

संस्कृत-शब्दार्थ-कौस्तुभ

अर्थात्
संस्कृत शब्दों का हिन्दी भाषा में
अर्थ बतलाने वाला
एक बड़ा कोष


संग्रहकर्ता
चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा, एम० आर० ए० एस०

[प्रथम संस्करण]

प्रकाशक
लाला रामनारायण लाल
पब्लिशर और बुकसेलर
इलाहाबाद

१९२८
मूल्य ६ रुपया

PREFACE

 F late years great efforts have been made to raise the standard of education in our schools and universities, and the study of no subject has attracted so much attention as that of the Indian Vernaculars. The educated public, as well as those responsible for our educational institutions, have been taking progressive interest in their teaching and development. Not long ago an academy has been instituted for the purpose of improving the Vernaculars with the moral and material blessings of the Government.

The classics, however, have not been so fortunate. Their studies are in comparative neglect. They have to yield their high place to more utilitarian and modern subjects. The present day tendency in education to subordinate what is purely or mostly cultural, to what is primarily utilitarian has thrown classics in shade.

Of all the classical languages *Sanskrit* has suffered most. Persian and Arabic are still popular with their admirers, for they (the admirers) have not yet decided to break off more or less completely from their past culture or ancient literature. They would not be satisfied with a second-hand and scrappy knowledge of their old literature through the translations by foreigners in foreign languages.

With the former champion of *Sanskrit* it is otherwise. A great many of those, who wield influence in the spheres of politics, education or social matters, even hesitate to do lip-service to that language in which the glories of their past are recorded. To them all old things of their country are only fit to be forgotten. Their neglect of *Sanskrit* has almost verged on hatred. They object even to that style of *Hindi*, which uses *Sanskrit* or words derived from it. And these very persons would gladly support the infusion of foreign words and derivatives into *Hindi* which might sound *Hebrew* and *Greek* to an average *Hindi*-speaking person !

Yet *Sanskrit* occupies an unique position—not only in the history and culture of *Āryavarta*—but also among the languages of the world. Dr. Ogilvie and Wilson did not overestimate the importance of *Sanskrit* when they said :—

" *Sanskrit*, the ancient language of the Hindoos, has been termed the language of the languages and is even regarded, as the key to all those termed 'Indo-European' including the Teutonic family, French, Italian, Spanish, Slavonian, Lithuanian, Greek, Latin and Celtic. It is found to bear such a striking resemblance both in its more important words and its grammatical forms to the Indo-European languages, as to lead to the conclusion that all must have sprung from a common source—some primitive language, now lost, of which they are all to be regarded as mere varieties."

It is very painful, for these reasons to find that *Sanskrit* does not possess an Etymological and Explanatory dictionary worthy of its importance and status. And when we consider the circumstances prevailing among our intelligentsia, it is idle to hope that the study of *Sanskrit* would receive any very serious impetus for some time to come—at any rate in these *Provinces*. However, it is our sacred duty to help the praiseworthy efforts of those who are still inclined to study *Sanskrit*. With this object in view, the present work was undertaken and this very simple compilation is placed before the public. There are two other valuable works on the subject—one by Dr. A. A. MacDonell and the other by the late Principal Vaman Shivaram Apte. But they could be of use to those only who know English.

The great work known as the great *Vachaspathya* is a standard work and is very useful for scholars. But until a well edited edition of the work comes out, it could not be of much help to even an average *Sanskrit* student.

There are three other works, viz., the *Padmachandra Kosha*, the *Chaturvedi Kosha* and the *Yugal Kosha*, which can help a *Sanskrit* reader, but they are too small for much practical use.

It is, therefore, hoped that the present work will answer the needs of those *Hindi* and *Sanskrit*-knowing students who are studying *Sanskrit* in a college or school or privately. It is designed to be an adequate guide to a knowledge of *Sanskrit* words. It contains as many explanations and details as were permitted by the limited space at the disposal of the compiler.

No doubt the work could be improved and enlarged, but there was a danger of defeating the very object of the compilation by such improvement. For an enlarged volume should have increased the price and thus it should have been out of reach of the *Sanskrit* students who are the poorest students in this poor country. The compiler is doubtful if the cost and price of the book—low as they are—are not already high for the *Sanskrit* students.

The compiler acknowledges with thanks the many works he has consulted in preparing this work. They are too numerous to be enumerated in a short preface. He must, however, acknowledge his special gratitude to the late

Principal Pandit V. S. Apte for the help he has obtained from his monumental work.

If the work reaches those for whom it is meant, and if it helps them in their study of *Sanskrit*, the compiler would feel his labours amply repaid. In case the first edition is exhausted in a reasonable time, thus showing a real demand for the work, the compiler proposes to enlarge and improve the work.

DARAGANJ,
Allahabad, The 23rd July, 1928. }

C. D. P. S.

संकेत-सूची

- १ अ० का०—अपादान कारक ।
- २ अव्यया०—अव्ययात्मक Indoclinable.
- ३ अन्व०—अन्वर्थ Literal.
- ४ अ० व०—अतिशयार्थवाचक Superlative.
- ५ आ० या आलं०—आत्मन्तरिक या आन्तरिक ।
- ६ आत्मा०—आत्मनोपदेश ।
- ७ अ० शा०—अङ्गशास्त्र ।
- ८ क० क०—कर्तृवाचक Accusative.
- ९ क० दा०—करणकारक Instrumental.
- १० कर्तृ० का०—कर्तृकारक सम्बन्धी ।
- ११ क० वा०—कर्मवाचक Passive.
- १२ क्रि० उ० या उ०—क्रिया उत्पत्तपदी ।
- १३ (त०) तपुंसकलित ।
- १४ परस्मै०—परस्मैपदी ।
- १५ व० कृ०—वर्तमानकालवाचक कृदन्त ।
- १६ (पु०) पुल्लिङ्ग ।
- १७ भू० क० क०—भूतकालवाचककर्मवाच्य कृदन्त ।
- १८ स० का०—सदृशभावनावाचक कर्मवाच्य कृदन्त ।
- १९ सं० वा०—सम्बोधनवाचक ।
- २० (स्त्री०) स्त्रीलिङ्ग ।

श्री:

संस्कृत-शब्दार्थ-कौस्तुभ

अ

अंशः

अ

—संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का यह प्रथम अक्षर है। बंगला आदि अन्य भाषाओं की वर्णमाला का भी यही आदिम वर्ण है। इसका उच्चारण कण्ठ से होता है; अतः यह वर्ण कण्ठ्य कहलाता है। संस्कृत व्याकरण में उच्चारणभेद से इसके १८ भेद दिखलाए गए हैं। प्रथम—ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत। तदुपरान्त—ह्रस्व-उदात्त, ह्रस्व-अनुदात्त, ह्रस्व-स्वरित; दीर्घ-उदात्त, दीर्घ-अनुदात्त, दीर्घ-स्वरित; प्लुत-उदात्त, प्लुत-अनुदात्त, प्लुत-स्वरित। ये ६ प्रकार हुए। फिर अनुनासिक और अननुनासिक भेद से—इन ६ के दुगुने ६ × २ = १२ भेद हुए। व्यञ्जनों के उच्चारण में इस वर्ण की सहायता अपेक्षित रहती है। इसीसे संस्कृत या हिन्दी में क आदिक वर्ण अकार-स्वर-संयुक्त लिखे तथा बोले जाते हैं। नञ् तत्पुरुष में भी 'न लोपो नञः' (पाणिनि-अष्टाध्यायी—६।३।७३) सूत्र से नकार का लोप हो जाने पर 'अ' वचता है। नञ्—के अर्थ ६ हैं:—

तत्सादृश्यमभावश्च, तदन्यत्वं तदल्पता।
अप्राशस्त्यं विरोधश्च, नञर्थः षट् प्रकीर्तिताः॥
(उदाहरण क्रम से)

सादृश्य में—न प्राहणः (अप्राहणः)
अभाव में—अपापम् (पापभावः)
भिन्नता के ज्ञान में—अघ्नः (घटभिन्नः)

अप्राशस्त्यभाव में—अकालः (अप्रशस्तकालः)
विरोध में—अनादरः (आदरविरोधी-तिरस्कार)
न-लोप में इतनी विशेषता है कि, स्वरवर्ण परे रहते
नुम् का आगम हो जाता है। जैसे, "अनादरः"।
(अर्थ) विष्णु। कहीं कहीं बद्ध का अर्थ भी
समझा जाता है।

पुल्लिङ्ग में	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा	अः	औ	आः
द्वितीया	अं	औ	आन्
तृतीया	एन	आभ्याम्	ऐः
चतुर्थी	आथ	"	एभ्यः
पञ्चमी	आत्-आद्	"	"
षष्ठी	अस्य	अयोः,	आनां
सप्तमी	ए	"	ऐषु

अंश (धा० उ०) [अंशयति-अंशयते] १ विभाजित
करना। बाँटना। भाग कर के बाँटना। २ पृथक्
करना। इसी अर्थ में अंशापयति भी व्यवहृत
होता है।

अंशः (पु०) १ भाग। हिस्सा। बाँट। २ भाज्य अङ्क।
३ भिन्न की लकीर के ऊपर की संख्या। ४ चौथा
भाग। ५ कला। ६ सोलहवाँ हिस्सा। ७ वृत्त की
परिधि का ३६०वाँ हिस्सा, जिसे इकाई मान कर
कोण या चाप का परिमाण बतलाया जाता है।
८ कंधा। ९ बारह आदित्यों में से एक।—अंशः

अंशावतार । एक हिस्से का हिस्सा ।—अंशि (क्रि० वि०) भागशः । हिस्सेवार ।—अवतारः जो पूर्णावतार न हो । अवतार विशेष । जिसमें परमात्मा का कुछ ही भाग हो ।—अवतरणं (महाभारत के आदिपर्व के ६४ वें तथा ६७ वें अध्यायों का नाम ।—भाज्—हर—हारिन् (पु० स्त्री०) उत्तराधिकारी, यथा—“ पिण्डदो-शहरश्चैषां पूर्वभावे परः परः ” । (याज्ञ०) —सवर्णनं (न०) अङ्गशास्त्र की एक क्रिया विशेष ।—स्वरः (संगीत में) प्रधान स्वर ।

अंशकः (पु०) १ हिस्सेदार । पाँतीदार । सामीदार । २ भाग । टुकड़ा । ३ दिवस । दिन ।

अंशनं (न०) भाग देने की क्रिया ।

अंशयित् (पु०) १ विभाजक । बाँटने वाला । २ हिस्सेदार । पाँतीवाला ।

अंशल (वि०) १ हिस्सा पाने का अधिकारी । २ मज्ज-बूत । ३ सबल । स्वस्थ । दृढ़काय । बलवान । मांसल ।

अंशिन् (वि०) १ सामीदार । समान भाग पाने वाला यथा—“ सर्वे वा स्युः समांशिनः । (याज्ञ०) २ हिस्सोंवाला ।

अंशु (पु०) १ किरण । रश्मि । २ चमक । दमक । ३ नौक । (डोरे का) झोर । ४ पोशाक । सजावट । ५ रफ्तार । गति । ६ परमाणु ।—जालं—(न०) रश्मिसमुदाय ।—धरः, —भृत्, —पतिः, —वाणः, —भर्तृ, —स्वामी, —हस्तः (पु०) सूर्य । आदित्य ।—पट्टं (न०) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र । —माला (स्त्री०) १ प्रकाश की माला । २ सूर्य या चन्द्र का मण्डल ।—मालिन्—माली (पु०) सूर्य ।

अंशुर्क १ वस्त्र विशेष । मिहीन कपड़ा । अर्थात् मिहीन रेशमी मलमल । दूसर । मिहीन सफेद वस्त्र । २ वह सिला कपड़ा जो सब के ऊपर या सब के नीचे पहिना जाता है । ३ पत्ता । ४ आँच की या रोशनी की मंदी लौ या ज्योति ।

अंशुमत् (वि०) १—चमकदार । चमकीला । दमकीला । २ नुकीला । नोकदार ।—मान् (पु०) १ सूर्य । २ सूर्यवंशी एक राजा, जो असमञ्जस के पुत्र और महाराज सगर के पौत्र तथा महाराज दिलीप के पिता थे ।

अंशुमती (स्त्री०) १ पौधा विशेषः सालवण । २ पूर्णमासी । पूर्णिमा ।

अंशुमत्फला (स्त्री०) केले का वृक्ष ।

अंशुल (वि०) चमकीला । दमकीला ।

अंशुलः (पु०) चाणक्य का दूसरा नाम ।

अंस् (असंयति, अंसापयति) देखो “ अंश् ” ।

अंसः १ टुकड़ा । हिस्सा । २ कंधा । कंधे की हड्डी । अंस-फलक ।—कूटः (पु०) साँड़ के कंधों के बीच का ऊपर को उठा हुआ भाग । कूबड़ । कुब्ज ।—अं (न०) कंधों का कवच विशेष ।—फलकः (पु०) मेरुदण्ड का उपरी भाग । भारः (पु०) कंधे पर का बोझ या जुआँ ।—भारिक. —भारिन् (वि०) कंधे पर रख कर बोझ उठाये हुए अथवा कंधे पर जुआँ रखे हुए ।—विवर्तिन (वि०) कंधों की ओर मुड़ा हुआ ।

अंसल (वि०) देखो “ अंशल ” । मज्जबूत कंधों वाला । यथा—“ युवा युगव्यायत बाहुरंसलः । ”

अंह् (धा० आत्मने०) [अंहते, अंहितुः, अंहित] जाना । समीप आना । आरम्भ करना भेजना । चमकना । बोलना ।

अंहतिः—ती (स्त्री०) १ भेंट । उपहार । दान । दैन । खैरात । २ बोमारी ।

अंहस् (न०) १ पाप । २ कष्ट । चिन्ता ।

अंहिः (पु०) १ पैर । २ पेड़ की जड़ । ३ चार की संख्या ।—पः (पु०) पादप । जड़ से जल पीने वाले अर्थात् वृक्ष ।—स्कन्धः (पु०) पैर के तलवे का उपरी भाग ।

अक् (धा० परस्मै०) [अकति, अकित] बूमबूममौआ चाल चलना । सर्पाकार चलना ।

अकं (न०) १ हर्ष का अभाव । पीड़ा । कष्ट । २ पाप ।

अकच (वि०) १ गंजा । जिसके सिर पर बाल न हों ।

अकचः (पु०) केतु का नाम ।

अकनिष्ठ (वि०) १ जो छोटा न हो । २ श्रेष्ठतर ।

अकनिष्ठः (पु०) गौतमबुद्ध का नाम ।

अकन्या (स्त्री०) जिसका द्वारपण उत्तर चुका हो ।

अकर (वि०) १ लुंजा । जिसके हाथ न हो । २ अकर्मण्य । जो कुछ न करे । ३ वह माल जिस पर चुंगी न लगे या वह व्यक्ति जिस पर कर न हो ।

अकरणा (न०) कुछ न करना । क्रिया का अभाव ।
अकरणीः (स्त्री०) १ असफलता । नैराश्य । अपूर्णता ।

२ इसका प्रयोग प्रायः किसी को शाप देने या किसी की अमङ्गल-कामना करने में होता है ।

अकर्ण (वि०) १ कर्णरहित । जिसके कान न हो ।
२ बहुरा ।

अकर्णः (पु०) सर्प ।

अकर्तन (वि०) बौना । खर्बाकार ।

अकर्मन् (वि०) १ सुल । २ जिसके पास करने को कुछ काम न हो अथवा जो कुछ भी काम न करता हो । ३ अयोग्य । ४ पतित । दुष्ट । ५ व्याकरण में अकर्मक क्रिया के अर्थ में । (न०) (—म्)
१ कार्याभाव । २ अनुचित कार्य । बुरा कर्म । पाप ।—अन्वित (वि०) १ बेकाम । खाली । निष्ठल । २ अपराधी ।—कृत (वि०) १ क्रिया से रहित । २ अनुचित काम करने वाला ।—भोगः (पु०) कर्मफल से मुक्त होने की स्वतंत्रता का सुखानुभव ।

अकर्मक (वि०) क्रियाविशेष । (स्त्री०) अकर्मिका ।

अकर्मण्य (वि०) १ अनुचित । न करने योग्य ।
२ सुस्त, निष्क्रमा ।

अकल (वि०) १ जो भागों में विभक्त न हो । २ परब्रह्म की उपाधि विशेष ।

अकल्क (वि०) १ विशुद्ध । पवित्र । २ पापशून्य ।

अकल्का (स्त्री०) चन्द्रमा की चार्दनी ।

अकल्प (वि०) १ अनिर्यत्रित । असंयत । २ निर्बल ।
अयोग्य । ३ तुलनाशून्य । जिसकी तुलना न हो सके ।

अकल्प्य (वि०) अस्वस्थ । भला चंगा नहीं ।

अकस्मात् (अव्यय०) संयोगवश । सहसा । आकस्मिक ।
अकस्मान् आया हुआ । तत्क्षण । बैठे बिठाए । औचक ।
दैवयोग से । हठात् । आप से आप । अकारण ।

अकांड, अकाण्ड (वि०) १ सहसा । इत्ति-
फाक्रिया । औचक । २ जिसमें डंडुल या डाली न हो ।—जात (वि०) सहसा उत्पन्न हुआ अथवा उत्पन्न किया हुआ ।—पातजात (वि०) जन्मते ही मर जाने वाला ।—शूल (न०) बायुगोले का सहसा उठने वाला दर्द ।

अकांडि, अकाण्डे (क्रि० वि०) अचिन्तित । सहसा ।

अकाम (वि०) १ विना कामना का । कामनारहित ।
२ इच्छाशून्य । ३ निस्पृह । ४ विना चाह अर्थात् प्रीति का । ५ अबोध । ६ अतर्कित ।

अकामतः (क्रि० वि०) १ विना प्रयोजन के । व्यर्थ ।
२ खेद के सहित । विवश होकर । अज्ञानता के कारण से ।

अकाय (वि०) विना शरीर का । पाञ्चभौतिक शरीर से रहित । (पु०) १ राहु का नाम । २ परमात्मा की एक उपाधि ।

अकारण (वि०) १ विना कारण । हेतुरहित ।
२ स्वेच्छाप्रसूत । अयत्नसम्भूत । स्वतःप्रवृत्त । अपने आप उत्पन्न ।

अकारणम् (क्रि० वि०) विना कारण के । व्यर्थ ।

अकार्य (वि०) अनुचित ।—कारिन् (वि०) १ पापी । बुरा काम करने वाला । २ कर्तव्य-
पराङ्मुख ।

अकार्यम् (न०) १ अनुचित या बुरा कर्म । २ जुर्म ।
अपराध ।

अकाल (वि०) १—अनुपयुक्त समय । अनवसर ।
कुसमय । ठीक समय । से पीछे या पहिले । २ कच्चा ।—कुसुमं,—पुष्पं (न०) कुसमय का फूल
हुआ फूल ।—कृष्ण्डः (पु०) कुसमय में फला
हुआ कुम्हड़ा ।—ज,—उत्पन्न,—जात (वि०)
कुसमय में उत्पन्न । कच्चा ।—जलदोदयः,—मेघो-
दयः १ कुसमय आकाश में बादलों का उमड़ना ।
२ पाला या कुहरा ।—मृत्यु (पु०) बेसमय की
मौत । असामयिक मृत्यु । अनायास मृत्यु । थोड़ी
अवस्था में मरना ।—वेला (स्त्री०) कुसमय ।—
सह (वि०) जो विलम्ब को अथवा समय का
नाश न सह सके बेसमय ।

अकिंचन, अकिञ्चन (वि०) जिसके पास कुछ न
हो । निपट निर्धन । कंगाल । दरिद्र । दीन । शरीर ।
सुहताज ।

अकिञ्चिज्ज्ञ, अकिञ्चिज्ज्ञ (वि०) कुछ भी न जानते
हुए । निपट अज्ञान । निपट अबोध ।

अकिञ्चित्कर (वि०) १ असमर्थ । जिसका
क्रिया कुछ भी न हो सके । अशक्त । २ तुच्छ ।

अकुण्ड, अकुण्ड (वि०) १ जो कुचिद्ध या गोंदक

न हो । तीक्ष्ण । चोखा । २ तीव्र । खरा । तेज ।
३ विना रोकटोका हुआ । ४ निर्दिष्ट ।
५ अत्यधिक ।

अकुतः (क्रि० वि०) यह अकेला कहीं नहीं प्रयुक्त होता । इसका अर्थ है जो कहीं से न हो ।

अकुतोभय (वि०) सुरक्षित । जिसे किसी का भय न हो ।

अकुप्यं (न०) १ सुवर्ण । २ चाँदी । ३ कम कीमती धातु नहीं ।

अकुशल (वि०) १ जो निपुण न हो । अनाड़ी ।
२ अशुभ । अभागा ।

अकुशलं (न०) विपत्ति । बुराई । अहित ।

अकूपारः (पु०) १ समुद्र । २ सूर्य । ३ बड़ा कछुआ । वह विशाल कछुआ जिसकी पीठ पर पृथिवी टिकी हुई मानी जाती है । ४ पत्थर । चट्टान ।

अकूर्च (वि०) कपटशून्य । शठता रहित । चातुर्य-विहीन । छलविवर्जित ।

अकुच्छ (वि०) सरल । सहज ।—म् (न०) सरलता । आसानी ।

अकृत (वि०) १ जो न किया गया हो । जो ठीक ठीक न किया गया हो । जिसके करने में भूल की गयी हो । २ अपूर्ण । अधूरा । जो तैयार न हो । ३ जो रचा न गया हो । ४ जिसने कोई काम न किया हो । ५ अपक्व । कच्चा । जो पका न हो ।—ता (स्त्री०) बेटी होने पर भी जो बेटी न मानी जाय और जो पुत्रों के समकक्ष मानी जाय ।—तं (न०) १ किसी कार्य को न करना । २ अश्रुतपूर्ण कर्म ।—अर्थ (वि०) असफल । अनुत्तीर्ण ।—अस्त्र (वि०) जिसको हथियार चलाने का अभ्यास न हो ।—आत्मन् (वि०) अज्ञानी । अबोध । मूर्ख । परब्रह्म या परमात्मा से भिन्न ।—उद्धाह (वि०) अविवाहित ।—ज्ञ (वि०) १ जो कृतज्ञ न हो । जो किये हुए उपकार को न माने । कृतज्ञ । नाशुकर । २ अधम । नीच ।—धी,—बुद्धि (वि०) अज्ञ । अबोध । मूर्ख ।

अकृतिन् (वि०) कुत्सित । अकुशल । असुविभाजनक ।

अकृष्ट (वि०) अनजुती हुई । जो न जोती गयी हो ।
—पच्य,—रोहिन् (न०) जो अनजुती जमीन में उत्पन्न हुआ हो ।

अकृष्णकर्मन् (वि०) निर्दोष । निर्मल ।

अकोट (पु०) सुपाड़ी का वृक्ष ।

अकोविद (वि०) मूढ़ । अपण्डित । मूर्ख ।

अक्का (स्त्री०) माता ।

अक्त (वि०) १ जोड़ा हुआ । २ गया हुआ ३ बाहर तक फैला हुआ । ४ तैलादि की मालिश किया हुआ

अक्ता, अक्तु (स्त्री०) रात्रि ।

अकृत्रं (न०) वर्म । कवच । जिरहबन्धन ।

अक्रम (वि०) गड़बड़ । अडबड़ ।

अक्रमः (पु०) गड़बड़ी । अनियमितता ।

अक्रिय (वि०) सुस्त । क्रियाशून्य ।

अक्रिया (स्त्री०) क्रियाशून्यता । सुस्ती । कर्तव्यपालन में असावधानी ।

अक्रूर (वि०) जो क्रूर या कठोर न हो । जो संगदिल न हो ।

अक्रूरः (पु०) एक यादव का नाम, जो कृष्ण के चचा और हितैषी थे ।

अक्रोध (वि०) क्रोधशून्य । शान्त ।

अक्रोधः (पु०) शान्त । क्रोधराहित्य ।

अक्रिका (स्त्री०) नील का पौधा ।

अक्रिष्ट (वि०) १ कष्टरहित । विना क्लेश का । २ सुगम । सहज । आसान ।

अक्त (धा० परस्मै०) [अक्षति, अक्ष्योति, अक्षित]
१ पढ़ूँचना । २ व्यास होना । ३ घुसना । ४ एकत्र करना । जमा करना ।

अत्तः (पु०) धुरी । किसी गोल वस्तु के बीचों बीच पिरोयी हुई वह लोहे की छड़ या लकड़ी जिस पर वह गोल वस्तु घूमती है । २ गाड़ी । छकड़ा । ३ पहिया । ४ तराजू की डांडी । ५ एक कल्पित स्थिर रेखा जो पृथिवी के भीतरी केन्द्र से होती हुई उसके आर पार दोनों ध्रुवों पर निकली है और जिस पर पृथिवी घूमती हुई मानी जाती है । ६ चौंसर का पाँसा । चौंसर । ७ रुद्राक्ष । ८ तौल विशेष जो १६ माशे की होती है और जिसे कर्प भी कहते हैं । ९ बहेड़ा । १० सर्प ।

११ गरुड़ । १२ आत्मा । १३ ज्ञान १४ मुकुटमा ।
व्यवहार । सामला । १५ जन्मान्ध ।

अक्षं (स्त्री०) १ इन्द्रिय । २ कृतिया । ३ सोहागा ।

अक्ष + अग्रकोलः—अक्षलकः (पु०) गाड़ी के पहिये
में जो कील लगायी जाती है, वह ।

अक्ष + आचपनम् (न०) चौसर की विड्ढाँत या बोर्ड ।

अक्ष + आवापः (पु०) ज्वारी ।

अक्ष + कर्णः (पु०) समकोण त्रिभुज के सामने
की बाहु ।

अक्षकुशल }
अक्षशीर्ष } (वि०) जुआ खेलने में प्रवीण ।

अक्षकूटः (पु०) आँख की पुतली ।

अक्षकौविद } (वि०) पाँसे या चौसर के खेल में
अक्षज्ञ } निपुण या उसका ज्ञाता ।

अक्षग्लहः (पु०) जुआ । पाँसे का खेल ।

अक्षजं (न०) १ ज्ञान । अवगति । २ वज्र । ३ हीरा ।

अक्षजः (पु०) विष्णु का नाम विशेष ।

अक्षतत्वं (न०) } जुआ खेलने की कला या विद्या ।
अक्षविद्या (स्त्री०) }

अक्षदर्शकः } (पु०) १ जुए का निर्णायक ।
अक्षदृष्ट } २ जुए का व्यवस्थापक ।

अक्षदेविन् (पु०) ज्वारी ।

अक्षधूतं (न०) जुआ । चौसर । पाँसे का खेल ।

अक्षधूर्तः (पु०) ज्वारी ।

अक्षधूर्तिलः (पु०) गाड़ी के जुआँ में जुता हुआ साँड़
या बैल ।

अक्षपटलं (न०) १ न्यायालय । २ वह स्थान या
कमरा, जहाँ अदालती कागजात रखे जाते हैं ।

अक्षपाटः (पु०) अखाड़ा ।

अक्षपाठकः (पु०) आईन के ज्ञान में निपुण । जज ।
न्यायाधीश ।

अक्षपातः (पु०) पाँसे का फिकाव ।

अक्षपादः (पु०) सोलह पदार्थ वादी न्यायशास्त्र
के रचयिता गौतम अपि अथवा न्यायवादी ।

अक्षभागः } (पु०) वे रेखाएँ जो किसी मानचित्र
अक्षशः } में उत्तर से दक्षिण की ओर खिंची हों,
उन रेखाओं का कुछ अंश ।

अक्षभारः (पु०) गाड़ी भर बोझ ।

अक्षमाला (स्त्री०) } रुद्राक्ष की माला ।
अक्षसूत्रं (न०) }

अक्षराजः (पु०) वह जिसे जुआ खेलने का व्यवसन
हो अथवा पाँसों में प्रधान ।

अक्षवाटः (पु०) वह घर जिसमें जुआ होता हो ।
जुआइखाना ।

अक्षदृढ्यं (न०) जुआ के खेल में पूर्ण निपुणता ।

अक्षघतो (स्त्री०) चौसर का खेल ।

अक्षणिक (वि०) दृढ़ । मज़बूत । जो क्षणिक या
स्थायी न हो ।

अक्षल (वि०) १ जो चोटिल न हो । २ जो टूटा
न हो । ३ सम्पूर्ण । ४ अविभक्त । जो विभाजित
न हो ।

अक्षतः (पु०) १ शिव । २ कूटे हुए या पड़ोरे
हुए चावल, जो धूप में सुखाये गये हों । (बहु-
वचन में) १ सम्पूर्ण अनाज । २ चावल जो
जल से धोये हुए हों और पूजन में किसी देवता
पर चढ़ाने को रखे जाँय । ३ यव ।

अक्षतं (न०) अनाज किसी भी प्रकार का । २
हिजड़ा । नपुंसक । (यह पुल्लिङ्ग भी है) ।

अक्षतयोनिः (स्त्री०) कन्या जिसका पुरुष से संसर्ग न
हुआ हो । वह कन्या जिसका विवाह तो हो गया
हो, परन्तु पुरुष के साथ संसर्ग न हुआ हो ।

अक्षता (पु०) १ क़ारी । २ धर्मशास्त्रानुसार वह
पुनर्भू स्त्री जिसने पुनर्विवाह तक पुरुष से संसर्ग
न किया हो । ३ काँकड़ासिंगी ।

अक्षम (वि०) १ असमर्थ । अयोग्य । लाचार ।
अशक्त । असहिष्णु । ३ समारहित । ४ अधीर ।

अक्षमा (स्त्री०) १ ईर्ष्या । २ अधैर्य । ३ क्रोध ।
रोष ।

अक्षय (वि०) जिसका नाश न हो । अविनाशी ।
अनश्वर । सदा बना रहने वाला । कभी जो न
चुके । २ कल्पान्तस्थायी । कल्प से अन्त तक
रहने वाला ।—तृतीया (स्त्री०) १ वैशाख
शुक्ला ३ । आखातीज । २ सतयुग का आरम्भ
दिवस ।

अक्षय्य (वि०) कभी न चुकने वाला । अविनाशी ।
सदा बना रहने वाला ।

अक्षर (वि०) १ अव्युत् । स्थिर । नित्य । अविनाशी । —रः १ शिव । २ विष्णु । —रं अकारादिवर्ण । मनुष्य के मुख से निकली हुई ध्वनि को सूचित करने वाले सङ्केत । २ लिखत । टीप । दस्तावेज । ३ अविनाशी आत्मा । ब्रह्म । ४ जल । ५ आकाश । ६ परमानन्द । मोक्ष । —अर्थ शब्दार्थ । —च (बु०) चुः—चयाः (नः) (पु०) लेखक । नकलनवीस । प्रतिलिपि करने वाला । यही अर्थ अक्षरजीवी अथवा अक्षरजीवकः अथवा अक्षर-जीविकः का भी है । —चक्षु (पु०) लेखक । क्लार्क । —च्युतकं (न०) किसी अक्षर के जोड़ देने से किसी शब्द का भिन्न अर्थ करना । —कुंद्म् (न०) —चूर्तं (न०) किसी पद्य का एक पाद । —जननी—तूलिका (स्त्री०) नरकुल या सैंटे की कलम । —न्यासः (वि०) १ लेख । २ अकारादि वर्ण । ३ धर्म-ग्रन्थ । ४ तंत्र की एक क्रिया जिसमें मंत्र के एक एक अक्षर पढ़ कर हृदय, अँगुलिया, कण्ठ आदि अंगस्पर्श किये जाते हैं । —भूमिका (स्त्री०) पट्टी या काठ का तख्ता जिस पर लिखा जाय । —मुखः (पु०) १ व्याज । विद्यार्थी । २ विद्वान् । शास्त्री । —वर्जित अपद मूर्ख । —शिक्षा (स्त्री०) तांत्रिक-अक्षर-शिक्षाविशेष । —संस्थानं (न०) १ लेख । २ वर्षामाला ।

अक्षरकं (न०) एक स्वर । एक अक्षर ।

अक्षरशः (क्रि० वि०) १ अक्षर । अक्षर । शब्द व शब्द । २—बिल्कुल, सम्पूर्णतया ।

अक्षान्तिः } (स्त्री०) असहिष्णुता । ईर्ष्या । दाह ।
अक्षान्तिः }

अक्षार (वि०) जिसमें बनावटी निमकीनपन न हो ।

अक्षारः (पु०) असली निमक ।

अक्षि (न०) [अक्षिणी, अक्षीणि, अक्ष्या, अक्ष्णः] १ नेत्र । २ दो की संख्या ।

अक्षिकम्पः (पु०) आँख कंपकपा ।

अक्षिकूटः (पु०)
अक्षिकूटः (पु०)
अक्षिगोलः (पु०)
अक्षितारा (स्त्री०) } आँख की पुतली ।

अक्षिगत (वि०) १ दृष्टिगोचर । २ उपस्थित । वर्तमान । आँख में पड़ी हुई (किरकिरी) । आँख का उदत्ता । ३ घृणित । यथा—“अक्षिगतो-ऽहमस्य हास्यो जातः ।” दशकुमारच०

अक्षिपद्मन् (न०) वन्हीं । पलकों के किनारों के अक्षिलोमन् } ऊपर के वाल ।

अक्षिपटलम् (न०) (१) आँख के कोण पर की झिल्ली । इसी झिल्ली का रोग विशेष ।

अक्षिविकूषितं (न०) तिरछी नज़र । कनखियों की अक्षिविकूषितं } देखन ।

अक्षिवः (पु०) पौधा विशेष । (न०) समुद्री अक्षिवः } लवण ।

अक्षुण्ण (वि०) १ अभग्न । अनट्टा । समूचा । २ अनाड़ी । अकुशल । ३ जो यरास्त न हुआ हो । जो जीता न गया हो । सफलमनोरथ । यथा “अक्षुण्णोनुनयः” (धेयसींहार) ४ जो कुचला या कूटा या पीटा गया हो । ५ असाधारण । नैरमामूली ।

अक्षेत्र (वि०) बिना खेत वाला । बिना जोता बोया हुआ । —वाद (वि०) जिसको आध्यात्मिक ज्ञान न हो ।

अक्षेत्रं (न०) बुरा या झराब खेत । (आ०) कुशिय्य । अयोग्य पात्र ।

अक्षोटः (पु०) अखरोट ।

अक्षोभ्य (वि०) जिस में खोभ न हो । अनुद्वेगी । शान्त । दृढ़ । धीर । स्थिर ।

अक्षौहिणी (स्त्री०) पूरी चतुरंगिनी सेना । सेना का एक परिमाण । सेना की संख्या विशेष । एक अक्षौहिणी में १०८३५० पैदल सिपाही, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ और २१८७० हाथी होते हैं ।

अखंड (वि०) अभग्न । जो टूटा न हो । सम्पूर्ण । अखण्ड } समूचा । अटूट । अविच्छिन्न । लगातार ।

अखंडनम् (न०) जिसको कोई काट न सके । अखण्डनम् } जिसका खण्डन न हो सके ।

अखंडनः (पु०) काज । समय । वक्त ।

अखण्डित (वि०) जिसके टुकड़े न हुए हों । अखण्डित } विभागरहित । अविच्छिन्न । —अनु

(पु०) वह फसल जिस में सामूली फल पुष्प उत्पन्न हों। सफल। फलवान्।

अखर्ष (वि०) जो बोना न हो, जो छोटा न हो। बड़ा। “अखर्षेण गर्वेण विराजमानः”। —दश-कुमार।

अखात (वि०) बिना खोदा हुआ। बिना गाढ़ा हुआ। बिना दफनाया हुआ।

अखातः (पु०) १ बिना खोदा हुआ या स्वाभाविक अखातं (न०) जलाशय या भील या खाड़ी। २ किसी मन्दिर के सामने की पुष्करिणी।

अखिल (वि०) सम्पूर्ण। समग्र। समूचा। सब। अखिलेन (क्रि० वि०) १ सम्पूर्णतः। पूर्ण रूप से। २ गैरआबाद। गैर जोता हुआ।

अखेटिकः (पु०) १ साधारणतः वृक्ष। २ कुत्ता जिसको शिकार खेलना सिखलाया गया हो।

अख्यातिः (स्त्री०) बदनामी। अपकीर्ति। निन्दा। (वि०) निन्द्य। बदनाम।

अग (धा० परस्मै०) [अगति, आगीत्, अगिष्यति, अगित] १ टेढ़ामेंढ़ा, सर्प की तरह चलना। लहरियादार गति। २ चलना। जाना।

अग (वि०) १ चलने में असमर्थ। २ जिसके पास कोई न पहुँच सके।—आत्मजा (स्त्री०) पर्वत की कन्या। पार्वती देवी।—ओकस् (पु०) १ पर्वत पर बसने वाला। २ (वृक्षवासी) पक्षी। ३ शरभ जन्तु जिसके आठ टोंगे बतलायी जाती हैं। ४ शेर। सिंह। (वि०) पहाड़ों में होकर घूमने फिरने वाला। जंगली।—जं (न०) शिलाजीत। शैलज तेल।

अगः (पु०) १ वृक्ष। २ पहाड़। ३ सर्प। ४ सूर्य। ५ ७ की संख्या।

अगच्छ (वि०) अचल। जो चल न सके।

अगच्छः (पु०) वृक्ष। पेड़।

अगतिः (स्त्री०) १ उपाय रहित। बिना उपाय का। २ अनवबोध।

अगतिक { (वि०) ‘जिसकी कहीं गति न हो’।
अगतीक { जिसका कहीं ठिकाना न हो। अशरण।
अनाथ। निराश्रित। निरावलम्ब।

अगद् (वि०) नीरोग। रोगरहित। स्वस्थ।

अगद्ः (पु०) १ औषध दवा। २ स्वास्थ्य। ३ विष नाश करने का विज्ञान।

अगद्, (पु०) चिकित्सक। वैद्य।
अगदंकारः अगदङ्कारः रोग दूर करने वाला।

अगदतन्त्रम् (न०) आयुर्वेद का एक अंग विशेष। इसमें सांप बिच्छू आदि के विष उतारने की दवाइयाँ लिखी हैं।

अगम देखो, अग।

अगम्य (वि०) १ गमन के अयोग्य। जहाँ कोई न पहुँच सके। २ अज्ञेय। जानने के अयोग्य। ३ विषट। कठिन। ४ अपार। बहुत। अत्यन्त। ५ अथाह, बहुत गहरा।

अगम्या (स्त्री०) न गमन करने योग्य। मैथुन करने के अयोग्य स्त्री। एक अस्त्ररथ नीच जाति।—गमनं (न०) न गमन करने योग्य स्त्री के साथ गमन करना।—गामिन्। (वि०) मैथुन न करने योग्य स्त्री के साथ गमन किये हुए।

अगरु (न०) ऊद। अगर लकड़ी।

अगस्तिः { (पु०) १ कुम्भज। एक ऋषि का नाम।
अगस्त्यः { २ एक नक्षत्र का नाम। ३ एक वृक्ष का नाम।—कूट (पु०) दक्षिण भारत के मद्रास प्रान्त के एक पर्वत का नाम, जिससे ताम्रपर्णी नदी निकलती है।

अगाध (वि०) १ अथाह। बहुत गहरा। अतल-स्पर्शी। २ असीम। अपार। बहुत। अधिक। ३ बोधागम्य। दुर्बोध।

अगाधः (पु०) छेद। गड्ढा। दरार।

अगाधं (न०)

अगाधजलः (पु०) इद। तालाब। (वि०) अथाह जल वाला।

अगारं (न०) घर। मकान।

अगिरः (पु०) स्वर्ग। आकाश।—ओकस् (वि०) स्वर्ग में आवास करने वाला (देवताओं की तरह)।

अगुण (वि०) १ निर्गुण। २ जिसमें कोई सद्गुण न हो। निकम्मा।

अगुणः (पु०) अपराध। खराबी। बुराई।

अगुरु { (वि०) १ हल्का। जो भारी न हो। २
(ज्वदः शास्त्र में) छोटा। ३ निगुरा। जिसका कोई गुरु न हो। (न० और पु० में भी) अगम। सुगन्धित काष्ठ विशेष।

गृहः (पु०) बिना घर वाला । (नट, जनजारा) यती ।

गोचर (वि०) इन्द्रियों के प्रत्यक्ष का अविषय । जिसका अनुभव इन्द्रियों को न हो । अप्रत्यक्ष । अप्रकट ।

गोचरम् (न०) ग्रह ।

ग्न्यायी (स्त्री०) १ अग्निदेव की स्त्री । स्वाहा । २ त्रेतायुग ।

ग्नि (पु०) आग । हवन की आग । यह तीन प्रकार की मानी गई है । यथाः—गार्हपत्य, ग्राहवनीय और दक्षिण । उदर के भीतर जो शक्ति खाद्य पदार्थों को पचाती है, उसको भी अग्नि कहते हैं और उसका नामविशेष है “जठराग्नि” या “वैशानर” । ३ पाँच तत्वों में से एक, जिसे “तेज” कहते हैं । ४ कफ, वात, पित्त में “पित्त” को अग्नि माना है । ५ सुवर्ण । ६ तीन की संख्या । ७ वैदिक तीन प्रधान देवताओं में (अग्नि, वायु और सूर्य) एक अग्नि भी है । ८ चित्रक । चीता । (औषध विशेष) । ९ मिलावा ।

१० नीबू ।—आ (आ) गारं—अ (आ) गारः—आलयः, (पु०)—गृहं (न०) अग्नि देव का मन्दिर ।—अस्त्रं (= अभ्यास्त्रं) (न०) वह अस्त्र विशेष जो मंत्र द्वारा चलाये जाने पर आग की वर्षा करता है ।—आणः (पु०) यह भी “अभ्यास्त्र” ही का अर्थ वाली शब्द है ।—आधानं (= अभ्याधान) (न०) १ अग्नि की यथाविधि स्थापना । २ अग्निहोत्र ।—आहितः, —(= अभ्याहितः) (पु०) जो अपने घर में सदा विधान पूर्वक अग्नि को रखता है ।—उत्पातः (पु०) अग्नि सम्बन्धी उपद्रव विशेष अथवा अग्नि द्वारा सूचित अशुभ चिह्न विशेष । उत्कापात आदि ।—उपस्थानं (न०) १ अग्नि का पूजन या आराधन । २ वे मंत्र विशेष जिनसे अग्नि का पूजन किया जाता है ।—कणः—स्तेकः (पु०) अँगारी । शोला । अँगारा ।—कार्यः—कर्मन् (न०) अग्नि का पूजन ।—काष्ठं (न०) अगर का वृक्ष ।—कुक्कुटः (पु०) जलता हुआ प्याल का प्ला । लूक । लुकारी ।—कुण्डं (न०)

एक विशेष प्रकार का गढ़ा जिसमें अग्नि प्रज्वलित करने के हवन किया जाता है । यह कुण्ड भालु के भी बनाये जाते हैं ।—कुमारः—तनयः—सुतः (पु०) १ कार्तिकेय । षडानन । २ आयुर्वेद के मतानुसार एक रस विशेष ।—कुलं (न०) क्षत्रियों का एक वंश विशेष ।—केतुः (पु०) १ धूम । धुआ । २ शिव का नाम । ३ रावण की सेना का एक राक्षस ।—क्रौणः (पु०)—दिक् पूर्वं और दक्षिण का कोना जिसके देवता अग्नि हैं ।—क्रिया (स्त्री०) १ शव का अग्निदाह । मुर्दा जलाना । २ दागना ।—क्रीडा (स्त्री०) १ आतिशबाजी । २ रोशनी । दीपमालिका ।—गर्भं (वि०) जिसके भीतर आग हो ।—गर्मः (पु०) भूयस्कान्तमणि । सूर्यमुखी शीशा ।—गर्म (स्त्री०) १ शमीवृक्ष । २ पृथिवी का नाम । चित् (पु०) अग्निहोत्री ।—चयः (पु०)—चयनं (न०)—चित्या (स्त्री०) देखो अभ्याधान ।—ज (वि०) अग्नि से उत्पन्न ।—जातः (पु०) १ कार्तिकेय । षडानन । २ विष्णु ।—जं—जातं (न०) सुवर्ण ।—जिह्वा (स्त्री०) आग की लौ । (न०) अग्नि की सात जिह्वा मानी गयी हैं । उन सातों के भिन्न भिन्न नाम हैं । (यथा कराली, धूमिनी, श्वेता, लोहिता, नीललोहिता, सुवर्ण । पाराना ।)—तपस् (वि०) उत्पन्न होता हुआ । चमकता हुआ या जलता हुआ ।—त्रयं (न०)—त्रेता (स्त्री०) तीन प्रकार की आग जिनका वर्णन अग्नि के अर्थ के अन्तर्गत किया जा चुका है ।—द् (वि०) ताकत बढ़ाने वाला । जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाला ।—दानु (पु०) अन्तिम संस्कार अर्थात् दाहकर्म करने वाला ।—दीपन (वि०) जठराग्नि प्रदीप्तकारी ।—दीप्तिः—वृद्धिः (स्त्री) बढ़ी हुई पाचन शक्ति । अच्छी भूख ।—देवा (स्त्री०) कृत्तिका नक्षत्र ।—धानं (न०) वह स्थान या पात्र जिसमें पवित्र आग रखी जाय । अग्निहोत्री का गृह ।—धारणं (न०) अग्नि को घर में सदा रखना ।—परि किया, —परिष्किया (स्त्री०) अग्नि का पूजन ।—परिच्छेदः (पु०) हवन के ध्रुवा आज्यस्थली आदि पात्र ।—परीक्षा (स्त्री०) जलती हुई आग द्वारा

परीक्षा या जाँच जैसी कि जानकी जी की लंका में हुई थी।—पर्वतः (पु०) ज्वालामुखी पहाड़।—पुराणं (न०) १८ पुराणों में से एक। इसको सर्वप्रथम अग्निदेव ने वशिष्ठ जी को श्रवण कराया था; अतः वक्ता के नाम पर इसका नाम अग्नि-पुराण पड़ा।—प्रतिष्ठा (स्त्री०) अग्नि को विधानपूर्वक वेदी पर या कुण्ड में स्थापना; विशेषकर विवाह के समय।—प्रवेशः (पु०)।—प्रवेशनं (न०) किसी पतिव्रता का अपने पति के साथ चिता में बैठ कर सती होना।—प्रस्तरः (पु०) चकमक पत्थर, जिसको टकराने से आग उत्पन्न होती है।—बाहुः (पु०) भ्रूम। (धुआँ)।—भं (न०) १ कृत्तिका नक्षत्र का नाम। २ सुवर्ण।—भु (न०) १ जल। २ सुवर्ण।—भूः (पु०) अग्नि से उत्पन्न। कार्तिकेय का नाम।—मणिः (पु०) सूर्यकान्तमणि। चकमक पत्थर।—मंथः (मन्यः) (पु०) मंथनं (मन्थनम्) (न०) रगड़ से आग उत्पन्न करना।—मान्थं (न०) कङ्जित। कुपच। अनपच।—मुखः (पु०) १ देवता। २ साधारणतया ब्राह्मण। ३ खटमल।—मुखी (स्त्री०) रसोद्भव।—युग ज्योतिषशास्त्र के पाँच पाँच वर्ष के १२ युगों में से एक युग का नाम।—रक्षणां अग्नि को घर में बनाये रखना। बुझने न देना।—रजः (पु०)।—रचस् (पु०) १ इन्द्रगोप नामक कीड़ा। वीरबहूदी। २ अग्नि की शक्ति। ३ सुवर्ण।—रोहिणी (स्त्री०) रोगविशेष। इसमें अग्नि के समान झलकते हुए फफोले पड़ जाते हैं।—लिङ्ग (पु०) आग की लौ की रंगत और उसके झुकाव को देख शुभाशुभ बतलाने की विद्याविशेष।—लोकः (पु०) वह लोक जिसमें अग्नि वास करते हैं। यह लोक मेरुपर्वत के शिखर के नीचे है।—लिङ्गः—वंशः (पु०) देखो “अग्निकुल”।—वधूः स्वाहा, जो वक्ष की पुत्री और अग्नि की स्त्री है।—वर्धक (वि०) जठराग्नि को बढ़ाने वाली दवा।—वर्णाः (पु०) इक्ष्वाकुवंशी एक राजा का नाम। यह सुदर्शन का पुत्र और रघु का पौत्र था।—वल्लभः (पु०) १ साखू का पेड़। २ साल का गौद। ३ राल। धूप।

—बाहुः (पु०) १ भ्रूम। धुआँ। २ बकरा।—विद् (पु०) अग्निहोत्री।—विद्या (स्त्री०) अग्निहोत्र। अग्नि की उपासना की विधि।—विश्वरूप केतुतारों का एक भेद।—वेशः आयुर्वेद के एक आचार्य।—व्रतः (पु०) वेद की एक ऋचा का नाम।—वीर्य (न०) १ अग्नि की शक्ति या पराक्रम। (२) सुवर्ण।—शरणां (न०)।—शाला (स्त्री०)।—शालं (न०) वह स्थान या गृह जहाँ पवित्र अग्नि रखी जाय।—शिखः (पु०) १ दीपक। २ आग्निबाण। ३ कुसुम या बरें का फूल। ४ केसर।—शिखं (न०) १ केसर। २ खोना।—ष्टुतं—ष्टुभ—ष्टोम (पु०) यज्ञविशेष।—संस्कारः (पु०) १ तपाना। २ जलाना। ३ शुद्धि के लिये अग्निस्पर्शसंस्कार का विधान। ३ मृतक के शव को भस्म करने के लिये चिता पर अग्नि रखने की क्रिया। दाहकर्म। ४ आहु में पिण्डवेदी पर आग की चिनगारी फिराने की रीति।—सखः, सहायः (पु०) १ पवन। हवा। २ जंगली कबूतर। ३ भ्रूम। धुआ।—सादिक (वि०) या (क्रि० वि०) अग्निदेवता के सामने संपादित। अग्नि को सार्ची करना।—सात् (क्रि० वि०) आग में जलाया हुआ। भस्म किया हुआ।—सेवन आग तापना।—स्तुत यज्ञीय कर्म का वह भाग जो एक दिन अधिक होता है।—स्तोमः (पु०) देखो “अग्निष्टोमः”।—श्वान्तः (पु०) दिव्य पितर। नित्य पितर। पितरों का एक भेद। अग्नि, विद्युत् आदि विद्य जों का जानने वाला।—होत्रं (न०) एक यज्ञ। सायं प्रातः नियम से किये जाने वाला वैदिक कर्म विशेष।—होत्रिन् (वि०) अग्निहोत्र करनेवाला।

अग्नीध्रः (पु०) ऋत्विक् विशेष। इसका कार्य यज्ञ में अग्नि की रक्षा करना है।

अग्नीषोमीयम् (न०) अग्निसोम नामक यज्ञ की हवि। यज्ञ विशेष। इस यज्ञ के देवता अग्नि और सोम माने गये हैं।

अग्र (वि०) १ आगे का भाग। अगला हिस्सा। सिरा। नोक। २ स्मृत्यानुसार भिक्षा का परिमाण, जो मोर के ४८ अङ्गों या सोलह माशे के बराबर होता है। ३ प्रथम। ४ श्रेष्ठ। ५ प्रधान।—अग्नी

कः,—अणीकः (पु०)—अनीकं,—अणीकम् (न०) सेना के आगे आगे चलने वाली बुद्धसवार सैनिकों की टोली ।—आसनं (=अग्रासनं) (न०) प्रधान बैठकी। सब से ऊँची बैठकी ।—करः (पु०) हाथ का अगला भाग या हाथी की सूङ की नोक। दहिना हाथ । हाथ की उँगलिया ।—गः (पु०) १ नेता । २ रहलुमा । मार्ग-दर्शक ।—गण्य (वि०) प्रधान । मुखिया । जिसकी गिनती प्रथम की जाय । बड़ा । श्रेष्ठ ।—ज (वि०) प्रथम उत्पन्न ।—जः (पु०) बड़ा भाई । २ ब्राह्मण ।—जा (स्त्री०) बड़ी बहिन ।—जात,—जातक,—जाति,—जन्मन् (पु०) १ प्रथम जन्मा हुआ । बड़ा भाई । २ ब्राह्मण ।—जिह्वा (स्त्री०) जीभ की नोक ।—दानिन् (पु०) पतित ब्राह्मण जो मृतक-कर्म में दान लेता है ।—दूतः (पु०) आगे जानेवाला दूत । हल्कारा ।—तस् (अव्यया०) सामने । पहिले ।—नीः या गीः (पु०) अगुआ । श्रेष्ठ । प्रधान ।—पादः (पु०) पैर की उँगलि ।—पाणिः (पु०) दहिना हाथ ।—पूजा (स्त्री०) सर्वोत्कृष्ट सम्मान ।—पेयं (न०) पान करने में पूर्ववर्तिता । किसी पेय वस्तु को पीने में सर्वप्रथमता या प्रधानत्व ।—भागः (पु०) १ प्रथम या श्रेष्ठ भाग । २ अवशिष्ट । शेष । बचा हुआ । ३ नौक । छोर ।—भागिन् (वि०) प्रथम पाने वाला ।—भूमिः (स्त्री०) उद्देश्य । लक्ष्य ।—मांसं (न०) हृदय का मांस । हृत्पिण्ड ।—यायिन् (वि०) आगे चलने वाला ।—योधिन् (पु०) मुख्य योद्धा । प्रधान लड़ने वाला ।—सन्धानी (स्त्री०) यमराज के दूत का वह खाता जिसमें प्राणियों के पाप पुण्य लिखे जाते हैं ।—सन्ध्या (स्त्री०) प्रातः सन्ध्या ।—सर (वि०) आगे चलने वाला ।—हः (पु०) अविवाहित । जिसके स्त्री न हो ।—हायनः (पु०)—हायणः (पु०) वर्ष के आरम्भ का मास । मार्गशीर्ष मास । अगहन का महीना ।—हारः (पु०) राजा की ब्राह्मणों को दी हुई भूमि ।—तः (क्रि० वि०) सामने । पूर्व । आगे । २ उपस्थिति में । ३ प्रथम ।—सरः (पु०) नेता । पेशवा ।

अग्रिम (वि०) १ अगल । पेशगी । २ आगे आनेवाला । सब से आगे का । मुख्य । ३ ज्येष्ठ । अग्रिमः (पु०) ज्येष्ठप्राता । अग्रिय (वि०) सब से आगे वाला । अग्रियः (पु०) ज्येष्ठप्राता । अग्रीय (वि०) आगे होने वाला । मुख्य । अग्रू (स्त्री०) उँगली । अग्रै (क्रि० वि०) १ सामने । आगे (समय और स्थान सम्बन्धी) । २ उपस्थिति में । ३ पीछे से । यथा “एवमग्रे कथयति ।” “एवमग्रेऽपि श्रोतव्यं ।” (४) सर्वप्रथम (अन्य की अपेक्षा) । प्रथम । अग्रेगः, अग्रेगूः (पु०) नेता । पेशवा । अग्रेदधिषुः, अग्रेदधिषूः (पु०) ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य जाति का वह मनुष्य जो किसी विवाहिता स्त्री के साथ विवाह करता है । अग्रेदिधिषूः (स्त्री०) “ज्येष्ठयां यस्मिन्दायां कथयामासुहतेऽनुजा । का चाग्रेदिधिषुर्हेया पूर्वा च दिधिषुः स्मृता ॥” अर्थात् वह स्त्री जिसका स्वयं तो विवाह हो गया हो, किन्तु उसकी बड़ी बहिन अविवाहिता हो । अग्रेपतिः (पु०) ऐसी स्त्री का पति । अग्रेवनं, अग्रेवणं (न०) वन की सीमा । वन का प्रान्त । अग्रेसर (वि०) अग्रगामी । पुरोगामी । आगे चलने वाला । अग्र्य (वि०) सब से आगे । सर्वोत्कृष्ट । सर्वोत्तम । सर्वोच्च । सर्वप्रथम । अग्र्यः (पु०) जेष्ठ प्राता । जेठा भाई । अग्र्य् अग्र्य् (धा० उ०) भूल करना । पाप करना । अनुचित करना । अग्र्यं (न०) १ पाप । २ दुष्कर्म । अपराध । जुर्म । ३ व्यसन । ४ अशौच । सूतक । अपवित्रता । ५ मुख्य । दुःख । अघः (पु०) बकासुर और पूतना के भाई एक असुर का नाम । यह कंस की सेना का प्रधान सेनाध्यक्ष था । अघ + अहः (अहन) (पु०) अशौचदिन । अपवित्र दिन । अघ + आयुस् (वि०) पापमय जीवन वाला ।

अघ + नाश, अघ + नाशन (वि०) प्रायश्चित्तात्मक ।
पाप दूर करने वाला ।

अघर्म (वि०) ढंडा । जो गर्म न हो ।

अघमर्षणम् (न०) पापनाशक मंत्र विशेष । यह मंत्र
वैदिक सन्ध्या में पढ़ा जाता है ।

अघविषः (पु०) सर्प ।

अघशंसः (पु०) दुष्ट मनुष्य यथा चोर आदि ।

अघशंसिन् (वि०) मुद्रावर । दूसरे के पाप कर्म या
जुर्म की (अधिकारीवर्ग के) सूचना देने वाला ।

अघायुः (पु०) पापपूर्ण । जिसका जीवन पापमय हो ।

अघोर (वि०) जो भयानक न हो ।—रः (पु०)
शिव । महादेव ।—पथः,—मार्गः (पु०) शैव ।
शिवपंथी ।—प्रमाणं (न०) भयङ्कर शपथ या
परीक्षा ।

अघोरा (स्त्री०) भाद्रमास के कृष्ण पक्ष की १४शी ।
इस तिथि को शिव जी की पुजा की जाती है ।
इसीसे इसका नाम “अघोरा” पड़ा है ।

अघोः सम्बोधनवाची अव्यय ।

अघोष (वि०) प्लुतस्वर ।—पः (पु०) व्यञ्जन
अक्षरों में से किसी का प्लुत स्वर ।

अघ्न्यः (पु०) प्रजापति । पर्वत । (वि०) मारने के
अयोग्य ।—ह्न्या (स्त्री०) सौरमेयी । गौ । जो न
मारी जाय या जो न मारे ।

अघ्रेयम् (न०) १ सूधने के अयोग्य । २ मदिरा ।
शराब ।

अङ्क, अङ्क (भा० आत्मने०) टेढ़ामेढ़ा चलना ।
[अङ्कयति—अङ्कयते, अङ्कयितुं, अङ्कित] १ चिन्हित
करना । निशान लगावना । २ गणना करना ।
३ कलङ्कित करना । दागी करना । ४ चलना ।
जाना । सर्गर्ष चलना ।

अङ्कः, अङ्कः (पु० न०) १ गोदी । क्रोड़ । २ चिन्ह ।
निशान । ३ संख्या । ४ पार्व । ओर । तरफ़ । ५
सामीप्य । पहुँच । ६ नाटक का एक भाग । ७ काँटा ।
काँटेदार औज़ार । ८ दस प्रकार के रूपकों में से
एक । ९ टेढ़ी रेखा । रेखा ।—अघतारः
(=अङ्कावतारः) (पु०) किसी नाटक के किसी एक

अङ्क के अन्त में अगले दूसरे अङ्क के अभिनय
की सूचना या आभास जो पात्रों द्वारा दी
जाय ।—तंत्रं (न०) अङ्कगणित या बीजगणित
विद्या ।—धारणं (न०) धारणा (स्त्री०)
१ चिन्हित । २ किसी पुरुष को पकड़ कर रखने
की रीति ।—परिवर्तः (पु०) दूसरी ओर
उलटना । करबट । २ किसी को आलिङ्गन करने के
लिये करबट बदलना ।—पालिः—पाली (स्त्री०)
१ आलिङ्गन । २ दायी । बाय ।—पाशः (पु०)
अङ्कगणित की विधिविशेष ।—भाजू (वि०)
१ गोद में बैठा हुआ अथवा किसी को (बच्चे की
तरह) कमर पर रखकर ले जाते हुए । २ सहज
में प्राप्त । समीपवर्ती । शीघ्र प्राप्तव्य ।—मुखं या
—आस्थं (न०) किसी नाटक का वह स्थल
जिसमें उस नाटक के सब दृश्यों का खुलासा
किया गया हो ।—विद्या (स्त्री०) गणितशास्त्र ।

अङ्कनम्, अङ्कनम् (न०) १ चिन्ह । चिन्हानी ।
२ चिन्हित करने की क्रिया ।

अङ्कतिः, अङ्कतिः (पु०) १ पवन । २ अग्नि । ३
ब्रह्म । ४ अग्निहोत्री ब्राह्मण ।

अङ्कुटः, अङ्कुटः (पु०) चाबी । ताली ।

अङ्कुरः, अङ्कुरः (पु०) १ अँखुआ । नवोद्भिद । गाभ ।
अँगुसा । २ डाम । करखा । कनखा ।
३ चुकीले चौबड़े दाँत । (आलं०) ४ प्रशाखा ।
पलख । सन्तति । ५ जल । ६ रक्त । ७ केश ।
८ सूजन । गुमड़ा ।

अङ्कुरित, अङ्कुरित (वि०) अँखुआ निकला
हुआ । उगा हुआ । जमा हुआ ।

अङ्कुशः, अङ्कुशः १ काँटा विशेष, जिससे हाथी हाँका
जाता है । २ रोक । थाम ।—ग्रहः (पु०)
महावत । हाथी चलाने वाला ।—दुर्धरः (पु०)
मतवाला हाथी ।—धारिन् (पु०) हाथी रखने
वाला अथवा जिसके पास हाथी हो ।

अङ्कूषः, अङ्कूषः देखो “अङ्कुश” ।

अङ्कोठः, अङ्कोठः, अङ्कोलः, अङ्कोठः, अङ्कोलः
अङ्कोलः (पु०) पिश्टे का पेड़ ।

अङ्कोलिका, अङ्कोलिका (स्त्री०) आलिङ्गन ।

य, अङ्गु (वि०) दागने योग्य ।

न्यः (पु०) एक प्रकार का ढोल या मृदङ्ग ।

१, अङ्गु (धा० परस्मै०) [अङ्गयति, अङ्गित]

१ रेंगना । घुटनों के बल चलना । २ चिपटना ।

३ रोकना । ठक्का देना ।

१, अङ्गु (धा० परस्मै०) [अङ्गति । अङ्गति ।

आनङ्ग —आनङ्ग । अङ्गितुं, —अङ्गितुं । अङ्गित

अङ्गित ।] १ जाना । चहलना २ चारों ओर घूमना

फिरना । ३ चिन्हित करना । दागना । ४ गिनना ।

१, अङ्गु (अव्यया०) सम्बोधनवाची अव्यय

विशेष जिसका अर्थ है—“बहुत अच्छा”, “श्रीमान्

बहुत ठीक”, “अवरय”, “सख है”, “अङ्गीकार

है ” किन्तु जब इसके पूर्व “किं” जुड़ता है, तब

इसका अर्थ होता है—“कितना कम” ? या

“कितना अधिक” यथा:—

“तुमने कार्यं सवतीश्वरानां

किञ्च वाग्दस्तवता मरेण ।”

—पञ्चतन्त्र ।

संस्कृत—कोशकारों ने “अङ्गु” शब्द के निम्नाङ्कित

अर्थ बतलाये हैं—

“क्षिप्रं च पुनरर्थं च अङ्गुणाद्ययोस्तथा ।

इदं सम्बोधने चैव अङ्गुशब्दः प्रयुज्यते ।”

अर्थात् शीघ्रता । पुनः । सङ्गम । असूया । हर्ष ।

सम्बोधन के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होता है ।

—गं, (अङ्गु) (न०) १ काय । गात्र । अवयव । २

प्रतीक । ३ उपाय । ४ मन । ५ छः की संख्या का

वाचक । —गः (अङ्गुः) (पु०) एक देश विशेष तथा

वहाँ के निवासियों का नाम । यह देश बिहार के

भागलपुर नगर के आसपास कहीं पर है । इसकी

सीमा का परिचय संस्कृतसाहित्य में इस प्रकार

दिया हुआ है:—

वैद्यनाथं समारम्भ्य सुवनेशान्तमं क्षिप्रं ।

तावदङ्गाभिर्धो देशो यात्रार्यं नहि दुष्प्रति ॥”

अर्थात् वैद्यनाथ-देवघर से लेकर उड़ीसास्थित

सुवनेश्वर तक का देश अङ्गदेश कहलाता है । इस

देश में इतने बीच में जान का निषेध नहीं है

का जो सम्बन्ध शरीर के साथ होता है, वह अङ्गअङ्गी

भाव कहलाता है । गौणमुख्य भाव । उपकार्योपकारक

भाव । —अङ्गीपः । —अङ्गीशः (पु०) अङ्गदेश का

राजा या अङ्गीश्वर । —ग्रह (पु०) अकड़बाई । शरीर

की पीड़ा । अंगों का अकड़ जाना । —ज—जात

(वि०) १ शरीर से उत्पन्न या शरीर पर उत्पन्न ।

२ सुन्दर । विभूषित । —जः, —जनुस् (पु०) १

पुत्र । बेटा । २ शरीर के लोम । (न०) ३

प्रेम । कामदेव । ४ नशे का व्यसन । नशा ।

मद्यपान । ५ रोगविशेष । व्याधि । —जा

(स्त्री०) पुत्री । बेटी । —जं (न०) रक्त ।

खून । लोह । —द्वीपः (पु०) द्विः द्वीपों

में से एक । —न्यासः (पु०) उपयुक्त मंत्रोच्चारण

पूर्वक हाथ से शरीर के भिन्न भिन्न अङ्गों का स्पर्श ।

—पालिः (स्त्री०) अलिङ्गन । —पालिका

(देखो अङ्गपालि) । —प्रत्यङ्गम् (न०) शरीर

के छोटे बड़े सब अङ्ग । —भूः (पु०) १ पुत्र ।

२ कामदेव । —भङ्गः (पु०) १ किसी शरीरावयव का

नाश । २ लकवा का रोग । ३ पेंसिल । —मंत्रः (पु०)

मंत्र विशेष । —मर्दः (पु०) शरीर दबानेवाला । २

शरीर दबाने की क्रिया । अङ्गमर्दकः अङ्गमर्दिन्

भी इसी अर्थ में व्यवहृत होते हैं । —मर्षः (पु०)

गठिया रोग । —यज्ञः—यागः (पु०) किसी मुख्य

यज्ञ के अन्तर्गत कोई गौण यज्ञीय कर्म विशेष । —

रक्तकः (पु०) शरीर की रक्षा करने वाला । अंगरेजी

भाषा में “ वाडीगार्ड ” अङ्गरक्षक ही का परियाय-

वाची शब्द है । —रक्षाणी १ अंगरक्षी । अंगा ।

२ टरछड़ । ३ कवच । बर्म । —रक्षाणं (न०) किसी

व्यक्ति का रक्षण । —रागः (पु०) चन्दन आदि

लेप । २ उबटन । ३ उबटन लगाने की

क्रिया । —विकल (वि०) १ अङ्गभङ्ग । २ लकवा

भारा हुआ । —विह्वलिः (स्त्री०) सुरत बदल

जाना । सहसा सर्वाङ्गीन पतन । जीवन शक्ति का

निमज्जन । अवसाद । —विकारः (पु०) शारी-

रिक दोष या त्रुटि । —विक्षेपः (पु०) शारीरिक

अवस्था का सकेन्द्रीकरण या उनको दिखाना

हुवाना अंगों का कक्षावाची । —विद्या

शुभाशुभ घटनाओं को बतलाने की विद्या । सांख्य-
द्विक विद्या । २ व्याकरण शास्त्र, जिससे ज्ञान की
वृद्धि हो । बृहद्संहिता का २१ वाँ अध्याय जिसमें
इस विद्या का विस्तार पूर्वक वर्णन है ।—वीरः
(पु०) मुख्य या प्रधान शूर ।—वैकुण्ठ (न०)
१ अङ्गों की चेष्टा से हृदय का भाव बतलाने की
क्रिया । २ सिर हिला कर स्वीकृति बतलाने
की क्रिया । ३ आँख मारना । शरीर की बदली
हुई सूरत ।—संस्कारः (पु०)—संस्क्रिया
(स्त्री०) अङ्गों की शोभा बढ़ाने वाले कर्म ।—
संहतिः (स्त्री०) सुन्दर अङ्गसंस्थान या अङ्ग
विन्यास । अङ्गसौष्टव । अङ्गप्रत्यङ्ग की श्रेष्ठता या
परस्पर ऐक्य । शरीर । शरीर की दृढ़ता ।—सङ्गः
(पु०) ऐक्य । शारीरिक स्पर्श । सङ्गम ।
सेवकः (पु०) निज नौकर ।—हारः (पु०)
नृत्य विशेष । अंगों की मटकौल ।—हारिः ।
१ मटकौल । २ रंगभूमि । ३ नाचने का कमरा ।
नाचघर ।—हीन (वि०) अपूर्याङ्ग । लुंजा ।
लंगड़ा । विकलाङ्ग ।

अंगकम्, अङ्गकम् (न०) १ शरीर का अवयव । २
शरीर ।

अंगणम्, अङ्गणम् (न०) देखो “अङ्गनम्” ।

अंगतिः, अङ्गतिः (पु०) १ सवारी । गाड़ी । बखी ।
अग्नि । ३ ब्रह्म । ४ अग्निहोत्री ब्राह्मण ।

अंगदम्, अङ्गदम् (न०) बाहुभूषण । जोशन । बाजूबंद ।

अंगदः, अङ्गदः (पु०) १ वालि के पुत्र का नाम । २
उर्मिला की कोख से उत्पन्न लक्ष्मण के एक पुत्र
का नाम । इनकी राजधानी का नाम अंगदिया था ।
३ दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम ।

अंगन-अंगणः, अङ्गनम्-अङ्गणम् (न०) १ आँगन ।
सहन । चौक । २ सवारी । ३ चलना । टहलना ।
घूमना ।

अंगना, अङ्गना (स्त्री०) १ अच्छे अंगोवाली स्त्री ।
२ सार्वभौम नामक दिग्गज की हथिनी ।
३ (ज्योतिष में) कन्याराशि ।—जन (पु०)
स्त्रीजाति ।—प्रिय (वि०) स्त्रियों का प्रेमी ।—
प्रियः (पु०) अशोक वृक्ष ।

अंगस्, अङ्गस् (पु०) पक्षी ।

अंगारः (पु०) अंगारं (न०) अङ्गारः (पु०) अङ्गारं
(न०) १ जलता हुआ या ठंडा, कोयला ।

“ वषट्पदवति चाङ्गारः शीतः कुष्माण्ठते करम् । ”

—हितोपदेश ।

२ मङ्गल ग्रह । (न०) लाल रंग ।—धानिका
(स्त्री०) अंगीठी । बरोसी ।—पात्री (स्त्री०)
शकटी (स्त्री०) अंगीठी । बरोसी । बल्लूरी-बल्लूरी
(स्त्री०) कितने ही पैघों का नाम है । विशेष कर
गुआ या घुघची का ।

अंगारकः (पु०)—अंगारकं (न०) अङ्गारकः (पु०)
अङ्गारकं (न०) १ कोयला । २ मङ्गलग्रह ।
३ भौमवार । ४ चिनगारी ।—मणिः (पु०)
मूंगा ।

अंगारी—अङ्गारी (स्त्री०) अंगीठी । बरोसी ।

अंगारकित, अङ्गारकित (वि०) जलाया हुआ ।
भूना हुआ । तला हुआ ।

अंगारिका, अङ्गारिका (स्त्री०) १ अंगीठी । बरोसी ।
२ गले का डंठल । ३ किंशुक की कली ।

अंगारिणी, अङ्गारिणी (स्त्री०) १ छोटी अंगीठी ।
२ बेल । लता ।

अंगारित, अङ्गारित (वि०) १ जलाया हुआ । २
भूना हुआ । ३ अधजल ।

अंगिका, अङ्गिका (स्त्री०) चोली । अंगिया ।

अंगिन्, अङ्गिन् (वि०) १ दैहिक । देहभृत ।
मूर्तिमान् । शरीरधारी । २ मुख्य । प्रधान ।
जिसमें उपभाग हो ।

“ एक एव भवेदंगो ऋतारो वीर एव वा । ”

—साहित्यदर्पण ।

अंगिरः, अंगिरस्, अङ्गिरः, अङ्गिरस् (पु०) १ एक
प्रजापति का नाम जिनकी गणना दस प्रजापतियों
में है । एक वैदिक ऋषि । ३ बहुवचन में अंगिरा के
सन्तान । ३ बृहस्पति का नाम । ४ साठ संवत्सरों
में से छठवें का नाम । ५ कत्तीला (गोंद विशेष)
अंगीकारः, अङ्गीकारः (पु०)—कृतिः (स्त्री०)—
करणं (न०) १ स्वीकृति । मंजूरी । २ रजामंदी ।
प्रतिज्ञा ।

अंगीकृत, अङ्गीकृत (वि०) स्वीकृत । मंजूर ।
अङ्गीकार किया हुआ ।

अंगीय, अङ्गीय (वि०) शरीर सम्बन्धी ।

अंगुः, अङ्गुः (पु०) हाथ ।

अंगुरिः-अंगुरी, अङ्गुरिः-अङ्गुरी (स्त्री०) उँगुली ।

अंगुलः, अङ्गुलः (पु०) १ उँगली २ अंगूठा (न०)

अंगुल भर का नाप, जो आठ धब के बराबर माना जाता है ।

अंगुलिः-अंगुली-अंगुरिः-अंगुरी } १ उँगली
अङ्गुलिः-अङ्गुली-अङ्गुरिः-अङ्गुरी } जिनके नाम
यथाक्रम अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका
और कनिष्ठिका हैं । २ हाथी की सूँड़ की
नोंक । ३ नाप विशेष ।—तोरणं (न०) माथे पर
चंदन का अर्धचन्द्राकार पुष्प (तिलक) ।
—अंगुलिः (न०) दस्ताना जो अनुप चलाने वाले
उँगुलियों में पहना करते थे ।—मुद्रा, —मुद्रिका
(स्त्री०) सील मोहर सहित अंगूठी । मोटनं—
स्फोटनं (न०) अंगुली चटकाना ।—संज्ञा
(स्त्री०) उँगली का इशारा या संकेत ।—संदेशः
उंगलियों के इशारे से मनोगत भावों को प्रदर्शित
करना ।—सम्भूतः (पु०) नख ।

अंगुलिका, अङ्गुलिका देखो अंगुलिः ।

अंगुली, अंगुरी, अंगुलीयं, अंगुरीकं, अंगुरीयकं,
अङ्गुली, अङ्गुरी, अङ्गुलीयं, अङ्गुरीकं, अङ्गुरीयकं
(न०) अंगूठी । इसका प्रयोग पुष्पिक में भी होता
है । यथा ।

“ काकुत्स्थस्यांगुलीयकम् ।”

भट्टी कान्य ।

अंगुष्ठः, अङ्गुष्ठः (पु०) १ अंगूठा ।—मात्र (वि०)

अंगूठे के बराबर (नाप में) ।

अंगुष्ठयः, अङ्गुष्ठयः (पु०) अंगूठे का नापून या नख ।

अंगुष्पः, अङ्गुष्पः (पु०) १ न्योला । २ तीर ।

अंग्, अङ्ग (धा० आत्मने०) [अंगते-अङ्गते, अंगति-
अङ्गति] चलना । २ आरम्भ करना । शीघ्रताकरना ।
३ डौटना । डपटना । फटकारना । भलाबुरा कहना ।

अंगस्, अङ्गस् (न०) पाप ।

अंग्रि, अङ्गि (अङ्गि) १ पैर । २ पैर की जड़ । किसी
श्लोक का चौथा चरण । चतुर्थपाद ।—पः (पु०)
वृक्ष ।—पान (वि०) पैर या पैर की उँगुली (लड़कों
की तरह) चूसने वाला ।—स्कन्धः (पु०) गुल्फ ।
एकी या एकी ।

अच् (धा० उभय०) [अचित्-ते, अंचति, आनंच,
अंचित—अक्त] १ जाना । २ हिलना डुलना ।
३ सम्मान करना । ४ प्रार्थना करना । ५ माँगना ।
पूँछना ।

अच् (पु०) व्याकरण शास्त्र में “अच्” स्वर की
संज्ञा है ।

अचक्र (वि०) बिना पहिये का । व्यापाररहित ।
मंत्री सेनापति रहित (राजा) ।

अचक्षुस् (वि०) अंधा । नेत्रहीन । (न०) डुरी
आँख । रोगिल नेत्र ।

अचंड, अचण्ड (वि०) शान्त । जो क्रोधी स्वभाव
का न हो ।

अचंडी, अचण्डी (वि०) सीधी गौ । शान्त स्त्री ।
अचतुर (वि०) १ चार संख्या से शून्य । २ अनिपुण ।
अनाड़ी ।

अचल (वि०) गमन या शक्ति हीन । स्थावर । स्थायी ।

अचलः (पु०) १ पहाड़ । चट्टान । २ कील । काँटा ।

३ सात सूचक संख्या ।

अचला (स्त्री०) पृथिवी ।

अचलं (न०) ब्रह्म ।

अचल-कन्यका, सुता-दुहिता-तनया । (स्त्री०) ।
हिमालय की पुत्री । पार्वती ।

अचलकीला (स्त्री०) पृथिवी ।

अचलज, जात (वि०) पर्वत से उत्पन्न ।

अचलजा, जाता (स्त्री०) पार्वती का नाम ।

अचलविष् (पु०) कोयल ।

अचलविष् (पु०) पर्वतशत्रु । इन्द्र का नाम जिन्होंने
पर्वतों के पंख काट डाले थे ।

अचलपतिः-राष्ट्र (पु०) हिमालय पर्वत का नाम ।
पर्वतों का स्वामी ।

अचापल, लय (वि०) चञ्चलतारहित । स्थिर ।
अचापल्यं—(न०) स्थिरता ।

अचित् (वि०) (वैदिक) १ जिसमें समझदारी न
हो । २ धर्मविचार शून्य । जड़ ।

अचित (वि०) (वैदिक) १ गया हुआ ।
२ अविचारित । ३ एकत्र न किया हुआ ।
बिखरा हुआ ।

अचिन्त (वि०) विचार से परे । जो समझ ही में न आवे ।

अचिन्त्य, अचिन्त्य (वि०) १ मन और बुद्धि अचिन्तनीय, अचिन्तनीय के परे । अवोधगम्य । अज्ञेय । कल्पनातीत । २ अकृत । अतुल्य । ३ आशा से अधिक ।

अचिन्त्यः, अचिन्त्यः (पु०) ब्रह्मा । शिव ।
अचिन्तित, अचिन्तित (वि०) जिसका चिन्तन न किया गया हो । विना सोचा विचारा । आकस्मिक ।

अचिर (न०) अल्प । थोड़ा । थोड़ी देर ठहरने या रहने वाला । शीघ्र । जल्दी ।—अंशु, आभा, द्युतिः, प्रभा, भास्-रोचिस्- (स्त्री०) चपला, बिजली ।
अचिरात् (अव्ययात्मक) तुरन्त, शीघ्रता से [अचिरेण, अचिरस्य भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं ।]

अचेतन (वि०) १ चेतनारहित । जड़ । २ । संज्ञा-शून्य । मूर्च्छित । ३ ज्ञानहीन ।

अचेतन्यम् (वि०) चेतनारहित । ज्ञानशून्य । जड़ ।

अच्छ (वि०) साफ । पवित्र । विशुद्ध ।—च्छः (पु०) १ स्फटिक । २ रीछ । भालू ।—उदन (= अच्छोद) साफजल वाला ।—दं (न०) कादम्बरी में वर्णित हिमालय पर्वत-स्थित एक भील का नाम ।—भल्लुः (पु०) रीछ । भालू ।

अच्छ, अच्छा (वैदिक) (अव्यया०) ओर । तरफ ।

अच्छावाकः (पु०) आह्वानकर्ता । सोमयज्ञ कराने वालों में से एक ऋत्विज जो होता का सहचर रहता है ।

अच्छान्दस् १ वह जिसने वेदाध्ययन न किया हो । (यज्ञोपवीत संस्कार होने के पूर्व का बालक) अथवा वेदाध्ययन का अनधिकारी । शूद्र । २ जो पद्यमय न हो ।

अच्छिद्र (वि०) अभङ्ग । जो टूटा न हो । जो चोटिल न हो । निर्दोष । त्रुटिरहित ।

अच्छिद्रं (न०) निर्दोष कार्य । निर्दोषता ।

अच्छिन्न (वि०) १ अविरत । सतत । २ जो खण्डित न हो । ३ अविभक्त । जो पृथक् न किया जा सके ।

अच्छोदनम् (न०) शिकार । आखेट ।

अच्छोदम् (न०) निर्मल जल वाला सरोवर । देखो अच्छ के अन्तर्गत ।

अच्युत (वि०) जो कभी न गिरे । दृढ़ । स्थिर । अचि-चल । (पु०) भगवान् विष्णु का नाम ।—अग्रजः (पु०) बलराम या इन्द्र का नाम ।—अंगजः,—पुत्रः,—आत्मजः (पु०) कामदेव । अनंग । कृष्ण और रुक्मिणी के पुत्र का नाम ।—आवासः,—वासः (पु०) अश्वत्थ वृक्ष । वट वृक्ष ।

अज (धा० परस्मै०) (अजति, अजितवीत) १ चलना । जाना । २ हाँकना । नेतृत्व करना । ३ फैकना । लुढ़काना । छिटकाना ।

अज (वि०) १ जन्मरहित । अनन्तकाल से वर्तमान ।—(पु०) यह ब्रह्मा की उपाधि है । २ विष्णु का शिव का या ब्रह्मा का नाम । ३ जीव । ४ मेढ़ा । बकरा ५ मेषराशि । ६ अज विशेष । ७ चन्द्रमा अथवा कामदेव का नाम ।—अदनी (स्त्री०) एक कटीली वनस्पति । धमासा ।—अविकं (न०) छोटा पशु ।—अश्वं (न०) बकरे । घोड़े ।—एडकं (न०) बकरे । मेढ़े ।—गरः (पु०) एक बड़ा भारी सर्प ।—गरी (स्त्री०) एक पौधे का नाम ।—गल 'देखो अजागल' ।—जीवः—जीविकः (पु०) बकरों की हेड़ ।—मारः (पु०) १ कसाई । बूचड़ । २ एक प्रदेश का नाम जो इन दिनों अजमेर के नाम से प्रसिद्ध है ।—मोढः (पु०) १ अजमेर का दूसरा नाम । २, युधिष्ठिर की उपाधि ।—मोदा—मोदिका (स्त्री०) यह एक अत्यन्त गुणकारी दवाई के पौधे का नाम है । इसे ओवा भी कहते हैं ।—शृङ्गी (स्त्री०) पौधा विशेष । मेढ़ासिंगी ।

अजन (वि०) चलते हुए । हाँकते हुए ।—जः (पु०) ब्रह्मा ।

अजका, अजिका (स्त्री०) छोटी बकरी ।

अजकवः (पु०), अजकवम् (न०) शिव जी के धनुष का नाम ।

अजकावः—(पु०), अजकावम् (न०) शिवधनुष ।

अजगावं—(न०) अजगावः (पु०) पिनाक । शिव जी का धनुष ।

अजड (वि०) जो जड़ अर्थात् मूर्ख न हो ।

अजन (वि०) निर्जन (विद्यावान) । जहाँ एक भी जन न हो ।

अजनाम (पु०) भारतवर्ष का प्राचीन नाम अजनाम था ।

अजनिः (स्त्री०) राखा । सड़क ।

अजन्मन् (वि०) अनुत्पन्न । अजन्मा । जीव की उपाधि । (पु०) अन्तिम परमानन्द । मोक्ष ।

अजन्य (वि०) उत्पन्न किये जाने के या होने के अयोग्य । मनुष्य जाति के प्रतिकूल ।—म् (न०) देवी उत्पात् । देवी उपद्रव । भूचाल आदि ।

अजपः (पु०) १ वह ब्राह्मण जो सर्वोपासन यथा-विधि नहीं करता । जप न करने वाला । २ बकरे पाखने वाला । बकरे चराने वाला । ३ अस्पृष्ट पढ़ने वाला ।

अजपा (स्त्री०) देवता विशेष । गायत्री । जिसका जप श्वास प्रश्वास के साथ स्वयं होता रहता है ।

अजपात् (पु०) १ पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र । २ ग्यारह द्वादशों में से एक का नाम ।

अजभक्त (पु०) बकुर ।

अजंभ, अजम्भ (वि०) दन्तरहित ।—म्भः (पु०) १ मँढ़क । २ सूर्य । बालक की वह अवस्था जब उसके दाँत नहीं रहते ।

अजय (वि०) जो जीता या सर न किया जा सके ।
—यः (पु०) हार । शिकस्त ।—या (स्त्री०) भांग ।

अजय्य (वि०) अजेय । जो जीता न जा सके ।

अजर (वि०) १ जो बूढ़ा न हो । सदैव युवा । २ अविनाशी । जिसका कभी नाश न हो । २ः (पु०) देवता ।—म् (न०) परब्रह्म ।

अजर्यम् (न०) मैत्री । दोस्ती ।

अजस्त (वि०) निरन्तर । सन्तत । सदा । त्रिकाल में स्थितशील ।

अजहःस्वार्था (स्त्री०) लक्षणाविशेष । इसमें लक्षक शब्द, अपने वाच्यार्थ को न छोड़कर, कुछ भिन्न अथवा अतिरिक्त अर्थ प्रकट करता है । इसका उपादानलक्षण भी नाम है ।

अजहलिङ्गम् (न०) संज्ञाविशेष जो विशेषण की तरह व्यवहृत होने पर भी अपना लिङ्ग न बदले ।

अजहा (स्त्री०) कँवाँड़ । कपिकच्छुक । शूकशिखी नामक औषध ।

अजा १ सांख्यदर्शनानुसार प्रकृति या माया । २ बकरी ।

—गलस्तनः (पु०) बकरी के गले के थन ।

इनकी उपमा किसी वस्तु की निरर्थकता सूचित करने में दी जाती है ।—जीवः,—पालकः (पु०) जिसकी जीविका बकरे बकरियों से हो । बकः की हेड़ ।

अजाजिः-अजाजी (स्त्री०) काला जीरा । सफेद जीरा ।

अजात (वि०) अनुत्पन्न । जो अभी तक उत्पन्न न हुआ हो ।—अरिः,—शत्रु (वि०) जिसका कोई शत्रु न हो । (पु०) १ युधिष्ठिर की उपाधि । २ शिवजी

तथा अनेकों की उपाधि ।—ककुत्, —दू (पु०) छोटी उमर का बैल, जिसके कुब्ज न निकला हो ।

बलुड़ा । बल्ला ।—व्यञ्जन (वि०) जिसके स्पष्ट चिन्ह (बाड़ी मंछ आदि) पहिचान के लिये न हों ।—व्यवहारः (पु०) नाबालिश । अव्यस्क ।

अजानिः (पु०) रड्डा । जिसकी स्त्री न हो । स्त्री रहित । विधुर ।

अजानिकः (पु०) बकरों की हेड़ ।

अजानेय (वि०) कुलीन । उत्तम या उच्च कुल का । निर्भय (जैसे घोड़ा) ।

अजित (वि०) अजेय । जो जीता न जा सके । —तः (पु०) विष्णु, शिव तथा बुध की उपाधि विशेष ।

अजिनम् (न०) १ चीता । शेर । हाथी आदि का और विशेष कर काले हिरन का रोंगदार चमड़ा, जो आसन अथवा तपस्वियों के पहिने के काम आता था । २ एक प्रकार का चमड़े का थैला या धौकनी ।

—पत्रा-जी-त्रिका (स्त्री०) चिमगादड़ । चिमगीदड़ ।

—योनिः (पु०) हिरन या बारहसिंहा ।—वासिन्

(वि०) मृगचर्मधारी ।—सन्धः (पु०)

लोमनिर्मितवस्त्र-व्यवसायी । पशुमीना या शाल बेचने वाला ।

अजिर (वि०) १ तेज । फुर्तीला । शीघ्र ।—म् (न०) १ शॉगन । चौक । अखाड़ा । २ शरीर ।

३ इन्द्रियगम्य कोई पदार्थ । ४ पवन । हवा ।
५ मेंढक ।

अजिरा (स्त्री०) १ एक नदी का नाम । २ दुर्गा का नाम ।

अजिह्व (वि०) १ सीधा । २ ईमानदार ।

अजिह्वः (पु०) मेंढक ।

अजिह्वग (वि०) अपनी सीध में जाने वाला ।
(पु०) तीर । बाण ।

अजिह्वः (पु०) मेंढक ।

अजीकवं (न०) शिव जी का अनुप ।

अजीमर्तः (पु०) १ सर्प । २ उपनिषद् तथा पुराणों में वर्णित शुनःशेक के पिता का नाम ।

अजीर्ण (वि०) न पचा हुआ ।

अजीर्णम् (न०) अजीर्णिः (स्त्री०) १ अपच ।
मन्दाग्नि । बद्धज्वरी । अध्यसन । २ वीर्य ।
शक्ति । पराक्रम । ओजस्विता । जीर्णता का
अभाव ।

अजीव (वि०) मृत । मरा हुआ । मृतक ।

अजीवः (पु०) मृत्यु । मौत ।

अजीवनिः (स्त्री०) मृत्यु । (इसका व्यवहार प्रायः
अकोसने में होता है । यथा:—

“अजीवनिस्ते शठ भूयात् ।”

—सिद्धान्त कौमुदी ।

अजेय (वि०) जो जीता न जा सके । जीतने के
अयोग्य ।

अजैकपाद् (पु०) १ पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र । २ रव
विशेष की उपाधि ।

अज्जूका } (स्त्री०) १ (नाट्यकोक्ति में) वेश्या ।
अज्जूका } २ बड़ी बहिन ।

अज्जलं (न०) १ ढाल । २ वहकता हुआ अंगारा ।

अज्ञ (वि०) जड़ । अनपढ़ । अविवेकी । मूर्ख ।
ज्ञानशून्य । अनुभवशून्य ।

अज्ञात (वि०) अविदित । अनजाना हुआ । अपरि-
चित । अप्रकट । नमालूम ।

अज्ञान (वि०) १ ज्ञानशून्य । गँवार । मूर्ख ।

—प्रभवः (पु०) अज्ञान से उत्पन्न ।—प्रभवी
(वि०) मूर्ख । अविद्वान् ।

अज्ञानम् (न०) ज्ञान का अभाव । जड़ता । मूर्खता ।
मोह । अज्ञानपन । २ अविद्या ।

अज्ञेय (वि०) जो जाना न जा सके । बोधागम्य ।
ज्ञानातीत ।

अञ्च, अञ्चम् (धा० उभय०) [अञ्चति-ते, आनञ्च, अञ्चितुं
अञ्चयात् या अञ्च्यात्, अक या अञ्चित] १ मोड़ना,
उमैठना । झुकाना । यथा “शिरोञ्चित्वा ।”
(भट्टिकाव्य) २ जाना । हिलना डुलना । मिलना ।
३ पूजन करना । सम्मान करना । भूषित करना ।
४ याचना करना । प्रार्थना करना । अभिलाषा
करना । ५ झुनझुनाना । अस्पष्ट शब्द कहना ।
गुनगुनाना (निज०) प्रकाशित करना ।
खोलना ।

अञ्चलः (पु०) }
अञ्चलः (पु०) } (किनारा । छोर ।
अञ्चलं (न०) }
अञ्चलम् (न०) }

अञ्चित (वि०) १ मुड़ा हुआ, झुका हुआ । २ सम्मा-
नित । प्रतिष्ठित । ३ सिला हुआ । बुना हुआ ।

अञ्जनम् } (न०) १ कज्जल । २ सौवीर ।
अञ्जनम् } ३ साज्जन । ४ स्याही । ५ अग्नि ।
६ रात्रि । (पु०) दिग्गज विशेष ।

अञ्जनकेशी } (स्त्री०) एक सुगन्धद्रव्य विशेष,
अञ्जनकेशी } जिसे स्त्रियाँ बालों में लगाती हैं ।
इसे हृदबिलासिनी कहते हैं ।

अञ्जना } (स्त्री०) एक वानरी का नाम । हनुमान
अञ्जना } जी की माता का नाम ।

अञ्जनाधिका } (स्त्री०) काज्जल से भी बढ़ कर
अञ्जनाधिका } काला एक कीट विशेष ।

अञ्जनावती } (स्त्री०) सुप्रतीक नामक दिग्गज
अञ्जनावती } की हथिनी । इसका रंग बहुत
काला है ।

अञ्जनी } (स्त्री०) गन्ध पदार्थों को लेपन
अञ्जनी } करने योग्य स्त्री । कटुक वृक्ष । काञ्जाजन ।

अञ्जलिः } (पु०) जुड़े हुए दोनों हाथ । दोनों
अञ्जलिः } हथेलियों को जोड़ कर या मिलाकर

सं० श० कौ०—३

जो बीच में गड्ढा का बनता है उसे अञ्जलि कहते हैं। इस अञ्जलि में जितना आवे उतना एक नाप। परिमाण विशेष।—कर्मन् (न०) प्रणाम। सम्मानसूचक मुद्रा।—कारिका (स्त्री०) मिट्टी की गुड़िया।—पुटः (पु०)—पुटं (न०) दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ संपुट।

अञ्जलिका { (स्त्री०) १ मूषिका। लुहिया।
अञ्जलिका { छोटा चूहा। २ अर्जुन के एक बाण का नाम।

अञ्जस—अञ्जसी { (वि०) १ जो देहा न हो।
अञ्जोस—अञ्जोसी { सीधा। २ ईमानदार। सच्चा।
अञ्जसा { (क्रि० वि०) १ सिधार्ह से। २ सच्चाई से।
अञ्जसा { ३ उचित रीति से। ठीक तौर पर।
४ शीघ्रता से। तुरन्त ताव से।—कृत (वि०)
विनय से किया हुआ। शीघ्रता से किया हुआ।

अञ्जिष्ठः—अञ्जिष्णु { (पु०) सूर्य। भास्कर।
अञ्जिष्ठः—अञ्जिष्णु { मार्त्तण्ड।

अञ्जीरः (पु०) अञ्जीरं (न०) १ स्वनामख्यात वृक्ष एवं फल
अञ्जीरः (पु०) अञ्जीरं (न०) १ विशेष। अञ्जीर।

अट् (धा० प०) (कभी कभी आत्मनेपदी भी होती है) [अटति, अटित] घूमना फिरना।

अट (वि०) घूमते हुए।

अटर्न (न०) घूमना। अमण। गमन।

अटनिः, अटनी (स्त्री०) घनुष का अङ्गभाग।

अटा (स्त्री०) अमण करने का अभ्यास (जैसा परिव्राजक किया करते हैं) अमण। पर्यटन।

अटरुषः { (पु०) अड्डसा।
अटरुषः {

अटविः, अटवी (स्त्री०) वन। जंगल।

अटविकः, आटविकः (पु०) वनरत्ना। वन में काम करने वाला।

अट् (धा० आ०) १ मारना। २ लांछना। (निज०) १ कम करना। घटाना। २ अनादर करना।

अट् (वि०) १ ऊँचा। खकायी। २ सतत। ३ शुष्क। सूखा रुखा।

अट्म (न०) अट् (पु०) १ अटा। अटारी। २ कुदर बुर्ज। ३ आश्रय। आधार। आधार

के लिये बनाया हुआ प्रकार। गुंबज़। ४ हाट। बाज़ार। मंडी। ५ प्रासाद। महल। विशाल भवन।

अट्म (न०) भोज्य पदार्थ भात। [“अट्मशूला जलपदा” महाभारतः।—“अट्म अन्नं शूलं विक्रेयं येषां ते” नीलकण्ठः।]

अट्कः (पु०) अटा। महल।

अट्कहासः (पु०) जोर की हँसी। कहकहा। खिल खिलाना।

अट्कहासकः (पु०) कुन्व पुष्प।

अट्कहासिन् (पु०) शिव जी का नाम।

अट्कालः, अट्कालकः (पु०) १ अटा। कोठा। २ दूसरी मंज़िल। ३ महल। प्रासाद।

अट्कालिका (स्त्री०) प्रासाद। ऊँचा भवन।—कारः (पु०) राज। थवई। मैमार।

अट् (धा० पर०) उद्यम करना।

अटुनं (न०) ढाल।

अण् (धा० पर०) रव करना। आस लेना।

अणुक, अनक (वि०) बहुत छोटा। तुच्छ। तिर-स्करणीय। अभागा।

अण्णिः (पु०) १ सुई की नोक। २ पहिये अण्णी (स्त्री०) की चाबी। ३ सीमा। इह। ४ घर का कोना।

अण्णिमन् (पु०) अण्णुता, (स्त्री०) अण्णुत्वं (न०) १ सूक्ष्मता। २ शिवजी को आठ सिद्धियों में से एक।

अण्णिमा (स्त्री०) १ छोटापन। लघुता। २ अष्ट सिद्धियों में से एक।

अण्णियस् (वि०) १ बहुत थोड़ा। २ बहुत छोटा। लघुतर।

अण्णु (वि०) [स्त्री०—अण्णवी] १ लेश। सूक्ष्म। परमाणु सम्बन्धी।

अण्णुः (पु०) १ नैयायिकों द्वारा स्वीकृत पदार्थ विशेष। पदार्थों का मूल कारण। २ चीना नाम से प्रसिद्ध ग्रीहि विशेष। ३ विष्णु का नाम। ४ शिव का नाम।

अण्णुक (वि०) १ अल्पतर। २ बहुत छोटा। बड़ा सूक्ष्म। बहुत मिहीन। ३ तीक्ष्ण।

अणुभा (स्त्री०) विद्युत् । बिजली ।

अणुमा (स्त्री०) जिसकी प्रभा स्वरूप और चण-
स्थायी हो । विद्युत् । बिजली ।

अणुमात्रिक (वि०) १ अतिदुर्लभ । अत्यन्त छोटा ।
२ जीव की संज्ञा ।

अणुरेणुः (पु०) त्रसरेणु । धूलकण ।

अणुवादः (पु०) १ सिद्धान्त विशेष जिससे जीव
या आत्मा अणु माना गया है । यह ब्रह्माचार्य
का सिद्धान्त है । २ शास्त्रविशेष जिसमें पदार्थों
के अणु नित्य माने गये हैं । वैशेषिकदर्शन ।

अणिष्ठ (वि०) सूक्ष्मतर । सूक्ष्मतर । अति सूक्ष्म ।

अण्डः (पु०) अण्डं (न०) १ अण्डकोश । २ अण्ड ।
अण्डः—अण्डं (न०) ३ कस्तूरी । ४ पेशी । ५ शिव
का नाम ।—जः (पु०) १ पक्षी या अण्डे से उत्पन्न
होने वाले जीव यथा मकली, सर्प, छिपकली
आदि । २ ब्रह्मा ।

अण्डजा } (स्त्री०) मुरक । कस्तूरी ।
अण्डजा }

अण्डधरः } (पु०) शिव ।
अण्डधरः }

अण्डाकार—कृति } (वि०) अण्डे की शकृ का ।
अण्डाकार—कृति }

अण्डालुः } (पु०) मकली ।
अण्डालुः }

अण्डीरः } (पु०) पुरुष । बलवान् पुरुष ।
अण्डीरः }

अत् (धा० पर०) [अतनि, अत्त-अतित] १ जाना ।
चलना । भ्रमण करना । सदैव चलना ।
२ (वैदिक) प्राप्त करना ३ बाँधना ।

अतनं (न०) जाना । घूमना ।

अतनः (पु०) भ्रमण करने वाला । पर्यटक ।
राहचलनू ।

अतट (वि०) सीधा ढालवाँ । खड़ा ढालवाँ ।

अतटः (पु०) प्रपात । पर्वत का ऊपरी भाग । ऊँचा
पहाड़ ।

अतथा (अव्यया०) ऐसा नहीं ।

अतदर्ह (अव्यया०) अनुचित रीति से । अवाञ्छित
रूप से ।

अतदुणः (पु०) १ अलङ्कार विशेष । किसी वर्णनीय
पदार्थ के गुण ग्रहण करने की सम्भावना रहने
पर भी जिसमें गुण ग्रहण नहीं किया जा सकता
उसे अतदुण अलङ्कार कहते हैं । २ बहुव्रीहि
समास का एक भेद ।

अतंत्र (वि०) [स्त्री०-अतंत्री] १ विना डोरी का ।
विना तारों का (बाजा) । २ असंयत ।

अतन्द्र } (वि०) सतर्क । सावधान । जागरूक ।
अतन्द्रित } चौकल । होशियार ।
अतन्द्रित }

अतपस्-अतपस्क (वि०) वह व्यक्ति जो अपना
धार्मिक कृत्य नहीं करता या जो अपने धार्मिक
कर्तव्यों से विमुख रहता है ।

अतर्क (वि०) युक्तिशून्य । तर्क के नियमों के विरुद्ध ।

अतर्कः (पु०) जो तर्क के नियमों से अनभिज्ञ हो ।

अतर्कित (वि०) १ आकस्मिक । २ बे सोचा
समझा । जो विचार में न आया हो ।

अतर्कितस् (क्रि० वि०) आकस्मिक रूप से ।

अतर्क्य (वि०) १ जिसके विषय में किसी प्रकार
की विवेचना न हो सके । २ अचिन्त्य ।
३ अनिवर्चनीय ।

अतल (वि०) जिसमें तरी या पैदी न हो ।

अतलम् (न०) सात अघोलोंमें अर्थात् पातालों में
से दूसरा पाताल ।

अतलः (पु०) शिव जी का नाम । —स्पर्श,
—स्पर्श (वि०) तलरहित । बहुत गहरा ।
जिसकी थाह न मिले ।

अतस् (अव्यया०) १ इसकी अपेक्षा । इससे ।
२ इससे या इस कारण से । अतः । ऐसा या इस
लिये । इस शब्द के समानार्थ वाची “ यत् ”
“ यस्मात् ” और “ हि ” हैं । ३ अतः । इस
स्थान से । इसके आगे । (समय और स्थान
सम्बन्धी) इसके समानार्थवाची हैं “ अतःपरं ” या
“ अतर्क्य ” । पीछे से ।—अर्थ,—निमित्त इस

कारण । अतएव । इस कारण से ।—एव इसी कारण से ।—उर्ध्व इसके आगे । पीछे से ।—पर आगे । और आगे । इसके पीछे । इसके परे । इससे भी आगे ।

अतसः (पु०) १ पवन । हवा । २ आत्मा । जीव ।
३ पटसन का बना हुआ वस्त्र ।

अतसी (स्त्री०) अलसी । सन । पटसन ।—तैलम् (न०) अलसी का तेल ।

अतस्क (वि०) असंयतेन्द्रिय जो अपनी इन्द्रियों को अपने वश में न रख सके ।

अति (अन्यथा०) यह एक उपसर्ग है जो विशेषणों और क्रियाविशेषणों के पहले लगायी जाती है । इसका अर्थ है—बहुत । बहुत अधिक । परिमाण से बहुत अधिक । उत्कर्ष । प्रकर्ष । प्रशंसा । क्रिया में जुड़ने पर यह उपसर्ग—ऊपर, परे का अर्थ बतलाती है । जब यह संज्ञा या सर्वनाम में जुड़ती है, तब इसका अर्थ होता है—परे । बढ़ कर । श्रेष्ठतर । प्रसिद्ध । प्रतिपन्न । उत्तर । ऊपर ।

अतिकथा (स्त्री०) बहुत बड़ा कर कहा हुआ वृत्तान्त ।
२ व्यर्थ की या बेमतलब की बातचीत ।

अतिकर्षणं (न०) अत्यन्त पीड़ित । अत्यधिक परिश्रम ।

अतिकश (वि०) कोड़े को न मानने वाला । छोड़े की तरह हाथ में न आने वाला ।

अतिकाय (वि०) दीर्घकाय । असाधारण लीलालीला का ।

अतिकृच्छ्र (वि०) बहुत कठिन । बड़ा मुश्किल ।

अतिकृच्छ्रम् (न०) अतिकृच्छ्रः (पु०) १ असाधारण कठिनता । २ एक प्रायश्चित्त विशेष, जो १२ रात में पूर्ण होता है ।

अतिक्रमः (पु०) १ नियम या मर्यादा उल्लङ्घन । विरुद्ध व्यवहार । २ अग्रतिष्ठा । असम्मान । बे-इज्जती । ३ चोड़ । ४ विरोध । ५ (काल का) व्यतीत हो जाना । बीत जाना । दमन करना । पराजित करना । हराना । ६ छोड़ जाना । उपेक्षा करना । भूल जाना । ७ जोर शोर

का आक्रमण । ८ आधिक्य । ९ दुष्प्रयोग । १० निर्धारण । स्थापन । आदेश । करसंस्थापन ।

अतिक्रमणम् (न०) उल्लङ्घन । पार करना । बढ़ जाना । सीमा के बाहिर जाना । समय को व्यतीत करना । आधिक्य । दोष । अपराध ।

अतिक्रमणीय (स० क० कृ०) अतिक्रमण करने योग्य । उल्लङ्घन करने योग्य । बचा देने के योग्य । छोड़ देने के योग्य ।

अतिक्रान्त (भू० क० कृ०) सीमा या मर्यादा का उल्लङ्घन किये हुए । बढ़ा हुआ । बीता हुआ । व्यतीत ।

अतिस्वद्व (वि०) शय्यारहित । शय्या की आवश्यकता को दूर कर देने योग्य ।

अतिग (वि०) अत्यधिक । अपेक्षा कृत । उत्कृष्ट ।

अतिगन्ध (वि०) ऐसी गन्ध जो सब के ऊपर हो ।

अतिगन्धः (पु०) १ गन्धक । २ भूतृण । ३ चंपा का पेड़ ।

अतिगव (वि०) १ बड़ा भारी मूर्ख । गण्ड मूर्ख ।
२ अवर्णनीय । अकथनीय ।

अतिगण्डः (पु०) ज्योतिष शास्त्र वर्णित योग विशेष । (वि०) बड़ा गले वाला ।

अतिगुण (वि०) १ वह जिसमें सर्वोत्कृष्ट अथवा श्रेष्ठतर गुण हों । २ गुणशून्य । निकम्मा ।

अतिगुणः (पु०) श्रेष्ठ गुण ।

अतिगौ (स्त्री०) श्रेष्ठ गौ । उत्तम गाय ।

अतिग्रह (वि०) जो बोधगम्य न हो ।

अतिग्रहः } (पु०) १ इन्द्रियगम्य । इन्द्रियगोचर ।
अतिग्राहः } २ सत्यज्ञान । ३ श्रेष्ठ होने के लिये कर्म या क्रिया ।

अतिचरम् (वि०) सेनाओं पर विजय प्राप्त ।

अतिचर (वि०) बड़ा परिवर्तनशील । अनित्य । अचिर-स्थायी । क्षणविध्वंसी । क्षणिक ।

अतिचररा (स्त्री०) स्थलपद्मिनी । पद्मिनी । पद्मचारिणी-लता ।

अतिचरणां (न०) अत्यधिक अभ्यास । अधिक काम करना ।

अतिचारः (पु०) १ उल्लङ्घन । २ सङ्गुण में अति-
क्रमण करना । ३ ग्रहों की शीघ्र गति । ग्रहों
का एक राशि से दूसरी राशि पर जाना ।

अतिच्छत्र (पु०) } १ छाती नाम से प्रसिद्ध एक
अतिच्छत्रा (स्त्री०) } नृण विशेष । २ तालमखाना ।
अतिच्छत्रका (स्त्री०) } ३ सुल्फा ।

अतिजगती (स्त्री०) छन्द विशेष जो १३ अक्षरों का
होता है (वि०) जगत को ढाँकने वाला । ज्ञानी ।
जीवन्मुक्त ।

अतिजव (वि०) बड़े वेग से चलने वाला ।

अतिजागरः (पु०) नीलक यची—जो सदा जागता
रहता है । (वि०) जिसको नींद न आवे ।

अतिजात (वि०) जो आघात न हो ।

अतिडोनें (न०) पक्षियों का एक असाधारण उड़ान ।

अतितराम्, अतितमां (अव्यया०) १ अधिक ।
उच्चतर । २ बहुत अधिक ।

अतितीक्ष्ण (वि०) अत्यन्त कड़वा । सरिचा ।

अतितीव्रा (स्त्री०) गौंठदूब ।

अतिथिः (पु०) मनु अध्या० ३ श्लो० १०२ के अनुसार
अतिथि की परिभाषा यह है :—

“ एकस्मिन् दि निवसन्नातिथिर्वाङ्मनः स्मृतः ।
अतिथिं हि स्थितो यस्मात्तस्मादतिथिश्च्यते ॥ ”

१ आगन्तुक । घर में आया हुआ । अज्ञात
पूर्वव्यक्ति ।—क्रिया, (वि०)—सत्कारः (पु०)
सत्क्रिया, (स्त्री०)—सेवा,—सपर्या (स्त्री०)
अतिथि का आदर सत्कार । मेहमानदारी ।
—धर्मः (पु०) अतिथि का सत्कार—यज्ञः
(पु०) पञ्चमहायज्ञों में से एक । नृयज्ञ ।
अतिथिपूजा । मेहमानदारी ।

अतिदानं (न०) अत्यधिक दान ।

अतिदिष्ट (वि०) दूसरे के धर्म का दूसरे में आरोप ।
मीमांसा शास्त्र की परिभाषा विशेष ।

अतिदीप्यः (पु०) रक्तचित्रक वृक्ष । लाल चीता का
पेड़ ।

अतिदेशः (पु०) अतिदिष्ट । वह नियम जो अपने
निर्दिष्ट विषय के अतिरिक्त और विषयों में भी
काम दे ।

अतिद्वय (वि०) १ अद्वितीय । जिसके समान दूसरा
न हो । जो दो से बढ़ कर हो । जिसकी तुलना न
हो सके । जिसका जोड़ न हो ।

अतिध्वन्वन् (पु०) बेजोड़ तीरंदाज या योद्धा ।
जिसके जोड़ का दूसरा धनुर्धारी या योद्धा न हो ।

अतिधृतिः (स्त्री०) एक छन्द जिसमें प्रत्येक पद में
१६ अक्षर होते हैं ।

अतिनिद्रा (वि०) १ अत्यधिक निद्रालु । अत्यधिक सोने
वाला । २ बिना निद्रा का । निद्रा रहित ।
अनिद्रम् । निद्रा के समय का अतिक्रम । अतिनिद्रा
(स्त्री०) अत्यधिक नींद ।

अतिनु, अतिनौ (वि०) नाव से उतारा हुआ । नदी
या समुद्र के तट पर उतरा हुआ ।

अतिपंचा, अतिपञ्चा (स्त्री०) पाँच वर्ष के ऊपर की
लड़की ।

अतिपतनं (न०) निर्दिष्ट सीमा के आगे उड़ जाना
या निकल जाना । चूक जाना । छोड़ जाना ।
उल्लङ्घन करना । मर्यादा के बाहर जाना ।

अतिपत्तिः (स्त्री०) असिद्धि । असफलता । सीमा
के बाहर जाना ।

अतिपत्रः (पु०) सागौन का वृक्ष ।

अतिपर (वि०) वह व्यक्ति जिसने अपने शत्रुओं
का नाश कर डाला हो ।

अतिपरः (पु०) बड़ा या श्रेष्ठ शत्रु ।

अतिपरिचयः (पु०) अत्यधिक मेलमिलाप ।

अतिपातः (पु०) १ गुजरजाना (समय का) ।
नष्ट हो जाना । चूक । भूल । उल्लङ्घन । २ बदना
का बदना । ३ दुर्व्यवहार । असद्व्यवहार ।
विरोध । प्रातिकूल्य ।

अतिपातकं (न०) एक बड़ाभारी पाप ।

अतिपातिन् (वि०) चाल में बढ़ा हुआ । अपेक्षा-
कृत वेगवान् ।

अतिपात्य (भू० स० क०) विलम्ब करने योग्य ।
स्थगित करने योग्य ।

अतिप्रबन्धः (पु०) अत्यन्त निरवच्छिन्नता ।

अतिप्रगे (अन्यथा०) बड़े तबके । बड़े भार ।

अतिप्रदः (पु०) ऐसा प्रश्न जिसको सुन उद्वेक उत्पन्न हो । खिजाने वाला प्रश्न ।

अतिप्रसङ्गः (पु०) प्रगाढ़ प्रेम ।

अतिप्रसक्तिः (स्त्री०) १ अत्यन्त उद्दण्डता । (व्याक०)
२ अतिव्याप्तिः । ३ धनिष्ठसंसर्गः ।

अतिप्रौढा (स्त्री०) स्थानी लड़की, जो विवाह योग्य हो गयी हो ।

अतिबल (वि०) बड़ा बलवान या हठ ।

अतिबलः (पु०) एक प्रसिद्ध या विख्यात योद्धा ।

अतिबला (स्त्री०) १ एक विद्याविशेष जिसे विश्वामित्र जी ने श्रीरामचन्द्र जी को बतलाया था । २ एक औषध विशेष ।

अतिबाला (स्त्री०) दो वर्ष की उम्र की गौ ।

अतिभरः अतिभारः (पु०) बहुत अधिक बोझ ।

अतिभारमः (पु०) खच्चर ।

अतिभवः (पु०) पराजय । विजय ।

अतिभावः (पु०) श्रेष्ठता । उत्कृष्टता ।

अतिभीः (स्त्री०) विधुत् । बिजुली । इन्द्र के वज्र की कड़क या चमक ।

अतिभूमिः (स्त्री०) १ आधिक्य । चरम सीमा पर पहुँच । अत्युच्च स्थान पर आरोहण । २ साहस । अमर्यादा । ३ क्याति । श्रेष्ठता ।

अतिमतिः (स्त्री०) अतिमानः (पु०) क्रोध । चिढ़चिढ़ापन । अत्यन्त गर्व या अभिमान ।

अतिमर्त्यः (पु०)—अतिमानुष (वि०) अमानुषिक । अलौकिक ।

अतिमात्र (वि०) मात्रा से अधिक । अत्यधिक । नितान्त असमर्थनीय ।

अतिमाय (वि०) अन्त में मुक्त हुआ । सांसारिक माया से मुक्त ।

अतिमुक्तः १ अन्त में दासता से मुक्त । बंधन से मुक्त ।
२ बन्ध्या । ऊसर । ३ बढ़ाव । चढ़ाव ।

अतिमुक्तः } (पु०) माधवी खता । कुसरी ।
अतिमुक्तकः } कुसरमोगरा ।

अतिमुक्तिः (स्त्री०) मुक्ति । मोक्ष । आवागमन से सदा के लिये छुटकारा ।

अतिरंक्ष् (वि०) अत्यन्त फुर्तीला । बहुत तेज ।

अतिरथः (पु०) ऐसा थोड़ा जिसका कोई प्रतिद्वन्दी न हो और जो रथ में बैठ कर लड़े ।

अतिरभसः (पु०) बड़ी रफ्तार । उद्दामवेग । हठ । जिद्द ।

अतिराजन् (पु०) १ असाधारण या उत्तम राजा ।
२ वह व्यक्ति जो राजा से आगे बढ़ जाय ।

अतिरात्रः (पु०) ज्योतिष्योस यज्ञ का एक ऐच्छिक भाग । २ रात्रि की निस्तब्धता ।

अतिरिक्त (वि०) १ सिवाय । अलावा । २ अधिक । बढ़ती । शेष । ३ न्याया । अलग । जुदा । भिन्न ।

अतिरेकः अतिरेकः (पु०) १ अतिशय । २ सर्वोत्कृष्टता । सर्वश्रेष्ठत्व । ३ प्रसिद्धि । ४ अन्तर । भेद ।

अतिरुच (पु०) घुटना । रहना ।

अतिरुक् (स्त्री०) अत्यन्त सुन्दरी स्त्री ।

अतिरोमशः अतिलोमश (वि०) बहुत रोंगटों वाला । बहुत बालों वाला ।

अतिरोमशः } (पु०) १ जंगली बकरा । २
अतिलोमशः } बृहद्वक्ष्य बंदर ।

अतिलङ्घनं (न०) १ बहुत अधिक उपवास या लंबन । (२) उल्लङ्घन । अतिक्रमण ।

अतिलङ्घिन् (वि०) भूल करने वाला । शल्लंभी करने वाला ।

अतिवयस् (वि०) बहुत बूढ़ा । बड़ी उमर का ।

अतिवर्णाश्रमिन् (वि०) १ जो वर्णाश्रम के परे हो ।

अतिवर्तनं (न०) १ क्षम्य अपराध । क्षम्य दुष्टाचरण । क्षम्य सामान्य अपराध । क्षमा करने योग्य कुछ अपराध । २ दण्डवर्जित ।

अतिवर्तिन् (वि०) अतिक्रम करने वाला । नियम तोड़ कर चलने वाला ।

अतिवादः (वि०) अत्यन्त कड़ा । बड़ा सख्त । कुवाच्य युक्त भाषा । गाली । कुवाच्य । तिरस्कार । निन्दावाद । भर्त्सना ।

अतिवाहनं (न०) १ व्यतीत । पार्श्व किया हुआ । २ अत्यन्त सहनशील या परिश्रमी । अत्यधिक भार । किसी काम से पिंड या पीछा छुदाये हुए ।

अतिविकट (वि०) बड़ा भयङ्कर ।

अतिविकटः (पु०) दुष्टहाथी ।

अतिविषा (स्त्री०) एक विषविशेष जो दवाई के काम में आता है ।

अतिविस्तरः (पु०) १ दीर्घसूत्रता । २ प्रपंच । बहुत बकभक्क ।

अतिवृत्तिः (स्त्री०) १ अतिक्रमण । उल्लङ्घन । २ अतिशयोक्ति ।

अतिवृष्टिः (स्त्री०) मूसलधार वर्षा । ६ प्रकार की ईतियों में से एक ।

अतिवेल (वि०) १ अत्यधिक । असीम । अतिशय । २ अमिताचारी ।

अतिवेलम् (क्रि० वि०) १ अत्यधिकतया । २ वे समय से । अनन्तर से ।

अतिव्याप्तिः (स्त्री०) किसी नियम या सिद्धान्त का अनुचित विस्तार । किसी कथन के अन्तर्गत उद्देश्य या लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य विषय के आ जाने का दोष । नैयायिकों का एक दोष विशेष । यदि किसी का लक्षण अथवा किसी शब्द की या वस्तु की परिभाषा की जाय और वह लक्षण या परिभाषा अपने मुख्य वाच्य को छोड़ कर दूसरे की बोधक हो तो वहाँ अतिव्याप्ति दोष माना जाता है ।

अतिशयः (पु०) १ बहुत । अत्यन्त । सर्वोत्तमता । २ उत्कृष्टता ।—उक्तिः (अतिशयोक्तिः) (स्त्री०) अलङ्कारविशेष, जिसमें लोकलीला का उल्लङ्घन विशेष रूप से दिखलाया जाय ।

अतिशयन (वि०) बड़ा । मुख्य । प्रचुर । बहुतसा ।

अतिशयनम् (न०) आधिक्य । बहुतायत ।

अतिशयनम् (न०) श्रेष्ठत्व । समीचीनत्व । उमदापन । प्रकर्ष ।

अतिशयिन् (वि०) श्रेष्ठ । समीचीन ।

अतिशयिन् (पु०) १ अतिक्रमण । २ अधिक ।

अतिशेषः (पु०) बचत । स्वल्प बचा हुआ ।

अतिश्रेयसिः (पु०) वह पुरुष जो सर्वोत्तम स्त्री से श्रेष्ठ हो ।

अतिश्व (वि०) १ बल में बड़ा चढ़ा । कुत्ता । २ कुत्ते से निकृष्ट ।—श्व (स्त्री) दासत्व । सेवा ।

अतिश्वन् (पु०) सर्वोत्तम कुत्ता ।

अतिसक्तिः (स्त्री०) अनिष्टता । अत्यधिक अनुराग ।

अतिसन्धानं (न०) धोखा । दगा । जाल । कपट ।

अतिसरः (पु०) १ आगे बढ़ा हुआ । २ नेता ।

अतिसर्गः (पु०) १ देना । (पुरस्कार रूप से) । २ अनुमति देना । आज्ञा देना । ३ पृथक् करना । छुड़ाना (नौकरी से) ।

अतिसर्जनम् (न०) १ देना । २ मुक्ति । छुटकारा । ३ वदान्यता । दानशीलता । ४ वध । विच्छेद । वियोग ।

अतिसर्व (वि०) सर्वोपरि । सब के ऊपर ।

अतिसर्वः (पु०) परमात्मा । परब्रह्म ।

अतिसारः } (पु०) दस्तों की बीमारी ।
अतीसारः }

अतिसारिन् } (पु०) अतीसार रोग जिसमें मल
अतीसारिन् } बढ़ कर रोगी के उदराम्नि को मन्द कर देता है और शरीर के रसों के साथ बराबर निकलता है ।

अतिस्नेहः (पु०) अत्यधिक अनुराग ।

अतिस्पर्शः (पु०) अर्द्धस्वर और स्वर की एक संज्ञा ।

अतीत (वि०) १ गत । बीता हुआ । २ मरा हुआ । ३ निर्लेप । विरक्त । पृथक् । ४ असंख्य यथा “संख्यातीत” ।

अतीन्द्रिय (वि०) जो इन्द्रियों के ज्ञान के बाहिर हो । अव्यक्त । अप्रत्यक्ष । अगोचर ।

अतीन्द्रियः (पु०) (सांख्यशास्त्र में) जीव या पुरुष । परमात्मा ।

अतीन्द्रियम् (न०) १ (सांख्य मतानुसार) प्रधान या प्रकृति । २ (वेदान्त में) मन ।

अतीव (अव्यया०) अधिक । अतिशय । बहुत ।

अतुल (वि०) असमान । अनुपम । उपमान रहित ।

अतुलः (पु०) तिलक वृत्त ।

अतुल्य (वि०) जिसकी तुलना या समता न हो ।
बेजोड़ । अद्वितीय ।

अतुषार (वि०) जो ठंडा न हो । —करः (पु०)
सूर्य ।

अतृणया (स्त्री०) थोड़ी सी घास ।

अतेजस् (वि०) १ धुंधला । जो चमकदार न हो ।
२ निर्बल । कमज़ोर । ३ तुच्छ ।

अत्ता (स्त्री०) १ माता । २ बड़ी बहिन । ३ सास ।

अत्तिः (स्त्री०) अत्तिका (स्त्री०) बड़ी बहिन
आदि ।

अत्नः, अत्नुः (पु०) १ हवा । २ सूर्य ।

अत्यग्निः (पु०) विकार उत्पन्न करने वाली तीक्ष्ण
पाचन शक्ति ।

अत्यग्निष्टोमः (पु०) ज्योतिष्टोम यज्ञ का कर्म
विशेष ।

अत्यङ्गुश (वि०) जो दश में न रह सके । वेकावू
(हाथी) ।

अत्यन्त (वि०) १ बेहद । बहुत अधिक । अतिशय
२ सम्पूर्ण । नितान्त । ३ अनन्त । सदा
सर्वदा रहने वाला । —अभावः (=अत्यन्ता-
भावः) किसी वस्तु का बिल्कुल न होना । सत्ता
की नितान्त शून्यता । —गत (वि०) सदैव के
लिखे गया हुआ । जो लौटकर न आवे । —गामिन्
(वि०) बहुत चलने फिरने वाला । बहुत तेज़
चलने वाला । —वासिन् (पु०) वह जो सदा
अपने शिक्षक के साथ छात्रावस्था में रहै । —
संयोगः (पु०) अति सामीप्य । अविच्छिन्नता ।
अविच्छेद ।

अत्यन्तिक (वि०) १ बहुत या बहुत तेज़ चलने
वाला । २ बहुत समीप । ३ दूर । दूर का ।

अत्यन्तिकम् (न०) अति सामीप्य । बिल्कुल मिला
हुआ । पड़ोस ।

अत्यन्तीन (वि०) बहुत अधिक चलने फिरने वाला
बड़ी तेज़ी से चलने वाला ।

अत्ययः (पु०) १ बीत जाना । निकल जाना । २ अन्त ।
उपसंहार । समाप्ति । अनुपस्थिति । अदर्शन ।
लोप । तिरोधान् । ३ मृत्यु । नाश । ४ स्वतरा ।
जोखों । डुराई । ५ दुःख । ६ अपराध । दोष ।
अतिक्रमण । ७ आक्रमण ।

अत्ययित (वि०) १ बढ़ा हुआ । आगे निकला
हुआ । २, उलझन किया हुआ । अत्याचार किया
हुआ ।

अत्ययिन् (वि०) बढ़ा हुआ । आगे निकला हुआ ।

अत्यर्थ (वि०) अत्यधिक । बहुत ज्यादा ।

अत्यर्थम् (कि० वि०) बहुत अधिकता से । अति-
शयता से ।

अत्यन्ह (वि०) स्थितिकाल में एक दिन से अधिक ।

अत्याकारः (पु०) तिरस्कार । अभिषाप । भर्त्सना ।
धिकार । २ बड़े डील डौल वाला शरीर ।

अत्याचारः (पु०) १ अन्याय । विरुद्धाचार । दुराचार ।
आचार का अतिक्रमण । कोई ऐसा कार्य जो
प्रथा से समर्थित न हो । २ उपद्रव । दुःखद काम ।
अधार्मिक कृत्य ।

अत्यादित्य (वि०) सूर्य की चमक को अपनी चमक
से दबा देने वाला ।

अत्यानन्दा (स्त्री०) स्त्रीसहवास सम्बन्धी आनन्दों
के प्रति अस्वस्थ अनास्था ।

अत्यायः (पु०) १ अतिक्रमण । उलझन । २ आधिक्य ।
ज्यादती ।

अत्यारूढ (वि०) बहुत अधिक बढ़ा हुआ ।

अत्यारूढम् (न०) —अत्यारूढिः (स्त्री०) अस्थुच्चपद ।
अत्यधिक उन्नति या उत्कर्ष ।

अत्याश्रमः (पु०) १ संन्यासाश्रम । (२) संन्यासी
२ परमहंस । ब्रह्मचर्यादि आश्रमधर्मों को पालन
करने वाला ।

अत्याहितं (न०) १ बड़ी भारी विपत्ति । स्वतरा
महाविपद । दुर्घटना । २ दुस्साहस या जोखं
का काम ।

अभ्युक्तिः (स्त्री०) बहुत बड़ा कर कहा हुआ कथन ।
बड़ा चढ़ा कर कहने की शैली । बढ़ावा ।
सुबालिगा ।

अभ्युपध (वि०) विश्वस्त । परीक्षित ।

अभ्युहः (पु०) १ गम्भीर विचार या ध्यान । ठीक
अथवा सच्चा तर्कवितर्क । २ जलकुण्ड । एक
प्रकार का जलपट्टी । कालकण्ठ ।

अत्र अधिकरणार्थक अभ्यय । यहाँ । इसमें ।—अन्तरे
(क्रि० वि०) इस बीच में । इस असें में ।
—भवत् (पु०)—भवान् । श्लाघ्य । पूज्य ।
प्रशंसा करने योग्य । अंगरेज़ी के Your honour
या His Honour के समान । इसी प्रकार
Your Ladyship or Her Ladyship
के लिये “अत्रभवती” का व्यवहार होता है ।
यथा ।

(१) “ अत्रभवान् मकुतियापन्नः ”

—शकुन्तला ।

(२) “ दृष्टव्येचनादेव परिश्रान्तात्रभवतीं लक्षये ।

—शकुन्तला ।

अत्रत्य (वि०) १ यहाँ सम्बन्धी । इस स्थल से । २
यहाँ उत्पन्न हुआ । यहाँ प्राप्त । इस स्थान का ।
स्थानीय ।

अत्रप (वि०) निर्लज्ज । दुःशील । प्रगल्भ । उद्धत ।

अत्रिः (पु०) एक ऋषि का नाम ।—जः,—जातः
दृग्जः,—नेत्रप्रसूतः,—प्रभवः,—भवः (पु०)
चन्द्रमा ।

अद नयनसमुखं ज्योतिरन्नेरिवद्वीः ।”

रघुवंश सर्ग २ श्लोः ७५

अथ (अव्यया०) मङ्गल । आरम्भ । अधिकार ।
२ तदनन्तर । पीछे से । ३ यदि । कल्पना करिये ।
यदि अब । ऐसी दशा में । किन्तु यदि । ४ और ।
ऐसा भी । इसी प्रकार । जिस प्रकार । ५ इसका
प्रयोग किसी विषय की जिज्ञासा करने में तथा
कोई प्रश्न आरम्भ करने में होता है । ६ सम्पूर्णता ।
नितान्तता । ७ सन्देह । संशय । यथा “शब्दों
नित्योऽथानित्यः ।”—अपि, अपरञ्च । किञ्च ।

अपिच । पुनः ।—किं, और क्या ? हाँ । ठीक यही ।
ठीक ऐसा हो । निस्सन्देह ।—च अपिच । किञ्च ।
इसी प्रकार । ऐसे ही ।—वा १ या । २ वर ।
अधिकतर । या क्यों । या कदाचित् । प्रथम कथन
का संशोधन करते हुए ।

अथर्वन् (पु०) १ यज्ञकर्ता विशेष, जो अग्नि और
सोम का पूजन करता है । २ ब्राह्मण । (बहुवचन
में ।) अथर्वन् ऋषि के सन्तान । अथर्ववेद की
ऋचाएं ।

अथर्वा, अथर्व (पु० न०) अथर्ववेद ।—निधिः,—
विद् (पु०) अथर्ववेद पढ़ने का पात्र या अधि-
कारी । अथर्ववेद का ज्ञाता ।

अथर्वणिः (पु०) अथर्ववेद में निष्णात ब्राह्मण ।
अथवा अथर्ववेद में वर्णित कार्यों के कराने में
निपुण ।

अथर्वणिं (न०) अथर्ववेद की अनुष्ठानपद्धति ।

अथवा (अव्यया०) पक्षान्तर बोधक अव्यय । या ।
वा । किंवा ।

अथो (अव्यया०) अथ ।

अद् (धा० प०) [अस्ति, अन्न-जग्ध] १ खाना ।
भक्षण करना । २ नष्ट करना ।

अद्-अद् (वि०) भोजन करते हुए । भक्षण करते हुए ।

अदंष्ट्र (वि०) दन्तरहित ।

अदंष्ट्रः (पु०) सर्प जिसका विषदन्त उखाड़ लिया
गया हो ।

अदक्षिण (वि०) १ बाँया । २ वह कर्म जिसमें कर्म
कराने वाले को दक्षिणा न मिले । विना दक्षिणा
का । ३ सादा । निर्बल मन का । निर्वोध । मूढ़ ।
४ सौष्टवशून्य । नैपुण्यरहित । चातुर्यविवर्जित ।
भद्दा । ५ प्रतिकूल ।

अदण्ड्य (वि०) १ दण्ड देने के अयोग्य २ दण्ड
से मुक्त । सज़ा से बरी ।

अदत् (वि०) दन्तरहित । विना दाँतों का ।

अदत्त (वि०) १ विना दिया हुआ । २ अन्याय
पूर्वक या अनुचित रीति से दिया हुआ । ३
विवाह में न दिया हुआ ।

अदत्ता (स्त्री०) अविवाहित लड़की ।

अदत्तम् (न०) निष्कलदान ।—आदायिन् (पु०) निष्कल दान का ग्रहण करने वाला । वह पुरुष जो बिना दी हुई वस्तु को उठा ले जाय । उठाई-गीरा । चोर ।—पूर्वा (स्त्री०) बिना सम्बन्ध युक्त । जिसकी सगाई पहले न हुई हो ।

“ अदत्तपूर्वोत्थाशङ्क्यते ”

मालतीमाधव । अ० ४

अदन्त । १ बिना दाँतों वाला । २ जिनके अन्त में अदन्त । अत या अ हो । ३ जोंक ।

अदन्त्य । (वि०) १ दाँत सम्बन्धी नहीं । २ दाँतों के अदन्त्य । योग्य नहीं । दाँतों के लिये हानिकारक ।

अदभ्र (वि०) कम नहीं । बहुत । अधिक । विपुल ।

अदर्शनम् (न०) १ अदृष्ट । अनुपस्थित । २ (व्याकरण में) वर्यलोप ।

अदस् (वि०) दूर की वस्तु । तत् । दूसरा । अन्य । ये अभी ।

अदात् (वि०) १ (लड़की जो) विवाह में न दी गयी हो । २ अवदान्य । कंजूस ।

अदादि (वि०) जिसके आरम्भ में अद् हो । व्याकरण की रूढ़ि विशेष ।

अदाय (वि०) जो भाग पाने का अधिकारी न हो ।

अदायाद् (वि०) १ जो उत्तराधिकारी होने का अधिकारी न हो । २ उत्तराधिकारी रहित । लावारिस ।

अदायिक (वि०) । १ वह वस्तु या सम्पत्ति जिसके अदायिकी (स्त्री०) पाने के उत्तराधिकारी ने अपना स्वत्व प्रदर्शित न किया हो । लावारिसी । जिसका कोई वारिस न हो । २ जो पुरतैनी न हो ।

अदितिः (स्त्री०) १ पृथिवी । २ अदिति देवी, जो आदित्यों की माता है । पुराणों में देवताओं की उत्पत्ति अदिति ही से बतलायी गयी है । ३ बायीं । ४ गौ ।

अदितिजः ।
अदितिनन्दनः } (पु०) देवता ।

अदुर्ग (वि०) १ जिसमें प्रवेश किया जा सके । २ दुर्गरहित ।—विषयः (पु०) ऐसा देश जिसमें रक्षा के लिये दुर्ग न हो । अरक्षित देश या राज्य ।

अदूर (वि०) जो बहुत दूर न हो । समीप (समय और स्थान सम्बन्धी) ।

अदूरम् (पु०) समीप्य । पड़ोस ।

अदूरं, अदूरं, अदूरेण, अदूरतः अदूरात् (अव्यया०) (किसी स्थान या समय से) बहुत दूर नहीं ।

अदृश् (वि०) दृष्टिहीन । नेत्रहीन । अंधा ।

अदृष्ट (वि०) १ जो देखा न जाय । अनदेखा हुआ । जो पहिले न देखा गया हो । २ जो जाना न गया हो । ३ पूर्व से अनदेखा । न देखा या न सोचा हुआ । अज्ञात । अविचारित । ४ अस्वीकृत । आईन के विरुद्ध ।

अदृष्टम् (न०) वह जो देख न पड़े । २ आरब्ध । भाग्य । नसीब । किस्मत । पाप या पुण्य जो दुःख या सुख का कारण है । ४ ऐसी विपत्ति या स्वतरा जिसका पहले कभी ध्यान भी न रहा हो । (जैसे अग्निकाण्ड, जलप्लावन) ।—अर्थ (वि०) अभ्यात्मविद्या सम्बन्धी । तत्त्वविद्या सम्बन्धी ।—कर्मन् (वि०) आक्रियात्मक । अनुभवशून्य ।—फल (वि०) वह जिसका परिणाम दृष्टिगत न हो ।—फलं (न०) अच्छे बुरे कर्मों का भावी फल या परिणाम ।

अदृष्टिः (स्त्री०) बुरी दृष्टि । (वि०) अंधा ।

अदेय (वि०) जो देने योग्य न हो या जो दिया न जा सके ।

अदेयम् (न०) वह जिसका दिया जाना या देना ठीक नहीं या आवश्यक नहीं । इस श्रेणी के वस्तु में स्त्री, पुत्र आदि हैं ।

अदेव (वि०) १ देव के समान नहीं । २ अपवित्र

अदेवः (न०) वह जो देवता न हो । राक्षस । दैत्य । असुर ।

अदेशः (पु०) १ अनुपयुक्त स्थान । २ कुदेश । वर्जित देश ।—कालः (पु०) कुदेश और कुसमय ।—स्थ (वि०) कुठौर का ।

अदोष (वि०) १ निर्दोष । दोषरहित । त्रुटिरहित । निरपराध । २ रचना सम्बन्धी दोषों से वर्जित । (रचना के दोष जैसे अश्लीलता; ग्राम्यता आदि ।)

अदोहः (पु०) १ वह समय जिसमें गौ का दुहना सम्भव नहीं । २ न दुहना ।

अद्वा (अव्यया०) सचमुच । बेशक । निस्सन्देह । द्रढकीकृत । २ प्रत्यक्ष रूप से । स्पष्टतया ।

अद्भुत (वि०) १ विलक्षण । विचित्र । आश्चर्यजनक । विस्मयकारक । अनौत्सा । अजीव । अनृता । अपूर्व । अलौकिक । २ काव्य के नौ रसों में से एक ।—सारः (पु०) अद्भुत रस । सर्जरस । शब्दभूष ।—स्वनः (पु०) १ आश्चर्यशब्द । २ महादेव का नाम ।

अद्यनिः (पु०) आग । अग्नि । आँच ।

अद्यार (वि०) बहुत खाने वाला । भक्ष्यशील ।

अद्य (वि०) खाने योग्य ।

अद्यम् (न०) भोज्यपदार्थ । खाने योग्य कोई वस्तु । (अव्यया०) आज । आज का दिन । वर्तमान दिवस ।—अपि (= अद्यापि) आज भी । आज तक । अब भी । अब तक नहीं ।—अवधि (= अद्यावधि) १ आज से । आज तक ।—पूर्व (न०) आज के पहिले । इससे पूर्व । आज से आगे ।—श्वीना (वि०) वह गर्भिणी स्त्री जो एक ही दो दिन में बच्चा जनने वाली हो । आसन्नप्रसवा ।

अद्यतन (वि०) १ आज सम्बन्धी । आज तक की । २ आधुनिक ।

अद्यतनी (स्त्री०) भूतकाल का परियायवाचक शब्द ।

अद्यतनीय, अद्यतन १ आज का । २ आधुनिक ।

अद्रव्यं (न०) १ वह वस्तु जो किसी भी काम की न हो । निकम्मी वस्तु । २ कुशिव्य । कुपात्र ।

अद्रिः (पु०) १ पर्वत । पहाड़ । २ पत्थर । ३ वज्र । कुलिश । ४ वृक्ष । ५ सूर्य । ६ बादलों की घटा । बादल । ७ मापविशेष । ८ सात की संख्या ।—ईशः,—पतिः,—नाथः (पु०) १ पहाड़ों का राजा । हिमालय । २ कैलासपति महादेव ।—कीला (स्त्री०) पृथिवी ।—कन्या,—तनया,—सुता (स्त्री०) पार्वती ।—जं (न०) गेरू मिट्टी ।—द्विष, —भिद्र (पु०) पर्वत-शत्रु या पर्वत को विदीर्य करने वाला । यह इन्द्र की उपाधि है ।—द्रोणि, —द्रोणी (स्त्री०) १ पहाड़ की घाटी । २ नदी जो पहाड़ से निकलती है ।—पतिः—राजः (पु०) पहाड़ों का स्वामी । हिमालय ।—शय्यः (पु०) शिव ।—शृङ्गम् (न०)—सानु पर्वत का शिखर । पहाड़ की चोटी ।—सारः (पु०) पर्वत का सारांश । लोहा ।

अद्रोहः (पु०) विद्वेषशून्यता । विनम्रता ।

अद्रय (वि०) १ दो नहीं । २ बेजोड़ । अद्वितीय एकमात्र ।

अद्रयः (पु०) बुद्धदेव का नाम ।

अद्रयं (न०) अद्वितीयता । विजातीय और स्वगतभेद-शून्यता । सर्वोत्कृष्ट सत्य । ब्रह्म और विश्व की एकता । जीव और बाह्य पदार्थों की एकता ।—वादिन् (न०) वेदान्ती । बौद्ध । अद्वैतवादी । बौद्धविशेष ।

अद्रारं (न०) द्वार नहीं । कोई भी निकलने का रास्ता या द्वार, जो नियमित रूप से दरवाज़ा न हो ।

अद्वितीय (वि०) बेजोड़ । केवल । एकमात्र । जिसके समान दूसरा न हो ।

अद्वितीयम् (न०) परमात्मा । ब्रह्म ।

अद्वैत (वि०) द्वितीयशून्य । अपरिवर्तनशील । २ अनुपम । बेजोड़ । एकाकी ।

अद्वैतम् (न०) १ ऐक्य । (विशेष कर ब्रह्म या जीव का अथवा ब्रह्म और संसार का अथवा जीव और बाह्य पदार्थों का ।) २ सर्वोत्कृष्ट या सर्वोपरि सत्य । ब्रह्म ।—वादिन् । (वि०) वेदान्ती । ब्रह्म और जीव को एक मानने वाला ।

अधम (वि०) कुद । नीच । दुष्टतिदुष्ट । बहुत बुरा ।
—अङ्गम् (न०) पैर । पाद ।—अर्ध (न०)
शरीर के नीचे का आधा अङ्ग । नाभि के नीचे का
अंग ।—ऋणः,—ऋणिकः (पु०) कर्जदार
कदुआ । (उत्तमर्णः का उलटा)—भृतः,—भृतकः
(पु०) कुली । मजदूर । साईल ।

अधमः (पु०) जार ।

अधमा (स्त्री०) दुष्ट मलकिन । दुष्टा स्वामिनी ।
अधर (वि०) १ नीचे का । निचला । तले का । २ नीच ।
अधम । दुष्ट । गुण में कम । अश्रेष्ठ । ३ परास्त
किया हुआ । पराभूत । चुप किया हुआ ।
—उत्तर (वि०) १ नीचला और ऊपर का ।
अच्छा बुरा । २ शीघ्र या देर से । ३ उल्टा
पल्टा । अंडबंड । अस्तव्यस्त । ४ समीप दूर ।
—ओष्ठः (पु०) नीचे का होंठ ।—कण्ठः
(पु०) गरदन के नीचे का भाग ।—पानं (न०)
चूमना । चुम्बन करना ।—मधु-अमृतं (न०)
औठों का अमृत ।—स्वास्तिकं । (न०)
अधोविन्दु ।

अधरम् (न०) १ (शरीर के) नीचे का भाग । निचला
हिस्सा । २ भाषण । व्याख्यान ।

अधरस्मात्
अधरतः
अधरस्तात्
अधरात्
अधरतात्
अधरेण

(अन्यथा०) नीचे की ओर । निचले
भाग में । नीचे के लोक में ।

अधरीकृ (धा० उ०) आगे निकल जाना । हरा देना ।
पराजित कर देना ।

अधरीण (वि०) १ निचला । २ निन्दित । बदनाम ।
अपकीर्तित । भर्त्सित ।

अधरेद्युः (अन्यथा०) किसी पूर्व दिक्क । २ परसें
(बीता हुआ)

अधर्मः (पु०) १ पापकर्म । अन्याय । दुष्टता । अन्याय
से । अन्यायपूर्वक । २ अन्याय कर्म । निषिद्ध कर्म ।
पाप । धर्म और अधर्म । न्याय में वर्णित २४ गुणों
में से दो और इनका सम्बन्ध आत्मा से है ।
सुख और दुःख के ये ही कारण हैं । ३ एक प्रजा-
पति का नाम । सूर्य के एक अनुचर का नाम

अधर्मम् (न०) उपाधिशून्यता । ब्रह्म की उपाधि
विशेष ।—आत्मन्,—चारिन् (वि०) दुष्ट ।
पापी ।

अधर्मा (स्त्री०) मूर्तिमान् दुष्टता ।

अधवा (स्त्री०) राँव । बेवा । जिसका पति मर गया हो ।

अधस्, अधः (अन्यथा०) नीचे । नीचे के लोक में ।
नरक में ।—अंशुकम् (न०) निचला कपड़ा
यथा बनिगाहन । नीमास्तीन आदि । २ धोती ।
कटिवस्त्र ।—अक्षजः (पु०) विष्णु का नाम ।—
करः (पु०) हाथ का निचला हिस्सा ।—करणम्
(न०) पराभव । अधःपात ।—खननम् (न०)
गाड़ना । तोपना ।—गतिः (स्त्री०)—गमनम्,
(न०)—पातः (पु०) नीचे जाना । नीचे गिरना ।
नीचे उतरना । अवनति । हास ।—गन्तु (पु०)
चूना । मूसा ।—चरः (पु०) चोर ।—जिहिका
(स्त्री०) अलि-प्रति-जिह्वा । सुधाश्रवा । तालु-
जिह्वा । वण्टिका । छोटी जीभ जो तालु के नीचे
रहती है ।—दिश (स्त्री०) अधोविन्दु । दक्षिण
दिश ।—दृष्टिः (स्त्री०) नीचे को निगाह ।—
प्रस्तरः (पु०) वह चटाई जिस पर वे लोग जो
मातमपुर्सी करने आते हैं, बिठाये जाते हैं ।—
भागः (पु०) नीचे का भाग ।—भुवनं (न०)
—लोकः (पु०) पृथिवी के नीचे के लोक पाता-
लादि ।—मुख—वदन (वि०) नीचे की ओर
मुख किये हुए ।—लम्बः (पु०) सीसे का गोला ।
लम्बितरेखा । सीधी खड़ी रेखा ।—वायुः (पु०)
अपानवायु । उदराध्मान । पेट का फूलना ।—
स्वस्तिकं (न०) अधोविन्दु ।

अधस्तन (वि०) [स्त्री०—अधस्तनी] जो नीचे
हो । निचला ।

अधस्तात् (कि० वि०) (अधि०) नीचे की ओर ।
अंदर । भीतर ।

अधामार्गवः (पु०) अपामार्ग ।

अधारणक (वि०) जो लाभदायक न हो ।

अधि (अन्यथा०) १ यह क्रियाओं के साथ उपसर्ग की
तरह आता है । ऊपर । ऊर्ध्व । अतीत । अधिक ।
२ प्रधान मुख्य विशेष

अधिक (वि०) १ बहुत । ज्यादा । विशेष । २ अतिरिक्त ।
सिवा । फालतू । बचा हुआ । शेष ।

अधिकम् (न०) अलङ्कार विशेष, जिसमें आधेय को
आधार से अधिक वर्णन करते हैं।—अङ्ग,—अङ्गी
(वि०) नियत संख्या से अधिक अंगों वाला।—
—अर्थ (=अधिकार्थ) (वि०) अत्युक्त।—अद्धि
(वि०) बहुल । प्रचुर । शुभ । सम्पन्न । सौभाग्य-
शाली । अद्धमान्।—तिथि (स्त्री०)—दिनं
(न०)—दिवसः (पु०) बढ़ी हुई तिथि ।

अधिकरणम् (न०) १ आधार । आसरा । सहारा ।
२ सम्बन्ध । ३ (व्याकरण में) कर्त्ता और कर्म द्वारा
क्रिया का आधार । व्याकरण विषयक सम्बन्ध । ४
(दर्शन में) आधार विषय । अधिष्ठान । मीमांसा
और वेदान्त के अनुसार वह प्रकरण जिसमें किसी
सिद्धान्त विशेष की विवेचना की जाय और उसमें
निम्न पाँच अवयव हों—१ विषय, २ संशय, ३
पूर्वपक्ष, ४ उत्तरपक्ष, ५ निर्णय । यथाः—

“विषयो विषयश्चैव पूर्वपक्षस्तथोत्तरं ।

निर्णयश्चेति सिद्धान्तः शास्त्रेऽधिकरणं श्रुतम् ॥”

—भोजकः (पु०) जज । निर्णायक । न्यायकर्त्ता ।

—मण्डपः (पु०) अदालत । न्यायालय ।—

सिद्धान्तः (पु०) सिद्धान्त विशेष जिसके सिद्ध
होने से अन्यसिद्धान्त भी स्वयं सिद्ध हो जायँ ।

अधिकरणिकः (पु०) न्यायाधीश । न्यायकर्त्ता ।
राज्यन्यवर्ग । पर्यवेक्षक । वह जिसको देखरेख और
प्रबन्ध का काम सौंपा गया हो ।

अधिकर्षिकः (पु०) किसी बाज़ार का दरोगा, जिसका
काम व्यापारियों से कर उगाहने का हो ।

अधिकाम (वि०) उग्र आकाक्षाओं वाला । अति-
प्रचण्ड । क्रोधाविष्ट । उत्तेजित । कामासक्त । कामो-
दीप्तिजनक ।

अधिकारः (पु०) १ कार्यभार । आधिपत्य । प्रभुत्व ।
अधिकार । २ अधिकारयुक्तपद । ३ शासन ।
४ प्रकरण । शीर्षक । ५ चमना । ६ योग्यता ।
परिचय । ज्ञान ।—विधि (स्त्री०) मीमांसा की वह
विधि या आज्ञा जिससे यह बोध हो कि, किस फल
के लिये कौन सा चतानुष्ठान करना चाहिये ।

अधिकारिन् } (वि०) अधिकारयुक्त । अधिकार
अधिकारवत् } प्राप्त । २ पाने का हक्द्वार । प्राप्त
करने का अधिकारी । ३ प्राप्त । ४ योग्य ।
योग्यता या क्षमता रखने वाला । क्राविल । उप-
युक्त पात्र ।

अधिकारी, अधिकारवान् (पु०) १ अफसर ।
पदाधिकारी । दरोगा । २ स्वामी । मालिक ।
स्वत्वाधिकारी ।

अधिकृत (वि०) अधिकार में आया हुआ । हाथ में
आया हुआ । उपलब्ध ।

अधिकृतः (पु०) अधिकारी । अध्यक्ष ।

अधिकृतिः (स्त्री०) स्वत्व । हक़ । मालिकाना ।

अधिकृत्य (अन्यथा०) सम्बन्ध से । विषयक ।

अधिकमः (पु०) } चढ़ाई । आरोहण । चढ़ाव ।

अधिकमणं (न०) }

अधिकेपः (पु०) १ कुवाच्य । गाली । आचेप । अप-
मान । व्यंग्य । २ बरखास्तड़ी । विसर्जन ।

अधिगत (भू० का० कृ०) १ प्राप्त । पाया हुआ ।
२ जाना हुआ । अवगत । ज्ञात । पढ़ा हुआ ।

अधिगमः (पु०) अधिगमनम् (न०) प्राप्ति । पाना ।
ज्ञान । अव्ययन । ३ लाभ । सम्पत्ति की प्राप्ति ।
व्यापारिक सारिणी । ४ स्वीकृति । ५ सङ्गम ।
संसर्ग । आलाप ।

अधिगुण (वि०) योग्य । उत्कृष्टगुण विशिष्ट । गुण-
वान् । (कमान पर) भली भाँति रोदा चढ़ाया
हुआ । भलीभाँति ग्रन्थित ।

अधिग्रहणं (न०) किसी वस्तु के ऊपर टहलना या
चलना ।

अधिजननं (न०) उत्पत्ति ।

अधिजिह्वः (पु०) १ सर्प ।

अधिजिह्वा } १ उपजिह्वा । २ जिह्वा पर एक
अधिजिह्विका } प्रकार की सूजन ।

अधिज्य (वि०) धनुष का रोदा ताने हुए ।

अधित्यका (स्त्री०) पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि ।
ऊँचा पथरीला मैदान । उसका उल्टा “ उपत्यका ”
है ।

अधिदन्तः (पु०) एक दाँत के ऊपर दूसरे दाँत की
उत्पत्ति ।

अधिदेवः (पु०) } इष्टदेव । कुलदेव । पदार्थों के
अधिदेवता (स्त्री) } अधिष्ठाता देवता । रक्षक देवता ।

अधिदैव } (न०) किसी वस्तु का अधिष्ठाता
अधिदैवतम् } देवता ।

अधिनाथः (पु०) परब्रह्म । परमात्मा । सर्वेश्वर ।

अधिनायः (पु०) गन्ध । महक ।

अधिपः } (पु०) मालिक । स्वामी । राजा ।
अधिपतिः } प्रभु । शासक । प्रधान ।

अधिपती (स्त्री०) [वैदिक] स्वामिनी । शासन करने
वाली ।

अधिपुरुषः } (पु०) परमात्मा । परब्रह्म ।
अधिपुरुषः }

अधिप्रज (वि०) बहुसन्तति वाला ।

अधिभूतं (न०) परमात्मा । परब्रह्म । परब्रह्म की
सर्वव्यापकता ।

अधिमात्र (वि०) नाप से अधिक । अत्यधिक ।
अपरमित ।

अधियज्ञः (पु०) प्रधान यज्ञ । परमेश्वर ।

“ अधियज्ञो ह्यनेनात्र देहे देहभृतां वरः ”

गीता ।

अधिरथ (वि०) रथ पर सवार ।

अधिरथः (पु०) १ सारथी । रथवान् । रथ हाँकने
वाला । २ कर्ण के पिता का नाम ।

अधिराज } (पु०) चक्रवर्ती । बादशाह । सम्राट् ।
अधिराजः }

अधिराज्यं } (न०) १ साम्राज्य । चक्रवर्ती राज्य ।
अधिराज्यं } २ राष्ट्र । सम्राट् का ऐश्वर्य ।

३ एक देश का नाम ।

अधिरुढ (भू० का० कृ०) १ सवार । चढ़ा हुआ ।
२ बढ़ा हुआ । उन्नत ।

अधिरोहः (पु०) १ हाथी का सवार । २ चढ़ाव ।

अधिरोहणं (न०) चढ़ना । सवार होना । ऊपर
उठना ।

अधिरोहिणी (स्त्री०) नसैनी । सीढ़ी । ज़ीला ।

अधिरोहिन् (वि०) चढ़ा हुआ । सवार । ऊपर
उठा हुआ ।

अधिलोकं (अव्यया०) १ सांसारिक । २ संसार में ।

अधिवचनम् (न०) १ किसी के पक्ष में बोलना ।
बकालत । २ नाम । उपाधि ।

अधिवासः (पु०) १ निवासस्थल । रहने की जगह ।

(२) हठ पूर्वक तकादा । ३ किसी यज्ञानुष्ठान के

आरम्भ में किसी प्रतिमा की प्रतिष्ठाक्रिया

विशेष । ४ परिच्छेदविशेष । जुगा । अंगा ।

५ अंतर फुल्ले या उबटन लगाना । महासुगन्ध ।

खुशबू । ६ मनु के अनुसार स्त्रियों के

६ दोषों में से एक । ७ दूसरे के घर जाकर रहना ।

परगृहवास । ८ अधिक ठहरना । अधिक देर तक

रहना ।

अधिवासनम् (न०) १ सुगन्धित पदार्थ से सुवासित

करना । सुगंधपदार्थ । २ मूर्ति की आरम्भिक

प्रतिष्ठा । देवता की किसी मूर्ति में उसकी प्रतिष्ठा

करना ।

अधिविज्ञा (स्त्री०) पतिपरित्यक्ता स्त्री । वह स्त्री जिसके
पति ने दूसरा विवाह कर लिया हो ।

अधिवेत् (पु०) पति जिसने अपनी पहिली पत्नी छोड़
दी हो ।

अधिवेदः (पु०) एक अतिरिक्त पत्नी करना ।

अधिवेदनं (न०) एक विवाहित स्त्री के रहते दूसरी स्त्री
के साथ विवाह करना ।

अधिभ्रयः (पु०) १ आधार । पात्र । २ उबालना ।
गर्माना (आग पर रख कर) ।

अधिभ्रयणं } (न०) उबालना । गर्माना ।
अधिभ्रयणं }

अधिभ्रयणी } तंदूर । अग्निकुण्ड । चूल्हा । अंगीठी ।
अधिभ्रयणी }

अधिभ्री (वि०) अत्यधिक धनवान् । सर्वोत्कृष्ट ।
सर्वोपरि प्रभु या स्वामी ।

अधिष्ठानम् (न०) १ समीप खड़े होना । समीप जाना ।

२ स्थिति । आधार । बैठक । स्थान । नगर ।

कसबा । ३ आवासस्थान । रहाइस । ४ अधिकार ।

राजसत्ता । सत्ता । ५ कुक्कल । राज्याधिपति । ६

पाहयो- चक्रा ० प्रवृत्तान्त । नजीर । निर्दिष्ट
निमित्त । १/२/३/४/५/६/७/८/९/१०/११/१२/१३/१४/१५/१६/१७/१८/१९/२०/२१/२२/२३/२४/२५/२६/२७/२८/२९/३०/३१/३२/३३/३४/३५/३६/३७/३८/३९/४०/४१/४२/४३/४४/४५/४६/४७/४८/४९/५०/५१/५२/५३/५४/५५/५६/५७/५८/५९/६०/६१/६२/६३/६४/६५/६६/६७/६८/६९/७०/७१/७२/७३/७४/७५/७६/७७/७८/७९/८०/८१/८२/८३/८४/८५/८६/८७/८८/८९/९०/९१/९२/९३/९४/९५/९६/९७/९८/९९/१००/१०१/१०२/१०३/१०४/१०५/१०६/१०७/१०८/१०९/११०/१११/११२/११३/११४/११५/११६/११७/११८/११९/१२०/१२१/१२२/१२३/१२४/१२५/१२६/१२७/१२८/१२९/१३०/१३१/१३२/१३३/१३४/१३५/१३६/१३७/१३८/१३९/१४०/१४१/१४२/१४३/१४४/१४५/१४६/१४७/१४८/१४९/१५०/१५१/१५२/१५३/१५४/१५५/१५६/१५७/१५८/१५९/१६०/१६१/१६२/१६३/१६४/१६५/१६६/१६७/१६८/१६९/१७०/१७१/१७२/१७३/१७४/१७५/१७६/१७७/१७८/१७९/१८०/१८१/१८२/१८३/१८४/१८५/१८६/१८७/१८८/१८९/१९०/१९१/१९२/१९३/१९४/१९५/१९६/१९७/१९८/१९९/२००/२०१/२०२/२०३/२०४/२०५/२०६/२०७/२०८/२०९/२१०/२११/२१२/२१३/२१४/२१५/२१६/२१७/२१८/२१९/२२०/२२१/२२२/२२३/२२४/२२५/२२६/२२७/२२८/२२९/२३०/२३१/२३२/२३३/२३४/२३५/२३६/२३७/२३८/२३९/२४०/२४१/२४२/२४३/२४४/२४५/२४६/२४७/२४८/२४९/२५०/२५१/२५२/२५३/२५४/२५५/२५६/२५७/२५८/२५९/२६०/२६१/२६२/२६३/२६४/२६५/२६६/२६७/२६८/२६९/२७०/२७१/२७२/२७३/२७४/२७५/२७६/२७७/२७८/२७९/२८०/२८१/२८२/२८३/२८४/२८५/२८६/२८७/२८८/२८९/२९०/२९१/२९२/२९३/२९४/२९५/२९६/२९७/२९८/२९९/३००/३०१/३०२/३०३/३०४/३०५/३०६/३०७/३०८/३०९/३१०/३११/३१२/३१३/३१४/३१५/३१६/३१७/३१८/३१९/३२०/३२१/३२२/३२३/३२४/३२५/३२६/३२७/३२८/३२९/३३०/३३१/३३२/३३३/३३४/३३५/३३६/३३७/३३८/३३९/३४०/३४१/३४२/३४३/३४४/३४५/३४६/३४७/३४८/३४९/३५०/३५१/३५२/३५३/३५४/३५५/३५६/३५७/३५८/३५९/३६०/३६१/३६२/३६३/३६४/३६५/३६६/३६७/३६८/३६९/३७०/३७१/३७२/३७३/३७४/३७५/३७६/३७७/३७८/३७९/३८०/३८१/३८२/३८३/३८४/३८५/३८६/३८७/३८८/३८९/३९०/३९१/३९२/३९३/३९४/३९५/३९६/३९७/३९८/३९९/४००/४०१/४०२/४०३/४०४/४०५/४०६/४०७/४०८/४०९/४१०/४११/४१२/४१३/४१४/४१५/४१६/४१७/४१८/४१९/४२०/४२१/४२२/४२३/४२४/४२५/४२६/४२७/४२८/४२९/४३०/४३१/४३२/४३३/४३४/४३५/४३६/४३७/४३८/४३९/४४०/४४१/४४२/४४३/४४४/४४५/४४६/४४७/४४८/४४९/४५०/४५१/४५२/४५३/४५४/४५५/४५६/४५७/४५८/४५९/४६०/४६१/४६२/४६३/४६४/४६५/४६६/४६७/४६८/४६९/४७०/४७१/४७२/४७३/४७४/४७५/४७६/४७७/४७८/४७९/४८०/४८१/४८२/४८३/४८४/४८५/४८६/४८७/४८८/४८९/४९०/४९१/४९२/४९३/४९४/४९५/४९६/४९७/४९८/४९९/५००/५०१/५०२/५०३/५०४/५०५/५०६/५०७/५०८/५०९/५१०/५११/५१२/५१३/५१४/५१५/५१६/५१७/५१८/५१९/५२०/५२१/५२२/५२३/५२४/५२५/५२६/५२७/५२८/५२९/५३०/५३१/५३२/५३३/५३४/५३५/५३६/५३७/५३८/५३९/५४०/५४१/५४२/५४३/५४४/५४५/५४६/५४७/५४८/५४९/५५०/५५१/५५२/५५३/५५४/५५५/५५६/५५७/५५८/५५९/५६०/५६१/५६२/५६३/५६४/५६५/५६६/५६७/५६८/५६९/५७०/५७१/५७२/५७३/५७४/५७५/५७६/५७७/५७८/५७९/५८०/५८१/५८२/५८३/५८४/५८५/५८६/५८७/५८८/५८९/५९०/५९१/५९२/५९३/५९४/५९५/५९६/५९७/५९८/५९९/६००/६०१/६०२/६०३/६०४/६०५/६०६/६०७/६०८/६०९/६१०/६११/६१२/६१३/६१४/६१५/६१६/६१७/६१८/६१९/६२०/६२१/६२२/६२३/६२४/६२५/६२६/६२७/६२८/६२९/६३०/६३१/६३२/६३३/६३४/६३५/६३६/६३७/६३८/६३९/६४०/६४१/६४२/६४३/६४४/६४५/६४६/६४७/६४८/६४९/६५०/६५१/६५२/६५३/६५४/६५५/६५६/६५७/६५८/६५९/६६०/६६१/६६२/६६३/६६४/६६५/६६६/६६७/६६८/६६९/६७०/६७१/६७२/६७३/६७४/६७५/६७६/६७७/६७८/६७९/६८०/६८१/६८२/६८३/६८४/६८५/६८६/६८७/६८८/६८९/६९०/६९१/६९२/६९३/६९४/६९५/६९६/६९७/६९८/६९९/७००/७०१/७०२/७०३/७०४/७०५/७०६/७०७/७०८/७०९/७१०/७११/७१२/७१३/७१४/७१५/७१६/७१७/७१८/७१९/७२०/७२१/७२२/७२३/७२४/७२५/७२६/७२७/७२८/७२९/७३०/७३१/७३२/७३३/७३४/७३५/७३६/७३७/७३८/७३९/७४०/७४१/७४२/७४३/७४४/७४५/७४६/७४७/७४८/७४९/७५०/७५१/७५२/७५३/७५४/७५५/७५६/७५७/७५८/७५९/७६०/७६१/७६२/७६३/७६४/७६५/७६६/७६७/७६८/७६९/७७०/७७१/७७२/७७३/७७४/७७५/७७६/७७७/७७८/७७९/७८०/७८१/७८२/७८३/७८४/७८५/७८६/७८७/७८८/७८९/७९०/७९१/७९२/७९३/७९४/७९५/७९६/७९७/७९८/७९९/८००/८०१/८०२/८०३/८०४/८०५/८०६/८०७/८०८/८०९/८१०/८११/८१२/८१३/८१४/८१५/८१६/८१७/८१८/८१९/८२०/८२१/८२२/८२३/८२४/८२५/८२६/८२७/८२८/८२९/८३०/८३१/८३२/८३३/८३४/८३५/८३६/८३७/८३८/८३९/८४०/८४१/८४२/८४३/८४४/८४५/८४६/८४७/८४८/८४९/८५०/८५१/८५२/८५३/८५४/८५५/८५६/८५७/८५८/८५९/८६०/८६१/८६२/८६३/८६४/८६५/८६६/८६७/८६८/८६९/८७०/८७१/८७२/८७३/८७४/८७५/८७६/८७७/८७८/८७९/८८०/८८१/८८२/८८३/८८४/८८५/८८६/८८७/८८८/८८९/८९०/८९१/८९२/८९३/८९४/८९५/८९६/८९७/८९८/८९९/९००/९०१/९०२/९०३/९०४/९०५/९०६/९०७/९०८/९०९/९१०/९११/९१२/९१३/९१४/९१५/९१६/९१७/९१८/९१९/९२०/९२१/९२२/९२३/९२४/९२५/९२६/९२७/९२८/९२९/९३०/९३१/९३२/९३३/९३४/९३५/९३६/९३७/९३८/९३९/९४०/९४१/९४२/९४३/९४४/९४५/९४६/९४७/९४८/९४९/९५०/९५१/९५२/९५३/९५४/९५५/९५६/९५७/९५८/९५९/९६०/९६१/९६२/९६३/९६४/९६५/९६६/९६७/९६८/९६९/९७०/९७१/९७२/९७३/९७४/९७५/९७६/९७७/९७८/९७९/९८०/९८१/९८२/९८३/९८४/९८५/९८६/९८७/९८८/९८९/९९०/९९१/९९२/९९३/९९४/९९५/९९६/९९७/९९८/९९९/१०००

अधिष्ठित (भू० का० क०) १ उहरा हुआ । स्थापित ।
बसा हुआ । २ नियुक्त । निर्वाचित । ३ रक्षित ।
देखरेख में । अधिकार में । प्रभावान्वित ।
आतङ्कित ।

अधीकारः देखो “अधिकारः”

“स्वागतं स्वाध्यायकारावबलंय ।”

—कुमारसम्भव ।

अधीतिन् (वि०) सुपठित । भलीभाँति पढ़ा हुआ ।
अधीतिः (स्त्री०) १ अध्ययन । पाठ । २ स्मृति ।
स्मरणशक्ति । याददातन ।

अधीन (वि०) आश्रित । मातहत । वशीभूत ।

अधीयानः (वि०) छात्र । विद्यार्थी । छात्र जो वेद
पढ़ता हो ।

अधीर (वि०) १ भीरु । डरपोक । कायर । २ बबड़ाया
हुआ । उत्तेजित । उद्विग्न । व्याकुल । विह्वल । ३
चंचल । अस्थिर । बेसब । उतावला ।

अधीरा (स्त्री०) १ बिजली । विद्युत् । २ कलह-
प्रिया स्त्री ।

अधीवासः (पु०) चुगा । चोरा ।

अधीशः (पु०) १ स्वामी । मालिक । सरदार । राजा ।

अधीश्वरः (पु०) १ मालिक । स्वामी । (२) भूपति ।
राजा । अधिपति ।

अधीष्ट (वि०) अवैतनिक । सत्कारपूर्वक किसी व्यापार
में नियुक्त । सविनय प्रार्थित ।

अधीष्टः (पु०) अवैतनिक पद या कार्य ।

अधीना (अव्यया०) सम्पत्ति । इस समय । अब ।
आजकल ।

अधीनातन (वि०) [स्त्री०—अधीनातनी] आधुनिक ।
अर्वाचीन ।

अधीमकः (पु०) जलती हुई आग जिसमें धुआं न हो ।

अधीतिः (स्त्री०) १ एति का अभाव । अधीरता ।

२ असुख । ३ चंचलता । दृढ़ता का अभाव ।
बबड़ाहट । आलुरता ।

अधीत्य (वि०) १ दुर्जेय । जिसके समीप कोई न पहुँच
सके । २ शर्मीला । ३ अभिमानी । गर्वीला ।

अधीऽत्त } देखो “अधत्”
अधीऽशुक }

अधीऽत्तजः (पु०) १ परब्रह्म । २ विष्णु । ज्ञानी ।
जीवन्मुक्त ।

अधीत्य (वि०) १ इन्द्रियगोचर । २ व्यापक । विस्तृत ।

अधीत्यः (पु०) १ देखरेख करने वाला । किसी विषय
का अधिकारी । पर्यवेक्षक । व्यवस्थापक । २ क्षीरिका
वृक्ष ।

अधीत्यरं (न०) ओङ्कार ।

अधीति (अव्यया०) विवाह के समय हवन करने के अग्नि
के समीप या ऊपर । (न०) स्त्रीधन । वह धन जो
वर को अग्नि की साक्षी में वधू के माता पिता
देते हैं ।

अधीति (अव्यया०) ऊपर । ऊँचे पर ।

अधीतिक्षेपः (पु०) बुरी बुरी गालियाँ । अत्यन्त
कुत्सित कुवाच्य । उग्र भर्त्सना ।

अधीधीन (वि०) नितान्त अधीन । निपट वशवर्ती ।
बिका हुआ दास । जन्म का दास ।

अधीयः (पु०) विद्या । अध्ययन । स्मरणशक्ति ।

अधीयनम् (न०) १ पढ़ना (विशेष कर वेदों का) अर्थ
सहित अक्षरों को ग्रहण करना । २ ब्राह्मणों के
शास्त्र विहित पट् कर्मों में से एक ।

अधीध्र (वि०) वह जिसके पास अतिरिक्त आधा हो ।

अधीध्रानम् (न०) उद्योग । निश्चय । (प्रकृत और
अप्रकृत की) इस प्रकार की पहचान जिससे यह
बोध हो जाय कि एक दूसरे में सम्पूर्णतः लीन
हो गया ।

अधीवसायः (पु०) १ उद्योग । २ इदं विचार ।
सङ्कल्प । ३ बुद्धि सम्बन्धी व्यापार । ४ किसी
पदार्थ का ज्ञान होने के समय रजोगुण और
तमोगुण की न्यूनता होने पर जो सत्वगुण का
प्रादुर्भाव होता है उसे अधीवसाय कहते हैं । ५

लगातार उद्योग । अविश्रान्त परिश्रम । ५ उत्साह ।
निश्चय । प्रतीति ।

अध्यवसायिन् (न०) १ लगातार उद्योग करनेवाला ।
परिश्रमी । उद्योगी । उद्यमी । २ उत्साही ।

अध्ययानं (न०) अधिक भोजन । एक बार भर पेट
खा लेने पर, उसके न पचते पचते पुनः खा लेना ।
अजीर्ण । अन्नपच ।

अध्यात्म (वि०) आत्मा सम्बन्धी ।—ज्ञानम् (न०)
आत्मा अनात्मा का विवेक ।—विद्या (स्त्री०)
अध्यात्मतत्त्व । जीव और ब्रह्म का स्वरूप बतलाने
वाली विद्या ।

अध्यात्मं (न०) आत्मा । देह । मन । “स्वभावोऽध्या-
त्ममुच्यते” गीता के इस वाक्यानुसार स्वभाव को
अध्यात्म कहते हैं । श्रीधर के मतानुसार प्रत्येक
शरीर में परब्रह्म की जो सत्ता या अंश वर्तमान
रहता है, वही अध्यात्म कहलाता है ।

अध्यात्मिक (वि०) [स्त्री०—अध्यात्मकी] अध्यात्म
सम्बन्धी ।

अध्यापकः (पु०) शिक्षक । गुरु । उपाध्याय । पढ़ाने
वाला । (विशेषकर वेदों का) विष्णुस्मृति के
अनुसार अध्यापक के दो भेद हैं । एक आचार्य
जो द्विज बालक का उपनयन संस्कार कर उसे वेद
पढ़ने का अधिकारी बनाता है और दूसरा
उपाध्याय जो अपने छात्र को वृत्त्यर्थ कोई विद्या
पढ़ा देता है ।

अध्यापनम् (न०) पढ़ाना । शिक्षा देना । ब्राह्मणों
के षट् कर्त्तव्यों में से एक । स्मृतिकारों के मतानुसार
अध्यापन तीन प्रकार का है । १ धर्मार्थ पढ़ाना । २ शुल्क लेकर पढ़ाना ।
३ सेवा के बदले पढ़ाना ।

अध्यापयितु (पु०) शिक्षक । पढ़ाने वाला ।

अध्यायः (पु०) १ पाठ । अध्ययन (विशेषतः वेदों
का) । २ अध्ययन का उपयुक्त काल । पाठ । उपदेश ।
३ प्रकरण । किसी ग्रन्थ का एक बड़ा भाग ।
संस्कृतकोशकारों ने अध्याय के पर्यायवाची
ये शब्द बतलाये हैं:—

बर्गो वर्गः परिच्छेदोद्घाताध्यायः ।
उच्छ्वासः परिवर्तश्च पटलः काष्ठसानन ॥
स्थानं प्रकरणं चैव पर्वोद्घाताध्यायानि च ।
स्कन्धांशौ तु पुराणादौ माययः परिकीर्तितौ ॥

अध्यायिन् (वि०) पढ़ने वाला । अध्ययनशील ।

अध्यायुद्ध (वि०) १ चढ़ा हुआ । मवार । २ ऊपर
उठा हुआ । उन्नत पर पहुँचा हुआ । ३ ऊँचा ।
श्रेष्ठ । ४ नीचा । अनुत्तम ।

अध्यारोपः (पु०) १ उठाना । ऊँचा करना । २
(वेदान्त मतानुसार) भ्रमवश दूसरी वस्तु को
दूसरी वस्तु समझना यथा रस्ती को साँप सम-
झना । ३ मिथ्याज्ञान ।

अध्यारोपणं (न०) १ उठाना । २ बोना (बीजों का) ।

अध्यावापः (पु०) (बीजों को) बोने या बोने के
लिये छितराने की क्रिया । २ खेत जिसमें बीज
बोये जाँय ।

अध्यावाहनिकम् (न०) छः प्रकार के उन स्त्रीधनों
में से एक जिसे स्त्री समुराल जाते समय अपने
माता पिता से पाती है ।

“यत् पुनर्लभते नारी नोद्यमात्रा तु पैतृकात् । (गृध्रात्)

अध्यावाहनिकम् नाम स्त्रीधनं परिकीर्तितम्”

अध्यासः (पु०) १ किसी पर बैठना । (किसी स्थान
अध्यासनम् न०) १ को) रोकना या छेकना । अध्यक्ष
का काम करना । २ बैठकी । स्थान ।

अध्यासः (पु०) देखो अध्यारोप । मिथ्याज्ञान ।
उपाङ्ग । अनुपङ्ग ।

अध्याहारः (पु०) १ किसी वाक्य को पूरा करने
अध्याहरणम् (न०) १ के लिये उसमें छूटी हुई बात
को मिला कर उस वाक्य को पूरा करना । वाक्य
को पूरा करने के लिये उसमें ऊपर से कोई शब्द
मिलाना या जोड़ना । २ तर्क वितर्क । उदाबोध ।
विचार । बहस । विचिकित्सा ।

अध्युष्टः (पु०) गाड़ी जिसमें ऊँट जुते हों ।
चौपहिया ।

अध्युद्ध (वि०) ऊपर को उठा हुआ । उमड़ा हुआ ।

अध्युद्धः (पु०) शिव ।

अध्यूह (स्त्री०) “ अधिविज्ञा ” देखो ।
 अध्येषणम् (न०) प्रार्थना । कोई कार्य कराने की प्रार्थना ।
 अध्येषणा (स्त्री०) प्रार्थना । याचना ।
 अध्रुव (वि०) १ सन्दिग्ध । संशयपूर्ण । २ अस्थायी ।
 विनश्वर । अदृढ़ । अलग किये जाने वाला ।
 अध्रुवं (न०) अनिश्चयता ।
 अध्वन् (पु०) १ मार्ग । रास्ता । सड़क । नल्लों के धूमने का मार्ग । २ अन्तर । बीच । फासला । ३ समय । काल । मूर्तिमान काल । ४ आकाश । वातावरण । ५ विधि । उपाय । प्रक्रिया । ६ आक्रमण ।
 अध्वगः (पु०) १ पथिक । राहगीर । मुसाफिर । २ ऊँट । ३ खच्चर । ४ सूर्य ।
 अध्वगा (स्त्री०) गङ्गा ।—पति (पु०) सूर्य ।—रथः (पु०) १ पालकी गाड़ी । २ हल्कारा ।
 अध्वनीन } (वि०) यात्रा करने योग्य ।
 अध्वन्य }
 अध्वनीनः } (पु०) तेज चलने वाला यात्री ।
 अध्वन्यः }
 अध्वरः (पु०) यज्ञ । एक धार्मिक कृत्य विशेष । सोमयाग ।
 अध्वरम् (न०) आकाश या अन्तरिक्ष ।
 अध्वरमीमांसा (स्त्री०) जैमिनि प्रणीत पूर्वमीमांसा का नाम ।
 अध्वर्युः (पु०) १ यज्ञ कराने वाला । अश्विक । यजुर्वेद का जानने वाला । पुरोहित । २ यजुर्वेद ।
 —वेदः (पु०) यजुर्वेद ।
 अध्वति देखो “ अध्वगः ” ।
 अध्वान्तम् (न०) प्रदोषकाल । गोधूलिबेला । उषा । काकज्योत्स्ना । तिमिर । अन्धकार ।
 अधन् (धातु० पर०) [अनिति, अनित] स्वांस लेना । प्राण धारण करना । हिलना डोलना । जीना ।
 अधनः (पु०) स्वांस ।
 अनंश (वि०) पैतृक सम्पत्ति में भाग न पाने वाला ।

अनंशु मत्फला (स्त्री०) कदलीवृक्ष । केले का पेड़ ।
 अनकदुन्दभिः (पु०) श्री कृष्ण के पिता वसुदेव की उपाधि ।
 अनकदुन्दभी (स्त्री०) ढोल । नगाड़ा ।
 अनक्ष (वि०) नेत्रहीन । दृष्टिरहित । अंधा ।
 अनक्षर (वि०) १ गूंगा । २ अनपढ़ । ३ उच्चारण करने के अयोग्य ।
 अनक्षरम् (न०) गाली । कुवाच्य । भर्त्सना । डाँट डपट ।
 अनशिः (पु०) १ श्रौतस्मार्तकर्महीन । अग्निहोत्र रहित । २ अधार्मिक । अपवित्र । ३ वह जो अनपच रोग से पीड़ित हो । कब्जित रोग वाला । ४ अविवाहित । जिसका ब्याह न हुआ हो ।
 अनय (वि०) १ पापरहित । निर्दोष । २ त्रुटि रहित । सुन्दर । खूबसूरत । ३ सुरक्षित । अनचोटिल । जिसके चोट न लगी हो । ४ विद्युद् । कलङ्क रहित ।
 अनघः (पु०) १ सफेद सरसों या राई । २ विष्णु का नाम । शिव का नाम ।
 अनङ्कुश } (वि०) १ जो दबाव में न रहै ।
 अनङ्कुश } डहण्ड । २ कविस्वातन्त्र्य (Poetic License) का उपभोग करने वाला ।
 अनङ्ग } (वि०) १ शरीररहित । अशरीरी ।
 अनङ्ग } —क्रीड़ा (स्त्री०) प्रेमालापमयी क्रीडा । बिहार । प्रेमी और प्रेयसी का पारस्परिक प्रेमालाप पूर्वक क्रीडन । —लेखः (पु०) प्रेमपत्र । —शत्रुः—असुहृत् (पु०) शिवजी का नाम ।
 अनङ्गः } (पु०) कामदेव ।
 अनङ्गः }
 अनङ्गम् } (न०) १ आकाश । पवन । एक प्रकार का अति सूक्ष्म वायवीय पदार्थ । ईंधन । २ मन ।
 अनङ्गम् }
 अनङ्गम् } (वि०) बिना सुर्मा का ।
 अनङ्गम् } (न०) १ आकाश । व्योम । २ परब्रह्म ।
 अनङ्गम् } विष्णु या नारायण ।
 अनुहु (पु०) (अनुज्ञा) १ बैत । साँढ़ । २ क्षपराणि ।

लगातार उद्योग । अविश्रान्त परिश्रम । ५ उत्साह । निश्चय । प्रतीति ।

अध्यवसायिन् (न०) १ लगातार उद्योग करनेवाला । परिश्रमी । उद्योगी । उद्यमी । २ उत्साही ।

अध्यशनं (न०) अधिक भोजन । एक बार भर पेट खा लेने पर, उसके न पचते पचते पुनः खा लेना । अजीर्ण । अनपच ।

अध्यात्म (वि०) आत्मा सम्बन्धी ।—ज्ञानम् (न०) आत्मा अनात्मा का विवेक ।—विद्या (स्त्री०) अध्यात्मतत्त्व । जीव और ब्रह्म का स्वरूप बतलाने वाली विद्या ।

अध्यात्मं (न०) आत्मा । देह । मन । “स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते” गीता के इस वाक्यानुसार स्वभाव को अध्यात्म कहते हैं । श्रीधर के मतानुसार प्रत्येक शरीर में परब्रह्म की जो सत्ता या अंश वर्तमान रहता है, वही अध्यात्म कहलाता है ।

अध्यात्मिक (वि०) [स्त्री०—अध्यात्मकी] अध्यात्म सम्बन्धी ।

अध्यापकः (पु०) शिक्षक । गुरु । उपाध्याय । पढ़ाने वाला । (विशेषकर वेदों का) विष्णुस्मृति के अनुसार अध्यापक के दो भेद हैं । एक आचार्य जो द्विज बालक का उपनयन संस्कार कर उसे वेद पढ़ने का अधिकारी बनाता है और दूसरा उपाध्याय जो अपने छात्र को वृत्त्यर्थ कोई विद्या पढ़ा देता है ।

अध्यापनम् (न०) पढ़ाना । शिक्षा देना । ब्राह्मणों के पद कर्तव्यों में से एक । स्मृतिकारों के मतानुसार अध्यापन तीन प्रकार का है । १ धर्मार्थ पढ़ाना । २ शुल्क लेकर पढ़ाना । ३ सेवा के बदले पढ़ाना ।

अध्यापयितृ (पु०) शिक्षक । पढ़ाने वाला ।

अध्यायः (पु०) १ पाठ । अध्ययन (विशेषतः वेदों का) । २ अध्ययन का उपयुक्त काल । पाठ । उपदेश । ३ प्रकरण । किसी ग्रन्थ का एक बड़ा भाग । संस्कृतकेशिकारों ने अध्याय के परियायवाची ये शब्द बतलाये हैं:—

कर्णो वर्गः परिच्छेदोद्घाताध्यायाकसंग्रहाः ।
उच्छ्वासः परिवर्तन पटलः काण्डभाजन ॥
स्थानं प्रकरणं चैव पर्वोऽस्त्राशाहिकानि च ।
स्कन्धांश्चैव तु पुराणाश्चैव भाष्यः परिकीर्तितौ ।

अध्यायिन् (वि०) पढ़ने वाला । अध्ययनशील ।

अध्यारूढ (वि०) १ चढ़ा हुआ । सवार । २ ऊपर उठा हुआ । उन्नत पर पहुँचा हुआ । ३ ऊँचा । श्रेष्ठ । ४ नीचा । अनुत्तम ।

अध्यारोपः (पु०) १ उठाना । ऊँचा करना । २ (वेदान्त मतानुसार) अमवश दूसरी वस्तु को दूसरी वस्तु समझना यथा रस्सी को साँप समझना । ३ मिथ्याज्ञान ।

अध्यारोपणं (न०) १ उठाना । २ बोना (बीजों का) ।

अध्यावापः (पु०) (बीजों का) बोने या बोने के लिये छितराने की क्रिया । २ खेत जिसमें बीज बोये जाँय ।

अध्यावाहनिकम् (न०) छः प्रकार के उन स्त्रीधनों में से एक जिसे स्त्री ससुराल जाते समय अपने माता पिता से पाती है ।

“यत् पुनर्लभते नारी नीवनात्तु पौतृकात् । (गृह्यसूत्र)

अध्यावाहनिकम् नाम स्त्रीधनं परिकीर्तितम्”

अध्यास्तः (पु०) १ किसी पर बैठना । (किसी स्थान अध्यासनम् न०) १ को) रोकना या छेकना । अध्यस्त का काम करना । २ बैठकी । स्थान ।

अध्यास्तः (पु०) देखो अध्यारोप । मिथ्याज्ञान । उपाङ्ग । अनुषङ्ग ।

अध्याहारः (पु०) १ किसी वाक्य को पूरा करने अध्याहरणम् (न०) १ के लिये उसमें छूटी हुई बात को मिला कर उस वाक्य को पूरा करना । वाक्य को पूरा करने के लिये उसमें ऊपर से कोई शब्द मिलाना या जोड़ना । २ तर्क वितर्क । उद्भावोद् । विचार । बहस । विचिकित्सा ।

अध्युष्टः (पु०) गाड़ी जिसमें ऊँट जुते हों । चौपहिया ।

अध्यूढ (वि०) ऊपर को उठा हुआ । उमड़ा हुआ ।

अध्यूढः (पु०) शिव ।

अध्यूह (स्त्री०) “ अधिविज्ञा ” देखो ।
 अध्येषणम् (न०) प्रार्थना । कोई कार्य करने की प्रार्थना ।
 अध्येषणा (स्त्री०) प्रार्थना । याचना ।
 अध्रुव (वि०) १ सन्दिग्ध । संशयपूर्ण । २ अस्थायी ।
 विनश्वर । अटढ़ । अलग किये जाने वाला ।
 अध्रुवं (न०) अनिश्चयता ।
 अध्वन् (पु०) १ मार्ग । रास्ता । सड़क । नक्षत्रों के घूमने का मार्ग । २ अन्तर । बीच । फासला । ३ समय । काल । मूर्तिमान काल । ४ आकाश । वातावरण । ५ विधि । उपाय । प्रक्रिया । ६ आक्रमण ।
 अध्वगः (पु०) १ पथिक । राहगीर । मुसाफिर । २ ऊँट । ३ खच्चर । ४ सूर्य ।
 अध्वगा (स्त्री०) गङ्गा ।—पति (पु०) सूर्य ।—रथः (पु०) १ पालकी गाड़ी । २ हल्कारा ।
 अध्वनीन } (वि०) यात्रा करने योग्य ।
 अध्वन्य }
 अध्वनीनः } (पु०) तेज चलने वाला यात्री ।
 अध्वन्यः }
 अध्वरः (पु०) यज्ञ । एक धार्मिक कृत्य विशेष ।
 सोमयाग ।
 अध्वरम् (न०) आकाश या अन्तरिक्ष ।
 अध्वरमांसा (स्त्री०) जैमिनि प्रणीत पूर्वमीमांसा का नाम ।
 अध्वर्युः (पु०) १ यज्ञ कराने वाला । ऋत्विक् ।
 यजुर्वेद का जानने वाला । पुरोहित । २ यजुर्वेद ।
 —वेदः (पु०) यजुर्वेद ।
 अध्वान्ति देखो “ अध्वगः ” ।
 अध्वान्तम् (न०) प्रदोषकाल । गोधूलिबेला ।
 उषा । काकज्योत्स्ना । तिमिर । अश्वकार ।
 अन् (धातु० पर०) [अनिति, अनित] स्वांस लेना ।
 प्राण धारण करना । हिलना डोलना । जीना ।
 अन्ः (पु०) स्वांस ।
 अनंश (वि०) पैतृक सम्पत्ति में भाग न पाने वाला ।

अनंशुमत्फला (स्त्री०) कदलीवृक्ष । केले का पेड़ ।
 अनकदुन्दभिः (पु०) श्री कृष्ण के पिता वसुदेव की उपाधि ।
 अनकदुन्दभी (स्त्री०) ढोल । नगाड़ा ।
 अनल (वि०) नेत्रहीन । दृष्टिरहित । अंधा ।
 अनन्तर (वि०) १ गंगा । २ अनपद । ३ उच्चारण करने के अयोग्य ।
 अनन्तरम् (न०) गाली । कुवाच्य । भर्त्सना । डाँट डपट ।
 अनन्निः (पु०) १ श्रौतस्मार्तकर्महीन । अग्निहोत्र रहित । २ अधार्मिक । अपवित्र । ३ वह जो अनपच रोग से पीड़ित हो । कब्जित रोग वाला । ४ अविवाहित । जिसका व्याह न हुआ हो ।
 अनघ (वि०) १ पापरहित । निर्दोष । २ त्रुटि रहित । सुन्दर । खूबसूरत । ३ सुरक्षित । अनचोटिल । जिसके चोट न लगी हो । ४ विशुद्ध । कलङ्क रहित ।
 अनघः (पु०) १ सफेद सरसों या राई । २ विष्णु का नाम । शिव का नाम ।
 अनङ्कुश } (वि०) १ जो दबाव में न रहै ।
 अनङ्कुश } उद्वेग । २ कविस्वातंत्र्य (Poetic License) का उपभोग करने वाला ।
 अनङ्ग } (वि०) १ शरीररहित । अशरीरी ।
 अनङ्ग } —क्रीड़ा (स्त्री०) प्रेमालापमयी क्रीड़ा ।
 विहार । प्रेमी और प्रेयसी का पारस्परिक प्रेमालाप पूर्वक क्रीडन । —लेखः (पु०) प्रेमपत्र । —
 शत्रुः—असुहृत् (पु०) शिवजी का नाम ।
 अनङ्गः } (पु०) कामदेव ।
 अनङ्गः }
 अनङ्गम् } (न०) १ आकाश । पवन । एक प्रकार
 अनङ्गम् } का अति सूक्ष्म वायवीय पदार्थ । ईथर ।
 २ मन ।
 अनङ्जन } (वि०) बिना सुर्मा का ।
 अनङ्जन }
 अनङ्जनम् } (न०) १ आकाश । ज्योम । २ परब्रह्म ।
 अनङ्जनम् } विष्णु या नारायण ।
 अनुहु (पु०) (अनुहान्) १ बैल । साँड़ । २
 वृषराशि ।

अनङ्गुही } (स्त्री०) गौ । गाय ।
अनङ्गाही }

अनति (अव्यया०) बहुत अधिक नहीं ।

अनतिरेकः (पु०) अमेद ।

अनतिविलम्बिता (स्त्री०) १ विलम्ब का अभाव ।
२ वक्ता का एक गुण । ३५ वाग्युष्ण हैं, उनमें
से एक ।

अनद्यः (पु०) सफेद सरसों ।

अनद्यतन (वि०) व्याकरण में क्रिया का काल-
विशेष-बोधक शब्द ।

अनद्यतनः (पु०) आज का दिन नहीं ।

अनधिक (वि०) १ अधिक या अत्यधिक नहीं । २
असीम । पूर्ण ।

अनधीनः (पु०) बड़ई जो रोजनदारी पर काम न
कर स्वतंत्र अपने लिये ही काम करे ।

अनध्यक्ष (वि०) १ जो देख न पड़े । अगोचर । अदृष्ट ।
२ अध्यक्ष या नियन्ता बर्जित ।

अनध्यायः (पु०) अध्ययन के लिये अनुपयुक्त समय
या दिन । पढ़ने के लिये निषिद्ध काल या दिन ।
छुटी का दिन ।

अननम् (न०) स्वांस लेना । प्राण धारण करना ।

अननुभावुक (वि०) धारण करने के अयोग्य । न
समझने लायक ।

अनन्त } (वि०) अन्तरहित । निस्सीम । सीमा
अनन्त } रहित । कभी समाप्त न होने वाला ।—

तृतीया (स्त्री०) भाद्रपद शुक्ला तृतीया । मार्ग-
शीर्ष शुक्ला तृतीया और वैशाख शुक्ला तृतीया ।—

द्वष्टिः (पु०) इन्द्र या शिव का नाम । —देवः

(पु०) १ शेषनाग । २ शेषशायी नारायण का

नाम । —पार (वि०) । अन्तरहित चौड़ाई या

औड़ाई । निस्सीम । —रूप १ (वि०)

संख्यातीत आकार प्रकार का । २ विष्णु भगवान

की उपाधि । —विजयः (पु०) युधिष्ठिर के

शङ्ख का नाम ।

अनन्तः—(पु०) १ विष्णु का नाम । शेष जी का
नाम । श्रीकृष्ण और उनके भाई का नाम । शिव

का नाम । वासुकी नाग का नाम । २ बादल ।

३ एक प्रकार का मसृण खनिज पदार्थ । अन्नक ।

४ अनन्ता—जो एक रेशम का डोरा होता है
और जिसमें १४ गांठे लगा कर अनन्त चतुर्दशी
के दिन दहिनी बाँह पर बाँधा जाता है ।

अनन्तम् (न०) १ आकाश । ज्योम । २ अनन्तकाल ।

३ निस्तार । उद्धार । अव्याहति । पापमोचन ।

पापक्षमापन । ४ परब्रह्म ।

अनन्तर } (वि०) १ जिसके भीतर स्थान न हो ।

अनन्तर } निस्सीम । २ दृढ़ । धन । ३ जो बहुत दूर

न हो । अति निकट का । मिला हुआ । सदा हुआ

(जड़ा हुआ) —जः (पु०) या—जा (स्त्री०)

क्षत्रिय या वैश्य माता के गर्भ तथा ब्राह्मण वा

क्षत्रिय पिता के वीर्य से उत्पन्न । २ छोटा या बड़ा

भाई या बहिन ।

अनन्तरम्, अनन्तरम् (न०) १ निरन्तरता । २ ब्रह्म ।

अनन्तरम्, अनन्तरम् (अव्यया०) पीछे । पश्चात् ।

बाद को ।

अनन्तरीय } (वि०) क्रम से एक के बाद दूसरा ।

अनन्तरीय } (वि०) क्रम से एक के बाद दूसरा ।

अनन्तता } (स्त्री०) १ पृथिवी । २ एक की संख्या ।

अनन्तता } ३ पार्वती का नाम । ४ परब्रह्म । ५ कई

पौधों के नाम जैसे, दुर्वा, अनन्तमूल आदि ।

अनन्य (वि०) १ अन्य से सम्बन्ध न रखने वाला । एक-

निष्ठ । एक ही में लीन । २ एकरूप । अमिश्र ।

३ एकमात्र । अद्वितीय । ३ अविभक्त । —गतिः

(स्त्री०) गत्यन्तर रहित । —चित्त, —चिन्त—

चेतस, —मानस्, —मानस, —हृदय (वि०)

एक ही ओर मन या ध्यान लगाने वाला । —जः,

—जन्मन् (पु०) कामदेव । अन्नङ्ग । —पूर्वः (पु०)

जिसकी दूसरी की न हो । —पूर्वा । —(स्त्री०)

कारी । अविवाहिता । जिसका पति न हो । —भाज्

(वि०) स्त्री जो अन्य किसी पुरुष में अनुराग न

रखती हो । —विषय (पु०) वह विषय जिसका किसी

से सम्बन्ध न हो या जिस पर किसी अन्य की सत्ता

न हो । —वृत्ति (वि०) १ एक ही स्वभाव का ।

२ जिसके आजीविका का अन्य कोई द्वार न हो । ३

एकाग्रचित्त । —सामान्य, —साधारण (वि०)

असाधारण । एक ही में जो अनुरागवान् हो ।

एक ही से सम्बन्ध रखने वाला ।—सदृश (वि०)—सदृशी । (स्त्री०) बेजोड़ । अद्वितीय ।

अनन्वयः (पु०) १ अनन्वयशून्य । सम्बन्ध रहित ।
२ अर्थालङ्कार विशेष जिसमें एक ही उपमान और एक ही उपमेय हो ।

अनप (वि०) जिसमें अधिक जल न हो ।

अनपकारणं (न०) १ अनुपकारी । अपकार न करने
अनपकर्मन् (न०) वाला । २ अमोचन । ३ अदा
अनपक्रिया (स्त्री०) न करना ।

अनपकारः (पु०) डुराई नहीं । भलाई । हित ।—
कारिन् (वि०) निर्दोष । अहित शून्य ।

अनपत्य (वि०) सन्तानहीन । सन्ततिवर्जित । जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो ।

अनपत्रप (वि०) निर्लज्ज । बेहया । बेशर्म ।

अनपभ्रंशः (पु०) ठीक ठीक बना हुआ शब्द । शब्द जो विकृत रूप में न हो, अपने शुद्ध रूप में हो ।

अनपसर (वि०) जिसमें से निकलने का कोई मार्ग न हो । २ असमर्थित । अक्षम्य ।

अनपसरः (पु०) बल पूर्वक अधिकार करने वाला
जुवरदस्ती कब्जा करने वाला । बरजोरी दखल करने वाला ।

अनपाय (वि०) अनश्वर । अविनाशी ।

अनपायः (पु०) स्थायित्व । स्थितिशीलता । २ शिवजी का नाम ।

अनपायिन् (वि०) अविनाशी । दद । मज्जवृत्त ।
स्थायी । क्षणभङ्गुर नहीं ।

अनपेक्ष } (वि०) १ अपेक्षावर्जित । निःस्पृह ।
अनपेक्षिन् } २ असावधान ३ स्वतंत्र । जिसे किसी
अन्य व्यक्ति की परवाह न हो । जिसे किसी वस्तु की जरूरत न हो । ४ निर्वैद्य । पक्षपात रहित ।
५ असङ्गत ।

अनपेक्षम् (क्रि० वि०) स्वतंत्रता से । मनसुखकारी ।
यथेच्छ । अनवधानता से ।

अनपेक्षा (स्त्री०) निःस्पृहता । उपेक्षा ।

अनपेत (वि०) १ दूर न निकला हुआ । जो
व्यतीत न हुआ हो । २ जो विपथगामी न हो ।

जो पृथक् न हो । ३ जो विहीन न हो । जो वर्जित न हो । [अनभ्यस्त ।

अनभिज्ञ (वि०) अज्ञ । अनजान । अपरिचित ।

अनभ्यावृत्तिः (स्त्री०) न दुहराना । बारबार आवृत्ति न करना ।

अनभ्याश } (वि०) समीप नहीं । दूर ।
अनभ्यास }

अनभ्र (वि०) मेघविवर्जित ।

अनमः (पु०) वह ब्राह्मण, जो न तो किसी को स्वयं
प्रणाम करे और न किसी को उसके किसे हुए
प्रणाम के बदले आशीर्वाद दे ।

अनमितपञ्च (वि०) कृपणतया । लोभ से ।

अनंबर } (वि०) गंगा । जो कपड़े पहिने न हो ।
अनम्बर }

अनंबरः } (पु०) बौद्ध भिक्षुक ।
अनम्बरः }

अनयः (पु०) १ दुर्न्यवस्था । असदाचरण । अन्याय ।
अनौचित्य । २ दुर्नीति । कुपथ । ३ विपत्ति ।
दुःख । ४ दुर्भाग्य । ५ जुआ ।

अनर्गल (वि०) १ अनियंत्रित । यथेच्छाचारी । २
बिना तालेकुंजी का । खुला हुआ ।

अनर्थ (वि०) अमूल्य । वेशक्रीमती ।

अनर्थः (पु०) अनुचित मूल्य । अयथार्थ मूल्य ।

अनर्थ्य (वि०) अमूल्य । बढ़ा प्रतिष्ठित ।

अनर्थ (वि०) १ निकम्मा । किसी काम का नहीं ।
२ अभागा । दुःखी । ३ हानिकारक । ४
बाहियात । बेमतलब का ।—कर (वि०) ।—
करी (स्त्री०) उपद्रवी । हानिकारी ।

अनर्थः (पु०) १ निष्प्रयोजन या बिना मूल्य का ।
२ कोई वस्तु जो कोई काम की न हो ।
निकम्मी वस्तु । ३ आपत्ति । विपत्ति । बद
क्रिस्मती । दुर्भाग्य । ४ निरर्थक । अर्थशून्यता ।

अनर्थ्य } (वि०) १ अनुपयोगी । अर्थ रहित ।
अनर्थक } २ तुच्छ । ३ बाहियात ४ जो लाभ-
दायक नहीं है । हानिकारी ५ अभागा ।

अनर्थम् } (न०) वाह्यात बातचीत । बेमतलब
अनर्थकम् } की बातचीत ।

अनर्ह (वि०) १ अयोग्य । अवान्छित । २ कोई
काम का नहीं ।

अनलः (पु०) १ अग्नि । २ अग्निदेव । ३ भोजन
पचाने की शक्ति । ४ पित्त । —द (वि०) गर्मी
या अग्नि नाशक या दूर करने वाला । २ वीपन ।
पावन शक्ति बढ़ाने वाला । —प्रिया (स्त्री०)
अग्नि की पत्नी स्वाहा । —सादः (पु०) भूख
का न लगना । कुपच रोग ।

अनलस (वि०) १ आलस्य विवर्जित । कुर्तीला ।
परिश्रमी । २ अयोग्य । अनुपयुक्त ।

अनलप (वि०) १ थोका नहीं । बहुत । २ उदार ।
सज्जन ।

अनवकाश (वि०) १ अवकाश का अभाव । फुरसत
का न होना । २ जो लागू न हो । ३ अप्राप्य ।

अनवग्रह (वि०) अप्रतिरोधनीय । अनिवार्य । अति
प्रबल । स्वच्छन्द ।

अनवच्छिन्न (वि०) निस्सीम । अमर्यादित ।
अचिन्हित । जो काटा गया न हो । जो अलहदा न
किया गया हो । २ अत्यधिक । ३ असंशोधित ।
जिसकी परिभाषा न दी हो । ४ अलखित ।
अदृष्ट ।

अनवद्य (वि०) निर्दोष । निष्कलङ्क । अभर्त्तनीय ।
—अङ्ग, —रूप (वि०) सुन्दर । खूबसूरत । —अङ्गी
(स्त्री०) वह स्त्री, जिसके शरीर की सुन्दरता में
कोई ब्रुति या दोष न हो ।

अनवधान (वि०) असावधान । अमनस्क ।

अनवधानता (स्त्री०) असावधानी । अमनस्कता ।

अनवधि (वि०) निस्सीम । अवधि रहित । अनन्त ।

अनवधम् (वि०) जो नीच या अश्रेष्ठ न हो । श्रेष्ठ ।
उन्नत ।

अनवरत (वि०) निरन्तर । सतत । सदैव ।
रातदिन । लगातार । हमेशा । [समीचीन ।

अनवरार्थ (वि०) मुख्य । श्रेष्ठ । सर्वोत्तम ।

अनवजंघ, अनवजम्भ } (वि०) निराश्रित ।
अनलम्भन, अनवलम्भन } जिसका सहारा न हो ।

अनवलांघः (पु०) अनवलांघम् (न०) । स्वातन्त्र्यः
अनवलम्बः (पु०) अनवलम्बम् (न०) ।

अनवल्लोभनम् (न०) संस्कार विशेष । सीमन्तोन्नयन
के पीछे तीसरे मास में गर्भ का किया जाने वाले
संस्कार ।

अनवसर (वि०) १ बेमौका । कुसमय । १ जिसको
काम काज से फुरसत न मिले ।

अनवसरः (पु०) १ फुरसत का अभाव । २ कुसमयत्व ।

अनवस्कर (वि०) मैल से रहित । साफसुथरा ।

अनवस्थ (वि०) १ अदृढ़ ।

अनवस्था (स्त्री०) अस्थिरता । अस्थिर दशा । २ बुरा
चाल चलन । ३ तर्क शैली का दोष विशेष ।

अनवस्थान (वि०) चंचल । अस्थायी । अदृढ़ ।

अनवस्थानः (पु०) पवन ।

अनवस्थानम् (न०) १ नश्वरता । २ चरित्र सम्बन्धी
निर्बलता ।

अनवस्थित (वि०) १ परिवर्तनीय । अस्थिर ।
२ परिवर्तित । ३ असंयत । अनियंत्रित ।

अनवेसक (वि०) असावधान । लापरवाह ।
निरपेक्ष । [निरपेक्षता ।

अनवेक्षणम् (न०) असावधानी । लापरवाही ।

अनशनम् (न०) उपवास । भूखों मरना ।

अनश्वर (वि०) [स्त्री०—अनश्वरी] अविनाशी ।
जो नष्ट न हो । जो नाश को प्राप्त न हो ।

अनसू (न०) १ गाड़ी । २ भोजन । भात । ३ जन्म ।
उत्पत्ति । ४ प्राणधारी । ५ रसोईघर ।

अनसूय } (वि०) बाह से रहित । ईर्ष्या से
अनसूयक } वर्जित ।

अनसूया (स्त्री०) १ ईर्ष्या का अभाव । २ अत्रिमुनि
की पत्नी का नाम । ३ उच्च कोटि का पातिव्रत धर्म ।

अनहन् (न०) बुरा दिन । अभाग्य दिन ।

अनाकालः (पु०) १ कुसमय । बेवक़्त । २ अकाल ।
कहत । —भृतः (पु०) अन्न बिना प्राण जाने
पर, अन्न के लिये अपने को दूसरे का दास बनाने
वाला । [अचञ्चल ।

अनाकुल (वि०) १ शान्त । आत्मसंयत । २ स्थिर ।

अनागत (वि०) १ नहीं आया हुआ । २ अप्राप्त । ३

भविष्यद् ४ अनजान । अज्ञात ।—अवेत्तयां
(न०) आगम देखना । आगे का ज्ञान ।—
आबाधः (पु०) आने वाली विपत्ति ।—
आर्तवा (स्त्री०) कारी, जो जवान नहीं हुई ।—
विधातृ (पु०) वह जो भविष्य के लिये तैयारी करे ।
परिणामदर्शी । पंचतंत्र की कहानी के एक मत्स्य
का नाम ।

अनागमः (पु०) न पहुँचना । न आना । २ अप्राप्ति ।
अनागस् (वि०) निर्दोष । निरपराध । निष्कलङ्क ।
अनाचारः (पु०) निन्दित आचार । शास्त्र विहित
आचारों के विरुद्ध आचरण ।

अनातप (वि०) जो उष्ण न हो । ठंडा ।

अनातुर (वि०) १ जो आतुर न हो । जो उद्विग्न न
हो । २ अपरिश्रान्त । जो थका न हो ।

अनात्मन् (वि०) १ आत्मा रहित । २ जो आत्मा
से सम्बन्ध न रखे । ३ वह जो संयमी न हो
जिसने अपने को बश में न किया हो । (पु०)
आत्मा से भिन्न । अन्य । आत्मा से कोई वस्तु
भिन्न ।—ज्ञ,—वेदिन् (पु०) अपने आपको न
पहचानने वाला । मूर्ख ।—सम्पन्न (वि०) मूर्ख ।

अनात्मनी (वि०) निःस्वार्थी । स्वार्थ रहित ।

अनात्मवत् (वि०) असंयत । अजितेन्द्रिय ।

अनाथ (वि०) नाथरहित । रक्षकवर्जित । गरीब ।
मातृपितृ रहित । यतीस । विधवा ।

अनाथसभा (स्त्री०) मोहताजप्राणा । अनाथालय ।

अनादर (वि०) निरपेक्ष । विचार शून्य ।

अनादरः (पु०) अप्रतिष्ठा । धृष्टता । असम्मान ।

अनादि (वि०) जिसका शुरु न हो । जिसका आरम्भ
काल अज्ञात हो । आदिरहित । सनातन ।

—अनन्त,—अन्त (वि०) अथ और इति रहित ।

आरम्भ और समाप्ति विवर्जित । सनातन ।—

अनन्तः (पु०) भगवान् विष्णु का नाम ।—निधन

(वि०) जिसकी न आदि (आरम्भ) हो और

न अन्त (समाप्ति) । सतत । सनातन ।—

मध्यान्त (वि०) जिसका न तो आरम्भ हो न
मध्य हो और न अन्त हो । सनातन ।

अनादीनव (वि०) निर्दोष । निरपराध ।

अनाद्य (वि०) १ अनादि । २ अभक्ष्य । वह वस्तु
जो खाने योग्य न हो ।

अनानुपूर्व्य (वि०) जो नियत क्रम में न रहै ।

अनाप्त (वि०) १ अप्राप्त । अयोग्य । अनिपुण ।

अनातः (पु०) अनजान । अजनबी ।

अनामक (वि०) नाम रहित । गुमनाम । बदनाम ।

अनामन् (वि०) नामरहित । गुमनाम । अपकी-
र्तित । बदनाम । (पु०) १ लोंव मास । अधिक
मास । २ हाथ की वह उँगली जिसमें अँगूठी
पहनी जाती है । छगुनिया के पास की अँगूली ।
(न०) अशरीर । बवासीर ।

अनामा (स्त्री०) अँगूठी पहनने की उँगली ।
अनामिका (स्त्री०) छगुनिया के पास वाली उँगली ।

अनामय (वि०) तंदुस्त । स्वस्थ । हृष्टकहा ।

अनामयः (पु०) तंदुस्ती । स्वास्थ्य ।

अनामयम् (न०) विष्णु का नाम ।

अनायत्त (वि०) जो परतंत्र न हो । स्वतंत्र । स्वतंत्र
अजीविका ।

अनायास (वि०) बिना प्रयास । बिना परिश्रम ।
बिना उद्योग । सरल । सहज ।

अनारत (वि०) १ सतत । बराबर । अखण्डित ।
अबाधित । २ सनातन ।

अनारम्भः (पु०) अननुष्ठान । आरम्भ का अभाव ।

अनार्जव (वि०) कुटिल । बेईमान । अधार्मिक ।

अनार्जवम् (न०) १ कुटिलता । जाल । फरेब ।
२ रोग ।

अनार्तव (वि०) [स्त्री०—अनार्तवी] बे श्रुतु का ।

अनार्तवा (स्त्री०) वह लड़की जिसको मासिक धर्म न
होता हो ।

अनार्य (वि०) दुर्जन । दुःशील । अधम । दस्यु ।

अनार्यः (पु०) १ जो आर्य न हो । २ वह
देश जिसमें आर्य न बसते हों । ३ शूद्र ।
४ म्लेच्छ । ५ अधम पुरुष ।

अनार्यकं (न०) १ आर्यावर्त से भिन्न देश । अगुरु
काठ । अगर की लकड़ी ।

अनार्थ (वि०) जो ऋषियों का प्रोक्त न हो ।
अवैदिक ।

अनालंब } (वि०) निराश्रित । विना सहारे का ।
अनालम्ब }

अनालंबः } (पु०) सहारे का अभाव । आधार
अनालम्बः } शून्यता ।

अनालंबी } (स्त्री०) शिवजी की बीणा या
अनालम्बी } सारंगी ।

अनालम्बुका, अनालम्बुका } (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।
अनालम्बुका, अनालम्बुका }

अनावर्तिन् (वि०) फिर न होने वाला । फिर न
लौटने वाला । [छिटा न हो ।

अनाविद्ध (वि०) जो डेरा न गया हो । जो
अनावृत्तिः (स्त्री०) १ फिर न जन्मना । मोक्ष ।
अपरवर्तन । [विशेष । इति विशेष ।

अनावृष्टिः (स्त्री०) सूखा । वर्षा का अभाव । उपद्रव
अनाश्रमिन् (पु०) वह जो चार आश्रमों में से किसी
भी आश्रम में न हो । जो आश्रमी न हो ।

“अनाश्रमी न तिष्ठेत्तु समन्यकमपि द्विजः ।”

अनाश्रय (वि०) जो किसी का कहना न सुने । या
कहने पर कान न दे । [क्रिया गया हो ।

अनाश्वस् (वि०) अनखाया हुआ । जो भोग न
अनास्था (स्त्री०) १ निरपेक्षता । अश्रद्धा । २ अनादर ।

अनाहत (वि०) १ नया (कपड़ा) । कोरा कपड़ा ।
२ तंत्रशास्त्रानुसार हृदयस्थित द्वादशदल कमल ।
३ मध्यम । वाक् । ४ आघात रहित वस्तु ।

अनाहार (वि०) उपवास किये हुए ।

अनाहारः (पु०) उपवास । कड़ाका । जंघन ।

अनाहुतिः (स्त्री०) अनहवनीय । कोई हवन, जो हवन
के नाम से कहलाने के अयोग्य हो । २ अनुचित
बलि या अर्घ्य ।

अनाहूत (वि०) अनिमंत्रित । विना बुलाया हुआ ।
विना न्योता हुआ ।—उपजल्पिन् विना कहे
बोलने वाला या शेखी बघारने वाला ।—उपविष्ट
(वि०) अनिमंत्रित आ कर बैठा हुआ ।

अनिकेत (वि०) गृहहीन । आवारा । जिसके घर
न हो और बेसतलब इधर उधर घूमा करे ।

अनिर्गीर्ण (वि०) १ जो निगला हुआ न हो । अमुक्त ।
२ अकथित । ३ जो छिपा न हो । प्रकट । प्रत्यक्ष ।

अनिच्छ } (वि०) इच्छा न रखने वाला । अन-
अनिच्छक } मिलायी । निराकांक्षी । जिसे चाह
अनिच्छत् } न हो ।
अनिच्छु }
अनिच्छुक }

अनित्य (वि०) १ जो सनातन न हो । २ विनश्वर ।
विनाशी । नाशवान । ३ अस्थायी । अधुव ।
४ असाधारण । अनिमित्त । ५ अस्थिर । चञ्चल ।
६ सन्दिग्ध । संशयात्मक । दत्तः,—दत्तकः,—
दत्तिमः (पु०) पुत्र जो किसी दूसरे को कुछ
दिनों के लिये दे दिया जाय ।

अनित्यम् (अच्यया०) १ कभी कभी । हठात् । दैवात् ।

अनिद्र (वि०) निद्रारहित । जागता हुआ (आलं०)
जागरूक । सावधान । सतर्क ।

अनिन्द्रियं (न०) १ कारण । २ इन्द्रियों में से कोई
इन्द्री नहीं, मन ।

अनिभृत (वि०) १ सार्वजनिक । खुल्लुखुल्ला ।
अनछिपा हुआ । २ लज्जाहीन । बेहया । साहसी ।
३ अस्थिर । जो डढ़ न हो । चपल । अविनीत ।

अनिमकः (पु०) १ मँढक । २ कोयल । ३ मधु-
मक्षिका ।

अनिमित्त (वि०) अकारण । आधाररहित ।—निरा-
क्रिया (स्त्री०) बुरे शकुनों को पलट देने की
क्रिया ।

अनिमित्तम् (न०) १ किसी उपयुक्त कारण या अवसर-
का अभाव । २ अपशकुन । बुरा शकुन ।

अनिमिष } (वि०) दृढ़तापूर्वक नियुक्त या नियत ।
अनिमेष } स्पन्दनहीन (नेत्र)—दृष्टि,—लोचन
(वि०) विना पलक झपकाये देखना । [आचार्य ।

अनिमिषाचार्यः (पु०) गुरु बृहस्पति । देवताओं के

अनिमेषः (पु०) १ देवता । २ मङ्गली । ३ विष्णु ।

अनियत (वि०) १ असंयत । २ सन्दिग्ध । अनि-
यमित । ३ कारणशून्य । ४ नश्वर ।—आत्मन्

(वि०) असंयत ।—पुंसका (वि०) दुश्चारिणी

श्री ।—धृति (वि०) वह जिसकी आमदनी या जीविका बंधी हुई न हो । अनियमित आय ।

अनियंत्रण (वि०) असंयत । जो नियंत्रण में न रहे ।
उच्छृङ्खल ।

अनियंत्रितः (पु०) उच्छृङ्खल । नियमविरुद्ध ।

अनियमः (पु०) १ नियम का अभाव । नियत आज्ञा । २ सन्देह । ३ अनुचित आचरण ।

अनिरुक्त (वि०) १ स्पष्ट न कहा गया हो । २ भली भाँति व्याख्या न किया हुआ । भली भाँति न समझाया हुआ ।

अनिरुद्ध (वि०) अबाधित । मुक्त । अनियंत्रित । स्वेच्छाचारी । जो बश में न आसके ।—पथं (न०) १ बिना रुका मार्ग । आकाश । न्योम ।

अनिरुद्धः (पु०) १ भेदिया । जासूस । २ प्रद्युम्न के पुत्र का नाम जो श्री कृष्ण जी का पौत्र और ऊषा का पति था । ३ पशु आदि के बांधने की रस्सी । ४ मत का अविच्छाता ।—भाविनी (स्त्री०) अनिरुद्ध की स्त्री । ऊषा ।

अनिर्णयः (पु०) अनिश्चितता । निर्णय का अभाव ।

अनिर्देश) (वि०) मृत्यु अथवा जन्म के १० दिन
अनिर्देशाह) के अशौच के भीतर ।

अनिर्देशः (पु०) किसी निश्चित नियम या आज्ञा का अभाव ।

अनिर्देश्य (वि०) वह जिसकी परिभाषा का वर्णन न हो सके । अवर्णनीय ।

अनिर्देश्यम् (न०) परब्रह्म ।

अनिर्धारित (वि०) अनिश्चित ।

अनिर्घचनीय (वि०) १ अनुच्चार्य । अवर्णनीय । २ वर्णन करने के अनुपयुक्त ।

अनिर्घचनीयम् (न०) १ माया । अज्ञान । २ संसार ।

अनिर्वाण (वि०) अनधुला । स्नान न किये हुए ।

अनिर्घदः (पु०) अक्षोभ । उदासीनता या उदासी का अभाव । आत्मनिर्भरता । साहस ।

अनिर्घृत (वि०) बेचैन । दुःखी ।

अनिर्घृतिः) (स्त्री) १ बेचैनी । विकलता । चिन्ता ।
अनिर्घृतिः) २ गरीबी । निर्धनता ।

अनिलः (पु०) १ पवन । २ पवन देव । ३ एक उपदेवता । ४ शरीरस्थ पवन । मानसिक भावों में से एक । ५ गठिया रोग या जातजन्य कोई रोग ।—अयनं (न०) पवनमार्ग ।—अशनु,—अशिन् । २ पवनखाना । उपवास ।

आत्मजः (पु०) पवनपुत्र । भीम और हनुमान ।—
आमयः (अनिलामयः) (पु०) वातरोग ।
अफरा ।—सखः (पु०) अग्नि ।

अनिलन् (पु०) सर्प ।

अनिलोदित (वि०) भली भाँति अविचारित । बुरी तरह निर्णीत ।

अनिशं (अव्यया०) सदा । अविरत । सर्वदा ।

अनिष्ट (वि०) १ अनभीष्ट । अवाञ्छित । प्रतिकूल ।
२ अशुभ । ३ बुरा । अमाग्न ४ यज्ञद्वारा असम्मानित ।—आपत्तिः (स्त्री०)—आपादनं (न०) अवाञ्छित वस्तु की प्राप्ति । अवाञ्छित घटना ।—
ग्रहः (पु०) पापग्रह । बुरेग्रह ।—प्रसङ्गः (पु०) दुर्घटना । अशुभ घटना । किसी बुरी वस्तु, युक्ति अथवा नियम से सम्बन्ध युक्त ।—फलं (न०) बुरा परिणाम ।—शङ्का (स्त्री०) अशुभ का भय ।—हेतुः (पु०) अपशकुन । बुरा शकुन ।

अनिष्टम् (न०) १ अशुभ । अमाग्न । दुर्भाग्य ।
विपत्ति । २ असुविधा । हानि ।

अनिष्टपत्रम् (अव्यया०) तीर का वह भाग जिसमें पर लगे रहते हैं, जिससे वह दूसरी ओर न निकले ।

अनिस्तोर्ण (वि०) १ जिससे मिट्टी या पीछा न छुट्य हो । २ अनुत्तरित । अखण्डित । जिसका खरबन न हुआ हो ।

अनीकः (पु०) १ सेना । फौज । पट्टन । दल ।
—स्थः (पु०) २ सैनिक । योद्धा । ३ पहरेदार । सन्तरी । ४ महावत या हाथी का शिञ्चक । ५ मारुबाजा । डोल या बिगुल । ६ सङ्केत । चिह्न । निशानी ।

अनीकम् (न०) १ जमाव । झुंड । २ लड़ाई ।
आमना-सामना । युद्ध । ३ रंक्ति । अवली ।
४ सामना । मुख्य । प्रधान ।

अनीकिनी (पु०) १ सेना । दल । फौज । २ तीन
चमू या अचौहिणी सेना का दसवाँ भाग ।

अनील (वि०) जो नीला न हो । सफेद ।—वाजिन्
(पु०) सफेद बोटों वाला । अर्जुन की उपाधि ।

अनीश (वि०) १ सर्वोपरि । सर्वोच्च । २ जो किसी
पर अपनी सत्ता आ आतङ्क न रखता हो । जो
स्वामी या मालिक न हो ।

अनीशः (पु०) विष्णु का नाम ।

अनीश्वर (वि०) १ असंयत । २ अयोग्य । ३ ईश्वर
सम्बन्धी नहीं । नास्तिकता वाला ।—वाद्ः (पु०)
नास्तिकवाद । नास्तिक ।

अनीह (वि०) निःस्पृह । निरपेक्ष । फलाशारहित ।
अनिच्छुक ।

अनीहा (स्त्री०) अनिच्छा । निःस्पृहता ।

अनु (अन्यथा०) यह एक उपसर्ग है (इसका
प्रयोग संज्ञाओं के साथ क्रियाविशेषणात्मक
समासों के बनाने में या क्रियाओं अथवा क्रियाओं
की धातुओं में होता है । १ पीछे । पश्चात् । २
साथ । पास पास । ३ साथ । सम्बन्ध से ।
४ अश्रेष्ठ या आश्रित । ५ विशेष सम्बन्ध में या
अवस्था में । ६ साक्षात् । ७ दुहराना । ८ दिन
प्रति दिन । ९ ओर । तरफ । १० क्रम से
एक के बाद एक । ११ समान । मानों ।
१२ संसर्धनीय । संसर्धन करने योग्य ।

अनुक (वि०) १ लालची । अभिलाषी । २ कामी ।
क्षपट । इन्द्रियदास ।

अनुकम् (न०) वितर्क । युक्ति ।

अनुकथनम् (न०) १ पीछे का वर्णन । २ सम्बन्ध ।
३ संवाद । वार्तालाप ।

अनुकनीयस् (वि०) दूसरा सब से छोटा (उम्र में) ।

अनुकम्पक (वि०) दयालु । दयावान् । कृपा-
पूर्ण ।

अनुकम्पनम् } (न०) दया । कृपा । कोमलता ।
अनुकम्पनम् }
सहानुभूति ।

अनुकम्पा } (स्त्री०) दया । कृपा ।
अनुकम्पा }

अनुकम्प्य } (स० का० कृ०) दयापात्र । कृपापात्र ।
अनुकम्प्य } सहानुभूति दिखलाने योग्य । दयनीय ।

अनुकम्प्यः } (पु०) हलकारा । दूत शीघ्र सन्देशा ले
अनुकम्प्यः } जाने वाला ।

अनुकरणम् (न०) १ नकल उतारना । २ प्रति-
अनुकृतिः (स्त्री०) लिपि । समानता । एक-
रूपता ।

अनुकर्षः (पु०) १ पीछे धसीटना । २ रथ के
अनुकर्षणम् (स्त्री०) नीचे रहने वाली लकड़ी
जिसके सहारे पहिये रहते हैं ।

अनुकल्पः (पु०) गौण कल्प । मुख्य के अभाव में
उसके प्रतिनिधि की कल्पना । प्रतिनिधि ।

अनुकामीन (वि०) स्वेच्छापूर्वक गमन या सहर्ष
गमन । स्वेच्छाचारिता ।

अनुकार देखो “ अनुकरण ” ।

अनुकाल (वि०) सामायिक । मौके का ।

अनुकीर्तनम् (न०) प्रकाशन या प्रकटन या
घोषणा करने की क्रिया ।

अनुकूल (वि०) १ पक्ष में । अभिमत । मनोज्ञ ।
मुआफिक । २ सद्यः । दोस्ताना । ३ संसर्धनीय ।

अनुकूलः (पु०) विश्वस्त और दयालु पति । नायक
विशेष ।

अनुकूलम् (न०) १ कृपा । अनुग्रह । २ सहायता ।
प्रसन्नता ।

अनकूलयति (धा० परमै०) मिलाना । अपने पक्ष में
कर लेना । राजी कर लेना ।

अनुककच (वि०) आरे की तरह दाँतों वाला ।

अनुक्रमः (पु०) १ सिलसिला । क्रम । तरतीब ।
परिपाटी । यथाक्रम । २ विषयसूची ।

अनुक्रमणं (न०) १ सिलसिलेवार बढ़ना । २ अनु-
गमन ।

अनुक्रमणी } (स्त्री०) १ विषय सूची । परिपाटी
अनुक्रमणिका } बतलाने वाली । जिसमें किसी
ग्रन्थ में वर्णित विषयों का संक्षेप में पतेवार वर्णन
हो । सूची । तालिका । २ काव्यायन के एक ग्रन्थ
का नाम । इसमें मंत्रों के ऋषि, छन्द, देवता,
और मंत्रों के विनियोगों का वर्णन है ।

अनुक्रिया देखो “अनुकरणम्”

अनुक्रोशः (पु०) दया । रहम । कृपा ।

अनुक्षणम् (अन्यथा०) प्रत्येक लक्ष्मा । प्रत्येक क्षण ।
सन्त । बराबर । अक्सर । बहुधा ।

अनुक्षु (पु०) } दरबान या सारथी का
अनुक्षुता (स्त्री०) } दहलुआ ।

अनुक्षेत्र (पु०) पुजारियों को दी जाने वाली वृत्ति
या बंधान । (उड़ीसा के मंदिरों में यह बंधान
बंधा हुआ है) ।

अनुख्यातिः (स्त्री०) किसी गुप्त बात की सूचना देना
या उसको प्रकट करना ।

अनुग (वि०) अनुगत । पीछे जाने वाला ।
(मिलान करने पर) मिलना ।

अनुगः (पु०) अनुयायी । पिछलगुआ । आज्ञाकारी
नौकर । साथी । सहचार ।

अनुगतिः (स्त्री०) अनुगमन । पीछे चलना । नकल
करना । अनुकरण करना ।

अनुगमः (पु०) } १ पीछे चलना । अधीन
अनुगमनम् (न०) } होना । सहायक होना ।

२ सहमरण । किसी स्त्री का अपने पति के पीछे
मरना । ३ अनुकरण करना । अनुसरण करना ।
समीप जाना । ४ अनुहार । अनुसार ।

अनुगर्जित (वि० कृ०) गर्जन करता हुआ ।

अनुगर्जितम् (न०) गर्जन युक्त, प्रतिध्वनि ।

अनुगचीनः (पु०) गोपाल । ग्वाला । अहीर ।
गौ चराने वाला ।

अनुगामिन् (पु०) } अनुयायी । साथी ।
अनुगामी (वि०) } अनुवर्ती । पीछे चलने
वाला ।

अनुगुण (वि०) समान गुण वाला । समान स्वभाव
वाला । अनुकूल । मनोज्ञ । उपयोगी ।

अनुग्रहः (पु०) } कृपा । दया । अनुकंपा । २
अनुग्रहणम् (न०) } स्वीकारोक्ति । स्वीकृति ।

३ प्रधान सैन्यदल का पश्चात्भाग रक्षक सैन्यदल ।

अनुग्रासकः (पु०) मुख भर कर अर्थात् जितना
मुख में अट सके ।

अनुचरः (पु०) दास । सेवक । दहलुआ । सहचार ।

अनुचरी } (स्त्री०) दहलुनी । दासी ।
अनुचरा }

अनुचारकः (पु०) अनुचर । सेवक ।

अनुचारिका (स्त्री०) अनुचरी । दासी ।

अनुचित (वि०) १ अयुक्त । नासुनासिब ।
२ असाधारण । अयोग्य ।

अनुचिन्ता, (स्त्री०) अनुचिन्तनम् (न०) } विचार ।
अनुचिन्ता (स्त्री०) अनुचिन्तनम् (न०) } ध्यान ।

अनुध्यान । उत्कण्ठा पूर्वक स्मरण ।

अनुच्छादः (पु०) अंगे के नीचे पहिना जाने वाला
कपड़ा । नीमा ।

अनुच्छित्तिः (स्त्री०) } अनाशक्तत्व । अनष्टत्व ।
अनुच्छेदः (पु०) }

अनुज } (वि०) पीछे जन्मा हुआ । पिछला ।
अनुजजात } छोटा ।

अनुजः } (पु०) छोटा भाई ।
अनुजातः }

अनुजन्मन् (पु०) छोटा भाई ।

अनुजीविन् (वि०) परावलम्बी । दूसरे पर (आजी-
विका के लिये) निर्भर । नौकर । चाकर ।

अनुज्ञा (स्त्री०) } अनुमति । आज्ञा । हुक्म ।
अनुज्ञानं (न०) }

अनुज्ञापकः (पु०) आज्ञा देने वाला । हुक्म देने
वाला ।

अनुज्ञापनम् (न०) } आज्ञा । हुक्म । अनुमति ।
अनुज्ञप्ति (स्त्री०) }

अनुज्येष्ठम् (अन्यथा०) (वयक्रम से) ज्येष्ठता
या बढ़ाई ।

अनुतर्पः (पु०) १ प्यास । २ हृच्छा । कामना ।
३ पानपात्र । ४ मद्य ।

अनुतर्षणं (न०) देखो “अनुतर्षः” [दुःख ।
अनुतापः (पु०) पश्चात्ताप । कर्म करने के अनन्तर
अनुतिलं (अव्यया०) अति सूक्ष्मता से । तिल तिल
करके । तिल के बराबर ।

अनुत्क (वि०) जो अत्यधिक उत्कृष्ट न हो ।
जो पश्चात्ताप न करे । [कर ।

अनुत्तम (वि०) सर्वोत्कृष्ट । सर्वश्रेष्ठ । सब से बढ़
अनुत्तर (वि०) १ मुख्य । प्रधान । २ उत्तम ।
श्रेष्ठ । ३ उत्तर विना । बुध । उत्तर देने में अस-
मर्थ । ४ दृढ़ । मज्जबूत । ५ नीच । अश्रेष्ठ ।
कमीना । बुद्ध । ६ दक्षिणी । दक्षिण दिशा का ।

अनुत्तरम् (न०) कोई उत्तर नहीं । [वाला ।

अनुत्तरङ्ग (वि०) मज्जबूत । दृढ़ । बिना लहरों

अनुत्तरा (स्त्री०) दक्षिण दिशा ।

अनुत्थानं (न०) उद्योग का अभाव ।

अनुत्सूत्र (वि०) सूत्र के विरुद्ध नहीं ।

अनुत्सेकः (पु०) क्रोध या अभिमान का अभाव ।
शील ।

अनुत्सेकिन् (वि०) जो अभिमान से फूल कर कुप्पा
न हो गया हो ।

अनुदर (वि०) कुशोदर । पतला दुबला ।

अनुदर्शनं (न०) पर्यवेक्षण । मुआयना ।

अनुदात्त (वि०) १ जो उदात्त स्वर से उच्चारणीय न
हो । उदात्त स्वर से भिन्न स्वर ।

अनुदार (वि०) १ जो उदार न हो । जो कुञ्जीन
न हो । २ जिसके उपयुक्त पत्नी हो ।

अनुदिनम् } (अव्यया०) नित्य । हररोज्ज । दिनों
अनुदिवसम् } दिन ।

अनुदेशः (पु०) १ पीछे का निर्देश । २ निर्देश ।
आज्ञा ।

अनुद्धत (वि०) जो उदगड या अभिमानी न हो ।

अनुद्ध (वि०) १ जो वीर न हो । जो साहसी
न हो । कोमल स्वभाव वाला । २ जो उन्नत या
बहुत ऊँचा न हो ।

अनुदुत (वि० क०) पिड़ियाया हुआ । २ लौटाया
हुआ । वापिस लाया हुआ । अनुगामी ।

अनुदुतम् (न०) (संगीत में) तालविशेष ।
मात्रा का चौथा भाग ।

अनुद्वाहः (पु०) अविवाहावस्था । अनूढावस्था । चिर-
कौमार्य ।

अनुधावनम् (न०) १ पीछे दौड़ना । पीछा करना ।
पड़ियाना । २ किसी पदार्थ के बिल्कुल समीप
समीप दौड़ना । अनुसन्धान करना । पता
लगाना । तहकीकात करना । ३ अप्राप्त होने पर
भी किसी मलकिन या स्वामिनी का पता
लगाना । ४ साफ करना । पवित्र करना ।

अनुध्यानम् (न०) १ अनुचिन्तन । बार बार
सोचना । २ किसी विषय में तत्पर रहना । ३
असक्ति । ४ कृपा करना । ५ मङ्गलकामना ।

अनुनयः (पु०) १ विनय । प्रणिपात । २ सान्त्वना ।
३ प्रार्थना ।

अनुनादः (पु०) शब्द । होहल्ला । शोर । गुल-
गपाड़ा । प्रतिध्वनि । काई ।

अनुनायक (वि०) १ विनम्र । विनयशील । २
आज्ञाकारी ।

अनुनायिक (वि०) तुष्ट । शान्त । सुप्रसन्न ।

अनुनायिका (स्त्री०) एक अभिनय पात्री जो किसी
अभिनय के मुख्य-पात्र (नायिक) की सहायक
हो, जैसे धात्री, दासी आदि । अनुनायिका ये
होती हैंः—

सखी मञ्जिता दासी मेध्या धात्रेयिका तथा ।

अन्याश्च शिल्पकारिणो विज्ञेया अनुनायिकाः ॥

अनुनासिक (वि०) नासिका की सहायता से उच्चारण
होने वाले वर्ण ।

अनुनिर्देशः (पु०) किसी पूर्ववर्ती वचन या आज्ञा
का सम्बन्धसूचक दूसरा वचन या आज्ञा ।

अनुनीतिः देखो “अनुनय” ।

अनुपघातः (पु०) किसी जोखों या बाधा का
अभाव ।

अनुपतनं (न०) १ गणित की त्रैशिक क्रिया ।
अनुपातः (पु०) १ त्रैशिक गणित । २ पीछे गिरना ।
पीछा करना । ३ अनुगुण्य । एक अङ्ग के साथ
दूसरे अङ्ग का सम्बन्ध ।

अनुपथ (वि०) मार्ग का अनुसरण ।

अनुपथम् (क्रि० वि०) सड़क के साथ साथ ।

अनुपद (वि०) १ पीछे पीछे । क्रम क्रम । २
अनन्तर । बाद ही ।

अनुपद्वी (स्त्री०) मार्ग । सड़क ।

अनुपदिन (वि०) अनुसरित । पीछे लगा हुआ ।
खोजने वाला । तलाश करने वाला । जिज्ञासु ।

अनुपदीना (स्त्री०) बूता, मोज्ञा, खड़ाक ।

अनुपधः (पु०) उपधा या उपान्य शब्दांश का
अभाव । [जाल साजी के ।

अनुपधि (वि०) प्रवञ्चना रहित । कुलवर्जित । विना

अनुपन्यासः (पु०) १ वर्णन न करना । बयान न
देना । २ सन्देह । शक । प्रमाय या निश्चय का
अभाव । असमाधान ।

अनुपपत्तिः (स्त्री०) १ उपपत्ति का अभाव ।
असङ्गति । असिद्धि । २ असम्पन्नता ।
असमर्थता ।

अनुपम (वि०) उपमारहित । बेजोड़ । बेतुल्य ।
सर्वोत्तम । सर्वोत्कृष्ट । [हथिनी ।

अनुपमा (स्त्री०) नैऋत्य कोण के कुमुद दिग्गज की

अनुपमेय } (वि०) बेजोड़ । जिसकी तुलना न
अनुपमित } हो सके ।

अनुपलब्धिः (स्त्री०) । अप्राप्ति । न मिलना । अस्वी-
कृति । प्रत्याभिज्ञान । (सांख्य) प्रत्याभिज्ञान ।

अनुपलम्भः } (पु०) बोध या प्रत्यय का
अनुपलम्भः } अभाव ।

अनुपवीतिन् (पु०) जो द्विज यज्ञोपवीत धारण
न करे ।

अनुपशयः (पु०) १ कोई वस्तु या अवस्था जो रोग
की वृद्धि करे । २ रोगज्ञान के पांच विधानों में से
एक । इससे आहार विहार के दुरे परिणाम से
रोगी के रोग का शान प्राप्त किया जाता है ।

अनुपसंहारिन् (पु०) (न्याय) हेत्वाभास ।

अनुपसर्गः (पु०) १ शब्दांश जिसमें उपसर्ग न हो ।
२ उपसर्ग रहित ।

अनुपस्थानम् (न०) गैरहाजिरी । अनुपस्थिति ।
समीप न होना । अविद्यमानता ।

अनुपस्थित (वि०) गैरहाजिर । मौजूद नहीं ।
अविद्यमान ।

अनुपस्थितिः (स्त्री०) गैरहाजिरी । अविद्यमानता ।

अनुपहत (वि०) १ चोटिल नहीं । २ अव्यवहत ।
काम में न लाया हुआ । अनभ्यस्त । ३ कोरा
(जैसा कपड़ा) ।

अनुपाख्य (वि०) जो साफ साफ न देख पड़े ।
जो साफ साफ समझ में न आवे ।

अनुपातकम् (न०) महापातक जैसे चोरी, हत्या,
न्यायचर आदि । विष्णुस्मृति में, इस श्रेणी में,
३५ और मनुस्मृति में ३० प्रकार के पातकों को
शामिल किया है ।

अनुपानम् (न०) पदार्थ विशेष जो किसी औषध
के साथ या ऊपर से खाया जाय । [आज्ञाकारी ।

अनुपालनम् (न०) रखवाली । सुरक्षा ।

अनुपुरुषः (पु०) अनुयायी ।

अनुपूर्व (वि०) यथाक्रम । सुविभक्त । समपरिमित ।

—जः (वि०) पीढ़ी दर पीढ़ी । साख व साख ।

—वत्सा (वि०) गौ जो नियमित रूप से

वत्से दे । —पूर्वशः, —पूर्वण (क्रि० वि०)
क्रमागत रीति से ।

अनुपेत (वि०) जिसका उपनयन (यज्ञोपवीत)
संस्कार न हुआ हो । [प्रयोग ।

अनुप्रयोगः (पु०) बार बार दुहराना । अतिरिक्त

अनुप्रवेशः (पु०) १ दरवाजे के भीतर जाना ।
किसी के मन के भीतर घुसना । मन में स्थान
करना ।

अनुप्रसक्तिः (स्त्री०) १ वनिष्ठ प्रेम । प्रगाढ़
अनुराग । २ (शब्दों का) अत्यन्त वनिष्ठ
सम्बन्ध ।

अनुप्रसादनम् (न०) प्रसादन । सोपन । दूसरे को सन्तुष्ट या प्रसन्न करने की क्रिया ।

अनुप्राप्तिः । (स्त्री०) प्राप्ति । पहुँच ।

अनुप्लवः (पु०) अनुयायी । नौकर । सहायक । अनुगामी ।

अनुप्रासः (पु०) अलङ्कार विशेष । इसमें किसी पद में एक ही अक्षर बार बार प्रयुक्त हो कर उस पद को अलङ्कृत करता है । वर्णवृत्ति । वर्णमैत्री । वर्णसाम्य ।

अनुबद्ध (व० कृ०) १ बंधा हुआ । गसा हुआ । जकड़ा हुआ । २ यथाक्रम अनुगमन करने वाला । ३ सम्बन्ध युक्त । ४ सतत । लगातार ।

अनुबन्धः } (पु०) १ बन्धान । सम्बन्ध । युक्त । २
अनुबन्धः } एक के बाद एक क्रमागत । ३ परिणाम ।
फल । ४ इरादा । उद्देश्य । कारण ५ व्याकरण में प्रकृति, प्रत्यय, आगम, आदेश आदि में कार्य के लिये जो वर्ण लगा दिये जाते हैं, वे भी अनुबन्ध कहे जाते हैं । ६ माता पिता का अनुवर्तन करने वाला पुत्र । प्रारम्भ किये हुए किसी काम का अनुवर्तन करना । ७ भावी अशुभ परिणाम । फलसाधन । ८ वेदान्त में एक एक विषय का अधिकरण । ९ बाल, कफ, पित्त में जो अग्रधान हो । १० लगाव । आगा पीछा । ११ होने वाला शुभ या अशुभ ।

अनुबन्धनम् } (न०) लगाव । सम्बन्ध ।
अनुबन्धनम् }

अनुबन्धिनः } (वि०) १ सम्बन्धित । लगाव रखने
अनुबन्धिनः } वाला । सम्बन्धी । परिणाम स्वरूप ।
२ समृद्धशाली । ३ अबाधित ।

अनुबन्धय (वि०) १ मुख्य । प्रधान । २ मारे जाने को । मार डालने को ।

अनुबलं (न०) मुख्य सेना की रक्षा के लिये उसके पीछे आने वाला सैन्यदल । सहायक सैन्यदल ।

अनुबोधः (पु०) स्मरण या बोध जो पीछे हो । गन्धोद्दीपन ।

अनुबोधनम् (न०) प्रबोधन । स्मरण । स्मरण शक्ति ।

अनुभवः (पु०) १ साक्षात् करने से प्राप्त हुआ ज्ञान । परीक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान । उपलब्ध ज्ञान । तजर्ब । २ परिणाम । फल ।— सिद्ध (वि०) अनुभव या तजर्बे से प्रतिपादित ।

अनुभावः (पु०) राजसी चमकदमक । चमक दमक । महिमा । बढ़ाई । शक्ति । अधिकार । प्रभाव । सामर्थ्य । निश्चय । २ हृदयस्थित भाव को प्रकाशित करने वाली कटाक्ष रोमाञ्छादि चेष्टा । भावप्रकाश का भावबोधक । ३ काव्य में रस के चार अंगों में से एक । वे गुण और क्रियाएँ जिनसे रस का बोध हो सके । ४ अनुभाव के १ सात्विक २ कायिक ३ मानसिक और आहार्य चार भेद माने जाते हैं । हाव भी इसीके अन्तर्गत है ।

अनुभावक (वि०) द्योतक । निर्देशक । बतलाने वाला । समझाने वाला ।

अनुभावनम् (न०) चेष्टाओं द्वारा मानसिक भावों का निर्देश करना अर्थात् बतलाना ।

अनुभाषणं (न०) किसी दावे या कथन को दुहरा कर खण्डन करना । खण्डन करने के लिये किसी दावे या कथन को दुहराना ।

अनुभूतिः (स्त्री०) अनुभव । परिज्ञान । आधुनिक न्याय के अनुसार ये चार प्रकार की मानी गयी हैं । अर्थात् १ प्रत्यक्ष । २ अनुमिति । ३ उपमिति । ४ शब्दबोध ।

अनुभोगः (पु०) १ वह भूमि जो किसी को किसी काम के बदले माफ़ी में दी जाय । झिदमती । २ सुखभोग । विलास ।

अनुभ्रातृ (पु०) छोटा भाई ।

अनुमत (व० कृ०) १ अनुज्ञात । स्वीकृत । अङ्गीकृत । २ पसंद । प्रिय । प्यारा । कृपापात्र ।

अनुमतः (पु०) अनुगामी । आशिक ।

अनुमतम् (न०) स्वीकृति । रज़ामंदी । अनुमति । अनुज्ञा ।

अनुमतिः (स्त्री०) १ आज्ञा । अनुज्ञा । हुक्म । २ पूर्णिमा जिसमें एक कला कम हो । चतुर्दशीयुक्त पूर्णिमा ।— पत्रं (न०) प्रमाणपत्र जिसमें किसी काम की मंजूरी दी गयी हो ।

अनुमननम् (न०) स्वीकृति । अनुमति । आज्ञा ।
इजाजत । २ स्वतंत्रता ।

अनुमंत्रणम् (न०) मंत्रों द्वारा आह्वान या प्रतिष्ठा ।
अनुमरणम् (न०) पीछे मरना । किसी पहले मरे
हुए के पीछे मरना । किसी विधवा का पीछे सती
होना ।

अनुमा (स्त्री०) अनुमिति । अनुमान ।

अनुमानम् (न०) १ अटकल । अंदाज़ा । भावना ।
विचार २ । परिणाम । नतीजा । फल । ३ न्याय-
शास्त्रानुसार प्रमाण के चार भेदों में से एक ।
इससे प्रत्यक्ष साधनों द्वारा अप्रत्यक्ष साध्य की
भावना होती है ।

अनुमासः (पु०) आगे का महीना ।

अनुमासम् (अव्यया०) प्रत्येक मास ।

अनुमितिः (स्त्री०) १ अनुमान । २ नव्य न्याय के
अनुसार अनुभूति के चार भेदों में से एक ।
३ अनुभव विशेष । परावर्त से उत्पन्न ज्ञान । हेतु
या तर्क से किसी वस्तु को जान लेना ।

अनुमेय (स० का० कृ०) अनुमान के योग्य ।

अनुमोदनम् (न०) १ समर्थन । तार्किक ।
स्वीकृति । [अनुयाग ।

अनुयाजः (पु०) यज्ञ का अङ्ग विशेष । अनुयाज ।

अनुयातृ (पु०) अनुयायी ।

अनुयात्रम् (न०) } अनुचरवर्ग । परिषदवर्ग ।
अनुयात्रा (स्त्री०) } पारिपार्श्व ।

अनुयात्रिकः (पु०) अनुचर । नौकर ।

अनुयानं (न०) अनुगमन । पीछे जाना ।

अनुयायिन् (वि०) १ पीछे गमन करने वाला ।
अनुवर्ती । आश्रित । नौकर । २ परिवर्ती घटना ।

अनुयोक्तृ (पु०) परीक्षक । जिज्ञासु । शिक्षक ।

अनुयोगः (पु०) १ प्रश्न । खोज । परीक्षा ।
२ भर्त्सना । डांटडपट । धिक्कार । ३ याचना ।
४ उद्योग । ५ ध्यान । ६ टीकाटिप्पणी ।—कृत
(पु०) १ प्रश्नकर्ता । २ उपदेशक । शिक्षक ।
गुरु ।

अनुयोजनम् (न०) प्रश्न । खोज ।

अनुयोज्यः (पु०) नौका ।

अनुरक्त (व० कृ०) १ लाल । रंगीन । २ प्रसन्न ।
सन्तुष्ट । अनुरागवान् ।

अनुरक्तिः (स्त्री०) प्रेम । अनुराग । भक्ति । स्नेह ।

अनुरंजक } (वि०) प्रसन्नताप्रद । सुखप्रद ।
अनुरञ्जक } आह्लादकर ।

अनुरंजनं } (न०) सन्तोषकारक । प्रसन्नता-
अनुरञ्जनम् } प्रद ।

अनुरतिः (स्त्री०) प्रेम । स्नेह ।

अनुरध्या (स्त्री०) पगडंडी । उपमार्ग ।

अनुरसः (पु०) } प्रतिध्वनि । भाई ।
अनुरमितं (न०) }

अनुरहस (वि०) गुप्त । एकान्त । निज ।

अनुरागः (पु०) १ ललाई । २ भक्ति । प्रेम । स्वामि-
भक्ति ।

अनुरागिन् } (वि०) प्रेमपूर्ण ।
अनुरागवत् }

अनुरात्रम् (अव्यया०) रात्रि में । प्रत्येक रात्रि ।
प्रति रात्रि । एक रात के बाद दूसरी रात ।

अनुराधा (स्त्री०) २० नक्षत्रों में से १७ वाँ । यह
सात तारों के मिलने से सर्पाकार है ।

अनुरूप (वि०) अनुहार । तुल्य । सदृश । समान ।
सरीखा । २ योग्य । अनुकूल । उपयुक्त ।

अनुरूपं }
अनुरूपतः } (कि० वि०) सादृश्य से । अनुहार
अनुरूपेण } से । अनुसार ।
अनुरूपशः }

अनुरोधः (पु०) } १ प्रेरणा । उत्तेजना । २
अनुरोधनम् (न०) } आग्रह । दबाव । विनय
पूर्वक किसी बात के लिये आग्रह । प्रार्थना ।
याचना । अनुवर्तन ।

अनुरोधिन् } (वि०) विनयी । विनम्र । वचन-
अनुरोधक } ग्राही ।

अनुलापः (पु०) बारबार कथन । पुनरुक्ति ।
द्विरुक्ति । (न्याय०) पुनर्वाद । आग्नेहन ।

अनुलासः } (पु०) मोर । मयूर ।
अनुलास्यः }

अनुलेपः (पु०) } किसी तरल वस्तु की तह
अनुलेपनम् (न०) } चढ़ाना । सुगंधित वस्तुओं
को शरीर में लगाना । उबटन करना । २
उबटन । लेप ।

अनुलोम (वि०) १ केश सहित । श्रेणीक्रम ।
नियमित । अनुकूल । २ सङ्कर (जाति)
—अर्थ (वि०) अनुकूल कथन । —ज,
—जन्मन् (वि०) यथाक्रम उत्पत्ति । पिता की
अपेक्षा हीनवर्ण माता की सन्तान । वर्णसङ्कर ।

अनुलोमम् (अव्यया०) यथाक्रम । स्वाभाविक
क्रम से ।

अनुलोमाः (बहुवचन) सङ्करजातियाँ । दोगली
जातियाँ ।

अनुत्वण (वि०) १ अत्यधिक नहीं । न अधिक न
कम । २ अस्पष्ट । अव्यक्त ।

अनुवंशः (पु०) गोत्रपट । वंशावलीपत्र ।

अनुवक्र (वि०) बहुत टेढ़ा ।

अनुवचनं (न०) पुनरावृत्ति । पठन । शिक्खण ।

अनुवत्सरः (पु०) वर्ष । संवत्सर ।

अनुवर्तनम् (न०) १ अनुगमन । आज्ञापालन ।
समर्थन । २ प्रसन्नता । कृतज्ञता । ३ परसंदगी ।
४ परिणाम । फल । ५ किसी पूर्ववर्ती सूत्र की
पूर्ति ।

अनुवश (वि०) दूसरे का वशवर्ती । दूसरे की इच्छा
पर निर्भर । परवश । आज्ञाकारी ।

अनुवाकः (पु०) ग्रन्थविभाग । ग्रन्थखण्ड । अध्याय
या प्रकरण का एक हिस्सा । वेद के अध्याय का
एक भाग ।

अनुवाचनम् (न०) १ पढ़वाना । पाठ कराना ।
शिक्षा दिलाना । २ स्वयं बांचना या पढ़ना ।

अनुवातः (पु०) हवा का रुख । जिस ओर की हवा
हो उस ओर ।

अनुवादः (पु०) १ दुरुक्तिः । व्याख्या करने के लिये
या उदाहरण देने के लिये अथवा पुष्ट करने के

लिये किसी अंश का बार बार पढ़ना । किसी ऐसे
विषय का जिसका निरूपण हो चुका हो, व्याख्या
रूप में या प्रमाण रूप में पुनः पुनः कथन ।
२ समर्थन । ३ सूचना । अफवाह । ४ भाषान्तर ।
उल्था । तर्जुमा ।

अनुवादक } (वि०) १ उल्था करने वाला । भाषान्तर
अनुवादिन् } करने वाला । २ अर्थवाचक । व्याख्या-
सूचक । सङ्कतिविशिष्ट ।

अनुवाद्य (सं० का० कृ०) व्याख्या करने योग्य ।
उदाहरणीय ।

अनुवारं (अव्यया०) बार बार । समय समय पर ।
अक्सर ।

अनुवासः (पु०) १ सुगन्ध । सौरभ । २ धूप
अनुवासनम् (न०) १ आदि से सुवासित । ३ वस्त्र के
झोर को अंतर से तर कर सुवासित करना ।

अनुवासनः (पु०) पिचकारी ।

अनुवासित (वि०) सुवासित । सुगन्धित ।

अनुवित्तिः (स्त्री०) प्राप्ति । उपलब्धि ।

अनुविद्ध (व० कृ०) झिंझा हुआ । मुरझा किया
हुआ । बर्मा चलाया हुआ । २ फैला हुआ । झापा
हुआ । ओतप्रोत । परिपूर्ण । व्याप्त । संमिश्रित ।
३ सम्बन्धयुक्त । ४ जड़ा हुआ ।

अनुविधानं (न०) १ आज्ञापालन । २ आज्ञानुसार
कार्य करना ।

अनुविधायिन् (वि०) आज्ञाकारी ।

अनुविनाशः (पु०) पीछे से विनाश ।

अनुविद्वम्भः (पु०) परिणाम स्वरूप बाधा में पड़ा
हुआ । अन्त में रुद्ध ।

अनुवृत्त (व० कृ०) आज्ञापालन । अनुवर्तन ।
२ अवाधित । बिना रोका टोका हुआ । सतत ।

अनुवृत्तः (पु०) १ प्रविष्ट । व्याप्त । पालित ।

अनुवृत्तिः (स्त्री०) १ स्वीकृति । आज्ञापालन ।
समर्थन । अनुसरण । सातत्य । निरवच्छिन्नता ।
२ पुनरावृत्ति ।

अनुवेलं (अव्यया०) कभी कभी । यदाकदा । प्रायः ।
समय समय । सदैव ।

पु०) } १ अनुसरण । पीछे प्रवेश करना ।
न०) } २ ज्येष्ठ के अनिवारित रहते
है का विवाह ।

५ } (न०) गौश लक्षण ।

(पु०) १ चोट । छेदन । वेधन ।
२ संभोग । मिलन । ३ सुकन । ४ रोक ।

} १ पुनरावृत्ति । पुनः पुनः उच्चारण ।
२ शाप । अक्रोश ।

न०) } घर आये हुए शिष्ट पुरुषों के जाने
श्री०) } के समय, कुछ दूर तक उनको
के लिये जाना । शिष्टाचारविशेष ।
। पीछे जाना ।

०) भक्त । भक्तिमान् । अनुरक्त । अनु-

वि०) सौ के साथ या सौ में खरीदा

०) १ पश्चात्ताप । परिताप । दुःख ।
भारी बैर । घोर शत्रुता । महाक्रोध । ३
निष्ठ सम्बन्ध । घनिष्ठ अनुराग । ४ किसी
वरीदाने के बाद का सोम । ५ दुष्कर्मों
।।म ।

वि०) दुःख । दुःखी ।

(स्त्री०) परकीया नायिका का एक भेद ।
अपने प्रिय के मिलने के स्थान के नष्ट
दुःखी हो ।

वि०) १ भक्ति के कारण अनुरागी ।
निष्ठ । २ पश्चात्ताप करने वाला ।
एक धृष्टोपादक ।

०) राजस ।

(वि०) निर्देशक । शासन करने
वाला । आज्ञा देने वाला । देश या
राज्य का प्रबन्ध करने वाला ।
उपदेश । शिक्षक ।

(न०) १ उपदेश । शिक्षा । आज्ञा ।
आदेश । व्याख्यान । विवरण । २ महा-
१ एक पर्व ।

अनुशिष्टिः (स्त्री०) आदेश । शिक्षण । निर्देश । आज्ञा ।
विचार पूर्वक कर्तव्याकर्तव्य का निरूपण ।

अनुशीलनम् (न०) बार बार देखना । आलोचन ।
अध्ययन विशेष ।

अनुशोकः (पु०) } शोक । पछतावा । दुःख ।
अनुशोचनम् (न०) } खेद ।

अनुश्रवः (पु०) गुरु परम्परा से उच्चारित । जो केवल
सुना जाय । वेद ।

अनुषक्त (व० कृ०) १ सम्बन्धित । चिपका हुआ ।
सटा हुआ ।

अनुषङ्गः (पु०) १ अतिनिकट सम्बन्ध या विद्यमानता ।
सम्बन्ध । मेल । संब । २ एकीभावा । संहति ।
३ एक शब्द का दूसरे शब्द से सम्बन्ध । ४ निश्चित
परिणाम । ५ दया । करुणा । ६ प्रसङ्ग से एक
वाक्य के आगे और वाक्य लगा लेना । ७ (न्याय
में) उपनयन के अर्थ को निगमन में ले जाकर
बयाना ।

अनुषङ्गिक (वि०) सहभावी । सहवर्ती । सम्बन्धी ।

अनुषंगिन् } (वि०) १ सम्बन्ध युक्त । सम्बन्धी ।
अनुषङ्गिन् } सटा हुआ । चिपका हुआ । २ व्यास ।

अनुषेकः } (पु०) पानी से बार बार तर करना ।
अनुसेचनम् } (न०) सींचना ।

अनुष्टुतिः (स्त्री०) स्तुति प्रशंसा । (यथाक्रम) ।

अनुष्टुभ् (स्त्री०) १ प्रशंसा से पूर्ण । वाणी ।
२ सरस्वती । ३ चार पाद का एक कृन्द् विशेष ।
इसके प्रत्येक पाद में आठ अक्षर होते हैं ।

अनुष्टाव् } (वि०) करते हुए । बनाते हुए ।
अनुष्टायिन् }

अनुष्ठानम् (न०) किसी क्रिया का प्रारम्भ । शास्त्र
विहित किसी कर्म को नियम पूर्वक करना ।
प्रयोग । पुरस्चरण ।

अनुष्ठानम् (न०) कोई काम करवाना ।

अनुष्ण (वि०) १ जो गर्म न हो । ठंडा । २ सुस्त ।
काहिल । निरपेक्ष ।

अनुष्णः (पु०) ठंडा । शीतल ।

अनुष्णम् (न०) नीलकमल । उत्पल ।

अनुव्यन्धः (पु०) पिछला पहिया ।
 अनुसन्धानम् (न०) खोज । तहकीकात । सूत्र
 निरीक्षण या पर्यवेक्षण । परीक्षा । जांच । २ चेष्टा ।
 प्रयत्न । कोशिश । ३ उपयुक्त सम्बन्ध ।
 अनुसंहित (वि० क०) तहकीकात किया हुआ ।
 जाँचा हुआ । खोज किया हुआ ।
 अनुसंहितम् (अन्यथा०) संहिता (वेद में) संहिता
 के अनुसार ।
 अनुसमयः (पु०) नियमित या उपयुक्त सम्बन्ध
 जैसा कि शब्दों का ।
 अनुसमापनम् (न०) नियमित समाप्ति ।
 अनुसम्बन्ध (वि०) सम्बन्धयुक्त ।
 अनुसरः (पु०) अनुचर । अनुयायी । सहचर ।
 साथी ।
 अनुसरणम् (न०) पीछे पीछे चलना । पीछा
 करना । पीछे जाना । समर्थन । अनुकूल आचरण ।
 अनुसर्पः (पु०) पेट के बल रेंगने वाले जन्तु ।
 छिपकली, सर्प आदि ।
 अनुसवनम् (अन्यथा०) १ यज्ञान्तर । २ प्रत्येक
 यज्ञ में । ३ प्रसिद्धि ।
 अनुसाम (वि०) अनुकूल । मित्रता से । राजी ।
 सुप्रसन्न ।
 अनुसायं (न०) प्रतिसन्ध्या । हर शाम ।
 अनुसारः (पु०) १ अनुकूल । सहश । समान ।
 २ अनुसरण । अनुक्रम । ३ पदार्थ । रीति रस्म ।
 निश्चित परंपरायी ४ प्राप्त या प्रतिष्ठित अधिकार ।
 अनुसारक } (वि०) १ अनुसरण । अनुक्रम ।
 अनुसारिन् } २ खोज । ढूँढ़ । तलाश । परीक्षा ।
 जांच । ३ अनुसार । समर्थन में ।
 अनुसाराणा (स्त्री०) पीछे पीछे जाना । पीछा करना ।
 अनुसूचक (वि०) बतलाने वाला । निर्देश करने
 वाला ।
 अनुसूचनम् (न०) निर्देश । बतलाना । प्रकट
 करना ।
 अनुसृतिः (स्त्री०) पीछे पीछे जाना । पीछे चलना ।
 समर्थन । अनुसार ।

अनुसैन्यं (न०) किसी सेना का पिछला भाग ।
 मुख्य सेना का सहायक सैन्य दल ।

अनुस्कन्दम् (अन्यथा०) यथाक्रम से उत्तराधिकारी
 होना । क्रम से किसी वस्तु का मालिक होना ।

“नेहं नेहमनुस्कन्दम् ।”

सिद्धान्तकौमुदी ।

अनुस्तरणम् (न०) चारों ओर से सीना या
 गांठना । चारों ओर फैलाना या बिछाना ।

अनुस्तरणी (स्त्री०) गौ । वह गौ जो किसी के
 मृतक कर्म में उत्सर्ग की जाय ।

अनुस्मरणम् (न०) १ स्मरण । याददाश्त । २ बार
 बार का स्मरण ।

अनुस्मृतिः (स्त्री०) १ मन से किया हुआ ध्यान ।
 अन्य वस्तुओं को त्याग एक ही वस्तु का ध्यान
 करना । ध्यान । अनुस्मरण ।

अनुस्यूत (वि०) ग्रथित । बुना हुआ । निरन्तर
 संसक्त । खूब मिला हुआ । सिला हुआ या
 बँधा हुआ ।

अनुस्वानः (पु०) आहँ । प्रतिध्वनि । एक स्वर के
 समान दूसरा स्वर ।

अनुस्वारः (पु०) स्वर के बाद उच्चारण किया जाने
 वाला एक अनुनासिक वर्ण । इसका चिन्ह [ं]
 है । आश्रयस्थान भागी । स्वर के ऊपर की बिंदी ।

अनुहरणम् (न०) नकल । समानता । समान-
 अनुहारः (पु०) रूपता । अनुकरण ।

अनूकः (पु०) १ कुटुम्ब । जाति । २ प्रवृत्ति ।
 अनूकम् (न०) मिजाज । स्वभाव । चरित्र । शील ।
 जातीय विशेषता ।

अनूचान (वि०) १ अध्ययनशील । साङ्गोपाङ्गः
 अनूचानः (पु०) वेद पढ़ा हुआ विद्वान् । वेदों
 का अर्थ करने वाला । २ विनय युक्त । सविनय ।
 सुशील ।—मानी (वि०) अपने को वेदार्थ का
 ज्ञाता समझने वाला ।

अनूढ (वि०) १ न डेया हुआ । न ले जाया हुआ ।
 २ कारा । अविवाहित ।—मान (वि०) लज्जाशील ।
 लज्जालु । लज्जवन्त । लजीला ।—भ्रातृ (अनूढ-
 भ्रातृ) अविवाहित पुरुष का भाई ।

अनूढा (स्त्री०) कारी । अविवाहिता ।—भ्रातृ (पु०) १ अविवाहिता स्त्री का भाई । २ राजा की रखैल का भाई ।

अनूक्कम् (न०) जलाभाव । सूखा । अनावृष्टि ।

अनूद्देशः (पु०) अलङ्कार विशेष ।

अनून (वि०) १ अस्वल्प । श्रेष्ठ । अभावशून्य । २ पूर्ण । समस्त । समूचा । बड़ा । बहुत ।

अनूप (वि०) जलप्राय । अधिक जल वाला । दलदल वाला ।—जं (अनूपजम्) (न०) १ नम । तर । २ अदरक । आदी ।—प्राय (वि०) दलदल वाला ।

अनूपः (पु०) १ अधिक जल वाला देश । २ देश विशेष का नाम ।

अनूपाः बहुवचन दलदल । ३ जलाशय । तालाब । ४ (नदी) तट । (पर्वत) पार्ष्व । ५ भैंसा । ६ मैडक । ७ तीतर विशेष । ८ हाथी ।

अनूरु (वि०) जंवा रहित ।

अनूरुः (पु०) सूर्य के सारथि अरुण देव । उपःकाल । भोर । तड़का ।

अनूर्जित (वि०) १ अदृढ़ । नामजबूत । निर्बल । सामर्थ्यहीन । २ गर्वरहित ।

अनूषर (वि०) खोना । ऊसर ।

अनूच } (वि०) विना आचा का । जो आगे न
अनूच } पड़ा हो या न जानता हो । अनोपवीत न होने के कारण जिसे वेदाध्ययन का अधिकार न हो ।

अनूचो मातवजः ।

मुग्धबोध ।

अनूजु (वि०) जो सीधा न हो । टेढ़ा । (आलं०) दुष्ट । बेईमान । डुरा ।

अनूण (वि०) जो कर्जदार न हो । जिसके ऊपर ऋणियों, देवों एवं पितरों का ऋण न हो ।

अनृत (वि०) झूठा ।—वदनं, —भाषणं, —आख्यानं (न०) झूठ बोलना । असत्य बोलना ।—वादिन्—वाच् (वि०) झूठा ।—व्रत (वि०) जो अपना व्रत झूठा सिद्ध करे ।

अनृतम् (न०) १ झूठ । व्रता । धोखा । २ कृषि ।

अनृतुः (पु०) अनुचित समय । बेठीक वक्त ।—कन्या (स्त्री०) लवकी जिसको रजस्वलाधर्म न हुआ हो ।

अनेक (वि०) १ एक नहीं । एक से अधिक । कई एक । भिन्न भिन्न । २ विद्युत । विभाजित ।

अनेकधा (अव्यया०) अनेक प्रकार से ।

अनेकशः (अव्यया०) १ कई बार । बहुत बार । अक्सर । बहुधा । २ अनेक प्रकार से । बहुत तरह से । ३ बहुत बड़ी संख्या में । बड़ी तादाद में । बड़े परिमाण में । बड़ी मिकदार में ।

अनेकान्त (वि०) अनिश्चित । अनिश्चित । जो एक रूप न हो । जिसके विषय में कुछ निश्चय न हो । चञ्चल । [जैनदर्शन]

अनेकान्तवादः (पु०) स्यादवाद । आर्हतदर्शन ।

अनेकान्तवादी (वि०) बौद्ध । जैनविशेष । सात पदार्थों को मानने वाले नास्तिक विशेष ।

अनेकः (वि०) मूर्ख आदमी । अनाड़ी आदमी ।—मूक (वि०) १ गूंगा बहरा । २ अंधा । ३ बेईमान । ४ दुष्ट ।

अनेनस् (वि०) पापरहित । कलङ्कशून्य ।

अनेहस (पु०)
अनेहा (स्त्री०) } समय । काल । वक्त ।
अनेहसौ

अनैकान्त (वि०) अनिश्चित । चञ्चल । अस्थिर । परिवर्तनीय । कभी कभी । नैमित्तिक । बीच बीच में ।

अनैकान्तिक (वि०) [स्त्री०—अनैकान्तिकी] चञ्चल । अस्थिर । २ न्याय में हेत्वाभास के पांच प्रकारों में से एक । [इसके तीन भेद हैं । यथा साधारण । असाधारण । अनुपसंहारी । सव्यभिचार ।]

अनैक्यम् (न०) एकता का अभाव । बहुतायत । २ ऐक्य का अभाव । गड़बड़ी । दुर्व्यवस्था ।

अनैतिह्यम् (न०) परस्परगत पदति के विरुद्ध ।

अनौ (अव्यया०) नहीं । न ।

अनौकशायिन् (पु०) [स्त्री०—अनौकशायी] घर में न सोने वाला । भिन्नक ।

नौक्तः (पु०) वृत्त ।

नौचित्यं (न०) अयोग्यता । अयुक्ता ।

नौजस्यं (न०) उत्साह । साहस या बल का अभाव ।

नौद्वत्यम् (न०) १ शील । विनम्रता । २ शान्ति ।

नौरस (वि०) शास्त्रविरुद्ध । निज नहीं । गोद लिया हुआ (पुत्र) ।

नंत, अन्त (वि०) १ समीप । २ अङ्गीर । ३ सुन्दर ।

प्यारा । ४ सब से नीचा । सब से गथाबीता । ५

सब से छोटा (उम्र में) ।—तः [कभी कभी

नपुंसक भी] (पु०) १ छोर । सीमा । मर्यादा । २

किनारा । धार । ३ वस्त्र का अँचल । ४ पड़ोस ।

समीप्य । उपस्थिति । ५ समाप्ति । ६ मृत्यु । नाश ।

जीवन की समाप्ति । ७ (व्याकरण में) किसी शब्द

का अन्तिम अक्षर या शब्दांश । ८ समाप्तान्त शब्द

का अन्तिम शब्द । ९ पिछला भाग या अवशेष

भाग जैसे—निशान्त । वेदान्त । ११ प्रकृति ।

अवस्था । प्रकार । जाति । १२ स्वभाव । सिंहाज ।

सारांश ।—अवशायिन् (पु०) चाण्डाल ।—

अवसायिन् (पु०) १ नाई । २ अछूत जाति ।

चाण्डाल ।—कर, —करणा, —कारिन् (वि०)

नाशक । मारक । मरणशील ।—कर्मन (न०)

मृत्यु ।—कालः (पु०) —बैला (स्त्री०)

मृत्यु का समय या मृत्यु की घड़ी ।

—ग (वि०) १ अन्त तक पहुँचा हुआ । २ भली

भाँति परिचित ।—गति, —गामिन् (वि०) नष्ट ।

नाशवान् ।—गमनं (न०) १ समाप्ति । पूर्णता ।

२ मृत्यु ।—द्वीपकं (न०) अलङ्कार विशेष ।—

पालः (पु०) १ आगे का सैन्यदल । २ द्वारपाल ।—

लीन (वि०) छिपा हुआ ।—लोपः (पु०) शब्द

के अन्तिम अक्षर का अभाव ।—वासिन् (वि०)

सीमा पर रहने वाला । समीप रहने वाला । (पु०)

१ शिष्य जो सदा अपने शिक्षक के समीप रह कर

विद्याध्ययन करता है । २ चाण्डाल जो गाँव के

निकास पर रहता है ।—शय्या (वि०) १ भूमि

पर का बिछौना । मृत्युशय्या । २ कब्रगाह ।

कबरस्तान । श्मशान ।—सक्तिया (स्त्री०) दाहकर्म ।

—सद् (पु०) शिष्य । छात्र ।

अंतक, अन्तक (वि०) जिससे मौत हो । नाश करने वाला । मोहलक । मृत्युशील ।

अंतकः, अन्तकः (पु०) १ मौत । मृत्यु । २ यमराज ।

अंततः, अन्ततः (अव्यया०) १ अन्त से । २ अन्त

में । आखिर में । सब से पीछे से । ३ कुछ कुछ ।

थोड़ा थोड़ा । ४ भीतर । अन्दर ।

अंते, अन्ते (अव्यया०) अन्त में । आखिर में ।

२ भीतर । अंदर । ३ सामने । समीप में । पास

में ।—वातः (पु०) १ पड़ोसी । साथी ।

२ शिष्य । छात्र । शगिर्द ।

अंतर, अन्तर (अव्यया०) (धातु का एक उपसर्ग)

बीचोबीच । मध्य में । अन्दर । में ।—अग्निः

(पु०) जठराग्नि । पेट के अंदर की आग

जो भोजन पचाती है ।—अङ्ग (वि०)

भीतरी । भीतर का ।—अङ्गम् (न०) १ भीतरी

अंग अर्थात् हृदय । मन । २ प्रगाढ़ मित्र । विश्वस्त

पुरुष ।—आकाशः (पु०) ब्रह्म जो हृदय में वास

करता है ।—हृदयाकाश । आकृतं (न०) गुप्त

विचार । मन में छिपा हुआ हरादा ।—आत्मन्

(पु०) १ आत्मा । जीव । आन्तरिकभाव । हृदय ।

२ (बहुवचन में) आत्मा के भीतर रहने वाला

परमात्मा ।—आराध (वि०) मन में आनन्द-

नुभव ।—इन्द्रियं (न०) भीतर की इन्द्रिय । मन ।

—करणां (न०) हृदय । जीव । रह । विचार और

अनुभव का स्थान । विचार शक्ति । मन । सत्या-

सत्य विवेकशक्ति ।—कुटिल (वि०) मन का

कपटी । कुटिल ।—कुटिलः (पु०) शङ्क ।—कौणाः

(पु०) भीतरी कौना ।—कोपः (पु०) अंदरूनी

गुस्सा । भीतरी क्रोध ।—गडु (वि०) निक्कमा ।

व्यर्थ । अनुपयोगी ।—गम्, —गत (वि०) देखो

“अन्तर्गम्” ।—गर्म (वि०) गर्मिणी ।—गिर, —

गिरि (अव्यया०) पहाड़ों में ।—गुडवल्लय (पु०)

अन्तर्गुडवल्लय । मलद्वार आदि स्वाभाविक छिद्रों

को खोलने मूढ़नेवाली गोलाकार पेशी ।—गूढ़

(वि०) भीतर छिपा हुआ ।—गूढ़विषः (पु०) हृदय

में छिपा हुआ विष ।—गृहं, —गेहं, —भवनं

(न०) घर के भीतर का कोठा या कमरा ।—घषाः

(पु०) —घात । घर के द्वार के सामने का खुला हुआ स्थान । —चर (वि०) शरीर में न्यास । —जठरं (न०) पेट । —ज्वलनं (न०) जलने वाला । सूजन । —ताप (वि०) भीतर की जलन । —तापः (पु०) भीतरी ज्वर । —दहनं (न०) —दाहः (पु०) १ भीतरी गर्मी । २ सूजन । —द्वारं (न०) घर का चौरदरवाजा । —परः (पु०) —पटं (न०) पर्दा । चिक आड़ । परिधानम् (वि०) पोशाक के सब से नीचे का वस्त्र । —पुरं (न०) १ महल के भीतर का कमरा । २ महल के भीतर रहने वाली स्त्रियाँ । राजमहिषी । रानी । —धर्ती, जनानी खोदी का दरोगा । —पुरिकः (पु०) जनानखाने का दरोगा । —भेदः (पु०) भीतरी रूगड़े । आपसी का झगड़ा, टंटा । —मनस् (वि०) उदास । उद्विग्न । —यामः (पु०) दम साधना और कण्ठस्वर को रोकना । —लीन (वि०) भीतर छिपा हुआ । —वल्ली (वि०) गर्भिणी स्त्री । —वस्त्रं, (न०) —वासस् (न०) अंगे आदि के नीचे पहिने का वस्त्र । कुर्ता बनियाइन आदि । —वाणि (वि०) प्रकाशविद्वान् । —वेगः (पु०) अंदरूनी बुझार । भीतर की धक्काहट । आन्तरिक-चिन्ता । —वेदिः, —वेदी (स्त्री०) अन्तर्वेद । प्रदेश विशेष । वह प्रदेश जो गंगा और यमुना नदी के बीच में है । —वेश्मन् (न०) घर के भीतर का कोठा । भीतर का कोठा । —वेश्मिकः (पु०) रनवास का प्रबन्धक । —शिला (स्त्री०) एक नदी का नाम जो विन्ध्याचल पर्वत से निकलती है । —सत्त्वा (वि०) गर्भिणी स्त्री । —सन्तापः (पु०) अंदरूनी दुःख, चोभ, खेद । —सलिल (वि०) वह जल जो जमीन के नीचे बहता है । —सार (वि०) भारी । दढ़ । —सेनं (अव्यया०) सेनाओं के बीच में । —स्थः (अन्तस्थः) (पु०) स्पर्श और उष्म के मध्य के वर्णय, व, र, ल आदि । —स्वेदः (पु०) (मदमाता) हाथी । —हासः (पु०) गुद हास्य । —हृदयं (न०) हृदय के भीतर का स्थान ।

र, अन्तर (वि०) १ भीतरी । भीतर की ओर । २ समीप । पास में । ३ सम्बन्धवाची । समीपी ।

प्रियः ४ समान । ५ भिन्न । दूसरा । ६ बाहिरी । बाहिरस्थित । बाहिर पहिना जाने वाला । —अपत्या (वि०) गर्भवती स्त्री । —ज्ञ (वि०) भीतर का हाल जानने वाला । दूरदर्शी । परिणाम दर्शी । —पुरुषः —पूरुषः, (पु०) जीव । आत्मा । वह देवता जो पुरुष के भीतर वास करता और उसके शुभाशुभ कर्मों का साक्षी बना रहता है । —प्रभवः (पु०) वर्णसङ्कर जाति वालों में से एक । —स्थ, —स्थायिन्, —स्थित (वि०) १ भीतर, अंदर । स्वाभाविक । सहज । २ बीच में स्थित ।

अंतरम्, अन्तरम् (न०) १ (क) भीतर । भीतरी । (ख) सुरास, सन्धि । २ आत्मा । रुह । हृदय । मन । ३ परमात्मा । ४ कालसन्धि । बीच का समय या स्थान । अवकाश का समय । ५ कमरा । स्थान । ६ द्वार । जाने का रास्ता । प्रवेश द्वार । ७ (समय की) अवधि । ८ मौका । अवसर । समय । ९ (दो वस्तुओं के बीच) अन्तर । फर्क । १० (गणित में) भिन्नता । शेष । ११ फर्क । दूसरा । परिवर्तित । १२ विशेषता । प्रकार । क्रिस्म । १३ निर्बलता । असफलता । त्रुटि । दोष । १४ जमानत । वायित्व-स्वीकृति । १५ सर्वश्रेष्ठता । १६ परिधान । वस्त्र । १७ अभिप्राय । मतलब । १८ प्रतिनिधि । एक के स्थान पर दूसरे के स्थापन की क्रिया । १९ रहित । विना ।

अंतरतः, अन्तरतः (अव्यया०) १ भीतर । भीतरी । बिल्कुल २ बीच से । बीच में । ३ अंदर ।

अंतरम्, अन्तरम् (वि०) अत्यन्त निकट । भीतरी । पास । अत्यन्त विश्वस्त ।

अंतरयः, अन्तरयः } (पु०) वाधा । रोक ।
अंतरायः, अन्तरायः } अड़चन । रुकावट ।

अंतरयति, अन्तरयति (क्रि०) १ बीच में डालना । दूसरी ओर मुड़वाना । स्थगित करवाना । २ विरोध करना । ३ हटाना । ठकेलना ।

अंतरा, अन्तरा (अव्यया०) १ निकट । २ मध्य । ३ रहित । विना । —असः (पु०) वक्षस्थल । छाती । —भवदेहः, (पु०) —भवसत्त्वं (न०)

जीव या जीव की वह अवस्था जो मृत्यु और जन्म के बीच के काल में रहती है।—वेदिः (पु०)—
वेदी (स्त्री०) १ बरंडा । ढालान । द्वारमण्डप ।
२ दीवाल विशेष ।—शृङ्ग (अव्यया०) सींगों के बीच ।

अंतरालं, अन्तरालं } (न०) १ अभ्यन्तर ।
अंतरालकं, अन्तरालकं } मध्य । बीच ।

अंतरितं, अन्तरितं } (न०) आकाश । आसमान ।
अंतरीकं, अन्तरीकं } ध्योम । नभः ।—गः, —
चरः (पु०) पक्षी । चिड़िया ।—जलं (न०)
ओस । हिम ।

अंतरित, अन्तरित (व० कृ०) १ बीच में गया हुआ ।
बीच में पड़ा हुआ । २ अन्दर घुसा हुआ । छिपा
हुआ । ढका हुआ । पर्दा के भीतर का । दृष्टि के
श्रोमल । ३ स्कावट डाला हुआ । रुद्ध । सका हुआ ।
भिन्न किया हुआ । पृथक् किया हुआ । निगाह से
छिपा हुआ । अदृष्ट । ४ गायब । लुप्त । नष्ट (दृष्टि
से) प्रस्थानित । रोका हुआ । ५ छूटा हुआ । चूका
हुआ ।

अंतरीपः, अन्तरीपः (पु०) भूमि का एक टुकड़ा जो
किसी समुद्र या खाड़ी के भीतर तक चला गया
हो । द्वीप ।

अंतरीयम्, अन्तरीयम् (न०) बनियाइन । कुर्ता ।
नीमास्तीन । नीमा ।

अंतरेण, अन्तरेण (अव्यया०) १ विना । छोड़ कर ।
सिवाय । २ मध्य में । बीच में । हृदय से ।
मन से ।

अंतर्गतम्, अन्तर्गतम् (वि०) १ अन्तर्भूत । भीतर
गया हुआ । २ विस्मृत । ३ छिपा हुआ । ४ अदृष्ट ।
गायब ।—उपमा (स्त्री०) गुप्त उपमा ।

अंतर्धा, अन्तर्धा (पु०) छिपाव । दुराव । ढकाव ।

अंतर्धानम्, अन्तर्धानम् (न०) छिप जाना । गुप्त
हो जाना । अदृश्य होना ।

अंतर्धिः, अन्तर्धिः (स्त्री०) अदृश्यता । छिपाव ।
दुराव ।

अंतर्भव, अन्तर्भव (वि०) भीतर की ओर । भीतरी ।
अंदरूनी ।

अंतर्भावः, अन्तर्भावः (पु०) अन्तर्निवेश । सहज
प्रवृत्ति । अन्तर्निगूढ प्रवृत्ति ।

अंतर्भावना, अन्तर्भावना (स्त्री०) अन्तर्निवेश ।
२ मानसिक ध्यान या चिन्ता ।

अंतर्त्य, अन्तर्त्य (वि०) भीतरी । अंदरूनी । बीच
में । मध्य में ।

अंतर्हित, अन्तर्हित १ मध्यस्थित । पृथक् किया
हुआ । अलगया हुआ । छिपा हुआ । गूढ़ ।
२ अदृश्य । गायब ।—आत्मन् (पु०) शिवजी
का नाम ।

अंति, अन्ति (अव्यया०) के । समीप में ।

अंतिः, अन्तिः (नाटकों में) । बड़ी बहिन ।

अंतिक, अन्तिक (वि०) १ समीप । नज़दीक ।
२ पहुँच । ३ तक ।

अंतिकम्, अन्तिकम् (न०) सामीप्य । पड़ोस ।
उपस्थिति । मौजूदगी ।

अंतिका, अन्तिका (स्त्री०) १ जेठी बहिन । २ चूल्हा ।
अंगीठी । ३ सातलाख्य या शतलाख्य नाम की
औषधि विशेष ।

अंतिम, अन्तिम (वि०) चरम । सब से पीछे का ।
आखिरी ।—अङ्कः (पु०) नव की संख्या ।
—अङ्गुलिः कनिष्ठिका । छुगुनिया ।

अंती, अन्ती (पु०) चूल्हा । अंगीठी । अलाव ।

अत्य, अन्त्य (वि०) १ अन्तिम । चरम् । २ सब से
नीचा । सब से बुरा । सब से हल्का । दुष्ट ।
—अवसायिन् (पु०) (स्त्री०) नीच जाति का
पुरुष या स्त्री । निम्न सात जातियाँ नीच मानी
गयी हैं ।

“ चाण्डालः शूद्रपचः बन्ता भूतो वैदेहकस्तथा ।

पाण्डवायोगवैः चैव सन्तैस्तेऽन्यथावसायिनः ॥

—आहुतिः, —इष्टिः (स्त्री०) —कर्मन्,

—क्रिया (स्त्री०) पूर्णाहुति । बलिदान ।—अमृणं
(न०) तीन अणुओं में से अन्तिमअणु अर्थात्

सन्तानोत्पत्ति । —जः, —जन्मन् (पु०) १
शूद्र । सात नीच जातियों में से एक । चाण्डाल ।

—जन्मन्, —जाति, —जातीय (वि०) १ किसी

नीच जाति का । २ शूद्र । ३ चाण्डाल ।—भं (न०)
रेवली नक्षत्र ।—युगं (न०) अन्तिम युग अर्थात्
कलियुग ।—योनि (वि०) अस्वन्त नीच जाति
का ।—लोपः किसी शब्द के अन्तिम अक्षर का
ह्रस्व होना ।—धर्माः (पु०)—धर्माँ (स्त्री०) नीच
जाति का पुरुष या स्त्री । शूद्र स्त्री या शूद्र पुरुष ।
यः, अन्यः निम्नवर्ण का मनुष्य । शब्द का अन्तिम
अक्षर । ३ (पु०) अन्तिम चान्द्रमास । फाल्गुण
मास । ४ स्वेच्छ ।

अंत्यम्, अन्त्यम् (न०) संख्याविशेष अर्थात्
 १००००००००००००००००। मीन राशि । रेवती
 नक्षत्र ।

अंत्यकः, अन्त्यकः (पु०) पञ्चमवर्ण का मनुष्य ।
 अंत्या, अन्त्या (स्त्री०) नीच जाति की स्त्री ।
 अंत्रं, अन्त्रं (न०) आंत ।—कूजः (पु०),—कूजनं,—
 विकूजनं, न०) आंत का बोलना । पेट की गुद-
 गुद ।—वृद्धिः (स्त्री०) आंत का उतरना ।—
 शिला(स्त्री०) विन्ध्याचल से निकलने वाली एक
 नदी का नाम ।—स्रज्ज (स्त्री०) आंतों की माला
 जिसे नृसिंह भगवान् ने पहिना था ।—अन्त्रंघ्रिभिः
 (स्त्री०) अजीर्ण । अपच ।

अद्भुतः, अद्भुतः } (स्त्री०) हथकड़ी बेड़ी । हाथी के
अद्भुतः, अद्भुतः } पैर में बांधने की जंजीर । नूपुर ।
अद्भोलनम्, अद्भोलनं (न०) लहराना । हिलना ।
हिलना डुलना ।

अंध, अन्ध (धातु० उभय०) अंधा बनाना । अंधा
हो जाना ।

अंध, अन्ध (वि०) अंधा । दृष्टिहीन ।—कारः (पु०)
अंधियारा ।—कूपः (पु०) १ कुआ जिसका मुख
ढपा हो । २ एक नरक का नाम ।—तमसं,—
तामसं,—अन्धातमसम् (न०) निविड
अन्धकार ।—तामिस्रः या तामिश्रः (पु०) १ निविड
अन्धकार ।—धी (वि०) मानसिक अंधा ।—
पूतना (स्त्री०) एक राक्षसी जो बालकों में
रोग उत्पन्न करने वाली मानी जाती है ।

अंधम्, अन्धम् (न०) १ अंधियारा । अन्धकार ।
२ जल । गंदला जल ।

अंधकरण, अन्धकरण (वि०) अंधा बनाने वाला ।
 अंध्रंभविष्णु, अन्ध्रंभविष्णु (वि०) अंधा हो जाना ।
 अंधमभावुक, अन्धभावुक (वि०) देखो अंध्रंभविष्णु ।
 अंधक, अन्धक (वि०) अंधा ।—अरिः,—रिपुः,
 शत्रुः,—घाती,—असुहृद् (पु०) अन्धक कैत्य
 के मारने वाले । शिवजी का नाम ।—वर्तः
 (पु०) एक पहाड़ का नाम ।—वृष्णिः (पु०)
 (बहुवचन) अन्धक और वृष्णि के वंशवाले ।

अंधकः, अन्धकः (यु०) एक असुर का नाम जो कश्यप और विलि का पुत्र था और जिसे शिव जी ने मारा था ।

अंधस, अन्धस (न०) भोजन ।

अधिका, अन्धिका १ रात्रि । २ खेल विशेष ।
आँखमिचौनी । जुआ । ३ नेत्ररोग विशेष ।

अंधुः, अन्धुः (पु०) कुआ । कूप इनारा ।

अंध्रः, अन्ध्रः (पु० बहुवचन) १ एक जाति का तथा उस जाति के उस देश का नाम जिसमें वह बस्ती है । २ एक राजवंश का नाम । ३ निम्न या वर्णसङ्कर जाति का मनुष्य ।

अन्नम् (न०) १ (साधारणतया) भोजन । मात ।
 २ कच्चा धान्य, चना, जौ आदि ।—अर्थ (न०)
 उपयुक्त भोजन । —आच्छादनं, —वस्त्रं (न०)
 भोजन और वस्त्र ।—कालः (पु०) भोजन
 करने का समय ।—कूटः (पु०) मात का एक
 बड़ा (पर्वतोपम) ढेर ।—कोष्ठकः
 (पु०) १ भद्वेरी । भण्डारी । अन्नमारी ।
 २ विष्णु । ३ सूर्य ।—गन्धिः (पु०) दस्तों की
 बीमारी । अतीसार । संग्रहणी ।—जलं (न०)
 रोटी पानी ।—दासः (पु०) नौकर । चाकर ।
 वह नौकर जो केवल भोजन पर काम करे ।—
 देवता (स्त्री०) अन्न के अधिष्ठातृ देवता ।—दोषः
 (पु०) निषिद्ध अन्न खाने से उत्पन्न पाप ।—
 द्वेषः (पु०) अन्न से अरुचि । अफरा रोग ।—पूर्णा
 (स्त्री०) दुर्गा का एक रूप विशेष ।—प्राशः,
 (पु०)—प्राशनं (न०) १६ संस्कारों में से
 एक विशेष संस्कार । इसमें नवजात बालक को

प्रथमवार अन्न खिलाने की विधिवत् क्रिया सम्पादन की जाती है । जूठा ।—भुज् (वि०)
१ अन्न का खाना । २ शिव की उपाधि ।—मलं (न०) १ विष्टा । मल । पाखाना (२) मंदिरा विशेष ।

अन्नः (पु०) सूर्य ।

अन्नमय (वि०) [स्त्री०—अन्नमयी] अन्न की बनी हुई ।—कोशः,—कोषः (पु०) स्थूल शरीर ।

अन्नमयम् (न०) अन्न का बाहुल्य । भोज्य पदार्थों की बहुतायत ।

अन्य (वि०) (अन्यत् न०) १ भिन्न । दूसरा ।
२ विलक्षण । असाधारण । यथा ।

“अन्या अपहितमयी मनसः प्रवृत्तिः

—भामिनीविलास ।

३ साधारण । कोई । ४ अतिरिक्त । नया । अधिक ।

—असाधारण (वि०) जो दूसरों के लिये साधारण न हो । विचित्र । विलक्षण ।—उदर्य (वि०) दूसरे से उत्पन्न ।—र्यः (अन्यर्यः पु०) १ सौतेली मा का पुत्र । सौतेला भाई ।—र्या (अन्यर्या) (स्त्री०) सौतेली बहिन ।—ऊढा (वि०) दूसरे को विवाही हुई । दूसरे की पत्नी ।—क्षेत्रं (न०) १ दूसरा खेत । २ दूसरा राज्य । विदेशी राज्य । ३ दूसरे की स्त्री ।—ग,—गामिन् (वि०) १ दूसरे के पास जाना । २ व्यवहारी । छिनरा । जार । लंपट । पापी ।—गोत्र (वि०) दूसरे वंश का ।—क्षित (वि०) मनविषेप ।—ज,—जात । (वि०) दूसरी उत्पत्ति का । दूसरी जाति का ।—जन्मन् (न०) जन्मान्तर ।—दुर्वह (वि०) दूसरों द्वारा न ढोने या उठाने योग्य ।—नाभि (वि०) दूसरे वंश या कुल का ।—पर (वि०) १ दूसरों के प्रति भक्तिमान् । दूसरों से अनुरक्त । दूसरी वस्तु को प्रकट करना या हवाला देना ।—पुष्टः (पु०) —पुष्टा (स्त्री०) —भृता, (पु०) —भृता (स्त्री०) दूसरों से पाली हुई । कोयल । —पूर्वा (स्त्री०) कन्या का जिसकी सगाई दूसरी जगह हो चुकी है ।—बीजः,—बीज-

समुद्भवः—समुत्पन्नः (पु०) गोद लिया हुआ पुत्र । दत्तक पुत्र ।—भृत (पु०) कौआ । काक । —मनस्,—मनस्क,—मानस (वि०) चञ्चल । जो ध्यान न दे । असावधान ।—भ्रातृजः (पु०) सौतेला भाई ।—रूप (वि०) परिवर्तित । बदला हुआ ।—लिङ्ग,—लिङ्गक (वि०) दूसरे शब्द के लिङ्गात्सुसार ।—वापः (पु०) कोयल ।—विवर्धित (वि०) कोयल ।

अन्यतम् (वि०) बहुत में से एक ।

अन्यतर (वि०) दो में से एक ।

अन्यतरतः (अन्य०) दो तरह में से एक ।

अन्यतरेद्यः (अन्यथा०) दो में से किसी एक दिन । एक दिन या दूसरे दिन ।

अन्यतः (अन्य०) १ दूसरे से । २ एक ओर । दूसरे आधार पर या दूसरे उद्देश्य से ।

अन्यत्र (अन्य०) दूसरी जगह । अन्यस्थान । २ व्यतिरेक । दूसरा । ३ विना ।

अन्यथा (अन्य०) १ प्रकारान्तर । पक्षान्तर । २ मिथ्यापन से । झूठपन से । ३ अशुद्धता से । भूल से ।—भावः (पु०) परिवर्तन । बदलबदल । अन्तर ।—वादिन् (वि०) प्रकारान्तर से बोलने वाला । मिथ्यावादी ।—वृत्ति (वि०) १ परिवर्तित । उत्तेजित । उद्विग्न ।—सिद्धिः (स्त्री०) (न्याय में) एक दोष विशेष, जिसमें यथार्थ नहीं, प्रत्युत अन्य कोई कारण दिखला कर किसी विषय की सिद्धि की जाय ।—छोत्रं (न०) व्यर्थ ।

अन्यदा (अन्यथा०) १ दूसरे समय । दूसरे अवसर पर । अन्य किसी दशा में । २ एक बार । कभी एक बार । ३ कभी कभी ।

अन्यर्हि (अन्यथा०) दूसरे समय ।

अन्याद्दत्त
अन्याद्दत्त
अन्याद्दत्त } (वि०) परिवर्तित । असाधारण ।
अन्याद्दत्त } विलक्षण ।

अन्याय (वि०) अनुपयुक्त । बेठीक ।

अन्यायः (पु०) कोई अनुचित या आईन विरुद्ध कार्य ।

अन्यायिन् (वि०) अनुचित । अयथार्थ ।
 अन्याय (वि०) १ अयथार्थ । आईन विरुद्ध ।
 २ अनुचित । बेदौल । भदा । ३ अप्रामाणिक ।
 अन्यून (वि०) समूचा । समस्त ।—अङ्ग (वि०)
 जिसका कोई अङ्ग कम बड़ न हो ।
 अन्येद्युः (अव्यया०) १ दूसरे दिन या अगले दिन ।
 २ एक दिन । एक बार ।
 अन्योन्य (अव्यया०) १ परस्पर । आपस में ।—
 आश्रय (वि०) परस्पर अविलम्बित । -युक्तिः
 (स्त्री०) वार्तालाप । बातचीत ।
 अन्योन्याभावः (पु०) पारस्परिक अभाव ।
 अन्योन्याश्रय (वि०) आपस का सहारा । एक दूसरे
 की अपेक्षा । सापेक्षज्ञान ।
 अन्वत् (वि०) प्रत्यक्ष । साक्षात् ।
 अन्वत्तम् (न०) पीछे से पीछे । तुरन्त ही । पीछे से ।
 तुरन्त । सीधा, किसी के बीच में होकर नहीं ।
 अन्वक् (अव्यया०) तदनन्तर । पीछे से । अनुकूलता
 से । पीछे ।
 अन्वञ् (वि०) १ पीछे जाना । पछियाना । अनुस-
 रण ।
 अन्वयः (पु०) अनुयायी । चाकर । २ सम्बन्ध । सङ्गति ।
 रिश्तेदारी । ३ व्याकरणानुसार वाक्य की शब्द
 योजना । ४ जाति । वंश । कुल । ५ वंशवाले ।
 कुलवाले । ६ न्याय में कार्य करण सम्बन्ध ।—
 आगत (वि०) वंशपरम्परागत ।—ज्ञः (पु०)
 वंशावाली जानने वाला ।—व्यतिरेकः (पु०)
 निश्चय पूर्वक हों या ना सूचक कथित वाक्य ।
 १ नियम और अपवाद ।—व्याप्तिः (स्त्री०)
 स्वीकारोक्ति । जहाँ धूम वहाँ अग्नि—इस प्रकार
 की व्याप्ति ।
 अन्वर्थ (वि०) १ अर्थ के अनुसार । २ सार्थक ।
 अर्थयुक्त ।
 अन्ववसर्गः (पु०) कामचारानुज्ञा । यथेच्छ आच-
 रण की अनुमति । यथेच्छाचार ।
 अन्ववसित (वि०) सम्बन्धयुक्त । बंधा हुआ ।
 जकड़ा हुआ ।

अन्ववायः (पु०) जाति । वंश । कुल ।
 अन्ववेत्ता (स्त्री०) सम्मान । आदर ।
 अन्वष्टका (स्त्री०) साग्निकों के लिये एक मातृक श्राद्ध,
 जो अष्टका के अनन्तर पूस, माघ, फागुन और
 आश्विन की कृष्ण नवमी को किया जाता है ।
 अन्वष्टमदिशि (अव्यया०) उत्तर पश्चिम के कोण
 की ओर ।
 अन्वहं (अव्यया०) प्रति दिन । दिन दिन ।
 अन्वाख्यानं (न०) पूर्वकथित विषय की पीछे से
 व्याख्या ।
 अन्वाचयः (पु०) मुख्य कार्य की सिद्धि के साथ साथ
 अप्रधान (गौण) की भी सिद्धि । जैसे एक काम
 के लिये जाते हुए को, एक दूसरा वैसा ही साधारण
 काम बतला देना ।
 अन्वादिष्ट (व० कृ०) पीछे वर्णित । पुनर्नियुक्त । २
 गौण । उपयोगी ।
 अन्वादेशः (पु०) एक आज्ञा के बाद दूसरी आज्ञा ।
 किसी कथन की द्विरुक्ति ।
 अन्वाधानं (न०) हवन की अग्नि पर समिधाओं
 को रखना ।
 अन्वाधिः १ अमानत, जो किसी अन्य पुरुष को इस
 लिये सौंपी जाय कि, अन्त में वह उसे उसके
 न्यायानुमोदित अधिकारी को दे दे । २ दूसरी अमा-
 नत । ३ सतत परिताप, पश्चात्ताप या पछतावा
 अन्वाधेयं } (न०) एक प्रकार का स्त्रीधन, जो
 अन्वाधेयकं } स्त्री को विवाह के बाद पतिकुल या
 पितृकुल अथवा उसके अन्य कुटुम्बियों से प्राप्त
 होता है ।
 अन्वारम्भः (पु०) } स्पर्श । किसी विशेष धर्मा-
 अन्वारम्भणम् (न०) } नुष्ठान के बाद यजमान का
 स्पर्श या पीठ ठोकना यह जताने को कि, उसका कृत्य
 सुफल हुआ ।
 अन्वारोहणं (न०) किसी सती स्त्री का पति के शव
 के साथ या पीछे भस्म होने के लिये चिता पर
 चढ़ना ।
 अन्वासनम् (न०) सेवा । पूजा । २ एक के बैठने
 के बाद दूसरे का बैठना । ३ दुःख । शोक ।

अन्वाहार्यः (पु०) } मृत पुरुष के उद्देश्य से प्रति
अन्वाहार्यम् (न०) } अमावास्या के दिन किया
अन्वाहार्यकम् (न०) } जाने वाला मासिक श्राद्ध ।

अन्वाहिक (वि०) [स्त्री०—अन्वाहिकी] दैनिक ।

अन्वित (व० क०) १ युक्त । सम्बन्धग्रास । २ किसी पद के शब्द जो वाक्परचना के नियमानुसार यथास्थान रखे गये हों । ३ साधर्म्य के अनुसार भिन्न भिन्न वस्तु जो एक श्रेणी में रखी हुई हों ।

अन्वीक्षणं (न०) १ ध्यान से देखना । २ खोज ।

अन्वीक्षणा (स्त्री०) अनुसन्धान । विचार ।

अन्वीत वेत्तो अन्वित ।

अन्वृत्तं (अव्यया०) पक्ष के बाद पक्ष ।

अन्वेषणः (पु०) } अनुसन्धान । खोज ।
अन्वेषणम् (न०) } तलाश । ढूँढ ।
अन्वेषणा (स्त्री०) }

अन्वेषक } (वि०) खोजने वाला । तलाश करने वाला ।
अन्वेषिन् }
अन्वेषू }

अप् (स्त्री०) [इसके बहुवचन ही में रूप होते हैं ।

आपः, अपः, अजिः, अज्यः, अपां और अप्सु; किन्तु वैदिक साहित्य में इसके रूप दोनों वचनों, में एकवचन और बहुवचन में मिलते हैं ।]
जल । पानी । —पतिः (पु०) वरुण का नाम । २ समुद्र ।

अप (अव्यया०) जब यह किसी क्रिया में उपसर्ग के रूप में जोड़ा जाता है; तब इसका अर्थ होता है दूर । हट कर । विरोध । अस्वीकृति । खगदन । वर्जन । कई स्थलों पर अप का अर्थ होता है बुरा । अश्रेष्ठ । बिगड़ा हुआ । अशुद्ध । अयोग्य ।

अपकरणां (न०) १ अनुचित रीति से बर्तना । २ बुराई करना । अपमान करना । चिढ़ाना । दुर्व्यवहार करना । धातल करना ।

अपकर्तृ (वि०) सांघातिक । अनिष्टकर । अमीति-कर । (पु०) शत्रु ।

अपकर्षन् (न०) १ दुष्कर्म । दुराचार । दुष्टाचरण । २ दुष्टता । अत्याचार । ज्यादती । ३ कर्त्तुं अक्षर करना । अक्षर चुकाना । “दत्तस्थानपकर्षच ।” (मनु०)

अपकर्षः (पु०) नीचे को खींचना । २ बढ़ावा । कमी । उतार । ३ निरादर । अपमान । बेकदी ।

अपकर्षक (वि०) घटाने वाला । छोटा करने वाला । नीचे खींचने वाला ।

अपकर्षणम् (न०) १ हटाना । खींच कर नीचे ले जाना । खींचकर निकालना । २ कम करना । ३ किसी को किसी स्थान से हटाकर स्वयं उस पर बैठना ।

अपकारः (पु०) १ अनिष्टसाधन । द्वेष । द्वेष्ट । बुराई । नुकसान । हानि । अनभल । अहित । २ दुष्टता । अत्याचार । उग्रता । ३ ओछा या नीच कर्म । —अर्थिन् (वि०) विद्वेषकारी । अनिष्ट-प्रिय । दुराशय । —शब्दः (पु०) गालियाँ । कुवाच्य । अपमानकारक उक्ति ।

अपकारक } (वि०) १ अनिष्टकर्त्ता । बर्त
अपकारिन् } पड़ाने वाला । हानिकारी । २
विरोधी । द्वेषी ।

अपकारकः } (पु०) अपकार करने वाला । बुराई
अपकारी } करने वाला ।

अपकुशः (पु०) दन्तरोग विशेष ।

अपकृत (वि०) } अपकार किया हुआ । अपकारी ।

अपकृति (स्त्री०) } अपक्रिया । अपकार । क्षति ।

अपकृष्ट (व० क०) १ हटाया हुआ । खींच कर ले जाया हुआ । २ नीच । दुष्ट । शूद्र ।

अपकृष्टः (पु०) काक । कौआ ।

अपकौशली (स्त्री०) खबर । समाचार । सूचना ।

अपक्तिः (स्त्री०) १ कच्चापन । २ अजीर्ण ।

अपक्रामः (पु०) १ पलायन । भगाव । दौड़ । भागना । २ (समय का) निकल जाना । (वि०) अस्त-व्यस्त । गढ़बढ़ ।

अपक्रमणम् (न०) } पलायन । (सेना का) पीछे
अपक्रामः (पु०) } हट जाना । निकल भागना ।
पचकर निकल जाना ।

अपक्रोशः (पु०) गाली । अपशब्द । निन्दन ।
जुगुप्सन । तिरस्कार ।

अपक्वम् (वि०) अपरिणत । नहीं बड़ा हुआ ।
कच्चा ।

अपक्ष (वि०) १ बिना पंख का । उड़ने की शक्ति से
हीन । २ जो किसी दल विशेष का न हो । ३
जिसका कोई मित्र या अनुयायी न हो । ४
विरुद्ध । उल्हा ।—पातः (पु०) पक्षपातराहित्य ।
न्याय । खरापन ।—पातिन् (न०) जो किसी
की तरफ़दारी न करे । खरा । न्यायी ।

अपक्षयः (पु०) नाश । अधःपात । हास । क्षय ।

अपक्षेपः (पु०) } १ फेंकना । पलटाना । २
अपक्षेपणम् (न०) } गिराना । च्युतकरना । ३
प्रकाशादि का किसी पदार्थ से टकरा कर पलटना ।
४ (वैशेषिक दर्शनानुसार) आकुञ्चन, प्रसारण
आदि पाँच प्रकार के कर्मों में से एक ।

अपगण्डः (पु०) बालिग । वयस्क ।

अपगमः (पु०) } १ प्रस्थान । वियोग । २ पात ।
अपगमनम् (न०) } शायब ।

अपगतिः (स्त्री०) बदकिस्मती । दुर्भाग्य । अभाग्य ।

अपगारः १ (पु०) धिक्कार । डाँटडपट । गालीगलौज ।
२ गालियाँ देनेवाला या अप्रियवचन कहने वाला ।

अपगर्जित (वि०) गर्जनाशून्य ।

अपगुणः (पु०) दोष । अवगुण ।

अपगोपुर (वि०) नगरद्वार से शून्य । जिसमें फाटक
न हो ।

अपघनः (पु०) देह । शरीर । अवयव । शरीरावयव ।

अपघातः (पु०) १ हत्या । हिंसा । २ वज्रना । धोखा ।
विश्वासघात ।

अपघातिन् (वि०) विश्वासघाती । हिंसक । हत्या
करने वाला ।

अपघ्नः (पु०) १ रसोई बनाने के अयोग्य अथवा जो
अपने लिये रसोई न बनावे । २ गँवार रसोईया ।
३ एक प्रकार की गाली ।

अपघ्नयः (पु०) अवनति । हास । सदन । अधः-
पात । नाश । २ ऐब । झुटि । दोष । असफलता ।

अपचरितं (न०) अपराध । भूल । दुष्कर्म ।

अपचारः (पु०) १ प्रस्थान । मृत्यु । २ अभाव । राहित्य ।
३ अपराध । दुष्कर्म । असदाचरण । जुर्म । ४
अपथ्य ।

अपचारिन् (वि०) दुष्ट । बुरा । असदाचारी ।

अपचितिः (स्त्री०) हानि । अधःपात । नाश । २
व्यय । ३ पाप का प्रायश्चित्त । समन्वय । बलि-
पूरण । ४ सम्मान । पूजन । प्रतिष्ठाप्रदर्शन ।

अपच्छत्र (वि०) बिना छाते का । छाता रहित ।

अपच्छाय (वि०) १ जिसकी परछाई न हो । २
चमक रहित । बुंधला ।

अपच्छायः (पु०) जिसकी परछाई न हो । देवता ।

अपच्छेदः (पु०) १ काट डालना । २ हानि ।
अपच्छेदनम् (न०) ३ वाधा ।

अपजयः (पु०) हार । शिकस्त ।

अपजातः (पु०) बुरी सन्तान । सन्तान जो अपने
माता पिता के गुणों के समान न हो ।

अपज्ञानं (न०) अस्वीकृति । छिपाव । दुराव ।

अपञ्चीकृतं (न०) पदार्थ विशेष जो पाँचतत्त्वों से
न बना हो ।

अपटी (स्त्री०) १ क्रनात । कपड़े की एक प्रकार की
विशेष पर्दा । २ पर्दा ।

अपटु (वि०) अनिपुण । गाडदी । भौंदू । २ वक्तृत्व
शक्ति में जो निपुण न हो । ३ बीमार । रोगी ।

अपठ (वि०) जो पढ़ न सके । जो पढ़ा न हो ।
अधम पाठक ।

अपठित (वि०) १ जो विद्वान न हो । जो बुद्धिमान
न हो । सूख । अपढ़ । अज्ञानी । २ जिसमें
चातुर्य, रुचि और दूसरों की सराहना करने का
अभाव हो ।

अपणय (वि०) जो विक न सके ।

अपतर्पणं (न०) (बीसारी में) कड़ाका । लंघन ।
असन्तोष ।

अपति १ (वि०) बिना स्वामी के । बिना पति के ।
अपतिक १ अविवाहित ।

अपत्नीक (वि०) विना स्त्री वाला । पत्नीरहित ।
 अपत्यं (न०) सन्तति । शिशु । सन्तान । औलाद ।
 —काम (वि०) पुत्र या पुत्री की इच्छा रखने वाला ।—पथः (पु०) योनि । भग ।—विक्र-
 यिन् (पु०) सन्तान बेचने वाला ।—शत्रुः
 (पु०) १ केकड़ा । २ साँप ।
 अपत्रप (वि०) निर्लज्ज । बेहया ।
 अपत्रपणम् (न०) } शर्म । लजा । लाज ।
 अपत्रपा (स्त्री०) }
 अपत्रपिष्णु (वि०) शर्मीला । लजीला ।
 अपत्रस्त (व० क०) भयभीत । डरा हुआ । भय से
 थमा हुआ । भय से रुका हुआ ।
 अपथ (वि०) मार्गहीन ।—गामिन् (वि०)
 बुरी राह चलने वाला । कुमार्गी ।
 अपथम् (न०) } बुरी सड़क । सड़क का अभाव ।
 अपन्था (स्त्री०) } (अलं०) बुरी राह । पाप की राह ।
 अपथ्य (वि०) १ अयोग्य । अनुचित । हानिकारी ।
 जहरीला । २ अहितकर । जो गुणकारी न हो ।
 ३ खराब । अभागा ।—कारिन् (वि०) अप-
 राधी । जुर्म करने वाला ।
 अपदः (पु०) उरग । सरीसृप, सर्प आदि ।—
 अन्तर (वि०) समीपस्थ । अति निकट ।—
 अन्तरम् (न०) समीप्य । निकटता ।
 अपदम् (न०) १ बुरा स्थान या घर । २ शब्द
 जो पदवाच्य न हो । ३ न्योस ।
 अपदक्षिणां (अव्यया०) बाई ओर ।
 अपदस (वि०) असंयमी । विना इन्द्रिय-निग्रह-वान् ।
 अपदेश (वि०) दस की संख्या से दूर ।
 अपदानं (न०) १ सदाचरण । विशुद्ध आच-
 अपदानकम् (न०) २ महान् या उत्तम काम ।
 सर्वोत्तम कर्म । ३ सम्यक् पूर्ण किया हुआ कार्य ।
 अपदार्थः (पु०) १ कुछ नहीं । २ वाक्य में जो शब्द
 प्रयुक्त हुए हों उनका अर्थ न होना ।

“ अपदार्थेति अपदार्थः अनुपपन्नः ”

—काव्यप्रकाश ।

अपदेशः (पु०) १ बयान । कथन । उपदेश । वर्णन ।
 २ बहाना । ब्याज । मिस । ३ लक्ष्य । उद्देश्य ।
 ३ अपने स्वरूप को छिपाना । भेष बदलना । ४
 स्थान । ५ अस्वीकृति । ७ कीर्ति । नामवरी । ८
 ब्रह्म । धोखा । दशाबाजी ।
 अपदेवता (स्त्री०) भूत । प्रेत । दुष्ट आत्मा ।
 अपद्रव्यं (न०) बुरी वस्तु ।
 अपद्वारं (न०) बगल का दरवाजा । बगली द्वार ।
 अपधूम (वि०) धूमरहित ।
 अपध्याजं (न०) बुरे विचार । अनिष्टचिन्तन । मन
 ही मन अकोसना ।
 अपध्वंसः (पु०) अधःपात । अपमान । बेइज्जती ।
 —जः (पु०)—जा (स्त्री०) किसी वर्णसङ्कर,
 अधम और अद्वैत जाति का व्यक्ति ।
 अपध्वस्त (व० क०) शायित । अकोसा हुआ ।
 धूणित । २ जो अच्छी तरह से न कूटा पीसा गया
 हो । अधकुटा । अधकचरा । ३ त्यक्त । त्यागा
 हुआ । छोड़ा हुआ ।
 अपध्वस्तः (पु०) दुष्ट अभागा । जिसमें सदसद्विवेक
 शक्ति रह ही न गयी हो ।
 अपनयः (पु०) १ हटाना । अलहदा करना । खरब-
 करना । २ बुरी नीति । बुरा आलचलन ।
 ३ उपकार ।
 अपनयनं (न०) हटाना । अलहदा करना । २
 (वाव) पुराना । चंगा करना । ३ उच्छेद्य करना ।
 अपनस (वि०) नकटा । नाक रहित ।
 अपनसिः (स्त्री०) } हटाना । अलगाना । अल-
 अपनोदः (पु०) } हटा करना । नष्ट करना ।
 अपनोदनम् (न०) } प्रायश्चित्त करना । दूर करना ।
 अपपाठः (पु०) बुरी तरह पाठ करना । गलत पाठ
 करना । पाठ में भूल ।
 अपपात्र (वि०) नीच जाति के पात्रों (बरतनों)
 को काम में लाने से वञ्चित ।
 अपपात्रितः (पु०) किसी बड़े दुष्कर्म करने के कारण
 जाति से च्युत मनुष्य जो अपने सम्बन्धियों के
 साथ एक बरतन में खा पी न सके ।

अपपानं (न०) अपेय । न पीने योग्य पीने की वस्तु ।
 अपप्रजाता (स्त्री०) स्त्री, जिसका गर्भपात हो गया हो ।
 अपप्रदानम् (न०) दूँस । रिश्वत ।
 अपभय { (वि०) डर से रहित । निर्भय ।
 अपभी { निःशङ्क । निडर ।
 अपभरणी (स्त्री०) अन्तिम तारापुञ्ज या नक्षत्र ।
 अपभाषणम् (न०) गालियाँ । मानहानि ।
 अपभ्रंशः (पु०) १ पतन । गिराव । २ बिगाड़ ।
 विकृति । ३ बिगाड़ा हुआ ।
 अपमः (पु०) ग्राह्यिक । ग्रहण या अयनमण्डल
 सम्बन्धी । क्रान्ति । अपक्रान्ति ।
 अपमर्दः (पु०) धूल गर्वा । जो बुहारा जाय ।
 अपमर्शः (पु०) झूना । चराना ।
 अपमानः (पु०) निरादार । बेइज्जती । बदनामी ।
 अपमार्गः (पु०) पगडंडी । बगली रास्ता । बुरी रास्ता ।
 अपमुख (वि०) बदशक्ल । बदसूरत । कुरूप ।
 अपमूर्धन (वि०) लापरवाह ।
 अपमार्जनम् (न०) १ धो कर साफ करना । पवित्र
 करना । २ हजामत बनवाना ।
 अपमृत्युः (पु०) कुमृत्यु । कुसमय की मौत । विजली
 गिरने से, विष खाने से, साँप आदि के काटने
 से मरना ।
 अपमृषित (वि०) १ जो बोधगम्य न हो । जो सम-
 न पड़े । अस्पष्ट । २ असह्य । नापसंद ।
 अपयशस् (न०) { बदनामी । अपकीर्ति ।
 अपयशः (पु०) }
 अपयानम् (न०) भाग जाना । पीछे लौट जाना ।
 अपर (वि०) १ जो पर या दूसरा न । पहिला ।
 पूर्व का । २ पिछला । जिससे कोई पर न हो ३ ।
 दूसरा । अन्य । और । भिन्न । ४ अपकृष्ट । नीचा ।
 —अग्नि, (पु०) दक्षिण और गार्हपत्याग्नि ।
 —अपराः, —अपरे, —अपराग्नि, दूसरे दूसरे ।
 कई एक । भिन्न भिन्न । —अहः, (पु०) तीसरे
 पहर । —इतरा, (स्त्री०) पूर्व दिशा । —कालः,
 (पु०) पीछे का काल । पिछला समय ।

—जनः, (पु०) पारचात्य जन । पश्चिमी
 देशों के रहने वाले । दक्षिण, (अव्यया०) दक्षिण
 पश्चिम में । —पत्तः, (पु०) १ कृष्णपत्त । २ दूसरी
 ओर । उल्टी ओर । ३ प्रतिवादी । —पर, (वि०)
 कई एक । भिन्न भिन्न । तरह तरह के । —पाणि-
 नीयाः, (पु०) पाणिनी के शिष्य जो पश्चिम में रहते
 हैं । —प्रणय, (वि०) सहज में दूसरे द्वारा प्रभा-
 वान्वित होने वाला । —रात्रः, (पु०) रात का पिछला
 पहर । —परलोकः, (पु०) स्वर्ग । —स्वस्तिकं
 (न०) आकाश का पश्चिमी अन्तिम बिन्दु । —
 हैमन (वि०) शीतकाल का पिछला भाग ।
 अपरः (पु०) १ हाथी का पिछला पैर । २ शत्रु ।
 अपरम् (न०) १ भविष्य । २ हाथी का पिछला
 पैर । (अव्यया०) पुनः । आगे ।
 अपरता (स्त्री०) { दूसरापन । अनगैरीपन । २४ गुणों में
 अपरत्वं (न०) } से एक गुण । अन्तर । सम्बन्ध ।
 अपरत्र (अव्य०) अन्यत्र । दूसरी जगह ।
 अपरक्त (वि०) १ विना रंग का । खुररहित । पीला ।
 २ असन्तुष्ट ।
 अपरतिः (स्त्री०) १ विन्नेद २ असन्तोष ।
 अपरवः (पु०) कगड़ा । विवाद (किसी सम्पत्ति के
 उपभोग के सम्बन्ध में) २ अपकीर्ति । बदनामी ।
 अपरस्पर (वि०) एक के बाद दूसरा । अवाधित ।
 लगातार ।
 अपरा (स्त्री०) पश्चिम का ओर । हाथी के पीछे का
 धड़ । ३ गर् शिष्य । भिक्षु । ४ गर्भावस्था में रुका
 हुआ रजोधर्म ।
 अपराग (वि०) विना रंग का ।
 अपरागः (पु०) १ असन्तोष । २ शत्रुता । दुश्मनी ।
 अपराञ्च (वि०) सम्मुख । सामने । —राक् (अपराक्)
 (अव्यया०) सम्मुख । सामने । —मुख, (वि०)
 —मुखी, (स्त्री०) २ मुँह न मोड़ना । ३ साहस
 के साथ सामना करना । मोर्चा लेना ।
 अपराजित (वि०) जो हारा न हो । अजेय ।
 अपराजितः (पु०) १ एक प्रकार का झहरीला कीड़ा ।
 २ विष्णु । ३ शिव ।

अपराजिता (स्त्री०) १ दुर्गादेवी जिनका पूजन दशहरा के दिन किया जाता है । २ ओषधि विशेष । यह ओषधि कलाई में घंत्र की तरह बांधी जाती है । ३ ईशान कोण ।

अपराधिः (स्त्री०) १ अपराध । कसूर । २ पाप । दुष्कर्म ।

अपराधः (पु०) १ कसूर । जुर्म । २ पाप ।

अपराधन् (वि०) अपराध करने वाला । अपराधी ।

अपरिग्रह (वि०) जिसके पास न तो कोई वस्तु हो और न कोई नौकर चाकर । निपट मोहताज । निपट रंक ।

अपरिग्रहः (पु०) १ अस्वीकृति । नामंजूरी । २ अभाव । गरीबी ।

अपरिच्छद (वि०) दरिद्र । गरीब । मोहताज ।

अपरिच्छिन्न (वि०) १ सतत २ अभेद्य । मिला हुआ ३ असीम । इत्यन्तारहित ।

अपरिणायः (पु०) अनुद्भावस्था । अविवाहित अवस्था । चिर-कौमार्य ।

अपरिणीता (स्त्री०) अविवाहित लड़की ।

अपरिसंख्यानम् (न०) १ आनन्द्य । २ असीम । ३ असंख्यत्व ।

अपरीक्षित (वि०) १ अनजांचा हुआ । अखिन्न । २ कुविचारित । मूर्खतापूर्ण । अविचारित । ३ जो सब प्रकार से सिद्ध या स्थापित न हुआ हो ।

अपरुष (वि०) क्रोधशून्य ।

अपरूप (वि०) [स्त्री०—अपरूपा या अपरूपी] बदशक्ल । कुरूप । बेढंग । अंगभंग ।

अपरेद्युः (अव्यया०) दूसरे दिन । अगले दिन ।

अपरीक्ष (वि०) १ अदृश्य । जो देख न पड़े । इन्द्रियों द्वारा जाना जाने वाला । २ समीप ।

अपरोधः (पु०) वर्जन । मनाई । रोक ।

अपर्णा (वि०) पत्तारहित ।

अपर्णा (स्त्री०) पार्वती या दुर्गा देवी का एक नाम ।

अपर्याप्त (वि०) १ अयथेष्ट । जो काफ़ी न हो । २ असीम । सीमारहित । ३ अशक्त । असमर्थ अधोम्य ।

अपर्याप्तिः (स्त्री०) १ अपूर्णता । कमी । त्रुटि । २ अयोग्यता । अक्षमता ।

अपर्याय (वि०) क्रमरहित । बेसिलसिले ।

अपर्यायः (पु०) क्रम या विधि का अभाव । जिसका कोई क्रम या सिलसिला न हो ।

अपर्युषित (वि०) रात का रखा हुआ नहीं । बासी नहीं । ताज़ा । टटका ।

अपर्वन (वि०) जिसमें गाँठ न हो । (न०) १ बेजोड़ अथवा जिसमें जोड़ने की जगह न हो । २ वे समय । अनन्तर ।

अपल (वि०) बेमांस का ।

अपलम् (न०) पिन या बोल्ड ।

अपलपनम् (न०) १ छिपाव । दुराव । २

अपलापः (पु०) छिपाना । किसी वस्तु की जानकारी को छिपाना । निकास । सत्य बात का, विचार का और भाव का छिपाना । —दण्डः, (पु०) मिथ्याभाषण के लिये सज़ा ।

अपलापिन् (वि०) इंकार करने वाला । मुकरने वाला । छिपाने वाला । [प्यास ।

अपलापिका (स्त्री०) अपलासिका (स्त्री०) बड़ी

अपलापिन् (वि०) १ प्यासा । २ प्यास या

अपलापुक (वि०) अभिलाषा से मुक्त ।

अपवन (वि०) विना आँधी बतास के । पवन से रक्षित ।

अपवनम् (न०) नगर के समीप का बाग । उपवन । ललाकुल ।

अपवरकः (पु०) १ भीतरी कमरा । २

अपवारका (स्त्री०) १ रोशनदान । झरोखा ।

अपवर्णा (न०) १ पर्दा । चिक । २ कपड़ा ।

अपवर्गः (पु०) १ पूर्णता । समाप्ति । किसी कार्य का पूरा होना या सुसम्पन्न होना । २ अपवाद ।

विशेष नियम । ३ स्वर्गीय आनन्द । ४ भेंट ।

पुरस्कार । दैन । ५ त्याग । ६ फैंकना । छोड़ना

(तीरों का) ।

अपवर्जनम् (न०) १ त्याग । (प्रतिज्ञा की) पूर्ति ।

उद्घरण होना । २ भेंट । दान । ३ स्वर्गीय आनन्द ।

अपवर्तनम् (न०) पलटाव । उलटफेर । २ वञ्चित

करना ।

अपवादः (पु०) १ निन्दा । अपकीर्ति । कलङ्क ।
२ नियम विशेष जो व्यापक नियम के विरुद्ध हो ।
३ आज्ञा । निर्देश । ४ खण्डन । प्रतिवाद । ५
विश्वास । इतमीनान । ६ प्रेम । सौहार्द ।
सद्भाव । आत्मीयता । ७ वेदान्तशास्त्रानुसार
अध्यारोप का निराकरण ।

अपवादक (वि०) १ निन्दक । बदनाम करने
अपवादिन् (वि०) वाला । २ विरोधी । किसी आज्ञा
को हटाने वाला । बाहिर करने वाला ।

अपवारणम् (न०) १ छिपाव । ढकाव । २ अन्तर्धान ।
३ रोक । व्यवधान । बीच में पड़ कर आघात से
बचाने वाली वस्तु ।

अपवारित (वि० कृ०) १ ढका हुआ । छिपा हुआ ।
२ दूर किया हुआ । हटाया हुआ । ३ तिरोहित ।
अन्तर्हित ।

अपवारितम् (न०) छिपे हुए या गुप्त तौर
अपवारितकम् (वि०) तरीके ।

अपवादः (पु०) १ दूर करना । हटाना ।
अपवाहनम् (न०) २ कम करना । घटाना ।

अपविघ्न (वि०) अबाधित । बिना रोक टोक का ।

अपविद्ध (व० कृ०) १ ढलकाया हुआ या दूर फैका
हुआ । २ त्यक्त । त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । अस्वी-
कृत किया हुआ । भूला हुआ । स्थानान्तर किया
हुआ । बुझाया हुआ । रहित । हीन । २ नीच ।
क्षुद्र । ओझा ।

अपविद्धः (पु०) हिन्दूधर्मशास्त्रानुसार बारह प्रकार के
पुत्रों में से वह पुत्र जिसे उसके जनक जननी ने
त्याग दिया हो और अन्य किसी ने उसे गोद ले
लिया हो ।

अपविद्या (स्त्री०) अज्ञता । आध्यात्मिक अज्ञान ।
अविद्या । माया ।

अपवीणा (वि०) बुरी बीया रखने वाला या बिना
बीया का ।

अपवीणा (स्त्री०) बुरी बीया ।

अपवृत्तिः (स्त्री०) पूर्ति । समाप्ति । सम्पूर्णता ।

अपवृत्तिः (स्त्री०) । खुलाव । जो ढका न हो ।

अपवृत्तिः (स्त्री०) समाप्ति । क्षोर । अन्त ।

अपवेधः (पु०) शलत छेदना (मोती आदि का) ।
ठीक स्थान पर न वेधना ।

अपव्ययः (पु०) फिजूलखर्च । निरर्थक व्यय ।

अपशकुनम् (न०) बुरा सगुन । असगुन ।

अपशङ्क (वि०) निडर । निर्भय ।

अपशब्दः (पु०) १ अशुद्ध शब्द । दूषित शब्द ।
२ असंबद्ध प्रलाप । ३ गाली । कुवाच्य । ४
पाद । गोज्ञ । अपानवायु ।

अपशिरस् (वि०) सिररहित । बेसिर का ।
अपशीर्ष (वि०) सिररहित । बेसिर का ।
अपशीर्षिन् (वि०) सिररहित । बेसिर का ।

अपशुच (वि०) बिना शोक । (पु०) रुद्ध ।
जीवात्मा ।

अपशोकः (पु०) अशोकवृक्ष ।

अपश्चिम (वि०) जिसके पीछे कोई न हो । २ प्रथम ।
पूर्व । सब के आगे वाला । ३ अति । अत्यन्त ।

“ अपश्चिमा कष्टानामपदं प्राप्नुवत्यहं । ”

—रामायण

अपश्रयः (पु०) तकिया । बालिश ।

अपश्री (वि०) सौन्दर्यरहित । बदसूरत ।

अपश्रु (न०) अङ्गुश की नोक ।

अपशु (वि०) १ विरुद्ध । २ प्रतिकूल । ३ बाँया ।
(अव्य०) १ विरुद्ध । २ झुठई से । ३ निर्दोषता
से । ४ भली भाँति । ठीक ठीक ।

अपशु (वि०) उल्टा । विरुद्ध ।
अपशुल (वि०) उल्टा । विरुद्ध ।

अपसदः (पु०) १ जातिवहिष्कृत । २ अधम । नीच ।
अपकृष्ट । ३ नीच जाति विशेष ।

अपसरः (पु०) १ अपसरण । हटना । पीछे लौटना ।
२ युक्तियुक्त कारण । ३ उचित समाप्रार्थना ।

अपसरणम् (न०) चला जाना । झूट जाना
(सेना का) । बच कर निकल जाना ।

अपसर्जनम् (न०) १ त्याग । २ भेंट या दान ।
३ स्वर्गाय सुख ।

अपसर्पः (पु०) जासूस । भेदिता ।
अपसर्पकः (पु०) जासूस । भेदिता ।

अपसर्पणं (न०) पीछे हटना या जाना । भेदिया की तरह भेद लेना ।

अपसर्पण्य } (वि०) १ दहिना । २ उहटा ।
अपसर्पण्यक } विरुद्ध ।

अपसर्पण्यम् (अव्यया०) यज्ञोपवीत को बाँधे कंधे से दहिने कंधे पर करना ।

अपसारः (पु०) १ बाहिर जाना । बहिर्गमन । पीछे लौटना । २ निकाल । निकलने का रास्ता ।

अपसारणम् (न०) १ दूर हटाना । हँका देना ।
अपसारणा (स्त्री०) १ निकाल देना । रास्ता देना ।
बाजू हो जाना ।

अपसिद्धान्तः (पु०) असत् सिद्धान्त ।

अपसृतिः (स्त्री०) गमन ।

अपस्करः (पु०) पहियों को छोड़ गाड़ी का अन्य कोई भाग ।

अपस्करम् (न०) १ विद्या । २ योनि । भग ।
३ गुदा । मलद्वार ।

अपस्नानं (न०) १ अशौचस्नान । २ अपवित्र स्नान । ऐसे जल में स्नान करना जिसमें कोई मनुष्य पहिले अपना शरीर धो चुका हो ।

अपस्पश (वि०) जिसके पास जासूस न हो ।

अपस्पर्श (वि०) विषेत्तन । संज्ञाहीन । अनुभव-शक्तिहीन ।

अपस्मारः (पु०) १ विस्मृति । भ्रान्ति ।
अपस्मृति (वि०) २ मिरगी । बीमारी ।

अपस्मारिन् (वि०) १ मुलकड़ । मूल जाने वाला ।
अपस्मृतिः (स्त्री०) २ भिगी के रोग वाला ।

अपह (वि०) दूर रखते हुए । स्थानान्तरित करते हुए । नाश करते हुए ।

अपहतपाप्मा (वि०) जिसके समस्त पाप दूर हो गये हों । वेदान्त द्वारा जानने योग्य (आत्मा) ।

अपहतिः (स्त्री०) हटाना । नष्ट करना । विनाश । उच्छेद ।

अपहननम् (न०) निवारण करना । हटाना । प्रति-क्षेप करना । पीछे हटाना ।

अपहरणम् (न०) १ हर ले जाना । स्थानान्तरित करना । २ चुराना ।

अपहसितं (न०) १ अकारण हास । मूर्खतापूर्ण
अपहासः (पु०) २ हास । निरर्थक हास्य ।

अपहसित (व० कृ०) निरस्त । हराया हुआ । गले में हाथ देकर निकाला हुआ । रद्दी किया हुआ । छोड़ा हुआ । त्यागा हुआ ।

अपहानिः (स्त्री०) १ त्याग । विच्छेद । २ अन्तर्धान । नाश । वर्जन ।

अपहारः (पु०) लूट । चोरी । छिपाव । छुटाना । अपचय । अपहरण । सङ्कोचन ।

अपहारक (वि०) १ अपहरण करने वाला । छीनने वाला । बलात् हरने वाला । २ डाँकू । चोर छुटेरा ।

अपहारी (वि०) १ अपहरणशील । २ नाश करने वाला । ३ चोर । छुटेरा ।

अपहृत (वि०) छीना हुआ । लूटा हुआ । चुराया हुआ ।

अपहवः (पु०) छिपाव । दुराव । २ वायजाल से सत्य को छिपाना । ३ बहाना । टालमटोल । ४ स्नेह । प्रेम ।

अपभुतिः (स्त्री०) १ मुकरना । सत्य को छिपाना । २ काव्यालङ्कार विशेष । इसमें उपमेय का निषेध कर के उपमान स्थापित किया जाता है ।

अपह्वासः (पु०) बटाव । कमी ।

अपाकः (पु०) १ अजीर्ण । अनपच । २ कच्चापन । ३ अवयस्कता ।

अपाकरणम् (न०) १ निराकरण । हटाना । दूर करना । २ अस्वीकृति । नामंजुरी । खण्डन । ३ अदायगी । कर्ज की अदायगी का प्रबन्ध । ४ व्यवसाय उत्तोलन । किसी कारबार को समेटना । उठा देना ।

अपाकर्मन् (न०) अदायगी । परिशोध । अण-परिशोध की व्यवस्था । कारवार उठाना ।

अपाकृतिः (स्त्री०) अस्वीकृति । स्थानान्तरित कारण । भय या क्रोध से उत्पन्न उद्वास ।

अपात (वि०) १ विद्यमान । प्रत्यक्ष । हन्निग्रभाद्य । २ नेत्रहीन । बुरे नेत्रों वाला ।

अपांक } (वि०) एक पंक्ति में नहीं । जालि
अपांकेय } बहिष्कृत । जो अपनी विरादरी के साथ
अपांक्य } बैठ कर न लायी सके ।

अपाङ्गः } (पु०) १ आँख का कोना । २ सम्प्र-
 अपाङ्गकः } दाय सूचक माथे पर का चिन्ह । ३ काम-
 देव ।—दर्शनं, (न०) —दृष्टिः, (स्त्री०)
 —विलोकितं, (न०) —चोक्षणां, (न०) कनखियों
 से देखना । आँख मारना ।
 अपाच्च } (वि०) १ पश्चात्भाग में स्थित । पीछे ।
 अपांच् } अनखुला । अस्पष्ट । ३ पश्चात्त्य । ४
 दक्षिणी । दक्षिण का ।
 अपाची (स्त्री०) दक्षिण या पश्चिम दिशा ।
 अपाचीन (वि०) १ पीछे को घूमा हुआ । पीछे को
 मुड़ा हुआ । २ अदृश्य । जो न देख पड़े । ३ दक्षिण
 का । पश्चिम का । सामने का । उल्टा ।
 अपाच्य (वि०) दक्षिणी या पश्चिमी ।
 अपाणिनीय (वि०) १ पाणिनी के नियमों के विरुद्ध ।
 २ वह जिसने पाणिनी का व्याकरण भली भाँति
 न पढ़ा हो । संस्कृत भाषा का मामूली ज्ञान ।
 अपात्रं (न०) १ कुपात्र । बुरा वस्तु । अयोग्यपुरुष । दान
 देने के लिये अयोग्य व्यक्ति । निन्दित । बुराचारी ।
 अपात्रीकरणम् (न०) निन्दित कर्म करने वाला ।
 अयोग्यता । नौ प्रकार के पापों में से एक ।
 अपादानं १ (न०) हटाना । अलगवा । विभाग ।
 २ व्याकरण में पाँचवाँ कारक ।
 अपाध्वन् (पु०) बुरा मार्ग ।
 अपानः (पु०) १ शरीर में नीचे रहने वाला पवन ।
 पाँच प्राण वायुओं में से एक । यह गुदा मार्ग से
 निकलता है । २ गुदा ।
 अपानृत (वि०) सत्य । असत्य से मुक्त ।
 अपाप } (वि०) पापरहित । विशुद्ध । पवित्र ।
 अपापिन् } धर्मात्मा ।
 अपां (अप् का बहुवचन)—ज्योतिस्, (न०) विजली
 विद्युत ।—नपान्, सावित्री और अग्नि की उपाधि ।
 —नाथः, (पु०) पतिः, (पु०) १ समुद्र । २
 वरुण का नाम ।—निधिः, (पु०) १ समुद्र । २
 विष्णु का नाम ।—पाथम्, (न०) भोजन ।—
 पित्तं, (न०) अग्नि ।—योनिः, (पु०) समुद्र ।
 अपामार्गः (पु०) चिचड़ा । अजाभारा ।
 अपामार्जनं (न०) धोना । साफ करना । (रोग
 आदि को) दूर करना ।

अपायः (पु०) १ प्रस्थान । २ वियोग । अलगवा ।
 ३ अदृश्यता । तिरोहितता । अविद्यमानता ।
 सर्वनाश । ४ हानि । चोट ।
 अपार (वि०) १ पार रहित । २ असीम । सीमा-
 रहित । ३ जो कमी चुके ही नहीं । बहुत । ४
 पहुँच के बाहिर । ५ जिसके पार कठिनता से हुआ
 जाय । जिससे पार पाना कठिन हो ।
 अपारम (न०) नदी का दूसरा तट ।
 अपार्ण (वि०) १ दूर । फासला । २ समीप ।
 अपार्थ } (वि०) निकम्मा । हानिकारी ।
 अपार्थक्य } निरर्थक । अर्थहीन ।
 अपावरणं (न०) } १ घेरा । २ छिपाव । बुराव ।
 अपावृत्तिः (स्त्री०) }
 अपावर्तनम् (न०) } १ लौट जाना । पीछे चला
 अपावृत्तिः (स्त्री०) } जाना । भाग जाना ।
 २ क्रान्ति ।
 अपाश्रय (वि०) निरावलम्ब । असहाय ।
 अपाश्रयः (पु०) १ आश्रय । आश्रयस्थल ।
 २ चन्दोवा । शामियाना । शीर्ष ।
 अपासंगः } (पु०) तरकस ।
 अपासङ्गः }
 अपासनं (न०) १ फेंक देना । रही कर देना । २ त्याग ।
 परित्याग । ३ नाश ।
 अपासरणं (न०) प्रस्थान । हटाना ।
 अपास्तु (वि०) निर्जीव । मृत ।
 अपि (अव्यया०) सम्भावना । प्रश्न । शङ्का । गद्वाँ ।
 समुच्चय । अनुज्ञा । अवधारण । भी । ही ।
 निश्चय । ठीक ।
 अपिगीर्णं (वि०) १ प्रशंसित । प्रसिद्ध । २ कथित ।
 वर्णित ।
 अपिच्छिल (वि०) गँदला नहीं । स्वच्छ । साफ ।
 अपितृक (वि०) १ पितारहित । २ पैतृक या पुत्रतैनी
 नहीं । अपैतृक ।
 अपिव्य (वि०) पैतृक नहीं ।
 अपिधानं—पिधानं (न०) ढकना । आच्छादन ।
 अपिधिः (स्त्री०) छिपाव । बुराव ।
 अपिब्रत (वि०) किसी धर्मानुष्ठान में भाग लेनेवाला ।
 रक्तसम्बन्ध युक्त ।

अपिहित—पिहित (न० कृ०) बंद । मुँदा हुआ । ढका हुआ । छिपा हुआ ।

अपीतिः (स्त्री०) १ प्रवेश । समीप गमन । २ नाश । हानि । ३ प्रलय ।

अपीनसः (पु०) नाक में खुरकी । ठंडक (स्त्रि में)

अपुंस्का (स्त्री०) विना पति की स्त्री ।

अपुत्रः (पु०) पुत्ररहित ।

अपुत्रक (वि०) पुत्र या उत्तराधिकारी रहित ।

अपुत्रिका (स्त्री०) पुत्ररहित पिता की लड़की जिसके निज का भी कोई पुत्र न हो ।

अपुनर् (अव्यया०) फिर नहीं । सदा के लिये । एक बार । सदैव ।—अन्वय (वि०) पुनः न लौटने वाला । मृत ।—आदानं (न०) वापिस न लेना या पुनः न लेना ।—आवृत्तिः (स्त्री०) मोच ।

अपुष्ट (वि०) १ दुबला । पतला २ धीमा । अप्रखर । कोमल (स्वर) ।

अपूपः (पु०) पुआ । मालपुआ । अँदरसा ।

अपूरणी (स्त्री०) शालमली वृक्ष । सेमर का पेड़ ।

अपूर्ण (वि०) अधूरा । जो पूर्ण न हो । असमाप्त ।

अपूर्व (वि०) जो पहिले न रहा हो । नया । विलक्षण । असाधारण । अद्भुत । ३ अपरिचित । ४ प्रथम नहीं ।—पतिः (स्त्री०) जिसके पहिले पति न रहा हो । क़ारी । अविवाहिता ।—विधिः (स्त्री०) अन्य प्रमाणों से अप्राप्त अर्थ का विधान करने वाला ।

अपूर्वः (पु०) परमात्मा ।

अपूर्वम् (न०) पाप पुण्य, जिसके कारण पीछे सुख दुःख की प्राप्ति होती है ।

अपृथक् (अव्यया०) अलहदा से नहीं । साथ साथ । समष्टि रूप से ।

अपेक्षा (स्त्री०) १ उम्मेद । आशा । अभिलाषा ।

अपेक्षणी (न०) २ आवश्यकता । आकांक्षा । ३ कार्य और कारण का परस्पर सम्बन्ध । सम्बन्ध । ४ परबाह । ध्यान । ५ प्रतिष्ठा । सम्मान ।

अपेक्ष्य } (वि०) वाञ्छनीय । आकांक्षणीय ।
अपेक्षितम् } अपेक्षित । ज़रूरी ।
अपेक्षणीय }

अपेक्षितम् (न०) इवाहिश । इच्छा । सम्मान । सम्बन्ध ।

अपेत (सं० का० कृ०) १ तिरोहित । गथा हुआ । २ विरुद्ध । रहित । मुक्त । दोषरहित ।—कृत्यः (वि०) कार्यशून्य ।

अपोगण्डः (पु०) १ किसी शरीरावयव की अधिकता अथवा स्वल्पता । देह के किसी अङ्ग की कमी या बेशी । २ सोलह वर्ष की अवस्था के नीचे नहीं अर्थात् ऊपर । बालिग । वयस्क । ३ बालक । बच्चा । ४ अत्यन्त भीरु । बड़ा डरपोंक । ५ (चेहरे की) सकुड़न वाला ।

अपोढ (वि०) निरस्त । त्यक्त । निकाला हुआ ।

अपोदका (स्त्री०) शाक विशेष । पूति नामक शाक ।

अपोहः (पु०) १ स्थानान्तरित करना । हँका देना । मथा देना । पुराना । २ शङ्का या तर्क का निराकरण । ३ तर्क वितर्क करना । बहस करना । ४ उन सब विषयों का निराकरण जो विचारणीय विषय के बाहिर हो ।

अपोहनम् (न०) तर्क वितर्क करने की शक्ति । बहस करने की योग्यता ।

अपोहा (सं० का० कृ०) हटाने योग्य । दूर किया अपोहनीय । हुआ । निकाला हुआ ।

अपौरुष } (वि०) १ कायर । भीरु । २ अमानु-
अपौरुषेयं } धिक । अलौकिक ।

अपौरुषम् } (न०) १ भीरुता । डरपोंकपन । कायरता
अपौरुषेयम् } २ अलौकिक या अमानुषिक शक्ति ।

अप्तोर्यामः } (पु०) एक यज्ञ का नाम । सामवेद
अप्तोर्यामन् } की एक ऋचा का नाम । जो उक्त यज्ञ की समाप्ति में पढ़ी जाती है । ज्योतिष्टोम यज्ञ का अन्तिम या सप्तम भाग ।

अप्रययः (पु०) १ समीप आगमन । मिलन । २ (नदी में से) उल्लेखना । उल्लिखना । ३ प्रवेश । अन्तर्धान । अदृष्ट होना । मोच होना । ४ नाश ।

अप्रकरणं (न०) मुख्य विषय नहीं । चाहियात विषय ।

अप्रकाश (वि०) १ धुँधला । काला । चमक से शून्य । २ स्वप्रकाशमान् । ३ तिरोहित । छिपा हुआ । गुप्त ।

अप्रकाशम् } (अव्यया०) चुपके से । गुप्तचुप ।
अप्रकाशे }

अप्रकृत (वि०) अमुख्य । अप्रधान । नैमित्तिक ।
२ विषय से भिन्न । अप्रासङ्गिक ।

अप्रकृतम् (न०) १ उपमान । अस्वाभाविक ।
बनावटी । २ झूठा ।

अप्रगम (वि०) हतनी तेज़ी से जाने वाला कि
अन्य लोग पीछे न चल सकें ।

अप्रगल्भ (वि०) १ असाहसी । शर्मीला । शीलवान्
२ अप्रौढ़ । ३ निरुद्यम । डीला । सुस्त ।

अप्रगुण (वि०) व्याकुल । प्रकृष्ट गुणहीन ।

अप्रज्ञ (वि०) १ सन्तान रहित । सन्ततिहीन ।
२ अनुपपन्न । ३ जो (स्थान या घर) बसा न हो ।
जहाँ बस्ती न हो ।

अप्रजस (वि०) १ सन्तति हीन । जिसके कोई
अप्रजतो) औलाद न हो ।

अप्रज्ञाता (स्त्री०) बन्ध्या स्त्री ।

अप्रतिकर्मन् (वि०) १ ऐसे कर्म करने वाला, जिसकी
बराबरी अन्य कोई न कर सके । २ अनिवार्य ।
अति प्रबल । अप्रतिरोधनीय ।

अप्रतिकार (वि०) १ जिसका कोई उपाय या तद-
अप्रतीकार) वीर न हो सके । लाहज़ाज । असाध्य ।
२ जिसका कोई बदला न दिया जा सके ।

अप्रतिघ (वि०) १ अमेघ । अजेय । २ जो नष्ट न
किया जा सके । जो हटाया न जा सके । जो दूर
न किया जा सके । ३ अक्रोधी । शान्त ।

अप्रतिद्वन्द्व (वि०) १ जिसका कोई प्रतिद्वन्द्वी न
अप्रतिद्वन्द्व) हो । अजेय । २ बेजोड़ ।

अप्रतिपत्त (वि०) १ अप्रतियोगी । विपक्षीशून्य ।
शत्रुरहित । २ असदृश ।

अप्रतिपत्ति (स्त्री०) १ अस्वीकृति । अकृति ।
२ उपेक्षा । ३ समझदारी का अभाव । ४ दृढ़
विचार शून्यता । गढ़बड़ी । विह्वलता ।

अप्रतिबन्ध (वि०) १ रुकावट का न होना । स्वच्छ-
न्दता । २ विवादरहित । विना झगड़े का ।

अप्रतिबल (वि०) अजेयशक्तियुक्त । वह मनुष्य
जिसके समान बली दूसरा न हो ।

अप्रतिभ (वि०) १ शीलवान् । लज्जालु । २
प्रतिभाशून्य । उदास । ३ स्फूर्ति रहित । सुस्त ।
४ मतिहीन । निर्बुद्धि ।

अप्रतिमट (वि०) जिसका सामना करने वाला कोई
न हो । बेजोड़ ।

अप्रतिमटः (पु०) ऐसा घोड़ा जिसके सामने कोई
खड़ा न रह सके ।

अप्रतिम (वि०) जिसकी तुलना न हो सके । बेजोड़ ।
असदृश । असमान । अप्रतिद्वन्द्वी ।

अप्रतिरथ (वि०) ऐसा वीर योद्धा जिसके समान
दूसरा वीर योद्धा न हो । बेजोड़ वीर योद्धा ।

अप्रतिरथः (पु०) विष्णु ।

अप्रतिरथम् (न०) १ युद्ध की यात्रा । २ युद्धार्थ
यात्रा के लिये किया गया मङ्गलाचार । ३ सामवेद
का एक भाग ।

अप्रतिरव (वि०) विवादरहित । जिसके सम्बन्ध में
कोई झगड़ा न हो ।

अप्रतिरूप (वि०) जिसके समान रूप वाला कोई
न हो । अद्वितीय । अनुपम । जिसकी तुलना न
हो सके ।—कथा, (स्त्री०) ऐसा वचन जिसका
उत्तर न हो । उत्तरहीन वचन ।

अप्रतिवीर्य (वि०) वह जिसके समान शौर्य या परा-
क्रम किसी अन्य में न हो । अथवा जिसके शौर्य
या पराक्रम की समानता अन्य न कर सके ।

अप्रतिशासन (वि०) जिसका शासन में दूसरा कोई
प्रतिद्वन्द्वी न हो । एक ही शासन में रहने वाला ।

अप्रतिष्ठ (वि०) १ अस्थायी । विनश्वर । २ जो
लाभप्रद न हो । निकम्मा । व्यर्थ । ३ अपकीर्तिकर ।

अप्रतिष्ठानम् (न०) अनस्थिरत्व । प्रौढ़ता या दृढ़ता
का अभाव ।

अप्रतिहत (वि०) १ अबाधित । निर्विघ्न । अजेय ।
२ आघातरहित । ३ बलवान् । जो निर्बल न हो ।
४ जो हतोत्साह न हो ।—नेत्र (वि०) जिसके
नेत्र निर्बल न हो ।

अप्रतीत (वि०) १ जो प्रसन्न या हर्षित न हो ।
२ जिसकी बात समझ में न आवे । अस्पष्ट । शब्द
दोष विशेष ।

अप्रमत्ता (स्त्री०) क़ारी लड़की, जिसका विवाह न हुआ हो । या जिसका दान न किया गया हो ।

अप्रत्यक्ष (वि०) १ अदृष्ट । अगोचर । २ अज्ञात । ३ अविद्यमान । अनुपस्थित ।

अप्रत्यय (वि०) १ आत्मसन्दिग्ध । बेपत्तवार । जिसको किसी पर विश्वास न हो । २ ज्ञानशून्य । ३ व्याकरण में प्रत्यय रहित ।

अप्रत्ययः (पु०) अविश्वास । आत्मसंशय । २ जिसका मतलब न समझा गया हो । दुर्बोध । ३ प्रत्यय नहीं ।

अप्रदक्षिणा (अव्यय०) बाण से दहिनी ओर ।

अप्रधान (वि०) अमुख्य । गौण । अन्तर्वर्ती ।

अप्रधानम् (न०) १ मातृहत्या की हालत । तावेदारी । अधीनतायी । २ गौणकर्म ।

अप्रधुष्य (वि०) अजेय । जो जीता न जा सके ।

अप्रभु (वि०) १ जो बलवान न हो । बलरहित । २ जिसमें शासन करने की शक्ति न हो । अशक्त । असमर्थ । अयोग्य ।

अप्रमत्त (वि०) जो प्रमादी न हो । असावधान न हो । सावधान । बुद्धिमान । सतर्क ।

अप्रमद (वि०) उत्सवरहित । उदास । हर्षरहित ।

अप्रमा (स्त्री०) अथार्थ ज्ञान । मिथ्या ज्ञान ।

अप्रमाण (वि०) १ असीम । अपरिमाण । २ अप्रामाणिक । ३ जो प्रमाण न माना जाय । अविश्वस्त ।

अप्रमाणम् (न०) १ ऐसी आज्ञा या नियम जो किसी कार्य में प्रमाण मान कर ग्रहण न किया जाय । २ असङ्गति । अप्रासङ्गिकता ।

अप्रमाद (वि०) सतर्क । सावधान ।

अप्रमादः (पु०) सावधानी । सतर्कता ।

अप्रमेय (वि०) जो नापा न जा सके । असीम । सीमारहित । २ जो अथार्थ रूप से न जाना या समझा जा सके । जाँच के अयोग्य ।

अप्रमेयम् (न०) ब्रह्म ।

अप्रयाणिः (स्त्री०) गमन न करने वाला । जो उन्नति न करे । (इसका प्रयोग प्रायः किसी को शाप देने या अकोसने में होता है ।

अप्रयुक्त (वि०) अव्यवहृत । जिसका प्रयोग न किया गया हो या किया जा सके । दुर्व्यवहृत । अनुचित-रीत्या प्रयुक्त । (अ०) दुर्लभ । आसाधारण ।

अप्रवृत्तिः (स्त्री०) १ क्रियाशून्यता । निश्चेष्टता । जड़ता । उत्तेजना का अभाव ।

अप्रसङ्गः (पु०) १ अनुराग का अभाव । २ सम्बन्ध का अभाव । ३ अनुपयुक्त समय या अवसर ।

अप्रसिद्ध (वि०) १ अज्ञात । तुच्छ । २ असाधारण ।

अप्रस्ताविक (वि०) [स्त्री०—अप्रस्ताविकी] अप्रासङ्गिक । असङ्गत ।

अप्रस्तुत (वि०) १ असङ्गत । प्रसङ्ग विरुद्ध । २ वादियात । अर्थ रहित । ३ नैमित्तिक । विजातीय । बहिरङ्ग । अप्रधान ४ जो प्रस्तुत या विद्यमान न हो ।—प्रशंसा, (स्त्री०) वह अर्थालङ्कार जिसमें अप्रस्तुत के कथन द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाय ।

अप्रहृत (वि०) १ अनाहत । २ अनजुती भूमि । ३ कोरा कपड़ा ।

अप्राकरणिक (वि०) [स्त्री०—अप्राकरणिकी] जो प्रकरण के या प्रसङ्ग के अनुसार न हो ।

अप्राकृत (वि०) १ जो प्राकृत न हो । गँवारु । २ जो असली न हो । अस्वाभाविक । ३ असाधारण ४ विशेष ।

अप्राश्य (वि०) गौण । अधीन । निकृष्ट ।

अप्राप्त (वि०) जो मिल न सके । २ जो न पहुँचा हो, न आया हो । ३ नियम जो लागू न हो ।—अवसर,—काल (वि०) अनवसर का । बेमौके । अनश्रुत का । कुसमय का ।—यौवन (वि०) जो युवा न हुआ हो ।—व्यवहार,—वयस्, (वि०) नाबालिग । अवयस्क ।

अप्राप्तिः (स्त्री०) १ अलब्धि । २ जो पूर्व में किसी नियम से सिद्ध या प्रतिष्ठित न हुआ हो । ३ जो धटित न हो ।

अप्रामाणिक (वि०) [स्त्री०—अप्रामाणिकी] १ जो प्रामाणिक न हो । ऊटपटाँग । २ अविश्वस्त । जो मातृवर न हो ।

अप्रिय (वि०) १ अरुचिकर । नापसंद । २ जो प्यारा न हो जो मित्र न हो ।

अप्रियः (पु०) शत्रु । बैरी ।

अप्रियम् (न०) अरुचिकर काम । नापसंद काम ।

अप्रीतिः (स्त्री०) अरुचि । नापसंदगी । घृणा । अभक्ति । पराङ्मुखता ।

अप्रौढ़ (वि०) जो प्रौढ़ अर्थात् बड़ न हो । २ भीरु । असाहसी । ३ जो पूरा बड़ा हुआ न हो ।

अप्रौढ़ा (स्त्री) १ अविवाहित लड़की । २ लड़की जितका हाल ही में विवाह हुआ हो, किन्तु जिसे रजस्वला धर्म न होता हो ।

अप्लुत (वि०) जो प्लुत न हो । अदीर्घकृत (स्वर) । अविलम्बित ।

अप्सरस् } (स्त्री०) इन्द्र की सभा में नाचने वाली
अप्सरा } देवाङ्गना, जो गन्धर्वों की स्त्रियाँ कही
अप्सरः } जाती हैं । स्वर्गवेद्या ।—पतिः, (पु०)
इन्द्र ।

अफल (वि०) फलरहित । वेफलवाला । बन्ध्या । २ जो उर्वर न हो । व्यर्थ । निरर्थक । ३ नपुंसक किया हुआ । खोजा या हिजड़ा बनाया हुआ ।—आफांतिन्, —प्रेप्सु, (वि०) ऐसा पुरुष जो अपने परिधम का पुरस्कार या पारिश्रमिक न चाहे । निस्स्वार्थी ।

अफलः कांश्चिन्निर्बन्धः क्रियते ब्रह्मादिभिः । ”

महाभारत

अफेल (वि०) विना फैल का । फेतरहित ।

अफेनम् (न०) अफीम ।

अबद्ध } (वि०) १ विना बंधा हुआ । अनरुद्ध ।
अबद्धक } स्वतंत्र । २ विना अर्थ का । निरर्थक
वाहियात । गुमसुम । विरुद्ध ।—मुख (वि०)
जो मुँह का अपवित्र हो । जो गाली गलौज
बका करे ।

अबन्धु }
अबन्धु } (वि०) एकाकी । मित्र रहित ।
अबाधध }
अबाधध }

अबल (वि०) १ निर्बल । कमजोर । २ अरक्षित ।

अबला (स्त्री०) स्त्री । औरत ।

अबाध (वि०) १ बाधा शून्य । अबाधित । २ पीडा रहित ।

अबाधः (पु०) १ रोकटोक न होना । २ अखण्डन ।

अबाल (वि०) लड़कपन नहीं । लड़का नहीं । जवान । २ छोटा नहीं । पूरा (जैसा पूर्णिमा का चन्द्र) ।

अबाह्य (वि०) १ बाहिरी नहीं । भीतरी । २ (आल०) परिचित ।

अविधनः } (पु०) समुद्र के भीतर रहने वाला
अविन्धनः } अग्नि । बड़वानल ।

अबुद्ध (वि०) बुद्ध । मूर्ख । वेवकूफ ।

अबुद्धिः (स्त्री०) १ बुद्धि का अभाव । निर्बुद्धिता । २ अज्ञान । मूर्खता ।—पूर्व,—पूर्वक, (वि०) बेस-मक्का हुआ । अनजाना हुआ ।—पूर्व (अबुद्धि-पूर्व)—वर्क, (अबुद्धिपूर्वकम्) (अव्यया०) अज्ञातभाव से । अनजानपने से ।

अबुध् } (वि०) निर्बोध । मूढ़ । (पु०) मूर्ख व्यक्ति ।
अबुध् } मूढ़ व्यक्ति (स्त्री०) अज्ञानता । बुद्धि का
अभाव ।

अबोध (वि०) अज्ञानी । मूर्ख । मूढ़ ।—गम्य (वि०) जो समझ में न आवे ।

अबोधः (पु०) अज्ञता । मूर्खता । मूढ़ता । ज्ञान का अभाव ।

अब्ज (वि०) जल में या जल से उत्पन्न ।—कार्तिका कमल का बीज पुटक ।—जः, —भवः, —भूः,—योनिः, (पु०) ब्रह्मा के नाम ।—बान्धवः, (पु०) सूर्य ।—वाहनः, (पु०) शिवजी का नाम ।

अब्जम् (न०) १ कमल । २ संख्याविशेष । सौ करोड़ । अरब । ३ भसीड़ा । ४ शंख । ५ चन्द्रमा । ६ बन्धन्तरि ।

अब्जा (स्त्री०) सीप ।

अब्जिनी (स्त्री०) १ कमलों का समुदाय । २ स्थान जहाँ कमल ही कमल हो । ३ कमल का पौधा ।—पतिः, (पु०) सूर्य ।

अब्दः (पु०) १ बादल । वर्ष (पु० और न०) । २ एक पर्वत का नाम ।—अर्थ, (न०) आधा

वर्ष । १ महीना ।—वाहनः, (पु०) शिव जी का नाम ।—शतं, (न०) शताब्दी । सदी । १०० वर्ष ।—सारः, (पु०) एक प्रकार का कपूर ।

अग्निः (पु०) १ समुद्र । २ ताल । सरोवर । जलाशय । झील । ३ सान और कमी २ चार की संख्या का संकेत ।—अग्निः, (पु०) बड़वानल ।—कफः, —फेनः (पु०) फेन ।—जः (पु०) चन्द्रमा । २ शङ्ख । जा, (स्त्री०) १ वाहणी । मद्य । २ लक्ष्मी देवी ।—द्वीपा, (स्त्री०) पृथिवी ।—नगरी, (स्त्री०) द्वारकापुरी ।—नवनीतकः (पु०) चन्द्रमा ।—मण्डूकी, (स्त्री०) सीप ।—शयनः, (पु०) विष्णु भगवान् । सारः (पु०) एक रत्न ।

अब्रह्मचर्य (वि०) १ अपवित्र । २ जो ब्रह्मचारी न हो ।

अब्रह्मचर्यम् } (न०) १ ब्रह्मचर्य का अभाव ।
अब्रह्मचर्यकम् } २ स्त्रीप्रसङ्ग ।

अब्रह्मण्य (वि०) ब्राह्मण के योग्य नहीं । २ ब्राह्मणों के प्रतिकूल ।

अब्रह्मण्यम् (न०) ब्राह्मण के अयोग्य कर्म ।

अब्रह्मन् (वि०) ब्राह्मणों से भिन्न या ब्राह्मणों का अभाव ।

अभक्तिः (स्त्री०) १ श्रद्धा का या अनुराग का अभाव । २ अश्रद्धा ।

अभक्ष्य (वि०) ना खाने योग्य । जिसका खाना निषिद्ध हो ।

अभक्ष्यम् (न०) वर्जित खाद्य पदार्थ ।

अभग (वि०) अभागा । बद्धकिस्मत ।

अभद्र (वि०) अशुभ । बुरा । दुष्ट ।

अभद्रम् (न०) १ बुराई । पाप । दुष्टता । २ दुःख ।

अभय (वि०) भय से रहित । निर्भय । निडर । सुरक्षित । बेखौफ ।—डिण्डिमः, (पु०) १ सुरक्षा का डिब्बोरा । २ सैनिक ढोल ।—दक्षिणा, —दानं,—प्रदानं, (न०) किसी को भय से मुक्त कर देने की प्रतिज्ञा या वचन का देना ।

अभयंकर } (वि०) १ भयङ्कर या भयावह नहीं ।
अभयङ्कर } निर्भयप्रद । २ सुरक्षा करना ।
अभयंकर
अभयङ्कर
अभयंकर
अभयङ्कर

अभवः (पु०) १ अनस्तित्व २ मोक्ष । नैसर्गिक सुख । ३ समाप्ति या नाश ।

अभव्य (वि०) न होने को । अनुचित । अशुभ । अभागा । प्रारब्धहीन ।

अभाग (वि०) १ जिसका हिस्सा था पांती न हो । (हिस्सा पैतृक) । २ अविभक्त । बिना बँटा हुआ ।

अभावः (पु०) १ असत्ता । न होना । अनस्तित्व । नेस्ती । २ अविद्यमानता । ३ नाश । मृत्यु । ४ अदर्शन । यह पांच प्रकार का होता है । (क) प्राग्भाव । (ख) प्रध्वंसाभाव । (ग) अत्यन्ताभाव । (घ) अन्योन्याभाव । (ङ) संसर्गाभाव । ५ वृद्धि । दोटा । बाटा ।

अभावना १ (स्त्री०) निर्णय करने की शक्ति अथवा अथार्थ ज्ञान की अनुपस्थिति । २ ध्यान का अभाव ।

अभाषित (वि०) अकथित । न कहा हुआ ।—पुंस्कः, (पु०) शब्द विशेष जो न तो कभी पुल्लिङ्ग और न नपुंसक लिङ्ग बन सके । जो सदा स्त्रीलिङ्ग ही बना रहे ।

अभि (अव्यया०) १ उपसर्ग विशेष जो संज्ञावाची और क्रियावाची शब्दों में लगाया जाता है । इसका अर्थ है— और प्रति । तरफ । २ पक्ष में । विपक्ष में ३ पर । ऊपर ४ छिड़कना । बुरकना । ५ अधिक । अतिरिक्त । आरपार । जब यह उपसर्ग विशेषणों और ऐसे संज्ञावाची शब्दों में जो क्रिया से नहीं बने, लगाया जाता है, तब इसका अर्थ होता है— १ घनिष्टता । अत्यन्तता । उत्कृष्टता । २ सामीप्य । सामने । प्रत्यक्ष । ३ पृथक् पृथक् । एक के बाद एक ।

अभिक } (वि०) कामुक । अभिलाषी । मरभुका ।
अभीक }

अभिकांक्षा (स्त्री०) स्वाहिष । अभिलाषा । आकांक्षा ।

अभिकांक्षिन् (वि०) अभिलाषी । स्वाहिषमंद ।

अभिकाम (वि०) स्नेहभाजन । प्यारा । अभिलाषी । कामुक ।

अभिकामः (पु०) १ स्नेह । प्रेम । २ स्वाहिष अभिलाषा ।

अभिक्रमः (पु०) १ आरम्भ । उद्योग । २ चढ़ाई ।
 आक्रमण । सांघातिक आक्रमण । ३ चढ़ना ।
 सवार होना ।
 अभिक्रमणं (न०) } समीप गमन । चढ़ाई ।
 अभिक्रान्ति (स्त्री०) }
 अभिक्रोशः (पु०) १ चिह्नाहट । पुकार । २ गाली ।
 भर्त्सना । फटकार । डाँटडपट ।
 अभिक्रोशकः (पु०) पुकारने वाला । गाली देने वाला ।
 अभिख्या (स्त्री०) १ चमक दमक । सौन्दर्य ।
 कान्ति । २ कथन । घोषणा ३ पुकार । सम्बोधन ।
 ४ नाम (उपाधि) ५ शब्द । समानार्थवाची
 शब्द । ६ कीर्ति । नामवरी । गौरव । प्रसिद्धि
 (जुरे भाव में) । माहात्म्य ।
 अभिख्यानं (न०) कीर्ति । गौरव ।
 अभिगमः (पु०) १ आगमन । गमन । मुला-
 अभिगमनम् (स्त्री०) } कात । पहुँचना । २ मैथुन ।
 अभिगम्य (स० का० कृ०) १ समीप आगमन या
 गमन किया हुआ । भेटा हुआ । खोजा हुआ ।
 २ उपगम्य । प्राप्त्य ।
 अभिगर्जनं } (न०) भयानक दहाड़ । भयङ्कर गर्ज ।
 अभिगर्जितं }
 अभिगादिन् (वि०) पास जाने वाला । (मैथुन
 सम्बन्धी) रसज्ञवत् रखने वाला ।
 अभिगुप्तिः (स्त्री०) रचण । संरचण ।
 अभिगोस्त् (पु०) रचक । अभिभावक । बली ।
 अभिग्रहः (पु०) १ लूट खसोट । ज़बरदस्ती छीनना ।
 २ आक्रमण । चढ़ाई । ३ किसी काम के लिये
 किसी का ललकारना । ४ शिकायत । फरियाद ।
 ५ अधिकार । शक्ति ।
 अभिग्रहणम् (न०) लूट लेना । छीन लेना ।
 अभिग्रहणम् (न०) १ घिसन । रगड़ । २ प्रेतवेश ।
 विर पर भूत का चढ़ना ।
 अभिघातः (पु०) १ चोट देना । मार । प्रहार ।
 ताड़न । आक्रमण । हमला । २ सम्पूर्णतः नाश ।
 सर्वनाश । पूर्ण रूप से स्थानान्तरित करने की
 क्रिया ।
 अभिघातक (वि०) [स्त्री०—अभिघातिका]
 रोक । बचाव ।

अभिघातिन (पु०) शत्रु । बैरी ।
 अभिघारः (पु०) १ धी । २ हवन में धी डालना ।
 अभिघारणम् (न०) धी छिड़ने की क्रिया ।
 अभिचरः (पु०) अनुचर । नौकर ।
 अभिचरणम् (न०) किसी बुरे काम के लिये अनुष्ठान;
 जैसे शत्रु नाश के लिये श्येन याग ।
 अभिचारः (पु०) अनुष्ठान । मारण उच्चारण, विद्वे-
 षण आदि के लिये अनुष्ठान ।—ज्वरः (पु०) ऐसे
 अनुष्ठान से उत्पन्न ज्वर ।
 अभिचारक [स्त्री०—अभिचारिकी] } (वि०)
 अभिचारिन् [स्त्री०—अभिचारिणी] } अनुष्ठान ।
 डुटका टेंटना ।
 अभिचारकः } (पु०) अनुष्ठानकर्ता । जादूगर ।
 अभिचारि } तांत्रिक ।
 अभिजनः (पु०) १ कुटुंब । कुनवा । जाति । वंश ।
 उत्पत्ति । निकास, वंशपरम्परा । २ कुलीनता । खान-
 दानीपना । ३ जन्मस्थान । जन्मभूमि । पैतृकस्थान ।
 ४ कीर्ति । प्रसिद्धि । ५ खानदान का सरदार
 या मुखिया । कुलभूषण । ६ अनुचर । चाकरवर्ग ।
 अभिजनवत् (वि०) कुलीन वंश का । कुलीन ।
 अभिजयः (पु०) विजय । पूरी पूरी जीत ।
 अभिजात (व० कृ०) १ उत्पन्न । अच्छे कुल में
 उत्पन्न । कुलीन । २ शिष्ट । विनम्र । ३ मधुर ।
 अनुकूल । ४ योग्य । उचित । उपयुक्त । उत्तम
 गुणवान । सत्पात्र । ५ सुन्दर । रूपवान । ६
 विद्वान् । परिष्ठत । प्रसिद्ध ।
 अभिजातिः (स्त्री०) कुलीन वंश में उत्पत्ति ।
 अभिजिघ्रणं (न०) स्नेह प्रदर्शन करने को सिर
 सँघना ।
 अभिजित् (पु०) १ विष्णु का नाम । २ नक्षत्र
 विशेष । उत्तराषाढ़ा के अन्तिम १५ दण्ड तथा
 श्रवण के प्रथम चार दण्ड अभिजित कहलाता
 है । ३ दिन का आठवाँ मुहूर्त्त । दोपहर के पौने
 बारह बजे से लेकर साढ़े बारह बजे तक का
 समय । विजय मुहूर्त्त ।
 अभिज्ञ (वि०) १ जानकार । विज्ञ । २ निपुण ।
 कुशल ।

अभिज्ञा (स्त्री०) १ प्रत्याभिज्ञा । पुनर्ज्ञान । प्राथमिक ज्ञान । २ स्मृति । पहिचान ।

अभिज्ञानम् (न०) १ प्रत्याभिज्ञा । पुनर्ज्ञान । २ स्मृति । पहिचान । ३ चिन्हाती । ४ चन्द्रमण्डल का काला भाग ।—आभरणम् (न०) गहना जो किसी बात का स्मरण कराने के लिये उपस्थित किया जाय । परिचायक । सहदानी ।

अभितस् (अव्यया०) १ समीप । निकट । पास । ओर । तरफ । २ अत्यन्त समीप । निकट में । पास में । समझ । सामने । प्रत्यक्ष में । ३ आगे पीछे । ४ सब ओर से । चारों ओर । चौरफा । ५ नितान्त । निपट । पूर्णतः । धुराधुर । ६ कुत्ती से । तेजी से ।

अभितापः (पु०) प्रबल गमी (चाहे यह शरीरिक हो चाहे मानसिक) । चोभ । उद्वेग । पीड़ा । दुःख ।

अभिताम्र (वि०) बहुत लाल ।

अभिदक्षिणम् (अव्यया०) दहिनी ओर या तरफ़ ।

अभिद्रवः (पु०) } आक्रमण । हमला ।

अभिद्रवणम् (न०) }

अभिद्रोहः (पु०) १ षड्वंश । हानि । निर्दयता । २ गाली । भर्त्सना ।

अभिधर्षणं (न०) १ भूतावेश । भूत का शरीर में आवेश होना । भूताधिवेश । २ अत्याचार ।

अभिधा (स्त्री०) १ ताम । उपाधि । २ वाचक शब्द । ३ शब्दों के वाच्यार्थ का बोधन करने वाली शक्ति । ४ (मीमांसा) शाब्दी भावना ।

अभिधानम् (न०) १ कथन । निरूपण । नाम करण । २ अविव्यद्—कथन । निःसन्देह भाव से कथित वाक्य । ३ नाम । उपाधि । लक्षण । पद । ४ भाषण । संवाद । ५ शब्दकोश ।—कोशः, (पु०)—माला (स्त्री०) शब्दकोश ।

अभिधायक (वि०) [स्त्री०—अभिधायिका] १ सूचक । परिचायक । २ नाम रखने वाला ।

अभिधायिन् (वि०) निरूपक । प्रकाशक ।

अभिधाषणम् (न०) आक्रमण । हमला । पीड़ा करना ।

अभिधेय (सं० का० कृ०) १ वर्णित । कथित । निरूपित । २ नाम धरने योग्य ।

अभिधेयम् (न०) १ अर्थ । भाव । तात्पर्य । अभिप्राय । ३ निचोड़ । निष्कर्ष । ३ विवेच्य या आलोच्य विषय । प्रकरण । प्रसङ्ग । ४ किसी शब्द का अविकल अर्थ ।

अभिध्या (स्त्री०) १ दूसरे की वस्तु पर मन डिगाना । पराई वस्तु की चाह । २ अभिलाषा । इच्छा । लालच ।

अभिनन्दः (पु०) १ हर्ष प्रसन्नता । २ प्रशंसा । स्तुति । सराहना । बधाई । ३ अभिलाषा । इच्छा । ४ प्रोत्साहन । उत्तेजन ।

अभिनन्दनम् (न०) १ आनन्द । अभिवादन । बंदना । स्वागत । २ प्रशंसा । अनुमोदन । ३ अभिलाषा । इच्छा ।

अभिनन्दनोय (सं० का० कृ०) १ हर्षप्रद । अभिनन्दन २ प्रशंसित । वंदनीय ।

अभिनम्र (वि०) झुका हुआ । नम्रा हुआ ।

अभिनयः (पु०) हृदय के भाव को प्रकट करने वाली क्रिया । स्वांग । नकल । नाटक का खेल ।

अभिनव (वि०) १ कोरा । बिल्कुल नया । ताज़ा । टटका । २ अनुभवशून्य ।—यौवन,—वयस्क, (वि०) (अवस्था में) बहुत छोटा । जवान ।

अभिनहनम् (न०) (आँखों के ऊपर बांधने की) पट्टी । अंधा ।

अभिनिद्युक्त (वि०) काम में लगा हुआ । मशगूल ।

अभिनिर्मुक्त (वि०) १ छोड़ा हुआ । त्यागा हुआ । २ सूर्यास्त के समय सोने वाला ।

अभिनिर्माणम् (न०) १ कूच । प्रस्थान । २ चढ़ाई । हमला । किसी शत्रुसैन्य पर धावा ।

अभिनिधिष्ठ (व० कृ०) १ बैठा हुआ । धसा हुआ । गड़ा हुआ । २ लिस । मश । ३ कृतसङ्कल्प । दृढ़प्रतिज्ञ । ४ हठी । जिद्दी । आग्रही । ५ एक ही ओर लगा हुआ । अनन्य मन से अनुरक्त ।

अभिनिविष्टता (स्त्री०) १ दृढ़प्रतिज्ञा । सङ्कल्प । अपने स्वार्थ में (किसी बात की भी परवाह न कर) लिस हो जाना ।

अभिनिवृत्तिः (स्त्री०) सम्पादन । सिद्धि । समाप्ति । पूर्णता ।
 अभिनिवेशः (पु०) अनुरक्ति । लीनता । एकाग्र-
 चिन्तन । २ उत्सुकतापूर्ण अभिलाषा । ३ इद-
 प्रतिज्ञा । ४ (योगदर्शन में) पाँच क्लेशों में से
 अन्तिम क्लेश । मृत्यु । शङ्का ।
 अभिनिवेशिन् (वि०) १ अनुरक्त । लिस । लीन ।
 २ (मन को किसी ओर) लगाना । फेरना ।
 ३ इदप्रतिज्ञ । कृतसङ्कल्प ।
 अभिनिष्क्रमणम् (न०) बाहिर का निकास ।
 अभिनिष्ठानः (पु०) वर्णमाला का एक अक्षर ।
 अभिनिष्पतनम् (न०) वहिर्भावन । बाहिर निकलना ।
 युद्धार्थं द्रुतवेग से प्रयाण । [सिद्धि ।
 अभिनिष्पत्तिः (स्त्री०) समाप्ति । अन्त । पूर्णता ।
 अभिनिह्वः (पु०) अस्वीकृति । प्रत्याख्यान ।
 दुराव । छिपाव ।
 अभिनीत (व० कृ०) १ निकट लाया हुआ । २
 अभिनय किया हुआ । (नाटक) खेला हुआ ।
 ३ पूर्णता को पहुँचाया हुआ । सर्वोत्कृष्ट । ४ सु-
 सजित । ५ योग्य । उचित । उपयुक्त । ६ क्रुद्ध ।
 ७ दयालु । अनुकूल । ८ प्रशान्तचित्त । स्थिर
 चित्त ।
 अभिनीतिः (स्त्री०) १ भावभङ्गी । हावभाव ।
 २ कृपा । दयालुता । मैत्री । सन्तोष ।
 अभिनेतृ (पु०) [स्त्री०—अभिनेत्री] एकतर । नाटक
 का पात्र ।
 अभिनेय { (स० का० कृ०) अभिनय करने
 अभिनेतव्य । योग्य । खेलने योग्य ।
 अभिज्ञ (वि०) १ जो भिन्न या कटा न हो । अपृथक्
 एकमय । २ अपरिवर्तित ।
 अभिपतनं (न०) १ समीप गमन । २ आक्रमण ।
 हत्या । चढ़ाई । प्रस्थान । कूच । रवानगी ।
 अभिपत्तिः (स्त्री०) १ समीपगमन । समीप खींचना ।
 २ समाप्ति ।
 अभिपन्न (व० कृ०) १ समीप गया हुआ या आया
 हुआ । ओर या तरफ दौड़ा हुआ । गया हुआ ।

२ भागा हुआ । भगोड़ा । ३ वश में किया हुआ ।
 पकड़ा हुआ । गिरफ्तार किया हुआ । ४ अभागा ।
 ब्रह्मस्मृत । आपत्ति में फँसा हुआ । ५ स्वीकृत ।
 ६ अपराधी ।
 अभिपरिप्लुत (वि०) १ निमज्जित । डूबा हुआ ।
 डूबा हुआ । २ हिला हुआ ।
 अभिपूरण (वि०) अतिप्रबल । विह्वलकारी ।
 अभिपूर्व (अव्यया०) क्रमशः । अनुक्रम से ।
 अभिप्रणयनम् (न०) पवित्र संत्रों से संस्कार या
 प्रतिष्ठा करने की क्रिया ।
 अभिप्रणयः (पु०) स्नेह । कृपा । प्रसादन । तुष्टि-
 साधन । तोषन । [२ लाया हुआ ।
 अभिप्रणीत (व० कृ०) १ संस्कारित । प्रतिष्ठित ।
 अभिप्रयनम् (न०) बिड़ाना, बखेरना या (आगे)
 बढ़ाना । ऊपर से ढालना या ढकना ।
 अभिप्रदक्षिणम् (अव्यया०) दहिनी ओर ।
 अभिप्रायः (पु०) १ आशय । मतलब । तात्पर्य
 प्रयोजन । उद्देश्य । विचार । अभिलाषा । इच्छा ।
 २ सम्मति । राय । विश्वास । ३ सम्बन्ध ।
 हवाला ।
 अभिप्रेत (व० कृ०) १ इष्ट । अभिलषित । ईप्सित ।
 चाहा हुआ । २ पसंद । सम्मत । स्वीकृत । ३ प्रिय ।
 अनुकूल ।
 अभिप्रेक्षणं (न०) छिड़काव । छिड़कना ।
 अभिप्लवः (पु०) १ दुःख । उपद्रव । २ नि-
 मज्जन । डूबना । [भूति । मग्न । आकुलित ।
 अभिप्लुत (व० कृ०) दमन किया हुआ । अभि-
 अभिवृद्धिः (स्त्री०) बुद्धिवृद्धि । ज्ञानेन्द्रिय । (यथा
 आँख, जिह्वा, कान, नाक, त्वचा ।)
 अभिभवः (पु०) १ हार । शिकस्त । वश । काबू ।
 २ तिरस्कार । अनादर । ३ हीनता । दमन ।
 ४ आधिक्य । प्राबल्य । उभाड़ । फैलाव ।
 व्याप्ति । प्रसार ।
 अभिभवनम् (व०) दमन । संयम । (स्वयं)
 वशवर्ती होना

अभिभाषणम् (न०) दमन करना । वशवर्ती बनाना ।
विजयी बनाना ।

अभिभाषिन् } (वि०) १ दमन करने वाला ।
अभिभाषक } हराने वाला । पराजित करने वाला ।
अभिभाषक } जीतने वाला । २ लोकोत्तर । श्रेष्ठ ।

अभिभाषणम् (न०) व्याख्यान । भाषण ।

अभिभूतिः (स्त्री०) १ सर्वोत्तमता । प्राबल्य ।
आधिक्य । २ विजय । पराजय । वशवर्तीकरण ।
अधीनता । ३ अपमान ।

अभिमत (व० कृ०) १ अभीष्ट । प्रिय । प्यारा । अनु-
कूल । वाञ्छनीय । २ सममत । स्वीकृत । माना
हुआ ।

अभिमतः (पु०) मायूक । प्यार करने वाला ।
आशिक ।

अभिमतम् (न०) स्वाहिश । अभिलाषा ।

अभिमतस (वि०) अभिलाषी । इच्छुक । उत्सुक ।
आशावान् ।

अभिमंत्रणम् (न०) मंत्र विशेषों को पढ़कर (किसी
वस्तु को) पवित्र या संस्कारित करना । २ जादू
टोना करना । ३ सम्बोधन करना । न्योता देना ।
उपदेश करना ।

अभिमरः (पु०) १ नाश । हत्या । २ युद्ध ।
लड़ाई । ३ विश्वासघात (आपस ही के लोगों के
साथ) । अपने ही लोगों से भय या शङ्का ।
४ बन्धन । कैद । बेदी ।

अभिमर्दः (पु०) १ रगड़ । २ कुचलन । कजाव
किया जाना (शत्रुद्वारा किसी देश को) । ३ युद्ध ।
लड़ाई । ४ मर्दिरा । शराब ।

अभिमर्दन (वि०) १ पीसना । चूर चूर करना ।
२ घससा । रगड़ । युद्ध ।

अभिमर्शः (पु०) } १ स्पर्श । संसर्ग । २ आक्र-
अभिमर्शनम् (न०) } मण । अत्याचार । ३ मैथुन ।
अभिमर्षः (पु०) } सम्भोग ।
अभिमर्षणम् (न०) }

अभिमर्शक } (वि०) छूने वाला । बलात्कार करने
अभिमर्षक } वाला ।
अभिमर्शिन }
अभिमर्षिन }

अभिमादः (पु०) नशा । मद ।

अभिमानः (पु०) १ गर्व । घमण्ड । अहङ्कार । अपने
को बड़ा भारी प्रतिष्ठित समझना । आत्मश्लाघा ।
२ व्यक्तित्व । ३ स्नेह । प्रेम । ४ स्वाहिश ।
इच्छा । ७ धाव । चोट ।—शालिन्, (वि०)
अभिमानी । अहङ्कारी ।—शून्य, (वि०) आत्मा-
भिमान से रहित । विनम्र ।

अभिमानिन् (वि०) अभिमानी । घमण्डी । अपने को
बहुत लगाने वाला ।

अभिमुख (वि०) [स्त्री०—अभिमुखी] १ सामने ।
सम्मुख । २ समीप । ३ अनुकूल । ४ ऊपर
को मुख किये हुए ।

अभिमुखं } (अन्यथा०) ओर । तरफ । सामने मुंह
अभिमुखे } किये हुए ।

अभियाचनम् (न०) } प्रार्थना । माँग ।
अभियाच्चा (स्त्री०) }

अभियात् } (वि०) समीप आया या गया हुआ ।
अभिधातिन् } आक्रमण करता हुआ ।

अभियातिः } (पु०) मारपीट के इरादे से समीप
अभियायिन् } जाना या आने की क्रिया । शत्रु ।
अभियात् } बैरी ।

अभियानम् (न०) १ समीप आना या जाना । २
(शत्रु पर) धावा बोलने की क्रिया । आक्रमण
करने की क्रिया ।

अभियुक्त (व० कृ०) १ व्यस्त । किसी काम में
नधा हुआ । २ भली भाँति अभिज्ञ । पारदर्शी ।
विशारद । ३ विद्वान् । ज्ञानी । ४ प्रतिवादी ।
जो किसी मुकदमे में फँसा हो । ५ नियुक्त ।

अभियोक्तृ (वि०) अभियोग उपस्थित करने वाला ।
(पु०) १ वादी । फरियादी । २ शत्रु । बैरी ।
आक्रमणकारी । ३ झूठा दावा करने वाला ।

अभियोगः (पु०) १ मनोनिवेश । लगन । २
उद्योग । अव्यवसाय । ३ किसी बात की जानकारी
प्राप्त करने या उसे सीखने के लिये उसमें मनो-
निवेश । ४ अपराध की योजना । नास्तिक ! अज्ञा-
दावा । ५ चढ़ाई । आक्रमण ।

अभियोगिन् (वि०) १ मनोनिवेशित । संलग्न ।
२ आक्रमण करने वाला । ३ दोषी ठहराने वाला ।
(पु०) मुद्दाई । वादी ।

अभिरक्षा (स्त्री०) } सर्वविध रक्षण । सर्वत्र रक्षण ।
अभिरक्षणं (न०) }

अभिरतिः (स्त्री०) १ आनन्द । हर्ष । सन्तोष ।
अनुराग । भक्ति ।

अभिराम (वि०) १ हर्षपूर्ण । मधुर । अनुकूल ।
२ सुन्दर । मनोहर । रम्य । प्रिय ।

अभिरुचिः (स्त्री०) अभिलाषा । चाह । पसंदगी ।
प्रवृत्ति । २ यश की चाहना । उच्चाभिलाषा ।

अभिरुचितः (पु०) प्यार करने वाला । चाहने वाला ।
आशिक ।

अभिरुतम् (न०) आवाज़ । पुकार । शोरगुल ।

अभिरूप (वि०) १ सदृश । अनुसार । २ मनोहर ।
हर्षपूर्ण । ३ प्रिय । प्रेमपात्र । माशूक । ४ पण्डित ।
बुद्धिमान । बुध ।—पतिः (पु०) १ वह स्त्री
जिसका मनोनुकूल पति हो । २ एक व्रत का
नाम, जो परलोक में अच्छा पति पाने के लिये,
स्त्रियों द्वारा किया जाता है ।

अभिरूपः (पु०) १ चन्द्रमा । २ विष्णु । ३ शिव ।
४ कामदेव ।

अभिलंघनम् (न०) कूदकर आरपार चले जाने की
क्रिया । नाघ जाना । कूद जाना ।

अभिलाषां (न०) इच्छा । अभिलाषा ।

अभिलाषित (व० कृ०) इच्छित । वाञ्छित । इष्ट ।

अभिलाषितम् (न०) इच्छा । चाह । प्रवृत्ति ।

अभिलापः (पु०) १ भाषण । कथन । २ प्रकटन ।
वर्णन । विस्तृत वर्णन । ३ किसी व्रत या धर्मा-
नुष्ठान का संकल्प वा प्रतिज्ञा ।

अभिलाषः (पु०) निराई । (खेत की) कटाई ।

अभिलाषः (पु०) कामना ।
अभिलासः (कभी २) } आकांक्षा । इच्छा । मनोरथ ।

अभिलाषक } (वि०) इच्छुक । इच्छा करने वाला ।
अभिलाषिन् } लालची । लोभी । लुब्ध ।
अभिलासिन् }

अभिलिखित (वि०) लिखा हुआ । खुदा हुआ ।

अभिलिखितम् (न०) लेख । लिखावट । खुदा
अभिलेखनम् } हुआ लेख ।

अभिलीन (वि०) १ संलग्न । चिपटा हुआ । सटा हुआ ।
२ आलिङ्गन किये हुए ।

अभिलुलित (वि०) १ आन्दोलित । गड़बड़ किया
हुआ । २ खिल्लाई । चञ्चल ।

अभिलूता (स्त्री०) मकड़ी विशेष ।

अभिवदनम् (न०) सम्बोधन । प्रणाम । सलाम ।

अभिवन्दनम् (न०) सम्मान पुरस्सर प्रणाम ।

अभिषर्षणम् (न०) वर्षा । वृष्टि । जल की वर्षा ।

अभिवादः (पु०) } सम्मान पुरस्सर प्रणाम ।
अभिवादनम् (न०) } प्रणाम तीन प्रकार से होता
है । प्रथम, प्रत्युत्थान । द्वितीय, पादोपसंग्रह । तृतीय,
स्वगोत्र एवं स्वनाम का उच्चारण कर वंदना करना ।

अभिवादक (वि०) (स्त्री०—अभिवादिनी)
प्रणाम करने वाला । प्रणाम । विनम्र । सुशील ।
सम्मान सूचक । नम्र ।

अभिविधिः (पु०) व्याप्ति । मर्यादा ।

अभिविश्रुत (वि०) जगतप्रसिद्ध । सर्वश्रेष्ठ ।

अभिवृद्धिः (स्त्री०) उन्नति । बढ़ती । सफलता ।
समृद्धि ।

अभिव्यक्तः (कि० वि०) १ प्रत्यक्ष । प्रगट । घोषित ।
२ स्वच्छ । साफ ।

अभिव्यक्तिः (स्त्री०) प्रकटकरण । प्रदर्शन ।

अभिव्यञ्जनम् (न०) प्रकटन । प्रकाशन ।

अभिव्यापक (वि०) १ अच्छी तरह प्रचलित होने
अभिव्यापिन् } वाला । २ सम्मिलित । शामिल ।
व्याप्त । अन्तर्भुक्त ।

अभिव्याप्तिः (स्त्री०) सर्वव्यापकता । अन्तर्भुक्तता ।
शामिलपन ।

अभिव्याहरणं (न०) } १ कथन । उच्चारण । २ नाम ।
अभिव्याहारः (पु०) } उपाधि । संज्ञा ।

अभिशंसक (वि०) दोषी ठहराने वाला । अपमान
अभिशंसिन् } करने वाला । बदनाम करने वाला

अभिशंसनम् (न०) १ आरोप । इलजाम । २ गाली ।
अपमान । उद्दहता ।

अभिशंका } १ (स्त्री०) सन्देह । शक । मय । चिन्ता ।
अभिशङ्का }

अभिशापनम् (न०) } १ अकोसा । शाप । २ संगीत
अभिशापः (पु०) } इलज्जाम । इलज्जाम । बड़ा भारी
दोष ।—रोष । ३ अपवाद । निन्दा । बदनाम ।
—ज्वरः, (पु०) ऐसा ज्वर जो कि अकोसने या
शापवश चढ़ आया हो ।

अभिशापित (वि०) घोषित । वरित । कथित ।

अभिशास्त (व० कृ०) १ बदनाम । तिरस्कृत ।
गरिबाया हुआ । २ चोटिल । घायल । आक्रान्त ।
नामधरा हुआ । ३ शापित । ४ दुष्ट । पापी ।

अभिशास्तक (वि०) कूटनूट दोषी ठहराया हुआ ।
बदनाम किया हुआ । बदनाम ।

अभिशास्तिः (स्त्री०) १ अकोसा । शाप । २ दुर्भाग्य
बदकिस्मती । बुराई । विपत्ति । भर्त्सना । बद-
नामी । अप्रतिष्ठा । ४ याचना । माँग ।

अभिशापनम् (न०) अकोसना । शाप देना ।

अभिशीत (वि०) ठंडा । शीतल ।

अभिशीघ्रम् (न०) बड़ा भारी दुःख, पीड़ा
या क्लेश ।

अभिशीघ्रणं (न०) आहारण आदर करने बैठे उस समय
कृपाधर्मों की पुनरावृत्ति ।

अभिर्षणः } १ (पु०) मिलन । एकीभाव । ऐक्य
अभिर्षङ्गः } २ पराजय दमन किया । ३ लगा हुआ
अभिसंगः } आवात । धक्का । दुःख । इकबट्टक आई
अभिसङ्गः } हुई विपत्ति । ४ भूतपीडा । प्रेतावेश ।
५ शपथ । ६ आलिङ्गन । सम्भोग । ७ अकोसा ।
शाप । गाली । ८ झूठा दोष । रोष । झूठी
बदनामी । ९ तिरस्कार । असम्मान ।

अभिषवः (पु०) १ सोमलता को दूध फर,
उससे सोमरस निकालने की क्रिया । २ शराव
खींचना । धर्मावुष्टान करने में प्रवृत्त होने के पूर्व
स्नानमार्जन आदि की क्रिया । ४ स्नान । प्रक्षालन ।
अवभृथ स्नान । ५ बलिर्कर्म ।

अभिषवणम् (व०) स्नान ।

अभिषिक्त (व० कृ०) १ अभिषेक किया हुआ ।
भींगा हुआ । तर । २ राजतिलक किया हुआ ।
राजसिंहासन पर बैठा हुआ ।

अभिषेकः (पु०) १ जल से सिञ्चन । छिड़काव । २
ऊपर से जल छोड़कर स्नान । ३ राजतिलक । राज-
गद्दी । ४ राज्याभिषेक के लिये जल ।

अभिषेचनम् (न०) १ छिड़काव । २ राज्याभिषेक ।

अभिषेचनम् (न०) किसी शत्रु पर हमला करने को
प्रस्थान या कूच । शत्रु का सामना करने की क्रिया ।

अभिषेकायति (कि०) सेना के साथ बढ़ाई करने को
प्रस्थान करना । आक्रमण करना । शत्रु सैन्य से
सुठभेद करना ।

अभिष्वः (पु०) प्रशंसा । विरुदावली । तारीफ ।

अभिष्यन्दः } (पु०) १ बहाव । आव । २ नेत्र रोग
अभिष्यन्दः } विशेष । आँख आना । ३ अत्यधिक
बढ़ती ।

अभिष्वङ्गः (पु०) १ संसर्ग । २ अत्यन्त अनुराग ।
प्रेम । स्नेह ।

अभिसंश्रयः (पु०) शरण । पनाह । साया ।

अभिसंस्तवः (पु०) बड़ी भारी प्रशंसा या स्तुति ।

अभिसन्तापः (पु०) युद्ध । लड़ाई । विग्रह ।

अभिसन्देहः (पु०) १ जननेन्द्रिय । २ विनिमय ।
परिवर्तन । बदलौअल ।

अभिसन्धः } (पु०) १ धोखा देने वाला । छलिया ।
अभिसन्धकः } २ निन्दक । दोषदर्शी ।

अभिसन्धा (स्त्री०) १ भाषण । घोषणा । शब्द ।
व्यान । कथन । प्रतिज्ञा । २ धोखा । प्रवञ्चना ।

अभिसन्धानम् (न०) १ भाषण । शब्द । विचारित
घोषणा । प्रतिज्ञा । २ धोखा । दगाबाजी ।

अभिसन्धिः १ भाषण । विचारित घोषणा । प्रतिज्ञा ।
२ इरादा । उद्देश्य । अभिप्राय । लक्ष्य । ३ राय ।
मत । सम्मति । विश्वास । ४ खास इकरारनामा ।
विशेष प्रतिज्ञापत्र । शर्तें । ठहराव ।

अभिसमवायः (पु०) ऐक्य ।

अभिसम्परायः (पु०) अविष्यद् ।

अभिसम्पातः (पु०) १ एकत्रित होना । सङ्गम ।
२ युद्ध । लड़ाई । ३ शाप । अकोसा ।

अभिसम्बन्धः (पु०) १ सम्बन्ध । रिश्ता । जोड़ ।
सन्धि । २ संसर्ग । मैथुन ।

अभिसम्मुख (वि०) आदरपूर्वक देखना । मुख सामने किये हुए ।

अभिसरः (पु०) १ अनुचर । अनुयायी २ साथी । संगी । सहायक ।

अभिसरणम् (न०) १ समीपगमन । २ मिलाप । सङ्केतस्थान । प्रेमियों के मिलने का सङ्केतस्थान या ठहराव ।

अभिसर्गः (पु०) सृष्टि । संसार की रचना ।

अभिसर्जनम् (न०) १ भेंट । दान । २ वध । हत्या ।

अभिसर्पणं (न०) समीपगमन ।

अभिसान्वः (पु०)
अभिशान्वः (पु०)
अभिसान्वनम् (न०)
अभिशान्वनम् (न०)

तुष्टिसाधन । सान्त्वना ।
प्रबोध । डाँड़स । धीरज ।

अभिसाद्यं (अव्यय०) मूर्यास्त के समय । सन्ध्या के लगभग ।

अभिसारः (पु०) १ प्रेमी प्रेमिका का मिलने के लिये (सङ्केतस्थान पर) गमन । सङ्केतस्थल । ठहराव । २ प्रेमी प्रेमिका का सङ्केतस्थान या सङ्केत समय । ३ हस्ता । आक्रमण ।

अभिसारिका (स्त्री०) नायिका जो सङ्केतस्थल पर अपने प्यारे नायिक से मिलने स्वयं जाय या उसे बुलावे ।

अभिसारिन् (वि०) भेंट करने को जाने वाला । आगे बढ़ने वाला । आक्रमणकारी । बड़े वेग से बाहर निकलने वाला । [लापा ।

अभिसनेहः (पु०) अनुराग । स्नेह । प्रेम । अभि-
प्रभिस्रुरित (वि०) पूर्णरूप से फैला हुआ या बढ़ा हुआ । पूर्ण वृद्धि को प्राप्त (यथा पुष्प) ।

अभिहत (व० कृ०) १ ढोंका हुआ । २ पीटा हुआ । मारा हुआ । बायल किया हुआ । २ रोका हुआ । रुद्ध । ३ (अङ्गनायित) गुणा किया हुआ ।

अभिहतिः (स्त्री०) १ मार । चोट । २ गुणा । जरब ।

अभिहरणं (न०) १ समीप लाना । जाकर लाना । २ लूटना । [दान । यज्ञ ।

अभिहवः (पु०) १ आह्वान । आमंत्रण । २ बलि-

अभिहारः (पु०) लोजाना । लूट लेना । चुरा लेना । २ आक्रमण । हमला । ३ हथियार लगाना । हथियार लेना ।

अभिहासः (पु०) हँसी दिहनी । मज़ाक । हर्ष ।

अभिहित (व० कृ०) १ कथित । कहा हुआ । बोधित । वर्णित । २ सम्बोधित । बुलाया हुआ । पुकारा हुआ । [क्रिया ।

अभिहोसः (पु०) अग्नि में घी की आहुतियाँ देने की अभी (वि०) निडर । निर्भय ।

अभीक (वि०) १ अभिलाषी । उत्सुक । २ कामुक । विलासी । भोगासक्त । ३ निर्भय । निडर ।

अभीरण (वि०) १ दुहराया हुआ । २ सतत । निरन्तर । २ अत्यधिक ।

अभीक्षणम् (न०) १ अक्सर । बहुधा । बारंबार २ अविच्छिन्नता से । ३ बहुत अधिक । अत्यन्त अधिकारी से ।

अभीप्सित (वि०) अभीष्ट । वाञ्छित । चाहा हुआ । २ मनोनीत । ३ अभिप्रेत । आशय के अनुकूल ।

अभीप्सितम् (न०) अभिलाषा । मनोरथ ।

अभीरः (पु०) १ अहीर । ग्वाला । गौचराने वाला । —पल्ली (स्त्री०) अहोरो का एक छोटा सा गाँव ।

अभीशापः (पु०) देखो “अभिशाप” ।

अभीशुः } (पु०) १ लगान । २ प्रकाश की किरण ।
अभीषुः } ३ अभिलाषा । ४ अनुराग ।

अभीष्ट (व० कृ०) १ अभिलषित । अभीप्सित । २ प्रिय । कृपापात्र । प्राणप्यारा ।

अभीष्टः (पु०) परम प्यारा ।

अभीष्टम् (न०) मनोरथ । चाही हुई वस्तु । अभि-
मत वस्तु ।

अभीष्टा (स्त्री०) स्वामिनी । प्रेयसी ।

अभुज (वि०) १ जो देहा या मुदा या झुका हुआ न हो । सीधा । सतर । ३ अच्छा । भला । रोगरहित ।

अभुज (वि०) सुजारहित । लुंजा ।

अभुजिष्या (स्त्री०) स्त्री, जो दासी या दहलनी न हो । स्वतंत्र स्त्री । [का नाम ।

अभूः (पु०) जो पैदा न हुआ हो । भगवान विष्णु

अभूत (वि०) अनस्तित्व । जो नहीं है या नहीं रहा है । जो यथार्थ या सत्य नहीं है । मिथ्या । अविद्यमान ।—पूर्व, (वि०) जो पहले कभी नहीं था । बेजोड़ । जो किसी पहिली नज़ीर (उदाहरण) से समर्थित न हो ।—शत्रु, (वि०) जिसका कोई शत्रु न हो ।

अभूतिः (स्त्री०) १ अनस्तित्व । अत्यन्ताभाव । २ निर्धनता ।

अभूमिः (स्त्री०) १ अनुपयुक्त स्थान या पदार्थ । २ पृथिवी को झोड़ कर अन्य कोई भी पदार्थ ।

अभृत } (वि०) १ जो भाड़े पर न हो, या जिस }
अभृत्त्रिम } का भाड़ा न दिया गया हो । ६ अस-
मर्थित ।

अभेद (वि०) अविभक्त । २ समान । एकसा ।

अभेदः (पु०) अन्तर या फर्क का अभाव । २ अति समानता ।

अभेद्य } (वि०) १ जो टुकड़े टुकड़े न किया }
अभेदिक } जा सके । जो बेधा न जा सके ।

अभेद्यम् (न०) हीरा ।

अभोज्य (वि०) न खाने योग्य । वर्जित भोज्यपदार्थ ।

अभ्यग्र (वि०) समीप । निकट । पास । २ ताज़ा । टटका ।

अभ्यग्रम् (न०) सामीप्य । निकटता ।

अभ्यङ्ग (वि०) हाल ही में चिन्ह किया हुआ । नवीन चिन्हित ।

अभ्यङ्गः (पु०) शरीर में तेल लगाना । तैलमर्दन ।

अभ्यञ्जनम् } (न०) शरीर में मालिश करने का तैल }
अभ्यञ्जनम् } या उबटन । २ आँख में लगाने का }
सुर्मा ।

अभ्यधिक (वि०) अपेक्षाकृत अधिक । अत्यधिक । २ गुण या परिमाण में अपेक्षाकृत अधिक । उच्चतर । बड़ा । ऊँचा । ३ अधिक । असाधारण । मुख्य ।

अभ्यनुज्ञा (स्त्री०) } १ अनुमति । दी हुई }
अभ्यनुज्ञानम् (न०) } आज्ञा । २ किसी दलील }
की स्वीकृत ।

अभ्यन्तर } (वि०) १ मध्य । बीच । भीतरी । अति }
अभ्यन्तर } समीपी । अति निकट सम्बन्धी । ३ हाव-
भाव प्रकाशन की कला । गोपनीय कथा ।

अभ्यन्तरकः } (पु०) अन्तरङ्गमित्र ।
अभ्यन्तरकः }

अभ्यमनम् (न०) आक्रमण । चोट । २ रोग ।

अभ्यमित } (व० क०) १ रोगी । बीमार ।
अभ्यान्त } २ घायल चोटिल ।

अभ्यमित्र (न०) शत्रु पर आक्रमण । (अभ्य०)
शत्रु के विरुद्ध या शत्रु की ओर ।

अभ्यमित्रोऽयः } (पु०) योद्धा जो बीरता पूर्वक अपने }
अभ्यमित्रोऽयः } शत्रु का सामना करता है ।
अभ्यमित्रः }

अभ्ययः (पु०) १ आगमन । पहुँच । २ (सूर्य के)
अस्त होने की क्रिया ।

अभ्यर्चनम् (न०) } पूजन । सजावट । शृङ्गार ।
अभ्यर्चा (स्त्री०) } सम्मान ।

अभ्यर्ण (वि०) समीप । निकट ।

अभ्यर्थन (न०) } १ विनय । विनती । दरखास्त ।
अभ्यर्थना (स्त्री०) } २ सम्मानार्थ आगे बढ़कर }
लेना । अगवानी ।

अभ्यर्थिन् (वि०) माँगने वाला । याचना करने वाला ।

अभ्यर्हणा (स्त्री०) १ पूजा । २ सम्मान । प्रतिष्ठा ।

अभ्यर्हित (वि०) १ सम्मानित । पूजित । २ योग्य ।
उपयुक्त । भव्य ।

अभ्यवकर्षणम् (न०) खींच कर बाहिर निकालना ।

अभ्यवकाशः (पु०) खुली हुई जगह ।

अभ्यवस्कन्दः (पु०) } १ बीरता पूर्वक शत्रु के }
अभ्यवस्कन्दनम् (न०) } सम्मुख होना । २ ऐसी }
चोट करना जिससे शत्रुवेकाम या निकमा हो }
जाय । ३ आघात ।

अभ्यवहरणम् (न०) १ फेंक देना या गिरा देना ।
२ भोजन करना । खाना । गले के नीचे उतारना ।
निगलना ।

अभ्यवहारः (पु०) १ भोजन करना । खाना खाना ।
२ भोजन ।

अभ्यवहार्यः (स० का० कृ०) खाने योग्य ।

अभ्यवहार्यम् (न०) भोज्य पदार्थ ।

अभ्यसनम् (न०) दुहराना । पुनरावृत्ति । २ सतत-
अध्ययन । किसी काम में तन्मयता ।

अभ्यसूयक (वि०) [स्त्री — अभ्यसूयिका]
डाही । ईर्ष्यालु । निन्दक ।

अभ्यसूया (स्त्री०) डाह । ईर्ष्या । क्रोध ।

अभ्यस्त (व० कृ०) १ जिसका अभ्यास किया गया
हो । बार बार किया हुआ । मस्क किया हुआ ।
२ सीखा हुआ । पढ़ा हुआ । ३ गुणा किया हुआ ।
४ अस्वीकृत ।

अभ्याकर्षः (पु०) (पहलवानों की तरह) हथेली
से छाती टोंक कर मानों कुश्ती लड़ने के लिये
ललकारना ।

अभ्याकान्तिरिति (न०) १ झूठा इलज्जाम । असत्य
आरोप । २ मनोरथ । अभिलाषा ।

अभ्याख्यानम् (न०) १ झूठा इलज्जाम । असत्य
दोषारोपण । अपवाद । निन्दा । २ गर्व को सर्व
करने की क्रिया ।

अभ्यागत (व० कृ०) १ सामने आया हुआ ।
घर आया हुआ । अतिथि बना हुआ ।

अभ्यागतः (पु०) पाहुना । महमान । अतिथि ।

अभ्यागमः (पु०) समीप आना या जाना । आग-
मन । मुलाकात । भेंट । २ सामीप्य । पड़ोस ।
३ भिड़ना । हम्ला करना । ४ युद्ध । लड़ाई
५ शत्रुता । बैर ।

अभ्यागमनम् (न०) समीपगमन । आगमन । भेंट ।
मुलाकात ।

अभ्यागारिकः (पु०) वह जो अपने कुटुम्ब के
भरण पोषण में चलाशील हो ।

अभ्याघातः (पु०) हमला । आक्रमण ।

अभ्यादानं (न०) आरम्भ । प्रारम्भ । प्रथम आरम्भ ।

अभ्याधानं (न०) रखना । डालना (जैसे आग में
हूँधन)

अभ्यान्त (वि०) रोगी । बीमार ।

अभ्यापातः (पु०) विपत्ति । सङ्कट । बदकिस्मती ।

अभ्यामर्दः (पु०) } युद्ध । लड़ाई । भिड़न्त ।
अभ्यामर्दनम् (न०) } हमला ।

अभ्यारोहः (पु०) } चढ़ना । सवार होना ।

अभ्यारोहणम् (न०) } ऊपर की ओर जाना ।

अभ्यावृत्तिः (स्त्री०) पुनरावृत्ति । बार बार आवृत्ति ।

अभ्याश (वि०) समीप । नज़दीक ।

अभ्याशः (पु०) १ आगमन । व्याप्ति । २ पड़ोस ।
सामीप्य । ३ लाभ । परिग्रह । ४ लाभ की आशा
को आशा । प्रत्याशा ।

अभ्यासः (पु०) १ बार बार किसी काम को करने
की क्रिया । २ पूर्णता प्राप्त करने को बारंबार एक
ही क्रिया का अवलम्बन । २ आदत । बान । देव ।
स्वभाव । ३ रीति । रवाज़ । पद्धति । ४ कसरत ।
कवायद । ५ पाठ । अध्ययन । ६ समीप । पड़ोस ।
७ अभ्यस्त अंश (निरुक्त में) । (गणित में) गुणा ।
(संगीत में) एकतान सङ्गीत । अस्थायी या टेक ।
—योगः, (पु०) एक अवलम्ब में चित्त को
स्थापित कर देना अभ्यास कहा जाता है । अभ्यास
सहित समाधि ।

अभ्यासादनम् (न०) शत्रु का सामना करना । शत्रु
पर आक्रमण करना ।

अभ्याहननम् (न०) १ मारना । चोटिल करना ।
घात करना । २ रोकना । (रास्ते में) बाधा
डालना ।

अभ्याहारः (पु०) १ समीप लाना या किसी ओर
लाना । डेना । २ लूटना ।

अभ्युत्थानं (न०) १ (जल) द्विबकना । तर करना ।
२ प्रोक्षण । मार्जन ।

अभ्युचित (वि०) मामूली । साधारण । प्रधान-
रूप । प्रचलित । [शालीनता ।

अभ्युच्चयः (पु०) उन्नति । बढ़ती । २ समृद्धि-

अभ्युत्क्रोशनम् (न०) उच्चस्वर से चिल्लाना ।

अभ्युत्थानं (न०) १ किसी के सम्मान के लिये
आसन छोड़ कर खड़े होने की क्रिया । २ प्रस्थान ।
रवानगी । ३ उदय । पदोन्नति । समृद्धि । शान ।

अभ्युत्पत्तन (न०) उद्घाटन । रूपट । आक्रमण ।

अभ्युदयः (पु०) १ उन्नति । वृद्धि । २ उदय ।

(किसी नक्षत्र का) निकलना । ३ उत्सव । उत्स-
वावसरः । ४ आरम्भ । प्रारम्भ । [उदाहरण ।

अभ्युदाहरणम् (न०) किसी वस्तु का (उल्टा)

अभ्युदित (व० कृ०) १ उदय हुआ । २ पदोन्नत ।

३ सूर्यास्त के समय सोया हुआ ।

अभ्युदयः (पु०) } किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति अथवा

अभ्युदयनम् (न०) } महत्मान का सम्मान करने

अभ्युदतिः (स्त्री०) } को आगे जा कर उसे लेने
की क्रिया । अगवान्नी । उदय । विकास । उत्पत्ति ।

अभ्युद्यत (व० कृ०) १ उठा हुआ । ऊपर उठाया

हुआ । २ तैयार किया हुआ । तैयार । ३ आगे

गया हुआ । उदय हुआ । ४ अग्राचित दिवा हुआ
या लाया हुआ ।

अभ्युन्नत (वि०) १ उठा हुआ । ऊँचा किया हुआ ।

२ ऊपर को निकला हुआ । अत्युच्च ।

अभ्युन्नतिः (स्त्री०) अत्यन्त पदोन्नति और सृष्टि ।
शालीनता ।

अभ्युपगमः (पु०) १ समीप आगमन । आगमन ।

२ मंजूर करना । मान लेना । किसी बात को सत्य
समझ कर मान लेना । (दोष को) अङ्गीकार
करना । ३ चवन । प्रतिज्ञा ।

अभ्युपगमन-सिद्धान्तः (पु०) १ न्याय का एक
सिद्धान्त विशेष । बिना परीक्षा किये, किसी ऐसी
बात को मान कर, जिसका खण्डन करना है,
फिर उसकी परीक्षा करने को अभ्युपगमसिद्धान्त
कहते हैं । २ स्वीकृत प्रस्ताव या सर्वजनगृहीत
मूलनीति ।

अभ्युपपत्तिः (स्त्री०) १ सहायतार्थ समीप जाने की
क्रिया । व्याकुल होने की क्रिया । १ अनुग्रह । कृपा ।
२ सान्त्वना । डाँडस । धीरज । ३ संरक्षण ।
बचाव । रक्षा । ४ इकारनामा । प्रतिज्ञापत्र ।
स्वीकृति । प्रतिज्ञा । ५ स्त्री को गर्भवती करने की
क्रिया ।

अभ्युपायः (पु०) १ प्रतिज्ञा । इकार । फसाव ।
२ उपाय । इलाज ।

अभ्युपायनम् (न०) १ बूस । रिशबत । लालच ।
२ सम्मानप्रदर्शक सेंट ।

अभ्युपेत (अव्यया०) अग्रह किये जाने पर । रक्षा-
मंद होने पर । प्रतिज्ञा करने पर ।

अभ्युपेत्य (व० कृ०) १ समीप आया हुआ । २ प्रति-
ज्ञाता । स्वीकृत । अङ्गीकृत ।

अभ्युषः }

अभ्युषः } (पु०) एक प्रकार की रोटी या अपाती ।

अभ्युषः }

अभ्युहः (पु०) १ तर्क । दलील । बादविवाद ।
२ अनुमान । कल्पना । ३ त्रुटि की पुर्ति । ४ बुद्धि ।
समझ ।

अभ्र (धा० पर०) [अभ्रति, आनभ्र, अभ्रित]
जाना, इधर उधर घूमना फिरना ।

अभ्रम् (न०) १ बादल । २ आकाश । व्योम ।
३ अभ्रक । ४ (गणित में) शून्य । ज़ीरो ।

अभ्रंलिह (वि०) बादलों का स्पर्श करनेवाला ।
(अर्थात् बहुत ऊँच)

अभ्रंलिहः (पु०) पवन ।

अभ्रकम् (न०) अभ्रक ।

अभ्रंकष (वि०) बादलों को छूनेवाला । बहुत ऊँचा ।

अभ्रंक्षः (पु०) १ हवा । पवन । २ पर्वत ।

अभ्रसुः (स्त्री०) पूर्व दिशा के दिग्गज की हथिनी ।
इन्द्र के पुरावत हाथी की हथिनी ।—प्रियः,
—वल्लभः, (पु०) पुरावत हाथी ।

अभ्रिः } (स्त्री०) १ लकड़ी की बनी फरही, जिससे
अभ्रीः } नाव की सफाई की जाती है । काष्ठ कुदाल ।
२ कुदाली । [आच्छादित ।

अभ्रित (वि०) बादल छाये हुए । बादलों से

अभ्रिय (वि०) बादल सम्बन्धी या बादलों से उत्पन्न ।

अभ्रेषः (पु०) औचित्य । न्याय्य । न्यायानुमोदित
होने का भाव ।

अम् (अव्यया०) १ जल्दी से । फुर्ती से । २ अल्प ।
स्वल्प ।

अम् (धा० पर०) (अमति, अमितुं, अमित)
१ जाना । ओर या तरफ जाना । २ सेवा करना ।
सम्मान करना । ३ शब्द करना ४ । खाना ।

(आमयति) आक्रमण करना । पीड़ा अथवा रोग से दुःखी होना । पीड़ित होना ।

अम (वि०) कड़ा ।

अमः (पु०) १ गमन । २ बीमारी । नौकर ।

३ अनुचर । ४ यह । स्वयं ।

अमंगल } (वि०) अशुभ । बुरा । खराब । बद्-
अमङ्गल } क्रिस्मत् ।
अमङ्गल्य }

अमंगलः } (पु०) एरण्ड वृक्ष । अँडी का पेड़ ।
अमङ्गलः }

अमंड } (वि०) १ बिना सजावट के । बिना आभू-
अमण्ड } ण के । २ बिना फेन या माँद के ।

अमत् (वि०) १ असम्मत । अविज्ञात । अतर्कित ।
नहीं जाना हुआ । २ नापसंद ।

अमतः (पु०) १ समय । २ बीमारी । ३ मृत्यु ।

अमति (वि०) बुरे दिल का । दुष्ट । चरित्रभ्रष्ट ।
—पूर्य, (वि०) सत्यासत्यविवेकशक्तिहीन ।
अनिच्छाकृत । अनभिप्रेत ।

अमतिः (पु०) १ बद्माश । दुष्ट । दगावाज़ ।
२ चन्द्रमा । ३ समय । काल । (स्त्री०) अज्ञानता ।
अविवेकता । ज्ञान का, सङ्कल्प का या दीर्घदर्शिता
का अभाव ।

अमत्त (वि०) जो मत्त या डम्भत्त न हो । गम्भीर ।

अमत्रं (न०) १ बरतन । घड़ा । वासन । २ ताकत ।
शक्ति ।

अमत्सर (वि०) जो ईर्ष्यालु या डाही न हो । उदार ।

अमनस् } (वि०) १ जिसका मन ठीक ठिकाने
अमनस्के } न हो । २ विवेकशक्ति से हीन । ३ अना-
विष्ट । अमनोयोगी । ४ जिसका मन काबू में
न हो । ५ स्नेहशून्य । —गत, (वि०) अज्ञात ।
अविन्य । —योगः, (पु०) अमनोयोगिता । —हर,
(वि०) अप्रसन्न-कारक । प्रतिकूल । नापसंद ।

अमनः (न०) अबोध । निर्वोध । बाह्य वस्तु के
ज्ञान से शून्य । २ अमनोयोगी । (पु०) पर-
मात्मा ।

अमनाक् (अन्यथा०) स्वल्प नहीं । अधिकता से ।
बहुत अधिक ।

अमनुष्य (वि०) १ मनुष्य नहीं । अमानुषिक ।
२ जहाँ मनुष्यों की वस्ती न हो ।

अमनुष्यः (पु०) १ मनुष्य नहीं । २ शैतान । राक्षस ।

अमंत्र } (वि०) १ वैदिक मंत्रों से रहित ।
अमंत्रक } वह कर्मानुष्ठान जिसमें वैदिक मंत्रों के पढ़ने
की आवश्यकता न पड़े । २ वेद पढ़ने के अनभि-
कारी (शूद्र, स्त्री आदि) । ३ वेद को न जानने
वाला । ४ वह रोगचिकित्सा जिसमें जादू-टोना
की क्रिया न हो ।

अमंद } (वि०) १ जो मंद या सुस्त न हो । क्रिया-
अमन्द } शील । प्रतिभावात् । २ उम्र । दृढ़ । तेज़ ।

३ थोड़ा नहीं । बहुत । अत्यधिक । बड़ा । तीव्र ।

अमम (वि०) ममतारहित । जिसमें स्वार्थ या
सांसारिक वस्तुओं का अनुराग न हो ।

अममता (स्त्री०) } स्वार्थरहित्य । अनासक्ति ।
अममत्वं (न०) } उदासीनता ।

अमर (वि०) १ जो कभी मरे नहीं । अविनाशी ।

अविनश्य । —अङ्गना, —स्त्री, (स्त्री०) अप्सरा । —

अद्रिः, (पु०) देवताओं का पर्वत । सुमेरु पर्वत । —

अधिपः, —इन्द्रः, —ईशः, ईश्वरः, —पतिः, —

भर्ता, —राजः, (पु०) १ देवताओं के राजा । इन्द्र ।

२ विष्णु । ३ शिव । —आचार्यः, —गुरु, —इज्यः,

(पु०) देवताओं के गुरु —अर्थात् बृहस्पति ।

—आपता, —तटिनी, —सरित्, (स्त्री०) स्वर्ग

की नदी । गङ्गा । —आलयः, (पु०) स्वर्ग ।

—कण्टकं, (न०) अमरकण्टक पहाड़ जिस

से नर्मदा नदी निकलती है । —कौशः, —कोषः,

(पु०) संस्कृत भाषा के एक प्रसिद्ध शब्दकोश का

नाम, जो अमरसिंह विरचित है । —तरुः, —दारुः,

(पु०) इन्द्र के स्वर्ग का एक वृक्ष । —विजः,

(पु०) ब्राह्मण जो किसी देवालय में पूजा करे अथवा

देवालय का प्रबन्ध करे । —पुरः, (न०) स्वर्ग ।

—पुष्पः, —पुष्पकः, (पु०) कल्पवृक्ष । —प्रख्यः,

—प्रभ, (वि०) अमर के समान । अविनाशी के

समान । —रत्नं, (न०) स्फटिक पत्थर । —लोकः,

(पु०) स्वर्ग । —सिंहः, (पु०) संस्कृत कोषकार

अमरसिंह । यह जैन थे और कहा जाता है कि,

विक्रमाजीत के नौरत्नों में से एक थे ।

अमरः (पु०) १ देवता । २ पारा । ३ सुवर्ण । ४ तैलीय की संख्या । ५ अमरसिंह का नाम । ६ हड्डियों का ढेर ।

अमरता (स्त्री०) } अविनश्वरता ।
अमरत्वं (न०) }

अमरा (स्त्री०) १ अमरावती पुरी । २ नाभिसूत्र । नाभिनाल । ३ गर्भाशय ।

अमरावती (स्त्री०) इन्द्र की पुरी का नाम ।

अमरी (स्त्री०) देवता की स्त्री । देवी । इन्द्र की राजधानी ।

अमर्त्य (वि०) अविनाशी । दैवी । जो कभी नाश न हो ।—आपगा, (स्त्री०) गङ्गा का नाम ।

अमर्त्यः (पु०) देवता ।

अमर्मन् (न०) शरीर का मर्मस्थल नहीं ।—वेधिन (वि०) मर्मस्थल को न वेधने वाला । कोमल । मुलायम ।

अमर्याद (वि०) १ सीमारहित । सीमा के बाहिर । अनुचित । असम्मानकारी । २ असीम । असदाचरण । असम्मान ।

अमर्यादा (स्त्री०) उचित सम्मान की अवहेला ।

अमर्ष (वि०) दूसरे का उत्कर्ष न सहने वाला ।

अमर्षः (पु०) १ असहनशीलता । अधैर्य । ईर्ष्या । ईर्ष्या से उत्पन्न क्रोध । २ क्रोध । कोप ।

अमर्षण } (वि०) १ अधैर्यवान् । असहनशील ।
अमर्षित } जो क्षमा न करे । २ क्रोध । रुठ हुआ ।
अमर्षिन् } रोषपरवश । ३ प्रचण्ड । उग्र । दृढ़
अमर्षवत् } प्रतिज्ञ ।

अमल (वि०) जिसमें मैल न हो । साफ सुथरा । निष्कलङ्क । वेधवा । वेदात्ता । विशुद्ध । सच्चा । २ सफेद । चमकदार ।—(ला) (स्त्री०) १ लक्ष्मी जी का नाम । २ नाला । नाभिसूत्र । ३ एक वृक्ष का नाम । आमला वृक्ष ।—पतत्रिन् (पु०) जंगली हंस ।—रत्नं, (न०)—मणिः (पु०) स्फटिक पत्थर ।

अमलम् (न०) १ स्वच्छता २ अन्नक । ३ परमात्मा ।

अमलिन (वि०) स्वच्छ । वेदात्ता । निष्कलङ्क । पवित्र ।

अमसः (पु०) १ रोग । २ सूइता । ३ मूर्ख । ४ समय ।

अमा (वि०) मापरहित । जो नापा न जा सके । (अव्यया०) साथ । समीप । पास । (स्त्री०) अमावास्या तिथि । चन्द्र की १६ वीं कला । (पु०) आत्मा । जीव ।

अमांस (वि०) १ विना मांस का । जो मांसल न हो । २ दुबला । पतला । निर्बल ।

अमांसम् (न०) मांस को छोड़ अन्य कोई भी वस्तु ।

अमात्यः (पु०) दीवान । महामात्र । मंत्री । सचिव ।

अमात्र (वि०) १ असीम । जो नापा न जा सके । २ सम्पूर्ण या समूचा नहीं । ३ असौलिक ।

अमात्रः (पु०) परमात्मा ।

अमाननम् (न०) } तिरस्कार । अपमान । अवज्ञा ।
अमानना (स्त्री०) }

अमानस्य (न०) पीड़ा । दर्द ।

अमानिन् (वि०) निरभिमान । विनयी । विनम्र ।

अमानुष (वि०) [स्त्री०—अमानुषी] मनुष्य सम्बन्धी नहीं । अमानवी । अलौकिक । अपौरुषेय ।

अमानुष्य (वि०) अमानुषी । अलौकिक ।

अमामसी } (स्त्री०) अमावास्या ।
अमामासी }

अमाय (वि०) १ सच्चा । निष्कपट । निश्चल । २ जो नापा न जा सके ।

अमायम् (न०) ब्रह्म ।

अमाया (स्त्री०) १ छल या कपट का अभाव । सच्चाई । ईमानदारी । २ वेदान्त दर्शन में “अमाया” से माया या भ्रम से रहित का बोध होता है । परमात्मा का ज्ञान ।

अमायिक } (वि०) निश्चल । निष्कपट । ईमानदार ।
अमायिन् }

अमावस्या } (स्त्री०) अमावस । कृष्णपक्ष की
अमावास्या } अन्तिम तिथि । अंधेरे पाल का
अमावसी } अन्तिम दिन ।
अमावासी }

अमित (वि०) १ अपरिमित । जिसका परिमाण न हो । बेहद । असीम । २ अवज्ञा किया हुआ । तिरस्कृत । ३ अज्ञात । ४ अशिष्ट ।—अक्षर, (वि०) राख-वत् । कवित्व शून्य ।—आम, (वि०) असीम कान्तिवान् ।

—ओजस्, (वि०) सर्वशक्तिमान् ।—तेजस्,—
द्युति, (वि०) असीम महिमा या कान्ति वाला ।
विक्रमः, (पु०) १ असीम पराक्रमशाली ।
२ विष्णु का नाम ।

अमित्रः (पु०) जो मित्र न हो । शत्रु । रिपु । वैरी ।
प्रतिद्वन्दी ! सामना करने वाला ।

अमिथ्या (अव्यया०) झुठाई से नहीं । सचाई से ।

अमित्र (वि०) बीमार । रोगी ।

अमिषं (न०) १ सांसारिक भोग पदार्थ । बिलास ।
२ ईमानदारी । सचाई । ३ मांस । गोश्त ।

अमीवाम् (न०) कष्ट । क्लेश । पीड़ा । चोट ।

अमीवा (स्त्री०) १ रोग । बीमारी । २ तकलीफ ।
कष्ट । भय ।

अमुक (सर्वनामीय विशेषण) फलां । ऐसा । ऐसा ।
जब किसी वस्तु विशेष या व्यक्ति विशेष का नाम
लेना अभीष्ट नहीं होता और उसके निर्दिष्ट किये
बिना काम भी नहीं चलता, तब उस वस्तु या
व्यक्ति का नाम न लेकर उसके बजाय इस शब्द
का प्रयोग किया जाता है ।

अमुक (वि०) जो मुक्त न हो । बँधा हुआ । बंधन
में पड़ा हुआ । जिसे छुटकारा न मिला हो । बद्ध ।

—हस्त (वि०) लोभी । कंजूस । किफायतशर ।
अमुकम् (न०) हथियार (यथा तलवार, छुरी जो
फेंककर न चलाया जाय । हाथ में पकड़े ही पकड़े
चलाया जाय ।) [मोच का न मिलना ।

अमुक्तिः (स्त्री०) स्वतंत्रता या मोच का अभाव ।

अमुतः (अव्यया०) १ वहाँ से । वहाँ । २ उस
स्थान से । ऊपर से । ३ परलोक में । अगले जन्म
में । ४ वहाँ ।

अमुथा (अव्यया०) इस प्रकार । यों । उस प्रकार ।

अमुष्य (सम्बन्ध कारक अदस्) एक ऐसे का ।

—कुल, (वि०) एक ऐसे कुल का ।—कुलम्,
(न०) एक प्रसिद्ध कुल या वंश का ।—पुत्रः,
(पु०) पुत्री, (स्त्री०) अच्छे या प्रसिद्ध वंश में
उत्पन्न पुत्र या पुत्री ।

अमृद्वश { (वि०) [स्त्री०—अमृद्वशी, अमृद्वती]
अमृद्वश { इस प्रकार का । इस जाति या प्रकार का ।
अमृद्वत् {

अमूर्त (वि०) आकारशून्य । अशरीरी । शरीर
रहित ।—गुणः (पु०) वैशेषिकदर्शन में गुण
को अशरीरी माना है । यथा धर्म अधर्म ।

अमूर्तः (पु०) १ अवयव रहित । २ वायु । अन्तरिक्ष ।
आकाश । ३ काल । ४ दिशा । ५ आत्मा ।
६ शिव ।

अमूर्ति (वि०) आकाररहित । जिसकी कोई
शक्ति न हो ।

अमूर्तिः (पु०) विष्णु । (स्त्री०) अमूर्तिता : शक्ति
का या आकार का न होना ।

अमूल (वि०) बेजड़ । निर्मूल । असत्य ।
अमूलक (वि०) मिथ्या । प्रमाणशून्य । जिसका कोई
प्रमाण या आधार न हो ।

अमूल्य (वि०) अनमोल । वैशक्कीमती । बहुमूल्य ।

अमृणालम् (न०) एक सुगन्धित वास विशेष ।
नलद । उशीर । खस ।

अमृत (वि०) १ जो मृत न हो । २ अमर ।

३ अविनाशी । अविनश्य ।—अमृतः,—करः,—
दीधितिः,—द्युतिः,—रश्मिः, (पु०) चन्द्रमा

की उपधियाँ ।—अन्धस्,—अशनः,—आशिनः,
(पु०) जिसका भोजन अमृत हो । देवता । अवि-

नाशी ।—आहरणः, (पु०) गरुड का नाम ।—
उत्पन्ना, (स्त्री०) मक्खी ।—उत्पन्नम्, उद्भवम्

(न०) एक प्रकार का सुमाँ ।—कुराडम्, (न०)
पात्र जिसमें अमृत हो ।—गर्भः (पु०) १ व्यक्ति-

गत आत्मा । २ परमात्मा ।—तरङ्गिणी, (स्त्री०)
चाँदनी । झन्झाई ।—द्रव, (वि०) अमृत बहाने

या बुझाने वाला ।—द्रवः, (पु०) अमृत की धारा ।
—धारा, (स्त्री०) १ छन्दविशेष । वृत्त विशेष ।

इस वृत्त में चार चरण होते हैं और प्रथम पद में
२०, दूसरे में १२, तीसरे में १६ और चौथे में ८

अक्षर होते हैं । २ अमृत की धारा ।—पः (पु०)
१ देवता । २ विष्णु का नाम । ३ शराब पीने

वाला ।—फला, (स्त्री०) प्राचा का गुच्छा ।—
वन्धुः, (पु०) १ देवता । २ घोड़ा या चन्द्रमा ।

—भुज, (पु०) अमर । देवता ।—भू, (वि०)
जन्म मरण से मुक्त ।—मन्थनम्, (न०) अमृत

निकालने के लिये समुद्र का मंथन ।—रसः,
सं० श० कौ—११

(पु०) १ अमृत । २ ब्रह्मा ।—लता,—लतिका,
(स्त्री०) वह लता जिससे अमृत निकले ।—सारः,
(पु०) घी ।—सू,—सूतिः, (पु०) १ चन्द्रमा ।
२ देवताओं की जननी ।—सोदरः (पु०) उच्चै-
श्रवा घोड़ा । [नाम ।

अमृतः (पु०) १ देवता । अमर । २ धनवन्तरि का
अमृतम् (न०) १ अमरता । सोम । स्वर्ग । ४ अमृत
रस । ५ सोमरस । ६ विष का मारक । ७ यज्ञशेष ।
८ अयाधित भिक्षा । ९ जल । १० आसव
विशेष । ११ घी । १२ दूध । १३ भोज्य पदार्थ
(कोई भी) । १४ मात । १५ कोई मधुर प्यारा या
मनोहर पदार्थ । १६ सुवर्ण । १७ पारा ।
१८ विष । १९ ब्रह्मा ।

अमृतकम् (न०) अमरत्व प्रदायक रस विशेष ।

अमृतता
अमृतत्वं } अमरता ।

अमृता १ एक प्रकार की मद्य । गिलोय, गुचं आदि
कई औषधियाँ । [सोने वाले] ।

अमृतेशयः (पु०) विष्णु का नाम । (जल में
अमृषा (अन्यथा०) छुड़ाई से नहीं । सचाई से ।

अमृष्ट (वि०) १ बिना मला हुआ । २ बिना साफ
किया हुआ । [पतला ।

अमेदस्क (वि०) जिसके चर्वी न हो । दुर्बल । लटा ।

अमेधस् (वि०) मूर्ख । मूढ़ । बुद्धिहीन ।

अमेध्य (वि०) १ जो यज्ञ या हवन करने योग्य न हो ।
२ यज्ञ के अयोग्य । ३ अपवित्र । अशुद्ध । मैला ।
गंदा । अस्वच्छ ।

अमेध्यम् (न०) १ विद्या । मल । २ अशकुन ।

अमेय (वि०) असीम । सीमारहित । अपार ।
२ अचिन्त्य । जो जाना न जा सके । अज्ञेय ।
—आत्मन्, (पु०) विष्णु का नाम ।

अमोघ (वि०) १ अचूक । निशाने पर ठीक पहुँचने
वाला । २ अन्यर्थ ।—दण्डः, (पु०) १ जो
दण्ड देने में कभी न चूके । २ शिव का नाम ।

अमोघः (पु०) १ जो कभी अन्यर्थ न जाय या न
चूके । २ विष्णु का नाम ।

अम्ब } (धा० पर०) १ जाना । २ (आत्म०)
अम्बु } शब्द करना ।

अम्ब } (अन्यथा०) अच्छा । हाँ ।

अम्बः } (पु०) पिता ।

अम्बम् } (न०) १ जल । पानी । २ नेत्र । आँख ।

अम्बकम् } (न०) १ नेत्र । २ पिता ।

अम्बरं } (न०) १ अन्तरिक्ष । आकाश । व्योम ।
अम्बरम् } २ कपड़ा । वस्त्र । पोशाक । परिच्छद ।
३ केसर । ४ अन्नक । ५ सुगन्धित पदार्थ विशेष ।
अम्बरी—ओकस्, (पु०) स्वर्गवासी । देवता ।
—दम्, (न०) कपास । हई ।—मणिः, (पु०)
सूर्य ।—लेखिन, (वि०) आकाशरूपी ।

अम्बरीषं } (न०) १ कढ़ाई । २ खेद । सन्ताप ।
अम्बरीषम् } ३ युद्ध । लड़ाई । ४ नरक विशेष ।
५ किसी जानवर का बच्चा । बछड़ा । किशोर ।
६ सूर्य । ७ विष्णु का नाम । ८ शिव का नाम ।

अम्बरीषः } (पु०) राजा विशेष । यह महाराज
अम्बरीषः } मान्वाता के पुत्र थे और परम भागवत थे ।

अम्बष्ठः } (पु०) १ ब्राह्मण पिता और वैश्य माता
अम्बष्ठः } की औलाद । २ महावत । ३ (बहुवचन
में) देश का तथा उस देश के बसने वालों का
नाम ।

अम्बुष्ठा } (स्त्री०) गणिका, यूथिका आदि कितने ही
अम्बुष्ठा } पौधों का नाम । (जुही, पाठा, पहाड़मूल,
सुका, अंबाड़ा आदि पौधे ।)

अम्बा } (स्त्री०) (सम्बोधनकारक में “ अम्बे ”
अम्बा } वैदिक साहित्य में) १ माता । २ शिवपत्नी
दुर्गा का नाम । ३ राजा पाण्डु की माता का
नाम ।

अम्बाड़ा }
अम्बाड़ा } (स्त्री०) माता । जननी । मा ।
अम्बाला }
अम्बाला }

अम्बालिका } (स्त्री०) १ माता । भद्रसहिता । २
अम्बालिका } एकपौधे का नाम । ३ राजाविचित्रवीर्य
की रानी का नाम, जो काशिराज की सब से
छोटी कन्या थी ।

रम्बिका } (स्त्री०) १ माता । भद्रमहिला । २ पार्वती
रम्बिका } का नाम । ३ राजा विश्ववीर्य की पत्नी
रानी का नाम । यह काशिराज की मन्त्राली बेटा
थी ।—पतिः,—भर्ता, (पु०) शिव का नाम ।
—पुत्रः,—सुतः, (पु०) धृतराष्ट्र का नाम ।

रम्बिकेयः }
रम्बिकेयः } (पु०) १ राघव जी का, २ कार्तिकेय
रम्बिकेयकः } का, ३ धृतराष्ट्र का नाम ।
रम्बिकेयकः }

रम्बु } (न०) १ पानी । २ जल का भाग जो रक्त में
रम्बु } रहता है ।—कणः, (पु०) जल की बूंद ।—
कराटकः, (पु०) ग्राह । बडियाल । मगर ।—
किरातः, (पु०) बडियाल । मगर ।—कीशः,—
कूर्मः, (पु०) सूँस । शिशुमार ।—केशरः, (पु०)
नीबू का पेड़ ।—क्रिया, (स्त्री०) पितरों को
जलदान । तर्पण ।—गः,—चरः,—चारिन्, (वि०)
जल में रहने वाले जीवजन्तु ।—धनः, (पु०)
झोला ।—चत्वरं, (न०) झील ।—जः, (वि०)
जल में उत्पन्न ।—जः, (पु०) १ चन्द्रमा ।
२ कपूर । ३ सारस पक्षी । ४ शङ्ख ।—जम्, (न०)
१ कमल । २ इन्द्र का वज्र ।—जम्भन्, (न०)
कमल । (पु०) १ चन्द्रमा । २ शङ्ख । ३ सारस ।
—तस्करः, (पु०) जल का चोर । सूर्य ।
—दः, (वि०) जल देने वाला या जिससे जल
निकले ।—दः, (पु०) बादल ।—धरः, (पु०)
१ बादल । मेघ । २ अन्नक ।—धिः, (पु०)
१ जल का कोई पात्र । जैसे बड़ा, कलसा आदि ।
२ समुद्र । ३ चार की संख्या ।—निधिः,
(पु०) समुद्र ।—पः, (वि०) जल पीने वाला ।
—पः, (पु०) १ समुद्र । २ वरुण ।—पातः
(पु०) धारा । जलप्रपात । जलप्रवाह । जलधोत ।
—प्रसादः, (पु०)—प्रसादनम्, (न०) कलक
निर्मली का पेड़ । (जिससे जल साफ होता है)
—भवम्, (न०) कमल ।—भृत्, (पु०)
१ जलवाहक । बादल । २ समुद्र । ३ अन्नक ।
—मात्रजः, (वि०) जो केवल जल ही में उत्पन्न
हो ।—मात्रजः, (पु०) शङ्ख ।—मुचः, (पु०)
बादल ।—राजः, (पु०) समुद्र । वरुण ।—
राशिः, (पु०) समुद्र ।—रहः, (न०) १ कमल

२ सारस ।—रहः, (पु०)—रहः, (न०) कमल ।
—रोहिणी, (स्त्री०) कमल ।—वाहः, (पु०)
१ बादल । २ झील । ३ पानी ढोने वाला ।—
वाहिन्, (न०) पानी ढोने वाला । (पु०) बादल ।
वाहिनी, (स्त्री०) कठेली या काठ का डोल ।—
विहारः, (पु०) जलक्रीड़ा ।—वेतसः, (पु०) नर-
कुल जो जल में उत्पन्न होता है ।—सरणं, (न०)
जल की धारा या जल का बहाव ।—सर्पिणी,
(स्त्री०) जोंक ।

अम्बुमत् } (वि०) पनीला । जिसमें जल हो ।
अम्बुमत् }
अम्बुमती } (स्त्री०) एक नदी का नाम ।
अम्बुमती }
अम्बुमती }
अम्बुमती } (वि०) थोड़ा बंद कर के गुन गुनाया
अम्बुमती } हुआ । ऐसे बोला हुआ जिससे थूक उड़े ।
अम् (धा० आत्म०) [अंभते, अंभित] शब्द करना ।
अम्भस् (न०) १ जल । २ आकाश । ३ लग्न से
चौथी राशि ।—जः, (वि०) पानी का ।—जः,
(पु०) १ चन्द्रमा । २ सारसपक्षी ।—जं, (न०)
कमल ।—जम्भन्, (पु०) बड़ा की बपाधि ।
(न०) कमल ।—दः,—धरः, (पु०) बादल ।
—धिः,—निधिः,—राशिः, (पु०) समुद्र ।—रहः
(न०)—रहः (न०) कमल । (पु०) सारस ।—
सारं (न०) मोती ।—सूः (पु०) हुआ ।
बदरी वाला । बादल का ।

अम्भोजिनी } (स्त्री०) १ कमल का पौधा या उसके
अम्भोजिनी } फूल । २ कमल के फूलों का समूह ।
३ स्थान जहाँ कमल के फूलों का बाहुल्य हो ।

अम्भय (वि०) [स्त्री०—अम्भयी] पनीली या
पानी की बनी हुई ।

अम्भ देखो आम्भ ।

अमल (वि०) खटा ।—अमल, (वि०) खटा ।
—उद्गारः, (पु०) खड़ी इकार ।—केशरः,
(पु०) चक्रोतरा या बीजपूरक का पेड़ ।—
निम्बकः, (पु०) नीबू का पेड़ ।—फलः, (पु०)
इम्ली का वृक्ष ।—फलं, (न०) इम्ली फल ।—
वृत्तः, (पु०) इम्ली का पेड़ ।—सारः, (पु०)
नीबू का वृक्ष ।

अम्लः (पु०) १ खट्वापन । २ सिरका । ३ विभिन्न प्रकार के अम्लरस तत्त्व । ४ चकौतरा का वृक्ष । ५ ढकार ।

अम्लकः (पु०) एक वृक्ष का नाम । लकड़ी ।

अम्लान (वि०) १ जो कुम्हलाया न हो । जो सुर-भाया हुआ न हो । २ साफ । स्वच्छ । चमकीला । पवित्र । विना बादलों का ।

अम्लानि (वि०) सतेज । सबल । [हरियाली ।

अम्लानिः (स्त्री०) १ सतेजता । सबलता । २ ताज़गी ।

अम्लानिन् (वि०) साफ । स्वच्छ ।

अम्लिका (स्त्री०) १ मुँह का खट्वापन । खट्टी अम्लीका } ढाकर । २ इम्ली का वृक्ष ।

अम्लिमन् (पु०) खट्वापन ।

अय (धा० आत्म०) [कभी कभी यह परस्मैपदी भी होती है, विशेष कर "उद्" के संयोग से] [अयते, अयाचक्रे, अयितुं, आयित] जाना । गमन करना ।

अयः (पु०) १ गमन । २ पूर्वजन्म के शुभ कर्म । ३ सौभाग्य । खुशकिस्मती । ४ (खेलने का) पांसा —अयित, —अयवत्, (वि०) भाग्यवान् । खुशकिस्मत ।

अयह्मं (न०) निरोगता । तंदुरुस्ती ।

अयज्ञः (पु०) बुरा यज्ञ । यज्ञ नहीं ।

अयज्ञिय (वि०) १ यज्ञ के अयोग्य (जैसे उद्) । २ यज्ञ करने के अयोग्य (जैसे अनुपवीत बालक) ३ गँवार । दूषित ।

अयत्न (वि०) जिसमें यत्न न करना पड़े ।

अयत्नः (पु०) यत्न का अभाव । सहज । सरल ।

अयथा (अन्यथा०) जो ज्यों का त्यों न हो । ठीक-ठीक न हो । भूल से । गलती से । अनुचित । अयोग्य । —यत्, (अन्यथा०) गलती से । अनुचित रीति से ।

अयथार्थानुभवः (पु०) अनुचित या मिथ्या अनुभव । अन्य वस्तु में अन्य वस्तु का ज्ञान ।

अयर्ज (न०) १ गमन । २ मार्ग । रास्ता । (सूर्य की) गति । (यह गति उत्तर या दक्षिण होती है ।) ३ स्थान । आवसथल । ४ ब्यूह का मार्ग या द्वार । ५ दक्षिणायन । उत्तरायण ।

अयंत्रित (वि०) बेकाबू जो बश में न हो । मन-मुल्ली । स्वेच्छाचारी ।

अयमित (वि०) १ अनियंत्रित । बेकाबू । २ विना सम्हाला हुआ । विना सजाया हुआ ।

अयशः (पु०) कलङ्क । अपवाद । —कर, —करो, (वि०) अपकीर्तिकारी । बदनामी कराने वाला ।

अयशस् (वि०) अपकीर्तित । बदनाम । फलङ्कित ।

अयशस्य (वि०) बदनाम । कलङ्कित ।

अयस् (न०) १ लोहा । २ ईसपात । ३ सुवर्ण । ४ कोई भी धातु । ५ अगर की लकड़ी । (पु०)

अग्नि । आग । —अग्रं, —अग्रकम्, (न०) हथौड़ा । मूसल । —कारुडः, (पु०) १ लोहे का तीर । २ उत्तम लोहा । ३ लोहे का ढेर । —

कान्तः, (अयस्कान्तः) (पु०) १ चुंबक पत्थर । २ मूल्यवान् पत्थर । मणि । —कारः, (पु०) लुहार । —कोटं, (न०) लोहे का मोर्चा

—मलं, (न०) लोहे का मल । —मुखः (पु०) लोहे की नोक का तीर । शङ्खः (पु०) १ भाला । २ कील । ३ परंग । —शूलं, (न०) १ लोहे का भाला । २ तीक्ष्ण उपाय । —हृदय, (वि०) कड़ा हृदय । निर्दयी ।

अयस्प्रय (न०) [स्त्री०—अयोमयी] लोहे अयोमय (न०) } की या अन्य किसी धातु की बनी हुई ।

अयाचित (वि०) विना माँगी हुई । —व्रतः, (पु०) —व्रतम् (न०) विना माँगी भीख पर जीवन व्यतीत करना ।

अयाचितम् (न०) विना माँगी भीख ।

अयाज्य (वि०) ब्राह्मण पतित । वह व्यक्ति जिसको यज्ञ नहीं कराया जा सकता ।

अयात (वि०) नहीं गया हुआ । —याम, (वि०) रात की रखी या बाली नहीं । ताज़ी । टटकी ।

अयथार्थिक (वि०) [स्त्री०—अयथार्थिकी] १ असत्य । झूठी । अनुचित । ठीक नहीं । २ असली नहीं । असङ्गत । असंलग्न । युक्ति-विरुद्ध ।

अयथार्थ्य (न०) १ अयोग्य । अशुद्धि । २ अस-ङ्गति । असंलग्नता ।

अयानं (न०) न चलना । न हिलना डुलना । ठहरना । गतिरोध । अवस्थिति ।

अयि (अव्यया०) (किसी से प्यार से बोलते समय सम्बोधन करने का शब्द ।) ओह । हो । ए ।

अयुक्त (वि०) १ जो गाड़ी के जुपों में जुता न हो या जिस पर जीन न कसा हो । २ जो मिला न हो । जुड़ा न हो । मिला हुआ । सम्बन्धयुक्त । ३ अभक्तिमान् । अधार्मिक । अमनस्क । असावधान । ४ अनभ्यस्त । जो किसी काम में न लगा हो । ५ अयोग्य । अनुपयुक्त । अनुचित । ६ सूठा । असत्य ।

अयुग } (वि०) १ पृथक् । इकेला । इकेहरा ।
अयुगल } २ अविभाज्य ।—अर्चिस्, (पु०) अग्नि ।
आग । नेत्रः, —नयनः, (पु०) शिवजी का नाम ।—शः, (पु०) कामदेव का नाम ।—सतिः (पु०) सात ओड़ें वाला । सूर्य ।

अयुज् (वि०) अविभाज्य ।—इष्टुः, —वाणः, —शरः, (पु०) कामदेव का नाम । (कामदेव के पास २ बाण बतलाये जाते हैं)—नेत्र, लोचन, —अक्ष, —शक्ति । शिव जी का नाम ।

अयुत् (वि०) जो मिला न हो । असंयुक्त । असंबद्ध ।—अयुतम् (न०) दस हजार की संख्या ।—अध्यापकः, (पु०) एक अच्छा शिक्षक ।—सिद्धिः, (स्त्री०) कोई कोई वस्तुएँ या विचार अभिन्न हैं—इस बात को प्रमाणित करने की क्रिया ।

अयुतम् (न०) दस हजार की संख्या ।

अये (अव्यया०) देखो “अयि ।” यह क्रोध, आश्चर्य, विषाद आतंक सम्बोधन वाची अव्यय है ।

अयोगः (पु०) १ वियोग । अलगाव । अन्तराल । अचकाश । २ अयोग्यता । असंलग्नता । ३ अनुचित मेल । ४ विधुर । रदुआ । ५ हथौड़ा । ६ अरुचि । नापसंदगी ।

अयोगवः (पु०) [स्त्री० —अयोगवा, अयोगवी] देखो आमेगव । यज्ञ पिता और वैश्या माता का पुत्र ।

अयोग्य (वि०) १ जो योग्य न हो । अनुपयुक्त । बेकार । निरक्षर । अपात्र ।

अयोग्य (वि०) जो आक्रमण करने योग्य न हो । अप्रतिरोधनीय । अतिप्रबल ।

अयोध्या (स्त्री०) सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी जो सरयू के तट पर बसी हुई है ।

अथेनि (वि०) अजन्मा । नित्य ।—ज, —जन्मन् (वि०) जो गर्भ से उत्पन्न न हुआ हो ।—जा, —सम्भवा, । (स्त्री०) जनकदुहिता सीता ।

अथेनिः (स्त्री०) गर्भाशय नहीं । ब्रह्म की उपाधि ।

अथैगपद्यं (न०) समकालीनता का अभाव ।

अथैगिक (वि०) [स्त्री० —अथैगिकी] शब्दसाधन-विधि से जिसकी उत्पत्ति न हो ।

अरः (पु०) पहिये की नाभि और नेमि के बीच की लकड़ी ।—अन्तर, (बहु०) आरों के बीच की खाली जगह ।—घट्टः, —घट्टक, (पु०) रहट । कुए से पानी निकालने का यंत्र विशेष । २ गहरा कूप ।

अरजस् } (वि०) १ धूलगर्दा से रहित । साफ ।
अरज } २ अत्यार्त्तिक से वजित ।
अरजस्क }

अरजस्का (स्त्री०) जिसको मासिक धर्म न हो ।

अरजाः (स्त्री०) रजोधर्म होने के पूर्व की अवस्था की लड़की ।

अरज्जु (वि०) बिना रसियों का । (न०) कारा-गृह । जेल ।

अरणिः (स्त्री० पु०) } छेकुर की लकड़ी जिसको
अरणी (स्त्री०) } रगड़ने से अग्नि निकलता है ।

यज्ञ के लिये आग इसकी लकड़ियों को रगड़ कर ही निकाली जाती थी ।

अरणिः (पु०) १ सूर्य । २ अग्नि । ३ चकमक पत्थर ।

अरण्यां (न० कभी कभी पु० भी) जंगल । वन ।

—अर्यन्तः (पु०) वन का निगरांकार । वन की देखरेख करने वाला । फारेस्टरेंजर ।—अर्यन्तं, —यानं, (न०) वनगमन । तपस्वी वनना ।—

अोकस्, —सद्, (वि०) १ वनवास । २ वन-

वासी । बाणप्रस्थ या संन्यासी —चन्द्रिका,

(अन्व०) वन में चांदनी । (आलं०) वृथा का

शृङ्गार ।—नृपतिः, —राज्, —राट्, —राज,

(पु०) सिंह । बीता ।—पण्डितः (पु०) वन का

परिडत । (अलं०) मूर्ख मनुष्य ।—इवन्
(पु०) भेदिया ।

अरस्यकम् (न०) वन । जंगल ।

अरस्यानिः } (स्त्री०) एक बड़ा लंबा चौड़ा वन ।
अरस्यानी }

अरत (वि०) १ सुस्त । काहिल । २ असन्तुष्ट ।

विरुद्धः—त्रप, (वि०) जो रमण करने में
लजावे नहीं ।—त्रपः (पु०) कुत्ता (जो गली
में कुतिया के साथ रमण करने में लज्जित नहीं
होता ।

अरतं (न०) अरमण्यकार्य ।

अरति (वि०) १ असन्तुष्ट । २ सुस्त । काहिल ।
चेष्टाहीन ।

अरतिः (स्त्री०) १ भोग विलास का अभाव ।
२ कष्ट । पीड़ा । दुःख । दुर्द । ३ चिन्ता ।
शोक । विकलता । घबड़ाहट । ४ असन्तुष्टता ।
असन्तोष । ५ चेष्टाहीनता सुस्ती । काहिली ।
६ उदरव्याधि ।

अरतिः (पु० या० स्त्री०) १ मुड़ी । मूका । बूसा ।
२ एक हाथ (का नाम) । कोहनी से उगुनियां
की नोक तक ।

अरलिकः (पु०) कोहनी । हाथ और बाँह के बीच
का जोड़ ।

अरं (अव्यया०) १ तेज़ी से । समीप । पास । विद्य-
मान । २ तत्परता से ।

अरमण } (वि०) १ अप्रसन्नताकारक । प्रतिकूल ।
अरमण } नापसंद । २ सतत ।

अररं (न०) } १ कपाट । किवाड़ । २ गिलाफ ।
अररी (स्त्री०) } स्थान । ठकान ।

अररः (पु०) रौंपी (चमार का एक औज़ार) ।

अररे (अव्यया०) अतिशीघ्रता अथवा घृणा व्यञ्जक
सम्बोधनवाची अव्यय ।

अरविन्दः } (पु०) १ सारस । २ तांबा ।—अक्ष
अरविन्दः } (अरविन्दाक्ष) (वि०) कमलनयन । विष्णु
का विशेषण या उपाधि ।—द्वलप्रभम् (न०) तांबा
—नाभिः नाभः, (पु०) विष्णु का नाम ।—सद्
(पु०) ब्रह्मा का नाम ।

अरविदं } (न०) १ कमल । रक्त या नीले कमल
अरविन्दम् } का फूल ।

अरविन्दिनी (स्त्री०) १ कमल का पौधा । २ कमल
पुष्पों का समूह । ३ वह स्थान जहाँ कमलों का
बाहुल्य हो ।

अरस (वि०) १ रसहीन । नीरस । फीका ।
२ निस्तेज । मंद । ३ विवर्ण । बलहीन । अगुण-
कारी ।

अरसिक (वि०) १ रुखा । जो रसिक न हो ।
२ कविता के मर्म को न जानने वाला ।

अराग } (वि०) १ अनासक्त । उदासीन ।
अरागिन् } २ स्थिर । पक्षपातशून्य ।

अराजक (वि०) राजारहित । जहाँ राजा न हो ।

अराजन् (पु०) राजा नहीं ।—भोगीन (वि०)
राजा के काम लायक नहीं ।—स्थापित (वि०)

जो राजा द्वारा प्रतिष्ठित न हो ; आईन विरुद्ध ।

अरातिः (पु०) १ शत्रु । वैरी । २ छः की संख्या ।
—भङ्गः (पु०) शत्रुओं का नाश ।

अराल (वि०) टेढ़ा मेढ़ा । मुड़ा हुआ ।—केशी
(स्त्री०) वह स्त्री जिसके घुघुराले बाल हों ।—
पद्मन् (वि०) टेढ़ी मेढ़ी बक्षियों वाला ।

अरालः (पु०) १ टेढ़ी या झुकी हुई बाँह । २ मद-
माता हाथी ।

अराला (स्त्री०) वेश्या । पुंश्रली । रंडी ।

अरिः (पु०) १ शत्रु । वैरी । २ मनुष्य जाति के
छः शत्रु, काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि जो मनुष्य
के मन को व्याकुल किया करते हैं ।

कावः क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च मरसरः ।

कृतारिषड्वर्णब्रधेन—॥

किरातार्जुनीय ।

३ छः की संख्या । ४ गार्दी का कोई भाग ।

५ पहिया ।—कर्षण, (वि०) शत्रुजयी
या शत्रु को अपने वश में करने वाला ।—कुलं,
(न०) १ बहुत से शत्रु । शत्रु समुदाय । २ शत्रु ।

—घ्नः, (पु०) शत्रु का नाश करने वाला ।

—चिन्तनं, (न०) चिन्ता । (स्त्री०) वैदेशिक

शासन विभाग । शत्रु सम्बन्धी व्यवस्था ।—

नन्दन, (वि०) शत्रु की प्रसन्नता । शत्रु को

विजय दिलाने वाला ।—भद्रः (पु०) सब से बड़ा

या मुख्य शत्रु ।—सूदनः, हन, —हिसकः,

(पु०) शत्रुहन्ता । शत्रु को मारने वाला ।

अरिन्दम (वि०) शत्रु को घरा में करने वाला ।
विजयी । विजय प्राप्त ।

अरिक्थभाज् (वि०) ऐसा व्यक्ति जो पैतृक
अरिक्थीय } सम्पत्ति पाने का अधिकारी न हो
(हिजबा आदि होने के कारण) ।

अरिचम् (न०) १ लोहे की चूर । कच्चा लोहा ।
२ नाव का डौड़ ।

अरिषं (न०) मूसलधार जलकी वर्षा ।

अरिषः (पु०) बवासीर । गुदा का रोग विशेष ।

अरिष्ट (वि०) अनचुटीला । पूर्ण । अविनाशी । सुरक्षित ।
—गृहम्, (न०) सौरी । सूतिकागृह । ताति
(वि०) शुभ ।—तातिः, (स्त्री०) सतत हर्ष ।
—मथनः, (पु०) विष्णु या शिव का नाम ।
—शरया, (स्त्री०) बीमार । रोगी ।—सूदनः,—
हन् (पु०) अरिष्ट नामक दैत्य के मारने वाले
विष्णु ।

अरिष्टः (पु०) १ गीघ । २ कंक । कौवा । ३ शत्रु ।
४ अनेक पौधों का नाम । रीठा का वृक्ष । नीब
का वृक्ष । ५ जहसुन ।

अरिष्टम् (न०) १ बुरी प्रारब्ध । बदकिस्मती ।
२ अनिष्टसूचक उत्पात । ३ बुरे लक्षण या बुरे
शकुन जो मौत आने के सूचक माने गये हैं ।
मरणकारक योग । ४ सौभाग्य । कुशकिस्मती ।
हर्ष । ५ सौरी । सूतिकागृह । ६ भाटा । ७ शराव ।

अरुचिः (स्त्री०) १ अनिच्छा । २ अग्रिमान्द्य रोग ।
३ घृणा । नफरत । ४ सन्तोषजनक समाधान
का अभाव ।

अरुचिर } (वि०) जो मनोहर न हो । अशुभ ।
अरुच्य } अमङ्गलक ।

अरुज् (वि०) भला चंगा । तंदुरुस्त । नीरोग ।

अरुज (वि०) भला चंगा । तंदुरुस्त ।

अरुण (वि०) [स्त्री० — अरुणा, अरुणी] १ लाल ।
रक्त । २ व्याकुल । घबड़ाया हुआ । ३ गूंगा । मूक ।
—अनुजः,—अवरजः (पु०) अरुण देव के
छोटे भाई गरुड जी का नाम ।—अर्चिस् (पु०) सूर्य ।—आत्मजः (पु०) १ अरुण पुत्र
जटायु का नाम । २ शनि, सावर्णिमनु, कर्ण,

सुर्यीव, यम और दोनों अधिनीकुमारों के नाम ।

—आत्मजा, (स्त्री०) यमुना और तापती
नदियों का नाम ।—ईक्षण, (वि०) लालनेत्र
वाला ।—उद्यः, (पु०) भोर । प्रातःकाल ।

—उपलः, (पु०) चुन्नी रत्न ।—कमलं (न०)
लाल रंग का कमल ।—ज्योतिस् (पु०) शिव का
नाम ।—प्रियः (पु०) सूर्य का नाम ।—प्रिया
(स्त्री०) १ सूर्यपत्नी । २ छाया ।—लोचनः,

(पु०) कवृतर । परेवा ।—सारथिः, (पु०) सूर्य ।

अरुणः (पु०) १ लाल रंग । २ प्रातःकालीन पूर्वाकाश
की रक्तमयी आभा । ३ सूर्यदेव के सारथी ।
४ सूर्य ।

अरुणम् (न०) १ लाल रंग । २ सुवर्ण । सेना ।
३ केसर ।

अरुणित } (वि०) लाल रंग का । लाल
अरुणीकृत } रंगा हुआ ।

अरुन्तुद } (वि०) १ मर्मस्थलों को काटना या
अरुन्तुद } घायल करना । घायल करना । पीड़ा
कारक तीव्र या तीक्ष्ण । दाहकारक ।

“ अरुन्तुदमिवास्त्रानमनिर्वाणस्य दन्तिनः । ”

रघुवंश ।

२ उग्रप्रकृति वाला । तीक्ष्ण स्वभाव युक्त ।

अरुन्धती } (स्त्री) १ वशिष्ठ जी की पत्नी का नाम ।
अरुन्धती } २ इस नाम का एक तारा, सहस्रि मण्डल
में सब से छोटा आठवाँ एक तारा, जो वशिष्ठ जी के
समीप रहता है । अरुन्धती तारा के नाम से प्रसिद्ध
है । यह तारा उन लोगों को नहीं दिखलाई
पड़ता जिनका मृत्यु अतिनिकट होता है ।—जार्निः,
नाथः,—पतिः, (पु०) वशिष्ठ जी का नाम ।

अरुष } (वि०) रुठा हुआ नहीं । शान्त ।
अरुष्ट }

अरुष (वि०) १ क्रुद्ध नहीं । रुठा हुआ नहीं ।
२ चमकदार । चमकीला ।

अरुस् (वि०) घायल । दाह्य । कष्टजनक ।—
कर, (वि०) घायल या चोटिल करना ।

अरुः (पु०) १ अकौआ । मदार । २ रक्त खदिर ।
लाल कथा । (न०) १ मर्मस्थल । २ धाव ।
कण्ठ ।

अरूप (वि०) १ रूपरहित । आकारशून्य ।
२ बदशक्त । कुरूप । भौड़ा । ३ असमान । अस-
दृश ।—हार्य, (वि०) जो सौन्दर्य से आकर्षित
या वश में न किया जा सके ।

अरूपम् (न०) १ बदशक्त का । २ सांख्यदर्शन का
प्रधान और वेदान्त दर्शन का ब्रह्म ।

अरूपकः (पु०) १ बौद्ध दर्शनानुसार योगियों की
एक भूमि अथवा अवस्था । निर्वाजसमाधि । (वि०)
बिना रूपक का । अन्वर्थ । अविकल ।

अरे (अव्यया०) एक सम्बोधनार्थक अव्यय । ए । ओ ।
जब कोई बड़ा किसी छोटे को सम्बोधन करता है ;
तब इसका प्रयोग किया जाता है । क्रोधावेश में
“अरे” कहा जाता है ।

“अरे महाराज मति कुतः चित्रियाः ।”

उत्तररामचरित्र ।

यह अव्यय ईर्ष्याबोधक भी है ।

अरेपस् (वि०) १ निष्पाप । निष्कलत्र । २ स्वच्छ ।
निर्मल । पवित्र ।

अरेरे (अव्यया०) एक सम्बोधनार्थक अव्यय । इसका
प्रयोग क्रोध की दशा में या किसी का तिरस्कार
करने के लिये किया जाता है ।

अरोक (वि०) १ उँचला । चेमक का ।

अरोग (वि०) नीरोग । रोग से शून्य । तंदुरुस्त ।
मजबूत । भला । चंगा ।—अरोगः (वि०)
अच्छा । स्वस्थ ।

अरोगिन } (वि०) तंदुरुस्त । भला । चंगा ।
अरोग्य }

अरोचक (वि०) [स्त्री०—अरोचिका] १ जो चमक-
दार या चमकीला न हो । २ एक रोग विशेष
जिसमें अन्न आदि का स्वाद मुँह में नहीं मिलता ।
३ अरुचिकर । जो रुचि नहीं ।

अरोचकः (पु०) भूख का नाश या भूख न लगना ।
वृथा । अतिवृथा ।

अर्क (धा० पु०) १ उष्ण करना । गर्माना । २
स्तुति करना ।

अर्कः (पु०) १ प्रकाश की किरण । विजली की चमक
या कौंध । २ सूर्य । ३ अग्नि । ४ सफ़टिक । ५
ताँवा । ७ रविवार । ७ अर्कवृक्ष । मदार । अकौआ ।

८ आकन्द वृक्ष । ९ इन्द्र का नाम । १० बारह
की संख्या ।—अश्मन्, (पु०)—उपलः, (पु०)
सूर्यकान्त मणि ।—इन्दुसङ्गमः, (पु०) दर्श ।
अमावास्या । वह समय जब चन्द्र और सूर्य मिलते
हैं ।—कान्ता, (स्त्री०) सूर्यपत्नी ।—चन्दनः
(पु०) लाल चंदन ।—जः (पु०) कर्ण ।
सुग्रीव और यम की उपाधि ।—जौ (पु०)
देवताओं के चिकित्सक अश्विनीकुमार ।—तनयः
(पु०) सूर्यपुत्र । कर्ण, यम और शनि की
उपाधि ।—तनया, (स्त्री०) यमुना और तापती
नदियों के नाम ।—विष् (स्त्री०) सूर्य का प्रकाश ।
—दिनं, (न०) वासरः, (पु०) रविवार इतवार ।
नन्दनः—पुत्रः,—सुतः,—सुनुः, (पु०) शनि,
कर्ण या यम के नाम ।—बन्धुः,—बान्धवः (पु०)
कमल ।—मण्डलम् (न०) सूर्य का चैरा ।
—विवाहः (पु०) मदार के पेड़ के साथ
विवाह । [तीसरा विवाह करने के पूर्व लोग अर्क के
पेड़ से विवाह करते हैं । यथाः—

चतुर्थादिविवाहायै तुलीयेऽर्कं समुद्रहरे ।

काश्यप ।]

अर्गलः (पु०) १ बौड़ा, बिरली, किल्ली, सिट-
अर्गला (स्त्री०) { कनी ये किवाड़ बंद करने के काठ
अर्गली (स्त्री०) { के यंत्र हैं । २ लहर । तरंग ।
अर्गलम् (न०) } ३ (पु०) दुर्गा पाठ के अन्तर्गत
एक स्तोत्र विशेष ।

अर्गलिका (स्त्री०) छोटा बँड़ा जो किवाड़ों को बंद
करने के लिये उनमें अटकाया जाता है । चटखनी ।

अर्घ (धा० प०) [अर्चति, अर्चित] दाम लगाना ।
मोल लेना ।

परिलक्षा यत्र न सन्ति देहे

पार्श्वन्ति रश्मिः शिः समुद्रजानि ।

सुभाषित ।

अर्घः (पु०) १ मूल्य । दाम । कीमत । भाव ।
२ पूजा की सामग्री । षोडशोपचार पूजन में से
एक उपचार । इस उपचार में जल, दूध, कुशाग्र,
दही, सरसों, चावल और घव मिला कर देवता को
अर्पण करते हैं । जलदान । सामने जल गिराना ।
—अर्ह (वि०) सम्मानसूचक भेंट करने
योग्य ।—बलाबलं (न०) भाव । उचित

मूल्य । मूल्य में तारतम्य या उतार चढ़ाव या मूल्य का कमवेशी होना ।—संस्थानम्—संस्थापनम्, (न०) दाम कृतने की क्रिया । क्रीमत लगाना ।

अर्घाशः (पु०) शिव जी का नाम ।

अर्घ्य (वि०) १ क्रीमती । मूल्यवान् । २ पूज्य ।

अर्घ्यम् (न०) किसी देवता या प्रतिष्ठित व्यक्ति को सम्मान प्रदर्शक भेंट ।

अर्च (धा० उभय०) [अर्चति—अर्चिते, अर्चित] १ पूजा करना । शृङ्गार करना । प्रणाम करना । सम्मान पूर्वक स्वागत करना । २ वैदिक साहित्य में) स्तुति करना ।

अर्चक (वि०) पूजा करने वाला । शृङ्गार करने वाला । सजाने वाला ।

अर्चकः (पु०) पुजारी । शृङ्गारिया ।

अर्चन (वि०) पूजन करते हुए । स्तुति करते हुए ।

अर्चनम् (न०) } पूजा । पूजन । आदर । सत्कार ।
अर्चना (स्त्री०) }

अर्चनीय (स० का० क०) पूजनीय । शृङ्गार करने अर्च्य } योग्य । पूज्य । मान्य । प्रतिष्ठित । सम्मानित । [सृति या प्रतिमा ।

अर्चा (स्त्री०) १ पूजा । शृङ्गार । २ पूजन करने की

अर्विः (स्त्री०) किरन । अंगारा । चमक ।

अर्विष्मत् } (पु०) सूर्य । अग्नि ।
अर्विष्मान् }

अर्विस्त् (न०) } १ आग का शोला या अंगारा ।
अर्विः (पु०) } बमक । किरन । २ दीप्ति । आभा । (पु०) किरन । ३ अग्नि । [२ सूर्य ।

अर्विस्त् (वि०) चमकीला । (पु०) १ अग्नि ।

अर्ज (धा० प०) [अर्जति, अर्जित] १ उपार्जन करना । कमाना ।

अर्जक (वि०) [स्त्री०—अर्जिका] प्राप्त करने वाला । उपार्जन करने वाला ।

अर्जकः (वि०) वृक्ष विशेष । बाबुई वृक्ष, जिसके सुतों से रस्सी बटी जाती है ।

अर्जनम् (न०) प्राप्त करना । उपलब्धि । प्राप्ति ।

अर्जुन (वि०) [स्त्री०—अर्जुना, अर्जुनी] १ सफेद । स्वच्छ । चमकीला । दिन के प्रकाश की तरह । यथा—

“पिशंगमौजीपुनसर्जुमच्छवि ।”

—शिशुपालवध ।

२ स्पष्टता ।

अर्जुनः (पु०) १ सफेद रंग । २ मोर । मयूर ।

६ वृक्ष विशेष जिसकी छाल बड़ी गुणदायक है ।

४ महाराज युधिष्ठिर के छोटे भाई । इनका वृत्तान्त महाभारत में विस्तार से लिखा हुआ है । ५ कार्तवीर्य राजा का नाम, जिसको परशुराम जी ने मारा था । ६ इकलौता पुत्र ।—ध्वजः (पु०)

सफेद ध्वजा वाला । हनुमान जी का नाम ।

अर्जुनी (स्त्री०) १ कुटनी । २ गौ । ३ कर्तोया नदी का दूसरा नाम ।

अर्जुनम् (न०) घास ।

अर्जुनोपमः (पु०) साखू का वृक्ष । सागौन का पेड़ या सागौन ।

अर्णः (पु०) १ साखू, या सागौन का वृक्ष । २ [वर्षा-माला का] एक वर्ष ।

अर्णवः (पु०) १ (फैनों से युक्त) समुद्र ।—उद्भवः, (पु०) चन्द्रमा ।—उद्भवा, (स्त्री०) लक्ष्मी ।—उद्भवं, (न०) अमृत ।—पोत, (पु०),—यानम्, (न०)—मन्दिरः (पु०) १ वरुण । २ समुद्रवासी । ३ विष्णु ।

अर्णस्त् (न०) जल ।—दः, (अर्णदः) (पु०) बादल ।—भवः (पु०) शङ्ख ।

अर्णस्वत् (वि०) जिसमें बहुत जल हो ।

अर्णस्वत् (पु०) समुद्र । सागर ।

अर्तनम् (न०) धिक्कार । फिटकार । गाली ।

अर्तिः (स्त्री०) १ पीड़ा । दुःख । खेद । २ धनुष की नोक ।

अर्तिका (स्त्री०) (नाट्य साहित्य में) बड़ी बहिन ।

अर्थ (धा० आत्म०) [अर्थयते, अर्थित] १ माँगना । याचना करना । प्रार्थना करना । बिनती करना । २ वाञ्छा करना । अभिलाषा करना ।

अर्थः (पु०) १ उद्देश्य । प्रयोजन । अभिलाषा । २ कारण । हेतु । भाव । आधार । ज़रिया । ३ विष्णु का नाम ।—अधिकारः, (पु०) खजानची का ओहदा ।—अधिकारिन्, (पु०)

स० श० को—१२

खजानची । कोषाध्यक्ष ।—अन्तरम् (न०)
 (अर्थान्तरम्) १ भिन्न अर्थ यानी मानी ।
 २ भिन्न उद्देश्य या हेतु । ३ नया मामला ।
 नयीपरिस्थिति ।—न्यासः (पु०) (= अर्थान्तर-
 न्यासः) कान्यालङ्कार विशेष जिसमें प्रकृति अर्थ
 की सिद्धि के लिये अन्य अर्थ लाना पड़ता है ।
 अर्थालङ्कार का एक भेद । २ (न्यास दर्शन में)
 निग्रहस्थान ।—अन्वित, (= अर्थान्वित)
 (वि०) १ धनी । सम्पत्ति वाला । २ गुडार्थ
 प्रकाशक । गुरुतर ।—अर्थिन्, (= अर्थार्थिन्)
 (वि०) वह जो धन प्राप्त करना चाहे या जो
 कोई अपना उद्देश्य सिद्ध करना चाहे ।—
 अलङ्कारः, (= अर्थालङ्कारः) (पु०) वह
 अलंकार जिसमें अर्थ का चमत्कार दिखाया जाय ।
 आगमः, (= अर्थआगमः) (पु०) १ आय ।
 आमदनी । धन की प्राप्ति । २ किसी शब्द के
 अभिप्राय को सूचना करना ।—आपत्तिः,
 (= अर्थोपपत्तिः) (स्त्री०) १ अर्थालङ्कार जिसमें
 एक बात के कहने से दूसरी बात की सिद्धि हो ।
 २ मीमांसाशास्त्रानुसार प्रमाण विशेष । जिसमें
 एक बात कहने से दूसरी बात की सिद्धि अपने
 आप हो जाय ।—उत्पत्तिः, (= अर्थोत्पत्तिः)
 (स्त्री०) धनोपार्जन । धनप्राप्ति ।—उपपत्तेपकः,
 (= अर्थोपपत्तेपकः) (पु०) नाटक का आरम्भिक
 दृश्य विशेष । यथा—

“ अर्थोपपत्तेपकाः पञ्च । ”

साहित्यदर्पण ।

उपमा, (= अर्थोपमा) (स्त्री०) उपमा विशेष
 जिसका सम्बन्ध शब्दार्थ या शब्द के भाव से
 रहता है ।—उपमन्, (= अर्थोपमन्) (पु०)
 धन की गर्मी ।—

“ अर्थोपमना विरहितः पुरुषः स एव ।

भागवत ।

—ओघः, (= अर्थोघः) (पु०) या—राशिः,
 (= अर्थराशिः) (पु०) खजाना या धन का ढेर ।—
 कृत (वि०) १ धनी बनानेवाला । २ उपयोगी ।
 लाभकारी ।—काम, (वि०) धनाकांक्षी ।—
 कुच्छू, (न०) १ कठिन विषय । २ धन सम्बन्धी

सङ्कट ।—कृत्यं (न०) धन का लाभ कराने वाले
 किसी कारोवार ।—गौरवं, (न०) अर्थ की
 गम्भीरता ।—ग्र, (वि०) क्रिजूल खर्च ।
 अपव्ययी ।—जात, (वि०) अर्थ से परिपूर्ण ।—
 जातम्, (न०) १ वस्तुओं का संग्रह । धन की
 बड़ी भारी रकम । बड़ी सम्पत्ति ।—तत्त्वं, (न०)
 १ यथार्थ सत्य । असली बात । २ किसी वस्तु
 का यथार्थ कारण या स्वभाव ।—द, (वि०)
 १ धनप्रद । २ उपयोगी लाभदायी ।—दूषणम्
 (न०) १ क्रिजूलखर्ची । अपव्ययिता ।
 २ अन्याय पूर्वक किसी की सम्पत्ति छीन लेना
 या किसी का पावना (रुपया या धन) न देना ।
 ३ (किसी पद या शब्द के) अर्थमें दोष
 निकालना ।—निर्वधन, (वि०) धन पर
 निर्भरता ।—पतिः, (पु०) १ धन का
 अधिष्ठाता । राजा । २ कुवेर की उपाधि ।—
 पर, —लुब्ध, (वि०) १ धन प्राप्ति के लिये
 तुला हुआ । लालची । लोभी । २ कृपण ।
 व्ययकुण्ठ ।—प्रयोगः, (पु०) व्याज । सूद ।
 कुसीद ।—वृद्धि (वि०) स्वार्थी ।—मात्रं, (न०)
 —मात्रा, (स्त्री०) सम्पत्ति । धन दौलत ।—
 लोभः (पु०) लालच ।—वादः, (पु०) १ किसी
 उद्देश्य या अभिप्राय की घोषणा । २ प्रशंसा ।
 स्तुति । तारीफ ।—विकल्पः, (पु०) सत्य से
 ढिगने की क्रिया । सत्य बात को बदलने की क्रिया ।
 अपलाप ।—वृद्धिः, (स्त्री०) धन को जोड़ना ।—
 व्ययः, (पु०) खर्च ।—शास्त्रं, (न०) सम्पत्ति
 शास्त्र । धन सम्बन्धी नीति को बताने वाला
 शास्त्र ।—शौचं, (न०) रुपये के दैन लेन के मामले
 में सफाई या ईमानदारी ।—संबन्धः, (पु०) किसी
 शब्द से उसके अर्थ का सम्बन्ध ।—सारः, (पु०)
 बहुत सा धन ।—सिद्धिः, (स्त्री०) सफलता ।
 मनोरथ का पूरा होना ।

अर्थतः (अव्यया०) १ अर्थगौरव । २ दूरहकीकत ।
 सचमुच । यथार्थतः । ३ धन प्राप्ति लाभ या फायदे
 के लिये । ४ इस कारण से ।

अर्थना (स्त्री०) प्रार्थना । विनय । विनती । २ प्रार्थना-
 पत्र । अर्जी ।

अर्थवत् (वि०) १ धनी । २ गूढार्थ प्रकाशक ।
३ जिसका अर्थ हो । किसी प्रयोजन का ।
सफल । उपयोगी ।

अर्थवत्ता (स्त्री०) धन सम्पत्ति । धन दौलत ।

अर्थात् (अव्यया०) या । अथवा ।

अर्थिकः (पु०) १ चौकीदार । २ वैतालिक
भाद । ३ भिडुक । भिखारी । मँगता ।

अर्थित (व० कृ०) प्रार्थना किया हुआ । अभिलषित ।

अर्थितम् (न०) १ अभिलाषा । इच्छा । २ प्रार्थना-
पत्र । अर्ज़ी ।

अर्थिता } १ याचना । प्रार्थना । २ इच्छा ।
अर्थित्व } अभिलाषा ।

अर्थिन् (वि०) १ याचक । भिडुक । मँगता ।
भिखारी । २ सेवक । सहायक । धनी । ४ वादी ।
५ धनरहित । ६ अभिलाषी । मनोरथ रखने
वाला ।

अर्थ्य (वि०) १ माँगने योग्य । प्रार्थनीय । २ योग्य ।
उचित । ३ गूढार्थ प्रकाशक । समुचित । ४ धनी ।
धनवान् । ५ परिणत । बुद्धिमान् ।

अर्थ्यम् (न०) लाल खड़िया । गेरु ।

अर्द्ध (धा० प०) १ पीड़ा देना । अत्याचार करना ।
चोट मारना । चोटिल करना । बध करना ।
२ माँगना । प्रार्थना करना । याचना करना ।

अर्द्धन (वि०) पीड़ाकारक । क्लेशदायी ।

अर्द्धनम् (न०) पीड़ा । कष्ट । चिन्ता । बबड़ाहट ।
व्याकुलता ।

अर्द्धना (स्त्री०) १ माँग । भिक्षा । २ वध । चोट ।
पीड़ाकारक ।

अर्ध } (वि०) आधा । खण्ड । टुकड़ा ।—
अर्द्ध } अग्नि, (न०) क्रनखिया । सैन मारना ।

—अर्धिन, (वि०) आधे का भागीदार ।—
अर्धः, (पु०)—अर्ध (न०) आधे का आधा ।
चौथाई ।—अवभेदकः, (पु०) आधे सिर की
पीड़ा । अधासीसी ।—गङ्गा, (स्त्री०) कावेरी नदी
का नाम । (कावेरी के स्नान करने से गङ्गास्नानका
आधा फल प्राप्त हो जाता है)—चन्द्रः, (पु०)
१ चन्द्रार्ध । अष्टमी का चन्द्रमा । आधे चन्द्रमा
के आकार का नख का भाव । गरदनिया । गलहस्त ।

३ साजुनासिक चिन्ह विशेष (°) । ४ मोर के
पंखों पर की चन्द्रिका । ५ चन्द्राकार बाण ।—

चोलकः (पु०) अँगिया । बाँहकटी ।—
नारीशः,—नारीश्वरः, (पु०) महादेव का नाम ।
शिव पार्वती की मूर्ति विशेष । हरगौरी रूप शिव ।
—पञ्चाशत्, (स्त्री०) २५ पचीस ।—भागः
(पु०) १ आधा हिस्सा पाने का अधिकारी ।
२ साथी । साझीदार ।

अर्धक (वि०) आधा ।

अर्धिक (वि०) [स्त्री०—अर्धिकी] १ आधा
नापने वाला । २ जो आधा हिस्सा पाने का हकदार
हो ।

अर्धिकः (पु०) वर्णसङ्कर, जिसकी परिभाषा
पाराशर स्मृति में इस प्रकार हैः—

वैश्यकन्यावसुरपुत्री ब्राह्मणेन तु संस्कृतः ।

अर्धिकः स तु विवेच्यो मोक्ष्यो विधौर्न संशयः ॥

अर्धिन् (वि०) आधे हिस्से का हकदार ।

अर्धोदयः } (पु०) योगविशेष । यह योग तब
अर्द्धोदयः } समझा जाता है, जब श्रवण नक्षत्र और
न्यतीपात हो । अमावस तिथि ।

अर्पणम् (न०) १ भेंट । नज़र । त्याग । अथा—

“ स्वदेहार्पणमिच्छयेत् । ”

रघुवंश ।

२ वापिसी । ३ छेदना ।

सीस्थतुरडार्पणैर्ग्रीवां

अर्पिस् (पु०) हृदय का मांस ।

अर्ष् (धा० परस्मै) [अर्षति, आनर्ष, अर्षितुं] १
एक ओर जाना । २ हनन करना । वध करना ।

अर्षुदः अर्षुदः (पु०) १ सूजन । गुमहा । २ दस
अर्षुदम् अर्षुदम् (न०) १ करोड़ की संख्या । ३ आबु
पहाड़ का नाम । ४ सर्प । ५ बादल । ६ दैत्य विशेष
जिसे इन्द्र ने मारा था । ७ मांस का डेर ।

अर्भक (वि०) १ छोटा । सूक्ष्म । ह्रस्व । २ निर्बल ।
दुबला । ३ मूढ़ । मूर्ख । ४ युवा । ५ बालकपन ।

अर्भकः (पु०) १ बालक । बच्चा । २ किसी पशु का
बच्चा । ३ मूर्ख । मूढ़ ।

अर्य (वि०) १ सर्वोत्तम । सर्वश्रेष्ठ । प्रतिष्ठित ।
कुलीन ।

अर्थः (पु०) १ मालिक । प्रभु । २ वैश्य ।—वर्गः
(पु०) प्रतिष्ठित वैश्य । [की स्त्री ।

अर्था (स्त्री०) १ मलकिन । २ वैश्या । वैश्य जाति
अर्थमन् (पु०) १ सूर्य । २ पितरों के मुखिया ।
३ मदार । आक । अकौआ । ४ द्वादश आदित्यों में
से एक । ५ उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी देवता ।
६ परम प्रियमित्र । साथ खेलने वाला ।

अर्थम्यः (पु०) सूर्य । प्राख्योपम मित्र ।

अर्थाशी (स्त्री०) वैश्य जाति की स्त्री । वैश्या ।
बनीनी ।

अर्थन् (पु०) १ घोड़ा । २ चन्द्रमा के १० घोड़ों में
से एक । ३ इन्द्र । ४ माप विशेष जो गाय के
काँन के बराबर का होता है ।—ती (स्त्री०)
१ घोड़ी । २ कुटनी ।

अर्थाच् (वि०) १ इस ओर आते हुए । २ (किसी)
ओर घूमा हुआ । किसी से मिलने को आता
हुआ । ३ इस ओर को । ४ (समय या स्थान में)
नीचे या पीछे । ५ बाद का । पीछे का । पिछला ।
—क, (अव्यया०) १ इस ओर । इस तरफ ।
२ किसी विन्दु विशेष से । किसी स्थान विशेष
से । ३ पूर्व का । पहला (समय सम्बन्धी या
स्थान सम्बन्धी) ४ नीचे की ओर । पिछाड़ी ।
निचला । ५ पश्चात् । पीछे से । ६ अन्तर्गत ।
समीप । [विरुद्ध ।

अर्थाचीन (वि०) १ आधुनिक । हालका । २ उत्पन्न ।
अर्थाचीनम् (अव्यया०) १ इस ओर का । २ अपेक्षा
कृत पीछे का । [सीर रोग नाशक ।

अर्शस् (न०) बवासीर रोग ।—झ, (वि०) बवा-
अर्शस् (वि०) बवासीर रोग से पीड़ित ।

अर्ह (धा० पर०) [अर्हति, अर्हंतुं, आनर्हं,
अर्हित] आर्ष प्रयोग । यथा ।

रावणो बार्हते प्रजां—

रामायण ।

१ योग्य होना । २ अधिकारी होना । २ कोई
काम करने के योग्य होना । ३ सदृश या समान
होना ।

अर्ह (वि०) १ प्रतिष्ठित । मान्य । २ योग्य । ३
भज्य । उपयुक्त । ४ मूल्यवान् ।

अर्हः (पु०) १ इन्द्र का नाम । विष्णु का नाम ।
३ मूल्य ।

अर्हा (स्त्री०) पूजन । आराधन । उपासना ।

अर्हण (न०) (वि०) पूजन । उपासना ।

अर्हणा (स्त्री०) सम्मान । प्रतिष्ठापूर्ण व्यवहार ।

अर्हत् (वि०) १ उपयुक्त । योग्य । आराधनीय ।
उपास्य । (पु०) १ बौद्धों में सर्वोच्च । २
जैनियों के एक पूज्य देवता ।

अर्हन्त (वि०) उपयुक्त । योग्य ।

अर्हन्तः (पु०) १ बौद्ध । २ बौद्धभिक्षुक ।

अर्हन्ती (स्त्री०) पूजने, उपासना या सम्मान किये
जाने के लिये अपेक्षित गुण ।

अर्ह्य (स० का० कृ०) १ उपयुक्त । माननीय ।
प्रतिष्ठित । २ स्तुति योग्य ।

अल (धा० उभ०) [अलति—अलते, अलितुं,
अलित] १ सजाना । २ योग्य होना । ३
रोकना । बचाना ।

अलं (न०) १ बिच्छू की पूंछ का डंक । २ पीला-
हरताल । (अव्यया०) काफ़ी ।

अलकः (पु०) १ घुघराले बाल । २ जुल्फें । ३ केसर
का शरीर पर उपटन । ४ उन्मत्त कुत्ता ।

अलकम् (न०) व्यर्थ । निरर्थक ।

अलका (स्त्री०) (१) ८ और १० बरस के भीतर
उम्र कोलङ्की । २ कुबेर की राजधानी का नाम ।

अलक्तः (पु०) कतिपय वृत्तों की लाल लाल
अलक्तकः } या बकला । लाचारस । लाल का
रंग । महावर (जो स्त्रियाँ पैरों में लगाती हैं) ।

अलक्षण (वि०) १ जिसमें कोई चिन्ह या निशान
न हो । २ अप्रसिद्ध । जिसके लक्षण निर्दिष्ट न
हों । ३ अशुभ ।

अलक्षणम् (न०) १ अशुभ शकुन या चिन्ह ।
२ जिसकी परिभाषा न हो, या धुरी परिभाषा हो ।

अलक्षित (वि०) अदृष्ट । अप्रकट । गायब ।

अलक्ष्मीः (स्त्री०) दरिद्रता । अभाग्यपन । दुर्दिष्ट ।

अलक्ष्य (वि०) १ अदृष्ट । अप्रकट । अज्ञात ।
२ अचिन्हित । ३ विशेष चिन्हरहित । ४ देखने
में लुब्ध । ५ जिसका कोई महाना न हो । धोखे
से वर्जित ।—गति (वि०) ऐसे चलना कि

कोई देख न सके ।—जन्मना (वि०) अज्ञात उत्पत्ति । अस्पष्ट उत्पत्ति ।

अलगावः (पु०) पानी का साँप ।

अलघु (वि०) [स्त्री०—अलघ्वी] १ जो हल्का न हो । भारी । बड़ा । २ जो छोटा न हो । लंबा । ३ संगीन । गम्भीर । ४ बहुत बड़ा । अत्यन्त । प्रचण्ड । प्रबल ।—उपलः, (पु०) चहान ।

अलंकरणम् } (न०) १ सजावट । शृङ्गार ।
अलङ्करणम् } २ आभूषण । गहना ।

“पुनरलंकरणं भुवः”

भक्तृहरिः

अलंकरिण्यु } (वि०) १ गहनों का शौकीन ।
अलङ्करिण्यु } २ सजावटी । सजाने में निपुण ।

अलंकारः } (पु०) सजावट । शृङ्गार । २ आभूषण ।
अलङ्कारः } गहना । ३ साहित्य शास्त्र का एक अंग । ४ अलङ्कार शास्त्र ।

अलंकारकः } (पु०) गहना । सजावट ।
अलङ्कारकः }

अलंकृतिः } (स्त्री०) १ सजावट । २ आभूषण
अलङ्कृतिः } (कर्णालंकृति अमर) ३ साहित्य शास्त्र का एक आभूषण ।

अलंक्रिया } (स्त्री०) सजावट । शृङ्गार ।
अलङ्क्रिया }

अलंघनीय } (वि०) पहुँच के बाहिर । अनतिक्रम-
अलङ्घनीय } णीय । दुरतिक्रम । अनुलङ्घ्य ।

अलजः (पु०) पक्षी विशेष ।

अलंजरः, अलञ्जरः } (पु०) बड़ा । मिट्टी का
अलंजुरः, अलञ्जुरः } बड़ा ।

अलम् (अव्यया०) (वि०) काफी । पर्याप्त । यथो-
चित । उपयुक्त ।—कर्माणि, (वि०) निपुण ।
कुशल ।—धूमः (पु०) सघन धुआँ । अत्य-
धिक धुआँ ।—पुरुषोण (वि०) मनुष्योचित ।
मनुष्य के लिये पर्याप्त ।—भूष्ण (वि०)
योग्य । कुशल ।

अलंपट } (वि०) जो लंपट या विषयी न हो ।
अलम्पट } शुद्ध चरित्र वाला ।

अलंपटः } (पु०) जनाना कमरा । जनानखाना ।
अलम्पटः }

अलंघुषः } (पु०) १ वमन । छुर्दि । कै । ओकी ।
अलम्घुषः } २ खुले हुए हाथ की हथेली । ३ रावण
के एक राक्षस सैनिक का नाम । ४ एक राक्षस जिसे
महाभारत के युद्ध में अटोत्कच ने मारा था ।

अलंघुषा } (स्त्री०) १ मुंडी । गोरखमुण्डी ।
अलम्घुषा } २ स्वर्ग की एक अप्सरा । ३ दूसरे का
आना रोकने के लिये खींची गयी लकीर । ४ लुई-
मुई । लजालू पौधा ।

अलंबुसा } (स्त्री०) एक देश का नाम ।
अलम्बुसा }

अल्य (वि०) १ गृहहीन । आचारा । २ जो कमी
नाश को प्राप्त न हो । अविनश्वर ।

अल्यः (पु०) १ स्थायित्व । २ उत्पत्ति । पैदायश ।

अलर्कः (पु०) १ पागल कुत्ता । २ सफेद मदार या
अकौआ । ३ एक राजा का नाम ।

अलले (अव्यया०) पैशाची भाषा का शब्द जो
नाटकों में बहुधा व्यवहृत होता है ।

अलचालं (न०) पेड़ की जड़ का खोड़आ या थाला,
जिसमें जल भर दिया जाता है ।

अलस् (वि०) जो चमकीला न हो या जो चमके नहीं ।

अलस (वि०) १ अक्रियाशील । जिसके शरीर में
कुर्ती न हो । सुस्त । काहिल । २ आन्त । थका
हुआ । ३ मृदु । कोमल । ४ मन्द । चेष्टाहीन ।

अलसक (वि०) अकर्मण्य । काहिल । सुस्त ।

अलातः (पु०) } अपजला काठ या लकड़ी ।
अलातम् (न०) } जलता हुआ काठ या लकड़ी ।

अलाधुः (स्त्री०) } तुम्बी । लावू । तुमडिया ।—धु
अलावूः (न०) } तुमड़ी का बना वस्त्र । तुमड़ी

का फल ।—कटं, (न०) तुमड़ी की रज ।

अलारं (न०) दरवाजा ।

अलिः (पु०) १ भौरा । २ बिच्छू । ३ काक । कौआ ।

४ कोयल । ५ मदिरा ।—कुलम्, (न०) भौरों

का कुँड ।—मियः, (पु०) कमल ।—विरावः,

(पु०)—रुतं, (न०) भौरों का गुआर ।

अलिकं (न०) माथा ।

अलिन् (पु०) १ बिच्छू । २ शहद की मक्खी ।

अलिनी (स्त्री०) शहद की मक्खियों का समुदाय ।

अलिगर्दः (पु०) सर्प विशेष ।

अलिङ्ग } (वि०) १ जिसके कोई विशिष्ट चिह्न न
अलिङ्ग } हो । जिसके कोई चिह्न न हो । २ धुरे
चिह्नों वाला । ३ (व्याकरण में) जिसका कोई
लिङ्ग न हो ।

अलिङ्गः } (पु०) पानी का घड़ा ।
अलिङ्गरः }

अलिङ्गः } (पु०) घर के द्वार के सामने का चबूतरा
अलिङ्गः } या चौतरा ।

अलिपकः (पु०) १ कोयल । २ शहद की मक्खी ।
३ कुत्ता । [२ मिथ्या ।

अलीक (वि०) १ अप्रसन्नकर । अरुचिकर ।

अलीकं (न०) १ माथा । २ सूठ । असत्य । [दशा ।

अलीकिन् (वि०) अरुचिकर । अप्रसन्नकर । २ झूठ ।

अलुः (पु०) एक छोटा जलपात्र ।

अलुल (वि०) कोमल । नम्र ।

अले } (अव्यया०) अर्थशून्य शब्द जो नाटकों
अलेले } के उस दृश्य में जहाँ पिशाचों का संवाद
होता है, प्रयुक्त किया जाता है ।

अलेपक (वि०) निष्कलङ्क ।

अलेपकः (पु०) ब्रह्म की उपाधि ।

अलोक (वि०) १ अदृश्य । जो देख न पड़े ।

२ जिसमें कोई आदमी भी न हो । ३ ऐसा जीव
जो मरने के बाद अन्य किसी लोक में न जाय ।

अलोकः (पु०) १ लोक नहीं । २ लोक का नाश

अलोकम् (न०) मनुष्यों का अभाव ।—सामान्य
(वि०) असाधारण ।

अलोकनम् (न०) अदृश्यता ।

अलोल (वि०) १ स्थिर । टिका हुआ । २ श्व ।

मज्जबूत । ३ अचञ्चल । ४ जो व्यासा न हो ।
हृच्छा से रहित । कामनाशून्य ।

अलोलुप (वि०) १ कामनाशून्य । जो लालची न
हो । लोलुप न हो ।

अलौकिक (वि०) [स्त्री०—अलौकिकी] १ इस
लोक का नहीं । चमत्कारी ।

अल्प (वि०) १ लुच्छ । २ थोड़ा । ज़रासा ।

३ विनाशी । थोड़े दिनों का । ४ दुर्लभ ।

अल्पक (वि०) [स्त्री०—अल्पिका] १ कम ।

थोड़ा २ छद्म । धृष्यायोग्य ।

अल्पपंचः (पु०) कंजूस । लोभी । लालची ।

अल्पशः (अव्यया०) थोड़े अंश में । थोड़ा ।

अल्पीकृ (धा० उभय०) छोटा करना । बटाना ।
संख्या में कम करना । [छोटा या कम ।

अल्पीयस् (वि०) अपेक्षाकृत कम या छोटा । बहुत

अल्ला (स्त्री०) माता । (सम्बोधनकारक में
“अल्ल”) ।

अव् (धा० परस्मै०) [अवति, अवित, या ऊत]

१ बचाना । रक्षा करना । सहारा देना । २ प्रसन्न
करना । सन्तुष्ट करना । आनन्द देना । ३ पसंद
करना । हृच्छा करना । अभिलाषा करना । ४ कृपा
करना । अनुग्रह करना । उन्नति करना । [यद्यपि
धातुरूपावली में इस धातु के और भी बहुत से
अर्थ दिये हैं; किन्तु उन अर्थों में इस धातु का
प्रयोग वर्तमान संस्कृतसाहित्य में बहुत कम
होता है ।]

अव (अव्यया०) १ दूर । फासले पर । नीचे ।

२ (जब यह किसी क्रिया में “उपसर्ग” होता है

तब ये निम्न भाव प्रकट करता है :—) १ संकल्प ।

विचार । २ फैलाव । बहाव । विस्तार । ३ अवज्ञा ।

अवहेला । ४ स्वल्पता । ५ अवलम्ब । ६ शोधन ।

शुद्धता । निर्मलता ।

अवकट (वि०) १ नीचे की ओर । पीछे की ओर ।

२ प्रतिकूल । विरुद्ध ।

अवकटम् (न०) विरुद्धता । प्रतिकूलता ।

अवकरः (पु०) धूल । बुहारन ।

अवकर्तः (पु०) टुकड़ा । धजी । कतरन ।

अवकर्तनम् (न०) काटन । कतरन ।

अवकर्षणम् (न०) १ बाहिर निकालने या खींचकर
बाहिर निकालने की क्रिया । २ बहिष्करण ।

अवकलित (वि०) १ देखा हुआ । अवलोकन किया

हुआ । २ जाना हुआ । ३ लिया हुआ । ग्रहण

किया हुआ । प्राप्त ।

अवकाशः (पु०) १ अवसर । मौका । २ खाली

वक्त । फुसंत । छुटी । ३ स्थान । जगह । ४ शून्य

जगह । ५ दूरी । अन्तर । फासला ।

अवकीर्णिनि (वि०) व्रत से च्युत । धर्म से नष्ट ।

अवकीर्णी (पु०) वह ब्रह्मचारी जिसने अपना

ब्रह्मचर्य व्रत भङ्ग कर दिया हो ।

अवकुञ्चनं } (न०) झुकाव । टेढ़ापन । खिचाव ।
अवकुञ्चनम् }

अवकुण्ठनं } (न०) १ घिराव । झिकाव ।
अवकुण्ठनम् } २ खिचाव ।

अवकुण्ठित } (वि०) झेका हुआ । झिका हुआ या
अवकुण्ठित } घेरा हुआ । खिचा हुआ ।

अवकुण्ठ (व० कृ०) १ नीचे गिराया हुआ ।
२ स्थानान्तरित किया हुआ । ३ निकाला हुआ ।
४ अपकुण्ठ । नीचा । अधःपतित । जातिवहिकृत ।

अवकुण्ठः (पु०) नौकर जो नीचे काम करता हो ।

अवकुण्ठि (स्त्री०) १ सम्भावना । २ उपयुक्तता ।

अवकुण्ठिन् (वि०) बंजर । (वृक्ष) जिसमें कोई
फल न लगे ।

अवकोकिल (वि०) कोकिल द्वारा गिराया हुआ ।
कोकिल द्वारा तिरस्कृत । [खच्चा । मातवर ।

अवक्र (वि०) जं । टेढ़ा न हो । (आलं) ईमानदार ।

अवक्रन्द (धि०) धीरे धीरे रोता हुआ । गर्जता
हुआ । हिनहिनाता हुआ ।

अवक्रन्दनम् (न०) रोने की क्रिया । जोर से रोने
की क्रिया ।

अवक्रमः (पु०) उतार । ढाल । निचान ।

अवक्रमः (पु०) १ मूल्य । कीमत । २ मजदूरी ।
भाड़ा । किराया । ठेका । इजारा । पट्टा । चक्र-
नामा । ३ भाड़े पर उठाने की क्रिया । पट्टे पर देने
की क्रिया । ४ कर या राजस्व । राजप्राप्त्यर्थ्य ।

अवक्रान्तिः (स्त्री०) १ उतार । २ समीप आगमन ।

अवक्रिया (स्त्री०) छूट । चूक । भूल ।

अवक्रोशः (पु०) १ बेसुरा कोलाहल । २ अक्रोश ।
शाप । ३ गाली । भिड़की । फटकार ।

अवक्रोशः (पु०) १ बूँद बूँद टपकने की क्रिया ।
२ कचलोहू । धाव का पानी । पंखा ।

अवक्षयः (पु०) नाश । सड़ाव । गलन । हानि ।

अवक्षेपः (पु०) दोषारोपण । २ आपत्ति ।

अवक्षेपणं (न०) १ गिराव । अधःपात । नीचे
फेंकने की क्रिया । २ तिरस्कार । घृणा । ३ फटकार ।
भर्त्सना । दोषारोपण । ४ वशवर्ती करण ।

अवक्षेपणी (स्त्री०) बगाम रास

अवखण्डनं (न०) विभक्त करने की क्रिया । नष्ट
करने की क्रिया ।

अवखातम् (न०) गहरा गढ़ा ।

अवगणनं (न०) १ अवज्ञा । तिरस्कार । अवहेला ।
२ फटकार । दोषारोपण । ३ अपमान ।

अवगण्डः (पु०) मुहासा या फुंसी जो चेहरे पर
या गाल पर होती है । [धारण ।

अवगतिः (स्त्री०) निश्चयात्मक ज्ञान । समझ ।

अवगमः (पु०) १ समीप गमन । ऊपर से
अवगमनम् (न०) १ नीचे उतरने की क्रिया ।
२ समझ । धारणा । ज्ञान ।

अवगाढ़ (व० कृ०) १ बूढ़ा हुआ । घुसा हुआ ।
डूबा हुआ । २ ढीला । नीचा । गहरा । ३ जमा
हुआ । पक्का बना हुआ ।

अवगाहः (पु०) १ स्नान । २ निमज्जन
अवगाहनम् (न०) (आलं०) निष्काल
होने की क्रिया । पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की क्रिया ।

अवगीत (व० कृ०) १ बेसुरा गाया हुआ । डुरा
गाया हुआ । २ अक्रोश हुआ । धिक्कारा हुआ ।
३ दुष्ट । पापी । (न०) जनापवाद । निन्दा ।
अभिशाप ।

अवगुणः (पु०) दोष । त्रुटि । कमी ।

अवगुण्ठनं } (न०) ढकने की क्रिया । छिपाने
अवगुण्ठनम् } की क्रिया । २ पर्दा । घूँघट । झुर्का ।

अवगुण्ठनवत् } (वि०) [स्त्री०—अवगुण्ठनवती] ।
अवगुण्ठनवत् } घूँघट से ढका हुआ ।

अवगुण्ठिका } (स्त्री०) घूँघट । पर्दा ।
अवगुण्ठिका }

अवगुण्ठित } (व० कृ०) ढका हुआ । घूँघट काढ़े
अवगुण्ठित } हुए । छिपा हुआ ।

अवगुरणं } (न०) मार डालने के उद्देश्य
अवगुरणम् } से हमला करने की क्रिया । हथियार
से आक्रमण करने की क्रिया ।

अवगूहनम् (न०) १ छिपाव । दुराव । २ आलिङ्गन
करने की क्रिया ।

अवग्रहः (पु०) १ (व्याकरण में) सन्धिविच्छेद ।
२ लुप्त अक्षर जिसका चिन्ह (ऽ) है ।
३ अनावृष्टि । सूखा । ४ रुकावट । अड़चन । रोक ।
बाधा । ५ गव सम्पूज हाथी का म्रम्या

७ स्वभाव । प्रकृति । ८ दण्ड । सजा । शाप ।
 अक्रोसा । [अवहेला ।
 अवग्रहणम् (न०) १ रुकावट । अड़चन । २ अपमान ।
 अवग्रहः (पु०) १ दूटन । बिलगाव । अलगव ।
 २ अड़चन । रुकावट । रोक । ३ शाप । अक्रोसा ।
 अवग्रहः (पु०) १ भूमि का बिल । गुफा । गुहा ।
 २ अनाज पीसने की चक्की । ३ गड्ढा करने की
 क्रिया । हिलाकर गड्ढा करने की क्रिया ।
 अवघर्षणम् (न०) १ रगड़न । मालिश । पीसने
 की क्रिया । (सूखा रङ्ग आदि) मल कर साफने की
 क्रिया । (लगे रंग को) मल कर छुटाना ।
 ३ पीसना ।
 अवघातः (पु०) १ धान आदि का ताड़न ।
 २ चोट । प्रहार । बध । हत्या । ३ अपमृत्यु ।
 अवघूर्णनम् (न०) घुमरी । चक्कर ।
 अवघोषणम् (न०) } १ ढिंढोरा । २ राजसूचना ।
 अवघोषणा (स्त्री०) }
 अवघ्राणम् (न०) सूँघने की क्रिया ।
 अवचन (वि०) न बोलने वाला । चुप । खामोश ।
 वाणी रहित ।
 अवचनम् (न०) १ वचन या कथन का अभाव ।
 चुप्पी । मौनत्वा । २ फटकार । डाँटडपट । दोषा-
 रोपण । झिड़की ।
 अवचनीय (वि०) जो कहा न जा सके । जो बोला
 न जा सके । अश्लील या भद्दी (बात या भाषा)
 २ झिड़की के अयोग्य । भर्त्सना सै रहित ।
 अवचयः } (पु०) सञ्चय । (जैसे फल फूल
 अवचयः } आदि का)
 अवचारणम् (न०) किसी काम में लगाने की क्रिया ।
 आगे बढ़ने का तरीका । बरताव या जुगत का
 लगाना ।
 अवचूडः } (पु०) रथ का उधार । किसी झंड़े
 अवचूलः } की सजावट के लिये लटकाये हुए चौरी-
 उमा गुच्छे ।
 अवचूर्णनं (न०) पीसना । कूटना । पीस कर चूर्ण
 कर डालना । २ चूर्ण बुरकाना । विरोध कर कोई
 सूखी दवा किसी घाव पर बुरकाना ।

अवचूलकः (पु०) } चौरी (जिससे मक्खियाँ
 अवचूलकम् (न०) } उड़ायी जाती हैं) ।
 अवच्छेदः } (पु०) टुककन । कोई वस्तु जिससे दूसरी
 अवच्छेदः } वस्तु ढकी जा सके ।
 अवच्छिन्न (व० क०) १ काट कर अलग किया
 हुआ । २ विभाजित । पृथक् किया हुआ । छुड़ाया
 हुआ । ३ जिसका किसी अवच्छेदक पदार्थ से
 अवच्छेद किया गया हो । ४ छेका हुआ । घेरा हुआ ।
 सम्हाला या संशोधित किया हुआ । निश्चित किया
 हुआ ।
 अवच्छुरित (वि०) मिश्रित । मिला हुआ ।
 अवच्छुरितम् (न०) खिलखिलाहट । अट्टहास ।
 टहाका ।
 अवच्छेदः (पु०) १ टुकड़ा । भाग । २ सीमा ।
 हद्द । ३ वियोग । ४ विशेषता । ५ निश्चय ।
 निर्णय । ६ लक्षण (जिससे कोई वस्तु निर्भ्रान्त
 रूप से पहचानी जा सके) । सीमाबद्धकरण ।
 परिभाषाकरण ।
 अवच्छेदक (वि०) १ भेदकारी । अलग करने
 वाला । २ विशेषण । ३ गुण रूप शब्द । ४ औरों
 से अलग करने वाला ।
 अवजयः (पु०) हार ।
 अवजितिः (स्त्री०) जय । विजय ।
 अवज्ञानम् (न०) अवहेला । अपमान ।
 अवटः (पु०) १ छेद । रन्ध्र । गुफा । २ गढ़ा ।
 गडढा । ३ कूप । ४ खाल । खाड़ी । शरीर का
 कोई भी नीचा या दबा हुआ अवयव या भाग ।
 —कच्छपः (अन्यथ०) गढ़े का कछुआ । (आल०)
 अनुभव शून्य । वह जिसने संसार का कुछ भी
 ज्ञान सम्पादन नहीं किया ।
 अवटिः } (स्त्री०) १ छेद । रन्ध्र । २ कूप ।
 अवटी } कुआ ।
 अवटोट (वि०) चपटी नाक वाला ।
 अवटुः (पु०) १ भूमि का बिल । २ कूप । ३ गरदन
 के पीछे का भाग । शरीर का दबा हुआ भाग ।
 (स्त्री०) गरदन का उठा हुआ भाग ।
 अवटु (न०) सुरास । छेद । खोंप । दरार ।

अवडीनं (न०) पत्नी का उड़ान । नीचे की ओर उड़ान ।

अवतंसः (पु०) १ हार । गजरा । माला । २ कान अवतंसम् (न०) की बाली । बालीनुमा एक आभूषण । ३ मस्तक पर पहिनने का गहना । मुकुट । ताज । [आभूषण ।

अवतंसकः (पु०) कान का आभूषण । कोई भी अवतंसयति (कि०) बाली की तरह इस्तेमाल करना । बाली बनाना ।

अवततिः (स्त्री०) फैलाव । पसार । बढ़ाव ।

अवतप्त (व० कृ०) १ गर्माया हुआ । गरम किया हुआ । २ प्रकाशित । उजागर ।

अवतमसं (न०) १ सुदुपटा । थोड़ा अन्धकार । २ अंधकार । अंधियाला ।

अवतरः (पु०) उतार । गिराव ।

अवतरणम् (न०) १ स्नानार्थ पानी में उतरने की क्रिया । २ अवतार । प्रादुर्भाव । जन्म-ग्रहण-करण । वारण करण । ३ पार होना । उतरना । ४ पवित्र स्थान जहाँ स्नान किया जा सके । ५ अनुवाद । भूमिका । दीवाचा । ६ उद्धरण । नकल । प्रतिकृति ।

अवतरणिका (स्त्री०) ग्रन्थ की भूमिका । उपोद्घात ।

अवतरणी (स्त्री०) देखो अवतरणिका ।

अवतर्पणम् (न०) शान्त करनेवाला उपाय ।

अवताड़नम् (न०) कुचलन । रूंधना । कुचरना । २ मारण । आघातकरण ।

अवतानः (पु०) १ फैलाव । २ झुके हुए धनुष को सीधा करने की क्रिया । ३ ढक्कन या पर्दा ।

अवतारः (पु०) १ उतार । अवाई । आगमन । २ आकार । ३ प्रादुर्भाव । किसी देवता का पृथिवी पर जन्मग्रहण करण । ४ घाट । ५ स्नान करने का पवित्र स्थान । ६ अनुवाद । ७ तालाव । ८ भूमिका । दीवाचा ।

अवतारक (वि०) [स्त्री०—अवतारिका] प्रादुर्भूत । अवतरित ।

अवतारणं (न०) उतरवाने की क्रिया । २ अनुवाद । ३ किसी भूत प्रेत का आवेश । ४ पूजन । शृङ्गार । ५ भूमिका । उपोद्घात ।

अवतीर्ण (व० कृ०) १ उतरा हुआ । नीचे आया हुआ । २ स्नान किया हुआ । ३ पार किया हुआ । गुजरा हुआ ।

अवतोका (स्त्री०) स्त्री या गौ जिसका कारण विशेष वश गर्भभाव हो गया हो ।

अवक्तिन् (वि०) विभाजित करने वाला ।

अवदंशः (पु०) ऐसा भोज्य पदार्थ जिसके खाने से प्यास बढ़े । बलवर्द्धक पदार्थ ।

अवदाघः (पु०) १ उष्णता । २ गर्मी की कतु ।

अवदात (वि०) १ खूबसूरत । सुन्दर । २ साफ । स्वच्छ । बेदाग । चिकनाया हुआ । ३ पुण्यात्मा । पीला ।

अवदातः (पु०) चित्तरंगा । सफेद या पीला रंग ।

अवदानं (न०) १ पवित्र या शास्त्र विहित वृत्ति । २ सम्पादितकार्य । ३ श्रुता या गौरवपूर्ण कोई कार्य । श्रुता । बीरता । ४ टुकड़े टुकड़े करने की क्रिया । ५ किसी अनौखी कहानी का कोई दृश्य ।

अवदारणम् (न०) १ चीरन । फाड़न । विभाजित करण । खुदाई । टुकड़े टुकड़े करने की क्रिया । २ कुदाल । लकड़ी का फावड़ा ।

अवदाहः (पु०) गर्मी । उष्णता । जलन ।

अवदीर्ण (व० कृ०) विमुक्त । हटा हुआ । भग्न । २ पिघला हुआ । ३ हड़बड़ाया हुआ । भटका हुआ । [पय ।

अवदोहः (पु०) १ दोहन । दुधना । २ दूध ।

अवद्य (वि०) १ अधम । पापी । निन्द्य । २ गहिर्त । त्याज्य । निकृष्ट । कुत्सित ।

अवद्यं (न०) १ अपराध । दोष । त्रुटि । २ पाप । दुष्टकर्म । ३ कलंक । भर्त्सना ।

अवद्योतनम् (न०) प्रकाश ।

अवधानम् (न०) १ मनोयोग । २ मनोयोगता । संलग्नता । सावधानी ।

अवधारः (पु०) डीक डीक निश्चय । बंधेज । बंदिश ।

अवधारण (वि०) १ सीमा बढ़ करने वाला । बंधेज बाँधने वाला ।

अवधारणम् (न०) १ निश्चय । २ हड़करण । प्रमाण ।

अवधि: (स्त्री०) १ सीमा । हद् । पराकाष्ठा ।
 २ निर्धारित समय । मियाद । काल । अटकाव ।
 ४ नियुक्ति । ५ किस्मत । दिवीज्ञान । ज़िला ।
 विभाग । ६ रन्ध्र । गढ़ा । [करना ।
 अवधीर (धा० पर०) अवहेला करना । बेहज्जत
 अवधीरणम् (न०) अवज्ञापूर्वक बर्ताव करने की क्रिया ।
 अवधीरणा (स्त्री०) बेहज्जती । असम्मान । हार ।
 अवधूत (व० क्रि०) १ हिलाता हुआ ।
 लहराता हुआ । २ खारिज किया हुआ । अस्वीकृत ।
 घृणा किया हुआ । ३ अपमानित किया हुआ ।
 नीचा दिखलाया हुआ ।
 अवधूतः (पु०) त्यागी । संन्यासी ।
 अवधूननं (न०) १ हिलाने की क्रिया । लहराने की
 क्रिया । २ धबकाहट । कपकपी ।
 अवध्य (वि०) पवित्र । मौत से बरी ।
 अवध्वंसः (पु०) १ त्याग । उत्सर्ग । २ चूर्ण ।
 धूल । ३ असम्मान । भर्त्सना । कलङ्क ।
 ४ बुरकाने की क्रिया ।
 अवर्नं (न०) १ रक्षय । बचाव । २ प्रसन्नकारक ।
 हर्षप्रद । ३ इच्छा । कामना । ४ हर्ष । सन्तोष ।
 अवर्नत (व० कृ०) १ झुका हुआ । झुकाये हुए ।
 अवर्नति (स्त्री०) झुकाव । २ अस्त होने की क्रिया ।
 ३ प्रणाम । डंडोत्त । ४ (धनुष की तरह) झुकने
 की क्रिया । ५ नम्रता । शील ।
 अवर्नद्ध (व० कृ०) १ बना हुआ । २ खुसा हुआ ।
 गढ़ा हुआ । बना हुआ । बंधा हुआ । जुड़ा हुआ ।
 अवर्नद्धम् (न०) ढोल ।
 अवर्नम्र (वि०) झुका हुआ । नवा हुआ ।
 अवर्नयः } (पु०) नीचे को गिराने की क्रिया ।
 अवर्नायः } २ नीचे उतरने की क्रिया । अधःपात
 करने की क्रिया ।
 अवर्नाट (वि०) चपटी नाक वाला ।
 अवर्नामः (पु०) झुकाव । पैरों पड़ने की क्रिया ।
 २ झुकाने की क्रिया ।
 अवर्निः } (स्त्री०) १ भूमि । पृथ्वी । ज़मीन ।
 अवर्नी } २ नदी ।—ईशः,—ईश्वरः,—नाथः,
 —पतिः,—पालः, (पु०) राजा । नरेश । भूपाल ।
 —चर, (वि०) पृथिवी पर अमण करने वाला ।

आवारा । तलं. (न०) ज़मीन की सतह ।
 धरातल ।—मण्डलं, (न०) भूगोल ।—रुहः,—
 ट, (पु०) वृक्ष । पेड़ ।
 अवर्नेजनं (न०) १ प्रचालन । मार्जन । २ श्राद्ध
 की वेदी पर बिछे हुए कुशों पर जल सींचने का
 संस्कार । ३ पाद्य । पैर धोने के लिये जल
 धोने के लिये जल ।
 अवर्तिः, अवन्तिः } (स्त्री०) २ उज्जयिनी या
 अवन्ती, अवन्ती } उज्जैन का नाम । २ एक नदी
 का नाम । (पु०) और बहुवचन में) मालवा
 प्रदेश का तथा उस देश के निवासियों का नाम ।
 अवर्ध्य } (वि०) उर्वर । उपजाऊ । जो उत्तर
 अवर्ध्य } न हो ।
 अवर्पतनम् (न०) नीचे गिरने की क्रिया । उतरने
 की क्रिया ।
 अवर्पाक (वि०) बुरी तरह पकाया हुआ ।
 अवर्पातः (पु०) नीचे गिरने की क्रिया । अधःपात ।
 २ उतार । ३ छिद्र । गढ़ा । ४ विशेष कर वह गढ़ा
 जो हाथियों को पकड़ने के लिये खोदा जाता है ।
 अवर्पातनम् (न०) ठोकर लग कर गिरने की क्रिया ।
 ठुकराना । नीचे गिराने की क्रिया । अधःपात ।
 अवर्पवित (वि०) जातिभ्रष्ट । जाति बिरादरी से
 खारिज ।
 अवर्पीडः (पु०) १ दवाव । २ एक प्रकार की दवाई
 जिसे सूचने से छींकें आती हैं । [वाली वस्तु ।
 अवर्पीडनं (न०) खाने की क्रिया । २ छींक लाने
 अवर्पीडना (स्त्री०) उत्पात । खगडन । भञ्जन ।
 अवर्बोधः (पु०) १ जागना । जाग उठना । २ ज्ञान ।
 ३ सूक्ष्म विवेचना । विवेक । मतामत । ४ उपदेश ।
 सूचना ।
 अवर्बोधक (न०) वाह्यवस्तु का ज्ञान । ज्ञान ।
 अवर्बोधकः १ सूर्य । २ भाट । बंदीजन । ३ शिक्षक ।
 अवर्बोधनम् (न०) ज्ञान । प्रतीति ।
 अवर्भंगः } (पु०) नीचा दिखलाने की क्रिया ।
 अवर्भङ्गः } जीतने की क्रिया । परास्तकरण ।
 अवर्भासः (पु०) १ चमक दमक । प्रकाश । २ ज्ञान ।
 अवर्बोध । ३ दर्शन । प्राकट्य । ३ दैवज्ञान ।
 ४ स्थान । पहुँच । ५ मिथ्या ज्ञान । अम ।

अवभासक (वि०) तेजोमय ।

अवभासकम् (न०) परमात्मा । परब्रह्म । [देहा ।

अवभृग्न (वि० कृ०) झुका हुआ । मुड़ा हुआ ।

अवभृथः (पु०) १ यज्ञान्त स्नान । २ मार्जन के लिये जल । ३ यज्ञानुष्ठान विशेष, जो प्रधान यज्ञ की त्रुटियों की शान्ति के अर्थ किया जाता है ।—स्नानम् (न०) यज्ञान्त स्नान ।

अवभ्रः (पु०) बलपूर्वक या चुरा छिपा कर (किसी मनुष्य का) हरण । भगा ले जाने की क्रिया ।

अवभ्रट (वि०) चपटी नाक वाला ।

अवम् (वि०) १ पापी । २ तिरस्करणीय । कुट्ट । ३ कमीना । अवःपतित । अपकृष्ट । ४ अगला । परमघनिष्ठ । सम्पूर्ण । ५ अन्तिम । (उन्न में) सब से छोटा ।

अवमत् (व० कृ०) असम्मानित किया हुआ । अवज्ञात । अवमानित । निन्दित ।—अकुशः (पु०) मदमत् हाथी जो अकुश को कुछ भी न माने ।

अवमतिः (स्त्री०) १ अवमानना । अवज्ञा । अवहेला । २ शृणा । अवाङ्मुखता ।

अवमर्दः (पु०) १ कुचलन । २ बर्बादी । नाश । जुल्म । अत्याचार ।

अवमर्शः (पु०) स्पर्श । संसर्ग ।

अवमर्षः (पु०) १ विचार । अन्वेषण । खोज । २ किसी नाटक के ५ प्रधान भागों या सन्धियों में से एक । विमर्श ।

“यत्र सुखफलोगाय उद्विन्ने गर्भतोऽधिकः ।

आपादयैः आप्तरायदु देऽवमर्ष इति स्मृतः ॥

—साहित्यदर्पण ३६६

३ आक्रमण करने की क्रिया ।

अवमर्षणम् (न०) १ असहिष्णुता । असहनशीलता । २ मिटाने की क्रिया । स्मृति से नष्ट कर देने की क्रिया ।

अवमानः (पु०) असम्मान । तिरस्कार । अवहेला ।

अवमाननम् (न०) } असम्मान । बेइज्जती ।

अवमानना (स्त्री०) }

अवमानिन् (वि०) अवहेलना किया हुआ ।

असम्मानित । बेइज्जत ।

अवमूर्धन् (वि०) सिर झुकाये हुए ।—शयः (वि०) ओंघा मुँह कर खेटा हुआ ।

अवमोचनम् (न०) मुक्तकरण । रिहा करने की क्रिया । स्वतंत्र करने की क्रिया । छोड़ देने की क्रिया । ढीला कर देने की क्रिया ।

अवयवः (पु०) १ शरीर का एक अंग । २ अंश । भाग । हिस्सा । ३ न्यायशास्त्रानुसार वाक्य का एक अंश । ऐसे अंश पाँच माने गये हैं [यथा १ प्रतिज्ञा, २ हेतु, ३ उदाहरण, ४ उपनय और ५ निगमन ।] ४ शरीर । ५ उपादानीभूत ।

अवयवशः (वि०) (अव्यया०) हिस्सा हिस्सा कर के अलग अलग । टुकड़ा टुकड़ा । [वाला ।

अवयविन् (वि०) अवयव वाला । अंशों या भागों

अवयवी (वि०) १ सम्पूर्ण । समष्टि । समूचा । अंगी । जिसके और बहुत से अवयव हो ।

अवर (वि०) १ (अवस्था या उन्न में) छोटा । (समय में) पिछला, बाद का । पिछाड़ी का ।

२ एक के बाद दूसरा । ३ नीचे । अपेक्षाकृत निचला । अपकृष्ट । हीन । ४ तुच्छ । गयाबीला ।

अधमाधम । ५ (प्रथम का उल्टा) अन्तिम । ६ सब से कम (परिमाण में) । ७ पार्श्वस्थ ।

—अर्थः, (पु०) १ कम से कम भाग । कम से कम । २ दो समान भागों में से पिछला आधा भाग । ३ शरीर का पिछला भाग ।—अवर,

(वि०) सब से नीच । सब से अपकृष्ट ।—उत्क,

(वि०) अन्तिमवर्णित ।—जः, (वि०) (उन्न में) अपेक्षाकृत छोटा ।—जः, (पु०) छोटा भाई ।—जा, (स्त्री०) छोटी बहिन ।—वर्ण,

(वि०) हीन जाति वाला ।—वर्णः, (पु०) १ शूद्र । २ चतुर्थ या अन्तिम वर्ण ।—वर्णकः,—

वर्णजः, (पु०) शूद्र ।—व्रतः, (पु०) सूर्य ।—शैलः, (पु०) पश्चिम का पहाड़ जिसके पीछे सूर्य

अस्त होता है । अस्तावल ।

अवरम् (न०) हाथी की जाँघ का पिछला भाग ।

अवरतः (अव्यया०) पीछे । पीछे की ओर । पीछे का । पिछला । [विश्राम ।

अवरतिः (स्त्री०) १ विराम । समाप्ति । २ आराम ।

अवरीण (वि०) गिरा हुआ । अधः पतित । वृणित ।
निन्द्य । [बीमार ।

अवरुणा (वि०) १ दूटा हुआ । फटा हुआ । २ रोगी ।

अवरुद्धिः (स्त्री०) १ रोक । थाम । रुकावट ।
२ घिराव । ३ उपलब्धि । प्राप्ति

अवरूप (वि०) बदशक्क । बदसूरत । कुरूप ।

अवरोचकः (पु०) भूख का नाश ।

अवरोधः (पु०) १ रुकावट । २ समय । ३ अन्तःपुर ।
हरम । ज्ञानखाना । ४ समष्टिरूप से किसी
राजा की शनियाँ । यथा—

“ अवरोधे महत्पि ”

रामायण ।

५ घेरा । हाता । बंदीगृह । ६ झेक । मुहासिरा ।

७ उठोना । ८ कटहरा । ९ लेखनी । क्रलम ।

१० चौकीदार । ११ खुल्ला । गह्वर ।

अवरोधक (वि०) रोकने वाला । घेरा डालने वाला ।

अवरोधकः (पु०) पहरेवाला । रक्षक ।

अवरोधकम् (न०) प्रतिबन्धक । घेरा । हाता ।

अवरोधनम् (न०) १ झेक । मुहासिरा । २ रुका-
वट । ३ अङ्गचन । रोक । ४ अन्तःपुर ।
ज्ञानखाना ।

अवरोधिक (वि०) रुकावट डालने वाला ।

अवरोधिकः (पु०) ज्ञानी व्योदी का दरबान ।

अवरोधिका (स्त्री०) अन्तःपुरवासिनी महिला ।

अवरोधिन् (वि०) १ अङ्गचन डालने वाला । रुकावट
डालने वाला । २ घेरा डालने वाला ।

अवरोपणं (न०) उखाड़ डालने की क्रिया । २ नीचे
उतारने की क्रिया । ३ ले जाने की क्रिया । वञ्चित
करने की क्रिया । घटाना ।

अवरोहः (पु०) उतार । झाल । २ बेल जो वृक्ष की
जड़ से फुनगी तक लिपटी होती है । ३ स्वर्ग ।
आकाश । ५ वट की डाली ।

अवरोहणम् (न०) १ उतार । गिराव । पतन । २ चढ़ाव ।

अवर्णा (वि०) १ रंग रहित । २ बुरा । कमीना ।

अवर्णाः (पु०) १ बदनामी । कलङ्क । धब्बा ।
आरोप । इलजाम । धिक्कार ।

अवलत्त (वि०) सफेद । उज्ज्वल । इसी अर्थ में
“अवलत्त” भी आता है ।

अवलत्तः (पु०) सफेद रंग । [हुआ ।

अवलग्न (वि०) चिपटा हुआ । सटा हुआ । झूटा

अवलग्नः (पु०) कमर । कटि । देह का मध्यभाग ।

अवलम्बः (वि०) १ नीचे को लटकता हुआ ।

२ आश्रित । ३ आश्रय । शरण । ४ धुनकिया
सहारा देने वाली लकड़ी ।

अवलम्बनम् (न०) १ धुनकिया । सहारा । २ सहा-
यता । मदद । [हुआ । सना हुआ ।

अवलित (व० कृ०) १ अभिमानी । क्रोधी । २ पोता

अवलीढ (व० कृ०) १ खाया हुआ । चबाया हुआ ।

२ चाटा हुआ । छुआ हुआ । ३ भक्षित । नष्ट किया
हुआ ।

अवलीला (स्त्री०) १ खेलकूद । हर्ष । २ अवमानना ।

अवहेला । तिरस्कार । (वि०) अनायास ।

आसानी ।

अवलुचनम् (न०) १ काट डालने की क्रिया । उखाड़

अवलुञ्चनम् } डालने की क्रिया । नोंच डालने की
क्रिया । २ जड़ से उखाड़ डालने की क्रिया ।

अवलुंठनम् } (न०) १ ज़मीन पर लुढ़कन या
अवलुञ्ठनम् } लोटने की क्रिया । २ लूट ।

अवलेखः (पु०) १ तोड़न । २ खरोचन । झीलन ।

अवलेखा (स्त्री०) १ रगड़न । २ किसी व्यक्ति को
सुसज्जित करने की क्रिया ।

अवलेपः (पु०) १ अभिमान । क्रोध । २ जबर-
दस्ती । बरजोरी आक्रमण । अपमान । ३ पोतने की
क्रिया । ४ आभूषण । ५ ऐक्य । सङ्ग ।

अवलेपनम् (न०) १ पोतने की क्रिया । सानना ।
२ तैल । तेल । उबटन । ३ ऐक्य । मेळ ।
४ अभिमान ।

अवलेहः (पु०) चाटने की क्रिया । २ (सोम जैसा)
अर्क । चटनी । माजून ।

अवलोकः (पु०) १ देखन । २ नज़र । दृष्टि ।

अवलोकनम् (न०) १ देखने की क्रिया । देखभाल ।
२ जाँच पड़ताल । निरीक्षण । ३ दृष्टि । नेत्र ।

४ चितवन । झटा ।

अवलोकित (व० कृ०) देखा हुआ ।

अवलोकितम् (न०) दृष्टि । चितवन । झटा ।

अववरकः (पु०) १ छिद्र । रन्ध्र । २ लिङ्गकी ।

अववादः (पु०) १ भर्त्सना । २ विश्वास । भरोसा ।
३ अवहेलना । अपमान । ४ समर्थन । बचाव ।
५ बदनामी । ६ आज्ञा ।

अवव्रश्चः (पु०) खपाची । चिपटी । किरच ।

अवज्ञा (वि०) १ स्वतंत्र । मुक्त । २ जो पालन न हो ।
अवज्ञाकारी । नाफरमाबरदार । मनमुल्ली । स्वेच्छा-
चारी । ३ जो किसी का वशवर्ती न हो । ४ असं-
यमी । इन्द्रियदास । ५ परतंत्र । शक्तिहीन ।
बापरा । [स्वेच्छाचारी ।

अवशंगमः (पु०) जो दूसरे के कहने में न हो ।

अवशातनम् (न०) नाशकरण । काट गिराने की क्रिया ।
२ मुरझाने की क्रिया । सूख जाने की क्रिया ।

अवशेषः (पु०) १ बचा हुआ । शेष । बाक़ी ।
२ समाप्त ।

अवश्य (वि०) १ जो वश में होने योग्य न हो । अश्यास-
नीय । २ अवश्यम्भावी । ३ अनिवार्य । आवश्यक ।
—पुत्रः (पु०) ऐसा पुत्र जिसको पढ़ाना या अपने
वश में रखना सम्भव न हो ।

अवश्यं (अव्यया०) सर्वथा । जरूर । निस्सन्देह ।
निरचय कर के । —भाविन् (वि०) जरूर होने
वाला । जो टल न सके ।

अवश्यक (वि०) आवश्यक । अनिवार्य । [तुषार ।

अवश्या (स्त्री०) कोहर । पाला । ओस । हिम ।

अवश्यायः (पु०) १ कोहारा । ओस । पाला । हिम
तुवार । २ अभिमान । घमंड ।

अवश्रयणम् (न०) किसी भी वस्तु को आग से
निकालने की क्रिया ।

अवष्टब्ध (व० कृ०) अवलम्बित । पकड़ा हुआ ।
घिरा हुआ । २ उपर लटकता हुआ । ३ समीप ।
निकट । पास । ४ रुका हुआ । मुका हुआ ।
५ बंधा हुआ । गसा हुआ ।

अवष्टम्भः (पु०) मुकने की क्रिया । सहारा खेने की
क्रिया । २ सहारा । ३ क्रोध । घमंड । ४ खंभा ।
५ सुवर्ण । ६ आरम्भ । प्रारम्भ । ७ ठहरने की
क्रिया । रुकजाने की क्रिया । ८ साहस । हठ
सङ्कल्प । ९ लकवा । मूर्च्छा । अचेतना ।

(न०) १ सहारा खेने की क्रिया
२ सहारा देने की क्रिया ३ खंभा ।

अवष्टम्भमय (वि०) [स्त्री०—अवष्टम्भमयी]
सुनहली । सुवहला । सोने का बना अथवा खंभे के
बराबर लंबा । [२ संग । संपर्शित ।

अवसक्त (व० कृ०) १ लटकता हुआ । स्थापित ।
अवसक्तिका (स्त्री०) १ अरदाहन । अदवाइन ।
२ पिङ्गरियों और धुटनों में बांधने की पट्टी ।
३ पट्टी ।

अवसंडीने } (न०) पक्षियों का गिरोह बाँध कर
अवसण्डीनीम् } उपर से एक साथ नीचे की ओर
उड़ते हुए आना ।

अवसथः (पु०) १ वासा । डेरा । आवादी । २ गाँव ।
३ पाठशाला । विद्यालय ।

अवसथ्यः (पु०) विद्यालय । पाठशाला ।

अवसन्न (व० कृ०) १ निमज्जित । अवनत ।
२ समाप्त । ३ रहित । खोया हुआ ।

अवसरः (पु०) १ मौका । समय । २ अवकाश । फुर-
सत । ३ वर्ष । ४ वृष्टि । ५ उतार । ६ निजीरूप
से परामर्श खेने की क्रिया ।

अवसर्गः (पु०) १ ठीलापन । छुड़ाव । २ स्वेच्छा-
नुसार कार्य करने की अनुमति देने की क्रिया ।
३ स्वतंत्रता ।

अवसर्पः (पु०) जामूस । भेदिया । एलची । राज-
प्रतिनिधि ।

अवसर्पणं (न०) नीचे उतारने की क्रिया । अधोगमन ।

अवसादः (पु०) १ निमज्जन । मूर्च्छा । बैठना । २
नाश । हानि । ३ समाप्ति । ४ थकावट । ५ हार ।

अवसादक (वि०) मूर्च्छित करने वाला । असफल
करने वाला । उदास करने वाला । थकाने वाला ।
अवसादनम् (न०) १ अवनति । हानि । २ अत्या-
चार । ३ समाप्ति ।

अवसानम् (न०) १ रुकावट । २ समाप्ति । उप-
संहार । ३ मृत्यु । रोग । ४ सीमा । हद्द । ५
विराम । ठहराव । ६ स्थान । विश्रामस्थान ।
आवासस्थान ।

अवसायः (पु०) १ अन्त । समाप्ति । २ अवशिष्ट ।
३ सम्पूर्णता । ४ सङ्कल्प । निर्याय ।

अवसित (व० कृ०) १ समाप्त पूर्व २ रुक
जाना हुआ समाप्त हुआ ३ निश्चित किया

हुआ । दर्शाया किया हुआ । ४ एकत्र किया हुआ । जमा किया हुआ । ५ नत्थी किया हुआ । बंधा हुआ ।

अवसेकः (पु०) छिड़काव । सिंचन ।

अवसेवनम् (न०) १ सींचने की क्रिया । पानी देने की क्रिया । २ रोगी के शरीर से पसीना निकालने की क्रिया । ३ रक्त निकालने की क्रिया ।

अवस्कन्दः (पु०) १ आक्रमण । हमला । २ अवस्कन्दनम् (न०) १ ऊपर से नीचे उतरने की क्रिया । २ शिविर । छावनी । [करते हुए ।

अवस्कन्दिन् (वि०) आक्रमण करते हुए । बलात्कार

अवस्करः (पु०) १ विष्टा । २ गुह्याङ्ग (यथा लिङ्ग गुदा, योनि) ३ डुहारन । बटोरन ।

अवस्तरणम् (न०) बिछौना ।

अवस्तात् (अव्यया०) १ नीचे । नीचे से । नीचे की ओर । २ तले ।

अवस्तारः (पु०) १ पदी । २ कनात । ३ चटाई ।

अवस्तु (न०) १ तुच्छ वस्तु । २ असलियत नहीं । अवास्तवता ।

अवस्था (स्त्री०) १ दशा । हालत । अवस्थिति । समय । काल । २ स्थिति । ३ आयु । उम्र । —

चतुष्टयम्, (न०) मनुष्य जीवन की दशाये— [यथा—१ बाल्य, २ कौमार, ३ यौवन, ४ वार्धक्य ।]—अयं, (न०) वेदान्तदर्शन के अनुसार मनुष्य की तीन दशाएँ [यथा—१ जाग्रत, २ स्वप्न, ३ सुषुप्ति ।]—द्वयं, (न०) जीवन की दो दशाएँ (यथा—सुख और दुःख)

अवस्थानं (न०) १ स्थिति । रहायस । २ स्थान । ३ आवसस्थल । बसने का स्थान ४ ठहरने की अवधि ।

अवस्थायिन् (वि०) ठहरने वाला । बसने वाला । रहने वाला ।

अवस्थित (व० कृ०) १ रहा हुआ । ठहरा हुआ । २ इड़ । ३ अवलम्बित । टिका हुआ ।

अवस्थितिः (स्त्री०) १ वर्तमानता । रहाइस । २ डेरा । बासा ।

अवस्थदनम् (न०) शरण । चूने की क्रिया । गिरने की क्रिया ।

अवसंसनम् (न०) नीचे गिरने की क्रिया । पात । पतन ।

अवहतिः (स्त्री०) कूटना । कुचरना ।

अवहननम् (न०) १ झिलका निकालने को धानों का कूटने की क्रिया । २ फैंफड़े ।

“यथा यथाव इत्ययम्” ।—यावत्तव्यम् ।

“अवहननम् = कुक्कुदः—कितावर ।

अवहरणम् (न०) १ हरण करण । स्थानान्तरित करण । २ फैंक देने की क्रिया । ३ चोरी । लूट । ४ सपुर्दगी । ५ कुछ काल के लिये युद्ध कार्य बंद कर देने की क्रिया । अस्थायी सन्धि ।

अवहस्तः (पु०) हाथ की पीठ ।

अवहानिः (स्त्री०) हानि । वाटा । नुकसान ।

अवहारः (पु०) १ चोर । २ शार्क मछली । ३ अस्थायी सन्धि । ४ आसन्नण । समन । बुलावा । ५ स्वधर्मत्याग । ६ फिर मोल ले लेने की क्रिया ।

अवहारकः (पु०) शार्क मछली ।

अवहार्य (स० का० कृ०) १ ले जाने को । स्थानान्तरित किये जाने को । २ अर्थदण्डनीय । दण्डनीय । ३ फिर मोल लेने योग्य ।

अवहालिका (स्त्री०) दीवाल ।

अवहासः (पु०) १ मुसक्यान । २ हँसी विल्लीगी । उपहास ।

अवहित्या, अवहित्या (स्त्री०) } मानसिक भाव का अवहित्यं, अवहित्यम् (न०) } दुराव । इसकी गणना “संचारी” या व्यभिचारी भाव में है । आकारगुति ।

अवहेलः (पु०) } अवज्ञा । अपमान । तिर-अवहेला (स्त्री०) } स्कार ।

अवहेलनं (न०) } अवज्ञा । अपमान । तिर-अवहेलना (स्त्री०) } स्कार ।

अघाक (अव्यया०) १ नीचे की ओर । २ दक्षिणी । दक्षिण की ओर ।—ज्ञानं, (न०) अपमान ।—भव, (वि०) दक्षिणी ।—मुख, (वि०) [स्त्री०—मुखी] नीचे की ओर देखते हुए । २ सिर के बल ।—शिरस्, (वि०) नीचे की ओर सिर खटकाये हुए ।

अवात्त (वि०) अभिभावक । रखवाला ।

अवाग्र (वि०) झुका हुआ । प्रणाम करता हुआ ।

अवाच (वि०) गूंगा । मूक । (न०) ब्रह्म ।
 अवाच } (वि०) १ नीचे की ओर झुका हुआ ।
 अवाचश्चे } २ अपेक्षाकृत नीचा । ३ सिर के बल । ४
 दक्षिणी । (पु० और न०) ब्रह्म ।
 अवाची १ दक्षिण । २ नीचे का लोक ।
 अवाचीन (वि०) १ नीचे की ओर । सिर के बल ।
 २ दक्षिणी । ३ उत्तरा हुआ ।
 अवाच्य (वि०) १ जो कहने योग्य न हो । २ बुरा । ३
 ठीक ठीक या स्पष्ट न कहा हुआ । जो शब्दों द्वारा
 प्रकट न किया जा सके ।—देशः, (पु०) भग ।
 योनि ।
 अवाञ्छित } (वि०) झुका हुआ । नीचा ।
 अवाञ्छित }
 अवानः (पु०) रवास प्रवास ।
 अवांतर } (वि०) १ मध्यवर्ती । २ अन्तर्गत ।
 अवान्तर } शामिल । ३ गौण । ४ फालतू ।
 अवाप्तिः (स्त्री०) प्राप्ति । उपलब्धि ।
 अवाप्य (स० का० कृ०) प्राप्त करने योग्य ।
 अवारः (पु०) } १ समीप का नदीतट । निकट
 अवारं (न०) } वर्ती नदीतट । २ उस ओर ।
 —पारः, (पु०) समुद्र ।—पारोण, (वि०) १
 समुद्र का या समुद्र से सम्बन्ध रखने वाला । २
 नदी पार करने वाला ।
 अवारीण (वि०) नदी पार करने वाला ।
 अवावटः (पु०) उस स्त्री का पुत्र जो उस स्त्री की
 जाति के किसी पुरुष के (पति को छोड़) वीर्य
 से उत्पन्न हुआ हो ।
 द्वितीयेन तु यः विज्ञा सवर्णायां प्रजायते ।
 “अवावट” इति ख्यातः शूद्रवर्मा स जातिः ॥
 अवावद् (पु०) चोर । चुराकर ले जाने वाला ।
 अवासस् (वि०) नंगा । जो कपड़े पहिने हुए न हो ।
 (पु०) बुद्धदेव का नाम ।
 अवास्तव (वि०) [स्त्री०—अवास्तवी]
 १ जो असली न हो । २ निराधार । अयौक्तिक ।
 अविः (स्त्री०) १ भेड़ । (पु०) २ सूर्य । ३ पर्वत ।
 ४ पवन । वायु । ५ ऊनी कंबल । शाल । ६
 दीवाल । छार दीवाली । ७ चूड़ा । (स्त्री०) १
 भेड़ । २ रजस्वलास्त्री ।—कटः, (पु०) भेड़ों
 का गिरोह ।—कटोरणः, (पु०) एक प्रकार का

राजकर जिसमें भेड़ें दी जाती हैं ।—दुग्धं—
 दूध, —मरीसं,—सोढं, (न०) भेड़ी का दूध
 —पटः, (पु०) भेड़ी का घाम । ऊनी वस्तु ।
 —पादः, (पु०) गड़रिया ।—स्थलं, (न०)
 भेड़ों की जगह । एक नगर का नाम ।
 “अविस्थलं” वृकस्थलं साकम्दी वारणावतम्”

—महाभारत ।

अविकः (पु०) भेड़ ।
 अविका (स्त्री०) भेड़ी ।
 अविकम् (न०) हीरा ।
 अविता (स्त्री) भेड़ । भेड़ी ।
 अविकल्प (वि०) जो शेखी न मारता हो, जो अभि-
 मान न करता हो । जो अकड़ता न हो । [न हो ।
 अविकल्पनम् (वि०) जो घमंडी न हो, जो अकड़बाज़
 अविकल (वि०) १ सम्पूरा । सम्पूर्ण । पूरा । तमाम
 सब । ज्यों का त्यों । २ नियमित । क्रम से ।
 गड़बड़ नहीं ।
 अविकल्प (वि०) अपरिवर्तनशील ।
 अविकल्पः (पु०) १ सन्देह का अभाव । २ निश्चया-
 त्मक निर्देश या आज्ञा ।
 अविकल्पम् (अव्यया०) निस्सन्देह । निस्सङ्कोच ।
 अविकार (वि०) जिसमें विकार न हो । जो अपरि-
 वर्तनशील हो ।
 अविकारः (पु०) अपरिवर्तनशीलता ।
 अविकृतिः (स्त्री०) परिवर्तन का अभाव । विकार
 का अभाव । २ (सांख्य दर्शन में) प्रकृति जो
 इस संसार का कारण मानी जाती है ।
 अविक्रम (वि०) शक्तिहीन । निर्बल ।
 अविक्रमः (पु०) भीरुता । डरपोकपना । कादरता ।
 अविक्रिय (वि०) अपरिवर्तनशील ।
 अविक्रियम् (न०) ब्रह्म । [सम्पूर्ण ।
 अविघ्नत (वि०) जो कम नहीं हुआ । सम्पूरा ।
 अविग्रह (वि०) शरीर रहित । अदैहिक । अशरीरी ।
 ब्रह्म की उपाधि ।
 अविग्रहः (पु०) (व्याकरण का) नित्य समास ।
 अविघात (वि०) बेरोक टोक । बिना अड़चन का ।
 अविघ्न (वि०) बिना विघ्नवाधा का ।

अविघ्नम् (न०) विघ्नवाचा से रहित या वञ्चित ।
(यह शब्द नपुंसक है, हाज़ाँ कि 'विघ्न'
पुल्लिङ्ग है)

“ साधयाम्यहमविघ्नमस्तु ते ”

—रघुवंश ।

अविघ्नमस्तु ते क्येषाः पितेव धुरि पुत्रिणां ।

—रघुवंश ।

अविचार (वि०) विचार शून्यता । कुविचार ।

अविचारः (पु०) निर्णय का अभाव । अविवेक ।

अविचारित (वि०) बिना विचारा हुआ । जिसके
विषय में विचारा न गया हो ।—निर्णयः (पु०)
पक्षपात । पक्षपातपूर्ण सम्मति ।

अविचारिन् (वि०) १ लापरवाह । असावधान ।
अविवेकी । २ फुर्तीला ।

अविज्ञात (वि०) अनजानते हुए ।

अविज्ञातता (पु०) परमेश्वर ।

अविडीनं (वि०) पक्षियों का सीधा उड़ान ।

अवितथ (वि०) १ झूठा नहीं । सच्चा । २ कार्य में
परिणत किया हुआ । फलरहित नहीं ।

अवितथं (न०) सत्य । [अनुसार ।

अवितथं (अन्यथा०) झुठाई से नहीं । सचाई के

अवितथजः (पु०) } पारा । पारद ।

अवित्यजम् (न०) }

अविदूर (वि०) दूर नहीं । समीप । निकट । पास ।

अविदूरं (न०) निकटता । सामीप्य । (अन्यथा०)
(किसी स्थान से) दूर नहीं । (किसी स्थान
के) निकट ।

अविद्य (वि०) अशिक्षित । अपढ़ । मूर्ख ।

अविद्या (स्त्री०) १ अज्ञानता । मूर्खता । शिक्षा का
अभाव । २ आध्यात्मिक अज्ञान । ३ माया ।—मय,
(वि०) अज्ञान से उत्पन्न । माया से उत्पन्न ।

अविधवा (स्त्री०) जो विधवा न हो । विवाहिता ।
जो जिसका पति जीवित हो ।

अविधा (अन्यथा०) सम्बोधनात्मक होने पर “ सहा-
यता करो, सहायता करो ” कहने के लिये प्रयुक्त
किया जाता है ।

अविधेय (वि०) जो अपने मान का या काबू का न
हो । न करने योग्य । प्रतिकूल ।

अचिनय (वि०) धृष्ट । दीठ । उद्दण्ड ।

अचिनयः (पु०) १ चिनय का अभाव । धृष्टता । दिठाई ।
उद्दण्डता । २ अपराध । जुर्म । दोष । ३ अशि-
मान । अकड़ ।

अचिनाभावः (पु०) १ अवियोग । अविच्छेद । २ ऐसा
सम्बन्ध जो कभी छूट न सके । ३ सम्बन्ध ।

अचिनीत (वि०) १ दुर्दान्त । सरकश । २ उद्दण्ड ।
गँवार । [अभङ्ग । समूचा ।

अविभक्त (वि०) १ अविभाजित । सम्मिश्रित । २

अविभाग (वि०) जो बँटा हुआ न हो । अविभक्त ।

अविभागः (पु०) जो बट न सके । २ ऐसी पुरतैनी
सम्पत्ति जो बँट न सके ।

अविभाज्य (वि०) जो बँट न सके ।

अविभाज्यं (न०) वे चीज़ें जो बटवारे के समय
बाँटी नहीं जाती । यथा

यद्यं पात्रमलङ्कारं कृताञ्जलुदकं स्त्रियः ।

योगध्वजं प्रचारं च न विभाज्य प्रचक्षते ॥

मनु अ० ६ श्लो० २१६

अविरत (वि०) १ निरन्तर । विरामशून्य । २ अनिवृत्त ।
लगा हुआ । [अजितेन्द्रियत्व ।

अविरति (वि०) निरन्तर । सतत । (स्त्री०)
१ सातत्य । निरन्तरता । २ असंयतता ।

अविरल (वि०) १ घना । सघन । अन्यवच्छिन्न ।
२ संसक्त । अव्यवहित । ३ स्थूल । मौटा । ऊबड़-
खाबड़ । सारवान । ४ निरन्तर ।

अविरलं (अन्यथा०) १ ध्यान से । निरन्तरता से ।

अविरोधः (पु०) १ विरोध का अभाव । अनुकूलता ।
२ सुसङ्गत ।

अविलम्ब (वि०) तुरन्त । फौरन । [फुर्ती ।

अविलम्बः (पु०) विलम्ब का अभाव । शीघ्रता ।

अविलम्बम् (न०) बिना विलम्ब के । तुरतफुरत ।
(अन्यथा०) शीघ्रता से ।

अविलम्बित (वि०) बिना विलम्ब के । शीघ्र । तुरन्त ।

अविलम्बितम् (अन्यथा०) शीघ्रता से ।

अविला (स्त्री०) भेड़ी ।

अविवक्षित (वि०) १ जिसके विषय में इरादा न
किया गया हो या जो अपना उद्दिष्ट न हो । २ जो
बोलने या कहे जाने को न हो ।

अविधिक (वि०) जिसकी खोज न की गयी हो । जो भली भाँति विचार न गया हो । अविचारित । विवेचनाशून्य । गढ़बढ़ ।

अविवेक (वि०) अविचारी । नादान । विचारहीन ।

अविवेकः (पु०) १ विचार का अभाव । नादानी । अज्ञान । २ जल्दबाज़ी । उतावलापन ।

अविशङ्क (वि०) निर्भय । निडर ।

अविशङ्का (स्त्री०) भय का अभाव । सन्देह का अभाव । विश्वास । भरोसा ।

अविशङ्कम् (न०) } विना सन्देह या सङ्कोच
अविशङ्कन (अव्यया०) } के ।

अविशङ्कित (वि०) १ निःशङ्क । निडर । बेखौफ । २ निस्सन्देह । निश्चय ।

अविशेष (वि०) विना किसी अन्तर या फ़र्क के । समान । बराबर । सदृश ।

अविशेषः (पु०) } अन्तर या भेद का अभाव ।
अविशेष (न०) } समानता । सादृश्य ।

अविशेषज्ञ (वि०) जो भेद या अन्तर न जानता हो ।

अविष (वि०) जो ज़हरीला न हो । जो विष न हो ।

अविषः (पु०) १ समुद्र । २ राजा ।

अविषी (स्त्री०) १ नदी । २ पृथिवी । ३ स्वर्ग ।

अविषय (वि०) १ अगोचर । २ अप्रतिपाद्य । अनिर्वचनीय । ३ विषयशून्य ।

अविषयः (पु०) १ अनुपस्थिति । अविद्यमानता । २ परे । पहुँच के बाहिर ।

अवी (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।

अवीचि (वि०) लहरों से रहित ।

अवीचिः (पु०) तरक विशेष ।

अवीर (वि०) १ जो वीर न हो । कायर । डरपोंक । २ जिसके कोई पुत्र न हो ।

अवीरा (स्त्री०) वह स्त्री जिसके न कोई पुत्र ही हो और न पति ही हो ।

अवृत्ति (वि०) १ जिसका अस्तित्व न हो । जो हो ही न । जिसकी कोई जीविका न हो ।

अवृत्तिः (स्त्री०) १ वृत्ति का अभाव । जीविका का कोई वसीला न होना । २ मज़दूरी का अभाव ।

अवृथा (अव्यया०) जो वृथा न हो । सफलतापूर्वक ।
—अर्थ (वि०) सफल ।

अवृष्टि (वि०) सूखा ।

अवृष्टिः (स्त्री०) मेह का अभाव । अनावृष्टि । सूखा । अकाल ।

अवेक्षक (वि०) निरीक्षक । द्रोणा । ईस्पेक्टर ।

अवेक्षणां (न०) १ किसी ओर देखना । २ पहरा देना । रखवाली करना । निरीक्षण । ३ ध्यान । खबरदारी ।

अवेक्षणीय (स० का० कु०) १ देखने योग्य । निरीक्षण के योग्य । २ जाँच के योग्य । परीक्षा के योग्य । [विचार ।

अवेक्षा (स्त्री०) १ देखना । २ ध्यान । खबरदारी ।

अवेद्य (वि०) १ जो जानने योग्य नहीं । गोप्य । २ जो प्राप्त न हो सके ।

अवेद्यः (पु०) बड़बड़ा । [२ कुसमय का ।

अवेले (वि०) १ असीम । जिसकी सीमा न हो ।

अवेलेः (पु०) ज्ञान का दुराव ।

अवेला (स्त्री०) प्रतिकूल समय ।

अवैध (वि०) [स्त्री०—अवैधी] १ अनियमित । नियम या आईन के विरुद्ध । २ शास्त्रविरुद्ध ।

अवैमत्यम् (न०) ऐक्य । एकता ।

अवोत्तगम् (न०) हाथ टेका कर पानी छिड़कना ।
उत्तावेनैव हस्तेन मोक्षं परिकीर्तितम् ।
न्यकुताभ्युत्थं मोक्षं तिरश्चाद्योषणं स्मृतम् ॥”

अवोदः (पु०) छिड़काव । नम करने की क्रिया ।

अव्यक्त (वि०) १ अस्पष्ट । जो प्रत्यक्ष न हो । अगोचर । अज्ञेय । ३ अचिन्त्य । ४ अज्ञात ।

अनुत्पद्य । ५ (बीजगणित में) अनवगत राशि ।

—क्रिया (स्त्री०) बीजगणित की एक क्रिया ।

—पद (वि०) वह पद जो तात्वादि प्रथकों से न बोला जा सके । जैसे जीव जन्तुओं की बोली ।—

राग, (वि०) लाल रंग ।—रागः, (पु०)

अरुण रंग ।—राशिः, (बीजगणित में) अनव-

गत राशि ।—व्यक्तः, (पु०) शिव जी की

उपाधि ।

अव्यक्तः (पु०) १ विष्णु का नाम । २ शिव का नाम । ३ कामदेव । ४ प्रधान । प्रकृति । ५ मूर्ख ।

सं० श० कौ०—१४

अव्यक्तम् (न०) (वेदान्त दर्शन में) १ ब्रह्म ।
२ आध्यात्मिक अज्ञानता । ३ (सांख्य) सर्व-
कारण । ४ जीव । (अव्यया०) अस्पष्टता से ।

अव्यग्र (वि०) १ दृढ़ । शान्त । २ जो किसी व्यापार
में संलग्न न हो ।

अव्यङ्ग } (वि०) जिसमें कुछ त्रुटि या कमी न हो ।
अव्यङ्ग्य } भली भाँति निमित्त । दृढ़ । संपूर्ण ।

अव्यञ्जन } (वि०) १ चिन्हरहित । अस्पष्ट ।
अव्यञ्जन }

अव्यञ्जनः } (पु०) ऐसा पशु जिसकी उन्न के विचार
अव्यञ्जन } से सींग होने चाहिये, किन्तु सींग हों न ।

अव्यय (वि०) पीढ़ा से मुक्त ।

अव्ययः (पु०) सपै । साँप ।

अव्ययिषः (पु०) १ सूर्य । २ समुद्र ।

अव्ययिषी (स्त्री०) १ पृथिवी । २ अर्धरात्रि । रात्रि ।

अव्यभिचारः } (पु०) १ अविच्छेद । अविच्छेद ।
अव्यभिचारः } अपार्थक्य । २ वफादारी । निमक-
हलाली ।

अव्यभिचारिन् (वि०) १ अनुकूल । २ सब प्रकार
से सत्य । ३ धर्मात्मा । पवित्र । ४ स्थायी ।
५ वफादार ।

अव्यय (वि०) १ अपरिवर्तनशील । जो कभी नष्ट
न हो । सदा एक रस रहने वाला । २ जो ध्यय
न किया गया हो । ३ मितव्ययी । ४ ऐसे फल
देने वाला जो कभी नष्ट न हो ।

अव्ययः (पु०) १ विष्णु का नाम । २ शिव का नाम ।

अव्ययम् (न०) १ ब्रह्म । २ व्याकरण का वह शब्द
जिसका सब लिङ्गों, सब विभक्तियों और सब
वचनों में समान रूप से प्रयोग हो ।

अव्ययात्मा (स्त्री०) जीव । आत्मा ।

अव्ययीभावः (पु०) १ समास विशेष । यह समास
प्रायः पूर्वपदप्रधान होता है । यह या तो
विशेषण या क्रियाविशेषण होता है । २ अनष्टता ।
अनाशता । ३ व्यय या खर्च का अभाव ।
(धनहीनता वश) [कूल । प्रिय ।

अव्यलीक (वि०) १ झूठा नहीं । सच्चा । २ अनु-

अव्यवधान (वि०) १ समीप का । पास का ।
सीधा । २ खुला हुआ । ३ बेढका हुआ । नंगा ।
४ असावधान । अमनोयोगी ।

अव्यवधानम् (न०) असावधानता । अमनोयोगिता ।
अव्यवस्थ (वि०) १ जो (एक स्थान पर) नियत
न हो । हिलने डुलने वाला । अनवस्थित ।
चञ्चल । अचिरस्थायी । २ अनियमित ।

अव्यवस्था (स्त्री०) १ अनियमितता । निर्धारित
नियम के विरुद्ध आचरण । २ किसी धार्मिक
विषय पर या दीवानी मामले में दी हुई अनुचित
सम्मति ।

अव्यवस्थित (वि०) १ शास्त्र या पद्धति के विरुद्ध ।
२ चञ्चल । अस्थिर । ३ क्रम में नहीं । विधिपूर्वक
नहीं ।

अव्यवहार्य (वि०) १ जो अपनी जाति वालों के
साथ खाने पीने और उठने बैठने का अधिकारी
न हो । जाति बहिष्कृत । २ जिस पर मुकद्दमा न
चलाया जा सके ।

अव्यवहित (वि०) साथ । लगा हुआ ।

अव्याकृत (वि०) १ अप्रकट । २ कारणरूप ।

अव्याकृतं (न०) १ वेदान्त में अप्रकट बीज रूप
जगत्कारण अज्ञान । २ सांख्यदर्शन में प्रधान ।

अव्याजः (पु०) } १ ईमानदारी । २ सादगी ।
अव्याजम् (न०) }

अव्यापक (वि०) जो व्यापी न हो । जो सब जगह
न पाया जाय । १ अक्षधारणक्षम ।

अव्यापार (वि०) जिसका कोई व्यापार न हो । बिना
व्यवसाय धंधे का । बेकाम । निठाबा ।

अव्यापारः (पु०) १ कार्य से निवृत्ति । २ ऐसा
व्यापार जो न तो किया जाय और न समझ में
आवे । ३ निज का धंधा नहीं ।

अव्याप्ति (स्त्री०) व्याप्ति का अभाव । २ नव्य न्याया-
नुसार लक्ष्य पर लक्षण के न धरने का दोष ।

" लक्ष्यैकदेशे लक्षणस्यावर्तनस्य व्याप्तिः । "

अव्याहृत (वि०) १ बेरोकटोक का । अप्रतिरुद्ध ।
२ जो खण्डित न हो । सत्य ।

अन्युत्पन्न (वि०) १ अनभिज्ञ । अनादी । अकुशल ।
 २ व्याकरण के मतानुसार वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति
 अथवा सिद्धि न हो सके ।
 अन्युत्पन्नः (पु०) व्याकरणज्ञानशून्य ।
 अव्रत (वि०) जो निर्दिष्ट धर्मानुष्ठान अतोपवास
 न करता हो ।
 अश (धा० आत्म०) [अश्नुते, अशित-अष्ट] १
 व्यास होना । घुसना । परिपूर्ण होना । २ पहुँचना ।
 जाना या आना । ३ प्राप्त करना । पाता ।
 हासिल करना । उपभोग करना । ४ अनुभव प्राप्त
 करना । ५ खाना ।
 अशकुनः (पु०) } असगुन । बुरा शकुन ।
 अशकुनम् (न०) }
 अशक्तिः (स्त्री०) १ कमजोरी । निर्बलता । असम-
 र्थता । २ अयोग्यता । अपात्रता ।
 अशक्य (वि०) असम्भव । असाध्य ।
 अशङ्क, अशङ्क } (वि०) १ निडर । निर्भय ।
 अशङ्कित, अशङ्कित } २ जिसको किसी प्रकार का
 सन्देह न हो ।
 अशनम् (न०) १ व्यासि । फैलाव । २ भोजन करने की
 क्रिया । खिलाना । ३ चखना । उपभोग करना ।
 ४ भोजन ।
 अशना (स्त्री०) भोजनेच्छा । भूख ।
 अशनाया (स्त्री०) भूख ।
 अशनायित } (वि०) भूखा ।
 अशनायुक }
 अशनिः (पु० स्त्री०) १ इन्द्र का वज्र । २ बिजली का
 कौंवा । ३ फैक कर मारने का अस्त्र । आला,
 बरछी आदि । ४ ऐसे अस्त्र की नौक । (पु०)
 १ इन्द्र । २ अग्नि । ३ बिजली से उत्पन्न अग्नि ।
 अशब्दं (न०) १ ब्रह्म । २ (सांख्य में) प्रधान ।
 अशरण (वि०) अनाथ । निराश्रय । वेपनाह ।
 अशरोरः (पु०) १ परमात्मा । ब्रह्म । २ कामदेव ।
 ३ संन्यासी ।
 अशरोरिन् (वि०) अशरीरी । अलौकिक ।
 अशास्त्र (वि०) १ धर्मशास्त्र के विरुद्ध । २ नास्तिक
 दर्शन वाला ।
 अशास्त्रीय (वि०) शास्त्रविरुद्ध ।

अशित (व० कृ०) खाया हुआ । सन्तुष्ट । उपभुक्त ।
 अशितगन्धीन } १ पूर्व में मवेशियों या पशुओं द्वारा
 अशितगन्धीन } चरा हुआ । २ पशुओं के चरने का
 स्थान । चरागाह ।
 अशित्रः (पु०) १ चोर । २ चाँवल की बलि ।
 अशिरः (पु०) १ अग्नि । २ सूर्य । २ हवा ।
 ४ राक्षस ।
 अशिरं (न०) हीरा । [धड़ । कबन्ध ।
 अशिरस् (वि०) शिरहीन । (पु०) बेसिर का ।
 अशिव (वि०) १ अमङ्गलक । अमङ्गलकारी । अशुभ ।
 २ अभागा । बद्किस्मत ।
 अशिवं (न०) १ अभाग्य । बद्किस्मती । २ उपद्रव ।
 अशिव (वि०) १ असाधु । दुःशील । अविनीत ।
 उजड़ । बेहूदा । २ शास्त्रअसम्मत । ३ किसी
 प्रामाणिक ग्रन्थ में न पाया जाने वाला ।
 अशीत (वि०) जो ठंडा न हो । गर्म । उष्ण ।—
 करः,—रश्मिः, (पु०) सूर्य ।
 अशीतिः (स्त्री०) अस्सी । ८० ।
 अशीर्षक (वि०) देखो अशिरस ।
 अशुचि (वि०) १ जो साफ न हो । मैला । गंदा ।
 अशुद्ध । मृतकसूतक । २ काला ।
 अशुचिः (स्त्री०) १ अपवित्रता । सूतक । २ अधःपात ।
 अशुद्ध (वि०) १ अपवित्र । गलत ।
 अशुद्धि (वि०) १ अपवित्र । गंदा । २ दुष्ट ।
 अशुद्धिः (स्त्री०) अपवित्रता । गंदगी ।
 अशुभ (वि०) १ अमङ्गलकारी । अकल्याणकर ।
 २ अपवित्र । गंदा । ३ अभागा । [विपत्ति ।
 अशुभम् (न०) १ अमङ्गल । २ पाप । ३ अभाग्य ।
 अशून्य (वि०) १ जो खाली या रीता न हो । २ परि-
 पूर्ण । पूर्ण किया हुआ ।
 अशूल (वि०) विना पकाया हुआ । कच्चा । अनपका ।
 अशेष (वि०) जिसमें कुछ भी न बचे । पूर्ण ।
 समूचा । समस्त । परिपूर्ण ।
 अशेष, }
 अशेषण, } (अव्यया०) सम्पूर्णतः ।
 अशेषतः }
 अशोक (वि०) शोक रहित ।—अरिः, (पु०)
 कदंब वृक्ष ।—अष्टमी, (स्त्री०) चैत्र की कृष्णा

अष्टमी । —तरुः, —नगः, वृक्षः, (पु०) अशोक
वृक्ष । —त्रिरात्रः, —(पु०) त्रिरात्रम्, (न०)
तीन रात व्यापी व्रत या उत्सव विशेष ।

अशोकः (पु०) १ वृक्ष विशेष । २ विष्णु । ३
सौर्य राजवंश का एक प्रसिद्ध राजा ।

अशोकम् (न०) १ अशोक वृक्ष का फूल जो कामदेव
के पांच सरो में से एक माना जाता है । २ पारा ।
पारद ।

अशोच्य (वि०) शोक करने या शोकान्वित होने के
अयोग्य । जिसके लिये शोक करना उचित नहीं ।

अशौचं (न०) १ अपवित्रता । गंदगी । मैलापन ।
२ जनन या मरण का सूतक ।

अशनया (स्त्री०) भूख । बुभुक्षा ।

अशनीतपिवता (स्त्री०) न्याता जिसमें आमंत्रित जन
खिलाये पिलाये जाते हैं ।

“अश्नोवपिधत्तेयमन्ती अमुता स्मरकर्मणि ।”

—भट्टिकाव्य ।

अश्मकः (बहुवचन) (पु०) १ दक्षिण के एक
देश विशेष का नाम । २ उक्तदेशवासी ।

अश्मन् (पु०) १ पत्थर । २ चकमकपत्थर । ३
बादल । ४ कुलिश । वज्र । —उत्थं, (न०)
राल । —कुट्ट, —कुट्टक, (वि०) पत्थर पर फोड़ी
हुई (कोई भी चीज़) । —गर्भः, (पु०), —
गर्भ, (न०) —गर्भजः, (पु०) —गर्भजं, —(न०)
शेनिः, (पु०) पक्षा । —जः, (पु०) —जम्,
(न०) १ गेरू । २ लोहा । —जतु, —
जतुकं, (न०) राल । —जातिः, (पु०)
पक्षा । —दारणः, (पु०) हथौड़ा जिससे पत्थर तोड़े
जाते हैं । —पुष्पं, (न०) राल । —भालं, (न०)
पत्थर या लोहे का इमामदस्ता या खरल । —सार,
(वि०) पत्थर या लोहे की तरह । —सारं,
(न०) —सारः, (पु०) १ लोहा । २ पुलराज ।
नीलमणि ।

अश्मन्तं } (न०) १ अलाउ । वह स्थान जहाँ आग
अश्मन्तम् } जलाकर रखी जाय । २ क्षेत्र । मैदान ।
३ मृत्यु ।

अश्मन्तकः, अश्मन्तकः (पु०) } अलाउ ।
अश्मन्तकम्, अश्मन्तकम् (न०) } अग्नि-

कुण्ड । (पु०) एक पौधे का नाम जिसके रेशों से
ब्राह्मणों का कटिसूत्र बनाया जाता है ।

अश्मरी (स्त्री०) पथरी का रोग ।

अश्वः (पु०) कौना ।

अश्वं (न०) आँसू । २ रक्त । —पः, (पु०) रक्त-
पाथी । खून पीने वाला ।

अश्ववण (वि०) बहरा । जिसके कान न हों ।

अश्ववणः (पु०) सर्प । साँप ।

अश्वान्नभोजिन् (वि०) ऐसा ब्राह्मण जिसने
श्राद्धान्न न खाने का व्रत धारण किया हो ।

अश्वान्त (वि०) १ जो थका हुआ न हो । अथक ।
२ लगातार । निरन्तर । (अव्यया०) लगातार
रीत्या । निरन्तर रीत्या ।

अश्विः } (स्त्री०) १ कोना । कोण । २ किसी
अश्वी } हथियार का वह किनारा जो पैना होता
है । किसी भी वस्तु का पैना किनारा ।

अश्वीक } (वि०) १ जिसमें चमक या सौन्दर्य न
अश्वील } हो । पीला । २ अभागा । जो समृद्धि-
शाली न हो ।

अश्रु (न०) आँसू । —उपहत, (वि०) आँसूओं
से भरा हुआ । —कला, (स्त्री०) आँसू की
बूंद । —परिप्लुत, (वि०) आँसूओं से तर ।
आँसूओं से नहाया हुआ । —पातः, (पु०)
आँसूओं का बहना । —लोचन, नेत्र, (वि०)
आँखों में आँसू भरे हुए ।

अश्रुत (वि०) १ जो सुना न गया हो । जो सुनाई न
पड़े । २ मूर्ख । अशिक्षित ।

अश्रुत (वि०) वेदविरुद्ध ।

अश्रेयस् (वि०) अपेक्षाकृत जो उत्कृष्ट न हो ।
अपकृष्टतर । (न०) उपद्रव । दुःख ।

अश्लील (वि०) १ अप्रिय । कुरूप । २ गँवारू ।
फूहर । भदा । असभ्य । ३ कुवाच्य । [गलौज ।

अश्लीलम् (न०) फूहर बोलचाल । बुरी गाली
अश्लेषा (स्त्री०) १ नवीं नक्षत्र । २ अनमिल ।

अनैक्य । —जः, —भूः, —भवः, (पु०) केतुग्रह
का नाम ।

अश्वः (पु०) १ घोड़ा । २ सात की संख्या । ३
मानवी जाति विशेष (जिसमें घोड़े जितना शूल

होता है) ।—अजनी, (स्त्री०) चाबुक । कोड़ा ।
 —अधिक, (वि०) जो घुड़सवारों की सेना में हो । जिसके पास बड़े अधिक हों ।—
 अध्वक्षः, (पु०) घुड़सवारों की सेना का कमाण्डर ।
 —अनीकम्, (न०) घुड़सवारों की सेना ।
 —अरिः, (पु०) भैसा ।—आयुर्वेदः, (पु०) साल-
 होत्र ।—आरोहः, (पु०) घुड़सवार ।—उरस्, (वि०) घोड़े की तरह चौड़ी छाती वाला ।—
 कर्णः, —कर्णकः, (पु०) १ वृक्षविशेष । २ घोड़े का कान ।—कुटी, (स्त्री०) अस्तबल ।
 कुशल, —कोविद, (वि०) घोड़ों के वश में करने की कला में कुशल ।—खरत्रः, (पु०) खच्चर ।—खुरः, (पु०) घोड़े का खुर । गोष्ठं, (न०) अस्तबल ।—घासः, (पु०) घोड़े का चारा ।
 —चलनशाला, (स्त्री०) घोड़े घुमाने का स्थान ।
 —चिकित्सकः, —वैद्यः, (पु०) सालहोत्र ।—चिकित्सा, (स्त्री०) सालहोत्र ।—जघनः, (पु०) पौराणिक अर्द्धघोटकाकृति अद्भुत मनुष्य ।—
 नायः, (पु०) घोड़ों का समूह । घोड़ों को चराने वाला ।—निबंधिकः, (पु०) साईस ।—पालः, —पालकः, —रत्नः, (पु०) घोड़े का साईस ।—
 बन्धः, (पु०) साईस ।—भा, (स्त्री०) बिलुली ।
 —महिषिका, (स्त्री०) घोड़े और भैसे की स्वाभाविक शत्रुता ।—मुख, (वि०) घोड़ेजैसा मुख या सिर वाला ।—मुखः, (पु०) किन्नर ।—मुखी, (स्त्री०) किन्नरी ।—मेघः, (पु०) यज्ञ विशेष जिसमें घोड़े का बलिदान दिया जाता है ।—मेधिक, —मेधीय, (वि०) अश्वमेध यज्ञ के योग्य या उससे सम्बन्ध रखने वाला ।—युज, (वि०) (गाड़ी) जिसमें घोड़े जुते हों ।—रपः, (पु०) घोड़े का सवार या साईस ।—रथा, (स्त्री०) गन्धमादन पर्वत के निकट बहने वाली एक नदी का नाम ।—रत्नं, (न०) —राजः, (पु०) सर्वोत्तम घोड़ा । घोड़ों का राजा ।—जाला, (स्त्री०) सर्प विशेष ।—वक्त्रः, (पु०) किन्नर या गन्धर्व ।—वडवं, (न०) तबेला । अस्तबल, जहाँ घोड़े घोड़ी रखी जाँय ।—वहः, (पु०) घुड़सवार ।
 —वारः, —वारकः, (पु०) चाबुकसवार ।

साईस ।—वाहः, —वाहकः, (पु०) घुड़सवार ।
 —विदुः, (वि०) घोड़ों को पालने और उनको चाल आदि सिखाने की कला में कुशल । (पु०) १ घोड़ों का सौदागर । २ राजा नल की उपाधि ।
 —वृषः, (पु०) बीज का घोड़ा । वह घोड़ा जो घोड़ियों को ग्याभन करता हो ।—वैद्यः, (पु०) सालहोत्री ।—शाला, (स्त्री०) अस्तबल । तबेला ।
 —शावः, (पु०) घोड़ी का बड़ेड़ा ।—शास्त्रं (न०) सालहोत्र विद्या ।—शृगालिका, (स्त्री०) स्थार और घोड़े की स्वाभाविक दुश्मनी ।—सादः, —सादिन्, (पु०) घुड़सवार । सैनिक घुड़सवार ।
 —सारथ्यं (न०) रथवाणी । सारथीपन ।—स्थान, (वि०) अस्तबल में उत्पन्न ।—स्थानं, (न०) अस्तबल । तबेला ।—हृदयं, (न०) १ घोड़े की हड्डी या इरादा । २ शहसवारी ।

अश्वक (वि०) घोड़े की तरह ।

अश्वकः (पु०) १ टट्टू । भाड़े का टट्टू । २ बुरा घोड़ा । ३ साधरयतः घोड़ा ।

अश्वकिनी (स्त्री०) अश्विनी नक्षत्र ।

अश्वतरः (पु०) [स्त्री०—अश्वतरी] खच्चर ।

अश्वत्थः (पु०) पीपल का पेड़ ।

अश्वत्थामन् (पु०) यह द्रोण का पुत्र था । इसकी माता का नाम कृपी था । महाभारत के युद्ध में यह कौरवों की ओर से पाण्डवों से लड़ा था । यह सप्तचिरजिवियों में से एक है ।

अश्वस्तन (वि०) १ आने वाले कल का नहीं । अश्वस्तनिक } आज का । २ एक दिन के व्यवहार के लिये अन्नादि संग्रह करने वाला ।

अश्विक (वि०) घोड़ों से खींचा जाने वाला ।

अश्विन् (पु०) चाबुक सवार ।—नौ, (द्विवचन) देवताओं के वैद्यों का नाम ।

अश्विनी (स्त्री०) २७ नक्षत्रों में प्रथम । एक अप्सरा जो सूर्य की पत्नी मानी गयी है और जिसने घोड़ी बनकर सूर्य के साथ मैथुन करवाया था ।—कुमारौ, —पुत्रौ, —सुतौ, (द्विवचन) सूर्यपत्नी अश्विनी के दो जुलहे पुत्र ।

अश्वीय (वि०) घोड़ों का । घोड़ों से सम्बन्ध रखने वाला । घोड़ों के अनुकूल ।

अश्वीयं (न०) घुड़सवारों का एक दस्ता ।
अषडक्षीण (वि०) छः नेत्रों से न देखा हुआ ।
अर्थात् जिसे केवल दो पुरुषों ने जाना हो या
जिस पर केवल दो पुरुषों ने विचार कर कुछ
निश्चय किया हो ।

अषडक्षीणम् (न०) गोप्य । गुप्त
अषाढः (पु०) अषाढ मास ।
अष्टक (वि०) आठ भागों वाला । अशुना ।
अष्टकः (पु०) जिसने पाणिनी व्याकरण के आठ ग्रन्थ
पढ़े हों ।

अष्टकम् (न०) १ आठ भागों से बनी हुई समूची कोई
वस्तु । २ पाणिनी के सूत्रों के आठ अध्याय ।
३ ऋग्वेद का भाग विशेष । ४ किन्हीं आठ वस्तुओं
का एक समुदाय । ५ आठ की संख्या ।

अष्टका (स्त्री०) १ तीन दिवसों का समुदाय, ७मी,
८मी, ९मी । २ पौष, माघ और फागुन की
कृष्णष्टमी । ३ आठ जो उक्त तिथियों को किया
जाता है ।

अष्टाङ्गः (पु०) } चौपड़ की बिछांत ।
अष्टाङ्गम् (न०) }

अष्टन् (वि०) आठ संख्या ।—अष्ट, —अष्टन (वि०)
आठ दिन तक होने वाला ।—कर्णः, (वि०) आठ
कानों वाला । ब्रह्मा की उपाधि ।—कर्मन्, (पु०)
—गतिकः, (पु०) राजा जिसे ८ प्रकार के
कर्तव्यों का पालन करना पड़ता है वे आठ कर्म
यह हैं :—

आदाने च विसर्गे च तथा प्रैषविविधयोः ।

पञ्चमे चार्थवचने व्यवहारस्य चेद्विधेः ।

दण्डयुद्धयोः सदा रक्तस्तेनायुधसिक्तो नृपः ॥

—कृतवत् (अन्यथा०) आठगुना ।—कीर्णः,
(पु०) आठ पहलू या आठकोना ।—गुण, (वि०)
आठगुना ।—गुणम्, (न०) आठ प्रकार के गुण जो
ब्राह्मण में होने चाहिये । वे आठगुण ये हैं :—

दया सर्वभूतेषु संतिः, अश्रूया, शौचं,
अनायासः, सङ्गलक्ष्, अकार्पण्यश्च, अस्पृहा, चेति ॥

—गौतम ।

—चत्वारिंशत्, (स्त्री०) (= अष्टचत्वारिंशत्)
४८ । अड़तालीस ।—तय, (वि०) अठगुना ।

—त्रिंशत्, (वि०) ३८ । अड़तीस ।—त्रिकं,
(न०) २४ की संख्या ।—दलं, (न०)
आठदल का कमल ।—दिश, (स्त्री०) आठ
दिशाएं ।—दिकपालाः, (पु०) आठों दिशाओं के
अधिष्ठाता । आठ दिक्पाल ये हैं :—

इन्द्रो बभ्रुः पितृगतिः नैऋतो वज्रो भवत् ।

दुर्वेर ईशः पतयः पूर्वार्दीनां दिशां क्रमात् ॥

धातुः (पु०) सोना, चाँदी, ताँबा, रांगा, सीसा,
लोहा, यशद रस (पारा) ।—पदः, (अष्टापदः)
(पु०) १ मकड़ी । २ शरभ । ३ कील । कांटा ।
४ कैलास पर्वत ।—पदं, (—अष्टापदम्)
(न०) १ सुवर्ण । २ वस्त्र विशेष । —मङ्गलः,
(पु०) घंटा जिसका मुख, पूँछ, अगल, छाती
और खुर सफेद हों । —मङ्गलम् (न०) आठ
माङ्गलिक द्रव्यों का समुदाय । वे आठ
ये हैं :—

सुगराको वृषो नागः कलशो व्यजनं तथा ।

वैजयन्ती तथा मेरी दीप इत्यष्टमङ्गलम् ।

स्थानान्तरे—

कोकः कृष्णः सङ्गलान्ध्रौ ब्रह्मणो गौर्धुनाशनः ।

हिरण्यं सर्पराक्षस्य आघो राजा तथाधुमः ॥

—मूर्तिः, (पु०) शिवजी की उपाधि ।—रत्नः,
आठरत्न ।—रसाः, (बहुव०) नाट्य शास्त्र के
आठरस । यथा ।

हृद्गारहास्य कवचरौद्र वीर भवानकाः ।

बीभर्तुः द्रुतसर्पौ सेतयष्टौ नाट्ये रसाः शृणुनाः ॥

—विध, (वि०) आठप्रकार ।—विंशतिः,
(स्त्री०), २८ । अड़हस ।—श्रवणः,—श्रवस्
(पु०) चारमुख और आठकानों वाले ब्रह्मा जी ।

अष्टतय (वि०) आठ भाग या आठ अवयव वाला ।

अष्टतयम् (न०) आठ का औसत ।

अष्टधा (अन्यथा०) आठ गुना । आठ बार । आठ
प्रकार से । आठ भाग में ।

अष्टम (वि०) आठवाँ ।

अष्टमः (पु०) आठवाँ भाग

अष्टमी (स्त्री०) चान्द्रमास का आठवाँ दिवस । पंच
की आठवीं तिथि ।

अष्टमक (वि०) आठवाँ ।

यौशमपुनकं हरेत् । यौशवक्ष्य ॥

अष्टमिका (स्त्री०) चार तोले की तौल विशेष ।

अष्टादशन् (वि०) अठारह ।—उपपुराणम् (न०)

अठारह उपपुराण जिनके नाम ये हैं —

आद्यं सनत्कुमारोक्तं नारसिंहमतः परं ।
तृतीयं नारदं प्रोक्तं कुमारं तु भाषितम् ।
चतुर्थं शिवबर्माख्यं साक्षान्नन्दोक्तं भाषितम् ।
दुर्वाससोक्तमाष्टमं नारदोक्तमतः परम् ।
कापिलं नामकं चैव तथैवोक्तमस्मिन् ।
ब्रह्मपण्डं चाथ साधु कालिकाह्वयमेव च ।
साहेश्वरं तथा शंख सौरं सर्वार्थज्ञम् च ।
पराशरोक्तं प्रवरं तथा भागवतद्वयम् ।
इदमष्टादशं प्रोक्तं पुराणं धर्मसंज्ञितम् ।
चतुर्थां सन्धितं पुर्यं संहितानां प्रभेदतः ।

—हेमाद्री

—पुराणं, (न०) १८ पुराण जिनके नाम ये हैं:—

१ ब्राह्म, २ पाद्म, ३ विष्णु, ४ शिव, ५ भागवत,
६ नारदीय, ७ मार्कण्डेय, ८ अग्नि, ९ भविष्य,
१० ब्रह्मवैवर्त ११ लिङ्ग १२ बराह, १३ स्कन्द,
१४ वामन, १५ कौर्म, १६ मत्स्य, १७ गरुड ।
१८ ब्रह्माण्ड ।—विद्या, (स्त्री०) १८ प्रकार की
विद्याएं या कलाएं । यथा—

अंगानि वेदाश्चरवारी सोमांसा न्यायवित्तरः ।
धर्मशास्त्रं पुराणं च विद्या इतोऽष्टचतुर्दश ।
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गानधर्मश्चेति ते त्रयः ।
अर्थशास्त्रं चतुर्थं तु विद्या ह्यष्टा दशैव तु ।

अष्टिः (स्त्री०) १ खेल का पांसा । २ सोलह की
संख्या । ३ बीज । ४ झिलका । छाल ।

अष्टदीला (स्त्री०) १ कोई गोल वस्तु । २ गोल पत्थर
या स्फटिक । ३ झिलका । छाल । ४ बीज का
अनाज ।

अस् (भा० पर०) [अस्ति, आसीत्, अस्तु, स्यात्]
होना, जिंदा रहना । (कोई बात का) पैदा
होना । लेना । जाना । [बढ़ न हो ।

असंयत (वि०) संयम रहित । क्रमशून्य । जो नियम

असंयमः (पु०) संयम का अभाव । रोक का न होना ।

यह इन्द्रियों के विषय में प्रयुक्त होता है ।

असंशय (वि०) संशयरहित । निश्चित । [न पड़े ।

असंश्रव (वि०) जो सुनने के परे हो । जो सुनाई

असंस्पृष्ट (वि०) जो मिश्रित न हो । जो संलग्न न
हो । बटवारा होने के बाद फिर जो शामिलान में
न रहे ।

असंस्कृत (वि०) १ विना सुधारा हुआ । अपरि-
माजित । २ जिसका संस्कार न हुआ हो । ब्राह्म ।

असंस्कृतः (पु०) व्याकरण के संस्कार से शून्य ।
अपशब्द । बिगाड़ा हुआ शब्द ।

असंस्तुत (वि०) १ अज्ञात । अपरिचित । २ असा-
धारण । विलक्षण ।

असंस्थानं (न०) १ संयोग का अभाव । २ गड़बड़ी
३ अभाव । कमी ।

असंस्थित (वि०) १ जो व्यवस्थित न हो । अनिय-
मित । २ एकत्रित नहीं ।

असंस्थितिः (स्त्री०) गड़बड़ी । घालमेल ।

असंहत (वि०) जो जुड़ा न हो । जो मिला न हो ।
खिखरा हुआ । [या जीव ।

असंहतः (पु०) सांख्य दर्शन के अनुसार पुरुष
असंस्कृत (अव्यया०) एक बार नहीं । बारंबार ।

अस्सर ।—समाधिः बारंबार की समाधि या
ध्यान ।—गर्भवासः (पु०) बारंबार जन्म ।

असक्त (वि०) १ जो किसी में सक्त न हो । २ फला-
मिलाप से रहित । सांसारिक पदार्थों से विरक्त ।

असक्तं (अव्यया०) १ किसी में विशेष अनुराग न
रखते हुए । २ निरन्तर । सतत ।

असक्त्य (वि०) जिसके जंघा न हो ।

असखिः (स्त्री०) शत्रु । विरोधी ।

असगोत्र (वि०) जो एक गोत्र या कुल का न हो ।

असंकुल } १ (वि०) जहाँ बहुत भीड़ भाड़ न हो ।

असङ्कुल } २ खुला हुआ । साफ । चौड़ा (मार्ग)

असंकुलः } (पु०) चौड़ा मार्ग ।

असङ्कुलः } (पु०) चौड़ा मार्ग ।

असंख्य (वि०) गणना के परे जिसकी गणना न
हो सके । [संख्यावाला ।

असंख्यात (वि०) अगणित । संख्यातीत । अनन्त

असंख्येय (वि०) अगणित । संख्यातीत ।

असंख्येयः (पु०) शिव जी की उपाधि विशेष ।

असंग } (वि०) १ अननुरक्त । सांसारिक या लौकिक

असङ्ग } बंधनों से मुक्त । २ अनवरुद्ध । जो सौथरा न

हो । ३ अनमिल । ४ एकान्त आक्रमण न किया हुआ ।

असंगः } (पु०) १ वैरान्ध । २ पुरुष या जीव ।
असङ्गः }
असंगत } (वि०) १ अयुक्त । सङ्गविवर्जित ।
असङ्गत } २ अभावनीय । विषम । ३ गँवार ।
अशिष्ट ।

असंगति } (स्त्री०) १ सङ्गति विहीन । २ मेल
असङ्गति } का न होना । असंबन्ध । वेसिलसिला-
पन । ३ अनुपयुक्तता । ४ एक काव्यालङ्कार ।
इसमें कार्य कारण के बीच देश काल सम्बन्धी
अर्थार्थता दिखलाई जाती है ।

असंगम } (वि०) जो मिला हुआ न हो ।
असङ्गम }
असंगमः } (पु०) पार्थक्य । विद्वेह । अनैक्य ।
असङ्गमः } २ असंलग्नता । अमेल ।
असङ्गिन् } (वि०) १ जो मिला हुआ न हो २
असङ्गिन् } संसार से विरक्त ।
असंज्ञ (वि०) संज्ञाहीन । मूर्च्छित ।
असंज्ञा (स्त्री०) अनैक्य । विरोध । कगड़ा टंटा ।
असत् (वि०) १ न होना या अस्तित्व का न
होना । २ अनस्तित्व । अवास्तविकता । ३ बुरा ।
खराब । ४ दुष्ट । पापी । वृषित । ५ तिरोहित ।
६ शलत । अनुचित । मिथ्या । झूठा । (न०)
१ अनस्तित्व । असत्ता । २ मिथ्या । झूठ ।

असती (स्त्री०) जो सती या पतिव्रता न हो । —
अध्येतु (वि०) शास्त्रारण्य ब्राह्मण । जो अपने
वेद की शाखा को छोड़ अन्य वेद की शाखा
पढ़े ।

स्वशाखां यः परित्यज्य अन्यत्र कुर्वते आसत् ।
शाखापट्टः स विद्येयो वर्जयेत्सं क्रियामु च ॥

—आगमः, (पु०) १ विरुद्ध मतावलम्बी ।
२ बेईमानी से (धन को) हथियाना । ३ बेई-
मानी । —आचारः, (वि०) बुरे आचरण वाला ।
दुष्ट । —आचारः, (पु०) दुष्ट । पतित । कर्मन्,
—क्रिया, (स्त्री०) १ बुरा काम । २ दुर्व्यवहार ।
—ग्रहः,—ग्राहः, (पु०) १ बुरी चालवाजी । २
बुरी राय । पत्रपात । ३ वच्चों जैसी अभिलाषा ।
—वेष्टितम्, (न०) हानि । चोट । —दूशः

(वि०) बुरे नेत्रों वाला । बुरी दृष्टि वाला । —
परिग्रहः, (पु०) बुरे मार्ग का ग्रहण । —
प्रतिग्रहः, (पु०) कुदान । बुरा दान । जैसे तेर
तिल आदि । —भावः, (पु०) १ अविद्य-
मानता । असत्ता । २ दुष्ट सम्मति । दुष्ट स्वभाव ।
—वृत्तिः (स्त्री०) १ नीच कर्म या पेशा । २
दुष्टता । —संसर्गः (पु०) बुरी संगत ।

असतायो (स्त्री०) दुष्टता ।
असत्ता (स्त्री०) १ अनस्तित्व । २ असत्य । ३
दुष्टता । बुराई ।

असत्त्व (वि०) शक्तिहीन । सत्ता रहित ।
असत्त्वं (न०) १ अनवस्थान । २ अवास्तविकता ।
असत्य ।

असत्य (वि०) १ झूठा । २ कल्पित । अवास्तविक ।
—सन्ध, (वि०) अपने वचन को पूरा न करने
वाला । झूठा । दगाबाज़ । धोखेबाज़ ।

असत्यः (पु०) मिथ्यावादी । झूठ बोलने वाला ।
असत्यं (न०) झूठ । मिथ्या ।

असदृश (वि० [स्त्री०—असदृशी] १ असमान ।
बेमेल । २ अयोग्य । अनुचित ।

असदृस् (अव्यया०) तुरन्त नहीं । देर करके । देरी से ।
असन् (पु०) इन्द्र । (न०) रक्त । खून ।

असन (वि०) फैकते हुए । छुटाते हुए ।
असन्दिग्ध (वि०) १ सन्देह रहित । निस्सन्देह ।
स्पष्ट । साफ । २ विरवस्त ।

असन्दिग्धम् (अव्यया०) निश्चय । निस्सन्देह ।
असन्धि (वि०) १ जो मिले या जुड़े (शब्द) न
हो । २ जो बन्धन में न हो । स्वतंत्र ।

असंनद्ध (वि०) १ जो हथियारों से सुसज्जित न हो ।
२ परिद्वतमन्य ।

असंनिकर्षः (पु०) १ दूरी । २ समझ के बाहिर ।
असंनिवृत्तिः (स्त्री०) न लौटौअल । न लौटने की
क्रिया ।

असपिण्ड (वि०) जो सपिण्ड न हो । जो अपने
वंश या कुल का न हो । जो अपने हाथ का दिया
पिंड पाने का अधिकारी न हो ।

असम्य (वि०) गँवार । उजड़ । नाशाइस्ता ।
असम (वि०) १ विषम । २ असमान । बेजोड़ ।

—सायकः (पु०) कामदेव की उपाधि । काम देव के पास पांच बाणों का होना माना गया है ।

—लोचन, —नयन, —नेत्र (वि०) १ विषम-संख्यक नेत्रों वाले । २ शिव जी की उपाधि ।

असमंजस } (वि०) १ अस्पष्ट । अवोधगम्य ।
असमञ्जस } २ अनुचित । असङ्गत । ३ वाहि-
यात । मूर्खतापूर्ण ।

असमवायिन् (वि०) जो सम्बन्ध युक्त या परंपरा-
गत न हो । आकस्मिक । पृथक् होने योग्य ।—
कारणम्, (न०) न्याय दर्शन के अनुसार वह
कारण जो द्रव्य न हो, गुण वा कर्म हो ।

असमस्त (वि०) १ असम्पूर्ण । थोड़ा सा । पूरा
नहीं । २ (व्याकरण में) जो समासान्त न हो ।
३ पृथक् । अलहदा । असम्बद्ध । [अधूरा ।

असमाप्त (वि०) जो समाप्त न हो । अधूरा ।
असमीक्ष्य (वि०) बिना विचारा हुआ ।—कारिन्,
(वि०) बिना विचारे काम करने वाला ।

असम्पत्ति (वि०) गरीब । धनहीन ।

असम्पत्तिः (स्त्री०) १ धनहीनता । गरीबी । २
दुर्भाग्य । बदकिस्मती । ३ असफलता ।
असम्पूर्णता ।

असम्पूर्ण (वि०) १ जो पूरा न हो । अधूरा । २
समूचा नहीं । ३ थोड़ा थोड़ा । कुछ कुछ ।

असम्बद्ध (वि०) १ जो परस्पर सम्बन्ध युक्त न
हो । बेमेल । २ बेहुदा । वाहियात । जिसका
कुछ अर्थ न हो । ३ अनुचित । गलत ।

असम्बन्ध (वि०) बेमेल । सम्बन्ध रहित ।

असम्बाध (वि०) १ जो सङ्कीर्ण न हो । प्रशस्त ।
चौड़ा । २ जो मनुष्यों की भीड़भाड़ से भरा
न हो । एकान्त । ३ खुला हुआ । जहाँ हरेक की
गम्य हो ।

असम्भव (वि०) जो सम्भव न हो । जो हो न
सके । नामुमकिन ।

असम्भव्य } (वि०) १ नामुमकिन । अस-
असम्भाविन् } भव । २ अवोधगम्य ।

असम्भावना (स्त्री०) सम्भावना का अभाव ।
अभिविषयता । अनहोनापन ।

असम्भृत (वि०) १ जो बनावटी उपायों से न लाया
गया हो । जो बनावटी न हो । नैसर्गिक । अकु-
त्रिम । सहज । २ जो भली भाँति पाला पोसा न
गया हो । [२ अनभिमत । विरुद्ध ।

असम्मत (वि०) १ जो पसंद न हो । नापसंद ।
असम्मतः (पु०) बैरी । विरोधी । (अनुदोषैरसम्मतान्)
—आदायिन्, (वि०) चोर ।

असम्मतिः (स्त्री०) १ सम्मति का अभाव । विरुद्ध
मत या राय । २ नापसंदगी । अरुचि ।

असम्मोहः (पु०) १ मोह का या भ्रम का अभाव ।
२ दृढ़ता । शान्ति । चित्त की स्थिरता । ३ वास्त-
विक ज्ञान ।

असम्यक् (वि०) [स्त्री०—असमीची] १
खराब । कुत्सित । अनुचित । अशुद्ध । २
असम्पूर्ण । अधूरा ।

असलम् (न०) १ लोहा । २ किसी अस्त्र को
छोड़ते समय पड़ा जाने वाला संग्र विशेष । ३
हथियार ।

असवर्ण (वि०) भिन्न जाति या वर्ण का ।
असह (वि०) असह्य । जो सहा न जाय । जो
बरदाश्त न हो । [ईर्ष्या ।

असहन (वि०) असहिष्णु । ईर्ष्यालु । डाही ।
असहनः (पु०) शत्रु । बैरी ।

असहनम् (न०) असहनशोलता । असन्तोष ।

असहनीय } जो सहन न किया जा सके ।
असहितव्य }
असहा

असहाय (वि०) १ मित्रशून्य । एकान्ती । अकेला ।
२ बिना साथी संगी या सहायक का । [अगोचर ।

असाक्षात् (अव्यया०) जो नेत्रों के सामने न हो ।
असाक्षिक (वि०) [स्त्री०—असाक्षिकी] जिसका
कोई गवाह न हो ।

असाक्षिन् (वि०) १ जो चरमदीद गवाह न हो ।
२ जिसकी गवाही प्रमाण स्वरूप ग्रहण न की
जाय । ३ जो किसी प्रामाणिक पत्र को प्रामाणित
करने का अधिकारी न हो ।

असाधनीय } (वि०) १ जो साध्य न हो । जिस-
असाध्य } पर वश न चले । सिद्ध न होने
योग्य । २ जो ठीक न हो ।

असाधारण (वि०) असामान्य । अपूर्व । विलक्षण ।
 असाधारणः (पु०) न्याय में सत्य और विपक्ष ।
 असाधु (वि०) १ जो साधु न हो । अप्रिय । २ दुष्ट ।
 ३ असचरित्र । ४ अपभ्रंश । अशुद्ध ।
 असामयिक (वि०) [स्त्री०—असाभयिकी,] बे
 अवसर का । बिना समय का । बेवक्त का ।
 असामान्य (वि०) असाधारण । विलक्षण ।
 अपूर्व ।
 असामान्य (न०) विलक्षण या विशेष सम्पत्ति ।
 असाम्प्रत (वि०) अयोग्य । अनुचित । अयुक्त ।
 कालान्तर । [अयोग्यता से ।
 असाम्प्रतम् (अव्यया०) अनुचित रूप से ।
 असार (वि०) १ सारहीन । २ व्यर्थ । निष्क्रमा ।
 ३ जो लाभदायक न हो । ४ निर्बल । कमजोर ।
 असारः (पु०) १ वेङ्गलूरी हिरसा । अनाव-
 असारं (न०) १ एक अंश । २ रेंडी का पेड़ । ३
 ऊँद या अगर की लकड़ी ।
 असारता (स्त्री०) १ सारहीनता । निस्सारता । तत्त्व-
 शून्यता । २ निरर्थकता । तुच्छता । ३ मिथ्यात्व ।
 असाहसं (न०) वेग या प्रचण्डता का अभाव ।
 सुशीलता ।
 अस्तिः (पु०) १ तलवार । २ छुरी जो जानवरों
 को हलाल करने के लिये इस्तेमाल की जाती है ।
 —गमङ्कः, (पु०) छोटा तकिया जो गालों के
 नीचे रखा जाता है ।—जीविन, (वि०) तल-
 वार के कर्म से आजीविका करने वाला ।—वृष्टः,
 —दृष्टकः, (पु०) मगर । घड़ियाल ।—दन्तः,
 (पु०) मगर । घड़ियाल । नक्र ।—धारा,
 (स्त्री०) तलवार की धार ।—धारावतः,
 (न०) १ किसी किसी के मतानुसार एक बात
 विशेष, जिसमें तलवार की धार पर खड़ा होना
 पड़ता है । २ अन्य मतानुसार खुवती स्त्री के
 साथ सदैव रह कर भी उसके साथ मैथुन करने
 की इच्छा को रोकना । (आलं०) कोई भी असाध्य
 या असम्भव कार्य ।—धावः, —धावकः, (पु०)
 सिंगलीगर । हथियार साफ करने वाला ।—धेनुः,
 —धेनुका, (स्त्री०) छुरी । छुरा ।—पत्रः, (पु०)
 १ ऊल । ईल । गन्ना । २ वृक्ष विशेष जो अघो-

खों में उत्पन्न होता है ।—पत्रं, (न०) तलवार
 की धार ।—पुच्छः, —पुच्छकः, (पु०) सूँस
 संगमाही ।—पुत्रिका, —पुत्री, (स्त्री०) छुरी ।
 —मेदः, (पु०) सड़ा हुआ खदिर ।—हृत्, (न०)
 छुरी या तलवार की लड़ाई ।—हेतिः,
 (पु०) तलवार चलाने वाला । तलवार बहा-
 वुर । [का भाग ।

असिकं (न०) निचले ओठ और छुड़ी के बीच
 असिकी (स्त्री०) १ अन्तःपुर की युवती परिचारिका
 या दासी । २ पंजाब की एक नदी का नाम ।

असिकका (स्त्री०) युवती दासी ।

असित (वि०) जो सफेद न हो । काला ।—अभ्युजं,
 —उत्पलं, (न०) नील कमल ।—अर्विसु,
 (पु०) अग्नि ।—अश्मन, (पु०)—उपलः,
 (पु०) कालोहानीला पत्थर ।—केशा, (स्त्री०)
 काले बालों वाली ।—गिरिः, (स्त्री०)—नगाः,
 (पु०) नीलपर्वत । पर्वत विशेष ।—ग्रीव,
 (वि०) काली गर्दन वाला ।—ग्रीवः, (पु०)
 अग्नि ।—नयन, (वि०) काले नेत्रों वाली ।—
 पक्षः, (पु०) अधियारा पाख ।—फलं, (न०)
 सीध नारियल ।—मृगः, (पु०) काला हिरन ।
 कृष्णमृग ।

असितः (पु०) १ काला या नीला रंग । २ कृष्ण
 पक्ष । ३ शनिग्रह । ४ काला साँप ।

असिता (स्त्री०) १ नील का पौधा । २ कन्या जो
 अन्तःपुर में रहती है (और जिसके बाल अधिक
 होने पर भी सफेद नहीं होते) । ३ यमुना नदी ।

असिद्ध (वि०) १ जो सिद्ध अर्थात् पूरा न हुआ हो ।
 २ अधूरा । अपूर्ण । ३ अप्रमाणित । ४ कच्चा ।
 अनपका । ५ जिसका परिणाम कुछ न हो ।

असिद्धः (पु०) न्यायानुसार हेतु के तीन दोष । वे
 तीन दोष ये हैं—आश्रयासिद्ध । स्वरूपासिद्ध ।
 न्यायतासिद्ध ।

असिद्धिः (स्त्री०) १ अप्राप्ति । अनिष्पत्ति । २ कच्चा-
 पन । कच्चाई । ३ अपूर्णता ।

असिरः (पु०) १ किरण । २ तीर । ३ चटखनी ।

असु (न०) दुःख । शोक ।—भङ्गः, (पु०)
 १ जीवन का नाश । २ जीवन की आशङ्का या

भय ।—भुत्, (पु०) जीवधारी । प्राणी ।—
सम, (वि०) प्राणोपम ।—समः, (पु०)
पति । प्रेमी ।

असुः (पु०) १ स्वांस । जीवन । आध्यात्मिक
जीवन । २ मृतात्माओं का जीवन । ३ (बहुवच-
नान्त) प्राणादि पांच वायु ।

असुमत (वि०) जीवित । स्वांसयुक्त । (पु०)
१ प्राणधारी । जीवधारी । २ जीवन ।

असुख (वि०) १ दुःखी । शोकाकुल । २ (जिसका
पाना) सहज नहीं । कठिन ।

असुखम् (न०) दुःख । शोक । पीड़ा ।—जीविका,
(स्त्री०) दुःखमय जीवन ।

असुखिन् (वि०) दुःखी । शोकाकुल । [न हो ।

असुत (वि०) वेधौलाद । जिसके कोई बाल बच्चा

असुरः (पु०) १ दैत्य । राक्षस । दानव । २ भूत ।
प्रेत । ३ सूर्य । ४ हाथी । ५ राहु की उपाधि ।

६ बादल ।—अधिपः,—राजः,—राजः, (पु०)

१ असुरों के राजा । २ प्रह्लाद के पौत्र राजा बलि

की उपाधि ।—आचार्यः,—गुरुः, (पु०) १ शुक्रा-
चार्य । २ शुक्रमह ।—आह्वं, (न०) दीन और

ताँबे को मिला कर बनायी हुई धातु विशेष ।—

द्विषः, (पु०) असुरों के बैरी । अर्थात् देवता ।—

रिपुः,—सूदनः, (पु०) असुरों का नाश करने

वाले । विष्णु भगवान की उपाधि ।—हन्, (पु०)

१ असुरों को मारने वाला । २ अग्नि, इन्द्र की

उपाधि । ३ विष्णु का नाम ।

असुरा (स्त्री०) १ राशि । २ राशिचक्र सम्बन्धी
एक राशि । ३ बेरया ।

असुरी (वि०) दानवी । राक्षसी । असुर की स्त्री ।

असुर्य (वि०) असुरों का । आसुरी ।

असुरसा (स्त्री०) पौधे का नाम । तुलसीवृक्ष की
अनेक जातियाँ ।

असुलभ (वि०) जो सहज में न मिल सके ।

असुसूः (पु०) सीर । बाण ।

असुहृद् (पु०) शत्रु । बैरी ।

असुल्लगाम् (न०) बेहज्जती । अप्रतिष्ठा । [बंजर ।

असूत } (वि०) जिसमें कुछ भी न हो । बाँस ।

असूतिक }

असूतिः (स्त्री०) १ वाक्पन । बंजरपन । २ अद्वचन ।
स्थानान्तरितकरण ।

असूयति (क्ति० परस्मै०) १ डाह करना । ईर्ष्या करना ।
२ अप्रसन्न होना । नाराज़ होना । तिरस्कार
करना ।

असूयक (वि०) १ ईर्ष्यालु । डाही । अपवादरत ।
हस्ताशील । २ असन्तुष्ट । अप्रसन्न ।

असूयनम् (न०) निन्दा । अपवाद । २ ईर्ष्या । डाह ।

असूया (स्त्री०) १ डाह । ईर्ष्या । असहिष्णुता ।
२ निन्दा । अपवाद । ३ क्रोध । रोष ।

असूयुः (पु०) १ डाही । ईर्ष्यालु । २ अप्रसन्न ।

असूर्य (वि०) सूर्यरहित ।

असूर्यपश्य (वि०) जो सूर्य को भी न देखे ।

असूर्यपश्या (स्त्री०) १ सती पतिव्रता स्त्री । २ राज-
प्रसाद की स्त्रियाँ । रत्नवास की रानियाँ, जिन्हें सूर्य
तक के दर्शन मिलना दुर्लभ है ।

असूज् (न०) १ खून । रक्त । लोहू । २ भङ्गलग्रह ।

३ केसर ।—करः, (पु०) रस ।—धरा, (स्त्री०)

चर्म । चमड़ा ।—धारा, (स्त्री०) लोहू की धार ।

—पः,—पाः, (पु०) राक्षस । रक्त पीने वाला ।

—वहा, (स्त्री०) रक्तधमनी । नाड़ी ।—विमो-
क्षणं (न०) रक्त का बहना ।—आवः,—आवः

(पु०) रक्त का बहना ।

असेचन (वि०) अत्यन्त प्रिय । जिसे देखते

असेचनक (वि०) देखते कभी जी न भरे ।

असौष्टव (वि०) १ सौन्दर्य या मनोहरता का

अभाव । २ बदसूरत । विकलाङ्ग ।

असौष्टवम् (न०) १ निकम्मापन । गुणाभाव ।

२ विकलाङ्गता । बदसूरती ।

अस्वलित (वि०) १ जो हिले नहीं । स्थिर ।

स्थायी । २ बेचुटीला । ३ सावधान ।

अस्त (व० क०) १ फैला हुआ । डाला हुआ ।

त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । २ समाप्त । ३ भेजा

हुआ ।—कस्या, (वि०) दयाहीन । निष्ठुर ।—

धी, (वि०) मूर्ख ।—व्यस्त, (वि०) इधर

उधर गड़बड़ ।—संख्य, (वि०) असंख्य ।

अस्तः (पु०) १ अस्ताचल पर्वत । पश्चिमाचल ।

२ सूर्य का विपना । ३ विपना तिरोहित होना

पात । हास ।—गमनं, (न०) १ अस्त होना ।
अदृष्ट होना । २ मृत्यु । जीवन रूपी सूर्य का
अस्त होना ।

अस्तमनं (न०) (सूर्य का) डूबना ।

अस्तमयः (पु०) १ (सूर्य का) डूबना । २ नाश ।
अन्त । हास । हानि । ३ पात । वशस्व ।
४ असित होना ।

अस्ति (अव्यया०) है । स्थिति । विद्यमानता ।
रहना ।—नास्ति (अव्यया०) सन्दिग्ध । कुछ
सही कुछ गलत ।

अस्तिरर्थं (न०) विद्यमानता । सत्ता ।

अस्तेयं (न०) चोरी न करना । अचौर्य ।

अस्थानम् (न०) कलङ्क । अपवाद ।

अस्त्रं (न०) फेंक के मारे जाने वाला हथियार, तलवार,
बरछी भाला । बाण आदि ।—अगारं,—आगरं,
(न०) सिलहखाना । हथियारों का भाण्डार ।—
कण्टकः, (पु०) तीर । बाण ।—विकित्सकः,
(पु०) जराह ।—त्रिकित्सा, (स्त्री०) जराही ।
—जीवः,—जीविन्, (पु०)—धारिन्, (पु०)
सिपाही ।—निवारणं, (न०) अस्त्र के चार को
रोकना ।—मंत्रः, (पु०) किसी अस्त्र के छोड़ने
या लौटाने के समय पढ़ा जाने वाला मंत्र विशेष ।
—मार्जः,—मार्जकः, (पु०) सिंगलीगर ।—
युद्धं, (न०) हथियारों की लड़ाई ।—लाघवं,
(न०) अस्त्र चलाने का कौशल ।—विद्, (वि०)
अस्त्रविद्या का जानने वाला ।—विद्या, (स्त्री०)
—शास्त्रं, (न०)—वेदः, (पु०) अस्त्रविद्या ।
—वृष्टिः, (स्त्री०) अस्त्रों की वर्षा ।—शिक्षा,
(स्त्री०) सैनिक अभ्यास ।

अस्त्रिन् (वि०) अस्त्रों से लड़ने वाला । धनुर्धर ।

अस्त्री (स्त्री०) १ स्त्री नहीं । २ व्याकरण में पुल्लिङ्ग
और नपुंसक लिङ्ग ।

अस्थान (वि०) अति गहरा ।

अस्थानं (न०) १ बुरी या गलत जगह । २ अनुचित
स्थान । अनुचित वस्तु । अनुचित अवसर ।
बेमौक़ा ।

अस्थाने (अव्यया०) बेमौक़े । कुठौर । ठीक स्थान
पर नहीं । अयोग्य पदार्थ ।

अस्थावर (वि०) चर । हिलने डुलने वाला । जो
अचर न हो । जड़म ।

अस्थि (न०) १ हड्डी । २ फल का छिलका या
गुठली ।—कृत,—तेजस्, (पु०) ।—सम्भवः,
—सारः,—स्नेहः, (पु०) गूदा ।—जः, (पु०)
१ गूदा । २ वज्र ।—तुण्डः, (पु०) पक्षी ।
चिड़िया ।—धन्वन्, (पु०) शिव जी का
नाम ।—पक्षर, (पु०) १ हड्डियों का पिंजरा ।
ठठरी । कंकाल ।—प्रक्षेपः, (पु०) हड्डियों के
गङ्गा या अन्य किसी तीर्थ के जल में डालने की
क्रिया ।—भक्षः, (पु०) भुक्, हड्डी खाने
वाला । कुत्ता । भक्षः (पु०) हड्डी का टूट
जाना ।—माला, (स्त्री०) १ हड्डियों की माला ।
२ हड्डियों की पंक्ति ।—मालिन्, (पु०) शिव
जी का नाम ।—शेष, (वि०) लटकर हड्डी मात्र
रह जाना ।—सञ्चयः, (पु०) १ शवदाह के
बाद जली हुई हड्डियों को बटोरना । २ हड्डियों
का ढेर ।—सन्धिः, (स्त्री०) जोड़ । अन्य-
संयोग । पर्व ।—समर्पणं (न०) हड्डियों का
गङ्गाप्रवाह ।—स्थूणाः, (पु०) शरीर ।

अस्थितिः (स्त्री०) दृढ़ता का अभाव । (आलं०)
शिष्टता का अभाव । अच्छे चालचलन का
अभाव ।

अस्थिर (वि०) जो स्थायी या दृढ़ न हो । चञ्चल ।
अस्पर्शनं (न०) अतंसर्ग । किसी वस्तु का स्पर्श
बचाना ।

अस्पष्ट (वि०) १ जो साफ़ (समझने या देखने
योग्य) न हो । २ सन्दिग्ध । [पतित ।

अस्पृश (वि०) जो छूने योग्य न हो । २ अपवित्र ।

अस्फुट (वि०) अस्पष्ट । सन्दिग्ध ।

अस्फुटं (न०) सन्दिग्ध भाषण ।—फलं, (न०)
सन्दिग्ध या अस्पष्ट परिणाम ।

अस्मद् (वि०) आत्मवाची सर्वनाम । देहाभिमानी
जीव । मैं । हम ।

अस्मदीय (वि०) हमारा । हम लोगों का ।

अस्माकं (सर्व०) हमारा ।

अस्मार्त (वि०) १ जो स्मरण के भीतर न हो ।
स्मरणातीत कालवाची । २ आईन विरुद्ध । धर्म

शास्त्र अर्थात् स्मृतियों के विरुद्ध । जो स्मार्त-
सम्प्रदाय का न हो । [सुलकङ्कपन ।
अस्मृतिः (स्त्री०) स्मरण शक्ति का अभाव । विस्मृति ।
अस्मि (अव्यया०) मैं ।
अस्मिता (स्त्री०) १ अहङ्कार । २ योगशास्त्रानुसार
पाँच प्रकार के क्लेशों में से एक । द्रव्य, द्रष्टा और
दर्शनशक्ति को एक मानना अथवा पुरुष (आत्मा)
और बुद्धि में अभेद मानना । ३ सांख्य में इसे
मोह और वेदान्त में इसे हृदयग्रन्थि कहते हैं ।
अस्त्रः (पु०) १ कोना । कोण । २ सिर के बाल ।
—कण्ठः (पु०) तीर । —जं (न०) मांस ।
गोरत । —पः, (पु०) खून पीने वाला राक्षस ।
—पा, (स्त्री०) जोंक । —मातृका, (स्त्री०)
अन्नरस । अर्द्धजीर्ण सुक्तद्रव्य ।
अस्त्रं (न०) १ आँसू । २ रक्त । खून ।
अस्त्र (वि०) १ जीवनोपाय विहीन । अकिञ्चन ।
निर्धन । गरीब । २ निज का नहीं । [वश्य ।
अस्वतंत्र (वि०) १ आश्रित । पराधीन । २ नञ् ।
अस्वप्न (वि०) जागता हुआ । अनिद्रित ।
अस्वप्नः (पु०) देवता । [२ व्यञ्जन ।
अस्वरः (पु०) १ मन्दस्वर । धीमी आवाज़ ।
अस्वरं (अव्यया०) जोर से नहीं । धीमी आवाज़ में ।
अस्वर्ग्य (वि०) जिससे स्वर्ग की प्राप्ति न हो ।
अस्वाध्यायः (पु०) १ जिसने वेदाध्ययन आरम्भ न
किया हो । जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ
हो । २ अध्ययन में रुकावट ।
अस्वस्थ (वि०) बीमार । रोगी । भला चंगा नहीं ।
अस्वामिन् (वि०) जो किसी वस्तु का स्वामी या
मालिक न हो । —विक्रयः, (पु०) बिना मालिक
की विक्री ।
अस्वैरिन् (वि०) परतंत्र । पराधीन ।
अह (धा० आत्म०) १ मिल कर गाना । २ बनाना ।
सङ्कलन करना । ३ जाना । ४ चमकना ।
अह (अव्यया०) प्रशंसा ; वियोग; दृढ़ सङ्कल्प,
अस्वीकृति ; भेजना; पद्धति का त्याग, बोधक
अन्यथ ।
अहंयु (वि०) अभिमानी क्रोधी स्वार्थी

अहत (वि०) १ जो इत या चोटिल न हो । कोरा ।
अनधुला हुआ । नवीन ।
अहतं (न०) कोरा या अनधुला वस्त्र ।
अहन् (न०) [कर्ता—अहः, अह्नी—अहनी,
अहानि, अह्ना, अहोभ्यां आदि]
१ दिवस (जिसमें रात भी शामिल है)
२ दिवस-काल । (समास के अन्त में अहन् का
अहः; अहं, या अन्ह, हो जाता है । इसी प्रकार
समास के आदि में इसके रूप अहम्, या
अहरः, होते हैं जैसे अहःपति या अहर्पति,]
—करः, (पु०) सूर्य । —गणः, (पु०) १ दिनों
का समूह । २ तीस दिन का मास । —दिवं,
(अव्यया०) नित्य प्रति । प्रति दिन । दिनों
दिन । —निशं, (अव्यया०) दिन रात । —
पतिः, (पु०) सूर्य । —बान्धवः, (स्त्री०)
—मणिः, (स्त्री०) सूर्य । —मुखं, (न०)
दिन का आरम्भ । सबेरा । —शेषः, (पु०) —शेषं,
(न०) सायंकाल । सांफ । शाम ।
अहम् (सर्वनाम) १ मैं । आत्मसम्बन्धी । २ अभि-
मान । धमंड । अहङ्कार । —अप्रिका, (स्त्री०)
श्रेष्ठता के लिये होड़ । प्रतिद्वन्द्वता । —अहमह-
मिका, (स्त्री०) १ प्रतिद्वन्द्वता । स्पर्धा । ईर्ष्या ।
२ अहङ्कार । ३ सैनिक स्पर्धाकारी । —कारः,
(पु०) १ अहङ्कार । आत्मश्लाघा । २ अभिमान ।
क्रोध । —कारिन्, (वि०) अभिमानी । आत्मा-
भिमानी । आत्मश्लाघी । —कृतिः, (स्त्री०)
अहङ्कार । अभिमान । —पूर्व, (वि०) प्रथम
होने की अभिलाषा वाला । —पूर्विका, —
—प्रथमिका, (वि०) १ स्पर्धा । प्रतिद्वन्द्वता ।
२ आत्मश्लाघा । —भद्रं, (न०) आत्मश्लाघा । —
भावः, (पु०) अभिमान । अहङ्कार । —
मतिः (स्त्री०) १ अविद्या । अज्ञान । अन्य में
अन्य के धर्म को दिखाने वाला ज्ञान । २ श्लाघा ।
अभिमान । अहङ्कार ।
अहरणीय (वि०) १ जो चुराया न जा सके ।
अहार्य (वि०) जो स्थानान्तरित न किया जा सके ।
जो ले जाया न जा सके । २ भक्त । ३ दृढ़ । अस्-
कोची । स्थिर प्रतिज्ञ ।

अहल्य (वि०) अनजुता हुआ ।

अहल्या (स्त्री०) गौतम की पत्नी । इसको इसके पति के शाप से भगवान् श्रीरामचन्द्र जी ने मुक्त किया था ।—जारः, (पु०) इन्द्र ।—नन्दनः, (पु०) सतानन्द ऋषि ।

अहह (अन्यथा०) विस्मय, एवं खेद व्यञ्जक सम्बोधन ।

अहर्दयः (पु०) पर्वत । पहाड़ ।

अहिः (पु०) १ सर्प । साँप । २ सूर्य । ३ राहुग्रह । ४ वृत्रासुर । ५ घोखेवाज । दगावाज । ६ मेघ । बादल । ७ सीसक । ८ भोगी । ९ नीच । १० अश्लेषा नक्षत्र । ११ दुष्ट मनुष्य । १२ जल । १३ पृथिवी । १४ दुवार गौ । १५ नाभि ।—कान्तः, (पु०) पवन । हवा ।—कोषः, (पु०) साँप की कैचुली ।—कुञ्जकः, (न०) कुकुरमुता ।—जित्, (पु०) १ श्री कृष्ण का नाम । २ इन्द्र का नाम ।—तुगिडकः, (पु०) साँप पकड़ने वाला कालवेष्टिथा ।। महुअर बजाने वाला । आद्गर । बाजीगर ।—द्विष्, —दुह्, —मार, —रिपु, विद्विष्, (पु०) गरुड़ जी का नाम । २ न्योला । ३ मोर ।—नकुलिका, (स्त्री०) सर्प और न्योले की स्वाभाविक शत्रुता ।—निर्मोकः, (पु०) साँप की कैचुली ।—पतिः, (पु०) १ सर्पराज । वासुकी । २ कोई भी बड़ा सर्प । पुत्रकाः, (पु०) नाव विशेष । जो सर्प के आकार की होती है ।—फेनः (पु०)—फेनम्, (न०) अफीम ।—भयं, (न०) १ किसी द्विपे सर्प का भय । २ दगा या विरवासघात का भय । मित्र से भय ।—भुज्, (पु०) १ गरुड़ का नाम । २ मोर । ३ न्योला । नकुल ।—भृत् (पु०) शिव ।

अहिंसा (स्त्री०) मन, वच, कर्म से किसी प्राणी को पीड़ा न देना ।

अहिंस (वि०) अहिंसक । जो हिंसा न करे । निर्दोष ।

अहिकः (पु०) अंधा सर्प ।

अहित (वि०) १ जो रखा न गया हो । जो नियत न हो । २ अयोग्य । अनुचित । ३ हानिकारी । अहितकर । ४ प्रतिकूल । ५ बैरी । विरोधी ।

अहितः (पु०) शत्रु । बैरी ।

अहितम् (न०) हानि । नुकसान । चति ।

अहिम् (वि०) जो ठंडा न हो । गर्म ।—अंशु, —करः,—तेजस्, धुतिः,—रविः (पु०) सूर्य ।

अहीन (वि०) १ समूचा । सम्पूर्ण । अन्यून । २ बड़ा । जो छोटा न हो । ३ अधिकार में रखने वाला । जो किसी वस्तु से वञ्चित न हो । ४ जो जातिच्युत या पतित न हो ।

अहीनः (पु०) } एक यज्ञ जो कई दिनों तक होता है ।
अहीनं (न०) }

अहीरः (पु०) ग्वाला । गौ चराने वाला । अहीर ।

अहीरणि (पु०) कुचलेह । दुम्हा साँप ।

अहीश्रुवः (पु०) शत्रु । बैरी ।

अहु (वि०) सङ्गीर्ण । व्यास ।

अहुत (वि०) जो हवन न किया गया हो ।

अहुतः (पु०) ध्यान । खव । स्वाध्याय ।

अहे (अन्यथा०) धिक्कार, खेद और वियोग सूचक अन्यथ ।

अहेतुः (वि०) अकारण । स्वेच्छापूर्वक । मनमाना ।

अहेतुक (वि०) १ विना कारण के । २ फल की इच्छा से रहित । ३ विना किसी तात्पर्य के ।

अहो (अन्यथा०) एक अन्यथ जो निम्न भावों का श्रोतक हैः— आश्चर्य, शोक, खेद प्रशंसा, स्पर्धा, ईर्ष्या, सन्तोष, थकावट, सम्बोधन, तिरस्कार ।

अन्हाय (अन्यथा०) तुरन्त । तेज़ी से । फुर्ती से ।

अह्वय, } (वि०) निर्लज्ज । अभिमानी ।
अह्वयाण }

अहि (वि०) १ मोटा । २ विषयी । ३ बुद्धिमान । ४ कवि ।

अहोः (वि०) निर्लज्ज ।

अहोः (वि०) बौद्ध भिक्षुक ।

आ

आ वर्ण माला का दूसरा अक्षर तथा स्वर । यह 'अ' का दीर्घ रूप है । आर्ह । अनुमति । सच्चुच । इसका प्रयोग अनुकंपा, दया, वाक्य, समुच्चय, थोड़ा, सीमा, व्याप्ति, अवधि से और तक के अर्थ में होता है । जब यह क्रिया अथवा संस्थावाचक शब्दों के पूर्व लगाया जाता है, तब यह समीप, सम्मुख, चारों ओर से आदि अर्थ को बतलाता है । वैदिक भाषा में 'आ' सप्तम्यन्त शब्द के पहले— में और आदि का अर्थ बतलाता है ।

आः (पु०) महादेव । (स्त्री०) लक्ष्मी ।

आकत्यनम् (न०) डींग । शेखी । बड़ाई ।

आकम्पः (पु०) १ थोड़ा हिलाना डुलाना । २ हिलाना कापना ।

आकम्पित (वि०) कम्पयुक्त, काँपता हुआ ।
आकम्प्य (वि०) आंदोलित । [क्रिया ।

आकृत्यं (न०) किसी वस्तु को अपवित्र कर डालने की आकरः (पु०) १ खान । २ समूह । ३ सर्वोत्कृष्ट । सर्वोत्तम । [द्वारा नियुक्त राजपुरुष ।

आकरिकः (पु०) खान की निगरानी के लिये राजा

आकरिन (वि०) १ खान से निकला हुआ । खनिज पदार्थ । २ कुलीन ।

आकर्णनम् (न०) सुनना । कान करना ।

आकर्षः (पु०) १ खिचाव । २ दूर खींच ले जाना । ३ (धनुष को) तानना । ४ वशीकरण । ५ पोंसे का खेल । ६ पोंसा । ७ चौपड़ की बिछाई । ८ ज्ञानेन्द्रियः ९ कसौटी । [वाला ।

आकर्षक (वि०) खींचने वाला । आकर्षण करने

आकर्षकः (वि०) चुम्बक पत्थर ।

आकर्षणम् (न०) १ खिचाव । २ तंत्र शास्त्र का एक प्रयोग विशेष ।

आकर्षणी (स्त्री०) लक्ष्मी । ऊँचाई से फलफूल पत्ती तोड़ने की लंबी और नोंक पर मुड़ी हुई लकड़ी विशेष ।

आकर्षिक (वि०) [स्त्री०—आकर्षिकी] १ चुम्बक का पत्थर का २ खींचने वाला ।

आकर्षिन् (वि०) खींचने वाला ।

आकलनम् (न०) १ पकड़ । २ गणना । गिनती । ३ इच्छा । अभिलाषा । ४ पूछताछ । ५ समझ बुझ ।

आकल्पः (पु०) १ आभूषण । शृङ्गार । सजावट । २ पोशाक । परिच्छद । ३ रोग । बीमारी ।

आकल्पकः (पु०) १ खेद पूर्वक स्मरण । २ मूर्च्छा । ३ हर्ष या प्रसन्नता । ४ अन्धकार । ५ गाँठ या जोड़ ।

आकषः (पु०) कसौटी । [(कसौटी पर)

आकधिक (वि०) जाँचना । परीक्षा करना

आकस्मिक (वि०) [स्त्री०—आकस्मिकी] १ अचानक । अकस्मात् । सहसा । आशातीत । २ अकारण ।

आकांक्षा (स्त्री०) १ अभिलाषा । इच्छा । बांछा । चाह । २ अभिप्राय । तात्पर्य । इरादा । ३ अनुसन्धान । ४ अपेक्षा ।

आकायः (पु०) १ चिता की अग्नि । २ चिता ।

आकारः (पु०) १ शङ्कु । स्वरूप । आकृति । सुरत । २ डीलडौल । क्रद । ३ वनावट । संगठन । ४ चेष्टा । ५ सङ्केत ।

आकरण }
आकारण } १ आनन्दन । २ ललकार ।
आकरणा }
आकारणा }

आकालः (पु०) ठीक समय ।

आकालिक (वि०) [स्त्री०—आकालिकी] १ क्षणिक । शीघ्र नष्ट होने वाली । २ बेफसल की (वस्तु) ।

आकालिकी (स्त्री०) बिजली ।

आकाशः (पु०) १ आसमान । गगन । व्योम ।

आकाशं (न०) २ आकाश तत्त्व । ३ शून्य स्थान । शून्यता । ४ स्थान । ५ ब्रह्म । ६ प्रकाश । स्वच्छता ।—ईशः, (पु०) १ इन्द्र । २ कोई भी अनाथ व्यक्ति जैसे स्त्री, बालक । जिसके पास आकाश को छोड़ अन्य कोई सम्पत्ति ही न हो ।—कक्षा, (स्त्री०) चित्ति ।—कल्प, (पु०)

ब्रह्म ।—गः, (पु०) पत्नी ।—गा, (स्त्री०)
आकाशगंगा ।—चन्द्रसः, (पु०) चन्द्रमा ।—
जनिन्, (पु०) खिड़की । करोखा ।
दीपः,—प्रदीपः, (पु०) जैची बत्ती पर लटका
कर जो दीपक कार्तिक मास में अगवान जन्मी-
नारायण की प्रसन्नता सम्पादनार्थ जलाया जाता है
उसे आकाशदीप कहते हैं ।—भाषितं, (न०)
किसी नाटक के अभिनय में कोई पात्र जब बिना
किसी प्रश्नकर्ता के आकाश की ओर देख कर, आप ही
आप प्रश्नकर्ता और आप ही उसका उत्तर देता है ;
तब ऐसे प्रश्नोत्तर को आकाशभाषित कहते हैं ।
—यानं, (न०) व्योमयान । विमान । ऐरोप्लेन ।
—रत्निन्, राजप्रसाद की छार दीवाली पर का
चौकीदार ।—वाणी, (स्त्री०) देववाणी । वह
वाणी जिसका बोलने वाला न देख पड़े ।—
मण्डलं (न०) नभमण्डल ।—स्कटिकः, (पु०)
ओले ।

आकिचनं }
आकिञ्चनं } दरिद्रता । धनहीनता । गरीबी ।
आकिञ्चन्यं }
आकिञ्चन्यं }

आकीर्णं (व० कृ०) बिखरा हुआ । फैला हुआ ।
व्याप्त ।

आकुञ्चनम् (न०) सिकोड़न । मोड़न । समेटन ।
फैले हुए को एकत्र करने की क्रिया ।

आकुल (वि०) १ व्याप्त । सङ्कल । भरा हुआ ।
परिपूर्ण । २ व्यग्र । व्यस्त । ३ उद्विग्न । बुद्ध ।
४ विह्वल । कातर । अस्वस्थ ।

आकुलं (न०) आबादी । आबाद जगह ।

आकुलित (वि०) दुःखी । व्यग्र । उद्विग्न । विह्वल ।

आकुण्ठित (वि०) कुछ कुछ सकुड़ा हुआ । कुछ कुछ
सिमटा हुआ ।

आकूर्तं (न०) १ आशय । अभिप्राय । २ भाव । ३
आश्चर्य । ४ इच्छा । वाञ्छा ।

आकृतिः (स्त्री०) १ बनावट । गठन । ढांचा । अवयव ।
विभाग । २ मूर्ति । रूप । ३ चेहरा । मुख । ४
चेष्टा । ५ २२ अक्षरों का एक वर्णवृत्त ।

आकृतिरूपा (स्त्री०) धौसा नाम की एक लता ।

आकृष्टिः (स्त्री०) १ खिंचाव । आकर्षण । २ माध्या
कर्षण । ३ (धनुष का) दानना ।

आक्रेकर (वि०) अधमुँदा ।

आकौकैरः (पु०) मकर राशि ।

आक्रन्दः (पु०) १ रुदन । रोना । चीखना । २ बुलाना
आह्वान करना । ३ शब्द । चीख । ४ मित्र ।
प्राणकर्ता । ५ भाई । ६ घोर संयाम । युद्ध ।
रोने का स्थान । ७ कोई राजा जो अपने मित्र राजा
को अन्य राजा की सहायता करने से रोके ।

आक्रन्दनम् (न०) १ विलाप । रुदन । २ बुलाहट ।

आक्रन्दिक (वि०) रोने का शब्द सुन रोने के स्थान
पर जाने वाला ।

आक्रन्दित (व० कृ०) १ गर्जता हुआ । फूट फूट कर
रोता हुआ । २ आह्वान किया हुआ ।

आक्रन्दितम् (न०) चिलाहट । गर्जन । दहाड़ । नाद ।

आक्रमः (पु०) १ समीप आगमन । हम्ला ।

आक्रमणम् (न०) १ आक्रमण । ३ घेरना ।
कब्जा करना । ४ प्राप्त करना । पकड़ लेना । ५
छाप लेना । छा लेना । ६ भारी बोझ से खाद
देने की क्रिया ।

आक्रान्त (व० कृ०) १ पकड़ा हुआ । अधिकार में
लिया हुआ । २ पराजित । हराया हुआ । छिंका
हुआ । असित । ३ प्राप्त । अधिकारभुक्त ।

आक्रान्तिः (स्त्री०) १ पदार्पण । रूचना । उपर रखना ।
ढेकना । २ दबाव । ज़दाव । पकड़न । ३
चढ़न । आगे निकल जाने की क्रिया । ४ शक्ति ।
सामर्थ्य । बल । [करने वाला ।

आक्रमकः (पु०) आक्रमण करने वाला । हम्ला

आक्रीडः (पु०) १ खेल । दिलबहलाव ।

आक्रीडम् (न०) १ आनन्द । २ प्रमोद-कानन ।
झीझवन । लीलोद्यान । रमना ।

आकुष्ट (व० कृ०) १ तिरस्कृत । डाँटा डपटा हुआ ।
निन्दा किया हुआ । धिक्कारा हुआ । २ अकोसा
हुआ । शापित । ३ चिन्ताया हुआ । गर्जना किया
हुआ ।

आकुष्ठम् (न०) १ बुलावा । बुलाहट । २ प्रखर
शब्द । गाली गलौज भरी हुई वक्तृता या कथन ।

आक्रोशः (पु०) } १ पुकार । चिन्ताहट । २
आक्रोशनम् (न०) } धिक्कार । कलङ्क । भर्त्सना ।
शाली । ३ शप । अक्रोसा । ४ शपथ । सौम्य ।
आक्रोदः (पु०) नमी । तरी । झिड़काव ।
आक्षय्युतिक (वि०) [स्त्री०—आक्षय्युतिकी]
जुए से समाप्त किया हुआ । जुए से उपज ।
(विरोध या बैर)
आक्षय्यम् (न०) बत । उपवास । झोड़ावारी ।
आक्षय्यपटिकः (पु०) १ जुए खाने का प्रबन्ध कर्ता ।
जुए की हार जीत का निर्णायक । २ न्यायकर्ता ।
निर्णायक ।
आक्षय्यपाद (वि०) [स्त्री०—आक्षय्यपादी] अक्षपाद
या गौतम का सिखलाया हुआ ।
आक्षय्यपादः (पु०) न्यायशास्त्रवादी । नैयायिक ।
आक्षय्यारः (पु०) आरोप । अपवाद दोषारोप ।
(विशेष कर न्यायविचार का)
आक्षय्यारणम् (न०) } कलङ्क । अपवाद । (व्यभि-
आक्षय्यारण (स्त्री०) } चार के लिये) दोषा
रोपण ।
आक्षय्यारित (व० कृ०) १ कलङ्कित । बदनाम किया
हुआ । २ दोषी । अपराधी ।
आक्षय्यिक (वि०) [स्त्री०—आक्षय्यिकी] १ पाँसों
से जुआ खेलने वाला । २ जुए से सम्बन्ध युक्त ।
आक्षय्यिकम् (न०) १ जुए में प्राप्त धन । २ जुए में
किया हुआ ऋण ।
आक्षय्यसिका (स्त्री०) तान या राग विशेष जो किसी
अभिनयपात्र द्वारा उस समय गाया जाय,
जिस समय वह रंगमञ्च के समीप पहुँचे ।
आक्षय्यीव (वि०) १ थोड़ा नशा पिये हुए । २ मद-
माता । नशे में चूर ।
आक्षय्येपः (पु०) १ दूर का फिकाव । उछाल । खिंचाव
अपहरण । २ कटूक्ति । धिक्कार । कलङ्क । शाली ।
ताना । प्रगल्भ भर्त्सना । ३ चित्त विक्षेप । प्रलो-
भन । प्ररोचन । ४ लगाव । चढ़ाना (रंग जैसे) ।
५ किसी ओर सङ्केत करण । (किसी शब्द का अर्थ)
मान लेना । ६ परीखाम निकाल लेना । ७
अमानत । जमा । धरोहर । ८ आपत्ति । सन्देह ।
९ ध्वनि । व्यंग्य ।

आक्षेपकः (पु०) १ फेंकने वाला । २ चित्त विक्षेप-
कारक । ३ आक्षेप करने वाला । दोषी ठहराने
वाला । ३ शिकारी ।
आक्षेपणम् (न०) फेंकाव । उछाल ।
आक्षेपः } (पु०) अक्षरेट का वृत्त ।
आक्षेपः }
आक्षेपनम् (न०) शिकार ।
आखः, आखनः (पु०) कुदाली । लकड़ी की फावड़ी ।
आखण्डलः (पु०) इन्द्र ।
आखनिकः (पु०) १ बेलदार । खानि खोदने
वाला । २ चूहा । ३ सूआ । शूकर । ४ चौर ।
५ कुदाल ।
आखरः (पु०) १ कुदाल । २ बेलदार । खानि खोदने
वाला ।
आख्यातः (पु०) } १ झील । ऐसा जलाशय जो
आख्यातम् (न०) } किसी मनुष्य का बनाया
हुआ न हो ।
आख्यानः (पु०) १ वह जो चारों ओर खोदे । २
कुदाल । ३ बेलदार ।
आख्युः (पु०) १ चूहा । घूस । झुँद । २ चौर ।
३ शूकर । ४ कुदाल । ५ कंजूस ।—उत्तरः,
(पु०) बलमीकि । मृत्तिकाकूट ।—उत्तर्य,
(न०) चूहों का समुदाय ।—गः,—पत्रः,—
रथः,—वाहनः, (पु०) श्रीगणेश जी की
उपाधि; जिनका वाहन चूहा है ।—घातः,
(पु०) शूद्र । डोम ।—पाषाणः, (पु०)
चुम्बक पत्थर ।—भुज,—भुजाः, (पु०)
बिला । बिलार ।
आखेटकः (पु०) शिकार । अहेर ।—शीर्षकः,
(न०) १ चिकना फर्श या ज़मीन । २ खान ।
विवर । गुफा ।
आखेटक (वि०) } शिकार । शृगधा ।
आखेटकम् (न०) }
आखेटकः (पु०) शिकारी ।
आखेटः (पु०) अक्षरेट का वृत्त ।
आख्या (स्त्री०) १ नाम । उपाधि ।
आख्यात (व० कृ०) १ कथित । कहा हुआ ।
उक्त । २ गिना हुआ । पढ़ा हुआ । ३ जाना
सं० श० कौ० १६

हुआ । ज्ञात । ४ (व्याकरण में) साधन किया

हुआ । धातुओं के रूप बनाये हुए ।

आख्यातं (न०) किया ।

“भावप्रधानाख्यात ।”

निरुक्त ।

आख्यातिः (स्त्री०) १ कथन । सूचना । विज्ञप्ति ।

२ नामवरी । कीर्ति । ३ नाम ।

आख्यानम् (न०) १ कथन । घोषणा । विज्ञप्ति ।

सूचना । २ पूर्ववृत्तौक्ति । ३ कहानी । किस्सा ।

४ उत्तर (“प्रश्नाख्यानयोः” पाणिनी अष्टा-
ध्यायी ।)

आख्यानकम् (न०) किस्सा । छोटी कहानी ।

कथानक । उपाख्यान ।

आख्यायक (वि०) कहने वाला ।

आख्यायकः (पु०) १ हस्कारा । २ राजकीय घोषणा
करने वाला या उत्सवादि की व्यवस्था करने वाला ।

आख्यायिका (स्त्री०) एक प्रकार की गद्यमयी
रचना । कहानी । [साहित्यज्ञों ने गद्य रचना के
दो भेद बतलाये हैं । अर्थात् कथा और आख्या-
यिका । बाण के “हर्षचरित” को ऐसे लोग
“आख्यायिका” मानते हैं और कादम्बरी को
कथा । यद्यपि दण्डिन् के मतानुसार इन दोनों में
भेद कुछ भी नहीं है ।

सकथाख्यायिकेत्येका प्रातिः संज्ञाद्वयाङ्गिता ।

काव्यादर्श ।]

आख्यायिन् (वि०) कहने वाला । जताने वाला ।

आख्येय (स० का० कृ०) कहने योग्य । बतलाने
योग्य । जताने योग्य ।

आगतिः (स्त्री०) १ आगमन । २ प्राप्ति । उप-
लब्धि । ३ प्रत्यावर्तन । ४ उत्पत्ति ।

आगन्तु (वि०) १ आया हुआ । पहुँचा हुआ ।
बाहिर से आया हुआ । बाहिरी । ३ आकस्मिक
४ भूला भटका । पथभ्रान्त ।

आगन्तुः (पु०) १ नवागत । अपरिचित । महमान ।

आगन्तुक (वि०) [स्त्री०—आगन्तुका,—आग-
न्तुकी] १ अपनी इच्छा से आया हुआ । विना
बुलाये आया हुआ । भूला भटका या धूमला
फिरता आया हुआ । २ आकस्मिक । ४ प्रचिस ।

आगन्तुकः (पु०) १ अनाहूत प्रवेशक । विना बुलाये

आया हुआ । अनधिकार प्रवेश करने वाला व्यक्ति ।

२ अपरिचित । महमान । अतिथि । नवागन्तुक ।

आगमः (पु०) १ अवाई । आगमन । आमद ।

२ उपलब्धि । प्राप्ति । ३ जन्म । उत्पत्ति । उत्पत्ति-
स्थान । ४ योजना । (धन की) प्राप्ति ।

५ बहाव । धार (पानी की) । ६ लिखित
प्रमाण । ७ ज्ञान । ८ आमदनी । आय । राजस्व ।

९ वैध उपाय से प्राप्त कोई वस्तु । १० संपत्ति
की वृद्धि । ११ परम्परागत सिद्धान्त या विधि ।

शास्त्र । १२ शास्त्राध्ययन । पवित्रज्ञान ।

१३ विज्ञान । १४ वेद । १५ (न्याय के) चार
प्रकार के प्रमाणों में से अन्तिम प्रमाण । १६ उप-
सर्ग, विभक्ति या प्रत्यय । १७ किसी अक्षर का

संयोग या मिलावट । १८ संस्कृत भाषा में,
क्रियापदों के आदि में युक्त स्वरवर्ण । १९ उत्पत्ति ।

सिद्धान्त ।—बुद्ध. (वि०) प्रकाण्ड विद्वान् । यथा ।

“प्रतीप इदमगमबुद्धमेवी ।”

—रघुवंश ।

आगमनम् (न०) १ आगमन । अवाई । आमद ।

२ प्रत्यावर्तन । ३ उपलब्धि । प्राप्ति । ४ सम्भोग
के लिये किसी स्त्री के समीप गमन ।

आगमिन् (वि०) १ आने वाला । भविष्य का ।

आगामिन् (वि०) २ आसन्न । आने वाला ।

आगम् (न०) १ कसूर । अपराध । २ पाप ।—

कृत. (वि०) अपराध करने वाला । अपराधी ।

दोषी ।

आगस्त्यी (स्त्री०) दक्षिण दिशा ।

आगस्त्य (वि०) दक्षिणी ।

आगाध (वि०) अत्यन्त गहरा । अथाह ।

आगामिक (वि०) [स्त्री०—आगामिकी] भविष्य
काल सम्बन्धी । २ आने वाला । आसन्न ।

आगामुक (वि०) १ आने वाला । २ भविष्य का ।

आगार (न०) घर । आवास-स्थान । [प्रतिज्ञा

आगुर् (स्त्री०) स्वीकारोक्ति । हाँमी । स्वीकृति

आगुर्यां (वि०) (न०) गुप्त प्रस्ताव या सूचना ।

आगुर्याम् (वि०) (न०) गुप्त प्रस्ताव या सूचना ।

आगूः (स्त्री०) इकरार । प्रतिज्ञा ।

आग्निः (वि०) [स्त्री०—आग्निकी] आग सम्बन्धी ।
यज्ञीय अग्नि सम्बन्धी ।

आग्नीध्रं (न०) वह स्थान जहाँ अग्निहोत्र का अग्नि
जलाया जाता है ।

आग्नीध्रः (पु०) १ हवन करने वाला । २ मनुवंशोद्भव
महाराज प्रियव्रत का पुत्र ।

आग्नेय (वि०) [स्त्री०—आग्नेयी] १ अग्नि
सम्बन्धी । अग्न्या । २ अग्नि को चढ़ाया हुआ ।

आग्नेयः (पु०) कार्तिकेय या स्कन्द की उपाधि ।
आग्नेयी (स्त्री०) १ अग्नि की पत्नी । २ पूर्व और
दक्षिण के बीच वाली दिशा ।

आग्नेयम् (न०) १ कृत्ति का नक्षत्र । २ सुवर्ण ।
३ रत्न । रक्त । ४ घी । ५ आग्नेयास्त्र ।

आग्न्याधानिकी (स्त्री०) दक्षिणा विशेष जो ब्राह्मण
को दी जाती है ।

आग्रभोजनिकः (पु०) ब्राह्मण जो प्रत्येक भोज में
सब के आगे या प्रथम बैठने का अधिकारी है ।

आग्रयणम् (न०) आहिताग्नियों का नवशस्येष्टि ।
नवाक्ष विधान । [आहुति ।

आग्रयणः (पु०) अग्निष्टोम में सोम की प्रथम
आग्रहः (पु०) १ पकड़ । ग्रहण । २ आक्रमण ।

३ सङ्कल्प । प्रगाढ़ अनुराग । कृपा । अनुग्रह ।
संरक्षकता ।

आग्रहायणः (पु०) मार्गशीर्ष मास ।

आग्रहायिणी (स्त्री०) १ मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा ।
अगहनी पूनो । २ मगशिरा नक्षत्र का नाम ।

आग्रहायणकः } (पु०) मार्गशीर्ष या अगहन
आग्रहायणिकः } मास ।

आग्रहारिक (वि०) [स्त्री०—आग्रहारिकी] नियमा-
नुसार प्रथम भाग पाने वाला । प्रथम भाग पाने
योग्य । ब्राह्मण । श्रेष्ठ ब्राह्मण ।

आग्रहना (स्त्री०) १ हिलाना । कम्पन । ताड़न ।
२ रगड़ । संसर्ग ।

आग्रर्षः (पु०) } रगड़ । मालिश । ताड़न ।
आग्रर्षणम् (न०) }

आघाटः (पु०) सीमा । हद्द ।

आघातः (पु०) १ ताड़न । मारण । २ चोट । प्रहार ।

धाव । ३ दुर्भाग्य । बदकिस्मती । विपत्ति ।
४ कसाईखाना । वधस्थान ।

—“आघातं नीयमानस्य ।”

—हितोपदेश ।

आघारः (पु०) १ छिड़काव । २ विशेष कर हवन
के समय अग्नि पर घी का छिड़काव । ३ घी ।

आधूर्णनं (न०) लोटना । उछाल । चक्कर । तैरना ।

आधोषः (पु०) बुलावट । आमंत्रण । आह्वानकरण ।

आधोषणम् (न०) } दिंडोरा । राजाज्ञा की

आधोषणा (स्त्री०) } घोषणा । [होना ।

आध्याणम् (न०) १ लूँघना । २ अधाना । सन्तुष्ट

आंगारं } (न०) अंगारों का ढेर ।

आङ्गारम् } (न०) अंगारों का ढेर ।

आंगिक } (वि०) [स्त्री०—आंगिकी, आङ्गिकी]

आङ्गिक } १ शारीरिक । दैहिक । २ हाव भाव युक्त ।

आंगिकः } (पु०) तबलची या मृदंगची ।

आङ्गिरसः } (पु०) बृहस्पति का नाम । अंगिरस का

आङ्गिरसः } पुत्र ।

आचक्षुस् (पु०) । विद्वान् । पण्डित ।

आचमः (पु०) कुल्ला । आचमन ।

आचमनम् (न०) जल से मुख साफ करने की

क्रिया । किसी धर्मानुष्ठान के आरम्भ में दहिने

हाथ की हथेली में जल रख कर पीने की क्रिया ।

आचमनकम् (न०) १ पीकदानी ।

आचयः (पु०) १ जमाव । भीड़ । २ ढेर । समूह ।

आचरणम् (न०) १ अनुष्ठान । व्यवहार । बर्ताव ।

२ चालचलन । ३ चलन । प्रचलन । पद्धति ।

४ स्मृति ।

आचर्यं } (वि०) १ आचमन या कुल्ला किये हुए ।

आचर्यन्त } २ आचमन करने योग्य ।

आचामः (पु०) १ आचमन । कुल्ली । २ जल या

गर्म जल का उफान ।

आचारः (पु०) १ चालचलन । चरित्र । चाल-

ढाल । २ रीतिरिवाज । चलन । पद्धति । ३ सदा-

चार । ४ शील । ५ रस्म ।—अष्ट, —पतित,

(वि०) दुराचारी । अशिष्ट ।—पूत, (वि०)

सदाचार के अनुष्ठान से पवित्र ।—ताज,

(पु० बहुव०) स्त्रियों जो राजा या किसी

प्रतिष्ठित व्यक्ति के ऊपर बरसायी जाती है—(उसके प्रति सम्मान प्रदर्शनार्थ)। — वेदी, (स्त्री०)
आर्यावर्त देश का नाम । [से समर्थित ।

आचारिक (वि०) ग्रामाणिक । पद्धति या नियम
आचार्यः (पु०) १ (साधारणतः) शिक्षक या
गुरु । २ उपनयनसंस्कार के समय गायत्री मंत्र
का उपदेश देने वाला । ३ गुरु । वेद पढ़ाने वाला ।
४ जब यह किसी के नाम के पूर्व लगता है (यथा
आचार्य वासुदेव) तब इसका अर्थ होता है,
विद्वान्, पण्डित । अंगरेज़ी के “डॉक्टर” शब्द का
यह प्रायः समानार्थवाची शब्द भी है ।—मिश्र,
(वि०) माननीय । पूज्य ।

आचार्यकं (न०) १ शिक्षा । पाठन । पढ़ाना ।
२ आध्यात्मिक गुरु का गुरुत्व ।

आचार्यानी (स्त्री०) अचार्य की पत्नी ।

आचित्र (न० कृ०) १ परिपूरित । भरा हुआ । लदा
हुआ । ढका हुआ । २ बेधा हुआ । ओतप्रोत ।
३ सञ्चित । एकत्रित किया हुआ ।

आचित्रः (पु०) गाड़ी भर बोझ (न० भी है) ।
दस गाड़ी भर की तौल, अर्थात् ८० हजार
तोला । [सिंघी लगाना ।

आचूषणं (न०) १ चूसना । २ चूस कर उगल देना ।
आच्छादः (पु०) कपड़े । सिले कपड़े ।

आच्छादनं (न०) १ ढकने वाली वस्तु । चादर ।
चद्दर । २ कपड़े । सिले कपड़े । कुत में लगी हुई
लकड़ी की छत । [जलन पैदा करता हुआ ।

आच्छुरित (वि०) १ मिश्रित । २ खुरचा हुआ ।

आच्छुरितं (न०) नखवाद्य । नखों को एक दूसरे पर
रगड़ कर बाजे की तरह बजाने की क्रिया ।
२ अट्टहास्य ।

आच्छुरितकम् (न०) १ नाखून का खरोँचा । नोंह
की खरोँच । २ अट्टहास्य ।

आच्छेदः (पु०) १ काटना । नश्वर लगाना ।

आच्छेदनम् (न०) २ ज़रा सा काटना ।

आच्छेदनम् (न०) डँगलियाँ चटकाना ।

आच्छेदनम् (न०) शिकार । आखेट । मृगया ।

आजकं (न०) बकरों का कुंड ।

आजगवम् (न०) शिव जी का धनुष ।

आजननम् (न०) कुलीनता । उच्चवंशोज्ज्वलता ।
प्रसिद्ध कुल या वंश ।

आजानः (पु०) उत्पत्ति । जन्म ।

आजानम् (न०) उत्पत्ति-स्थान । जन्मस्थान ।

आजानेय (वि०) [स्त्री०—आजानेयी] अच्छी
जाति का (जैसे घोड़ा) । २ निर्भीक । निर्भय ।

आजानेयः (पु०) अच्छी जाति का घोड़ा ।

आजिः (पु०) १ युद्ध । लड़ाई । २ रणक्षेत्र ।

आजीवः (पु०) १ आजीविका । २ पेशा ।

आजीवनम् (न०) १ आजीविका । २ पेशा ।

आजीवः (पु०) जैनी भिक्षुक ।

आजीविका (न०) पेशा । आजीविका का उपाय ।

आजुर्, आजू (स्त्री०) १ विना पारिश्रमिक काम
करना । २ नौकर जो वेतन लिये विना काम करे ।
नरक ही में रहना जिसके भाग्य में बदा है ।

आज्ञातिः (स्त्री०) आज्ञा । आदेश । हुक्म ।

आज्ञा (स्त्री०) १ आदेश । हुक्म । २ अनुमति
इजाजत ।—अनुग, —अनुगामिन्, —अनुया-
यिन्, —अनुवर्तिन्, —अनुसारिन्, —सम्पा-
दक, —वह (वि०) आज्ञाकारी । फर्मावर्दार ।

आज्ञापनम् (न०) १ आज्ञा । हुक्म । २ अकट-
पत्र ।

आज्यं (न०) धी ।—पार्श्व, (न०) स्थाली,
(स्त्री०) वर्तन जिसमें धी रखा जाय । —भुज्
(पु०) १ अग्नि का नाम । २ देवता ।

आञ्चनम् (न०) शरीर से कांटे या तीर को थोड़ा सा
खींच कर निकालने की क्रिया ।

आंघ्र (घा० प०) [आंघ्रित, आंघ्रित] १ लंबा
करना । बढ़ाना । २ ठीक करना । बैठाना ।
(जैसे हड्डी का)

आंजनम् (न०) (हड्डी या दाँग को) बराबर या
ठीक करना या बैठाना ।

आंजनम् (न०) अंजन ।

आंजनः } (पु०) हनुमान जी का नाम ।

आंजनेयः }

आठविकः (पु०) १ बनरखा । २ अग्रगन्ता ।

आदिः (पु० स्त्री०) पक्षी विशेष । शरारि । [इसका
“आदि” भी रूप होता है ।]

आटीकनं (न०) बछड़े की उछलकूद ।
 आटीकरः (पु०) बैल । साँड़ ।
 आटोपः (पु०) १ अभिमान । आत्मश्लाघा ।
 २ सृजन । फैलाव । बढ़ाव । फुलाव ।
 आडम्बरः (पु०) १ अभिमान । मद । औद्धत्य ।
 २ दिखावट । वाह्य उपाङ्ग । ३ बिगुल या तुरही
 की आवाज़, जो आक्रमण की सूचक हो । ४
 आरम्भ । शुरुआत । ५ रोप । क्रोध । ६ हर्ष ।
 आनन्द । ७ बादलों की गर्जन । हाथियों की विचार ।
 ८ लड़ाई में बजाया जाने वाला ढोल । ९ युद्ध
 का कोलाहल या गर्जन तर्जन ।
 आडम्बरिन् (न०) मदमत्त । अभिमान में चूर ।
 आढकः (पु०) } द्रोण नामक तैल का चतुर्थांश ।
 आढकम् (न०) }
 आढ्य (वि०) १ धनी । धनवान । २ सम्पन्न ३
 बहुतायत से । विपुल ।—चर, (पु०)—चरो,
 (स्त्री०) जो एक बार धनी हो ।
 आढ्यंकरण (वि०) धनवान करने वाला ।
 आढ्यंकरणम् (न०) धन । सम्पत्ति ।
 आणक (वि०) नीच । ओछा । दुष्ट ।
 आणकम् (न०) मैथुन करने का आसन विशेष ।
 आणव (वि०) [स्त्री०—आणवी] बहुत ही छोटा ।
 आणवं (न०) बहुत ही छोटापन या अत्यन्त
 सूक्ष्मता ।
 आणिः (पु० स्त्री०) १ गाड़ी की धुरी की चावी या
 पिन । २ घुटने के ऊपर का जाँघ का भाग ।
 ३ सीमा । हद्द । ४ तलवार की धार ।
 आंड } (वि०) अण्डज । वे जीव जो अंडे से
 आण्ड } उत्पन्न होते हैं ।
 आंडः } १ (पु०) हिरण्यगर्भ या ब्रह्मा की उपाधि ।
 आण्डः }
 आंडम् } (न०) १ अँडों का ढेर । झोल । न्याँत ।
 आण्डम् } २ अण्डकोश की थैली ।
 आंडीर } (वि०) १ बहुत से अँडों वाला । २ बड़ा
 आण्डीर } हुआ पूर्वव्यप्राप्त (जैसे साँड़)
 आतक } (पु०) १ रोग शारीरिक रोग २

आतंचनम् } (न०) १ दही । २ जमा हुआ
 आतञ्चनम् } दूध । ३ एक प्रकार का तोड़ या
 पड़ा । ४ प्रसन्न करना । सन्तुष्ट करना । ५ भय ।
 झतरा । आपत्ति । सङ्कट । ६ रफ्तार । गति ।
 आतत (वि०) १ फैला हुआ । बिछा हुआ । छाया
 हुआ । बढ़ा हुआ । २ ताना हुआ (जैसे धनुष
 की प्रत्यंचा)
 आततायिन् (पु०) १ महापापी । २ शस्त्र उठा कर
 किसी का वध करने को उद्यत । शुक नीति में
 छः प्रकार के आततायी बतलाये गये हैं । यथा—
 आग लगाने वाला । विषखिलाने वाला । शस्त्र हाथ
 में लिये किसी का वध करने को उद्यत । धन का
 चोर । खेत का हरने वाला और स्त्रीचोर ।
 “अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रोन्मत्तो घनापहः ।
 क्षेत्रदारहरश्चैतान् पठ् विद्यादाततायिनः ॥”
 आतपः (पु०) १ सूर्य अथवा आग की गर्मी । घाम ।
 २ प्रकाश ।—उदकं, (न०) मृगतृष्णा ।—
 अं,—(न०)—अकं, (न०) छाता । छत्र ।—
 लंघनं, (न०) लपट का लगना ।—वारणं,
 (न०) छाता ।—शुष्क, (वि०) धूप में
 सुखाया हुआ ।
 आतपनः (पु०) शिव जी का नाम ।
 आतरः } (पु०) नाव की उतराई या पुल का
 आतारः } महसूल । मार्गव्यय । भाड़ा ।
 आतर्पणं (न०) १ सन्तोष । २ प्रसन्नता । सन्तुष्ट-
 करण । ३ दीवाल पर सफेदी पोतना । फर्श
 लीपना ।
 आतापिन् } (न०) पक्षी विशेष । चील ।
 आतायिन् }
 आतिथेय (वि०) [स्त्री०—आतिथेयी] १
 अतिथों का सम्कार । २ अतिथि के योग्य ।
 अतिथि के लिये उपयुक्त । [पहुनई ।
 आतिथेयं (न०) महमानदारी । अतिथि का सम्कार ।
 आतिथ्य (वि०) पहुनई के योग्य ।
 आतिथ्या (पु०) पाहुना । महमान । अतिथि ।
 आतिथ्य (न०) पहुनई

आतिरेक्यं (न०) विपुलता । फालतृपन ।
आतिरेक्यम् { अति आधिक्यता । अधिकार्ह ।
आतिशय्यम् (न०) आधिक्य । बहुतायत । ज्यादाती ।
आतुः (पु०) लकड़ी या लट्टों का बेड़ा । धरनई
या चौघड़ा ।

आतुर (वि०) १ चोटिल । घायल । २ रोगी । दुःखी ।
पीड़ित । ३ शरीर या मन का रोगी । ४ उत्सुक ।
अधीर बेचैन । ५ निर्बल । कमज़ोर ।—शाला,
(स्त्री०) अस्पताल ।

आतुरः (पु०) बीमार । मरीज ।

आतोद्यं { (न०) वाद्य विशेष । एक प्रकार
आतोद्यकम् } का बाजा ।

आत् (व० क०) १ लिया हुआ । प्राप्त । स्वीकार किया
हुआ । माना हुआ । २ इकरार किया हुआ ।
३ आकर्षण किया हुआ । ४ निकाला हुआ ।
खींच कर बाहर निकाला हुआ ।—गन्ध, (वि०)
१ शत्रु ने जिसके अहङ्कार को दूर कर डाला
हो । शत्रु से पराजित । २ सूँचा हुआ ।—
—गर्व, (वि०) नीचा दिखलाया हुआ ।
तिरस्कृत । अधःपतित । [का ।

आत्मक (वि०) बना हुआ । दंग का या स्वभाव
आत्मकीय { (वि०) अपना । अपने से सम्बन्ध
आत्मीय } युक्त ।

आत्मन् (पु०) १ आत्मा । जीव । २ परमात्मा । ३
मन । ४ बुद्धि । ५ मननशक्ति । ६ स्फूर्ति । ७
मूर्ति । शङ्क । ८ पुत्र ।

‘आत्मा वै पुत्रमात्मनि’ ।

१ उद्योग । सावधानी । १० सूर्य । ११ अग्नि ।
१२ पवन । १३ सार । १४ विशेषता । लक्षण ।
१५ स्वभाव । प्रकृति । १६ पुरुष या समस्त
शरीर ।—अधीन, (वि०) स्वावलम्बी । स्व-
तंत्र ।—अधीनः, (पु०) १ पुत्र । २
भोजार्ह । ३ विदूषक । मसखरा ।—अनुगमनम्,
व्यक्तिगत उपस्थिति या विद्यमानता ।—
अपहारकः, (पु०) पाखंडी । बहुरूपिया ।—
आराम, (वि०) १ ज्ञान-प्राप्ति का प्रयासी ।
अध्यात्मविद्या का खोजी । २ अपने आत्मा में
असक्त रहने वाला ।—आशिन, (पु०) मछली
जो अपने बखों को खा जाता करती है ।—

आश्रयः, (पु०) अपने ऊपर निर्भर रहने वाला ।
—उद्भवः, (पु०) १ पुत्र । कामदेव ।—उद्भवा,
(स्त्री०) पुत्री ।—उपजीविन्, (पु०) १ अपने परि-
श्रम से उपार्जित आय पर रहने वाला । २ दिन में
काम करने वाला मजदूर । ३ अपनी पत्नी की
कमाई खाने वाला । ४ नाटक का पात्र । सार्व-
जनिक अभिनेता ।—काम, (वि०) १ आत्मा-
भिमानी । अहङ्कारी । २ केवल । ब्रह्म या पर-
मात्मा की भक्ति करने वाला ।—गुप्तिः, (स्त्री०)
गुफा । माँव ।—ग्राहिन्, (वि०) स्वार्थी ।
लालची ।—घातः, (पु०) १ आत्महत्या ।
२ धर्मविरोध ।—घातिन्, (पु०)—घातक,
(पु०) आत्महत्या । २ धर्मविरोधी ।—घोषः,
(पु०) १ मुर्गा । ऊँट । २ काक । कौवा ।—
जः, (पु०)—जन्मन्, (पु०)—जातः,
(पु०)—प्रभवः (पु०)—सम्भवः, (पु०)
१ पुत्र । २ कामदेव ।—जा (स्त्री०) १ पुत्री ।
२ तर्कशक्ति । समझने की शक्ति या समझ ।
बुद्धि ।—जयः, (पु०) अपने आपको जीतना ।
जितेन्द्रियत्व ।—ज्ञः,—विद्, (पु०) आत्म-
ज्ञानी । अवि ।—ज्ञानं, (न०) आत्मा और
परमात्मा सम्बन्धी ज्ञान । २ सत्यज्ञान ।—तत्त्वं,
(न०) जीव या आत्मा का अथवा परमात्मा
के स्वरूप का ज्ञान ।—त्यागः, (पु०) १
आत्मोत्सर्ग । २ आत्मनाश । आत्मघात ।—
त्यागिन्, (पु०) १ आत्मघात । आत्महत्या ।
२ स्वधर्मत्याग ।—आर्णः, (न०) १ आत्म-
रक्षा । २ शरीररक्षक । बाड़ी-गार्ड ।—दर्शः,
(पु०) दर्पण । आईना ।—दर्शनम्, (न०)
१ अपना दर्शन करना । आत्मज्ञान । सत्य ज्ञान ।
—द्रोहिन् (वि०) अपने ऊपर अत्याचार करने
वाला । २ आत्मघाती ।—नित्य, (वि०) अत्यन्त
प्रिय ।—निवेदनम्, (न०) अपने आपको समर्पण
करना । आत्मसमर्पण ।—निष्ठ, (वि०) सदैव
आत्मविद्या की खोज में रहने वाला ।—प्रशंसा,
(स्त्री०) आत्मश्लाघा । अपनी बढ़ाई ।—बन्धुः,
—बान्धवः, (पु०) अपने नातेदार । [धर्मशास्त्र में
नातेदारों के अन्तर्गत इतने लोगों की गणना है ।

आत्मनातुः स्वसुः पुत्रा आत्मपितुः स्वसुः पुत्राः ।
आत्मनातुः पुत्राश्च विज्ञेया ह्यात्मजात्मनः ॥

अर्थात् माँसी का पुत्र । दुआ का पुत्र और मामा का पुत्र ।] — बोधः, (पु०) आत्मज्ञान । २ आध्यात्मिकज्ञान । — भूः, — योनिः, (पु०) १ ब्रह्मा का नाम । २ विष्णु का नाम । ३ शिव का नाम । ४ कामदेव । २ पुत्र । — भूः, (स्त्री०) १ पुत्री । २ प्रतिमा । ३ बुद्धि । — मात्रा, (स्त्री०) परमात्मा का एक अंश । — मानिनः, (वि०) १ आत्मसम्मान रखने वाला । २ अभिमानी । — याजिनः, (वि०) जो अपने लिये या अपने को बलि दे । (पु०) सब में अपने को देखने वाला । आत्मदर्शी विद्वान् । — लाभः, (पु०) जन्म । उत्पत्ति । पैदाइश । — वञ्चकः, (वि०) अपने आपको धोखा देने वाला । — वधः, — वध्या, — हत्या, (स्त्री०) आत्मघात । — वशः, (पु०) आत्मसंयम । आत्मशासन । — विदुः, (पु०) बुद्धिमान पुरुष । ज्ञानी । — विद्या (स्त्री०) आध्यात्मिक विद्या । — वीरः (पु०) १ पुत्र । २ पत्नी का भाई । साला । ३ (नाट्य-शास्त्र में) विदूषक । — वृत्तिः, (स्त्री०) १ हृदय की परिस्थिति । — शक्तिः, (स्त्री०) अपनी सामर्थ्य । — श्लाघा, — स्तुतिः, (स्त्री०) अपनी बड़ाई । शोखी । बींग । — संयमः, (पु०) आत्मवशत्व । — सम्भवः, — समुद्भवः (पु०) १ पुत्र । २ कामदेव । ३ ब्रह्मा । विष्णु । शिव की उपाधि । — सम्भवा, — समुद्भवा (स्त्री०) १ पुत्री । २ बुद्धि । — सम्पन्न, (वि०) स्वस्थ । धीरचेता । संयत । धृतात्मा । २ बुद्धिमान । प्रतिभाशाली । — हननं, (न०) — हत्या (स्त्री०) आत्म-घात । खुदकुशी । — हित, (वि०) अपना लाभ । अपना फायदा ।

अना (अव्यया०) स्वयमर्थक रूप से उसका प्रयोग होता है । यथा—

अथ चास्तमित्ता स्वचारात्मना ।

रामायण ।

आत्मनीन (वि०) १ निज से सम्बन्ध रखने वाला । निज का । अपना । २ आत्महितकर ।

आत्मनीनः (पु०) १ पुत्र । २ साला । ३ विदूषक । आत्मनेपदं (न०) १ संस्कृत व्याकरण में धातु में लगने वाले दो तरह के प्रत्ययों में से एक । २ आत्मनेपद प्रत्यय के लगने से बनी हुई क्रिया ।

आत्मभरि } १ जो अकेला अपने को पाले । २
आत्मम्भरि } जो विना देवता पितर और
अतिथि को निवेदन किये भोजन करे । ३ उदर-
भरि । पेहू । स्वार्थी । लालची ।

आत्मवत् (वि०) १ धृतात्मा । संयत । धीरचेता ।
२ बुद्धिमान । [संयम । बुद्धिमत्ता ।

आत्मवत्ता (स्त्री०) धीरता । धृतात्मता । आत्म-
आत्मसान् (अव्यया०) अपने अधिकार में । अपने
वश में ।

आत्यंतिक } (वि०) [स्त्री० — आत्यंतिकी,
आत्यन्तिक } आत्यन्तिकी] १ लगातार । अवि-
रत । अनन्त । स्थायी । अविनाशी । २ बहुत ।
अतिशय । सर्वाधिक । ३ परम । प्रधान ।
महान् । सम्पूर्ण । बिल्कुल ।

आत्ययिक (वि०) [स्त्री० — आत्ययिकी] १ नाश
कारी । विपत्तिकारी । पीड़ाकारी । दुःखद ।
२ अमाङ्गलिक । अशुभ । ३ जरूरी । अत्यन्त
आवश्यक ।

आत्रेय (वि०) अत्रि के वंश का । अत्रिका । अत्रि
से उत्पन्न । [की पत्नी । ३ रजस्वला स्त्री ।
आत्रेयी (स्त्री०) १ अत्रि के वंश में उत्पन्न स्त्री । २ अत्रि
आत्रेयिका (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।

आथर्वण (वि०) [स्त्री० — आथर्वणी] अथ-
र्ववेद से निकला हुआ या अथर्ववेद का ।

आथर्वणः (पु०) १ अथर्वण वेद को जानने वाला ।
ब्राह्मण । २ अथर्वण वेद । ३ गृहचिकित्सक ।
पुरोहित । [ब्राह्मण ।

आथर्वणिकः (पु०) अथर्वण वेद पढ़ा हुआ
आदर्शः (पु०) १ दाँत । २ काटने की क्रिया । काटने
से पैदा हुआ धाव ।

आदरः (पु०) १ सम्मान । प्रतिष्ठा । मान ।
इज्जत । २ ध्यान । मनोयोग । मनोनिवेश ।
३ उत्सुकता । अभिलाषा । ४ उद्योग । प्रयत्न । ५
आरम्भ । शुरुआत । ६ प्रेम । अनुताप ।

आदर्शां (न०) आदर सत्कार ।

आदर्शः (पु०) १ दर्पण । आईना । २ मूल ग्रन्थ जिससे नकल की जाय । नमूना । बानगी । ३ प्रतिलिपि । ४ दिप्यही टीका । भाष्य । विवरण । अर्थ ।

आदर्शकः (पु०) दर्पण । आईना । शीशा ।

आदर्शनम् (न०) १ दिखावट दिखाने के लिये सजावट । २ दर्पण ।

आद्हनम् (न०) १ जलन । २ चोट । ३ हनन । ३ तिरस्कार । गरिथाना । ४ क्रवरस्तान । ५ रमशान ।

आदानं (न०) १ ग्रहण । स्वीकृति । पकड़ । २ आर्जन । प्राप्ति । ३ (रोग का) लक्षण ।

आदायिन् (वि०) लेना । प्राप्त करना ।

आदि (वि०) १ प्रथम । प्रारम्भिक । आदि कालीन । २ मुख्य । प्रधान । प्रसिद्ध । ३ आदिकाल का ।

—अन्त (वि०) जिसका आरम्भ और समाप्ति हो । शुरु और अखीर वाला ।—अन्तः, (न०)

आरम्भ और समाप्ति । करः,—कर्तृ,—कृतः,

(पु०) सृष्टिकर्ता । ब्रह्म की उपाधि विशेष ।—

कविः, (पु०) ब्रह्म और वाल्मीकि की उपाधि विशेष ।—काण्डः, (न०) वाल्मीकि रामायण का

प्रथम अर्थात् बालकाण्ड ।—कारणः, (न०) सृष्टि का मूलकारण सांख्यवाले प्रकृति को और नैयायिक

पुरुष को आदिकारण मानते हैं ।—काव्यं (न०)

वाल्मीकि रामायण ।—देवः (पु०) १ नारायण या विष्णु । २ सूर्य । ३ शिव ।—दैत्यः (पु०)

हिरण्यकशिपु की उपाधि ।—पर्वन् (न०)

महाभारत के प्रथमपर्व का नाम ।—पुरुषः, या

—पुरुषः, (पु०) विष्णु । नारायण ।—बलं,

(न०) जनन शक्ति ।—भवः (पु०) १

ब्रह्मा की उपाधि । २ विष्णु का नाम । ३ ज्येष्ठ

आत्मा ।—मूर्तः, (न०) आदिकारण ।—वराहः

(पु०) विष्णु भगवान की उपाधि ।—शक्तिः

(स्त्री०) माया की सामर्थ्य । दुर्गा की उपाधि ।

—सर्गः (पु०) प्रथम सृष्टि ।

आदितः } (अन्यथा०) प्रथमतः । अन्वयन ।

आदी }

आदितेयः (पु०) १ अदिति के सन्तान । २ देवता ।

आदित्यः (पु०) १ अदिति-पुत्र । देवता । २ द्वादश

आदित्य । ३ सूर्य । भास्कार । ४ विष्णु का पांचवा

अवतार ।—मण्डलं, (न०) सूर्य का घेरा ।—

सुनुः, (पु०) १ सूर्यपुत्र । २ सुग्रीव का नाम । ३

यम । ४ शनिग्रह । ५ कर्ण का नाम । ६ सावर्ण्य

नाम के मनु । ७ वैवस्वत मनु ।

आदिनवः { पु० }

आदीनवः { पु० }

आदिनवम् { न० }

आदीनवम् { न० }

आदिम (वि०) प्रथम । आदिकालीन । असली ।

आदीपनम् (न०) १ आग में जलाना । २ भड़काना ।

३ किसी उत्सव के अवसर पर दीवाल की दुताई

और फर्श की लिपाई ।

आदृत (व० कृ०) सम्मानित । आदर किया गया ।

आदेवनम् (न०) १ जुआ । २ जुआ का पांसा । ३

चौसर की बिक्री । ४ जुआघर ।

आदेशः (पु०) १ आज्ञा । हुक्म । २ निर्देश । नियम ।

२ वर्णन । सूचना । विज्ञप्ति । ४ भविष्यद्वाणी । ५

व्याकरण में अक्षरपरिवर्तन ।

आदेशिन् (वि०) १ आज्ञा देने वाला । हुक्म देने वाला ।

२ उभाड़ने वाला । उकसाने वाला । (पु०) १

आज्ञा देने वाला । सेनापति । २ ज्योतिषी ।

आद्य (वि०) १ प्रथम । प्राथमिक । २ सर्वप्रधान ।

मुख्य । अग्रग्राह्य ।—कविः (पु०) वाल्मीकि ।

आद्या (स्त्री०) १ दुर्गा की उपाधि । २ मास की प्रथम

तिथि ।

आद्यं (न०) १ आरम्भ । २ अनाज । भोज्य पदार्थ ।

आद्यून (वि०) १ निर्लज्जता पूर्वक । बेशर्मी से ।

२ पेद्द । सरसुका । भूखा । बुभुक्षित ।

आद्योतः (पु०) प्रकाश । चमक ।

आधमनम् (न०) १ अमानत । बंधक । २ बिक्री के

माल की बनावटी चढ़ी हुई दर ।

आधर्मग्यं (न०) कर्जदारी ।

आधर्मिक (वि०) बेईमान । अन्यायी ।

आधर्षः (पु०) १ तिरस्कार । २ बरजोरी की हुई चोट

आधर्षणम् (न०) १ सज्जा । दण्ड । २ खरबन

३ चोटिल करना ।

आधर्षित (न० कृ०) १ चोटिख किया हुआ ।
२ बहस में हराया हुआ । ३ सज़ायागता ।
दण्डित ।

आधानम् (न०) १ रखना । ऊपर रखना । २ लेना ।
प्राप्त करना । फिर से लेना । वापिस लेना । ३ हवन
के अग्नि को स्थापित करना । ४ करना । बनाना ।
५ भीतर डालना । देना । ६ पैदा करना । तैयार
करना । ७ बंधक । धरोहर । अमानत ।

आधानिकः (पु०) गर्भाधान संस्कार ।

आधारः (पु०) १ आश्रय । आसरा । सहारा अवलंब ।
२ व्याकरण में अधिकरण कारक । ३ थाला ।
आलवाल । ४ पात्र । ५ नीच । बुनियाद । मूल ।
६ (योगशास्त्र में वर्णित) मूलाधार । ७ बाँध ।
बंध । ८ नहर ।

आधिः (पु०) १ मन की पीड़ा । २ श्वाप । अकोस ।
विपत्ति । ३ बंधक । धरोहर । ४ स्थान । आवास-
स्थान । ५ ठिकाना । स्थान । ६ कुटुम्ब के भरण
पोषण के लिये चिन्तित मनुष्य ।—ज्ञः (वि०)
पीड़ित ।—भोगः (पु०) भोगबंधक ।—स्तेनः
(पु०) बंधक धरी हुई वस्तु का, विना वस्तु के
मालिक की अनुमति के भोग करने वाला ।

आधिकरणिकः (पु०) न्यायाधोश । जज ।

आधिकारिक (वि०) [स्त्री०—आधिकारिकी]
१ सर्वप्रधान । सर्वोत्कृष्ट । २ सरकारी दफ्तर
सम्बन्धी ।

आधिक्यं (न०) १ बहुतायत । अधिकता ।
ज्यादती । २ सर्वोत्कृष्टता । सर्वोपरिता ।

आधिदैविक (पु०) [स्त्री०—आधिदैविकी]
१ देवताकृत । देवताओं द्वारा प्रेरित । यज्ञ, देवता,
भूत, प्रेत आदि द्वारा होने वाला । २ प्रारब्ध से
उत्पन्न ।

आधिपत्यं (न०) १ प्रभुत्व । स्वामित्व । अधिकार ।
२ राजा के कर्तव्य । यथा ।

“यावद्देवो पुत्रं प्रकुर्वन्वाधिपत्ये ।”

महाभारत ।

आधिभौतिक (वि०) [स्त्री०—आधिभौतिकी]
न्याय सर्पादि जीवों द्वारा कृत (पीड़ा) । जीव

अथवा शरीर धारियों द्वारा प्राप्त । तत्त्वों से उत्पन्न ।
प्राणि सम्बन्धी । [शासन ।

आधिराज्यं (न०) राजकीय । आधिपत्य । सर्वश्रेष्ठ
आधिपत्येदिकं (न०) सम्पत्ति । प्रथम स्त्री का धन
जो पुरुष द्वारा दूसरी स्त्री से विवाह करने पर उसे
दिशा जाय । विष्णु स्मृति में लिखा है

यच्च द्वितीयविवाहार्थिना पूर्वस्त्रियै
पारितोषिकं धनं दत्तं तदधिपत्येदिकं ॥

आधुनिक (वि०) [स्त्री०—आधुनिकी] अब का ।
हाल का । आजकल का । साम्प्रतिक । नवीन ।
वर्तमान काल का । इदानीन्तन ।

आधोरखः (पु०) हाथीसवार अथवा महावक्त्र ।
आध्मानम् (न०) १ धौकनी से धौकना । फूंकना ।
(आलं०) बाढ़ । २ शेखी । दौंग । ३ धौकनी ।
४ पेट का फूलना । जलंधर रोग ।

आध्यात्मिक (वि०) [स्त्री०—आध्यात्मिकी]
१ आत्मासम्बन्धी । पवित्र । २ परमात्मा । ३
आत्मसम्बन्धी । ४ मन से उत्पन्न (दुःख, शोक)
आध्यानम् (न०) १ चिन्ता । फिक्र । २ शोकमय
स्मृति । ३ ध्यान ।

आध्यापकः (पु०) शिक्षक । दीक्षागुरु ।

आध्यासिक (वि०) [स्त्री०—आध्यासिकी]
अध्यास से उत्पन्न ।

आध्वनिक (वि०) [स्त्री०—आध्वनिकी] यात्री ।
यात्रा करने में चतुर । यात्रा करने वाला ।

आध्वर्यव (वि०) [स्त्री०—आध्वर्यवी] अध्वर्यु
सम्बन्धी अथवा यजुर्वेद से सम्बन्ध रखने वाला ।

आध्वर्यवम् (न०) १ यज्ञ में कार्यविशेष । २ विशेषतः
अध्वर्यु का कार्य करने वाला ब्राह्मण । ३ यजुर्वेद
जानने वाला ।

आनः (पु०) १ स्वांस लेना । वायु को भीतर
खींचना । २ फूंकना ।

आनकः (पु०) १ नगाड़ा । बड़ा ढोल । २ गरजने
वाला बादल ।—दुन्दभिः (पु०) श्रीकृष्ण के
पिता वसुदेव जी की उपाधि ।—दुन्दभिः या
—दुन्दभी, (स्त्री०) बड़ा ढोल । नगाड़ा ।

आनतिः (स्त्री०) मुकना । नीचा होना । प्रणाम ।
३ सम्मान । आतिथ्य । अतिथि संस्कार ।

सं० श० की०—१७

आनन्द (वि०) १ बंधा हुआ । गला हुआ । २ मल-
बद्धकारक । [धारण करना ।

आनन्दः (पु०) १ ढोल । २ पोशाक । परिच्छेद
आनन्दम् (न०) १ सुँह । चेहरा । २ अध्याय । परिच्छेद ।
आनन्दार्थम् (न०) अन्तर । अन्तर । समीप । निकट ।
आनन्द्यम् (न०) १ असीमत्व । २ अनन्तत्व ।
३ अमरत्व । ४ ऊर्ध्वलोक । स्वर्ग । आधीमुख ।

आनन्दः (पु०) १ हर्ष । सुख । प्रसन्नता । २ ईश्वर ।
ब्रह्म । शिव का नाम ।—काननम्, —वनं (न०)
काशीपुरी । वाराणसीपुरी ।—पटः (पु०)
वर के वस्त्र ।—पूर्ण (वि०) परमानन्द से भरा
हुआ ।—पूर्णः (पु०) परब्रह्म ।—प्रभवः,
(पु०) वीर्य । आतु ।

आनन्दधु (वि०) प्रसन्नता । हर्षपूर्ण ।

आनन्दधुः (पु०) प्रसन्नता । हर्ष ।

आनन्दन (वि०) प्रसन्न करते हुए । आनन्दित
करते हुए ।

आनन्दनम् (न०) १ प्रसन्न करना । आनन्दित
करना । २ प्रणाम करना । नमस्कार करना ।
३ आते जाते समय मित्रों का शिष्टोचित कुशल
प्रश्नादि पूछ कर उपचार करना ।

आनन्दमय (वि०) हर्षपूरित । सुख से पूर्ण ।—
कोषः (पु०) शरीर के पाँच कोषों में से एक ।

आनन्दमयः (पु०) परब्रह्म ।

आनन्दिः (पु०) १ प्रसन्नता । हर्ष । २ कौतूहल ।

आनन्दिन् (वि०) १ प्रसन्न । हर्षित । २ प्रसन्नकर ।

आनर्तः (पु०) १ नाचघर । नृत्यशाला । रंगभूमि ।
२ युद्ध । लड़ाई । ३ सौराष्ट्र देश का दूसरा नाम
अर्थात् काठियावाड़ । ४ सूर्यवंशी एक राजा का
नाम, जो राजा शन्याति का पुत्र था ।

आनर्थक्यं (न०) १ निरर्थकता । बेकारपन ।
२ अयोग्यता ।

आनायः (पु०) जाल ।

आनायिन् (पु०) मनुआ । धीवर । मज्जाह ।

आनाय्यः (पु०) वृक्षशापि ।

आनाहः (पु०) १ बंधन । २ कोष्ठबद्धता । कब्जियत ।
३ (वस्त्र की) चौड़ाई या अर्ज ।

आनिल (वि०) [स्त्री०—आनिली] वायु से
उत्पन्न । वातल ।

आनिलः } (पु०) हनुमान या भीम का नाम ।
आनिलिः }

आनील (वि०) कालौहा । हल्का नीला ।

आनीलः (पु०) काला घोड़ा ।

आनुकूलिक (वि०) [स्त्री०—आनुकूलिकी]
उपयुक्त । सुविधाजनक । एकसा ।

आनुकूल्यं (न०) १ अनुकूलता । उपयुक्तता ।
२ अनुग्रह । कृपा ।

आनुगत्यम् (न०) परिचय । जानपहचान । हेतुमेल ।

आनुगुण्यम् (न०) अनुकूलता । उपयुक्तता ।
समानता । बराबरी । [देहाती । आभीण ।

आनुग्रामिक (वि०) [स्त्री०—आनुग्रामिकी]

आनुनासिक्यम् (न०) अनुनासिकता ।

आनुपदिक (वि०) [स्त्री०—आनुपदिकी] १ पीछा
करते हुए । अनुगमन करते हुए । २ अध्ययन
करते हुए ।

आनुपूर्व (न०) } १ शैली । परिपाटी । क्रम ।
आनुपूर्व्यम् (न०) } रीति । २ वर्णक्रम ।
आनुपूर्वी (स्त्री०) }

आनुपूर्व्यं } (अध्यया०) एक के बाद दूसरा ।
आनुपूर्व्यम् } यथाक्रम ।
आनुपूर्व्यम् }

आनुमानिक (वि०) [स्त्री०—आनुमानिकी] १
अनुमान प्रमाण से सम्बन्ध रखने वाला । २
अनुमानलभ्य । ३ संख्या । अटकल पञ्चू ।

आनुमानिकम् (न०) सांख्य शास्त्र में कहा
गया प्रधान ।

आनुयात्रिकः (पु०) अनुयायी । चाकर ।

आनुरक्तिः (स्त्री०) प्रीति । अनुराग ।

आनुलोमिक (वि०) [स्त्री०—आनुलोमिकी] १
क्रमानुयायी । क्रम से काम करने वाला । २
अनुकूल ।

आनुलोम्यम् (न०) १ स्वाभाविक क्रम । ठीक क्रम ।
२ क्रमानुगत क्रम । ३ अनुकूलता । [पड़ोसी ।

आनुवैश्यः (पु०) अपने घर के समीप ही रहने वाला

आनुश्रविक (वि०) जिसको परंपरा से सुनते चले आये हो । [वैदिक कर्मानुष्ठान ।

आनुश्रविकः (पु०) वेद में विधान किया हुआ ।
आनुषंगिक } (वि०) [स्त्री०—आनुषंगिकी,
आनुषङ्गिक } आनुषङ्गिकी] १ साथ साथ होने वाला । २ अनिवार्य । आवश्यक । ३ गौण । ४ अनुरक्त । शौकीन । ५ विषयक । सम्बन्धी । यथोचित । सुव्यवस्थित । ६ अंदाकार । ७ अन्तर्भुक्त । उपलब्ध ।

आनूप (वि०) [स्त्री०—आनूपी] १ पानी वाला । दलदली । नम । २ दल दल में उत्पन्न हुआ ।

आनूपः (पु०) वह जीव जिसे दल दल या जल में रहना पसंद हो (जैसे भैंसा, भैल) ।

आनृण्यम् (न०) अश्रुण्यता । कर्ज से बेबाक होना ।
आनृशंस } (वि०) कृपालु । दयावान ।
आनृशंस्य } रहमदिल ।

आनृशंसम् } १ रहमदिली । २ कृपालुता । ३
आनृशंस्यम् } दया । रहम । तरस ।

आनैपुण्यं } (न०) अकुशलता । मूढ़ता ।
आनैपुण्यं }

आन्त } (वि०) [स्त्री०—आन्ति, आन्ति]
आन्त } अन्तिम । अन्त का ।

आन्तम् } (अन्वया०) पूर्णतः । अन्ततः ।
आन्तम् }

आन्तर } (वि०) १ भीतरी । गुप्त । छिपा हुआ ।
आन्तर } २ अत्यन्त भीतरी । भीतर का ।

आन्तरम् } (न०) अन्त्यन्तरीय स्वभाव ।
आन्तरम् }

आन्तरिक्ष } (वि०) १ ज्योम सम्बन्धी ।
आन्तरिक्ष } आकाशी । स्वर्गीय । नैसर्गिक । २
आन्तरिक्ष } अन्तरिक्ष में उत्पन्न ।
आन्तरिक्ष }

आन्तरिक्षं } (न०) आकाश । आसमान ।
आन्तरिक्षम् } पृथिवी और आकाश के बीच का स्थान ।

आन्तर्गणिक } (वि०) शामिल । सम्मिलित ।
आन्तर्गणिक }

आन्तर्गोहिक } (वि०) घर के भीतर होने वाला
आन्तर्गोहिक } या उत्पन्न ।

आन्तिका, आन्तिका (स्त्री०) बड़ी बहिन ।

आन्दोल, आन्दोल (भा० प०) [दोलबली,

दोलित] १ झूलना । इधर उधर डोलना । २ हिलना । काँपना ।

आन्दोलः } (पु०) १ झूलना । झूला । २ कंपकपी ।
आन्दोलः }

आन्धसः } (पु०) आँध का मौँड़ या मौँड़ी ।
आन्धसः }

आन्धसिकः } (पु०) रसोइया । पाचक ।
आन्धसिकः }

आन्ध्र } (न०) अंधापन ।
आन्ध्र }

आन्ध्र } (वि०) आन्ध्र देशीय । तिलंगाना
आन्ध्र } देश का ।

आन्ध्रः } (पु०) तिलंगाना देश ।
आन्ध्रः }

आन्वयिक (वि०) [स्त्री०—आन्वयिकी] १ कुलीन । अच्छे कुल में उत्पन्न । अच्छी जाति का । २ सुव्यवस्थित । नियमित ।

आन्वाहिक (वि०) [स्त्री०—आन्वाहिकी] नित्य होने वाला (कृत्य) । नित्य (कर्म) ।

आन्वीक्षिकी (स्त्री०) १ तर्कशास्त्र । न्याय दर्शन । २ आत्मविद्या ।

आप् (भा० प०) [आप्नोति । आप] १ प्राप्त करना । पाना । २ पहुँचना । मिलना । (आगे गये हुए को पीछे जा कर) पकड़ लेना । ३ ब्याप्त होना । छेक लेना । ४ अनुमति देना ।

आपकर (वि०) [स्त्री०—आपकरी] अप्रीतिकर । उपद्रवकारी ।

आपक (वि०) कच्चा । अधसिका ।

आपकम् (न०) रोटी । चपाती ।

आपगा (स्त्री०) नदी । सरिता ।

आपगोयः (पु०) नदीपुत्र । भीष्म या कृष्ण की उपाधि ।

आपणाः (पु०) दूकान । हाट । बाज़ार ।

आपणिक (वि०) [स्त्री०—आपणिकी] व्यापार सम्बन्धी । वाणिज्य सम्बन्धी । [विक्रेता ।

आपणिकः (पु०) दूकानदार । व्यापारी । व्यवसायी ।

आपतनं (न०) १ आगमन । समीप आगमन । २ घटना । हादसा । ३ प्राप्ति । उपलब्धि । ४ ज्ञान ।

५ स्वाभाविक परिणाम ।

आपतिक (वि०) [स्त्री०—आपतिकी] इतिहास-
किया । अचानक । दैवी ।

आपतिकः (पु०) बाज पक्षी ।

आपतिः (स्त्री०) १ परिवर्तन । २ प्राप्ति । ३ सङ्कट ।
आकृत । विपत्ति । ४ (दर्शन में) अनिष्ट प्रसङ्ग ।

आपद् (स्त्री०) विपत्ति । सङ्कट ।—कालः, (पु०)
सङ्कट का समय । कष्ट का समय ।—गतः,—
ग्रस्तः,—प्राप्तः, (वि०) १ विपत्ति में फँसा हुआ ।
२ अभागा । कमबख्त ।—धर्मः, (पु०) वे कृत्य
जो साधारण समय में शास्त्रविरुद्ध होने पर भी
विपत्ति काल में किये जा सकते हैं ।

आपदा (स्त्री०) विपत्ति । सङ्कट । [किराल ।

आपनिकः (पु०) १ पन्ना । नीलम । पुखराज । २

आपन्न (व० कृ०) १ प्राप्त । उपलब्ध । २ गिरा
हुआ । मुचलिला ।—सत्त्वा, (स्त्री०) गर्भवती
स्त्री ।

आपमित्यक (वि०) बदले में पाया हुआ ।

आपराहिक (वि०) [स्त्री०—आपराहिकी] दोषहर
वाक्य का ।

आपस् (न०) १ जल । पानी । २ पाप ।

आपातः (पु०) १ अतंकर गिरना । आक्रमण । उतार ।
(सवारी से) उतरना । २ गिरना । पटकना ।
अधःपात । ३ किसी घटना का अचानक होना ।

आपाततः (अव्यया०) अकस्मात् । अचानक । २
अन्त को । आखिरकार ।

आपादः (पु०) १ प्राप्ति । उपलब्धि । २ पुरस्कार ।
इनाम । पारिश्रमिक ।

आपादनम् (न०) पहुँचना । लाना ।

आपानम् } (न०) १ मद्यपों की मण्डली ।
आपानकम् } २ मौरवी चक्र । भोज । ३ कलारी
की शराब की दुकान ।

आपालिः (पु०) जू । चीलर । जुआँ । चिलुप ।

आपीडः (पु०) १ तंग करना । धातल करना ।
२ दुबाना । निचोड़ना । ३ सीसफूल । ४ हार ।
माळा ।

आपीन (व० कृ०) मौदा ताज़ा । मज़बूत ।

आपीनः (पु०) कूप । कुआँ । इनारा ।

आपीनम् (न०) स्तन के ऊपर की धुँडी । थन । ऐन ।

आपूषिक (वि०) [स्त्री०—आपूषिकी] १ अच्छे
पुष्ट बनाने वाला । २ पुष्टा खाने का आदी ।

आपूषिकः (पु०) रसोइया । नानवाई । हलवाई ।

आपूषिकं (न०) पुष्टों का ढेर ।

आपूष्यः (पु०) १ आटा । चून । माँडा हुआ मीठा
आटा जिससे पुष्टा बनाये जाय । २ सत्तू ।

आपूरः (पु०) १ बहाव । धार । प्रवाद । २ पूर्ण
करना । भरना ।

आपूरणम् (न०) पूर्ण करना । भरना ।

आपूषं (न०) धातु विशेष । रंगा या टीन ।

आपूच्छा १ वार्तालाप । २ बिदाई । अन्तिम खानगी ।
३ कौतुहल ।

आपोशनः, (पु०) मंत्र विशेष जो भोजन करने
के पूर्व और पीछे पढ़े जाते हैं । वे ये हैं । भोजन
के आरम्भ में पढ़ा जाने वाला मंत्र —

“अष्टौ पस्तरणमसि स्वाहा” ।

भोजनोपरान्त का मंत्र—अष्टौ पिबानमसि स्वाहा ।

आप्त (व० कृ०) १ प्राप्त । पाया हुआ । हासिल ।

हासिल किया हुआ । २ पहुँचा हुआ । ३ विश्वास ।

४ अन्तरंग । गोप्य । सच्चा (मनुष्य) । ५ वनिष्ट ।

परिचित । ६ युक्तियुक्त । समझदार ।—काम,

(वि०) पूर्णकाम । जिसकी सब कामनाएँ

पूरी हो चुकी हों ।—कासः, (पु०) परब्रह्म ।

—गर्भा, (स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।—वचनम्,

(न०) विश्वस्त पुरुष के वचन ।—वाच्, (वि०)

विश्वास करने योग्य । ऐसा पुरुष जिसके वचन

प्रामाणिक माने जा सकें । (स्त्री०) १ विश्वस्त या

मातवर पुरुष की सलाह । २ वेद या श्रुति ।

स्मृति । इतिहास । पुराण ।—श्रुतिः (स्त्री०)

१ वेद । २ स्मृति ।

आप्तः (पु०) १ विश्वस्त पुरुष । इतमीदान का

आदमी । उपयुक्त पुरुष । २ सम्बन्धी । रिश्तेदार ।

मित्र । [२ संसार त्यागी ।

आप्तम् (न०) १ माज्य फल । बाँट फल । लब्ध ।

आप्तिः (स्त्री०) १ प्राप्ति । उपलब्धि । २ पहुँच ।

मिलनभेंट । ३ योग्यता । सम्मान । ४ समाप्ति ।

परिपूर्णाता ।

आप्य (वि०) १ जल सम्बन्धी । २ प्राप्य ।

आप्यान (व० कृ०) १ मौदा । तगड़ा । रोबीला ।

मजबूत । २ प्रसन्न । सन्तुष्ट ।

आप्यायनम् (न०) १ प्रीति । २ बाढ़ । बढ़ती ।

आप्यायनम् (न०) } १ पूर्ण करने या मौदा करने
आप्यायना (स्त्री०) } की क्रिया । २ सन्तुष्ट करना ।

अवाना । ३ आगे बढ़ना । उन्नति करना ।

४ मुदाव । मौदापन । ५ पौष्टिक दवाई ।

आप्रच्छन्नम् (न०) १ बिदा माँगना । गमन के समय

जाने की अनुमति लेना । २ स्वागत करना ।

३ वधाई देना ।

आप्रपदीन (वि०) पैर तक लटकता हुआ (झँगा) ।

आसवः (पु०) १ स्नान । डुबकी । गोता ।

आसवनम् (न०) २ चारों ओर पानी का

झिड़काव ।—प्रतिन, या—आप्लुतप्रतिन (पु०)

गृहस्थ जिसने ब्रह्मचर्याश्रम से निकल गृहस्थाश्रम

में प्रवेश किया हो । स्वातक । [बाढ़ । बड़ा ।

आप्तावः (पु०) १ स्नान । मार्जन । २ जल की

आफूक (न०) अफीम ।

आवद्ध (व० कृ०) १ बंधा हुआ । जकड़ा हुआ । २

गड़ा हुआ । ३ बना हुआ । ४ पाया हुआ । ५

रखा हुआ ।

आवद्धम् (न०) १ बाँधना । जोड़ना । २ जुआं ।

आवद्धः (पु०) ३ आभूषण । ४ स्नेह ।

आबंधः, आवन्धः (पु०) १ बंधन । बाँधने

आबंधनम्, आवन्धनम् (न०) } की रस्सी ।

२ जुए का जेत । ३ गहना । शृङ्गार । ४ स्नेह ।

आवर्हः (पु०) १ चौर डालना या खींच लेना ।

२ मार डालना ।

आवाधः (पु०) क्लेश । कष्ट । सन्ताप । हानि ।

आवाधा (स्त्री०) १ चोट । पीड़ा । कष्ट । २ मान-

सिक क्लेश या सन्ताप । [सूचना ।

आवोधनम् (न०) १ ज्ञान । समझ । २ शिक्षण ।

आव्ध (वि०) बादल सम्बन्धी या बादल का ।

आव्दिक (वि०) वार्षिक । सालाना ।

आभरणं (न०) १ गहना । जेवर । शृङ्गार । २ पालन

पोषण की क्रिया ।

आभा (स्त्री०) १ चमक । दमक । कान्ति । २ रूप ।

रंग । सौन्दर्य । ३ सादृश्य । समानता । ४ छाया-

चित्र । छाया । परछाई । प्रतिविम्ब ।

आभाणकः (पु०) कहावत ।

आभाषः (पु०) १ सम्बोधन । २ उपोद्घात । भूमिका ।

आभाषणम् (न०) परस्पर कथोपकथन । बातचीत ।

आभासः (पु०) १ चमक । दमक । आब । २ निदि-

ध्यासन । भावना । ३ समानता । सादृश्य ।

४ कलक । मिथ्याज्ञान । ५ तात्पर्य । अभिप्राय ।

आभासुर } (वि०) चमकीला । सुन्दर ।

आभास्वर } (पु०) चौखट देवगण का समूह ।

आभास्वरः } (पु०) चौखट देवगण का समूह ।

आभिचारिक (वि०) [स्त्री०—आभिचारिकी]

१ ऐन्द्रजादिक । बाजीगर । अमानुषिक २

शापित । अभिवापित । अकोसा हुआ ।

आभिजन (वि०) [स्त्री०—आभिजनी] जन्म

सम्बन्धी ।

आभिजनम् (न०) कुलीनता । सत्कुलोद्भवता ।

आभिजात्यम् (न०) १ कुलीनता । २ पद ।

३ विद्वत्ता । ४ सौन्दर्य ।

आभिधा (स्त्री०) १ शब्द । स्वर । २ नाम ।

आभिवानिक (वि०) जो किसी कोष में हो ।

आभिधानिकः (पु०) कोषकार ।

आभिमुख्यं (न०) १ ओर । तरफ । २ सामने

होना । आमने सामने । ३ आलोक्य ।

आभिरूपकः (पु०) १ सौन्दर्य । सुन्दरता ।

आभिरूप्यम् (न०) १ सौन्दर्य । सुन्दरता ।

आभिषेचनक (वि०) [स्त्री०—आभिषेचनकी]

अभिषेक सम्बन्धी ।

आभिहारिक (वि०) [स्त्री०—आभिहारिकी]

मेंट करने योग्य । चढ़ाने योग्य ।

आभिहारिकम् (न०) मेंट । चढ़ावा ।

आभीक्ष्ण्यम् (न०) निरन्तर आवृत्ति ।

आभीरः (पु०) १ अहीर । (बहुवचन में) एक

देश का नाम तथा उस देश के निवासी ।—

पल्लिः,—पल्ली (स्त्री०) अहीरों का गाँव ।

आभीरी (स्त्री०) अहीरिन ।

आभील (वि०) भयानक । भयप्रद । डरानेवाला ।

आभीलं (न०) चोट । शारीरिक पीड़ा ।

आभुज (वि०) ज़रासा मुड़ा हुआ । थोड़ा देखा ।

आभोगः (पु०) १ गोलाई । चक्र । वृद्धि । सीमा । चौहद्दी । २ डीलडौल । आकार । विस्तार । लंबाई चौड़ाई । ३ उद्योग । ४ सांप का फैला हुआ फन । ५ भोगविलास । नृत्ति ।

आभ्यंतर } (वि०) [स्त्री०—आभ्यन्तरी] भीतरी ।
आभ्यन्तर } अंदर का । भीतर की ओर ।

आभ्यवहारिक (वि०) [स्त्री०—आभ्यवहारिकी] खानेयोग्य ।

आभ्यासिक (वि०) १ अभ्यास से उत्पन्न या अभ्यास का फल । २ अभ्यास । आदृति । ३ समीपी । पड़ोस का । अभ्यासिक ।

आभ्युदयिक (वि०) [स्त्री०—आभ्युदयिकी] १ शुभकर्मों की वृद्धि के लिये । २ उच्च । शुभ । आवश्यक ।

आभ्युदयिकम् (न०) किसी मङ्गल कार्य में पितरों के उद्देश्य से किया गया श्राद्ध कर्म ।

आम् (अव्यया०) स्वीकारोक्तवाची अव्यय ।

आम (वि०) १ कच्चा । अधसिका । अनसम्भृता । २ अनपका । ३ अनसिका । ४ अनपचा ।—
आशयः, (पु०) पेट की वह थैली जिसमें खाया हुआ अन्न रहता है । पेट का उपरी भाग ।—
कुम्भः, (पु०) कच्चा बड़ा ।—गन्धि, (न०) कच्चे माँस की या मुर्दे के जलने की गन्धि ।—
ज्वरः, (पु०) एक प्रकार का ज्वर ।—त्वच, (वि०) कोमल चाम का ।—रक्त, (न०) दस्तों की बीमारी जिसमें आँव गिरे ।—रसः, (पु०) अर्धजीर्ण भुक्तद्रव्य ।—वातः (पु०) अजीर्ण । अनपच ।—शूलः, (पु०) वायुगोले का दर्द । आँव सुरेड़ का रोग ।

आमः (पु०) १ रोग । बीमारी । २ अजीर्ण । कोष्ठ-चङ्गता । ३ सुली अलगाया हुआ अनाज ।

आमंजु } (वि०) मनोहर । प्यारा । पेट की
आमञ्जु } मरोड़ ।

आमंडः } (पु०) रण्डवृक्ष । रेंडी का रूख ।
आमण्डः }

आमानरयं } (न०) पीड़ा । शोक ।
आमानरयं }

आमंत्रणम् (न०) १ बुलावा । न्योता ।
आमंत्रणा (स्त्री०) } २ बिदाई । ३ चर्चाई ।
४ अनुमति । ६ वार्तालाप । ७ सम्बोधन कारक ।

आमंद्र } (वि०) गम्भीर स्वरवाला । गुड़गुड़ा-
आमन्द्र } हट का ।

आमंद्रः } (पु०) हल्का गम्भीर स्वर । गुड़गुड़ा-
आमन्द्रः } हट ।

आमयः (पु०) १ रोग । बीमारी । अस्वस्था । २ क्षति । चोट ।

आमयाचिन् (वि०) बीमार । कञ्जित वाला । जिसको अनपच का रोग हो ।

आमरणांत } (वि०) [स्त्री०—आमरणा-
आमरणान्त } न्तिकी] मृत्यु तक रहने वाला ।
आमरणांतिक } यावज्जीवन रहने वाला ।
आमरणान्तिक }

आमर्दः (पु०) कुचलना । पीस डालना । रगड़ डालना ।

आमर्शः (पु०) १ स्पर्श करना । रगड़ना । २ परा-मर्श । सलाह । मशवरा ।

आमर्षः (पु०) } क्रोध । कोप । रोष । गुस्सा ।
आमर्षणम् (न०) } अधीरता ।

आमलकः (पु०) } आँवले का पेड़ ।
आमलकी (स्त्री०) }

आमलकम् (न०) आँवले का फल ।

आमात्यः (पु०) दीवान । वज़ीर । मुसाहिब ।

आमानस्यं (न०) पीड़ा । शोक ।

आमिक्षा (स्त्री०) मठा । झंझ । तक्र ।

आमिषं (न०) १ गोश्त । माँस । २ (आलं०) शिकार ।
आखेट । भोग्य वस्तु । ३ भोजन । चारा । दाना ।
४ रिश्वत । उत्कोच । धूस । ५ अभिलाषा ।
कामेच्छा । ६ भोगविलास । प्रिय या मनोहर वस्तु ।

आमीलनम् (न०) नेत्रों का बंद करना या मूँदना ।

आमुक्तिः (स्त्री०) पहनना । धारण करना । (पोशाक या कवच ।)

आमुखं (न०) १ आरम्भ । २ (नाट्य साहित्य में) प्रस्तावना । (अव्यया०) सामने । आगे ।

आमुष्मिक (वि०) [स्त्री०—आमुष्मिकी] पर-लोक से सम्बन्ध रखने वाला । परलोक का ।

आमुष्यायण (वि०) } [स्त्री०—आमुष्यायणी]
 आमुष्यायणः (पु०) } सत्कुलोद्भव। किसी प्रसिद्ध
 पुरुष का पुत्र।
 आमोचनम् (न०) १ खोल देना। ढील देना। छोड़
 देना। २ गिराना। निकालना। उड़ेलना।
 २ बाँध रखना।
 आमोचनम् (न०) कुचलना। पीस डालना।
 आमोदः (पु०) १ हर्ष। आनन्द। प्रसन्नता।
 २ सुगन्धि। सुवास।
 आमोदन (वि०) प्रसन्नकारक। हर्षप्रद।
 आमोदनं (न०) १ प्रसन्नता। हर्ष। २ सुवासित
 करना। सौरभान्वित करना।
 आमोदिन् (वि०) प्रसन्न। हर्षित। सुवासित।
 आमोषः (पु०) चोरी। डाँका।
 आमोषिन् (पु०) चोर।
 आम्नात (व० कृ०) १ विचारित। २ अधीत।
 पुनरावृत्त। ३ स्मरण किया हुआ। ४ परंपरागत
 प्राप्त।
 आम्नानं (न०) अध्ययन।
 आम्नायः (पु०) १ (ब्राह्मण, उपनिषद् और आर-
 ण्यकों सहित) वेद। २ वंशपरम्परागत परिपाटी।
 कुल की रीतिभौति। ३ विश्वासमूलक उपदेश।
 गुरोपदिष्ट शिक्षा। ४ परामर्श मंत्रणा या उपदेश।
 आम्बिकेयः } (पु०) चतराष्ट्र और कार्तिकेय की
 आम्बिकेयः } उपाधि।
 आम्भासिक } (वि०) [स्त्री०—आम्भासिकी]
 आम्भासिक } पनीला। रसीला।
 आम्भासिकः } (पु०) मत्स्य। माही।
 आम्भासिकः }
 आम्रः (पु०) आम का पेड़।—कूटः (पु०) एक
 पर्वत का नाम।—पेशी (स्त्री०) अमावस्य।
 आम का रस जो जमा कर सुखा लिया जाता है।
 —वर्णः (न०) आम का कुञ्जवन। आम की
 उद्यानव्रीथिका।
 आम्रं (न०) आम के वृक्ष का फल।
 आम्रातः (पु०) अमावस्य का पेड़।
 आम्रातम् (न०) आमड़ा के पेड़ का फल।
 आम्रातकः (पु०) १ आमड़ा का वृक्ष। २ अमावस्य।

आम्नेडनम् (न०) पुनरावृत्तिः। दुहराना। फेरना।
 आमुष्यता करना।
 आम्नेडितम् (न०) किसी शब्द या स्वर का बार बार
 दुहराया जाना। व्याकरण की एक संज्ञा।
 आम्लः (पु०) } इमली का पेड़।
 आम्ला (स्त्री०) }
 आम्लं (न०) १ खटाई। तुर्षी।
 आम्लिका } (स्त्री०) इमली का वृक्ष।
 आम्लीका }
 आयः (पु०) १ आगमन। आना। २ धनप्राप्ति।
 धनागम। ३ आय। आमदनी। प्राप्ति। ४ लाभ।
 फायदा। नफ़ा। ५ जनानखाने का रखक।—
 व्ययौ, (द्विवचन) आमदनी स्वर्ष।
 आयःशूलिक (वि०) [स्त्री०—आयःशूलिकी,]
 कार्यतत्पर। परिश्रमी। अङ्गिष्ठ। अध्यवसायी।
 आयःशूलिकः (पु०) अपनी उद्देश्य सिद्धि के लिये
 जोरदार उपायों से काम लेने वाला पुरुष।
 आयत (व० कृ०) १ लंबा। २ विस्तृत। परिव्याप्त।
 ३ बड़ा। ४ आकर्षित। ईंचा हुआ। ५ मुड़ा
 हुआ। रुढ़।—अक्ष, (वि०) अक्षी,
 (स्त्री०)—ईक्षण,—नेत्र,—लोचन, (वि०)
 बड़े नेत्रों वाला या बड़े नेत्रों वाली।—अपाङ्ग
 बड़े कोण वाली आँखें।—आयतिः, (स्त्री०)
 बहुत दिनों बाद आने वाला भविष्यकाल।—
 छद्म, (स्त्री०) केले का पेड़। कदली वृक्ष।—
 लेख, (वि०) बहुत मुड़ा हुआ।—स्तुः,
 (पु०) भाट। स्तुतिवादक।
 आयतः (पु०) चौड़ाई की अपेक्षा लंबा अधिक।
 आयतनम् १ (न०) १ स्थान। निवासस्थान। घर।
 डेरा। २ अग्निवेदी। अग्निकुण्ड। ३ देवालय।
 मन्दिर। ४ घर का स्थान।
 आयतिः (स्त्री०) १ लंबाई। विस्तार। २ भविष्यद्
 काल। भविष्य। ३ भावी फल। ४ राजश्री।
 प्रताप। महिमा। ५ हाथ बढ़ाना। स्वीकृति।
 प्राप्ति। ६ कर्म।
 आयत्त (व० कृ०) १ अवलम्बित। पराधीन। परतंत्र।
 २ शिक्षणीय। वश्य। नम्र।

आयुषिः (स्त्री०) १ परवशता । वश्यता । २ स्नेह ।
३ सामर्थ्य । ४ सीमा । मर्यादा । ५ सुविधा-
जनक । ६ प्रताप महिमा । ७ चरित्र की दृढ़ता ।
आयुषात्तथ्यं (न०) अयोग्यता । अनुपयुक्तता ।
अनौचित्य ।
आयुषमनम् (न०) १ लंबाई । विस्तार । २ संयम ।
बंधन । ३ (धनुष को) तानना । [लालसा ।
आयुषलज्जः (पु०) अधैर्य । अधीरज । उतावलापन ।
आयुस (वि०) लोहे का बना । लोहा । धातु का ।
आयुसं (न०) १ लोहा । २ लोहे की बनी कोई भी
वस्तु । ३ हथियार ।
आयुसी (स्त्री०) कवच ।
आयुस्त (व० कृ०) १ पीड़ित । कष्टित । दुःखी । २
चोटिल । ३ कुद । ४ तीक्ष्ण ।
आयुयानम् (न०) आयुमत । स्वभाव । मिजाज ।
आयुयामः (पु०) १ लंबाई । २ विस्तार । फैलाव ।
३ पसरना । आगे बढ़ना । ४ संयम । दमन ।
बंद करना ।
आयुयामवत् (न०) बड़ा हुआ । लंबा ।
आयुयसः (पु०) १ उद्योग । २ शकावट ।
आयुयसिन् (वि०) १ थका हुआ । श्रान्त । २ परिश्रम
करने वाला । उद्योग करने वाला ।
आयुयुक्त (व० कृ०) १ नियुक्त । नियत । २ संयुक्त ।
प्राप्त । [सहायक ।
आयुयुक्तः (पु०) मंत्री । मिनिस्टर । गुमराता ।
आयुयुधः (पु०) १ अस्त्र । हथियार । डाल । हथियार
आयुयुधं (न०) १ तीन प्रकार के होते हैं । एक
“प्रहरण” जैसे तलवार । दूसरा “हस्तमुक्त” जैसे
शक, भाला, बरबी आदि । तीसरा “यंत्रमुक्त”
यथा तीर, बन्दूक, तोप । अगारं,—आगारं,
(न०) हथियारों का भाण्डारगृह ।—जीविन्
(वि०) हथियार से जीवन निर्वाह करने वाला ।
(पु०) थोड़ा । सिपाही ।
आयुयुधिक (वि०) आयुष सम्बन्धी ।
आयुयुधिकः (पु०) थोड़ा । सिपाही ।
आयुयुधिन् } (वि०) हथियार धारण करने वाला
आयुयुधीय } अथवा हथियार से काम लेने वाला ।
आयुयुधम् (वि०) १ जीवित । जिव्वा । २ दीर्घजीवी ।

आयुष्य—(वि०) आयु बढ़ाने वाला । जीवन की
रक्षा करने वाला । जीवनरक्षक ।
आयुष्यं (न०) जीवनी शक्ति ।
आयुस् (न०) १ जीवन । जीवन की अवधि । २
जीवनी शक्ति । ३ भोजन । [सप्तास में स् का
प हो जाता है । जब स् किसी दीर्घ व्यञ्जन के पृथ
आवे तब ह्रस्व व्यञ्जन के पूर्व स् का र् हो जाता
है ।]—कर, (वि०) उन्न बढ़ाने वाला ।—द्रव्यं,
(न०) घी ।—वेदः, (पु०) चिकित्सा शास्त्र ।
—वेददृश,—वेदिक,—वेदिन्, (वि०) ओषधि
सम्बन्धी । (पु०) वैद्य । चिकित्सक ।—शेषः,
(पु०) १ बचा हुआ जीवन । २ जीवन का अन्त ।
३ आयु का हास ।—स्तोमः, (= आयुष्टोमः)
(पु०) यज्ञ जो दीर्घजीवन की प्राप्ति के लिये
किया जाता है ।
आये (अव्ययः) स्नेहव्यञ्जक सम्बोधनात्मक अव्यय ।
आयोगः (पु०) १ नियुक्ति । २ क्रिया । ३ पुष्प-
हार । सुवासित द्रव्य । ४ समुद्रतट या किनारा ।
आयोगवः (पु०) [स्त्री०—आयोगवी] वैश्या के गर्भ
और शुद्ध के वीर्य से उत्पन्न सन्तान । बढ़ई ।
आयोजनम् (न०) १ जोड़ना । २ ग्रहण करना ।
लेना । ३ उद्योग । प्रयत्न ।
आयोधनम् (न०) १ थुद । लड़ाई । संग्राम । २
रणभूमि ।
आरः (पु०) १ पीतल । २ लोह विशेष । ३ कोय ।
आरं (न०) १ कोना ।—कूटः (पु०) कूटम् (न०)
पीतल ।
आरः (पु०) १ मङ्गलग्रह । २ शनिग्रह ।
आरा (स्त्री०) १ मोची की राँपी । २ चाकू ।
आरत्त (वि०) रक्षित ।
आरत्तः (पु०) १ बचाव । पालन । रक्षण ।
आरत्ता (स्त्री०) १ कुम्भसन्धि । ३ सेना ।
आरत्तकः १ (पु०) १ चौकीदार । संतरी । २ देहाती
आरत्तिकः १ न्यायाधीश । पुलिस । मैजिस्ट्रेट ।
आरटः (पु०) नट । अभिनेता । नाटक का पात्र ।
एक्टर ।
आरणिः (पु०) बंबुर । उल्टा बहाव ।
आरुण्य (वि०) [स्त्री०—आरुण्या, आरुण्यी]
जंगली । जंगल में उत्पन्न ।

आरण्यक (वि०) जंगली । जंगल में उत्पन्न ।

आरण्यकः (पु०) बनरखा । जंगली मनुष्य । जंगल का रहने वाला ।

आरण्यकम् (न०) वेद के ब्राह्मणों के अन्तर्गत एक भाग जो या तो वन में बैठ कर रचे गये थे या जिनको वन में जाकर पढ़ना चाहिये ।

[अरण्येऽनुष्ठानसंस्तुतः कारण्यकम् ।

अरण्येऽध्ययनादेश आरण्यकमुदाहृतम् ।]

आरतिः (स्त्री०) १ नीराजन । आरती

आरनालं (न०) माँड़ । चाँवल का पसाव ।

आरब्धेः (स्त्री०) आरम्भ । आरम्भ ।

आरभटः (पु०) उद्योगी पुरुष । उत्साही पुरुष ।

आरभटः (पु०) साहस । विश्वास । (स्त्री०) वृत्ति ।

आरभटी (स्त्री०) विशेष प्रकार का नृत्य ।

आरंभः (पु०) १ आरम्भ । शुरुआत । २ भूमिका

आरम्भः ३ कर्म । कार्य । ४ शीघ्रता । तेज़ी । ५

उद्योग । चेष्टा । प्रयत्न । ६ दृश्य । ७ वध । हनन ।

आरभ्यां (न०) १ पकड़ना । काबू में करना ।

२ पकड़ । दस्ता । बँट । हैडिल ।

आरवः (पु०) १ आवाज़ । २ चिल्लाहट । गुराहट । भौंक

आरावः (पु०) कुत्ते भेड़िये आदि की बोली ।

आरस्थं (न०) अस्वादिष्टता । जिसमें ज्ञायका न हो ।

आरात् (अव्यया०) १ समीप । पड़ोस में । २ दूर ।

फासले पर । ३ दूर से । दूरी से ।

आरातिः (पु०) शत्रु । बैरी ।

आरातीय (वि०) १ समीप । नज़दीक । २ दूर ।

आरात्रिकम् (न०) भगवान के विग्रह की आरती करना ।

आराधनम् (न०) १ प्रसन्नता । सन्तोष । २ पूजन ।

सेवा । श्रद्धा । ३ प्रसन्न करने का उपाय ।

४ सम्मान । प्रतिष्ठा । ५ पावनक्रिया । ६

सम्पन्नता । सफलता ।

आराधना (पु०) पूजन । सेवा ।

आराधनी (स्त्री०) पूजन । श्रद्धा । तुष्टिसाधन ।

प्रसादन (देवता का) ।

आराधयितृ (वि०) पुजारी । पूजन करने वाला ।

विनम्र सेवक । [२ बाग़ बगीचा ।

आरामः (पु०) १ हर्ष । प्रसन्नता । आल्हाद ।

आरामिकः (पु०) माली ।

आरालिकः (पु०) रसोइया ।

आरुः (पु०) १ सूअर । २ कर्कट । केकड़ा ।

आरू (वि०) भूरे या साँवले रंग का ।

आरूढ (व० कृ०) सवार । चढ़ा हुआ । बैठा हुआ ।

आरूढिः (स्त्री०) चढ़ाई । उठान । उचान ।

आरेकः (पु०) १ खाली करना । २ कुञ्चन ।

सिकुञ्चन ।

आरेचित (वि०) कुञ्चित । सिकुड़ा हुआ ।

आरोप्यं (न०) सुस्वास्थ्य । अच्छी संतुष्टी ।

आरोपः (पु०) १ संस्थापन । २ कल्पना । ३ एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ की कल्पना करना ।

आरोपणम् (न०) स्थापन । लगाना । मढ़ना ।

२ किसी पौधे को एक स्थान से हटाकर दूसरी जगह लगाना । रोपना । बैठाना । ३ किसी वस्तु के गुण को दूसरी वस्तु में मान लेना । ४ मिथ्या ज्ञान । अम । ५ अनुप पर रोदा चढ़ाना ।

आरोहः (पु०) १ सवार । २ चढ़ाई । (घोड़े की) सवारी । उठी हुई जगह । उचान । ऊँचाई । ५ अहंकार । अभिमान । ६ पहाड़ । ढेर । ६ (स्त्री की कमर) नितंब । चूतर । ७ माप विशेष । ८ खान ।

आरोहकः (पु०) सवार । चढ़ने वाला ।

आरोहणम् (न०) १ सवार होने की या ऊपर चढ़ने की क्रिया । २ घोड़े पर चढ़ना । ३ जीना । सीढ़ी ।

आर्किः (पु०) अर्क का पुत्र अर्थात्—१ यम । शनिग्रह । २ राजा कर्ण । ४ सुग्रीव । ५ वैवस्वत मनु ।

आर्त्त (वि०) [स्त्री०—आर्त्ती] नास्तिक । तारका सम्बन्धी । [शहद की मक्खी ।

आर्घा (स्त्री०) जाति विशेष अथवा पीले रंग की

आर्घ्य (न०) जंगली शहद ।

आर्च (वि०) [स्त्री०—आर्ची] अर्चा करने वाला । पूजा करने वाला पुजारी ।

आर्चिक (वि०) ऋग्वेद सम्बन्धी ।

आर्चिकं (न०) सामवेद की उपाधि ।

आर्जवम् (न०) १ सिधार्ह । २ सीधायन । स्पष्ट-
वादिता । ईमानदारी । सचाई । कुटिलता का
अभाव ।

आर्जुनिः (पु०) अर्जुनपुत्र । अभिमन्यु ।

आर्त (वि०) अस्वस्थ । पीडित । कष्ट प्राप्त ।

आर्तव (वि०) [स्त्री०—आर्तवा, आर्तवी]
१ ऋतु सम्बन्धी । २ मौसमी । ऋतु में उत्पन्न ।
सामयिक । ३ स्त्री धर्म का ।

आर्तवः (पु०) वर्ष ।

आर्तवम् (न०) १ रज जो स्त्रियों की योनि से प्रति
मास निकलता है । २ रजस्वला होने के पीछे कति-
पय दिवस, जो गर्भाधान के लिये श्रेष्ठ होते हैं ।
३ पुष्प ।

आर्तवी (स्त्री०) घोड़ी ।

आर्तवेयी (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।

आर्तिः (स्त्री०) १ दुःख । क्लेश । पीडा । (शारीरिक
या मानसिक) । २ मानसिक चिन्ता । ३ बीमारी ।
रोग । ४ अनुष की नौक । ५ नाश । विनाश ।

आर्तिजिन (वि०) ऋत्विज ।

आर्तिज्य (न०) ऋत्विज का पद ।

आर्थ (वि०) [स्त्री०—आर्थी] किसी वस्तु या
पदार्थ से सम्बन्ध युक्त ।

आर्थिक (वि०) [स्त्री०—आर्थिकी] १ अर्थयुक्त ।
२ बुद्धिमान् । ३ सारवान् । वास्तविक ।

आर्द्र (वि०) १ नम । तर । भीगा हुआ । २ हरा ।
रसीला । ३ ताजा । टटका । नया । ४ कोमल ।
मुलायम ।—काष्ठं, (न०) हरी लकड़ी ।—पृष्ठ,
(वि०) सींचा हुआ । तरोताजा ।—शाकः,
(पु०) अदरक । आदी ।

आर्द्रा (स्त्री०) नक्षत्र विशेष । छठवाँ नक्षत्र ।

आर्द्रकं (न०) अदरक । आदी ।

आर्द्रयति (क्रि०) भिंगाना । नमकरना ।

आर्ध (वि०) आधा ।

आर्धिक (वि०) [स्त्री०—आर्धिकी] आधे से
संबन्ध रखनेवाला । आधा बँटवाने वाला ।

आर्धिकः (पु०) १ वह जोता, जो खेत की आधी
पैदावार ले लेने की शर्त पर खेत जोतता बोता

है । २ वैश्य का पुत्र, जिसे ब्राह्मण ने पाला
पोसा हो ।

आर्य (वि०) १ श्रेष्ठ आर्य के योग्य । २ श्रेष्ठ । प्रति-
ष्ठित । कुलीन । उच्च । ३ उत्तम । समीचीन ।
सर्वोत्कृष्ट ।—गृह्य (वि०) १ श्रेष्ठों द्वारा
सम्मानित । २ श्रेष्ठ का मित्र । श्रेष्ठ पुरुषों
द्वारा उपगम्य । ३ सम्मानित । ४ ऋजु । सरल ।
—देशः (पु०) आर्यों के रहने का देश ।
—पुत्रः (पु०) १ प्रतिष्ठित जन का पुत्र । २
दीक्षा गुरु का पुत्र । ३ बड़े भाई का पुत्र । ४ सम्मान
जनक संज्ञा । इसी प्रकार पति के लिये पत्नी का
अथवा अपने राजा के लिये उसके सेनापति की
सम्मानजनक संज्ञा । ५ ससुर का पुत्र (साला) ।
—प्रायः, (वि०) आर्यों द्वारा आवाद । श्रेष्ठ जनों
से परिपूर्ण ।—मिश्रः, (वि०) प्रतिष्ठित । सम्मानित ।
विख्यात ।—मिश्रः, (पु०) १ भद्रपुरुष । २
सम्मान सम्बोधन ।—लिङ्गिन्, (पु०) धर्म ।
—अष्ट, (पु०) । शठ । धूर्त । भण्ड ।—वृत्त,
(वि०) नेक । भला ।—वेग, (वि०) मल्ली
प्रकार परिच्छेद पहिने हुए ।—सत्यं, (न०)
महान् सत्य । श्रेष्ठ सत्य ।—हृद्य, (वि०) श्रेष्ठों
द्वारा पसंद किया हुआ ।

आर्यः (पु०) १ हिन्दुओं और ईरानियों का नाम । २
अपने धर्म और शास्त्र को मानने वाला । ३ प्रथम
तीन वर्ण । [ब्राह्मण । क्षत्रिय । वैश्य ।] ४ एक
प्रतिष्ठित व्यक्ति । ५ कुलीन । ६ कुलीनोचित
आचरण का व्यक्ति । ७ स्वामी । मालिक । ८
गुरु । शिक्षक । ९ मित्र । १० वैश्य । ११ ससुर ।
१२ बुद्धदेव ।

आर्या (स्त्री०) १ सास । २ श्रेष्ठ स्त्री । ३ कुन्द
विशेष ।—आवर्तः, (पु०) श्रेष्ठ पुरुषों का
आवास स्थान । देश विशेष जो पूर्व और पश्चिम
में समुद्रों द्वारा और उत्तर दक्षिण में हिमालय
और विन्ध्यगिरि द्वारा सीमाबद्ध है ।

आसनुद्रात्तु वै पूर्वादासनुद्राच्च पश्चिमात् ।

तयोरेवान्तरं गिर्योः आर्यावर्तं विदुर्बुधाः ॥

—मनुस्मृति ।

आर्यकः (पु०) १ भद्रपुरुष । २ पितामह ।

आर्यका } (स्त्री०) श्रेष्ठा स्त्री । कुलीन ।
आर्यिका }

आर्य (वि०) [स्त्री०—आर्यी] केवल ऋषियों द्वारा प्रयुक्त होने वाला या वाली । ऋषियों की । वैदिक । पवित्र । पुनीत । अलौकिक ।

आर्यः (पु०) ऋषिप्रोक्त आठ प्रकार के विवाहों में से एक । जिसमें कन्या के पिता को, वरपक्ष से एक या दो गौएँ दी जाती है ।

आदायार्यस्तु गोद्वयम् ।

याज्ञवल्क्य ।

आर्य (न०) ऋषिप्रणीत शास्त्र । वेद ।

आर्यभ्यः (पु०) बड़वा जो इतना बड़ा हो कि काम में लाया जासके या साड़ बना कर छोड़ा जासके ।

आर्येय (वि०) [स्त्री—आर्येयी] १ ऋषि का । ऋषि सम्बन्धी । २ योग्य । साम्य । प्रतिष्ठित ।

आर्हत (वि०) [स्त्री०—आर्हती] जैन-सिद्धान्त-वादी ।

आर्हतः (पु०) जैनी ।

आर्हतम् (न०) जैनियों का सिद्धान्त ।

आर्हन्ती (पु०) } योग्यता ।
आर्हन्त्यम् (न०) }

आलः (पु०) } १ मङ्गली आदि के आँडे । २
आलं (न०) } पीतसंख्या । हरताल ।

आलगर्दः (पु०) पनिआ सॉप ।

आलभनम् (न०) १ पकड़ना । २ स्पर्श करना । ३ मार डालना ।

आलंबः (पु०) १ अवलम्ब । आश्रय । धुनकिया ।
आलम्बः } २ सहारा । रक्षण ।

आलंबनम् (न०) १ अवलम्ब । आश्रय । २
आलम्बनम् } सहारा । ३ आश्रय । अवस्थान । ४
कारण । हेतु । ५ रस में विभाग विशेष । उसके अवलम्ब से रस की उत्पत्ति होती है ।

आलंबिन् (वि०) १ लटकता हुआ । झुका हुआ ।
आलम्बिन् } सहारा । लिखे हुए । २ समर्थित । ३
पहिने हुए । धारण किए हुए ।

आलम्भः (पु०) } १ पकड़ना । स्पर्श करना ।
आलम्भः (पु०) } २ चीरना । फाड़ना । ३
आलम्भनम् (न०) } यज्ञ में बलिदान के लिये पशु
आलम्भनम् (न०) } का वध करना । यथा “अश्वा-
लम्भं गवालम्भम् ।”

आल्यः (पु०) } १ घर । गृह । २ आचार ।
आल्यं (न०) } ३ स्थान । जगह ।

आलर्क (वि०) पागल कुत्ता सम्बन्धी या पागल कुत्ते के कारण हुआ ।

आलवश्यं (न०) १ जिसमें निमक न हो । जिसमें स्वाद न हो । २ जिसमें कुछ लुनाई न हो । बदसूरत । कुरूप ।

आलवालं (न०) खोड्वा । थाला ।

आलस (वि०) [स्त्री०—आलसी] सुस्त । काहिल ।

आलस्य (वि०) आलसी । सामर्थ्य होने पर भी आवश्यक कर्तव्य का पालन न करने वाला । अकर्मण्य । उदासीन । [उदासीनता ।

आलस्यम् (न०) सुस्ती । काहिली । अकर्मण्यता ।

आलातम् (न०) लकड़ी जिसका एक छोर जलता हो । लुआठी । लुक ।

आलानम् (न०) १ हाथी बाँधने का खंभा या खंटा । हाथी के बाँधने का रस्सा । २ बेड़ी । ३ जंजीर । सकड़ी । रस्सा । ४ बंधन । [वाला ।

आलानिक (वि०) हाथी बाँधने के खंभे का काम देने

आलापः (पु०) १ वार्तालाप । बातचीत । कथोप-
कथन । सम्भाषण । २ वर्णन । कथन । ३ तान ।
सङ्गीत के सप्त स्वरों का साधन ।

आलापनम् (न०) वार्तालाप । कथोपकथन ।

आलाबूः } (स्त्री०) कुम्हड़ा । कुहँड़ा । कूष्माण्ड ।
आलाबूः }

आलावर्तम् (न०) कपड़े का बना पंखा । [सच्चा ।

आलि (वि०) १ निकम्मा । सुस्त । २ ईमानदार ।

आलि (पु०) १ बिच्छू । २ मधुमक्षिका ।

आली (स्त्री०) १ सखी । सहेली । २ कृतार ।
अवलि । ३ पंक्ति । लकीर । रेखा । ४ पुल । सेतु ।
५ बांध ।

आलिगनं (न०) चिपटाना । गले लगाना ।

आलिङ्गनम् } परिस्मरण ।

आलिङ्गिन् (वि०) चिपटाये हुए ।

आलिङ्गिन् } (वि०) चिपटाये हुए ।
आलिङ्गिन् }

आलिङ्गी (स्त्री०) }
आलिङ्गी (स्त्री०) } यवाकार । जोटा ।
आलिङ्ग्यः (पु०) }
आलिङ्ग्यः (पु०) }

आलिजरः } (पु०) मही का मटका या बड़ा बड़ा ।
 आलिजरः }
 आलिन्दः } (पु०) १ चबूतरा । चौतरा ।
 आलिन्दः }
 आलिन्दकः }
 आलिन्दकः }
 आलिपनं } (पु०) पुताई । लिपाई ।
 आलिपनम् }
 आलीढम् (न०) दहिना घुटना मोड़ कर बैठना । बैठने का आसन विशेष ।
 आलु (न०) धन्नौटी । वेड़ा ।
 आलुः (पु०) १ उल्लू । धुन्धू । २ आबनूस । काले आबनूस की लकड़ी ।
 आलुः (स्त्री०) बड़ा ।
 आलुचनम् } (न०) नोंच कर उखाड़ना । चीर फाड़
 आलुचनम् } कर टुकड़े टुकड़े कर डालना ।
 आलुल (वि०) १ हिलने डुलने वाला । २ निर्वल ।
 आलेखनम् (न०) १ लेख । २ चित्रण । ३ खरोचन । खसोटन ।
 आलेखनी (स्त्री०) कुंची । कलम ।
 आलेख्यम् (न०) १ हाथ से बनायी हुई तसवीर । तसवीर । चित्र । २ लेख ।—शेष, (वि०) सिवाय चित्र के जिसका कुछ भी न बचा हो अर्थात् मृत । मरा हुआ ।
 आलेपः (पु०) १ माखिश । उपटन । लेप ।
 आलेपनम् (न०) २ पलस्तर ।
 आलोकः (पु०) १ चितवन । अबलोकन ।
 आलोकनम् (न०) २ दृश्य । दर्शन । ३ प्रकाश । ४ आव । कान्ति । ५ बधाई ।
 आलोचक (वि०) देखने वाला । जाँचने वाला ।
 आलोकम् (न०) देखने की शक्ति । देखने का हेतु या कारण ।
 आलोचनम् (न०) १ देखना । पहचानना । गुण-
 आलोचना (स्त्री०) १ दोष-निरूपण । विवेचना ।
 आलोडनम् (न०) १ हिलाना । गडबड
 आलोडना (स्त्री०) १ करना । हिलाना डुलाना । २ मिश्रण करना । मिलाना ।
 आलोल (वि०) १ जरा जरा हिलता हुआ । काँपता हुआ । घूमता हुआ । २ हिलता हुआ । आन्दोलित ।

आवनेयः (पु०) भूसुत । मङ्गलग्रह ।
 आवन्त्य } (वि०) अवन्ती । (उज्जैन) से आया
 आवन्त्य } हुआ या अवन्ती से सम्बन्ध युक्त ।
 आवन्त्यः } (पु०) १ अवन्ती का राजा या निवासी ।
 आवन्त्यः } पतित ब्राह्मण की सन्तान ।
 आवपनम् (न०) १ बीज बोने बखेरने या फेंकने की क्रिया । २ बीज बोना । ३ मुँडन । हजामत । ४ पात्र । वड़ा । आरी । करवा । लोटा ।
 आवरकं (न०) ठक्कन । पर्दा । धूँघट ।
 आवरणम् (न०) १ ढाँकना । छिपाना । मूँडना । २ बंद करना । घेरना । ३ ठक्कन । पर्दा । ४ रोक । अड़चन । ५ घेरा । हाता । छारदीवाली । ६ वस्त्र । कपड़ा । ७ ढाल ।—शक्तिः, (स्त्री०) आत्मा व चैतन्य की दृष्टि पर परदा डालने वाली शक्ति ।
 आवर्तः (पु०) १ घुमाव । चक्कर । २ बवंडर । भँवर । ३ विचार । विवेचन । ४ घुँघराले बाल । ५ घनी बस्ती । ६ रत्न विशेष । लाजा-वर्त । ७ सोनामक्की । ८ चिन्ता । ९ बादल जो पानी न बरसावे ।
 आवर्तकः (पु०) १ बादल विशेष । २ बवंडर । ३ चक्कर । फेरा । ४ घुँघराले बाल ।
 आवर्तनः (पु०) विष्णु ।
 आवर्तनम् (न०) १ घुमाव । चक्कर । २ आवर्तन । घूर्णन । ३ (आतुर्यों का) गलाना । ४ आवृत्ति । ५ दही या दूध का रखना ।
 आवर्तनी (स्त्री०) घरिया; जिसमें रख कर सुनार लोग सोना चाँदी गलाते हैं ।
 आवलिः } (स्त्री०) १ रेखा । पंक्ति । २ श्रेणी ।
 आवली } कतार ।
 आवलित (वि०) थोड़ा सा मुड़ा हुआ ।
 आवश्यक (वि०) [स्त्री०—आवश्यक] १ जरूरी । सापेक्ष । २ प्रयोजनीय जिसके बिना काम न चले ।
 आवश्यकम् (न०) आवश्यकता । ऐसा कर्म या कर्त्तव्य जिसके बिना काम न चले । अनिवार्य परिणाम ।
 आवसतिः (स्त्री०) रात । आधी रात ।

आवसथः (पु०) १ आवसस्थान । मकान । घर । २ विश्रामगृह । ३ छात्रालय । मठ । कुटी । ४ वृत्त विशेष ।

आवसथ्य (वि०) घर वाला । घर के भीतर ।

आवसथ्यः (पु०) अग्निहोत्र का अग्नि जो घर में रखा जाता है ।

आवसथ्यम् (न०) १ छात्रावास । छात्रनिलय । २ मठ । कुटी । ३ घर । मकान ।

आवर्तित (वि०) १ समाप्त । सम्पूर्ण । २ निर्णीत । निश्चित । निर्धारित ।

आवसितम् (न०) पका हुआ अनाज । [हुए ।

आवह (वि०) उत्पन्न करते हुए । पथ दिखलाते

आवापः (पु०) १ बीज बोना । २ बखेरना । ३ आल-
बाला । ४ वरतन । अनाज । अनाज रखने का
बर्तन । ५ पेय पदार्थ विशेष । ६ कंकण । ७
ऊबड़ खाबड़ ज़मीन ।

आवापकः (पु०) कंकण । पहुँची ।

आवापनम् (न०) करवा ।

आवालं (न०) थाला । खोदुआ ।

आवासः (पु०) १ घर । मकान । बस्ती । २
आवासस्थल ।

आवाहनम् (न०) १ बुलावा । न्योता । आमंत्रण ।
२ देवता का आह्वन । ३ अग्नि में आहुति देना ।

आविक (वि०) [स्त्री०—आविकी] १ भेद
सम्बन्धी । २ ऊनी ।

आविकम् (न०) ऊनी कपड़ा ।

आविग्न (वि०) दुःखी । विपद्ग्रस्त । मुसीबतग्रस्त ।

आविद्ध (व० क०) १ बिदा हुआ । विधा हुआ । २
टेढ़ा । झुका हुआ । ३ जोर से फेंका हुआ । चलाया
हुआ । [२ अवतार ।

आविभावः (पु०) १ प्रकाश । प्राकट्य । उत्पत्ति ।

आविल (वि०) १ मटीला । गंदला । मैला । गंदा ।
२ अपवित्र । अष्ट । ३ काले रंग का । कलौहा । ४
धुंधला । मंद ।

आविलयनि (क्रि० पर०) धब्बा लगाना । कलङ्कित
करना ।

आविष्करणम् (न०) १ प्राकट्य । प्रकाश ।

आविष्कारः (पु०) १ साक्षात्करण ।

आविष्ट (व० क०) १ प्रविष्ट । घुसा हुआ । २ आवे-
शित (भूत प्रेत द्वारा) । ३ मरा हुआ । वश में
किया हुआ । ४ सर्वग्रास किया हुआ । घेरा हुआ ।
रत । सचेष्ट ।

आविस् (अव्यया०) सामने । नेत्रों के आगे । खुल-
खुल्ला । साफ तौर पर । स्पष्टतः ।

आवीतं (न०) अपसव्य । दहिने कंधे पर जनेक
रखने की क्रिया ।

आवुकः (पु०) (नाटक की भाषा में) पिता ।

आवुत्तः (पु०) भगिनीपति । बहनोई ।

आवृत् (स्त्री०) १ किसी ओर झुका या मुड़ा ।

प्रवेश । २ क्रम । विधि । तरीका । ३ रास्ते
का मोड़ । रास्ता । दिशा । ४ प्रायश्चित्त विशेष ।

आवृत्त (व० क०) १ घूमा हुआ । चक्कर खाया हुआ ।
लौटा हुआ । २ दुहराया हुआ । ३ अभ्यस्त । पढ़ा
हुआ । सीखा हुआ । अभ्रीत ।

आवृत्तिः (स्त्री०) १ प्रत्यावर्तन । लौटना । २ पल-
टाव । (सेना का पीछे) हटाव । ३ परिक्रमा ।

चक्कर । ४ घूमकर या चक्कर काट कर पुनः उसी
स्थान पर आना जहाँ से रवाना हुआ हो । ५ बार-
बार जन्म और मरण । लौकिक जीवन । ७ बार-
बार किसी बात का अभ्यास । ७ पुनरावृत्ति ।

दुहराना ।

आवृष्टिः (स्त्री०) वर्षा । फुआरः ।

आवेगः (पु०) बेचैनी । चिन्ता । उद्विग्नता । प्रवरा-
हट । व्यस्तता । चित्तचाञ्चल्य । २ प्रवराहट ।
उतावली ।

आवेदनम् (न०) १ सूचना । इत्तिला । २ प्रति-
स्मरण । वर्णन । ३ अपनी दशा को सूचित
करना । अर्जी । ४ अर्जीदावा ।

आवेशः (पु०) १ व्याप्ति । सञ्चार । प्रवेश । २
अनुरक्ति । ३ अभिमान । अहङ्कार । ४ चित्तचाञ्चल्य ।

क्रोध । रोष । ५ भूतावेश । किसी प्रेत का किसी के
शरीर पर अधिकार होना । भूतप्रेतवाचा । सृगी
की मूर्खता ।

आवेशनम् (न०) १ प्रवेश । द्वार । २ भूत प्रेत की
बाधा । ३ क्रोध । रोष । ४ कारखाना । ५ घर ।

आवेशिक (वि०) [स्त्री०—आवेशिकी] १ विल-
क्षण । निज का । २ पुरतैनी ।

आवेशिकः (पु०) महान । अतिथि । अभ्यागत ।

आवेशकः (पु०) दीवाल । घेरा । हाता ।

आवेशनम् (न०) १ बैठन । बन्धन । २ लिफाफा ।
रैपर । ३ दीवाल । हाता । घेरा ।

आश (वि०) खानेवाला । भक्षक ।

आशः (पु०) भोजन ।

आशंसनम् (न०) १ प्रतीक्षा । अभिलाषा । २
कथन । घोषणा । [घोषणा ।

आशंसा (स्त्री०) १ अभिलाषा । आशा । २ भाषण ।

आशंसु (वि०) अभिलाषी । आशावान ।

आशंका } (स्त्री०) १ भय । डर । २ सन्देह ।

आशङ्का } अनिश्चितता । ३ अविश्वास । शक ।
शुबह ।

आशंकित } (व० क०) भयभीत । डरा हुआ ।

आशङ्कित }

आशंकितं } (न०) १ डर । भय । २ सन्देह । शक ।

आशङ्कितम् } अनिश्चितता ।

आश्रयः (पु०) १ शयनगृह । विश्रामस्थल । २

आवसगृह । आश्रयस्थल । ३ स्थान । आधार ।

खात । गढ़ा । ४ आमाशय । पेट । मेदा । ५

अभिप्राय । तात्पर्य । ६ मन । हृदय । ७ समृद्धि ।

मखत्ती । बखारी । ८ इच्छा । मर्जी । १० प्रारब्ध ।

भान्य । ११ पशु पकड़ने का खात या गढ़ा ।

आशः (पु०) अग्नि । आग ।

आशरः (पु०) १ अग्नि । २ राक्षस । दैत्य । ३
हवा ।

आशवम् (न०) १ तेजी । फुर्ती । २ आसव । अर्क ।

आशा (स्त्री०) १ किसी अप्राप्त वस्तु के प्राप्त करने

की अभिलाषा और उसकी प्राप्ति का कुछ कुछ

निश्चय । २ अभिलाषा । इच्छा । ३ मिथ्या अभि-

लाषा । ४ दिशा । अञ्चल । अवकाश ।—अन्वित,

—जनन, (वि०) आशावान । आशाकारक ।—

गजः, (पु०) दिग्गज ।—तैन्तुः, (पु०) बहुत कम

आशा ।—पालः, (पु०) दिग्गज ।—पिशाचिका,

(स्त्री०) आशाराक्षसी ।—बन्धः, (पु०) १ विश्वास ।

२ सात्वता । भरोसा । आशा । ३ मकड़ी का

जाला ।—भङ्गः, (पु०) आशा का टूटना ।—

हीन, (वि०) हतोत्साह । उदास ।

आषाढः (पु०) आषाढ का महीना ।

आशास्य (स० का० क०) वर द्वारा प्राप्तव्य । २
अभिलषित ।

आशास्यं (न०) १ आशा । इच्छा । अभिलाषा । २
आशीर्वाद । बरदान । दुआ ।

आशीर्जित } (वि०) मनकारता हुआ ।

आशीर्जित }

आशित (वि०) १ खाया हुआ । खाने को दिया
हुआ । २ अघाया हुआ । तुस ।

आशितम् (न०) भोजन ।

आशितंगवीन } (वि०) पशुओं द्वारा पहिले चरा

आशितङ्गवीन } हुआ ।

आशितंभव } (वि०) अघाया । तुस हुआ ।

आशितम्भव }

आशितंभवम् } (न०) १ भोजन । भोड्य पदार्थ ।

आशितम्भवः } २ तुसि । (पु० भी होता है ।)

आशिर (वि०) पेद्र । भोजनभद्र ।

आशिरः (पु०) १ अग्नि । २ सूर्य । ३ दैत्य । राक्षस ।

आशिस् (स्त्री०) १ आशीर्वाद । दुआ । मङ्गलकामना ।

२ प्रार्थना । अभिलाषा । कामना । ३ सर्प का

विषदन्त ।—वादः, (पु०)—वचनं, (न०)

मङ्गला कामना सूचक वचन । दुआ । असीस ।

—विषः, (आशीर्षिषः) (पु०) सर्प । साँप ।

आशी (स्त्री०) १ सर्प का विषदन्त । २ विष ।

गरज । ३ आशीर्वाद । दुआ ।—विषः, (पु०)

१ सर्प । २ एक विशेष प्रकार का सर्प ।

आशु (वि०) तेज । फुर्तीला ।—कारिन्, (अन्यथा०)

—कृत, (वि०) कोई भी काम हो, शीघ्र करनेवाला ।

—कोपिन्, (वि०) चिड़चिड़ा । तुलुक मिजाज ।

—ग, (वि०) तेज । फुर्तीला ।—गः, (पु०)

१ हवा । २ सूर्य । ३ तीर ।—तोष, (पु०) शिव

जी की उपाधि ।—व्रीहिः, (पु०) चावल जो

बरसात ही में पक जाते हैं ।

आशुः (पु०) आशु (न०) चाँवल, जो वर्षाश्रु ही में

पक जाते हैं ।

आशुशुक्ताणिः (पु०) १ हवा । २ आग ।

आशोकुटिन (पु०) पहाड़ ।

आशोषणं (न०) सुखाना ।

आशौचं (न०) अपवित्रता । (जनन मरण के समय होने वाला सूतक ।)

आश्चर्य (वि०) अद्भुत । विस्मयकारी । असामान्य । अजीब ।

आश्चर्यम् (न०) १ चमत्कार । जादू । २ विस्मय-
णता । विचित्रता ।

आश्चोतनम् } (न०) १ निन्दावाद । प्रोक्षण । २
आश्चोतनम् } पलकों पर धी आदि लगाना ।

आश्म (वि०) [स्त्री०—आश्मी] पत्थर का बना
हुआ । पथरीला । [का बना हुआ ।

आश्मन (वि०) [स्त्री०—आश्मनी] पथरीला । पत्थर
आश्मनः (पु०) १ पत्थर की बनी कोई वस्तु । २ सूर्य
के सारथी अरुण का नाम ।

आश्मिक (वि०) [स्त्री०—आश्मिकी] १ पत्थर का
बना । २ पत्थर ढोनेवाला या ले जाने वाला ।

आश्यान (व० कृ०) १ कड़ा । जमा हुआ । २ कुछ
कुछ सूखा हुआ ।

आश्रं (न०) आँसू । [क्रिया ।

आश्रपणम् (न०) पाचन की या उबालने की

आश्रमः (पु०) १ साधुओं के रहने का स्थान ।

आश्रमम् (न०) १ कुटी । गुफा । २ ब्राह्मण के जीवन
की चार अवस्थाओं में से कोई एक । [चार

अवस्थाएँ—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ,
संन्यास । कृत्रिय और वैश्य को साधरणतः उक्त

प्रथम तीन आश्रमों में प्रवेश करने का अधिकार है,
किन्तु किसी किसी धर्मशास्त्रकार के मतानुसार

ये दोनों वर्ण चतुर्थ आश्रम में भी प्रवेश कर सकते
हैं] ३ विद्यालय । पाठशाला । ४ वन । उपवन । —

गुरुः, (पु०) प्रधानाध्यापक । प्रिंसपल । —धर्मः,
१ प्रत्येक आश्रम के कर्त्तव्य कर्म । २ संन्यासाश्रम

के कर्त्तव्य । —पदं, —मण्डलं, (न०) तपोवन । —
भूय, (वि०) आश्रम धर्म से पतित । —वासिन्,

—आलयः—सदृ, (पु०) तपस्वी । संन्यासी ।

आश्रमिक (वि०) चार आश्रमों में से किसी एक
आश्रमिन्) आश्रम का ।

आश्रयः (पु०) १ आसरा । सहारा । आधार ।
विश्रामस्थल । आश्रयस्थल । २ शरण । पनाह ।

३ भरोसा । ४ घर । ५ राजा के ६ गुणों में से
एक । ६ तरकस । ७ अधिकार । स्वीकृति । ८
सम्बन्ध । सङ्गति ।

आश्रयक } (पु०) अग्नि ।
आश्रयशः }

आश्रयणम् (न०) १ सहारा लेने की क्रिया । २
स्वीकृत करना । पसन्द करना । ३ पनाह । आश्रय ।

आश्रयिन् (वि०) १ आश्रित । आश्रय लेनेवाला ।
२ सम्बन्ध युक्त ।

आश्रव (वि०) आज्ञाकारी । आज्ञानुवर्ती ।

आश्रवः (पु०) १ सरिता । नदी । चरमा । सोता ।
२ प्रतिज्ञा । वादा । प्रतिश्रुति । ३ दोष ।

अपराध ।

आश्रिः (स्त्री०) तलवार की धार । [वाला ।
आश्रित (व० कृ०) १ शरणागत । २ आसरे पर रहने

आश्रितः (पु०) चाकुर । नौकर । अनुयायी ।

आश्रुत (व० कृ०) १ सुना हुआ । २ प्रतिज्ञात ।
स्वीकृत । मंजूर किया हुआ ।

आश्रुतम् (न०) इस प्रकार पुकारना जो सुन पड़े ।

आश्रुतिः (स्त्री०) १ श्रवण । २ स्वीकृति ।

आश्लेषः (पु०) १ आलिङ्गन । चिपटाना । लिपटाना ।
गले लगाना । २ घनिष्ठ सम्बन्ध । सम्बन्ध ।

आश्लेषा (स्त्री०) नवौ नक्षत्र । [सम्बन्धी ।

आश्व (वि०) [स्त्री०—आश्वी] घोड़े का । घोड़ा
आश्वं (न०) बहुत से घोड़े । घोड़ों का समुदाय ।

आश्वत्थ (वि०) [स्त्री०—आश्वत्थी] पीपल का
बना हुआ या पीपल का या पीपल सम्बन्धी ।

आश्वत्थम् (न०) पीपल वृक्ष के फल ।

आश्वयुज (वि०) [स्त्री०—आश्वयुजी] आश्विन
मास से सम्बन्ध रखने वाला ।

आश्वयुजः (पु०) आश्विन मास । कार का
महीना । [पूर्णिमा ।

आश्वयुजी (स्त्री०) आश्विन मास की पूर्णमासी या

आश्वलक्ष्मिकः (पु०) १ घोड़ों के नाल जड़ने
वाला । २ अश्ववैद्य । सालहोत्री । ३ साईस ।

आश्वासः (पु०) १ स्वतंत्र रीत्या सांस लेना ।
२ सान्त्वना । प्रसन्नता । अभयदान । ३ निश्चिन्ता ।

अवसान । ४ किसी पुस्तक का परिच्छेद या काण्ड ।

आश्वत्थम (न०) दिलासा । तसल्ली । ढाँढस । धीरज । आशाप्रदान ।

आश्विकः (पु०) बुद्धसवार ।

आश्विनः (पु०) कार का महीना ।

आश्विनेयौ (द्विवचन) दो आश्विनी कुमार । ये दोनों देवताओं के चिकित्सक कहे जाते हैं ।

आश्विन (वि०) [स्त्री०—आश्विनो] घोड़े पर सवार हो यात्रा करने वाला ।

आषाढ (पु०) १ वर्षाऋतु के प्रथम मास का नाम । २ पलास का दण्ड ।

आषाढा (स्त्री०) २० वाँ और २१ वाँ नक्षत्र । पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा । [मासी ।

आषाढी (स्त्री०) आषाढ मास की पूर्णिमा या पून-आष्टमः (पु०) आठवाँ भाग या अंश ।

आस्, आः (अन्यथा०) स्मृति, क्रोध, पीड़ा, अपाकरण, खेद, शोक-द्योतक अव्यय ।

आस् (धा० आ०) [आस्ते, आसित] १ बैठना । लेटना । विश्राम करना । २ रहना । बसना । ३ चुपचाप बैठना । बेकार बैठना । ४ होना । जीवित रहना । ५ अन्तर्गत होना । ६ जाने देना । छोड़ देना । ७ एक ओर रख देना ।

आसः (पु०) } १ बैठक । २ कमान ।
आसम् (न०) } "स सासिः सासुसुः सासः ।"—
—किराताजुनीय ।

आसक्त (व० कृ०) १ अनुरक्त । लीन । लिस । २ लुब्ध । मुग्ध । मोहित । आशिक ।

आसक्तिः (स्त्री०) १ अनुरक्ति । लिसला । २ लगन । चाह । प्रेम । ३ हृत्क ।

आसंगः } (पु०) १ अनुराग । अभिनिवेश । २ संगति,
आसङ्गः } (सोहबत । मिलन । ३ बंधन ।

आसंगिनी } (स्त्री०) बंधन ।
आसङ्गिनी }

आसंजनम् } (न०) १ बांधना । लपेटना । (शरीर-
आसंजनम् } पर) धारण करना । २ फँस जाना ।
चिपट जाना । ३ अनुराग । भक्ति ।

आसत्तिः (स्त्री०) १ संसर्ग । मेलमिलाप । २ घनिष्ठ ऐक्य । ३ लाभ । फायदा । ४ सामीप्य । निक-

टता । ५ अर्थबोधार्थ विना व्यवधान के परस्पर सम्बन्ध युक्त दो पदों या शब्दों का समीप रहना ।

आसन् (न०) मुख ।

आसन् (न०) १ बैठ जाना । २ बैठक । बैठकी । तिपाई । ३ बैठने का वंग विशेष । आसन विशेष । ४ बैठ जाना या रुक जाना । ५ मैथुन करने की कोई भी विशेष विधि । ६ द्युः प्रकार की राजनीति में से एक । वे ये हैंः—
"सन्धिर्ना विग्रही यावन्नाशनं द्वैवमग्रयः ।"

अमरकोष ।

शत्रु के सामना करने पर भी किसी स्थान पर बड़े रहना । ७ हाथी का कंधा ।

आसना (स्त्री०) बैठक । तिपाई । टिकाव ।

आसनी (स्त्री०) छोटी बैठकी ।

आसंदी } कोच । तकिया दार लंबी बैंच जिस पर
आसन्दी } गद्दा मड़ा हो ।

आसन्न (व० कृ०) समीपस्थ । निकट का । उपस्थित ।—कालः, (पु०) १ मृत्यु की घड़ी । २ जिसकी मृत्यु समीप हो ।—परिचारकः, (पु०)
—चारिका, (स्त्री०) व्यक्तिगत चाकर । शरीर-रक्षक । बाडीगाई ।

आसंवाद्य (वि०) बंद किया हुआ । रोका हुआ । चारों ओर से रुका हुआ ।

आसंवाद्या भविष्यन्ति यन्मात्रः शरद्वृष्टिभिः ।

—रामायण ।

आसवः (पु०) १ अर्क । २ काढ़ा । ३ हर प्रकार का मद्य । [मण ।

आसादनम् (न०) १ उपलब्धि । प्राप्ति । २ आक्र-

आसारः (पु०) १ मूसलधार वृष्टि । २ शत्रु को घेरना । ३ आक्रमण । हस्ता । चढ़ाई । ४ मित्र राजा की सैन्य । ५ रसद । भोज्यपदार्थ ।

आसिकः (पु०) तलवारबहादुर । तलवारबंद सिपाही ।

आसिधारम् (न०) व्रत विशेष ।

आसुतिः (स्त्री०) १ परिश्रवण । निःसरण । सरण । खिंचाव । टपकाव । सुआव । २ फाँट । काथ । काढ़ा ।

आसुर (वि०) [स्त्री०—आसुरी] १ असुरों का । असुर सम्बन्धी । २ राक्षसी । नारकी । अधम ।
आसुरः (पु०) १ असुर । २ आठ प्रकार के विवाहों में से एक । इसमें वर अपने लिये बधू को मूल्य देकर बधू के पिता या अन्य किसी सम्बन्धी से खरीदता है ।

आसुरी (स्त्री०) १ जराही । बीरा फाड़ी का इलाज । २ राक्षसी या असुर की स्त्री ।

आसुत्रित (वि०) १ पुष्प माला बनाना या पहिना । २ ओतप्रोत । गुथा हुआ ।

आसेकः (पु०) सिंचन । जल से सींचना । तर करना या भिगोना । उड़ेलना । [छिड़कना ।

आसेचनम् (न०) उड़ेलना । डालना । तर करना ।

आसेधः (पु०) गिरफ्तारी । हवालात । पकड़ रखना । गिरफ्तारी चार प्रकार की होती है यथा—

“स्थानसेधः कालदूतः मयावात् कर्तव्यमथा ।”

—नारद ।

आसेवा (स्त्री०) १ उत्साह युक्त अभ्यास । आसेवनम् (न०) १ उत्साह पूर्वक किसी कर्म को बार बार करने की प्रवृत्ति । २ पुनरावृत्ति ।

आस्कन्दः (पु०) १ आक्रमण । चढ़ाई । आस्कन्दनम् (न०) १ हम्ला । २ चढ़ना । सवार होना । सीढ़ी पर चढ़ना । ३ बिहार । भर्त्सना । ४ घोड़े की एक चाल । ५ युद्ध । लड़ाई ।

आस्कन्दिन् (वि०) कूदते हुए । फलंगिते हुए । हम्ला करते हुए । आक्रमण करते हुए ।
आस्कन्दिन् (न०) १ घोड़े की चाल विशेष । २ तेज़ दलकी ।

आस्कन्दिन् (वि०) कूदते हुए । फलंगिते हुए । हम्ला करते हुए । आक्रमण करते हुए ।

आस्तरः (पु०) १ चादर । चदर । २ कालीन । शलीचा । बिस्तरा । चटाई । ३ बिछावन ।

आस्तरणम् (न०) १ बिछौना । चादर । २ शय्या । ३ गद्दा । तोषक । चादर । ४ शलीचा । ५ हाथी की झूल ।

आस्तारः (पु०) बिछाना । ठाँकना । बखेरना ।

आस्तिक (वि०) [स्त्री०—आस्तिकी] १ परलोक और ईश्वर में विश्वास रखने वाला । २ वेदों पर आस्था रखने वाला । ३ पवित्र । सच्चा । विश्वासी ।

आस्तिकता (स्त्री०) १ ईश्वर और परलोक आस्तिक्यम् (न०) में विश्वास । २ वेद में आस्तिकत्वम् (न०) विश्वास । ३ सच्चाई । विश्वास । श्रद्धा । ईश्वरभक्ति । धर्मानुराग ।

आस्तीकः (पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम । यह जरफाह के पुत्र थे । इन्हींके बीच में पड़ने से महाराज जनमेजय ने सर्पयज्ञ बंद किया था ।

आस्था (स्त्री०) १ श्रद्धा । पूज्यबुद्धि । २ स्वीकारोक्ति । प्रतिज्ञा । ३ सहारा । आश्रय । आधार । ४ आशा । भरोसा । ५ उद्योग । प्रयत्न । ६ दृष्टा । हालत । परिस्थिति । ७ समारोह ।

आस्थानम् (न०) १ स्थान । जगह । २ आधार । आधारस्थल । ३ समारोह । ४ श्रद्धा । पूज्य बुद्धि । ५ सभा-भवन । दरबार । दरवाजों के बैठने के लिये विशाल भवन । ६ विश्रामस्थान ।

आस्थित (व० क०) निवास किया । ठहरा । रहा । पहुँचा । मान गया । बड़े प्रयत्न से किसी काम में संलग्न । घिरा हुआ । फैला हुआ ।

आस्पदम् (पु०) १ स्थान । जगह । बैठक । कमरा । २ (अलं०) आवासस्थान । ३ पद । मर्यादा । ४ प्रताप । अधिकार । ५ मामला । ६ सहारा । ७ लग्न से दसवाँ स्थान ।

आस्पदं (न०) १ लिसकन । काँपन । थर-थर । २ धराहट । धड़कन । [होड़ी ।

आस्पर्धा (स्त्री०) स्पर्धा । बराबरी । हिस्सा । होड़-आस्फालः (पु०) १ धीरे-धीरे चलाना या डुलाना । २ फटफटाना । ३ विशेष कर हाथी के कानों का फटफटाना ।

आस्फालनम् (न०) १ रगड़ना । मलना । चलाना । दबाना । पछाड़ना । २ गर्थ । अहङ्कार ।

आस्फोटः (पु०) १ मदार का पौधा । २ ताल ठोंकना ।

आस्फोटनम् (न०) १ फटफटाना । २ थर थर काँपना । ३ फूँकना । फुलाना । ४ सकोड़ना । सूँढ़ना । ५ ताल ठोंकना ।

आस्फोटा (स्त्री०) नवमल्लिका का पौधा । चसेली की भिन्न भिन्न जातियाँ ।

आस्माक (स्त्री०—आस्माकी] हमारा । आस्माकीन हमारे ।

आस्यं (न०) १ मुख । दाढ़ें । २ चेहरा । ३ मुख का वह भाग जिससे वर्ण का उच्चारण किया जाता है ।
 ४ छेद ।—आसचः, (पु०) थूक । खकार ।—
 पत्रं, (न०) कमल ।—लाङ्गलः, (पु०)
 १ कुत्ता । २ शूकर ।—लोमन्, (न०) ढाढ़ी ।
 आस्यन्दनम् (न०) बहना । टपकना ।
 आस्यंधय (वि०) चूमा । चुम्बन ।
 आस्रं (न०) खून । लोहू । रक्त ।
 आस्रपः (पु०) रक्त पीने वाला । राक्षस ।
 आस्रवः (पु०) १ पीड़ा । कष्ट । दुःख । २ बहाव ।
 दौड़ । ३ निकास । ४ अपराध । रोष । ५ चुरते
 हुए चावल का फेन । [कष्ट ।
 आश्रावः (पु०) १ घाव । २ बहाव । थूक । ४ पीड़ा ।
 आस्वादः (पु०) १ चखना । खाना । २ सुस्वाद ।
 रस ।
 आस्वादनम् (न०) चखना । खाना ।
 आह (अव्यया०) भर्त्सना । उग्रता । प्रभुत्वसूचक
 अव्ययात्मक सम्बोधन ।
 आहत (व० कृ०) १ पिटा हुआ । चोट खाया
 हुआ । २ कुचला हुआ । ३ चोटिल । मरा हुआ ।
 ४ (अङ्कगणित में) गुणा किया हुआ । ५ (पाँसा)
 फेंका हुआ । ६ मिथ्या उच्चारित ।
 आहतः (पु०) ढोल । [असम्भव कथन ।
 आहतम् (न०) १ कोरा कपड़ा । २ बेहूदा कथन ।
 आहतिः (स्त्री०) १ आघात । २ प्रहार । ३
 लट्ट । डंडा । [वाला ।
 आहर (वि०) लाने वाला । जाकर लाने वाला । लेने
 आहरः (पु०) १ ग्रहण । पकड़ । २ परिपूर्णता ।
 किसी कार्य को करने की क्रिया । ३ बलिदान ।
 आहरणं (न०) १ छीनना । हरलेना । स्थानान्तरित
 करना । अपनयन । ३ ग्रहण । लेना । ४ विवाह
 में दिया जानेवाला दहेज ।
 “ सत्त्वानुष्णाहरणी कृतश्रीः ।
 रघुवंश ।
 आहवः (पु०) १ युद्ध । लड़ाई । २ ललकार ।
 चुनौती । ३ यज्ञ । होम ।
 आहवनम् (न०) यज्ञ । होम ।
 आहवनीय (स० का० कृ०) हवन करने योग्य ।

आहवनीयः (पु०) गार्हपत्याग्नि से लिया हुआ
 अभिसंश्रित अग्नि, जो यज्ञ करने के लिये यज्ञ-
 मण्डप में पूर्व दिशा में स्थापित किया जाता है ।
 आहारः (पु०) १ लाना । हरलाना । २ भोजन
 करना । ३ भोजन ।—पाकः, (पु०) भोजन
 की पाचन क्रिया ।—विरहः, (पु०) फाँका ।
 कड़ाका । लँघन ।—सम्भवः, (पु०) खाये
 हुए पदार्थों का रस ।
 आहार्य (स० का० कृ०) १ आहरणीय । २ पकड़
 कर पास लाने योग्य । ३ कृत्रिम । बाहिरी । ४
 चार प्रकार के अभिनयों में से एक ।
 आहवः (पु०) १ ढोरों को जल पिलाने के लिये
 कुए के पास का हौद । २ युद्ध । लड़ाई । ३
 आह्वान । आसंश्रय । ४ आग ।
 आहिडिकः } (पु०) वर्णसङ्कर विशेष । निषाद
 आहिशिडिकः } पिता और वैदेहि माता से उत्पन्न ।
 आहित (व० कृ०) १ स्थापित । रखा हुआ । जमा
 किया हुआ । अमानतन रखा हुआ । ठिकाया
 हुआ । डाला हुआ । किया हुआ । २ संस्कारित ।
 —अग्नि, (पु०) अग्निहोत्री ।—अङ्ग, (वि०)
 चिन्हित । धम्बादार ।
 आहितुशिडकः (पु०) सपेरा । मदारी ।
 आहुतिः (स्त्री०) १ होम । हवन । किसी देवता के
 उद्देश्य से उसका मन्त्र पढ़ कर अग्नि में साकल्य
 का डालना । २ साकल्य की वह मात्रा जो एक
 बार हवनकुण्ड में छोड़ी जाय ।
 अहुतिः (स्त्री०) आह्वान । आसंश्रय ।
 आहेय (वि०) सर्प सम्बन्धी ।
 आहेयः (पु०) सर्प । सर्प का विष ।
 आहो (अव्यया०) सन्देह, विकल्प, प्रश्नाव्यञ्जक
 अव्ययात्मक सम्बोधन ।
 आहोपुरुषिका (स्त्री०) १ बड़ी भारी अहंमन्यता ।
 २ शेखी । अपनी शक्ति का बखान ।—स्वित्
 (अव्यया०) १ विकल्प । सन्देह । प्रश्न । २ जानने
 की अभिलाषा । ३ दैनिक ।
 आन्हं (न०) बहुत दिवस ।
 आन्हिक (वि०) [स्त्री०—आन्हिकी] प्रति दिन का ।
 दैनिक । नित्य प्रति होनेवाला काम ।

आन्धिक (न०) स्नान, सन्ध्या, तर्पण, भोजनादि
नित्य के कृत्य ।

आह्लादः (पु०) हर्ष । आनन्द । प्रसन्नता ।

आह्व (वि०) बुलानेवाला । चिल्लानेवाला ।

आह्वा (स्त्री०) १ पुकार । चिल्लाहट । २ नाम ।
संज्ञा । यथा "अमृताह्वः, शताह्वः ।"

आह्वयः (पु०) १ नाम संज्ञा । २ हुआ । जानवरों की
लड़ाई से उत्पन्न हुआ मामला, मुकद्दमा ।

"यत्पूर्वक पश्चिमेवादिबोधनं आह्वयः ।"

—राघवानन्द ।

आह्वयनम् (न०) नाम । संज्ञा ।

आह्वानं (न०) १ निमन्त्रण । बुलावा । न्योता । २
अदालत की बुलाहट । ३ किसी देवता का
आह्वान । ४ ललकार । चिनौती । ५ नाम ।
संज्ञा । [संज्ञा ।

आह्वयः (पु०) १ अदालत का बुलावा । २ नाम

आह्वयकः (पु०) हत्कारा । डाँकिया ।

इ

इ संस्कृत अथवा देवनागरी वर्णमाला में स्वर के
अन्तर्गत तीसरा वर्ण । इसका स्थान तालुदेश और
प्रयत्न विवृत है ।

इः (पु०) कामदेव का नाम । (अव्यया०) क्रोध दया,
भर्त्सना, आश्चर्य और सम्बोधनवाची अव्यय ।

इ (धा० पर०) (एति, इति) १ जाना । आना ।
पहुँचना । पाना उपस्थित होना । हाजिर होना ।
दौड़ना । घूमना । तेजी से या बारंबार जाना ।

इक् (प्रत्यय) आद करना । स्मरण करना ।
इकटा (स्त्री०) घास विशेष जिससे चटाई बुनी जाती
है ।

इक्वालः (पु०) ज्योतिष में वर्षफल के सोलह
योगों में से एक योग । सम्पत्ति ।

इक्षवः (पु०) गन्ना । ऊख ।

इक्षुः (पु०) गन्ना ऊख । पौड़ा । —काण्डः, (पु०)
—काण्डम्, (न०) दो जाति के गन्नों के नाम ।
—कुहकः, (पु०) गन्ना एकत्रित करने वाला ।
—दा, (स्त्री०) एक नदी का नाम । —पाकः,
(पु०) शीरा । गुड़ । जूसी । चोटा । राब ।
भट्टिका, (स्त्री०) राब और चीनी का बना
हुआ भोज्य पदार्थ विशेष । मती, —मालिनी,
—मालवी, (स्त्री०) नदी विशेष । —मेहः,
(पु०) प्रमेह विशेष । इसमें पेशाब के साथ
मथु या शक्कर निकलती है । मधुमेह । इक्षु प्रमेह ।
—रसः, (पु०) गन्ने का रस या शीरा । —वणां,
(न०) गन्नों का वन या जंगल । —विकारः,

(पु०) चीनी । गुड़ । शीरा । राब । —सारः,
(पु०) शीरा । चीनी । गुड़ ।

इक्षुरः (पु०) गन्ना ।

इक्ष्वाकुः (पु०) १ सूर्यवंशी एक राजा विशेष । इनके
पिता का नाम वैवस्वत मनु था । २ महाराज
इक्ष्वाकु का वंशज । ३ कड़वी तूँबी । तितलौकी ।
इक्ष्वालिका (स्त्री०) काँस । काही ।

इख् } (धा० पर०) [इखति, इखति] जाना ।
इख् } हिलना बुलना ।

इङ्ग } (धा० उभय०) [इङ्गति, इङ्गते, इङ्गित] हिलना
इङ्ग } डोलना ।

इङ्ग } (वि०) १ हिलने वाला । २ अद्भुत ।
इङ्ग }

इङ्गः } (पु०) १ इशारा । सङ्केत । २ हावभाव द्वारा
इङ्गः } मानसिक भाव का द्योतन ।

इङ्गनम् } (न०) १ हिलाना । डोलाना । २ ज्ञान ।
इङ्गनम् }

इङ्गितम् } (न०) १ धड़कन । डोलन । २ मानसिक
इङ्गितम् } विचार । ३ इशारा । सङ्केत । सैन । —

कोविदः, —ज्ञ, (वि०) इशारे बाज़ी में कुशल ।
मनोभाव को प्रकाश करने वाला । हाव भावों को
जानने वाला ।

इङ्गुदः, इङ्गुदः (पु०) } १ हिङ्गोट का वृक्ष ।
इङ्गुदो, इङ्गुदी (स्त्री०) } २ ज्योतिमति वृक्ष ।
३ मालकङ्गनी ।

इङ्गुदम् } (वि०) हिङ्गोट वृक्ष का फल ।
इङ्गुदम् }

इचिकिलः (पु०) १ कच्चा तालाब । २ कीचड़ ।

इश्वाक (पु०) जलवुरिचक । पनबीछी ।

इच्छलः (पु०) एक छोटा पौधा विशेष, जो जल के समीप उत्पन्न होता है । हिजल ।

इच्छा (स्त्री०) १ अभिलाषा । वाञ्छा । चाह । २ (अंकगणित में) प्रश्न । कठिन प्रश्न ।—दानं, (न०) मुहमंगा दान ।—निवृत्तिः (स्त्री०) सांसारिक कामनाओं की ओर से उदासीनता । वासनाओं का त्याग ।—फलं, (न०) किसी प्रश्न का उत्तर ।—रत्नं, (न०) मनचाहा खेल कूद ।—वस्तुः, (पु०) कुबेर का नाम ।—संपदः, (स्त्री०) मनोकामना का पूरी होना ।

इज्य (वि०) पूज्य । [यण । परमात्मा ।

इज्यः (पु०) १ गुरु । २ देवगुरु बृहस्पति । ३ नारा-

इज्या (स्त्री०) १ यज्ञ । २ दान । पुरस्कार । ३ मूर्ति प्रतिमा । ४ कुटिनी । ५ गौ ।—शीलः, (पु०) सदा यज्ञ करने वाला ।

इटः (पु०) १ एक प्रकार की घास । २ चट्टाई ।

इटधरः (पु०) साँड़ या बारहसिंहा जो चरने के लिये स्वतंत्र छोड़ दिया जाय ।

इड् (स्त्री०) [वैदिक प्रयोग] १ इड् । २ बलि । ३ प्रार्थना । ४ धारा प्रवाह चकृता । ५ पृथिवी । ६ भोजन । ७ सामग्री । ८ वर्षाकाल । ९ पञ्चप्रयोगों में से तीसरा प्रयोग । [इडोयजति] १० ब्रह्म ।

इडस्पतिः (पु०) त्रिषु का नाम ।

इडः (पु०) अग्नि का नाम ।

इडा } (स्त्री०) १ पृथिवी । २ वाणी । ३

इडाला } अन्न । हवि । ४ गौ । ५ (इडा०) देवी

का नाम । मनु की बेटी । यह बुध की स्त्री और

राजा पुरुरवा की माता थी । ६ स्वर्ग । ७ शरीर

की एक नाड़ी जो दहिने अंग में रहती है । ८

दुर्गा । ९ अम्बिका । ११ पार्वती । १२ स्तुति ।

१३ एक यज्ञपात्र । १४ आहुति जो प्रयाजा और

अनुयाजा के बीच दी जाती है । १५ आसोमपा

नामक एक अप्रिय देवता । १६ नय देवता ।

इडाचिका (स्त्री०) बरं । बरैया ।

इडिका (स्त्री०) धरती । पृथिवी ।

इडिकः (पु०) जंगली बकरा ।

इण (क्रि०) जाना ।

इत (वि०) १ गत । गया हुआ । २ स्मरण किया हुआ । ३ प्राप्त ।

इतर (सर्वनाम) (वि०) [स्त्री०—इतरा, इतरत्] १ दूसरा । अन्य । भिन्न । २ पामर । निम्न श्रेणी का ।

इतरतः { (अव्यया०) १ अन्यथा । नहीं तो । २

इतरत्र { अन्यत्र । ३ मिश्रत्व ।

इतरथा (अव्यया०) १ अन्य प्रकार से । और तरह से । २ प्रतिकूलरीत्या । अन्यथा । ३ कुटिल भाव से । ४ दूसरी ओर ।

इतरेतर (वि०) अन्योन्य । परस्पर । आपस में ।

इतरेद्युः (अव्यया०) अन्यदिवस । दूसरे दिन ।

इतस् (अव्यया०) १ यहाँ से । यहाँ । २ इस पुरुष से । मुझसे । ३ इस ओर । मेरी ओर । ४ इस संसार से । ५ इस समय से ।

इतस्ततः (इतः इतः) (अव्यया०) इधर उधर । इसमें । उसमें ।

इति (अव्यया०) १ समाप्ति । २ हेतु । ३ निदर्शन ।

४ निकटता । ५ प्रत्यक्ष । ७ अवधारण ।

८ व्यवस्था । ९ मान । १० परामर्श । ११ शब्द

के यथार्थ रूप को प्रकट करने वाला । १२ वाक्य

का अर्थप्रकाशक ।—अर्थः, (पु०) सारांश ।

—कथा, (स्त्री०) वाहियात वातचीत ।—

करणीय, (वि०) किन्हीं नियमों के अनुसार

करने योग्य ।—मात्र, (वि०) असुक्त परिमाण का ।

वृत्तं, (न०) पुरावृत्त । पुरानी कथा । कहानी ।

इतिकर्तव्यता (स्त्री०) अवश्य करने योग्य । काम

करने का क्रम, जिसके अनुसार एक काम के

अनन्तर दूसरा काम किया जाय ।

इतिमथ्ये (अव्य०) इतने में ।

इतिह (अव्य०) १ उपदेश परंपरा । २ देर से सुना

जाने वाला उपदेश । ३ सुना सुनाया अन्धा

वचन ।

इतिहासः (पु०) १ पुस्तक जिसमें बीते हुए काल की

प्रसिद्ध घटनाओं और तत्कालीन प्रसिद्ध पुरुषों का

वर्णन हो । २ वह ग्रन्थ जिसमें धर्म, अर्थ, काम

और मोक्ष का उपदेश प्राचीन कथानकों से युक्त

हो । तबारीख । [संस्कृत साहित्य में इतिहास

ग्रन्था मे दो ही ग्रन्थों की गणना है—यथा श्री महात्मनीकि रामायण और महाभारत ।

इत्थं (अन्वया०) इस प्रकार । इस तरह । ऐसे ।—कारं, (न०) इस प्रकार से ।—कारं, (अन्वया०) इस प्रकार से । इस ढंग से ।—भूत, (वि०) १ ऐसी दशा में । ऐसी हालत में । २ सच्ची । ज्यों की त्यों (जैसे कथा, या कहानी) ।—विध, (वि०) १ इस प्रकार का । २ ऐसे गुणों वाला ।—शालः, (पु०) ज्योतिष में वर्षफल के तीसरे योग का नाम ।

इत्थ (वि०) प्राप्य । पहुँचने योग्य । जाने योग्य ।
इत्था (स्त्री०) १ गमन । मार्ग । २ डोली । पात्की ।
इत्वर (वि०) [स्त्री०—इत्वरी] १ गमन । यात्रा । यात्री । २ निष्ठुर । निडुर । ३ पामर । अधम । नीच । ४ तिरस्कृत । अपमानित । ५ निर्धन । गरीब ।

इत्वरः (पु०) हिजड़ा । नपुंसक । खोजा ।
इत्वरी (स्त्री०) १ अभिस्तारिका । २ व्यभिचारिणी । कुलदा स्त्री ।

इदम् (सर्वनाम०—वि०) [पु०—इदं । स्त्री०—इत् । न०—इदं] किसी ऐसी वस्तु को बतलाने वाला, जो बतलाने वाले के निकट हो । यह । यहाँ ।

इदानीं (अव्य०) सम्प्रति । अब । इस समय । अभी । अभी भी ।

इदानींतन (वि०) १ इस समय का । अभी का । आधुनिक । २ नवीन । नया ।

इद्ध (व० कृ०) जलता हुआ । प्रदीप्त ।

इद्धं (न०) १ धूप । घाम । गर्मी । २ दोसि । चमक । ३ आश्चर्य । ४ बड़ा । निर्मल । साफ़ ।

इध्मः (पु०) } ईधन । समिधा जो हवन में जलायी
इध्मं (न०) } जाती है ।—जिह्मः (पु०) आग ।
अग्नि ।—प्रवृद्धनः (पु०) कुल्हाड़ी । [करना ।

इध्या (स्त्री०) प्रज्वलन करना । जलाना । प्रकाश
इन (वि०) १ योग्य । शक्तिमान् । बलवान् । २ सावसी ।

इनः (पु०) १ प्रभु । स्वामी । २ राजा ।

इन्दिरः } (पु०) बड़ी मधु मक्षिका । अमर ।
इन्दिरः } भौरा ।

इन्दिरा } (स्त्री०) लक्ष्मी देवी । विष्णु पत्नी ।—
इन्दिरा } आलयम्, (न०) लक्ष्मी का निवास
स्थल । नील कमल ।—मन्दिरः, (पु०) विष्णु
भगवान की उपाधि ।—मन्दिरम्, (न०) नील
कमल ।

इन्दीवरिणी } (स्त्री०) नील कमलों का समूह ।
इन्दीवरिणी }

इन्दीवारः } (पु०) नील कमल ।
इन्दीवारः }

इन्दुः } (पु०) १ चन्द्रमा । २ एक की संख्या । ३
इन्दुः } कपूर ।—कमल, (न०) सफेद कमल ।—

कला, (स्त्री०) चन्द्रमा की एक कला । ३

—कलिका, (स्त्री०) १ केत की । २ चन्द्रकला ।

२—कान्तः, (पु०) चन्द्रकान्त मणि । [यह
मणि चन्द्रमा के सामने रखने से पसीजती है ।]

—कान्ता, (स्त्री०) रात ।—दायः, (पु०)

चन्द्रमा की क्षीणता । प्रतिपदा ।—जः,—पुत्रः,

(पु०) बुधग्रह । पुत्रजा,—जा, (स्त्री०)

नर्मदा या रेवा नदी का नाम ।—जनकः, (पु०)

समुद्र ।—कला, (पु०) कला । अर्धचन्द्र ।—

भा, (स्त्री०) कम्बोदिनी ।—भृत्,—शेखरः,

—मौलिः, (पु०) शिव जी की उपाधि ।—

मणिः, (पु०) चन्द्रकान्तमणि ।—मण्डलं,

(न०) चन्द्रमा का घेरा ।—रत्नं, (न०)

मोती । सोमलता ।—लेखा,—वेखा, (स्त्री०)

चन्द्रकला ।—लोहकं,—लौहं (न०) चाँदी ।—

वदना, (स्त्री०) छन्दविशेष ।—वासरः,

(पु०) सोमवार ।

इन्दुमती } (स्त्री०) १ पृथ्वीमा । २ अज की पत्नी
इन्दुमती } और भोज की भगिनी का नाम ।

इन्दूरः }
इन्दूरः } (पु०) चूहा । भूसा ।

इन्द्र } (वि०) १ ऐश्वर्यवान् । विभूतिसम्पन्न । २ श्रेष्ठ ।
इन्द्र } बड़ा ।

इन्द्रः } (पु०) १ देवताओं के राजा । २ मेघों के
इन्द्रः } राजा । वृष्टि के राजा । वृष्टि । ३ स्वामी । प्रभु ।

शासक । ४ वैदिक देवता विशेष । इसका वाहन
ऐरावत हाथी और अश्व वज्र है । इसकी रानी का
नाम शची और पुत्र का नाम जयन्त है । इसकी

सभा का नाम "सुधर्मा" है। इसकी राजधानी का नाम अमरावती है। वहीं "नन्दन" नाम का उद्यान है, जिसमें पारिजात वृक्षों का प्राधान्य है और वहीं कल्पवृक्ष है। इसके बोड़े का नाम उच्चैः-श्रवा है और सारथी का नाम मातलि है। यह ज्येष्ठा नक्षत्र और पूर्व दिशा का स्वामी है।—
अनुजः, (= इन्द्रानुजः,) (पु०)—अवरजः, (= इन्द्रावरजः,) (पु०) विष्णु या नारायण की उपाधि।—अरिः, (पु०) दैत्य या दानव।—
आयुधं, (= इन्द्रायुधम्,) (न०) इन्द्र का हथियार। इन्द्रधनुष।—कोलः, (पु०) १ मन्दराचल पर्वत का नाम। २ चट्टान।—
कीलम्, (न०) इन्द्र की ध्वजा।—कुञ्जरः, (पु०) ऐरावत हाथी।—कूटः, (पु०) पर्वत विशेष।—कोशः,—कोषः,—कोपकः, (पु०) १ कोच। सोफा। (Sofa) २ चबूतरा। ३ खूँदी जो दीवाल में गाड़ी जाती है। नागदन्त।—
गिरिः, (पु०) महेन्द्राचल।—गुरुः,—आचार्यः, (पु०) बृहस्पति।—गोपः,—गोपकः, (पु०) वीर बहूटी नाम का एक कीड़ा।—चापः, (न०)—धनुस्, (न०) सात रंगों का बना हुआ एक अर्धवृत्त जो वर्षाकाल में सूर्य के सामने की दिशा में कभी कभी आकाश में देख पड़ता है।—जालं, (न०) १ एक अस्त्र जिसका प्रयोग अर्जुन ने किया था। २ माया कर्म। जादू-गरी। तिलस्म।—जालिकः, (वि०) धोखे-बाज़। बनावटी। मायावी।—जालिकः, (पु०) जादूगर। इन्द्रजाल करने वाला।—जित्, (पु०) इन्द्र को जीतने वाला। मेघनाद (जो रावण का पुत्र था और) जिसे लक्ष्मण जी ने मारा था।—जित्विजयिन्, (पु०) लक्ष्मण।—तूलं—तूलकं, (न०) रुई का ढेर।—दारुः, (पु०) देवदारु वृक्ष।—नीलः, (पु०) नील-मणि।—नीलः,—नीलकः, (पु०) मर-कत मणि। पद्मा।—पत्नी, (स्त्री०) शची देवी।—पुरोहितः, (पु०) बृहस्पति देव।—प्रस्थं, (न०) आधुनिक दिल्ली नगरी।—प्रहरणं, (न०) वज्र।—मेषजम्, (न०)

सोंठ।—मर्द्दः, (पु०) १ इन्द्रोत्सव। २ वर्षाकाल। लोकः, (पु०) स्वर्ग।—घंशा,—वज्रा, (स्त्री०) दो छन्दों के नाम। शत्रुः, (पु०) १ इन्द्र का वैरी। २ वह जिसका शत्रु इन्द्र हो।—शूलभः, (पु०) वीरबहूटी नाम का कीड़ा।—सुतः,—सुनुः, (पु०) इन्द्र का पुत्र (क) जयन्त। (ख) अर्जुन। (ग) वालि।—
सेनानीः, (पु०) कार्तिकेय की उपाधि।

इन्द्रकं } (न०) सभाभवन। कमेटी घर।
इन्द्रकं }
इन्द्राणी } (स्त्री०) १ शची देवी। २ इन्द्रायन वृक्ष।
इन्द्राणी } ३ बड़ी हलायची। ४ बौंदी आँख की पुतली। ५ संभाल। सिन्धुवार वृक्ष। निरगुण्डी।
इन्द्रियं } (न०) १ बल। जोर। २ शरीर के वे अव-
इन्द्रियं } गव, जिनसे बाह्यी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। ये दो प्रकार के होते हैं। यथा कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय, अथवा बुद्धीन्द्रिय। ३ शारीरिक शक्ति। ४ वीर्य। ५ पाँच की संख्या का सङ्केत।—
अगोचर, (वि०) जो दिखलायी न दे।—
अर्थः, (पु०) इन्द्रियों का विषय। विषय जिनका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो, [ये विषय हैं—रूप, शब्द, गन्ध, रस स्पर्श]।—
ग्रामः,—
वर्गः, (पु०) इन्द्रियों का समूह।—ज्ञानं, (न०) सत्यासत्यविवेकशक्ति।—निग्रहः, (पु०) इन्द्रियों का दमन।—वधः, (पु०) अज्ञानता। अचेतना। मूर्च्छा।—विप्रतिपत्तिः (स्त्री०) इन्द्रियों का उत्पन्नगमन।—स्वापः, (पु०) मूर्च्छा। अचेतना। बेहोशी।

इंधे } (धा० आ०) [इंधे या इंधे, इड] जलाना।
इंधे } प्रकाशित करना। आग लगाना।

इंधा } (पु०) इंधन। जलाने की लकड़ी।
इंधः }

इंधनम् } (न०) १ जलाना। उजाला २
इंधनम् } इंधन। लकड़ी।

इमः (पु०) हाथी।—अरिः (पु०) शेर।—
आजनः, (पु०) गणेश जी का नाम। गज-
नन।—निमीलिका, (स्त्री०) चानुपं। बुद्धिमत्ता।
चालाकी। होशियारी।—पालकः, (पु०) महावत।—पोटा, (स्त्री०) हाथी की मादा

छोटी सन्तान ।—पोतः, (पु०) हाथी का बच्चा ।—युवतिः, (स्त्री०) हथिनी ।

इभी (स्त्री०) हथिनी ।

इभ्य (वि०) धनी । धनवान् ।

इभ्यः (पु०) १ राजा । २ महावत् ।

इभ्यक (वि०) धनी । धनवान् ।

इभ्या (स्त्री०) हथिनी ।

इयत् (वि०) इतना । इतना बड़ा । इतने विस्तार का ।

इयत्ता (स्त्री०) } सीमा । परिमाण । माप ।

इयत्वं (न०) }

इरगं (न०) १ ऊसर भूमि । खुनई जमीन । २ विद्यावान् । उजाड़ ।

इरंमदः (पु०) १ बिजली की कड़क या कौवा । वह आग जो बिजली गिरने पर प्रकट होती है । वज्राग्नि २ वदवानल ।

इरा (स्त्री०) १ पृथिवी । २ वाणी । ३ वाणी की अधिष्ठात्री देवी । सरस्वती । ४ जल । ५ भोज्य पदार्थ । ६ मदिरा ।—ईशः, (पु०) वरुण । विष्णु । गणेश ।—चरं, (न०) ओला । पत्थर जो बादल से बरसते हैं ।

इरावत् (पु०) समुद्र । सागर ।

इरिणं (न०) खुनही जमीन ।

इर्वाक } (वि०) नाशक । हिनक ।

इर्वालु } (पु० स्त्री०) ककड़ी । कर्कटी ।

इल् (धा० पर०) [इलति, इलित] १ चलना । डोलना । हिलना । २ सेना । ३ फैकना । भेजना । डाल देना ।

इला (स्त्री०) १ पृथिवी । २ गौ । ३ वाणी ।—गोलः, (पु०)—गोलं, (न०) पृथिवी । भूगोल ।—धरः, (पु०) पहाड़ ।

इलिका (स्त्री०) पृथिवी ।

इल्वकाः } (बहुवचन) मृगशिरस् नक्षत्र ।

इल्वलाः } (न०) १ जैसा । २ गोथा । ३ कुछ थोड़ा । कुछ कुछ । शायद । कदाचित् ।

इष् (धा० पर०) [इच्छति, इष्ट] १ चाहना । कामना करना । २ चुनना । पसंद करना । ३ प्राप्त

करने के लिये प्रयत्नवान् होना । ४ अनुकूल होना । रजामन्द होना । सहमत होना ।

इषः (पु०) १ शक्तिशाली । बलवान् । २ आश्विनमास ।

इषिका } (स्त्री०) १ नरकुल । सीक । २ बाण ।

इषिरः (पु०) अग्नि ।

इषुः (पु०) १ तीर । २ पांच की संख्या का सङ्केत ।

—अग्रं,—अतीकं, (न०) तीर की नोक ।—

असनं, अखं, (न०) कमान । धनुष ।—

आसः, (पु०) १ धनुष । २ धनुषवर ।

३ थोड़ा ।—कारः,—कृत्, (पु०) धनुष

बनाने वाला ।—धरः, भृत्, (पु०) धनुर्वर ।

—पथः,—विलेपः, (पु०) तीर छोड़ना ।

तीर की शिखर ।—प्रयोगः, (पु०) तीर चलाना ।

इषुभिः (पु०) तरकल । तूणीर ।

इष्ट (व० कृ०) १ अभिलषित । चाहा गया ।

२ प्रिय । प्यारा । प्रेमपात्र । कृपापात्र । ३ पूज्य ।

मान्य । ४ यज्ञ किया हुआ । यज्ञ में पूजन किया हुआ ।

इष्टः (पु०) प्रेमी । आशिक । पति ।

इष्टम् (न०) १ कामना । अभिलाषा । चाह ।

२ संस्कार । ३ यज्ञादि कर्मानुष्ठान । (अव्यया०)

अपने इच्छा से । अपने आप । स्वेच्छतया ।

इष्टका (स्त्री०) ईंट । लपरैल ।—न्यासः, (पु०)

नींव रखना ।—पथः, (पु०) ईंटों की बनी सड़क ।

इष्टदेवः (पु०) } अपना देवता विशेष ।

इष्टदेवता (स्त्री०) }

इष्टा (स्त्री०) शमी वृक्ष । छैकुर का पेड़ ।

इष्टार्थः (पु०) अभिलषित पदार्थ ।

इष्टापत्तिः (स्त्री०) अभिलषित कार्य का होना ।

प्रतिवादी के अनुकूल वादी का कथन या कथान । यथा —

“ इष्टापत्तौ दोषास्तर काह । ”

इष्टापूर्तम् (न०) यज्ञादि अनुष्ठान । कूप, बाबली खुदवाना, वृक्षादि रोपण करना, (धर्मशालादि, परोपकारी कार्य करना) ।

“इष्टाप्रतिविधिः सदस्त्वयन्मातु ।”

इष्टिः (स्त्री०) १ अभिलाषा । कामना । २ प्रवृत्ति ।
३ यज्ञ । दर्शपौर्णमास । ४ व्याकरण में भाष्यकार
की वह सम्मति, जिसके विषय में सूत्रकार ने कुछ न
लिखा हो । सूत्र और वार्तिक से भिन्न व्याकरण
का नियम विशेष । — पक्षः, (पु०) कंजूस । —
पशुः, (पु०) बलिदान के लिये पशु ।

इष्टिका (स्त्री०) ईंट । खपरौह ।

इध्मः (पु०) १ कामदेव । २ वसन्त ऋतु ।

इध्यः (पु०) } वसन्त ऋतु ।
इध्यम् (न०) }

इस् (अव्यया०) क्रोध, पीड़ा एवं शोक व्यञ्जक
अव्ययात्मक सम्बोधन ।

इह (अव्यया०) यहाँ । इस समय । इस स्थान में ।
अथ । — अमुत्र, (= इहामुत्र) (अव्यया०) इस
लोक और परलोक में । यहाँ और वहाँ । — लोकः,
(पु०) इस दुनिया में या इस जन्म में । — स्थः,
(वि०) यहाँ खड़ा हुआ । ।

इहत्य (वि०) यहाँ का । इस स्थान का । इस लोक का ।

इहत्तः (पु०) चेदि देश का नाम ।

इष्ट

ई (पु०) संस्कृत या नागरी वर्णमाला का चौथा
अक्षर । यह ‘इ’ का दीर्घ रूप है । तालु इसका
उच्चारण स्थान है ।

ई (धा० आत्म०) [ईयते] १ जाना । (परस्मै०)
चमकना । २ व्याप्त होना । ३ अभिलाषा करना ।
४ फैकना । ५ जाना । ६ रवाना होना । ७
माँगना (आत्म०) । ८ गर्भवती होना ।

ईः (पु०) कामदेव का नाम । (अव्यया०) उदासी,
पीड़ा, क्रोध, शोक, अनुकम्पा, सम्बोधन और
विवेक व्यञ्जक अव्ययात्मक सम्बोधन ।

ईत् (धा० आत्म०) [ईच्छते, ईच्छित] १ देखना ।
ताकना । जानना । आलोचना करना । धूरना ।
२ सम्मान करना । ३ परवाह करना । ४ सोचना ।
विचारना । ५ खोजना । ढूँढना । अनुसन्धान ।
करना ।

ईक्षकः (पु०) दर्शक । देखने वाला । [आँख ।

ईक्षणं (न०) १ देखना । २ इष्टि । चितवन । ३ नेत्र ।

ईक्षणिकः (पु०) ज्योतिषी । भविष्यद्वाक्ता ।

ईक्षतिः (पु०) चितवन । इष्टि ।

ईक्षा (स्त्री०) १ चितवन । इष्टि । २ विवेचना ।

ईक्षिका (स्त्री०) १ नेत्र । २ कलक ।

ईक्षित (व० कृ०) देखा हुआ । विचारा हुआ ।

ईक्षितम् (न०) १ चितवन । निगाह । २ नेत्र । आँख ।

ईक्ष् (धा० पर०) [ईक्षति, ईक्षित] १ जाना ।

ईक्ष् (वि०) हिलना । सरकना । झूमना । आगे पीछे

होना । २ डुलाना । हिलाना । झुलाना ।
लटकाना ।

ईज् (धा० आत्म०) १ जाना । २ दोष लगाना ।
ईज् (कलङ्क लगाना ।

ईड (धा० आत्म०) [ईड्, ईडित] स्तुति करना ।
प्रशंसा करना ।

ईडा (स्त्री०) प्रशंसा । स्तुति । बड़ाई ।

ईद्व्य (स० का० कृ०) प्रशंसनीय । श्लाघनीय ।
प्रशंस्य । श्लाघ्य ।

ईतिः (स्त्री०) १ प्लेग । आपत्ति । २ फसल सन्वन्धी
उपद्रव । ऐसे उपद्रव ६ प्रकार के होते हैं । यथा,
— अतिवृष्टि । अनावृष्टि । दीर्घियों का आगमन ।

चूहों का उपद्रव । तोतो का उपद्रव । राजाओं
की चढ़ाई या उनका दौरा ।

अतिवृष्टिर्नाहृष्टिः प्रलभा हूपकाः शुकाः ।

अरवासन्नाहव राजानः पक्षेता वैतयः रक्षताः ॥

३ संक्रामक रोग । ४ विदेशों में भ्रमण या यात्रा ।

५ दंगा । मारपीट ।

ईद्विता (स्त्री०) [इयत्ता का उत्पटा ।] मात्रा ।

ईद्वत् (वि०) [स्त्री० — ईद्वत्ती, ईद्वशी] इसका
ईद्वश् ईद्वश् भी रूप होता है । ऐसा । इस
प्रकार का । इसके सदृश । इसके बराबर । इस
प्रकार के गुणों वाला ।

ईप्सा (स्त्री०) १ अपेक्षा । २ चाह । अभिलाषा ।

ईप्सित (वि०) अभिलषित । चाह । हुआ । प्रिय । प्यारा ।

ईप्सितं (न०) अभिलाषा । चाह ।

ईप्सु (वि०) प्राप्ति की कामना । किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये परिश्रम करने वाला ।

ईर् (धा० आत्म०) [ईर्त्ते, ईरांचके, ऐरिष्ट, ईरितुं ईर्ण] [परस्मै० में - ईरित] १ जाना । हिलाना । डुलाना । २ फँकना । डालना । डुबाना । सहसा निचेप करना । ३ कहना । उच्चारण करना । दुहराना । गतिशील करना । ४ काम में लगाना । प्रयुक्त करना । काम में लाना ।

ईरणाः (पु०) हवा ।

ईरणां (न०) १ आन्दोलन । २ गमन ।

ईरिणा (वि०) ऊसर । उजाड़ ।

ईरिणाम् (न०) उजाड़ स्थान । ऊसर ज़मीन ।

ईर्दय (क्रि०) ढाह करना । होड़ करना ।

ईर्मय (न०) घाव ।

ईर्या (स्त्री०) इधर उधर घूमना फिरना (साधु की तरह) ।

ईर्षारुः (पु० स्त्री०) ककड़ी ।

ईर्ष्या } (पु०) डाह । परोत्कर्ष-असहिष्णुता ।

ईर्ष्य } (धा० परस्मै०) डाह करना । दूसरे की बढ़ती न देख सकना ।

ईर्ष्यु } (वि०) डाही । ईर्ष्यालु ।

ईर्ष्या } (स्त्री०) हास । हसद । दूसरे की बढ़ती देख

ईर्ष्यालु } जो जलन पैदा होती है उसे ईर्ष्या कहते हैं ।

ईलिः (पु०) [स्त्री०—ईली] हथियार विशेष । सोटा । छोटी तलवार ।

ईश् (धा० आत्म०) [ईष्टे, ईशित] १ शासन करना । मालिक होना । हुकूमत करना । २ योग्य होना । अधिकार करना । कब्ज़ा करना ।

ईश (वि०) १ अधिकार में किये हुए ।

ईशः (पु०) १ प्रभु । मालिक । २ पति । ३ ग्यारह की संख्या । ४ शिव का नाम ।

ईशा (स्त्री०) १ दुर्गा का नाम । २ धनवती स्त्री ।—कोणाः, (पु०) ईशान दिशा । उत्तर और पूर्व की दिशाओं के बीच का कोना —पुरी, —नगरी, (स्त्री०) काशीपुरी । बनारस नगर ।—सखः, (पु०) कुबेर की उपाधि ।

ईशानः (पु०) १ शासक । अधिष्ठाता । मालिक । प्रभु । २ शिव जी का नाम । ३ विष्णु का नाम । ४ सूर्य ।

ईशानी (स्त्री०) दुर्गा देवी का नाम ।

ईशिता (स्त्री०) } उत्कृष्टता । महत्त्व । आठ सिद्धियों
ईशित्वं (न०) } में से एक । [जिसको ईशिता की सिद्धि प्राप्त हो जाय, वह सब पर शासन कर सकता है ।]

ईश्वर (वि०) [स्त्री०—ईश्वरा ईश्वरी] शक्तिशाली । १ ताकतवर । बलवान । योग्य । उपयुक्त । २ धनी । धनवान् ।—निषेधः, (पु०) ईश्वर के अस्तित्व को न मानना । नास्तिकता । —पूजक, (वि०) ईश्वर की पूजा करने वाला । ईश्वर में आस्थावान् । ईश्वरभक्त ।—सभन्, (न०) देवालय । मन्दिर । —सभम्, (न०) राजदरबार । राजसभा ।

ईश्वरः (पु०) १ प्रभु । मालिक । २ राजा । शासक । ३ धनी या बड़ा आदमी । यथा—“मा प्रयच्छेश्वरे धनम्” । ४ पति । ५ परमात्मा । परब्रह्म । परमेश्वर । ६ शिव का नाम । ७ विष्णु का नाम । ८ कामदेव ।

ईश्वरा } (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।

ईश्वरी } (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।

ईष (धा० उभय) [ईषति-ईषिते, ईषित] १ उड़जाना । भाग जाना । २ देखना । ३ देना । ४ मार डालना ।

ईषः (पु०) आश्विन मास ।

ईषत् (अव्यया०) हल्कासा । थोड़ासा । —उष्ण, (वि०) गुनगुना ।—कर, (वि०) १ थोड़ा करने वाला । २ सहज में होने वाला । —जलं, (न०) उथला पानी ।—पाण्डु, (वि०) हल्का सफेद या पीला । —पुरुषः (पु०) अधम या तिरस्कार सं० श० कौ०—२०

करने योग्य मनुष्य ।—रक्तः (वि०) पिलौहा लाल ।
नारंगी ।—लभः,—प्रलभः, (वि०) थोड़े में मिलने
वाला ।—हासः, (पु०) सुसक्यान । सुसकुराहट ।

ईषा (स्त्री०) गाड़ी का बम या हल का बाँस ।

ईषिका (स्त्री०) १ हाथी की आँख की पुतली । २
रंगसाज की कूची । ३ हथियार । तीर । नेजा ।

ईषिरः (पु०) अग्नि । आग ।

ईषीका (स्त्री०) रंगसाज की कूची । (सोने या चांदी
की) छड़, ईंट, सलाका या डला ।

ईष्मः } (पु०) १ कामदेव । २ वसन्तऋतु ।
ईषदः }

ईह (धा० आत्म०) [ईहते, ईहित] १ इच्छा करना ।
अभिलाषा रखना । २ किसी वस्तु के पाने के लिये
प्रयत्न करना । ३ उद्योग करना । प्रयत्न करना ।

ईहा (स्त्री०) १ स्वादिष्ट । चाह । २ उद्योग । क्रिया-
शीलता ।

ईहामृगः (पु०) १ भेड़िया । २ नाटक का एक परिच्छेद
जिसमें चार दृश्य हों ।

ईहावृकः (पु०) भेड़िया । [हुआ ।

ईहित (व० कृ०) वाञ्छित । अभिलषित । चाहा
ईहितं (न०) १ वाञ्छा । अभिलाषा । चाह । २ उद्योग
प्रयत्न । ३ कर्म । कार्य ।

उ

उ—नागरी वर्णमाला का पाँचवा अक्षर । इसका
उच्चारण ओष्ठ की सहायता से होता है । इसकी
गणना मुख्य तीन स्वरों में है । ह्रस्व, दीर्घ,
प्लुत, सातुनासिक एवं निरनुनासिक—इस प्रकार
इसके १८ भेद हैं । उ, को गुण करने से “ओ”
और वृद्धि करने से “औ” होता है ।

उः (पु०) १ शिव जी का नाम । २ ब्रह्म का नाम । ३
चन्द्रमा का विम्ब । ४ ओम् का दूसरा अक्षर ।
(अव्यया०) पुकारने का, क्रोध, अनुग्रह, आदेश,
स्वीकृति, एवं प्रश्न व्यञ्जक अव्ययात्मक सम्बोधन ।

उं (धा०) १ शब्द करना । कोलाहल मचाना । गर-
जना । २ धोँकना । ३ माँगना । तगाड़ा करना ।

उकानहः (पु०) लाल और पीले रंग का घोड़ा ।

उकुणः (पु०) खटमल । खटकीरा ।

उक्त (व० कृ०) १ कहा हुआ । कथित । २ बोला
हुआ । बतलाया हुआ । ३ सम्बोधित । ४ वर्णित ।

उक्तं (न०) वाणी । शब्दराशि । कथित ।—अनुक्त,
(वि०) कहा और अनकहा हुआ ।—उपसंहारः,
(पु०) संचित वर्णन । सिंहावलोकन । सारांश ।
—निर्वाहः, (पु०) कथन का समर्थन । —प्रत्युक्तं,
(न०) कथन और उत्तर । संवाद ।

उक्तिः (स्त्री०) १ कथन । वचन । २ वाक्य । ३
(मानसिक भाव) व्यक्त करने की शक्ति । यथा
“एक बोधत्या पुष्पवन्तौ दिवाकर निशाकरो ।”

—अमरकोश

उक्थं (न०) १ कथन । वाक्य । स्तोत्र । २ स्तुति ।
प्रशंसा । ३ सामवेद का नाम ।

उत् (धा० उभय०) [उच्चति, उचित] १ छड़कना ।
तर करना । नम करना । उडेलना । २ निकालना ।
छोड़ना ।

उत्तरां (न०) छिड़काव । प्रोक्षण या मार्जन ।

उत्तन् (पु०) बैल । साँड़ ।—तरः, (पु०)
छोटा साँड़ । [सवोत्तम ।

उत्ताल (वि०) १ तेज । भयानक । २ ऊँचा, बड़ा ।

उत्तालः (पु०) बंदर । वानर ।

उख् (धा० पर०) [ओखति, उंखित, ओखित,
उंख्] उंखित] चलना । हिलना । डोलना ।

उखा (स्त्री०) बटलोई । डेगाची ।

उख्य (वि०) बटलोई में उबाला हुआ ।

उग्र (वि०) १ निष्ठुर । हिंसक । जंगली । २ भयानक ।

भयङ्कर । भयप्रद । ३ बलवान । शक्तिशाली ।
प्रबल । प्रचण्ड । ४ तीक्ष्ण । तेज़ । पैना । ५

उच्च । कुलीन ।—काण्डः, (पु०) करेला ।—

गन्धः, (पु०) १ चम्पा का वृक्ष । चमेली ।

२ लशुन । लहसुन । हँस ।—गन्धः,

(वि०) तेज़ महकवाला ।—चारिणी, —चण्डा,

(स्त्री०) दुर्गा का नाम । जाति, (वि०) नीच

जाति में उत्पन्न ।—दर्शन,—रूप, (वि०)

भयानक शक्त वाला ।—धन्वन, (वि०) मज्जबूत
धनुषधारी । (पु०) शिव जी का नाम । इन्द्र का

नाम । —शेखरा, (स्त्री०) गङ्गाजी का नाम ।
—श्रवस्, (पु०) रोमहर्षण का पुत्र । (वि०)
सुनी बात को तुरन्त याद कर लेने वाला । —सेनः,
(पु०) कंस के पिता का नाम ।

उग्रः (पु०) १ शिव या रुद्र का नाम । २ वर्षसङ्कर
जाति विशेष । क्षत्रिय पिता से शूद्रा माता में
उत्पन्न सन्तान । ३ केरल देश । मालावार देश ।
४ रौद्ररस । [वीभत्स्य ।

उग्रपश्य (वि०) भयानक शङ्क वाला । भयानक ।
उच् (धा० पर०) [उच्यति, उचित या उग्र ।] १
जमा करना । इकट्ठा करना । २ अनुरागी होना ।
प्रसन्न होना । ३ उपयुक्त होना । ४ आदी होना ।
अभ्यस्त होना ।

उचित (व० कृ०) १ योग्य । ठीक । मुनासिब ।
वाजिब । २ सामान्य । साधारण । प्रधानरूप ।
प्रचलित । ३ अभ्यस्त । आदी । ४ श्लाघ्य । प्रशंसनीय

उच्च (वि०) १ ऊँचा । २ श्रेष्ठ । महान । उत्तम ।
—तरुः, (पु०) नारियल का वृक्ष । —तालः,
(पु०) मद्यशाला का सज्जीत नृत्य आदि । —
नीच, (वि०) १ ऊँचा नीचा । उतार चढ़ाव ।
२ विविध । बहुप्रकार । —ललाटा, —लला-
टिका, (स्त्री०) चौड़े माथे वाली स्त्री । —संश्रय,
(वि०) उच्च स्थानीय । (उच्चग्रह के लिये)

उच्चकैः (अव्यया०) १ ऊँचा । ऊपर । लंबा । २ तार ।
रवकारी ।

उच्चकुम्भ (वि०) १ ऊपर देखने वाला । ऊपर की
ओर निगाह किये हुए । २ अंधा दृष्टिहीन ।

उच्चंड } (वि०) १ भयानक । भयङ्कर । २ तेज ।
उच्चण्ड } कुर्तीला । ३ उच्चस्वर वाला । ४ क्रुद्ध ।
कुपित ।

उच्चंद्रः } (पु०) रात का अन्तिम पहर ।
उच्चन्द्रः }

उच्चयः (पु०) १ संग्रह । ढेर । समूह । २ समुदाय ।
३ स्त्री के डुपट्टे की ग्रन्थि । ४ समृद्धि । अभ्युत्थ ।

उच्चरणम् (न०) १ ऊपर या बाहिर जाना । २
उच्चारण । कथन ।

उच्चल (वि०) हिलने वाला । सरकने वाला ।

उच्चलम् (न०) मन ।

उच्चलनम् (न०) निकलना । चला जाना ।

उच्चलित (व० कृ०) चलने को तैयार । जाने को
उद्यत ।

उच्चाटनम् (न०) १ विश्लेषण । निकास । २ वियोग ।
विछोह । ३ उखाड़ना (वृक्ष का) । ४ तांत्रिक पट्
कर्मों में से एक । ५ चित्त का न लगना ।

उच्चारः (पु०) १ कथन । बर्णन । उच्चारण । २ मल ।
३ विष्टा । “ मातुरुच्चार एव सः । ” ३ विसर्जन ।
छोड़ना ।

उच्चारणं (न०) १ उच्चारण । कथन । २ निरूपण ।

उच्चावच (वि०) १ ऊँचा नीचा । अनियमित । ऊबड़
खावड़ । २ भिन्न भिन्न ।

उच्छुडः } (पु०) ध्वजा का फहरा । पताका । ध्वजा ।
उच्छूलः }

उच्चैः (अव्य०) १ ऊँचा । ऊपर । ऊपर की ओर । २
जोर की आवाज़ के साथ । बड़े शोर के साथ । ३
बहुत अधिक । बहुतायत । —घुष्टं, (न०) १
शोरगुल । कोलाहल । २ उच्च स्वर से पढ़ी गयी
घोषणा । —वाद्, (पु०) प्रशंसा । —शिरस्,
(वि०) उच्चाशय । उदारशय । उदारचेता । —
श्रवस्, —श्रवस्, (वि०) १ बड़े बड़े कानों वाला ।
२ बहरा । (पु०) इन्द्र के घोड़े का नाम ।

उच्चैस्तमां (अव्यया०) १ अत्युच्च । बहुत ही अधिक
ऊँचा । २ बड़े जोर से । अत्युच्च स्वर से ॥

उच्चैस्तरं } (न०) अत्युच्चस्वर का । २ बहुत
उच्चैस्तरां } अधिक लंबा या ऊँचा ।

उच्छ्रज (वि०) १ विनष्ट । नष्ट किया हुआ । काट
कर गिराया हुआ । २ लुप्त ।

उच्छ्रलत् (वि०) १ प्रकाशित । दीप्त । इधर उधर
डोलने वाला । २ गतिशील । ३ उड़ जाने वाला
या ऊपर उड़ने वाला । ४ बहुत ऊँचा जाने वाला ।

उच्छ्रलनम् (न०) ऊपर को जाने वाला या सरकने
वाला । [फुलेल की मालिश करना ।

उच्छ्रादनम् (न०) १ ढकना । २ शरीर में तेल

उच्छ्रासन (वि०) नियम या आदेश के अनुसार न
चलने वाला । अदम्य । दुरन्त । दुष्ट ।

उच्छ्रास्त्र (वि०) १ शास्त्रविरुद्ध । २ धर्मशास्त्र का
अतिक्रम करना ।

उच्छिख (वि०) १ चुटियादार । २ अग्निशिखायुक्त ।
भभकता हुआ । [करना ।

उच्छित्तिः (स्त्री०) नाश । मूलोच्छेदन । जड़ से नाश
उच्छिन्न (व० क०) १ मूलोच्छेद किया हुआ । २ नष्ट
किया हुआ । नीच । हीन । [महान् ।

उच्छिरस् (वि०) १ गर्दन उठाये हुए । २ कुलीन ।
उच्छिर्लीध्र } (वि०) कुरुरमुत्तों से परिपूर्ण ।
उच्छिर्लीध्र }

उच्छिर्लीध्र } (न०) कुरुरमुत्ता ।
उच्छिर्लीध्र }

उच्छिष्ट (व० क०) १ बचा हुआ । जूठा । छूटा
हुआ । २ अस्वीकृत किया हुआ । त्याग हुआ ।
३ बासा । तिवासा ।—मोदनम्, (न०) मोम ।

उच्छिष्टं (न०) जूठन ।

उच्छीर्षक (पु०) १ तकिया । २ सिर ।

उच्छुष्क (वि०) सूखा हुआ । मुरझाया हुआ ।

उच्छून (वि०) १ फूला हुआ । सूबा हुआ । २
मौटा । ३ ऊँचा । महान् ।

उच्छूङ्खल (वि०) १ बेलगाम का । जो बश या काबू में
न हो । असंयत । असंयमी । २ स्वेच्छाचारी ।
३ डाँवाडोल ।

उच्छेदः (पु०) १ उखाड़पुखाड़ । २ खण्डन ।
उच्छेदनम् (न०) १ नाश । २ नश्वर । लगाने
की क्रिया ।

उच्छेषः (पु०) १ अवशिष्ट । बचा हुआ । शेष ।
उच्छेषणम् (न०) १ अवशिष्ट । बचा हुआ । शेष ।

उच्छेषण (वि०) १ सुखाने वाला । कुम्हलाने वाला ।
२ जलन करने वाला ।

उच्छेषणम् (न०) सुखाव । कुम्हलाव । मुरझाव ।

उच्छ्रयः } (पु०) १ किसी ग्रह का उदय । २ उठान ।
उच्छ्रयः } (इमारत का) खड़ा करना । ३ ऊँचाई ।

उच्छ्रयः } उठान । ४ बाढ़ । उन्नति । सवनता । ५ अभि-
मान । घमंड ।

उच्छ्रयणम् (न०) उठान । ऊँचाई ।

उच्छ्रित (व० क०) १ उठा हुआ । ऊँचा किया हुआ ।
२ ऊपर गया हुआ । उदित । ३ ऊँचाई । लंबा ।
बड़ा । उत्पन्न । ४ उत्पन्न किया हुआ । उत्पन्न
हुआ । ५ समृद्धशाली । उन्नत । बड़ा हुआ ।
६ अभिमानी ।

उच्छ्रसनम् (न०) १ सांस लेना । आह भरना ।

उच्छ्रसित (व० क०) १ आह भरता हुआ । सांस
लेता हुआ । २ तरोंताड़ा । ३ पूरा फूला हुआ ।
खुला हुआ । ४ विश्राम लिये हुए । सान्निवत ।

उच्छ्रसितम् (न०) १ स्वांस । प्राणवायु । २ प्रफुल्लता ।
सांस से फूलाना । ३ स्वांस भीतर श्चीचना ।
इमार । उठाना (छाठी का) फुलाव । सिसकना ।
५ शरीर व्यापी पांच प्राणवायु ।

उच्छ्रसः १ ऊपर को खींची हुई स्वांस । २ उसांस ।
आह । ३ सान्निवता । ठाँहस । उसाह । ५ वायुरन्ध्र ।
५ ग्रन्थ का प्रकरण विभाग ।

उच्छ्रसिन् (वि०) १ सांस लेते हुए । २ उसांस
लेते हुए । आह भरते हुए । ३ अदृश्य होते हुए ।
कुम्हलाते हुए ।

उच्छ्र (धा० प०) १ बांधना । २ समास करना ।
त्याग देना । छोड़ देना ।

उज्जयिनी } (स्त्री०) उज्जैन नगरी ।
उज्जयिनी }

उज्ज्यासनम् (न०) मार डालना । मारण । घात ।

उज्जिह्वान (वि०) १ उठना । उदय होना ।
२ प्रस्थान । बिदाई ।

उज्जृम्भ } (वि०) १ फुलाया हुआ । बढ़ाया
उज्जृम्भ, } हुआ । २ खुला हुआ ।

उज्जृम्भः } (पु०) १ खिलना । फूलना । विकास ।
उज्जृम्भः } २ विद्वेह । जुदाई ।

उज्जृम्भा (स्त्री०)

उज्जृम्भा (स्त्री०) १ जसुहाई । २ उद्धारन ।

उज्जृम्भणम् (न०) ३ फैलाव । बढ़ती ।

उज्जृम्भणम् (न०)

उज्ज्य (वि०) खुली हुई डोरी का धनुष रखने वाला ।

उज्ज्वल (वि०) १ चमकीला । चमकदार । आभा
वाला । सफेद । २ मनोहर । सुन्दर । फूला हुआ ।
बढ़ा हुआ । ३ असंयमी ।

उज्ज्वलः (पु०) प्रेम । अनुराग ।

उज्ज्वलम् (न०) सुवर्ण । सोना । [कान्ति ।

उज्ज्वलनम् (न०) प्रदीप्त । चमकीला । चमक ।

उज्ज् (धा० प०) [उज्जति, उज्जित] १ त्यागना ।
छोड़ना । २ बचा जाना । निकल भागना ।
३ बाहिर निकालना । निकाल डालना ।

उत्पन्नकः (पु०) १ बादल । २ भक्त ।

उत्पन्नम् (न०) त्याग । स्थानन्तरकरण । छोड़ देना ।

उत्पन्नः } (धा० पर०) [उन्त्ति, उन्त्तित] खेत में
उत्पन्नः } सिल उठ जाने बाद के पड़े हुए अनाज के
दाने बीनना । एकत्र करना ।

उत्पन्नः } (पु०) अनाज के दानों का संग्रह करने
उत्पन्नः } की क्रिया ।—वृत्ति,—शील, (वि०)

खेत में छूटे हुए अनाज के कणों को बीन कर
पेट भरने वाला ।

उत्पन्नम् } (न०) अनाज की मंडी या गंज में
उत्पन्नम् } पड़े अनाज के दानों को एकत्र करने
की क्रिया ।

उत्पत्ति (न०) १ पत्र । पत्ता । २ वास वृत्ति ।—जः,
(पु०) जम्, (न०) सोपबी । कुटी ।

उत्पत्तिः (स्त्री०) } १ नक्षत्र । तारा । २ जल ।
उत्पत्तिः (न०) } —चक्र, (न०) राशिचक्र ।

—पः (पु०)—पम्, (न०) बड़ी धरनई ।

—पः, (पु०) चन्द्रमा ।—पतिः (पु०)—

राज, (पु०) चन्द्रमा ।—पथः—(पु०)

आकाश । ज्योम । अन्तरिक्ष ।

उत्पत्तिः } (पु०) १ गृह्य का पेड़ । २ घर की
उत्पत्तिः } छोकी । ३ हिजड़ा । नपुंसक । ४ कोढ़
विशेष । (यह नपुंसक लिंग भी होता है)

उत्पत्तिम् } (न०) १ गृह्य का फल । २ ताँवा ।
उत्पत्तिम् }

उत्पत्तिम् (न०) उद्यान (पक्षियों का) । [भीम ।

उत्पत्तिम् (वि०) १ मनोहर । समीचीन । सर्वोत्तम ।

२ भयानक ।

उत्पत्ति (व० क०) उड़ता हुआ । ऊपर उड़ता हुआ ।

उत्पत्तिम् (न०) उद्यान । चिड़ियों का विशेष प्रकार
का उद्यान ।

उत्पत्तिम् (न०) उद्यान ।

उत्पत्तिः (पु०) शिवजी का नाम ।

उत्पत्तिः (पु०) उड़ीसा प्रान्त का प्राचीन नाम ।

उत्पत्तिः } (पु०) आटे का लड्डू । रोटी ।
उत्पत्तिः } [सूचक अव्यय ।

उत्पत्ति (अव्यय०) सन्देह, प्रश्न, विचार और प्रचण्डता,

उत्पत्ति (अव्यय०) सन्देह, अनिश्चितता, अनुमान,
अथवा, या, और, सङ्गति सूचक अव्यय ।

उत्पत्तिः (पु०) अंगिरस के एक युग का नाम जो बृह-
स्पति के ज्येष्ठ भ्राता थे ।—अनुजः,—अनु-

जन्मान् (पु०) देवाचार्य बृहस्पति ।

उत्पत्ति (वि०) १ अभिलाषी । चाह रखने वाला । २
दुःखी । उदास । शोकान्वित । ३ अमनस्क ।

उत्पत्तिः } (वि०) बिना अंगिया या कञ्चुकी धारण
उत्पत्तिः } किये हुए ।

उत्पत्ति (वि०) १ बड़ा । लंबा चौड़ा । २ बलवान् ।
शक्तिशाली । भयङ्कर । ३ अत्यधिक । अधिक । ४
बहुतायत से । अत्यधिक । सम्पन्न । ५ नशे में चूर ।
मदमाता । पागल । मदोत्पत्ति । ६ श्रेष्ठ । उत्तम ।
७ विषम ।

उत्पत्तिः (पु०) १ हाथी का मद । २ मदमाता हाथी ।

उत्पत्तिः } (वि०) १ ऊपर को गर्दन उठाये हुए ।

उत्पत्तिः } उद्ग्रीवः (पु०) २ तस्पर । उत्सुक ।

उत्पत्तिः } [स्त्री०—उत्पत्तिः] मैथुन करने का ढंग
उत्पत्तिः } विशेष ।

उत्पत्तिः } (स्त्री०) १ प्रबल इच्छा । लालसा ।
उत्पत्तिः } व्याकुलता । २ किसी प्यारे पुरुष की प्रिय

वस्तु के मिलने की प्रबल इच्छा । ३ खेद । शोक ।

उत्पत्तिः } (व० क०) उत्सुक । चिन्तित ।

उत्पत्तिः } शोकान्वित । किसी प्यारे पुरुष या प्रिय-
वस्तु के मिलने की प्रबल इच्छा ।

उत्पत्तिः } (स्त्री०) सङ्केत स्थान पर प्यारे के न

उत्पत्तिः } आने पर लर्क वितर्क करने वाली
नायिका । आठ प्रकार की नायिकाओं में से एक ।

उत्पत्तिः (वि०) } गर्दन उठाए हुए ।

उत्पत्तिः (वि०) }

उत्पत्ति (वि०) } कौपते हुए ।

उत्पत्ति (वि०) }

उत्पत्तिः (पु०)

उत्पत्तिः (पु०) } कैंपकपी । सिहुरन ।

उत्पत्तिः (न०)

उत्पत्तिम् (न०) }

उत्पत्तिः (पु०) १ ढेर । समूह । २ टाल । गोला ।
३ कूड़ा कर्कट ।

उत्पत्तिः (पु०) } १ वाद्य यंत्र विशेष । एक प्रकार

उत्पत्तिः (न०) } का बाजा । २ तराश । चीरना
फाड़ना । ३ जड़ से उखाड़ना ।

उत्कर्षः (पु०) १ उखाड़ना । उचेलना । ऊपर खींच लेना । २ उन्नत । बढ़ती । प्रसिद्धि । उदय । समृद्धि । ३ आधिक्य । अधिकार्थ । ४ सर्वोत्कृष्टता । उत्तमोत्तम गुण । महिमा । ५ अद्वैत । अभिमान । ६ हर्ष । प्रसन्नता । [उचेल लेना ।

उत्कर्षणम् (न०) १ ऊपर खींचना । २ उखाड़ लेना ।

उत्कलः (पु०) १ उड़ीसा प्रान्त का नाम । २ बहे-
लिया । चिड़ीमार । ३ कुली ।

उत्कलाप (वि०) पँछ उठाये और फैलाये हुए ।

उत्कलिका (स्त्री०) १ उत्कण्ठा । चिन्ता । विकलता ।
२ हेल । क्रोडा विशेष । ३ कली । ४ लहर ।
५ — प्राश्रं (न०) ऐसी गद्य रचना जिनमें
कर्णकटुश्रवणों और लंबे लंबे समासों की भर-
मार हो ।

“अवेदुरक्षलिकायां यस्मान्नायं दुष्टाश्चर ।”

उत्कर्षणं (न०) १ फाड़ना । खींचना । २ जोतना ।
हल चलाना । ३ मलना । रगड़ना ।

उत्कारः (पु०) १ अनाज फटकना । २ अनाज की
देरी लगाना । ३ अनाज बोने वाला ।

उत्कासः (पु०) } १ खग्वारना । खांसना ।
उत्कासनं (न०) } २ गले का कफ साफ
उत्कासिका (स्त्री०) } करना ।

उत्किर (वि०) गुफना की तरह धुमाया हुआ ।
हवा में उड़ाया हुआ ।

उत्कीर्तनम् (न०) प्रशंसा । स्तुति । कीर्तन ।

उत्कुटम् (न०) उत्थान लेटना । चित्त लेटना ।

उत्कुणः (पु०) खटमल । खटकीरा । चिलुआ ।
चील्हर । [नाम करने वाला ।

उत्कुल (वि०) पतित । अष्ट । अपने कुल को बद-

उत्कूजः (पु०) कोकिल की कूक ।

उत्कूटः (पु०) छाता । छतरी ।

उत्कूर्दनम् (न०) उछाल । कुलांच । फलांग ।

उत्कूल (वि०) तट को नाँव कर बहने वाली ।

उत्कूलित (वि०) तटवर्तिनी ।

उत्कृष्ट (व० कृ०) १ ऊपर उठाया हुआ । उठा हुआ ।

उन्नत । २ सर्वोत्तम । उत्तम । श्रेष्ठतम । उच्चतम ।

३ उठा हुआ । हल चलाया हुआ ।

उत्कोचः (पु०) घूस । रिशवत ।

उत्कोचकः (पु०) १ घूस । २ घूसखोर । रिशवती ।

उत्क्रमः (पु०) १ प्रस्थान । २ उन्नतिशील । उन्नत ।

३ नियमविरुद्धता । विरुद्धाचरण । ४ उछाल ।
फलांग ।

उत्क्रमणं (न०) १ उछाल । निकास । प्रस्थान ।
२ सृष्टि । जीव का शरीर से वियोग । [२ सृष्टि ।

उत्क्रान्तिः (स्त्री०) १ उछाल । वहिर्निष्क्रमण ।

उत्क्रामः (पु०) ऊपर या बाहिर जाना । प्रस्थान ।
२ अतिक्रमण । ३ विरुद्धता । नियम का भंग
करण ।

उत्कोशः (पु०) १ चिल्लपों । शोरगुल । कोलाहल ।
२ घोषणा । दिठोरा । ३ कुररी ।

उत्क्लेदः (पु०) तर होना । भीगना ।

उत्क्लेशः (पु०) १ बबड़ाहट । अशान्ति । विकलता ।
२ विचारों की गड़बड़ी । ३ रोग । बीमारी ।
विशेष कर समुद्री बीमारी ।

उत्क्षिप्त (व० कृ०) १ उछाला हुआ । लुकाया हुआ ।
ऊपर उठाया हुआ । २ रोका हुआ या रुका हुआ ।
अवलम्बित । ३ पकड़ा हुआ । ४ ढाया हुआ ।
गिराया हुआ । उजाड़ा हुआ ।

उत्क्षिप्तः (पु०) धतूरे का पौधा ।

उत्क्षिप्तिका (स्त्री०) आभूषण विशेष जो कान के
ऊपरी भाग में पहिना जाता है । बाला ।

उत्क्षेपः (पु०) १ उछाल । लुकान । २ ऊपर उछाली
हुई वस्तु । ३ प्रेषण । रवानगी । ४ वमन ।
उछांट ।

उत्क्षेपक (वि०) उछालने वाला या वह वस्तु जो
उछाली जाय । उछाली हुई वस्तु ।

उत्क्षेपकः (पु०) १ कपड़ों का चोर । २ भेजने
वाला । आज्ञा देने वाला ।

उत्क्षेपणं (न०) १ उछाल । लुकान । २ वमन ।
उछांट । ३ रवानगी । प्रेषण । ४ सूय । पंखा ।

उत्खचित (वि०) घोलमेल । श्रोतप्रोत । जड़
हुआ । बैठाया हुआ । [विशेष ।

उत्खला (स्त्री०) सुगन्ध विशेष । खुशबूदार वस्तु

उत्खात (व० कृ०) १ खोदा हुआ । उखाड़ा हुआ ।

२ खींच कर बाहिर निकाला हुआ । ३ जड़ से
उखाड़ा हुआ । जड़ तोड़ कर निकाला हुआ ।

—कैलिः, (स्त्री०) कीड़ा के लिये सींग या हाथी के दाँत से ज़मीन को खोदना । [ज़मीन ।

उत्खातं (न०) १ रन्ध्र । गुफा । २ ऊबड़ खाबड़

उत्खातिन् (वि०) विषम । ऊँची नीची । असम ।

उत्त (वि०) भीगा हुआ । नम । तर ।

उत्तंसः (पु०) १ शिखा । चोटी । सीसफूज । २ कान की बाली या भुमका ।

उत्तंसित (वि०) कानों में बाली पहिने हुए । चोटी पर रखे या पहिने हुए । [(नद या नदी)

उत्तट (वि०) तटों के ऊपर निकल कर बहने वाला ।

उत्तप्त (न० क०) जला हुआ । गर्म । सूखा । शुष्क ।

उत्तप्तम् (न०) सूखा मांस ।

उत्तम (वि०) १ सर्वोत्कृष्ट । सबसे अच्छा । २ सब के

आगे । सब के ऊपर । सब से ऊँचा । ३ अत्युच्च ।

मुख्य । प्रधान । ४ सब से बड़ा । प्रथम ।—

अङ्गम्, (न०) शिर । सिर ।—अध्रम्,

(वि०) ऊँचा नीचा ।—अर्धः, (पु०) सब

से अच्छा आधा भाग । २ अन्तिम अर्धभाग ।

—अर्धः, (पु०) अन्तिम या पिछला दिवस ।

सुदिन । शुभ दिन ।—ऋणः,—ऋणिकः,

(उत्तमर्णः) (पु०) महाजन । कर्ज देने

वाला । (अधर्मर्णः—कर्जदार का उल्टा)—

पुरुषः,—पूरुषः, (पु०) १ (व्याकरण में)

१ कर्ता । २ परमेश्वर । ३ सब से अच्छा आदमी ।

—श्लोक, (वि०) सर्वोत्कृष्ट कीर्तिसम्पन्न ।

आदर्श । सहिमान्वित । प्रसिद्ध ।—साहसः,

(पु०)—साहसम्, (न०) सब से अधिक

जुमाना या अर्थव्ययः । एक हजार (और किसी

किसी के मतानुसार) अस्सी हजार पण का

जुमाना । [पुरुष ।

उत्तमः (पु०) १ विष्णु भगवान का नाम । २ अन्त्य-

उत्तमा (स्त्री०) सब से अच्छी स्त्री ।

उत्तमीय (वि०) सब से ऊपर । सब से ऊँचा ।

सर्वोत्तम । मुख्य । प्रधान ।

उत्तमः (पु०) १ सहारा । रोक । धाम ।

उत्तमः (पु०) २ धुनुकिया । ३ रोक ।

उत्तमनम् (न०) एक ।

उत्तमनम् (न०)

उत्तर (वि०) १ उत्तर दिशा का । उत्तर दिशा में

उत्पन्न । २ उत्तर । अपेक्षा कृत ऊँचा । ३

पिछला । बाद का । पीछे का । अगला । अन्त

का । ४ बाँया । ५ उत्कृष्ट । मुख्य । सर्वोत्तम । ६

अधिकतर । ७ सम्पन्न । युक्त । अन्वित । ८

पार होने को । पार उतारने को ।—अध्वर,

(वि०) उत्तर । नीचतर ।—अधिकारः,

(पु०)—अधिकारिता, (स्त्री०)—अधि-

कारित्वं, (न०) सम्पत्ति पाने का हक । वारि-

सपन ।—अधिकारिन्, (पु०) उत्तराधिकारी ।

वारिस ।—अयनं, (न०) उत्तरी मार्ग । वे छः

मास जिनमें सूर्य की गति उत्तर की ओर झुकी

हुई होती है । मकर से मिथुन के सूर्य तक का

छः मास का समय ।—अर्ध, (न०) १ शरीर का

नाभि के ऊपर का आधा भाग । २ उत्तरी भाग ।

३ पूर्वार्ध का उल्टा । पहिला भाग ।—अर्धः,

(पु०) अगला दिन । आने वाला कल ।—

आभासः, (पु०) अम पूर्ण उत्तर या जवाब ।

—आशा, (स्त्री०) उत्तर दिशा ।—आशा-

धिपतिः,—आशापतिः, (पु०) कुबेर ।

—आषाढा, (स्त्री०) २१ वाँ नक्षत्र ।—

आसङ्गः, (पु०) ऊपर पहिने का वस्त्र ।—

इतर, (वि०) दक्षिण । दक्षिण का ।—

इतरा, (स्त्री०) दक्षिण दिशा ।—उत्तर,

(वि०) अधिक अधिक । सदा बढ़ने वाला ।—

उत्तरं, (न०) जवाब ।—ओष्ठः, (= उत्तरौष्ठः या

उत्तरोष्ठः,) (पु०) ऊपर का ओठ ।—काण्डम्

(न०) श्री महात्मा की रामायण का सातवाँ

काण्ड ।—कायः, (पु०) शरीर का ऊपरी भाग ।

—कालः, (पु०) आगे आने वाला समय ।—

कुरु, (पु०) (बहुवचन) पृथिवी के नौ खण्डों में

से एक । उत्तरकुरु का प्रदेश ।—कौसलाः, (पु०

बहुवचन) अयोध्या के आस पास का देश ।—

क्रिया, (स्त्री०) शवदाह के अनन्तर मृतक के

निमित्त होने वाला कर्म ।—कुदः, (पु०)

बादर । चहर । पलंगपोश ।—ज्योतिषाः, (पु०

बहु०) पश्चिम दिशा का एक देश ।—दायक,

(वि०) अवज्ञाकारी । नाफरमाबरदार ।

गुस्ताव । ढीठ । - दिश, (स्त्री०) उत्तर दिशा ।
 — ईशः, — पालः, (= उत्तरदिक्पालः)
 (पु०) कुबेर । - पत्तः, (पु०) १ कृष्णपत्र । अंधेरा
 पात्र । २ पूर्वपत्र का उल्टा । शास्त्रार्थ में वह
 सिद्धान्त जो विवादग्रस्त विषय का खण्डन करे । —
 पदं (न०) किसी यौगिकशब्द का अन्तिम शब्द ।
 — पादः, (पु०) अज्ञीवावे का दूसरा हिस्सा ।
 — प्रच्छेदः, (पु०) रज्जई । लिहाफ । तोशक ।
 — प्रत्युत्तरं (न०) १ बाद विवाद । बहस । २
 किसी मुकदमें में वकालत । — फल्गुनी, —
 फाल्गुनी, (स्त्री०) १२ वां नक्षत्र । - भाद्रपद,
 — भाद्रपदा २६ वां नक्षत्र । — मोमांसा,
 (स्त्री०) वेदान्त दर्शन । — वयसं, — वयस्,
 (न०) बुढ़ापा । — वस्त्रं, — वासस्, (न०)
 ऊपर का वस्त्र । चुगा । लवादा । ओवर कोट । —
 वादिन्, (पु०) प्रतिवादी । मुद्दालह । प्रति-
 पक्षी । — साधकः, (पु०) सहायक ।

उत्तरः (पु०) १ आगे आने वाला समय । भविष्यत्
 काल । २ विष्णु का नाम । ३ शिव का नाम । ४
 विराट के पुत्र का नाम ।

उत्तरा (स्त्री०) १ उत्तर दिशा । २ नक्षत्र विशेष ।
 ३ विराट की कन्या का नाम, जो अभिमन्यु को
 व्याही गई थी ।

उत्तरंग } (वि०) १ लहरों से ढूँचा हुआ । घोड़ा
 उत्तरङ्ग } हुआ । कंपाथमान । लहराती हुई
 लहरों से युक्त ।

उत्तरतः } (अव्यया०) उत्तर से उत्तर दिशा तक ।
 उत्तरात् } बाईं ओर । पीछे । बाद को ।

उत्तरत्र (अव्यया०) पीछे से । बाद को । आगे को ।
 नीचे । अन्त में ।

उत्तराहि (अव्यया०) उत्तर दिशा की ओर ।

उत्तरीयं } (न०) ऊपर पहिनने का कपड़ा ।
 उत्तरीयकं }

उत्तरेण (अव्यया०) उत्तर की ओर । उत्तर दिशा की
 तरफ । [आने वाले कल के बाद ।

उत्तरेद्युः (अव्यया०) अगले दिन के बाद । परसों
 उत्तर्जनम् (न०) भयङ्कर । डरावना ।

उत्थान (वि०) १ फैला हुआ । बिछा हुआ । बढ़ा
 हुआ । प्रसारित । २ चित्त पड़ा हुआ । सीधा ।

सतर । ३ साफ दिल का । स्पष्ट बक्ता । ४ उथला ।

— पादः, (पु०) एक पौराणिक राजा का नाम
 जिनका पुत्र भक्तशिरोमणि ध्रुव था । —

पादजः, (पु०) ध्रुव का नाम । — शय (वि०) चित्त
 पड़ा हुआ । — शयः, (पु०) — शया, (स्त्री०)
 स्तनधय । दूध पीता हुआ छोटा शिशु या बच्चा ।

उत्तापः (पु०) १ बड़ी गर्मी । तपन । २ पीड़ा ।
 कष्ट सन्ताप । ३ धक्काहट ।

उत्तारः (पु०) १ उतारा । २ ढुलाई । नाव पर लदे
 माल का उतारना । ३ पिंड छुटना । ४ वमन ।
 उछांट ।

उत्तारकः (पु०) रक्षक । विपत्ति से छुड़ाने वाला ।
 उत्तारणम् (न०) नाव पर से तट पर उतारने की
 क्रिया । छुड़ाने की क्रिया ।

उत्तारणः (पु०) विष्णु का नाम ।

उत्ताल (वि०) १ बढ़ा । मजबूत । २ उग्र । तेज़ ।
 ३ भयानक । भयङ्कर । ४ दुरूह । कठिन । ५
 ऊँचा । लंबा ।

उत्तालः (पु०) लंगूर ।

उत्तुंग (वि०) ऊँचा । लंबा । बड़ा ।

उत्तुङ्ग }

उत्तुषः (पु०) भुसी निकाला हुआ अन्न । सुना
 हुआ । अनाज ।

उत्तेजक (वि०) १ उभाड़ने वाला । बढ़ाने वाला ।
 उकसाने वाला । प्रेरक । २ बेगों को तीव्र करने
 वाला ।

उत्तेजनं (न०) १ धक्काहट । विकलता । २
 उत्तेजना (स्त्री०) } बढ़ावा । प्रोत्साह । ३ तेज़ करने
 वाला । ४ भड़काने वाला भाषण । ५ प्रलोभन ।

उत्तोरण (वि०) ऊँची या सीधी महरावों से सुसज्जित ।

उत्तोलनम् (न०) उठाना । ऊपर उठाना ।

उत्त्यागः (पु०) १ त्याग । वैराग्य । उत्सर्ग । २
 उछाल । लुकाव । ३ संसार से वैराग्य ।

उत्त्रासः (पु०) बढ़ा भारी भय या डर ।

उत्थ (वि०) १ उत्पन्न हुआ । पैदा हुआ । निकला ।
 २ खड़ा हुआ । आगे आया हुआ ।

उत्थानम् (न०) १ उठने या खड़े होने की क्रिया ।
 २ उदय । ३ उत्पत्ति । ४ समाधि से

पुनरुत्थान । ५ उद्योग प्रयत्न । क्रियाशीलता ।
६ शक्ति । स्फूर्ति । ७ हर्ष । आनन्द । ८ युद्ध ।
९ सेना । १० आँगन । वह मण्डप जहाँ बलिदान
दिया जाय । ११ सीमा । मर्यादा । हद ।
१२ सजग होना । जाग उठना ।—एकादशी
(स्त्री०) कार्तिक शुक्ला ११ । इस दिन भगवान्
चार मास से चुकने के बाद जागते हैं । इसको
प्रबोधिनी-एकादशी भी कहते हैं ।

उत्थापनम् (न०) १ उठाना । खड़ा करना । २
ऊंचा उठाना । ३ भड़काना । उत्तेजित करना ।
४ जगाना । ५ वमन । छुँट ।

उत्थित (व० क०) १ उठा हुआ । २ खड़ा हुआ ।
३ उत्पन्न । पैदा हुआ । निकला हुआ । उदय
हुआ । ४ बढ़ा हुआ । ५ मर्यादित । सीमाबद्ध ।
६ फैला हुआ । पसरा हुआ ।—अंगुलिः (पु०)
पसारा हुआ हाथ । खुला हुआ हाथ । फैलाया
हुआ हाथ ।

उत्थितिः (स्त्री०) उन्नमन । उच्चता । उठान ।

उत्पद्मन् (वि०) उल्टे पत्कों वाला ।

उत्पत् (पु०) पत्नी । चिड़िया ।

उत्पत्तनम् (न०) १ उड़ान । फलांग । उछाल ।
कुदान । २ ऊपर चढ़ना । चढ़ना ।

उत्पत्ताक (वि०) मंडा उठाये हुए ।

उत्पत्तिष्ठा (वि०) उड़ता हुआ । ऊपर जाता हुआ ।

उत्पत्तिः (स्त्री०) १ जन्म । २ उत्पादन । ३ उत्पत्ति
स्थान । उद्गमस्थान । ४ उदय होना । ऊपर
चढ़ना । दृष्टिगोचर होना । ५ लाभ । मुनाफा ।
—व्यञ्जकः, (पु०) १ दूसरा जन्म । [उपनयन-
संस्कार दूसरा जन्म कहलाता है । क्योंकि द्विजन्मा
संज्ञा उपनयन संस्कार के बाद ही होती है ।]
२ द्विजन्मा का चिन्ह ।

उत्पथः (पु०) असम्मार्ग । खराब रास्ता ।

उत्पथं (न०) विपथ गमन ।

उत्पन्न (व० क०) १ पैदा हुआ । निकला हुआ । २
उदय हुआ । उगा हुआ । ऊपर गया हुआ । ३
प्राप्त किया हुआ ।

उत्पल (वि०) मौसरहित । दुबला पतला । लटा ।

—अर्थात्,—चलुस् (वि०) कमलनयन ।—पत्रं
(न०) १ कमल का पत्ता । २ स्त्री के नख की
खरोंच से उत्पन्न घाव । नखकृत । नखचिन्ह ।

उत्पलम् (न०) २ नील कमल । कमोदिनी । २ कोई
भी पौधा ।

उत्पलिन् (वि०) बहु-कमल-पुष्प-सम्पन्न ।

उत्पलिनी (स्त्री०) १ कमल पुष्पों का ढेर । २ कमल
का पौधा जिसमें कमल के फूल लगे हों ।

उत्पावनम् (न०) साफ करना । पवित्र करना ।

उत्पाटः (पु०) १ उखाड़ना । उचेलना । २ जड़ डाली
सहित नष्ट करना । कान के भीतर का रोग
विशेष । [डाली सहित नष्ट कर डालना ।

उत्पाटनम् (न०) जड़ से उखाड़ डालना । जड़
उत्पाटिका (स्त्री०) वृक्ष की छाल ।

उत्पाटिन् (वि०) उचेलना । उन्मूलन । उखाड़न ।

उत्पातः (पु०) १ उछाल । कुलाँच । उड़ान । २ अति-
क्षेप । उठान । उभाड़ । अशुभसूचक शकुन । ४
ग्रहण भूकम्प आदि अशुभ सूचक घटनाएँ ।—
पवनः,—वातः,—वातालिः (पु०) बवंडर ।
तूफान ।

उत्पाद् (वि०) ऊपर को पैर किये हुये । शयः—
शयनः (पु०) १ शिष्ट । २ तीतर विशेष ।

उत्पादः (पु०) उत्पत्ति । प्राकट्य । प्रादुर्भाव ।

उत्पादक (वि०) [स्त्री०—उत्पादिका] पैदा करने-
वाला । प्रभावोत्पादक । पूरा करने वाला ।

उत्पादकः (पु०) पैदा करनेवाला । उत्पन्न करनेवाला ।
जनक । पिता ।

उत्पादकम् (न०) उद्गम स्थान । कारण । हेतु ।

उत्पादनम् (न०) उत्पत्ति । पैदाइश । [हुआ ।

उत्पादिन् (वि०) उत्पन्न किया हुआ । पैदा किया

उत्पादिका (स्त्री०) १ कीट विशेष । दीमक । २
जननी । माता । पैदा करने वाली ।

उत्पाली (स्त्री०) तंदुरुस्ती । स्वास्थ्य ।

उत्पिजर } (वि०) १ जो पिंजड़े में बन्द न हो ।
उत्पिजर } २ गढ़-बढ़ । अत्यन्त घबड़ाया हुआ ।
उत्पिजल }

उत्पीडः (पु०) १ दबाव । २ प्रबल या प्रचण्ड बहाव ।
३ फेन । भाग ।

उत्पीडनम् (न०) दबाव । साड़न ।

उत्पुच्छ (वि०) पूछ उठाये हुए ।

उत्पुलक (वि०) १ रोमाञ्जित । जिसके रोगटे खड़े हों । २ प्रसन्न । हर्षित ।

उत्प्रभ (वि०) चमकीला । प्रकाशमान ।

उत्प्रभः (पु०) दहकती हुई आग ।

उत्प्रसवः (पु०) गर्भपात या गर्भश्राव ।

उत्प्रासः (पु०) १ ज़ोर से फेंकना । २ हँसी
उत्प्रासनम् (न०) १ मज़ाक । २ अट्टहास । ४

उपहास । मज़ाक । जीद । ताना । व्यङ्ग्य ।

उत्प्रेक्षा (न०) १ चित्तवन । अवलोकन । पहचान ।

२ ऊपर की ओर ताकना । ३ अनुमान । कल्पना । ४ तुलना ।

उत्प्रेक्षा (स्त्री०) १ अनुमान । कल्पना । क्रयास । २
असावधानी । उदासीनता । ३ अर्थातिङ्कार विशेष ।
इसमें भेदज्ञानपूर्वक उपमेय में उपमान की
प्रतीति होती है ।

उत्प्लवः (पु०) उछाल । कुदान । फलाँग । छलाँग ।

उत्प्लवा (स्त्री०) बोट । नाव । फिरती ।

उत्प्लवनम् (न०) कूद । छलाँग । फलाँग । उछाल ।

उत्फल (न०) उत्तम फल ।

उत्फालः (पु०) १ उछाल । छलाँग । फलाँग ।
वेगवान गति । २ कूदने को उद्यत होने का एक
हंग विशेष ।

उत्फुल्ल (व० कृ०) १ खिला हुआ । २ बिलकुल खुला
हुआ । फैला हुआ । ३ फूला हुआ । आकार में
बड़ा हुआ । ४ उत्तान खेद हुआ ।

उत्फुल्लम् (न०) स्त्री की योनि । [स्थान ।

उत्सः (पु०) चरमा । सोता । श्रोत । जल का

उत्सर्गः (पु०) १ गोद । अङ्क । २ आलिङ्गन ।

उत्सङ्गः १ लिपदाना । चिपदाना । २ आभ्यान्तरिक ।

सामीप्य । पड़ोस । ४ सतह । तल । ओर । ढाल ।

नितंब । ६ ऊपरी भाग । चोटी । पहाड़ की
चढ़ाई । ८ घर की छत ।

उत्संगित (वि०) १ सम्मिलित । समूह । २ गोद में
उत्सङ्गित १ लिया हुआ । गोद का ।

उत्सर्जनम् (न०) उछाल या छुटाना । ऊपर को
उत्सर्जनम् १ उठाने की क्रिया ।

उत्सर्ग (व० कृ०) १ सड़ा हुआ । २ नष्ट किया
हुआ । उजाड़ा हुआ । जड़ से उखाड़ा हुआ ।
त्यागा हुआ । ३ अकोला हुआ । शगपित । ४
अप्रचलित । लुप्त ।

उत्सर्गः (पु०) १ त्याग । न्यास । २ उड़ेलना ।
गिराना । ३ भेंट । दान । अर्पण (करना) । दे
डालना । ४ व्यय करना । ५ छोड़ देना । [जैसे
वृषोत्सर्ग में] बलिदान । ७ विद्या या पुरीष का
त्याग । (अध्ययन या किसी व्रत की) समाप्ति ।
८ साधारण नियम (अपवाद का उल्टा) १०
योनि । भग ।

उत्सर्जनम् (न०) १ त्याग । न्यास । परित्याग । २ भेंट ।
पुरस्कार । दान । ३ (वैदिक) अध्ययन को
स्थगित करना । ४ वैदिक अध्ययन बंद करने के
उपलक्ष्य में गृहकर्म विशेष । यह वर्ष में दो बार
अर्थात् पूस और श्रावण में किया जाता है ।

उत्सर्पः (पु०) १ ऊपर जाना या ऊपर सरकना ।
उत्सर्पणम् (न०) २ फुलाना ३ साँस लेना ।

उत्सवः (पु०) १ मङ्गलकार्य । उद्गाह । २ आनन्द ।
हर्ष । ३ उचाई । उच्चस्थान । ४ क्रोध । रोष । ५
इच्छा । इच्छा का उत्पन्न होना । —सङ्केतः (बहु-
वचन, पु०) हिमालय पर्वत में रहने वाली एक
मनुष्य जाति ।

उत्सादः (पु०) १ नाश । विनाश । २ उजड़न । हानि ।

उत्सादनम् (न०) १ नाश । २ सुगन्धि । ३ वाव को
पूरना या उसका अच्छा होना । ४ चढ़ना ।
उठना । ५ ऊपर उठाना । ऊँचा करना । ६ दो बार
किसी खेल को अच्छी तरह जोरना ।

उत्सारकः (पु०) १ पुलिस का सिपाही । २ चौकी-
दार । ३ दरवान । द्वारपाल ।

उत्सारणम् (न०) १ दूर हटाना । हटाना । रास्ते
से दूर करना । २ अतिथि का सत्कार । महमान-
दारी ।

उत्साहः (पु०) १ साहस । हिम्मत । २ उमङ्ग ।
उद्गाह । जोश । हौसला । ३ हठ अध्यवसाय । ४
हठ सङ्कल्प । ५ शक्ति । सामर्थ्य । ६ हड़ता ।
पराक्रम । बल । —वर्धनः, (पु०) वीर रस

—वर्धनम् (न०) वीरता ।—शक्तिः, (स्त्री०)
बढ़ता । उछाह ।

उत्साहनम् (न०) १ उद्योग । प्रयत्न । २ अध्यवसाय ।
बढ़ प्रयत्नशीलता । ३ उत्साहवृद्धि । हौसला
बँधाना । उमाड़ना ।

उत्सिक्त (व० कृ०) १ छिड़का हुआ । २ अभिमानी ।
क्रोधी । अकड़वाड़ा । ३ जल की बाढ़ से बड़ा
हुआ । अत्यधिक । ४ चंचल । विकल ।

उत्सुक (वि०) १ अत्यन्त इच्छावान् । उत्कण्ठित ।
चाह से आकुल । २ बेचैन । उद्विग्न । व्याकुल ।
३ अनुरक्त । ४ शोकान्वित ।

उत्सूत्र (वि०) १ डोरी से न बंधा हुआ । ढीला ।
बंधनमुक्त । २ अनियमित । गड़बड़ । ३ व्याकरण
के नियम के विरुद्ध ।

उत्सूरः (पु०) सन्ध्याकाल । सूर्यपुट ।

उत्सेकः (पु०) १ छिड़काव । उड़ेलना । २ उमड़न ।
बढ़ती । अत्यधिकता । ३ अभिमान । शेखी ।

उत्सेकिन् (वि०) १ उमड़ा हुआ । बढ़ा हुआ । २
अभिमानी । क्रोधी । अकड़वाड़ा ।

उत्सेचनम् (न०) जल का छिड़काव या जल को
उछालने की क्रिया । [मोटापन । ३ शरीर ।

उत्सेधः (पु०) १ उच्चस्थान । ऊँचा स्थान । २ मुटई ।

उत्सेधम् (न०) हनन । मारण । घात ।

उत्स्रयः (पु०) सुसक्यान ।

उत्स्वन (वि०) उच्चरवकारी । दीर्घ स्वर वाला ।

उत्स्वनः (पु०) उच्चरव । दीर्घस्वर ।

उत्स्वप्रायते (क्रिया) सोते में बराना ।

उद् (अव्यया०) यह एक उपसर्ग है जो क्रियाओं
और संज्ञाओं में लगाया जाता है, अर्थ होता है:
१ ऊपर । बाहिर । २ अलग । पृथक् । ३ उपा-
र्जन । लाभ । ४ लोकप्रसिद्धि । ५ कौतूहल ।
चिन्ता । ६ मुक्ति । ७ अनुपस्थिति । ८ फुलाना ।
बढ़ाना । खोलना । ९ मुख्यता । शक्ति ।

उद्क् (अव्यया०) उत्तर दिशा की ओर ।

उद्कम् (न०) पानी ।—अन्तः, (पु०) तट ।
किनारा । समुद्रतट ।—अर्थिन्, (वि०) प्यासा ।
—आधारः, (पु०) कुण्ड । हौद ।—उदञ्चनः,
(पु०) लोटा । कलसा ।—उद्गं, (न०) जलधर रोग ।

—कर्मन्, (न०) —कार्य, (न०) —क्रिया,
(स्त्री०)—दानं, (न०) पितरों की तृप्ति के लिये

जल से तर्पण ।—कुम्भः, (पु०) जल का घड़ा या
कलसा ।—गाहः, (पु०) स्नान ।—ग्रहणः, (न०)

पीने का जल ।—दुः, —दातृ, —दायिन् —
दानिक, (वि०) जलदाता । जल देने वाला ।—

दः, (पु०) १ तर्पण करने वाला । २ दंश वाला ।
उत्तराधिकारी ।—धरः, (पु०) बादल ।—वज्रः,
(पु०) ओलों की वृष्टि ।—शान्तिः, (स्त्री०)

मार्जनक्रिया ।—हारः, (पु०) पानी डोने वाला ।
उदकल } (वि०) पनीला । पानी का भाग
उदकिल } जिसमें विशेष हो ।

उदकेधरः (पु०) जलजन्तु । पानी में रहने वाला
जीव जन्तु ।

उदक्त (वि०) ऊपर उठा हुआ ।

उदक्षय (वि०) जल की अपेक्षा रखने वाला ।

उदक्षया (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।

उद्ग्र (वि०) १ ऊँचा । उन्नत । उठा हुआ । बाहिर
निकला हुआ या बाहिर की ओर बढ़ा हुआ । २

बड़ा । चौड़ा । प्रशस्त । बहुत बड़ा । ३ बूढ़ा । ४
मुख्य । प्रसिद्ध । गौरवान्वित । ५ प्रचण्ड ।

असह्य । ६ भयानक । डरावना । ७ कराल ।
उद्विग्न । ८ परमानन्दित ।

उदंकः } (पु०) चमड़े की बनी (तेल या घी
उदङ्कः } रखने की) कुम्पी या कुम्पा ।

उदञ्च } (वि०) [(पु०)—उदङ्कः (न०)—
उदञ्च } उदङ्क, (स्त्री०)—उदीची] १ ऊपर की
उदञ्च } ओर घूमा हुआ या जाता हुआ । २ ऊपर का ।

उच्चतर । ३ उत्तरी या उत्तर की ओर घूमा हुआ ।
४ पिछला ।—अद्रिः, (पु०) हिमालय पर्वत ।

—अयनम्, (न०) उत्तरायण ।—आवृत्तिः,
(स्त्री०) उत्तर से लौटने की क्रिया ।—पथः, (पु०)

उत्तर का एक देश ।—प्रवणः, (वि०) उत्तर की
ओर झुका हुआ या ढाला हुआ ।—मुखः, (वि०)

उत्तर की ओर मुख किये हुए ।

उदञ्चनम् } (न०) १ डोल । बाल्टी जिससे कुएँ
उदञ्चनम् } से जल निकाला जाय । २ चढ़ाव ।

उठाव । उठान । ३ ढक्कन । ढकना ।

दंजलि } (वि०) दोनों हाथों से सम्पुट सा
दंजलि } बनाये और उंगलियों को उपर किये
हुए हाथों की मुद्रा विशेष ।

दंडपालः } (पु०) १ मत्स्य । २ सर्प विशेष ।
दण्डपालः }

दधिः (पु०) १ घट । घड़ा । जलपात्र । २ समुद्र ।

३ मील । सरोवर । ४ घड़ा । कलसा ।

उदन् (न०) जल । पानी । [अन्य शब्दों के साथ जब इसका योग किया जाता है, तब इसके "न्" का लोप हो जाता है । [जैसे—उदधिः,]—कुम्भः, (पु०) घड़ा । कलसा ।—ज, (वि०) पानी का ।—धानः, (पु०) १ पानी का घड़ा । २ बादल ।—धिकन्या, (स्त्री०) १ लक्ष्मी । २ द्वारकापुरी ।—पात्रं, (न०)—पात्री, (स्त्री०) जल भरने का बर्तन ।—पानः, (पु०)—पानम् (न०) १ कुप के समीप की हौदी । २ कूप ।—पेषः, (न०) लेही । चिपकाने की वस्तु ।—विन्दुः, (पु०) जल की बूंद ।—भारः, (पु०) जल ढोने वाला अर्थात् बादल ।—मन्थः (पु०) यवागू या जब का विशेष रीत्या बनाया हुआ जल, जो रोगी को पथ्य में दिया जाता है ।—मानः, (पु०)—मानम्, (न०) आठक का पचासवाँ भाग । तौल विशेष ।—मेघः, (पु०) वृष्टि करने वाला बादल ।—वज्रः, (पु०) १ ओलों की वर्षा । २ कुआरा ।—वासः, (पु०) जल में रहना या जल में खड़ा रहना ।—वाह, (वि०) जल लाने वाला ।—वाहः, (पु०) मेघ ।—वाहनं, (न०) जलपात्र ।—शरावः, (पु०) जल से भरा घड़ा ।—शिवत्, (न०) छाड़ या मठा जिस में १ हिस्सा जल और २ हिस्सा माछ हो ।—हरणः, (पु०) पानी निकालने का पात्र ।

उदंत } (पु०) १ समाचार । खबर । वर्णन ।
उदन्तः } इतिहास । २ साधु पुरुष ।

उदंतकः } (पु०) समाचार । खबर ।
उदन्तकः }

उदंतिका } (स्त्री०) सन्तोष । तृप्ति ।
उदन्तिका }

उदन्य (वि०) प्यासा । तृषित ।

उदन्या (स्त्री०) प्यास । तृषा ।

उदन्वत् (पु०) समुद्र । सागर ।

उदयः (पु०) १ उगना । उठना । ऊँचा होना । २ आगमन (जैसे धनोदयः) उपज (जैसे फलोदयः) । ३ सृष्टि । ४ उदयगिरि । ५ उन्नति । अभ्युदय । ६ पदोन्नति । ७ परिणाम । ८ पूर्णता । परिपूर्णता । ९ लाभ । नफा । १० आमदनी । आय । मालगुजारी । ११ न्याज । सूद । १२ कान्ति । चमक ।—अचलः, —आद्रिः, —गिरिः, —पर्वतः, —शैलः, (पु०) उदयाचल नामक पर्वत जो पूर्व दिशा में है ।—प्रस्थः, (पु०) उदयाचल की अधिल्यका । [२ परिणाम ।

उदयनम् (न०) १ उगना । निकलना । उपर चढ़ना ।

उदयनः (पु०) १ अगस्त्य जी का नाम । २ चन्द्रवंशी एक राजा का नाम । यह वत्सराज के नाम से प्रसिद्ध था और कौशाम्बी इसकी राजधानी थी ।

उदरं (न०) १ पेट । २ किसी वस्तु का भीतरी भाग । खोखलापन । पोलापन । ३ जलोदर रोग के कारण पेट का फुलाव । ४ हनन । घात । हत्या ।—आध्मानः, (पु०) पेट का फूलना ।—आमयः, (पु०) अतीसार । संग्रहणी । दस्तों की बीमारी ।—आवर्तः, (पु०) नाभि का ।—आवेष्टः, (पु०) फीता जैसा कीड़ा ।—आणं, (न०) १ कबच । बफ़तर । २ पेटी । पेट पर बांधने की पट्टी ।—पिशाच, (वि०) बहुत खाने वाला । भोजनभट्ट ।—सर्वस्वः, (पु०) भोजन भट्ट या जिसे केवल पेट भरने ही की चिन्ता हो ।

उदरधिः (पु०) १ समुद्र । २ सूर्य ।

उदरंभरि } (वि०) १ अपने पेट का भरण पोषण
उदरभरि } करने वाला । स्वार्थी । २ भोजनभट्ट ।

उदरवत् } (वि०) बड़ेपिट्ट । बड़े पेट वाला ।
उदरिक } तोंदिल । मौटा ।
उदरिल }

उदरिन् (न०) बड़े पेट या तोंद वाला । मौटा ।

उदरिणी (स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।

उदर्कः (पु०) १ समाप्ति । अन्त । उपसंहार । २ परिणाम । फल । किसी कर्म का भार्य परिणाम ।
 ३ आने वाला काल । भविष्यत् काल ।
 उदर्चिस् (वि०) चमकीला । कान्तिमान । दृक्कता हुआ ।—(पु०) १ अग्नि । २ कामदेव । ३ शिव ।
 उदवसितं (न०) घर । बासा । डेरा ।
 उदध्रु (वि०) जो फूट फूट कर रोता हो । जिसकी आँखों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित हो ।
 उदसनम् (न०) १ फैंकना । उठाना । बनाकर खड़ा करना । २ निकालना ।
 उदास (वि०) १ ऊँचा । उठा हुआ । २ कुलीन । महिमान्वित । ३ उदार । दानशील । ४ प्रख्यात । आदर्श । महान् । ५ प्रिय । प्यारा । मायूक । ६ ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ ।
 उदान्तः (पु०) १ दान । भेंट । ३ वाद्य यंत्र विशेष । एक प्रकार का बाजा । ढोल ।
 उदात्तम्, (न०) अलङ्कार विशेष । इसमें सम्मान्य विभूति का वर्णन खूब चढ़ा बढ़ा कर किया जाता है ।
 उदानः (पु०) १ शरीरस्थ पाँच वायु में से एक । यह कण्ठ में रहती है । इसकी चाल हृदय से कण्ठ और तालू तक तथा सिर से भ्रूमध्य तक मानी गयी है । डकार और झींक इसीसे आती है ।
 २ नाफ । नाभि । ढुङ्गी ।
 उदायुध (वि०) हथियार उठाये हुए ।
 उदार (वि०) १ दाता । दानशील । २ महान् । श्रेष्ठ । कुलीन । ३ ऊँचे दिल का । असङ्कीर्ण । ४ ईमानदार । सच्चा । धर्मात्मा । ५ अच्छा । भला । उत्तम । ६ वाम्मी । ७ विशाल । कान्तियुक्त । चमकीला । ८ बढ़िया पोशाक पहिने वाला । ९ सुन्दर । मनोहर । मनोसुगन्धकारी । प्रिय ।—आत्मन्,—चेतस्,—चरित,—मनस्,—सत्त्व, (वि०) उन्नतचेता । महानुभाव । महामना । महात्मा । महामति ।—धी, (वि०) अत्युच्च प्रतिभावान् ।—दर्शन, (वि०) सुन्दर । खूबसूरत ।
 उदारता (स्त्री०) १ दानशीलता । फैयाज़ी । २ धनीपना । अमीरी । [३ खिन्नचित्त । दुःखी ।
 उदास (वि०) १ फिरक । २ निरपेक्ष । तटस्थ ।

उदासः } (पु०) १ विषय-विरागी-व्यक्ति । दार्शनिक
 उदासिन् } पण्डित । २ विरक्त । निरपेक्ष ।
 उदासीन (व० कृ०) १ विरक्त । २ प्रपञ्चशून्य ।
 उदासीनः (पु०) १ तटस्थ । निरपेक्ष । जो विरोधी पक्षों में से किसी की ओर न हो । २ अपरिचित ।
 ३ सामान्य रूप से सब से परिचित ।
 उदास्थितः (पु०) १ पर्यवेक्षक । दुरोग । सुपरिटेंडेंट ।
 २ द्वारपाल । दरवान । ३ जासूस । भेदिया । ब्रत-भङ्ग यत्नी ।
 उदाहरणम् (न०) १ वर्णन । कथन । २ निरूपण । पाठ करना । वार्तालाप आरम्भ करना । ३ दृष्टान्त । मिसाल । प्रत्यन्तर । पटतर । ४ (न्यायदर्शन) वाक्य के पाँच अवयवों में से तीसरा । इसमें साध्य के साथ साधर्म्य वा वैधर्म्य होता है । ५ अर्थान्तर न्यास अलङ्कार । [आरम्भिक भाग ।
 उदाहारः (पु०) १ दृष्टान्त । मिसाल । २ भाषण का उदित (व० कृ०) १ उगा हुआ । ऊपर चढ़ा हुआ ।
 २ ऊँचा । लंबा । ३ बढ़ा हुआ । ४ उत्पन्न हुआ । पैदा हुआ । ५ कथित । कहा हुआ । उच्चारित ।
 उदीक्षणम् (न०) १ खोज । तलाश । चितवन । अवलोकन ।
 उदीची (स्त्री०) उत्तर दिशा । [२ उत्तर का ।
 उदीचीन (वि०) १ उत्तर की ओर मुका या मुड़ा हुआ ।
 उदीच्य (वि०) दक्षिण दिशा वासी ।
 उदीच्यः (पु०) सरस्वती नदी के उत्तर-पश्चिम वाला देश । (बहुवचन में) उक्त देश निवासी ।
 उदीच्यं (न०) एक प्रकार की सुगन्धित वस्तु ।
 उदीपः (पु०) जल की बाढ़ । वृद्धा ।
 उदीरणम् (न०) १ कथन । उच्चारण । प्रकटन ।
 २ बोलना । कहना । ३ फैंकना । पठाना । बिदा करना ।
 उदीर्ण (व० कृ०) १ बढ़ा हुआ । उगा हुआ । उत्पन्न हुआ । २ फूला हुआ । उठा हुआ । ३ तना हुआ । खिंचा हुआ ।
 उदुम्बरः (पु०) गूलर का पेड़ ।
 उदुखलं (न०) उलूखल । उखरी ।
 उदूढा (स्त्री०) विवाहित स्त्री । [२ भयङ्कर ।
 उदेजय (वि०) १ खँपटा हुआ या दिकने वाला ।

ते: (स्त्री०) १ उठान । उगना । चढ़ाव । चढ़ाई ।
२ निकास । उद्गमस्थान । ३ वमन । छूँट ।

न्ध (वि०) १ खुशबूदार । २ उग्रगन्ध वाला ।

य: (पु०) १ उदय । आविर्भाव । २ उत्पत्ति का स्थान । निकास । २ सीधे खड़े होना जैसे रोमोद्गमः । ३ बाहिर जाना । प्रस्थान । ४ उत्पत्ति-सृष्टि । ५ उच्चाई । उच्च स्थान । ६ पौधे का छँखुआ । ७ वमन । छूँट । उगलन ।

मनम् (न०) उदय । आविर्भाव ।

मनीय (वि०) चढ़ा हुआ । ऊपर गया हुआ ।

मनीयम् (न०) धुले हुए कपड़े का जोड़ा ।

ढ (वि०) गहरा । सघन । अत्यन्त । बहुत ।

म् (न०) अत्यन्तअधिकता । (अव्य०) अधिकारी से । अत्यन्तता से । [करने वाला ।

तृ (पु०) उद्गाता । यज्ञ में सामवेद का गान

तः (पु०) १ उबाल । उफान । २ वमन । छूँट
३ थूक । खखार । ४ डकार ।

शरिन् (वि०) १ ऊपर गया हुआ । उठा हुआ । २
निकला हुआ । बाहिर आया हुआ ।

हरणम् (न०) १ छूँट । वमन । २ लार । राल ।
३ डकार । ४ उखाड़ पड़ाई ।

हीति: (स्त्री०) १ उच्चस्वर का गान । २ सामगान ।
३ छन्द विशेष । [३ ओंकार । परब्रह्म ।

हीथ: (पु०) १ सामगान । २ सामवेद का दूसरा भाग ।

हीर्ण (वि०) १ वमन किया हुआ । उगला हुआ
२ उडोला हुआ । बाहिर निकाला हुआ ।

हूर्ण (वि०) उठा हुआ । ऊपर उठाया हुआ ।

दुथ: } (पु०) अध्याय । परिच्छेद ।
दुन्य: }

दुथि } (वि०) सम्मिलित । मिला हुआ । जुड़ा हुआ ।
दुथि }

दुह: (पु०) १ उठाना । ऊपर करना । २
दुहणम् (न०) ऐसा कार्य जो धर्मावुष्ठान

अथवा अन्य किसी अनुष्ठान से पूरा हो सके ।
३ डकार । [प्रतिवाद ।

दुह: (पु०) १ उन्नयन । उठालेना । २ प्रत्युत्तर ।

दुहणिका (स्त्री०) वादी का जवाब । प्रतिवाद ।

दुहित (व० क०) १ उठाया हुआ । ऊपर किया

हुआ । २ ले जाया हुआ । ३ सर्वोत्तम । ४ रखा
हुआ । सौंपा हुआ । ५ बंधा हुआ । कसा हुआ ।
७ स्मरण किया हुआ ।

उद्गीच } (वि०) गर्दन उठाए हुए ।
उद्गीचिन् }

उद्ग: (पु०) १ उत्तमता । प्रधानता । २ प्रसन्नता ।
हर्ष । ३ अञ्जलि । ४ अग्नि । ५ आदर्श । नमूना
६ शरीरस्थित वायु विशेष ।

उद्गन: (पु०) बढ़ई का पीड़ा ।

उद्गदनम् (न०) } रगड़ । ताड़न ।
उद्गदना (स्त्री०) }

उद्गर्षणम् (न०) १ रगड़न । २ सोठा । डंडा । लट्ट ।

उद्गाद: (पु०) चौकी । वह स्थान जहाँ चौकी रहे ।

उद्गाटक: (पु०) १ चाबी । कुंजी । २ कुएँ पर
उद्गाटकम् (न०) की रस्सी और डोल ।

उद्गाटन (वि०) खोलना । ताखा खोलना ।

उद्गाटनम् (न०) १ खोलना । उधारना । २ प्रकट
करना । प्रकाशित करना । ३ उठाना । ४ चाबी ।
कुंजी । कुएँ की रस्सी और डोल । गिरी । चरखी ।

उद्गात: (पु०) १ आरम्भ । प्रारम्भ । २ हवाला ।
सङ्केत । ३ ताड़न । चोटिल करना । ४ प्रहार ।
घाव । ५ हिलन डुलन । झटका; जो गाड़ी में बैठने
पर लगता है । ६ उठान । उचान । ७ लाठी ।
मूंगरी । ८ हथियार । ९ अध्याय । सर्ग ।

उद्गोप: (पु०) १ घोषण । घोषणा । बिंदोरा । २ सार्व-
जनिक रिपोर्ट ।

उद्गंश: (पु०) १ खदमल । २ चिलुआ । ३ मच्छर ।

उद्गण्ड (वि०) १ डँडुल सहित । २ डंडा उठाए हुए ।
भयानक ।—पालः, (पु०) दण्डविधानकर्ता
या दण्ड देने वाला । २ मत्स्य विशेष । ३ सर्प
विशेष ।

उद्गंतुर } (वि०) १ बड़े दाँतों वाला या वह जिसके
उद्गंतुर } दाँत आगे निकले हों । २ ऊँचा । लंबा । ३
भयङ्कर ।

उद्गति } (वि०) १ वीर्यवान । प्रबल । विनीत ।
उद्गन्त }

उद्दानम् (न०) १ बंधन । बन्दीग्रह । २ पालतु
बनाना । वश में करना । ३ मध्यभाग । कटि ।
कमर । ४ अग्निकुण्ड । ५ वादवानल ।

उद्दाम (वि०) १ बन्धनरहित । मुक्त । स्वतंत्र ।
२ बलवान् । शक्तिशाली । मद में चूर । मदमत्त ।
नशे में चूर । ३ मयानक । ४ स्वेच्छाचारी । ५
बहुत बढ़ने वाला । बढ़ा । महान् । अत्यधिक ।

उद्दामः (पु०) वरुणदेव का नाम ।

उद्दामं (अव्यय०) मज्जबूती से । भयङ्करता से ।

उद्दालकम् (न०) एक प्रकार का मधु या शहद ।

उद्धित (वि०) बंधनयुक्त । बंधा हुआ ।

उद्धिष्टम् (व० कृ०) १ वर्णित । कथित । २ विशेष रूप से
कहा हुआ । ३ व्याख्या किया हुआ । सिखलाया
हुआ ।

उद्दीपः (पु०) १ दहन । जलन । प्रकाशन । २ दहन-
कारी । जलानेवाला । [प्रकाशक ।

उद्दीपक (वि०) १ भड़काने वाला । २ दहनकारी ।

उद्दीपनम् (न०) १ उत्तेजित करने की क्रिया । २
उत्तेजित करने वाला पदार्थ । ३ अलङ्कार शास्त्र के
वे विभाव जो रस को उत्तेजित करते हैं । ४ रोशनी
करना । प्रकाश करना । ५ देह को भस्म करना
या जलाना ।

उद्दीप्ति (वि०) दृढता हुआ । जलता हुआ ।

उद्दीप्त (वि०) अभिमानी । घमंडी ।

उद्देशः (न०) १ वर्णन । सविशेष विवरण । ३
उदाहरण । दृष्टान्त द्वारा प्रदर्शन । व्याख्या । ४
खोज । अनुसन्धान । तहकीकात । ५ संक्षिप्त विव-
रण । ६ निर्देशपत्र । ७ शर्त । इकरार । ८ हेतु ।
कारण । ९ स्थान । जगह । १० मतलब । अभि-
प्राय ।

उद्देशकः (पु०) १ उदाहरण । २ (अङ्कगणित में)
प्रश्न । कठिन प्रश्न । कूट प्रश्न ।

उद्देश्य (स० का० कृ०) व्याख्यान करने को ।

उद्देश्यं (न०) १ अभिप्रेत अर्थ । वह वस्तु जिसको
लक्ष्य में रख कर कोई बात कही जाय । वह वस्तु
जो किसी कार्य में प्रवृत्त करे । २ विधेय का उल्टा ।
विशेष्य । [भाग । अध्याय । पर्व । काण्ड ।

उद्द्योतः (पु०) १ चमक । आब । २ ग्रन्थ का

उद्द्रावः (पु०) पीछे हटना । भागना ।

उद्धत (व० कृ०) १ उठा हुआ । उठाया हुआ । २
अत्यधिक । बहुत अधिक । ३ अहङ्कारी । घमंडी

अकड़वाज़ । ४ सफ़्त । ५ व्याकुल । उद्धिग्न ।
६ विशाल । महान् । गौरव युक्त । गंवारू । बद-
तमीज़ । —मनस् —मनस्क (वि०) उच्चाशय ।
अवसन्न ।

उद्धतः (पु०) राजा का पहलवान । राजसल्ल ।

उद्धतिः (स्त्री०) १ ऊँचाई । २ अभिमान । घमंड ।
३ गौरव । ४ आघात । प्रहार । [दम फूलना ।

उद्धमः (पु०) १ बजाना । फूँकना । २ सांस लेना ।

उद्धरणम् (न०) १ खींचना । उतारना । २ खींच
कर निकालना । ३ झुड़ाना । ४ नामोनिशान
मिटाना । ५ ऊपर उठाना । ६ वमन करना । ७
मुक्ति । मोक्ष । ८ ऋण से उद्धार होना ।

उद्धर्तु (वि०) १ ऊपर उठानेवाला । ऊँचा करने
उद्धारक } वाला । २ भागीदार । साझीदार ।

उद्धर्ष (वि०) हर्षित । प्रसन्न ।

उद्धर्षः (पु०) १ बड़ी भारी प्रसन्नता । २ किसी कार्य
को आरम्भ करने का साहस । ३ त्योहार । पर्व ।

उद्धर्षणम् (न०) उत्साहवर्द्धन । जान डालना । २
रोमाञ्च । शरीर के रोंगटों का खड़ा होना ।

उद्धवः (पु०) १ यज्ञाग्नि । २ उत्सव । पर्व । ३ एक
यादव का नाम जो श्रीकृष्ण का मित्र था ।

उद्धस्त (वि०) हाथ बढ़ाये या उठाये हुए । [झूँट ।

उद्धानम् (न०) १ यज्ञकुण्ड । २ उगाल । वमन ।

उद्धांत (वि०) उगला हुआ । झूँट किया हुआ ।
उद्धान्त } [गया हो ।

उद्धांतः (पु०) हाथी जिसका मद चूना बन्द हो
उद्धान्तः }

उद्धारः (पु०) १ मुक्ति । छुटकारा । त्राण । विस्तार ।
२ ऊपर उठाना । ३ सम्पत्ति का वह भाग, जो बरा-
बर बाँटने के लिये अलग कर लिया जाय । ४ युद्ध
की लूट का द्वाँ भाग जो राजा का होता है । ५
ऋण । ६ सम्पत्ति की पुनः प्राप्ति । ७ मोक्ष ।
नैसर्गिक आनन्द ।

उद्धारणम् (न०) १ निकालना । ऊपर उठाना । २
बचाना (किसी सङ्कट से) उबारना ।

उद्धुर (वि०) १ असंयत । अनरुद्ध । स्वतंत्र । २ दृढ़ ।
निडर । ३ भारी । परिपूर्ण । ४ गाढ़ा । सघन ।
५ योग्य ।

उद्धृत (व० क०) १ हिला हुआ । गिरा हुआ ।
 उठाया हुआ । ऊपर फैला हुआ । २ उन्नत । उन्नत
 किया हुआ । [हिलाना ।
 उद्धूतनम् (न०) १ ऊपर फैकना । ऊपर उठाना । २
 उद्धूतनम् (न०) धूप देना । [चूर्ण बुरकाना ।
 उद्धूलनम् (न०) चूर्ण करना । पीसना । धूल या
 उद्धूषणम् (न०) शरीर के रोंगटों का खड़ा होना ।
 उद्धृत (व० क०) १ निकाला हुआ । ऊपर खींचा
 हुआ । जादू से उखाड़ा हुआ । नष्ट किया हुआ ।
 २ अन्य स्थान से ज्यों का त्यों लिया हुआ ।
 उद्धृतिः (स्त्री०) १ खींचना । खींचकर बाहर निकालना ।
 २ किसी ग्रन्थ का कोई अंश उतार लेना । ३
 बचाना । छुड़ाना । ४ पाप से छुड़ाना ।
 उद्मानम् (न०) अङ्गीठी । अलाव ।
 उद्धयः (पु०) एक नदी का नाम ।
 उद्धयः } (वि०) ढीला ।
 उद्धयः }
 उद्धयः (पु०) }
 उद्धयः (पु०) } वांधना । लटकाना । स्वयं लट-
 उद्धयनम् (न०) } काना ।
 उद्धयनम् (न०) }
 उद्धयकः } (पु०) जाति विशेष जो धोबी का काम
 उद्धयकः } करती है ।
 उद्धल (वि०) मञ्जवृत । ताकतचर ।
 उद्धाप (वि०) आंसुओं से परिपूर्ण ।
 उद्धाहु (वि०) बाहें उठाये हुए ।
 उद्धुल (व० क०) १ जागा हुआ । उत्तेजित । २
 खुला हुआ । ३ स्मरण कराया हुआ । ४ स्मरण
 किया हुआ ।
 उद्धोधः (पु०) } जागृति । स्मृति । याद करना ।
 उद्धोधनम् (न०) } उठ बैठना ।
 उद्धोधक (वि०) १ बोध कराने वाला । याद कराने
 वाला । चेताने वाला । ब्याल कराने वाला । २
 उदीत कराने वाला ।
 उद्धोधकः (पु०) सूर्य का नाम ।
 उद्धट (वि०) १ सर्वोत्तम । मुख्य । २ प्रबल । प्रचण्ड ।
 उद्धटः (पु०) १ सूप । २ कड़ुआ । कच्छप ।
 उद्धवः (पु०) १ उत्पत्ति । सृष्टि । जन्म । निकाल ।
 २ उद्गमस्थान । ३ विष्णु का नाम ।

उद्भावः (पु०) १ उत्पत्ति । प्रादुर्भाव । २ विशालता ।
 उद्भावदम् (न०) १ खोजना । मन में लाना । २
 उत्पत्ति । रचना । पैदायश । ३ अमनस्कता ।
 असावधानी । ४ तिरस्कार ।
 उद्भासः (पु०) चमक । आभा । कान्ति । आब ।
 उद्भासिन् } (वि०) चमकदार । चमकीला । उत्तम ।
 उद्भासुर }
 उद्भिद (वि०) अंकुरित । अँखुओं वाला ।
 उद्भिद (वि०) अंकुरित ।
 उद्भिदः (पु०) १ अंकुर । अँखुआ । २ पौधा । ३
 श्रोत । चरमा । फव्वारा ।
 उद्भिद-विद्या (स्त्री०) वनस्पति विज्ञान ।
 उद्धूत (व० क०) १ उत्पन्न हुआ । पैदा किया हुआ ।
 २ विशाल । ३ इन्द्रियगोचर । [उन्नति ।
 उद्धृतिः (स्त्री०) १ उत्पत्ति । पैदायश । २ समृद्धि ।
 उद्धेदः (पु०) १ वेधना । २ फोड़ कर निकलना ।
 उद्धेदनम् (न०) १ दिखलाई पड़ना । प्रादुर्भाव ।
 प्रकटन । बाढ़ । ३ फव्वारा । श्रोत । चरमा । ४
 रोंगटों का खड़ा होना ।
 उद्धमः (पु०) १ धूमरी । घनौटा । २ (तखवार को)
 घुमाना । ३ धूमना फिरना । ४ खेद । [लना ।
 उद्धमणं (न०) १ धूमना फिरना । २ उठना । निक-
 उद्यत (व० क०) १ उठा हुआ । ऊपर उठा हुआ ।
 २ निरन्तर उद्योगकारी । परिश्रमी । क्रियावान् । ३
 झुका हुआ । ताना हुआ । ४ तत्पर । उत्सुक ।
 तुला हुआ ।
 उद्यमः (पु०) १ उत्थान । उन्नयन । २ सत्य उद्योग ।
 अध्यवसाय । ३ तत्परता । तैयारी ।—मृत्, (वि०)
 कठिन परिश्रम करने वाला ।
 उद्यमनम् (न०) उत्थान । उन्नमन ।
 उद्यमिन् (वि०) परिश्रमी । अध्यवसायी
 उद्यानम् (न०) १ गमन । वहिर्गमन । २ उपवन ।
 पार्क । बाग । आनन्दवाटिका । ३ अभिप्राय ।
 हेतु । कारण ।—पालः, रक्तकः, (पु०) माली ।
 उद्यानकम् (न०) बाग । पार्क ।
 उद्यापनम् (न०) समाप्ति । अवसान ।
 उद्योगः (पु०) १ प्रयत्न । प्रयास । मिहनत । २ उद्यम ।
 कामधन्धा । [श्रमी ।
 उद्योगिन् (वि०) क्रियाशील । अध्यवसायी । परि-

उद्ः (पु०) जलजन्तुओं का राजा । [मुर्गा ।
 उद्भूतः (पु०) १ रथ की दुरी की कील या पिन । २
 उद्भावः (पु०) शोरगुल । होहल्ला । कोलाहल ।
 उद्भित्त (व० कृ०) १ बढ़ा हुआ । अत्यधिक ।
 विपुल । २ स्पष्ट । साफ़ ।
 उद्भुज (वि०) नाश करना । गुप्तगुप्त नष्ट करना ।
 उद्भूतः (पु०) १ वृद्धि । बढ़ती । अधिकता । विपु-
 लता । २ कान्यालङ्कार विशेष ।
 उद्भूतः (पु०) वर्ष । साल । [बुलकाना ।
 उद्भूतम् (न०) १ भेंट । दान । २ उड़ेलना ।
 उद्भूतम् (न०) }
 उद्भूतिः (स्त्री०) } वमन । उबकाई ।
 उद्भूतिः (स्त्री०) }
 उद्भूतः (पु०) १ वक्षत । फालतूपन । २ अधिकता ।
 भाराधिक्य । ३ शरीर में तेल फुलेल की
 मालिश या उबदन ।
 उद्भूतम् (न०) १ ऊपर जाना । उठना । २ निकलना ।
 बाढ़ (पौधों की) । ३ समृद्धि । उन्नयन । करवटें
 लेना । उठ खड़े होना । ४ पीसना । कूटना । ६
 उबदन लगाना । तेल फुलेल की मालिश ।
 उद्भूतम् (न०) १ उन्नति । २ छिपाकर या धीरे धीरे
 हँसना । [चौथा पत्र । ३ विवाह ।
 उद्भूतः (पु०) १ पुत्र । २ पवन के सप्त पथों में से
 उद्भूत (स्त्री०) बेटी । पुत्री ।
 उद्भूतम् (न०) १ विवाह । २ सहारा । ऊपर
 उठाना । ले जाना । ३ सवारी करना ।
 उद्भूत (वि०) उगला हुआ । ओका हुआ ।
 उद्भूतम् (न०) १ वमन । उगाल । २ श्रंगीठी ।
 उद्भूत (वि०) १ ओका हुआ । २ सदरहित ।
 उद्भूतम् }
 उद्भूतः (पु०) १ निकाल । बहिर्निर्क्षेप । २ हजामत ।
 शौरकर्म ।
 उद्भूतः (पु०) १ देश निकाला । २ त्याग । ३ वध ।
 ४ यज्ञीय संस्कार विशेष ।
 उद्भूतम् (न०) १ निकालना । देश निकाला देना । २
 त्यागना । ३ निकाल लेना या निकाल कर ले
 जाना (आगसे) । ४ वध करना ।
 उद्भूतः (पु०) १ सहारा । २ विवाह । परिणय ।

उद्भूतम् (न०) १ ऊपर ले जाना । ऊपर चढ़ाना ।
 उठाना । २ विवाह ।
 उद्भूतनी (स्त्री०) १ रस्सी । डोरी । २ कौड़ी ।
 उद्भूतः (वि०) १ विवाह सम्बन्धी । [विवाहित ।
 उद्भूतः (वि०) १ उठा हुआ । ऊपर खींचा हुआ । २
 उद्भूतनी (स्त्री०) रस्सी । डोरी ।
 उद्भूत (व० कृ०) दुःखी । सन्तप्त । शोकप्लुत ।
 उदास । [नेत्र ।
 उद्भूतः (न०) १ ऊपर की ओर देखना । २ दृष्टि ।
 उद्भूतम् (न०) पैसा करना ।
 उद्भूतम् (न०) बढ़ती । बाढ़ ।
 उद्भूत (व० कृ०) १ उठा हुआ । ऊँचा किया हुआ ।
 २ उमड़ कर बहा हुआ ।
 उद्भूतः (पु०) १ कंपना । थरथराना । थराना । २
 बबड़ाहट । विकलता । ३ भय । आशङ्का । ४
 चिन्ता । खेद । शोक । ५ आश्चर्य । ताज्जुब ।
 उद्भूतम् (न०) सुपारी ।
 उद्भूतम् (न०) १ विकलता । व्याकुलता । २
 पीड़ा । कष्ट । सन्ताप । ३ खेद । [से युक्त ।
 उद्भूतः (वि०) सिंहासन से युक्त । अथवा उच्चस्थान
 उद्भूतः (पु०) काँपना । थरथराना । अत्यधिक
 प्रकम्प । [मथौदा का अतिक्रम किये हुए ।
 उद्भूत (वि०) (जलक) उमड़ कर बहा हुआ ।
 उद्भूत (व० कृ०) काँपा हुआ । उझाला हुआ ।
 उद्भूतम् (न०) हिलना बुलना ।
 उद्भूत (वि०) १ ठीला किया हुआ । खुला हुआ ।
 २ मुक्त । बंधन से छूटा हुआ । बंधन रहित ।
 उद्भूतम् (न०) १ चारों ओर से घेरने या ठकने की
 क्रिया । २ घेरा । हाता । ३ पीठ या चित्तब की
 पीड़ा ।
 उद्भूत (पु०) पति । स्वसम । खात्रिव ।
 उद्भूत (न०) दूध देने वाले पशुओं का पेन । लेवा ।
 उद्भूत (धा० पा०) [उन्नति, उत्त—उन्न]
 उद्भूत (भिगोना । तर करना । नम करना । स्नान
 करना ।
 उद्भूतम् } (न०) नमी । ठरी ।
 उद्भूतम् }

उद्धः, उद्धः }
 उद्धः, उद्धः } (पु०) चूहा । बूँस ।
 उद्धः, उद्धः }
 उद्धः, उद्धः }

उन्नत (व० क०) १ उठा हुआ । ऊपर उठा हुआ ।
 २ ऊँचा । लंबा । बड़ा । विख्यात । ३ मौटा ।
 भरा हुआ । —ग्रान्त, (वि०) विषम । ऊँचा
 नीचा । फूला पिचका । —चरण, (वि०) बेरोक
 बढ़ने और फैलने वाला । प्रबल । पिछले पैरों पर
 खड़ा । —शिरस्, (वि०) बड़ा अभिमानी ।

उन्नतः (पु०) अजगर ।

उन्नतम् (न०) ऊँचाई । चढ़ाव । चढ़ाई ।

उन्नतिः (स्त्री०) १ ऊँचाई । चढ़ाव । २ वृद्धि
 समृद्धि । तरक्की । बढ़ती । —ईशः, (पु०) गरुड़ जी
 का नाम । [हुआ । मौटा । भरा हुआ ।

उन्नतिमत् (वि०) उठा हुआ । बाहिर निकला
 उन्नमनं (न०) १ ऊपर उठाना । ऊँचा चढ़ाना । २
 ऊँचाई ।

उन्नम्र (वि०) १ सीधा । सतर । २ विशाल । ऊँचा ।

उन्नयः } (पु०) १ ऊपर चढ़ना । ऊपर उठना । २
 उन्नायः } ऊँचाई । चढ़ाई । ३ सादर्य । समता ।
 ४ अटकल ।

उन्नयनम् (न०) १ ऊपर उठाना । २ ऊपर
 खींचकर पानी निकालना । ३ विचार । विवाद ।
 ४ अटकल

उन्नस (वि०) मौटी या ऊँची नाक वाला ।

उन्नादः (पु०) धिल्लाहट । गर्ज । गुञ्जार । पक्षियों की
 चहक या कूजन । (मस्त्रियों की) भिनभिन्नाहट ।

उन्नाम (वि०) तुंदीला । बड़े पेट का । जिसकी नाभि
 ऊँची उठी हो ।

उन्नाहः (पु०) १ नौक । गुमबा । २ बंधन ।

उन्नाहम् (न०) चौवल से बना हुआ पदार्थ विशेष ।

उन्निद्र (वि०) १ निद्रारहित । जागता हुआ । २
 फैला हुआ । पूरा फूला हुआ । कलियों से युक्त ।

उन्नेत् (वि०) उठा हुआ । (पु०) सोलह प्रकार के
 यज्ञ कराने वालों में से एक ।

उन्मज्जनम् (न०) पानी से बाहर निकलना ।

उन्मत्त (वि० क०) १ मदमाता । नशे में चूर ।

२ पागल । सिड़ी । ३ अकड़ा हुआ । फूला हुआ ।

बहमी । उचड़ी । प्रेतावेधित । —कीर्तिः, —वेशः,
 (पु०) शिव जी का नाम । —गङ्गम् (न०)
 वह प्रदेश विशेष जहाँ गङ्गाजी का हरहरना प्रबल
 रूप से होता है । —दर्शन, —रूप, (वि०)
 देखने में या शक्त से पागल । —प्रलपित (वि०)
 नशे के भोंक में बातचीत । प्रलपितम् (न०)
 पागल का कथन ।

उन्मत्तः (पु०) चूरा ।

उन्मथनं (न०) १ हिलाना डुलाना । पटक देना ।
 गिरा देना । २ मारना । बध । हत्या ।

उन्मद् (वि०) १ नशे में चूर । मदमत्त । २ पागल ।
 मतवाला । आपे से बाहिर । डौंवाडोल ।

उन्मदः (पु०) १ पागलपन । २ नशा ।

उन्मदन (वि०) प्रेमासक्त । प्रेम में विह्वल ।

उन्मदिष्ण (वि०) १ पागल । २ मदमाता । नशे
 में चूर ।

उन्मनस् } (वि०) १ उद्विग्न । विकल । व्याकुल ।
 उन्मनस्कै } बेचैन । २ मित्रविद्योह से संतप्त ।
 ३ उत्सुक । लालायित । अधीरजी । [होना ।

उन्मनायते (क्रि०) बेचैन होना । मन का व्याकुल

उन्मथः } (पु०) १ विकलता । २ हत्या । बध ।
 उन्मथ्यः }

उन्मथलम् } (न०) १ हत्या । बध । चोटिल
 उन्मथनम् } करना । २ लकड़ी से पीटना ।
 ३ लोभ । उद्वेग ।

उन्मथूल (वि०) चमकीला । चमकदार । [उबटना ।

उन्मर्दनं (न०) १ मलना । रगड़ना । दबाना । २

उन्माथः (पु०) १ पीड़ा । कष्ट । २ लोभ । उद्वेग ।
 ३ हत्या । बध । ४ जाल । फंदा ।

उन्माद् (वि०) १ पागल । सिड़ी । २ डौंवाडोल ।

उन्मादः (पु०) १ पागलपन । सिड़ीपन । २ बड़ी
 भौंक या क्रोध । ३ मानसिक रोग विशेष जिससे
 मन और बुद्धि का कार्यक्रम अस्तव्यस्त हो जाता
 है । (न०) इसके ३३ सञ्चारी भावों में से एक
 जिसमें वियोगादि के कारण चित्त ठिकाने नहीं
 रहता । ४ खिलना । प्रस्फुटन । यथा—

“उन्मादं वीक्ष्य पञ्चाभास्”

साहित्यदर्पण ।

उन्मादन (वि०) पागल । नशे में चूर ।

उन्मादनः (पु०) कामदेव के पांच शरों में से एक ।
 उन्मानं (न०) १ तौल । नाप । २ मूल्य । कीमत ।
 उन्मार्ग (वि०) असन्मार्ग में जानेवाला । कुपथगामी ।
 उन्मार्गः (पु०) १ कुपथ । २ निकृष्ट आचरण ।
 बुरा ढङ्ग । बुरी चाल । [भाङना ।
 उन्माजनम् (न०) गद्य । मलिश । पोखता ।
 उन्मितिः (स्त्री०) नाप । मूल्य ।
 उन्मिन्न (वि०) मिश्रित । मिलावटी ।
 उन्मिषित (व० क०) १ खुली हुई (आँखें) । जागता
 हुआ । २ खुला हुआ । ३ ताना हुआ ।
 उन्मिषितम् (न०) दृष्टि । नज़र । निगाह ।
 उन्मीलः (पु०) } (नेत्रों का) खोलना । जागना ।
 उन्मीलनम् (न०) } बढ़ाना । तानना ।
 उन्मुख (वि०) १ ऊपर मुँह किये । ऊपर की ताकता
 हुआ । २ उत्कण्ठा से देखता हुआ । ३ उत्कण्ठित ।
 उत्सुक । ४ उद्यत । तैयार ।
 उन्मुखर (वि०) [स्त्री०—उन्मुखरी] कोलाहल
 मचाने वाला । शोर गुल करने वाला ।
 उन्मुद्र (वि०) १ बिना मोहर या सील का । २ खुला
 हुआ । फूँक कर बढ़ाया हुआ या फुलाया हुआ ।
 ताना हुआ । खींच कर बढ़ाया हुआ । [करना ।
 उन्मूलनम् (न०) जड़ से उखाड़ना । समूल नष्ट
 उन्मेदा (स्त्री०) मुट्ठाई । मोटापन ।
 उन्मेषः (पु०) } (नेत्रों की) १ खुलन । आँख मट-
 उन्मेषणम् (न०) } कौशल । सैन्यामानी । २ बढ़ावा
 फुलाव । ३ रोशनी । प्रकाश । चमक । ४
 जागृति । दृश्य होने की क्रिया । नज़र आना ।
 प्रादुर्भाव । प्राकट्य । [क्रिया ।
 उन्मोचनम् (न०) खोलने की क्रिया । ढीला करने की
 उप (अव्यया०) यह उपसर्ग जब किसी क्रिया या
 संज्ञावाची शब्द के पूर्व लगाया जाता है, तब यह
 निम्न अर्थों का बोधक होता है:—१ सामीप्य ।
 सान्निध्य । २ शक्ति । योग्यता । ३ व्याप्ति । ४
 उपदेश । ५ सृष्टि । नाश । ६ त्रुटि । दोष । ७
 प्रदान । ८ क्रिया । उद्योग । ९ आरम्भ । १०
 अध्ययन । ११ सम्मान । पूजन । १२ सादृश्य ।
 १३ वरात्त्व । १४ अश्रेष्ठत्व ।

उपकटः (पु०) } १ सामीप्य । सान्निध्य । पड़ोस ।
 उपकण्ठः (पु०) } २ किसी ग्राम या ग्रामसीमा
 उपकण्ठं (न०) } के समीप का स्थान । (अव्यया०)
 उपकण्ठम् (न०) } गर्दन के ऊपर, गले के पास ।
 २ पास में । पड़ोस में ।
 उपकथा (स्त्री०) छोटी कहानी । गल्प ।
 उपकनिष्ठिका (स्त्री०) कनिष्ठिका के पास की
 उँगली । अनामिका ।
 उपकरणम् (न०) १ अनुग्रह । सहायता ।
 २ सामान । सामग्री । औज़ार । हथियार । यन्त्र ।
 उपस्कर । ३ आजीविका का द्वार । जीवनोपयोगी
 कोई वस्तु । ४ राजचिन्ह (छत्र, दण्ड, चंवर
 आदि)
 उपकर्णनम् (न०) श्रवण । सुनना ।
 उपकर्णिका (स्त्री०) अफवाह ।
 उपकर्तृ (वि०) उपयोगी । अनुकूल ।
 उपकल्पनम् (न०) } १ सामान । २ रचना ।
 उपकल्पना (स्त्री०) } मिथ्या रचना । बनावटीपन ।
 उपकारः (पु०) १ परिचर्या । सहायता । मदद ।
 २ अनुग्रह । कृपा । ३ आभूषण । शृङ्गार ।
 उपकारी (स्त्री०) १ शाही स्त्रीमा । राजप्रसाद । २
 पान्थनिवास । सराय । धर्मशाला ।
 उपकार्या (स्त्री०) राजप्रसाद । महल ।
 उपकुञ्चिः (पु०) }
 उपकुञ्चिः (पु०) } छोटी इलायची ।
 उपकुञ्चिका (स्त्री०) }
 उपकुञ्चिका (स्त्री०) }
 उपकुम्भ (वि०) } १ समीप । निकट । २ एकान्त ।
 उपकुम्भ (वि०) } [इच्छा रखता हो ।
 उपकुर्वाणाः (पु०) ब्रह्मचारी, जो गृहस्थ होने की
 उपकुल्या (स्त्री०) नहर । खाई ।
 उपकूपं } (अव्यया०) कूप के समीप ।
 उपकूपे }
 उपकृतिः } (स्त्री०) अनुग्रह । कृपा ।
 उपक्रिया }
 उपक्रमः (पु०) १ आरम्भ । २ अनुष्ठान । उठान ।
 ३ रोगी की परिचर्या । ४ ईमानदारी की परीक्षा ।
 ५ चिकित्सा । इलाज । ६ सामीप्य ।
 उपक्रमणं (न०) १ समीपागमन । २ अनुष्ठान ।
 ३ आरम्भ । ४ चिकित्सा ।

उपक्रमशिका (स्त्री०) सूचिका । दीवाचा ।
 उपक्रीडा (स्त्री०) चौगान । खेलने के लिये मैदान ।
 उपक्रोशः (पु०) } फटकार । डाँटडपट ।
 उपक्रोशनम् (न०) } भर्त्सना ।
 उपक्रोष्टु (पु०) (रेंकता हुआ) गधा ।
 उपकरण } (न०) वीणा की ऋनकार ।
 उपकायाम् }
 उपक्षयः (पु०) १ अवनति । कमी । हास । बटती ।
 २ व्यय ।
 उपक्षेपः (पु०) १ धुमाना । फिराना । २ धमकी ।
 आक्षेप । ३ अभिनय के आरम्भ में अभिनय का
 संक्षिप्त वृत्तान्त-कथन ।
 उपक्षेपणम् (न०) १ नीचे फेंकना या गिराना । २
 दोषारोपित करना । जुर्म आशय करना ।
 उपग (वि०) १ समीप आया हुआ । पीछे लगा हुआ ।
 सम्मिलित । २ प्राप्त हुआ ।
 उपगणः (पु०) छोटी या अन्तर्गत श्रेणी ।
 उपगत (व० कृ०) १ गया हुआ । समीप आया
 हुआ । २ घटित । ३ प्राप्त । अनुभूत । ४ प्रति-
 ज्ञात ।
 उपगतिः (स्त्री०) १ समीपगमन । ज्ञान । परि-
 चय । २ स्वीकृति । ३ प्राप्ति । उपलब्धि ।
 उपगमः (पु०) } १ गमन । समीप गमन । २
 उपगमनम् (न०) } ज्ञान । परिचय । ३ प्राप्ति ।
 उपलब्धि । ३ समागम (स्त्री पुरुष का) ४
 संगत । सोहबत । ६ सहिष्णुता । अनुभव ।
 ७ स्वीकृति । ८ प्रतिज्ञा । इकरार ।
 उपगिरि } (अव्यया०) पर्वत के समीप ।
 उपगिरिम् }
 उपगिरिः (पु०) उत्तर दिशा में पर्वत के समीप अव-
 स्थित एक प्रदेश का नाम ।
 उपगु (अव्यया०) गौ के समीप ।
 उपगुः (पु०) ग्वाला । गोप ।
 उपगुरुः (पु०) सहायक शिक्षक । नायब मुद्दरिस ।
 उपगूढ (व० कृ०) १ छिपा हुआ । २ छिपाकर किया हुआ ।
 उपगूहनम् (न०) १ छिपाव । दुराव । २ अलिङ्गन ।
 ३ आश्चर्य । अश्चर्य ।
 उपग्रहः (पु०) १ कैद । पकड़ । गिरफ्तारी । २
 हार । पराजय । ३ कैदी । बंदी । ४ योग । सम्मे-

लन । ५ अनुग्रह । प्रोत्साहन । ६ छोटा ग्रह
 [राहु केतु आदि] ।
 उपग्रहणम् (न०) १ नीचे से पकड़ना । गिरफ्तारी ।
 बंदी बनाना । ३ सहारा । उन्नयन । ४
 वेदाध्ययन ।
 उपग्राहः (पु०) १ भेंट देना । २ भेंट ।
 उपग्राह्यः (न०) भेंट । नैवेद्य । नजराना ।
 उपघातः (पु०) १ प्रहार । आघात । २ तिरस्कार ।
 ३ नाश । ४ स्पर्श । संसर्ग । ५ आक्रमण । ६
 रोग । ७ पाप ।
 उपघोषणम् (न०) प्रकटन । प्रकाशन । दिहोरा ।
 उपघ्नः (पु०) १ सहारा । २ संरक्षण । पनाह ।
 उपघ्नकः (पु०) लाल रङ्ग का हंस विशेष ।
 उपचक्षुस् (न०) चरमा । पेनक ।
 उपचयः (पु०) १ सञ्चय । २ वृद्धि । उन्नति ।
 बढ़ती । ३ परिमाण । ढेर । ४ समृद्धि । उन्नयन ।
 ५ कुण्डली में लगन से तीसरा, छठवाँ और
 ग्यारहवाँ स्थान ।
 उपचरः (पु०) चिकित्सा । इलाज ।
 उपचरणम् (न०) समीपगमन ।
 उपचाय्यः (पु०) यज्ञीयाग्नि विशेष ।
 उपचारः (पु०) १ सेवा । परिचर्या । पूजन ।
 सत्कार । २ विनम्रता । सम्बोधित व्यवहार । ३
 चापलूसी । चादुता । ४ नमस्कार । प्रणाम
 करने का विधान विशेष । ५ दिखावट । दिखावटी
 रीतिरस्म । ६ चिकित्सा । इलाज । ७ व्यवस्था ।
 प्रबन्ध । ८ धर्मावुष्ठान । ९ व्यवहार । १० घूस ।
 रिशवत । ११ बहाना । प्रार्थना । १२ विसर्ग के
 स्थान में सू और धू का प्रयोग ।
 उपचितिः (स्त्री०) संग्रह । बढ़ती । उन्नति ।
 उपचूलनं (न०) गर्मने की क्रिया । जलाना ।
 उपच्छदः (पु०) ढक्कन । ढकना ।
 उपच्छन्दम् } (न०) १ सीटी सीटी बातें कह कर
 उपच्छन्दम् } अपना काम निकालने की
 क्रिया । प्रलोभित करना । २ आमन्त्रण देना ।
 न्योता । [निकास ।
 उपजनः (पु०) १ बढ़ती । उन्नति । २ पुंछुड़ा । ३

उपजल्पनम् } (न०) वार्तालाप ।
उपजल्पितम् }

उपजापः (पु०) १ उपचाप कान में कहना या बतलाना । २ बैरो के मित्र के साथ सन्धि के गुपचुप पैगाम । राजक्रान्ति के लिये असन्तोष का बीज वपन । ३ अनैक्य । विच्छेद ।

उपजीवक } (पु०) दूसरे के आधार पर रहने-
उपजीवन } वाला । परतंत्र । अनुचर ।

उपजीवनम् (न०) } १ जीविका । रोज़ो । २
उपजीविका (स्त्री०) } निर्वाह । ३ जीविका का साधन, सम्पत्ति आदि ।

उपजीव्य (स० का० कृ०) १ जीविका देने वाला । २ संरक्षकता प्रदान करते हुए । ३ लिखने के लिये सामग्री प्रदान करने वाला ।

“सर्वेषां कश्चिमुत्थयानामुपजीव्यो भविष्यति ।”

—महाभारत ।

उपजीव्यः (पु०) १ संरक्षक । २ आधार या प्रमाण जिससे कोई लेखक अपने लेख की सामग्री पावे ।

उपजीवः (पु०) } १ स्नेह । २ भोगविलास ।
उपजीव्यम् (न०) }

उपज्ञा (स्त्री०) १ वह ज्ञान जो स्वयं प्राप्त किया हो, परम्परा से प्राप्त न हुआ हो । २ ऐसे कार्य का अनुष्ठान जो पूर्व में कभी न किया गया हो ।

उपहौकनम् (न०) नज़र । भेंट । उपहार ।

उपतापः (पु०) १ गर्मी । २ उष्णता । क्लेश । पीड़ा । शोक । ३ सङ्कट । विपत्ति । ४ रोग । बीमारी । ५ शोभता । हड़बड़ी । [कष्ट देना ।

उपतापनम् (न०) १ गर्माना । २ सन्तप्त करना ।

उपतापिन् (वि०) १ गर्माया हुआ । गर्म । उष्ण । २ सन्तप्त । पीड़ित । बीमार । [नक्षत्र का नाम ।

उपतिष्ठं (न०) अरक्षेण नक्षत्र का नाम । पुनर्वसु

उपत्यका (स्त्री०) पर्वत के नीचे की भूमि । पहाड़ की तलहटी । पहाड़ की तराई ।

उपदर्शः (पु०) १ वह वस्तु जो प्यास या भूख को भड़कावे । २ डसना । डंक मारना । गर्मी की बीमारी । आतिशय ।

उपदर्शः (वि०) [बहुवचन] लगभग दस्त ।

उपदर्शकः (पु०) १ पथप्रदर्शक । २ द्वारपाल । ३ साक्षी । गवाह ।

उपदा (स्त्री०) १ नज़राना । भेंट । २ वृत्त । रिशवत ।

उपदानं } (न०) १ बलि । चढ़ावा । २ दान ।
उपदानकम् } रिशवत ।

उपदिश (स्त्री०) } १ उपदिशा । दिशाओं
उपदिशो (स्त्री०) } के कोण । २ पेशानी । आग्नेयी नैऋती । वायवी ।

उपदेवः (पु०) } छोटा देवता । निकृष्ट देवता ।
उपदेवता (स्त्री०) }

उपदेशः (पु०) १ शिक्षा । नसीहत । हित की बात । कथन । २ दीक्षागुरुमन्त्र । ३ सविशेष विवरण । विवरण । ३ व्याज । बहाना । मिस ।

उपदेशक (वि०) शिक्षा देने वाला । नसीहत करने वाला ।

उपदेशकः (पु०) शिक्षक । पथप्रदर्शक । दीक्षागुरु ।

उपदेशनं (न०) शिक्षा । नसीहत । सीख ।

उपदेशिन् (वि०) उपदेश । नसीहत देने वाला ।

उपदेश्ट (पु०) शिक्षक । गुरु । दीक्षागुरु ।

उपदेहः (पु०) १ सलहम । २ ढकना ।

उपदेहः (पु०) १ गाय का स्तन । स्तन के ऊपर की हुई । २ दोहनी । पात्र जिसमें दूध बुहा जाय ।

उपद्रवः (पु०) १ उत्पात । आकस्मिक वाधा । सङ्कट । २ चोटफेंट । विपत्ति । आफत । ३ ऊधम । गड़बड़ । दंगा कसाव । गदर । रोग का लक्षण ।

उपधर्मः (पु०) गौण धर्म या नियम ।

उपधा (स्त्री०) १ छल । प्रवञ्चना । जाल । फरेब । २ सत्यता या ईमानदारी की परीक्षा ।—भुतः,

(पु०) वह नौकर जिसके ऊपर बेईमानी का हल-ज्ञान लगाया गया हो ।—शुद्धि, (वि०) परीक्षित । जाँचा हुआ ।

उपधातुः (पु०) १ निकृष्ट धातु अथवा प्रधान धातुओं के समान । धातु वे ये हैं :—

सप्रोपधातवः स्वर्ग्य आदिकं तारणादिकं ।

दुर्ग्यं कांस्यं च रीतिर्यत्र सिन्दूरं च शिलाजलम् ॥

२ शरीर के रस रक्तादि सात धातुओं से बने हुए दूध, पसीना, चर्बी आदि । वे ये हैं :—

स्तन्यं रसो वसा स्वेदो दन्ताः केशास्त्वयिव च ।

श्रीमन्मंथं सप्तधामुनां कृताहवतोपधातवः ॥

उपधानं (न०) १ जिस पर रख कर सहारा लिया जाय । २ सकिथा । २ विशेषता । व्यक्तित्व । ३

स्नेह । कृपा । २ धार्मिक अनुष्ठान । ३ सर्वोत्तम गुण विशिष्टता । ७ विष । जहर ।

उपधानीयं (न०) तकिया ।

उपधारणं (न०) १ विचार । आलोचना । २ किसी ऊपर रखी या लगी हुई चीज को लगी में अटका कर खींच लेने की क्रिया ।

उपधिः (पु०) १ जालसाजी । बेईमानी । २ सत्य का अपलाप । जान बूझ कर सत्य को छिपाना । ३ भय । धमकी । विवशता । कपट । छल । ४ पहिया या पहिया का स्थान विशेष ।

उपधिकः (पु०) दागाबाज़ । धोखेबाज़ । प्रबलक । छद्मी । कपटी ।

उपधूपित (वि०) १ सुवासित । बफारा दिया हुआ । २ मरणासन्न । ३ अत्यन्त पीड़ित ।

उपधूपितः (पु०) मृत्यु ।

उपधृतिः (स्त्री०) प्रकाश का एक किरण ।

उपध्मानः (पु०) होठ । ओठ ।

उपध्मानम् (न०) फूँक । सांस ।

उपनक्षत्रम् (न०) सहकारी नक्षत्र । गौण नक्षत्र । ऐसे नक्षत्रों की संख्या ७२६ कही जाती है ।

उपनगरं (न०) नगर । प्रांत । उपपुर । नगर का बाहिरी भाग ।

उपनत (व० कृ०) आगम । आया हुआ । प्राप्त । घटित हुआ । [प्रणाम करना ।

उपनतिः (स्त्री०) १ समीप आगमन । २ झुकाव ।

उपनयः (पु०) १ समीप जाना । जाकर जाना । २ प्राप्ति । उपलब्धि । लगन । ३ उपनयन संस्कार । ४ न्याय में वाक्य के चौथे अवयव का नाम ।

उपनयनम् (न०) १ निकालना । पास ले जाना । २ भेंट करने की क्रिया । बढ़ावा । ३ यज्ञोपवीत धारण कराना । व्रतबंध । जनेऊ ।

उपनागरिका (स्त्री०) अलङ्कार में वृत्ति अनुप्रास का एक भेद विशेष । इसमें कर्णमधुर वर्णों का प्रयोग किया जाता है ।

उपनायकः (पु०) १ नाटकों में या किसी साहित्य ग्रन्थ में प्रधान नायक का साथी या सहकारी । [जैसे रामायण में लक्ष्मण ।] २ आशिक । उपपति । प्रेमी ।

उपनायिका (स्त्री०) नाटकों में प्रधान नायिका की सखी या सहेली । [जैसे मातलीभाव में मद-अन्तिका ।—]

उपनाहः (पु०) १ बीटा । बंडल । २ घाव या फोड़े पर लगाने की मलहम या लेप । ३ सितार की खूंदी ।

उपनाहनम् (न०) १ मलहम या लेप लगाने की क्रिया । २ ग्लास्टर लगाने की क्रिया । ३ उबटन करना ।

उपनिक्षेपः (पु०) अमानत । धरोहर । [ऐसी धरोहर जिसकी संख्या, तौल आदि धरोहर रखने वाले को बतला कर दिखला दी जाय । मितानुसार ने ऐसी धरोहर की यह परिभाषा दी है:—

“उपनिक्षेपो नाम रूपसंख्याप्रदर्शने रक्षार्थं परस्मै हस्ते निहितं द्रव्यं ।”]

उपनिधानम् (न०) १ समीप रखना । २ धरोहर रखना । ३ धरोहर । अमानत ।

उपनिधिः (पु०) सील मोहर लगा कर और बंद कर के रखी हुई अमानत । धरोहर । गिरवी रखी हुई वस्तु । बंधक रखी हुई द्रव्य ।

उपनिपातः (पु०) १ समीप गमन । समीप आगमन । २ अचानक घटित घटना या आक्रमण ।

उपनिपातिन् (वि०) आता हुआ । आगत ।

उपनिबंधनम् (न०) १ किसी कार्य को सुसम्पन्न करने का साधन । संबंधन । बस्ता । पुस्तक के ऊपर की झिल्ल ।

उपनिमंत्रणम् (न०) आमंत्रण । प्रतिष्ठा । अभिषेक ।

उपनिवेशित (वि०) स्थापित । दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ ।

उपनिषद् (स्त्री०) १ वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अन्तिम भाग जिनमें आत्मा और परमात्मा आदि का वर्णन किया गया है । २ वेद के गुप्तार्थ प्रकाशक ग्रन्थ । ३ ब्रह्मविद्या । ब्रह्मसम्बन्धी सत्य-ज्ञान । ४ वेदान्त दर्शन । ५ रहस्य । एकान्त । ६ समीप या पड़ोस का भवन । ७ समीप उपवेशन । ब्रह्मविद्या की प्राप्ति के लिये गुरु के निकट उपवेशन ।

उपनिष्करः (पु०) गली । राजमार्ग । मुख्य मार्ग । प्रधान रास्ता ।

उपनिष्कप्रणाम (न०) १ बाहिर निकलना । निकलना । २ संस्कार विशेष । सब से प्रथम नवजात बालक को बाहिर लाने के समय का संस्कार विशेष । यह संस्कार चौथे मास किया जाता है । ३ मुख्यमार्ग ।

उपनृत्यं (न०) नृत्यशाला या नाचने की जगह ।
उपनेतृ (वि०) पास लाने वाला । जाकर लाने वाला ।
उपनेतृता (स्त्री०) उपनयन संस्कार कराने वाला आचार्य ।

उपन्यासः (पु०) १ पास लाना । २ धरोहर । अमानत । बंधक । ३ प्रस्ताव । सूचना । विवरण । भूमिका । ग्रन्थपरिचय । हवाला ॥ ४ नीतिवाक्य । आर्डन ।

उपपत्तिः (पु०) जार । आशिक ।
उपपत्तिः (स्त्री०) १ प्राप्ति । सिद्धि । प्रतिपादन । हेतु द्वारा किसी पदार्थ की स्थिति का निश्चय । २ घटना । चरितार्थ होना । ३ मेलमिलना । सङ्गति । ४ युक्ति । हेतु । ५ प्रमाण । उपपादन । ६ प्राप्ति । उपलब्धि ।

उपपदम् (न०) १ पास या पीछे बोला गया या लगाया गया पद । २ उपाधि । शिक्षा सम्बन्धी योग्यता प्रदर्शक पदवी । प्रतिष्ठासूचक सम्बोधनवाची शब्द ; जैसे ' आर्य ' ! ' शर्मन ' !

उपपन्न (व० कृ०) १ लब्ध । प्राप्त । पाया हुआ । मिला हुआ । २ ठीक । योग्य । उपयुक्त । उचित । ३ युक्तियुक्त । यथार्थ । ४ पास आया हुआ । पहुँचा हुआ । ५ शरणागत ।

उपपरीक्षा (स्त्री०) } जाँचपड़ताल । अनुसन्धान ।
उपपरीक्षणम् (न०) }

उपपातः (पु०) १ इत्तिफाकिया घटना । २ विपत्ति । सङ्कट । घटना ।

उपपातकम् (न०) झोटा पाप । आलवल्क्य स्मृति में लिखा है ।

अज्ञपातकतुल्यानि पापान्युक्तानि याणि तु ।

तानि पातकसंज्ञानि तन्मूलमुपपातकम् ॥

उपपादनम् (न०) १ करना । पूरा करना । २ देना । सौंपना । हवाले करना । भेंट करना । ३ सिद्ध करना । साबित करना । ठहराना । युक्ति पूर्वक किसी विषय को समझाना । ४ परीक्षण । अवगति ।

उपपाश्व (न०) १ कंधा । बगल । तरफ । २ उपजाश्वः (पु०) सामने की ओर या तरफ ।

उपपीडनम् (न०) १ नष्ट करना । उजाड़ना । २ पीड़ित करना । घायल करना । ३ पीड़ा । कष्ट ।

उपपुरम् (न०) नगर प्रान्त । नगर के समीप की बस्ती ।

उपपुराणम् (न०) अठारह प्रधान पुराणों के अतिरिक्त अन्य छोटे पुराण । पुराणों के बाद बनाये गये पुराण । इनके नाम ये हैं—

१ सनत्कुमार । २ नारसिंह ३ नारदीय ४ शिव, ५ दुर्वासा, ६ कपिल, ७ मानव, ८ औशनस, ९ वल्क्य, १० कालिका ११ शौर्व, १२ नन्दा, १३ सौर, १४ पराशर, १५ आदित्य, १६ माहेश्वर, १७ भार्गव, १८ वासिष्ठ ।

उपपुष्पिका (स्त्री०) जमुहई ।

उपप्रदर्शनम् (न०) बतलाना । निर्देश करना ।

उपप्रदानम् (न०) १ सौंपना । हवाले करना । २ रिशवत । वूस । नज़र । ३ राजस्व । खिराज ।

उपप्रलोभनम् (न०) १ फुसलाहट । लोभन । लालच । २ घूस । रिशवत । प्रलोभन ।

उपप्रेक्षणं (न०) उपेक्षा । तिरस्कार ।

उपप्रेषः (पु०) निमंत्रण । बुलावा ।

उपसवः (पु०) १ विपत्ति । सङ्कट । क्लेश । दुःख । २ अशुभ घटना । ३ अत्याचार । तंग करना । कष्ट देना । ४ भय । आतङ्क । ५ अशुभसूचक दैवी उपद्रव । ६ चन्द्र या सूर्य ग्रहण । उत्कापात । ७ राहु उपग्रह का नाम । ८ राज्यक्रान्ति । ९ विघ्न । बाधा । [से सताया हुआ ।

उपसविन् (वि०) १ सन्तप्त । पीड़ित । २ अत्याचार

उपबन्धः (पु०) १ सम्बन्ध । २ उपसर्ग । ३ रति क्रिया का आसन विशेष ।

उपबर्हः (पु०) } तकिया । बालिश ।

उपबर्हणम् (न०) }

उपबहु (वि०) थोड़ा । कुछ ।

उपबाहुः (पु०) नीचे की बाँह ।

उपभङ्गः (पु०) भाग जाना । पीछे भागना ।

उपभाषा (स्त्री०) गौण बोलचाल की भाषा ।

उपभृत् (स्त्री०) यज्ञीय पात्र विशेष ।

उपभोगः (पु०) १ आनन्द । भोजन । आस्वादन ।

२ भोग विलास । स्त्री के साथ सहवास । व्यवहार का सुख उठाने वाला । ४ सन्तोष । आनन्द ।

उपमंत्रणम् (न०) सम्बोधन करने, निमंत्रण देने और बुलाने की क्रिया ।

उपमंत्रणी (स्त्री०) आग उकसाने की एक लकड़ी ।
उपमन्थनी } विशेष ।

उपमर्दः (पु०) १ रगड़ । चिड़न । निचोड़ । कुचलन ।
२ नाश । वध । हत्या । ३ धिक्कार । भर्त्सना । गाली ।
तिरस्कार युक्त वाक्य । ४ मुसी अलगाव । ५ किसी लगाने हुए देश का प्रतिवाद या खगडन ।

उपमा (स्त्री०) १ समानता । सादृश्य । तुलना । २ पट्टर । मिलान । ३ अर्थालङ्कार जिसमें दो वस्तुओं में जेद रहते भी उनकी समानता दिखाई जाती है ।

उपमातृ (स्त्री०) १ धात्र । दूषपिलाने वाली दाई । २ बिल्कुल निकट का सम्बन्ध रखने वाली स्त्री ।

उपमानम् (न०) १ वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय । समानता सूचक । २ न्याय में चार प्रमाणों में से एक ।

उपमितिः (स्त्री०) १ समानता । तुलना । सादृश्य ।
२ उपमा या सादृश्य से होने वाला ज्ञान ।

उपमेय (स० का० कृ०) वर्य्य । वर्णनीय । तुलना करने योग्य । [जाय ।

उपमेयं (न०) उपमा के योग्य । जिसकी उपमा दी उपयंत्र (पु०) पति ।

उपयंत्रम् (न०) जराही कर्म का एक छोटा औज़ार ।

उपयमः (पु०) विवाह । परिणय ।

उपयमनम् (न०) १ विवाह करना । २ रोकना । संयम करना । ३ अभिस्थापन । [एक ।

उपयष्टृ (पु०) १६ यज्ञ कराने वाले ब्राह्मणों में से उपयाचक (वि०) माँगने वाला । माँगा । प्रार्थी ।
आवेदक

उपयाचनम् (न०) याचना । प्रार्थना । आवेदन ।

उपयाचित (व० कृ०) याचित । प्रार्थित ।

उपयाचितम् (न०) १ प्रार्थना । निवेदन । २ मनौली । मानता । ३ किसी कार्य की सिद्धी के लिये देवी देवता से प्रार्थना करना ।

उपयाजः (पु०) यज्ञ का अतिरिक्त विधान ।

उपयानम् (न०) समीप आगमन । समीप आना ।

उपयुक्त (व० कृ०) १ अटका हुआ । २ योग्य । टीक । उपयुक्त । उचित । ३ उपयोगी । काम का ।

उपयोगः (पु०) १ काम । व्यवहार । इस्तेमाल ।

प्रयोग । २ औषधोपचार या दवाइयों का बनाना ।

३ योग्यता । उपयुक्तता । औचित्य । ४ सामीप्य ।

उपयोगिन् (वि०) व्यवहार में लाया हुआ । २ व्यवहार में लाने योग्य । उपयोगी । ३ योग्य । उचित ।

उपरक्त (व० कृ०) १ पीड़ित । सन्तप्त । २ अस्त । ३ रंगीन । रंगा हुआ ।

उपरक्तः (पु०) राहु-केतु-ग्रस्त चन्द्र सूर्य ।

उपरक्तः (पु०) शरीररक्त ।

उपरक्त्याम् (न०) रक्त । नौकी ।

उपरत (व० कृ०) १ बंद किया हुआ । २ मरा हुआ ।

—कर्मन्, (वि०) सांसारिक कर्मों पर भरोसा न करने वाला । —स्पृह (वि०) समस्त काम-नाओं से शून्य । संसार से विरुद्ध ।

उपरतिः (स्त्री०) १ विरति । त्याग । विषय से विराग । २ स्त्रीसम्भोग से अरुचि । ३ उदासी-नता । ४ मृत्यु ।

उपरत्नं (न०) साधारणरत्न । अश्रेष्ठरत्न । अद्वियारत्न ।

उपरमः } (पु०) १ निवृत्ति । वैराग्य । त्याग । ३
उपरामः } मृत्यु । [विराम ।

उपरमणम् (न०) १ स्त्रीसम्भोग से विरति । २

उपरसः (पु०) १ वैद्यक में पारे के समान गुण करने वाले रस । २ स्वाद-विशेष । मौख स्वाद ।

उपरागः (पु०) १ सूर्य चन्द्र का ग्रहण । २ राहु । ३ ललाई । लाल रंग । रंग । ४ विपत्ति । सङ्कट । ५ धिक्कार । भर्त्सना । कुवाच्य ।

उपराजः (पु०) राजप्रतिनिधि । वाइसराय ।

उपरि (अव्य०) ऊपर । —ऊपर, (वि०) ऊपर चलने वाला (जैसे पत्नी) । —तन, —स्थ, (वि०) ऊपर का, ऊँचा । —भागः, (पु०) ऊपरी हिस्सा । ऊपर की ओर । —भूमिः, (स्त्री०) ऊपर की जमीन ।

उपरिष्ठात् (अव्यय०) ऊपर । ऊँचे पर । आगे । बाद को । पीछे से । पीछे ।

उपरीतकः (पु०) रतिक्रिया का आसन या विधि विशेष । [प्रकार का नाटक ।
 उपरूपकम् (न०) अठारह प्रकार के नाटकों में छठिया
 उपरोधः (पु०) १ रोकटोक । बाधा । अड़चन ।
 २ उत्पात । होहल्ला । आफत । ३ आड़ । पर्दा ।
 रोक । ४ रक्षा । अनुग्रह ।
 उपरोधक (वि०) १ रोकने वाला । २ ढकने वाला ।
 आड़ करने वाला । घेरने वाला ।
 उपरोधकम् (न०) भीतर का कोठा । निज का कमरा ।
 उपरोधनम् (न०) रोकटोक । बाधा । अड़चन ।
 उपलः (पु०) १ पत्थर । चट्टान । २ रत्न ।
 उपलकः (पु०) पत्थर ।
 उपला (स्त्री०) १ बालू । रेत । २ साफ की हुई चीनी ।
 उपलक्षणम् (न०) १ अवलोकन । निहारण । चिन्ह
 करण । २ चिन्ह । पहचान । विशिष्टता । ३
 पदवी । ४ एक प्रकार की अजहत्स्वार्थ लक्षणा ।
 उपलब्धिः (स्त्री०) १ प्राप्ति । २ आलोचन । बोध ।
 ज्ञान । बुद्धि । मति । ४ अनुमान । कल्पना ।
 उपलभः } (पु०) १ प्राप्ति । उपलब्धि । २
 उपलभः } पहचान । अवगति । खोज । तलाश ।
 उपलालनम् (न०) प्रियपात्र । लाडला । दुलारा ।
 उपलालिका (स्त्री०) प्यास । तृषा ।
 उपलिङ्गम् (न०) दुर्निमित्त । अशकुन ।
 उपलिप्ता (स्त्री०) कामना । अभिलाषा ।
 उपलेपः (पु०) १ लेप । मालिश । उबटन । २
 लीपना । पोतना । ३ रोक । रुक पड़ जाना ।
 उपलेपनम् (न०) १ मालिश, लेप या उबटन करने
 की क्रिया । २ लेप । उबटन । मलहम ।
 उपवनं (न०) बारा । उद्यान ।
 उपवर्णः (पु०) विस्तृत विवरण ।
 उपवर्णनं (न०) विस्तृत विवरण ।
 उपवर्तनम् (न०) १ अखाड़ा । कसरत करने का
 स्थान । २ जिला या परगना । ३ राज्य ।
 ४ दलदल ।
 उपवसथः (पु०) ग्राम । गाँव ।
 उपवस्तम् (न०) उपवास । कड़ाका । व्रत ।
 उपवासः (पु०) १ व्रत । उपोषण । निराहार
 रहना । २ अजीर्ण अग्नि का प्रज्वलित करना ।

उपवाहनम् (न०) ले जाना । समीप लाना ।
 उपवाह्यः (पु०) } राजा की सवारी ।
 उपवाह्या (स्त्री०) }
 उपविद्या (स्त्री०) लौकिक विद्या । छटिया ज्ञान ।
 उपविषः (पु०) १ बनावटी ज़हर । २ छटिया ज़हर ।
 उपविषम् (न०) १ मादक विष; यथा अफीम । धतूरा ।
 उपवीण्यति (क्रि०) वीणा बजाना ।
 उपवीतं (न०) उपनयन संस्कार ।
 उपवृंहणम् (न०) बढ़ती । वृद्धि । सञ्चय ।
 उपवेदः (पु०) वे विद्याएँ जिनका मूल वेद में है ।
 ये चार हैं । यथा धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, आयुर्वेद,
 स्थापत्य । धनुर्वेद विद्या का मूल अजुर्वेद में, गन्धर्व
 विद्या का सामवेद में, आयुर्वेद विद्या का अग्वेद में
 और स्थापत्य विद्या का अथर्ववेद में है ।
 उपवेशः } (न०) बैठना । जमना । स्थित
 उपवेशनम् } होना ।
 उपवैश्वं (न०) दिन के तीन काल, प्रातः, मध्याह्न
 और सायं । त्रिसन्ध्या ।
 उपव्याख्यानम् (न०) पीछे से लगायी या जोड़ी
 हुई व्याख्या या टीका ।
 उपव्याघ्रः (पु०) चीता ।
 उपशमः (पु०) १ निस्तब्ध हो जाना । शान्त हो
 जाना । २ विराम । अवसान । ३ निवृत्ति ।
 इन्द्रियनिग्रह । शान्ति । ४ निवारण का उपाय ।
 इलाज । चारा ।
 उपशमनम् (न०) १ निस्तब्धता । शान्ति । विरति ।
 २ हास । ३ विलोप । अवसान ।
 उपशयः (वि०) १ दाब । घात । मौँद । बनैले
 पशुओं के रहने का स्थान । २ बगल में लेटना ।
 उपशल्यं (न०) शान्त । मैदान ।
 उपशाखा (स्त्री०) छोटी डाली या छोटी शाख ।
 उपशान्तिः (स्त्री०) १ विराम । अन्त । शान्ति । हास ।
 २ झुमाना । (जैसे भूख को या प्यास को) कम
 करना ।
 उपशायः (पु०) बारी बारी से सोना ।
 उपशालं (न०) भवन के पास का छोटा घर । मकान
 के सामने का घेरा या हाता । (अन्य०) घर के
 समीप या पास ।
 उपशास्त्रं (न०) छोटी पुस्तक या कोई छोटी कला ।

उपशिक्षा (स्त्री०) } अध्ययन । अध्यापन । पढ़ना ।
 उपशिक्षणम् (न०) } पढ़ाना ।
 उपशिष्यः (पु०) शगिर्द का शगिर्द ।
 उपशोभनम् (न०) } शृङ्गार । सजावट ।
 उपशोभा (स्त्री०) }
 उपशोषणम् (न०) सूख जाना । सुरक्षा जाना ।
 उपश्रुतिः (स्त्री०) १ सुनना । श्रवण करना । वह
 दूरी जहाँ सुन पड़े । २ प्रतिज्ञा । स्वीकृति ।
 उपश्लेषः (पु०) } १ संसर्ग । २ आलिङ्गन ।
 उपश्लेषणम् (न०) }
 उपश्लोकयति (क्रि०) श्लोक बना कर प्रशंसा
 करना ।
 उपसंयमः (पु०) १ दमन करना । रोकना । वश-
 वर्त्ती करना । बाँधना । २ प्रलय । संसार का
 नाश ।
 उपसंयोगः (पु०) १ गौण सम्बन्ध । २ सुधार ।
 उपसंरोहः (पु०) साथ साथ उगना या किसी के
 ऊपर उगना ।
 उपसंवादः (पु०) इकरानामा । प्रतिज्ञापत्र ।
 उपसंव्यानम् (न०) भीतर अर्थात् कपड़े के भीतर
 पहिना जाने वाला कपड़ा । कुर्ता, बनियाइन
 आदि ।
 उपसंहारणम् (न०) १ वापिस ले लेना । फेर लेना ।
 छीन लेना । २ रोक रखना । ३ छेक देना । ४
 आक्रमण करना । हस्ता करना ।
 उपसंहारः (पु०) १ मिला देना । संयोग कर देना २
 वापिस लेना या रोक रखना । ३ समारोह ।
 संग्रह । समास करना । खत्म करना । समाप्ति ।
 ४ भाषण का अन्तिम भाग जिसमें व्याख्यानदाता
 अपने व्याख्यान का प्रभाव सहित संक्षेप वर्णन
 करता है । ५ सारांश । सारसंग्रह । ६ संक्षिप्ता
 ७ पूर्णता । ८ नाश । मृत्यु । ९ हस्ता ।
 आक्रमण ।
 उपसंक्षेपः (पु०) सार । संक्षेप । सारांश ।
 उपसंख्यानम् (न०) १ जोड़ । जमा । २ अतिरिक्त धोम
 या वृद्धि । यह शब्द प्रायः कात्यायन के वार्तिक
 के लिये प्रयुक्त होता है, जिसमें पाणिनी की छूटों
 की पूर्ति की गई है ।

उपसंग्रहः (पु०) } १ आनन्दित रखना । निर्वाह
 उपसंग्रहणम् (न०) } करना । किसी को खाने
 पीने आदि की आवश्यकताओं का प्रबन्ध कर
 देना । २ प्रणाम । वाञ्छद्व सलाम । प्रणाम के
 लिए चरणस्पर्श । ३ अंगीकार करण । ४
 विनम्र आवेदन । विनय । ५ एकत्र करण । जमा
 करना । संयोग करना । मिलाना । ६ ग्रहण
 करना । उपकरण ।
 उपसत्तिः (स्त्री०) १ संयोग । सम्बन्ध । २ सेवा ।
 पूजा । परिचर्या । ३ दान । चढ़ावा । भेंट ।
 उपसद्ः (पु०) १ समीप गमन । २ दान । भेंट ।
 उपसदनम् (न०) १ समीप जाना । समीपवर्त्ती
 होना । २ गुरु के चरणों में बैठना । शिष्य बनना
 २ पदोस । सेवा ।
 उपसंतानः (पु०) } १ निकट सम्बन्ध । २ सन्तान ।
 उपसन्तानः (पु०) }
 उपसंधानम् (न०) } मिलावट । जोड़ ।
 उपसन्धानम् (न०) } [देना ।
 उपसंन्यासः (पु०) रख देना । त्याग देना । छोड़
 उपसंप्राधानम् (न०) जमा करना । ढेर करना ।
 उपसंपत्तिः (स्त्री०) } १ समीप आगमन । २ शक्ति
 उपसम्पत्तिः (स्त्री०) } करना । ठहराव ठहराना ।
 उपसंपन्नः (पु०) } १ प्राप्त । २ आया हुआ ।
 उपसम्पन्नः (व० कृ०) } आगत । ३ स्वत्व प्राप्त ।
 ४ बलि में मारा हुआ (पशु) ।
 उपसंपन्नम् (न०) } मसाला । झोंक । अघार ।
 उपसम्पन्नम् (न०) }
 उपसंभाषः (पु०) }
 उपसम्भाषः (पु०) } १ वार्त्तालाप । २ प्ररोचना ।
 उपसंभाषा (स्त्री०) } प्रवर्त्तना ।
 उपसम्भाषा (स्त्री०) }
 उपसरः (पु०) १ समीप जाना । २ गौ का प्रथम
 गर्भ । “गवामुपसरः ।” [होना ।
 उपसरणम् (न०) १ तरक जाना । २ शरणागत
 उपसर्गः (पु०) १ बीमारी । रोग । बीमारी के
 कारण शारीरिक परिवर्तन । २ विपत्ति । संकट ।
 चोट । क्षति । ३ अशकुन । उपद्रव । द्वैवी
 उत्पात । ग्रहण । ५ मृत्यु का पूर्व लक्षण । वह
 शब्द या अव्यय जो केवल किसी शब्द के पू

लगता है और उसमें किसी अर्थ की विशेषता करता है। जैसे अनु, उप, अन् आदि।

उपसर्जनम् (न०) १ उडेलना। २ विपत्ति। देवी उत्पात। ३ विसर्जन। ४ ग्रहण। ५ कोई व्यक्ति या वस्तु जो दूसरे के अधीन हो।

उपसर्पः (पु०) समीप जाना।

उपसर्पणम् (न०) समीप जाना। आगे बढ़ना।

उपसर्पा (स्त्री०) सांड के योग्य गाय। [एक असुर।

उपसुन्दः (पु०) निकुम्भ का पुत्र और सुन्द का भाई

उपसूर्यकम् (न०) सूर्यमण्डल।

उपसृष्ट (व० कृ०) १ मिला हुआ। जुड़ा हुआ।

सहित। २ आवेशित। ३ सन्तुष्ट। पीड़ित। ४ ग्रस्त। ५ उपसर्ग से युक्त।

उपसृष्टः (पु०) राहु केतु ग्रसित सूर्य या चन्द्र।

उपसृष्टम् (न०) स्त्रीमैथुन। स्त्रीसम्भोग।

उपसेचनम् (न०) १ उडेलना। छिड़कना। पानी

उपसेकः (पु०) १ से तर करना। २ गीली चीज़। रस।

उपसेचनी (स्त्री०) कठोरा। चमची। कलछी।

उपसेवनम् (न०) १ पूजन। अर्चा। श्रद्धार। २ सेवा

उपसेवा (स्त्री०) १ (किसी वस्तु का) आदी होना।

अभ्यस्त होना। ४ बर्तना। हस्तेमाल करना।

उपभोग करना (स्त्री का)।

उपस्करः (पु०) १ अंग अर्थात् जिसके बिना कोई वस्तु अधूरी रहे। ३ मसाला। ३ सामान। अस-

बाब। उपकरण। ४ गृहस्थी के लिए उपयोगी

सामान जैसे बुहारी, सूप, चकनी आदि। ५

आभूषण। ६ कलङ्क। दोष। भर्त्सना।

उपस्करणम् (न०) १ बध। हत्या। चोटिल करना।

२ संग्रह। ३ परिवर्तन। संशोधन। ४ छुट।

त्रुटि। ५ कलङ्क। दोष।

उपस्कारः (पु०) १ परिशिष्ट। २ न्यूनता पूरक।

३ सौन्दर्यवान बनाना। सजावट। ४ आभूषण।

५ आवात। प्रहार। ६ संग्रह।

उपस्कृत (व० कृ०) १ तैयार किया हुआ। बनाया

हुआ। २ संग्रहीत। ३ सौन्दर्यवान बनाया हुआ।

सजाया हुआ। भूषित किया हुआ। ४ न्यूनता की

पूर्ति किया हुआ। ५ संशोधित किया हुआ।

उपस्कृतिः (स्त्री०) परिशिष्ट।

उपस्तम्भः (पु०) १ सहारा। २ उस्ताह।

उपस्तम्भनम् (न०) १ उत्तेजना। सहायता। ३

आधार।

उपस्तरणम् (न०) १ फैलाना। बिखेरना। २

चावर। ३ बिछौना। शय्या। ४ कोई वस्तु जो

बिछाई जाय।

उपस्त्री (स्त्री०) रंडी।

उपस्थः (पु०) १ गोद। २ मध्यभाग।

उपस्थम् (न०) १ स्त्री की योनि। २ पुरुष का

लिङ्ग। ३ कूल्हा।—निग्रहः, (पु०) इन्द्रिय-

निग्रह। बंधेज।—पुत्रः,—दत्तः (पु०) पीपल

का वृक्ष।

उपस्थानम् (न०) १ निकट आना। सामने आना।

२ अव्यर्थता या पूजा के लिये निकट आना। ३

रहने की जगह। डेरा। वासा। ४ तीर्थ या देवा-

लय। ५ स्मृति। याददाश्त।

उपस्थापनम् (न०) १ पास रखना। तयार होना।

तैयार होना। २ स्मृति को नया करना। याद-

दाश्त का ताज़ा करना। ३ परिचर्या। सेवा।

उपस्थापकः (पु०) सेवक।

उपस्थितिः (वि०) १ निकटता। २ विद्यमानता।

६ प्राप्त करना। पाना। ४ पूरा करना। कार्या-

न्वित करना। ५ स्मृति। याददाश्त। ६ परि-

चर्या। सेवा।

उपस्नेहः (पु०) नम करना। तर करना।

उपस्पर्शः (पु०) १ स्पर्श करना। छूना। संसर्ग

उपस्पर्शनम् (न०) १ होना। २ स्नान। प्रक्षालन।

मार्जन। ३ कुत्सा करना। मुह साफ करना।

आश्चमन करना।

उपस्मृतिः (स्त्री०) धर्मशास्त्र के छोटे ग्रन्थ।

इनकी संख्या १८ है।

उपस्रवणं (न०) १ राजस्वला धर्म। २ बहाव।

उपस्रवणं (न०) राजस्व। लाभ, जो भूमि की आय

से अथवा पूँजी से होता है।

उपस्वेदः (पु०) तरी। पसीना।

उपहत (व० कृ०) १ आहत। निर्बल। पीड़ित। २

प्रभावान्वित किया हुआ। पीटा हुआ। हराया

हुआ । ३ अवश्य नष्ट होने वाला । ४ विकारित ।
५ बिगाड़ा हुआ । अपवित्र किया हुआ ।—
आत्मन्, (वि०) उद्भिन्न चित्त ।—दृश, (वि०)
चौधियाया हुआ । अंधा ।—धो, (वि०) मूढ़ ।

उपहतक (वि०) अभागा । बदकिस्मत ।
उपहति (स्त्री०) १ ग्रहार । चोट । २ बध । हत्या ।
उपहत्या (स्त्री०) आँखों का चौधियाना ।
उपहरणम् (न०) १ लाना । जाकर लाना । २ ग्रहण
करना । पकड़ना । ३ नज़र करना । मेंट देना । ४
बलिपशु चढ़ाना । ५ भोजन परोसना या बाँटना ।
उपहसित (व० कृ०) चिढ़ाया हुआ । मज़ाक उड़ाया
हुआ ।

उपहसितं (न०) कटाव युक्त हँसी । [रहता है ।
उपहस्तिका (स्त्री०) बटुआ जिसमें पान का सामान
उपहारः (पु०) १ मेंट । चढ़ाव । २ दान । पुरस्कार ।
२ बलिपशु । यज्ञ । किसी देवता का चढ़ावा ।
४ नज़राना । दक्षिणा । ५ सम्मान । ६ लड़ाई
का हज़ाना । ७ महमानों को बाँटा हुआ भोजन ।
उपहालकः (पु०) कुन्तल देश का नाम ।
उपहासः (पु०) १ हँसी । ठट्ठा । दिखलगी । २
निन्दा । बुराई ।

उपहास-पात्रम् (व०) } हँसी उड़ाने लायक ।
उपहासास्पदम् (व०) } निन्दनीय ।
उपहासक (वि०) दूसरों की दिखलगी उड़ाने वाला ।
उपहासकः (पु०) मसख़रा ।
उपहास्य (स० का० कृ०) हँसने योग्य ।
उपहित (वि०) स्थापित । रखा हुआ ।
उपहृतिः (स्त्री०) आह्वान । बुलौआ । बोला ।
उपह्वरः (पु०) १ एकान्त स्थल । २ उतार । [करना ।
उपह्वानम् (न०) बुलाना । न्योतना । मंत्रों से आह्वान
उपांशु (अव्यया०) १ कानाफूसी । मन्दस्वर से
धीमी आवाज से । २ चुपके चुपके ।

उपांशुः (पु०) मंत्र जपने की विधि विशेष । ऐसे
जपना जिससे अन्य कोई आप्य मंत्र को सुन न
सके ।

उपाकरणम् (न०) १ योजना । उपक्रम । तैयारी ।
अनुष्ठान । २ यज्ञ में वेदपाठ । ३ यज्ञीय पशु का
संस्कार विशेष ।

उपाकर्मन् (न०) १ तैयारी । आरम्भ । प्रारम्भ । २
श्रावणी कर्म ।

उपाकृत (व० कृ०) १ समीप लाया हुआ । २ बलिदान
किया हुआ । ३ आरम्भ किया हुआ ।

उपात्तं (अव्यया०) नेत्रों के सामने । विद्यमानता में ।
उपाख्यानम् (न०) १ पुरानी कथा । पुराना
उपाख्यानकम् (न०) १ वृत्तान्त । २ किसी कथा
के अन्तर्गत कोई अन्य कथा ।

उपागमः (पु०) १ समीप आगमन । पहुँचना । २
घटित होना । ३ प्रतिज्ञा । इकरार । ४ स्वीकृति ।
उपाश्रम् (न०) १ छोर के पास का भाग । २ गौण
अवयव । [पीछे वेदाध्ययन करना ।

उपाग्रहणम् (न०) वेदाध्ययन का अधिकारी हुए
उपांगम् } (न०) १ अन्तर्गत भाग । अँग का
उपाङ्गम् } भाग । अवयव । २ त्रुटिपूर्क का पूरक ।
मुख्य का साहाय्य ।

उपाचारः (पु०) १ स्थान । २ पद्धति ।
उपाजे (अव्यया०) यह केवल कृ धातु के साथ ही
व्यवहृत होता है । सहारे । सहारे से ।

उपांजनं } (न०) तेल मलना । लीपना ।
उपाञ्जनम् }

उपात्ययः (पु०) आज्ञा उल्लङ्घन । मर्यादा भङ्ग
करना ।

उपादानं १ (न०) ग्रहण करना । लेना । प्राप्त करना ।
२ वर्णन करना । बखान करना । ३ सम्मिलित
करना । शामिल करना । ४ सांसारिक पदार्थों से
हन्त्रियों को हटाना । ५ कारण । हेतु । ६ वे
पदार्थ जिनसे कोई वस्तु बनी हो । ७ सांख्य की
चार आध्यात्मिक तृष्टियों में से एक ।

उपाधिः (पु०) १ धोखा । जाल । चालाकी । २
अम । कपट । ३ वह जिसके संयोग से कोई
पदार्थ और का और दिखलाई पड़े । ४ विशेषता
५ प्रतिष्ठासूचक पद । पदवी । बिगाड़ा हुआ
नाम । ६ परिस्थिति । ६ वह पुरुष जो अपने
कुटुम्ब के भरणपोषण में सावधान रहता है ।
७ धर्मचिन्ता । कर्त्तव्य का विचार । ८ उत्पात ।
उपद्रव ।

उपाधिक (वि०) अत्यधिक । नियमित संख्या से
अधिक । वेशी । अतिरिक्त ।

उपाध्यायः (पु०) १ अध्यापक । शिक्षक । गुरु ।

२ वेदवेदाङ्ग का पढ़ाने वाला ।

उपाध्याया } (स्त्री०) पढ़ानेवाली अध्यापिका ।

उपाध्यायी } (स्त्री०) गुरुपत्नी । अध्यापिका ।

उपाध्यायानी (स्त्री०) गुरु की पत्नी ।

उपानह (स्त्री०) जूता । खड़ाऊ ।

उपांतः } (पु०) १ किनारा । बाड़ । धार । हाशिया ।

उपान्तः } प्रांत । सिरा । ३ आँख की कोर । ३

पड़ोस । सन्निकट । ४ नितम्ब ।

उपांतिक } (वि०) समीपवर्ती । पड़ोस का ।

उपांतिक } (न०) पड़ोस । पास । समीप ।

उपांत्य } (वि०) अन्तिम के पूर्व का एक ।

उपांत्यः } (पु०) आँख की कोर ।

उपांत्यम् } (न०) पड़ोस । समीप । निकट ।

उपायः (पु०) १ साधना । युक्ति । तदबीर । साधन ।

युद्ध में शत्रु को धोखा देना । २ आरम्भ ।

प्रारम्भ । उपक्रम । ३ उद्योग । प्रयत्न । ४ शत्रु

को परास्त करने की युक्ति । यथा साम, दान,

भेद, दण्ड । ५ उपागम । ६ शृङ्गार के दो साधन ।

—चतुष्टयम्, (न०) शत्रु को बस में करने के

चार उपाय । साम, दान, भेद, दण्ड । चतुष्टयज्ञः,

(वि०) इन चार साधनों का जानकार या इन

साधनों का व्यवहार करने में चतुर —तुरीयः,

(पु०) चौथा उपाय अर्थात् दण्ड ।

उपायनम् (न०) १ समीपगमन । २ शिष्य बनना ।

धर्मानुष्ठान में लगना । ३ भेंट । चढ़ावा ।

उपायः } (पु०) आरम्भ । प्रारम्भ ।

उपायः } (न०) प्राप्ति । उपलब्धि । कमाई ।

उपायः (वि०) कम मूल्य का । घटिया ।

उपालम्भः (पु०) १ ओलहना । शिकायत ।

उपालम्भः (पु०) २ विलम्ब करना ।

उपालम्भम् (न०) ३ मुलतबी करना । स्थगित

उपालम्भम् (न०) करना ।

उपावर्तनम् (न०) १ लौट आना । लौट जाना । वापिस

आना या जाना । २ चकर खाना । घूमना । ३

समीप आना ।

उपाश्रयः (पु०) १ सहायता प्राप्त करने का

वसीला । आधार । सहारा । पानेवाला पात्र । ३

निर्भरता । [भक्त । अनुयायी । ३ शत्रु ।

उपासकः (पु०) १ उपासना करने वाला । २ सेवक ।

उपासनम् (न०) १ सेवा । परिचर्या । सेवा

उपासना (स्त्री०) १ में उपस्थित रहना । २ पूजन ।

सम्मान । ३ तीरन्दाजी का अभ्यास । ४ ध्यान ।

५ गार्हपत्याग्नि । [३ ध्यान ।

उपासा (स्त्री०) १ सेवा । परिचर्या । २ पूजन ।

उपास्तमनम् (न०) सूर्यास्त ।

उपास्तिः (स्त्री०) १ चाकरी । सेवा में उपस्थित

रहना । २ पूजन । अर्चन ।

उपास्त्रं (न०) गौण अस्त्र । छोटा हथियार ।

उपाहारः (पु०) हल्का जलपान ।

उपाहित (व० कृ०) १ स्थापित । जमा कराया हुआ ।

२ सम्बन्धयुक्त । संयोजित । [हुआ सर्वनाश ।

उपाहितः (पु०) अग्निभय या अग्नि का किया

उपेक्षा (स्त्री०) १ लापरवाही । उदासीनता । २

विरक्ति । चित्त का हटना । २ घृणा । तिरस्कार ।

उपेत (व० कृ०) १ समीप आना । २ उपस्थित । ३

युक्त । सम्पन्न । [का छोटा भाई ।

उपेन्द्रः (पु०) वामन या विष्णु भगवान् । इन्द्र

उपेय (स० का० कृ०) १ समीप जाने को । २ पाने

को । किसी उपाय से होने को ।

उपोढ (व० कृ०) १ संग्रह किया हुआ । जमा

किया हुआ । राशीकृत । २ समीप लाया हुआ ।

समीप । ३ युद्ध के लिये क्रमबद्ध किया हुआ ।

५ विवाहित ।

उपोत्तम (वि०) अन्तिम से पूर्व का एक ।

उपोद्घातः (पु०) १ आरम्भ । २ भूमिका । दीवाचा ।

३ उदाहरण । किसी के कथन के विपरीत युक्ति ।

४ अवसर । माध्यम । द्वारा । जरिया । ५ पृथ-

करण ।

उपोद्वलक (वि०) समर्थित । द्दीकृत ।

उपोषणम् } (न०) उपवास । व्रत । कांका ।
उपोषितम् } कड़ाका ।

उत्तिः (स्त्री०) बीज बोना ।

उज्ज (धा० पर०) [उज्जति, उज्जित] १ दवाना ।
वश में करना । २ सीधा करना ।

उम् (धा० पर०) [उभति, उभति, उभति,
उम्] उंभित] १ कैद करना । २ दो को मिलाना ।
३ परिपूर्ण करना । ४ ढांकना ।

उभ (सर्वनाम) (वि०) दोनों ।

उभय (सर्वनाम) (वि०) दोनों ।—चर (वि०)
जल थल में रहने वाला ।—विद्या, (स्त्री०)
आध्यात्मिक ज्ञान और लौकिक ज्ञान ।—वेतन,
(वि०) दोनों ओर से वेतन पाने वाला । दशा-
वाज ।—व्यञ्जन, (वि०) स्त्री और पुरुष दोनों
के चिन्ह रखने वाला ।—संभवः,—सम्भवः,
(पु०) दुविधा । भ्रम ।

उभयतः (अव्यया०) १ दोनों ओर से । दोनों ओर ।
२ दोनों दशाओं में । ३ दोनों प्रकार से ।—
दत्त,—दन्त, (वि०) दाँतों की दुहरी पंक्तियों
वाला ।—मुख, (वि०) दोनों ओर देखने वाला ।
दुमुँहा ।—मुखी, (स्त्री०) गौ ।

उभयत्र (अव्यया०) १ दोनों जगह । २ दोनों तरफ ।
३ दोनों दशाओं में । [दशाओं में ।

उभयथा (अव्यया०) १ दोनों प्रकार से । २ दोनों
उभयद्यस् (अव्यया०) १ दोनों दिवस । २ दोनों
उभयेद्युस् } पिछले दिनों ।

उभ् (अव्यया०) क्रोध, प्रश्न, प्रतिज्ञा, स्वीकारोक्ति,
सच्चाई व्यञ्जक अव्यय विशेष ।

उमा (स्त्री०) १ शिव जी की पत्नी, जो हिमालय की
पुत्री थी । २ कान्ति । सौन्दर्य । ३ यश ।
कीर्ति । ४ निस्तब्धता । शान्ति । ५ रात्रि । ६
हल्दी । ७ सन ।—गुरुः, (पु०) —जनकः,
(पु०) हिमालय पर्वत ।—पतिः, (पु०)
शिव जी ।—सुतः, (पु०) कार्तिकेय या
गणेश जी ।

उंबरः }
उम्बरः } (पु०) चौखट की ऊपर वाली लकड़ी ।
उम्बुरः }
उम्बुरः }

उरः (पु०) मेढ़ ।

उरगः [स्त्री० —उरगी] १ साँप । सर्प । २ नाग ।
३ सीसा ।—अशनः,—शत्रुः, (पु०) १ साँप
का शत्रु । २ गरुड । ३ मोर । ४ ग्योला ।
—इन्द्रः, (पु०) —राजः, (पु०) वासुकी या
शेष जी का नाम ।—प्रतिस्तर, (वि०) परिणया-
ङ्गुलीयक के लिये सर्प रखने वाला ।—भूपणाः,
(पु०) शिव जी का नाम ।—सारचन्दनः,
(पु०)—सारचन्दनम्, (न०) एक प्रकार के
चन्दन का काष्ठ ।—स्थानं, (पु०) पाताल, जहाँ
सर्प रहते हैं ।

उरंगः

उरङ्गः } (पु०) सर्प । साँप ।

उरंगमः

उरङ्गमः

उरगा (स्त्री०) एक नगरी का नाम ।

उरगाः (पु०) [स्त्री० —उरगी,] १ मेढ़ । मेघ ।
मेढ़ । २ एक दैत्य, जिसे इन्द्र ने मारा था ।

उरगाकः (पु०) १ मेघ । २ बादल ।

उरगी (स्त्री०) मेढ़ी । मेघी ।

उरग्नः (पु०) मेढ़ । मेघ ।

उररी (अव्यया०) स्वीकारोक्ति, प्रवेश और सम्मति
व्यञ्जक अव्यय ।

उरस् (पु०) (उरः) छाती । वक्षस्थल ।—क्षतं,
(न०) छाती का घाव ।—ग्रहः,—घातः, (पु०)
फेफड़े का रोग ।—हृदः,—घातं, (न०) छाती
के रक्त के लिये बर्म विशेष ।—जः,—भूः,—

उरसिजः,—उरसिहृदः, (पु०) स्त्रियों की छाती ।
—सूत्रिका, (स्त्री०) मोती का हार जो वक्षस्थल
पर पड़ा हो ।—स्थलं, (न०) छाती । वक्षस्थल

उरस्य (वि०) १ औरस सन्तान (पुत्र या कन्या) ।
२ वक्षस्थल का । ३ सर्वोत्कृष्ट ।

उरस्यः (पु०) पुत्र ।

उरस्वत् } (वि०) चौड़ी छाती वाला ।

उरसिल }

उरी (अव्यया०) देखो उररी ।

उर (वि०) [स्त्री० उर और उरर्वी] १
औंढा । लंबा चौड़ा । प्रशस्त । २ बढ़ा । लंबा ।
अधिक । अव्यधिक । विपुल । ३ बहुमुख्यवान ।

वेशकीमती ।—कीर्ति, (वि०) प्रसिद्ध ।
 सुपरिचित ।—कर्म, (पु०) विष्णु भगवान की
 उपाधि (वामनावतार की) —गाय, (वि०)
 महान लोगों से प्रशंसित ।—मार्ग, (पु०)
 लंबा मार्ग ।—विक्रम, (वि०) पराक्रमी ।
 बलवान ।—स्वन, (वि०) अतिउच्च स्वर ।
 गम्भीर स्वर । तार स्वर ।—हार, (पु०)
 मूल्यवान हार ।

उर्णनाभः (पु०) मकड़ी ।

उर्णा (स्त्री०) १ ऊन । नमदा । २ दोनों भौवों के
 बीच का केशमण्डल । देखो 'ऊर्णा' ।

उर्वटः (पु०) १ बछड़ा । २ वर्ष । [भूमि ।

उर्वरा (स्त्री०) १ उपजाऊ भूमि । २ (सामान्यतः)

उर्वशी (स्त्री०) १ विषम वासना । उरक अभिलाषा ।

२ स्वर्गवासिनी इन्द्र की एक प्रसिद्ध अप्सरा ।

—रमणाः,—सहायः,—वल्लभः, (पु०) पुरुरवा
 का नाम ।

उर्वारः (पु०) १ एक प्रकार की ककड़ी । २ खरबूजा ।

उर्वी (स्त्री०) १ भूमि । २ पृथिवी । ३ मैदान ।

—ईशः, ईश्वरः,—पतिः,—धवः, (पु०) राजा ।

—धरः, (पु०) १ पर्वत । २ शेषनाग ।—भूतः,

(पु०) १ राजा । २ पहाड़ ।—रुद्रः, (पु०)

वृद्ध । पेड़ ।

उलपः (पु०) १ बेल । लता । २ कोमल वृक्ष ।

उलूकः (पु०) १ उल्लू । घुघू । २ इन्द्र का नाम ।

उलूखलं (न०) उखरी ।

उलूखलकम् (न०) खल । इमामदस्ता ।

उलूखलिक (वि०) खल में कूटा हुआ ।

उलूतः (पु०) अजगर सर्प ।

उलूपी (स्त्री०) नागराज एक कुमारी का नाम, जो
 अर्जुन को व्याही थी और अर्जुन के औरस और
 उलूपी के गर्भ से बभ्रुवाहन नामक एक वीर उत्पन्न
 हुआ था, जिसने युधिष्ठिर के राजसूययज्ञ की
 दिग्विजय यात्रा में अर्जुन को परास्त किया था ।

उल्का (स्त्री०) १ प्रकाश । तेज । २ लुक । लुआठा ।

आकाश से टूट कर गिरा हुआ तारा । ३ मशाल ।

४ अग्नि । अंगारा । —धारिन्, (वि०) मशा-

लची । —पातः, (पु०) —मुखाः, (पु०)

एक राक्षस । एक दैत्य [लकड़ी ।

उल्लुषी (स्त्री०) १ राक्षसी । दानवी । २ अधजली

उल्ल्वं } (न०) १ गर्भपिण्ड । गर्भवासी कक्षा बच्चा ।

उल्ल्वं } २ भय । घोर । ३ गर्भाशय ।

उल्लव्या } (वि०) १ गाढ़ा । गांघ्रिदार । २ अधिक ।

उल्लव्या } विपुल । ३ दृढ़ । मज्जवृत्त । बड़ा । ४ प्रादु-

र्भत । प्रत्यक्ष ।

उल्लुकः (पु०) १ अधजली लकड़ी । २ मशाल ।

उल्लूधनम् (न०) १ लाँघना । डाँकना । २ अलि-

उल्लूङ्घनम् (न०) १ क्रमण । ३ विरुद्धाचरण ।

उल्लुल (वि०) १ हिलने डुलने वाला । २ बने वालों
 वाला ।

उल्लुसनम् (न०) १ हर्ष । आत्साद । २ रोमाञ्च ।

उल्लसित (व० कृ०) १ चमकीला । दमकदार ।

प्रभावान् । कान्तिवान् । २ प्रसन्न । आनन्दित ।

उल्लाघ (वि०) १ रोग से छुटा हुआ । रोग छुटने पर

किञ्चित् प्राप्त बल । २ निपुण । पटु । चालाक । ३

विशुद्ध । ४ हर्षित । प्रसन्न ।

उल्लापः (पु०) १ वाणी । शब्द । २ अपमानकारक

शब्द । आक्षेपयुक्त भाषण । आक्षेप । ३ तार स्वर

से पुकारना या बुलाना । ४ बीमारी या भावावेश

के कारण परिवर्तित कण्ठस्वर । ५ सङ्केत । इशारा

सूचना ।

उल्लाप्यम् (न०) एक प्रकार का नाटक ।

उल्लासः (पु०) १ हर्ष । आनन्द । २ चमक । आभा ।

दीप्ति । ३ एक अलङ्कार, जिसमें एक गुण या दोष

से दूसरे के गुण या दोष दिखलाये जाते हैं । इसके

चार भेद माने गये हैं । ४ ग्रन्थ का एक भाग ।

पर्व । काण्ड ।

उल्लासनम् (न०) दीप्ति । चमक । आभा ।

उल्लिङ्गित (वि०) प्रसिद्ध । प्रख्यात । मशहूर ।

परिचित । [हुआ ।

उल्लिङ्गः (वि०) चिकनाया हुआ । मला हुआ । रगड़ा

उल्लुचनम् (न०) १ तोड़ना । कटना । २ बाल को

खींचना या उखाड़ना ।

उल्लुगठनम् (न०) १ श्लेषवाक्य । व्यङ्ग्यवाक्य ।

उल्लुगठा (स्त्री०) १ व्यङ्ग्योक्ति । विपरीतार्थक

वाक्य ।

उल्लेखः (पु०) १ वर्णन । चर्चा । जिक्र । २ लिखना
लेख । ३ एक काव्यालङ्कार विशेष । इसमें एक ही
वस्तु का अनेक रूपों में दिखलाई पढ़ना वर्णन
किया जाता है । ४ खुरचना । छीलना । रगड़न ।

उल्लेखनं (न०) १ खुरचन । छीलन । रगड़ ।
२ खुदाई । ३ बमन । छर्दि । ४ वर्णन । चर्चा ।
५ लेख । चित्रण ।

उल्लोचः (पु०) राजछत्र । भण्डप । चन्द्रातप
चैदेवा । शामियाना ।

उल्लोचः (पु०) लहर । तरङ्ग । हिलोरा ।

उल्व } देखो "उल्व, उल्वण"
उल्वण }

उशनस् (पु०) शुक्र का नाम । शुक्र ग्रह का अधि-
ष्ठातृ देवता । वैदिक साहित्य में इनको कवि की
उपाधि है । इनके नाम से एक स्मृति भी है ।

उशी (स्त्री०) इच्छा । अभिलाषा ।

उशीरः (पु०)
उषीरः (पु०)
उशीरं, उषीरं (न०)
उशीरकम्, उषीरकम् (न०)

खस । गँबड़े की
जड़ । वीरनमूल ।

उष् (ध० पर०) [ओषति, ओषित—उषित—उष्ट]
१ जलना । भस्म होजाना । २ दण्ड देना । ३
मार डालना । धातल करना ।

उषः (पु०) १ प्रातःकाल । बड़ा सबेरा । २ कामी
पुरुष । ३ लुनिया भूमि ।

उषणम् (न०) १ काली मिर्च । २ अदरक । आदी ।

उषपः (पु०) १ अग्नि । २ सूर्य ।

उषस् (स्त्री०) १ तड़का । मुराहा । गजरदम । २
प्रातःकाल का प्रकाश । ३ प्रातः सायं सन्ध्याओं
की अधिष्ठात्री देवी ।—बुधः, (पु०) अग्नि ।

उषसी (स्त्री०) दिन का अवसान । सायंकाल ।

उषा (स्त्री०) तड़का । भोर । २ प्रातःकालीन प्रकाश ।
३ सुट पुटा । ४ लुनियाही भूमि । बटलोई । ५
बाणासुर की पुत्री का नाम ।—कालः, (पु०)
मुर्गा ।—पतिः,—रमणः,—ईशः, (पु०)
अनिन्द्य जी का नाम ।

उषित (वि०) १ बसा हुआ । २ जला हुआ ।

उष्टः (पु०) १ ऊँट । २ मैसा । ३ साँड़ । [स्त्री०—
उष्ट्री]

उष्ट्रिका (स्त्री०) १ उटनी । २ मिट्टी का बना ऊँट
की शकल का मदिरा पात्र ।

उष्ण (वि०) १ गरम । ताता । २ पैना । तीक्ष्ण ।
सख्त । क्रियाशील । ३ तासीर में गरम । ४ तेज़
चालाक । ५ हैजा सम्बन्धी ।

उष्णः (पु०) } १ गर्मी । ताप । गर्माई । २ ग्रीष्म-
उष्णम् (न०) } ऋतु । ३ सूर्याताप । बाम ।

(पु०) पियाज ।—अंशुः,—करः,—गुः,—
दीधितिः,—रश्मिः,—रुचिः, (पु०) सूर्य ।
—अभिगमः,—आगमः,—उपगमः, (पु०)
ग्रीष्मऋतु ।—उदकं, (न०) गर्मजल । ताता
पानी ।—कालः,—गः, (वि०) ग्रीष्मऋतु ।—
वाष्पः, (पु०) १ आँसू । २ गर्म भाफ ।—
वारणः, (पु०)—वारणम्, (न०) छाता । छत्र ।

उष्णाक (वि०) १ तीक्ष्ण । चालाक । क्रियाशील ।
२ उवर पीड़ित । पीड़ित । ३ गर्माना । गर्म करना ।

उष्णाकः (पु०) १ उवर । २ ग्रीष्मऋतु गर्मी का
मौसम । [से व्याकुल । बसाया हुआ ।

उष्णालु (वि०) गर्मी को सह सकने वाला । गर्मी

उष्णिका (स्त्री०) भात की माँड़ी ।

उष्णिमन् (पु०) गर्मी ।

उष्णीषः (पु०) } १ फेंटा । साफा । २ पगडो ।

उष्णीषम् (न०) } मुकुट । ३ पहचान का चिन्ह ।

उष्णीषिन् (वि०) मुकुटधारी । (पु०) शिव जी
का नाम ।

उष्मः } (पु०) १ गर्मी । २ ग्रीष्मऋतु । ३

उष्मकः } क्रोध । स्वभाव की गर्माई । गरम मिजाज़ ।

४ उत्सुकता । उत्कण्ठा ।—अन्वित, (वि०)

क्रुद्ध । क्रोध में भरा ।—भास्, (पु०) सूर्य ।

—स्वेदः, (पु०) वफारा । भाफ से स्नान ।

उष्मन् (पु०) १ गर्मी । गर्माहट । २ भाफ । वाष्प ।

३ ग्रीष्मऋतु । ४ उत्सुकता । उत्कण्ठा । ५ श,

घ, स और इ ये अक्षर व्याकरण में उष्मन् माने

गये हैं ।

उस्तः (पु०) १ किरन । २ साँड़ २ देवता ।

उस्त्रा } (स्त्री०) १ प्रातःकाल । भोर । तड़का । २.

उस्त्रिः } प्रकाश । ३ गौ ।—कः, (उस्त्रिकः,)

(पु०) नाटा बैल ।

उह् (धा० पर०) [ओहति, उहित] १ पीड़ित करना । धातु करना । २ नाश करना ।

उह् } (अव्यया०) बुलाने में प्रयोग किया जाने
उहह् } वाला अव्यय ।
उहः (पु०) साँड़ ।

ऊ

ऊ संस्कृत या नागरी वर्णमाला का द्वां अक्षर । उच्चारण स्थान ओठ है । दो मात्राओं से दीर्घ और तीन मात्राओं से यह प्रयत्न होता है । अनुनासिक-भेद से इसके भी दो दो भेद हैं ।

ऊः (पु०) १ शिव जी का नाम । २ चन्द्रमा । (अव्यया०) १ आरम्भ-सूचक अव्यय । २ आह्वान, अनुकंपा और रक्षण या रक्षा व्यञ्जक अव्यय विशेष ।

ऊढ (वि०) १ ढोया गया । ढोकर ले जाया गया । २ लिया गया । ३ विवाहित । विवाह किया हुआ ।

ऊढः (पु०) विवाहित पुरुष । व्याहा हुआ पुरुष ।

ऊढा (स्त्री०) लड़की जिसका विवाह हो चुका हो ।

ऊढिः (स्त्री०) विवाह । परिणय । शादी ।

ऊढिः (स्त्री०) १ बुनना । सीना । २ रचा । संरक्षण । ३ भोगविलास । ४ क्रीड़ा । खेल ।

ऊधस् (न०) गौ का या भैस का ऐन । वह धैली जिसमें दूध भरा रहता है ।

ऊधन्यं (न०) } दूध । क्षीर ।
ऊधस्यं (न०) }

ऊन (वि०) १ कम । न्यून । २ अधूरा । अपर्याप्त । ३ (संख्या, आकार या श्रेणी में) कम । ४ निर्बल । अपकृष्ट । घटिया । ५ हीन ।

ऊम् (अव्यया०) प्रश्न, क्रोध, भर्त्सना, गर्व, ईर्ष्या व्यञ्जक अव्यय विशेष ।

ऊय् (धा० आत्म०) [ऊयते, ऊत] बुनना । सीना । ऊररी देखो 'उररी' ।

ऊरव्यः (पु०) [स्त्री०—ऊरव्या] वैश्य, जिसकी उत्पत्ति वेद में ब्रह्म की जँघा से बतलायी गयी है ।

ऊरुः (पु०) १ जाँघ । जंघा ।—अष्टीर्धं (न०) जाँघ और घुटना ।—उद्भव, (वि०) जंघा से निकला या उत्पन्न हुआ । —ज, —जन्मन, —सम्भव, (वि०) जंघा से निकला हुआ ।

(पु०) वैश्य । —दक्ष, —द्वयस, —मात्र, (वि०) घुटने तक या घुटने तक ऊँचा । घुटने के बराबर गहरा । —पर्वन्, (पु० न०) घुटना । —फलकम् (न०) जाँघ की हड्डी । १ ट्ठा या कूल्हे की हड्डी ।

ऊररी देखो "उररी" । [पदार्थ ।

ऊर्ज (स्त्री०) १ शक्ति । बल । २ रस । ३ भोज्य । ऊर्जः (स्त्री०) १ कार्तिक मास का नाम । २ स्फूर्ति । शक्ति । ३ बल । ताकत । ४ उत्पन्न करने की शक्ति । ५ जीवन । स्वांस ।

ऊर्जस् (न०) १ बल । शक्ति । २ भोजन ।

ऊर्जस्वत् (वि०) १ रसीला । जिसमें भोज्य पदार्थ का अंश अत्यधिक हो । २ शक्तिशाली । बलवान् ।

ऊर्जस्वल (वि०) बड़ा । बलवान् । मज्जवृत् । शक्तिशाली ।

ऊर्जस्विन् (वि०) शक्तिवान् । दृढ़ । विशाल ।

ऊर्जा (स्त्री०) १ भोजन । २ शक्ति । ३ ताकत । बल । ४ बढ़ती या वृद्धि ।

ऊर्जित (वि०) १ बलवान् । मज्जवृत् । शक्तिसम्पन्न । २ प्रसिद्ध । उत्कृष्ट । श्रेष्ठ । सुन्दर । ३ उदात्त । कुलीन । सतेज । तेजस्वी । ज्ञिन्दादिल । [कुर्त्ती ।

ऊर्जितम् (न०) १ शक्ति । बलवृत्ता । २ पौरुष ।

ऊर्णम् (न०) १ ऊन । २ ऊनी कपड़ा । —नाभः, —पटः, —नाभिः, (पु०) मकड़ी । —अद्, —दस् (वि०) ऊन की तरह कोमल ।

ऊर्णा (स्त्री०) १ ऊन । परम । २ भौओं के मध्य का केशमण्डल । —पिण्डः, (पु०) ऊन का गोला या पिंडी ।

ऊर्णायु (वि०) ऊनी । [कंबल ।

ऊर्णायुः (पु०) १ मेष । मेढ़ा । २ मकड़ी । ३ ऊनी ।

ऊर्णु (ध० उभय०) [ऊर्णोति-ऊर्णोति, ऊर्णित] ढकना । घेरना । घुमाना ।

१ (वि०) १ सतर । सीधा । ऊपर का । २ उठा हुआ । उभड़ा हुआ । सीधा खड़ा हुआ । ३ ऊँच । उच्छ्र । उच्चतर । ४ खड़ा हुआ (बैठे हुए का उल्टा) ५ दूटा हुआ । —कच, —केण, (वि०) २ खड़े बालों वाला । —कचः, (पु०) केतु का नाम । —कर्मन्, (न०) —क्रिया, (स्त्री०) ऊपर की ओर की गति । २ उच्चा स्थान प्राप्त करने के लिये किया गया कर्म । (पु०) विष्णु का नाम । कायः, (पु०) —कायम्, (न०) शरीर का ऊपर का भाग । —ग, —गामिन्, (वि०) ऊपर गमन । चढ़ना । ऊँचा उठना । —गति, (वि०) ऊपर गमन । —गतिः, (स्त्री०) —गमः, —गमनं, (न०) १ चढ़ाई । ऊँचा । २ स्वर्ग गमन । —चरण, —पाद, (वि०) शरभ । —जानु, —जू, —जु । (वि०) ऊपर बैठा हुआ । घुटनों के बल बैठा हुआ । —दृष्टि, —नेत्र, (वि०) ऊपर देखने वाला । (अलं०) उच्चाभिलाषी । —दृष्टिः, (स्त्री०) योगदर्शन के अनुसार दृष्टि को भौत्यों के मध्य भाग में ठिकाने की क्रिया । —देहः, (पु०) मृतक कर्म । —पातनम्, (न०) (जैसे पारे का) शोधना । परिष्कार । —पात्रम्, (न०) यज्ञीयपात्र । —मुख, (वि०) ऊपर को मुख किये हुए । —मौहूर्तिक, (वि०) कुछ देर बाद होने वाला । —रेतस्, (वि०) अपने वीर्य को कभी न गिराने वाला । स्त्री सम्भोग कभी न करने वाला । (पु०) १ शिव । २ भीष्म । —लोकः, (पु०) ऊपर का लोक । स्वर्ग । —वर्त्मन्, (पु०) अन्तरिक्ष । —वातः, —वायुः, (पु०) शरीर के ऊपरी भाग में रहने वाला पवन । —शायिन्, (वि०) चित्त सोने वाला । (पु०) शिव का नाम । —शोधनम्, (न०) वसन करने की क्रिया । —श्वासः, (पु०) मृत्यु को प्राप्त होना । —स्थितिः, (स्त्री०) १ छोड़ा पालना । २ छोड़े की पीठ । ३ उन्नयन । सर्वोत्कृष्टता ।

ईम् (न०) उचान । उचाई । (अव्यया०) १ ऊपर की ओर । २ अन्त में । ३ तार स्वर में । ४ पीछे से । बाद को ।

ऊर्मिः (पु० स्त्री०) १ लहर । तरङ्ग । २ धार । प्रवाह । ३ प्रकाश । ४ गति । गति की हुतता । ५ तह या किसी सिले कपड़े की प्लेट । पंक्ति । अवली रेखा । ७ दुःख । बेचैनी । चिन्ता । —मालिन्, तरंगमालाओं से विभूषित (पु०) समुद्र । ऊर्मिका (स्त्री०) १ तरङ्ग । २ अँगूठी । ३ खेद । शोक (जो किसी वस्तु के खोने से उत्पन्न हो) । ४ शहद की मक्खी या भौरों का गुंजार । ५ तह या प्लेट किसी सिले हुए वस्त्र की ।

ऊर्व (वि०) विस्तृत । विशाल ।

ऊर्वः (पु०) बड़वानल ।

ऊर्वरा (स्त्री०) उपजाऊ भूमि ।

ऊर्लुपिन् (न०) संस । शिशुमार ।

ऊष् (धा० पर०) [उपति, ऊषित] रोगी होना । गड़बड़ होना । बीमार होना ।

ऊषः (पु०) १ लुनही ज़मीन । २ चार । ३ दरार । झिरी । सन्धि । ४ कान के भीतर का पोला भाग । ५ मलयगिरि । ६ प्रातःकाल । प्रभात ।

ऊषकम् (न०) प्रभात । तड़का । भोर ।

ऊषणम् (न०) १ काली मिर्च । २ अदरक ।

ऊषणा (स्त्री०) १ आदी ।

ऊषर (वि०) निमक या लोना मिला हुआ ।

ऊषरः (पु०) } ऊसर भूखण्ड जो लुनहा हो ।
ऊषरम् (न०) }

ऊषवत् देखो “ऊपर ।”

ऊष्मः (पु०) १ गर्मी । २ ग्रीष्मऋतु ।

ऊष्मण } (वि०) गर्म ।
ऊष्मणय }

ऊष्मन् (पु०) १ गर्मी । क्रोध । २ ग्रीष्मऋतु । ३ भाफ । वाष्पोद्गम । (मुँह से) भाफ निकालना । ४ उत्पाप । क्रोध । अत्यासक्ति । उग्रता । ज्वरदस्ती । ५ श, घ, स् और ह् । —उपगमः, (पु०) ग्रीष्मऋतु का आगमन । —पः, (पु०) १ अग्नि । २ पितृगण विशेष ।

ऊह् (धा० उभय०) [ऊहति उहते, ऊहित] १ टीपना । चिन्हित करना । आलोचना करना । २ अनुमान करना । अटकल

लगाना । ३ समझना । जानना । पहचानना ।
आशा करना । ४ बहस करना । विचार करना ।
ऊहः (पु०) १ अनुमान । अटकल । २ परीक्षण और
निश्चय करण । ३ समझ । ४ युक्ति । युक्ति-
प्रदर्शन । ५ छूट को पूरा करने वाला । त्रुटिपूरक ।
—अपोहः, (=ऊहापोहः,) तर्क वितर्क । सोच
विचार ।

ऊहनम् (न०) अनुमान । अटकल ।
ऊहनी (स्त्री०) भाइ । बुहारी ।
ऊहवत् (वि०) बुद्धिमान । तीव्र । [करना ।
ऊहा (स्त्री०) अध्याहार । वाक्य में त्रुटि को पूरा
ऊहिन् (वि०) कौन और क्या की बहस कर अटकल
लगाने वाला । [फैज ।
ऊहिनी (स्त्री०) १ समूह । समुदाय । २ सेना ।

ऋ

ऋ संस्कृत या नागरी वर्णमाला का सातवाँ वर्ण : यह
भी एक स्वर है और इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा
है । ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत के अनुसार इसके तीन
भेद हैं । इन भेदों में भी उदात्त, अनुदात्त और
प्लुत के अनुसार प्रत्येक के तीन भेद हैं । फिर इन
नों भेदों में भी प्रत्येक के अनुनासिक और
निरनुनासिक दो दो भेद हैं । इस प्रकार सब मिला
कर ऋ के अठारह भेद हैं ।

ऋ (अव्यय०) आह्वान, उपहास और निन्दान्वयक
अव्यय विशेष ।

ऋ (धा० पर०) [ऋच्छति, ऋत्] १ जाना ।
२ हिलाना । ३ प्राप्त करना, पहुँचना । मिलना ।
४ उत्तेजित करना । (परस्मै०) [ऋणोति, ऋण्य]
१ धायल करना । २ आक्रमण करना । (निजन्त)
[अर्पयति, अर्पित] १ फैकना । जड़ता । रोपना ।
२ रखना । लगाना । टकटकी बांधना । ३ वेना ।
४ हवाले करना । सौंपना ।

ऋ (स्त्री०) १ देवमाता । अदिति । २ निन्दा । बुराई ।
ऋक् (स्त्री०) १ ऋचा । वेदमंत्र । २ ऋग्वेद ।
ऋक्णा (वि०) लायल । चोटिल । चुटीला ।

ऋकथं (न०) १ सम्पत्ति । २ विशेषकर मरने पर
छोड़ी हुई सम्पत्ति । सामान । ३ सुवर्ण । सेना ।
—ग्रहणम्, (न०) सम्पत्ति का प्राप्त करना । —
ग्राहः (पु०) वारिस । उत्तराधिकारी । — भागः,
१ बटवारा । हिस्सा । बाँट । २ हिस्सा । भाग ।
पैतृक सम्पत्ति । —भागिन्, —हर, —हारिन्
(पु०) १ उत्तराधिकारी । २ अन्यतम उत्तराधि-
कारी ।

ऋत् (वि०) गंजा ।

ऋत्तः (पु०) १ रीछ । भालू । २ एक पर्वत का नाम ।
(न० पु०) १ नक्षत्र । तारा । राशि । २ राशिचक्र
की एक राशि । —चक्रं, (न०) राशिचक्र ।
नाथः, — ईशः, (पु०) चन्द्रमा । —नेमिः,
(पु०) विष्णु का नाम । —राज्, —राजः,
(पु०) १ चन्द्रमा । २ जम्बुवत । जाम्बवान ।
रीछों के राजा । —हरीश्वरः, (पु०) रीछों और
लंगूरों के राजा ।

ऋत्ता (पु० बहुवचन) सप्तर्षि के सात तारे ।

ऋत्ताः (स्त्री०) उत्तर दिशा ।

ऋत्तीः (स्त्री०) मादा भालू ।

ऋत्तरः (पु०) १ ऋत्विज । २ कौट । [पर्वत ।
ऋत्तवत् (पु०) नरमदा नदी का समीपवर्ती एक
ऋच् (धा० परस्मै०) [ऋचति] १ प्रशंसा करना ।
२ ठकना । पर्दा डालना । ३ प्रकाशित होना ।
चमकना ।

ऋच् (स्त्री०) १ ऋचा । २ ऋग्वेद की ऋचा । ३
ऋग्वेद । ४ चमक । दमक । ५ प्रशंसा । ६ पूजन ।
—विधानं, (न०) कतिपय वैदिक कर्मों का
विधान, जो ऋग्वेद के मंत्रों को पढ़ कर किये जाते
हैं । —वेदः, (पु०) ऋग्वेद । —संहिता, (स्त्री०)
ऋग्वेद । [के पिता थे ।

ऋत्तिकः (पु०) ऋग्वंशीय एक ऋषि । यह जमदग्नि
ऋत्वीषः (पु०) नरक । [की सीढ़ी । ३ सीढ़ी ।

ऋत्वीषम् (न०) १ कढ़ाही । तसला । २ सोमलता

ऋच्छ (धा० पर०) [ऋच्छति] १ कड़ा होना ।
संभत होना । २ जाना । ३ समता ऋ न रहना ।

अच्छुका (स्त्री०) इच्छा । कामना ।

अज्ज (धा० आत्म०) [अजंते, अजित] १ जाना ।

२ प्राप्त करना । पाना । ३ खड़े रहना या दृढ़ होना । ४ स्वस्थ होना या मजबूत होना । ५ उपाजैन करना ।

अजीष देखो अजीष ।

अजु } (वि०) [स्त्री०—अजु, या अजुवी] १

अजुक } सीधा । २ ईमानदार । सच्चा । ३ अनुकूल । नेक । ४ सरल । सहज ।—गः, (पु०) १ व्यवहार में ईमानदार या सच्चा । २ तीर । बाण ।—रोहितं, (न०) इन्द्र का लाल और सीधा धनुष । [विशेष ।

अजुवी (स्त्री०) १ ईमानदार स्त्री । २ नक्षत्रपथ

अजुणं (न०) १ कर्ज । उधार । २ दुर्ग । किला । ३ जल । ४ भूमि । ५ देव, अग्नि और पितरों के उद्देश्य से किया हुआ यथाक्रम यज्ञ । ६ वेदाध्ययन और सन्तानोत्पत्ति नामक आवश्यक कर्तव्य कर्म ।—अन्तकः, (पु०) मङ्गल ग्रह ।—अप-नयनम्,—अपनोदनं,—अपाकरणम्,—दानं, (न०)—मुक्तिः,—मोक्षः, (पु०)—शोधनम् (वि०) कर्ज की अदायगी । श्रृणुशोध । कर्ज चुकाना ।—आदानं, (न०) अजुण में दिये हुए रुपयों का वापिस मिलना ।—अजुणं, (अजुणार्ण) कर्ज के ऊपर कर्ज । एक कर्ज चुकाने को जो दूसरा कर्ज काड़ा जाय ।—ग्रहः, (पु०) १ कर्ज लेना । २ कर्ज लेने वाला ।—दातृ,—दायिन्, (वि०) कर्ज देने वाला ।—दासः, (पु०) कर्ज चुका देने के बदले कर्ज चुकाने वाले का बना हुआ दास ।—प्रत्कुणः,—मार्गणः, (पु०) जमानत ।—मुक्तः, (वि०) कर्ज से छुटकारा पाया हुआ ।—मुक्तिः, (स्त्री०) कर्ज से छुटकारा पाना ।—लेख्यं, (न०) दस्तावेज । दीप ।

अजिकः (पु०) कर्जदार ।

अजिन् (वि०) कर्जदार । अजी ।

अजत (वि०) १ उचित । ठीक । २ ईमानदार ।

सच्चा । २ पूजित । सम्मानित ।—धामन,

(वि०) सच्चा या पवित्र स्वभाव वाला । (पु०)

विष्णु भगवान का नाम ।

अजुतपराः (पु०) अयोध्या के एक राजा, जो राजा नल के मित्र थे और पाँसा खेलने में बड़े निपुण थे ।

अजुतपेयः (पु०) एकाह यज्ञ जो छोटे छोटे पायों को नष्ट करने के लिये किया जाता है ।

अजुतम् (अव्यया०) ठीक रीति से । ठीक तौर पर ।

अजुतम् (न०) १ निश्चित नियम या आईन । २

धार्मिक प्रथा । यज्ञ । ३ अलौकिक नियम । अलौकिक सत्य । ४ जल । ५ सत्य । जो कायिक वाचिक एवं मानसिक हो । ६ उच्छ्वृत्ति । ब्राह्मण की उपजीव्य वृत्ति । ७ कर्म का फल ।

अजुतभरा (स्त्री०) योगशास्त्रानुसार सत्य को धारण और पुष्ट करने वाली चित्तवृत्ति विशेष ।

अजुतिः (स्त्री०) १ गति । २ स्पर्धा । ३ निन्दा । ४ मार्ग । ५ मङ्गल । कल्याण ।

अजुलीया (स्त्री०) विकार । भर्त्सना ।

अजुलुः (पु०) १ मौसम । वसन्तादि छः ऋतुणं । २

शब्द-प्रवर्तक-काल । ३ रजोदर्शन । ४ रजोदर्शन के उपरान्त का समय जो गर्भाधान के लिये उपयुक्त काल है । ५ उपयुक्त या ठीक समय । ६ प्रकाश । चमक । ७ छः की संख्या का सङ्केत ।—कालः,—समयः, (पु०)—वेला, (स्त्री०) रजोदर्शन के पीछे १६ रात्रि पर्यन्त गर्भाधान का उपयुक्त काल । ऋतु-मौसम का अवधि काल ।

—गणः, (पु०) ऋतुओं का समुदाय ।

—गामिन्, (वि०) ऋतुकाल में स्त्री के पाल जाने वाला ।—पर्णः, (पु०) अयोध्या के

इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम ।—पर्यायः,—

वृत्तिः, (पु०) मौसम का आना जाना ।—मुखं,

(न०) किसी ऋतु का प्रथम दिवस ।—राजः,

(पु०) ऋतुओं का राजा अर्थात् वसन्त ।—

लिङ्गम्, (न०) १ ऋतुओं का मिलान ।—

सन्धिः, (स्त्री०) वह स्त्री जो रजोदर्शन होने

के बाद स्नान कर चुकी हो और सम्भोग के योग्य

हो गई हो ।—स्नाता (स्त्री०) रजोदर्शन के

बाद का स्नान । [पुष्पवती ।

अजुतमती (स्त्री०) रजस्वला । मासिक धर्मयुक्ता ।

अजुते (अव्यया०) विना । सिवाय ।

अजुतेजा (पु०) नियमानुकूल रहना ।

अन्तरिक्षम् (न०) भूत प्रेतों का भगाना ।

अन्तोक्ति (स्त्री०) सत्य वचन ।

अन्तः (पु०) १ अन्तु का अन्त । २ स्त्री के रजो दर्शन से १६ वीं रात्रि ।

अन्विज् (पु०) यज्ञ करने वाला । साधारणतया प्रत्येक यज्ञ में चार अन्विज् हुआ करते हैं । अर्थात् होतृ, उदातृ, अध्वर्यु, ब्रह्मन् । किन्तु बड़े यज्ञ में इनकी संख्या १६ होती है ।

अन्विय (वि०) १ नियमानुसार । निरन्तर । अन्विक कर्म का ज्ञाता । २ सम्पन्न ।

अद् (व० कृ०) १ समृद्धशाली । सम्पत्तिशाली । २ वर्धमान । बढ़ने वाला । ३ जना किया हुआ ।

अद्भ्यः (पु०) विष्णु भगवान का नाम ।

अद्भ्यम् (न०) १ बढ़ती । २ प्रत्यक्षी भूत प्रणाम । सिद्धान्त ।

अद्भिः (स्त्री०) १ बढ़ती । वृद्धि । २ सफलता । समृद्धि । धनदौलत । ३ परिमाण । ४ अलौकिक शक्ति । ५ पूर्णता ।

अद्भ्य (धा० पर०) [अद्भ्यति, रिध्नोति, अद्भ्य] १ फलना फूलना । सफल मनोरथ होना । २ बढ़ना । बढ़ती होना । ३ सन्तुष्ट करना । प्रसन्न करना ।

अद्भ्यक (क्रि०) १ देना । २ मारना । ३ निन्दा करना । ४ लड़ना ।

अद्भ्युः (पु०) १ देव । देवता । स्वर्ग में उत्पन्न । अदित से उत्पन्न ।

अद्भ्युक्तः (पु०) १ इन्द्र का नाम । २ स्वर्ग । ३ वज्र ।

अद्भ्युक्ति (पु०) इन्द्र का नाम ।

अद्भ्यन् (वि०) पटु । दक्ष । निपुण ।

अद्भ्यन्तक (पु०) बाद्ययंत्र या बाजा बजाने वाला ।

अद्भ्यः (पु०) सफेद पैरों का बारहसिंघा ।

अद्भ्यम् (न०) वध । हत्या ।

अद्भ्यकेतुः } (पु०) १ प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध का
अद्भ्यकेतनः } नाम । २ कामदेव का नाम ।

अद्भ्य (धा० पर०) [अद्भ्यति, अद्भ्य] १ जाना समीप जाना । २ मार डालना । (अर्धनि) १ यहना । २ फिसलना ।

अद्भ्यमः (पु०) १ साँड़ । २ सर्वोत्कृष्ट । सर्वोत्तम । (जैसे पुरुषर्षभः) ३ संगीत के सप्तस्वरों में से दूसरा । ४ सुधर की पूँछ । ५ मगर की पूँछ । ६ जैनियों के मान्य अवतार विशेष ।—कूटः, (पु०) पर्वत विशेष ।—ध्वजः, (पु०) शिव जी का नाम ।

अद्भ्यमी (स्त्री०) १ स्त्री जो पुरुष के रूप रंग की हो । २ गौ । ३ विधवा स्त्री ।

अद्भ्यिः (पु०) १ वैदिक-संज्ञ-वृष्टा । २ अनुष्ठानादि । कर्म वस्तुतः वाले सूत्रों के रचयिता । गोत्र, प्रवर, प्रदत्तक । ३ प्रकाश की किरण । ४ मत्स्य-विशेष ।—कुल्या, (स्त्री०) एक नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत के तीर्थयात्रा पर्व में है ।—तर्पणं, (न०) ऋषियों की वृत्ति के लिये जलदान विशेष ।—पञ्चमी, (स्त्री०) भाद्रमास की शुक्ला ५ मी ।—लोकः, (पु०) ऋषियों का लोक ।—स्तोमः, (पु०) १ ऋषियों की प्रशंसा । २ यज्ञ विशेष जो एक ही दिन में पूरा होता है ।

अद्भ्युः (पु०) १ गर्मी । २ अँगारा । शोला ।

अद्भ्यिः (पु० स्त्री०) १ दुधारा खाँड़ा । २ तलवार । ३ भाला बर्छी आदि कोई सा हथियार ।

अद्भ्य (पु०) मृगभेद ।—अद्भ्यः,—केतनः,—केतुः, (पु०) अनिरुद्ध का नाम ।—मूकः, (पु०) पर्वत विशेष जो पंजाबरोवर के निकट है ।—

अद्भ्यः, (पु०) विभाण्डक ऋषि के पुत्र का नाम ।

अद्भ्यकः (पु०) चित्रित या सफेद पैरों वाला हिरन ।

अद्भ्य (वि०) बढ़ा । ऊँचा । अच्छा । देखने योग्य (पु०) इन्द्र और अग्नि का नाम ।

ॐ

१ संस्कृत या नागरी वर्णमाला का आठवाँ वर्ण ।
इसका उच्चारणस्थान नुद्वी है ।
२ (अव्यया०) मय, बनाव या रोक, भर्त्सना, विकार,
अनुकम्पा अथवा स्मृतिव्यञ्जक अव्यय विशेष ।

ॐ (पु०) १ भैरव का नाम । २ एक दानव या दैत्य
का नाम ।

ॐ (घ० पर०) [ॐणाति ईण] जाना ।
हिलना ।

लृ

लृ

नोट:—वर्णमाला में लृ, और लृ, भी हैं, किन्तु इनसे कोई शब्द आरम्भ नहीं होता ।

ए

१ संस्कृत वर्णमाला का नववाँ वर्ण । शिक्षा में इसे
सन्व्यन्तर माना है । इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ
और तालु हैं । संस्कृत में मात्रादुसार इसके दीर्घ
और प्लुत दो ही भेद हैं ।

२ (पु०) विष्णु का नाम । (अव्यया०) स्मरण, ईर्ष्या,
दया, आह्वान, तिरस्कार अथवा धिक्कार बोधक
अव्यय विशेष ।

एक (सर्वनाम० वि०) १ एक । इकहरा । अकेला ।
केवल । २ जिसके साथ अन्य कोई न हो । ३
वही । उसी जैसा । समान । ४ इद । अपरिवर्तित ।
५ अद्वितीय । ६ मुख्य । प्रधान । एकमेव । ७
केलौड़ । ८ बहुतां में या दो में से एक ।—अक्ष,
(वि०) १ एक छुरी वाला । २ काना ।—अक्षः,
(पु०) १ काक । २ शिवजी का नाम ।—अक्षर,
(वि०) एक अक्षर का ।—अक्षरं, (न०)
अक्षर ।—अक्ष, (वि०) १ एक ही ओर ध्यान
लगाये हुए । २ ध्यानावस्थित । ३ अवज्ञात ।
—अक्षयं १ (न०) ध्यानावस्थित ।—अक्षु, (पु०)
शरीररक्षक । १ बुद्ध या मङ्गल ग्रह ।—अनुदिष्टं,
(न०) एक पितृ के उद्देश्य से किया हुआ मृत
कर्म (श्राद्ध) ।—अन्त, (वि०) १ सुनसान ।
२ एक ओर । अलहदा । पृथक् । ३ एक ओर
ध्यान लगाये हुए । ४ अत्यधिक । विशाल । ५
नितान्त । निपट । निसन्देह । निरन्तर ।—अन्तः
(पु०) सुनसान स्थान ।—अन्तं,—अन्तेन,—
अन्ततः,—अन्ते (अव्यया०) १ अकेला । विशाल ।
नित्य । सदैव । २ अधिकता से । नितान्त । समूचा ।
—अन्तिक, (वि०) अन्तिस ।—अयन, (वि०)

ऐसा रास्ता जिस पर केवल एक ही चलने की पग-
झण्डी हो ।—अयनम्, (न०) १ एकाग्रचित्त । २
निरालास्थान । ३ अड्डा । मिलने की जगह । ४
एकेश्वरवाद ।—अर्थः, (पु०) १ एक ही वस्तु । २
एक ही अर्थ । समान अर्थ ।—अहन्,—अहः,
(पु०) १ एक दिन की न्याय । २ एक ही दिन में पूरा
होने वाला अथ ।—आतपत्र (वि०) एकहज्रराज्य ।
(साम्राज्य सूचक चिन्ह) एकहज्र ।—आदेशः
दो या अधिक अक्षरों के स्थान पर एक अक्षर का
प्रयोग ।—आवलिः,—आवली, (स्त्री०) १ इक-
हरी मोती की माला । २ कान्यालङ्कार विशेष ।—
उदकः (पु०) सम्बन्धी । सगीत्री ।—उदः, (पु०)
—उदरः, (स्त्री०) सगा । भाई । सगी । बहिन ।—
उद्दिष्टम्, एकोद्दिष्टम् (न०) एक के उद्देश्य से किया
हुआ श्राद्ध (वार्षिक श्राद्ध) ।—ऊन, (वि०) एक कम ।
—एक, (वि०) एक एक करके ।—एकं (न०)
—एकैकः (अव्यया०) एक एक करके । अलग
अलग ।—एकः, (पु०) अविच्छिन्न प्रवाह ।
—कर, (वि०) एक ही काम करने वाला ।
—करा (वि०) १ एक हाथ वाला । २ एक
करिन वाला ।—कार्यं, (वि०) मिल कर काम
करने वाला । सहयोगी ।—कार्यम्, (न०) एक
ही काम । एक ही व्यवसाय ।—कालः, (पु०)
एक समय । एक ही समय ।—कालिक,—
कालीन, (वि०) १ एक ही बार होने वाला । २
सहयोगी । समवयस्क ।—कुण्डलः, (पु०) १
कुबेर का नाम । २ बलभद्र जी का नाम । ३ शेष
जी का नाम ।—गुरु,—गुरुक, (वि०) एक ही

गुरु वाले ।—गुरुः,—गुरुकः (पु०) गुरुभाई ।
 —चक्र, (वि०) एकपहिया वाला ।—चक्रः
 (पु०) सूर्य का रथ ।—चत्वारिंशत् (स्त्री०)
 ४१ । इकतीस ।—चर (वि०) १ अकेला
 घूमने या रहने वाला । २ वह जिसके पास एक ही
 चाकर हो । ३ बिना सहायता लिखे रहने वाला ।
 —चारिन् (वि०) अकेला ।—चारिणी, (स्त्री०)
 पतिव्रता स्त्री ।—चित्त, (वि०) केवल एक ही
 बात को सोचने वाला ।—चित्तं, (न०)
 एकमत्व । एकराग्य ।—चेतस्,—मनस्, (वि०)
 सर्वसम्मत ।—जन्मन्, (पु०) १ राजा । २
 शूद्र ।—जात, (वि०) एक ही माता पिता,
 से उत्पन्न ।—जातिः, (स्त्री०) शूद्र ।—जातीय,
 (वि०) एक ही वंश या कुल का ।—ज्योतिस्,
 (पु०) शिव जी का नाम ।—तान, (वि०)
 अत्यन्त दत्तचित्त ।—तालः, (पु०) ऐक्य । सम-
 स्वर । गान, नृत्य और वाद्य की सङ्गति । तौर्यत्रिक
 —तीर्थिन्, (वि०) एक ही तीर्थ में स्नान
 करने वाले । एक ही सम्प्रदायके । (पु०) सहपाठी ।
 गुरुभाई ।—त्रिंशत्, (स्त्री०) ३१ । इकतीस ।
 —दंष्ट्रः,—दन्तः, (पु०) एक दाँत वाला अर्थात्
 गणेश जी ।—दण्डिन्, (पु०) संन्यासी या
 भिक्षुक विशेष । [हारीतस्मृति में इनके चार भेद
 बतलाये गये हैं । १ कुटीचक, २ बहुदक, ३ हंस
 और ४ परमहंस । इनमें उत्तरोत्तर श्रेष्ठतर माने
 गये हैं ।]—दृश्,—दृष्टिः, (पु०) १ काना काक ।
 २ शिव जी । ३ दार्शनिक ।—देवः, (पु०)
 परब्रह्म ।—देशः, (पु०) १ एक स्थान या जगह ।
 २ एक भाग या अंश । एक तरफ ।—धर्मन्,—
 धर्मिन्, (वि०) एक ही प्रकार के । एक ही वस्तु
 के बने हुए । एक सम्प्रदाय वाले ।—धुर,—
 धुरावह,—धुरीण, (वि०) १ केवल एक ही
 काम करने योग्य । २ एक ही जुए में जोते जाने
 योग्य ।—नटः, (पु०) किसी अभिनय का मुख्य
 पात्र । सूत्रधार ।—नवतिः, (स्त्री०) ९१ । इक्या-
 नवे ।—पक्षः, (पु०) एक दल । एक ओर ।
 —पत्नी, (स्त्री०) १ सच्ची पत्नी । पतिव्रता पत्नी ।
 २ सौत ।—पद्मी, (स्त्री०) पगड़बी ।—पदे,

(अव्यया०) सहसा । अचानक ।—पाद्ः,
 (पु०) एक पैर । विष्णु और शिव जी का
 नाम ।—पिङ्गः,—पिङ्गलः, (पु०) कुबेर
 का नाम ।—पिण्डः, (वि०) सपिण्ड ।—
 भार्या, (स्त्री०) पतिव्रता स्त्री ।—भार्यः,
 (पु०) केवल एक पत्नी रखने वाला ।—भाव,
 (वि०) सच्चा भक्त । ईमानदार ।—यष्टिः, (पु०)
 —यष्टिका, (स्त्री०) इकलस्रा मांतीहार ।—योनि,
 (वि०) गर्भाशय सम्बन्धी एक ही वंश या जाति का ।
 —रसः, (पु०) समान । एक ठङ्क का । केवल
 एक रस ।—राज्,—राजः, (पु०) एक छत्र
 राजा ।—राजः, (पु०) ऐसी रस्म जो केवल एक ही
 रात में समाप्त हो जाय ।—रिक्थिन्, (पु०)
 समान स्वत्वाधिकारी ।—रूप, (वि०) १ समान
 आकृति वाला । १ एक ही रङ्ग ठङ्क का ।—लिङ्गः,
 १ वह शब्द जो समान लिङ्गवाची हो । २ कुबेर
 का नाम ।—वचनं, (न०) एक संख्यावाची ।
 —वर्णः, (पु०) एक जाति का ।—वर्णिका,
 (स्त्री०) एक वर्ष की बछिया ।—वाक्यता,
 (स्त्री०) सामञ्जस्य ।—चारं,—चारे, (पु०)
 (अव्यया०) १ केवल एक बार । २ तुरन्त ।
 अचानक । सहसा । ३ एक बार । एक मरतबा ।
 —विंशतिः, (स्त्री०) इक्कीस । २१ ।—
 विद्वोचन, (वि०) एक आँख का । काना ।—
 विषयिन्, (पु०) प्रतिद्वन्द्वी ।—वीरः, (पु०)
 एक प्रसिद्ध योद्धा ।—वेणिः,—वेणी, (स्त्री०)
 एक चोटी । [जब पतिव्रता स्त्रियाँ पति से अलग हो
 जाती हैं, तब वे केशविन्यास न कर, सब केशों
 को जोड़ बँडोर कर उन सब की एक चोटी बना
 लेती हैं ।]—शफः, (पु०) एक सुम वाले जानवर
 जैसे घोड़ा गधा आदि ।—शृङ्ग, (वि०) एक
 सींग वाला ।—शृङ्गः, (पु०) १ गैड़ा । २
 विष्णु का नाम ।—शेषः, (पु०) द्वन्द्व समास
 का एक भेद, जिसमें दो या तीन अथवा अधिक
 शब्दों का लोप कर एक ही शब्द रहे और वह अर्थ
 उन सब शब्दों का दे । जैसे पितरौ । यहाँ पितरौ
 से अर्थ माता और पिता दोनों से है ।—श्रुत,
 (वि०) एक बार सुन्य हुआ ।—श्रुतिः, (स्त्री०)

एकस्वरी । वेद पाठ करने का क्रम विशेष, जिसमें उदात्तादि स्वरों का विचार न किया जाय ।—
सप्ततिः (स्त्री०) । ७१ इकहत्तर ।—सर्ग (वि०) दत्तचित्त ।—साक्षिक (वि०) एक का देखा हुआ ।—हायन (वि०) एक वर्ष का पुराना या एक वर्ष की उम्र का ।—हायनी (स्त्री०) एक वर्ष की बछिया ।

एकक (वि०) १ अकेला । २ समान सदृश ।

एकतम (वि०) बहुतों में से एक ।

एकतर (वि०) १ दो में से एक । २ दूसरा । भिन्न ।

३ बहुतों में से एक ।

एकतस् (अव्यया०) १ एक ओर से । एक ओर । २ अकेला । एक एक कर के ।

एकतः-अन्यतः (अव्यया०) १ एक तरफ । २ दूसरी तरफ ।

एकत्र (अव्यया०) १ एक स्थान पर । २ साथ साथ । सब एक साथ । [ही समय में ।

एकदा (अव्यया०) १ एक बार । २ एक ही बार । एक

एकधा (अव्यया०) १ एक प्रकार । २ अकेले । ३ तुरन्त । एक ही समय में । ४ एक साथ ।

एकल (वि०) अकेला । एकान्त ।

एकशस् (अव्यया०) एक एक करके ।

एकाकिञ्च (वि०) अकेला । एकान्त । [१११ ग्यारह ।

एकादशन् (वि०) संख्यावाची विशेषण ।

एकादश (वि०) [स्त्री०—एकादशी] ग्यारहवाँ ।—
द्वारं (न०) शरीर के ११ छेद या दरवाजे ।—

रुद्राः (बहुवचन) ग्यारह रुद्र ।

एकादशी (स्त्री०) चन्द्रमा के प्रत्येक पक्ष की ग्यारहवीं तिथि । विष्णु भक्तों के उपवास का दिवस । यह

विष्णु सम्बन्धी उपवासदिवस है ।

एकीभावः (पु०) संमिश्रण । एकत्व । ऐक्य ।

एकीय (वि०) एक का या एक से ।

एकीयः (पु०) एक का सहायक । एक पक्ष का ।

एज् (धा० पर०) [एजते, एजित] १ कांपना । २ हिलना । हिलोरना । ३ चमकना ।

एजक (वि०) हिलता हुआ । काँपता हुआ । हिलने-
वाला काँपनेवाला ।

एजनं (न०) कम्प । कापना ।

एठ (धा० आत्म०) [एठते, एठित] चिढ़ाना ।
सामना करना । [दुष्ट ।

एड (वि०) बहरा ।—भूक (वि०) १ बहरा गूंगा । २

एडः (पु०) एक प्रकार की भेड़ ।

एडकः (पु०) १ भेड़ा । २ जङ्गली बकरा ।

एडका (स्त्री०) भेड़ी ।

एशाः } (पु०) काला मृग ।—अजिनम् (न०)

एशकः } मृगचर्म ।—तिलकः,—भृत, (पु०)

चन्द्रमा ।—दूश (वि०) हिरन जैसे नेत्रोंवाला ।

(पु०) मकर राशि ।

एशी (स्त्री०) काली हिरनी ।

एत (वि०) [स्त्री०—एता, एती] रंगभिरंगा । कमकीला ।

एतः (पु०) हिरन । बारहसिंहा ।

एतद् (सर्वनाम० वि०) [पु० एषः । स्त्री०—एषा ।
न० एतद् ।] यह । यहाँ । सामने ।

एतदीय (वि०) इसका । इससे सम्बन्ध युक्त ।

एतनः (पु०) स्वांस । स्वांस त्याग ।

एतर्हि (अव्यया०) अब । इस समय । वर्तमान समय
में ।

एतद्ग्रा } (वि०) [स्त्री०—एताद्ग्रा, एताद्ग्री]

एताद्ग्री } १ ऐसा । इसकी तरह । २ इस तरह का ।

एतावत् (वि०) १ इतना अधिक । इतना बड़ा । इतने
अधिक । इतने परिमाण का । इतना लम्बा चौड़ा ।

इतना दूर । इस प्रकार का । इस किसम का ।

एध् (धा० आत्म०) [एधते, एधित] १ बढ़ना । बढ़ा

होना । २ आराम से रहना । समृद्धिशाली होना ।

(निजन्त) बढ़ाना । बढ़ाई देना । सम्मान
करना ।

एधः (पु०) ईधन । जलाने के लिये लकड़ी ।

एधतुः (पु०) १ मानव । २ अग्नि ।

एधस् (न०) ईधन ।

एधा (स्त्री०) समृद्धि । हर्ष । आनन्द ।

एधित (व० कृ०) १ वृद्धि युक्त । बढ़ा हुआ । २
पाला पोसा हुआ ।

एनस् (न०) १ पाप । अपराध । दोष । २ उरपात ।
जुर्म । ३ क्लेश । ४ भर्त्सना । कलङ्क ।

एनस्वत् } (वि०) दुष्ट । पापी ।

एनस्विन् }

एना (अव्यय०) यहाँ वहाँ ।
 एनी (स्त्री०) बारहसिंघी ।
 एमन् (पु०) रास्ता । मार्ग ।
 एरका (स्त्री०) तृण विशेष । एक प्रकार की घास ।
 एरंडः } (पु०) अरंडी का पौधा ।
 एरगडः }
 एर्षारूक (पु०) खरबूजा । ककड़ी ।
 एलकः (पु०) मेढ़ा ।
 एलवालुः } (न०) कैथा की छाल । सुवासित
 एलवालुकम् } द्रव्य विशेष ।
 एलविलः (पु०) कुबेर का नाम । [दाने ।
 एला (स्त्री०) १ इलायची का पौधा । २ इलायची के
 एलायचि (स्त्री०) लज्जावन्ती जाति का एक गुल्म ।
 एलीका (स्त्री०) छोटी इलायची ।
 एव (अव्यय०) सादृश्य । समानता । परिभव ।
 तिरस्कार । निश्चय । ही । भी ।
 एव (अव्यय०) इस प्रकार । और । स्वीकार । प्रश्न ।
 निश्चय ।—अवस्थ (वि०) ऐसी परिस्थिति में ।

—आदि,—आद्य (वि०) ऐसा । और इस
 प्रकार का ।—कार (अव्यय०) इस प्रकार से ।
 —गुण (वि०) इस प्रकार के गुणों वाला ।
 —प्रकार,—प्राय (वि०) इस तरह का । इस
 किस्म का ।—भूत (वि०) इस प्रकार के गुण-
 वाला । इस रकम का । ऐसा ।—रूप (वि०)
 इस किस्म का । इस शक्ल का ।—विध (वि०)
 इस प्रकार का । ऐसा ।
 एष (धा० उभय०) [एषति एषते, एषित] १
 जाना । समीप जाना । २ किसी ओर शीघ्रता से
 जाना ।
 एषणः (पु०) लोहे का बाण ।
 एषणम् (न०) इच्छा । कामना । खोज ।
 एषणा (स्त्री०) इच्छा । अभिलाषा ।
 एषणिका (स्त्री०) सुनार का कांटा (तौलने का) ।
 एषा (स्त्री०) कामना । इच्छा ।
 एषिन् (वि०) इच्छा करनेवाला । कामना करने
 वाला ।

ऐ

ऐ—संस्कृत वर्णमाला या नागरी वर्णमाला का दसवाँ
 वर्ण । इसका उच्चारण कण्ठ और तालु से
 होता है ।
 ऐः (पु०) शिव जी का नाम । (अव्यय०) स्मरण,
 बुलावा, सम्बोधन व्यञ्जक अव्यय विशेष ।
 ऐक्यम् (अव्य०) तुरन्त । फौरन ।
 ऐक्यं (न०) समय या घटना विशेष का एकत्व ।
 ऐकपत्यं (न०) सर्वोपरि प्रधानत्व इकल्वराज्य ।
 ऐकपदिक (वि०) [स्त्री०—ऐकपदिकी] एक पद
 से सम्बन्ध रखनेवाला ।
 ऐकपद्यं (न०) १ शब्दों का योग । २ एक शब्द में
 बना हुआ । [वाक्यता ।
 ऐकमत्यं (न०) एक मत । एक आशय । एक-
 ऐकागारिकः (पु०) १ चोर । २ एक घर का मालिक ।
 ऐकाग्र्यं (न०) एक ही वस्तु पर ध्यान लगाना ।

ऐकांगः (पु०) } शरीररक्षक दल का एक सिपाही ।
 ऐकाङ्गः (पु०) }
 ऐकात्म्यं (न०) १ एकता । ऐक्य । आत्मा का ऐक्य ।
 २ एकरूपता । समता । ३ ब्रह्म के साथ एकत्व
 होना ।
 ऐकाधिकरण्यं (न०) १ सम्बन्ध का एकरव । २ एक
 कालिकत्व । समकालीन विद्यमानता ।
 ऐकांतिक } (वि०) १ सम्पूर्ण । बिल्कुल । नितान्त ।
 ऐकान्तिक } २ निश्चित । ३ सिवाय । अतिरिक्त ।
 ऐकान्तिकः (पु०) वह शिष्य जो वेद पढ़ने में एक
 भूल करे ।
 ऐकार्थ्यं (न०) समान उद्देश्य वाला । अर्थ की सङ्गति ।
 ऐकाहिक (वि०) [स्त्री०—ऐकाहिकी] एक दिन
 में होने वाला । एक दिन का । प्रति दिन का ।
 ऐक्यं (न०) १ एकत्व । मेल । एकता । २ एकमत्य ।
 ३ समानता । सादृश्य । ४ जोड़ । योग ।

पेक्ष (वि०) गन्ने का । गन्ने से बना हुआ । गन्ने से निकला हुआ ।

पेक्ष (न०) १ चीनी । खाद । २ मदिरा विशेष ।

पेक्ष (वि०) गन्ने से बना हुआ ।

पेक्ष (वि०) गन्ने के लिये उपयुक्त ।

पेक्ष (पु०) गन्ना ढोने वाला ।

पेक्षभारिक (वि०) गन्ने का गद्दर ढोने वाला ।

पेक्षक (वि०) इच्छाकृ का ।

पेक्षक (पु०) १ इच्छाकृ का वंशधर । २ इच्छाकृ

पेक्षकृ (वि०) के वंशधर का राज्य ।

पेक्ष (वि०) [स्त्री०—पेक्षी, पेक्षी]

पेक्ष (वि०) हिमोद वृक्ष से उत्पन्न ।

पेक्ष (न०) हिमोद वृक्ष का फल ।

पेक्ष

पेक्ष (वि०) [स्त्री०—पेक्षिकी] १ इच्छानु-
वर्ती । इच्छानुसार । २ स्वेच्छित । अनियमित ।

पेक्ष (वि०) [स्त्री०—पेक्षी] भेद का ।

पेक्ष (पु०) भेद की एक जाति ।

पेक्ष

पेक्ष (पु०) कुबेर का नाम ।

पेक्ष

पेक्ष (वि०) [स्त्री०—पेक्षी] हिरन का (चर्म या
ऊन) ।

पेक्ष (वि०) [स्त्री०—पेक्षी] काले हिरन से उत्पन्न ।
अथवा काले हिरन की किसी वस्तु से उत्पन्न ।

पेक्ष (पु०) काला बारहसिंघा ।

पेक्ष (न०) रतिबन्ध ।

पेक्ष (न०) इस प्रकार का विशेष गुण या

पेक्ष (पु०) ऐतरेय ब्राह्मण का पढ़ने वाला ।

पेक्ष (वि०) [स्त्री०—पेक्षी]

इतिहास सम्बन्धी । परम्परागत । [जानने वाला ।

पेक्ष (पु०) इतिहास लेखक । इतिहास का

पेक्ष (न०) परम्परागत उपदेश । पौराणिक वृत्तान्त ।

पेक्ष (न०) मूलाधार । अभिप्राय । उद्देश्य । आशय ।

पेक्ष (न०) पाप ।

पेक्ष

पेक्ष (वि०) चन्द्रमा सम्बन्धी ।

पेक्ष

पेक्ष (पु०) चान्द्र मास ।

पेक्ष

पेक्ष (वि०) [स्त्री०—पेक्षी] इन्द्र सम्बन्धी ।

पेक्ष

पेक्ष (पु०) अर्जुन और वालि का नाम ।

पेक्ष (वि०) [स्त्री०—पेक्षी]

पेक्ष (पु०) मायावी । धोखे में डालने वाला ।

असौत्पादक २ जादू जानने वाला ।

पेक्ष

पेक्ष (पु०) मायावी । मदारी ।

पेक्ष

पेक्ष (वि०) गंज के रोग से पीड़ित ।

पेक्ष

पेक्ष (पु०) हाथियों की एक जाति ।

पेक्ष

पेक्ष (पु०) १ इन्द्रपुत्र जयन्त, अर्जुन, वालि ।

पेक्ष

पेक्ष (वि०) १ इन्द्रियों से सम्बन्ध

पेक्ष

पेक्ष (वि०) रखने वाला । विषयभोगी ।

पेक्ष

पेक्ष (वि०) १ इन्द्रियों से सम्बन्ध

पेक्ष

पेक्ष (वि०) रखने वाला । विषयभोगी ।

पेक्ष

पेक्ष (वि०) रखने वाला । विषयभोगी ।

पेक्ष

पेक्ष (वि०) रखने वाला । विषयभोगी ।

पेक्ष

पेक्ष (पु०) सूर्य का नाम ।

पेक्ष

पेक्ष (न०) परिमाण । संख्या ।

पेक्ष

पेक्ष (पु०) इन्द्र का हाथी ।

पेक्ष

पेक्ष (पु०) १ इन्द्र के हाथी का नाम । २ श्रेष्ठ

पेक्ष

हाथी । ३ पातालवासी नागों के नेताओं में से

पेक्ष

एक नेता । ४ पूर्व दिशा का दिक्कुत्तर । ५ एक

पेक्ष

प्रकार का इन्द्रधनुष ।

पेक्ष

पेक्ष (स्त्री०) १ पेरावत हाथी की हथिनी । २

पेक्ष

बिजली । ३ पञ्जाब की रावी नदी का नाम । इरा-

पेक्ष

वती नदी ।

पेक्ष

पेक्ष (न०) १ मद्य । शराब । २ मङ्गल ग्रह । [नाम ।

पेक्ष

पेक्ष (पु०) इला और बुध से उत्पन्न पुरुरवा का

पेक्ष

पेक्ष (पु०) एक सुगन्धि-द्रव्य का नाम ।

पेक्ष

पेक्ष (पु०) १ कुबेर का नाम । २ मङ्गलग्रह ।

पेक्ष

पेक्ष (पु०) १ एक सुगन्धि-द्रव्य । २ मङ्गलग्रह ।

पेक्ष

पेक्ष (वि०) [स्त्री०—पेक्षी] १ शिव जी का । २

पेक्ष

सर्वोपरि । राजकीय । राजोचित ।

पेशान (वि०) शिव जी का ।

पेशानी (स्त्री०) १ ईशान उपदिशा । २ दुर्गा का नाम ।

पेश्वर (वि०) [स्त्री०—पेश्वरी] १ विशाल । २ बलवान् । शक्तिशाली । ३ शिव जी का । ४ सर्वोपरि । राजकीय ५ दैवी ।

पेश्वरी (स्त्री०) दुर्गादेवी का नाम ।

पेश्वर्यम् (न०) १ प्रभुत्व । अधिकार । २ शक्ति । बल । शासन । अधिकार । ३ राज्य । ४ धन । सम्पत्ति । विभव । ५ भगवान की सर्वव्यापकता की शक्ति । सर्वव्यापकता ।

पेशमस् (अव्यया०) इस वर्ष के भीतर । इस वर्ष में ।

पेपमस्तन } (वि०) १ वर्तमान वर्ष का । चालू
पेपमस्त्य } साल का ।

पेष्टिक (वि०) [स्त्री०—पेष्टिकी] यज्ञीय । संस्कारात्मक । शिष्टाचार सम्बन्धी ।—पूर्तिक, (वि०) इष्टापूर्त (यज्ञ और धर्माने) से सम्बन्ध युक्त ।

पेहलौकिक (वि०) [स्त्री०—पेहलौकिकी] इस लोक का । सांसारिक । दुनियावी ।

पेहिक (वि०) [स्त्री०—पेहिकी] १ इस लोक या स्थान का । सांसारिक । दुनियावी । २ स्थानीय ।

पेहिकं (न०) (इस दुनिया का) धंधा । व्यवसाय ।

ओ

ओ—संस्कृत वर्णमाला या नागरी वर्णमाला का ग्यारहवाँ वर्ण । इसका उच्चारण ओष्ठ और कण्ठ से होता है । इसके उदात्त, अनुदात्त, स्वरित तथा साधुनासिक भेद होते हैं ।

ओ (पु०) ब्रह्म का नाम । (अव्यया०) ओह का संचित रूप । पुकारने, याद करने और दया प्रदर्शित करने के काम में प्रयुक्त होने वाला अव्यय विशेष ।

ओकः (पु०) १ घर । मकान । २ छाया । रक्षा । बचाव । आड़ । शरण । आश्रय । ३ पक्षी । ४ शूद्र ।

ओकणः } (पु०) खड्गमल । खटकीरा ।
ओकणिः }

ओकस् (न०) १ गृह । मकान । २ आश्रय । शरण ।

ओल् (धा० पर०) [ओलति, ओलित] १ सूख जाना । २ योग्य होना । पर्याप्त होना । ३ शोभा बढ़ाना । सजाना । ४ अस्वीकृत करना । ५ रोकना । आड़ करना ।

ओधः (पु०) १ जल की बाढ़ । जल की धार । जल का प्रवाह । २ बड़ा । ३ ढेर । समुदाय । ४ सम्पूर्ण । समूचा । ५ अविच्छिन्नता । सातत्य । ६ परम्परा । परम्परागत उपदेश । ७ उत्तराज ।

ओकारः } (पु०) १ एक पवित्र पद जो वेदाध्ययन
ओङ्कारः } के पूर्व और अन्त में कहा जाता है । २

अव्ययात्मक रूप में इसका अर्थ होता है । सम्मान-पूर्ण स्वीकृति, गम्भीर समर्थन । हाँ । बहुत अच्छा । मङ्गल । स्थानान्तरण । बचाव । ३ ब्रह्म । प्रणव । ओज् (धा० उभय०) [ओजति, ओजयति, ओजित] बलवान होना । योग्य होना ।

ओज (वि०) विषम । ऊँचा ।

ओजस् (न०) १ प्राणबल । सामर्थ्य । शक्ति । २ उत्पादनशक्ति । ३ चमक । दीप्ति । ४ कान्यालङ्कार विशेष । ५ जल । ६ धातु जैसी आभा ।

ओजसीन } (वि०) मज्जवृत्त । शक्तिशाली ।
ओजस्य }

ओजस्वत् } (वि०) मज्जवृत्त । शक्तिशाली ।
ओजस्विन् }

ओङ् (पु०) [बहुवचन] उड़ीसा प्रदेश और उड़ीसा प्रदेश वासी ।

ओङ्म् (न०) जवाकुसुम । [ओर तक सिला हुआ । ओत (वि०) बुना हुआ । सूत से एक ओर से दूसरे ओतप्रोत (वि०) १ अन्तर्न्यास । एक में एक बुना हुआ । गुथा हुआ । परस्पर लगा और उलझा हुआ । २ सब-ओर फैला हुआ ।

ओतुः (पु०) विह्वी ।

ओदनः (पु०) भात । भोज्य पदार्थ । भिगेवा-
ओदनम् (न०) } और दूध से रंघा हुआ भोज्य ।

ओ, आम् (अव्यया०) देखो ओझार ।

ओरफः } (पु०) गहरी खरोच ।

ओरम्फः }

ओल (वि०) भीगा । नम । तर ।

ओलंड } (धा० पर०) [ओलण्डति, ओलण्डयति,
ओलण्डे } ओलण्डित] ऊपर की ओर फैलना ।

उच्चाटना ।

ओल्ल (वि०) नम । तर ।

ओल्लः (पु०) शरीर बंधक । प्रतिभू । जामिन ।

ओपः (पु०) जलन । दाह ।

ओपणः (पु०) चरपराहट । तीक्ष्णता ।

ओषधिः } (स्त्री०) १ सुखरी । गुल्म । २ काष्ठदि

ओषधी } दवाइयाँ । बसौंद पौधा विशेष जो पकने

पर सूख जाता है । —ईशः, —गर्भः, —नाथः,

(पु०) चन्द्रमा । —ज. (वि०) पौधों से उत्पन्न । —

धरः, —पतिः (पु०) १ दवाइयाँ बेचने वाला ।

२ वैद्य । इकीम । ३ चन्द्रमा —प्रस्थः, (पु०)

हिमालय की राजधानी ।

ओष्ठः (पु०) होंठ । अधर । —अधरौ, —रं. (न०)

ऊपर और नीचे का ओठ । —पुटं, (न०) मुँह

खोलने से जो मुँह में खाली स्थान बन जाता है

वह ।

ओष्ठय (वि०) १ ओठों का । २ ओठों की सहायता से

उच्चारित होने वाले वर्ण । अर्थात् उ, ऊ, ए, फ,

ब, भ, म ।

ओष्णा (वि०) गुनगुना । थोड़ा गर्म ।

औ

औ—संस्कृत वर्णमाला का बारहवाँ वर्ण । इसका
उच्चारणस्थान कण्ठ और ओष्ठ है । यह स्वर
अ + ओ के मिलाने से बनता है ।

औ (अव्य०) आह्वान, सम्बोधन, विरोध, और
सङ्कल्प धोतक अव्यय विशेष ।

औक्थ्यं (न०) पढ़ने की विलक्षण विधि ।

औक्थिक्यं (न०) उक्थ संहिता ।

औत्तकम् } (न०) बैलों की हेड या बैलों का मुँड ।
औत्तम् }

औत्थं (न०) उग्रता । मयानकता । निष्ठुरता ।

औथः (पु०) बुढ़ा । जल की बाढ़ ।

औचित्यम् (न०) } योग्यता । लौलीनता ।

औचिती (स्त्री०) } उपयुक्तता । न्यायत्व ।

सत्यत्व ।

औत्तैःश्रवसः (पु०) इन्द्र के घोड़े का नाम ।

औजसिक (वि०) शक्तिशाली । बलवान ।

औजस्य (वि०) शक्ति और बल के लिये लाभदायक ।

औजस्यं (न०) शक्ति । जीवनी शक्ति ।

औज्ज्वल्यम् (न०) चमक । काण्ति ।

औडुपिक (वि०) नाव से नदी पार करना ।

औडुपिकः (पु०) नाव या बेड़ा का यात्री ।

औडुभवर औदुम्बर । गूलर ।

औडूः (पु०) उड़ीसा प्रान्त कारहने वाला या वहाँ
का राजा । [चिन्ता ।

औत्कण्ठ्यं, औत्कण्ठ्यं (न०) १ अभिलाषा ।

औत्कर्ष्यम् (न०) सर्वश्रेष्ठता । उत्कृष्टता ।

औत्तमिः (पु०) १४ मनुओं में से एक मनु का नाम ।

औत्तर (वि०) उत्तरी । उत्तर दिशा का ।

औत्तरेयः (पु०) परीक्षित राजा का नाम, जिनका
जन्म उत्तरा के गर्भ से हुआ था ।

औत्तानपादः } (पु०) १ ध्रुव जी का नाम । २ ध्रुव

औत्तानपादिः } नाम का सितारा जो सदा उत्तर दिशा
में देख पड़ता है ।

औत्पत्तिक (वि०) १ प्राकृतिक । प्रकृति सम्बन्धी ।
सहज । २ एक ही समय में उत्पन्न ।

औत्पात (वि०) अपशकुनों का प्रतिकार करते हुए ।

औत्पातिक (वि०) अमाङ्गलिक । विपत्तिकारक ।
अकल्याणकारक ।

औत्पातिकम् (न०) अपशकुन । अमङ्गल ।

औत्सङ्गिक (वि०) कुल्हे पर रख कर बोया हुआ
या कुल्हे पर रखा हुआ ।

औत्सर्गिक (वि०) १ सामान्य विधि के योग्य । २
त्याज्य । छोड़ने योग्य । ३ प्राकृतिक । स्वाभाविक ।

४ औत्पत्तिक ।

औसुक्य (न०) १ चिन्ता । बेचैनी व्याकुलता । २ उत्कण्ठा । उत्सुकता ।
 औदक (वि०) जलोद्भव । जल से उत्पन्न होने वाला । रसीला । जल सम्बन्धी ।
 औदन्न (वि०) बाल्टी या घड़े में रखा हुआ ।
 औदनिकः (पु०) रसोइया ।
 औदरिक (वि०) पेड़ । मरभूका । भोजनभट्ट ।
 औदर्य (वि०) १ गर्भस्थित । २ गर्भ में प्रविष्ट ।
 औदश्वितं (न०) माठा जिसमें बराबर का पानी मिला हो । [२ अर्थसम्पत्ति ।
 औदार्यम् (न०) १ उदारता । कुलीनता । बहुपण ।
 औदासीन्यम् (न०) १ उपेक्षा । उदासीनता ।
 औदास्यम् (न०) १ निरपेक्षता । २ एकान्तता ।
 ३ वैराग्य ।
 औदुम्बर (वि०) गूलर की लकड़ी का बना हुआ ।
 औदुम्बरः (पु०) वह प्रदेश जहाँ गूलर के वृक्षों का आधिक्य हो ।
 औदुम्बरी (स्त्री०) गूलर के वृक्ष की डाली ।
 औदुम्बरम् (न०) १ गूलर के वृक्ष की लकड़ी ।
 २ गूलर के फल । ताँबा ।
 औदात्रम् (न०) उद्गाता का पद ।
 औद्वालकम् (न०) कहुआ एवं चरपरा पदार्थ विशेष ।
 औद्देशिक (वि०) [स्त्री०—औद्देशिकी] प्रकट करने वाला । निर्देश करने वाला ।
 औद्दर्यं (न०) १ उदयडता । अकलबपन । उग्रता उजडुपन । २ धृष्टता । ठिठार्ह । ३ साहस ।
 औद्धारिक (वि०) [स्त्री०—औद्धारिकी] पैतृक सम्पत्ति से लिया हुआ । बँटवारे के योग्य ।
 औद्भिदम् (न०) १ ओत का जल । २ सेंधा निमक ।
 औद्भाहिक (वि०) [स्त्री०—औद्भाहिकी] १ विवाह के समय मिली हुई वस्तु । २ विवाह सम्बन्धी ।
 औद्भाहिकम् (न०) स्त्री के विवाह के अवसर पर मिली हुई वस्तु ।
 औद्घस्यं (न०) थन से निकला हुआ दूध ।
 औद्भत्यं (न०) उचाई । उचान ।
 औपकर्णिक (वि०) [स्त्री०—औपकर्णिकी] कान के समीप वाला ।
 औपकार्यम् (न०) १ बासा । २ खीमा । तंबू ।
 औपकार्या (स्त्री०) १

औपग्रस्तिकः (पु०) १ ग्रहण । २ चन्द्र या सूर्य
 औपग्रहिकः } ग्रहण ।
 औपचारिक (वि०) [स्त्री०—औपचारिकी]
 उपचार सम्बन्धी । जो केवल कहने सुनने के लिये हो । बोलचाल का । जो यथार्थ न हो । गौण ।
 अग्रधान । [छुटनों के समीप का ।
 औपजानुक (वि०) [स्त्री०—औपजानुकी]
 औपदेशिक (वि०) [स्त्री०—औपदेशिकी] १ जो उपदेश से जीविका करता हो । जो पढ़ा कर अपना निर्वाह करता हो । २ उपदेश से प्राप्त ।
 औपधर्म्यं (न०) १ मिथ्या सिद्धान्त । मतान्तर । २ अपकृष्ट धर्म । अधर्म-धर्म-सिद्धान्त ।
 औपाधिक (वि०) [स्त्री०—औपाधिकी] प्रपञ्ची । ओखेबाज । झुली । कपटी ।
 औपध्वेयं (न०) रथ का पहिया । रथाङ्ग ।
 औपनायनिक (वि०) [स्त्री०—औपनायनिकी]
 उपनयन सम्बन्धी । [धरोहर सम्बन्धी ।
 औपनिधिक (वि०) [स्त्री०—औपनिधिकी]
 औपनिधिकम् (न०) धरोहर । अमानत । बंधक ।
 औपनिषद् (वि०) [स्त्री०—औपनिषदी] १ उपनिषदों द्वारा जानने योग्य । वैदिक । ब्रह्मविद्या सम्बन्धी ।
 २ उपनिषदों पर अवलम्बित । उपनिषदों से निकला हुआ ।
 औपनिषद्ः (पु०) १ ब्रह्म । २ उपनिषदों के सिद्धान्त का अनुयायी या मानने वाला ।
 औपनीषिक (वि०) [स्त्री०—औपनीषिकी] नीवि के पास का । भोती की गाँठ के पास लगा हुआ ।
 औपपत्तिक (वि०) [स्त्री०—औपपत्तिकी] १ तैयार । पहुँच के भीतर । २ योग्य । उपयुक्त । ३ कल्पनात्मक । वाचनिक ।
 औपमिक (वि०) [स्त्री०—औपमिकी] १ उपमा के योग्य । तुलना के योग्य । २ उपमा से प्रदर्शित ।
 औपम्यम् (वि०) तुलना । समानता । सादृश्य ।
 औपयिक (वि०) [स्त्री०—औपयिकी] १ उपयुक्त । योग्य । उचित । २ प्रयोग द्वारा प्राप्त ।
 औपयिकः (पु०) }
 औपयिकम् (न०) } उपाय । सदुपाय । प्रतीकार ।
 औपरिष्ट (वि०) [स्त्री०—औपरिष्टी] ऊपर का ।

औपरोधिक (वि०) १ कृपा या अनुग्रह सम्बन्धी ।
औपरोधिक (वि०) २ रोक डालने वाला ।
सामना करने वाला ।

औपरोधिकः (पु०) पीलु वृक्ष की लकड़ी का
औपरोधिकः (वि०) डंडा । [पत्थर का ।

औपल (वि०) [स्त्री०—औपली] पथरीला ।

औपचरत (न०) कड़ाका । उपवास ।

औपचरन् (न०) १ उपवासोपयुक्त भोजन । फला-
हार । २ उपवास ।

औपचास्थम् (न०) उपवास ।

औपचाह्य (वि०) सवारी करने योग्य ।

औपवाह्यः (पु०) १ गजराज । २ राज-सान । शाही
सवारी ।

औपवेशिक (वि०) [स्त्री०—औपवेशिकी] सारा
समय लगा कर सेवा वृत्ति द्वारा आजीविका उपार्जन
करने वाला ।

औपसंख्यानिक (वि०) [स्त्री०—औपसंख्या-
निकी] ग्यूनतापूरक । योगिक ।

औपसर्गिक (वि०) [स्त्री०—औपसर्गिकी] १
उपसर्ग सम्बन्धी । २ विपत्ति का सामना करने की
योग्यता से सम्पन्न । ३ भाषी भ्रमरुल्लसूचक । ४
वातादि सन्निपात से उत्पन्न ।

औपास्थिक (वि०) व्यभिचार से पेट पालने वाला ।

औपस्थं (न०) मैथुन । स्त्रीसहवास ।

औपहारिक (वि०) [स्त्री०—औपहारिकी] भेंट
या चढ़ावा सम्बन्धी ।

औपाकरणम् (न०) वेदाध्ययन का आरम्भ ।

औपधिक (वि०) १ सापेक्ष । २ उपाधि सम्बन्धी ।

औपाध्यायक (वि०) [स्त्री०—औपाध्यायकी]
अध्यापक से प्राप्त । [सम्बन्धी ।

औपासन (वि०) [स्त्री०—औपासनी] गुह्याग्नि

औपासनः (पु०) गुह्याग्नि ।

औम् (अव्यया०) शूद्रों के उच्चारणार्थ प्रणव का
रूप विशेष । [क्योंकि शूद्रों के लिखे ओं का
उच्चारण वर्जित है ।]

औरस्र (वि०) [स्त्री०—औरस्री] भेड़ से उत्पन्न
या भेड़ सम्बन्धी । [मौटा ऊनी कंबल ।

औरस्रम् (न०) १ भेड़ का माँस । २ ऊनीवस्त्र ।

औरस्रकम् (न०) भेड़ों का कुंड ।

औरस्रिकः (पु०) गढ़रिया । मेपपाल ।

औरस्र (वि०) [स्त्री०—औरस्री] १ छाती से
उत्पन्न । अपने वास्तविक पिता के वीर्य से उत्पन्न ।
२ न्याय । वैध । विहित । आईनसङ्गत ।

औरस्रः (पु०) विहित पुत्र ।

औरस्री (स्त्री०) विहित पुत्री ।

औरस्र देखो, औरस ।

और्ण [स्त्री०—और्णी] (वि०) ऊनी । उनसे
और्णिक [स्त्री०—और्णिकी] बनी ।

और्णिक [स्त्री०—और्णिकी]
और्ध्वकालिक (वि०) [स्त्री०—और्ध्वकालिकी]
पीछे की । पिछले समय की । [कर्म ।

और्ध्वदेहम् (न०) प्रेतक्रिया । दसगात्र । सपिण्डदान

और्ध्वदेहिक (वि०) मृत पुरुष से सम्बन्ध युक्त ।

और्ध्वदेहिक प्रेतकर्म सम्बन्धी ।

और्ध्वदेहिकम् (न०) प्रेतकर्म । अन्येष्टिकर्म ।

और्ध्वदेहिकम् मरने के बाद किये जाने वाले कर्म
विशेष । [जज्ञा से उत्पन्न ।

और्व (वि०) [स्त्री०—और्वी] १ और्व सम्बन्धी । २

और्वः (पु०) १ ऋगुवंशीय एक प्रसिद्ध ऋषि ।

२ बाड़वानल । ३ मौना सिद्धी का निमक ।

४ पौराणिक भूगोल का दक्षिण भाग, जहाँ दैत्यों
का निवास है । ५ पञ्चप्रवर मुनियों में से एक ।

औलूकं (न०) उल्लूओं का समूह ।

औलूक्यः (पु०) कथाद का नाम जो वैशेषिक
दर्शन के प्रचारक थे ।

औलवश्यं (न०) अधिकता । अत्याधिक्य । विषमता ।
तोत्रता । अति तीव्रता ।

औशन (वि०) [स्त्री०—औशनी, औशनसी]

औशनस उशना सम्बन्धी या उशना से उत्पन्न
अथवा उशना से अधीत ।

औशनसम् (न०) उशना कृत स्मृति या धर्मशास्त्र ।

औशीनरः (पु०) उशीनर का पुत्र ।

औशीनरी (स्त्री०) पुरुखा की रानी का नाम ।

औशीरं (न०) १ पंखा या खैरी की डंडी । २ शय्या ।

३ बैठकी जैसे कुर्सी बूढ़ा आदि । ४ खस पद्म
हुआ उवदना विशेष । ५ खस की जड़ । ६ पञ्जा ।

औषणम् (न०) १ चरपराहट । २ काली मिर्च ।

औषधम् (न०) १ जड़ी बूटीयां । २ दवाई । ३ खनिज पदार्थ ।

औषधिः } (स्त्री०) १ जड़ी बूटी । २ काष्ठादि
औषधी } चिकित्सा के पदार्थ । ३ बूटी जिससे
अग्नि निकलता है । यथा

“पिरमन्ति न ज्वलितुमौषधयः ।”

किरातार्जुनीय ।

औषधीय (वि०) दवा सम्बन्धी । वह दवा जिसमें
जड़ी बूटी पड़ी हो ।

औषरं } (न०) सेंधा निमक ।
औषरकम् }

औषस (वि०) [स्त्री०—औषसी] प्रातःकाल
सम्बन्धी । सबेरों का

औषसी (स्त्री०) तड़के । बड़े सबेरों ।

औषसिक } (वि०) [स्त्री०—औषसिकी,
औषिक } औषिकी] मुराहे या तड़के का उत्पन्न ।

औष्ट्र (वि०) [स्त्री०—औष्ट्री] १ ऊँट सम्बन्धी या
ऊँट से उत्पन्न । २ ऊँटों के बाहुल्य से युक्त ।

औष्ट्रं (न०) ऊँटनी का दूध ।

औष्ट्रकम् (न०) ऊँटों का समुदाय ।

औष्ठ्य (वि०) ओठ सम्बन्धी । ओठ से उच्चारित
होने वाला ।—वर्णाः, (पु०) ओठ से उच्चारित
होने वाले वर्ण अर्थात् ठ, ड, प, क, ख, भ, म्,
त्, द, ।—स्थान, (वि०) ओठों से उच्चारित ।

—स्वरः (पु०) ओठ से उच्चारित स्वर ।

औष्ण्यम् (न०) गर्मी । गरमाहट ।

औष्ण्यं } (न०) गर्मी ।
औष्ण्यम् }

क

क—संस्कृत अथवा नागरी वर्णमाला का प्रथम व्यंजन ।
इसका उच्चारणस्थान कण्ठ है । इसको स्पर्शवर्ण
भी कहते हैं । ख, ग, घ, ङ, इसके सवर्ण हैं ।

कः (पु०) १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ कामदेव । ४
अग्नि । ५ हवा । पवन । ६ यम । ७ सूर्य । ८
जीव । ९ राजा । १० गाँठ या जोड़ । ११ मोर ।
मयूर । १२ पक्षियों का राजा । १३ पक्षी । १४
मन । १५ शरीर । १६ काल । समय । १७ बादल ।
मेघ । १८ शब्द । स्वर । १९ बाल । केश ।

कम् (न०) १ प्रसन्नता । हर्ष । २ जल । ३ शिर ।

कंसः (पु०) १ जल पीने का पात्र । गिलास ।

कंसम् (स्त्री०) १ घंटी । कंठोरा । २ काँसा । ३
परिमाण विशेष, जिसे आदक कहते हैं ।

कंसः (पु०) उग्रसेन के पुत्र कंस का नाम । यह मथुरा
का राजा था और बड़ा अत्याचारी था । इसे
श्रीकृष्ण ने मथुरा ही में मारा था ।—अरिः,—
अरातिः—जित्,—कृष्,—द्विष्,—हन, (वि०)
कंस का मारने वाला । अर्थात् श्रीकृष्ण भगवान् ।
—अस्थि, (न०) काँसा ।—कारः, (पु०)
एक वर्णसङ्कर जाति । कसेरा ।

कंचकारशङ्कुकारी बाह्यपारशंभुवतुः ।

—शब्दकल्पद्रुम ।

कंसकम् (न०) काँसा ।

कक् (धा० आत्म०) [ककते, ककित] १ चाहना ।
अभिलाषा करना । ३ घमंड करना । ४ चंचल
होना ।

ककुब्जलः } (पु०) चातक पक्षी ।
ककुब्जलः }

ककुब् (स्त्री०) १ चोटी । शिखर । २ मुख्य । प्रधान ।
३ बैल का कुब्ब । ४ सींग । राजकीय चिन्ह (जैसे
छत्र चमर आदि) ।—स्थः, (पु०) राजा पुर-
जय की उपाधि । सूर्यवंशी राजा विशेष । यह
इक्ष्वाकु के वंश में उत्पन्न हुए थे ।

ककुब्दः (पु०) १ पहाड़ की चोटी । पर्वत

ककुब्दम् (न०) १ शिखर । २ कौहान । कुब । ३
मुख्य । प्रधान । ४ राजचिन्ह ।

ककुब्जत (वि०) कुब्ज वाला । (पु०) (शिखर
वाला) १ पहाड़ । २ (काँसा भी) पहाड़ ।

ककुब्जती (स्त्री०) कमर । कूल्हा ।

ककुब्धिन् (वि०) १ शिखावाला । कुब्ज वाला (पु०)
बैल । २ पहाड़ । ३ दैवतक राजा का नाम ।

ककुद्धत् (पु०) कुन्व वाला भैसा ।

ककुन्दरम् (न०) जघन कूप । कूप का खूँसा । रौन ।

ककुम् (स्त्री०) १ दिशा । २ कान्ति सौन्दर्य । ३ चम्पा के फूलों की माला । ४ धर्मशास्त्र । ५ चोटी । शिखर । [अर्जुन वृष]

ककुम् (पु०) १ बीणा की मुकी हुई लकड़ी । २

ककुम् (न०) कूटज वृष का फूल ।

ककुलः (पु०) वकुल वृष ।

ककुलः (पु०) } शीतलचीनी । गन्धद्रव्य ।

ककुली (स्त्री०) } वनकपुर । [हँसी का ।

ककुलट (वि०) १ सखत । कड़ा । ठोस । २ हास्य ।

ककुलटी (स्त्री०) चाक । खड़िया मिट्टी ।

ककुः (पु०) १ छिपने की जगह । २ छोर उस वस्त्र का जो सब वस्त्रों के नीचे पहना जाता है । धोती का छोर । ३ खता या खेल विशेष । ४ घास । सूखी घास । ५ सूखे वृक्षों का वन । ६ बगल । काँख । ७ राजा का अन्तःपुर । ८ जंगल का भीतरी भाग । ९ भीत । पाला । १० भैसा । ११ फाटक । १२ दलदल वाली ज़मीन ।

ककुः (न०) १ तारा । २ पाप ।

ककुः (स्त्री०) १ कँखोरी । २ हाथी बाँधने की जंजीर या रस्सी । ३ कमरबंद । इज़ारबंद । ४ द्वारदीवारी । दीवाल । ५ कमर । मध्यभाग । ६ आँगन । सहन । ७ हाता । ८ घर के भीतर का कमरा या कोठा । निज कमरा । कोठा । ९ अन्तःपुर । १० सादर्य । ११ उत्तरीय वस्त्र । डुपट्टा । १२ आपत्ति । एनराज । प्रतिवाद । १३ प्रतिवृद्धता । हिस । होड़ । १४ काँसोटा (कमर में बाँधने का वस्त्र विशेष) । १५ पटक । कमरबंद । १६ पहुँचा ।—अग्निः, (पु०) दावानल ।—अन्तरम्, (न०) भीतर का या नीच कमरा ।—अवेत्तकः, (पु०) १ जनानी ब्योड़ी का दरोगा । २ राजकीय उद्यान का अफसर । ३ द्वारपाल । ४ कवि । शायर । ५ लग्नपट । ६ खिलाड़ी । चितेरा । ७ अभिनयपात्र । ८ प्रेमी । आशिक ।—धरं, (न०) कंधे का जोड़ ।—पः, (पु०) कड़वा ।—पटः, (पु०)

लंगोट ।—पुटः, (पु०) काँख । बगल ।—

शायः, शायुः, (पु०) कुत्ता । श्वान ।

ककुः (स्त्री०) १ हाथी या घोड़े का जेवरबन्द । २ स्त्री का कमरबंद या नारा । ३ उत्तरीय वस्त्र । डुपट्टा । उपजा । ४ अँगो आदि की गोद । मग्गी । ५

अन्तःपुर का कमरा । ६ दीवाल । हाता । ७ सादर्य ।

ककुः (स्त्री०) हाता । घेरा । बड़े भवन का खण्ड ।

कंकः, कङ्कः (पु०) १ बृहत् वक् विशेष । २ आमों की

जातियाँ । ३ थमराज का नाम । ४ क्षत्रिय । ५

बनावटी ब्राह्मण । ६ विराट के यहाँ अज्ञातवास

की अवधि में युधिष्ठिर ने अपना नाम कङ्क ही रखा

था ।—पत्र, (वि०) वक् विशेष के पक्षों से

सम्पन्न ।—पत्रः, (पु०) तीर । बाण ।—गन्निः,

(पु०) (=कङ्कपत्रः)—मुखः (पु०) चीमटा ।

—शायः (पु०) कुत्ता ।

कंकटः, कङ्कटः (पु०) १ कवच । सैनिक

कंकटकः, कङ्कटकः (पु०) } उपस्कर । २ शत्रुश ।

कंकणः, कङ्कणः (पु०) } १ कलाई में पहिने

कंकण, कङ्कणम् (न०) } का आभूषण विशेष ।

२ कड़ा । पहुँची । ककना । ३ विवाहसूत्र । कौतुक-

सूत्र । ४ साधारणतः कोई भी आभूषण । ५ चोटी ।

कलगी ।

कंकणः } (पु०) पानी की फुहार । यथा ।—

कङ्कणः } नितम्बे द्वारा ली नयनपुगले कङ्कणमरम् ।

—उद्भट

कंकणी, कङ्कणी (स्त्री०) } १ बँधुर । २ बजने

कंकणिका, कङ्कणिका (स्त्री०) } बाला आभूषण ।

कंकतः, कङ्कतः (पु०) }

कंकत, कङ्कतम् (न०) }

कंकती, कङ्कती (स्त्री०) }

कंकतिका, कङ्कतिका (स्त्री०) }

कंकरं } (न०) मठा जिसमें जल मिला हो ।

कङ्करम् }

कंकालः, कङ्कालः (पु०) } ठठरी । हड्डियों का

कंकालं, कङ्कालम् (न०) } ढाँचा । अस्थिपञ्जर ।

—पालिन्, (पु०) शिव जी का नाम ।—शेष,

(वि०) जिसके शरीर में केवल हड्डियाँ हड्डियाँ ही

रह गयी हों ।

कंकालयः } (पु०) शरीर । देह । जिस्म ।

कङ्कालयः }

ककेलः, ककुलः } (पु०) अशोक वृक्ष ।
ककेलिः, ककुलिः }

ककौली, } देखो ककौली ।
ककुली }

ककुलः } (पु०) हाथ ।
ककुलः }

कच् (धा० परस्मै०) [कचति, कचित] शब्द करना ।
चित्तलाना । शोर मचाना । (उभय०) १ बाँधना ।
नशी करना । २ चमकाना ।

कचः (पु०) १ केश (विशेष कर सिर के) २ । सूखा
और पुरा हुआ धातु । गुत । ३ बंधन । ४ वस्त्र
की गोठ या संज्ञाक । ५ बादल । ६ बृहस्पति के
पुत्र का नाम ।—अग्रं, (न०) आलों का धुध-
रालापन ।—आश्रित, (वि०) खुले या बिखरे
वालों वाला ।—ग्रहः, (पु०) बाल पकड़ने
वाला ।—मालः, स्त्री०) धूम । धुआँ ।

कचगर्न } (न०) वह मण्डी जहाँ बिकने के लिये
कचङ्गन } आये हुए माल पर कोई कर वसूल न
किया जाय ।

कचंगलः } (पु०) समुद्र ।
कचङ्गलः }

कचा (स्त्री०) हथिनी ।

कचाकवि (अन्यया०) एक दूसरे के बाल पकड़
कर खींचना और लड़ना ।

कचादुरः (पु०) जलकुक्कुट ।

कचर (वि०) १ बुरा । मैला । २ दुष्ट । नीच ।
अधःपतित । [अन्यय विशेष ।

कचित् (अन्यया०) ग्रन्थ, हर्ष, और मङ्गल व्यञ्जक

कचलः (पु०) १ तट । हाशिया । सीमा । सीमा-

कचलम् (न०) १ वर्ती देश । २ दलदल । ३ गोद ।

मङ्गी । ४ नाव का एक हिस्सा । ५ कलुष का

शरीराङ्ग विशेष ।—अन्तः, (पु०) किसी नदी

या झील का तट ।—पः, (पु०) कलुषा ।—

पी, (स्त्री०) १ कलुषी । २ वीणा विशेष ।—भूः,

(स्त्री०) दलदल ।

कचुटिका }
कचुटिका } (स्त्री०) मृगा की चुन्ट ।
कचुटादी }

कचुडा (स्त्री०) मींगुर । मिरली ।

कचुः (स्त्री०) } खाज । खुजली ।
कचु (स्त्री०) }

कचुर (वि०) १ खजुहा । २ लम्पट । विषयी ।

कज्जलं (न०) १ काजल । २ सुर्मा । स्याही ।

मसी ।—ध्वजः, (पु०) दीपक । लेंप ।—

रोचकः, (पु०) —रोचकम्, (न०) डीबट ।

पत्तीलसेत ।

कच् (धा० आत्म०) २ बाँधना । २ चमकाना ।

कचरः } (पु०) १ सूर्य । मशर का पैदा ।
कञ्जरः }

कचुकः } (पु०) १ कवच । २ सर्पचर्म ।

कञ्चुकः } कंचुली । ३ पोशाक । परिच्छद । ४

धुल पोशाक । ५ अंगिया । चोली । जाकट ।

कचकालः } (पु०) सर्प । साँप ।
कञ्चकालः }

कचुकित } (वि०) १ कवच धारण किये हुए ।

कञ्चुकित } २ पोशाक पहिने हुए ।

कचुकिन् } (वि०) १ कवचधारी । (पु०) १

कञ्चुकिन् } जनानी ब्योड़ी का रखवाला । शयन-

गृह की परिचारिक । २ लम्पट । व्यभिचारी । ३

सर्प । ४ द्वारपाल । ५ यव । जौ । अन्न विशेष ।

कचुलिका, कञ्चुलिका } (स्त्री०) चोली । अंगिया ।

कचुली, कञ्चुली }

कजः } (पु०) १ बाल । २ ब्रह्म का नाम ।—नामः,

कजः } (पु०) विष्णु का नाम ।

कजम् } (न०) १ कमल । २ अमृत ।

कजम् }

कजकः, कजकः (पु०) } पक्षी विशेष ।

कजकी, कजकी (स्त्री०) }

कजना, कजनः (पु०) १ कामदेव । २ पक्षी विशेष ।

कजरः, कजरः } (पु०) १ सूर्य । २ हाथी ।

कजारः, कजारः } ३ उदर । पेट । ४ ब्रह्मा की

उपाधि ।

कजलः } (पु०) पक्षी विशेष ।

कजलः }

कट् (धा० पर०) [कटति, कटित] १ जाना ।

२ डकना ।

कटः (पु०) १ चटार्द । २ कूल्हा । ३ कूल्हा और

कमर । ४ हाथी की कनपटी । ५ घास विशेष । ६

शव । लाश । ७ शव-वाहन-शिविका । समाधि

सं० श० को०—२६

मण्डप । ८ पौंसों के फेंकने का विशेष प्रकार । ९ अतिरिक्त । आधिक्य । १० तीर । बाण । ११ रवाज़ रीति । १२ कबरस्तान ।—अन्तः, (पु०) भलक । कमखियों देखना ।—उदकं (न०) १ तर्पण का जल । २ हाथी का मद । ३ वर्षासङ्कर जाति विशेष । [शूद्राणां वैश्यतश्चौर्यात् कटकार इति स्मृतः—उशना ।] २ चटाई बनाने वाला । धकार ।—कांजः, (पु०) खसारदान । पीक दान ।—खादकः, (पु०) १ स्थार । गीदद । २ काक । ३ कांच का पात्र ।—घोषः, (पु०) गड़रियों का पुरवा ।—पूतनाः, (पु०) - पूतना, (स्त्री०) एक प्रकार के प्रेतात्मा ।—द्रूः, (पु०) १ शिव । २ बुद्धभूत या पिशाच । ३ कीट । कीड़ा ।—प्रोथः, (पु०)—प्रोथं, (न०) चूतड़ । नितंब ।—मालिनी, (स्त्री०) मदिरा । शराब ।

कटकः (पु०) १ पहुँची । कड़ा । २ मेखला । कटकम् (न०) १ कमरबन्द । ३ डोरी । ४ जंजीर की कड़ी । ५ चटाई । ६ लेंचा निमक । ७ पर्वत पार्श्व । ८ उपत्यका । ९ सेना । १० राजधानी । ११ घर । मकान । १२ चक्र । पहिया । वृत्त ।

कटकिन् (पु०) पर्वत । पहाड़ ।

कटकटः } (पु०) १ आग । २ सेना । ३ गणेश
कटकुटः } जी का नाम ।

कटनम् (न०) मकान की छत, खपरैल या छप्पर । कटाहः (पु०) १ कड़ाह । बड़ी कड़ाही २ खप्पर । ३ कूप । हीला ।

कटिः } (स्त्री०) १ कमर । २ नितम्ब । ३ हाथी
कटी } का गण्डस्थल ।—तटं, (न०) करिहा । करिहाँव ।—त्रं (न०) कमरबन्द । कमर में बाँधने का कपड़ा ।—प्रोथः, (पु०) चूतड़ ।—मालिका, (स्त्री०) खियों का इज़ार बन्द । नारा ।—रोहकः, (पु०) हाथी का सवार । हाथी पर सवारी करने वाला ।—शीर्षकः, (पु०) कूल्हा । करिहाँव ।—श्रुङ्गला, (स्त्री०) बजनी करधनी ।—सूत्रं, (न०) कमरबन्द । इज़ारबन्द ।

कटिका (स्त्री०) कूल्हा । करिहाँव ।

कटीरः } १ गुफा । कूल्हा । कटि ।
कटीरम् }

कटीरकं (न०) १ शरीर का पिछला भाग । २ पुट्टा । चूतड़ ।

कटु (वि०) [स्त्री०—कटुः, कट्वी] १ चरपरा । तीता । पटरसों में से एक [छः प्रकार के रस ये हैं—१ अमुर, २ कटु, ३ अम्ल, ४ तिक्त, ५ कषाय और ६ खवण ।] २ सुवासित । सुगन्धित । ४ दुरगन्धित ५ उग्र । तीक्ष्ण । प्रतिकूल । अप्रीतिकर । ६ ईर्ष्यालु । ७ तेज़ । प्रचण्ड ।—(न०) अनुचित कर्म । २ अपमान । धिक्कार । फटकार ।—कीटः, —कीटकः, (पु०) डाँस । मच्छुड़ ।—काणः, (पु०) गिटिम पर्वी ।—अग्नि, (न०) सोंठ ।—निष्प्रावः, (पु०) वह अनाज जो जल की बाढ़ में जलमग्न न हुआ हो ।—मोदं, (न०) सुगन्धित द्रव्य विशेष ।—रवः, (पु०) मैङ्क । मण्डक ।

कटुः (पु०) चरपराहट । तीतापन ।

कटुक (वि०) १ तीक्ष्ण । चरपरा । २ प्रचण्ड । तेज़ ३ अप्रीतिकर । अप्रिय ।

कटुकः (पु०) चरपराहट । तीतापन । [गँवारपन ।

कटुकता (स्त्री०) अशिष्ट व्यवहार । अशिष्टता ।

कटुरं (न०) जलमिश्रित छाछ या माठा ।

कटोरं (न०) सुखमयपात्र । मिट्टा का बर्तन ।

कटोलः (पु०) १ चरपरा स्वाद । २ निम्नवर्ण का पुरुष जैसे चाण्डाल ।

कटु (धा० परस्मै०) कष्ट में रहना ।

कठः (पु०) एक ऋषि का नाम । यह वैशम्पायन के शिष्य थे । यजुर्वेद के पढ़ाने वाले । यजुर्वेद की एक शाखा इन्हींके नाम से प्रसिद्ध है ।

—धूर्तः, (पु०) कठशास्त्र में निष्णात ब्राह्मण ।

—श्रोत्रियः, (पु०) यजुर्वेद की कठशास्त्र में पारङ्गत ब्राह्मण ।

कठमर्दः (पु०) शिव जी का नाम ।

कठर (वि०) कड़ा । सख्त ।

कठाः (पु०) कठऋषि के अनुयायी ।

कठिका (स्त्री०) खड़िया । चाक ।

कठिन (वि०) १ कड़ा । सख्त । कठिन । कठोर । २ निष्ठुर हृदय । संगदिल । निर्दयी । ३ नम्र न होने

वाला । अनाई । ४ उग्र । प्रचण्ड । ५ पीडा-
कारक ।

कठिनः (पु०) वन । बेहड़ ।

कठिना (स्त्री०) १ मिथी या बुरे की बली मिठाई
विशेष । २ मिट्टी की हड्डिया ।

कठिनिका } (स्त्री०) १ नाक । खड़िया मिट्टी । २
कठिनी } कुशुनिया । कनिष्ठिका ।

कठार (वि०) १ कड़ा । डोल । २ निर्दयी । कठोर-
हृदय । दयाहीन । ३ पैना । तेज़ । ४ पुरा ।
पुरा बड़ा हुआ । सम्पूर्ण । ५ (आर्त्त०) पक्का ।
संस्कारित । साक़ किया हुआ ।

कड़ू देखो कण्डू । [मूल्य]

कड़ (वि०) १ गुंगा । २ रुखा स्वर । ३ अज्ञान ।

कड़ंगरः कड़ङ्गरः } (पु०) तृण । तिनका ।
कड़ंकरः कड़ङ्करः }

कड़ंकरीय, कड़ङ्करीय } (वि०) तृण खाने वाला ।
कड़ंगरीय, कड़ङ्गरीय } (गौ, भैस आदि) ।

कड़ुर्ध्र (न०) पात्र विशेष । एक प्रकार का बर्तन ।

कड़ंदिका, कड़न्दिका (स्त्री०) कलण्डिका । विलान ।

कड़ंबः, कड़म्बः (पु०) } डंडुल । डंठा ।
कलंबः, कलम्बः (पु०) }

कड़ार (वि०) १ साँवला । धौला । २ उमरा । ३
क्रोधी । अहंकारी । घमंडी । अकड़वाज़ ।

कड़ारः (पु०) १ साँवला या धौला रंग । २ नौकर ।

कड़ितुलः (पु०) तलवार । खांडा ।

कण् (घा० परस्मै०) [कणति, कणित] १ कराहना ।
सिसकना २ छोटा होना । ३ जाना । ४ आँख
मपना । पलकों से आँखें मूँदना ।

कणः (पु०) १ अनाज । २ अणु । ३ स्वल्प परिमाण ।
४ रस्तीभर गर्द या धूल । ५ पानी की बूंद या
फुहार । ६ अनाज की बाल । ७ आग का अङ्गारा ।
—अदः, —भक्तः, —भुज्, (पु०) अणुवाद
अर्थात् वैशेषिक दर्शन के आविर्भावकर्त्ता का कुलित
नाम । —जीरकम्, (न०) जीरा । —भक्तकः,
(पु०) पत्नी विशेष । —लाभः, (पु०) भँवर ।

कणपः (पु०) भाला या साँग । [कण्य]

कणशः (अव्यया०) थोड़ा थोड़ा । बूंद बूंद । कण

कणिकः (पु०) १ अनाज का दाना । २ अणु । ३

अनाज की बाल । ४ भुने हुए गेहूँओं का भोज्य
पदार्थ विशेष ।

कणिका (स्त्री०) १ अणु । झोटे से छोटा पदार्थ । २
जलविन्दु । ३ अनाज विशेष ।

कणिकाः (पु०) } अनाज की बाल ।
कणिशम् (न०) }

कणीक (वि०) छोटा । नन्हा ।

कणै (अव्यया०) कामना पूर्ति व्यञ्जक अव्यय ।

कणैरा } (स्त्री०) १ हथिनी । २ रंडी । वेश्या ।
कणैरुः } पतुरिया ।

कण्टकः, कण्टकः (पु०) } १ काँटा । २ डंक । ३
कण्टकम्, कण्टकम् (न०) } (आर्त्त०) १ शासन या

राज्य का कण्टक रूप व्यक्ति । ४ व्याधि । बवाल ।
५ रोमाञ्च । ६ नख । नाँह । ७ मन दुखाने वाला
भाषण । (पु०) १ बौल । २ कारखाना । —

अशनः, —भक्तकः, (पु०) —भुज्, (पु०) जंड ।

—उद्धरणम्, (न०) काँटा निकालना । (आर्त्त०)

अग्रिय या उत्पातकारी व्यक्ति या वस्तु को
दूर करना । —प्रभुः, (पु०) १ काँटा । झाड़ी ।

२ शास्त्रमन्त्री वृत्त । —मर्दनः, (न०) उपद्रव

वमन । —विशोधनम्, (न०) प्रत्येक दुःख-
दाई श्रोत को नष्ट कर डालना ।

कण्टकित् } (वि०) १ कटीला । २ रोमाञ्चित ।
कण्टकित् }

कण्टकिन् } (वि०) १ कटीला । २ दुःखदायी । —
कण्टकिन् } फलः, (पु०) कण्टहल का वृत्त ।

कण्टकिलः } (पु०) कटौला बौल ।
कण्टकिलः }

कण्टकण्ठ (घा० उभय०) [कण्ठति, कण्ठते,
कण्ठयति, कण्ठयते, कण्ठित] शोक करना ।
स्वापा करना । चिन्तित होना । अभिलाषी होना ।
सखेद स्मरण करना ।

कण्ठः, कण्ठः (पु०) } १ गला । २ गर्दन । ३
कण्ठम्, कण्ठम् (न०) } स्वर । आवाज़ । ४ पात्र

का किनारा या गर्दन । ५ सामीप्य । पड़ोस —

आभरणम्, (न०) कंठा । पाटिया । तिलरी

आदि गले का गहना । —कूणिका, (स्त्री०)

बीणा । सारंगी । —गत, (वि०) गले

में प्राप्त । गले में स्थित । गले में आधा

या अटका हुआ ।—तटः, —तटं, —तटी,
(स्त्री०) गर्दन की अगल बगल का स्थान ।—
दल, (वि०) गरदन तक ।—नीडकः, (पु०)
चील ।—नीलकः, (पु०) मसाल । लुका ।
पलीता ।—पाशकः, (पु०) हाथी की गर्दन का
रस्सा ।—भूषा, (स्त्री०) छोटी गुंज ।—
मणिः, (स्त्री०) रत्न जो गले में पहिना जाय ।
—लता, (स्त्री०) १ पट्टा । कालर । २ बाग-
डोर । अगाड़ी ।—शोषः, (पु०) गला सूखना ।
—स्थ, (वि०) गले वाला । गले से उच्चारण
किये जाने वाले वर्ण ।

कंठतः } (अव्यय०) १ गले से । २ स्पष्टतः ।
कण्ठतः } साफ साफ ।

कंठालः } (पु०) १ नाव । २ बेलचा । कुदाली ।
कण्ठालः } ३ युद्ध । ४ कैद ।

कंठाला } (स्त्री०) बर्तन जिसमें दही या दूध
कण्ठाला } बिलोया जाय ।

कंठिका } (स्त्री०) एकलरा हार या गुंज ।
कण्ठिका }

कंठी } (स्त्री०) १ गर्दन । गला । २ गुंज ।
कण्ठी } गोप । कालर । पट्टा । ३ थोड़े की गर्दन
में बाँधने की रस्सी ।—रक्षः, (पु०) १ शेर ।
सिंह । २ मदमाता हाथी । ३ कवृत्तर । ४ स्पष्ट
वोषणा या उत्तरेख ।

कंठीलः } (पु०) कैद । उष्ट्र ।
कण्ठीलः }

कंठेकालः } (पु०) शिव जी का नाम ।
कण्ठेकालः }

कंठ्य } (वि०) १ गले से उत्पन्न । २ जिसका
कण्ठ्य } उच्चारण गले से हो ।—वर्णः, (पु०) कण्ठ से
उच्चारित होने वाले अक्षर । यथा अ, आ, इ, ए, उ,
ग, घ, ङ्, और ह् ।—स्वरः, (पु०) अ और
आ अक्षर ।

कंठ् } (धा० डभ्य०) १ प्रसन्न होना । सन्तुष्ट
कण्ठ् } होना । २ गर्व करना । ३ फटकना । कूट
कर भूसी अलगाना । ४ बचाव करना । रक्षा
करना ।

कंठनम् } (न०) १ भूसी से अनाज को अलगाने
कण्ठनम् } की क्रिया । फटकना । पछोरना । २
भूसी ।

कंडनी } (स्त्री०) उखली । खरल । खल ।
कण्डनी }

कंडरा } (स्त्री०) नस ।
कण्डरा }

कंडिका } (स्त्री०) १ छोटे से छोटा विभाग । २ शुद्ध-
कण्डिका } यजुर्वेद का भाग विशेष ।

कंडुः } (पु० स्त्री०) १ खुजलाइट । खुजली ।
कण्डुः } खाज ।

कंडूः } (स्त्री०) खुजली । खाज ।
कण्डूः }

कंडूतिः } (स्त्री०) खाज । खुजली ।
कण्डूतिः }

कंडूयति, कण्डूयति } (क्रि० उ०) खुजलाना । धीरे
कंडूयते, कण्डूयते } धीरे मलना ।

कंडूयनम् } (न०) मलना । खुजलाना ।
कण्डूयनम् }

कंडूयनकः } (पु०) गुद गुदाने वाला । सुरसुरी
कण्डूयनकः } पैदा करने वाला ।

कंडूया } (स्त्री०) खाज । खुजली ।
कण्डूया }

कंडूल } (वि०) सुरसुरी, जिसके होने से खुज-
कण्डूल } लाने को जी चाहे ।

कंडोलः } (पु०) डलिया । टोकरी । कौथा ।
कण्डोलः }

कंडोषः } (पु०) काँफा । कीड़ा । कीट ।
कण्डोषः }

कण्वः, (पु०) एक ऋषि का नाम जिन्होंने शकु-
न्तला का पालन पोषण किया था—दुहितृ,—
सुता, (स्त्री०) शकुन्तला ।

कतः } निर्मली का वृक्ष जिसके फल से जल साफ
कतकः } किया जाता है ।

कतं } (न०) निर्मली वृक्ष का फल ।
कतकम् }

कतम (सर्वनाम वि०) कौन । कौनसा ।

कतर (सर्वनाम वि०) कौन । दो में से कौन सा ।

कतमालः (पु०) अग्नि । आग ।

कति (सर्वनाम वि०) १ कितने । २ कुछ ।

कतिकृत्वम् (अव्यय०) कितने बार । कितने दफा

कतिधा (अव्यय०) १ कितनी बार । २ कितने स्थान
पर । कितने भागों में ।

कतिपय (वि०) १ कुछ । थोड़े से । कुछेक ।

कतिविध (वि०) कितने प्रकार के ।

कतिशस् (अव्यया०) एक दफे में कितने ।

कथ् (धा० आत्म०) [कथते, कथित] १ डींगे
हाँकना । शेखी बघारना । २ प्रशंसा करना ।
प्रसिद्ध करना । ३ माली देना ।

कथनम् (न०) }
कथना (स्त्री०) } बखान करना । डींगे हाँकना ।

कत्सवरं (न०) कंथा ।

कथ् (धा० उभय०) [कथयति, कथित] १ कहना ।
बतलाना । २ बर्णन करना । ३ वार्तालाप करना ।
४ निर्देश करना । खोल देना । दिखला देना । ५
निरूपण करना । ६ सूचना देना । प्रवर देना ।
शिकायत करना ।

कथक (वि०) कहने वाला । निरूपण करने वाला ।

कथकः (पु०) १ किसी अभिनय का प्रधान पात्र ।
२ वादी । ३ किस्सा कहने वाला ।

कथनम् (न०) वर्णन । निरूपण । विवरण ।

कथम् (अव्यया०) १ कैसे । किस प्रकार । किस तरह से ।
कहाँ से । २ यह आश्चर्य व्यक्त भी है —
कथिकः (पु०) जिज्ञासु । खोजी ।—कारं,
(अव्यया०) किस रीति से । कैसे ।—प्रभाण,
(वि०) किस नाप का ।—भूत, (वि०) किस
प्रकार का कैसा ।—रूप, (वि०) किस सूरत
शङ्क का ।

कथंता }
कथन्ता } (स्त्री०) किस प्रकार का । किस ढंग का ।

कथा (स्त्री०) १ कहानी । किस्सा । २ कल्पित
कहानी । ३ वृत्तान्त । वर्णन । ४ वार्तालाप । कथो-
पकथन । ५ आख्यायिका के ढंग का गद्यमय
निबन्ध ।—अनुरागः, (पु०) वार्तालाप करने में
हर्षित होते वाला पुरुष ।—अन्तरम्, (न०)
१ बातचीत के सिलसिले में । २ दूसरी कहानी ।
—आरम्भः, (पु०) कहानी का आरम्भ ।—
उदयः, (पु०) कहानी का आरम्भ ।—उद्घातः
(पु०) पाँच प्रकार की प्रस्तावनाओं में से
दूसरे प्रकार की प्रस्तावना । २ किसी कहानी
के वर्णन का आरम्भ ।—उपाख्यानम्, (न०)
वर्णन । निरूपण ।—कृतं, (न०) कल्पित कहानी

का रूप रंग । २ मिथ्यावर्णन ।—नायकः,—
पुरुषः, (पु०) किसी कहानी का मुख्यपात्र ।
—पीठः, (न०) किसी कहानी का आरम्भिक
भाग ।—प्रबन्धः, (पु०) कहानी । किस्सा ।—
प्रसङ्गः, (पु०) १ वार्तालाप । बातचीत का
सिलसिला । २ विषय ।—प्राणः, (पु०)
नाटक का पात्र ।—मुखं, (न०) कथापीठ ।
किसी कहानी का आरम्भिक अंश ।—योगः, (पु०)
वार्तालाप का सिलसिला ।—विपर्यासः, (पु०)
किसी कहानी का बदला हुआ ढंग ।—शेषः,—
अवशेष, (वि०) वह पुरुष जिसका केवल वृत्तान्त
बच रहे अर्थात् मृत । मृतक । मरा हुआ ।—शेषः,
—अवशेषः, (पु०) कहानी का शेष अंश या
बचा हुआ भाग ।

कथानकम् (न०) छोटी कहानी जैसे बेताल-
पच्चीसी ।

कथित, न० कृ०) १ कहा हुआ । वर्णित । निरू-
पित । २ वाच्य ।—पटं (न०) पुनर्कति ।

[यह निबन्ध रचना में रचना सम्बन्धी दोष माना
गया है ।] वाक्य से सम्बन्ध रखने वाला । वाक्य
सम्बन्धी ।

कटु (धा० आत्म०) [कटते] धबड़ा जाना । मन का
चञ्चल होना । (आत्म०) [कटते] १ रोना ।
आँसू बहाना । २ दुःखी होना । ३ झुलाना । पुका-
रना । ४ मार डालना या कोटिल करना ।

कटु (अव्यया०) यह ' कु ' का पर्यायवाची है और
बुराई, स्वल्पता, हास, अनुपयोगिता, त्रुटिपूर्णता
आदि के भावों को प्रकट करता है ।—
अक्षरं (न०) बुरे अक्षर । बुरा लेख ।—अग्निः
(पु०) थोड़ी आग ।—अध्वन् (पु०) बुरा
मार्ग ।—अन्नं (न०) बुरा भोजन ।—अपत्यं
(न०) बुरा बालक ।—अभ्यासः (पु०) बुरी
आदत या बान । कुदेव ।—अर्थ (वि०) निरर्थक ।
अर्थरहित ।—अर्थना (स्त्री०) पीड़ा । अत्याचार ।
—अर्थयति, (क्रि०) १ तिरस्कार करना । तुच्छ
समझना । २ पीड़ित करना । अत्याचार करना ।
—अर्थित (वि०) १ तिरस्कृत । घृणित । तुच्छी-
कृत । २ अत्याचार पीड़ित । खिजाया हुआ ।

विद्याया हुआ । ३ तुच्छ । कमीना । ४ बद् । दुष्ट ।
—अर्थः (पु०) लोभी । लालची । —अर्थभावः
(= कदर्यभावः) लोभ । लालच । कंजूसी । प्रलो-
भन । सूतता । कंजूसपना । —अश्वः, (पु०) दुष्ट
बोढा । —आकार (वि०) भौड़ा । बद्धशक्त ।
अपरूप । —आचार (वि०) दुष्ट । बुरे आचरणों
वाला । —आचारः (पु०) बदचालचलन । —
उष्ट्रः (पु०) बुरा ऊँट । —उष्ण, (वि०)
गुनगुन । —उष्णम् (न०) गुनगुनापन । —रथः
(पु०) बुरा रथ या गाड़ी । —वद् (वि०)
१ बुरी बात करने वाला । अस्पष्ट बोलने वाला
अथवा ठीक ठीक बात न कहने वाला । २ दुष्ट ।
तिरस्करणीय ।

कदकं (न०) चँदना । मण्डप । शामियाना ।
कदन्म (न०) १ नाश । बरबादी । हत्या । २ शुद्ध ।
३ पाप ।

कदम्बः, कदम्बः } (पु०) १ स्वनामख्यात
कदम्बक, कदम्बकः } वृक्षविशेष । इसके बारे में
कहा जाता है कि, जब बादल गरजते हैं,
तब इसमें कलियाँ लगती हैं । २ घास विशेष ।
३ हल्दी । —अनिलः (पु०) १ कदम्ब के पुष्पों
की सुवास से सुवासित पवन । २ वसन्त
ऋतु । —वायुः (पु०) सुवासित पवन ।

कदम्बकं } (पु०) १ आरा । आरी । २ अंकुश ।
कदम्बकम् } अकुल ।

कदरः (न०) जसा हुआ दूध । दही ।

कदरं (न०) १ समारोह । २ कदम्ब वृक्ष के फूल ।

कदलः } (पु०) केले का पेड़ । कदली वृक्ष ।
कदलकः } (पु०) केले का पेड़ । २ सुग विशेष । ३

कदली (स्त्री०) १ केले का पेड़ । २ सुग विशेष । ३
ध्वजा जो हाथी की पीठ पर लेकर आगे बढ़ाई
जाती है । ४ ध्वजा या झंडा ।

कदरा (अव्यया०) कब किस समय ।

कदु (वि०) १ धौला । भूरा ।

कद्री (स्त्री०) } (स्त्री०) कश्यप ऋषि की पत्नी और
नागों की माता । —पुत्रः, —सुतः (पु०) सर्प ।
सर्प ।

कनकं (न०) सोना ।

कनकः (पु०) १ पलास वृक्ष । २ धतूरे का वृक्ष । ३
तिंदुक । —अंगदम् (पु०) सोने का बाजू । —

अचलः—अद्रिः—गिरिः—शैलः, (पु०)
सुमेरु पर्वत । —आलुका, (स्त्री०) सुवर्ण
कलस या सोने का फूलदान । —आहूयः, (पु०)
धतूरे का वृक्ष । —टड्डः, (पु०) सुनहली कुल्हाड़ी
—पञ्च, (न०) सोने का बना कान का गहना ।
—परागः, (पु०) सोने की रज । —रसः, (पु०)
१ हरताल । २ गला हुआ सोना । —सूत्रं (न०)
सोने की गुंज । आभूषण विशेष । —स्थली, (स्त्री०)
सोने की खान ।

कनकमय (वि०) सोने का बना हुआ । सुनहला ।
कनखलं (न०) हरिद्वार के समीप का एक तीर्थ
विशेष ।

कनन (वि०) काना एक आँख का ।

कनयति (क्रि०) कम करना । आकार में घटाना ।
छोटा करना ।

कनिष्ठ (वि०) १ सब से छोटा । सब से कम । २
उम्र में सब से छोटा । [उँगली ।

कनिष्ठा (स्त्री०) छगुनिया । हाथ की सब से छोटी
कनीनिका } १ छगुनिया । हाथ की सब से छोटी
कनीनी } उँगली । २ आँख की पुतली ।

कनीथस् (वि०) १ अपेक्षा कृत कम । अपेक्षाकृत
छोटा । २ वय में अपेक्षा कृत छोटा ।

कनेरा (स्त्री०) १ रण्डी । बेश्या । २ हथिनी ।

कन्तुः } (पु०) १ काम । २ हृदय (जो विचार
कन्तुः } और अनुभव का स्थान है ।) ४ खत्ती या
खौ जिसमें अनाज भरा जाता है ।

कन्था } (स्त्री०) कथड़ी । कथरी । —धारिणम्
कन्था } (न०) कथड़ी पहिना । —धारिन् (पु०)
योगी । भिक्षुक ।

कन्दः (पु०) कन्दः (पु०) } १ एक प्रकार की जड़
कन्दम् (न०) कन्दम् (न०) } जो खायी जाती है ।

२ लहसन । ३ गाँठ । गुमड़ी । —मूलम् (न०)

मूली । —सारं (न०) इन्द्र का उद्यान । (पु०)
बादल ।

कदड्डं (न०) सफेद कमल । कमोदिनी ।

कन्दरः (पु०) कन्दरः (पु०) } गुफा । घाटी (पु०)

कन्दरम् (न०) कन्दरम् (न०) } अंकुश । आकुल ।

कन्दरा } (स्त्री०) कन्दरी, कन्दरी (स्त्री०)
कन्दरा } गुफा । खुखाल । घाटी ।

कंदराकारः } (पु०) पहाड़ । पर्वत ।
कन्दराकारः }

कंदर्पः, कन्दर्पः (पु०) १ कामदेव । २ प्रेम । —
कूपः (पु०) १ कुस या कुशा (२) वेनि ।
भग । —ज्वरः, (पु०) कामज्वर । —दहनः, (पु०)
शिव जी का नाम । —मुपजः, —मुसलः, (पु०)
पुरुष की जनेन्द्रिय । लिङ्ग । —शृङ्खल, (पु०)
रतिबन्ध ।

कंदलः, कन्दलः (पु०) १ अंशुआ । अंकुर । २
कंदलम्, कन्दलम् (न०) } लानत । मलामत ।
भर्त्सना । ३ गाल अथवा गाल और कनपुटी ।
४ अशकुन । कुलक्षण । ५ मपुर स्वर । ६ केले
का वृक्ष । (पु०) १ सुवर्ण । २ युद्ध । लड़ाई ।
३ वादानुवाद । बहस । (न०) पुष्प विशेष ।

कंदली, कन्दली (स्त्री०) १ केले का वृक्ष । २ एक
जाति का हिरन । ३ ऊँडा । ४ कमलगट्टा । या
कमल का बीज । —कुमुदम् (न०) कुकुरमुत्ता ।

कंदुः } (पु०) (स्त्री०) १ बंशोई । पत्तीली ।
कन्दुः } २ तंदूर चूल्हा ।

कंदुकः, कन्दुकः (पु०) } गेंद । बाल । —लीला
कंदुकम्, कन्दुकम् (न०) } (पु०) गेंद बतले का
खेल ।

कंदोटः, कन्दोटः (पु०) } १ कमेदिनी या सफेद
कंदोईः, कन्दोईः (पु०) } कमल का फूल । २ नील
कमल ।

कंधरः } (पु०) १ गरदन । २ बादल ।
कन्धरः }

कंधरा } (स्त्री०) गरदन ।
कन्धरा }

कंधिः } (स्त्री०) १ ससुद्ध । २ गर्वन ।
कन्धिः }

कञ्चम् (न०) १ पाप । २ मूर्च्छा । बेहोशी ।

कन्यका (स्त्री०) १ लड़की । २ अविवाहिता लड़की ।
३ दस वर्ष की लड़की की संज्ञा विशेष । साहित्या-
लङ्कार में कई प्रकार की नायिकाओं में से एक ।
अविवाहिता लड़की, जो किसी पद्यमय काव्य की
प्रधान नायिका हो । ४ कन्याराशि । —कुलः (पु०)
बहकावा । दम । झूँसा । कुसलाहट । —जनः,
(पु०) कुँवारी कन्या । अविवाहिता लड़की ।

—जातः, (पु०) अविवाहिता लड़की से उत्पन्न
पुत्र । कानीन ।

कन्यसः (पु०) सब से बहुरा भाई ।

कन्यसा (स्त्री०) सब से छोटी उँगुली ।

कन्यसी (स्त्री०) सब से छोटी वहिन ।

कन्या (स्त्री०) १ अविवाहिता लड़की या पुत्री । २

दस वर्ष की उम्र की लड़की । ३ कारी लड़की ।

४ साधारणतः कोई भी स्त्री । ५ कन्या राशि ।

६ दुर्गा का नाम । ७ बड़ी इलायची । —अन्तःपुरं,

(न०) जनानखाना । अन्तःपुर । —आट, (वि०)

युवती लड़कियों की खोजमें रहने वाला । —आटः,

(पु०) १ लड़कियों के रहने का स्थान । २ वह

पुरुष जो युवतियों का शिकार करे अथवा उनकी

खोज में रहे । —कुन्तः, (पु०) कन्नौज नामक नगर

—गत्तम्, (न०) कन्या राशि पर गया हुआ ग्रह ।

—ग्रहणम्, (न०) विवाह में कन्या को ग्रहण

करना या लेना । —दानम्, (पु०) विवाह में

कन्या को देना । —दोषः, (पु०) कन्याओं के

ऐव, जैसे रोग, अज्ञान्यूनता आदि । —धनम्

(न०) दहेज । यौतुक । —पतिः, (पु०)

दामाद । जामाता । —पुत्रः, (पु०) अविवाहिता

लड़की से उत्पन्न लड़का जिसे कानीन कहते हैं ।

—पुरं, (न०) जनानखाना । —भर्तृ, (पु०)

१ दामाद । जमाई । २ कार्तिकेय का नाम ।

—रत्नं, (स्त्री०) अत्यन्त सुन्दरी कन्या ।

—राशिः, (पु०) कन्याराशि । —वेदिन,

(पु०) जमाई । —शुल्कं, (न०) वह धन

जो कन्या का मृत्यु स्वरूप कन्या के पिता को

दिया जाता है । —स्वयंवरः, (पु०) कारी

कन्या द्वारा अपने लिये पति का वरण करने का

विधान विशेष । —हरणं, (न०) कन्या के

भगा ले जाना ।

कन्यका } (स्त्री०) १ युवती लड़की । २ कारी
कन्यिका } लड़की ।

कन्यामय (वि०) युवती कन्या के रूप में ।

कन्यामयम् (न०) जनानखाना । अन्तःपुर ।

(जिसमें अधिक संख्या लड़कियों ही की हो) ।

कपटः (पु०) } धोखा । झूठ । कपट । —तापसः,
कपटन् (न०) } पाखण्डी साधु । बना हुआ
तपस्वी । —पट्ट, (वि०) धोखा देने में निपुण ।
—प्रबन्धः, (पु०) कपटपूर्ण चाल । —लेख्यम्,
(न०) जाली दस्तावेज या टोप । —घननम्,
(न०) धोखे की बात । —वेश, (वि०) वह-
रूपिया । शङ्क बढ़ने हुए ।

कपटिकः (पु०) झूठी । कपटी दगाबाज ।

कपर्दः } (पु०) १ कौड़ी । २ जटा । विशेष कर
कपर्दकः } शिव जी का जटाजूट ।

कपर्दिका (स्त्री०) कौड़ी ।

कपर्दिन् (पु०) शिव जी का नाम ।

कपाटः (पु०) } १ किवाड़ । २ द्वार । दरवाजा ।

कपाटम् (स्त्री०) } —उद्घाटनम् (न०) किवाड़
खोलना । —झः (पु०) सेंध फोड़ने वाला । चोर ।

कपालः (पु०) } १ खोपड़ी । खप्पर । ३ समारोह
कपालं (न०) } संग्रह । ४ भिक्षापात्र । ५ प्याला
या कदोरा । ६ ढक्कन । ढकना । —पाणिः, —

भृत्, —मालिन्, —शिरस्, (पु०) शिव जी
की उपाधियाँ । —मालिनी, (स्त्री०) दुर्गादेवी
का नाम ।

कपालिका (स्त्री०) खपरा । खप्पर । ढिक्का ।

कपालिन् (वि०) १ खोपड़ी रखने वाला । २ खोप-
डियों की (माला) पहिनने वाला । (पु०)
१ शिव जी की उपाधि । २ नीच जाति का आदमी,
जो ब्राह्मणी माता और सख्खाहा पिता से उत्पन्न
हुआ हो ।

कपिः (पु०) १ बंदर । लङ्कूर । २ हाथी । —आख्याः
सुगन्धिद्रव्य । धूप । घूना । —इन्द्रः, (पु०)
श्रीरामचन्द्र, और सुग्रीव की उपाधि । —इन्द्रः,
(पु०) १ हनुमानजी की उपाधि । २ सुग्रीव की
उपाधि । जाम्बवान् की उपाधि । —कच्छुः, (स्त्री०)
एक पौधे का नाम । —केतनः, —ध्वजः, (पु०)
अर्जुन का नाम । —जः, —तैलं, —नामन्,
(न०) १ शिलाजीव । २ लोवान । —प्रभुः, (पु०)
श्रीरामचन्द्रजी की उपाधि । —लोहं, (न०)
पीतल ।

कपिञ्जलः } (पु०) १ चातक पत्ती । २ तीतर पत्ती ।
कपिञ्जलः }

कपित्थः (पु०) कैथा का पेड़ । —आस्यः (पु०)
वानर विशेष ।

कपित्थम् (न०) कैथा के पेड़ का फल ।

कपिल (वि०) १ भूरा । धुमैला । २ भूरे बालों वाला ।

कपिलद्युति (पु०) सूर्य ।

कपिलधारा (स्त्री०) गङ्गा जी की उपाधि ।

कपिलस्मृति (स्त्री०) कपिल रचित सांख्य सूत्र ।

कपिलः (पु०) १ एक महर्षि का नाम, जिन्होंने
सगर राजा के ६० हजार पुत्रों को कुपित हो, भस्म
कर डाला था । इन्होंने सांख्यदर्शन का आविष्कार
किया था । २ कुत्त । ३ लोवान । ४ धूप । ५ एक
प्रकार की आग । ६ भूरा या धुमैला रंग ।

कपिला (स्त्री०) १ भूरे रंग की गाय । २ एक प्रकार
का सुगन्धिद्रव्य ३ लकड़ी का लट्ठा । ४ ओंकर ।
जलौका ।

कपिलाश्वः (पु०) इन्द्र की उपाधि ।

कपिश (वि०) १ भूरा । सुनहला । २ ललौहर ।

कपिशः (वि०) १ भूरा या सुनहला रंग । २ शिलाजीव
या लोवान । [नाम ।

कपिश (स्त्री०) १ माधवीलता । २ एक नदी का
कपिशित (वि०) सुनहला या भूरे रंग का ।

कपुञ्जलं (न०) } १ चूड़ाकरण संस्कार । २ दोनों
कपुष्टिका (स्त्री०) } कपटियों के ऊपर के केशगुच्छ ।

कपूय (वि०) निकम्मा । हेय । नीच ।

कपोतः (पु०) १ पिड़की । फाका । कबूतर । २
(साधरणतः) पक्षी । —अन्धिः, (पु०) सुगन्धि
द्रव्य विशेष । —अञ्जनम्, (न०) सुमां ।
—अरिः, (पु०) बाज पक्षी । —चरणा, (स्त्री०)
सुगन्धिद्रव्य विशेष । —पालिका, —पाली,
(स्त्री०) काबुक । अड्डा । —राजः, (पु०)
कबूतरों का राजा । —सारं, (न०) सुमां । —
—हस्तः, (पु०) हाथ जोड़ने की विधि विशेष
भय या प्रार्थना व्यञ्जक होती है ।

कपोतकः (पु०) छोटा कबूतर ।

कपोतकम् (न०) सुमां ।

कपोलः (पु०) गाल । —फल्कः, (पु०) चौड़े
गाल । —भित्ति, (स्त्री०) कनपटी और गाल ।
—रागः, (पु०) गालों का गुलाबी रंग ।

कफः (पु०) श्लेष्मा । बलगम । —अरिः, (पु०)
सोढ । —कूर्चिका, (स्त्री०) थूक । खसार । —
क्षयः, (पु०) क्षय रोग । —घ्न, —नाशन,
—हर, (वि०) कफनाशक । —उवरः, (पु०)
कफ की वृद्धि या कफ के विकार से उत्पन्न उवर ।

कफल (वि०) कफ प्रकृति का ।

कफिन् (वि०) [स्त्री०—कफिनी] कफ की वृद्धि से
पीड़ित । कफिला ।

कफणः {
कफणः { (स्त्री०) कुहनी ।
कफणी }

कवन्धः—कवन्धः (पु०) { सिर रहित धड़ ।
कवन्धम्—कवन्धम् (न०) { (विशेष कर वह
धड़ जिसमें प्राण बाकी हों ।) (पु०) १ पेट ।
२ बादल । ३ धूमकेतु । ४ राहु का नाम । ५
जल । ६ श्रीमद्वाल्मीकि रामायण में वर्णित राक्षस
विशेष, जिसे श्रीरामचन्द्र जी ने मारा था ।

कवित्थः (पु०) कैथा का पेड़ ।

कम् (धा० आत्मा०) [कामयते, कामित, कान्त]
१ प्यार करना । आसक्त होना । २ उत्कण्ठित
होना । अभिलाषा करना । इच्छा करना ।

कमठः (पु०) १ कछुआ । २ बाँस । ३ घड़ा ।
—पतिः, (पु०) कछुवों का राजा ।

कमठी (स्त्री०) १ कछुई या छोटा कछुआ ।

कमण्डलु, कमण्डलुः (पु०) मिट्टी या लकड़ी का
जलपात्र । —धरः (पु०) शिवजी का नाम ।

कमल (वि०) १ विषयी । लम्पट । २ सुन्दर ।
मनोहर ।

कमलः (पु०) १ कामदेव । २ अशोक वृक्ष । ३ ब्रह्मा
का नाम । [प्रिय ।

कमलोय (वि०) १ वाञ्छनीय । २ मनोहर । सुन्दर ।

कमर (वि०) कामासक्त । उत्सुक ।

कमलं (न०) १ कमल । २ जल । ३ तौबा । ४
अर्कविशेष । द्वाविशेष । ५ सारस पक्षी । ६
सूत्रस्थली । —अक्षी, (स्त्री०) कमल जैसे नेत्रों
वाली स्त्री । —आकरः, (पु०) १ कमल समूह ।
२ कमल परिपूर्ण सरोवर । —आलया, (स्त्री०)
लक्ष्मी जी का नाम । आसनः (पु०) ब्रह्मा

का नाम । —ईक्षणा, (वि०) कमल जैसे नेत्रों
वाली (स्त्री) । —उत्तरं, (न०) कुसुम पुष्प ।
—खण्डम् (न०) कमल समूह । —जः, (पु०)
१ ब्रह्मा की उपाधि । २ रोहिणी नक्षत्र । —जम्भन्,
(पु०) —भवः —योनिः, —सम्भवः, (पु०)
ब्रह्मा की उपाधियाँ ।

कमलः (पु०) १ सारस पक्षी । २ हिरन विशेष ।

कमलकम् (न०) एक छोटा कमल ।

कमला (स्त्री०) १ लक्ष्मीजी की उपाधि । २ सर्वोत्तम
स्त्री । —पतिः, —सखः (पु०) विष्णु की उपाधि ।

कमलिनी (स्त्री०) १ कमल का पैधा । २ कमल
समूह । ३ वह स्थान जहाँ कमलों का बाहुल्य हो ।

कया (स्त्री०) सौन्दर्य । कमनीयता ।

कामितु (वि०) कामासक्त । कामुक ।

कम्प { (धा० आत्मा०) [कंपते, कंपित] हिलना ।

कम्प { काँपना । थरथराना । धूमना फिरना ।

कंपः, कम्पः (पु०) { थरथरी : कपकपी । —अपचित,
कंपा, कम्पा (स्त्री०) { (वि०) थरथराने वाला । आन्दो-
लित । उद्भिन्न । —लक्ष्मन् (पु०) वायु । पवन ।

कंपन { (वि०) थरथराने वाला । काँपने वाला ।
कम्पन { हिलने वाला ।

कंपनः { (पु०) शिशिरऋतु । नवंबर और दिसंबर का
कम्पनाः { मास ।

कंपनम् { (न०) १ थरथरी । कंपकपी । २ उच्चारण
कम्पनम् { विशेष । गिटिकरी ।

कंपाकः { (पु०) वायु । पवन ।
कम्पाकः {

कम्प { (वि०) काँपने वाला । हिलने वाला ।
कम्प {

कम्ब { (धा० परस्मै०) [कम्बति, कम्बित] जाना ।
कम्ब { हिलना ।

कम्बर { (वि०) चित्रविचित्र । रंगबिरंगा ।
कम्बर {

कम्बरः { (पु०) रंगबिरंगा रंग का । चितकम्बर रंग
कम्बर { का ।

कम्बलः { (पु०) १ ऊनी कंबल । २ गलथ्या । गौ की
कम्बलः { गरदन के नीचे का लटकता हुआ मांस ।
हँगा । ३ हिरन विशेष । ४ ऊनी वस्त्र जो ऊपर से
पहिना जाय । ५ दीवाल । —वाह्यार्क (न०)
बहली जिस पर ऊनी पर्दा पड़ा हो ।

कंबलम् } (न०) जल ।
कम्बलम् }

कंबलिका } (स्त्री०) छोटा कंबल । (पु०) बैल ।
कम्बलिका } सौँद ।—वाह्यकं (न०) कंबल के उबार
की बैलगाड़ी ।

कंवी, कंवी } (स्त्री०) कलछी या चमचा ।
कम्बी }

कंबु, कम्बु } (वि०) [स्त्री०—कम्बु—कंबू]
कंवी, कम्बी } चित्तीदार । धब्बादार रंगविरंगा ।

(पु० न०) शङ्ख । (पु०) १ हाथी २ गरदन । ३
रंगविरंगा रंग । ४ शरीरस्थ एक रंग । ५ कंकण ।
पहुँची । ६ नलीनुमा हड्डी । —कण्ठी,
(स्त्री०) शंख जैसी गरदन वाली स्त्री
—ग्रीवा (स्त्री०) देखो कंबुकण्ठी ।

कंबोजः } (पु०) १ शङ्ख । २ हाथी विशेष ।
कम्बोजः } ३ (बहुवचन) एक देश विशेष तथा वहाँ
के रहने वाले ।

कम्प (वि०) मनोहर । सुन्दर ।

करः (पु०) [स्त्री०—करा, या करी,] १ हाथ ।
२ रोशनी की किरन । ३ हाथी की सूँड़ । ४ कर ।
सुँगी । खिराज । ५ ओला । ६ २४ अँगुल का
माप विशेष । ७ हस्त नक्षत्र ।—अग्रं, (न०)
हाथ का अगला भाग । २ हाथी की सूँड़ की
नोक ।—आघातः, (पु०) हाथ का आघात ।
—आरोहः, (पु०) अँगुठी ।—आर्लबः, (पु०)
हाथ का सहारा देना ।—आस्फोटः, (पु०) १
छाती । २ हाथ का आघात ।—कण्टकः, (पु०)
—कण्टकम्, (न०) हाथ की अँगुली का नाखून ।
—कमलं, —पङ्कजम्, —पद्मं, (न०) कमल
जैसा हाथ । सुन्दर हाथ ।—कलशः, (पु०)—
कलशम्, (न०) हाथ की अँगुली ।—किसलयः,
(पु०)—किसलयम्, (न०) १ कोमल कर ।
२ अँगुली ।—कोषः, (पु०) हाथ की अँगुली ।
—ग्रहः, (पु०)—ग्रहणम्, (न०) १ कर
लगाना । २ पाणिग्रहण करना । ३ विवाह ।—
ग्राहः, (पु०) १ पति । २ कर उगाहने वाला ।—
जः, (पु०) हाथ की अँगुली का नख ।—जम्,
(न०) सुगन्धि द्रव्य विशेष ।—जालं, (न०)
प्रकाश की धारा ।—तलः, (पु०) हथेली ।—

तालः, (पु०)—तालकम्, (पु०) १ ताली
बजाना । करताल नाम का बाजा विशेष ।—
तालिका, —ताली, (स्त्री०) ताली ।—तोया,
(स्त्री०) एक नदी का नाम ।—दः, (वि०) १
कर अदा करते हुए । २ कर दे या कर देने वाला ।
—पत्रं, (न०) आरा । आरी । पत्रिका,
(स्त्री०) जल में क्रीड़ा करते समय पानी को उछा-
लना ।—पटलवः, (पु०) १ कोमल हस्त । २
अँगुली ।—पालिका (स्त्री०) १ तलवार । २
फाँवड़ा । कुदाली ।—पीडनम्, (न०) विवाह ।
—पुटः, (वि०) अँगुली ।—पृष्ठं, (न०) हाथ
की पीठ । बालः,—बालः, (पु०) १ तलवार ।
२ अँगुली का नख ।—भारः, (पु०) अत्यन्त
अधिक कर ।—भूः (पु०) अँगुली का नख ।—
भूषणं, (न०) पहुँची । कड़ा ।—मालः, (पु०)
धुआ ।—मुक्तं, (न०) हथियारों में सरताज ।—
रहः, (पु०) नख । नाखून ।—वीरः,—वीरकः,
(पु०) १ तलवार । खौड़ा । २ कबरगाह । ३ एक
देश विशेष का नाम । ४ वृक्ष विशेष ।—शाखा,
(स्त्री०) अँगुली ।—शीकरः, (पु०) हाथी
की सूँड़ से फँका हुआ जल ।—शूकः, (पु०)
अँगुली का नाखून ।—सारः, (पु०) किरनों
के प्रकाश का मंदा पड़ जाना ।—सूत्रं, (न०)
सूत्र जो विवाह के समय कलाई पर बाँधा जाता
है ।—स्थालिनः, (पु०) शिव का नाम ।—
स्वनः, (पु०) ताली बजाना ।

करकः (पु०) } कमण्डलु । साधु का जलपात्र ।
करकम् (न०) } —अंभस्, (पु०) नारियल का
वृक्ष ।—आसारः, (पु०) ओलों की फुआर या
वर्षा ।—जम्, (पु०) पानी ।—पात्रिका, (स्त्री०)
साधु का कमण्डलु ।

करङ्कः (पु०) १ हड्डियों की ठठरी । २ खोपड़ी । ३
नरेंरी । नारियल का बना पात्र । पिटारी ।
संबूकची ।

करंजः } (पु०) भिलावे का पेड़ ।
करञ्जः }

करटः (पु०) १ हाथी का गाल । २ कुसुंभ । ३ काक ।
४ नास्तिक । अविश्वासी । ५ पतित ब्राह्मण ।

करटकः (पु०) १ काक । २ चोरी की कला का विस्तार करने वाले कर्णारथ का नाम । ३ हितोपदेश और पञ्चतन्त्र में वर्णित एक शृगाल का नाम ।

करटिन् (पु०) हाथी ।

करटुः } (पु०) सारस पक्षी का भेद ।
करेटुः }

करणम् (न०) १ करना । सम्पन्न करना । २ क्रिया । ३ धार्मिक अनुष्ठान । ४ व्यवसाय । व्यापार । ५ इन्द्रिय । ६ शरीर । ७ क्रिया का साधन । ८ कारण । हेतु । ९ दीप । दस्तावेज । लिखित प्रमाण । १० संगीत विद्या में ताली से ताल देना । ११ ज्योतिष में दिन विभाग विशेष ।—अधिपः, (पु०) जीव ।—ग्रामः, (पु०) इन्द्रियों की समष्टि ।—त्राणं, (न०) सिर ।

करंडः } (पु०) १ संदूकची या छोटी डलिया ।
करण्डः } २ शहद की मक्खी का छत्ता । ३ तलवार ।
४ कारणद्वय (जल) पक्षी ।

करंडिका, करण्डिका } (स्त्री०) बाँस की पिटारी ।
करंडी, करण्डी }

करंधय } (वि०) हाथ चूमते हुए ।
करन्धय }

करभः (पु०) १ कलाई से लेकर उँगुली के नख तक के हाथ का पृष्ठभाग । २ सूँड़ । ३ जवान हाथी । ४ जवान ऊँट । ५ ऊँट । ६ सुगन्धि द्रव्य विशेष ।—ऊरुः, (स्त्री०) हाथी की सूँड़ जैसी जँवाओं वाली स्त्री ।

करभकः (पु०) ऊँट ।

करभिन् (पु०) हाथी ।

करंब, करम्ब } (वि०) १ मिश्रित । मिला-
करंबित, करम्बित } जुला । रंगबिरंगा । २ जड़ा हुआ । बैठाया हुआ ।

करंभः, करम्भः } (पु०) १ आटा या अन्य
करंबः, करम्बः } भोज्यपदार्थ जिसमें दही मिला हो । २ कीचड़ । यथा—

करंभवानुकाशः पात्र ।

मनु ।

करहाटः (पु०) एक देश । सम्भवतः सतारा जिले का आधुनिक करहाद । कमल का डंठुल या कमलनाल । कमल की जड़ से निकलने वाले रेशे ।

करालः (वि०) १ भयानक । खौफनाक । २ फटा-हुआ । चौड़ा खुला हुआ । ३ बड़ा । लंबा । ऊँचा । ४ असम । विषम । नुकीला ।—दंष्ट्रः (वि०) भयानक दाढ़ों वाला ।—वदना, (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।

करालिकः (पु०) १ वृक्ष । २ तलवार ।

करिका (स्त्री०) खरोंच । नखाघात ।

करिणी (स्त्री०) हथिनी ।

करिन् (पु०) १ हाथी । २ आठ को संख्या ।—इन्द्रः,—ईश्वरः,—वरः, (पु०) विशाल हाथी । गजराज ।—कुम्भः, (पु०) हाथी के मस्तक का वह भाग जो ऊँचा उठा हुआ हो ।—गर्जितं, (न०) हाथी की चिंघाड़ ।—दन्तः, (पु०) हाथीदाँत ।—पः, (पु०) महावत ।—पोतः—शावः,—शावकः (पु०) हाथी का वच्चा ।—बंधः, (पु०) हाथी का खूँटा ।—मान्चलः, (पु०) सिंह ।—मुखः, (पु०) गणेश जी ।—वैजयन्ती, (वि०) हाथी की पीठ पर रखा हुआ झंडा ।—स्कन्धः, (वि०) हाथियों का समूह ।

करोरः (पु०) १ बाँस का झँखुआ । २ झँखुआ । ३ करील नाम का कटीला एक झाड़ । ४ जलकुम्भ ।

करीषः (पु०) } सूखा गोबर ।—अग्निः,
करीषम् (न०) } (पु०) अग्ने कर्षों की आग ।

करीषंकषा (स्त्री०) प्रचण्ड पवन या आँधी ।

करोषिणी (स्त्री०) सम्पत्ति की अभिघात्री देवी ।

करुण (वि०) कोमल । करुण हृदय । दयापात्र । दया प्रदर्शित करने योग्य । दयोत्पादक । शोका-न्वित ।—मल्ली, (स्त्री०) मरिक्का का पौधा । २ सहित्यालङ्कार में वियोग-जन्य प्रेम का भाव ।

करुणः (पु०) १ रहम । दया । अनुकम्पा । कोमलता । २ दुःख । शोक ।

करुणा (स्त्री०) अनुकम्पा । रहम । दया ।—आर्द्र (वि०) कोमलहृदय ।—निधिः, दया का भाण्डार ।—पर, —मय, (वि०) अत्यन्त दयालु ।—विमुख, (वि०) निष्ठुर । सज़दिल ।

करेटः (पु०) उँगुली का नख ।

करेखाः (पु०) १ हाथी । २ कर्णिकार । कठचंपा या वनचंपा का पेड़ ।—भूः,—सुतः, (पु०)

हस्ती-विज्ञान के आविर्भावकर्ता पालकाय का नाम । [का नाम ।

करेणुः (स्त्री०) १ हथिनी । २ पालकाय की माता करोट (न०) } १ खोपड़ी । २ कटोरा या करोटिः (स्त्री०) } पात्र ।

कर्कः } (पु०) १ मकरा । २ राशिचक्र की कर्कटकः } चौथी राशि । ३ अग्नि । ४ जलपात्र । ५ आईना । दर्पण । ६ सफेद रंग का छोटा ।

कर्कटः } (पु०) १ कैंकड़ा । २ कर्कराशि । ३ कर्कटकः } घेरा । चक्र ।

कर्कटिः } (स्त्री०) ककड़ी विशेष । कर्कटी }

कर्कन्धुः } (स्त्री०) उजाव या ईरानी बैर का पेड़ कर्कन्धूः } और उसके फल ।

कर्कर (वि०) १ कड़ा । दोस । पोड़ा ।—अर्त्तः, (पु०)—अङ्कः, (पु०) खजिनपट्टी ।—अन्धुकः, (पु०) अन्धा कुआ । अन्धकूप ।

कर्करः (पु०) १ हथौड़ा । धन । २ दर्पण । आईना । ३ हड्डी । खोपड़ी की हड्डी का टूटा हुआ टुकड़ा ।

कर्कराटुः (पु०) दीर्घ तिरछी दृष्टि । दूर तक देखने-वाली तिरछी चितवन । कलक ।

कर्कराला (स्त्री०) धुँधुराले बाल ।

कर्करो (स्त्री०) ऐसा जलपात्र जिसकी पैदी में चलनी की तरह छिद्र हों ।

कर्कश (वि०) १ कड़ा । सख्त । रूखा । २ निष्ठुर । दयाशून्य । ३ अचण्ड । दृढ़ । अत्यधिक । ४ उद्वेग । ५ असदाचरणी । असती । अपतिव्रता । (स्त्री०) ६ समझने में कठिन । समझ में न आने योग्य ।

कर्कशः (पु०) १ तलवार । खड्ग । २ कर्जा । ३ राजा ।

कर्कशिका } (स्त्री०) वनज द्रव्य विशेष । कर्कशी }

कर्किः (पु०) कर्क राशि ।

कर्कोटः } (पु०) १ आठ मुख्य सर्पों में से एक । कर्कोटकः } यह एक बड़ा विषैला सर्प होता है । यहाँ

तक कि, इसके देख देने ही से देखे जाने वाले पर सर्पविष का असर पैदा हो जाता है । २ गन्ना ।

३ बेल का पेड़ ।

कर्चूरः (पु०) १ कचूर । २ एक सुगन्ध-द्रव्य विशेष ।

कर्चूरम् (न०) १ सुवर्ण । २ इरताल । मैनफल ।

कर्ण (धा० उभय०) [कर्णयति, कर्णित] १ छेदना । सूराल करना । वेधना । २ सुनना ।

कर्णः (पु०) १ कान । २ कड़ादार गंगाल या जंगाल आदि बर्तन के कड़े या कान । दस्ता । बेंट । ४ ढाँड़ । पतवार । ५ समकोण त्रिभुज की वह रेखा जो समकोण के सामने होती है । ६ महाभारत में वर्णित कौरव पक्षीय एक प्रसिद्ध योद्धा राजा [यह सूर्यपुत्र के नाम से प्रसिद्ध था, तथा बड़ा प्रसिद्ध दानी था । कुन्ती जब स्वारी थी, तब उसके गर्भ से इसकी उत्पत्ति हुई थी । इसीसे यह ' कानीन ' भी कहलाता था । कुरुक्षेत्र के युद्ध में इसने कौरवों की ओर से पाण्डवों से युद्ध किया था । अन्त में अर्जुन द्वारा यह मारा गया था ।]—अञ्जलिः, (स्त्री०) कान का भाग विशेष अथवा वह मुख्य भाग जिससे सुनाई पड़ता है ।—अनुजः, (पु०) युधिष्ठिर ।—अन्तिक, (वि०) कान के समीप ।—अन्दुः, अन्दूः, (स्त्री०) कान की बाली या बाला ।—अर्पणम्, (न०) सुनना । कान देना ।—आस्फालः, (पु०) हाथी का कान फट-फटाना ।—उत्तंसः, (पु०) कान में धारण किया जानेवाला आभूषण विशेष अथवा आभूषण ।—उपकर्णिका, (स्त्री०) अफवाह । किम्बदन्ती ।—द्वेनः, (पु०) कान में सतत आवाज का होना ।—गोचर, (वि०) जो सुन पड़े ।—ग्राहः, (पु०) पतवारी ।—जप, (वि०) (कर्णजप भी रूप होता है) गुप्त बात कहने वाला । मुखबिर ।—जपः, जापः, (पु०) निन्दक । निन्दा करनेवाला ।—जाहः, (पु०) कान की जड़ ।—जित्, (पु०) कर्ण को हराने-वाला । अर्जुन की उपाधि ।—तालः, (पु०) हाथी के कानों की फटफट का शब्द ।—धारः, (पु०) पतवारी ।—धारिणी, (स्त्री०) हथिनी ।—परम्परः, (स्त्री०) सुनी सुनाई बात । अफवाह ।—पालिः, (स्त्री०) कान का नीचे लटकता हुआ हिस्सा । पाशः, (पु०) सुन्दर कान ।—पूरः, (पु०) १ कर्णफूल । कर्णफूल । कान का आभूषण विशेष । २ अशोक का वृक्ष ।—पूरकः, (पु०) १ कर्ण-

फूल । बाली । २ कदम्ब का पेड़ । ३ अशोक का पेड़ । ४ नील कमल ।—प्रान्तः, (पु०) “ कर्णपालि ” देखो ।—भूषण, (न०)—भूषा, (स्त्री०) कान का गहना ।—मूलं, (न०) कान के बीचे का भाग ।—पोटा, (स्त्री०) दुर्गा का एक रूप ।—वंशः, (पु०) बाँस बल्लू से बना मयान ।—वर्जित, (वि०) कानरहित ।—वर्जितः, (पु०) सर्व ।—विधर, (न०) कान का छेद ।—विष्, (स्त्री०) कान का मैल या ठेठ ।—वेधः, (पु०) संस्कार विशेष जिसमें कान छेदे जाते हैं । छिदावन ।—वेष्टः, (पु०)—वेष्टनम्, (न०) कान की बालियाँ ।—शृङ्खुची, (स्त्री०) कान का बहिर्भाग ।—शूलः, (पु०)—शूलं, (न०) कान का दर्द ।—श्रव (वि०) जैसी आवाज से कहा गया । सुन पढ़ने योग्य ।—श्रावः,—संश्रवः, (पु०) कान का बहना । कान का रोग विशेष ।—सूः, (स्त्री०) कर्ण की जननी कुन्ती ।—होन, (वि०) कर्णविवर्जित ।—हीनः, (पु०) सर्प ।

कर्णाकशि (वि०) कानों कान ।

कर्णाटः (बहुवचन) भारत के दक्षिणी प्रायःद्वीप का एक भूखण्ड विशेष ।

कर्णाटी (स्त्री०) कर्णाट देश की स्त्री ।

कर्णिक (वि०) १ कानों वाला । २ पतवार वाला ।

कर्णिकः (पु०) माझी । पतवारिया । पतवारी ।

कर्णिका (स्त्री०) १ कानों की बाली । गुमड़ी । गूमड़ा ।

३ पञ्चवीज कोष । ४ कूँची या चित्रकार की लेखनी । ५ मध्यमा जैंगुली । ६ फल का डंठल ।

७ हाथी की सूड़ की नाँक । ८ चाक मिट्टी ।

खदिया । [२ पञ्चकोषजी ।

कर्णिकारः (पु०) १ बनचम्पा या कठचम्पा का पेड़ ।

कर्णिकारम् (न०) कर्णिकार वृक्ष का फूल जिसमें सुगन्धि बिलकुल नहीं होती ।

कर्णिन् (वि०) १ कानों वाला । २ बड़े बड़े कानों वाला । शरपच्च युक्त । (पु०) १ गधा । २ पतवारी ।

३ गाठोंदार बाण ।

कर्णी (स्त्री०) १ पुङ्खदार विशेष बनावट का बाण ।

२ मूलदेव की माता का नाम । यह मूलदेव

चौर्यकला विज्ञान के प्रादुर्भाव कर्ता थे ।—रथः

(पु०) पदा पड़ा हुआ रथ ।—सुतः (पु०) मूलदेव जो चुराने की कला के आविष्कारकर्ता बतलाये जाते हैं । [२ रुई या सूत कातना ।

कर्तनम् (न०) १ काटना । तराशना । कुतरना ।

कर्तनी (स्त्री०) १ कैची । २ खकू । ३ छोटी तलवार ।

कर्त्तव्य (स० वा० कृ०) १ करने योग्य । २ काटने या नाश करने योग्य ।

कर्तु (वि०) १ कर्ता । करने वाला । २ परब्रह्म ।

३ ब्रह्म की एक उपाधि । ४ विष्णु और शिव की उपाधि ।

कर्त्ती (स्त्री०) १ कुरी २ कतरनी । कैची ।

कर्दः (पु०) कीचड़ काँदा ।

कर्दकः (वि०)

कर्दमः (पु०) १ कीचड़ । कीच । काँदा । २ मैल ।

कूड़ा । २ (आलंका०) पाप ।—आटकः, (पु०)

कूड़ाखाना ।

कर्दमम् (न०) मांस । गोश्त ।

कर्पटः (पु०) १ पुराना या पैबंद लगा हुआ

कर्पटम् (न०) १ कपड़ा । २ कपड़े की धज्जी । ३

गेतथा रंग का कपड़ा । दगीला कपड़ा ।

कर्पटिक (वि०) चिथड़े लपेटे हुए ।

कर्पटिन् (वि०)

कर्पणः (पु०) एक प्रकार का शस्त्र ।

कर्परः (पु०) १ कड़ाही । कड़ाह । २ पात्र । अर्तन ।

३ ठीकरा । ४ खोपड़ी । ५ एक प्रकार का

हथियार ।

कर्पासः (पु०)

कर्पासम् (न०) कपास का वृक्ष । रुई का पेड़ ।

कर्पासी (स्त्री०)

कर्पूरः (पु०) कपूर । काफूर ।

कर्पूरम् (न०)—खण्ड, (पु०) १ कपूर का

खेत । २ कपूर की डली ।—तैलं, (न०)

कपूर का तेल ।

कर्परः (पु०) दर्पण । आईना ।

कर्बु (वि०) रंग बिरंगा । चितकबरा ।

कर्बुर (वि०) १ रंग बिरंगा । चितकबरा । २ भूरा ।

धुमैला । (पु०) १ कवृतर के रंग का । चितकबरा

रंग । २ पाप । ३ प्रेत । शैतान । ४ अकूरे का पेड़ ।

कर्तव्यम् (न०) १ सोना । २ जल ।
 कर्तुरित (व० कृ०) रंगविरंगा ।
 कर्मठ (वि०) १ कार्यकुशल । क्रियाकुशल । काम
 करने में निपुण । २ परिश्रम से काम करने वाला ।
 ३ केवल धार्मिक अनुष्ठानों के करने ही में लव-
 लीन ।
 कर्मठः (पु०) यज्ञ कराने वाला ।
 कर्मण्य (वि०) चतुर । निपुण ।
 कर्मण्या (स्त्री०) मजदूरी । उजरत । पारिश्रमिक ।
 कर्मण्यम् (न०) क्रियाशीलता ।
 कर्मन् (न०) १ क्रिया । कर्म । चरित्र । २ सम्पादन ।
 ३ व्यवसाय । कर्तव्य । ४ धार्मिक कृत्य । ५
 धर्मानुष्ठान का सम्पादन । ६ धर्म विशेष । नैतिक
 कर्तव्य । ७ परिणाम । फल । ८ कर्मविपाक ।
 पूर्व जन्म में किये हुए शुभाशुभ कर्मों का फला-
 फल । प्रारब्ध । —अस्तम्, (वि०) कोई भी काम
 करने के योग्य । —अगम्, (न०) यज्ञ कर्म का
 एक भाग विशेष । —अधिकारः, (पु०) धार्मिक
 कृत्य या क्रिया करने का अधिकार । अनुकूल,
 (वि०) १ कर्मानुसार । २ पूर्वजन्म में किये
 हुए कर्मों के अनुसार । —अन्तः, (पु०)
 १ किसी कार्य या क्रिया का अवसान ।
 २ व्यापार । व्यवसाय । कर्म का सम्पादन । ३
 खत्ती । खों । अनाज का माण्डार । ४ जुती हुई
 जमीन । —अन्तरं, (न०) १ क्रिया में भेद । २
 प्रायश्चित्त । पापनिवृत्ति । ३ किसी धर्मानुष्ठान का
 स्थगित करना । —अन्तिक, (वि०) अन्तिम । —
 अन्तिकः, (पु०) नौकर । कारीगर । —आजोषः
 (पु०) कारीगर । —इन्द्रियम्, (न०) वे इन्द्रियाँ
 जो कर्म करें । जैसे हाथ पैर, आँख कान आदि । —
 उदारं, (न०) महानुभावता । उच्चाश्रयता ।
 — उद्युक्त, (वि०) मशगूल । लवलीन । क्रिया-
 शील । स्पृहोवान् । —करः, (पु०) १ राजन्दारी
 पर काम करने वाला मजदूर । २ असराज । —कर्तुः,
 (पु०) व्याकरण में कर्ताकारक । —कारणः, (पु०)
 कारणम्, (न०) वेद का वह अंश जिसमें
 यज्ञानुष्ठानादि कर्मों का तथा उनके माहात्म्य का
 वर्णन है । —कारः, (पु०) वह मनुष्य जो कोई

भी काम करे । कारीगर । उजरत लेकर काम करने
 वाला । ३ लुहार । ४ साँड़ । —कारिन्, (पु०)
 मजदूर । कारीगर । —कार्मुकः, (पु०) —कार्मु-
 कम्, (न०) सुइय वनुष । —कीलकः, (पु०)
 धोबी । —क्षेत्रं, (न०) वह भूमि जहाँ धार्मिक
 कर्मानुष्ठान किया जाय । [भारतवर्ष कर्मभूमि कह
 लाता है ।] —गृहीत, (वि०) किसी कार्य करते
 समय पकड़ा हुआ । (जैसे चोरी करते समय
 चोर) —घातः (पु०) काम बंद कर देना । काम
 छोड़ बैठना । चण्डालः, —चाण्डालः, (पु०)
 १ नीच काम करने वाला । वशिष्ठ जी ने पांच
 प्रकार के कर्मचाण्डाल बतलाये हैं:—

असूयकः पिशुनश्च कृतघ्नो दीर्घरोचकः

चरदारः कर्मबाधकः जन्मतश्च गोपे पञ्चनः ॥

२ दुस्साहस पूर्ण या निशुद्ध काम करने वाला । ३
 राहु का नाम । —चोदना, (स्त्री०) १ वह हेतु
 या कारण जिससे प्रेरित हो कोई यज्ञानुष्ठान कर्म
 करे । २ शास्त्र की वह स्पष्ट आज्ञा या निर्देश, जिसमें
 किसी धार्मिक अनुष्ठान करने का अवश्य करणीय
 विधान वर्णित हो । —क्षीः, (पु०) धर्मानुष्ठान
 का विधान जानने वाला । —त्यागः, (पु०)
 लौकिक कर्मों का त्याग । —दुष्ट, (वि०) असदा-
 चारी । दुष्ट । लंपट । तिरस्करणीय । —दोषः,
 (पु०) १ पाप । २ भूल । चूक । त्रुटि । गलती ।
 ३ मानवोचित कर्मों का शोच्य परिणाम । ४
 अयशस्कर आचरण । —धारयः, (पु०) एक
 प्रकार का समास । —ध्वंसः, (पु०) किसी धर्मा-
 नुष्ठान कर्म के फल का नाश । २ हतोत्साह । —
 नाशा, (स्त्री०) एक नदी का नाम । —
 निष्ठु, (वि०) धार्मिक कृत्यों के करने में
 संलग्न । —पथः, (पु०) कर्मयोग । कर्ममार्ग
 (ज्ञानमार्ग का उल्टा) —पाकः, (पु०) पूर्व
 जन्म में किये हुए कर्मों के फल की प्राप्ति का समय ।
 —न्यासः, (पु०) धर्मानुष्ठानों के फल का त्याग ।
 —फलं (न०) पूर्वजन्म में किये हुए शुभाशुभ
 कर्मों का शुभाशुभ फल । —बंधः, —बंधनम्,
 (न०) आवसामन, अथवा जन्म मरण का बंधन ।
 —भूः, भूमिः (स्त्री०) भारतवर्ष । —मीमांसा,

(स्त्री०) कर्मकाण्ड सम्बन्धी वेदभाग पर विचार करने वाला जैमिनि द्वारा रचित ग्रन्थ विशेष ।—
मूलं, (न०) कुश । १—युगम्, (न०) कलियुग ।
—योगः, (पु०) कर्ममार्ग ।—विपाक, देखो कर्मपाक ।—शाला, (स्त्री०) दूकान । कारखाना ।
—शील,—शूर, (वि०) परिश्रमी । क्रियाशील ।
सङ्गः, (पु०) लौकिक कर्मों और उनके फलों में आसक्ति ।—सचिवः, (पु०) दीवान ।
मिनिस्टर । बज़ीर ।—संन्यासिकः,—संन्यासिनः,
(पु०) संन्यासी जिसने समस्त लौकिक कर्मों का त्याग कर दिया हो । ऐसा तपस्वी जो धार्मिक अनुष्ठान तो करे, किन्तु उनके फलों की कामना न करे ।—साक्षिन्, (पु०) १ प्रत्यक्षदर्शी साक्षी । २ वे साक्षी जो जीवधारियों के शुभाशुभ कर्मों को साक्षी बन कर देखते हों । [ऐसे नौ साक्षी माने गये हैं । यथाः—

सूर्यः सोमो यमः कालो महःभूतानि पञ्च च ।

यते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः ॥]

—सिद्धिः, (स्त्री) सफलता । मनोरथ का साफल्य ।—स्थानं, (न०) दफ्तर । आफिस । व्यापार करने का स्थान ।

कर्मदिन (पु०) संन्यासी । साधु ।

कर्मारः (पु०) लुहार ।

कर्मिन् (वि०) १ क्रियाशील । कार्यतत्पर । २ वह पुरुष जो फल प्राप्ति की अभिलाषा से धर्मानुष्ठान करता हो । (पु०) कारीगर । कलाकुशल ।

कर्मिष्ठ (वि०) चतुर । परिश्रमी । व्यापारपटु ।

कर्कटः (पु०) मण्डी अथवा किसी प्रान्त का ऐसा मुख्य नगर जिसके अन्तर्गत कम से कम २०० से ४०० तक ग्राम हों ।

कर्षः (पु०) १ तनाव । खिंचाव । २ आकर्षण । ३ खेत की जुताई । ४ खाई । लंबी नाली । ५ खरोंच ।

कर्षः (पु०) } १६ माशा की सोने चाँदी की तौल ।
कर्षम् (न०) }

कर्षक (वि०) खींचने वाला ।

कर्षणम् (न०) १ खींचना । तानना । २ जोतना । हल चलाना । ३ चोटिल करना । पीड़न । चीखता ।

कर्षिणी (स्त्री०) लगान ।

कर्षूः (स्त्री०) १ खाई । लंबी नाली । २ नदी । ३ नहर । (पु०) १ अन्ने कंड़ों की आग । २ खेती । ३ आजीविका ।

कर्हिचित्, (अव्यया०) किसी समय ।

कल् (धा० आत्म) [कलते, कलित] १ गिनना । २ बजाना । (उभय०) [कलयति, कलयते, कलित] १ पकड़ना । धामना । २ गिनना । ३ खेना । रखना । ४ जानना समझना ।

कल (वि०) १ अस्पष्ट मधुर धीमी और कोमल । २ निर्बल । ३ कच्चा । अनपचा हुआ । अपक्व । ४ हलफुन का शब्द करने वाला ।—कुरुरः (पु०) सारसपक्षी ।—अनुनादिन् (पु०) १ गौरैया पक्षी । २ मधुमक्षिका । ३ चटक पक्षी ।—अविकलः, (पु०) गौरैया पक्षी ।—आलापः, (पु०) १ धीमी कोमल गुनगुनाहट । २ मधुर एवं मित्र सम्भाषण । ३ मधुमक्षिका ।—उत्ताल, (वि०) ऊंचा । तीव्र । पैना ।—कण्ठ, (वि०) मधुर कण्ठस्वर वाला ।—कण्ठः, (पु०)—कण्ठी, (स्त्री०) १ कोयल । २ हंस । ३ कबूतर ।—कलः, (पु०) १ जन समुदाय का कोलाहल । २ अस्पष्ट और अडबड शोरगुल । ३ शिव जी का नाम ।—कूजिका —कूजिका, (स्त्री०) निर्लज्जा स्त्री । असती स्त्री ।—घोषः (पु०) कोयल ।—तूलिका, (स्त्री०) निर्लज्जा या रसीली स्त्री ।—धौतं, (न०) १ चाँदी । २ सोना ।—धौत-लिपिः, (स्त्री०) सुनहले अक्षरों की लिखावट ।—ध्वनिः, (स्त्री०) १ मधुर धीमा स्वर । २ कबूतर । ३ मेर । मयूर । ४ कोयल ।—नादः, (पु०) मधुर धीमा स्वर ।—भाषणं, (न०) बालकों की तोतली बोली ।—रवः, (पु०) मधुर धीमा स्वर ।—हंसः, (पु०) १ हंस । राजहंस । २ बत्तक । ३ परमात्मा ।

कलः (पु०) धीमा कोमल एवं अस्पष्ट स्वर ।

कलं (न०) वीर्य । धातु ।

कलंकः (पु०) १ धब्बा । काला दाग । चिन्ह । २

कलङ्कः (अलङ्का०) अपयश । बदनामी । अपकीर्ति । ३ दोष । त्रुटि । ४ लोहे का मोर्चा ।

कलकषः } (पु०) [स्त्री०—कलकषी, कलकषी]
कलकषः } सिंह ।

कलकित } (वि०) बदनाम । दगीला ।
कलकित }

कलकुरः } (पु०) भँवर । बगूला । उल्टी धारा ।
कलकुरः } उल्टा बहाव ।

कलजः } (पु०) १ पक्षी । २ विष बुझे अस्त्र से
कलजः } मारा हुआ हिरन आदि जीवधारी ।

कलजम् } (न०) विष में बुझे अस्त्र से मारे हुए पशु
कलजम् } का मांस ।

कलत्रम् (न०) १ पत्नी २ कमर । कूल्हा । ३
शाही गढ़ ।

कलनम् (न०) १ ध्वजा । दाग । २ त्रुटि । अपराध ।
दोष । ३ ग्रहण । आस । पकड़ । ४ अवगति ।
समझ । ५ रव । शब्द ।

कलना (स्त्री०) १ पकड़ । आस । ग्रहण । २ क्रिया ।
३ वशवर्तित्व । मुर्ती । ४ समझ । ५ धारण
करना । पहिना ।

कलन्दिका } (स्त्री०) बुद्धि । प्रतिभा ।
कलन्दिका }

कलभः (पु०) } १ हाथी का बच्चा । २ तीस वर्ष
कलभी (स्त्री०) } की उम्र का हाथी । ३ ऊँट का
या अन्य किसी जानवर का बच्चा ।

कलमः (पु०) १ वे धान जो मई और जून में बोये
जाते और दिसम्बर में पकते हैं । २ लेखनी ।
नरकुल जिसकी कलम बनती है । ३ चोर ।
४ गुंडा । बदमाश । दुष्ट ।

कलम्बः } (पु०) १ तीर । २ कदम्ब वृक्ष ।
कलम्बः }

कलम्बुटम् } (न०) (ताड़ा) मक्खन ।
कलम्बुटम् }

कललः (पु०) } योनि । गर्भ की किल्ली ।
कललम् (न०) }

कलविद्धः } (पु०) १ गौरैया पक्षी । २ इन्द्रजौ ।
कलविद्धः } १ ध्वजा । दारा ।

कलशः (पु०) } १ घड़ा । कलसा । २ चौतीस सेर
कलसः } का माप विशेष ।—जन्मन्,—
कलशम् (न०) } उद्भवः, (पु०) अगस्त्य जी
कलसम् } का नाम ।

कलशी (स्त्री०) } घड़ा । कलसा ।—सुतः,
कलसी (पु०) } अगस्त्य ऋषि का नाम ।

कलहः (पु०) } १ झगड़ा । लड़ाई भिड़ाई ।
कलहम् (न०) } २ युद्ध । जंग । ३ दौर्बल्य ।
धोखाधड़ी । झूठ । झूठ । ४ प्रचण्डता ।
आघात । प्रहार । मार ।—अन्तरिता, (स्त्री०)
प्रेमी से झगड़ा हो जाने के कारण अपने प्रेमी से
वियुक्त स्त्री ।—अपहृत, (वि०) बरजोरी हरा
हुआ । छीना हुआ । प्रिय, (वि०) वह व्यक्ति
जिसे लड़ाई झगड़ा अच्छा लगता हो ।

कलहः (पु०) नारद जी की उपाधि ।

कला (स्त्री०) १ किसी वस्तु का छोटा अंश ।
टुकड़ा । २ चन्द्रमण्डल का १६वाँ अंश । ३
व्याज । सूद । ४ समयविभाग । ५ राशि के
तीसवें भाग का ६० वाँ भाग । कोई धंधा । ऐसी
कलाएँ चौलठ होती हैं । यथा गाना बजाना
आदि । ७ चातुर्य । प्रतिभा । ८ कपट । झूठ ।
९ नौका । १० रजोदर्शन ।—अन्तरं, (न०)
अन्य अंश । २ व्याज । सूद । लाभ ।—अयनः,
(पु०) तलवार की धार पर नृत्य करने वाला ।
—आकुलम्, (न०) हलाहल विष ।—केलि,
(वि०) हर्षित । आल्हादित । रसीला ।—केलिः,
(पु०) कामदेव की उपाधि ।—लयः, (पु०)
चन्द्र का हास ।—धरः, निधिः,—पूर्णाः,
(पु०) चन्द्रमा ।—भृत्, (पु०) चन्द्रमा ।

कलादः } (पु०) सुनार ।
कलादकः }

कलापः (पु०) १ गढ़ा । गठबी । २ समुदाय ।
वस्तुओं का संग्रह । ३ मयूरपुच्छ । ४ स्त्री
का इज्जारबंद या करधनी । ५ आभूषण । ६ हाथी
की गरदन की रस्सी । ७ तरकस । तूणीर । ८
तीर । बाण । ९ चन्द्रमा । १० बुद्धिमान एवं
चतुर मनुष्य । ११ एक ही कुन्द में लिखी हुई
पद्य रचना । १२ संस्कृत का व्याकरण विशेष ।

कलापी (स्त्री०) घास का गढ़ा ।

कलापकम् (न०) १ चार श्लोकों का समूह जो किसी
एक ही विषय के वर्णन में हो और जिनका एक
ही अन्वय हो । २ ऋण जिसकी अदायी उस
समय हो जिस समय मोर अपनी पूंछ फैलावे ।

कलापकः (पु०) १ गड्ढा । गड्ढर । २ मोतियों की माला । ३ हाथी के गले की रस्सी । ४ करवनी या कमरबंद । ५ माथे पर का तिलक विशेष ।

कलापिन् (पु०) १ मोर । २ कोयल । ३ वटवृक्ष ।

कलापिनी (स्त्री०) १ रात । २ चन्द्रमा ।

कलायः (पु०) बीज विशेष ।

कलाधिकः (पु०) मुर्गा ।

कलाहकः (पु०) काहिणी । एक प्रकार का मुँह से बजाया जाने वाला बाजा ।

कलिः (पु०) १ मगड़ा । लड़ाई । २ युद्ध । जंग । ३ चौथा युग यानी कलियुग । [कलियुग ४१२००० वर्ष का होता है । यह ११०२ ख्री० पू० वर्ष की ८ वीं फरवरी को लगा था ।] ४ मूर्ति धारी कलियुग जिसने राजा नल को सताया था । ५ किसी श्रेणी का सर्वनिकृष्ट । ७ विभीतिका वृक्ष । बहेड़ा का पेड़ । ८ पाँसे का वह पहल जिस पर १ अंकित हो । ८ वीर । शूर । ९ तीर । बाण (स्त्री०) कली । —कारः, —कारकः, —क्रियः, (पु०) नारद जी की उपाधि । —द्रुमः, —वृक्षः, (पु०) बहेड़े का पेड़ । —युगं, (न०) कलियुग ।

कलिका } (स्त्री०) १ अनखिला फूल । बौड़ी । २ कलिः } कला । धारी । अंश । इकाई ।

कलिगाः } (पु०—बहुवचन) देश विशेष और कलिङ्गाः } उसमें बसने वाले लोग । वामनागों में इसकी सीमा का उल्लेख इस प्रकार पाया जाता है ।

जगन्नाथान्धकारश्च कुण्डलीरान्तगः प्रिये ।

कलिङ्गदेशः सम्प्रोक्तो बामनार्णवपरायणः ॥

कलिङ्गः } (पु०) चटाई । चिक । पर्दा । कलिङ्गीः }

कलित् (वि०) गृहीत । पकड़ा हुआ । लिया हुआ ।

कलिदः } (पु०) १ पर्वत जिससे यमुना नदी निक- कलिन्दः } लती है । २ सूर्य । —कन्या, —जा, —

तनया, —नन्दिनी, (स्त्री०) यमुना नदी की उपाधियाँ । —गिरः, (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध पर्वत ।

कलिल (वि०) १ ढका हुआ । भरा हुआ । २ मिला हुआ । ३ प्रभावान्वित । वशवर्ती । अभेद्य ।

कलिलम् (न०) एक बड़ा ढेर ।

कलुष (वि०) १ मदीला । गंदला । मैला । खराब । २ झिलकादार । दबा हुआ । भदा । ३ भरा

हुआ । ४ क्रुद्ध । अप्रसन्न । उत्तेजित । ५ दुष्ट ।

पापी । बुरा । ६ निष्ठुर । तिरस्करणीय । ७

काला । धुंधला । मैला । ८ सुल्ल । काहिल ।

अकर्मण्य । —योनिर, (वि०) वर्णसङ्कर ।

कलुषः (पु०) मैसा । महिष ।

कलुषं (न०) १ मैल । कूड़ा करकट । कीचड़ । २ पाप । ३ क्रोध । रोष ।

कलेवरः (पु०) } शरीर । देह । तन । जिस्म । कलेवरम् (न०) }

कलकः (पु०) } १ बी या तेल की तलछट । काँइटा । कलकम् (न०) }

विपकने वाला कोई पदार्थ । ३ मैल । कूड़ा । ४

विषा । ५ नीचता । कपट । दुष्म । ६ पाप । ७

पीसा हुआ चूर्ण ।

कलकफलः (पु०) अनार का पेड़ ।

कलकनं (न०) छलना । प्रवञ्चना । मिथ्या । झूठ ।

कलिकः } (पु०) भगवान् विष्णु का दसवाँ अथवा कलिकन् } अन्तिम अवतार ।

कल्प (वि०) १ साध्य । होने योग्य । सम्भव । २ उचित । ठीक । योग्य । ३ निपुण । दक्ष ।

कल्पः (पु०) १ धर्मशास्त्र की आज्ञा । आईन ।

आदेश । २ निर्दिष्ट नियम । ऐच्छिक नियम ।

३ प्रस्ताव । सूचना । निश्चय । सङ्कल्प । ४ पद्धति ।

ढंग । तरीका । विधान । ५ प्रलय । ६ ब्रह्मा जी

का एक दिवस अथवा १००० युगव्यापी काल ।

७ बीमार की चिकित्सा । ८ ऋग्वेदाङ्गों में से वेद का

एक अङ्ग । —अन्तः, (=कल्पान्तः) (पु०) प्रलय

काल । नाश । —आदिः, (=कल्पादिः,) (पु०)

सृष्टि के आरम्भ काल में सब वस्तुओं का पुनः

निर्माण । —कारः, (पु०) कल्पसूत्र के निर्माता ।

—क्षयः, (पु०) प्रलय । सर्वनाश । —तरुः, —

द्रुमः, —पादपः, —वृक्षः, (पु०) स्वर्ग का एक

वृक्ष विशेष । (आलं०) उदार वस्तु —

पालः, (पु०) मद्य विक्रेता । —लता, —लतिका,

(स्त्री०) स्वर्गीय लता विशेष । —सूत्रं, (न०) ग्रन्थ

विशेष जिसमें पद्धतियों का निरूपण है ।

कल्पकः, (पु०) १ रीति । शास्त्रोक्त कर्म । २ नाई ।

नापित ।

कल्पनम् (न०) १ बनाना । सजाना । सुव्यवस्थित करना । २ पूरा करना । कार्य में परिणत करना । ३ कतरना । काटना । ४ गाढ़ना । ५ सजाने के लिये तर ऊपर रखना ।

कल्पना (स्त्री०) १ बनाना । करना । २ तरतीब में लाना । ३ सजाना । ४ रचना करना । ५ आविष्कार करना । ६ विचार । मानसिक कल्पना । ७ जाल । जालसाजी । ८ रीतिभाँति । युक्ति ।

कल्पनी (स्त्री०) कैची ।

कल्पित (वि०) सुव्यवस्थित । निर्मित । सजित ।

कल्मष (वि०) १ पापी । दुष्ट । २ मैला कुचैला । गंदा ।

कल्मषः (न०) } १ धब्बा । मैल । २ पाप ।
कल्मषः (पु०) }

कल्माष (वि०) [स्त्री०—कल्माषी,] १ रंग-बिरंगा । चितकबरा । २ सफेद और काला मिला हुआ ।—कण्ठः, (पु०) शिवजी की उपाधि ।

कल्माषः (पु०) १ चितकबरा रंग । २ सफेद और काले रंगों का संमिश्रण । ३ दैत्य । दानव ।

कल्माषी (स्त्री०) यमुना नदी का नाम ।

कल्य (वि०) १ स्वस्थ । रोगरहित । तंदुल्ल । २ तैयार । तय्यर । ३ चलुर । ४ शुभ । अनुकूल । ५ बहरा रँग । ६ शिचाप्रद ।—आशः,—जग्धिः, (स्त्री०) कलेवा । सबेरे का भोजन ।—पालः—पालकः (पु०) कलार । कलवार । शराब खींचने वाला ।—वर्तः, (पु०) कलेवा । जलपान ।—वर्तम्, (न०) तुच्छ । हल्का । अनावश्यक ।

कल्य, (न०) १ तड़का । सवेरा । २ आने वाला । अगला दिन । ३ मदिरा । ४ बधाई । शुभ कामना । आशीर्वाद । ५ शुभ संवाद ।

कल्या (स्त्री०) १ मदिरा । २ बधाई ।—पालः,—पालकः, (पु०) कलाल । कलवार ।

कल्याण (वि०) [स्त्री०—कल्याणा,—कल्याणी,] (न०) १ शुभ । सुखी । भाग्यवान । सौभाग्य-शाली । २ सुन्दर । प्रिय । मनोहर । ३ सर्वोत्तम । गौरवान्वित । ४ मङ्गलकारी । भला ।—कृत, (वि०) १ लाभदायक । शुभ । २ मङ्गल-

कारी । शुभप्रद । ३ पुण्यात्मा ।—धर्मन्, (वि०) पुण्यात्मा ।—वचनं, (न०) सौहार्दव्यञ्जक भाषण । शुभ कामनाएं ।

कल्याण (न०) १ सौभाग्य । सुशक्तिमती । आनन्द । भलाई । समृद्धि । २ पुण्य । ३ उत्सव । ४ सुवर्ण । ५ स्वर्ग ।

कल्याणक (वि०) [स्त्री०—कल्याणिका,] १ शुभ । समृद्धिशाली । धन्य ।

कल्याणिन् (वि०) [स्त्री०—कल्याणिनी,] १ सुखी । भरापूरा । २ भाग्यशाली । धन्य । ३ शुभ । मङ्गलकारी ।

कल्याणी (स्त्री०) गौ । गाय ।

कल्ल (वि०) बहरा । बधिर ।

कल्लोलः (पु०) १ विशाल लहर । २ शत्रु । ३ प्रसन्नता । हर्ष ।

कल्लोलिनी (स्त्री०) नदी । सरिता ।

कव् (धा० आत्म०) [कवते, कवित] १ प्रशंसा करना । २ वर्णन करना । रचना (पद्य का) । ३ चित्रण करना । चित्र बनाना ।

कवकः (पु०) मुँह भर ।

कवकम् (न०) कुरुरमुत्ता । कठफूल ।

कवचः (पु०) १ बर्म । जिरहवस्त्र । २ ताबीज ।

कवचम् (न०) } यंत्र । ३ ढोल ।—पत्रः, (पु०) भोजपत्र ।—हर, (वि०) १ बर्म धारण किये हुए । २ कवच धारण करने के लिये अति बृद्ध ।

कवटी (स्त्री०) चौखट (द्वार की) या (तसवीर का) चौखटा ।

कवर, कवर (वि०) [स्त्री०—कवरा या कवरी, कबरा या कवरी] १ मिश्रित । मिलाजुला । २ जड़ा हुआ । रंगबिरंगा ।

कवरः, कवरः (पु०) } १ निमक । २ खटाई या कवरम्, कवरम् (न०) } खट्टापन । चोटीबंद । खुटीला । बाल बांधने का फीता ।

कवरी-कवरी (स्त्री०) गुथी हुई चोटी । चोटीबन्द ।

कवलः (पु०) } सुखभर । कौर । गस्ता ।
कवलम् (न०) }

कवलित (वि०) १ खाया हुआ । निगला हुआ । २ चबाया हुआ । ३ ग्रहण किया हुआ । पकड़ा हुआ ।

कवाट (देखो कपाट)

कवि (वि०) १ सर्वज्ञ । सर्वविद् । २ बुद्धिमान । चतुर । प्रतिभावान । ३ विचारवान । ४ प्रशंसनीय । श्लाघ्य ।

कविः (पु०) १ बुद्धिमान पुरुष । विचारवान । पण्डित । पद्यरचना करनेवाला । शायर । ३ असुराचार्य । शुक्रदेव की उपाधि । ४ आदिकवि वाल्मीकि । ५ ब्रह्मा । ६ सूर्य । (स्त्री०) लगाम ।—उद्येष्टः, (पु०) वाल्मीकि जी की उपाधि ।—पुत्रः, (पु०) शुक्र जी की उपाधि ।—राजः, (पु०) १ बड़ा शायर । २ एक कवि का नाम । एक पद्य का रचयिता जो राघवपाण्डवीय के नाम से प्रसिद्ध है ।

कविकः (पु०) } लगाम ।
कविका (स्त्री०) }

कविता (स्त्री०) पद्यरचना ।

कवियं } (न०) लगाम ।
कवीयं }

कवोष्ण (वि०) गुनगुना । कुड़ कुड़ गर्म ।

कव्यं (न०) पितरों के लिए तैयार किया हुआ अन्न कव्य और देवताओं के लिये तैयार किया हुआ अन्न हव्य कहलाता है ।—वाहू (पु०)—वाहः—वाहनः (पु०) अग्नि ।

कव्यः (पु०) पितर विशेष ।

कशः (पु०) कोड़ा । चाबुक ।

कशा (स्त्री०) १ चाबुक । कोड़ा । २ कोड़े मारना । ३ डोरी । रस्सी ।

कशिपु (पु० या न०) १ चटाई । २ तकिया । ३ विस्तर । शय्या । [भोजन वस्त्र ।

कशिपुः (पु०) १ भोजन । २ परिच्छिद । वस्त्र । ३ कशेरु (पु०) (न०) १ मेरुदण्ड-अस्थि । पीठ के कसेरु } बीच की हड्डी । २ तृण विशेष । जल में उत्पन्न होने वाला फल विशेष जिसे कसेरु कहते हैं ।

कश्मल (वि०) गंदा । मैला । लज्जाकर । घृणित ।

कश्मलं (न०) १ मन की उदासी । २ मोह । ३ पाप । ४ मुर्छा ।

कश्मीरः (पु० बहुवचन) देश विशेष । तंत्र ग्रन्थानुसार इस देश की सीमा यह है ।

आरदानटभारभ्य कुकुनाद्रितटान्तकः ।

तावत्कश्मीर देशः स्यात् पञ्चः सद्वीजनात्मकः ॥

जः-जं-जन्मन् (पु० न०) केसर । जाफ़ान ।

कश्य (वि०) चाबुक लगाने योग्य ।

कश्यं (न०) शराब । मदिरा । मद्य ।

कश्यपः (पु०) १ कछुआ । २ अदिति और दिति के पति, एक ऋषि का नाम ।

कष् (धा० उभय०) [कषति, कषते, कषित] १ मलना । खरोचना । झीलना । २ जाँचना । परीक्षा लेना । (कसौटी पर रगड़ कर) परीक्षा लेना । ३ धायल करना । नष्ट करना । ४ लुजलाना ।

कष (वि०) रगड़ा हुआ । खुरचा हुआ ।

कषः (पु०) १ रगड़ । २ कसौटी का पत्थर ।

कषणाम् (न०) १ रगड़न । चिन्हकरण । झीलना । २ कसौटी पर से सुवर्ण की परख ।

कषा देखो 'कश' ।

कषायः (वि०) १ कछुआ । कसैला । २ सुगन्धित । ३ लाल । कलौहा लाल । ४ मधुर स्वर वाला । ५ भूरा । ६ अनुचित । मैला ।

कषायः (पु०) } १ कसैला या कछुवा स्वाद या रस ।
कषायम् (न०) } २ लाल रङ्ग । ३ काढ़ा । ४ लेप ।
उबटन । ५ तेल । फुलेल लगाकर शरीर को सुवासित करना । ६ गोद । राल । ७ मैल । मैलापन । सुस्ती । मूढ़ता । ८ साँसारिक पदार्थों में अनु-
राग या अनुरक्ति । (पु०) १ अत्यासक्ति । अनुराग । २ कलियुग ।

कषायित (वि०) १ रंगीन । रंजित । रक्तरञ्जित । २ मावान्तरित । विकृत ।

कषि (वि०) हानिकर । अनिष्टकर । क्षतिजनक ।

कषेरुका } (स्त्री०) पीठ के बीच की हड्डी । मेरु-
कषेरुका } दण्ड ।

कष्ट (वि०) १ बुरा । खराब । दुष्ट । गलत । २ पीडाकारक । सन्तापकारी । ३ क्लिष्ट । कठिनाई से वश में होने वाला । ४ उपद्रवी । अनिष्टकारी । क्षतिजनक । ५ आगे होने वाला । अशुभ बतलाने वाला ।

—आगत, (वि०) कठिनाई से प्राप्त या कठिनाई से आया हुआ ।—कर, (वि०) पीड़ाकारक । दुःखदायी ।—तपस्, (वि०) कठोर तप करने वाला ।—साध्य, (वि०) कठिनाई से पूरा होने वाला ।—स्थान, (न०) दूषित जगह । कठिनाई का या अप्रिय या प्रतिकूल स्थान ।

कष्टं (न०) १ दुष्ट । कठिनाई । विपत्ति । पीड़ा । दर्द । २ पाप । दुष्टता । ३ अद्वचन ।

कष्टं (अव्यया०) हा कष्ट । हा धिक् ।

कष्टि (स्त्री०) १ आँव । परीक्षा । २ पीड़ा । दुःख ।

कस् (धा० प०) [कसति, कसित] हिलना । जाना । (आत्मने०) [कस्ते या कस्ते] १ जाना । २ नाश करना ।

कस्तुरिका } (स्त्री०) मुरक । कस्तूरी ।—मृगः (पु०)
कस्तुरिका } वह हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी
कस्तूरी } निकलती है ।

कल्हारं (न०) सफेद कमल ।

कल्लः (पु०) एक प्रकार का बेत ।

कांसीयं (न०) कांसा । फूल । धातु ।

कांस्य (वि०) काँसे या फूल का बना हुआ ।—कारः, (पु०) कसेरा । काँसे का बरतन बनाने वाला ।—तालः (पु०) काँफ । मजीरा । भाजनम् (न०) पीतल का पात्र ।—मलं, (न०) कसाव । ताँबे का मोर्चा । पितराई ।

कांस्यम् (न०) } १ फूल । काँसा । २ काँसे का
कांस्यः (पु०) } बढ़ियाल । ३ पीतल का बना जल
कांस्यम् (न०) } पीने का पात्र । गिलास ।

काकः (पु०) १ कौवा । २ (आलं०) तुच्छजन । नोच, निर्लज्ज या उद्धत पुरुष । ३ लंगड़ा आदमी । ४ जल में केवल सिर भिगो कर (काक की तरह) स्नान करना ।—अक्षिगोलक न्याय, (पु०) कौए की एक ही आँख की पुतली दोनों नेत्रों में चली जाती है । इसी प्रकार उभय सम्बन्धी दृष्टान्त ।—अरिः, (पु०) उल्लू । उलूक ।—उदरः, (पु०) साँप ।—उलूकिका, —उलूकीयं, (न०) काक और उलूक का स्वाभाविक वैर । पंचतंत्र के तीसरे तंत्र का नाम “काकोलूकीयम्” है ।—विज्ञा, (स्त्री०) गुज्ञा या घुंघची का झाड़ ।—वृद्धः,—

वृद्धिः, (पु०) १ खंजन पची । २ जुल्फ । अलक ।

—जातः (पु०) कोकिल ।—तालीय, (वि०) अचानक या इत्तिफाकिया होने वाली घटना ।—तालुकिन, (वि०) तिरस्करणीय । दुष्ट ।—दन्तः, (पु०) कौए के दाँत । (आलं०) कोई वस्तु जिसका अस्तित्व असम्भव हो । अनहोनी बात ।

—दन्तगवेषणम्, (न०) ऐसी बात की खोज जो सर्वथा असम्भव हो । व्यर्थ का काम । ऐसा काम जिसके करने में कुछ भी लाभ न हो ।—

ध्वजः, (पु०) वाइवानल ।—निद्रा, (स्त्री०) झपकी । जो तुरन्त दूर हो जाय ।—पक्षः,—

पक्षकः, (पु०) एक प्रकार की उल्लू । पट्टे । बालकों की दोनों कनपुटियों के लंबे वालों को काकपक्ष कहते हैं ।—पदं, (न०) छूट का यह

() चिन्ह । [हस्तलिखित पुस्तक या किसी लेख में जहाँ यह चिन्ह लगा हो वहाँ समझ ले कि यहाँ कुछ छूट गया है ।]—दः, (पु०) स्त्री-

समागम का विधान विशेष ।—पुच्छः,—पुष्टः, (पु०) कोकिल । कोइल ।—पेय, (वि०) छिड़ला । उथला ।—भीरुः, (पु०) उल्लू ।

उलूक ।—यवः, (पु०) अनाज की वाल जिसमें दाना न हो ।—रुतं, (न०) कौए की काँव काँव जिससे भविष्यद् के शुभाशुभ का ज्ञान होता है ।

—वन्ध्या, (स्त्री०) वह स्त्री जिसके केवल एक ही सन्तान होता है ।—स्वरः, (पु०) कौए की कर्णकर्कश बोली ।

काकं (न०) काकसमुदाय । काकी (स्त्री०) मादा कौआ । कौआदिया ।

काकलः } (पु०) पहाड़ी कौआ । काला काक ।
काकालः }
काकलम् } (न०) रत्नविशेष जो गर्दन में पहिना
काकालम् } जाता है ।

काकलिः } (स्त्री०) १ धीमा मधुर स्वर । २ सीटी
काकली } जिससे चोर यह जानने का यत्न किया करते हैं कि, लोग जगते हैं या सोते हैं । ३ कैची । ४ गुज्ञा का झाड़ ।—रवः, (पु०) कोकिल ।

काकिणी } (स्त्री०) १ कौड़ी । २ सिक्का
काकिणिका } विशेष जो चौथाई पण या २०

काकिणी } (स्त्री०) १ कौड़ी । २ सिक्का
काकिणिका } विशेष जो चौथाई पण या २०

कौटिल्यों के बराबर होता है । ३ चौथाई भाषा ।
४ माप का एक अंश विशेष । ५ तराजू की
इंडी । ६ अठारह इंच या आधगज ।

काकिनी (स्त्री०) १ चौथाई पण । २ माप विशेष का
चतुर्थांश । ३ कौड़ी ।

काकुः (स्त्री०) १ वक्रोक्ति । भय, क्रोध, शोक के
आवेश में स्वर की विकृति या परिवर्तन । २
अस्वीकारोक्ति को इस ढब से कहना कि, सुनने
वाले को वह स्वीकारोक्ति जान पड़े । २ गुणगुणा-
हट । ४ जिह्वा ।

काकुत्स्थः (पु०) ककुत्स्थ राजा के वंशधर । सूर्य-
वंशी राजाओं की उपाधि विशेष ।

काकुदं (न०) तालु । तलुआ । जिह्वा का
आश्रयस्थान ।

काकोलः (पु०) १ काला कौआ । पहाड़ी काक ।
२ सर्प । ३ शूकर । ४ कुम्हार । ५ नरक भेद ।

काक्षः (पु०) १ तिरछी चितवन । कनखिया देखना ।

काक्षम् (न०) ऐसे देखना जिससे आन्तरिक अग्र-
सन्नता प्रकट हो । टेंडी चितवन ।

कागः (पु०) काक ।

काँक्ष् (धा० परस्मै०) [काँक्षति, काँक्षित] १ इच्छा
करना । चाहना । २ आशा करना । प्रतीक्षा
करना ।

काँक्षा (स्त्री०) १ कामना । इच्छा । २ प्रवृत्ति । भूख
जैसे “भक्तकाँक्षा” ।

काँक्षिन् (वि०) [स्त्री०—काँक्षिणी] इच्छा करने
वाला । अभिलाषी ।

काँक्षः (पु०) १ काच । शीशा । स्फटिक । २ फाँसा ।
फंदा । लटकने वाली अलमारी का खाना । जुएँ
की रस्सी । ३ नेत्र रोग विशेष । ४ मोम । ५ खारी-
मिट्टी ।—घट्टी, (स्त्री०) झारी । लोटा जो काच
का बना हो ।—भाजनं, (न०) शीशे का पात्र ।
—मणिः, (पु०) स्फटिक ।—मलं,—लघणं,
—सम्भवम् (न०) काला निमक या सोडा ।

काँचनम् } (न०) डोरी या फीता जो बंडल
काँचनकम् } लपेटने या कागजों को नथी करने के
काम में आवे ।

काँचनकिन् (पु०) हस्तलिपि । लिपि । लिखंत ।

काचूकः (पु०) १ मुर्गा । २ चक्रवाक । चकई चकवा ।

काजलम् (न०) १ स्वल्प जल । २ दूषित-जल ।

कांचन } (वि०) [स्त्री०—काञ्चनी] सुनहला
काञ्चन } या सोने का बना हुआ ।—अङ्गी, (स्त्री०)

सुनहले रंग की स्त्री । अर्थात् पीले रंग की स्त्री

—कन्दरः, (पु०) सोने की खान ।—गिरिः,

(पु०) सुमेरु पर्वत ।—भूः, (स्त्री०) १ पीली

मिट्टी वाली ज़मीन । २ सुवर्णरज ।—सन्धिः,

(स्त्री०) दो पक्षों के बीच हुई ऐसी सन्धि या

सुलह जिसमें उभय पक्ष के लिये समान शर्तें हों ।

कांचनम् } (न०) १ सोना । सुवर्ण । २ चमक ।

काञ्चनम् } दमक । ३ सम्पत्ति । धनदौलत । ४

कमल का रेशा ।

कांचनः } (पु०) १ घटुरा का पौधा । २ चम्पा का

काञ्चनः } पौधा ।

कांचनारः

काञ्चनारः } (पु०) केविदार या कचनार का

कांचनालः } पेड़ ।

काञ्चनालः

काञ्चिः } (स्त्री०) १ करधनी जिसमें रोंनें या धूँवर

काञ्चिः } लगे हों । बजनी करधनी । २ दक्षिण

काञ्ची } भारत की स्वनाम प्रसिद्ध एक नगरी जिसकी

काञ्ची } गणना सप्त मोक्षपुरियों में है । आधुनिक

काँजीवरम् नगर ।—पदं (न०) कुल्हा और कमर ।

काञ्जिकम् } (न०) खट्टी महेरी । खाद्यपदार्थ

काञ्जिकम् } विशेष जो खट्टा हो ।

काटुकं (न०) खटाई । खट्टापन ।

काठः (पु०) चट्टान । पत्थर ।

काठिनम् } (न०) १ कड़ाई । कड़ापन । २ निष्ठुरता

काठिन्यम् } कठोरता । निष्ठुरहृदयता ।

काण (वि०) १ काना । २ छेद किया हुआ ।

फूटी (कौड़ी) । तथा—

“ प्रातः काणवराटकोपि न मया
दृष्टेऽपुना मुञ्च मां । ”

काणयः } (पु०) कानी स्त्री का पुत्र ।

काणेरः }

काणेली (स्त्री०) १ असली या व्यवहारिणी स्त्री ।

२ अविवाहिता स्त्री ।—मातु, (पु०) अविवाहिता

स्त्री का पुत्र ।

कांडः, काण्डः (पु०) } १ भाग । अंश । २
कांडम्, काण्डम् (न०) } एक पोरुए से दूसरे
पोरुए तक का किसी पोरुएदार पौधे का भाग ।
३ तना । डंडुल । डाली । शाखा । ४ किसी ग्रंथ
का एक भाग । ५ पृथक् विभाग । ६ गुच्छा ।
समूह । गट्ठा । ७ तीर । ८ लंबी हड्डी । ९
बेल । नरकुल । १० छड़ी । डंडा । ११ जल ।
पानी । १२ अवसर । मौका । १३ खास जगह ।
रहस्य स्थान । १४ दुष्ट । पापी । —कारः,
(पु०) तीर बनाने वाला । —गोचरः,
(पु०) लोहे का तीर । —पटः, —पटकः, (पु०)
कनात । पर्दा । —पातः, (पु०) तीर का उड़ान
या वह स्थान जहाँ तक तीर जा सके । —पृष्ठः,
(पु०) १ सैनिकवृत्ति विशेष । सिपाही ।
२ वैश्या स्त्री का पति । ३ दत्तकपुत्र या
औरसपुत्र से भिन्न कोई पुत्र (यह गाली देने में
प्रयुक्त होता है ।) कमीना । निमकहराम । महावीर
चरित्र में जामदग्न्य को शतानन्द ने काण्वपृष्ठ
कहा है ।

“स्वकुलं पृष्ठतः कृत्वा यो वै परकुलं ब्रजेत् ।

तेन दुःखचरितेनासौ काण्डपृष्ठ इति श्रुतः ॥

—भङ्गः, (पु०) हड्डी का टूटना या किसी शरीरा-
व्यव का भङ्ग होना । —वाणी, (स्त्री०) चाण्डाल
की वीणा । —सन्धि, (स्त्री०) गाँठ । —स्पृष्टः,
(पु०) घेड़ा । सिपाही ।

कांडवत् } (पु०) धनुषधारी ।
काण्डवत् }

कांडीरः } (पु०) धनुषधारी ।
काण्डीरः }

कांडोलः } नरकुल की बनी डलिया या टोकरी ।
काण्डोलः }

कात् (अव्यया०) गाली, तिरस्कार व्यञ्जक अव्यय ।
कातर (वि०) १ भीरु । डरपोंक । उत्साहहीन । २
दुःखित । शोकान्वित । भीत । ३ घबड़ाया हुआ ।
विकल । व्याकुल । ४ भय से विह्वल या भय के
कारण थरथराता हुआ ।

कातर्य (न०) भीरुता । डरपोंकपना ।

कात्यायनः (पु०) १ प्रसिद्ध व्याकरणि जिन्होंने
पाणिनी के सूत्रों को पूर्ण करने के लिये वार्तिक

की रचना की । वररुचि नामक व्याकरण का
वार्तिक बनानेवाले । २ कात्यायनसूत्र नामक
एक धर्मशास्त्र के निर्माता ।

कात्यायनी (स्त्री०) १ एक बूढ़ी या अंधेड़ स्त्री (जो
लाल वस्त्र पहिनती हो) । २ पार्वती का नाम ।

—पुत्रः, —सुतः (पु०) कार्तिकेय का नाम ।

काथचित्क } (वि०) [स्त्री०—काथचित्की]
काथचित्क } कठिनाई से पूर्ण हुआ हो ।

काथिकः (न०) कहानी कहनेवाला ।

कादंबः } (पु०) १ कलहंस । २ तीर । ३ गन्ना ।
कादम्बः } ४ कदम्ब का पेड़ ।

कादंबम् } (न०) कदम्ब के फूल ।
कादम्बम् }

कादंबरम् } (न०) कदम्ब के फूलों की शराब ।
कादम्बरम् }

कादंबरी } (स्त्री०) १ कदम्ब के फूलों से खींची हुई
कादम्बरी } मदिरा । २ मदिरा । शराब । ३ हाथी की
कनपुटी से चूनेवाला मद । ४ सरस्वती देवी की
उपाधि । ५ मादा कोकिल ।

कादंबिनी } (स्त्री०) मेघमाला ।
कादम्बिनी }

कादाचित्क (वि०) इतिहासिक ।

काद्वेयः (पु०) सर्प विशेष ।

काननम् (न०) १ जङ्गल । वन । २ घर । मकान ।

—अग्निः, (पु०) दावानल । —ओकस्, (पु०)
१ वनवासी । २ वानर ।

कानिष्ठिकम् (न०) छगुनिया । सब से छोटी हाथ
की डँगुली ।

कानिष्ठिनेयः (पु०) } सब से छोटे बच्चे की
कानिष्ठिनेयी (स्त्री०) } सन्तान ।

कानीनः (पु०) १ अविवाहिता स्त्री से उत्पन्न पुत्र ।
२ व्यास । ३ कर्ण ।

कांत } (वि०) १ प्रियः । इष्ट । प्यारा । २ मनोहर ।
कान्त } अनुकूल । सुन्दर । —पतिन् (पु०) मेर ।
मथूर । —लोहं (न०) चुम्बक पत्थर ।

कांतः } (पु०) १ प्रेमी । आशिक । २ पति । ३ प्रेम-
कान्तः } पात्र । माशुक । ४ चन्द्रमा । ५ वसन्तऋतु ।
६ एक प्रकार का लोहा । ७ रत्नविशेष । ८ कार्ति-
केय की उपाधि ।

कांतम् } (न०) केसर । जाफ़ान् ।
कान्तम् }

कांता } (स्त्री०) १ माशूका या प्रेमपात्री सुन्दरी
कान्ता } स्त्री । २ पत्नी । भार्या । ३ प्रियङ्गु वेल ।
४ बड़ी इलायची । ५ पृथिवी ।—अंध्रिदोहदः
(पु०) अशोकवृक्ष ।

कांतारः, कान्तारः (पु०) १ विशाल बियावान ।
कांतारं, कान्तारं (न०) १ निर्जन वन । २ खराब
सड़क । ३ रन्ध्र । खुसाल । छेद । सन्धि । (पु०)
लाल रङ्ग के गलों की अनेक जातियां । तिन्दुक ।
पहाड़ी आबनूस ।

कांतिः } (स्त्री०) १ मनोहरता । सौन्दर्य । २ आभा ।
कान्तिः } दीप्ति । आब । ३ व्यक्तिगत शृङ्गार । ४
कामना । इच्छा । चाह । ५ अलङ्कार शास्त्र में
प्रेम से बड़ी हुई सुन्दरता । साहित्यदर्पणकार ने,
“कान्ति” ‘शोभा’ और ‘दीप्ति’ में इस प्रकार
अन्तर बतलाया है :—

“रूपयौवन साहित्यं भोगादौरङ्गभूषणम् ।

शोभाप्रोक्ता वैव कान्तिर्नन्मद्याप्यायिता द्युतिः ।

कान्तिरेवासि विस्तीर्णा दीप्तिरित्यभिधीयते ॥”

६ मनोहर मनोनीत स्त्री । ७ दुर्गा की उपाधि ।
—कर, (वि०) सौन्दर्य लानेवाला । शोभा
बढ़ानेवाला ।—द, (वि०) सौन्दर्यप्रद । शोभा-
जनक ।—दं, (न०) १ पित्त । २ धी ।—
दायक, —दायिन्, (वि०) शोभा देनेवाला ।—
भूत, (पु०) चन्द्रमा ।

कांतिमत् } (वि०) मनोहर । सुन्दर । सर्वोत्तम ।
कान्तिमत् } (पु०) चन्द्रमा ।

कांदवम् } (न०) लोहे की कढ़ाई या चूल्हे में भुनी
कान्दवम् } हुई कोई वस्तु ।

कांदविकः } (पु०) नानबाई । हलवाई ।
कान्दविकः }

कांदिशीक } (वि०) १ भगोड़ा । भाग जानेवाला ।
कान्दिशीक } २ भयभीत । डरा हुआ । [ब्राह्मण ।

कान्यकुब्जः (पु०) एक देश का नाम । कन्नौज । २

कापटिक (वि०) [स्त्री—कापटिकी] १ धोखेबाज़ ।
जालसाज़ । बेईमान । २ दुष्ट ।

कापटिकः (पु०) चापलूस । खुशामदी ।

कापट्यं (न०) दुष्टता । जालसाज़ी । धोखा । छल ।
कपट ।

कापथ (पु०) खराब सड़क ।

कापालः } (पु०) १ शैव सम्प्रदाय के अन्तर्गत
कापालिकः } एक उपसम्प्रदाय । इस सम्प्रदाय के लोग
अपने पास खोपड़ी रखते हैं और उसी में रीध
कर या रख कर खाते हैं । घामाचारी । २ एक
प्रकार की कोढ़ ।

कापालिन् (पु०) शिवजी का नाम ।

कापिक (वि०) [स्त्री—कापिकी] वानर जैसी
शक्ल का या वानर की तरह आचरण करने वाला ।
कापिल (वि०) [स्त्री—कापिली] १ कपिल का
या कपिल सम्बन्धी । २ कपिल द्वारा पढ़ाया हुआ
या कपिल से निकला हुआ ।

कापिलः (पु०) १ कपिल के सांख्यदर्शन को मानने
वाला या उसका अनुयायी । २ भूरा रंग ।

कापुरुषः (पु०) नीच या ओछा जन । डरपोंक या
दुष्ट जन ।

कापेयं (न०) १ वानर की जाति का । २ वानर
जैसी चेष्टा करने वाला । ३ वानरी हथकंडे ।

कापोत (वि०) स्त्री—कापोती] भूरे धुमैले सफेद
रंग का ।

कापोतं (न०) १ कवूरों का गिरोह । २ सुर्मा ।

—अञ्जनम् (न०) आँख में लगाने का सुर्मा ।

कापोतः (पु०) भूरा रंग ।

काम् (अव्यया०) किसी को बुलाने में प्रयोग होने
वाला अव्यय ।

कामः (पु०) १ कामता । अभिलाषा । २ अभिलषित
वस्तु । ३ स्नेह । प्रेम । ४ पुरुषार्थ विशेष । स्त्री-
सम्भोग की कामना या स्त्रीसम्भोग का अनुराग । ५
कामुकता । मैथुनेच्छा । ६ कामदेव । ७ प्रद्युम्न का
नाम । ८ बलराम का नाम । ९ एक प्रकार का
आम का पेड़ ।

कामं (न०) १ इष्टवस्तु । अभीष्ट पदार्थ । २ धीर्य । धातु ।

—अग्निः, (पु०) प्रेम की आग या सरगामी ।

—अद्भुतः, (पु०) १ नख । नाखून । २ जनने-

न्द्रिय । लिङ्ग ।—अङ्गः (पु०) आम का पेड़ ।

—अन्धः, (पु०) कोकिल ।—अन्धा, (स्त्री०)

कस्तूरी ।—अग्निन् (वि०) मनोभिलषित

भोजन जब चाहे तब पाने वाला ।—अभिकाम,

(वि०) कामुक । लंपट । —अरुण्यः, (न०) मनोहर उपवन । या सुन्दर उद्यान । —अरिः (= कामारिः) (पु०) शिवजी । —अर्थिन्, (वि०) कामुक । —अवतारः, (पु०) प्रद्युम्न का नाम । अवसायः, (पु०) —दुःख सुख की ओर से उदासीनता । —अशनः, (न०) १ इच्छानुसार खाने वाला । २ असंयत भोग विनाश । —आतुर, (वि०) प्रेम के कारण बीमार । प्रेमरोगाक्रान्त । कामातुर । —आत्मज्ञः, (पु०) प्रद्युम्न पुत्र अनिरुद्ध की उपाधि । —आत्मन्, (वि०) कामुक । कामासक्त । आशिक । —आयुधं, (न०) १ कामदेव के बाण । २ जननेन्द्रिय । —आयुधः, (पु०) आम का पेड़ । —आयुस्, (पु०) १ गीघ । गिद्ध । २ गरुड । —आर्तः, (पु०) कामपीडित । प्रेमविह्वल । —आसक्तः, (वि०) कामी । कामुक । प्रेम में विह्वल । —ईप्सु, (वि०) अभीष्ट वस्तु आदि के लिये प्रयत्नवान् । —ईश्वरः, (पु०) १ कुबेर की उपाधि । २ परब्रह्म । —उदकं, (न०) १ स्वेच्छापूर्वक जलदान । २ सगोत्र या जो तर्पण के अधिकारी हैं, उनसे मित्र किसी का जलतर्पण करना । —उपहृतः, (वि०) कम पीडित । —कला, (स्त्री०) काम की स्त्री रति का नाम । —कूटः, (पु०) १ वेश्या का प्रेमी । २ वेश्यापना । केलि, (वि०) कामरत । कामुक । कामी । —केलिः, (पु०) १ आशिक । प्रेमी । २ मैथुन । —चरः, चारः, (वि०) बेरोकटोक । असंयत । —चरः, —चारः, (पु०) १ बेरोक टोक गति । २ स्वेच्छाचारिता । ३ स्वेच्छाचार । ४ कामासक्तता । मैथुनेच्छा । ५ स्वार्थपरता । —चारिन्, (वि०) १ असंयत गतिशील । २ कामी । कामुक । ३ स्वेच्छाचारी (पु०) १ गरुड । २ गौरैया । —जित्, (वि०) काम को जीतने वाला । (पु०) १ शिव जी की उपाधि । २ स्कन्द की उपाधि । —तालः, (पु०) कोकिल । —दः, (वि०) अभिलाषा पूर्ण करनेवाला । —दाः, (स्त्री०) कामधेनु । —दर्शनः, (वि०) मनोहर रूप वाला । —दुग्धा, दुहः, (स्त्री०) कामधेनु । —दूती, (स्त्री०) कोकिला । —देवः, (पु०) प्रेम के अधिष्ठाता

देवता । —धेनुः, (स्त्री०) स्वर्ग की गौ विशेष । —ध्वंसिन्, (पु०) शिव जी का नाम । —पत्नी, (स्त्री०) रति । कामदेव की स्त्री । —पालः, (पु०) बलराम का नाम । —प्रवेदनः, (न०) अपनी इच्छा प्रकट करना । —प्रश्नः, (पु०) मनमाना प्रश्न या सवाल । —फलाः, (पु०) आम के पेड़ों की जाति विशेष । —भोगाः, (बहुवचन) मैथुनेच्छा की पूर्ति । —महः, (पु०) कामदेव सम्बन्धी उत्सव विशेष जो चैत्रमास की पूर्णिमा को मनाया जाता है । —मूढः, —मोहितः, (वि०) प्रेम से बुद्धि गँवाये हुए । कामान्ध । —रसः, (पु०) वीर्यपात । —रसिकः, (वि०) कामुक । कामी । —रूपः, (वि०) १ इच्छानुसार रूप धारण करनेवाला । २ सुन्दर । खूबसूरत । —रूपाः, (बहुवचन) गोदादी का प्रांत कामरूप देश के नाम से प्रसिद्ध है । —रेखा, —लेखा, (स्त्री०) वेश्या । रंडी । पतुरिया । —लोला, (वि०) कामपीडित । —वरः, (पु०) मुँहमाँगा वरदान । —वल्लभः, (पु०) १ वसन्तऋतु । २ आम का पेड़ । —वल्लभा (स्त्री०) जुन्हाई । चन्द्रमा की चाँदनी । —वशः, (वि०) प्रेमासक्त । —वशः, (पु०) प्रेमासक्ति । —वादः (पु०) मनमाना कहना । जो जी में आवे सो कहना । —विहंतुः, (वि०) असफल मनोरथ । —वृत्तः, (वि०) कामुक । ऐयाश । —वृत्तिः, (वि०) स्वेच्छाचारी । स्वतंत्र । —वृत्तिः, (स्त्री०) स्वतन्त्रता । स्वेच्छाचारिता । —वृद्धिः, (स्त्री०) कामेच्छा की वृद्धि । —शरः, (पु०) १ प्रेम का बाण । २ आम का पेड़ । —शास्त्रः, (पु०) प्रणयात्मक विज्ञान । —संयोगः, (पु०) अभीष्ट पदार्थ की उपलब्धि या प्राप्ति । —सखः, (पु०) वसन्तऋतु । —सूः, (वि०) किसी भी अभिलाषा का पूरा करनेवाला । —सूत्रम्, (न०) वात्स्यायन सूत्र जिसमें कामशास्त्र का प्रतिपादन है । —हैतुकः, (वि०) बिना किसी कारण के । केवल इच्छामात्र से उत्पन्न ।

१ कामतः (अव्यया०) १ स्वेच्छतः । मनमाना । रजामन्दी से । जानबूझ कर । इरादतन । ३ कामुकवत् । रसिकता से । ४ स्वेच्छानुसार । असंयत रूप से । बेरोकटोक ।

कामन् (वि०) रसिया । ऐयाश ।

कामनम् (न०) स्वाहिश । चाह । अभिलाषा ।

कामना (स्त्री०) अभिलाषा । इच्छा । चाह ।

कामनीयम् (न०) कमनीय । सुन्दर । मनोहर ।

कामंभमिन् } (पु०) कसेरा । ठेरा ।
कामन्धमिन् }

कामम् (अच्यया०) १ इच्छा या प्रवृत्ति के अनुसार ।

२ इच्छानुकूल । ३ प्रसन्नता से । रजामन्दी से ।

४ ठीक । बहुत ठीक । स्वीकारोक्तिसूचक अच्यय ।

५ माना हुआ । स्वीकार किया हुआ । ६ निस्सन्देह ।

सचमुच । वस्तुतः । ८ वहुतर । बल्कि ।

कामयमान } (वि०) रसिया । ऐयाश । लम्पट ।
कामयान }
कमयितु }

कामल (वि०) रसिया । ऐयाश । लम्पट ।

कामलः (पु०) १ वसन्तकाल । २ मरुभूमि ।

रेगस्तान ।

कामलिका (स्त्री०) मदिरा । शराब ।

कामवत् (वि०) १ अभिलाषी । चाह रखने वाला ।

२ रसिक । ऐयाश ।

कामिन् (वि०) [स्त्री०—कामिनी] १ कामी ।

रसिक । ऐयाश । २ अभिलाषी । (पु०) १

प्रेमी । आशिक । कामी । ऐयाश । २ स्त्रीण ।

स्त्रीनिर्जित पुरुष । ३ चक्रवाक । ४ गौरैया ।

५ शिव जी की उपाधि । ६ चन्द्रमा । ७ कबूतर ।

कामिनी (स्त्री०) १ प्यार करनेवाली स्त्री । २ मनोहर

या सुन्दरी स्त्री । ३ स्त्री । औरत । ४ भीरु

स्त्री । ५ शराब । मदिरा ।

कामुक (वि०) [स्त्री०—कामुका या कामुकी]

१ अभिलाषी । चाह रखने वाला । २ रसिक ।

लम्पट । ऐयाश ।

कामुकः (पु०) १ प्रेमी । आशिक । ऐयाश आदमी ।

२ गौरैया पक्षी । ३ अशोक वृक्ष ।

कामुका (स्त्री०) धन की कामना रखनेवाली स्त्री ।

जरपरस्त औरत ।

कामुकी (स्त्री०) झिनाब या ऐयाश औरत ।

कांपिलः, काम्पिलः } गुण्डारोचना नामक लता ।

कांपीलः, काम्पीलः } [ठकी हुई गाड़ी ।

कांबलः, काम्बलः (पु०) कंबल या ऊनी वस्त्र से

कांबविकः, काम्बविकः (पु०) शङ्ख या सीप के बने
आभूषण बेचने वाला दूकानदार । शङ्ख का
व्योपारी ।

कांबोजः, काम्बोजः (पु०) १ कम्बोज (कंबोडिया)
देशवासी । २ कम्बोज देश का राजा । ३ पुत्राय
वृक्ष । ४ कम्बोज देश में उत्पन्न होने वाले घोड़ों
की एक जाति विशेष ।

काम्य (वि०) १ वाञ्छनीय । २ किसी विशेष कामना
के लिए किया हुआ कर्मातुष्टान । ३ सुन्दर ।

मनोहर । कमनीय ।—अभिप्रायः, (पु०)

स्वार्थवश किया हुआ कर्म । जिसका हेतु

या कारण स्वार्थ हो ।—कर्मन्, (पु०) कर्मा-

तुष्टान जो किसी उद्देश्य विशेष के लिये किया

गया हो और जिससे भविष्य में फल प्राप्ति की

इच्छा हो ।—गिर (स्त्री०) अनुकूल कथन या

भाषण ।—दानम्, (न०) ऐसा दान या भेंट

जो स्वीकार करने योग्य हो । स्वेच्छानुसार दी हुई

भेंट या अपनी इच्छा के अनुसार दिया हुआ दान ।

—मरणा, (न०) इच्छा मृत्यु । आत्महत्या ।—

मर्त, (न०) अपनी इच्छा से रखा हुआ व्रत ।

काम्या (स्त्री०) अभिलाषा । इच्छा । प्रार्थना ।

काम्ल (वि०) नाममात्र को खट्टा । कमखट्टा ।

कायः } १ शरीर । देह । तन । २ पेड़ का धड़ या
कायम् } तना । ३ तारों को छोड़ कर बीणा का

समस्त काठ का डोंचा । ४ समुदाय । समारोह ।

संग्रह । ५ पूजा । मूलधन । ६ घर । वासा ।

ढेरा । ७ चिन्ह । ८ स्वभाव ।—अग्निः, (पु०)

पाचनशक्ति ।—क्लेशः, (पु०) शरीर

सम्बन्धी कष्ट ।—चिकित्सा, (स्त्री०) आयु-

र्वेद के आठ विभागों में तीसरा विभाग अर्थात्

उन रोगों की चिकित्सा या इलाज जो समस्त

शरीर में व्याप्त हों ।—मानं, (न०) शरीर का

माप ।—वलनम्, (न०) कबच । वर्म ।—स्थः,

(पु०) १ मुंशी जाति, जिसकी उत्पत्ति बन्निय

जाति और शूद्रा स्त्री से हुई हो । २ कायथ जाति

का एक मनुष्य ।—स्था, (स्त्री०) १ कैथानी ।

कायथ की स्त्री । २ बहेबर, हर्रा, अर्बुका का

पेड़ । —स्थी, (स्त्री०) कायस्थ की स्त्री ।

—स्थित, (वि०) शारीरिक । देह सम्बन्धी ।

कायः, (पु०) प्राजापत्य विवाह । आठ प्रकार के ।
विवाहों में से एक प्रकार का विवाह ।

कायम्, (न०) प्राजापतितीर्थ । उँगुलियों की जड़ के पास का हाथ का भाग । विशेष कर कनिष्ठिका का मूलभाग ।

कायक, (वि०) शरीर सम्बन्धी । —वृद्धिः, कायिक (वि०) } (स्त्री०) वह व्याज या सूद कायिका (वि०) } जो किसी धरोहर रखे हुए कायिकी (वि०) } जानवर का उपयोग करने के बदले मुजरा दिया जाय ।

कायका } (स्त्री०) व्याज सूद ।
कायिका }

कार (वि०) [स्त्री०—कारी] समासान्त शब्द का अन्तिम शब्द होकर जब यह आता है, तब इसका अर्थ होता है ; करने वाला, बनाने वाला, सम्पादन करने वाला । यथा—कुम्भकार, ग्रन्थकार, आदि । —अवरः, (पु०) एक वर्णसङ्कर जाति विशेष जिसकी उत्पत्ति निषाद पिता और वैदेही जाति की माता से हो । —कर, (वि०) गुमास्ता या आम-मुखतार की जगह काम करने वाला । —भूः, (पु०) चुंगी उधाने की जगह । कर वसूल करने का स्थान ।

कारः (पु०) १ कार्य । कर्म (यथा पुरुषकार) । २ उद्योग । प्रयत्न । चेष्टा । ३ धार्मिक तप । ४ पति । स्वामी । मालिक । ५ सङ्कल्प । इदंनिश्चय । ६ शक्ति । सामर्थ्य । ताकत । ७ कर या चुंगी । ८ बर्फ का ढेर । ९ हिमालय पर्वत ।

कारक (वि०) [स्त्री०—कारिका] १ करने वाला बनाने वाला । २ प्रतिनिधि । कारिन्दा । सुनीम । —दीपकम्, (न०) अलङ्कार शास्त्र का अर्थालङ्कार भेद । —हेतुः, (पु०) ज्ञापक हेतु का उल्ला । क्रियात्मक हेतु ।

कारकम् (न०) व्याकरण में कारक उसे कहते हैं जिसका क्रिया से सम्बन्ध होता है । कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, सम्बन्ध —ये सात कारक हैं । २ व्याकरण का वह भाग जिसमें कारकों का वर्णन है ।

कारणम् (न०) १ हेतु । २ जिसके बिना कार्य की उत्पत्ति न हो सके । ३ साधन । जरिया । ४ उत्पादक । कर्ता । जनक । ५ तत्व । ६ किसी मादक की मूल घटना । ७ इन्द्रिय । ८ शरीर । ९ चिन्ह । टीप । दस्तावेज प्रमाण । अधिकार । १० वह आधार जिस पर कोई मत या निर्णय अवलम्बित हो ।

—उत्तरं, (न०) १ मन में कुछ अभिप्राय रख कर उत्तर देना । २ वादी की कही बात को कह कर पीछे उसका खण्डन करना । [जैसे—मैं यह स्वीकार करता हूँ कि यह घर गोविन्द का है; किन्तु गोविन्द ने मुझे यह दान में दे दिया है ।]

—भूत, (वि०) कारण बना हुआ । हेतु बना हुआ । —माला, (स्त्री०) काव्यालङ्कार विशेष । —वादिन्, (पु०) वादी । मुद्दई । —वारि, (न०) वह जल जो सृष्टि की आदि में उत्पन्न किया गया था । —विहीन (वि०) हेतुरहित । कारणरहित । बेवजह । —शरीरम्, (न०) नैमित्तिक शरीर ।

कारण (स्त्री०) १ पीड़ा । क्लेश । २ नरक में डाला जाना । [त्तिक ।

कारणिक (वि०) १ परीक्षक । न्यायकर्ता । २ नैमिकारंढवः } (पु०) एक प्रकार की वतक ।
कारणदवः }

कारंध्यमिन् } (पु०) १ कसेरा । उडैरा । २ खनिज-कारंध्यमिन् } विद्यावित् ।

कारवः (पु०) काक । कौआ ।

कारस्करः (पु०) किपाक नामक वृक्ष ।

कारा (स्त्री०) १ जेलखाना । बंदीगृह । २ वीणा का भाग विशेष या तूँबी । ३ पीड़ा । कष्ट । क्लेश । ४ दूती । ५ सुनारिन । ६ वीणा की गूँज को कम करने का औज़ार । —आगारं, —गृहं, —वेश्मन्, (न०) जेलखाना । कैदखाना । —गुप्तः, (पु०) कैदी । बंदी । बँधुआ । —पालः, (पु०) जेलखाने का दरोगा ।

कारिः (स्त्री०) क्रिया । कर्म । (पु०) या (स्त्री०) कलाकुशल । दस्तकार ।

कारिका (स्त्री०) १ नाचने वाली स्त्री । २ कारोबार । व्यापार । व्यवसाय । ३ काव्य, दर्शन, व्याकरण, विज्ञान सम्बन्धी प्रसिद्ध पद्यात्मक कोई रचना ।

[जैसे सांख्यकारिका] । ४ अत्याचार । जुलूम । ५ व्याज । सूद । ६ अल्पाक्षरयुक्त और बहुअर्थवाची श्लोक ।

कारीशं (न०) अन्ने कंदों का ढेर ।

कारु (वि०) [स्त्री०—कारु,] १ कर्त्ता । करने वाला । प्रतिनिधि । कारिदा । नौकर । २ कला-कुशल । कारीगर । कारीगरों में गणना इतनों की है ।

“ तथा च तत्रैवापद्य भाषितो राजकन्तथा ।
यद्वचनवचनकारुण्य कारुण्यः शिष्टिष्वपी नतः ॥ ”

—चौरः, (पु०) ऐंड़ा लगाने वाला । सेंध फोड़ने वाला । डाँकू ।—जः, (पु०) १ कल से बनी कोई वस्तु । कल का कोई भाग या कोई कल । २ युवा हाथी या हाथी का बच्चा । ३ टीला । पहाड़ी । ४ फेन । ५ गेरू । ६ तिल । मस्सा ।

कारुणिक (वि०) [स्त्री०—कारुणिकी] दयालु । कृपालु ।

कारुण्यम् (न०) दया । रहम । अनुकम्पा ।

कार्कश्यम् (न०) १ सज्जती । कठोरता । उदण्डता । २ दृढ़ता । ३ ठोसपना । ४ हृदय की कठोरता । संगदिली ।

कार्तवीर्यः (पु०) हैहयराज कृतवीर्य का पुत्र । उसकी राजधानी माहिष्मती नगरी थी । इसको सहस्रबाहु या सहस्राजुन भी कहते हैं ।

कार्तस्वयम् (न०) सोना । सुवर्ण ।

कार्त्तातिकः } (पु०) ज्योतिषी । भविष्यद्वक्ता ।
कार्त्तान्तिकः }

कार्तिक (वि०) [स्त्री०—कार्तिकी,] कार्तिक मास सम्बन्धी ।

कार्तिकः (पु०) १ एक मास का नाम जिसकी पूर्ण-मासी के दिन चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र में होता है । अथवा जिसकी पूर्णमासी के दिन कृत्तिका नक्षत्र होता है । २ स्कन्द की उपाधि ।

कार्तिकी (स्त्री०) कार्तिक मास की पूर्णमासी ।

कार्तिकेयः (पु०) शिवपुत्र । स्कन्द । स्वामिकार्तिकः ।
—प्रसूः, (स्त्री०) पार्वती देवी । स्कन्द की जननी ।

कार्त्स्न्य (न०) सम्पूर्णता । समुच्चापन ।

कार्दम (वि०) [स्त्री०—कार्दमी] १ कीचड़ युक्त । कीचड़ में भरा या उससे सना । २ कर्दम प्रजा-पति सम्बन्धी ।

कार्पटः (पु०) १ आवेदनकर्त्ता । अर्जी देने वाला । प्रार्थी । उम्मेदवार । २ चिथड़ा । लत्ता ।

कार्पटिकः (पु०) १ तीर्थयात्री । २ तीर्थजलों को ढो कर आजीविका करने वाला । ३ तीर्थयात्रियों का एक दल । ४ अनुसूची मनुष्य । ५ पिछलग्गू । खुशामदी ।

कार्पश्यम् (न०) १ धनहीनता । गरीबी । २ अनु-कम्पा । दया । रहम । ३ कंजूसी । सूमपना । शक्ति-हीनता । निर्बलता । ४ हल्कापन । ओछापन । मन का हल्कापन ।

कार्पास (वि०) [स्त्री०—कार्पासी] रई का बना हुआ ।—अस्थि, (न०) बिनौला । कपास का बीज ।—नासिका, (स्त्री०) तकुआ । तकला । —सौत्रिक, (वि०) कपास के सूत से बना हुआ ।

कार्पासं (पु०) १ कोई वस्तु जो रई से बनी कार्पासः (न०) हो । २ कागज ।

कार्पासिक (वि०) [स्त्री०—कार्पासिकी] रई का बना हुआ या कपास से उत्पन्न ।

कार्पासिका } (स्त्री०) कपास का पौधा ।
कार्पासी }

कार्मण (वि०) [स्त्री०—कार्मणी,] किसी कार्य को पूरा करना । किसी कार्य को सुचारु रूप से करना ।

कार्मणं (न०) जादू । तंत्र विद्या ।

कार्मिक (वि०) [स्त्री०—कार्मिकी,] १ निर्मित । बना हुआ । २ जरी का काम किया हुआ । रंगबिरंगे सूतों से बिना हुआ । ३ रंग बिरंगा ।

कार्मुक (वि०) [स्त्री०—कार्मुकी,] काम के योग्य । काम करने लायक । किसी कार्य को सुचारु रूप से पूर्ण करने वाला ।

कार्मुकम् (न०) १ धनुष । क्रमान । २ बॉल ।

कार्य (स० का० कृ०) बना हुआ । किया हुआ जो किया जाना चाहिये ।—अक्षम, (वि०) जो अपने कर्त्तव्य कार्य करने में असमर्थ हो । अयोग्य ।

—अकार्यविचारः, (पु०) किसी विषय की सफल विफल युक्तियों पर वादानुवाद । किसी कार्य के औचित्य अनौचित्य पर वादानुवाद । —अधिपः, (पु०) कार्योध्यक्ष । २ उद्योतिष में वह ग्रह जिसकी परिस्थिति देखकर किसी प्रश्न का उत्तर दिया जाय । —अर्थः, (पु०) १ उद्देश्य । प्रयोजन । २ नौकरी पाने के लिये आवेदनपत्र । —अर्थिन्, (न०) १ प्रार्थी । २ किसी पदार्थ की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील । ३ पदप्रार्थी । नौकरी चाहने वाला । ४ अदालत में किसी दावे के लिये बकालत करने वाला । अदालत का आग्रह ग्रहण करने वाला । —आसनं, (न०) वह स्थान जहाँ लौन दैन या खरीद क्रोस्त होती हो । दुकान । गद्दी । —ईक्षां (न०) सार्वजनिक कार्यों की देख रेख । —उद्धारः, (पु०) कर्त्तव्यपालन । —कर, (न०) गुणकारी । —कारणे, (द्विवचन) कारणे । कार्य किया । —कालः, (पु०) १ काम करने का समय । ऋतु । मौसम । उपयुक्त समय या अवसर । —नौरत्नं, (न०) विषय का महत्व । —चिन्तक, (वि०) परिणामदर्शी । विचारवान । विवेकी । —चिन्तकः, (पु०) किसी कार्य या कार्यालय का प्रबन्धकर्त्ता या व्यवस्थापक । —च्युत, (वि०) बेकार । जो कहीं नौकर चाकर न हो । ठलुआ । किसी पद से हटाया या निकाला हुआ । —दर्शनं, (न०) १ अवलोकन । मुआयना । पर्यवेक्षण । २ अनुसन्धान । तहकीकात । —निर्णायः, (पु०) किसी काम का निपटारा । —पुटः, (पु०) १ निरर्थक काम करने वाला । २ पागल । चलितचित्त । झुकी । ३ निठल्ला । ठलुआ । —प्रक्षेपः, (पु०) अकर्मण्यता । काहिली । सुत्ती । —प्रेष्यः, (पु०) प्रतिनिधि । कारिदा । मुनीम । दूत । कासिद । —विपत्ति, (पु०) असफलता । दुर्भाग्य । —शेषः, (पु०) १ किसी कार्य का अवशिष्ट अंश । २ किसी कार्य की सम्पन्नता । पूर्णता । —सिद्धिः, (स्त्री०) सफलता । कामयाबी । —स्थानं, (न०) दफ्तर । आफिस । कोठी । दुकान । —हन्तु, (वि०) दूसरे के काम में बाधा डालने वाला । विपत्ती ।

कार्यम् (न०) १ काम । व्यवसाय । २ कर्त्तव्य कर्म । ३ पेशा । उद्योग । व्यापार । अति आवश्यक कारोबार । ४ धार्मिक अनुष्ठान । ५ हेतु । कारण । प्रयोजन । ६ आवश्यकता । अपेक्षा । ७ आचरण । ८ अभियोग । मुकदमा । ९ कर्त्तव्य कार्य । १० नाटक का शेष अङ्क । ११ उत्पत्ति-स्थान ।

कार्यतः (अन्यथा०) किसी प्रयोजन या उद्देश्य से । अन्ततोगत्वा । लिहाजा । अतएव ।

कार्श्यं (न०) १ लटापन । दुबलापन । पतलापन । २ कामी । स्वरूपता । थोडापन ।

कार्षः (५) किसान । खेतिहर ।

कार्षापणः { पु० } भिन्न वजन और मूल्य के
कार्षापणम् { न० } सिक्के ।
कार्षापणकः { पु० }

कार्षापणम् (न०) रुपया ।

कार्षापणिक (वि०) [स्त्री—कार्षापणिकी] एक कार्षापण के मूल्य का । जिसका मूल्य एक कार्षापण हो ।

कार्षिक देखो “कार्षापण”

कार्षा (वि०) [स्त्री०—कार्षा] श्रीविष्णु या श्रीकृष्ण से सम्बन्ध रखने वाला या वाली । २ व्यास का या की । ३ कृष्ण मृग का या की ।

कार्षायिस् (वि०) [स्त्री—कार्षायिनी] काले लोहे का बना हुआ या हुई ।

कार्षायिसम् (न०) लोहा ।

कार्षाः (पु०) कामदेव की उपाधि ।

काल (वि०) [स्त्री०—काली] काले रंग का । —अयस्त्वं, (न०) लोहा । —अक्षरिकः, (पु०) पढ़ा लिखा । साक्षर । —अगरुः, (पु०) चंदन वृक्ष विशेष । (न०) चंदन की लकड़ी । —अग्निः, —अग्नलः, (पु०) प्रलय के समय की आग । —अजितं, (न०) काले मृग का चर्म । —अञ्जनम्, (न०) एक प्रकार का अञ्जन । —अगृहजः (पु०) कोकिल । —अतिपातः, —अतिरेकः, (पु०) १ विलम्ब । देरी । समय गँमाना । २ अवधि या म्याद बीत जाने के कारण होने वाली हानि । —अध्यक्षः, (पु०) १ सूर्य देवता । २ परमात्मा । —अनु-

नादिन, (पु०) १ मधुप्रसिका । २ गौरैया पक्षी ।
 ३ चातक पक्षी ।—अन्तकः, (पु०) समय, जो मृत्यु
 का अधिष्ठात्र देवता और समस्त पदार्थों का
 नाशक माना जाता है ।—अन्तः, (न०) १ बीच
 का समय । २ समय की अवधि । ३ अन्य समय
 या अन्य अवसर ।—अभ्रः, (पु०) काला, पनीला
 बादल ।—अवधिः, (पु०) निर्दिष्ट समय ।
 —अशुद्धिः, (स्त्री०) स्थापे या शोक मनाने की
 अवधि जन्म अथवा मरण अशौच या सूतक ।
 —आयत्सं (न०) लोहा । —उत्त, (वि०) ठीक
 मौसम में बोया हुआ । —कञ्जम्, (न०) नील-
 कमल ।—कटकुटः, (पु०) ७ शिवजी का नाम ।
 —कण्ठः, (पु०) १ मोर । मयूर । २ गौरैया
 पक्षी । ३ शिवजी की उपाधि । करणम्, (न०)
 समय नियत करना ।—कर्णिका, —कर्णी,
 (स्त्री०) बदकिस्मती । विपत्ति । दुर्भाग्य ।—
 कर्मन्, (न०) मृत्यु । मौत ।—कीलः,
 (पु०) कोलाहल ।—कुराठः, (पु०)
 यमराज । धर्मराज ।—कूटः, (पु०)—
 कूटम्, (न०) हलाहल विष । वह विष जो
 समुद्र मन्थन के समय निकला था जिसे शिवजी ने
 अपने कण्ठ में रख लिया था ।—कूट, (पु०) १
 सूर्य । २ मयूर । मोर । ३ परमात्मा ।—क्रमः,
 (पु०) समय का बीत जाना ।—क्रिया, (स्त्री०)
 १ समय का नियत करना । २ मृत्यु ।—शेषः,
 (पु०) विलम्ब । देरी । समय का नाश । २
 समय बिताना ।—खण्डम् (न०) यकृत ।
 लीवर ।—गङ्गा, (स्त्री०) यमुनानदी ।—अन्धिः,
 (पु०) वर्ष ।—चक्रं, (न०) १ समय का
 पहिया । २ युग । २ (आलं०) भाग्यचक्र । जीवन
 के उतार चढ़ाव ।—चिह्नं, (न०) मृत्यु निकट
 आने के लक्षण ।—चोदित, (वि०) वह जिसके
 सिर पर काल या मृत्युदेव खेल रहे हों ।—ज्ञ,
 (वि०) उचित समय या उचित अवसर जानने
 वाला ।—ज्ञः, (पु०) १ ज्योतिषी । २ भुर्गा ।
 —अयम्, (न०) भूत, वर्तमान, भविष्यद् ।
 —दण्डः, (पु०) मृत्यु । मौत । —धर्मः,
 —धर्मन्, (पु०) १ ऐसे आचरण जो किसी

भी समय के लिये उपयुक्त हों । २ मृत्युकाल ।
 मृत्यु ।—धारणा, (स्त्री०) काल की वृद्धि ।
 —निरूपणम्, (न०) समय जानने की विद्या ।
 कालनिरूपण शास्त्र ।—नेमिः, (स्त्री०) १
 कालरूपी पहिये के आरे । २ रावण के चाचा का
 नाम, जिसे रावण ने हनुमान को मार डालने का
 काम सौंपा था, किन्तु पीछे वह स्वयं हनुमानजी
 द्वारा मार डाला गया था । ३ हिरण्यकशिपु का
 पुत्र । ४ एक अन्य राक्षस, जिसके १०० पुत्र थे
 और जिसे विष्णु ने मारा था ।—पाशः, (पु०)
 यम का पाश या फाँसी ।—पाशिकः, (पु०)
 जस्ताद । वह आदमी जो मृत्युदण्ड प्राप्त लोगों
 को फाँसी लगाता हो ।—पृष्ठं, (न०) १ हिरनों की
 जाति विशेष । २ कङ्कपक्षी ।—पृष्ठकम्, (न०)
 १ कर्ण के धनुष का नाम । २ धनुष ।—प्रभालं,
 (न०) शरद ऋतु ।—भक्तः, (पु०) शिवजी ।
 —मुखः, (पु०) लंगूरों की एक जाति ।—
 मेधी, (स्त्री०) मंजिष्ठा नाम के पौधा ।—
 यवनः, (पु०) यवन जातीय राजा, जिसने श्री
 कृष्ण पर मथुरा में, जरासन्ध के कहने से चढ़ाई
 की थी और जो श्रीकृष्ण की युक्ति से राजा
 मुचुकुन्द द्वारा भस्म किया गया था ।—योगः,
 (पु०) भाग्य । किस्मत ।—योगिन्, (पु०)
 शिवजी की उपाधि ।—रात्रिः,—रात्री (स्त्री०)
 १ अंधेरीरात । प्रलयकाल की रात । कल्पान्त-
 रात । कार्तिकी अमा की रात ।—लोहं, (न०)
 हंसपातलोहा ।—विप्रकर्षः, (पु०) समय की
 वृद्धि ।—वृद्धिः, (स्त्री०) व्याज या सूद जो नियत
 रूप से किसी निर्दिष्ट समय पर अदा किया जाय ।
 —वेला, (स्त्री०) शनिग्रह का समय । दिन में आधे
 पहर यह समय नित्य आता है । इस समय में शुभ
 कार्य करना वर्जित है ।—सदृश, (वि०) १ समय
 से । अवसर साधकर ।—सर्पः, (पु०) काला और
 महाविषैला साँप ।—सारः (पु०) काले रंग का
 मृग ।—सूत्रं,—सूत्रकं, (न०) १ समय या मृत्यु
 का डोरा । २ नरक विशेष ।—स्कन्धः, (पु०)
 तमालवृक्ष —स्वरूप, (वि०) मृत्यु की तरह

भयङ्कर । —हरः, (पु०) शिवजी का नाम ।

—हरणं, (न०) समय का नाश । विलम्ब ।

—हानिः, (स्त्री०) विलम्ब । कालातिक्रमण ।

कालं (न०) १ लोहा । २ सुगन्ध द्रव्य विशेष ।

कालः (पु०) १ काला रंग । २ समय । ३

उपयुक्त समय या अवसर । ४ समय के

विभाग जैसे घंटा, मिनिट आदि । ५ मौसम ।

वैशेषिक दर्शन के अनुसार नौ द्रव्यों में से काल

एक द्रव्य माना गया है । ७ परमात्मा का वह

रूप जो संहारकारी है । ८ यमराज । ९ प्रारब्ध ।

भाग्य । किस्मत । १० नेत्र का काला भाग ।

गोलक । ११ कोकिल । १२ शनिग्रह । १३ शिव

जी । १४ समय का माप । १५ कलवार । कलार ।

१६ विभाग । भाग ।

कालकं, (न०) यकृत । कलेजा । जिगर ।

कालकः (पु०) १ तिल । मस्ता । लहसन । २

पनिया साँप । ३ आँख का गोल और काला

भाग ।

कालंजरः } (पु०) १ पर्वत तथा उस पर्वत के

कालंजरः } समीप का भूखण्ड । २ साधु समारोह ।

३ शिव जी की उपाधि ।

कालेशयं (न०) माठा । छात्र ।

काला (स्त्री०) दुर्गादेवी की उपाधि ।

कालापः (पु०) १ सिर के केश । २ साँप का फन ।

३ कलाप व्याकरण पढ़ने वाला । ४ इस व्याकरण

का जानने वाला । ५ राक्षस । दैत्य । दानव ।

कालापकम् (न०) १ कलाप-व्याकरण-विद्वानों का

समुदाय । २ कलाप के सिद्धांत या उसकी शिक्षा ।

कालिक (वि०) [स्त्री०—कालिकी] १ समय

सम्बन्धी । २ समय पर निर्भर । ३ समयानुसार ।

समय से ।

कालिकः (पु०) १ सारस । २ बगला ।

कालिकम् (न०) कृष्णचन्दन ।

कालिका (स्त्री०) १ कालारंग । कालौच । २

स्याही । काली स्याही । ३ किसी वस्तु का मूल्य

जो किश्तबन्दी कर के चुकाया जाय । ४ छः

माही या तिमाही सूद जो निर्दिष्ट समय पर

अदा किया जाय । ५ बादलों का समूह । ६

बढ़ा । वह धातु जो सोने में मिलाई जाती है ।

७ कलेजा । यकृत । ८ कौआ की मादा । ९

बिच्छू । १० मदिरा । शराब । ११ दुर्गा देवी

का नाम ।

कालिंग } (वि०) [स्त्री०—कालिंगी] कलिंग देश

कालिङ्ग } में उत्पन्न या उस देश का ।

कालिंगः } (पु०) १ कलिंग देश का राजा । २

कालिङ्गः } कलिंग देश का सर्प । ३ हाथी । ४ राज-
कर्कटी । एक प्रकार की ककड़ी ।

कालिंगाः } (पु०) (बहुवचन) एक देश का नाम ।

कालिङ्गाः } (न०) तरबूज । हिंगवाना । कलींदा ।

कालिङ्गम् } (वि०) [स्त्री०—कालिङ्गी] कलिन्द पर्वत से

कालिन्द } निकला या आया हुआ । यमुनानदी ।

—कर्पणः,—भेदनः, (पु०) बलराम जी की

उपाधि ।—सूः, (स्त्री०) सूर्यपत्नी संज्ञा ।—

सोदरः, (पु०) यमराज ।

कालिमन् (पु०) कालौच । कालापन ।

कालियः (पु०) एक बड़ा भारी सर्प जो यमुना में

रहता था और जिसे श्रीकृष्ण ने दमन कर वृन्दावन

से भगाया था ।—दमनः,—मर्दनः, (पु०) श्री-

कृष्ण की उपाधि ।

काली (स्त्री०) १ कालिमा । कालौच । २ स्याही ।

मसी । ३ पार्वती की उपाधि । ४ कृष्ण मेघमाला ।

५ काले रंग की स्त्री । ६ न्यास माता सत्यवती

का नाम । ७ रात्रि ।—तनयः, (पु०) भैया ।

कालीकः (पु०) बगला । [यिक ।

कालीन (वि०) १ किसी विशेष समय का । २ साम-

कालियं } (न०) एक प्रकार का चन्दन ।

कालीयकं } (न०) एक प्रकार का चन्दन ।

कालुष्यम् (न०) १ गन्दगी । मैलाकुचैलापन ।

गँदलापना । २ मलीनता । अस्वच्छता । ३

अनैक्य ।

कालेय (वि०) कलियुग का । [३ केसर । जाफ़ान् ।

कालेयम् (न०) १ यकृत । कलेजा । २ कृष्णचन्दन ।

कालेयरुः (पु०) १ कुत्ता । २ हल्दी । ३ चन्दनविशेष ।

काल्पनिक (वि०) [स्त्री०—काल्पनिकी] १ बना-

वदी । फर्जी । २ जाली ।

काल्य (वि०) १ समय से । सामयिक । अवसरानुसार ।

२ प्रिय । अनुकूल । शुभ । कल्याणकारी ।

काल्यम् (न०) तड़का । सवेरा । मोर । प्रभात ।

काल्यणकम् (न०) कल्याण करनेवाला । शुभ ।

कावचिक (वि०) [स्त्री०—कावचिकी] कवच या
वर्म सम्बन्धी ।

कावचिकम् (न०) कवचधारी पुरुषों का समूह ।

काधुकः (पु०) १ मुर्गा । २ चक्वा चक्वी ।

कावेरम् (न०) केसर । जाफ़ान ।

कावेरी (स्त्री०) १ दक्षिण भारत की एक नदी का
नाम । २ रंडी । बेरया ।

काव्य (वि०) १ वह पुरुष जिसमें कवि अथवा पण्डित
के लक्षण विद्यमान हों । २ अविष्य । ईश्वरी प्रेरणा
से लिखा हुआ । पद्यमय ।—अर्थः, (पु०) पद्य-
मय विचार । पद्य सम्बन्धी भाव ।—चौरः, (पु०)
दूसरे की कविता चुरानेवाला ।—रसिकः, (वि०) वह
पुरुष जो कविता को पसंद करता हो और
उसकी विशेषताओं और सौन्दर्य की सराहना
कर सके ।—लिङ्गम्, (न०) अलङ्कार विशेष ।

काव्यं (न०) १ पद्यमयी रचना । २ शायरी ।
कविता । ३ प्रसन्नता । नीरोगता । ४ बुद्धि ।
५ ईश्वरी प्रेरणा । स्फूर्ति ।

काव्यः (पु०) १ शुक्राचार्य का नाम । यह असुरों
के गुरु थे ।

काव्या (स्त्री०) १ प्रांतमा । २ सखी सहेली ।

काश् (धा० आत्म०) [काशते, काश्यते; काशित]
१ चमकना । चमकदार देख पड़ना । सुन्दर दिख-
लाई पड़ना । प्रकट होना ।

काशः (पु०) } एक प्रकार की घास जो छत छाने
काशम् (न०) } और चटाई बनाने के काम में
आती है । (न०) १ उस घास का फूल । तृणपुष्प ।
२ फेफड़े का रोग ।

काशि (पु०) [बहुवचन] एक प्रदेश का नाम ।

काशिः } (स्त्री०) सप्त मोक्षपुरियों में से एक । आधु-
काशी } निक बनारस नगर ।—पः, (पु०) शिव
जी की उपाधि ।—राजः, (पु०) काशी के एक
राजा का नाम जो अम्बा, अम्बिका और अम्बा-
लिका का पिता था ।

काशिन् (वि०) [स्त्री०—काशिनी] १ चमकीला । २
सदृश । समान [यथा जितकाशिन् अर्थात् जो
विजयी के समान आचरण करे ।]

काशी (स्त्री०) देखो 'काशिः' ।—नाथः, (पु०) शिव
जी ।—यात्रा, (स्त्री०) काशी की तीर्थयात्रा ।

काश्मरी (स्त्री०) एक पौधा जिसे गाँभारी कहते हैं ।

काश्मीर (वि०) [स्त्री०—काश्मीरी] काश्मीर देश
में उत्पन्न । काश्मीर देश का । काश्मीर से आया
हुआ ।—जं, (न०)—जन्मन्, (न०) केसर ।
जाफ़ान ।

काश्मीरं (न०) केसर । जाफ़ान । [रहनेवाले ।

काश्मीराः (बहुवचन) देश विशेष अथवा उस देश के
काश्यं (न०) मदिरा । शराब । मद्य ।—पम् (न०)
माँस । गोरोत ।

काश्यपः (पु०) १ एक प्रसिद्ध ऋषि । २ कथाद
का नाम ।—नन्दनः (पु०) १ गरुड़ की
उपाधि । २ अरुण का नाम ।

काश्यपिः (पु०) गरुड़ और अरुण की उपाधि ।

काश्यपी (स्त्री०) पृथ्वी ।

काषः (पु०) रगड़न । खरोंच ।

काषाय (वि०) [स्त्री०—काषायी] जोगिया या
गेरुआ रङ्ग का ।

काषायम् (न०) जोगिया या गेरुआ रङ्ग का वस्त्र ।

काष्ठं (न०) १ लकड़ी का टुकड़ा । २ शहनीर ।

लट्ठा । ३ लकड़ी । बूड़ी । ४ नापने का एक

औज़ार ।—आगारः, (पु०)—आगरम्, (न०)

लकड़ी का बना मकान या घेरा ।—अम्बुवाहिनी,

(स्त्री०) बाल्टी । डोलची ।—कदली, (स्त्री०)

जंगली केला ।—कीटः, (पु०) लकड़ी का घुन ।

—कुट्टः, —कूटः, (पु०) कठफुड़वा । हुदहुद ।

खुटबई । पत्ती विशेष ।—कुदालः, (पु०)

कटौता ।—तत्तू, (पु०)—तत्तकः, (पु०)

बड़ई ।—तन्तुः, (पु०) शहतीरों में रहने वाला

एक छोटा कीड़ा ।—दारुः, (पु०) देवदारु का

पेड़ । पलाश का पेड़ ।—भारिकः, (पु०)

लकड़हारा । लकड़ी ढोने वाला ।—मठी, (वि०)

चिता ।—मल्लः, (पु०) ठठरी जिस पर

रख कर मुर्दा ले जाया जाता है ।—लेखकः,

(पु०) लकड़ी में रहने वाला एक छोटा कीड़ा ।
 —वाट, (पु०) —वाटं, (न०) लकड़ी की दीवाल ।
 काष्ठकम् (न०) ऊद । अगर ।
 काष्ठा (स्त्री०) १ दिशा । २ सीमा । ३ चरम सीमा ।
 ४ शुद्धदौड़ का मैदान । ५ चिन्ह । शुद्धदौड़ का
 पाला । ६ आकाशस्थित पवन वा वायु का मार्ग ।
 समय का परिमाण । कला का तीसरा भाग ।
 काष्ठिकः (पु०) लकड़ी ढोने वाला ।
 काष्ठिका (स्त्री०) लकड़ी का एक छोटा टुकड़ा ।
 काष्ठीला (स्त्री०) कदली वृक्ष । केले का पेड़ ।
 कास् (धा० आत्म०) [कासते० कासित] १ चम-
 कना । २ खलारना । खाँसना । कहरना ।
 कासः } १ खाँसी । जुकाम । २ झींक ।—कुण्ठ,
 कासा } (वि०) खाँसी से पीड़ित ।—घ्न, —हृत,
 (वि०) खाँसी दूर करने वाला । कफ निकालने
 वाला ।
 कासरः (पु०) मैला । [स्त्री०—कासरी,] जैस ।
 कासारः (पु०) } तालाब । पुष्करिणी ।
 कासारम् (न०) } तलैया । भील । सरोवर ।
 कास्तु } (स्त्री०) १ एक प्रकार का भाला । २ अस्पष्ट
 काशु } भाषण । ३ दीप्ति । दमक । आव । ४
 रोग । ५ भक्ति ।
 कास्तुति (स्त्री०) पगडंडी । गुप्तमार्ग ।
 काहल (वि०) १ भूखा । मुर्खाया हुआ । २ उत्पाती ।
 ३ अत्यधिक । प्रशस्त । बड़ा ।
 काहलः (पु०) १ बिल्ली । २ मुर्गा । ३ काक । ४
 रव । आवाज़ ।
 काहलम् (न०) अस्पष्ट भाषण ।
 काहला (स्त्री०) बड़ा ढोल ।
 काहली (स्त्री०) युवती स्त्री ।
 किंवत् (वि०) शरीर । तुच्छ । बापुरा ।
 किंशाढः (पु०) १ धान की बाल । २ बगुला ।
 कङ्कपत्नी । ३ तीर ।
 किंशुकं (पु०) पलाश वृक्ष । ढाक का पेड़ ।
 किंशुकः (न०) पलाश पुष्प ।
 किंशुककः (पु०) पलाश वृक्ष ।
 किंकिः (पु०) १ नारियल का पेड़ । २ नीलकण्ठ
 पक्षी । ३ चातक पक्षी ।

किङ्कणी }
 किङ्कणी } (स्त्री०) ध्वरु । रोना । छोटी
 किङ्कणिका } छोटी घंटियाँ ।
 किङ्कणिका }
 किङ्किरः } (पु०) १ घोड़ा । २ कोकिल । ३
 किङ्किरः } भौरा । ४ कामदेव । ५ लाल रंग ।
 किङ्किरा } (स्त्री०) खून । रक्त । लोहू ।
 किङ्किरा }
 किङ्किरातः } (पु०) १ तोता । २ कोकिल । ३
 किङ्किरातः } कामदेव । ४ अशोक वृक्ष ।
 किञ्जलः }
 किञ्जलः } (पु०) कमल पुष्प का रेशा या कमल का
 किञ्जलकः } फूल । किसी वृक्ष का फूल या उसका
 किञ्जलकः } रेशा ।
 किटिः (पु०) शूकर । सुअर ।
 किटिमः (पु०) खटमल । जुआँ । चील्हर ।
 किट्टं } (न०) कीट । काँहट । मैल । तलछट ।
 किट्टकं } ज्ञानन ।
 किट्टालः (पु०) १ ताँबे का पात्र । २ लोहे का मोर्चा ।
 किणः (पु०) १ ठेठ । घट्टा । चट्टा । गूत । फोड़े या
 वाव का निशान । २ तिल । मस्सा । ३ लकड़ी
 का धुन ।
 किशवं (न०) पाप ।
 किशवं (पु०) } मदिरा का खसीर उठाने या उसमें
 किशवः (न०) } उफान लाने वाली द्रव्य विशेष ।
 कित् (धा० परस्मै०) (कृतति) १ इच्छा करना ।
 २ जीवित रहना । ३ इलाज करना । चंगा करना ।
 आराम करना ।
 कितवः (पु०) [स्त्री०—कितवी,] १ बदमाश ।
 गुंडा । लवार । कपटी । २ धतूरे का पौधा । ३
 सुगन्ध द्रव्य विशेष ।
 किंविन् } (पु०) घोड़ा । अश्व ।
 किन्विन् }
 किन्नरः (पु०) देवताओं के गायक । इनका मुख
 घोड़े जैसा और शरीर मनुष्य जैसा होता है ।
 किन्नरेश (पु०) कुबेर । धनाधिप ।
 किम् (अव्यया०) समासान्त शब्दों में यह प्रथम कु
 की जगह प्रयुक्त होता है और इसके अर्थ यह
 होते हैं—खराबी, हास, रोष, कलङ्क या धिक्कार ।
 यथा—किंसखा, अर्थात् दुष्ट या बुरा मित्र ।

किन्नर, अर्थात् बुरा मनुष्य या अङ्ग भङ्ग मनुष्य आदि । आगे के समासान्त शब्द देखो ।
—दासः, (पु०) बुरा नौकर । —नरः, (पु०) १ दुष्ट या विकृत पुरुष । २ देवगायक जाति विशेष । —नरी, (स्त्री०) १ किन्नर की स्त्री । २ वीणा विशेष । —पुरुषः, (पु०) १ नीच या तिरस्करणीय पुरुष । २ किन्नर । —पुरुषेश्वरः, (पु०) कुबेर । —प्रभुः, (पु०) बुरा स्वामी या बुरा राजा । —राजन् (वि०) बुरा राजा वाला । —सखि (पु०) (एकवचन कर्ता कारक में किसका रूप होता है) दुष्ट पुत्र । यथा ।

“य किंस्वा साधु न शक्ति योऽपि ।”

—किरातार्जुनीय ।

म् (सर्वनाम० अव्य०) [कर्ता एकवचन (पु०)
—कः, (स्त्री०) का, (न०) किम्] १ कौन ।
क्या । कौनसा । —अपि, (अव्य०) १ कुछ
कुछ । २ बहुत अधिक । अकथनीय । अवर्णनीय ।
३ बहुत अधिक । कहीं ज्यादा । —अर्थ, (वि०)
किस प्रयोजन से । किस उद्देश्य से । —अर्थ,
(अव्य०) क्यों । क्यों कर । —आख्य,
(वि०) किस नाम का । किस नाम वाला । —
इति, (अव्य०) काहे को । क्यों कर । किस काम
के लिये । —उ, —उत्, (अव्य०) १ या ।
अथवा । वा । (सन्देहात्मक) २ क्यों । ३ कितना
और अधिक । कितना और कम । —करः,
(पु०) नौकर । दास । गुलाम ।

“अवेहि मां किन्नरसद्वृत्तैः”

—रघुवंश

—करा, (स्त्री०) दासी । नौकरानी । चाकरानी ।
—करी, (स्त्री०) नौकर की पत्नी । —कर्तव्यता,
—कार्यता, (स्त्री०) किर्तव्यमूढ़ता । अर्थात्
ऐसी परिस्थिति में पहुँचना जब अपने मन में
स्वयं यह प्रश्न उठे कि अब मुझे क्या करना चाहिये ।
परेशानी । —कारण, (वि०) क्यों कर । किस
कारण से । —कित, (अव्य०) एक अव्यय जो
अप्रसन्नता या असन्तोष प्रकट कर्ता है । —
दण, (वि०) अकर्मण्य, जो समय का मूल्य
नहीं समझता —गोत्र, (वि०) किस वंश का ।

किस खान्दान का । —च, (अव्य०) अतिरिक्त
उपरान्त । —चन, (अव्य०) कुछ अंश में ।
थोड़ा सा । —चित् (अव्य०) कुछ अंश में ।
कुछ कुछ । थोड़ा सा । —चित्त, (वि०) थोड़ा
जानने वाला । बकबादी । —चित्कर, (वि०)
कुछ करने वाला । उपयोगी । —चित्कालः,
(पु०) कभी कभी । कुछ समय । —चित्प्राण,
(वि०) थोड़ा जीवन वाला । —विन्मात्र
(वि०) बहुत थोड़ा । —वृन्दस् (वि०) किस
वेद को जानने वाला । —तर्हि, (अव्य०)
फिर क्यों कर । किन्तु । तथापि । कितना
ही । फिर भी इसके उपरान्त । —तु, (अव्य०)
किन्तु । ताहम । तो भी । तथापि । —देवत, (वि०)
किस देवता का । —नामधेय, —नामन् (वि०)
किस नाम का । —निमित्त, (वि०) किस प्रयो-
जन का । —निमित्तम्, (अव्य०) क्यों । क्यों
कर । जिस लिये । इस लिये । जिस कारण से ।
—नु, (अव्य०) १ आया । या । अथवा । २
अत्यधिक । अत्यल्प । ३ क्या । —नु, —खल,
(अव्य०) १ ऐसा क्यों कर । क्यों कर सम्भव ।
क्यों । निश्चय ही । २ अस्तु । ऐसा ही सही । —
पत्न, —पत्नान, (वि०) कंजस । सूम । लाजची ।
मक्खीचूस । —पराक्रम, (वि०) किस शक्ति
या विक्रम वाला । —पुनर, (अव्य०) कितना
और अधिक या कितना और कम । —प्रकारे,
किस ढंग से । किस तरह । —प्रभाव, (वि०)
किस चलाव का । किस हतवे का । —भूत,
(वि०) किस तरह का या किस स्वभाव का ।
—रूप, (वि०) किस शक्त का । —वदन्ति,
—वदन्ती, (स्त्री०) अफवाह । —घराटकः
(पु०) अपव्ययीपुरुष । क्रजूल खर्च करने वाला
आदमी । —वा, (अव्य०) प्रश्नवाची अव्यय ।
—विद्, (वि०) क्या जानने वाला । —व्यापार,
(वि०) किस पेशे का । —शील, (वि०) कैसे
स्वभाव का । —स्वित्, (अव्य०) या । आया ।

कियत् (वि०) [कर्ता एकवचन पु० —कियान्, स्त्री०
—कियती; न० कियत्] १ कितना बड़ा । कितनी
दूर । कितना । कितने । कितने प्रकार का । किन
स० श० कौ०—३०

गुणों वाला । २ निकम्मा । ३ कुछ । थोड़ा सा ।
अल्पसंख्यक । थोड़ा । —पतिका, (स्त्री०)
उद्योग । धीर गम्भीर उद्योग । —कालम्,
(अव्यया०) १ कितने समय का । २ कुछ थोड़े
समय का । —चिरं, (अव्यया०) कब तक ।
कितने समय तक । —दूरं, (अव्यया०) १ कितनी
दूर । कितने फासिले पर । कितना लंबा । २ कुछ
समय के लिये । कुछ दूर पर ।

किरः (पु०) शूकर । सुअर ।

किरकः (पु०) १ लेखक । २ सुअर का बच्चा । घेंटा ।

किरणः (पु०) प्रकाश की किरन । (सूर्य, चन्द्र
अथवा किसी प्रकाशयुक्त पदार्थ की) किरन । २
रजकण । —मालिनः, (पु०) सूर्य ।

किरातः (पु०) १ एक पतित पहाड़ी जंगली जाति,
जो वनजन्तुओं को मार कर उनके माँस पर अपना
निर्वाह करती है ।

वैयाकरणकिरातादपशब्दभूगाः क्व यान्तु संज्ञताः ।

यदि नटगणकचिकित्सकवैतालिके वदनकंदरा न स्युः ॥

२ जंगली । बर्वर । ३ बौना । घामन । ४ साईस ।
घुड़सवार । ५ किरात का रूप धारण करने वाले
शिव जी का नाम । —ताः, (बहुवचन) एक प्रदेश
का नाम । —आशिन्, (पु०) गरुड़ जी की
उपाधि ।

किराती (स्त्री०) १ किरात जाति की एक स्त्री । २
चौरी डुलाने वाली स्त्री । ३ कुटनी । ४ किराती
का रूप धारण करने वाली पार्वती । ५ आकाश-
गंगा ।

किरिः (पु०) १ शूकर । सुअर । २ बादल ।

किरीटः (पु०) १ मुकुट । ताज । कलंगी । २
किरीटम् (न०) १ व्यापारी । —धारिन्, (पु०)
राजा । —मालिनः, (पु०) अर्जुन की उपाधि ।

किरीटिन् (वि०) मुकुट धारण करने वाला । (पु०)
अर्जुन का नाम ।

किर्मीर (वि०) धब्बेदार । चित्तेदार । रंग विरंगा ।
—जित्, —निषूदनः, —सूदनः, (पु०) भीम की
उपाधि ।

किर्मीरः (पु०) एक राजस का नाम, जिसे भीम
ने मारा था ।

किल (अव्यया०) १ निश्चय । अवश्य । २ सत्य
सत्य । यथावत् । ज्यों का त्यों । ३ अलीक कार्य ।
आशा । सम्भावना । ४ असन्तोष । अरुचि । ५
तिरस्कार । ७ हेतु । कारण ।

किलः (पु०) खेल । तुच्छ । —किञ्चित्, (न०)
कामप्रणोदित उद्विग्नता । रुदन । हास्य । प्रेमी के
सामने मचलना, रुटना, क्रोध करना आदि ।

किलकिलः (पु०) १ एक प्रकार का हर्षसूचक
किलकिला (स्त्री०) १ शब्द विशेष । वानरों की
किलकारी ।

किलिजं } (न०) १ चटाई । २ हरी लफड़ी का
किलिजम् } पतला तख्ता । तख्ता ।

किलिवत् (पु०) बड़ा ।

किल्विषं (न०) १ पाप । २ अपराध । दोष । जुर्म ।
३ रोग । बीमारी ।

किशलयः (पु०) १ अङ्कुर । अँखुआ । पल्लव ।
किशलयम् (न०) १ पत्ता ।

किशोरः (पु०) १ बड़ेवा । बच्चा । किसी जानवर का
बच्चा । २ बालक । बच्चा । छोटा । ३ १२ वर्ष की
उम्र से कम का बालक । नाबालिग । अवयस्क
अप्राप्त व्यवहार अर्थात् मैनर । ३ सूर्य ।

किशोरी (स्त्री०) युवती स्त्री ।

किष्किन्धः } (पु०) १ एक प्रदेश का नाम । २
किष्किन्ध्याः } उस प्रदेशस्थित एक पर्वत का नाम ।

किष्किन्धा } (स्त्री०) किष्किन्ध्या प्रदेश की राज-
किष्किन्ध्या } धानी का नाम ।

किष्कु (वि०) दुष्ट । तिरस्करणीय । बुरा ।

किष्कुः (पु०) (स्त्री०) १ बाँह । २ बारह अँगुल
का माप ।

किसलः (पु०) किसलयम् (न०) १ नवपल्लव ।
किसलयः (पु०) किसलयम् (न०) १ कोमल-
पत्र । अङ्कुर । अँखुआ ।

कोकट (वि०) [स्त्री०—कीकटी] १ गरीब । बपुरा
२ कंजूस ।

कीकटः (पु०) एक देश का नाम । आधुनिक विहा-
प्रान्त । “कीकटेषु गया पुराण ।”

कीकस (वि०) कड़ा । हड़ । मजबूत ।

कीकसम् (न०) हड्डी । अस्थि ।

चक्रः (पु०) १ खोलला बाँस । पोला बाँस । २ बाँस जो हवा चलने पर खड़खड़ाता हो अथवा हवा के चलने से उत्पन्न बाँस की सनसनाहट । ३ एक जाति का नाम । ४ विराट राजा का साला और उसकी सेना का प्रधान सेनापति । इसे भीम ने मारा था । क्योंकि इसने द्रौपदी के साथ अनुचित कर्म करना चाहा था । —जित्, (पु०) भीम की उपाधि ।

टः (पु०) कीड़ा । तिरस्कार या हिकारत में इस शब्द का प्रयोग समासान्त शब्दों में किया जाता है जैसे द्विपटीटः, अर्थात् दुष्टहाथी; पत्तिकीटः, अर्थात् दुष्टपक्षी आदि । —घ्नः, (पु०) गन्धक । —जं, (न०) देशम् । —जा, (स्त्री०) लाख । चपड़ा । —मणिः, (पु०) जुगनु । खद्योत ।

टकः (पु०) १ कीड़ा । २ मागध जाति का बंदी-जन ।

द्विश
द्विगे
द्विशी (स्त्री०) } किस प्रकार का । कैसा । किस
द्वित्त
द्विल्ली (स्त्री०) } स्वभाव का ।

नाश (वि०) १ भूमि जोतने वाला । २ गरीब । धनहीन । ३ कंजूस । स्वल्प । थोड़ा । [विशेष ।

नाशः (पु०) १ यमराज की उपाधि । २ वानर

रः (पु०) तोता । सुगन्ध । —इष्टः, (पु०) आम का वृक्ष । —धर्णकम्, (न०) सुगन्ध द्रव्यों का सरताज ।

रम् (न०) गोश्त । माँस । [रहने वाले ।

राः (बहुवचन) कश्मीर देश और उस देश के रण (वि०) १ गुथा हुआ । फैला हुआ । पड़ा हुआ । बिखरा हुआ । २ ढका हुआ । भरा हुआ । ३ रखा हुआ । ४ घायल । जोड़िल ।

रिणिः (स्त्री०) १ बखेरना । २ ढकना । छिपाना । ३ घायल करना । [देवालय ।

र्तनम् (न०) १ कहना । वर्णन करना । २ मन्दिर ।

र्तना (स्त्री०) १ वर्णन । कथन । पाठ । २ कीर्ति । महिमा ।

र्तिः (स्त्री०) १ प्रसिद्धि । प्रख्याति । महिमा । यश । २ प्रशंसा । सराहना । अनुग्रह । ३ कीचड़ ।

कृदा । ४ बढ़ाव । फैलाव । पसार । ५ प्रकाश । कान्ति । आभा । ६ आवाज़ । —भाज्, (वि०) प्रसिद्ध । प्रख्यात । मशहूर । (पु०) दोषाचार्य की उपाधि । —शेषः, (पु०) जिसकी ख्याति के समय कुछ भी पीछे न रह जाय । मृत्यु । मौत ।

कील् (धा० परस्मै०) १ बाँधना । २ खोंसना । कीलना । अर्थात् बंद कर देना । कील ठोकना । सहारा देना । टेक लगाना । दाव लगाना ।

कीलः (पु०) १ कील । पिन । २ बड़ी । ३ खंभा । खूटा । ४ हथियार । ५ कोहनी । ६ कोहनी का प्रहार । ७ लौ । ८ सूक्ष्म अणु । ९ शिवजी का नाम ।

कीलकः (पु०) १ पत्थर । खूँटी । मेख । कील । २ खम्भा । स्तूप ।

कीलालः (पु०) १ अमृत के समान स्वर्गीय पेय पदार्थ । २ शहद । ३ हँवान । जानवर । —धिः, (पु०) समुद्र । —यः, (पु०) राक्षस । दानव । दैत्य ।

कीलालकम् (न०) रक्त । खून ।

कीलिका (स्त्री०) धुरी की कील ।

कीलित (वि०) १ बिधा हुआ । २ गड़ा हुआ । कील से बड़ा हुआ ।

कीश (वि०) गंगा ।

कीशः (पु०) १ वानर । लंगूर । २ सूर्य । ३ पक्षी ।

कु (अन्यथा०) हास, खराबी, कमी, त्रिसावट, पाप, धिक्कार, स्वल्पता, आवश्यकता और झुटि ज्यत्सक अव्यय विशेष । इसके विविध परियायवाची शब्द हैं—१ “कद्”, २ “कव”, ३ “का” और ४ “कि” । [उदाहरण—१ कदश्च । २ कवोष्ण । ३ कोष्ण । ४ किप्रभुः ।] —पुत्रः (पु०) मङ्गल ग्रह । —कर्मन्, (न०) बौद्धा काम । बुरा काम । —ग्रहः, (पु०) अशुभग्रह । —ग्रामः, (पु०) पुरवा । छोटा ग्राम । —चेल, (पु०) चियड़े पहिने हुए । —चर्या, (स्त्री०) दुष्टता । दुष्टाचरण । —जन्मन्, (वि०) अकृत्नीन । नीच । —तनु, (वि०) कुरूप । विकलाङ्ग । —तनुः, (पु०) कुबेर की उपाधि । —तंत्री, (स्त्री०) धुरी दीणा । —तीर्थ, (न०) बुरा

शेवक ।—दिनं, (न०) अशुभ दिवस ।—दृष्टिः, (स्त्री०) १ बुरी निगाह । २ क्रमज्ञोर निगाह । ३ वेद विरुद्ध सम्मति ।—देशः, (पु०) बुरा देश या स्थान । ऐसा देश जहाँ जीवनोपयोगी पदार्थ अप्राप्त हों या जहाँ का राजा अच्छा न हो और अत्याचारी हो ।—देहः, (वि०) कुरूप । विकलाङ्ग ।—देहः, (पु०) कुबेर की उपाधि ।—धी, (वि०) १ मूर्ख । मूढ़ । बेवकूफ । २ दुष्ट ।—नटः, (पु०) बुरा अभिनय पात्र ।—नदिका, (स्त्री०) छोटी नदी या नाला ।—नाथः, (पु०) दुष्ट स्वामी या मालिक । नामन्, (पु०) कंजूस ।—पथः, (पु०) कुमार्ग ।—पुत्रः, (पु०) दुष्ट पुत्र या बेटा ।—पुरुषः, (पु०) नीच आदमी ।—पूय, (वि०) नीच । ओझा । तिरस्करणीय ।—प्रिय, (वि०) अप्रिय । तिरस्करणीय । नीच । ओझा ।—स्रवः, (पु०) बुरी नाव ।—ब्रह्मः, —ब्रह्मन्, (पु०) पतित ब्राह्मण ।—मंत्रः, (पु०) बुरी सलाह ।—योगः, (पु०) ग्रहों का बुरा या अशुभ संयोग ।—रसः, (पु०) मदिरा विशेष ।—रूप, (वि०) बदशक्ल । भद्दा ।—रूप्यं, (न०) टीन । जस्ता ।—चंगः, (पु०) सीसा ।—वचस्, —वाक्यम्, (न०) गाली-गलोज ।—वर्षा, (पु०) अचानक या प्रचंड वर्षा ।—विवाहः, (पु०) विवाह की बुरी पद्धति ।—वृत्तिः, (स्त्री०) बुरा आचरण बद्चालचलन ।—वैद्यः, (पु०) खरा वैद्य । नीम हकीम ।—शील, (वि०) उजड़ । असभ्य । दुष्ट । बदतमीज़ । अशिष्ट । दुष्टस्वभाव ।—छलम्, (न०) बुरा स्थान ।—सरित्, (स्त्री०) छोटी नदी या नाला ।—सूतिः, (स्त्री०) १ दुष्टाचरण । दुष्टता । हंजाल । २ बदमाशी ।—स्त्री, (स्त्री०) दुष्ट स्त्री ।

(स्त्री०) १ पृथिवी । २ त्रिभुज का आधार ।—भम् (न०) एक प्रकार की शराब ।

धा० आत्म० [कवते] शब्द करना । बजाना । [कुवते] १ कराहना । कहरना । २ चिल्लाना । (परस्मै०) [कौति] मिनभिनाना ।

कुकीलः (पु०) पहाड़ । पर्वत ।

कुकुदः } विवाह में उपयुक्त पात्र को उचित शृङ्गार
कुकुदः } सहित एवं शास्त्रीय विधानानुसार कन्या
देने वाला ।

कुकुन्दरः कुकुन्दरः } (पु०) जवन कूप ।

कुकुन्दरः कुकुन्दरः }
कुकुराः (बहुवचन) दशार्ह देश का नामान्तर ।

कुकुलः (पु०) } १ भूसी । चोकर । २ चोकर की
कुकुलम् (न०) } आग । (न०) १ सूराल । छेद ।

गढ़ा । गर्त । २ कवच । वर्म ।

कुकुटः (पु०) १ मुर्गा । २ लुआट । अपजली लकड़ी ।
३ चिनगारी । अंगारा । [स्त्री०—कुकुटी] मुर्गी ।

कुकुटिः } (स्त्री०) दम्भ । स्वार्थसिद्धी के लिये
कुकुटी } किया गया धर्मानुष्ठान ।

कुकुभः (पु०) १ जंगली मुर्गा । २ मुर्गा ३ वारनिश ।
लुक । रोगन ।

कुकुरः (पु०) [स्त्री०—कुकुरी] कुत्ता ।—वाच्, (पु०) हिरनों की एक जाति ।

कुत्तः (पु०) पेट ।

कुत्तिः (पु०) १ पेट । २ गर्भाशय । पेट का वह भाग जिसमें गर्भ की झिल्ली रहती है । ३ किसी भी वस्तु का भीतरी भाग । ४ रन्ध्र । ५ गुफा । गुहा । ६ म्यान । ७ खाड़ी ।—शूलः, (पु०) पेट का दर्द ।

कुत्तिमरि (वि०) पेट । पल्ले दर्ज का स्वार्थ ।
मरभुका । भोजनभट्ट ।

कुंकुमम् } (न०) । केसर । जाफ़ान ।—आद्रिः, (पु०)
कुङ्कुमम् } एक पर्वत का नाम ।

कुच् (ध० परस्मै०) (कुचति, कुचित) १ पत्नी की बोली विशेष बोलना । २ जाना । ३ चिकनाना । ४ सकोड़ना । ५ झुकाना । सिकुड़जाना । ६ रोकना । अटकाना । ७ लिखना या लिखे को मिटाना ।

कुचः (पु०) छाती । चूची । चूची के ऊपर की घुंड़ी ।
—अग्रं, —मुखं, (न०) चूची के ऊपर की घुंड़ी ।
—फलः, (पु०) अनार का वृक्ष ।

कुचर (वि०) [स्त्री०—कुचरा, कुचरी] १ रेंगने वाला । २ दुष्ट । नीच । पापी । ३ निन्दक । (पु०) स्थिर ग्रह ।

कुच्छ (न०) कमल की जाति विशेष ।

कुजः (पु०) १ वृक्ष । २ मङ्गलग्रह । राक्षस विशेष ।

—जा, (स्त्री०) सीताजी का नाम ।

कुजभनः, कुजम्भनः } (पु०) घर में सेंध लगाने
कुजमिलः, कुजम्मिलः } वाला चोर ।

कुम्भटिका, } (स्त्री०) कुहासा । नीहार । पाला ।
कुम्भटिका }
कुम्भटी } कुहरा ।

कुम्भ } देखो कुम्भ ।

कुम्भनम् } (न०) । सुकाना । सकोड़ना ।

कुम्भिः, } (पु०) आठ अंगुली या पसों का माप
कुम्भिः } विशेष ।

कुम्भिका } (स्त्री०) १ ताली । चाबी । २ बाँस का
कुम्भिका } अङ्कुर ।

कुम्भित } (वि०) सिकुड़ा हुआ । मुड़ा हुआ ।
कुम्भित } सुका हुआ ।

कुम्भजः (पु०) कुम्भजः (पु०) } १ लता वृक्षों से परिवे-
कुम्भजम् (न०) कुम्भजम् (न०) } ष्टित स्थान । लतागृह ।
लतावितान ।

“चल सखि कुम्भं सतिभिरपुङ्गवैः शीलय नीलनिचोलं ।”

—गीतगोविन्द

२ हाथी के दाँत ।—कुटीरः, (पु०) लतागृह ।

कुम्भरः } (पु०) १ हाथी । २ श्रेष्ठार्थवाचक । [अमर
कुम्भरः } कोपकार ने निम्न शब्द श्रेष्ठार्थवाचक
बतलाये हैं—व्याघ्र, पुङ्गव, वर्षभ, कुम्भर, सिंह,
शार्दूल, नाग ।] ३ अश्वस्थ वृक्ष । ४ हस्त नक्षत्र ।
—अनीक, (न०) सेना का अंग विशेष
जिसमें हाथीसवारों की टोली हो ।—अशनः,
(पु०) पीपल का वृक्ष ।—अणतिः, (पु०) १
शेर । २ शरभ ।—ग्रहः, (पु०) हाथी
पकड़ने वाला ।

कुट (धा० पर०) (कुटति, कुटित) १ मुड़वाना ।
सुकवाना । २ मोड़ना । सुकाना । ३ बेईमानी
करना । धोखा देना । छलना । (कुट्यति) टुकड़े
टुकड़े कर डालना । कूटना । विभाजित करना ।
चौरना ।

कुटः (पु०) } जलपात्र । कलसा । घड़ा । (पु०)
कुटम् (न०) } १ दुर्ग । गढ़ । २ हथौड़ा । घन ।

३ वृक्ष । ४ घर । ५ पर्वत ।—जः, (पु०) १ एक
वृक्ष का नाम । २ अगस्त जी का नाम । ३
द्रोणाचार्य का नाम ।—हरिका, (स्त्री०)
दासी । चाकरानी ।

कुटकं (न०) हल जिसमें बाँस लगा न हो ।

कुटकः } (पु०) छत्त । छावनी ।

कुटङ्कः } (पु०) मड़ैया । मौपड़ी ।

कुटपः (पु०) १ माप विशेष । तौल विशेष । २
गृहउद्यान । घर के निकट का बाग । ३ ऋषि ।

कुटपम् (न०) कमल ।

कुटरः (पु०) खंभा जिसमें मथानी की रस्ती लपेटी
जाय ।

कुटलं (न०) छत्त । छप्पर ।

कुट्टिः (पु०) १ शरीर । २ वृक्ष । (स्त्री०) १ मौपड़ी ।
२ मोड़ । सुकाव ।—चरः, (पु०) सूस । शिशु-
मार ।

कुट्टिरं (न०) कुटीर । कुटी । मौपड़ी ।

कुट्टिल (वि०) १ टेढ़ा । सुका हुआ । मुड़ा हुआ ।
धूमधुमाव का । धूमा हुआ । रदुःखदायी । ३ सूठा ।
बनावटी । कपटी । बेईमान ।—आशय, (वि०)
दुष्ट नियत का । दुष्टात्मा ।—पद्मन्, (वि०)
सुके हुए पलकों वाला ।—स्वभाव, (वि०) कपटी ।
छली । धोखेबाज़ ।

कुट्टिलिका (स्त्री०) १ पैर दबा कर चलने वाला (जैसे
शिकारी चलते हैं) । २ लुहार की मट्टी । लोहसाही ।
कुटी (स्त्री०) १ मोड़ । २ मौपड़ी । ३ कुटनी । ४
—चक्रः, (पु०) चार प्रकार के संन्यासियों में
से एक ।

चतुर्विधा भिन्नवस्ते कुटीषकश्चतुष्कौ ।

इस परमहंस्य यो यः पश्चात् स उत्तमः ॥

—महाभारत ।

—चरः, (पु०) वह संन्यासी जो अपनी गृहस्थी
का भार अपने पुत्र को सौंप स्वयं तप और
धर्मानुष्ठान में लग जाता है ।

कुटीरः (पु०) }
कुटीरम् (न०) } मौपड़ी । कुटी । मड़ैया ।
कुटीरकः (पु०) }

कुटुनी (स्त्री०) कुटनी । जो लंपटों को छिनाल औरतें ला कर दे ।

कुटुंब, कुटुम्ब } (न०) १ गृहस्थ । नातेदार ।
कुटुम्बकम्, कुटुम्बकम् } रिस्तेदार । २ गृहस्थी सम्बन्धी चिन्ता और कर्त्तव्य । (पु० न०) १ सन्तान । सन्तति । औलाद । २ नाम । ३ जाति । —कलहः, (पु०) कलहम्, (न०) घरेलू झगड़ा । घरू विवाद ।—भरः, (पु०) गृहस्थी का भार ।—व्यापृत, (वि०) वह पुरुष जो गृहस्थी का पालन पोषण करे और उनकी सम्हाल रखे ।

कुटुम्बिकः कुटुम्बिकः } (प्र०) १ गृहस्थ । बाल बच्चों
कुटुम्बिन् कुटुम्बिन् } वाला । किसी कुटुम्ब का एक व्यक्ति ।

कुटुम्बिनी } (स्त्री०) १ गृहस्थ की स्त्री । २ गृहिणी ।
कुटुम्बिनी } ३ स्त्री ।

कुट्ट (धा० उभय०) [कुट्टयति, कुट्टित] १ काटना । विभाजित करना । २ पीसना । चूर्ण करना । कूटना । ३ कलङ्क लगाना । दोष लगाना । धिक्कारना । ४ वृद्धि करना ।

कुट्टकः (पु०) पीसने वाला । कूटने वाला ।
कुट्टनम् (न०) १ काटना । कतरना । २ पीसना । कूटना । ३ गाली देना । धिक्कारना ।

कुट्टनी } (स्त्री०) कुटनी । दृष्टाला ।
कुट्टिनी } (स्त्री०) कुटनी । दृष्टाला ।

कुट्टमितं (न०) प्रियतम के साथ मिलने की आन्तरिक हल्का रहते भी, न मानने के लिये हाथ या सिर हिलाकर, इशारे से इंकार करना ।

कुट्टाक (वि०) [स्त्री०—कुट्टाकी,] जो काटता या विभाजित करता है या जो काटा या विभाजित किया जाता है ।

कुट्टारः (पु०) पहाड़ । [अकेलापन ।
कुट्टारं (न०) १ स्त्रीमैथुन । २ ऊनी कंबल । ३ कुट्टिमः (पु०) १ पत्थर जड़ा हुआ फर्श ।
कुट्टिमम् (न०) २ ठोंक पीट कर मकान बनाने के लिये तैयार की गयी नींव । ३ रस्नों की खान । ४ अनार । ५ झोपड़ी ।

कुट्टिहारिका (स्त्री०) दासी । खरीदी हुई दासी ।

कुठः (पु०) वृक्ष ।

कुठर देखो कुठर ।

कुठारः (पु०) [स्त्री०—कुठारी,] कुल्हाड़ी । परसा ।

कुठारिकः (पु०) लकड़हारा । लकड़ी काटने वाला ।

कुठारिका (स्त्री०) छोटी कुल्हाड़ी ।

कुठारः (पु०) १ वृक्ष । पेड़ । २ लंगूर । बंदर ।

कुठिः (पु०) १ वृक्ष । २ पहाड़ ।

कुडंगः } (पु०) लताकुञ्ज । लतागृह ।
कुडङ्गः } (पु०) लताकुञ्ज । लतागृह ।

कुडंवः } (पु०) अनाज की एक तौल जो १२ अंजलि
कुडणः } भर अथवा प्रस्थ के बराबर होती है ।

कुड्मल (वि०) खुला हुआ । खिला हुआ । फैला हुआ ।

कुड्मलः (पु०) खिलावट । कली ।

कुड्मलम् (न०) नरक विशेष ।

कुड्मलित (वि०) १ कलीदार । जिसमें कलियाँ आगयी हों । फूला हुआ । २ प्रसन्न । हँसमुख ।

कुड्यं (न०) १ दीवाल । २ अस्तरकारी । ३ उत्सुकता । कौतूहल ।—छेदिन् (पु०) सेंध लगाने वाला । चोर ।—छेद्यः, (पु०) खोदने वाला ।

वेल्दार ।—छेद्यम्, (न०) गर्त । गढ़ा । दरार ।

कुण (धा० परस्मै०) [कुणति, कुणित] १ सहारा देना । समर्थन करना । सहायता देना । २ शब्द करना । बजाना । [बच्चा ।

कुणकः (पु०) हाल का उत्पन्न हुआ जानवर का कुणप (वि०) [स्त्री०—कुणपी] मुर्दा जैसी सड़ा-इन वाला । सड़ाइन ।

कुणप (वि०) १ मुर्दा । शव । (पु०) १ भाला ।

कुणपम् (न०) १ बर्छी । २ दुर्गन्धि । सड़ाइन ।

कुणिः (पु०) १ विसहरी । फोड़ा जो हाथ की अँगुलियों के नाखूनों के किनारे होता है । २ लुझा, जिसकी एक बाँह सूख गयी हो ।

कुण्टक } (वि०) [स्त्री०—कुण्टकी] मैदा ।
कुण्टक } स्थूल ।

कुण्ड (धा० परस्मै०) [कुण्डति, कुण्डित] १ मौथरा पड़ जाना । २ लंगड़ा हो जाना या अँगहीन हो जाना । ३ मूर्ख बनना । सुस्त पड़ जाना । ४ ठीला करना । (निजन्त) झिपाना ।

कुण्ड } (वि०) १ मौथरा । सुस्त । ठीला । २ अलड़ ।

कुण्ड } अनाड़ी । मूढ़ । ३ सुस्त । काहिल
अकर्मण्य । ४ निर्बल ।

कुंठकः } (पु०) मूल । वेवकूफ ।
कुण्ठकः }

कुंठित } (व० क०) १ मौथरा । गोंठिल । २
कुण्ठित } मूल । ३ विकलाङ्ग ।

कुंडः, कुण्डः (पु०) } १ कुड़ा । कुडी । २ हैदी ।
कुंडः, कुण्डम् (न०) } चरी । ३ समूचापन । ४

कुण्ड । कूप । ५ खप्पर । भिन्नापात्र । (पु०)
छिनाले का लड़का । छिनाला कराने से पैदा हुआ
बालक । पतिजीवित रहते हुए अन्य पुरुष से
उत्पन्न सन्तान । [स्त्री०—कुंडी कुण्डो]

“पत्यौ जीवति कुण्डः स्यात् ।”

—मनु० ।

आशिन, (पु०) भड्डवा । कुटना ।—ऊधस्,
[—कुण्डोष्ठी] १ वृष से ऐन भरी हुई गौ । २
स्त्री जिसके कुच पूरे निकल चुके हो ।—कीटः,
(पु०) १ चकला वाला । व्यभिचारिणी स्त्रियों का
अड्डे वाला । २ चारवाक मतावलम्बी । नास्तिक ।
३ छिनाले में उत्पन्न आह्वय ।—कौलः, (पु०)
कमीना या अधम पुरुष ।—गोलं,—गोलकम्,
(न०) १ महेरी । पसाव । पीच । माँद ।
ओगरा । २ कुण्ड और गोलक का समुदाय ।

कुंडलः, कुण्डलः (पु०) } १ कान का आभूषण २
कुंडलम्, कुण्डलम् (न०) } पट्टुची । ३ रस्सी की
गढ़री । ऐंठन ।

कुंडलना } (स्त्री०) एक गोल चिन्ह जो उस शब्द
कुण्डलना } पर लगाया जाता है, जिसको पढ़ते
समय, विचारते समय अथवा नक़ल करते समय
झोड़ देना चाहिये । वह चिन्ह गोलाकार होता है ।

कुंडलिन् (वि०) [स्त्री०—कुण्डलिनी] १ कुण्डलों से
भूषित । २ गोलाकार । ३ ऐंठनदार । उमेंडा
हुआ । (पु०) १ सर्प । २ मोर । ३ वरुण की
उपाधि ।

कुंडिका, कुण्डिका } (स्त्री०) १ घड़ा । कमण्डलु
कुडिन, कुण्डिन } (पु०) (ब्रह्मचारी का) । शिव
जी की उपाधि ।

कुंडिनम् } (न०) एक नगर का नाम । विदुषों की
कुण्डिनम् } राजधानी ।

कुंडिर, कुण्डिर } (वि०) मज्जवृत् । डढ़ ।
कुंडीर, कुण्डीर }

कुंडिरः, कुण्डिरः } (पु०) मनुष्य ।
कुंडीरः, कुण्डीरः }

कुतपः (पु०) १ ब्राह्मण । २ द्विजन्मा । ३ सूर्य ।
४ अग्नि । ५ महमान । ६ बैल । सौंड़ । ७ दौहित्र ।
धोइता । लड़की का लड़का । ८ भौजा । बहिन का
लड़का । ९ अनाज । १० दिन का आठवाँ सुहृत् ।
कुतपम् (न०) १ कुश । दर्भ । २ एक प्रकार का
कंजल ।

कुतस् (अव्यया०) १ कहाँ से । किधर से । २ कहाँ ।
अन्यत्र कहाँ । किस स्थान पर । ३ क्यों । किस-
लिये । इसलिये । किस कारण से । किस उद्देश्य से ।
४ क्योंकर । किस प्रकार । ५ अत्यधिक । अत्यल्प ।
६ क्योंकि । यतः । [हुआ ।

कुतस्य (वि०) १ कहाँ से आया हुआ । २ कैसे
कुतुकम् (न०) १ अभिलाषा । कामना । प्रवृत्ति ।
२ कौतुक । ३ उत्कण्ठा ।

कुतुपः } (स्त्री०) कुप्पी या कुप्पा ।
कूतः }

कूतहल (वि०) १ अद्भुत । विलक्षण । २ सर्वोत्तम ।
सर्वश्रेष्ठ । ३ श्लाघ्य । प्रसिद्ध ।

कूतहलम् (न०) १ अभिलाषा । कौतुक । २ उत्सुकता ।
उत्कण्ठा । ३ कोई पक्षार्थ जो प्रिय या रुचिकर
हो । कौतुहल ।

कुत्र (अव्यया०) कहाँ ।

कुत्रत्य (वि०) कहाँ रहनेवाला । कहाँ बसनेवाला ।

कुत्स् (धा० आत्म०) [कुत्सयते, कुत्सित] गाली
देना । धिक्कारना । फटकारना । दोषी ठहराना ।

कुत्सनम् (न०) } गाली । तिरस्कार । निन्दा ।
कुत्सा (स्त्री०) } अपशब्द ।

कुत्सित (वि०) १ तिरस्कार करने योग्य । २ नीच ।
कमीना । कुष्ट ।

कुथः (पु०) कुश । दर्भ ।

कुथः (पु०) } १ हाथी की मूल । २ काजीन ।
कुथम् (न०) } गलीचा ।
कुथा (स्त्री०) }

कुद्वारः } (पु०) १ कुदाली । २ फाँवड़ा । ३
कुदालः } कचनार का वृक्ष । काञ्चन वृक्ष ।
कुदालकः }

कुञ्जलं (न०) देखो कुड्मलं ।

कुद्रकः, कुद्रङ्गः } (पु०) १ चौकीदार का घर
कुद्रगः, कुद्रङ्गः } या चौकी या मचान पर बनी
मढ़ैया ।

कुनकः (पु०) काक । कौआ ।

कुतः } (पु०) १ प्रास नामक शस्त्र । भाला ।
कुन्तः } सपत्न्य स्त्री । २ छोटा कीड़ा । कीट ।

कुन्तलः } (पु०) १ सिर के केश । जलपान करने
कुन्तलः } का कटोरा या प्याला । ३ हल । ४ जौ ।

५ सुगन्ध द्रव्य । (बहुवचन) देश विशेष और
उसके निवासी ।

कुन्तयः } (पु०) (कुन्ति का बहुवचन) देश
कुन्तयः } विशेष और उसके बाशिंदे ।

कुन्तिः } (पु०) राजा कथ के पुत्र का नाम ।—
कुन्तिः } भोज, (पु०) एक यादव वंशी राजा का
नाम (इसके कोई सन्तान न थी अतः इसने कुन्ती
को गोद लिया था ।)

कुन्ती } (स्त्री०) शूरसेन राजा की औरसी पुत्री
कुन्ती } जिसका नाम पृथा था और कुन्तिभोज ने
इसे गोद लिया था । यह राजा पाण्डु की पटरानी
थी और इसीके गर्भ से कर्ण, युधिष्ठिर, भीम
और अर्जुन का जन्म हुआ था ।

कुन्थ (धा० परस्मै०) [कुन्थति, कुन्थति, कुन्थित]
१ पीड़ित होना । २ चिपटना । ३ गले लगाना ।
४ घायल करना ।

कुन्दः—कुन्दः (पु०) } चमेली की जाति का एक
कुन्दः—कुन्दम् (न०) } पौधा ।

कुन्दं } (न०) कुन्द का फूल ।
कुन्दम् }

कुन्दः } (पु०) १ विष्णु की उपाधि । २ खराद ।
कुन्दः } ३ कुबेर के नौ धनागारों में से एक । ४
करवीर वृक्ष ।

कुन्दमः } (पु०) बिल्ली ।
कुन्दमः }

कुन्दिनी } (स्त्री०) कमलों का समूह ।
कुन्दिनी }

कुन्दुः } (पु०) चूहा । मूसा ।
कुन्दुः }

कुप् (धा० परस्मै०) [कुप्यति, कुपित] १ क्रोध
करना । २ भड़क उठना ।

कुपिन्द } देखो कुविन्द या कुविन्द ।
कुपिन्द }

कुपिनिन् (पु०) धीवर । मलुआ । माहीगीर ।
कुपिनी (स्त्री०) छोटी मछलियाँ कंसाने का एक
प्रकार का जाल । [वृण्णित ।

कुपूय (वि०) दुष्टाचरणवाला । नीच । अकुलीन
कुप्यम् (न०) १ उपधातु । २ चाँदी और सोने को
छाड़ कर अन्य कोई भी धातु ।

कुर्वरः } धनाध्यक्ष देवता का नाम जो उत्तर दिशा
कुर्वरः } के मालिक हैं ।—अद्रिः, —अचलः, (पु०)
कैलास पर्वत का नाम ।—दिशू, (स्त्री०) उत्तर
दिशा ।

कुब्ज (वि०) कुबड़ा । झुका हुआ ।

कुब्जः (पु०) १ खज्ज विशेष । २ कूबड़ । ३ थोड़ी
कौमल्यता वाला ४ अपामार्ग ।

कुब्जा (स्त्री०) राजा कंस की एक जवान कुबड़ी
दासी का नाम । इसका कुबड़ापन श्रीकृष्ण ने
मिटाया था ।

कुब्जकः (पु०) एक वृक्ष का नाम ।

कुब्जिका (स्त्री०) आठ वर्ष की अविवाहिता लड़की ।
कुभूत (पु०) पर्वत । पहाड़ ।

कुमारः १ (पु०) पुत्र । बालक । पाँच वर्ष के नीचे की
उम्र का बालक । ३ युवराज । राजकुमार । ४
कार्तिकेय का नाम । ५ अग्नि का नाम । ६
तोता । ७ सिन्धुनद का नाम ।—पालनः,
(पु०) १ वह पुरुष जो बालकों की देखभाल करे ।
२ शास्त्रिवाहन राजा का नाम ।—भृत्य, (स्त्री०)
१ लड़कों की देखभाल । २ भानुपना । दाई
का काम । जच्चा स्त्री की परिचर्या ।—वाहिन
—वाहनः, (पु०) मोर । मयूर ।—सूः, (स्त्री०)
पार्वती का नाम । २ राघोश जी का नाम ।

कुमारकः (पु०) १ बच्चा । बालक । २ आँख की
पुतली ।

कुमारयति (क्रि०) बालकों की तरह कीड़ा करना ।

कुमारिक (वि०) [स्त्री०—कुमारिकी] लड़कियों
कुमारिन् [स्त्री०—कुमारिणी] के बाहुल्य
वाला ।

कुमारिका } १ (स्त्री०) जवान लड़की । १० और १२
कुमारी } वर्ष के बीच की उम्र की लड़की । २
अविवाहिता । क्वारी । ३ लड़की । पुत्री । ४ दुर्गा

का नाम । ५ कई एक पौधों का नाम । ६ सीता ।
७ बड़ी इलायची । ८ भारतवर्ष की दक्षिणी सीमा
का एक अन्तरीप । ९ श्यामा पत्नी । १० नव-
मल्लिका । ११ घृतकुमारी । १२ नदी विशेष ।
—पुत्रः, (पु०) कानीन । अविवाहिता का पुत्र ।
—श्वसुरः, (पु०) विवाह होने से पहिले
सतीत्व से अष्ट हुई लड़की का ससुर ।

कुमुद (वि०) १ अरुणालु । अमित्र । २ लालची ।
(न०) १ कुमुदनी का फूल । २ लाल कमल
का फूल ।

कुमुदः (पु०) } १ सफेद कमल जो चन्द्रमा उदय
कुमुदम् (न०) } होने पर खिलता है । २ लाल
कमल । (न०) चाँदी । (पु०) १ विष्णु की उपाधि ।
२ दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम जिसने अपनी
छोटी बहिन कुमुदती का विवाह श्रीशमपुत्र कुश
के साथ किया था । —अभिख्यं, (न०) चाँदी ।
—आकरः, —आवासः, (पु०) सरोवर जो कमलों
से भरी हो । —ईशः, (पु०) चन्द्रमा । —खण्डम्,
(न०) कमल समूह । —नाथः, पतिः, —बन्धुः,
—बान्धवः, —सुहृद्, (पु०) चन्द्रमा ।

कुमुदवती (स्त्री०) कमल का पौधा ।

कुमुदिनी (स्त्री०) १ सफेद कमल जिसमें सफेद कमल
के फूल लगते हैं । २ कमलों का संग्रह । ३ वह
स्थान जहाँ कमलों का बाहुल्य हो । —नायकः,
—पतिः, (पु०) चन्द्रमा ।

कुमुदकः (पु०) विष्णु की उपाधि ।

कुम्भा } (स्त्री०) यज्ञस्थान का हाता या वेरा ।
कुम्बा }

कुम्भः } (पु०) १ बड़ा । जलपात्र । कलसा । २
कुम्भः } हाथी के माथे के दो माँसपिण्ड । ३ कुम्भ
राशि । ४ चौसठ सेर या २० द्रोण की तौल । ५
प्राणायाम का एक अंग जिसमें स्वाँस खींचने के
बाद रोकी जाती है । ६ वेश्यापति । ७ कुम्भकर्ण
का पुत्र । ८ गुग्गुलु । —कर्णः, (पु०) रावण
का छोटा भाई । —कारः, (पु०) १ कुम्हार ।
२ वर्षासङ्कर जाति । उशना के मतानुसार ।

“वेश्यायां विप्रतक्षीर्यात् कुम्भकारः स उच्यते ।”

पराशर जी के मतानुसार—

“वासाकाराश्चर्ककर्षा कुम्भकारो व्यजायत ।”

—घोषः, (पु०) एक प्राचीन कस्बे का नाम । —
जः, —जन्मन्, (पु०) —योनिः, —सम्भवः,
(पु०) १ अगस्त्य जी की उपाधियाँ । २ द्रोणाचार्य
की उपाधि । ३ वशिष्ठ जी की उपाधि । —दासी,
(स्त्री०) कुम्भी । —मण्डुकः, (पु०) बड़े का
मिड़का । (आलं०) अनुभवशून्य मनुष्य । —
सन्धिः, (पु०) हाथी के माथे पर के दो माँस-
पिण्डों के बीच का गढ़ा ।

कुम्भकः } (पु०) १ स्तम्भ का आधार । प्राणायाम
कुम्भकः } विशेष ।

कुम्भा } (स्त्री०) छिनाल स्त्री । नौची । रंडी ।
कुम्भा }

कुम्भिका } (स्त्री०) १ कलसिया । २ रंडी । वेश्या ।
कुम्भिका }

कुम्भिन् } (पु०) १ हाथी । २ नक्र । मगर । घड़ियाल ।
कुम्भिन् } ३ मछली । ४ एक प्रकार का विषैला कीड़ा ।

५ गुग्गुलु । —मदः, (पु०) हाथी का मद ।

कुम्भिलः } (पु०) १ घर में सेंध फोड़ने वाला चोर ।
कुम्भिलः } २ ग्रन्थचोर । लेखचोर । श्लोकार्थ चुराने
वाला । ३ साला । ४ गर्भ पूर्ण होने के पूर्व ही
उत्पन्न हुआ बालक ।

कुम्भी } (स्त्री०) १ कलसिया । छोटा जलपात्र ।
कुम्भी } २ मिट्टी के बरतन । ३ अनाज की तौल का
एक बाट । बटखरा । ४ अनेक पौधों का नाम । —
नसः, (पु०) एक प्रकार का विषैला साँप । —
पाकः, (एकवचन या बहुवचन) (पु०) नरक
विशेष जहाँ पापी, कुम्हार के बरतनों की तरह अवा
में पकाये जाते हैं ।

कुम्भीकः } (पु०) १ पुत्राग वृक्ष । २ गाबू । —
कुम्भीकः } मल्लिका, (स्त्री०) एक प्रकार की मक्खी ।

कुम्भीरः } (पु०) एक जलजन्तु विशेष ।
कुम्भीरः }

कुम्भीरकः, —कुम्भीरकः, } (पु०) १ चोर । २
कुम्भीलः, —कुम्भीलः, } मगर । नक्र ।
कुम्भीलकः, —कुम्भीलकः, }

कुर—(धा० परस्मै०) [कुरति, कुरित] शब्द करना ।
बजाना ।

कुरंकरः, कुरङ्करः, } (पु०) सारस पत्नी ।
कुरंकरः, कुरङ्करः, }

कुरंगः } (पु०) [स्त्री०—कुरङ्गी.] १ लाल रंग का
कुरङ्गः } हिरन ।

“सवंगी कुरङ्गी दृषङ्गी करोडु ।”

—जगन्नाथ ।

२ हिरनों की जाति विशेष ।—अत्ती,—नयना,
—नयनी,—नेत्रा, (स्त्री०) हिरन जैसी
आँखों वाली स्त्री । —नाभिः, (स्त्री०)
कस्तूरी । मुरक ।

कुरंगमः } (पु०) देखो कुरङ्गः । [कर्कराशि।
कुरङ्गमः }

कुरचिल्लः (पु०) १ कैकड़ा । २ बनैले सेव । ३
कुरटः (पु०) मोची । चमार ।

कुरंटः, कुरण्टः, (पु०) } पीले रंग का
कुरंटकः, कुरण्टकः, (पु०) } सदाबहार ।
कुरण्टिका, कुरण्टिका, (स्त्री०) } कलगा । गुल-
केस । गुलशादाव ।

कुरंडः } (पु०) अस्वकंशवृद्धि रोग । एक रोग
कुरण्डः } जिसमें पोते बढ़ जाते हैं ।

कुररः } (पु०) उत्क्रोश पक्षी । चकवा ।
कुरलः }

कुररी (स्त्री०) १ चकवी । चकई । २ भेड़ । मेपी ।
—गुणः, (पु०) चकवी पक्षियों का झुंड ।

कुरवः (पु०) } गुलकेस । गुलशादाव ।
कुरवः (पु०) } गुलशादाव का
कुरवकः, कुरवकम्, (न०) } कुल । [विशेष।

कुरोरं (न०) स्त्रियों के सिर पर ओढ़ने का वस्त्र
कुरुः (बहुवचन) १ आधुनिक दिल्ली के आस पास
का प्रदेश । २ उस देश के राजा ।

कुरुः (पु०) [एकवचन] १ पुरोहित । २ भात ।
—क्षेत्रं (न०) दिल्ली के पश्चिम एक तीर्थस्थान,
जहाँ कौरव और पाँण्डवों का लोकन्यकारी इति-
हासप्रसिद्ध युद्ध हुआ था ।—जंगलम्, (न०)
कुरुक्षेत्र ।—राज्, (पु०) राजः, (पु०) राजा
दुर्योधन ।—विष्टः, (पु०) चार तोले की सौने की
तौल ।—वृद्धः, (पु०) भीष्म की उपाधि ।

कुरंटः } (पु०) लाल रंग का गुलशादाव ।
कुरण्टः }

कुरंटीः } (स्त्री०) काठ की पुतली ।
कुरण्टीः }

कुरालः (पु०) माथे के ऊपर के बाल ।

कुरुविदः, कुरुविन्दः (पु०) } लाल । रत्न (न०) १
कुरुविदम्, कुरुविन्दम् (न०) } कालानिमक । २

दर्पण । आईना ।

कुकुटः (पु०) १ भुर्गी । २ कूड़ा कर्कट ।

कुकुरः (पु०) कुत्ता ।

कुर्चिका (स्त्री०) कूर्चिका । कूची ।

कुर्द } देखो कूर्द—कूर्दन ।
कुर्दन }

कूर्परः } १ घुटना । २ कोहनी ।
कूपरः }

कूर्पासः } (पु०) स्त्रियों के पहिनने की
कूर्पासः } एक प्रकार की चोली या अँगिया ।
कूर्पासकः }

कुर्वत् (व० क०) करता हुआ । (पु०) १ नौकर ।
२ मोची । चमार ।

कुलं (न०) १ वंश । घराना । स्थान । २ घर । मकान ।
३ कुलीन या उत्तम वंशीय । ४ झुंड । गिरोह ।
दल समूह । समुदाय । ५ (बुरे अर्थ में) गिरोह ।
६ देश । ७ शरीर । ८ अगला भाग ।—अकुल,
(वि०) अच्छा बुरे कुल का ।—अगना, (स्त्री०)
उच्च कुलोद्भवा स्त्री ।—अङ्गारः, (पु०) कुलकलङ्क ।
—अचलः—अद्रिः, पर्वतः,—शैलः, (पु०)
प्रसिद्ध सप्त पर्वतों में से एक ।—अन्वित, (वि०)
उत्तम कुलोत्पन्न । अभिमान, (पु०) अपने कुल
का अहङ्कार ।—आचारः, (पु०) अपने वंश का पर-
म्परागत आचरण ।—आचार्यः, (पु०) १ कुलपुरोहित
२ वंशावली रखने वाला ।—अलंघिन् (वि०) कुल
रखने वाला ।—ईश्वरः, (पु०) १ कुटुम्ब का
मुखिया । २ शिव जी का नाम ।—उत्कट, (वि०)
उच्च कुलोद्भव—उत्कटः, (पु०) अच्छी नस्ल का
घोड़ा ।—उत्पन्न,—उद्भूत,—उद्भव, (वि०)
अच्छे वंश में उत्पन्न । उद्ग्रहः, (पु०) खान्दान
का मुखिया ।—उपदेशः, (पु०) खान्दानी
नाम ।—कज्जलः, (पु०) कुलकलंक । कुलाङ्गार ।
—कण्टकः, (पु०) अपने कुल के लिये दुःखदायी ।
कन्यका,—कन्या, (स्त्री०) कुलीन लड़की ।
—करः, (पु०) कुल का आदिपुरुष ।—कर्मन्,
(न०) अपने कुल या खान्दान की खास रस्म

अथवा विशेष रीति ।—कलङ्कः, (पु०) अपने खानदान में धब्बा लगाने वाला ।—कृतः, (पु०) १ वंश का नाश । २ कुल की बरबादी ।—गिरिः, भूमृत्, (पु०) ।—पर्वतः,—शैलः, (पु०) प्रधान सप्त पर्वतों में से एक । कुलाचल ।—झ, (वि०) वंश को बरबाद करने वाला ।—ज,—जात, (वि०) १ कुलीन । अच्छे खानदान का । खानदानी । २ पैतृक । बाप दादों का । पुरखों का ।—जनः, (पु०) खानदानी । कुलीन ।—तन्तुः, (पु०) अपने कुल को कायम रखने वाला ।—तिथिः, (पु० स्त्री०) १ चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी, चतुर्दशी । वह तिथि जिस दिन कुलदेवता का पूजन होता है ।—तिलकः, (पु०) अपने वंश को उजागर करने वाला । वंशउजागर । दीपः,—दीपकः, (पु०) कुलउजागर ।—दुहितृ, (स्त्री०) कुलकन्या ।—देवता, (स्त्री०) खानदानी देवता । वह देवता जिनका पूजन अपने कुल में सदा से होता चला आता हो ।—धर्मः, वंशपरम्परा से प्रचलित धर्म । अपने खानदान की पद्धति या रीतिरस्म ।—धारकः, (पु०) पुत्र ।—धुर्यः (पु०) वह पुत्र जो अपने घर वालों का भरणपोषण कर सकता हो । वयस्क पुत्र ।—नन्दन, (वि०) अपने कुल को प्रतिष्ठा बढ़ाने वाला ।—नायिका, (स्त्री०) वह लड़की जिसकी पूजा वाममार्गी तंत्रिक औरवीचक में किया करते हैं ।—नारी, (स्त्री०) कुलीन और सती स्त्री ।—नाशः, (पु०) १ खानदान का नाश या बरबादी । २ जातिच्युत । पंक्तिबहिष्कृत । ३ जैट ।—परम्परा, (स्त्री०) वंशावली । पतिः, (पु०) १० हजार शिष्यों का भरण पोषण कर, उनको पढ़ाने वाला ब्रह्मर्षि ।

सुनीमां दशसाहस्रं योऽब्रुवानादिपोषणात् ।
अव्यापयति विप्रर्षिरसौ कुलपतिः स्मृतः ॥

—पांसुका, (स्त्री०) कुलया स्त्री ।—पालिः,—पालिका,—पाली, (स्त्री०) सती या कुलीन स्त्री ।—पुत्रः, (पु०) उत्तम कुल में उत्पन्न लड़का ।—पुरुषः, (पु०) १ कुलीन पुरुष । खानदानी आदमी । २ पुरखा । बुजुर्ग ।—पूर्वगः, (पु०)

पुरखा । बुजुर्ग ।—भार्या, (स्त्री०) पतिव्रता या सती स्त्री ।—भृत्या, (स्त्री०) गर्भवती स्त्री की परिचर्या करने वाली ।—मर्यादा, (स्त्री०) कुल की प्रतिष्ठा । खानदानी इज्जत ।—मार्गः, (पु०) खानदानी रस्म ।—योषित्,—वधू, (स्त्री०) कुलीन और अच्छे आचरण वाली स्त्री ।—वारः, (पु०) मुख्य दिवस अर्थात् मंगलवार और शुक्रवार ।—विद्या, (स्त्री०) वह ज्ञान जो किसी घर में परम्परा से प्राप्त होता आया हो ।—विप्रः, (पु०) पुरोहित ।—वृद्धः, (पु०) कुल का वृद्ध और अनुभवी पुरुष ।—व्रतः,—व्रतम्, (न०) खानदानी व्रत ।—श्रेष्ठिन्, (पु०) १ किसी वंश का प्रधान । २ कुलीन घराने का कारीगर ।—संख्या, (स्त्री०) १ खानदानी इज्जत । २ सम्मानित घरानों में गणना ।—सन्ततिः, (स्त्री०) आलऔलाद ।—सम्भव, (वि०) कुलीन घराने का ।—सेवकः, (पु०) उत्कृष्ट नौकर ।—स्त्री, (स्त्री०) अच्छे घराने की औरत । नेक औरत ।—स्थितिः, (स्त्री०) घराने की प्राचीनता या समृद्धि ।

कुलक (वि०) कुलीन ।

कुलकः (पु०) १ किसी जत्था का मुखिया । किसी थोक का प्रधान । २ किसी प्रसिद्ध घराने का कलाकेविद । ३ बाँबी ।

कुलकम् (न०) १ समूह । समुदाय । २ ऐसे ५ से १५ तक के श्लोकों का समूह जो एकवाक्य बनाते हों या एकान्वयी हों ।

कुलटा (स्त्री०) छिनाल औरत । व्यभिचारिणी स्त्री ।

—पतिः (पु०) कुटना । मछंदर ।

कुलतः (अव्यया०) जन्म से ।

कुलत्थः (पु०) कुलथी । एक प्रकार का अनाज ।

कुलन्धर } (वि०) अपने कुल या वंश को कायम
कुलन्धर } रखने वाला ।

कुलम्बरः, कुलम्भरः } (पु०) चोर ।
कुलम्बलः, कुलम्भलः }

कुलवत् (वि०) कुलीन ।

कुलायः (पु०) १ पत्नी का वींसला । २

कुलायम् (न०) १ शरीर । २ स्थान । जगह । ३ जाला । बुना हुआ वस्त्र । ४ किसी वस्तु के रखने

का घर या खाना । पात्र ।—निलायः (पु०)
घोंसले में बैठना । अंडे सेना ।—स्थः (पु०)
पत्नी । [अटारी । पत्नीशाला ।

कुलायिका (स्त्री०) पिंजड़ा । पत्तियों के बैठने की
कुलाजः (पु०) १ कुम्हार । २ जंगली सुर्गा ।

कुलिः (पु०) हाथ ।

कुलिक (वि०) कुलीन ।—बेला, (स्त्री०)
दिन का वह विशेष भाग जिसमें शुभ कार्य करने
का निषेध है ।

कुलिकः (पु०) १ सगोत्री । २ वराने या वंश का
मुखिया । ३ कुलीन । कलाकोविद ।

कुलिङ्गः } (पु०) १ पत्नी । २ गौरैया ।
कुलिङ्गः }

कुलिन् (वि०) [स्त्री०—कुलिनी] कुलीन । (पु०)
पर्वत । पहाड़ ।

कुलिन्दः } (बहु०) एक देश विशेष और उसके
कुलिन्दः } शासक ।

कुलिरः (पु०) } १ कैकड़ा २ कर्कराशि ।
कुलिरम् (न०) }

कुलिशः—कुलीशः (पु०) } १ इन्द्र का वज्र ।
कुलिशम्—कुलीशम् (न०) } नौक ।—धरः,
—पाणिः, (पु०) इन्द्र ।—नायकः, (पु०) श्रीमैथुन
का आसन विशेष । रतिबन्ध ।

कुली (स्त्री) बड़ी साली । सरहज ।

कुलीन (वि०) अच्छे खानदान का ।

कुलीनः (पु०) अच्छी नस्ल का घोड़ा ।

कुलीनसम् (न०) पानी ।

कुलीरः } (पु०) १ कैकड़ा । २ कर्कराशि ।
कुलीरकः }

कुलुकगुप्ता (स्त्री०) अधजली लकड़ी । लुआट ।

कुलूतः (पु०) (बहुवचन) एक देश विशेष और
उसके राजा ।

कुलमाषं (न०) पीची । माँड ।

कुलमाषः (पु०) अन्न विशेष ।

कुल्य (वि०) १ कुल का । वंश सम्बन्धी । २ कुलीन ।

कुल्यः (पु०) कुलीन पुरुष ।

कुल्यं (न०) १ मित्रभाव से धरेल बातों के सम्बन्ध में
प्रश्न । (समवेदना । सहायभूति । वधाई आदि)
२ हड्डी । ३ माँस । ४ सूप ।

कुल्या (स्त्री०) १ सती स्त्री । २ नहर । नाला । छोटी
नदी । ३ गढ़ा । गर्त । खाई । ४ अनाज की तौल
विशेष, जो ८ द्रोण के बराबर होती है ।

कुवं (न०) १ फूल । २ कमल ।

कुवलं (न०) १ कमल विशेष । २ मोती । ३ जल ।

कुवल्यम् (न०) १ नील कमल विशेष । २ पृथिवी
(पु० भी)

कुवल्यिनी (स्त्री०) १ नील कमल विशेष का पौधा । २
कमल समूह । ३ वह स्थान जहाँ कमलों की बहुतायत
हो । कमल का पौधा ।

कुवाद (वि०) १ बदनाम । तुच्छ । हल्का । निन्दक ।
दोष देने वाला । २ नीच । कमीना । दुष्ट ।

कुविकः (पु०) (बहुवचन) एक देश विशेष का नाम ।

कुविः—कुविन्दः } (पु०) १ जुलाहा । कोरी । २
कुपिन्दः, कुपिन्दः } कोरी की जाति का नाम ।

कुवेणी (स्त्री०) १ पकड़ी हुई मङ्गलियों को रखने की
टोकरी । २ बुरी बंधी हुई सिर की चोटी ।

कुवेलं (न०) कमल ।

कुश (वि०) १ पापी । २ मतवाला ।

कुशं (न०) जल ।

कुशः (पु०) १ दर्भ । पवित्र वृक्ष विशेष । २ श्री
रामचन्द्र जी के ज्येष्ठपुत्र । ३ द्वीप विशेष ।

कुशल (वि०) १ ठीक । उचित । अच्छा । शुभ । २
प्रसन्न । समृद्धशाली । २ योग्य । निपुण । पटु ।

दक्ष ।—काम, (वि०) सुख प्राप्ति का अभिलाषी ।
प्रश्नः, (पु०) राजीखुरी पूँछना ।—बुद्धि, (वि०)

बुद्धिमान । कुशाग्र बुद्धि । प्रतिभाशाली ।

कुशलं (न०) १ कल्याण । मङ्गल । २ गुण । धर्म ।
३ निपुणता । चतुराई ।

कुशलिन् (वि०) [स्त्री०—कुशलिनी] प्रसन्न । अच्छी
दशा में । भरा पूरा ।

कुशस्थलं (न०) कुशौज ।

कुशस्थली (स्त्री०) १ द्वारका पुरी ।

कुशा (स्त्री०) १ रस्सी । २ लगाम ।

कुशावती (स्त्री०) श्रीरामचन्द्र जी के पुत्र कुश की
राजधानी का नाम ।

कुशाग्र (वि०) बहुत महीन । कुश की नौक के समान ।
—बुद्धि, (वि०) तीक्ष्ण बुद्धिवाला ।

कुशारणिः, (पु०) दुर्वासा ऋषि ।

कुशिक (वि०) ऐंचाताना । भैंसा ।

कुशिकः (पु०) १ विश्वामित्र के पिता का नाम ।
२ हल की फाल । नसी । कुसी । फाल । ३ तेल की तलछट ।

कुशी (स्त्री०) हल की फाल ।

कुशीलवः (पु०) १ भाट । चारण । गवैया । २ अभिनय या नाटक का पात्र बनने वाला । नट ।
नचैया । ३ खबर फैलाने वाला । ४ वाल्मीकि की उपाधि । [कमण्डलु ।

कुशुम्भः, कुशुम्भः (पु०) संन्यासी का जलपात्र ।

कुशूलः (पु०) १ अन्न भरने का कोठार । भण्डारी । २ धान की भूसी की आग ।

कुशेशयं (न०) १ कमल ।

कुशेशयः (पु०) १ सारस । २ कनैर का पेड़ ।

कुप् (धा० परस्मै०) [कुप्याति, कुपित] १ फाड़ना ।
खींच कर निकालना । खींचना । २ परीक्षा करना । जाँचना । पढ़तालना । ३ चमकना ।

कुषाकः (पु०) १ पुत्र । २ अग्नि । ३ लंगूर ।
बन्दर ।

कुष्ठः (पु०) } कोढ़ रोग ।—घरिः, (पु०) १
कुष्ठम् (न०) } गन्धक । २ कथा । ३ पर्वत । ४ कितने
ही पौधों के नाम ।—केतुः, (पु०) खेखसा का
साग ।—गन्धिनी, (स्त्री०) असगन्ध ।

कुष्ठिन् } (वि०) [स्त्री० कुष्ठिनो] कोढ़ी ।
कुष्ठी }

कुष्माण्डः (पु०) १ कुम्हड़ा । २ झूठा गर्भ । ३ शिव का एक गण ।

कुष्माण्डकः (पु०) कुम्हड़ा ।

कुस् (धा० परस्मै०) [कुस्यति, कुसित] १ आलिङ्गन करना । २ घेरना ।

कुसितः (पु०) १ आवाद देश । २ व्याज या सूद पर निर्वाह करने वाला ।

कुसिद्ः } (पु०) इसको कुशीद् या कुषीद् भी
कुसीद्ः } लिखते हैं । महाजन । सूदखोर ।

कुसीदम् (न०) १ कर्जा जो सूद सहित अदा किया जाय ।
२ रुपये उधार देना । व्याजखोरी । व्याज का
धन्दा ।—पथाः, (पु०) सूदखोरी । व्याज । सूद ।

५ सैकड़े से अधिक भाव का सूद ।—वृद्धिः, (स्त्री०)
रुपयों पर व्याज ।

कुसीदा (स्त्री०) व्याजखोर स्त्री ।

कुसीदायी (स्त्री०) व्याजखोर की पत्नी ।

कुसीदिकः } (पु०) व्याजखोर । सूद खाने वाला ।
कुसीदिन् }

कुसुमं (न०) १ फूल । २ रजोदर्शन । ३ फल ।—
अञ्जनम्, (न०) पीतल की भस्म जो अञ्जन की जगह
इस्तेमाल की जाती है ।—अञ्जलिः, (पु०) पुष्पा-
ञ्जलि ।—अधिपः,—अधिराज्, (पु०) चम्पा का
पेड़ ।—अचचायः, (पु०) फूल एकत्र करना ।—
अचतंसकं, (न०) सेहरा । सरपेच । हार ।—अरुः,
—आयुधः,—इषुः,—बाणः,—शरः, (पु०) १
कुसुम बाण । पुष्पशर । फूल का तीर । ३ काम-
देव का नाम ।—आकरः, (पु०) १ बाग,
बगीचा । पुष्पोद्यान । २ गुलदस्ता । ३ वसन्त
ऋतु ।—आत्मकं, (न०) केसर । जाफ़ान ।—
आसवं, (न०) १ शहद । मधु । २ मदिरा विशेष ।
—उज्ज्वलं, (वि०) पुष्पों से प्रकाशित ।—कार्मुकः,
चापः,—धन्वन, (पु०) कामदेव ।—चित, (वि०)
पुष्पों के ढेर का ।—पुरं, (न०) पड़ना ।
पादलिपुत्र ।—लता, (स्त्री०) फुली हुई चेल ।—
शयनम्, (न०) फूलों की सेज ।—स्तवकः,
(पु०) गुलदस्ता ।

कुसुमवती (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।

कुसुमित (वि०) फूला हुआ । पुष्पित ।

कुसुमालः (पु०) चोर ।

कुसुम्भः, कुसुम्भः (पु०) } १ कुसुम्भ । २ केसर । ३
कुसुम्भः, कुसुम्भम् (न०) } संन्यासी का जलपात्र ।
(पु०) दिखावटी स्नेह । (न०) सुवर्ण । सोना ।

कुसूलः (पु०) खली । खों । अन्न का भाण्डार गृह ।
कुसृतिः (स्त्री०) झल । जाल । कपट । धोखा
प्रवृत्ति ।

कुस्तुभः (पु०) १ विष्णु । २ समुद्र ।

कुहः (पु०) धनाधिप कुवेर ।

कुहकः (पु०) झली । प्रवृत्तिक । जालसाज ।
मदारी । ऐन्द्रजालिक ।

कुहकम् (न०) } जालसाजी । इन्द्रजाल ।—कार,
कुहका (स्त्री०) } (वि०) ऐन्द्रजालिक । जालसाज ।
छलिया ।—अकिल, (वि०) संशयात्मा ।
शक्ती । सतर्क । धोखे से डरा हुआ ।—स्वनः,
—स्वरः, (पु०) मुर्गा ।

कुहनः (पु०) १ मूला । २ साँप ।

कुहनम् (न०) १ छोटा मिट्टी का पात्र । २ शीशे का पात्र ।

कुहना } (स्त्री०) दंभ ।
कुहनिका }

कुहरं (न०) १ रन्ध्र । छिद्र । गुफा । बिल । २ कान ।
३ गला । ४ साजीव्य । ५ मैथुन । समागम ।

कुहरितं (न०) १ आवाज़ । २ कोकिल की कूक । ३
मैथुन के समय की सिसकारी ।

कुहुः } (स्त्री०) १ अमावस्या । अमावस । २ इस-
कुहुः } तिथि का देवता । ३ कोकिल की कूक ।—कुशुः
—मुखः,—रवः,—शब्दः, (पु०) कोयल ।

कू (धा० आत्म०) [कवते, कुवते] १ शब्द करना ।
शोर करना । २ दुःख में चिल्लाना । कहरना ।

कूः (स्त्री०) चुबैल । दुष्ट स्त्री । [बाहिता स्त्री की ।

कूचः (पु०) चूची । विशेष कर युवती अथवा अवि-
कूचिका } (स्त्री०) १ कूची । कुश । पैसिल ।
कूची } २ ताली ।

कूज् (धा० परस्मै०) [कूजति—कूजित,] भिल-
भिनाना । गुज़ार करना । कूजना ।

कूजः (पु०) }
कूजनं (न०) } १ कूक । चहचहाहट । २ पहियों
कूजितं (न०) } की खदखदाहट या चूँचौ ।

कूट (वि०) १ मिथ्या । २ अचल । दृढ़ ।

कूटः (पु०) } १ कपट । छल । माया । धोखा । २
कूटम् (न०) } चालाकी । जालसाजी । ३ विषम

प्रश्न । परेशान करने वाला सवाल । छिष्ट

रचना । ४ झूठ । मिथ्या । ५ पर्वत की

चोटी या शिखर । ६ निक्कास । ऊँचाई ।

उसाड़ । ७ माथे की हड्डी । शिखा । ८ सींग । ९

कोना । छोर । १० प्रधान । मुख्य । ११ ढेर ।

समूह । १२ हथौड़ा । धन । १३ हल की फाल ।

कुशी । १४ हिरन फसाने का जाल । १५ गुसी ।

१६ कलसा । घड़ा । (पु०) १ घर । आवास-
स्थल । ३ अगस्त्य जी का नाम ।—अक्षः, (पु०)

झूठा पौसा ।—आगारं, (न०) अटारी ।

अटा ।—अर्थः, (पु०) सन्निधय अर्थ ।—उपायः,

(पु०) जालसाजी । ठगविद्या ।—कारः, (पु०)

जालसाज । ठग । झूठा गवाह ।—कृत्, (वि०)

१ जाली दस्तावेज बनाने वाला । ३ वृत्त देने

वाला । (पु०) १ कायस्थ । २ शिव जी का

नाम ।—खड्गः, (पु०) गुसी (तलवार) ।—

छद्मन्, (पु०) कपटी । छलिया । ठग ।—

तुला, (स्त्री०) झूठी तराजू ।—धर्म, (वि०)

मिथ्या भाषण जहाँ कर्तव्य समझा जाय ।—

पाकलः, (पु०) हाथी का वातज्वर ।—पालकः,

(पु०) कुम्हार । कुम्हार का झँवा ।—पाशः,

—वन्धः, (पु०) फंदा । जाल ।—मानं, (न०)

झूठी तौल ।—मोहनः (पु०) स्कन्द की उपाधि ।

—यंत्रम्, (न०) फंदा । जाल, जिसमें पक्षी

या हिरन फँसाये जाते हैं ।—युद्धः, (न०) धोखे

बड़ी का युद्ध ।—शात्मलिः, (पु० स्त्री०)

१ शात्मली । वृत्त विशेष । २ नरक में दण्ड देने का

यंत्र विशेष ।—शासनं, (न०) बनावटी

डिग्री । झूटी डिग्री ।—सातिनः, (न०) झूठा

गवाह ।—स्थ, (वि०) शिखर या चोटी पर

अवस्थित या खड़ा हुआ । सर्वोच्च पद पर अवि-

ष्टित । सर्वोपरि ।—स्थः, (पु०) १ परमात्मा ।

२ आकाशादितत्व । ३ व्याघ्रनख नाम का सुराब्ध-

द्रव्य विशेष ।—स्वर्ण (न०) बनावटी या

झूठा सेना । मुलम्मा ।

कूटकं (न०) १ झूल । धोखा । जाल । २ ओष्ठत्व ।

उन्नयन । ३ हल की नोक । कुशी ।—आख्यानां,

(न०) बनावटी कहानी ।

कूटशः (अव्यया०) ढेर में । समूह में ।

कूण (धा० उभय०) [कूणयति—कूणयते, कूणिन]

१ बोलना । बातचीत करना । २ सकोदना । बंद

करना ।

कूणिका (स्त्री०) १ सींग । २ बीणा की खूँटी ।

कूणित (वि०) बंद । सुँदा हुआ ।

कूदालः (पु०) पहाड़ी आचनूस ।

कूपः (पु०) १ कूप । इनारा । ३ जेद । रन्ध्र । गुफा ।

बिल । पोलापन । सन्नि । ३ कुप्पी । कुप्पा । ४

मस्तूल।—अङ्कः,—अङ्कः, (पु०) रोमाञ्च। रोंगटे खड़े होना।—कच्छपः,—मण्डकः, (पु०)—मण्डकी, (स्त्री०) कुप का कच्छप या मँडक। (आलं०) अनुभवशून्यमनुष्य।—यन्त्रम्, (न०) पानी निकालने का रहट।

कूपकः (पु०) १ अस्थायी या कच्चा कुआँ। २ गुफा। बिल। ३ जंघों के बीच का स्थान। ४ जहाज का मस्तूल। ५ चिता। ६ चिता के नीचे के रन्ध्र। ७ कुप्पी कुप्पा। ८ नदी के बीच की चट्टान या बृक्ष।

कूपारः }
कूवारः } (पु०) समुद्र।

कूपी (स्त्री०) १ कुहियाँ। छोटा कूप। २ बोतल। कराबा। ३ नाभि।

कूवर } (वि०) [स्त्री०—कूवरी कूवरी] १ सुन्दर।
कूवर } मनोहर। २ कुबड़ा।

कूवरः } (पु०) १ वह बाँस जिसमें छुप को फँसाते
कूवरः } हैं। २ कुबड़ा आदमी।

कूवरी } (स्त्री०) १ कंबल या कपड़े से ढकी गाड़ी।
कूवरी } २ वह बाँस या लंबी लकड़ी जिसमें छुआँ लगाया जाता है।

कूर (न०) }
कूरः (पु०) } भोजन। भात।

कूर्चः (पु०) } १ मुड़ा। मुदरी। गट्टर। २ मुट्ठी
कूर्चम् (न०) } भर कुश। ३ मोरपंख। ४ दाढ़ी।

५ खुटकी। ६ दोनों भौहों का मध्यभाग। ७ कूची।

८ जाल। छाल। कपट। ९ डींगी मारना। अकड़ना। १० दम्भ। ढोंग। (पु०) १ सिर। २ भण्डारी।—शीर्षः,—शेखरः, (पु०) नाशिक का वृक्ष।

कूर्चिका (स्त्री०) १ चित्र लिखने की कूची या पेंसिल। २ कुंजी। ताली। ३ कजी। फूल। ४ दुग्धविकार। ५ सुई। [कूदना। उछलना।

कूर्द (धा० उभय०) [कूर्दति, कूर्दते, कूर्दित] १

कूर्दनम् (न०) १ झलांग। २ खेल। क्रीड़ा।

कूर्दनी (स्त्री०) १ चैत्री पूर्णिमा को कामदेव सम्बन्धी उत्सव विशेष। २ चैत्री पूर्णिमा।

कूर्पः (पु०) दोनों भौहों के बीच का स्थान।

कूर्परः (पु०) १ कौहनी। २ धुटना।

कूर्मः (पु०) १ ककवा। २ कच्छपावतार।—अवतारः, (पु०) विष्णुभगवान् का कच्छपावतार।—पृष्ठं,—पृष्ठकं, (न०) १ कछवे की पीठ। २ ढकना।—राजः, (पु०) विष्णु भगवान् अपने दूसरे अवतार के रूप में।

कूलं (न०) १ समुद्रतट। नदीतट। २ ढाल। उतार। ३ घंचल। झोर। किनारा। सांभीष्य। ४ तालाव। ५ सेना का पिछला भाग। ६ ढेर। डीला।—चर, (वि०) नदीतट पर चरने वाला या रहने वाला।—भूः (स्त्री०) तट की भूमि।—हण्डकः—हुण्डकः, (पु०) जल-मँवर।

कूलंकपः, कूलङ्कपः (पु०) नदी की धार।

कूलंकपा, कूलङ्कपा (स्त्री०) नदी। सरिता।

कूलंधय, कूलन्धय (वि०) नदी तटवर्ती। नदीतट के पास का।

कूलमुद्रुज (वि०) तट ढहाने वाला।

कूलमुद्रह (वि०) नदीतट को ढहाने वाला। ले जाने वाला।

कूप्मांडः, कूष्माण्डः (पु०) कुम्हड़ा।

कूहा (स्त्री०) कुहासा। कुहरा।

कृ (धा० उभय०) [कृणाति—कृणाते] चोटिल करना घायल करना। मार डालना। [करोति, कुरुते, कृत] १ करना। २ बनाना। ३ किसी वस्तु को बनाकर तैयार करना। ४ मकान उठाना। सृष्टि करना। ५ उत्पन्न करना। ६ तैयार करना। क्रम में करना। ७ लिखना। रचना करना। ८ अनुष्ठान करना। ९ कहना। निरूपण करना। १० पालन करना। आज्ञा का पालन करना। तामील करना। ११ पूरा करना। समाप्त करना। १२ फँकना। निकाल देना। उबेल देना। १३ धारण करना। लेना। १४ बोलना। उच्चारण करना। १५ ऊपर रखना। १६ सोंपना। १७ भोजन बनाना। १८ सोचना। विचारना। ध्यान देना। १९ लेना। ग्रहण करना। २० शब्द करना। २१ व्यतीत करना। बिताना। २२ फेरना। ध्यान किसी ओर आकर्षित करना २३ दूसरे के बिसे कोई काम

करना । २४ इस्तेमाल करना । व्यवहार में लाना ।

२५ विभाजित करना । बाँटना । २६ किसी दशा विशेष में लाकर डाल देना ।

कुकः (पु०) गला ।

कुकणः } (पु०) तीतर ।
कुकरः }

कुकलासः } (पु०) छिपकली । गिरगट ।
कुकलासः }

कुकुवाकः (पु०) १ सुर्गा । २ मोर । ३ छिपकली ।
विस्तृष्ट्या ।—ध्वजः, (पु०) कार्तिकेय की
उपाधि ।

कुकटिका (स्त्री०) १ गरदन का उठा हुआ भाग । २
गरदन का पिछला भाग घड़ी ।

कुक्कु (वि०) १ कष्टकर । पीड़ाकारी । २ बुरा ।
विपत्तिकारी । दुष्ट । ३ पापी । ४ सङ्कट में फसा
हुआ ।—प्राण, (वि०) जिसके प्राण सङ्कट में
हों । २ कष्टपूर्वक स्वांस लेने वाला । ३ कठिनाई
से जीवन निर्वाह करने वाला ।—साध्य, (वि०)
(रोगी) जो कठिनाई से अच्छा हो सके । २
कठिनाई से पूर्ण किया हुआ ।

कुक्कुः (पु०) } १ कठिनाई । कष्ट । पीड़ा । सङ्कट ।
कुक्कुम् (न०) } विपत्ति । २ शारीरिक कष्ट । तप ।
प्रायश्चित्त ।

कुक्कुण } बड़ी कठिनाई से । कष्टपूर्वक ।
कुक्कुत् }

कृत (धा० परस्मै०) [कृतति, कृत] १ काटना ।
काट कर अलग कर डालना । विभाजित कर
डालना । चीर डालना । फार डालना । टुकड़े
टुकड़े कर डालना । नष्ट कर डालना । [कृणुति,
कृत्त ।] १ काटना । २ घेर लेना ।

कृत (वि०) करने वाला, कर्त्ता । बनाने वाला । रचने
वाला । (पु०) एक प्रकार के उपसर्ग ।

कृतं (न०) १ कर्म । कार्य । क्रिया । २ सेवा ।
लाभ । ३ परिणाम । फल । ४ उद्देश्य । प्रयोजन ।
५ पाँसे का वह पहल जिसपर ४ बिंदु बने हों । ६
चार युगों में से प्रथम युग जिसमें मनुष्यों के
१, २, ५००० वर्ष होते हैं । (मनु० अ० १ श्लो० ६६
और इस पर कुल्लूकभट्ट की व्याख्या ।] किन्तु महा
भारत के अनुसार कृतयुग में मनुष्यों के ४८००

वर्षों के ऊपर वर्ष होते हैं । ७ चार की संख्या ।—
अकृत, (वि०) किया और अनकिया अर्थात्
अधूरा ।—अङ्क, (वि०) चिन्हित । दागा हुआ ।
२ गिनती किया हुआ ।—अङ्कः, (पु०) पाँसे
का वह पहल जिसपर चार बिंदुकी बनी हों ।—
अञ्जलि, (वि०) हाथ जोड़े हुए । अनुकर,
(वि०) । उत्तर साधक । सहायक । अधीन ।—
अनुसारः, (पु०) रीति । रस्म । रीति भाँति ।
—अन्तः, (पु०) १ यमराज । २ प्रारब्ध ।
किस्मत । ३ सिद्धान्त । ४ पापकर्म । दुष्टकर्म । ५
शनिग्रह । ६ शनिवार ।—अन्तजनकः, (पु०)
सूर्य ।—अन्नं (न०) १ पकाया हुआ खाना ।
२ पचा हुआ अन्न । ३ विद्या ।—अपराध, (वि०)
कसूरवार । अपराधी । दोषी ।—अभय, (वि०)
किसी सङ्कट या भय से बचाया हुआ ।—अभि-
षेक, (वि०) राजगद्दी पर बैठाया हुआ । राज-
तिलक किया हुआ ।—अभ्यास, (वि०)
अभ्यस्त ।—अर्थ, (वि०) १ सफल । २ सन्तुष्ट ।
प्रसन्न । ३ चतुर ।—अवधान, (वि०) होशि-
यार । सावधान ।—अवधि, (वि०) निर्धारित ।
नियत । २ सीमावद्ध । मर्यादित ।—अवस्थ,
(वि०) बुलाया हुआ । २ स्थिर । बसा हुआ ।
—अस्त्र, (वि०) १ हथियारबंद । २ अत्र
विद्या में निपुण ।—आगम, (पु०) परमात्मा ।
—आत्मन्, (वि०) १ इन्द्रोजित । संघर्षी । २
पवित्र मन वाला ।—आभरण, (वि०) भूषित ।
—आयास, (वि०) पीड़ित ।—आह्वान,
(वि०) खलकारा हुआ । चुनौती दिया हुआ ।
—उद्वाह, (वि०) विवाहित । ऊपर को बाँहे
उठा कर तप करने वाला ।—उपकार, (वि०)
अनुग्रहीत ।—कर्मन्, (वि०) चतुर । निपुण ।
(पु०) १ परमात्मा । २ संन्यासी ।—काम,
(वि०) वह जिसकी कामनाएँ पूरी हो चुकी हों ।
—काल, (वि०) १ निश्चित समय का । २ वह
जिसने कुछ काल तक प्रतीक्षा की है ।—कालः,
(पु०) निश्चित समय ।—कृत्य, (वि०) १
वह जिसकी उद्देश्य सिद्धि हो चुकी हो । २
सन्तुष्ट । अघाया हुआ । ३ कर्त्तव्य पालन किये

हुए ।—कयः, (पु०) खरीददार । ग्राहक ।—तृण, (वि०) १ घड़ी भर बड़ी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करने वाला । २ अवसरप्राप्त ।—ज्ञः, (वि०) अनुपकारी । एहसान करामोश । करे को न मानने वाला । पूर्व के समस्त उपायों को विफल करने वाला ।—चूड़ः, (पु०) वह बालक जिसका चूड़-करण संस्कार हो चुका हो ।—ज्ञः, (वि०) उप-कृत । मशकूर ।

(वि०) १ किया हुआ । बनाया हुआ । पूर्ण किया हुआ । उपकार को मानने वाला । २ सदाचरणी ।—ज्ञः, (पु०) कुत्ता ।—तीर्थ, (वि०) १ जो सब तीर्थ कर आया हो । २ जो किसी अव्यापक के पास अध्ययन करता हो । ३ उपायों को अच्छी तरह जानने वाला । ४ पथप्रदर्शक ।—दासः, (पु०) वेतनभोगी नौकर । पन्द्रह प्रकार के दासों में से एक ।—धी, (वि०) १ विचारवान । बुद्धिमान । २ शिद्धि । विद्वान ।—निर्गुञ्जनः, (पु०) पश्चात्ताप करने वाला पापी ।—निश्चय, (वि०) निर्धारित । निश्चय किया हुआ ।—पुङ्गु, (वि०) धनुर्विद्या में निपुण ।—पूर्व, (वि०) पहले किया हुआ ।—प्रतिकृतं, (न०) आक्रमण और बचाव ।—प्रतिज्ञ, (वि०) १ वह जो किसी के साथ कोई प्रतिज्ञा या ठहराव कर चुका हो । २ अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण किये हुए ।—बुद्धि, (वि०) शिक्षित । पढ़ा लिखा । बुद्धिमान ।—मुख, (वि०) शिक्षित । बुद्धिमान ।—लक्षण, (वि०) १ चिन्हित । मोहर लगा हुआ । २ दागा हुआ । ३ सर्वोत्तम । श्रेष्ठ । सर्वप्रिय । ४ छद्म । बीना हुआ । निरूपित ।—वर्मन्, (पु०) कौरव पक्षीय एक योधा जो सात्यकी द्वारा मारा गया था ।—विद्य, (वि०) शिक्षित । अधीत ।—वेतन, (वि०) भाड़े का । वेतनभोगी ।—वेदिन्, (वि०) कृतज्ञ ।—वेश, (वि०) भूषित ।—शोभ, (वि०) १ सुन्दर । २ उत्तम । ३ चतुर ।—कुशल ।—शौच, (वि०) पवित्र । शुद्ध ।—श्रमः,—परिश्रमः, (पु०) अधीत । पढ़ा लिखा । शिक्षित ।—सङ्कल्प, (वि०) निश्चित किया हुआ ।—संज्ञ, (वि०) १ सचेत । मूर्च्छा से जागा हुआ ।

२ जागा हुआ ।—सन्नाह, (वि०) कथंच पहिने हुए ।—सपत्निका, (वि०) वह स्त्री जिसके सौत हो । हस्त,—हस्तक, (वि०) १ निपुण । कुशल । पटु । २ धनुर्विद्या में पटु । अस्त्र शस्त्र चलाने की विद्या में निपुण ।

कृतक (वि०) १ किया हुआ । बनाया हुआ । तैयार किया हुआ । २ कृत्रिम । बनावटी । अवास्तविक । ३ मिथ्या । झूठा । बनाया हुआ । ४ गोद लिया हुआ ।

कृतं (अव्या०) पर्याप्त । काफी । अधिक नहीं । कृतिः (स्त्री०) १ करतूत । २ पुरुषार्थ । ३ बीस अक्षर के चरण वाला श्लोक विशेष । ४ जादू । इन्द्रजाल । ५ चोट । वध । ६ बीस की संख्या ।—करः (पु०) रावण की उपाधि ।

कृतिन्, (वि०) १ सन्तुष्ट । अवाया हुआ । अपनी साध पूरी किये हुए । २ भाग्यवान् । धन्य । कृतकृत्य । ३ चतुर । योग्य । पटु । निपुण । ४ नेक । धर्मात्मा । पवित्र । ५ अनुगमन । अनुसरण । आज्ञा-पालन । आज्ञानुसार करने वाला ।

कृते { (अव्या०) लिये । निमित्त । बखजह ।
कृतेन { इसलिये ।

कृत्तिः (स्त्री०) १ चर्म । चमड़ा । २ मृगछाला । ३ भोजपत्र । ४ कृत्तिका नक्षत्र ।—वास,—वासस्, (पु०) शिव जी ।

कृत्तिका (बहुवचन) २७ नक्षत्रों में से तीसरा ।—तनयः,—पुत्रः,—सुतः, (पु०) १ कार्तिकेय । भवः, (पु०) चन्द्रमा ।

कृतु (वि०) १ भली भाँति करने वाला । काम करने की योग्यता रखने वाला । शक्तिमान । २ चतुर । चालाक । निपुण ।

कृतुः (पु०) कारीगर । शिल्पी ।

कृत्य (वि०) १ वह जो किया जाना चाहिये । उपयुक्त । ठीक । २ सम्भव । साध्य । ३ विश्वासघाती ।

कृत्यं (न०) १ कर्तव्य । कर्म । २ कार्य । अवश्य करणीय कार्य । ३ उद्देश्य । प्रयोजन ।

कृत्यः “तत्त्व”, “अनीयं” “य” और “एलिम”, ये विभक्तियाँ हैं ।

कृत्या (स्त्री०) १ कार्य । क्रिया । २ जादू । टोना ।
३ देवी विशेष, जो मारण कर्म के लिये विशेष
रूप से बलिदानादि से पूजी जाती है ।

कृत्रिम (वि०) १ बनावटी । नकली । कल्पित । २
गोद लिया हुआ ।—धूपः,—धूपकः, (पु०)
राल, लोबान, गूगूल आदि को मिलाने से बनी
हुई धूप ।—पुत्रकः, (पु०) गुड्डा । गुड़िया ।
पुतली ।

कृत्रिमः (पु०) १२ प्रकार के पुत्रों में से एक । जो
व्यस्क हो और अपने जनक जननी की अनुमति
बिना किसी का पुत्र बन बैठा हो ।

“कृत्रिमः स्यारस्वयं दत्तः ।”

—याज्ञवल्क्य ।

कृत्रिमम् (न०) १ एक प्रकार का निमक । २ एक
सुगन्ध पदार्थ ।

कृत्स्न (न०) १ जल । २ समूह ।

कृत्स्नः (पु०) पाप ।

कृत्स्न (वि०) समस्त । समूचा । सम्पूर्ण ।

कृतर्त्न (न०) हल ।

कृतर्त्न (न०) } काटना । फाड़ना । नौचना ।
कृतर्त्नम् (न०) } कुतरना ।

कृपः (पु०) अश्वत्थामा के माना का नाम । सप्त
चिरजीवियों में से एक ।

कृपण (वि०) १ गरीब । दयापात्र । अभाग ।
साहाय्यहीन । २ सत्यासत्य-विवेक-शून्य । अक-
र्मण्य । ३ नीच । ओढ़ा । दुष्ट । ४ कंजूस ।
जालची ।—ध्रीः,—बुद्धि, (वि०) नीचमना ।
—वत्सल, (वि०) दीनों पर दया करने वाला ।
दीनदयालु ।

कृपणः (पु०) कंजूस ।

कृपणम् (न०) कंजूसी । दरिद्रता ।

कृपा (स्त्री०) रहम । दया । अनुकम्पा ।

कृपाणः (पु०) १ तलवार । २ छुरी ।

कृपाणिका, (स्त्री०) खंजर । छुरी ।

कृपाणी (स्त्री०) १ कैवी । २ खोंड़ा । खंजर ।

कृपालु (वि०) दयालु । कृपापूर्ण ।

कृपी (स्त्री०) कृपाचार्य की बहिन और द्रोणाचार्य की
पत्नी ।—पतिः, (पु०) द्रोणाचार्य ।—सुतः,
(पु०) अश्वत्थामा ।

कृपीटम् (न०) १ जङ्गल । वन । २ हथेली । ३
जल । ४ पेट ।—पालः, (पु०) १ पतवार ।

२ समुद्र । ३ पवन । हवा ।—यानिः,
(पु०) अग्नि ।

कृमि (वि०) कीड़ों से भरा हुआ ।—कौशः,
—कौषः, (पु०) रेशम के कीड़े का खोल ।
रेशम का कोया ।—कौशउत्थं (न०)
रेशमी वस्त्र ।—जः,—जग्धं, (न०) अगर की
लफड़ी ।—जा, (स्त्री०) लहा । लाख ।—जलजः,
—चारिरुहः, (पु०) घोंघा । शङ्ख का कीड़ा ।—
पर्वतः,—शैलः, (पु०) डेहुर । बाबूरी ।—फलः,
(पु०) उदुम्बुर या गूलर का पेड़ ।—शङ्खः, (पु०)
शङ्ख का कीड़ा ।—शुक्तिः, (स्त्री०) १ घोंघा ।
सीप । २ कीड़ा जो इनमें रहे । ३ दोपड़ा शङ्ख ।
कृमिः (पु०) १ कीड़ा । रोग के कीटाणु । ३ गधा ।
४ मकड़ी । ५ लाख ।

कृमिण } (वि०) कीड़ेदार । कीड़ों से पूर्ण ।
कृमिल }

कृमिला (स्त्री०) बहुत बच्चे जनने वाली औरत ।

कृश (धा० पर०) [कृश्यति, कृश] १ दुबला होना ।
लटना । २ क्षीण पड़ना (चन्द्रमा की तरह) ।

कृश (वि०) १ पतला । दुबला । लटा । निर्बल ।
२ छोटा । थोड़ा । महीन । ३ तुच्छ । निर्धन ।
—अस्तः, (पु०) मकड़ी ।—अङ्गः, (वि०) दुबला ।
लटा ।—अङ्गी, (स्त्री०) १ झरझरे शरीर की
स्त्री । २ प्रियंगु लता ।—उदर, (वि०) पतली
कमरवाली ।

कृशला (स्त्री०) सिर के बाल । [उपाधि ।

कृशालु (पु०) आग ।—रेतस् (पु०) शिव जी की

कृशाश्विन (पु०) नाटक का पात्र । एक्टर ।

कृष् (धा० उभय०) [कृपति, कृपते, कृष्ट] १ जोतना ।
हल चलाना । [कर्षति—कृष्ट] १ खींचना । घसी-
टना । कढ़ोरना । २ आकर्षण करना । ३ सेना ।
की तरह परिचालन करना । ४ झुकाना (कमान
की तरह) ५ मालिक बनना । बशवर्ती करना ।
दवा खेना । ६ जोतना । ७ प्राप्त करना । ८ खीन
ले जाना । विमुक्त करना ।

कृषाणः } (पु०) हलवाहा । किसान ।
कृषिकः }

कृषिः (स्त्री०) १ जुताई । २ कृषि । किसानी ।—
कर्मन् (न०) खेती ।—जीविन्, (वि०)
किसानी पेशा । खेती करके निर्वाह करनेवाला ।
फलं, (न०) खेती की पैदावार ।—सेवा, (स्त्री०)
किसानी । खेतिहरपन ।

कृषीवलः (पु०) किसान । काश्तकार । खेतिहर ।

कृष्करः (पु०) शिव जी । [हुआ ।

कृष्ट (वि०) १ खींचा हुआ । आकृष्ट । २ जोता
कृष्टिः (स्त्री०) विद्वान् आदमी । (स्त्री०) १ खिंचाव ।
आकर्षण । २ जुताई ।

कृष्ण (वि०) १ काला । २ दुष्ट । बुरा ।

कृष्णः (पु०) १ काला रङ्ग । २ काला मृग । ३ काक
४ कोकिल । ५ कृष्णपक्ष । अँधेरा पाल । ६
कलियुग । ७ भगवान् विष्णु का आठवाँ अवतार
जो कंसादि दुर्वास्त दैत्यों के नाश के लिये मथुरा
में हुआ था और जिनके चरित्रों से भागवतादि
पुराण और महाभारतादि इतिहास पूर्ण हैं । ८
महाभारत के रचयिता कृष्णद्वैपायन व्यास । ९
अर्जुन का नाम । १० अंगर की लकड़ी ।—
अग्ररु, (न०) एक प्रकार के चन्दन की लकड़ी ।—
अचलः, (पु०) रैवतक पहाड़ का नाम ।—अजिनं,
(न०) काले मृग का चर्म ।—अयस्, (न०)
अयस्, —अभिषम्, (न०) लोहा । कान्ति-
सार लोहा ।—अध्वन्, —अर्विस, (पु०) आग ।
—अष्टमी, (स्त्री०) भाद्र कृष्ण अष्टमी, जो
श्रीकृष्ण जी के जन्म की तिथि है ।—आवासः,
(पु०) अज्जीर या बरगद का पेड़ ।—उदरः,
(पु०) एक प्रकार का सर्प ।—कन्दं, (न०)
लाल कमल ।—कर्मन्, (वि०) असदाचरणी ।
पापी । दोषी । दुष्ट । अपराधी ।—काकः, (पु०)
जंगली काक या पहाड़ी कौआ ।—काष्ठः, (पु०)
भैसा ।—कोहलः, (पु०) जुआरी ।—गतिः,
(पु०) आग ।—ग्रीवः, (पु०) शिव ।—
तारः, (पु०) मृग विशेष ।—देहः, (पु०) मौंरा ।
अमर ।—धनं, (न०) बुरे दङ्ग से या
देईमानी करके कमाया हुआ धन ।—द्वैपायनः,

(पु०) व्यास जी का नाम ।—पक्षः, (पु०)
अँधियारा पाल । बदी ।—मृगः, (पु०) काला
हिरन ।—मुखः, —वक्त्रः,—वदनः, (पु०) काले
मुख का बानर ।—यजुर्वेदः, (पु०) तैत्तरीय या
कृष्ण यजुर्वेद ।—लोहः, (पु०) सुम्बक पत्थर ।
वर्णः, (पु०) १ काला रङ्ग । २ राहुग्रह । ३ शूद्र ।
—वर्त्मन्, (पु०) १ अग्नि । २ राहुग्रह । ३ ओझा
आदमी ।—वेणा, (स्त्री०) एक नदी का नाम ।
—शकुनिः, (पु०) काक । कौआ ।—मारः,
(पु०) चित्तीदार हिरन ।—शृङ्गः, (पु०) भैंसा ।—
सखः,—सारथिः, (पु०) श्रीकृष्ण ।

कृष्णम् (न०) १ कालापन । कालिख । अँधियारी ।
२ लोहा । ३ सुर्मा । ४ अँख की पुतली । ५ काली
मिर्च या गोल मिर्च । ६ सोसा ।

कृष्णकम् (न०) काले हिरन का चमड़ा ।

कृष्णलं (न०) धुँधची ।

कृष्णालः (पु०) धुँधची का पौधा ।

कृष्णा (स्त्री०) १ द्रौपदी । २ दक्षिण भारत की
एक नदी का नाम ।

कृष्णिका (स्त्री०) राई ।

कृष्णिमन् (पु०) कालापन ।

कृष्णी (स्त्री०) अँधियारी रात ।

कृ (धा० परस्मै०) [किरति—कीर्ण] १ बखेरना ।
झिक्तगाना । उबेलना । फेंकना । २ भगा देना । ३
ढकना । भर देना । छिपा देना ।

कृत् (धा० उभ०) [कीर्तयति—कीर्तयते, कीर्तित] १
उल्लेख करना । पुनरावृत्ति करना । उच्चारण
करना । २ कहना । पढ़ना । घोषित करना ।
सूचना देना । ३ नाम लेना । पुकारना । ४ स्तव
करना । प्रशंसा करना । महत्त्व बढ़ाना । स्मरण
रखना ।

कृप् (धा० आत्म०) [कल्पते, कल्पत] १ योग्य होना ।
उपयुक्त होना । रजामन्द करना । पूर्ण करना ।
पैदा करना । २ भलीभाँति व्यवस्थित होना ।
सफल होना । ३ होना । घटित होना । ४ तैयार
होना । ५ अनुकूल होना । ६ शरीक होना ।
[निजन्त] १ तैयार करना । व्यवस्था करना ।

जड़ना । २ स्थिर करना । नियत करना । ३ बाँटना । ४ सम्पन्न करना । ५ विचारना ।

कृत् (इ० कृ०) १ रचित । बनाया हुआ । सजा हुआ । टुकड़े किया हुआ । काटा हुआ । ३ उत्पन्न किया हुआ । ४ स्थिर किया हुआ । तै किया हुआ । ५ आविष्कृत । विचारा हुआ ।—कीला, (स्त्री०) किवाला । एक प्रकार की दस्तावेज़ ।

कृत् (स्त्री०) १ पूर्णता । सम्पूर्णता । सफलता । कामियाबी । २ आविष्कार । सुव्यवस्था ।

कृत् (वि०) खरीदा हुआ । क्रीत । [निवासी । केकयः (पु०) (बहुवचन) देश विशेष और उसके केकर (वि०) [स्त्री०—केकरी] ऐचाताना । भेंडी आँख वाला । भेंडा ।

केकर (न०) भेंडापन ।

केका (स्त्री०) मोर की बोली ।

केकावलः }
केकिकः } (पु०) मोर । मयूर ।
केकिनः }

केणिका (स्त्री०) स्त्रीमा । तंबू । कनात ।

केतः (पु०) १ मकान । २ आवादी । वस्ती । ३ झंडा । पताका । ४ सङ्कल्प । इरादा । अभिलाषा ।

केतकं (न०) केतकी का फूल ।

केतकः (पु०) १ एक पौधे का नाम । २ झंडा । पताका ।

केतकी (स्त्री०) १ एक पौधा विशेष । २ केतकी का फूल ।

केतनम् (न०) १ घर । मकान । २ आसन्न । जुलावा । ३ जगह । स्थान । ४ झंडा । पताका । ५ चिन्हानी । चिन्ह । ६ अनिवार्य कर्म ।

केतित (वि०) १ आसन्नित । जुलाया हुआ । २ बसने वाला । बसा हुआ ।

केतुः (पु०) १ झंडा । पताका । २ प्रधान । मुखिया । नेता । ३ पुच्छलतारा । धूमकेतु । ४ चिन्हानी । निशान । ५ चमक । सफाई । ६ प्रकाश की किरन । ७ उपग्रह विशेष । केतुग्रह ।—ग्रहः, (पु०) केतुग्रह ।—भूः, (पु०) बादल ।—यष्टिः, (स्त्री०) पताका का बाँस ।—रत्नं,

(न०) वैदूर्य ।—अस्तनं, (न०) कपड़े की पताका ।

केदारः (पु०) १ पानी भरे खेत । चरसाह । २ धाला । खोडुआ । ३ पर्वत । ४ केदार पर्वत । ५ शिवजी का रूप विशेष ।—खगडम्, (न०) मेंढ । बाँध ।—नाथः, (पु०) शिवजी का रूप विशेष ।

केनारः (पु०) १ सिर । शीश । २ खोपड़ी । ३ जाल । ४ गाँठ । जोड़ ।

केनिपातः (पु०) पतवार । डाँड़ ।

केन्द्रम् (न०) १ वृत्त का मध्य भाग । २ वृत्त का प्रमाण । ३ जन्मपत्र के लगन, चतुर्थ, सप्तम और दशम स्थान । ४ मुख्यस्थान । मध्यस्थल ।

केयूरः (पु०) }
केयूरम् (न०) } बाजूबंद । जोशन । तावीज़ ।

केरलः (पु० बहुवचन) मालावार देश और वहाँ के अधिवासी ।

केरली (स्त्री०) १ मालावार की स्त्री । २ ज्योतिर्विज्ञान ।

केल (धा० परस्मै०) [केलति, केनित] १ हिलाना । २ क्रीड़ा करना । क्रीडोत्सुक होना ।

केलकः (पु०) नचैया । नाचने वाला ।

केलासः (पु०) स्फटिक पत्थर ।

कलिः (पु० स्त्री०) १ खेल । क्रीड़ा । २ आमोद प्रमोद । ३ हँसी मज़ाक । दिल्लगी । हर्ष, ।—कला । (स्त्री०) १ रतिकला । २ सरस्वती देवी की वीणा ।—किल, (पु०) विदूषक । मसखरा ।—किलावती, (स्त्री०) कामदेव की पत्नी । रति देवी ।—कीर्णः, (पु०) ऊंट ।—कुञ्चिका, (वि०) छोटी साली ।—कुपित, (वि०) खेल में क्रुद्ध ।—कोषः, (पु०) अभिनय-पात्र । नचैया ।—गृहं,—निकेतनम्,—मन्दिरं,—सदनम्, (न०) प्रमोद भवन ।—नागरः, (पु०) कामासक्त । कामुक । प्रेयाश ।—पर, (वि०) खिलाड़ी । आमोदप्रमोदप्रिय ।—मुखः, (पु०) हँसी । खेल । आमोद प्रमोद ।—वृत्तः (पु०) कदम्ब वृत्त विशेष ।—शयनं,

(न०) सेज ।—शुचिः, (स्त्री०) पृथिवी ।
—सचिवः, (पु०) अभिन्न मित्र ।

केलिः (स्त्री०) पृथिवी ।

केलिकः (पु०) अशोक वृक्ष ।

केली (स्त्री०) १ खेल । क्रीड़ा । २ आमोद प्रमोद ।

—पिकः (पु०) आमोद के लिये पाली हुई
कोकिला ।—वनी, (स्त्री०) प्रमोद वन —

शुकः (पु०) आमोद के लिये पाला गया तोता ।

केवल (वि०) १ विशिष्ट । असाधारण । २ अकेला ।

मात्र । एकमात्र । बेजोड़ । ३ समस्त । समूचा ।

नितान्त । सम्पूर्ण । ४ अनावृत । विना ढका
हुआ । ५ शुद्ध । साफ । अमिश्रित ।

केवलं (अव्यय०) सिर्फ । एकमात्र ।

केवलतस् (अव्य०) नितान्तता से । विशुद्धता से ।

केवलिन् (वि०) [स्त्री०—केवलिनी] १ अकेला ।

सिर्फ । एकमात्र । २ ब्रह्म के साथ एकत्व के
सिद्धान्त पर पूर्ण श्रद्धावान् ।

केशः (पु०) १ बाल । २ विशेष कर सिर के केश ।

३ घोड़ा या सिंह के गरदन के बाल । अयाल । ४

प्रकाश की किरण । ५ वरुण की उपाधि । ६ सुग-

न्धद्रव्य विशेष ।—अन्तः, (पु०) १ बाल की

नोक । २ जटा । लट । चौड़ी । ३ चूड़ाकरण

संस्कार ।—उच्चयः (पु०) बहुत या सुन्दर

बाल ।—कर्मन्, (पु०) बालों को सम्हालना

या काढ़ना । माँग पट्टी बनाना ।—कलापः, (पु०)

बालों का ढेर —कीटः, (पु०) जूँ । बालों में रहने

वाले कीट विशेष ।—गर्भः, (पु०) वेणी ।

चोटी ।—किङ्कदः, (पु०) नाई । हज्जाम ।—

जाहुः, (पु०) बालों की जड़ ।—पक्षः,—पाशः,

हस्तः, (पु०) बहुत अधिक बाल ।—बन्धः,

(पु०) चुटीला । बाल बाँधने का फीता ।—भूः,

भूमिः, (स्त्री०) सिर या शरीर का अन्य कोई

भाग जिस पर केश उगे ।—प्रसाधनी, (स्त्री० —

मार्जकं, मार्जनं, (न०) कंघा । कंघी ।—रचना,

(स्त्री०) बाल सम्हालना ।—वेशः, (पु०)

चुटीला । फीता ।

केशटः (पु०) १ बकरा । २ विष्णु का नाम । ३

खट्मल ४ भाई ।

केशव (वि०) बहुत शय्यवा सुन्दर केशों वाला ।—

आयुधः, (पु०) आस का पेड़ ।—आयुधम्,

(न०) विष्णु का शस्त्र ।—आलयः,—आवासः,

(पु०) पीपल का पेड़ ।

केशवः (पु०) १ विष्णु का नाम जो ब्रह्म खड़ादिकों

पर दया करते हैं । केशी दैत्य को मारने वाले ।

केशाकेशि (अव्य०) परस्पर बाल खींच कर (लड़ने

वाले ।)

केशिक (वि०) [स्त्री०—केशिकी] सुन्दर बालों

वाला ।

केशिन् (पु०) १ सिंह । २ श्री कृष्ण के हाथ से मरे

हुए एक राक्षस का नाम । ३ देवसेना का हरण

करने वाला और इन्द्र द्वारा मारा गया एक दूसरे

राक्षस का नाम । ४ श्री कृष्ण की उपाधि । ५

अच्छे बालों वाला ।—निषूदनः,—मथनः,

(पु०) श्रीकृष्ण की उपाधियाँ ।

केशिनी (स्त्री०) १ सुन्दर वेशी वाली स्त्री ।

२ विश्रवस की पत्नी और रावण की माता का

नाम ।

केशरः, केशरः (पु०) } १ सिंह की गरदन के

केशरम्, केशरम् (न०) } बाल । अयाल । २

फूल का रेशा या सूत । ३ वकुल वृक्ष । ४ सुन्नाग

वृक्ष । ५ (आमफल का) रेशा । (न०) वकुलपुष्प ।

—अचलः, (पु०) मेरु पर्वत ।—चरं (न०)

केसर । जाफ़ान् ।

केशरिन् } (पु०) १ सिंह । २ अपनी श्रेणी का सर्वो-

केशरिन् } कृष्ट या सर्वोत्तम । ३ घोड़ा । ४ नीबू अथवा

चक्रोतरा अथवा बिजौर का पेड़ । ५ पुंढाग

वृक्ष ६ हनुमानजी के पिता का नाम ।—सुतः

(पु०) हनुमान जी ।

कै (धा० परस्मै०) [कायति] आवाज़ करना ।

बजाना ।

कैशुकम् (न०) किशुक का फूल ।

कैकयः (पु०) कैकय देश का राजा ।

कैकसः (पु०) एक राक्षस । एक दैत्य ।

कैकेयः (पु०) कैकय देश का राजा या राजकुमार ।

कैकेयी (स्त्री०) महाराज दशरथ की छोटी रानी और

भरत की जननी ।

कैटभः (पु०) एक दैत्य जो विष्णु के हाथ से मारा गया था ।—अरिः, —जित्, —रिपुः, —हन्, (पु०) विष्णु ।

कैतकं (न०) केतकी का फूल ।

कैतवं (न०) १ जुआ का दाँव । २ धूर्त । जुआ । भूट । कपट । छल । जाल । ठगी । चालाकी ।

कैतवः (पु०) १ ठग । छलिया । २ जुआरी ३ धूर्ता ।

कैतवप्रयोगः (पु०) चालाकी । ठगी ।

कैतववादः (पु०) छल । प्रवञ्चना । जाल ।

कैदारः (पु०) चावल । अन्न ।

कैदारम् (न०) खेतों का समुदाय ।

कैमुतिकः (पु०) न्याय विशेष ।

कैरवः (पु०) १ उवारी । ठग । प्रवञ्चक । २ शत्रु ।

—बन्धुः (पु०) चन्द्रमा ।

कैरवम् (न०) कोकावेली । सफेद कमल जो चन्द्रमा की चाँदनी में खिलता है ।

कैरविन् (पु०) चन्द्रमा ।

कैरविणी (स्त्री०) १ कमल का पौधा जिसमें सफेद कमल के फूल लगे हों । २ सरोवर जिसमें सफेद कमल के फूलों का बाहुल्य हो । ३ सफेद कमलों का समूह ।

कैरवी (स्त्री०) चन्द्रमा की चाँदनी । जुन्हाई ।

कैलासः (पु०) हिमालय पर्वत का शिखर विशेष ।

—नाथः, (पु०) १ शिवजी । २ कुबेरजी ।

कैवर्तः (पु०) मल्लाह । मलुआ । माहीगीर ।

कैवल्यं (न०) १ एकत्व । एकान्तता । २ व्यक्तित्व । ३ मोक्ष विशेष ।

कैशिक (वि०) [स्त्री०—कैशिकी] केशों जैसा । बालों की तरह मिहीन ।

कैशिकं (न०) बालों का परिमाण ।

कैशिकः (पु०) प्रेमभाव । कामुकता । [वृत्ति ।

कैशिकी (स्त्री०) कौशिकी । नाट्य शास्त्र की एक

कैशोरं (न०) किशोर अवस्था जो १ से १५ वर्ष तक रहती है ।

कैश्यं (न०) सम्पूर्णकेश ।

कोकः (पु०) १ भेड़िया । २ चक्रवाक । ३ कोकिल ।

४ मैदक । ५ विष्णु । —देवः, (पु०) कबुतर ।

—बुधः (पु०) सूर्य ।

कोकनदं (न०) लाल कमल ।

कोकाहुः (पु०) सफेद कमल ।

कोकिलः (पु०) १ कोयल । २ अभजली लकड़ी ।

—आवासः, —उत्सवः, (पु०) आम का वृक्ष ।

कोंकः, कोङ्कः } (पु०) (बहुवचन) सद्य पर्वत

कोंकणः, कोङ्कणः } और समुद्र के बीच का भूखण्ड प्रदेश विशेष ।

कोंकणा, कोङ्कणा (स्त्री०) जमदग्नि की पत्नी रेणुका का नाम । —सुतः, (पु०) परशुराम ।

कोजागरः (पु०) आश्विनी पूर्णिमा के दिवस का उत्सव विशेष ।

कोटः (पु०) १ गढ़ । किला । २ शाला । भोंपड़ी । ३ बांकापन । ४ दाढ़ी ।

कोटरः (पु०) } वृक्ष का खोबर ।

कोटरम् (न०) } (स्त्री०) १ बाणासुर की माता । २ बालग्रह ।

कोटरी } (स्त्री०) नंगी स्त्री । २ दुर्गा देवी ।

कोटवी } (स्त्री०) १ कमान की मुड़ी हुई नोक । २ नोक । छोर । ३ अस्त्र की नोक या धार । ४ चरम बिन्दु । आधिक्य । सर्वोत्कृष्टता ।

५ चन्द्रकला । ६ कक्षर की संख्या । ७ समकोण त्रिभुज की एक भुजा । ८ श्रेणी । कक्षा । विभाग ।

९ राज्य । सत्तनत । १० विवादग्रस्त प्रश्न का एक पक्ष । ईश्वरः, (पु०) करोड़पति ।—जित्,

(वि०) कालिदास की उपाधि ।—पात्रं, (न०)

पतवार ।—पालः, (पु०) दुर्गरक्षक ।—

वेधिन्, (वि०) क्लिष्टकर्मा । बड़ा कठिन काम

करने वाला ।

कोटिक (वि०) अत्यन्त उच्च काम करने वाला ।

कोटिरः (पु०) १ साधुओं के सिर के बालों की चोटी

जिसे वे माथे के ऊपर बाँध लेते हैं और जो साँग

की तरह जान पड़ती है । २ न्योला । ३ हन्द्र ।

कोटिशः } (पु०) हँगा । पाटा ।

कोटीशः } (पु०) हँगा । पाटा ।

कोटिशः (अन्यथा०) करोड़ों । असंख्य ।

कोटीरः (पु०) १ मुकुट । ताज । २ कलंगी । चोटी ।

३ साधुओं के सिर की चोटी जिसे वे साँग की

शक्ल में माथे के ऊपर बाँध लिया करते हैं ।

कोष्ठः (पु०) कोट । गढ़ । किला । महल । राज-
प्रासाद ।

कोष्ठवी (स्त्री०) १ बाल खोले नंगी स्त्री । २ दुर्गा-
देवी । ३ बायासुर की माता का नाम ।

कोट्टारः (पु०) १ किला या किले के भीतर का ग्राम ।
२ तालाब की सीढ़ियाँ । ३ कूप । तड़ाग । ४
लम्पट या दुराचारी पुरुष ।

कोणः (पु०) १ कोना । २ सारंगी या बेला बजाने
का गज । ३ तलवार आदि हथियारों की पैनी
धार । ४ झड़ी । डंडा । डंका या ढोल बजाने की
लकड़ी । ५ मंगल ग्रह । ७ शनि ग्रह । ८ जन्म
कुण्डली में लग्न से नवम और पञ्चम स्थान ।—
कुणाः, (पु०) खटमल ।

कोणपः (पु०) देखो कौणप ।

कोदंडः कोदण्डः, (पु०) } कमान । धनुष ।
कोदंडम्, कोदण्डम् (न०) } (पु०) मौ ।

कोद्रघः (पु०) कोंदों अनाज ।

कोपः (पु०) १ क्रोध । कोप । रोष । गुस्सा । २
(पित्त-) कोप (वात-) कोप आदि शारीरिक
अस्वस्थता ।—आकुल,—आविष्ट, (वि०)
क्रुद्ध । कुपित ।—पदं, (न०) १ क्रोध का कारण ।
२ बनावटी क्रोध ।—वशः, (पु०) क्रोध के
वशवर्ती होना ।

कोपन (वि०) १ क्रोधी । २ क्रुद्ध करना ।

कोपनम् (न०) क्रुद्ध हो जाना । [स्त्री ।

कोपना (स्त्री०) १ बिगड़ैल औरत । क्रोधी स्वभाव की

कोपिन् (वि०) १ क्रुद्ध । २ क्रोध उत्पन्न करने
वाला । ३ शरीरस्थ रसों का उपद्रव उत्पन्न करने
वाला ।

कोमल (वि०) १ मुलायम । नरम । २ धीमा । मंद ।
प्रिय । मधुर । ३ मनोहर । सुन्दर ।

कोमलकम् (न०) कमल ताल के सूत या रेशे ।

कोयष्टिः } (पु०) शिखरी । एक पक्षी जो पानी
कोयष्टिकः } के ऊपर उड़ा करता है ।

कोरकः (पु०) } १ कली । २ कमलनाल सूत्र ।
कोरकम् (न०) } ४ सुगन्ध द्रव्य विशेष ।

कोरदूषः (पु०) देखो कोद्रघः ।

कोरित (वि०) १ कलीदार । अङ्कुरित । २ चूर्ण किया
हुआ । पिसा हुआ । कुटा हुआ । २ टुकड़े टुकड़े
किया हुआ ।

कोलं (न०) १ एक तोला भर की तौल । २ गोल
या काली मिर्च । ३ एक प्रकार का बेर ।—अञ्जः,
(पु०) कलिङ्ग देश ।—पुच्छः, (पु०)
बगला । बूटीमार ।

कोलः (पु०) १ शूकर । सुअर । २ नाव । बेड़ा । ३
बलस्थल । ४ कूबड़ । कुडब । कूल्हा । गोद । ५
आलिङ्गन । ६ शनिग्रह । ७ जातिच्युत । पतित
जाति का । ८ धर्वर । जंगली जाति का ।

कोलंवकः } (पु०) वीणा का ढाँचा ।
कोलम्बकः }

कोला }
कोलिः } (स्त्री०) देखो बदरी ।
कोली }

कोलाहलं (न०) } चिह्नाहट । शोरगुल ।
कोलाहलः (पु०) }

कोविद् (वि०) परिणित । अनुभवी । चतुर । बुद्धि-
मान । योग्य ।

कोविदारं (न०) } एक वृक्ष विशेष का नाम ।
कोविदारः (पु०) } लाल कचनार ।

कोशः (पु०) कोशम् (न०) } १ कठौती ।
कोषः (पु०) कोषम् (न०) } दोहनी । २

बाल्टी । डोलची । ३ कोई भी पात्र । ४ संवूक ।

अलमारी । दराज़ । ट्रंक । ५ ग्यान । ६ ढक्कन ।

खोल । चादर । ७ ढेर । ८ भाण्डारगृह । ९

खजाना । धनागार । १० धन सम्पत्ति । दौलत ।

रूपया पैसा । ११ सोना चाँदी । १२ शब्दार्थ

संग्रह । शब्दार्थ संग्रहावली । १३ कली । अन-

खिला फूल । १४ फल की गुठली । १५ झीमी ।

फली । बौड़ी । डौंडा । १६ जायफल । सुपाड़ी । १७

रेशम का कोका । १८ योनि । गर्भाशय । १९

अरइकोश । २० अंडा । २१ लिंग । पुरुष जनने-

न्द्रिय । २२ गोला । गेंद । २३ वेदान्त में

वर्णित पाँच प्रकार के कोश यथा अन्नमयकोश,

प्राणमयकोशादि । २४ [धर्मशास्त्र में] एक

प्रकार की अपराधी के अपराध की कठोर परीक्षा ।
—अधिपतिः,—अभ्युत्तः, (पु०) १ खजानची ।

[आधुनिक] अर्थसचिव । २ कुबेर ।—अगारः, (पु०) धनागार । खजाना ।—कारः, (पु०) १ स्थान या परतला बनाने वाला । २ दिक्कनरी बनाने वाला । ३ कोका के भीतर का रेशमी कोड़ा । ४ कोशावस्था । कोशवासी । तितली आदि जिनके पर न आये हों ।—कारकः, (पु०) रेशम का कोड़ा ।—कृत्, (पु०) गन्ना ।—गृहं, (न०) खजाना ।—अञ्जुः, (पु०) सारस ।—नायकः,—पानः, (पु०) खजानची । भंडारी ।—पेटकः,—पेटकम्, (न०) तिजोरी । काफर ।—वासिन्, (पु०) कोशस्थ जीव ।—वृद्धि, (स्त्री०) १ धन की वृद्धि । २ अखण्डकोश की वृद्धि ।—शायिका, (स्त्री०) स्थान में रखी छुरी ।—स्थ, (वि०) स्थान वाला ।—स्थः, (पु०) कोशवासी जीव ।—हीन, (वि०) गरीब । धनहीन ।

कोशलिक (न०) घूस । रिश्वत ।

कोशातकिन (पु०) १ व्यापार । व्यवसाय । विजारत । २ व्यापारी । सौदागर । ३ वाइवानल ।

कोशिन } (पु०) आम का पेड़ ।
कोषिव }

कोष्ठ (न०) १ घेरे की दीवाल । हाते की दीवाल । छारदिवारी । २ झिलका या खोखा ।

कोष्ठः (पु०) १ शरीर का कोई भाग जैसे हृदय, फेफड़ा, आदि । २ मेदा । पेड़ । ३ भीतर का कमरा । ४ अन्नभाण्डार ।—आगारं, (न०) भाण्डार । भण्डारी ।—अग्नि, (पु०) अन्न पचाने वाली शक्ति ।—पालः, (पु०) १ खजानची । भंडारी । २ चौकीदार ।

कोष्ठकं (न०) ईंट चूने का बना होव जिसमें पशु पानी पीवे ।

कोष्ठकः (पु०) १ अनाज का भाण्डार । भंडारी । २ हाते की दीवाल । छारदीवाली ।

कोष्ण (वि०) गुनगुना । कुनकुना । थोड़ा गरम । तत्ता ।
कोष्णं (न०) गर्मी । जप्ता ।

कोसलः } (पु०) (बहुवचन) देश विशेष और
कोशलः } वहाँ के अधिवासी

कोसला } (स्त्री०) अयोध्या नगरी ।
कोशला }

कोहलः (स्त्री०) १ काहिली । बाद्य विशेष । २ शराब ।
कौकुटिकः (पु०) १ चिड़ीमार । २ वह साधु जो चलते समय जमीन की ओर दृष्टि रखता है जिससे कोई जीव उसके पैर से न कुंचले । ३ दम्भी । पाखण्डी ।

कौत्त (वि०) [स्त्री०—कौत्तो] पेड़ की । कुच की ।
कौत्तेय (वि०) [स्त्री०—कौत्तेयी] कुचवाला । पेड़ वाला । २ स्थान वाला ।

कौत्तेयकः (पु०) तलवार । खड़ा ।

कौकः—कौकः } (पु०) कोङ्कण देश और
कौकणः—कौकणः } वहाँ के अधिवासी ।

कौट (वि०) [स्त्री०—कौटो] १ स्वतन्त्र । मुक्त । २ घरेलू । ३ बेईमान । छली । ४ जल में फंसा हुआ ।—जः, (पु०) कुदज वृक्ष ।—तलः, (पु०) स्वतन्त्र बढ़ई (आमतत्तः का उद्घा) ।—सान्नि, (पु०) झूठा गन्नाह ।—साक्ष्यं (न०) झूठी या जाली गवाही । [देना ।

कौटः (पु०) १ जाल । झल । झूठ । २ झूठी गवाही
कौटिकः } (पु०) बहेलिया । चिड़ीमार । कन्दे में
कौटिकः } फंसानेवाला । जाल में पकड़ने वाला ।
चिड़ीमार । कसाई । अधिक ।

कौटिलिकः (पु०) १ शिकारी । व्याध । २ लुहार ।
कौटिल्यं (न०) १ कुटिलता । २ दुष्टता । ३ बेईमानी । जाल । झल । [नीतिकार ।

कौटिल्यः (पु०) चाणक्य का नाम । एक प्रसिद्ध
कौटुंब } (वि०) [स्त्री०—कौटुम्बी] गृहस्थोप-
कौटुम्ब } योगी । गृहोपयोगी ।

कौटुंबं } (न०) पारिवारिक सम्बन्ध । रिश्तेदारी ।
कौटुम्बम् }

कौटुम्बिक } (वि०) [स्त्री०—कौटुम्बिकी]
कौटुम्बिक } पारिवारिक । परिवार सम्बन्धी ।

कौटुम्बिकः } (पु०) पिता या घर का बड़ा बूढ़ा ।
कौटुम्बिकः }

कौणपः (पु०) राक्षस । दाजव । दैत्य । दन्तः
(पु०) भीष्म ।

कौतुकं (न०) १ अभिलाषा । कुतूहल । इच्छा । २ कौतूहलोत्पादक कोई वस्तु । ४ विवाहसूत्र जो कलाई पर बाँधा जाता है । ५ विवाह में एक विधि विशेष । ६ उत्सव । महोत्सव । विवाहादि

शुभ उत्सव । ८ हर्ष । आल्लाह । ९ कीड़ा ।
आमोदप्रमोद । १० गान । नृत्य । हर्य । तमाशा
११ हँसी । मज़ाक । १२ बधाई । प्रणाम ।
आगारः, —आगारं, —गृहं (न०) प्रमोद
भवन । —क्रिया, (स्त्री०) —मङ्गलं, (न०) विवाहो-
त्सव । तोरणः, (पु०) —तोरणम् (न०) मङ्गल-
सूचक महारावदार द्वार, जो विवाहादि उत्सवों के
अवसर पर बनाये जाते हैं ।

कौतूहलं } (न०) १ अभिलाषा । जिज्ञासा ।
कौतूहल्यं } २ औत्सुक्य । ३ आश्चर्य । विस्मय ।

कौतिकः (पु०) भालावरदार ।

कौतेय } (पु०) कुन्ती का पुत्र । युधिष्ठिर, भीम,
कौन्तेयः } और अर्जुन ।

कौप (वि०) [स्त्री०—कौपी] कूप सम्बन्धी या
कूप से निकला हुआ ।

कौपीनम् (न०) १ लंगोटी । २ गुलाब । ३ चिथड़ा ।
४ पाप या अनुचित कर्म ।

कौट्यं (न०) देहापन । कुवदापन ।

कौमार (वि०) [स्त्री०—कौमारी] १ क्वारी ।
२ कोमल । मुलायम । —भृत्यं, (न०) बालक
का पालन पोषण और चिकित्सा ।

कौमारं (न०) १ जन्म से पाँच वर्ष तक की अवस्था ।
२ कुआरापना—(१६ वर्ष की अवस्था तक की
लड़की का कुआरापना माना गया है) ।

कौमारकम् (न०) लड़कपन । कमउन्नपना ।

कौमारिकः (पु०) लड़कियों का पिता ।

कौमारिकेयः (पु०) अनव्याही स्त्री का पुत्र ।

कौमुदः (पु०) कार्तिक मास ।

कौमुदी (स्त्री०) १ चाँदनी । जुन्दाई । व्याकरण का
एक ग्रन्थ । ३ कार्तिकी पूर्णिमा । ४ आश्विनी
पूर्णिमा । ५ उत्सव । ६ विशेष कर वह उत्सव
जिसके घरों और देवालयों में दीपमालिका की
जाय । ७ न्याय्या । —पतिः, (पु०) चन्द्रमा ।
—वृत्तः, (पु०) डीवड । पतीलसोत ।

कौमोदकी } (स्त्री०) भगवान विष्णु की गदा का
कौमोदी } नाम ।

कौरव (वि०) [स्त्री०—कौरवी] कुरुओं से सम्बन्ध
रखने वाला ।

कौरवः (पु०) १ राजा कुरु की सन्तान । २ कुरुओं का
राजा या शासक ।

कौरव्यः (पु०) १ कुरु की सन्तान । २ कुरुओं का
राजा या शासक ।

कौर्यः (पु०) वृश्चिक राशि ।

कौल (वि०) [स्त्री०—कौली] १ पैतृक । मौलसी ।
२ कुलीन । अच्छे खान्दान का ।

कौलः (पु०) १ वाममार्गी तान्त्रिक । २ ब्रह्मज्ञानी ।

कौलं (पु०) वाममार्ग का सिद्धान्त और उसके अनु-
ष्ठान ।

कौलकेयः (पु०) वर्षसङ्कर । छिनाल का लड़का ।

कौलटिनेयः (पु०) १ सती भिखारिन का लड़का । २
वर्षसङ्कर ।

कौलटेयः (पु०) १ सती या असती भिखारिन का
पुत्र । वर्षसङ्कर । दोगला ।

कौलिक (वि०) [स्त्री०—कौलिकी] कुल सम्बन्धी ।
२ कुल में प्रचलित । पैतृक । पुरतैनी । मौलसी ।

कौलिकः (पु०) १ केरी । जुलाहा । २ पाखंडी ।
दग्भी । ३ वाममार्गी ।

कौलीन (वि०) कुलीन । खान्दानी । [मार्गी]

कौलीनः (पु०) १ भिखारिन का लड़का । २ वाम-

कौलीनम् (न०) १ लोकापवाद । कुत्सा । निन्दा ।
असदाचरण । कुकर्म । ३ पशुओं की लड़ाई । ४

मुर्गों की लड़ाई । युद्ध । लड़ाई । ५ कुलीनता ।
७ छिपाने योग्य । गुहाङ्ग । [वाद]

कौलीन्यः (न०) १ कुलीनता । २ पारिवारिक अप-

कौलूतः (पु०) कौलूतों का राजा ।

“कौलूतदिपशवर्मा ।” सुप्रसादक ।

कौलकेयः (पु०) कुत्ता । ताज़ी कुत्ता । शिकारी
कुत्ता ।

कौल्य (वि०) कुलीन ।

कौवेर } (वि०) [स्त्री०—कौवेरी कौवेरी] कुबेर
कौवेर } सम्बन्धी ।

कौवेरी } (स्त्री०) उत्तर दिशा ।
कौवेरी }

कौश (वि०) [स्त्री०—कौशी] १ रेशमी । २ कुश
का बना ।

कौशलं } (न०) १ प्रसन्नता । समृद्धि । २ निपु-
कौशल्यं } खाई । निपुणता । चतुराई ।

कौशलिकं (न०) घँस । रिश्कत ।
 कौशलिका, कौशिली (स्त्री०) १ भेट । चढ़ावा ।
 २ कुशलप्रश्न । बधाई ।
 कौशलयेयः (पु०) कौशल्यानन्दन श्रीरामचन्द्र जी ।
 कौशलया (स्त्री०) महाराज दशरथ की महारानी
 कौसल्या और श्रीरामचन्द्र जी की जननी ।
 कौशलयायनिः (पु०) कौशल्यानन्दन श्रीराम ।
 कौशांधी (स्त्री०) दुआव में अवस्थित एक प्राचीन
 नगरी का नाम ।
 कौशिक (वि०) [स्त्री०—कौशिकी] १ ग्यानदार ।
 ग्यान में रखा हुआ । २ रेशमी ।—अरातिः,—
 अरिः, (पु०) काक । कौशा ।—फलः, (पु०)
 नारियल का पेड़ ।—प्रियः, (पु०) श्री रामचन्द्र
 जी की उपाधि ।
 कौशिकः (पु०) १ विश्वामित्र । २ उल्लू । ३ कोश-
 कार । ४ गूदा । मिगी । सत । सार । ५ गुगल ।
 ६ न्योला । ७ सपैला । साँप पकड़नेवाला । ८
 शृङ्गार । ९ गुप्त धन जाननेवाला । १० इन्द्र ।
 कौशिका (स्त्री०) कदोरा । प्याला ।
 कौशिकी (स्त्री०) १ बिहार की एक नदी का नाम ।
 दुर्गादेवी का नाम । ३ चार प्रकार की नाव्यशास्त्र
 की वृत्तियों में से एक वृत्ति ।
 कुकुमारार्थशब्दार्थ कौशिकी ताडु कथ्यते ।
 —साहित्यदर्पण ।
 कौशियम् } (न०) १ रेशम । २ रेशमी वस्त्र । ३
 कौषियम् } लहंगा ।
 कौसीद्यं (न०) सूदखोरी । २ सुखी । अकर्मण्यता ।
 काहिली । परिश्रम से अरुचि ।
 कौस्तिकः (पु०) १ झलिया । धोखेबाज़ । बद-
 माश । १ मदारी । ऐन्द्रजालिक ।
 कौस्तुभः (पु०) समुद्रमन्थन के समय प्राप्त एक
 मणि, जिसे भगवान विष्णु अपने वक्षस्थल पर
 धारण करते हैं ।—लक्षणाः,—वक्षस्, (पु०)
 —हृदयः, (पु०) विष्णु भगवान की उपाधियाँ ।
 क्रूय (धा० आत्म०) [क्रयते] १ कर कर शब्द करना ।
 २ डूबना । ३ भींगना ।
 क्रकचः (पु०) आरा ।—च्छदः, (पु०) केतकी
 वृक्ष ।—पत्रः, (पु०) साल का वृक्ष ।—पादः,
 (पु०)—पादः, (पु०) बिस्तुइथा । छिपकली ।

क्रंकरः (पु०) १ तीतर । २ आरा । ३ निर्धन
 मनुष्य । ४ रोग । बीमारी ।
 क्रतुः (पु०) १ यज्ञ । २ विष्णु की उपाधि । ३ दस
 प्रजापतियों में से एक । ४ प्रतिभा । ४ शक्ति ।
 क्रान्त्यता ।—उत्तमः, (पु०) राजसूय यज्ञ ।—
 द्रवः,—द्विष्, (पु०) राक्षस । दैत्य ।—ध्वंसिन्,
 (पु०) शिवजी की उपाधि ।—पतिः, (पु०)
 यज्ञकर्ता ।—पुरुषः, (पु०) विष्णु की उपाधि ।
 —भुज्, (पु०) ईश्वर ।—राज् (पु०) १ यज्ञों
 के प्रभु । २ राजसूय यज्ञ ।
 क्रथ (धा० परस्मै०) [क्रथति, क्रथित] धायल
 करना । चोटिल करना । मार डालना ।
 क्रथकैशिकः (पु० बहुवचन) एक देश का नाम ।
 “अथेश्वरश्च क्रथकैशिकान्” ।
 रघुवंश ।
 क्रथनम् (न०) हत्या । क्रल्लआम ।
 क्रथनकः (पु०) ऊँट ।
 क्रन्द् } (धा० परस्मै०) [क्रन्दति, क्रन्दित] १ रोना ।
 क्रन्द् } आँसू बहाना । २ बुलाना । पुकारना ।
 क्रन्दनम् }
 क्रन्दनम् } (न०) १ रोदन । रोना । बिलाप । २
 क्रन्दितं } पास्परिक ललकार ।
 क्रन्दितं }
 क्रम् (धा० उभय०) पर [क्रामति, क्रामते, क्राम्यति,
 क्रान्त] १ चलना फिरना । पदार्पण करना । पैर
 रखना । जाना । २ समीप जाना । ३ गुज़रना ।
 निकल जाना । ४ कूदना । फलांगना । उछलना ।
 ५ चढ़ना । ऊपर जाना । ६ ठकना । छेकना ।
 कब्जा करना । अधिकार जमाना । भरना । ७ आगे
 निकल जाना । बढ़ जाना । ८ योग्य होना । किसी
 काम को हाथ में लेना । ९ बढ़ना । १० पूरा
 करना । सम्पन्न करना । ११ स्त्रीमैथुन करना ।
 क्रमः (पु०) १ पग, कदम । २ पैर । ३ गमन ।
 अग्रगमन । मार्ग । ४ अनुष्ठान । आरम्भ । ५
 सिलसिला । ६ तरीका । ढब । ७ पकड़ । ८ जान-
 वर की एक प्रकार की उस समय की बैठक
 विशेष, जब वह उछल कर किसी पर आक्रमण
 करना चाहता है । दबकन । ९ तैयारी । तत्परता ।
 १० भारी काम । जोखों का काम । ११ कर्म ।

कार्य । १२ वेद पढ़ने की शैली विशेष । १३ शक्ति । ताकत ।—अनुसारः, [क्रमानुसारः] (पु०) अन्वयः [क्रमान्वयः] (पु०) ठीक सिल-सिलेवार । यथावस्थित ।—आगत,—आयात, (वि०) पैतृक । पुरतैनी ।—उया, (स्त्री०) हय । बटती ।—भङ्ग, (पु०) अनियमितता ।

क्रमक (वि०) क्रमानुसार । क्रमवद्ध । पद्धति के अनुसार । यथानियम । [पूरा करे ।

क्रमकः (पु०) वह विद्यार्थी जो क्रमशः पाठ्यक्रम क्रमशः (न०) १ पग । कदम । २ चलना य चाल । ३ अग्रगमन । ४ उल्लेखन । भङ्ग ।

क्रमणः (पु०) १ पैर । १ बोबा ।

क्रमतः (अव्यय०) धीरे धीरे । क्रम से ।

क्रमशः (अव्यय०) १ सिलसिलेवार । क्रमानुसार । २ धीरे धीरे । एक के बाद एक ।

क्रमिक (वि०) १ क्रमागत । एक के बाद एक । सिल-सिलेवार । २ पैतृक । पुरतैनी ।

क्रमुः, क्रमुकः (पु०) सुपारी का पेड़ ।

क्रमेलः } (पु०) उँट ।
क्रमेलकः }

क्रयः (पु०) खरीद । लिवाली ।—आरोहः, (पु०) बाज़ार । हाट । पैठ ।—क्रीत, (वि०) खरीदा । हुआ । मोल लिया हुआ ।—लेख्यम्, (न०) बेचीनामा । दानपत्र । बृहस्पति जी बेचीनामे की व्याख्या इस प्रकार करते हैं—

बृह लेखानि कश्च काश्चान् बुद्ध्या बुद्ध्याकरान्वितान् ।
एवं कारयते यन्तु क्रयलेखं तद्बुद्धयते ।

—विक्रयौ, (द्विवचन०) व्यापार । व्यवसाय । खरीद फरोख्त ।—विक्रयिकः, (पु०) व्यापारी । सौदागर ।

क्रयणं (न०) खरीद । लेवाली ।

क्रयिकः (पु०) १ व्यापारी । सौदागर । २ खरी-दार । गाहक ।

क्रय्य (वि०) विक्री के लिये । बिकाऊ ।

क्रय्यं (न०) कच्चा मांस ।—अद्,—अद,—भुज (वि०) कच्चा मांस खाने वाला । (पु०) १ शेर, चीता आदि मांस भक्षी जीवजन्तु । २ राक्षस । पिशाच ।

क्रशिमन् (पु०) दुबलापन । लटापन । लीलाटा ।

क्राकचिकः (पु०) आराकश । आरा चलाने वाला ।

क्रांत } (वि०) गया हुआ । गत
क्रान्त }

क्रांतः } (पु०) १ बोड़ा । २ पैर । पद ।—दर्शिन,
क्रान्तः } (वि०) सर्वज्ञ ।

क्रांतिः } (स्त्री०) १ गति । अग्रगति । २ पग ।

क्रान्तिः } कदम । ३ अग्रगमन । ४ आक्रमण । वशवर्ती
करण । ५ विषुवरेखा से किसी ग्रहमण्डल की
दूरी । ६ आधुनिक ।—कदाः, (पु०)—मगडलं,
—वृत्तं, (न०) अग्रवृत्त या मण्डल । पृथिवी
का अग्रवृत्त ।

क्रायकः } (पु०) १ खरीदार । गाहक । लेवालिया ।

क्रायिकः } २ व्यापारी ।

क्रिमिः (पु०) १ कीड़ा । २ छोटा कीड़ा ।

क्रिया (स्त्री०) १ सम्पादन । कार्य । कृति । सफलता ।

२ कर्म । उद्योग । उद्यम । ३ परिश्रम । ४ शिक्षण
५ गानवाद्यादि किसी कला की अभिरुचि या जान-
कारी । ६ अभ्यास । ७ साहित्यिक रचना । यथा
बृहत्त नमोभिरवहितैः क्रियानिर्वाहं कालिदासस्य ।

—विक्रमोर्वशी ।

कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदी बहुनामः ।

—मालविकाग्निमित्र ।

न प्राथारिचत्त कर्म । अनुष्ठान । पद्धति । ६ प्राथ-
रिचत्त । १० श्राद्धकर्म । मृतसंस्कार । दाह कर्मादि ।

११ पूजन । १२ चिकित्सा । इलाज । १३ गति ।

हरकत ।—अन्वित, (वि०) कर्मकाण्डी ।—

अपवर्गः, (पु०) १ किसी कार्य का सम्पादन या

सुसम्पन्नता । २ कर्मकाण्ड से छुटकारा ।—अभ्यु-

पगमः, (पु०) विशेष प्रतिज्ञापत्र । इकरारनामा ।

—अथसन्न, (वि०) वह पुरुष जो अपने गवाहों

के बयान के कारण अपना मुकदमा हारता है ।

—कलापः, (वि०) १ वह समस्त कर्मकाण्ड

जो एक सनातनधर्मी को करना चाहिये । २ किसी

व्यवसाय का आद्यन्त विस्तृत विवरण ।—कारः,

(वि०) १ गुमास्ता । मुल्तार । मुनीम । २

नेासिखुआ । ३ इकरारनामा । प्रतिज्ञापत्र ।—

द्वेषिन्, (पु०) जिसकी ओर गवाही दे उसके

सामंजस को अपनी गवाही से हराने वाला । (पाँच-प्रकार के गवाहों में से एक) — निर्देशः, (पु०) गवाही । साची । — पटुः, (वि०) क्रियाकुशल । कार्यनिपुण । — पथः, (पु०) चिकित्सा प्रणाली । — परः, (वि०) अपने कर्तव्य पालन में परिश्रम करने वाला । — पादः, (पु०) साची । लिखित प्रमाण तथा अन्य प्रमाण जो वादी की ओर से अपने अर्जी दावे में पेश किये गये हों । — योगः, (पु०) १ क्रिया से सम्बन्ध । २ उपायों का प्रयोग । — लोपः, (पु०) किसी आवश्यक अनुष्ठेय कर्म का त्याग । — वाचकः, — वाचिनः, (वि०) अव्यय जो क्रिया के ढङ्ग का वर्णन करे । — वादिन्, (पु०) वादी । मुद्दई । — विधिः, (पु०) किसी कर्म का विधान । — विशेषणः, (न०) निर्देशकारक विशेषण । — संक्रान्तिः, (स्त्री०) शिष्टार्थ । ज्ञानोपदेश । — समभिहारः, (पु०) किसी कर्म की पुनरावृत्ति । [अभ्यासी । क्रियावत् (वि०) अभ्यस्त । किसी कार्य को करने का की (धा० उभय) [क्रीणाति, क्रीणीते, क्रीत] १ खरीदना । मोल लेना । २ अदल बदल करना । विनियम करना ।

क्रीड् (धा० परस्मै०) [क्रीडति, क्रीडित] १ खेलना । अपना दिल बहलाना । २ जुआ खेलना । ३ हँसी करना । उपहास करना । मसखरी करना । [दिलबगी ।

क्रीडः (पु०) १ खेल । आमोद प्रमोद । २ हँसी । क्रीडनम् (न०) १ खेल । आमोद प्रमोद । २ खिलौना ।

क्रीडनकः (पु०)
क्रीडनकम् (न०)
क्रीडनीयम् (न०)
क्रीडनीयकम् (न०) } खिलौना ।

क्रीडा (स्त्री०) १ खेल । आमोद प्रमोद । २ हँसी । दिलबगी । — गृहः, (न०) प्रमोदभवन । क्रीडा-भवन । — शैलः, (पु०) कृत्रिम पहाड़ । प्रमोद शैल । — नारी, (स्त्री०) रंडी । — कोपः, (पु०) झूठा क्रोध । बनावटी कोप । — मयूरः, (पु०) मनबहलाव के लिये रखा हुआ मोर । — रत्नः, (न०) रमणकार्य । मैथुन ।

क्रीडापस्करम् (न०) खेल का सामान ।

क्रीत (वि०) खरीदा हुआ । मोल लिया हुआ ।

क्रीतः (पु०) धर्मशास्त्र में वर्णित बारह प्रकार के पुत्रों में से एक प्रकार का खरीदा हुआ पुत्र । — अनुशयः, (पु०) किसी चीज़ को खरीदने के लिये पार्श्वान्ताप । मोल ली हुई वस्तु को वापिस करना ।

क्रौंच, क्रौञ्च (पु०) } १ बगला । क्रौंचपक्षी
क्रौञ्चः, क्रौञ्चः (पु०) }

क्रुध (धा० परस्मै०) [क्रुध्यति, क्रुद्ध] क्रुपित होना । नाराज़ होना ।

क्रुध् (स्त्री०) क्रोध । गुस्सा ।

क्रुश् (स्त्री० परस्मै०) [क्रुशति, क्रुष्ट] १ रोना । विलाप करना । २ चीखना । चिल्लाना ।

क्रुष्ट (वि०) बुलाया हुआ ।

क्रुष्टम् (न०) बुलाना । चिल्लाना । चीखना ।

क्रूर (वि०) १ निष्ठुर । निर्दयी । दयाशून्य । नृशंस ।

२ सख्त । रूखा । ३ भयङ्कर । भयानक । भयप्रद ।

४ उपद्रवी । उत्पाती । बरबाद करने वाला । ५ बायल । चोटिल । ६ खूनी । ७ कच्चा । ८ मज़बूत । ९ गर्म । तीक्ष्ण । अप्रिय । — आकृति,

(वि०) भयङ्कर रूप वाला । — आचारः, (वि०)

निष्ठुर व्यवहार करने वाला । — आशयः, (वि०)

१ जिसमें भयङ्कर जीव हों (जैसे नदी) २ नृशंस स्वभाव वाला । — कर्मन्, (न०) १ खूनी

काम । २ कोई भी कठोर परिश्रम का काम । —

कुन् (वि०) भयानक । खूबार । निर्दयी । — कोष्ठः,

(वि०) दस्तावर दवा यानी जुलाब देने पर भी

जिसको दस्त न आवे ऐसे कठे वाला । कब्जियत

रोग से पीड़ित । — गन्धः, (पु०) गंधक ।

— दृश्, (वि०) १ कुदृष्टि वाला । बुरी निगाह

डालने वाला । २ उत्पाती । दुष्ट । — राक्षिन्,

(पु०) पहाड़ी काक । — लोचनः, (पु०)

शनिग्रह ।

क्रूरं (न०) १ घाव । २ हत्या । निर्दयता ।

क्रूरः (पु०) बाज । शिकरा । बहरी । बगुला ।

क्रेतु (पु०) खरीदनेवाला । ग्राहक ।

क्रौत्तः } (पु०) एक पर्वत का नाम ।
क्रौञ्चः }

क्रोडः (पु०) १ शूकर । २ वृक्ष का खोडर । ३ वक्षस्थल । ४ किसी वस्तु का मध्यभाग । ५ शनि-
ग्रह !—अङ्गः, —अंघ्रिः, —पादः (पु०) कवचा ।
—पत्रं, (न०) १ हाशिये का लेख । २ पत्र की
समाप्ति करने के बाद लिखा हुआ लेख । ३ न्यूनता
पूरक । ४ दानपत्र का अनुबन्ध ।

क्रोडम् (न०) १ वक्षस्थल । छाती । २ किसी
क्रोडा (स्त्री०) वस्तु का भीतरी भाग । रन्ध्र ।
खोखलापन । पोखलापन ।

क्रोडीकरणम् (न०) आलिङ्गन । छाती से लगाना ।

क्रोडीमुखः (पु०) गेंडा ।

क्रोधः (पु०) १ क्रोध । रोष । २ रौद्ररस का भाव ।
—उद्भिः, (वि०) क्रोधरहित । ठंडा । शान्त ।
—मूर्च्छित, (वि०) गुस्ते में भरा हुआ ।
कुपित ।

क्रोधन (वि०) क्रोध में भरा हुआ । क्रुद्ध ।

क्रोधनं (न०) क्रोधी । क्रोध ।

क्रोधाबु (वि०) क्रोधी । गुस्सेल ।

क्रोशः (पु०) १ चीख । चीत्कार । चिल्लाहट ।
कोलाहल । २ कोस । ३ मील ।—तालः,—
ध्वनिः, (पु०) बड़ा ढोल ।

क्रोशन (वि०) चीत्कार करने वाला ।

क्रोशनं (न०) चीत्कार । चीख ।

क्रोष्टु (पु०) [स्त्री०—क्रोष्ट्री] गीदड़ । शृगाल ।

क्रौञ्चः—क्रौञ्चः (पु०) १ कुरर पक्षी । पर्वत विशेष ।
यह हिमालय पर्वत का गायी है और कार्तिकेय
तथा परशुराम ने इसे वेधा था ।—अदनं, (न०)
कमलनाल के रेशे ।—अरातिः ।—अरिः,—
रिपुः, (पु०) १ कार्तिकेय का नाम । २ परशुराम
का नाम ।—दारणः,—सूदनः, (पु०) १
कार्तिकेय । परशुराम ।

क्रौर्य (न०) क्रूरता । निष्ठुरता । निर्दयीपन ।

क्रुदु } (धा० परस्मै०) [क्रुदनि, क्रुदित] १
क्रुन्दु } पुकारना । बुलाना । २ चिज्ञाना । विलाप
करना । (आत्मने०) [क्रुदते, क्रुदते] परेशान
होना । धक्का जाना ।—क्रुम् (धा० परस्मै०)
[क्रामति, क्राम्यति, क्रान्त] थक जाना । उदास
हो जाना ।

क्रुम् (धा० परस्मै०) [क्रामति, क्राम्यति, क्रान्त]
थक जाना । उदास हो जाना ।

क्रुमः क्रुमथः (पु०) थकावट । थकाई ।

क्रुति } (वि०) १ थका हुआ । परिश्रान्त । २ कुहलाया
क्रान्त } हुआ । मुर्झाया हुआ । ३ लदा । निर्बल ।

क्रुति } (स्त्री०) थकावट । थम ।—क्रुद् (वि०)
क्रान्ति } थकावट दूर करने वाला ।

क्रुद् (धा० परस्मै०) [क्रियति, क्रिन्न] भीग जाना ।
नम होना । तर होना । (निजन्त) भिगोना । तर
करना ।

क्रुन्न (वि०) भीगा । तर ।—अक्षः, (वि०) चुंधा ।
किचड़ाहा ।

क्रुश् (धा० आत्म०) [किसी किसी के मतानुसार
यह परस्मै० भी है [क्रिश्यते, क्रिष्ट, अथवा
क्रिशित] १ सताया जाना । पीड़ित किया जाना ।
२ सताना । तंग करना । (परस्मै०) [क्रिश्नाति,
क्रिष्ट, क्रिशित] १ सताना । पीड़ित करना ।
तंग करना । दुःखदेना ।

क्रिशित } (वि०) १ पीड़ित । दुःखी । सन्तप्त । २
क्रिष्ट } सताया हुआ । ३ मुर्झाया हुआ । ४
विरोधी । असङ्गत । [जैसे मेरी माता वन्ध्या है ।]
५ कुत्रिम । ६ लजित ।

क्रुष्टिः (स्त्री०) १ सन्ताप । पीड़ा । दुःख । २ नौकरी ।
चाकरी । सेवा ।

क्लीब } (वि०) १ नपुंसक । हिजड़ा । २ भीरु ।
क्लीव } निर्बल । ३ ओझा । नीच । ४ सुल ।
काहिल । ५ नपुंसक लिङ्ग का ।

क्लीवः, क्लीबः (पु०) १ नपुंसक । हिजड़ा ।
क्लीवम्, क्लीबम् (न०) १ खोजा ।

न ह्यत्र केचित्तं रस्य विद्या चाप्यु निमज्जति ।

मेढू' चोष्मादशुक्राभ्या जीनं क्लीबः स उच्यते ।

—कात्यायन ।

२ नपुंसक लिङ्ग ।

क्लेदः (पु०) १ नमी । तरी । सील । २ फोड़े का
बहाव । ३ कष्ट । दुःख । पीड़ा ।

क्लेशः (पु०) १ पीड़ा । कष्ट । क्रोध । ३ सांसारिक
संक्रुष्ट ।—क्षम, (वि०) कष्ट सहन करने योग्य ।

क्लेश्य } (न०) १ नपुंसकता । २ अमानुषता ।
क्लेश्य } भीरुता । ३ निरर्थकता । अपुंसकत्व ।

क्रोमं (न०) कैकड़ा । फुसफुस ।
 क (अव्यया०) कहाँ । किधर ।
 कश्चित् कश्चित् (वि०) कहीं । एक जगह । इसी
 जगह । यहाँ यहाँ । अभी अभी ।
 कण् (धा० परस्मै०) [कणति कणित] भंकार करना ।
 घुं घुरु जैसा शब्द करना । चहकना । अस्पष्टगाना ।
 कणः (पु०)
 कणानं (न०) { १ शब्द । २ किसी भी वाजे का
 कणितं (न०) { शब्द ।
 कणः (पु०)
 कथ्य (वि०) किस स्थान का । कहाँ का ।
 कथ् (धा० परस्मै०) [कथति कथित] १ उवाचना ।
 काढ़ा बनाना २ जीर्ण करना । पचाना ।
 कथः }
 कथः } (पु०) काढा ।
 कान्तिक् (वि०) [स्त्री०—कान्तिक्की] दुर्लभ ।
 असाधारण ।
 क्षः (पु०) १ नाश । २ अन्तर्धान । अदर्शन । हानि ।
 ३ विधुत । ४ क्षेत्र । ५ किसान । ६ विष्णु का
 चौथा या तृसिंहावतार । ७ राक्षस ।
 क्षण } (धा० उभय०) [क्षणति, क्षणते, क्षत्] १
 क्षन् } धातु करना । २ भङ्ग करना ।
 क्षणः (पु०) } १ लहमा । पल । २ सैकण्ड ।
 क्षणम् (न०) } २ अवकाश । फुलत ।
 अक्षयि सवधनः स्वर्गो गच्छति ।
 * मालविकाग्निमित्र ।
 १ उपयुक्त क्षण । अवसर । २ शुभ क्षण । ३
 उत्सव । वर्ष । ४ परतंत्रता । दासता । ५ मध्य-
 विन्दु । मध्य ।—अन्तरे, (अव्यया०) अगला पल ।
 कुछ ही देर बाद ।—क्षेपः, (पु०) क्षण भर का
 विलम्ब ।—क्षः, (पु०) ज्योतिषी ।—क्षम्, (न०)
 पानी । जल ।—क्षः, (स्त्री०) १ रात्रि । २ हल्दी ।—
 क्षकरः,—पतिः, (पु०) चन्द्रमा ।—क्षुतिः,
 (स्त्री०)—प्रकाश, —प्रभा, (स्त्री०) विद्युत ।
 विजली ।—निःश्वासः, (पु०) सूँस । शिशुमार ।
 —भङ्गुर, (वि०) नष्ट हो जाने वाला । नश्वर ।
 निर्बल ।—मात्रं, (अव्यया०) एक क्षण के लिये ।
 —रामिन्, (पु०) कबुतर । परेवा ।—विध्वंसिन्,
 (वि०) एक क्षण में नष्ट होने वाला । (पु०)
 एक श्रेणी के नास्तिक दार्शनिक विशेष ।

क्षणतुः (पु०) धाव । फोड़ा । [डालना ।
 क्षणनम् (न०) धाव करना । चोटिल करना । मार
 क्षणिक (पु०) क्षणभर का । दमभर का ।
 क्षणिका (स्त्री०) विद्युत । विजली ।
 क्षणिन् (वि०) [स्त्री०—क्षणिनी] १ अवकाश
 रखने वाला । २ दमभर का । क्षणिक ।
 क्षणिनी (स्त्री०) रात । रजनी ।
 क्षत् (वि०) धातु । काटा हुआ । भंग किया हुआ ।
 तोड़ा हुआ । चीरा हुआ । फाड़ा हुआ ।—अरि,
 (वि०) विजयी । फतहयाव ।—उदरं, (न०)
 दस्तों की बीमारी ।—कासः, (पु०) खाँसी
 जो चोटफेंड से उत्पन्न हुई हो ।—जं, (न०) १ रक्त ।
 लोहू । खून । २ पीप । पसेव । राल ।—योनिः,
 (स्त्री०) उपयुक्त स्त्री । वह स्त्री जो पुरुष के
 साथ सम्भोग करा चुकी हो ।—विक्षत,
 (वि०) जिसका शरीर धावों से भरा हो ।
 वृत्तिः, (स्त्री०) आजीविका रहित ।—व्रतः,
 (पु०) ब्रह्मचारी । व्रतभङ्ग करने वाला ब्रह्मचारी ।
 क्षतं (न०) १ खरोच । २ धाव । चोट । ३ खतरा ।
 जोखों । नाश । भय ।
 क्षतिः (स्त्री०) १ चोट । धाव । २ विनाश । काट ।
 चीरा । चीरफाड़ । ३ बरबादी । हानि । नुक-
 सान । ४ हास । कमी । क्षय ।
 क्षत् (पु०) १ वह जो काटता या मोड़ता है । २ चाकर ।
 द्वारपाल । दरवान । ३ कोचवान । बोड़ागादी
 हाँकने वाला । सारथी । ४ शूद्र पुरुष और तत्रिया
 स्त्री से उत्पन्न पुरुष । ५ दासीपुत्र । ६
 ब्रह्मा । ७ मछली ।
 क्षत्रः (न०) } १ अधिकार । प्रभुता । प्रधानता ।
 क्षत्रम् (पु०) } शक्ति । २ तत्रिय जाति का पुरुष या
 तत्रिय जाति ।—अन्तर्क्षः, (पु०) परशुराम ।—
 धर्मः, (पु०) १ बहादुरी । वीरता । सैनिक शूरता ।
 २ तत्रिय के अवश्य कर्तव्य कर्म ।—पः, (पु०)
 शासक । मण्डलेश्वर । सूबेदार ।—वन्धुः, (पु०)
 १ जाति का तत्रिय । २ केवल तत्रिय । दुष्ट या
 पापी तत्रिय । (यह गाली है) जैसे ब्रह्मवन्धु ।
 तत्रियः (पु०) दूसरे वर्ण का पुरुष । राजपूत ।—
 हणः, (पु०) परशुराम ।

तन्त्रियका } (स्त्री०) १ तन्त्रिय वर्ण की स्त्री । २
तन्त्रिया } तन्त्रिय की पत्नी ।
तन्त्रियिका }
तन्त्रियाणी (स्त्री०) १ तन्त्रिय वर्ण की स्त्री । २ तन्त्रिय
की पत्नी ।

तन्त्रिया (स्त्री०) तन्त्रिय की पत्नी ।

तन्त्र } (वि०) [स्त्री०—तन्त्री,] धैर्यवान् । सहन
तन्त्र } शील । विनयी ।

तप् (धा० उभय०) [तपति—तपते, तपित] ज्वन
करना । (निजन्त) [तपयति—तपयते, तपित]
१ पैक देना । भेज देना । व्युत् कर देना । २ चूक
जाना ।

तपणः (पु०) बौद्ध सम्प्रदाय का भिक्षुक ।

तपणाम् (न०) १ अशौच । सूतक । अशुद्धि ।
२ नाश । निर्वासन ।

तपणकः (पु०) बौद्ध या जैन भिक्षुक ।

तपणी (स्त्री०) १ जड़ । २ जाल ।

तपणयुः (पु०) अपराध । जुर्म ।

तपा (स्त्री०) १ रात । रजनी । २ हल्दी ।—अटः,
(पु०) १ रात में घूमने वाला । २ राक्षस ।
पिशाच ।—करः,—नाथः, (पु०) १ चन्द्रमा ।
२ कपूर ।—घनः, (पु०) काला मेघ ।—
चरः, (पु०) राक्षस । पिशाच ।

ताम् (धा० आत्म०) [तामते, ताम्यति, तान्त]
या तामित १ अनुज्ञा देना । परवानगी देना । २
जमा करना । माफ करना । धैर्य रखना । शान्त
होना । प्रतीक्षा करना । ४ सहलेना । निर्वाह
करना । ५ सामना करना । मुकाबिला करना ।
६ (किसी काम करने) योग्य होना ।

ताम (वि०) १ धैर्यवान् । २ सहनशील । विनयी ।
३ उपयुक्त । योग्य । ४ उचित । ठीक । ५ सहने
योग्य । सह लेने योग्य । ६ अनुकूल ।

तामा (स्त्री०) १ धैर्य । सहनशक्ति । माफी । २
पृथिवी । ३ दुर्गा देवी ।—जः, (पु०) मङ्गल
ग्रह ।—भुजः,—भुजः, (पु०) राजा ।

तामित् (वि०) [स्त्री०—तामित्री] धैर्यवान् ।
तामिन् (वि०) [स्त्री०—तामिनी] सहनशील ।

तायः (पु०) १ घर । मकान । २ हानि । घटी ।
खराबी । हास । कमी । ३ अन्त । नाश । समाप्ति

४ आर्थिक हानि । ५ (भाव का) गिराव । ६ स्थाना-
न्तरित करण । ७ प्रलय । ८ चर्षी का रोग । ९
साधारणतः कोई भी रोग । १० बीजगणित में
ऋण या बाकी ।—कर, (वि०) नाशक । नाश
करने वाला ।—कालः, (पु०) १ प्रलय का समय ।
२ घटतो का समय ।—कासः (पु०) चर्षी
से उत्पन्न खाँसी ।—एक्षः, (पु०) अधिघारा
पाख ।—युक्तिः, (स्त्री०)—योगः, (पु०) नाश
करने का अवसर ।—रोगः, (पु०) चर्षी का
रोग ।—वायुः, (पु०) प्रलय कालीन पवन ।—
संपद्, (स्त्री०) नितान्त हानि । सम्पूर्णतः हानि ।
सर्वनाश ।

तयथुः (पु०) चर्ष रोग या उसकी खाँसी ।

तयिन् (वि०) [स्त्री०—तयिणी] १ विनाशक ।
नाशक । २ चररोगग्रस्त । ३ विनश्वर । (पु०)
चन्द्रमा । [वाला ।

तयिष्णु (वि०) १ नाश करने वाला । १ त करने
२ विनश्वर । टूटने फूटने वाला ।

तार (धा० पर०) [तारति, तारित] यह सकर्मक और
अकर्मक दोनों प्रकार से प्रयुक्त होती है । १
बहना । फिसलना । २ भेजना । उड़ेलना । निका-
लना । ३ टपकना । चूना । रिसना । ४ नष्ट
होना । ५ बेकार हो जाना । ६ अलग किया
जाना । वञ्चित किया जाना । (निजन्त) [तारयति]
दोषी ढहराना । नश्वर । नाशवान् ।

तार (वि०) १ पिघला हुआ । २ जड़म । चर ।

तारं (न०) १ पानी । २ शरीर ।

तारः (पु०) बादल ।

तारणम् (न०) १ बहने की, चूने की, टपकने की, रिसने
की क्रिया । २ पसीना खाने की क्रिया ।

तारिन् (पु०) वर्षा ऋतु ।

ताल (धा० उभय०) [तालयति—तालयते तालित]
१ धोना । साफ कर देना । शुद्ध करना । धोना ।
माँजना । २ पौड़ डालना ।

तवः } (पु०) १ झींक । खाँसी ।
तवथुः }

तात्र (वि०) [स्त्री०—तात्री] तन्त्रिय सम्बन्धी या
तन्त्रिय का ।

ज्ञानम् (न०) १ चित्रित जाति । चित्रित के कर्म ।

ज्ञाति } (व० कृ०) १ धैर्यवान् । सहनशील । चमा-
ज्ञान्त } वान् । २ माफ किया हुआ ।

ज्ञाता } (स्त्री०) पृथिवी ।
ज्ञान्ता }

ज्ञातु } (वि०) धैर्यवान् । सहनशील ।
ज्ञान्तु }

ज्ञातुः } (पु०) पिता । जनक । आप ।
ज्ञान्तुः }

ज्ञाम (वि०) १ झुलसा हुआ । जला हुआ । २ धरा
हुआ । पतला । नष्ट किया हुआ । लटा हुआ ।
दुबला । ३ हल्का । थोड़ा । छोटा । ४ निर्बल ।
बलहीन ।

ज्ञार (वि०) काट करनेवाला । जलानेवाला । तेज ।
तीक्ष्ण । खारा । नमकीन ।—अच्छ, (न०)
समुद्री निमक ।—अञ्जनम्, (न०) खारी अञ्जन
या लेप ।—अम्बु, (न०) खारी रस ।—उद्, —
उदकः, —उदधिः, —समुद्रः, (पु०) खारी
समुद्र ।—जयं, —त्रितयम् (न०) सज्जी, सोरा
और जवाखार (या सोहागा) ।—नदी, (स्त्री०)
नरक की खारी पानी की नदी विशेष ।—भूमिः
(स्त्री०)—वृत्तिका, (स्त्री०) खुनिया जमीन ।—
मेलकः, (पु०) खारी पदार्थ ।—रसः, (पु०)
खारी रस ।

ज्ञारं (न०) १ काला निमक । २ पानी । जल ।

ज्ञारः (पु०) १ रस । सार । २ शीरा । चोटा । राव ।
जूली । ३ कोढ़ भी तीक्ष्ण पदार्थ । ४ शीशा । ५
बदमाश । लुच्चा । ठग ।

ज्ञारकः (पु०) १ खार । २ रस । सार । ३ पिंजडा ।
टोकरा या जाल जिसमें पक्षी रखे जाते हैं । ४
घोबी । ५ फूल । कली ।

ज्ञारणम् (न०) } अभिशाप । अभियोग । विशेष
ज्ञारणा (स्त्री०) } कर व्यभिचार या लम्पटता का ।

ज्ञारिका (स्त्री०) मूख ।

ज्ञारित (वि०) १ खारी पदार्थ से छुड़ाया हुआ । २
लम्पटता का झूठा दोष लगाया हुआ ।

ज्ञालनं (न०) १ धोना । साफ करना । पखारना । २
छिड़कना ।

ज्ञालित (वि०) १ धुला हुआ । साफ किया हुआ ।

शुद्ध किया हुआ । २ पौष्टा हुआ । झाड़ा हुआ ।

क्षि (धा० परस्मै०) [क्षयति, क्षित या क्षीण] १
गलना । नष्ट होना । २ शासन करना । हुकूमत
करना । अधिकार जमाना ।—[क्षयति, क्षिणाति,
क्षिणाति] १ नाश करना । बरबाद करना ।
बिगाड़ना । २ वदना । ३ मार डालना, चोटिल
करना । (निजन्त) [क्षययति या क्षपयति] १
नाश करना । स्थानान्तरित करना । समाप्त
करना । २ व्यतीत करना ।

क्षितिः (स्त्री०) १ पृथिवी । २ गृह । आवासस्थान ।
मकान । ३ हानि । नाश । ४ प्रलय ।—ईशः,—
ईश्वरः, (पु०) राजा ।—कणः, (पु०) धूल ।
रज ।—कम्पः, (पु०) भूचाल । भूडोल ।—क्षित्,
(पु०) राजा । राजकुमार ।—जः, (पु०) १ वृक्ष ।
२ केचुआ । ३ मङ्गलगृह । ४ नरकासुर ।—जम्,
(न०) अन्तरिक्ष ।—जा, (स्त्री०) सीता जी ।—
तलं, (न०) पृथिवी तल । जमीन की सतह ।—
देवः, (पु०) ब्राह्मण ।—धरः, (पु०) पहाड़ ।—
नाथः,—पः,—पतिः,—पालः,—भुजः, (पु०)
रक्षिन्, (पु०) राजा । सम्राट् ।—पुत्रः, (पु०)
मङ्गलग्रह ।—प्रतिष्ठ, (वि०) धरती पर बसनेवाला
—मृत्, (पु०) पर्वत । पहाड़ ।—मण्डलम्,
(न०) भूमण्डल भूगोलक ।—रन्ध्रम्, (न०)
गढ़ा । गर्त ।—रुद्ध, (पु०) पेड़ । वृक्ष ।—वर्धनः,
(पु०) शत्रु । मुर्दा । मृतकशरीर । लाश ।—
वृत्तिः, (स्त्री०) धैर्ययुक्त व्यवहार या आचरण ।
पृथिवी की गति ।—व्युदासः, (पु०) विज ।

क्षिद्रः (पु०) १ रोग । २ सूर्य । ३ सींग ।

क्षिप (धा० उभय) [किन्तु जब इसके पूर्व अभि, प्रति,
और अति जोड़े जाते हैं तब ही यह परस्मै० होती
है ।] परस्मै० क्षिपति—क्षिपते, क्षिप्यति, क्षिप्त
१ फेंकना । पटकना । भेजना । रवाना करना ।
छोड़ना । मुक्त कर देना । रखना । स्थापित करना ।
३ लगाना । अर्पित करना । ४ फेंक देना । ५
छीन लेना । नाश कर डालना । ६ खारिज कर
देना । अस्वीकृत कर देना । घृणा करना । ७

अपमान करना । गाली देना । तिरस्कार करना ।
फटकारना ।

क्षिपणं (न०) १ भेजना । पठाना । फैकना । २ गाली
गलोज ।

क्षिपणि (स्त्री०) १ डोंड । २ जाल । ३
क्षिपणी हथियार ।

क्षिपणिः (स्त्री०) आघात । चोट । प्रहार ।

क्षिपण्युः (पु०) १ शरीर । २ वसन्तऋतु ।

क्षिपा (स्त्री०) १ रात । २ पड़ौनी । पटक । गिराव ।

क्षिप्त (व० कृ०) १ फेंका हुआ । झितराया हुआ । घुमाया
हुआ । पटका हुआ । २ त्यागा हुआ । ३ अनादृत
४ स्थापित । ५ पागल । सिढ़ी । — कुक्कुरः, (पु०)
पागल कुत्ता । —चित्त, (वि०) चञ्चलचित्त (वि०)
विकल । —देह, (वि०) तोड़ा हुआ । पसरा हुआ ।

क्षिप्तं (न०) गोली का घाव ।

क्षितिः (स्त्री०) कृतार्थ । पहेली का अर्थ ।

क्षिप्र (वि०) [तुलनात्मक—क्षेपीयस् । क्षेपिष्ठ] फुर्तीला ।
—कारिन्, (वि०) फुर्तीला ।

क्षिप्रं (ध्वज्य०) तेजी से । फुर्ती से । जल्दी से ।

क्षिया (स्त्री०) १ हानि । नाश । बरबादी । हास । २
असम्भ्यता । आचारभेद ।

क्षीजनम् (न०) पोले नरकुलों में से निकली हुई सर-
सराहट की आवाज़ ।

क्षीण (वि०) १ दुबला । पतला । लटा हुआ । घटा हुआ ।

खर्च कर डाला गया । २ नाज़ुक । पतला । ३

स्वल्प । थोड़ा । कम । ४ बर्नहीन । गरीब । ५

शक्तिहीन । निर्बल । —चन्द्रः, (पु०) कृष्णपक्ष

का चन्द्रमा । —धन, (वि०) निर्धन । गरीब ।

—पाप, (वि०) पाप का फल भोगने के पीछे

उस पाप से रहित । —पुण्य, (वि०) जिसका

सञ्चित पुण्यफल पूरा हो चुका हो और जिसे

अगले जन्म के लिये पुनः पुण्यफल सञ्चय करना

चाहिये । —मध्य, (वि०) पतली कमर वाला ।

—वासिन्, (वि०) खड़हर में रहने वाला । —

विक्रान्त, (वि०) साहस या शक्ति से रहित । —

वृत्ति, (वि०) आजीविका से रहित ।

क्षीव, क्षोष वेखो क्षीव, क्षीव ।

क्षीरं (न०) १ दूध । २ किसी वृक्ष का दूध

क्षीरः (पु०) १ जैसा रस । ३ जल । —अदः,

(पु०) बच्चा । शिशु । —अग्निः, (पु०)

दूध का समुद्र । —अग्निजः, (पु०) १ चन्द्रमा ।

२ मोली । —अग्निजा, —अग्निजनया, (स्त्री०)

लक्ष्मी । —आहः, (पु०) सनौवर का वृक्ष । —

उदः, (पु०) दूध का समुद्र । —ऊर्मिः, (स्त्री०)

दूध के समुद्र की लहर । —ओदनः, (पु०)

दूध में उबले हुए चावल । —कण्ठः, (पु०)

बच्चा । शिशु । —जं, (न०) जमौआ दूध । जमा

हुआ दूध । —तुमः, (पु०) अश्वत्थ वृक्ष । बरगद

का पेड़ । —धात्री, (स्त्री०) दूध पिलाने वाली दासी ।

—धिः, —निधिः, (पु०) दूध का समुद्र । —

धेनुः, (स्त्री०) दुधार गाय । —जीरं, (न०)

१ पानी और दूध । २ दूध सहसा जल । ३ धोल-

मेल । मिलावट । —पः, (पु०) दूध पीने वाला

बच्चा । —वारिः, —वारिधिः, (पु०) दूध का

समुद्र । —विकृतिः, जमा हुआ दूध । —वृदाः,

(पु०) न्यग्रोध, उदुम्बर, अश्वत्थ और मधूक

नाम के वृक्ष । —शरः, (पु०) १ मलाई । २ दूध का

आग या फेन । —समुद्रः, (पु०) दूध का समुद्र ।

—सारः, (पु०) मक्खन । —हिमालीरः, (पु०)

दूध का फेन ।

क्षीरिका (स्त्री०) खीर । दूध से बना खाद्य पदार्थ ।

क्षीरिन् (वि०) दुधार । दूध देने वाला ।

क्षीव (धा० परस्मै०) [क्षीवति, क्षीव्यति] १ नशा

में होना । मदिरा पान करना । २ थूकना । सुँह

से निकासना ।

क्षीव (वि०) उत्तेजित । नशे में चूर ।

क्षु (धा० परस्मै०) [क्षीति, क्षुत] १ क्षीकना । २

खाँसना । खखारना ।

क्षुण्ण (व० कृ०) १ कुचला हुआ । कटा हुआ । २

अभ्यस्त । अनुगत । ३ चूर्ण किया हुआ ।

—मनस् (वि०) परचात्ताप करने वाला ।

क्षुत् (स्त्री०)

क्षुत (न०)

क्षुता (स्त्री०)

क्षीक ।

क्षुद् (धा० उभय०) [क्षुण्ति, क्षुते, क्षुण्ण]

१ कुचलना । पैरों से रूंधना । पटकना ।

कुचल डालना । पीस डालना । २ हिलना । उत्तेजित होना ।

लुद्र (वि०) १ बिल्कुल छोटा । छोटा । टिंगना । २ ओछा । कमीना । दुष्ट । नीच । ३ उद्दण्ड । ४ निष्ठुर । ५ शरीर । ६ कंजूस ।

लुद्रल (वि०) मिहीन । छोटा । (पशुओं और रोगों के लिये इस शब्द का प्रयोग विशेष रूप से होता है ।)

लुद्रा (स्त्री०) १ मधुमक्षिका । २ कर्कशा स्त्री । ३ लंजी औरत । ४ वेश्या । रंडी ।—अञ्जनम्, (न०) रोग विशेष में न्यवहार किये जाने वाला सुमा ।—अंत्रः, (पु०) हृदय के भीतर का छोटासा रन्ध्र ।—उल्लूकः, (पु०) उल्लू ।—कम्बुः, (पु०) छोटा शङ्ख ।—कुष्ठं, (न०) एक प्रकार की हल्की कोढ़ ।—घण्टिका, (स्त्री०) १ घुंघरू । रौंता । २ बजनी करधनी ।—चन्दनम्, (न०) लाल-चन्दन की लकड़ी ।—जन्तुः, (पु०) कोई भी लुद्र जीव ।—दंशिका, (स्त्री०) डाँस । गोमक्षिका ।—बुद्धि, (वि०) ओछी बुद्धि का । कमीना ।—रसः, (पु०) शहद ।—रोगः, (पु०) मामूली बीमारी । आयुर्वेद में इस प्रकार की ४४ बीमारियाँ गिनायी गयी हैं ।—शङ्खः, (पु०) छोटा घोंघा ।—सुवर्णः, (न०) खोटा या हल्का सोना ।

लुध् (धा० पर०) [लुध्यति, लुधित] भूखा होना । भूख लगना ।

लुध् } (स्त्री०) भूख ।—आर्तः,—आविष्ट,
लुधा } (वि०) भूख से पीड़ित ।—तामः,
(वि०) भूखे रहते रहते दुबला हो जाना ।—
पिपासितः, (वि०) भूखा प्यासा ।—निवृत्तिः,
(स्त्री०) भूख का दूर होना । पेट भरना ।

लुधालु (वि०) भूखा ।

लुधित (वि०) भूखा ।

लुपः (पु०) काड़ी । काढ़ ।

लुभ् (धा० आत्म०) [लोभते, लुभ्यति, लुभ्नाति, लुभित—लुब्ध] १ काँपना । थरथराना । उत्तेजित होना । विकल होना । २ अस्थिर होना । ठोकर खाना ।

लुभित (वि०) १ काँपता हुआ । व्याकुल । २ भयभीत । ३ कुद ।

लुब्ध (वि०) १ उत्तेजित । विकल । २ शबदाया हुआ । ३ भयभीत ।

लुब्धः (पु०) १ मथानी । स्त्रीमैथुन का विधान विशेष ।

लुमा (स्त्री०) अलसी । एक प्रकार का सन ।

लुर् (धा० परस्मै०) [लुरति, लुरित] १ काटना । खरोचना । २ हल से खेत में रेखाएँ सी खींचना । रेखा खींचना ।

लुरः (पु०) १ छुरा । अस्तुरा । २ छुरेलुमा शरपल । ३ गौ का छुर । घोड़े का सुम । ४ तीर ।—कर्मन्, (न०)—क्रिया, (स्त्री०) हजामत ।—चतुष्टयं, (न०) हजामत के लिये आवश्यक चार वस्तुएँ ।—धानं,—भाण्डम्, (न०) उस्तरे का धर । नाऊ की पेटी ।—धारः, (वि०) छुरे की तरह पैना ।—प्रः, (पु०) १ घोड़े के सुम के आकार की नोंक वाला तीर । २ कुदाली । फावड़ी ।—मर्दिन्,—मुशिडन्, (पु०) नाई । हज्जाम ।

लुरिका, लुरी (स्त्री०) १ चक्क । छुरी । कटार । २ छोटा अस्तुरा ।

लुरिणी (स्त्री०) हज्जाम की पत्नी । नाईन । नाउन ।

लुरिन् (पु०) हज्जाम । नाऊ । नाई ।

लुल्ल (वि०) छोटा । कम । स्वल्प ।

लुल्लक (वि०) १ थोड़ा । छोटा । विहीन । २ नीच । पापी । ३ तुच्छ । ४ निर्धन । ६ दुष्ट । कलुषित हृदय का । युवा ।

क्षेत्र (न०) १ खेत । २ स्थावर सम्पत्ति । भूमि । ३ स्थान । प्रान्त । गोदाम । ४ तीर्थस्थान । ५ चारों ओर से घेरा हुआ चौगान । ६ उर्वरा भूमि । जल-खेड़ा जमीन । ७ उत्पत्तिस्थान । ८ भार्या । ९ शरीर । १० मन । ११ घर । कसबा । १२ क्षेत्र । रेखागणित की एक शङ्ख । [जैसे त्रिभुज] । १३ अङ्कित क्षेत्र । चित्र ।—अधिदेवता, (स्त्री०) किसी पवित्र स्थल का अधिष्ठाता या रक्षक देवता ।—आजीवः, (पु०)—करः, (पु०) किसान । खेतिहर ।—गणितं, (न०) क्षेत्ररेखा । गणित ।—गत (वि०) रेखा-गणित सम्बन्धी या भूमि की नापजोख सम्बन्धी ।

—ज, (वि०) १ क्षेत्रोत्पन्न । २ शरीरोत्पन्न । - जः, (पु०) १२ प्रकार के पुत्रों में से एक । नियोग द्वारा उत्पन्न पुत्र ।—जात, (वि०) दूसरे की भार्या में उत्पन्न किया हुआ पुत्र ।—ज्ञ, (वि०) १ स्थलों का जानकार । २ चतुर । दक्ष ।—ज्ञः, (पु०) १ जीवात्मा । २ परमात्मा । ३ अधर्मी । दुराचारी मनमौजी । ४ किसान ।—पतिः, (पु०) जमीन-दार ।—पदं, (पु०) किसी देवता के उद्देश्य से उत्सर्ग किया हुआ पवित्र स्थल ।—पालः, (पु०) १ खेत का रखैया या रखवाला । २ देवता विशेष जो खेत की रखवाली करता है । ३ शिव जी की उपाधि ।—फलं, (न०) खेत की लंबाई चौड़ाई का माप ।—भक्तिः, (स्त्री०) खेत का विभाग ।—भूमिः, (स्त्री०) भूमि जिसमें खेती की जाती है ।—विट्, (वि०) क्षेत्रज्ञ । (पु०) १ किसान । २ आध्यात्मिक ज्ञान सम्पन्न विद्वान् । ३ जीवात्मा ।—स्थ, (वि०) पवित्र स्थल में रहने वाला ।

क्षेत्रिक (वि०) [स्त्री०—क्षेत्रिकी] क्षेत्र सम्बन्धी ।

क्षेत्रिकः (पु०) १ किसान । २ जोता ।

क्षेत्रिन् (पु०) १ कृषक । २ (नाममात्र का) जोता । ३ जीवात्मा । ४ परमात्मा ।

क्षेत्रिय (वि०) १ खेत सम्बन्धी । २ असाध्य ।

क्षेत्रियम् (न०) १ आन्तरिक रोग । २ चरागाह । गोचरभूमि ।

क्षेत्रियः (पु०) लम्पट । व्यभिचारी ।

क्षेपः (पु०) १ उछालना । फेंकना । पटकना । धूमना । अवयवों का चालन । २ फेंक । पटक । ३ भेजना । रवाना करना । ४ दे पटकना । ५ भङ्ग करना । (नियम) तोड़ना । ६ व्यतीत कर डालना । ७ विलम्ब । दीर्घसूत्रता । ८ तिरस्कार अपशब्द । ९ अपमान । अप्रतिष्ठा । १० अभिमान । घमण्ड । ११ गुलदस्ता ।

क्षेपक (वि०) १ फेंकने वाला । भेजने वाला । २ मिलावटी । बीच में छुसेड़ा हुआ । ३ अपमान-कारक । गालीगलौज वाला ।

क्षेपकः (पु०) मिलावटी या बनावटी भाग । किसी ग्रन्थ का वह अंश जो मूलग्रन्थकार का न हो कर

अन्य किसी ने मूलग्रन्थकार के नाम से स्वयं बना कर ग्रन्थ में जोड़ दिया हो । पुस्तक में ऊपर से मिलाया हुआ पाठ ।

क्षेपणम् (न०) १ फेंकना । डालना । भेजना । बतलाना । २ व्यतीत करना । ३ छोड़ जाना । ४ गाली देना । ५ गुफना या गोफन नामक एक यंत्र जिसमें रख कर कङ्कण दूर तक फेंका जाता है ।

क्षेपणिः } (स्त्री०) १ डाँड़ । २ मछली पकड़ने का जाल । २ गोफ या गुफना जिससे कङ्कण दूर तक फेंके जाते हैं ।

क्षेम (वि०) १ सुरक्षित । प्रसन्न । २ सुखी । निरोग ।

क्षेमः (पु०) १ शान्ति । प्रसन्नता । चैन । सुख ।

क्षेमम् (न०) १ निरोगता । २ अनामय । निर्विघ्नता । रक्षा । ३ रक्षित । सुरक्षित । ४ जो वस्तु पास है उसका रक्षण । ५ मोक्ष । अनन्तसुख । (पु०) एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य ।—कर, (=क्षेमंकर) (वि०) शुभ । मङ्गलकारी ।

क्षेमिन् (वि०) [स्त्री०—क्षेमिणी] सुरक्षित । आनन्दित ।

क्षै (धा० परस्मै०) [क्षायति, क्षाम] बरबाद करना । दुर्बल होना । नष्ट करना ।

क्षैर्यं (न०) १ नाश । २ दुबलापन ।

क्षैत्रं (न०) १ खेतों का समूह । २ खेत ।

क्षैर्य (वि०) [स्त्री०—क्षैर्या] १ दुधार । दूध वाला । २ दूध सम्बन्धी ।

क्षोडः (पु०) हाथी बाँधने का खूँटा ।

क्षोणिः } (स्त्री०) १ भूमि । २ एक की संख्या ।

क्षोणी } (स्त्री०) १ भूमि । २ एक की संख्या ।

क्षोत् (पु०) मूसल । बड़ा । घन ।

क्षोदः (पु०) १ खुदाई । पिसाई । २ सिल या उखली । ३ रज । धूल । कण ।—क्षम्, (वि०) जाँच, अनुसन्धान या परीक्षा में ठहरने योग्य ।

क्षोदिमन् (पु०) सूक्ष्मता ।

क्षोभः (पु०) १ हिलाना । चलना । उछालना । २ भटका देना । ३ उत्तेजना । घबड़ाहट । उत्पात । उचंग ।

क्षोभणं (न०) उत्तेजना । भड़क ।

क्षोभणः (पु०) कामदेव के पाँच वाश्यों में से एक ।

लौमः (पु०) } अठारी। अटा।
लौमम् (न०) }

लौणिः (स्त्री०) १ भूमि। २ एक की संख्या।
लौणी } —प्राचीरः (पु०) समुद्र। —भुजः (पु०)
राजा। —भृत्, (पु०) पहाड़। पर्वत।

लौद्रं (न०) १ ओढ़ापन। २ ओढ़ापन। नीचता
३ शहद। मधु। ४ पानी। ५ रजकण। —जं,
(न०) मोम।

लौद्रः (पु०) चम्पा का वृक्ष।

लौद्रेयं (न०) मोम।

लौमं (न०) } १ रेशमी वस्त्र। बुना हुआ रेशम।

लौमः (पु०) } २ हवादार अटा या अठारी। ३
मकान का पिछवाड़ा। (न०) ४ अस्तर। लेनिन।
५ अलसी।

लौमी (पु०) सन। पटसन।

लौरं (न०) हजामत।

लौरिकः (पु०) हजाम। नाई।

ल्यु (ध० परस्मै) [द्यौति, द्यातु] पैनाना। तेज
करना।

लमा (स्त्री०) १ ज़मीन। २ एक की संख्या। —जः,
(पु०) मङ्गलग्रह। —पः, पतिः, —भुजः (पु०)
राजा। —भृत्, (पु०) राजा या पहाड़।

लमाय् (ध० आत्म०) [लमायते, लमायित]
हिलना। काँपना।

ल्विड् (धा० उभय०) [ल्वेडति-ल्वेडते, ल्वेड या
ल्वेडित] गुनगुनाना। गर्जना। सीटी बजाना।
गुराना। भनभनाना। बराना।

ल्विड् (ध० आत्म०) ल्विड् (धा० परस्मै०)
[ल्विद्यति, ल्वेडित, ल्विद्यण] १ भौंगना। २ (वृक्ष
का) दूध निकालना। मवाद का बहना। जब
इसमें प्र लगता है तब इसका अर्थ होता है भिन-
भिनाना, बरबराना।

ल्वेडः (पु०) १ आवाज़। शोर। ज़हरीले जानवरों
का ज़हर। विष। ३ नसी। ४ त्याग।

ल्वेडा (स्त्री०) सिंहगर्जना। २ रतगुहार। रण में
योद्धाओं की ललकार। ३ बाँस। बल्ली।

ल्वेडितम् (न०) सिंहनाद।

ल्वेला (स्त्री०) खेल। क्रीड़ा। हँसी। मज़ाक।

ख

ख संस्कृत अथवा नागरी वर्णमाला का दूसरा व्यंजन
अथवा कवर्ग का दूसरा वर्ण। इसका उच्चारण
स्थान कण्ठ है। इसको स्पर्शवर्ण कहते हैं।

खः (पु०) सूर्य।

खम् (न०) १ आकाश। २ स्वर्ग। ३ इन्द्रिय। ४
नगर। ५ खेल। ६ शून्य। ७ अनुस्वार। ८ रन्ध्र।
दरार। पोलाई। ९ शरीर के छेद या विकास यथा
मुँह, कान, आँखें, नथुने, गुदा और इन्द्रिय। १०
घाव। ११ प्रसन्नता। आनन्द। १२ अवतक।
भोबल। १३ क्रिया। १४ ज्ञान। १५ ब्राह्मण।
—अटः (पु०) [खेऽटः] १ ग्रह। २ राहु।
—आपगा, (स्त्री०) राजा का नाम। —उल्काः,
(पु०) १ धूमकेतु। २ ग्रह। —उल्लुकाः, (पु०)
मङ्गलग्रह। —कामिनी, (स्त्री०) दुर्गा। —

कुन्तलः, (पु०) शिव का नाम। —गः, (पु०)
१ चिड़िया। पक्षी। २ पवन। ३ सूर्य। ४ ग्रह।
५ टिहू। बोटा। ६ देवता। ७ बाण। तीर।
—गाधिपः, (पु०) गकड़। —गान्तकः, (पु०)
बाज। गीध। —गाभिराम, (पु०) शिव। —
गासनः, (पु०) १ उदयाचलपर्वत। २
विष्णु। —गेन्द्रः, —गेश्वरः, (पु०) गरुड़
की उपाधियाँ। —गवती, (स्त्री०) पृथिवी। —
गस्थानम्, (न०) १ वृक्ष का कोटर या खोहर।
२ घोंसला। —गङ्गा, (स्त्री०) आकाशगङ्गा। —
गतिः, (स्त्री०) उड़ान। —गमः, (पु०) पक्षी।
—गोलः, (पु०) आकाशमण्डल। —गोलविद्या,
(स्त्री०) ज्योतिर्विद्या। —चमसः, (पु०) चन्द्रमा।
—चरः, (पु०) [इसके खचर, और खेचर,

दो रूप होते हैं] १ पत्नी । २ सूर्य । ३ बादल ।
४ हवा । ५ राक्षस ।—चरी (खचरी, खेचरी)
(स्त्री०) १ उड़ने वाली अप्सरा । २ दुर्गादेवी की
उपाधि ।—जलं, (न०) ओस । वर्षा का जल
कोहर । कुहासा ।—उद्योतिस्, (पु०) जुगुन ।
—तमालः, (पु०) १ बादल । २ हुआ ।—
द्योतः, (पु०) १ जुगुन । २ सूर्य ।—द्योतनः,
(पु०) सूर्य ।—धूपः, (पु०) अग्निबाण ।
—परागः, (पु०) अन्वकार ।—पुष्पं, (न०)
आकाश का फूल । [इस शब्द का प्रयोग उस
समय किया जाता है, जब असम्भवता दिखलानी
होती है ।]

निम्न श्लोक में चार असम्भवताएँ प्रदर्शित की गयी हैं

वृगवृषांनचि स्वातः शशशृङ्गवसुधरः ।
एव वनध्यायुतो यासि खपुष्पकृतशेखरः ॥

—सुभाषित ।

—भं, (न०) ग्रह ।—भ्रान्तिः, (पु०) स्वेनपत्नी ।
—मणिः, (पु०) सूर्य ।—मीलनं, (न०) औघाधी ।
थकावट ।—मूर्तिः, (पु०) शिवजी का नाम ।
—वारि, (न०) वृष्टिजल । ओस ।—वाष्पः, (पु०)
वर्षा । कोहरा । कोहासा ।—शय, या खेशय,
(वि०) आकाश में सोने वाला या रहने वाला ।
—श्वासः, (पु०) हवा । पवन ।—समुत्थः,—
संभव, (वि०) आकाशोत्पन्न ।—सिन्धुः, (पु०)
चन्द्रमा ।—स्तनी, (स्त्री०) धरती । जमीन ।—
स्फटिकः, (न०) सूर्यकान्त या चन्द्रकान्त मणि ।
—हर, (वि०) जिसका भाजक शून्य हो ।

खक्खट (वि०) सञ्चल । ठोस ।

खक्खटः (पु०) खडिया मिट्टी ।

खंकरः } (पु०) अलक । लट । काकुल ।
खङ्करः }

खच् (धा० परस्मै०) [खचति, खच्नाति, खचित]
१ प्रकट होना । सामने आना । २ पुनर्जन्म होना ।
३ पवित्र करना । (उभय०) बाँधना । जड़ना ।
लपेटना ।

खचित (वि०) १ जड़ा हुआ । भरा हुआ । मिला
हुआ । २ गड़ा हुआ । गड़बड़ करना । ३ जड़ा
हुआ ।

खज् (धा० परस्मै०) [खजति, खजित] मथना ।
गड़बड़ करना । घालमेल करना ।

खजः } (पु०) मथानी । मथने की लकड़ी
खजकः } विशेष ।

खजपम् (न०) घी । घृत ।

खजाकः (पु०) पत्नी । चिड़िया ।

खजाजिका (स्त्री०) कलड़ी । चमचा ।

खज् } (धा० परस्मै०) [खजति] तंग करना ।
खज् } लंगड़ा कर चलना । रुक जाना ।

खज् } (वि०) लंगड़ा । रुका हुआ ।—खटः,
खज् } (पु०) १ खेल । २ खज्जन पत्नी ।

खज्जनः } (पु०) खज्जन पत्नी की जाति विशेष ।
खज्जनः }

खज्जनम् } (न०) लंगड़ी चाल । लंगड़ा कर चलने
खज्जनम् } की चाल ।

खज्जना, खज्जना } (स्त्री०) खज्जन पत्नी की
खज्जनिका, खज्जनिका } जाति विशेष ।

खज्जरीटः, खज्जरीटः }
खज्जटकः, खज्जटकः } (पु०) खज्जन पत्नी ।
खज्जलेखः, खज्जलेखः }

खटः (पु०) १ कफ । २ अंधा रूप । ३ टोंकी । ४

हल । ५ धास ।—कटाहकः, (पु०) पीकदान ।

—खादकः, (पु०) १ गीदड़ । शृगाल । २ काक ।
कौआ । ३ जन्तु । ४ शीशे का पात्र ।

खटकः (पु०) १ सगाई कराने का धंधा करने

वाला । २ अधमुँहा हाथ । [विशेष परिस्थिति ।

खटकामुखं (न०) गोली चलाने के समय हाथ की

खटिका (स्त्री०) १ खडिया । २ कान का बाहिरी भाग ।

खटिकिका } (स्त्री०) खडकी ।

खटिकिका }
खटिकी }

खटिनी } (स्त्री०) खडी । खडिया मिट्टी ।
खटी }

खट्टन (वि०) बौने आकार का । कदाकार ।

खट्टनः (पु०) बौना । कदाकार मनुष्य । [धास ।

खट्टा (स्त्री०) १ खाट । चारपाई । २ एक प्रकार की

खट्टिः (पु०, स्त्री०) अर्थी । विद्वान ।

खट्टिकः (पु०) १ खटिक । खटीक । चिड़ीमार ।
बहेलिया । शिकारी । २ कसाई ।

खट्टेरक (वि०) ठिंगना । कदाकार ।

खट्वा (स्त्री०) १ खाट । चारपाई । सेज । पलका । २ हिंडोला । झूला । झूलन खटोला ।—अङ्गिनः, (पु०) १ लकड़ी या डंडा जिसकी मूँठ में खोपड़ी जड़ी हो । यह शिव जी का हथियार समझा जाता है और उनके अनुयायी गुँसाई साधु उसे अपने पास रखते हैं । २ दिलीप राजा का दूसरा नाम ।—अंगधर, —अंगभृत्, (पु०) शिव जी की उपाधियाँ ।—आप्तुत, —आरूढ, (वि०) १ नीच । पापी । २ परित्यक्त । दुष्ट । ३ मूढ़ । मूर्ख ।

खट्वाका } (स्त्री०) खटोला । छोटी खाट ।
खट्टिका }
खडः (पु०) तोड़ना । विभाजित करना ।
खडिका } (स्त्री०) खड़िया चाक । मिट्टी ।
खडी }

खड्डं (न०) लोहा ।
खड्डः (पु०) १ तलवार । २ गैड़े का सींग । २ गैड़ा ।—आघातः, (पु०) तलवार का घाव ।—आधरः, (पु०) म्यान । परतला ।—अभिधं, (न०) मैसे का मांस ।—आह्वः, (पु०) गैड़ा ।—कोशः, (पु०) म्यान । परतला ।—धरः, (पु०) तलवार चलाने वाला योद्धा ।—धेनुः, —धेनुका, (स्त्री०) १ छोटी तलवार । २ गैड़े की मादा ।—पत्रं, (न०) तलवार की धार ।—पिधानं, —पिधानकम्, (न०) म्यान । परतला ।—पुत्रिका, (स्त्री०) छुरी । चाकू । छोटी तलवार ।—प्रहारः, (पु०) तलवार का आघात ।—फलं, (न०) तलवार की धार ।

खड्गवत् (वि०) तलवार से सज्जित ।
खड्गिकः (पु०) १ तलवार से लड़ने वाला योद्धा । तलवारबंद सिपाही । २ कसाई । बूचड़ ।
खड्गिन् (वि०) [स्त्री०—खड्गिनी] तलवारबंद । (पु०) गैड़ा ।

खड्गीकं (न०) हंसिया । दराँती ।

खंड } (धा० परस्मै०) [खण्डयति, खण्डित] १
खण्ड् } तोड़ना । काटना । चीरना । फाड़ना । टुकड़े
टुकड़े कर डालना । चूर्ण कर डालना । २ भली भाँति
हरा देना । नाश करना । ३ हताश करना ।

विफल करना । ४ गड़बड़ करना । उपद्रव
मचाना । ५ उगना । धोखा देना ।

खंडं, खण्डम् (न०) १ ऐड़ा । नक़ब । दरार ।
खंडः, खण्डः (पु०) १ साँस । सन्धि । छूट । हड्डी
का टूटना । २ टुकड़ा । भाग । हिस्सा । अंश ।
३ अध्याय । सर्ग । ४ समूह । समुदाय । मुंड ।
(पु०) १ खाँड़ । चीनी । २ रत्न का दोष ।
(न०) १ एक प्रकार का निमक । २ एक प्रकार
का गन्ना ।—अभ्रं, (न०) १ बिखरे हुए बादल ।
२ भोगविलास में लगा हुआ । दाँतों से काटने का
निशान ।—आलिः, (स्त्री०) १ तेल का एक
नाँप । २ सरोवर या झील । ३ स्त्री जिसका पति
नमकहरामी के लिये अपराधी ठहराया गया हो ।
—कथा, (स्त्री०) छोटी कहानी ।—काव्यं,
(न०) छोटा पद्यात्मक ग्रन्थ जैसे मेघदूत ।
खण्डकाव्य की परिभाषा साहित्यदर्पणकार ने
यह दी है ।—

खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्यैकदेशानुसारि च ॥

—जः, (पु०) एक प्रकार की चीनी ।—धारा,
(स्त्री०) कैची । कतरनी । कतली ।—परशुः,
(पु०) १ शिव जी की उपाधि । २ परशुराम
जी की उपाधि ।—पर्शुः, १ शिव । २ परशु-
राम । ३ राहु । ४ हाथी, जिसका
एक दाँत टूटा हो ।—पाल, (पु०) हलवाई ।—
प्रलयः, (पु०) छोटी प्रलय जिसमें स्वर्ग के नीचे
के समस्त लोक नष्ट हो जाते हैं ।—मोदकः,
(पु०) ओले । लड्डू ।—लवणं, (न०) निमक
विशेष ।—विकारः, (पु०) खाँड़ । चीनी ।—
शर्करा, (स्त्री०) बूरा । मिश्री ।—शी ना, (स्त्री०)
पुंश्चली स्त्री । छिनाल औरत । व्यभिचारिणी
पत्नी ।

खंडकः (पु०) } टुकड़ा । अंश । भाग ।
खण्डकः (पु०) } (पु०) १ शक्कर ।
खंडकं, खण्डकम् (न०) } खाँड़ । २ नखरहित ।
खंडन, खण्डन (वि०) १ तोड़ा हुआ । टूटा हुआ ।
कटा हुआ । विभाजित । २ नष्ट किया हुआ ।
खंडनं, खण्डनम् (न०) १ तोड़ना । टुकड़े टुकड़े
करना । काट डालना । २ काटना । चोटिल
करना । घायल करना । ३ हताश करना । व्यर्थ

कर देना । ४ बाधा डालना । ५ धोखा देना ।
६ किसी की वलीलों को काट देना । ७ विप्लव ।
विरोध । ८ विसर्जन । बरखास्तरी ।

खंडलः, खगडलः (पु०) } टुकड़ा ।
खंडलं, खगडलम् (न०) }

खंडशस्त्र, खगडशस्त्र (अव्यया०) टुकड़े टुकड़े ।
टुकड़ों में ।

खंडित, खगडित (व० कृ०) १ कटा हुआ ।
टुकड़े टुकड़े किया हुआ । २ नष्ट किया हुआ । ३
(बहस में) हराया हुआ । (बहस में) उत्तर
दिया हुआ । ४ विप्लव किया हुआ । बिगड़ा
हुआ ।—विग्रह, (वि०) अंगहीन । अंगभग ।
—वृत्त, (वि०) असदाचारी । दुराचारी । भ्रष्ट ।

खंडिता } (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति अन्यत्र
खगडिता } रात बिताता हो । आठ मुख्य नायिकाओं
में से एक ।

खंडिनी, खगडिनी (स्त्री०) पृथिवी ।

खंदिकाः, खगडिकाः (बहुवचन) मुना हुआ या
तला हुआ अनाज ।

खदिरः (पु०) १ कथा का वृक्ष । २ इन्द्र । ३
चन्द्रमा ।

खन्- (धा० उ०) [खनति-खनते, खात, खन्यते, या
खायते] खोदना ।

खनकः (पु०) १ खोदने वाला । २ सेंध फोड़ने
वाला । ३ भूसा । ४ खाना ।

खननम् (न०) १ खुदाई । २ गाड़ना ।

खनिः } (स्त्री०) खान ।
खनो }

खनित्रं (न०) फाँवड़ा । कुदाली ।

खपुरः (पु०) सुपाड़ी का पेड़ ।

खर (वि०) मृदु, रत्न, द्रव का उल्टा । १ कड़ा ।
रूखा । ठोस । २ तेज़ । तीक्ष्ण । कठोर । ३
खट्टा । तीता । ४ सघन । घना । ५ हानिकारक ।
अवगुणकारी । ६ तेज़ धार वाला । ७ गरम ।
उष्ण । ८ निष्ठुर । नृशंस ।—अंशुः,—करः,—
रश्मिः, (पु०) सूर्य ।—कुटी, (स्त्री०) १ गधों
का अस्तबल । २ नाई की दूकान ।—कोणः,—
क्राणः, (पु०) तीतर विशेष ।—कोमलः, (पु०)

ज्येष्ठमास ।—गृहं,—गेहं, (न०) गधों के लिये
अस्तबल ।—दण्डम्, (न०) कमल ।—ध्वंसिन्,
(पु०) श्रीराम जी की उपाधि ।—नादः, (पु०)
गधा की रेंक ।—नालः, (पु०) कमल ।—पात्रं,
(न०) लोहे का बर्तन ।—पालः, (पु०)
काठ का बर्तन ।—प्रियः, (पु०) कबूतर ।—
यानं, (न०) गधे की गाड़ी यानी गाड़ी जिसमें
गधे जुते हों ।—शब्दः, (पु०) गधे का रेंकना । २
समुद्री गिड़ । लघ्वः ।—शाला, (स्त्री०) गधों
का अस्तबल ।—स्वरा, (स्त्री०) जंगली चमेली ।

खरः (पु०) १ गधा । २ खच्चर । ३ काक । ४ एक
राक्षस का नाम जो रावण का भाई था ।

खरिका (स्त्री०) पिसी हुई मुश्क या कस्तूरी ।

खरिधम्—खरिन्धम् } (वि०) गधों का दूध
खरिधय—खरिन्धय } पीने वाला ।

खरी (स्त्री०) गधों ।—जघः, (पु०) शिवजी की
उपाधि ।—घृषः, (पु०) गधा । मूर्ख ।

खरु (वि०) १ सफेद । २ मूर्ख । मूढ़ । ३ निर्दयी ।
४ वर्जित वस्तुओं का अभिलाषी ।

खरुः (पु०) १ घोड़ा । २ दाँत । ३ घमंड । ४ काम-
देव । ५ शिव । (स्त्री०) वह लड़की जो अपना
पति स्वयं पसंद करे ।

खर्ज (धा० परस्मै०) [खर्जति, खर्जित] १ कट
देना । वैधेन करना । २ चराना । थराना । चूँचूँ
करना ।

खर्जनम् (न०) खरोचना । झीलना ।

खर्जिका (स्त्री०) १ जननेद्रिय सम्बन्धी रोग विशेष ।
२ चाट । चसका ।

खर्जुः (स्त्री०) १ खरोचन । झीलन । २ खजूर का
पेड़ । ३ धतूरे का भाड़ ।

खर्जुरं (न०) १ चाँदी । २ हरताल ।

खर्जुः (स्त्री०) खान । खजली ।

खर्जुरं (न०) १ चाँदी । २ हरताल ।

खर्जूरः (पु०) १ खजूर का वृक्ष । २ बिच्छू ।

खर्जुरी (स्त्री०) खजूर का पेड़ ।

खर्परः (पु०) १ चोर । २ गुंडा । ठग । ३ खप्पर ।
खोपड़ी । ४ खपरा । ५ छाता ।

खर्परिका, खर्परी (स्त्री०) एक प्रकार का सुमाँ ।

खर्व—खर्व (कि०) [खर्वति, खर्वित] १ जाना ।
हरकत करना । २ अकड़ना ।

खर्व—खर्वः (वि०) १ अंगभंग । अपूर्ण । २
ठिगना । कदाकार । नीचा । छोटा । (कद में)

खर्वः—खर्वः (पु०) } दस अरब की संख्या ।
खर्व—खर्व (न०) } — शाख, (वि०)
ठिगना । कदाकार । योना ।

खर्वटः (पु०) } १ हाट । पैठ । २ पहाड़ की तराई
खर्वटम् (न०) } का ग्राम ।

खल् (धा० परस्मै०) [खलति, खलित] १ हिलना
काँपना । २ एकत्र करना । इकट्ठा करना ।

खलः (पु०) } १ खलिहान । २ ज़मीन । स्थल । ३
खलम् (न०) } स्थान । जगह । ४ धूल का ढेर ।
५ तलछट । नीचे बैठी हुई कीचड़ । (पु०)
दुष्ट मनुष्य ।—उक्तिः, (स्त्री०) गाली ।—
धाम्यं, (न०) खलिहान ।—पूः, (पु० स्त्री०)
मेहतर । बटोरने वाला ।—मूर्तिः, (पु०) पारा ।
संसर्गः, (पु०) दुष्ट की सङ्गति ।

खलकः (पु०) बड़ा ।

खलति (वि०) गंजा ।

खलतिकः (पु०) पहाड़ ।

खलिः } (स्त्री०) तेल की तलछट । कीट । काइट ।
खली } खरी ।

खलिनः—खलीनः (पु०) } लगाम । रास ।
खलिनम्—खलीनम् (न०) }

खलिनी (स्त्री०) खलिहानों का समूह ।

खलीकारः (पु०) } १ चोटिल करना । घायल
खलीकृतिः (स्त्री०) } करना । २ बुरा व्यवहार करना ।
३ दुष्टता । उत्पात ।

खलु (अव्यया०) १ निश्चय, वास्तविकता, और
यथार्थता बोधक अव्यय । २ मित्रत । आर्जु ।
प्रार्थना । विनय । ३ अनुसंधान । ४ वर्जन ।
मनाई । निषेध । ५ हेतु । [कभी कभी यह
वाक्यालङ्कार की तरह भी व्यवहार में लाया
जाता है ।

खलुज् (पु०) अंधियारा । अंधेरा ।

खलूरिका (स्त्री०) परेड मैदान जहाँ सैनिक लोग
क्रवाह्द करें तथा अस्त्रप्रयोग का अभ्यास करें ।

खल्या (स्त्री०) खलिहानों का समूह ।

खलुः (पु०) १ खरल जिसमें डाल कर कोई वस्तु
कूटी जाय । चक्की । २ खड्वा । गढ़ा । ३ चमड़ा ।
४ चातक पत्ती । ५ मसक ।

खल्लिका (स्त्री०) कढ़ाई ।

खल्लिट } (वि०) गंजा ।
खल्लोट }

खल्लाट (वि०) गंजा ।

खशः (बहुवचन० पु०) उत्तर भारत में पहाड़ी एक
देश और उस देश के अधिवासी ।

खशीरः (बहुवचन० पु०) देश विशेष और उसके
अधिवासी ।

खपः (पु०) १ क्रोध । २ निष्ठुरता । नृशंसता ।

खसः (पु०) १ खाल । खुजली । २ देश विशेष ।

खसूचिः (पु० स्त्री०) निन्दाव्यञ्जक शब्द यथा
“ वैयाकरणखसूचिः ” । वैयाकरण जो व्याकरण
को भूल गया हो । व्याकरण को भली भाँति न
जानने वाला ।

खस्खसः (पु०) पोस्ते के दाने ।—रसः, (पु०)
अफीम । अहिफेन ।

खाजिकः (पु०) मुना हुआ अनाज ।

खाद्—खात् (अव्यया०) गला साफ करते समय
का शब्द । खखार ।

खाटः (पु०) }
खाटा (स्त्री०) } अर्थी । टिकड़ी जिस पर रख
खाटिका (स्त्री०) } कर मुर्दे को शमशान पर ले
जाते हैं ।
खाट्री (स्त्री०) }

खांडवः—खाण्डवः (पु०) मिश्री । कंद ।

खांडवम्—खाण्डवम् (न०) इन्द्र के एक वन का
नाम जो कुरुक्षेत्र के समीप था और जिसे अर्जुन
और श्रीकृष्ण की सहायता से अग्निदेव ने भस्म
किया था ।—प्रस्थः (पु०) एक नगर का नाम ।

खांडविकः—खाण्डविकः } (पु०) हलवाई ।
खांडिकः—खाण्डिकः }

खात (वि०) १ खुदा हुआ । २ फटा हुआ । टूटा
फूटा ।

खातम् (न०) १ गढ़ा । गर्त । २ रन्ध्र । सूराख ।
छेद । ३ खनन । खुदाई । ४ तालाब जो खंभा
अधिक और चौड़ा कम हो ।—भूः, (स्त्री०)
नगर के या किले के चारों ओर जल से भरी खाई ।

खातकः (पु०) १ खोदने वाला। बेलदार। २ कटुआ : कर्जदार।
 खातकं (न०) खाई। गढ़ा। गर्त।
 खाता (स्त्री०) कृत्रिम तालाब।
 खातिः (स्त्री०) खुदाई।
 खात्रं (न०) १ फटुआ। कुदाली। २ लंबा अधिक और चौड़ा कम तालाब। ३ डोरा। ४ वन। जंगल। ५ भय।
 खाद् (धा० परस्मै०) [खादति, खादित] खाना। भक्षण करना। शिकार करना। काटना।
 खादक (वि०) [स्त्री०—खादिका] खाने वाला। निघटाने वाला।
 खादकः (पु०) कर्जदार। ऋणी। कटुआ।
 खादनं (न०) १ खाना। चबाना। २ भोज्य पदार्थ।
 खादनः (पु०) दाँत। दन्त। [उपद्रवी।
 खादुक (वि०) [स्त्री०—खादुकी] उत्पाती।
 खाद्यम् (न०) भोज्यपदार्थ। खाना।
 खादिर (वि०) [स्त्री—खादिरी,] खदिर यानी कथा के वृक्ष से बना हुआ या तत् वृक्ष सम्बन्धी।
 खानं (न०) १ खुदाई। २ चोट।—उदकः, (पु०) नारियल का वृक्ष।
 खानक (वि०) [स्त्री०—खानिका] खोदने वाला। बेलदार। खान खोदने वाला।
 खानिः (स्त्री०) खानि।
 खानिकं (न०) } कूप का छेद। कूप की दरार
 खानिकः (स्त्री०) } या सन्धि।
 खानिलः (पु०) घर में सेंध लगाने वाला चोर।
 खार } (स्त्री०) १२ मन ३२ सेर की अनाज
 खारिः खारी } की तौल विशेष।
 खार्वा (स्त्री०) ब्रेता युग।
 खिखिरः—खिद्धिरः (पु०) १ लौमड़ी। २ चारपाई मचवा या पाया।
 खिद् (धा० परस्मै०) [खिदति, खिन्न] ठोंकना। दबाना। दुःख देना। सताना। (आत्मने०) [खिद्यते, खिद्यते, खिद्यते,] सन्तप्त होना। पीड़ित होना। थक जाना। सुस्त या उदास हो जाना। डराना। भय दिखाना।

खिदिरः (पु०) १ संन्यासी। ककीर। २ मोहताज। भिखमंगा। ३ चन्द्रमा। [पीडित।
 खिन्न (व० कृ०) सन्तप्त। उदास। शमशील। दुःखी।
 खिलं (न०) } १ बंजर जमीन का टुकड़ा। मरु-
 खिलः (पु०) } भूमि का एक खत्त। २ अतिरिक्त भजन जो मूलभजनसंग्रह में न आया हो। ३ त्रुटिपूर्क। परिशिष्ट भाग। ४ संग्रह। ५ शून्यता। खोखलापन।
 खिंगाहः—खुङ्गाहः (पु०) काला टटुआ या घोड़ा।
 खुरः (पु०) १ (गाय आदि का) खुर। २ सुगन्ध द्रव्य विशेष। ३ छुरा। अस्तुरा। ४ खाट का पाया।—आघातः,—क्षेपः, (पु०) जात।—गास,—गास, (वि०) चपटी नाक वाला।—पद्मी, (स्त्री०) घोड़े के पैरों के चिन्ह।—प्रः, (पु०) तीर जिसकी नोंक या फल अर्द्ध चन्द्राकार हो।
 खुरली (स्त्री०) सैनिक कवायद या अस्त्र-चालन का अभ्यास।
 खुरालकः (पु०) लोहे का तीर।
 खुरालिकः (पु०) १ छुरा रखने का धर या केस। २ लोहे का तीर। ३ तकिया।
 खुल्ल (वि०) छोटा। कम। नीच। ओछा।—तातः, (पु०) पिता का छोटा भाई। छोटा चाचा।
 खेचर देखो खचर।
 खेटः (पु०) १ गाँव। २ कफ। ३ बलराम का मूसल। ४ घोड़ा।
 खेटितानः } (पु०) वैतालिक जो अपने मालिक को गा
 खेटितालः } बजा कर जगावे।
 खेटिन् (पु०) मनमौजी। अष्ट।
 खेदः (पु०) १ उदासी। शिथिलता। सुस्ती। २ थकावट। ३ पीड़ा। शोक।
 खेयं (न०) गढ़ा। खाई।
 खेयः (पु०) पुल।
 खेल (धा० परस्मै०) [खेलति, खेलित] १ हिलाना। इधर उधर घूमना। २ काँपना। खेलना।
 खेल (वि०) खिलाड़ी। कामी। कामुक।
 खेलनं (न०) १ हिलाना डुलना। २ खेल। अमोद-प्रमोद। ३ अभिनय।

खेला (स्त्री०) क्रीड़ा । खेल ।
 खेलिः (स्त्री०) १ क्रीड़ा । खेल । २ तीर ।
 खोटिः (स्त्री०) चालाक या नटखट स्त्री ।
 खोड (वि०) लंगड़ा । लूना ।
 खोर } (वि०) लंगड़ा । लूना ।
 खोल }
 खोलकः (पु०) १ पुरवा । गाँव । २ बाँवी । ३ सुपाडी
 का छिलका । ४ डेगची विशेष ।
 खोलिः (पु०) तरकस ।
 ख्या (धा० परस्मै०) [ख्याति, ख्याल] कहना ।
 बतलाना । बखान करना । [ख्यायते] प्रसिद्ध होना
 [(निजन्त) ख्यापयति-ख्यापयते] १ प्रसिद्ध

करना । ३ उद्घोषित करना । २ कहना । वर्णन
 करना । तारीफ करना । प्रशंसा करना ।

ख्यात (व० कृ०) १ जाना हुआ । २ उक्त । कहा
 हुआ । ३ प्रसिद्ध । मशहूर । बदनाम ।—गर्हण,
 (वि०) बदनाम ।

ख्यातिः (स्त्री०) १ प्रसिद्धि । शोहरत । गौरव ।
 कीर्ति । २ संज्ञा । पदवी । उपाधि । ३ वर्णन ।
 ४ प्रशंसा । ५ (दर्शन में) ज्ञान ।

ख्यापनम् (न०) १ वर्णन । प्रकाशन । व्यक्तकरण ।
 प्रकट करना । २ प्रसिद्ध करना । कीर्ति
 फैलाना ।

ग

ग संस्कृत या नागरी वर्णमाला का तीसरा व्यंजन ।
 कवर्ग का तीसरा वर्ण । इसका उच्चारणस्थान
 कण्ठ्य है । इसको स्पर्शवर्ण कहते हैं ।

ग (वि०) केवल समास में पीछे जाता है और वहाँ इसका
 अर्थ होता है कौन, कौन जाता है, हिलने वाला ।
 जाने वाला । होने वाला । ठहरने वाला । रहने
 वाला । मैथुन करने वाला ।

गं (न०) गीत । भजन ।

गः (पु०) १ गन्धर्व । गणेश जी । इन्द्रः शास्त्र में
 गुरु अक्षर के लिये चिन्ह ।

गगनम् } (न०) [किसी किसी के मतानुसार
 गगणम्] गगणम् रूप अष्टल है ।

फाल्गुने गगने केने पारवतिपुच्छन्ति वर्षराः ।

अर्थात् फाल्गुन, गगन और फेन शब्दों में
 जङ्गली लोग न की जगह या लगाते हैं] १
 आकाश । अन्तरिक्ष । २ शून्य । सिफर । ३ स्वर्ग ।
 —अग्रं, (न०) सब से ऊँचे ऊर्ध्वलोक ।—अंगना,
 (स्त्री०) अप्सरा । परी । किन्नरी ।—अध्वगः,
 (पु०) १ सूर्य । २ ग्रह । ३ स्वर्गीय जीव ।—
 अम्बु, (न०) वृष्टिजल ।—उल्मुकः, (पु०)
 मङ्गलग्रह ।—कुसुमं,—पुष्पं, (न०) आकाश का

फूल (असम्भाव्य वस्तु) ।—गतिः, (पु०) १ देवता ।
 २ स्वर्गीय जीव । ३ ग्रह ।—चर, (गगनेचर भी)
 (वि०) आकाश में चलने वाला ।—चरः, (पु०)
 १ पक्षी । २ ग्रह । ३ स्वर्गीय आत्मा ।—ध्वजः,
 (पु०) १ सूर्य । २ बादल ।—सद्, (पु०)
 आकाशवासी या अन्तरिक्ष में बसने वाला । (पु०)
 स्वर्गीय जीव ।—सिन्धु, (स्त्री०) गङ्गाजी की
 उपाधि ।—स्थ, —स्थित, (वि०) आकाश में
 टिका हुआ ।—स्पर्शनः, (पु०) १ पवन । हवा ।
 २ अष्ट मास्तों में से एक का नाम ।

गंगा } (स्त्री०) भारतवर्ष की पुरातनोपा पसिद्ध
 गङ्गा } नदी ।—अम्बु,—अम्भस्, (न०) १ गङ्गाजल ।
 २ आश्विन मास की वृद्धि का निर्मल जल ।—
 ध्रुवतारः, (पु०) १ गङ्गाजी का भूलोक में
 आगमन । २ तीर्थस्थलविशेष ।—उद्भेदः, (पु०)
 गङ्गाजी के निकलने का स्थान । गङ्गात्री ।—क्षेत्रं,
 (न०) गङ्गाजी और उसके दोनों सतों से दो दो
 कोस का स्थान ।—जः (पु०) २ कार्तिकेय ।—
 दत्तः, (पु०) भीष्मपितामह ।—द्वारं, (न०)
 वह स्थान जहाँ गङ्गाजी पहाड़ छोड़ मैदान में
 आती है । हरिद्वार ।—धरः, (पु०) १ शिवजी ।
 २ समुद्र ।—पुत्रः, (पु०) १ भीष्म । २ कार्तिकेय ।

३ दोगला । वर्षासङ्कर विशेष । इस जाति के पुरुष सुदृढ़ ढोया करते हैं । ४ गङ्गा के घाटों पर बैठ कर यात्रियों से पुजवाने वाले । घाटिया ।—भूत्. (पु०)
१ शिव । २ समुद्र ।—यात्रा. (स्त्री०) १ गङ्गाजी को जाना । २ मरणासन्न पुरुष को मरने के लिये गङ्गातट पर लेजाना ।—सागरः, (पु०) वह स्थान, जहाँ गङ्गाजी समुद्र में गिरती है ।—सुतः, (पु०) १ भोष्म । २ कार्तिकेय ।—हुदः, (पु०) एक तीर्थ का नाम ।

गंगाका, गङ्गाका }
गङ्गाका, गङ्गाका } (स्त्री०) श्री गङ्गाजी ।
गङ्गिका, गङ्गिका }

गंगोलः, गङ्गोलः (पु०) रत्न विशेष जिसे गोमेद भी कहते हैं ।

गङ्गः (पु०) १ वृक्ष । २ अङ्गगणित का पारिभाषिक शब्द विशेष ।

गङ्ग (धा० परस्मै०) [गङ्गति. गङ्गति] १ शोर करना । गर्जना । २ नद्ये में होना । बबड़ा जाना ।

गङ्गः (पु०) १ हाथी । २ आठ की संख्या । ३ लंबाई नापने का माप विशेष जो दो हाथ का होता है ।

“साधारणभारंगुहया त्रिगङ्गुलकी गङ्गः ।”

४ राक्षस जिसे शिव जी ने मारा था ।—अग्रणी, (पु०) १ सर्वोत्तम हाथी । २ ऐरावत की उपाधि ।—अधिपतिः, (पु०) गजराज ।—अव्यक्तः, (पु०) हाथियों का दारोगा ।—अपसदः, (पु०) दुष्ट हाथी ।—अशनः, (पु०) अश्वत्थ वृक्ष ।—अशनः, (न०) कमल की जड़ ।—अरिः, (पु०) १ सिंह । २ गङ्ग नामी राक्षस के मारने वाले शिवजी ।—आजीवः, (पु०) महावत ।—आननः, आस्यः, (पु०) गणेश जी ।—आयुर्वदः, (पु०) हाथियों की चिकित्सा का शास्त्र ।—आरोहः, (पु०) महावत ।—आह्वं, —आह्वयम्, (न०) हस्तिनापुर नगर का नाम ।—इन्द्रः, (पु०) १ गजराज । २ ऐरावत ।—इन्द्रकर्णः, (पु०) शिव जी ।—कूर्माशिनः, (पु०) गरुड़ जी ।—गतिः, (स्त्री०) १ हाथी जैसी चाल । मदमाती चाल । २ गङ्ग-गामनी स्त्री ।—गामिनी, (स्त्री०) हाथी जैसी

चाल से चलनेवाली स्त्री ।—दंष्ट्र, —दंष्ट्रस, (वि०) हाथी जितना लंबा या ऊँचा । दन्तः, (पु०) १ हाथी का दाँत ।—२ गणेश जी । ३ हाथी-दाँत का । ४ खूँटी । कील या क्रैकेट (जो दीवाल पर लटका दिया जाता है) ।—दन्तमयः, (वि०) हाथी दाँत का बना हुआ ।—दानः, (न०) १ हाथी का भव । २ हाथी का दान ।—नासा, (स्त्री०) हाथी की कनपटी । पतिः, (पु०) १ हाथी का स्वामी । २ बड़ा ऊँचा गजराज । ३ सर्वोत्तम हाथी ।—पुङ्गवः, (पु०) गजराज ।—पुरः, (न०) हस्तिनापुर नगर ।—बंधनी, —बंधिनी, (स्त्री०) गजशाला ।—भद्रकः, (पु०) अश्वत्थ वृक्ष ।—मण्डनम्, (न०) हाथी के माथे पर बनाई हुई रङ्ग बिरङ्गी रेखाएँ । हाथी का शृङ्गार ।—मण्डलिका, —मण्डली, (स्त्री०) हाथियों की मण्डली ।—माचलः, (पु०) सिंह ।—मुक्ता (स्त्री०)—मौक्तिकः, (न०) गङ्ग के मस्तक से निकलने वाला मोती ।—मुखः,—वक्त्रः,—चदनः (पु०) गणेश जी ।—मोहनः (पु०) सिंह । शेर ।—यूथं, (न०) हाथियों का झुंड ।—योधिन्, (वि०) हाथी की पीठ पर बैठ कर लड़ने वाला ।—राजः, (पु०) हाथियों में सर्वोत्कृष्ट हाथी ।—वजः, (पु०) हाथियों की एक टोली ।—साह्वयम्, (न०) हस्तिनापुर ।—स्नानम्, (न०) हाथी का स्नान । (आलं०) व्यर्थ का काम । जिस प्रकार हाथी स्नान कर पुनः सूँढ़ में भर सूखी मिट्टी अपने ऊपर डाल कर स्नान व्यर्थ कर डालता है; उसी प्रकार कोई काम करके पुनः वही खराब कर डाला जाय, तो उस कार्य को गङ्गस्नानवत् कार्य कहते हैं ।

गङ्गता (स्त्री०) हाथियों का समूह ।

गङ्गवत् (वि०) १ हाथी की तरह । २ हाथी रखने-वाला ।

गङ्ग } (धा० परस्मै०) [गङ्गति] विशेष रूप
गङ्गे } से शब्द करना ।

गङ्गः } १ खान । २ खजाना । ३ गोशाला । ४
गङ्गजः } गङ्ग । अनाज की मण्डी । ५ अवज्ञा । तिर-

स्कार ।—जा, (स्त्री०) १ भौंपड़ी । मदैया ।
 छप्पर । २ मदिरा की दूकान । ३ मदिरापात्र ।
 गंजन } (वि०) १ अत्यधिक वृणित । लज्जित किया
 गञ्जन } हुआ । २ विजयो ।
 गंजा } (स्त्री०) १ भौंपड़ी । २ कलारी । शराब की
 गञ्जा } दूकान । ३ पानपात्र ।
 गंजिका } (स्त्री०) कलारी । शराब की दूकान ।
 गञ्जिका }
 गङ् (धा० परस्मै०) [गङ्ति, गङ्तिन] १ चुआना ।
 २ खींचना । रस निकालना ।
 गङ्गः (पु०) १ पर्दा । टही । २ हाता । ३ खाई । ४
 रोकथाम । अटकाव । ५ सुनहले रङ्ग की मङ्गली ।
 —उत्थं,—देशजं,—लघणं, (न०) सँधा
 निमक ।
 गङ्गयतः }
 गङ्गयन्तः } (पु०) बादल । मेघ ।
 गङ्गयितुः }
 गङ्गिः (न०) १ बछड़ा । २ सुस्त बैल ।
 गङ्गु (वि०) कुबड़ा ।
 गङ्गुः (पु०) १ कूबड़ । २ बर्फी । भाला । साँग । ३
 निरर्थक वस्तु ।
 गङ्गुक (पु०) १ झारी । लोटा । जलपात्र । २ अंगूठी ।
 गङ्गुर }
 गङ्गुल } (वि०) कुबड़ा । झुका हुआ ।
 गङ्गेरः (पु०) बादल । मेघ ।
 गङ्गोलः (पु०) १ मुँह भर । २ कच्ची खाँड ।
 गङ्गुरः }
 गङ्गुलः } (पु०) भेड़ । मेघ ।
 गङ्गुरिका (स्त्री०) १ भेड़ों की कतार । २ अविच्छन्न
 रेखा । धार ।
 गङ्गुकः (पु०) सोने का गङ्गा या पात्र विशेष ।
 गण (धा० उभय०) [गणयति-गङ्गयते, गणित]
 १ गिनना । गणना करना । गिन्ती करना । २
 जोड़ना । हिसाब लगाना । ३ तख्तीना करना ।
 अन्दाज़ा लगाना । ४ श्रेणीवार रखना । ५ ख्याल
 करना । ६ लगाना । (दोष) ७ ध्यान देना ।
 गणः (पु०) १ कुण्ड । गिरोह । समूह । हेड़ ।
 दोली । दल । २ श्रेणी । कक्षा । ३ नौकरों की
 टोली । ४ शिव जी के गण । ५ एक उद्देश्य के

लिये बनी हुई मनुष्यों की संस्था । ६ एक सम्प्र-
 दाय । ७ सैनिकों की एक छोटी टोली । ८ संख्या ।
 ९ पाद (कविता में) । १० व्याकरण में एक श्रेणी
 को धातुएँ यथा भ्वादिगण । ११ गणेश जी का
 नाम ।—अग्रणी, (पु०) गणेश जी ।—अचलः,
 (पु०) कैलास पर्वत का नाम ।—अधिपः,—
 अधिपतिः, (पु०) १ शिव जी । २ गणेश जी ।
 ३ सेनापति । गुरु । यूथप या यूथपति ।—अन्नं,
 (न०) कई आदमियों के खाने योग्य बनाया हुआ
 भोज्य पदार्थ ।—अभ्यन्तर, (वि०) दल या
 समुदाय में से एक ।—अभ्यन्तरः, (पु०)
 किसी धार्मिक संस्था का नेता या मुखिया ।
 —ईशः, (पु०) १ गणेश, —ईशानः,—
 ईश्वरः, (पु०) १ गणेश । २ शिव ।—उत्साहः,
 (पु०) गैडा ।—कारः, (पु०) १ श्रेणीबद्ध करने
 वाला । २ भीष्म का उपाधि ।—चक्रकं, (न०)
 धर्मात्माओं की पंक्ति या ज्योनार ।—तिथि,
 (वि०) दल या टोली बनाने वाला ।—देवताः,
 (पु०) देव समूह । अमरकोशकार ने इनकी
 गणना यह बतलायी हैः—

आदित्यविश्ववसवस्तुषिता आर्यराजिनः ।

नवाराजिकराध्याश्च रुद्राश्च गणनेवराः ॥

अर्थात् १२ आदित्य, १० विश्वदेव, ८ वसु, ४१
 वायु, १२ साध्य, ११ रुद्र, ३६ तुषित, ६४
 अभास्वा, २२० महाराजिक ।—द्रव्यं, (न०)
 सार्वजनिक सम्पत्ति ।—धरः, (पु०) १ एक
 श्रेणी या संख्या का मुखिया । २ पाठशालीय अध्या-
 पक ।—नाथः,—नायकः, (पु०) १ गणेश जी ।
 २ शिव जी ।—नायिका, (स्त्री०) दुर्गादेवी ।—
 पः,—पतिः,—(पु०) शिव जी अथवा गणेशजी ।
 —पीठकं, (न०) वस्त्रस्थल । छाती ।—पुङ्गवः,
 (पु०) १ जाति का या श्रेणी का मुखिया । (बहु-
 वचन) एक देश और उसके अधिवासो ।—पूर्वः,
 (पु०) किसी जाति या श्रेणी का मुखिया ।—
 भर्तृ, (पु०) १ शिव जी का नाम । २ गणेश जी
 का नाम । ३ श्रेणी का मुखिया ।—भोजनं, (न०)
 पंगति । ज्योनार । ओज ।—राज्यं, (न०)

दक्षिण की एक रियासत का नाम ।—हासः, हासकः, (पु०) सुगन्ध द्रव्य विशेष ।
 गणक (वि०) [स्त्री०—गणिका] बड़ा मूल्य देकर खरीदा हुआ ।
 गणकः (पु०) १ अङ्कगणित का जाननेवाला । २ ज्योतिषी । दैवज्ञ ।
 गणनी (स्त्री०) ज्योतिषी की स्त्री ।
 गणनं (न०) १ गिनती । हिसाब किताब । २ जोड़ । ३ कल्पना । विचार । ४ विश्वास ।
 गणना (स्त्री०) गिनती । किताब ।—महाभाजः (पु०) अर्थसचिव । [क्रम से ।
 गणशस्त्र (अव्यय०) समूह में । टोली में । श्रेणी के गणिः (स्त्री०) गिनती । गणना । [पुष्प विशेष । गणिका (स्त्री०) १ रण्डी । वेश्या । २ हथिनी । ३ गणित (वि०) १ गिना हुआ । संख्या डाला हुआ । जोड़ा घटाया हुआ । २ ध्यान दिया हुआ । गणितं (न०) १ गणना । गिनती । २ अङ्कगणित, जिसके अन्तर्गत पाटीगणित या व्यक्तगणित, बीजगणित, और रेखागणित सम्मिलित हैं । ३ जोड़ ।
 गणितिन् (पु०) १ जिसने गणना की हो । २ अङ्कगणित का जानने वाला ।
 गणिन् (वि०) [स्त्री०—गणिनी,] किसी का मुँड या दल रखनेवाला । (पु०) अध्यापक । शिक्षक ।
 गणोय (वि०) गिनती करने योग्य । गिनने योग्य ।
 गणेरुः (पु०) कर्णिकार वृत्त । (स्त्री०) १ रंड़ी । २ हथिनी ।
 गणेरुका (स्त्री०) १ कुटनी । २ चाकरानी । दासी ।
 गण्डः } (पु०) १ गाल । २ हाथी की कनपुटी ।
 गण्डः } ३ बुदबुद । बबुला । बुल्ला । ४ फोड़ा । गिल्दी । गुमड़ा । मुँहासा । सूजन । ५ बंधा । गरदन की बीमारी विशेष । ६ गाँठ । जोड़ । ७ चिन्ह । दाग । धब्बा । ८ गैड़ा । ९ मूत्रस्थली । १० वीर । योद्धा । ११ घोड़े के साज का अंश विशेष ।—अंगः, (पु०) गैड़ा ।—उपधानं, (न०) तकिया । मसनद ।—कुसुमं, (न०) हाथी का मूँद ।—कूपः, (पु०) पर्वतशिखर पर का कूप या कुर्छा ।—देशः,—प्रदेशः (पु०) गाल ।—

फलकं, (न०) चौड़ा गाल ।—मालः, (पु०) —माला, (स्त्री०) रोग विशेष । वह रोग जिसमें गरदन में माला की तरह गिल्टियाँ निकलती हैं । —मूर्ख, वि०) वज्रमूर्ख । महामूर्ख ।—शिला, (स्त्री०) १ एक बड़ी भारी चट्टान जिसे भूडोल या तूफान ने नीचे गिरा दिया हो । २ माथा ।—साहिया, (स्त्री०) गरडकी नदी का नाम । स्थलं, (न०)—स्थली, (स्त्री०) १ गाल । २ हाथी की कनपुटी ।

गंडकः } (पु०) १ गैड़ा । २ रोक । अड़चन ।
 गण्डकः } बाधा । ३ गाँठ । ग्रन्थि । ४ चिन्ह । धब्बा । दाग । ५ फोड़ा । गुमड़ा । गुमड़ी । मुँहासा । ६ वियोग । विरह । ७ चार कौड़ी के मूल्य का सिक्का विशेष ।—वती, (स्त्री०) गरडकी नदी ।

गंडका } (स्त्री०) डला । डली । भेला ।
 गण्डका } भेली । लौदा । चक्का । डोंका । ठेला ।
 गंडकी } (स्त्री०) एक नदी का नाम जो गङ्गा में गण्डकी } गिरती है ।—पुत्रः, (पु०),—शिला, (स्त्री०) शालग्राम शिला ।

गंडलिन् } (पु०) शिव जी का नाम ।
 गण्डलिन् }
 गंडिः } (पु०) पेड़ का तना या धड़ । जड़ से ले
 गण्डिः } कर उस स्थान तक का भाग जहाँ से डालियों का निकलना आरम्भ होता है ।

गंडिका } (स्त्री०) पत्थर विशेष ।
 गण्डिका }
 गंडीरः } (पु०) शूरवीर ।
 गण्डीरः }

गण्डूः } (पु० स्त्री०) १ तकिया । ३ जोड़ । गाँठ ।
 गण्डूः } ग्रन्थि ।—पदः, (पु०) कीट विशेष ।

गण्डूषः, गण्डूषः } (स्त्री०) १ मुँह भर । २ अञ्जली
 गण्डूषा, गण्डूषा } भर । ३ हाथी की सूँड़ की नोक ।

गण्डोलः } (पु०) १ कच्ची शक्कर । २ मुँहभर ।
 गण्डोलः }

गत (व० कृ० (गम् का) १ गया हुआ । सदैव के लिये गया हुआ । २ बीता हुआ । गुजरा हुआ । ३ मृत । मरा हुआ । ४ आया हुआ । पहुँचा हुआ । ५ अवस्थित । स्थापित । अव-

लम्बित । ६ गिरा हुआ । कम किया हुआ । ७ सम्बन्धी । विषय का ।—अन्तः, (वि०) अन्धा । नेत्रहीन ।—अध्वस्तः, १ वह जिसने अपनी यात्रा पूरी कर डाली हो । २ अभिज्ञ । अवगत । (स्त्री०) चतुर्दशी युक्त अमावस्या ।—अनुगतः, (न०) किसी रीति या रस का अनुयायी या माननेवाला ।—अनुगतिकः, (वि०) अर्थानुयायी ।—अन्तः, (वि०) वह जिसकी समाप्ति आ पहुँची हो ।—अर्थः, (वि०) १ निर्धन । गरीब । २ अर्थहीन ।—अस्तु, —जोचित,—प्राण, (वि०) मृत । मरा हुआ ।—आधि, (वि०) निश्चित । प्रसन्न ।—आयुसः, (वि०) बुढ़ा । अपाह्व । अशक्त ।—आर्तवा, (स्त्री०) जञ्चा ।—उत्साहः, (वि०) शिथिल । उदास । उत्साहहीन ।—कलमषः, (वि०) पाप या दोष से मुक्त । पवित्र ।—कृमः, (वि०) तरोताजा । चेतन, (वि०) मूर्छित । बेहोश ।—दिनं (अव्यया०) बीता हुआ कल ।—प्रत्यागतः, (वि०) जाकर लौटा हुआ ।—प्रभः, (वि०) मंदा । धुंधला । कुम्हलाया हुआ ।—प्राणः, (वि०) मृत । मरा हुआ ।—प्रायः, (वि०) लगभग गुजरा हुआ । मरा हुआ ।—भर्तृका, (स्त्री०) विधवा । राई । शोषित भर्तृका । वह स्त्री जिसका पति विदेश गया हो ।—लक्ष्मीकः, (वि०) प्रभाहीन । कमक रहित । धुंधला । कुम्हलाया हुआ ।—वयस्कः, (वि०) बुढ़ा ।—वर्षः, (पु०)—वर्ष (न०) बीता हुआ वर्ष ।—वैरः, (वि०) मेल मिलाप किये हुए । सन्धि किये हुए ।—व्यथः, (वि०) पीड़ा रहित ।—सत्वः, (वि०) १ मृत । मरा हुआ । २ नीच । ओछा ।—सन्नः, (वि०) हाथी जिसके मद न चूता हो ।—स्पृहः, (वि०) साँसारिक अनुराग से रहित ।

: (स्त्री०) १ चाल । हरकत । गमन । २ प्रवेश । ३ समाई । जमाह । विस्तार । ४ पथ । मार्ग । रास्ता । ५ गमन । पहुँचना । प्राप्ति । ६ फल । परिणाम । ७ हालत । दशा । परिस्थिति । ८ उपाय । जरिया । ९ पहुँच । शरण स्थान । बचाव । ११ उत्पत्ति स्थान । निकास । १२ मार्ग । पथ ।

१३ जलूस । यात्रा । १४ कर्मफल । नतीजा । १५ भाग्य । प्रारब्ध । १६ नक्षत्र पथ । १७ नक्षत्र की चाल विशेष । १८ नासूर । घाव । भगंदर । १९ ज्ञान । बुद्धि । २० पुनर्जन्म । २१ आयु की भिन्न दशाएँ । यथा—शैशव, यौवन, बुढ़ापा आदि ।—अनुसरः, (पु०) दूसरे के पीछे चलना । दूसरे के मार्ग पर गमन करना ।—भङ्गः, (पु०) निवृत्ति । निवारण । प्रतिबन्ध ।—हीनः, (वि०) बेबस । असहाय । अनाथ ।

गत्वर (वि०) [स्त्री०—गत्वरी] १ चर । जङ्गम । चलने-वाला । २ नरवर । नाशवान ।

गद् (धा० परस्मै०) [गदति, गदित] १ ऐसे बोलना जिससे समझ पड़े । २ गणना करना ।

गदं (न०) एक प्रकार का रोग ।

गदः (पु०) १ भाषण । वक्तृता । २ वाक्य । ३ रोग । ४ गर्ज । गड़गड़ाहट ।—अग्रदौ, (द्विवचन) अश्विनीकुमार ।—अग्रणी, (स्त्री०) सब रोगों का सरदार अर्थात् क्षय रोग ।—अम्बरः, (पु०) बादल ।—अरातिः, (पु०) दवा ।

गदयितु (वि०) १ बातुनिया । बकवादी । २ कामी । लम्पट ।

गदयितुः (पु०) कामदेव का नाम ।

गदा (स्त्री०) काठ या लोहे का अस्त्र विशेष ।—अग्रजः, (पु०) श्रीकृष्ण का नाम ।—अग्रपाणिः, (वि०) दहिने हाथ में गदा लेनेवाला ।—धरः, (पु०) विष्णु भगवान की उपाधि ।—भृत्, (पु०) गदा से युद्ध करने वाला । (पु०) विष्णु भगवान की उपाधि ।—युद्धं, (न०) गदा की लड़ाई ।—हस्तः, (वि०) गदास्त्र से सज्जित ।

गदिन (वि०) [स्त्री०—गदिनी,] १ गदा लिये हुए । २ रोगी । बीमार । (पु०) विष्णु की उपाधि ।

गद्गद् (वि०) हकला । रुक रुक कर बोलने वाला ।—स्वरः, (पु०) १ हकलाने की बोली । २ मैसा ।

गद्गदः (पु०) हकलाना । तुतलाना ।

गद्गदं (न०) हकला कर बोलना ।

गद्य (स० का कृ०) बोलने को । कहने को ।

गद्यं (न०) पद्य नहीं । वार्तिक । वह रचना जिसमें कविता या पद्य न हो ।

गद्याणकः }
 गद्यानकः } (पु०) १ घुंघची आरत्ती भर की तौल ।
 गद्यालकः }
 गन्तु } (वि०) [स्त्री०—गन्त्री,] १ जाने वाला ।
 गन्तु } २ स्त्री के साथ मैथुन करने वाला ।
 गन्त्री } (स्त्री०) बैलगाड़ी ।
 गन्त्री }
 गन्ध } (धा० आत्म०) [गन्धयते] १ वायल करना ।
 गन्ध } २ माँगना । ३ जाना ।
 गन्धः } (पु०) १ वृ० बास । २ सुगन्ध पदार्थ । ३
 गन्धः } गन्धक । ४ विसा हुआ चन्दन । ५ सम्बन्ध ।
 रिशता । पड़ोसी । ६ चमण्ड । अकड़ ।—अश्मजा,
 (स्त्री०) जंगली नीबू का वृक्ष ।—अश्मन्, (पु०)
 गन्धक ।—आखु, (पु०) छलुन्दर ।—आख्यः,
 (पु०) नारंगी का पेड़ ।—आख्यम्, (न०)
 चन्दन काष्ठ ।—इन्द्रियं, (न०) नाक । नासिका ।
 —इभः,—गजः,—द्विषः,—हस्तिन्, (पु०)
 सर्वोत्तम हाथी ।—उत्तमा, (स्त्री०) शराव ।
 मदिरा ।—ओतुः, (पु०) गन्धगोकुला । जीव-
 विशेष ।—कालिका,—कालो, (स्त्री०) वेद
 व्यासजी की माता का नाम ।—केलिका,—
 चेलिका, (स्त्री०) कस्तूरी । मुस्क ।—सी,
 (स्त्री०) नाक ।—धूलिः, (स्त्री०) कस्तूरी ।
 —नकुलः, (पु०) छलुन्दर ।—नालिका,—
 नाली, (स्त्री०) नाक । नासिका ।—
 निलया, (स्त्री०) एक प्रकार की चमेली ।—
 पः, (पु०) पितृगण विशेष ।—पलाशिका,
 (स्त्री०) हल्दी ।—पाष्णः, (पु०)
 गन्धक ।—पुष्पा, (स्त्री०) नील का पौधा ।
 —पूतना, (स्त्री०) बालग्रह विशेष ।—
 फली, (स्त्री०) १ प्रियङ्गुलता । २ चम्पा के वृक्ष
 की फली ।—वन्धुः, (पु०) आम का पेड़ ।
 —मादनः, (पु०) १ भौरा । २ गन्धक ।—मादनम्,
 (न०) मेरु पर्वत के पूर्व एक पर्वत जिसमें महक-
 दार अनेक वन हैं ।—मादनी, (स्त्री०) शराव ।
 —मादिनी, १ (स्त्री०) लाख । चपड़ा ।—
 मार्जारः, (पु०) मुस्कबिलाई ।—मुखा,—
 मूषिकः, (पु०)—मूषी, (स्त्री०) छलुंदर ।
 —मृगः, (पु०) १ मुस्कबिलाई । २ मुस्कहिरन ।

कस्तूरीमृग ।—मैथुनः, (पु०) सौँड़ । बैल ।
 —मोदनः, (पु०) गन्धक ।—मोहिनी, (स्त्री०)
 चंपा की कली ।—राजः, (पु०) चमेली ।—
 राजम्, (न०) चन्दन ।—लता, (स्त्री०)
 प्रियङ्गु की बेल ।—लोलुपा, (स्त्री०) भ्रमर ।
 मधुमक्षिका ।—वहः, (पु०) पवन । हवा ।—
 वहा, (स्त्री०) नासिका । नाक । वाहकः,
 (पु०) १ पवन । हवा । २ कस्तूरीमृग ।—
 वाही, (स्त्री०) नाक ।—विह्वलः, (पु०)
 गेहूँ ।—वृत्तः, (पु०) साल का पेड़ ।—व्याकुलः,
 (न०) कङ्कोल ।—शुण्डिनी, (स्त्री०) छलुंदरी ।
 —शेखरः, (पु०) मुस्क । कस्तूरी ।—सोमं,
 (न०) सफेद कमोदिनी ।

गंधकः } (पु०) गन्धक ।
 गन्धकः }
 गन्धनम् } (न०) १ अश्ववसाय । सततचेष्टा ।
 गन्धनम् } २ चोट । घाव । ३ प्राकट्य । प्रकाशन । ४
 सूचना । सङ्केत । इशारा ।

गन्धवती } (स्त्री०) १ भूमि । पृथिवी । २ शराव । ३
 गन्धवती } व्यास माता सत्यवती । ४ चमेली की
 जातियाँ ।

गन्धर्वः } (पु०) १ देवताओं के गवैया । २ गवैया ।
 गन्धर्वः } ३ घोड़ा । ४ मुस्कहिरन । कस्तूरीमृग ।
 ५ मृत्यु के बाद और जन्म के पूर्व की जीव की
 दशा । ६ काली कोयल ।—नगरं,—पुरं, (न०)
 गन्धर्वों की पुरी ।—राजः, (पु०) गन्धर्वों के
 राजा चित्ररथ ।—विद्या, (स्त्री०) सङ्गीत
 विद्या ।—विवाहः, (पु०) आठ प्रकार के विवाहों
 में से एक । इस प्रकार का विवाह युवक और
 युवती के पारस्परिक प्रेमबंधन पर ही निर्भर है ।
 युवक युवती को न तो अपने किसी सगे सम्बन्धी
 से अनुमति लेने की आवश्यकता पड़ती है और न
 कोई रीतिरिवाज अदा करने की जरूरत ही होती है ।
 —वेदः, (पु०) चार उपवेदों में से एक । यह
 सामवेद का उपवेद है ।—हस्तः, (पु०)—
 हस्तकः, (पु०) अंडी या रेड़ी का रूल ।

गन्धारः } (पु०) [बहुवचन] १ देश विशेष
 गन्धारः } और उसके अधिवासी । २ राग विशेष ।
 ३ सिन्दूर ।

गन्धाली } (स्त्री०) १ बहैया । २ सतत सुगन्ध
गन्धाली } देने वाला पदार्थ विशेष ।—गर्भः
(पु०) छोटी इलायची ।

गन्धालु } (वि०) सुवासित । सुगन्धित ।
गन्धालु }

गन्धिक } (वि०) १ सुगन्धियुक्त । २ अल्प परि-
गन्धिक } माण का ।

गन्धिकः } (पु०) १ गन्धी । इत्रफरोश । २ गन्धक ।
गन्धिकः }

गभस्ति (पु० स्त्री०) १ प्रकाश की किरण । २ चन्द्रमा
या सूर्य की किरण ।—करः,—पाणिः,—हस्तः,
(पु०) सूर्य ।

गभस्तिः (पु०) सूर्य । स्त्री । अग्निपत्नी स्वाहा की
उपाधि ।

गभस्तिमत् (पु०) सूर्य । (न०) पाताल के सप्त
विभागों में से एक ।

गभीर (वि०) १ गहन । गहरा । २ गुप्त । रहस्यमय ।
४ दुर्बोध । ५ गाढ़ा । सघन । घना ।—ग्राध्वन्,
(पु० न०) परब्रह्म ।—वेधः, (वि०) वेधकारी ।
गभीरिका (स्त्री०) बड़ा ढोल जिसमें बड़ा गंभीर
शब्द हो ।

गभोलिकः (पु०) गोल छोटा तर्किया ।

गम् (भा० परस्मै०) [गच्छति, गत (निजन्त)
गमयति । आत्म० जिगांसते] १ जाना । २
प्रस्थान करना । रवाना होना । ३ पहुँचना ।
समीपगमन । ४ गुजरना । व्यतीत होना । ५
होना ।

गम (वि०) [समास के अन्त में जोड़ा जाता है
जैसे “हृदयङ्गम” “पुरोगम” आदि और तब
इसका अर्थ होता है] जाते हुए । पहुँचते हुए ।
प्राप्त होते हुए ।—आगमः, (पु०) जाना आना ।

गमः (पु०) १ गमन । २ प्रस्थान । ३ आक्रमणकारी
का कूच । ४ मार्ग । रास्ता । ५ अविवेक । ६ कम
समझ पाना । ७ स्त्रीमैथुन । ८ चौपड़ का खेल ।

गमक (वि०) [स्त्री—गमिका] १ सूचक । सङ्केत-
कारी । स्मारक । २ विश्वासोत्पादक ।

गमनम् (न०) १ गमन । चाल । गति । २ समीप-
गमन । ३ आक्रमणकारी का कूच । ४ भोगना ।
५ प्राप्ति । उपलब्धि । ६ स्त्रीमैथुन ।

गमिन् (वि०) जाने वाला । जाने की इच्छा रखने
वाला । गमनेच्छु । (पु०) यात्री ।

गमनीय, गम्य (स० का० कृ०) १ समीप जाने
योग्य । २ बोधगम्य । सहज में समझने योग्य । ३
उपलब्धित । अन्तर्भुक्त । ध्वनित । तात्पर्य द्वारा
आगत । ४ उपयुक्त । वाञ्छनीय । योग्य । ५ मैथुन
के योग्य । ६ आरोग्य होने योग्य ।

गम्भारिका, गम्भारिका } (स्त्री०) एक वृक्ष का
गम्भारी, गम्भारी } नाम ।

गम्भीर, } (वि०) १ (हरके अर्थ में) गहरा । २
गम्भीर, } गम्भीर शब्द वाला (जैसे ढोल) । ३ गाढ़ा ।

सघन । घना (जैसे जंगल) । ४ प्रगाढ़ ।
अगाध । विचक्षण । ५ संगीत । गुरुतर । वास्त-
विक । दृढ़ । गुप्त । रहस्यमय । ७ दुरभिगम्य ।
कठिना से समझने योग्य ।—वेदिन्, (वि०)
विकल । बेचैन ।

गम्भीरः } (पु०) १ कमल । २ नीव । चकोतरा ।
गम्भीरः } विजौरा ।

गम्भीरा—गम्भीरा । } (स्त्री०) एक नदी का
गम्भीरिका—गम्भीरिका } नाम ।

गयः (पु०) १ गया प्रदेश और उसके निवासी । २
एक असुर का नाम ।

गया (स्त्री०) बिहार प्रान्त के एक नगर का नाम,
जहाँ सनातनधर्मी अत्यन्त प्राचीन काल से अपने
पितरों का उद्धार करने को जाते हैं ।

गर (वि०) [स्त्री०—गरी] १ निगलने योग्य ।
—अधिका, (स्त्री०) लाक्षा कीट । लाख या
लाल रंग जो लाक्षा या लाख से निकलता है ।—
झी, (स्त्री) मङ्गली विशेष ।—दं (वि०) ज़हर
देने वाला । विष खिलाने वाला ।—दं, (न०)
ज़हर । विष ।—व्रतः, (पु०) मयूर । मोर ।

गरः (पु०) १ पेय । शरबत । २ रोग । बीमारी ।
३ निगलना । लीलना ।

गरं (पु०) } १ ज़हर । विष । २ प्रतिपेधक । विष-
गरः (न०) } नाशक वस्तु । ज़हरमोहरा । (न०)
तर करना । भोगना ।

गरणां (न०) १ निगलने की क्रिया । २ झिड़काव ।
३ ज़हर । विष ।

गरभः (पु०) १ बच्चादात्री । गर्भाशय ।

गर्ल (न०) १ विष । हलाहल । जहर । २ साँप का
गर्लः (पु०) १ विष । घास का गट्टा ।—अरिः, (पु०)
पत्ता । हरे रंग की मणि विशेष ।

गरित् (वि०) विष मिला हुआ । विष दिया हुआ ।

गरिमन् (पु०) १ भार । गुरुता । २ महत्त्व । विशेष-
पता । गौरव । ३ उत्तमता । ४ शिवजी की अष्ट-
सिद्धियों में से एक जिसके अनुसार वे स्वेच्छापूर्वक
अपने शरीर को जितना चाहे उतना बढ़ा या भारी
बना सकते हैं । [महत्त्व पूर्ण ।

गरिष्ठ (वि०) १ सब से अधिक भारी । २ सर्वाधिक
गरीयस् (वि०) अपेक्षा कृत भारी । अपेक्षाकृत महत्त्व
पूर्ण ।

गरुडः (पु०) १ पक्षिराज । २ गरुडाकार भवन । ३
गरुड के आकार का व्यूह ।—अग्रजः, (पु०)
अरुण जो गरुड जी के बड़े भाई और सूर्य के
सारथी है ।—अङ्गः, (पु०) विष्णु का नाम ।
—अङ्कितम्,—अश्मन्,—ध्वजः, (पु०)
विष्णु की उपाधि ।—ग्रहः, (पु०) विशेष प्रकार
से युद्ध के लिये सेना को खड़ा करना ।

गरुत् (पु०) १ पक्षी का पर । २ भोजन करना ।
निगलना ।—योधिन्, (पु०) लवा । बटेर ।

गरुलः (पु०) पक्षिराज गरुड ।

गर्गः (पु०) १ ब्रह्मा के पुत्रों में से एक पुत्र । मुनि
विशेष । २ साँड़ । ३ केतुआ । (बहुवचन०) गर्ग
के वंशधर । गर्गगोत्री ।—स्त्रोतस्, (न०) एक
तीर्थ का नाम ।

गर्गरः (पु०) १ भँवर । २ बाजा विशेष । ३ मछली
विशेष । ४ मथानी ।

गर्गरी (स्त्री०) मथानी । गगरी ।

गर्गाटः (पु०) एक प्रकार की मछली ।

गर्ज (धा० परस्मै०) [गर्जति, गर्जयति—गर्जयते,
गर्जित] १ गर्जना । गुराणा । घुरघुराना । २
सिंहनाद करना । कड़कना ।

गर्जनं (न०) १ गर्ज । चिंवार । गदगदाहट । घुर-
घुराहट । २ रव । चीत्कार । शोरगुल । कोलाहल ।
३ रोष । क्रोध । ४ युद्ध । लड़ाई । ५ भर्त्सना ।
धिकार । फिटकार ।

गर्जः (पु०) १ हाथी की चिंवार । २ बादल की गद-
गदाहट ।

गर्जा (स्त्री०) } बादलों की गरजन ।
गर्जि (पु०) }

गर्जित् (वि०) गरजता हुआ । सिंहनाद करता हुआ ।

गर्जितम् (न०) सवसाता और चिंवारता हुआ हाथी ।

गर्त (न०) } पोल । छेद । गुफा । (पु०) १ कमर

गर्तः (पु०) } या कूल्हा का भाग विशेष । २
रोग विशेष । ३ त्रगर्त देश का प्रान्त विशेष ।—
आश्रयः, (पु०) चूहे की तरह भूमि में बिल
बना कर रहनेवाला जन्तु ।

गर्तिका (स्त्री०) जुलाहे का कारखाना ।

गर्द् (धा० परस्मै०) [गर्दति, गर्दयति—गर्दयते]
गरजना । रव करना ।

गर्दभं (न०) सफेद कुमेदिनी ।

गर्दभः (पु०) [स्त्री०—गर्दभी] १ गधा । २
गंध । बाल ।—अशङ्कः,—अशङ्कः, (पु०) १
वृक्ष विशेष । २ वृत्त ।—आह्वयं, (न०) सफेद
कमल ।—गदः, (पु०) चर्मरोग विशेष ।

गर्धः (पु०) १ कामना । इच्छा । उत्सुकता । २
लालचीपन । लालच ।

गर्धन् } (वि०) लालची । लोभी ।
गर्धित }

गर्धिन् (वि०) [स्त्री—गर्धिनी] १ अभिलाषी ।
इच्छुक । लालची । २ उत्सुकता पूर्वक अनुसरण ।

गर्भः (पु०) गर्भाशय । पेट । २ गर्भाशय की
फिल्ली । गर्भाधान । ३ गर्भाधान का समय ।
४ गर्भ का बच्चा । ५ बच्चा या पक्षिशवक । ६
भीतर का भाग । मध्यभाग । अभ्यन्तरीय भाग ।
७ आकाशोत्पन्न पदार्थ जैसे कोहासा । ओस ।
हिम । ८ प्रसूतिकागृह । ९ कोठे के भीतर की
कोठरी १० छेद । ११ अग्नि । १२ भोजन ।
१३ पनस-कंटक । कटहर का छिकला । १४ नदी
की भण्डारी ।—अङ्गः, (पु०) (गर्भेऽङ्गः भी
होता है) अभिनय के किसी दृश्य के अन्तर्गत
कोई दृश्य ।—अवकान्ति, (स्त्री०) गर्भस्थित
बालक के शरीर में जीव का पड़ना ।—अङ्गारम्,
(न०) १ गर्भस्थान । बच्चेदानी । २ जननस्थान ।

अन्तःपुरः । प्रसूतिकागृह । ४ मन्दिर में वह स्थान जहाँ मूर्ति स्थापित हो । गर्भमन्दिर ।—
 आधानं, (न०) १ गर्भस्थापन । २ संस्कार विशेष ।—आशयः, (पु०) गर्भस्थान । गर्भ की भित्तली ।—आस्त्रावः, (पु०) गर्भ का कच्ची अवस्था में गिर जाना ।—ईश्वरः, (पु०) जन्म से घनी होना ।—उत्पत्तिः, (स्त्री०) गर्भपिण्ड का बनना ।—उपघातः, (पु०) गर्भ का गिर पड़ना ।—कालः (पु०) गर्भस्थापन का समय ।—कोशः,—कोषः, (पु०) गर्भाशय ।—क्लेशः, (पु०) गर्भस्थ बालक के बाहिर निकलने के समय की पीड़ा जो गर्भधारिणी स्त्री को होती है ।—क्षयः, (पु०) गर्भ का नाश ।—गृहं,—भवनं,—वैश्वमनू, (न०) १ भवन का मुख्य कमरा । २ प्रसूतिका गृह । ३ गर्भमन्दिर या वह कमरा जिसमें मूर्ति स्थापित हो ।—ग्रहणं, (न०) गर्भस्थापना । गर्भ रह जाना ।—घातिन, (वि०) गर्भ गिराने वाला ।—खलनं (न०) गर्भ का हिलना डुलना या स्थानच्युत होना ।—व्युत्तिः, (स्त्री०) १ जन्म । उत्पत्ति । २ कच्चा गर्भ गिर पड़ना ।—दासः, (पु०)—दासी, (स्त्री०) जन्म से गुलाम या जन्म से दासी ।—द्रुह, (वि०) पेट गिराना ।—धरा, (स्त्री०) गर्भिणी ।—धारणम्, धारणा,—(स्त्री०) गर्भ में सन्तान को रखना ।—ध्वंसः, (पु०) गर्भश्राव ।—पाकिन, (पु०) ६० दिन में पकने वाले चावल ।—पातः, (पु०) गर्भश्राव ।—पोषणम्,—भर्मन्, (न०) गर्भस्थ बालक का पालन पोषण ।—मण्डपः, (पु०) जन्मावध । प्रसूतिका-गृह ।—मासः, (पु०) गर्भस्थापन का महीना ।—मेखनम्, (न०) उत्पत्ति । जन्म ।—योषा, (स्त्री०) १ गर्भिणी स्त्री । २ तटों को नाँच कर बहनेवाली गङ्गा ।—रूपः,—रूपकः, (पु०) शिशु । बच्चा ।—लक्षणम्, (न०) गर्भ धारण के चिन्ह ।—लम्भनम्, (न०) संस्कार विशेष ।—वसति, (स्त्री०) वासः, (पु०) गर्भाशय ।—विच्युतिः, (स्त्री०) गर्भाधान के आरम्भ ही में गर्भपात ।—वेदना, (स्त्री०) बालक उत्पन्न होने के समय का स्त्री को कष्ट ।—व्याकरणां,

(न०) गर्भपिण्ड की रचना ।—शङ्कुः, (पु०) गर्भस्थित मृतबालक को निकालने का औज़ार ।—सम्भवः,—सम्भूतिः, (स्त्री०) गर्भस्थापन । गर्भ रह जाना ।—स्थ, (वि०) १ गर्भ का । २ आभ्यान्तरिक । भीतरी ।—स्त्रावः, (पु०) गर्भपात ।
 गर्भकं (न०) दो रात्रि, (जिसके बीच में एक दिन हो) की अवधि ।
 गर्भकः (पु०) पुष्पों का गुच्छा जो बालों में खोसा जाता है ।
 गर्भगडः (पु०) गर्भवृद्धि के कारण पेट का बढ़ जाना ।
 गर्भवती (स्त्री०) जिसके पेट में गर्भ हो ।
 गर्भिणी (स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।—अवेक्षणं, (न०) धातुपना । दाई का काम ।—दौहर्दः, (न०) गर्भिणी स्त्री की इच्छाएँ या रुचि ।—व्याकरणम्,—व्याकृतिः, (स्त्री०) गर्भवृद्धि का विज्ञान विशेष । आयुर्वेद का प्रसङ्ग विशेष ।
 गर्भित (वि०) गर्भवाली । जिसके पेट में गर्भ हो ।
 गर्भेतुत (वि०) १ गर्भ में बालक होने से तृप्त । २ भोजन एवं सन्तान की ओर से निश्चिन्त । ३ कामचोर । आलसी ।
 गर्भुत (स्त्री०) १ एक प्रकार की वास । २ एक प्रकार का नरकुल । ३ सुवर्ण । सोना ।
 गर्व (धा० परस्मै०) [गर्वति, गर्वित] गर्वीला, घमण्डी अथवा अभिमानी होना ।
 गर्वः (पु०) अभिमान । घमण्ड । ऐंठ । अकड़ ।
 गर्वाटः (पु०) द्वारपाल । दरबान । चौकीदार ।
 गर्ह (धा० आत्म०) कभी कभी पर० भी । [गर्हते, गर्हयते, गर्हित] १ दोष लगाना । दोषी ठहराना । धिक्कारना । फटकारना । २ अभिषाप लगाना । खेद प्रकट करना ।
 गर्हणं (न०) १ भर्त्सना । कलङ्क । धिक्कार । फिट-गर्हणा (स्त्री०) १ कार ।
 गर्हा (स्त्री०) गाली । भर्त्सना ।
 गर्हा (वि०) भर्त्सनीय । धिक्कारने योग्य । निन्द्य ।
 —वादिन्, (वि०) निन्दक । अपशब्द कहने-वाला ।

चुआना २ गिर पड़ना । गिर जाना । ३ अदृश्य हो जाना । गायब हो जाना स्थानांतरित हो जाना खाना । निगलना । लीलना

गल. (पु०) १ गला । २ गर्दन । २ साल वृत्त की राल । ३ वाद्ययंत्र या बाजा विशेष ।—अङ्कुरः, (पु०) गले का रोग विशेष ।—उद्भवः, (पु०) घोड़े के अयाल ।—ओघः, (पु०) गुमड़ा जो गले में हो ।—कंवलः, (पु०) बैल या गाय के गर्दन की खाल जो लटकती रहती है ।—गण्डः (पु०) घेघा । गले का रोग विशेष ।—ग्रहः, (पु०) —ग्रहणं (न०) १ गरदनियाना । गर्दन में हाथ लगा कर पकड़ना । २ रोग विशेष । ३ कृष्णपक्ष की ४थी, ७मी, ८मी ९मी, १३थी, अमावस्या । ४ ऐसा दिवस जिसमें अभ्ययन आरम्भ हो, किन्तु अगले दिन ही अन-ध्याय हो । ५ अपने आप बिसाई विपत्ति । ६ मङ्गली की चटनी ।—चर्मन्, (न०) गला । नरेटी । नली । नरखड़ा ।—छारं, (न०) मुख ।—मेखला, (स्त्री०) गुञ्ज । हार । कण्ठा ।—वार्त, (वि०) १ स्वस्थ । तन्दुरुस्त । २ मुफ्त-खोर । खुशामदी टट्टू ।—व्रतः, (पु०) मयूर । मोर ।—शुण्डिका, (स्त्री०) कव्वा ।—शुण्डा, (स्त्री०) गरदन की गिल्टियों की सृजन ।—स्तनी, (गलेस्तनी) (स्त्री०) बकरी ।—हस्तः, (पु०) १ अर्धचन्द्र । गलहस्ता । गरदनिया । २ अर्धचन्द्र बाण ।—हस्तित, (वि०) गले में हाथ डाल कर पकड़ना ।

गलकः (पु०) १ गला । गरदन । २ एक प्रकार की मङ्गली ।

गलनं (न०) चूना । टपकना । रिसना ।

गलंतिका—गलन्तिका } (स्त्री०) १ कलसिया । गलंती—गलन्ती } छोटा कलसा । छोटा घड़ा । २ छोटा घड़ा जिसकी पेदी में छेद करके शिव जी के ऊपर ढाँग देते हैं, जिससे उस छेद से बराबर शिव जी पर जल टपका करे ।

गलिः (पु०) पुष्ट किन्तु कामचोर बैल ।

हुआ । ३ चुआ हुआ बहा हुआ ४ खोया हुआ पृथक किया हुआ । नज़र से छिपा हुआ । ५ सयुक्त ढीला । ६ रीता । खाली । टपक टपक कर खाली हुआ ७ साफ किया हुआ चीण । निर्बल ।—कुष्ठं, (न०) कोढ़ के रोग की वह दशा जब अँगुलियाँ गल गल कर गिर पड़ती हैं ।—दन्त, (वि०) दन्तहीन ।—नयन, (वि०) अँधा ।

गलितिकः (पु०) नृत्य विशेष ।

गलेगंडः } (पु०) एक पक्षी विशेष जिसकी गर- गलेगण्डः } दन में खाल की थैली सी लटका करती है ।

गल्म (धा० आत्म०) [गल्मते, गल्मित] साहसी होना । आत्म निर्भर होना ।

गल्म (वि०) साहसी । हिम्मती ।

गल्या (स्त्री०) गलों का समूह ।

गल्लः (पु०) गाल । विशेष कर मुख के दोनों ओर के पास का भाग ।—चातुरी, (स्त्री०) छोटा गोल तकिया जो गाल के नीचे रखा जाता है ।

गलुकः (पु०) १ पानपात्र । जॉम । मदिरा पीने का बरतन । २ नीलमणि । पुखराज ।

गल्लर्कः (पु०) शराब पीने का प्याला ।

गल्वर्कः (पु०) १ स्फटिक मणि । २ लाजवर्द । ३ शिलास । मदिरा-पान-पात्र ।

गलह (धा० आत्म०) [गलहते—गल्हित] कलङ्क लगाना । इलज़ाम लगाना । भर्त्सना करना ।

गव [किसी किसी समासान्त पद के पहिले लगाया जानेवाला “गौ” का परियाय] ।—अक्षः, (पु०) रोशनदान । झरोखा ।—अक्षित, (वि०) खिड़कियोंदार ।—अग्रं, (न०) गौओं का मुँह । रौहर (गोऽग्रं, गोअग्रं, गवाग्रं)—अदन्, (न०) चरागाह । गोचरभूमि ।—अदनी, (स्त्री०) १ गोचरभूमि । २ नौद जिसमें गौओं को सानी खिलायी जाती है ।—अधिका, (स्त्री०) लाज । लाचा ।—अहं, (वि०) गौ के मूल्य का ।—अविकं, (न०) पौहे और भेद ।—अशनः, (पु०) १ चमार । मोची । २ जातिच्युत ।—अश्वं, (न०)

साँड़ और घोड़े ।—आकृति, (वि०) गोमुखी ।
गौ की आकृति की ।—आन्धिकं (न०) नाप
जिसके अनुसार रोज गौ को चारा दिया जाय ।
—इन्द्रः (पु०) १ गौ का मालिक । २ उत्तम
साँड़ ।—उद्धः, (पु०) उत्तम साँड़ या गाय ।

गवयः (पु०) बैल की जाति विशेष ।

गवलः (पु०) जङ्गली भैंसा ।

गवालूकः (पु०) (देखो गवय)

गविनी (स्त्री०) गौओं की हेड । रौहर ।

गव्य (वि०) १ गौ या मवेशियों से युक्त । २ गौ से
उत्पन्न यथा दूध, दही, मक्खन आदि । ३
मवेशियों के योग्य या उनके लिये उपयुक्त ।

गव्यं (न०) १ मवेशी । गौओं की हेड या रौहर । २
गोचरभूमि । ३ गौ का दूध । ४ पीला रङ्ग या
रोगन ।

गव्यः (स्त्री०) १ गौओं की हेड या रौहर । २ माप
विशेष, जो दो कोस या ४ मील के बराबर होता
है । ३ रोदा । कमान की डोरी । ४ पीला पदार्थ
विशेष या पीला रङ्ग अथवा रोगन ।

गव्या (स्त्री०) १ गौओं की हेड । २ दो कोस की
दूरी का माप । ३ रोदा । धनुष की डोरी ।
४ हरताल ।

गव्युतम् (न०) } १ माप विशेष जो एक कोस या
गव्युतिः (स्त्री०) } दो मील के बराबर होता है ।
२ माप जो दो कोस या चार मील के बराबर
होता है ।

गवेधुः (पु०) } मवेशियों के खाने योग्य घास या
गवेधुः (पु०) } रुख विशेष ।
गवेधुका (स्त्री०) }
गवेधुकं (न०) गेरू । लाल खड़िया ।

गवेष (धा० आत्म०) [गवेषते, गवेषयति, गवेषित]
१ तलाश करना । खोजना । ढूँढ़ना । २ उद्योग
करना । कड़ा परिश्रम करना ।

गवेष (वि०) ढूँढ़ने का ।

गवेषः (पु०) ढूँढ़ना । खोज । तलाश ।

गवेषणम् } किसी वस्तु की खोज या तलाश ।
गवेषणा }

गवेषित (वि०) ढूँढ़ा हुआ । तलाश किया हुआ ।
अनुसन्धान किया हुआ ।

गह (धा० उभय०) [गहयति-गहयते] १ (वन की
तरह) घना होना । सघन होना । अप्रवेश्य या
अप्रवेशनीय होना । २ गम्भीरतापूर्वक प्रवेश
करना या बैठना ।

गहन (वि०) १ गहरा । सघन । गाढ़ा । घना । २ अप्र-
वेश्य जिसमें कोई घुस या पैठ न सके । अगम्य ।
३ छिष्टता पूर्वक समझने योग्य । दुरधिगम्य ।
दुर्बोध । रहस्यमय । ४ छिष्ट । असरल । कठिन ।
पीड़ा या दुःख देने वाला । ५ गम्भीर । प्रखर ।
प्रचण्ड ।

गहनम् (न०) १ अगाध गर्त । गहराई । २ वन । ऐसा
सघन वन जिसमें कोई घुस न सके । ३ छिपने
की जगह । ४ गुफा । ५ पीड़ा । कष्ट ।

गह्वर (वि०) [स्त्री०—गह्वरा, गह्वरी,] अप्रवेश्य ।
गह्वरं (न०) १ अतलस्पर्शगर्त । २ गहराई । २ वन ।
जङ्गल । गुफा । ४ अगम्य स्थान । ५ छिपने का
स्थान । ६ पहेली । ७ दम्भ । पाखंड । ८ रोदन ।
कंदन ।

गह्वरः (पु०) लता मण्डप । निकुञ्ज ।

गह्वरी (स्त्री०) गुफा । कन्दरा ।

गा (स्त्री०) गीत । भजन ।

गांग (वि०) [स्त्री०—गाङ्गी] गङ्गा का या
गाङ्ग } गङ्गा से । गङ्गा से उत्पन्न या गङ्गा का ।

गांगं } (न०) १ आकाश गङ्गा का जल । [लोगों
गाङ्गं } को विश्वास है कि जब सूर्य के देखते देखते
जल की वृष्टि होती है तब वह आकाश गंगा
का जल होता है २ सुवर्ण । सोना ।

गांगः } (पु०) १ भीष्म की उपाधि । २ कार्तिकेय
गाङ्गः } की उपाधि ।

गांगटः, गाङ्गटः } (पु०) सींगा मङ्गली ।
गांगट्यः, गाङ्गट्यः }

गांगायनि } (वि०) १ भीष्म । २ कार्तिकेय ।
गाङ्गायनि }

गांगेय } (वि०) [स्त्री०—गाङ्गेयी] गङ्गा का या
गाङ्गेय } गङ्गा में ।

गांगेयं } (न०) सुवर्ण । सोना ।
गाङ्गेयं }

गांगेयः } (पु०) १ भीष्म । २ कार्तिकेय ।
गाङ्गेयः }

गाजर (न०) गजर । गाजर ।

गैर्जाकायः (पु०) लवा । बटेर ।

गाढ (ब० क०) १ दूबा हुआ । गोता लगाये हुए ।
स्नान किये हुए । गहरा घुसा हुआ । २ सघन बसा
हुआ । ३ अत्यन्त भिन्ना या दबा हुआ । मूदा हुआ ।
बन्द । पक्का । कसा हुआ । ४ सघन । घना । ५
गहरा । अगम्य । ६ मज्जवृत्त । दृढ़ । उग्र ।
प्रचण्ड । प्रगाढ़ । अत्यन्त । अतिशय । निपट ।
अपरिमित ।—मुष्टिः (वि०) बद्धमुष्टि ।
कङ्काल । मङ्गलीचूल् ।—मुष्टिः (स्त्री०)
तलवार ।

गाढं (अव्यया०) अतिशयता से । गुरुता से,
दृढ़ता से ।

गाणपत (वि०) [स्त्री०—गाणपती] किसी दल
के दलपति से सम्बन्ध रखने वाला । २ गणेश
सम्बन्धी ।

गाणपत्यं (न०) गणेश जी की पूजा या आरा-
धना । गृथपतिव । सरदारी । [मानने वाला ।

गाणपत्यः (पु०) गणेश को अपना आराध्य देव

गाणिक्यं (न०) वेश्या या रक्षियों का समूह ।

गाणेशः (पु०) गणेश का पूजने वाला ।

गांडिवः, गाण्डिवः (पु०) १ अर्जुन के
गांडीवः, गाण्डीवः } धनुष का नाम ।
गांडिवम्, गाण्डिवम् (न०) } असल में यह
गांडीवम्, गाण्डीवम् (न०) } धनुष सोम ने
वरुण को और वरुण ने अग्नि को दिया था ।
सायणवचन दाह के समय यह अर्जुन को अग्नि
द्वारा प्राप्त हुआ था । २ धनुष ।—धन्वन, (पु०)
अर्जुन की उपाधि ।

गांडीविन् } (पु०) अर्जुन ।
गाण्डीविन् }

गातागतिक (वि०) आने जाने के कारण उत्पन्न ।

गातानुगतिक (वि०) [स्त्री०—गातानुगतिकी]
अन्ध अनुयायी या पुरानी लकीर का फकीर
बनने के कारण पैदा हुआ ।

गातु (पु०) १ भजन । गीत । २ गवैया । ३
गन्धर्व । ४ कोयल । ५ भौरा ।

गातुः (पु०) [स्त्री०—गात्री] १ गवैया । २
गन्धर्व ।

गात्रम् (न०) १ शरीर । २ शरीर अवयव । ३ हाथी
के आगे के पैर की जाँघ ।—अनुलेपनी, (स्त्री०)
उबटना ।—आवरणम्, (न०) ढाल ।—
उत्सादनं, (न०) तेल उबटन लगा कर शरीर को
साफ करना ।—कर्षण, (वि०) निर्वल या दुर्बल
शरीर वाला ।—मार्जनी, (स्त्री०) तोलिया ।
अँगोष्ठा ।—यष्टिः, (स्त्री०) लटा दुबला शरीर ।
—रुहं, (न०) रोंगटे । लोम ।—जता, (स्त्री०)
दुहरा वदन । छिरछिरी वेह ।—सङ्कोचिन्, (पु०)
खेवर । उदविलाव के समान पशु विशेष ।—
सम्प्लवः, (पु०) एक छोटा पक्षी । गोताखोर ।

गाथः (पु०) गीत । भजन ।

गाथकः } (पु०) १ गवैया । २ पुराणों या धर्म
गाथिकः } कथाओं को गाकर पढ़ने वाला ।

गाथा (स्त्री०) १ छन्द । २ वेद से भिन्न छन्द । ३
गीत । शोक । ४ प्राकृत भाषा का छन्द ।—कारः
(पु०) प्राकृत छन्द निर्माता ।

गाथिका (स्त्री०) गीत । भजन ।

गाथ् (धा० आत्म०) [गाथते, गाथित] १ स्थगित
होना । रुक जाना । ठहर जाना । बच रहना । २
रवाना होना । घुसना । बुझकी लगाना । गोता
लगाना । ३ दूबना । खोजना । तलाश करना । ४
बटोर जोड़ कर एकत्र करना । डोरे से बाँधना या
बुनना । गूथना ।

गाथ (वि०) पार होने योग्य । उथला । गम्य ।

गाथम् (न०) १ उथली जगह । वह जगह जहाँ जल
कम हो और पैदल ही लोग पार हो जायँ ।
घाट । २ स्थल । ३ लाभोच्छा । लिप्ता । कामा-
भिलाष । ४ तली । तल ।

गाथिः } (पु०) विश्वामित्र जी के पिता का नाम ।
गाथिन् } —जः, —नन्दनः, —पुत्रः, (पु०) विश्वामि-
त्र ।—नगर, —पुरं, (न०) आधुनिक कन्नोज
या कान्यकुब्ज देश का नाम ।

गाथेयः (पु०) विश्वामित्र का नाम ।

गानं (न०) गीत । भजन ।

गात्री (स्त्री०) बैलगाड़ी ।

गान्दिनी } (स्त्री०) १ गङ्गा । २ स्वफल्क की माता
गान्दिनी } और अक्रूर की पत्नी का नाम ।—सुतः,
(पु०) १ भीष्म । २ कार्तिकेय । ३ अक्रूर ।

गान्धर्व—गान्धर्व (वि०) [स्त्री०—गान्धर्वी]

गन्धर्व सम्बन्धी ।

गान्धर्व } (न०) गन्धर्वों की कला विशेष । जैसे
गान्धर्व } सङ्गीत आदि ।—शाला, (स्त्री०)
सङ्गीतालय ।

गान्धर्वः } (पु०) १ गवैया । गन्धर्व । देवगायक ।
गान्धर्वः } २ आठ प्रकार के विवाहों में से एक । ३

उपवेद जो सामवेद के अन्तर्गत माना गया है ।

४ घोड़ा । अश्व ।

गान्धर्वकः—गान्धर्वकः } (पु०) गवैया ।
गान्धर्विकः—गान्धर्विकः }

गान्धारः } (पु०) १ सङ्गीत के सप्तस्वरों में
गान्धारः } से तीसरा । सरगम (सा रे ग म प)
का तीसरा वर्ण । २ गेरू । ३ भारतवर्ष और
फारस के बीच का देश । आधुनिक कंधार ।
कंधार देश का शासक या अधिवासी ।

गान्धारिः } (पु०) दुर्योधन के मामा शकुनि की
गान्धारिः } उपाधि ।

गान्धारी } (स्त्री०) धृतराष्ट्र की पत्नी और दुर्योधनादि
गान्धारी } कौरवों की जननी ।

गान्धारियः } (पु०) दुर्योधन की उपाधि ।
गान्धारियः }

गान्धिकः } (पु०) १ गंधी । अतर फुलेल बेचने
गान्धिकः } वाला । २ लेखक । मुहरिर । क्लार्क ।

गान्धिकम् } (न०) अतर फुलेल आदि सुगन्ध द्रव्य ।
गान्धिकम् }

गामिन् (वि०) [समास के अन्त में आने वाला]
१ जाने वाला । घूमने वाला । २ सवार होने
वाला । ३ सम्बन्धी । सम्बन्ध रखने वाला ।

गाम्भीर्यम् } (न०) गहराई । गंभीरता ।
गाम्भीर्यम् }

गायः (पु०) गान । गीत । भजन ।

गायकः (पु०) गवैया । गाने वाला ।

गायत्रः (न०) } १ वैदिक छन्द विशेष जिसमें
गायत्रम् (न०) } २४ अक्षर होते हैं । २ एक परम

पवित्र एवं ब्राह्मणों द्वारा उपास्य वैदिक मंत्र,
जिसकी उपासना किये बिना ब्राह्मण में ब्राह्म-
णत्व ही नहीं आता ।

गायत्रिन् (वि०) [स्त्री०—गायत्रिणी] सामवेद
के मंत्रों को गाने वाला ।

गायत्री (स्त्री०) ऋचा या गान ।

गायनः (पु०) [स्त्री०—गायनी] १ गवैया । २ आजी-
विका के लिये गानविद्या का अभ्यास करना ।

गारुड (वि०) [स्त्री०—गारुडी] १ गरुड के
आकार का । २ गरुड सम्बन्धी । गरुडोत्पन्न ।

गारुडः (पु०) } १ पक्षा । २ सर्पों को वशीभूत
गारुडम् (न०) } करने का मंत्र विशेष । ३ गरुड
मंत्र से अभिमंत्रित अस्त्र । ४ सोना । सुवर्ण ।

गारुडिकः (पु०) पेन्द्रजालिक । जादूगर । जहर-
मोहरा बेचने वाला । विषवैद्य ।

गारुत्मत् (वि०) [स्त्री०—गारुत्मती] १ गरुड के
आकार का । २ गरुड के मंत्र से अभिमंत्रित
(अस्त्र) ।

गारुत्मते (न०) पक्षा ।

गार्दभ (वि०) [स्त्री०—गार्दभी] गधे का या गधे
से उत्पन्न ।

गार्दुर्गम् (न०) लालच । लोभ ।

गार्ध्र (वि०) [स्त्री०—गार्ध्री] गीध से उत्पन्न ।

गार्ध्रः (पु०) १ लोभ । लालच । २ तीर । बाण ।
—पक्षः, —वासस् (पु०) गीध के परों से युक्त
तीर ।

गार्भ (वि०) [स्त्री०—गार्भी] } गर्भाशय
गार्भिक (वि०) [स्त्री०—गार्भिकी] } सम्बन्धी ।
भ्रूय सम्बन्धी । अन्तःसत्त्वावस्था सम्बन्धी ।

गार्भिणां } (न०) कई एक गर्भवती स्त्रियाँ ।
गार्भिण्यम् }

गार्हपत्यं (न०) गृहस्थ का पद और उसका गौरव ।

गार्हपत्यः (पु०) १ अग्निहोत्र का अग्नि । तीन प्रकार
के अग्नियों में से एक । २ वह स्थान जहाँ यह
पवित्र अग्नि रखा जाय ।

गार्हपत्यं (न०) गृहस्थ का पद और गौरव ।

गार्हमेध (वि०) [स्त्री०—गार्हमेधी] गृहस्थ के
योग्य या गृहस्थ के उपयुक्त ।

गार्हमेधः (पु०) गृहस्थ के नित्य अनुष्ठेय पञ्चयज्ञ ।

गालनम् (न०) १ (किसी पनीली वस्तु को)
छानना । २ पिघलाना ।

गालवः (पु०) १ लोघ्न वृक्ष । २ आवनूस विशेष । ३ विश्वामित्र के एक शिष्य का नाम । ४ एक ऋषि का नाम ।

गालिः (स्त्री०) गाली । अपशब्द । कुवाच्य ।

गालित (वि०) १ झाना हुआ । २ चुआया हुआ । (अर्क की तरह) खींचा हुआ । ३ पिघलाया हुआ ।

गालोढ्यं (न०) कमलगद्दा या कमल का बीज ।

गावलाणिः (स्त्री०) सज्जय की उपाधि । गवलाण्य का पुत्र ।

गाह् (धा० आत्म०) [गाहते, गाढ या गाहित] १ गोता लगाना । डूबना । डुबकी लगाना । स्नान करना । २ घुसना । पैठना । घूमना फिरना । ३ गड़बड़ करना । चलाता । उथल पुथल करना । भथना । हिलाना डुलाना । ४ सम्म हो जाना । लीन होना । तन्मय होना ५ अपने को झिपाना । ६ नष्ट करना ।

गाहः (पु०) १ डुबकी । गोता । स्नान । २ गहराई । अभ्यन्तरीय । अन्तर्देश । [स्नान ।

गाहनं (न०) गोता या डुबकी लगाने की क्रिया । गाहित (वि०) १ स्नान किया हुआ । डुबकी लगाये हुए । २ घुसा हुआ । प्रवेशित ।

गिन्दुकः } १ (पु०) १ खेलने की गेंद । २ गेंदुक
गिन्दुकः } नामक वृक्ष विशेष ।

गिर (स्त्री०) १ वायी । शब्द । भाषा । स्तव । संसार । गीत । भजन । ३ विद्या की अधिष्ठात्री देवी श्रीसरस्वती जी ।—पतिः, (पु०) [गीःपतिः, गोष्पतिः, और गीर्पतिः,] १ बृहस्पति अर्थात् देवाचार्य । २ विद्वान् । पण्डित ।—रथः, [गीरथः,] बृहस्पति का नाम ।—वाणः,—वाणः, (पु०) [गीर्वाणः,] देवता ।

गिरा (स्त्री०) वायी । भाषण । भाषा । आवाज़ ।

गिरि (वि०) प्रतिष्ठित । सम्मानित । माननीय ।—इन्द्रः, (पु०) १ ऊँचा पहाड़ । शिव जी । ३ हिमालय पर्वत ।—ईशः, (पु०) १ हिमालय पर्वत । २ शिव जी ।—कच्छपः, (पु०) पहाड़ी कछुआ ।—कराटकः, (पु०) इन्द्र का वज्र ।—कदम्बः, (पु०)—कदम्बकः, (पु०)

कदम्ब वृक्ष की जाति विशेष ।—कन्दरः, (पु०) गुफा ।—कर्णिकः, (स्त्री०) पृथिवी ।—काणः (पु०) काना ।—काननः, (न०) पहाड़ की अमराई । पहाड़ी छोटा वन ।—कूटः, (न०) पर्वतशिखर ।—गङ्गा, (स्त्री०) नदी विशेष ।—गुडः, (पु०) गेंद । गोला ।—गुहाः (स्त्री०) पहाड़ी गुफा या कंदरा ।—चरः, (पु०) चोर ।—ज, (वि०) पहाड़ से उत्पन्न ।—जम्, (न०) १ अवरक । २ गेरु । ३ लोधान । ४ राज । नक्रता । ५ लोहा ।—जा, (स्त्री०) १ पार्वती देवी । २ पार्वती कदली । पहाड़ी केला । ३ मल्लिका लता । ४ गङ्गा जी ।—जातनयः,—जानन्दनः,—जासुतः, (पु०) १ कार्तिकेय । २ गणेश जी ।—जापतिः, (पु०) शिव जी ।—जामलं, (न०) अवरक । भोडर ।—जालं, (न०) पहाड़ की पंक्ति या सिलसिला ।—ज्वरः, (पु०) इन्द्र का वज्र ।—दुर्ग, (न०) पहाड़ी किला ।—द्वारं, (न०) घाटी ।—धातुः, (पु०) गेरु ।—ध्वजं, (न०) इन्द्र का वज्र ।—नगरं, (न०) दक्षिणपथ के एक नगर का नाम ।—गादी, (स्त्री०) (नदी) पहाड़ी चरमा ।—गाह, (न०) (वि०) पहाड़ों से गिरा हुआ ।—नन्दिनी, (स्त्री०) १ पार्वती । २ गङ्गा । ३ कोई भी (पहाड़ी) नदी ।

यथा—“कलिन्दगिरिबन्दिनीतटसुरङ्गनालम्बिनी ।”

भामिनीविलास ।

—गितम्बः, (नितम्बः) (पु०) पहाड़ का ढाल ।—पोलुः, (पु०) फलदार वृक्ष विशेष ।—पुष्पकं, (न०) राज ।—पृष्ठः, (पु०) पहाड़ की चोटी ।—प्रपातः, (पु०) पहाड़ का ढाल ।—प्रस्थः, (पु०) पहाड़ की अधित्यका ।—भिद्, (पु०) इन्द्र ।—भू, (वि०) पहाड़ से उत्पन्न ।—भूः, (स्त्री०) १ श्री गङ्गा । २ पार्वती ।—मल्लिका, (स्त्री०) कुटजवृक्ष ।—मानः, (पु०) विशाल और अतिबलिष्ठ हाथी ।—मृद्,—मृद्भवम्, (न०) गेरु ।—राज, (पु०) १ ऊँचा पर्वत । २ हिमालय ।—राजः, (पु०) हिमालय ।—वज्रम्, (न०)

मगध के एक नगर का नाम ।—शालः, (पु०)
पक्षी विशेष ।—शृङ्गः, (पु०) गणेश जी की
उपाधि ।—शृङ्गम्, (न०) पर्वत शिखर ।—
षट्, (सद्) (पु०) शिव ।—सानु, (न०)
अधित्यका ।—सारः, (पु०) १ बोहा । २
जस्ता । ३ मलयपर्वत की उपाधि ।—सुतः,
(पु०) मैनाक पर्वत ।—सुता, (स्त्री०) पार्वती ।
—स्रवा, (स्त्री०) पहाड़ी जलप्रवाह । पहाड़ी
चरमा जो बड़े वेग से बहे ।

गिरिः (पु०) १ पहाड़ । पर्वत । टीला । २ बड़ी भारी
चटान । ३ नेत्र रोग विशेष । ४ दस प्रकार के
गुंसाइयों में से एक श्रेणी के गुंसाइयों की
उपाधि । ५ आठ की संख्या । ६ बालकों के
खेलने की गेंद । (स्त्री०) १ निगलना । खीलना ।
२ चूहा । मूसा ।

गिरिकः }
गिरिकः } (पु०) खेलने की गेंद ।
गिरियाकः }

गिरिका (स्त्री०) चुहिया । छोटा चूहा ।

गिरिशः (पु०) शिवजी की उपाधि ।

गिल (धा० परस्मै०) [गिलति, गिलित]
निगलना । खीलना ।

गिलः (पु०) नीच का वृक्ष ।

गिलगिलः (पु०) मगर । नक़ । बड़ियाल । समुद्री
मिलग्राहः } जन्तु विशेष ।

गिलनम् (न०) } निगलना । खा डालना ।
गिलिः (पु०) }

गिलयुः (पु०) गले की कड़ी गिलडी ।

गिलित } (वि०) खाया हुआ । निगला हुआ ।
गिरित }

गिष्णुः—गेष्णुः (पु०) १ गवैया । सामवेद गाने वाला
ब्राह्मण ।

गीत (व० कृ०) १ गाया हुआ । २ वर्णित । कथित ।
—अयनं, (न०) बाजा । बीन । बाँसुरी ।
—ज्ञः, (वि०) गानविद्या में निपुण ।—
प्रियः, (पु०) शिव जी ।—मोदिन्, (पु०)
किन्नर ।—शास्त्रं, (न०) सङ्गीत विधि ।

गीतकं (न०) गान ।

गीता (स्त्री०) कतिपय संस्कृत के पद्यमय धार्मिक
ग्रन्थों के नाम । जैसे रामगीता । भगवद्गीता ।
शिवगीता आदि । [नाम ।

गीतिः (स्त्री०) १ भजन । गीत । २ एक छन्द का
गीतिका (स्त्री०) १ छोटा भजन । २ गान ।

गीतिन् (वि०) [स्त्री०—गीतिनी] जो गाने की
ध्वनि में पड़ता हो । ऐसा पढ़ने वाला अधम माना
गया है । यथा ।

गीति गोत्री शिरःकंभी तथा लिखितपाठकः ।

शिक्षा ।

गीर्ण (वि०) १ निगला हुआ । खाया हुआ । २
प्रशंसित ।

गीर्णिः (स्त्री०) १ प्रशंसा । २ कीर्ति । ३ भक्षण ।
निगलना ।

गु (धा० परस्मै०) [गुवति, गूत] १ विघाशन्य
होना । २ कच्चा बच्चा निकालना ।

गुगुलः } (पु०) एक प्रकार का सुगन्ध पदार्थ ।
गुगुलुः } गुगुल ।

गुच्छः (पु०) १ गुच्छा । २ फूलों का गुच्छा । गुलदस्ता ।
३ मयूरपंख । ४ मुक्ताहार । ५ ३२ या ७० तारों
की मोतियों की माला ।—अर्थः, (पु०) २४
तारों की मोतियों की माला ।—अर्थः, (पु०)
—अर्थम्, (न०) आधागुच्छा ।—कण्ठिशः,
(पु०) अक्षविशेष ।—पत्रः, (पु०) खजूर का
पेड़ । ताड़ का पेड़ ।—फलः, (पु०) १ अंगूर ।
२ केले का पेड़ ।

गुच्छकः (पु०) गुच्छा ।

गुञ् (धा० परस्मै०) [गुञ्जति] प्रायः गुञ् भी होता
है । [गुञ्जति, गुञ्जित, गुञ्जित] गुञ्जना । गुञ्जार
करना । गुनगुनाना ।

गुञ्जः (पु०) १ गुनगुनाहट । भिनभिनाहट । २ पुष्प-
गुच्छ । गुलदस्ता ।—कृतः, (पु०) भौरा ।

गुञ्जनं } (न०) धीरे धीरे बोलना । गुनगुनाना ।
गुञ्जनम् }

गुञ्जा } (स्त्री०) १ घुंघची का काड़ । २ धीमी
गुञ्जा } आवाज़ । गुनगुनाहट । ४ ढोल । ५ मदिरा
की दुकान । ६ ध्यान ।

गुञ्जिका } (स्त्री०) घुंघची का दाना ।
गुञ्जिका }

गुणितं } (न०) गुंजार । गुणगुनाहट ।
गुणितं }

गुटिका (स्त्री०) १ गोली । २ गोल स्फटिक । स्फटिक का गुरिया । गोला या गेंद । ३ रेशम का कोथा । ४ मोती । —अर्जनं, (न०) सुर्मा विशेष ।

गुटी (स्त्री०) देखो गुटिका ।

गुड़ः (पु०) १ गुड़ । शीरा । राव । चोटा । २ गोला । ३ गेंद । ४ खेलने की गेंद । ५ कौर । कवर । ६ हाथी का कवच या जिरहबद्धतर । —उदकं, (न०) शीरे का शरबत । —उद्गवा, (स्त्री०) चीनी । शकर । —श्रोदनम्, (न०) मीठा भात । —तृणम्, (न०) —दार्ढः, (पु०) —दार्ढ, (न०) गन्ना । ऊख । पिण्ड । (न०) मिठाई विशेष । —फलः (पु०) पीलू का पेड़ । —शर्करा, (स्त्री०) चीनी । —शृङ्गम् (न०) गुम्मत । कलश । —हरीतकी, (स्त्री०) शीरे में पड़ी हुई हरं अर्थात् हरं का मुरब्बा ।

गुड़कः (पु०) १ गेंद । २ कौर । गस्सा । ३ शीरा से खींचा हुआ एक प्रकार का अर्क ।

गुड़लं (न०) मदिरा । शराब । वह शराब जो शीरे से खींची गयी हो ।

गुडा (स्त्री०) १ कपास का पौधा । २ गोली ।

गुडाका (स्त्री०) १ सुस्ती । २ निद्रा ।

गुडाकेशः (पु०) १ तीव्र को बश में करने वाला । २ अर्जुन । ३ शिव ।

गुडगुडायनम् (न०) खखारना ।

गुडेरः (पु०) १ गेंद । गोला । २ कौर । गस्सा ।

गुण (व० डभय०) [गुणायति, गुणायते, गुणित]
१ गुणा करना । २ सलाह देना । ३ आमन्त्रण देना । न्योतना ।

गुणाः (पु०) १ सिफत (अच्छी या बुरी) । २ भलाई । सुकृति । उत्तमता । श्रेष्ठता । नामवरी । ख्याति । ३ उपयोग । लाभ । अच्छाई । ४ प्रभाव । परिणाम । शुभ परिणाम । ५ डोरा । डोरी । रस्सा । ६ धनुष की प्रयोज्यता । ७ बाजे की डोरी । ८ नस । ९ लक्षण । १० रजोगुण, तमोगुण, सत्तोगुण । स्वभाव । ११ सूत की बत्ती । तन्तु । १२ इन्द्रिय जन्म विषय (कर्म यथा रूप, रस, रस, स्पर्श और शब्द ।) १३ पुनरावृत्ति । गुना । यथा-दसगुना

बार यथा दस बार । १४ गौण । १५ आधिक्य । विपुलता । आतिशय्य । १६ विशेषण । इ, उ, ऋ के स्थान में ए, ओ, आ, और अल का आदेश । १७ काव्यालङ्कार शास्त्र में मम्मट ने गुण की परिभाषा यह दी है:—

ये रसस्यागिने धर्माः शौर्यादय इवात्मनः ।

उरुर्बर्हेतवस्ते सुपुष्पास्थितयो गुणाः ॥

१८ नीति में राजा के लिए ६ गुण बतलाये हैं । यथा—सन्धि, विग्रह, यान, स्थान, आसन, संश्रय और द्वेष या द्वेषीभाव । १९ तीन की संख्या । २० वृत्तांश की प्रान्तद्वय संयोजक सरल रेखा । २१ ज्ञानेन्द्रिय । २२ पाचक । २३ भीम की उपाधि । २४ त्याग । विराग । —कारः, (पु०) १ कुशल रसोद्वया जो हर प्रकार के व्यञ्जन बना सके । २ भीम की उपाधि । —ग्रामः, (पु०) सदगुणों का समूह । —जयं, —जियतम्, (न०) सख, रजस्, तमस । —लयनिका, —लयनी, (स्त्री०) तम्बू । खीमा । —वृत्तः, —वृत्तकः, (पु०) मस्तूल या वह खंभा जिससे जहाज या नाव बाँध दी जाती है । —शब्दः, (पु०) विशेषण । —सागरः, (पु०) १ अच्छे गुणों का समुद्र । अत्यन्त गुणवान् पुरुष । २ ब्रह्म । परमात्मा ।

गुणकः (पु०) १ हिसाब जोड़ने वाला या लगाने वाला । २ वह राशि जिसके साथ गुणा जाता है । गुणनं (न०) १ गुणा । २ गिनती । ३ किसी के सदगुणों का बखान ।

गुणनिका (स्त्री०) १ अभ्ययन । पुनरावृत्ति । २ नृत्य या नृत्यकला । ३ (नाटक की) प्रस्तावना । ४ माला । हार । ५ शून्य । सिफर ।

गुणनीय (वि०) १ गुणा करने योग्य । २ गिनने योग्य । ३ परामर्श देने योग्य ।

गुणनीयः (पु०) अभ्ययन । अभ्यास ।

गुणवत् (वि०) गुणवान् । श्रेष्ठ । उत्तम । नेक । सुकृत ।

गुणिका (स्त्री०) गुमदी । गिल्दी ।

गुणित (व० कृ०) १ गुणा किया हुआ । २ घेर लगाया हुआ । एकत्र किया हुआ । जमा किया हुआ । ३ गिना हुआ ।

गुणिन् (वि०) १ गुणवान् । सराहनीय । उत्कृष्ट । २ नेक । शुभ । ३ किसी के गुणों से परिचित । ४ गुणों से युक्त । ५ सुख्य ।

गुणीभूत (वि०) महत्त्वपूर्ण अर्थ से वञ्चित । २ गौण गुणों से युक्त । [मध्यम काव्य ।

गुणीभूत व्यङ्ग्यम् (न०) अलङ्कार में कहा हुआ गुण } (धा० उभय०) [गुणयति, गुणयते, गुणित]
गुण्ड } घेरना । चारों ओर से छेक लेना । लपेटना ।
ढकना ।

गुंठनम् } (न०) १ ढकना । छिपाना । २ (शरीर में)
गुंठनम् } मलना जैसे शरीर में भस्म मलना ।

गुंठित } (वि०) १ घिरा हुआ । ढका हुआ । २ पिसा
गुंठित } हुआ । कुदा हुआ । चूर्ण किया हुआ ।

गुंङ् } (धा० परस्मै०) [गुणयति गुणित,]
गुण्ड } १ ढकना । छिपाना । २ पीसना । चूर्ण
करना ।

गुंङकः } (पु०) १ रज । चूर्ण । २ तैलभाण्ड । ३
गुण्डकः } धीमा मधुर स्वर ।

गुंङिकः } (पु०) आद्य । भोजन । चूर्ण ।
गुंङिकः } (पु०) आद्य । भोजन । चूर्ण ।

गुंङित } (वि०) १ पिसा हुआ । चूरा किया हुआ ।
गुंङित } २ धूलधूसरित ।

गुणय (वि०) १ गुणी । गुणवान् । २ बखानने योग्य । ३ प्रशंसनीय । श्लाघ्य । ४ गुणा करने योग्य ।

गुत्सकः (पु०) १ गद्दा । गट्टर । बंडल । गुच्छा । २ गुलदस्ता । ३ चौरी । चंबर । ४ अभ्यास । सर्ग ।

गुद् (धा० आ०) [गोदते, गुदित] खेलना । क्रीड़ा
करना ।

गुदं (न०) गुदा । मलत्याग स्थान ।—अङ्कुरः,
(पु०) बवासीर ।—आवर्तः, (पु०) कोष्ठ-
बद्धता ।—उद्भवः, (पु०) बवासीर ।—ओष्ठः,
(पु०) गुदा का छेद ।—कीलः, —कीलकः,
(पु०) बवासीर ।—ग्रहः, (पु०) कब्जियत ।
कोष्ठबद्धता ।—पाकः, (पु०) गुदा की सूजन ।
—वर्त्मनः, (न०) गुदा । मलद्वार ।—स्तम्भः,
(पु०) कोष्ठबद्धता ।

गुध् (धा० परस्मै०) [गुधयति, गुधित] लपेटना ।
ढकना । कपड़े पहनना । [गुधति] क्रोध करना ।
[गोधते] खेलना ।

गुंदलः } (पु०) ढोल विशेष का शब्द ।
गुन्दलः } (पु०) ढोल विशेष का शब्द ।

गुंवालः—गुन्दालः } (पु०) चातक पत्ती ।
गुंवालः—गुन्दालः } (पु०) चातक पत्ती ।

गुप् (धा० परस्मै०) [गोपायति, गोपायित या गुप्त]
१ बचाना । रक्षा करना । शत्रु के आक्रमण से
बचना । पहरा देना । २ छिपाना । ३ धृष्टा
करना । भर्त्सना करना । तिरस्कार करना ।

गुपितः (पु०) १ राजा । त्राता । परित्राण करता ।

गुप्त (वि०) [व० कृ०] १ रक्षित । सुरक्षित । रखवाली
किया हुआ । २ छिपा हुआ । गोप्य । छिपाने
लायक । ३ अदृश्य । आखों के ओझल । ४ बुढ़ा
हुआ या जोड़ा हुआ ।—कथा (स्त्री०) गुप्त
सूचना । ऐसी सूचना जो प्रकट करने योग्य नहीं
है ।—शक्तिः, (स्त्री०) जासूस । भेदिया ।—चरः,
(पु०) १ बलराम । २ जासूस ।—दानं, (न०)
अप्रकट दान ।—वेशः, (पु०) बनावटी वेश ।

गुप्तं (अन्वय०) चुपके चुपके ।

गुप्तः (पु०) वैश्य की उपाधि ।

गुप्तकः (पु०) रक्षक ।

गुप्ता (स्त्री०) काव्य की मुख्य नायिका । परकीया
नायिका ।

गुप्तिः (स्त्री०) १ रक्षण । संरक्षण । २ छिपाव । दुराव ।
३ ढकना । ४ गुफा । बिल । ५ जमीन में गढ़ा
खोदना । ६ रक्षा का उपाय । किलाबन्दी । घुस ।
परकौट । गढ़की भीत । ७ बन्दीगृह । जेलखाना ।
८ नाव का निचला तला । ९ रोकथाम ।

गुफ् } (धा० परस्मै०) [गुफति, गुंफति,
गुफि, गुम्फ् } गुफित, गुंफित] १ गूथना । २ (आर्त्त०)
लिखना । रचना ।

गुफित } (व० कृ०) गुथा हुआ । बाँधा
गुफित, गुम्फित } हुआ । बुना हुआ ।

गुंफः } (पु०) १ बन्धन । गूथन । २ एकत्रकरण ।
गुम्फः } रचना । क्रमबद्ध करण । ३ पहुँची । करभूषण
विशेष । ४ गलमुच्छा । मँछ ।

गुंफना } (स्त्री०) १ गूथना । २ क्रमबद्ध करना
गुम्फना } रचना । यथारीत्या शब्दयोजना करना
अच्छा निबन्ध ।

गुरु (धा० आ०) [गुरुते, गूर्त, गूर्ण] प्रयत्न करना ।
चेष्टा करना । [गूर्ण] १ चोरिल करना ।
मार डालना । २ जाना ।

गुरणम् (न०) प्रयत्न । सतत चेष्टा ।

गुरु (वि०) } [तुलनात्मक—गरीयस, गरिष्ठ] १
गुरुवी (वि०) } भारी । बोझिल । २ महान । ३
दीर्घ । ४ महत्वपूर्ण । ५ क्रिष्ट । (असह्य) । ६ प्रचण्ड ।
७ सम्मानित । ८ गरिष्ठ जो शीघ्र न पचे । ९
उत्तम । सर्वोत्कृष्ट । १० प्यारा । प्रेमपात्र । ११
अहङ्कारी । धमरही ।—अर्थः, (पु०) अध्यापन
का शुरुक । पढ़ाई की फीस ।—उत्तमः, (पु०)
परमात्मा ।—कारः, (पु०) पूजन । सम्मान ।—
क्रमः, (पु०) परम्परागत प्राप्त शिक्षा ।—जनः,
(पु०) बड़ा बूढ़ा कोई भी व्यक्ति ।—तल्पः (पु०)
गुरु की शय्या ।—तल्पगः,—तल्पिन्, (पु०) १
गुरुपत्नी के साथ व्यवहार करनेवाला । पाँच
महापातकियों में से एक । २ सौतेली माता के
साथ मैथुन करने वाला ।—दक्षिणा, (स्त्री०) वह
शुल्क जो गुरु को दिया जाय ।—दैवतः, (पु०)
गुरुपूज्य ।—पाक, (वि०) गरिष्ठ (पदार्थ)
जो कठिनता से पचे ।—भ्रं, (न०) १ पुष्प
नक्षत्र । २ कमान । धनुष ।—मर्दतः, (पु०)
ढोलक या मृदङ्ग ।—रत्नं, (न०) पुष्कराज ।
—वर्तिन्,—वासिन्, (पु०) ब्रह्मचारी । विद्यार्थी,
जो गुरु के पास या घर में रहै ।—वृत्तिः, (स्त्री०)
ब्रह्मचारी का अपने गुरु के प्रति व्यवहार ।

गुरुः (पु०) १ पिता । २ बूढ़ा । ३ शिक्षक । अध्या-
पक । ४ मन्त्रदाता । दीक्षा देने वाला । ५ प्रभु ।
अध्यक्ष । शासक । ६ देवाचार्य । बृहस्पति । ७
बृहस्पति ग्रह । ८ किसी नये सिद्धान्त का प्रचा-
रक । ९ पुष्प नक्षत्र । १० द्रोणाचार्य । ११
मीमांसकों में सिद्धान्त विशेष के प्रवर्तक प्रभाकर ।

गुरुक (वि०) [स्त्री०—गुरुकी] १ कुछ थोड़ा हल्का ।
२ छन्दोशास्त्र में गुरु वर्ण ।

गुर्जरः } (पु०) गुजरात प्रान्त ।
गुर्जरः }

गुर्विणी } (स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।
गुर्वी }

गुलः (पु०) शीरा । राव । चोटा ।

गुलुच्छः } (पु०) दस्ता । गुच्छा ।
गुलुच्छः }

गुल्फः (पु०) गड्ढा । गिटुआ । पावों की गांठें ।

गुल्मं (न०) १ झाड़ी । वृक्षों का झुरमुट । वन ।

गुल्मः (पु०) } जङ्गल । २ प्रधान पुरुषों से युक्त
रक्तकदल, जिसमें ६ हाथी, ६ रथ, २७
घुड़सवार और ४५ पैदल होते हैं । ३ दुर्ग ।
किला । ४ प्रोहा । ५ प्रीहावृद्धि । ६ देहाती
पुलिस की चौकी । ७ घाट ।

गुल्ममूलम् (न०) अदरक । आदी ।

गुल्मलता (स्त्री०) सोमवल्ली ।

गुलिमन् (वि०) [स्त्री०—गुलिमनी] १ झाड़ बोध
कर उगने वाला । २ प्रीहावृद्धि का रोगी ।

गुल्मी (स्त्री०) खीमा । तंबू ।

गुवाकः } (पु०) सुपाड़ी का पेड़ ।
गुवाकः }

गुह् (धा० उभय०) [गृहति, गृहते, गूढ] संवरण
करना । छिपाना । ठकना ।

गुहः (पु०) १ कार्तिकेय । २ घोड़ा । ३ शृङ्गवेरपुर के
निषादों का राजा और श्रीरामचन्द्र जी का मित्र ।
४ विष्णु ।

गुहा (स्त्री०) १ गुफा । २ छिपाव । दुराव । ३ गढ़ा ।
विल । ४ हृदय ।—आहित, (वि०) हृदयस्थित ।
—चरं, (न०) ब्राह्मण ।—मुख, (वि०) खुला
हुआ मुख वाला ।—शयः, (पु०) १ चूहा । २
शेर । चीता । ३ परमात्मा । ४ अज्ञान ।

गुहिनं (न०) वन । जंगल ।

गुहेरः (पु०) १ अभिभावक । सरंक्षक । २ लुहार ।

गुहा (स० का० कृ०) १ छिपाने के योग्य । गुप्त । २
एकान्त । ३ रहस्य ।—दीपकः, (पु०) जुगनु ।
—निष्यन्दः, (पु०) पेशाब । मूत्र ।—भाषितं,
(न०) १ रहस्यमयी वार्ता या वार्तालाप । २
रहस्य ।—मयः, (पु०) कार्तिकेय ।

गुहा, (न०) रहस्य । गुप्तत्व ।

गुहाः (पु०) १ पाखण्ड । दग्ध । २ कड़वा ।

गुहाकः (पु०) देवयोनि विशेष । यह भी कुबेर के
किन्नरों की तरह प्रजा हैं और धनागार की रक्षा का
काम इनके सुपुर्द है ।

। (स्त्री०) १ कूडा करकट । २ विष्टा । मल ।
 गृह (व० क०) १ गुप्त । छिपा हुआ । २ ठका हुआ ।
 ३ गहन । ४ एकान्त । आङ्गः, (पु०) कड़वा ।
 —आँधिः, (पु०) साँप । —आत्मन्, (गृहोत्मन्)
 परमात्मा । —उत्पन्नः, —जः, (पु०) धर्माशास्त्रों
 के मतानुसार १२ प्रकार के पुत्रों में से एक ।
 अज्ञातनामा पिता का पुत्र, जिसकी उत्पत्ति
 गुपचुप हुई हो ।

‘गृहे प्रवृत्त उच्यते गृहजस्तु सुतः स्मृतः ।’

—याज्ञवल्क्य ।

—नीडः, (पु०) खजन पची । —पथः, (पु०) १
 गुप्तमार्ग । २ पगडंडी । ३ मन । समस्त । प्रतिभा ।
 —पादः, —पादः, (पु०) सर्प । साँप । —पुरुषः,
 (पु०) भेदिता । जासूस । —पुष्पकः, (पु०)
 वकुल वृक्ष । —भार्गः, (पु०) सुरङ्गी रास्ता । —
 मैथुनः, (पु०) काक । कौआ । —वर्चस्, (पु०)
 मैदक । —सार्त्तिन्, (न०) प्रपञ्ची गवाह । ऐसा
 गवाह जो छिप कर अन्य गवाहों की गवाही
 सुन ले और तदनुसार स्वयं गवाही दे ।

गूथं (न०) } विष्टा । मल ।
 गूथः (पु०) }

गूषणा (स्त्री०) आँखों की वह आकृति जो मोर के
 पंखों में होती है ।

गृ (धा० परस्मै०) [गति] छिड़कना । तर करना ।
 नम करना ।

गृज् (धा० परस्मै०) [गर्जति, या गृजति]
 गृज्ज् } नाद करना । गर्जना । धुरधुराना । गुराना ।

गृजनः } (पु०) १ गाजर । २ शलगम । ३ गौजा ।
 गृजनः }

गृजनम् } (व०) विचैले तीरों से बंध किये हुए
 गृजनम् } पशु का मौल ।

गृडिवः } (पु०) शृगाल विशेष । स्थारों की एक
 गृडीवः } जाति ।

गृध् (धा० परस्मै०) [गृध्यति, —गृध्] कामना
 करना । लोभ करना । लालच दिखाना ।

गृधु (वि०) लंपट । कामी ।

गृधुः (पु०) कामदेव ।

गृधु (वि०) १ लालची । लोभी । २ उत्सुक ।
 अभिलाषी ।

गृध् (न०) } अभिलाषा । लालच । लोभ ।
 गृध्या (स्त्री०) }

गृध्र (वि०) लालची । लोभी । —कूटः, (पु०)
 एक पर्वत का नाम जो राजगृह के समीप है । —
 पतिः, —राजः, (पु०) जटाश्रु की उपाधि । —
 वाजः, —वाजित, (वि०) गीध के परों से युक्त
 (वायु) ।

गृध्रं (न०) } गीध । गिद्ध ।
 गृध्रः (पु०) }

गृष्टिः (स्त्री०) १ एक प्रसूता गौ । एक व्यान की
 गौ । वह गौ जो केवल एक बार ही व्यायी हो ।
 २ कोई भी जवान मादा जानवर ।

गृहं (न०) १ घर । भवन । २ पत्नी ।

“ न गृहं गृहस्थिर्वाहुर्दृष्टिषो गृहं लुच्यते । ”

—पंचतन्त्र ।

३ गृहस्थ का जीवन । ४ नाम । [यह शब्द जब
 एक घर के लिये प्रयुक्त किया जाता है, तब नपुंसक
 लिङ्ग और जब एक से अधिक घरों के लिये
 तब पुल्लिङ्ग होता है । यथा मेघदूते—“ तत्रागारं
 धनपति-गृहान् । ”] —गृहः, (वा० पु०) १
 घर । —आतः, (पु०) छेद । सूराल । खिड़की
 (विशेष) । —आधिपः, —ईशः, —ईश्वरः, (पु०)
 गृहस्थ । —अग्रनिकः, (पु०) गृहस्थ । —अर्थः,
 (पु०) गृहस्थी के मामले । —अश्लं, (न०)
 काँजी । खटामौड़ । —अवग्रहणी, (स्त्री०)
 देहरी । वहलीज (पु०) २ पाट । सिल । —
 आरामः, (पु०) घर के आसपास का बाग ।
 —आश्रमः, (पु०) गृहस्थ । —आश्रमिन्, (पु०)
 गृहस्थ । —उपकरणः, (न०) गृहस्थी के लिये
 उपयोगी पात्र अथवा अन्य कोई वस्तु । —कपोतः,
 —कपोतकः, (पु०) पालतू कबूतर । —करणः,
 (न०) घर गृहस्थी के मामले । भवन या घर
 की इमारत । —कर्मन्, (न०) गृहस्थी के
 धंधे । —कलहः, (पु०) घरेलू झगड़े । —
 कारकः, (पु०) धवई । राज । मैमार । —कार्यः,
 घर गृहस्थी के काम । —चुल्ली, (स्त्री०) घर,
 जिसमें पास पास दो कमरे हों, किन्तु इनमें से एक
 का मुख पूर्व और दूसरे का पश्चिम की ओर हो ।

—छिद्रम्, (न०) गृहछिद्र । घर गृहस्थी की कमज़ोरियाँ या कलङ्क । २ पारिवारिक झगड़े ।
—जः,—जातः, (पु०) वह दास जो वहीं या उसी घर में जन्मा हो जिसमें वह नौकर हो ।
—जालिका, (स्त्री०) चोखा । कपट । छल । कपट वेश ।—ज्ञानिन् —[गृहेज्ञानिन्, भी रूप होता है ।] (वि०) अनुभवशून्य । मूर्ख । मूढ़ । बेवकूफ ।—तटी, (स्त्री०) चतुतरा । चौतरा ।—देवता, (स्त्री०) घर का देवता । कुलदेवता ।—देहली, (स्त्री०) दहलीज़ । दहरी ।—नमनम्, (न०) पवन । हवा ।—नाशनः, (पु०) जंगली कबूतर ।—नीडः, (पु०) गौरैया ।—पतिः, (पु०) १ गृहस्थ । २ यज्ञ करने वाला । घर का स्वामी । गृहस्थ के अनुष्ठेय कर्म, यथा आतिथ्य ।—पालाः, (पु०) १ घर का मालिक । २ घर का कुत्ता ।—पोतकः, (पु०) वह स्थल जिसके ऊपर मकान खड़ा हो और उससे सम्बन्ध रखने वाली उसके आस पास की ज़मीन ।—प्रवेशः (पु०) नये बने मकान में जाने के पूर्व कतिपय शास्त्रीय कर्मानुष्ठान ।—बभ्रुः, (पु०) पालतु न्योला ।—घलिः, (स्त्री०) अवशिष्ट अन्न से सब प्राणियों को आहारदान । जैसे पशु पक्षी, गृहदेवता आदि को ।—भङ्गः, (पु०) १ घर से निर्वासित । २ घर को नाश करना । ३ घर फोड़ना । ४ असफलता । किसी दूकान या घर की वरबादी ।—भेदिन्, (वि०) १ घर का भेद । घर का भेदुआ । २ घर में झगड़े उत्पन्न कराने वाला ।—मणिः, (पु०) दीपक । लैंप ।—मात्रिका, (स्त्री०) चमगादड़ ।—मृगः (पु०) कुत्ता ।—मेघ्रः, (पु०) गृहस्थ ।—यंत्रं, (न०) डंडा या बाँस जिस पर उत्सव के अवसरों पर ध्वजा फहरायी जाय ।—वित्तः, (पु०) घर का मालिक ।—शुकः, (पु०) आमोद प्रमोद के लिये पाला गया तोता ।—सर्वेशकः, (पु०) यवई । राज । मैमार ।—स्थः, (पु०) गृहस्थ । बालबच्चों वाला ।

इयाय्यः (पु०) गृहस्थ । बालबच्चों वाला ।

इयालु (वि०) पकड़ने वाला । ग्रहण करने वाला ।

गृहिणी (स्त्री०) घरवाली । पत्नी ।—पदं, (न०) घरस्वामिनी की मर्यादा ।

गृहिन् (पु०) गृहस्थ । बाल बच्चे वाला ।

गृहीत (व० कृ०) १ ग्रहण किया हुआ । २ स्वीकृत । ३ प्राप्त । उपलब्ध । ४ पहिना हुआ । धारण किया हुआ । ५ लूटा हुआ या लुटा हुआ । ६ सीखा हुआ । पढ़ा हुआ । समझा हुआ ।—गर्भा, (स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।—दिश, (वि०) १ झगड़ा । २ रायब । लापता ।

गृहीतिन् (वि०) [स्त्री—गृहीतिनी] वह व्यक्ति जिसने कोई बात समझ ली हो ।

गृहीतिर्दिन् (पु०) घर में डींगे मारने वाला और घर के बाहिर युद्ध में पीठ दिखाने वाला । कायर । डरपोंक ।

गृहा (वि०) १ आकर्षणीय । प्रसन्न करने योग्य । २ घरेलू । ३ परतंत्र । परसुखापेक्षी । ४ पालतु । ५ बाहिर अवस्थित । ६ मल-द्वार ।—अग्नि, (पु०) अग्निहोत्र की आग ।

गृहाः (पु०) १ घर में बसने वाला । २ पालतु जानवर ।

गृहा (स्त्री०) नगर के आसपास का गाँव ।

गृ (धा० परस्मै०) [गृणाति, गूर्ण] १ बोलना । पुकारना । बुलाना । आमंत्रण करना । उद्बोधित करना । २ वर्णन करना । ३ प्रशंसा करना । स्तव करना ।

गेंडुकः } (पु०) गेंद । गद्दा ।

गेय (वि०) १ गाने वाला । गवैया । २ गाने योग्य ।

गेष् (धा० आत्म०) [गेषते, गेष्य,] तलाश करना । खोजना । ढूँढ़ना । अनुसंधान करना ।

गेहम् (न०) घर । मकान । बस्ती ।

गेहेऽवेदिन् (वि०) भीरु । कायर । डरपोंक ।

गेहेदाहिन् (वि०) भीरु । कायर । डरपोंक ।

गेहेनर्दिन् (वि०) डरपोंक । पर्दे का सुतार । गोबर के ढेर पर बैठा हुआ सुर्गा ।

गेहेमेहिन् (वि०) घर में झूतने वाला । कामचोर ।

गेहेऽवाडः (पु०) अकड़बाज़ । डींगें हाँकने वाला । अभिमानी ।

गेहेश्वरः (पु०) भीरु । डरपोंक ।

गेहिन् (वि०) [स्त्री०—गेहिनी,] देखो गृहिन्, ।
 गेहिनी (स्त्री०) पत्नी । गृहिणी । घर की मलकिन ।
 गै (धा० पर) [गायति,—गीत,] १ गाना । गीत
 गाना । २ गाने के स्वर में पढ़ना या बोलना । ३
 वर्णन करना । निरूपण करना । ४ पद्य द्वारा
 वर्णन करना या कविता बनाकर प्रसिद्ध करना ।
 गैर (वि०) [स्त्री०—गैरी] पहाड़ पर उत्पन्न ।
 गैरिक (वि०) [स्त्री०—गैरिकी] पहाड़ पर उत्पन्न ।
 गैरिकं (न०) } गेरू । (न०) सुवर्ण । सोना ।
 गैरिकः (पु०) }
 गैरियं (न०) राल । नफ़ता ।

गौ (पु० स्त्री०) [कर्ता—गौः] १ पशु । मवेशी
 (बहुवचन में) । २ गौ से उत्पन्न कोई भी वस्तु
 जैसे दूध, चमड़ा आदि । ३ नक्षत्र । ४ आकाश ।
 ५ इन्द्र का वज्र । ६ किरण । ७ हीरा । ८ स्वर्ग ।
 ९ तीर ।

गौ (स्त्री०) १ गौ । २ पृथिवी । ३ वाणी । ४ सर-
 स्वती देवी । ५ माता । ६ दिशा । ७ जल ।
 ८ नेत्र ।

गो (पु०) १ साँड़ । बैल । २ रोम । लोम । ३
 इन्द्रिय । ४ वृषराशि । ५ सूर्य । ६ नौ की संख्या ।
 ७ चन्द्रमा । ८ घोड़ा ।—कण्टकः, (पु०)—
 कण्टकम्, (न०) बैलों से खूँदा हुआ मार्ग या
 स्थान जो दूसरों के जाने योग्य न रह गया हो । २
 गाय का खुर । ३ गौ के खुर की नोक ।—कर्णः,
 (पु०) १ गाय का कान । २ खबर । ३ साँप । ४
 बालिशता । बित्ता । माप विशेष । ५ अवध प्रान्त
 का तीर्थ विशेष जो गोकर्ननाथ के नाम से
 प्रसिद्ध है । ६ बाणविशेष ।—किराटा,—
 किराटिका, (स्त्री०) मैना पक्षी ।—किलः,—
 कीलः, (पु०) १ हल । २ खल्ल ।—कुलं, (न०)
 १ गौ की रौहर । गौओं का समूह । २ गोशाला । ३
 गोकुल गाँव जहाँ श्रीकृष्ण पाले पोसे पये थे ।—
 कुलिक, (वि०) १ दलदल में फंसी गौ को
 निकालने में सहायता न देने वाला । २ ऐचाताना ।
 भेड़ा ।—कुतं, (न०) गोबर ।—क्षीरं, (न०)
 गाय का दूध ।—गृष्टिः, (स्त्री०) एक बार
 की व्यायी गाय ।—गोयुगं, (न०) बैलों की

एक जोड़ी ।—गोष्ठं, (न०) गोशाला ।—ग्रन्थिः,
 (स्त्री०) १ कंडे । उपरी । २ गोशाला ।—
 ग्रहः, (पु०) मवेशी पकड़ना ।—ग्रासः, (पु०)
 भोजन करने के पूर्व निकाला हुआ हिस्सा ।—
 घृतं, (न०) १ वृष्टि का जल । २ घी । गौ का
 घी ।—चन्दनम्, (न०) एक प्रकार का चन्दन ।
 —चर, (वि०) १ गौ का चरा हुआ । २ पृथिवी
 पर घूमने वाला । ३ लक्ष्य के भीतर ।—चरः,
 (पु०) १ गोचरभूमि । चरागाह । २ ज़िला ।
 प्रान्त । विभाग । प्रदेश । ३ इन्द्रियों की पहुँच के
 भीतर । इन्द्रियों के विषय । ४ पहुँच । लक्ष्य के
 भीतर । ५ पकड़ । शक्ति । प्रभाव । काबू । ६
 दिङ्मण्डल । दिगन्तवृत्त । आकाशमण्डल ।—
 चर्मन्, (न०) १ गाय का चमड़ा । २ सतह
 नापने का माप विशेष, जिसकी परिभाषा वशिष्ठ
 जी ने इस प्रकार दी है—

दशरश्त्रेण वंशेन दशवंशात् सप्तततः

पञ्च चाप्यधिकान् दद्यादेतद्गोचर्म बोध्यते ॥

—चर्मवसनः, (पु०) शिवजी ।—चारकः,
 (पु०) भाला । अहीर ।—जरः, (पु०) बड़ा
 साँड़ या बैल ।—जलं, (पु०) गोमूत्र ।—
 जागरिकं, (न०) आनन्द । उल्लास । उछाह ।
 मज़ल ।—तलजज्ञः, (पु०) उत्तम साँड़ या
 गाय ।—तीर्थ, (न०) गोशाला ।—त्रं, (न०)
 १ गोशाला । २ वंश । कुल । ३ नाम । संज्ञा ।
 ४ समूह । ५ वृद्धि । ६ वन । ७ खेत । ८ मारी ।
 ९ सम्पत्ति । १० वृष । छाता । ११ भविष्यज्ञान ।
 १२ श्रेणी । जाति । वर्ग ।—त्रः, (पु०)
 पर्वत । पहाड़ ।—त्रकीला, (स्त्री०) पृथिवी ।
 —त्रज, (वि०) एक ही कुल या वंश में उत्पन्न ।
 —त्रपटः, (पु०) वंशावली ।—त्रमिदः,
 (पु०) पहाड़ों को फोड़ने वाला । इन्द्र ।—
 त्रस्त्रलनम्, (न०)—त्रस्त्रलितम्, (न०)
 गलत नाम से पुकारना ।—त्रा, (स्त्री०) १ गौओं
 की देड़ । २ पृथिवी ।—दन्तम्, (न०) हस्ताल ।
 —दा, (स्त्री०) गोदावरी नदी ।—दानम्, (न०)
 बाल काटने का दान । यथा रघुवंशे—“गोदान
 विवेरनन्तरम् ।”—दारणां, (न०) १ हल । २

कुवाली । फाँड़ ।—दाववरी, (स्त्री०) नदी विशेष ।—दुह, (पु०)—दुहः, (पु०) १ ग्वाला । अहीर । गाय दुहने वाला । २ गाय दुहने का समय ।—दोहनम्, १ गाय दुहने का समय । २ गाय दुहना ।—दोहिनी, (स्त्री०) बासन जिसमें दूध दुहा जाय ।—द्रवः, (पु०) गोमूत्र ।—धरः, (पु०) पर्वत ।—धुमः,—धूमः, (पु०) १ गेहूँ । २ नारंगी । शंतरा ।—धूलिः, (पु०) वह समय जब गोचरभूमि से गौ चर कर लौटे ।—धेनुः, (स्त्री०) गाय जो दूध देती हो और जिसके नीचे बड़ड़ा हो ।—ध्रः, (पु०) पर्वत । पहाड़ ।—नन्दी, (स्त्री०) सादा सारस ।—नर्दः, (पु०) १ सारस । २ देश विशेष ।—नर्दीयः, (पु०) महाभाष्यकार पतञ्जलि ।—नासः, (पु०) १ सर्प विशेष । २ रत्नविशेष ।—नाथः, (पु०) १ बैल । साँड़ । २ ज़मींदार । ३ ग्वाला । ४ गौ का धनी ।—निप्यन्दः, (पु०) गोमूत्र ।—पः, (पु०) १ गोप । ग्वाला । २ गोशाला का प्रधान । ३ गाँव का दारोगा । ४ राजा । ५ संरक्षक । अभिभावक ।—पी. (स्त्री०) गोप की स्त्री ।—पीध्यस्तः, (पु०)—पेद्रः,—पेशः, (पु०) श्रीकृष्ण ।—पीदलः, (पु०) सुपारी का वृक्ष ।—पतिः, (पु०) १ गौ का धनी । २ साँड़ । ३ मुखिया । प्रधान । ४ सूर्य । ५ इन्द्र । ६ कृष्ण । ७ शिव । ८ वरुण । ९ राजा ।—पशुः, (पु०) यज्ञीय पशु ।—पानसी, (स्त्री०) छप्पर की धुनकिया ।—पालः, (पु०) १ ग्वाला । अहीर । २ श्रीकृष्ण । ३ राजा ।—पालकः, (पु०) १ अहीर । ग्वाला । २ शिव ।—पालिका,—पाली, (स्त्री०) अहीरिन । ग्वाला की स्त्री ।—पीतः, (पु०) खंजन पत्नी विशेष ।—पुच्छः, (पु०) १ वानर विशेष । २ हार विशेष जिसमें दो, चार या ३४ खरे हों ।—पुटिकम्, (न०) शिव जी के नादिया का सिर ।—पुत्रः (वि०) बड़ड़ा ।—पुरं (न०) १ नगर-द्वार । २ मुख्य द्वार । ३ मंदिर का सजा हुआ द्वार ।—पुरोधं, (न०) गोबर ।—प्रकाशडम्, (न०) विशाल बैल ।—प्रचारः, (पु०) गोचर

भूमि ।—प्रवेशः, (पु०) गौओं के चरकर लौटने का समय, सूर्यास्त काल ।—भृत्, (पु०) पहाड़ ।—मत्तिक, बग्घी । डाँस ।—मण्डलम्, (न०) १ भूगोल । २ गौओं का झुंड ।—मत्तलिका (स्त्री०) वह गाय जो कावू में लायी जा सके । सीधी गाय । उत्तम गाय ।—मथः, (पु०) ग्वाला ।—मायुः, (पु०) १ सृगाल । २ मैड़क । एक गन्धर्व का नाम ।—मुखः,—मुखम्, (न०) वाद्य यंत्र विशेष ।—मुखः, (पु०) १ मगर । घड़ियाल । नक्र । २ चोरों का किया हुआ विशेष प्रकार का दीवार में सुराख ।—मुखं, (न०)—मुखी, (स्त्री०) जप करने की थैली ।—मूढ (वि०) बैल की तरह मूढ़ । मूत्रं, (न०) गाय का मूत्र ।—मृगः, (पु०) एक प्रकार का बैल ।—मेदः, (पु०) मणि विशेष ।—यानम्, (न०) बैल-गाड़ी । बहली । रथ ।—रत्नः, (पु०) १ गोपाल । ग्वाला । २ नारंगी ।—रङ्गः, (पु०) १ जलपक्षी । कैदी । बंदी । ३ नगना स्त्री । परमहंस ।—रस्तः, (पु०) १ गाय का दूध । २ दही । ३ मक्खन ।—राजः, (पु०) सर्वोत्तम बैल ।—रुतं, (न०) दो कोस या चार मील का माप ।—राटिका,—राटी, (स्त्री०) मैना पत्नी ।—रोखना (स्त्री०) गौ के मस्तक से निकला हुआ पीला पदार्थ ।—लवणं (न०) माप विशेष जिसके अनुसार गाय को निमक दिया जाता है ।—लांगुलः,—लांगूलः, (पु०) वानर विशेष ।—लोमी (स्त्री०) बेश्या । रंडी ।—वत्सः, (पु०) बड़ड़ा ।—वत्सआदिन्, (पु०) भेड़िया ।—वर्धनः (पु०) मथुरा जिले का एक पर्वत और तीर्थस्थान ।—वर्धन-धरः,—वर्धनधारिन्, (पु०) श्रीकृष्ण ।—वशा, (स्त्री०) बाँझ गाय ।—वाटं,—वास, (पु०) गोशाला ।—विदः, (पु०) १ मुख्य ग्वाला । अहीरों का मुखिया । २ श्रीकृष्ण । ३ बृहस्पति ।—विष्, (स्त्री०)—विष्टा, (स्त्री०) गोबर ।—विसर्गः, (पु०) प्रातःकाल का वह समय जब चरने के लिये गौएं ढीली जाती हैं ।—

वीर्यः (न०) दूध का मूल्य ।—वृन्दम्, (न०) मवेशियों की हर्ड या रौहर ।—वृन्दारकः, (पु०) सर्वोत्तम बैल या गौ ।—वृषः, (पु०) उत्तम सौँड़ ।—वृषध्वजः, (पु०) शिवजी ।—व्रजः, (पु०) १ गोशाला । २ गौओं का झुंड । ३ चरागाह जहाँ गौएँ चरे ।—शकृत, (न०) गोबर ।—शालं, (न०)—शाला, (स्त्री०) वह छाया हुआ घर, जिसमें गौएँ रखी जाय ।—पङ्कवम्, (न०) बैलों की तीन जोड़िया ।—छः, (पु०) गोशाला ।—संख्यः, (पु०) ग्वाला । अहीर ।—सर्गः, (पु०) प्रातःकाल ।—सूत्रिका, (स्त्री०) गाय बाँधने की रस्सी ।—स्तनः, (पु०) १ गाय का ऐन या थन । २ गुलदस्ता । चौलड़ा मोती का हार ।—स्तना, —स्तनी, (स्त्री०) अँगूरों का गुच्छा ।—स्थानं, (न०) गोशाला ।—स्वामिन्, (पु०) १ गाय का धनी । २ भिक्षुक विशेष । ३ उपाधि विशेष ।—हत्या, (स्त्री०) गोवध ।—हनम्, (न०) गोबर ।—हित, (वि०) गौ की रक्षा करने वाला ।

गोडुम्बः (पु०) कर्लीदा । हिंगवाना । तरबूज ।

गोणी (स्त्री०) १ गोब । बेरा । २ एक द्रोण के बराबर की तौल । ३ चिथड़ा । गूदड़ ।

गोण्डः । (पु०) १ मांसल नाभि । २ नीच जाति गोण्डः } विशेष । विशेष कर नर्वदा और कृष्णानदी के बीच विन्ध्याचल के पूर्वी भाग में बसने वाली जाति के लोग ।

गोतमः (पु०) सतानन्द के पिता और अहिल्या के पति एवं अँगिरस गोत्री एक ऋषि विशेष ।

गोतमी (स्त्री०) गोतम की स्त्री अहिल्या ।—पुत्रः, (पु०) सतानन्द ।

गोधा (स्त्री०) १ चमड़े का पट्टा जो बाईं भुजा पर धनुष की रगड़ बचाने को बाँधा जाता है । २ नाका । मगर । बड़ियाल । ३ तौत । डोरी ।

गोधिः (पु०) १ माथा । २ गङ्गा का नक्र ।

गोधिका (स्त्री०) गोह । एक प्रकार का जन्तु विशेष ।

गोपः (पु०) [स्त्री०—गोपी] १ रत्नक । २ छिपाव ।

चुराव । ३ गाली । कुवाच्य । ४ उत्तेजना । आन्दोलन । ५ दीप्ति । चमक । कान्ति ।

गोपायनं (न०) रक्षण । बचाव ।

गोपायित (वि०) रक्षित ।

गोप्य (वि०) [स्त्री०—गोप्यी] रक्षा करने वाला । छिपाने वाला । दुराने वाला ।

गोमत् (वि०) गोधन वाला ।

गोमती (स्त्री०) नदी विशेष ।

गोमयं (न०) } गोबर ।

गोमयः (पु०) }

गोमयकुर्वं } (न०) कठफूला । कुदुरमुत्ता ।

गोमयप्रियं } (न०) कठफूला । कुदुरमुत्ता ।

गोमिन् (पु०) १ मवेशी का धनी । २ स्थार । भूगाल ।

३ अर्चक । ४ बुद्धदेव का सेवक । [चेष्टा ।

गोमणं (न०) स्फूर्ति । सतत प्रयत्न । अविच्छिन्न

गोर्धम् (न०) मस्तिष्क । दिमाग ।

गोलः (पु०) १ गेंद । गोला । गढ़ा । २ भूगोल । ३

नभमण्डल । ४ विधवा का पुत्र । वेश्यापुत्र ।

हरामी । ५ एक राशि पर कई ग्रहों का समागम ।

गोला (स्त्री०) १ लड़कों के खेलने की काठ की गेंद ।

२ जल रखने का मटका । कूड़ा । ३ सिंगरफ ।

लाल संख्या । ४ स्याही । मसी । ५ सखी ।

सहेली । ६ दुर्गा का नाम । गोदावरी नदी

का नाम ।

गोलकः (पु०) १ गेंद । गोला । २ लकड़ी की गेंद । ३

मिट्टी का बड़ा घड़ा । ४ विधवापुत्र । ५ एक

राशि पर ६ या अधिक ग्रहों का योग । ६ शीरा ।

राब । ७ मदन का पेड़ ।

गोष्ठ (धा० आ०) [गोष्ठते] एकत्र होना । जमा

होना । ढेर लगाना ।

गोष्ठः (पु०) } १ गोशाला । २ अहीरों का झुंड ।

गोष्ठं (न०) } (पु०) जमाव ।

गोष्ठीः } (स्त्री०) १ जमाव । सभा । मीटिंग । २

गोष्ठी } संस्था । ३ वार्तालाप । बातचीत । संवाद ।

४ समूह । समुदाय । ५ सम्बन्ध । नाता । ६

नाटक की रचना विशेष ।

गोष्पद् (न०) १ गौ का खुर । २ धूल में गाय के

खुर का चिन्ह । ३ उस खुरचिन्ह में समा जाने

वाला जल । ४ गौ क खुर म समाव उतना जल ।
५ स्थान जहाँ गौएं प्रायः आया जाया करें ।

गोहा (वि०) छिपाने योग्य । गोप्य ।

गौजिकः } (पु०) सुनार ।
गौजिकः }

गौडः (पु०) १ एक प्रान्त विशेष का नाम । स्कन्द-
पुराण में इस देश का परिचय इस प्रकार दिया
गया है :—

बंगदेशः समारभ्य भुवनेशान्ततः शिवे ।

गौडदेशः समारभ्यतः सर्वविद्या विशारदः ।

२ ब्राह्मणों की जाति विशेष ।

गौडाः (पु० बहु०) गौड देश के अधिवासी ।

गौडी (स्त्री०) १ शीरा या गुड़ की शराब । २
रागिनी विशेष । ३ छन्दःशास्त्र की रीति या
वृत्ति विशेष ।

गौडिकः (पु०) गन्ना । उख ।

गौण (वि०) [जी०—गौणी] १ अमुख्य ।
अप्रधान । २ व्याकरण में प्रधान का उल्टा । ३
गुणवाचक । गुण बतलाने वाला ।

गौण्यं (न०) मातहत्य । अधीन होकर रहना । अप-
कृष्ट पद ।

गौतमः (पु०) १ (क) भरद्वाज ऋषि का नाम ।
(ख) सतानन्द मुनि का नाम । (ग) कृपाचार्य
का नाम, जो द्रोणाचार्य के साले थे । (घ) बुद्ध-
देव का नाम । (ङ) न्यायशास्त्र प्रवर्तक का
नाम ।—सम्भवा, (स्त्री०) गोदावरी नदी ।

गौतमी (स्त्री०) १ द्रोणाचार्य की स्त्री कृपी का
नाम । २ गोदावरी नदी की उपाधि । ३ बुद्धदेव
की शिक्षा या उपदेश । ४ गौतम द्वारा प्रवर्तित
न्याय दर्शन । ५ हल्दी । ६ गोरोचन । ७ कण्व
मुनि की बहिन ।

गौधीमीनं (न०) खेत जिसमें गेहूँ उत्पन्न होते हैं ।
गौनर्दः (पु०) महाभाव्य प्रणेतृ पतञ्जलि की
उपाधि ।

गौपिकः (पु०) गोपी या गोप की स्त्री का बालक
या पुत्र ।

गौसेयः (पु०) वैश्या का पुत्र ।

गौर (वि०) [स्त्री०—गौरा या गौरी] १
सफेद । २ पिलोहों । पीला या खाल । ३

ललोहो । ४ चमकीला । दीप्तियुक्त । ५ विशुद्ध ।
स्वच्छ । मनेहर ।

गौरः (पु०) १ सफेद रंग । २ पिलोहों रंग । ३
ललोहों रंग । ४ सफेद राई । ५ चन्द्रमा । ६
भैसा विशेष । ७ एक प्रकार का हिरन ।

गौरं (न०) १ कमल-नाख-तन्तु । २ केसर । जाफ़ान ।
३ सुवर्ण । सोना ।

गौरस्तर्पणः (पु०) सफेद राई ।

गौरास्यः (पु०) एक प्रकार का काले रंग का वानर
जिसका मुख सफेद होता है ।

गौरद्वयं (न०) ग्वाला या गौओं की रखवाली करने
वाले का पद ।

गौरवम् (न०) १ वजन । भारीपन । प्रयोजनीयता ।
३ ज़रूरीपन । ४ सम्मान । प्रतिष्ठा । ५ कुलीनता
पदमर्यादा । बड़पन । ६ भारीपन । गुरुत्व ।—
आसनं (न०) सम्मान की बैठक ।—हरित,
(वि०) प्रशंसित । कीर्तिवान । ख्याति
सम्पन्न ।

गौरविति (वि०) अत्यन्त सम्मानीय ।

गौरिका (स्त्री०) क्वारी । युवती लड़की । जवान
लड़की ।

गौरिलः (पु०) १ सफेदराई । २ लोहे या ईस्पात लोहे
की चूर या धूल ।

गौरी (स्त्री०) १ पारवती का नाम । २ आठवर्ष की
कन्या । ३ क्वारी । रजोधर्म जिस लड़की को न
हुआ हो वह लड़की । ४ गौरी या गेहुआ रंग की
लड़की । ५ पृथिवी । ६ हल्दी । ७ गौरोचन ।
८ चरुण की स्त्री । ९ मल्लिका की लता । १०
तुलसी का पौधा । ११ मल्लिष्ठ का पौधा ।—

कान्तः,—नायः, (पु०) शिवजी ।—गुरु,
(पु०) हिमालय पर्वत ।—जः, (पु०)
कार्तिकेय ।—जम्, (न०) अवरक ।—पट्टः,
(पु०) वह योनिरूपी अर्धा जिसमें शिवलिङ्ग
स्थापित किया जाता है ।—पुत्रः, (पु०)
कार्तिकेय ।—ललितं, (न०) गौरोचन ।—
सुतः (पु०) १ कार्तिकेय । २ ऐसी स्त्री
का पुत्र जिसका विवाह आठ वर्ष की अवस्था में
हुआ हो ।

गौरतल्लिकः, (पु०) गुरुपत्नी के साथ गमन करने वाला या गुरु की शय्या को अष्ट करने वाला ।

गौलक्षिकः, (पु०) गौ के शुभाशुभ लक्षणों को जानने वाला ।

गौल्लिकः, (पु०) किसी सैनिक दल का एक सिपाही ।

गौशतिक (वि०) [स्त्री०—गौशतिकी] १०० गायें पालने वाला ।

गमा (स्त्री०) पृथिवी ।

ग्रन्थ या ग्रन्थ (धा० आत्मने०) [ग्रथते, ग्रन्थते] १ टेढ़ा करना । तिरछा करना । झुकाना २ गूथना । रचना ।

ग्रन्थनम् (न०) १ गाढ़ा करना । जमाना । २ गूथना । ३ पुस्तक की रचना करना । लिखना । [ग्रथना, भी अन्तिम दो अर्थों का वाची है ।]

ग्रथनः (पु०) गुच्छा ।

ग्रथित (व० कृ०) १ गूँथा हुआ । २ रचा हुआ । ३ श्रेणीबद्ध किया हुआ । यथाक्रम किया हुआ । ४ जमाया हुआ । गाढ़ा किया हुआ । ५ गाँठ गठीला ।

ग्रन्थ (धा० परस्मै०) [ग्रन्थित, ग्रन्थति, ग्रन्थयति-ग्रन्थयते, ग्रथित, और ग्रथते भी रूप होते हैं] १ बाँधना । गूथना । यथाक्रम करना । श्रेणी बद्ध करना । २ लिखना । रचना करना । ३ बनाना पैदा करना ।

ग्रन्थः (पु०) १ बाँधना । गाँठ लगाना । २ रचना । ग्रन्थ । पुस्तक । साहित्यिक रचना । ३ धन । सम्पत्ति । ४ अनुष्टुप छन्द वाला पद्य ।—कारः,—कृत, (पु०) ग्रन्थरचयिता । लेखक ।—कुटी,—कूटी, (स्त्री०) १ पुस्तकालय । २ दफ्तर जहाँ काम किया जाय ।—विस्तरः, (पु०) बृहदकारता । प्रकाशता । प्रगल्भ शैली ।—सन्धिः, (स्त्री०) काण्ड । अध्याय । सर्ग ।

ग्रन्थनम् } देखो ग्रथन ।
ग्रन्थना }

ग्रन्थिः (स्त्री०) १ गिल्टी । गुमड़ा । गुमड़ी । २ रस्सी की गाँठ । ३ कपड़े के आँचल की गाँठ, जिसमें पैसे रुपये गठियाये जाते हैं । ४ बैत या

नरकुल के पोखरों की गाँठ या जोड़ । ६ टेढ़ापन । भद्दापन । असत्य । ७ सूजना या फूलना ।—छेदकः,—सेदः,—मोचकः, (पु०) गँठकटा । जेब कतरने वाला ।—पर्णाः, (पु०)—पर्णम्, (न०) १ एक सुगन्ध वृक्ष । २ एक सुगन्ध पदार्थ ।—बन्धनम्, (न०) १ विवाह के समय दूल्हा दुलहिन का गठजोड़ा । २ पदी ।—हरः, (पु०) सचिव । दीवान ।

ग्रन्थिकः } (पु०) १ दैवज्ञ । ज्योतिषी । २ अज्ञात-
ग्रन्थिकः } वास के समय राजा विराट के यहाँ रहते समय नकुल ने अपना नाम ग्रन्थिक ही रखा था ।

ग्रन्थित } (वि०) देखो ग्रथित ।
ग्रन्थित }

ग्रन्थिन् } (पु०) १ ग्रन्थ पढ़ने वाला । २ विद्वान् ।
ग्रन्थिन् } सुपठित ।

ग्रन्थिल } (वि०) गाँठ गठीला
ग्रन्थिल }

ग्रस् (धा० आत्म०) [ग्रसते, ग्रस्ते] १ निगलना । लील लेना । निघटाना । बर्त डालना । २ पकड़ना । ३ ग्रहण डालना । ४ शब्दों पर चिन्ह या दाग लगाना । ५ नष्ट करना । (उभय०) [ग्रसति, ग्रासयति,—ग्रासयते] खा डालना भक्षण कर जाना ।

ग्रसनम् (न०) १ निगलना । खाना । २ पकड़ना । ३ चन्द्र और सूर्य का अपूर्य ग्रास ।

ग्रस्त (व० कृ०) १ खाया हुआ । भक्षण किया हुआ । २ पकड़ा हुआ । अधिकृत किया हुआ । प्रभाव पड़ा हुआ । ३ ग्रहण लगा हुआ ।—ग्रस्तं (न०) ग्रहण सहित सूर्य या चन्द्रमा का अस्त होना ।—उदयः, (पु०) ग्रहण लगे हुए चन्द्रमा सूर्य का उदय होना ।

ग्रस्तम् (न०) अर्द्धोच्चारित शब्द या वाक्य ।

ग्रह् (धा० उभय०) वैदिक साहित्य में ग्रम्, [गृह्णाति, गृहीत, (निजन्त) ग्राहयति, जिघृक्षति] १ पकड़ना । लेना । ग्रहण करना । २ पाना । प्राप्त करना । अङ्गीकार करना । वसूल करना । उगाहना । ३ गिरफ्तार करना । बंदी बनाना । ४ रोकना । थामना । पकड़ना । ५

आकर्षित करना । अपनी ओर खींचना । ६ जीतना । एक पक्ष में कर लेना । ७ प्रसन्न करना । खुश करना । ८ अधिकार में करना । प्रभावाम्बित करना । ९ धारण करना । १० सीखना । जानना । पहिचानना । समझना । ११ विश्वास करना । ख्याल करना । १२ इन्द्रियगोचर करना । १३ वशवर्ती करना । १४ अनुमान करना । परिणाम निकालना । १५ बखान करना । वर्णन करना । १६ खरीदना । मोल लेना । १७ वखिल करना । झीन लेना । लूट लेना । १८ धारण करना । पहिन लेना । १९ पहचान लेना । २० (ब्रत) रखना । २१ अस लेना । २२ हाथ में (किसी) कार्य को लेना । [निजन्त] १ लेना । ग्रहण करना । पकड़ना । स्वीकार करना । २ विवाह में दान कर डालना । ३ सिखलाना । बतलाना ।

:(पु०) १ पकड़ना । हाथ साफ करना । २ पकड़ । लेना । प्राप्त करना । अङ्गीकार करना । उपलब्धि । ३ चोरी । डाँका । ४ लूट का माल । ५ ग्रहण (चन्द्रमा सूर्य का) । ६ ग्रह । ८ वर्णन । निरूपण । दुहराना । ९ आह । नक्र । मगर । घड़ियाल । १० भूत । पिचाश । ११ बच्चों के कष्ट देने वाली दुष्ट योनि विशेष । १२ ज्ञान । बोध । १३ ज्ञानेन्द्रिय । १४ सतत चेष्टा । निरन्तर प्रयत्न । १५ अभिप्राय । संशा । मनोरथ । १६ संरक्षकता । अनुग्रह ।—अधीन, (वि०) ग्रहों के शुभाशुभ फलों के ऊपर निर्भर ।—अवमर्दनः, (पु०) राहु का नाम ।—अवमर्दनम् (न०) ग्रहों की टकर ।—अधीशः, (पु०) सूर्य ।—आधारः, —आश्रयः, (पु०) भुव वृत्त सम्बन्धी नक्षत्र । मेरु सम्बन्धी नक्षत्र ।—आमयः, (पु०) १ सिर्गी । २ भूतावेश ।—आलुञ्जनम्, (न०) शिकार पर झपटना और उसके टुकड़े टुकड़े कर डालना ।—ईशः, (पु०) सूर्य ।—कल्लोलः (पु०) राहु ।—गतिः, (स्त्री०) ग्रहों की चाल ।—चिन्तकः, (पु०) ज्योतिषी । दैवज्ञ ।—दशा, (स्त्री०) ग्रह की दशा ।—नायकः, (पु०) १ सूर्य । २ शनि ।—विग्रहौ, (वचन) इनाम और दण्ड ।—नेमि, चन्द्रमा । -

पतिः, (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा ।—पीडनम्, —पीडा, (स्त्री०) १ ग्रह के कारण दुःख या क्लेश । २ चन्द्र सूर्य का ग्रहण ।—राज्ञः, (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्र । ३ बृहस्पति ।—मण्डलं, (न०) —मण्डली, (स्त्री०) ग्रहों का वृत्त ।—युतिः, (स्त्री०) ग्रहों का योग ।—वर्षः, (पु०) वर्षफल ।—विप्रः (पु०) ज्योतिषी ।—शान्तिः, (स्त्री०) जपदानादि से अशुभ ग्रहों के अशुभ फल को दूर करना ।—संगमम्, (न०) ग्रहों का योग ।

ग्रहणम् (न०) १ पकड़ना । ग्रहण करना । २ पाना । प्राप्ति । अङ्गीकार करना । ३ वर्णन करना । कहना । ४ पहनना । धारण करना । ५ चन्द्र और सूर्य का ग्रहण । ६ बुद्धि । समझ । ७ ज्ञान । ८ प्रतिध्वनि ।—माँई । ९ हाथ । १० इन्द्रिय ।

ग्रहणाः (स्त्री०) संग्रहणी का रोग । दस्तों की ग्रहणी बीमारी ।

ग्रहिल (वि०) १ लिया हुआ । स्वीकृत । २ अविनयी । हठी । जिदी ।

ग्रहीतृ [स्त्री०—ग्रहीत्री] १ पाने वाला । स्वीकार करने वाला । २ जान लेने वाला । पहिचान लेने वाला । देखने वाला । ३ कर्जदार । ऋणिण ।

ग्रामः (पु०) १ गाँव । पुरवा । पुरा । २ जाति । समाज । ३ समूह । समुदाय । ४ सरगल । स्वर । राग । अधिकृतः,—अध्यक्षः,—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) गाँव का मुखिया । चौधरी ।—अन्तः, (पु०) ग्राम की सीमा । ग्राम के समीप की जगह ।—अन्तरं, (न०) अन्य ग्राम ।—अन्तिकम्, (न०) ग्राम का पड़ोस या सामीप्य ।—आचारः, (पु०) गाँव की (रस्म) ।—आधानं, (न०) शिकार ।—उपाध्यायः, (पु०) ग्रामयाजक ।—कण्टकः, (पु०) चुगलखोर । पिथुन ।—कुमारः, (पु०) देहाती लड़का ।—कूटः, (पु०) १ ग्राम का सर्वोत्तम पुरुष । २ शत्रु ।—घातः, (पु०) गाँव की लूट करने वाला ।—घोषिन्, (पु०) इन्द्र ।—चर्या, (स्त्री०) स्त्रीमैथुन ।—जालं, (न०) कई एक ग्रामों का समूह ।—शीः, (स्त्री०) १ गाँव या समाज का मुखिया या चौधरी । २ नेता । मुखिया । ३ नाई । ४ कामीपुरुष । (स्त्री०)

१ रंडी । वेश्या । २ नील का पौधा ।—तत्तः,
(पु०) बढ़ई जो गाँव में काम करे ।—धर्मः,
(पु०) स्त्रीमैथुन ।—प्रेष्यः, (पु०) किसी
ग्राम के समाज का संदेश ले जाने और ले आने
वाला ।—मृदुरिका, (स्त्री०) ग्राम का झगड़ा
या उत्पात । उपद्रव ।—मुखः, (पु०) हाट ।
बाज़ार ।—मृगः, (पु०) कुत्ता ।—याजकः,
(पु०)—याजिन, (पु०) १ ग्राम का उपाध्याय ।
२ पुजारी । अर्थक ।—घंडः, (पु०) नपुंसक
पुरुष । हिजड़ा ।—संघः, (पु०) ग्रामीण संस्था ।
—सिंहः, (पु०) कुत्ता ।—स्थ, (वि०) १ ग्राम
में रहने वाला । २ एक ही ग्राम का बसने वाला
साथी ।—हासकः, (पु०) बहनोई ।

ग्रामटिका (स्त्री०) अग्रभाग गाँव । दरिद्र गाँव ।

ग्रामिक (वि०) [स्त्री०—ग्रामिकी] १ ग्रामीण ।
गँवारू । २ गँवार ।

ग्रामिकः (पु०) ग्राम का चौधरी वा मुखिया ।

ग्रामीणः (पु०) १ गाँव में रहने वाला । २ कुत्ता । ३
काक । ४ शूकर ।

ग्रामेय (वि०) गाँव में उत्पन्न । गँवार ।

ग्रामेयी (स्त्री०) रंडी । वेश्या ।

ग्राम्य (वि०) गाँव सम्बन्धी । १ गाँव का । २ ग्राम-
वासी । ३ पालतू । हिला हुआ । ४ जुता हुआ ।
नीच । अशिष्ट । कमीना । ५ अश्लील ।—अश्वः,
(पु०) गधा ।—कर्मन्, (न०) ग्रामवासी का
पेशा या रोज़गार ।—कुङ्कुमं, (न०) केसर ।
—धर्मः, (पु०) १ ग्रामवासी का कर्तव्य । २
मैथुन । स्त्रीप्रसङ्ग ।—पशुः, (पु०) पालू जानवर ।
—बुद्धि, (वि०) अज्ञानी । हंसोढ़ । मसखरा ।
—वल्लभा, (स्त्री०) रंडी । वेश्या ।—सुखं,
(न०) मैथुन ।

ग्राम्यः (पु०) पालतूकुत्ता ।

ग्राम्यं (न०) १ गवारू बोलचाल । २ ग्राम में तैयार
किया गया भोजन । ३ स्त्रीमैथुन ।

ग्रामन् (पु०) १ पत्थर । चट्टान । २ पहाड़ । ३
बादल ।

ग्राम्यः (पु०) १ कवर । कौर । गस्सा । मुँह भर माप ।
२ भोजन । पालन पोषण का उपस्कर । ३ राहु

या केतु ग्रस्त चन्द्र या सूर्य का एक भाग ।—
आच्छादनम्, (न०) भोजन कपड़ा ।—शल्यं,
(न०) गले में अटकी कोई भी वस्तु ।

ग्राह (वि०) एकड़ हुआ ।

ग्राहः (पु०) १ एकड़ । २ नक्र । ग्राह । मगर ३
बंदी । कैदी । ४ स्वीकृति । ५ समझ । ज्ञान ।
६ अटलता । दृढ़ता । अत्यानुरोध । ७ दृढ़ प्रति-
ज्ञता । सङ्कल्प । निश्चय । ८ रोग । बीमारी ।

ग्राहक (वि०) खरीदार । पाने वाला ।

ग्राहकः (पु०) १ बाज । राजपक्षी । २ विषवैद्य ।
३ खरीदार ४ पुलिस अफसर ।

ग्रीवा (स्त्री) गरदन । घंटा, (स्त्री०) घोड़े के
गले की घंटी या घुंघरू ।

ग्रीवालिका देखे ग्रीवा ।

ग्रीविन् (पु०) ऊंट ।

ग्रीष्म (वि०) गर्म ।

ग्रीष्मः (पु०) १ गर्मी की ऋतु । ज्येष्ठ और आषाढ़ के
मास । २ गर्मी । ३ उष्णता ।—उद्गवा, (स्त्री०)
—जा, (स्त्री०) नवमल्लिका लता ।

ग्रैव (वि०) [स्त्री०—ग्रैवी] }
ग्रैवेय (वि०) [स्त्री०—ग्रैवेयी] } गरदन सम्बन्धी
ग्रैवं } (न०) १ गले का पट्टा या कंठा । २ हाथी
ग्रैवेयं } के गले की जंजीर ।

ग्रैवेयकम् (न०) १ हार । कंठा । २ हाथी के गले
की जंजीर ।

ग्रैष्मक (वि०) [स्त्री०—ग्रैष्मिका] १ गर्मी में
बोया हुआ । २ गर्मी की ऋतु में अदा
करने योग्य ।

ग्लपनम् (न०) १ मुर्काना । सूखना । कुम्हलाना ।
२ पर्यवसान ।

ग्लस् (धा० आत्म०) [ग्लसते, ग्लस्त] खा जाना ।
भक्षण कर जाना ।

ग्लहः (धा० उभय०) [ग्लहति—ग्लहते,
ग्लाहयति,—ग्लाहयते] १ जुआ खेलना । जुआ
में जीतना । २ पाना । प्राप्त करना ।

ग्लहः (पु०) १ जुआरी । २ दाँव । ३ पाँसा । ४
जुआ । द्यूत ।

ग्लान (व० कृ०) १ थका हुआ । परिश्रान्त ।
२ बीमार । रोगी ।

ग्लानि (स्त्री०) १ थकान । २ हास । ३ निर्वलता ।
बीमारी । ४ घृणा । अस्वस्थि ।

ग्लान्ति (वि०) थका हुआ । श्रान्त ।

ग्लैच् (धा० प०) [ग्लोचति, ग्लुक्] १ जाना ।
२ बुराना । लूटना । ३ छीन लेना ।

ग्लै (धा० प०) [ग्लायति, —ग्लान] १ घृणा
करना । २ थक जाना । ३ हिरास होना । उदास
होना । ४ मूर्च्छित होना ।

ग्लौ (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।

घ

घ संस्कृत वर्षमाळा या नागरी वर्षमाळा का बीसवाँ
वर्ष और व्यंजनो में से कवर्ग का चौथा व्यंजन ।
इसका उच्चारण जिह्वामूल या कण्ठ से होता है ।
यह स्पर्श वर्ष है । इसमें घोष, नाद, संवार और
महाप्राण प्रयत्न होते हैं ।

घ (वि०) यह समास में पीछे जुड़ता है और इसका
अर्थ होता है मारने वाला; हत्या करने वाला जैसे
पाणिघ, राजघ ।

घः (पु०) १ घंटा । २ घर्चरशब्द ।

घट् (धा० आत्म०) [घटते, —घटित] यत्न
करना । प्रयत्न करना । घटित होना । होना ।

घटः (पु०) १ बड़ा । २ कुम्भराशि । ३ हाथी का
माथा । ४ कुम्भक प्राणायाम । ५ २० द्रोण के
समान तौल । ६ स्तम्भ का एक भाग । —
घाटीपः (पु०) कबी या गाढ़ी का उधार । —
उद्भवः, —जः, —यानिः, —सम्भवः, (पु०)
अगस्त्य जी । —ऊधस्, (स्त्री०) (= घटोद्गी)
दूध से परिपूर्ण ऐन वाली गौ । —कर्परः, (पु०)
१ संस्कृत साहित्य के कवि विशेष । २ खपरा । —
कारः, —कृत्, (पु०) कुम्हार । —ग्रहः, (पु०)
कहार । धीमर । पनभरा । —दासी, (स्त्री०)
कुटनी । —पर्यसनम् (न०) जो अपने जीव-
काल में पुनः अपनी जाति में शामिल होने को
रजामंद न हुआ हो ऐसे जातिव्युत्त का औद्ध
देहिक कृत्य । —भेदनकम् (न०) कुम्हार का
एक औज़ार जो बरतन बनाने के काम में आता
है । —राजः, (पु०) आँवा में पकाया हुआ मिट्टी

का घड़ा । —स्थापनम्, (न०) घड़ा रखकर उसमें
देव विशेष का आवाहन पूर्वक पूजन ।

घटक (वि०) १ प्रयत्नवान् । चेष्टा करने वाला । २
सम्पन्न करने वाला । २ मौलिक । आवश्यक सांस्था-
निक । प्रधान । वास्तविक ।

घटकः (पु०) १ एक वृक्ष जिसमें फूल न लग कर
फल ही लगते हैं । २ दियासलाई बनाने वाला ।
३ सगाई कराने वाला । विचवानिया । ४ वंशावली
जानने वाला ।

घटनं (न०) १ प्रयत्न । उद्योग । २ घटना । बाके
घटना (न०) ३ होना । ३ सम्पन्नता । पूर्णता । ४
मेल । ऐक्य । संसर्ग । सम्बन्ध । ५ बनाना ।
गढ़ना । तैयार करना ।

घट्टा (स्त्री०) १ उद्योग । प्रयत्न । चेष्टा । २ संख्या ।
दल । जमाव । ३ सैनिक कार्य के लिये जमा हुए
हाथियों का समूह । ४ समूह । (बादलों का)

घटिकं (न०) कूल्हा ।

घटिकः (पु०) पानी पिलाने वाला ।

घटिका (स्त्री०) १ छोटा मिट्टी का घड़ा । २ बाल्टी ।
डोल । मिट्टी का छोटा बर्तन । ३ २४ मिनिट की
एक घड़ी । ४ जलबड़ी । ५ गट्टा । टखना ।
एड़ी ।

घटिन् (पु०) कुम्भ राशि ।

घटिधम् } (न०) जो घड़ा भर (जल) पी जाय ।
घटिधम् }

घटी (स्त्री०) १ छोटा घड़ा । २ २४ मिनिट का
काल । ३ जलबड़ी । —कारः, (पु०) कुम्हार । —
ग्रह, —ग्राह (वि०) पनभरा । पानी देनेवाला ।

—यंत्रं (न०) १ डेकी । एक यंत्र विशेष जो पानी उलीचने के काम में आता है । २ जलघड़ी ।

घटोत्कचः (पु०) हिडिम्बा राजसी के गर्भ से उत्पन्न भीम का पुत्र ।

घट्ट (धा० आत्म०) [घट्टते] —(उभय०) [घट्टयति-घट्टयते, घट्टित] १ हिलाना डुलाना । गडुबडु करना । २ स्पर्श करना । मलना । हाथों को मलना । ३ चिकनाना । चोट मारना । ४ निन्दा करना । ५ उखाड़ पड़ाड़ करना ।

घट्टः (पु०) १ घाट । महसूल उगाहने का स्थान । —कुट्टी, । महसूल उगाहने की चौकी । —जीविन्, (पु०) १ मल्लाह । नाव खेने वाला । २ दोगला, जाति विशेष । (यथा “ वैश्यायां रजकाज्जातः ”) ।

घट्टना (स्त्री०) १ हिलाना । गडुबडु करना । २ मलना । व्यवसाय । पेशा ।

घंटः } (पु०) एक प्रकार की चटनी विशेष ।
घण्टः }

घंटा } (स्त्री०) १ घंटा । घड़ियाल । —अगारं,
घण्टा } (न०) घंटाघर । —फलकः, (पु०) —

फलकम्. (न०) ढाल जिसमें घूबर जड़े हों । —ताडः, (पु०) घंटा बजाने वाला । —नादः (पु०) घंटा का नाद । —पथः, (पु०) किसी ग्राम की मुख्य सड़क । यथा —

दशवक्त्रन्तरो राजमन्त्रो घंटा वयः स्मृतः ।

कौटिल्य ।

—शब्दः, (पु०) १ काँसा । फूल । २ घंटे की आवाज़ ।

घटिका (स्त्री०) घंटी । छोटा घंटा ।

घंटुः } (पु०) १ हाथी की छाती के आर पार
घण्टुः } बाँधने की रस्सी जिसमें घंटे

अटके हों । २ उच्छ्रिता । प्रकाश ।

घंडः (पु०) } मधुमक्षिका ।
घण्डः (पु०) }

घन (वि०) १ कसा हुआ । दृढ़ । कड़ा । ओस । २ गाढ़ा । घना । सघन । ३ पूर्ण । पूर्णता को प्राप्त । ४ गहरा । ५ स्थायी । बेरोकटोक । ६ अभेद्य । ७ महान् । अतिशाय । तीक्ष्ण । ८

सम्पूर्ण । ९ शुभ । सौभाग्य सम्पन्न । —अत्ययः,

(पु०) —अन्तः, (पु०) शरद ऋतु । —

अम्बु (न०) वर्षा । —आकरः, (पु०) वर्षा

ऋतु । —आगमः, (पु०) वर्षाऋतु । —आमयः,

(पु०) बुहारे का वृक्ष । —आश्रयः, (पु०)

आकाश, अन्तरिक्ष । —उपलः, (पु०) ओले । —

ओघः, (पु०) बादलों का समूह । —कफः,

(पु०) ओले । विनौले । —कालः, (पु०)

वर्षाकाल । —गर्जितं, (न०) बादलों की गड़-

गड़ाहट । —गोलकः, (पु०) चाँदी, सेने की

मिलौनी । खोटी धातु । —जम्बालः, (पु०)

गाढ़ी कीचड़ या काँदी । —तालः, (पु०)

पक्षी विशेष । सारङ्ग पक्षी । —तोलः (पु०)

चातक पक्षी । —नाभिः, (पु०) धूम । धुआ ।

—नीहारः, (पु०) सघन कोहासा । कोहरा । —

पदवी, (स्त्री०) आकाश । अन्तरिक्ष । —पापराडः,

(पु०) मयूर । मोर । —मूलं, (न०) घनवर्ग ।

—रसः (पु०) १ गाढ़ा रस । २ सार । काढ़ा ।

३ कपूर । ४ पानी । जल । —वर्त्मन्, (न०)

आकाश । —वल्लिका, —वल्ली, (स्त्री०)

बिजली । वासः, (पु०) कोहड़ा । कोला ।

काशीफल । —वाहनः, (पु०) १ शिव । २

इन्द्र । —श्याम, (वि०) अत्यन्त काला । —

श्यामः, (पु०) १ श्रीरामचन्द्र । २ श्री कृष्ण

चन्द्र की उपाधि । —समयः, (पु०) वर्षाऋतु ।

सारः, (पु०) १ कपूर । २ पारा । पारद । ३

जल । पानी । —स्वनः, (पु०) बादलों की गड़-

गड़ाहट ।

घनः (पु०) १ बादल । २ गदा । बड़ा हथौड़ा या

घन । ३ शरीर । ४ समूह । समुदाय । ५

अवरक ।

घनम् (न०) १ मांस । मजीरा । घंटा । घड़ियाल ।

२ लोहा । ३ टीन । ४ चर्म । छाल । छिलका ।

घनाघनः (पु०) १ इन्द्र । २ दुष्ट हाथी । २ मदमत्त

हाथी । ३ नशे में चूर हाथी । ४ पानी से भरा

काला बादल ।

घरट्टः (पु०) चकिया ।

धधर (वि०) १ अस्पष्ट । २ बर्ताता हुआ । ३ (बादल की तरह) धधरधर ।

धधरः (पु०) १ बरबराहट । २ कोलाहल । ३ द्वार । फाटक । ४ हास्य । आनन्दोल्लास । ५ उल्लू । ६ तुषाग्नि ।

धधरा } (स्त्री०) १ धुंधरू या रोंने । २ धुँवरों
धधरी } की आवाज़ । ३ गङ्गा । ४ वीणा विशेष ।
धधरिका (स्त्री०) रोंने । धुँवरू । वाद्ययंत्र विशेष ।
एक प्रकार का बाजा ।

धधरितं (न०) शूकर की धुरधुराहट ।

धर्मः (पु०) गर्मी । उष्णता । २ ग्रीष्म ऋतु । ३ पसीना । स्वेद । ४ कड़ा । बड़ी कड़ाई । हंडा । —
अंशुः, (पु०) सूर्य । —अन्तः, (पु०) वर्षा-
ऋतु । —अम्बुः, —अम्भस्, (न०) पसीना ।
स्वेद । —चर्चिका, (स्त्री०) अन्धुरियाँ ।
अन्धोरी । —दिधितिः, (पु०) सूर्य । —द्युतिः,
सूर्य । —पयस्, (न०) पसीना । स्वेद ।

धर्षः (पु०) १ रगड़न । रगड़ । २ कूटना ।
धर्षणम् (न०) पीसना ।

धस् (धा० प०) [धसति, धस्ति, धस्त,]
खाना । भक्षण करना ।

धस्मर (वि०) १ मरभुखा । खाऊ । पेहू । २ भक्षक ।
नाशक ।

धस्त्र (वि०) चोट पहुँचाने वाला । हानिकारक ।

धस्त्रं (न०) केसर । ज्ञाप्रान ।

धस्त्रः (पु०) १ एक दिन । २ सूर्य ।

धाटः (पु०) } गर्दन का पृष्ठ भाग ।
धाटा (स्त्री०) }

धाटिकः } (पु०) १ घंटा बजाने वाला । बंदी-
घाटिकः } जन । भाट । ३ धतुरा का पौधा ।

धातः (पु०) १ प्रहार । चोट । २ हत्या । ३ तीर ।
४ गुणनफल । —चन्द्रः, (पु०) (अशुभ राशि
स्थित) चन्द्रमा । —तिथिः, (स्त्री०) अशुभ
चान्द्र तिथि । —नक्षत्रम्, (न०) अशुभ नक्षत्र ।
—वारः (पु०) अशुभ बार । —स्थानं, (न०)
कसाईखाना । फाँसीघर ।

धातक (वि०) हत्यारा । जल्लाद ।

धातन (वि०) हत्यारा । हत्याकारी ।

धातनम् (न०) १ हत्याकरण । आघात । २ (अज्ञ मे
पशु की तरह) हनन ।

धातिन् (वि०) [स्त्री०—धातिनी] १ प्रहार करने
वाला । मारने वाला । २ पकड़ने वाला । मार
डालने वाला । ३ नाशक । —पतिन्, —विहगः,
(पु०) बाज पक्षी ।

धातुक (वि०) [स्त्री०—धातुकी] १ हिंसक ।
२ क्रूर । निष्ठुर । नृशंस ।

धात्य (वि०) मार डालने योग्य ।

धारः (पु०) सिंचन । छिड़काव । तर करना ।

धार्तिकः (पु०) धी में सिकी पूड़ी या माल पुआ,
विशेष कर जिसमें अनेक छिद्र से होते हैं ।

धासः (पु०) १ चारा । २ चरागाह । गोचरभूमि ।
—कुन्दम्, —स्थानं, (न०) चरागाह ।

धु (धा० आत्म०) [धुचते, धुत,] अस्पष्ट शब्द
करना । ऐसा शब्द करना जिसका अर्थ समझ में
न आवे ।

धुः (पु०) कबूतर की कूटरगूँ । गुटरगूँ ।

धुई (धा० प०) [धुटति, धुटित] १ पुनः
आघात करना । बदला लेना । रोकना । २
प्रतिवाद करना । (धोटते) लौटना । ३ सौदा
करना । बदलौअल करना ।

धुटः } (स्त्री०) [स्त्री०—धुटिक, —धुटिका,]
धुटिः } टखना । एड़ी ।
धुटी }

धुण (धा० प०) [धोणते, धुणाति, धुणित,]
लौटना । डगमगाना । घूमना । लौटना । घूम कर
लौट आना । चक्कर देना । (आत्म०) लेना ।
प्राप्त करना ।

धुणः (पु०) धुन । झोटा कीड़ा विशेष । —अक्षरं,—
लिपि, (स्त्री०) लकड़ी या कागज में धुनों की
बनाई अक्षरनुमा आकृतियाँ ।

धुटः धुसटः (पु०) }
धुटकः धुगटकः (पु०) } एड़ी ।
धुटिका धुगिटिका (स्त्री०) }

धुंडः—धुण्डः (पु०) भौरा । अमर ।

धुर् (धा० प०) [धुरति, धुरित,] शब्द करना ।
कोलाहल करना । सोने के समय खुराना । गुराना ।
भयङ्कर होना । दुःख में रोना ।

धुरी (स्त्री०) नथना । (विशेष कर शूकर के)
 धुर्धुरः (पु०) १ कीट विशेष । धुराना । २ गुराना ।
 धुर्धुरी (स्त्री०) शूकर का शब्द विशेष ।
 धुलधुलारवः (पु०) एक प्रकार का कवुतर ।
 धुष् (धा० प०) [घोषति, घोषयति,—
 घोषयते, धुषित, धुष्ट, या घोषित] १ शब्द
 करना । आवाज़ करना । शोर करना । २ घोषणा
 करना ।
 धुसृगां (न०) केसर । जाफ़रा ।
 धूकः (पु०) उल्लू । धुघू ।—अरिः, (पु०)
 कौआ ।
 धूर्ण (धा० आ०) [धूर्णते, धूर्णति, धूर्णित,]
 इधर उधर घूमना या मारे मारे फिरना । चक्कर
 लगाना । हिलना । घूम कर पीछे पलटना ।
 धूर्ण (वि०) इधर उधर घूमने वाला ।—वायुः,
 (पु०) बबण्डर ।
 धूर्णनम् (न०) } हिलाना । घूमना । चक्कर
 धूर्णना (स्त्री०) } काटना ।
 धृ (धा० प०) [धरति, धृत] छिड़काव
 करना । (उभय०) [धारयति,—धारयते,
 धारित] नम करना । तर करना । छिड़कना
 सींचना ।
 धृण (धा० प०) [धृणाति,—धृणा] जलना ।
 चमकना ।
 धृणा (स्त्री०) १ अरुचि । चित । दया । रहम । २
 तिरस्कार । ३ भर्त्सना । विहार ।
 धृणालु (वि०) दयालु । कोमल हृदय । कृपालु ।
 धृणिः (स्त्री०) १ गर्मी । धूप । २ किरन । ३ सूर्य ।
 ४ लहर । (न०) जल ।—निधिः, (पु०)
 सूर्य ।
 धृतं (न०) १ घी । २ मक्खन । ३ पानी ।—अन्नः,
 —अर्चिस्, (पु०) दहकती हुई आग ।—आहुतिः,
 (स्त्री०) घी की आहुति । आहुः, (पु०)
 वृक्ष विशेष ।—उदः, (पु०) घी का समुद्र ।
 —ओदनः, (पु०) घी मिश्रित भात ।—कुल्या,
 (स्त्री०) घी की नदी ।—दीधितिः, (पु०)
 आग ।—धारः, (स्त्री०) अविच्छिन्न घी की
 धार ।—धूरः,—वरः, (पु०) मिष्टान्न विशेष ।

—लेखनी, (स्त्री०) कलखी या चमचा
 जिससे घी डाला या निकाला जाय ।
 धृताची (स्त्री) १ रात । २ सरस्वती देवी । ३ अप्सरा
 विशेष ।—गर्भसम्भवा, (स्त्री०) बड़ी इलायची ।
 धृष् (धा० परस्मै०) [वर्षति, धृष्ट,] १ रगड़ना ।
 मलना । प्रहार करना । २ झाड़ना । पालिश
 करना । चिकनाना । चमकाना । ३ पीसना ।
 कूटना । कुचरना । ४ स्पर्धा करना । हिंस्र करना ।
 डाह करना ।
 धृष्टिः (पु०) शूकर । (स्त्री०) १ पीसना । कूटना ।
 मलना । २ प्रतिद्वन्द्वता । स्पर्धा ।
 धोटः (पु०) } धोड़ा । अश्व ।—अरिः, (पु०)
 धोटकः (पु०) } मैसा ।
 धोटी } (स्त्री०) बोड़ी ।
 धोटिका }
 धोणासः } (पु०) रेंगने वाला जन्तु विशेष ।
 धोनासः }
 धोणा (स्त्री०) १ नासिका । नाक । २ बोड़े का
 नथुना । शूकर का धूथन ।
 धोणिन् (पु०) शूकर ।
 धोंटा } (स्त्री०) वृक्ष विशेष । सुपाड़ी का पेड़ ।
 धोण्टा }
 धोर (वि०) १ भयङ्कर । भयानक । २ प्रचण्ड ।
 उग्र ।—आकृति,—दर्शन, (वि०) भयानक
 शक्ल का ।—धुष्यं, (न०) कौसा । फूल ।—
 रासनः, (पु०)—रासिन्,—वाशनः,—वाशिन्,
 (पु०) शृगाल । स्यार ।—रूपः, (पु०) शिव ।
 धोरं (न०) १ भय । डर । २ ज़हर ।
 धोरः (पु०) शिव ।
 धोरा (स्त्री०) रात ।
 धोलाः (पु०) } माठा । छाँड़ ।
 धोलं (न०) }
 धोषं (न०) कौसा धालु ।
 धोषः (पु०) १ शोर गुल । २ बादल की गड़गड़ाहट ।
 ३ घोषणा । दिहोरा । ४ अफवाह । किंवदन्ती ।
 ५ ग्वाला । गोप । ६ गाँव । पुरवा । ७ कायस्थ ।
 धोषणम् (न०) } दिहोरा । राजाज्ञा । फरमान ।
 धोषणा (स्त्री०) }

घोषायिलुः (पु०) १ चिल्लाने वाला । भाट । बंदी-जन । २ ब्राह्मण । ३ कोकिल ।

घ्न (वि०) [स्त्री०—घ्नी,] मारने वाला । हत्या करने वाला । नाशक । विनाशक ।

घ्रा (धा० प०) [जिघ्रति, घ्रातः,—घ्राण्] १ सूंघना । सूंघ कर जान लेना । ३ चुंबन करना ।

घ्राण (व० क०) सूंघा हुआ ।—इन्द्रियं, (वि०) श्रौंखों का अंधा किन्तु नाक से सूंघ सूंघ कर जान लेने वाला ।—तर्पण, (वि०) नासिकाप्रिय ।—तर्पणम्, (न०) सुगन्धि ।

घ्राणं (न०) १ सूंघना । २ गन्धि । सुगन्धि ।

घ्रातिः (स्त्री०) १ सूंघने की क्रिया । २ नाक ।

ङ

नोट—ङ से आरम्भ होने वाला संस्कृत में कोई शब्द नहीं है ।

च

च संस्कृत वर्णमाला या नागरीवर्णमाला का २२ वाँ अक्षर और छठवाँ व्यञ्जन और दूसरे वर्ग चवर्ग का प्रथम अक्षर । यह भी व्यञ्जन है । इसका उच्चारण स्थान तालु हैं । यह स्पर्शवर्ण है और इसके उच्चारण में श्वास, विचार, घोष और अल्पप्राण प्रयत्न लगते हैं ।

चः (पु०) १ चन्द्रमा । २ कड़वा । ३ चोर । (अव्यय०) और । पादपूरक ।

चक् (धा० उभ०) [चकति, -चकते, चकित] अधाना । अफरना । सन्तुष्ट होना । रोकना । अड़ना ।

चकास् (धा० परस्मै० किन्तु कदाचित् आत्मने० भी) [चकास्ति,—चकास्ते, चकासित,] चमकना चमकीला होना । २ (आलं०) प्रसन्न होना और समृद्धशाली होना । (निजन्त) चमकाना । प्रकाशित करना ।

चकित (वि०) (भय के कारण) १ थरथर काँपता हुआ । २ भयभीत । चौंका हुआ । ३ भीरु । डर-पोंक । शङ्कान्वित । शङ्कित । (न०) एक छन्द जिसके प्रत्येक पाद में १६ अक्षर होते हैं ।

चकोरः (पु०) तीतर की जाति का एक पहाड़ी पक्षी जो कि चन्द्रमा को देख बहुत प्रसन्न होता है ।

चक्रं (न०) १ पहिया । २ कुम्हार का चाक । ३ तेली का कोल्हू । ४ भगवान् विष्णु का आयुध विशेष । ५ वृत्त । मण्डल । ६ दल । समूह । समुदाय । ७ राष्ट्र । राज्य । ८ प्रान्त । सूबा । जिला । ग्रामों का समुदाय । ९ सैनिक ब्यूह । १० युग । ११ अन्तरिक्ष । आकाशमण्डल । १२ सेना । भीषभाइ । १३ ग्रन्थ का अध्याय । १४ भँवर । १५ नदी का घूमघुमाव ।—अङ्गः, (पु०) १ राजहंस । २ गाड़ी । ३ चक्रवाक ।—अटः, (पु०) १ मदारी । सपेरा । २ गुंडा । बदमाश । ठग । ३ दीनार या सिक्का विशेष ।—आकारः,—आकृति, (वि०) गोलाकार । गोल ।—आयुधः, (पु०) श्रीविष्णु ।—आवर्तः, (पु०) भँवर जैसी या चक्रदार गति ।—आह्वः, (पु०)—आह्वयः, (पु०) चक्रवाक ।—ईश्वरः, (पु०) १ विष्णु । २ जिले का आला अफसर या सर्वोच्च अधिकारी ।—उपजीविन्, (पु०) तेली ।—कारकं, (न०) १ नाखून । नख । २ सुगन्ध-द्रव्य विशेष ।—गण्डुः, (पु०) गोल तकिया ।—गतिः, (स्त्री०) चक्र । चक्रदार चाल या गति ।—गुच्छः, (पु०) अशोक वृक्ष ।—ग्रहणां, (न०) [स्त्री०—ग्रहणी] परकोटा । खाई ।—धर, (वि०) मण्डल में सं० श० कौ०—३१

भूमने वाला ।—सूडामणिः, (पु०) सुकुटमणि ।
 —जीवकः,—जीविन्, (पु०) कुम्हार ।—
 तीर्थ, (न०) नैमिवारय का तीर्थ विशेष ।—
 धरः, (पु०) १ विष्णु का नाम । २ राजा ।
 सूबेदार । प्रान्त का शासक । ३ देहाती कलाबाज
 नट । जादूगर । मदारी ।—धारा, (स्त्री०) पहिये
 की परिधि या उसका घेरा ।—नाभिः, (पु०)
 पहिये की नाह ।—नामन्, (पु०) १ चक्रवाक ।
 २ लोहभस्म ।—नायकः, (पु०) १ सैनिक टोली
 का नायक । ३ सुगन्ध द्रव्य विशेष ।—नेत्रिः,
 पहिये की परिधि या उसका घेरा ।—पाणिः,
 (पु०) विष्णु भगवान् ।—पादः,—पादकः,
 (पु०) १ गाड़ी । २ हाथी ।—पालः, (पु०)
 १ सूबेदार या प्रान्त का शासक । २ एक सैनिक
 विभाग का अधिकारी । ३ आकाशमण्डल ।—
 बन्धु,—बान्धवः, (पु०) सूर्य ।—बालः,—
 बालः,—बाहः,—बाहः,—बालं,—बालं,—
 बाहं,—बाहं, (न०) १ मण्डल । वृत्त । समुदाय ।
 समूह । ३ आकाश मण्डल । (पु०) १ पौराणिक
 पर्वत माला जो पृथिवी की परिधि को दीवाल की
 तरह घेरे हुए हैं और जो प्रकाश और अन्धकार
 की सीमा समझी जाती है । २ चक्रवाक ।—भूतः,
 (पु०) १ चक्रधारी । २ विष्णु ।—मेदिनी,
 (स्त्री०) रात । निशा ।—भ्रमः,—भ्रमिः, (स्त्री०)
 चक्की (आटा पीसने की) ।—मण्डलिन् (पु०)
 सर्प विशेष ।—मुखः, (पु०) शूकर ।—
 यानम्, (न०) गाड़ी ।—रदः, (पु०) शूकर ।
 —वर्तिन्, (पु०) आसमुद्रक्षितीश । सत्राट् ।
 —वाकः, (पु०) चक्रवा चकवी ।—वाहः,
 (पु०) १ सीमा । सरहद्द । २ डीवट । पतिल-
 सेत । ३ किसी कार्य में व्याप्ति ।—वातः, (पु०)
 तूफान । बंबडर । आँधी ।—वृद्धिः, (स्त्री०)
 सूद दर सूद ।—व्यूहः, (पु०) मण्डलाकार
 सैनिक संस्थापना ।—संज्ञः, (न०) टीन ।—
 संज्ञः, (पु०) चक्रवाक ।—साह्वयः, (पु०)
 चक्रवाक ।—हस्तः (पु०) विष्णु ।
 (पु०) १ चक्रवाक । २ समुदाय । समूह । दल ।
 चक्र (वि०) चन्द्राकार । गोल ।

चक्रकः (पु०) तर्क विशेष ।
 चक्रवत् (वि०) १ पहियादार या जिसमें पहिये लगे
 हों । २ गोल । (पु०) १ तेली । २ सत्राट् ।
 ३ विष्णु का नाम ।
 चक्रांकी } (स्त्री०) राजहंस ।
 चक्राङ्गी }
 चक्रिका (स्त्री०) १ ढेर । दल । टोली । २ घोखा ।
 दगाबाजी । ३ घुटना ।
 चक्रिन् (पु०) १ विष्णु । २ कुम्हार । ३ तेली । ४
 सत्राट् । ५ सूबेदार । प्रान्त का शासक ।
 ६ गधा । ७ चक्रवाक । ८ मुखबिर । सूचना देने
 वाला । ९ सर्प । १० काक । ११ मदारी । नट ।
 चक्रिय (वि०) यात्रा करने वाला । गाड़ी में बैठने वाला ।
 चक्रीवत् } (पु०) गधा । रासभ । खर ।
 चक्रीवन्तः }
 चक्र (धा० आत्म०) [चष्टे] १ देखना । ताकना ।
 पहचानना । २ बोलना । कहना । बतलाना ।
 चक्षुस् (पु०) १ शिश्नक । दीक्षागुरु । अध्यात्म विद्या
 सम्बन्धी विद्या पढ़ाने वाला । २ देवगुरु बृहस्पति ।
 चक्षुष्य (वि०) १ सुन्दर । खूबसूरत । मनोहर । २
 आँखों के लिये भला ।
 चक्षुष्या (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री ।
 चक्षुस् (न०) १ नेत्र । आँखें । २ दृष्टि । दृक्शक्ति ।
 देखने की शक्ति ।—गोचर, (वि०) दिखलाई
 पड़ने वाला ।—दानं, (न०) मूर्ति प्रतिष्ठा के
 अन्तर्गत नेत्रोन्मीलन कृत्य ।—पथः, (पु०) दृष्टि
 की पहुँच । अन्तरिच ।—मलं, (न०) कीचड़ ।
 आँखों का मैल ।—रागः, (= चक्षुरागः) (पु०)
 आँखों की सुखी । आँखमिड़ौअल ।—रोगः,
 (= चक्षुरोगः) (पु०) नेत्ररोग विशेष ।—
 विषयः, (पु०) १ दृष्टिगोचरत्व । २ चिन्हानी ।
 देखने से प्राप्त हुआ ज्ञान अथवा देखने से प्राप्त
 होने वाला ज्ञान । ३ कोई भी पदार्थ जो दिख-
 लाई पड़े । [अच्छे या स्वच्छ नेत्रों वाला ।
 चक्षुष्मत् (वि०) १ देखने की शक्ति से सम्पन्न । २
 चक्षुणः, चक्षुणः (पु०) १ वृत्त । पेड़ । २ गाड़ी ।
 चक्रुरः, चक्रुरः (पु०) १ ३ कोई भी पहियादार
 सवारी ।

चक्रमणम् } (न०) १ घूमना फिरना । दहलना । २
चक्रुमणम् } धीरे धीरे चलना ।

चञ्च (धा० प०) [चञ्चति, चञ्चित] १ हिलना ।
लहराना । काँपना । २ दोड़ल्यमान होना ।
झूमना ।

चंचः } (पु०) १ टोकनी । डलिया । २ पञ्चाङ्गुल-
चञ्चः } मान । पाँच अंगुल का नाप ।

चंचरिन् } (पु०) भ्रमर । भौरा ।
चञ्चरिन् }

चंचरीकः } (पु०) भ्रमर । भौरा ।
चञ्चरीकः }

चंचल } (वि०) १ कँपकपा । थरथराने वाला ।
चञ्चल } काँपने वाला । २ अस्थिर । एकसा न
रहने वाला ।

चंचलः } (पु०) १ पवन । २ प्रेमी । आशिक ।
चञ्चलः } ३ मनमौजी । लम्पट ।

चंचला } (स्त्री०) १ विद्युत् । बिजली । २ धन की
चञ्चला } अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी जी ।

चंचा } (वि०) १ बेत का बना हुआ । २ गुड़ा ।
चञ्चा } गुबिया । पुसला ।

चंचु } (वि०) १ प्रसिद्ध । प्रख्यात । परिचित ।
चञ्चु } २ चतुर ।—प्रहार, (पु०) चोंच की
चोट ।—भृत्, (पु०)—कत्, (पु०) पची ।

चंचुः } (पु०) हिरन ।
चञ्चुः }

चंचू } (स्त्री०) चोंच ।
चञ्चू }

चंचुर } (वि०) चतुर । पटु ।
चञ्चुर }

चट् (धा० प०) [चटति, चटित] कूटना ।
गिरना । अलग होना । [चाटयति—चाटयते]
१ बध करना । २ चायल करना । ३ पैठना ।
धुसना । तोड़ना ।

चटकः (पु०) गौरैया ।

चटका } (स्त्री०) मादा गौरैया ।
चटिका }

चटुं (न०) } चापलूसी भरे शब्द । पेट ।
चटुः (पु०) }

चटुल (वि०) १ कँपकपा । काँपने वाला । अस्थिर ।
अडढ़ । २ चञ्चल । ३ मनोहर । सुन्दर । प्रिय ।

चटुला (स्त्री०) बिजली । विद्युत् ।

चटुलोल } (वि०) १ कँपकपा । २ मनोहर ।
चटुलोल } सुन्दर । ३ मधुरभाषी ।

चण (वि०) प्रसिद्ध । प्रख्यात । निपुण ।

चणः (पु०) मटर विशेष ।

चणकः (पु०) चना । मटर ।

चण्ड } (वि०) १ भयानक । उग्र । क्रोध ।
चण्ड } युक्त । २ गर्म । उष्ण । ३ फुदीला ।

कर्कट । ४ भालदार । ५ चूक ।—अंशुः,—

दीधितिः,—भानुः, (पु०) सूर्य ।—ईश्वरः,

(पु०) शिव का रूप विशेष ।—मुण्डा,

(=चामुण्डा) (स्त्री०) दुर्गा का रूप विशेष ।

—मृगः, (पु०) वन्य जन्तु विशेष ।—

विक्रम, (वि०) अत्यन्त पराक्रमी ।

चण्डं } (न०) १ गर्मी । उष्णता । २ क्रोध ।

चण्डम् } रोष ।

चण्डा, चण्डा (स्त्री०) १ दुर्गा देवी । २ क्रोधन

चण्डी, चण्डी (स्त्री०) } स्वभाव की स्त्री ।

चण्डातः } (पु०) सुगन्ध युक्त कनेर ।

चण्डातः } (पु०) सुगन्ध युक्त कनेर ।

चण्डातकः, चण्डातकः (पु०) } कुर्ती ।

चण्डातकम्, चण्डातकम् (न०) } छोटाकोट ।

चण्डाल } (वि०) दुष्ट । निष्ठुर । नृशंसकर्मा ।

चण्डाल } क्रूरकर्मान ।—वल्लकी, (स्त्री०)

चण्डाल की बीणा ।

चण्डालः } (पु०) १ अत्यन्त नीच एवं शृण्णित एक

चण्डालः } वर्णसङ्कर जाति का नाम जिसकी उत्पत्ति

ब्राह्मण पिता और शूद्रा स्त्री से हुई है । २ इस

जाति का मनुष्य । जातिच्युत पुरुष ।

चण्डालिका } (स्त्री०) चण्डाल की बीणा ।

चण्डालिका } (स्त्री०) चण्डाल की बीणा ।

चण्डिका } (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।

चण्डिका } (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।

चण्डिमन् } (पु०) १ क्रोध । रोष । उग्रता ।

चण्डिमन् } २ गर्मी । उष्णता ।

चण्डिल } (पु०) नाई । हज्जाम ।

चण्डिलः } (पु०) नाई । हज्जाम ।

चतुर (वि०) [संस्थावाची—सदा बहुवचनान्त

यथा—(पु०) चत्वारः, (स्त्री०) चतस्रः, (न०)

चत्वारि] चार ।—अंशः, (पु०) चतुर्थ भाग ।

अङ्गम्, (न०) १ जिसके चार अंग हों । हाथी,

घोड़े, रथ और पैदल सिपाहियों से सज्जित सेना ।

२ एक प्रकार की शतरंज ।—अन्तः, (पु०) चारों ओर से आवेष्टित ।—अन्ता, (स्त्री०) पृथिवी ।—अशीति, (वि०) ८४वाँ ।—अशीति, (वि०) ८४ । चौरासी ।—अश्र, —अश्र, (वि०) १ चार कोनों वाला । चतुष्कोण । २ सब प्रकार से सुन्दर । सुबौल ।—अहं, (न०) चार दिवस की अवधि ।—आननः, (पु०) ब्रह्मा जी ।—आश्रमं, (न०) ब्राह्मण के जीवन के चार भाग ।—कर्ण, (वि०) (= चतुष्कर्ण) केवल दो आदमियों का सुना हुआ ।—गतिः, (पु०) १ परमात्मा । २ कछुवा ।—गुण, (वि०) चारगुण । चौपाया ।—चत्वारिंशत्, (= चतुश्चत्वारिंशत्) (वि०) ४४ । चौबालीस ।—दन्तः (पु०) इन्द्र के हाथी ऐरावत की उपाधि ।—दश, (वि०) १४वाँ ।—दशन्, (वि०) १४ । चौदह !—दसरत्नानि, (बहुवचन) चौदह रत्न जो समुद्रमन्थन के समय निकले थे । यथा —

सहस्रैः कौस्तुभपारिजातकपुरा चन्वन्वरिश्चन्द्रजा
गावो काचदुषाः सुरैरवरगजो रम्भादिदेवाङ्गनाः ।
अथ सप्तमुखो विषं हरिषदुः शंखोऽमृतं चाङ्गुधे
रत्नानोह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वुः सदा चङ्गलम् ।

—दशविद्या, (स्त्री०) [बहुवचन] चौदह विद्याएँ । वे ये हैं :—

यज्ञज्ञानविज्ञाना वेदा चर्चशास्त्रं पुराणकं ।
जीर्णौषा तर्कनपि च एता विद्याश्चतुर्दश ॥

—दशी, (स्त्री०) चौदस ।—दिशं, (न०) चारों दिशाओं का समूह । (अन्यथा०) चारो दिशाओं की ओर । सब तरफ से ।—दोलः, (पु०) दोलम्, (न०) ताम्रकाम । राजकीय पालकी ।—नवति, (वि०) या (स्त्री०) १४ । चौरानवे ।—पंच, (वि०) [चतुःपञ्च या चतुष्पञ्च] चार या पाँच ।—पञ्चाशत् (स्त्री०) [= चतुःपञ्चाशत् या चतुष्पञ्चाशत्] ४४ । चौवन ।—पथः, (पु०) [= चतुःपथः या चतुष्पथः अथवा चतुष्पथम्] चौराहा । (पु०) ब्राह्मण ।—पद, (वि०) [= चतुष्पदः] १ चार पैरों वाला । २

चार अवयवों वाला ।—पदः, (पु०) चौपाया ।—पदी (स्त्री०) चार पदों वाला श्लोक, जिसमें ३२ अक्षर होते हैं ।—पाठी, (स्त्री०) [चतुष्पाठी] ब्राह्मणों की पाठशाला जिसमें चारों वेद पढ़ाये जाँय ।—पाणिः, (पु०) [= चतुष्पाणिः] विष्णु भगवान ।—पाद्, —पाद, [= चतुःपाद या चतुष्पाद] (वि०) चार पदों वाला, चार भागों या अवयवों वाला । (पु०) चौपाया ।—बाहुः, (पु०) विष्णु ।—बाहु, (न०) चतुष्कोण ।—भद्रं, (न०) पुरुषों के चार पुरुषार्थ अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ।—भागः, (पु०) चतुर्थांश । चौथा हिस्सा । चौथाई ।—भुज् (वि०) चार भुजा वाला । (पु०) विष्णु । (न०) चतुष्कोण ।—मासं (न०) चार मास की अवधि । [आषाढ़ मास की शुक्ला ११ से कार्तिक शुक्ला ११ तक की अवधि]—मुख, (वि०) चार मुखों वाला ।—मुखः, (पु०) ब्रह्मा जी ।—मुखम्, (न०) १ चार मुख । २ चार द्वारों वाला घर ।—युगं (न०) चारयुग ।—वक्त्रः, (पु०) ब्रह्मा जी ।—वर्गः (पु०) चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ।—वर्गः, (पु०) चार जातियाँ यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।—वार्षिका (स्त्री०) चारवर्ष की उम्र की गौ ।—विंश (वि०) २४ चौबीस ।—विंशति (वि० या स्त्री०) २४ । चौबीस ।—विद्य, (वि०) चारो वेदों को जानने वाला ।—विद्या (स्त्री०) चारो वेद ।—विध, (वि०) चार प्रकार का । चौगुना ।—वेद, (वि०) चारो वेदों से परिचित ।—वेदः, (पु०) परब्रह्म ।—व्यूहः, (पु०) विष्णु भगवान का नामान्तर ।—व्यूहम् (न०) वैद्यक शास्त्र ।—षष्टि (वि० या स्त्री०) चौसठ । ६४ ।—सप्तति (वि० या स्त्री०) ७४ । चौहत्तर ।—हायन, —हायण, (वि०) चार वर्ष की उम्र का ।

चतुर (वि०) १ होशियार । स्याना । निपुण । पट । २ तीक्ष्ण बुद्धि सम्पन्न । फुर्तीला । तेज । ३ मनोहर । सुन्दर । प्रिय । अनुकूल ।

चतुरं (न०) १ चतुर्थ । पटुता । निपुणता । २
गजशाला । [(पु०) संन्यासाश्रम ।

चतुर्थ (वि०) [स्त्री०—चतुर्थी] चौथा ।—आश्रमः,
चतुर्थ (न०) चौथाई । चतुर्थांश ।

चतुर्थक (वि०) चौथा ।

चतुर्थकः (पु०) चौथिया ज्वर ।

चतुर्थी (स्त्री०) १ चौथितिथि । २ कारक विशेष ।—
कर्मन्, (न०) विवाह में एक कर्म विशेष जो
चतुर्थ दिवस किया जाता है ।

चतुर्धा (अव्यया०) चार प्रकार से । चार गुना ।

चतुष्कम् (न०) १ चार का समूह । २ चौराहा । ३
चौकोन आँगन । चार खंभों पर टिका हुआ बड़ा
कमरा । चौदहरी ।

चतुष्की (स्त्री०) १ चौकोन बड़ी पुष्करिणी । २
मसहरी । मञ्जरदानी ।

चतुष्टय (वि०) [स्त्री०—चतुष्टयी] चारगुना ।

चतुष्टयम् (न०) १ चार का समूह । २ चौकोन ।

चत्वरं (न०) १ चबूतरा । आँगन । २ चौराहा । ३
समथर भूमि जो यज्ञ के लिये तैयार की गयी हो ।

चत्वारिंशत् (स्त्री०) चालीस । ४० ।

चत्वालः (पु०) १ हवनकुण्ड । २ कुण्ड । ३
गर्भाशय ।

चद् (धा० उभय०) [चदति, चदते] माँगना ।
याचना करना ।

चदिरः (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर । ३ हाथी ।
४ सर्प ।

चन (अव्यया०) [च + न] और नहीं ।

चन्द } (धा० परस्मै०) [चन्दति, चन्दित] १
चन्द } चमकना । २ प्रसन्न होना ।

चन्दः } (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।

चन्दनः } (पु०) चन्दन । सुगन्धद्रव्य विशेष ।—
चन्दनः } अचलाः,—गिरिः,—अद्रिः, (पु०)
चन्दनम् } मलयपर्वत ।—उदकं, (न०)
चन्दनम् } चन्दन मिश्रित जल ।—पुष्पं (न०)
जवैग । लौंग ।

चन्दिरः } (पु०) १ हाथी । २ चन्द्रमा ।

चन्द्रः } (पु०) १ चन्द्रमा । चाँद । २ चन्द्रग्रह । ३
चन्द्रः } कपूर । मयूरपंख में की चन्द्रिकाएँ । ४

जल । ६ सुवर्ण । [चन्द्र जब समाप्तान्त शब्दों के
अन्त में आता है, तब इसका अर्थ प्रख्यात या
आदर्श होता है । यथा गुरुचन्द्रः अर्थात् सर्वो-
त्कृष्ट या आदर्श पुरुष]—अंशुः, (पु०) चन्द्र
की किरण ।—अर्धः, (पु०) आधा चन्द्रमा ।
—आत्मजः,—औरसः,—जः,—जातः,—
तनयः,—तन्त्रनः,—पुत्रः, (पु०) बुध ग्रह ।
—आननः, (पु०) कार्तिकेय ।—आपीडः,
(पु०) शिव ।—आह्वयः, (पु०) कपूर ।—
इष्टा, (स्त्री०) कमल का पौधा । कमोदिनी के
पुष्पों का समूह ।—उपलः, (पु०) चन्द्र-
कान्त मणि ।—कान्तः, (पु०) चन्द्रकान्त
मणि ।—कला, (स्त्री०) चन्द्रमा का एक
अंश ।—कान्ता, (स्त्री०) १ रात । २
चाँदनी ।—कान्तिः, (स्त्री०) चाँदनी । (न०)
चाँदी ।—क्षयः, (पु०) अमावास्या ।—गोलः,
(पु०) चन्द्रलोक ।—गोलिका (स्त्री०)
चाँदनी ।—ग्रहणम्, (न०) चन्द्रमा का ग्रहण ।
—चञ्चला, (स्त्री०) एक प्रकार की छोटी मछली ।
—चूडः—मैलिः—शेखरः, (पु०) शिवजी
की उपाधियाँ ।—दाराः, (पु० बहुवचन) २०
नक्षत्र जो दक्ष की कन्याएँ हैं, चन्द्रमा की स्त्रियाँ
हैं ।—द्युतिः, (पु०) चन्दन काष्ठ । (स्त्री०)
चाँदनी ।—नामन्, (पु०) कपूर ।—पादः,
(पु०) चन्द्र किरण ।—प्रभा, (स्त्री०)
चाँदनी ।—बाला, (स्त्री०) १ बड़ी इलायची ।
२ चाँदनी ।—विन्दुः, (पु०) चिन्ह विशेष
(०) ।—भस्मन्, (न०) कपूर ।—भागा,
(स्त्री०) दक्षिण भारत की एक नदी का नाम ।
—भासः, (पु०) तलवार ।—भूति, (न०)
चाँदी ।—मणिः, (पु०) चन्द्रकान्त मणि ।—रेखा,
—लेखा, (स्त्री०) चन्द्रमा की कला ।—रेणुः,
(पु०) ग्रन्थचोर । लेखचोर ।—लोकः, (पु०)
चन्द्रमा का लोक ।—लोहकं,—लोहं,—
लौहकं, (न०) चाँदी ।—वंशः, (पु०)
सारतीय प्राचीन प्रसिद्ध राजवंशों में से एक ।
चन्द्रवंश ।—वदन, (वि०) चन्द्रमा जैसे मुख
वाला ।—वतं, (न०) एक प्रकार का वत ।

—शाला, (स्त्री०) १ अटारी । अटा । २ चौदनी । —शालिका, (स्त्री०) अटा । अटारी । —शिला, (स्त्री०) चन्द्रकान्त मणि । —संज्ञः, (पुं०) कपूर । —सम्भवः, (पुं०) बुध ग्रह । —सम्भवा, (स्त्री०) छोटी इलायची । —सालोर्फ, (न०) चन्द्रलोक की प्राप्ति । —हन्, (न०) राहु की उपाधि । —हासः, (पुं०) १ चमचमाली तलवार । २ रावण की तलवार का नाम । ३ केरल के राजा सुधार्मिक का पुत्र चन्द्रहास था ।

चन्द्रकः (पुं०) १ चन्द्रमा । २ मयूर के पंखों की चन्द्रिका । ३ नख । ४ चन्द्र के आकार का मण्डल (जो जल में तैल बिन्दु डालने से बन जाता है) ।

चन्द्रकिन् (पुं०) मयूर । मोर ।

चन्द्रकस् (पुं०) चन्द्रमा ।

चन्द्रिका (स्त्री०) १ चौदनी । २ व्याख्या । टीका । ३ रौशनी । ४ बड़ी इलायची । ५ चन्द्रभागतनदी । ६ मल्लिका जल । —अश्वजु, (न०) लफेद कमल जो चन्द्रमा के उदय होने पर खिलता है । —द्रावः, (पुं०) चन्द्रकान्त मणि । —पायिन्, (पुं०) चकोर पक्षी ।

चन्द्रिलः (पुं०) १ नाई । २ शिव ।

चप् (धा० परस्मै०) [चपति,] सान्त्वना प्रदान करना । डाँडस बँधाना । (उभय०) [चपयति, —चपयते,] पीसना । कूटना । गूथना । सानना ।

चपटः (पुं०) देखो चपेट ।

चपल (वि०) १ काँपने वाला । हिलाने वाला । थर-थराने वाला । २ अस्थिर । चंचल । अनियमित । डाँवाडोल । ३ निर्बल । नरवर । ४ फुर्तीला । उतावला । ५ अविचारी । अविवेकी ।

चपलः (पुं०) १ मछली । २ पारा । पारद । ३ चातक पक्षी । ४ सुगन्ध द्रव्य विशेष ।

चपला (स्त्री०) १ विजली । २ कुलटा स्त्री । ३ मदिरा । ४ लक्ष्मी । ५ जिह्वा । —जनः, (पुं०) चंचल या अस्थिर स्वभाव की स्त्री ।

चपेटः (पुं०) १ थप्पड़ । २ फैले हुए हाथ की हथेली ।

चपेट, चपेटिका (स्त्री०) थप्पड़ । भापड़ ।

चप् (धा० परस्मै०) [चपति, चान्त,] १ पीना । चसकना । पी डालना । २ खाना ।

चपराः (पुं०) एक प्रकार का हिरन ।

चपराः (पुं०) } जन्तु विशेष की पूँछ का बना चँवर ।
चपरास् (न०) }

चपरी (स्त्री०) सुरागाय । चमर की मादा । पुच्छं, (न०) चमर की पूँछ जो चँवर की तरह इस्ते-माल की जाती है । —पुच्छः, (पुं०) गिलेहरी ।

चपरिकः (पुं०) कोविदार वृक्ष ।

चमसः (पुं०) } यहाँ में सोमवल्ली का रस पीने
चमसप् (न०) } का पात्र विशेष ।
चमसी (स्त्री०) }

चमूः (स्त्री०) सेना (कौज) सैन्यदल जिसमें ७२६ हाथी, ७२६ ही रथ, २१८७ घोड़सवार और ३६४६ पैदल होते हैं । —चरः, (पुं०) घोड़ा । सिपाही । —नाथः, —पः, —पतिः, (पुं०) सेनानायक । जनरल । कमाँडर ।

चमूर (पुं०) एक प्रकार का हिरन ।

चम्प (धा० उभय०) [चंपयति, —चंपयते] जाना । हिलना ।

चम्पकः (पुं०) १ चंपा का वृक्ष । २ सुगन्धिद्रव्य विशेष ।

चम्पकं (न०) चम्पा का फूल । —माला, (स्त्री०) १ चंपाकली । आभूषण विशेष । २ चम्पा के फूलों का हार । ३ छन्द विशेष । —रम्भा, (स्त्री०) कदली विशेष ।

चम्पकालुः (पुं०) कटहर का पेड़ ।

चम्पकावती (स्त्री०) गंगातट पर अवस्थित एक चम्पा प्राचीन नगर का नाम । इस पुरी का चम्पावती आधुनिक नाम भागलपुर है ।

चम्पालुः (पुं०) देखो “चम्पकालु” ।

चम्पू (स्त्री०) गद्यपद्य मिश्रित काव्य विशेष ।

गद्यपद्यनयं काव्यं चम्पूदिव्यभिधीयते ।

—साहित्यदर्पण ।

चय (धा० आत्म०) [चयते] श्रौर जाना ।

चयः (पुं०) १ समूह । समुदाय । ढेर । २ टीला । ३ पुरस । ४ परकोटा । ५ दुर्गद्वार । ६ बैठकी । ७ इमारत । भवन । ८ लकड़ी की ढाल ।

चयनम् (न०) १ पुष्पादिक को बीन कर एकत्र करने की क्रिया । २ ढेर ।

चर् (धा० पर०) [चरति, चरित] १ चलना । फिरना । इधर उधर घूमना । भ्रमण करना । २ अभ्यास करना । देखना । ३ चरना । ४ खाना । निघडाना । ५ किसी काम में लगना । ६ रहना । किसी वशा में रहना । [निजन्त] [चारयति] १ चलाना । भेजना । २ भगा देना । ४ अभ्यास करवाना ।

चर (वि०) [स्त्री०—चरी,] १ काँपता हुआ । थर थराता हुआ । २ जंगम । चलने वाला । ३ जान-वार । जीवधारी ।—अचर, (पु०) स्थावर जङ्गम ।—अचरम्, (न०) १ संसार । २ आकाश अन्तरिक्ष ।—द्रव्यं, (न०) हिलाने डुलाने वाला पदार्थ ।—मूर्तिः, (पु०) उत्सव मूर्ति ।

चरः (पु०) १ जासूस । भेदिना । दूत । २ खंजन पक्षी । ३ जुआ । ४ कौड़ी । ५ मङ्गलग्रह । ६ मङ्गलवार ।

चरकः (पु०) १ जासूस । २ रमता भिन्नक । ३ आयुर्वेद विशेष । ४ पापक ।

चरहः (पु०) खंजन पक्षी ।

चरणः (पु०) १ पैर । २ सहारा । खंभा । धुन-चरणम् (न०) १ किया । ३ वृत्त मूल । ४ श्लोक का एक पाद । ५ चौथाई । ६ वेद की शाखा । ७ जाति । नस्ल । (न०) घूमना । फिरना । भ्रमण । २ सम्पादन । अभ्यास । ३ चालचलन । बर्ताव । ४ सम्पन्नता । ५ भक्षण ।—अचरुतं, —उदकं, (न०) जल । जिससे ब्राह्मण या किसी देव मूर्ति के पैर धोये गये हों । पैर का धोवन ।—अरविन्दं, —कमलं, —पद्मं, (न०) कमल जैसे पैर ।—आयुधः, (पु०) सुगाँ ।—आस्कन्दनम्, (न०) कुचरना । पैरों से रूँधना ।—अन्धिः, (पु०)—पर्वन्, (न०) उल्लाना ।—न्यासः, (पु०) कदम ।—पः, (पु०) वृत्त ।—पतनम्, (न०) पैरों पड़ना ।—पतित, (पु०) पैरों पड़ना । पैर लगना ।—शुश्रूषा, —सेवा, (स्त्री०) १ इण्डवत । नकविसनी । २ सेवा । भक्ति ।

चरम (वि०) १ अन्तिम । आखिरी । २ पिछला । ३

बड़ा । पुराना । ४ विरज्जुल बाहिरी । ५ परिचयी । ६ सब से नीचा या कम ।—अचलः,—अर्द्धिः,—दमाभृत्, (पु०) अस्ताचल पर्वत ।—अवस्था, (स्त्री०) वृद्धावस्था । बुढ़ापा ।—कालः, (पु०) मृत्यु की घड़ी ।

चरमम् (अव्यया०) अन्त में । आखिर में ।

चरिः (पु०) जन्तु ।

चरित (भू० कृ०) १ भ्रमण किया हुआ । घूमा हुआ । २ पूरा किया हुआ । अभ्यास किया हुआ । ३ उपलब्ध किया हुआ । ४ जाना हुआ । ५ भेद किया हुआ ।—अर्थः, (वि०) १ सफल । २ सन्तुष्ट । ३ पूरा किया हुआ ।

चरितम् (न०) १ गमन । मार्ग । अभ्यास । चाल-चलन । आचरण । ३ जीवनचरित्र । स्वयं लिखित अपनी जीवनी । इतिहास (कथा) ।

चरित्रम् (न०) १ आचरण । आदत । बाल । देव । चाल-चलन । करतब । २ सम्पादन । निर्वाह । पालन । रक्षा । अनुष्ठान । ३ इतिहास । जीवनी । स्वहस्त लिखित जीवनी । वृत्तान्त । साहसिककार्य । आश्चर्य घटना । स्वभाव । मिजाज । ५ कर्तव्य । निर्दिष्ट अनुष्ठान ।

चरिष्णु (वि०) डोलने वाला । क्रियाशील । भ्रमणकारी ।

चरुः (पु०) कण्य विशेष । हव्य विशेष ।

चर्च (धा० उभय०) [चर्चयति,—चर्चयते, चर्चित] पढ़ना । सीखना । अभ्ययन करना । [परस्मै० चर्चति, चर्चित] १ गाली देना । धिक्कारना । निन्दा करना । २ बहस करना । विचार करना ।

चर्चनं (न०) १ अभ्ययन । पुनरावृत्ति । बारबार पढ़ना । २ शरीर में उबटन या लेप करना ।

चर्चिका (स्त्री०) १ गीत विशेष । २ ताल देना । चर्चरी } यखिदतों का पाठ । ३ उत्सव के समय के खेल । उत्सव का उल्लास । ५ उत्सव । ६ चाप-लुखी । ७ धुँधराले बाल ।

चर्चा (स्त्री०) १ पाठ । पुनरावृत्ति । अभ्ययन । चर्चिका } बार बार पढ़ना । २ बहस । खोज । अनु-संधान । तहकीकात । ३ निदिध्यासन । ४ शरीर में चन्दनादि का लेप ।

चर्चिक्यम् (न०) शरीर में चन्दनादि लगाना । लेप ।
उबटन ।

चर्वित (व० कृ०) १ लगा हुआ । लेप किया हुआ
२ विचारित । अनुसन्धान किया हुआ ।

चर्पटः (पु०) चपेट । थप्पड़ । चापड़ ।

चर्पटी (स्त्री०) चपाती । रोटी ।

चर्मटः (पु०) ककड़ी । [ककड़ी ।

चर्मटी (स्त्री०) १ आनन्द कोलाहल । हर्षरव । २

चर्मम् (न०) ढाल ।

चर्मगवती (स्त्री०) चंबल नदी । यह नदी इटावे के
पास यमुना में गिरती है ।

चर्मन् (न०) १ चाम । २ चमड़ा । ३ स्पर्शज्ञान ।

४ ढाल ।—अभ्रमस्, (न०) शरीर का स्वच्छ
तरल पदार्थ । रस ।—अवकर्तनं, (न०) चमड़े

का कारोबार ।—अवकर्तिन्,—अवकर्तृ (न०)
मोची । जूता बनाने वाला । चमार ।—

कारः,—कारिन्, (पु०) मोची । चमार ।

—कीलः,—कीलं, (न०) मस्सा । टेंडर ।—

चित्रकं, (न०) सफेद कोड़ा ।—जं, (न०)

१ बाल । २ खून ।—तरङ्गः, (पु०) सूरि । शिकन ।

—दण्डः, (पु०)—नालिका, (स्त्री०) कोड़ा ।

—दुमः,—वृत्तः, (पु०) भोजपत्र का वृत्त ।—

पट्टिका, (स्त्री०) पाँसे फेंकने का चमड़े का

चौरस टुकड़ा ।—पत्रा, (स्त्री०) चिमगीदड़ ।—

पादुका, (स्त्री०) जूता ।—प्रमेदिका,

(स्त्री०) चमार की राँपी ।—प्रसेवधः (पु०)—

प्रसेविका, (स्त्री०) धोंकनी ।—बंधः, (पु०)

चमड़े का तस्मा ।—मुराडा, (स्त्री०) दुर्गा का

नाम । यष्टिः, (स्त्री०) चाबुक ।—वसनः,

(पु०) शिवजी ।—वाद्य, (न०) ढोल ।

ढोलक । तबला आदि ।—सम्मवा, (स्त्री०) बड़ी

इलायची ।—सारः, (पु०) शरीर का स्वच्छ तरल
पदार्थ या रस ।

चर्ममय (वि०) चमड़े का ।

चर्मरुः } (पु०) मोची । चमार ।
चर्मरः }

चर्मिक (वि०) ढालधारी ।

चर्मिन् (वि०) १ ढालधारी । २ चमड़े का । (पु०)

ढालधारी सिपाही । २ केला । ३ भूर्जपत्र
का पेड़ ।

चर्या (स्त्री०) १ गति । चाल । २ चालचलन ।

व्यवहार । आचरण । ३ अभ्यास । अनुष्ठान ।

निर्वाह । रक्षा । ४ नियमित अनुष्ठान । ६ भक्षण ।

७ रस्म । रीति ।

चर्व् (धा० पर०) [चर्वति, चर्वयति, चर्वयते,
चर्वित] १ चवाना । खाना । कुतरना । टुनगना ।

२ चूसना । चसकना । ३ चखना ।

चर्वणम् (न०) } १ चवाना । खाना । २ चसकना ।

चर्वण (स्त्री०) } २ चखना ।

चर्वा (स्त्री०) थप्पड़ का प्रहार ।

चर्वित (भू० कृ०) १ चबलाया हुआ । कुतरा
हुआ । खाया हुआ । चकला हुआ ।—चर्वणम्,

(न०) चवाये हुए को चवाना । एक ही विषय
की शब्दान्तर में पुनरुक्ति ।—पात्रं (न०)

पीकदानी ।

चल् (धा० पर०) [चलति, चलते, चलित]

हिलना । काँपना । थराना । धड़कना । उथल
पुथल होना ।

चल् (वि०) १ ढोलता हुआ । काँपता हुआ । २

अस्थिर । ढीला । ३ निर्बल । कमजोर । नाशवान ।

४ घबड़ाया हुआ ।—अचल, (वि०) १ स्थावर

जंगम । २ चंचल । नाशवान ।—अचलः, (पु०)

काक ।—अन्तकः, (पु०) गठिया ।—आत्मन्,

(वि०) चञ्चल ।—इन्द्रिय, (वि०) १ इन्द्रिय

सम्बन्धी । इन्द्रियसेव्य । २ सहज में परिवर्त-

नीय ।—इषुः, (पु०) वह तीरंदाज जिसका तीर

लक्ष्यच्युत हो जाय ।—कर्णः (पु०) किसी ग्रह का

पृथिवी से ठीक ठीक अन्तर ।—चञ्चुः, (पु०)

चकोर पक्षी ।—चित्त, (वि०) चञ्चल मना ।—

दलः,—पत्रः, (पु०) अश्वत्थ वृक्ष ।

चलः (पु०) १ कंपकपी । घबड़ाहट । विकलता । २

पवन । ३ पारद ।

चला (स्त्री०) १ लक्ष्मी । २ सुगन्धद्रव्य विशेष ।

चलन (वि०) हिलने वाला । काँपने वाला ।

चलनः (पु०) १ पैर । २ हिरन ।

चलनी (स्त्री०) १ स्त्रियों की कुर्ती । २ हाथी बाँधने का रस्ता ।

चलनकं (न०) नीच जाति की स्त्रियों के पहिने की कुर्ती ।

चलिः (पु०) चादर । ओढ़नी ।

चलित (व० कृ०) १ चला हुआ । हिला हुआ । आन्दोलित । २ गया हुआ । प्रस्थानित । ३ प्राप्त । ४ जाना हुआ । समझा हुआ ।

चलितं (न०) नृत्य विशेष ।

चलुः (पु०) सुखभर जल ।

चलुकः (पु०) १ कुल्ला करने को हथेली में जल लेना । २ सुट्टीभर या मुँह भर जल ।

चष् (धा० डभ्य०) [चषति, चषते] खाना । [(ए०) चषति]

चषकः (पु०) } मदिरा पीने का बरतन । (न०)
चषकम् (न०) } १ मदिरा । २ शहद ।

चषतिः (स्त्री०) १ भोजन । २ हत्या । ३ निर्वलता । हास । गलाव ।

चषालः (पु०) १ यज्ञीयस्तम्भ के ऊपर लगाने को काठ का छल्ला । २ छत्ता ।

चह (धा० परस्मै०) [चहति, चहयति—चहयते] दुष्टता करना । २ छलना । धोखा देना । अभिमान करना ।

चाकचक्ष्यं (न०) चमक दमक ।

चाक्र (वि०) १ गोल । २ पहिया सम्बन्धी ।

चाक्रिकः (पु०) १ कुम्हार । २ तेली । ३ गाड़ीवान ।

चाक्रिणः (पु०) कुम्हार या तेली का पुत्र ।

चाक्षुष (वि०) १ नेत्र सम्बन्धी । २ दृष्टिगोचर ।

चाक्षुषः (पु०) कठवें मनु ।

चाङ्गः } (पु०) १ खट्टा शाक विशेष । २ दान्तों की चाङ्गः } सफेदी या उनका सौन्दर्य ।

चांचल्यं } (न०) १ अस्थिरता । २ चंचलता ।
चाञ्चल्यम् } ३ विनश्वरता ।

चाटः (पु०) ठग । चटमार । बदमाश । सेउड़ा ।

[चाटः ऐसे ठग को कहते हैं जो आरम्भ में अपनी ओर से उस मनुष्य के मन में पूर्ण विश्वास

उत्पन्न कर लेता है, जिसे वह धोखा देना चाहता है ।

“प्रतारकः विश्वः स्य वे परधनमवहरन्ति ।”

—मिताचरा]

चाटुं (न०) १ चापलूसी । खुशामद । ठकुर-

चाटुः (पु०) १ सुहाती । २ स्पष्टकथन ।—उक्तिः

(स्त्री०) चापलूसी की बात ।—उल्लोल,—

कार (वि०) चापलूस । खुशामदी टट्टू ।—

पटु (वि०) चापलूसी करने में निपुण ।—पटुः,

(पु०) मसखरा । भाँड़ । विदूषक ।

चाणक्यः (पु०) विष्णु गुप्त या कौटिल्य भी चाणक्य का नाम था । इन्होंने नीति विषयक एक उत्कृष्ट ग्रन्थ की रचना की है ।

चाणूरः (पु०) कंस का एक सेवक दैत्य, जिसे मल्ल-युद्ध में श्रीकृष्ण ने पड़ाया था ।

चाण्डालः (पु०) [स्त्री०—चाण्डाली] पतित जाति । देखो “चण्डाल ।”

चातकः (पु०) एक पक्षी विशेष जो वर्षाजल में स्नान की बूंद से बड़ा प्रसन्न होता है । पपीहा ।—

आनन्दनः, (पु०) १ वर्षाचतु । २ बादल ।

[स्त्री०—चातकी] ।

चातनं (न०) १ स्थानान्तरण । २ चोटिल करना ।

चातुर (वि०) १ चार संख्या सम्बन्धी । २ चतुर ।

योग्य । स्याना । ३ सुचारु भाषी । चापलूस । ४

दृश्य । दृष्टिगोचर ।

चातुरं (न०) चार पहिये की गाड़ी ।

चातुरी (स्त्री०) निपुणता । चतुराई । चतुरता ।

पटुता ।

चातुरत्वं (न०) चौपड़ के या पाँसे के खेल में चार संख्या चिन्हित पाँसे का पड़ना । चार का दाव आना ।

चातुरतः (पु०) झोटा गोल तकिया ।

चातुराश्रमिक } (वि०) [स्त्री०—चातुरा-

चातुराश्रमिन् } श्रमकी] [स्त्री०—चातुरा-

श्रमणी] वह ब्राह्मण जो चार आश्रमों में से

किसी एक आश्रम में हो ।

चातुराश्रम्यम् (न०) ब्राह्मण के जीवन की चार अवस्थाएँ ।

चातुरिक } (वि०) चौथिया । चौथे दिन होने
चातुरिक } वाला ।
चातुरिक }

चातुरिकः (पु०) चौथिया बुलवार ।

चातुर्याहिक (वि०) चौथे दिन का ।

चातुर्दश (न०) राक्षस ।

चातुर्दशिकः (पु०) चतुर्दशी के दिन अनाध्याय
दिवस होता है । जो इस अनाध्याय के दिवस
अध्ययन करता है उसे चातुर्दशिकः कहते हैं ।

चातुर्मासिक (वि०) [स्त्री०—चातुर्मासिका]
चातुर्मास्य यज्ञ करने वाला ।

चातुर्मास्य (न०) यज्ञ विशेष जो प्रत्येक चार मास
बाद अर्थात् कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ के
आरम्भ में किया जाता है ।

चातुर्य (न०) १ निपुणता । चतुराई । २ मनो-
हरता । सौन्दर्य ।

चातुर्वर्ग्य (न०) १ हिन्दुओं की चार वर्ण की
व्यवस्था । २ इन चारों वर्णों के अनुष्ठेय कर्म ।

चातुर्विध्यम् (न०) चार प्रकार । चार तरह । [कुशा ।

चात्वालः (पु०) १ चोकर अग्निकुण्ड । २ दर्भ ।

चान्दनिक } १ चन्दन सम्बन्धी या चन्दन से उत्पन्न ।

चान्दनिक } २ चन्दन के तेल या लेप से सुवासित ।

चांद्र } चन्द्रमा सम्बन्धी ।—भागा, (स्त्री०)

चान्द्र } चन्द्रभागा नदी ।—भासाः, (पु०) महीना

जिसकी गणना चन्द्र तिथियों के अनुसार की
जाती है ।—व्रतिकः, (पु०) चान्द्रायण-व्रत-धारी ।

चांद्रः } (पु०) १ चन्द्रतिथियों से गणित मास ।

चान्द्रः } २ शुक्लपक्ष । ३ चन्द्रकान्त मणि ।

चांद्रम् } (न०) चान्द्रायण व्रत ।

चान्द्रम् }

चांद्रकम् } (न०) सोंढ ।

चान्द्रकम् }

चांद्रमस } (वि०) चन्द्रमा सम्बन्धी ।

चान्द्रमस }

चांद्रमसं } (न०) मृगाशिरस् नक्षत्र ।

चान्द्रमसं }

चांद्रमसायनः }

चान्द्रमसायनः }

चान्द्रमसायनिः }

चान्द्रमसायनिः }

(पु०) बुधग्रह ।

चान्द्रायणम् } (पु०) चान्द्रायण व्रत ।

चान्द्रायणम् }

चापं (न०) १ धनुष । कमान । २ इन्द्रधनुष । ३
वृत्तांश । ४ धनुष राशि ।

चापलं } (न०) १ चपलता । चञ्चलता । कुर्ती ।

चापल्यं } ३ कुर्तीलापन । अस्थिरता । नश्वरता ।

३ अविचारित कर्म । जल्दबाजी । जल्दबाजी का
काम । बेचैनी । विकलता ।

चामरः (पु०) } चैवर । चैरी ।—ग्राहः,—

चामरम् (न०) } ग्राहिन्, (पु०) चैवर हुलाने

वाला । चैवरवरदार ।—ग्राहिणी, (स्त्री०)

दासी जो राजा के ऊपर चैवर हुलावे ।—पुष्पः,

(न०)—पुष्पकः (पु०) १ सुपाड़ी का पेड़ ।

२ केतकी का पेड़ । ३ आम का पेड़ ।

चामरिन् (पु०) घोड़ा । अश्व ।

चामीकरं (न०) १ सुवर्ण । सोना । २ धतूरा ।

प्रख्य, (वि०) सुवर्ण की तरह ।

चामुंडा } (स्त्री०) दुर्गा देवी का एक भयानक

चामुंडा } रूप ।

चाम्पिला (स्त्री०) चंपा अथवा आधुनिक नदी

चंवल ।

चाम्पेयः (पु०) १ चंपा वृक्ष । २ नागकेसर वृक्ष ।

चम्पेयम् (न०) १ कमल नाल का सूत या रेशा ।

२ सुवर्ण । ३ धतूरे का पौधा ।

चाय (धा० उभय०) [चायति—चायते] १ देखना ।

सूझना । २ पूजन करना ।

चारः (पु०) १ गमन । चहलकदमी । गति । चाल ।

अमण । २ जासूस । भेदिता । ३ अन्धास । अनुष्ठान ।

४ बँदीगृह । ५ बेड़ी । जंजीर ।—अन्तरितः,

(पु०) जासूस ।—ईक्षणः, (पु०)—चक्षुस्,

(पु०) राजा जो चरों के द्वारा देखता है ।—

चण, (वि०)—चञ्चु, (वि०) सुन्दर चाल

या गति वाला ।—पथः, (पु०) चौराहा ।

भट्टः, (पु०) वीर । योद्धा ।—वायुः, (पु०)

ग्रीष्म ऋतु में बहने वाला पवन । पछैयाँ हवा

पड़ियाव ।

चारम् (न०) एक कृत्रिम विष ।

चारकः (पु०) १ भेदिया । जासूस । २ गढ़रिया । गोपाल । ३ नेता । लीडर । ४ हाँकने वाला । गाड़ी चलाने वाला । सारथी । ५ सार्हस । छुड़सवार । ६ बन्दगृह ।

चारणः (पु०) १ भ्रमणकारी । पर्यटक । तीर्थ-यात्री । २ घूमने फिरने वाला नट या गायक, बंजीजन, भाट । ३ गन्धर्व । ४ पुराण पाठक । ५ जासूस । भेदिया ।

चारिका (स्त्री०) दासी । परिचारिका ।

चारितार्थ (न०) सफलता । कामियाबी ।

चारित्र्यम् (न०) या चारित्र्यं, (न०) १ आचरण । चालचलन । २ सुकीर्ति । नामवरी । ख्याति । खरापन । सत्यता । साधुता । ३ (स्त्री०) सतीत्व । ४ स्वभाव । निर्वाह ।—कवच, (वि०) सतीत्व रूपी कवच धारिणी ।

चारु (वि०) [स्त्री०—चारुर्वी] १ सुस्वागत । प्रिय । अनुकूल । प्रेमपात्र (मायूक) । २ मनोहर । सुन्दर । सुढौल । सुस्वरूप ।—अङ्गी, (स्त्री०) सुखरूपा स्त्री ।—घोण, (वि०) सुन्दर नासिका वाला ।—दर्शन, (वि०) सूवसूरत । मनोहर ।—धारा, (पु०) इन्द्राणी । शची ।—नेत्र, (न०)—लोचन, (वि०) सुन्दर नेत्रों वाला ।—नेत्रः, (पु०)—लोचनः, (पु०) हिरन । मृग ।—फला, (स्त्री०) अंगूर । दाणा ।—लोचना, (स्त्री०) सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री ।—वक्र, (वि०) खूबसूरत चेहरे वाला ।—वर्धना, (स्त्री०) स्त्री । औरत ।—व्रता, (स्त्री०) मास भर व्रत रखने वाली स्त्री ।—शिला, (स्त्री०) रत्न । जवाहरात ।—शील, (वि०) अच्छे स्वभाव का ।—हासिन, (वि०) मधुर हास करने वाला ।

चारु (न०) केसर । जाफ़ानू ।

चारुः (पु०) बृहस्पति । देवाचार्य ।

चार्विक्यं (न०) १ शरीर को सुवासित करना । शरीर में उबटन लगाना । २ उबटन ।

चार्म (वि०) [स्त्री०—चार्मी] १ चमड़े का । २ चमड़े से ढका हुआ । ३ ढालधारी ।

चार्मण (वि०) [स्त्री०—चार्मणी] चर्म या चाम से ढका हुआ ।

चार्मणम् (न०) चमड़ा या ढालों का समूह ।

चार्मिक (वि०) [स्त्री०—चार्मिकी] चमड़े का बना हुआ ।

चार्मिणं (न०) ढाल धारी मनुष्यों की टोली ।

चार्वाकः (पु०) १ नास्तिकवादी । २ महाभारत में उल्लिखित एक राक्षस जो दुर्योधन का मित्र और पाण्डवों का शत्रु था ।

चार्वी (स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री । २ चाँदनी । ३ प्रतिभा । ४ चमक । आव । कान्ति । ५ कुबेर की पत्नी का नाम ।

चालः (पु०) १ वर की छत या छत्रनई । २ नील-कण्ठ पक्षी । ३ प्रकम्प । ४ चर । जंगम ।

चालकः (पु०) चञ्चल या बेचैन हाथी ।

चालनं (न०) (धूँझ का) हिलाना या हुलाना । चलमी में रखकर छानना ।

चालनी (स्त्री०) चलनी ।

चाषः } (पु०) नीलकण्ठ पक्षी ।
चासः }

चि (उभय०) [चिनांति, चिनुते, चित । (निजन्त) चाययति, चापयति, या व्यययति, चपयति । (सनन्त) चिचोषति, चिकीषति] १ एकत्र करना । २ ढेर लगाना । पंक्तिबद्ध करना । ३ जड़ना । भरना ।

चिकित्सकः (पु०) वैद्य । हकीम । डाक्टर ।

चिकित्सा (स्त्री०) श्रौपथोपचार । इलाज । मालजा ।

चिकित्स्य (वि०) साध्य रोगी । इलाज करने योग्य बीमार ।

चिकिलः (पु०) कीचड़ । काँदा ।

चिकीर्षा (स्त्री०) अभिलाषा । कामना ।

चिकीर्षित (वि०) अभिलषित ।

चिकीर्षितम् (वि०) अभिप्राय । प्रयोजन । मतलब ।

चिकीर्षु (वि०) अभिलाषी । इच्छुक ।

चिकुर (वि०) १ चञ्चल । अस्थिर । काँपने वाला । २ अविचारी । दुस्साहसी ।

चिकुरः (पु०) १ सिर के केश । २ पर्वत । ३ सर्प या रेंगने वाला कोई भी जीव ।—उच्चमः,

— कलापः,— निकरः— पक्षः,— पाशः,—
भारः,— हस्तः, (पु०) बालों की चोटी या
चूड़ा ।

चिकूरः (पु०) केश । बाल ।

चिकः (पु०) छलूँदर ।

चिकण (वि०) १ चिकना । चमकीला । २ फिल-
लाहट वाला । ३ कोमल । स्निग्ध । ४ निलहा ।
नैलाक्त ।

चिकणः (पु०) सुपारी का वृक्ष ।

चिकणम् (न०) सुपारी फल ।

चिकसः (पु०) यवागृ । यव का बना भोज्य पथ्य
विशेष ।

चिक्रा (स्त्री०) देखो चिकण ।

चिकिरः (न०) चूहा ।

चिक्रुं (न०) नमी । तरी । ताज़गी । टटकापन ।

चिक्रिडं (न०) कुम्हड़ा या कद्दू ।

चिन्किलाः (पु० बहुवचन) देश विशेष और उसके
रहने वाले ।

चिन्धा (स्त्री०) १ इमली का पेड़ । इमली ।

चिन्धा (स्त्री०) २ पुंखची का पौधा ।

चिट् (धा० पर०) [चेटति, चेटयति, चेटयते]
पठाना । बाहिर भेजना ।

चित् (धा० पर०) [चेतति, चेतयते, चेतित]

१ पहचानना । चीन्हना । देखना । २ समझना ।

जान लेना । ३ सचेत होना । होश में आना ।

४ प्रकट होना । प्रदीप्त होना ।

चित् (स्त्री०) १ विवेक । ज्ञान । बोध । २ बुद्धि ।

प्रतिभा । समझ । ३ हृदय । मन । आत्मा ।

जीवात्मा । रूह । ४ ब्रह्म ।—आत्मन्, (पु०)

१ विवेक शक्ति । विचार शक्ति । विशुद्ध ज्ञान ।

परब्रह्म ।—आत्मकं, (न०) संज्ञा । चैतन्य ।

आभासः, (पु०) जीव ।—उल्लासः, (पु०)

जीवात्माओं के मन को प्रसन्न करने वाला ।—

घनः, (पु०) परमात्मा या ब्रह्म ।—प्रवृत्तिः,

(स्त्री०) सोच विचार ।—शक्तिः, (स्त्री०)

बोध शक्ति ।—स्वरूपं, (न०) परमात्मा ।

चित् (भू० कृ०) १ एकत्रित किया हुआ । ढेर

लगाया हुआ । २ प्राप्त । उपलब्ध । ३ जड़ा
हुआ । बैठाया हुआ ।

चितं (न०) भवन । इमारत ।

चिता (स्त्री०) शव जलाने के लिये तर ऊपर रखा
हुआ काष्ठ का ढेर ।—चूड़कम्, (न०) चिता ।

चितिः (स्त्री०) १ एकत्रीकरण । २ ढेर । समूह ।

परिमाण । ३ तह । पर्त । ४ चिता । ५ धी ।

बुद्धि ।

चितिका (स्त्री०) १ चिता । २ टाल । गोला ।

गंज । ढेर । ३ करघनी ।

चित्त (वि०) १ देखा हुआ । पहिचाना हुआ । २

विचारित । मनन किया हुआ । ३ निर्धारित ।

४ इच्छित ।—अनुवर्तिन्, (वि०) मन के

अनुसार ।—अपहारकः, (वि०)—अपहारिन्,

(वि०) आकर्षक । मन चुराने वाला ।—

आभोगः, (पु०) किसी वस्तु के प्रति अनन्य

अनुराग ।—आसङ्गः, (पु०) अनुराग । प्रेम ।

—उद्वेकः, (पु०) अभिमान । अहङ्कार ।—

पेक्ष्य, (वि०) मत्तैष्य । एकदली ।—उन्नतिः,

—समुन्नतिः, (स्त्री०) १ उदारता ।

उच्चाशयता । २ अहङ्कार । अभिमान ।—चारिन्,

(वि०) दूसरे की इच्छानुसार चलने वाला ।

जः, (पु०) जन्मन्, (पु०)—भूः, (पु०)

योनिः, (पु०) १ प्रेम । अनुराग । २ काम-

देव ।—ज्ञः, (वि०) दूसरे के मन की बात जानने

वाला ।—नाशः, (पु०) विवेकहीनता ।—

निर्वृतिः, (स्त्री०) सन्तोष । प्रसन्नता ।—

प्रथमः, (वि०) शान्त । स्वस्थ ।—प्रशमः,

(पु०) मन की शान्ति ।—प्रसन्नता, (स्त्री०)

हर्ष ।—भेदः, (पु०) १ मत-अनैक्य । २

असङ्गति ।—मोहः, (पु०) चित्तविभ्रम ।—

विकारः, (पु०) विचार या भावना का परि-

वर्तन ।—विक्षेपः, (पु०) चित्तमोह ।—

विह्वलः, (पु०)—विभ्रमः, (पु०) विचि-

सता । सिद्धीपन । पातालपन ।—विश्लेषः, (पु०)

मैत्रीमङ्गल ।—वृत्तिः, (स्त्री०) १ प्रवृत्ति ।

मुकाव । २ आन्तरिक अभिप्राय । उमङ्ग ।—

वेदना, (स्त्री०) कष्ट । विपत्ति । चिन्ता ।—

वैश्वल्यं, (न०) बावलापन । सिद्धीपन ।—हारिन्,
(वि०) मनोहर । आकर्षक । मनोमुग्धकारी ।
प्रिय ।

चित्तं (न०) १ विचार । २ मनोयोग । इच्छा ।
३ उद्देश्य । ४ मन । ५ हृदय । ६ युक्ति । हेतु ।
७ प्रतिभा । विचारशक्ति । तर्कनाशक्ति ।

चित्तवत् (वि०) १ युक्तियुक्त । सहेतुक । तर्कना-
शक्ति सम्पन्न । २ दयालु हृदय । मनभावन ।
सर्वप्रिय ।

चित्यं (न०) वह स्थान जहाँ शव भस्म किया जाय ।
रमणान ।

चित्या (स्त्री०) चिता ।

चित्र (वि०) १ चमकीला । स्पष्ट । साफ । २ रंग-
बिरंगा । ३ हचिकर । प्रिय । ४ भिन्न भिन्न ।
तरह तरह का । ५ आश्चर्यकारी । अद्भुत ।—
अक्षी, (पु०) —नेत्र, —लोचना,
(स्त्री०) सारिका । मैना पक्षी ।—अङ्ग, (वि०)
आरिषोदार । धब्बेदार ।—अङ्गम्, (न०)
खंदुर । इंगुर ।—अर्पित, (वि०) चित्रित ।—
आकृतिः, (स्त्री०) हाथ की बनी तस्वीर ।—
आयसम्, (न०) ईसपात लोहा ।—आरम्भः,
(पु०) तस्वीर का ख़ाका ।—उक्तिः, (स्त्री०)
१ आकाशवाणी । २ आश्चर्यप्रद कहानी ।—
ओदनः, (पु०) पीला भात ।—कण्ठः, (पु०)
कवूतर । परेवा ।—कवला, (पु०) रंगबिरंगी
हाथी की झूल । २ रंग बिरंगा ग़लीचा ।—करः,
(पु०) चित्रकार । नाटक का पात्र ।—कर्मन्
(न०) १ अस्त्रधारण कार्य । २ शृङ्गार । सजा-
वट । ३ तस्वीर । ४ जादू । ५ चित्तेरा । २
जादूगर ।—कामः, (पु०) चीता । बाघ ।
—कारः, (पु०) चित्तेरा । सङ्कर वर्ण विशेष ।

“स्वप्नतेरपि गान्धिवशां चित्रकारो न्यत्रायत ।”

—पराशर

—कूटः, (पु०) तीर्थक्षेत्र विशेष जो बाँदा
(बुन्देलखण्ड) में है ।—कूत् (पु०) चित्तेरा ।
—क्रिया, (स्त्री०) चित्रणकला ।—ग, (वि०)
—गत, (वि०) चित्रित ।—गंधम्, (न०)
हरताल ।—गुप्तः, (पु०) यमराज के पेशकार

जो जीवधारियों के पाप पुण्यों का लेखा रखते हैं ।
काथरों के कुलदेवता ।—जल्पः, (पु०)
नाना विषयों पर अस्तव्यस्त विचार ।—त्वञ्च,
(पु०) भोजपत्र ।—दण्डकः, (पु०) कपास
का पौधा ।—न्यस्त, (वि०) चित्रित ।—
पत्तः, (पु०) तीतर विशेष ।—पटः, (पु०)
पट्टः, (पु०) १ चित्र । २ रंगीन और खानेदार
कपड़ा ।—पद, (वि०) अनेक भागों में
विभक्त । अच्छे या सुन्दर भावों से भरा हुआ ।
पादा, (स्त्री०) मैना पक्षी ।—पिच्छकः,
(पु०) मोर ।—पङ्कः, (पु०) एक प्रकार का
तीर ।—पृष्ठः, (पु०) गैरैधा पक्षी ।—फलकं,
(न०) तल्ला या पट्टी जिस पर रखकर चित्र
खींचा जाय ।—वर्हः, (पु०) मयूर ।—भानुः,
(पु०) १ आग । २ सूर्य । ३ भैरव । मदार का
पौधा ।—मण्डलः, (पु०) सर्प विशेष ।—
मृगः, (पु०) चीतल । हिरन ।—मेखलः,
(पु०) मयूर ।—योधिन, (पु०) अर्जुन का
नाम ।—रथः, (पु०) १ सूर्य । २ गन्धर्वों के
एक सरदार का नाम । मुनि नास्त्री स्त्री के गर्भ
से उत्पन्न करयप ऋषि के सोलह पुत्रों में से एक
का नाम ।—लेखा, (स्त्री०) उपा की एक
सहेली का नाम ।—लेखकः, (पु०) चित्तेरा ।
लेखनिका, (स्त्री०) चित्तेरे की कूची ।—
विचित्र, (वि०) रंग बिरंगा ।—विद्या, (स्त्री०)
चित्रकला ।—शाला, (स्त्री०) चित्तेरे का
कार्यालय ।—शिखण्डिन् (पु०) सप्तर्षियों की
उपाधि ।—संस्थ, (वि०) चित्रित ।—द्वस्तः,
(पु०) युद्ध के समय हाथ की विशिष्ट स्थिति ।

चित्रं (न०) १ तस्वीर । २ हाथ की खींची हुई
तस्वीर । डीँचा । ख़ाका । ३ चमकीला आभू-
षण । गहना । ४ चित्रचण्ण दर्शन । आश्चर्य ।
५ साम्प्रदायिक तिलक । ६ स्वर्ग । आकाश ।
७ धब्बा । दागा । ८ कोढ़ रोग विशेष ।

चित्रः (पु०) १ कई प्रकार के रंग के समूह का एक
रंग । रंग बिरंगा रंग । २ अशोक वृक्ष ।

चित्रं (अव्यय०) आह । ओह । कैसा आश्चर्य ।
कैसा विस्मय ।

चित्रकं (न०) माथे का साम्प्रदायिक चिन्ह स्वरूप तिलक ।

चित्रकः (पु०) १ चित्रकार । चितेरा । २ चीता । ३ वृक्ष विशेष ।

चित्रल (वि०) रंग विरंगा । धब्बेदार ।

चित्रलः (पु०) रंग विरंगा रंग ।

चित्रा (स्त्री०) चौदहवाँ नक्षत्र ।—ग्रहणः, (पु०)
—ईशः, (पु०) चन्द्रमा ।

चित्रिकः (पु०) चैत्र मास ।

चित्रिणी (स्त्री०) चार प्रकार की (अर्थात् पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी और हस्तिनी अथवा करिणी) स्त्रियों में से एक । रतिसञ्चरीकार ने चित्रिणी के लक्षण यह लिखे हैंः—

भवति रतिरभवा नाति खर्वा न दीर्घा,
तिलकुक्षुमधुना वा स्निग्ध नीलोत्पलाक्षी ।
वम कटिन कुचाव्या मुन्दरी बहुशाला,
सकलगुण बिचित्रा चित्रिणी चित्रवक्ता ॥

चित्रित (वि०) १ रंग विरंगा । धब्बेदार । २ रंगा हुआ ।

चित्रिन् (वि०) [स्त्री० — चित्रिणी] १ अद्भुत । २ रंग विरंगा ।

चित्रोयते (क्रि०) आश्चर्य करना । आश्चर्य का कारण बनना ।

चिन्त } (धा० उभय०) [चिन्तयति, चिन्तयते,
चिन्त } चिन्तित] १ सोचना । विचारना । २ ध्यान देना । ख्याल करना । ३ स्मरण करना । याद करना । ४ दृढ़ निश्चालना । खोज निकालना । ५ सम्मान करना । ७ तोलना । अच्छे बुरे का विचार करना । ८ बहस करना ।

चिन्तनम्, चिन्तनम् (न०) } १ सोचना । विचार-
चिन्तना, चिन्तना (स्त्री०) } रना । २ सोच विचार में पड़ जाना ।

चिन्ता } (स्त्री०) १ विचार । सोच । २ चिन्ता ।
चिन्ता } फिकिर । सोच । दुःखदायी विचार ।—
आकुल, (वि०) फिकिर से विकल । उत्सुक ।
कर्मन्, (न०) सोच फिकिर ।—पर, (वि०)
विचारवान् । उत्सुक ।—मणिः, (पु०) विचार-
रते ही अभिलषित वस्तु को देने वाला रत्न

विशेष ।—नेश्मन्, (न०) विचार-भवन ।
सभाभवन ।

चिन्तिडी } (स्त्री०) इमली का पेड़ ।
चिन्तिडी }

चिन्तित } (वि०) विचारा हुआ । सोचा हुआ ।
चिन्तित }

चिन्तितः }
चिन्तितः } (स्त्री०) सोच । विचार । ख्याल ।
चिन्तितः }

चिन्त्य } (स० का० कृ०) १ सोचने योग्य । विचारने
चिन्त्य } लायक । २ दृढ़ने लायक । पता लगाने
योग्य । ३ सन्दिग्ध । विचारने योग्य ।

चिन्मय (वि०) आध्यात्मिक । चैतन्यमय ईश्वर ।

चिन्मयम् (न०) १ विशुद्ध ज्ञान । २ परब्रह्म ।

चिपट (वि०) चपटी नाक का ।

चिपटः (पु०) चॉवल या अनाज जो चपटा किया
गया हो ।

चिपिटः (पु०) देखो चिपट ।—ग्रोव, (वि०)
कोतलगार्दन ।—नासं, (न०)—नासिक,
(वि०) चपटी नाक वाला ।

चिपिटकः } (न०) चपटे या कुटे चॉवल । स्थोरा ।
चिपुटः } चिउरा ।

चिबुकं } (न०) ठोड़ी ।
चिबुकं }

चिमिः (पु०) तोता ।

चिर (वि०) दीर्घ । दीर्घ काल व्यापी । बहुत दिनों
का । पुराना ।—आयुस्, (वि०) बहुत दिनों का
या बड़ी उम्र का । (पु०) देवता ।—आरोधः,
(पु०) बहुत दिनों से डाला हुआ घेरा ।—
उत्थ, (वि०) दीर्घ-काल-व्यापी ।—कार,
(वि०)—कारिक,—(वि०)—कारिन्,
(वि०)—क्रिय, (वि०) धीरे धीरे कार्य करने
वाला । विलंब करने वाला । दीर्घसूत्री ।—
कालः, (पु०) दीर्घकाल ।—कालिक,
—कालीन, (वि०) बहुत दिनों का । बहुत
पुराना ।—जात, (वि०) बहुत दिनों पूर्व
उत्पन्न । बहुत पुराना ।—जीविन्, (वि०) दीर्घ-
जीवी । चिरजीवियों में सात की गणना है । यथा—

अरवत्याना अतिव्याप्ति इत्युक्तं च विभीषणः ।

रूपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीवितः ॥

—पाकिन्, (वि०) देर में पकने वाला ।—
पुष्पः, (पु०) वकुल वृक्ष ।—मित्रं, (न०)
पुराना दोस्त ।—मेहिन्, (पु०) गधा । रासभ ।
खर ।—रात्रं, (न०) कई रात्रियों की अवधि
का काल । दीर्घकाल ।—विप्रोषित, (वि०)
दीर्घकाल से निर्वासित । दीर्घ कालीन प्रवासी ।
—सूता, (न०)—सूतिका, (स्त्री०)
वह गौ जिसके अनेक बछड़े उत्पन्न हुए हों ।—
—सेवकः, (पु०) पुराना नौकर ।—स्थः,
(न०)—स्थायिन्, (पु०)—स्थित (वि०)
टिकाऊ । बहुत दिनों चलने वाला ।

चिरं (न०) दीर्घ काल ।

चिरंजीव (वि०) दीर्घ जीवी ।

चिरजीवः (पु०) कामदेव की उपाधि ।

चिरटी } (स्त्री०) यह विवाहित अथवा अवि-
चिरिंटी } वाहित स्त्री जो जवान होने पर भी
चिरिगटी } दीर्घकाल तक अपने पिता के घर ही
में रहे ।

चिरत्न (वि०) [स्त्री०—चिरत्नी] प्राचीनकालीन ।
बहुत पुरानी ।

चिरंतन } (वि०) प्राचीन । बहुत पुरानी ।
चिरन्तन }

चिरयति } (क्रि०) देर करना । विलंब करना ।
चिरायते } अटकाना ।

चिरिः (पु०) तोता ।

चिरुः (पु०) कंधे के जोड़ ।

चिर्मटी (स्त्री०) ककड़ी विशेष ।

चिल् (धा० प०) [चिलति] कपड़ा धारण करना ।

चिलमिलिका } (स्त्री०) १ एक प्रकार की गुंज
चिलमीलिका } या सोने की सक्की । २ जुगनु ।
३ बिजली ।

चिल्ल (धा० परस्मै०) [चिल्लति, चिल्लित]
ठोला पड़ जाना । शिथिल होना ।

चिल्लः (पु०) } चील ।—ग्रामः, (पु०) जेब-
चिल्ला (स्त्री०) } कट । चोर । गिरहकट ।

चिल्लिका } (स्त्री०) गेंद बल्ले का खेल ।
चिल्लीका }

चिविः (पु०) ठोड़ी ।

चिन्हं (न०) १ निशान । दाग । मोहर । निशानी ।
लक्ष्य । चपरास । बिल्ला । २ चिन्हानी । ३
राशि । ४ लक्ष्य । दिशा ।—कारिन्, (पु०)
१ चिन्ह । दाग । २ हनन । घायल करना ।
चोटिल कान । ३ भयप्रद । विनौना ।

चिन्हित (वि०) १ निशान किया हुआ । मोहर लगा
हुआ । बिल्लाधारी । चपड़ासधारी । २ दागा
हुआ । ३ परिचित ।

चीन्कारः (पु०) हाथी की चिंघार या गधे की रेंक ।

चीनः (पु०) १ चीनदेश । २ हिरन विशेष । ३ वस्त्र

विशेष ।—अंशुकम्, —वासस्, (न०) रेशमी

वस्त्र ।—कपूरः, (पु०) कपूर विशेष ।—जं,

(न०) ईस्पात लोहा ।—भिर्ण, (न०) १ सिन्दूर ।

इंगुर । २ सीसा —वङ्गम्, (न०) सीसा ।

चीनम् (न०) १ झंडा । पताका । २ आँखों के कोथों

के लिये पड़ी विशेष । ३ सीसा ।

चीनाः (पु०) (बहुवचन) चीन का राजा या चीन
देशवासी ।

चीनाकः (पु०) कपूर विशेष ।

चीरं (न०) १ चिथड़ा । धज्जी । २ छाल । ३ वस्त्र ।

४ चौलड़ा मोती का हार । ५ धारी । लकीर ।

लेखन का विधान विशेष । खुदाई । नक्काशी । ७

सीसा ।—परिग्रहः,—वासिन्, (वि०) १ छाल को

(वस्त्र के स्थान पर) पहिने हुए । २ चिथड़े

पहिने हुए ।

चीरिः (स्त्री०) १ आँख ढाँपने का घूँघट विशेष । २

गेंद बल्ले का खेल । ३ भीतर पहिने वाले कपड़े

की संज्ञा या गोद ।

चीरिका } (स्त्री०) गेंद बल्ले का खेल ।
चीरुका }

चीर्या (वि०) १ किया हुआ । कृत । २ अधीत । पाठ

किया हुआ । ३ विभाजित । चिरा हुआ । फटा

हुआ ।—पर्याः (पु०) खजूर ।

चीलिका (स्त्री०) गेंद बल्ले का खेल ।

चीव (धा० उभय०) [चीवति, चीवते] १ पहनना ।

धारण । करना । ढकना । २ पाना । ३ घेरा

बालना । चारों ओर से रुद करना ।

चीवरं (न०) १ वस्त्र । फटा कपड़ा । चिथड़ा । २ कथड़ी ।

चीवरिन (पु०) १ बौद्ध या जैन भिक्षुक । २ भिक्षुक ।

चुक्कारः (पु०) सिंह की दहाड़ या गर्जन ।

चुकः (पु०) असलवेत या खट्टा साग विशेष । २ खट्टापन । खटाई ।—फलं (न०) हमली का फल ।—वास्तुकं (न०) खट्टा साग विशेष ।

चुकुम् (न०) खटाई । खट्टापन ।

चुका (स्त्री०) हमली का पेड़ ।

चुक्रिमन् (पु०) खट्टापन ।

चुचुकः (पु०)

चुचुकम् (न०) } चूची के ऊपर की घुंड़ी ।

चुचूकम् (न०) }

चुचु } (वि०) प्रख्यात । प्रसिद्ध । निपुण ।

चुटा, चुण्टा } (स्त्री०) कुहिया । छोटा तालाब ।

चुटा, चुशडा } (स्त्री०) कुहिया । छोटा तालाब ।

चुत् (धा० पर०) चूना । रिसना । टपकना ।

चुतः (पु०) भग । योनि । स्त्री का गुप्ताङ्ग ।

चुद् (धा० उभय०) [चोदयति, चोदयते, चोदित]

१ भेजना । निर्देश करना । आगे फैकना । आगे बढ़ाना । २ सुझाना । मन में डालना । प्रेरणा करना । उसकाना । भड़काना । जाल डालना । सजीव करना । प्रवृत्त करना । पथ प्रदर्शन करना । ३ कुर्त्सी करना । शीघ्रता करना । ४ प्रश्न करना । पूछना । ५ दवाना । प्रार्थना द्वारा दवाव डालना । ६ उपस्थित करना । पेश करना ।

चुंदी (स्त्री०) कुंदनी ।

चुप् (धा० पर०) [ची०—चोपति,] धीरे धीरे चलना । रँगना । पैर दबा कर चलना ।

चुचुकः (पु०) डोकी ।

चुव } धा० उभय० [चुम्बति चुम्बते, चुम्ब-
चुम्ब } यति—चुम्बयते, चुम्बित] चूमा लेना ।

मिठी लेना । धीरे से स्पर्श करना । चराना ।

चुंबः, चुम्बः (पु०) } चूमा । बोसा । मिठी ।

चुम्बा, चुम्बा (स्त्री०) }

चुम्बकः } (पु०) १ चूमा लेने वाला । २ लगपट ।

चुम्बकः } वेरयागामी । रसिया । ३ गुंडा । ठग । ४

लेउट्ट पण्डित । पल्लवग्राही पण्डित । ५ चुम्बक पत्थर । मकनातीसी पत्थर ।

चुंवर्न } (न०) चूमा । बोसा । मिठी ।

चुम्बनम् }

चुर् (धा० उभय०) [चोरयति, चोरयते, चोरित]

१ लूटना । चुराना । २ रखना । अधिकार करना ।

चुरा (स्त्री०) चोरी ।

चुरिः } (स्त्री०) छोटा कूप । कुइया ।

चुरी } (स्त्री०) छोटा कूप । कुइया ।

चुलुकः (पु०) १ गहरी कीचड़ । २ मुँहभर जल या अजली । ३ छोटा बरतन ।

चुलुकिन् (पु०) संस । शिशुमार । जलजन्तु विशेष ।

चुलुप् (धा० पर०) [ची०—चुलुम्पति] झूलना ।

इधर उधर हिलना । आन्दोलन करना ।

चुलुम्पः (पु०) दुलारे बालक ।

चुलुम्पा (स्त्री०) वकरी ।

चुल्ल (धा० पर०) [चुल्लति] खेलना । क्रीड़ा करना । प्रेम सूचक भाव प्रदर्शित करना ।

चुल्लिः (स्त्री०) चूल्हा ।

चूचकं } (न०) चूची के ऊपर की घुंड़ी ।

चूचूकम् }

चूडकः (पु०) कूप । कुआ । इनारा ।

चूडा (स्त्री०) १ चोटी । चुटिया । चूडा । २ चूडा-करण संस्कार । ३ मुर्गा या मोर के सिर की कलंगी । ४ सिर । ५ चोटी । शिखर । ६ अठारी ।

अठा । ७ कूप । ८ कलाई का आभूषण ।—करणं, —कर्मन्, (न०) मुखन संस्कार ।—पाशाः, (पु०) केश समूह ।—मणिः, (पु०)—रत्नं, (न०)

१ सीसफूल या सीस में धारण करने के लिये मणि जड़ित आभूषण विशेष । २ सर्वोत्तम । सर्वोत्कृष्ट ।

चूडार } (वि०) चोटीदार । कलगीदार । चोटी ।

चूडाल } चूडा ।

चूतः (पु०) आम्रवृक्ष । आम का पेड़ ।

चूतम् (न०) भग । योनि । स्त्री का गुप्ताङ्ग ।

चूर्ण (धा० उभय०) [चूर्णयति, चूर्णयते-चूर्णित] १ कूट कर या पीस कर आटा कर डालना । २ कूटना । कुचरना ।

चूर्णः (पु०) १ चूर्ण । २ आटा । ३ धूल । ४ चूर्णम् (न०) १ घिसा हुआ चंदन । सुशब्दार्थ चूर्ण । (पु०) १ खड़िया । २ चूना ।—कार. (पु०) चूना फूँकने वाला ।—कुन्तलः (पु०) घुँघराले वाला ।—खण्डम्, (न०) रोड़ा । कंकड़ । गिट्टी ।—पारदः, (पु०) सिंदूर । इंगूर । लालरंग ।—योगः, (पु०) सुगन्धित चूर्ण ।

चूर्णकः (पु०) मुना और पिसा हुआ अनाज
चूर्णकम् (न०) १ सुगन्धयुक्त चूर्ण । २ सरल गद्य-मय निबन्ध । यथा ।

“अन्तरीराश्वरं रश्मिपञ्चमं चूर्णकं विदुः ॥”

—कुन्दोमञ्जरी ।

चूर्णनं (न०) चूर्ण करना । चूर्ण ।

चूर्णिका (स्त्री०) १ चूर्ण । २ सौ कोड़ियों का चूर्ण । योग या जोड़

चूर्णिका (स्त्री०) १ मुना और पिसा अनाज । २ गद्य रचना की शैली विशेष ।

चूर्णित (वि०) कूटा हुआ । पीसा हुआ । टुकड़े टुकड़े किया हुआ ।

चूर्णः (पु०) बाल ।

चूर्णा (स्त्री०) १ ऊपर के खन का कमरा । २ चोटी, कलंगी । ३ छल तारे की चोटी ।

चूर्णिका (स्त्री०) १ मुँह की कलंगी । २ हाथी का कर्णमूल । नाटक में वह कथन जो पर्दे की आड़ से कहा जाता है । यथा —

अन्तर्जगत्तिकासंख्यः सूचनार्थरचयित्तिका ।

साहित्यदर्पण ।

चूर्ण (धा० पर०) [चूर्णति, चूर्णित] चूसना । पीना ।

चूर्णा (स्त्री०) (हाथी के लिये) १ चमड़े का तंग । २ चूसना । ३ तंग । पेटी ।

चूर्ण्य (न०) कोई भोज्य पदार्थ जो चूस कर खाने योग्य हो; आस आदि ।

चूर्त (धा० पर०) [स्त्री०—चूर्तति] १ चोटिल करना । मार डालना । २ बाँध लेना । आपस में जोड़ कर मिला देना । ३ जलाना । प्रकाश करना ।

चेकितानः (पु०) १ शिवजी । २ यादव वंशी राजा जो महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की ओर से लड़ा था ।

चेष्टः (पु०) १ नौकर । २ अनुरागी । आशिक । चेष्ट } चहीता ।

चेष्टिका, चेष्टिका } (स्त्री०) दासी । दहलनी । चेष्टि, चेष्टी }

चेत्तन (वि०) १ सजीव । जीविन । जीवधारी । प्राण-धारी । २ दृश्यमान । दृष्टिगोचर ।

चेत्तनः (पु०) १ जीव । प्राणी । २ जीवात्मा । रूह । मन । ३ परमात्मा ।

चेत्तना (स्त्री०) १ संज्ञा । बोध । २ समझ । धी । ३ जीवन । सजीवता । जान । ४ बुद्धि । विवेक ।

चेत्तस् (न०) १ विवेक । २ चित्त । मन । आत्मा । ३ तर्कना शक्ति । विचारशक्ति ।—जन्मन्,—भवः,—भूः, (पु०) १ प्रेम । अनुराग । २ काम-देव ।—विकारः, (पु०) मन की विकलता ।

चेत्तोमत् (वि०) जीवित । सजीव ।

चेद् (अव्यया०) अगर । बशर्ते कि । यद्यपि ।

चेदिः (पु०, बहुवचन) एक देश का नाम । उस देश के अधिकारी ।—पतिः,—भूमृतः, (पु०)—राज्, (पु०)—राजः (पु०) शिशुपाल का नाम । यह दमघोष राजा का पुत्र था और श्रीकृष्ण के हाथ से युधिष्ठिर के राजसूययज्ञ में श्रीकृष्ण का अपमान करने के लिये मारा गया था ।

चेय (वि०) ढेर करने योग्य । जमा करने योग्य ।

चेल् (धा० परस्मै०) [स्त्री०—चेलति] १ चलना । जाना । २ हिलना । काँपना । थरथराना ।

चेल्म (न०) कपड़ा ।—प्रत्तालकः, (पु०) घोड़ी ।

चेल्तिका (स्त्री०) अँगिया । चोली ।

चेष्ट (धा० आत्म०) [चेष्टते, चेष्टित] १ डोलना । घूमना । जीवन के चिन्ह दिखाना । सजीव होने के लक्षण प्रदर्शित करना । २ उद्योग करना । ३ पूर्ण करना । ४ आचरण करना ।

चेष्टकः (पु०) स्त्रीप्रसङ्ग का आसन या विधान विशेष । रतिबन्ध ।

चेष्टनम् (न०) उद्योग । चेष्टा । प्रयत्न ।

चेष्टा (स्त्री०) १ यत्न । उद्योग । २ हावभाव । ३ आचरण ।—नाशः, (पु०) प्रलय ।—निरु-

पशा, (न०) किसी व्यक्ति विशेष के आचरणों पर दृष्टि रखना । [हुआ ।
 चेष्टित (व० कृ०) चेष्टा किया हुआ । प्रयत्न किया
 चैतन्यम् (न०) १ चेतना । जीवन । बोध । सजीवता ।
 २ परमात्मा ।
 चैतिक (वि०) बुद्धि सम्बन्धी । मानसिक ।
 चैत्यः (पु०) १ पत्थरों का ढेर । २ स्मारक । कब्र
 चैत्य (न०) १ का पत्थर जिस पर मुर्तियों के जीवनकाल
 आदिका परिचय रहता है ३ यज्ञमण्डप । ४ मन्दिर ।
 देवालय । धार्मिक अनुष्ठान करने का स्थान । ५ देवा-
 लय । ६ बुध या जैन मंदिर । ७ गुलर का वृक्ष ।
 रथ्यावृक्ष ।—तलुः—तुमः, वृत्तः, (पु०) किसी
 पवित्र स्थान पर जमा हुआ गुलर का पेड़ ।—
 पालः, (पु०) किसी देवालय का पुजारी ।—
 मुखः, (पु०) साधु का कमण्डलु ।
 चैत्रः (पु०) १ चैत मास । २ बौद्ध भिक्षुक ।
 चैत्रम् (न०) १ मंदिर । स्रुतपुरुष का स्मारक ।
 आवलिः (स्त्री०) चैत्र की पूर्णमासी ।—सखः,
 (पु०) कामदेव ।
 चैत्ररथं } (न०) कुबेर के बारा का नाम ।
 चैत्ररथ्यं }
 चैत्रिः }
 चैत्रिकः } (पु०) चैत्र मास या चैत का महीना ।
 चैत्रिन् }
 चैत्री (स्त्री०) चैत्री पूर्णमासी ।
 चैद्यः (पु०) शिशुपाल । [धोबी ।
 चैल (न०) १ कपड़े का टुकड़ा ।—धावः, (पु०)
 धोत (वि०) १ साफ सुथरा । शुद्ध । २ ईमानदार ।
 सच्चा । ३ चतुर । निपुण । ३ पट्ट । ४ प्रिय ।
 मनोहर । प्रसन्नकारक ।
 चोचं (न०) १ बाल । बकला । २ चर्म । खाल । ३
 नारियल ।
 चोटी (स्त्री०) कुर्ती । छोटा कोट ।
 चोडः (पु०) चोली । अँगिया ।
 चोदना (स्त्री०) १ प्रेरणा । ३ उत्साह । ४ उपदेश ।
 —गुडः, (पु०) गेंद । गद्दा ।
 चोदित (व० कृ०) १ भेजा हुआ । २ उत्तेजित ।
 जीवन डाला हुआ । ५ युक्ति या कारण प्रदर्शित
 करने के लिये पेश किया हुआ ।

चोद्यम् (न०) १ एतराज या प्रश्न करना । २ एतराज
 करना । ३ आश्चर्य ।
 चोरः } (पु०) चोर । ठग । डाँकू ।
 चौरः }
 चोरिका } चोरी । लूट ।
 चौरिका }
 चोरित (वि०) चुराया हुआ । लूटा हुआ ।
 चोरितम् (न०) १ छोटी चोरी । अपहरण ।
 २ चुराई हुई कोई भी वस्तु ।
 चोलः (पु० बहुवचन) आधुनिक तंजौर प्रान्त
 प्राचीन काल में चोल देश के नाम से प्रसिद्ध था ।
 इस देश के अधिवासी ।
 चोलः (पु०) } चोली । अँगिया ।
 चोली (स्त्री०) }
 चोलकः (पु०) १ बाल की बनी पोशाक । बलकल-
 वस्त्र । २ अँगिया । चोली । ३ चपरास । पेटी ।
 चोलकिन् (पु०) १ बोझा जो पेटी लगाये हो । २
 शंतेरे का पेड़ । ३ कलाई ।
 चोलङ्गुकः, चोलशङ्गुकः } (पु०) पगड़ी ।
 चोलौङ्गुकः, चोलोण्डुकः } साफा । मुकुट ।
 कलगी ।
 चोषः (पु०) १ चूसन । २ मृजन ।
 चोड } (वि०) १ कलङ्गीदार । २ केश सम्बन्धी ।
 चोल } (न०) चूहाकरण संस्कार ।
 चौर्य (न०) १ चोरी । ठगी । २ रहस्य ।—रतं, (न०)
 गुपचुप स्त्रीसम्भोग ।—वृत्तिः, (स्त्री०) डाँका
 डालने की वान ।
 च्यवनम् (न०) १ गति । गतिशीलता । २ राहित्य ।
 शून्यता । हीनता । ३ मरण । नाश । बहाव ।
 बुध्दाव । २ टपकाव ।
 च्यु (धा० आत्म०) [च्यवते, च्युत,] १ गिरना ।
 टपकना । चूना । फिसलना । डूबना । २ बाहिर
 निकलना । बह निकलना । रसना । ३ अलग
 होना । रहित होना । त्यागना ।
 च्युत् (धा० प०) [स्त्री०—च्योतति] १ बहना ।
 टपकना । २ फिसलना । रपटना ।
 च्युत (व० कृ०) १ गिरा हुआ । फिसला हुआ । २
 स्थानान्तरित । बहिष्कृत । ३ भटका हुआ । भूला
 हुआ ।—अधिकार, (वि०) बर्खास्त । नौकरी

से छुड़ाया हुआ ।—आत्मन्. (वि०)
छुड़ाया ।

व्युत्तिः (स्त्री०) १ पतन । २ झलगाव । ३ टपकना ।

वहनिकलना । ४ अदृश्य होना । नष्ट होना । ५
योनि । भग । ६ मलद्वार । गुदा ।

व्यूतः (पु०) आम का पेड़ ।

छ

छ संस्कृत या नागरी वर्णमाला के स्पर्श नामक भेद के
अन्तर्गत चर्चा का दूसरा वर्ण । यह व्यञ्जन है ।
इसके उच्चारण का स्थान तालु है । इसके उच्चारण
अघोष और महाप्राण नामक प्रयत्न लगते हैं ।

छः (पु०) १ माग । अंश । टुकड़ा । (वि०)
१ स्वच्छ । २ छेदक । ३ चञ्चल ।

छगः (पु०) [स्त्री०—छगी] बकरा ।

छगलः (पु०) [स्त्री०—छगली] बकरा ।

छगलं (न०) नीला कपड़ा ।

छगलकः (पु०) बकरा ।

छटा (स्त्री०) १ समूह । समुदाय । जमाव । २ प्रकाश
की किरणों का समूह । चमक । कान्ति । दीप्ति ।
३ अविच्छिन्न पंक्ति ।—आभा, (स्त्री०)
विजली । विद्युत् ।—फलः, (पु०) सुपाड़ी का
वृक्ष ।

छत्रं (न०) छाता । छतरी ।—धरः, धारः,
(पु०) छाता तान कर (किसी के पीछे पीछे)
चलने वाला भृत्य ।—धारणम्, (न०) १ छाता
लेकर चलना । २ राजचिह्न छत्र (चक्र आदि)
से भूषित होना ।—पतिः, (पु०) १ सन्नाह । चक्र-
वर्ती । २ जम्बुद्वीप के एक प्राचीन राजा का नाम ।
—भङ्ग, (पु०) १ राज्यनाश । राजसिंहासन से
व्युत्ति । २ पारतन्त्र्य । परवशता । ३ रजामंदी ।
४ वैधव्य ।

छत्रः (पु०) कुकुरमुता । कठफूल ।

छत्रकं (न०) कठफूल । कुकुरमुता ।

छत्रकः (पु०) शिवालय ।

छत्रा (स्त्री०) } कठफूल । कुकुरमुता ।

छत्राकः (पु०) }

छत्रिकः (पु०) वह नौकर जो छाता तान कर चले ।

छत्रिन् (वि०) [स्त्री०—छत्रिणी] छाता रखने

वाला या छाता ले जाने वाला ।—(पु०)
नाई । हज्जाम ।

छत्रः (पु०) १ घर । २ कुञ्ज । लतामण्डप ।

छद् (धा० उभय०) [छदति—छदते, छादयति,
छादयते, छल, छादित] १ ढकना । छालेना ।
२ फैलाना । ३ छिपाना । प्रसना ।

छदः (पु०) } १ उधार । चादर । २ डैना ।
छदनम् (न०) } बाजू । २ पता । ३ म्यान ।
परतला ।

छदिः (स्त्री०) } १ गाड़ी की छत्त । २ घर की
छदिस् (न०) } छत्त या छावनी ।

छदान् (न०) १ कपटवेश । २ न्याज । बहाना । ३
ठगी । धोखेबाजी । बेईमानी । चाल ।—
तापसः, (पु०) पाखण्डी । धर्म की ओट में
शिकार खेलने वाला । दम्भी ।—हृषेण, (अन्वया०)
भेष बदले हुए । कपटवेशी ।—वेशिन्, (पु०)
धोखेबाज । ठग । कपट वेशधारी ।

छद्भिन् (वि०) १ कपटी । दगाबाज । २ कपट वेशधारी ।

छन्छन् (अन्वया०) बनावटी आवाज । छनाछन
या छनछनाहट की आवाज ।

छन्द (धा० उभय०) [छन्दयति, छन्दयते,
छन्दित] १ प्रसन्न करना । खुश करना । २ प्रवृत्त
करना । ३ ढकना । ४ प्रसन्न होना ।

छन्दः (पु०) १ इच्छा । कामना । अभिलाषा । स्वेच्छा ।
२ वश में करना । काबू में करना । ३ अभिप्राय ।
हरादा । मंशा । ४ विषय । जहर ।

छन्दस् (न०) १ कामना । अभिलाषा । २ स्वेच्छा-
चार । ३ उद्देश्य । अभिप्राय । मंशा । ४ चालाकी ।

छोत्वा । ५ वेद । ६ वृत्त । पद्य । ७ छन्दःशास्त्र ।

—छुत्तं (न०) वेद का कोई सा भाग ।—गः,
(= छन्दोगः) १ सासवेद गाने वाला ब्राह्मण । २

कुन्द पदने वाला ।—भङ्गः (पु०) कुन्दशास्त्र के नियमों को उल्लङ्घन करने वाला ।

कुत्र (वि०) १ ठका हुआ । २ क्षिप्य हुआ । रहस्यमय कुमण्डः (पु०) मातृपितृहीन ।

कुर्द (धा० उभय०) [कुर्दयति, कुर्दित] वमन करना । कै करना ।

कुर्दः (पु०)
कुर्दनम् (न०)
कुर्दः (स्त्री०)
कुर्दिश (स्त्री०)
कुर्दिन् (स्त्री०)

वमन । कै । रोग ।

कुलः (पु०) १ दगा । चालाकी । धोखा । २ कुलम् (न०) १ धोखाबाजी । बदमाशी । ३ बहाना । ४ मंशा । अभिप्राय । ५ दुष्टता । ६ मुलावा । ७ वंदिश । अभिप्राय ।

कुलप्रति (क्रि०) कुलता है । धोखा देता है ।

कुलनं (न०)
कुलना (स्त्री०)

धोखा देना । ठगना ।

कुलिकं (न०) नाटक या नृत्य विशेष ।

कुलिन् (पु०) धोखेबाज । बदमाश ।

कुलित (स्त्री०) १ झाल । बकला । २ लता कुली विशेष । ३ सन्तान । औलाद ।

कुन्निः (स्त्री०) १ रंग । चमड़े को रंगत । २ सौन्दर्य । कान्ति । ४ चमक । आव । ५ चमड़ा चर्म ।

कुग (वि०) बकरा सम्बन्धी ।—भोजन, (पु०) मेष्ठिया ।—मुखः, (पु०) कार्तिकेय ।—रथः, वाहनः, (पु०) अग्निदेव ।

कुगः (पु०) [स्त्री०—कुगरी] १ बकरा । २ मेघराशि ।

कुगम् (न०) बकरी का दूध ।

कुगणः (पु०) अन्ने कंदों की आग ।

कुगल (वि०) [स्त्री०—कुगली] बकरा सम्बन्धी ।

कुगलः (पु०) बकरा ।

कुत (वि०) १ कटा हुआ । विभाजित । २ निर्बल । दुबला । लटा हुआ ।

कुत्रः (पु०) शिष्य । चेला ।—दर्शनम्, (न०) एक दिन रखे हुए दूध का ताजा मक्खन ।—व्यंसकः, (पु०) कुन्दजड़न तालिवद्म । माथरी बुद्धि का विद्यार्थी ।

कुत्रम् (न०) एक प्रकार का शहद ।

कुदम् (न०) कुप्पर । कुत्त ।

कुदन् (न०) १ पदी । आड़ । चिक । २ क्षिपाव । लुकाव । ३ पत्ता । ४ वस्त्र ।

कुशिकः (पु०) बदमाश । गुंडा ।

कुन्दस् (वि०) १ वैदिक । २ वेदाधीन । ३ पद्यमय ।

कुन्दसः (पु०) वेदज्ञ ब्राह्मण ।

कुया (स्त्री०) १ साया । परछाहीं । २ प्रतिबिम्ब । ३ समानता । सादृश्य । ४ अम । धोखा । माया । भाँसा । ५ रंगों को गड़बड़ी । ६ चमक । आव । ७ रंग । ८ चेहरे की रंगत । ९ सौन्दर्य । १० रक्षा । हिराजत । ११ पंक्ति । पांति । १२ अंधकार । १३ धूस । रिश्वत । १४ दुर्गादेवी । १५ सूर्यपत्नी का नाम ।—अङ्कः, (पु०) चन्द्रमा ।—ग्रहः, (पु०) शीशा । दर्पण ।—तनयः,—सुतः, (पु०) शनिग्रह ।—तरुः, (पु०) छायादार पेड़ । द्वितीय, (वि०) अकेला ।—पथः, (पु०) अन्तरिक्ष । आकाशमण्डल ।—भूतः, (पु०) चन्द्रमा ।—मानम्, (न०) छाया का माप ।—मित्रम्, (न०) छाया ।—मृगधरः, (पु०) चन्द्रमा ।—यंत्र, (न०) धूपघड़ी ।

कुयामय (वि०) सायादार । प्रतिबिम्बित ।
कुः (स्त्री०) गाली । धिक्कार ।
कुका (स्त्री०) कुँक ।
कुक्तिः (स्त्री०) कटन । विभाजन ।
कुत्वर (वि०) १ काटने लायक । २ कुली । कपटी । धोखेबाज । बदमाश ।

कुद (धा० उभय०) [कुदति, कुदिते, कुदति]

१ काटना । चीरना । लुनना । तोड़ना । २ बाधा डालना । ३ स्थानान्तरित करना । हटाना । नाश करना । शान्त करना । नष्ट करना या कर डालना ।

कुदकं (न०) १ इन्द्र का वज्र । २ हीरा ।

कुदि (स्त्री०) काटना । विभाजित करना ।

कुदिः (स्त्री०) १ कुल्हाड़ी । २ इन्द्र का वज्र ।

कुदिरः (पु०) १ कुल्हाड़ी । २ शब्द । ३ अग्नि । ४ रस्सा ।

छिदुर (वि०) १ काटनेवाला । विभाजित करनेवाला ।

२ सहज में तोड़ा जाने वाला । ३ दूटा हुआ ।

अव्यवस्थित । ४ विपरीति । ५ गुंडा । बदसाश ।

छिद्र (वि०) छिपा हुआ । छेददार ।—अनुजीविन्,

—अनुसन्धानिन्,—अनुसारिन्,—अन्वेपिन्,

(वि०) दोषग्रही । निन्दक ।—अन्तरः, (पु०) बेत ।

नरकुल ।—आत्मन्, (वि०) जो अपनी निर्बलता

बतला कर दूसरों को अपने ऊपर आक्रमण करने

का अवसर दे ।—कर्ण, (वि०) छिदे हुए

कानों वाला ।—दर्शन, (वि०) दोषप्रदर्शक ।

४ दोषान्वेषी ।

छिद्रं (न०) १ सुराख । छेद । सन्धि । दरार ।

२ नुटि । दोष । भूल । ३ निर्बल स्थान ।

निर्बल पक्ष । असम्पूर्णता ।

छिद्रित (वि०) १ छेदोंवाला । २ सुराख किया हुआ ।

पास पास छोटे छोटे छिद्रों से युक्त ।

छिन्न (ब० क०) १ कटा हुआ । चिरा हुआ । अल-

गाथा हुआ । २ नष्ट किया हुआ । स्थानान्तरित

किया हुआ ।—केश, (वि०) मुच्छिन्न । मुड़ा

हुआ ।—द्रुमः, (पु०) कटा हुआ पेड़ ।—ह्येध,

(वि०) सन्देह निराकृत ।—नासिक, (वि०)

नकटा ।—भिन्न, (वि०) आरपार चिरा हुआ ।

—मस्त,—मस्तक, (वि०) सिर कटा हुआ ।

—मूल, (वि०) जब से कटा हुआ ।—श्वासः,

(पु०) एक प्रकार का दमे का रोग ।—संशय,

(वि०) संशयहीन । सन्देह रहित ।

छुछुन्दरः (पु०) छुछुंदर जन्तु ।

छुप् (धा० प०) [छुपति] छूना ।

छुपः (पु०) १ स्पर्श । २ भाड़ी । ३ युद्ध । लड़ाई ।

छुद् (धा० प०) [छोरति, छुरति] १ काटना ।

चीरना । २ खोदना । नक्स बनाना ।

छुरणं (न०) मालिश । उबटन ।

छुरा (स्त्री०) चूना । कलाई । सफेदी ।

छुरिका (स्त्री०) छुरी । चाकू ।

छुरित (ब० क०) १ जड़ा हुआ । २ कैलाया हुआ ।

ढका हुआ । २ गड़बड़ किया हुआ । डोलमाल

किया हुआ ।

छुरी,

छुरिका,

छुरी

(स्त्री०) चाकू ।

छुइ (ब० प०) [छुर्दति, छुर्दयति, छुर्दयते] १ जलाना ।

सुलगाना । (उभय) [छुगन्ति, छुग्न] १ खेलना ।

२ चमकना । ३ कै करना ।

छेक (वि०) १ पालतू । हिला हुआ । २ शहहया ।

नागरिक । ३ धूर्त ।—अनुप्रासः, (पु०) अनु-

प्रास विशेष । शब्द सम्बन्धी अलङ्कार ।—उक्तिः,

(स्त्री०) श्लेषकारी । कौशलपूर्वक दूसरे का

अनुग्रह प्राप्त करने वाला ।

छेदः (पु०) १ काटना । काटकर गिराना । तोड़ कर

गिराना । अलगाना । बाँटना । २ सिद्धि । सफाई ।

स्थानान्तरकरण । ३ नाश । बाधा । ४ अवसान ।

अन्त । समाप्ति । ५ टुकड़ा । टूँक ।

छेदनं (न०) १ काटना । फाड़ना । चीरना । अलगाना ।

२ विभाग । अंश । भाग । टुकड़ा । ३ नाश ।

स्थानान्तरकरण ।

छेदि. (स्त्री०) बड़ई ।

छेमगडः (पु०) मानृपितृहीन बालक ।

छैलकः (पु०) बकरा ।

छैदिकः (पु०) बेत ।

छां (धा० पर०) [छयति, छाति, या छित]

(निजन्त) [छापयति] काटना । (खेत की)

कटाई ।

छोटिका (स्त्री०) खुटकी ।

छोरणं (न०) त्याग ।

ज

ज संस्कृत या नागरी वर्णमाला का एक व्यंजन और चवर्ग का तीसरा वर्ण है। यह स्पर्श वर्ण है। इसका बाह्य प्रयत्न संवार और नाद घोष है। यह अल्पप्राण माना जाता है। इसका उच्चारण-स्थान तालु है।

ज जब "ज" सप्तास के अन्त में आता है। तब इसका अर्थ होता है—उससे या इससे उत्पन्न हुआ। जैसे पङ्क + ज = पङ्कज। अर्थात् कीचड़ से उत्पन्न।

जः (पु०) १ पिता। जनक। २ उत्पत्ति। जन्म। ३ जहर। ४ पिशाच। ५ विजयी। ६ कान्ति। आभा। आव। ६ विष्णु।

जकुटः (पु०) १ मलय पर्वत। २ कुत्ता।

जल् (धा० परस्मै०) [जलित्ति, जलित, या जग्ध] रवाना। नाश करना। निषटना।

जज्ञाम् (न०) } खा डालना। निघटा डालना।
जज्तिः (स्त्री०) }

जगत् (वि०) चर। चलने वाले। (पु०) हवा। पवन। (न०) संसार।—अग्नि, —अग्निविका, (स्त्री०) दुर्गा।—आत्मन्, (पु०) परमात्मा। आदिजः, (पु०) शिव।—आधारः, (पु०) १ काल। २ पवन।—आयुः, —आयुस्, (पु०) पवन। हवा। ईशः, —पतिः, (पु०) परमात्मा।—उद्धारः, (पु०) संसार की मोक्ष।—कर्तृ, —धातु, (पु०) सृष्टिकर्ता।—चक्षुस् (पु०) सूर्य।—नाथः, (पु०) सृष्टिस्वामी।—निवासः, (पु०) १ परमात्मा। २ विष्णु। ३ सांसारिक स्थिति।—प्राणः, —बलः (पु०) पवन।—योजिः (पु०) १ परमात्मा। २ विष्णु। ३ शिव। ४ ब्रह्मा। (स्त्री०) पृथिवी।—वहा (स्त्री०) पृथिवी।—सात्तिन्, (पु०) १ परमात्मा। २ सूर्य।

जगती (स्त्री०) १ पृथिवी। २ मानवजाति। लोग। ३ गौ। ४ छन्द विशेष जिसके प्रत्येक पद में १२ अक्षर होते हैं।—अधीश्वरः, —ईश्वरः, (पु०) राजा।—रुद्र, (पु०) बृह।

जगज्जुः } (पु०) १ अग्नि। २ कीट। ३ जानवर।
जगज्जुः }

जगरः (पु०) कवच। वक्त्रतर।

जगल (वि०) १ गुण्डा। बदमाश। कपटी।

जगलं (न०) १ गोबर। २ कवच। ३ मदिरा। अन्तिम दो अर्थों में इस शब्द का प्रयोग पुल्लिङ्ग में भी होता है।

जग्ध (वि०) खाया हुआ।

जग्धिः (स्त्री०) १ भोजन। भोज्य पदार्थ।

जग्भिः (पु०) पवन।

जघनं (न०) १ कूल्हा। कमर। नितम्ब। २ सेना जो वचन में रखी जाय।—चपला (स्त्री०) असती स्त्री।

जघन्य (वि०) १ सब से पीछे का। पिछला। अन्तिम। सब से गया बीता। निकृष्ट। नीच। तिरस्करणीय। २ अकुलीन।—जः, (पु०) १ छोटा भाई। २ शत्रु।

जघन्य (पु०) शत्रु।

जग्भिः (पु०) (आक्रमण करने का एक) अस्त्र।

जग्ध (वि०) मारने वाला। मार डालने वाला।

जंगम } (वि०) चर। जीवधारी। चलने फिरने
जङ्गम } वाले।—इतर, (वि०) अचल। स्थावर।
जो चलफिर न सके।—कुटी, (स्त्री०) छाता।

जंगमम् } (न०) चलने फिरने वाला पदार्थ।
जङ्गमम् }

जंगलम् } (न०) १ वन। अरण्य। निर्जन स्थान।
जङ्गलम् } परती भूमि। २ उपवन। बेहड़। ३ एकान्त जगह।

जंगलः } (पु०) खेत की मँड़।
जङ्गलः }

जङ्गुलम् } (न०) जहर। विष।
जङ्गुलम् }

जङ्घा } (स्त्री०) जाँघ। एड़ी से घुटनों तक का
जङ्घा } भाग।—आरः, —कारिकः, (पु०)
हस्कारा। डाकिया। चर। दौड़ेया।—प्राणः,
(न०) टांगों के लिये कवच।

जघाल } (वि०) तेज दौड़ने वाला ।
 जङ्गल }
 जंघालः } (पु०) १ हत्कारा । २ हिरन । बारह-
 जङ्गलः } सिंघा ।
 जंघिल } (वि०) तेज दौड़ने वाला । तेज ।
 जङ्घिल } फुर्तीला ।
 जज् } (धा० पर०) [जंजति, या जञ्जति,]
 जंज् } लड़ना । युद्ध करना ।
 जट् (धा० पर०) [स्त्री०—जटति] जसना ।
 थका होना । धंधना । एकत्र होना । उलझ जाना ।
 (बालों की जटा बाँधना ।
 जटा (स्त्री०) १ जूड़ा । २ जटामाली । ३ जब या मूल ।
 ४ शाखा । ५ शतावरी । ६ शेर के अयाल । ७ वेद
 का पाठ विशेष ।—चोरः, —टङ्ग, —टीरः, —धरः,
 (पु०) शिव जी की उपाधियाँ ।—जूटः, (पु०)
 १ जटाओं का समुदाय । २ शिवजी के सिर के
 उमड़े हुए बाल ।—ज्वालः, (पु०) दीपक ।
 लेंप ।—धर, (वि०) जटाजूट धारण करने
 वाला ।
 जटायु (वि०) बड़ी आयु वाला ।
 जटायुः (पु०) १ पक्षी विशेष । इसने सीता जी के
 लिये रावण से युद्ध कर अपने प्राण गँवाये थे । २
 गृगल ।
 जटाल (वि०) १ जटाजूटधारी । २ एकत्री भूत ।
 जटालः (पु०) गूलर का वृक्ष ।
 जटिः } (स्त्री०) १ गूलर का वृक्ष । २ जटाजूट ।
 जटी } ३ जमाव ।
 जटिन् (वि०) [स्त्री०—जटिनी] १ जटाजूटधारी ।
 (पु०) शिवजी का नाम । २ जूँच वृक्ष ।
 जटिल (वि०) १ जटाजूटधारी । २ उलझन डालने
 वाला । पेचीला । ३ सघन । अगम्य ।
 जटिलः (पु०) १ सिंह । शेर । २ बकरा ।
 जठर (वि०) कठोर । दृढ़ । मजबूत ।
 जठरं (न०) } १ पेट । मेदा । कुक्षि । २ गर्भा-
 जठरः (पु०) } शय । ३ किसी भी वस्तु का
 आँदरूनी भाग ।—अग्निः (पु०) पेट के भीतर
 खाये हुए पदार्थों को पचाने वाली आग । पाक-
 स्थली का पाचकरस ।—आमयः, (पु०) उदर
 सम्बन्धी रोग । जलोदर रोग ।—ज्वाला,—

व्यथा, (स्त्री०) पेट की पीड़ा । पेट की व्यथा ।
 बायगोले का दर्द ।—यंत्रणा,—यातना, (स्त्री०)
 गर्भ में रहते समय का कष्ट ।
 जड (वि०) १ ठंडा । शीतल । २ निर्जीव । तेज-
 स्वताहीन । गतिहीन । लकना मारा हुआ । ३
 ३ मूढ़ । बुद्धिहीन । विवेकहीन । अज्ञान । ४ अच्छे
 बुरे ज्ञान से शून्य । ५ सुन्न । अकड़ा हुआ ।
 ठिठुरा हुआ । ६ गूँगा । ७ वेदाध्ययन करने में
 असमर्थ । किय, (वि०) सुस्त । दीर्घसूत्री ।
 —भरतः, (पु०) बिलरुखा । गाडदी । अनाड़ी ।
 जडम् (न०) जल । सीसा ।
 जडता (स्त्री०) } १ सुस्ती । २ अज्ञानता । ३
 जडत्वम् (न०) } मूर्खता ।
 जडिग्रन् (पु०) १ शीतलता । २ विवेकहीनता । ३
 सुस्ती । काहिली । सुर्दादिली । ४ ठिठुरन । सुन्न ।
 जतु (न०) लाख ।—अश्मकम्, (न०) खनिज
 विष विशेष ।—रसः (पु०) लाख ।
 जतुकं (न०) लाख ।
 जतुका (न०) १ लाख । २ चिमगादड़ ।
 जतुकी } (स्त्री०) चिमगादड़ ।
 जतूका }
 जत्रु (पु०) हँसली की हड्डी ।
 जन् (धा० आत्म०) [जायते, जात, जन्यते,
 या जायते] १ उत्पन्न होना । पैदा होना ।
 २ उदय होना । निकलना । ३ होना । घटित
 होना । (निजन्त) [स्त्री०—जन्यति]
 उत्पन्न करना । पैदा करना ।
 जनः (पु०) १ जीवधारी । प्राणधारी । २ व्यक्ति ।
 (पुरुष या स्त्री) (समूहार्थ में) पुरुष गण ।
 लोग । संसार । ३ जाति महर्लोक के आगे
 का लोक ।—अतिग, (वि०) असाधारण ।
 असामान्य । अलौकिक ।—अधिपः,—अधि-
 नाथः, (पु०) राजा ।—अन्तः (पु०) १ ऐसा
 स्थान जहाँ बस्ती न हो । २ अज्ञान । प्रवेश । यम
 की उपाधि ।—अस्तिकं, (न०) कानाफूसी ।
 खुसफुस ।—अर्दनः (पु०) विष्णु या कृष्ण ।
 —अशनः, (पु०) भेड़िया ।—आचारः, (पु०)
 रसम । रिवाज ।—आश्रमः, (पु०) सराय । धर्म-
 शाला । उतारा ।—आश्रयः, (पु०) थोड़े

समय के लिये निर्मित वासस्थान । मण्डप । तंबू । चाँदनी । चन्द्रातप ।—इन्द्रः,—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) राजा ।—इष्ट, (वि०) लोगों द्वारा वाञ्छित या पसंद ।—इष्टः, (पु०) एक प्रकार की चमेली ।—उदाहरणम्, (न०) महिमा । कीर्ति ।—आद्यः (पु०) मनुष्यों का जमाव या समूह ।—कारिन्, (पु०) लाख ।—जनुस्, (न०) लोगों की आँख । सूर्य ।—आ, (स्त्री०) छतरी । छाता ।—देवः, (पु०) राजा ।—पदः, (पु०) १ जाति । समाज । किसी राज्य का प्रजा समूह । वंश । वर्ष । २ राज्य । राष्ट्र । प्रदेश जिसमें लोगों की बस्ती हो । ३ त्तरी । ४ लोग । प्रजा । ५ मानव जाति ।—पविन्, (पु०) किसी देश या समाज का शासक ।—प्रवादः, (पु०) १ किंवदन्ती । अफवाह । इत्तिहा । २ कलङ्क । अपवाद ।—प्रिय, (वि०) १ परोपकारी । सर्वोपकारपरायण । २ सर्वजनप्रिय ।—मर्यादा, (स्त्री०) प्रचलित पद्धति ।—रजनम्, (न०) सार्वजनिक अनुग्रह प्राप्त करने वाला ।—रवः, (पु०) १ किंवदन्ती । अफवाह । २ अपवाद । कलङ्क ।—लीकः, (पु०) महलौक के ऊपर का लोक विशेष ।—वादः (जानेवादः भी) १ समाचार । खबर । अफवाह । २ अपवाद । कलङ्क ।—व्यावहारः, (पु०) लोकाचार ।—ध्रुन, (वि०) सुप्रसिद्ध ।—ध्रुतिः, (स्त्री०) अफवाह । किंवदन्ती । इत्तिहा ।—संवाध, (वि०) सवन बसी हुई (बस्ती) ।—स्थानं, (न०) दण्डकवन । दण्डकारण्य जहाँ खर और दूषण की चौकी थी ।
क (वि०) [स्त्री०—जनिका] पैदा करने वाला । उत्पन्न करने वाला । कारणीभूत ।
कः (पु०) १ पिता । २ जन्म देने वाला । २ विदेह या मिथिला के एक प्रसिद्ध राजा का नाम जो सीता जी के पौष्यपिता थे ।—आत्मजा, (स्त्री०) सीता जी ।—तनया,—नन्दिनी,—सुता, (स्त्री०) सीता जी । जानकी जी ।
कमः } (पु०) चारणाल । [समूह ।
कमः }
ता (स्त्री०) १ उत्पत्ति । २ मानवजाति । जन-
न (वि०) कारणीभूत । उत्पादक ।

जननम् (न०) १ उत्पत्ति । जन्म । २ सृष्टि । ३ प्रादुर्भाव । ४ जीवन । अस्तित्व । ५ वंश । कुल । वर्ष ।
जननिः (स्त्री०) १ माता । १ जन्म । उत्पत्ति ।
जननी (स्त्री०) १ माता । २ दया । रहम । अनुकम्पा । रहमदिली । ३ चिमगादड़ । ४ लाख ।
जन्मेजयः (पु०) चन्द्रवंशी एक प्रसिद्ध राजा । यह महाराज परीक्षित का पुत्र था और अपने पिता को इसने वाले तबक से बदला लेने के लिये इसने सर्पयज्ञ किया था । पीछे आस्तिक ऋषि के समझाने पर सर्पयज्ञ बंद किया गया था ।
जनयितृ (वि०) [स्त्री०—जनयित्रो] उत्पादक । सृष्टिकर्ता । बनानेवाला । (पु०) पिता ।
जनयित्रो (स्त्री०) माता ।
जनस् (न०) जन देखो ।
जनिः } १ उत्पत्ति । सृष्टि । पैदावार । २ स्त्री ।
जनिः }
जनी } ३ माता । ४ भायाँ । बहू । पुत्रवधू ।
जनित (वि०) १ उत्पन्न करने वाला । २ उत्पन्न किया हुआ । पैदा किया हुआ । कारणीभूत ।
जनितृ (पु०) पिता ।
जनित्रि (स्त्री०) माता ।
जनु } (स्त्री०) उत्पत्ति । पैदावार । पैदावश ।
जनु }
जनुस् (न०) १ उत्पत्ति । जन्म । २ सृष्टि । ३ जीवन । अस्तित्व ।—जनुषान्धः, (पु०) जन्मान्ध । पैदावशी अंधा ।
जंतुः } (पु०) १ जीव । प्राणधारी । मनुष्य । २
जंतुः } (व्यक्तिगत) आत्मा । ३ बुद्ध जाति का प्राणधारी ।—कम्बुः, (पु०) बौधा ।—फलः, (पु०) गूलर का वृक्ष ।
जंतुका } (स्त्री०) लाख ।
जंतुका }
जंतुमती } (स्त्री०) पृथिवी ।
जंतुमती }
जन्म (न०) उत्पत्ति ।
जन्मन् (न०) १ जन्म । उत्पत्ति । पैदावश । २ विकास । उद्गम । प्रादुर्भाव । प्राकट्य । सृष्टि । ३ जीवन । अस्तित्व । जन्मस्थान । ४ पैदावश ।—अधिपः, (पु०) १ शिव । २ जन्म नक्षत्र ।—अन्तरम्, (न०)

दूसरा जन्म।—अन्तरीय, (वि०) दूसरे जन्म का।
जन्मान्तरकृत।—अन्ध, (वि०) जन्म से अंध।
—अष्टमी, (स्त्री०) भाद्रकृष्ण अष्टमी। जिस
दिन श्री कृष्ण भगवान का जन्म हुआ था।—
कुण्डली, (स्त्री०) एक चक्र विशेष जिसमें जन्म-
समय के ग्रहों की स्थिति का उल्लेख किया जाता
है।—कुतू, (पु०) पिता।—क्षेत्रं, (न०)
उत्पत्तिस्थान।—तिथिः, (पु० स्त्री०)—दिनम्,
(न०)—दिवसः, (पु०) जन्म-दिवस।—दः, (पु०)
पिता।—नक्षत्रं,—भं, (न०) वह नक्षत्र जो जन्म
के समय हो।—नामन्, (न०) जन्म होने के
१२ वें दिवस रखा गया नाम जो राशि के अनुसार
आद्य अक्षर संयुक्त होता है।—पञ्चं, (न०)—
पत्रिका, (स्त्री०) जन्मकुण्डली।—प्रतिष्ठा, (स्त्री०)
१ जन्मस्थान। २ माता।—भाज्, (पु०) प्राणी।
जीवधारी।—भाषा, (स्त्री०) मातृभाषा।—
भूमि, (स्त्री०) जन्मस्थान।—योगः, (पु०) जन्म-
कुण्डली।—रोगिन्, (वि०) पैदायशी बीमार।
लग्नं, (न०) वह लग्न जो जन्म के समय हो।
—वर्षन्, (न०) भग। योनि।—शोधनं, (न०)
जन्म होने पर, तत्सम्बन्धी कर्तव्यों का यथा-
विधि पालन।—साफल्यं, (न०) जीवन के
उद्देश्यों की सिद्धि।—स्थानं, (न०) १ जन्म-
स्थान। २ गर्भाशय।

जन्मिन् (पु०) प्राणी। जीवधारी।

ज्य (वि०) १ उत्पन्न हुआ। पैदा हुआ। (समाप्तान्त
में इसका अर्थ होता है)। २ किसी कुल या वंश
का अथवा किसी कुल या वंश सम्बन्धी। ३
(असुक्त से) उत्पन्न। ४ गैवारु। ग्रामीण।
साधारण। ५ राष्ट्रीय।

ज्यः (पु०) १ पिता। २ मित्र। २ वर (बूढ़ा) का
नातेदार। मित्र। दहलुआ। ३ साधारण जन।
४ किंवदन्ती। अफवाह। ५ उत्पत्ति। सृष्टि।
पैदायश। उत्पन्न। सृष्टि की हुई वस्तु। कर्म (क्रिया
का फल) ३ शरीर। ४ जन्म के समय होने वाला
अशकुन। ५ हार। पैठ। मैला। ७ युद्ध। लड़ाई
७ भर्त्सना। फटकार।

ज्या (स्त्री०) १ माता का मित्र। २ वधू के नतैत।

वधू की सहेली। ३ हर्ष। आह्लाद। ४ स्नेह।
प्रीति। [अग्नि। ४ सृष्टिकर्त्ता या ब्रह्मा।

जन्तुः (पु०) १ उत्पत्ति। २ प्राणी। जीवधारी। ३
जप् (धा० परस्मै०) [जपति, जपित, जप्त] मन
ही मन किसी (मंत्र को) बारं बार कहना। जप
करना।

जपः (पु०) मंत्र जो अत्यन्त धीमे स्वर से बार बार
पढ़े जायें।—परायणः, (वि०) जपनिरत।—
माला, (स्त्री०) माला जिस पर जप किया
जाय।

जपा (स्त्री०) सदागुलाब का फूल या पौधा।

जप्यं (न०) } मंत्र जो जपा जाय।
जप्यः (पु०) }

जम् (धा० पर०) [जभति, जंभति] सङ्गम
जंम्] करना। रमण करना। (आत्म०) [जभते,
जम्भते] जमुहाई लेना। उवासी लेना।

जम् (धा० परस्मै०) [जमति] खाना।

जमदग्निः (पु०) ऋग्वंशीय एक ऋषि जो परशुराम
के पिता थे। इनके पिता का नाम ऋचीक और
माता का नाम सत्यवती था। जमदग्नि बड़े
अध्ययन शील थे और कहा जाता है इन्होंने वेदा-
ध्ययन भली भाँति किया था। इनकी मामी का
नाम रेणु था। जिसके गर्भ से इनके पाँच पुत्र
हुए थे।

जपंती } (पु०) [द्विवचन] पति पत्नी। दम्पती और
जपन्ती } जायापति।

जंघालः } (पु०) १ कीचड़। २ काड़। लियार।
जम्बालः } ३ केतक पौधा।

जंवाल्लिनी } (स्त्री०) नदी।
जम्बाल्लिनी }

जंवीरं } (न०) जमीरी का फल।
जम्बीरम् }

जंवीरः } (पु०) जमीरी का वृक्ष।
जम्बीरः }

जंबू, जम्बू } (स्त्री०) जामुन का फल और जामुन का
जंबू, जम्बू } पेड़।—खण्डः,—द्वीपः, (पु०) सात
द्वीपों में से एक, जो मेरु पर्वत को घेरे हुए हैं।

जंबूकः, जम्बूकः } (पु०) १ शृगाल। गीदड़ २
जंबूकः, जम्बूकः } नीच मनुष्य। ३ जामुन का
फल।

जंबूल: } (पु०) वृक्ष विशेष।
जम्बूल: }

जंभ: } (पु०) १ दाँत। २ जाँबड़ा। ३ भक्षण।
जम्भ: } ४ कुतरना। काटकर टुकड़े टुकड़े कर डालना।
५ भाग। अंश। ६ तरकस। तूलीर। ७ छोड़ी।
८ जमुहाई। ९ इन्द्र द्वारा हत एक दैत्य। १० नीबू
या जंभीरी का पेड़।—अराति:—द्विष,—
भेदिन. रिपु: (वि०) इन्द्र।—अरि: (पु०)
१ आग। २ इन्द्र का वज्र। ३ इन्द्र।

जंभका, जम्भका }
जंभा, जम्भा } (स्त्री०) जमुहाई। उवासी।
जंभिका, जम्भिका }

जंभर: , जम्भर: } (पु०) नीबू या जंभीरी का वृक्ष।
जंभीर: , जम्भीर: }

जय: (पु०) विजय। सफलता। जीत [युद्ध या
जुझाँ या मुकद्दमे में]। २ संयम। नियम। ३ सूर्य।
४ इन्द्रपुत्र जयन्त। ५ युधिष्ठिर। ६ विष्णु के
द्वार पाशों में से एक। ७ अर्जुन की उपाधि।
८ पताका विशेष। ९ मार्ग। १० ज्योतिष
में ३ या ८ मी। ११ शी तिथियाँ।—आवह,
(वि०) विजयक्षयी। विजय देने वाला।—उद्धर
(वि०) विजय प्राप्ति के आनन्द में नृत्य करने
वाला।—कोलाहल: (पु०) १ जयजयकार।
२ पाँसों का खेल विशेष।—घोष:—घोषणा,
(न०) घोषणा, (स्त्री०) विजय का ढिंढोरा।—
ढक्का (स्त्री०) विजयसूचक ढोल का शब्द।
—पञ्च, (न०) विजय का लेखा।—पाल: (पु०)
१ राजा। २ ब्रह्म। ३—पुत्रक: (पु०) एक प्रकार
का पाँसा।—मङ्गल: (पु०) शाही हाथी। २
ज्वर की दवा।—वाहिनी, (स्त्री०) शची देवी की
उपाधि।—शब्द: (पु०) १ जयजयकार।
२ जय।—स्तम्भ: (पु०) विजय का स्मारक
स्वरूप स्तम्भ।

जयन्तम् (न०) १ जीत। विजय। २ युद्धसवारों तथा
हाथी सवारों आदि का कवच।—युज्, (वि०)
१ विजयी। २ बहुमूल्य साज सामान से सजा
हुआ घोड़ा आदि।

जयन्त: (पु०) १ इन्द्रपुत्र। २ शिव। ३ चन्द्रमा।
—पत्रम् (न०) जज का लिखा हुआ फैसला।

अश्वमेधीय घोड़े के माथे पर बँधा हुआ विजय
पत्र। [दुर्गा का नाम।

जयन्ती (स्त्री०) १ पताका। ध्वजा। २ इन्द्रपुत्री। ३
जयद्रथ: (पु०) दुर्योधन का बहनोई जो सिन्धु देश
का राजा था। यह दुःशला का पति था। अर्जुन
के हाथ से यह महाभारत के युद्ध में मारा गया
था।

जया (स्त्री०) १ दुर्गा की परिचारिका का नाम।
जयिन् (वि०) १ विजयी। सफल। मुकद्दमा जीतने
वाला। २ मनोहर। मन को वश में कर लेने
वाला। (पु०) विजयी। जयी।

जय्य (वि०) जीतने योग्य। जो जीता जा सके।

जरठ (वि०) १ सख्त। कड़ा। ठोस। बड़ा। २
जर्जरित। निर्बल। ४ पूरा बढ़ा हुआ। पका।
पका हुआ। ५ निष्ठुर। नृशंस।

जरठ: (पु०) पाण्डु राजा का नाम।

जरण (वि०) बूढ़ा। जर्जरित। निर्बल।

जरत् (वि०) १ बूढ़ा। पुरनिया। २ कमजोर।
जर्जरित।—कारु: (पु०) एक महर्षि का नाम
जिसने वासुकी की वहिन के साथ शादी की थी।
—गव: (पु०) बूढ़ा बैल।

जरती (स्त्री०) बूढ़ी स्त्री। बुढ़िया।

जरन्त: (पु०) १ बूढ़ा आदमी। २ भैंसा।

जरा (स्त्री०) १ बुढ़ापा। २ निर्बलता। बुढ़ाई। ३
पाचनशक्ति। ४ एक राक्षसी का नाम जिसने
जरासंध के शरीर के दो टुकड़ों को जोड़ा था।
—अवस्था, (स्त्री०) बूढ़ापन। जीर्णता।—
जीर्ण, (वि०) बुढ़ापे के कारण निर्बल। कम-
जोर।—सन्ध: (पु०) यह बृहद्रथ का पुत्र था
और मगध देश का राजा था। इसकी बेटी कंस
को न्याही थी। जब उसने सुना कि, श्री कृष्ण ने
इसके दामाद को मार डाला है, तब इसने १८
बार मथुरा पर घढ़ाई की। इसकी चढ़ाइयों से तंग
आकर यादवों को मथुरा त्यागनी पड़ी और वे
मथुरा से सुवूर और समुद्रस्थित द्वारकापुरी में
जा बसे थे। अन्त में महाराज युधिष्ठिर के राज-
सूय यज्ञ में श्रीकृष्णचन्द्र जी की दुरधिसन्धि से
भीम ने इसका वध किया था।

जरायणिः (पु०) जरासन्ध का नाम ।

जरायु (न०) १ कैचली । २ गर्भाशय की ऊपर की भित्तली । ३ गर्भाशय । भग ।—ज, (वि०) वे प्राणी जो जरा से युक्त उत्पन्न होते हैं । यथा मनुष्य । मृग आदि ।

जरित (वि०) १ बूढ़ा । अधिक उम्र का । २ निर्बल । जीर्ण । [उम्र का ।

जरिन् (वि०) [स्त्री०—जरिणी] बूढ़ा । अधिक जरुथम् (न०) मौस ।

जर्जर (वि०) १ बूढ़ा । जीर्ण । कमजोर । २ घिसा हुआ । फटा हुआ । टुकड़े टुकड़े किया हुआ । विभक्त । चीरा हुआ । ३ धायल । चोटिल । ४ पोला ।

जर्जरम् (न०) इन्द्रध्वजा ।

जर्जरित (वि०) १ बूढ़ा । पुराना । जीर्ण । निर्बल । २ घिसा हुआ । टुकड़े टुकड़े किया हुआ । टुकड़े टुकड़े हो कर बिखरा हुआ । ३ निकम्मा किया हुआ । अवश ।

जर्जरीक (वि०) १ पुराना ।—जीर्ण, (पु०) २ छिद्रों से परिपूर्ण । छिद्रान्वित ।

जर्तुः (पु०) १ भग । येनि । २ हाथी ।

जल (वि०) सुस्त । शीतल । ठंडा ।—अञ्जलं, (न०) १ चरमा । सेता । २ प्राकृतिक जल-प्रवाह । ३ काई । सिवार ।—अञ्जलिः, (पु०) अञ्जलीभर जल । २ जलतर्पण ।—अटनः, (पु०) बगुला ।—अटनी, (स्त्री०) जौक । जलौका ।—अष्टकः, (न०) शार्क नाम का मत्स्य ।—अत्ययः, (पु०) शरद्वृत्त ।—अधिदैवतः, (पु०)—अधिदैवतम्, (न०) वरुण । पूर्वाषाढा नक्षत्र ।—अधिपः, (पु०) वरुण । अम्बिका, (स्त्री०) कृप । कुआ ।—अर्कः (पु०) जल में सूर्यमण्डल का प्रतिबिम्ब ।—अर्णवः, (पु०) १ वर्षावृत्त । २ मीठे जल का समुद्र ।—अर्थिन्, (वि०) प्यासा ।—अवतारः, (पु०) नदी का घाट ।—अष्टौला, (पु०) एक बृहद् चौकोर तालाव ।—असुका, (स्त्री०) जौक ।—आकारः, (न०) चरमा । फुआरा । फव्वारा । कृप ।—आकांतः, (पु०)

कांतः, —कांतिन्, (पु०) हाथी ।—आखुः, (वि०) उदविलाव जो मछली खाता है ।—आत्मिका, (स्त्री०) जौक ।—आधारः, (पु०) तालाव । सरोवर । जलाशय ।—आयुका, (स्त्री०) जौक ।—आर्द्रः, (वि०) भीगा । तर ।—आर्द्रम्, (न०) भीगे कपड़े । आर्द्रा, (स्त्री०) पानी से तर पंखा ।—आलोका, (स्त्री०) जौक ।—आवर्तः, (पु०) भँवर ।—आशयः, (पु०) १ तालाव । सरोवर २ मछली । ३ समुद्र ।—आश्रयः, (पु०) १ तालाव । २ जलभवन ।—आह्वयः, (न०) कमल ।—इन्द्रः, (पु०) १ वरुण । २ समुद्र ।—इन्धनः, (न०) बाइवानल ।—इभः, (पु०) सूँस । शिशुमार ।—ईशः, —ईश्वरः, (पु०) १ वरुण । २ समुद्र ।—उक्कृस्तः, (पु०) १ परीवाह । नहर । नाली । २ नदी की बाढ़ ।—उदरः, (न०) जलोदर ।—उरगा, (स्त्री०)—ओकस्, (पु०) ओकसः, जौक ।—कण्टकः, (पु०) नक्र । नाका । बड़ियाल ।—कपिः, (पु०) गंगा जी की सूँस ।—कपोतः, (पु०) जलकवूतर ।—करङ्कः, (पु०) १ शङ्ख । २ नारियल । ३ बादल । ४ लहर । ५ कमल ।—कटकः, (पु०) कीचड़ । काकः, (पु०) पानी का कौआ । पानकौड़ी ।—कान्तारः, (पु०) वरुण ।—किराटः, (पु०) शार्क मछली ।—कुक्कुटः, (पु०) जलमुर्ग । मुरगावी । कुलंज ।—कुम्भलः, (न०)—कोशः, (वि०) सिवार ।—कूपी, (स्त्री०) १ चरमा । सेता । कूप । २ तालाव । पोखरा । ३ भँवर ।—कूर्मः, (पु०) सूँस ।—केलिः, (पु०) या —क्रीडा, (स्त्री०) जल में का खेल जैसे एक दूसरे पर पानी उल्लिखना ।—क्रिया, (स्त्री०) जलतर्पण ।—गुल्मः, (पु०) १ ककुआ । २ चौखूँटा तालाव । ३ भँवर ।—चर, (वि०) (जलेचर, भी रूप होता है) जल का ।—चरजीवः, —चर, + आजीवः, (पु०) मछवा । धीमर । माही-गीर ।—चारिन्, (पु०) १ जल में रहने वाला

जन्तु । २ मछली ।—ज (वि०) जल में पैदा होने वाला । जल में रहने वाला ।—जः, (पु०) १ जलजन्तु । २ मछली । ३ सिवार । कोई । ४ चन्द्रमा ।—जः, (पु०)—जम्, (न०) १ शंख । २ घोंघा । कमल । जन्तुः, (पु०) १ मछली । २ कोई भी जल में रहने वाला जीव ।—जन्तुका, (स्त्री०) जौक ।—जन्मन्, (न०) कमल ।—जिह्वः, (पु०) मगर । नाका ।—जीविन्, (पु०) धीवर । माहीगीर । मछवाहा ।—तरङ्गः, (पु०) १ लहर । २ जलतरंग । वाद्ययंत्र विशेष ।—त्रा, (स्त्री०) छाता ।—त्रासः, (पु०) जलातङ्क । पागल कुत्ते के काटने से उत्पन्न पागलपन ।—दः, (पु०) १ बादल । २ कपूर ।—अशनः, (पु०) साल वृक्ष ।—आगमः, (पु०) वर्षाभूत ।—दुर्दुरः, (पु०) वाद्ययंत्र विशेष ।—देवता, (स्त्री०) जलपरी ।—द्रोणी, (स्त्री०) बाल्टी । डोलची ।—धरः, (पु०) १ बादल । २ समुद्र ।—धि, (पु०) १ समुद्र । २ संख्या विशेष । ३ चार की संख्या ।—नकुलः, (पु०) ऊदविलाव ।—नरः, (पु०) जलमानुस ।—निधिः, (पु०) १ समुद्र । २ चार की संख्या ।—निर्गमः, (पु०) १ नाली । पानी निकलने का मार्ग । २ जलप्रपात ।—नीलिः, (स्त्री०) सिवार । कोई ।—पटलं, (न०) बादल ।—पतिः, (पु०) १ समुद्र । २ वरुण ।—पथः, (पु०) समुद्री यात्रा ।—पारावतः, (पु०) जलपक्षी विशेष ।—पुष्पम्, (न०) जल में उत्पन्न होने वाला फूल ।—पूरः, (पु०) १ जल की बाढ़ । २ जल से परिपूर्ण चरमा ।—पृष्ठजा, (स्त्री०) कोई । सिवार ।—प्रदानं, (न०) तर्पण ।—प्रलयः (पु०) जल द्वारा नाश ।—प्रान्तः, (पु०) नदीतट ।—प्रायः, (न०) वह देश जिसमें जल का बाहुल्य हो ।—प्रियः, (पु०) १ चातक पक्षी । २ मछली ।—स्रव, (पु०) ऊदविलाव ।—स्त्रावनम्, (न०) जलप्रलय । बूढ़ा ।—वन्धुः, (पु०) मछली ।—बालकः, (पु०)—बालकः, (पु०) विन्ध्यागिरि ।—वालिका, (स्त्री०) बिजली ।—बिडालः,

(पु०) ऊदविलाव ।—बिम्बः, (पु०)—बिम्बम्, (न०) बूढ़ा ।—विल्वः, (पु०) १ झील । सरोवर । २ कछुवा । ३ कैकड़ा ।—भूः, (पु०) १ बादल । २ जलसञ्चय का स्थान । ३ कपूर विशेष ।—भूत, (पु०) १ बादल । २ घड़ा । ३ कपूर ।—मलिका, (स्त्री०) जल का क्रीड़ा ।—मण्डूकं, (न०) जलदुर् । एक प्रकार का बाजा ।—मार्गः, (पु०) नाली । पनाला । पानी निकलने का रास्ता । नहर ।—मुच, (पु०) १ बादल । २ कपूर विशेष ।—मूर्तिः, (पु०) शिव जी की उपाधि विशेष ।—मूर्तिका, (स्त्री०) ओला ।—यंत्रम्, (न०) १ फव्वारा । २ जल खींचने की कल ।—यात्रा, (स्त्री०) जलमार्ग से गमन ।—यानं, (न०) जहाज । नौका ।—रगडः, (वि०)—रगडः, (पु०) १ भवर । २ कुआर । ३ बूढ़ । ४ सर्प ।—रसः, (पु०) निमक । लवण ।—राशिः, (पु०) समुद्र ।—रुहः, (पु०) रुहं, (न०) कमल ।—रूपः, (पु०) मगर । बड़ियाल । नक ।—लता, (स्त्री०) लहर ।—वायसः, (पु०) जलपक्षी विशेष । सुर्गावी ।—वाहः, (पु०) बादल ।—वाहनो, (स्त्री०) नाली । परनाला । नहर । बंबा ।—वृश्चिकः, (पु०) झींगा मछली ।—व्याजः, (पु०) पनिहॉ साँप ।—शयः, (न०) शयनः,—(पु०)—शायिन्, (पु०) विष्णु ।—शूकं, (न०) सिवार । कोई ।—शूकरः, (पु०) नक । मगर । बड़ियाल ।—शोषः, (पु०) सूखा । अनावृष्टि ।—सर्पिणी, (स्त्री०) जौक ।—सूत्रिः, (स्त्री०) १ सूँइस । शिशुमार । २ मछली विशेष । ३ काक । ४ जौक ।—स्थानं, (न०)—स्थायः, (पु०) सरोवर । झील । तालाव ।—हम्, (न०) घर जिसमें जगह जगह फव्वारे लगे हों । ग्रीष्मभवन ।—हस्तिन्, (पु०) जल-हाथी ।—हारिणी, (स्त्री०) नाली । पनाला ।—हासः, (पु०) फेन । भाग । समुद्रफेन । जलम् (न०) १ पानी । २ एक सुगन्ध द्रव्य विशेष । ३ शीतलत्व । ४ पूर्वापादा नञ्च ।

जलगमः }
जलङ्गमः } (पु०) चाखडाल ।
जलमसिः (पु०) १ बादल । २ कपूर ।
जलाका
जलालुका
जलिका
जलुका
जलुका } (स्त्री०) जौंक ।
जलेजं
जलेजातम् } (न०) कमल ।
जलेशयः (पु०) १ मछली । २ विष्णु ।
जल्प् (धा० परस्मै०) [जल्पति, जल्पित] १ बोलना ।
बातचीत करना । २ बराना । अस्पष्ट बोलना ।
३ तोतलाना ।
जल्पः (पु०) १ बातचीत । वार्तालाप । २ संवाद ।
३ गपलप । ४ वादविवाद । दूसरे की बात काट
कर अपनी बात रखने वाला ।
जल्पक } (वि०) [स्त्री०—जल्पिका]
जल्पाक } बातूनी । बक्की ।
जव (वि०) तेज़ । फुर्तीला ।—अधिकः, (पु०)
वेगवन्त घोड़ा । युद्ध की शिक्षा प्राप्त घोड़ा ।—
अनिलः, (पु०) आँधी । तुफान ।
जवः (पु०) १ तेज़ी । फुर्ती । जल्दी । २ वेग ।
जवन (वि०) [स्त्री०—जवनी] तेज़ । फुर्तीला ।
जवनः (पु०) १ युद्ध की शिक्षा प्राप्त घोड़ा । २
वेगवन्त घोड़ा ।
जवनम् (न०) तेज़ी । फुर्ती । वेग ।
जवनिका } (स्त्री०) १ कनात । २ पर्दा । चिक् ।
जवनी }
जवसः (पु०) चरागाह ।
जवा (स्त्री०) जवा कुसुम ।
जव् (उभय० धा०) [जवति, जवते] बायल
करना । चोटिल करना ।
जस् (धा० पर०) [जस्यति] झुक करना ।
झोड़ देना [जसति, जासयति] भारना ।
बायल करना । चोटिल करना । २ तिरस्कार
करना । अपमान करना ।
जहकः (पु०) १ समय । काल । २ बच्चा । ३ साँप
की कँचुकी ।

जहत् (वि०) [स्त्री०—जहती] स्थक । परिस्थक ।
जहानकः (पु०) कल्पान्त प्रलय ।
जहुः (पु०) किसी भी पशु का बच्चा ।
जन्हुः (पु०) सुहोत्र राजा का पुत्र जिसने गङ्गा को
अपना दत्तक बनाया था ।
जागरः (पु०) १ जागृति । २ जागृत अवस्था का
दृश्य । ३ कवच । जरहग्रस्त ।
जागरणम् (न०) १ जागृति । जागना । २ साव-
धानी । सतर्कता ।
जागरा (स्त्री०) देखो जागरणम् । [सावधान ।
जागरित (वि०) १ जागा हुआ । २ सतर्क ।
जागरितम् (न०) जागृति । जागरण ।
जागरितु (वि०) [स्त्री०—जागरित्री] १ जागृत ।
जागरुक) निद्रा का अभाव । २ सावधान । सतर्क ।
जागर्तिः }
जागर्ग्यो } (स्त्री०) जागते रहना ।
जागर्ग्या }
जगुडम् (न०) केसर । जाफ़ान ।
जागृ [धा० पर० जागर्ति, जागरित] १
जागते रहना । सावधान रहना । २ रात भर
बैठ रहना । ३ नींद में जगाया जाना । ४
पहिले से देखना ।
जाघनी (स्त्री०) १ पूँछ । हुम । ३ जंवा ।
जांगल } (वि०) [स्त्री०—जाङ्गली] १
जाङ्गल } वेहाती । चित्रवत् सुदर्शन । नयनरञ्जन ।
रम्य । सुन्दर । २ जंगली । ३ बहशी । बर्बर ।
४ उजाड़ । सूना ।
जांगलः } (पु०) तीतर विशेष । कपिल्ल पक्षी ।
जाङ्गलः }
जांगलं } (न०) १ मांस । २ हिरन का मांस ।
जाङ्गलम् } ३ कुक्षदेश का समीपवर्ती देश विशेष ।
जांगुलं } (न०) जहर । सर्प आदि विषैले जान-
जाङ्गुलम् } वरों का जहर ।
जांगुलिः }
जाङ्गुलिः } (पु०) विषवैद्य ।
जांगुलिकः }
जाङ्गुलिकः }
जांगिकः } (पु०) १ धावक । हलकारा । २ उंट ।
जाङ्गिकः }
जाजिन् (पु०) थोड़ा । लड़ने वाला ।

जाठर (वि०) [स्त्री०—जाठरी] पेट सम्बन्धी या पेट का ।

जाठरः (पु०) पाचन शक्ति ।

जाड्यं (न०) १ ठिठुरन । इठल । २ सुस्ती । अकर्म-
यथता । ३ मूर्खता । जड़ता । ४ जिह्वा का स्वाद
राहित्य ।

जात (व० क०) १ उत्पन्न । पैदा हुआ । २ निकला
हुआ । बड़ा हुआ । ३ कारणीभूत ४ द्रवित ।
दुःखी ।—अपत्या, (स्त्री०) माता ।—अमर्ष,
(वि०) क्रुद्ध । रोषित ।—अश्रु, (वि०)
आँसू बहाता हुआ । रोता हुआ ।—इष्टिः,
(स्त्री०) पुत्रोत्पन्न के समय किया जाने वाला
धर्मकृत्य विशेष ।—उत्तः, (पु०) जवान बैल ।
—कर्मन्, (न०) बालक उत्पन्न होने के समय
किया जाने वाला कर्म विशेष ।—कलाप, (वि०)
पूँछ वाला (जैसे मोर) ।—काम, (वि०)
मोहित । लट्टू । लवलीन ।—पत्न, (वि०)
पंखोंवाला ।—पाश, (वि०) बेड़ी पड़ा हुआ ।
—प्रत्यय, (वि०) विश्वास दिलाया हुआ ।—
मन्मथ, (वि०) प्रेमासक्त ।—मात्र, (वि०)
हाल का जन्मा हुआ ।—रूप, (वि०) सुन्दर ।
कान्तिमान ।—रूपम्, (न०) सुवर्ण । सोना ।
—वेदस्, (पु०) अग्नि ।

जातक (वि०) उत्पन्न ।

जातकं (पु०) १ सद्योजात बालक । २ भिक्षुक ।

जातकः (न०) १ जातकर्म । बालक के उत्पन्न
होने पर किया जाने वाला कर्म । २ जन्मकुण्डली ।
३ समान वस्तुओं का जोड़ या ढेर ।

जातिः (स्त्री०) १ उत्पत्ति । जन्म । २ जन्म से
निश्चित होने वाली जाति । ३ वर्ण । जाति ।
वंश । कुल । ४ जाति । ५ श्रेणी । कक्षा । किसी
वस्तु या जीव की पहिचान का चिन्ह
या विशेषता विशेष । ७ अग्निकुण्ड । ८ जाय-
फल । (चमेली के फूल या पौधा । १० अव्यव-
हार्य उत्तर (न्याय में) । ११ सरगम । सा रे ग म
पा धा नी सा । १२ छन्द विशेष ।—अंधः, (पु०)
जन्म से अंधा ।—कोशः,—कोषः, (पु०)
कोषम्, (न०) जायफल ।—कोशी,—कोषी,

(स्त्री०) जायफल का छिलका ।—धर्मः, (पु०)
१ वर्ण धर्म । २ जातीय गुण ।—ध्वंसः, (पु०)
वर्णच्युति या वर्णाधिकार से बहिष्कृति ।—पत्री,
(स्त्री०) जायफल का ऊपरी छिलका ।—ब्राह्मणः,
(पु०) केवल जन्म से ब्राह्मण किन्तु कर्म से
नहीं । अपद ब्राह्मण ।—भ्रंशः, (पु०) जाति-
भ्रष्टता ।—लक्षणं, (न०) जातीय पहिचान ।
—वैरं, (न०) स्वाभाविक शत्रुता ।—वैरिन्,
(पु०) स्वाभाविक वैरी ।—शब्दः, (पु०)
संज्ञा ।—सङ्करः, (पु०) दोगला । वर्णसङ्कर ।
—सम्पन्न, (वि०) कुलीन । उत्तम कुल का ।
सारं, (न०) जायफल ।—स्मर, (वि०)
पिछले जन्म का वृत्तान्त स्मरण रखने वाला ।—
होन, (वि०) नीच जाति का । जातिच्युत ।

जातिमत् (वि०) कुलीन । उत्तम कुल का ।

जातु (अव्यय०) १ समस्त । नितान्त । किसी समय ।
सम्भवतः । २ कदाचित् । कभी कभी । ३ एक
बार । किसी समय । किसी दिन ।

जातुधानः (पु०) राक्षस । दैत्य । पिशाच ।

जातुष (वि०) [स्त्री०—जातुषी] १ लाख का बना
या लाख से ढका हुआ । २ चिपचिपा । चिप-
कने वाला ।

जात्य (वि०) १ एक ही कुल वाला । २ कुलीन । ३
मनोहर । प्रिय । प्रसन्नकर ।

जानकी (स्त्री०) श्रीरामचन्द्र जी की पत्नी सीता ।

जानपदः (पु०) १ ग्रामवासी । ग्रामीण । गँवार ।
किसान । २ देहात । ३ प्रजा ।

जानु (न०) छुटना ।—द्वय, (वि०) छुटनों तक ।
छुटनों जितना गहरा ।—फलकम्, (न०)—
मण्डलम्, (न०) खुरिया । चपनी ।

जापः (पु०) १ जप । फुसफुसाहट । गुनगुनाहट । बर-
बराना । २ मंत्र का अप ।

जाबालः (पु०) बकरी का समूह ।

जामदग्न्यः (पु०) परशुराम का नाम ।

जामा (स्त्री०) १ लड़की । २ बहू । वधू ।

जामाट (पु०) १ दामाद । २ प्रभु । स्वामी । ३
सुरजमुखी ।

जामिः (स्त्री०) १ बहिन । २ लड़की । ३ वधू ।

पुत्रवधू । ४ निष्ठ की स्त्री नातेदारीत । ५ सती
साथी स्त्री ।

जामिन् (न०) लग्न से सातवाँ घर या जन्मलग्न से
७ वीं लग्न ।

जामेयः (पु०) भाँजा । बहिन का पुत्र ।

जाम्बवन् (न०) १ सुवर्ण । सोना । २ जामुन-फल ।

जाम्बवन् } (पु०) रीछों के राजा, जिन्होंने लंका पर
जाम्बवन् } आक्रमण करने में श्रीरामचन्द्र जी की
सहायता की थी ।

जाम्बीरम् } १ जमीरी । नीच विशेष ।
जाम्बीलम् }

जाम्बूनदं (न०) १ सुवर्ण । सोना । २ सोने का
आभूषण । ३ धतूरा का पौधा ।

जाया (स्त्री०) स्त्री । स्त्री को जाया कहने का कारण
मनुस्मृतिकार ने इस प्रकार बतलाया है —

पतिर्भार्या सम्प्रविश्य गर्भो भूतवेद जायते ।

जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः ॥

—अनुजीविन्, (पु०)—आजीवः,—मनुः (पु०)

१ नट । नचैया । २ रणवीर का पति । ३
मित्रक । मोहताज ।

जायिन् (वि०) [स्त्री०—जायिनी] जीतने वाला ।
वशवर्ती करने वाला ।

जायुः (पु०) १ दवाई । २ वैद्य ।

जारः (पु०) आशिक । वीर । प्रेमी ।—जः,—जन्मन्,
—जातः, (पु०) दोगला ।—भरा, (स्त्री०)
झिनाल औरत ।

जारिणी (स्त्री०) झिनाल औरत ।

जालं (न०) १ जाल । फंदा । २ मकड़ी का जाल ।

३ कवच । ४ रोशनदान । खिड़की । ५ संग्रह ।

संख्या । समुदाय । ६ जादू । ७ माया । भ्रम । ८

अनखिला फूल ।—अद्भः, (पु०) सुरास । छेद ।

—कर्मन् [न०] मछली पकड़ने का धंधा या

पेशा ।—कारकः, (पु०) १ जाल बनाने वाला । २

मकड़ी ।—गोणिका, (स्त्री०)—मथानो, —

पाद्,—पादः, (पु०) हँस ।—प्राया,

(स्त्री०) कवच । जरहबख्तर ।

जालकं (न०) १ जाल । २ समूह । संग्रह । ३

झरोखा । खिड़की । ४ कली । अनखिला फूल । ५

चूड़ामणि । आभरण विशेषः । ६ धोंसला । ७

माया । भ्रम । धोखा ।—मालिन् (वि०)
अवगुण्ठित । धंधर ।

जालकिन् (पु०) वादक ।

जालकिनी (स्त्री०) भेड़ ।

जालिकः (पु०) १ माहीगीर । मछुआ । २ बहे-
लिया । चिड़ीमार । ३ मकड़ी । ४ सूबेदार । ५
बदमाश । गुंडा ।

जालिका (स्त्री०) १ जाल । २ कवच । ३ मकड़ी ।
४ जौक । ५ विधवा । ६ लोहा । ७ घुघट । ऊनी
वरत्न ।

जालिनी (स्त्री०) तसबीरों से सुसज्जित कमरा ।

जालम् (वि०) [स्त्री०—जालमी] १ निष्ठुर
वृत्तंस । कड़ा । सख्त । २ दुस्ताहसी । अविवेकी ।

जालमः (पु०) १ बदमाश । गुंडा । २ धन-
हीन । नीच ।

जालमक (वि०) [स्त्री०—जालिका] घृणित ।
नीच । कमीना ।

जावन्यं (न०) १ गति । रफ्तार । तेज़ी । २ शीघ्रता ।
हड़बड़ी ।

जाह्वी (स्त्री) श्री गङ्गा जी ।

जि (धा० परस्मै०) [जयति,—जित] १ जीतना ।

हराना । वशवर्ती करना । २ आगे बढ़ जाना । ३

जीतना (बाज़ी या दाव) । ४ निग्रह करना । ५

विजयी होना ।

जिः (पु०) पिशाच ।

जिगत्सुः (पु०) स्वाँस । जीवन ।

जिगीषा (स्त्री०) १ जीतने की अभिलाषा । २ स्पर्धा ।

३ प्रतिष्ठा । मान । ४ पेशा ।

जिगीषु (वि०) विजयी होने का अभिलाषी ।

जिघत्सा (वि०) १ भूखा । २ मन्थलशील । ३ सन्तुष्ट ।

जिघत्सु (वि०) भूखा ।

जिघांसा (स्त्री०) वध करने का अभिलाषी ।

जिघांसुः (पु०) शत्रु । बैरी ।

जिघृत्ता (स्त्री०) ग्रहण करने या पकड़ने का
अभिलाषी । [अंदाजन ।

जिघ्र (वि०) महकदार । आनुमानिक । अंदाज़िया ।

जिज्ञासा (स्त्री०) (किसी बात के) जानने
की इच्छा ।

जिज्ञासु (वि०) १ किसी बात को जानने का अभि-
लाषी । २ सुसुद्ध ।

जित् (वि०) [यह समासान्त शब्द के अन्त में
आता है । यथा कालजित्] जीतने वाला । वशवर्ती
करने वाला । काबु में करने वाला ।

जित (व० कृ०) १ जीता हुआ । वशवर्ती किया हुआ ।
संयत । २ जीत कर हस्तगत किया हुआ । प्राप्त ।
३ अतिशयित । ४ वशवर्ती किया हुआ ।—अक्षर,
(वि०) अलीभाँति पड़ा हुआ । सुपडित ।—
अभिज्ञ, (वि०) वह मनुष्य जिसने अपने वैरियों
को परास्त कर दिया हो । विजयी ।—अरि, (वि०)
शत्रु को जीत लेने वाला ।—अरि, (पु०)
बुद्धदेव की उपाधि ।—आत्मन्, (वि०)
आत्मसंयमी ।—आहूव, (वि०) विजयी ।—
इन्द्रिय, (वि०) जितेन्द्रिय । अपनी इन्द्रियों को
काबु में रखने वाला । जितेन्द्रिय की परिभाषा
यह है :—

शुभा रूपमाय दृष्टा च भुक्त्वा प्राप्त्वा च यो नरः ।

नदुष्यति, न्नायति वा च विक्रिये जितेन्द्रियः ॥

—काशिन, (वि०) विजयी होने का अभिमानी ।
विजयी होने की शान दिखानेवाला ।—कोप, —क्रोध,
(वि०) क्रोध को जीतने वाला । उद्विग्न न होने
वाला ।—नेमिः, (पु०) पीपल की लकड़ों का
बना झंडा ।—श्रम, (वि०) परिश्रमी । न थकने
वाला ।—स्वर्गः, (पु०) मरने के बाद शुभकर्मों
द्वारा स्वर्ग में जाने वाला ।

जितिः (स्त्री०) जीत । विजय ।

जितुभः } (पु०) मिथुन राशि । द्वादश राशियों में
जित्तमः } तीसरी राशि ।

जित्वर (वि०) [स्त्री०—जित्वरी] विजयी ।
फतहयाव ।

जिन (वि०) १ विजयी । फतहयाव । २ बहुत पुराना
या बुढ़ा ।—इन्द्रः, —ईश्वरः, (पु०) प्रधान बौद्ध
मिह्मक । जैनियों का अर्हत् ।—सच्चन्, (न०)
जैनियों का मन्दिर ।

जिनः (पु०) १ बौद्ध या जैन साधु । २ जैनी
अर्हत्तों की उपाधि । ३ विष्णु ।

जिवाजिह्वः (पु०) चकोर पक्षी ।

जिष्णु (वि०) १ विजयी । फतहयाव । २ जीतने
वाला । प्राप्त करने वाला ।

जिष्णुः (पु०) १ सूर्य । २ इन्द्र । ३ विष्णु । ४ अर्जुन ।

जिह्वा (वि०) १ तिरछा । टेढ़ा । बाँका । २ भेंड़ा ।
ऐंचाताना । ३ अनियमित चलने वाला । ४ नैतिक ।
कौटिल्य । बेईमान । दुष्ट । ५ धुंधला ।
अंधियारा । पीले रंग का । ६ सुस्त । काहिल ।—
अक्ष, (वि०) भेंड़ी आँख वाला । भेंड़ा ।—गः,
(पु०) सर्प ।—गति, (वि०) टेढ़ा मेढ़ा चलने
वाला ।—मेहनः, (पु०) मेढक ।—योधिन, (वि०)
बेईमानी से युद्ध करने वाला ।—शल्यः, (वि०)
खदिर वृक्ष ।—जिह्वः, (पु०) जिह्वा । जीभ ।

जिह्वां (न०) बेईमानी । झूठ ।

जिह्वन् (वि०) मरमुका । पेटू । लालची । लृणालु ।

जिह्वा (स्त्री०) १ जवान । जीभ । २ अग्नि की जिह्वा
अर्थात् आग की लौ ।—आस्वादः, (पु०)
चाटना । लपलपाना ।—उल्लेखनी, —उल्लेख-
निका, (स्त्री०)—निलेखनम्, (न०) जिह्वा का मैल
साफ करने वाली वस्तु । जिभी ।—पः, (पु०) १
कुत्ता । २ बिल्ली । ३ चीता । बाघ । ४ लकड़बग्घा ।
५ रीछ ।—मूलं, (न०) जिह्वा की जड़ ।—
मूलतीय (वि०) वर्ण विशेष । वर्ण जिनके
उच्चारण के लिये जिह्वामूल से सहायता ली जाती
है ।—रदः, (पु०) पक्षी विशेष ।—लिह्, (पु०)
कुत्ता ।—लौल्यं, (न०) लालच । चंदोरापन ।—
शल्यः, (पु०) खदिर का पेड़ ।

जीन (वि०) बड़ा । पुराना । घिसा हुआ । चीन्हा ।

जीनः (पु०) चमड़े का थैला ।

जीमूतः (पु०) १ बादल । २ इन्द्र ।—कूटः (पु०)
पहाड़ । पर्वत ।—वाहनः (पु०) १ इन्द्र । २
विद्याधरों के एक राजा का नाम । नागानन्द
नाटक का प्रधान पात्र ।—वाहिन्, (पु०) श्रम ।
धुआँ ।

जीरः (पु०) १ लकड़वार । २ जीरा ।

जीरकः, } (पु०) जीरा ।
जीरणः }

जीर्ण (वि०) १ पुराना । प्राचीन । २ घिसा हुआ ।
इस्तेमाली । नष्ट किया हुआ । फटा हुआ । ३ पचा

हुआ ।—उद्धारः, (पु०) मरम्भ । रफू ।—
उद्यानं, (न०) उजड़ा हुआ बगीचा ।—उवरः,
पुराना खुबार । बहुत दिनों का ज्वर ।—पर्याः, (पु०)
कदख वृत्त ।—वाटिका (स्त्री०) उजड़ी हुई
बगिया या सिकान ।—वज्र (न०) रत्न विशेष ।

जीर्ण (न०) १ लोवान । २ बुढ़ापा ।

जीर्णः (पु०) १ बुढ़ा आदमी । २ वृद्ध ।

जीर्णक (वि०) सूखा हुआ । सुर्खाया हुआ ।

जीर्णिः (स्त्री०) १ बुढ़ापा । निर्बलता । २ पाचन
शक्ति ।

जीव् (धा० आत्म०) [जीवति, जीवित] १ जीवित
रहना । २ पुनरुज्जीवित करना । ३ किसी वस्तु
के सहारे निर्वाह करना ।

जीव (वि०) १ जीना । अस्तित्व कायम रखना ।—

जीवः, (पु०) १ प्राण । अन्तरात्मा । २ जीवात्मा ।

३ जीवन । अस्तित्व । ४ प्राणी । प्राणधारी । ५

आजीविका । पेशा । ६ कर्ण का नाम । ७ मस्तों

का नाम । ८ पुण्य नक्षत्र ।—अन्तकः, (पु०)

चिड़ीमार । २ जल्लाद । हत्यारा ।—आत्मन्,

(पु०) जीवात्मा जो शरीर के भीतर रहता है ।—

आदानं, (न०) रक्तआव ।—आधानम्, (न०)

प्राण की या जीवन की रक्षा ।—आधारः, (पु०)

हृदय ।—इन्धनं, (न०) दहकती हुई लकड़ी ।

लुआट ।—उत्सर्गः, (पु०) इच्छा पूर्वक जान

देना । आत्महत्या ।—उर्णा (स्त्री०) जीवित पशु की

ऊन ।—गृहं,—मन्दिर्, (न०) शरीर । देह ।—

ग्राहः, (पु०) जीवित पकड़ा हुआ क़ैदी ।—

जीवः, (जीवजीवः भी) (पु०) चकोर पक्षी ।—

दः, (पु०) १ वैद्य । २ शत्रु ।—दशा, (स्त्री०)

सुस्थुशीलत्व । नाशवान् । अस्तित्व ।—धनं, (न०)

पशु धन । गाध, बैल आदि ।—धानी, (स्त्री०)

पृथिवी ।—पतिः, (स्त्री०)—पत्नी (स्त्री०) स्त्री

जिसका पति जीवित हो ।—पुत्रा,—वत्सा,

(स्त्री०) बच्चे वाली स्त्री ।—मातृका, (स्त्री०)

सप्तमातृका जिनके नाम ये हैं—

कुमारी जनका नंदा विमला लक्ष्मी वत्सा ।

पद्मा चेति च विख्याताः सन्तीति जीवमातृकाः ।

रक्तम्, (न०) रजोवर्म का रक्त या लोह ।

—लोकः, (पु०) १ मर्त्यलोक । भूलोक । २

प्राणी । प्राणधारी । जीव । मानव जाति ।—

वृत्तिः, (स्त्री०) पशु का । पालने का पेशा ।—

शेष, (वि०) वह जिसके पास अपने प्राण को

छोड़ और कुछ भी न रह गया हो ।—संक्रमणम्,

(न०) जीव का जन्मग्रहण और शरीरत्याग ।

आवागमन ।—साधनम्, (न०) अनाज । अन्न ।

—साफल्यः, (न०) जन्मधारण करने की

सफलता ।—सूः, (स्त्री०) स्त्री जिसके सन्तान

जीवित हो ।—स्थानं, (न०) जोड़ । गिरह ।

गाँठ । मेल ।

जीविकः (पु०) १ जीवधारी । २ नौका । बौधभिद्रुक ।

भीख पर निर्भर रहने वाला कोई भी भिक्षुक । ४

सूदखोर । ५ सँपेला । सँप पकड़ने वाला ।

कालबेलिया । ६ वृक्ष । पेड़ ।

जीवत् (वि०) [स्त्री०—जीवन्ती] जिंदा । सजीव ।

—लोकः, (स्त्री०) वह औरत जिसके बच्चे

जीवित हों ।—पतिः, (स्त्री०)—पत्नी, (स्त्री०)

स्त्री जितका पति जीवित हो । सधवा ।—मुक्त,

(वि०) परमात्मा का साक्षात्कार करने वाला ।

सांसारिक कर्मबन्धन से जुड़ा हुआ ।—मृत,

(वि०) जिंदा मरा हुआ ; अर्थात् जिंदा होने पर

भी मुर्दे की तरह बेकार ।

जीवथः (पु०) १ जीवन । अस्तित्व । २ कड़वा ।

३ मोर । ४ बादल ।

जीवन (वि०) [स्त्री०—जीवनी] जीवनप्रद ।

जीवनी शक्ति देने वाला ।—अन्तः, (पु०)

मृत्यु । मौत ।—आघातं, (न०) विष ।—

आवासाः, (पु०) १ वरुण देव । २ शरीर । देह ।

तनु ।—उपायः, (पु०) आजीविका ।—

ओषधम्, (न०) १ अमृत । २ सजीवनी दवा ।

जीवनं (न०) १ जीवन । अस्तित्व । २ सजीवनी

शक्ति । ३ जल । पानी । ४ पेशा । ५ एक दिन

का वाला मक्खन जो दूध से निकाला गया हो ।

जीवनः (पु०) १ प्राणधारी । २ पवन । ३ पुत्र ।

जीवनकम् (न०) भोजन ।

जीवनीयम् (न०) १ पानी । २ ताजा या दूधका दूध ।

जीवन्तः (पु०) १ जिंदगी । अस्तित्व । २ दवाई ।

जीवन्तिकः (पु०) चिड़मार । बहेलिया ।

जीवा (स्त्री०) १ जल । २ पृथिवी । ३ कमान की डेरी । ४ दूतांश के दोनों प्रान्तों को मिलाने वाली सरल रेखा । ५ आजीविका के साधन । ६ गहनों की संकार का शब्द । ७ बचा । पौधा विशेष ।

जीवानु (पु० न०) १ भोजन । २ जीवन । अस्तित्व । ३ पुनरुज्जीवन । ४ मुँह को जिलाने वाली दवा ।

जीविका (स्त्री०) जीविका का साधन । वृत्ति । रोजी । आजीविका ।

जीवित (वि०) १ जिंदा । २ पुनरुज्जीवित किया हुआ । ३ सजीव ।—अन्नकः, (पु०) शिव ।—ईशः, (पु०) १ प्रेमी । पति । २ यम । ३ सूर्य ४ चन्द्रमा ।—कालः, (पु०) जीवन काल । या जीवन की अवधि ।—ज्ञा, (स्त्री०) नाड़ी । धमनी । रग ।—व्ययः, (पु०) जीवनेत्सर्ग ।—संशयः, (पु०) प्राणसङ्कट ।

जीवतम् (न०) १ जीवन । अस्तित्व । २ जीवन की अवधि । ३ आजीविका । ४ प्राणधारी । जीव ।

जीविन् (वि०) [स्त्री० जीविनी] १ जीवित । जिंदा । (पु०) प्राणधारी ।

जीव्या (स्त्री०) आजीविका का साधन ।

जुगुप्सनम् (न०) १ भर्त्सना फटकार । धिक्कार ।

जुगुप्सा (स्त्री०) १ अश्वि । घृणा । नफरत । २ निंदा ।

जुष्ट (धा० आत्म०) [जुषते जुष्ट] १ प्रसन्न या सन्तुष्ट होना । अनुकूल होना । २ पसंद करना । मुस्ताक होना । उपयोग करना । ३ अशुभ होना । अभ्यास करना । ४ अनुसंधान करना । ५ चुनना । ६ तर्क करना ।

जुष्ट (व० कृ०) १ प्रसन्न । आनंदित । २ अभ्यस्त । सेवित । ३ सम्पन्न ।

जुहः (स्त्री०) १ श्रुवा । आहुति देने का चमचा ।

जुहोतिः (पु०) यज्ञोपकर्म सम्बन्धो पारिभाषिक शब्द विशेष ।

जूः (स्त्री०) १ गति । तेज चाल । २ वायुमण्डल । ३ राक्षसी । ४ सरस्वती ।

जूकः (पु०) तुला राशि ।

जूटः (पु०) जटा । सिर के लंबे और आपस में चिपटे हुए बाल ।

जूटर्क (न०) जटा ।

जूतिः (स्त्री०) वेग । तेज रक्तार ।

जूर (धा० आत्म०) [जूरते, जूर्ण] १ चोटिल करना । बध करना । २ नाराज होना । ३ बदना ।

जूर्तिः (स्त्री०) ज्वर ।

जू (धा० परस्मै०) [जरति] नीचा दिखाना । तिरस्कार करना ।

जूम्, जूम् (धा० आत्म०) [जूमते, जूंमते, जूमिमत, अं० घ] १ जमुहाई लेना । २ खोलना । फैलाना । ३ बढ़ाना । छा देना । सर्वत्र व्याप्त कर देना । ४ प्रकट करना । ५ आराम करना । ६ पल्टाखाना । लौटना ।

जूभः, जूम्भः (पु०)

जूभं, जूम्भं (न०)

जूभणं, जूम्भणं (न०)

जूभा, जूम्भा (स्त्री०)

जूभिका, जूम्भिका (स्त्री०)

जू (धा० प०) [जरति, जीर्यति, जृणाति, जारयति-जारयते, जीर्ण या जारित] पुराना पड़ जाना । घिस जाना । कुम्हला जाना । सड़ जाना । नष्ट हो जाना । धुल जाना । पच जाना ।

जैलु (पु०) १ जेता । विजयी । २ विष्णु ।

जैताकः (पु०) गर्म कोठरी जिसमें बैठकर शरीर से जेन्ताकः पसीना निकाला जाय ।

जेमनम् (न०) १ भोजन करना । खाना । २ भोज्य पदार्थ ।

जैत्र (वि०) [स्त्री० -जैत्री] १ विजयी । सफल । विजयप्रद । २ उत्कृष्ट ।

जैत्र (न०) १ विजय । जीत । २ उत्कृष्टता ।

जैत्रः (पु०) १ विजयी । फतहयाव । २ पारा । पारद ।

जैनः (पु०) जैनी । जैन मतानुलम्बी ।

जैमिनिः (पु०) मीमांसादर्शनकार महर्षि विशेष ।

जैवातृक (वि०) [स्त्री० -जैवातृकी] दीर्घजीवी ।

जैवातृकः (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर । ३ पुत्र । ४ दवा । ५ किसान ।

जैवेयः (पु०) बृहस्पतिपुत्र कच की उपाधि ।

जैह्वय (न०) देहापन । कुटिलता । असत्य ।
 जोगटः (पु०) गर्भवती स्त्री की रुचि या इच्छायाँ ।
 जोटिंगः } (पु०) शिव का नाम ।
 जोटिङ्गः }
 जोषः (पु०) १ सन्तोष । उपभोग । प्रसन्नता । हर्ष ।
 २ खामोशी । शान्ति ।
 जोषं (अव्यया०) १ अपनी इच्छासुसार । सहज में ।
 २ उपचार ।
 जोषा } (स्त्री०) औरत । स्त्री ।
 जोषित }
 जोषिका (स्त्री०) १ कलियों का गुच्छा । २ स्त्री ।
 ज (वि०) समासान्त शब्द के अन्त में जुड़ता है ।
 १ ज्ञाता । अवगत । परिचित । बुद्धिमान ।
 जः (पु०) १ बुद्धिमान एवं विद्वान् मनुष्य । २ बोधसम
 आत्मा । ३ बुधग्रह । ४ मङ्गलग्रह । ५ ब्रह्मा ।
 जपित } (वि०) अवगत । जाना हुआ । सिखाया
 जप्त } हुआ । व्याख्या किया हुआ ।
 जप्तिः (स्त्री०) १ समझ । २ बुद्धि । ३ प्रकटन ।
 प्रख्यापन ।
 ज्ञा (धा० उभय०) [जानाति, जानीते, ज्ञात] १
 जानना । परिचित होना । २ ढूँढ़ निकालना । पता
 लगा लेना । अनुसन्धान करना । ३ समझ लेना ।
 ४ जाँचना । परीक्षा करना । ५ पहचान लेना । ६
 सोचना विचारना । किसी काम में लगना ।—
 (निजन्त)—[ज्ञापयति, ज्ञपयति] १ सूचना
 देना । प्रकट करना । २ प्रार्थना करना ।
 ज्ञात (वि०) जाना हुआ । दर्याप्त किया हुआ ।
 समझा हुआ । सीखा हुआ ।—सिद्धान्तः, (पु०)
 वह मनुष्य जो किसी भी शास्त्र की पूर्ण रूप से
 जानकारी रखता हो ।
 ज्ञातिः (पु०) पैतृक सम्बन्ध । पिता । भाई आदि ।
 सपितृ । विरादरी ।—भावाः, (पु०) विरादरी ।
 रिश्तेदारी । नातेदारी ।—भेदः, (पु०) नातेदारी
 में मतभेद । मतभेद ।—विदुः, (वि०) नगीची
 नातेदारी करने वाला ।
 ज्ञातेयं (न०) नातेदारी ।
 ज्ञातृ (पु०) १ बुद्धिमान आदमी । २ परिचित । ३
 ज्ञमानत । प्रतिभू ।

ज्ञानं (न०) १ जानकारी । समझदारी । दक्षता ।
 निपुणता । २ बोध । विद्वत्ता । ३ विवेक । ४
 आत्मज्ञान । ५ ज्ञानेन्द्रिय ।—अनुत्यादः, (पु०)
 अज्ञानता । मूर्खता ।—आत्मन्, (वि०) सर्व-
 विद् । बुद्धिमान ।—इन्द्रियं, (न०) ज्ञानेन्द्रिय
 जो पाँच हैं (यथा स्वप्न, रसना, चक्षुस्, कर्ण,
 नासिका) ।—काण्डम्, (न०) वेद का भाग
 विशेष, जिसमें आत्मा और परमात्मा सम्बन्धी ज्ञान
 है ।—कृत, (वि०) ज्ञानब्रूम कर किया हुआ ।
 —गम्य, (वि०) ज्ञान से जानने योग्य ।
 —चक्षुस्, (पु०) बुद्धिमान । विद्वान् ।—
 तत्त्वं, (न०) सत्यज्ञान । ब्रह्मज्ञान ।—तपस्,
 (न०) तपस्या जो सत्यज्ञान सम्पादनार्थ की
 जाय ।—दः, (पु०) गुरु ।—दा, (स्त्री०)
 सरस्वती ।—दुर्वल, (वि०) ज्ञान शून्य ।—
 निष्ठ, (वि०) सत्य अथवा आध्यात्मिक ज्ञान
 सम्पादन में तत्पर ।—यज्ञः, (पु०) दार्शनिक ।
 —शास्त्रं, (न०) भविष्य कथन का विज्ञान ।
 भाग्य में लिखे को बताने की विद्या ।—साधनम्,
 (न०) ज्ञानेन्द्रिय ।
 ज्ञानतः (अव्यया०) ज्ञान ब्रूम कर । इरादतन ।
 ज्ञानमय (वि०) आध्यात्मिक । ज्ञान सम्पन्न ।
 ज्ञानमयः (पु०) १ परब्रह्म । २ शिव ।
 ज्ञानिन् (वि०) [स्त्री०—ज्ञानिनी] बुद्धिमान ।
 प्रतिभावान । (पु०) १ ज्योतिषी । भविष्यद्वक्ता ।
 २ ऋषि । मुनि ।
 ज्ञापक (वि०) जतलाने वाला । बतलाने वाला ।
 ज्ञापकं (न०) असलाना । प्रकटन । सूचन ।
 ज्ञापकः (पु०) १ शिक्षक । २ आज्ञा देने वाला ।
 प्रभु ।
 ज्ञापित (वि०) जाना हुआ । सूचित किया हुआ ।
 ज्ञीप्सा (स्त्री०) जानने की अभिलाषा ।
 ज्या (स्त्री०) १ कमान की डोरी । प्रत्यञ्चा । रोदा ।
 २ वृत्तांश की सरल रेखा । ३ पृथिवी । ४ जननी ।
 माता ।
 ज्यानिः (स्त्री०) १ बुढ़ापा । जीर्णता । २ त्याग ।
 विराग । ३ नदी स्रोत । चरमा ।
 ज्यायस् (वि०) [स्त्री०—ज्यायसी] १ मङ्गला ।

बीच का । पुराना । २ सर्वोत्कृष्ट । सर्वोत्तम । ३ अधिकतर बड़ा । ४ अधिकतर वयस्क । बाबिरा ।
 ज्येष्ठ (वि०) १ जेठा । सब से बड़ा । २ सर्वोत्तम । ३ मुख्य । प्रधान । प्रथम ।—ग्रंशः, (पु०) १ बड़े भाई का हिस्सा । २ पैतृक सम्पत्ति का वह विशेष हक जो सब से बड़े भाई को (सब से बड़ा होने के कारण) प्राप्त होता है । ३ सर्वोत्तम भाग ।—अंशु, (न०) १ पानी जिसमें अनाज धोया गया हो । २ माँड । भात का पलावन ।—आश्रमः, (पु०) १ सर्वोत्तम अर्थात् गृहस्थ आश्रम । २ गृहस्थ ।—तातः, (पु०) ताऊ । पिता का बड़ा भाई ।—वर्गाः, (पु०) सब से ऊँची जाति अर्थात् ब्राह्मण जाति ।—वृत्तिः, (पु०) बड़ों का कर्त्तव्य ।—श्वश्रूः, (स्त्री०) १ भार्या की बड़ी बहिन । बड़ी सरैया या साली ।

ज्येष्ठः (पु०) १ जेठाभाई । सब से बड़ा भाई । २ ज्येष्ठ मास ।

ज्येष्ठा (स्त्री०) १ सब से बड़ी बहिन । २ १८ वाँ नक्षत्र । ३ मध्यमा अंगुली । ४ छपकली । विस्तुह्या । ५ गङ्गा का नाम ।

ज्येष्ठः (पु०) चान्द्र मास विशेष । जेठ मास ।

ज्येष्ठी (स्त्री०) १ ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा । २ छपकली । विस्तुह्या ।

ज्यैष्ठ्य (न०) १ जेठापन । २ मुख्यता । प्रधानता ।

ज्यो (धा० आत्म०) [स्त्री०—ज्यवते] १ परामर्श देना । निर्देश देना । २ बत रखना ।

ज्योतिर्मय (वि०) ताराओं से सम्बन्ध युक्त । नक्षत्रों का ।

ज्योतिष (वि०) (गणित या फलित) ज्योतिष सम्बन्धी ।—विद्या, (स्त्री०) नक्षत्रविद्या ।

ज्योतिषः (पु०) १ ज्ञः वेदाङ्गों में से एक । ग्रहादि की गति, स्थिति, आदि जानने वाला ।

ज्योतिषी } (पु०) नक्षत्र । तारा ।
 ज्योतिष्कः }

ज्योतिष्मत् (वि०) १ चमकदार । चमकीला । २ स्वर्गीय । (पु०) सूर्य ।

ज्योतिषिणी (स्त्री०) १ रात । २ मन की शान्ति ।

ज्योतिस् (न०) १ प्रकाश । प्रभा । चमकीला । (पु०) सूर्य ।—इङ्गः,—इङ्गणः, (पु०) जुगनू ।—कणाः, (पु०) आग की चिनगारी ।—गणाः, (पु०) नक्षत्र या ग्रह समूह ।—चक्रं, (न०) राशिचक्र ।—क्षः, (पु०) ज्योतिषी ।—समण्डलम्, (न०) ग्रहमण्डल ।—रथः, (ज्योतीरथः) ध्रुवतारा ।—विद्, (पु०) ज्योतिषी ।—विद्या, (स्त्री०)—शास्त्रं, (न०) ग्रह नक्षत्रादि की गति और स्वरूप का निरन्तर कराने वाला शास्त्र ।—स्तोमः, (पु०) यज्ञ विशेष जिसे सम्पन्न करने के लिये १६ कर्मकाण्डी विद्वानों की आवश्यकता होती है ।

ज्योत्स्ना (स्त्री०) १ जुन्हाई । २ प्रकाश । चाँदनी ।—ईशः, (पु०) चन्द्रमा ।—प्रियः, (पु०) चकोर पक्षी ।—वृद्धः, (पु०) १ शमादान । डीबट । २ सोमवती ।

ज्योत्स्नी (स्त्री०) चाँदनी रात ।

ज्यौः (पु०) बृहस्पति ग्रह ।

ज्योतिषिकः (पु०) दैवज्ञ । गणक । ज्योतिषी ।

ज्योत्स्नः (पु०) शुक्ल पक्ष ।

ज्वर (धा० प०) [ज्वरति, जूर्ण,] १ ज्वर आना । २ रोगी होना । बीमार होना ।

ज्वरः (पु०) १ बुखार । ताप । २ मानसिक व्यथा । पीड़ा । क्लेश ।—अग्निः, (पु०) ज्वर का चढ़ाव ।—अहुशः, (पु०) ज्वरान्तक दवा ।—प्रतीकारः, (पु०) ज्वर की दवा या ज्वर दूर करने का उपाय ।

ज्वरित् } (वि०) ज्वर चढ़ा हुआ । ज्वर से
 ज्वरिन् } आक्रान्त ।

ज्वल (धा० प०) [ज्वलति, ज्वलित,] १ दहकना । २ जलजाना । ३ उत्सुक होना ।

ज्वलन (वि०) १ दाहकारी । दहकता हुआ । २ जल उठने वाला ।

ज्वलनं (न०) जलन । दहकन । भस्मक ।

ज्वलनः (पु०) १ आग । २ तीन की संख्या ।

ज्वलित (वि०) जला हुआ । प्रकाशमान ।

ज्वालः (पु०) १ प्रकाश । शोला । २ मशाल ।

ज्वाला (स्त्री०) शोला । प्रकाश ।—जिह्वा,
(पु०) —ध्वजः, (पु०) आग ।—मुखीः
आविरी पहाड़ । पहाड़ जिससे आग निकले ।

—वज्रः, (पु०) शिवजी की उपाधि
विशेष ।

ज्वालिन् (पु०) शिवजी की उपाधि ।

भू

संस्कृत अथवा देवनागरी वर्णमाला का नवौं और चवथा
का चौथा वर्ण । यह स्पर्श है और इसके उच्चारण में
संवार, नाद और घोष प्रचलित होते हैं । ब, छ, ज
और ञ इसके सवर्ण कहे जाते हैं । इसका उच्चा-
रण-स्थान तालु है ।

भूः (पु०) १ ध्वनि । मुनमुन की आवाज़ । २ भस्मा-
वात । ३ बृहस्पति ।

भूगभगायति (क्रि०) चमकना । जल उठना ।

भूगति } (अन्य०) शीघ्रता से । कुर्त्ती से ।
भूगिति }

भूकारः (पु०) }
भूङ्कारः (पु०) }
भूङ्कृतम् (न०) } १ भौरे की गूँज ।
भूङ्कृतम् (न०) }

भूङ्कारिणी } गङ्गा नदी ।
भूङ्कारिणी }

भूङ्कतिः } (स्त्री०) धातु के बने आभूषणों के
भूङ्कतिः } बजने का शब्द विशेष । भूङ्कार ।

भूङ्कनम् } (न०) धातु के बने आभूषणों का
भूङ्कनम् } शब्द या भूङ्कार ।

भूङ्क्ता } (स्त्री०) १ पवन के चलने या जलवृष्टि का
भूङ्क्ता } शब्द । २ आँधी पानी । तूफान । ३ भूज

भूज शब्द ।—अनिलः, (पु०)—मरुत्—

वातः, (पु०) आँधी पानी । तूफान ।

भूङ्कति (अन्यथा०) तुरन्त । कुर्त्ती से । फौरन ।

भूङ्कणां (न०) } भूङ्कार । भूजभूज का शब्द ।
भूङ्कणा (स्त्री०) }

भूङ्कणाधित (वि०) भूङ्कार शब्द करने वाला ।

भूङ्कत्कारः } (पु०) नूपुर, कङ्कण आदि के बजने
भूङ्कत्कारः } का शब्द ।

भूङ्पः, भूङ्पः (पु०) } कूटना । कुलौंच । उड़ाल ।
भूङ्पा, भूङ्पा (स्त्री०) } ऋपट ।

भूङ्पाकः भूङ्पाकः

भूङ्पाकः भूङ्पाकः

भूङ्पिन् भूङ्पिन्

भूङ्पः (पु०)

भूङ्पा (स्त्री०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

भूङ्परी (पु०)

भूङ्परी (स्त्री०)

झाटः (पु०) १ लताच्छादित स्थान । कुञ्ज । २ वन । उपवन ।

झिंढिः } (स्त्री०) एक प्रकार की झाड़ी ।
झिण्डिः }

झिरिका (स्त्री०) झींगुर ।

झिल्लिः (स्त्री०) १ झींगुर । २ लेंप की बत्ती । ३ रोशनी । प्रकाश । चमक ।—कण्ठः, (पु०) पालतू कबूतर ।

झिल्लीः (स्त्री०) झींगुर । वाद्ययंत्र विशेष । बाजा विशेष ।

झिल्लिका (स्त्री०) झींगुर । धूप या धाम का प्रकाश । चमक ।

भीरुका (स्त्री०) झींगुर ।

झुंठ } (पु०) १ वृक्ष । २ झाड़ी ।
झुण्टः }

झोडः (पु०) सुपारी का पेड़ ।

ञ

संस्कृत नागरी वर्णमाला का दसवाँ व्यञ्जन जो चववीं का पाँचवाँ वर्ण है । इसका उच्चारण-स्थान तालु और नासिका है । इसका प्रयत्न स्पर्श, घोष अल्पमात्र है ।

ञः (पु०) १ बैल । २ शुक्र । ३ ऐंड़ी बैंड़ी चाल । ४ सङ्गीत । गान । ५ ध्वर शब्द ।

ट

ट संस्कृत वा नागरी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यञ्जन और टवर्ग का प्रथम अक्षर । इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है । इसके उच्चारण में तालू से जीभ लगानी पड़ती है ।

टः (पु०) १ धनुष की टंकार । २ चतुर्थीश । ३ शपथ । ४ पृथिवी । ५ नारियल की नरेंदी । ६ बीना ।

टक् (धा० उभय) [टङ्कयति, टङ्कयते, टङ्कित] १ बाँधना । लपेटना । कसना । २ टकना । आच्छादित करना ।

टंकः, टङ्कः (पु०) १ कुदाली । कुल्हाड़ी । लैनी । टंक्, टङ्कम् (न०) १ तलवार । २ तलवार की म्यान । ३ पहाड़ी का ढाल । ४ क्रोध । ५ अहङ्कार । ७ टांग ।

टंका } (स्त्री०) टांग ।
टङ्का }

टंककः (पु०) चांदी का सिक्का जिस पर ठप्पा लगा

हो ।—पतिः, (पु०) टकसाल का प्रधानाध्यक्ष ।—शाला, (स्त्री०) टकसालघर ।

टंकरा, टङ्कराम् } (न०) सुहागा ।
टंकन, टङ्कनम् }

टंकरा, टङ्कराः } (पु०) १ बोदे की जाति विशेष ।
टंकन, टङ्कनः } २ जाति विशेष के मनुष्य ।—

द्वारः, (पु०) सुहागा ।—टङ्कारः, (पु०) १ रोदे के टंके की आवाज़ । २ हाऊ हाऊ शब्द । चिल्लाहट । चीत्कार ।

टंकारिन् } (वि०) [स्त्री० —टङ्कारिणी] टंकारने
टङ्कारिन् } का शब्द ।

टंकिका } (स्त्री०) कुल्हाड़ी ।
टङ्किका }

टंगः, टङ्गः (पु०) } फावड़ा । कुदाली । कुल्हाड़ी ।
टंग, टङ्गम् (न०) }

टंगरा, टङ्गराः (पु०) } सुहागा ।
टंगरा टङ्गराम् (न०) }

टगा } (स्त्री०) टाँग ।
टङ्गा }

टङ्करी (स्त्री०) १ वाद्ययंत्र या बाजा विशेष । २
मञ्जाक । हँसी । दिल्ली ।

टांकारः } (पु०) मंकार । गुंजार ।
टाङ्कारः }

टिक (धा० आत्म०) [टेकते] जाना । सरकना ।
हिलना डुलना ।

टिटिभः } (पु०) [स्त्री० - टिटिभी या टिटिभी]

टिटिभः } टिटहरी चिड़िया ।

टिपणी } (स्त्री०) व्याख्या । टीका ।
टिपनी }

टीक (धा० आत्म०) [टीकते] जाना । हिलना ।

टीका (स्त्री०) कठिन पथों का सरल अर्थ । भाषान्तर ।

टुंडुक } (वि०) १ छोटा । थोड़ा । २ निष्ठुर ।

टुण्डुक } चुशंस । ३ सज्जत । कड़ा ।

ठ

संस्कृत या नागरी वर्णमाला का बारहवाँ व्यंजन और
द्वर्ग का दूसरा वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा
है । इसका उच्चारण करते समय जीभ का मध्य-
भाग तालू में लगाना पड़ता है ।

ठः (पु०) १ रव । २ चन्द्र अथवा सूर्य मण्डल ।
३ वृत्त । ४ शून्य । ५ पवित्र स्थान । ६ मूर्ति ।
७ देव । ८ शिव जी का नाम ।

ठकुरः (पु०) १ देव प्रतिमा । प्रतिष्ठासूचक एक
उपाधि । २ काव्यप्रदीप के रचयिता का
नाम ।

ठार (पु०) पाला । बरफ ।

ठालिनी (स्त्री०) पटका । कमरबंद ।

ड

संस्कृत या नागरी वर्णमाला का तेरहवाँ व्यंजन । द्वर्ग
का तीसरा वर्ण । इसका उच्चारण आन्तरिक
प्रयत्न द्वारा तथा जिह्वामध्य को मूर्द्धा में लगाने
से किया जाता है ।

डः (पु०) १ शब्द विशेष । २ एक प्रकार का ढोल
या मृदङ्ग । ३ वाडवाग्नि । समुद्र की आग । ४
भय । ५ शिव । ६ पत्नी विशेष ।

डकारी (स्त्री०) १ चाण्डाल का बाजा । २ बीणा ।
सारंगी । तंबूरा ।

डप् (क्रि०) एकत्र करना । एकट्ठा करना ।

डम् (क्रि०) शब्द करना । बजाना ।

डमः (पु०) डोम । नीच जाति ।

डमरं (न०) डर कर भाग निकलना ।

डमरः (पु०) १ गदर । विद्रोह । २ शत्रु को भाव
भङ्गी और लजकार से डराना ।

डमरुः (पु०) एक प्रकार का बाजा जो शिव जी को
बड़ा प्रिय है । कापालिक शैषों का वाद्ययंत्र ।

डम् } (धा० डम्) [डम्बयति, डम्बयते] १
डम्ब } फेंकना । भेजना । २ आज्ञा देना । ३ देखना ।

डम्बरे } (वि०) प्रसिद्ध । विख्यात ।
डम्बर }

डम्बर } (पु०) १ जमाव । जमघट । समूह ।
डम्बरः } समुदाय । २ दिखवाट । चटक भटक ।

३ सादृश्य । समानता । ४ अभिमान । अहङ्कार ।

डम् } (धा० डम्) [डम्बयति, डम्बयते]
डम्भ } एकत्र करना ।

डयम् (न०) १ उड़ान । २ पालकी । डोली ।

डल्लकं या डल्लकम्, (न०) डलिया या डला ।

डावित्यः (पु०) काठ का बारहसिंहा ।

डाकिनी (स्त्री०) काली देवी की एक सहचरी ।

डाङ्कतिः } (स्त्री०) घंटे का नाद । आकर का शब्द ।
डाङ्कतिः }

डामर (वि०) १ भयानक । भयङ्कर । २ विप्लवकारी ।
उपद्रवी । ३ मनोहर । सुस्वरूप ।

डामरः (पु०) १ कोलाहल । चीत्कार । उपद्रव । २
किसी उत्सव या लड़ाई भगड़े के समय होने वाला
चीत्कार या कोलाहल ।

डालिमः (पु०) दाडिम । अनार ।

डाहलः (बहु० पु०) एक देश विशेष और उस देश
के अधिवासी ।

डिगरः } (पु०) १ नीकर । चाकर । टहलुआ ।

डिङ्गरः } २ गुण्डा । बदमाश । धोखेवाज । ३ नीच
जाति का आदमी ।

डिडिमः } (पु०) डोलक । डोलकी ।

डिङ्गिः, डिङ्गिः, डिङ्गिरः } (पु०) समुद्रफेन ।

डिङ्गीरः, डिङ्गिडरः, डिङ्गिडीरः } (पु०) दस प्रकार के नाटकों में से एक ।

मायेन्द्रजालसंशाम ओषाद्भ्रान्तादिचेष्टितैः ।

उपरागश्च भूयिष्ठो द्विरः शयानोऽतिवृत्तः ॥

डिबः } (पु०) १ भगड़ा । टंटा । २ भयभीत होने

डिम्बः } पर किया हुआ शब्द । ३ बच्चा । ४ अण्डा ।

५ गोला या गेंद ।—आहवः, (पु०)—युद्धम्,

(न०) झूठा युद्ध । बिना हथियारों की लड़ाई ।

डिबिका } (स्त्री०) १ बिनाल औरत । २ बबूला ।

डिभ } (पु०) १ बच्चा । २ जानवर का बच्चा । ३

डिम्भः } मूख । मूढ़ ।

डिभकः } (पु०) [स्त्री०—डिम्भिका] १ बच्चा ।

डिम्भकः } २ जानवर का बच्चा ।

डी (धा० आत्म०) [डयते, डियते, डीन] १

उड़ना । २ जाना ।

डीन (द० कृ०) उड़ा हुआ ।

डीनम् (न०) पक्षी का उड़ान । पक्षियों के उड़ान

१०१ प्रकार के होते हैं । इन उड़ानों के भेदों के

बोझ होता है । यथा :—“अवडीनम्”,

“उडीनम्”, “प्रडीनम्”, “अभिडीनम्”,

“विडीनम्”, “परिडीनम्” “पराडीनम्” आदि ।

डुडुम्भः } (पु०) निर्विष सर्प विशेष ।

डुडुम्भः } (पु०) निर्विष सर्प विशेष ।

डुलिः (स्त्री०) झोटा ककड़ा ।

डेमः (पु०) डेम । अत्यन्त नीच जाति का आदमी ।

ढ

संस्कृत वा नागरी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यञ्जन ।

द्वर्ग का चौथा वर्ण । इसका उच्चारण स्थान

मूर्धा है ।

ढक्का (स्त्री०) बड़ा ढोल ।

ढामरा (स्त्री०) हंस ।

ढाल (न०) ढाल ।

ढालिन् (पु०) ढालधारी योद्धा ।

ढंढिः } (पु०) गयेश जी ।

ढुण्ढिः } (पु०) गयेश जी ।

ढौलः (पु०) बड़ा ढोल ।

ढौक् (धा० आत्म०) [ढौकते, ढौकित] जाना ।

समीप जाना ।

ढौकनं (न०) १ भेंट । चढौती । २ धूस ।

य

संस्कृत या नागरी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यञ्जन
द्वर्ग का प्रथम वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान
मूर्धा है । इसके उच्चारण में आन्त्यन्तर प्रयत्न
स्पष्ट और सातुनासिक है । बाह्य प्रयत्न, संवार
नाद, घोष और अल्पप्राण है । इसका संयोग
मूर्धन्य वर्ण, अन्तस्थ तथा 'म' और 'ह' के
साथ होता है ।

संस्कृतभाषा में य से आरम्भ होने वाले शब्दों का
अभाव है ; किन्तु धातुपाठ में कुछ धातु ऐसी हैं
जिनका प्रथम अक्षर य है । वास्तव में यह 'य',
'न' स्थानीय है । इनके 'य' से लिखे जाने का
कारण यह है कि, इससे यह सूचित होता है कि,
'न' कतिपय उपसर्गों के पूर्व आने से 'य' के
साथ भी परिवर्तित होता है । ऐसी धातुओं की
सूची केश के अन्त में दी गयी है ।

त

सं १६ त या नागरी वर्णमाला का सोलहवाँ व्यञ्जन । तवर्ग
का प्रथम वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान दन्त है ।
इसके उच्चारण में विवाद श्वास और अघोष
प्रयत्न लगाये जाते हैं । इसके उच्चारण में आधी
मात्रा का समय लगता है ।

तः (पु०) १ पूँछ । २ गीदड़ की पूँछ । ३ झाली ।
४ गर्भाशय । ५ देहनी । ६ जोड़ । ७ चोर । ८
दुष्टजन । ९ जातिच्युत । १० वर्वर । ११ बौद्ध ।
१२ रत्न । १३ असुत । १४ छन्द में गण्य विशेष ।
तक् (क्रि०) १ दुःखी होना । उड़ना । रुपटना ।
२ हँसना । ४ चिढ़ाना । ५ सहन करना ।

तकिल (वि०) छली । रुपटी । सुतफण्डी ।

तक्रं (न०) मठा । छाड़—अटः, (पु०) रह ।—
सारं, (न०) साज़ा मन्खन ।

तन् (धा० प०) [तन्नति, तद्वीति, तष्ट] १ काट
डालना । छेनी से काटना । चीरना । टुकड़े टुकड़े
करना । २ सँभारना । ३ बनाना । सिरजना । ४
घायल करना । ५ अविष्कार करना । ६ मन में
कल्पना करना ।

तत्तकः (पु०) १ बड़ई । लकड़हारा । २ सूत्रधार । ३
देवताओं का कारीगर । ४ पातालवासी मुख्य नागों
में से एक का नाम ।

तत्तयां (न०) काटना ।

तत्तन् (पु०) बड़ई । लकड़हारा । (जाति से हो या
पेशे से हो)

तगरः (पु०) पौधा विशेष ।

तक् (धा० प०) [तङ्कति, तङ्कित] १ सहन
करना । २ हँसना । ३ कष्ट में रहना ।

तंक } (पु०) १ कष्टमय जीवन । २ प्रियजन के
तङ्कः } वियोग से उत्पन्न कष्ट । ३ भय । डर । ४
संगतराश की छैनी ।

तंकनं } (न०) कष्टमय जीवन । दुःखी जीवन ।
तङ्कनम् }

तंग् } (धा० प०) [तंगति, तंगित] १ जाना ।
तङ्ग } चलना । २ कांपना । धरथराना । ३ ठोकर
खाना ।

तंच् } (धा० प०) [तनक्ति, तंचित] सकोड़ना ।
तञ्च } पीछे हटना ।

तटः (पु०) डालू स्थान । रपट । आकाश ।

तटः (पु०) } १ नदी का किनारा । २ शरीर के
तटा (स्त्री०) } कतिपय अवयवों की संज्ञा यथा
तटी (स्त्री०) } जघनतट, कटितट, कुचतट आदि ।
तटं (न०) } (न०) खेत ।

तटस्थ (वि०) तट का या किनारे पर का । (आल०)
उदासीन ।

तटाकः (पु०) }
तटाकम् (न०) } ताखाव ।

तटिनी (स्त्री०) नदी ।

तङ् (धा० उभय०) [ताडयति-ताडयते, ताडित]
मारना । सितार आदि के तारों को बजाना ।

तङ्गः (वि०) देखो तङ्गाग ।

तङ्गागः (पु०) तालाव । गहरी पुष्करिणी ।

तङ्गाघातः (पु०) तडाघात । तटों में टकरों का लगना ।

तङ्गित् (स्त्री०) विजली । विद्युत ।—गर्भः, (पु०)
बादल ।—जता, (स्त्री०) दो शाखों में विभक्त
विद्युत रेखा ।—लेखा, (स्त्री०) विजली की रेखा ।

तङ्गित्वत् (वि०) विजली वाला । (पु०) बादल ।

तङ्गिन्मय (वि०) विजली से सम्पन्न ।

तङ्ग } (धा० आ०) [तङ्गडते, तङ्गित]
तङ्गड } मारना ।

तङ्गकः } (पु०) खज्जन पक्षी ।
तङ्गडकः }

तङ्गुलः } (पु०) छिलका निकले हुए चावल । अनाज
तङ्गुलः } के चार रूप हैं— यथा शस्य, धान्य, तङ्गुल
और अन्न । चारों की अलग अलग परिभाषा
इस प्रकार है:—

शस्यं जेजगतं प्रोक्तं चतुष्टयं धान्यमुच्यते ।

चिस्तुषः तङ्गुलः प्रोक्तः स्विन्नचन्नमुदाहृतः ।

तत (व० क०) फैला हुआ । बढ़ा हुआ । ढका हुआ ।

ततम् (न०) तारों वाला बाजा ।

ततस् (ततः) (अव्यया०) १ उससे । तब से । २
वहाँ । वहाँ से । ३ तब । जिसके पीछे । पश्चात् ।
पीछे से । ४ अतएव । अन्ततोगत्वा । इसलिये ।
५ ऐसी हालत में । ६ उसके परे । आगे । और
आगे । ७ तदपेक्षा । उसके अलावा या अतिरिक्त ।

ततस्त्य (वि०) वहाँ से आया हुआ ।

तति (अव्यया०) १ इतने अधिक । २ संख्या ।
दल । समूह । ३ यज्ञकर्म ।

तत्त्वं (न०) (“तत्त्वं” भी लिखा जाता है) १
वास्तविक दशा या परिस्थिति । २ वास्तविक या
सत्यरूप । ३ सच्चाई । ४ निष्कर्ष । ५ यथार्थ रूप ।
६ परमात्मा । ब्रह्मत्व । ७ यथार्थ सिद्धान्त । ८
मन । ९ नृत्य विशेष । १० वस्तु । ११ सांख्य के
मतानुसार पच्चीस पदार्थ ।

तत्त्वतः (अव्यया०) अथार्थतः । वस्तुतः ।

तत्र (अव्यया०) १ वहाँ । उस स्थान पर । २ उस
अवसर पर । तब ।

तत्रत्य, (अव्यया०) वहाँ होने वाला । वहाँ की
वस्तु ।—भवत्, (वि०) पूज्य । पूजनीय ।

तत्पर (वि०) तैयार । सज्ज ।

तत्परायण (वि०) तदासक्त । उसीमें लगा हुआ ।

तत्पुरुषः (पु०) १ परमात्मा । २ समास विशेष ।

तथा (अव्यया०) साम्य । वैसे ही । निश्चय ।—अ,
(अव्यया०) जैसा कि ।—हि, (अव्यया०) इष्टान्त ।
उदाहरण ।

तथापि (अव्यया०) तोभी । ताहम ।

तथैव (अव्यया०) तिस पर भी । ठीक वैसा ही ।

—अ, (अव्यया०) इसी तरह । उसी तरह ।

तथात्वं (न०) १ ऐसा होने पर । ऐसी दशा में ।
२ सत्य ।

तथ्य (वि०) सत्य । वास्तविक । असली ।

तथ्यम् (न०) सच्चाई । वास्तविकता । असलियत ।

तद् (सर्व०) पूर्वकथित । पहिले कहा हुआ ।—
अनन्तरं, (अव्यया०) ठीक उसके पीछे । उसके
बाद ।—अनु, (अव्यया०) उसके बाद । पीछे से ।
—अन्त, (वि०) इस प्रकार समाप्ति ।—अर्थ,—
अर्थीय, (वि०) यह अर्थ रखते हुए ।—अवधि,
(अव्यया०) १ यहाँ तक । इस समय तक । तब
तक । २ तब से । उस समय से ।—एकचित्त,
(वि०) अपने मन को नितान्ततया उस पर
लगाये हुए ।—कालः, (पु०) वर्तमान क्षण ।
वर्तमान समय ।—कालं, (अव्यया०) तुरन्त ।
फौरन ।—तथा, —तथात्, (अव्यया०) तुरन्त
फौरन ।—क्रिय, (वि०) बिना मजदूरी लिये
काम करने वाला ।—ज्ञः, (पु०) बुद्धिमान
जन । विद्वान् ।—तृतीय, (वि०) तीसरी बार
वह कार्य करने वाला ।—धन, (वि०) कंजूस ।
लाजची ।—पर, (वि०) उसके पीछे का ।
उसके बाद का । अवकृष्ट ।

तदा (अव्यया०) १ तब । उस समय । २ उस दशा में ।

—मुख, (वि०) आरम्भ किया हुआ । आरम्भ
किया हुआ ।—मुखं, (न०) आरम्भ । आरम्भ ।

तदात्वं (न०) उस समय में । वर्तमान समय ।

तदानीम् (अव्यया०) तब । उस समय ।

तदानीं तन (वि०) उस समय का । समकालीन ।

तदीय (वि०) उसका । उनका ।

तद्वत् (वि०) उसके समान । समानता से ।

तन् (धा० उभय०) [तनोति,—तनुते, तन, ।
तन्यते, तायते । तितंसति, तितांसति । नित-
निपति] १ फैलाना । पसारना । खंवा करना । २
ढकना । परिपूर्ण करना । ३ पूरा करना । ४ रचना
करना । लिखना । ५ झुकाना (धनुष को)

तनयः (पु०) १ पुत्र । २ नर औलाद ।

तनया (स्त्री०) लड़की । पुत्री ।

तनिमन् (पु०) झुटाई । सूक्ष्मता । पतलापन ।

तनु (वि०) [स्त्री०—तनु, तन्वी] १ पतला । दुबला ।
लटा हुआ । २ कोमल । सुलायन । ३ मिहीन ।
४ छोटा । बोना । कम । थोड़ा । परिमित । ५
तुच्छ । ६ छिड़ला । पायाव (नदी) । (स्त्री०)
१ शरीर । देह । २ (बाहिरी) रूप । आकार । ३
स्वभाव । ४ चर्म । चाम ।—अङ्ग, (वि०) दुबला
पतला । कोमल ।—अङ्गी, (स्त्री०) दुबली पतली
स्त्री । नज़ाकत वाली औरत ।—कूपः, (पु०)
रोमों के छेद ।—कृदः, (पु०) कवच । जर्ह-
वक्त्रतर ।—जः, (पु०) पुत्र ।—जा, (स्त्री०)
पुत्री ।—त्यज्, (वि०) १ अपने प्राणों को
खतरे में डालने वाला । मरने वाला ।—त्याग,
(वि०) थोड़ा थोड़ा खर्च करने वाला । कंजूस ।
—त्रं,—त्राणः, (न०) कवच ।—भवः, (पु०)
पुत्र ।—भवा, (स्त्री०) पुत्री ।—भक्षा,
(स्त्री०) नाक ।—भूत, (पु०) जीवधारी ।
प्राणधारी ।—मध्य, (वि०) पतली कमर
वाला ।—रसः, (पु०) पसीना । पसेव ।—रुह,
रुहं, (न०) शरीर के रोम ।—वारं, (न०)
कवच ।—व्रणः, (पु०) मुहासे ।—सञ्चारिणी,
(स्त्री०) दस वर्ष की उम्र की लड़की । युवती
स्त्री ।—सरः, (पु०) पसीना ।—हृदः, (पु०)
गुदा । मलद्वार ।

तनुल (वि०) फैला हुआ । बड़ा हुआ ।

तनुस् (न०) शरीर ।

तनु (स्त्री०) शरीर ।—ऊर्ध्वः,—जः, (पु०)
पुत्र ।—ऊर्ध्वा,—जा, (स्त्री०) पुत्री ।—
नपं, (न०) घी ।—नपात्, (पु०) आग ।

—रुहं, (न०) शरीर । लोम (पु०) भी होता
है । २ पर ।—रुहः, (पु०) पुत्र ।

तन्तिः (स्त्री०) १ रेखा । वृत्तांश की सरल रेखा ।
तन्तिः } डोरी । २ पंक्ति । अक्वरी ।—पालः, (पु०)
गौश्रों की हेड़ों का रखवाला । २ विराट् राज के
यहाँ रहते समय सहदेव ने अपना अनावटी नाम
तन्तिपाल ही रखा था ।

तंतुः (पु०) १ डोरी । सूत । तार । डोरी । धारी ।
तन्तुः } २ मकड़ी का जाला । ३ तांत । ४ सम्भान ।

औलाद । जाति । ५ जलजन्तु विशेष । ६ परव्रज ।

—कीटः, (पु०) रेशम का कीड़ा ।—नागः,

(पु०) बृहद् जलजन्तु विशेष । निर्यासः,

(पु०) वृक्ष विशेष ।—नाभः, (पु०) मकड़ी ।

—भः, (पु०) १ राई के दाने । २ बछड़ा ।—

वाद्यं, (न०) बाजा जिसमें तार या डोरी लगी

हों ।—वालं, (न०) हुनावट ।—वापः, (पु०) १

जुलाहा । कोरी । २ कर्पा । ३ हुनाई ।—विग्रहा,

(स्त्री०) केला ।—शाला, (स्त्री०) कपड़ा

बिगने का घर ।—सन्तत, (वि०) बिना हुआ ।

सिला हुआ ।—सारः, (पु०) सुपारी का वृक्ष ।

तंतुकः } (पु०) राई के दाने ।
तन्तुकः }

तंतुनः, तन्तुनः } (पु०) जलजन्तु विशेष । शार्क
तंतुणः, तन्तुणः } मत्स्य ।

तंतुरं, तन्तुरं } (न०) कमलनाल का रेशा ।
तंतुलं, तन्तुलं }

तन्त्र } (धा० उभय०) [तन्त्रयति,—तन्त्रयते,—
तन्त्रे तन्त्रित] १ संयम में करना । शासन करना ।

हुकूमत करना । २ परवरिश करना । पालन पोषण
करना ।

तन्त्रं } (न०) १ करघा । २ सूत । ३ ताना । ४ वंश ।
तन्त्रम् } ५ अविच्छिन्न (वंश) परंपरा । ६ कर्मकाण्ड

पद्धति । ७ मुख्य विषय । ८ सिद्धान्त । नियम ।

कल्पना । विज्ञान । ९ परतंत्रता । पराधीनता ।

१० चिज्ञान शास्त्र । ११ अध्याय । पर्व । १२

तंत्र शास्त्र । १३ मंत्र तंत्र । १४ मुख्य या प्रधान

तंत्र । १५ दवाई । १६ शपथ । १७ पोशाक । १८

किसी कार्य के करने की ठीक ठीक पद्धति । १९

राजकीय परिवार । दरबारी । २० ग्रन्थ । प्रदेश ।

अधिकार । ३१ राज्य । शासन । हुक्मसत् । २२
सेना । २३ डेर । समूह । २४ घर । २५ सजावट ।
शृङ्गार । २६ धन सम्पत्ति । २७ आल्हाद ।—
वापः,—वापं, (न०) १ (कपड़े) बिनना । २
करघा ।—वायः, (पु०) १ मकड़ी । २ जुलाहा ।
कोरी ।

तन्त्रकः } (पु०) कोरा कपड़ा ।

तन्त्रकः }

तन्त्राणां } (न०) हुक्मसत् क्रायस रचना । शान्ति
तन्त्राणाम् } बनाये रचना ।

तन्त्रिः, तन्त्रिः } (स्त्री०) १ डोरी । डोर । २ रोदा ।
तन्त्री, तन्त्री } ३ वीणा के तार । ४ नलें । ५ पँख ।

तन्द्रा } (स्त्री०) १ शिथिलता । थकावट । २
तन्द्रा } औँधई । सुस्ती ।

तन्द्रालु } (वि०) १ थका हुआ । २ निद्रालु । सोने
तन्द्रालु } की इच्छा रखने वाला ।

तन्द्रीः, तन्द्रीः } (स्त्री०) औँधई । सुस्ती ।
तन्द्री, तन्द्री }

तन्मय (वि०) उसीमें निवेशित चित्त वाला । उसी
में लगा हुआ । उसीमें लीन हो जाने वाला ।

तन्वी (स्त्री०) कृशाङ्गी । कोमलाङ्गी ।

तप् (धा० आत्म०) [तपति—तप्त] १ चमकना ।
जलना । गर्माना । तपना । गर्मी पैदा करना ।
सन्तप्त होना । तपस्या करना । २ गर्म करना ।
जलाना । चोटिल करना । नुकसान पहुँचाना ।
खराब करना ।

तप (वि०) १ गर्म । उष्ण । जलता हुआ । २ सन्ताप-
दायी । दुःखदायी ।—अत्ययः,—अन्तः (पु०)
ग्रीष्म ऋतु का अवसान और वर्षा ऋतु का
आरम्भ । [४ तपस्या ।

तपः (पु०) १ गर्मी । आग । २ सूर्य । ३ ग्रीष्म ऋतु ।

तपती (स्त्री०) तापती नदी ।

तपनः (पु०) १ सूर्य । २ ग्रीष्म ऋतु । २ सूर्यकान्त
मणि । ४ नरक विशेष । ५ शिव । ६ मदार या
आक का पौधा ।—आत्मजः,—तनयः (पु०)
यम । कर्ण । सुग्रीव ।—आत्मजः,—तनया
(स्त्री०) यमुना । गोदावरी ।—इष्टं, (न०)
ताँवा ।—उपलः,—मणिः, (पु०) सूर्यकान्ति
मणि ।—ऊदः, (पु०) सूर्यमुखी ।

तपनी (स्त्री०) गोदावरी या तापती नदी ।

तपनीयं (न०) सुवर्ण । सोना ।

तपस् (न०) १ उष्णता । गर्मी । आग । २ पीड़ा ।
कष्ट । ३ तप । धार्मिक अनुष्ठान । ४ ध्यान ।
आलोचन । ५ पुण्यकर्म । ६ अपने वर्ण या
आश्रम का शास्त्र विहित कर्मानुष्ठान । ७ जन-
लोक के ऊपर का लोक । (पु०) १ माघ मास ।
(पु० न०) शिशिरऋतु । २ हेमन्त ऋतु । ३
ग्रीष्म ऋतु ।—अनुभावः, (पु०) धार्मिक कर्मा-
नुष्ठान का प्रभाव ।—अवटः, (पु०) ब्रह्मावर्त
प्रदेश ।—क्लेशः, (पु०) तपस्या के कष्ट ।—
चरणः,—चर्या, (स्त्री०) तपस्या ।—तप्तः,
(पु०) इन्द्र ।—धनः, (पु०) तपस्वी ।
संन्यासी ।—निधिः, (पु०) तपस्वी । संन्यासी ।
—प्रभावः, (पु०)—बलं, (न०) तपस्या द्वारा
उपाजित शक्ति ।—राशिः, (पु०) संन्यासी ।—
लोकः, (पु०) जनलोक के ऊपर का लोक ।—
वनं, (न०) वन, जहाँ तपस्वी तप करें ।—वृद्धः,
(वि०) बहुत तप कर चुकने वाला ।—विशेषः,
(पु०) सर्वोत्कृष्ट भक्ति । प्रधान धर्मानुष्ठान ।—
स्थली, (स्त्री०) काशी ।

तपसः (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा । ३ पक्षी ।

तपस्यः (पु०) फाल्गुण मास ।

तपस्या (वि०) तप । व्रतचर्या ।

तपस्विन् (वि०) १ तपस्वी । २ बापुरा । साहाय्य-
हीन । दयापात्र । (पु०) तपस्वी ।—पत्रं,
(न०) सूर्यमुखी का फूल ।

तप्त (व० कृ०) १ गर्माया हुआ । जला हुआ । २
अंगारे की तरह लाल । अति गर्म । ३ पिघला
हुआ । ४ सन्तप्त । पीड़ित । ५ तपस्या करने
वाला । काञ्चनम्, (न०) सोना ।—कृच्छ्रं,
(न०) तप विशेष । व्रतचर्या विशेष ।—रूपकं,
(न०) विशुद्ध चाँदी ।

तम् (धा० परस्मै०) [ताम्यति, तात] १ (गला)
घोंटना । २ थक जाना । शान्त होना । ३ मन में
सन्तप्त होना । विकल होना ।

तमं (न०) १ अन्धकार । २ पैर की नौक ।

तमः (पु०) १ राहु । २ तमाल वृक्ष ।

तमस् (न०) अन्धकार । २ तरक का अन्धकार । ३
 भ्रम । ४ तमोगुण । ५ क्लेश । दुःख । ६ पाप
 (पु० न०) राहु । —अपह, (पु० वि०) भ्रम
 दूर करने वाला । अज्ञान हटाने वाला । —अपहः,
 (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा । ३ अग्नि । —
 कायडः, (पु०) —कायडः (न०) घोर या गाढ़
 अन्धकार । —गुणः, (पु०) तमोगुण । —घ्नः,
 (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्र । ३ अग्नि । ४ विष्णु ।
 ५ शिव । ६ ज्ञान । ७ बुद्धदेव । —उद्योतिस्,
 (पु०) जुगन् । खद्योत । —तातिः (पु०)
 अन्धकार छाने वाला । —नुटः, (पु०) १ तन्त्र ।
 २ सूर्य । ३ चन्द्रमा । ४ अग्नि । ५ दीपक ।
 —नुदः, (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा । —मिट्,
 —मण्डिः, (पु०) जुगन् । —विकारः, (पु०)
 बीमारी । —हन्, —हर, (वि०) अन्धकार दूर
 करने वाला । (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा ।

तमसः (पु०) १ अन्धकार । २ कृप ।

तमस्विनी } (स्त्री०) रात । रजनी ।
 तमा }

तमालः (पु०) १ वृक्ष विशेष जिसकी छाल बड़ी
 काली होती है । २ माथे पर लगाने का साम्प्र-
 दायिक चिन्ह या तिलक विशेष । ३ तलवार ।
 खौड़ा । —पत्रं, (न०) १ तिलक विशेष । २
 तमाल ।

तमिः } (स्त्री०) १ रात, विशेष कर कृष्णपक्ष की ।
 तमी } २ सुई । बेहोशी । ३ हल्दी ।

तमिस्र (वि०) अंधियारा । कृष्ण । काला ।

तमिर्झ (न०) १ अंधियारी । अन्धकार । २ भ्रम ।
 ३ क्रोध । —पक्षः, (पु०) कृष्णपक्ष ।

तमिस्रा (स्त्री०) १ कृष्ण पक्ष की रात । २ प्रगाढ़
 अन्धकार ।

तमोमयः (पु०) राहु ।

तंवा, तम्बा } (स्त्री०) गौ । गाय ।
 तंबिका, तम्बिका }

तय् (धा० आ०) [तयते] १ चलना । जाना । २
 रक्षा करना ।

तरः (पु०) १ अनुप्रस्थ-गमन । चौराहा । मार्ग । २
 भाड़ा । ३ सड़क । ४ उतारा । —परायम्, (न०)
 भाड़ा । —स्थानं, (न०) घाट ।

तरक्तः } (पु०) लेई । जन्तु जिसके बदन में काँटे
 तरक्तुः } होते हैं ।

तरंगः } (पु०) १ लहर । २ (ग्रन्थ का) अध्याय ।
 तरङ्गः } ३ फलांग । ४ वस्त्र ।

तरंगिणी } (स्त्री०) नदी ।
 तरङ्गिणी }

तरंगित (न०) १ तरंगों वाली । २ वाद । ३ शक्ति ।
 अस्त ।

तरण (न०) १ पार करना । २ विजय । जीत । ३
 डाँड़ ।

तरणः (पु०) १ नाव । बेड़ा । २ स्वर्ग ।

तरणिः (पु०) १ सूर्य । २ प्रकाश की किरण ।

तरणिः } (स्त्री०) नाव । बेड़ा । घन्नीली । —रत्नं,
 तरणी } (न०) लाल ।

तरङ्गः, तरगङ्गः (पु०) १ नाव । २ बेड़ा ।
 तरङ्गं, तरगङ्गम् (न०) ३ घन्नीली । ३ डाँड़ । —

पादा, (स्त्री०) एक प्रकार की नाव ।

तरङ्गी तरगङ्गी } (स्त्री०) नाव । बेड़ा । घन्नीली ।
 तरङ्गु }
 तरङ्गी, तरङ्गी }

तरंतः } (पु०) १ समुद्र । २ प्रचण्ड जलवृष्टि । ३
 तरन्तः } मैदक । ४ दैत्य या राक्षस ।

तरल (वि०) १ थरथराने वाला । काँपने वाला । २
 चंचल । अटढ़ । विनश्वर । ३ उत्तम । चमकीला ।
 चमकदार । ४ पनीला । ५ लंपट ।

तरलः (पु०) १ द्वार के बीचों बीच की मुख्यमण्डि ।
 २ द्वार । ३ समतल सतह । ४ तली । गहराई ।
 ५ हीरा । ६ लोहा ।

तरला (स्त्री०) माँड़ । उबले हुए चाँवलों का जल
 विशेष । लस्सी ।

तरलयति (क्रि०) हिलाना । ह्वर उधर घुमाना ।

तरलायते (क्रि०) काँपना । हिलना । ह्वर उधर
 घूमना ।

तरलयित (न०) बड़ी लहर ।

तरवारिः (पु०) तलवार । खड्ग ।

तरस् (न०) १ रजतार । वेग । २ विक्रम । शक्ति ।
 स्फूर्ति । २ तीर । किनारा । चौराहा । ३ बेड़ा ।
 घन्नीली ।

तरस्म (न०) गोश्त । मांस ।

तरसानः (पु०) नाव ।

रस्विन (वि०) [स्त्री०—तरस्विनी] १ तेज ।
फुर्तीला । २ मजबूत । शक्तिमान । साहसी ।
बलवान । १ हलकारा । २ वीर । ३ पवन । वायु ।
४ गरुड़ ।

रांधुः }
रान्धुः } (पु०) बड़ी और चपटी तली की नाव ।
नरालुः }

नरिः } (स्त्री०) १ नाव । २ कपड़े रखने का
नरी } संदूक । ३ कपड़े का छोर या किनारा ।

रथः, (पु०) सेपणो । डौड़ ।

नरिकः }
नरिकिन् } (पु०) मल्लाह । नाव खेवने वाला ।

रिका (स्त्री०) }
रिन् (न०) } नाव । पोत । जहाज़ ।
रित्री (स्त्री०) }
रिणी (स्त्री०) }

रीषः (पु०) १ नाव । बेड़ा । २ समुद्र । ३ योग्य
पुरुष । ४ स्वर्ग । ५ कार्य । व्यापार । पेशा ।

रुः (पु०) वृक्ष ।—खगडः, (पु०),—खगडं,
(न०),—पगडः, (पु०), पगडम्, (न०)
वृक्ष समूह ।—जीवनम्, (न०) पेड़ की जड़ ।
—तलं, (न०) वृक्ष की जड़ के समीप की
भूमि ।—नखः, (पु०) काँटा ।—मृगः, (पु०)
वानर ।—रागः, (पु०) १ कली या फूल ।
२ अँखुआ । कल्ला । अँकुर ।—राजः, (पु०)
तालवृक्ष ।—रुद्रा, (स्त्री०) वह वृक्ष जो दूसरे वृक्ष
पर जमे या फैले ।—विलासिनी, (स्त्री०)
नवमल्लिका लता ।—शायिन्, (पु०) पत्नी ।

तरुणा (वि०) १ जवान । युवा । २ छोटा । हाल
का पैदा हुआ । कोमल । मुलायम । हाल ही का
उगा हुआ । ३ नवीन । ताज़ा । दटका । ४ जिन्दा-
दिल ।—ज्वरः, (पु०) वह ज्वर जो एक सप्ताह
तक न उतरे ।—दधि, (न०) पाँच दिन का
रखा हुआ दही ।—पीतिका, (स्त्री०) इंगुर ।
विष विशेष ।

तरुणाः (पु०) युवा पुरुष । जवान आदमी ।

तरुणी (स्त्री०) युवती स्त्री । जवान औरत ।

तरुश (वि०) वृक्षों का बाहुल्य अथवा वृक्षों से
परिपूर्ण ।

तर्क (धा० उभय०) [तर्कयति—तर्कयते, तर्कित]
१ कल्पना करना । अनुमान करना । सन्देह करना ।
विश्वास करना । २ परिणाम पर पहुँचना । ३
बहस करना । विचारना । ४ सोचना । इरादा
करना । ५ खोजना । ढूँढना । ६ चमकना । ७
बोलना ।

तर्कः (पु०) १ कल्पना । अनुमान । क्रयास । अटकल ।
२ युक्ति । वादविवाद । ३ सन्देह । ४ न्याय
शास्त्र । तर्क शास्त्र । ५ आँकाक्षा । ६ कारण ।
हेतु ।—विद्या, (स्त्री०) न्याय शास्त्र ।

तर्ककः (पु०) १ उम्मेदवार । जिज्ञासु । प्रार्थी ।
२ न्याय शास्त्र का जानने वाला ।

तर्कुः (पु० स्त्री०) तकुआ जिस पर चक्के में सूत
लपेटा जाता है ।—पिण्डः,—पीठो, (न०)
तकुआ के निचले छोर पर का गोला ।

तर्कुः (पु०) सेई । जन्तु विशेष ।

तर्क्यः (पु०) शोरा ।

तर्ज (धा० परस्मै०) [तर्जति, तर्जयति—तर्जयते,
तर्जित] १ डरवाना । भयभीत करना । २ फट
कारना । गरियाना । डौटना । भर्त्सना करना ।
कलङ्क लगाना । ३ चिढ़ाना । घिमाना ।

तर्जनं (न०) } १ भयभीत करना । डरवाना ।
तर्जना (स्त्री०) } २ भर्त्सना ।

तर्जनी (स्त्री०) अँगूठे के पास की अँगुली ।

तर्णः } (पु०) बछड़ा । बछवा ।

तर्णाकः }
तर्णिः (पु०) १ बेड़ा । २ सूर्य ।

तर्द (धा० परस्मै०) [तर्दति] १ घायल करना ।
चोटिल करना । २ बध करना । काट गिराना ।

तर्पणम् (न०) १ प्रसन्न करना । सन्तुष्ट करना । २
सन्तोष । प्रसन्नता । ३ आन्धिक पाँच कर्तव्यानु-
ष्ठानों में से एक । पितृयज्ञ विशेष । ४ समिधा ।
हवन के लिये इंधन ।—इच्छुः, (पु०) भीष्म
पितामह की उपाधि ।

तर्मन् (न०) यज्ञीयस्तम्भ का शिरोभाग ।

तर्षः (पु०) १ प्यास । २ कामना । इच्छा । ३
समुद्र । सागर । ४ नाव । ५ सूर्य ।

तर्पणम् (न०) प्यास । तृषा ।

उर्ध्वत } (वि०) १ प्यासा । अभिलाषी । इच्छुक ।
 उर्ध्वल }
 तर्हि (अव्य०) १ उस समय । २ उस दशा में ।—
 यदा तर्हि, (वि०) जब तब ।—यदितर्हि, (न०)
 यदि तब ।—कथं-तर्हि, (न०) तब कैसे ?
 तल (न०) } १ सतह । २ हथेली । ३ तलवा ।
 तलः (पु०) } ४ बाँह । ५ थप्पड़ । ६ नीचता ।
 पद की अपकृष्टता । ७ तलदेश । निम्न देश ।
 तली । पैदी ।—प्रजुलिः, (स्त्री०) पैर की
 उँगुली ।—अतलः, (न०) सात नादकों में से
 एक ।—ईत्तलः, (पु०) सुअर ।—उदा,
 (स्त्री०) नदी ।—घातः, (पु०) थप्पड़ ।
 चपेटा ।—तालः, (पु०) बाजू विशेष ।—त्रं,
 —त्राणां, —वारणां, (न०) धनुर्धरों का चमड़े
 का दस्ताना ।—प्रहारैः, (पु०) थप्पड़ ।—
 सारकं, (न०) ज़ेरबंद । तंग । अधोबंधन ।
 तलकं (न०) बड़ा तालाव ।
 तलतः (अव्यया०) पैदी से ।
 तलाची (स्त्री०) चढाई ।
 तलिका (स्त्री०) ज़ेरबंद । तंग । अधोबंधन ।
 तलितं (न०) तला हुआ माँस ।
 तलिन (वि०) १ पतला । दुबला । लया । २ कम ।
 थोड़ा । ३ साफ़ । स्वच्छ । ४ नीचे का । ५ पृथक ।
 तलिनं (न०) विस्तरा । चारपाई । पलंग । कोच ।
 तलिमं (न०) १ पत्थर जड़ा हुआ फर्श । २ चारपाई ।
 खाट । ३ पाल । तिरपाल । चँदोवा । ४ लंबी
 तलवार या छुरी ।
 तलुनः (पु०) हवा । पवन ।
 तलकं (न०) जंगल ।
 तल्पं (न०) } १ चारपाई । पलंग । सेज । २
 तलपः (पु०) } स्त्री । भार्या (यथा गुरुतल्पा)
 ३ गाढ़ी में बैठने का स्थान । ४ मकान के ऊपर
 की मंज़िल । गुम्मत ।
 तल्पकः (पु०) वह नौकर जिसका काम चारपाई
 बिछाने का हो ।
 तल्लजः (पु०) उत्तमता । सर्वोत्कृष्टता । प्रसन्नता ।
 यथा—गोतल्लजा, कुमारीतल्लजा ।
 तल्लिका (पु०) ताली ।
 तल्ली (स्त्री०) जवान स्त्री ।

तष्ट (वि०) १ चिरा हुआ । कटा हुआ । छिनी से
 छीला हुआ । २ संहारा हुआ ।
 तष्टृ (पु०) १ बढ़ाई । २ विश्वकर्मान ।
 तस्करः (पु०) चोर । डाँकू ।
 तस्करी (स्त्री०) च्यसनी स्त्री ।
 तस्थु (वि०) अचल । स्थिर ।
 तात्तग्यः } (पु०) बढ़ाई का पुत्र ।
 तादग्यः }
 तान्त्रीलिकः (पु०) विशेष प्रवृत्ति, सुकाव या
 स्वभाव सूचक प्रत्यय विशेष ।
 तादंकः } (पु०) कान का बाला । आभूषण विशेष ।
 तादङ्कः }
 तादस्थम् (न०) १ सामीप्य । २ अनासक्ति ।
 उदासीनता । उपेक्षा ।
 ताडः (पु०) १ प्रहार । ठोंकर । २ कोलाहल ।
 ३ म्यान । परलला । ४ पर्वत । पहाड़ ।
 ताडका (स्त्री०) एक राक्षसी जिसे श्रीरामचन्द्र जी ने
 विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करते समय जान से मारा
 था । वह सुकेतु की बेटी, सुन्दर की भार्या और
 मारीच की माता थी ।
 ताडकेयः (पु०) ताडका का पुत्र । मारीच की उपाधि ।
 ताडंकः, ताडङ्कः (पु०) } ताडपत्र ।
 ताडपत्रम् (न०) }
 ताडनं (न०) मारना । कोड़ मारना । कोड़ा खगाना ।
 ताडनी (स्त्री०) कोड़ा । चाबुक ।
 ताडिः (पु०) } १ एक प्रकार का खजूर वृक्ष । २
 ताडी (स्त्री०) } आभूषण विशेष ।
 ताड्यमान (वि०) पिटा हुआ ।
 ताड्यमानः (पु०) वाद्ययंत्र विशेष । एक प्रकार का
 बाजा, जो लकड़ी से बजाया जाय । जैसे ढोल ।
 ताडवः, ताण्डवः (पु०) } १ नृत्य । नाच ।
 ताडवम्, ताण्डवम् (न०) } २ विशेष कर, शिव
 जी का नृत्य विशेष । ३ नाचने की कला । ४ एक
 प्रकार की वास ।—प्रियः, (पु०) शिव जी ।
 तातः (पु०) पिता । अपने से उम्र में छोटों के लिये
 सम्बोधन का शब्द विशेष । यह शब्द अपने से बड़ों
 को भी प्रतिष्ठा सूचक सम्बोधन की तरह प्रयुक्त
 किया जाता है ।—गु, (वि०) पिता के
 अनुकूल ।—गुः, (पु०) ताऊ । चाचा ।

तातन. (पु०) खजन पत्नी ।

तातलः (पु०) १ रोग । २ लोहे का डंढा । लोहे की तेज़ नौक की कील । ३ रसोई बनाना । पकाना । ४ गर्मी ।

तातिः (पु०) औलाद । (स्त्री०) सातत्य । पारम्पर्य । वंशानुक्रम ।

तात्कालिक (वि०) [स्त्री०—तात्कालिकी] १ समकालीन । २ समीप का । उसी समय का । तात्पर्यम् (न०) आशय । निष्कर्ष । अभिप्राय । तात्त्विक (वि०) सत्य । असली । वास्तविक । परमावश्यक ।

तादात्म्यम् (न०) एक ही स्वभाव का । समान । तादृक्ष (वि०) [स्त्री०—तादृक्षी] वैसा । तादृश (वि०) [स्त्री०—तादृशी] उसकी तरह । तानं (न०) १ तनाव । फैलाव । २ ज्ञानेन्द्रिय । तानः (पु०) १ सूत । रेशा । २ (गान में) तान । तानवं (न०) दुवलापन । स्वरूपता । तानूरः (पु०) भैंर ।

तांत (वि०) १ थका हुआ । शिथिल । परिश्रान्त । तान्त (वि०) पीड़ित । सन्तप्त । ३ मुकाया हुआ । कुम्हलाया हुआ ।

तांतवं (न०) १ कातना । बिनना । २ मकड़ी तान्तवम् (न०) का जाला । ३ बुना हुआ कपड़ा । तांत्रिक (वि०) [स्त्री०—तान्त्रिकी] १ किसी तान्त्रिक कला या सिद्धान्त में भली भाँति सुपरिचित । २ तंत्र सम्बन्धी । ३ तंत्रों में सुपण्डित ।

तांत्रिकः (पु०) तंत्रों को मानने वाला । तान्त्रिकः (पु०) तंत्रों को मानने वाला ।

तापः (पु०) १ गर्मी । भस्मक । धक्का । २ पीड़ा । कष्ट । ३ शोक । दुःख ।—त्रयं, (न०) तीन प्रकार के कष्ट (यथा आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक)—हर, (वि०) शान्ति-दायी ।

तापनः (पु०) १ सूर्य । २ ग्रीष्मऋतु । ३ सूर्य-कान्तिमणि । ४ कामदेव के बाणों में से एक बाण का नाम ।

तापनम् (न०) १ जलन । २ कष्ट । ३ दर्द ।

तापस (वि०) [स्त्री०—तापसी] १ तपस्या या तपस्वी सम्बन्धी । २ साधु । धर्मचिष्ट । भक्ति पूर्ण ।

तापसः (पु०) [स्त्री०—तापसी] साधु । संन्यासी । तपस्वी ।—इष्टा, (स्त्री०) दाक्षा । दाख । अंगूर ।—तपः,—तुमः, (पु०) इडुदी वृक्ष ।

तापस्यं (न०) तपस्या । व्रतचर्या । [पुष्प । तापिच्छः (पु०) तमालवृक्ष । अथवा इस वृक्ष के तापी (स्त्री०) १ तापती नदी । २ यमुना नदी । तामः (पु०) १ भयप्रद वस्तु । २ कसूर । अपराध । दोष । भूल । त्रुटि । ३ चिन्ता । कष्ट । ४ अभि-लाषा ।

तामरम् (न०) १ जल । २ मकलन । तामरसं (न०) १ लालकमल । २ सोना । तांबा । तामरसी (स्त्री०) तालाव जिलमें कमल हो । तामस (वि०) [स्त्री०—तामसी] १ कृष्ण । काला । २ तमोगुण्यी । ३ अज्ञानी । ४ दुष्ट ।

तामसं (न०) अन्धकार । तामसः (पु०) १ दुष्टमन । अधमजन । अग्निद । २ साँप । ३ धुष्पू । उल्लू ।

तामसी (स्त्री०) १ कृष्णपक्ष की रात । २ निद्रा । ३ दुर्गा की उपाधि ।

तामसिक (वि०) [स्त्री०—तामसिकी] अंधि-यारा । तमस् सम्बन्धी । तमस् से उत्पन्न या निकला हुआ ।

तामिस्रः (पु०) नरक विशेष ।

तांबूलं (न०) पान ।—करंकरः,—पेटिका, ताम्बूलम् (स्त्री०) पानदान । बिल्हरा ।—दः,—धरः,—वाहकः, (पु०) नौकर जो अपने मालिक के साथ पानदान लिये हुए ढोले और जहाँ जरूरत पड़े वहाँ पान खिलावे ।—बल्लो, (स्त्री०) पान की बेल ।

तांबूलिकः (पु०) तंबोली । ताम्बूलिकः (पु०) तंबोली ।

तांबूली (स्त्री०) पान का पौधा । ताम्बूली (स्त्री०) पान का पौधा ।

ताम्र (वि०) तांबे जैसे लाल रंग का ।—अक्षतः, (पु०) १ काक । २ कोयल ।—अर्धः, (पु०) काँसा ।

फूल ।—अश्वत्थः, (पु०) पञ्चरागमणि ।—
उपजीविन् (पु०) ताँबे की चीज़े बनाने
वाला ।—आशुः, (पु०) लाला ओंठों वाला ।
—कारः, —कुक्षः, (पु०) कसेरा । ठेरा ।—
कृमिः, (पु०) इन्द्रगोप कीट । बीरबहूदी ।—
गर्भम्, (न०) तृत्तिया ।—चूडः, (पु०)
मुर्गा ।—अपुञ्ज, (न०) पीतल । द्रुः, (पु०)
लालचन्दन ।—पुः, (पु०)—पत्रं, (न०) ताम्रपत्र
जिन पर दान दी हुई वस्तुओं के नाम दानदाता
का नाम और दानग्रहीता का नाम खोदा जाता
था ।—पर्णा, (स्त्री) मलयाचल से निकलने
वाली एक नदी का नाम ।—पल्लवः, (पु०)
अशोकवृक्ष ।—लितः, (पु०) एक प्रदेश का
नाम ।—लितः, (पु०) (बहु०) ताम्रलित
देश का राजा या इस देश के अधिवासी ।—
वृक्षः, (पु०) चन्दन विशेष ।

ताम्रिक (वि०) [स्त्री० - ताम्रिकी] ताँबे का
बना हुआ ।

ताम्रिकः (पु०) ठेरा । कसेरा ।

ताम्र (धा० आत्म०) [तायते. तायित] १ फैलाना ।
बढ़ाना । अविच्छिन्न पंक्ति में आगे बढ़ना । २
२ रक्षा करना । बचाना ।

तार (वि०) १ ऊँचा । २ उच्चस्वर । ३ चमकदार
चमकीला । ४ उत्तम । श्रेष्ठ । ५ स्वादिष्ट ।—अश्वः,
—अरिः, (पु०) लोहभस्म जो दवा के काम में
आवे ।—पतनं, (न०) नक्षत्रपात । उत्क्रापात ।
—पुष्पः, (पु०) कुन्द या चमेली की बेल ।
—वायुः, (पु०) सन् सन् करती हुई हवा ।
—शुद्धिकरं, (न०) सीसा । सीसक ।—स्वर,
(वि०) खर आवाज़ वाला ।—हारः, (पु०)
१ मोती का हार । २ दमकता हुआ हार ।

तारः (पु०) १ नदीतट । २ मोती की आव । ३
सुन्दर या बड़ा मोती । ४ उच्चस्वर ।

तारं (न०) १ ग्रह या नक्षत्र । २ कपूर । (न०)

तारः (पु०) १ चाँदी । २ आँख की पुतली
(यह पुल्लिङ्ग भी है) । ३ मोती । (यह स्त्री-
लिङ्ग भी है) ।

तारक (वि०) [स्त्री०—तारिका] १ ले जाने वाला ।
पारकरैया । २ रक्षक । बचाने वाला । उद्धारक ।

तारकः (पु०) १ खिवैया । राहवतैया । २ बचाने
वाला । छुड़ाने वाला । ३ एक दानव जिसे
कार्तिकेय ने मारा था । (पु० न०) बेड़ा ।
घनौटी । (न०) १ आँख की पुतली । २
आँख ।—अरिः, —जित्, (पु०) कार्तिकेय
का नाम ।

तारका (स्त्री०) १ सितारा । नक्षत्र । २ धूमकेतु ।
३ आँख की पुतली ।

तारकिणी (स्त्री०) रात जिसमें आकाश के तारे
देख पड़ें ।

तारकित (वि०) नक्षत्रों वाला । नक्षत्र विजडित ।

तारणः (पु०) नौका । बेड़ा ।

तारणं (न०) १ पार होना । २ बचाना । छुड़ाना ।

तारणिः } (पु०) बेड़ा । नाव ।
तारणी }

तारतम्यं (न०) न्यूनाधिक्य । कमज्यादा । थोड़ा
बहुत । भेद । अन्तर ।

तारलः (पु०) लंपट मनुष्य । कामुक ।

तारा (स्त्री०) १ तारा या नक्षत्र । २ स्थिर नक्षत्र ।
३ आँख की पुतली । ४ मोती । ५ बालि की
स्त्री का नाम । ६ बृहस्पति की स्त्री का नाम ।
७ हरिश्चन्द्र राजा की रानी का नाम ।—अधिपः,
—आपीडः,—पतिः, (पु०) चन्द्रमा ।—
पथः, (पु०) आकाशमण्डल । आकाश ।—
भूषा, (स्त्री०) रात ।—मण्डलं, (न०)
१ खगोल । २ आँख की पुतली ।—मृगः, (पु०)
मृगशिरस् नक्षत्र ।

तारिकं (न०) भाड़ा । किराया । उतराई ।

तारुण्यम् (न०) १ जवानी । युवावस्था । २
ताज़गी । टटकापन ।

तारेयः (पु०) १ बुधग्रह । २ बालिपुत्र अङ्गद की
उपाधि ।

तार्किकः (पु०) १ न्यायदर्शनवेत्ता । २ विद्वान् ।

तार्क्ष्यः (पु०) १ गरुड । २ अरुण । ३ गाढ़ी । ४
घोड़ा । ५ सर्प । ६ पक्षी ।—ध्वजः, (पु०)
विष्णु ।—नायकः, (पु०) गरुड ।

तार्तीय (वि०) तीसरा ।

तार्तीयिक (वि०) तीसरा ।

तालः (पु०) १ तालवृत्त । २ ताली बजाना । ३ फड़-फड़ाना । ४ हाथी के कानों की फड़फड़ाहट । ५ सङ्गीत की प्रक्रिया विशेष । ६ मँजीरा । ७ हथेली । ८ ताला । चटखनी । ९ तलवार की झूठ ।—अङ्कः, (पु०) १ बलराम । २ ताल-पत्र जो लिखने के काम आते हैं । ३ पुस्तक । ४ आरा ।—अवचरः, (पु०) जवैया । नाचने वाला । नाटक का पात्र ।—कैतुः, (पु०) भीष्मपितामह ।—दीरकः, (न०)—गर्भः, (पु०) ताड़ वृक्ष का रस ।—ध्वजः—भुत्, (पु०) १ बलराम का नाम । २ कर्णभूषण विशेष ।—मर्दलः, (पु०) बाजा विशेष । यंत्र, (न०) जराही का औजार ।—रेचनकः, (पु०) नृत्यकरने वाला । नाटक खेलने वाला ।—लक्षणाः, (पु०) बलराम ।—घनं, (न०) वृक्षों का समूह । उपवन ।—वृन्तं, (न०) पंखा ।

तालं (न०) १ ताड़ वृक्ष का फल । २ हड़ताल ।

तालकं (न०) १ हड़ताल । २ चटखनी । ताला ।

तालकः (पु०) कर्णभूषण विशेष ।

तालव्य (वि०) तालू से सम्बन्ध रखने वाला ।—वर्णः, (पु०) वे अक्षर जो तालू की सहायता से बोले जाँय । ऐसे अक्षर ये हैं—इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ और य् ।

तालिकः (पु०) १ हथेली । २ ताली ।

तालितं (न०) १ रंगीन कपड़ा । २ बोरा । डोरी ।

ताली (स्त्री०) १ पहाड़ी ताड़ के पेड़ । २ ताड़ी वृक्ष । ३ महकदार मिट्टी । ४ एक प्रकार की कुंजी ।—घनं, (न०) ताड़ के वृक्षों का झुमट ।

तालु (न०) तालू ।—जिह्वः, (पु०) मगर । नक ।

तालूरः (पु०) मँबर । ज्वार । बाढ़ ।

तालूषकं (न०) तालू ।

तावक (वि०) } तेरा । तुम्हारा ।
तावकीन (वि०) }

तावत् तवतिक } (वि०) इतना । उतना ।

तावत्क (वि०) इतने मुख्य का । इतने दामों का ।

तावुरिः (पु०) वृष राशि

तिक (वि०) तीता । कहुआ ।—गन्धा, (स्त्री०) राई ।—धातुः, (पु०) पित्त ।—फलः (पु०)—मरिचः, (पु०) निर्मली ।—सारः, (पु०) खदिर वृक्ष ।

तिकः (पु०) १ कहुआपन । कहुआ स्वाद । २ कुटज वृक्ष । ३ तीतापन । चरपराहट । ४ गन्धि ।

तिग्म (वि०) १ तीव्र । पैना । नौकदार (हथियार) । २ उग्र । प्रचण्ड । ३ भभकता हुआ । जलता हुआ । ३ तीता । कहुआ । ४ घोर । क्रोधी । अशुः, (पु०) १ सूर्य । २ अग्नि । ३ शिव ।—करः, —दीधितिः, —रश्मिः, (पु०) सूर्य ।

तिग्मम् (न०) १ गर्मी । २ तीतापन ।

तिज् (धा० आत्म०) [तितितिते तितितिते] सहन करना । सहना । गवारा करना ।

तितडः (पु०) चलनी । (न०) छाता ।

तितिला (स्त्री०) १ सहनशीलता । सत्र । त्याग ।

तितिलु (वि०) धैर्यवान । सहनशील ।

तितिमः (पु०) १ जुगन् । खद्योत । २ इन्द्रगोप । बीरब्रह्मटी ।

तितिरः } (पु०) तीतर विशेष ।
तितिरः }

तितिरिः (पु०) १ तीतर । २ एक ऋषि का नाम जिन्होंने कृष्णयजुर्वेद को सब से प्रथम पढ़ाया ।

तिथः (पु०) १ आग । २ प्रेम । ३ समय । ४ वर्षा या शरद ऋतु ।

तिथि (पु० स्त्री०) १ चान्द्र दिवस । २ पन्द्रह की संख्या ।—क्षयः, (पु०) अमावास्या तिथि का ह्रास ।—पञ्जी, (स्त्री०) पञ्चाङ्ग । पत्रा ।

तिनिशः (पु०) वृक्ष विशेष ।

तिन्तिडः तिन्तिडः (पु०)
तिन्तिडी, तिन्तिडी (स्त्री०) } इमली का
तिन्तिडिका, तिन्तिडिका (स्त्री०) } वृक्ष । इमली ।
तिन्तिडीकः, तिन्तिडीकः (पु०) }

तिन्दुः, तिन्दुः }
तिन्दुकः, तिन्दुकः } (पु०) तेंदू का पेड़ ।
तिन्दुलः, तिन्दुलः }

तिम् (धा० पर०) [तेमति, तिमित] नम करना ।
गीला करना ।

तिमिः (पु०) १ समुद्र । २ मत्स्यविशेष ।—कोपः,
(पु०) समुद्र ।—ध्वजः, (पु०) एक दैत्य
जिसे इन्द्र ने महाराज दशरथ की सहायता से
मारा था ।

तिमिगिलः (पु०) एक विशाल मत्स्य जो तिमि-
तिमिङ्गिलः) मत्स्य को भी खा डालता है ।

तिमित (वि०) १ गतिहीन । स्थिर । अचल । २
गीला । नम । तर ।

तिमिर (वि०) काला । अन्धकारमय ।

तिमिरः (पु०) १ अंधकार । २ अन्धापन । ३

तिमिरम् (न०) १ लोहे का मोर्चा ।—अरिः,—
वृद्ध, (पु०)—रिपुः, (पु०) सूर्य ।

तिरश्ची (स्त्री०) किसी जानवर, पक्षी या जन्तु
की मादा ।

तिरश्चीन (वि०) टेढ़ा । तिरछा ।

तिरस् (अव्यया०) १ तिरछेपन से । टेढ़ेपन से । २
बिना । रहित । ३ गुप्तरीत्या । अदृश्य रूप से ।

तिरयति (क्रि०) १ छिपाना । गुप्त रखना । २ रोकना ।
अवचन डालना । बाधा देना । ३ जीत लेना ।

तिर्यक् (अव्य०) टेढ़ेपन से ।

तिर्यच् (वि०) [तिरश्ची—तिर्यची] १ टेढ़ा ।
तिरछा । बौका । २ मुड़ा हुआ । झुका हुआ ।

(पु० न०) पशु । पक्षी ।—अन्तरं, (न०)

अङ्ग । चौड़ाई ।—अयनं, (न०) सूर्य की
वार्षिकगति ।—ईत्, (वि०) भेंड़ा । एँचाताना ।

—जातिः, (पु०) पशु जाति ।—प्रमाणं, (न०)

चौड़ाई ।—प्रेक्षणं, (न०) कनखियों देखना ।

तिरङ्गी आँख कर देखना ।—यानिः, (स्त्री)

पशु पक्षी जाति ।—स्रोतस्, (पु०) पशु सृष्टि ।

तिलः (पु०) १ तिल का पौधा । २ तिल बीज । ३
शरीर पर का तिल या मस्सा । ४ तिल के समान

छोटा टुकड़ा ।—अम्बु, —उदकं, (न०) तिल
मिश्रित जल, जो तर्पण के काम में आता है ।—

उत्तमा, (स्त्री०) एक अम्सरा का नाम ।—

ओदनः, (पु०)—ओदनं (न०) तिल चावल

की खीर ।—कालकः, (पु०) मस्सा । तिल ।

—किट्टं,—खलिः,—खली, (स्त्री०) या चूरा,

(न०) खल जो पशुओं को खिलायी जाती है ।

तैलं, (न०) तिली का तेल ।—पर्णः, (पु०)

तारपीन ।—पर्णम् (न०) चन्दन ।—पर्णी,

(स्त्री०) १ चन्दन का वृक्ष । २ तारपीन ।—रसः,

(पु०) तिली का तेल ।—रनेहः, (पु०)

तिली का तेल ।—होमः, (पु०) तिल की

आहुति ।

तिलुंतुदः } (पु०) तेली ।

तिलुत्तुदः } (पु०) तेली ।

तिलशः (अव्य०) अत्यन्त अल्प परिमाण में ।

तिल्वः (पु०) लोभ का वृक्ष ।

तिलकं (न०) १ मूत्रस्थली । २ कुङ्कुम । फेंफड़ा ।

३ लवण विशेष ।—आश्रयः, (पु०) माया ।

तिलकः (पु०) १ वृक्ष विशेष । २ शरीर पर का छोटा

सा काला चिन्ह विशेष । (पु०) मस्तक पर का

तिलक या टीका ।

तिलका (स्त्री०) गुंज ।

तिलित्सः (पु०) बड़ा सर्प ।

तिष्ठु (अव्यया०) वह समय जब वृष देने को
गौ खड़ी होती है । सन्ध्या के बंटा या डेढ़ घंटे

बाद का समय ।

तिष्यः (पु०) १ पुण्य नक्षत्र । २७ नक्षत्रों में से

आठवाँ नक्षत्र । २ पौषमास ।

तिष्यम् (न०) कलियुग ।

तीक् (धा० आत्म०) [तीकते] जाना । चलना ।

तीक्ष्ण (वि०) १ पैना । तीव्र । २ गर्म । ताता । ३ उग्र ।

प्रचण्ड । ४ कड़ा । जोरदार । दृढ़ । ५ कर्कश ।

टेढ़ा । ६ कठोर । ७ हानिकर । अशुभ । विषैला । ८

कुशाग्र । ९ बुद्धिमान । चतुर । १० दाही । ११

त्यागी । भक्त ।—अंशुः, (पु०) १ सूर्य । २

अग्नि ।—आयसं (न०) ईस्पात लोहा ।—

उपायः, (पु०) उग्रसाधन ।—कन्दः, (पु०)

लहसन ।—कर्मन्, (वि०) क्रियाशील ।

स्पर्धामान् ।—दंष्ट्र, (पु०) चीता ।—धारः,

(पु०) तलवार ।—पुष्पं, (न०) लौंग ।—पुष्पा,

(स्त्री०) १ लौंग का पौधा । २ केतकी का पौधा ।

—बुद्धि, (वि०) तेज़ अङ्ग का । चतुर ।—रश्मिः,

(पु०) सूर्य रस (पु०) १ शोरा २ विचैत्रा
सरब पदार्थ — जौह (न०) ईस्पात शूक,
(पु०) जौ ।

तीक्ष्णः (पु०) १ शोरा । २ लालमिर्च । ३
कालीमिर्च । ४ राई ।

तीक्ष्णां (न०) १ लोहा । २ ईस्पात । ३ गर्मी ।
सीतापन । ४ युद्ध । ५ विष । ६ मृत्यु । ७
हथियार । ८ समुद्री निमक । ९ शीघ्रता ।

तीम् (धा० परस्मै०) [तीम्यति] भीगना । नम
होना ।

तीरं (न०) १ तट । किनारा । २ हाँशिया । छोर ।
किनारा ।

तीरः (पु०) १ बाण । २ सीसा । ३ टीन । जस्ता ।
तीरित (वि०) तै किया हुआ । निर्णीत । साची के
अनुसार फैसला किया हुआ ।

तीरितम् (न०) किसी कार्य की समाप्ति या अवसान ।
तीर्ण (वि०) १ पार किया हुआ । गुज़रा हुआ । २
फैला हुआ । बढ़ा हुआ । ३ सब से आगे निकला
हुआ । सर्वोत्तम ।

तीर्थम् (न०) १ रास्ता । मार्ग । घाट । उतारा । २ घाट ।
३ जलस्थान । ४ पवित्रस्थान । ५ द्वारा ।
जरिया । माध्यम । ६ उपाय । ७ पवित्र या
पुण्यप्रद व्यक्ति । योग्य पुरुष । प्रतिष्ठा योग्य
पदार्थ । उपयुक्त पात्र । ८ गुरु । आचार्य ।
७ उद्गम स्थान । १० यज्ञ । ११ सचिव ।
१२ उपदेश । निर्देश । १३ उपयुक्त स्थान
या काल । १४ उपयुक्त या साधारण पद्धति ।
१५ हाथ के कई भाग जो देव और पितृ कार्य के
लिये पवित्र माने जाते हैं । १६ दार्शनिक सिद्धान्त
विशेष । १७ स्त्रियों का रज । १८ ब्राह्मण । १९
अग्नि । — उदकम्, (न०) पवित्र जल । — करः,
(पु०) १ जैनग्रन्थ । २ संन्यासी । ३ नवीन दर्शन-
कार । ४ विष्णु का नाम । — काकः, — ध्वांसः,
वायसः, (पु०) लोलुप । — भूत, (वि०) पवित्र ।
विशुद्ध । — यात्रा, (स्त्री०) पुण्यप्रद स्थानों में
गमन । — राजः, (पु०) प्रयाग का नाम । —
राजिः, — राजी, (स्त्री०) बनारस । काशी ।
— वाकः, (पु०) सिर के बाल । — विधि,

(स्त्री०) तीर्थ में जाकर वहाँ धर्म विशेष करने
की पद्धति । — सेविन् (वि०) तीर्थयात्री ।
(पु०) सारस ।

तीर्थ (न०) संन्यासियों की एक उपाधि ।

तीर्थिकः (पु०) तीर्थयात्री । ब्राह्मण साधु ।

तीवरः (पु०) १ समुद्र । २ शिकारी । ३ राज
पुतिन की वर्गसङ्कर औलाद ।

तीव्र (वि०) १ उग्र । प्रचण्ड । २ गर्म । उष्ण । ३
चमकीला । ४ व्यापक । ५ अनन्त । असीम । ६
भयानक । — आनन्दः, (पु०) शिव जी —
— गति, (वि०) तेज़ । फुर्तीला । — पौरुष,
(न०) १ दुस्साहस पूर्ण वीरता । २ वीरता । —
संवेग, (वि०) १ दृढ़ विचार सम्पन्न । २ अति
प्रचण्ड ।

तीव्रं (न०) १ उष्णता । गर्मी । २ तट । ३ लोहा ।
तु (अन्वया०) १ किन्तु । प्रत्युत । २ और । अब ।
इस सम्बन्ध में । ४ भेदसूचक भी है ।

तुक्कारः } (पु०) विन्ध्याचल वासी जातियों
तुखारः } में से एक जाति के लोगों का नाम ।
तुषारः }
तुंग } (वि०) १ ऊँचा । उन्नत । लंबा । प्रधान । २
तुङ्ग } प्रलंब । ३ मेहरावदार । ४ मुख्य । ५ दृढ़ । —
वीजः, (पु०) पारा । — भद्रः, (पु०)
मदमाता हाथी । — भद्रा, (स्त्री०) एक नदी का
नाम जो कृष्णा नदी में गिरती है । — वेणा,
(स्त्री०) एक नदी का नाम । — शेखरः, (पु०)
पर्वत ।

तुंगः } (पु०) १ ऊँचाई । उठान । २ पर्वत । ३ चोटी ।
तुङ्गः } ४ बुधग्रह । ५ गेंडा । ६ नारियल का वृक्ष ।
तुंगी } (स्त्री०) १ रात्रि । २ हल्दी । — ईशः, (पु०)
तुङ्गी } १ चन्द्रमा । २ सूर्य । ३ शिव । ४ कृष्ण । —
पतिः, (पु०) चन्द्रमा ।

तुच्छ (वि०) १ झाली । रहित । व्यर्थ । हल्का । २
छोटा । थोड़ा । न कुछ । ३ त्यक्त । त्यागा हुआ ।
४ नीच । कमीना । अकिञ्चित्कर । तिरस्करणीय ।
निकम्मा । ५ शरीर । अभागा । दुखिया । — द्रः,
(पु०) एरण्ड वृक्ष । — धान्यः, — धान्यकः,
(पु०) फूस । पुश्ताल ।

तुच्छं (न०) भूखी ।

तुङ्गः (पु०) इन्द्र का वज्र ।
 तुम् (पु०) मूसा । चूहा ।
 तुण (धा० पर०) [तुणति] १ कुकाना । देदा करना ।
 २ धोखा देना । ठगना ।
 तुङ्ग } (न०) १ मुख । चेहरा । चोंच । यूथन
 तुङ्गम् } (शूकर का) । २ हाथी की सूँड़ । ३ औजार
 की नोक ।
 तुङ्गिः } (पु०) १ चेहरा । मुख । २ चोंच । (स्त्री०)
 तुङ्गिः } दुड़ी । नाभि ।
 तुङ्गिन् } (पु०) शिव के वृषभ का नाम ।
 तुङ्गिन् } (वि०) १ बातूनी । गप्पी । २ थोदिल । ३
 तुङ्गल } कटुभाषी ।
 तुङ्ग (पु०) १ अग्नि । २ पत्थर ।—अञ्जनं,
 (न०) आँख में लगाने की दवाई विशेष ।
 तुङ्ग (न०) तुलिया ।
 तुङ्गा (स्त्री०) १ छोटी इलायची । २ नील का पौधा ।
 तु (धा० परस्मै०) [तुदति, तुन्न] १ मारना ।
 धायल करना । २ चुभोना । गड़ाना । ३ पीड़ित
 करना । सताना । दुःख देना ।
 तु (न०) पेट । थोंद ।—कूपिका,—कूपी,
 तुन्दम् } (स्त्री०) नाभि ।—परिमार्ज,—परिमृज्,
 —मृज, (वि०) काहिल । सुस्त । दीर्घसूत्री ।
 तुन्दवत् } (वि०) मौटा । थुंड़ीला ।
 तुन्दिक, तुन्दिक } (वि०) १ थोड़ीला । बड़े पेट
 तुदिन्, तुन्दिन् } का । मटका जैसे पेट वाला ।
 तुदिभ, तुन्दिभ } २ अत्यन्त मौटा । ३ भरा
 तुदिल, तुन्दिल } हुआ या लदा हुआ ।
 तुन्न (वि०) १ चोटिल । टकराया हुआ । धायल ।
 २ सताया हुआ । चाया, (पु०) दर्जी ।
 तुम् (धा० परस्मै०) [तुभ्यति, तुम्नाति] चोटिल
 करना ।
 तुमुल (वि०) १ शोर गुल मचाने वाला । २ भयानक ।
 क्रोधी । ३ उद्विग्न । व्याकुल । ४ परेशान ।
 घबड़ाया हुआ । (पु० न०) १ कोलाहल ।
 शोरगुल । २ अस्तव्यस्त द्रन्धयुद्ध ।
 तुम्बः } (पु०) तूबी ।
 तुम्बः }

तुम्बरः } (पु०) एक गन्धर्व का नाम ।
 तुम्बरः }
 तुम्बरं } (न०) वाद्ययंत्र विशेष । बाजा ।
 तुम्बरम् }
 तुम्बा } (स्त्री०) १ तूबा । २ दुधार गौ ।
 तुम्बा }
 तुम्बिः, तुम्बिः } (स्त्री०) तूबी । तोमड़ी ।
 तुम्बी, तुम्बी }
 तुम्बुः, तुम्बुः } (पु०) एक गन्धर्व का नाम ।
 तुम्बरः, तुम्बरः }
 तुरगः (पु०) १ घोड़ा । २ मन । विचार ।—
 आरोहः, (पु०) घुड़सवार ।—उपचारकः,
 (पु०) साईस ।—प्रियः, (पु०)—प्रियं,
 (न०) यव । जौ । ब्रह्मचर्य, (न०) स्त्री
 के अभाव में विवश हो ब्रह्मचर्य धारण करना ।
 तुरगिन् (पु०) घुड़सवार ।
 तुरगी (स्त्री०) घोड़ी ।
 तुरंगः } (पु०) १ घोड़ा ।—अरिः, (पु०) मैसा ।
 तुरङ्गः } —द्विषणी, (स्त्री०) मैस ।—प्रियः,—प्रियं,
 (न०) यव । जौ ।—मेधः, (पु०) अश्वमेध
 यज्ञ ।—यायिन्,—सादिन्, (पु०) घुड़सवार ।
 —वक्त्रः,—वदनः, (पु०) किन्नर ।—शाला,
 (स्त्री०)—स्थानम्, (न०) अस्तबल । घुड़-
 साल ।—स्कन्धः, (पु०) रिसाला । घुड़सवारों
 की टोली ।

तुरंगं } (न०) मन । विचार ।
 तुरङ्गम् }
 तुरंगमः } (पु०) घोड़ा ।
 तुरङ्गमः }
 तुरंगी } (स्त्री०) घोड़ी ।
 तुरङ्गी }
 तुरायणम् (न०) १ असंग । अनासक्ति । २ यज्ञ
 विशेष ।
 तुरासाह (पु०) (कर्ता एकवचन तुराषाट् या
 तुराषाड्] इन्द्र का नाम ।
 तुरी (स्त्री०) १ जुलाहों का एक प्रकार का औजार ।
 ढरकी । नारी । माखो । ३ चित्रकार की कूची ।
 तुरीय (वि०) चौथा ।—वर्णः, (पु०) रङ्ग ।
 तुरीयं (न०) चौथाई । चौथा हिस्सा । चौथा ।

तुरुष्क (पु०) तुरक लोग

तुर्य (वि०) चौथा ।

तुर्यम् (न०) चौथाई । चौथा हिस्सा ।

तुल (धा० पर०) [तालति, तोलयति—तोलयते, तोलयति—तुलयते भी] १ तोलना । २ सोचना विचारना । ३ उठाना । ऊँचा करना । ४ पकड़ना । पकड़े रहना । ५ तुलना करना । ६ बराबरी करना । ७ तिरस्कार करना । ८ सन्देह करना ९ परीक्षा लेना ।

तुलनं (न०) १ तौल । २ उठान । तुलना ।

तुलना (स्त्री०) १ समानता । २ मौत । ३ तलमीना । ४ उठाना । ऊपर करना । परीक्षा करना ।

तुलसी (स्त्री०) वृक्ष विशेष जो विष्णु को परम प्रिय है ।

तुला (स्त्री०) १ तराजू । तल्लरी । २ नाप । बॉट । —कूटः, (पु०) पासंगी । तराजू । —कोटिः, —कोटी, (स्त्री०) तुर । —कोशः, —कोषः, (पु०) परीक्षा विशेष । —दानं, (न०) अपने शरीर के वजन के बराबर सुवर्ण आदि वस्तुएँ तौल कर उन्हें दान कर देना तुलादान कहलाता है । —धटः, (पु०) बटखरा । —धरः, (पु०) १ व्यापारी । सौदागर । २ तुलाराशि । —धारः, (पु०) व्यवसायी । सौदागर । —परीक्षा, (स्त्री०) तुला द्वारा परीक्षा का विधान विशेष । —पुरुषः, (पु०) सोलह प्रकार के महादानों में से एक दान । —प्रग्रहः, प्रम्राहः, (पु०) तराजू की डोरी या डंडी । —यानं, (न०) —यष्टिः, (पु०) तराजू की डंडी । —वीजं, (न०) बुँबची के दाने । —सूत्रं, (न०) तराजू की डोरी ।

तुलित (व० कृ०) १ तोला हुआ । २ मिलान किया हुआ ।

तुल्य (वि०) १ एक ही प्रकार का या एक ही श्रेणी का । बराबर का । समान । सदृश । २ उपयुक्त । एक सा । अभिन्न । —दर्शन, (वि०) समान दृष्टि से देखना । —यानं, (न०) एक साथ पीना । —रूप, (वि०) समान । सदृश ।

तुवर (वि०) १ कसैले स्वाद का । २ दाढ़ी रहित ।

तुष (धा० परस्मै०) [तुष्यति तुष] प्रसन्न होना । सन्तुष्ट होना । सन्तोष करना ।

तुषः (पु०) भूसी । —अग्निः, —अनलः, (पु०) भूसी या चोकर की आग । —अश्विः, (न०) —उदकं, (न०) खट्टा जवागू । खट्टा चाँवल का मॉद । —ग्रहः, —सारः, (पु०) अग्नि ।

तुषार (वि०) ठंडा । कुहरे का । ओस का । —अग्निः, —गिरिः, —पर्वतः, (पु०) हिमालय पर्वत । —कणः, (पु०) कोहरा या पाले की बूंद । ओसकण । —कालः, (पु०) जाड़े का मौसम । —किरणः, —रश्मिः, (पु०) चन्द्रमा । —गौर, (वि०) वर्ष की तरह सफेद । वर्ष के कारण सफेद । (पु०) १ कपूर ।

तुषारः (पु०) १ कोहरा । सर्दी । २ वर्ष । ३ ओस । ४ पाला । बौझार ।

तुषिताः (बहु० पु०) उपदेवता जिनकी संख्या १२ या ३६ बता लायी जाती है ।

तुष्टः (व० कृ०) १ प्रसन्न । सन्तुष्ट । २ जो प्राप्त हो उससे सन्तुष्ट और अप्राप्त प्रत्येक वस्तु से विरक्त ।

तुष्टिः (स्त्री०) सन्तोष । प्रसन्नता । आनन्द ।

तुष्टुः (पु०) कान में पहिने का रत्न ।

तुहिन (वि०) शीत । अकड़न । फेंठन । (शीत के कारण) —अंशुः, (पु०) —करः, —किरणः, —द्युतिः, —रश्मिः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर । —अचलः, (पु०) —अग्निः, (पु०) —शैलः, (पु०) हिमालय पर्वत । —कणः, (पु०) ओस की बूंद । —शर्करा, (स्त्री०) वर्ष ।

तूण (धा० उभय०) [तूणयति, तूणयते] सकोड़ना । [तूणयते] भरना । परिपूर्ण करना ।

तूणः (पु०) तूणीर । तरकस । —धारः, (पु०) धनुषधारी ।

तूणी } (स्त्री०) तरकस ।
तूणीर }

तूबरः (पु०) १ दाढ़ी रहित पुरुष । २ बिना सींग का बैल । ३ कसैला जायका । ४ हिजड़ा ।

तूर (धा० आत्म०) [तूर्यते, तूर्ण] १ तेज़ी से जाना । जल्दी करना । २ चोटिल करना । बध करना ।

तूरं (न०) तुरही । एक प्रकार का बाजा ।

तृण (वि०) १ तृण । वेगवान् २ खरायाला
शीघ्रगामी फुर्तीला ।

तृण (अन्यथा०) तेज़ी से । फुर्ती से । शीघ्रता से ।

तृणः (पु०) शीघ्रता । फुर्ती ।

तृण्य (न०) } वाच्यंत्र विशेष ।—अधोघः, (पु०)

तृण्यः (पु०) } औजारों का समूह ।

तूल (न०) } १ रुई । २ अन्तरिक्ष । आकाश । वायु-

तूलः (पु०) } मण्डल ।—कार्मुकं, (न०) धनुस्,

(न०) रुई धुनने की कमान । धनुही ।—पिबुः,

(पु०) रुई ।—शर्करा, (स्त्री०) १ बिनौला ।

२ घास का गद्दा । ३ शहनूत ।

तूलकं (न०) रुई ।

तूला (स्त्री०) १ कपास का पेड़ । २ दिया की
बत्ती ।

तूली (स्त्री०) १ रुई । २ बत्ती । ३ जुलाहे की
कूची । ४ चित्तरे की कूची । ५ नील का पौधा ।

तूलिः (स्त्री०) चित्तरे की कूची ।

तूलिका (स्त्री०) १ चित्तरे की कूची । पैसिल ।

२ सूती बत्ती । ३ रुई भरा गद्दा । ४ बर्सा । छेद

करने का औज़ार ।

तूष्णीक (वि०) खामोश । चुपचाप ।

तूष्णीं (अन्यथा०) गुप्त रूप से । चुपचाप । बिना

बोले या शोरगुल किये ।—भावः, (पु०)

खामोशी । सूक्त्व ।—शील, (वि०) खामोश ।

तूस्तं (न०) १ जटा । २ धूल । ३ पाप । ४ परि-

माण । ज़रा ।

तृह् (धा० परस्मै०) [तृहति] वध करना । बाधल
करना ।

तृणं (न०) १ घास । २ नरकुल । सरपत । ३ घास

फूसकी बनी कोई चीज़ ।—अग्निः, (पु०)

१ फूस या भूसी की आग । २ आग जो जल्द बुझ

जाय ।—अञ्जनः, (पु०) गिरगट ।—

अटवी (स्त्री०) वन जिसमें घास बहुत हो ।—

आवर्तः, (पु०) १ हवा का बवंडर । २ एक

दैत्य का नाम जिसे श्री कृष्ण ने मारा था ।—

असृजं, (न०)—कुङ्कुमम्, (न०)—गौरं,

(न०) भिन्न भिन्न प्रकार के सुगन्ध-द्रव्य ।—

इन्द्रः, (पु०) खजूर का पेड़ ।—उल्का, (स्त्री०)

घास की बनी मसाल । फूस का लुआन अध

जला फूस का मूत्र ।—घाकस्, (न०) फूस की

झोपड़ी ।—काण्डः, (पु०)—काण्डम्, (न०) घास

का ढेर ।—कुटी, (स्त्री०)—कुटीरकं (न०) घास

फूस की कुटिया ।—केतः, (पु०) खजूर का

पेड़ ।—गोघ्रा, (स्त्री०) एक प्रकार का गिरगट ।

गोह ।—ग्राहिन्, (पु०) नीलम । पुखराज ।—

चरः, (पु०) गोमेद मखि ।—जलायुका,—

जलुका, (स्त्री०) झोँझा । कमला । कीड़ा ।—

द्रुमः, (पु०) १ नारियल । २ ताल । ३ खजूर ।

४ केतक वृक्ष । ५ छुहारे का वृक्ष ।—धान्यं,

(न०) विना जोती बोई भूमि में उत्पन्न धान्य ।

नीवार । धान्य विशेष ।—ध्वजः, (पु०) १ ताल

वृक्ष । २ बाँस ।—पीडं, (न०) हाथापाई ।—

पूली, (स्त्री०) चटाई । नरकुल की बनी

बैठकी ।—प्रायः (वि०) निकम्मा । तुच्छ ।—

विन्दुः, (पु०) एक ऋषि का नाम ।—मणिः,

(पु०) रत्न विशेष ।—राजः, (पु०) १ नारियल

का पेड़ । २ बाँस । ३ ईख । ४ तालवृक्ष ।—

वृक्षः, (पु०) खजूर का पेड़ । छुहारे का पेड़ ।

नारियल का पेड़ ।—शीतं, (न०) एक प्रकार की

महकदार घास । सारा, (स्त्री०) केले का

पेड़ ।—सिंहः, (पु०) कुल्हाड़ी ।—हर्म्यः,

(पु०) फूस का झोपड़ा ।

तृणया (स्त्री०) घास या फूस का ढेर ।

तृतीय (वि०) तीसरा ।—प्रकृतिः, (पु० या स्त्री०)

हिजड़ा । नपुंसक ।

तृतीयं (न०) तिहाई । तीसरा हिस्सा ।

तृतीयक (वि०) १ तिजारी । तीसरे दिन आने

वाला ज्वर ।

तृतीया (स्त्री०) १ तिथि तीज । २ कारक विशेष ।

—कृत, (वि०) तीन बार जोता हुआ खेत ।—

प्रकृतिः, (पु० स्त्री०) हिजड़ा । नपुंसक ।

तृतीयिन् (वि०) तीसरा भाग पाने का अधिकारी ।

तृद् (धा० परस्मै०) [तर्दति, तृणत्ति, तृप्ते, तृण्य]

१ चीरना । फाड़ना । छेद करना । २ मार डालना

नष्ट कर डालना । उजाड़ देना । ३ छोड़ देना ।

मुक्त कर देना । ४ तिरस्कार करना ।

तृप् (धा० परस्मै०) [तृप्यति, तृप्नोति तृपति
तृप्त] १ सन्तुष्ट होना २ प्रसन्न करना ।
तृप्त (वि०) सन्तुष्ट । अफरा हुआ । अघाया हुआ ।
तृप्ति (स्त्री०) १ सन्तोष । २ कृपाई । अघाई । अनिच्छा
३ प्रसन्नता । आरुह्य ।
तृष् (धा० पर०) [तृप्यति, तृपित] १ प्यासा
होना । २ चाटना । ३ उत्सुक होना । लालच करना ।
तृष् (स्त्री०) [कर्ता एकवचन ।—तृट्, तृड्]
१ प्यास । २ उत्कट अभिलाषा । उत्सुकता ।
तृषा (स्त्री०) प्यास ।—घात, (वि०) १ प्यासा ।
—हृ, (न०) पानी ।
तृपित (व० कृ०) १ प्यासा । २ लोलुप । लालच का लोभी ।
तृष्णाज् (वि०) १ लालची । लोभी । २ प्यास लगाने
वाला ।
तृष्णा (स्त्री०) १ प्यास । २ अभिलाषा । लालच ।
—ज्ञयः (पु०) मन की शान्ति । सन्तोष ।
तृष्णालु (वि०) १ बहुत प्यासा । २ बड़ा लालची ।
तृह् (धा० परस्मै०) [तृणेडि, तर्हयति, तर्हयते,
तृढ] धातु करना । मार डालना । टकराना ।
तृ (धा० परस्मै०) [तरति, तीर्ण] १ पार होना २
(मार्ग) तै करना । ३ तैरना । उतराना । ४
(कठिनाई को) पार करना । बश में करना । ५
सम्पूर्णतः अपने अधिकार में कर लेना । ६ पूरा
करना । समाप्त करना । ७ छुटकारा पाना । छूट
जाना ।
तेजनम् (न०) १ बाँस । २ पैनाना । तेज करना । ३
जलाना । ४ चमकाना । ४ पालिश करना । ६
नरकुल । ७ बाण की नौक । ८ हथियार की धार ।
तेजलः (पु०) एक प्रकार का तीतर ।
तेजस् (न०) १ तेज़ी । २ (चाकू की) तेज़धार । ३
आग की शिखा । ४ गर्मी । भभक । धधक ।
चकाचौंध । ५ चमक । आव । ६ पांचतत्वों ।
में से एक । ७ सौन्दर्य । ८ पराक्रम । ९ विक्रम ।
१० स्फूर्ति । ११ चरित्रबल । १२ सर्वोत्कृष्ट
आभा । १३ वीर्य । मुख्य लक्षण । १४ सार । १५
आध्यात्मिक शक्ति । १६ अग्नि । ११ गूदा ।
मिंगी । १८ पित्त । १९ घोड़े का वेग । २० ताज़ा
मक्खन । २१ सुवर्ण । २२ ब्रह्म । २३ सत्त्वगुण ।

(साख्यमतानुसार) । कर (वि०) १ चमक
पैदा करने वाला २ बलप्रद भङ्ग (पु०)
अपमान । माननाशक । अनुत्साह ।—भगडलं,
(न०) प्रकाश का वेग ।—मूर्तिः, (पु०) सूर्य ।
—रूपः, (पु०) ब्रह्म । परमात्मा ।
तेजस्वत् (वि०) १ चमकीला । २ तेज । तीक्ष्ण ।
तेजोवत् (वि०) ३ वीर । ४ क्रियाशील ।
तेजस्विन् (वि०) [स्त्री०—तेजस्विनी] १ चमकीला ।
चमकदार । २ शक्तिमान । वीर । दृढ़ । ३ कुलीन ।
४ प्रसिद्ध । ५ प्रचण्ड । ६ क्रोधी । ७ आईन के
अनुसार ।
तेजित् (वि०) १ पैनाया हुआ । २ उत्तेजित । भड़-
काया हुआ ।
तेजीयस् (वि०) तेज वाला ।
तेजोमय (वि०) १ महत्त्वपूर्ण । २ चमकीला । ज्योति-
र्मय । प्रकाशमय । प्रधान तेज वाला ।
तेजोमात्रा (स्त्री०) सत्त्वगुण का अंश । इन्द्रिय
समूह ।
तेप् (क्रि०) काँपना । गिरना ।
तेमः (पु०) आद्री भाव । गीला होना ।
तेमनम् (न०) १ गीला होना । भीगना । २ गीला । ३
चटनी । मसाला ।
तेवनं (न०) १ खेल । आमोद प्रमोद । २ क्रीडास्थल ।
बिहार भूमि ।
तैजस (वि०) [स्त्री०—तैजसी] १ चमकीला । २
ज्योतिर्मय । तेजोमय । ३ धातु का । ४ विषयी ।
५ विक्रमी । क्रियात्मक । ६ शक्तिमान । बलिष्ठ ।
—आवर्तनी, (स्त्री०) बड़िया । कुल्हिया ।
तैजसं (न०) वी ।
तैतिच् (वि०) [स्त्री०—तैतिची] सहनशील ।
तैतिरः (पु०) तीतर । बटेर ।
तैतिलः (पु०) १ गेंडा । २ देवता ।
तैत्तिरः (पु०) १ तीतर । २ गेंडा ।
तैत्तिरं (न०) तीतरों का समूह ।
तैत्तिरीय (पु० बहु०) यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा
वाले ।
तैत्तिरीयः (पु०) कृष्ण यजुर्वेद ।
तैमिरः (पु०) आँख के धुंधलापने का रोग ।

तैथिक (वि०) पवित्र शुद्ध ।

तैथिक (न०) पवित्रजल । किसी पुराय नदी या सरोवर का जल ।

तैथिकः (पु०) १ संन्यासी । साधु २ नवीन दार्शनिक सिद्धान्त का आविष्कार करने वाला । नवीन मत या सम्प्रदाय का प्रवर्तक ।

तैल (न०) १ तेल । २ धूप । जोवान ।—अटो, (स्त्री०) बँर्या ।—अभ्यङ्गः, (पु०) शरीर में तेल की मालिश ।—कल्कजः, (पु०) खली ।—पर्णिका, —पर्णी, (स्त्री०) १ चन्दन २ धूप । ३ तारपीन ।—पिञ्जः (पु०) सफेद तिल ।—पिपीञ्जिका, (स्त्री०) छोटी लाल चीदी ।—फलः, (पु०) इंगुदी वृक्ष ।—भाविनी, (स्त्री०) लमेखी ।—माली, (स्त्री०) दीपक की बत्ती ।—यंत्र, (न०) कोल्हू ।—स्फटिकः, (पु०) रत्न विशेष ।

तैलङ्गः (पु०) आधुनिक कर्नाटक प्रदेश ।

तैलङ्गाः (पु० बहु०) कर्नाटक प्रदेश के अधिवासी ।

तैलिकः } (पु०) तेली ।

तैलिन् } (पु०) तेली ।

तैलिनी (स्त्री०) बत्ती ।

तैलीनं (न०) तिल का खेत ।

तैषः (पु०) पौष मास ।

तोकं (न०) औलाद । बच्चा ।

तोककः (पु०) चातक पक्षी ।

तोडनम् (न०) १ चीरना । विभाजित करना । २ फाटना । ३ चोटिल करना ।

तोदत्रं (न०) अङ्गुश या कीलदार चाबुक ।

तोदः (पु०) पीड़ा । सन्ताप ।

तोदनं (न०) १ पीड़ा । कष्ट । २ अङ्गुश । ३ मुख । मुख ।

तोमरं (न०) १ लोहे का बंडा । २ बर्छी । साँव ।

तोमरः (पु०) —धरः, (पु०) अग्निदेव ।

तोयं (न०) पानी ।—अधिवासिनी, (स्त्री०) पुष्प विशेष ।—आधारः, —आशयः, (पु०) सरोवर ।

कूप । जलाशय ।—आलयः, (पु०) समुद्र ।—

ईशः, (पु०) वरुण की उपाधि ।—ईशं, (न०)

पूर्वायादानचक्र ।—उत्सर्गः, (पु०) जल-वृष्टि ।—

कमल (न०) १ शरीर के भिन्न भिन्न अवयवों के

जल से भाजित करना । २ जलतर्पण । कुच्छुः,

(पु०)—कुच्छुः, (न०) वस्तुचर्या विशेष

जिसमें केवल जल पीकर ही निर्दिष्ट काल तक

रहना पड़ता है ।—क्रीडा (स्त्री०) जलविहार ।

—गर्भः, (पु०) नारियल ।—चरः, (पु०)

जलजीव ।—डिम्बः, —डिम्भः, (पु०) ओला ।

—दः, (पु०) बाढ़ ।—धरः, (पु०) बाढ़ ।

—धिः, —निधिः, (पु०) समुद्र ।—नीवी,

(स्त्री०) पृथिवी ।—प्रसादनम्, (न०) नारियल

को साफ करना ।—मलं, (न०) समुद्रफेन ।—

मुचः, (पु०) बाढ़ ।—यंत्रं, (न०) १ जलघड़ी ।

२ फव्वारा । राजः, —राशिः, (पु०) समुद्र ।

—वेला, (स्त्री०) समुद्रतट ।—व्यतिकरः,

(पु०) (नदियों का) सङ्गम ।—शुक्तिका,

(स्त्री०) सीपी । सर्पिका, (स्त्री०)—सूचकः,

(पु०) मँडक ।

तोरणं (न०) १ मेहराबदार द्वार । २ बरसाती ।

तोरणः (पु०) १ काटक । ३ अस्थायी रूप से बनाया

हुआ फाटक । ४ मेहराबदार स्तानागार के समीप

का चबूतरा । (न०) गर्दन । गला ।

तोलं (न०) १ तौल जो तराजू में तौल कर

तोलाः (पु०) १ जानी गयी हो । २ १२ मासे की

तौल । एक तोला ।

तोषः (पु०) सन्तोष । प्रसन्नता ।

तोषणं (न०) सन्तोष । प्रसन्नता ।

तोषलं (न०) मूसल ।

तौलिकः (पु०) तुलाराशि ।

तौलिकं (न०) मोती ।

तौलिकः (पु०) साँपी जिसमें से मोती निकलता है ।

तौर्यं (न०) तुरही का शब्द ।—त्रिकं, (न०) नृत्य

और सङ्गीत । गान, वाद्य और नृत्य तीनों की

संगति ।

तौलं (न०) तराजू ।

तौलिकः } (पु०) चित्रकार । चित्तेरा ।

तौलिककः } (पु०) चित्रकार । चित्तेरा ।

त्यक्त (व० कृ०) १ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । २

त्यागी ।—अग्निः, (पु०) ब्राह्मण जिसने अग्नि-

सं० श० कौ०—४६

होत्र करना त्याग दिया हो जीवित प्राण
(वि०) किसी भी प्रकार की ज ज्ञा में अपने को
डालने के लिये उद्यत प्राण त्यागने को तैयार ।—
लज्जा (वि०) बेहया । बेशर्म ।

त्यज् (धा० परस्मै०) (न्यजति, त्यक्त) १ त्यागना ।
छोड़ना । अलहदा हो जाना । २ बिदा करना ।
छोड़ देना । निकाल देना । ३ विरक्त होना ।
४ बच निकलना । कनियाना । कतरा जाना ।
५ छुटी पाना । पीछा छुड़ाना । ६ एक ओर कर
देना । ७ ध्यान न देना । छोड़ना । जाने देना ।
न बाँटना ।

त्यागः (पु०) १ छोड़ना । अलहदा हो जाना । वियोग ।
२ विराग । ३ भेंट । दान । धर्मादा । ४ उदारता ।
५ पसेव । शरीर का मल ।—युत, —शील,
(वि०) उदार ।

त्यागिन् (वि०) १ त्यागने वाला । छोड़ देने वाला ।
२ दे डालने वाला । दानी । ३ बीर । बहादुर । ४
कर्मानुष्ठान के फल की आशा न रखने वाला ।

अप् (धा० आत्म०) [अपते, अपित] शर्माना ।
लजित होना ।

अपा (स्त्री०) १ लाज । शर्म । सङ्कोच । २ झिनाल
स्त्री । ३ ख्याति । प्रसिद्धि ।—निरस्त, —हीन,
(वि०) निर्लज्ज । बेहया । बेशर्म ।—रगडा,
(स्त्री०) बेरथा । रंडी ।

अपिष्ट (वि०) अत्यन्त सन्तुष्ट । [सन्तुष्ट ।

अपीयस् (वि०) [स्त्री०—अपीयसी] अधिकतर
अपु (न०) टीन । जस्ता ।

अपुलम् }
अपुषम् } (न०) टीन । जस्ता ।
अपुस् }
अपुसम् }

अप्स्यं (न०) माछा या बोला हुआ दही ।

अय (वि० [स्त्री०—अयी] तिहरा । तीन गुना ।
तीन प्रकार के तीन भागों में विभाजित ।

अयं (न०) तिगुना । तीन का समूह ।

अयस् (कर्त्ता० बहु० पु०) तीन ।—अत्वारिंश, (वि०)
तेतालीसवाँ ।—अत्वारिंशत, (वि०) तेतालीस ।
—त्रिंश, (व०) ३३वाँ ।—त्रिंशति, (वि० या स्त्री०)
तेतीस ।—दश, (वि०) १ तेरहवाँ ।—दशन्,

(वि० बहु०) १३ जों । दशति (स्त्री०) तेरस ।

नवति, (स्त्री०) १३ ।—पञ्चाशत्, (स्त्री०)

२३ । त्रेपन ।—विंश, (वि०) २३वाँ ।—

विंशति, (स्त्री०) २३ । तेहस ।—षष्टि, (स्त्री०)

६६ त्रेसठ ।—सप्तति, (स्त्री०) ७७ । तिहत्तर ।

अयी (स्त्री०) १ तीन वेदों का समूह । २ त्रिपङ्का ।

त्रिमूर्ति । त्रिपष्ट । ३ सत्रवा स्त्री जिसका पति

और बाल बच्चे जीवित हो । ४ बुद्धि । प्रतिभा ।

—तनुः, (पु०) १ सूर्य । २ शिव ।—धर्मः,

(पु०) तीनों वेदों में कथित धर्म ।—मुखः,

(पु०) ब्राह्मण ।

अस् (धा० परस्मै०) [असति, अस्पति, अस्त] १

काँपना । थरथराना ।

अस (वि०) चल । जंगम । गतिशील ।—रेणुः,

(पु०) १ सूर्य की किरण में व्याप्त परमाणु का

छड़वाँ अंश । २ सूर्य की स्त्री का नाम ।

अस्तं (न०) १ वन । जंगल । २ जानवर ।

असः (पु०) हृदय ।

असरः (पु०) जुलाहे की ढरकी । नारी । माखा ।

अस्तुर } (वि०) भयविह्वल । डरपोंक । कापने वाला ।

अस्तु } (वि०) भयविह्वल । डरपोंक । कापने वाला ।

अस्त (व० कृ०) १ डरा हुआ । भयभीत । डरपोंक ।

भयविह्वल । २ जलदी । त्वरा ।

आण (व० कृ०) संरक्षित । रचा किया हुआ । बचाया

हुआ ।

आणं (न०) १ रक्षा । बचाव । २ पनाह । सहायता ।

आत (व० कृ०) सुरक्षित । रक्षित ।

आपुष (वि०) [स्त्री०—आपुषी] टीन का बना हुआ ।

आस (वि०) १ गतिशील । २ भय ।

आसः (पु०) १ डर । भय । शङ्का । २ रत्न का ऐव ।

आसन (वि०) भयप्रद । भयावह ।

आसनम् (न०) भयभीत करने की क्रिया ।

आसित (वि०) डरा हुआ । भयभीत ।

त्रि संख्यावाची विशेषण [इसके रूप केवल बहुवचन

में होते हैं । कर्त्ता पु०—अयः, (स्त्री०) अयः,

(न०) अयि,] तीन ।—अंशः, (पु०)

१ तिहरा हिस्सा । तिगुना हिस्सा । २ तिहाई

हिस्सा ।—अक्षः, अक्षकः, (पु०) शिव जी ।

अक्षरः, (पु०) १ आकार । प्रत्यय । २ घटक । स्त्री पुरुष की जोड़ी मिलाने वाला ।—
अङ्गुष्ठम्, —अङ्गुष्ठः, (न०) १ बहंगा । कामर ।
२ एक प्रकार का सुरमा या अञ्जन ।—अञ्जलि,
(न०) —अञ्जलि, (स्त्री०) तीन अंजुली ।—
अधिष्ठानः, (पु०) जीवात्मा ।—अध्वगा, —
मार्गगा, —वर्तगा, (स्त्री०) गङ्गा जी की
उपाधियाँ ।—अम्बकः, (पु०) तीन नेत्रों वाला
अर्थात् शिव जी ।—अम्बिका, (स्त्री०) पार्वती
जी ।—अब्द, (वि०) तीन साल का ।—अब्द,
(न०) तीन वर्षों का समूह ।—अशीत, (वि०)
८३ वर्ष ।—अष्टनः, (वि०) चौबीस ।—अश्व
—अश्व, (वि०) तिकोना ।—अश्व —अश्व,
अश्व, (न०) त्रिकोण ।—अहः, (पु०) तीन दिवस
का काल ।—आहितः, (पु०) तीन दिन में
पूरा हुआ या तीन दिन में उत्पन्न हुआ । तिजारी ।
—अर्च, (पु०) (तुम्हें भी) (न०) तीन
श्रुचाओं की समष्टि ।—ककुद, (पु०) १
त्रिकूटाक्ष का नाम । २ विष्णु या कृष्ण ।—
कर्मन्, (पु०) ब्राह्मण के तीन मुख्य कर्तव्य ।
अर्थात् यज्ञ करना, वेदों का पढ़ना और दान देना ।
(पु०) इन तीन कर्मों को करने वाला ब्राह्मण ।
—कायः, (पु०) बुद्ध का नाम ।—कालं,
(न०) तीनों काल अर्थात् भूत, भविष्यत् और
वर्तमान । या प्रातः, मध्याह्न और सायं ।—कूटः,
(पु०) एक पर्वत का नाम जो लंका में है और
जिसकी चोटी पर लंका नगरी बसी हुई थी ।—
कूर्चकं, (न०) त्रिफला चाकू ।—काण, (वि०)
तिकोना ।—काणः, (पु०) १
त्रिकोण । २ योनि । भग ।—गणः, (पु०)
धर्म अर्थ और काम । गत, (वि०) १
तिहरा । २ तीन दिन में किया हुआ ।—गर्ताः,
(बहु०) १ देश विशेष, पंजाब का आधुनिक
जालंधर नगर । इस देश के शासक अथवा अधिवासी ।
—गर्ता, (स्त्री०) छिनाल औरत ।—गुण, (वि०) १
बेरों वाला । २ तिवारा कहा हुआ । तिवारा ।
तिगुना । ३ तीन गुणों वाला अर्थात् सत्व, रजस्
और तमस् गुणों वाला ।—गुणा, (स्त्री०) १

माया । २ दुर्गा ।—चलुस्, (पु०) शिव ।
—चतुर, (वि०) (बहु०) तीन या चार ।—
चत्वारिंश, (वि०) ४३ वर्ष ।—चत्वारिंशत्,
(स्त्री०) ४३ ।—जगत्, (न०) —जगती,
(न०) १ त्रिलोक । जमीन, आस्मान और
पाताल । २ आकाश, स्वर्ग और भूलोक ।—जटः,
(पु०) शिव जी का नाम ।—जटा, (स्त्री०)
अशोक बाटिका में सीता जी के साथ रहने वाली
राक्षसियों में से एक राक्षसी का नाम ।—णता,
(स्त्री०) वधुप ।—णव —णवन्, (वि०
बहु०) तीन बार । २ अर्थात् २७ ।—तत्तं, —
तत्ती, (पु०) तीन बड़ियों का समुदाय ।—
दण्डम्, (न०) संन्यासियों का दण्ड विशेष ।
—दण्डिन्, (पु०) १ तीन दण्डों को बाँध कर
उसे दहिने हाथ में धारण करने वाले श्रीवैष्णव
संन्यासी । २ वह जिसने अपने मन, वाणी और
शरीर को अपने वश में कर लिया हो ।

वाग्दण्डोऽथ नमोदण्डः कायदण्डस्तथैव च ।
यस्मैते निहिता बुद्धी विदग्धीति स उच्यते ॥

—मनुस्मृति ।

—दशाः, (बहु०) १ तीस । २ तेत्तीस देवता ।
दशः, (पु०) शिव ।—दोषं, (न०) बात,
पित्त और कफ-इन तीनों का व्यतिक्रम ।—धारा,
(स्त्री०) गंगा ।—णयनः, (जयनः) —नेत्रः,
—लोचनः, (पु०) शिव जी ।—नवत, (वि०)
४३ वर्ष । तिरानचेष्टा ।—पञ्च, (वि०) पन्द्रह ।—
पंचाश, (वि०) ४३ वर्ष ।—पंचाशत्, (स्त्री०)
४३ ।—पटुः, (पु०) काँच । शीशा ।—
पत्ताकः, (पु०) तीन उंगली उठाये हुए पैला
हुआ हाथ । २ माथे का ऊर्ध्वपुण्ड्र । तिलक ।—
पत्रकं, (न०) पलाश वृक्ष ।—पथं, (न०)
१ तीन मार्गों का समूह । २ भूमि, स्वर्ग, आकाश
या आकाश, भूमि पाताल । ३ तिराहा ।—
पथगा, (स्त्री०) गङ्गा ।—पदं, —पदिका,
(स्त्री०) तिपाई ।—पदी, (स्त्री०) १ हाथी का
जरेबंद । २ गायत्री छन्द । ३ तिपाई । गोधा-
पद्मी नाम का पौधा ।—पर्णः, (पु०) किशुक
वृक्ष ।—पाद, (वि०) १ तीन पैरों वाला ।

२ तीन हिस्सों वाला । ३ तीन चौथाई वाला ।
 ४ विष्णु । —पुट, (वि०) तिकौना । —पुटः,
 (वि०) तिकौना । —पुटः, (पु०) १ बाण ।
 २ हथेली । ३ एक हाथ या आधा गज । ४ नदी-
 तट या समुद्रतट । —पुटकः, (पु०) त्रिकोण ।
 —पुटा, (स्त्री०) दुर्गा का नाम । —पुण्ड्रम्,—
 पुण्ड्रकम्, (न०) माथे पर का तीन आड़ी
 रेखाओं वाला टीका । —पुरं, (न०) तीन नगरों
 का समूह । पृथिवी, अन्तरिक्ष और आकाश में
 चाँदी, सोने और लोहे की तीन पुरियाँ, मयदानव
 ने राक्षसों के लिये बनायी थीं, जिनको देवताओं
 की प्रार्थना स्वीकार कर, शिव जी ने नष्ट कर डाला
 था । —पुरः, (पु०) एक दानव का नाम जो
 इन नगरों का अधिपति था । —पुरान्तकः,—
 अरिः,—घ्नः,—दहनः,—द्विष्, (पु०)—हरः,
 (पु०) महादेव जी के नामान्तर । —पुरी, (स्त्री०)
 १ जबलपुर के पास का एक नगर । २ एक प्रदेश का
 नाम । —पौरुष, (वि०) तीन पीढ़ी तक का ।
 —प्रसूतः, (पु०) मदमाता हाथी । —फला,
 (स्त्री०) हर । बहेरा, आँख । —बलिः,—
 बली,—बलिः,—बली, (स्त्री०) नाभि के
 ऊपर तीन सिमिटें । ये स्त्री के सौन्दर्य का चिन्ह
 मानी गयी हैं । —भद्रं, (न०) स्त्रीप्रसङ्ग । स्त्री-
 मैथुन । —भुजं, (न०) त्रिकोण । —भुवनं,
 (न०) तीनलोक । —भूमः, (पु०) तीन
 खना महल । —मार्गा, (स्त्री०) श्रीगंगा जी ।
 —मुकुटः, (पु०) त्रिकूटाचल । —मुखः,
 (पु०) बुध देव की उपाधि । —मूर्ति, (पु०)
 ब्रह्मा, विष्णु और महादेव जी की मूर्ति । यष्टिः,
 (पु०) तिलकाहार । —यामा, (स्त्री०) तीन
 पहर की । —यानिः, (पु०) मुकदमा । अभि-
 योग । मुकदमा दायर करने के साधरणतः तीन
 कारण होते हैं । यथा—क्रोध, लोभ और बुद्धि
 विपर्यय । —रात्रं, (न०) तीन रात की अवधि ।
 रेखः, (पु०) शङ्ख । —लिङ्ग, (वि०) तीन
 लिङ्गों वाला अर्थात् विशेषण । —लिङ्गः, (पु०)
 तैलङ्ग देश । —लोकं, (न०) तीन लोक । —
 लोकेशः, (पु०) सूर्य । —लोकनाथः, (पु०)

१ इन्द्र । २ विष्णु । ३ शिव । —वर्गः, (पु०) १ धर्म
 और काम । २ ज्ञय, स्थान और वृद्धि । —वर्णकं,
 ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य । —चारं, (अध्यया०)
 तिवारा । तीन मर्तवा । —विक्रमः, (पु०)
 वामनावतार । —विद्यः, (पु०) तीनों वेदों का
 जानने वाला । —विध, (वि०) तीन प्रकार का ।
 त्रिगुना । —विष्टपं,—पिष्टपं, (पु०) स्वर्ग । —
 वेणिः,—वेणी, (स्त्री०) प्रयाग का वह स्थान जहाँ
 गङ्गा, सरस्वती और यमुना का सङ्गम है । —वेदः,
 (पु०) तीनों वेदों को जानने वाला ब्राह्मण । —
 शङ्खः, (पु०) १ सूर्यवंशी एक राजा का नाम ।
 यह हरिश्चन्द्र राजा का पिता और अयोध्या का
 राजा था । २ चातक पक्षी । ३ पतंगा । ४ बिस्ली ।
 ५ जुगन् । खद्योत । —शङ्खजः, (पु०) हरि-
 श्चन्द्र राजा । —शङ्खयाजिनः, (पु०) विश्वा-
 मित्र । —शत, (वि०) तीन सौ । —शतम्,
 (न०) १. १०३ । २ तीन सौ । —शिखं, (न०)
 तीन कलंगी का मुकुट । —शिरस्, (पु०)
 राक्षस जिसे श्रीरामचन्द्र जी ने मारा था । —शूलं,
 अस्त्र विशेष । —शूलद्यङ्गः,—शूलधारिन्,
 (पु०) शिव की उपाधि । —शूलिन्, (पु०)
 शिव जी । —शृङ्गः, (पु०) त्रिकूटाचल । —
 षष्टिः, (स्त्री०) ६३ । —सन्ध्यं, (न०)
 सन्ध्यी, (स्त्री०) प्रातः, मध्याह्न और सायं
 काल । —सन्ध्यं, (अध्यया०) तीन सन्ध्याओं
 का समय । —सप्त, (वि०) ७३ वर्ष । —
 सप्ततिः, (स्त्री०) ७३ । —सप्तन्—सप्त, (वि०)
 बहु० । २१। इक्कीस । —साम्यं, (न०) तीनों
 गुणों की समानता । —स्थली, (स्त्री०) तीन
 तीन तीर्थ स्थान अर्थात् काशी, प्रयाग और गया ।
 —स्रोतस्, (स्त्री०) गंगा । —सीत्थ,—हल्य,
 (वि०) तीन बार जुता हुआ (खेत) —हायण,
 (वि०) तीन वर्ष का ।

त्रिंश (वि०) १ [स्त्री०—त्रिंशी] १ तीसवाँ । २
 तीसवाला । ३ तीस से जुड़ा हुआ जैसे त्रिंशशतं
 अर्थात् १३० ।

त्रिंशक (वि०) १ तीस वाला । २ तीस में खरीदा
 हुआ या तीस के मूल्य का ।

त्रिशत् (स्त्री०) तीस । पुत्र (न०) चन्द्रमा क
उदय पर खिलने वाला कमल

त्रिशत्कम् (न०) तीस का जाब ।

त्रिंशतिः (स्त्री०) तीस ।

त्रिक (वि०) १ तिहरा । तिगुना । २ तीन शत ।

त्रिकम् (न०) १ त्रिमूर्ति । २ तिराहा । ३ कूल्हा ।
४ मुहूर्तों के बीच का स्थान । ५ त्रिकुट या तीन
मसाले ।

त्रिका (स्त्री०) झरहट । कुएँ से पानी निकालने का
यंत्र विशेष ।

त्रितय (वि०) [स्त्री०—त्रितयी] तीन भागों वाला ।
तिगुना । तिहरा ।

त्रितयम् (न०) तीन का समूह ।

त्रिधा (अव्यया०) तीन प्रकार से या तीन भागों में ।

त्रिस् (अव्यया०) तिवार । तीन बार ।

त्रुट् (धा० परस्मै०) [त्रुट्यति, त्रुटति, त्रुटित]
चीरना । तोड़ना ।

त्रुटिः } (स्त्री०) १ काटना । तोड़ना । फाड़ना । २ छोटा
त्रुटी } हिस्सा । अणु । ३ क्षण या लव । ४ सम्भेद ।
संशय । ५ हानि । नाश । ६ छोटी इलायची
(का पौधा) ।

त्रेता (स्त्री०) १ तीन का समूह । २ तीन प्रकार के इव-
नाग्नि का समूह । ३ पाँचों में तीन का दौव फेंकना ।
चार युगों में से दूसरा युग ।

त्रेधा (अव्य०) तीन प्रकार से । तीन भागों से ।

त्रै (धा० आत्म०) [त्रायते, त्रात, त्राण] रक्षा
करना । बचाना ।

त्रैकालिक (वि०) [स्त्री०—त्रैकालिकी] तीन काल
से सम्बन्ध रखने वाला । अर्थात् बीते हुए, आगे
आने वाले और वर्तमान कालों से सम्बन्धयुक्त ।

त्रैकाल्यं (न०) तीन काल । भूत, भविष्यद् और वर्त-
मान ।

त्रैगुणिक (वि०) तिहरा । तीन गुना ।

त्रैगुण्यम् (न०) १ तीन गुणों का । २ तिहरापन ।
३ सत्व, रजस् और तमस् ।

त्रैपुरः (पु०) १ त्रिपुर प्रदेश । २ उस देश का शासक
या रहने वाला ।

त्रैमातुरः (पु०) लक्ष्मण का नाम ।

त्रैमिक (वि०) [स्त्री०—त्रैमासिका] तान मास
का, प्रत्येक तीसरे मास होने या निकलने वाला ।

त्रैराणिकं (न०) गणित की क्रिया विशेष ।

त्रैलोक्यं (न०) तीन लोकों का समूह ।

त्रैवर्णिक (वि०) [स्त्री०—त्रैवर्णिकी] प्रथम तीन
वर्णों से सम्बन्ध रखने वाला ।

त्रैविक्रम (वि०) विष्णु या वामनावतार का ।

त्रैविद्यं (न०) १ तीन वेद । २ तीन वेदों का अध्ययन ।
३ तीन विज्ञान ।

त्रैविद्यः (न०) तीनो वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण ।

त्रैविष्टपः } (पु०) देवता ।
त्रैविष्टपयः }

त्रैगङ्गुषः (पु०) त्रिशङ्कु के पुत्र राजा हरिश्चन्द्र की
उपाधि ।

त्रोटकं (न०) नाटक विशेष । जैसे कालिदास की
विक्रमोर्वशी

त्रोटिः (स्त्री०) चोंच ।—हस्तः, (पु०) पत्नी ।

त्रोत्रं (न०) अङ्गुश । चाबुक ।

त्वत् (धा० पर०) [त्वत्तति, त्वष्ट] तराशना ।
छाँटना । कतरना । छीलना ।

त्वङ्कारः } (पु०) नृकार । अप्रतिष्ठाकारक सम्बोधन ।
त्वङ्कारः }

त्वङ्ग } (धा० पर०) [त्वङ्गति] १ जाना । हिलना ।
त्वङ्गे } २ कूटना । कटपट दौड़ना । ३ काँपना ।

त्वच् (स्त्री०) १ चमड़ा (मनुष्य, सर्प आदि का) ।
२ चर्म (नाप, हिरण आदि का) । ३ झाल । गूदा ।

४ कोई चीज़ जो टकने वाली हो । ५ स्पर्श ज्ञान ।
—अङ्कुरः (पु०) रोमाञ्च । रोंगटे खड़े होना ।—

इन्द्रियम् (न०) स्पर्शेन्द्रिय ।—कण्डुरः (पु०)
फोड़ा । धाव । नासूर ।—गन्धः, (पु०)

नारंगी । शन्तरा ।—वैदः, (पु०) चर्म का
धाव । खरौच ।—जं, (न०) १ खून । लोह ।

२ रोम । लोम ।—तरङ्गकः, (पु०) झुरी ।
सकुडन ।—शं, (न०) कवच ।—दोषः, (पु०)

चर्मरोग । कोढ़ ।—पारुष्यः, (न०) चर्म का
रुखापन ।—पुष्पः, (पु०) रोमाञ्च ।—सारः,

(पु०) [त्वविसारः,] बौंस ।—सुगन्धः,
(पु०) नारंगी ।

त्वचा (स्त्री०) देखो त्वच् ।

त्वदीय (वि०) तुम्हारा तेरा
 त्वद् (सर्व०) तेरा । तुम्हारा ।
 त्वद्विध (वि०) तेरी तरह । तुम्हारी तरह ।
 त्वर् (धा० आत्म०) [त्वरते, त्वरित] शीघ्रता
 करना ।
 त्वरा } (स्त्री०) शीघ्रता । जल्दी । वेग ।
 त्वरिः }
 त्वरित (वि०) तेज़ । फुर्तीला । वेगवान ।
 त्वरितं (न०) जल्दी । तेज़ी । (अव्यय०) जल्दी से ।
 त्वष्ट् (पु०) १ बढई । मैमार । कारीगर । २
 विश्वकर्मा ।
 त्वाद्दृश } (वि०) [स्त्री०—त्वाद्दृशी] तेरी तरह ।
 त्वाद्दृशे } तुम्हारी तरह । तेरी जाति का ।

त्विष (धा० उभय०) [त्विषति—त्विषते] चमकना
 प्रदीप्त होना ।
 त्विप् (स्त्री०) १ रोशनी । प्रकाश । आभा । चमक ।
 २ सौन्दर्य । ३ अधिकार । वजन । ४ अभिलाषा ।
 कामना । ५ रीतिरस्म । ६ प्रचण्डता । ७ वाणी ।
 —ईशः, (त्विषांपतिः भी) (पु०) सूर्य ।
 त्विषिः (पु०) प्रकाश की किरन ।
 त्स्रुः (पु०) १ रेंग कर चलने वाला कोई भी जान-
 वर । २ तलवार की मूँठ या अन्य किसी हथि-
 यार की मूँठ ।

थ

थ संस्कृत या नागरी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन और
 तवर्ग का दूसरा वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान
 दन्त है ।
 थः (पु०) पहाड़ ।
 थम् (न०) १ रक्षा । रक्षण । २ भय । डर । ३
 शुभत्व । मङ्गल ।
 थुङ् (धा० परस्मै०) [थुङति] १ ढकना । पर्दा-
 डालना । २ छिपाना ।

थुङनम् (न०) ढकन । लपेटन ।
 थुत्कारः (पु०) थूकते समय जो शब्द किया जाता है ।
 थुर्व (धा० पर०) [थुर्वति] चोटिल करना ।
 थूत्कारः (पु०) } थूत शब्द जो थूकने के समय
 थून्कृतं (न०) } किया जाता है ।
 थै (अव्य०) नृत्य के समय मृदङ्ग के बोल ।

द

द संस्कृत या नागरी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजन
 और तवर्ग का तीसरा वर्ण । इसका उच्चारण-
 स्थान दन्तमूल है । दन्तमूल में जिह्वा के अगले
 भाग के स्पर्श से इसका उच्चारण होता है । यह
 अल्पप्राण है और इसमें संवार, नाद और घोष
 बाह्यप्रयत्न होते हैं ।
 द (वि०) [यह समास के पीछे आता है] देना ।
 उत्पन्न करना । काटना । नष्ट करना । अलग

करना । जैसे धनद, अलद, गरद, तोयद, अनलद
 आदि ।
 दं (न०) भार्या । पत्नी ।
 दः (पु०) १ दान । पुरस्कार । २ पहाड़ ।
 दा (स्त्री०) १ गर्मी । २ पश्चात्ताप । परिताप ।
 दंश् (धा० परस्मै०) [दंशति, दष्ट] काटना ।
 डंकमारना । डसना ।
 दंशः (पु०) १ डसना । काटना । डंक मारना ।
 २ सर्प का विषदन्त । वह स्थान जहाँ डसा

हो । ४ काटना । चीरना । ५ बनैली मक्खी ।
६ दोष । त्रुटि । कमी । ७ दाँत । ८ चरपराहट ।
तीतापन । ९ कवच । १० जोड़ । अवयव ।—
भोरः, (पु०) भैंसा ।

दंशकः (पु०) १ कुत्ता । २ गोमक्खी । डॉप ।
मक्खी ।

दंशनम् (न०) १ डसने या काटने की क्रिया । कवच ।
दंशित (वि०) १ काटा हुआ । २ कवच धारण
किये हुए ।

दंशिन (पु०) देखो दंशः ।

दंशी (स्त्री०) छोटी गोमक्खी ।

दंष्ट्रा (स्त्री०) बड़ा दाँत । हाथी का दाँत । डंक ।
विपदन्त । —अस्त्रः, —आयुधः, (पु०)
जंगली शूकर । —कराल, (वि०) भयानक
दाँतों वाला । —विषः, (पु०) एक प्रकार का
विषैला सर्प ।

दंष्ट्राज (वि०) बड़े बड़े दाँतों वाला ।

दंष्ट्रिका (वि०) देखो "दंष्ट्रा"

दंष्ट्रिन् (पु०) १ बनैला शूकर । २ सर्प । ३ सेहू ।

दत्त (वि०) १ योग्य । निष्णात । विशेषज्ञ । चतुर ।
निपुण । २ उपयुक्त । उपयोगी । ३ तत्पर ।
सावधान । मनोयोगी । कुर्तीला । ४ सच्चा ।
ईमानदार । —अध्वरध्वंसकः, —मृतध्वंसिन्,
(पु०) शिव जी । —कन्या, —जा, —तनया,
(स्त्री०) १ दुर्गा की उपाधि । २ अश्विनी
आदि नक्षत्र । —सुतः, (पु०) देवता ।

दत्तः (पु०) एक प्रसिद्ध प्रजापति का नाम ।

दत्ताव्यः (पु०) १ गीध । २ गरुड़ की उपाधि ।

दक्षिण (वि०) १ योग्य । निपुण । कारीगर ।
निष्णात । चतुर । २ दहिना । (वाम का उल्टा) ।
दक्षिण ओर अवस्थित । ६ सच्चा । सीधा । ईमान-
दार । निपेक्ष । ७ प्रिय । मधुर । ८ शिष्ट । सम्य ।
भद्र । ९ आज्ञाकारी । अनुगत । विनीत । १०
अवलम्बित । पराधीन । —अग्निः, (पु०)
अन्वाहार्यपचन । यज्ञाग्नि जो दक्षिण दिशा में
स्थापित की जाती है । —अग्र, (वि०) दक्षिण
की ओर निकला हुआ । —अवलः, (पु०)
दक्षिणी पर्वतमाला अर्थात् मलयाचल । —अभि-

मुख, (वि०) दक्षिण दिशा की ओर मुख किये
हुए । दक्षिण की ओर । —अयनं, (न०)
दक्षिणायन । सूर्य की गति विशेष । कर्क की
संक्रान्ति से मकर की संक्रान्ति पर्यन्त जिस मा-
स पर सूर्य चलते हैं वह दक्षिणायन कहलाता है ।
इस पथ पर सूर्य ६ मास रहते हैं । —अर्धः,
(पु०) १ दहिना हाथ । २ दहिनी या दक्षिण
दिशा की ओर । —आन्वार, (वि०) १ ईमान-
दार । अच्छे आचरण का । २ शक्तिपूजक । —
आशा, (स्त्री०) दक्षिण दिशा । —आशापतिः,
(पु०) यमराज । धर्मराज । —इतर, (वि०)
१ वाम । बायाँ । २ उत्तरी । उत्तरादी । —इतरा,
(स्त्री०) उत्तर दिशा । —उत्तर, (वि०)
दक्षिण से उत्तर की ओर झुकी हुई । —उत्तरवृत्तं,
(न०) मध्यान्हरेखा । —पश्चात्, (अव्यया०)
दक्षिण पश्चिम की ओर । —पश्चिम, (वि०)
दक्षिण पश्चिमी । —पश्चिमा, (स्त्री०)
दक्षिण-पश्चिम । —पूर्व—प्राग्, (वि०)
दक्षिण-पूर्व । —पूर्वा, —प्राची, (स्त्री०) दक्षिण-
पूर्व का कोण । —समुद्रः, (पु०) दक्षिणी
समुद्र । —स्थः, (पु०) रथवान । सारथी ।

दक्षिणाः (पु०) १ दहिना हाथ या बाँह । २ भद्र या
सम्य जन । नायक विशेष । ३ विष्णु या शिव की
उपाधि ।

दक्षिणतः (अव्यया०) १ दहिनी ओर से या दक्षिण
दिशा की ओर से । २ दक्षिण हाथ की ओर ।
३ दक्षिण दिशा की ओर या दहिनी ओर ।

दक्षिणा (अव्यया०) १ दहिनी ओर का या दक्षिण दिशा
में । —अर्ह, (वि०) दक्षिणा या दान देने योग्य ।
—आवर्त, १ दहिनी ओर मुड़ा हुआ । २
दक्षिण दिशा की ओर मुड़ा हुआ । —कालः,
(पु०) दक्षिणा लेने का समय । —पथः, (पु०)
दक्षिणीभारत । —प्रवणः, (वि०) दक्षिणा की
ओर झुका हुआ ।

दक्षिणा (स्त्री०) १ ब्राह्मण को देने योग्य धन । २
दक्षिण प्रजापति की पुत्री और यज्ञ रूपी पुरुष
की पत्नी समझी जाती है । ३ दान । भेंट ।

पुरस्कार । पारिश्रमिक । ४ तुधार गौ । ५ दक्षिण दिशा । ६ दक्षिणनी भारत ।

दक्षिणाहि (अव्यय०) १ दहिनी ओर दूर । २ दक्षिण दिशा में दूर । दहिनी ओर ।

दक्षिणीय } (वि०) दक्षिणा पाने योग्य ।
दक्षिणय }

दक्षिणोन (अव्य०) दहिनी ओर का ।

दग्ध (व० कृ०) १ जला हुआ । अग्नि में भस्म हुआ । २ (आलं०) सन्तप्त । पीड़ित । सताया हुआ । ३ भूखों मरा हुआ । अकाल का मारा । ४ अशुभ । अमङ्गलकारी । ५ शुष्क । स्वादरहित । फीका । अलौना । ६ अभगा । शपित । दुष्ट ।

दग्धिका (स्त्री०) भुने हुए चॉवल ।

दग्ध (वि०) [स्त्री०—दग्धी] तक । उतना गहरा या ऊँचा ।

दण्ड } (धा० डभय०) [दण्डयति—दण्डयते,
दण्डे } दण्डित] दण्ड देना । सजा देना । जुर्माना करना ।

दण्डः, दण्डः (पु०) } १ लकड़ी । डंडा । गदा ।
दण्डं, दण्डम् (न०) } सोठा । २ राजदण्ड । आस्त-
दण्ड । ३ दण्ड जो द्विजों को उपनयन संस्कार के समय ग्रहण कराया जाता है । ४ संन्यासी द्वारा ग्रहण किया जाने वाला दण्ड । ५ हाथी का दाँत । ६ डंडुल । कमलदण्ड । ७ नाव के डण्ड । ८ मथानी । रई । ९ अर्थदण्ड । जुर्माना । १० शरीरिक दण्ड । ११ कैद । कारागृह-वास । १२ आक्रमण । इयादती । सजा । १३ सेना । १४ व्यूह । १५ वश-वर्तीकरण । संयम । १६ चार हाथ का नाँप विशेष । १७ लिङ्ग । १८ अहङ्कार । अभिमान । १९ शरीर । २० यम की उपाधि । २१ विष्णु का नाम । २२ शिव जी । २३ सूर्य का सहचर । २४ फोड़ा । (पु०)—अजिनं, (न०) दण्ड और मृगचर्म । २ (आलं०) दम्भ और कृल या प्रवञ्चना ।—अधिपः, (पु०) मुख्य न्यायाधीश ।—अनीकं, (न०) सेना की एक टोली ।—अर्हः, (वि०) सजा पाने योग्य ।—अलसिका, (स्त्री०) हैजा ।—आज्ञा, (स्त्री०) फौजदारी से सजा ।—आह्वानं, (न०) मीठा । झाँझ ।—कर्मन्, (न०) दण्डविधान ।—काकः, (पु०) द्रोण-

काक ।—काष्ठं, (न०) डंडा । सोठा ।—ग्रहणं, (न०) संन्यासी होना ।—ऊर्ध्वं, (न०) भाण्डार जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार के वर्तन रखे जाते हैं ।—ढक्का, (स्त्री०) एक प्रकार का ढोल ।—दासः, (पु०) ऋण न चुकाने के कारण बना हुआ दास ।—देवकुलं, (न०) न्यायालय । कचहरी ।—धर, (वि०)—धार, (वि०) १ आसा ले चलने वाला । २ दण्ड देने वाला ।—धरः,—धारः, (पु०) १ राजा । २ यम । ३ न्यायाधीश ।—नायकः, (पु०) १ न्यायाधीश । पुलिस का अफसर । मैजिस्ट्रेट । २ सेनानायक ।—नीतिः, (स्त्री०) १ न्यायविधान । २ नागरिक और सैनिक शासन पद्धति । ३ राजनीति । शासन व्यवस्था ।—नेतृ, (पु०) राजा ।—पालः, (पु०) १ छड़ी का गिरना । २ दण्डविधान ।—पः, (पु०) राजा ।—पांशुलः, (पु०) द्वारपाल । दरवान ।—पाणिः, (पु०) यमराज ।—पातनं, (न०) दण्डविधान करना ।—पारुथ्यं, (न०) १ आक्रमण । ज़ोर जबरदस्ती । प्रचण्डता । २ कठोर दण्डविधान ।—पालः,—पालकः, (पु०) १ मुख्य या प्रधान न्यायकर्त्ता । २ द्वारपाल । दरवान ।—पोणः, (पु०) मूठ-दार चलनी ।—प्रणामः, (पु०) १ शरीर को मुकाये बिना नमस्कार करना । प्रणाम करते समय डंडे की तरह सतर खड़े रहना । २ प्रणाम करते समय लकड़ी की तरह पृथिवी पर गिर पड़ना ।—बालधिः, (पु०) हाथी ।—भङ्गः, (पु०) दण्डविधान को भङ्ग कर देना ।—भृत्, (पु०) १ कुम्हार । २ यम ।—माणवः,—मानवः, (पु०) १ आसाधारी । २ दण्डवारी संन्यासी ।—माथः, (पु०) राजमार्ग ।—यात्रा, (स्त्री०) १ बरात का जलूस । २ चढ़ाई । राज्य को जीतलेना ।—यामः, (पु०) १ यमराज । २ अगस्त्य । ३ दिवस ।—वादिन्,—वादिन्, (पु०) द्वारपाल । रक्षक ।—वादिन्, (पु०) पुलिस का उच्च पदाधिकारी ।—विधिः, (पु०) १ दण्डविधान के नियम । २ फौजदारी कानून ।—विष्कम्भः, (पु०) वह खंभा जिसके सहारे रई फेरी जाती है ।—

गूह (पु० विशेष ढग से सेना को खडे करने की व्यवस्था ।—शास्त्र, (न०) दण्डविधान की पद्धति । कैाद्वारी कानून ।—हस्तः, (स्त्री०)

१ द्वारपाल । दरवान । २ यमराज ।

दंडकः } (पु०) १ छड़ी । डंडा । २ पंक्ति ।
दण्डकः } अवली । ३ छन्द का नाम ।

दंडकः, दण्डकः (पु०) } १ नर्मदा और गोदावरी
दंडका, दण्डका (स्त्री०) } के बीच दक्षिण भारत
दंडकम्, दण्डकम् (न०) } का एक प्रसिद्ध प्रान्त ।

श्री रामचन्द्र जी के समय में यह प्रान्त उजाड़ पड़ा था ।

दंडन } (न०) सजा । जुमाना । अर्थदण्ड ।
दण्डनम् }
दंडादंडि } (अव्यया०) लट्ठों की लड़ाई ।
दण्डादण्डि }

दंडारः } (पु०) १ गाड़ी । २ कुम्हार का चाक ।
दण्डारः } ३ नाव । बेड़ा । ४ मस्त हाथी ।

दंडिकः } (पु०) आलाचारी ।
दण्डिकः }

दंडिका } (स्त्री०) १ जड़ी । २ पंक्ति । अवली ।
दण्डिका } ३ मोती का हार । हार । ४ रस्सा ।

दंडिन् } (पु०) १ संन्यासी । २ द्वारपाल ।
दण्डिन् } ३ डौंड चलाने वाला । खेवट । ४ जैनी

साधु । ५ यम । ६ राजा । ७ काव्यादर्श तथा दश कुमारचरित्र का रचयिता ।

दन्त } (पु०) दाँत ।—द्वदः,—(द्वद्वदः) (पु०)
दन्त } ओठ ।

दन्त (व० कृ०) १ दिया हुआ । दे डाला हुआ । भेंट किया हुआ । २ सौंपा हुआ । हवाले किया हुआ । ३ रक्खा हुआ । पसारा हुआ ।—अनप-कर्मन्,—अप्रदानिकं, (न०) दी हुई वस्तु को न देना । हिन्दूधर्म शास्त्र में वर्णित बारह प्रकार के स्वत्वाधिकारों में से एक ।—अवधान, (वि०) मनोयोगी ।—आत्रेयः, (पु०) एक ऋषि का नाम जो अत्रि और अनुसूया से उत्पन्न हुए थे और जो ब्रह्मा विष्णु और महेश का मिश्रित अवतार माने जाते हैं ।—आदर, (वि०) सम्मान प्रदर्शित करने वाला । आदर करने वाला ।—शुल्का, (स्त्री०) दुल्हिन जिसके लिये दहेज दिया गया हो ।—हस्त, (वि०) हाथ का सहारा देने वाला । हाथ का सहारा पाये हुए ।

दन्त पु०) १ हिन्दू धर्म शास्त्रानुसार १२ प्रकार के पुत्रों में से एक । २ वरुण की उपाधि विशेष । ३ दन्तात्रेयी ।

दन्तकः (पु०) गोद लिया हुआ पुत्र ।

दत् (धा० आत्म०) [ददते] देना । नज़र करना ।

दद (वि०) देते हुए । नज़र करते हुए ।

ददनं (न०) दान । भेंट ।

दध् (धा० आ०) [दधते] १ ग्रहण करना । २ रखना । अधिकार में कर लेना । ३ देना । नज़र करना । भेंट करना ।

दधि (न०) १ जमौआ दूध । जमौआ माठा । २ तारपीन । ३ वस्त्र ।—अध्नं,—अधोदन्, (न०) दही मिला हुआ माठा ।—उत्तर,—उत्तरकं,—उत्तरगं, (न०) दही का तोड़ ।—उदः,—उदकः, (पु०) दधिसागर ।—कूर्चिका, (स्त्री०) दही मिश्रित भात ।—चारः, (पु०) रई ।—जं, (न०) ताज़ा मक्खन ।—फलः, (पु०) कैथा ।—मण्डः,—वारि, (न०) दही का तोड़ ।—मंथन, (न०) दही का बिलोना ।—शोणः, (पु०) बंदर ।—सक्त, (पु० बहु०) जव का भोज्य पदार्थ जिसमें दही मिला हुआ हो ।—सारः,—स्नेहः, (पु०) ताज़ा मक्खन ।—स्वेदः, (पु०) माठा ।

दधित्यः (पु०) कैथा । कपित्थ ।

दधीन्वः (पु०) एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जिन्होंने वज्र बताने के लिये अपने शरीर के हाड़ दे दिये थे ।—अस्थि, (न०) १ इन्द्र का वज्र । २ हीरा ।

दनुः (स्त्री०) दानवों की माता जो दध की लड़की और कश्यप की पत्नी थी ।—जः,—पुत्रः,—सम्भवः,—सुनुः, (पु०) दैत्य । दानव ।—द्विप्, (पु०) देवता ।

दन्तः (पु०) १ दाँत । काँप । विषदन्त । २ हाथी का दाँत । ३ बाण की नोक । ४ पर्वत की चोटी । ५ कुञ्ज ।—अग्रं, (न०) दाँत का अग्रभाग ।—अन्तरं, (न०) दाँत के बीच का हिस्सा ।—उद्देदः, (पु०) दाँत निकालना ।—उल्लूख-लिकः, (पु०)—खालिन्, (पु०) जो दाँतों से उखरी मूसल का काम ले । तपस्वी विशेष ।

कवण, (पु०) नीबू का वृक्ष कार,
 (पु०) हाथी के दाँत को चीज़ बनाने वाला
 कारीगर । काष्ठ, (न०) दतवन । मुखारी ।
 —कूर, (पु०) लड़ाई । —ग्रहिन्, (वि०)
 दाँतों को खराब करने वाला । —घर्षः, (पु०)
 दाँतों को कटकटाना । —चालः, (पु०) ठीला
 दाँत । दाँत जो हिल उठ हो । —कुन्दः, (पु०)
 ओठ । —जान, (वि०) [बच्चा जिसके] दाँत
 निकलते हैं । —जाह्न, (न०) दाँत की जड़ ।
 —धावन, (न०) १ मुखारी करना । २ मुखारी ।
 दतवन । धावनः, (पु०) बकुल का पेड़ ।
 —पत्रं, (न०) कर्णभूषण विशेष । —पञ्चकं,
 (न०) १ कर्णभूषण विशेष । २ कुन्द का फूल ।
 —पत्रिका, (स्त्री०) १ कर्णभूषण विशेष । २
 कुन्द । —पवन, (वि०) १ दाँत साफ करने की
 कूची । २ दाँत साफ करना । —पातः, (पु०)
 दाँतों का पतन । —चाली, (स्त्री०) १ दाँत की
 नाँक । २ मसूड़ा । —पुष्पं, (न०) १ कुन्द का
 फूल । २ कतकफूल । —प्रक्षालनं, (न०)
 दाँतों का धोना । —भागः, (पु०) हाथी के
 माथे का अगला भाग । —मलं, (न०) दाँतों
 का मैल । —मांसं, —मूलं, —चरकं, (न०)
 मसूड़ा । —मूलीया, (बहु०) दाँत की सहायता
 से उच्चारण किये जाने वाले अक्षर । —यथा ल, त,
 थ्, द, ध्, न्, और स् । —रोगः, (पु०) दाँत
 की पीड़ा । —चरुं, —वासस्, (न०) ओठ । —
 बीजः, —बीजः, —बीजकः, —बीजकः, (पु०)
 अनार का वृक्ष । —वीणा, (स्त्री०) १ वाद्य यंत्र
 विशेष । २ दाँतों की कट् कट् । —वैदर्भः, (वि०)
 बाहिरी ओट से दाँतों का हिल उठना । —व्यसनं,
 (न०) दाँत का हट जाना । —शठ, (वि०)
 खटा । —शठः, (पु०) नीबू का पेड़ । —शर्करा,
 (स्त्री०) दाँत की पपड़ी । —शाणः, (पु०)
 दन्तमज्जन । —शूलं, (न०) —शूलः, (पु०)
 दाँत का दर्द । —शोधनिः, (स्त्री०) खरका ।
 —शोधः, (पु०) मसूड़ों की सृजन । —हर्षकः,
 (पु०) नीबू का पेड़ ।
 हः } (पु०) १ चोटी । शिखर । २ ब्रेकेट ।
 कः } दीवाल में लगी खूंट ।

दत्तादिति } (अन्य०) परस्पर काटाकूटी ।
 दन्तादिति }

दंतावलः, दन्तावलः (पु०) } हाथी ।
 दन्तिन्, दन्तिन् (पु०) }

दंतुर } (वि०) १ बड़े बड़े या आगे निकले हुए दाँतों
 दन्तुर } वाला । २ दाँतेदार । खुरदरे किनारे वाला ।
 ३ लहरियादार । ४ खड़ा होना (जैसे रोंगटों का)

—कुन्दः, (पु०) नीबू का पेड़ ।

दंतुरित } (वि०) बड़े या निकले हुए दाँतों
 दन्तुरित } वाला ।

दंत्य } (वि०) दाँतों का ।
 दन्त्य }

दंत्यः } (पु०) दाँतों की सहायता से उच्चारण होने
 दन्त्यः } वाले अक्षर । दन्तमूलीय ।

दंशः } (पु०) दाँत ।
 दन्शः }

दंशूक } (वि०) १ जहरीला । काटने वाला ।
 दन्शूक } उत्पाती ।

दंशूकः } (पु०) १ साँप । २ सरीसृप जन्तु । ३
 दन्शूकः } राक्षस ।

दम्, दम् (धा० पर०) [दभति, दभोति
 दभ्य] १ चोटिल करना । २ झुलना । धोखा
 देना । ३ जाना । ४ आगे बढ़ाना । आगे हाँकना ।

दभ्र (वि०) थोड़ा । छोटा ।

दभ्रं (अव्यया०) थोड़ा सा । हल्का सा । कुछ कुछ ।

दभ्रः (पु०) ससुद्र ।

दम् (धा० पर०) [दाम्यति, दमित, दान्तः]
 १ पालने योग्य । २ शान्त होने योग्य । ३
 पालना । वशवर्ती करना । जीतना । रोकना ।
 ४ शान्त करना ।

दमः (पु०) १ पालना । वशवर्ती करना । २ बाहिर
 की वृत्तियों को रोकना । ३ बुरे कामों से मन को
 हटाना । ४ मन की दृढ़ता । ५ सज़ा । दण्ड ।
 ६ कीचड़ ।

दमथः } (पु०) १ आत्मसंयम । २ सज़ा ।
 दमथुः }

दमन (वि०) [स्त्री०—दमनी] वशवर्ती ।
 पालन । विजयी ।

दमनं (न०) १ पालना । वशवर्ती करना । संयम

में रखना । २ सजा देना । दण्ड देना । ३ आत्म संयम ।

दमयंती } (स्त्री०) विदर्भ के राजा भीम की राज-
दमयन्ती } कुमारी । इसका दमयन्ती नाम इस लिये
पड़ा था कि, इसने अपने अनुपम सौन्दर्य से
संसार की समस्त रूपवती स्त्रियों का अभिमान
दूर कर दिया था ।

दमयितृ (वि०) १ पालने वाला । वशवर्ती करने
वाला । २ दण्ड देने वाला । ३ विष्णु का नाम ।

दमित (वि०) १ पालतू । शान्त । २ विजित ।
संयत । वश में किया हुआ । हराया हुआ ।

दमनस् } (पु०) अग्नि ।
दमनस् }

दम्पती } (पु०) (द्विवचन) [समाः जाया + पति]
दम्पती } पतिपत्नी ।

दम्भः } (पु०) १ पाखण्ड । छल । प्रवञ्चना । २
दम्भः } धार्मिक पाखण्ड । ३ अभिमान । अहङ्कार । ४
पाप । दुष्टता । ५ इन्द्र का वज्र ।

दम्भनं } (न०) छल । प्रवञ्चना । दगा । धोखा ।
दम्भनम् }

दम्भिन् } (पु०) पाखण्डी । छलिया ।
दम्भिन् }

दम्भोलिः } (पु०) इन्द्र का वज्र ।
दम्भोलिः }

दम्य (वि०) १ पालने योग्य । काबू में लाने योग्य ।
२ दण्डनीय ।

दम्यः (पु०) १ नया बैल । विना निकाला हुआ
बछड़ा ।

दय (धा० आत्म०) [दयते, दयित] १ दया
आना । रहम खाना । सहानुभूति प्रदर्शित करना ।
२ प्यार करना । पसंद करना । आसक्त होना ।
३ रक्षा करना । ४ जाना । ५ देना । बाँटना ।
हिस्से में बाँटना । ६ बायल करना ।

दया (स्त्री०) रहम । किसी को दुःख में देख उसके
दुःख को दूर करने की इच्छा ।—कूटः,—कूर्चः,
(पु०) बुद्धदेव की उपाधि ।

दयालु (वि०) दयावाला । कृपालु ।

दयित (व० कृ०) प्यारा । अभिलषित । चाहा हुआ ।

दयितः (पु०) पति । प्रेमी । प्रेमपात्र ।

दयिता (स्त्री०) पत्नी । प्रेयसी ।

दर (वि०) फटा हुआ । विरा हुआ ।

दरं (न०) १ गुफा । रन्ध्र । बिल । भीटा ।

दरः (पु०) २ शङ्ख । (पु०) १ भय । डर ।

दरम (अव्यया०) तनकसा । हल्का सा ।

दरयां (न०) लोड़ना । बीरना । फाड़ना ।

दरणिः (पु०) १ अँवर । चक्कर । २ धार । ३

दरणी (स्त्री०) १ समुद्र का दिलोरा या लहर ।

दरद् (स्त्री०) १ हृदय । २ भय । डर । ३ पर्वत ।

पहाड़ । ४ बाँध । टीला ।

दरदाः (पु० बहु०) काश्मीर का सीमावर्ती एक देश ।

दरदं (न०) सिंदूर । इंगुर ।

दरदः (पु०) भय । डर ।

दरिः } (स्त्री०) गुफा । गह्वर । घाटी ।
दरी }

दरिद्र (वि०) गरीब । मोहताज ।

दरिद्रता (स्त्री०) निर्धनता ।

दरिद्रा (स्त्री०) (धा० परस्मै०) [दरिद्राति,

दरिद्रित (निज०) दरिद्रयति] निर्धन होना ।

२ कष्ट में होना । ३ लडा दुबला होना ।

दरोदरः (पु०) १ जुआरी । २ जुए का दाव ।

दरोदरः (न०) १ जुआ । २ पौसा ।

दर्वरः (पु०) १ पहाड़ । २ कुछ दूरा हुआ बड़ा ।

दर्वरीकं (न०) बाजा ।

दर्वरीकः (पु०) १ मैदक । ३ बादल । ३ बाजा ।

दर्वुरः (पु०) १ मैदक । २ बादल । ३ शहनाई ।

४ पर्वत । ५ दक्षिण भारत का एक पर्वत ।

दर्वुः } (पु०) दाद । एक प्रकार का चर्मरोग ।
दर्वुः }

दर्यः (पु०) १ अहङ्कार । अभिमान । तुनकमिजाजी ।

२ दुस्साहस । ३ गर्व । घमण्ड । ४ चिद्विज्ञापन ।

५ गमी । ६ मुरक । मृगमठ ।—आध्मात,

(वि०) अभिमान से फूला हुआ ।—जिदु,—

हर, (वि०) दर्पखर्बकारी । नीचा दिखाने

वाला ।

दर्पकः (पु०) कामदेव का नाम ।

दर्पणं (न०) १ आईना । २ जलाने वाला । फुलाने

वाला ।

दर्पणः (पु०) आईना । बड़ा । शीशा ।

दर्पित (वि०) [स्त्री० दर्पिणी] अभिमानी ।
दर्पिन् (अ०) अहंकारी । चिडचिडा ।

दर्भ (पु०) कुशा । एक प्रकार की पवित्र घास ।

—अम्लपः, (पु०) जलप्रचुर देश जहाँ कुश
बहुतायत से लगे हों ।—आह्वयः, (पु०) मूँज ।

दर्भट (न०) निज का कमरा ।

दर्वः (पु०) १ हिल जन । उपद्रवी आदमी । २
राक्षस । दैत्य । ३ कलछी ।

दर्वटः (पु०) १ चौकीदार (गम का) । २ दरवान ।
द्वारपाल ।

दर्वरिकः (पु०) १ इन्द्र । २ राजा विशेष । ३
पवन । वायु ।

दर्विका (स्त्री०) कलछी । चमचा ।

दर्वी (स्त्री०) १ कलछी । चमचा । २ सर्प का
दर्विः (पु०) फल ।—करः, (पु०) सौँप । सर्प ।

दर्शः (पु०) १ दृश्य । तमाशा । दर्शन । २ अमा-
वास्या । ३ यज्ञ विशेष ।—पः, (पु०) देवता ।

—यामिनी, (स्त्री०) अमावास्या की रात ।—
विषद्, (पु०) चन्द्रमा ।

दर्शक (वि०) १ देखने वाला । २ दिखलाने वाला ।
बतलाने वाला ।

दर्शकः (पु०) १ दिखाने वाला या दिखाने के लिये
सामने रखने वाला । २ द्वारपाल । दरवान ।
पहरेदार । ३ निपुणजन । कारीगर ।

दर्शनम् (न०) १ देखना । २ जानना । समझना ।
पहचानना । ३ दृश्य । ४ आँख । ५ पर्यवेक्षण ।

मुखायना । ६ भेंट करना । ७ उपस्थित होना ।
८ रूप । वर्ण । आकार । ९ स्वप्न । १० समझ ।

परख । बुद्धि । ११ फैसला । निर्णय । धारणा ।
१२ धर्म सम्बन्धी ज्ञान । १३ दार्शनिक सिद्धान्त ।

१४ दर्शन । १५ आईना । दर्पण । १६ गुण ।
नैतिक विशेषता । १६ यज्ञ ।—इण्डु, (वि०)

देखने का अभिलाषी ।—प्रतिभूः, (पु०) उपस्थित
होने के लिये जमानत ।

दर्शनीय (वि०) १ देखने योग्य । पहचानने योग्य ।
२ देखने योग्य । मनोहर । सुन्दर । अदालत में

उपस्थित करने के लिये ।

दर्शयितु (पु०) १ रखवाला । द्वारपाल । २ पथ-
प्रदर्शक ।

दर्शित (वि०) १ दिखलाया हुआ । प्रकट हुआ ।
प्रादुर्भूत । २ दखा हुआ । समझा हुआ । ३

समझाया हुआ । सिद्ध किया हुआ । ४ स्पष्ट ।

दर्शिन् (वि०) [स्त्री०—दर्शिनी] देखने वाला ।
पहचानने वाला । जानने वाला । समझने वाला ।

दल् (धा० परस्मै०) [दलति, दलित] १ फटपड़ना ।
चीरना । दराज करना । तड़काना । फोड़ना ।

२ फैलाना । खिलाना ।

दल (न०) } १ टुकड़ा । हिस्सा । २ अंश । ३
दलः (पु०) } आधा । ४ म्यान । परतला । ५

छोटा अङ्गुर । कोंपल । पत्ता । ६ किसी हथियार
का फल । ७ ढेर । समूह । परिमाण । ८ सेना

की टुकड़ी ।—आढकः, (पु०) १ फेन । फेना ।
२ समुद्री मत्स्य विशेष की हड्डी । ३ खाई ।

गढ़ा । ४ आँधी । तूफान । ५ गेरु ।—कोषः,
(पु०) कुन्द की वेल ।—निर्मोकः, (पु०)

भूर्ज वृक्ष ।—पुष्पा, (स्त्री०) केतक वृक्ष ।—
सूचिः,—सूची, (स्त्री०) काँटा ।—स्नसा,

(स्त्री०) पत्ते का रेशा या नस ।

दलनम् (न०) फटना । तोड़ना । काटना । हिस्से
करना । कुचलना । पीसना । चीरना ।

दलनी } (पु० स्त्री०) मट्टी का ढेला ।
दलिः }

दलपः (पु०) १ हथियार । २ सुवर्ण । ३ शास्त्र ।
दलशः (अव्य०) टुकड़े टुकड़े करके ।

दलित (व० क०) टूटा हुआ । फटा हुआ । चिरा
हुआ । फटा हुआ । खुला हुआ । फैला हुआ ।

दलमः (पु०) १ पहिया । २ जाल । बेईमानी ।
३ पाप ।

दवः (पु०) १ जंगल । वन । २ दावाग्नि । वनदहन ।
३ अग्नि । गर्मी । ४ ज्वर । पीड़ा ।—आशिः,—

दहनः, (पु०) वन की आग । दावानल ।
दवधुः (पु०) १ अग्नि । गर्मी । २ पीड़ा । चिन्ता ।

दुःख । ३ आँख का फूलना ।

दधिष्ठ (वि०) दूरतम । सब से अधिक दूर ।
दधीयस् (वि०) १ दूरतर । २ बहुत परे ।

दशक (वि०) दस युक्त । दसगुना ।
दशकम् (न०) दस का समूह ।

तु } (स्त्री०) दस का समूह । दहाई ।
ति }

न (वि०) दस ।—अङ्गुली, (न०) दस अंगुली लंबा ।—अर्ध, (वि०) पाँच ।—अर्धः, (पु०) बुधदेव ।—अवतारः, (पु० बहु०) विष्णु के दस अवतार ।—अश्वः, (पु०) चन्द्रमा ।—आननः,—आस्यः, (पु०) रावण ।—आमयः, (पु०) भद्र ।—ईशः, (पु०) १० गाँव का दुरोगा ।—एकादशिक, (वि०) वह आदमी जो १० देव और ११ वसूल करे । अर्थात् १० सैकड़ा सूद लेने वाला ।—कण्ठः,—कन्धरः, (पु०) रावण ।—गुणा, (वि०) दसगुना । दस गुना अधिक बड़ा ।—ग्रामिन्, (पु०)—पः, (पु०) १० गाँव का दुरोगा ।—ग्रीवः, (पु०) रावण ।—पारमिता,—धरः, (पु०) दस सिद्धियों का रखने वाला । बुधदेव की उपाधि ।—पुरः, (पु०) राजा रन्वितदेव की राजधानी ।—जलः,—भूमिगः, (पु०) बुधदेव ।—मालिकाः, (पु० बहु०) एक देश का नाम ।—मास्य (वि०) १ दस मास का । २ दस मास का गर्भ में रहा हुआ ।—मुखः, (पु०) रावण ।—मुखरिपुः, (पु०) श्री रामचन्द्र ।—रथः, (पु०) महाराज अज के पुत्र श्रीरामचन्द्र के पिता महाराज दशरथ ।—रश्मिशतः, (पु०) सूर्य ।—रात्रि, (न०) दस रात का काल ।—रात्रः, (पु०) दस दिन में पूर्ण होने वाला यज्ञ ।—रूपभूत, (पु०) विष्णु ।—वक्त्रः,—वदनः, (पु०) रावण ।—वाजिन्, (पु०) चन्द्रमा ।—वार्षिक, (वि०) दस वर्ष बाद होने वाला या दस वर्ष तक रहने वाला ।—विध (वि०) दस प्रकार का ।—शत, (न०) १ एक हजार । २ ११० ।—शत-रश्मिः, (पु०) सूर्य ।—शती, (स्त्री०) एक हजार ।—साहस्र, (न०) दस हजार ।—हरा, (स्त्री०) १ गंगा जी की उपाधि । २ ज्येष्ठा शुक्ला १० को होने वाला गङ्गोत्सव । ३ दुर्गा जी का उत्सव जो आश्विन शुक्ला १० को होता है । [का । दस गुना ।

तय (वि०) [स्त्री०—दशतयी] दस हिस्सों

दशधा (अव्य०) १ दस प्रकार से २ दस भागों में
दशान (न०) } १ दाँत । २ काटना ।
दशनः (पु०) }

दशनं (न०) कवच ।—अंशुः, (पु०) दाँतों की दमक ।—अङ्गुः, (पु०) दन्तचत । काटने का चिन्ह ।—उच्छिष्टः, (पु०) १ ओठ । २ चुम्बन । ३ आह ।—ऊदः, वासस्, (न०) १ ओठ । २ चूमा ।—पदं, (न०) दन्तचत । काटने का निशान ।—त्रोजः (पु०) अनार का वृक्ष ।

दशनः (पु०) पर्वत शिखर ।

दशम (वि०) [स्त्री०—दशमी] दसवाँ ।

दशमिन् (वि०) [स्त्री०—दशमिनी] १ दसमी तिथि । २ जीवन का दसवाँ वर्ष । ३ शताब्दी के अन्तिम दस वर्ष ।—स्थः,—दशमोगत, (वि०) २० वर्ष से ऊपर की उम्र का ।

दष्ट (वि०) काटा हुआ । डसा हुआ ।

दशा (स्त्री०) १ कपड़े की भाँकर । २ बत्ती ३ उम्र या जीवन की दशा । ४ अवस्था । ५ काल । अवधि । ६ परिस्थिति । हालत । ७ मन की दशा । ८ प्रारब्ध । कर्मों का फल । ९ ग्रहों की स्थिति । (जन्म काल में) ।—अन्तः, (पु०) १ बत्ती का छोर । २ जीवन का अन्त ।—इन्धनः, (पु०) दीपक । लैंप ।—कर्पः, (पु०) कपड़े का किनारा । २ दीपक ।—पाकः,—विपाकः, (पु०) प्रारब्धा-नुसार फल । जीवन की दशा में परिवर्तन ।

दशार्गः (पु० बहु०) १ एक प्रदेश का नाम । २ उक्त देश के अधिवासी ।

दशिन् (वि०) [स्त्री०—दशिनी] दस वाला । (पु०) दस गाँवों का व्यवस्थापक ।

दशेर (वि०) कट्टर । उत्पाती । हानिकर ।

दशेरः (पु०) उपद्रवी या विपैला जानवर ।

दशेरकः } (पु०) ऊंट का बच्चा ।
दसेरकः }

दस्युः (पु०) १ एक दुष्ट जाति के जीवों की संज्ञा जिनको, देवताओं के शत्रु होने के कारण इन्द्र ने मारा था । २ जानिच्युत । पतित । नात्य । संस्कार-अष्ट । ३ चोर । डाँकू । लुटेरा । ४ दुष्ट । उद्वेष्ट । पापात्मा । ५ अत्याचारी ।

दक्ष (वि०) बहुरी । भयङ्कर । नाशक ।
 दक्षौ (पु० द्वि०) दोना अश्विनीकुमार ।
 दक्ष (पु०) १ गर्दभ । गधा । २ अश्विनी नक्षत्र ।
 दक्षः (स्त्री०) सूर्यपत्नी और अश्विनीकुमारों की माता ।

दह (धा० परस्मै०) [दधति, दग्धः, दिधत्तति]
 १ जलाना । दग्ध करना । २ नाश करना । भस्म करना । ३ सन्तप्त करना । पीड़ित करना । ४ दागना । छल देना ।

दहन (वि०) १ जलन वाला । अग्नि द्वारा भस्म होने वाला । २ नाशक । हानिकारक ।—अरातिः (पु०) जल । पानी ।—उपलः, (पु०) सूर्य-कान्तिमणि ।—उल्का, (स्त्री०) लुआट । अथजली लकड़ी ।—केलनः, (पु०) धूम ।—धुआँ ।—प्रिया, (स्त्री०) स्वाहा । अग्नि की स्त्री ।—सारथिः, (पु०) पवन ।

दहनं (न०) १ जलना । आग में भस्म होना ।

दहनः (पु०) १ अग्नि, २ कबूतर । ३ तीन की संख्या । ४ कुत्सितजन । ५ भिलावे का पौधा ।

दहर (वि०) १ छोटा । पतला । पतिल । २ कमउम्र ।

दहरः (पु०) १ बच्चा । शिशु । २ जानवर का बच्चा । ३ छोटा भाई । ४ हृदयगह्वर या हृदय । ५ चूहा या घँस ।

दहः (पु०) १ अग्नि । २ दावाग्नि । दावानल ।

दा (धा० परस्मै०) [यच्छति, दत्त] देना ।

दाक्षायणी (स्त्री०) १ २७ नक्षत्र में से कोई भी । २ करधपपत्नी दिति का नाम । ३ पार्वती । ४ रेवती नक्षत्र । ५ कद्रू या विनता । ६ दन्ती का पौधा ।—पतिः, (पु०) १ शिव । २ चन्द्रमा ।—पुत्रः, (पु०) देवता ।

दाक्षाय्यः (पु०) गीध । गृध्र ।

दाक्षिण (वि०) [स्त्री०—दाक्षिणी] १ यज्ञ की दक्षिणा सम्बन्धी । २ दक्षिण दिशा सम्बन्धी ।

दाक्षिणं (न०) यज्ञीय दक्षिणा की वस्तुओं का समुच्चय ।

दाक्षिणात्य (वि०) दक्षिण प्रदेश वाली ।

दाक्षिणात्यः (पु०) १ दक्षिण का रहने वाला आदमी । २ नारियल ।

दाक्षिणिक (वि०) [स्त्री०—दाक्षिणिकी] यज्ञीय दक्षिणा सम्बन्धी ।

दाक्षिण्यम् (न०) १ नम्रता । शिष्टता । २ कृपालुता । प्रेमी का बनद्वयी या अन्यन्त शिष्टाचार । ३ ऐक्य । ऐकमत्य । ४ प्रतिभा । चातुरी ।

दाक्षी (स्त्री०) १ दक्ष की कन्या । २ पाणिनी की माता का नाम ।—पुत्रः, (पु०) पाणिनी का नाम ।

दाक्ष्यं (न०) १ चातुरी । निपुणता । शौक्यता । २ सत्यता । ईमानदारी ।

दाघः (पु०) जलन ।

दाढकः (पु०) दाँत । हाथी का दाँत ।

दाडिमः (पु०) १ अनार का पेड़ । २ छोटी दालिमः (पु०) १ हलायची ।—प्रियः,—भक्षणः
 दाडिम (स्त्री०) (पु०) तोता । शुक ।
 दालिमा (स्त्री०)

दाडिमं (न०) अनार फल ।

दाडिम्बः (पु०) अनार का पेड़ ।

दाढा (स्त्री०) १ बड़ा दाँत । २ समूह । ३ इच्छा । कामना ।

दाडिका (स्त्री०) दाढ़ी । रमञ्जु ।

दांडाजिनिक } (वि०) [स्त्री०—दाण्डाजिनिकी]
 दाण्डाजिनिक } दण्ड और मृगचर्म धारण करने वाला ।

दांडाजिनिकः } (पु०) धोखे बाज़ । झुलिया । कपटी
 दाण्डाजिनिकः } पाखण्डी । दरभी ।

दांडिकः } (पु०) दण्डवाता । सजा देने वाला ।
 दाण्डिकः }

दात (वि०) १ विभाजित । कटा हुआ । २ धोखा हुआ । साफ किया हुआ । ३ पका हुआ ।

दातिः (स्त्री०) १ देना । २ काटना । नाश करना । ३ वितरण । बाँट ।

दातृ (वि०) [स्त्री०—दात्री] १ दाता । २ उदार । (पु०) ।

दाता (स्त्री०) १ देने वाला । २ दाता । ३ महाजन । कर्ज देने वाला । ४ शिक्षक ।

दात्यूहः (पु०) १ पत्ती विशेष । २ चातक पत्ती । ३ बादल । ४ जलकाक ।

दात्रं (न०) हंसिया । काटने का औज़ार ।

दाद (पु०) दान भट द (पु०) दाता ।
दाद (धा० उभय) [दानति—दानते] १ काटना
विभाजित करना ।

दानं (न०) १ देना । सौपना । हवाले करना । २ दान ।
भेंट । पुरस्कार । ३ उदारता । धर्मादा । ४ हाथी
का मदजल । ५ घूस । चार उपायों में से एक, जिनसे
शत्रु को अपने में मिलाया जाता है । ६ काँटना ।
बाँटना । ७ स्वच्छता । सफाई । ८ रक्षा । बचाव ।
१० बैठक । आसन ।—कुल्या, (स्त्री०) हाथी
की कनपुटी से मदजल का बहना ।—धर्मः,
(पु०) धर्मादा । धर्मार्थ दान ।—पतिः, (पु०)
१ अत्यन्त उदार पुरुष । २ अक्रूर जो कृष्ण के मित्र
थे ।—पत्रं, (न०) दस्तावेज़ जिसमें किसी वस्तु
का दान किसी के नाम लिखा गया हो ।—पात्रं,
(न०) दान लेने के योग्य व्यक्ति । ब्राह्मण जिसे
दान दिया जा सके ।—प्रातिभाष्यं, (न०)
श्रृणु श्रुति करने की ज्ञानत ।—भिन्न, (वि०)
जो घूस देकर विरुद्ध बना दिया गया हो ।—वीरः,
(पु०) अत्यन्त उदार पुरुष ।—शीलः,—शूरः,
शीलः, (वि०) अत्यन्त दानी या उदार पुरुष ।

दानकं (न०) दानदान ।

दानवः (पु०) राक्षस ।—अरिः, (पु०) देवता ।
२ विष्णु ।—गुरुः, (पु०) शुक्र का नाम ।

दानवेयः देखो दानवः ।

दांत } (व० क०) १ पला हुआ । वश में किया हुआ ।
दान्त } लगाम को मानने वाला । २ पालतू । सीधा ।
२ त्यक्त । ३ उदार ।

दांतः } (पु०) १ पालतू बैल । सीधा बैल । २
दान्तः } दाता । ३ दमनक वृक्ष ।

दांतिः } (स्त्री०) आत्मसंयम । वश में करना ।
दांतिः }

दांतिक } (वि०) हाथी दाँत का बना हुआ ।
दांतिक }

दापित (वि०) १ दिलाया हुआ । २ जुमाना किया
हुआ । ३ दिया हुआ । ४ निबटाया हुआ । कैसल
किया हुआ ।

दामन् (वि०) १ डोरा । सूत । रस्सा । २ कमर-पेटी ।
पटुका । कमरबंद । २ (विधुत्) रेखा । धारी ।

लकीर । ३ बड़ी पट्टी या बंधन ।—अश्रूलं,
—अश्रुनं, (न०) छोड़े की पिछाड़ी बाँधने की
रस्ती ।—उदरः, (पु०) श्रीकृष्ण ।

दामनी (स्त्री०) पैर बाँधने की रस्ती ।

दामिनी (स्त्री०) विजली ।

दांपत्यम् } (न०) विवाह । वैवाहिक सम्बन्ध ।
दाम्पत्यम् }

दांभिक } (वि०) [स्त्री०—दाम्भिकी] १ धोखेबाज़ ।
दाम्भिक } झलिया । कपटी । २ अभिमानी । तड़-
कीला भड़कीला । बनावटी ।

दायः (पु०) १ दान । भेंट । नज़र । २ धौतुक ।
दहेज़ । ३ हिस्सा । भाग । शेयर । ४ सौपना ।
हवाले करना । ६ बाँटना । तकसीम करना । ८
हानि । नारा । ९ दुर्भाग्य । १० जगह ।—अप-
वर्तनं, (न०) पैतृक सम्पत्ति का अपहरण या
जब्त ।—अर्ह, (वि०) पैतृक सम्पत्ति पाने का
दावा पेश करना ।—आदः, (पु०) १ उत्तराधि-
कारी । २ पुत्र । ३ रिश्तेदार । भाईबन्धु ।
जुड़म्बी । ४ दूर का नातेदार । ५ पावनादार ।—
आदा,—आदी, (स्त्री०) १ उत्तराधिकारिणी ।
२ कन्या । पुत्री ।—आर्ध, (न०) १ पैतृक । २
उत्तराधिकारी होने की अवस्था ।—कालः, (पु०)
पैतृक सम्पत्ति के बदवारे का समय ।—अन्धुः,
(पु०) १ पैतृक सम्पत्ति का भागीदार । २ भाई ।
—भागः (पु०) उत्तराधिकारियों में सम्पत्ति
का बदवारा । बदवारा । [बरकाने वाला ।

दायक (वि०) [स्त्री०—दायिका] देने वाला ।

दारः (पु०) १ दरार । सन्धि । छेद । सुराख । २ जुता
हुआ खेत ।—अधीन, (वि०) स्त्री पर अवल-
म्बित ।—उपसंग्रहः,—ग्रहः,—परिग्रहः,—
ग्रहणं, (न०) विवाह । शादी ।—कर्मन्,
(न०) किया । विवाह । परिणय ।

दारक (वि०) [स्त्री०—दारिका] तोड़ने वाला ।
फाड़ने वाला । चीरने वाला ।

दारकः (पु०) १ लड़का । पुत्र । २ बच्चा । शिशु । ३
कोई भी जानवर का बच्चा । ४ ग्राम ।

दारणां (न०) चीरना । फाड़ना । खोलना । दरार
करना ।

दारद (पु०) १ पारद । पारा २ ससुद्र । (पु०)
 (न०) सिन्दूर ईश्वर
 दारा (बहु०) भार्या । पत्नी ।
 दारका (स्त्री०) १ लकड़ी । २ रंडी । वेश्या ।
 दारित (वि०) फटा हुआ । विभाजित । कटा हुआ ।
 चिरा हुआ ।
 दारिद्र्य (न०) निर्धनता । गरीबी ।
 दारी (स्त्री०) १ दरार । बिस्सई । २ रोग विशेष ।
 दारु (वि०) फाड़ने वाला । चीरने वाला ।
 दारु (न०) १ काठ । काठका टुकड़ा । शहनीर । २
 कुन्दा । डेकली । उठंगन । टेकन । डंडी । ३ चट-
 खनी । ४ देवदारु वृक्ष । ५ कच्चा लोहा । ७
 पीतल ।—अशुद्धः, (पु०) मोर । मयूर ।—
 आघाटः, (पु०) कठकुडवा ।—गर्भा, (स्त्री०)
 कठपुतली ।—जः, (पु०) ढोल विशेष ।—पात्रं,
 (न०) काठ का पात्र । कटोता ।—पुत्रिका,
 पुत्री, (स्त्री०) काठ की गुड़िया । मुख्याह्वया—
 मुख्याह्वा, (स्त्री०) छपकली ।—यंत्रं, (न०)
 १ कठपुतलियाँ जो तार के बल नचायी जाती हैं । २
 काठ की कोई भी कल ।—वधूः, (पु०) कठपुतली
 या काठ की गुड़िया ।—सारः, (पु०) चन्दन ।
 —हस्तकः, (पु०) काठ का चमचा ।
 दारुः (पु०) १ उदार पुरुष । २ चित्रकार ।
 दारुकः (पु०) १ देवदारु वृक्ष । २ कृष्ण के सारथी
 का नाम ।
 दारुका (स्त्री०) १ पुतली । २ काठ की बनी किसी
 की शक्क ।
 दारुण (वि०) १ कड़ा । रूखा । २ कठोर । निष्ठुर ।
 कण्ठशूल्य । ३ भयानक । भयङ्कर । ४ भारी ।
 प्रचण्ड । ५ तीव्र । तीव्र । ६ निदारुण । ७ दिल
 दहलाने वाला ।
 दारुणां (न०) सख्ती । निष्ठुरता ।
 दारुणः (पु०) भयानक रस का भाव ।
 दारुण्य (न०) १ सख्ती । दृढ़ता । २ विश्वास-जनक
 प्रमाण । समर्थन ।
 दारुणं (न०) } १ शंख (दाहिनाबत्ती) । २ जल ।
 दारुणः (पु०) }
 दार्भ (वि०) [स्त्री०—दार्भी] कुश का बना हुआ ।

दाव (वि०) [स्त्री०—दार्धी] लकड़ी का । काष्ठ का
 दावट (न०) कोसिलघर । न्यायालय । अदालत ।
 दार्शनिकः (पु०) दर्शन शास्त्रों से सुपरिचित ।
 दार्षद (वि०) [स्त्री०—दार्षदी] १ पत्थर का ।
 खनिज । चपटे पत्थर पर का फर्श ।
 दार्ष्टान्त (वि०) [स्त्री०—दार्ष्टान्ती] दृष्टान्त देकर
 दार्ष्टान्त समझाया हुआ ।
 दादिमः (पु०) इन्द्र का नाम ।
 दावः (पु०) देखो दाव ।—अग्निः,—अनलः,
 (पु०)—दहनः, (पु०) दावानल । वन की आग ।
 दाशः (पु०) मङ्गवाहा । धीमर । मज्जाह ।—ग्रामः,
 (पु०) ग्राम, जिसमें अधिकांश मङ्गुए रहते हैं ।
 —नन्दिनी, (स्त्री०) सत्यवती, जो व्यास की
 माता थीं ।
 दाशरथः (पु०) दशरथ का पुत्र । साधारणतः
 दाशरथि श्री राम तथा उनके तीनों भाइयों का
 नाम, किन्तु विशेषतः श्रीरामचन्द्र का नाम ।
 दाशार्हाः (बहु०) दाशार्ह के वंशज अर्थात् यादव
 गण ।
 दाशेरः (पु०) १ मङ्गु का पुत्र । २ मङ्गुआ । ३ ऊँट ।
 दाशेरकः (पु०) मालवा प्रदेश ।
 दाशेरकाः (पु० बहु०) मालवा प्रदेश के शासक
 और अधिवासी ।
 दासः (पु०) १ दास । गुलाम । सेवक । २ मङ्गुआ ।
 ३ शूद्र । चतुर्थ वर्ण का आदमी । ४ शूद्र के नाम
 के पीछे लगाया जाने वाला शब्द विशेष ।—अनु-
 दासाः (पु०) गुलाम का गुलाम ।—जनः
 (पु०) सेवक या दास ।
 दासी (स्त्री०) १ स्त्रीगुलाम । चाकरनी । २ मङ्गुए
 की पत्नी । ३ शूद्र की पत्नी । ४ रंडी । वेश्या ।
 —पुत्रः,—सुतः, (पु०) दासी का पुत्र या
 बेटा ।—समं, (न०) दासियों का समूह ।
 दासेरः (पु०) दासी का पुत्र । २ शूद्र । ३
 दासेरकः मङ्गुआ । ४ ऊँट ।
 दास्यं (न०) गुलामी । चाकरी । नौकरी । बन्धन ।
 दाहः (पु०) १ जलन । आग । २ लालिमा (जैसे-
 आकाश की) । ३ जलन । ४ ज्वरांश ।—
 अगुरु (न०) —काष्ठं (न०) काष्ठ
 विशेष ।—आत्मक, (वि०) जल उठने

गाला । भभकने वाला । ज्वरः (पु०)
ज्वर जिसके चढ़ने पर शरीर में जलन सी उत्पन्न
हो जाय ।—सरः (पु०)—सरस् (न०)
—स्थलं (न०) शमयान । मरवट । कवगाह ।
—हर (वि०) गर्मी नष्ट करने वाला । हूरं,
(न०) उशीर । खस ।

दाहक (वि०) [खी०—दाहिका] १ जलने वाला ।
सुलगने वाला । २ आग लगाने वाला । ३ दागने
वाला । जल देने वाला ।

दाह्य (वि०) जलाने योग्य । भभक उठने योग्य ।

दिकः (पु०) करम । जवान हाथी, जिसकी उम्र २०
वर्ष की हो ।

दिग्ध (वि०) १ लिखा हुआ लिपा हुआ । २ लिखा
नष्ट किया हुआ । ३ जहर में बुझा हुआ ।

दिग्धः (पु०) १ तेल । मलहम । २ उबटन । ३
अग्नि । ४ आग में बुझातीर । ५ कहानी । [सच्ची
या कल्पित]

दिडिः, दिगिडः } (पु०) एक प्रकार का बाजा ।
दिडिरः, दिगिरः }

दित (वि०) फटा हुआ । फटा हुआ । चिरा हुआ ।
विभाजित ।

दितिः (स्त्री०) १ उदारता । २ काटफाँस । ३ दक्ष
की एक कन्या का नाम जो कश्यप को व्याही थी
और जो दैत्यों की माता थी ।—जः,—तनयः,
(पु०) राक्षस । दैत्य ।

दित्यः (पु०) दैत्य ।

दिग्दा (स्त्री०) देने की इच्छा ।

दिदृक्षा (स्त्री०) देखने की इच्छा ।

दिदृक्षु (वि०) देखने के लिये इच्छुक ।

दिधिषुः (पु०) १ एक स्त्री का दूसरा पति । २ अक्षत
योनि विधवा जिसका पुनर्विवाह हुआ हो ।

दिधिषूः } (स्त्री०) दो बार व्याही हुई स्त्री । वह
दिधिषूः } अविवाहिता स्त्री जिसकी छोटी बहिन का
विवाह होगया हो ।—पतिः, (पु०) वह मनुष्य
जिसने अपने भाई की विधवास्त्री से मैथुन
किया हो ।

दिधीषा (स्त्री०) सहायता करने की अभिलाषा ।

दिनं, (न०) १ दिन । २ दिवस जिसका मान रात

सहित २४ घंटे का है ।—अश्विनं, (न०) अश्व
कार ।—अत्ययः,—अन्तः,—अवसानं, (न०)
सन्ध्या । सूर्यास्त का समय ।—अधीशः, (पु०)
सूर्य ।—ईश्वरप्राप्तजः, (पु०) १ शनिग्रह । २
सूर्याव ।—करः,—कर्तृ,—कृत, (पु०) सूर्य ।
—केसरः,—वः, (पु०) अन्धकार ।—लयः,
(पु०) सन्ध्या काल ।—सूर्या, (स्त्री०) नित्य
का धंधा । नित्य का कार्यक्रम ।—ज्योतिस्,
(न०) धूप ।—दुःखिन, (पु०) चक्रवाक ।
चक्रवा चक्रई । पः,—पतिः,—बन्धुः,—
सणिः,—मयूखः,—रत्नं, (न०) सूर्य ।—मुखं,
(न०) प्रातःकाल ।—मूर्धन् (पु०) उदया-
चल पर्वत ।—यौवनं (न०) दोपहर । सन्ध्याकाल ।

दिनिका (स्त्री०) एक दिन की सज़दूरी ।

दिरिपकः (पु०) खेलने की गेंद ।

दिलीपः (पु०) सूर्यवंशी एक राजा जो राज अंशुमत
के पुत्र और भागीरथ के पिता थे । किन्तु कालि-
दास ने इनको रघु का पिता बतलाया है ।

दिष् (धा० परस्मै०) [दीव्यति, द्यूत, या द्यूनः]
१ चमकना । २ फेंकना । पटकना । ३ जुआ
खेलना । पासों से खेलना । कीड़ा करना । ४
हँसी मज़ाक करना । ५ दांव लगाना । ६ बेचना ।
७ फजूल खर्ची करना । उड़ाना । ८ प्रशंसा
करना । ९ प्रसन्न होना । ११ पागल होना ।
नशे में चुर होना । १२ सोना । १३ अभिलाषा
करना । [देवति, देवयति,—देवयते] १ खिलाप
करना । २ तंग कराना । सतवाना ।

दिव् (स्त्री०) [कर्ता एकवचन—द्यौः] १ स्वर्ग । २
आकाश । ३ दिवस । ४ प्रकाश । चमक ।—
पतिः, (दिवस्पतिः) (पु०) इन्द्र ।—स्पृथिव्यौ
(दिवस्पृथिव्यौ) पृथिवी आकाश ।—दिविजः,
—दिविष्टः,—दिविस्थः,—दिविसद्, (पु०)
दिविषद् (पु०) दिवोकस्, (पु०) दिवौकस्
—दिवौकसः, (पु०) स्वर्गवासी देवता ।

दिवम् (न०) १ स्वर्ग । २ आकाश । २ दिवस ।
४ जंगल ।

दिवस (न०) } दिन । इश्वर कर (पु०)
 दिवस (पु०) } सूर्य - मुख (न०) प्रातःकाल
 विगम (पु०) सन्ध्याकाल । स्यात्काल ।
 ईवा (अव्यया०) दिन से । दिनके समय में ।—
 अटनः, (पु०) १ काक ।—अन्धः,
 (पु०) उल्लू ।—अन्धकी, —अन्धिका
 (स्त्री०) छद्मर ।—करः, (पु०) सूर्य ।
 २ काक । ३ सूरजमुखी फूल ।—कीर्तिः, (पु०)
 १ चापडाल । नीच जाति का आदमी । २ नाई ।
 ३ उल्लू ।—निशः, (अव्य०) दिन रात ।—
 प्रदीपः, (पु०) दिन का दीपक । दुर्वोध
 मनुष्य ।—भीतः, —भीतिः, (पु०) १ उल्लू ।
 २ चोर । सेंच लगाने वाला ।—मध्यः, (न०)
 दोपहर ।—रात्रः, (अव्य०) दिन रात ।—वसुः,
 (पु०) पुत्र ।—शयः, (वि०) दिन में सोने
 वाला ।—स्वप्नः, —स्वापः, (पु०) दिन में
 सोना । [या दिन सम्बन्धी ।
 दिवातन (वि०) [स्त्री०—दिवातनी] दिन का
 देविः (स्त्री०) चाप पक्षी ।
 दिव्य (वि०) १ दैवी । स्वर्गीय । नैसर्गिक । २
 अलौकिक । अद्भुत । ३ चमकीला । दमकदार ।
 ४ मनोहर । सुन्दर । अंशुः, (पु०) सूर्य ।
 —अङ्गना, —नारी, —स्त्री, (स्त्री०)
 अप्सरा, —अदिव्य, (वि०) लौकिक तथा
 अलौकिक (वीर) जैसे अर्जुन ।—उदकं, (न०)
 वृष्टि का जल ।—कारिन्, (वि०) शपथ खाने
 वाला । सत्यासत्य की परीक्षा देने वाला ।—
 गायनः, (पु०) गन्धर्व ।—चलुस्, (वि०)
 १ दिव्य दृष्टि वाला । २ अंधा । (पु०) १ वानर ।
 २ अलौकिक दृष्टि ।—ज्ञानं, (न०) अलौकिक
 ज्ञान । नैसर्गिक ज्ञान ।—दृशः, (पु०) ज्योतिषी ।
 दैवज्ञ ।—प्रश्नः, (पु०) शकुन विचार ।—
 रश्मः, (न०) चिन्तामणि ।—रथः, (पु०)
 देवविमान जो आकाश में चलता है ।—रस्, (पु०)
 पारद । पारा ।—वस्त्रः, (वि०) नैसर्गिक
 परिच्छेद सम्पन्न ।—वस्त्रः, (पु०) १ धूप ।
 धाम । २ सूरजमुखी फूल ।—सरित्, (स्त्री०)
 आकाशगङ्गा ।—सारः, (पु०) साल वृक्ष ।

दिव्य (न०) १ नैसर्गिक स्वभाव । दैवी २
 आकाश । ३ (अभ्यास द्वारा) परीक्षा । ४
 शपथ । किरिया । गम्भीर बोधना । ५ लौकिक ।
 ६ चन्दन विशेष ।

दिव्यः (पु०) १ अलौकिक पुरुष । स्वर्गीय जीव ।
 २ यक्ष । जवा । ३ यम । ४ तत्त्ववेत्ता । दार्शनिक ।
 दिश (धा० उभय०) [दिशति—दिशते, दिष्ट]
 १ बतलाना । दिखलाना । सामने रखना । २
 निर्दिष्ट करना । ३ देना । लौपना । ४ अदा
 करना । ५ राजी होना । अङ्गीकार करना । ६
 आज्ञा देना । हुक्म देना । ७ अनुमति देना ।
 परवानगी देना ।

दिश (स्त्री०) [कर्त्ता एकवचन ।—दिक्, दिग्,]
 १ दिशा । २ निर्देश । सङ्केत । ३ अञ्चल । प्रदेश ।
 ४ विदेशी अञ्चल । ५ दृष्टिकोण । ६ आज्ञा ।
 आदेश । ७ सात की संख्या । ८ पक्ष या दल । ९
 काटने की गूत या चिन्ह ।—धन्तः, (पु०) दूरवर्ती
 स्थान ।—अन्तरं, (न०) १ दूसरी ओर । २
 मध्यवर्ती स्थान । अन्तरिक्ष । ३ सुदूरवर्ती स्थान
 विशेष ।—अम्बरः, (वि०) नितंग नंगा ।
 मादरजात नंगा ।—अम्बरः, (पु०) १ नागा ।
 जैन या बौद्ध धर्म का । २ भिक्षुक । संन्यासी । ३
 शिव । ४ अम्बरकार ।—ईशः, —ईश्वरः, (पु०)
 दिक्पाल ।—करः, (पु०) १ युवक । युवा-
 पुरुष । २ शिव जी ।—कारिका, —करी, (स्त्री०)
 युवती लड़की या स्त्री ।—कारिन्—गजः,—
 दन्तिन्,—वारणः, (पु०) अष्टदिग्गजों में से
 एक ।—चक्रं, (न०) १ आकाश मण्डल । २ समूचा
 संसार ।—जयः,—विजयः, (पु०) संसार का
 विजय ।—दर्शनं, (न०) केवल दिशा निर्देश ।
 —नागः, (पु०) १ दिग्गज । २ कालिदास का
 समकालीन एक कवि । मुखं, (न०) आकाश
 का कोई स्थान या भाग ।—मोहः, (पु०)
 दिग्भ्रम ।—वस्त्रः, (वि०) नितंग नंगा । नागा ।
 —वस्त्रः (पु०) १ दिगम्बरी साधु । २ शिव जी ।
 —विभावितः (वि०) जगत्प्रसिद्ध ।

दिशा (स्त्री०) दिशा । सिन्ध । अञ्चल । प्रान्त ।—
 गजः,—पालः, (पु०) दिग्गज । दिक्पाल ।

दिष्ट (वि०) १ विखलाया हुआ निर्दिष्ट । २ वर्णित
३ निश्चित । ४ आनिष्ट । अन्त (पु०) भृश ।
दिष्टम् (न०) १ अंश । भाग । २ प्रारब्ध । आज्ञा ।
आदेश । निर्देश । ४ उद्देश्य ।

दिष्टिः (स्त्री०) १ अंश । भाग । २ निर्देश । आदेश ।
निश्चय । आज्ञा । ३ भाग्य । प्रारब्ध । ४ सौभाग्य ।
हर्ष । शुभ कार्य ।

दिष्ट्या (अव्यय०) सौभाग्य से । भाग्यवश ।

दिह् (धा० उभय०) [दिष्टि, विष्टि, विग्धिः] १
लेप करना । उपटन करना । झाँटकर करना ।
कैलाना । २ खराब करना । अष्ट करना । अपवित्र
करना ।

दी (धा० आत्म०) [दीयते, दीन,] नष्ट होना । मर
जाना ।

दीक्ष् (धा० आत्म०) [दीक्षते, दीक्षित] १ यज्ञ
करने की योग्यता प्रदान करना । २ आत्मसमर्पण
करना । ३ शिष्य बनाना । ४ उपनयन संस्कार
करना । ५ यज्ञ करना । ६ आत्मसंयम का
अभ्यास करना ।

दीक्षकः (पु०) दीक्षा गुरु ।

दीक्षशं (न०) शिक्षादान । दीक्षादान ।

दीक्षा (स्त्री०) १ संस्कार । २ यज्ञारम्भ के पूर्व का
कर्म विशेष । ३ उपनयन संस्कार । ४ किसी उद्देश्य
की सिद्धि के लिये आत्मसमर्पण करना ।

दीक्षित (व० कृ०) १ दीक्षाप्राप्त । मंत्रोपदिष्ट । २
यज्ञ करने के लिये तैयार । ३ व्रत चारण किये हुए ।

दीक्षितः (पु०) १ दीक्षा में संलग्न यज्ञ कराने वाला ।
२ शिष्य । ज्योतिषोम आदि बड़े बड़े यज्ञ करने
वालों की सन्तान ।

दीदिविः (पु०) १ भात । २ स्वर्ग ।

दीधितिः (स्त्री०) १ प्रकाश की किरण । २ चमक । ३
कान्ति । शारीरिक स्फूर्ति ।

दीधितिमत् (वि०) चमकीला । (पु०) सूर्य ।

दीधी (धा० आत्म०) [दीधीते] १ चमकना । २
मालूम पड़ना । प्रकट होना ।

दीन (वि०) १ गरीब । निर्धन । निष्किञ्चन । २
सन्तप्त । पीड़ित । अभाग । ३ दुःखी । उदास । ४
भीरु । डरपोंक । ५ कमीना । दयार्द्र । कष्ट ।—

दयालु (वि०) दयस्वरु (वि०) दीनों
पर कृपा करने वाला ।—दन्धुः (पु०) दीनों
का मित्र ।

दीनः (पु०) निर्धन मनुष्य । पीड़ित मनुष्य ।

दीनारः (पु०) १ एक प्रकार का प्राचीन कालीन
सौने का सिक्का । २ सिक्का । ३ सुवर्ण भूषण ।

दीप् (धा० आत्म०) [दीप्यते, दीप्त, वेदीप्यते] १
चमकना । भभकना । २ जलना । ३ घटकना । ४
शोधाविष्ट होना । ५ ज्योतिर्मय होना ।

दीपः (पु०) दीपक । चिरास । लैंप ।—अश्विता,
(स्त्री०) अमावास्या ।—आराधनं, (न०)

आर्ती करना ।—आलिः,—आलि,—आवली,
—उत्सवः, (पु०) दीपकों की माला या पंक्ति ।

दिवाली का उत्सव जो कार्तिकी अमावास्या को
किया जाता है ।—कलिका, (स्त्री०) दीपक

का फूल । चिरास का गुल ।—किट्टम्, (न०)
काजल ।—कूपी,—खरी, (स्त्री०) दीपक की

बत्ती । पलीता ।—पादपः,—वृक्षः, (पु०)
दीपक । झाड़ । शमादान ।—पुष्पः, (पु०)

चम्पक वृक्ष ।—भाजनं, (न०) लैंप ।—माला,
(स्त्री०) रोशनी ।—शत्रुः, (पु०) पतिगा ।

पंखी ।—शिखा, (स्त्री०) दीपक की लौ ।—
शृङ्खला, (स्त्री०) दीपकों की पंक्ति । रोशनी ।

दीपक (वि०) [स्त्री०—दीपिका] १ जलता
हुआ । प्रकाशमान । २ चमकता हुआ । सुन्दर
बनाने वाला । ३ भड़काने वाला । उभाड़ने वाला ।
४ बलप्रद । पावनशक्ति बढ़ाने वाला ।

दीपकं (न०) १ केसर । जाफ़ाँन । २ अर्थात्तद्धार
विशेष ।

दीपकः (पु०) १ रोशनी । चिरास । दीपक । २
बाज पत्नी । ३ कामदेव की उपाधि ।

दीपनम् (न०) १ जलानेवाला । प्रकाश करने
वाला । २ बलप्रद । पावनशक्ति को बढ़ाने वाला ।
३ स्फूर्ति उत्पन्न करने वाला । ४ केसर । जाफ़ाँन ।

दीपिका (स्त्री०) पलीता । मसाल ।

दीपित १ (वि०) १ आग लगा हुआ । २ जलता
हुआ । ३ प्रकाश करता हुआ । ४ प्रकट किया
हुआ । प्रत्यक्ष किया हुआ ।

दीप्तः (व० क०) जलता हुआ । प्रकाशमान ।
 धधकता हुआ चमकीला । बलता हुआ ।
 ४ भड़का हुआ । उच्चलित किया हुआ ।
 —अग्निः, (पु०) सूर्य ।—अक्षः, (पु०)
 विचार ।—अग्नि, (वि०) जलता हुआ ।—
 अग्निः, (पु०) १ धधकती हुई आग । २
 अगस्त्य जी का नाम ।—अद्भुतः, (पु०) मयूर ।
 मोर ।—आत्मन्, (वि०) क्रोधन स्वभाव का ।
 —उपलः, (पु०) सूर्यकान्त मणि ।—किरणः,
 (पु०) सूर्य ।—कोर्तिः, (पु०) कार्तिकेय का
 नाम ।—जिह्वा, (स्त्री०) लोमड़ी । [यह प्रायः
 किसी बद्मिजाज या कलहप्रिया स्त्री के लिये
 आलङ्कारिक रूप से प्रयुक्त होता है] —तपस्,
 (वि०) तपस्या में निरत ।—पिङ्गलः, (पु०)
 सिंह ।—रसः, (पु०) कँचुवा ।—लोचनः,
 (पु०) बिछी ।—लोहं, (न०) पीतल ।
 काँसा ।

दीप्तं (न०) सुवर्ण । सोना ।

दीप्तः (पु०) १ सिंह । २ नीव या बिनौरे का पेड़ ।

दीप्तिः (स्त्री०) १ चमक । आभा । कान्ति । २
 अत्यन्त मनोहरता । ३ लाख । चपड़ी । ४
 पीतल ।

दीप्ति (वि०) चमकीला । भड़कीला ।

दीप्तिः (पु०) अग्नि । आग ।

दीर्घ (वि०) [तुलना करने में द्राघीयस् Compar.

—द्राघिष्ठ, Superl.] लंबा (समय और स्थान
 सम्बन्धी) बहुत दूर तक पहुँचने या व्याप्त होने
 वाला । २ दीर्घकालीन । बहुत समय का । अरुचि
 उत्पन्न करने वाला । ३ गम्भीर । ४ दीर्घ (जैसे स्वर)
 ५ जंचा । लंबा ।—अध्वगः, (पु०) हल्कारा ।
 कासिद ।—अहनः, (पु०) ग्रीष्मऋतु ।—
 आकार, (वि०) लंबा अधिक, चौड़ा कम ।—
 आयु, —आयुस्, (वि०) दीर्घजीवी ।—
 आयुधः, (पु०) १ माला । २ बड़ी आदि
 कोई भी लंबा हथियार । ३ शूकर ।—आस्यः,
 (पु०) हाथी ।—कण्ठः, —कण्ठकः,—
 कन्धरः (पु०) सारस पक्षी ।—काय (वि०)
 कद में लंबा ।—केशः, (पु०) रीछ ।—गतिः,

ग्रीव घाटिक जघ (पु०) ऊँट
 जिह्व, (पु०) सर्प तपस् (पु०) अहस्या
 के पति गौतम का नाम तद दण्ड
 (पु०) ताड़ वृक्ष ।—तुण्डी, (स्त्री०) छल्ल-
 दर ।—दर्शिनः, (वि०) १ दूर देखने वाला ।
 आगा पीछा सोचने वाला । विवेकी । समझदार ।
 २ बुद्धिमान । मतिमान । (पु०) १ रीछ । २
 उल्लू ।—नाद (वि०) निरन्तर अति कोला-
 हल करने वाला ।—नादः, (पु०) १ कुत्ता । २
 मुर्गा । ३ शङ्ख ।—निद्रा, (स्त्री०) दीर्घकालीन
 नींद । मृत्यु ।—पत्रः, (पु०) ताड़ का वृक्ष ।
 पादः, (पु०) बगुला । बूटीमार ।—पादप,
 (पु०) १ नारियल का पेड़ । सुपाड़ी का पेड़ ।
 ३ ताड़ का पेड़ ।—पृष्ठः, (पु०) सर्प ।—
 बाला, (स्त्री०) स्रग विशेष । चमरी ।—
 मारुतः, (पु०) हाथी ।—रतः, (पु०) कुत्ता ।
 रदः, (पु०) शूकर ।—रसनः, (पु०) सर्प ।
 रोमन्, (पु०) शूकर ।—वक्त्रः, (पु०) हाथी ।
 —सक्थ, (वि०) बड़ी बड़ी जाँघों वाला ।—
 सत्रं, (न०) दीर्घ-काल-न्यापी सोमयाग ।—
 सत्रः, (पु०) ऐसा यज्ञ करने वाला ।—सूत्र,
 —सूत्रिन्, (वि०) धीरे काम करने वाला ।

धीमा । सुस्त । दीर्घसूत्री ।

दीर्घ (अव्यया०) १ असें का । असें तक । २ गह-
 राई से । गम्भीरता से । ३ दूर । सुदूर ।

दीर्घः (पु०) १ ऊँट । २ दीर्घ स्वर ।

दीर्घिका (स्त्री०) १ दिग्घी । लंबी झील । २ झील
 या रूप ।

दीर्घा (वि०) १ फटा हुआ । चिरा हुआ । २ भय-
 भीत । डरा हुआ ।

दुःख (वि०) १ पीड़ाकारक । अप्रिय । प्रतिकूल ।
 २ कठिन । असरल ।—अतीत, (वि०) दुःखों
 से मुक्त ।—अन्तः, (पु०) मोक्ष ।—कर,
 (वि०) पीड़ादायी । कष्टदायी ।—ग्रामः,
 (पु०) सांसारिक अस्तित्व । दुःखदायी इश्य

द्विज, (वि०) १ सरल कथा । २ पीडित
दुःखी ।—प्रायः, —बहुल, (वि०) दुःखों से
परिपूर्ण ।—भाज्, (वि०) दुःखी ।—लोकः,
(पु०) सांसारिक जीवन जो दुःखपूर्ण है ।
—शील, (वि०) कठिनता से कावु में किये
जाने वाला । दुष्ट स्वभाव का । चिड़चिड़ा ।

दुःखम् (न०) १ दुःख । रंज । पीडा । कष्ट । २
मुसीबत । कठिनाई ।

दुःखित } (वि०) [स्त्री०—दुःखिनी] १ पीडित ।
दुःखिन् } सन्तप्त । दुःखी । २ बापुरा । कष्टी ।
अभागा ।

दुःकुलं (न०) रेशमी मिहीन वस्त्र । दुपट्टा ।

दुग्ध (वि०) दुहा हुआ । दूध निकाला हुआ ।
खींचा हुआ । निकाला हुआ ।—अग्रं, (न०)
—तालीयं, (न०) मलाई ।—पाचनम्,
(न०) दुधैदी जिसमें दूध गरमाया जाता हो ।
—पोष्य, (वि०) माता का दूध पीने वाला
(बच्चा) ।—समुद्रः, (पु०) क्षीरसागर ।

दुग्धम् (न०) १ दूध । २ क्षीरवृक्षों का दूध
जैसा रस ।

दुध (वि०) १ दुहने वाला । देने वाला ।

दुधा (स्त्री०) दुधार गौ ।

दुंडुक } (वि०) बेईमान । दुष्ट हृदय का । जालसाज ।
दुग्दुक }

दुद्रुमः (पु०) हरा प्याज ।

दुंदमः } (पु०) ढोल । नगाड़ा ।
दुन्दमः }

दुंदुः } (पु०) १ एक प्रकार का ढोल । २ कृष्ण के
दुन्दुः } पिता वसुदेव का नाम ।

दुंदुमः } (पु० स्त्री०) ढोल विशेष । (पु०) १
दुन्दुमः } विष्णु । २ कृष्ण । ३ विष विशेष । ४ एक
दैत्य जिसे बालि ने मारा था ।

दुंदुभिः } (पु० स्त्री०) बड़ा ढोल । नगाड़ा । (पु०)
दुन्दुभिः } १ विष्णु । २ कृष्ण । ३ विषविशेष । ४
दैत्य जिसे बालि ने मारा था ।

दुर् (अव्यया०) एक उपसर्ग जो दुस्, के बदले उन
शब्दों में लगायी जाती है, जो स्वर या ह्रस्व व्यञ्जनों
से आरम्भ होते हैं । इसका प्रयोग “दुरे” “कठोर”
या “दुरूह” के अर्थ में किया जाता है ।—अक्ष,

(वि०) १ कमजोर आँख वाला २ दुरे नेत्रों
वाला ।—अक्षः, (पु०) कपट के पाँसे ।—
अतिक्रम, (वि०) १ दुस्तर । जिसका नाँबना
या पार होना कठिन हो । २ अजेय । ३ अनि-
वार्य ।—अत्यय, (वि०) देखो अतिक्रम ।—
अदूट, (न०) अभाग्य । बुरी किस्मत ।—
अधिग, —अधिगम, (वि०) १ अप्राप्त । २
२ जो कठिनाई से मिल सके । ३ कठिनाई से
समझ में आ सके ।—अधिष्ठित, (वि०) बुरी
तरह किया हुआ । दुर्व्यवस्थित ।—अध्यय,
(वि०) १ कठिनता से प्राप्त करने योग्य । २
अध्ययन करने के लिये अत्यन्त कठिन ।—अध्यव-
सायः, (पु०) मूर्खता पूर्ण व्यवसाय या कार्य ।
—अध्वः, (पु०) बुरा मार्ग ।—अश्ल, (वि०)
१ अनन्त । अन्तरहित । जिसकी समाप्ति पर
पहुँचा ही न जा सके । २ परिणाम में दुःखदायी ।
—अन्वय, (वि०) कठिनाई से पीछे चलने
योग्य । २ कठिनाई से प्राप्त करने या समझने
योग्य ।—अन्वयः, (पु०) असंपूर्ण परिणाम
या फल ।—अभिमानिन्, (वि०) अनुचित
अभिमान करने वाला ।—अवगम, (वि०)
समझ में न आने योग्य ।—अवग्रह, (वि०)
कठिनाई से वश में लाने योग्य ।—अवस्थ,
(वि०) दुर्दशाग्रस्त ।—अवस्थ, (स्त्री०)
दुर्दशा ।—आकृति, (वि०) बदसूरत । कुरूप ।
—आक्रम, (वि०) अजेय । न जीतने योग्य ।
आक्रमणं, (पु०) १ अनुचित चढ़ाई । २ दुरूह
स्थान ।—आगमः, (पु०) अनुचित या शास्त्र
विरुद्ध उपलब्धि ।—आग्रहः, (पु०) मूर्खता
पूर्ण हठ । जिद्द ।—आचर, (वि०) कठिनाई
से पूर्ण होने वाला ।—आचार, (वि०) दुष्ट
आचरण वाला । दुष्ट ।—आचारः, (पु०)
कुत्सित पद्धति । दुष्टता ।—आत्मन्, (पु०)
दुष्टात्मा । पापी । बदमाश ।—आघर्ष, (वि०)
१ दुरतिक्रम । दुरूह । २ जिस पर आक्रमण न
किया जा सके । ३ क्रोधी ।—आनय, (वि०)
कठिनता से झुकाने या खींचने योग्य ।—आप,
(वि०) कठिनाई से प्राप्तव्य ।—आराध्य,

(वि०) कठिनाई से प्रसन्न होने वाला या मनाया जाने वाला ।—आरोहः, (वि०) कठिनाई से चढ़ने योग्य ।—आरोहः, (पु०) १ नारियल का पेड़ । २ लाड़का वृक्ष । ३ कुहारे का पेड़ ।—आलापः, (पु०) १ अकोसा । शाप । २ गाली गलौज ।—आलोक, (वि०) १ कठिनाई से देखने या पहचानने योग्य । २ चकाचौंध वाला ।—आधार, (वि०) कठिनाई से ठकने योग्य । कठिनाई से काबू में आने वाला ।—आशय, (वि०) दुष्ट मन वाला । दुष्टात्मा । मलिनचित्त का ।—आशा, (स्त्री०) बुरी या दुष्ट अभिलाषा । आशा जिसका पूरा होना कठिन हो ।—आसद, (वि०) १ अजेय । जिस पर आक्रमण न किया जा सके । २ कठिनाई से मिलने वाला । ३ असमान । असदृश ।—इत, (वि०) १ कठिन । २ पापपूर्ण ।—इतम्, (न०) १ बुरा मार्ग । २ दुष्टता । कठिनाई । खतरा । भय । ३ मुसीबत । विपत्ति ।—इष्टं, (न०) १ अकोसा । शाप । २ अनुष्ठान जो दूसरे को हानि पहुँचाने के लिये किया जाय ।—ईशः, (पु०) बुरा स्वामी । दुष्ट मालिक ।—ईषणा, —एषणा, (स्त्री०) अकोसा । शाप ।—उक्तं,—उक्तिः, (स्त्री०) ऐसा कथन जो बुरा लगे । गाली । भर्त्सना । धिक्कार । फटकार ।—उत्तर, (वि०) जो उत्तर देने योग्य न हो ।—उदाहर, (वि०) कठिनाई से उच्चारण करने योग्य ।—उद्ध, (वि०) असह्य ।—ऊह, (वि०) निगूढ़ । दुर्बोध ।—ग, (वि०) १ कठिनाई से प्रवेश करने योग्य । अगम्य । २ अप्राप्त्य । ३ जो समझ में न आ सके । गः, (पु०)—गम्, (न०) किसी वन, नदी या पर्वत के ऊपर का मार्ग जो कठिनाई से तै किया जा सके । १ सङ्कीर्ण मार्ग । २ गड़ी । गढ़ । किला । महल । ३ ऊबड़-खाबड़ भूमि । ४ कठिनाई । विपत्ति । मुसीबत । कष्ट । भय । खतरा ।—गर्ग, (=दुर्गा) (स्त्री०) पार्वती का नाम विशेष ।—गत, (वि०) १ अभागा । दुःखस्था को प्राप्त । २ अकिञ्चन । निर्धन । ३ दुःखी । मुसीबतज्जदा ।—गतिः, (स्त्री०) १ अभाग्य । बदकिस्मती । अभाव ।

कष्ट । २ कठिन अवस्था या मार्ग । ३ नरक ।—गन्ध, (वि०) दुर्गन्धि युक्त ।—गन्धः, (पु०) १ बदबू । बास । सड़ाह्न । २ प्याज़ । ३ आम का पेड़ ।—गन्धि, —गन्धिन, (वि०) बदबू वाला ।—गम, (वि०) १ अगम्य । न जाने योग्य । २ अप्राप्त्य । ३ समझने में कठिन ।—गाढ, —गाध, —गाह्य, (वि०) थाह लेने में कठिन । अथाह । जिसका अनुसन्धान न हो सके ।—ग्रह, (वि०) १ कठिनाई से प्राप्त्य या सम्पन्न करने योग्य । २ कठिनाई से जीतने या काबू में करने योग्य । ३ कठिनाई से समझ में आने योग्य ।—ग्रहः, (पु०) मरोड़ । ऐंठन । जकड़ । अकड़बाई ।—घट, (वि०) १ कठिन । २ असम्भव ।—घोषः, (पु०) १ चीज़ । चिल्लाहट । २ रीछ ।—जन, (वि०) १ दुष्ट । बुरा । खराब । २ मलिन चित्त का । उपद्रवी ।—जनः, (पु०) दुष्ट आदमी । उत्पाती आदमी ।—जय, (वि०) अजेय ।—जर, (वि०) १ सदैव युवा रहने वाला । २ कड़ा (खाद्य पदार्थ) । १ सहज में न पचने योग्य । २ कठिनाई से उपभोग करने योग्य ।—जात, (वि०) १ दुःखी । अभागा । २ दुष्ट स्वभाव का । बुरा । दुष्ट । ३ मिथ्या । बनावटी ।—जातम्, (न०) दुर्भाग्य । बदकिस्मती । विपत्ति ।—जाति, (वि०) १ दुष्ट स्वभाव । दुष्ट । बुरा । २ जाति वहिष्कृत ।—जातिः, (स्त्री०) विपत्ति । दुर्वस्था ।—ज्ञान, —ज्ञेय, (वि०) जो बोधगम्य न हो । जो जाना न जा सके ।—णयः,—नयः, (पु०) दुष्टाचरण । २ अतौचित्य ३ अन्याय ।—णामन्,—नामन्, (वि०) बुरा नाम वाला ।—दम,—दमन,—दम्य, (वि०) कठिनाई से बस में आने योग्य ।—दर्श, (वि०) १ कठिनाई से दिखलायी पढ़ने वाला । २ चकाचौंध वाला ।—दान्त, (वि०) ऊबसी । उपद्रवी ।—दान्तः, (पु०) १ बड़बड़ा । २ झगड़ा । ऊबस ।—दिनं, (न०) १ बुरा दिन । २ दिन जिसमें आकाश मेघाच्छादित रहै । ३ वृष्टि (किसी भी चीज़ की) । ४ गाढ़ अंधकार ।—दूष्ट, (वि०) अनुचित रीत्या निर्णीत ।—दैवं,

(न०) दुर्भाग्य बद्रक्लिस्मती द्यूत (न०)
 कपट द्यूत द्रुम (पु०) प्याज । धर
 (वि०) जिस धारण करना या पकड़ रखना
 कठिन हो ।—धरः, (पु०) पारा । पारद ।—
 धर्म, (वि०) १ जिसका तिरस्कार न हो सके ।
 जो पकड़ा न जा सके । २ अग्रभ्य । ३ भयावह ।
 भयजनक । ४ क्रोधन स्वभाव का ।—धी, (वि०)
 मूढ़ । मूर्ख ।—नामकः, (पु०) अशरोग ।
 बवासीर के मसले ।—निग्रह, (वि०) जो
 दबाया न जा सके । जिस पर शासन न किया जा
 सके । बर्बर । जंगली ।—निमित्त, (वि०)
 असावधानी से भूमि पर रखा हुआ ।—निमित्तं,
 (न०) १ अपशकुन । २ अनुचित बहाना ।—
 निवार,—निवार्य, (वि०) कठिनाई से रोकने या
 बचाने योग्य । अजेय ।—नीत, (न०) दुश्चरण ।
 दुर्नीत । बुरा चाल चलन ।—नीतिः, (स्त्री०)
 बुरा शासन ।—बल (वि०) १ निर्बल । कमजोर
 २ उस्ताहीन । ३ छोटा । थोड़ा । कम ।—बाल,
 (वि०) गंजा । खलवाट ।—बुद्धि, (वि०)
 १ मूर्ख । मूढ़ । २ दुष्ट चित्त का । दुष्टात्मा ।
 बोध, (वि०) जो समझ में न आ सके । अथाह ।
 —भग, (वि०) अभागा ।—भगा, (स्त्री०)
 १ पत्नी जिसे उसका पति नापसंद करता हो । २
 दुष्ट स्वभाव स्त्री ।—भर, (वि०) जिसका पालन
 पोषण न किया जा सके ।—भाग्य, (वि०)
 अभागा । बद्रक्लिस्मत् ।—भाग्यं, (न०) अभाग्य ।
 बद्रक्लिस्मती ।—भित्तं, (न०) अकाल । क्रहण ।—
 भृत्यः, (पु०) बुरा नौकर । भ्रातृ, (पु०)
 बुरा भाई ।—मति, (वि०) १ मूर्ख । मूढ़ ।
 अज्ञान । २ दुष्ट ।—मद, (वि०) शराबी ।
 पागल । भयानक ।—मनस्, (वि०) मन में
 दुःखी । अनुत्साहित । उदास । दुःखी ।—मनुष्यः,
 (पु०) बुरा आदमी ।—मंत्रः,—मंत्रितम्,
 (न०) बुरा परामर्श । बुरी सलाह ।—मरणम्,
 (न०) अकाल मृत्यु ।—मर्याद, (वि०) दुरशील ।
 दुष्ट ।—मल्लिका,—मल्लीः, (स्त्री०) छोटा
 नाटक । सुखान्त । नक्रल ।—मिश्रः, (पु०) १
 बुरा दोस्त । २ शत्रु ।—मुख, (वि०) १ कुरूप ।

बदशाह २ बत्तखान । मू य (वि०) महंगा
 तेज । मंजस्, (वि०) मूर्ख । मूढ़ । कुन्द ।
 (पु०) मूढ़ । बुद्ध ।—योध, —योधन, (वि०)
 अजेय । जो जीता न जा सके ।—योधनः, (पु०)
 दृष्टराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र ।—योनि (वि०) नीच
 जाति में उत्पन्न ।—लक्ष्य, (वि०) कठिनाई से
 देख पड़ने वाला ।—लभ, (वि०) १ कठिनाई से
 प्राप्त होने योग्य या मिलने योग्य । २ सर्वोत्तम ।
 प्रसिद्ध । ३ प्रिय । प्रेमपात्र । ४ मूल्यवान् ।—
 ललित, (वि०) १ लाड़ प्यार से विगाड़ा हुआ ।
 दुलार से खराब किया हुआ । २ नटखट । उपद्रवी
 दुष्ट ।—लेख्यं, (न०) जाली दस्तावेज ।—वन्न,
 (वि०) अवर्णनीय ।—वर्चं, (न०) गाली ।
 दुर्वच्य ।—वन्नस्, (न०) गाली । कुवाच्य ।—
 वर्ण, (वि०) बुरे रंग का ।—वर्ण, (न०)
 चाँदी ।—वसतिः, (स्त्री०) ऐसा आवासस्थान
 जहाँ रहने में कष्ट हो ।—वह, (वि०) भारी ।
 —वाक्य, (वि०) १ बोलने या कहने में कठिन ।
 २ कुवाच्य युक्त । ३ कठोर । निष्ठुर ।—वाच्यं,
 (न०) १ गाली । फटकार । धिक्कार । २ बदनामी ।
 अपवाद ।—वादः, (पु०) मानहानि । बदनामी ।
 —वार,—वारण, (वि०) असह ।—वासना,
 १ बुरी अभिलाषा । २ अलीक कल्पना । असारवस्तु
 —वासस्, (वि०) १ बुरी तरह पोशाक पहिने
 हुए । २ नंगा । (पु०) अवि और अनुसूया के
 पुत्र एक ऋषि का नाम ।—विगाह,—विगाहा,
 (वि०) अथाह ।—विचित्र, (वि०) जो समझ
 में न आ सके ।—विदग्ध, (वि०) १ अपटु ।
 कच्चा । मूर्ख । मूढ़ । २ नितान्त या निपट अज्ञान ।
 ३ मूर्खतावश अभिमान से फूला हुआ । बृथा-
 भितानी ।—विध, (वि०) १ कमीना । २
 दुष्ट । ३ अकिञ्चन । ४ मूर्ख ।—विनयः, (पु०)
 बुरा चालचलन ।—विनीत, (वि०) डीठ ।
 हठी । जिदी ।—विपाकः, बुरा परिणाम या
 फल । २ इस जन्म या पूर्व जन्म में किये हुए
 कर्मों का बुरा फल ।—विलसितं, (न०)
 उद्दण्डता । नटखटी ।—वृत्त, (वि०) १ दुष्ट ।
 बदमाश । असदाचरणी । २ गुण्डा ।—वृत्तम्,

(न०) असदाचरण । दुरा चाल चलन वृत्ति
 स्त्री०) सुखा अक्कल दरबहार (पु०)
 अनुचित निर्णय या फसला । - दत्त, (वि०)
 अवज्ञाकारी । नियम-विरुद्ध करने वाला । - हुन,
 (न०) विधि-विरुद्ध हवन किया हुआ । - हृद्,
 (वि०) दुष्ट हृदय । (पु०) कोई भी शत्रु । -
 हृदय, (वि०) दुष्ट हृदय । दुरा इरादा रखने
 वाला । दुष्ट ।

दुरादर (न०) दुश्मा । पाँसे का खेल ।

दुरादरः (पु०) १ ज्वाही । दुश्मा खेलने वाला । २
 पाँसे रखने की पेटी ३ दाँव ।

दुल (धा० उभ०) [दोलयति—दोलयते, दालित]
 भूलना ।

दुलिः (स्त्री०) छोटी कलुई या कड़वी ।

दुष् (धा० परस्मै०) [दुष्यति, दुष्ट] १ हानि
 उठाना । खराब होना । धब्बा लगना । अपवित्र
 होना । दूत लगना । २ पाप करना । भूल करना ।
 गलती करना । ४ असली होना । निमकबरामी
 करना ।

दुष्ट (व० कृ०) १ खराब किया हुआ । बरबाद किया
 हुआ । चोटिल किया हुआ । नष्ट किया हुआ ।
 २ भ्रष्ट किया हुआ । कलङ्कित किया हुआ । ३
 बिगाड़ा हुआ । ४ दुष्ट । ५ अपराधी । जुर्म करने
 वाला । ६ नीच । ओछा । ७ दोषपूर्ण । त्रुटि
 युक्त । ८ कष्टदायी । ९ निकम्मा । - आत्मन्, -
 आशय, (वि०) दुष्ट चित्त । दुराशय । - राजः
 (पु०) खूनी हाथी । - चेतस् — धी बुद्धि,
 (वि०) मलिन चित्त । खराब तवियत का । -
 दुष्ः, (पु०) झराब या अक्षियल बैल ।

दुष्टिः (स्त्री०) चरित्रग्रंथ । भ्रष्टावस्था ।

दुष्टु (अव्यया०) १ दुरा । झराब । २ अनुचित रूप से ।
 भूल से । गलती से ।

दुष्यन्तः } (पु०) सूर्यवंशी एक राजा जो पुरुवंशी
 दुष्यन्तः } थे । इनका गन्धर्व-विवाह शकुन्तला के साथ
 हुआ था ।

दुस् (यह एक उपसर्ग है जो संज्ञावाची और कभी
 कभी क्रियावाची शब्दों में लगायी जाती है ।
 इसका प्रयोग "दुरा, दुष्ट, अपकृष्ट, कठोर या

कठिन के अर्थों में किया जाता है करम्,
 (न०) १ कठिन और पीड़ादायी कार्य । कठि-
 नाई । २ अन्तरिक्ष । आकाश । - कर्मन्, (पु०)
 पापकर्म । अपराध । जुर्म । - कालः, (पु०)
 १ दुरा समय । २ प्रलय काल । ३ शिवजी की
 उपाधि । - कुलं, (न०) अकुलीन कुल । -
 कुलीन, (वि०) नीच वंशोत्पन्न । - कृत, (पु०)
 दुष्ट जन । - कृतं, - कृतिः, (स्त्री०) पापकर्म ।
 असदकर्म । - क्रम, (वि०) अस्तव्यस्त । गड़
 बड़ । - चर, (वि०) १ कठिनाई से पूरा होने
 वाला । कठिन काम । २ अपवेश्य । अयासव्य । ३
 असदाचरणी । - चरः, (पु०) १ रीढ़ । २ शङ्ख
 विशेष । - चरित, (वि०) दुष्ट । दुरे आचरण
 वाला । - चिकित्स्य, (वि०) असाध्य । आरोग्य
 न होने वाला । - च्यवनः, (पु०) इन्द्र । -
 द्यावः (पु०) शिवजी । - तर, (वि०) (= दुष्टर,
 या दुस्तर,) १ कठिनाई से पार किये जाने वाला ।
 २ कठिनाई से बश में किये जाने वाला । अजेय —
 तर्कः, (पु०) मिथ्या वादविवाद । - पच, (= दुष्पच)
 (वि०) कठिनाई से पचने योग्य । - पतनं, (न०)
 दुरी तरह गिरने वाला । (अपशब्द) — परिग्रह,
 (वि०) कठिनाई से पकड़ा जानेवाला । - परिग्रहः,
 (पु०) दुष्टास्त्री या भार्या । - पूर, (वि०) सुरिकल
 से भरा जाने वाला या अघाने वाला । - प्रकाश,
 (वि०) अंधियारा । धुंधला । - प्रकृति, (वि०)
 दुरे स्वभाव का । चिड़चिड़ा । - प्रजसू, (वि०)
 दुरी औलाद वाला । - प्रज्ञ, (= दुष्प्रज्ञ) (वि०)
 मूढ़ । निर्बल चित्त का — प्रधर्ष, - प्रधृष्य,
 (वि०) दुर्धर्ष । जिसपर हम्मा न हो सके । - प्रवादः,
 (पु०) कलङ्क । अपकीर्ति । अपवाद । - प्रवृत्तिः,
 (स्त्री०) दुरी खबर । अमङ्गलजनक संवाद । -
 प्रसह, [= दुष्प्रसह] १ भयङ्कर । २ असह्य । -
 प्राप, - प्राण, (वि०) अप्राप्त्य । कठिनता से
 मिलने योग्य । - शकुनं (न०) अपशकुन ।
 दुरा सगुन । - शला, (स्त्री०) धतराष्ट्र की एकमात्र
 पुत्री का नाम । यह जगद्रथ को ब्याही गयी थी ।
 - शासन, (वि०) कठिनाई से काबू में आने
 वाला । - शासनः, (पु०) धतराष्ट्र के १०० पुत्रों

मे से उनक एक पुत्र का नाम इसीने महारानी
द्रौपदी का भरी सभा में श्रीर खाव कर अप
मान किया था। इस अपमान का बदला भीमसेन
ने कुरुक्षेत्र की लड़ाई में इसके कलेजे का
गमगम लोहू पीकर लिया था।—शील,
[= दुःशील] (वि०) पापिष्ठ। दुराचारी।
धर्मभ्रष्ट।—सम, [= दुःसम या दुःसम] (वि०)
१ असम। असदृश। जो बराबर था समान न हो।
२ अभागा। ३ दुष्ट। कुत्सित। अनुचित।—समं,
(अव्यय०) दुष्ट। दुष्टता से।—सर्वं, (न०)
दुष्ट व्यक्ति।—सन्धान, —सन्धेय, (वि०) कठि
नाई से मिलने वाले या आपस में मेल कर लेने
वाले।—सह, [= दुःसह] (वि०) असह।
असमर्थनीय।—साक्षिन्, (पु०) झूठा साक्षी।
झूठा गवाह।—साध्य, —साध्य, (वि०) १ कठिनाई
से पूरा होने वाला या व्यवस्थित होने वाला। २
असाध्य (रोग)। ३ कठिनाई से बश में होने वाला।
—स्थ, —स्थित, [= दुःस्थ, और दुःस्थित]
१ दुरा। अकिञ्चन। निर्धन। अभागा। २ पीड़ित।
दुःखी। ३ अस्वस्थ। बीमार। ४ चञ्चल। अशान्त।
५ मूर्ख। अज्ञान।—स्थाम्, (अव्यय०) बुरी
तरह।—स्थितिः, (स्त्री०) बुरी दशा। बुरी
हालत।—स्पृष्टं [= दुःस्पृष्टं] १ थोड़ा सा हुआव
या लगाव।—स्मर, (वि०) कठिनाई से स्मरण
किया जाने वाला या जिसे स्मरण करने से पीड़ा
हो।—स्वप्नः, (पु०) खराब सपना।

दुह (धा० उभय) [दोगिध, दुग्धे, दुग्ध] १ दुहना
या दूध कर निचोड़ लेना। निकाल लेना। खींच
लेना। २ एक के भीतर से दूसरी चीज़ निकालना।
३ लाभ उठाना। ४ (किसी अपेक्षित वस्तु को)
देना। ५ उपभोग करना।

दुहितृ (स्त्री०) बेटी। पुत्री।—पतिः, या दुहितुः-
पतिः, (पु०) दामाद। जमाई।

दुः (धा० आत्म०) [दूयते दून] १ सन्तप्त होना।
पीड़ित होना। दुःखी होना। २ दुःखी करना।
पीड़ित करना।

तः } (पु०) आसिद्। संदेश ले जाने वाला।
तकः } पैगाम ले जाने वाला। इधर की बात उधर
और उधर की बात इधर पहुँचाने वाला।

दूतिका } (स्त्री०) कटनी [कभी कभी दूती का
दूती } लो हस्व भी हो जाता है।]

दूत्यं (न०) १ दूतपना। २ संदेश। पैगाम।

दून (वि०) पीड़ित। दुःखी।

दूर (वि०) [दूचीयस Comp. दूविष्ट, Super]

दूरवर्ती। फासले पर।—अन्तरित, (वि०) दूर
होने के कारण बिलगाया हुआ।—आपातः,

(पु०) दूर से निधानाबाज़ी करना।—आसाव,

(वि०) दूर से फलौंगना या कूदना।—आरुह,

(वि०) ऊँचा चढ़ा हुआ। बहुत आगे बढ़ा हुआ।

—ईरितेक्षण, (वि०) झंझ। ऐंछाताना।—

गत, (वि०) दूर स्थानान्तरित किया हुआ। दूर

गया हुआ।—अद्भुत, (न०) दूरस्थ वस्तुओं को देखने

की अलौकिक शक्ति।—दर्शनः, (पु०) १ गीब। २

विद्वान् पुरुष। पण्डित।—दर्शिन (वि०) दूरदर्शी।

विवेकी। विचारवान। (पु०) १ गीब। २ पण्डित।

३ देवदूत। पैगम्बर। ऋषि।—दृष्टिः, (स्त्री०) १

दूर तक देख सकने की शक्ति। २ विवेक।—पातः,

(पु०) १ बहुत ऊँचाई से गिरना। २ दूर का

उड़ान।—पार, (वि०) १ बहुत चौड़ा (या

चौड़े फाँट की नदी)। २ कठिनाई से पार होने

योग्य।—बन्धु, (वि०) भार्या तथा भाई बन्धुओं

से दूर किया हुआ।—भाज्, (वि०) दूरी।

फासला। वर्तित, (वि०) दूर पर मौजूद होना

फाँसले पर होना।—वस्त्रक, (वि०) नंगा।—

विलम्बिन, (वि०) बहुत नीचा लटकने वाला।

—वेधिन, (वि०) दूर से छेद करने वाला या

धुसने वाला।—संस्थ, (वि०) बहुत दूरी पर

मौजूद।

दूरतः (अव्यय०) बहुत दूर से। फाँसले से।

दूरेत्य (वि०) दूरी पर। दूर से आना।

दूर्यम् (न०) मल। गाद। विण्डा।

दूर्वा (स्त्री०) एक प्रकार की घास जो बहुत फैलती
है और देव तथा पितृ पूजन के काम आती है। यह
घोड़ों को खिलायी जाती है और घोड़े इसे बड़े
प्रेम से खाने हैं।

दूलिका } (स्त्री०) नील का पौधा।
दूली }

दूष (वि०) अपविष्ट करने वाला खराब करने वाला
यथा पक्तिदूष”

दूषक (वि०) [स्त्री०—दूषिका] भष्ट करने वाला।
नष्ट करने वाला। २ पापी

दूषकः (पु०) १ कुपथ में प्रवृत्त करने वाला।
स्त्रियों का सतीत्व नष्ट करने वाला। २ बदनाम
मनुष्य।

दूषणं (न०) १ दोष। २ हानिकारक। ३ गाली।
कुवाच्य। ४ अपवाद। अपकीर्ति।

दूषणः (पु०) रावण पत्नीय एक प्रधान रावण जिसे
जनस्थान में श्रीरामचन्द्र जी ने मारा था।

दूषिः } (स्त्री०) आँख का कीचड़।
दूषी }

दूषिका (स्त्री०) १ पेंसिल। चित्रकार की कूची। २
चाँवल विशेष। ३ आँख का कीचड़।

दूषित (वि०) १ भष्ट। नष्ट। बिगड़ा हुआ। २
चोटिल। ३ टूटा फूटा। चरित्रभ्रष्ट। ४ अपकी-
र्तित। कलङ्कित। ५ मिथ्या दोषारोपित। बदनाम
किया हुआ।

दूष्य (वि०) भष्ट होने योग्य। कलङ्क लगाने योग्य।

दूष्यं (न०) १ पीप। शल। २ विप। ३ रुई। ४ वस्त्र।
कपड़ा। ५ शामियाना। तंबू।

दूष्या (स्त्री०) हाथी का चमड़े का जेरबंद।

दू (धा० आत्म०) [द्रियते,—दूत,—दिदरिषते]
सम्मान करना। आदर करना। पूजा करना।

दूह् (धा० परस्मै०) [दूहति दूहित] १ मजबूत करना।
दढ़ करना। २ दढ़ होना। ३ बढ़ना। अधिक
होना।

दूहित (व० कृ०) १ मजबूत किया हुआ। दढ़ किया
हुआ। २ बढ़ा हुआ।

दूकं (न०) छिद्र। रन्ध्र। छेद।

दूढ (वि०) १ मजबूत। अचल। अथक। २ पोढ़ा।
ढोस। ३ स्थापित। ४ अचञ्चल। ५ दृढता से
बँधा हुआ। ६ कसा हुआ। ७ घना। ८ बड़ा।
अत्यधिक शक्तिशाली। कठोर। ताकत वाला।
श्चिमड़ा। १० ऐसा कड़ा जो कठिनाई से लचाया
जा सके। ११ टहरने वाला। चलाक। १२
विश्वस्त। १३ निश्चित। अवश्य। १४—अंग, (वि०)

शरीर का पुष्प अङ्गम् (न०) हीरा इषुधि
(वि०) मजबूत तरकस रखने वाला।—काशङ्कः,
—ग्रन्थिः, (पु०) बाँस।—ग्राहिन्, (वि०) मजबूती
से पकड़ने वाला।—दंशकः, (पु०) शार्क नामक
समुद्री जन्तु विशेष।—द्वार, (वि०) मजबूती से
द्वार को बंद रखने वाला।—धनः, (पु०) कुध देव
की उपाधि।—धन्वन्,—धन्विन्, (पु०) अच्छा
तीरन्दाज।—निश्चय, (वि०) १ दृढ़ सङ्कल्प।
—जीरः,—फलः, (स्त्री०) नारियल का वृक्ष।—
प्रतिज्ञ, (न०) वचन या प्रतिज्ञा का पक्का।—
प्ररोहः, (पु०) गूलर का पेड़।—प्रहारिन्, (वि०)
१ कस कर प्रहार करने वाला। २ ठीक लक्ष्य वेधने
वाला।—भक्ति, (वि०) निमकडलाल। सच्चा।
—मति, (वि०) अपने विचार का पक्का।—मुष्टि,
(वि०) १ सुम। कंजूस। २ मजबूती से मुट्ठी
बाँधने वाला।—मुष्टिः, (स्त्री०) तलवार।—
मूलः, (पु०) नारियल का पेड़।—लोमन्, (पु०)
जंगली सुअर।—वैरिन्, (पु०) कदयाशून्य
शत्रु। बेरहम दुश्मन।—व्रत, (वि०) १ धर्मा
जुष्ठान में दढ़। २ अचल। सच्चा। ३ अध्यवसायी।
—सन्धि, (वि०) १ मजबूती से मिले हुए। २
अच्छी तरह जुड़े हुए।—सौहृद, (वि०) मैत्री में
अचल या दढ़।

दूतिः (पु० स्त्री०) १ पानी मरने का चमड़े का डोल। २
मछली। ३ चर्म। खाल। ४ धौंकनी।—दुरिः,
(पु०) कुत्ता।

दून्फूः (स्त्री०) १ साँपिन। २ बज्र।

दून्भूः (स्त्री०) १ इन्द्र का वज्र। २ सूर्य। ३ राजा।
४ यम।

दूप् (धा० परस्मै०) [दर्पति, दर्पयति, दर्पयते] प्रकाश
करना। जलाना। बालना। [दूष्यति,—दूस्त]
१ अभिमान करना। अकड़ना। २ अत्यन्त प्रसन्न
होना। ३ आपे में न रहना।

दूस्त (वि०) १ अभिमानी। अकड़वाज। २ पागल।
मदमाता। आतङ्कायी।

दूप्त्र (वि०) अभिमानी। अकड़वाज। मजबूत। दढ़।

दृश् (धा० परस्मै०) [पश्यति,—दृष्ट] देखना। निहा-
रना। अवलोकन करना। पहचानना।

दृश (स्त्री०) १ दृष्टि निगाह २ आँख । ३ बोध ।
ज्ञान । ४ दो की संख्या । ५ ग्रह की गति ।—
अध्यक्षः, (पु०) सूर्य ।—कर्णः, (पु०) सर्प ।—
क्षयः, (पु०) धुंधला दिखलाई पड़ना । देखने की
शक्ति का कम हो जाना ।—जलः, (न०) आँसू ।
—पातः, (पु०) निगाह । नज़र । चितवन ।—
प्रिया, (स्त्री०) सौन्दर्य आभा —भक्तिः, (स्त्री०)
प्रेम भरी चितवन । विषः, (पु०) सर्प ।—श्रुतिः
(पु०) सर्प । साँप ।

दृशद् } (स्त्री०) पत्थर ।
दृषद् }

दृशा (स्त्री०) आँख ।—आकाक्ष्यः, (न०) कमल ।—
उपमं, (न०) सफेद कमल ।

दृशानः (पु०) १ दीक्षा गुरु । २ ब्राह्मण । ३ लोकपाल ।
दृशालं (न०) प्रकाश । चमक ।

दृशिः } (स्त्री०) १ आँख । २ शास्त्र ।
दृशी }

दृश्य १ देखने को । दिखलाई पड़ने वाला । २ मनो-
हर । सुन्दर ।

दृश्यं (न०) दिखलाई पड़ने वाली वस्तु ।

दृश्वन् (वि०) जानने वाला । देखने वाला । (आलं०)
जानकार ।

दृषट् (स्त्री०) १ चटान । २ चक्की का पाट । ३
सिल, जिस पर मसाले आदि पीसे जाते हैं ।—
उपलः, (पु०) चक्की का पाट जिस पर मसाले
पीसे जाते हैं ।

दृषद्वल् (वि०) पथरीला । चटानदार ।

दृषद्वती (स्त्री०) आर्यावर्त देश की पूर्वी सीमा की
एक नदी जो सरस्वती नदी में गिरती है ।

दृषदिमाधकः (पु०) कर जो चक्की चलाने वालों पर
लगाया जाय ।

दृष्ट (ध० कृ०) १ देखा हुआ । जाना हुआ । समझा
हुआ । २ पाया हुआ । मिला हुआ । ३ प्रकट ।
प्रादुर्भूत । ४ निश्चित किया हुआ । निर्णीत ।—
अन्तः—अन्तर्ग, (न०) १ मिसाल । उदा-
हरण । नज़र । २ शास्त्र । विज्ञान । ३ मृत्यु ।
—अर्थ, (वि०) स्पष्टार्थ-बोधक ।—कष्ट, —
दुःख, (वि०) कष्टसहिष्णु । दुःख भेले हुए ।

—कूटम्, (न०) कठिन प्रश्न । पहेली । बुझौ-
अल ।—क्षोष, (वि०) १ क्षोषयुक्त देखा हुआ ।
२ दुष्ट । ३ पकड़ा हुआ ।—ग्रन्थय, (वि०) १
विरचन । २ विश्वास दिलाया हुआ ।—रजस्,
(स्त्री०) युवावस्था को प्राप्त लड़की ।—व्यनि-
कर, (वि०) १ सुराबतें भेले हुए । २ अनिष्ट को
पहिले ही से जान लेने वाला ।

दृष्टं (न०) डकैतों का भय ।

दृष्टिः (स्त्री०) १ निगाह । नज़र । २ दृष्टि की आँखों
से देखना । ३ ज्ञान । जानकारी । ४ आँख ।
देखने की शक्ति । निगाह । ५ चितवन । ६
बुद्धि ।—कृत, —कृतं, (न०) स्थलपत्र ।
—क्षेपः, (पु०) नज़र ।—गुणः, (पु०)
तीरन्दाजों का निशाना या लक्ष्य ।—गोचर,
(वि०) नज़र के सामने ।—पूत, (वि०)
दृष्टि रख कर पवित्र रखना । रखवालो करना कि,
अपवित्र न होने पावे ।—बन्धु, (पु०) जुगुनू ।
—विशेषः, (पु०) कनस्त्रियों से देखना ।—
विद्या, (स्त्री०) नेत्रविद्या । चाबुसी विद्या ।
—विषः, (पु०) सर्प । साँप ।

दृह् } (धा० परस्मै०) [दृहति, दृहति,] १ दृढ़
दृह् } होना । २ बढ़ना । उगना । ३ समृद्धिमान होना
४ कस कर बाँधना ।

दृ (धा० परस्मै०) [दृर्यति, दृर्याति, दीर्ण,]
१ चिर कर खुल जाना । २ चिरवा डालना ।
फड़वा डालना । टुकड़े टुकड़े करवा डालना ।

द्रे (धा० परस्मै०) [द्रयते, दात,] रक्षा करना ।
बचाना ।

देदीप्यमान (वि०) चमकदार । दहकता हुआ ।

देय (वि०) १ देने को । भेंट करने को । चढ़ाने को ।
देने योग्य । भेंट करने योग्य । ३ लौटा देने को ।
फेर देने को ।

देव (धा० आत्म०) [देवते] १ खेलना । क्रीड़ा
करना । जुआ खेलना । २ विलाप करना । ३
चमकना ।

देव (वि०) [स्त्री०—देवी,] देवी । नैसर्गिक
स्वर्गीय । अंशः, (पु०) भगवान का अंशावतार ।
—अगारः, (पु०) अगारं, (न०) मन्दिर ।—

अङ्गा (स्त्री०) स्वर्गीय अप्सरा। अतिदेव,—
अधिदेव (पु०) सवाच देवता शिव
अधिप., (पु०) इन्द्र. अन्वस्., (न०)
—अन्न, (न०) देवताओं का अन्न। कव्य।
अभीष्ट, (वि०) देवताओं को प्रिय। देवता को
चढ़ा हुआ।—अभीष्टा, (स्त्री०) १ नफीरी वजाने
वाला। २ पान। ताम्बूल।—अररायं. (न०)
बाग।—अरिः, (पु०) दानव।—अर्चनं
(न०)—अर्चना, (स्त्री०) देवताओं का
पूजन।—अवस्थ, (पु०) देवालय। मन्दिर।
—अश्वः, (पु०) इन्द्र का घोड़ा उच्चैःश्रवा।
—आक्रीडः, (पु०) देवताओं का नन्दन वन।
—आजीवः, (पु०)—आजीविन् (पु०)
पुजारी। देवलक।—आत्मन्, (पु०) गूलर का
वृक्ष।—आयतनम्, (न०) मन्दिर।—आयुधं,
(न०) १ देवताओं का हथियार। २ इन्द्रधनुष।
—आलयः, (पु०) १ स्वर्ग। २ मन्दिर।—
आवासः, (पु०) १ स्वर्ग। २ अश्वत्थ वृक्ष।
३ मन्दिर। ४ सुमेरु पर्वत।—आहारः, (पु०)
अमृत।—इज्, (वि०) [कर्ता एकवचन
देवेट, या देवेड,] देवताओं की पूजा।—इज्यः,
(पु०) बृहस्पति।—इन्द्रः,—ईशः, (पु०) १
इन्द्र। २ शिव।—उद्यानम्, (न०) १ नन्दनवन।
२ मन्दिर के समीप का बाग।—ऋषिः,
[= देवर्षिः,] (पु०) १ अग्नि, ऋगु, पुलस्त्य,
अगिरस आदि देवर्षि हैं। २ नारद की उपाधि।
—ओकस्, (न०) सुमेरु पर्वत।—कन्या,
(स्त्री०) अप्सरा।—कर्मन्, (न०)—कार्यं,
(न०) १ धार्मिक कृत्य या अनुष्ठान। २ देवा-
र्चन।—काष्ठं, (न०) देवदारु वृक्ष।—कुण्डं,
(न०) कुदरती तालाव।—कुलं, (न०) १
मन्दिर। २ देव जाति। ३ देवताओं का समूह।
—कुल्या, (स्त्री०) स्वर्ग गङ्गा।—कुसुमं, (न०)
लवङ्ग। लौंग।—खालं,—खानकं, १ घाटी।
३ किसी मनुष्य का न बनाया हुआ तालाव या
जलाशय। ३ मन्दिर के समीप का जलाशय।
—गणाः, (पु०) देवताओं की एक श्रेणी।—
गणिका, (स्त्री०) अप्सरा।—गर्जनं, (न०)

बादल की गड़गड़ाहट गायत्र (पु०)
गन्धर्व गिरि (पु०) एक पर्वत का नाम
गुरुः, (पु०) १ कश्यप. बृहस्पति. शुद्धी,
(स्त्री०) सरस्वती की उपाधि या उसके समीप के
स्थान की उपाधि।—गृहं, (न०) १ मन्दिर।
२ राजप्रासाद। महल।—जया, (स्त्री०) देवा-
र्चन। देवपूजन।—चिकित्सकौ, (वि०)
अश्विनी कुमारद्वय।—कुन्दः, (पु०) सौलहा
मेती का हार।—तरुः, (पु०) १ अश्वत्थ वृक्ष।
२ मदारवृक्ष। ३ पारिजात वृक्ष। ४ सन्तान वृक्ष। ५
कल्पवृक्ष। ६ हरिचन्दन वृक्ष।—ताडः, (पु०) १ अग्नि
२ राहु।—दत्तः, (पु०) अर्जुन के शङ्ख का नाम
—दारु, (पु०) एक प्रकार का सनोवर का वृक्ष।
दासः, (पु०) मन्दिर का नौकर।—दासी,
(स्त्री०) मन्दिरों में रहने वाली स्त्रियाँ, जिनको
उनके घर वालों ने देवता को चढ़ा दिया हो।
नृत्यकी। वेश्या।—दीपः, (पु०) आँख।—
दूतः, (पु०) परिशता। देवदूत।—दुन्दुभिः,
(पु०) १ देवताओं का ढोल या नगाड़ा। २
श्यामा तुलसी जिसमें लाल मञ्जरी लगती है।
—देवः, (पु०) १ ब्रह्मा। २ शिव। ३ विष्णु।
द्रोणी, (स्त्री०) देवमूर्ति का जुलूस।—धर्मः,
(पु०) धार्मिक अनुष्ठान।—नदी, (स्त्री०)
१ गङ्गा। २ कोई भी पवित्र नदी।—नन्दिन्,
(पु०) इन्द्र के द्वारपाल का नाम।—नागरी,
(स्त्री०) वह लिपि जिसमें संस्कृत भाषा लिखी
जाती है।—निकायः, (पु०) स्वर्ग।—निन्दकः,
(पु०) नास्तिक।—निर्मित, प्राकृतिक।—पतिः,
(पु०) इन्द्र।—पथः, (पु०) १ आकाशमार्ग।
२ आकाश-गङ्गा। ज्ञापपथ।—पशुः, (पु०)
देवता को चढ़ाया हुआ कोई भी जानवर।—
पुरः,—पुरी, (स्त्री०) अमरावती पुरी।—
पूज्यः, (पु०) बृहस्पति।—प्रतिकृतिः, (स्त्री०)
प्रतिमा, (स्त्री०) मूर्ति। विग्रह।—प्रश्नः,
(पु०) ज्योतिष।—प्रियः, (पु०) शिव।
(देवानांप्रियः) यह अनियमित समास है। इसका
अर्थ होता है) १ बकरा। २ मूर्ख। पशु के समान
मूढ़।—बलिः, (पु०) देवताओं को बलिदान

—ब्रह्मन्, (पु०) नारद ।—ब्राह्मणः, (पु०)
ब्राह्मण जो मन्दिर की चढ़त पर निर्वाह करता हो ।
२ प्रतिष्ठित ब्राह्मण ।—भवनं, (न०) १ स्वर्ग ।
२ मन्दिर । ३ अश्वत्थ वृक्ष ।—भूमिः, (स्त्री०)
स्वर्ग ।—भूतिः, (स्त्री०) गङ्गा ।—भूयं, (न०)
देवत्व । देवसायुज्य ।—भृत्, (पु०) १ विष्णु ।
२ इन्द्र ।—मणिः, (पु०) १ कौस्तुभ मणि ।
२ सूर्य ।—मातृक, (वि०) वह देश जो, नदी
नहर के जल पर नहीं, किन्तु सर्वथा वृष्टि जल पर
ही निर्भर है ।—मानकः, (पु०) विष्णु भगवान्
की कौस्तुभ मणि ।—मुनिः, (पु०) देवर्षि ।—
यजनं, (न०) यज्ञभूमि । यज्ञस्थली ।—यात्रा,
(स्त्री०) उत्सव विशेष ।—युगं, (न०) कृत
युग ।—योनिः, (स्त्री०) देवताओं के अंश से
उत्पन्न विद्याधर आदि नौ योनिचौ प्रधान हैं ।
[यथा विद्याधर । अप्सरा । यक्ष । राक्षस । गन्धर्व
किन्नर । पिशाच । गुह्यक और सिद्ध]—योषा,
(स्त्री०) अप्सरा ।—रहस्यं, (न०) दैवी
रहस्य ।—राज्, —राजः, (पु०) इन्द्र ।—लता,
(स्त्री०) नवमखिलिका ।—लिङ्गं, (न०) किसी
देवता की मूर्ति ।—लोकः, (पु०) स्वर्ग ।—
वक्त्रं, (न०) अग्नि ।—वर्धन्, (न०)
आकाश ।—वर्धकिः, —शिल्पिन्, (पु०)
विश्वकर्मा ।—वाणी, (स्त्री०) आकाशवाणी ।
—वाहनः, (न०) अग्नि ।—व्रतं, (न०) धार्मिक
व्रत ।—व्रतः, (पु०) १ भीष्म । २ कार्तिकेय ।
—शत्रुः, (पु०) दैत्य ।—शुनी, (स्त्री०) देव-
ताओं की कुत्तिया सर्मा की उपाधि ।—शेषं, (न०)
यज्ञ का अवशिष्ट भाग ।—श्रुतः, (पु०) १
विष्णु । २ नारद । ३ वेदसंहिता । ४ देवता ।
—सभा, (स्त्री०) १ देवताओं का सभाभवन
जिसका नाम है सुधर्मन् । २ जुआखाना ।—
सभ्यः, (पु०) १ उवारी । २ जुआखाने में रहने
वाला । ३ देवता का सेवक ।—सायुज्यं, (न०)
देवत्व प्राप्ति । देवता के साथ एकासन होने की
योग्यता ।—सेना, (स्त्री०) १ देवताओं
की फौज । २ स्कन्द की स्त्री पत्नी, सोलह
मानुष्यों में से एक ।—स्वं, (न०) देवताओं

की सम्पत्ति । देवनिर्मात्यधन । वह सम्पत्ति जो
केवल धर्मकृत्यों ही में लगायी जा सके ।—हविस्,
(न०) वज्र में देवताओं के उद्देश्य से उत्सर्ग
किया हुआ पशु ।—दूति, (स्त्री०) कर्दम मुनि
की स्त्री । कपिल की माता ।
देवः (पु०) १ देवता । २ इन्द्र । ३ ब्राह्मण । ४
राजा । शासक (जैसे मनुष्यदेव) ५ ब्राह्मणों की
उपाधि । (यथा पुरुषोत्तम देव) । ६ नाटकों में
राजाओं के सम्बोधन करने का शब्द विशेष ।—
देवकी (स्त्री०) देवक की कन्या का नाम जो वसुदेव
को व्याही थी और जिसके गर्भ से श्री कृष्ण का
जन्म हुआ था ।—नन्दनः, (पु०)—पुत्रः,—
मातृ,—पुत्रः, (पु०) श्रीकृष्ण ।
देवटः (पु०) कारीगर ।
देवता (स्त्री०) १ इन्द्रादि देवता । २ देवमूर्ति ।
प्रतिमा । ४ इन्द्रिय ।—अगारः, (पु०)—
अगारं, (न०)—आगारः,—आगारं,—गृहः,
(न०) देवालय । देवमन्दिर ।—अधिपः, (पु०)
इन्द्र ।—अभ्यर्चनम्, (न०) देवार्चन ।—
आयतनं,—आलयः,—वेदमन्, (न०) मन्दिर ।
—प्रतिमा, (स्त्री०) किसी देवता की मूर्ति ।
—स्नानं, (न०) मूर्ति का स्नान ।
देवद्यं च (वि०) देवता का शृङ्गार ।
देवन् (पु०) पति का छोटा भाई । देवर ।
देवनं (न०) १ सौन्दर्य । चमक । आभा । २ पाँसे
का खेल । जुआ । ३ आमोद प्रमोद । क्रीड़ा ।
खेल । ४ वाग । वाटिका । ५ कमल । ६ स्पर्द्धा ।
७ व्यापार । कामकाज । ८ प्रशंसा ।
देवनः (पु०) पाँसा ।
देवना (स्त्री०) जुआ । चौसर ।
देवयानी (स्त्री०) शुक की कन्या का नाम ।
देवरः (पु०) पति का बड़ा या छोटा भाई । देवर
देवृ } या जेठ ।
देवलः (पु०) निम्न कोटि का ब्राह्मण जो देवता की
चढ़त पर अपना निर्वाह करता है ।
देवसात् (अव्यय०) देवता की प्रकृति या स्वभाव ।
देविक (वि०) [स्त्री०—देविकी,] १ देव सम्बन्धी ।
देविल (वि०) २ देवता से उत्पन्न ।
देवी (स्त्री०) १ देवपत्नी । २ दुर्गा का नाम । ३

सम्बन्धता का नाम । ४ अग्रमहिता पाना ५
पुत्र या प्रतिष्ठित रित्रया का उपाय ।

देश (पु०) १ स्थान । भाग । भूखण्डल का कोई
स्थान । २ प्रान्त । ३ विभाग । हिस्सा । ४ कान्यदा
नियम ।—अतिथिः, (पु०) विदेशी ।—
अन्तरम्, (न०) अन्य देश ।—अन्तरिन्,
(पु०) विदेशी ।—आचारः,—धर्मः, (पु०)
स्थानीय रस्न या आइन । किसी देश का आचार ।
—कालज्ञ, (वि०) उचित समय और स्थान
का ज्ञान ।—ज, —जान, (वि०) १ देशी । २
दिसावरी । ३ विशुद्ध सन्तति । —भाषा, (स्त्री०)
किसी देश की बोलचाल की भाषा ।—रूपः,
(न०) धर्म्यता । उपयुक्तता ।—व्यवहारः,
(पु०) स्थानीय आचार ।

देशकः (पु०) १ शासक । सूबेदार । २ उपदेशक ।
शिक्षक । गुरु । ३ पथप्रदर्शक । रहस्युमा ।

देशना (स्त्री०) आदेश । निर्देश ।

देशिक (वि०) स्थानीय । किसी देश विशेष सम्बन्धी ।

देशिकः (पु०) १ आध्यात्मिक गुरु । २ यात्री । पथ
प्रदर्शक । ४ स्थानों से परिचय रखने वाला ।

देशिनी (स्त्री०) तर्जनी । अंगुष्ठ के पास वाली अँगुली ।

देशी (स्त्री०) प्राकृतिक भाषाओं में से कोई एक ।

देशीय (वि०) १ किसी प्रान्त का । प्रान्तीय । २
देश सम्बन्धी । स्थानीय ।

देश्य (वि०) १ जो बतलाने को हो या जो सिद्ध करने
को हो । २ प्रान्तीय । स्थानीय । ३ तत् देश ज्ञात ।
विशुद्ध उत्पत्तिक । ४ प्रायः ।

देश्यः (पु०) १ अत्यन्तदर्शी । २ किसी देश का अधि-
वासी ।

देश्यं (न०) पूर्व पक्ष । प्रथम सम्मति ।

देह (न०) १ शरीर ।—अन्तरं, (न०) अन्य ।

देहः (पु०) १ शरीर ।—अन्तरप्राप्तिः, (स्त्री०)
जन्मग्रहण ।—आत्मवादः, (पु०) चार्वाक
का मत । नास्तिकवाद ।—आत्मवादित्, (पु०)
चार्वाकसिद्धान्तानुयायी ।—आवरण, (न०)
कवच । पोशाक ।—ईश्वरः, (पु०) जीव ।

—उद्भव, —उद्भूत, (वि०) शरीर में उत्पन्न ।

—कर्तृ, (पु०) १ सूर्य । २ परमात्मा । ३

पिता काय (पु०) १ शरीर का आच्छादन
करा वाली वस्तु । २ पर । डैना । ३ चमड़ा ।—
लयः, (पु०) १ शरीर का नाश । २ बीमारी ।
रोग । शत. (वि०) अवतार । शरीर में प्राप्त ।
—जः, (पु०) पुत्र ।—जा, (स्त्री०) पुत्री ।
—त्यागः, (पु०) मृत्यु । इच्छा मृत्यु ।—दः,
(पु०) पारा ।—दीपः, (पु०) नेत्र ।—धर्मः,
शरीर के आवश्यक कृष्य ।—धारकः, (न०)
हड्डी ।—धारण, (न०) जीवन ।—धिः, (पु०)
बाजू । डैना ।—धृप्, (पु०) पवन । वायु ।
—चङ्ग, (वि०) शरीरधारी ।—भाज, (पु०)
शरीरधारी कोई भी जीव । विशेष कर मनुष्य ।
—भुज, (पु०) १ जीव । २ सूर्य ।—भृत्, (पु०)
१ जीवधारी विशेष कर मनुष्य । २ शिव जी । ३
जीवन । जीवनी शक्ति ।—यात्रा, (स्त्री०) १
मरण । मृत्यु । २ शरीर की रक्षा का साधन । ३
आजीविका ।—लक्षण, (न०) चर्म के ऊपर का
निल या भस्मा ।—वायुः, (पु०) शरीर
स्थित पाँच पवन ।—सारः, (पु०) मज्जा ।

देहभर (वि०) मरमुखा । पेट ।

देहवत् (वि०) शरीरधारी । (पु०) १ मनुष्य । २
जीव । रूह ।

देहला (स्त्री०) शराब । नदिरा ।

देहलिः () (स्त्री०) ड्योढ़ी । दहलीज । दहरी ।—
देहली () दीपः, (पु०) ड्योढ़ी का दीपक ।

देहिन् (वि०) [स्त्री०—देहिनी] शरीरधारी ।
(पु०) १ जीवधारी विशेषतया मनुष्य । २ जीव ।
रूह ।

देहिनी (स्त्री०) पृथिवी ।

दै (दायति. दात) १ पवित्र करना । साफ करना ।
२ पवित्र होना । ३ बचाना । रक्षा करना ।

दैत्यः (पु०) दिति के पुत्र । राक्षस । दैत्य ।—
इज्यः,—शुरुः,—पुरोधस्, (पु०) पूज्यः,
(पु०) शुकाचार्य ।—निषूदनः, (पु०)
विष्णु ।—मातृ, (स्त्री०) दिति । दैत्यों की माता ।
—मेदजा, (स्त्री०) पृथिवी ।

दैत्यः (पु०) दिति के पुत्र अर्थात् दैत्य ।—अरिः,
(पु०) १ देवता । २ विष्णु ।—दैवः, (पु०)

१ विष्णु २ पवन ।—पतिः (पु०) हिरण्य-
कशिपु ।

दैया (स्त्री०) १ ओषधिशेष । २ मदिरा ।

दैव (वि०) [स्त्री०—दैवी]
दैवदिन (वि०) [स्त्री०—दैवदिनी] } प्रतिदिन
दैवन्दिन (वि०) [स्त्री०—दैवन्दिनी] } का। दैनिक।
दैविक (वि०) [स्त्री०—दैविकी] }
दैविकी (स्त्री०) दैनिक मजदूरी । दिन भर की
उजरत ।

दैव्य }
दैव्य } लंबाई ।

दैव्य (न०) १ निर्धनता । शरीर । २ शोक ।
दैव्य } उदासी । रंज । ३ निर्बलता । ४ कमीनापन ।

दैव (वि०) [स्त्री०—दैवी] १ देवता सम्बन्धी ।
नैसर्गिक । स्वर्गीय । २ राजकीय ।—अन्यथः,
(पु०) असाधारण अप्राकृतिक घटना से उत्पन्न
उपद्रव ।—अधोनः,—आयस्तः, (वि०) भाग्या-
धीन ।—अहोरात्रः, (पु०) देवताओं का एक
दिन रात । अर्थात् मनुष्यों का एक वर्ष ।—उपहत,
(वि०) अभाग ।—कर्मन्, (न०) देवताओं
को भेंट चढ़ाने का कर्म ।—कौविद्,—चिन्तकः,
—ज्ञः, (पु०) ज्योतिषी । दैवज्ञ ।—गतिः,
(स्त्री०) भाग्य का पत्थ । भाग्य का फेर ।
—तन्त्र, (वि०) भाग्याधीन ।—द्वीपः (पु०)
नेत्र ।—दुर्विपाकः, १ (पु०) भाग्य की निष्ठु-
रता ।—दोषः, (न०) भाग्य का बुरापन ।—
घर, (वि०) भाग्य पर भरोसा करने वाला ।
भाग्यवादी ।—प्रश्नः, (पु०) ज्योतिष ।—युगं,
(न०) देवताओं का युग जिसमें देवताओं के १२०००
वर्ष हुआ करते हैं ।—योगः, (पु०) भाग्य से
किसी घटना का अतर्कित भाव से होना ।—
योगात्, (अव्यया०) दैवशास्त्र ।—लेखकः (पु०)
दैवज्ञ ।—वशः, (पु०)—वशं, (न०) भाग्य की
शक्ति ।—वाणी, (स्त्री०) आकाशवाणी । २
संस्कृत भाषा ।—हीन, (वि०) भाग्यहीन ।
प्रारब्ध का फूटा । अभाग ।

दैव्य (न०) भाग्य । प्रारब्ध । किस्मत ।

दैवः (पु०) आठ प्रकार के विवाहों में से एक ।

दैवकः (पु०) देवता ।

दैवत (वि०) [स्त्री०—दैवती] देवी ।

दैवत (न०) १ देवता । २ देव समूह । देवता मात्र ।
३ मूर्ति ।

दैवतस् (अव्यया०) दैवात् । इत्तिफाकिया ।
सौभाग्य से ।

दैवत्य (वि०) देवता सम्बन्धी ।

दैवानः } (पु०) दुष्ट (मृत) आत्मा का सेवक ।
दैवलकः } भूत प्रेत उपासक ।

दैवारिपः (पु०) शङ्ख ।

दैवासुरं (न०) देवता और दैव्यों का स्वाभाविक वैर ।

दैविक (स्त्री०) [स्त्री०—दैविकी] देवता सम्बन्धी ।
देवी ।

दैविकम् (न०) अनिवार्य वचना ।

दैविन् (पु०) ज्योतिषी । दैवज्ञ ।

दैव्य [स्त्री०—दैव्या दैव्यी] देवी ।

दैव्य (न०) १ भाग्य । प्रारब्ध । २ दैवी शक्ति ।

दैशिक (वि०) [स्त्री०—दैशिकी] १ स्थानीय ।
ग्रामीय । २ जातीय । समूचे देश से सम्बन्ध
रखने वाला । ३ स्थान सम्बन्धी । स्थान से
सम्बन्धयुक्त । ४ किसी स्थान से परिचित । ५
शिक्षण । प्रदर्शन ।

दैशिकः (पु०) १ शिक्षक । गुरु । २ पथप्रदर्शक ।

दैष्टिक (वि०) [स्त्री०—दैष्टिकी] भाग्य में लिखा
हुआ । दैवनिर्दिष्ट ।

दैष्टिकः (पु०) भाग्यवादी ।

दैहिक (वि०) [स्त्री०—दैहिकी] शारीरिक ।
शरीर सम्बन्धी ।

दैह्य (वि०) शरीर सम्बन्धी ।

दैहाः (पु०) जीवात्मा । रूढ़ ।

दा (वा० पा०) [दानि, दित] १ काटना । विभक्त-
करना । २ अनाज काटना । पकाना ।

दोम्भु (पु०) १ भाला । अहीर । २ बड़का । ३
भाड़े का कवि । वह पुरुष जो अपने स्वार्थ के लिये
हो कोई कार्य करता हो ।

दोग्ध्री (स्त्री०) १ दुधार गौ । २ दूध पिलाने वाली
दाई ।

दोधः (पु०) बड़का ।

दोरः (पु०) रस्सा । रज्जु ।

दोलः (पु०) १ झूला । हिंडोला । २ उत्सव विशेष ।
 होली का उत्सव ।
 दोला } (स्त्री०) १ डोली । पाल्की । २ हिंडोला ।
 दालिका } ३ उतार चढ़ाव । घटा बढ़ी । ४ सन्देह ।
 अनिश्चय ।—अधिभूट, —आरुड, (वि०) झूले
 पर चढ़ा हुआ ।—युद्ध, (न०) सफलता में
 सन्देह । युद्ध जिसमें हार जीत का कुछ निश्चय
 न हो ।
 दोलायते (कि०) १ झूलाना । २ विकल होना ।
 दोषः (पु०) १ त्रुटि । कलङ्क । भर्त्सना । ऐव । निर्बलता ।
 भूल । गलती । २ कुर्म । अपराध । ३ खराबी ।
 ४ हानि । बुराई । ५ दुष्परिणाम । ६ रोग । ७
 त्रिदोष ।—आलङ्कारिक त्रुटि । ८ बड़बड़ा । १०
 खण्डन ।—आरोपः (पु०) इत्ज़ाम लगाना ।
 कुर्म फट्टे लगाना ।—एकदृश, (पु०) दोषदर्शी ।
 —कर, —कृत, (वि०) हानिकारक ।—ग्रस्त,
 (वि०) दोषी । दोष था त्रुटि से पूर्ण । आहिन्,
 (वि०) १ मलिन चित्त । दुष्ट हृदय । २ भर्त्सना-
 त्मक ।—झ, (वि०) दोष जनाने वाला । —झः,
 (पु०) १ बुद्धिमान पुरुष । २ हकीम । वैद्य ।—
 त्रयं, (न०) बात पित्त और कफ का व्यतिक्रम ।
 —दृष्टि, (वि०) निन्दक । दोष ढूँढने वाला ।
 —भाज, (वि०) दोषी । अपराधी ।
 दोषणं (न०) आरोप ।
 दोषल (वि०) दोषी । त्रुटिपूर्ण । खोटा । लंपट ।
 दोषस् (स्त्री०) रात । (न०) अन्धकार ।
 दोषा (अच्यया०) रात्र को । (स्त्री०) १ बाँह ।
 २ रात का अन्धकार । रात । —आस्यः —
 तिलकः, (पु०) दीपक ।—करः, (पु०)
 चन्द्रमा ।
 दोषातन (वि०) [स्त्री०—दोषातनी,] रात सम्बन्धी ।
 दोषिक (वि०) [स्त्री०—दोषिकी,] दोषी । खराब ।
 त्रुटिपूर्ण ।
 दोषिकः (पु०) बीमारी । रोग ।
 दोषिन् (वि०) [स्त्री०—दोषिणी] १ अपवित्र ।
 अष्ट । २ दोषपूर्ण । अपराधी । दुष्ट । खोटा ।
 दोस् (पु० न०) १ बाँह । भुजा । २ महाराज का
 भाग ।—गड्ड, [दिगंड] (वि०) टेढ़ी भुजा ।—

ग्रह, [=दोर्ग्रह] (वि०) शक्तिमान । ताकतवर ।—ग्रहः,
 (पु०) भुजपीड़ा ।—दण्डः, [=दोर्दण्डः] मजबूत
 भुजा । डंडा जैसी भुजा ।—मूलं [=दोर्मूलं] (न०)
 बगल । काँख ।—युद्धं, [=दोर्युद्धं,] द्वन्द्व युद्ध ।—
 शालिन्, [दोःशालिन्] बहादुर । वीर ।—शिखरं,
 [दोःशिखरं] (न०) कंधा ।—सहस्रभूतं [=दोः]
 सहस्रभूतं] (पु०) १ बाणासुर की उपाधि । २
 सहस्रार्जुन की उपाधि ।—स्थः, [=दोस्थः,] १ भृत्य ।
 नौकर । २ सेना । चाकरी । ३ खिलाड़ी । ४ खेल ।
 कीड़ा ।

दोहः (पु०) १ दुहना । २ दूध । ३ दूध दुहने का
 पात्र ।—अपनयः, (पु०)—जं, (न०) दूध ।
 दोहदं (न०) १ गर्भवती स्त्री की रुचि । २ गर्भ ।
 दोहदः (पु०) १ बच्चों की अभिलाषा, जो उनके मन
 में फूल खिलाने के समय होती है । [यथा अशोक वृक्ष
 चाहता है कि, युवतियाँ उसे ठुकरावें । वक्रुल चाहता
 है कि, लोग मुँह में भरकर शराब के उस पर कुल्ले
 करें ।] ४ प्रबल अभिलाषा । ५ अभिलाषा । कामना ।
 —लक्षणां, (न०) गर्भाशय की किल्ली ।
 दोहदवती (स्त्री०) गर्भवती स्त्री जो किसी वस्तु पर
 मन चलावे ।

दोहनं (न०) १ दुहना । २ दुधैड़ी ।
 दोहन (वि०) १ दुहना । २ देनेवाला । (अभीष्ट वस्तु)
 दोहनी (स्त्री०) दुधैड़ी । दूध दुहने का पात्र ।
 दोहलः (पु०) देखो दोहद ।
 दोहली (पु०) अशोक वृक्ष ।
 दोहा (वि०) दुहने योग्य ।
 दोहा (न०) दूध ।
 दोःशील्यम् (न०) बुरा मिजाज । दुष्टता । दुष्ट
 स्वभाव । [स्थापक ।
 दोःसाधिकः (पु०) १ द्वारपाल । २ ग्राम का व्यव-
 दौकूलः } (पु०) गाड़ी जिस पर रेशमी उबार या
 दौगूलः } पड़ा पड़ी हो ।
 दौकूलं (न०) } महीन रेशमी वस्त्र ।
 दौगूलं (न०) }
 दौत्यं (न०) सदेखा । पैगाम । [पना ।
 दौरात्यं (न०) १ दुष्टता । दुष्ट स्वभाव । २ उपद्रव-
 दौर्गत्यं (न०) १ धनहीनता अभाव । सुहृताजपना ।
 २ दुःख । अभागापन ।

दौर्गन्ध्यं } (न०) बुरी या अप्रिय गन्ध ।
 दौर्गन्ध्यं (न०) दुर्जन्ता । दुष्टता ।
 दौर्जीवित्यं (न०) दुःख पूर्ण जीवन ।
 दौर्बल्यं (न०) निर्बलता । नपुंसकता । कमजोरी ।
 दौर्भागनेयः (पु०) उस स्त्री का पुत्र जिसकी अपने
 पति के साथ खटपट रहती हो
 दौर्भाग्यं (न०) अभाग्य । बह्किस्मती ।
 दौर्भाग्यं (न०) भाई भाई में झगड़ा ।
 दौर्मनस्यं (न०) मानसिक पीड़ा ।
 दौर्मन्थं } (न०) असद् परामर्श ।
 दौर्मन्थम् }
 दौर्वचस्यम् (न०) असद् भाषण ।
 दौर्हृदं } (न०) १ शत्रुता । मन का विकार ।
 दौर्हृदम् } २ गर्भ । ३ गर्भवती स्त्री की रुचि । ४
 अभिलाषा ।
 दौर्लिप्तः (पु०) इन्द्र ।
 दौर्वारिकः (पु०) [स्त्री०—दौर्वारिकी] द्वारपाल ।
 दरवान । पहरेदार ।
 दौर्धर्यं (न०) असद् आचरण । दुष्टता । असत्कार्य ।
 दौर्कुलं (वि०) [स्त्री०—दौर्कुली] } तुच्छ
 दौर्कुलेयं (वि०) [स्त्री०—दौर्कुलेयी] } कुल
 में उत्पन्न । नीच घर में उत्पन्न ।
 दौष्टवं (न०) जुटापन । खोटापन । दुष्टता ।
 दौष्ट्यन्तिः दौष्ट्यन्तिः } (पु०) दुष्ट्यन्त या दुष्मन्त
 दौष्ट्यन्तिः दौष्ट्यन्तिः } का पुत्र ।
 दौष्टित्रं (न०) तिल । [नवासा ।
 दौष्टित्रः (पु०) पुत्री का पुत्र । धोइता । नाती ।
 दौष्टित्रायणाः (पु०) धोइते का पुत्र । नवासे का पुत्र ।
 दौष्टित्री (स्त्री०) पुत्री की पुत्री । धोइती ।
 दौष्टिदिनी (स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।
 द्यु (धा० पर०) [द्यौति] किसी ओर आगे बढ़ना ।
 आक्रमण करना । चढ़ाई करना । हम्ला करना ।
 द्यु (न०) १ दिवस । २ आकाश । ३ चमक । ४
 स्वर्ग । (पु०) अग्नि ।—गः, (पु०) पक्षी ।—
 चरः, (पु०) १ ग्रह । २ पक्षी ।—जयः, (पु०)
 स्वर्गप्राप्ति ।—धुनिः, (स्त्री०)—नदी, (स्त्री०)
 स्वर्गीय गंगा ।—निवासः, (पु०) देवता ।—
 पतिः, (पु०) १ सूर्य । २ इन्द्र ।—मणिः,

(पु०) सूर्य ।—लोकः, (पु०) स्वर्ग ।—पद्,
 —सद्, (पु०) १ देवता । २ ग्रह ।—सरित्,
 (स्त्री०) श्रीगङ्गा ।
 द्युक्तः (पु०) उत्तलू ।—धारिः (पु०) काक । कौवा ।
 द्युत् (धा० आत्म०) [द्योतते, द्युतित या-
 द्योतित] चमकना । चमकीला होना ।
 द्युतिः (स्त्री०) १ चमक । चमकीलापन । सौन्दर्य ।
 आभा । २ प्रकाश । प्रकाश की किरण । ३ गौरव ।
 महत्व ।
 द्युतित (वि०) प्रकाशमान । चमकता हुआ । चम-
 कीला ।
 द्युम्नं (न०) १ चमक । आभा । २ स्फूर्ति । शक्ति ।
 विक्रम । ३ धन । सम्पत्ति । ४ प्रत्यादेश । वैवज्ञान ।
 द्युचन् (पु०) सूर्य ।
 द्युतं (न०) } १ क्रीड़ा । खेल । चौपड़ का खेल ।
 द्युतः (पु०) } २ जीता हुआ इनाम या पुर-
 स्कार ।—आधिकारिन् (पु०) जुआखाने का
 मालिक ।—करः,—कृत्, (पु०) जुआरी । जुआ
 खाना रखने वाला ।—कारः,—कारकः, (पु०)
 जुआखाना रखने वाला । २ जुआरी ।—क्रीडा,
 (स्त्री०) पाँसे का खेल । जुआ ।—पूर्णिमा,—
 पौर्णिमा, (स्त्री०) कोजागरी पूरनमासी । आश्विन
 मास की पूरनमासी ।—वोर्ज, (न०) कौड़ी ।
 —वृत्तिः, (पु०) १ पेशेवर ज्वारी । २ जुआर-
 खाने का रखने वाला या चलाने वाला ।—जम्मा,
 —समाजः, (पु०) १ जुआखाना । २ ज्वारियों
 का समुदाय ।
 द्यौ (धा० पर०) [द्यौति] १ तिरस्कार
 करना । तुच्छ समझ कर व्यवहार करना । २ बद-
 शक्ल करना ।
 द्यौ (स्त्री०) [कर्त्ता एक०—द्यौः] स्वर्ग । इन्द्रलोक ।
 आकाश ।—भूमिः, (स्त्री०) पक्षी । चिड़िया ।
 —सद्, [= द्यौषद्] देवता ।
 द्योतः (पु०) १ प्रकाश । आभा । चमक । २ सूर्य
 की भूप । ३ गर्मी ।
 द्योतक (वि०) १ चमकदार । २ प्रकाश । ३ स्पष्टी
 करण करने वाला । समझाने वाला । बतलाने
 वाला ।

आतिस (न०) १ प्रकाश चमक आभा २ ननत्र
सिताभा इगार [= द्योतिरिगार] (पु०)
खद्योतः जुगुनू ।

द्रक्षणां (न०) तौल विशेषः नाप विशेष । एक तोला ।
द्रदयति (क्रि०) मज्जवत करना । दड़ करना ।

द्रडिमन् (पु०) १ मज्जवती । दड़ता । २ समर्थन । ३
बयान । ४ बोझ । भार ।

द्रप्सं (न०) माडा । तक्र । द्राक्ष ।

द्रम् (धा० पर०) [स्त्री०—द्रभति] दौड़ना ।
इधर उधर जाना । इधर उधर भागते फिरना ।

द्रमं } (न०) तौल या नाप विशेष ।
द्रमं }

द्रव (वि०) १ दौड़ने वाला (घोड़े की तरह) । २
चूने वाला । टपकने वाला । तर । ३ बहने वाला ।
पनीला । ४ तरल । ५ पिघला हुआ ।—आधारः,
(पु०) छोटा बरतन । चुल्हू ।—जः, (पु०) शीरा ।
चोदा । राव ।—द्राव्यं, (न०) तरल पदार्थ । —
रसा, (स्त्री०) १ लाख । २ गोंद ।

द्रवः (पु०) १ गमन । अमण । गति । २ टपकना ।
चूना । उफनना । चू जाना । ३ पीछे भाग आना ।
भाग जाना । ४ खेल । आमोद । बिहार । ५
पनीलापन । ६ पनीला पदार्थ । तरल पदार्थ । ७
रस । सार । ८ काथ । काठा । ९ बेरा ।

द्रवन्ती } (स्त्री०) नदी ।
द्रवन्ती }

द्रविडः (पु०) १ दक्षिण भारत का प्रान्त विशेष । २
उस प्रान्त का निवासी । ४ एक नीच जाति का
नाम ।

द्रविणं (न०) १ धन । रुपया पैसा । सम्पत्ति । २
सुवर्ण । ३ पराक्रम । चिक्रम । ४ वस्तु । पदार्थ ।
सामग्री ।—अधिपतिः,—ईश्वरः, (पु०)
कुबेर की उपाधि ।

द्रव्यं (न०) १ वस्तु । पदार्थ । २ उपादान
सामग्री । उपयुक्त या योग्य पदार्थ । २ वह
पदार्थ जो क्रिया और गुण अथवा केवल गुण
का आश्रय हो । ३ वैशेषिकदर्शन के द्रव्य जो ६
माने गये हैं । ४ कोई भी अधिकृत वस्तु जैसे धन,
सम्पत्ति, सामान आदि । औषधि विशेष । ५

शील । ६ काँसा । फूल । ७ मदिरा । ८ होड़
द व अजन, वृद्धि,—सिद्धिः, (स्त्री०)
धन की प्राप्ति ।—अधः, (पु०) धन का बाहुल्य ।
—परिग्रहः, (पु०) धन वा सम्पत्ति का अधि-
कार ।—प्रकृतिः, (स्त्री०) पदार्थ का स्वभाव ।
संस्कारः, (पु०) यज्ञीय वस्तुओं की शुद्धि ।—
वाचकं, (न०) सत्तावाचक । स्वाधीन । मूलतत्त्व
सम्बन्धी । स्थायी ।

द्रव्यवत् (वि०) धनी । अमीर ।

द्रष्टव्य (वि०) १ देखने को । देखने योग्य । २ मनो-
हर । प्रिय । सुन्दर ।

द्रष्टु (पु०) १ अक्षि । ध्यान द्वारा देखने वाला ।
२ न्यायाधीश ।

द्रहः (पु०) गहरी झील ।

द्रा (धा० पर०) [द्राति, द्रायति] १ सोना । २
भागना । शीघ्रता करना । भाग जाना । उड़जाना ।
द्राक् (अव्यया०) शीघ्रता से । तुरन्त । तौरन ।—
भूतकं, (न०) टटका पानी । कुएँ से तुरन्त
निकाला हुआ जल ।

द्राक्षा (स्त्री०) दाख । मुनका । अंगूर ।—रसः,
(पु०) अंगूर का रस । शराब । अंगूरी शराब ।
द्राघयति (क्रि०) १ लंबा करना । बढ़ाना । पसारना ।
आगे करना । २ वृद्धि करना । घनीभूत करना ।
३ विलम्ब करना ।

द्राघिमन् (पु०) १ लंबाई । २ अर्द्धांश सूचित रेखा
का अंश ।

द्राघिष्ठ (वि०) सब से अधिक लंबा । बहुत लंबा ।
[यह दीर्घ का Super. है ।]

द्राघियस् (वि०) [स्त्री०—द्राघियसी] लंबा ।
बहुत लंबा ।

द्राण (वि०) १ बहा हुआ । भागा हुआ । २ सोने
वाला । निदासा ।

द्राणां (न०) १ भागना । भगड़ । २ नींद ।

द्रापः (पु०) १ कीचड़ । काँदा । २ स्वर्ण । आकाश ।
३ मूर्ख । मूढ़ । ४ शिव । ५ छोटा शङ्ख ।

द्रामिलः (पु०) चाणक्य का नाम ।

द्रावः (पु०) १ पलायन । २ वेग । ३ बहाव । ४
गर्मी । ताप । ५ पिघलाव ।

द्रावकः (पु०) १ द्रव रूप में करने वाला पदार्थ ।
 दोस चीज़ को तरल करने वाला । २ बहाने वाला ।
 ३ गलाने वाला । ४ पिघलाने वाला । ५ चन्द्रकान्त
 मणि । ६ चोर । ७ चतुर आदमी । ८ सुहागा ।
 ९ चुम्बक पत्थर । १० लंपट ।
 द्रावकं (न०) मोम ।
 द्रावणम् (न०) १ भगा देना । २ पिघलाना । ३
 (अर्क की तरह) खींचना । ४ रीग ।
 द्राविडः (पु०) द्रविड देश वासी ।
 द्राविडी (स्त्री०) इलायची ।
 द्राविडकं (न०) काला निमक ।
 द्राविडकः (पु०) आँवा हल्दी ।
 द्रु (भा० पर०) [द्रवति, द्रुत] १ भागना ।
 बहना । २ आक्रमण करना । ३ तरल होना । धुल
 जाना । पिघलना । उमड़कर बहना ।
 द्रु (पु० न०) १ लकड़ी । २ लकड़ी का बना कोई
 भी औज़ार । (पु०) १ वृक्ष । २ शाखा । डाली ।
 —किलिभं, (न०) देवदारु वृक्ष । घणः,
 (पु०) १ काठ की हथौड़ी । २ बड़ई की हथौड़ी
 जैसा लोहे का बना हथियार । ३ कुल्हाड़ी । ४
 ब्रह्मा ।—झी, (स्त्री०) कुल्हाड़ी ।—नखः,
 (पु०) काँटा ।—नस, (वि०) —गास्
 (वि०) लंबी नाक वाला ।—नहः,—गाहः,
 (पु०) मिथान । परतला ।—सल्लकः, (पु०)
 वृक्ष विशेष । पियालघृष्ट ।
 द्रुणं (न०) धनुष की डोरी ।
 द्रुणः (पु०) १ विच्छू । २ भुं गी कीड़ा । ३ बदमाश ।
 द्रुणिः } (स्त्री०) १ छोटा या मादा कलुवा । २ ।
 द्रुणी } बास्टी । डोल । ३ कनखजुरा । काँतर ।
 गोजर ।
 द्रुत (घ० कृ०) १ तेज़ । फुर्तीला । वेगवान । २ बढ़ा
 हुआ । भागा हुआ । बच कर निकला हुआ । ३
 ४ पिघला हुआ । तरल हुआ । धुला हुआ ।
 द्रुतं (अव्यय०) तेज़ी से । फुर्ती से ।
 द्रुतः (पु०) १ विच्छू । २ वृक्ष ।
 द्रुतविलम्बितम् (न०) एक छन्द का नाम ।
 द्रुतिः (स्त्री०) पिघलना । धुलना । जाना । भाग
 जाना ।

द्रुपदः (पु०) पाञ्चाल देश के एक राजा का नाम ।
 इस ही को वेदी का नाम द्रोपदी था ।
 द्रुमः (पु०) १ वृक्ष । २ स्वर्ग का एक वृक्ष ।—
 धरिः, (पु०) हाथी ।—आभयः, (पु०) लाख ।
 गोंद ।—आश्रयः, (पु०) छिपकली ।—
 ईश्वरः (पु०) ताड़ का पेड़ ।—उत्पलः,
 (पु०) कर्णिकार वृक्ष ।—नखः,—मरः,
 (पु०) काँटा ।—व्याघ्रिः, (पु०) लाख ।
 गोंद ।—श्रेष्ठः, (पु०) ताड़ का पेड़ ।—
 षण्डम्, (न०) पेड़ों का समूह ।
 द्रुमिणी (स्त्री०) वृक्षों का समूह ।
 द्रुमयः (पु०) माप । मान ।
 द्रुह (भा० पर०) [द्रुहति, द्रुघ्न] घृणा या
 नफरत करना । हानि पहुँचाने का अवसर द्रुहना ।
 बदला लेने के लिये षडयंत्र रचना । उपद्रव
 करने का मंसूबा बाँधना ।
 द्रुह (वि०) आयल करने वाला । चोटिल करने वाला ।
 द्रोह करने वाला । (स्त्री०) हानि । चोट ।
 द्रुहः (पु०) १ पुत्र । २ भील ।
 द्रुह्याः } (पु०) ब्रह्मा या शिव का नाम ।
 द्रुहियाः }
 द्रूः (पु०) सुवर्ण ।
 द्रूघ्याः (पु०) हथौड़ा । घन । लोहे की गदा ।
 द्रूयाः (पु०) विच्छू ।
 द्रूयाः (पु०) १ चार सौ बाँस लंबी भील । २ जल
 से भरा बादल । ३ वनकाक । ४ विच्छू । ५ वृक्ष ।
 ६ सफ़ेद फूलों का पेड़ । ७ कौरव और पाण्डवों के
 गुरु द्रोणाचार्य ।—काकः (पु०) जंगल काक ।
 —तीरा,—घा,—दुग्धा,—दुधा, (स्त्री०)
 एक द्रोण दूध । दूध देने वाली गाय ।—मुखः,
 (न०) ४०० ग्रामों की रजधानी ।
 द्रूयां (न०) } १ तौल विशेष जो १६ या ३२ सेर
 द्रूयाः (पु०) } की होती है । (न०) १ २ ता ।
 कठौती । २ टब ।
 द्रूयिः } (स्त्री०) १ काठ की बाल्टी । २ जल ।
 द्रूयी } ३ नाँद । ४ १२८ सेर की तौल ।
 —दलः, (पु०) केतक वृक्ष ।
 द्रोहः (पु०) १ उत्पल । उपद्रव । २ प्रतिहिंसा ।
 बैर । द्वेष । ३ विरवासघात । ४ विद्वेह ।

अपराध ।—अटः, (पु०) १ दम्भी । पापखी ।
२ शिकारी । ३ कृत्य आदमी ।—सिन्तनम्,
(न०) दुरा विचार ।—बुद्धि, (वि०) उपद्रव
करने का तुला हुआ ।—बुद्धिः, (स्त्री०) दुष्ट
विचार ।

द्रोण्यायनः }
द्रोण्यायनिः } (पु०) द्रोणपुत्र अरवत्थामा ।
द्रोणिः }

द्रौपदी (स्त्री०) द्रुपद की पुत्री जो पाण्डवों को
व्याही गयी थी और जिसका कौरवों द्वारा भरी
सभा में अपमान, कुरुक्षेत्र के इतिहासप्रसिद्ध
महायुद्ध के कारणों में से एक है ।

द्रौपदेयः (पु०) द्रौपदी का पुत्र ।

द्वन्द्वं (न०) १ जोड़ा । २ जानवरों का जुड़ा । ३
किसी का भी जोड़ा । ४ झगड़ा । टंटा । ५ मल्ल
युद्ध । ६ सन्देह । अनिश्चय । ७ गद्दी । गढ़ । ८
गुप्तमेद ।—चर, —चारिन्, (वि०) जुट रहने
वाले चक्रवाक । चकवा चकई ।—भावः, (पु०)
विरोध । अनयन ।—भिन्नं, (न०) नर और मादा
का विच्छेद ।—भूत, (वि०) १ जोड़ा बाँधना ।
२ सन्दिग्ध ।—युद्धं, (न०) दो का पारस्परिक
युद्ध ।

द्वन्द्वः (पु०) घड़ियाल जिस पर घंटा बजाया जाता
है । समास भेद विशेष ।

द्वन्द्वशः } (अव्यय०) दो दो करके । जुट में । जोड़े में ।
द्वन्द्वशः }

द्वय (वि०) [स्त्री०—द्वयी] दुगुना । दुहरा । दो
प्रकार का ।—आत्मक, (वि०) रजस् और
तमस् से रहित जिसका मन हो । ऋषि—आत्मक,
(वि०) दो प्रकार के स्वभाव का ।—वादिन्,
(वि०) दुजिह्वा । कपटी ।

द्वयं (न०) १ जोड़ा । जुट । २ दो प्रकार का
स्वभाव । ३ मिथ्यापन ।

द्वयी (स्त्री०) जोड़ । जुट ।

द्वारं (न०) १ तीसरे युग का नाम । पाँसे का वह
द्वारः (पु०) पहल जिस पर दो खुदे हों । ३

सन्देह । पशोपेश । अनिश्चय ।

द्वार (स्त्री०) १ दरवाजा । फाटक । २ साधन ।—

स्थः,—स्थितः, (पु०) [=द्राःस्थः, द्रास्थः,
द्रास्थितः द्रास्थितः] द्वारपाल । दरवान ।
द्वारं (न०) १ दरवाजा । फाटक । २ रास्ता । निकास
मानव शरीर के नौ छिद्र । ३ मार्ग । माध्यम ।
साधन ।—अधिपः (पु०) दरवान । कण्टकः,
(पु०) चटखनी । बैड़ा ।—कपाटः, (पु०)—
कपाटं, (न०) किवाड़ । पल्ला । गोपः, (पु०)
—नायकः (पु०)—पः, (पु०)—पालः,
(पु०)—पालकः, (पु०) द्वारपाल । दरवान ।
—दारुः, (पु०) शीशम ।—पट्टः, (पु०)
१ किवाड़ । २ दरवाजे की पर्दा ।—पिण्डी, (स्त्री०)
दहली । दहलीज़ । ज्योंही ।—पिधानः, (पु०)
दरवाजे की चटखनी ।—बलिभुजः, (पु०) १
काक । २ गौरैया ।—बाहुः, (पु०) पाखा ।
—यंत्रं, (न०) ताला । चटखनी ।—स्थः, (पु०)
दरवान ।

द्वारका } (स्त्री०) गुजरात प्रान्त स्थित श्रीकृष्ण की
द्वारिका } राजधानी का नाम ।—ईशः, (पु०)
श्रीकृष्ण ।

द्वारवती } (स्त्री०) द्वारका । श्रीकृष्ण की राजधानी
द्वारावती } का नाम ।

द्वारिकः }
द्वारिन् } (पु०) द्वारपाल । दरवान ।

द्वि (वि०) [कर्ता द्विवचन—द्वौ, (पु०)—द्वे, (स्त्री०)
द्वे (न०) दो । दोनों ।—अक्ष, (वि०) दो आँखों
वाला ।—अक्षर, (वि०) दो अक्षरों वाला ।—
अंगुल, (वि०) दो अंगुल लंबा ।—अंगुलं,
(न०) दो अंगुल की लंबाई ।—अणुकं,
(पु०) दो अणुओं का योग ।—अर्थ, (वि०)
१ दो अर्थ का । द्विर्थक । २ जटिल । ३ दो लक्ष्यों
वाला ।—अशीत, (वि०) ८२ वर्ष ।—अशीतिः,
(स्त्री०) ८२ । बयासी ।—अष्टं, (न०) ताँवा ।—
अष्टः, (पु०) दो दिवस की अवधि ।—आत्मक,
(वि०) दो प्रकार का स्वभाव वाला । दो ।—
आमुष्यायणः, (पु०) दो बाप का बेटा । एक तो
अपने जनक का दूसरे वत्तक पिता का ।—अमृचं,
(द्वृचं या द्वर्थचं) ऋचाओं का संग्रह ।—कः,
—ककारः (पु०) १ काक । कौवा ।—ककुद्ः,

(पु०) ऊँट ।—गु. (वि०) दो गाय के बड़ले में प्राप्त ।—गुः, (पु०) तत्पुरुष समास का एक अवान्तर भेद जिसमें प्रथम शब्द संख्यावाची होता है ।—गुण, (वि०) दूना । दुगुना ।—गुणित, १ दूना किया हुआ । दो से गुणा किया हुआ । २ दुहराया हुआ । दो पत्तों में किया हुआ । ३ लपेटा हुआ । ४ दूना बढ़ाया हुआ । दुगुना किया हुआ ।
—चरण, (वि०) दो पैरों वाला ।—चत्वारिंश, (वि०) [= द्विचत्वारिंश, या द्वाचत्वारिंश,] ४२ वाँ ।—चत्वारिंशत्, (स्त्री०) (द्विचत्वारिंशत्, या द्वाचत्वारिंशत्,) (स्त्री०) ४२ । बयालिस ।
—जः, (पु०) १ दो बार उत्पन्न हुआ । ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य । ब्राह्मण जिसमें समस्त संस्कार हों । २ पक्षी । सर्प । मकली आदि कोई भी अण्डज जन्तु । ३ दाँत ।—जराजः, (पु०) १ चन्द्रमा २ गरुड़ । ३ कपूर ।—राजवन्धुः, (पु०) १ केवल जन्म का ब्राह्मण किन्तु ब्राह्मणोचित कर्मों से रहित । २ ब्राह्मण बनने का दावा रखने वाला मनुष्य । बनावटी ब्राह्मण ।—जन्मन्, —जातिः, (पु०) १ प्रथम तीन वर्णों में से कोई भी हिन्दू । २ ब्राह्मण । ३ चिड़िया । ४ दाँत ।—जातीय, (वि०) प्रथम तीन वर्णों से सम्बन्ध युक्त ।—जिह्वः, (पु०) १ सर्प । २ जुगलखोर । कहानी कहने वाला । ३ कपटी मनुष्य ।—त्रिंश, (द्वा-त्रिंश,) (न०) १ ३२ वाँ । २ बत्तीस का ।—त्रिंशत्, [द्वात्रिंशत्,] (स्त्री०) ३२ ।—दण्डि, (अण्यथा०) डंडे से डंडा ।—दत्, (वि०) दो दाँतों वाला ।—दश, (वि०) २० । बीस ।—दश, (वि०) [द्वादश] १ बारहवाँ । २ बारह से बना हुआ ।—दशन्, [द्वादशन्,] (वि० बहुव०) १२ बारह ।—अंशुः, (पु०) १ बुध । २ बृहस्पति ।—आयुस, (पु०) कुत्ता ।—दशी, [द्वादशी] तिथि विशेष ।—देवतं, (न०) विशाखा नक्षत्र ।—देहः, (पु०) गणेश ।—धातुः, (पु०) गणेश ।—नवत, (वि०) १२ वे ।—नवतिः, (स्त्री०) १२ ।—पः, (पु०) हाथी ।—पक्षः, (पु०) १ चिड़िया । २ मास ।—पञ्चाश, (वि०) ५२वाँ ।—पञ्चाशत्, (स्त्री०) ५२ ।—पथं, (न०) दो मार्ग ।

—पदः, (पु०) दो पैर का आदमी ।—पादिका, —पदी, (स्त्री०) छन्द विशेष ।—पाद्, —पावः, १ दो पैर का आदमी । २ पक्षी । ३ देवता ।—पाद्यः, —पाद्यं, (न०) दुहरी सजा ।—पाथिव, (पु०) हाथी ।—विन्दुः, (पु०) विसर्ग ।—भुजः, (पु०) कोण ।—भूम, (वि०) दोमंजला ।—मातृ, —मातृजः, (पु०) १ गणेश । २ जरासन्ध राजा ।—मार्गी, (स्त्री०) चौराहा ।—मुखा, (स्त्री०) जौंक ।—रः, (पु०) भौरा ।—रदः, (पु०) हाथी ।—रसनः, (पु०) सर्प ।—रात्रं, (न०) दो रात ।—रूप, (वि०) १ दो रूप वाला । २ दो रंग का ।—रेतस्, (पु०) खच्चर ।—रेफः, (पु०) भौरा ।—वज्रकः, (पु०) १६ कोने का या सोलह पहल का धर विशेष ।—वाहिका, (स्त्री०)—हिंडोला ।—विंश, [द्वाविंश,] (वि०) बाइसवाँ ।—विंशतिः, [द्वाविंशतिः,] (स्त्री०) बाइस ।—विध, (वि०) दो प्रकार का ।—वेशरा, (स्त्री०) एक प्रकार की हल्की गाड़ी जिसमें खच्चर जोते जाते हैं ।—शतं, (न०) १ दो सौ । २ एक सौ दो ।—शत्य, (वि०) दो सौ मूल्य का या दो सौ में खरीदा गया ।—शफ, (वि०) चिरा हुआ सुम या खुर ।—शफः, (पु०) खुर वाला कोई भी जानवर ।—शीर्षः, (पु०) अग्नि ।—षथ, (वि०) दो बार ६, यानी १२ ।—षष्ट [= द्विषष्ट, द्वाषष्ट] बासठवाँ ।—षष्टि (स्त्री०) [+ द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः,] बासठ ।—सप्तत, [+ द्वि द्वा, —सप्तति,] (वि०) बहत्तरवाँ ।—सप्ततिः, (स्त्री०) [+ द्वि, —द्वा —सप्ततिः, बहत्तर ।—सप्ताहः, (पु०) एक पञ्च या पखवारा ।—सहस्र —साहस्र, (वि०) २००० से युक्त । सहस्रं, —साहस्रं, (न०) दो हजार ।—सीत्य, —हल्य, (वि०) दो प्रकार से जोता हुआ । अर्थात् प्रथम खंभान में दूसरी बार चौड़ान में ।—सुवर्ण, (वि०) दो मोहरों में खरीदा हुआ या दो मोहरों के मूल्य का ।—हन, (पु०) हाथी ।—हायन्, —वर्ष, (वि०) दो वर्ष पुराना या दो वर्ष की उम्र का ।—हीन, (वि०) नपुंसक लिङ्ग

का —हृन्वा (स्त्री०) गमवता स्त्री —होतु
(पु०) अग्नि ।

द्विक (वि०) १ दुहरा । जुद्धदार । दो से युक्त । २
दूसरा । ३ दूसरी बार होने वाला । ४ दो से बड़ा
हुआ । दो से कड़ा ।

द्विनय (वि०) [स्त्री—द्विनयी] दो से युक्त अथवा दो
में विभक्त । दूना । दूसरा ।

द्वितयं (न०) जोड़ा । जुड़ ।

द्वितीय (वि०) दूसरा ।—आश्रमः, (पु०) गृहस्थाश्रम
गार्हस्थ्य ।

द्वितीयः (पु०) १ कुटुम्ब में दूसरा । पुत्र । २ साथी ।
सार्थीदार । पत्नीदार । मित्र ।

द्वितीया (स्त्री०) १ चान्द्र मास की दूसरी तिथि । २
पत्नी । साथी । सार्थीदार । ३ विभक्ति विशेष ।

द्वितीयक (वि०) दूसरा

द्वितीयाकृत (वि०) दो बार जुटा हुआ ।

द्वितीयिन् (वे०) स्त्री०—द्वितीयिनी दूसरे स्थान को
अधिकृत किये हुए ।

द्विध (वि०) दो भागों में विभक्त ।

द्विधा (अव्यया०) १ दो भागों में । २ दो प्रकार से । —
करणं, (न०) दो भागों में विभक्त करना । —
गतिः, (पु०) १ कैकड़ा । २ भगर । नक्र । ३
जल-थल-चर जन्तु ।

द्विधास् (अव्यया०) दो दो करके ।

द्विप् (धा० उभय०) [द्विष्टि, द्विष्टे द्विष्ट,] नफरत
करना । घृणा करना ।

द्विप् (वि०) विरोधी । घृणा करने वाला । (पु०) शत्रु ।

द्विपः (पु०) शत्रु ।

द्विपत् (पु०) शत्रु । बैरी । दुश्मन ।

द्विष्ट (वि०) १ बैरी । अशुभचिन्तक । २ अरुचिकर ।
घृण्य ।

द्विष्टं (न०) तौबा ।

द्विस् (अव्यया०) दुबारा ।—आगमनम्, [=द्विराग-
मनम्] (न०) शोना ।—आपः, [द्विरापः] (पु०)
हाथी ।—उक्त, (वि०) [द्विरुक्त] १ दो बार कहा
हुआ । दुहराया हुआ । २ फालतु । अधिक ।—
उक्तिः, (स्त्री०) [द्विरुक्तिः,] १ पुनरावृत्ति ।
दुहराना । २ फालतुपना । व्यर्थत्व ।— ऊढा,

(द्विरुद्धा) (स्त्री०) स्त्री जिसका ने बार विवाह
हुआ हो ।— भावः, (पु०)—वचनं, (न०)
दुहराव ।

द्वीपं (न०) १ दायू । २ पनाह । पैदावार ।—

द्वीपः (पु०) १ कर्पूरः, (पु०) चीन का कपूर ।

द्वीपवत् (वि०) द्वीपों से परिपूर्ण ।—(पु०) समुद्र ।

द्वीपवर्गी (स्त्री०) पृथिवी ।

द्वीपिन् (पु०) १ चीता । २ लकड़बग्घा ।—नाखः,
—नाखं, (न०) १ चीते के नाखून । २ सुगन्ध द्रव्य
विशेष ।

द्वेधा (अव्यया०) दो भागों में । दो प्रकार से ।
दुबारा । [बैर ।

द्वेषः (पु०) १ घृणा । अरुचि । नफरत । २ शत्रुता ।

द्वेषण (वि०) नफरत करने वाला । नापसन्द करने
वाला ।

द्वेषणं (न०) घृणा । अरुचि । नफरत ।

द्वेषणः (पु०) शत्रु । बैरी ।

द्वेषिन् } (वि०) घृणा करने वाला । बैर करने
द्वेषट् } वाला । (पु०) शत्रु ।

द्वेष्य (स० का० कृ०) १ घृणा करने योग्य । घृण्य ।
अप्रिय ।

द्वेष्यः (पु०) शत्रु । बैरी ।

द्वैगुणिकः (पु०) वह व्याजखोर जो सौ पर सौ ही
सद लेता है ।

द्वैगुण्यं (न०) १ बूनी रकम । दूना सुल्य या दूना
नाप । २ द्वेष । ३ तीन गुणों में से दो गुणों की
विद्यमानता (तीनगुण-सत्त्व, रजस् और तमस्) ।

द्वैतं (न०) १ दुई । २ द्वैतवाद ।—वनं, (न०) वन
विशेष ।—वादिन्, (पु०) द्वैत सिद्धान्त मानने
वाला ।

द्वैतिन् (पु०) द्वैतीयीक. (वि०) [स्त्री०—द्वैतीयीकी]
१ द्वैतवादी । २ दूसरा ।

द्वैध (वि०) [स्त्री०—द्वैधी] दुहरा । दूना ।

द्वैधं (न०) १ दुहरापन । दो प्रकार का स्वभाव या
अवस्था । २ दो भागों में अलग किया हुआ । ३
अन्तर । कर्क । ४ सन्देह । शक । ५ दो प्रकार का
व्यवहार । दुहरापन । भीतर कुछ और बाहर
कुछ । राजनीति के षड गुणों में से एक । इसमें

पारस्परिक व्यवहार में दो प्रकार का स्वभाव रखना पड़ता है। अर्थात् मुख्य उद्देश्य को छिपा कर गौण उद्देश्य प्रकट किया जाता है।

द्वैधीभावः (पु०) १ द्विधाभाव । अनिश्चय । २ भीतर कुछ बाहर कुछ ।

द्वैध्यं (न०) १ धन्त । फर्क । २ जलबल । कपट ।

द्वैप (वि०) [स्त्री०—द्वैपो] १ द्वीप सम्बन्धी । टापू में रहने वाला । २ चीते का । व्याघ्राम्बर से ढका हुआ या बना हुआ ।

द्वैपः (पु०) व्याघ्र की चाम से सजा हुआ रथ या गाड़ी ।

द्वैपत्तं (न०) दो दल ।

द्वैपायनः (पु०) टापू में उत्पन्न । व्यास जी का नाम ।

द्वैप्य (वि०) [स्त्री०—द्वैप्या या द्वैप्या] टापू में रहने वाला या टापू से सम्बन्ध रखने वाला ।

द्वैमातुर (वि०) दो माताओं वाला । एक जननी दूसरी सौतेली माता ।

द्वैमातुरः (पु०) १ गणेश । २ जरासन्ध ।

द्वैमातृक (वि०) [स्त्री०—द्वैमातृकी] वह भूमि जो वृष्टि के जल और नदी के जल पर निर्भर हो ।

द्वैरथं (न०) दो रथों पर सवार । दो योद्धाओं का पारस्परिक युद्ध ।

द्वैरथः (पु०) शत्रु । बैरी ।

द्वैराज्यं (न०) वह राज्य जो दो राजाओं में बँटा है ।

द्वैवार्षिक (वि०) दुसाला ।

द्वैविध्यं (न०) १ दुहरापन । दो प्रकार का स्वभाव । २ मिश्रता । अन्तर । फर्क ।

ध

ध नागरी या संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तर्जनी का चौथा वर्ण । इसका उच्चारण स्थान दन्तमूल है । इसके उच्चारण में आन्त्यन्तर प्रयत्न की आवश्यकता होती है, और जिह्वा का अग्र-भाग दाँतों के मूल में लगाना पड़ता है । बाह्य प्रयत्न संवार, नाद, घोष महाराण हैं ।

ध (वि०) १ धारण करने वाला । २ ग्रहण करने वाला । पकड़ने वाला ।

धं (न०) धनदौलत । सम्पत्ति ।

धः (पु०) १ ब्रह्मा । २ कुबेर । ३ धर्म । सद्गुण । सदाचार ।

धक् (पु०) क्रोध में निकलने वाला शब्द विशेष ।

धक्क (धा० डभय०) [धक्कयति, धक्कयते] नाश करना ।

धटः (पु०) १ तराजू । २ तराजू द्वारा कठोर परीक्षा । ३ तुला राशि ।

धटकः (पु०) ४२ रत्ती के वजन की तौल विशेष ।

धटिका } १ पुराना वस्त्र । चिथड़ा । २ कोपीन ।

धटी

धटिन् (पु०) १ शिव जी । २ तुला राशि ।

धण (धा० परस्मै०) [धणति] शब्द करना ।

धत्तरः

धत्तूरकाः } धतूरा ।

धत्तूरका

धन् (धा० परस्मै०) [धनति] शब्द करना ।

धनम् (न०) १ सम्पत्ति । दौलत । खजाना । रुपैया ।

२ प्रियतम कोई भी वस्तु । बहुमूल्य कोई भी वस्तु । ३ पूँजी । लुट का माल । शिकार । ४ खिलाड़ी को, जो खेल में जीता हो, दिया जाने वाला पुरस्कार । ५ पुरस्कार प्राप्त करने के लिये भिद्यन्त । ६ अङ्क गणित में जोड़ का चिन्ह (+)

—अधिकारः (पु०) पैतृक सम्पत्ति पर अधिकार पाने का हक ।—अधिकारिन्,—अधिकृतः,

(पु०) १ खजानची कोषाध्यक्ष । २ उत्तराधिकारी ।—अधिगोप्तृ,—अधिपः,—अधिपतिः,

—अध्यक्षः (पु०) १ कुबेर । २ कोषाध्यक्ष ।

अपह्ण (पु०) १ उपाय २ लूट
आन्त (वि०) १ धन के दान से सम्मानित ।
मूलमान भट दकर सन्तुष्ट रखा हुआ । २ धनी ।
अमीर । अर्थिन्, (वि०) लालची । कंजूस ।
—आख्य, (वि०) धनी । धनवान् । अमीर ।
—आधारः, (पु०) खजाना । कोषागार ।
—इशः, —इश्वरः, (पु०) खजानाधी । कुबेर ।
उष्मन्, (पु०) (= अथोष्मन्,) धन की
गर्माहट या गर्मी । ऐपिन्, (पु०) महाजन जो
अपना रुपया मॉगे । —कैलिः, (पु०) कुबेर ।
—त्रयः, (पु०) धन का जाल । —गर्व, —
गर्वित, (वि०) पान रुपयों के लोभे होने के कारण
अभिमान । —जातं, (न०) सम्पत्ति । सब प्रकार
की मूल्यवान् अधिकृत सामग्री । —दः, (पु०)
१ उदार पुरुष । धनी पुरुष । २ कुबेर की उपाधि ।
३ अग्नि का नाम । —इण्डः, (पु०) अथर्दण्ड ।
नुमाना । —दायिन्, (पु०) अग्नि । —पतिः,
(पु०) कुबेर । —पालः, (पु०) १ खजानाधी ।
२ कुबेर । —पिशाचिका, —पिशाची, (स्त्री०)
धन का लालच । धनलिप्सा । —प्रयोगः, (पु०)
अधिक व्याज । —मूलं, (न०) पूँजी । मूल-
धन । —लोभः, (पु०) लालच । —व्यगः,
(पु०) १ खर्च । २ फूटलखर्ची । अपप्यय ।
स्थानं, (न०) कोषागार । —हरः, (पु०) १
उत्तराधिकारी । २ चोर । ३ गन्धविशेष ।

धनकः } (पु०) लालच । लोभ ।
धनाया }

धनत्रयः } (पु०) १ अर्जुन का नाम । २ अग्नि की
धनत्रयः } उपाधि ।

धनवत् (वि०) धनी । धनवान् ।

धनिकः (पु०) १ धनी पुरुष । २ महाजन । उत्तमर्थी ।
३ पति । ४ ईमानदार व्यापारी । ५ प्रियकु वृद्ध ।

धनिन् (वि०) [स्त्री०—धनिनी] अमीर । धनवान् ।
(पु०) १ धनी आदमी । २ महाजन ।

धनिष्ठ (वि०) बड़ा धनवान् ।

धनिष्ठा (स्त्री०) २३ वां नक्षत्र ।

धनी } (स्त्री०) जवान स्त्री या लड़की ।
धनीका }

धनु (पु०) कमान ।

धनुस् (वि०) कमानवारी । (न०) १ कमान । २
नाप विशेष जो ४ हाथ के बराबर का होता है ।
३ वृत्त की गुलाई । ४ धनुष राशि । ५ वीरान ।
—कर, (= धनुकर) (वि०) धनुधारी ।
—करः (पु०) कमान बनाने वाला ।
—कारडम्, (= धनुःकारडम्) तीर कमान ।
—खण्डम्, (= धनुः खण्डम्,) कमान का एक
भाग । —गुणः, (पु०) (= धनुर्गुणः,) रोदा ।
कमान की डोरी । —ग्रहः, (पु०) (= धनुर्ग्रहः)
तीरन्दाज । —ज्या, (स्त्री०) (= धनुर्ज्या)
कमान की डोरी । —द्रुमः, (पु०) (= धनुर्द्रुमः)
बाँस । —धरः, —भृत्, (पु०) (= धनुर्धरः)
तीरन्दाज । —पाणिः, (वि०) (= धनुर्पाणिः)
धनुष लिये हुए । —मार्गः, (पु०) (= धनुर्मार्गः)
धनुषाकार रेखा । —विद्या, (स्त्री०) (= धनुर्विद्या)
धनुष चलाने की विद्या । —वृत्त, (= धनुर्वृत्तः)
(पु०) १ बाँस । २ अथर्व वृत्त । —वेदः,
(= धनुर्वेदः) (पु०) अथर्ववेद के अन्तर्गत एक
उपवेद जिसमें बाण चलाने की विद्या का वर्णन है ।

धनू (स्त्री०) कमान ।

धन्य (वि०) १ धन देने वाला । जिससे धन प्राप्त
हो । २ धनवान् । ३ भाग्यवान् । सुकृती । सुखी ।
४ सर्वोत्कृष्ट । सर्वोत्तम । पुण्यात्मा । —वादः,
(पु०) १ शाबाशी । प्रशंसा । वाह वाह ।
शुक्रिया । २ कृतज्ञताद्योतक शब्द ।

धन्यं (न०) सम्पत्ति । धनदौलत ।

धन्यः (पु०) १ भाग्यवान् या सुकृती जन । २
नास्तिक । निमकहराम । ३ एक जाड़ू का नाम ।

धन्या (स्त्री०) १ उपमाता । २ वनदेवी । ३ मनु की
एक कन्या जो ध्रुव को व्याही थी । ४ आमलकी ।
छोटा आँवला । ५ धनिया । [वाला ।

धन्यमन्य (वि०) अपने को धन्य या भाग्यवान् मानने
धन्याकं (न०) धनिया । धनिया का पौधा ।

धन्वं (न०) कमान । —धिः, (पु०) कमान रखने
का बक्स ।

धन्वन् (पु० न०) सुरक जमीन । रोगक्षान । पक्षी

जमीन । समुद्रतट । कड़ी जमीन ।—दुर्गम्
(न०) चारो ओर रोगस्तान होने से अगम्य दुर्ग ।

धन्वन्तरं } (न०) चार हाथ या दो गज का नाप ।
धन्वन्तरं }

धन्वन्तरिः } (पु०) देववैद्य । देवताओं के चिकित्सक ।
धन्वन्तरिः }

धन्विन् (वि०) [स्त्री०—धन्विनी] कमान से
सज्जित । (पु०) १ सीरन्दाज । २ अर्जुन की
उपाधि । ३ शिव की उपाधि । ४ धनुष राशि ।

धन्विनः (पु०) शूकर ।

धम (वि०) [स्त्री०—धमा, धमी] १ धौंकने
वाला । २ पिथलाने वाला ।

धमः (पु०) १ चन्द्रमा । कृष्ण की उपाधि । ३ यम ।
४ ब्रह्मा ।

धमकः (पु०) लुहार ।

धमधमा (स्त्री०) धम धम का शब्द ।

धमन (वि०) १ धौंकने वाला । २ निष्ठुर ।

धमनः (पु०) एक प्रकार का नरकुल ।

धमनिः } (स्त्री०) १ नरकुल । पाइप । २ नाड़ी ।

धमनी } शिरा । ३ गला । ग्रीवा ।

धमिः (स्त्री०) धौंकने की क्रिया ।

धम्मलः } (पु०) स्त्री के सिर के बालों का जुड़ा

धम्मिलः } जिसमें मोती और फूल आदि गुथे हों ।

धम्मिलः }

धय (वि०) पीने वाला । चूसने वाला । [यथा स्तनं धय]

धर (वि०) [स्त्री०—धरा—धरी] पकड़ने वाला ।
धारण करने वाला । [यथा राक्षाधर]

धरः (पु०) १ पहाड़ । २ रुई का ढेर । ३ विट ।
कुटना । ४ कच्छावतार । ५ वस्तुओं में से एक का
नाम ।

धरणी (वि०) [स्त्री०—धरणी] धारण करने
वाला । रक्षा करने वाला । बहन करने वाला ।

धरणी (न०) १ सहारा देने वाला । धारण करने
वाला । २ कण्ठ में रखने वाला । खाने वाला । ३
सहारा । खंभा । ४ दस पल के समान की एक
तौल । ५ जमानत ।

धरणी (पु०) १ बांध । पुल । २ संसार । ३ सूर्य ।
४ स्त्री के कुच । ५ चौपल । धान्य । ६ हिमालय ।

धरणिः } (स्त्री०) १ पृथिवी । २ भूमि । जमीन
धरणी } ३ वृत्त की धन्व । ४ शिरा । धमनी ।

—ईश्वरः, (पु०) १ राजा । विष्णु । ३ शिव ।

कीलकः, १ (पु०) पहाड़ ।—जः,—पुत्रः,—

सुतः, (पु०) १ मङ्गल ग्रह । २ नरकासुर ।—

जाः,—पुत्री,—सुता, (स्त्री०) जनक दुलारी

जानकी ।—धरः, (पु०) १ शेष । २ विष्णु । ३

पर्वत । ४ कच्छप । ५ राजा । ६ दिग्गज ।—धृतः

(पु०) १ पर्वत । २ विष्णु । ३ शेष ।

धरा (स्त्री०) १ पृथिवी । २ शिरा । ३ गभोशय ।

योनि । ४ गूदा । मिमी ।—अधिपः, (पु०)

राजा ।—धामरः,—देवः,—सुरः, (पु०)

ब्राह्मण ।—आध्वजः,—पुत्रः,—सुतः, (पु०)

१ मङ्गल ग्रह । नरकासुर ।—आत्मजा, (स्त्री०)

सीता जी ।—धरः, (पु०) १ पर्वत । २ कृष्ण

या विष्णु । ३ शेष जी ।—पतिः, (पु०) १

राजा । २ विष्णु ।—भुज, (पु०) राजा ।—

भूत, (पु०) पर्वत । पहाड़ ।

धरित्री (स्त्री०) १ पृथिवी । २ जमीन । भूमि ।

धरिम्न (पु०) तराजू । तखरी ।

धर्तुरः (पु०) धतुरे का पौधा ।

धर्मे (न०) १ मकान । घर । २ धुनकिया ।

खम्भा । ३ यज्ञ । ४ पुण्य । सदाचार ।

धर्मः (पु०) वह कर्म जिसके करने से करने वाले का

इस लोक में अभ्युदय हो और परलोक में मोक्ष की

प्राप्ति हो । २ आर्हन् । कानून । प्रचलन । पद्धति ।

३ कर्त्तव्य । ४ न्याय । समानता । पक्षपात । ५

किसी वस्तु या व्यक्ति की वह वृत्ति जो उससे सदा

रहै और उससे कभी पृथक् न हो । ६ नेम ।

ईश्वरभक्ति । छवि । फव्वल । ७ कर्त्तव्याकर्त्तव्य

अवधारण विषयक शास्त्र । ८ समानता । सादृश्य ।

९ यज्ञ । १० स्वसङ्ग । धर्मात्मा पुरुषों का सह-

वास । ११ भक्ति । १२ तौर तरीका । १३ उप-

निषद् । १४ शुद्धिद्विष्टि का नाम । १५ यम का

नाम ।—अङ्गः, (पु०) —अङ्ग, (स्त्री०)

सारस ।—अधर्मौ (पु० द्विवचन) शुभ और

अशुभ । उचित और अनुचित । धर्म और अधर्म ।

अधिकरणम्, (न०) आर्हन् के अनुसार

सं० श० कौ०— ५१

शामन । आर्हण का प्रयोग करना ।—अधिकार-
शिन्, (पु०) न्यायाधीश ।—अधिकारः, (पु०)
१ धार्मिक कृत्यों की व्यवस्था । २ न्याय का
प्रयोग । ३ न्यायाधीश का पद ।—अधिष्ठानं,
(न०) न्यायालय ।—अध्यक्षः, (पु०) १ न्याया-
धीश । २ विष्णु ।—अनुष्ठानं, (न०) धर्मानु-
सार व्यवहार करना । सदाचरण ।—अपेत,
(वि०) सकर्म से शलग होना । अधार्मिक ।—
अपेनं, (न०) पाप । असकर्म । अन्याय ।
—अरण्यं, (न०) नदीभूमि । अप्याश्रम ।—
अर्लीक, (वि०) असदाचरणी ।—आगमः,
(पु०) धर्मशास्त्र ।—आचार्यः, (पु०) १ धर्म
की शिक्षा देने वाला । २ धर्म शास्त्र का अध्यापक ।
—आत्मजः, (पु०) युधिष्ठिर ।—आत्मन्,
(वि०) उचित । ठीक । सत् । पुण्यमय ।
पवित्र ।—आसनं (न०) न्याय का सिंहासन ।
—इन्द्रः, (पु०) युधिष्ठिर ।—ईशः, (पु०) धर्म-
राज ।—उत्तर, (वि०) न्याय करने और पक्षपात
शून्य होने में प्रसिद्ध ।—उपदेशः, (पु०) १
धर्मशास्त्र की शिक्षा । २ धर्मशास्त्रों का समुच्चय ।
—कर्मन् (न०)—कार्यं, (न०)—क्रिया,
(स्त्री०) १ कोई भी धार्मिक कृत्य । कोई भी
धर्मानुष्ठान । कोई भी धार्मिक विधि या विधान ।
२ सदाचरण ।—कथादरिद्रः, (पु०) कलियुग ।
—कायः, (पु०) बुधदेव ।—कीलः, (पु०)
राजा की ओर से दानपत्र या दान देने की आज्ञा ।
—केतुः, (पु०) बुधदेव ।—कोशः,—कोपः,
(पु०) धर्मशास्त्रों का समूह या कर्त्तव्य कर्मों का
समुच्चय ।—क्षेत्रं, (न०) १ भारतवर्ष । २
दिल्ली के पास का एक स्थान विशेष । कुरुक्षेत्र ।—
ग्रहः, (पु०) वैशाख मास में (ब्राह्मण को
दिया जाने वाला) सुगन्धयुक्त जल से पूर्ण
वड़ा ।—चक्रभृत्, (पु०) बौध या जैन ।—
चरणः, (न०)—चर्या, (स्त्री०) धर्मशास्त्रानुसार
आचरण । धार्मिक कर्त्तव्यों का नियमित अनुष्ठान ।
—चारिन्, (वि०) पुण्यात्मा । धर्मात्मा ।
(पु०) संन्यासी ।—चारिणी (स्त्री०)
१ पत्नी । २ सती स्त्री ।—चिन्तनं,—चिन्ता,

(स्त्री०) धार्मिक चर्या की चिन्ता ।—जः,
(पु०) १ औरस सन्तान । २ युधिष्ठिर का नाम ।
जन्मन्, (पु०) युधिष्ठिर का नाम ।—जिज्ञासा,
(स्त्री०) धर्म सम्बन्धी बातें जानने की इच्छा ।
—जीवन, (वि०) वह पुरुष जो अपने वर्ण के
धर्मानुसार आचरण करता है ।—ज्ञ, (वि०)
१ उचित अनुचित जानने वाला । २ उचित ।
पुण्यात्मा । ऋषिकल्प ।—न्यायः (पु०) धर्मत्यागी ।
—दाराः, (पु०) बहुवचन धर्मपत्नी ।—द्रोहिन्
(पु०) राक्षस ।—धातुः, (पु०) बुध की
उपाधि ।—ध्वजः,—ध्वजिन्, (पु०) पाखण्डी ।
दम्भी ।—नन्दनः, (पु०) युधिष्ठिर ।—नाथः,
(पु०) धर्मानुसार स्वामी या मालिक ।—नाभः,
(पु०) त्रिण्डु ।—निवेशः, (पु०) धर्म के प्रति
भक्ति ।—निष्पत्तिः, (स्त्री०) कर्त्तव्यपालन ।
—पत्नी, (स्त्री०) शास्त्र विधि से परिणीत पत्नी ।
—पर, (वि०) धर्मात्मा । पुण्यात्मा । सुकृती ।
—पाठकः, (पु०) धर्मशास्त्र पढ़ाने वाला ।—
पालः, (पु०) धर्मशास्त्र रक्षक ।—पीडा,
(स्त्री०) धर्मशास्त्र के विरुद्ध आचरण ।—पुत्रः,
(पु०) १ वह सन्तान जो कर्त्तव्य समझ कर
उत्पन्न की जाय न कि सुखभोग के उद्देश्य से । २
युधिष्ठिर की उपाधि ।—प्रवक्तृ, (पु०) १ धर्म
शास्त्र का व्याख्याता । आर्हणी मशवराकार ।
धर्मव्यवस्थादाता । २ धर्मोपदेश । धर्मोपदेशक ।
—प्रवचनम्, (न०) १ कर्त्तव्य सम्बन्धी विज्ञान ।
२ धर्मशास्त्र का व्याख्याता ।—प्रवचनः, (पु०)
बुधदेव की उपाधि ।—बाणिजिकः,—वाणि-
जिकः, (पु०) वह मनुष्य जो धार्मिक कृत्यों को
इसलिये करता है कि उसे उनसे कुछ लाभ उसी
प्रकार हो जिस प्रकार बर्तिये को व्यापार करने से
होता है ।—भगिनी, (स्त्री०) १ धर्मवहिन ।
२ धर्मगुरु की पुत्री । ३ समान धर्मपालन करने
वाली ।—भागिनी, (स्त्री०) सती भार्या ।
पतिव्रता पत्नी ।—भाणकः, (पु०) पुराण
पाठक । कथावाचक ।—भ्रातृ, (पु०) गुरुभाई ।
सहपाठी ।—महामात्रः, सचिव जिसके हाथ में
धर्मादा विभाग हो ।—मूलं, (न०) वेद ।—युगं,

(न०) कृतयुग ।—यूपः, (पु०) विष्णु ।—
रति, (वि०) धर्मात्मा । पुण्यात्मा । सुकृतो ।—
राज्, (पु०) १ यमराज । २ जिन । ३ युधिष्ठिर ।
४ राजा ।—राधिन्, (वि०) धर्मशास्त्र विरुद्ध ।
अधार्मिक । धर्मविरुद्ध । २ असदाचरणी ।—लक्षणा,
(न०) १ धर्म की पहचान । २ वेद ।—लक्षणा,
(स्त्री०) मीमांसा दर्शन ।—लोपः, (पु०)
धर्माचरण का नाश । असदाचरण । कर्तव्यपराङ्म-
मुखता ।—वत्सज्, (वि०) धर्मात्मा ।—वर्तैन्,
(वि०) पुण्यात्मा । न्यायवान् ।—वासरः,
(पु०) पूर्वमासी ।—वाहनः, (पु०) १ शिव ।
२ भैसा (धर्मराज का वाहन)—विद्, (वि०)
धर्मशास्त्र का जानने वाला ।—विप्रवः, (पु०)
असदाचरण ।—वैतसिकः, (पु०) अन्याय से
उपार्जित धन का दान करने वाला । इस आशा से
कि लोग उसे उदार या दानी मानें ।—शाला,
(स्त्री०) १ न्यायालय । २ कोई भी धार्मिक
संस्था ।—शासनम्, (न०)—शास्त्रं, (न०)
कर्तव्यकर्तव्य का यथार्थ उपदेशक शास्त्र । मनु-
स्मृति आदि धर्मशास्त्र ।—शील, (वि०)
धार्मिक ।—संहिता, (स्त्री०) मनु-याज्ञवल्क्यादि
स्मृतिथी ।—सङ्गः, (पु०) १ न्याय या सुकर्म
के प्रति अनुराग । २ दम्भ । पाखण्ड ।—सभा,
(स्त्री०) न्यायालय ।—सहायः, (पु०) किसी
धार्मिक कृत्य के अनुष्ठान में भाग लेने वाला या
सहायता पहुँचाने वाला ।
धर्मतः (अव्यय०) नियत या धर्म शास्त्रानुसार ।
धर्मयु (वि०) धर्मात्मा । न्यायी । ईमानदार । सच्चा ।
धर्मिन् (वि०) १ धर्मात्मा । न्यायी । सच्चा । २
अपना कर्तव्य जानने वाला । ३ धर्म शास्त्रानुसार
चलने वाला । ४ विशेष लक्षणान्त । (पु०)
विष्णु ।
धर्मीपुत्रः (पु०) नाटक का पात्र । एक्टर । नट ।
धर्म्य (वि०) १ धर्मानुसार । २ धार्मिक । ३ न्याय-
वान् । ईमानदार । सच्चा । ४ मासूली । साधारण ।
विशेष गुण सम्पन्न ।
धर्मः (पु०) अविनय । अविनीत व्यवहार । छुष्टता ।
२ अभिमान । अहङ्कार । ३ अधैर्य । ४ संयम ।

रोक । ६ सतीत्व हरण । १ अपमान । गुस्ताखी ।
हत्क । ७ हिजडा । नपुंसक ।—कारिणी, (स्त्री०)
स्त्री जिसका सतीत्व हरण हो चुका हो ।
धर्मक (वि०) १ खाने वाला । दमन करने वाला ।
२ सतीत्व हरण करने वाला । ३ असहनशील ।
धर्मकः (पु०) १ सतीत्व-हरणकारी । व्यभिचारी । २
अभिनय-कर्ता । नट । नर्तक ।
धर्मशाम् (न०) १ अवज्ञा । अपमान । २ आक्र-
धर्मशाम् (स्त्री०) १ मण । सतीत्वहरण । ४ सम्भोग ।
रति । ५ कुवाच्य । गाली ।
धर्मिणीः } (स्त्री०) रंडी । वेश्या ।
धर्मिणी }
धर्मित (वि०) १ दबाया या दमन किया हुआ । २
सतीत्व हरण की हुई । ३ असद व्यवहार किया
हुआ । गाली दिया हुआ । अपमानित किया हुआ ।
धर्मितम् (न०) १ अभिमान । २ मैथुन । सम्भोग ।
धर्मिता (स्त्री०) वेश्या । असती स्त्री ।
धर्मिन् (वि०) १ अभिमानी । अकड़वाज । आपे से
बाहिर । २ सतीत्व-हरण करने वाला । ३ अपमान
करने वाला । अवज्ञा करने वाला । ४ मैथुन करने
वाला ।
धर्मिणी (स्त्री०) रंडी । वेश्या । कुलटा स्त्री ।
धवः (पु०) १ कंपन । थरथराना । २ मनुष्य । ३
पति (जैसे विधवा) । ४ स्वामी । मालिक । ५
गुंडा । बदमाश । धोखेवाज ।
धवल (वि०) १ सफेद । २ सुन्दर । ३ साफ़ । विशुद्ध ।
—उत्पलं, (न०) सफेद कमल या कमोदिनी जो
चन्द्रमा के उदय होने पर खिलती है ।—गिरिः,
(पु०) हिमालय की सर्वोच्च चोटी ।—गृहं, (न०)
चूने से पुता घर । राजप्रासाद ।—पक्षः, (पु०)
हंस । चान्द्रमास का शुक्लपक्ष ।—मृत्तिका,
(स्त्री०) खडिया मट्टी । चाक ।
धवलं (न०) सफेद कागज ।
धवलः (पु०) १ सफेद रंग । २ श्रेष्ठ बैल । ३ चीन
का कपूर । ४ एक वृक्ष का नाम । धव ।
धवला (स्त्री०) गोरे रंग की स्त्री ।
धवली (स्त्री०) सफेद रंग की गाय ।
धवलित (वि०) सफेद किया हुआ ।

धवल्लिम्ब (न०) १ मफेदी मफ् रग २
पालपन

धविव्रं (न०) मृगवर्म का बना पंखा ।

धा (धा० उभ०) [दधाति,—धत्ते,—हित,—
धीयते, (तिज्जत्) धापयति,—धापयते,
—धित्सति,—धित्सते,] १ रखना । स्थापित
करना । जड़ना । बँडाना । २ गाड़ना । निर्देश
करना । ३ पान करना । ४ धामना । धामाना । ५
पकड़ना । ग्रहण करना । ६ पहनना । धारण
करना । ६ दिखाना । प्रदर्शित करना । ७ बहन
करना । सहन करना । ८ समर्थन करना । सहारा
लगाना । ९ सृष्ट करना । उत्पन्न करना । १०
मेलना । भोगना । ११ करना ।

धाकः (पु०) १ ब्रैल २ पात्र । आधार । ३ भोज्य
पदार्थ । माल । ४ खँभा । स्तम्भ ।

धाटी (स्त्री०) आक्रमण । हमला ।

धाणकः (पु०) सोने का सिका ।

धातुः (पु०) १ आवश्यक । प्रधान । साधक । २
मूलउपादान । तत्त्व जैसे पृथिवी, जल, तेज, वायु
और आकाश । ३ निःसृतरस (यथा मल मूत्र
पसीना आदि) । ४ बाल, पित्त और कफ । ५ खनिज
पदार्थ । ६ क्रिया सम्बन्धी धातु । ७ जीवात्मा ।
८ परमात्मा । ९ इन्द्रिय । १० इन्द्रियजन्य कर्म
यथा रूप रस गन्ध आदि । ११ हड्डी ।—
उपलः, (पु०) खड़िया मिट्टी ।—काशीर्णः,—
कासीसं, (न०) कसीस ।—कुशलः, (वि०)
जोहा पीतल आदि से वस्तु बनाने में पटु ।—
क्रियाः, (स्त्री०) खनिजविद्या । धातुतत्त्व ।—
क्षयः, (पु०) शारीरिक रोग विशेष । क्षयी का
रोग । प्रमेह का रोग ।—द्रावकः, (पु०)
सोहागा ।—भूतः, (पु०) पर्वत । पहाड़ ।—
मलः, (न०) वैद्यक के अनुसार वात, पित्त, कफ
पसीना, नाखून, बाल, आँख या कान का मैल
आदि, जिनकी मृष्टि शरीरस्थ किसी धातु के
परिपक्व हो जाने पर उसके बचे हुए निरर्थक अंश
या मल से होती है । २ सीसा ।—मासिकः,
(न०) १ सोनामक्खी नाम की उपधातु । २
खनिज पदार्थ विशेष ।—मारिन्, (पु०) गन्धक ।

राजक (पु०) वीर्य वल्लभ (न०)
सोहागा । वाढ (पु०) खनिज विद्या धातुतत्त्व
—दाविन्, (पु०) रसायनी । कीमियागर ।—
वैरिन्, (पु०) गन्धक ।—शेखरं, (न०)
१ कसीस । २ सीसा ।—शोधनं,—सम्भवम्,
(न०) सीसा ।—साम्यम्, (न०) सुस्वास्थ्य ।
अच्छी तंदुरुस्ती ।

धातुमत्, (वि०) धातु की विपुलता ।

धातु (पु०) १ धाता । बनाने वाला । सृष्टिकर्त्ता ।
सम्पादक । २ वाहक । रक्षक । समर्थक । ३ ब्रह्म
की उपाधि । ४ विष्णु । ५ जीव । ६ सप्तर्षियों
का नाम । ७ विवाहिता स्त्री का प्रेमी या
आशिक । व्यभिचारी ।

धात्रं (न०) पात्र जिसमें कोई चीज़ रखी जा सके ।

धात्री (स्त्री०) १ दाई । धाय । पालने वाली माता ।
उपमाता । २ माता । ३ पृथिवी । ४ आँवले का
वृक्ष ।—पुत्र, (पु०) धाय का लड़का । २
नट । अभिनयकर्त्ता । फलं, (न०) आँवला ।

धात्रेयिका } (स्त्री०) १ धाय की लड़की । २
धात्रेयी } धाय । धात्री ।

धानं (न०) १ वह जो धारण करे । वह जिसमें
धानी (स्त्री०) } कोई वस्तु रखी जाय । पात्र ।
२ स्थान । जगह ; जैसे मसीधानी । राजधानी ।

धानाः (स्त्री० बहुवचन०) १ भुने हुए जौ या चाँवल ।
२ भुना हुआ कोई भी अनाज । ३ अनाज । ४
कली । अँकुर ।

धानुर्दण्डिकः } (पु०) धनुर्धर । तीरन्दाज ।
धानुष्कः }

धानुष्यः (पु०) बाँस ।

धांधा } (स्त्री०) इलायची । एला ।
धान्धा }

धान्यं (न०) १ अनाज । नाज । चाँवल । २ धनिया ।
—अर्थः, (पु०) अनाज ही जिसका धन है ।
—अम्लं, (न०) माँड का बना हुआ खट्टा
पदार्थ ।—अस्थि, (न०) भूखी । चोकर ।
—उत्तम (वि०) अनाजों में उत्तम अर्थात्
चाँवल ।—कलकं, (न०) १ भूखी । २ पुश्ताल ।
—कोशः, (पु०)—कोष्ठकं, (न०) खत्ती । अनाज

का भाखडार ।—क्षेत्र, (न०) अनाज का खेत ।
—चमसः, (पु०) विशेष क्रिया से तैयार किया हुआ चाँवल । चूड़ा । चौरा ।—त्वच्, (स्त्री०) अनाज की भूसी ।—मायः, (पु०) अनाज का व्यापारी ।—राजः, (पु०) जौ ।—वर्धनं, (न०) व्याज पर अनाज उधार देना ।
—बीजं, — बीजं, (न०) धनिया ।
—वीरः, (पु०) उई । माप ।—शीर्षकं, (न०) अनाज की बाल ।—शूकं, (न०) अन्न की बाल या मुद्दा ।—सारः, (पु०) कुटा हुआ अनाज ।

धान्या (स्त्री०) } धनिया ।
धान्याक (न०) }

धान्वन् (वि०) [स्त्री०—धान्वनी] रेगस्तान में अवस्थित । धन्वन् ।

धामकः (पु०) मौँसा । एक प्रकार की तौल ।

धामन् (न०) १ आवासस्थान । निवासस्थान । डेरा । २ स्थान । आश्रयस्थल । ३ किसी घर के निवासी । किसी कुटुम्ब के सदस्य । ४ प्रकाश की किरण । ५ प्रकाश । चमक । महिमा । ६ बल । पराक्रम । प्रताप । ७ उत्पत्ति । ८ शरीर । १० (सैन्य) दल । समूह । ११ दशा । परिस्थिति ।
—केशिन्, —निधिः, (पु०) सूर्य ।

धामनिका } (स्त्री०) धमनी । नाड़ी । शिरा ।
धामनी }

धार (वि०) १ ग्रहण करने वाला । वहन करने वाला । सहारा देने वाला । २ बहने वाला ।

धारः (पु०) १ विष्णु । २ अचानक मूसलाधार जलवृष्टि । ३ ओले । ४ गहरी जगह । ५ ऋण । ६ सीमा ।

धारकः (पु०) धारण करने वाला । वर्तन । वक्ता । ट्रंक आदि ।

धारण (वि०) [स्त्री०—धारणी] धारण करने वाला या वाली ।

धारणकः (पु०) कर्जदार । ऋणी ।

धारणा (स्त्री०) १ धारण करने की क्रिया या भाव । २ वह शक्ति जिसमें कोई बात मन में धारण की जाती है । बुद्धि । समझ । ३ दृढ़ निश्चय । पक्का विचार । ४ मर्यादा । ५ योग के आठ अँगों में

से एक । ६ विश्वास । निश्चय ।—शक्तिः, (स्त्री०) याद रखने की ताकत ।

धारणी (स्त्री०) १ पंक्ति । रेखा । २ शिवा ।

धारयित्री (स्त्री०) पृथिवी । जमीन ।

धारा (स्त्री०) १ जल का प्रवाह । धार । २ घड़े का छेद जिससे पानी या अन्य कोई तरल पदार्थ बहे । ३ धोड़े की चाल । ४ सिरा । बाड़ । धार । ७ पहाड़ का किनारा । ८ पहिया । बाग की दीवाल या घेरा । ९ सेना का अग्रभाग । सर्वोच्चस्थान । उत्तमता । १० समूह । ११ कीर्ति । १२ रात । १३ हल्दी । १४ समानता । १५ काम का अग्रभाग ।—अग्रं, (पु०) तीर का चौड़ा फल ।—अङ्कुरः, (पु०) १ वृष्टिजल की बूँद । २ ओला । ३ शत्रुसैन्य के सम्मुख आगे बढ़ना ।—अङ्गः, (पु०) तलवार ।—अटः, (पु०) चाक पच्ची । २ घोड़ा । ३ बादल । ४ मदमाता हाथी ।—अधिरूढ, (वि०) सर्वोच्च स्थान पर चढ़ा हुआ ।—अध्र, (स्त्री०) वायु । हवा ।—अश्रु, (न०) आँसुओं का प्रवाह ।—आसारः, (पु०) मूसलधार जल-वृष्टि ।—उष्ण, (धन से निकला हुआ) गर्म । ताता ।—गृहं, (न०) स्नानागार जिसमें फुहारा लगा हो ।—धरः, (पु०) १ बादल । २ तलवार ।—निपातः,—पातः, (पु०) १ जलवृष्टि । २ जलप्रवाह ।—यंत्रम्, (न०) फुहारा । फव्वारा ।—वर्षः, (पु०) वर्षम्. (न०)—सम्पातः, (पु०) मूसलधार या लगातार जलवृष्टि ।—वाहिन्, (वि०) सतत । लगातार ।—विष, टेढ़ी तलवार ।

धारिणी (स्त्री०) पृथिवी ।

धारिन् (वि०) [स्त्री०—धारिणी] १ ले जाने वाला । धारण करने वाला । २ याद रखना । स्मरण रखना ।

धार्तराष्ट्रः (पु०) १ धृतराष्ट्र का पुत्र । २ हंस विशेष जिसके पैर और चोंच काली होती है ।

धार्मिक (वि०) [स्त्री०—धार्मिकी] १ धर्मात्मा । पुण्यात्मा । ईमानदार । सच्चा । २ न्यायप्रिय । सत्यप्रिय । सत्य पर निर्भर । ३ धर्मिष्ठ ।

धार्मिक (न०) धार्मिक लोगों का समूह ।
 धार्मिक (न०) अभिमान । दिखाई ।
 धाव (धा० परस्मै०) [धावति, धावित] १ भागना । आगे बढ़ना । २ भाग जाना ।
 धावकः (पु०) १ धोबी । २ संस्कृत भाषा के एक कवि का नाम ।
 धावक (न०) १ पलायन । सरपट दौड़ । २ बहाव । ३ आक्रमण । ४ सफाई । ५ किसी वस्तु से रगड़ना ।
 धावक (न०) १ सफेदी । २ पोलापन ।
 धि (धा० पर०) [धियति] ग्रहण करना । धरना । पकड़ना ।
 धि (पु०) धारण करने वाला । भाण्डार ।
 धिक् (अव्यया०) धिक्कार । फटकार ।—कारः,—क्रिया, (स्त्री०) भर्त्सना । तिरस्कार ।—दण्डः, (पु०) फटकार । भर्त्सना ।—पारुष्यं, (न०) कुवाच्य । गाली ।
 धिष्णु (वि०) धोखा देने का अभिलाषी । धोखे-बाज़ ।
 धिष्णु देखो धि ।
 धिषणा (न०) आवासस्थान । रहने की जगह ।
 धिषणः (पु०) बृहस्पति का नाम ।
 धिषणा (स्त्री०) १ बायो । वकृता । २ प्रशंसा । गीत । ३ बुद्धि । प्रतिभा । समझ । ४ प्याला । कटोरा । कमण्डलु ।
 धिषाय (न०) १ वैद्यक । स्थान । मकान । २ धूम-केतु । दूधता हुआ तारा । लूक । उल्का । ३ अग्नि । ४ नक्षत्र । सितारा ।
 धिषायः (पु०) १ वह स्थान जहाँ वज्रिय अग्नि स्थापन किया जाय । २ दैत्यगुरु शुक्राचार्य । ३ शुक्रग्रह । ४ पराक्रम । बल ।
 धीः (स्त्री०) १ बुद्धि । समझ । मन । २ ख्याल । विचार । कल्पना । ३ इरादा । संसूचा । ४ भक्ति । प्रार्थना । ५ यज्ञ ।—इन्द्रियं, (न०) ज्ञानेन्द्रिय ।—गुणाः, (बहु०) बुद्धि सम्बन्धी गुण । [वे गुण ये हैं—
 शुद्धा अवयव चैव ग्रहणं धारणं तथा ।
 लक्षणाश्चैव विज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः ॥
 —कामन्दक ।

—पतिः [= धियांपतिः] बृहस्पति ।—मन्त्रिन्, (पु०) —सचिवः, (पु०) कर्मसचिव का उल्टा । अर्थात् वह मंत्री जो केवल परामर्श दे । २ बुद्धिमान परामर्शदाता ।—शक्तिः, (स्त्री०) बुद्धि सम्बन्धी विशिष्टता ।—सखः, (पु०) परामर्श-दाता । सचिव । मंत्री ।
 धीमत् (वि०) बुद्धिमान । प्रतिभाशाली । परिष्ठत । (पु०) बृहस्पति की उपाधि ।
 धीत (वि०) पिया हुआ । चूसा हुआ ।
 धीतिः (स्त्री०) १ पीना । चूसना । २ प्यास ।
 धीर (वि०) १ वीर । साहसी । हिम्मतवर । २ दृढ़ । टिकाऊ । सातित्य । ३ दृढ़ मन का । दृढ़ प्रतिज्ञ । पक्के विचार का । ४ शान्त । ५ गम्भीर । संजीदा । ६ मजबूत । उत्साहवान । ७ बुद्धिमान । समझदार । विवेकी । परिष्ठत । चतुर । ८ गहरा । गम्भीर । उच्च (स्वर) ९ कोमल । मुलायम । अनुकूल । प्रिय । १० सुस्त । काहिल । ११ दुस्साहसी । १२ उजड़ । ज़िदी ।—उदात्तः, (पु०) किसी काव्य या कविता का प्रधानपात्र जो वीर और उदात्त विचारों का हो ।—उद्धतः, (पु०) किसी काव्य या कविता का प्रधान पात्र जो वीर तो हो किन्तु साथ ही तुनक मिज़ाज भी हो ।—चेतस्, (वि०) दृढ़ । दृढमनस्क । साहसी । हिम्मतवर ।—प्रशान्तः, (पु०) किसी काव्य या कविता का प्रधानपात्र जो वीर होने के साथ ही साथ शान्त प्रकृति का भी हो ।—ललितः, (पु०) किसी काव्य या कविता का प्रधानपात्र जो दृढ़ और वीर तो हो, किन्तु साथ ही आसोदप्रिय और लापरवाह भी हो ।—स्कन्धः, (पु०) मैसा ।
 धीरं (न०) केसर । कुङ्कुम ।
 धीरं (अव्यया०) साहसपूर्वक । दृढ़ता से ।
 धीरः (पु०) १ समुद्र । २ बालि का नामान्तर ।
 धीरता (स्त्री०) १ सहनशीलता । सहिष्णुता । मन की दृढ़ता । २ स्पष्टता आदि मानसिक वेगों का शमन । ३ गाम्भीर्य । संजीदगी ।
 धीरा (किसी काव्य का या कवि की कृति की मुख्य-पात्री, जो अपने पति या प्रेमी के प्रति अपने मन में

ईर्ष्यापरायण हो, किन्तु अपने इस मानसिक भाव को बाह्य सङ्केतों से अपने पति या प्रेमी के सामने प्रकट न होने दे।

धीलटिः } (स्त्री०) पुत्री ।
धीलटी }

धीवरं (न०) लोहा ।

धीवरः (पु०) मछुआ । माहीगीर । मत्ताह ।

धीवरी (स्त्री०) १ मछुवा की स्त्री । २ मछली रखने की डलिया ।

धु (धा० उभय०) [धुनोति, धुनते, धुत] देखो धूँ ।

धुत् (धा० आत्म०) [धुत्ते, धुत्ति] १ जलना भभकना । २ रहना । ३ थकना ।

धुत (वि०) १ हिला हुआ । २ त्यक्त । त्यागा हुआ ।

धुनिः } (स्त्री०) नदी ।—नाथः (पु०) समुद्र ।
धुनी }

धुर [कर्त्ता एकवचन धूः] १ जुआ । २ जुए का वह भाग जो जानवर के कंधे पर रहता है । ३ धुरी के छोरों की कीलें जो पहियों को निकलने से रोकती हैं । ४ बंब । ५ बोझ । भार । दायित्व । कर्त्तव्य । वेगार । ६ सब से आगे का या सब से ऊँचा भाग । चोटी । सिर ।—गतः, (= धूर्गत] (वि०) १ रथ के बाँस पर खड़ा हुआ । २ मुख्य । प्रधान । अनुआ ।—जटिः, (धूर्जटिः,) (पु०) शिव जी की उपाधि ।—(धरः, = धूर्धरः, धुरन्धर) (वि०) १ जुआँ ढोने वाला । २ जोतने योग्य । ३ सद्गुणों से सम्पन्न । आवश्यक कर्त्तव्यों के भार से भारान्वित । ४ प्रधान । मुखिया । नेता ।—धरः, (पु०) १ बोझ ढोने वाला जानवर । २ काम धंधे में संलग्न मनुष्य । ३ प्रधान । नेता । मुखिया ।—वहः, (= धूर्वह) (वि०) १ बोझ ढोने वाला । २ व्यवस्थापक ।—वहः, (पु०) बोझ ढोने वाला जानवर ।—धूर्वोदृ भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

धुरा (स्त्री०) बोझ । भार ।

धुरीण } (वि०) १ बोझ ढोने योग्य । भार
धुरीय } उठाने योग्य । २ (गाड़ी या हल में)
जोतने योग्य । ३ उत्तरदायी कर्त्तव्यों से सम्पन्न ।

धुरीणः } (पु०) १ बोझ ढोने वाला । २ जान-
धुरीयः } वर । ३ कामधन्धे में लिप्त मनुष्य । ४
मुखिया । प्रधान । नेता ।

धुर्य (वि०) १ बोझ ढोने योग्य । बोझ उठाने योग्य
२ उत्तरदायी कर्त्तव्यों का भार सँपने योग्य ।

धुर्यः (पु०) १ बोझ ढोने वाला जानवर । २ घोडा
या बैल जो गाड़ी या रथ में जुता हुआ हो । ३
बोझ ढोने वाला । ४ प्रधान । मुखिया । नेता ।
५ सचिव । दीवान । मंत्री ।

धुस्तुरः } (पु०) धतूरे का पौधा ।
धुस्तूरः }

धू (धा० पर०) [धुवति, धवति, धवते, धूनाति,
धुनुते, धुनोति, धुनीते, धूनयति धूनयते,
धूत, धून,] १ हिलाना । आन्दोलन करना ।
२ दूर कर देना ।

धूः (स्त्री०) हिलने वाली । काँपने वाली । आन्दोलन
करने वाली ।

धूत (व० कृ०) १ हिला हुआ । २ झड़ा हुआ । ३
स्थानान्तरित किया हुआ । ३ हवा किया हुआ ।
४ त्यक्त । त्यागा हुआ । भागा हुआ । ५ धिक्कारा
हुआ । ६ जाँचा हुआ । ७ तिरस्कृत किया हुआ ।
८ अनुमान किया हुआ ।—कलमवः, —पापः,
(वि०) पापों से युक्त ।

धून (व० कृ०) काँपा हुआ । आन्दोलित ।

धूप (धा० पर०) [धूपायति धूपायित] १
गर्माणा या गर्म होता । २ धूप देना । ३ चमकना ।
४ बोलना ।

धूपः (पु०) एक प्रकार का द्रव्य विशेष जिसे आग
पर डालने से सुगन्ध युक्त धुआँ निकलता है । इसके
पञ्चाङ्गः दशाङ्गः, षोडशाङ्ग आदि अनेक भेद हैं ।
अङ्गः, (पु०) १ तारपीन । २ सरल नामक वृक्ष ।
३—अर्हः, (न०) गुग्गुलु ।—पात्रं, (न०)
धूपदानी ।

धूपनं (न०) धूप देना । अग्नियारी देना ।

धूपित (वि०) धूप दिया हुआ । गर्माया हुआ ।
सुगन्ध युक्त किया हुआ ।

धूमः (पु०) १ धुआँ । २ कुहरा । ३ हल्का । ४
बादल । ५ ढकार । ६ विशेष प्रकार का धुआँ

जिसका रंग विशेष में सचन कराया जाता है

धूम (वि०) धूम का रंग । धूमल रंग का ।

धूमना, (स्त्री०) धूमपान का नाम ।—केतनः,

—केतुः, (पु०) १ अग्नि । धाग । २ उत्का ।

धूमकेतुः । पुच्छलतारा । ३ केतु ग्रह ।—जः,

(पु०) बादल ।—ध्वजः, (पु०) अग्नि ।—

पानं, (न०) हुका पीना ।—धैनिः, (पु०)

बादल ।

धूमल (वि०) धुमैला । धुएँ के रंग का । बैंगनी ।

धूमायति (क्रि०) धुएँ से भर जाना या ठक
धूमायते जाना ।

धूमिका (स्त्री०) बाष्प । कोहरा । कुहासा ।

धूमित (वि०) धुएँ के कारण छिपा हुआ । अन्ध-
कारमय ।

धूम्या (स्त्री०) धूप की घटा । प्रगाढ़ धूसः ।

धूस्र (वि०) १ धुमैले रंग का । भूरा । २ लज्जोद्वा
काला । ३ अंधकार । ४ बैंगनी ।—अटः, (पु०)

धूम्यार पत्नी । भृङ्गनाज ।—रुच् (वि०) बैंगनी

रंग का ।—लोचनः, (पु०) कवृतर ।—

लोहितः, (वि०) गहरा बैंगनी ।—लोहितः,

(पु०) शिवजी ।—शूकः, (पु०) ऊँट ।

धूत्रं (न०) १ पाप । गुनाह । दुष्टता ।

धूत्रः (पु०) १ लाल और काले का मिश्रण । २ धूप ।

३ राम की सेना का एक भाग ।

धूत्रकः (पु०) ऊँट । उष्ट्र । कमेलक ।

धूर्त (वि०) १ मायावी । छुली । कपटी । २ बंचक ।

प्रतारक । दगाबाज । धोखा देने वाला । ३

उत्पात्ती । उपद्रवी ।—कृतः, (वि०) चालाक ।

वेईमान । मुत्तली । (पु०) धतुरे का पौधा ।—

जन्तुः, (पु०) मनुष्य ।—रचना, (स्त्री०)

बद्धमाशी । गुंजापन ।

धूर्तः (पु०) १ धोखा देने वाला । दगाबाज । २

जुआरी । ३ हाथपेच करने वाला आदमी । ४

अनुरा । ५ चोर नामक गन्धद्रव्य । ६ साहित्य में

शठनायक का एक भेद ।

धूर्तकः (पु०) १ शृगाल । २ धूर्त । ३ जुआरी । ४

कौरव्य कुल का नाग । [बं.]

धूर्वी (स्त्री०) गाड़ी का अगला हिस्सा । गाड़ी का

ढूँक (न०) जहर ।

धूलि (पु०) १ धूल । गर्दा । २ चूण ।—

धूली (स्त्री०) १ कुहिनः, (न०)—केदारः,

(पु०) १ टीला किले का धुस्स । २ जुता हुआ

खेत ।—ध्वजः, (पु०) पवन ।—पटलः,

(पु०) धूल का बादल ।—पुष्पिका,—पुष्पी

(स्त्री०) केतकी का पौधा ।

धूलिका (स्त्री०) कोहरा । कोहासा ।

धूसर (वि०) धुमैले रंग का ।

धूसरः (पु०) १ भूरा रंग । २ गधा । ३ ऊँट । ४

कवृतर । ५ तेली ।

धृ (धा० आत्म०) [ध्रियते धृत] १ होना ।

जीना । जीवित बना रहना । २ पाला पोसा जाना ।

३ हृदय निश्चय करना ।

धृत (व० कृ०) १ पकड़ा हुआ । आया हुआ ।

लेजाया हुआ । वहन किया हुआ । समर्थित । ३

अधिकृत किया हुआ । ३ रखा हुआ । बचाया हुआ

४ पकड़ा हुआ । ५ धिमा हुआ । इस्तेमाली । ६

भरा हुआ । जमा किया हुआ । ७ अभ्यास किया

हुआ । देखा हुआ । ८ तौला हुआ ।—आध्यन्,

इद मनवाला ।—दाहः, (वि०) १ सज़ा देने

वाला । २ सज़ापाने वाला ।—पट, (वि०)

कपड़े से लपटा हुआ ।—राजन्, (वि०) अच्छे

राजा द्वारा शासन किया हुआ ।—राष्ट्रः, (पु०)

(= धृतराष्ट्रः) विचित्रवीर्य की विधवा रानी के गर्भ

से व्यास के साथ नियोग कराकर उत्पन्न हुआ पुत्र ।

यह दुर्योधन का पिता था ।—सर्पन्, (वि०)

कवचधारी ।—धृतिः, (स्त्री०) १ पकड़ने वाला ।

धामने वाला । २ अधिकृत करने वाला । ३ सम-

र्थन करने वाला । ४ दृढ़ता । मज़बूती । ५ मन की

दृढ़ता । स्फूर्ति । इद सङ्कल्प । ६ सन्तोष ।

आनन्द । प्रसन्नता ।

धृतिमत् (वि०) १ दृढ़ । मज़बूत । इद सङ्कल्प

वाला । २ सन्तुष्ट । प्रसन्न । हर्षित ।

धृष्टन् (पु०) १ विष्णु । २ ब्रह्मा । ३ पुरुष । मुकृत ।

४ आकाश । ५ समुद्र । ६ चालाक आदमी ।

धृष् (धा० पर०) [धर्षति—धर्षित] १ साथ साथ

आना । २ धावत करना ।

धृष्ट (वि०) १ ढीठ । साहसी । हिम्मत वाला । २ अशिष्ट । बेहया । निर्लज्ज । ३ अभिमानी । प्रगल्भ । ४ लंपट । कुकर्म । परित्यक्त ।—दुस्त्रः, (पु०) दुपद राजा का बेटा ।—धी.—मानिन् (वि०) अभिमानी ।

धृष्टः (पु०) बेवफा पति या प्रेमी ।

धृष्टाज् (वि०) १ साहसी । २ निर्लज्ज । बेहया ।

धृष्टिः (स्त्री०) प्रकाश की किरण ।

धृष्ट्या (वि०) १ साहसी । हिम्मत वाला । बहादुर । शक्तिमान । २ निर्लज्ज । बेहया ।

ध्रे (धा० पर०) [ध्रियति, ध्रीत] १ चूसना । पीना ।

ध्रेनः (पु०) १ समुद्र । २ नद ।

ध्रेनुः (स्त्री०) १ गौ । २ दुधार गाय । ३ किसी भी पुरुषवाची शब्द के पीछे यह शब्द लगाने से यह शब्द स्त्रीवाची हो जाता है । यथा खड्गध्रेनुः, बहवध्रेनुः । ४ पृथिवी ।

ध्रेनुकः (पु०) बलराम द्वारा मारे गये एक दैत्य का नाम ।—सूदनः, (पु०) बलराम ।

ध्रेनुका (स्त्री०) १ हथिनी । २ दुधार गौ ।

ध्रेनुष्या (स्त्री०) वह गाय जिसका दूध बंधक रखा हो ।

ध्रेनुकं (न०) १ गौधों का समूह । २ रतिबंध ।

ध्रेर्यम् (न०) १ धीरज । धीरता । चित्त की स्थिरता । २ शान्ति । ३ गाभीर्य । ४ साहस ।

ध्रेवतः (पु०) सङ्गीत के सप्तस्वरों में से एक स्वर ।

ध्रेवत्यं (न०) चालाकी । चातुर्य ।

ध्रेर् (धा० पर०) [स्त्री०—ध्रेरति] १ तेज़ी से जाना । २ निपुण होना ।

ध्रेरणम् (न०) १ बाहन । सवारी । २ तेज़ी से या चारु रूप से जाने वाला । ३ घोड़े की कदम चाल ।

ध्रेरणिः } (स्त्री०) १ श्रेणी । २ परम्परा ।
ध्रेरणी }

ध्रेरितं (न०) १ चोट पहुँचाना । चोटिल करना । २ शमन । गति । ३ घोड़े की कदम ।

ध्रौत (धा० कृ०) १ धोया हुआ । साफ किया हुआ । २ चिकनाया हुआ । चमकाया हुआ । ३ चमकीला । सफेद ।—कटः, (पु०) मौटे कपड़े का थैला ।—कोषजं, —कौषेयं, (न०) कलफ किया हुआ रेशमी कपड़ा ।

ध्रौतम् (न०) चाँदी ।

ध्रौघः (पु०) १ भूरापन । २ भवन के लिये स्थान जो विशेष रीत्या बनाया गया हो ।

ध्रौरितकं (न०) घोड़े की कदम चाल ।

ध्रौरेय (वि०) [स्त्री०—ध्रौरेयी] बौझ डोने योग्य ।

ध्रौरेयः (पु०) १ बौझ डोने वाला जानवर । २ घोड़ा ।

ध्रौर्तिकं } (न०) कपट । कल । बेईमानी ।
ध्रौर्तिकं }
ध्रौर्त्य } बदमाशी ।

ध्मा (धा० पर०) [ध्रमति, ध्मात] १ फूँकना ।

फूँक मारना । स्वाँस लेना । २ आग फूँकना ।

धौक कर कोई वस्तु बनाना ।

ध्माकारः (पु०) लुहार ।

ध्मात्तः या ध्वात्तः (पु०) १ काक । २ बगला । ३ फकीर । ४ धर ।

ध्मात (धा० कृ०) १ बजाया हुआ । २ फूँका हुआ । ३ फुलाया हुआ ।

ध्मापित (वि०) जलाकर भस्म किया हुआ ।

ध्यात (वि०) विचारित । विचार किया हुआ ।

ध्यानं (न०) १ प्रगाढ़ चिन्ता । २ बाह्य इन्द्रियों के प्रयोग के बिना केवल मन में लाने की क्रिया या भाव । ३ अन्तःकरण में उपस्थित करने की क्रिया या भाव । ४ मानसिक प्रत्यक्ष ।—गम्य, (वि०) केवल ध्यान द्वारा प्राप्त ।—तत्पर, —निष्ठ, —पर, (वि०) ध्यान में मग्न ।—मात्रं, (न०) केवल ध्यान या विचार ।—योगः, प्रशान्त ध्यान ।—स्थ, (वि०) ध्यान में निरत होने के कारण आत्मविस्तृत ।

ध्यानिक (वि०) ध्यान द्वारा पाया हुआ या खोजा हुआ ।

ध्याम (वि०) अपरिष्कृत । मैला कुचैला । काला कलटा । दाग लगीला ।

ध्यामन् (पु०) १ मात्रा । परिणाम । माप । २ प्रकाश । (न०) ध्यान ।

ध्यै (धा० पर०) [ध्यायति, ध्यात] ध्यान करना । विचार करना ।

ध्याडिः (पु०) पुष्प एकत्र करने वाला ।

ध्रुव (वि०) १ स्थिर । अचल । सदा एक ही स्थान

पर रहने वाला। इधर उधर न हटने वाला
 वन एक हा अवस्था में रहने वाला ३ चिन्ह
 निश्चित। दृढ़। ठीक। पक्का।—अक्षरः, (पु०)
 विष्णु।—आचरनः, (पु०) वालों का भौता या
 भौरी।—तारा, (स्त्री०)।—तारक, (न०) ध्रुव
 तारा।

ध्रुवः (पु०) १ ध्रुव तारा। २ पृथिवी का अक्षदेश।
 ४ वट वृक्ष। वरगाद। ५ खंभा। धून। स्थाणु। ६
 वृक्ष का तना। ७ टेक (गीतकी)। ८ समय।
 युग। जमाना। ९ ब्रह्मा। १० विष्णु। ११
 शिव। १२ उन्नतपाद राजा के एक पुत्र का
 नाम जिसने पिता द्वारा अपमानित हो, तपःप्रभाव
 से राज्य सम्पादन किया था।

ध्रुवकः (पु०) १ (किसी गीत की) टेक। २ (वृक्ष
 का) तना। ३ खंभा।

ध्रौव्यं (न०) १ दृढ़ता। अचलत्व। स्थिरता। २
 अवस्थान। स्थिति। स्थितिकाल। ३ निश्चय।

ध्वंस (धा० आत्म०) [ध्वंस्ते, ध्वंस्त] १ नीचे
 गिरना। गिर कर टुकड़े टुकड़े हो जाना। २ गिर
 पड़ना। हूब जाना। उदास होना। ३ नष्ट
 होना। सड़जाना। ४ अस्त होना। (निजन्त)
 नाश करना।

ध्वंसः (पु०) १ विनाश। नाश। गिरकर चूर
 ध्वंसनं (न०) १ चूर होना। (किसी मकान का
 सहसा बैठ जाना। २ हानि। नाश।

ध्वंसिः (पु०) एक सुहृत् का शराँश।

ध्वजः (पु०) १ झंडा। राजचिन्ह। २ प्रसिद्ध पुरुष।
 झंडे का बाँस या दण्ड। ३ चिन्ह। राजचिन्ह। ४
 देवचिन्ह। ५ सराय का चिन्ह। ६ द्रेडमार्क। ७
 पुरुष या स्त्रीचिन्ह। ८ कलवार (भदिरा बेचने
 वाला)। ९ किसी वस्तु के पूर्व अवस्थित मकान।

१० अभिमान। ११ दम्भ।—अंशुकम्,—पटः,
 —पटं, (न०) झंडा। आहत, (वि०) समर-
 क्षेत्र में पकड़ा हुआ।—गृहं, (न०) घर जिसमें
 झंडे रखे जाते हैं।—धुमः, (पु०) ताड़ का वृक्ष।
 —प्रहरणः, (पु०) पवन।—यंत्रं, (न०)
 झंडा खड़ा करने का यंत्र।—यष्टिः, (स्त्री०) झंडे
 का बाँस।

ध्वजवत (वि०) १ झंडों से सुसज्जित। २ चिन्ह
 युक्त। ३ किसी अपराध के लिये दागा हुआ। दाग
 कर चिन्हित किया हुआ। (पु०) झंडावरदार।
 २ शराब बेचने वाला।

ध्वजिन् (वि०) [स्त्री०—ध्वजिनी] झंडावरदार।
 २ चिन्ह रखने वाला। सुराभाजन चिन्ह। (भ०)
 झंडावरदार। कलवार। शराब बेचने और खींचने
 वाला ३ गाड़ी। फिटव। रथ। ४ पर्वत। ५
 सर्प। ६ मयूर। मोर। ७ वोड़ा। ८ ब्राह्मण।

ध्वजिनी (स्त्री०) सेना। पलटन।

ध्वजीकरणां (न०) झंडा खड़ा करना। झंडा फह-
 राना।

ध्वन् (धा० पर०) [ध्वनति, ध्वनित,] ध्वन करना।
 शब्द करना। भिनभिनाना। प्रतिध्वनि करना।
 गर्जना। दहाड़ना।

ध्वननं (न०) १ शब्द करना। २ सङ्केत करना। ३
 अर्थ लगाना।

ध्वनः (पु०) १ शब्द। स्वर। २ भिनभिन्न आवाज।

ध्वनिः (स्त्री०) १ आवाज। नाद। २ बाजे की लय।

३ वादल की गड़गड़ाहट। ४ खाली शब्द। ५

शब्द। ६ साहित्य में ध्वनि उस विशेषता को कहते

हैं, जो काव्य में शब्दों के नियत अर्थों के योग से

सूचित होने वाले अर्थ की अपेक्षा प्रसङ्ग से निक-
 लने वाले अर्थ में होती है।—ग्रहः, (पु०) १

कान। २ श्रवण करना। ३ श्रवण करने का भाव।

—नाला, (स्त्री०) एक प्रकार की तुरही। २

बीणा। ३ बाँसुरी।—विहाराः, (पु०) भय या

शोक के कारण परिवर्तित हुआ कण्ठस्वर।

ध्वनित (व० कृ०) १ शब्दित। २ व्यञ्जित। ३

बजाया हुआ। वादित।

ध्वस्तिः (स्त्री०) नाश। वरबादी।

ध्वंसः (पु०) १ काक। २ मिथुन। ३ निर्लज्ज मनुष्य।

४ सारस।—अरातिः, (पु०) उल्लू।

ध्रुवू।—पुष्टः, (पु०) कोयल।

ध्वानः, (पु०) १ शब्द। २ भिनभिनाहट। गुञ्जार।
 बरबराना।

ध्वान्तम् (न०) अन्धकार उन्मथ वित्त, ध्वान्तारि. (पु०) १ सूर्य । २ आक का पौधा । ३
(पु०) जुगुनु ।—शात्रवः, (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा । आग ।
चन्द्रमा । ३ अग्नि । ४ सफेद रंग ।
ध्वु (धा० पर०) [ध्वरति] १ झुकावा । २ मार डालना ।

न

न संस्कृत या नागरी वर्णमाला का बीसवाँ व्यंजन और
तवर्ग का पाँचवाँ वर्ण । इसका उच्चारणस्थान
दन्त है । इसका उच्चारण करते समय आभ्यन्तर
प्रयत्न और जीभ के अग्रभाग का दन्तमूल से
स्पर्श होता है और बाह्य प्रयत्न, संवार, नाद, घोष
और अरूप प्राण्य है ।

न (वि०) १ पतला । फालतु । २ खाली । रीता । ३
वही । समान । ४ अविभक्त ।

नः (पु०) १ मोती । २ गणेश का नाम । ३ दौलत ।
सम्पत्ति । ४ दल । ५ युद्ध । (अव्य०) नहीं । न ।
—अस्त्यौ, (पु० बहु०) अश्विनी कुमार ।—
एक, (वि०) एक नहीं । एक से अधिक । कई
एक । भिन्न भिन्न ।—किञ्चन, (वि०) अत्यन्त
धनहीन । भिखारीपन से ।

नकुटं (न०) नाक । नासिका ।

नकुलः (पु०) १ न्योला । २ चौथे पाण्डव का नाम ।

नक्तम् (न०) १ रात । २ रात को भोजन करना ।

(एक प्रकार का व्रत)—अन्ध, (वि०) रात को

अंधा । जो रात में न देख सके ।—वर्षा, (स्त्री०)

रात में भ्रमण करने वाला ।—चारिन्, (पु०)

१ उल्लू । २ बिल्ली । ३ चोर । ४ राक्षस । दैत्य ।

—भोजनं, (न०) रात का भोजन । ज्वालू ।—

मालाः, (पु०) एक वृक्ष का नाम ।—सुखा,

(स्त्री०) सन्ध्या ।—व्रतं, (न०) दिन में उपवास

और रात में भोजन । कोई भी व्रत जो रात में

किया जाय ।

नक्तं (अव्यय०) रात में । रात के समय ।—क्षरः,

(पु०) १ कोई भी रात में घूमने वाला प्राण-

धारी । २ चोर ।—चारिन्, (पु०) रात में

घूमने फिरने वाला ।—दिनं, (न०) दिन रात ।

—दिवं,—दिनं, (अव्यय०) रात और दिन में ।

नक्तकः (पु०) मैले चिथड़े । मैले फटे कपड़े ।

नक्क (न०) १ चौखट का ऊपर का काट । २
नासिका । नाक ।

नक्कः (पु०) मगर । बड़ियाल ।

नक्का (स्त्री०) १ नाक । २ शहद की मक्खियों या
बरों का समूह ।

नक्षत्रं (न०) १ तारा । २ ग्रह । ३ मोती ।— ईशः,

—ईश्वरः,—नाथः,—पः,— पतिः,— राजः,

(पु०) चन्द्रमा ।—नक्क, (न०) १ नक्षत्र-

मण्डल । २ राशिचक्र ।—दर्शः, (पु०) फलित

ज्योतिषी । गणक ज्योतिषी ।—नेमिः, (पु०)

१ चन्द्रमा । २ ध्रुवतारा । ३ विष्णु । (स्त्री०)

रेवती नक्षत्र ।—पथः, (पु०) नक्षत्र मण्डित

आकाश ।—पाठकः, (पु०) ज्योतिषी । २०

मोतियों की माला या हार । ३ हाथी के गले का

कठला ।—योगः, (पु०) चन्द्रमा के साथ नक्षत्रों

का योग ।—वर्त्मन्, (पु०) आकाश ।—विद्या,

(स्त्री०) खगोल विद्या । ज्योतिष विद्या ।—

दृष्टिः, (स्त्री०) उत्कर्षपात । तारे का दूटना ।—

सूचकः, (पु०) कुत्सित ज्योतिषी ।

नक्षत्रिन् (पु०) १ चन्द्रमा । २ विष्णु ।

नखं } १ हाथ या पैर का नाखून । पंजा । चंगुल ।

नखः } २ बीस की संख्या ।—खः, (पु०) हिस्सा ।

भाग ।—अङ्कः, (पु०) खरौच । नखचिन्ह ।

आघातः, (पु०) खरौच । नखचत ।—

आयुधः, (पु०) १ चीता । २ सिंह । ३ मुर्गा ।

—आशिन्, (पु०) उल्लू ।—कुटः, (पु०)

नाई ।—जाह्न, (न०) नखमूल ।—दारुणः,

(पु०) राज । गीघ ।—दारुणः, (न०) नाखून काटने

की कैची ।—निहंतनं—रंजनी, (स्त्री०) नाखून

काटने की कैची । नहली ।—पदं, (न०)—

नखा, (पु०) नखत । खरोच ।—मुखः, (पु०)
कमान ।—लेखा, (स्त्री०) १ नखविन्द । २
नख को रंगना ।—विक्रिः, (पु०) शिकारी
चिदिया ।—शङ्खः, (पु०) झोटा शंख ।

खपत्र (वि०) नख की खरोच ।

खरं (न०) हाथ का नाखून । पंजा । चंगुल ।
खरः (पु०) —आयुधः, (पु०) १ चीता ।
२ सिंह । ३ मुर्गा ।—आह्वः, (पु०) करवीर ।

खानखि (अव्य०) नख के लिये नख ।

खन् (वि०) १ पंजा या नखायुध सम्पन्न । २
कटीला । (पु०) पंजे वाला जन्तु । यथा चीता
सिंह ।

ख. (पु०) १ पर्वत । पहाड़ । २ वृक्ष । ३ पौधा ।
४ सूर्य । ५ साँप । ६ सात की संख्या ।—अटनः,
(पु०) बंदर ।—अधिपः, —अधिराजः, —
इन्द्रः, (पु०) १ हिमालय । २ सुमेरु पर्वत ।
अरिः, (पु०) इन्द्र ।—उच्चायः, (पु०)
पर्वत की उचाई ।—ओकस्, (पु०) १ पत्नी ।
२ काक । ३ सिंह । ४ शरभ ।—जः, (वि०)
पर्वतोत्पन्न ।—जः, (पु०) हाथी ।—जा,—
नन्दिनी (स्त्री०) पार्वती ।—पतिः, (पु०)
१ हिमालय पर्वत । २ चन्द्रमा ।—भिद्, (पु०)
१ कुल्हाड़ी । २ इन्द्र ।—मूर्धनः, (पु०) पर्वत-
शिखर ।—रन्ध्रकरः, (पु०) कार्तिकेय ।

खरं (न०) कसबा । शहर ।—अधिकृतः,—
अधिपः,—अध्यक्षः, (पु०) १ पुलिस का
मुख्य अधिकारी । जिला मैजिस्ट्रेट । २ किसी कसबे
का शासक ।—उपान्तः, (पु०) नगर के समीप
की आवादी ।—ओकस् (पु०) नागरिक ।
नगरनिवासी ।—काकः, (पु०) शहरवा
कौआ । तिरस्कार का शब्द ।—घातः, (पु०)
हाथी ।—जनः, (पु०) १ गाँव के लोग । २
नागरिक ।—प्रदक्षिणा, (स्त्री०) जलूस में मूर्ति
को नगर के चारों ओर ले जाना ।—प्रान्तः, (पु०)
उपपुर । बाहिरी भाग ।—मार्गः, (पु०)
मुख्यमार्ग ।—रक्षा, (पु०) किसी ग्राम या नगर
की व्यवस्था या शासन ।—स्थः, (पु०) ग्राम-
वासी । नगरनिवासी ।

नगरी (स्त्री०) पुरी ।—काकः, (पु०) सारस ।

वकः, (पु०) काक । कौआ ।

नग्न (वि०) १ नंगा । विवस्त्र । उधारा । २ बिना
जुता हुआ । जो आवाद न हो । सुनसान ।—
अटः,—अटकः, (पु०) १ जो नंगा घूमे फिरे ।
२ दिगंबर जैन या बौद्ध देव ।

नग्नः (पु०) १ नंगा भिक्षुक । नागा । २ लपणक ।
बौद्ध भिक्षुक । ३ दम्भी । पाखण्डी । ४ सेना के
साथ रहने वाला कवि । भ्रमण करने वाला कवि ।

नशा (स्त्री०) १ नंगी स्त्री । बेहया स्त्री । २ बारह वर्ष
या दशवर्ष से कम उम्र की बालिका, जिसको
रजोधर्म न हुआ हो ।

नग्नक (वि०) [स्त्री०—नग्निका] नंगा । दिगंबर ।

नग्नका } १ नंगी या निर्लज्ज स्त्री । २ रजोधर्म
नग्निका } होने के पूर्व की अवस्था वाली लड़की ।

नग्नकरणम् (न०) नंगा करना ।

नग्नंभविष्णु } (वि०) नग्न होने वाला ।
नग्नंभावुक }

नगः } (पु०) प्रेमी । आशिक ।
नङ्गः }

नचिकेतस् (पु०) अग्नि ।

नचिर (वि०) अचिर ।

नज् (अव्य०) न । नहीं ।

नट् (धा० पर०) [नटति] १ नाचना । २ अभि-
नय करना । ३ बाथल करना । (निजन्त)
[नाटयति—नाटयते] १ अभिनय करना । भाव
प्रदर्शित करना । २ अनुकरण करना । नकल
करना । १ गिरना । टपकना । २ चमकना । ३
बाथल करना ।

नटः (पु०) १ नचैया । अभिनयपात्र । ३ निम्न
श्रेणी के चरित्र का पुत्र । ४ अशोक वृक्ष ।
५ एक प्रकार का नरकुल ।—अन्तिका, (स्त्री०)
शर्म । लज्जा ।—ईश्वरः, (पु०) शिव ।—चर्या,
(पु०) नाटक के पात्र द्वारा किया हुआ अभिनय ।—
भूषणः,—भूषणः, (पु०) हरताल ।—रङ्गः,
(पु०) अभिनयशाला ।—वरः, (पु०) सूत्र-
धार ।—संज्ञकम्, (न०) हरताल ।—संज्ञकः,
(पु०) नाटक का पात्र । नचैया ।

नटनम् (न०) १ नृत्य । नाच । २ नाटकीय अभिनय । हावभाव प्रदर्शन ।

नटी (स्त्री०) १ नट की स्त्री । २ नाचने वाली स्त्री । ३ अभिनय करने वाली स्त्री । ४ अभिनय करने वाले नट की स्त्री । ५ वेश्या । — सुतः, (पु०) नर्तकी का पुत्र ।

नट्या (स्त्री०) अभिनय करने वाले नटों का समुदाय ।
नडं } (पु०) १ एक जाति का सरपत । —अगारं,
नडः } —आगारं, (न०) नरकुल की मौपड़ी । —
प्रायः (वि०) सरपत के बाहुल्य से सम्पन्न ।
—वनं, (स्त्री०) सरपत का वन । —संहतिः,
(स्त्री०) सरपत का समूह ।

नडश (वि०) [स्त्री०—नडशी] सरपतों से ढका हुआ ।

नडिनी (स्त्री०) वह नदी जिसमें सरपत अधिक हों ।
नडिल (वि०) } [स्त्री०—नडिती, नडुती]
नडुत (वि०) } सरपतों की विपुलता । सरपतों
से ढका हुआ । सरपतों का ।

नड्या (स्त्री०) सरपतों का मूढा ।

नडूल (वि०) सरपतों की अधिकता ।

नत (व० कृ०) १ झुका हुआ । प्रणाम करता हुआ ।
बिनीत । २ बूड़ा हुआ । उदास । ३ टेढ़ा । —
अशः, (पु०) वह वृत्त जिसका केन्द्र भूकेन्द्र पर
हो और जो विषुव रेखा पर लंब हो । इस वृत्त
का उपयोग ग्रहों की स्थिति निश्चित करते समय
होता है । —अङ्गः, (वि०) १ बदन झुकाये हुए ।
२ प्रणाम करने वाला । —अङ्गी, (स्त्री०)
औरत (स्त्री०) —नासिक, (वि०) चपटी
नाक का । —भूः, टेढ़ी भौं वाली स्त्री ।

नतं (न०) मध्याह्नरेखा से किसी भी ग्रह का फासला ।

नतिः (स्त्री०) १ झुकाव । प्रणाम । २ टेढ़ापन ।
धुमाव । प्रणाम करने के लिये शरीर झुकाना ।

नट् (धा० पर०) [नडति, नडित] १ शब्द करना ।
गर्जना । प्रतिध्वनि करना । २ बोलना । चिल्लाना ।
दहाड़ना । थरथराना ।

नदः (पु०) १ बड़ी नदी । २ जलप्रवाह । नाला ।
३ समुद्र । —राजः, (पु०) समुद्र ।

नदधुः (पु०) १ शोर । गर्जना । २ बैल का दहाड़ना ।

नदी (स्त्री०) नदी । —ईनः, —ईगः, —कान्तः,

(पु०) समुद्र । —कुलप्रियः, (पु०) एक
प्रकार का नरकुल । —जः, (वि०) जलोत्पन्न ।

—जः, (पु०) भीष्म । —जं, (न०) कमल ।

—तरस्थानं, (न०) उतरने का स्थान । घाट ।

—दोहः, (पु०) भाड़ा । उतराई । किराया ।

—धरः, (पु०) शिव । —पतिः, (पु०) १

समुद्र । २ वरुण । —पूरः, (पु०) उमड़ी हुई

नदी । —भवं, (न०) नदी-लवण । —मातृक,

(न०) नदी के जल या नहर के जल से

सींचा जाने वाला देश । —रयः, (पु०) नदी की

धार । —वंकः, (पु०) नदी का मोड़ । —ष्णः,

—स्नः, (पु०) १ नदीजल में स्नान । २ नदी के

खतरनाक स्थानों को जानने वाला । ३ अनुभवी ।

चतुर । —सर्जः, (पु०) अर्जुन वृक्ष ।

नद्ध (व० कृ०) १ बंधा हुआ । अटका हुआ । चारों

ओर से लपेटा हुआ । पहनाया हुआ । २ ढका

हुआ । जड़ा हुआ । गुथा हुआ । जुड़ा हुआ ।

मिला हुआ ।

नद्धम् (न०) बंधन । पट्टी । गाँठ ।

नद्धी (स्त्री०) चमड़े का तस्मा ।

ननद्व, ननद्व } (स्त्री०) पति की बहिन । नन्द ।

ननद्व, ननद्व } (पु०) पति की बहिन

ननद्वपतिः, ननद्वपतिः } का पति । नन्दोई ।

ननु (अन्त्य०) एक अव्यय जिसका व्यवहार कोई बात

पूछने, सन्देह प्रकट करने या वाक्य के आरम्भ में

किया जाता है ।

नन्द } (धा० पर०) [नन्दति, नन्दित] प्रसन्न होना ।

नन्द } (पु०) १ प्रसन्नता । हर्ष । आह्लाद । २

नन्दः } (ग्यारहवें लंबी) वीणा विशेष । ३ मेंढक ।

४ विष्णु । ५ यशोदा के पति का नाम । —

आत्मतः, —नन्दनः, (पु०) श्रीकृष्ण । —पालः,

(पु०) वरुण ।

नन्दक } (वि०) १ प्रसन्न करने वाला । २ कुटुम्ब को

नन्दक } प्रसन्न करने वाला ।

नन्दकः } (पु०) १ मेंढक । २ कृष्ण की तलवार का

नन्दकः } नाम । ३ कोई भी तलवार । ४ प्रसन्नता ।

नदकिन् } (पु०) विष्णु ।
नन्दकिन् }

नन्दधुः } (पु०) प्रसन्नता । आनन्द । खुशी ।
नन्दधुः }

नन्दनः } (वि०) प्रसन्नताकारक । —जं, (न०) पीले
नन्दनः } चन्दन की लकड़ी । हरिचन्दन ।

नन्दनः } (पु०) १ पुत्र । २ मेंढक । ३ विष्णु । शिव ।
नन्दनः }

नन्दः } (न०) १ इन्द्र के उद्यान का नाम । २
नन्दः } प्रसन्न होना । ३ हर्ष ।

नन्दनः, नन्दन्तः } (पु०) पुत्र ।
नन्दयन्तः, नन्दयन्तः }

नन्दा } (स्त्री०) १ प्रसन्नता । हर्ष । २ धनदौलत ।
नन्दा } सम्पत्ति । छोटा मिट्टी का बड़ा । ३ नन्द । ४

शुक्ल पल की ये तिथियां शुभ मानी गयी हैं ।

प्रतिपदा, छठ और ११वीं तिथियां ।

नन्दिः } (पु० स्त्री०) प्रसन्नता । हर्ष । —ईशः, -
नन्दिः } ईश्वरः, (पु०) १ शिव । २ शिव जी के प्रधान

गण का नाम । —ग्रामः, (पु०) उस ग्राम का
नाम जहाँ श्रीराम के वनोवासकाल में भरत जी

रहे थे । —घोषः, (पु०) अर्जुन के रथ का नाम ।

वर्धनः, (पु०) शिव का नाम । मित्र । चान्द्र

पक्ष का अवसान । अमावास्या ।

नन्दिकः } (पु०) १ हर्ष । २ वृत्तिया । छोटा बड़ा ।
नन्दिकः } ३ शिव का एक गण । —ईशः, — ईश्वरः,

(पु०) १ शिव जी के एक प्रधान गण का नाम । २

शिव का नाम ।

नन्दिन् } (वि०) १ आनन्दित । आह्लादित । २ प्रस-
नन्दिन् } न्नाकारक । (पु०) १ पुत्र । २ नाटक में

आशीर्वादात्मक वचन कहने वाला । ३ शिव के
द्वारपाल का नाम । शिव के वाहन का नाम ।

नन्दिनी } (स्त्री०) १ लकड़ी । २ नन्द । नन्द ।

नन्दिनी } पति की बहिन । ३ सुरभी गौ की लकड़ी ।

कामधेनु । ४ श्री गङ्गा जी । ५ श्यामा तुलसी ।

नन्दात् (पु०) नाती पौत्र । यह वैदिक प्रयोग है
यथा 'तनूलपात् ।'

नर्पसु } (पु०) हिजड़ा । ज़नाना ।
नर्पसुः }

नर्पसकं (न०) १ न स्त्री और न पुरुष ।

नर्पसकः (पु०) १ हिजड़ा । २ भीरु । डरपोक ।

— (न०) नर्पसकवाची शब्द । नर्पसकलिङ्ग ।

नष्ट (पु०) नाशी । पौत्र ।

नभः (पु०) श्रावण मास ।

नभस् (न०) १ आकाश । वायुमण्डल । २ मेघ ।

३ कोहरा । वाष्प । ४ जल । ५ वय । उन्न ।

(पु०) १ जलवृष्टि । २ वर्षाऋतु । ३ नासिका ।

४ गन्ध । ५ श्रावणमास । —अम्बुपः, (पु०)

चातक पक्षी । —कान्तिन्, (पु०) सिंह । —

—गजः, (पु०) बादल । —चलुस्, (पु०)

सूर्य । —चमस्, (पु०) १ चन्द्रमा । २

चादू । —चर, (वि०) आकाशगामी । —चरः,

(पु०) १ देवता । किन्नर आदि । २ पक्षी । —

दुहः, (पु०) मेघ । —हुटि, (वि०) १

अंधा । आकाश की ओर देखने वाला ।

ह्रीपः, —धूमः, (पु०) मेघ । बादल । —

नदी, (स्त्री०) श्रीगङ्गा । — प्राणः, (पु०)

वायु । पवन । —मणिः, (पु०) सूर्य ।

—मण्डलं, (न०) आकाश । वायुमण्डल ।

रजस्, (पु०) अन्धकार । —रेणुः, (स्त्री०)

कोहरा । तुषार । —लयः, (पु०) धूम । —लिह,

(वि०) आकाश चाटने वाला । महोच्च । बहुत

ऊँचा । —सद्, (पु०) देवता । —सरित्,

(स्त्री०) आकाशगङ्गा । —स्थली, (स्त्री०)

आकाश । —स्थूण, (वि०) आकाश को छूने

वाला ।

नभसः (पु०) १ आकाश । २ वर्षाऋतु । ३ समुद्र ।

नभसंगमः } (पु०) पक्षी ।

नभसङ्गमः }

नभस्यः (पु०) भाद्रपद मास ।

नभस्वन् (वि०) वाष्पीय । कुहरा का । (पु०)
पवन । वायु ।

नभाक् (पु०) १ अन्धकार । २ राहु उपग्रह ।

नभ्राज् (पु०) काली घटा या काला बादल ।

नभ् (धा० पर०) [नभसि-नभते. नन्, (निजन्त)
नभयति-नभयते] नचना । प्रणाम करना ।

सुकला । निम्न गमन करना । सुक कर टेढ़ा होना ।

नभत (वि०) सुका हुआ । टेढ़ा मेढ़ा ।

नभतः (पु०) १ अभिनय-कर्त्ता-नट । २ धूम । ३
स्वामी । प्रभु । ४ मेघ । बादल ।

नमन (न०) १ झुकना । २ प्रणाम । नमस्कार
नमस् (अव्यया०) प्रणाम । सलाम ।—आरः,
(पु०) प्रणाम ।—कृतिः (स्त्री०)—कर-
णम्, (न०) नमस्कार करना ।—कृत (वि०)
प्रणाम किया हुआ । पूज्य । मान्य ।—गुरुः
(पु०) दीक्षा गुरु ।—चारु, (अव्यया०) नमस्
शब्द कहने वाला ।

नमस (वि०) अनुकूल । महरवान ।

नमसित } (वि०) प्रणम्य । सम्माननीय । पूज्य ।
नमस्वित }

नमस्यति (३ि०) पूजा करना । प्रणाम करना ।

नमस्य (वि०) १ प्रणाम करने योग्य । २
सम्माननीय ।

नमस्या (स्त्री०) पूजन । सम्मान । प्रणाम ।

नमुचिः (पु०) १ एक दैत्य का नाम जिसका इन्द्र ने
वध किया था । २ कामदेव का नाम ।

नमेरुः (पु०) रुद्राक्ष या सुरपद्म वृक्ष ।

नम्र (वि०) १ नत । झुका हुआ । २ विनयावनत ।
३ टेढ़ा । ४ पूजा करने वाला । ५ भक्त ।

नय् (धा० आत्म०) [नयते] १ जाना । रक्षा
करना ।

नयः (पु०) १ पथप्रदर्शक । रहनुमा । व्यवहार ।
वर्ताव । ३ दूरदर्शिता विवेक । ४ नीति । राजनैतिक
प्रतिभा । मुलकीशासन । राज्य की नीति । ५
न्याय । नीतिविद्या । समानता । आर्जव । सत्य-
शीलता । ६ व्यवस्था । कल्पना । ७ सारकथा ।
मूलवाक्य । तत्वकथा । सिद्धान्त । ८ विधि । तौर
तरीका । मार्ग । ९ मत । राय । १० दार्शनिक
सिद्धान्त ।—कोविद्, —ज्ञ, (वि०) नीति कुशल ।
—चक्रुस्, (पु०) राजनैतिक दूरदर्शिता ।—
नेतृ, (पु०) राजनैतिक नेता ।—विद्, (पु०)—
विशारदः, (पु०) राजनैतिक नेता ।—शास्त्रम्,
(न०) १ राजनैतिक शास्त्र । २ नीति सम्बन्धी
कोई शास्त्र ।—शालिन्, (वि०) ईमानदार ।

नयनम् (न०) १ लेजाना । रहनुमा करना । व्यवस्था
करना । २ लेलेना । पास लाना । खींचना ।
३ शासन करना । हुकूमत करना । ४ प्राप्त करना ।
५ नेत्र । आँख ।—अभिराम, (वि०) देखने

में मनोहर अभिराम (पु०) च —मा
उत्सवः, (पु०) १ दीपक । २ कोई भी मनो-
हर वस्तु ।—उपान्तः, (पु०) नेत्रों के कोने ।—
गोचर, (वि०) दिखलाई पड़ने वाला । समच ।
—हृदः, (पु०) पलक ।—पथः, (पु०) इष्टि
के भीतर —गुट्ट, (न०) आँख के गढ़े या गोलक ।
—सलिलं, (न०) आँसू ।

नरः (पु०) १ मनुष्य । २ पुमान् । ३ शतरंज का
प्यादा । ४ धूपघड़ी की कील । ५ परब्रह्म । ६
एक प्राचीन ऋषि का नाम । ७ अर्जुन का नाम ।
—अधिपः, (पु०)—ईशः, (पु०)—ईश्वरः,
(पु०)—देवः, (पु०)—पतिः, (पु०)—
पालः, (पु०) राजा ।—अन्तकः, (पु०) मृत्यु
—अयणः, (पु०) विष्णु ।—अंशः, (पु०)
दैत्य । राक्षस ।—इन्द्रः, (पु०) १ राजा । २
वैद्य । इकीम । चिकित्सक । ३ विषवैद्य ।—उत्तमः,
(पु०) विष्णु ।—ऋषभः, (पु०) राजा । नरपति ।
—कपालः, (पु०) मनुष्य की खोपड़ी ।—
कीलकः, (पु०) गुरुहन्त्रा । दीक्षा गुरु की हत्या
करने वाला ।—केशरिन्, (पु०) नृसिंहावतार ।
—द्विष्, (पु०) दैत्य । दानव ।—नारायणः,
(पु०) कृष्ण का नाम ।—पशुः, (पु०) मनु-
ष्याकृति का जानवर ।—पुङ्गवः, (पु०) पुरुष-
श्रेष्ठ ।—मानिका, —मानिनी, —मालिनी,
(स्त्री०) मर्दानी औरत जिसके दाढ़ी हों ।—
मेधः, (पु०) यज्ञ विशेष जिसमें मनुष्य की
बलि दी जाय ।—यन्त्रम्, (न०) धूपघड़ी ।—
यानं, (न०)—रथः, (पु०)—वाहनम्,
(न०) पालकी । पीनस । ताम्रभात । डेला ।
रिक्का । कोई सवारी जिसे आदमी ढकेल कर या
उठा कर ले चलें ।—जोकः, (पु०) १ वह लोक
जिसमें मनुष्य रहै । २ मानव जाति ।—वाहनः,
(पु०) कुवेर ।—वीरः, (पु०) बहादुर आदमी ।
व्याघ्रः,—शार्दूलः, (पु०) प्रसिद्ध पुरुष ।—
शृङ्गम्, (न०) मनुष्य के सींग । एक असम्भव
कल्पना ।—संसर्गः, (पु०) मनुष्य समुदाय ।
—सिंहः,—हरिः, (पु०) नृसिंहावतार ।—
स्कन्धः, (पु०) मनुष्यों का समूह या दल ।

नरक (न०) । नरक । योजक । वह स्थान जहाँ नरकः (पु०) । मरने के बाद जीवों का जीवित अवस्था में किये हुए पापों का दण्ड दिया जाता है । नरक २३ हैं । इनकी गाननाओं में तारतम्य है ।

नरकः (पु०) एक असुर का नाम । यह प्रागज्यो-तिषपुर का अधिपति था । यह अदिति के कानों के कुण्डल से भागा था । अतः देवताओं के प्रार्थना करने पर श्रीकृष्ण ने अकेले ही उसे मार गिराया था ।—अन्नकः,—अरिः,—जित् (पु०) श्रीकृष्ण ।—आमयः, (पु०) । मरने के बाद जीव का सूक्ष्म शरीर । २ भूत । प्रेतात्मा ।—कुण्डलम्, (न०) नरक का एक गर्त जिसमें पापियों को नरकधातना दी जाती है ।—स्या, (स्त्री०) वैतरिणी नदी ।

नरगं, नरङ्गम् (न०) । पुरुष की जननेन्द्रिय । नरगं, नरङ्गः (पु०) । लिङ्ग ।

नरधिः (स्त्री०) सांसारिक जीवन । सांसारिक नरधिः । अस्तित्व ।

नरी (स्त्री०) औरत । स्त्री ।

नरकुण्डकम् (न०) नाक ।

नतः (पु०) नृत्य । नाच ।

नर्तकः (पु०) १ नाचने वाला । नृत्यक । २ नाटक का अभिनय करने वाला एक पात्र । ३ भाट । जगा । नकीव । ४ हाथी । ५ राजा । ६ मयूर । मोर ।

नर्तकी (स्त्री०) १ नाचने वाली । २ हथिनी । ३ मयूरनी ।

नर्तनं (न०) हावभाव । नाच । नृत्य ।—गृहं, (न०)—शाला, (स्त्री०) नाचघर ।—प्रियः, (पु०) शिब जी ।

नर्तनः (पु०) नाचने वाला ।

नर्तित (वि०) नाचा हुआ । नचाया हुआ ।

नर्द (धा० पर०) [नर्दति, नर्दित] १ गर्जना । आवाज करना । भीषण शब्द करना । २ जाना ।

नर्द (वि०) १ डकारने वाला । रंभाने वाला । दहा-डने वाला ।

नर्दनं (न०) १ डकारना । रंभाना । २ उच्चस्वर । प्रशंसा करना ।

नर्दितः (पु०) एक प्रकार के पाँसे या पाँसे का विशेष रूप से एक फिकाव ।

नर्दितम् (न०) शब्द । दहाड़ । डकार । रंभाना ।

नर्मः (पु०) १ ठिकरा । खप्पर । २ सूर्य ।

नर्मठः (पु०) १ विदूषक । भाँड़ । २ कासुक । लंपट । ऐय्यारा । ३ खेल । आमोद प्रमोद । मनोरञ्जन । ४ मैथुन । सम्भोग । ५ ठोड़ी । ६ चूची के ऊपर की काली घुंडी । चूचुक ।

नर्मन् (न०) १ क्रीड़ा । मनोरञ्जन । मनवहलाच । आमोद प्रमोद । २ हसी-मजाक । दिखलगी । ३ मसखरा । हसोड़ा ।—कीलः, (पु०) पति ।—गर्म, (वि०) हसोड़ा । पुरमजाक । हाज़िर जवाब ।—गर्भः, (पु०) गुप्त प्रेमी । छिपा हुआ आशिक । अप्रकट चाहने वाला ।—द, (वि०) प्रसन्नकारक । आल्हादक ।—दः (पु०) मस-खरा ।—दा, (स्त्री०) नदी विशेष जो विन्ध्य-गिरि से निकल कर खंभात की खाड़ी में गिरती है ।—द्युति, (वि०) प्रसन्न । हर्षयुक्त ।—द्युतिः (स्त्री०) किसी हँसी की बात सुन प्रसन्न होना ।—सचिवः,—सुहृद्, (पु०) विदूषक । वह मनुष्य जो किसी राजा के पास उसे हँसाने के लिये रहे ।

नर्मरा (स्त्री०) १ पहाड़ी घाटी । २ धौकनी । ३ वृद्धा स्त्री जिसको रजोधर्म न होता हो । ४ सरक वृक्ष ।

नलं (न०) कमल ।

नलः (पु०) १ एक प्रकार का नरकुल । २ दमयन्ती के पति राजा नल । ३ श्रीरामजी की सेना का एक प्रसिद्ध वानरयूथपति, जिसने ससुद्र पर पुल बाँधने के काम में मुख्य साहाय्य प्रदान किया था ।—कीलः, (पु०) घुटना । टेंडुना ।—कूवरः, (पु०)—कूवरः, (पु०) कुबेर के एक पुत्र का नाम ।—दम्, (न०) उशीर । खस ।—पट्टिका, (स्त्री०) चटाई ।—मीनः, (पु०) झींगा मछली ।

नलकं (न०) शरीर की कोई भी लंबी हड्डी । गोला-कार वह हड्डी जिसके भीतर मज्जा हो । नली के

आकार की हड्डी । २ कालदेवता के भतीजे का नाम, जिसे बुद्ध ने उपदेश दिया था ।

नलकिनी (स्त्री०) १ जंघा . जांव । २ टांग ।

नलिनं (न०) १ कमल का फूल । २ जल । ३ नील का पौधा । “नलिनेशयः” विष्णु की उपाधि है ।

नलिनः (पु०) सारस ।

नलिनी (स्त्री०) १ कमलिनी । कमल । २ कमल का ढेर । ३ वह स्थान या तालाब जहाँ कमल बहुतायत से उत्पन्न होते हैं —खराडम्, पराडम्, (न०) कमलों का ढेर ।—रुहः, (न०) ब्रह्मा की उपाधि ।—रुहं, (न०) कमलनाल । कमल के नाल के भीतर के सूत । [हाथ का होता है ।

नल्वः (पु०) भूमि नापने का एक नाप जो ४०० नव (वि०) १ नया । ताज़ा । टटका । हाल का ।

२ आधुनिक ।—अन्नं, (न०) ताज़ा अनाज ।

—अम्बुः, (पु०) ताज़ा पानी ।—अहः, (पु०)

पक्ष का प्रथम दिवस ।—इतर, (वि०) पुराना ।

—उद्धतं, (न०) टटका मक्खन ।—उद्धा,—

पाणिग्रहणा, (स्त्री०) हाल की व्याही दुलहिन ।

—कारिका,—कालिका,—फालिका, (स्त्री०) १

हाल की व्याही औरत । २ स्त्री जो थोड़े ही दिनों

पूर्व प्रथम बार रजस्वला हुई हो ।—क्लावः, (पु०)

हाल में दाखिल हुआ विद्यार्थी ।—नी, (स्त्री०)

—नीतं, (न०) ताज़ा मक्खन ।—नीतकं,

(न०) १ घी । २ टटका मक्खन ।—पाटकः,

(पु०) नया शिक्षक ।—मल्लिका,—मालिका,

(स्त्री०) चमेली का एक भेद ।—यज्ञः, (पु०)

नये अन्न या फल से अग्नि में आहुति देने की

क्रिया विशेष ।—यौवनं, (न०) ताज़ी जवानी या

युवावस्था ।—रजस्, (स्त्री०) लड़की जिसको

हाल ही में रजोदर्शन हुआ हो ।—वधूः,—

वरिका, (स्त्री०) हाल की व्याही लड़की ।

—वल्लभम्, (न०) एक प्रकार का चन्दन ।

—वस्त्रं, (न०) कोरा या नया कपड़ा ।—

शशिभूत, (पु०) शिव जी का नाम ।—

—सूतिः,—सूतिका, (स्त्री०) १ दुधार गौ । २

जल्दा स्त्री ।

नव (न० अव्यया०) टटका । हालका । बहुत देर का नहीं ।

नवः (पु०) काक । कौआ ।

नवकं (न०) नौ का जोड़ ।

नवत (वि०) [स्त्री०—नवती] नव्वेवाँ ।

नवतः (पु०) हाथी की मूल जिस पर चित्रकारी हो ।

२ उनी वस्त्र । कंबल । २ झूल । उधार । पर्दा ।

नवतिः (स्त्री०) नव्वे ।

नवतिका (स्त्री०) १ नव्वे । २ चित्रकार की कूची ।

नवन् (वि०) नौ । १ ।—अशोतिः, (स्त्री०) ८९

नवासी ।—अर्चिस्, (पु०)—दीधितिः, (पु०)

मङ्गल ग्रह ।—कृत्वस्, (अव्यया०) नोगुना ।—

—ग्रहाः, (पु०) बहुवचन, नवग्रह ।—

चत्वारिंशः, (वि०) ४१ वा उनचासवाँ ।—

चत्वारिंशत् (स्त्री०) ४१ । उनचास ।—

त्रिंशः,—द्वारं, (न०) शरीर जिसमें १ छेद है ।

—त्रिंश, (वि०) ३१ वाँ ।—दश, (वि०)

११ वाँ । उनीसवाँ ।—नवतिः, (स्त्री०) ९९ ।

निन्यानवे ।—निधिः, (पु० बहु०) कुबेर की

नौ निधियाँ यथा—

महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो नल्लर कच्छपौ ।

सुकुन्दकुन्द नीलाश्च खर्वश्च निधयो नव ॥

पञ्चाश, (वि०) ५१ उनसठवाँ ।—पञ्चाशत्,

(स्त्री०) ५१ । उनसठ ।—रत्नं, (न०) नौ बहुमूल्य

रत्न । २ विक्रमादित्य की सभा के नौ कविरत्न—

“ चन्द्रतरिचपलजामर सिंहरङ्गु—

वेतालभट्ट घटकर्पूरकालिदासः ।

ख्यातो बराहमिहिरौ कृपतेः सभायाश्च

रत्नानि वै वरचर्चिर्नवविक्रमस्य ॥

—रसाः, (पु० बहु०) काव्य के नवरस यथा—

१ शृङ्गार, २ करुणा, ३ हास्य, ४ रौद्र, ५ वीर, ६

७ वीभत्स । ८ अद्भुत और । ९ शान्त ।—

रात्रं, (न०) नौ दिन । चैत्र शुक्ला प्रतिपदा

से नवमी तक और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से

१ मी तक के नौ दिन, जिनमें लोग धर्माभ्यासान

क्रिया करते हैं ।—विंश, (वि०) २१वाँ ।

उनतीसवाँ ।—विंशतिः, (स्त्री०) २१ । उनतीस

—विध, (पु०) नौ गुना या नौ प्रकार का ।

—शतं, (न०) १ १०१ । एक सौ नौ । २ नौ

सं० श० कौ० ५३

सौ पणि (खा०) ०६ । उनहत्तर
सप्तति (स्त्री०) ७६ उन्ना

नवधा (अव्यय०) नौ प्रकार स । नौगुना ।

नवम (वि०) [स्त्री०—नवमो] नवाँ । ११वाँ ।

नवशः (अव्यय०) नौसे ।

नवीन (वि०) १ नया । ताज़ा । टटका । हाल
नव्य (का०) २ आधुनिक ।

नश (धा० परस्मै०) [नश्यति, नष्टः,] १ खोजना
२ नष्ट हो जाना । नाश हो जाना । भाग जाना ।
उड़ जाना । ४ असफल हो जाना । नाकामयाव
हो जाना ।

नश (स्त्री०)

नशः (पु०)

नशनं (न०)

नाश । विनाश सत्यानाश ।

नश्वर (वि०) [स्त्री०—नश्वरी] १ नाशवान् ।
जो नाश हो जाय । जो ज्यों का त्यों न रहे । २
नाशक । उपद्रवकारी ।

नष्ट (व० कृ०) १ खोया हुआ । २ जो अदृश्य हो ।
जो दिखाई न दे । ३ जिसका नाश हो गया
हो । जो बरबाद हो गया हो । ४ नृत्त । मरा
हुआ । ५ खराब किया हुआ । ६ वञ्चित । मुक्त ।
—अर्थ, (वि०) गरीब बनाया हुआ ।—
आतंकम्, (अव्य०) बिना भय या शङ्का ।
—आसिस्त्रं, (न०) लूट का माल । लूट ।
—आशङ्क, (वि०) निहत् । निर्भय ।—इन्दुकला,
(स्त्री०) पुष्पिमा ।—इन्द्रिय, (वि०) इन्द्रिय-
रहित ।—चेतन, —चेष्ट, —संज्ञ, (पु०) बेहोश
मूर्छित ।—चेष्टता, (स्त्री०) सार्वदेशिक नाश ।
प्रलय ।—अमन, (पु०) बर्षासङ्कर । दोगला ।
नस् (स्त्री०) नाक ।—लुट, (न०) छोटी नाक
वाला ।

नस्तस् (अव्यय०) नाक से ।

नस्ता (स्त्री०) नाक ।

नस्तः (पु०) नाक ।—ऊतः, (पु०) नाथ से थामा
हुआ बैल ।

नस्तं (न०) सुवनी । हुलास ।

नस्ता (स्त्री०) पशुओं के नाक का छेद जिसमें नाथ
बाँधी जाती है ।—ऊतः, (पु०) नथा हुआ
बैल ।

नस्तित (वि०) नाथा हुआ नाक में छेद कर रस्सी
डाला हुआ ।

नस्य (वि०) नासिका सम्बन्धी ।

नस्य (न०) १ नाक के भीतर के बाल । २ हुलास ।
सुवनी ।

नस्या (स्त्री०) १ नाक । २ जानवर की नाक का
छेद जिसमें रस्सी पिन्दी हुई जाती है ।

नह् (धा० उभय०) [नहति—नहाते, नह]
१ बाँधना । लपेटना । २ पहिनना । धारण करना ।

नहि (अव्यय०) नहीं । न । किसी प्रकार नहीं ।
बिरकुल नहीं ।

नहुषः (पु०) चन्द्रवंशी पुरुरवा राजा का पौत्र और
राजा ययाति का पिता ।

ना (अव्यय०) नहीं । न ।

नाकः (पु०) १ स्वर्ग । २ आकाशमण्डल ।—घरः,
(पु०) देवता । २ किन्नर ।—नाथः,—नायकः,
(पु०) इन्द्र ।—धनिता, (स्त्री०) अप्सरा ।
—सद्, (पु०) देवता ।

नाकिन् (पु०) देवता ।

नाकुः (पु०) १ दीमक की मिट्टी का ढूँढ़ । बस्मीक ।
२ पर्वत ।

नाक्षत्र, (वि०) [स्त्री०—नाक्षत्री] नक्षत्र युक्त ।

नाक्षत्रं (न०) ६० ध्वी के दिन से ३० दिवस का
मास । नाक्षत्र मास । जितने दिनों में चन्द्रमा
२७ नक्षत्रों पर १ बार घूम जाता है उसे नाक्षत्र
मास कहते हैं ।

नाक्षत्रकिः (पु०) नाक्षत्र मास । देखो नाक्षत्रं ।

नागः (पु०) १ सर्प । २ सर्प जाति विशेष जिनका
ऊपरी शरीर मनुष्याकृति का और नीचे का धड़
सर्प शरीराकृति का होता है । ३ हाथी । ४ जल
जीव विशेष । शार्क । ५ निष्ठुर या संगदिल
आदमी । ६ कोई भी प्रसिद्ध पुरुष (“यथा
पुरुषनाग”) । ७ बादल । ८ खूँटी । ९
नागकेसर । नागरमौषा । १० शरीरस्थ पाँच
वायुओं में से नाग वायु वह है, जिसके द्वारा
डकारें आती हैं । ११ ग्यारह की संख्या ।
—अंगना, (स्त्री०) १ हथिनी । २ हाथी की
खूँट ।—अञ्जना, (स्त्री०) हथिनी ।—अधिपः,

(पु०) शेष जी ।—अन्तकः, (पु०)—
अरातिः,—अरिः, (पु०) १ गरुड़ । २ मोर । ३ सिंह ।—अशनः, (पु०) १ मयूर । २ गरुड़ ।—
आननः, (पु०) गणेश जी ।—आह्वः, (पु०)
हस्तिनापुर ।—इन्द्रः, (पु०) १ उत्कृष्ट हाथी ।
२ ऐरावत । ३ शेष जी ।—ईशः, (पु०) १
शेष जी । २ परिभाषेन्दुशेषर के रचयिता का नाम
(नागेश भट्ट) ३ पातञ्जलि का नाम ।—उदरः,
(न०) लोहे का तवा या बकतर जिसे अस्त्रों के
आघात से बचने के लिये छाती पर बाँधा करते थे
२ गर्भोपद्रव भेद ।—केसरः, (पु०) सदाबहार
का पेड़ ।—गर्भम्, (न०) सिन्दूर ।—चूड़ः,
(पु०) शिव जी ।—जं, (न०) १ सिन्दूर ।
२ बंग ।—जिह्विका, (स्त्री०) मैनसिल ।—
जीवनं (न०) बंग । फूका हुआ बंग ।—दन्तः,
—दन्तकः, (पु०) १ हाथीदाँत । २ खूँटी जिस
पर कपड़े आदि दौंगे जाते हैं ।—तन्ती, (स्त्री०) १
सूर्यमुखीफूल विशेष । २ इंडी । वेश्या ।—नक्षत्रं,
(न०)—नायकं, (न०) अश्लेषा नक्षत्र ।—
कः, (पु०) सपौ का राजा ।—नासा,
(स्त्री०) हाथी की सूँड़ ।—निर्यूहः, (पु०)
खूँटी या बैकट ।—पञ्चमी, (स्त्री०) श्रावण
शुक्ला ५ को नाग सम्बन्धी एक उत्सव विशेष ।
—पदः, (पु०) रतिबंध । मैथुन करने का
आसन विशेष ।—पाशः, (पु०) १ ऐन्द्रजालिक
फंदा, जो युद्धकाल में शत्रु को फसाने के
लिये व्यवहृत किया जाता था । २ वरुण
के फंदे का नाम ।—पुष्पः (पु०) १ चम्पा
का पेड़ । २ पुष्पाग वृक्ष ।—बन्धकः,
(पु०) हाथी पकड़ने वाला ।—बन्धुः,
(पु०) बट या वरगद का पेड़ ।—बलः, (पु०)
भीम की उपाधि ।—भूषणः, (पु०) शिव जी
का नाम ।—मण्डलिकः, (पु०) १ सपेरा । २
साँप पालने वाला ।—मल्लः, (पु०) ऐरावत
हाथी ।—यष्टिः, (स्त्री०)—यष्टिका, (स्त्री०)
१ नये खुदे ताल का पानी नापने का बाँस विशेष ।
२ धरती में छेद करने का वर्मा ।—रक्तं (न०)—
रेणुः, (पु०) सिन्दूर ।—रंगः (पु०) नारंगी ।—

राजः, (पु०) शेष जी ।—लता,—बल्लरी—
बल्ली, (स्त्री०) पान की लता । पान ।—
लोकः, (पु०) नागों के रहने का लोक । पाता
लोक ।—वारिकः, (पु०) १ राजा की सवार
का हाथी । २ महावत । ३ मयूर । मोर ।
गरुड़ । ५ हाथियों के यूथ का यूथपति । ६ किसी
सभा का प्रधान पुरुष ।—सम्भवम्,—सम्भूतं
(न०) सिन्दूर ।—साह्व्यं (न०)
हस्तिनापुर ।

नागर (वि०) [स्त्री०—नागरी] १ नगर में
उत्पन्न हुआ । शहरका । २ नगर सम्बन्धी । ३
नगर में बोली जाने वाली । ४ शिष्ट । ५ चतुर ।
चालाक । ६ बुरा । वह पुरुष जिसमें नगर की
बुराइयाँ आगयी हों ।

नागरः (पु०) १ पौर । पुरवासी । २ देवर । ३
व्याख्यान । ४ नारंगी । ५ थकावट । परिश्रम । ६
किसी बात की जानकारी से ईकार ।

नागरक } (वि०) १ नगर में उत्पन्न । शहरका ।
नागरिक } २ शिष्ट । सम्य । ३ चालाक । चतुर ।
विदग्ध ।

नागरकः } (पु०) १ नगर में रहने वाला । २
नागरिकः } शिष्ट मनुष्य । ५ वह जिसमें नगर के
समस्त दोष आगये हों । ६ चोर । ७ कारीगर । ८
पुलिस का प्रधानाध्यक्ष ।

नागरी (स्त्री०) १ वह वर्णमाला जिसमें संस्कृत
लिखी जाती है । २ कपट से भरी चालाक औरत ।
३ स्नुही का पौधा । धूरर ।

नागरीटः } १ लम्पट । व्यभिचारी । २ प्रेमी ।
नागरीटः } आशिक । ३ जार ।

नागरकः (पु०) नारंगी ।

नागर्यं (न०) चालाकी ।

नाचिकेतः (पु०) आग ।

नाटः (पु०) १ नाच । अभिनय करने की क्रिया । २
करनाटक देश का नाम ।

नाटकं (न०) डामा । दृश्यकव्य । अभिनय ग्रन्थ ।

नाटकः (पु०) अभिनय करने वाला । नट ।

नाटकीय (वि०) नाटक सम्बन्धी ।

नाटारः (पु०) नटी का पुत्र ।

नाटिका (स्त्री०) छोटा नाटक जिसमें चार अङ्क होते हैं किन्तु इनका कथा कल्पित हानी है। इसमें स्त्री पात्रा का आधिक्य होता है।

नाटितकं (न०) हाव भाव।

नाट्यः (पु०) } नटी या नर्तकी का पुत्र।
नाट्यः (पु०) }

नाट्यं (न०) नृत्य गीत और वाद्य। नटों का काम।

नाट्यः (पु०) नट। अभिनय करने वाला पुरुषपात्र।

—आचार्यः, (पु०) नाचने की तालीम देने वाला। नृत्य शिक्षक।—उक्तिः, (स्त्री०) विशेष विशेष सम्बोधन सूचक शब्द जो विशेष विशेष व्यक्तियों के लिये नाटक ग्रन्थों में व्यवहृत किये जाते हैं।—धर्मिका, (स्त्री०)—धर्मी, (स्त्री०) नाटक सम्बन्धी नियम।—प्रियः, (पु०) शिष्य।—शाल, (स्त्री०) १ नाचघर। २ नाटकघर।—शास्त्रं (न०) नृत्य, गीत और अभिनय की विद्या।

नाडिः } (स्त्री०) १ किसी कमल का पोला नाल।
नाडी } २ तृण का पोला डंडुल। ३ नली। शरीर के भीतर की वे नलियाँ जिनमें होकर लोहू बहा करता है। विशेष कर वे नलियाँ जिनमें हृदय से शुद्ध रक्त बन कर प्रत्येक तृण सारे शरीर में जाया करता है। धमनी। ४ वंशी। वीणा। ५ भगन्दर। ६ कलाई पर की नाड़ी। ७ २४ मिनट के बराबर का काल। ८ अर्धमुहूर्त काल। ९ ऐन्द्रजालिक कर्तव्य।—चरणाः, (पु०) पक्षी।—चीरं, (न०) एक छोटी नरकुल।—जंघः, (पु०) काक।—परीक्षा, (स्त्री०) नाड़ी देखना।—मण्डलं, (न०) विषुवरेखा।—व्रणाः, (पु०) फोड़ा। नासुर। भगन्दर। [मिनट का काल।

नाडिका (स्त्री०) १ नाड़ी। धमनी। २ धड़ी (२४ नाडिधम, नाडिन्धम) (वि०) १ नली को फूँकने नाडीधम, नाडीन्धम } वाला। २ नाडियों को हिलाने वाला। ३ श्वास को जल्दी चलाने वाला। हँकाने वाला।

नाडिधमः, नाडिन्धमः } (पु०) सुनार। स्वर्णकार।
नाडीधमः, नाडीन्धमः }

नाणकं (न०) सिका। कोई चीज़ जिस पर कोई छप्पा लगा हो।

नातिचर (वि०) बहुत काल का नहीं बहुत लंबा।
नातिदूर (वि०) बहुत दूर नहीं।

नातिवादः (पु०) कुवाच्यों को बचाने वाला।

नाथ् (था० पर०) [नाथति] १ मँगाना। याचना करना। २ मालिक बनना। प्रभावान्वित करना। ३ कष्ट देना। ४ आशीर्वाद देना।

नाथः (पु०) १ मालिक। स्वामी। प्रभु। रक्षक। मार्गप्रदर्शक। नेता। २ पति। ३ नटखट बैल की नाक में डाला हुआ रस्ता।—हरिः (पु०) पशु। हैवान।

नाथघत् (वि०) १ सनाथ। जिसका कोई रत्नक या रक्षा करने वाला हो। ३ परतंत्र। दूसरे पर निर्भर। परवशवर्ती।

नादः (पु०) १ शब्द। ध्वनि। आवाज़। २ गर्जन। चिल्लाहट। चीत्कार। ३ वयों का अव्यक्त मूलरूप। ४ सानुवांसिक स्वर जो '५' अर्द्धचन्द्र से व्यक्त होता है।

नादिन् (वि०) शब्द करने वाला। नाद करने वाला रौमने वाला। दहाड़ने वाला।

नादेय (वि०) [स्त्री०—नादेयी] जलोत्पन्न। नदी में होने वाला। नदी सम्बन्धी।

नादेयं (न०) सैधा निमक।

नाना (अव्यया०) १ भिन्न भिन्न स्थानों में। भिन्न भिन्न प्रकार से। विविध। (२) अनेक। बहुत।—अत्यय, (वि०) १ अनेक प्रकार का।—अर्थ, भिन्न भिन्न उद्देश्य और लक्ष्य वाला। २ अनेकार्थ वाची।—कार, (अव्यया०) अनेक प्रकार से किया हुआ।—रस्त, (वि०) भिन्न भिन्न प्रकार के स्वादों वाला।—रूप, (वि०) अनेक रूपों वाला।—वर्ण, (वि०) अनेक रंगों का।—विध, (वि०) विविध प्रकार का।—विधं, (अव्यया०) अनेक प्रकार से।

नानाद्रः } (पु०) ननद का पुत्र।
नानान्द्रः }

नांत } (वि०) अन्तरहित। असीम।
नान्त }

नांतरीयक } (वि०) जो पृथक न हो सके। घनिष्ठ
नान्तरीयक } सम्बन्ध रखने वाला।

नात्रम् } (न०) प्रशसा । विरुदावली
नान्त्रम् }

नादिकर, नादिकर. (पु०) } अशीर्वाद देने वाला ।
नादिन्, नान्दिन् (पु०) } नाटक में नांदी का
कथन ।

नांदी } (स्त्री०) १ प्रसन्नता । हर्ष । सन्तोष । २
नान्दी } समृद्धि । ३ देवस्तुति । ४ नाटक के पूर्व आशी-
वांदात्मक स्तुति ।—करः, (पु०) शब्द करने
वाला । नाव करने वाला ।—निनादः, (पु०)
हर्षनाद ।—पटः, (पु०) कूप का ढकना ।—
मुख, (वि०) पितृ जिनके लिये नान्दीमुख
श्राद्ध किया जाता है ।—मुखश्राद्धं. (न०)
आभ्युदयिक श्राद्ध । श्राद्ध जो किसी शुभ कार्य के
आरम्भ करने के पूर्व किया जाता है ।—मुखः,
(पु०) कूप का ढकना ।—वादिन्, (पु०) १
नाटक में मङ्गलाचरण करने वाला । २ ढोल
बजाने वाला ।

नापितः (पु०) नाई । हज्जाम ।

नापित्थं (न०) नाई का थंघा ।

नाभिः (पु० स्त्री०) १ नाह । नाफ । दुड़ी । २ चक्र-
मध्य । पहिये का मध्यभाग । ३ प्रधान । नेता ।
मुखिया । ४ समीप की नातेदारी । ५ सम्राट् ।
६ समीपी नातेदार । ७ सन्निध । घर । (स्त्री०)
मुरक । कस्तूरी ।—आवर्तः, (पु०) दुड़ी का
गढ़ा ।—जः,—जन्मन्, (पु०)—भूः, (पु०)
बह्मा ।—वाडी, (स्त्री०)—नालं, (न०) नारा ।

नाभिल (वि०) १ नाभि सम्बन्धी । २ उभरी हुई
नाभि वाला ।

नाभीलम् (न०) १ दुड़ी का गढ़ा । २ पीड़ा ।
कष्ट । ३ भङ्गनाभि । ४ स्त्रियों के कटि के नीचे
का भाग । उरुसन्धि ।

नाभ्य (वि०) नाभि सम्बन्धी

नाभ्यः (पु०) शिव जी ।

नामन् (न०) १ शब्द जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति या
समूह का ज्ञान प्राप्त हो । किसी वस्तु या व्यक्ति
का निर्देश करने वाला शब्द । संज्ञा । आख्या ।
अभिख्या । आह्व । २ —आहु, (वि०) नाम से
चिन्हित ।—अनुशासनम्, (न०)—अभिधानं,

(न०) १ अपना नाम बतलाना । २ शङ्कोश ।

अपराधः, (पु०) नाम लेकर गाली देना ।
नाम निकालना यानी बदनामी करना ।—आवली,
(स्त्री०) नामों की तालिका ।—करणं,—कर्मन्,
(न०) नामकरणसंस्कार ।—ग्रहः, (पु०)
नाम लेकर सम्बोधन करना ।—धारक,—धारिन्,
(वि०) नाम मात्र रखने वाला । नाम के लिये ।
सिर्फ नाम मात्र का ।—धेयं, (न०) नाम ।
निर्देशः, (पु०) नाम लेकर बतलाना ।—मात्र
(वि०) केवल नाम के लिये ।—माला, (स्त्री०)
—संग्रहः, (पु०) नामों की तालिका ।—मुद्रा,
(स्त्री०) मोहर वाली अँगूठी ।—वर्जित, (वि०)
१ नाम रहित । २ मूर्ख । मूढ़ ।—वाचक, (वि०)
नाम बतलाने वाला । वाचकम्, (न०) व्यक्ति
या वस्तु का निज नाम ।—शेष, (वि०) जिसका
केवल नाम बच रहा हो । श्रुतक । मरा हुआ ।

नाभिः (स्त्री०) विष्णु ।

नामित (वि०) झुकाया हुआ ।

नाम्य (वि०) लचीला । झुकाने योग्य ।

नायः (पु०) १ नेता । मुखिया । २ नेतृत्व । ३
नीति । ४ साधन ।

नायकः (पु०) १ नेता । चलाने वाला । २ प्रधान ।
प्रभु । ३ मुख्य या प्रसिद्ध पुरुष । ४ सेनानायक ।
चमूपति । ५ किसी काव्य का चरितनायक । ६
हार के बीच का रत्न । ७ मुख्य दृष्टान्त ।—
अधिपः, (पु०) राजा ।

नायिका (स्त्री०) १ स्वामिनी । २ भार्या । ३ किसी
काव्य की प्रधानपात्री ।

नारः (पु०) जल ।—जीवनं, (न०) स्वर्ण ।

नारं (न०) जनसमूह । नरों का समुदाय ।

नारक (वि०) [स्त्री०—नारकी] नरक सम्बन्धी ।

नारकः (पु०) १ नरक । दोऊख । २ नरकवासी ।

नारकिक } (वि०) नरक का । (पु०) नरकवासी ।
नारकिन् }
नारकीय }

नारंगः } (पु०) १ नारंगी का पेड़ । २ लंपट ।

नारङ्गः } पेयाश । ३ जीवधारी । ४ जुलही जुलहा ।
यमजप्राणी ।

नारंग, नारङ्गम् (न०) १ नारंगी का फल ।

नारंगकं, नारङ्गकम् (न०) २ गाजर ।

नारदः (पु०) एक प्रसिद्ध देवर्षि । ब्रह्मा के इस मानस पुत्रों में से यह एक है ।

नारसिंह (वि०) नरसिंह सम्बन्धी ।

नारसिंहः (पु०) विष्णु की उपाधि ।

नाराचः (पु०) १ लोहे का तीर । २ तीर । ३ जलहस्ती । शिशुमार । सुहस ।

नाराचिका } (स्त्री०) सुनार का काँटा ।
नाराची }

नारायणः (पु०) १ विष्णु भगवान् । इस शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार मनु ने बतलायी है:—

“आपो नारा इति मोक्षा आपो वै नरवृत्तवः ।

ता यदभ्यासार्थं पूर्ष तेन नारायणः स्मृतः ॥”

२ एक ऋषि का नाम जो नर के साथी थे और जिनकी जंघा से उर्वशी की उत्पत्ति हुई थी । यथा

“उद्धृत्वा नरसखस्य पुत्रः सुरम्भी ।”

नारायणी (स्त्री०) १ लक्ष्मी देवी । २ दुर्गा देवी ।

नारिकेरः } (पु०) नारियल ।
नारिकेलः }

नारी (स्त्री०) १ स्त्री । औरत ।—नारङ्गकः (पु०) पेसी । आशिक । लंपट । व्याभिचारी ।—दृषणां, (न०) स्त्रियों के पाप जिनका उल्लेख मनु ने इस प्रकार किया है:—

पापं दुर्जनसंनर्गः पत्या च विरहोऽपमं ।

स्वप्नोऽप्यपुद्गलसंशयः नारीणां हृषणानि यद् ॥

—प्रसङ्गः, (पु०) लंपटता । व्यभिचार ।—रत्नं, (न०) उत्तम स्त्री ।

नार्यंगः } (पु०) नारंगी का पेड़ ।
नार्यङ्गः }

नाल (वि०) नरकुल का बना हुआ ।

नालम् (न०) १ पोला डंडुल । कमल का डंडुल । (पु०) नाड़ी । घमनी । ३ हरताल । ४ मूठ । दस्ता । बेंट ।

नालः (पु०) नहर । नाली ।

नालंबी (स्त्री०) शिव की वीणा ।

नाला (स्त्री०) पोलाडंडुल । विशेष कर कमल का ।

नालिः } (स्त्री०) १ घमनी । नाड़ी । २ कमल का
नाली } नाल । ३ घड़ी । २४ मिनट का काल ।

हाथी का कान छेदने का औज़ार । ५ नाली नहर । ६ कमल का फूल ।

नालिकः (पु०) मैसा ।

नालिका (स्त्री०) १ कमलनाल । २ नली । ३ हाथी का कान छेदने का औज़ार ।

नालिकं (न०) १ कमल का फूल । २ बंसी । बाँसुरी ।

नालिके २ }
नालिकेलि } नारियल ।
नालिकेली }
नालिकेरी }

नालीकः (पु०) १ तीर । २ एक प्रकार का छोटा वाण जो नली में रख कर छोड़ा जाता है । ३ कमल । ४ सूतदार कमलनाल । ५ कमल के फूल का सूतदार डंडुल ।

नालिकिनी (स्त्री०) १ कमल के फूलों का समूह । २ कमल का तालाव ।

नाविकः (पु०) १ मल्लाह । २ जल में यात्रा करने वाले । ३ जहाज का यात्री ।

नाविन् (पु०) मल्लाह ।

नाव्य, (वि०) १ नाव से जाने योग्य । २ प्रशंसाह ।

नाव्यं (न०) नवीनपन । नयापन ।

नाशः (पु०) १ अदृश्यता । असफलता । नाश । बरबादी । हानि । २ दुर्भाग्य । बदकिस्मती । विपत्ति । ३ त्याग । ४ भाग जाना ।

नाशक (वि०) नाश करने वाला । बरबाद करने वाला ।

नाशन (वि०) [स्त्री०—नाशनी] नाश करने वाला ।

नाशनं (न०) १ नाश । बरबादी । २ स्थानान्तरकरण । ३ मृत्यु ।

नाशिन् (वि०) [स्त्री०—नाशिनी] नाशक । नाश योग्य । नाश होने वाला ।

नाष्टिकः (पु०) किसी खोई हुई वस्तु का मालिक या रखने वाला ।

नासा (स्त्री०) १ नाक । २ सूँड़ । ३ चोखट का ऊपर का बाजू ।—अग्रं, (न०) नाक की नोंक ।—क्षिप्रं,—रन्ध्रं,—विवरं, (न०) नकुना । नथुना ।—दारु, (न०) चोखट का ऊपर का बाजू । दुः (पु०)—पुटं, (न०) नथुना ।

नकुना।—वंशः, (पु०) नाक के उपर बीचो बीच वाली पतली हड्डी । नाक का पौसा । —
स्त्रावः, (पु०) नाक का एक रोग जिसमें नाक से सफेद और पीला मवाद निकला करता है ।

नासिकन्धय (वि०) नाक में होकर पीना ।

नासिका (स्त्री०) नाक ।—मलाः, (पु०) रूँद ।

नासिक्य (वि०) नासिका से उत्पन्न ।

नासिक्यं (न०) नाक ।

नासिक्यः (पु०) नासिक शब्द ।

नासीरं (न०) किसी शत्रु के सामने जाना या आगने सामने लड़ना ।

नासीरः (पु०) १ (सेना का) अगला भाग । २ सेनानायक के आगे चलने वाला दल जो जयनाद करता जाता है ।

नास्ति (अव्यया०) नहीं ।—चादः, (पु०) वह सिद्धान्त, जिसमें ईश्वर का होना नहीं माना जाता है ।

नास्तिक (वि०) वेद और ईश्वर को न मानने नास्तिकः (पु०) वाला । ईश्वर को जगत् का उपादान कारण न मानने वाला ।

नास्तिक्यं (न०) नास्तिकता । ईश्वर परलोक आदि में अविश्वास ।

नास्तिदः (पु०) आम का पेड़ ।

नास्यं (न०) बैल की नाथ ।

नाहुः (पु०) १ बाँधने वाला । बँद करने वाला । २ फंदा । लासा । जाल । ३ कबजियत । बद्धकोष्ठता ।

नाहुषः } (पु०) यथाति राजा की उपाधि ।
नाहुषिः }

नि (अव्यया०) यह एक उपसर्ग है जो संज्ञावाचक और क्रियावाचक शब्द में लगायी जाती है और निम्नार्थों में प्रयुक्त होती है । १ नीचापन । नीचे की ओर की गति ; जैसे 'निपत्' । २ समूह । समुदाय ; जैसे 'निकर' । 'निकाय' । ३ आधिक्य ; यथा 'निकाम' । ४ आज्ञा, आदेश ; यथा 'निर्देश' । ५ सातत्य, स्थिरत्व ; यथा निविशन । ६ पटुता ; यथा निपुण । ७ रोक, बंधन ; यथा 'निबन्ध' । ८ सम्मिलन, संयोग । यथा 'निपीतमुदकं' । ९ सामीप्य ; यथा—

'निकट' । १० तिरस्कार, हानि ; यथा 'निकृति' । 'निकाय' । ११ दिखावट ; यथा निदर्शन । १२ अवसान, यथा —'निवृत्' । १३ आश्रय, यथा 'निलय' । १४ सन्देह । १५ निश्चय । १६ स्वीकृति । १७ फैकदेना । दान ।

निःक्षेपः (पु०) १ फैकदेना । भेज देना । २ खर्च कर डालना ।

निःश्रयणी } (स्त्री०) नलैनी । सीढ़ी । जीना ।
निःश्रेणिः }

निःश्वासः } (पु०) १ बाहिर स्वाँस निकालना ।
निःराश्वासः } साँस लेना । २ आह भरना । ऊँची साँस लेना ।

निःसरणम् (न०) १ बाहिर निकलना । बाहिर निकलने का रास्ता । २ द्वार । दरवाजा । ३ महायात्रा । मृत्यु । ४ उपाय । साधन । ५ निर्वाण । मोक्ष ।

निःसह (वि०) १ असह्य । २ शक्तिहीन । ३ जो बरदाश्त न हो सके ।

निःसरणम् (न०) १ निकालना । २ बाहिर कर देना । ३ घर का द्वार ।

निःस्त्रवः (पु०) शेष । वचन । अधिक ।

निःस्त्रावः (पु०) १ व्यर्थ । खर्च । २ उबले हुए चाँचलों का जल या माँड़ी ।

निकट (वि०) समीप । पास ।

निकटं (न०) } सामीप्य ।
निकटः (पु०) }

निकारः (पु०) १ डेर । २ गल्ला । मुँड । समूह । ३ गड्ढर । गड्ढा । बंडल । ४ सार । ५ उचित पुरस्कार या भेट । मानार्थ स्वेच्छाप्रदत्त वेतन । ६ द्रव्यकोष ।

निकर्तनम् (न०) काटकर नीचे गिराने की क्रिया ।

निरुर्षणम् (न०) १ मैदान । खुली जगह । चौगान जो नगर के निकट हो । २ घर के द्वार के सामने की खुली जगह । ३ पड़ोस । ४ अनबुई अनजुती जमीन का टुकड़ा ।

निकषः (पु०) १ कसौटी । २ हथियारों पर सान रखने का पत्थर । सिल्ली । ३ कसौटी पर की सोने की रेखा । —उपलः, (पु०) —ग्रावम्, (पु०) —पाषाणः, (पु०) कसौटी । सिल्ली ।

निकषा (स्त्री०) १ शवश का माता का नाम । २
प्रतनी पिशाचिन (अन्वया०) समीप
आत्मजः, (पु०) राक्षस ।

निकाम (वि०) १ विपुल । बहुत । अत्यधिक । २
अभिलाषी ।

निकामं (न०) १ कामना । अभिलाषा ।
निकामः (पु०) १ (अन्वय०) १ इच्छानुसार ।
२ अपने सन्तोषार्थ । मन भरने को । ३ अत्यधिक ।

निकायः (पु०) १ ढेर । समूह । श्रेणी । दल । कुंड ।
२ सभा । समाज । स्कूल । संस्था । ३ घर ।
आवादी । आवासस्थान । ४ शरीर । ५ निशाना ।
लक्ष्य । ६ परमात्मा ।

निकारयः (पु०) घर । आवादी । भवन ।

निकारः (पु०) १ अनाज फटकना । २ ऊपर उठाना ।
३ वध । हत्या । ४ नीचा दिखाना । वशवर्ती
करना । ५ तिरस्कार । हतक । मानहानि ।
६ गाली । कुवाच्य । अपमान । ७ दुष्टता ।
८ विरोध । खण्डन ।

निकारणम् (न०) वध । हत्या ।

निकाशः (पु०) १ दृष्टि । प्रत्यक्ष । २ आकाश ।
निकासः (पु०) ३ सामीप्य । पड़ोस । ४ समानता ।
सादृश्य ।

निकायः (पु०) रगड़ । खरोंच ।

निकुंचनः (पु०) तौल विशेष जो ८ तोले के
निकुञ्जनः } बराबर होती है ।

निकुंज, निकुञ्जः (पु०) १ जलानुह । जलामयद्वय ।
निकुंज, निकुञ्जम् (न०) १ ऐसा स्थान जो घनी
जाताओं और घने वृक्षों से ढका हो ।

निकुम्भः (पु०) १ शिव के एक अनुचर का नाम ।
निकुम्भः (पु०) २ सुन्द और उपसुन्द के पिता का नाम ।

निकुरंभं (न०) }
निकुरम्भम् (न०) } गल्ला । कुंड । समूह ।
निकुरंभं (न०) } गिरोह ।
निकुरम्भम् (न०) }

निकुलीनिका (स्त्री०) कोई भी दस्तकारी या कला जो
किसी के घर में परम्परागत होती चली आती
हो ।

निकुत (व० क०) १ नीचा देखे हुए । अपमानित ।
२ तिरस्कृत । ३ प्रवञ्चित । धोखा खाये हुए । ४

स्थानान्तरित किया हुआ । ५ दुखी । घायल
६ दुष्ट । बेईमान । ७ कमीना । नीच । पापी ।

निकुति (वि०) नीच । बेईमान । दुष्ट ।—प्रज्ञ,
(वि०) दुष्ट । दुष्ट हृदय ।

निकृतिः (स्त्री०) १ नीचता । दुष्टता । २ बेईमानी ।
दगा । कपट । ३ मानहानि । अपमान । ४ कुवाच्य
गाली । अस्वीकृति । स्थानान्तर करण । ५ धन-
हीनता । गरीबी ।

निकुंतन (वि०) [स्त्री०—निकुन्तनी] काटकर
निकुन्तन } नीचे गिराने वाला ।

निकुंतनं (न०) १ काटना । नाश करना । २
निकुन्तनम् } काटने का औज़ार ।

निकृय (वि०) १ नीच । कमीना । पापी । २ जातिच्युत ।
घृणित । ३ गँवार ।

निकेतः (पु०) मकान । आवासस्थान । भवन । घर ।
निकेतनं (न०) मकान । घर ।

निकेतनः (पु०) पलायण । प्याज ।

निकोचनम् (न०) संकुचन । सिकोड़ । सिमटाव ।

निकृणः (पु०) १ साङ्गीतिक स्वर । २ स्वर । ३
निकृणः } वीणा की म्मनकार । ४ किलरों का शब्द ।

निकृ (स्त्री०) जू का अण्डा ।

निकृति (व० क०) १ फेंका हुआ । नीचे पटक
हुआ । २ धरोहर रखा हुआ । जमा कराया हुआ ।
गिरवी रखा हुआ । ३ भेजा हुआ । ४ नापसंद
किया हुआ । त्याग हुआ ।

निकृपः (पु०) १ फेंकने वा डालने की क्रिया या
भाव । २ खलाने की क्रिया या भाव । ३ गिरवी ।
धरोहर । ४ कोई चीज बिना सील मोहर लगाये
खुली जमा करा देना । ५ पोंढ़ने या सुखाने की
क्रिया ।

निकृपणम् (न०) १ फेंकना । डालना । २ छोड़ना ।
खलाना । ३ त्यागना । ४ कोई भी उपाय जिसके
द्वारा कोई वस्तु रखी जाय ।

निकृननम् (न०) खनना । खोदना । गाढ़ना ।

निकृर्व (वि०) बोना । खराँकार ।

निकृर्व (न०) दस हजार करोड़ । दस सहस्र करोड़ ।

निकृत (व० क०) १ खोदा हुआ । खोदकर निकाला
हुआ । २ खोद कर लगाया हुआ या जमाया
हुआ । ३ खोदकर गाढ़ा हुआ ।

निखिल (वि०) सम्पूर्ण । सच्चा । तमाम सब ।
निगड (न०) } १ लोहे की जंजीर जो हाथी के
निगडः (पु०) } पैर में बाँधी जाती है । २ बेड़ी ।
जंजीर ।

निगडित (वि०) बेड़ी पड़ा हुआ । जंजीर से बंधा हुआ ।

निगणः (पु०) यज्ञीय धूम ।

निगदः } (पु०) १ स्तुति-पाठ । स्तोत्रपाठ । २
निगदः } व्याख्यान । संवाद । ३ अर्थ सीखना । ४
वर्णन ।

निगदितम् (न०) संवाद । कथोपकथन । व्याख्यान ।

निगमः (पु०) वेद । वेदसंहिता । २ वेद का कोई
अंश या अवतरण । ३ वेदभाष्य । आसवचन । ४
धानु । ५ निश्चय । विश्वास । ६ न्याय । ७
व्यापार । व्यवसाय । ८ हाट । मंडी । बाज़ार ।
पैठ । मेला । ९ बनजारा । फेरी वाला सौदागर ।
१० मार्ग । बाज़ार का रास्ता । ११ नगर ।

निगमनम् (न०) १ वेद का अवतरण । २ न्याय में
अनुमान के पाँच अवयवों में से एक । परिणाम ।
नतीजा ।

निगरः } (पु०) निगलने की या भक्षण करने की
निगरः } क्रिया ।

निगरणम् (न०) निगलना । लीलना । खा डालना ।

निगरणः (पु०) १ गला । २ यज्ञीय अग्नि या यज्ञीय
जले हुए पदार्थ का बुझा ।

निगलः } (पु०) १ निगलना । लीलना । खा
निगलः } डालना । २ घोंड़े का गला या गर्दन ।

—वत् (पु०) घोड़ा ।

निगोर्ग (व० क०) १ निगला हुआ । लीला हुआ ।
(आल०) २ छिपा हुआ । सम्पूर्णतया सोखा
हुआ या खाया हुआ ।

निगूढ (वि०) १ छिपा हुआ । २ अत्यन्त गुप्त ।

निगूढम् (अव्यया०) गोप्य । रहस्यमय ।

निगूहनम् (न०) छिपाना । दुराना

निग्रन्थनं } (न०) हत्या । वध ।
निग्रन्थनम् }

निग्रहः (पु०) १ रोक । अवरोध । २ दमन । ३
पकड़ना । गिरफ्तार करना । ४ पकड़ कर बंद कर
देना । जैद कर लेना । ५ पराभव । पराजय । ६

नाश । विनाश । ७ चिकित्सा । रोग की रोकथाम ।
८ दण्ड । सज़ा । ९ भर्त्सना । डाँट । फटकार । १०
असुवि । घृणा । ११ (न्याय में) तर्क सम्बन्धी
दोष विशेष । १२ दस्ता । बँट । १३ सीमा । हद ।

निग्रहण (वि०) रोकने वाला । दबाने वाला ।

निग्रहणम् (न०) १ रोकने का कार्य । दबाने का
कार्य । २ गिरफ्तारी । पकड़ । ३ दण्ड । सज़ा ।
४ पराजय । हार ।

निग्राहः (पु०) १ सज़ा । २ शाप । आक्रोश ।

निघ (वि०) जितना लंबा उतना ही चौड़ा ।

निघः (पु०) १ गैद । २ पाप ।

निघटुः } (पु०) १ वैदिक कोश । यास्क ने निघटु
निघटुः } की जो व्याख्या लिखी है वह निरुक्त के नाम
से प्रसिद्ध है । २ शब्दसंग्रह मात्र, जैसे चैतक का
निघटु ।

निघर्षः (पु०) } रगड़ । मथन ।
निघर्षणं (न०) }

निघसः (पु०) १ खाने की क्रिया । भोजन करने
की क्रिया । २ भोजन । खाने की सामग्री ।

निघातः (पु०) १ प्रहार । घात । २ उच्चारण के
लहज़े का अभाव ।

निघातिः (स्त्री०) १ लोहे की गदा । लौहदण्ड । २
निहाई ।

निघुष्टं (न०) शब्द । शोरगुल । कोलाहल ।

निघ्न (वि०) १ अधीन । आदत्त । वशीभूत । आशा-
कारी । २ नम्र । वश्य । शिक्षणीय । ३ गुणित ।
गुणा किया हुआ ।

निघ्नः (पु०) १ सूर्य वंशीय राजा अनरण्य का पुत्र ।
२ एक राजा जो अनमित्र का पुत्र था ।

निघ्नयः (पु०) १ ढेर । समूह । समुदाय । २ सञ्चय ।
३ निश्चय ।

निघ्निकिः (देखो नैचिकी) ।

निघ्नायः (पु०) ढेर ।

निघ्नित (व० क०) १ ढका हुआ । फैला हुआ । २
पूरित । मरा हुआ । ३ उठा हुआ ।

निचुलः (पु०) १ बेत । २ कालिदास के एक
कविमित्र । ३ ऊपर से शरीर ढाँकने का कपड़ा ।

निचुलकं (न०) उरस्त्राण । कर्म विशेष ।

निचोल (पु०) १ चप्पर ओढनी धूँट
 अरका । २ पल्लवापाश । ३ हाली का परना
 निचोलकः (पु०) १ जाकेट । अंगिया । २ उरस्त्राय ।
 निच्छविः (स्त्री०) तीर युक्ति देश । तिरहुत ।
 निच्छविः (पु०) एक प्रकार के वात्य चित्रिय । सर्वार्थ
 की से उत्पन्न वात्य चित्रिय की सम्मान ।
 निज (धा० उभय०) [नेनैकि, नेनिके, प्रणेनोक्ति,
 निक,] १ धोना । साफ करना । पवित्र करना ।
 २ अपने शरीर को धोना या पवित्र करना । ३
 पोषण करना ।
 निज (वि०) १ जन्म से । स्वाभाविक । प्राकृतिक ।
 २ अपना । ३ विलक्षण । ४ सदैव बना रहने
 वाला ।
 निज } (धा० आत्म०) [निके] धोना ।
 निज्ज }
 निटलं } (न०) मत्था । माथा ।—अन्तः. (पु०)
 निटिलं } शिव जी का नाम ।
 निडीनम् (न०) पक्षियों का नीचे की ओर उड़ना या
 रूपदा ।
 नितंबः } (पु०) १ चूतड़ । कमर का पिछला उभरा हुआ
 नितम्बः } भाग । (विशेषतः स्त्रियों का) । २ ढालुवाँ
 किनारा (पर्वत का) ३ नदी का ढालुवाँ तट ।
 ४ कंधा । ५ खड़ी चट्टान ।—विम्ब, (वि०)
 गोल कमर का पिछला भाग ।
 नितंबवत् } (वि०) सुन्दर कमर वाला ।
 नितम्बवत् }
 नितंबवती } (वि०) सुन्दर कमर वाली ।
 नितम्बवती }
 नितम्बिन् } (वि०) अच्छे नितम्बों वाली ।
 नितम्बिन् }
 नितम्बिनी } (स्त्री०) १ बड़े और सुन्दर नितम्बों
 नितम्बिनी } वाली स्त्री । २ स्त्री ।
 नितरां (अन्यथा०) १ सदैव । हमेशा । २ समूचा ।
 सम्पूर्ण । तमाम । ३ अत्यधिक । अत्यन्त । बहुत
 अधिक । ४ निश्चय रूप से । अवश्य ।
 नितलं (न०) सात पातालों में से एक ।
 नितांत } (वि०) असाधारण । अत्यधिक ।
 नितान्त } अतिशय ।
 नितांतं } (न०) बहुत अधिक । अत्यन्त अधिकता
 नितान्तम् } से ।

नित्य (वि०) जो सब दिन रहे जिसका कभी नारा
 न हो शान्त अविनाशी त्रिकालव्यापी
 कर्मन्,—(न०)—कृत्यं,—(न०)—क्रिया,
 (स्त्री०) प्रतिदिन का काम । नित्य की क्रिया जैसे
 सन्ध्या, तर्पण अग्निहोत्रादि ।—गतिः, (पु०) वायु ।
 पवन ।—दानं, (न०) नित्यदान देने की क्रिया ।
 —नियमः, (पु०) प्रतिदिन का बंधा हुआ काम ।
 —नैमित्तिकम्, (न०) पर्वथाद्य प्रायश्चित्तादि
 कर्म ।—प्रलयः (पु०) नींद । निद्रा ।—युक्तः
 (पु०) परमात्मा । श्रीरामानुज सिद्धान्तानुसार.
 विष्णुसेनादि सूरिगण जिनके विषय में वेदों में
 लिखा है—

तद्विष्णोः परमं पदं तदा परमन्ति मूरयः ।

—यौवना, (स्त्री०) सदैव युवती बनी रहने
 वाली अथवा जिसका भौवन बराबर या बहुत काल
 तक स्थिर रहे ।—शङ्कित, (वि०) सदैव सशङ्कित
 रहने वाला ।—सामासः, (पु०) समास
 विशेष ।

नित्यता (स्त्री०) } १ अनन्तरता । नित्य होने का
 नित्यत्वं (न०) } भाव । २ आवश्यकता ।
 नित्यदा (अन्यथा०) सर्वदा । हमेशा ।
 नित्यशस् (अन्यथा०) सदैव । हमेशा । सर्वदा ।
 निद्रद्रुः (पु०) मनुष्य । मानव ।
 निदर्शक (वि०) १ देखने वाला । २ जानने वाला ।
 पहचानने वाला । ३ बतलाने वाला । निर्देश
 करने वाला ।
 निदर्शनम् (न०) १ दिखाने का कार्य । प्रदर्शित करने
 का कार्य । प्रकट करने का कार्य । २ सबूत ।
 साक्षी । ३ उदाहरण । नज़ीर । ४ शकुन । शुभ
 सूचना । ५ आश्वचन । आदेश ।
 निदाघः (पु०) १ गर्मी । उष्मा । २ ग्रीष्मऋतु । २
 पसीना ।—करः, (पु०) सूर्य ।—कालः, (पु०)
 ग्रीष्मऋतु ।
 निदानं (न०) १ बँधना । रस्सी । आगडोर । २
 बड़ड़ा बाँधने की रस्सी । ३ आदिकारण । कारण ।
 ४ रोगलक्षण । रोगनिर्णय । रोग की पहचान ।
 ५ अन्त । छोर । ६ पवित्रता । शुद्धि ।
 निदिग्ध (व० कृ०) १ छेपा हुआ । लेप किया
 हुआ । २ जमा किया हुआ । बढ़ाया हुआ ।

निदिध्या (स्त्री०) छोटी इलायची ।

निदिध्यासनं (न०) } बारंवार स्मरण । बारंवार
निदिध्यासः (पु०) } ध्यान में लाना ।

निदेशः (पु०) १ शासन । आशा । हुक्म । २
कथन । वर्णन । वार्तालाप । ३ पदोस । नैक्य । ४
५ पात्र । बर्तन । यज्ञीयपात्र ।

निदेशिन् (वि०) निर्देश करने वाला । बतलाने वाला ।

निदेशिनी (स्त्री०) १ दिशा । २ देश ।

निन्द्रा (स्त्री०) १ नींद । २ सुस्ती । ३ सुकलित
अवस्था ।—भङ्गः, (पु०) जागरति । जागरण ।
—वृत्तः, (पु०) अन्धकार ।—सञ्जननं, (न०)
कफ । श्लेष्मा । (कफ की वृद्धि से नींद अधिक
आती है)

निद्राणं (न०) सोनेवाला । उंचासा ।

निद्रालु (वि०) सोनेवाला । निद्राशील ।

निद्रित (वि०) सोया हुआ ।

निधन (वि०) गरीब । धनहीन ।

निधनं (न०) १ नाश । २ मरण । ३ समाप्ति ।

निधनः (पु०) १ अवसान । ४ कुटुम्ब । जाति ।

निधानम् (न०) १ नीचे रखना । तरतीबवार
जमा करना । २ सुरक्षित रखना । बचा कर रखना ।
३ वह स्थान जहाँ कोई वस्तु रखी जाय । ४ द्रव्य-
कोश । ५ जमा । जखीरा । सम्पत्ति । धन ।

निधिः (पु०) १ घर । आधार । २ आरुडार ।
खजाना । ३ सम्पत्ति । कुबेर के नौ प्रकार के
खजाने हैं । (यथा—पद्म । महापद्म, शङ्ख । मकर ।
कच्छप । मुकुन्द । कुन्द । नील और वर्च) । ४
समुद्र । ५ विष्णु । ६ अनेक सद्गुणों से भूषित
पुरुष ।—ईशः, —नाथः, (पु०) कुबेर ।

निधुवनं (न०) १ आन्दोलन । कंप । २ मैथुन । ३
आनन्द । उपभोग । क्रीडा ।

निध्यानं (न०) १ दर्शन । देखना । २ निर्देशन ।

निध्वानः (पु०) नाद । आवाज़ ।

निनल्लु (वि०) १ मरने का अभिलाषी । २ निकल भागने
की इच्छा रखने वाला ।

निन्दः } (पु०) नाद । ध्वनि । कोलाहल । २
निनादः } गुआर । भिन्नभिन्न शब्द ।

निनयनं (न०) १ किसी कार्य को पूर्ण करने की
क्रिया । २ उड़ेलना ।

निन्दु } (धा० पर०) [निन्दति, —निन्दित,—
निन्दुः } प्रणिन्दति,] कलङ्क लगाना । धिक्कारना ।
हाँटना । फटकारना ।

निन्दक } (वि०) निन्दा करने वाला । गाली देने
निन्दक } वाला । बदनाम करने वाला ।

निन्दनं, निन्दनम् (न०) } १ कलङ्क । कुवाच्य ।
निन्दा, निन्दा (स्त्री०) } बदनामी । २ दुष्टता ।
हानि ।—स्तुतिः, (स्त्री०) व्याजस्तुति । स्तुति
के रूप में निन्दा ।

निन्दित } (व० क०) कलङ्कित । बदनाम किया
निन्दित } हुआ । कुवाच्य कहा हुआ ।

निन्दुः } (स्त्री०) जिसके पास मरा हुआ बच्चा हो ।
निन्दुः }

निन्द्य } (वि०) १ निन्दनीय । २ वर्जित । निषिद्ध ।
निन्द्य }

निपः } (पु०) } जल का घड़ा ।
निपम् } (न०) }

निपः (पु०) कदम्ब का पेड़ ।

निपठः } (पु०) पढ़ना । पाठ करना । अध्ययन
निपाठः } करना ।

निपतनम् (न०) नीचे गिरने की क्रिया । नीचे
उतरने की क्रिया ।

निपत्या (स्त्री०) १ जमीन जहाँ बिचलाहट या
फिसलन हो । २ रणक्षेत्र ।

निपाकः (पु०) पकाने की क्रिया । (जैसे कच्चे
फल को) ।

निपातः (पु०) १ पतन । गिराव । पात । २ अधः-
पतन । ३ विनाश । ४ मृत्यु । क्षय । नाश । २
५ व्याकरण के मतानुसार वह शब्द जिसके बनने
के निधम का पता न हो या जो व्याकरण के
नियमों से सिद्ध न हो ।

निपातनम् (न०) १ गिराने का कार्य । २ नाश ।
क्षय । ध्वंस । ३ वध । हत्या । ४ नियमविरुद्ध
शब्द का रूप ।

निपानं (न०) १ पीने की क्रिया । २ तालाव । ३
कूप के समीप का हौद जिसमें पशुओं के पीने को
जल भरा जाय । ४ कूप । ५ दूध दुहने का पात्र ।

निपीडनम् (न०) १ दबा कर निकालने की क्रिया
२ बाध करने की क्रिया ।

निपाडना (स्त्री०) प्रत्याचार । चाट ।

निपुण (वि०) १ चतुर । तीव्र । पटु । २ योग्य
काविल । ३ अनुभवी । ४ दयालु या मैत्री भाव
रखने वाला । ५ तीक्ष्ण । सूक्ष्म । कोमल । ६
सम्पूर्ण । पूरा । ठीक ठीक ।

निपुणम् (अन्त्य०) १ निपुणता से । पटुता से ।
निपुणान् चतुराई से । २ सम्पूर्णतया । ३ ज्यों का
त्यों । ठीक ठीक ।

निबद्ध (व०) १ बन्धन में पड़ा हुआ । बेड़ी में पड़ा
हुआ । रोका हुआ । बँद किया हुआ । २ सम्बन्ध
रखे हुए । ३ बना हुआ । ४ जड़ा हुआ । भू-
साक्षी देने का जुलाया हुआ ।

निबन्धः (पु०) १ बंधन । २ (स्कान) बनाना ।
निबन्धः ३ रोक थाम । ४ बंधन । बेड़ी । ५ पट्टी ।
सहारा । अवलम्ब । ६ अधीनता । सम्बन्ध । ७
कारण । उपादान कारण । आधार । उद्देश्य । नीव ।
८ स्थान । आधार । ९ रचना । प्रबन्ध । व्यवस्था ।
१० साहित्यिक रचना । निबन्ध । ११ सद्वृत्ति ।
१२ बीखा की खँटी । १३ वाक्यरचना । १४
टीका ।

निबन्धनी } (स्त्री०) बंधन । रस्ती । बेड़ी ।
निबन्धनी }

निवर्हण } (वि०) नाशक । विनाशक । शत्रु ।
निवर्हण }

निवर्हणम् } (न०) बध । हत्या । नाश । विनाश ।
निवर्हणम् }

निविड (वि०) १ घना । घनघोर । २ गहरा ।
३ दबी या चपटी नाक वाला ।

निभ (वि०) समान । तुल्य । बराबर । सदृश ।

निभं (न०) १ प्राकट्य । प्रादुर्भाव । २ मिस ।

निभः (पु०) १ बहाना । २ चालाकी । धोखा ।

निमीलनम् (न०) देखना । पहचानना ।

निभूत (वि०) १ अत्यन्त भीत । २ गया गुजरा ।
बीता हुआ ।

निभूत, (वि०) रखा हुआ । जमा किया हुआ । नीचा
किया हुआ । २ परिपूर्ण । ३ क्षिपा हुआ । ४ गुप्त ।

५ शान्त । चुप । लामोश । दृढ़ । अचञ्चल । अचल
गतिहीन । ६ नम्र । कोमल । ७ विनीत । विनम्र ।

८ दृढ़सङ्कल्प का दृढ़विचार का । ९ पुष्कन्ती ।
अकेला । १० बंद । सु दा हुआ ।

निभूतम् (अन्त्य०) चुपचाप । गुप्तगुप्त । गुप्त रीति
से । बिना जनाये हुए ।

निमग्न (व० कृ०) १ डूबा हुआ । सना हुआ । लिस ।
२ नीचे बैठा हुआ । अस्त हुआ । ३ क्षिपा हुआ ।
४ दबा हुआ । अप्रधान ।

निमज्जथुः (पु०) १ डूबने की क्रिया । २ सेना ।
सेज पर पड़ कर सेना ।

निमज्जनम् (न०) स्नान । अवगाहनस्नान ।
डूबना ।

निमंत्रणम् (न०) १ बुलावा । २ हाजिर होने की आज्ञा
३ उपस्थित होने का आज्ञापत्र ।

निमयः (पु०) अदलावदली । एक चीज़ के भूत्य में दे
कर, दूसरी चीज़ खरीदना ।

निमानं (न०) १ भाव । २ मूल्य ।

निमिः (पु०) १ (आँख) झपकाना । मटकाना ।
२ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम जो मिथिला
राजवंश का पूर्वपुरुष था ।

निमित्तं (न०) १ हेतु । कारण । २ चिन्ह । लक्षण ।
३ शकुन । सगुन । ४ उद्देश्य । फल की तरफ
लक्ष्य ।—आवृत्तिः, (स्त्री०) किसी विशेष
कारण पर निर्भर ।—कारणं, (न०)—हेतुः,
(पु०) वह कारण जिसकी सहायता या कर्तृत्व से
कोई वस्तु बने ।—कृत् (पु०) काक । कौश्या ।—
धर्मः, (पु०) प्रायश्चित्त । धार्मिक विधि जो कभी
कभी की जाय ।—विद्, (वि०) शकुनों का
शुभाशुभा फल जानने वाला (पु०) ज्योतिषी ।

निमित्तं }
निमित्तेन } अवग्रह । क्योंकि ।
निमित्तात् }

निमिषः (पु०) १ आँख झपकाने की क्रिया ।
आँखें बंद करने की क्रिया । २ पलक मारने भर
का समय । पल । क्षण । ३ फूलों के मुंदने की
क्रिया । ४ पलकों के खुलने और बंद होने की
क्रिया । ५ विदग्ध ।

निमीलनम् (न०) १ पलक झपकाना । २ निमेष ।
२ मरण । ३ सर्वप्राप्त ग्रहण ।

निमीला } (स्त्री०) १ आखा की झपकी । २
निमीलिका } व्याज । दूध ।

निमूलं (अव्यया०) जड़ के नीचे तक ।

निमेषः (पु०) पलक का गिरना । क्षण । पल ।—
कृत, (स्त्री०) बिजली । विद्युत ।—रुच,
(पु०) जुगनु ।

निम्न (वि०) १ गहरा । २ नीचा । दबा हुआ ।
—उन्नत, (वि०) ऊँचा नीचा । ऊबड़खाबड़ ।
असम ।—गतं, (न०) नीची जगह ।—गा,
(स्त्री०) नदी । पहाड़ी स्रोत ।

निम्नं (न०) १ गहराई । नीची जमीन । २
ढाल । उतार । ३ दरार । ४ निम्नभाग ।

निम्नः } (पु०) नीम का पेड़ ।
निम्नः }

निम्नोच्चः (पु०) सूर्यास्त ।

नियत (वा० कृ०) १ नियम द्वारा स्थिर । बंधा
हुआ । परिमित । संयत । बद्ध । पाबंद । २
ठहराया हुआ । स्थिर । ठीक किया हुआ । निश्चित ।
३ नियोजित । स्थापित । प्रतिष्ठित ।

नियतं (अव्यया०) १ सदैव । हमेशा । २ निश्चित
रूप से । अवश्य ।

नियतिः (स्त्री०) १ नियत होने का भाव । बंधेज ।
बद्ध होने का भाव । २ ठहराव । स्थिरता । ३
भाग्य । वैध । अदृष्ट । ४ नियत बात । अवश्य
होने वाली बात । पूर्वकृत कर्म का परिणाम जो
अनिवार्य है । (जैन) ५ जड़ प्रकृति ।

नियन्तु } (पु०) १ सारथी । रथवान । गाड़ीवान ।
नियन्तु } २ शासक । सूबेदार । परिचालक । मालिक ।
३ दण्ड देने वाला । सजा देने वाला ।

नियन्त्रणं, नियन्त्रणं (न०) } १ रोकथाम । २
नियन्त्रणा, नियन्त्रणा (स्त्री०) } देखाभाली । ३
व्यवस्था ।

नियन्त्रित } (व० कृ०) नियम से बंधा हुआ ।
नियन्त्रित } प्रतिबद्ध । जिस पर किसी प्रकार की
रोकथाम हो ।

नियमः (पु०) १ परिमित । रोक । पाबंदी । नियन्त्रण ।
२ दबाव । शासन । ३ बंधा हुआ कर्म । प्रचलित
विधान । परम्परा । दस्तर । ४ ठहराई हुई रीति
या विधि । व्यवस्था । पद्धति । ५ शर्त । ठहराव । ६

प्रतिज्ञा । ७ अर्थालङ्कार विशेष । ८ विष्णु । ९
महादेव ।—निष्ठा, (स्त्री०) नियमानुसार
काम करने की श्रद्धा ।—पत्रं, (न०) इकरार-
नामा । प्रतिज्ञापत्र ।—स्थितिः, (स्त्री०)
संन्यास ।

नियमनं (न०) १ रोकटोक । दण्डविधान । वशाव ।
२ अवरोध । सीमाबन्धन । बाधा । तमादी । ३
वीनता । ४ आदेश । ५ निश्चित नियम ।

नियमवती (स्त्री०) स्त्री जो मासिक धर्म से हुआ
करती हो ।

नियमित (व० कृ०) १ रोका हुआ । थामा हुआ ।
२ शासन किया हुआ । रहनुमा किया हुआ । ३
निर्दिष्ट किया हुआ । बतलाया हुआ । ४ इकरार
किया हुआ । प्रतिज्ञावद्ध ।

नियामः (पु०) १ रोक । अवरोध । २ धर्म सम्बन्धी
वृत्त ।

नियामनम् (न०) देखो “ निपातनम् ”

नियामक (न०) [स्त्री० नियामिका] १ रोकने
वाला । अवरोध करने वाला । २ वश में करने
वाला । काबु में लाने वाला । दवाने वाला ।
स्पष्टतया परिभाषा करने वाला । ४ पथप्रदर्शक ।
शासक ।

नियामकः (पु०) १ मालिक । स्वामी । शासक । २
सारथी । रथ हाँकने वाला । ३ नाव खेने वाला ।
मल्लाह । ४ माफ़ी । करौंधार । चालाक ।

नियुक्त (वा० कृ०) आविष्ट । निर्देश किया हुआ ।
आज्ञा । आज्ञा दिया हुआ । २ नियत किया हुआ
नियोजित अधिकार दिया हुआ । ३ प्रश्न करने के
लिये अनुमति दिया हुआ । ४ लगा हुआ । संलग्न ।
५ बंधा हुआ । ६ दयापत किया हुआ ।

नियुक्तिः (स्त्री०) १ आज्ञा । आदेश । २ तैनाती ।
मुकदमी ।

नियुतम् (न०) १ एक लाख । लक्ष । २ दस लाख ।
१०० अयुत । दसहज़ार करोड़ ।

नियुद्ध (वि०) १ पैदल युद्ध करने वाला । २ व्यक्ति-
गत झगड़ा । ३ बाहुयुद्ध । हाथापाही । कुश्ती ।

नियोगः (पु०) १ किसी काम में लगाना । तैनाती ।
२ उपयोग । ३ आज्ञा । ४ बंधन । संलग्नता । ५

आवश्यकता एहरण ६ उद्योग प्रगद ७
निष्पन्न = प्राचीन आया का एक प्रथा जिसके
अनुसार निःसन्तान स्त्री का अधिकार था कि वह
परपुरुष से संयोग कर सन्तान उत्पन्न कराले ।

किन्तु कलियुग में यह प्रथा वर्जित है ।

नियोगिन् (पु०) अफसर । सचिव । कर्मचारी ।

नियोग्यः (पु०) स्वाधीन । प्रभु ।

नियोजनम् (न०) १ वंश । अटकाव । २ आज्ञा ।

आदेश । ३ अनुरोध । आग्रह । ४ नियुक्ति ।

नियोग्यः (पु०) अधिकारी । अफसर । कर्मचारी ।

कारकुन । नौकर ।

नियोजः (पु०) पहलवान । कुश्नी लड़ने वाला ।

मल्ल बाँझा ।

निर (अव्यया०) निस् का पर्यायवाची । इसका अर्थ

है बाहिर । दूर । विना । रहित ।—अश, (वि०)

१ सम्पूरा । सम्पूर्ण । २ वह जो पैतृक सम्पत्ति में से

कुछ भी भाग पाने का अधिकारी न हो ।—

अन्तः, (पु०) ऐसी जगह जहाँ विस्तार करने का

स्थान न हो ।—अग्नि, (वि०) अग्निहोत्र की

आग को अमावधानी से बुक जाने देने वाला ।

—अङ्कुश, (वि०) बिना रोक टोक का । वश

में न रहने वाला । कान्ठ में न आने वाला । स्वा-

धीन । स्वतंत्र ।—अङ्ग, (वि०) जिसमें आग

न हो । २ उपायशून्य । उपायवर्जित । —अजिन्,

(वि०) १ बिना सुमें का । २ वेदाग । निष्कलङ्क ।

३ मिथ्या से रहित । ४ सीधा सादा । चालाकी न

जानने वाला ।—अञ्जनः, (पु०) शिव जी की

उपाधि ।—अञ्जना, (स्त्री०) पूर्णमा ।—

अतिशय, (=निरतिशय) (वि०) हृद दर्ज

का ।—अत्ययः, (वि०) १ स्तर से महङ्ग ।

सुरक्षित । २ दोषशून्य । निस्वार्थी । हर

प्रकार से सफल काम ।—अध्व, (वि०)

गुमराह । वह जो मार्ग भूल गया हो ।

—अनुक्रोश, (वि०) निर्दयी । संगदिल ।

निष्ठुर हृदय ।—अनुक्रोशः, (पु०) निष्ठुरता ।

—अनुग, (वि०) जिसके कोई अनुयायी न हो ।

—अनुनासिक, (वि०) जिसका उच्चारण नाक

से न हो ।—अनुरोध, (वि०) १ प्रतिकूल । २

अक्रुपालु अन्तर (वि०) १ अविच्छिन्न २

जिसके बीच में अन्तर या फासला न हो । ३

निविड । घना । गम्भिर । ४ बड़ आकार का । ५

बफादार । ईमानदार । सच्चा । ६ जो अन्तर्धान

न हो । जो दृष्टि से ओझल न हो । ७ समान ।

एक सा ।—अन्तरम्, (अव्य०) अविच्छिन्न ।

बराबर होने वाला । अखण्डित ।—अन्तराल,

(वि०) १ सटा हुआ । २ सङ्कीर्ण ।—अन्वय,

(वि०) १ निस्सन्तान । बेधौलाद । २ जिसका

कोई सम्बन्ध न हो । ३ मूल से भिन्न । ४ दृष्टि से

ओझल । ५ नौकर चाकरों से रहित ।—अपत्रप,

(वि०) १ निर्लज्ज । वेहवा । २ साहसी ।—अप-

राध, (वि०) कलङ्करहित । बेकसूर ।—

अपाय, (वि०) १ दुष्टता से रहित । अप

कार शून्य । २ अविनाशी । ३ अअन्त । अमोघ ।

अन्यर्थ ।—अपेक्ष, (वि०) १ जिसे किसी बात

की चाह न हो । २ लापरवाह । असावधान । ३

कामनाशून्य । ४ जिसे किसी साँसारिक पदार्थ से

अनुराग न हो । ५ निस्वार्थी । ६ तटस्थ ।—

अपेक्षा, (स्त्री०) १ अपेक्षा या चाह का अभाव ।

२ लगाव का न होना । ३ अवस्था । परवाह न

होना ।—अभिभव, (वि०) जो अपमान का

पात्र न हो ।—अभिमान, (वि०) अहङ्कार

से रहित । अभिमानशून्य ।—अभिलाप,

(वि०) इच्छारहित ।—अभ्र, (वि०) बादल-

शून्य ।—अमर्ष, (वि०) क्रोधरहित । धैर्यधारी ।

—अम्बु, (वि०) १ जल से बचने या परहेज

करने वाला । २ जलरहित । पानी का मोहताज ।

—अर्गल, (वि०) बिना चटखनी या साकल

कुँडे का । बेरोक टोक ।—अर्गलम्, (अव्यया०)

स्वतंत्रता से ।—अर्थ, (वि०) धनहीन । पारीब ।

निर्धन । २ अर्थरहित । ३ वाहियात । ४ व्यर्थ ।

निष्प्रयोजन । जिसका कोई काम का मतलब न

निकले ।—अर्थक, (वि०) १ व्यर्थ । हानिकर ।

२ बिना अर्थ का । वाहियात ।—अर्थकम्,

(न०) पादपूक । पूरा करने वाला ।—अव-

काश, (वि०) १ बिना स्वतंत्र स्थान का । २

जिसको फुसत न हो ।—अवग्रह, (वि०) १

बेरोकगोक बेकाह । २ स्वतन्त्र । खुदमुखत्वार् । ३ मनमौजी । जिद्दी ।—अवद्य, (वि०) कलङ्क रहित । दोषरहित । जो आपत्तिजनक न हो ।—अवधि, (वि०) असीम । सीमारहित ।—अवयव (वि०) जिसमें हिस्से न हों । अद्वय । ३ जिसमें अवयव (अंग-उपाङ्ग) न हों ।—अवलम्ब, (वि०) असमर्थित । बिना सहारे का । २ जो सहारा न दे ।—अवशेष, (वि०) समूचा । पूर्ण ।—अवशेषित, (अव्यय०) सम्पूर्णतया । बितकुल ।—अशन, (वि०) भोजन से परहेज करने वाला ।—अशन, (न०) कड़ाका । लंघन । फाका ।—अस्थ, (वि०) हथियारशून्य । खाली हाथ ।—अस्थि, (वि०) जिसके हड्डी न हों ।—अहङ्कार,—अहङ्कृति, (वि०) अभियान रहित । गर्वशून्य ।—आकांक्ष, (वि०) जिसे आकांक्षा न हो । कामनाशून्य । इच्छारहित ।—आकार, (वि०) १ जिसका कोई आकार या शक्त्ति सुरत न हो । जिसके आकार की भावना न हो । २ बदशक्त्ति । बदसूरत । कुरूप । भद्दा । ३ कपट वेशी । ४ विनम्र । लज्जालु ।—आकारः, (पु०) १ सर्पव्यापी सर्वशक्तिमान परमात्मा । २ विष्णु । ३ शिव ।—आकृति, (वि०) १ आकार रहित । जिसकी कोई शक्त्ति न हो । २ बदशक्त्ति । बदसूरत ।—आकृतिः, (वि०) १ स्वाध्याय रहित विद्यार्थी । वेदपाठ रहित ब्रह्मचारी । २ वैदिक कर्मादुष्टान पञ्च महायज्ञादि कर्म से रहित ।—आकुल, (वि०) १ जो विकल न हो । अनुद्विग्न । २ शान्त । दृढ़ । ३ स्पष्ट । साफ ।—आक्रोश, (वि०) जो द्रोषी न बहराया गया हो ।—आगस, (वि०) दोष रहित । पापशून्य ।—आचार, (वि०) आचार रहित ।—आडम्बर, (वि०) १ बिना ढोल का । ढोलों से रहित ।—आतङ्क, (वि०) १ निर्भय । निडर । २ बिना किसी पीड़ा के । स्वस्थ । तंतु-रुत ।—आतप, (वि०) गर्मी से रहित । छायादार । जहाँ सूर्य की रश्मियाँ प्रवेश न कर सकें ।—आतपा, (स्त्री०) रजनी । रात ।—आदर, (वि०) अपमान । बेइज्जती ।—आधार, (वि०) अवलम्ब या आश्रय रहित ।

—आधि, (वि०) सुरचित । चिन्ताशून्य ।—आपद्, (वि०) जिसे कोई आपदा न हो ।—आवाध, (वि०) १ उपद्रवों से रहित । २ बिना बाधा का । ३ जो उपद्रव न करे ।—आशय, १ रोगरहित । स्वस्थ । २ तिष्कलङ्क । शुद्ध । २ दोषशून्य । ३ कलङ्क या ऐयों से रहित । ४ पूर्ण । सम्पूर्ण । ५ अचूक । अभ्रान्त ।—आमयः, (न०)—आमयः, (पु०) रोग से रहित । भला । चंगा ।—आमयः, (पु०) १ जंगली चकरा । २ शूकर ।—आभिष, (वि०) १ जिसमें मौस न हो । मौस रहित । २ जिसमें मैथुन करने की इच्छा न हो । जो लालची न हो । ३ जिसे पारिश्रमिक या मजदूरी न मिले ।—आय, (वि०) जिससे कुछ भी लाभ न हो । जिससे कुछ भी आय या आसदनो न हो ।—आयास, (वि०) सरल । सहज ।—आयुध, (वि०) बिना हथियार के । खाली हाथ ।—आलस्य, (वि०) बिना सहारे का । निराधार । निराश्रय । स्वावलम्बी । २ मित्रशून्य । एकाकी ।—आलोक, (वि०) जो देख न सके । दृष्टिहीन । प्रकाशशून्य । अन्धकार ।—आश, (वि०) आशरहित ।—आशङ्क, (वि०) निडर । निर्भय ।—आशिस, (वि०) आशीर्वाद या वर रहित । बिना किसी इच्छा का । तटस्थ ।—आश्रय, (वि०) निरावलम्ब । निराधार । साहाय्यशून्य । एकाकी ।—आस्वाद, (वि०) जिनमें कुछ भी स्वाद या ज्ञापका न हो । सीढ़ा ।—आहार, (वि०) भोजन, (वि०) बिना भोजन का ।—आहरः, (पु०) कड़ाका । लंघन ।—इच्छ, (वि०) बिना इच्छा का । जिसका किसी में अनुराग न हो ।—इन्द्रिय, (वि०) १ जिसके शरीर का कोई अंग रहा न हो या बेकाम हो गया हो । २ अज्ञ-हीन । ३ निर्बल ।—इधन, (न०) ईधन का अभाव ।—इति, (वि०) श्रुत के कथों से मुक्त ।—इष्टधर, (वि०) नास्तिक ।—ईषं, (न०) हल ।—ईह, (वि०) १ कामनारहित । इच्छा-शून्य । २ अक्रियाशील ।—उच्छ्वास, (वि०) स्वास रहित ।—उत्तर, (वि०) १ त्राजवाब । २

अपने स अक्षर व्यक्ति स रहित उस्व
(वि०) विना उस्व का उसाह (वि०)
काहिल । सुप्त ।—उत्सुक, (वि०) १ उत्सुकता-
हीन । २ शान्त ।—उदक, (वि०) जलरहित ।
—उद्यम, उद्योग, (वि०) जिसके पास कोई
उद्यम न हो । बेकाम । बेकार ।—उद्वेग, (वि०)
उद्वेग से रहित निश्चित ।—उपक्रम, (वि०)
उपक्रमरहित । आरम्भ शून्य ।—उपद्रव,
(वि०) १ आक्रम विपत्ति से रहित । भाग्यवान् ।
प्राप्त । २ शान्तिप्रिय । सुरक्षित ।—उपाधि,
(वि०) ईमानदार ।—उपपत्ति, (वि०)
अयोग्य । अनुपयुक्त ।—उपपद, (वि०) विना-
किसी उपाधि या कृतिता का ।—उपप्लव, (वि०)
उपप्लव से रहित ।—उपम, (वि०) जिसकी
उपमा न हो । उपमा रहित । बेजोड़ ।—उपसर्ग,
अपशकुनों से रहित ।—उपाख्य, (वि०) १ जो
असली न हो । बनावटी । जिसका अस्तित्व ही न हो
(जैसे कन्यापुत्र) २ तुच्छ । ३ अदृश्य ।—उपाय,
(वि०) उपायरहित ।—उपेक्ष, (वि०) छोखा
या छल से रहित । जो असावधान न हो ।—
उपमन, (वि०) गयी रहित । उंडा ।—गन्ध,
(वि०) जिसमें गंध न हो ।—गर्त, (वि०) अह-
ङ्कार शून्य ।—गवाक्ष, (वि०) जिसमें छिड़की
या झरोखा न हो ।—गुण, (वि०) १ जिसमें
दोरी न हो । २ बुरा । खराब । निकम्मा । ३
गुणशून्य । निरुपाधि । ४ विना नाम का ।—
गुणः, (पु०) परमात्मा ।—गृह, (वि०)
जिसके घर द्वार न हो ।—गौरव, (वि०) जिस
का गौरव न हो ।—ग्रन्थः, (वि०) १ समस्त
बोधनों और बाधाओं से रहित । २ गरीब । अकि-
ञ्चन । भिन्न । ३ एकाकी । असहाय ।—ग्रन्थिः,
(पु०) १ मूख । मूढ़ । २ ज्वारी । २ संसारत्यागी
साधु जिसने संसार का मोह त्याग दिया हो और
जो भगवान् में अनुरागवान् हो । परमहंस ।—
ग्रन्थिक, (वि०) १ चतुर । चालाक । २ जिसके
साथ कोई न हो । एकाकी । ३ त्यक्त । त्यागा
हुआ । ४ फजरहित ।—ग्रन्थिकः, (पु०) १
नाग । दिगम्बरी जैन साधु ।—घटम, (न०)

बाजार जहाँ बड़ी भीड़ लगी हो । सब क लिये
खुला हुआ बाजार ।—दृष्ट, (वि०) १ निष्ठुर ।
संगदिल । बेरहम । २ निर्लज्ज । बेहया ।—जन,
(वि०) जो आवाद न हो । सुनसान ।—जनम्,
(न०) एकान्त स्थान । ब्रियावान् ।—जर, (वि०)
१ जवान । ताज़ा । २ अविनश्वर । जो नष्ट न
हो ।—जरं, (न०) अमृत ।—जरः, (पु०)
देवता ।—जल, (वि०) जलरहित । रेगस्तान ।
२ जिसमें पानी न मिलता हो ।—जलः, (पु०)
उजाड़ । रेगस्तान ।—जिह्वः, (पु०) मँढ़क ।
मेघा ।—जीव, (वि०) मरा हुआ । मृत । मुर्दा ।
—ज्वर, (वि०) जिसको ज्वर न हो ।—दृष्ट,
(वि०) शूद्र ।—दय, (वि०) १ निष्ठुर ।
संगदिल । २ क्रोधी । २ अत्यन्त दृढ़ । घनिष्ठ ।
अत्यधिक । दयं, (अव्यया०) निष्ठुरता से ।
बेरहमी से ।—दश, (वि०) दस दिन से
अधिक का ।—दशन, (वि०) जिसके दाँत न
हों । पुपला ।—दुःख, (वि०) पीड़ा रहित ।
जिससे पीड़ा न हो ।—दाप, (वि०) निरपराधी ।
त्रुटि रहित ।—द्रव्य, (वि०) गरीब । निर्धन ।
—द्रोह, (वि०) द्रोह या विद्वेष रहित ।—
द्रुद्ध, (वि०) १ जिसका कोई द्वन्द्वी न हो । जो
राग, द्वेष, मान, अपमान आदि द्वन्द्वों से (जुटों से)
परे या रहित हो । २ स्वच्छन्द । विना बाधा का ।
—धन, (वि०) सम्पत्तिहीन । निर्धन । गरीब ।
—धनः, (पु०) बूढ़ा बैल ।—धर्म (वि०)
बेईमान । अष्ट ।—धूम, (वि०) धूमरहित ।
—नर, (वि०) १ जिसको मनुष्यों ने त्याग दिया
हो ।—नाथ, (वि०) अनाथ । असहाय । जिसका
कोई नाथ न हो ।—निद्र, (वि०) जागता
हुआ । जो सोता न हो ।—निमित्त, (पु०)
कारण रहित ।—निमेष, (वि०) जो रूपके
नहीं ।—बन्धु, (वि०) जिसका जाति बिरादरी
वाला न हो । मित्रवर्जित ।—बल, (वि०)
अशक्त । बलरहित । कमजोर ।—बाध, (वि०)
बेरोकटोक । एकाकी ।—बुद्धि, (वि०) मूर्ख ।
बेवकूफ ।—बुध,—बुस, (वि०) जिसको भूखी
न निकाली गयी हो ।—भय, (वि०) निडर ।

भयरहित सुरक्षित । भर (वि०) १ अत्यधिक उग्र । प्रचण्ड । २ उत्सुक । धनिष्ठ । ३ गम्भीर । ४ परिपूर्ण ।—भाग्य (वि०) अभागा । बदकिस्मत ।—भृति, (वि०) जिसको रोजनवारी यानी मजदूरी न मिली हो ।—मदिक, (वि०) मस्त्रियों से रहित । एकाकी । एकान्त ।—मत्सर, (वि०) ईर्ष्यारहित ।—मत्स्य, (वि०) मछलियों से शून्य ।—मद्, (वि०) जो नशे में न हो । जो अभिमानी न हो ।—मनुज, —मनुष्य, (वि०) शौरावाद् । जहाँ कोई मनुष्य न रहता हो ।—मन्यु, (वि०) साँसारिक सम्बन्धों से मुक्त । निस्स्वार्थी । निरपेक्ष ।—मयाद, (वि०) असीम ।—मल, (वि०) १ जिसमें मैल न हो । साफ़ । स्वच्छ । २ चमकीला । ३ पापरहित ।—मलं, (न०) १ अशुद्ध । २ निर्मली । देवता को समर्पित पदार्थ का अवशेष ।—मशक, (वि०) मच्छनों से रहित ।—मांस, (वि०) माँस से रहित ।—मानुष, (वि०) शौरावाद् । उजाड़ ।—मार्ग, (वि०) पथशून्य ।—मुटः, (पु०) १ सूर्य । २ बदमाश । गुंडा ।—मुटं, (न०) बड़ा बाजार या बड़ी पैठ ।—मूल, (वि०) जड़हीन । २ आधारहीन । ३ मिटाया हुआ ।—मेघ, (वि०) बिना बादलों का ।—मोह, (वि०) मूर्ख । मूढ़ ।—मोह, (वि०) निभ्रान्त । अभ्रान्त ।—यत्न, (वि०) अक्रियाशील । सुस्त ।—यंत्रण (वि०) जिसकी कोई रोकटोक न हो । जो बश में न रह सके । हठी । जिद्दी ।—यंत्रणम्, (न०) स्वाधीनता । मनमौजीपन ।—यशस्क, (वि०) अकीर्तिकर ।—यूथ, (वि०) झुंड से छूटा हुआ ।—रक्त (नीरक्त, बे रंग का । फीका ।—रज, —रजस्क, (वि०) (नीरज, नीरजस्क,) १ जिसमें गर्व गुबार न हो । (स्त्री०) स्त्री जो रजस्वला न हो ।—रन्ध्र, (नीरन्ध्र,) (वि०) १ बिना छेदों या सूरालों का । २ सबन । घना । ३ मैदा । जाड़ा ।—रघ, (नीरघ) (वि०) जो शोर न करे । जो कोलाहल न करे ।—रस, (नीरस,) (वि०) १ जिसमें रस न हो । रसहीन । सूखा । शुष्क । २ फीका । जिसमें कोई स्वाद न हो । ३ जिसमें कोई आनन्द

न मिले । जिसस मनोरजन न हो । जैसे नीरस काव्य । ४ अप्रिय । ५ निष्ठुर । बेरहम ।—रसः (नीरसः,) (पु०) अन्तः ।—रसन (वि०) (नीरसन) बिना कमरबंद का ।—रन्ध्र, (वि०) (नीरन्ध्र) मंद । धुंधला जिसमें चमक न हो ।—रज, —रज, (नीरज,) (वि०) नीरोग । जो रोगी न हो ।—रघ, (नीरघ,) (वि०) आकारशून्य । जिसकी कोई शक्ति न हो ।—रोग, (नीरोग,) (वि०) स्वस्थ । चंगा । तंदुरुस्त ।—लक्षण, (वि०) १ जिसके शरीर में कोई शुभ चिह्न न हो । २ जिसको कोई पहचान न पावे । ३ तुच्छ । ४ जिसमें कोई ध्वजा न हो ।—लज्ज, (वि०) बेहया । बेशर्म ।—जिह्वा, (पु०) जिसकी पहचान के लिये कोई चिह्न न हो ।—लोप, (वि०) १ विषयों से अलग रहने वाला । निर्लिस । २ जो लीप पोता न गया हो । ३ पापरहित । कलङ्कशून्य ।—लोभ, (वि०) जो लोभो न हो । जो लालची न हो । इच्छा रहित ।—लोमन, (वि०) जिसके बाल न हों ।—लंघ, (वि०) सन्तानहीन ।—वण, —वन, (वि०) जंगल के बाहिर । जहाँ जंगल न हो । खुला हुआ । असर ।—वसु, (वि०) निर्धन । गरीब ।—वात, (वि०) जहाँ पवन न हो । शान्त ।—वातः, (पु०) ऐसा स्थान जो पवन के उपद्रवों से रहित हो ।—वानरा, (वि०) जहाँ बंदर न हों ।—वायस, (वि०) जहाँ कौए न हों ।—विकटप, —विकल्पक, (वि०) १ जो विकल्प, परिवर्तन या प्रभेदों से रहित हो । २ जो दृढ़ विचार वाला न हो । ३ जो पारस्परिक सम्बन्ध न रख सके ।—विकार, (वि०) १ अपरिवर्तित । जो बदले नहीं । २ जिसका कोई स्वार्थ न हो ।—विकास, (वि०) अनखिला हुआ ।—विघ्न, (वि०) बिना विघ्न वाधा के । विघ्न वाधाओं से मुक्त ।—विघ्नम्, (न०) विघ्नों का अभाव ।—विचार, (वि०) अविचारी । जो किसी बात पर विचार न करे । अविवेकी ।—विविक्तित्स, (वि०) वह जो सन्देह या शङ्का न करे ।

—विचर (वि०) गतिहीन । मशाहीन ।
 विचोन् (वि०) आमान प्रमोन् स रहित
 विन्ध्या, (वि०) विन्ध्याचल से निकलने वाली
 एक नदी का नाम ।—विमर्श, (वि०) विचार
 हीन । अविवेकी ।—विवर, (वि०) १ जिसमें
 कोई रन्ध्र या छिद्र न हो । २ जिसमें अन्तर न हो ।
 वनिष्ठ ।—विवाद, (वि०) मतभेद का अभाव ।
 ३ सर्वसम्मत ।—विवेक, (वि०) मूर्ख । जिसमें
 अच्छाई बुराई का विचार करने की शक्ति न हो ।
 —विगड्ड, (वि०) बिडर । निर्भय ।—विशेष,
 (वि०) वह जो किसी में भेदभाव न करे ।—
 विजेंयः, (पु०) परवक्त्र । परमात्मा ।—विशेषण,
 (वि०) बिना उपाधियों के ।—विष, (वि०)
 विषहीन । जिसमें जहर न हो ।—विषय, (वि०)
 १ घर से निकाला हुआ । २ जिसका काम करने
 के लिये कोई भी स्थान न हो । ३ जिसको विषय
 (स्त्री मैथुनादि) वासना न हो ।—विषाण,
 (वि०) जिसके सींग न हो ।—विहार, (वि०)
 जिसके लिये आनन्द का अभाव हो ।—वीज,—
 बीज, (वि०) १ बीजरहित । २ नपुंसक । ३
 कारखरहित ।—वीर, (वि०) १ वीरहीन । २
 भीमता से ।—वीरा, (वि०) वह स्त्री जिसका
 पति और लड़केवाले मर चुके हों ।—वीर्य,
 (वि०) शक्तिहीन । निर्बल । अमानुषिक ।
 नपुंसक ।—वृत्त, (वि०) वृत्तों से रहित ।—
 वृष, (वि०) बैल रहित ।—वेग, (वि०)
 स्थिर । जिसमें वेग या गति न हो ।—वैतन,
 (वि०) अवैतनिक ।—वेष्टनम्, (न०) जुलाहे
 की ठरकी ।—वैर, (वि०) शान्तिप्रिय । जिसका
 कोई शत्रु न हो ।—वैरं, (न०) शत्रुता का
 अभाव ।—व्यञ्जन, (वि०) १ सरल । साफ ।
 निष्कपट । २ बिना मसालों का ।—व्यञ्जने,
 (व्यञ्ज्या०) साफ तौर से । सरलता से ।—व्यथ,
 (वि०) १ पीड़ारहित । २ शान्त ।—व्यपेक्ष,
 (वि०) तटस्थ । उदासीन ।—व्यलोक,
 (वि०) १ जो किसी को कुछ न दे । २ पीड़ा-
 रहित । ३ कोई भी कार्य हो मन लगा कर या
 रजामंदी से करने वाला । ४ सच्चा । निष्कपट ।—

व्याज (वि०) वह स्थान जहाँ बीतो का उत्पात
 न हो । व्याज, (वि०) १ ईमानदार । सच्चा ।
 साफ मन का । २ निष्कपट । कुलशून्य ।—
 व्यापार, (वि०) जो कहीं नौकर न हो । जिसके
 पास कोई काम धंधा न हो ।—व्रण, (वि०)
 जिसके कोई घाव न हो । वीरपाद रहित ।—व्रत,
 (वि०) जो व्रत न रखता हो ।—हिमं, (न०)
 जाड़े का अवसान । हेमन्त ऋतु की समाप्ति ।—
 इति, (वि०) हथियार रहित ।—हेतु, (वि०)
 कारण रहित ।—हीक, (वि०) १ निर्लज्ज ।
 बेहया । वेशर्म । २ साहसी ।

निरत (वि०) १ किसी कार्य में लगा हुआ । तत्पर ।
 लीन । मशगूल । २ प्रसन्न । आनन्दित । ४ बंद ।
 निरतिः (स्त्री०) १ अत्यन्त रति । अत्यधिक प्रीति ।
 २ जिस या लीन होने का भाव ।

निरयः (स्त्री०) नरक । दोऊध ।

निरवहानिका (स्त्री०) } घेरा । बाड़ा । घेरे की
 निरवहानिका (स्त्री०) } दीवाल ।

निरस (वि०) स्वादहीन । फीका । शुष्क ।

निरसः (पु०) १ स्वादहीनता । २ फीकापन । ३
 जिसमें रस न हो । शुष्कता । ४ निरक्ति ।

निरसन (वि०) [स्त्री०—निरसनी] १ निराकरण ।
 परिहार । २ फेंकना । दूर करना । हटाना ।
 ३ वमन करना । कै करना । थूकना ।

निरसन (व० कृ०) १ फेंका हुआ । छोड़ा हुआ ।
 भगाया हुआ । देश निकाला हुआ । २ नष्ट
 किया हुआ । ३ त्यागा हुआ । अलग किया हुआ ।
 ४ हटाया हुआ । रहित किया हुआ । ५ छोड़ा
 हुआ । (जैसे तीर) ६ खण्डन किया हुआ ।
 ७ उगला हुआ । थूका हुआ । ८ अस्पष्ट रूप से
 जल्दी जल्दी बोला हुआ । ९ फाड़ा या चीरा हुआ ।
 १० दबाया हुआ । रोका हुआ । ११ तोड़ा
 हुआ । (जैसे कोई प्रतिज्ञा) ।—भेद, (वि०)
 समस्त भेदों को दूर किये हुए । समान । एक
 सा ।—राग, (वि०) संसारत्यागी । सांसारिक
 समस्त वासनार्थों को त्यागे हुए ।

निराकः (पु०) १ पंचम क्रिया । २ पसीना । ३
 पाप का परिणाम ।

निराकरणम् (न०) १ छानना । अलग करना ।
२ हटाना । दूर करना । ३ मिटाना । रद्द करना ।
४ शमन । निवारण । परिहार । ५ खण्डन ।
६ देश निर्वासन । ७ तिरस्कार । मुख्य यज्ञीय
कर्मों की अवहेलना । विस्मृति ।

निराकरण (वि०) १ हटाना । दूर करना ।
निकाल देना । २ बाधक । रोक टोक करने वाला ।
३ किसी को किसी वस्तु से वञ्चित करने वाला ।

निराकुल (वि०) १ परिपूर्ण । भरा हुआ । ढका
हुआ । २ पीड़ित ।

निराकृतिः (स्त्री०) १ निराकरण । परिहार । २
निराकिया । अस्वीकृति । इंकार । रोक टोक । बाधा ।
४ विरोध ।

निराग (वि०) राग रहित । अनुराग शून्य ।

निरादिष्ट (वि०) कर्ज चुकाया हुआ ।

निरामालुः (पु०) कैया ।

निरासः (पु०) १ निकास । निराकरण । स्थानान्तर-
करण । २ उगलना । ३ खण्डन । ४ प्रतिवाद ।
विरोध ।

निरिगिणी, निरिङ्गिणी } (स्त्री०) वैषट ।
निरिगिनी, निरिङ्गिनी }

निरीक्षणम् (न०) १ चितवन । २ इष्टि । ३
निरीक्षा (स्त्री०) } खोज । तलाश । ४ खोज
विचार । मान प्रवाद । ५ आशा । उम्मेद । ६
ग्रहों का योग या स्थिति । जन्म काल में ।

निरीर्ण (न०) } हल का फाल ।
निरीर्ण (न०) }

निरुक्त (वि०) १ प्रकट किया हुआ । कहा हुआ ।
समझाया हुआ । व्याख्या किया हुआ । २ उच्च-
स्वर से । स्पष्ट ।

निरुक्तं (न०) १ व्याख्या । व्युत्पत्ति । २ वेद के छः
अंगों में से एक, जिसमें अप्रचलित शब्दों की
व्याख्या की गयी है । ३ एक प्रसिद्ध व्याख्या का
नाम, जो यास्क द्वारा निघण्टु पर की गयी है ।

निरुक्तिः (स्त्री०) १ निरुक्त की रीति से निर्वचन ।
किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या जिसमें
व्युत्पत्ति आदि अच्छी तरह समझायी गयी हो ।

२ एक काव्यालङ्कार जिसमें अर्थ तो मनमाना
किया जाय, किन्तु हो सयुक्तिक ।

निरुस्तु (वि०) १ अत्यन्त उत्सुक । २ उदासीन ।
तटस्थ ।

निरुद्ध (व० कृ०) १ रोका टोका हुआ । बाधा दिया
हुआ । काबू में लाया हुआ । बस में किया हुआ ।
रुका हुआ । बंधा हुआ । २ ज़ैद किया हुआ ।—
कराड, (वि०) दम हुआ हुआ ।— गुदः, (वि०)
मलावरोध ।

निरुद्ध (वि०) १ प्रसिद्ध । विख्यात । प्रचलित ।
२ अविवाहित ।—लक्षणा, (स्त्री०) लक्षण
विशेष जिसमें गृहीत अर्थ रुद्ध हो गया हो अर्थात्
वह अर्थ केवल प्रसङ्ग या प्रयोजनवश ही ग्रहण
न किया गया हो ।

निरुद्धः (पु०) व्यापकता ।

निरुद्धिः (स्त्री०) १ स्थिति । प्रसिद्धि । कीर्ति ।
२ हेतुमेल । परिचय । ३ इदोकरण । विश्वास-
जनक । प्रामाणिक ।

निरूपणं (न०) १ आकार । शकल । सूरत ।
निरूपणा (स्त्री०) } २ दृष्टि । चितवन । ३ तलाश ।
खोज । ४ अनुसन्धान । निश्चय । ५ परिभाषा ।

निरूपित (व० कृ०) १ देखा हुआ । पता लगाया
हुआ । चिन्हित । २ नियुक्त किया हुआ । चुना
हुआ । पसंद किया हुआ । ३ तौला हुआ । विचारा
हुआ । ४ खोजा हुआ । दर्शाया किया हुआ ।
निश्चय किया हुआ ।

निरुहः (पु०) १ वस्ति किया । २ तर्क । विवाद ।
३ निश्चय । खोज । ४ वाक्य जिसमें कुछ छूटा
न हो । पूर्ण वाक्य ।

निर्मुक्तिः (स्त्री०) १ नाश । विनाश । २ विपत्ति ।
३ शाय । अकोस । ४ नैर्ऋत कोण की स्वामिनी ।
५ मृत्यु ।

निरोधं (न०) } १ रुकावट । बंधन । २ घेरा ।
निरोधः (पु०) } घेर लेना । ३ संघम । रोक ।
दवाना । ४ बाधा । विरोध । ५ चोटिल करना ।
सज़ा देना । ६ नाश । विनाश । ७ अरुचि । नाप-
संदगी । ८ दवाश । आशा का दूटना ।

र्ग (पु०) देश । ग्राम्त । स्थान ।

गर्धन } (न०) वध । हत्या ।
गन्धनम् }

गर्मः (पु०) १ फौरन स्वानगी । तुरन्त चमन ।
२ प्रस्थान । अदश्य होना । ३ द्वार । निकलने का मार्ग ।

गर्मनम् (न०) निकलने की क्रिया । विकास ।

गर्दः (पु०) वृक्ष का कोटर ।

ग्रन्थन } (न०) हत्या । वध ।
ग्रन्थनम् }

घट्टः, निर्घट्टः (पु०) १ शब्दों और उनके
। घट्ट, निर्घट्टम् (न०) १ अर्थों की तालिका ।
२ विषयसूची ।

घर्षणम् (न०) रगड़ ।

घातः (पु०) १ नाश । २ वज्रपात । आँधी का
झोका । आँधी । वृक्षान । ३ हवा की समसनाहट ।
४ भूचाल । ५ वज्रपात । बिजली की कड़क ।

घातनम् (न०) ज्वरदस्ती बाहिर करना । बाहिर
निकाल लाना ।

घोषः (पु०) १ शब्द । आवाज़ । २ बड़े झोरों का
कोलाहल ।

जयः (पु०) १ पूर्णतया विजय । पूरी जीत ।
जितिः (स्त्री०) १

भूरि (न०) १ सोता । चरमा । भरना । जल-
भूरिः (पु०) १ प्रपात । पहाड़ी नाला । (पु०)
१ खोकर जलाने वाला । २ सूर्य का एक घोड़ा ।
३ हाथी ।

भूरिन् (पु०) पर्वत । पहाड़ ।

भूरिणी (स्त्री०) नदी । पर्वत से निकला हुआ
भूरी } पानी का भरना ।

ग्रायः (पु०) फैसला ।—प्रायः, (पु०) दण्ड
विधान । डिग्री । तजबीज ।

ग्रायक (वि०) निर्णय करने वाला । तै करने
वाला । फैसला देने वाला ।

ग्रायनम् (न०) १ निश्चय करना । २ हाथी के
काँध का बाहिरी भाग विशेष ।

शैत (व० क०) धुला हुआ । साफ किया हुआ ।
स्वच्छ किया हुआ ।

निशिकि (स्त्री०) १ धुलाई । सफाई । स्वच्छता
२ प्रायश्चित्त ।

निशेकः (पु०) १ धुलाई । सफाई । २ स्नान ।
मार्जन । ३ प्रायश्चित्त ।

निशेजकः (पु०) धोबी ।

निशेजनम् (न०) १ मार्जन । २ प्रायश्चित्त (किसी
पाप का)

निशेदिः (पु०) स्थानान्तर करण । देश निकाला ।

निर्दट } (वि०) १ निष्ठुर । नृशंस । २ दूसरों के
निर्दड } दोषों पर प्रसन्न होने वाला । ३ डाही ।
ईर्ष्यालु । ४ बदज़वान । शाली गलौज करने
वाला । ५ व्यर्थ । अनावश्यक । ६ उग्र । प्रचण्ड ।
७ उन्मत्त । नशे में चूर ।

निर्वरः } (पु०) गुफा । गड्ढर ।
निर्वरिः }

निर्वलनम् (न०) भग्नकरण । नष्टकरण ।

निर्वहनम् (न०) भस्मकरण । जलाना ।

निर्दातु (पु०) १ बेकाम के पास फूस को खोदने
वाला । २ दानी । ३ किसान । पका अनाज
काटने वाला ।

निर्दारित (वि०) १ फटा हुआ । चीरफाड़ किया
हुआ । २ खुला हुआ । फाड़ कर खोला हुआ ।

निर्दिग्ध (व० क०) १ लेप किया हुआ । (लेल)
लगाया हुआ । २ खूब खिलाया पिलाया हुआ ।
मोटा ताज़ा ।

निर्दिष्ट (व० क०) १ जिसका निर्देश हो चुका हो ।
बतलाया या नियत किया हुआ । २ आज्ञा ।
आज्ञा दिया हुआ । ३ वर्णित । ४ तलाश या
व्याप्त किया हुआ । निश्चित किया हुआ । ५
प्रकट किया हुआ ।

निर्देशः (पु०) १ बतलाना । २ आदेश । ३ उपदेश ।
४ कथन । प्रकटन । ५ उल्लेख । जिक्र । ६
सामीप्य । नैकत्व । पास ।

निर्धारः (पु०) १ निश्चय । निर्णय । २ कितनी
निर्धारणम् (न०) १ ही वस्तुओं में से एक को अल-
गाना या बतलाना । ३ निश्चय । निर्णय ।

निर्धारित (व० क०) निश्चित किया हुआ । जिसका
निर्धारण हो चुका हो । ठहराया हुआ ।

निर्धत्त (व० क०) १ हिलाया हुआ । हटाया हुआ । २ त्यागा हुआ । अस्वीकृत । ३ वञ्चित किया हुआ । ४ बचाया हुआ । ५ खरबन किया हुआ । ६ नष्ट किया हुआ ।

निर्धौत (व० क०) १ धोया हुआ । २ चमकाया हुआ । चिकनाया हुआ ।

निर्बन्धः } (पु०) १ जड़ । हठ । २ कड़ी माँग ।
निर्बन्धः } आवश्यकता । ३ दुराग्रह । ४ दोषारोपण ।
५ अगड़ा । विवाद ।

निर्वहण (देखो निर्वहण)

निर्मट (वि०) ६३ । मजबूत । सशक्त ।

निर्मत्स्यनम् (न०) } १ धमकी । डाँट । डपट । २
निर्मत्स्यना (स्त्री०) } कुवाच्य । गाली । कलङ्क ।
बदनामी । ३ विद्वेष बुद्धि । द्रोह भाव । ४ लाल
रंग । लाल ।

निर्भेदः (पु०) १ फट पड़ना । विभक्त होना । (बीच
से) चिरना । २ चीरना । फाड़ना । ३ स्पष्ट
कथन । ४ नदीगर्भ । ५ किसी बात का दृढ़
निश्चय ।

निर्मथः (पु०) } १ रगड़ । मंथन ।
निर्मथनं (न०) } मथने की क्रिया ।
निर्मथः—निर्मथ्यः (पु०) } गड़बड़ करने की
निर्मथनम्—निर्मथ्यनम् (न०) } क्रिया । २ आग
प्रकट करने का या मथने का दो काष्ठों को आपस
में रगड़ना ।

निर्मथ्य } (वि०) १ गड़बड़ करने या मथने
निर्मथ्य } का । २ रगड़ कर उत्पन्न करने का ।

निर्मथ्यम् } (न०) आग पैदा करने के लिये अरणी
निर्मथ्यम् } (काठ की लकड़ियाँ)

निर्माणं (न०) १ नापने की क्रिया । २ नाप ।
पहुँच । विस्तार । ३ उत्पन्नकरण । बनाने की
क्रिया । गड़ने या ढालने की क्रिया । ४ सृष्टि ।
५ शकल । आकार । बनावट । ६ इमारत ।

निर्माणा (स्त्री०) योग्यता । उपयुक्तता । सुघटता ।

निर्माह्यम् (न०) १ शुद्धता । स्वच्छता । वेदाश-
पन । २ देवता को खड़ाही हुई वस्तु । देवार्पित
वस्तु । ३ चढ़े हुए फूल । देवता पर से उतारे हुए
फूल । कुम्हलाये हुए फूल । ४ अवशेष । बचत ।

निर्मिति (स्त्री०) उत्पत्ति पैदावार । बनावट ।
कोई भी कारीगरी की वस्तु ।

निर्मुक्त (व० क०) १ छोड़ा हुआ । मुक्त किया
हुआ । आजाद किया हुआ । २ सांसारिक मोह
ममता से छूटा हुआ । ३ पृथक् किया हुआ ।

निर्मुक्तः (पु०) वह साँप जिसने हाल ही में कैतुली
खली हो । [नाश करना ।

निर्मूलनम् (न०) जड़ से उखाड़ डालना । जड़ से
निर्मूल्य (व० क०) धोया या पोंछा हुआ । रगड़ कर
साफ किया हुआ ।

निर्मोक्षः (पु०) १ मुक्तकरण । आजाद कर देने की
क्रिया । २ चमड़ा । चर्म । त्वाल । कैतुली ।
कवच । ४ आकाश । ५ वायुमण्डल ।

निर्मोक्षः (पु०) पूर्ण मोक्ष जिसमें एक भी संस्कार
न बच रहे ।

निर्मोक्षनम् (न०) मुक्ति । मोक्ष ।

निर्याणम् (न०) १ बाहर निकलना । २ यात्रा ।
रवानगी । प्रस्थान । ३ वह सड़क जो किसी नगर
के बाहर की ओर जाती हो । ४ अदृश्य होना ।
गायब होना । ५ शरीर से आत्मा का निकलना ।
मृत्यु । ६ मोक्ष । मुक्ति । परमानन्द । ७ हाथी के
आँख का बाहिरी कोना । ८ पशुओं के पैरों में
बाँधने की रस्ती ।

निर्यातनम् (न०) बदला चुकाना । (धरोहर का
धनी को) पुनः सौंपना । २ ऋण चुकाना । ३
दान । भेंट । ४ प्रतीकार । बदला । वैरनिर्यातन ।
५ हत्या । बध । [मौत ।

निर्यातिः (स्त्री०) १ बहिर्गमन । प्रस्थान । २ मृत्यु ।

निर्यासः (पु०) मल्लाह । कर्णधार । नाव खेने वाला ।

निर्यासं (न०) } १ वृक्षों का चिपचिपा रस ।
निर्यासः (पु०) } गौड़ । राल । २ सार । काढ़ा ।
काथ । ३ कोई गाढ़ी तरल वस्तु ।

निर्यूहः (पु०) १ कलस । झुज्जा । गौख । २ मुकुट ।
कलगी । शिरोभूषण । ३ खुटी । ४ द्वार । फाटक ।
५ रस । काथ ।

निलुचनम् } (न०) खींच कर उखाड़ लेना ।
निलुञ्जनम् }

निलु टनम् } (न०) १ लूट खसोट । २ चीर-
निलुशुटनम् } फाड़ ।

निलेयनम् (न०) १ खरोचना । (लिखे हुए को)
छीखना । २ खरोचने का औज़ार । खरौचा ।

निलेयनी (स्त्री०) साँप की कैदुल ।

निलेयनम् (न०) १ कथन । उच्चारण । २ कहनावत ।
कहावत । लोककृति । ३ शब्दसाधन । ४ शब्द-
सूची । विषयसूची ।

निर्वपणम् (न०) १ भेंट करना । २ पिण्डदान । ३
पुरस्कारप्रदान । ४ दान । भेंट ।

निर्वर्णनम् (न०) १ देखना । २ सावधानी से
देखना ।

निर्वर्तक (वि०) [स्त्री०—निर्वर्तिका] पूरा करने
वाला । पूरा करने वाला ।

निर्वर्तनम् (न०) १ कर्म को पूर्ण करने की क्रिया ।

निर्वहणम् (न०) १ समाप्ति । पूर्णता । २ अन्त को
पहुँचाना यानी समाप्त या पूरा करना । ३ नाश ।
विनाश ।

निर्वाण (व० कृ०) १ फूँक कर बाहिर निकाला
हुआ । (दीपक) बुझाया हुआ । २ खोया हुआ ।
अदृश्य हुआ । ३ मारा हुआ । मृत । ४ जीवन से
मुक्त । ५ डूबा हुआ । अस्त हुआ । ६ चुप किया
हुआ ।

निर्वाणम् (न०) १ बुझने की क्रिया । २ अन्तर्धान ।
अदृश्यता । ३ मृत्यु । ४ मोक्ष । ५ बौद्धों की
मोक्ष का नाम निर्वाण प्राप्ति है ।

निर्वृत्त (व० कृ०) पूरा किया हुआ । जो पूरा हो गया
हो । जिसकी निष्पत्ति हो चुकी हो ।

निर्वृत्तिः (स्त्री०) निष्पत्ति । समाप्ति ।

निर्वेदः (पु०) १ वैराग्य । २ दुःख । खेद । ३ अनु-
ताप । ४ अपमान ।

निर्वेशः (पु०) १ लाभ । प्राप्ति । २ मज़दूरी । भाड़ा ।
नौकरी । ३ भोजन । उपभोग । उपयोग । ४ रकम
की वापिसी । ५ प्रायश्चित्त । ६ विवाह । ७
सूक्ष्मा । बेहोशी ।

निर्व्यथनम् (न०) १ बड़ा दर्द । २ तीव्र पीड़ा से
मुक्ति । ३ रन्ध्र । छेद । सुरास ।

निर्व्यूह (व० कृ०) १ समाप्त किया हुआ । पूरा किया
हुआ । २ बड़ा हुआ । वृद्धि को प्राप्त । ३ पूर्ण-
तया देखा हुआ । सत्यसिद्ध किया हुआ । सत्यता
से अन्ततक पहुँचाया हुआ अर्थात् समाप्त किया
हुआ । ४ स्थल । छोड़ा हुआ ।

निर्व्यूहः (स्त्री०) १ समाप्ति । अन्त । २ चोटी ।
सर्वोच्च स्थल ।

निर्व्यूहः (पु०) १ छोटा गुर्ज । २ शिरस्त्राण ।
कलगी । ३ द्वार । फाटक । ४ खूँटी । ब्रैकेट । ५
काथ । काड़ा ।

निर्व्यूहणम् (न०) १ शव को जलाने के लिये ले जाना ।
२ शव को जलाने के लिये चिता पर रखना । ३
लेजाना । निकाल लाना । खींच कर निकाल
लेना । हटाना । ४ जड़ से उखाड़ डालना ।

निर्व्यूहः (पु०) मल । विद्या ।

निर्व्यूहः (पु०) १ (तीर के) निकालने की क्रिया ।
२ मलमूत्रादि का त्यागना । छोड़ना । ६ इच्छा-
नुसार लगाना । ७ विज की सम्पत्ति या धन
दौलत का सञ्चय करना ।

निर्व्यूहः (वि०) १ (शव को जलाने के लिये)
ले जाने वाला । २ फैलाने वाला । प्रचार करने
वाला । ३ सुगन्ध वस्तु ।

निर्व्यूहः (स्त्री०) हटाना । रास्ता साफ़ करना ।

निर्व्यूहः (पु०) शब्द ।

निलयः (पु०) १ छिपने का स्थान । जानवरों का
बिल या मीठा । चिड़ियों का घोंसला । २ आवास-
स्थान । घर । गृह ।

निलयनम् (न०) १ उतरना । किसी स्थान में बस
जाना । २ आवासस्थान । घर ।

निलिपः } (पु०) १ देवता । २ मरुतों का दल ।
निलिम्पः } —निर्मरी, (स्त्री०) आकाशगंगा ।

निलिपा, निलिम्पा } (स्त्री०) गौ ।
निलिपिका, निलिम्पिका }

निलीन (व० कृ०) १ पिघला हुआ । २ बंद या
लपेटा हुआ । छिपा हुआ । ३ घिरा हुआ । ४
नष्ट किया हुआ । नाश किया हुआ । ५ बदला
हुआ ।

निवचने (अव्य०) ज़वानबंद करना । न बोलना ।

निवर्णनम् (न०) १ मखेरना । उल्लाना । डान्ना २
 बाना । ३ पितराक नाम पर किसी वस्तु को देना ।
 निवरा (स्त्री०) कारी कन्या । अविवाहिता स्त्री ।
 निवर्तक (वि०) १ लौटाने वाला । वापिस लाने
 वाला । २ बंद करने वाला । पकड़ने वाला । ३
 मिटा देने वाला । निकाल देने वाला । हटा देने
 वाला । ४ लौटा कर लाने वाला ।
 निवर्तन (वि०) १ लौटाने वाला । २ पीछे हटाने वाला ।
 बंद करने वाला ।
 निवर्तनम् (न०) १ वापसी । २ थंड़ी । ३ चिरन्ति ।
 ४ अकर्मण्यता । ५ ला कर पीछे देने की या लौटाने
 की क्रिया । ६ परचात्ताप । ७ उन्नति करने की
 अभिलाषा । ८ सौ बार गज भूमि । अथवा २०
 बाँस लंबी जगह ।
 निवसतिः (स्त्री०) घर । मकान । डेरा । रहाइस ।
 निवसथः (पु०) ग्राम । गाँव ।
 निवसनम् (न०) १ घर । मकान । डेरा । २ वस्त्र ।
 भीतर पहिनने का कपड़ा ।
 निवहः (पु०) १ समूह । समुदाय । राशि । ढेर । २
 सात पवनों में से एक पवन का नाम ।
 निवात (वि०) १ वह स्थान जहाँ पवन न हो । २
 शान्त । अबाध । ३ सुरक्षित । ४ कवच धारण
 किये हुए ।
 निवातं (न०) १ वह स्थान जो पवन से रक्षित हो ।
 २ जहाँ पवन न हो । ३ सुरक्षित स्थान । ४ सुदृढ़
 कवच ।
 निवातः (पु०) १ आश्रयस्थल । आश्रम । २ अभेद्य
 कवच ।
 निवापः (पु०) १ बीज । दाता । अनाज जो बीज के
 काम में आवे । २ पितरों के उद्देश्य से या उनके
 नाम पर किसी वस्तु का दान । आहुत में तर्पण-
 क्रिया । ३ भेंट । नज़र ।
 निवारः (पु०) १ रोक । वचाव । हटाने
 निवारणम् (न०) १ या रोकने की क्रिया । २
 वर्जन । निषेधकरण । ३ वाधा । रुकावट ।
 निवासः (पु०) १ रहन । रहाइस । २ घर । डेरा ।
 विश्राम-स्थल । ३ रात बिताना । ४ पोशाक का
 कोई वस्त्र ।

निवासनम् (न०) १ आवासस्थल । २ टिकाव । ३
 समययापन ।
 निवासिन् (वि०) १ रहने वाला । निवासी । वासी ।
 २ वस्त्र पहनने वाला । वस्त्र धारण करने वाला ।
 (पु०) ३ वाशिन्दा । रहने वाला ।
 निविड } (वि०) १ घना । घनघोर । २ गहरा ।
 निविड } ३ दृढ़ । अभेद्य । ४ मौटा । बड़ा । ५
 चपटी या टेढ़ी नाक का ।
 निविरीम (वि०) १ बना । सचन । मौटा । जाड़ा ।
 २ टेढ़ी नाक वाला ।
 निविशेष (वि०) अभिन्न । एकसा । समान । सदृश ।
 निविशेषः (पु०) भिन्नता का अभाव । असमानता
 रहित ।
 निविष्ट (व० क०) १ बैठा हुआ । स्थित । ठहरा
 हुआ । २ जो एकाग्रचित्त किये हो । एकाग्र । ३
 लपेटा हुआ । ४ हुसा या घुन्साया हुआ । ५ बाँधा
 हुआ । ६ दीक्षा दिया हुआ । ७ सुन्यवस्थित ।
 क्रम में रखा हुआ ।
 निवीतं (न०) १ जनेऊ को गले में माला की तरह
 डालना । २ इस प्रकार पहना हुआ जनेऊ ।
 निवीतं (न०) } धूँधट । बुरका ।
 निवीतः (पु०) }
 निवृत्त (व० क०) घेरा हुआ । लपेटा हुआ ।
 निवृत्तं (न०) } धूँधट । बुरका । चादर । पिछौरा ।
 निवृत्तः (पु०) }
 निवृत्तिः (स्त्री०) आदनी । चादर ।
 निवृत्त (व० क०) १ लौटा हुआ । वापिस
 आया हुआ । २ गया हुआ । प्रस्थान किये
 हुए । ३ रुका हुआ । बंद किया हुआ । ४ विरक्त ।
 ५ असदाचरण के लिये परचात्ताप किये हुए । ६
 समाप्त किया हुआ ।—आत्मनः, (पु०) १
 हृदि । २ विष्णु ।—कारण, (वि०) विना
 किसी अन्य हेतु या उद्देश्य के ।—कारणः, (पु०)
 धर्मात्मा मनुष्य । वह मनुष्य जिसमें सांसारिक
 वासनाएँ न रह गयी हों ।—मांस, (वि०)
 जिसने मांस खाना श्राग दिया हो ।—राग,
 (वि०) जितेन्द्रिय । जिसने अपनी इन्द्रियों को
 वश में कर लिया हो ।—वृत्ति, (वि०) किसी
 पेशे को त्यागना ।—हृदय, (वि०) वह जो अपने

मन म करता हा मन में पड़ताने
वाला ।

निवृत्तं (न०) वापिसी ।

निवृत्तिः (स्त्री०) १ वापिसी । २ अन्तर्द्वान् । अव-
सान । समाप्ति । ३ कर्मत्याग । विरक्ति । ४ वैराग्य ।
५ त्याग । ६ शान्ति । सांसारिक संस्रुतों से
उपराम । ७ आराम । विश्राम । ८ परमानन्द ।
९ संन्यास । १० रोक ।

निवेदनम् (न०) १ धोपणा । विज्ञप्ति । सूचना ।
वर्णन । २ सौपना । हवाले करना । ३ उत्सर्ग
करना । ४ प्रतिनिधि । ५ भेंट ।

निवेद्यं (न०) किसी देवमूर्ति के लिये भोग । नैवेद्य ।
निवेशः (पु०) १ प्रवेश । द्वार । २ शिविर । डेरा ।
३ पड़ाव । ४ घर । मकान । घेरा । ५ धरोहर ।
सपुर्दगी । ७ विवाह । ८ प्रतिलिपि । अङ्कन ।
नक्श । ९ सैनिक छावनी । १० भूषण । सजावट ।
निवेशनम् (न०) १ प्रवेश । द्वार । २ पड़ाव । डेरा ।
३ विवाह । ४ लिखापट्टी । ५ घर । मकान । ६
तंबू । ७ कस्बा या नगर । ८ घोंसला ।

निवेशः (पु०) चादर या बेठन ।

निवेशनम् (न०) चादर या बेठन ।

निशु (स्त्री०) १ रात । २ हल्दी ।

निशमनं (न०) १ चितवन । दृष्टि । २ दृश्य । ३
श्रवण । ४ जानकारी ।

निशरणं } (न०) वध । हत्या ।
निशारणम् }

निशा (स्त्री०) १ रात । २ हल्दी ।—अटः,—
अटनः, (पु०) १ उल्लू । २ राक्षस । भूत ।
दानव ।—अनिक्रमः,—अत्ययः,—अन्तः,—
अवसानं, (पु०) १ रात का बीत जाना । २
प्रातःकाल ।—अन्ध, (वि०) जो रात को
अँधा हो जाय ।—अधीशः,—ईशः,—नाथः,—
पतिः,—मणिः,—रत्नं, (न०) चन्द्रमा ।—
अर्धकालः, (पु०) रात्रि का प्रथम भाग ।—
आख्या,—आह्वा, (स्त्री०) हल्दी ।—आदिः,
(पु०) सन्ध्याकाल । सूर्यास्त के बाद का समय ।
उत्सर्गः, (पु०) रात्रि का अवसान । प्रातःकाल ।
—करः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ सुर्गा ३ कपूर ।

गृह (न०) सोने का कमरा —चर (वि०)
[स्त्री०—चरा, —चरो] रात को इधर उधर
घूमने वाला ।—चरः, (पु०) १ निशाचर । राक्षस ।
दुष्टात्मा । २ शिव जी की उपाधि । ३ गीदड़ ।
शृगाल । ४ उल्लू । ५ सर्प । ६ चक्रवाक । ७
चोर ।—चरपतिः, (पु०) १ शिव । २ रावण ।

चरो, (स्त्री०) १ राक्षसी । २ वह स्त्री जो
पूर्व निश्चय के अनुसार रात में अपने प्रेमी से
मिलने जाय । ३ वेश्या । कुलटा स्त्री ।—चर्मन्,
(पु०) अंधकार ।—जलं, (न०) ओस ।
कुहरा ।—दर्शिनः, (पु०) उल्लू ।—निशं,
प्रतिरात । सदैव । पुष्पं, (न०) १ कमोदनी
जो रात को खिलती या फूलती हो । २ ओस ।
कुहरा । कुहासा ।—मुखं, (न०) रात का
आरम्भ ।—मृगः, (पु०) शृगाल । गीदड़ ।
—वनः, (पु०) सन । शय ।—विहारः, (पु०)
राक्षस । दानव ।—वेदिनः, (पु०) सुर्गा ।—
—हसः, (पु०) कमोदिनी ।

निशात (व० क०) १ पैनाया हुआ । तीक्ष्ण । २
बिकनाया हुआ । बारनिस किया हुआ । चम-
कीला ।

निशानं (न०) तीक्ष्णीकरण । तेज़करना । शान
रखना । बाढ़ रखना ।

निशांत } (व० क०) नीरव । शान्त । चुपचाप ।
निशान्त }

निशांतम् } (न०) मकान । घर । डेरा । बासा ।
निशान्तम् }

निशामः (पु०) देखना । पहचानना । अवलोकन
करना ।

निशामनम् (न०) १ चितवन । अवलोकन । २
दृश्य । ३ श्रवण करना । ४ बार बार अवलोकन ।
५ परछाँही । प्रतिविम्ब ।

निशित (वि०) १ तेज़ । शान पर चढ़ा हुआ । २
ठहराव किया हुआ ।

निशीथः (पु०) १ अर्धरात्रि । आधीरात । २ सोने
का समय । रात ।

निशीथ्या } (स्त्री०) रात ।
निशीथ्या }

निशुभः } (पु०) १ हत्या । वध । २ मग्नकरण ।
निशुम्भः } २ भुक्ताने (भुत्तुष को) की क्रिया । ३
एक दैत्य का नाम जिसे दुर्गा देवी ने वध किया
था ।—मथनी, (स्त्री०)—मर्दनी, (स्त्री०)
दुर्गा देवी की उपाधि ।

निशुभनम् } (न०) वध । हत्या ।
निशुम्भनम् }

निश्चयः (पु०) १ अनुसन्धान । खोज । २ निश्चित ।
सम्पत्ति । दृढ़ विश्वास । ३ दृढ़ सङ्कल्प । ४ शकीन ।
विश्वास । ५ पूरा इरादा । पक्का विचार ।

निश्चल (वि०) १ अचल । स्थिर । अटल । २ जो
तनक भी न हिले डुले । २ अपरिवर्तनीय जो
कभी बदले नहीं ।—ध्रंग, (वि०) मजबूत
शरीर ।—ध्रंगः, (पु०) १ सारस विशेषः २
चटान या पर्वत ।

निश्चला (स्त्री०) पृथिवी ।

निश्चायक (वि०) वह जो किसी बात का निर्णय या
निश्चय करता हो । निर्णायक ।

निश्चारकम् (न०) १ प्रवाहिका नामक रोग । यह
अतिसार का एक भेद है । २ वायु । हवा । ३
हठ । मग्नजीवना ।

निश्चित (व० कृ०) निर्णीत । तैय्युदा ।

निश्चितं (अन्यथा०) दृढ । पक्का । जिसमें कोई फेर-
फार न हो ।

निश्चितिः (स्त्री०) १ खोज । अनुसन्धान । निर्णय । २
सङ्कल्प । पक्का विचार ।

निश्चमः (पु०) १ अध्यवसाय । किसी कार्य को करते
करते न घबड़ाना या ऊबना ।

निश्चयणी } (स्त्री०) सीढ़ी । लैनी
निश्चयिणी }
निश्चयिणी }

निश्वासः (पु०) स्वाँस लेना । आह भरना ।

निर्घणः } (पु०) १ आलिङ्गन । २ ऐक्य । मेल । ३
निर्घङ्गः } तरकस । तूणीर ।

निर्घणथिः } (पु०) १ आलिङ्गन । २ अनुधर । तीरं-
निर्घङ्गथिः } दाज । ३ सारथी । ४ रथ ।

निर्घगिन् } (वि०) १ आलिङ्गन करने वाला । २ तर-
निर्घङ्गिन् } कस रखने वाला ।—(पु०) १ तीरन्दाज ।
धनुर्धर । २ तूणीर । तरकस । ३ तख्तवार धारी ।

निषण्ण (व० कृ०) १ बैठा हुआ । आराम करता
हुआ । सहारा लिये हुए । २ जिसको सहारा मिला
हुआ हो । ३ प्रस्थानित । गमन किया हुआ । ४
उदास । पीड़ित । नीची गर्दन किये हुए ।

निषण्णकम् (न०) बैठक । बैठकी । आसन ।

निषया (स्त्री०) १ छोटी खाट । २ व्यापारी की
दुकान या गद्दी । ३ मंडी । हाट । बाज़ार ।

निषहरः (पु०) १ कीचड़ । २ कामदेव ।

निषहरी (स्त्री०) रात्रि ।

निषधः (पु० बहु०) १ देश विशेष और वहाँ के
अधिवासी जहाँ राजानल राज्य किया करते थे । २
निषध देश का राजा ३ एक पर्वत का नाम ।

निषादः (पु०) १ भारतवर्ष की एक अति प्राचीन
अनार्य जाति । इस जाति के लोगों ही में चिड़ी-
मार माहीगीर आदि निन्दित कर्म करने वाले हुआ
करते हैं । २ वर्णसङ्कर जाति विशेष । चाण्डाल ।
विशेष कर ब्राह्मण पिता और शूद्रा माता से
उत्पन्न सन्तति । ३ सङ्गीत के सप्तस्वरों में अन्तिम
और ऊँचा स्वर । इसका सरगम में संचित रूप
“नि” है ।

निषादित (वि०) १ बैठाय़ा हुआ । २ पीड़ित ।
सन्तप्त ।

निषादिन् (व० कृ०) नीचे बैठा हुआ या लेटा हुआ ।
(पु०) महावत ।

निषिद्ध (वि०) वर्जित । मना किया हुआ ।

निषिद्धिः (स्त्री०) निषेध । मनाई ।

निषूदनं (न०) वध । हत्या ।

निषूदनः (पु०) वध करने वाला ।

निषेकः (पु०) १ छिड़काव । डरकाव । २ चुआव ।
कराव । चूते हुए तेल की एक बूँद । ४ बहाव ।
डरकाव । रिसाव । ५ वीर्यपात । ६ सिञ्चन ।
आवपाशी । ६ धोने के लिये जल । ७ वीर्यपात
सम्बन्धी अपवित्रता । ८ मैला पानी ।

निषेधः (पु०) १ वर्जन । मनाई । रोक । २ अस्वी-
कृति । इंकार । ३ निषेधवाची नियम । ४
नियम का अपवाद ।

निषेधक (वि०) १ अभ्यास करने वाला । अनुसरण
करने वाला । भक्त । अनुरागी । २ रहने वाला ।

वास करने वाला । ३ उपभोग करने वाला । मज़ा लूटने वाला ।

निषेवणम् (न०) १ सेवा । चाकरी । २ पूजा । निषेवा (स्त्री०) ३ अभ्यास । अभिनय । ४ अनुराग । आसक्ति । ५ निवास । ६ परिचय । उपयोग ।

निष्क (धा० आत्म०) [निष्कृत्यते] १ तौलना । नापना ।

निष्क (न०) १ सोने का सिक्का जो एक कर्प या निष्कः (पु०) १६ मासे का होता है । २ सोने की तौल विशेष । ३ कंठा या हार जो सुवर्ण का बना हुआ हो । ४ सुवर्ण । (पु०) चाण्डाल । निष्कर्षः (पु०) १ निचोड़ । सार । सारांश । २ नाप । ४ निश्चय ।

निष्कर्षणम् (न०) १ खींचाव । खींच कर निकालना । २ (नतीजा) निकालना ।

निष्कालनम् (न०) १ (पशुओं को) हँका देना । २ मरण ।

निष्कासः } (पु०) १ बाहिर निकालने का रास्ता । निष्काशः } २ धमाँती । गृहद्वार के आगे पटा हुआ या व्यापार स्थान । ३ प्रभात । ४ अन्तर्धाना ।

निष्कासित (व० कृ०) १ निकाला हुआ । बाहिर किया हुआ । २ रखा हुआ । स्थापित । जमा कराया हुआ । ४ नियत किया हुआ । मुकर्र किया हुआ । ५ खोला हुआ । फूँका हुआ । बढ़ाया हुआ । ६ भर्त्सना किया हुआ । फटकारा हुआ । गरियाया हुआ ।

निष्कासिनी (स्त्री०) चाकरानी जो अपने मालिक के काबु में न हो ।

निष्कुटः (पु०) १ नज़रवाग । पाई बाग । घर के समीप का बाग । २ खेत । ३ जनानखाना । रनवास । ४ द्वार । ५ वृक्ष का कोटर ।

निष्कुटिः } (स्त्री०) बड़ी हलायची । निष्कुटी }

निष्कुपित (व० कृ०) १ फटा हुआ । बलपूर्वक खींच कर निकाला हुआ । २ बाहिर किया हुआ ।

निष्कुहः (पु०) वृक्ष कोटर ।

निष्कृत (व० कृ०) १ मुक्त । छूटा हुआ । स्वतंत्र । २ निश्चित । ३ हटाया हुआ । ४ समा किया हुआ ।

निष्कृतं (न०) १ प्रायश्चित्त ।

निष्कृतिः (स्त्री०) १ प्रायश्चित्त । २ छुटकारा । उपकार या ऋण से उद्धार । ३ स्थानान्तर-करण । ४ नीरोगता प्राप्ति । आराम होना । ५ बचाव । ६ असावधानी । ७ बुरा चाल चलन । बदमाशी । गुंडापन ।

निष्कृष्ट (व० कृ०) १ निकाला गया । खींचा गया । २ सारांश । निचोड़ ।

निष्कोपः (पु०) १ चीरना । निकालना । भीतर निष्कोषणम् (न०) से निकालना । खींच कर निकालना । २ सूंसी या चोकर अलगाना ।

निष्कोषणकम् (न०) दाँत साफ करने का तिनका या खरका ।

निष्क्रमः (पु०) १ निष्क्रमण की रीति । बाहिर निकालना । २ वैदिक हिन्दुओं में बच्चे का एक संस्कार । इसमें बालक जब चार मास का होता है तब उसे बाहिर लाकर सूर्य का दर्शन कराते हैं । ३ जाति-अंशता । पतित होना । ४ मन की वृत्ति ।

निष्क्रमणम् (न०) बाहर निकालना । देखो निष्क्रमः । निष्क्रमणिका (स्त्री०) देखो 'निष्क्रमः' ।

निष्क्रयः (पु०) १ छुटकारा । उद्धार । वह द्रव्य जो छुड़ाने के हेतु दिया जाय । २ पुरस्कार । इनाम । ३ भाड़ा । उजरत । मज़दूरी । ४ वापसी । मुक्ति । ५ बदला । विनिमय ।

निष्क्रयणम् (न०) छुटकारा । उद्धार । वह द्रव्य जो छुड़ाने के हेतु दिया जाय ।

निष्काशः (पु०) १ काढ़ा । २ रसा । भोर । शोरवा । वह पानी जिसमें भांस रँधा गया हो ।

निष्पन्नम् (न०) जलाना ।

निष्ठ (वि०) १ स्थित । ठहरा हुआ । २ तत्पर । लगा हुआ । ३ जिसमें किसी के प्रति भक्ति या श्रद्धा हो । ४ पटु । निपुण । ५ विश्वासी ।

निष्ठा (स्त्री०) १ स्थिति । प्रतिष्ठा । ठहराव । २ भक्ति । श्रद्धा । प्रगाढ़ अनुराग । ३ विश्वास । पूज्य वृद्धि । दृढ़ अनुरक्ति । ४ उत्कृष्टता । निपु-

खता । योग्यता । सर्वाङ्गपूर्णता । २ समाप्ति । ६ किसी डामा या नाटक का दुःखान्त । ७ नाश । मृत्यु । किसी निश्चित समय पर इस संसार से अन्तर्धान होना । ८ निश्चय । निश्चयात्मक ज्ञान । ९ याचना । १० कष्ट । पीड़ा । सन्ताप । चिन्ता ।

पुनम् (न०) चटनी । मसाला ।

प्रीवं (न०)
प्रीवः (पु०)
प्रेवः (पु०) १ थूक । २ एक दवा जिसके
प्रेवं (न०) सेवन से रोगी का कफ
प्रीवनम् (न०) निकलने लगता है ।
प्रेवनम् (न०)
प्रीवितं (न०)

पूर (वि०) १ कठिन । कड़ा । सख्त । २ तीव्र । तीव्र । उग्र । ३ नृशंस । कड़ेजी का । संगदिल । ४ बेलगाम । निर्लज्ज । बड़बोला ।
पूर्यत (व० क०) थूका हुआ । उगला हुआ । फैका हुआ ।

पूतिः (स्त्री०) थूक । खकार ।

पूण (वि०) १ कुशल । निपुण । पटु ।
पूणात् (स्त्री०) होशियार । विशेषज्ञ । किसी विषय का

बहुत अच्छा ज्ञाता या जानकार । विज्ञ । पारङ्गत । २ सुचारु रूप से सम्पन्न किया हुआ । ३ श्रेष्ठतर ।
पूक (वि०) १ काड़ा निकाला हुआ । औटया हुआ । उवाला हुआ । भली भाँति रौंथा हुआ ।
पूतनं (न०) १ रुपट कर निकलना । शीघ्र बाहिर आना ।

पूतिः (स्त्री०) १ जन्म । पैदावार । २ पका-वस्था । परिपाक । ३ समाप्ति । अन्त । ४ निपटेरा ।
पून्न (व० क०) १ उत्पन्न हुआ । पैदा हुआ । निकला हुआ । २ पूर्ण । समाप्त । सिद्ध । ३ तत्पर ।

पूवनम् (न०) फटकना ।

पूपादनम् (न०) १ पूर्णता । समाप्ति । सिद्धि । २ निष्पत्ति करना । सम्पादन करना । पूर्ण करना ।

पूपावः (पु०) १ फटक कर अनाज को साफ करना । २ सूप से निकली हुई हवा । ३ पवन ।

पूषितः (व० क०) निचोड़ा हुआ । दो को एकत्र कर दबाया हुआ ।

निष्पेयः (पु०) } मिलाकर रसाइना । पीसना ।
निष्पेयणम् (न०) } कूटना । कुचलना । चूर्ण करना ।

निष्पवाणम् (न०) कोरा वस्त्र ।
निष्पवाणि (न०)

निस् (अव्यया०) निषेध । सफलता । निश्चय । पूर्णता । उपभोग । तरण । भग्न करण । बाहिर । दूर । नहीं । बिना । रहित । [समासों में निस् के 'स्' का 'र' हो जाता है ।—कण्टक, (= निष्कण्टक (वि०) १ काँटों से रहित । २ शत्रुओं से शून्य । ३ भय से रहित ।—कन्द, (= निष्कन्द (वि०) कन्द से रहित ।—कपट, (= निष्कपट, (वि०) कपट या झूठ से रहित ।—कम्प, (= निष्कम्प (वि०) गतिहीन । स्थिर । दृढ़ । अटल । अचल ।—करुण, (= निष्करुण (वि०) करुणाशून्य । निष्पूर । कूर ।—कल, (= निष्कल, (वि०) १ बिना हिस्सों का । समूचा । २ हस्वाकार । ब्रौटा किया हुआ । ३ नपुंसक । बांझ । ४ अंगभङ्ग किया हुआ । विकलाङ्ग ।—कलः, (= निष्कलः (पु०) १ आधार । २ ब्रह्म का नाम ।—कला, (स्त्री०)—कली, (स्त्री०) बूढ़ी औरत जिसके बालबच्चे होने की सम्भावना न रही हो अथवा जिसका रजस्वला धर्म से होना बन्द हो गया हो ।—कलङ्क, (= निष्कलङ्क (वि०) निर्दोष । कलङ्क से रहित ।—कपाय, (= निष्कपाय (वि०) १ मैल से रहित । साफ । २ दुष्ट वासनाओं से शून्य ।—काम, (= निष्काम (वि०) कामनाओं या इच्छाओं से रहित । २ समस्त सांसारिक वासनाओं से रहित ।—कामं, (= निष्कामम् (अव्यया०) बेमज्जी । अनिच्छापूर्वक ।—कारण, (= निष्कारण (वि०) १ अनावश्यक । २ निस्स्वार्थभाव से । स्वार्थ से रहित । ३ निराधार ।—कालकः, (= निष्कालकः (पु०) वह प्रायश्चित्ती जिसका मुखडन हुआ हो । और जो शरीर में घी लगाये हो ।—कालिक, (= निष्कालिक (वि०) जिसका जीवन काल समाप्त होने पर हो । जिसके जीवन के दिन इने गिने रह गये हों । अजेय । अजय्य ।—किञ्चन

(= निष्कृष्टन) (वि०) जिसके पास एक पाइ भा न हो । धनहीन निधन कु ।
 (= निष्कुल) (वि०) जिसके कुल में कोई न रह गया हो ।—कुलीन, (= निष्कुलीन) (वि०) नीच ।—कूट, (= निष्कूट) (वि०) जो कपटी न हो । ईमानदार । सच्चा ।—कूप, (= निष्कूप) (वि०) निष्ठुर । क्रूर । बेरहम ।—कैवल्य, (= निष्कैवल्य) (वि०) १ नितान्त । निपट । बिल्कुल । २ मोक्ष हीन ।—क्रिय, (= निष्क्रिय) (वि०) १ निश्चेष्ट । बेकार । कुछ न करने वाला ।—क्षत्र (= निःक्षत्र)—सक्रिय (= निःसक्रिय) (वि०) सक्रिय जानि से रहित या शून्य ।—क्षेपः, (= निःक्षेपः) (पु०) १ फेंकने या ढालने की क्रिया का भाव-त्वाग । २ धरोहर । अमानत । थाली ।—चतुस्, (= निश्चतुस्) (वि०) अंधा । नेत्रहीन ।—चत्वारिंश (= निश्चत्वारिंश) (वि०) चालीस के ऊपर ।—चिन्त, (= निश्चिन्त) १ चिन्ता से रहित । बेक्रिा । २ अविवेकी । विचार-हीन ।—चेतन, (= निश्चेतन) मूर्छित । बे-होश ।—चेतस्, (= निश्चेतस्) (वि०) वह जिसके होश हवास दुरुस्त न हो ।—चेष्ट, (= निःचेष्ट, (वि०) गतिहीन । शक्तिहीन ।—छन्दस्, (= निश्छन्दस्) (वि०) बेटों का अध्ययन न करने वाला ।—छिद्र, (= निश्छिद्र) १ बिना किसी दोष या त्रुटि का । २ बिना छेदों का । ३ अबाधित । बेरोक टोक । बिना चोटकेंट का ।—तन्तु, (वि०) सन्तानहीन ।—तन्द्र, (वि०) जो काहिल या सुस्त न हो । ताजा । तंदुरुस्त । भला बंगा ।—तमस्क,—तिमिर, (वि०) १ अंधकारशून्य । प्रकाश । २ पाप या दुराचरण से रहित ।—तर्क्य, (वि०) विचार से परे ।—तल, (वि०) १ गोल । मण्डलाकार या गोलाकार । २ गतिशील । कम्पित । ३ जिसमें तली न हो ।—तुप, (वि०) जिसमें भूसी न हो । २ साफ किया हुआ । सरल किया हुआ ।—तेजस् (वि०) १ अग्निहीन । उष्णताशून्य । नपुंसक । २ सुस्त । काहिल । एहदी । ३ धुंधला ।

अस्पष्ट । उप (वि०) रेहया मिलजुज ।
 त्रिश (वि०) १ तीस से ऊपर । २ बरहम । नृशंस । क्रूर ।—त्रिंशः, (पु०) तलवार ।—त्रैगुण्य, (वि०) सत्व, रजस् और तमस् से रहित ।—पङ्क, (= निष्पङ्क) (वि०) जिसमें कीचड़ आदि न लगा हो । स्वच्छ । निर्मल । साफ । सुधरा ।—पताक, (= निष्पताक) (वि०) जिसके पास झंडा झंडी न हो ।—पति, —सुता, (= निष्पतिसुता) (वि०) वह स्त्री जिसका न पति हो न पुत्र हो ।—पत्र, (= निष्पत्र) (वि०) १ पत्रों से रहित । २ पररहित । जिसके पंख न हों ।—पद, (= निष्पद) (वि०) बिना पैरों का ।—पर्द, (न०) यान जो बिना पहियों के चले ।—परिकर, (= निष्परिकर) (वि०) बिना तैयारी के । बिना सरंजाम के ।—परिग्रह (= निष्परिग्रह) (वि०) जिसके पास कुछ भी सम्पत्ति न हो ।—परिग्रहः (पु०) संन्यासी जिसके बंध में कोई न रह गया हो ।—परिच्छद, (= निष्परिच्छद) (वि०) जिसके पिङ्गलगुण न हों । जिसके अनुचर न हो ।—परीक्ष, (= निष्परीक्ष) (वि०) जो भलीभाँति परीक्षित न किया गया हो । जिसकी अच्छी तरह से जाँच पड़ताल न की गयी हो ।—परीहार, (= निष्परीहार) (वि०) जो चेतावनी की पर-वाह न करे ।—पर्यन्त, (= निष्पर्यन्त) (वि०)—पार, (= निष्पार) (वि०) असीम । सीमारहित । जिसकी हद न हो । बेहद ।—पाप, (= निष्पाप) (वि०) पापशून्य । निरपराध । साफ । शुद्ध ।—पुत्र (= निष्पुत्र) (वि०) सन्तानहीन ।—पुरुष (= निष्पुरुष) (वि०) उजाड़ । १ बेयाबाद । २ पुत्रसन्तान रहित । ३ पुष्टिज्ञ नहीं । क्षीलिज्ञ, नपुंसक लिङ्ग ।—पुरुषः (पु०) १ हिजड़ा । जनाना । २ भीख । डरपाँक ।—पुलाक, (= निष्पुलाक) (वि०) भूसी निकाला हुआ । बिना भूसी का ।—पौरुष, (= निष्पौरुष) (वि०) अमानुषिक ।—प्रकम्प, (= निष्प्रकम्प) (वि०) हड़ । अटल । गतिहीन ।—प्रकारक, (= निष्प्रका-

रक) (वि०) विवरण रहित । विना शर्त या ज़ेद के ।—प्रकाश, (= निष्प्रकाश) (वि०) धुंधला । साफ नहीं । अंधकारमय ।—प्रचार, (= निष्प्रचार) (वि०) १ न हिलने डुलने वाला । एक स्थान पर रहने वाला । २ एकप्र ।—प्रतिकार, —प्रतीकार, (= निष्प्रति (ती) कार)—प्रतिक्रिय, (वि०) १ असाध्य । २ अवाधित । बेरोक टोक ।—प्रतिघ, (= निष्प्रतिघ) (वि०) बेरोकटोक । अवाधित ।—प्रतिद्वन्द्व, (= निष्प्रतिद्वन्द्व) (वि०) १ अज्ञात शत्रु । जिसका कोई विरोधी न हो । २ वेजोड़ ।—प्रतिभ, (= निष्प्रतिभ) (वि०) १ प्रतिभाहीन । चमक जिसमें न हो । २ जिसके प्रतिभा का अभाव हो । जो हाज़िरजवाब या प्रत्युत्पन्नमति न हो । कुंद ज़हल । मूढ़ । ३ विरक्त । उदासीन ।—प्रतिभान, (= निष्प्रतिभान) (वि०) १ भीर । डरपोक ।—प्रतीप, (= निष्प्रतीप) (वि०) सामने देखने वाला । पीछे न मुड़ने वाला ।—प्रत्यूह, (= निष्प्रत्यूह) (वि०) अवाधित । बेरोकटोक ।—प्रपञ्च, (= निष्प्रपञ्च) (वि०) जो प्रपञ्ची या छली न हो । ईमानदार ।—प्रभः, (निष्प्रभ या निःप्रभ) (वि०) १ जिसमें आब या चमक न हो । २ अशक्त । ३ उदास । अस्पष्ट । अन्धकारमय ।—प्रमाणक, (= निष्प्रमाणक) (वि०) विना अधिकार या प्रमाण के ।—प्रयोजन, (= निष्प्रयोजन) (वि०) १ विना प्रयोजन के । २ निराधार । निष्कारण । ३ निरर्थक । बेकार । ४ अनावश्यक । बेज़रूरत ।—प्रयोजनम्, (= निष्प्रयोजनम्) (अव्यय०) विना कारण । अकारण । विना किसी उद्देश्य के ।—प्राण, (= निष्प्राण) (वि०) मृत । मरा हुआ ।—फल, (= निष्फल) (वि०) जिसका कोई फल न हो । फलहीन । (अलंका०) १ असफल । नाकामियाव । २ निरर्थक । व्यर्थ । ३ बाँस । जिसमें फल न लगे । ४ अर्थशून्य । ५ बीज रहित । नपुंसक ।—फला, —फली, (= निष्फला, निष्फली) (स्त्री०) स्त्री जिसकी उख गर्भ धारण करने योग्य न रही हो ।—फेन,

(= निष्फेन) (वि०) फेन रहित ।—शब्द, (= निःशब्द) (वि०) जो शब्दों द्वारा प्रकट न करे । जो सुनाई न पड़े । (निःशब्द रोदितुमारने)—शलाक, (निःशलाक) (वि०) एकाकी । अकेला । एकान्ती । “अरण्ये निःशलाके वा संत्रयेद्विभावितः ।”—शेष, (= निःशेष) शलाक, (= निःशलाक) (न०) एकान्त स्थल । सुनसान जगह ।—शेष, (= निःशेष) (वि०) विना वचन के । सम्पूर्ण । पूरा । समूचा । नितान्त ।—शोध्य, (निःशोध्य) (वि०) धोया हुआ । साफ किया हुआ ।—संशय, (= निःसंशय) (वि०) १ निश्चित । विलाशक । २ निस्सन्देह । जो आशंका न करे ।—सङ्ग, (निःसङ्ग) (वि०) १ जो किसी में अनुरक्त न हो । उदासीन । २ संन्यासी । असम्बद्ध । पृथक् किया हुआ । ३ अवाधित । बाधा शून्य ।—सङ्गम्, (= निःसङ्गम्) निस्स्वार्थ भाव से ।—संज्ञ, (निःसंज्ञ) (वि०) बेहोश । मूर्छित ।—सत्त्व, (= निःसत्त्व) (वि०) १ स्फूर्ति हीन । निर्बल । २ नपुंसक । ३ नीच । ओछा । कमीना । ४ अस्तित्वहीन । ५ प्राणधारियों से रहित ।—सन्तति, (= निःसन्तति)—सन्तान, (= निःसन्तान) (वि०) वे औलाद । जिसके कोई सन्तान न हो ।—सन्दिग्ध, (= निःसन्दिग्ध) —सन्देह (= निःसन्देह) (वि०) निस्संशय । जिसको सन्देह या शक न हो ।—सन्धि, (= निःसन्धि, निस्सन्धि) (वि०) जिसमें ऐसी कोई ग्रन्थि या गाँठ न हो जो दिखलायी पड़े । गलन । सघन ।—सपत्न, (= निःसपत्न) (वि०) १ जिसका कोई शत्रु या प्रतिद्वन्द्वी न हो । २ जो सर्वथा एक ही का हो । ३ अज्ञात शत्रु ।—सर्म, (= निःसर्म) (अव्यय०) १ वे ऋतु का । ठीक समय पर नहीं । २ दुष्टता से ।—संपात, (= निःसंपात) (वि०) मार्ग न देने वाला । अवरुद्ध मार्ग ।—सम्पातः (= निःसम्पातः) (पु०) अर्द्धरात्रि का अन्धकार । आधीरात की अंधियारी । घनान्धकार ।—संवाध, (= निःसंवाध) (वि०) सङ्कीर्ण नहीं । प्रशस्त । बड़ा ।

मसार (-नि ससार) (वि०) १ रत्नहीन ।
निस्सार २ निष्कम्मा । सीम (= नि साय)

—सीमन्. (= निःसीमन्) (वि०) जो नापा
न जा सके । सीमारहित । असीम । —स्नेह.

(= निःस्नेह) (वि०) १ शुष्क । २ तटस्थ ।
उदासीन । ३ जिससे कोई प्यार न करता हो ।

जिसकी कोई देखरेख न रखता हो । —स्पन्द,
(= निःस्पन्द) (वि०) गतिहीन । दृढ़ । —

स्पृहः, (= निःस्पृहः) १ कामनाशून्य । २
लापरवाह । तटस्थ । ३ सन्तुष्ट । जो स्पृहावान वा

ईर्ष्यालु न हो । ४ माँसरिक बंधनों से मुक्त । —
स्व, (= निःस्व) (वि०) निर्धन । गरीब ।

—स्वादु, (= निःस्वादु) (वि०) फीका ।
निर्गर्गः (पु०) १ वक्शना । दान देना । भेंट करना ।

दे डालना । २ दान । ३ मलमूत्र । ४ त्याग ।
अधिकार त्याग । ५ रचना । सृष्टि —ज,—

सिद्ध, (वि०) जन्म से । स्वाभाविक । —भिन्न,
(वि०) स्वभाव से पृथक् । —विनीत, (वि०)

१ स्वभाव से विवेकी । बुद्धिमान् या दूरदर्शी । २
स्वभाव से सदाचारी ।

निर्गर्गः (पु०) }
निर्गर्गः (अव्यय०) } स्वभाव से । स्वाभाविक ।

निसारः (पु०) समूह ।
निसूदन (व० कृ०) } हिंसा करना । वध करना ।

निसूदनम् (न०) }
निसृष्ट (व० कृ०) १ सौंपा हुआ । दिया हुआ ।

वक्शा हुआ । २ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । ३
निकाळा हुआ । बिदा किया हुआ । ४ आज्ञा दिया

हुआ । ५ मध्य । बीचोबीच । —अर्थ, (वि०)
वह जिसे किसी विषय का प्रबन्ध सौंपा गया हो ।

—अर्थः, (पु०) १ एलची । एक राजा का प्रति-
निधि जो दूसरे राजा के दरबार में रहै । २ दूत ।

गुमास्ता । आमसुल्तार ।
निस्तरणम् (न०) १ निस्तार । छुटकारा । उद्धार ।

२ पार जाने की क्रिया । ३ उपाय ।
निस्तरह्यं (न०) वध । हत्या ।

निस्तारः (पु०) १ पार होने की क्रिया । २ पिंड
बुझाने की क्रिया । छुटकारा । बचाव । ३ मोक्ष ।

४ ऋण से छुटकारा । ५ उपाय । जरिया ।
निस्तीण (व० कृ०) १ छूटा हुआ । मुक्त । २ जो

तथा पार कर चुका हो ।
निस्तोदः (पु०) १ डंक । काँटा । २ पीड़ा । व्यथा ।
दर्द ।

निस्पन्दः (पु०) प्रकम्पन । गति । धड़कन ।
निस्यन्दः } (पु०) १ चूना । टपकना । बहना ।
निस्यन्दः } उमड़ कर बहना । २ रस । ३ बहाव ।

टपकने वाला रस ।
निस्यन्दिन् } (वि०) टपकने वाला । उमड़ कर बहने
निस्यन्दिन् } वाला ।

निक्रवः } (पु०) १ चरमा । सोता । २ चाँवलों
निलवः } का माँड़ ।

निस्वनः }
निस्वानः } (पु०) कोलाहल । शोर ।

निहत (व० कृ०) १ मारा हुआ । वध किया हुआ ।
२ जमा हुआ । गड़ा हुआ । ३ भक्तमान ।
असुराणी ।

निहननं (न०) वध । हत्या ।
निहवः (पु०) बुलाहट । पुकार ।
निहार देखो नीहार ।

निहिंसनम् (न०) हत्या । वध ।
निहित (व० कृ०) १ स्थापित । रखा हुआ । जमा
किया हुआ । लगाया हुआ । ४ बीच में धुसेड़ा
हुआ । गड़ा हुआ । ५ भाण्डार में जमा किया
हुआ । ६ गम्भीर स्वर से कहा हुआ । ७ पकड़ा
हुआ । ८ रखा हुआ ।

निहीन (वि०) कमीना । नीच । पापी ।
निहीनः (पु०) नीच मनुष्य । कमीना आदमी । नीच
कुलोत्पन्न मनुष्य ।

निहवः (पु०) १ छिपाव । दुराव । अस्वीकृति ।
इंकार । २ रहस्य । ३ अविश्वास । सन्देह ।
सन्दिग्धता । ४ दुष्टता । ५ प्रायश्चित्त । ७ बहाना ।
मिस ।

निहुतिः (स्त्री०) १ इंकार । किसी बात की जान-
कारी को छिपा डालना । २ कपटाचरण । ३
छिपाव । दुराव ।

नी (धा० उभय०) [नयति—नयते, नीत] १ ले
जाना । मार्ग प्रदर्शन करना । लाना । पहुँचाना ।

लेना । करवाना । २ रहनुमा करना । निर्देश देना । शासन करना ।

नी (पु०) नेता । पथप्रदर्शक । जैसे सेनानी । अग्रणी । आग्रणी "आदि ।

नीका (स्त्री०) खेतों की सिचाई के लिये पानी का बंबा या नहर ।

नीकाश (वि०) देखो ।—“निकाशः” ।

नील (वि०) १ नीला । छोटा । थोड़ा । कम । सजाकर । बोना । २ निम्नवर्ती । निम्नपदस्थ । ३ मंद । गम्भीर । (स्वर) ४ कमीना । छद्म । नीच । दुष्ट । सब से गया बीता । ५ निकम्मा । तुच्छ ।—गा, (स्त्री०) नदी ।—भोज्यः, (पु०) पलायन । प्याज ।—योनिन्, (वि०) अकुलीन । निम्न जाति में उत्पन्न ।—वज्रः, (पु०)—वज्र, (न०) वैक्रान्त नामक रत्न ।

नीचका } (स्त्री०) सर्वोत्तम गौ ।
नीचिका }
नीचिकी }

नीचकिन् (पु०) १ किसी वस्तु का सर्वोच्चभाग । २ बैल का सिर । ३ अच्छी गौ का रखैया ।

नीचा (स्त्री०) सर्वोत्तम गौ ।

नीचकैस् } (अव्यया०) १ नीचा । नीचे की ओर ।
नीचैस् } तले । भीतर । २ झुककर प्रणाम । ३ कोमलता से । धीरे से । ४ मन्द स्वर से । दबी जवान से । ५ छोटा । ह्रस्व । बोना । (पु०) एक पर्वत का नाम ।—गतिः, (स्त्री०) धीमा क्रम । मंद चाल ।—मुख, (वि०) नीचे मुख किये हुए ।

नीडः (पु०) } १ पत्नी का घोंसला । २ शय्या ।
नीडम् (न०) } पलंग । ३ भीटा । मँद । गुफा ।
४ किसी गाड़ी का अंदरूनी हिस्सा । ५ स्थान । जगह । रहने का स्थान । विश्राम स्थल ।—उद्भवः, (पु०)—जः, (पु०) पत्नी ।

नीडकः (पु०) १ पत्नी । २ घोंसला ।

नीत (व० क०) १ लाया गया । पहुँचाया गया । २ पाया गया । प्राप्त हुआ । उपलब्ध । ३ व्यय किया गया । गुजरा हुआ । बीता हुआ । ४ मली भौंति आचरित किया हुआ ।

नीट (न०) १ धनदौलत । २ अनाज । नाज ।

नीतिः (स्त्री०) १ पथप्रदर्शन । परिचालन । अनुशासन । २ चालचलन । अपना निज का चालचलन । ३ शील । भव्यता । शौचिव्य । उपयुक्तता । समीचीनता । ४ राजनीति । विज्ञता । विनयकारिता । सम्मार्ग । ५ पद्धति । धारा । युक्ति । उपाय । हिकमत । ६ राजनीति । राज्य की रक्षा के लिये काम में लायी जाने वाली युक्ति । राजाओं की चाल जो वे राज्य की प्राप्ति अथवा रक्षा के लिये चलते हैं । ७ आचारपद्धति । लोक या समाज के कल्याण के लिये निर्दिष्ट किया हुआ । आचार व्यवहार । ८ प्राप्ति । उपलब्धि । ९ दान । भेंट । चढ़ावा । १० सम्बन्ध । सहारा ।—कुशल, (वि०)—ज्ञ, (वि०)—लिप्ता, (वि०)—विद्, (वि०) राजनीति का जानने वाला ।—घोषः, (पु०) वृहस्पति की गाड़ी का नाम ।—दोषः, (पु०) नीति सम्बन्धी वृत्ति या भूल ।—बीजं, (न०) षडयंत्र का उद्गमस्थल ।—व्यतिक्रमः, (पु०) १ राजनीति या सामाजिक नीति के नियमों को तोड़ना । २ आचार पद्धति में भूल । नीति में भूल ।—शास्त्रं, (न०) १ वह शास्त्र जिसमें देश काल और पात्र के अनुरूप व्यवहार करने के नियमों का निरूपण किया गया हो । २ वह शास्त्र जिसमें मनुष्यसमाज के हित के लिये देश काल और पात्र के अनुसार आचार व्यवहार तथा प्रवन्ध एवं शासन का विधान हो ।

नीधम् } (न०) १ छप्पर या छत की ओलती । २
नीधम् } वन । जंगल । ३ पक्षियों का व्यास या चक्कर ।
४ चन्द्रमा । ५ रेवती नक्षत्र ।

नीपः (पु०) १ पहाड़ की तलहटी । २ कदम्ब वृक्ष । ३ अशोक वृक्ष । ४ राजवंश विशेष ।

नीपं (न०) कदम्ब पुष्प ।

नीरम् (न०) १ जल । पानी । २ रस । अर्क । कोई द्रव पदार्थ ।—जम्, (न०) १ कमल । २ मोती । ३ जलजीव ।—दः, (पु०) बादल ।—धिः,—निधिः, (पु०) समुद्र ।—रुहं, (न०) कमल ।

नीराजन } (स्त्री०) अश्वों का मार्जन । यह एक
नीराजना } सैनिक एवं धार्मिक कृत्य था, जिसे राजा लोग, शत्रु पर चढ़ाई करने के पूर्व आश्विन साम में

किया करत थे । २ किन्ही देवत की आरती
उत्तरना दीपदान । आरती ।

नील (वि०) [स्त्री०—नीला, नीली] १ नीला । २
नील से रंगा हुआ ।—अङ्गः, (पु०) सारस
पक्षी ।—अञ्जनम्, (न०) सुर्मा ।—अञ्जना,
—अञ्जसा, (स्त्री०) विजली । विद्युत ।—
अञ्जः, —अम्बुजं, —अम्बुजम्भनम्, (न०) —
उत्पलं, (न०) नील कमल ।—अम्भः, (पु०)
कालीघटा ।—अम्बरः, (वि०) नीलवस्त्र पहिने
हुए ।—अम्बरः, (पु०) १ राक्षस । दानव । २
शनिग्रह । ३ जलराम ।—अरुम्भः, (पु०) तड़का ।
भोर ।—अश्मन्, (पु०) नीलम रत्न ।—
कराठः, (पु०) १ मयूर । मोर । २ शिव । ३
नीलकण्ठ । ४ अलकुक्कुट विशेष । ५ खज्जन पक्षी ।
६ गौरैया । ७ मधुमक्षिका ।—केशी, (स्त्री०)
नील का पौधा ।—ग्रीवः, (पु०) शिव जी ।—
छदः, (पु०) १ बुहारे का पेड़ । २ गरुड़ ।—
तरुः, (पु०) ताड़वृक्ष ।—तालः, (पु०)
तमाल वृक्ष ।—पङ्कः, (पु०) —पङ्कम्, (न०)
अन्धकार ।—पटलं (न०) काली परदा या
काला उधार । अंधे की आँख पर का काला जाला ।
—पिच्छः, (पु०) बाज पक्षी ।—पुष्पिका,
(स्त्री०) १ नील का पौधा । २ अलसी । -
भः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ बादल । ३
मधुमक्षिका ।—मणिः, —रत्नं, (न०) नीलम ।
—मीलिकः, (पु०) जुगम् । खद्योत ।—
मृत्तिका, (न०) पुष्पकसीस । । कालीमिट्टी ।
—राजिः, (स्त्री०) कालिमा की रेखा ।
चनान्धकार ।—लोहितः, (पु०) शिव जी

लिलकं (न०) १ काला नौच । २ नीला ईस्पात
लोहा । बर्तलौह । बीदरी लोहा । ३ नीलाथोथा ।
तृतीय ।

लेलकः (पु०) काले रंग का घोड़ा ।

लेलंगुः, नीलङ्गुः (पु०) } एक कीट विशेष ।
लेलंगुः, नीलङ्गुः (पु०) }

ल्लिका (स्त्री०) १ नील का पौधा ।

लिमन् (पु०) नीला रंग । कालापन । नीलापन ।

नीली, स्त्री०) १ नील का पाधा । २ नीले रंग की
मक्खी । २ राग विशेष ।—रागः, (वि०)
अनुराग में हृद ।—रागः, (पु०) १ प्रेम जो नील
के रंग की तरह पक्का हो या जो कभी न छूटे ।
अटल प्रेम । २ पक्केमित्र ।—सन्धानं, (न०)
नील का खमीर ।

नीवरः (पु०) १ व्यवसाय । व्यापार । २ व्यवसायी ।
३ साधू । संन्यासी । ४ कीचड़ ।

नीवरं (न०) कीचड़ ।

नीवाकः (पु०) १ मैहगी के समय अनाज की बढ़ी हुई
माँग । ३ अकाल । दुष्काल ।

नीवारः (पु०) वे चावल जो बिना जोते बोये अपने
आप उत्पन्न हों । पसाई के चावल । तिथी के
चावल । मुन्यज । मुनियों के खाने का अनाज
विशेष ।

नीविः } (स्त्री०) कमर में लपेटी हुई धोती की वह
नीवी } गाँठ जिसे स्त्रियाँ पेट के नीचे सूत की डोरी
से या बौहों बाँधती हैं । फुड़ुंदी । नारा । हजार-
बंद । २ पूंजी । धारदाना । ३ होड़ । दाँव ।

नीवृत् (पु०) कोई भी आवाद स्थान ।

नीव्र (वि०) देखो नीध्र ।

नीशारः (पु०) १ गर्मकपड़ा । कंबल । २ मसहरी ।
३ कनाल ।

नीहारः (पु०) १ कोहरा । कुहासा । ओस । पान्ना ।
२ झाड़ा । मलमूत्र ।

नु (अन्यथा०) सन्देह । अनिश्चितता-सूचक अव्यय ।
यह सम्भावना और अवश्य के अर्थ में भी प्रयुक्त
होता है ।

नु (धा० पर०) [नौति, प्रशौति, नुत,] प्रशंसा
करना । सराहना करना । तारीफ करना ।

नुतिः (स्त्री०) १ प्रशंसा । तारीफ । बिरदावली । २
पूजन अर्चा ।

नुद् (धा० उभ०) (नुदति, नुदते—नुत्त या नुन्न,
प्रशुदति) १ धक्का देना । हँकना । रेलना ।
ठेलना । २ उत्तेजित करना । बतलाना । आग्रह
करना । ३ हयाना । भगा देना । फेंक देना । ४
भोजना । डालना ।

नूतन } (वि०) १ नया । २ ताज़ा । जवान । ३
नूतन } वर्तमान । प्रचलित । ४ तत्त्वण का । ५ हाल
का । आधुनिक । अद्भुत । विलक्षण । अनौखा ।
अपूर्व ।

नूनं (अव्यया०) १ अवश्य । दरहकीकत । सचमुच ।
२ बहुत कर के ।

नूपुरं (न०) } नेवर । बिड़िया ।
नूपुरः (पु०) }

नृ (पु०) १ नर । मनुष्य । २ मनुष्य जाति । ३ शत-
रंज की गोद या गुद्दी । ४ सूर्य घड़ी की कील । ५
पुल्लिङ्ग शब्द ।—अस्थिमालिनः, (पु०) शिव
जी ।—कपालं, (न०) मनुष्य की खोपड़ी ।—
कैसरिनः, (पु०) नृसिंहावतार ।—जलं, (वि०)
मनुष्य का सूत्र ।—देवः, (पु०) राजा ।—धर्मन्,
(पु०) कुबेर ।—मिथुनं, (न०) मिथुन राशि ।
—मेघः, (पु०) नरमेघ यज्ञ । वह यज्ञ जिसमें
मनुष्य का बलिदान दिया जाता है ।—यज्ञः,
(पु०) पञ्चयज्ञों में से एक ।—लोकः, (पु०)
भूलोक । मर्त्यलोक ।—वराहः, (पु०) विष्णु
का वराह अवतार ।—वाहनः, (पु०) कुबेर ।
—वेधनः, (पु०) शिव ।—शृङ्गं, (न०)
असम्भावना के उदाहरण के लिये मनुष्य के सींग ।
—सिंहः, (पु०) १ मनुष्यों में शेर या उत्तम
पुरुष । २ विष्णु भगवान का चौथा नृसिंहावतार ।
—सेनं, (न०)—सेना, (स्त्री०) मनुष्यों की
फौज ।—सोमः, (पु०) आदर्श मनुष्य । बड़ा
आदमी ।

नृगः (पु०) वैवस्वतमनु के पुत्र महाराज नृग जिन्हें
एक ब्राह्मण के शाप से गिरगट होना पड़ा था ।

नृत (था० पर०) [नृत्यति, प्रणृत्यति, नृत्त]
१ नाचना । इधर उधर घूमना । २ रंगमञ्च पर
अभिनय करना । ३ हावभाव दर्शाना । मटकना ।
खेलना ।

नृतिः (स्त्री०) नाच । नृत्य ।

नृत्तं } (न०) नाच । अभिनय । मूक अभिनय ।
नृत्यं } भँवर । अङ्ग विक्षेप । मटकना ।—प्रियः, (पु०)
शिव ।—शाला, (स्त्री०) नृत्यशाला । नाच-
घर ।—स्थानं, (न०) रंगभूमि । अभिनयस्थान ।
स्टेज ।

नृप } (पु०) राजा ।—नृपध्वजः, (पु०)
नृपति } राजसूय यज्ञ ।—आत्मजः, (= नृपध्वज-
नृपाल } जः,) (पु०) राजकुमार ।—नृपआशीर्षः,

(न०)—नृपमानं, (न०) वह सङ्गीत जो राजा
के भोजन करते समय होता है ।—नृपगृहं, (न०)
राजप्रासाद । महल ।—नृपनीतिः, (स्त्री०) राज-
नीति ।—नृपप्रियः, (पु०) आम का वृक्ष ।—नृप-
लक्ष्मन्, (न०)—नृपलङ्कम्, (न०) राजचिन्ह ।
विशेष कर सफेद छाता ।—नृपशासनं, (न०)
राजाज्ञा ।—नृपसभम्, (न०)—नृपसभा,
(स्त्री०) राजाओं का समारोह ।

नृशंस (वि०) दुष्ट । मलिनचित्त । क्रूर । उपद्रवी ।
कमीना ।

नेजकः (पु०) घोड़ी ।

नेजनम् (न०) धुलाई । सफाई ।

नेतृ (पु०) १ नेता । अग्रग्रा । सञ्चालक । व्यवस्था-
पक । अग्रगन्ता । २ आज्ञा देने वाला । गुरु । ३
प्रधान । मालिक । मुखिया । ४ दण्ड देने वाला ।
५ मालिक । स्वामी । ६ किसी अभिनय का
मुख्यपात्र ।

नेत्रं (न०) १ अग्रुआपन । सञ्चालन । २ नेत्र ।
३ मथानी की रस्ती । ४ बना हुआ रेशमी वस्त्र ।
मिहीन रेशमी कपड़ा । ५ एक वृक्ष की जड़ । ६
वाद्ययंत्र । बाजा । ७ गाड़ी । सवारी । मद्यो की संख्या
६ नेता । १० नक्षत्र । तारा ।—अञ्जनम्, (न०)
आँखों का सुर्मा ।—अन्तः, (पु०) आँख के
कोने का बाहरी भाग ।—अम्बु,—अम्बुसः,
(न०) आँसू ।—आमयः, (पु०) नेत्ररोग
विशेष ।—उत्सवः (पु०) कोई भी मनोहर
वस्तु ।—उपमं, (न०) बादाम ।—कनीनिका,
(स्त्री०) आँख की पुतली ।—कोणः, (पु०)
१ आँख का ढेला । २ फूल की कली ।—गोचर,
(वि०) दृष्टि के भीतर ।—जदः, (पु०) पलक ।
—जं,—जलं,—वारि, (न०) आँसू ।—पर्यन्तः,
(पु०) आँख का कोया या कोना ।—पिशङः,
(पु०) १ नेत्रगोलक । आँख का ढेल । २
बिल्ली ।—मलं, (न०) आँख का कीचड़ ।—
योनिः, (पु०) १ इन्द्र । २ चन्द्रमा ।—रञ्जनम्,
सं० श० कै०—५७

(न०) सुमां ।—रोमन्, (न०) आँख की धिरली या बन्ही ।—वस्त्रं, (न०) धूँ वट विशेष ।
—स्नग्मः, (पु०) आँखों का पथरा जाना ।
आँखों का हिलना झुलना बंद हो जाना ।

नेत्रिकम् (न०) १ पाइप । नली । २ कलछी ।
नेत्री (स्त्री०) १ नदी । २ धमनी । ३ स्त्रीनेता । ४ लक्ष्मी देवी ।

नेदिष्ठ (वि०) अत्यन्त निकट । निकटतम् ।
नेदीयस् (वि०) [स्त्री०—नेदीयसी] निकटतर ।
नेपः (पु०) घर का पुरोहित ।
नेपथ्यम् (न०) १ शृङ्गार । भूषण । २ पोशाक ।
परिच्छद । ३ अभिनयकर्ता की पोशाक । ४ वह स्थान जहाँ नाटक के पात्र अपना रूप भरते हैं । ५ पर्दे के पीछे का स्थान ।—विधानं, (न०) उस स्थान की व्यवस्था जहाँ अभिनयकर्ता अपना रूप भरते हैं ।

नेपालं (न०) ताँबा ।
नेपालः (पु०) भारतवर्ष के उत्तर में स्थित स्वनाम-
ख्यात राज्य विशेष ।

नेपालजा } सिंगरफ ।
नेपालजाता }
नेपालाः (पु०) नेपाल देश के अधिवासी ।
नेपालिका (स्त्री०) सिंगरफ । [फल ।
नेपाली (स्त्री०) जंगली लुहारे का वृक्ष या उसके
नेम (वि०) [कर्ता बहुवचन—नेमे,—नेमाः] आधा ।
नेमः (पु०) १ हिस्ता । २ समय । समय की अवधि ।
ऋतु । ३ सोमा । हृद । ४ हाता । बाढ़ा । ५
दीवाल की नाँव । ६ झल । कपट । दगा । ७
सन्ध्या । शाम । मगढ़ा । सूराल । ८ जड़ ।

नेमिः } (स्त्री०) १ चक्रपरिधि । २ किनारा ।
नेमी } बाढ़ । ३ व्यास । चक्र । ४ वज्र । पृथिवी ।
नेमिः (पु०) तिनिश वृक्ष । तिनार । तिनसुना ।
नेष्ट (पु०) सोमयाग में यज्ञ कराने वाले, जिनकी
संख्या १६ होती है ।

नेष्टुः (पु०) मट्टी का डेला ।
नैःश्रेयस् (वि०) [स्त्री०—नैःश्रेयसी] मोक्ष
नैःश्रेयसिक (वि०) [स्त्री०—नैःश्रेयसिकी] देने
वाला ।

नैस्वं } (न०) धनहीनता । गरीबी । मुहताजी ।
नैःस्वयं }
नैक (वि०) [न + एक] एक नहीं ।—आत्मन्,
(पु०)—रूपः, (पु०)—भृङ्गः, (पु०) पर-
ब्रह्म ।

नैकटिक (वि०) [स्त्री०—नैकटिकी] पड़ोस का ।
पास का । समीपी ।

नैकटिकः (पु०) साधु । भिक्षुक ।
नैकट्यं (न०) समीप्य । समीपता ।
नैकषेयः (पु०) राक्षस । दानव ।
नैकृतिक (वि०) [स्त्री०—नैकृतिकी] १ बेईमान ।
फूठा । २ कमीना । नीच । दुष्ट । ३ धुआ ।
रुखा ।

नैगम (वि०) [स्त्री०—नैगमी,] वेद सम्बन्धी ।
नैगमः (पु०) १ वेद का व्याख्याकार या टीकाकार ।
२ उपनिषद् । ३ युक्ति । उपाय । ४ विवेकपूर्ण
आचरण । ५ नागरिक । व्यापारी । सौदागर ।
महाजन ।

नैघण्टुकम् } (न०) १ वेद का शब्दकोष । वैदिक
नैघण्टुकम् } शब्दों का कोष । २ शब्दकोष ।
नैचिकं (न०) बैल का सिर ।
नैचिकी (स्त्री०) एक उत्तम गौ ।
नैतलं (न०) नरक । पाताल ।—सद्वन्, (पु०)
यम ।

नैत्यं (न०) अनन्तता । सातत्य ।
नैत्यक (वि०) [स्त्री०—नैत्यकी] १ सदैव
नैत्यिक (वि०) [स्त्री०—नैत्यिकी] अनुष्ठेय ।
नियमित रूप से अनुष्ठेय । ३ अनिवार्य । जो टल
न सके ।

नैदाघः (पु०) ग्रीष्म ऋतु । गर्मी का मौसम ।
नैदानः (पु०) शब्द । व्युत्पत्ति-तत्त्व ।
नैदानिकः (पु०) निदान शास्त्र विशारद ।
नैदेशिकः (पु०) आज्ञापालन करने वाला । नौकर ।
नैपातिक (वि०) [स्त्री०—नैपातिकी] अकस्मात्
या दैवसंयोग से वर्णन करने वाला ।

नैपुण्यम् (न०) १ निपुणता । पटुता । चतुर्थ ।
योग्यता । २ बाहुक सामंता । ३ सम्पूर्णता ।
नैभृत्यं (न०) १ लाज । सङ्कोच । विनम्रता । २ रहस्य

नैमत्रणकम् (न०) भोज । दादत ।
 नैमयः (पु०) व्यापारी । व्यवसायी ।
 नैमित्तिक (वि०) [स्त्री०—नैमित्तिकी] १ जो किसी कारण विशेष वश किया जाय । जो निमित्त या कारण उपस्थित होने पर या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिये हो । २ असाधारण । कभी कभी होने वाला ।
 नैमित्तिकम् (न०) १ कारण । २ कभी कभी होने वाला शास्त्रोक्त कर्म ।
 नैमित्तिकः (पु०) ज्योतिषी । फरिश्ता । ईश्वरदूत ।
 नैमिष (वि०) [स्त्री०—नैमिषी] एक निमिष या क्षण रहने वाला । क्षणिक । विनश्वर ।
 नैमिषं (न०) नैमिषारण्य तीर्थ ।
 नैमेयः (पु०) विनिमय । बदलाँअल ।
 नैयग्रोमं (न०) गूलर का फल । गूलर का वृक्ष ।
 नैयत्यं (न०) संयम । जितेन्द्रियत्व ।
 नैयमिक (वि०) [स्त्री०—नैयमिकी] नियमित । नियमानुसार ।
 नैयमिकं (न०) नियमानुसारता ।
 नैयायिकः (पु०) न्यायशास्त्र का जानने वाला । न्यायवेत्ता ।
 नैरन्तर्यं } (न०) निरन्तरत्व । अविच्छेदत्व ।
 नैरन्तर्यम् }
 नैरपेक्ष्यम् (न०) निरपेक्षता । तटस्थता । उदासीनता ।
 नैरयिकः (पु०) नरकवासी ।
 नैरर्थ्यम् (न०) निरर्थकता । ऊटपटाँग । वाहियाद ।
 नैराश्रयम् (न०) १ नाउम्मेदी । निराशा का भाव । २ आशा या इच्छा का अभाव ।
 नैरुक्तः (पु०) शब्द-व्युत्पत्ति-तत्त्वज्ञ ।
 नैरुज्यम् (न०) स्वास्थ्य । तंदुरुस्ती ।
 नैर्ऋतः (पु०) राक्षस । दैत्य ।
 नैर्ऋती (स्त्री०) १ दुर्गादेवी । २ दक्षिण-पश्चिम का कोना । उपदिशा विशेष ।
 नैर्गुण्यम् (न०) १ गुणों का अभाव । २ उत्तमता का अभाव । अच्छे गुणों का अभाव ।
 नैर्घृण्यम् (न०) निष्ठुरता । नृशंसता । क्रूरता ।
 नैर्मल्यम् (न०) सफाई । शुद्धता । निष्कलङ्कता ।
 नैर्लज्ज्यम् (द०) निर्लज्जता । वेशमी ।

नैल्यम् (न०) नीलापन । नीलारंग ।
 नैविज्यं } (पु०) सामीप्य । सकुड़न ।
 नैविज्यम् } वनिष्ठता । धवापन ।
 नैवेद्यम् (न०) भोज्य पदार्थ जो किसी देवता के अर्पण किया जाय ।
 नैश (वि०) [स्त्री०—नैशी] } १ रात
 नैशिक (वि०) [स्त्री०—नैशिकी] } सम्बन्धी । २ रात में दिखलाई पड़ने वाला ।
 नैश्चल्यं (न०) अचलता । अचलता ।
 नैश्चित्यम् (न०) १ दृढ़ विचार । पक्का इरादा । निश्चय । २ निश्चित कृत्य या रस्म ।
 नैषधः (पु०) १ निषध देश का राजा । २ यह उपाधि इस देश के राजाओं में से राजा नल की थी । ३ निषध-देश-वासी ।
 नैष्कर्म्यं (न०) १ सुस्ती । अकर्मण्यता । २ कर्म या कर्मफलों से छेका हुआ या सुस्तसना । ३ समाधि द्वारा प्राप्त मोक्ष ।
 नैष्किक (न०) [स्त्री०—नैष्किकी] वस्तु जिसका मूल्य एक निष्क हो ।
 नैष्किकः (पु०) १ टकसालघर का व्यवस्थापक ।
 नैष्ठिक (वि०) [स्त्री०—नैष्ठिकी] १ अन्तिम । अखीर । २ निर्णीत । स्पष्ट । पक्का । ३ निर्दिष्ट । दृढ़ । सतत । ४ सर्वोच्च । पूर्ण । ५ पूर्णतया परिचित या अवगत । ६ सदैव के लिये त्यागने और शुद्ध रहने का व्रत धारण करने वाला ।
 नैष्ठिकः (पु०) वह ब्रह्मचारी जिसने आजन्म के लिये ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया हो और जो अपने गुरुदेव की सेवा में रहै ।
 नैष्ठुर्यम् (न०) क्रूरता । नृशंसता । निष्ठुरता ।
 नैष्ठ्यं (न०) दृढ़ता । मजबूती । स्थिरता । स्थिरत्व ।
 नैसर्गिक (वि०) [स्त्री०—नैसर्गिकी] स्वाभाविक । प्रकृतिजन्य । परंपरागत ।
 नैस्त्रिंशकः (पु०) तलवारबहादुर । खज्जधारी ।
 नो (अव्यया०) (न + उ) नहीं । न ।
 नोचेत् (अव्यया०) नहीं तो । अन्यथा ।
 नोदनम् (न०) प्रचोदना । प्रेरणा । गोदना । चलाने या हाँकने का काम ।
 नोधा (अव्यया०) नौ हिस्सों में । नौगुना ।

नौ (स्त्री०) १ जहाज पोत नौका । नाव । बेड़ा ।
२ एक नक्षत्र का नाम —आराह [= नावा
राहः] (पु०) १ नाव का यात्री । २ मात्मी । —कर्ण-
धारः, (पु०) डोंड़ खेते वाला । —कर्मन्, (न०)
मात्मी का पेशा । —चरः, —जोषिकः, (पु०)
मल्लाह । मात्मी । —तार्य, (वि०) जहाज या
नाव में बैठ कर जाने योग्य । —दण्डः, (पु०)
डोंड़ । —यायिन्, (वि०) यात्री । —वाहः,
(पु०) नाव चलाने वाला । जहाज का बड़ा
अफसर या कप्तान । —व्यसनं, (न०) जहाज
का नष्ट होना । जहाज का नाश । —साधनं,
(न०) जहाजी बेड़ा । नौसेना । जलसेना ।
नौका (स्त्री०) झोटी नाव । बोट । —दण्डः, (पु०)
डोंड़ ।

न्यक् (अव्यय०) एक अव्यय जो तिरस्कार, अधः-
पात, अपमान का अर्थवाची है । —कारणं,
(न०) —कारः, (पु०) अधःपात ।
अपमान । हतक । —भावः, (पु०) अधःपात ।
तिरस्कार । अपकृष्ट बनाने वाला । अधीनताई ।
मातहत्य । —भावित, (वि०) १ तुच्छ । अधः-
पतित । अपमानित । २ अपमानित ।

न्यक्त (वि०) नीच । अपकृष्ट । दुष्ट । कमीना ।

न्यक्तं (न०) सूराल ।

न्यस्तः (पु०) १ मैला । २ पशुराम ।

न्यग्रोधः (पु०) १ वटवृक्ष । बरगद का पेड़ । २
लंबाई का एक नाप । उतनी लंबाई जितनी कि
दोनों हाथों के फैलाने से होती है । पुरसा । —
परिमण्डला, (स्त्री०) उत्तमाक्षा । उत्तमाक्षी
का लक्षण इस प्रकार है :—

स्तभौ तु द्वित्वौ यस्या निगम्ये च विशाकता ।

अध्वे सोडा भवेद्भावा न्यग्रोधपरिमण्डला ।

अन्यत्च

“हर्वाकाहनिव यस्या न्यग्रोधपरिमण्डला ।”

न्यङ्कुः (पु०) बारहसिंहा विशेष ।

न्यच् } (वि०) [स्त्री० —नीची] १ नीचे फेंका या
न्यञ्ज् } मुड़ा हुआ । २ मुँह के बल पड़ा हुआ ।
३ नीच । तुच्छ । कमीना । दुष्ट । ४ सुस्त ।
काहिल । ५ समूचा । समस्त ।

न्यञ्जनम् } (न०) १ मोड़ । मुमाव । २ लुक्ने का
न्यञ्जनम् } स्थान । झिपने की जगह । ३ खुखाल
गुफा ।

न्ययः (पु०) १ हानि । नाश । २ बरबादी ।

न्यसनम् (न०) १ धरोहर । न्यास । २ सौंपना । दे
देना ।

न्यस्त (व० कृ०) १ नीचे फेंका हुआ । फेंका
हुआ । खाला हुआ । २ रखा हुआ । धरा हुआ ।
३ स्थापित किया हुआ । बैठाया या जमाया
हुआ । ४ चुन कर सजाया हुआ । ५ धरोहर रखा
हुआ । अमानत रखा हुआ । हस्तान्तरित किया
हुआ । ६ झोड़ा हुआ । हटाया हुआ । त्यागा
हुआ । —दण्डः, (वि०) सजा से बरी किया
हुआ । —दण्डः (पु०) संन्यासी । —देह,
(पु०) मृत । मरा हुआ । —शस्त्र, (वि०)
१ वह जिसने अपने हथियार रख दिये हों । २
निरस्त्र । जिसके पास अपने बचाव के लिये कुछ
भी न हो । ३ जो हानिकारक न हो ।

न्याक्यं, (न०) मुना हुआ चावल ।

न्यादः (पु०) भोजन । आहार ।

न्यायः (पु०) १ पद्धति । तौरतरीक़ा । रीति ।
नियम । ढब । २ योग्यता । औचित्य । उपयुक्तता ।
३ आईन । इंसान । पुण्य । खरापन । धार्मि-
कता । ४ ईमानदारी । ५ मुकदमा । कानूनी कार-
वाई । ६ फौजदारी । कानून के अनुसार सज़ा । ७
राजनीति । पालिसी । सुशासन । ८ सादर्य ।
समानता । ९ प्रसिद्ध नीतिवाक्य । प्रसिद्ध कहा-
वत । फबती हुई नज़ीर । उपयुक्त उदाहरण ।
उदाहरण । १ वैदिकस्वर विशेष । १० सार्व-
जनिक नियम । ११ हिन्दूषडदर्शनों में से एक,
जिसके आविष्कारकर्ता गौतम ऋषि थे । १२
न्यायशास्त्र । १३ सबसब तर्क जिसमें प्रतिज्ञा, हेतु,
उदाहरण, उपनय और निगमन ये पाँच अवयव
होते हैं । १४ विष्णु । —पथः, (पु०) सीमाँला
शास्त्र । —वर्तिन्, (वि०) सदाचारी । —
वादिन्, (वि०) वह जो ठीक और न्यायोचित
बात कहता है । —वृत्तं, (न०) अक्छा चाल-
चलन । पुण्य । सद्गुण । —शास्त्रं, (न०)

१ न्याय दर्शन । २ न्याय दर्शन का विज्ञान ।—
सारिणी । उचित अथवा उपयुक्त आचरण या
व्यवहार ।—सूत्रं (न०) न्याय शास्त्र के सूत्र ।
न्यायतः (अव्यया०) १ न्याय से । ईमान से । ठीक
ठीक रीति से । धर्म और नीति के अनुसार । २
न्यायपूर्वक । सबाई से ।

न्यायिन् (वि०) १ योग्य । उचित । ठीक ।
२ युक्तिसिद्ध । न्यायसङ्गत । युक्तियुक्त । सङ्गत ।
न्याय्य (वि०) १ ठीक । उचित । उपयुक्त । न्याय-
सङ्गत । २ साधारण चलन के अनुसार ।

न्यास } (वि०) न्यस के अन्तर्गत देखो ।
न्यासिन् }

न्यूल, न्युल्ल } (वि०) १ मनमोहक । मनोहर ।
न्यूल, न्युल्ल } २ म्रिय । सुन्दर । ३ उचित । ठीक ।

न्युच् (धा० पर०) १ स्वीकार करना । राज्ञी
होना । रजामंद होना । २ हर्षित होना । प्रसन्न
होना ।

न्योचनी (स्त्री०) चाकरानी । टहलुनी ।

न्युञ्ज् (धा० परस्मै०) मोड़ना । ढवाना । फेंकना ।

न्युञ्ज (वि०) १ नीचे को मोड़ा या झुकाया हुआ ।

मुँह के बल पड़ा हुआ । औंध पड़ा हुआ । २
झुका हुआ । टेढ़ा । ३ कर्मपृष्ठवत् । ४ कुबड़ा ।—
खङ्गः, (पु०) खोंड़ा । एक प्रकार की तलवार ।
न्युञ्जं (न०) १ पात्र विशेष जो श्राद्धकर्त्तृ के
काम में आता है । २ कमरख फल ।

न्युञ्जः (पु०) १ न्यग्रोधवृक्ष । वरगढ़ का पेड़ । २
कुशनिर्मित श्रुवा ।

न्यून (वि०) १ कम । थोड़ा । अल्प । २ दागी ।
घटिया । मुहताज़ । ३ कमी । ४ ऐवी (अंग से)
५ नीच । ओछा । कमीना । दुष्ट ।—अङ्ग, (वि०)
विकलाङ्ग । अङ्गहीन ।—अधिक, (वि०) कमी-
वेश । असमान —धो, (वि०) अज्ञानी
मूर्ख ।

न्यूनं (अव्यया०) कम । थोड़े अंश में ।

न्यूनयति } (क्रि०) कम करना । घटाना ।
न्यूनीकृः }

न्योकस (वि०) [वैदिक] दिव्यधाम में रहने
वाला ।

न्योजस् (वि०) टेढ़ा । (आलं०) दुष्ट । बदमाश ।

प

प, संस्कृत या नागरी वर्णमाला का इक्कीसवाँ व्यंजन है
और अन्तिम वर्ग का प्रथम वर्ण है । इसका उच्चा-
रण ओठ से होता है । अतएव शिष्टाकार ने इसे
ओष्ठ्य माना है । इसके उच्चारण में दोनों ओठ
मिल जाते हैं; अतएव यह स्पर्शवर्ण है । इसके
उच्चारण के लिये विवार, श्वास, घोष और अल्प-
प्राण नामक प्रयत्न का व्यवहार किया जाता है ।

प (वि०) १ पीने वाला । जैसा “पादप” । २ रक्षक ।
शासक । अभिभावक । यथा गोप, नृप, चित्तिप ।

पः (पु०) १ बायु । पवन । २ पत्र । पत्ता । ३ अंडा ।

पक्कणः (पु०) चाण्डाल या बर्बर का झोंपड़ा ।

पकि } (वि०) पका हुआ । दढ़ ।
पक्व }
पक }

पक्कशः (पु०) एक बर्बर जाति का नाम । चाण्डाल ।
पक्त् (धा० पर०) [पक्त्ति, पक्त्तयति—पक्त्तयते]
१ लेना । पकड़ना । २ स्वीकार करना । ३ तरफदारी
करना । पक्त्पात करना ।

पक्त्तः [पक्त् + अक्त्] १ बाजू । डाना । २ तीर के दोनों
ओर लगे हुए पर । ३ कंधा । ४ कोख । ५ सेना
का एक बाजू । ६ किसी वस्तु का आधा । ७ पख-
वारा जो १२ दिन का होता है । ८ दल । तरफ ।
ओर । वंश । कुल । ९ किसी दल का अनुयायी ।
१० श्रेणी । समूह । समुदाय । अनुयायियों की
कोई भी संख्या । ११ वादविवाद का एक पक्ष ।
१२ कल्पना । १३ विवादग्रस्त विषय । १४ दो की
संख्या का वाची शब्द । १५ पक्षी । १६ परि-
स्थिति । हालत । १७ शरीर । १८ शरीरावयव ।

१३ राजा के चढ़ने का हाथी । २० सेना । २१ दीवाल । २२ विराध । २३ अत्युत्तर उत्तर का उत्तर । जवाब का जवाब । २४ मिफदार । प्रमाण । मात्रा । २५ पद । स्थान । २६ धारणा । ख्याल । २७ अग्निकुण्ड का वह स्थान जहाँ राख जमा हो । २८ सामीप्य । पड़ोस । २९ कोष्ठक । ३० शुद्धता । सर्वाङ्ग पूर्णिता । ३१ घर । मकान । —अन्तः, (पु०) १ कृष्ण या शुद्ध पक्ष का पन्द्रहवाँ दिन । पूर्णिमा । अमावास्या । २ सेना के पक्षों के छोर । —अन्तरं, (वि०) १ दूसरी तरफ । २ पक्ष । ३ भिन्न कल्पना । —अवसरः, (पु०) पक्षान्त । —आघातः, (पु०) १ पक्षाघात । लकवा जो एक अँग को मारे । २ युक्ति का खण्डन । —आभासः, (पु०) १ सिद्धान्ताभास । २ झूठा अर्जीदावा । —आहारः, (पु०) वह व्यक्ति जो पक्ष (अर्थात् १२ दिवस) में केवल एक दिवस भोजन करे । —उद्ग्राहिन्, (वि०) पक्षपात करने वाला । —गम्, (वि०) उड़ने वाला । —ग्रहणम्, (न०) किसी भी पक्ष का हो जाना । —घातः, (= पक्षाघातः) देखो आघातः । —चरः, (पु०) १ हाथी जो अपने गिरोह से बहक गया हो । २ चन्द्रमा । ३ दहलुआ । चाकर । —चिद्भि, (पु०) इन्द्र । —जः, (पु०) चन्द्रमा । द्वयं, (न०) १ बहस के दोनों पहलू । २ युग्मपक्ष अर्थात् एक मास । —द्वारं, (न०) अप्रधान द्वार । निज दरवाजा । —धर, (वि०) पंखों वाला । पक्ष विशेष में रहने वाला । किसी भी दल विशेष का पक्षपाती या तरफदार । —धरः, (पु०) १ पक्षी । २ चन्द्रमा । ३ पक्षपाती । दलवाला । ४ अपने मुँह से बहका हुआ हाथी । —नाडी, (वि०) पर की क्रलम । —पातः, (पु०) १ किसी भी पक्ष की तरफदारी । २ रुचि । अभिलाषा । अनुराग । स्नेह । ३ किसी पक्ष से अनुराग । तरफदारी । ४ परों का पतन । ५ पक्षपाती । तरफदार । —पातिता, (स्त्री०) —पातित्वं (न०) १ पक्षपात । तरफदारी । २ मैत्री । तीर्थस्व । सहपाठित्व । ३ परों का चालन । —पालिः, (वि०) १ पक्षपाती । तरफदार । २ सहानुभूति

रखने वाला । ३ अनुयायी पुट (पु०) १ प्राइवेट दरवाजा । २ बाजू । डाना । —पोषणः (पु०) कलहवृद्धि । —विगुः, (पु०) कंक पक्षी । —वाहनः, (पु०) पक्षी । —व्यापिन्, (वि०) समूचे तर्क में व्याप्त होने वाला या समूचे तर्क को ग्रहण करने वाला । —हृत, (वि०) शरीर का एक अंश लकवा से मारा हुआ । —हरः, (पु०) पक्षी । —होमः, (पु०) एक पक्षवारे तक होने वाला यज्ञ । धार्मिक विधि या कृत्य जो प्रति पक्ष किया जाय ।

पक्षकः (पु०) १ खिड़की । २ पक्षी । ३ साथी । सहवर्ती ।

पक्षता (स्त्री०) १ तरफदारी । मेल मिलाप । २ किसी एक पक्ष में हो जाना । ३ किसी पक्ष या किसी तर्क को ग्रहण कर लेना । ४ किसी का एक अंग बन जाना । ५ किसी पक्ष का समर्थन करना ।

पक्षतिः (स्त्री०) १ डाने की जड़ । २ शुद्धा प्रतिपदा । पक्षस् (न०) १ डाना । बाजू । २ किसी गाढ़ी के एक बाजू का भाग । ३ किवाड़ का घर । ४ सेना की एक टुकड़ी । ५ अर्द्धमास । ६ नदीतट । ७ तरफ । ओर ।

पक्षालुः (पु०) पक्षी ।

पक्षिणी (स्त्री०) १ मादा पक्षी । चिड़िया । २ दो दिन और एक रात का समय । ३ पूर्णिमा ।

पक्षिन् (वि०) [स्त्री०—पक्षिणी] १ पंखोंवाला । २ पक्षों से सम्पन्न । ३ पक्षपाती । तरफदार । (पु०) १ पक्षी । २ तीर । ३ शिव जी । —इन्द्रः, —प्रवरः, —राजः, (पु०) —राजः, —सिंहः, —स्वामिन्, (पु०) गरुड जी । —कीटः, (पु०) तुच्छ पक्षी । —पतिः, (पु०) सम्पाति गिद्ध । —पानीयशालिका, (स्त्री०) कठोला या कुण्ड जिसमें पक्षियों के लिए जल भरा रहे । —पुङ्गवः, (पु०) जटायु । —बालकः, —शावकः, (पु०) पक्षी का बच्चा । पक्षिशवक । —शाला, (स्त्री०) बोंसला । चिड़ियाघर ।

पक्षिलः (पु०) वास्त्यायन मुनि का नाम ।

पक्षीय (वि०) किसी पक्ष या दल से सम्बन्ध रखने वाला ।

पद्मन् (न०) [पद्म + मन्निन्] १ बरौनी ।
आँख की बन्ही । २ पुष्प की पत्तरी । ३ मिहीन
होरा । होरे का होर । ४ बाजू । डाला । ५ फूल
का एक पत्ता ।—कोपः, —प्रकोपः, (पु०)
बरौनी के आँख में चले जाने से उत्पन्न हुई आँख
की जलन ।

पद्मल (वि०) १ सुन्दर बरौनी वाला । २ बालों
वाला । बालदार ।

पद्म्य (वि०) [पद्मेभ्यः, यत्,] १ एक पाख में
उत्पन्न होने वाला । २ पक्षपाती । ३ एकतरफी ।
एक लंग का । ४ प्रत्येक पक्ष में बदलने वाला ।

पद्म्यः (पु०) पक्षपाती । इकतरफा । अनुयायी । मित्र ।
सहयोगी ।

पंकः, पङ्कः (पु०) १ कीचड़ । काँदा । २ बड़ी
पंकः, पङ्कम् (न०) मात्रा में । ३ दलदल । ४ पाप ।
५ मलहम । उबटन ।—कर्वटः, (पु०) नदी
की बाढ़ से आई हुई मिट्टी ।—कोरः, (पु०)
टिटिहरी नाम की चिड़िया ।—क्रीडः, —क्रीड-
नकः, (पु०) शूकर । सुअर ।—ग्राहः, (पु०)
मकर या मगर । नक । बड़ियाल ।—छिट्, (पु०)
रीठा का वृत्त । निर्मली का वृत्त ।—जं, (न०)
कमल ।—जः, (पु०) सारस पक्षी ।—जन्मन्,
(न०) कमल । (पु०) सारस-पक्षी ।—दिग्ध,
(वि०) कीचड़ में सना हुआ ।—भाज्, (वि०)
कीचड़ में डूबा हुआ ।—भारकः, (वि०) कीच-
ड़हा ।—मण्डुकः, (पु०) दुपटा शङ्ख ।—
—रुह, (न०) —रुह, (न०) कमल ।—वासः,
(पु०) मकरा ।—शूरणः, —सूरणः, (पु०)
कमल की जड़ । मसीड़ा ।

पङ्कजिनी } (स्त्री०) १ कमल का पौधा । २ कमल
पङ्कजिनी } के पौधों का समूह । ३ स्थान जहाँ पुष्पों
की बहुतायत हो । ४ कमेदिनी का कक्षीला दण्ड
या डंडल ।

पङ्कारः } (पु०) १ काई । सिवार । २ बाँध । मेंढा ।
पङ्कारः } पुस्ता । धुस । ३ जीना । सीढ़ी । नसैनी ।

पङ्किन } (वि०) कीचड़ से भरा हुआ । कीचड़ से
पङ्किन } सना हुआ ।

पङ्किल } गंदला । मैला । कीचड़हा ।
पङ्किल }

पङ्किलः } (पु०) नाव । किरती ।
पङ्किलः }

पङ्कजं } (न०) कमल ।
पङ्कजं }

पङ्करुह (न०) पङ्करुह
पङ्करुहम् (न०) पङ्करुहम् } कमल ।

पङ्करुहः } (पु०) सारस पक्षी ।
पङ्करुहः }

पङ्कग्रथ } (वि०) १ कीचड़ में रहने वाला ।
पङ्कग्रथ }

पङ्कणः } (पु०) चायहाल का ओपड़ा ।
पङ्कणः }

पङ्क्ति (स्त्री०) [पङ्क्त्विस्तारे किन्,] १ रेखा ।
पतनार । अवली । २ समूह । समुदाय । दल ।
गिरोह । ३ (एक ही जाति के) आदमियों की
कतार । एक जाति के मनुष्यों की पंगति । ४
वर्तमान या जीवित पीढ़ी । ५ पृथिवी । ६ कीर्ति ।
प्रसिद्धि । ७ पाँच का समूह या पाँच की संख्या ।
८ दस की संख्या या “ पङ्क्तिस्थ ” पङ्क्तिस्थ । ९
पाचन क्रिया । पकाने की क्रिया । १० एक ही जाति
के लोगों का समूह ।—कण्टकः, (पु०) पङ्क्ति-
दूषक ।—ग्रीवः, (पु०) रावण का नाम ।—
चरः, (पु०) समुद्री गिद्ध ।—दूषः, —दूषकः,
(पु०) जातिबहिष्कृत पुरुष जिसके साथ पङ्क्ति
में बैठ कर कोई भोजन न करे या जिसके साथ
बैठ कर भोजन करने से भोजन करने वाले पतित
हो जाँय ।—पावनः, (पु०) वह ब्राह्मण जिसको
यज्ञादि में बुलाना, भोजन कराना और दान देना
श्रेष्ठ माना गया है । ऐसा ब्राह्मण पङ्क्ति को पवित्र
करता है ।—रथः, (पु०) दशरथ का नाम ।

पङ्क्तिका (स्त्री०) पङ्क्ति । पतनार । पंगत ।

पङ्गु } (वि०) [स्त्री०—पङ्गू या पङ्गी] लंगड़ा ।
पङ्गु } लूला । एकटंगा । पंगुल । अपाहज ।

पङ्गुः } (पु०) १ लंगड़ा आवमी । २ शनिग्रह ।—
पङ्गुः } ग्राहः (पु०) १ मकर । नक । २ मकराशि ।

पङ्गुक } (वि०) लंगड़ा । लूला ।
पङ्गुक }

पङ्गुल } (वि०) लंगड़ा । लूला ।
पङ्गुल }

पगुल } (पु०) चादी की तरह सफेद रंग का ।
पडुल }

पच (आ० उभय०) [पचति—पचत, पचाच, पेचे,—अपाक्षीत—अपक्व—पचयति—पचयते, पक्तु,—पक्] १ पकाना । भूनना । साफ करना । (भोजन बनाने के पदार्थों को) २ (ईंटों को) पकाना । जलाना । ३ पचाना (भोजन को) ४ पकाना (फलादि को) ५ पूर्णता को प्राप्त करना । ६ भलना (धानुओं का) ७ अपने लिये भोजन बनाना ।

पक्ति (स्त्री०) (पच्, भावे—किन) १ रसोई बनाने की क्रिया । २ भोजन पचाने की क्रिया । ३ पक जाना । ४ कीर्ति । ह्वाति । ५ भोजन पचने का स्थान । ६ भोज्य पदार्थ से भरी धाली ।—शूलं, (न०) वायुशूल । अपच से उत्पन्न पेट का दर्द ।

पक्तु (वि०) १ रसोई बनाने की क्रिया । २ पेट में भोजन पचने की क्रिया । ३ (फलादि) पकने की क्रिया ।—(पु०) १ जठराग्नि । वैश्वानर । २ पाचक । रसोइया ।

पक्वं (न०) १ अग्निहोत्री गृहस्थ । २ अग्निहोत्र की आग ।

पक्विम (वि०) १ पका । पका हुआ । २ पूर्णता को प्राप्त । ३ पकाया हुआ । ४ (समुद्र का जल औद्य कर निकाला हुआ) निमक ।

पक्क (वि०) १ पका हुआ । भुना हुआ । उबला हुआ । २ हजम किया हुआ । ३ सेका हुआ । जलाया हुआ । ताव दिया हुआ । ४ (फलादि) पका हुआ । ५ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त । सम्पूर्ण । ६ अनुभवी । ७ पका हुआ । (फोड़ा) न भूरा । ८ नष्ट हुआ । नाश होने वाला ।—अतिसारः, (पु०) दस्तों की पुरानी बीमारी ।—अन्न, (न०) पकाया हुआ अन्न या अन्न से बने भोज्य पदार्थ ।—आधानं, (न०)—आशयः, (पु०) पेट । मेदा । तरेट ।—इष्टका, (स्त्री०) पकी हुई ईंट ।—इष्टकाचितम्, (न०) पकी ईंटों की बनी इमारत ।—कृत्, (वि०) १ पका हुआ । २ पूर्णता को प्राप्त । (पु०)

नीम का पेड़ । केश (वि०) भूरे बालों वाला रस (पु०) शराब या आसव ।—वारि, (न०) काँजी । चावल का खट्टा माँड़ ।

पकता (स्त्री०) पकने की या पूर्ण वृद्धि की क्रिया ।

पक्ता (वि०) पका हुआ ।

पच् (वि०) पका हुआ । सेका हुआ ।

पच (वि०) १ पकाना । भूनना । २ (पेट में) पचाना ।

पचः (पु०) } अन्नादि का पचाना ।
पचा (स्त्री०) }

पचकः (पु०) रसोइया ।

पचत (वि०) १ पकाया हुआ । २ पका हुआ ।

पचतः (पु०) १ अग्नि । २ सूर्य । ३ इन्द्र ।

पचतं (न०) बना हुआ भोजन ।—भृजता, (न०) बराबर भूजना व सेकना ।

पचन (वि०) [पच्—करणे ल्युट्] पकाना । साफ करना ।

पचनम् (न०) १ रसोई । २ रसोई बनाने का साधन । बरतन । ईधन । ३ पकजाना । पाल में पकजाना ।

पचपचः (पु०) शिशु जी की उपाधि ।

पचा (स्त्री०) पकाने की क्रिया ।

पचिः (पु०) १ अग्नि । २ रसोई बनाने की प्रक्रिया ।

पचेलिम (वि०) १ शीघ्र पकाना । २ पकने लायक । पकने योग्य । फलादि का पकना, अपने आप या कृत्रिम ढंग से ।

पचेलिमः (पु०) १ अग्नि । २ सूर्य ।

पचेलुकः (पु०) रसोइया । पाचक ।

पंक्तिका } (स्त्री०) छोटी घंटी (बजने की) ।
पञ्क्तिका }

पञ् (वि०) [वैदिक] १ ताकतवर । मजबूत । २ धनवान । धनी ।

पञ्ः (पु०) अँगिरस की उपाधि ।

पंचथुः } (पु०) १ काल । समय । २ कोयल ।
पञ्चथुः }

पंच } (वि०) फैला हुआ । बढ़ा हुआ ।
पञ्च }

पंचन् } [संख्यावाची विशेषण] इसका प्रयोग
पञ्चन् } सर्वत्र बहुवचन में होता है । पाँच ।—अंशः, (पु०) पाँचवा भाग । पाचवाँ ।—अग्निः, (पु०) १ पाँच अग्नि का समूह । २ पंचाग्नि का

समुदाय । (दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य और आवास्य ये यज्ञीय पाँचों अग्नियों के नाम हैं ।) अग्निहोत्री गृहस्थ । २ शरीरस्थ 'च' अग्नि विशेष । ३ इन अग्नियों के सिद्धान्त को जानने वाला ।—अंग, (वि०) पाँच अंगों वाला ।—अंगः, (पु०) १ कछवा । २ पचकल्याण घोड़ा ।—अंगी, (स्त्री०) बोड़े की लगाम ।—अंगम्, (न०) १ पाँच भागों का समुदाय । २ पूजन के पाँच प्रकार । पञ्चोपचार । ३ वृक्ष की पाँच वस्तुएँ । [१ छाल २ पत्ते ३ फूल ४ जड़ ५ फल] ४ तिथिपत्र । (जिसमें ये पाँच बातें हों) यथा— (१ तिथि २ वार ३ नक्षत्र ४ योग और ५ करण)—अङ्गिकम्, (वि०) पाँच अवयवों वाला ।—अंगुल, (वि०) [स्त्री०—अंगुला, अंगुली] पाँच अंगुल बड़ा ।—अंगुलः, (पु०) रेड़ी का रूल ।—अर्जः,—आर्जः, (न०) बकरे के शरीर की पाँच वस्तुएँ ।—अप्सरस्, (न०) एक भील का नाम जिसे माण्डकर्णी ने बनाया था ।—अमृत, (वि०) ५ पदार्थों से बना हुआ ।—अमृतं, (न०) पाँच अर्थों का समूह । पाँच सौटी वस्तुओं का समुदाय जो देवपूजन में प्रयुक्त होती हैं । [दुग्धं च शर्करा चैव घृतं, दधि तथा मधु]—अर्विस्, (पु०) डुधग्रह ।—अवस्थः, (पु०) लाश ।—अविकं, (न०) भेड़ के शरीर की पाँच चीजें ।—अशीतिः, (स्त्री०) ८५ पचासी ।—अहः, (पु०) पाँच दिन का काल ।—आतप, (वि०) पंचाग्नि तापना । (चार-अग्नि और १ सूर्य) एक प्रकार का तप ।—अहः, (पु०) पाँच दिवस का काल ।—आत्मक, (वि०) पाँच तत्वों का बना हुआ । (शरीर जैसे)—आननः,—आस्यः,—मुखः,—चक्षुः, (पु०) १ शिव । २ शेर । ३ सिंहराशि ।—आननी, (स्त्री०) दुर्गा देवी ।—आन्नायः (पु० बहुवचन) पाँचशास्त्र जो शिवजी के पाँच मुखों से निकले बतलाये जाते हैं ।—इन्द्रियं, (न०) पाँच इन्द्रियों का समुदाय ।—इषुः,—वाणः,—शरः, (पु०) कामदेव । (कामदेव के पाँच बाण ये हैं ।—

अरविदमरीकं च घृतं च लवणल्लिङ्गा ।

भीलोत्पलं च पचते पंचवक्त्रस्य आयकाः ।”

अन्यच्च

सम्प्रीहचोन्मादनी च शीघ्रस्तापनस्तथा ।

रत्नमनश्चरति कामन्द पञ्चशलाः प्रकीर्तिताः ।

—उष्मन्, (पु० बहु०) शरीरस्थ पाँच अग्नि ।

—कपाल, (वि०) पाँच प्यालों में बनाया हुआ या भेंट किया हुआ ।—कर्णः, (वि०)

(जानवरों के) कान पर पाँच की संख्या दागना ।

—कर्मन्, (न०) पाँच प्रकार की चिकित्सा ।

[१ वमन, २ रेचन, ३ नस्थ, ४ अनुवासन, ५ निरुह]—कृत्वस्, (अव्यया०) पाँचवार ।

पाँच मरतवा ।—कोणः, (पु०) पचकौना ।—

कोलं, (न०) पाँच जाति का समूह ।—कोपाः,

(पु० बहु०) शरीरस्थ ५ कोष । [पाँच कोष ये हैंः— १ अन्नमयकोष । २ प्राणमयकोष । ३

मनोमयकोष । ४ विज्ञानमयकोष । ५ आत्म-

मयकोष ।]—क्रोशी, (स्त्री०) १ पाँच कोश

का अन्तर । २ बनारस का नाम ।—खट्वं,

खट्वो, (स्त्री०) पाँच खाटों का समुदाय ।—

गवं, (न०) पाँच गौओं का समुदाय ।—गव्यं,

(न०) गौ से उत्पन्न पाँच पदार्थ । [१ दूध,

२ वही, ३ घी, ४ मूत्र, ५ गोबर]—गु (वि०)

पाँच गौ देकर खरीदा हुआ ।—गुण, (वि०)

पाँच गुना ।—गुणाः, (पु०) रूप, रस, गन्ध,

स्पर्श और शब्द ।—गुप्ति, (स्त्री०) ज़मीन ।—

गुतः, (पु०) १ कछवा । २ चार्वाकमत ।—

चत्वारिंश, (वि०) पैतालीसवाँ ।—जनः,

(पु०) १ मनुष्य । मानवजाति । २ एक दैत्य,

जिसे कृष्ण भगवान ने मारा था । ३ जीवात्मा । ४

पाँच प्रकार के जीव [अर्थात् १ देवता, २ मानव,

३ गन्धर्व, ४ नाग और ५ पितृ ।] ५ पाँच वर्ष

यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अत्यज ।—

जनः, (पु०) अभिनयकर्ता । विदूषक । मसखरा ।

ज्ञानः, (पु०) १ बुद्धदेव की उपाधि । २ पाशुपत

सिद्धान्तों का जानकार पुरुष ।—तत्तं, (न०)—

तत्ती (वि०) पाँच बड़ियों का समूह ।—तत्त्वं,

(न०) १ पाँच तत्वों का समूह । [पाँचतत्व—१

पृथ्वी, २ जल, ३ तेजस्, ४ वायु और ५ आकाश]

२ पंचमकार (तांत्रिकों के) [यथा मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन]—तंत्रम्, (न०) एक नीति विषयक संस्कृत का ग्रन्थ जिसमें पाँच अध्याय हैं और जिसमें पाँच नैतिक विषयों का उल्लेख किया गया है ।—तन्मात्रम्, (न०) इन्द्रियों से ग्रहण किये जाने वाले पाँच विषय; यथा शब्द, रस, स्पर्श, रूप और गन्ध ।—तपस्, (पु०) वह साधु जो औष्मन्तु में सूर्याताप में अपने चारों और चार जगहों में आग जला तथा पाँचवें सूर्य के आतप से पंचाग्नि तापता है ।—तयः, (वि०) पाँचगुना ।—तयः, (पु०) पञ्चक । पञ्चबन्धन ।—तिक्त, (न०) पाँच कड़वी दवाइयाँ—

[निवासितादृषटोत्तमिदिग्धिकाश्च ।]

—त्रिंशः, (पु०) ३५वाँ ।—त्रिंशत्,—त्रिंशतिः, (स्त्री०) ३५ । पैतीस ।—दश, (वि०) १५वाँ । १५ से बढ़ा हुआ अर्थात् पन्द्रह अधिक। यथा पञ्चदश दश यानी ११५ ।—दशद्, (वि०) (बहु) १५ । पन्द्रह ।—दशिन, (वि०) १५ से बना हुआ ।—दशी, (स्त्री०) पूर्णिमासी ।—दीर्घ, (न०) शरीर के पाँच दीर्घ भाग; अर्थात्

बाहू नेत्रद्वयं फुटिर्द्वे तु नासे त्रयैश्च च
स्तनयोरन्तरश्चैव पञ्चदीर्घं प्रचक्षते ॥”

—देवताः, (पु०) पाँच देवता यथा
आदित्यं गणनायं च देवीं रुद्रं च केशवम् ।
पञ्चदेवतत्रिंशत् सर्वकर्तुं पूजयेत् ॥

—नखः, (पु०) १ पाँच नखों वाले कोई जीव । २ हाथी । ३ कछुवा । ४ सिंह या चीता ।—नवः, (पु०) पंजाब जहाँ पाँच नदियाँ हैं । [शतद्रू, विपशा, इरावती, चन्द्रभागा, और वितस्ता । इनके आधुनिक नाम हैं । सतलज, ब्यास, रावी, चिनाव और झेलम]—नदाः, (पु० बहु०) पंजाब प्रान्त वाली ।—नवतिः, (स्त्री०) ६५ ।—नीराजनं, (न०) किसी देवविग्रह के सामने पाँच वस्तुओं का घुमाना यथा, दीपक, कमल, वस्त्र, आम और पान ।—पञ्चाश, (वि०) पचपनवां । ५५वाँ ।—पञ्चाशत्, (स्त्री०) ५५ । पचपन ।—पदी, (स्त्री०) पाँच कदम ।—पर्वन, (न० बहु०) पाँच पर्व यथा—

चतुर्दश्यष्टमी चैव अमावास्या च पूर्णिमा ।
पर्वपथेतानि राजेन्द्र रविसंक्रांतिरेव च ।”

—षाट्, (वि०) पाँच पैरों का ।—(पु०) संवत्सर । पात्रं, (न०) पाँच बरतनों का समूह । २ श्राद्ध विशेष जिसमें पाँच पात्रों में रख कर भोग लगाया जाता है ।—पितृ, (पु० बहु०) पाँच पिता यथा ।

“जनकश्चोपनेता च पञ्च कन्यां प्रयच्छति ।

अज्ञाता भयनाता पञ्चैते पितरः स्मृताः ॥”

—प्राणाः, (पु० बहुवचन) शरीरस्थ पाँच प्राणवायु । [यथा—प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान]—प्रसादः, (पु०) विशेष ढंग का मन्दिर जिसमें चार कौनों पर चार कलस और लाट या धौरहरा हो ।—बंधः, (पु०) अर्थदण्ड विशेष जो चोरी गयी या खोयी हुई वस्तु से या उसके मूल्य का पाँचवाँ भाग होता है । वाणाः,—वाणः,—शरः, (पु०) कामदेव ।—वाहुः, (पु०) शिव ।—भद्र, (वि०) १ पाँच गुणों वाला । २ पाँच मसाले की चटनी । ३ पाँच शुभ लक्षणों वाला (बौद्ध) । ४ दुष्ट ।—भुज, (वि०) पाँच भुजा की शङ्ख । पचकुनिया ।—भुजः, (पु०) पचकोना ।—भूतं, (न०) पाँच तत्व ।—मकारं, (न०) वाम-मार्गियों के मतानुसार मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन ।—महापातकम्, (न०) मनुस्मृति के अनुसार ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु-स्त्री-गमन और इन पातकों के करने वाले का सहवास; पाँच महापातक माने गये हैं ।—महायज्ञाः, (पु० बहु०) स्मृतियों और गृहसूत्रों के अनुसार पाँच कृत्य जिनका नित्य करना गृहस्थ के लिये आवश्यक है । वे पाँच कृत्य ये हैं :—

१—अध्यापन—इसे ब्रह्मयज्ञ कहते हैं । सन्ध्या-बंदन इसीके अन्तर्गत है ।

२—पितृतर्पण—इसे पितृयज्ञ भी कहते हैं ।

३ हवन—इसको देवयज्ञ कहते हैं ।

४—बलिवैश्वदेव—इसे भूतयज्ञ कहते हैं ।

५—अतिथिपूजन—इसे नृयज्ञ कहते हैं ।

—माषक, या —माषिक, (वि०) अर्थदण्ड जिसमें पाँच माशा (सुवर्ण) अपराधी को देना पड़ता

है ।—मात्स्य, (वि०) हर पाँचवे महीने होने वाला ।—मुखः, (पु०) पाँच नोंकों वाला बाण ।—मुद्रा, (स्त्री०) तंत्रानुसार पूजन में पाँच प्रकार की मुद्राएँ दिखाना आवश्यक है । वे पाँच मुद्रा ये हैं — १ आवाहनी । २ स्थापनी । ३ सन्निधापनी । ४ संबोधिनी । ५ सम्मुखी करणी ।—यामः, (पु०) दिन ।—रत्नं, (न०) पाँच जावहिर । (१) १ नीलम । २ हीरा । ३ पद्मराग । ४ मोती और मूंगा । (२) १ सोना । २ चाँदी । ३ मोती । ४ लाजावर्त (रावटी) ५ मूंगा । (३) १ सुवर्ण, २ हीरा, ३ नीलम, ४ पद्मराग और ५ मोती । २ महाभारत के पाँच प्रसिद्ध उपाख्यान ।—रसा, (स्त्री०) आँवला ।—रात्रं, (न०) पाँच रात का समय ।—राशिकं, (न०) राशित्त का एक प्रकार का हिसाब जिसमें चार ज्ञात राशियों के द्वारा पाँचवी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है ।—लक्षणम्, (न०) पुराण, जिसमें पाँच लक्षण होते हैं । [वे लक्षण ये हैं—१ सृष्टि की उत्पत्ति, २ प्रलय, ३ देवताओं की उत्पत्ति और वंशपरम्परा । ४ मन्वन्तर और ५ मनु के वंश का विस्तार । लवणं, (न०) पाँच प्रकार के निमक [१ काँच । सेंधा । ३ सामुद्र, ४ विट और सौंकर] —लाङ्गलकम्, (न०) महादान । अर्थात् उतनी भूमि का दान जिसको पाँच हल जोत सकें । लोहं, (न०) पाँच धातु १ तांबा । २ पीतल । ३ रांगा ४ सीसा और लोहा । (मतान्तरे) । १ सोना । २ चाँदी । ३ तांबा । ४ सीसा और रांगा ।—लोहकम्, (न०) पाँच प्रकार का लोहा । यथा—१ वज्रलौह । २ कान्तलौह । ३ पिण्डलौह । ४ क्रौंचलौह । ५ —वटः, (पु०) यज्ञोपवीत । जनेऊ ।—वटी, (पु०) पाँच वृक्षों का समूह । [पाँचवृक्ष । १ अश्वत्थ । २ बिल्व । ३ वट । ४ आँवला । ५ अशोक] । २ दण्डकारण्य के अन्तर्गत स्थान विशेष । यह स्थान गोदावरी नदी के तट पर नासिक में है । सीताहरण यहीं हुआ था ।—वर्गः, (पु०) पाँच वस्तुओं का समूह । यथा पाँच तत्व, पाँच इन्द्रियाँ, पाँच महायज्ञ ।—

वर्षदेशीय, (वि०) लगभग पाँच वर्ष का ।—वर्षीय, (वि०) पाँच वर्ष का । बलकलं, (न०) पाँच वृक्षों की छाल का समुदाय । (वे पाँच वृक्ष ये हैं—बरगद, गुलर, पीपल, पाकर और बेत या सिरिसि ।]—वार्धिक, (वि०) प्रति पाँचवे वर्ष होने वाला ।—वाहिन्, (वि०) (सवारी जिसमें पाँच घोड़े जुते हों ।—विंश, (वि०) २५वाँ ।—विंशतिः, (स्त्री०) २५ । पञ्चीस ।—विंशतिका, (स्त्री०) २५ (कहानियों का) संग्रह । यथा वैतालपञ्चीसी ।—विध, (वि०) पाँच प्रकार का । पञ्चगुना—वृत्, —वृत्तं, (न०) (अव्य०) पञ्चगुना ।—शत, (वि०) जिसका जोड़ ५०० हो ।—शतं, (न०) १ १०५ । २ पाँचसौ ।—शास्त्रः, (पु०) १ हाथ । २ हाथी ।—शिक्षः, (पु०) शेर । सिंह ।—घ, (वि०) (बहु०) पाँच या छः ।—पष्ट, (वि०) ६५ वाँ ।—पष्टिः, (स्त्री०) ६५ ।—सप्त, (वि०) ७५वाँ ।—सप्ततिः, (स्त्री०) ७५ ।—सुगन्धकं (न०) पाँच प्रकार के सुगन्ध द्रव्य । यथा ।

कर्मरूपकोलमवज्ञपुत्रपुत्राकजातोफलपञ्चकेन ।

समांशभागेन च योजितेन चनेः १२ पंचसुगन्धकं स्यात् ।

सूनाः, (स्त्री०) पाँच प्रकार की हिंसा जो गृहस्थों से, घर के कामधंधों में हुआ करती हैं । वे पाँच हिंसाएँ जिन कर्मों से होती हैं वे ये हैं ।—१ चूल्हा जलाना । २ आटा पीसना । ३ काढ़ देना । ४ कूटना । ५ पानी का बड़ा रखना ।—हायन, (वि०) पाँच वर्ष का ।

पंचक } (वि०) १ पाँच से सम्पन्न । पाँचसम्बन्धी ।
पञ्चक } २ पाँच से बना हुआ । ४ पाँच से खरीदा हुआ । ५ पाँच फी सदी लेने वाला ।

पंचकं, पञ्चकम् (न०) } पाँच का जोड़ या पाँच
पंचकः, पञ्चकः (पु०) } का समूह ।

पंचता, पञ्चता } (न०) १ पञ्चगुनी हाखत । २
पंचत्वं, पञ्चत्वम् } पाँच का समूह । ३ पाँच तत्वों का समुदाय । ४ मृत्यु । नाश ।

पंचयति } (वि०) पञ्चगुना ।
पञ्चयति }

पंचधा (अथवा०) १ पाँच भागों में । २ पाँच पञ्चधा प्रकार से ।

पंचनी (स्त्री०) शतरंज जैसे खेल विशेष की बिड़ौत पञ्चनी का कपड़ा ।

पंचम (वि०) [स्त्री०—पञ्चमी] १ पाँचवाँ । पञ्चम २ पाँचवाँ भाग । दक्ष । निपुण । रुचिर ।

सुन्दर ।—आस्थः, (पु०) कोकिल ।

पंचमः (पु०) १ सप्तस्वरों में से पाँचवाँ स्वर । पञ्चमः २ वह स्वर पिक या कोकिल के कण्ठस्वर के समान साता गया है । २ राग विशेष । ३ मैथुन ।

पंचमं (अथवा०) पाँचवी वार ।

पंचमी (स्त्री०) १ पाँचे । पाख की पाँचवी पञ्चमी तिथि । २ व्याकरण में पंचमी विभक्ति । ३ द्रौपदी । ४ खेल विशेष की बिड़ौत ।

पञ्चशः (अथवा०) पाँच और पाँच । पाँच से ।

पञ्चमिन् (वि०) पाँचवे वर्ष की उम्र में ।

पञ्चाश (स्त्री०—पञ्चाशी) (वि०) पचासवाँ ।

पञ्चाशत्, पञ्चाशत् (पु०) पचास ।

पञ्चाशिका (स्त्री०) पचास का समूह । पचास पञ्चाशिका पद्यों का संग्रह । यथा चौरपञ्चाशिका ।

पञ्चिका (स्त्री०) १ ऐतरेय ब्राह्मण । २ पाँच पञ्चिका अध्यायों व खण्डों का समूह । ३ पाँच पाँसों से खेला जाने वाला खेल विशेष ।

पञ्चालः (पु०) पञ्चाल देश का राजा ।

पञ्चालाः (पु०) (पु० बहु०) एक देश विशेष पञ्चालाः (पु०) और उस देश के अधिवासी ।

पञ्चालिका (स्त्री०) गुड़िया । पुतली ।

पञ्चाली (स्त्री०) १ गुड़िया । पुतली । २ राग पञ्चाली विशेष । ३ शतरंज या अन्य उसी प्रकार के एक खेल की बिड़ौत । (पंचारी का अर्थ भी यही है)

पञ्चावटः (पु०) यज्ञीय सूत्र जो कंधे के आरपार पञ्चावटः पहिना जाता है । जनेऊ ।

पंजरं (न०) पिंजड़ा । चिड़ियाखाना ।—पञ्जरम् (आखेटः, (पु०) मछली पकड़ने का जाल या डलिया विशेष ।—शुकः, (पु०) पिंजड़े में बंद तोता ।

पंजरं, पञ्जरम् (न०) १ पसली । २ ठोंठ । पंजरः, पञ्जरः (पु०) (पु०) १ शरीर । २ कलियुग । ३ गौ का एक संस्कार विशेष ।

पंजरकं, पञ्जरकम् (न०) पिंजड़ा ।

पंजिः, पञ्जिः (स्त्री०) १ रुई का गोलाकार गाला पंजी, पञ्जी जिससे सूत काता जाता है । २ लेखा । बही । रेजिस्टर । ३ पत्ता । तिथिपत्र ।—कारः,—कारकः, (पु०) १ लेखक । क्लार्क । २ पत्रा बनाने वाला ।

पंजिका (स्त्री०) १ टीका । व्याख्या । २ यमराज पंजिका की वह लेखाबही जिसमें मनुष्यों के शुभा-शुभ कार्यों का लेखा लिखा जाता है । ३ रोकड़-बही, जिसमें आमदनी और खर्च लिखा जाता है । —कारकः, (पु०) लेखक । मुनीम । कायथ जाति का पुरुष ।

पट् (धा० पर०) (पटति) जाना ।

पटम् (न०) १ कपड़ा । वस्त्र । वस्त्र का पटः (पु०) टुकड़ा । २ मिहीन कपड़ा । ३ पट्टी ।

पट्ट । ४ पट्टरी या कपड़े का टुकड़ा, जिस पर चित्र लिखे जाँय । (पु०) कोई वस्तु जो अच्छे प्रकार बनी हो । (न०) छत । छावन या छप्पर ।

—उटर्ज, (न०) तंबू । कुनात ।—कर्मन्, (न०) १ जुलाहे का काम । बुनाई ।—कारः, (पु०) १ जुलाहा । २ चित्रकार ।—कुटी, (स्त्री०)—मण्डपः, (पु०)—वायः, (पु०)—

वेश्मन्, (न०) सीमा ।—वासः, (पु०) १ ज़मीन । २ बंदी । कुर्नी । ३ सुगन्धिपूर्ण चूर्ण ।

—वासकः, (पु०) सुगन्धिपूर्ण चूर्ण ।

पटकः (पु०) १ शिविर । तंबू । खेमा । २ सूती कपड़ा । ३ आधा गाँव ।

पटमय (वि०) कपड़े का बना ।

पटमयः (पु०) खेमा । तंबू ।

पटञ्चरं (न०) चिथड़ा । फटा पुराना कपड़ा ।

पटञ्चरः (पु०) चोर ।

पटक (पु०) चोर ।

पटपटा (अव्यया०) पटपट की आवाज ।

पटल (न०) १ छत्त । छान । छप्पर । २ उधार ।

पर्दा । आवरण । घूंघट । बुरका । ३ आँख ठकने का घूंघट । ४ डेर । समूह । अंवार । ५ टोकरी । ६ लावलशकर । लवाज़मा । ७ माथे पर का या शरीर के अन्य किसी अंग का चिह्न । ८ ग्रन्थ का अध्याय ।

पटलः (पु०) } १ वृक्ष । पेड़ । २ डंडुल ।
पटली (स्त्री०) }

पटलप्रान्तः (पु०) छत्त का किनारा ।

पटहः (पु०) १ ढोल । मृदंग । तबला । दुन्दुभी । नगाड़ा । डंका । २ आरम्भ करने वाला । ३ वध करने वाला ।—घोषकाः (पु०) ड्योही पीटने वाला । ढिंढोरा पीटने वाला ।—अग्रगण्य (न०) लोगों को जमा करने के लिये इधर उधर घूम कर ढोल बजाने वाला ।

पटाकः (पु०) पट्टी । चिट्ठिया ।

पटालुका (स्त्री०) जोंक । जलौका ।

पटिः } (स्त्री०) १ रंगशाला का पर्दा । २ वस्त्र ।
पटी } ३ सौदा कपड़ा । ४ कनात । ५ रंगीन वस्त्र ।
—टोपः (पु०) रंगमंच की पर्दा डालना ।

पटिका (स्त्री०) बुना हुआ वस्त्र ।

पटिमन् (पु०) १ निपुणता । चतुरी । २ तीव्रता । ३ चारपन । ४ कड़ाई । सख्ती । रुखापन । ५ प्रचयवता । उग्रता ।

पटीर (वि०) सुन्दर । रूपवान । लंबा । ऊँचा ।—जन्मन्, (पु०) चन्दन का वृक्ष ।

पटीरः (पु०) १ गेंद । गोली (खेलने की) । २ चन्दन । ३ कामदेव ।

पटीरं (न०) १ कथा । २ चलनी । ३ पेट । ४ खेत । ५ बादल । ६ उचाई । ७ मूली । ८ गठिया । ९ मोतिया बिन्दु ।

पटु (वि०) [स्त्री०—पटु, या पट्टी] १ चतुर । निपुण । योग्य । २ चरपरा । तीता । ३ कुशाग्र बुद्धि । ४ प्रचयव । उग्र । ५ चीख । स्पष्ट । चीखने वाला । ६ उद्देश्योपयोगी । स्वभावतः उन्मुख । प्रवण । ७ सप्रत । निष्ठुर । नृशंस हृदय । ८

चालाक । क्लिरनी घृत मक्कर । छलिया । ९ स्वस्थ । तदुस्त । १० क्रियाशील । मशगूल । ११ वानुनी । १२ कूँका हुआ । बढ़ाया या फुलाया हुआ । १३ सप्रत । भयङ्कर । १४ बड़बोला । बेलनाम ।

पटुं (न०) } कुत्रा । कुकुमुत्ता । धरती का फूल ।
पटुः (पु०) } सर्प की टोपी । गगनधूल । खूखरी । टेकनस । खुंभी ।

पटु (न०) निमक ।—कल्प,—देशीय, (वि०) चालाक । साधारण चतुर ।—रूप, (वि०) अत्यन्त चतुर ।

पटुता (स्त्री०) } १ चतुराई । २ चातुर्य । निपुणता
पटुत्वं (न०) } योग्यता । ३ कार्यकारिणी शक्ति ।
पटोलः (पु०) परवर । परवल ।

पटोलकः (पु०) घोंघा । सीपी ।

पट्टं (न०) } १ पट्टी । तड़ती । लिखने की
पट्टः (पु०) } पट्टिया । २ तौबे आदि धातुओं की चिपटी पट्टी जिसके ऊपर राजाज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाती थी । ३ मुकुट । किरीट । कलंगी । ४ घण्टी । ५ रेशम । ६ मिहीन या रंगीन वस्त्र । वस्त्र । ७ सब कपड़ों के ऊपर पहिने का वस्त्र । ८ पगड़ी । साफा । संबील । ९ राजसिंहासन । तख्त । १० कुर्सी । काठ का मूढ़ा । ११ ढाल । १२ चक्की का पाद । १३ चौराहा । १४ नगर । कस्बा । १५ घाव या चोट पर बाँधने की पट्टी ।—अभिषेकः, (पु०) मुकुटधारण की क्रिया ।—आर्हा, (स्त्री०) पटरानी ।—उपाध्यायः (पु०) राजा की आज्ञाओं को लिखने वाला मुख्य लेखक । ज्ञास कलम ।—जं, (न०) एक प्रकार का कपड़ा ।—देवी,—महिषी,—राक्षी, (स्त्री०) पटरानी ।—वस्त्र,—वासस्, (वि०) बने हुए रेशमी वस्त्र अथवा रंगीन वस्त्र धारण करने वाला ।—सूत्रकारः (पु०) रेशमी वस्त्र बुनने वाला आदमी ।

पट्टकः (पु०) १ धातु की चपटी पट्टी जिसपर राजकीय आज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाय । २ चोट या घाव की पट्टी । ३ कागज़ात । प्रमाण-पत्र ।

पट्टनम् (न०) } नगर शहर ।
 पट्टना (स्त्री०) }
 पट्टना (स्त्री०) मण्डल । जिला । समाज ।
 पट्टिका (स्त्री०) १ पट्टी । तल्ली । २ प्रमाणपत्र ।
 सनद । ३ वस्त्रखण्ड । कपड़े का टुकड़ा । ४ रेसमी
 वस्त्र का टुकड़ा । ५ धाव या चोट की पट्टी ।—
 वायकः, (पु०) रेशमी वस्त्र बनाने वाला
 जुलाहा या केशी ।

पट्टिः—पट्टिसः } (पु०) एक प्रकार का बड़ी
 पट्टीशः—पट्टीसः } पैनी नौक का भाग ।

पट्टी (स्त्री०) १ माथे का आभूषण विशेष । खौर । २
 छोड़े का ज़ेरबंद या तंग ।

पट्टोलिका (स्त्री०) १ पट्टा । जो भूमि जोतने का जोते
 को दिया जाता है । २ लिखित कानूनी व्यवस्था ।

पट् (धा० परस्मै०) (पठति, पठित) १ पढ़ना । बार
 बार दुहराना । पाठ करना । २ अध्ययन करना ।
 ३ उद्धृत करना । वर्णन करना । ४ प्रकट करना ।
 घोषणा करना । ५ पढ़ाना । ६ सीखना । पढ़ना ।

पठकः (पु०) पढ़ने वाला ।

पठनं (न०) १ पढ़ना । पाठ करना । २ उल्लेख करना ।
 ३ अध्ययन करना ।

पठिः (स्त्री०) पढ़ना । अध्ययन करना ।

पठित (व० कृ०) १ पढ़ा हुआ । पाठ किया हुआ ।
 दुहराया हुआ । २ अधीत ।

पण् (धा० आत्म) [पणते, पणित] खरीदना ।
 बदलबदल करना । २ मोल भाव करना । ३ दाँव
 लगाना । होड़ बढ़ना । ४ जोखो उठाना । ५ खेल
 में जीतना ।

पणः (पु०) १ पाँसे से खेलना या दाँव लगाकर
 खेलना । २ कोई खेल जो दाँव लगाकर या होड़
 बढ़कर खेला जाय । ३ दाँव पर रखी हुई वस्तु ।
 ४ शर्त । ठहराव । इकरार । ५ मजदूरी । भाड़ा ।
 ६ पुरस्कार । इनाम । ७ एकम जो किसी सिक्के में
 हो या कौड़ियों में । ८ सिक्का विशेष जो कौड़ियों
 का होता था । ९ मूल्य । दाम । १० धनदौलत ।
 सम्पत्ति । ११ विक्री के लिये वस्तु । १२ व्यवसाय
 बनिज । लैन दैन । १३ दूकान । १४ फेरीवाला ।

१५ शराब खींचने वाला । १६ मकान । घर । १७
 सना का चढ़ाई का खूब । १८ मुट्ठी भर कोई भी
 वस्तु । १९ विष्णु ।—अंगना, (स्त्री०)
 बेश्या । रंडी । कसबी ।—अर्पणम् (न०)
 ठेका ।—अस्थिः (पु०) मंडी । पेंठ ।—अन्धः,
 (पु०) १ सन्धि । २ इकरारनामा । शर्तनामा ।

पणता (स्त्री०) } कीमत । मूल्य । दाम ।
 पणतं (न०) }

पणनम् (न०) १ खरीदना । मोललेना । विनिमय । २
 दाँव । ३ विक्री । व्यवसाय ।

पणसः (पु०) विक्री की वस्तु ।

पणाया (स्त्री०) १ लैन दैन । व्यवसाय । २ बाज़ार ।
 ३ व्यापार का लाभ । ४ जुआ । ५ प्रशंसा ।

पणायित (वि०) १ प्रशंसित । २ खरीदा हुआ ।
 बेचा हुआ । मोलभाव किया हुआ ।

पणिः (स्त्री०) बाज़ार । मंडी । (पु०) १ लोभी ।
 कृपण । कंजूस । २ पापी जन ।

पणिक (वि०) १० पण का (जुमाना) ।

पणित (व० कृ०) १ मोल भाव किया हुआ । २ दाँव
 पर लगाया हुआ ।

पणितं (न०) दाँव । होड़ ।

पणितृ (पु०) व्यवसायी । सौदागर ।

पणय (वि०) १ विक्री के लिये । २ मोल भाव करने
 के लिए ।—अंगना, (स्त्री०)—योषित्, (स्त्री०)
 —विलासिनी.—स्त्री, (स्त्री०) रंडी । बेश्या ।
 कसबी ।—अजिर, (न०) गाँव ।—आजीवः,
 (पु०) व्यापारी ।—आजीवकम्, (न०)
 मंडी । पेंठ ।—पतिः, (पु०) बड़ा व्यापारी ।—
 फलत्वं (न०) व्यापार का लाभ ।—भूमिः,
 (स्त्री०) मालगोदाम ।—वीथिका,—वीथी,
 —शाला, (स्त्री०) बाज़ार । मंडी । २ दूकान ।

पणयः (पु०) १ विक्री के लिये कोई भी चीज़ या
 सामान । २ व्यापार । सौदागरी । बनिज । ३
 मूल्य ।

पणघः (पु०) ढोल । ढोलक । तबला ।

पणविन् (पु०) शिव जी का नाम ।

पड } (धा० आ० मने०) [पडडते, पडडत]
पडड } जाना । हिलना । डोलना । (उभय०)
संग्रह करना । ढेर लगाना । जमा करना ।

पडः } (पु०) हिजड़ा । नपंसक ।

पडा } (स्त्री०) १ बुद्धि । समझदारी । २ विद्या ।
पडा } विज्ञान ।—अपूर्व, (न०) अदृष्ट फल की
अप्राप्ति । भाग्य में जो लिखा हो उसका न होना ।

पडावत् } (वि०) बुद्धिमान् । (पु०) विद्वान् ।
पडावत् } परिहृत ।

पडित } (वि०) १ विद्वान् । बुद्धिमान् । २ चतुर ।
पडित } निपुण । योग्य ।

पडितः } (पु०) १ विद्वान् । २ धृप । लोबान्
पडितः } आदि । ३ विशेषज्ञ ।—आर्तीय, (वि०)

कुछ कुछ चतुर ।—मराडल, (न०)—समा,
(स्त्री०) विद्वानों का समुदाय ।—मानिक,—
मानिन्, (पु०) अपने को परिहृत मानने वाला ।
वादिन्, (वि०) अपने को बुद्धिमान् समझने का
दावा रखने वाला ।

पडितक } (वि०) बुद्धिमान् । अक्लमंद ।

पडितकः } (पु०) विद्वान् आदमी ।

पडितिमन् } (पु०) ज्ञान । बुद्धिमानी । विद्वत्ता ।
पडितिमन् }

पट (धा० पर०) [पतति,—पतित] १ गिरना ।
नीचे आना । नीचे उतरना । गिर पड़ना । नीचे
उतरना । २ उड़ना । आकाश में उड़ना ।

पट (वि०) पुष्ट । भलीभाँति खिलाया पिलाया हुआ ।

पटः (पु०) १ उड़ान । २ गमन । पतन । उतार ।—
गः, (पु०) पत्नी ।

पटक (वि०) गिरने वाला । नीचे उतरने वाला ।

पटकः (पु०) ज्योतिष सम्बन्धी सारिणी ।

पतंगम् } (न०) १ पारा । पारद । २ चन्दन विशेष ।
पतङ्गम् }

पतंगः } (पु०) १ चिड़िया । २ सूर्य । टिड्डी । ४
पतङ्गः } मधुमक्षिका । ५ गेंद । ६ शोला । ७

शैतान । ८ पारा । पारद । ९ कृष्ण ।

पतंगं } (न०) १ चिड़िया । २ पतंगा ।
पतङ्गं }

पतंगिका } (स्त्री०) छोटी चिड़िया । छोटी
पतङ्गिका } मधुक ।

पतंगिन् } (पु०) पत्नी ।
पतङ्गिन् }

पतञ्जलिः } (पु०) महाभाष्य के प्रसिद्ध रचयिता ।
पतञ्जलिः } योग दर्शन के निर्माता ।

पतत् (वि०) [स्त्री—पतन्ती] उड़ने वाला । उत-
रने वाला । (पु०) पत्नी ।—ग्रहः, (पु०) सेना
जो बचल में रखी जाय । २ पीकदान ।—भोरः,
(पु०) वाज पत्नी । शिकरा ।

पतत्रम् (न०) १ डैना । २ पर । ३ सवारी ।

पतत्रिः (पु०) पत्नी ।

पतत्रिन् (पु०) १ पत्नी । लीर । ३ घोड़ा । (न०)
(द्विव०) [वैदिक] दिन और रात ।—केतनः,
(पु०) विष्णु ।—राजः, (पु०) गरुड ।

पतनम् (न०) [पत्-भावे ल्युट्] १ उड़ने की क्रिया ।
नीचे आने की क्रिया । २ अस्त होना । डूबना ।
३ नरक में गिरना । ४ स्वधर्म त्याग । गौरवा-
न्वित पद से पतन । पात । नाश । हास ।
७ मृत्तु । ८ लटकपड़ना । ९ (गर्भ) पात । १०
(अङ्गगणित में) बाकी । ११ ग्रह का विस्तार ।
—धर्मिन्, (वि०) नाशवान् । नश्वर ।

पतनीय (वि०) जातिअष्ट करने वाला । पतन
करने वाला ।

पतनीयं (न०) जातिअष्टकर पाप ।

पतयः } १ (पु०) १ चन्द्रमा । २ पत्नी । ३ टिड्डी ।
पतसः }

पतयालु (वि०) गिरने योग्य । पतनशील । [गमन ।

पतापत (वि०) १ गमनशील । पतनशील । २ प्रायः ।

पतित (व० क०) १ गिरा हुआ । नीचे उतरा हुआ । २
टपका हुआ । ३ (नैतिक) अधःपात हुआ । ४
धर्म त्यागने वाले । अधःपतित । जातिअष्ट । ५
सुख में गिरा हुआ । हारा हुआ । पराजित । ६
अन्तर्गत । ८ रखा हुआ । स्थापित ।—उत्पन्न,
(वि०) जातिअष्ट से उत्पन्न ।—सावित्रीकः,
(पु०) वह द्विजाति जिसका उपनयन संस्कार
था तो हुआ ही न हो अथवा हुआ भी हो तो
विधिपूर्वक नहीं ।

पति (न०) उद्यान

पतर (वि०) १ उड़ाहू । उड़ान वाला २ गमन कराने वाला ।

पतेरः (पु०) १ पत्नी । २ रन्ध्र या गड़ा । ३ माप विशेष । आड़क ।

पतम् } (न०) [वैदिक] उद्यान ।
पत्नम् }पतञ्जिका } (स्त्री०) क्षुण्ण का रोड़ा । प्रसञ्जा ।
पतञ्जिका } कमान की डोरी ।

पताका (स्त्री०) १ झंडा । झंडा । २ झंडे का डंडा ।

३ चिन्ह । राजचिन्ह । ४ नाटक की कोई ऐतिहासिक घटना । ५ माहुरलिक । सौभाग्य ।—

अंशुकं (न०) झंडा ।—स्थानकं, इसकी परिभाषा इस प्रकार है ।—

यत्रार्थे विनित्तनऽन्यस्मिन्मन्त्रिकोऽप्यः प्रयुज्यते ।

आगन्तुकेन भावेन पताकारानकं तु तत् ॥ ”

—साहित्यदर्पण ।

पताकिक (वि०) झंडावरदार ।

पताकिन (वि०) झंडा ले जाने वाला । झंडियों से भूषित या सजाया हुआ । (पु०) १ राजचिन्ह ।

राजचिन्ह सूचक झंडा ले जाने वाला । २ झंडा ।

पताकिनी (स्त्री०) सेना । फौज ।

पतिः (पु०) स्वामी । प्रभु । (यथा गृहपतिः) २

माजिक । अध्यक्ष । ३ शासक । सुवेदार । अधि-

ष्ठाता । ४ भर्ता । ५ जड़ । ६ गमन । गति ।

उद्यान । (स्त्री०) स्वामिनी । अधिष्ठात्री ।—

पतिघातिनी, (स्त्री०)—धत्री, (स्त्री०) १ स्त्री जो

पतिघातिनी हो, जिसने अपने पति की हत्या की

हो । २ हाथ की रेखा जिसका फल यह है कि

जिस स्त्री के वह रेखा हो वह अपने पति के साथ

विरहासवात करे ।—देवता,—देवा, (स्त्री०)

वह स्त्री जो अपने पति को देवतातुल्य पूज्य एवं

मान्य समझे । सती या साध्वी स्त्री ।—धर्मः,

(पु०) पत्नी का अपने पति के प्रति कर्तव्य ।—

प्राणा, (स्त्री०) सती स्त्री । लङ्घनम्, (न०)

पुनर्विवाह करके प्रथम पति की अवहेलना करने

वाली स्त्री ।—वेदनः, (पु०) शिवजी ।—

वेदनम्, (न०) मंत्र तंत्र से पति को प्राप्त करने

वाली ।—लोकः, (पु०) मरने के बाद उसलोक

की प्राप्ति जिसमें पति हो व्रता (स्त्री०) सती स्त्री ।—सेवा, (स्त्री०) पतिभक्ति ।

पतिवरा (स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पति बरने वाली हो ।

पतित्वं } (न०) [वैदिक] १ प्रभुत्व । स्वामित्व ।
पतित्वनं } २ गठजोड़ा । विवाह ।

पतिवती (स्त्री०) [वैदिक] सधवा । जीवित पति वाली ।

पतिवल्ली (स्त्री०) भार्या जिसका पति जीवित हो ।

पतीयति (क्रि०) पति की कामना करना ।

पतीयन्ती (स्त्री०) पति कामना वाली स्त्री अथवा पतीयन्ती पति के योग्य पत्नी ।

पत्नी (स्त्री०) १ भार्या । २ गृहिणी ।—आटः,

(पु०) जनानखाना । अन्तःपुर ।—शाला,

(स्त्री०) कोपड़ा । तंबू । पत्नी के रहने और गृहस्थी

के योग्य कमरा । (२) यज्ञशाला में वह घर

जो यजमान पत्नी के लिये बनाया जाता है । यह

घर यज्ञशाला से पश्चिम की ओर होता है ।—

संनहनम्, (न०) पत्नी की कमर में कमरबंद

बाँधना । पत्नी का कमरबंद ।

पतित (व० कृ०) १ गिरा हुआ । ऊपर से नीचे

आया हुआ । २ आचार, नीति या धर्म से गिरा

हुआ आचारच्युत । नीतिभ्रष्ट । धर्मत्यागी । ३

महापापी । अतिपातकी । नारकीय । ४ जातिवहि-

ष्कृति । समाज से निकाला हुआ । जाति या बिरा-

दरी से खारिज ।

पत्तनम् (न०) १ नगर । कस्बा । २ मृदङ्ग ।

पतिः (पु०) १ पैदल । पैदल सैनिक । २ पैदल चलने

वाला । ३ वीर । शूर ।—(स्त्री०) १ फौज का

एक छोटा दस्ता जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन

बुढ़सवार और पाँच पैदल सिपाही होते हैं । २

गमन । पाद । चरण ।—कायः, (पु०) पैदल

सिपाहियों की पट्टन ।—गणकः, (पु०) वह

सैनिक अधिकारी जिसका काम पैदल सैनिकों को

एकत्र करना हो ।—संहतिः, (स्त्री०) सैनिक

सिपाहियों की पट्टन ।

पत्तिक (वि०) पैदल गमन करने वाला ।

पत्तिन् (पु०) पैदल सैनिक ।

(न०) [पत्र पत्र] १ वृक्ष का पत्ता । २ पुष्प की पत्तुरी । कमल की पौखुरी । ३ कागज । ४ पत्र दस्तावेज । ५ सुवर्ण या अन्य किसी धातु का पत्र । जिसपर कुछ खोदा जाय । ६ डैना । पर । तीर के पर । ७ सवारी (जैसे गाड़ी, घोड़ा, जैट) । ८ मुख में चन्दन या अन्य कोई सुगन्ध पदार्थ का मलना । ९ तखवार या छुरी की धार । १० छुरी । कटार ।—अङ्गम् (न०) भोजपत्र का पेड़ । २ लालचन्दन । ३ कमलगट्टा । ४ पतंग । बक्कम ।—अङ्गुलिः, (पु०) माथे पर त्रिपुण्ड्र लगाना ।—अञ्जनम् (न०) १ स्याही । २ कालिख पोतना ।—आढ्यः, (न०) पीपल-मूल । २ पर्वततृण । ३ तृणाख्य । ४ पतंग । बक्कम । ५ नरसल । ६ तालीस पत्र ।—आवलिः (स्त्री०) १ सिन्दूर । २ पत्र रचना । पत्तियों की पत्राक्षर । ३ शरीर पर चन्दनादि से विशेष रूप से लकीरें कर शरीर का शृङ्गार करना ।—आवली, (स्त्री०) पत्रों की पंक्ति या श्रेणी । पीपल के कोमल पत्रों का, जव और शहद के साथ संमिश्रण ।—आहारः, (पु०) पत्तों को खाकर निर्वाह करना ।—ऊर्णम् (न०) रेशमी वस्त्र ।—उल्लासः, (पु०) कली या अँखुआ । — काहूजा, (स्त्री०) वह शोर जो पत्ती के परों की फड़फड़ाहट अथवा पत्तों से हो ।—कुच्छम्, (न०) एक व्रत जिसमें केवल पत्तों का काटा पीकर रहना पड़ता है ।—घना, (स्त्री०) पौधा जिसमें सबन पत्ते हों ।—भङ्गारः, (पु०) नदी की धार । —दारकः, (पु०) आरा ।—नाडिका, (स्त्री०) पत्ते की नसें ।—परशुः, (पु०) छैनी ।—पालः, (पु०) बड़ी कटार । लंबी छुरी ।—पाली, (स्त्री०) १ बाण का वह भाग जिसमें पर लगे हों । २ कैंची ।—पाश्या, (स्त्री०) माथे का आभूषण विशेष ।—पुटं, (न०) दौना या पत्ते का बना कोई पात्र ।—पुष्पाः, (स्त्री०) छोटे पत्ते की तुलसी ।—वन्धः, (पु०) पुष्पों की सजावट ।—बालः,—वालः, (पु०) बाँव ।—भङ्गः,—भङ्गिः,—भंगी, (स्त्री०) वे चित्र या रेखा जो सौन्दर्यवृद्धि के उद्देश्य से चित्रों

कस्तूरी कसर आदि के लेप अथवा सुनहले कपड़े पत्तों (कनोरिया) से माल, कपाल आदि पर बनाती हैं । सारी । २ पत्रभङ्ग बनाने की क्रिया ।—यौवनं, (न०) कोपल ।—रञ्जनम्, (न०) पृष्ठ की सजावट । पत्ते का शृङ्गार ।—रथः, (पु०) पत्ती । रथइन्द्रः, (पु०) गरुड ।—रथइन्द्र-केतुः, (पु०) विष्णु ।—लता, (स्त्री०) लंबी छुरी, बिबुआ या कटार ।—रेखा,—लेला,—चलुरी,—वह्निः—वल्ली, (स्त्री०) देखो पत्रभङ्ग ।—वाज, (वि०) (बाण) जो परों से सम्पन्न हो ।—जाहः, (पु०) १ पत्ती । २ तीर । ३ हल्कार । डाँकियाँ । चिट्ठीरसा ।—विशेषकः, (पु०) देखो पत्रभङ्ग ।—वेष्टः, (पु०) एक प्रकार का कर्णभूषण ।—शाकः, (पु०) पत्तों की भाजी ।—शिरा, (स्त्री०) पत्ते की नसें ।—श्रेष्ठः, (पु०) विल्ववृक्ष । बेल का पेड़ ।—सूचिः, (स्त्री०) काँटा ।—हिमं, (न०) हेमन्त ऋतु । पत्रकम् (न०) १ पत्ता । २ शरीर का सौन्दर्य बढ़ाने को शरीर पर बनायी गयी रेखाएँ विशेष । पत्रणा (स्त्री०) १ देखो पत्रभङ्ग । २ तीर को परों से सम्पन्न करने की क्रिया । पत्रिका (स्त्री०) १ पत्र । कागज का पृष्ठ । २ चिट्ठी या दस्तावेज । पत्रिन् (वि०) [स्त्री०—पत्रिणी] परोंदार । जिसमें पत्र या पत्ते हों । (पु०) १ तीर । २ पत्ती । ३ बाज पत्ती । ४ पर्वत । ५ रथ । ६ वृक्ष ।—वाहः, (पु०) पत्ती । पत्रिणी (स्त्री०) अँखुआँ । अँखुर । पत्ती (स्त्री०) लेख । पत्नी (स्त्री०) भार्या । जोड़ । पत्सलः (पु०) मार्ग । रास्ता । पथ् (धा० परस्मै०) [पथति] १ गमन करना । गतिशील होना । २ फँकना । टपकाना । पथः (पु०) मार्ग । सड़क । रास्ता ।—अतिथिः, (पु०) यात्री । राहगीर ।—कल्पना, (स्त्री०) इन्द्रजाल । जादू का खेल ।—दर्शकः, (पु०) रास्ता बतलाने वाला । रहनुमा ।

पथक (पु०) १ रास्ता जानने वाला । २ मार्ग बतलाने वाला ।

पथत् (पु०) माग । सड़क ।

पथिकः (पु०) १ यात्री । २ पथप्रदर्शक । —आश्रयः, (पु०) सराय । धर्मशाला । —सन्नतिः, —संहतिः, (स्त्री०) —सार्थः, (पु०) यात्रियों का दल ।

पथिका (स्त्री०) मुनका ।

पथिम् (पु०) १ राह । मार्ग । सड़क । २ यात्रा । ३ पहुँच । ४ बर्ताव का ढंग । ५ पंथ । सम्प्रदाय । सिद्धान्त । ६ नरक का विभाग । —कृत, (पु०) [वैदिक] १ पथप्रदर्शक । २ अग्नि का नाम । —देयं, (न०) सार्वजनिक सड़कों पर लगाया गया राजकर । —द्रुमः, (पु०) कथा का पेड़ । —ग्रह, (वि०) रास्तों का जानकार । —वाहक, (वि०) निष्पुत्र । —वाहकः, (पु०) १ शिकारी । चिड़ीमार । बहेलिया । २ ब्रोका होने वाला । कुली ।

पथिलः (पु०) यात्री । राहगीर । मुसाफिर ।

पथ्य (वि०) १ लाभदायक । गुणकारी । २ योग्य । उपयुक्त । उचित । —अपथ्यम्, (न०) हितकारी और अहितकारी वस्तुएं ।

पथ्यम् (न०) १ रोगी के लिये हितकर वस्तु या आहार । २ नीरोगता ।

पथ्या (स्त्री०) मार्ग । रास्ता ।

पद् (धा० आत्म०) [पदयते] जाना । चलना फिरना । (निजन्त) १ जाना । २ समीपगमन । ३ प्राप्त करना । ४ अभ्यास करना । अनुष्ठान में लाना । ५ [वैदिक] थक कर गिर पड़ना । ६ [वैदिक] नाश करना ।

पद (पु०) १ पैर । २ चतुर्थ भाग । चौथाई हिस्सा । —कापिन, (वि०) पैर मलने या खरोचने वाला । २ पैदल जाने वाला । (पु०) पैदल चलने वाला । —गः, (= पद्गः) (पु०) पैदल सिपाही । —जः, (= उजः) १ पैदल चलने वाला । २ शूद्र । —नद्धा, —नध्री, (स्त्री०) मुँडा जूता । शू । बूट । —निष्कः, (पु०) निष्क सिक्के का चतुर्थांश । —रथः, (= पद्मथः) (पु०) पैदल

सिपाही शब्द (पु०) पैर की आहट हति । हती, (स्त्री०) [= पद्धतिः, पद्धती] १ मार्ग । सड़क । रास्ता । २ पंक्ति । श्रेणी । अवली । ३ उपनाम । उपाधि । पदवी । जाति सूचक उपाधि । [यथा शर्म वर्म गुप्त और दास ।] ४ एक श्रेणी के लोगों का नाम । —हिमं, (= पद्धिमं) पैर की टेंडक । —अङ्गुः, (पु०) —चिह्नम्, (न०) पैर का निशान । —अङ्गुष्ठः, (पु०) पैर का अँगूठा । —अध्ययनम्, (न०) पदपाठ के अनुसार वेदाध्ययन । —अनुगः, पड़ियाना । पीछे लगना । —अनुरागः, (पु०) अनुयायी । पिछलगू । —अनुरागः, (पु०) १ चाकर । नौकर । २ सेना । —अनुशासनम्, व्याकरण । —अनुषांगः, (पु०) कोई वस्तु जो पद में जोड़ दी जाय । —अन्तः (पु०) १ किसी वाक्यखण्ड की पंक्ति की समाप्ति । २ शब्द का अन्त । —अन्तरं, (न०) और एक पग । एक पग का अन्तर । —अन्त्य, (वि०) अन्तिम । —अब्जं, —अम्भोजम्, —अरविन्दम्, —कमलं, पङ्कजम्, —पद्मं, (न०) कमल जैसे पैर । —अर्थः, (पु०) १ शब्दार्थ । २ पदार्थ । वस्तु । ३ अभिधेय । —आघातः, (पु०) लात । —आजिः, (पु०) पैदल सिपाही । —आदिः, (पु०) १ वाक्यखण्ड के आरम्भ की पंक्ति । २ किसी शब्द का आदि या प्रथम अक्षर । —विद्, (पु०) कुशिक्ष । बुरा शागव । —उत्तपता, (स्त्री०) जूती । —आवली, (स्त्री०) शब्दों की श्रेणी । —आसनं, (न०) पैर रखने की काठ की चौकी विशेष । —आहत, (वि०) लतियाया हुआ । —कारः, —कृत, (पु०) पदपाठ का रचयिता । —क्रमः, (पु०) चलना । गमन । —गः, (पु०) पैदल सिपाही । —गतिः, (स्त्री०) चाल । —ह्रैदः, —विच्छेदः, (पु०) —विग्रहः, (पु०) शब्दों का वार्थक्य । —च्युत, (वि०) स्थान या पद से पृथक् किया जाना । मुअत्तली । —न्यासः, (पु०) १ कदम रखना । २ पदचिह्न । ३ विशेष ढंग से पैर का रखना । ४ गोचर । गोखरु । ५ श्लोकपाद लिखना । —पंक्तिः, (स्त्री०) १ पदचिह्नों की श्रेणी । २ शब्दा-

वली ३ ईंट । सूखी ईंट । इष्टका ।—पाठः, (पु०) वेद पढ़ने का क्रम विशेष ।—पातः,—वित्तैपः, (पु०) क्रदम् । पग ।—ग्रन्थः, (पु०) पग । क्रदम् ।—भञ्जनम्, (न०) शब्दों का पृथक्करण ।—भञ्जिका, (स्त्री०) टीका जिसमें शब्दों की सन्धियों और शब्दों के समासों पर अधिक श्रम किया गया हो । २ बही । रजिस्टर । ३ पञ्चाङ्ग ।—भ्रंशः, (पु०) पदच्युति । मुथत्तली । माला, (स्त्री०) तांत्रिक मंत्र ।—योपनं, (न०) बेड़ी । [वैदिक] ।—वायः, (पु०) [वैदिक] नेता । पेशवा ।—विप्रश्मः, (पु०) पग । क्रदम् ।—वृत्ति, (स्त्री०) दो शब्दों की सन्धि ।—व्याख्यानं, (न०) शब्दों की व्याख्या या टीका ।—संघातः,—संघाटः, (पु०) १ संहिता के उन शब्दों का मिलान जो पृथक् हैं । २ टीकाकार । व्याख्या करने वाला ।—स्थ, (वि०) १ पैदल चलने वाला । २ अधिकारी या उच्चपदस्थ ।—स्थानं, (न०) पदचिह्न ।

पदं (न०) १ पैर । २ क्रदम् । पग । ३ पदचिह्न । पैर का निशान । ४ खोज । पता । चिह्न । द्वाप । ५ स्थान । स्थिति । अवस्थान । ६ महिमा । मर्यादा । पद । ७ कारण । गुणादि का आधार । ८ आवासस्थान । घर । मकान । पदार्थ । आधार । ९ श्लोकपाद । १० विभक्ति युक्त या पूर्ण शब्द । ११ बहाना । १२ वर्गमूल । १३ (किसी वाक्य का) खण्ड या खंड ।—१४ लंबाई नापने का माप । १५ वृत्तपाद । वृत्त या उसकी परिधि का चतुर्थांश । १६ किसी श्रेणी का अन्तिम भाग । १७ भूखण्ड ।

पदः (पु०) प्रकाश की किरण ।

पदकं (न०) पग । क्रदम् । परिस्थिति । पद ।

पदकः (पु०) १ हार । गले का आभूषण । २ पदपाठ का ज्ञाता । ३ निष्क । सुवर्ण की तौल विशेष ।

पदविः } (स्त्री०) १ मार्ग । रास्ता । २ पद ।
पदवी } संस्थान । स्थान । ३ जगह । ४ सदा-
चरण ।

पदातः, } (पु०) १ पैदल सिपाही । २ पैदल ।
पदातिः, } चलने वाला ।—अध्यक्षः, (पु०) पैदल
सेना का समूहपति ।

पदातिन् (वि०) १ पैदल सेना रखने वाला । २
पैदल चलने वाला । (पु०) पैदल सिपाही ।

पदातिकः } (पु०) पैदल सिपाही । दरवान ।
पदातीयः }

पदारः (पु०) पैर की धूल ।

पदिः [वैदिक] १ पैदल चलने वाला । २ एक पाद
लंबा । ३ केवल एक दल या विभाग वाला ।

पदिकः (पु०) पैदल सिपाही ।

पदिकम् (न०) पैर की नोक ।

पदेकः (पु०) बाज पत्नी ।

पद्वन् (पु०) मार्ग । रास्ता ।

पद्वं } देखो पद के अन्तर्गत ।
पद्वथ }

पद्म (व० क०) १ गिरा हुआ । डूबा हुआ । नीचे
उतरा हुआ । २ गया हुआ ।

पद्मम् (न०) १ नीचे की ओर गति । उतार । पतन ।
२ रेंगना ।

पद्मराः (पु०) सर्प । साँप ।

पद्म (वि०) कमल के रंग का ।—अद्म, (वि०)
कमल सदृश नेत्र वाला ।—अद्मः, (पु०)
विष्णु का नामान्तर ।—अद्मम्, (न०) कमलगद्ग ।
—अद्मन्तरम्, (न०) —अद्मन्तरः, (पु०)
कमलपत्र ।—आकरः, (पु०) १ बड़ा तलाब
जिसमें कमल की बहुतायत हो । २ जलपूर्ण
सरोवर या तालाब । ३ कमल का तालाब । ४
कमल समूह ।—आलयाः, (पु०) सृष्टिकर्ता
ब्रह्मा का नामान्तर ।—आलया, (स्त्री०) १
लक्ष्मी देवी का नामान्तर । २ लवङ्ग । लौंग ।—
आसनं, (न०) कमल की बैठकी । ध्यान करने
के लिये बैठने वालों का आसन विशेष जिसमें
पालथी मार कर सीधे बैठते हैं ।—आसनः,
(पु०) १ सृष्टिकर्ता ब्रह्मा का नामान्तर । २ शिव
का नामान्तर । ३ सूर्य का नामान्तर ।—आह्वम्,
(न०) लवङ्ग । लौंग ।—उद्भवः, (पु०) ब्रह्मा
का नामान्तर ।—करः,—हस्तः, (वि०) वह
जिसके हाथ में कमल हो ।—करः,—हस्तः,
(पु०) १ विष्णु का नामान्तर । २ कमल सदृश
हाथ । ३ सूर्य का नामान्तर ।—करा,—हस्ता,

(स्त्री०) लक्ष्मी का नामान्तर ।—कर्णिका (स्त्री०) १ कमल का बाजकोप २ कमलव्यूह बना कर खड़ी हुई सना का मध्यवर्ती भाग ।—कलिका, (स्त्री०) कमल की कली । अनखिला कमल का फूल ।—काष्ठम्, (न०) पद्माक्ष । दवा विशेष । केशरम्, (न०) केशरः, (पु०) कमल की तिरी ।—कोशः,—कौपः, (पु०) १ कमल का समुद्र । कमल के बीच का ज्वा जिसमें बीज होते हैं । २ करमुद्रा विशेष । खण्डम्,—प्राण्डम्, (न०) कमल समूह ।—गन्धः,—गन्धिः, (वि०) कमल जैसी सुशब्द वाचा ।—गन्धम्, (न०) —गन्धिः, (न०) पद्मकण्ठ । पद्माक्ष ।—गर्भः, (पु०) १ ब्रह्मा का नामान्तर । २ विष्णु का नामान्तर । ३ शिव का नामान्तर । ४ सूर्य का नामान्तर । ५ कमलपुष्प का भीतरी या मध्यभाग ।—गुणा, —गूहा, (स्त्री०) १ धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी का नामान्तर । २ लवङ्ग । लौंग ।—जः,—जातः,—भवः,—भूः,—योनिः,—सम्भवः, (पु०) १ कमल से उत्पन्न ब्रह्मा जी का नामान्तर ।—तन्तुः, (पु०) कमलनाल ।—नाभिः,—नाभः, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।—नालं, (न०) कमल नाल ।—निधिः, (पु०) कुबेर की नवनिधियों में से एक ।—प्राणिः, (पु०) १ ब्रह्मा का नामान्तर । २ बुधदेव का नामान्तर । ३ सूर्य का नामान्तर । ४ विष्णु का नामान्तर ।—पुष्पः, (पु०) कनेर का पेड़ ।—वन्धः, (पु०) एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसमें अक्षरों को ऐसे क्रम से लिखते हैं, जिससे कमल का आकार बन जाता है ।—वन्धुः, (पु०) १ सूर्य । २ मधुमक्षिका ।—बीजं, (न०) कमल के बीज ।—भासः, (पु०) शिव जी का नामान्तर ।—मालिनी, (स्त्री०) धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी जी ।—रागः, (पु०) —रागम्, (न०) मानिक या लाल नामक रत्न ।—रूपा, (स्त्री०) लक्ष्मी देवी का नामान्तर ।—रेखा, (स्त्री०) सामुद्रिक शास्त्रानुसार हथेली की कमलाकार रेखा । लाञ्छनः, (पु०) १ ब्रह्मा । २ कुबेर । ३ सूर्य । ४ राजा ।

—लाञ्छना, (स्त्री०) १ लक्ष्मी देवी का नामान्तर । २ सरस्वती देवी का नामान्तर । ३ तारा का नामान्तर ।—चासा, (स्त्री०) लक्ष्मी का नामान्तर ।—समासनः, (पु०) ब्रह्मा का नामान्तर ।—स्मुधा, (स्त्री०) १ गङ्गा का नामान्तर २ लक्ष्मी का नामान्तर । ३ दुर्गा का नामान्तर ।—हासः, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।

पद्मं (न०) १ कमल । (पु०) यथा—

“ पद्मवन्निर्गतं तोयं वत्ते पुष्पाफलं विग्रहः ।”

२ कमल सदृश आनूषण्य विशेष । ३ कमल की आकृति या आकार । ४ कमल की जड़ । ५ हाथी के चेहरे और सँड पर की रंगामेज़ी या चित्रकारी जो उसे सजाने को प्रायः लोग किया करते हैं । ६ कमलव्यूह । ७ संख्या विशेष । ८ सीसा । रास्ता । ९ शरीर स्थित अर्द्धचन्द्र । १० मानव शरीर के चिह्न विशेष । तिल । मस्ता । ११ दाग । धब्बा । पद्मः (पु०) १ मन्दिर विशेष । २ हाथी । ३ सर्प जाति विशेष । ४ श्रीरामचन्द्र की उपाधि । ५ कुबेर की नवनिधियों में से एक । स्त्रीमैथुन का एक आसन विशेष । रत्नवन्ध ।

पद्मकं (न०) १ पद्मव्यूह । कमल व्यूह । २ हाथी के चेहरे और सँड पर के रंगीन दाग । ३ बैठने का आसन विशेष ।

पद्मकिन् (पु०) १ हाथी । २ भोजपत्र का पेड़ ।

पद्मा (स्त्री०) १ श्रीविष्णुपत्नी लक्ष्मी जी का नामान्तर । २ लवंग । लौंग ।

पद्मावती (स्त्री०) १ लक्ष्मी का नामान्तर । २ एक नदी विशेष का नाम ।

पद्मिन् (वि०) १ कमल रखने वाला । २ धब्बेदार । (पु०) १ हाथी । २ विष्णु का नामान्तर ।

पद्मिनी (स्त्री०) १ कमल का पैधा । २ कमलसमुदाय । ३ वह सरोवर या ताल जिसमें कमलों की बहुतायत हो । ४ कमलनाल । ५ हथिनी । ६ कोकशास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जातियों में से सर्वोत्तम जाति । इस जाति की स्त्री अत्यन्त कोमलाङ्गी सुशीला रूपवती और पति-व्रता होती है ।

भवति कमलनेत्रा नायिकासुन्दरभा ।
अचिरक्षपुष्पयुग्मा च सकली कृष्ण की
वृद्धवचन सुशीला गीतचन्द्रा सुरक्षा ।
सकलतनुविशेषा पद्मिनी पद्मशयभा ॥

—ईशः, (पु०) —कान्तः, (पु०) —वल्लभः,
(पु०) सूर्य । —खगडम्, —पगडम्, (न०)
कमल समूह । वह स्थान जहाँ कमलों की
बहुतायत हो ।

पद्मशयः (पु०) विष्णु का नामान्तर ।

पद्य (पु०) १ जिसमें कविता के पद या चरण हो ।
२ चरण सम्बन्धी । ३ पदचिह्न से चिह्नित । ४
शब्द सम्बन्धी । ५ अन्तिम ।

पद्यः (पु०) १ शब्द । २ शब्द का अंश ।

पद्या (स्त्री०) १ पगडंडी । राह । रास्ता । २ चीनी ।

पद्यम् (न०) १ श्लोक । छन्द । २ प्रशंसा । स्तुति ।

पद्मः (पु०) ग्राम ।

पद्मः (पु०) १ भूलोक । मर्त्यलोक । २ गाड़ी । ३
मार्ग ।

पद्म (धा० उभय०) [पनायति—पनायते,
पनायित या पनित] १ स्तुतिकरना । प्रशंसा
करना । २ (आत्मने०) प्रसन्न होना । हर्षित होना ।
पनस्यति (क्रि०) प्रशंसाई होना । प्रशंसा के योग्य
होना । [दुष्प्रा ।

पनायित, पनित (वि०) प्रशंसित । प्रशंसा किया
पनुः } (पु०) [वैदिक] छात्रा । सराहना ।
पनूः } प्रशंसा ।

पनसः (पु०) १ कटहल या कटहर का वृक्ष । २
काँटा । ३ रामदल का एक वानर । ४ विभीषण
का एक मंत्री ।

पनसं (न०) कटहल का फल ।

पनसा } (स्त्री०) १ रोग विशेष । २ बानरी ।
पनसी } बंदरिया । राक्षसी ।

पनसिका (स्त्री०) कान और गर्दन पर होने वाली
फुंसी जो कटहल के काँटे की तरह नुकीली
होती है ।

पन्थक } (वि०) मार्ग में उत्पन्न । रास्ते में पैदा
पन्थक } हुआ ।

पन्न (वि०) गिरा हुआ । पड़ा हुआ । जैसे “शरणापन्न” ।

पपिः (पु०) चन्द्रमा ।

पपी (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा ।

पपु (वि०) पालन पोषण करने वाला । रक्षा करने
वाला ।

पपुः (स्त्री०) वह पोष्या माता जिसने माता की तरह
पाला हो ।

पंपा } (स्त्री०) १ दण्डकवन की एक झील या
पम्पा } सरोवर का नाम । २ दक्षिण भारत की एक
नदी का नाम ।

पय् (धा० आत्म०) [पयते] जाना । गमन करना ।

पयस् (न०) १ पानी । २ दूध । ३ बर्बर् । ४ भोजन ।

५ [वैदिक] रात । ६ शक्ति । ताकत । बल । ओज

—गलः, (पु०) —गडः, (पु०) १ ओला ।

२ द्वीप । —धनः, (न०) ओला । —चयः, (=पय-

श्रयः) (पु०) जलाशय । तालाब । झील । सरो-

वर । —जम्भन्, (पु०) बादल । —दः, (पु०)

बादल । —सुहृद्, (पु०) भयूर । केकी । मोर ।

—धरः, (पु०) १ बादल । मेघ । २ स्त्री की

छाती या चुची । ३ डाँड़ । ४ नारियल का वृक्ष । ५

कसौटक । मेरुदण्ड । पीठ के बीच की हड्डी । —

धस्, (पु०) १ समुद्र । २ झील । सरोवर । ३

जल बरसाने का बादल । —धारागृहं, (न०)

स्नानागार जहाँ जल फरता हो । —धिः, —

निधिः, (पु०) समुद्र । —पूरः, (पु०) जल-

कुण्ड । सरोवर । —मुचः, (पु०) बादल । —राशिः

(पु०) समुद्र । —वाहः, (पु०) बादल । —

व्रतं, (न०) दूधाहार पर रहना । उपवास

विशेष ।

पयस्य (वि०) १ दूधवाला । दूध का बना हुआ ।

२ पनीला ।

पयस्यः (पु०) बिल्ली ।

पयस्यति } (क्रि०) बहना ।

पयायते }

पयस्या (स्त्री०) दही ।

पयस्वल (वि०) बहुत दूध वाला । बहुत दुधार ।

बहुत दूध देने वाला ।

पयस्वलः (पु०) बकरा ।

पयस्विन् (वि०) जिसमें दूध हो । रसीली । पनीली ।

स्विनी (स्त्री०) १ दुधार गो २ नदी ३ बकरी । ४ रात ।

अधिक (न०) १ समुद्रफन ।

रः (पु०) कथे का वृत्त ।

रणी (स्त्री०) एक नदी का नाम जो विन्ध्याचल से निकलती है और चित्रकूट के नीचे बहती हुई जाती है ।

(वि०) १ दूसरा । भिन्न । और । स्वातिरिक्त । २ दूर । अलग । ३ परे । उस ओर । ४ पीछे का । बाद का । दूसरा । आगे का । बाद । परचाह । ५ उच्चतर । उरुःउतम् । ६ सर्वोच्च । सब से बड़ा । सब से अधिक प्रसिद्ध । विख्यात । मुख्य । श्रेष्ठ । प्रधान । ७ अपरिचित । गैर । अजनबी । ८ बैरी । शत्रु । दुश्मन । विरोधी । ९ बढ़ती । वचत । दृश्य हुआ । बचा हुआ । १० अन्तिम । आखीर का । अन्त का । ११ प्रवृत्त । लीन । तत्पर । —अङ्गम्, (न०) शरीर का पिछला भाग । —अङ्गुलम्, (न०) शिव जी का नामान्तर । —अदनम् (न०) फारस या अरब का बोड़ा । —अधिकारचर्चा (स्त्री०) अनधिकार हस्तक्षेप । जेबकाह । —अन्तः, (पु०) मृत्यु । —अन्ताः, (पु० बहु०) एक मानव जाति विशेष । —अन्तकः, (पु०) शिव जी का नामान्तर । —अक्ष, (वि०) दूसरे के अक्ष पर निर्वाह करने वाला । —अग्रम्, (न०) दूसरे का अग्र । —अपर, (वि०) दूर और निकट । दूर और समीप । २ पहिला और पिछला । ३ पूर्व और परे । ४ सबेरी और अवेरी । ५ ऊँच और नीच । ६ श्रेष्ठ और निकृष्ट । —अपरः, (पु०) मध्यम श्रेणी का गुह । —अमृतं, (न०) वर्षा । मेह । —अयशा, (वि०) —अयन, (वि०) १ भक्त । अनुरक्त । २ निर्भर । अधीन । ३ लीन । डूबा हुआ । ४ सम्बन्धयुक्त । ५ सहायक । —अयशम्, (न०) १ अन्तिम उपाय । मुख्य उद्देश्य । सर्वोच्च लक्ष्य । २ सार । (वैदिक) दृढ़ भक्ति । —अर्थ, (वि०) १ अन्य उद्देश्य । या अर्थ वाला । २ दूसरे के लिये किया हुआ । —अर्थः (पु०) १ सर्वाधिक लाभ । २ परमार्थ । ३ मुख्य सब से बढ़ कर अर्थ । ४ सब से बढ़ कर

पदार्थ अर्थात् स्त्रीप्रसङ्ग । अर्थम् (न०) अर्थ (अव्यया०) दूसरे के लिये । —अर्थ, (न०) १ दूसरा भाग । उत्तरार्द्ध । २ सर्वोच्च संख्या विशेष । —अर्थ, (वि०) १ और आगे की ओर का । संख्या में बहुत आगे का । २ सर्व-श्रेष्ठ । सर्वोत्तम । ३ अत्यन्त मूल्यवान् । ४ सब से अधिक सुन्दर । अर्थम्, (न०) १ अधिक से अधिक । २ अनन्त या असीम संख्या । —अवर, (वि०) १ दूर और नजदीक । २ सबेरी और अवेरी । ३ पहले और पीछे । ४ ऊँचा और नीचा । ५ परम्परागत । ६ सब शामिल किये हुए । —अवरा, (स्त्री०) सन्तति । औलाद । —अवरं, (न०) १ कार्य और कारण । २ विचार का समूचा विस्तार । ३ संसार । ४ पूर्णता । —अहः, (पु०) दूसरे दिन । —अहः, (पु०) रोपहर के बाद । दिन का उत्तरार्द्ध काल । —आगमः, (पु०) शत्रु का हमला । —आचित, (वि०) दूसरे द्वारा पाला पोसा हुआ । —आचितः, (पु०) गुलाम । दास । —आत्मन्, (पु०) परब्रह्म । —आयत्त, (वि०) अधीन । परमुखपेशी । दूसरे पर निर्भर । —आयुस्, (न०) ब्रह्म का नामान्तर । —आविद्धः, (पु०) १ कुबेर का नामान्तर । २ विष्णु का नामान्तर । —आश्रय, (वि०) दूसरे पर निर्भर । —आश्रयः, (पु०) १ पराधीन । २ शत्रु का प्रतिनिवर्तन । लौटना । —आश्रया, (स्त्री०) वह वृत्त जो दूसरे वृत्त पर उगे ; बंका । —आसङ्गः, (पु०) पराधीन । दूसरे पर निर्भर । —आस्कन्दिन्, (पु०) चोर । डाँकू । —इतर, (वि०) १ कृपाह्व । २ निज का । —ईशं, (न०) १ ब्रह्म की उपाधि । २ विष्णु का नामान्तर । —इष्टिः, (पु०) ब्रह्म । —उत्कर्षः (पु०) दूसरे की समृद्धि । —उपकारः, (पु०) दूसरों की सहाई । —उपकारिन्, (वि०) उपकारी । दूसरों पर दया करने वाला । —उपजापः, (पु०) शत्रुओं में भेदभाव उत्पन्न करने वाला । —उपदेशः, (पु०) दूसरों को शिक्षा या नसीहत । —उपहृद्, (वि०) शत्रु द्वारा घेरा हुआ । —ऊढा, (स्त्री०) दूसरे की स्त्री । —पथित,

(वि०) दूसरे द्वारा पाला पोसा हुआ । पधित
(पु०) १ नौकर २ कोयल कलत्र (न०)
दूसरे की स्त्री । कार्य, (न०) दूसरे का काम
या धंधा ।—लेज, (न०) १ दूसरे का शरीर । २
दूसरे का खेत । ३ दूसरे की स्त्री ।—गामिन्,
(वि०) १ दूसरे के साथ रहने वाला । २ दूसरे
को लाभ पहुँचाने वाला ।—गुण, (वि०) दूसरे
को लाभदायी ।—ग्रन्थि, (पु०) जोड़ ।
गाँठ ।—श्लानि, (स्त्री०) शत्रु को वशीभूत
करने की क्रिया ।—चक्र, (न०) १ शत्रुसैन्य ।
२ ६ प्रकार की दूतियों में से एक । शत्रुद्वारा
आक्रमण । ३ वैरी राजा ।—क्रन्द, (वि०)
अधीन ।—क्रन्द, (पु०) १ दूसरे की इच्छा ।
२ पराधीनता ।—क्रिद्र, (न०) दूसरे की कम-
जोरी या निर्बलता ।—ज, (वि०) अजनबी ।—
जन, (पु०) अजनबी । शैर ।—जात, (वि०)
१ दूसरे से उत्पन्न । २ आजीविका के लिये दूसरे
पर निर्भर रहने वाला ।—जात, (पु०) नौकर ।
—जित, (वि०) १ दूसरे से जीता हुआ । हारा
हुआ । २ दूसरे के सहारे रहने वाला ।—जित, (वि०)
कोयल पक्षी ।—तंत्र, (वि०) पराश्रित । दूसरे
के सहारे रहने वाला । पराधीन । परमुखापेक्षी ।
—दारा, (पु० बहु०) दूसरे की स्त्री ।—दारिन्,
(पु०) व्यभिचारी । लंपट ।—दुःख, (न०)
दूसरे का दुःख या शोक ।—द्वेषता, (स्त्री०)
परमात्मा । परब्रह्म ।—देश, (पु०) विदेश ।
स्वदेशातिरिक्त देश ।—देशिन्, (पु०) विदेशी ।
—द्रोहिन्,—द्वेषिन्, (वि०) दूसरों से घृणा
करने वाला । बैरी । विद्वेषी ।—धर्म, (न०)
दूसरे की सम्पत्ति ।—धर्म, (पु०) १ दूसरे का
धर्म । २ दूसरे का कर्त्तव्य या धंधा । ३ दूसरी
जाति के कर्त्तव्य ।—ध्यानन्, (न०) ध्यान ।
समाधि ।—पद, (पु०) शत्रु पक्ष या शत्रु का
दल ।—पदम्, (न०) १ सर्वोच्च पद । प्राधान्य ।
२ मोक्ष ।—पाकरत, (वि०) पेट के लिये दूसरे
की रसोई बनाने वाला । किन्तु पाक बनाने के पूर्व
निर्दिष्ट पञ्चयज्ञादि करने वाला ।—

पञ्चयज्ञं च स्वयं दत्त्वा परं प्रभुपतेरदात्तं

सदतः स तत्र अयं परः । करतस्तु सः ॥

—पिराडः, (पु०) दूसरे का दिया हुआ भोजन ।
दूसरे का भोजन ।—पुरजयः, (पु०) शूर ।
विजयी ।—पुरुषः, (पु०) १ गैर । अजनबी ।
अपरिचित । २ परब्रह्म । विष्णु । ३ दूसरी स्त्री का
पति ।—पुट, (वि०) दूसरे द्वारा पाला पोसा
गया ।—पुष्टः, (पु०) कोयल ।—पुष्टा, (स्त्री०)
१ कोयल पक्षी । २ पौधा विशेष । ३ बेस्था ।
रंडी ।—पूर्वा, (स्त्री०) वह स्त्री जो अपने
प्रथम पति को छोड़ दूसरा पति करे ।—प्रेष्यः,
(पु०) नौकर । चाकर ।—ब्रह्मन्, (न०) पर-
ब्रह्म । परमात्मा ।—भारा, (पु०) १ दूसरे का
हिस्सा । २ उत्कृष्टतर गुण । ३ सौभाग्य । समृद्धि ।
४ (अ०) सर्वोत्तमता । सर्वप्रधानता । सर्वोत्कृ-
ष्टता । (इ०) अत्यधिपुत्तान्त । विपुलता । उच्चता ।
उचाई । २ अन्तिम भाग । शेरा । भाषा, (स्त्री०)
विदेशी भाषा ।—भुक्त, (वि०) अन्य द्वारा
उपयुक्त या व्यवहृत किया हुआ ।—भृत्, (पु०)
काक । कौआ ।—भृत, (वि०) दूसरे द्वारा
पाला पोसा हुआ ।—भृत, (पु०)—
भृता, (स्त्री०) कोयल पक्षी ।—भर्त, (न०)
१ दूसरे की राय । २ भिन्न राय या सिद्धान्त ।—
मर्मज्ञ, (वि०) दूसरे की गुप्त बातें जानने वाला ।
—मृत्युः, (पु०) काक । कौआ । रमणः,
(पु०) किसी विवाहित स्त्री का प्रेमी या आशिक ।
—लोकः, (पु०) दूसरा लोक ।—वश,—
वश्य, (वि०) पराधीन । पराश्रित । वाच्य,
(न०) दोष । झुटि ।—वर्णिः, (पु०) १
जज । न्यायकर्त्ता । २ वर्ष । साल । ३ कार्तिकेय
के वाहन मयूर का नाम ।—वाद्, (पु०) १
अफवाह । किम्बदन्ती । २ आपत्ति । प्तराज ।
वादविवाद ।—वादिन्, (पु०) मुद्दे । वादी ।
वादविवाद करने वाला ।—वेश्मन्, (न०) पर-
ब्रह्म का आवासस्थान ।—व्रतः, (पु०) धृत्-
राष्ट्र का नामान्तर ।—श्वस्, (अव्यया०) आने-
वाले कल के बाद का दूसरा दिन । परसों ।—
सङ्गत, (वि०) १ दूसरे के साथ रहने वाला ।

२ दूसरे स लहने वाला सङ्गक (पु०)
जाव रुह सात् (अथवा०) दूसरे के
हाथ में गया हुआ । सेवा (स्त्री०) दूसरे की
चाकरी ।—स्त्री, (स्त्री०) दूसरे की भार्या ।—
स्व० (न०) दूसरे का मालमता ।—हन्, (वि०)
शत्रुहन्ता ।—हित, (वि०) १ शुभचिन्तक ।
परोपकारी । शीलवन्त । २ दूसरे के लिये लाभ-
कारक ।—हित, (न०) दूसरे का कुशल ।
दूसरे की भलाई ।

परं (न०) १ सर्वोच्च शिखर । सब से ऊँचा सिरा ।
२ परब्रह्म । ३ मोक्ष । ४ किसी शब्द का गौरवार्थ ।
परः (पु०) १ अन्यपुरुष । गैर । अजनबी । विदेशी
शत्रु । । बैरी । विरोधी ।
परकीय (वि०) १ दूसरे का । पराया । २ अपरि-
चित । द्वेषी ।

परकीया (स्त्री०) दूसरे की भार्या । स्त्री जो अपनी न
हो । मुख्य तीन नायिकाओं में से एक ।

परंजन, परंजनः } (पु०) वरुण का नामान्तर ।
परंजय, परंजयः }

परतस् (अव्यया०) १ दूसरे से । २ शत्रु से । ३
आगे । (अपेक्षाकृत) अधिक । परे । पीछे । ऊपर ।
४ अन्यथा । नहीं तो । ५ भिन्न प्रकार से । ६ बाद
को । और आगे ।

परत्वं (न०) १ पर होने का भाव । पूर्व या पहले
होने का भाव । २ भेद । पहिचान । ३ दूरी । ४
परिणाम । नतीजा । ५ शत्रुता । वैर । ६ समय
या स्थान की पूर्वता । वैशेषिक दर्शनानुसार द्रव्य
के २४ गुण ।

परत्र (अव्यया०) १ दूसरे लोक में । अगले जन्म में ।
२ परिणाम में । आगे या पीछे से । ३ उसके बाद ।
अविष्य में ।—भोरुः (पु०) वह जो परलोक
से भयभीत हो । धर्मात्मा आदमी ।

परत्रम् (न०) मरने के बाद मिलने वाला लोक ।
परंतप } (वि०) दूसरों को सताने वाला । शत्रु
परन्तप } को अपने वश में करने वाला ।

परंतपः } (पु०) शूरवीर । बहादुर । विजयी ।
परन्तपः }

परम (वि०) १ अति दूरवर्ती । अन्तिम । २ सर्वोच्च ।
उत्तम । सर्वश्रेष्ठ । सब से बड़ा । ३ मुख्य । प्रधान ।

आरम्भिक सब से बड़ कर श्रेष्ठ ४ अति ५
पर्याप्त काफी ६ सब स गया बीता ६ अपचा
कृत श्रेष्ठ अङ्गना (स्त्री०) सर्वारम्भक स्त्री
—अष्टाः, (पु०) अत्यन्त सूक्ष्म अणु ।—अद्वैतं,
(न०) १ परब्रह्म या परमात्मा । २ नितान्त
भेद विकल्प रहितवाद । जोव और ब्रह्म ने अभेद
की कल्पना करने वाला वेदान्त सिद्धान्त विशेष ।
—अक्षम्, (न०) खीर । दूध में पके हुए चाँवल ।
—अर्थः, (पु०) १ सर्वोच्च या सर्वोत्कृष्ट सत्य ।
सत्य आत्मज्ञान । जीव और ब्रह्म सम्बन्धी ज्ञान ।
२ सत्य । कोई भी उत्तम और आवश्यक वस्तु ।
४ उत्तम भाव । ५ उत्तम प्रकार की सम्पत्ति ।—
अर्थतः, (अव्यया०) सचमुच । वास्तव में ।
ज्यों का त्यों । ठीक ठीक ।—अष्टः, (पु०)
उत्तम दिवस ।—आत्मन्, (पु०) ब्रह्म । पर-
मात्मा ।—आनन्दः, (पु०) बहुत बड़ा सुख ।
ब्रह्म के अनुभव का सुख । ब्रह्मानन्द । परमात्मा ।
—आपद, (स्त्री०) सब से बड़ी विपत्ति या मुसी-
बत ।—ईशः, (पु०) विष्णु ।—ईश्वरः, (पु०)
१ विष्णु का नामान्तर । २ इन्द्र का नामान्तर ।
३ शिव का नामान्तर । ४ सर्वशक्तिमान परब्रह्म ।
परमात्मा । ५ ब्रह्मा का नामान्तर । ६ संसार का
अधीश्वर । दुनिया का अधिष्ठाता ।—अग्निः,
(पु०) महर्षि ।—ऐश्वर्यम्, (न०) प्रसुख ।
—गतिः, (स्त्री०) मोक्ष । मुक्ति । गवः
(पु०) उत्तम बैल । साँड़ या गाव ।—पदम्,
(न०) १ सर्वोत्तम पद । सर्वोच्च पदवी । २ मोक्ष ।
—पुरुषः, —पुरुषः, (पु०) परमात्मा । पर-
ब्रह्म ।—प्रख्य, (वि०) प्रसिद्ध । प्रख्यात ।—
ब्रह्मन्, (न०) परमात्मा ।—रसः, (पु०)
पानी मिला माछ ।—हंसः, (पु०) वह संन्यासी
जो ज्ञान की परमावस्था को प्राप्त कर चुका
हो । कुटीचक । बहुदक । हंस और परमहंस नाम
से संन्यासियों के चार भेद स्मृतिकारों ने किये
हैं । इनमें परमहंस सर्वश्रेष्ठ माना गया है ।

परमक (वि०) सर्वोच्च । सर्वोत्तम । सर्वश्रेष्ठ ।

परमतः (अव्यया०) अत्यधिकता से । बहुत अधिक ।

परमता (स्त्री०) १ सर्वोच्च । २ सर्वोच्च लक्ष्य ।

परंपदं } (न०) १ वैकुण्ठधाम । दिव्यधाम ।
परम्पद्म् } २ सब से श्रेष्ठ पद व स्थान । ३ मोक्ष ।
मुक्ति ।

परमश्रेष्ठ (वि०) सब से बढ़िया । श्रेष्ठतम ।

परमश्रेष्ठः (पु०) १ ब्रह्मा का नामान्तर । २ विष्णु का नामान्तर । ३ शिव का नामान्तर । ४ देवता । देवत ।

परमेष्ठिन् (पु०) १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ शिव ।
४ गरुड । ५ अग्नि । ६ कोई भी आध्यात्मिक गुरु । ७ (जैनियों का) अर्हत् ।

परंपर } (वि०) १ एक के बाद दूसरा । २ सिल-
परम्पर } सिलेवार । क्रमशः ।

परंपरः } (पु०) १ परपोता । पौत्र का पुत्र ।
परम्परः } २ हिरन विशेष ।

परंपरं } (न०) क्रमशः । सिलसिलेवार ।
परम्परम् }

परंपरा } (स्त्री०) १ अविच्छिन्न क्रम । सिलसिला
परम्परा } जो टूटे नहीं । २ पंक्ति । अवली ।

समूह । समुदाय । ३ क्रम । विधि । अर्थार्थ व्यवस्था । ४ वंश । कुल । ५ वध । नाश ।

परंपराक } (वि०) वज्र में पशु का वध करने
परम्पराक } वाला ।

परंपरोष्ण } (वि०) १ पैतृक । वंशपरम्परा से प्राप्त ।
परम्परोष्ण } २ खानदानी ।

परवन् (वि०) १ पराधीन । आज्ञाकारी । २ बलरहित ।
शक्तिहीन किया हुआ । सम्पूर्णतः परवश । ४ अनुरक्त । भक्त ।

परवत्ता (स्त्री०) परवशता । पराधीनता ।

परंजं } (न०) इन्द्र की तलवार ।
परञ्जम् }

परंजः } (पु०) १ कोल्हू । २ तलवार की धार ।
परञ्जः } ३ फेन ।

परशः (पु०) १ पारस पत्थर । स्पर्शमणि ।

परशुः (पु०) १ एक अस्त्र जिसमें एक डंडे के सिरे पर एक अर्द्धचन्द्राकार लोहे का फल लगा रहता है । कुल्हाड़ी विशेष । तबर । २ वज्र । —धरः, (पु०) १ परशुराम । २ गणेश । ३ परशुधारी सिपाही । —रामः, (पु०) जमदग्नि के पुत्र । —यन्, (न०) नरक विशेष

परश्वधः } (पु०) परसा । तबर । तबल ।
परश्वधः }

परस् (अव्यया०) १ परे । आगे । अपेक्षाकृत अधिक । २ दूसरी तरफ । ३ अत्यन्त दूसरा । ४ छोड़ कर । ५ (वैदिक) भाविष्यत् में । पीछे से । —कृष्ण, (वि०) अतिका । —पुंसा, (स्त्री०) [वैदिक] वह स्त्री जो अपने पति से सन्तुष्ट न होकर (आशिक या प्रेमी) की तलाश में हो । —पुरुष, (वि०) मनुष्य से बढ़ कर । —शत, (वि०) सौ से अधिक । —श्वस्, (अव्यया०) आने वाले कल के बाद का दिन । परसों । —सहस्र, (वि०) एक हजार से अधिक ।

परस्तात् (अव्यया०) १ परे । दूसरी तरफ या ओर । और आगे । २ इसके बाद । पीछे से । ३ अपेक्षाकृत ऊँचा । उच्चतर । ४ (वैदिक) ऊपर से । ५ अलग । दूर । पृथक् ।

परस्पर (वि०) आपस में । —ज्ञः, (पु०) मित्र । दोस्त ।

परस्मैपदम् (न०) १ संस्कृत में क्रियाएँ दो प्रकार
परस्मैभाषा (स्त्री०) की होती हैं । उनमें से एक । इससे दूसरे के लिये फल का ज्ञान होता है । व्याकरण में कथित तिप् आदि ।

परा (अव्यया०) यह एक अव्यय है । दूर, पीछे, एक तरफ, ओर के अर्थ में यह प्रयुक्त होता है । यथा परागत । पराक्रान्त । पराधीन आदि ।

पराक (वि०) छाँटा ।

पराकः (पु०) १ वलिदान देने की तलवार । २ प्रायश्चित्त विशेष । ३ रोग विशेष ।

पराकाशः (पु०) बहुत दूर की आशा या उम्मेद ।

पराकृ (क्रि०) खारिज कर देना । अस्वीकृत कर देना । तिरस्कार करना । ध्यान देना ।

पराकरणां (न०) अस्वीकृत कर देने की क्रिया । तिरस्कार ।

पराके (अव्यया०) फाँसले पर । अन्तर पर (वैदिक) ।

पराक्रम (क्रि०) १ हिम्मत दिखाना । बहादुरी दिखाना । २ लौट जाना । पीठ फेरना । ३ आक्रमण । करना । ४ आगे बढ़ना ।

पराक्रम (पु०) १ बहादुरी साहस । ताकत २
आक्रमण । ३ प्रयत्न । उद्योग । ४ विष्णु का
नामान्तर ।

पराक्रमिन् (वि०) पराक्रमी । साहसी । बहादुर ।
वीर । विक्रमशाली । हिम्मत वाला ।

पराक्रान्त (व० कृ०) १ बलवान् । बलिष्ठ । वीर ।
बहादुर । २ आक्रमण किया हुआ । ३ पीछे
भगाया हुआ ।

परागः (पु०) १ पुष्परज । वह रज व धूल जो फूलों
के बीच लंबे केसरों पर जमा रहती है । २ धूल ।
रज । ३ एक प्रकार का सुगन्ध-चूर्ण जो स्नानो-
परान्त शरीर में मला जाता है । ४ चन्द्रन । ५
चन्द्रमा सूर्य का ग्रहण । ६ कीर्ति । ख्याति । ७
स्वाधीनता । मनमौजीपन ।

परागम् (क्रि०) १ लौटना । २ घेरना । छेकना ।
धुसना । ३ प्रस्थान करना । ४ मर जाना ।

परागत (व० कृ०) १ मृत । मरा हुआ । २ ढका
हुआ । घिरा हुआ । ३ फैला हुआ । वड़ा हुआ ।

परागवः } समुद्र ।
पराङ्मुखः }

पराच् } (वि०) [स्त्री०—पराची या
पराञ्च-पराञ्च } पराञ्ची] १ दूसरी ओर स्थित ।
२ पराङ्मुख । मुँह फेरे हुए । ३ प्रतिकूल ।
विरोधी । ४ फाँसले पर । ५ बाहिर की ओर घूमा
हुआ । बाह्योन्मुख । ६ भगाया हुआ । लौटाया
हुआ । ७ उल्टा चलने वाला ।—मुख,
(= पराङ्मुख) १ विमुख । मुँह फेरे हुए । २
उदासीन । ३ विरुद्ध ।—मुखः, (पु०) तार्किक
मंत्र जो शत्रु के चलाये अस्त्र को लौटाने के लिये
पढ़ा जाता है ।

पराचीन (वि०) १ सामने की ओर भगाया हुआ ।
२ ध्यान न देने वाला । ३ उत्तरकालभव । पीछे
हुआ । दूसरी ओर अवस्थित ।

पराचीर्ण (न०) दूर । परे । अपेक्षाकृत अधिक ।
अधिकता ।

पराजि (क्रि०) १ हराना । शिकस्त देना । जीतना ।
वशवर्ती करना । मुसी करना । २ खोना । हाथ से
निकाल देना । ३ जीत लिया जाना । पराजित

होना ४ (किसी वस्तु को) असब्य जानना ५
५ वशीभूत हो जाना ।

पराजयः (पु०) विजय । हार ।

पराजित (व० कृ०) जीता हुआ । हराया हुआ ।

पराजिष्णु (वि०) १ विजयी । २ जीता हुआ । हराया
हुआ ।

परांजः } (पु०) १ कोल्हू (तेल का) । २ फैल ।

पराञ्जः } फैला । ३ तलवार या छुरी की बाड़ ।

पराणुत्तिः (स्त्री०) भगा देने की क्रिया । हटा देने की
क्रिया ।

परात्परः (पु०) परमात्मा । परब्रह्म ।

परादा (क्रि०) [वैदिक] १ सौंप देना । हवाले कर
देना । २ फैक देना । बरबाद कर डालना । ३
दे डालना । बदल लेना । ४ बाहिर कर देना ।

परादानं (न०) १ दे डालना । त्याग देना । २
बदलौअल ।

पराधिः (पु०) १ शिकार । आखेट । २ अत्यन्त
मानसिक पीड़ा ।

पराणसा } (स्त्री०) वैद्यक चिकित्सा । चिकित्सा
पराणसा } की क्रिया ।

परापत् (क्रि०) १ पहुँचना । समीप जाना । २ लौटना ।
३ बच जाना । ४ प्रस्थान करना । ५ गिर पड़ना ।
६ असफल होना । (निज०) भगा देना ।

पराभू (क्रि०) १ हराना । शिकस्त देना । नाश
करना । जीतना । २ घायल करना । चिढ़ाना ।
छेड़छाड़ करना । ३ अन्तर्धान होना । ४ नष्ट
होना । खोजाना । ५ वशवर्ती होजाना । आत्म-
समर्पण कर देना ।

पराभवः (पु०) १ हार । पराजय । २ तिरस्कार ।
अपमान ३ नाश । ४ अन्तर्धान । वियोग ।

पराभूत (व० कृ०) १ हराया हुआ । जीता हुआ ।
२ तिरस्कृत । अपमानित ।

पराभूतिः (स्त्री०) देखो पराभवः ।

पराभृत (वि०) वह जिसने मृत्यु को जीत लिया हो ।
मुक्त ।

परामृश (क्रि०) १ छूना । रगड़ना । धीरे धीरे चो-
मारना । २ हाथ लगाना । आक्रमण करना । घेर
डालना । ३ अष्ट करना । ४ विचार करना

सोचना ! २ मन ही मन सोचना विचारना । ६ सलाह लेना ।

परामर्शः (पु०) १ पकड़ना । खींचना । जैसे “केशप-
रामर्शः” । २ (धनुष को) झुकाना या तानना ।
३ प्रचलितता । आक्रमण । ४ होहल्ला । रुकावट ।
५ स्मरण करना । ६ विचार । मनन । ७ फैसला ।
निर्णय । ८ स्पर्श । थपथपाना । ९ रोग से पीड़ित
होना ।

परामर्शनम् (न०) १ याददास्त । स्मृति । २ विचार ।
सोच विचार ।

परामृष्ट (व० कृ०) १ स्पर्श किया हुआ । छुआ
हुआ । पकड़ा हुआ । गप्पा हुआ । २ बुरी तरह
व्यवहृत किया हुआ । भङ्ग किया हुआ । ३
विचारा हुआ । निर्णय किया हुआ । ४ सहा हुआ ।
५ सम्बन्ध किया हुआ । ६ रोगाक्रान्त ।

परारि (अव्यया०) गतवर्ष के पूर्व का वर्ष ।

परायण (वि०) १ गत । गया हुआ । २ निरत ।
प्रवृत्त । लीन । तत्पर । लगा हुआ ।

पारुः (पु०) कारवेल्ल । करेला ।

पारुकः (पु०) पत्थर या चट्टान ।

परावाकः (पु०) [वैदिक] खण्डन । प्रतिवाद ।

पराविद्धः (पु०) कुबेर का नामान्तर ।

परावत् (अव्यया०) [वैदिक] फाँसले पर ।
अन्तर पर ।

परावृत् (क्रि०) लौटना । लौटजाना ।

परावर्तनः (पु०) १ प्रत्यावर्तन । पलटने का भाव ।
पलटाव । २ बदलौआल । लौटवैन । अदलबदल ।
विनिमय । ३ फिर से पाने की क्रिया । पुनःप्राप्ति ।
४ सजा का बदल जाना ।

परावृत्त (व० कृ०) १ पलटाया या पलटाया हुआ ।
२ फेरा हुआ । ३ बदला हुआ । ४ लौटा कर
दिया हुआ ।

परावृत्तिः (स्त्री०) १ पलटने या पलटाने का भाव ।
पलटाव । २ मुकदमे का फिर से विचार या
फैसला ।

पराव्याधः (पु०) इतना फाँसला जितने में फँका
हुआ पत्थर जा कर गिरे ।

पराशरः (पु०) एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि
द्वैपायन वेदव्यास के पुत्र थे ।

पराशरिन् (पु०) भिडुक । भिखारी ।

परास् (क्रि०) १ त्यागना । छोड़ना । २ निकालना ।
३ अस्वीकृत करना । खण्डन करना । नामंजूर
करना । खारिज करना ।

परासं (न०) टीन । राँगा ।

परासनश्च (न०) बध । हत्या ।

परास्तु (वि०) प्राणरहित । मृत ।

परास्त (व० कृ०) १ फँका हुआ । बहाया हुआ । २
निकाल बाहर किया हुआ । निकाला हुआ । ३
त्यक्त । त्यागा हुआ । ४ खण्डन किया हुआ ।
अस्वीकृत किया हुआ । नामंजूर किया हुआ । ५
परास्त किया हुआ ।

पराहत (व० कृ०) १ आक्रान्त । ध्वस्त । २ दूर
किया हुआ । भगाया हुआ ।

पराहतम् (न०) आघात । चोट ।

परि (अव्यया०) एक उपसर्ग जिसके अन्य शब्दों में
जोड़ने से निम्न अर्थों की उपलब्धि होती है ।
१ सर्वतोभाव । अच्छी तरह । २ अतिशय । ३
पूर्णता । ४ दोषाख्यान जैसे परिहास । परिवाद ।
५ नियम । क्रम । ६ चारों ओर ।

परिकथा (स्त्री०) एक कहानी के अन्तर्गत उसीके
सम्बन्ध की दूसरी कहानी ।

परिकंपः } (पु०) १ महान । भयङ्कर कपकपी ।
परिकम्पः }

परिकरः (पु०) १ लवाज़मा । अनुगत सहचर । २
समूह । संग्रह । भीड़ । ३ आरम्भ । शुरुआत ।
४ कमरबंद । कमरपदी । पटुका । ५ पर्यङ्क । ६
एक अर्थालङ्कार जिसमें अभिप्रायपूर्ण विशेषणों के
साथ विशेष्य आता है । ७ फैसला । निर्णय ।

परिकर्मन् (पु०) नौकर । (न०) १ देह में चन्दन
केसर आदि लगाना । उवटन करना । २ पैर में
महावर लगाना । ३ तैयारी । ४ पूजन । अर्चन ।
५ पवित्रीकरण । ६ अङ्गशास्त्र की क्रिया विशेष ।

परिकर्तृ (पु०) पुरोहित जो अनविवाहित ज्येष्ठ
आता के रहते छोटे भाई का विवाह करावे ।

परिकर्षः (पु०) १ खींचने की क्रिया । खींच
परिकर्षणम् (न०) १ कर निकालने की क्रिया ।
उखाड़ने की क्रिया ।

परिकल्पनम् (न०) धोखा । छल । कपट । बद्मसाधो ।

परिकल्पनम् (न०) १ तै करना । निश्चित

परिकल्पना (स्त्री०) १ करना । २ बनावट ।

रचना । आविष्कार । ३ सम्पन्नकरण । ४ विभक्त-
करण । बंटवारा ।

परिकान्तिः (पु०) भक्त । साधु । संन्यासी ।

परिकीर्ण (व० कृ०) १ फैला हुआ । बिखरा हुआ ।

२ घिरा हुआ । भीड़भाड़ से युक्त । परिपूर्ण ।

परिकृष्ट (न०) शुद्ध । खार्ई ।

परिकोपः (पु०) महान् क्रोध । रोष ।

परिक्रमः (पु०) १ दहलना । २ फेरी देना । चारो

ओर घूमना । ३ क्रम । सिलमिला । ४ एक के

पीछे एक दूसरे का आना । ७ प्रविष्ट होने वाला ।

घुसने वाला ।—सहः (पु०) बकरा ।

परिक्रयः (पु०) १ मजदूरी । भाड़ा । २

परिक्रियणम् (न०) १ मजदूरी पर काम में

लगाना । ३ क्रय । खरीद । ४ विनिमय । पलटौ-

अल । अदलाबदली । ५ सन्धि जो रुपये देकर

की गयी हो ।

परिक्रिया (स्त्री०) १ खार्ई से घेरना । २ घेरना ।

परिक्रान्त (व० कृ०) थका हुआ । परिश्रान्त ।

परिक्रुदः (पु०) तरा । नमी । सील ।

परिक्रुशः (पु०) थकाई । थकावट । कष्ट । कड़ाई ।

परिक्रयः (पु०) १ नाश । गलाव । २ अदृश्य हो

जाने की क्रिया । समाप्त होने की क्रिया ।

बरबादी । हानि । घाटा । असफलता ।

परिज्ञाम (वि०) दुबला । लटा हुआ ।

परिज्ञालनम् (न०) १ छुजाई । सफाई । २ धोने के

लिये जल ।

परिज्ञित (व० कृ०) १ खार्ई आदि से घेरा हुआ ।

२ बिलगा हुआ । ३ घेरा हुआ । ४ बिछा हुआ ।

५ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ ।

परिज्ञीण (व० कृ०) १ नष्ट हुआ । अन्तर्धान हुआ ।

२ नष्ट किया हुआ । चीख किया हुआ । ३ दुबला

या लटा हुआ । घिसा हुआ । निघटा हुआ ।

४ नितान्त नाश को प्राप्त हुआ । ५ खोया हुआ ।

विनष्ट किया हुआ । ६ छोटा किया हुआ । घटाया
हुआ । ७ दिवाला निकाले हुए ।

परिज्ञोव (वि०) नशे में बिल्कुल चूर ।

परिज्ञेयः (पु०) १ इधर उधर भ्रमण करना । दह-

लना । २ फैलाना । बखेरना । ३ घेरना ।

छेकना । ४ घेरने की सीमा या घेरा ।

परिज्ञा (स्त्री०) खार्ई । किसी नगर या गढ़ के

बाहिर की नहर जो नगर या गढ़ की रक्षा के लिये

खोदी जाती है । खंदक ।

परिज्ञातम् (न०) १ खार्ई । खंदक । २ हल ।

पहिये से बनी लौक या लकीर । ३ खुदाई ।

परिज्ञेदः (पु०) थकावट । श्रान्ति ।

परिख्यातिः (स्त्री०) कीर्ति । नामवरी । प्रसिद्धि ।

परिगणनम् (न०) १ भलीभाँति गिनना । पूरा

परिगणना (स्त्री०) १ पूरा गिनना । ठीक ठीक

बयान या कथन ।

परिगत (व० कृ०) १ घेरा हुआ । २ चारो ओर

झाया हुआ । ३ जाना हुआ । समाप्ता हुआ । ४

भरा हुआ । ढका हुआ । ५ प्राप्त किया हुआ ।

पाया हुआ । ६ स्मरण किया हुआ ।

परिगलित (व० कृ०) १ ढूँवा हुआ । २ टकराया

हुआ । गिरा हुआ । ३ अदृश्यता को प्राप्त । ४

पिचला या गला हुआ । ५ बड़ा हुआ ।

परिगर्हणम् (न०) बड़ा भारी कलङ्क या दोषारोपण ।

परिगृह (व० कृ०) १ नितान्तगुप्त । २ जो समझ ही

में न आवे । बड़ी कठिनाई से समझ में आने

वाला ।

परिगृहीत (व० कृ०) १ पकड़ा हुआ । काँपे में

आया हुआ । २ आलिङ्गन किया हुआ । छाती से

लगाया हुआ । चिपटाया हुआ । घेरा हुआ । ४

स्वीकृत किया हुआ । लिया हुआ । पाया हुआ ।

५ माना हुआ । ६ आश्रय दिया हुआ । अनुग्रह

किया हुआ । ७ अनुसरण किया हुआ । आज्ञा

का पालन किया हुआ । ८ विरोध किया हुआ ।

परिगृह्या (स्त्री०) विवाहिता स्त्री ।

परिग्रहः (पु०) १ पकड़ । २ छिक्काव । घिराव । ३

पहनाव उड़ाव । ४ प्राप्ति । उपलब्धि । ५ स्वीकृति

६ सम्पत्ति । धनदौलत । ७ विवाह में पाना ।

विवाह । न भाया । पत्नी । १ अपनी संरक्षकता में लेना । अनुग्रह करना । १० चाकर । टहलुआ । ११ गृहस्त । परिवार । परिवार के लोग । १२ अन्तःपुर । रनवास । १३ जड़ । उत्पत्तिस्थान । १४ चन्द्रग्रहण । सूर्यग्रहण । १५ शपथ । १६ सेना का पिछला भाग । १७ विष्णु का नामान्तर । १८ पूर्णता ।

परिग्रहीतृ (पु०) पति । [विरह ।

परिग्रह (व० क०) १ थका हुआ परिश्रान्त । २

परिग्रहः (पु०) १ अर्गल । २ वाधा । रुकावट । ३

मूठ पर लोहा जड़ा हुआ डंडा या छड़ी । ४ लोहे

का डंडा ५ घड़ा । कलसा । ६ शीशे का घड़ा । ७

घर । न वध । नारा । ८ चोट ।

परिग्रहणम् (न०) १ आघात । २ खलबलाना ।

घोलमेल करना ।

परिग्रहातः (पु०) १ वध । हत्या । हनन ।

परिग्रहणम् (न०) १ स्थानान्तरकरण । पियूष

छुड़ाना । २ डंडा । लुहाँगी ।

परिग्रोपः (पु०) १ शौर । होहल्ला कोलाहल । २

अनुचित कथन । ३ मेघगर्जन ।

परिग्रतुर्दर्शनम् (न०) पूरा चौदह ।

परिचयः (पु०) १ ढेर । संग्रह । २ जानकारी ।

अभिज्ञता । घनिष्टता । अवगति । ३ परीक्षा ।

अध्ययन । अभ्यास । उद्घरण । ४ ज्ञान । ५

पहचान ।

परिवरः (पु०) १ नौकर । अनुयायी । सेवक । २

शरीररक्षक । ३ गृहक । चौकीदार । ४ सेवा ।

स्निग्धमतः ।

परिवरणः (पु०) नौकर । सेवक । सहायक ।

परिवरणम् (न०) १ चलना फिरना । २ सेवा ।

परिचर्या (स्त्री०) सेवा । उपस्थिति ।

परिचायकः (पु०) यज्ञीय अग्नि ।

परिचारकः } (पु०) सेवक । टहलुआ ।

परिचारिकः }

परिचितिः (स्त्री०) १ परिचय । जानकारी । घनिष्टता ।

परिच्छिद् (स्त्री०) १ राजा आदि के साथ सदैव रहने

वाले नौकर । अनुचर । २ लबाजमा । ३

असवाव । सामान ।

परिच्छिद् (पु०) १ पट । कपड़ा जो किसी वस्तु को ढक

चा छिपा सके : आच्छादन । २ वस्त्र । पोशाक ।

३ अनुचर । सेवक । आश्रितों का मण्डल । ४

छत्र चमर आदि सामान । ५ सामान असवाव ।

(वरतनादि) ६ यात्रोपयोगी सामान ।

परिच्छिद्दः } (पु०) अनुचर । सेवक । टहलुआ ।

परिच्छिद्दः }

परिच्छिन्न (व० क०) १ ढका हुआ । लपटा हुआ ।

कपड़ा पहिने हुए । वस्त्र धारण किये हुए । २

छाया हुआ । ३ घिरा हुआ । ४ छिपा हुआ ।

परिच्छित्तिः (स्त्री०) १ सीना । अवधि । इयत्ता । २

बटवारा । अलगाव ।

परिच्छिन्न (व० क०) १ अलगाया हुआ । विभाजित ।

२ भली भाँति परिभाषा दिया हुआ । निरिचत

किया हुआ । दर्याफत किया हुआ । ३ सीमाबद्ध ।

परिच्छित्तिः (पु०) १ अलगाव । बंटवारा । विवेक

(अच्छे पुरे का) २ लक्षण । निर्णय । ३

पहचान । फैसला । ४ सीमा । अवधि । इयत्ता ।

५ अध्याय । प्रकरण ।

परिच्छिद्य (वि०) १ गिनने नापने या तौलने योग्य ।

बिलगाने योग्य । २ बाँटने योग्य । विभाज्य ।

परिज्ञनः (पु०) १ अनुचर । अनुयायी । पिछलगुआ ।

सदा साथ रहने वाले नौकर । २ आश्रित जन

जैसे स्त्री पुत्रादि । ३ नौकर ।

परिजल्पितं (न०) ऐसा गूढ़ कथन जिससे अपनी

श्रेष्ठता और निपुणता प्रकट हो और (अपने

स्वामी) की निष्ठुरता, परिवर्जना तथा अन्य

ऐसे ही दुर्गुण प्रकट हों ।

परिज्ञप्तिः (पु०) १ बालालाप । संवाद । २ पहिचान ।

परिज्ञानम् (न०) पूर्णज्ञान । पूर्णपरिचय । सम्बन्ध

ज्ञान ।

परिडीनम् (न०) पक्षियों का चकर खाते हुए उड़ान ।

परिणद्ध (व० क०) १ चारों ओर से ढका या बंधा

हुआ । २ चौड़ा । लंबा ।

परिणत (व० क०) १ झुका हुआ । नवा हुआ । २

उतरता हुआ (जैसे उतरती उम्र) ३ पका हुआ ।

पूर्णवृद्धि को प्राप्त । ४ पूर्णरूप से बढ़ा हुआ ।

आगे बना हुआ । पूर्णता को प्राप्त ५ पचा हुआ ६ रूपान्तरित । प्रज्ञा हुआ ७ समाप्त
परिणामः (पु०) वह हाथी जो दाँतों का प्रहार करने को झुका हुआ हो ।

परिणतिः (स्त्री०) १ नवन । सुकाव । २ पकोवट । पकता । वृद्धि । ३ रूपान्तरित्व । अवस्थान्तरित्व । ४ पूर्णता । ५ परिणाम । नतीजा । ६ अन्त । समाप्ति । अवसान । ७ जीवन का अवसान । वृद्धावस्था । ८ परिपाक । पचन ।

परिणयः (पु०) } विवाह । शदी ।
परिणयनम् (न०) }

परिणहन (वि०) चारों ओर से लपेटा हुआ या बाँधा हुआ ।

परिणामः } (पु०) १ परिवर्तन । अदलबदल ।
परीणामः } रूपान्तरकरण । २ पाचन शक्ति । ३ नतीजा । फल । ४ वृद्धि । पकता । ५ अन्त । समाप्ति । अवसान । ६ वृद्धावस्था । बुढ़ापा । ७ छेप (काल का) । समय विलाना । ८ अर्थालङ्कार विशेष, जिसमें उपमेय के कार्य का उपमान द्वारा किया जाना अथवा अप्रकृत (उपमान) को प्रकृत (उपमेय से एक रूप हो कर केहूँ कार्य करना) कहा जाय ।—दर्शिन, (वि०) दूरदर्शी । विवेकी ।—दृष्टि, (वि०) विवेकी ।—दृष्टिः, (स्त्री०) विस्मयकारिता । विज्ञता । पूर्वविधान । भावी काल की व्यवस्था ।—पथ्य, (वि०) अन्त में गुणकारी ।—शूलं, (न०) वायुगोले का द्रु ।

परिणायः } (पु०) शतरंज की चाल । शतरंज
परीणायः } की गोट की चाल ।

परिणायकः (पु०) १ नेता । पेशवा । २ पति ।

परिणहः } (पु०) १ घेरा । विस्तार । २ चौड़ाई ।
परीणहः } अर्ज ।

परिणहवत् (वि०) बड़ा । लंबा । बड़ा हुआ । फैला हुआ ।

परिणहिन् (वि०) लंबा । बड़ा ।

परिणिमक (वि०) १ खाने वाला । चखने वाला । २ चुबन करने योग्य ।

परिणिष्टा (स्त्री०) पूर्ण निपुणता ।

परिणीत (व० क०) विवाहित ।

परिणीता (स्त्री०) विवाहिता स्त्री

परिणीतु (पु०) पति । स्वसम ।

परितर्णम् (न०) प्रसन्नता । सन्तोष ।

परितस् (अन्य०) १ चारों ओर । सब तरफ । सर्वत्र । सब जगह । २ ओर । तरफ ।

परितापः (पु०) १ बड़ी भारी शर्मा । उत्कट उन्मत्ता । २ कष्ट । पीड़ा । ३ विलाप । ४ कम्प । भय ।

परिनुष्ट (व० क०) १ मली भाँति सन्तुष्ट । २ आह्लादित । हर्षित ।

परितुष्टिः (स्त्री०) १ सन्तोष । पूर्ण सन्तोष । २ हर्ष । आह्लाद ।

परितोषः (पु०) १ सन्तोष । वासना या किसी वस्तु की प्राप्ति की अभिलाषा का अभाव । २ पूर्ण सन्तोष । प्रसन्नता । ३ आह्लाद । हर्ष ।

परितोषण (वि०) सन्तोषी । हर्षित ।

परितोषणम् (न०) सन्तोष । सन्तुष्टि ।

परित्यक्त (व० क०) १ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । २ रहित किया हुआ । ३ छोड़ा हुआ (जैसे तीर) । ४ आवश्यकता ।

परित्यागः (पु०) १ त्याग । त्यागने का भाव । २ विराग । वैराग्य । ३ असावधानी । छूट । ४ उदा-रता । वदान्यता । ५ घाटा । हानि ।

परित्राणं (न०) रक्षा । बचाव । रक्षण । छुटकारा । मुक्ति ।

परित्रासः (पु०) भय । आतङ्क । डर ।

परिदंशित (वि०) कबच से मलीभाँति आपादमस्तक ढका हुआ । जिरहपोश ।

परिदानं (न०) १ विनमय । अदल बदल । २ भक्ति । अनुरक्ति । ३ धरोहर को धरोहर रखने वाले को सौंपना ।

परिदायिन् (पु०) परिवेत् । वह पिता जो अपनी लड़की को ऐसे मनुष्य को विवाह में दे डाले जिसका बड़ा भाई कारा हो ।

परिदाहः (पु०) १ जलन । २ पीड़ा । परिताप ।

परीदाहः (पु०) } दाह । ३ शोक । विलाप ।

परिदेवः (पु०) } रोदन ।

परिदेवनं (न०) } १ विलाप । उलहना । २
परिदेविता (स्त्री०) } पड़तावा । शोक ।
परिदेवतम् (न०) }
परिदेवन (वि०) शोकान्वित : उदास । दुःखी ।
परिद्वष्ट (पु०) तमाशवीन । दर्शक ।
परिधर्पणम् (न०) १ आक्रमण । चढ़ाई ।
बलात्कार । २ हतक । अपमान । कुवाच्य । ३
दुर्व्यवहार । दुरा वर्ताव ।
परिधानम् (न०) १ पोशाक पहनना । वस्त्र
परीधानम्) धारण करना । २ वस्त्र । नीमा ।
परिधानीयम् (न०) नीमा । धँगे के नीचे पहिनने
का वस्त्र ।
परिधावः (पु०) १ नौकर । अनुचर । २ आश्रय ।
आश्रय । ३ पिछला भाग । चूतड़, पुट्टा आदि ।
परिधिः (पु०) १ दीवाल । हाता । मेंढ । घेरा । २
सूर्यमण्डल का घेरा । ३ आकाशमण्डल का घेरा या
प्रकाश का घेरा । ४ आकाशमण्डल का घेरा । ५
पहिये का घेरा । अग्निकुण्ड के चारों ओर गोला-
कार रखी हुई पलाश आदि की लकड़ी ।—पति,
—खेचरः (पु०) शिव जी का नामान्तर । स्थः,
(पु०) १ रखवाला । चौकीदार । २ रथ और
रथी का रक्षक एक सैनिक या सैनिकदल ।
परिधूपित (वि०) बहुत सुगन्धि वाला । बहुत
लुशबूदार ।
परिधूसर (वि०) बिल्कुल भूरा ।
परिधेयम् (न०) कुर्ता । नीमा । बनियाइन ।
परिध्वंसः (पु०) १ कष्ट । विपत्ति । आफत । वर-
बादी । २ सफलता । नाश । ३ जातिध्वंशता ।
परिध्वंसिन (वि०) १ गिराने वाला । २ नाश करने
वाला ।
परिनिर्वाण (वि०) बिल्कुल बुझा हुआ ।
परिनिर्वाणम् (न०) पूर्ण निर्वाण । मोक्ष ।
परिनिर्धृतिः (स्त्री०) पूर्ण मोक्ष ।
परिनिष्ठा (स्त्री०) १ पूर्ण ज्ञान । पूर्ण परिचय । २
सर्वाङ्ग पूर्णता । ३ चरम सीमा या अवस्था ।
पराकाष्ठा ।
परिनिष्ठित (व० क०) पूर्ण रूप से निपुणता प्राप्त ।
पूर्णकुशल । पूर्णअस्यक्त ।

परिपक्व (व० क०) १ भलीभाँति पकाया हुआ । २
भलीभाँति सँका हुआ । ३ बिल्कुल पका हुआ ।
४ बड़ा चतुर या चालाक । ५ भलीभाँति पचा
हुआ । ६ नष्ट होने वाला अथवा मरने वाला ।
परिपणं } (न०) पूँजी । मूल धन । बारदाना ।
परिपणम् }
परिपणनम् (न०) वचन हारना । प्रतिज्ञा । वादा ।
परिपणित (व० क०) वचन हारा हुआ । प्रतिज्ञात ।
परिपन्थकः } (पु०) विरोधी । शत्रु । बैरी । विद्वेषी ।
परिपन्थकः } दुश्मन ।
परिपन्थिन् } (वि०) मार्ग रोकने वाला । मार्गाव-
परिपन्थिन् } रोधक । (पु०) १ शत्रु । बैरी । प्रति-
येगी । विरोधी । दुश्मन । २ डाकू । लुटेरा । ठग ।
परिपाकः } (पु०) १ भलीभाँति पकाया हुआ ।
परीपाकः } २ पाचनशक्ति । ३ पका । पूर्णवृद्धि
को प्राप्त होना । परिपूर्णता । ४ फल । परिणाम ।
नतीजा । ५ चातुर्य । चालाकी । निपुणता ।
परिपाटल (वि०) पिछोहालाख ।
परिपाटिः } (स्त्री०) १ क्रम । शैली । सिलसिला ।
परिपाटी } २ प्रणाली । तरीका । चाल । ढंग ।
परिपाठः (पु०) पूर्ण वर्णन । विगत ।
परिपाश्वर् (वि०) समीप । ओर । तरफ । सटा
हुआ । मिला हुआ ।
परिपालनम् (न०) १ रक्षा । बचाव । २ पालन
पोषण ।
परिपिष्टकम् (न०) सीसा ।
परिपीडनम् (न०) दवाना । दबा कर निचोड़ना ।
सताना । अनिष्ट करना । हानि पहुँचाना ।
परिपुटनम् (न०) १ हटाना । दृष्टककरण । २ झाल
या चाम को अलग करना ।
परिपूजनं (न०) सम्मान करना । अर्चन करना ।
परिपूजा (स्त्री०) पूजा करना ।
परिपूत (व० क०) साफ किया हुआ । नितान्त
स्वच्छ । फटका हुआ । झाला हुआ । भूसी से
अलगया हुआ ।
परिपूरणम् (न०) खूब भरा हुआ । पूरा करना ।
परिपूर्ण (व० क०) १ बिल्कुल भरा हुआ । लबा-
लव । २ अघाया हुआ । सन्तुष्ट ।
परिपूर्तिः (स्त्री०) सम्पूर्णता । परिपूर्णता ।

परिपृच्छा (स्त्र०) सवाल प्रश्न ।

परिपलव (वि०) अत्यन्त कामत । त्रि सुम्भार

परिपाटः () काल का एक भोग । इसमें लोक का
परिपोटकः () चमड़ा सूज कर आशी लिये हुए लाल
रंग का हो जाता है और उसमें दर्द होता है ।

परिपोषणम् (न०) खिलाना पिलाना । पालन
पोषण । बढ़ाना । बृद्धि ।

परिप्रश्नः (पु०) तहकीकात । अनुसन्धान । प्रश्न ।
सवाल ।

परिप्राप्तिः (स्त्री०) प्राप्ति । उपलब्धि ।

परिप्रेष्यः (पु०) नौकर ।

परिप्लव (वि०) १ हिलता हुआ । काँपना हुआ । २
उतराता हुआ । ३ चञ्चल । अस्थिर ।

परिप्लवः (पु०) १ बड़ा । बाढ़ । प्रावन । २ नाव ।
३ अत्याचार । जुल्म । ४ गीला । भीगा ।

परिप्लुत (व० कृ०) १ जल की बाढ़ में डूबा हुआ ।
प्लावित । २ स्थान किये हुए । भीगा हुआ ।
गीला ।

परिप्लुतम् (न०) कुदान । उछाल । फलाँग ।
झलौंग ।

परिप्लुता (स्त्री०) शराव । मदिरा । मद्य ।

परिप्लुष्ट (व० कृ०) जला हुआ । कुजसा हुआ ।

परिवर्हः () (पु०) १ खवाजसा । नौकर चाकर ।

परिवर्हः () २ राजा के छत्र चैत्र आदि राजचिह्न ।
३ सजावट का सामान । ४ सम्पत्ति । धनदौलत ।

परिवर्हणम् () (न०) १ अनुचरवर्ग । २ शूङ्गार ।

परिवर्हणम् () सजावट । ३ वढ़ती । ४ पूजा । उपासना ।

परिवाधा (स्त्री०) १ कष्ट । पीड़ा । चिड़ । २ धका
वट । कठेनाई ।

परिवृंहणम् () (न०) १ समृद्धि । सकुशलता । २

परिवृंहणम् () किसी ग्रन्थ के अङ्ग स्वरूप ग्रन्थ
ग्रन्थ । वह ग्रन्थ अथवा शास्त्र जो किसी अन्य
ग्रन्थ या शास्त्र की पूर्ति या पुष्टि करता हो, जैसे
ब्राह्मण ग्रन्थ वेद के परिवृंहण हैं ।

परिवृंहित () (व० कृ०) १ उन्नत । बढ़ा हुआ । २

परिवृंहित () समृद्ध । फलता फूलता हुआ । ३ किसी
से जुड़ा या मिला हुआ । युक्त । अंगोभूत ।

परिभङ्गः (पु०) टुकड़े टुकड़े होकर टूटना । टुकड़े
टुकड़े हो जाना ।

परिभ्रंसम् (न०) डोंट डपट धक्का फटकार ।

परिभ्रव () (पु०) १ अनादर । तिरस्कार । अप-

परीभवः () मान ।—आस्पदं (न०)—पदं (न०)

१ तिरस्करणीय वस्तु । तिरस्कार के योग्य पदार्थ ।

२ अपमान या अपमानार्ह परिस्थिति ।—विधिः,

(पु०) अपमान ।

परिभविन (वि०) [स्त्री०—परिभविनी] १ अप-

मानकारक । तिरस्कार या अपमान करने वाला ।

२ अपमानित ।

परिभावः (पु०) देखो “परिभवः”

परिभाविन् (वि०) [स्त्री०—परिभाविनी] १ अप-

मानकारक । तिरस्कार करने वाला व्यवहार करने

वाला । २ लजित करने वाला । ३ तुच्छ समझने

वाला । सामना करने वाला । चिन्ता देने वाला ।

परिभाषणम् (न०) १ वार्तालाप । संवाद ।

कथोपकथन । गप्पसप्प । बातचीत । २ निन्दा

करते हुए उलहना । किसी को दोष देते हुए

या लानत मलामत करते हुए उसके कार्य पर

अप्रसन्नता प्रकट करना । लानत मलामत । फट-

कार । भर्त्सना । ३ नियम । आज्ञा । आदेश ।

परिभाषाः (पु०) १ परिष्कृत भाषण । स्पष्ट कथन ।

संशय रहित कथन । २ भर्त्सना । फटकार ।

निन्दा । गाली । कलङ्क । ३ पारिभाषिक शब्दा-

वली । ४ किसी ग्रन्थ में व्यवहृत शब्दों की

सूची ।

परिभुक्त (व० कृ०) १ खाया हुआ । व्यवहृत । काम

में आया हुआ । २ उपयुक्त । ३ अधिकृत ।

परिभुवन (वि०) मुका हुआ । देहा । मुदा हुआ ।

परिभूतिः (स्त्री०) तिरस्कार । इतक । अपमान ।

अनादर ।

परिभूषणः (पु०) वह सन्धि या शान्ति जो किसी

विशेष प्रदेश या भूखण्ड का समस्त राजस्व देकर

स्थापित की गयी हो ।

परिभोगः (पु०) १ भोग । उपभोग । २ मैथुन । स्त्री-

प्रसङ्ग । ३ अनधिकार किसी वस्तु को काम में

लाना ।

परिभ्रंशः (पु०) १ छुटकारा । निकास । २ गिराव ।

पतन । च्युति । स्खलन ।

परिभ्रम (पु०) १ इधर उधर टहलना । घूमना ।
भ्रमण । पर्यटन । २ घुमा फिरा कर कहना । सीधे
न कह कर केरफार से कहना । ३ भूल । भ्रम ।

परिभ्रमणम् (न०) १ पर्यटन । भ्रमण । मंथनगर ।
२ घूमना । चकर लगाना । ३ व्यास । घेरा ।
परिधि ।

परिभ्रष्ट (व० कृ०) १ पतित । गिरा हुआ । च्युत ।
स्थलित । २ निकला हुआ । निकल कर भागा
हुआ । ३ अधःपतित । ४ रहित किये हुए ।
वञ्चित किया हुआ । ५ असावधानी किया हुआ ।

परिमंडल } (वि०) गोलाकार । गोल । चक्रदार ।
परिमण्डल }
परिमंडलम् } (न०) १ गोला । २ गैद । ३ वृत्त ।
परिमण्डलम् } परिधि ।

परिमंथर } (वि०) अत्यन्त सुस्त । पहले दर्जे का
परिमन्थर } दीर्घसूत्री या बिसदा ।

परिमंद } (वि०) १ अत्यन्त धुंधला । अस्पष्ट । २
परिमन्द } बहुत सुस्त । ३ बहुत थका हुआ या कम-
जोर । ४ बहुत थोड़ा ।

परिमरः (पु०) नाश ।

परिमर्दः (पु०) १ रगड़ना । पीसना । २ कुच-
परिमर्दनं (न०) १ लना । पीस डालना । ३
नाश । ४ अनिष्ट । ५ कौरियाना । दवाना ।

परिमर्षः (पु०) १ डाह । ईर्ष्या । घृणा । अरुचि ।
२ क्रोध । रोष । गुस्सा ।

परिमलः (पु०) १ सुवास । उत्तमगन्ध । खुशबू ।
२ खुशबूदार चीजों का चूर्ण करना या मलना ।
३ खुशबूदार चीज । ४ सहवास । मैथुन । संभोग ।
५ पण्डितों का समुदाय । ६ धब्बा । कलङ्क ।

परिमलित (वि०) १ सुवासित । खुशबूदार । २
अष्ट । सौन्दर्यवर्ध ।

परिमाणं } (न०) १ नाप । नपना । (शक्ति या
परीमाणां } ताकत का ।) २ तौल । संख्या ।
मूल्य ।

परिमाणः (पु०) १ तलाश । खोज । अनु-
परिमाणां (न०) १ सन्धान । स्पर्श । संसर्ग ।

परिमार्जनं (न०) १ धोने या मँजने का काम ।
झाड़ने पोंछने का काम । २ एक प्रकार की मिठाई
जो घी मिश्रित शहद के शीरे में डुबोई हुई
होती है ।

परिमित (वि०) १ न अधिक और न कम । २
सीमा संख्या आदि से बद्ध । ३ नया तुला हुआ ।
४ हिसाब या अंदाज़ से उचित मात्रा या परि-
माण में ।—आभरण, (वि०) अंदाज़ से
आभूषण धारण किये हुए । थोड़े गहने पहिने
हुए ।—आयुस्, (वि०) अल्पायु । थोड़े दिनों
जीने वाला ।—आहार,—भोजन, (वि०)
कम भोजन करने वाला ।—कथ, (वि०) कम
बोलने वाला । नये तुले शब्द कहने वाला ।

परिमितिः (स्त्री०) १ नाप । परिमाण । सीमा ।

परिमिलनम् (न०) १ स्पर्श । संसर्ग । २ संयोग ।
मेल ।

परिमुखं (अव्यया०) चेहरे के निकट । किसी पुरुष
के) ईर्ष गर्द । चारों तरफ ।

परिमुग्ध (वि०) १ मनोहर तथापि सादा । २ मन-
मोहक किन्तु मूर्ख ।

परिमृदित (वि० कृ०) १ कुचला हुआ । पैरों से रूँदा
हुआ । २ आलिङ्गन किया हुआ । कौरियाया
हुआ । ३ रगड़ा हुआ । पीसा हुआ ।

परिमृष्ट (व० कृ०) १ साफ किया हुआ । धोया
हुआ । पवित्र किया हुआ । २ रगड़ा हुआ ।
सम्हाला हुआ । थपथपाया हुआ । ३ आलिङ्गन
किया हुआ । ४ फैला हुआ । व्याप्त । परिपूरित ।

परिमेय (वि०) १ थोड़ा । ससीम । २ जो नापा या
तोला जा सके । जो गणना किया जा सके । जो
गिना जा सके । ३ परिच्छिन्न । जिसकी सीमा हो ।

परिमोक्षः (पु०) १ स्थानान्तरकरण । मुक्तकरण ।
२ मुक्ति । छुटकारा । ३ मलपरित्याग । ४
निकास । ५ निर्वाण । मोक्ष ।

परिमोक्ष्यं (न०) १ छुटकारा । मुक्ति । २ बन्धन-
राहित्य ।

परिमोक्षः (पु०) चोरी । डाँकाजनी । लूट ।

परिमोषिन् (पु०) चोर । डाँकू ।

परिमोहनम् (पु०) किसी के मन या उसकी बुद्धि
को पूर्ण रूप से अपने वश में कर लेना । सम्यक्
वशीकरण ।

परिमलान (व० कृ०) १ कुम्हलाया हुआ । सुरभाया
हुआ । उदास । २ मलीन । हतप्रभ । निस्तेज ।

३ निर्बल । कमजोर वगैरह ४ प्र-वा लाया हुआ कलङ्कित

परिरत्नकः (पु०) रत्नक । अभिभावक ।

परिरक्षणम् (न०) सव प्रकार या सव तरह से परिरक्षा (स्त्री०) रक्षा । छुटकारा । निस्तार ।

परिरथ्या (स्त्री०) गर्ला । राह ।

परिरम्भ, परीरम्भ (पु०) } आलिङ्गन करने
परिरम्भ, परीरम्भः (पु०) } की क्रिया ।
परिरम्भम्, परिरम्भणम् (न०) }

परिराट्नि (वि०) चिह्नाने वाला । चीख मारने वाला ।

परिलघु (वि०) १ बहुत हल्का । (जैसे वस्त्र) २ बहुत हल्का या पचने में सुलभ (जैसे भोजन का कोई पदार्थ) ३ बहुत छोटा ।

परिलुप्त (न० कृ०) १ बाधा दिया हुआ । धबकाया हुआ । घटाया हुआ । २ खोया हुआ । लुप्त ।

परिलेखः (पु०) १ चित्र का खाका । चित्र का स्थूल रूप । ढाँचा । खाका । २ चित्र । [छुट ।

परिलोपः (पु०) १ क्षति । हानि । २ विलोप ।

परिवत्सरः (पु०) एक समूचा वर्ष । एक पूरा साल ।

परिवर्जनम् (न०) १ त्याग । परित्याग । २ तजना । छोड़ना । ३ बच । हत्या ।

परिवर्तः (पु०) १ फिराव । फेरा । घुमाव ।

परीवर्तः } चक्कर । २ विवर्तन । आवृत्ति । ३ अवधि । अवधि की समाप्ति । ४ युग की समाप्ति । ५ परिवर्तन । तबदीली । ६ भगवद् । पलायन । स्थानत्याग । ७ वर्ष । ८ पुनर्जन्म । ९ विनिमय । अदल बदल । बट्ठा । १० पुनरागमन । ११ आवासस्थल । घर । १२ परिच्छेद । अध्यय । १३ भगवान् विष्णु का दूसरा अवतार । कच्छपावतार ॥

परिवर्तक (वि०) १ घुमाने वाला । फिराने वाला । चक्कर देने वाला । २ बदलने वाला । विनिमय करने वाला ।

परिवर्तन (न०) १ घुमाव । फेरा । चक्कर । २ अदला बदली । हेरफेर । तबादला ३ दशान्तर । स्थित्यन्तर । ४ किसी काल या युग की समाप्ति । ५ जो किसी वस्तु के बदले में लिया या दिया जाय । विनिमय ।

परिवर्तिका (स्त्री०) एक रोग जिसमें अधिक खुजलाने, दवाने या रगड़ लगाने से लिङ्ग का चर्म उलट कर सूज जाता है ।

परिवर्तिन् (वि०) १ घुमाने वाला । चक्कर लगाने वाला । २ बार बार घूम कर आने या होने वाला । ३ परिवर्तनशील । ४ समीपवर्ती । पास रहने वाला । चारों ओर फिरने वाला । ५ भागने वाला । ६ बदलने वाला । ७ त्यागने वाला । ८ डौड़ देने वाला । दगड़ भरने वाला ।

परिवर्धनम् (न०) संख्या, गुण आवि में किसी पदार्थ की वृद्धि । परिवृद्धि ।

परिवस्थः (पु०) ग्राम । गाँव ।

परिवहः (पु०) सात पवनमार्गों में से छठवाँ पवन-मार्ग । इसी मार्ग में आकाशगंगा बहती है और सप्तर्षि चला करते हैं ।

परिवादः (पु०) १ निन्दा । अपवाद । बुराई ।

परीवादः } २ कलङ्क । अपकीर्ति । बदनामी । ३ दोष । दोषारोपण । ४ मिजराब जिससे पहन कर बीणा या सितार बजाया जाता है ।

परिवादकः (पु०) १ वादी । मुद्दई । दावागीर । २ सितार या बीणा बजाने वाला ।

परिवादिन् (वि०) १ निन्दक । निन्दा करने वाला । गाली देने वाला । अन्याय फैलाने वाला २ दोषी ठहराने वाला । ३ चीखने वाला । चिह्नाने वाला । ४ भर्त्सित । फटकारा हुआ । डाँटा हुआ । बदनाम किया हुआ । (पु०) दोषारोपण करने वाला । दावागीर ।

परिवादिनी (स्त्री०) बीणा जिसमें सात तार होते हैं ।

परिवापः (पु०) १ मुण्डन । २ बुआई । धक्की ।

परीवापः } ३ जलाशय । तालाब । कुण्ड । ४ सामान । ५ अनुचरवर्ग ।

परिवापित (वि०) मुड़ा हुआ । जिसका सिर मुड़ा हो ।

परिवारः (पु०) १ अनुचरवर्ग । २ डकन ।

परीवारः } आवरण । परिच्छेद । ३ ग्यान । परतला ।

परिवासः (पु०) वास । डेरा । थोड़े दिन का निवास ।

परिवाहः (पु०) ऐसा जलप्रवाह जिसके कारण

परीवाहः } पानी ताल, तालाब आदि की समाई से

ज्यादा हो जाय और बाँध के ऊपर से बहने लगे ।
२ जलमार्ग । जल बहने की नाली, बंका या नहर ।

परिवाहिन (वि०) समाई से अधिक जल के आने से बाँध के ऊपर से जल का बहाव ।

परिविणः

परिविन्नः { (पु०) अविवाहित ज्येष्ठ भ्राता, जिसका
परिविन्नः { छोटा भाई विवाहित हो ।
परिविन्तिः

परिविद्धः, (पु०) कुबेर का नामान्तर ।

परिविदकः, परिविन्दकः { (पु०) वह छोटा भाई,
परिविदत्, परिविन्दत् } जिसका विवाह ज्येष्ठ
भ्राता का विवाह होने से पूर्व हो चुका हो ।

परिविहारः (पु०) आनन्दार्थ इधर उधर भ्रमण ।

परिविह्वल (वि०) बहुत घबड़ाया हुआ । नितान्त
उद्विग्न ।

परिवारणम् (न०) १ ढकन । आवरण । परिच्छद ।
२ अनुचरवर्ग । ३ रोकना । बचना ।

परिवारित् (व० क०) १ घेरा हुआ । छेका हुआ ।
२ व्याप्त । फैला हुआ । पसरा हुआ ।

परिवारितं (न०) ब्रह्मा का धनुष ।

परिवृढः (पु०) स्वामी । प्रभु । अधिपति । प्रधान ।

परिवृत (व० क०) १ घेरा हुआ । २ छिपा हुआ ।
३ व्याप्त । छाया हुआ । ४ परिचित । जाना हुआ ।

परिवृत्त (व० क०) १ घुमाया हुआ । उलटा पलटा
हुआ । २ भग्नया हुआ । खदेड़ा हुआ । ३
समाप्त किया हुआ । खत्म किया हुआ । ४
बदला हुआ । बदला बदला हुआ ।

परिवृत्तम् (न०) आलिङ्गन ।

परिवृत्तिः (स्त्री०) १ घुमाव । चक्र । २ वापिसी ।
पलटाव । ३ विनमय । बदलौझल । ४ समाप्ति ।
अवसान । ५ घिराव । ६ किसी स्थल पर टिकना
या बसना । ७ एक अर्थालङ्कार जिसमें एक वस्तु
को देकर दूसरी के लेने अर्थात् अवल बदल का
कथन होता है । ८ एक शब्द के बदले दूसरे शब्द
को बैठना ।

परिवृद्धिः (स्त्री०) बढ़ती । उपज ।

परिवेतु (पु०) परिवेदक । वह छोटा भाई, जिसका
विवाह बड़े भाई का विवाह होने के पूर्व हुआ हो ।

परिवेदनम् (न०) १ बड़े भाई के अविवाहित रहते
छोटे भाई का विवाह । २ विवाह । ३ पूर्णज्ञान ।
४ यासि । उपलब्धि । ५ अग्न्याधान । ६ विद्य-
मानता । मौजूदगी ।

परिवेदना (स्त्री०) तीव्र बुद्धिमानी । विदग्धता ।
चतुराई ।

परिवेदनीया { (स्त्री०) उस छोटे भाई की स्त्री,
परिवेदिनी } जिसका विवाह ज्येष्ठ भ्राताओं के
पूर्व हो चुका हो ।

परिवेशः, परीवेशः, { (पु०) १ परसना या परो-
परिवेषः, परीवेषः } सना । २ घेरा । परिधि । ३
सूर्य या चन्द्र का पार्श्व या घेरा । ४ चन्द्रमण्डल ।
सूर्यमण्डल । ५ कोई ऐसी वस्तु जो चारों ओर से
घेर कर किसी वस्तु की रक्षा करनी हो ।

परिवेषकः (पु०) परोसने वाला ।

परिवेषणं (न०) १ परोसना । २ घेरना । घेरा । ३
चन्द्रमा या सूर्य का पार्श्व या घेरा । ३ परिधि ।

परिवेष्टनम् (न०) १ चारों ओर से घेरना या घेष्टन
करना । २ छिपाने, ढकने या लपेटने वाली चीज ।
आच्छादन । ३ परिधि ।

परिवेष्टु (पु०) परसेना । भोजन परोसने वाला ।

परिव्ययः (पु०) १ मूल्य । २ मसाला ।

परिव्याधः (पु०) सरपत या नरकुल की एक जाति ।

परिव्रज्या (स्त्री०) १ भ्रमण । जगह जगह घूमते
फिरना । एकान्तवास (संन्यासी की तरह)
संसार की मोह भ्रमता का त्याग । सप्रस्था । संन्यास ।

परिव्राज (पु०) वह संन्यासी जो सदा
परिव्राजः { (पु०) } भ्रमण करता रहै । संन्यासी ।
परिव्राजकः { (पु०) } यत्नी । परमहंस ।

परिशाश्वत (वि०) [स्त्री०—परिशाश्वती] सदा
एकसी ।

परिशिष्ट (वि०) छूटा हुआ । बचा हुआ ।

परिशिष्टम् (न०) किसी ग्रन्थ या पुस्तक का पीछे
जोड़ा हुआ अंश ।

परिशिलितम् (न०) १ स्पर्श । संसर्ग । २ सदैव का
संसर्ग । ३ अध्ययन । [मन्त्र पूर्वक] ।

परिशुद्धिः (स्त्री०) १ पूर्ण रूप से पवित्रता । २ छुट-
कारा । रिहाई ।

परिशुष्क (व० क०) १ मनी ननि सूखा हुआ २
कम्पनाय हुआ । अथन्त रसवान पाता । खोचला ।

परिशुष्क (न०) एक प्रकार का तला हुआ माँस ।

परिशुन्य (वि०) १ बिल्कुल खाली । २ नितान्त
झाकीन । पूर्णतः वञ्चित या रहित ।

परिश्रुतः (पु०) उत्सुक आत्मा ।

परिरेपाः } (पु०) १ बचा हुआ । अवशिष्ट । २

परिरेपाः } अवसान । समाप्ति । सम्पूर्णता । ३
अतिरिक्तत्व ।

परिशोधः (पु०) १ सफाई । स्वच्छता । २

परिशोधन (न०) १ त्यागना । छुड़ाना । चुकता
करना । [क्रिया ।

परिशोषः (पु०) सम्पूर्ण रूप से सुखाने या भूने की

परिश्रमः (पु०) १ थकावट । बलेश । पीड़ा । २ उद्यम ।

आयास । श्रम । महनत ।

परिश्रमः (पु०) १ सभा । २ आश्रम । आश्रयस्थल ।

परिश्रयः (पु०) १ सभा । परिषद् । २ आश्रम । रक्षा-
स्थान ।

परिश्रान्तिः } (स्त्री०) १ थकावट । आयास । परिश्रम ।

परिश्रान्तिः } क्लेश । मेहनत । उद्योग ।

परिश्लेषः (पु०) आलिङ्गन ।

परिषद् (स्त्री०) १ सभा । मजलिस । २ धर्मसभा ।

परिषद् : } (पु०) सभासद ।

परिषेकः } (पु०) १ छिड़कना । नम करना ।

परिषेकः } (वि०) दूसरे का पाला पोसा हुआ ।

परिषेकणः } (पु०) पोष्यपुत्र । वह बालक जिसे

परिषेकः } किसी अपरिचित मनुष्य ने पाला पोसा
हो ।

परिष्कं } (न०) दूसरे का पाला हुआ ।

परिष्कन्दः (पु०) १ पोष्यपुत्र । २ नौकर ।

परिष्करः (पु०) १ शृङ्गार । सजावट । आभूषण । २
पाचन क्रिया । ३ संस्कार । आरम्भिक संस्कारों द्वारा
पवित्र करने की क्रिया । ४ सामान (सजावट का)

परिष्कृत (व० क०) १ शृङ्गारित । सजा हुआ । २
पकाया हुआ । ३ आरम्भिक संस्कारों से शुद्ध किया
हुआ ।

परिष्किया (स्त्री०) सजावट । शृङ्गार । शोधन ।

परिष्मः } (पु०) १ हाथों की रंगीन भूल । २

परिस्नोमः } आच्छादन ।

परिस्पन्दः परिस्पन्दः } (पु०) १ अनुचरवर्ग ।

परिस्पन्दः परिस्पन्दः } २ पुष्पों से केशों का शृङ्गार ।

३ आभूषण या सजावट का कोई भी उपस्कर ।

४ धक्का । सिसकन । गति । ५ रसव । ६

कूटना । कुचलना ।

परिष्क (व० क०) चिपटाया हुआ । गले लगाया
हुआ । आलिङ्गन किया हुआ ।

परिष्पंगः } (पु०) १ आलिङ्गन । २ स्पर्श । मेल ।

परिस्वङ्गः } (पु०) १ आलिङ्गन । २ स्पर्श । मेल ।

परिसंवत्सर (वि०) पूरे एक वर्ष का ।

परिसंवत्सर (पु०) एक पूरा वर्ष ।

परिसंख्या (स्त्री०) १ गणना । गिनती । २ जोड़ ।
मीजान । कुल । संख्या । ३ एक अर्थालङ्कार
विशेष ।

परिसंख्यात (व० क०) गिना हुआ । गणना किया
हुआ । विशेष रूप से बतलाया हुआ ।

परिसंख्यातम् (न०) १ गणना । गिनती । शुमार ।
जोड़ । संख्या । २ विशेष निर्देश । ३ यथार्थ
निर्णय । उचित अनुमान या तर्कमीना ।

परिसंचरः } (पु०) महाप्रलय ।

परिसञ्चरः } (पु०) महाप्रलय ।

परिसमापन } (स्त्री०) साम्राप्ति । खातमा ।

परिसमाप्तिः } (स्त्री०) साम्राप्ति । खातमा ।

परिसमूहन (न०) १ ढेर । विशेष ढंग से अग्नि के

चारों ओर का जल का छिड़काव ।

परिसरः (पु०) १ किनारा । सीमा । सामीप्य । २

पड़ोस । नैक्य । स्थान । ३ चौड़ाई । अर्ज । ४

शृङ्खला । ५ नियम । आज्ञा ।

परिसरणम् (न०) इधर उधर घूमना फिरना ।

परिसर्पः (पु०) १ इधर उधर जाना या घूमना । २

तलाश में जाना । अनुसरण करना । पीछा करना ।

३ घेरा । हाता ।

परिसर्पणम् (न०) १ हिलना । रेंगना । २ इधर

उधर दौड़ना । इधर उधर भागना । चलते फिरते

रहना ।

परिसर्या (स्त्री०) }
 परीसर्या (स्त्री०) } १ इधर उधर घूमना फिरना ।
 परिसारः (पु०) } २ फेरी ।
 परीसारः (पु०) }
 परिस्तरणम् (न०) १ चारों ओर फैलाना या
 बिछाना । बखेरना । २ आवरण । आच्छादन ।
 परिस्फुट (वि०) १ बिल्कुल साफ । प्रत्यक्षगोचर ।
 ३ स्पष्टगोचर । पूर्णवृद्धि । पूरा फूला हुआ । पूरा
 बढ़ा हुआ । [खिलाना ।
 परिस्फुरणम् (न०) १ कंप । थरथराहट । २
 परिस्थन्दः (पु०) चूना । टपकना । रिसना । २ बहाव ।
 धारा । ३ अनुचरवर्ग ।
 परिस्त्रवः (पु०) १ बहाव । धार । २ फिसलाहट ।
 ३ नदी ।
 परिस्त्रावः (पु०) बहाव । प्रवाह । फूटना । निकाल ।
 परिस्त्रुत् (स्त्री०) १ मदिरा विशेष । २ टपकना ।
 परिस्त्रुता } चूना । बहना ।
 परिहृत (वि०) ढीला ।
 परिहरणं (पु०) १ त्याग । परित्याग । २ बचाव ।
 निवारण । ३ खण्डन । ४ पकड़ना । ले जाना ।
 परिहारः } (पु०) १ तजना । त्यागना । छोड़ना ।
 परिहारः } २ हटाना । अलग करना । दूर करना ।
 ३ निराकरण । खण्डन । ४ वर्णन न करना ।
 छूट । छोड़ जाना । ६ दुराव । छिपाव । ७ ग्राम
 के समीप का भूमिखण्ड या परती ज़मीन जो
 सब ग्रामवालों की सम्झौती जाय । ८ अपमान ।
 तिरस्कार । आपत्ति । पतराज ।
 परिहाणिः } (स्त्री०) १ कमी । घटती । घाटा ।
 परिहानिः } हानि । २ घटाव । अधःपतन ।
 परिहार्य (वि०) त्याज्य । जिसका परिहार किया जा
 सके । जिससे बचा जा सके ।
 परिहार्यः (पु०) कङ्कण । ककना ।
 परिहासः } (पु०) १ हसी । मज़ाक । दिल्लगी ।
 परीहासः } ठट्ठा । २ क्रीड़ा । खेल । ३ चिढ़ाना ।
 —वेदिन, (पु०) विदूषक । माँड़ । मसखरा ।
 परिहृत (व० कृ०) १ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ ।
 २ खण्डन किया हुआ । ३ पकड़ा हुआ । थामा
 हुआ । ४ पवित्र । अष्ट । त्याज्य ।

परीक्षकः (पु०) परीक्षा देने वाला । अनुसन्धान
 करने वाला । न्यायकर्ता ।
 परीक्षणम् (न०) जाँच । परीक्षा ।
 परीक्षा (स्त्री०) जाँच । पड़ताल । आजमाइश ।
 इस्तहान ।
 परीक्षित (पु०) अर्जुन के पौत्र और अभिमन्यु के
 पुत्र का नाम ।
 परीक्षितं (न० व० कृ०) जाँचा हुआ । पड़ताला
 हुआ ।
 परीत (व० कृ०) १ घिरा हुआ । २ बीता हुआ ।
 गुज़रा हुआ । ३ जमा हुआ । ४ पकड़ा हुआ ।
 अधिकृत किया हुआ ।
 परीताप
 परीपाक } देखो परिताप ।
 परीवार
 परीवाह
 परीहास
 परोप्सा (स्त्री०) १ किसी वस्तु की प्राप्ति की
 कामना । २ शीघ्रता । त्वरा ।
 परीरं (न०) फल ।
 परीरणम् (न०) १ कड़वा । २ छड़ी । ३ पट्टशायक ।
 वस्त्र विशेष ।
 परीष्टिः (स्त्री०) १ अनुसन्धान । खोज । तहकी-
 कात । २ सेवा । चाकरी । उपस्थिति । ३ मान ।
 पूजा । सम्मानप्रदर्शन ।
 परुः (पु०) १ गाँठ । जोड़ । २ लंग । हचक । ३
 अवसर । ४ स्वर्ग । ५ पहाड़ । पर्वत ।
 परुत् (अन्यथा०) गतवर्ष ।
 परुद्धारः (पु०) बोड़ा ।
 परुष (वि०) १ कड़ा । कठोर । कर्कश । सख्त । अत्यन्त
 रूखा या रसहीन । २ अप्रिय । बुरा लगने वाला ।
 ३ निर्दुर । निर्दय । ४ तीक्ष्ण । प्रचण्ड । उग्र ।
 तीव्र । ५ घामड़ । गाउदी । सुस्त । आलसी । ६
 मैला कुचैला ।—इतर, (वि०) मुलायम ।
 कोमल ।—उक्तिः,—घचनं, (न०) कुवाच्य या
 सफ़्तकलामी ।
 परुषम् (न०) कठोर शब्द या कथन । कुवाच्य ।
 परुत् (न०) १ पोहय । गाँठ । जोड़ । २ अवयव ।
 शरीरावयव ।

परेत (व० क०) मृत मरा हुआ सग के ब्रिये गया हुआ ।

परेतः (पु०) प्रेत भूत ।—भर्तृ, —राज्, (पु०) यम ।—भूमिः, (स्त्री०)—वासः, (पु०) रमशान । कयरस्तान ।

परैद्यवि } (अव्यया०) अन्यदिवस । दूसरे दिन ।
परैद्यस् }

परैष्टुः (स्त्री०) कई बार की ज्यायी हुई गाय ।
परैष्टुकाः (स्त्री०)

परोक्ष (वि०) १ दृष्टि से बाहिर । अगोचर । अनुपस्थित । २ गुप्त । अनजान । अपरिचित ।—भोगः, (पु०) वस्तु के मालिक की अनुपस्थिति में उसकी वस्तु का उपभोग ।—वृत्ति, (वि०) दृष्टि के ओझल रहने वाला ।

परोक्षं (न०) १ अनुपस्थिति । अगोचरत्व । २ व्याकरण में भूतकाल ।

परोक्षः (पु०) संन्यासी । साधु ।

परोक्षिः } (स्त्री०) तिलचट्टा । कींगुर ।
परोक्षी }

पर्जन्यः (पु०) १ बादल जो पानी बरसावे । बादल जो गर्जना करें । बादल । २ इष्टि । मेह । ३ इन्द्र ।
पर्ण (धा० उभय०) [पर्णयति, पर्णयते] सज्ज करना । हरा भरा करना ।

पर्ण (न०) १ डैना । बाजू । २ बाण में लगे पंख । ३ पत्ता । ४ पान । ताम्बूल ।—अशनं, (न०) पत्ते खा कर रहना ।—उटजं, (न०) पत्तों की झोंपड़ी । पर्णकुटी ।—कारः, (पु०) तमोली । पान बेचने वाला ।—टिका, (स्त्री०)—कुटी, (स्त्री०) झोंपड़ी जो पत्तों से छायी गयी हो ।—कृच्छ्रः, (पु०) एक प्रकार का प्रायश्चित्त जिसमें प्रायश्चित्ती को पाँच दिन पत्तों का काढ़ा और कुश खाकर रहना होता है ।—खण्डः, (पु०) बिना फलों का वृक्ष ।—खण्डं (न०) पत्तों का समूह ।—चौरपटः, (पु०) शिव जी का नामान्तर ।—चोरकः, (पु०) एक प्रकार का गन्धद्रव्य ।—नरः, (पु०) पत्तों का पुतला जो अप्राप्त शव के स्थान में रख कर कूक दिया जाता है ।—मेदिनी, (स्त्री०) त्रियङ्गुलता ।—भोजनः, (पु०) बकला ।—गुच्छ, (पु०) शिशिरश्रुतु ।—मृगः, (पु०) कोई

पशु जो वृक्षों के फूलफुट में रहै रुह, (पु०) वसन्तश्रुतु ।—लता, (स्त्री०) पान की बेल ।—वीटिका, (स्त्री०) सुपारी के टुकड़े जो पान की बीड़ी में रखे जाते हैं ।—शय्या, (स्त्री०) पत्तों का बिछौना ।—शाला, (स्त्री०) पर्णकुटी । पत्तों को बनी झोंपड़ी ।

पर्णः (पु०) पल्लाश वृक्ष ।

पर्णल (वि०) जहाँ पत्तों का बाहुल्य हो । पत्तों की इफरात वाला ।

पर्णसिः (पु०) १ जलविहार-भवन । घर जो पानी के बीच में बना हो । २ कमल । ३ शाक । ४ शृङ्गार । उवटन ।

पर्णिन् (पु०) वृक्ष ।

पर्णिल (वि०) देखो पर्णल ।

पर्द् (धा० आत्म०) [पर्दते] पादना । अपान वायु छोड़ना ।

पर्दः (पु०) १ केशसमूह । घने बाल । २ अपानवायु । पाद । गोत्र ।

पर्यः (पु०) १ छोटी घास । २ पङ्कपीठ । लंगडों के रहने का स्थान । एक पहिये की गाड़ी जिसके सहारे पङ्क चले । ३ मकान ।

पर्यरीकः (पु०) १ सूर्य । २ अग्नि । ३ तालाव । जलाशय ।

पर्यक् (अव्यया०) चारो ओर । हर ओर ।

पर्यकः (पु०) १ पलंग । पटका । खाट । चारपाई ।

पर्यङ्कः } २ अवसथिका । कमर पीठ और घुटने में लपेटने की वस्तु विशेष । ३ योगासन विशेष ।—बन्धः, (पु०) वीरासन विशेष ।—भोगिन्, (पु०) सर्प विशेष ।

पर्यटनम् } (न०) भ्रमण । इधर उधर की मटरगश्त ।
पर्यटितं }

पर्यनुयोगः (पु०) दृष्टान्तरथ जिज्ञासा । किसी विषय का खण्डन करने के लिये पूँछताँछ या अनुसन्धान ।

पर्यत, } (वि०) तक । तलक । लौ ।
पर्यन्त }

पर्यतः } (पु०) १ परिधि । व्यास । ३ सीमा ।
पर्यन्तः } किनारा । बाढ़ । क्षोर । १ पार्श्व । बगल ।

तरङ्ग । ४ समाप्ति । अवसान । स्वातमा ।—देशः,

(पु०) —भूः, —भूमिः, (स्त्री०) पड़ोस का ज़िला, नगर, कसबा या स्थान ।

पर्यांतिका } (स्त्री०) सद्गुणों की हानि या अभाव ।
पर्यन्तिका }

पर्ययः (पु०) १ विपर्यय । गड़बड़ी । २ परिवर्तन । तब-दीली । ४ कर्त्तव्य-पराङ्मुखता । ५ विरोध ।

पर्ययणम् (न०) १ चक्कर लगाना । परिक्रमा करना । चारों ओर घूमना । २ घोड़े का जीन ।

पर्यवदात (वि०) नितान्त विशुद्ध या स्वच्छ ।

पर्यवरोधः (पु०) रोक । अटकाव ।

पर्यवसानं (न०) १ समाप्ति । अन्त । खात्मा । २ इरादा । निश्चय ।

पर्यवसित (व० कृ०) १ समाप्त । पूरा किया हुआ । ख़त्म किया हुआ । २ नष्ट हुआ । खोया हुआ । ३ निश्चित किया हुआ ।

पर्यवस्था (स्त्री०) १ विरोध । समुहाना ।

पर्यवस्थानम् (न०) १ स्कावट । २ खण्डन ।

पर्यश्रु (वि०) आँखों में आँसू भरे हुए ।

पर्यसनम् (न०) १ निचेप । फैकना । २ भेज देना । ४ मुलतबी करना । स्थगित करना ।

पर्यस्त (व० कृ०) १ बिखरा हुआ । झितराया हुआ । २ घिरा हुआ । ३ उल्टा पल्टा हुआ । अस्त व्यस्त किया हुआ । उलटा सीधा किया हुआ । विसर्जन किया हुआ । निकाला हुआ । ५ चोटिल किया हुआ । घायल किया हुआ । मार डाला हुआ ।

पर्यस्तिः (स्त्री०) } वीरासन । आसन विशेष ।
पर्यस्तिका (स्त्री०) }

पर्याकुल (वि०) १ गँदला (जैसे पानी) । २ बहुत अधिक विकल । बहुत घबड़ाया हुआ । ३ गड़बड़ किया हुआ । अस्तव्यस्त किया हुआ । ४ सम्पन्न । पूर्ण ।

पर्याणम् (न०) ज़ीन कसा हुआ । काठी कसा हुआ ।

पर्याप्त (व० कृ०) १ प्राप्त । हासिल किया हुआ । २ समाप्त किया हुआ । पूर्ण किया हुआ । ३ पूरा । समूचा । तमाम । सब । ४ योग्य । काबिल । उपयुक्त । ५ काफी । आवश्यकता-नुसार । यथेष्ट ।

पर्याप्तं (न०) १ रज़ामन्दी से । तत्परता से । २ तुल्य । सन्तोष । प्रचुरता । यथेष्ट होने का भाव ।

पर्याप्तिः (स्त्री०) १ उपलब्धि । २ समाप्ति । अवसान । अन्त । ३ काफी । पूर्णता । यथेष्टता । ४ अघाना । सन्तोष । ५ प्रहार को रोकने की क्रिया । ६ योग्यता । काबलियत ।

पर्यायः (पु०) १ समानार्थवाची शब्द । समानार्थक शब्द । २ क्रम । सिलसिला । परंपरा । ३ प्रकार । ढंग । तरह । ४ मौज़ा । अवसर । ५ बनाने का काम । निर्माण । ६ द्रव्य का धर्म । ७ अर्थालङ्कार विशेष । ८ एक ही कुल में उत्पन्न होने के कारण किन्हीं दो व्यक्तियों का पारस्परिक सम्बन्ध ।

पर्यात्नी (अव्यया०) एक उपसर्ग जिसका अर्थ होता है हितन, अनिष्ट ।

पर्यालोचनम् (न०) } १ अच्छी तरह देखभाल ।
पर्यालोचना (स्त्री०) } समीक्षा । पूरी जाँच पड़ताल । २ जानकारी । परिचय ।

पर्यावर्तः (पु०) } लौटना । लौटकर आना ।
पर्यावर्तनम् (न०) }

पर्याविल (वि०) बड़ा मैला या गंदला । (पानी) जिसमें मिट्टी मिली हो ।

पर्यासः (पु०) १ समाप्ति । खात्मा । अवसान । २ चक्कर । ३ परिवर्तित क्रम । उल्टा या झौंथा ।

पर्याहारः (पु०) १ कंधों पर जुआँ रख कर किसी बोझी हुई गाड़ी को खींचना । २ ढुलाई । ३ बोझा । भार । ४ मट्टी का ढड़ा । ५ नाज को जमा करने की क्रिया ।

पर्युत्तणम् (न०) आढ़ । होम या पूजन आदि के समय विना किसी मंत्रोच्चारण के चारों ओर जल छिड़कना ।

पर्युत्थानम् (न०) खड़ा हो जाना ।

पर्युत्सुक (वि०) १ दुःखी । शोकान्वित । उदास । २ अत्यन्त उत्सुक ।

पर्युदचनं (न०) १ ऋण । कर्ज़ा । २ उद्धार ।

पर्युदस्त (व० कृ०) १ निवारित । रोका गया । हटाया गया । २ निकाला हुआ । छेका हुआ ।

पर्युदासः (पु०) अपवाद । किसी नियम या आज्ञा का अपवाद ।

पशुपस्थानम् (न०) सेवा । दहल । इस्थिति ।
 पशुपासनम् (न०) १ पूजा अर्चन मान
 सम्मान । सेवा । २ मन्त्रा । सौ जन्म । चारों
 ओर आसोन ।
 पशुपतिः (स्त्री०) बोलने की क्रिया ।
 पशुपणम् (न०) पूजन । अर्चन । सेवा ।
 पशुपित (व०) १ वासी । एक दिन पहले का । जो
 ताजा न हो । २ फीका । ३ सूखे । ४ व्यर्थ ।
 पशुपणम् (न०) } १ तर्क द्वारा अनुसन्धान । २
 यथेयता (स्त्री०) } खोज । तहकीकात । ३ सम्मा-
 नप्रदर्शन । पूजन ।
 पर्योपिः (स्त्री०) खोज । तलाश । अनुसन्धान ।
 पर्वक (न०) घुटना ।
 पर्वणी (स्त्री०) १ पूर्णिमा । पूर्णमासी । २ उत्सव ।
 ३ अश्वि की सन्धि में होने वाला एक रोग
 विशेष ।
 पर्वतः (पु०) १ पहाड़ । २ चट्टान । ३ कृत्रिम पर्वत ।
 ४ सात की संख्या । ५ वृत्त ।—अरिः, (पु०)
 इन्द्र का नामान्तर ।—आत्मजः, (पु०) मैनाक
 पर्वत का नामान्तर ।—आत्मजा, (स्त्री०)
 प्रावर्ती देवी ।—आधारा, (स्त्री०) पृथिवी ।—
 आशयः, (पु०) बावल ।—आश्रयः, (पु०)
 शरभ नामक जन्तु विशेष ।—काकः, (पु०)
 जंगली कौआ ।—जा, (स्त्री०) नदी ।—पतिः,
 हिमालय ।—मोचा, (स्त्री०) केला विशेष ।—
 राज्, (पु०)—राजः, (पु०) १ विशाल पर्वत । २
 पर्वतों का स्वामी अर्थात् हिमालय पर्वत ।—स्थ,
 (वि०) पर्वतवासी या पहाड़ी ।
 पर्वन् (न०) १ ग्रन्थि । जोड़ । गाँठ । २ शरीरा-
 वयव । अङ्ग । ३ अंश । भाग । टुकड़ा । विभाग ।
 ४ पुस्तक का भाग । जैसे महाभारत में १८ भाग
 या पर्व हैं । ५ जीने की सीढ़ी । ६ अवधि ।
 निर्दिष्ट काल । विशेष कर प्रतिपदा की दमी और
 चतुर्दशी तथा पूर्णिमा एवं अमावास्या । ७ वंश
 विशेष । ८ पूर्णिमा अमावास्या और संक्रान्ति ।
 ९ चन्द्र या सूर्य ग्रहण । १० उत्सव । पुण्यकाल ।
 ११ अवसर ।—कालः, (पु०) चतुर्दशी, अष्टमी,
 पूर्णिमा, अमावास्या और संक्रान्ति ।—कारिन्,

(पु०) वह प्राहण जो अमावास्या आदिपर्व
 दिवसा में किया जाने वाला धर्मानुष्ठानविशेष,
 व्यक्तिगत लाभ के लोभ में फँस, किसी भी दिन कर
 वाले ।—गामिन्, (पु०) पर्व के दिन स्त्रीप्रसङ्ग
 करने वाला (पर्व के दिन स्त्रीप्रसङ्ग करना बर्जित
 है ।)—धिः, (पु०) चन्द्रमा ।—योनिः,
 (पु०) नरकुल । सरपत या बेत ।—रहू, (पु०)
 अनार का पेड़ ।—सन्धिः, (वि०) १ पूर्णिमा
 अथवा अमावास्या और प्रतिपदा के बीच का
 समय । वह समय जब कि पूर्णिमा या अमावास्या
 का अन्त हो चुका हो और प्रतिपदा आरम्भ होती
 हो । २ चन्द्र या सूर्यग्रहणकाल ।
 पशुः (पु०) १ कुल्हाड़ी । तबल । २ हथियार ।—
 पाणिः, (पु०) १ गयेश जी । २ परशुराम ।
 पशुका (स्त्री०) पसली ।
 पश्वधः (पु०) देखो परश्वध ।
 पश्वद् (स्त्री०) देखो परिषद् ।
 पलः (पु०) पुआल । भूसी ।
 पजम् (न०) १ माँस । सोरत । २ एक तोल जो ४ कर्ष
 के बराबर होती है । ३ तरल पदार्थों का माँप
 विशेष । ४ समय का माँप विशेष ।—अग्निः,
 (पु०) पित्त ।—अङ्गः, (पु०) कड़वा ।—
 अदः,—अशनः, (पु०) राक्षस ।—तारः,
 (पु०) खून ।—गण्डः, (पु०) लेपक ।
 मिट्टी का पलस्तर करने वाला । राज । थवई ।—
 प्रियः, (पु०) १ राक्षस । २ वनकाक ।—भा,
 (स्त्री०) भूप्रदो के शङ्ख (कील) की तत्का-
 लीन द्राया जब मेघसंक्रान्ति के मध्याह्नकाल में
 सूर्य ठीक विषुवत् रेखा पर होता है ।
 पलंकट } (वि०) भीरु । डरपोक । बुझदिल ।
 पलङ्कट }
 पलंकरः } (पु०) पित्त ।
 पलङ्कुरः }
 पलंकषः } (पु०) १ राक्षस । प्रेत । पिशाच ।
 पलङ्कषः }
 पलंकपम् } (न०) १ माँस । २ कीचड़ । ३ तिल-
 पलङ्कपम् } कुट या तिल और चीनी की अनी मिठाई ।
 —ज्वरः, (पु०) पित्तज्वर । पित्त ।—प्रियः,
 (पु०) १ वनकाक । २ राक्षस ।

पकवः (पु०) एक प्रकार का जाल जिससे मछलियाँ पकड़ी जाती हैं ।

पलांडु } (पु० न०) प्याज़ ।
पलायडु }

पलापः (पु०) १ हाथी की कनपटी । २ बंधन । रस्ता । [भाव ।

पलायनम् (न०) भागना । भागने की क्रिया या पलायित (व० कृ०) भागा हुआ । जो छूट कर भाग गया हो ।

पलालः (पु०) पुआल । मूसी । चोकर ।—
पलालम् (न०) दोहदः, (पु०) आम का वृक्ष ।

पलालिः (पु०) मौस का ढेर ।

पलाशः (पु०) एक वृक्ष का नाम जिसका दूसरा नाम किशुक भी है । ढाक । टेसू ।

पलाशम् (न०) १ पलाश वृक्ष के फूल । २ पत्ता । ३ हरारन ।

पलाशिन (पु०) वृक्ष ।

पलिक्रि (स्त्री०) १ बूढ़ी स्त्री जिसके बाल पक गये हों । २ गाय जो प्रथम बार व्यायी हो । बालगर्भिणी ।

पलिघः (पु०) १ शीशे का घड़ा । काँच का बरतन । २ दीवाल । परकोटे की दीवाल । ३ लोहे का हंडा । ४ गोशाला ।

पलित (वि०) पका हुआ । बुझा । सफेद (बाल) ।

पलितम् (न०) १ सफेद बाल । केश । बुझाये के कारण बालों का सफेद होना । अत्यधिक या सम्हाले हुए केश ।

पलितंकरण } (वि०) सफेद कर देने वाला ।
पलितकुरण }

पलितंभविष्णु (वि०) सफेद हो जाने वाला ।

पल्यंकः } (पु०) पलंग । खाट ।
पल्यङ्कः }

पल्ययनम् (न०) १ जीन । काँठी । २ लगाम । रास ।

पल्लवः (पु०) एक बड़ा अनाज का भाण्डार या खत्ती ।

पल्लवः (पु०) १ अक्षुर । अँखुआ । कोंपल ।
पल्लवम् (न०) १ कल्ला । २ कली । फूल । ३

विस्तार । पसार । फैलाव । ४ अलक्त । (आल०) लाल रंग । ५ बल । ताकत । ६ तृण । बाल की पत्ती । ७ कड़ा या कंकण या बाजूबंद ।

८ प्रेम । क्रीड़ा । ९ चपलता । चाञ्चल्य । (पु०) अधर्मी । दुराचारी ।—अक्षुरः, (पु०)—
आधारः, (पु०) शाखा । डाली ।—अश्वः, (पु०) कामदेव ।—अशुः, (पु०) अशोक वृक्ष ।

पल्लवकः (पु०) १ अधर्मी । दुराचारी । २ वह बालक जो अप्राकृतिक मैथुन करवावे । अस्वाभाविक अभिगमन के लिये रखा हुआ बालक । ३ रंडी का प्रेमी या आशिक । ४ अशोक वृक्ष । ५ एक प्रकार की मछली । ६ कल्ला । अँखुआ ।

पल्लविकः (पु०) १ नास्तिक । दुराचारी । २ बहादुर । साहसी । ३ गावू ।

पल्लवित (वि०) [स्त्री०—पल्लविनी] कोंपल या कल्ले वाला (वृक्ष) । (पु०) वृक्ष । पेड़ ।

पल्लिः (स्त्री०) १ गाँवड़ा । छोटा ग्राम । २ कोंपड़ी ।
पल्लि } १ मकान । स्थान । टिकासरा । ४ नगर या कस्बा । ५ छिपकली । बिस्तुइया ।

पल्लिका (स्त्री०) १ गाँवड़ा । टिकासरा । ठहरने का स्थान । २ छिपकली । बिस्तुइया ।

पल्लवं (न०) छोटा तालाव ।—आवासः, (पु०) कछवा ।—पङ्कः, (पु०) कीचड़ (तालाव की)

पवः (पु०) १ पवन । हवा । २ शुद्धता । ३ अनाज को फटकना या पछोरना ।

पवम् (न०) गोबर ।

पवनः (पु०) हवा । बयार ।

पवनम् (न०) १ सफाई । २ पछोरना । फटकना । ३ चलनी । ४ जल । ५ कुम्हार का अँवा । (पु० भी है)—अशनः,—भुज्, (पु०) साँप ।—
आत्मजः, (पु०) १ हनुमान । २ भीम । ३ अग्नि ।—आशः, (पु०) सर्प ।—नाशः, (पु०) १ गरुड़ । २ मयूर —तनयः, (पु०)—सुतः, (पु०) १ हनुमान । २ भीम ।—व्याधिः, (पु०) १ कृष्णसखा उद्धव या ऊधो । २ गठिया का रोग । [विशेष ।

पवमानः (पु०) १ पवन । हवा । २ यज्ञीय अग्नि पवाका (स्त्री०) तुफान । बबण्डर ।

पविः (पु०) इन्द्र का वज्र । [हुआ ।

पवित (वि०) स्वच्छ किया हुआ । साफ किया

पवितं (न०) काली मिर्च । गोख मिर्च ।

पवित्र (वि०) १ शुद्ध । पापरहित । २ निर्मल । साक । ३ यज्ञादि द्वारा शुद्ध हुआ ।

पवित्र (न०) १ चलना आदि साफ करने का साधन । २ कुश जो यज्ञ में वी को छिड़कने या शुद्ध करने में व्यवहृत होता है । ३ कुश की पवित्री । ४ यज्ञोपवीत । जनेऊ । ५ तौबा । ६ जलवृष्टि । ७ जल । ८ मलना । साफ करना । ९ अर्घा । १० वी । ११ शहद ।—आरोपणम्, (न०) आरोहणम् (न०) उपनयन संस्कार ।—पाणि, (वि०) हाथ में कुश ग्रहण किये हुए ।—धान्यं, (न०) यव । जवा ।

पवित्रकं (न०) सनिया या सूती रस्सा या जाल ।

पशव्य (वि०) १ पशु के योग्य । २ पशु सम्बन्धी । ३ पशुतापूर्ण । पशु जैसा ।

पशुः (पु०) १ मवेशी । जानवर । लाकूल विशिष्ट चतुष्पद जन्तु । २ बलि के उपयुक्त पशु जैसे बकरा । ३ हैवान । जानवर । ४ शिव जी का गण्य ।—अवदानं, (न०) पशुबलि ।—क्रिया, (स्त्री०) १ पशुबलिदान की क्रिया । २ सम्भोग । मैथुन ।—गायत्री, (स्त्री०) मंत्र विशेष जो आसन्न सृष्टु वाले पशु के कान में पढ़ा जाता है । [ब्रह्म मंत्र यह है :—पशुपाशाय विद्महे शिरच्छेदाय (विरवकर्मणे) धीमही । तन्नो जीवः प्रचोदयात् ।]—घातः, (पु०) यज्ञ में पशुवध ।—चर्या, (स्त्री०) मैथुन ।—धर्मः, (पु०) १ पशु-व्यवहार । २ स्वच्छन्द मैथुन । ३ विधवा विवाह ।—नाथः, (पु०) शिव ।—पा, (पु०) पशुपाल ।—पतिः, (पु०) १ शिव । २ पशुपाल । पशु पालने या रखने वाला । ३ एक सिद्धान्त का नाम जो सिद्धान्त का प्रचारक है ।—पालः,—पालकः, (पु०) ग्वाला । गड़रिया ।—पालनं,—रक्षणं, (न०) पशुओं का पालना या रखना ।—पाशकः, (पु०) मैथुन विशेष ।—प्रेरणम्, (न०) पशु हाँकना ।—मारं, (अव्यया०) पशुवध की प्रणाली के अनुसार ।—यज्ञः,—यागः, (पु०)—द्रव्यं, (न०) पशुबलि ।—रज्जुः, (स्त्री०) पशु बाँधने की रस्सी ।—राजः, (पु०) शेर । सिंह ।

पश्चान् (अव्यया०) १ पीछे से पिछवाड़ से । २ पीछे बाद । तदुपरान्त । तब । ३ अन्त में । अन्ततोगत्वा । ४ पश्चिम दिशा से । ५ पश्चिम की ओर । पश्चिमी ।—कृतः, (वि०) पीछे छूटा हुआ । पीछे छोड़ा हुआ ।—तापः, (पु०) पछतावा ।

पश्चार्धः (पु०) १ (शरीर का) पिछला भाग । २ (समय या स्थान सम्बन्धी) अन्तिम । ३ पश्चिमी । पश्चिम की ओर से ।—अर्धः, (पु०) १ पिछाड़ी का आधा । २ रात का अन्तिम आधा भाग ।

पश्चिमा (स्त्री०) पश्चिम ।—उत्तरा, (स्त्री०) उत्तर-पश्चिम ।

पश्यत् (वि०) [स्त्री०—पश्यन्ती] देखने वाला । अवलोकन करने वाला ।

पश्यतोद्वरः (पु०) चोर । डाकू । मुनार ।

पश्यंती } (स्त्री०) १ रंढी । बेरया । २ स्वर विशेष । पश्यन्ती }

पस्यम् (न०) घर । आवादी । बस्ती । डेरा ।

पस्पशः (पु०) १ पतञ्जलि महाभाष्य के प्रथम अध्याय के प्रथम आह्निक का नाम । २ उपो-हृत । आरम्भिक वक्तव्य ।

पह्नुवाः—पह्नुवाः (पु०)—पान्हकाः (पु० बहु-वचन) एक जाति के लोगों का नाम । सम्भवतः फारस वाले ।

पा (धा० परस्मै०) [पिवति, पीत] १ पीना । २ रखा करना ।

पा (वि०) १ पीने वाला । यथा “सोमपाः” । २ रखा करने वाला । यथा “गोपा” ।

पांसन (वि०) [स्त्री०—पांसनी, पांशनी] १ पांशन (वि०) अपमानकारक । अप्रतिष्ठाकारक । २ नष्टकारी । अष्टकारी । ३ दुष्ट । तिरस्करणीय । ४ बदनाम । अपकीर्ति ।

पांसव (वि०) १ धूल का । गदें का । २ धूल । रेणु । पांशव } ३ विष्टा । पाँस । ४ कर्पूर विशेष ।—कासीसं, (न०) कसीस ।—कुलं,—कुली, (स्त्री०) मार्ग । रास्ता । (न०) १ धूल का ढेर । २ ऐसा प्रमाणपत्र या दस्ता-वेज जो किसी के नाम से न हो । निरा-

पद शासन, —कृत, (वि०) धूल से ढका हुआ ।
—हारं, (न०) —जम, (न०) निमक विशेष ।
—चत्वरं, (न०) ओला । —चन्दनः, (पु०) शिव जी का नाम । —चामरः, (पु०) १ धूल का ढेर । २ खीमा । तंबू । ३ बाँध या (नदी) तट जो दूब घास से ढका हो । ४ प्रशंसा । —जालिकः (पु०) विष्णु का नामान्तर । —पटलं, (न०) धूल की तह या पर्त । —मर्दनः, (पु०) पेड़ के चारों ओर खोद कर खोदुआ बनाना जिसमें जल भर दिया जाय । आलबाल ।

पांसुरः } (पु०) १ डाँस । गोमन्तली । २ लुंजा जो
पांशुरः } गाड़ी में बैठ कर धूमें ।

पांसुल } (वि०) १ धूलधूसरित । धूल से लस्त-
पांशुल } पस्त । गंदला किया हुआ । अष्ट किया हुआ । दगीला । दागदार । ३ अष्ट करने वाला । अपमान करने वाला ।

पांसुलः } (पु०) १ लंपट मनुष्य । अधर्मी मनुष्य ।
पांशुलः } नास्तिक मनुष्य । २ शिव जी का नामान्तर ।
पांसुला } (स्त्री०) १ रजस्वला स्त्री । २ छिनाल
पांशुला } औरत । ३ जमीन । भूमि ।

पाकः (पु०) १ भोजन बनाने की क्रिया । २ पकाने की जैसे हूँट आदि की क्रिया । ३ पचन (भोजन) की क्रिया । हजम करने की क्रिया । ४ प्रकृत । ५ पूर्णता । ६ परिणाम । फल । नतीजा । ७ किये हुए कर्मों का विपाक । कर्मविपाक । ८ अनाज । नाज । ९ (दाव या फोड़े का) पक जाना । १० (बालों का पक कर वृद्धावस्था के कारण) सफेद होना । ११ गार्हपत्यग्नि । १२ उत्सू । १३ बच्चा । १४ एक दैत्य का नाम जिसे इन्द्र ने मारा था । —अगारः, (पु०) —अगारं, (न०) —आगारः, (पु०) —आगारं, (न०) —शाला, (स्त्री०) —स्थानं, (न०) रसोईघर । —अतीसारः, (पु०) पुरानी दस्तों की बीमारी । —अभिमुख, (वि०) १ गढ़ । पकने को तैयार । २ अनुकूल होने वाले । —जं, (न०) १ काला निमक । कच्चा निमक । २ अफरा । —पात्रं, (न०) रसोई के बरतन । —पुटी, (स्त्री०) कुम्हार का औंटा । —यज्ञः, (पु०) पञ्च महायज्ञ में ब्रह्मयज्ञ को छोड़ अन्य

चार यज्ञ । वृषोत्सर्ग और गृहप्रतिष्ठा आदि कार्यों में किया जाने वाला खीर का हवन । —शुक्ला, (स्त्री०) खड़िया मिट्टी । —शास्त्रः, (पु०) इन्द्र का नामान्तर । —शास्त्रिः, (पु०) १ इन्द्रपुत्र जघन्त का नाम । २ वालि का नाम । अजुन का नाम । [ज्वर ।

पाकलः (पु०) १ अग्नि । २ हवा । ३ हाथी का पाकिम (वि०) १ रौंदा हुआ । पकाया हुआ । साफ किया हुआ । २ पकाया हुआ । (डार का या पाल का) । ३ उबाल कर उपलब्ध (यथानि-यम)

पाकुः } (पु०) रसोइया ।
पाकुः } (पु०) रसोइया ।

पाक्य (वि०) रौंधने के योग्य । साफ करने योग्य । पकाने योग्य ।

पाक्यः (पु०) सेरा ।

पाक्ष (वि०) [स्त्री०—पाक्षी] १ शुक्ल पक्ष का । पाक्षिक । पक्षवारे का । २ किसी दल से सम्बन्ध रखने वाला ।

पाक्षिक (वि०) [स्त्री०—पाक्षिकी] १ किसी पक्षवारे से सम्बन्ध युक्त । पक्षवारे का । २ पक्षी सम्बन्धी । ३ किसी दल की पक्षपात करने वाला । ४ युक्ति सम्बन्धी । ५ ऐच्छुक ।

पाक्षिकः (पु०) बहेलिया । चिड़ीमार ।

पाखंडः } (पु०) नास्तिक ।
पाखण्डः } (पु०) नास्तिक ।

पागल (वि०) विचित्र । जिसका दिमाग ठीक न हो ।

पांक्षेयः } (वि०) भोजन की पंगति में एक साथ
पांक्ष्य } बैठने योग्य । संसर्ग करने योग्य ।

पाचक (वि०) १ रौंधने वाला । भोज्य पदार्थ बनाने वाला । सेकने वाला । २ पका हुआ । ३ (भोजन को) पचाने वाला ।

पाचकं (न०) पित्त । —स्त्री०, (स्त्री०) १ रसोई बनाने वाली ।

पाचकः (पु०) १ रसोइया । २ अग्नि ।

पाचन (वि०) [स्त्री०—पाचनी] १ पचाने वाला । हाजिम । २ किसी वस्तु के अजीर्ण को नाश करने

वाली (आपधि) । ३ (फल आदि का) पकाने वाला ।

पाचनः (पु०) १ अग्नि । २ खट्वापन । खट्वापन ।

पाचनं (न०) १ पचाने या पकाने की क्रिया । २ (फल को) पकाने की क्रिया । ३ वह दवा जो आम या अपक्वदोष को पचावे । ४ घाव को सुँद देने वाला । ५ प्रायश्चित्त ।

पाचालं (न०) १ रत्नोद्दिष्ट बनने की क्रिया । २ फलादि पकाने की क्रिया ।

पाचालः (पु०) १ रत्नोद्दिष्ट । २ अग्नि । ३ हवा ।

पावा (स्त्री०) पकाना ।

पाँचकपाल } (वि०) [स्त्री०—पाञ्चकपाली]

पाञ्चकपाल } पाँच कटोरी में रखे हुए नैवेद्य सम्बन्धी ।

पाँचजन्यः } श्रीकृष्ण के शङ्ख का नाम ।—धरः, पाञ्चजन्यः } (पु०) श्री कृष्ण का नामान्तर ।

पाँचदश, } (वि०) [स्त्री०—पाञ्चदशी] पन्द्रह

पाञ्चदश } तिथि सम्बन्धी ।

पाँचदशम्, } (न०) पन्द्रह का समूह ।

पाञ्चनद } (वि०) पञ्जाब में प्रचलित ।

पाँचभौतिक } (वि०) [स्त्री०—पाञ्चभौतिकी]

पाञ्चभौतिक } पाँचतत्वों से बनी हुई ।

पाँचवार्षिक, } (वि०) [स्त्री०—पाञ्चवार्षिकी]

पाञ्चवार्षिक } पाँच वर्ष की ।

पाँचशब्दिकम्, } (न०) पाँच प्रकार का सन्नी ।

पाञ्चशब्दिकम् } २ वाच्यार्थ । बाले ।

पाँचा न, } (वि०) [स्त्री०—पाञ्चाली] पाञ्चाल

पाञ्चाल } देश सम्बन्धी । अथवा पाञ्चाल देशाधिपति सम्बन्धी ।

पाँचालः, } (पु०) १ पाञ्चालदेश । २ पाँचाल देश

पाञ्चालः } का राजा ।

पाँचालाः, } (पु० बहुव०) पाञ्चालदेश के रहने

पाञ्चालाः } वाले ।

पाँचालिका, } (स्त्री०) गुड़िया । पुतली ।

पाञ्चालिका } (स्त्री०) १ पाँचाल देश की स्त्री या

पाञ्चाली } रानी । २ द्रौपदी का नाम । ३ गुड़िया ।

पाञ्चाली } पुतली । ४ साहित्य में एक प्रकार की रचनाशैली

विशेष, जिसमें बड़े बड़े पाँच, छः समासों से युक्त

और कान्तिपूर्ण पदावली होती है । कई कई गौड़ी और बदर्मी के समिश्रण का पाञ्चाली मानते हैं ।

पाट् (अव्यय) एक अव्यय जो सम्बोधन अथवा पुकारने के लिये प्रयुक्त होता है ।

पाटकः (पु०) १ चीरने वाला । विभाजित करने वाला । २ ग्राम का एक भाग । ३ ग्राम का अर्द्ध भाग । ४ बाजा विशेष । ५ नदीतट । समुद्रतट । ६ घाट की पैदियाँ । ७ मूलधन या पूँजी का घाटा । ८ बलिदत्त । वित्त । ९ चौतर के पालों की फिकावट ।

पाटञ्चरः (पु०) चोर । लुटेरा । डाँकू ।

पाटनं (न०) चीरने की, फाड़ने की, तोड़ने की और नष्ट करने की क्रिया ।

पाटल (वि०) पिलौहा लाल । गुलाबी रंग का ।—उपलः, (पु०) माणिक रत्न ।—द्रुमः (पु०) पादर या पाटला का पेड़ ।

पाटलं (न०) १ पादर वृक्ष का फूल । २ एक प्रकार का चींचल जो वर्षा ऋतु में तैयार होता है । ३ केसर ।

पाटलः (पु०) १ पिलौहाँ-लाल या गुलाबी रंग । २ पादर या पादर वृक्ष ।

पाटला (स्त्री०) १ लाललोत्र । २ पाटला या पादर का पेड़ या इस पेड़ के फूल । ३ दुर्गा का नामान्तर ।

पाटलिः (स्त्री०) पाटला का वृक्ष ।—पुत्रः, (न०) आधुनिक पटना नगर का प्राचीन नाम । इसके नामान्तर पुष्पपुर या कुसुमपुर भी हैं ।

पाटलिकः (पु०) शिष्य । शागिर्द ।

पाटलिमन् (पु०) पिलौहाँ लाल रंग ।

पाटल्या (स्त्री०) पाटल वृक्ष के फूलों का समुदाय ।

पाटवं (न०) १ पटुता । चतुराई । चालाकी । कुशलता । २ स्फूर्ति । ३ कुर्सी ।

पाटविक (वि०) [स्त्री०—पाटविकी] १ चतुर । होशियार । निपुण । २ मुत्तन्नी । चालाक । धोखे-बाज ।

पाटित (व० कृ०) १ फटा हुआ । चिरा हुआ । दरार-दार । टूटा हुआ । २ विधा हुआ । छेदा हुआ । काटा हुआ ।

पाटी (स्त्री०) अङ्कगणित । - गणितं, (न०)
अङ्कगणित ।

पाटीरः (पु०) १ चन्दन । २ खेत । ३ जस्ता । ४
बादल । ५ चखनी ।

पाठः (पु०) १ पढ़ाई । २ ब्रह्मयज्ञ अर्थात् वेदपाठ ।
पञ्चमहायज्ञों में से एक । ३ जो कुछ पढ़ाया
जाया । ४ पुस्तक का एक अंश । - अन्तरं,
(न०) दूसरा पाठ । - छेदः, (पु०) ठहराव ।
विराम । अन्तर । विसर्ग । - दोषः, (पु०) अशुद्ध
पाठ । - निश्चयः, (पु०) किसी पुस्तक के किसी
अंश पर मनन कर उसके अर्थों का निश्चय
करना । - मञ्जरी, - शालिनी, (स्त्री०) मैना
या सारिका पक्षी । - शाखा, (स्त्री०) चटशाला ।
मदरसा । स्कूल ।

पाठकः (पु०) १ पढ़ाने वाला । शिक्षक गुरु । २
पुराणवाचक । कथावाचक । ३ दीक्षागुरु । ४ शिष्य ।
छात्र । विद्यार्थी ।

पाठनं (न०) पढ़ाना । अध्यापन कर्म ।

पाठित (व० कृ०) सिखलाया हुआ । पढ़ाया हुआ ।
पाठिन् (वि०) वह जिसने किसी विषय का अध्ययन
किया हो । २ जानकार । परिचित ।

पाठीनः (पु०) १ पुराणों की कथा सुनाने वाला । २
मञ्जरी विशेष ।

पाणः (पु०) १ व्यापार । व्यवसाय । २ व्यापारी ।
३ खेल । खेला । ४ खेल का दाँव । ५ इकरार-
नामा । ६ प्रशंसा । ७ हाथ ।

पाणिः (पु०) हाथ ।

पाणिः (स्त्री०) मंडी । हाट । बाजार । - गृहीती,
(स्त्री०) भार्या । पत्नी । - ग्रहः, - ग्रहणम्,
(न०) विवाह । शादी । - ग्रहीतृ (पु०) -
ग्राहः, (पु०) वर । पति । - घः, (पु०) १
ढोख बजाने वाला । २ मजदूर । ३ कारीगर । -
घातः, (पु०) हाथ का आघात या प्रहार । -
जः, (पु०) हाथ की उंगलियों के नाखून । -
तलं, (न०) हथेली । गदोरी । - धर्मः, (पु०)
विवाह की विधि या क्रिया । पीडनं, (न०)
विवाह । प्रणयिनी, (स्त्री०) भार्या । - बन्धः,
(पु०) विवाह । शादी । - भुजः, (पु०) अश्वस्थ

या वट वृक्ष । - मुक्तं, (न०) हाथ से फेंका
डेला । - रुहः, (पु०) - रुहः, (पु०) नख ।
नाखून । - वादः, (पु०) १ ताली पीटना । २
ढोख बजाना । - सूर्या, (स्त्री०) रस्सा । -

पाणिनिः (पु०) संस्कृत भाषा के एक स्वनाम-
ख्यात व्याकरणवी विद्वान का नाम ।

पाणिनीय (वि०) पाणिनी सम्बन्धी या पाणिनी का
बनाया हुआ ।

पाणिनीयं (न०) पाणिनि का बनाया व्याकरण ।

पाणिनीयः (पु०) पाणिनी का अनुयायी ।

पाणिन्ध्रम, पाणिन्ध्रम } (वि०) हाथ से धौंकने
पाणिन्ध्रय, पाणिन्ध्रय } वाला ।

पांडर } (वि०) १ सफेद । पिल्लौहँ-सफेद ।
पाण्डर } (वि०) १ सफेद । पिल्लौहँ-सफेद ।

पांडरम्, } (न०) १ गेरू । २ चमेली का फूल ।
पाण्डरम् } (न०) १ गेरू । २ चमेली का फूल ।

पांडवः } (पु०) राजा पाण्डु की औलाद । -
पाण्डवः } आभीलः, (पु०) श्रीकृष्ण का नाम ।

—श्रेष्ठः, (पु०) युधिष्ठिर ।

पांडवीय, } (वि०) पाण्डवों का ।
पाण्डवीय } (वि०) पाण्डवों का ।

पांडित्यम् } (न०) १ विज्ञता । पण्डिताई । २
पाण्डित्यम् } चतुराई । चालाकी । निपुणता ।

पाण्डु (वि०) सफेदी माहल पीला ।

पाण्डुः (पु०) १ सफेदी माहल पीला रंग । २ एक
रोग विशेष जिसमें रक्त के दूषित होने से शरीर
के चमड़े का रंग पीला हो जाता है । ३ सफेद
हाथी । ४ पाण्डवों के पिता का नाम । - ग्राम्यः,
(पु०) पाण्डुरोग । - कम्बलः, (पु०) १
सफेद कंबल । २ ऊपर पहिने का गर्म कपड़ा ।
३ राजा के हाथी की सूख । - पुत्रः, (पु०)
पाँच पाण्डवों में से कोई भी एक । - मृत्तिका,
पडोल मिट्टी । पंडू मट्टी । - रागः, (पु०)
सफेदी । - रोगः, (पु०) रोग विशेष । -
लेखः, (पु०) मसविदा । खट्वा । - शमिता,
(स्त्री०) द्रौपदी का नामान्तर । - सोपाकः,
(पु०) एक वर्णसङ्कर जाति ।

पांडुर } (वि०) १ पीला । जर्द । २ सफेद । -
पाण्डुर } इतुः, (पु०) गन्ना या पौड़ा ।

पांडुरम् } (न०) सफेद कोरु रोग ।
 पाण्डुरम् }
 पांड्यः } (पु०) देश विशेष का अधिपति या
 पाण्ड्यः } राजा ।
 पांड्याः } (पु० बहु०) देश विशेष और उसके
 पाण्ड्याः } अधिवासी ।
 पात (वि०) रञ्जित । रखवाली किया हुआ । बचाया
 हुआ ।
 पातः (पु०) १ उड़ान । पलायन । २ नीचे उतरना ।
 (सवारी से) उतरना । ३ पतन । गिराव ।
 ४ नाश । थरलादी । ५ प्रहार । आघात । ६
 बहना (जैसे आँसुओं का) ७ (तीर या गोली
 आदि का) छूटना । ८ आक्रमण । हमला ।
 ९ होना । (किसी घटना का) घटना । १०
 चूकना । ११ राहु का नामान्तर ।
 पातकं (न०) } पाप । गुनाह ।
 पातकः (पु०) }
 पातंगिः } (पु०) १ शनिग्रह । २ यमराज । ३
 पातङ्गिः } कर्ष । ४ सुग्रीव ।
 पातञ्जल } (वि०) [पातञ्जली] पतञ्जलि का
 पातञ्जल } बनाया हुआ ।
 पातञ्जलम् } (न०) पतञ्जलि विरचित योग दर्शन ।
 पातञ्जलम् }
 पातनम् (न०) १ गिराने की क्रिया । २ नीचा
 दिखाने की क्रिया । ३ स्थानान्तरित या हटाने की
 क्रिया ।
 पातालं (न०) १ नीचे के सप्त लोकों में से अन्तिम
 लोक का नाम । [कहा जाता है; इस लोक में नाग
 रहते हैं । नीचे के सात लोकों के नाम ये हैं:—
 १ अतल, २ वितल, ३ सुतल, ४ रसातल, ५
 तलातल, ६ महातल और ७ पाताल] । २ नीचे
 का कोई भी लोक । ३ गढ़ा या सुराल । वाद-
 वानल ।—गङ्गा, (स्त्री०) नीचे के लोक में
 बहने वाली गङ्गा ।—ओकस, (पु०)—
 निलयः, (पु०)—निरासः, (पु०)—वासिन्,
 (पु०) १ राजस । २ नाग ।

पातिकः (पु०) सुहृत् । शिशुमार ।

पातित (व० कृ०) १ गिराया हुआ । फँका हुआ ।

नीचे गिरा हुआ । २ नीचा दिखाया हुआ । ३
 (पद में) नीचा किया हुआ ।

पातित्यं (न०) पद या जाति की अंशता ।

पातिन् (वि०) [स्त्री०—पातिनी] १ गमनकारी ।
 २ नीचे उतरने वाला । ३ गिरने वाला । डूबने
 वाला । ४ सम्मिलित होने वाला । गिराने या
 फँकने वाला । ५ उड़ाने वाला । निकालने
 वाला । छोड़ने वाला ।

पातिली (स्त्री०) १ जाल । फंदा । २ हाँडी ।

पातुक (वि०) [स्त्री०—पातुकी] जो प्रायः
 या अक्सर गिरा करे । पतनशील ।

पातुकः (पु०) १ पहाड़ का उतार । २ सुहृत् ।
 शिशुमार ।

पात्रं (न०) १ पानी पीने का बर्तन । प्याला ।
 घड़ा । २ कोई भी बर्तन । ३ किसी वस्तु का
 आधार । ४ जलाशय । ५ दान पाने के योग्य
 व्यक्ति । ६ अभिनय करनेवाला । अभिनेता । नट ।
 ७ आमाल्य । राजसचिव । ८ नदी के उभय तटों के
 बीच का स्थान । ९ योग्यता । औचित्य । १०
 आज्ञा । आदेश ।—उपकरणम्, (न०) अप-
 कुछ श्रेणी की सजावट ।—पालः, (पु०) १
 डोंड़ या खेवा । २ तराजू की डंडी । संस्कारः
 (पु०) बरतनों की सफाई । २ नदी का प्रवाह ।

पात्रिक (व०) [स्त्री०—पात्रिकी] १ आदक से
 नापा हुआ । २ योग्य । पर्याप्त । उचित ।

पात्रिकं (न०) बरतन । प्याला । तरतरी ।

पात्रिय } (वि०) भोजन में शरीक होने योग्य ।
 पाथ्य }

पात्रीयं (न०) चुवा आदि यज्ञीय पात्र ।

पात्रीरः (न०) } नैवेद्य । चढ़ावा । भेंट ।

पात्रीरम् (पु०) }

पात्रेवहुलः } (पु०) जुठनखोर । पतरीचाट ।

पात्रेस्मितः } सुपतखोर । खुशामदी टट्टू । २ दगा-
 बाज़ आदमी । कपटी या दम्भी मनुष्य ।

पाथं (न०) १ जल । २ पवन । ३ भोजन ।

—जं, (न०) १ कमल । २ शङ्ख ।—दः,

—धरः, (पु०) बावल ।—धिः,—निधिः,—

पतिः, (पु०) समुद्र ।

पाथः (पु०) १ अग्नि । २ सूर्य ।

य (न०) १ पैदा । यात्रा में रास्ते के लिये भोजन । २ कन्या राशि ।

३ (पु०) १ पैर । २ किरण । ३ चारपाई या कुर्सी आदि का पाव । ४ वृद्ध की जड़ । ५ पहाड़ की तलैटी । ६ चतुर्थांश । ७ श्लोक के चार पादों में से एक । ८ किसी पुस्तक के अध्याय का विशेष अंश । ९ अंश । भाग । हिस्सा । १० खंभा । स्तम्भ । —अग्रं, (न०) पैर का सब से आगे का भाग । —अङ्गुः, (पु०) पदचिन्ह । पैर का निशान । —अङ्गुदम्, (न०) अङ्गुदी, (स्त्री०) नूपुर । —अङ्गुपुः, (पु०) पैर का अँगूठा । —अन्तः, (पु०) पैर का अन्तिम भाग । —अन्तरं, (न०) पग । पैड़ । क्रदम । —अम्बु, (न०) भाठा जिसमें एक चौथाई जल मिला हो । —अम्भस्, (न०) पैर का धोवन । जल जिसमें पैर धोये गये हों । —अरविन्दः —कमलं, —पङ्कजं, —पद्मं, (न०) कमल जैसे चरण । —अलिन्दी, (स्त्री०) नाव । नौका । —अव-सेवनम्, (न०) १ पैर धोना । २ जल जिससे पैर धोये गये हों । —आघातः, (पु०) ठोकर । लात । —आनत, (वि०) पैरों में पड़ा हुआ या गिरा हुआ । —आवर्तः, (पु०) कुए से जल निकालने वाला, चंन्र या पहिया, जो पैर से चलाया जाता है । —आसनं, (न०) पैर रखने का पीड़ा । आस्फालनम्, (न०) पैरों का चलाया । —आहत, (वि०) लतियाया हुआ । —उदकं-जलं, (न०) पैर धोने का जल या वह जल जिसमें किसी पूज्य व्यक्ति के पैर धोये गये हों । —उदरः (पु०) साँप । —कटकः, (पु०) कटक, (न०) —कोलिका, (स्त्री०) नूपुर । —तेपः, (पु०) क्रदम । पग । —ग्रन्थिः, (पु०) एड़ी । —ग्रह-राम्, (न०) पादस्पर्श । पैरछूना (प्रणा-मार्थ) —चतुरः, —चत्वरः (पु०) १ निन्दक । सुगुलखोर । सुशामदी । २ बकरा । बालू का भीटा । ३ ओला । —चारः (पु०) पैदल चलने वाला । —चारिन्, (वि०) पैदल चलने या लड़ने वाला । (पु०) १ पैदल । २ प्यादा सिपाही । —जः, (पु०) युद्ध । —जाहं-

(न०) एड़ी या एड़ों की गाँठ । —तलं, (न०) पैर का तलवा । —त्रः, (पु०) त्रा, (स्त्री०) त्राणं, (न०) जूता । —पः, (पु०) वृद्ध । —पञ्चशङ्कः, (पु०) पखडयम्, (न०) जंगल । —पालिका, (स्त्री०) पैर का गहना । —पाशः, (पु०) पशु के पैर में बाँधने की रस्ती । —पाशी, (स्त्री०) १ बेड़ी । २ चटाई । ३ लता । वेल । —पीठः, (पु०) —पीठं, (न०) पैर रखने का पीड़ा । —पूरणं, (न०) पादपूर्ति । किसी श्लोक या कविता के किसी चरण को लेकर उस चरण के भाव को नष्ट न करते हुए पूरा श्लोक बना देना । —प्रज्ञातनम्, (न०) पैर धोना । —प्रतिष्ठानं, (न०) पैर का पीड़ा । —ग्रहारः, (पु०) पैर की ठोकर या लात । —वन्धनम्, (न०) बेड़ी । —मुद्रा, (स्त्री०) पदचिन्ह । पैर का निशान । —मूलं, (न०) १ एड़ी या एड़ी की गाँठ । २ पैर का तलवा । ३ यर्वत की तलैटी । ४ किसी मनुष्य के बारे में नञ्जता सूचक कथन । —रजस्, (न०) पैर की धूल । —रज्जुः, (पु०) हाथी के पैर के लिये चमड़ा । —रथी, (स्त्री०) खबाक । जूता । —रोहः, (पु०) —रोहणः, (पु०) वटवृक्ष । —वन्दनं, (न०) चरणों में प्रणाम । —विरजस्, (न०) जूता । (पु०) देवता । —शाखा, (स्त्री०) पैर की अंगुली । —शैलः, (पु०) किसी पर्वत की तलैटी की पहाड़ी । —शोधः, (पु०) पैर की सुजन । —शौचं, (न०) पैर धोना । —सेवनं, (न०) —सेवा, (स्त्री०) १ चरणस्पर्श कर प्रतिष्ठा करना । २ सेवा । —स्फोटः, (पु०) पैरचटकाना । —हत, (वि०) लतियाया हुआ ।

पादविकः (पु०) यात्रो ।

पादात् (पु०) प्यादा सिपाही । पैदल ।

पादातः (न०) पैदल सिपाहियों की सेना ।

पादातिः } (पु०) पैदल सिपाही ।
पादाविकः }

पादिक (पु०) [स्त्री०—पादिकी] एक चौथाई ।

पादिनः (पु०) चतुर्थांश ।

पादुक (वि०) [स्त्री० पादुकी] पैदल चान वाला
पादुका (स्त्री०) खराद —कार (पु०) मोची

कुला बनान वाला ।

पादू (स्त्री०) मूत्री ।—कृत, (पु०) मोची ।

पाद्य (वि०) पैर का ।

पाद्यम् (न०) पैर धोने के लिये जल ।

पानं (न०) १ पान करना । पीना । अधर को चूमना ।
२ शराब पीना । ३ शरबत पीना । ४ पानपात्र ।
५ पैनावा । तेज करना । ६ रत्ना । बनाव ।

पानः (पु०) कलवार । शराब खींचने वाला ।—
अगारः,—आगारः, (पु०) —आगरः, (न०)
मदिरागृह ।—अगार्यः, (पु०) अत्यधिक मदिरा
पान ।—गोष्ठिका,—गोष्ठी, (स्त्री०) १
शराबियों की होली । २ डोलक या डोल की
दूकान । मदिरागृह । शराब की दूकान ।—प,
(वि०) शराब पीने वाला । पानं,—भाजनं,
(न०) —भाण्डं, (न०) पानपात्र । शराब
पीने का प्याला —भूः,—भूमिः,—भूमी,
(स्त्री०) पानशाला ।—मङ्गलः, (न०) मदिरा
पान करने वालों की गोष्ठी ।—रत, (वि०)
शराब पीने का लतियल ।—बणिजः, (पु०)
शराब बेचने वाला ।—विभ्रमः, (पु०) नशा ।
—शौण्डः, (पु०) बड़ा शराबी ।

पानकं (न०) पेय पदार्थ । शरबत । रस ।

पानिकः (पु०) शराब बेचने वाला । कलवार ।

पानिलं (न०) पानपात्र । शराब पीने का बरतन ।

पानीयं (न०) १ जल । २ पेय पदार्थ । रस । शरबत ।
—मङ्गलः, (पु०) ऊर्ध्वविलास जो मङ्गली खाते
हैं ।—वर्गिका, (स्त्री०) बालू । रेती ।—
लाला,—शालिका, (स्त्री०) पौशाला । प्रपा ।
वह स्थान जहाँ बिना कुछ लिये प्यासे को जल
पिलाया जाय ।

पान्यः } (पु०) बटोही । यात्री ।

पाप (वि०) १ दुष्ट । २ हानिकारी । अनिष्टकर ।
३ नीच । ४ अशुभ ।—अधम, (वि०)
पापियों में भी नीच या गया बीता ।—अपनुतिः,

(स्त्री०) प्रायश्चित्त । अह, (पु०) दुर्विन
बुरा दिन

पापं (न०) १ दुर्भाग्य । २ पाप । गुनाह । अपराध ।
पापः (पु०) दुष्टात्मा । पापात्मा । पापी आदमी ।
—आचारः, (वि०) बुरी राह चलने वाला ।—
आत्मन्, (वि०) दुष्ट हृदय । पापपरायण । दुष्ट ।
(पु०) पापी । पापकर्म करने वाला ।—
आशयः,—चेतस्, (वि०) बुरे इरादे रखने
वाला । दुष्टहृदय ।—कर,—कारिन्,—कृत,
(वि०) पापपूर्ण । पापी । बदमाश ।—क्षयः,
(पु०) पाप का नाश ।—ग्रहः, (पु०) दुष्ट
ग्रह । (यथा, मंगल, शनि, राहु और (केतु)
इ. (वि०) पापनाशक ।—वर्धः, (पु०)
१ पापी । २ राक्षस ।—दूष्टि, (वि०) बुरी
निगाह वाला ।—धो, (वि०) दुष्ट हृदय ।
दुष्ट ।—नापितः, (पु०) चालाक नाई ।—
नाशनः, (वि०) पापनाशक ।—पतिः, (पु०)
प्रेमी । आशिक ।—पुरुषः, (पु०) दुष्ट मनुष्य ।
फल,— (वि०) दुष्ट । अशुभ ।—बुद्धि,—
भाव,—मति, (वि०) दुष्ट हृदय । दुष्ट ।
धूर्त ।—भाजू, (वि०) पापपूर्ण । पापी ।—
मुक्त, (वि०) पाप से छूटा हुआ । पवित्र ।—
मात्रनं,—विनाशनन्, (न०) पापनाशक ।
पाप छुड़ाने वाला ।—योनि, (वि०) कमीना ।
अकुलीन ।—योनिः, (स्त्री०) अपकृत दशा में
उत्पत्ति ।—रोगः, (पु०) १ बुरा रोग । २
चेचक ।—शील, (वि०) पापकर्मों को करने
की प्रवृत्ति रखने वाला ।—सङ्कुलः, (वि०)
पापी हृदय का । दुष्ट ।—सङ्कुलपः, (पु०)
दुष्ट विचार ।

पापद्विः, (पु०) शिकार । आखेट ।

पापल (वि०) पाप देने वाला । पापकर ।

पापिन् (वि०) [स्त्री०—पापिनी] पापपूर्ण ।
दुष्ट । खराब । (पु०) पापी । पापिष्ठ ।

पापिष्ठ (वि०) बड़ा भारी पापी या दुष्ट ।

पापीयस् (वि०) [स्त्री०—पापीयसी] अपेक्षा
कृत खराब ।

पाप्मन् (पु०) पाप । गुनाह । जुने । दुष्टता । अपराध ।
पाप्मन् (पु०) चर्म रोग विशेष । खाज । —घ्नः,
(पु०) गन्धक ।

पाप्मर (वि०) [स्त्री०—पाप्मरा, पाप्मरी] १
खजुड़ा । २ दुष्ट । खल । ३ कमीना । पाजी । ४
मूर्ख । मूढ़ । ५ निर्धन । गरीब । निस्तहाय ।

पाप्मरः (पु०) १ मूर्ख । बेवकूफ । २ पाजी या
कमीना आदमी । ३ वह मनुष्य जो अत्यन्त नीच
कर्म या धंधा करता हो ।

पाप्मा (स्त्री०) खाज । देखो पाप्मन् ।

पायना (स्त्री०) १ पिलाना । २ सिञ्चन । नम
करना । ३ पैनाना । तेज़ करना ।

पायस (वि०) [स्त्री०—पायसी] दूध या जल
का बना हुआ ।

पायसं (न०) } १ स्त्री । दूध में चाँवल डाल कर
पायसः (पु०) } रँधा हुआ भोज्य पदार्थ
विशेष । २ तारपीन । (न०) दूध ।

पायिकः (पु०) पैदल सिपाही ।

पायुः (पु०) गुदा । मलद्वार ।

पाय्यं (न०) १ जल । २ पेय पदार्थ । ३ संरक्षण ।
४ परिमाण ।

पारः (पु०) १ नदी या समुद्र का सामने वाला
या दूसरा तट ।

पारं (न०) २ किसी वस्तु की आगे की या सामने
की ओर । ३ अपरतट या सीमा । ४ किसी वस्तु
का अधिक से अधिक परिमाण ।—रः, (पु०)
पारा :—अपारं, (न०)—अपारं, (न०)
दोनों तट । दूरतर और समीपतर तट ।—पारः,
(पु०) समुद्र ।—अयणं, (न०) १ पार-
गमन । २ अत्यन्त पढ़ना । भली भाँति किया
हुआ अध्ययन । ३ सम्पूर्ण । सम्पूर्णता । समुच्चा-
पन ।—अयणी, (स्त्री०) १ सरस्वती का
नामान्तर । २ ध्यान । विचार । ३ क्रिया । कर्म ।
४ प्रकाश ।—काम, (वि०) दूसरे छोर पर
जाने का अभिलाषी ।—ग, (वि०) १ पार
जाने वाला । २ अन्त तक पहुँचने वाला । ३
किसी विषय की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेने
वाला । ४ प्रकाण्ड विद्वान् ।—गत, —गमिन्,

(वि०) पल्लेपार गया हुआ ।—दर्शक, (वि०)
पछा पार देखाने वाला । जिसके भीतर से होकर
प्रकाश की किरणों के जा सकने के कारण उस
पार की वस्तुएँ दिखलाई दें ।—दृश्वन्, (वि०)
१ दूरदर्शी । विवेकी । बुद्धिमान । २ पूर्ण रूप
से जान कर ।

पारक (वि०) [स्त्री०—पारकी] १ पार करने
वाला । २ बचाने वाला । मुक्त करने वाला ।
उद्धार करने वाला । प्रसन्न करने वाला । सन्तुष्ट
करने वाला ।

पारक्य (वि०) १ पराया । परकीय । दूसरे का ।
२ विरोधी ।

पारक्यं (न०) पुण्यकार्य जो परलोक सुधारता है ।
परलोकसाधन ।

पारग्रामिक (वि०) [स्त्री०—पारग्रामिकी]
पराया । विदेशी । विरोधी ।

पारज् (पु०) सोना । सुवर्ण ।

पारजायिकः (पु०) लम्पट पुरुष । व्यभिचारी आदमी ।

पारटीटः } (पु०) पत्थर या चट्टान ।

पारटीनः } (पु०) पत्थर या चट्टान ।

पारण (वि०) १ पार करने वाला । २ उद्धार करने
वाला । उबारने वाला ।

पारणं (पु०) १ समाप्ति । खातमा । २ किसी
पुराणादि धर्मग्रन्थ का नियमित रूप से नित्य पाठ ।
३ किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन किया
जाने वाला पहला भोजन और तत्सम्बन्धी कृत्य ।

पारणः (पु०) १ वादल । २ सन्तोष । तृप्ति ।

पारणा (स्त्री०) १ व्रत समाप्ति पर भोजन । २
भोजन करना ।

पारतः (पु०) पारा ।

पारतन्ध्यं (न०) पराधीनता । परतंत्रता ।

पारत्रिक (वि०) [स्त्री०—पारत्रिकी] १ परलोक
का । २ कर्म जिससे परलोक बने । मरने के बाद
उत्तम गतिप्रदाता ।

पारदः (पु०) पारा ।

पारदारिकः (पु०) परस्त्री से मैथुन करने वाला ।
व्यभिचारी ।

पारदार्य (न०) व्यभिचार । लम्पटता ।

पारदेशिक (वि०) [स्त्री०—पारदेशिकी] विदेश
अन्य देश ।
पारदेशिकः (पु०) १ विदेश का रहने वाला ।
२ यात्री ।
पारदेश्य (वि०) [स्त्री०—पारदेश्यी] विदेश
का । विदेशी ।
पारदेश्यः (पु०) १ परदेशी । विदेश का रहने
वाला । २ यात्री ।
पारमृत् (न०) [इसका शुद्ध रूप प्राभृत जान
पड़ता है] भेंट । पुरस्कार ।
पारमहंस्यम् (न०) सर्वोत्कृष्ट संन्यास या ध्यान ।
पारमार्थिक (वि०) [स्त्री०—पारमार्थिकी] १
परमार्थ सम्बन्धी । अध्यात्म ज्ञान सम्बन्धी ।
२ असली । वास्तविक । सत्यस्थित । यथार्थ में
विद्यमान । ३ सत्यप्रिय । न्यायप्रिय । ४ सर्वोत्तम ।
सर्वोत्कृष्ट । सर्वश्रेष्ठ ।
पारमिक (वि०) [स्त्री०—पारमिकी] सर्वोत्कृष्ट ।
श्रेष्ठ । मुख्य । प्रधान ।
पारमित (वि०) १ पल्लेपार गया हुआ । २ आरपार
गया हुआ । चढ़ बढ़ कर ।
पारमेष्ठ्यम् (न०) १ सर्वोच्चता । सर्वोच्चपद । २
राजचिन्ह ।
पारंपरीय } (वि०) [स्त्री०—पारंपरीय]
पारंपरीय } परम्परागत । एक के बाद दूसरा, क्रम
से बराबर चला आता हुआ ।
पारंपरीय } (वि०) परम्परागत ।
पारंपरीय }
पारंपर्य } (न०) परम्परागत । लगातार जारी
पारंपर्य } रहना ।
पारयिष्णु (वि०) १ प्रसन्नकर । २ पार जाने के योग्य
किसी काम को पूरा करने योग्य ।
पारलौकिक (वि०) [स्त्री०—पारलौकिकी] १
परलोक सम्बन्धी । २ परलोक में शुभफल देने
वाला ।
पारवतः (पु०) कबूतर । परेवा ।
पारवश्यम् (न०) पराधीनता । परतंत्रता ।
पारशव (वि०) [स्त्री०—पारशवी] १ लोहे का
बना हुआ । २ कुल्हाड़ी सम्बन्धी ।

पारशवः (पु०) १ लोहा । २ वर्षासङ्कर जगति
विशेष । ब्राह्मण पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न
जाति । ३ हरामी । दोगाला ।
पारश्वथः } (पु०) परसाधारी ।
पारश्वधिकः }
पारस (वि०) [स्त्री०—पारसी] १ पारस देश
वासी । परशियन ।
पारसिकः (पु०) } १ फारसदेश । २ फारसदेश
पारसीकः (पु०) } का घोड़ा ।
पारसी (स्त्री०) फारसी भाषा ।
पारसीकाः (पु० बहु०) फारसदेशवासी ।
पारस्त्रैख्यः (पु०) हरामी । दोगाला ।
पारहंस्य (वि०) जितेन्द्रिय संन्यासी सम्बन्धी ।
पारा (स्त्री०) एक नदी का नाम ।
पारापतः (पु०) कबूतर । परेवा ।
पारायणिकः (पु०) १ व्याख्यानदाता । पुराण-
पाठक । २ शिष्य । छात्र ।
पारावतः (पु०) १ कबूतर । २ बंदर । ३ पर्वत ।
—अग्निः—विच्छः, (पु०) कबूतर विशेष ।
पारायकः (पु०) पत्थर । चट्टान ।
पारावारीण (वि०) दोनों तरफ पर आने जाने वाला ।
२ पूर्ण रूप से परिचित ।
पाराशरः } (पु०) पराशरपुत्र व्यास जी का
पाराशर्यः } नामान्तर ।
पाराशरिः (पु०) १ शुकदेव जी का नामान्तर । २
व्यास जी का नाम ।
पाराशरिन् (पु०) संन्यासी विशेष कर वे जो व्यास
रचित शारीर सूत्र पढ़ें ।
पारिकांतिन् (पु०) ध्यानमग्न रहने वाला संन्यासी ।
पारिजितः (पु०) जन्मेजय का नाम ।
पारिख्य (वि०) [स्त्री०—पारिख्यी] परखा या
खाई से चिरा हुआ ।
पारिजातः } (पु०) स्वर्गास्थित पाँच वृक्षों में से
पारिजातकः } एक । यह समुद्रमन्थन के समय निकला
था और इन्द्र को मिला था । श्रीकृष्ण ने इन्द्र से
छीन कर इसे सत्यभामा के बाग में लगाया था ।
२ मृगे का पेड़ । ३ सुगन्धि ।
पारिणाय्य (वि०) [स्त्री०—पारिणाय्यी] विवाह
सम्बन्धी । विवाह में प्राप्त ।

- पारिणाय्यम् (न०) विवाह के समय मिली हुई स्त्री की सम्पत्ति । २ विवाह-चिराय ।
- पारिणाह्य (न०) धरलू सामान और बरतन ।
- पारितथ्या (स्त्री०) सिर में गूँथने को मोतियों की लड़ी ।
- पारितोषिक (वि०) [स्त्री०—पारितोषिकी] सन्तुष्टकारी । प्रसन्नकारक ।
- पारितोषिकं (न०) पुरस्कार । इनाम । [वाला ।
- पारिध्वजिकः (पु०) झंडावरदार । झंडा ले चलने
- पारिन्द्रः } (पु०) सिंह ।
- पारिन्द्रः } (पु०) सिंह ।
- पारिपथिकः } (पु०) बाँकू । लुटेरा ।
- पारिपथिकः } (पु०) बाँकू । लुटेरा ।
- पारिपाठ्यं (न०) १ ढंग । रीति । प्रकार । परिपाटी । २ नियमितता ।
- पारिपार्श्वम् (वि०) अनुचर वर्ग । अनुयायी ।
- पारिपार्श्वकः } (पु०) १ नोकर । अर्दली । २
- पारिपार्श्वकः } (नाटक में) स्थापक का अनुचर ।
- पारिपार्श्विका (स्त्री०) सदा साथ रहने वाली दासी या चाकरानी ।
- पारिप्लव (वि०) १ इधर उधर घूमने वाला । चंचल । अस्थिर । २ तैरने वाला । उतराने वाला । ३ उद्दिप्त । धक्काया हुआ ।
- पारिप्लवं (न०) चञ्चलता । अस्थिरता । विकलता ।
- पारिप्लवः (पु०) नौका । नाव ।
- पारिप्लव्यं (न०) १ परेशानी । विकलता । २ उद्दिप्तता । ३ कम्प । प्रकम्प ।
- पारिप्लव्यः (पु०) हंस ।
- पारिबर्हः (पु०) विवाह के समय की भेंट ।
- पारिभद्रः (पु०) १ मूँगे का पेड़ । २ देवदारुवृक्ष । ३ सरल वृक्ष । ४ नीम का पेड़ ।
- पारिभाव्यं (न०) ज्ञानान्त । जामिनी ।
- पारिभाषिक (वि०) [स्त्री०—पारिभाषिकी] १ जिसका अर्थ परिभाषा द्वारा सूचित किया जाय । जिसका व्यवहार किसी विशेष अर्थ के सङ्केत के रूप में किया जाय । २ प्रचलित । मामूली ।
- पारिभाषडव्यम् (न०) अणु या परमाणु का परिभाषा ।
- पारिमुखिक (वि०) [स्त्री०—पारिमुखिकी] मुँह के सामने का । समोपवर्ती । पास का ।
- पारिमुख्यं (न०) उपस्थिति । मौजूदगी ।
- पारियात्रः } (पु०) सप्त कुल पर्वतों में से एक जो
- पारियात्रः } दिग्ध्य के अन्तर्गत है ।
- पारियात्रिकः } (पु०) १ पारियात्र पर्वत पर रहने
- पारियात्रिकः } वाला । २ पारियात्र पर्वत ।
- पारियानिकः (पु०) गाड़ी । बगधी ।
- पारिरत्तिकः (पु०) तपस्वी । साधु ।
- पारिवित्त्यं } (न०) अविवाहित । वह अविवाहित
- पारिवित्त्यम् } ज्येष्ठ भ्राता, जिसका छोटा भाई विवाहित हो ।
- पारित्राजकम् } (न०) १ परित्राजक का कर्म ।
- पारित्राज्यम् } भ्रमण । २ संन्यास ।
- पारिशीतः (पु०) एक प्रकार का पुत्रा या माल-पुत्रा ।
- पारित्रय्यं (न०) वचन । वचा हुआ ।
- परिषद् (वि०) [स्त्री०—परिषद्दी] परिषद सम्बन्धी ।
- परिषद् (पु०) १ परिषद में उपस्थित पुरुष । परिषद् का सदस्य । पंच । २ राजा का पासवान ।
- परिषदाः (पु० बहु०) देवता के अनुयायि वर्ग ।
- परिषद्यः (पु०) दर्शक । परिषद में उपस्थित जन ।
- परिहारिकी (स्त्री०) एक प्रकार की पहेली ।
- परिहार्यः (पु०) कड़ा । कंगन । बल्य ।
- परिहार्यम् (न०) परिहारत्व । ग्रहण । पकड़ ।
- परिहार्यं (न०) मज़ाक । दिल्लगी । हंसी ठट्ठा ।
- पारी (स्त्री०) १ हाथी के पैर का रस्सा । २ जल परिमाण । ३ पानपात्र । पानी का घड़ा । प्याला । ४ दुधैड़ी ।
- पारीण (वि०) १ विरुद्ध पक्ष वाला । पूर्ण परिचित ।
- पारीणह्यं (न०) गृहस्थी का सामान या बरतन ।
- पारीन्द्रः } (पु०) १ सिंह । २ अजगर सपें ।
- पारीन्द्रः } (पु०) १ सिंह । २ अजगर सपें ।
- पारीरगाः (पु०) १ कड़वा । २ झड़ी । झंडा ।
- पारुः (पु०) १ सूर्य । २ अग्नि ।
- पारुष्यं (न०) १ कठोरता । रुखापन । २ कड़वापन । नृशंसता । अदयालुता । ३ गाली । कुवाच्य ।

अपमान । ४ उग्रत (वचन या वस में) ।

५ इन्द्र का उद्यान ६ अग्र ।

पार्श्व (पु०) बृहस्पति का नामान्तर ।

परोवर्यम् (न०) परवरा ।

पार्श्वम् (न०) भूल या रात्र ।

पार्श्व (वि०) जलवृष्टि सम्बन्धी ।

पार्श्व (वि०) [स्त्री०—पार्श्वी] १ पत्ता सम्बन्धी ।

पत्तों का बला हुआ । पत्तोंदार । २ पत्तों पर बैठाया हुआ । (जैसे कर)

पार्थ (पु०) १ कुन्ती का दूसरा नाम पृथा था । अतएव युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को पार्थ कहते थे, किन्तु विशेषतया अर्जुन को पार्थ संज्ञा थी । २ राजा । पृथ्वीपति ।—सारथिः, (पु०) श्रीकृष्ण ।

पार्थिव्यं (ल०) पृथक् होने का भाव । भेद । अलह-दगी ।

पार्थिव (न०) बड़ाई । वड़प्पन । बाहुल्य । चौड़ाई ।

पार्थिव (वि०) [स्त्री०—पार्थिवी] १ मिट्टी का । पृथिवी का । पृथिवी सम्बन्धी । २ पृथिवी पर शासन करने वाला । ३ राजसी । शाही ।—नन्दनः,—सुतः, (पु०) राजकुमार ।—कन्या, —नन्दिनी,—सुता, (स्त्री०) राजकुमारी ।

पार्थिवः (पु०) १ पृथिवी पर रहने वाला । २ शाह-शाह । राजा । ३ मिट्टी का बरतन ।

पार्थिवी (स्त्री०) १ सीता का नामान्तर । २ लक्ष्मी जी का नामान्तर ।

पार्थः (पु०) १ सुट्टी भर चाँवल । २ हयरोग ।

पार्थलिक (न०) [स्त्री०—पार्थलिकी] १ पर्व पार्थलिक सम्बन्धी या पर्व का । २ बुद्धिमान् । बढ़ने वाला (जैसे चन्द्रमा) ।

पार्श्वणम् (न०) पितृश्राद्ध जो किसी पर्व में किया जाय । इस श्राद्ध में पिता पितामहादि समस्त मातृ-कुल और पितृकुल के पितरों को पिण्डदान दिया जाता है ।

पार्श्व (वि०) [स्त्री०—पार्श्वी] पहाड़ पर रहने वाला । पर्वत पर उत्पन्न या पर्वत से आया हुआ । ३ पहाड़ी ।

प चनिक (न०) पहाड़ का समूह या सिलसिला ।

पार्वती (स्त्री०) १ दुर्गादेवी । २ म्वालिन । ३ द्रौपदी । ४ पहाड़ी नदी । ५ सुगन्धयुक्त मृत्तिका विशेष ।—नन्दनः, (पु०) १ गणेश । २ कार्तिकेय ।

पार्वतीय (वि०) [स्त्री—पार्वतीयी] पर्वत पर रहने वाला ।

पार्वतीयः (पु०) १ पर्वतवासी । पहाड़ी आदमी । २ एक विशेष पहाड़ी जाति का नाम ।

पार्वत्यै (वि०) [स्त्री०—पार्वत्यै] पर्वत पर उत्पन्न ।

पार्वत्यै (पु०) सुमी । अञ्जन ।

पार्श्वः (पु०) परशुधारी योद्धा ।

पार्श्व (न०) १ शरीर का बगलों के बीच का पार्श्वः (पु०) भाग, जहाँ पसलियाँ हैं । कक्ष ।

अधोभाग । २ बगल । ओर । तरफ । पास ।

निकटता । सामीप्य । (पु०) पारसनाथ का नामान्तर । (न०) १ पसलियों का समूह । २

बेईमान का काम । कुदिल उपाय । देखी चाल ।

अनुचरः, (पु०) अर्दली । पासवान नौकर ।—

अस्थि, (न०) पसली—आयात, (वि०)

अतिनिकटवर्ती ।—आपन्न, (वि०) बगल में

खड़ा हुआ ।—उदरप्रियः, (पु०) मकड़ा ।—गः,

(पु०) अर्दली ।—गत, (वि०) पासवान ।

शरणागत ।—चरः, (पु०) नौका ।—दः,

(पु०) अर्दली । नौकर ।—देशः, (पु०) बगल ।

कुलि ।—परिवर्तनम्, (न०) १ (खाट पर पड़े पड़े)

करवट बदलना । २ भाद्रशुक्ल ११ जिसका नाम

पार्श्वैकादशी है । इस दिन भगवान विष्णु करवट

बदलते हैं ।—भागः, (पु०) बगल ।—वर्तिनः,

(वि०) १ बगल का रहने वाला । अर्दली । २

लग्ना हुआ । मिला हुआ । समीपी ।—शयः,

(वि०) १ करवट सोने वाला । २ बगल में सोने

वाला ।—शूलः,—शूलं, (न०) पसली का

वर्द ।—सूत्रकः, (पु०) आभूषण विशेष ।—

स्थ, (पु०) समीपवर्ती । निकटस्थ ।—स्थः,

(पु०) साथी । सहचर । पास खड़ा रहने वाला ।

अभिनेय के नटों में से एक ।

पाश्चकः (पु०) [स्त्री०—पाश्चिकी] कुटिल उपायों से धन कमाने वाला । चोर ।

पाश्चतस्र (अन्वय) समीप । पास । बगल में ।

पार्विक (वि०) [स्त्री०—पार्विकी] बगल सम्बन्धी ।

पार्विकः (पु०) १ पञ्चाती जन । तरफदार आदमी । २ सहचर । साथी । ३ ऐन्द्रजातिक । जादूगर ।

पार्वत (वि०) [स्त्री०—पार्वती] चित्तरा हिरन सम्बन्धी ।

पार्वतः (पु०) १ राजा द्रुपद और उसके राजकुमार । २ धृष्टद्युम्न का नामान्तर ।

पार्वती (स्त्री०) १ द्रौपदी । २ दुर्गादेवी ।

पार्षद (स्त्री०) सभा । समाज ।

पार्षदः (पु०) १ साथी । संगी । अर्द्धली २ अनुचर वर्ग । ३ सभा में उपस्थित जन । दर्शक । पंच ।

पार्षथः (पु०) सभा का सदस्य । पंच ।

पार्ष्णिः (पु० स्त्री०) १ पेड़ी । २ सेना का पिछला भाग । पीठ । पीछे । ४ लात । ठोकर । (स्त्री०) छिनाल स्त्री । २ कुन्ती का नामान्तर ।—ग्रहः, (पु०) अनुयायी ।—ग्रहणम्, (न०) आक्रमण । पिछाड़ी की ओर पड़े शत्रु को धमकाना ।—ग्राहः, (पु०) १ पीछे पड़ा हुआ शत्रु । २ सेनापति जो पीछे रहने वाली सेना का नायक हो । ३ मित्रराजा जो अपने मित्रराजा को सहायता दे ।—घातः, (पु०) लात । ठोकर ।—जं, (न०) पीछे रहने वाली सेना ।—वाहः, (पु०) बाहिरी घोड़ा । दूसरे का घोड़ा ।

पालः, (पु०) १ रक्षक । रखवाला । २ ग्वाल । अहीर । गबरिया । ३ राजा । ४ पीकदानी ।—मः, (पु०) छुकरमुत्ता । कठकूल । छत्रक ।

पालकः (पु०) १ रक्षक । २ राजा । शासक । ३ साईस । भटियारा । ४ घोड़ा । ५ चित्रक वृक्ष । ६ पोष्य पिता ।

पालकाप्यः (पु०) ऋषि विशेष का नाम । करेण ऋषि; इन्होंने सब से प्रथम हाथियों के सम्बन्ध का विज्ञान लोगों को सिखलाया था ।

पालकाप्यं (न०) हाथियों के सम्बन्ध का विज्ञान ।

पालकः, (पु०) १ पालक का शाक । ३ बाज-पालकः) पक्षी ।

पालकी } (स्त्री०) कुंदरु नामक गन्ध द्रव्य विशेष ।

पालकी } (स्त्री०) कुंदरु नामक गन्ध द्रव्य विशेष ।

पालन (वि०) जीववरक्षाकारो ।

पालनम् (न०) १ भरण पोषण । रक्षण । परवरण । २ भंग न करना । न डालना । ३ हाल की व्याप्री मौ का दूध ।

पालयितु (पु०) रक्षक । रक्षा करने वाला ।

पालाश (वि०) [स्त्री०—पालाशी] १ पलाश वृक्ष का । उससे उत्पन्न । २ पलाश की लकड़ी का बना हुआ । ३ सक्ज । हरा ।—खरडः,—परडः, (पु०) मगध देश ।

पालाशः (पु०) हरा रंग ।

पालिः } (स्त्री०) १ कान का अग्रभाग । २ नोक । पाली } किनारा । कोर । सीमा । हाशिया । ३ किसी अस्त्र की बाढ़ या धार । ४ सीमा । हद्द । ५ पंक्ति । अवली । ६ शब्दा । दाग । ७ पुल । ८ अङ्क । गोदी । क्रोड़ । ९ तालाव जो लंबा अधिक और चौड़ा कम हो । १० छात्रावस्था में गुरु द्वारा छात्र का भरण पोषण । ११ जूँ । चीलर । १२ प्रशंसा । वड़ाई । १३ दृढियल औरत ।

पालिका (स्त्री०) १ कान का अग्रभाग । २ तलवार की तेज बाढ़ । ३ छुरी विशेष ।

पालित (व० कृ०) १ रक्षित । २ पाला हुआ । (जो कहा सो) किया हुआ ।

पालित्यं (न०) वृद्धावस्था के करण वालों की सफेदी ।

पाल्वल (वि०) [स्त्री०—पाल्वली] तलैया सम्बन्धी । तलैया में ।

पावकः (पु०) १ अग्नि । आग । २ अग्नि देव । ३ तेज । ताप । ४ चित्रक वृक्ष । ५ तीन की संख्या ।—आत्मजः, (पु०) १ कार्तिकेय । २ सुदर्शन ऋषि ।

पावकिः (पु०) कार्तिकेय ।

पावन (वि०) [स्त्री०—पावनी] १ पाप से छुड़ाने

वाला । २ पवित्र विद्युद्ध एगनि (पु०)

शङ्खनाद ।

पावनं (न०) १ पवित्र करने की क्रिया । पवित्रता ।

२ तप । जल । ४ गोबर । ५ माथे का तिलक ।

पावनः (पु०) १ अग्नि । २ धूप । ३ सिद्ध । ३

व्यास देव ।

पावनी (स्त्री०) १ तुलसी । २ गौ । ३ गङ्गा नदी ।

पावमानी (स्त्री०) वेद की एक ऋचा का नाम ।

पावरः (पु०) १ पाँसे का वह पहलू जिस पर दूरी की संख्या अंकित हो । पाँसे का विशेष रूप से फैकना ।

पाशः (पु०) १ रस्सा । जंजीर । बेड़ी । फंदा । २ जाल (पकड़ने का) । ३ पाश । वरुण का अस्त्र विशेष ।

४ पाँसा । ५ किसी बुनी हुई वस्त्र की बाढ़ या उस का किनारा ।—अन्तः, (पु०) कपड़े की उल्टी ओर ।—क्रीडा, (स्त्री०) जुआ । घूत कर्म ।—

धरः,—पाणिः, (पु०) वरुण देव का नामान्तर ।

—बन्धः, (पु०) फंदा । जाल ।—बन्धकः,

(पु०) बिड़ीमार । बहेलिया ।—भूतः, (पु०)

वरुण का नामान्तर ।—रज्जुः, (स्त्री०) बड़ी रस्सी ।—हस्तः, (पु०) वरुण का नामान्तर ।

पाशकः (पु०) पाँसा ।—पीठः, (न०) पीढ़ा जिस पर जुआ खेला जाता है ।

पाशनम् (न०) १ फंदा । जाल । २ रस्सा । ३ जाल में फँसना । जाल से पकड़ना ।

पाशव (वि०) [स्त्री०—पाशवी] पशु से सम्बन्ध युक्त या पशु से उत्पन्न ।

पाशवं (न०) झुंड । गल्ला । गिरोह ।—पाजनं, (न०) चरागाह या वहाँ की घास ।

पाशित (वि०) बंधा हुआ । फंदे में फँसा हुआ । बेड़ी पड़ा हुआ ।

पाशिन (पु०) १ वरुण । २ यम । ३ बहेलिया । बिड़ीमार ।

पाशुपत (वि०) [स्त्री०—पाशुपती] पशुपति सम्बन्धी । शिवसम्बन्धी ।—अस्त्रं, (न०) शिव जी का एक अस्त्र विशेष ।

पाशुपतं (न०) पाशुपत सिद्धान्त ।

पाशुपतः (पु०) १ शैव । २ पशुपति के सिद्धान्तों को मानने वाला ।

पाशुपाल्य (न०) म्वाले या गबरिये का घघा ।

पाश्चात्य (वि०) १ पीछे का । पिछला । २ पीछे होने वाला । ३ बाद का ।

पाश्चात्यं (न०) पीछे का भाग ।

पाश्या (स्त्री०) १ जाल । २ रस्सों का । संग्रह ।

पाशकः (पु०) पैर का आभूषण विशेष ।

पाषंडकः, पाषण्डकः (पु०) } वेदविरुद्ध आचरण
पाषंडिन्, पाषण्डिन् (पु०) } करने वाला ।
नास्तिक ।

पाषाणः (पु०) पत्थर ।—दारकः, (पु०) —

दारणः, (पु०) संगतराश की छैनी ।—सन्धि, (पु०) चट्टान में बनी गुफा ।—हृदय, (वि०)

चूरांस हृदय ।

पाषाणी (स्त्री०) छोटा पत्थर जो बटखरे की तरह काम में लाया जाय ।

पि (धा० परमै०) [पिर्यति] जाना ।

पिकः (पु०) कोयल पक्षी ।—आनन्दः, (पु०) —

वान्धवः, (पु०) वसन्तऋतु ।—बन्धुः,—रागाः,

—चलुमः, (पु०) आम का पेड़ ।

पिकाः (पु०) १ बीस वर्ष का हाथी । २ अवात हाथी ।

पिंग (वि०) पीला । पीलापन लिये हुए । भूरा ।

पिङ्ग (वि०) भूरे रंग की आँखों वाला ।—अक्षः (पु०) १ लंगूर । २ शिव जी का नामान्तर ।—ईक्षणः, (पु०) शिव ।—ईशः

(पु०) अग्निदेव ।—कपिशा, (स्त्री०)

तेलचट्टा ।—चलुस्, (पु०) कैकड़ा । मकरा ।

—जटः, (पु०) शिव ।—सारः, (पु०)

हरताल ।—स्फटिकः, (पु०) गोमेद रत्न ।

पिंगः } (पु०) १ पीला या पीलापन लिये हुए

पिङ्गः } भूरा रंग । २ भैंसा । ३ चूहा ।

पिंगल } (वि०) भूरापन लिये लाल । तामड़ा ।

पिङ्गल } —अक्षः, (पु०) शिव ।

पिंगलं } (न०) १ पीतल । २ हरताल ।

पिङ्गलम् } (पु०) १ भूरा रंग । २ आग । ३ बंदर ।

पिङ्गलः } ४ न्योला । ५ छोटा उल्लू । ६ सपे विशेष ।

७ सूर्य का एक गण । ८ कुवेर की नवनिधियों में

से एक । ९ छन्दशास्त्रकार संस्कृत के एक

विद्वान् का नाम ।

पिंगला } (स्त्री०) १ उल्लू विशेष । २ शिंशपा
पिङ्गला } वृक्ष । ३ धातु विशेष । ४ शरीरस्थ
नाडी विशेष । ५ एक पुराणप्रख्यात वेश्या का
नाम ।

पिंगलिका } (स्त्री०) १ सारस पक्षी । २ उल्लू
पिङ्गलिका } पक्षी ।

पिंगा } (स्त्री०) १ हल्दी । २ केसर । ३ हरताल ।
पिङ्गा } ४ चण्डिका देवी ।

पिंगाशं } (न०) चोखा सोना ।
पिङ्गाशम् }

पिंगाशः } (पु०) गाँव का मुखिया या जमींदार ।
पिङ्गाशः } २ मङ्गली विशेष ।

पिंगारी } (स्त्री०) नील का पौधा ।
पिङ्गारी }

पिचंडः, पिचण्डः (पु०) }
पिचंडं, पिचण्डम् (न०) } पेट । उदर ।
पिचिंडः, पिचिण्डः (पु०) }
पिचिंडम्, पिचिण्डम् (न०) }

पिचंडकः } (पु०) औदरिक । पेटू । मरमुखा ।
पिचण्डकः }

पिचिंडकः } (पु०) टाँग की पिडुरी ।
पिचिण्डकः }

पिचिंडिल } (वि०) बड़े पेट का । बड़ी तोंद
पिचिण्डिल } वाला ।

पिचुः (पु०) १ रुई । २ दो तोले के बराबर की तौल
जिसे कर्प कहते हैं । ३ कोढ़ रोग विशेष । —तलं,
(न०) रुई । —मन्दः, —मर्दः, (पु०) नीम का
पेड़ ।

पिचुलः (पु०) १ रुई । २ विभिन्न प्रकार के पक्षियों
का साधारण नाम ।

पिचट (वि०) बंदमुट्टी ।

पिचटः (पु०) आँख की सूजन ।

पिचटम् (न०) १ जस्ता । सीसा ।

पेक्षा (स्त्री०) १ मोती की लव, जिसका ज्ञास
वजन होता है ।

पिच्छं (न०) १ मयूर का पूंछ का पर । २ मयूर की
पूँछ । ३ बाण में लगे पर । ४ डैना । बाजू । ५
कलेंगी । चोटी ।

पिच्छः (पु०) पूँछ ।

पेच्छाः (स्त्री०) १ ग्यान । गिलाफ । खोल । २
चाँवल का माँड़ । ३ पंक्ति । अवली । ४ ढेर ।

समूह । २ मोचरस । ६ केला । ७ कवच । ८
टाँग की पिडुरी । ९ सौंप का विष । १० सुपाडी ।

—दाणाः (पु०) बाज पक्षी ।

पिच्छल (वि०) चिकना । रपटन वाला ।

पिच्छिका (स्त्री०) मयूर पक्षों का मोरछल ।

पिच्छिल (वि०) १ चिकना । रपटन वाला । २ पूंछ
वाला ।

पिच्छिलः (पु०) [स्त्री०—पिच्छिला] —
पिच्छिलं, (न०) १ भात का माँड़ । २ एक
प्रकार की चटनी । ३ दही जिसके ऊपर ढाली हो ।
—त्वच् (पु०) नारंगी का पेड़ ।

पिञ्ज } (धा० आत्म०) [पिंके] १ रंगना । २ स्पर्श
पिञ्ज् } करना । ३ सजाना । (उभय०) [पिञ्जयति,
पिञ्जयते] १ देना । २ लेना । ३ चमकना । ४
शक्तिवान् होता । ५ रहना । बसना । ६ वध
करना । चोटिल करना ।

पिञ्जं } (न०) ताकत । शक्ति ।
पिञ्जम् }

पिञ्जः } (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर । ३ वध ।
पिञ्जः } हत्या । ४ ढेर ।

पिञ्जा } (स्त्री०) १ चोट । अनिष्ट । २ हल्दी । ३
पिञ्जा } रुई ।

पिञ्जटः } (पु०) आँख का कीचड़ ।
पिञ्जटः }

पिञ्जनम् } (न०) धुना की धनुही जिससे रुई धुनकी
पिञ्जनम् } जाती है ।

पिञ्जर } (वि०) सुनहला । भूरा ।
पिञ्जर }

पिञ्जरं } (न०) १ सोना । २ हरताल । ३ अस्थि-
पिञ्जरम् } पंजर । ४ पिंजड़ा ।

पिञ्जरः } (पु०) १ सुनहला या भूरा रंग । २ पीला
पिञ्जरः } रंग ।

पिञ्जरकं } (न०) हरताल ।
पिञ्जरकम् }

पिञ्जरित } (वि०) पीले रंग का । भूरे रंग का ।
पिञ्जरित }

पिञ्जल (वि०) १ बहुत बबड़ाया हुआ या परेशान ।
२ भयभीत ।

पिञ्जलं } (न०) १ हरताल । २ कुश की पत्ती ।
पिञ्जलम् }

पिजाल)

पिञ्जाल) (न०) सुवर्ण ।

पिजिका) (स्त्री०) बुनी रुई की पोखी बत्ती,
पिञ्जिका) जिससे काटने पर बढ़ बढ़ कर सूत
निकलते हैं ।

पिञ्जपः

पिञ्जपः } (स्त्री०) कान का मैल या टेढ़ ।

पिञ्जेटः

पिञ्जेटः } (पु०) कौंचड़ या आँख का मैल ।

पिञ्जोला

पिञ्जोला } (स्त्री०) पत्तों की खरभर ।

पिटं (न०)

पिटं (न०) १ घर । भीदा । २ कुत्त ।

पिटः (पु०)

पिटः (पु०) बक्स । पेटी । टोकरी ।

पिटकं (न०)

पिटकं (न०) १ पेटी । टोकरी । २ अन्न की

पिटकः (पु०)

पिटकः (पु०) भण्डारी । ३ मुहाँसा । फुंसी । ४

इन्द्र के भंडे पर का भूषण विशेष ।

पिटक्या (स्त्री)

पिटक्या (स्त्री) पेड़ियों का ढेर ।

पिटाकः (पु०)

पिटाकः (पु०) टोकरी । पेटी ।

पिट्टकं (न०)

पिट्टकं (न०) दाँत का मैल ।

पिठरं (न०)

पिठरं (न०) १ बरतन । कढ़ाई । बटलोई ।

पिठरः (पु०)

पिठरः (पु०) (न०) मथानी । रई ।

पिठरकं (न०)

पिठरकं (न०) बरतन । कढ़ाई । —कपालः,

पिठरकः (पु०)

पिठरकः (पु०) (पु०) —कपालं, (न०)

खप्पर कमण्डलु ।

पिडकः (पु०)

पिडकः (पु०) छोटा फोड़ा । फुड़िया । मुहाँसा ।

पिडका (स्त्री०)

पिडका (स्त्री०) फुंसी ।

पिण्ड } (धा० आत्म०) (उभय०) [पिण्डते,

पिण्डे } पिण्डयति—पिण्डयते, पिण्डित] समेट

कर गोला बनाना । २ जोड़ना । मिलाना । ३ ढेर

लगाना । इकट्ठा करना ।

पिण्ड } (वि०) [स्त्री० —पिण्डी] १ बेस । २

पिण्ड } घना । सघन ।

पिण्डं, पिण्डम् (न०)

पिण्डं, पिण्डम् (न०) १ गोला । २ डेला । ३

पिण्डः (पु०)

पिण्डः (पु०) कौर । कंवर । ४ खीर का

पिण्ड जो पितरों के लिये होता है । ५ भोजन ।

६ जीविका । ७ खैरात । धर्मादा । ८ योशत । माँस ।

९ शरीर । काया । १० ढेर । संग्रह । समूह । ११

टाँगों की पिड्डली । १२ हाथी का माथा । १३

दरवाजे के सामने का छप्पर । १४ धूप या

सुगन्धित द्रव्य विशेष । १५ (अंकगणित में)

जोड़ । मीजान । जमा । १७ (रेखागणित में) मुदाई ।

पिण्डं } (न०) १ ताकत । बल । शक्ति । २
पिण्डम् } लोहा । २ ताँजा मकखन । ४ सेना । —

अन्वाहार्यः, (वि०) पितरों को पिण्डदान दे चुकने

के बाद खाने योग्य । —अन्वाहार्यकम्, (न०)

पितरों के उद्देश्य से दिया हुआ भोजन । —अभ्रं,

(न०) ओला । —अयसं, (न०) फौलाद ।

अलककः, (पु०) लालरंग । —अशनः—आशः,

—आशकः, —आशिन्, (पु०) भिखक । भिखारी ।

—उदकक्रिया, (स्त्री०) पितरों को पिण्डदान तथा

जलदान । श्राद्ध और तर्पण । —उद्धरणम्, (न०)

श्राद्ध सम्बन्धी कृत्य में भाग लेना । —गोसः,

(पु०) गोंद । बोलान । —तैलं, (न०) —तैलकः,

(पु०) शिलारस । —दः, (न०) १ भोजन

देने वाला । पितरों को पिण्डदान देने का

अधिकारी । —दः, (पु०) १ पुरुष नातेदारों में

पिण्ड देने का अधिकारी । २ माजिक । संरक्षक ।

—दानं, (न०) पिण्डदान । पितरों को पिण्ड देना ।

—निर्वपणम्, (न०) पितरों को पिण्डदान देना ।

—पातः (पु०) खैरात बाटने वाला । धर्मादा बाँटने

वाला । —पातिकः, (पु०) खैरात पर या धर्मादे

पर गुजर बसर या निर्वाह करने वाला । —पादः,

—पाद्यः, (पु०) हाथी । —पुष्पं, (न०) १

अशोक वृक्ष । १ गुलाब विशेष । ३ अनार ।

—पुष्पः (पु०) १ अशोक या गुलाब का फूल ।

२ कमल । —भाजः, (वि०) पिण्डों में भाग

पाने का अधिकारी । (पु० बहुवचन में)

पितरगण । —भूतिः, (स्त्री०) निर्वाह । गुजर बसर

आजीविका का उपाय । —मूलं, —मूलकं (न०)

गाजर । शलजम । —यज्ञः, (पु०) श्राद्ध कर्म । —

लोपः, (पु०) हाथ में लगी हुई पिण्ड की खीर । —

लोपः (पु०) श्राद्ध कर्म का लोप । —संवन्धः,

(पु०) सृत पुरुषों में और जीवितों में वह सम्बन्ध

जिससे जीवित लोग मृतों को पिण्ड दे सकें ।

पिण्डकं, पिण्डकं (न०) १ गोला । २ गुमड़ा ।

पिण्डकः, पिण्डकः (पु०) १ गुमड़ी । ३ भोज्य

पदार्थ का गोलाकार कौर । ४ टाँग की पिण्डरी ।

५ लोवान, गुगल । ६ गाजर । (पु०) पिशाच ।
राक्षस ।
पिंडन } (पु०) पिण्ड बनाना ।
पिण्डन }
पिंडलः } (पु०) १ पुल । २ टीला ।
पिण्डलः }
पिंडसः } (पु०) भिडुक । फकीर ।
पिण्डसः }
पिंडानः } (पु०) लोवान । गुगल ।
पिण्डानः }
पिंडारः } (पु०) १ साहु । भिलारी । २ गाय
पिण्डारः } चराने वाला । ग्वाला । ३ भसे चराने
वाला । विककत वृक्ष । ४ एक प्रकार की धिक्का-
रात्मक सूचना ।
पिंडिः, पिण्डिः } (स्त्री०) १ गोला । गैद । २
पिंडी, पिण्डी } लुगरी । ३ पहिये के बीच का
भाग । चक्रनाभि । ३ टाँग की पिंडुरी । ४ अशोक
वृक्ष । ५ ताड़ विशेष ।—पुष्पः, (पु०) अशोक
वृक्ष ।—शूरः, (पु०) १ घर में बैठे ही बैठे
बहादुरी दिखाने वाला । २ पेड़ ।
पिंडिका } (स्त्री०) १ माँस की गोलाकार सृजन ।
पिण्डिका } २ पिंडली ।
पिंडित } (वि०) १ पिंडी बनाया हुआ । २
पिण्डित } सवन । वन । ३ ढेर किया हुआ । संग्र-
हीत । ४ मिश्रित । ५ जुड़ा हुआ । गुंथा किया
हुआ । ६ गिना हुआ । शुमार किया हुआ ।
पिंडिन् } (वि०) आद के पिण्डों को पाने वाला ।
पिण्डिन् } (पु०) १ भिडुक । २ पितरों को पिण्ड
देने वाला ।
पिंडिलः } (पु०) १ पुल । टीला । २ ज्योतिषी ।
पिण्डिलः } गणक ।
पिंडीर } (वि०) रसहीन । फीका । सूखा ।
पिण्डीर }
पिंडीरः } (पु०) १ अनार का वृक्ष । २ समुद्र-
पिण्डीरः } केन । ३ समुद्र का फैन ।
पिंडोलिः } (स्त्री०) जूठन ।
पिण्डोलिः }
पिण्ड्याकं } १ तिल या सरसों की खली । २ शिला-
पिण्ड्याकः } जीत । ३ सिहलक । शिलारस । ४
केसर । जाफ्रान् । ५ हॉग ।

पितामहः (पु०) [स्त्री०—पितामहि] १ बाबा !
बाप का बाप । २ ब्रह्मा जी का नामान्तर ।
पितृ (पु०) पिता ।
पितरौ (द्विवचन) पिता माना । दाददैन ।
पितरः (पु० बहुवचन) १ पूर्वपुरुष । पुरखा । पिता ।
२ पितृकुल के पितर । ३ पितृगण ।—अजित,
(वि०) पिता द्वारा पैदा किया हुआ । पैतृक
(सम्पत्ति) ।—कर्मन्, (पु०)—कार्य, (न०)
—कृत्यं, (न०)—क्रिया, (स्त्री०) आद
कर्म ।—काननम्, (न०) कदवाह । श्मशान
घाट ।—कुट्या, (स्त्री०) मलय से निकलने
वाली एक नदी ।—गणाः, (पु०) पितृगण ।
—गृहं, (न०) १ पिता का घर । मायका । २
श्मशान । कदवाह । कदस्तान ।—घातकः,—
घातिन्, (पु०) पितृहत्यारा । पिता को मारने
वाला ।—नर्यां, (न०) १ पितरों को जलदान ।
२ तिल ।—तिथिः, (स्त्री०) अमावास्या ।—
तीर्थ, (न०) १ गया तीर्थ । २ अँगूठे और
तर्जनी के बीच का हथेली का स्थान ।—दानं,
(न०) पितरों का आद या आद सम्बन्धी
दान ।—दायः, (पु०) बपौती । पिता से प्राप्त
सम्पत्ति या धन ।—दिनं, (न०) अमावास्या ।
—देव, (वि०) पितरों के अधिष्ठाता देवता ।
अग्नेष्वातादि पितृगण ।—देवाः, (पु०) पितृ-
देव ।—दैवत, (वि०) पितरों के अधिष्ठाता
देवता ।—दैवतं, (न०) मघा नक्षत्र ।—द्वयं,
(न०) बपौती । पिता से प्राप्त सम्पत्ति ।—
पक्षः, (पु०) १ पितर की ओर के लोग ।
पिता के सम्बन्धी । पितृकुल । २ आश्विन का कृष्ण
पक्ष ।—पतिः, (पु०) यमराज का नामान्तर ।—
पदं, (न०) पितृलोक ।—पितृ, (पु०) बाप
का बाप । बाबा ।—पुत्रौ, (द्वि०) पिता और
पुत्र ।—पूजनं, (न०) पितरों की अर्चा ।—
पैतामह, (वि०) [स्त्री०—पैतामही] पैतृक ।
परम्परागत ।—पैतामहाः, (बहुवचन) पुरखे ।
—प्रसूः, (स्त्री०) १ दादी । बाप की मा ।
पितामही । २ सन्ध्या ।—प्राप्त, (वि०) १
१ पिता से प्राप्त । पुरखों से प्राप्त ।—बन्धुः,
सं० श० कौ० ६४

(पु०) पिता के नातेदार । पित्रुल क लोग
भक्त (वि०) पिता का आज्ञाकारी भक्ति
(पु०) पिता की भक्ति । पिता में पूज्य बुद्धि ।—
भोजनम्, (न०) १ पितरों को अर्पण किया
हुआ भोजन । २ उरद ।—भ्रातृः, (पु०)
चाचा । ताऊ ।—मन्दिरं, (न०) १ पिता का
घर । २ श्मशान । कब्रस्तान ।—मेधः, (पु०)
वैदिक अन्त्येष्टि कर्म का भेद विशेष ।—यज्ञः,
(पु०) नर्पणादि । पितृनर्पण ।—राज्, (पु०)
—राजाः, (पु०) राजन्, (पु०) यमराज ।
—रूपः, (पु०) शिव ।—लोकः, (पु०)
वह लोक जिसमें पितृगण रहते हैं ।—वंशः,
(पु०) पिता का कुल ।—धनं, (न०)
कब्रस्तान । श्मशान ।—वसतिः, (स्त्री०)—
सञ्चयः, (न०) कब्रस्तान । श्मशान ।—आर्द्रः,
(न०) पितृआर्द्र ।—स्वप्नः, (स्त्री०) बुद्धि ।—
ध्वस्त्रीयः, (पु०) चचेरा भाई । कुफेरा भाई ।
—सन्निभः, (वि०) १ पैतृक । सन्ध्या काल ।
—स्थानीयः, (पु०) अभिभावक । पितृ
स्थानीय ।—हन्, —हत्या, (स्त्री०) पिता की
हत्या करने वाला ।
शुक (वि०) १ पिता सम्बन्धी । पुरखों का ।
पुरतनी । २ अन्त्येष्टि क्रिया सम्बन्धी ।
दृव्यः (पु०) १ पिता का भाई । चाचा । बचा ।
२ कोई भी पुरुष जातीय धर्मवृद्ध नातेदार ।
सं (न०) एक तरह का पदार्थ जो शरीर के भीतर
चकल में बनता है ।—अतीसारः, (पु०)
पित्त के प्रकोप से उत्पन्न दस्तों का रोग ।—
उपहत, (वि०) पित्त प्रकोप से पीड़ित ।—
कोपः, (पु०) पित्त ।—लोभः, (पु०)
पित्त का प्रकोप ।—उच्चरः, (पु०) पित्त के
प्रकोप से उत्पन्न उच्चर ।—प्रकोपः, (पु०) पित्त
का विकार ।—रक्तं, (न०) रक्त पित्त । रक्त-
शिक्ष्य ।—विदग्धः, (वि०) पित्त विकार से
निर्बल किया गया ।—शम्भन्, —हर, (वि०)
पित्त के विकारों को दूर करने वाला ।
गल (वि०) पित्त को उभाड़ने वाला । पित्तकारी ।
लं (न०) १ पीतल । धातु विशेष । २ भोजनपत्र ।

पि य (वि०) १ पैतृक पिता सम्बन्धी । पुरखों
का । पुरतनी । २ मृत पितरों से सम्बन्ध रखने
वाला ।
पिथ्यं (न०) १ मधा नक्षत्र । तर्जनी और अँगूठे
के बीच का हथेली का भाग ।
पिथ्यः (पु०) १ ज्येष्ठ आता । २ माघ मास ।
पिथ्या (स्त्री०) १ मधा नक्षत्र । २ पूर्णिमा ।
अमावास्या ।
पितृसत् (पु०) पत्नी ।
पितृसलः (पु०) भारी । रास्ता । सड़क । राह ।
पिधानं (न०) १ आच्छादन । छिपाना । २ म्यान ।
३ लवादा । चादर । ४ ढक्कन । ढकना ।
पिधानकम् (न०) १ म्यान । परतला । २ ढकना ।
पिधानक (वि०) छिपाने वाला । ढकने वाला ।
पिन्द्ध (व० कृ०) १ बंधा हुआ । पहना हुआ ।
२ पोशाक की तरह धारण किया हुआ । ३ छिपा
हुआ । ४ छिदा हुआ । घुसा हुआ । ५ लपेटा
हुआ । ढका हुआ ।
पिनाकं (न०) १ शिव जी का धनुष । २
पिनाकः (पु०) १ त्रिशूल । ३ धनुष । ४ डंडा
या छड़ी । ५ धूल की वृष्टि ।—गोत्र, —धृक्, —
धृत, —पाणिः, (पु०) शिव जी के नामान्तर ।
पिनाकिन् (पु०) शिव जी का नामान्तर ।
पिपतिपत् (पु०) पत्नी । चिड़िया ।
पिपतिपु (वि०) पतनशील । गिरने वाला ।
पिपतिपुः (पु०) चिड़िया ।
पिपासा (स्त्री०) प्यास । तृषा ।
पिपासित }
पिपासिन } (वि०) प्यासा ।
पिपासु }
पिपीलः (पु०) } चींटी ।
पिपीली (स्त्री०) }
पिपीलिकः (पु०) चींटी । चींटी ।
पिपीलिकं (न०) सुवर्ण विशेष ।
पिपीलिकः (पु०) चींटी ।
पिपीलिका (स्त्री०) साड़ा चींटी ।—परिसर्पणम्,
(न०) चींटियों का इधर उधर भ्रमण ।
पिप्पलः (पु०) १ बट वृक्ष । २ स्थान की डेपनी ।
कुर्त्ती या जाकेट की आस्तीन ।

पिप्पल (न०) १ पापल का फल । २ कोई भी बिना गुठली का फल । ३ मेथुन । ४ जल ।

पिप्पलिः } (स्त्री०) बड़ी पीपल ।
पिप्पली }

पिप्पिका (स्त्री०) दाँत का मल ।

पिप्पुः (पु०) निशान । तिल । मस्सा ।

पिप्पलः (पु०) वृक्ष विशेष । चिरौंजी का पेड़ ।

पिप्पलं (न०) चिरौंजी ।

पिप्प (धा० पर०) [पेलयति—पेलयते] १ फैकना । पटकना । २ भेजना । बतलाना । ३ उत्तेजना देना । बतलाना ।

पिप्पुः (पु०) देखो "पीलू" ।

पिप्प (वि०) ढँचा ताना । भेंड़ा ।

पिप्पलं (न०) भेंड़ी आँख ।

पिप्पका (स्त्री०) हथिनी ।

पिप्प (धा० उभय०) [पिपिषति—पिपिषते] १ बनाना । सम्हालना । २ संवदन करना । ३ प्रकाश करना । उमाला करना । चमकाना ।

पिपिषंग } (वि०) ललौंहा । भूरे रंग का ।
पिपिषङ्ग }

पिपिषंगः } (पु०) भूरा रंग ।
पिपिषङ्गः }

पिपिषंगकः } (पु०) विष्णु और उनके अनुचर का
पिपिषङ्गकः } नामान्तर ।

पिपिषाचः (पु०) राक्षस । दैत्य । दानव । पिपिषाच । शैतान ।—दुः, (पु०) वृक्ष विशेष ।—आध्या, (स्त्री०)—सञ्चारः, (पु०) पिपिषाच का आवेश ।—भाषा, (स्त्री०) भाषा विशेष ।—सर्भ, (न०) पिपिषाचों की सभा ।

पिपिषाचकिन् (पु०) कुवेर का नामान्तर ।

पिपिषाचिका (स्त्री०) १ पिपिषाची । २ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये पिपिषाच की तरह उत्सुकता । ३ लड़ने की वैशाचिक अभिलाषा ।

पिपिषितं (न०) मौन ।—आशानः, (पु०)—आशः, (पु०)—आशिन्, (पु०)—भुज, (पु०) १ मौलभक्षी । गोशतखोर । राक्षस । पिपिषाच । २ मनुष्य भक्षी । आदमी खाने वाला ।

पिपिषुन (वि०) १ बतलाने वाला । निर्देश करने वाला । प्रकट करने वाला । दिखाने वाला ।

आतक । २ एक की बुराई दूसरे से कर भेड़ डालने वाला । जुगलखोर । इधर की उधर लगाने वाला । ३ दुर्जन । खल । ४ कमीना । नीच । दुष्ट । तिरस्करणीय । ५ मूर्ख । मूढ़ । बेवकूफ ।—वचनं,—वाक्यं, (न०) जुगली । गिन्दा । बुराई ।

पिपिषुनः (पु०) १ निन्दक । जुगलखोर । २ रईस । ३ नारद का नामान्तर । ४ काक । कौआ ।

पिप्प (धा० पर०) [पिपिषति, पिपिषते] १ कूटना । पीसना । चूर्ण करना । मसलना । कुचलना । २ चोटिल करना । नष्ट करना । बध करना ।

पिपिष (व० क०) १ पिसा हुआ । चूर्ण किया हुआ । २ रगड़ा हुआ । निचोड़ा हुआ । दोनों हाथों से पकड़ कर दबाया हुआ ।

पिपिष (न०) १ पिसी हुई कोई भी वस्तु । २ आटा । पीठी । ३ सीता ।—उदकं, (न०) आटा में मिला हुआ जल ।—पवनं, (न०) आटा सूँझने की कढ़ाई ।—दशुः, (न०) आटा का बनाया हुआ पशु का खिलौना ।—पिपिषः, (पु०) आटा का लड्डू या पूरी ।—पूरः, (पु०) पूरी ।—पेषः, (पु०)—पेषणम्, (न०) आटा पीसना । पीसे को पीसना । व्यर्थ का काम करना ।—मेहः, (पु०) प्रमेह रोग के भिन्न भिन्न प्रकारों में से एक प्रकार का प्रमेह रोग ।—वर्तिः, (न०) छोटा लड्डू जो जवा, दाल की पीठी या चावल के आटा का बनाया जाता है ।—सौरभं, (न०) चिसा हुआ चन्दन ।

पिपिषकं (न०) १ पूरी जो किसी अन्न के आटे पिपिषकः (पु०) की बनायी गयी हो । २ रोटी । पूरी (न०) पीसे हुए तिल ।

पिपिषं (न०) १ ब्रह्माण्ड का विभाग विशेष । पिपिषः, (पु०) १ लोक । भुवन ।

पिपिषतः, (पु०) खुशबूदार चूर्ण ।

पिपिषकः (पु०) चाँवल की बनी हुई तवाखीर या बंसलोचन ।

पिपिषिकः (पु०) चाँवल के आटे की पूरी विशेष । अंदरसा ।

पिस (ध० पर०) [पिसति] जाना (उभय०)
[पिसयति पिसयने] १ पाना २ बलवान
होना । ३ बसना । ४ ज़ख्म करना । अनिष्ट
करना । ५ देना या लेना ।

पिहित (व० क०) १ बंद किया हुआ । मूँदा हुआ ।
सेका हुआ । बंधा हुआ । २ ढका हुआ । छिपा
हुआ । छिपाया हुआ । ३ भरा हुआ या
आच्छादित ।

पी (धा० आत्म०) [पीयते] पीना ।

पीच (न०) मोड़ी ।

पीठ (न०) १ पीड़ा । २ कुशासन । ३ मूर्ति का वह
आधारवत् स्थान जिस पर वह खड़ी रहती है । वेदी ।
४ किसी वस्तु के रहने का स्थान । अधिष्ठान
(यथा विद्यापीठ) । ५ राजसिंहासन । तख्त । ६
वह स्थान जहाँ सती के शरीर का कोई अंग अथवा
आभूषण भगवान् विष्णु के चक्र से कट कर गिरा
हो । ७ बैठने का एक विशेष ढंग । एक आसन
विशेष ।—केलिः, (पु०) अधर्मी । पीठमर्द
नायक ।—गर्भः, (पु०) वह गड़ड़ा जो वेदी पर
मूर्ति को जमाने के लिये खोद कर बनाया जाता
है ।—नायिका, (स्त्री०) १४ वर्ष की कन्या जो
दुर्गास्तव में दुर्गा की प्रतिमिथि मानी जाती है ।
—भूः, (पु०) प्राचीर के आसपास का भूभाग ।
—मर्दः, (पु०) १ नायिक के चार सखाओं में से
एक जो अपनी वचनचतुरी से नायिका का मान-
मोचन करने में समर्थ हो । २ नर्तकी के रथा को
मूल सिंखाने वाला उस्ताद ।—सर्प, (वि०)
लंगड़ा । लुंजा ।

पीठिका (स्त्री०) १ पीड़ा । २ मूर्ति या खंभे का
मूल या आधार । ३ पुस्तक का अंश या अध्याय ।

पीड़ (धा० उभ०) [पीडयति—पीडयते, पीडित]

१ कष्ट देना । सताना । अत्याचार करना । चोटिल
करना । अनिष्ट करना । छेड़खानी करना ।
छिड़ाना । २ सामना करना । ३ (किसी नगर पर)
बेरा डालना । ४ दवाना । निचोड़ना । चुटकी
काटना । ५ दवाना । नाश करना । ६ चूक जाना ।
जापरवाही करना । किसी अमाङ्गलिक वस्तु से
ढकना । ८ ग्रहण डालना ।

पीडक (पु०) अत्याचारी नाबिस

पीडनम् (न०) १ दावने की क्रिया । चोपना ।
अत्याचार करना । पीड़ा देना । २ निचोड़ना ।
दवाना । ३ दवाने का यंत्र विशेष । ४ पकड़ना ।
ग्रहण करना । ५ बरबाद करना । नष्ट करना ।
६ पीट पीट कर अनाज (वालों से) निकालना ।
७ सूर्य चन्द्र का ग्रहण । ८ तिरोभाव । लोप ।
पीड़ा (स्त्री०) १ दर्द । कष्ट । तकलीफ । व्याधि । २
अनिष्ट । हानि । वाटा । ३ उच्छेद । नाश । ४
अतिक्रमण । नियमभङ्ग करण । ५ रोक थाम । ६
दया । रहम । ७ सूर्यचन्द्रग्रहण । ८ शिरोमाला ।
सिर में लपेटा हुआ माला । ९ सरल वृक्ष ।—कर,
(वि०) कष्टदायी । दुःखदायी ।

पीडित (व० क०) १ पीडायुक्त । दुःखित । हेशयुक्त ।
२ निचोड़ा हुआ । दबाया हुआ । ३ थामा हुआ ।
पकड़ा हुआ । ४ भङ्ग किया हुआ । तोड़ा हुआ ।
५ उच्छिन्न । नष्ट किया हुआ । ६ ग्रहण लगा
हुआ । ७ बंधा हुआ । गसा हुआ ।

पीडितं (न०) १ पीड़ा युक्त । हेशयुक्त । दुःखित । २
मैथुन का आसन विशेष । [से ।

पीडितम् (अच्यया०) १ पक्षा । वनिष्ठता से । २ दबता
पीत (वि०) १ पिया हुआ । २ तर । भीगा हुआ ।

३ पीला ।—अभिधः, (पु०) अगस्त्य ऋषि का
नामान्तर ।—अम्बरः, (पु०) १ विष्णु भगवान्
का नामान्तर । २ नद । अस्मिन्कर्त्ता । ३ काषाय
वस्त्रधारी संन्यासी ।—अरुणः, (वि०)
पिलौंहा लाल ।—अश्मन्, (पु०) पुखराज
रत्न ।—कदली, (स्त्री०) कैले का भेद विशेष ।

—कन्दः, (न०) गाजर । शलजम् ।—कावेरः,
(न०) १ केसर । २ पीतल ।—काष्ठः, (न०)

पीला चन्दन । पझाख ।—गन्धम्, (न०) पीला
चन्दन ।—चन्दनं, (न०) १ हरिचन्दन ।

पीले रंग का चन्दन । २ केसर । ३ हल्दी ।—
चम्पकः, (पु०) १ दिवा । चिराग । प्रदीप ।—

तुण्डः, (पु०) कारण्डव या बया पक्षी ।—
दारु, (न०) सरल वृक्ष ।—दुग्धा, (स्त्री०)

दुधतर गौ ।—द्रुः, (पु०) सरल वृक्ष ।—पादा,
(स्त्री०) मैना पक्षी जिसके पैर पीले होते हैं ।

गुलगुलिषा ।—मणिः, (पु०) पुखराज ।—
मासिकं, (न०) सोनासाखी ।—मूलकं, (न०)
गाजर । शलजम् ।—रक्तं, (वि०) नारंगी रंगका ।
—रक्तं, (न०) पुखराज ।—रागः, (पु०) पीला
रंग । २ मोम । ३ पत्रकेसर ।—वालुका, (स्त्री०)
हल्दी ।—वासस्, (पु०) कृष्ण का नामान्तर ।
—सारः, (पु०) १ पुखराज । २ चन्दन वृक्ष ।
—सारं, (न०) पीलाचन्दन ।—सारिः,
(न०) सुर्मा ।—स्कन्धः, (पु०) शूकर ।—
—स्फटिकः, (पु०) पुखराज ।—हरित,
(वि०) पिलौहा हरा ।

पीतं (न०) १ सोना । २ हरताल ।

पीतः (पु०) १ पीला रंग । २ पुखराज । ३ कुसुम ।

पीतकं (न०) १ हरताल । २ पीतल । ३ केसर । ४
शहद । ५ अगर काष्ठ । ६ चन्दन काष्ठ ।

पीतनं (न०) १ हरताल । २ केसर ।

पीतनः (पु०) वट वृक्ष विशेष ।

पीतल (वि०) पीला ।

पीतलं (न०) पीतल धातु ।

पीतलः (पु०) पीला रंग ।

पीतिः (पु०) घोड़ा । (स्त्री०) चूँट । पेय पदार्थ ।
२ कलवरिया । शराब की दुकान । २ हाथी की
सूँड़ ।

पीतिका (स्त्री०) १ केसर । २ हल्दी । ३ पीली
चमेली ।

पीतुः (पु०) १ सूर्य । २ अग्नि । ३ हाथियों के
गिरोह का सरदार या यूथपति ।

पीथः (पु०) १ सूर्य । २ समय । ३ अग्नि । ४ पेय
पदार्थ (पानी वी आदि) । ५ जल ।

पीथिः (पु०) घोड़ा ।

पीन (वि०) १ मौटा । मौसल । स्थूल । धमधूसर ।
२ गुदगुदा । बड़ा । गाढ़ा । ३ पूरा । गोला । ४
अत्यधिक ।—ऊधस्, (स्त्री०) (पीथोष्ठी)
गौ जिसके थन दूध से भरे हों ।—वक्षस्, (वि०)
भरी हुई क्षतियों वाला ।

पीनसः (पु०) १ नाक का एक रोग विशेष । २ जुकाम ।

पीयुः (पु०) १ काक । २ सूर्य । ३ अग्नि । ४
उल्लू । ५ समय । ६ सुवर्ण ।

पीयूषं (न०) १ अमृत । सुधा । २ दूध । ३
पीयूषः (पु०) १ व्याने के सात दिन के भीतर का
गाय का दूध । पेवसी ।—महस्, (पु०) —
रुचिः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—वर्षः,
(पु०) १ अमृतवृष्टि । २ चन्द्रमा । ३ कपूर ।

पीलः (पु०) चेंदा । चींटा ।

पीलुः (पु०) १ तीर । २ अशु । ३ कीट । ४ हाथी ।
ताड़ वृक्ष का तना । ६ पुष्प । ७ ताड़ वृक्षों का
समूह । ८ वृक्ष विशेष ।

पीलुकः (पु०) चींटी । चेंटी ।

पीव् (वा० पर०) [पीवति] मुदना । मौटा होना ।

पीवन् (वि०) [स्त्री०—पीवरी] १ पूर्ण । मौटा ।
बड़ा । २ दृढ़ । मजबूत । (पु०) पवन ।

पीवर (वि०) [स्त्री०—पीवरा या पीवरी] १
मौटा । बड़ा । दृढ़ । मौसल । धमधूसर । २ गुद-
गुदा । मौटा ।

पीवरः (पु०) कड़वा ।

पीवरी (स्त्री०) १ युवती स्त्री । २ गौ ।

पीवा (स्त्री०) जल ।

पुंस् (धा० उभय०) [पुंसयति—पुंसयते] १
कुचरना । पीसना । २ पीड़ा देना । कष्ट देना ।
दण्ड देना ।

पुंस (पु०) [कर्त्ता—पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः
सम्बोधन एकवचन पुमान्] १ पुरुष । नर ।
मादा का उल्टा । २ मनुष्य । इंसान । मानव । ३
मनुष्य । मनुष्य जाति । मानव जाति । ४ नौकर ।
अर्दली । ५ पुल्लिङ्ग शब्द । ६ पुल्लिङ्ग । ७ जीव ।
रूढ़ ।—अनुज, (वि०) (= पुंसानुज) बड़े
भाई वाला ।—अनुजा, (= पुमनुजा) लड़के
के पीठ की लड़की अर्थात् वह लड़की जिसका
बड़ा भाई हो ।—अपत्यं (= पुमपत्यं) (न०)
नर बच्चा ।—अर्थः (= पुमर्थः) १ मनुष्य का
उद्देश्य । पुरुषार्थ । [पुरुषार्थ चार हैं, धर्म, अर्थ,
काम, मोक्ष] ।—आख्याः (= पुमाख्या) नर
की संज्ञा ।—आचारः (= पुमाचारः) (पु०)
पुरुष के आचार ।—काशा, (स्त्री०) स्त्री जो
पति की चाहना करती हो ।—काकिलः (पु०)
नरकोयल ।—खेटः (पु०) (= पुंखेटः)

नर ग्रह या नक्षत्र 'प' (= पाव) पु)
 १ माड । धैल २ (ससायान्त शब्द के अन्त में आन पर इसका अर्थ होता है । मुख्य । सर्वोत्तम । सर्वश्रेष्ठ । प्रसिद्ध । प्रख्यात ।—केतुः (पु०) शिव जी का नामान्तर ।—चली (= पुंश्चली) (स्त्री०) रंडी । वेश्या ।—चलीयः (पु०) (= पुंश्चलीयः) रंडी का वेश ।—सिन्हं (= पुंश्चिन्हं) (न०) पुरुष लक्षण । जनेन्द्रिय ।—जन्मन्, (= पुंजन्मन्) (न०) बालक की उत्पत्ति ।—योगः, (पु०) मन्त्रों का योग जिसमें किसी बालक का जन्म होता है ।—दासः, (= पुंदासः) (पु०) पुरुष नौकर ।—ध्वजः, (= पुंध्वजः) १ जीवधारियों में किसी भी जाति का नर । २ चूहा ।—नक्षत्रं, (= पुंनक्षत्रं) (न०) पुरुषवाची नक्षत्र ।—नागः, (= पुंनागः) (पु०) १ मनुष्यों में हाथी अर्थात् प्रसिद्ध पुरुष । २ सफेद हाथी । ३ सफेद कमल । ४ कायफर या जायफल । ५ नागकेसर वृक्ष ।—नाटः, —नाडः, (= पुंनाटः, पुंनाडः) (पु०) एक वृक्ष का नाम ।—नामधेयः, (= पुंनामधेयः) नर । १ पुरुषवाची —नामन् (= पुंनामन्) (वि०) पुरुषवाची नामधारी । २ पुंनाग वृक्ष ।—पुत्रः (पु०) लड़का ।—प्रजननं, (न०) लिङ्ग । जननेन्द्रिय ।—भूमन्, (= पुंभूमन्) (पु०) पुरुषवाची शब्द जो सदा बहुवचन में प्रयुक्त किया जाता है ।—“ दाराः पुंभूतिं चाक्षताः ”—अमरकोष ।—योगः, (पु०) (= पुंयोगः) १ पुरुषमैथुन । लौंडेबाज़ी । २ किसी नर या पति सम्बन्धी ।—रत्नं, (= पुंरत्न) (न०) उत्तम या श्रेष्ठ पुरुष ।—राशिः, (= पुंराशिः) पुरुषवाची राशि ।—रूपं (= पुंरूपं) (न०) पुरुष का आकार ।—लिङ्ग, (= पुल्लिङ्ग) (वि०) पुरुषवाची । नर ।—लिङ्गम्, (न०) १ पुल्लिङ्ग । २ मनुष्यत्व । पुरुषत्व । ३ लिङ्ग । जननेन्द्रिय ।—वत्सः (= पुंवत्सः) (पु०) बछ्छू-दर ।—वेष, (= पुंवेष) (वि०) मर्दानी पोशाक में ।—सवनं (= पुंसवनं) (न०) द्विजातिधियों

के सम्स्कारों में स दूसरा स्स्कार जो गर्भाधान से तासरे मास किया जाता है । २ वृक्ष । ३ गर्भ-पिण्ड ।

पुंस्त्वं (न०) १ पुरुषत्व । पुंसता । मर्दानगी । २ वीर्य । ३ पुरुषलिङ्ग ।

पुंस्त् (अव्यया०) १ पुरुष की तरह । २ पुल्लिङ्ग में ।

पुंक्ष (वि०) [स्त्री०—पुंक्षरी] } नीच । ओढ़ा ।
 पुंक्ष (वि०) [स्त्री०—पुंक्षरी] }

पुंक्षः } (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष ।
 पुंक्षसः }

पुंखं (न०) } तीर की वह जगह जहाँ उसमें पर
 पुंखं (न०) } लगे होते हैं ।
 पुंखः (पु०) }
 पुंखः (पु०) }

पुंखित } (व० कृ०) पंखों से सम्पन्न ।
 पुंखित }

पुंगं (न०) } ढेर । राशि । संग्रह । समूह ।
 पुंगं (न०) }
 पुंगः (पु०) }
 पुंगः (पु०) }

पुंगलः } (पु०) जीव । रह । आत्मा ।
 पुंगलः }

पुच्छं (न०) } १ पूंछ । २ बालदार पूंछ ।
 पुच्छः (पु०) } ३ मयूर की पूंछ ४ पीछे का भाग । ५ किसी वस्तु का छोर ।—अग्रं,—मूलं, (न०) पूंछ की नोंक ।—कण्टकः, (पु०) बीछ ।—जाहं, (न०) पूंछ की जड़ ।

पुच्छटिः } (स्त्री०) उंगली चटकाना ।
 पुच्छटिः }

पुच्छिन् (पु०) सुर्गा ।

पुंजः } (पु०) ढेर । समूह । संग्रह ।
 पुंजः }

पुंजिः } (स्त्री०) ढेर । समूह ।
 पुंजिः }

पुंजिकः } (पु०) ओला । जमी हुई बर्फ ।
 पुंजिकः }

पुंजित (वि०) १ जमा किया हुआ । संग्रह
 पुंजित किया हुआ । ढेर लगाया हुआ । २ मिलाकर
 दबाया हुआ ।

पुट (घ० पर०) (पुटति) १ कौरियाना । चिपटाना
 आलिङ्गन करना । २ बीच में पड़ना ।

पुट (न०) } १ तह । परत । पल्ला । २
पुटः (पु०) } अण्डली । ३ पत्तों का बना दौना ४
कोई भी औंड़ापरत । ५ छीमी । फली । ६
स्थान । गिलाफ । खोल । आच्छादन । ७ पलक ।
८ घोड़े का सुम । (पु०) चौखटा । (व०)
जायफल ।—उट्जः, (न०) सफेद छत्र ।—
उदकः, (पु०) नारियल ।—प्रीवः, (पु०)
१ बरतन । घड़ा । कलसा । २ ताँबे का
बरतन ।—पाकः, (पु०) दवाहवाँ बनाने का
विशेष विधान ।—मेदः, (पु०) १ नगर । कस्बा ।
२ वाद्ययंत्र विशेष । बाजा । (आतोष) । ३ भँवर ।
बाढ़ ।—मेदनः, (न०) नगर । शहर ।—
पुटकं (न०) १ तह । परत । २ कोई भी
छिछला बरतन । ३ दौना । ४ कमल । ५ जायफल ।
पुटकिनी (स्त्री०) १ कमल । २ कमल समूह ।
पुटिका (स्त्री०) इलायची ।
पुटित (वि०) १ रगड़ा हुआ । पीसा हुआ । २
सकुड़ा हुआ । ३ सिला हुआ । टकियाया हुआ ।
४ चिरा हुआ ।
पुटी (देखो पुट)
पुडू (धा० पर०) १ त्यागना । छोड़ना । २ विदा
करना । निकाल देना । ३ उमड़ना । ४ खोज
निकालना ।
पुडू } (धा० पर०) (पुण्डति) पीसना । पीस
पुण्डू } कर चून कर डालना । कटना ।
पुण्डः } (पु०) चिन्ह । निशान ।
पुण्डः }
पुण्डरीकं } (न०) १ कमलपुष्प, विशेष कर सफेद
पुण्डरीकं } रंग का । २ सफेद छाता ।
पुण्डरीकः } (पु०) १ सफेद रंग । २ आग्नेयी
पुण्डरीकः } दिशा का दिमाज । ३ चीता । ४ सर्प
विशेष । ५ चौवल विशेष । ६ कोठ रोग विशेष ।
७ गजज्वर । ८ आभ्र वृक्ष विशेष । ९ जल का
चढ़ा । १० अग्नि । ११ माथे पर साम्प्रदायिक
तिलक चिन्ह ।
पुण्डरीकाक्षः } (पु०) विष्णु का नामान्तर ।
पुण्डरीकाक्षः }
पुण्डन } (पु०) १ एक प्रकार की ईख । २ कमल ।
पुण्डन } ३ सफेद कमल । ४ माथे पर का
तिलक । ५ कीट विशेष ।

पुण्डः } (पु०) १ लाल जाति की छल । २
पुण्डः } कमल । ३ सफेद कमल । ४ माथे का
तिलक । ५ कीटा ।
पुण्डकः } (पु०) १ ईख की एक जाति । २
पुण्डकः } साम्प्रदायिक तिलक ।
पुण्डः } (पु० बहु०) भारत के एक प्रान्त का
पुण्डः } प्राचीन नाम और उस प्रान्त के निवासी ।
—केलिः, (पु०) हाथी ।
पुराय (वि०) १ पवित्र । शुद्ध । २ अच्छा । गुयी ।
नेक । ईमानदार । न्याय । ३ शुभ । मङ्गलात्मक ।
अनुकूल । ४ प्रसन्नकारक । आल्हादप्रद । मनो-
हर । सुन्दर । ५ भवुर सुगन्धि । ६ धूमधवाके
का । उत्सव सम्बन्धी ।
पुराय (न०) १ नेकी । भलाई । धार्मिक श्रेष्ठता ।
पुरायवर्द्धकार्य । पुरायकार्य । ३ पवित्रता ।
विशुद्धता । ४ पशुओं के पानी पीने के लिये
हौदी । हौद ।
पुराय (स्त्री०) तुलसी का पेड़ ।—अहं, (अहंन के
बदले) आनन्द का या मङ्गल दिवस । सुदिन ।—
उदयः, (पु०) सौभाग्योदय ।—उद्यान,
(वि०) सुन्दर उद्यान रखने वाला ।—कर्त्तृ
(पु०) पुरयात्मा या धर्मात्मा आदमी ।—कर्मन्
(वि०) शुभकार्य करने वाला । पुरयात्मा ।
ईमानदार । (न०) पुरय का कार्य ।—कालः,
(पु०) दान पुरय का समय ।—कीर्ति, (वि०)
शुभनाम या नामवरी वाला । प्रख्यात । प्रसिद्ध ।
—कृत्, (वि०) पुरयात्मा । नेक । धर्मात्मा ।—
कृत्या, (स्त्री०) धर्मकार्य ।—क्षेत्र, (न०) १ तीर्थ
स्थान । २ आर्यावर्त का नाम ।—गन्ध, (वि०)
भवुर सुगन्धि युक्त ।—गृह, (न०) १ वह घर
जहाँ लोगों को खैरात बाँटी जाती है । २ देवालय ।
—जनः, (पु०) १ धर्मात्मा आदमी । २ दानव ।
दैत्य । ३ यक्ष ।—ईश्वरः, (पु०) कुबेर ।—
जित, (वि०) धर्मकर्म से जीता हुआ ।—
तीर्थ, (न०) यात्रा का स्थान । तीर्थस्थान ।—
दर्शन, (वि०) सुन्दर । मनोहर ।—दर्शनः,
(पु०) नीलकण्ठ पक्षी ।—दर्शनः, (न०)
देवालयों में दर्शन ।—पुरुषः, (पु०) पुरयात्मा
या धर्मात्मा जन ।—प्रतापः, (पु०) पुरय या

अच्छे कर्म का प्रभाव । —फलं, (न०) सत्कर्मों का पुरस्कार । —फलः, (पु०) लता-कुञ्ज । —भाज्, (वि०) धन्य । नेक । धर्मात्मा । —भूः, —भूमिः (स्त्री०) पवित्र स्थान । तीर्थ स्थान । आर्यावर्त देश । —लोकः (पु०) स्वर्ग । —शकुनं, (न०) शुभ शकुन । —शकुनः, (पु०) शकुन पक्षी । —शील, (वि०) मनुष्य जिसका सम्मान सत्कर्मों की ओर हो । —श्लोकः, (वि०) अच्छे या सुन्दर चरित्र अथवा यश वाला । पवित्र चरित्र या आचरण वाला । पवित्र एवं शिक्षाप्रद जीवन वृत्तान्त वाला । —श्लोकः, (पु०) नल । युधिष्ठिर आदि । यथाः—

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः

पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको नवार्दनः ॥

—श्लोकाः, (स्त्री०) सीता और द्रौपदी । —स्थानं, (न०) तीर्थस्थान ।

पुण्यवत् (वि०) १ सत्कर्मों । धर्मात्मा । २ भाग्यवान् । शुभ । ३ सुखी ।

पुत् (न०) नरक विशेष जिसमें वे जीव डाले जाते हैं जो अपुत्रक हैं ।

पुत्तलः (पु०) १ मूर्ति । प्रतिमा । पुतला । २ पुत्तली (स्त्री०) १ गुड़िया पुतली । —दहनं, (न०)

—विधिः, (पु०) अप्राप्त मृतक के बदले उसका पुतला बना कर जलाना ।

पुत्तलकः (पु०) १ गुड़िया । गुड़िया ।

पुत्तिका (स्त्री०) १ मधुमक्षिका । २ दीमक ।

पुत्रः (पु०) १ बेटा । पूत । बेटा का नाम पूत इस लिये पड़ा—

पुत्राक्षो नरकाग्रस्तात् प्रायते पितरं पुतः ।

तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयंपुत्रः ॥

—अप्रादः, (पु०) १ पुत्र की कमाई पर निर्वाह करने वाला । २ कुटीचक संन्यासी । —अर्धिन, (वि०) पुत्र की कामना रखने वाला । —इष्टिः, —इष्टिका, (स्त्री०) पुत्र प्राप्ति के लिये यज्ञ विशेष । —काम, (वि०) पुत्र की अभिलाषा वाला । —कार्यं, (न०) कोई रीति या रस्म जो पुत्र सम्बन्धी हो । —कृतकः, (पु०) गोद लिया हुआ

बेटा । —जात, (वि०) बेटा वाला । पुत्र वाला । —द्वारं, (न०) बेटा और जोरु । —पौत्रं, —पौत्राः, (पु०) बेटा और नातियों वाला । —पौत्रोष्ण, (वि०) परम्परागत । पुरतैनी । —प्रतिनिधिः, (पु०) बेटा का एवजी । दत्तकपुत्र । —लाभः, (पु०) पुत्र की प्राप्ति । —सखः, (पु०) वह पुरुष जो लड़कों को बहुत चाहता हो । —हीन, (वि०) वह पुरुष जिसके कोई पुत्र न हो ।

पुत्रकः, (पु०) १ छोटा पुत्र या बच्चा । २ पुतली । गुड़िया । ३ गुंडा । छलिया । ४ टीढ़ी । पतिगा । ५ शरभ जन्तु । ६ बाल । केश ।

पुत्रका, पुत्रिका, पुत्री, (स्त्री०) १ बेटा । २ गुड़िया । पुतली । (समासान्त शब्दों में जब यह अन्त में होता है तब इसका अर्थ “छोटी जाति की कोई भी वस्तु” होता है । यथा “असिपुत्रिका” । —पुत्रः, —सुतः, (पु०) १ लड़की का पुत्र जो अपने नाना की गोद गया हो । २ वह लड़की जो अपने पिता के यहाँ पुत्र के स्थान पर गयी हो । ३ पौत्र । —प्रसूः, (स्त्री०) ऐसी माता जिसकी सन्तान कन्याएँ ही हों—पुत्र न हो । —मर्तुः, (पु०) जामाता । जमाई । दामाद ।

पुत्रिन् (वि०) [स्त्री०—पुत्रिणी] पुत्र या पुत्रों वाला । (पु०) एक पुत्र का पिता ।

पुत्रिय, पुत्रोय, पुत्र्य (वि०) पुत्र सम्बन्धी । सन्तानोचित ।

पुत्रीया (स्त्री०) पुत्र प्राप्ति की कामना या अभिलाषा । पुद्गल (वि०) सुन्दर । मनोहर ।

पुद्गलः (पु०) १ परमाणु । २ शरीर । ३ आत्मा । जीव । ४ शिव का नामान्तर ।

पुनर (अव्यया०) १ पुनः । फिर । नये सिरे से । २ पीछे । सामने की ओर से । बरखिलाफ इसके । इसके विरुद्ध । किन्तु । बल्कि । यद्यपि । तोभी । —अर्थिता, (स्त्री०) बार बार की हुई प्रार्थना । —आगत, (वि०) लौटा हुआ । फिरा हुआ । —आधामं, आधेयं, (न०) यज्ञीय अग्नि का पुनर्संस्कार । —आवर्तः, (पु०) १ प्रत्यागमन । २ पुनर्जन्म । —आवर्तिन, (वि०) पार्थिव-स्थिति में लौट कर आने वाला । —आवृत्त,

(स्त्री०)—आवृत्तिः, (स्त्री०) १ दुहराना ।
२ पुनर्जन्म । ३ संशोधन । (किसी पुरतः का) ।
—उक्तः, (वि०) १ पुनः कहा हुआ । दुहराया
हुआ । २ फालतू । अनावश्यक ।—उक्तः, (न०)
—पुनरुक्तता, (स्त्री०) १ दुहराने की क्रिया ।
२ फालतूपना । अनावश्यकता । निरर्थकता ।—
उक्तिः, (स्त्री०) देखो पुनरुक्तता ।—उत्थानं,
(न०) फिर से उठना ।—उत्पत्तिः, (स्त्री०)
पुनर्जन्म ।—उपगमः, (पु०) लौटना ।—
उपोद्गा, —ऊद्गा, (स्त्री०) दुबारा व्याही हुई स्त्री ।
—गमनं, (न०) पुनःगमन ।—जन्मन्, (न०)
पुनर्जन्म ।—जातः, (वि०) पुनः उत्पन्न हुआ ।
—णवः,—नवः, (पु०) नाखून । जो बार बार
उत्पन्न हो ।—दारक्रिया, (स्त्री०) पुनर्विवाह
(पुरुष का) ।—प्रत्युपकारः, (पु०) १ किसी के उप-
कार का बदला चुकाना । बार बार जन्म ग्रहण ।
२ नाखून । नख ।—भावः, (पु०) पुनर्जन्म ।
—भूः, (पु०) पुनर्विवाहिता विधवा ।—
यात्रा, (स्त्री०) १ पुनर्गमन । २ बार बार
जलूस का निकलना ।—वस्तुः, (पु०) १ पुनर्वस्तु-
नक्षत्र । २ विष्णु । ३ शिव ।—विवाहः, (पु०)
दुबारा विवाह ।

पुण्डुलः (पु०) उदरस्थवायु । जठरवात ।

पुण्डुसः (पु०) १ फेंफड़ा । पञ्चबीज कोष ।

पुर (स्त्री०) १ क़त्तवा । शहर जिसकी रक्षा के लिये
चारों ओर परकोटे की दीवाल हो । २ गढ़ी ।
क़िला । महल । ३ दीवाल । परकोटा । ४ शरीर ।
५ प्रतिभा । प्रज्ञा । धीर ।—द्वारः, (स्त्री०)—
द्वारं, (न०) नगर का फाटक ।

पुरं (न०) १ नगर । शहर । २ महल । गढ़ । गढ़ी ।
३ घर । भूकान । ४ शरीर । ५ ज्ञानान्तराणा ।
६ पाटलिपुत्र या पटने का नामान्तर । ७ दौना ।
पत्तों से बनाया गया प्यालेनुमा पात्र । ८ चकला ।
छिनाल छिरियों या रंड़ियों का बाज़ार । ९ चमड़ा ।
१० मौया । ११ गुग्गुल ।—अष्टः, (पु०)
परकोटे की दीवाल पर बनी हुई बुर्जी या बुर्ज ।
—अधिपः,—अध्यक्षः, (पु०) किसी नगर
का शासक या हाकिम ।—अरातिः,—अरिः,

—अरुद्धः, (पु०)—विपुः, (पु०) शिव
जी के नामान्तर ।—उत्सवः, (पु०) नगर में
मनाया जाने वाला उत्सव ।—उत्थानं, (न०)
पार्क या नगर के बीच में लगाया हुआ बाग ।
—अधिकृतः, (पु०) नगरिक । नगरनिवासी ।
—कोटः, (न०) गढ़ । नगरकोट ।—गः,
(वि०) १ नगर में जाने वाला । २ अनुकूल ।—
जित्,—जिप्,—भिद् (पु०) शिव जी का
नाम ।—अंशतिस् (पु०) १ अग्नि । २ अग्नि-
लोक ।—तटी, (स्त्री०) छोटाग्राम । छोटा ग्राम
जिसमें बाज़ार या पैठ लगती हो ।—तोरणं,
(न०) नगर का बहिर्द्वार ।—निवेशः, (पु०)
नगर की नींव डालना ।—पालः, (पु०) शहर
का हाकिम । गढ़ का नायक ।—मथनः, (पु०)
शिव जी का नामान्तर ।—पार्श्वः, (पु०) नगर की
गली ।—रक्षः,—रक्षकः,—रक्षितः, (पु०)
कौंस्टेबल । नगररक्षकदल का सिपाही या
अफसर ।—रोधः, (पु०) गढ़ी का अवरोध या
बेरा ।—वासिन्, (पु०) नगरिक । नगर
निवासी ।—शासनः, (पु०) १ विष्णु । २
शिव ।

पुरटं (न०) सुवर्ण ।

पुरणाः (पु०) समुद्र । सागर ।

पुरतस् (अव्यया०) १ पूर्व । पहिले । सामने । २
पीछे से ।

पुरंदरः (पु०) १ इन्द्र का नाम । २ शिव । ३
पुरन्दरः (पु०) अग्नि । ४ चौर । घर में संध लगाने वाला ।

पुरंदरा } (स्त्री०) गंगा का नामान्तर ।
पुरन्दरा }

पुरंधिः, पुरन्धिः (स्त्री०) पति, पुत्र, कन्या आदि
पूरंधी, पुरन्धी } से भरी पूरी स्त्री ।

पुरला (स्त्री०) दुर्गा देवी का नामान्तर ।

पुरस् (अव्यया०) १ पूर्व । पहिले । २ पूर्व दिशा
में । पूर्व दिशा से । ३ पूर्व की ओर ।—करणं,
(न०)—कारः, (पु०) १ सामने रखने वाला
अपेक्षाकृत अधिक रुचि । सम्मान प्रदर्शन । ४
पूजन । अर्चन । ५ सहवर्तिव । ६ तैयारी करना ।
७ क्रम में लाना । ८ पूर्ण करना । ९ आक्रमण
करना । १० आरोप ।—कृतः, (वि०) सामने
सं० श० को ६५

रखा हुआ । ४ सजाया हुआ पूजा किया हुआ ।
५ सम्मिलित अनुयायियों से युक्त । ६ तयार
किया हुआ । ७ संस्कारतः । ८ दायी छहराया
हुआ । ९ पूर्ण किया हुआ । १० होने के पूर्व ही
होने की आशा से आशान्वित ।—क्रिया,

(स्त्री०) १ सम्मानप्रदर्शन । २ आरम्भिक
संस्कार ।—ग, —गम, (= पुरोगम—पुरोग)
१ नेता । अगुआ । पेशवा । गति, (स्त्री०)
पूर्ववर्तिता । अग्रगमन ।—गतिः, (पु०) कृता ।
—गन्तु, (वि०)—गामिन्, (वि०) १
पहले या आगे जाने वाला । २ प्रधान नेता ।
(पु०) कृता ।—चरण, (न०) १ आरम्भिक
संस्कार । २ तैयारी । ३ चिल्ली देवता के नाम का
जप और उसके उद्देश्य से हवन ।—ऊदः, (पु०)
सब के ऊपर की बौंदी ।—जन्मन्, (= पुरो-
जन्मन्) (वि०) पूर्व उत्पन्न ।—डाश, —डाशः,
(= पुरोडाश, पुरोडाशः) (पु०) चावल के आटे
की बनी हुई टिक्किया जो कपाल में पकाई जाती
थी । यज्ञ में इसके टुकड़े काट काट कर, और मंत्र
पढ़ पढ़ कर देवताओं के उद्देश्य से इसकी आहुति दी
जाती थी ।—धत्स्, (= पुरोधत्स्) (पु०) पुरोहित ।
धार्म, (= पुरोधार्म) (न०) सामने रखना ।
आगे रखना । पुरोहित द्वारा कराया हुआ कर्म ।
—धिका, (= पुरोधिका) (स्त्री०) मन पर
चढ़ी हुई औरत ।—पाक, (वि०) प्रायः
भरा हुआ ।—प्रहर्तु, (पु०) आगे या पीछे की
ओर खटने वाला ।

स्तात् (अन्यथा०) १ पूर्व । सामने । २ सब से
आगे । ३ आरम्भ में । ४ पूर्व । पेशतर । ५ पूर्व
दिशा की ओर । ६ पीछे से । अन्त में ।

(अन्यथा०) १ पूर्व काल में । २ पूर्व । अब तक ।
३ आरम्भ में । ४ कुछ काल में । शीघ्र । अवि-
लम्ब ।—कथा, (स्त्री०) पुरानी कहावत या
कहानी ।—कल्पः, (पु०) १ पूर्वकाल की सृष्टि ।
२ भूतकाल की कथा । ३ पुरातन युग ।—कृत,
(वि०) पहिले किया हुआ ।—योन, (वि०)
प्राचीन कालीन उत्पत्ति ।—घसुः, (पु०) भीष्म
का नामान्तर ।—चिदु, (वि०) भविष्यकाल

का जानन वाला वृत्त (वि०) प्राचीन
कालीन प्राचीन काल से सम्बन्ध युक्त ।—वृत्त,
ईतिहास । तवारीख ।

पुरा (स्त्री०) १ गङ्गा नदी का नामान्तर । २ सुगन्ध
पदार्थ । ३ पूर्व । ४ महल ।

पुराण (वि०) [स्त्री०—पुराणा, पुराणी] १
पुराना । मुद्दत का । प्राचीन कालीन । २ असली ।
आदि का । ३ घिसा हुआ । बर्ता हुआ ।—आष्टा-
दशन्, —आष्टादशन्ः, (पु०) ८० कौड़ी के बराबर
का एक सिक्का ।—अन्तः, (पु०) यम का
नामान्तर ।—उक्त, (वि०) पुराण कथित ।
पुराण में दिया हुआ ।—गः, (पु०) १ ब्रह्मा
का नामान्तर । २ पुराणपाठक ।—पुरुषः, (पु०)
विष्णु का नामान्तर ।

पुराण (न०) १ प्राचीन कालीन कोई घटना । २
अतीतकाल की कथा । ३ हिन्दुओं के ग्रन्थ
विशेष का नाम । इनकी संख्या १८ है और
इनकी रचना वेदव्यास ने की है ।

पुरातन (वि०) [स्त्री०—पुरातनी] १ प्राचीन ।
पुराना । २ वृद्ध । आदिकाल का । ३ जीर्ण ।
घिसा हुआ ।

पुरातनः (पु०) विष्णु का नामान्तर ।

पुरिः (स्त्री०) १ कस्बा । शहर । २ नदी ।

पुरिशय (वि०) शरीरस्थ ।

पुरी (स्त्री०) १ नगर । शहर । २ गढ़ । दुर्ग । ३
शरीर ।—मोहः, (पु०) घट्टे का पौधा ।

पुरीतत् (पु० न०) हृदय के पास की एक आँत ।

पुरीषं (न०) १ विष्टा । मल । गू । २ कूड़ा करकट ।
—उत्सर्गः, (पु०) मलत्याग ।—निग्रहयाम्,
(न०) कोष्ठवृद्धता । कब्जियत ।

पुरीषाः (पु०) विष्टा । मल ।

पुरीषां (न०) मलत्याग ।

पुरीषमः (पु०) उरद । माष ।

पुरु (वि०) [स्त्री०—पुरु—पुर्वी] बहुत । विपुल ।
अत्यधिक ।

पुरुः (पु०) १ पुष्पपराग । २ देवलोक । अमरलोक ।
स्वर्ग । ३ चन्द्रवंशी एक राजा का नाम । यह
राजा ययाति के पुत्र थे ।—जित्, (पु०)

१ विष्णु । २ कुन्तिभोज राजा का था उसके भाई का नामान्तर ।—दं, (न०) सुवर्ण ।
—दंशकः, (पु०) हंस । —लंपट, (वि०)
बड़ा विषयी । बड़ा कामुक ।—हु, (अन्वया०)
बहुत से ।—हूतः, (वि०) अनेकों से आमंत्रित ।
—हूत, (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।

पुः (पु०) १ मनुष्य । आदमी । २ नर । किसी
पुत्र या पीढ़ी का कोई प्रतिनिधि । ३ अधिकारी
कार्यकर्ता । मुखतार । गुमारता । नौकर । यहलुआ ।
४ मनुष्य की उचाई या माप । ५ जीव । ७
परमात्मा । ८ व्याकरण में पुरुष के तीन भेद
अर्थात् उत्तम, मध्यम और अन्य माने गये हैं ।
९ अर्थ की पुतली । १० (सौख्यदर्शन में)
प्रकृति से भिन्न एक अपरिणामी, अकृता और
असङ्गचेतन पदार्थ ।—अङ्गम्, (न०) जन-
नेन्द्रिय । लिङ्ग ।—अद्यः, (पु०) मनुष्य-
भन्नी । राक्षस ।—अधमः, (पु०) सब से
गया बीता । नीच ।—अधिकारः, (पु०) मर-
दानगी का काम । मनुष्य की गणना या अँदाल ।
—अन्तरम्, (न०) दूसरा आदमी ।—अर्थः,
(पु०) १ चार पुरुषाथों में से कोई एक ।
२ पुरुषकार ।—अस्थि, —मास्तिस्, (पु०)
शिव जी का नामान्तर ।—आद्यः, (पु०) विष्णु
का नामान्तर ।—आयुषं, —आयुस्, (न०)
मनुष्य की जिन्दगी या उम्र ।—आशिनः, (पु०)
नरभन्नी । राक्षस ।—इन्द्रः, (पु०) राजा ।
बादशाह ।—उत्तमः, (पु०) १ सर्वोत्तम
मनुष्य । २ परमात्मा ।—कारः, (पु०) मनुष्य
का उद्योग या प्रयत्न । मरदानगी । पुरुषत्व ।—
कुणपः, (पु०)—कुणपम्, (न०) मनुष्य
की लाश या मृतक शरीर ।—कैसरिन्, (पु०)
विष्णु भगवान् का नृसिंहावतार ।—ज्ञानं, (न०)
मनुष्य जाति का ज्ञान ।—दध्, —द्वयत्, (वि०)
मनुष्य की लंबाई जितना ।—द्विष्, (पु०)
विष्णु का शत्रु ।—नायः, (पु०) १ चमूपति ।
२ राजा । बादशाह ।—पशुः, (पु०) नरपशु ।
—पुङ्गवः, —पुण्डरिकः, (पु०) उरुष्ठ या
प्रख्यात पुरुष ।—बहुमानः, (पु०) मनुष्य

जाति का सम्मान ।—मेघः, (पु०) गरमेघ
(यज्ञ) ।—घरः, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।
—वाहः, (पु०) १ गरुड का नाम । २ कुबेर ।
—व्याघ्रः, —शार्ङ्गलः (पु०)—सिंहः, (पु०)
१ पुरुषों में श्रेष्ठ । २ बहादुर । वीर ।—समवायः,
(पु०) पुरुषों की संख्या ।—सूक्तं, (न०) ऋग्वेद
के एक सूक्त का नाम जो सहस्रशीर्षा से आरम्भ
होता है ।

पुरुषं (न०) मेरु पर्वत का नामान्तर ।

पुरुषकः (पु०) । पुरुष की तरह दो पैरों पर खड़ा
पुरुषकम् (न०) । होना । बोड़े का जमना या
अलफ होना ।

पुरुषता (स्त्री०) } १ मरदानगी । वीरता । २
पुरुषत्वं (न०) } पुंसत्व ।

पुरुषायित (वि०) मनुष्य की तरह आचरण करने
वाला ।

पुरुषायितम् (न०) १ मनुष्य का आचरण । चाल-
चलन । २ स्त्री मैथुन करने का आसन विशेष ।

पुरुषवस् (पु०) एक चन्द्रवंशी राजा का नाम ।

पुरोटिः (पु०) १ नदी का प्रवाह या धार । २ पत्तों
की खरभर ।

पुरोडाश } (देखो पुरस् के अन्तर्गत ।
पुरोधस् }

पुर्व (धा० पर०) [पुर्वति] १ भरना । २ रहना ।
बसना । आवाद होना । ३ आमंत्रित करना ।
बुलावा भेजना ।

पुल (वि०) बड़ा । लंबा । चौड़ा । विशाल ।

पुलः (पु०) रोंगटों का खड़ा होना ।

पुलकः (पु०) १ भय या हर्ष के अनिरेक में शरीर
के रोंगटों का खड़ा होना । २ एक प्रकार का
पत्थर या रत्न । ३ खनिज पदार्थ । ४ रत्नदोष ।
५ गन्नाश पिण्ड । ६ हस्ताल । ७ शराब पीने का
काँच का गिलास । ८ राई का मसाला विशेष ।
—अङ्गः, (पु०) वरुण का फंदा ।—आलयः,
(पु०) कुबेर का नामान्तर ।—उद्गमः, (पु०)
रोमाञ्च ।

पुलकित (वि०) रोमाञ्चित । गद्गद । आनन्दित ।

पुलकिन् (वि०) [स्त्री०—पुलकिनी] जो रोमा-
ञ्चित हो । (पु०) कदंब वृक्ष विशेष ।

पुलस्ति (पु०) प्रज्ञा के मानसपुत्र ऋषिवा में
पुलस्त्य (पु०) स पञ्च ऋषि का नाम

पुला (शा०) गन्त का कच्चा, काग।

पुलाकः (पु०) १ कनक । अंकुर । २ उबला
पुलाकं (न०) हुआ चाँवल । भात । ३ संचेप ।

संग्रह । गुटका । ४ अल्पता । संक्षिप्तता । ५ चाँवल
का मौड़ । ६ क्षिप्रता । जल्दी ।

पुलाकिन् (पु०) वृक्ष ।

पुलायितं (न०) घोड़े की सरपट चाल ।

पुलितं (न०) १ नदी का रैनीला तट । २ पानी

पुलितः (पु०) के नीचे से हाल की निकली
हुई जमीन । चर । ३ नदीतट ।

पुलिनवति (स्त्री०) नदी ।

पुल्लिन्दकः (पु०) १ भारतवर्ष की एक प्राचीन

पुल्लिन्दकः असम्य जाति । २ इस जाति का एक
आदमी । जंगली । पहाड़ी ।

पुल्लिकः (पु०) सर्प ।

पुलोमन् (पु०) इन्द्र के ससुर एक दैत्य का नाम ।

—अरिः,— जित्,— भिद्,— द्विप्, (पु०)

इन्द्र के नामान्तर । —जा,—पुत्री, (स्त्री०)

पुलोमन की पुत्री और इन्द्र की भी सखी ।

पुप् (धा० पर०) [पोषति, पुष्यति, पुष्पाति,

पुष्ट, या पुषित] १ पोषण करना । पालना

पोसना । २ सहायता करना । ३ बढ़ने देना ।

सरसब्ज होने देना । ४ उन्नति करना । बढ़ाना ।

५ प्राप्त करना । कब्जे में करना । रखना । उप-

भोग करना । ६ दिखाना । प्रदर्शन करना । ७

बढ़ जाना या परवरिश पाना । ८ प्रशंसा करना ।

पुष्करं (न०) १ नीलकमल । २ हाथी की जिह्वा

की नोक । ३ ढोल का चाम । ढोलक का पुरा ।

४ तलवार की धार । ५ तलवार की म्यान । ६

तीर । ७ आकाश । अन्तरिक्ष । वायुमण्डल ।

८ पिंजड़ा । ९ जल । १० नखा । मद । ११

नृत्यकला । १२ बुद्ध । लड़ाई । १३ मेल ।

सम्मेलन । १४ अजमेर के निकटस्थ एक तीर्थ

स्थान का नाम ।

पुष्करः (पु०) १ तालाव । सरोवर । २ सर्प विशेष ।

३ ढोल । नगाड़ा । ४ सूर्य । ५ एक जाति के

उन बान्सा का नाम जो अनावृष्टि का कारण
होते हैं । ६ शिव जी का नामान्तर ।

पुष्करं (न०) ब्रह्माण्ड के सप्त विशाल भागों में

पुष्करः (पु०) से एक :—अक्षः, (पु०) विष्णु

का नाम ।—आर्यः,——आह्नः, (पु०)

सारस ।—तीर्थः, (पु०) अजमेर के पास का एक

तीर्थस्थान विशेष ।—पत्रं, (न०) कमल का

पत्ता ।—प्रियः, (पु०) मोम ।—बीजं, (न०)

कमलगद्दा । व्याघ्रः, (पु०) मगर । नक ।

वडियाल ।—गिह्वा, (स्त्री०) कमल की जड़ ।

भसीड़ा ।—स्थपतिः, (पु०) शिव जी का

नामान्तर ।—स्रज्, (स्त्री०) कमल की माला ।

पुष्करिणी (स्त्री०) १ हथिनी । २ कमल का

तालाव । ३ मील । तालाव । ४ कमल का

तालाव ।

पुष्करिन् (वि०) [स्त्री०—पुष्करिणी] (वह

सरोवर जिसमें) कमलों का बाहुल्य हो । (पु०)

हाथी ।

पुष्कल (वि०) १ बहुत । विपुल । अधिक । २

पूर्ण । पूरा । ३ सम्पन्न । चटकीला । भटकीला ।

४ सर्वोत्तम । सर्वश्रेष्ठ । मुख्य । ५ समीप । ६

गूँजने वाला । प्रतिध्वनि करने वाला । चिल्लाने

वाला । [पर्वत ।

पुष्कलः (पु०) १ एक प्रकार का ढोल । २ मेरु-

पुष्कलम् (न०) अनाज नापने का एक मान जो

६४ मुठ्ठियों के बराबर होता था । २ चार

घास की भिन्ना ।

पुष्कलकः (पु०) १ हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी

निकलती है । २ पञ्चर । खूँटी । मेख । कील ।

पुष्ट (व० क०) १ पोषण किया हुआ । पाला हुआ ।

२ तैयार । मौटा ताजा । बलिष्ठ । ३ शलवर्द्धक ।

मौटा ताजा बनाने वाला । ४ सम्पन्न । अच्छी तरह

सम्पन्न । ५ पूरी तरह शब्द करने वाला । चिल्लाने

वाला । ६ मुख्य । प्रधान । ७ पूर्ण । पूरा ।

पुष्टिः (स्त्री०) १ पोषण । २ मोटाई । ताजापन । ३

बलिष्ठता । ४ सम्पत्ति । मालमत्ता । सुख की

सामग्री या साधन । ५ सम्पन्नता । चटकीलापन

या भइकीलापन । ६ इन्द्रि । पुर्याता ।—कर,
(वि०) पुष्ट करने वाला । बल-वीर्य वर्द्धक ।—
कर्मन्, (न०) एक धार्मिक अनुष्ठान जो साँसा-
रिक समृद्धि की प्राप्ति के लिये किया जाता है ।
—द, (वि०) पुष्टि देने वाला । ताजगी देने
वाला । समृद्धिकारी । वर्धन, (वि०) समृद्धि-
कारक ।—स्वास्थ्यवर्द्धक । वर्धनः, (पु०)
सुरा । अरुणशिखा । कुक्कुट ।

(घा० पर०) [पुष्प्यति] १ खोलना ।
२ धौंकना । फूँक मारना । ३ पसारना । खिलना ।

(न०) १ फूल । २ स्त्री का रजोवर्म या मासिक
वर्म । ३ पुष्कराज । ४ नेत्ररोग विशेष । ५ कुबेर
का पुष्पक विमान । ६ वीरना । (प्रेमियों की
भावा में) सुशीलता । ७ विकाश । फूलना ।—
अञ्जनम्, (न०) एक प्रकार का अंजन जो
पीतल के हरे कसाव के साथ कुछ अन्ध दवाइयों
के संमिश्रण से पीस कर तैयार किया जाता है ।
—अञ्जलिः (पु०) फूलों से भरी अँजली जो
किसी देवता या पूज्य पुरुष को चढ़ायी जाय ।—
अम्बुजम्, (न०) मकरन्द ।—अवचयः,
(पु०) फूलों को एकत्र करना या चुनना ।—
धन्वः, (पु०) कामदेव का नामान्तर ।—
आकर, (वि०) फूलों से सज्ज ।—आगमः,
(पु०) वसन्त ऋतु ।—आजीवः, (पु०)
मालाकार ।—आपीडः, (पु०) गुलदस्ता ।—
—इधुः, (पु०) कामदेव ।—आसर्व, (न०)
शहद । मधु ।—उद्यानं, (न०) बाटिका । बाग ।
—उपजीविन्, (पु०) माली । मालाकार ।
—कालः, (पु०) वसन्त ऋतु ।—कीटः,
(पु०) भौंरा ।—केतनः,—केतुः, (पु०)
कामदेव । (न०) मकरन्द । पराग ।—ग्रहं, (न०)
शीशे का घर या कमरा जिसमें पौधे सर्दी से
बचा के रखे जाते हैं ।—घातकः, (पु०) बौंस ।
—चापः, (पु०) कामदेव ।—चामरः, (पु०)
१ दौनामरुआ । २ केवड़ा ।—जं, (न०) पुष्प-
रस ।—दः, (पु०) वृक्ष ।—दन्तः, (पु०) शिव
के एक गण का नाम । २ महिषस्तोत्र के रचयिता
का नाम । ३ वायव्य कोण के दिग्गज का नाम ।

—दामन्, (न०) पुष्पहार ।—द्रवः, (पु०)
फूल का रस ।—द्रुमः, (पु०) फूलने वाला
वृक्ष ।—ध्वः, (पु०) जाति बहिष्कृत ब्राह्मण
की सन्तान ।—धनुस्—धन्वन्, (पु०) काम
देव ।—धारणः, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।
—ध्वजः, (पु०) कामदेव का नामान्तर ।—
मिताः, (पु०) मधुमक्षिका ।—निर्यासः,
निर्यासकः, (पु०) पुष्परस ।—नेत्रं, (न०)
फूल की डंडी ।—पत्रिन्, (पु०) कामदेव ।
—पथः, (पु०) भग । स्त्री का गुप्ताङ्ग ।—पुरं,
(न०) पटना का नामान्तर ।—प्रचयः, (पु०)
प्रचायः, (पु०) पुष्प तोड़ना ।—प्रचायिका,
(स्त्री०) पुष्पसङ्ग्रह ।—प्रस्तारः, (पु०)
फूल शय्या ।—वाणः,—वाणः, (पु०) काम-
देव ।—भवः, (पु०) फूल का रस ।—मंज-
रिका, (वि०) नील कमल ।—माला,
(स्त्री०) फूलों की माला ।—मास्तः, (पु०)
१ चैत्रमास । २ वसन्त ऋतु ।—रजस्, (न०)
मकरन्द । पराग ।—रथः, (पु०) गाड़ी जो
युद्धोपयोगी न हो, जिसमें साधारणतया बैठ
घूमा फिरा जाय ।—रागः,—राजः, (पु०)
पुष्कराज ।—रेणुः, (पु०) मकरन्द ।—लोचनं,
(न०) नागकेशर वृक्ष ।—लावः, (पु०)
पुष्प इकट्ठा करने वाला ।—लावी, (स्त्री०)
मालिन ।—लिप्तः,—लिहू, (पु०) मधु-
मक्षिका ।—वदुकः, (पु०) वीर । बहादुर ।—
वर्षः, (पु०)—वर्षणं (न०) फूलों की वर्षा ।
पुष्पवृष्टि ।—वाटिका,—वाडी, (स्त्री०) फूल-
बगिया ।—वेणी, (स्त्री०) फूलों की माला ।—
शकटी, (स्त्री०) आकाशवाणी ।—शय्या, (स्त्री०)
फूल की शय्या ।—शरः,—शरासनः,—
सायकः, (पु०) कामदेव ।—समयः, (पु०)
वसन्त ऋतु ।—सारः,—स्वेदः, (पु०)
अमृत या फूलों से बना शहद ।—हास्ता, (स्त्री०)
रजस्वला स्त्री ।—हीना, (स्त्री०) स्त्री जिसकी
उम्र अधिक हो जाने से सन्तान न होती हो ।

पुष्पकं (न०) १ फूल । २ पीतल की भस्म या
मोर्चा । ३ लोहे का प्याला । ४ विमान विशेष

निसे रावण ने अपने बड़ भाई ऊबेर से छीन
लिया था । २ बलय । कङ्कण । ६ अजस विशेष
७ चेन्न राग विशेष ।

पुष्पधयः } (पु०) मधुमक्षिका । शहद की मक्खी ।
पुष्पधयः }

पुष्पधन् (वि०) १ फूल जैसा । फूला हुआ । २
फूलों से सजाया हुआ । (पु० द्वि०) चन्द्र
और सूर्य ।

पुष्पवती (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।

पुष्पा (स्त्री०) चम्पा नगरी ।

पुष्पिका (स्त्री०) १ दाँत का मैल । २ लिङ्ग का
मैल । ३ अध्याय के अन्त का वह भाग जिसमें
वर्णन किये हुए प्रसङ्ग की समाप्ति सूचित की
जाती है । यथा "इति श्रीमन् महाभारते आदि ।

पुष्पिणी (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।

पुष्पित (व० कृ०) १ पुष्पसंयुक्त । फूला हुआ ।
२ पूर्य विकसित ।

पुष्पिता (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।

पुष्पिन् (वि०) फूलदार । फूलों वाला ।

पुष्पः (पु०) १ कलियुग । २ पौषमास । ३ पुन्य
नक्षत्र ।

पुष्पलकः (पु०) १ कस्तूरी सुग । २ चपराक । चँवर
लिये हुए जैन साधु । ३ खूंट । कील ।

पुस्तं (व०) १ गीली मिट्टी का पलास्तर । चित्र-
कारी । लीपना पोतना । २ मिट्टी लगाने या खोदने
आदि का काम । ३ लकड़ी या धातु की
बनी कोई वस्तु । ४ पुस्तक । हाथ की लिखी
पोथी । किताब । —कर्मन् (न०) गारा की
अस्तरकारी । चित्रकारी ।

पुस्तकं (न०)

पुस्तकः (पु०) } किताब । हाथ की लिखी पोथी ।
पुस्ती (स्त्री०) }

पू (धा० आत्म०) [पवते, पूयते, पुनाति, पुनीते,
पूत, (निजन्त) पावयति] १ पवित्र करना ।
माँजना । २ साफ करना । ३ भूखी अलग करना ।
फटकना । ४ प्रायश्चित्त करना । ५ लक्षण से
पहचानना । ६ ईजाद करना । सोच विचार कर
कोई बात नई पैदा करना ।

पूग (पु०) १ वेर समूह समूह । २ सख्या ।
सभा सच ३ सुपारी का पेड़ । ४ स्वभाव ।
मिजाज ।

पूगं (न०) सुपारी फल । —पार्श्व, (न०) १ पीक-
दान । पानदान । —पीठं—पीठं (न०) पीक-
दान । —फलं, (न०) सुपादी । —वैरं, (न०)
अनेक लोगों से शत्रुता ।

पूज् (धा० उभय०) [पूजयति—पूजयते, पूजित]
१ पूजना । पूजन करना । सम्मान करना । सम्मान
पूर्वक स्वागत करना

पूजक (वि०) [स्त्री०—पूजिका] पुजारी ।
सम्मान करने वाला ।

पूजनं (न०) पूजा । अर्चा । सम्मान । प्रतिष्ठा ।
मान । —घ्राहं, (वि०) पूज्य । पूजा के योग्य ।

पूजित (व० कृ०) १ सम्मानित । २ पूज्य । ३
स्वीकृत । ४ सम्पन्न । ५ शिकारिश किया हुआ ।
प्रशंसित ।

पूजित (वि०) पूज्य । माननीय ।

पूजिलः (पु०) देवता ।

पूज्य (वि०) मान करने योग्य । पूजा करने योग्य ।

पूज्यः (पु०) ससुर । पत्नी का पिता या पति का
पिता । [करना । जमा करना ।

पूष् (धा० उभय०) [पूषयति—पूषयते] एकत्र

पूत (व० कृ०) १ पवित्र । शुद्ध । २ सूप से फटका
हुआ । ३ प्रायश्चित्त करके पवित्र किया हुआ ।
४ ईजाद किया हुआ । आविष्कार किया हुआ ।
५ सड़ा हुआ । बुला हुआ । बदबूदार । —
आत्मन्, (वि०) साफ दिल का । (पु०)
विष्णु का नामान्तर । —कतायी, (स्त्री०)
इन्द्राणी । शची । —कतुः, (पु०) इन्द्र का
नामान्तर । —तृणं, (न०) सफेद कुश । —द्रुः,
(पु०) पलाश वृक्ष । —धान्यं, (न०) तिल ।
—पाप्मन्, (वि०) पाप से मुक्त । —फलः,
(पु०) कटहल का वृक्ष ।

पूतं (न०) सचाई ।

पूतः (पु०) १ शुद्ध । २ सफेद कुश ।

पूतना (स्त्री०) १ एक रावली जो कंस की प्रेरणा
से गोकुल में श्रीकृष्ण को मारने गयी थी, किन्तु

श्रीकृष्ण द्वारा स्वयं मारी गया। २ राक्षसी।—
 अरिः,—सूदनः,—हनु, (पु०) श्रीकृष्ण।
 पूति (वि०) सड़ा हुआ। बुसा हुआ। बदबूदार।—
 आराडः, (पु०) कस्तूरी मृग।—काष्ठं, (न०)
 देवदारुवृक्ष।—काष्ठकः, (पु०) कदहल का वृक्ष।
 —गन्धः, (वि०) सड़ा। बुसा। दुर्गन्धयुक्त।—
 गन्धः, (पु०) १ सबाइन। बुसाइन। २ गन्धक।
 —गन्धि, (वि०) बदबूदार। सड़ा हुआ।—
 नासिक, (वि०) सड़ी हुई नाक वाला।—
 वक्त्र, (वि०) वह जिसके मुख से दुर्गन्ध
 आती हो।—व्राणं, (न०) पका हुआ फोड़ा।
 पूतिः (स्त्री०) १ स्त्रच्छता। पवित्रता। (न०)
 १ मैला जल। २ पीप। मवाद।
 पूतिक (वि०) सड़ा हुआ। बुसा हुआ। गंदा।
 पूतिकं (न०) विष्टा। मल।
 पूतिका (स्त्री०) एक प्रकार की रूखरी।—मुखः,
 (पु०) दुपत्ता शङ्ख।
 पून (वि०) नष्ट किया हुआ।
 पूयः (पु०) पुआ। मालपुआ।
 पूपला
 पूपली
 पूपालिका
 पूपाली
 पूषिका } (स्त्री०) मालपुआ। पुआ।
 पूयं (न०) १ पीप। मवाद।—रक्तः, (पु०)
 पूयः (पु०) १ नासिका का रोग विशेष। रक्तः,
 (न०) १ कचलोहू। २ नाक से पीप मिला
 हुआ रक्त का निकलना।
 पूर (धा० आत्म०) [पूर्यते, पूर्ण] १ भरना।
 पूर्य करना। २ प्रसन्न करना। सन्तुष्ट करना।
 पूरं (न०) भूप विशेष।—उत्पीडः, (पु०) जल
 की बाढ़।
 पूरः (पु०) १ भरना। पूर्य कर देना। २ सन्तुष्ट
 करना। प्रसन्न करना। अधाना। ३ उड़ेलना।
 ४ नदी या समुद्र के जल की बाढ़। ५ धार या
 बाढ़। ६ सरोवर। तालाब। ७ धाव का भरना
 या साफ करना। ८ एक प्रकार की रोटी या पूड़ी।
 पूरक (वि०) १ पूरा करने वाला। सन्तुष्ट करने
 वाला। अधाने वाला।

पूरकः (पु०) नीवू या जमीरी का वृक्ष। २ पितृ-
 श्राद्ध में सब से पीछे दिया जाने वाला पिण्ड।
 ३ गुणक अङ्क।
 पूरण (वि०) [स्त्री०—पूरणी] १ भरा हुआ।
 पूर्ण करने वाला। २ क्रमसूचक संख्या जैसे
 प्रथम, द्वितीय आदि। ३ अधाने वाला।—
 प्रत्ययः, (पु०) एक प्रत्यय जो किसी शब्द में
 पीछे लगा देने से क्रम बतलावे जैसे दूसरा,
 तीसरा आदि।
 पूरणं (न०) १ पूर्ति। २ परिपूर्ति। समाप्ति। २
 फुलाव। सृजन। ३ पावन। (यथा वचनपालन)
 किसी काम को पूरा करने की क्रिया। ४ रोटी या
 पूड़ी विशेष। ५ मृतक कर्म में व्यवहृत होने वाली
 रोटी या पूड़ी। ६ वृष्टि। मेह। ७ ताना। नाव
 खींचने का रस्ता। ८ श्रेष्ठ गुणन।
 पूरणाः (पु०) १ पुल। बाँध। २ समुद्र।
 पूरिका (स्त्री०) पूड़ी।
 पूरित (व० क०) १ भरा हुआ। पूर्ण। २ बाधा
 हुआ। ढका हुआ। ३ गुणा किया हुआ।
 पूर्य (व० क०) १ पूरित। भरा हुआ। २ तमाम।
 समूचा। कुल। ३ भरा पूरा। ४ पूर्ण किया
 हुआ। समाप्त किया हुआ। ५ बीता हुआ।
 गुजरा हुआ। ६ सन्तुष्ट। अधाया हुआ। ७ शब्द-
 कारी। स्तनस्तनाने या खनखनाने वाला। ८ बलिष्ठ।
 दृढ़। ९ स्वार्थी।—अङ्कः, (पु०) पूरी संख्या।
 अभिन्न अङ्क।—अभिलाष, (वि०) सन्तुष्ट।
 अधाया हुआ। आसकाम।—आनकं, (न०) १
 डोल। नगाड़ा। २ नगाड़े का शब्द। ३ पात्र।
 ४ चन्द्रकिरण।—इन्दुः, (पु०) पूर्णचन्द्र।
 —उपमा, (स्त्री०) सर्वाङ्गपूर्ण उपमा जिसमें
 उपमान, उपमेय, साधारण धर्म और उपमा प्रति-
 पादक बातें हों।—कुबुद, (वि०) पूरे कुब्ज
 वाला।—काम, (वि०) आसकाम।—कुम्भः,
 (पु०) १ भरा हुआ घड़ा। २ युद्ध का विशेष
 प्रकार। ३ दीवाल में घड़े के बराबर का सुरास।
 —पार्श्व, (न०) १ अनाज का माप जो २५६
 मृदियों के बराबर होता है। २ बक्स जिसमें भर
 कर ठसठसों पर नातेदार के पास सौगात भेजी

गय — वा — वीन (पु०) ताव
खाना न सा (स्त्री०) पूरिमा
पूर्णता ।

पूरेकः (पु०) १ वृत्त विशेष । २ रसोद्भवा । ३
कुण्ड । ताञ्जवृद्ध ।

पूरिमा (स्त्री०) उजियारे पाख की अन्तिम
पूरिमासी) निधि जिस दिन चन्द्रमा का सगडल
पूर्ण दिखलाई पड़ता है ।

पूत (वि०) १ पूर्ण । पूरा । २ छिपा हुआ । ढका
हुआ । ३ पोषित । रक्षित ।

पूत (न०) १ पूति । २ पालन पोषण । ३ पुरस्कार ।
इनाम । ४ धर्मादे अथवा परोपकार के कार्य
विशेष । पूत की परिभाषा इस प्रकार है:—

“वापाभूपतदागति देवतायनवाभि न ।

अद्भुतः नकारात्तः पुतन्निधमिषीयते ॥”

पूतिः (स्त्री०) १ पूर्ण करने की क्रिया । २ समाप्ति ।
(वचन) पालन । ३ नृषि ।

पूर्व (वि०) १ प्रथम । सब के आगे । २ पूर्वीय ।
पूर्व दिशा का । ३ पहिले का । ४ प्राचीन ।
पुरातन । ५ अगला । पूर्व वाला । ६ पूर्वकथित ।
ऊपर कहा हुआ । —अचलः, (पु०) —
—अग्निः, (पु०) उदयाचल । —अपर,
(वि०) १ पूर्वी पश्चिमी । २ पहला । अन्त
का । ३ पूर्वकालीन और पश्चाद्दर्शी । पहला
और अगला । ४ दूसरे से सम्बन्ध युक्त ।
अपर, — (न०) १ जो आगे और पीछे हो ।
२ सम्बन्ध । प्रमाण और कोई विषय जिसे सिद्ध
करना है । —अभिमुख, (वि०) पूर्व को मुख किये
हुए । —अवधिः, (पु०) पूर्वी समुद्र । —अर्जित,
(वि०) पूर्व कर्मों से उपार्जित । —अर्जित, (न०)
पुरतैनी ज्ञानदायक या सम्पत्ति । —अर्थ (न०) —
अर्थः (पु०) पहला आधाभाग (शरीर का)
ऊपरी भाग । —आवेदकः, (न०) सुहई (वादी) ।
आपादा, — (स्त्री०) २० वें नक्षत्र का नाम ।
इतर, — (वि०) उत्तरी-पूर्वी । —कर्मन्, (न०)
१ पूर्व समय में किया हुआ कर्म । २ प्रथम किये
जाने वाला कर्म । ३ कर्म जो पूर्वजन्म में किये
हैं । —कल्पः, (न०) पहले के समय । —कायः,
(पु०) १ जानवरों के शरीर का भाग ।

२ सृण्व व शरीर का ऊपरी भाग काल
(पु०) प्राचीन काल । —कालिका, —
कालोन, — (वि०) प्राचीन । काष्ठा, —
(स्त्री०) पूर्व दिशा । —कोटिः, (स्त्री०)
पूर्वपक्ष । —गङ्गा, (स्त्री०) नर्मदा नदी का
नाम । —जोदित, (वि०) पूर्वकथित । पूर्व-
वर्णित — ज, (वि०) १ प्रथम उत्पन्न । २ प्राचीन ।
पुरातन । ३ पूर्वी । —ज, (पु०) १ ज्येष्ठ आता ।
२ बड़ी स्त्री का पुत्र । ३ पूर्वपुरुष । —जन्मन्, —
(न०) पूर्वजन्म । (पु०) ज्येष्ठ आता । —जा,
(स्त्री०) बड़ी वहिन । —जातिः, (स्त्री०) पूर्व
जन्म । —ज्ञानं, (न०) पूर्वजन्म का ज्ञान । —
दक्षिण, (वि०) दक्षिण पूर्व का कोने वाला । —
दक्षिणा, (स्त्री०) दक्षिण पूर्व । —द्विपतिः,
— (पु०) इन्द्र । दिनः, (न०) दोपहर के
पहिले । —दिग्, (स्त्री०) पूर्व दिशा — दिग्,
— (न०) भाग्य का लिखा हुआ । देवः, —
(पु०) १ प्राचीन देवता । २ दैत्य या दानव ।
३ पितृ । देशः, — (पु०) पूर्वीय देश अथवा
भारतवर्ष का पूर्वीय भाग । पक्षः, — (पु०) ।
१ पूर्व कोटि । २ मास का पहला पखवारा । ३ किसी
तर्क के सम्बन्ध में प्रथम आपत्ति । प्रथम आपत्ति ।
४ सुकहभा । अभियोग । पदं, — (न०) किसी
समासान्त शब्द का प्रथम शब्द या किसी वाक्य
का पूर्ण अंश । पर्यतः, — (पु०) उदयाचल ।
—पाञ्चालक, (वि०) पूर्वी पाञ्चाल से सम्बन्ध
रखने वाला । —पाणिनीयाः, (पु० बहु०)
पूर्व देश में रहने वाले पाणिनि के अनुयायी ।
—पितामहः, (पु०) पूर्वपुरुष । पुरखा । —
पुरुषः, (पु०) १ ब्रह्मा । १ तीनों पीढ़ियों में से
कोई एक । (पितृ, पितामह-प्रपितामह) ३ पूर्व-
पुरुष । —फल्गुनी, (स्त्री०) । ११ वें नक्षत्र ।
भाद्रपदा, — (स्त्री०) २१ वें नक्षत्र । —भुक्ति,
(स्त्री०) पहले का कर्मा । —भूत, (वि०)
पहला । बीता हुआ । —श्रीमांसा, (स्त्री०)
हिन्दूदर्शन शास्त्र विशेष, जिसमें कर्मकाण्ड
सम्बन्धी विषयों का निर्णय किया गया है । —
रङ्गः, (पु०) वह गान या स्तुति जो किसी

आभिनय क आरम्भ में विभिन्न प्रशमनार्थ नटों द्वारा गायी जाती है। —रात्रि, (पु०) रात्रि का प्रथम भाग। —रूपं, (न०) १ शीघ्र होने वाले परिवर्तन की सूचना। २ रोगोत्पत्ति का लक्षण। २ आराम सूचक लक्षण। ३ आसरा। —वयस्, (वि०) युवा। जवान। —वर्तिन्, (वि०) पहले का। —वाद्, (पु०) व्यवहार शास्त्रानुसार वह अभिभाग जो न्यायालय में उपस्थित किया जाय। पहला दावा। नालिश। —वादिन्, (पु०) वादी। मुद्दै। वृत्तं, — (न०) १ पहले का हाल २ पूर्व आचरण। —सन्ध्या, (स्त्री०) आतःकाल। भोर। तड़का। —सर, (वि०) आगे जाने वाला। —सागरः, (पु०) पृथ्वी समुद्र। —साहसः, (पु०) प्रथम या तीन बड़े भारी अर्थद्वयों में से एक। —स्थितिः, (स्त्री०)। पूर्ववस्था।

पूर्व (न०) १ अगला भाग। (अन्यथा०) पहले २ पेशतर। आरम्भ में।

पूर्वः (पु०) पुरखा। पूर्वपुरुष।

पूर्वक (वि०) १ सहित। साथ। पूर्ववर्ती।

पूर्वकः (पु०) पूर्वपुरुष। पुरखा।

पूर्वगम् (वि०) पहले जाने वाला। [भोर।

पूर्वतस् (अन्यथा०) पूर्व दिशा में। पूर्व दिशा की

पूर्वत्र (अन्यथा०) पहले के भाग में। पूर्व में।

पूर्वघत् (अन्यथा०) पहिले की तरह।

पूर्विन् (वि०) [स्त्री०—पूर्विणी] पहिले का।

पूर्वीण (वि०) १ प्राचीन। पुरातन। २ पुरतैनी।

पुरखों की।

पूर्वेद्युस् (अन्यथा०) १ अगले दिन। २ बीते

हुए कल। ३ भोर में। सवेरे। दिन के पूर्वार्द्ध में।

४ बड़ी सवेरी।

पूज् (धा० पर०) [पूजति, पूजयति-पूजयते]

बेर करना। पूज्य करना। संग्रह करना।

पूलः } (पु०) मुट्ठा। बंडल। गट्ठा।

पूलकः } (पु०) मुट्ठा। बंडल। गट्ठा।

पूलिका (स्त्री०) पूड़ी।

पूषः } (पु०) शङ्खुल का पेड़।

पूषकः } (पु०) शङ्खुल का पेड़।

पूपन् (पु०) [कृत्ता-पूपा, -पशौ-पशुः] सूर्य

—अस्तुद्ध, (पु०) शिव का नामान्तर।—

आन्यजः, (पु०) १ बादल। २ इन्द्र।—

भासा, (स्त्री०) इन्द्रपुरी। अमरावती।

पृ (धा० आत्म०) [प्रियते, पृत] क्रियाशील

होना। कामकाज में लगा रहना। मशगूल

होना।

पूत (व० क०) १ मिला हुआ। मिश्रित। २

हुआ हुआ। संसर्गान्वित। संयुक्त।

पूतं (न०) धनदौलत। सम्पत्ति।

पूतिः (स्त्री०) स्पर्श। संसर्ग। युक्तता।

पूत्थं (न०) सम्पत्ति। धनदौलत।

पृच् (धा० आत्म०) [पूक्ते, पूक्ष्य] १ संसर्ग में

आना। जेटना। मिलाना। २ संमिश्रण होना।

३ संयोगान्वित होना। सन्नुष्ट करना। भरना।

अधना। ४ बढ़ाना। वृद्धि करना।

पूच्छकः (पु०) पूँछने वाला। जिज्ञासु।

पूच्छनम् (न०) जिज्ञासा। प्रश्न।

पूच्छा (स्त्री०) १ प्रश्न। जिज्ञासा। २ अविश्व

सम्बन्धी प्रश्न।

पूज् (धा० आत्म०) [पूंक्ते] संसर्ग में आना। स्पर्श

करना।

पूत् (स्त्री०) सेना।

पूतना (स्त्री०) १ सेना। २ संन्यतल, जिसमें २४३

हाथी, २४३ रथ, ७२३ घोड़े और १२१५ पैदल

सिपाही होते हैं। ३ सुतमेव। युद्ध। लड़ाई।—

साहः (पु०) इन्द्र का नामान्तर

पृथ् (धा० उभय०) [पृथयति, पृथयते] १

बढ़ना। २ फैलना। ३ भेजना।

पृथक् (अन्यथा०) १ अलग अलग। एकाकी।

अकेला। २ भिन्न। जुदा।—आत्मता, (स्त्री०)

१ विरक्ति। वैराग्य। २ भेद। अन्तर। निर्णय या

कैसला।—आत्मन्, (वि०) भिन्न। अलहदा।

जुदा।—आत्मिका, (स्त्री०) व्यक्तित्व। व्यक्तित्व

अस्तित्व।—करणं, (न०)—क्रिया, (स्त्री०)

अलग करने का काम।—कूल, (वि०) जुदे लून-

दान का।—सेत्रः, (पु०) (बहु०) वे लड़के जो

एक पिता, किन्तु भिन्न माताओं अथवा भिन्न भिन्न

वण की माताआ की काख से उपजत हुआ है।

वर (वि०) एकका चान वाला वन (पु०)

१ मूल । वेदकृष । २ नीच व्यक्ति । कमीना । आदमी । पापी जन ।—भावः, (पु०) अलह-दगी । जुदापन । रूप,—(वि०) भिन्न प्रकार या जाति के ।—विध, (वि०) भिन्न भिन्न । जुदा जुदा ।—शय्या, (स्त्री०) अलग सोने वाला ।—स्थितिः, (स्त्री०) भिन्न अस्तित्व ।

पृथ्वी (स्त्री०) देखो पृथिवी ।

पृथा (स्त्री०) पाण्डु राजा की दो रानियाँ थीं । उन दो में से कुन्ती का दूसरा नाम पृथा था ।—जः,—तनयः,—सुतः,—सुनुः, (पु०) प्रथम तीन पाण्डवों का नाम, किन्तु विशेषकर अर्जुन का ।—पतिः, (पु०) राजा पाण्डु ।

पृथिका (स्त्री०) वृश्चिकादि जाति का शतपदविशिष्ट कोई जीव ।

पृथिवी (स्त्री०) धरा । भूमि ।—इन्द्रः,—ईशः, (पु०)—कित्त, (पु०)—पालः,—पालकः,—भुजः,—भुजः,—शक्रः, (पु०) राजा ।—तलः, (न०) धरातल । जमीन की सतह ।—पतिः, (पु०) १ राजा । २ वमराज ।—मण्डलः, (पु०)—मण्डलम् (न०) भूमण्डल ।—रुहः, (पु०) वृक्ष । पेड़ ।—लोकः, (पु०) भूलोक । मर्त्य-लोक ।

पृथु (वि०) [स्त्री०—पृथु या पृथ्वी] १ चौड़ा । विस्तृत । २ अधिक । विपुल । ३ बड़ा । महान् । ४ विस्तारित । ५ असंख्य । अगणित । ६ चतुर । तेज । चालाक । ७ आवश्यक ।

पृथुः (पु०) १ अग्नि । २ एक राजा का नाम । राजावेष्टु का पृथु पुत्र था ।

पृथुः (स्त्री०) अफीम । अहिफेन ।—उदरः, (वि०) बड़े पेटवाला । भ्रमधूसर ।—उदरः,—(पु०) मेड़ा । मेष ।—जघनः,—नितम्बः, बड़े चूतड़ों वाला । पन्नः, (पु०)—पन्नः, (न०) १ बाल लहसन । प्रथ—यशस् (वि०) दूर दूर तक प्रसिद्ध ।—रोमन्, (पु०) मछली ।—श्री, (वि०) बहुत बड़ा । समृद्धिशाली ।—श्रोणि, (वि०) मौटी कमर वाली ।—सम्पद्,

(वि०) धनी । धनवान् । स्कन्ध, (पु०) शूकर । सुअर ।

पृथुकं (स्त्री०) } चिह्ना । व्योरा । चिउरा ।

पृथुकः (पु०) } (पु०) यच्चा ।

पृथुका (स्त्री०) लड़की ।

पृथुल (वि०) चौड़ा । लंबा । विस्तृत ।

पृथ्वी (स्त्री०) १ धरा । भूमि । २ पृथिवी तत्व ।

३ बड़ी इलायची । ४ एक छन्द का नाम ।

—ईशः,—पतिः,—पालः,—भुजः,—(पु०)

राजा ।—खातः, (न०) गुफा । खोह । माँद ।

—गर्भः, (पु०) गर्बोश का नाम ।—गृहः,

(न०) गुफा । खोह ।—जः, (पु०) १ वृक्ष ।

पेड़ । २ मङ्गल ग्रह ।

पृथ्वीका (स्त्री०) १ बड़ी इलायची । २ छोटी इलायची ।

पृदाकुः, (पु०) १ बिच्छू । २ चीता । ३ सर्प ।

छोटी जाति का जहरीला साँप । ४ वृक्ष । ५

हाथी । ६ तेंदुआ ।

पृश्नि } (वि०) १ छोटा । थोड़ा । खर्वाकार २
पृष्णि } सुकोमल । निर्बल । नाजुक ।
चितीदार । धब्बादार ।

पृश्निः (पु०) १ किरण । २ जमीन । भूमि । ३ तारा-गणयुक्त आकाश । ४ कृष्णमाता देवकी का दूसरा नाम ।—गर्भः,—धरः,—भद्रः, (पु०) कृष्ण के नामान्तर ।—शृङ्गः, (पु०) १ कृष्ण का नामान्तर । २ गणेश का नामान्तर ।

पृश्निका }
पृष्णिका } (स्त्री०) जलकुम्भी । एक पौधा जो
पृश्नी } जल में उत्पन्न होता है ।
पृष्णी }

पृषत् (न०) जल या अन्य किसी तरल पदार्थ की

बूँद ।—अंशः,—अश्वः, (पु०) १ पवन ।

हवा । २ शिव का नामान्तर ।—आयुः, (न०)

दही में मिला हुआ घी ।—पतिः, [=पृषतां-

पतिः] पवन । हवा ।—बलः, (पु०) पवन-

देव के श्रेष्ठ का नाम ।

पृषतः (पु०) १ चितीदार हिरन । २ जलबिन्दु । ३

धब्बा । चिह्न ।—अश्वः, (पु०) हवा । पवन ।

पृषत्कः (पु०) तीर । बाण ।

पृथति: } (पु०) जलबिन्दु ।
पृथन्ति: }

पृथाकरा (स्त्री०) छोटा पत्थर ।

पृथातकम् (न०) धी और वही का सम्मिश्रण ।

पृथादरः (पु०) पवन । हवा । [हुआ ।

पृष्ट (न० क०) १ जिज्ञासित । पूछा हुआ । २ छिड़का

पृष्टाहायनः (पु०) १ अन्न विशेष । २ हाथी ।

पृष्टिः (स्त्री०) जिज्ञासा । प्रश्न । सवाल ।

पृष्ठं (न०) १ पीठ । पिछला भाग । पीछे का हिस्सा । २ जानवर की पीठ । ३ सतह । तल ।

ऊपरी भाग । ४ पीठ या दूसरी ओर (किसी पत्र या दस्तावेज का) । ५ समतल छत । ६ पुस्तक का पन्ना ।—अस्थि, (न०) मेरुदण्ड ।—गोपः, —रत्नः, (पु०) वह सिपाही जो किसी योद्धा की पीठ की रक्षा पर नियुक्त हो ।—ग्रन्थि, (वि०) कुबड़ा ।—चक्षुस्, (पु०) दिग्दर्शिनी पत्रिका । ताश ।—तल्पनं, (न०) हाथी की पीठ की रग विशेष ।—दृष्टिः, (स्त्री०) १ कैकड़ा ।

३ भालू । रीढ़ ।—फलं, (न०) किसी पिंड के

ऊपरी भाग का क्षेत्रफल ।—भागः, (पु०)

पीठ ।—मांसं, (न०) १ पीठ का मांस । २ पीठ की गुमड़ी ।—मांसादः, —मांसादनः, (वि०)

जुगलधोर ।—मांसादम्, —मांसादनम्, (न०)

जुगली ।—यानं, (न०) सवारी (घोड़े के पीठ की)—वास्तु (न०) मकान का ऊपर का

तल्ला ।—वाहः, (पु०)—वाह्यः, (पु०) बैल

जिसकी पीठ पर बोझा लादा जाता हो ।—शयः, (वि०)

पीठ पर सोने वाला ।—शृङ्गः, (पु०)

जंगली बकरा ।—शृङ्गिन्, (पु०) १ भेड़ ।

मेढ़ा । २ भैंसा । ३ हिजड़ा । ४ भीम का

नामान्तर ।

पृष्ठकं (न०) पीठ ।

पृष्ठतस् (अन्य०) १ पीछे । पीठ पीछे । पीछे से ।

२ पीठ की ओर । पीछे की ओर । ३ पीठ पर ।

४ पीठ के पीछे । गुप्तचाप । गुप्तपुष ।

पृष्ठय (वि०) पीठ सम्बन्धी ।

पृष्ठयः (पु०) वह घोड़ा जिसकी पीठ पर बोझा लादा

जाता हो ।

पृष्णिः (स्त्री०) ऐसी ।

पृ (धा० पर०) [पिथति, पृणाति, पूर्ण] १

भरना । भर देना । पूरा कर देना । २ परिपूर्ण

करना । (बचन) पालन करना । (आशा) पूरी

करना । फूँक से फूल जाना या फूटना । ४ तृप्त

करना । अद्याना । ५ पालन पोषण करना ।

पेन्चकः (पु०) १ उल्लू । हाथी की पूँछ की जड़ ।

३ सेज । शय्या । ४ बादल । ५ जूँ । चील्हर ।

पेन्चकिन् (पु०) } हाथी ।

पेचिलः (पु०) }

पेंजूषः—पेज्जूषः (पु०) कान का मैल या डेठ ।

पेटं (न०) } १ पेटी । संदूक । टोकरा । थैला ।

पेटः (पु०) } २ समूह । (पु०) फैली हुई डँग-

लियों सहित खुला हाथ ।

पेटकं (न०) } १ टोकरी । पिटारा । थैला ।

पेटकः (पु०) } बोरा । २ समूह । समुदाय ।

पेटाकः (पु०) बैग । थैला । पेटी । टोकरा ।

पेटिका } (स्त्री०) छोटा थैला । टोकरी ।

पेटी

पेडा (स्त्री०) बड़ा थैला ।

पेय (वि०) १ पीने योग्य । २ सौंघा । स्वादिष्ट ।

रुचिकर ।

पेयं (न०) शर्वत ।

पेया (स्त्री०) माँड़ । लाजाफाँट ।

पेयुः (पु०) १ समुद्र । २ अग्नि । ३ सूर्य ।

पेयुषम् (न०) } १ अमृत । सुधा । २ उस गौ का दूध

पेयूषः (पु०) } जिसको व्याये ७ दिन से अधिक

न हुए हों । ३ ताज़ा घी ।

पेरा (स्त्री०) वाद्ययंत्र विशेष । बाजा ।

पेल (धा० पर०) [पेलति, पेलयति—पेलयते]

१ जाना । २ काँपना ।

पेलं (न०) } अरुडकोष ।

पेलकः (पु०) }

पेलव (वि०) १ सुकुमार । सुकुमोल । मिहीन ।

२ पतला । ३ दुबला ।

पेलिः—पेलिन् (पु०) घोड़ा ।

पेशल } १ कोमल । मुलायम । सुकुमार ।

पेपल } (वि०) २ दुबला । पतला । ३ मने-

पेसल } हर । सुन्दर । ४ विशेष । चतुर । निपुण ।

५ सुफली । झुली । कपटी ।

पणि (स्त्री०) १ मोरन का टुकड़ा मॉसखरड
पणा २ मॉस का गाला या पिण्ड । ३ अडा ।

४ रा . पट्टा । ५ गर्भाशय हान के कुछ
ही दिनों बाद का कड़ा गर्भपिण्ड । ६ खिलने
वाली कली (पु०) इन्द्र का यज्ञ । ७ एक प्रकार
का राजा ।—कोशः—कोशः, (पु०) पत्नी का
श्रेष्ठ ।

पेषः (पु०) रसीला । कूटना । कुचरना ।

पेषणी (न०) १ पलीना । चूर चूर करना । २ खलि-
हान में वह जगह जहाँ दूध चलाई जाती है ।
३ खल और लोड़ा । कोई भी कूटने पीसने
का यंत्र ।

पेषणीः (स्त्री०) }
पेषणी (स्त्री०) } चक्की का पाट । सिल । लोड़ा ।
पेषाकः (पु०) }

पेस्वर (वि०) १ गमनकारी । २ नाशकारी ।

पै (धा० पर०) (पाथति) सुखाना । कुहलाना ।

पैणिः } (पु०) थास्क का नाम विशेष ।
पैङ्गिः }

पैङ्गुपः } (पु०) कर्ण । कान ।

पैङ्गुपः }

पैठर (वि०) [स्त्री०—पैठरी] किसी पात्र में
उवाला हुआ ।

पैठीनसिः (पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

पैडिक्कम्, पैडिक्कम् } (न०) भिखारीपना ।
पैडिन्ध, पैडिन्धम्, }

पैतामह (वि०) [स्त्री०—पैतामही] बाबा
सम्बन्धी । पितामह या बाबा से प्राप्त ।

पैतामहाः (पु० बहु०) पुरखा । पूर्वपुरुष ।

पैतामहिक (वि०) [स्त्री०—पैतामहिकी] पिता-
मह सम्बन्धी ।

पैतृक (वि०) [स्त्री०—पैतृकी] १ पिता सम्बन्धी ।
२ पुरखेकी । परंपरागत शास्त्र । ३ पितरों का ।

पैतृकं (न०) पुरखों का आद्व कर्म ।

पैतृमत्यः (पु०) १ कानीन । अविवाहिता स्त्री का
पुत्र । २ किसी प्रसिद्धपुरुष का पुत्र ।

पैतृध्वसेयः } (पु०) चाची या काकी का पुत्र ।
पैतृध्वस्त्रीयः }

पैस (वि०) [स्त्री०—पैसी] १ पित्त का
पैलिक (वि०) [स्त्री०—पैलिकी] } पित्त
सम्बन्धी ।

पैत्र (वि०) [स्त्री०—पैत्री] १ पैतृक । पुरखेकी । २
पितरों का ।

पैत्रम् (न०) तल्लेनी और शैलूटे के बीच का स्थान ।

पैलध (वि०) [स्त्री०—पैलधी] पिलुआ की लकड़ी
का बना हुआ ।

पैशह्यं (न०) नम्रता । नरमी । कोमलता ।

पैशाच (वि०) [स्त्री०—पैशाची] पैशाचिक ।
नारकीय ।

पैशाचः (पु०) १ आठ प्रकार के विवाहों में से
आठवाँ या निकृष्ट श्रेणी का विवाह । २ एक
प्रकार का पिशाच वा राक्षस ।

पैशाचिक (वि०) १ नारकीय । २ शैतानी । राक्षसी ।

पैशाची (स्त्री०) १ किसी धार्मिक विधान के
समर्थ बनाया हुआ नैवेद्य । २ रात । ३ एक प्रकार
की निकृष्ट प्राकृत बोली ।

पैशुनं } (न०) १ चुगली । पीठ पीछे निन्दा ।

पैशुन्यम् } २ गुड़ई । बदमाशी । ३ दुष्टता ।

पैष्ट (वि०) [स्त्री०—पैष्टी] आटा या पिठी का
बना हुआ ।

पैष्टिक (वि०) [स्त्री०—पैष्टिकी] आटा या पिठी
का बना हुआ ।

पैष्टिकम् (न०) १ कचौड़ियाँ । २ अनाज से खींची
हुई मदिरा ।

पैष्टी (स्त्री०) अनाज को सड़ाकर बनाया हुआ मद्य ।

पोगंड } (वि०) १ पाँच से सोलह वर्ष तक की
पोगण्ड } अवस्था का । २ वह जिसका कोई अंग
कम या विकृत हो । ३ भौंडा । भड़ा । बदशक्क ।

पोगंडः, } (पु०) पाचवीं से सोलहवीं वर्ष तक
पोगण्डः } के भीतर का बालक ।

पोटः (पु०) घर की नींव ।—गालः, (पु०) १
एक प्रकार का नरकुल । २ काँस । ३ मछली
विशेष ।

पोटकः (पु०) नौकर ।

पोटा (स्त्री०) १ मरदानी औरत । मर्दों के चिन्ह
डाढ़ी मूँछ आदि रखने वाली स्त्री । २ हिजड़ा ।

आस्ता । प्रस्सी । बधिया । ३ नोकरानी । चाँक-
रानी ।

पोटी (स्त्री०) बड़ा बड़ियाल ।

पोटलिका } (स्त्री०) पुटरिया । पोटी । पैकट ।
पोटली } पारलल । गट्टा । गट्टर ।

पोतः (पु०) १ किसी भी जानवर का बच्चा । २
दस वर्ष की उम्र का हाथी । ३ नाव । वेड़ा ।
जहाज़ । ४ वस्त्र । कपड़ा । ५ वृक्ष का झँलुआ ।
६ वह स्थल जहाँ घर हो ।—आश्वादर्न (न०)
तंबू । कनात ।—आधानं, (न०) छोटी
नङ्गजी का दबा ।—धारिन्, (पु०) जहाज़ का
मालिक ।—भङ्गः, (पु०) जहाज़ का डूबना ।
—रक्तः, (पु०) नाव का डौड़ ।—वलिज्,
(पु०) व्यापारी जो समुद्र मार्ग से गमनागमन
कर व्यापार करे ।—वाहः, (पु०) मारुती ।
मल्लाह । केवट ।

पोतकः (पु०) १ जानवर का बच्चा । २ छोटा वृक्ष ।
३ वह भुखण्ड जिस पर घर बना हो ।

पोतासः (पु०) कपूर ।

पोतु (पु०) यज्ञ कराने वाले सोलह ब्राह्मणों में से
एक जिसको याज्ञिक भाषा में “ब्रह्मन्” कहते हैं ।

पोत्या (स्त्री०) नावों का समूह ।

पोत्रं (न०) १ सुअर का थूथन या खाँग । २ वस्त्र ।
३ नाव । जहाज़ । ४ हल की फाल । ५ वस्त्र । ६
यज्ञपात्र विशेष जो पोत नामक याजक के पास
रहता है । पोता नामक याजक का पद ।—
आयुधः, (पु०) शूकर । सुअर ।

पोत्रिन् (पु०) शूकर । सुअर ।

पोलः (पु०) १ ढेर । २ आयतन । आकार ।

पोलिका } (स्त्री०) गेहूँ के आटे की पड़ी ।
पोली }

पोलिदः } (पु०) जहाज़ का मल्लू ।
पोलिन्दः }

पोषः (पु०) पालन पोषण । परवरिश ।

पोषयितुः (पु०) कोमल ।

पोशितु (वि०) पालन पोषण करने वाला । (पु०)
खिलाने वाला । परवरिश करने वाला । रचक ।

पोषिन् } (वि०) पालन पोषण करने । खिलाने
पोष्टु } पिलाने वाला । (पु०) पालने पोसने
वाला । रचक ।

पोष्य (वि०) १ पालनीय । पालने योग्य । २ भली
प्रकार पाला पोसा हुआ ।—पुत्रः, —सुतः,
(पु०) दत्तक या गोद लिया हुआ ।—वर्गः, (पु०)
माता, पिता गुरु, पुत्र, पत्नी, सम्भ्रान्त, अभ्यागत
और शरणागत “पोष्यवर्ग” में हैं ।

पौञ्चलीय (वि०) [स्त्री०—पौञ्चलीया] देश
सम्बन्धी ।

पौञ्चल्यं (न०) देशापन । कुलदपन ।

पौंसवनं (न०) देखो —“पुंसवन” ।

पौंस (वि०) [स्त्री०—पौंसो] १ मानव योग्य ।
२ मानवता । मर्दानगी ।

पौंसं (न०) मनुष्यता । मर्दानगी ।

पौगंड } [स्त्री०—पौगण्डी] लड़कपन ।
पौगण्ड }

पौगंडम् } (न०) लड़कपन । (पौंच से सोलह
पौगण्डम् } वर्ष तक की अवस्था ।)

पौंडः } (पु०) १ एक देश का नाम । २ उस देश
पौण्डः } के राजा या वारिदे का नाम । ३ गन्ना
या ईख विशेष । ४ माथे पर का तिलक ।
५ भीम के शङ्ख का नाम ।

पौंडकः } (पु०) १ पौंडा । गन्ना । २ वर्षसङ्कर जाति
पौण्डकः } विशेष ।

पौतवं (न०) एक माँप ।

पौत्तिकं (न०) एक प्रकार का शब्द ।

पौत्र (वि०) [स्त्री०—पौत्री] पुत्र सम्बन्धी या
पुत्र से निकला हुआ ।

पौत्रः (पु०) पुत्र का पुत्र । नाती । पोता ।

पौत्री (स्त्री०) नातिन । पोती ।

पौत्रिकेयः (पु०) लड़की का लड़का जो अपने नाना
की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हो ।

पौनःपुनिक (वि०) [स्त्री०—पौनःपुनिकी] बार
बार होने वाला । अक्सर दुहराया हुआ ।

पौनःपुन्यं (न०) प्रायः या सदैव पुनरावृत्त ।

पौनस्कं } (न०) १ बारबार दुहराने की क्रिया ।
पौनस्क्यं } २ व्यर्थता । फाल्गुपना ।

पौनभय (वि०) १ उस विधवा सम्बन्धी जिसने दूसरे पति के साथ विवाह किया हो २ दुहराया हुआ ।

पौनर्मयः (पु०) १ पुनर्विवाहिता विधवा का पुत्र । स्मृतियों में वर्णित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक । २ किसी स्त्री का दूसरा पति ।

पौर (वि०) [स्त्री०—पौरी] नगर या कस्बा सम्बन्धी ।

पौरः (पु०) नागरिक । नगरनिवासी ।—पौराणा, —पौराणिक, (स्त्री०)—स्त्री, (स्त्री०) नगर-वासिनी स्त्री ।—जानपद, (वि०) नगर या देहात से सम्बन्धयुक्त ।—जानपदाः, (पु० बहु०) देहाती और नगर का ।—वृद्धः, (पु०) नगर या प्रतिष्ठित व्यक्ति विशेष ।

पौरकं (न०) १ घर के समीप का उद्यान । २ नगर समीपस्थ वाता ।

पौरन्दर (वि०) [स्त्री०—पौरन्दरी] इन्द्र पौरन्दर } सम्बन्धी । इन्द्र से निकला हुआ ।

पौरन्दर } (न०) ज्येष्ठा नक्षत्र ।

पौरव (वि०) [स्त्री०—पौरवी] पुरु से आया हुआ । पुरु सम्बन्धी ।

पौरवः (पु०) १ पुरु की सन्तान । २ उत्तरी भारत के एक प्रान्त विशेष का तथा उस प्रान्त के शासक अथवा अधिवासियों का नाम ।

पौरवीय (वि०) [स्त्री०—पौरवीयी] पौरव में अनुरक्त ।

पौरस्य (वि०) १ पूर्वी । २ सब से आगे का । ३ प्रथम । पूर्व का ।

पौराण (वि०) [स्त्री०—पौराणी] १ भूतकाल का । पुरातन काल का । प्राचीन । आदि का । २ पुराण सम्बन्धी । पुराण से निकला हुआ ।

पौराणिक (वि०) [स्त्री०—पौराणिकी] १ प्राचीन । पुरातन । २ पुराण सम्बन्धी । ३ इतिहास में निष्ण्यात ।

पौराणिकः (पु०) पुराण-पाठक ।

पौरुष (वि०) [स्त्री०—पौरुषी] १ मानव सम्बन्धी । मानवी । २ मरदानगी से ।

पौरुष (पु०) उतना बोक जितना कि एक आदमी ले जा सके ।

पौरुषी (स्त्री०) स्त्री । औरत ।

पौरुषं (न०) १ मानवी कर्म । मनुष्य का कर्म । उद्योग । प्रयत्न । २ वीरता । बहादुरी । विक्रम । पराक्रम । साहस । ३ पुंसत्व । ४ वीर्य । ५ लिङ्ग । ६ मनुष्य की पूरी ऊँचाई । पुरसा ।

पौरुषेय (वि०) [स्त्री०—पौरुषेयी] पुरुष सम्बन्धी । पुरुष का । २ पुरुषकृत । आदमी का किया हुआ । ३ आध्यात्मिक ।

पौरुषेयः (पु०) १ पुरुषवध । २ मनुष्य समूह । ३ रोजंदारी पर काम करने वाला मजदूर । ४ पुरुष का कर्म । मानव कर्म ।

पौरुष्यम् (न०) मनुष्यता । साहस । वीरता ।

पौरुगवः (पु०) पाकशालाध्यक्ष । राजा की पाक-शाला का अध्यक्ष ।

पौरुभाग्यं (न०) १ दोषदर्शन । २ ईर्ष्या ।

पौरुहित्यं (न०) पुरोहिताई । पुरोहित का कर्म ।

पौर्णमास (वि०) [स्त्री०—पौर्णमासी] पूर्णिमा सम्बन्धी ।

पौर्णमासः (पु०) एक याग या इष्टिका जो पूर्णिमा के दिन होती है ।

पौर्णमासी } (स्त्री०) पूर्णिमा । पूरनमासी ।

पौर्णमी } (स्त्री०) पूर्णिमा । पूरनमासी ।

पौर्णमास्यं (न०) पूर्णिमा के दिन किया जाने वाला यज्ञ विशेष ।

पौर्णिमा (स्त्री०) पूर्णमासी ।

पौर्तिक (वि०) [स्त्री०—पौर्तिकी] पूर्वसाधक कर्म । प्रोपकार के कर्म ।

पौर्व (वि०) [स्त्री०—पौर्वी] १ भूतकाल सम्बन्धी । २ पूर्व दिशा सम्बन्धी । पूर्वी ।

पौर्वदेहिक } (वि०) [स्त्री०—पौर्वदेहिकी] पौर्वदेहिक } पूर्वजन्म सम्बन्धी । पूर्वजन्म कृत ।

पौर्वपदिक (वि०) [स्त्री०—पौर्वपदिकी] समास का प्रथम पद ।

पौर्वापर्यम् (न०) पहले और पीछे का सम्बन्ध । क्रम । सिलसिला ।

पौर्वाहिक (वि०) [स्त्री०—पौर्वाहिकी] पूर्वाह्न सम्बन्धी ।

पौर्विक (वि०) [स्त्री० पावकी] १ पहिले का ।
अगला । पूव का । २ पैतृक । ३ पुरातन ।
प्राचीन ।

पौलस्त्यः (पु०) १ रावण का नामान्तर । २ कुबेर
का नामान्तर । ३ विभीषण का नामान्तर । ४
चन्द्रमा ।

पौलिः (पु० स्त्री०) } पूषी ।
पौलो (स्त्री०) }

पौलोमी (स्त्री०) शची । इन्द्राणी । —सम्भवः,
(पु०) जयन्त का नामान्तर ।

पौषः (पु०) पूष मास ।

पौषी (स्त्री०) पूषमास की पृथ्विमा ।

पौष्कर } (वि०) [स्त्री० पौष्करा या
पौष्करक } पौष्करक्री] नीलकमल सम्बन्धी ।

पौष्करिणी (स्त्री०) सरोवर जिसमें कमल हों ।

पौष्कलः (पु०) अनाज विशेष ।

पौष्कलयं (न०) १ आधिक्य । अधिकता । २ पूर्ण
वृद्धि ।

पौष्टिक (वि०) [स्त्री०—पौष्टिकी] पुष्टिकारक ।
पुष्ट करने वाला । बलदीर्घदायक ।

पौष्पा (न०) रेवती नक्षत्र ।

पौष्प (वि०) [स्त्री०—पौष्पी] पुष्प सम्बन्धी ।
फूलों का । फूलों से बिकला हुआ । फूलदार ।

पौष्पी (स्त्री०) पटना नगर का नामान्तर ।

प्याट् (अन्व०) हो, अहो कहकर पुकारने के लिये
न्यवहृत होने वाला अन्वय विशेष ।

प्याय् (धा० आत्म०) [प्यायते, प्यान, या पीन]
बढ़ना । बाढ़ आना ।

प्यायनम् (न०) उन्नति । बाढ़ ।

प्यायित (वि०) १ वृद्धि को प्राप्त । उन्नत । २ मौदा
पड़ा हुआ । ३ बलिष्ठ । तरोताजा ।

प्यै (धा० अ०) [प्यायते, पीन] १ बढ़ना । वृद्धि
को प्राप्त होना । ३ पूर्ण हो जाना ।

प्र (अन्व०) १ जब यह उपसर्ग किसी क्रिया में
लगाया जाता है, तब इसका अर्थ होता है आगे,
सामने, पेशतर, पहले, आगे की ओर, यथा प्रगम,
प्रस्था आदि । २ विशेषणवाची शब्दों में लगाने
से इसका अर्थ होता है —

बहुत अस्थधिकता से अस्थत्रिक यथा प्रकृष्ट
प्रसन्न आदि । (इ) सज्ञावाची शब्दों के पूर्व लगाने
पर इसका अर्थ होता है:—

(क) आरम्भ । प्रारम्भ । यथा—अस्थान ।

(ख) लंबाई । यथा—प्रवालमूषिक ।

(ग) बल । यथा—प्रभु ।

(घ) धनियता । अत्याधिक्य । यथा—पकर्ष ।
प्रवाद ।

(ङ) उन्नत स्थान । निकास । यथा—प्रभव ।
प्रपौत्र ।

(च) सम्पूर्णता । पूर्णता । यथा—प्रभुत्तमम् ।

(छ) राहित्य । वियोग । विना । यथा—प्रोपिता ।

(ज) जुड़ा । यथा—प्रजु ।

(झ) उत्तमता । यथा—प्राचार्यः ।

(ञ) पवित्रता । यथा—प्रसन्नजलः ।

(त) अभिलाषा । यथा—प्रार्थना ।

(थ) अवसान । यथा—प्रशम ।

(द) सम्मान । प्रतिष्ठा । यथा—प्राञ्जलि ।

(ध) विशिष्टता । यथा—प्रवाल । प्रयत्न ।

प्रकट (वि०) १ जाहिर । प्रत्यक्ष । २ खुला । बे-
परदा । सर्वसाधारण का । ३ जो दिखलाई पड़े ।

प्रकटं (अन्व०) साफ तौर से । प्रत्यक्ष रीत्या ।
—प्रीतिवर्द्धनः, (पु०) शिव जी ।

प्रकटनम् (न०) प्रकट या प्रत्यक्ष होने की क्रिया ।

प्रकटित (व० कृ०) १ प्रकट किया हुआ । प्रत्यक्ष
किया हुआ । खोला हुआ । २ सर्वसाधारण के
सामने रखा हुआ । ३ साफ ।

प्रकंपः } (पु०) कँपकँपी । थरथराहट ।
प्रकम्पः }

प्रकंपन } (वि०) १ पाने वाला । हिलाने वाला ।
प्रकम्पन }

प्रकंपनं } (न०) अत्यधिक कँपकँपी या थरथराहट ।
प्रकम्पनम् }

प्रकंपनः } (पु०) १ पवन । आँधी । २ नरक
प्रकम्पनः } विशेष ।

प्रकरं (न०) अंगर की लकड़ी ।

प्रकरः (पु०) १ ढेर । समूह । भोड़ । संग्रह । २ गुल-
दस्ता । ३ सहाय्य । सहायता । मैत्री । ४ चखन ।

प्रथा । २ सम्मान । ६ बरजारी हरण । वह
कावा फुसलाहट ।

प्रकरणाद् (न०) १ किसी विषय को समझने या
समझाने के लिये उस पर वादविवाद करना । विवाद
करना । २ विषय । प्रसङ्ग । ३ किसी ग्रन्थ
के अन्तर्गत छोटे छोटे भागों में से कोई भाग ।
अध्याय । ४ अवसर । मौका । ५ आरम्भिक
वस्तु । मुखवन्ध । ७ दृश्य काव्य के अन्तर्गत
रूपक के दस भेदों में से एक ।

प्रकरणिका } (स्त्री०) नाटिका ।
प्रकरणी }

प्रक्रिका (स्त्री०) दृश्यकाव्य का स्थल विशेष जो
उसमें लगा दिया जाता है और जो यह बतलाता
है कि, आगे क्या होने वाला है ।

प्रकरी (स्त्री०) १ नाटक के किसी दो अंकों के बीच
का वह अंतर जिसमें आगे होने वाली घटना की
सूचना दी जाती है । २ नटों की पोशाक । एकदरों
की ड्रेस । ३ मैदान । ४ चौराहा । ५ गान
विशेष ।

प्रकर्षः (पु०) १ उत्थिता । प्रसिद्धि । उत्कृष्टता ।
२ अधिकता । बहुलान्वत । ३ बल । ताकत ।
४ केवलत्व । ५ लंबाई । दीर्घाकरण ।

प्रकर्षणाद् (न०) १ खींच लेने की क्रिया । २ डल
जोरने की क्रिया । ३ अधि । प्रसार । ४ उत्क-
र्षणा । उत्कृष्टता । ५ विकलता । विल विक्षेप ।
आन्ति ।

प्रकला (स्त्री०) एक कला । (समय) का साठवाँ
भाग ।

प्रकल्पना (स्त्री०) निश्चित करना । स्थिर करना ।

प्रकल्पित (व० क०) १ बनाया हुआ । किया हुआ ।
निर्माण किया हुआ । २ निश्चित किया हुआ ।
निर्दिष्ट किया हुआ ।

प्रकल्पिता (स्त्री०) एक प्रकार की पहली या बुझौअल ।

प्रकांडः, प्रकाण्डम् (न०) १ वृक्ष का तना ।
प्रकांडः, प्रकाण्डः (पु०) १ स्कन्ध । २ डाली ।

शाखा । (समास के अन्त में) अपनी जाति में
सर्वोत्कृष्ट । ३ बाँह का ऊपरी भाग ।

प्रकाण्डक } (पु०) देखे प्रकाण्ड

प्रकांडरः } (पु०) वृक्ष । पेड़ ।
प्रकाण्डरः }

प्रकाश (पु०) १ प्रेमासक्त । अत्यधिक । बहुत ।
अवाया हुआ ।—भुज्, (वि०) अवाकर खाने
वाला ।

प्रकाशः (पु०) अभिलाषा । आनन्द । सन्तोष ।

प्रकाशं (अव्यया०) १ अत्यधिक । अत्यधिकता से ।
२ परास्तिरूप से । कामनानुसार । ३ स्वेच्छानुसार ।
रजामंदी से ।

प्रकाशः (पु०) १ ढंग । तौर तरीका । प्रणाली ।
तरह । भाँति । २ भेद । किस्म । ३ साम्य ।
सादृश्य । तुलना । ४ विशेषता । विशिष्टता ।

प्रकाश (वि०) १ चमकीला । भटकीला । चमकदार ।
२ सुस्पष्ट । प्रत्यक्ष । ३ सत्तेज । उज्ज्वल । विशद ।
स्पष्ट । प्रसिद्ध । प्रख्यात । प्रकट । खुला हुआ ।
६ स्थान जिस पर के वृक्ष काट कर साफ कर दिये
गये हों । मैदान । ७ फूला हुआ । बढ़ा हुआ ।
८ मानों । जैसा । सदृश ।—आत्मक, (वि०)
चमकीला । उज्ज्वल ।—आत्मन्, (वि०) चम-
कीला । उज्ज्वल । (पु०) १ शिवजी का नामान्तर ।
२ सूर्य ।—इतर, (वि०) अदृश्य । जो देख न
पड़े ।—कथः, (पु०) खुल्लखुल्ला खरीद ।—
नारी. (स्त्री०) रंडी । बेरेश । झिनाल ।

प्रकाशं (अव्यया०) १ खुल्लखुल्ला । साफ तौर पर ।
२ चिन्ता कर ।

प्रकाशः (पु०) १ रोशनी । उजियाला । चमक ।
उज्ज्वलता । आभ । छाया । २ (आलं०) व्याख्या ।
(यथा काव्यप्रकाश) ३ धूप । घाम । ४
प्राकृत्य । दर्शन । ५ कीर्ति । नामवरी । स्थाति ।
गौरव । ६ मैदान । ७ सुनहला दर्पण । ८ किसी
ग्रन्थ का अध्याय । परिच्छेद ।

प्रकाशक (वि०) [स्त्री०—प्रकाशिका] १ प्रकट
करने वाला । दिखलाने वाला । २ व्यक्त करने
वाला । निर्देश । ३ व्याख्या करने वाला । ४ चम-
कीला । उज्ज्वल । ६ प्रसिद्ध । विख्यात ।

प्रकाशकः (पु०) १ सूर्य । २ आविष्कारकर्ता ।
खोजी । ३ प्रसिद्ध करने वाला जैसे ग्रन्थ-प्रकाशक ।
—ज्ञातृ, (पु०) मुर्गा । [वाला ।
प्रकाशन (वि०) प्रकट करने वाला । प्रसिद्ध करने
प्रकाशनं (न०) प्रकाशित करने का काम । प्रकाश
में लाने का काम ।

प्रकाशनः (पु०) विष्णु का नामान्तर ।
प्रकाशित (व० कृ०) १ प्रकट किया हुआ । प्रसिद्ध
किया हुआ । २ चमकता हुआ । जिसमें से प्रकाश
निकल रहा हो । ३ प्रत्यक्ष । जो देख पड़े । स्पष्ट ।

प्रकाशिन (वि०) साफ । उज्ज्वल । चमकीला ।

प्रकीर्ण (न०) बखेरना । छिड़काना ।

प्रकीर्ण (व० कृ०) १ बिखरा हुआ । छिड़का हुआ ।
२ फैला हुआ । प्रकाशित । प्रचारित । ३ लहरता
हुआ । हिलता हुआ । ४ अस्तव्यस्त । ढीला ढाला ।
खुले हुए (जैसे केश) । ५ असंलग्नता ।
असम्बद्धता । ६ उद्विग्न । बबड़ाया हुआ । ७
फुटकर । मिलाजुला ।

प्रकीर्ण (न०) १ फुटकल वस्तुओं का संग्रह । २
अध्याय जिसमें फुटकल नियमों का संग्रह हो ।

प्रकीर्णक (वि०) बिखरा हुआ ।

प्रकीर्णक (न०) १ चैंबर । (पु०) घोड़ा ।

प्रकीर्णकः (पु०) (न०) १ फुटकर अध्याय ।

प्रकीर्तनम् (न०) १ घोषणा । २ प्रशंसा करना ।
तारीफ करना ।

प्रकीर्तिः (स्त्री०) १ नामवरी । प्रशंसा । २ ख्याति ।
प्रसिद्धि । घोषणा ।

प्रकुचः } (पु०) आठ तोले या एक पल का माप ।
प्रकुञ्चः }

प्रकुपित (व० कृ०) १ अत्यन्त क्रुद्ध । २ उत्तेजित ।

प्रकुल (न०) सुन्दर शरीर । सुडौल बदन ।

प्रकृष्णराडी (स्त्री०) दुर्गा का नामान्तर ।

प्रकृत (व० कृ०) १ सुसम्पन्न । २ आरम्भित । शुरू
किया हुआ । ३ नियुक्त किया हुआ । व्यस्त किया
हुआ । ४ असली । यथार्थ । ५ किसी विषय को
वादविवाद का विषय बनाया हुआ । विचारा-
धीन विषय । प्रस्तुत विषय । ६ आवश्यक ।
मनोरञ्जक ।

प्रकृत (न०) वास्तविक विषय । प्रस्तुत विषय ।—
अर्थः, (वि०) यथार्थ भाव बतलाने वाला ।—
अर्थः, (पु०) वास्तविक भाव ।

प्रकृतिः (स्त्री०) १ स्वभाव । तासीर । २ मिलाजु ।
३ बनावट । आकार । ४ निकास । परंपरा । ५
उद्गम स्थल । ६ सांख्यदर्शन में पुरुष और प्रकृति
को छोड़ तीसरी वस्तु नहीं मानी गयी । ७ आदर्श ।
नमूना । न स्त्री । ८ परब्रह्म का मूर्तिमान सङ्कल्प,
जिसके कारण सृष्टि की उत्पत्ति होती है । ९
पुरुष या स्त्री को जननेन्द्रिय । लिङ्ग । भग । ११
माता । (बहुवचन) १ राजा के आमात्य ।
मंत्रिमण्डल । २ राजा की प्रजा । ३ राजतंत्र के
अङ्ग जो सात माने गये हैं ।

“स्वाभ्यन्तरपरमस्वरूपकोशराष्ट्रदुर्गवर्तमानि च ।”

४ सांख्यदर्शन के अनुसार आठ प्रधान तत्व
जिनसे हरेक वस्तु उत्पन्न होती है । ५ सृष्टि को
बनाने वाले ५ तत्व । —ईशः, (पु०)
राजा या जिले का हाकिम । —रूपयः,
(वि०) स्वभाव से सुस्त या जो पहचान
न सके । —तरल, (वि०) स्वभाव से
चञ्चल । —पुरुषः, (पु०) अमात्य । राजपुरो-
हित । —मण्डलं, (न०) समूचा राज्य या
राष्ट्र या बादशाहत । —लयः, (पु०) प्रकृति में
लीन होना । —सिद्ध, (वि०) नैसर्गिक ।
स्वाभाविक । —सुभग, (वि०) स्वभाव से
मनोहर । —स्थ, (वि०) १ जो अपनी स्वाभा-
विक अवस्था में हो । सामूली हालत में । २
स्वस्थ । तंदुरुस्त । ३ आरोग्यता प्राप्त किया
हुआ । ४ संग ।

प्रकृष्ट (व० कृ०) १ आकृष्ट । खिंचा हुआ । २ लंबा ।
दीर्घ । ३ उत्कृष्टतर । उत्कृष्टतम । प्रधान । मुख्य ।
खास । ५ विचित्र । अशान्त ।

प्रकृष्ट (व० कृ०) तैयार किया हुआ । बनाया हुआ ।
सुव्यवस्थित ।

प्रकोथः (पु०) सड़ाइन । घुसाइन ।

प्रकोष्ठः (पु०) १ कोहनी के नीचे का भाग । २
दरवाजे के समीप का कोठा । ३ घर का आँगन ।

प्रकोष्ठकः (पु०) बड़े दरवाजे के पास की कोठरी ।

प्रसूत (पु०) १ घाटा ग हाथों का कवच । २ कुत्ता ३ खर ।

प्रक्रम (पु०) १ पैग । क्रम । २ पैग जो दूरी नाँपने के लिये व्यवहृत होता है । ३ आरम्भ । शुरुआत । ४ कार्यवाई । पद्धति । ५ अवकाश । अवसर । ६ नियमितता । ढंग । तौर । ७ अंश । अनुपात । माप ।—भङ्गः, (पु०) किसी कार्य में किसी आरम्भ किये हुए क्रम का उत्खनन । २ साहित्य का एक दोष जो उस समय माना जाता है, जिस समय किसी विषय के वर्णन में आरम्भ किये हुए क्रम आदि का यथावत् पाठन नहीं किया जाता ।

प्रक्रान्त (व० कृ०) १ आरम्भ किया हुआ । शुरू किया हुआ । २ गया हुआ । प्रस्थानित । ३ प्रस्तुत । विवादप्रस्त । ४ बीर ।

प्रक्रिया (स्त्री०) १ ढंग । तौर । तरीका । २ संस्कार । कर्म । ३ राजचिन्ह (चँवर बुआदि) का धारण करना । ४ उच्चपद । ५ ग्रन्थ का अध्याय, परिच्छेद । ६ व्याकरण में वाक्पञ्चना प्रणाली । ७ अधिकार । हक ।

प्रकीर्णः (पु०) खेल । क्रीडा । आभोद प्रभोद ।

प्रकीर्ण (व० कृ०) १ तर । नम । भीगा हुआ । २ वृत्त । अघाया हुआ । ३ कल्याणार्थ । दयामय ।

प्रकाशः } (पु०) बीणा की कनकार ।
प्रकाशः }

प्रक्षयः (पु०) नाश । बरबादी । [बहना ।

प्रक्षयम् (न०) टपकना । चूना । उफनना ।

प्रक्षालनं (न०) १ धोना । २ मँजना । साफ करना । पवित्र करना । ३ स्नान करना । ४ कोई भी वस्तु जो सफा करने के काम में आवे । ५ धोने के लिये जल ।

प्रक्षालित (व० कृ०) १ धोया हुआ । साफ किया हुआ । २ पवित्र किया हुआ । ३ प्रायश्चित्त करा के शुद्ध किया हुआ ।

प्रक्षिप्त (व० कृ०) १ फेंका हुआ । २ झुसेड़ा हुआ । ३ बढ़ाया हुआ । ४ ऊपर से मिलाया हुआ ।

प्रक्षीण (वि०) १ जीर्ण । २ नष्ट किया हुआ । ३ प्रायश्चित्त करके पवित्र किया हुआ । ४ लुप्त । अन्तर्धान ।

प्रक्षुण्ण (व० कृ०) १ कुचला हुआ । २ भेदा हुआ । खेना हुआ । ३ उत्तजित किया हुआ ।

प्रक्षेपः (पु०) १ फेंकना । डालना । छितराना । बखेरना । ३ मिलाना । बढ़ाना । ४ ऊपर से मिलाना । प्रक्षिप्त करना । ५ गाड़ी का बक्स या भण्डारी । ६ किसी कंपनी के हिस्सेदारों का जमा किया हुआ अपने अपने हिस्सों का रुपया ।

प्रक्षेपणम् (न०) फेंकना । पटकना ।

प्रक्षोभणम् (न०) घबराहट । बेचैनी ।

प्रक्षेडनः (पु०) १ लोहे का बाण । २ शोरगुल । कोलाहल ।

प्रक्षेडित (वि०) शोरगुल वाला । कोलाहल वाला ।

प्रखर (वि०) १ अत्यन्त उष्ण । २ बड़ा तेज या तीव्र । ३ बड़ा कठोर या रुखा ।

प्रखरः (पु०) १ खर । २ कुत्ता । घोड़े की पाखर या हाथी का कवच ।

प्रख्य (वि०) १ साफ । प्रत्यक्ष । स्पष्ट । २ सदृश । समान ।

प्रख्या (स्त्री०) १ प्रत्यक्ष गोचरत्व । २ प्रसिद्धि । प्रख्याति । ३ प्रकाशित वस्तु या विषय । ४ सादृश्य । समानता ।

प्रख्यात (व० कृ०) १ प्रसिद्ध । मशहूर । २ आगे ही से मोल लिया हुआ । ३ प्रसन्न । आह्लादित । —वस्तुक, (वि०) प्रसिद्ध पिता वाला ।

प्रख्याति (स्त्री०) १ श्रुति । प्रसिद्धि । २ प्रशंसा । तारीफ ।

प्रगंडः } (पु०) कंधे से लेकर कोहनी तक का
प्रगण्डः } भाग ।

प्रगंडी } (स्त्री०) नगर के परकोटे की दीवाल ।
प्रगण्डी }

प्रगत (व० कृ०) १ आगे गया हुआ । २ जुड़ा । अलहदा ।—जानु,—जानुक, (वि०) टेढ़ी टाँगों वाला ।

प्रगमः (पु०) प्रेम का प्रथम प्रदर्शन ।

प्रगमनम् (न०) १ वृद्धि । उन्नत । २ प्रेमस्थापन में प्रथम प्रेमप्रदर्शन ।

प्रगर्जनं (न०) वहाव । गर्जन ।

प्रगतम् (वि०) १ साहसी । उसाही । हिम्मती ।

२ निर्भय । निर । बहादुर । ३ वाग्मी । ४
हाज़िर जवाब । प्रत्युत्पन्नमति । ५ दृढप्रतिज्ञ ।
६ प्रौढ़ । ७ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त । पका हुआ ।
८ दृढ़ । निपुण । ९ अभिमानी । अहङ्कारी । घमंडी ।
१० निर्लज्ज । वेशर्म । नेहया । ११ आदर्श ।
प्रसिद्ध । [एक ।

प्रगल्भा (स्त्री०) साहसी स्त्री । नायिकाओं में से
प्रगाढ़ (व० क०) १ तर । भीगा हुआ । डूबा हुआ ।
२ अधिक । बहुत । ३ दृढ़ । मजबूत । ४ कड़ा ।
सख्त । कठिन ।

प्रगाढ़ (न०) १ तंगी । हीनता । अभाव । २
तपस्या । शारीरिक तप ।

प्रगाढ़ (अव्यया०) १ अत्यधिकता से । २ दृढ़ता से ।
प्रगाढ़ (पु०) उत्तम गवैया ।

प्रगुण (वि०) १ सीधा । ईमानदार । धर्मात्मा । २
अच्छे गुणों वाला । ३ योग्य । उपयुक्त । गुण-
वान् । निपुण । पटु । चतुर । [हुआ ।

प्रगुणित (वि०) १ सीधा किया हुआ । २ चिकनाया
प्रगृहीत (व० क०) १ जो भली भाँति ग्रहण किया
गया हो । २ प्राप्त । स्वीकृत । ३ जिसका उच्चारण
सन्धि के नियमों का ध्यान रखे बिना किया
गया हो ।

प्रगृह्य (न०) वह स्वर जिस पर सन्धि के नियमों
का प्रभाव न पड़े और जो स्वतंत्र रीति से लिखा
जाय और बोला जाय ।

प्रगे (अव्यया०) बड़े तक्के । भोर ही ।—तन,
(वि०) प्रातःकाल किया जाने वाला ।—निश,
—शय, (वि०) जो सबेरा होने पर भी सोता
रहै ।

प्रगोपनम् (न०) रक्षण । बचाव ।

प्रग्रथनम् (न०) बुनना । गूथना ।

प्रग्रहः (पु०) १ धारण । ग्रहण । २ चन्द्र या सूर्य के
ग्रहण का आरम्भ । ३ लगाम । राल । ४ रोक
थाम । ५ बन्धन । क़ैद । ६ बंधुआ । क़ैदी । ७
(छोड़े आदि पशुओं का) साधना । ८ किन्नर ।
९ तराजू की डोरी । १० स्वर जिसमें सन्धि के
नियम लागू न हों ।

प्रग्रहणम् (न०) १ पकड़ना । धरना । थामना ।
२ सूर्य या चन्द्र ग्रहण का आरम्भ । ३ लगाम ।
राल । ४ संयम । दमन ।

प्रग्रहः (पु०) १ पकड़ । थाम । २ डोला । ले
जाना । ३ तराजू की डोरी । ४ लगाम । राल ।

प्रग्रीवं (न०) १ रंगा हुआ कलस या बुर्ज़ी ।
प्रग्रीवः (पु०) १ किसी मकान के चारों ओर
लकड़ी का बनाया हुआ घेरा । २ तवेला । ३ बुड़
की फुनगी ।

प्रघटकः (पु०) नियम । सिद्धान्त । आदेश ।

प्रघटा (स्त्री०) किसी विज्ञान के आरम्भिक सिद्धान्त ।
—विद्, (पु०) फालतू विषय पढ़ने वाला ।
बकबादी ।

प्रघणः (पु०) १ बंगले के दरवाज़े के सामने
प्रघनः (पु०) { छाया हुआ स्थान । बरसाती ।
प्रघरागः (पु०) { वरामदा । २ तौबे का बरतन ।
प्रघनः (पु०) { ३ लोहे की गदा या धन । गदाजा ।

प्रघस (वि०) पेड़ । मरभुख्खा ।

प्रघसः (पु०) १ राबस । २ भुखड़पन । पैटूपन ।

प्रघातः (पु०) १ बध । २ युद्ध । लड़ाई ।

प्रघुणः (पु०) महमान । अतिथि ।

प्रघूर्णः (पु०) महमान । अतिथि ।

प्रघोपः (पु०) १ आवाज़ । शोर । २ गर्जन ।

प्रचक्रं (न०) सेना जो खानगी में हो ।

प्रचक्षस् (पु०) १ ब्रह्मपति ग्रह । २ ब्रह्मपति का
नामान्तर ।

प्रचंड } (वि०) १ अत्यन्त तीव्र । तेज़ । उग्र ।
प्रचण्ड } प्रखर । २ मजबूत । बलवान् । भयानक ।
३ अतिउष्ण । क्रोधमूर्च्छित । गुस्सैल । ४
साहसी । ५ भयङ्कर । ६ असह्य । दुस्सह ।—
आतपः, (पु०) भयङ्कर गर्मी ।—घोण, (वि०)
लंबी नाक वाला ।—सूर्य, (वि०) पेसी कड़ी
धूप जो सही न जाय ।

प्रचयः } (पु०) १ संग्रह । एकत्रीकरण । २ ढेर ।
प्रचायः } राशि । ३ वृद्धि । बढ़ती । ४ साधारण
मेल मिलाप ।

प्रचयनं (न०) संग्रह । एकत्रीकरण ।

प्रचरः (पु०) १ रास्ता । मार्ग । सड़क । २ रीति ।
रिवाज़ ।

प्रचल (वि०) १ धरधराता हुआ । काँपता हुआ ।
 २ प्रचलित । रिवाज के सुताविक ।
 प्रचलाकः (पु०) १ तीरंदाजी । २ भयूर की पूछ ।
 २ सर्प । साँप ।
 प्रचलाकिन् (पु०) मयूर । मोर ।
 प्रचलायित (वि०) लुढ़कने वाला । उछलने वाला ।
 प्रचलायितम् (न०) सिर हिलाना ।
 प्रचायिका (स्त्री०) १ बारी बारी से फूल चुनने
 वाला । २ मालिन ।
 प्रचारः (पु०) १ चलने वाला । २ भ्रमणकारी ।
 ३ प्रत्यक्ष होना । दृष्टिगोचर होना । ४ चलन
 रिवाज । किसी वस्तु का निरन्तर व्यवहार या
 उपयोग । ५ चालचलन । आचरण । ६ रीतिरस्म ।
 नेम । ७ क्रीडास्थली । अखाड़ा । ८ चरागाह ।
 ९ पथ । मार्ग । रास्ता ।
 प्रचालः (पु०) वीणा का एक भाग विशेष ।
 प्रचालनम् (न०) भली भाँति गडबड करना ।
 हिलाना डुलाना ।
 प्रचित (व० कृ०) १ एकत्रित किया हुआ । संग्रह
 किया हुआ । तोड़ा हुआ । २ जमा किया हुआ ।
 ३ ढका हुआ । भरा हुआ ।
 प्रचुर (वि०) १ बहुत । अधिक । विपुल । २ बड़ा ।
 दीर्घ । विस्तृत । ३ बाहुल्यता से सम्पन्न ।—
 पुरुष, (वि०) आवाद । बसा हुआ ।—पुरुषः,
 (पु०) चोर ।
 प्रचुरः (पु०) चोर ।
 प्रचेतस् (पु०) १ वरुण का नामान्तर । एक प्राचीन
 ऋषि जो स्मृतिकार भी थे ।
 प्रचेतृ (पु०) सारथी । रथ हाँकने वाला । कौचवान ।
 प्रचेलं (न०) पीला चन्दन काष्ठ ।
 प्रचेलकः (पु०) घोड़ा । अश्व ।
 प्रचोदनम् (न०) १ अनुरोध । प्रेरणा । उत्तेजन ।
 २ प्रवृत्ति । साजिश । आज्ञा । आदेश । ४ नियम ।
 क्रायदा कानून ।
 प्रचोदित (व० कृ०) १ प्रेरित । उत्तेजित । प्रवर्तित ।
 ३ आज्ञा । निर्देश दिया हुआ । निर्दिष्ट । ४
 प्रेषित । भेजा हुआ । निश्चय किया हुआ ।

प्रच्छ (धा० पर०) [पृच्छति, पृष्ट, ; (निजन्त)
 प्रच्छयति] १ पूछना । प्रश्न करना । सवाल
 करना । दर्याफ्त करना । २ तलाश करना ।
 खोजना । ढूँढना ।
 प्रच्छदः (पु०) आच्छादन । परदा । चादर । पलंग
 पोश । पलंग की चादर ।—पटः, (पु०)
 पलंग की चादर । चाँदनी ।
 प्रच्छन्नं (न०) } अनुसन्धान । जिज्ञासा । प्रश्न ।
 प्रच्छन्ना (स्त्री०) } सवाल ।
 प्रच्छन्न (व० कृ०) १ छिपा हुआ । परवेषित । वस्त्र
 छादित । कपड़े से लपेटा हुआ । गोप्य । निजी ।
 दुराव करने योग्य । छिपा हुआ ।
 प्रच्छन्नं (अव्यया०) चुपके चुपके । चोरी से ।—
 तस्कर, (पु०) ऐसा चोर जो चोरी करते
 कभी देखा न गया हो, किन्तु चोरी अवश्य
 करता हो ।
 प्रच्छर्दनम् (न०) १ वसन । रेचन ।
 प्रच्छर्दिका (स्त्री०) वसन । कै ।
 प्रच्छादनम् (न०) १ ढकना । छिपाना । २ कपड़ों
 के ऊपर पहनने का वस्त्र विशेष ।—पटः, (पु०)
 चादर । उड़ौना ।
 प्रच्छादित (व० कृ०) १ ढका हुआ । ओढ़े हुए ।
 वस्त्राच्छादित । २ छिपा हुआ ।
 प्रच्छायं (न०) सधन छाया । छायादार स्थान ।
 प्रच्छल (वि०) निर्जल । सूखा ।
 प्रच्यवः (पु०) १ अधःपात । नाश । बरबादी । २
 बापिली ।
 प्रच्यवनम् (न०) १ प्रस्थान । पलायन । पीछे की
 ओर हटाव । २ हानि । अभाव । ३ क्षरण । टप-
 कना । चूना ।
 प्रच्युत (व० कृ०) १ ऋढ़ा हुआ । हटकर गिरा हुआ ।
 २ अपने स्थान से हटा हुआ । ३ स्थानच्युत ।
 अधःपतित । ४ भगाया हुआ । हटाया हुआ ।
 प्रच्युतिः (स्त्री०) १ अपने स्थान से गिरने या हटने
 का भाव । २ हानि । अभाव । अधःपात । ३
 बरबादी । नाश ।
 प्रजः (पु०) पति । शौहर ।

प्रजनः (पु०) १ गर्भाधान । गर्भस्थापन । उत्पत्ति ।
पैदायश । २ पशुओं का गर्भस्थापन । ४ पैदा
करना । जनना ।

प्रजननम् (न०) १ गर्भाशय में गर्भस्थापन । उत्पत्ति ।
२ पैदायश । जन्म । बालक का उत्पन्न होना । ३
बीर्य । ४ भग । लिङ्ग । ५ सन्तान ।

प्रजनिका (स्त्री०) माता । जननी । माँ ।

प्रजनुकः (पु०) शरीर । देह ।

प्रजल्पः (पु०) गप्पशप्प । बकवाद । ऊटपटाँग ।
बातचीत ।

प्रजल्पनम् (न०) १ वार्तालाप । बोलचाल । २
बकबक । गप्पशप्प ।

प्रजविन् (वि०) [स्त्री०—प्रजविनी] तेज । फुर्तीला ।
वेगवान । (पु०) हल्कारा ।

प्रजा (स्त्री०) १ सन्तान । औलाद । २ उत्पत्ति ।
जन्म । पैदायश । ३ मानवजाति । लोग । रैथत ।
४ वीर्य । धातु ।—अन्तकः, (पु०) यम ।—
ईशुः, (वि०) सन्तानेश्वर ।—ईशः, —ईश्वरः,
(पु०) राजा । बादशाह ।—उत्पत्तिः,—
उत्पादनम्, (न०) सन्तान उत्पन्न करने की
क्रिया ।—काम, (वि०) सन्तानेश्वर ।—
तन्तु, (पु०) कुल । वंश । वंशपरम्परा ।—
दानं, (न०) चाँदी ।—नाथः, (पु०) राजा ।
बादशाह । नरपति ।—पः, (पु०) राजा ।
पृथिवीपाल ।—निषेकः, (पु०) गर्भस्थापन ।
गर्भाधान ।—पतिः, (पु०) १ सृष्टिउत्पन्न करने
वाला । २ ब्रह्मा जी का नामान्तर । ३ ब्रह्मा के
दस पुत्र जो प्रजापति कहलाये । ४ विश्वकर्मा का
नामान्तर । ५ सूर्य । ६ राजा । ७ दामाद ।
जमाई । ८ विष्णु भगवान् । ९ पिता । जनक ।
१० लिङ्ग । पुरुष की जननेन्द्रिय । पालः,—
पालकः, (पु०) राजा । नरपति ।—
पाली, (पु०) शिव जी का नामान्तर ।—
वृद्धिः, (स्त्री०) सन्तान की बढ़ती । सृज्,
(पु०) ब्रह्मा जी ।—हित, (वि०) सन्तान या
रैथत के लिये लाभकारी ।—हितं (न०) जल ।
पानी ।

प्रजागरः (पु०) १ रात को जागने वाला । अनि-
द्रित्व । २ विवेक । सावधानी । ३ रत्नक । अमि-
भावक । ४ कृष्ण भगवान् का नामान्तर ।

प्रजात (व० क०) पैदा हुआ । उत्पन्न हुआ ।

प्रजाता (स्त्री०) जन्मा । वह स्त्री जिसके बच्चा पैदा
हुआ हो ।

प्रजातिः (स्त्री०) १ जन्म । उत्पत्ति । सन्तानवृद्धि ।
२ जनन । ३ उत्पादक शक्ति । ४ प्रसववेदना ।
प्रसव की पीड़ा ।

प्रजावत् (वि०) १ प्रजावान । सन्तान वाला । २
गर्भवती ।

प्रजावती (स्त्री०) १ आगुजाया । भावज । भौजाई
भावी । ३ माता । दाई ।

प्रजिनः (पु०) पवन । हवा । वायु ।

प्रजीवनम् (न०) आजीविका ।

प्रजुद (वि०) मक्त । धनुरक्त । आसक्त ।

प्रज्ञ (वि०) बुद्धिमान् । प्रतिभावान् । विद्वान् ।

प्रज्ञप्तिः (स्त्री०) १ प्रण । शर्त । २ शिक्षा । विज्ञप्ति ।
सूचना । ३ सिद्धान्त ।

प्रज्ञा (स्त्री०) १ बुद्धि । ज्ञान । समझ । प्रतिभा । २
विवेक । जाँच । निर्णय । ३ विचार । मंशा । ४
बुद्धिमती स्त्री ।—चक्षुस, (पु०) अंधा नेत्रहीन ।
(पु०) धतराष्ट्र का नामान्तर । (न०) हिये
की आँखें । मन ।—पारमिता (स्त्री०) बौद्ध
ग्रन्थों के अनुसार दस मामिताओं (गुणों की परा
काष्ठा) में से एक, जिसे गौतम बुद्ध ने अपने मर्कट
जन्म में प्राप्त किया था ।—बुद्ध, (वि०) बुद्धि-
मत्ता में बड़ा ।—हीन, (वि०) बुद्धिहीन । मूर्ख ।
मूढ़ ।

प्रज्ञात (व० क०) १ जाना हुआ । समझा हुआ । २
पहचाना हुआ । ३ स्पष्ट । साफ । ४ प्रसिद्ध ।
प्रख्यात । मशहूर ।

प्रज्ञानं (न०) १ प्रतिभा । ज्ञान । बुद्धि । २ चिन्ह ।
निशानी ।

प्रज्ञावत् (वि०) बुद्धिमान । प्रतिभावान् ।

प्रज्ञाल, प्रज्ञिन् } (वि०) [स्त्री०—प्रज्ञिनी]
प्रज्ञित } बुद्धिमान् । प्रतिभाशाली ।
विवेकी ।

प्रज्ञ (वि०) टढ़ी दाग वाला

प्र चलनम् (न०) चलना चलने की क्रिया ।

प्रज्वलित (व० कृ०) १ धधकता हुआ । जलता हुआ । २ चमकीला । चमकता हुआ ।

प्रडीनम् (न०) १ चारों ओर (पक्षियों का) उड़ना । २ आगे की ओर उड़ना । ३ उड़ान भरना ।

प्रण (वि०) प्राचीन । पुराना ।

प्रणाशः (पु०) नष्ट का अग्रभाग ।

प्रणात (व० कृ०) १ बहुत झुका हुआ । २ प्रणाम करता हुआ । ३ दीन । ४ चतुर । निपुण ।

प्रणतिः (स्त्री०) १ प्रणाम । नमस्कार । प्रणिपात । दण्डवत् । २ चमत्ता । सुशीलता । दीनता ।

प्रणदनं (न०) आवाज । नाद ।

प्रणयः (पु०) १ विवाह । (पाणि) ग्रहण । २ प्रेम । प्रीति । आसक्ति । ३ मैत्री । दोस्ती । ४ मेलजोल । रसजूस । विश्वास । भरोसा । ५ अनुग्रह । दया । कृपा । ६ विनय । याचना । प्रार्थना । ७ प्रणाम । प्रणिपात । ८ मोक्ष ।—अपराधः, (पु०) प्रेम या मैत्री के विरुद्ध कोई अपचार ।—उन्मुख, (वि०) १ अन्तर्गत प्रेम को प्रकट करने को उद्यत । २ प्रेमावेश से घैररहित ।—कलहः, (पु०) प्रेमी का झगड़ा । बनावदी या झूठमूठ का झगड़ा ।—कुपित, (वि०) झूठमूठ का या दिखावदी क्रोध ।—कोपः, (पु०) नायिका का अपने नायिक के प्रति झूठमूठ का क्रोध ।—प्रकर्षः, (पु०) अत्यधिक प्रेम ।—भङ्गः, (पु०) १ मित्रता का टूट जाना । २ निमकहरामी पना ।—घञ्जनं, (न०) प्रेमप्रदर्शक वाक्य ।—धिमुख, (वि०) १ प्रेम से पराङ्मुख । २ मैत्री करने को अनिच्छुक ।—विहृतिः, —विधातः, (पु०) अस्वीकृति । अवज्ञा ।

प्रणयनम् (न०) १ लाना । जाकर लाना । २ परिचालन करना । लेजाना । ३ रचना । बनाना । तैयार करना । ४ लेखलिखना । निबन्ध लिखना । ५ दण्डाज्ञा देना । डिग्री देना अर्थात् वादी को जिताना । यथा “दण्डस्य प्रणयनम् ।”

प्रणयत् (वि०) १ प्रिय । प्यारा । २ निःकुल ।

अकपदी । सफ दिल का । ३ उत्सुकतापूर्वक अभिलाषी । कामना करने वाला ।

प्रणयिन् (वि०) १ प्यारा । प्रिय । कृपालु । अनुरक्त । २ प्रेमपात्र । ३ अभिलाषी । इच्छुक । ४ परिचित । घनिष्ठ (पु०) १ मित्र । सखा । प्रेमी । २ पति । प्रेमी । आशिक । ३ विनम्रप्रार्थी । प्रणयी । ४ पुजारी । भक्त ।

प्रणयिनी (स्त्री०) १ स्वामिनी । प्रेमपात्री । माशूका । भार्या । पत्नी । सखी । सहेली ।

प्रणयः (पु०) १ ओझार । २ तबला । मृदङ्ग । ढोल । ३ विष्णु या परब्रह्म का नामान्तर ।

प्रणस (वि०) खंबी नाक वाला । नकू ।

प्रणाडी (स्त्री०) माध्यम । बीच बिचाव । बीच में पड़ना ।

प्रणादिः (पु०) १ कोलाहल । होहल्ला । शोरगुल । २ गर्जन । ३ दिनहिनाहट । रैंक । ४ बरबराहट । जधजधकार । बाहवाही । ५ सहायता के लिये चीत्कार । ६ कान का रोग विशेष ।

प्रणामः (पु०) नमस्कार । प्रणिपात । दण्डवत् ।

प्रणाथकः (पु०) १ चमूपति । सेनापति । २ नेता । प्रधान । पथप्रदर्शक ।

प्रणाथ्य (वि०) १ प्यारा । प्रेमपात्र । माशूक । २ धर्मात्मा । ईमानदार । ३ नापसंद । अरुचिकर । अस्वीकृत । ४ विरक्त ।

प्रणालः (पु०) } १ नाली । नहर । बंवा । २
प्रणाली (स्त्री०) } परंपरा ।
प्रणालिका (स्त्री०) }

प्रणाशः (पु०) १ नाश । बरवादी । २ अवसान । समाप्ति ।

प्रणाशन (वि०) नाश करने वाला । स्थानान्तरित करने वाला ।

प्रणाशनम् (न०) नाश । बरवादी ।

प्रणिसित (वि०) लुम्बित ।

प्रणिधानं (न०) १ प्रयोग । व्यवहार । उपयोग । २ महान् प्रयत्न । ३ समाधि । ४ अत्यन्त भक्ति । ५ कर्मफलत्याग ।

प्रणिधिः (पु०) १ मेदिया । गुसचर । मोड़ंदा । २

नौकर । चाकर । अर्दली । ५ विनयी । शर्थना ।
याचना ।

प्रणिनादः (पु०) उच्चस्वर ।

प्रणिपतनं (न०) } प्रणाम । दण्डवत् । नमस्कार ।

प्रणिपातः (पु०) } चरणों में सिर नवाना ।—

रसः, (पु०) आयुधों पर पड़ा जाने वाला
मंत्र विशेष ।

प्रणिहित (व० कृ०) १ स्थापित । लगाया हुआ ।

२ सौपा हुआ । ३ फैलाया हुआ । बढ़ाया हुआ ।

पसारा हुआ । ४ जमा किया हुआ । ५ लवलीन ।

६ दृढ़प्रतिज्ञ । निर्णीत । ७ सावधान । ८ प्राप्त ।

उपलब्ध । ९ जासूसी किया हुआ ।

प्रणीत (व० कृ०) उपस्थित किया हुआ । पेश

किया हुआ । सामने रखा हुआ । २ सौपा हुआ ।

दिया हुआ । भेंट किया हुआ । ३ लाया हुआ ।

४ तैयार किया हुआ । बनाया हुआ । ५ सिख-

लाया हुआ । ६ फैका हुआ । निकाला हुआ ।

प्रणीतः (पु०) मंत्रों से संस्कृत किया हुआ यज्ञाग्नि ।

प्रणीतं (न०) अच्छी तरह पकाया या बनाया हुआ
कोई पदार्थ ।

प्रणुत्त (व० कृ०) १ निकाला हुआ । भगाया हुआ ।

२ भड़काया हुआ । चौकाया हुआ । डराया हुआ ।

प्रणुन्न (व० कृ०) १ भगाया हुआ । २ चलाया

हुआ । ३ भड़का हुआ । ४ काँपता हुआ ।

प्रणेतृ (पु०) १ नेता । सृष्टिकर्ता । बनाने वाला । ३

किसी सिद्धान्त का प्रचारक । आचार्य । ४ प्रण-

यनकर्ता । ग्रन्थरचयिता ।

प्रणेतृ (वि०) १ आज्ञाकारी । अधीन । बशवर्ती । २

किये जाने को । पूरा किये जाने को । ३ निश्चय

करने को । तैकरने को ।

प्रणोदः (पु०) १ हकाना । २ सुकाना ।

प्रतत (व० कृ०) १ छाया हुआ । ढका हुआ । २

तना हुआ । [बेल ।

प्रततिः (स्त्री०) १ विस्तार । फैलाव । २ लता ।

प्रतन (वि०) [स्त्री०—प्रतनी] प्राचीन । पुराना ।

प्रतनु (वि०) [स्त्री०—प्रतनु या प्रतन्वी] १ चीख ।

दुबला । २ बारीक । सूक्ष्म । ३ बहुत छोटा । ४

तुच्छ ।

प्रतपनं (व०) तपाना । तप्त करना ।

प्रतम (व० कृ०) १ गर्मांश हुआ । २ उत्सुक । ३

मन्तव्य । सताया हुआ । पीड़ित ।

प्रतरः (पु०) पार होना । उतरना । पार जाना ।

प्रतर्कः (पु०) १ अनुमान । ज्ञास । २ वाद-

प्रतर्कणं (न०) } विवाद ।

प्रतर्जनं (न०) सप्त अक्षरोंमें से एक ।

प्रतलः (पु०) हाथ की हथेली ।

प्रतानः (पु०) १ अङ्कुर । अँकुआ । कोपल । २

लता । बेल । ३ बहुशाखीय । पल्लवित होना ।

४ रोग विशेष जिसमें मूर्च्छा आती है ।

प्रतानिन् (वि०) १ फैलने वाला । २ अँकुआँ या
कोपल वाला ।

प्रतानिनी (स्त्री०) लूथ फैलने वाली लता या बेल ।

प्रतापः (पु०) १ उष्णता । गर्मी । २ ताप । ३

बल । आभा । ४ गौरव । ५ साहस । वीरता ।

६ जीवद । पराक्रम । ७ उत्सुकता ।

प्रतापन (वि०) १ गर्माना । पीड़न करना ।

प्रतापनं (न०) १ जलन । उष्णता । गर्मी । ताप ।

२ पीड़ा । सन्ताप । दण्डविधान ।

प्रतापनः (पु०) १ एक नरक का नाम । कुम्भीपाक

नरक । २ विष्णु भगवान का नाम ।

प्रतापवत् (वि०) १ महिमान्वित । गौरवान्वित । २

पराक्रमी । विक्रमी । बलवान् । बली । (पु०)

शिव का नामान्तर ।

प्रतारः (पु०) १ पार ले जाना । २ वञ्चना । ठगी ।

धोखेबाज़ी । ठगी ।

प्रतारकः (पु०) १ वञ्चक । ठग । धूर्त ।

प्रतारणम् (न०) १ पार करना । २ छलना ।

धोखा देना । ठगना ।

प्रतारणा (स्त्री०) छल । धोखा । ठगी । बदमाशी ।

चालबाज़ी । धूम ।

प्रतारित (वि०) छला हुआ । ठगा हुआ ।

प्रति (अव्यया०) एक उपसर्ग जो शब्दों के पूर्व

लगाया जाता है और निम्न अर्थ देता है १

विरुद्ध । विपरीत । २ सामने । ३ बदले में । ४

हर एक । एक एक । ५ समान । सदृश । ६ जोड़

का । मुकाबले का । ७ सामने । मुकाबले में । ८

ओर । तरफ ।—अक्षरं, (न०) प्रत्येक अक्षर में ।—अग्नि, (अव्यया०) अग्नि की तरफ ।—अङ्ग, (न०) १ शरीर का छोटा अवयव जैसे नाक । २ भाग । अव्याय । प्रत्येक अवयव । ४ आयुध : हथियार ।—अङ्गम्, (अव्यया०) शरीर के प्रत्येक अवयव में या पर । २ प्रत्येक उपविभाग के लिये ।—अनन्तर, (वि०) समीपवर्ती । २ समीपी (कुटुम्बी) ३ अत्यन्त घनिष्टता ।—अनिलं, (अव्यया०) पवन की ओर या विरुद्ध ।—अनीक, (वि०) १ शत्रु । विरोधी । २ सामना करने वाला । बचाव करने वाला ।—अनीकः, (पु०) शत्रु ।—अनीकं, (न०) १ शत्रुता । वैर । विरोध । २ आक्रमणकारी सेना । ३ अलंकार विशेष ।—अनुमानं, (न०) उल्टा परिणाम ।—अन्त, (वि०) समीपी । सीमावर्ती ।—अन्तः, (पु०) १ सीमा । हृद । २ सीमान्त देश । विशेष कर वह देश जिसमें हूस और म्लेच्छ बसते हों ।—अपकारः, (पु०) बदला । बदले में अनिष्ट करना ।—अर्घ्यं, (अव्यया०) प्रतिवर्ष ।—अर्कः, (पु०) सूर्य । बनावटी सूर्य ।—अवयवं, (अव्यया०) १ प्रत्येक अवयव में । २ विस्तार से ।—अवर, (वि०) १ निम्नतर । कम प्रतिष्ठित । २ अति नीच । अति तुच्छ ।—अश्मन्, (पु०) ईगुर । सिंदूर ।—अहं, (अव्यया०) प्रतिदिवस । हर रोज़ । दैनिक ।—आकारः, (पु०) स्थान । परतला ।—आघातः, (पु०) १ बदले का प्रहार । २ प्रतिक्रिया ।—आचारः, (पु०) उपयुक्त आचरण ।—आत्मं, (अव्यया०) एकाकी । अकेला । अलग अलग ।—आदित्यः, (पु०) सूर्य ।—आरम्भः, (पु०) १ पुनः आरम्भ । दुबारा शुरुआत । २ निषेध ।—आशा, (स्त्री०) १ उम्मेद । प्रतीक्षा । २ भरोसा । विश्वास ।—उत्तरं, (न०) जवाब । जवाब का जवाब ।—उलूकः, (पु०) १ काक । २ कोई पक्षी जो उल्लू के समान हो ।—अमुचं, (अव्यया०) प्रत्येक ऋचा में ।—एक, (वि०) हरेक ।—एकं, (अव्यया०) एक एक कर के ।

एक बार में एक । अलग अलग । एकाकी ।—कञ्जुकः, (पु०) शत्रु । बैरी ।—कण्ठम्, (अव्यया०) १ अलग अलग । एक के बाद एक । २ गले के समीप ।—कश, (वि०) जो कोड़े का भी ख्याल न करे ।—कायः, (पु०) १ पुतला । मूर्ति । तसवीर । सादृश्य । २ शत्रु । बैरी । ३ निशान । लक्ष्य ।—कितवः, (पु०) जुआरी का जोड़ीदार ।—कुञ्जरः, (पु०) आक्रमणकारी हाथी ।—कूयः, (पु०) परीखा । खार्ड ।—कूल, (वि०) १ खिलाफ । विपरीत । विरुद्ध । २ सख्त । अप्रिय । ३ अशुभ । ४ विरोधी । ५ उल्टा । ६ हठीला । जिद्दी । दुराग्रही ।—कूलं, (अव्यया०) १ विरुद्धताई से । उल्टे ढंग से ।—क्षणां, (अव्यया०) हर लहमें में ।—गजः, (पु०) आक्रमणकारी हाथी ।—गात्रं, (अव्यया०) प्रति अवयव में ।—गिरिः, (पु०) १ सामने का पहाड़ । २ छोटा पहाड़ या पहाड़ी । गृहं,—गेहं, (अव्यया०) हर एक घर में ।—ग्रामं, (अव्यया०) हरेक ग्राम में ।—चन्द्रः, (पु०) सूर्यमण्डल का चन्द्रमा ।—चरणां, (अव्यया०) प्रत्येक (वैदिक) सिद्धान्त या शाखा में । २ प्रत्येक पग पर ।—छाया, (स्त्री०) १ प्रतिबिम्ब । परछाईं । २ मूर्ति । प्रतिमा । छबी । तसवीर ।—जंघा, (स्त्री०) टाँग का अगला भाग ।—जिह्वा,—जिह्विका, (स्त्री०) गले के भीतर की घंटी । कच्चा । छोटी जीभ ।—तंत्रं, (अव्यया०) प्रत्येक तंत्र या मत के अनुसार । तंत्रसिद्धान्तः, (पु०) सिद्धान्त जो किसी शास्त्र में तो हो और किसी में न हो ।—इयहं, (न०) एक बार में (लगातार) तीन दिन ।—दिनं, (अव्यया०) सब ओर । सर्वत्र ।—द्वन्द्वः, (पु०) दो समान विरोधी व्यक्ति । मुकाबले का लड़ने वाला । बैरी । शत्रु ।—द्वन्द्वं, (न०) दो समान व्यक्तियों का विरोध ।—द्वन्द्विनः, (वि०) १ शत्रु । बैरी । २ प्रतिकूल । ३ बाह करने वाले । प्रतिस्पर्द्धी । (पु०) विरोधी । बैरी ।—द्वारं, (अव्यया०) प्रत्येक द्वार पर ।—ननु, (पु०) पन्ती । पौत्र का पुत्र । प्रपौत्र ।—नध,

(वि०) १ नवीन । युवा । ताज़ा । २ हाल का खिला हुआ या जिसमें हाल ही में कलियाँ आयी हों ।—नाड़ी, (स्त्री०) उपनाड़ी । छोटी नाड़ी ।
 —नायकः, (पु०) नाटकों अथवा काव्यों में मुख्य नायक का प्रतिद्वन्द्वी नायक । जैसे रामायण काव्य में श्रीराम जी मुख्य नायक हैं और रावण प्रति-नायक है ।—निधिः, (पु०) १ प्रतिमा । प्रति-मूर्ति । २ वह व्यक्ति जो किसी अन्य की ओर से उसका कोई काम करने को नियुक्त किया गया हो ।—निर्यातनः, (पु०) वह अपकार जो किसी अपकार का बदला चुकाने को किया जाय ।—पः, (पु०) राजा शान्तनु के पिता का नाम ।—पक्षः, (पु०) १ प्रतिवादी । विरोधी पक्ष । विरुद्ध दल । २ शत्रु । बैरी । दुश्मन ।—पक्षिन्, (पु०) विरोधी । बैरी ।—पुरुषः,—पुरुषः, (पु०) १ समान पुरुष । २ पवज्ञ । बदली । २ सहचर । साथी । ४ मनुष्य का पुतला जिसे चार सेंध के भीतर खड़ा करते हैं । इस लिये कि, उन्हें यह पता लग जाय कि, घर में कोई जाग तो नहीं रहा । ५ (किसीका) पुतला ।—प्राकारः, (पु०) परकोटे की दीवाल ।—प्रियं, (न०) वह उपकार जो किसी उपकार का बदला चुकाने के लिये किया जाय ।—जंघुः, (पु०) समान पद या स्थिति वाला ।—बल, (वि०) समान बल वाला । जोड़ीदार ।—बलं, (न०) बाहुः, (पु०) बाँह का अगला भाग ।—विम्बः—विम्बः (पु०) विम्बम्—विम्बम् (न०) १ परछाँही । छाया । २ प्रतिमा । प्रतिमूर्ति । छबी । तस्वीर ।—भट, (वि०) मुकाबला करने वाला ।—भटः, (पु०) बराबर का योद्धा । समान बल वाला योद्धा ।—भय, (वि०) भयङ्कर । खौफनाक ।—भयं, (न०) खतरा । जोखों ।—मण्डलं, (न०) सूर्य आदि चमकते हुए ग्रहों का मण्डल या घेरा । परिवेश ।—मल्लः, (पु०) प्रतिभा । बराबर का पहलवान ।—माया, (स्त्री०) जादू के जवाब का जादू ।—मित्रं, (न०) शत्रु । बैरी ।—मुख, (वि०) १ सामने खड़ा हुआ । २ समीप । निकट ।—

मुखं, (न०) नाटक की पञ्चसन्धियों में से एक । इस सन्धि में विलास, परिस्पर्ष, नर्म, (परिहास), प्रगमन, विरोध, पर्युपासन, पुष्प, वज्र, उपन्यास और वर्णसंहार आदि का वर्णन किया जाता है ।—मुद्रा, (स्त्री०) दूसरी मोहर ।—मूर्तिः (स्त्री०) प्रतिमा ।—ग्रूथपः, (पु०) आक्रमणकारी हाथियों के दल का अगुआ या नायक ।—रथः, (पु०) बराबरी का लड़ने वाला ।—राजः, (पु०) आक्रमणकारी या शत्रु राजा ।—रूप, (वि०) १ समान । सदृश । २ उपयुक्त । उचित ।—रूपं, (न०) १ तस्वीर । मूर्ति । प्रतिमा ।—रूपकं (न०) तस्वीर । चित्र । प्रतिमा ।—लक्षणां, (न०) चिन्ह । निशान । चिन्हानी ।—लिपिः, (स्त्री०) लेख की नक़ल । हाथ का लिखा हुआ लेख ।—लोभ, (वि०) १ उल्टा । २ जातिविरुद्ध । (अर्थात् वह जिसके पिता और माता भिन्न भिन्न वर्ण के हों) । ४ कमीना । नीच । ५ वाम । बायाँ ।—लोभकं, (न०) उल्टा क्रम ।—वस्तु, (न०) १ वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तु के बदले में दी जाय । ३ समानान्तर ।—वातः, (पु०) प्रतिकूल पवन ।—वातं, (न०) पवन के विरुद्ध ।—विषं, (न०) विष का उतारा ।—विष्णुकः, (पु०) मुचुकुन्द वृक्ष ।—वीरः, (पु०) विरोधी । विपक्षी ।—वृषः, (पु०) आक्रमणकारी साँड़ ।—वेशः, (पु०) पड़ोस । पड़ोस का मकान । घर के सामने या निकट का घर ।—वेशिन्, (पु०) पड़ोसी । पड़ोस में रहने वाला ।—वेश्मन्, (न०) पड़ोसी का घर ।—वेश्यः, (पु०) पड़ोसी ।—चैरं, (न०) बदला । दौंव ।—शब्दः, (पु०) १ प्रतिध्वनि । गूँज । कौई । २ गर्जन ।—शशिन्, (पु०) सूर्यमूठ का चन्द्रमा । चन्द्रमा का घेरा ।—सम, (वि०) बराबरी वाला । जोड़ीदार ।—सन्ध, (वि०) उल्टा क्रम वाला ।—सूर्यः,—सूर्यकः, (पु०) १ सूर्य का घेरा । २ एक उत्पत्ति जिसमें सूर्य के सामने एक ओर सूर्य निकला हुआ दिखलाई देता है । गिर-सं० श० कौ०—६८

गिट ।—सेना, (स्त्री०) शत्रु की सेना ।—
 हस्तः, हस्तकः, (पु०) प्रतिनिधि । एवजी ।
 प्रतिक (वि०) १ कार्यापेक्ष में मोल लिया हुआ ।
 प्रतिकरः (पु०) मुआवज़ा । क्षतिपूर्ति । प्रतिशोध ।
 प्रतिकर्तु (वि०) [स्त्री०—प्रतिकर्त्री] प्रतिशोध
 करने वाला । क्षतिपूर्ति करने वाला । (पु०)
 विरोधी । प्रतिपक्षी ।
 प्रतिकर्मन् (न०) १ प्रतिकार । बदला । २ वह कार्य,
 जो किसी दूसरे कर्म के द्वारा प्रेरित हो किसी कार्य
 के होने पर होने वाला कार्य । किसी काम के
 जवाब में होने वाला काम । ३ वेश । भेष । ४
 अङ्गकर्म । शरीर की सजावट । ५ विरोध । बैर ।
 प्रतिकर्षः (पु०) समष्टि । संग्रह ।
 प्रतिकषः (पु०) १ नायक । नेता । २ सहायक । ३
 वार्ताहर । क्रासिद ।
 प्रतिकारः } (पु०) १ प्रतिशोध । पुरस्कार ।
 प्रतीकारः } बदला । २ वह कार्य जो किसी बुरे कार्य
 का बदला देने को किया जाय । ३ चिकित्सा ।
 इलाज । ४ विपक्षता । सामना ।—विधानं,
 (न०) इलाज । चिकित्सा ।
 प्रतिकाशः } (पु०) १ प्रतिबिम्ब । २ चितवन ।
 प्रतीकाशः } दृष्टि ।
 प्रतिकुञ्चित } (वि०) मुड़ा हुआ । झुका हुआ ।
 प्रतिकुञ्चित } देखा ।
 प्रतिकृत (व० कृ०) फेरा हुआ । लौटा हुआ । अदा
 किया हुआ । प्रतिशोधित । बदला लिया हुआ ।
 २ इलाज किया हुआ ।
 प्रतिकृतिः (स्त्री०) १ बदला । प्रतिकार । २ प्रति-
 शोध । ३ प्रतिबिम्ब । चित्र । छायाचित्र । ४
 सादृश्य । तसवीर । मूर्ति । प्रतिमा । ५ प्रति-
 निधि ।
 प्रतिकुष्ट (व० कृ०) १ दुबारा जोता हुआ । २
 अति निन्दित । निकुष्ट । त्यक्त । ३ झिपा हुआ ।
 ४ नीच । कमीना ।
 प्रतिकोपः } (पु०) किसी के ऊपर गुस्सा ।
 प्रतिकोधः }
 प्रतिक्रमः (पु०) उल्टा पुल्टा क्रम या सिलसिला ।
 तिक्रिया (स्त्री०) १ प्रतीकार । बदला । २ एक
 तरफ कोई क्रिया होने पर परिणाम स्वरूप दूसरी

तरफ होने वाली क्रिया । ३ विरोध । सामना । ४
 व्यक्तिगत सजावट या शृङ्गार । ५ रक्षण । ६
 साहाय्य ।
 प्रतिकुष्ट (वि०) निर्धन । बापूरा ।
 प्रतिकृत्यः (पु०) खवाला । अर्दली ।
 प्रतिक्रित (व० कृ०) १ लौटाया हुआ । अस्वीकृत ।
 निकाला हुआ । २ रोका हुआ । सामना किया
 हुआ । ३ गाली दिया हुआ । निन्दा किया हुआ ।
 ४ भेजा हुआ । रवाना किया हुआ ।
 प्रतिकुनं (न०) छींक । छिका ।
 प्रतिकोपः (पु०) १ अस्वीकृति । ग्रहण न करना ।
 २ विरोध करना । खण्डन करना । खण्डन ।
 ३ झगडा ।
 प्रतिक्रियातिः (स्त्री०) प्रसिद्धि । ख्याति ।
 प्रतिगत (व० कृ०) पक्षियों का एक प्रकार का उड़ान ।
 प्रतिगमनम् (न०) लौट जाना । वापिस जाना ।
 वापसी ।
 प्रतिगर्हित (व० कृ०) कलङ्कित । निन्दित ।
 प्रतिगर्जना (स्त्री०) गर्जन के जवाब में गर्जन ।
 प्रतिगृहीत (व० कृ०) १ लिया हुआ । जो ग्रहण
 कर लिया गया हो । २ स्वीकृत । माना हुआ ।
 ३ विवाहित ।
 प्रतिग्रहः (पु०) १ स्वीकार । ग्रहण । २ उस दान
 का लेना जो विधिपूर्वक दिया जाय । ३ पकड़ना ।
 अधिकृत करना । ४ पार्याग्रहण । विवाह । ५
 ग्रहण । उपराग । ६ स्वागत । अभ्यर्थना । ७ दान
 लेने वाला । ८ अनुग्रह । कृपा । ९ सेना का
 पिछला भाग । १० उगालदान । पीकदान ।
 प्रतिग्रहणम् (न०) १ प्रतिग्रह लेना । २ स्वागत ।
 ३ विवाह ।
 प्रतिगृहीन् } (पु०) लेने वाला । ग्रहण करने वाला ।
 प्रतिगृहीतृ }
 प्रतिग्राहः (पु०) १ प्रतिग्रह । २ उगालदान ।
 पीकदान ।
 प्रतिघः (पु०) १ विरोध । सामना । मुकाबला । २
 लड़ाई । युद्ध । आपस की मारपीट । ३ क्रोध ।
 रोष । ४ मूर्खी । ५ शत्रु । बैरी ।

प्रतिघातः (पु०) १ रोकना । रोपना । २ सामना ।
प्रतीघातः (मुकाबला । ३ चोट के बदले चोट । ४

टक्कर । ५ रुकावट । बाधा ।

प्रतिघातनं (न०) १ हटाना । टालना । भगा देना ।
२ प्राणघात । वध । हत्या ।

प्रतिघ्नं (न०) शरीर । देह । काया ।

प्रतिघ्निकीर्षा (स्त्री०) बदला लेने की अभिलाषा ।

प्रतिघ्नितनं } (न०) ध्यान । पुनर्विचार ।
प्रतिघ्नितनम् }

प्रतिच्छेदनम् (न०) चादर । चहर ।

प्रतिच्छेदः, प्रतिच्छन्दः } (पु०) १ सादृश्य ।
प्रतिच्छेदकः, प्रतिच्छन्दकः } छबी । तसवीर । मूर्ति ।
प्रतिमा । २ परियाय ।

प्रतिच्छन्न (व० कृ०) १ ढका हुआ । लपटा हुआ ।
२ छिपा हुआ । ३ सम्पन्न । ४ घिरा हुआ ।
छिका हुआ ।

प्रतिच्छेदः (पु०) बाधा । रुकावट ।

प्रतिजल्पः (पु०) उत्तर । जवाब ।

प्रतिजल्पकः (पु०) प्रतिष्ठा पूर्वक सहमति या ऐक-
मत्य । [ध्यान देना ।

प्रतिजागरः (पु०) खूब सावधानी रखना । सम्यक्

प्रतिजीवनम् (न०) नया जन्म । फिर से जन्म ।

प्रतिज्ञा (स्त्री०) १ वादा । स्वीकृति । स्वीकारोक्ति ।

२ किसी काम को करने या न करने के विषय में
वचनदान । ३ वयान । कथन । घोषणा । ४ न्याय

में अनुमान के पाँच खण्डों या अवयवों में प्रथम
अवयव । ५ अभियोग । दावा ।—पत्रं, (न०)

वह पत्र जिस पर कोई प्रतिज्ञा लिखी हो । इक-
रारनामा ।—भङ्गः, (पु०) वादे को तोड़ देना ।

—विरोधः, (पु०) प्रतिज्ञा के प्रतिकूल आच-
रण । वादाखिलाफी ।—विवाहित, (वि०)

सगाई । वाक्दान ।—संन्यासः, (पु०) १ वादा-
खिलाफी । प्रतिज्ञा भंग करने की क्रिया । २ न्याय

में एक प्रकार का “निग्रहस्थान ।” प्रतिज्ञाहानि ।

प्रतिज्ञात (व० कृ०) १ वादा किया हुआ । २ कहा
हुआ । ३ स्वीकृत । माना हुआ ।

प्रतिज्ञानं (न०) १ ईमानधर्म से कहना । २ इकरार ।
वादा । ३ स्वीकारोक्ति ।

प्रतितरः (पु०) जहाज़ी । माँझी । डाँढ खेने वाला ।

प्रतिताली (स्त्री०) कुंजी । चाभी । ताली । (किसी
दरवाजे की ।

प्रतिदर्शनम् (न०) भेंट । मुलाकात ।

प्रतिदानं (न०) १ ली या रखी हुई वस्तु को लौटाना
२ विनिमय । एक वस्तु लेकर बदले में दूसरी वस्तु
देना । बदला । [फाड़ना ।

प्रतिदारणं (न०) १ लड़ाई । युद्ध । २ चीरना ।

प्रतिदिवन् (पु०) १ दिवस । २ सूर्य ।

प्रतिदृष्ट (व० कृ०) देखा हुआ । दृष्टिगोचर ।
निगाह के सामने पड़ा हुआ ।

प्रतिधावनम् (न०) आक्रमण । हमला । चढ़ाई ।

प्रतिध्वनिः (पु०) प्रतिनाद । प्रतिशब्द । गूँज ।

प्रतिध्वानः } भाँई ।

प्रतिध्वस्त (व० कृ०) गिराया हुआ । पटका हुआ ।

प्रतिनन्दनं } (न०) १ बचाई । स्वागत । २ धन्य-
प्रतिनन्दनम् } वाद देने की क्रिया ।

प्रतिनादः (पु०) प्रतिध्वनि । गूँज । भाँई ।

प्रतिनाहः } (पु०) झंडा । पताका ।

प्रतीनाहः }

प्रतिनिधिः (पु०) १ वह व्यक्ति जो दूसरे के बदले
कोई काम करने को नियुक्त किया जाय । एवज़ ।
बदली । २ ज़ामिन । ३ प्रतिमा ।

प्रतिनियमः (पु०) साधारण नियम ।

प्रतिनिर्जित (व० कृ०) १ अन्तर्धान । संयत । १
खरगडन किया हुआ ।

प्रतिनिर्देश्य (वि०) वह जो, यद्यपि प्रथम व्यक्त किया
जा चुका है, तथापि पुनः कहा जाय, इस अभि-
प्राय से कि कुछ अधिक कथन किया जाय ।

प्रतिनिर्यातनम् (न०) अपकार जो किसी अपकार
का बदला चुकाने को किया जाय ।

प्रतिनिविष्ट (वि०) हठी । आग्रही । ज़िद्दी ।—
मूर्खः, (पु०) दुराग्रही मूर्ख ।

प्रतिनिवर्तनं (न०) १ लौटना । वापिस आना ।
२ मुड़ना । पराङ्मुख होना ।

प्रतिनोदः (पु०) पीछे हटाने वाला । पीछे हटाने
की क्रिया ।

प्रतिपत्तिः (स्त्री०) १ प्राप्ति । उपलब्धि । २ ज्ञान ।
विवेक । ३ स्वीकृति । ४ स्वीकारोक्ति । ५ कथन ।

वयान । ६ आरम्भ । प्रारम्भ । ७ कार्यवाही ।

पद्धति ८ करना । पूरा करना १ सन्तव्य ।
 दृढ़ सङ्कल्प । १० सवाद खबर । ११ सम्मान ।
 मान । प्रतिष्ठा । १२ ढंग । उपाय । १३ प्रतिभा ।
 बुद्धि । १४ उपयोग । व्यवहार । १५ उन्नति ।
 बढ़ती । पदवृद्धि । १६ स्थाति । नामवरी ।
 प्रसिद्धि । १७ साहस । विश्वास । १८ प्रमाय ।
 हतमीनान । भरोसा ।—दत्त, (वि०) कोई
 काम कैसे करना चाहिये यह जानने वाला ।—
 पटहः, (पु०) ढोल । ढोलक । मृदंगः—भेदः,
 (पु०) मतभेद ।—विज्ञारदः, (वि०)
 निपुण । पटु । चतुर ।

प्रतिपद (स्त्री०) १ द्वार । दरवाजा । रास्ता । २
 आरम्भ । प्रारम्भ । ३ पाख की प्रथम तिथि ।
 ४ ढोल ।—चन्द्रः, (पु०) प्रतिपदा का चन्द्रमा ।
 —तूर्यः, (न०) नगाड़ा ।

प्रतिपदा } (स्त्री०) पाख की प्रथम तिथि । परवा ।
 प्रतिपदी }
 प्रतिपन्न (व० कृ०) १ प्राप्त । जो मिला हो । २ किया
 हुआ । पूरा किया हुआ । ३ आरम्भ किया हुआ ।
 ४ प्रतिज्ञात । ५ अङ्गीकृत । स्वीकृत । अपानाया
 हुआ । ६ जाना हुआ । अवगत । समझा हुआ ।
 ७ उत्तर दिया हुआ । ८ सिद्ध किया हुआ ।
 स्थापित किया हुआ । प्रमाणित किया हुआ ।

प्रतिपादक (वि०) [स्त्री०—प्रतिपादिका] १
 भली भाँति समझाने वाला । प्रतिपादन करने
 वाला । २ सावित करने वाला । प्रतिपन्न करने
 वाला । समर्थन करने वाला । ३ निष्पादन करने
 वाला । निरूपण करने वाला । ४ उन्नति करने
 वाला । बढ़ाने वाला । ५ निर्वाह करने वाला ।
 ६ उत्पन्न करने वाला ।

प्रतिपादनं (न०) १ दान । पुरस्कार । २ प्रतिपत्ति ।
 स्थापन । सिद्धि । ३ व्याख्या । निष्पादन । ४
 अभ्यास । टेव । वान । ५ आरम्भ ।

प्रतिपादित (व० कृ०) १ दिया हुआ । दान किया
 हुआ । भेंट किया हुआ । २ स्थापित किया हुआ ।
 सिद्ध किया हुआ । ३ व्याख्या किया हुआ ।
 अच्छी तरह समझाया हुआ । ४ घोषित किया
 हुआ । ५ उत्पन्न किया हुआ ।

प्रतिपालक (पु०) रक्षक । रखवाला ।
 प्रतिपालन (न०) रक्षण । रक्षा । रखवाली ।
 अभ्यास । आलोचन । वचाव ।

प्रतिपीडनम् (न०) अत्याचार । छेड़छाड़ ।
 प्रतिपूजनं (न०) १ अभिवादन । सम्मान प्रद-
 प्रतिपूजा (स्त्री०) १ शिव । २ पारस्परिक अभिवादन ।
 पारस्परिक शिष्टाचार प्रदर्शन ।

प्रतिपूरणं (न०) १ भरना । परिपूर्ण करना । २
 (सुईदार पिचकारी से) किसी तरल पदार्थ को
 भीतर डालना ।

प्रतिप्रणामः (न०) प्रणाम के बदले का प्रणाम ।
 प्रतिप्रदानं (न०) १ लौटाना । किसी की हुई या
 धरोहर रखी हुई वस्तु को लौटाना । २ विवाह में
 दान करना ।

प्रतिप्रयाणं (न०) लौटना । फिरना ।
 प्रतिप्रश्नः (पु०) १ प्रश्न के बदले प्रश्न । २ उत्तर ।
 प्रतिप्रसवः (पु०) अपवाद का अपवाद । जिस बात
 का एक स्थान पर निषेध किया गया हो उसीका
 किसी विशेष अवस्था में विधान ।

प्रतिप्रहारः (पु०) प्रहार के बदले प्रहार । चोट के
 बदले चोट ।

प्रतिप्रवनम् (न०) कूद कर लौट आना ।
 प्रतिफलः (पु०) १ परिणाम । नतीजा । २
 प्रतिफलनं (न०) प्रतिबिम्ब छाया । परछाई ।
 ३ प्रतिशोध । ४ बदला ।

प्रतिफुल्लक (वि०) फूलने वाला । पूरा खिला हुआ ।
 प्रतिबद्ध (व० कृ०) १ बंधा हुआ । २ सम्बन्ध
 युक्त । ३ जिसमें रुकावट या प्रतिबन्ध हो । ४
 जड़ा हुआ । ५ फैसा हुआ । पड़ा हुआ । ६
 हटाया हुआ । ७ जो हताश हो चुका हो । ८
 अविच्छिन्न सम्बन्ध युक्त जैसे आग और धुँआ ।

प्रतिबंधः } (पु०) १ बंधन । २ रोक । अटकाव ।
 प्रतिबन्धः } ३ विघ्न । बाधा । ४ सामना । मुकाबला ।
 ५ विराव । ६ सम्बन्ध । ७ अनिवार्य तथा अवि-
 च्छिन्न सम्बन्ध ।

प्रतिबंधक } (वि०) [स्त्री०—प्रतिबन्धिका] १
 प्रतिबन्धक } बाँधने वाला । गसने वाला । २ रोकने
 वाला । अटकाने वाला । ३ मुकाबला करने वाला ।
 सामना करने वाला ।

प्रतिबन्धकः } (पु०) शाखा । अङ्कुर ।
 प्रतिबन्धकः }
 प्रतिबन्धनं } (न०) १ बन्धन । २ क्रौं । ३ विज्ञ ।
 प्रतिबन्धनम् } बाधा ।
 प्रतिबन्धिः, प्रतिबन्धिः (पु०) } १ आपत्ति । पत-
 प्रतिबन्धी, प्रतिबन्धी (स्त्री०) } राज्ञ । ऐसी तर्क जो
 विपक्ष पर भी समान रूप से असर डाले ।
 (इसे 'प्रतिबन्धी' भी कहते हैं ।)
 प्रतिबाधक (वि०) १ हटाने वाला । दूर भगा देने
 वाला । २ रोकने वाला । बाधा डालने वाला ।
 प्रतिबाधनम् (न०) १ हटाना । दूर भगाना । २ नामंजूर
 करना । खारिज करना । अस्वीकृत करना ।
 प्रतिविचनं } (न०) १ परछाईं । प्रतिच्छाया । २
 प्रतिविम्बनम् } तुलना ।
 प्रतिविचित्र (वि०) जिसका प्रतिबिम्ब पड़ता हो ।
 प्रतिविम्बित (वि०) जिसकी परछाईं पड़ती हो । २ जो
 झलकता हो । जिसका आभास मिलता हो ।
 प्रतिबुद्ध (व० क०) १ जाना हुआ । पहचाना हुआ ।
 देखा हुआ । २ प्रसिद्ध । विख्यात ।
 प्रतिबुद्धिः (स्त्री०) १ जागृति । २ विरोधी अभिप्राय
 या हरादा ।
 प्रतिबोधः (पु०) १ जागना । २ ज्ञान । अवगति ।
 ३ शिक्षण । ४ युक्ति । तर्क ।
 प्रतिबोधनम् (न०) १ जागरण । जागृति । २
 शिक्षण । शिक्षा । ज्ञानोत्पादन ।
 प्रतिबोधित (व० क०) १ जागा हुआ । २ शिक्षित ।
 सिखलाया हुआ ।
 प्रतिभा (स्त्री०) १ सूरत । रूप । चितवन । २
 उज्ज्वलता । चमक । ३ बुद्धि । समझदारी । ४
 असाधारण मानसिक शक्ति । असाधारण बुद्धि-
 बल । ५ प्रतिभा । प्रतिबिम्ब । ६ साहस ।
 वीरता । दृष्टता । दिडार्ह । अक्खडपन । गुस्ताखी ।
 —अन्वित. (वि०) १ बुद्धिमान । २ अक्खड ।
 साहसी । —मुख, (वि०) साहसी । पूर्ण
 विश्वासी । —हानिः, (स्त्री०) १ अन्धकार । २
 बुद्धि का अभाव ।
 प्रतिभात (व० क०) १ चमकीला । प्रकाशवाद् । २
 जाना हुआ । समझा हुआ ।

प्रतिभानं (न०) १ प्रभा । चमक । २ बुद्धि ।
 ३ हाज़िरजवाबी । प्रत्युत्पन्नमतिरत्न ।
 प्रतिभाषा (स्त्री०) उत्तर । जवाब ।
 प्रतिभासः (पु०) १ (सहसा उत्पन्न हुआ) । १ चेत या
 बोध । २ आकृति । ३ अम । धोखा ।
 प्रतिभासनम् (न०) आकृति । शङ्क । सूरत ।
 प्रतिभिन्न (व० क०) १ विधा हुआ । छिद्रा हुआ ।
 २ घनिष्ठ सम्बन्ध युक्त । विभक्त ।
 प्रतिभूः (पु०) जमानत । हौमी ।
 प्रतिभेदनम् (न०) १ बेधना । घुसना । काटना ।
 चीरना । सन्धि करना । ३ खोलना । ४ विभाग
 करना ।
 प्रतिभोगः (पु०) उपभोग ।
 प्रतिभा (स्त्री०) १ मूर्ति । अनुकृति । प्रतिबिम्ब ।
 छाया । ३ माप । प्रसार । ४ हाथी का शिरोभाग
 विशेष । —गत, (वि०) मूर्ति में विद्यमान ।
 —चन्द्रः, (पु०) चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब । —
 परिचारकः, (पु०) पुजारी । अर्चक ।
 प्रतिभेन्दुः (पु०) } चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब ।
 प्रतिभाशशङ्कुः (पु०) }
 प्रतिमानं (न०) १ दृष्टान्त । उदाहरण । आदर्श ।
 २ मूर्ति । प्रतिमा । ३ अनुकृति । सादर्य । ४
 मान । तौल विशेष । ५ हाथी के दोनों दाँतों के
 बीच का भाग । ६ प्रतिबिम्ब ।
 प्रतिमुक्त (व० क०) १ पहिना हुआ । काम में लाया
 हुआ । २ बाँधा हुआ । बँधा हुआ । ३ अक्ख-
 शक से सजित । हथियार बंद । ४ छोड़ा हुआ ।
 मुक्त किया हुआ । ५ लौटाया हुआ । फेर कर
 दिया हुआ । ६ जेर से फँक कर मारा हुआ ।
 प्रतिमोलः (पु०) } कुटकारा । मुक्ति ।
 प्रतिमोक्षणम् (न०) }
 प्रतिमोचनम् (न०) १ खोलना । ढीला करना ।
 २ परिशोध । बदला । ३ कुटकारा । मुक्ति ।
 प्रतियत्नः (पु०) १ उद्योग । २ तैयारी । ३ पूर्ण
 करना । ४ नया गुण या खूबी उत्पन्न कर देना ।
 ५ अभिलाषा । इच्छा । ६ मुकाबला । सामना ।
 ७ बदला । ८ क्रौंदी बनाना । गिरफ्तार करना ।
 ९ अनुग्रह । कृपा ।

प्रतियातन (न०) प्रतिशोध बदला
 प्रतियानना (स्त्री०) बसवीर । मूर्ति । प्रतिमा ।
 प्रतियान (न०) लौटना । वापस आना ।
 प्रतियोगः (पु०) १ किसी वस्तु का दूसरा प्रतिरूप
 या उतारा । २ सामना । मुकाबला । ३ खण्डन ।
 ४ सहयोग । ५ मारक ।
 प्रतियोगिन् (पु०) १ शत्रु । विरोधी । बैरी ।
 २ बाधा डालने वाला । ३ सहायक । मददगार ।
 साथी । ४ बराबर वाला । जोड़ का । जोड़ीदार ।
 प्रतियोद्ध (पु०) } शत्रु । बैरी ।
 प्रतियोधः (पु०) }
 प्रतिरक्षणं (न०) } रक्षा । हिफाजत ।
 प्रतिरक्षा (स्त्री०) }
 प्रतिरम्भः } (पु०) क्रोध । रोष ।
 प्रतिरम्भः }
 प्रतिरवः (पु०) १ भगवा । टंटा । २ प्रतिध्वनि ।
 प्रतिरुद्ध (व० क०) १ अवरुद्ध । रुका हुआ । २
 अटका हुआ । ३ निर्बल । ४ बेकाम किया हुआ ।
 प्रतिरोधः (पु०) १ अटकाव । रोकटोक । २ बेरा ।
 अवरोध । ३ विरोधी । ४ छिपाव । दुराव । ५
 चेरी । डाँकेलनी । ६ भर्त्सना । धिक्कार ।
 प्रतिरोधकः (पु०) १ बैरी । शत्रु । २ डाँकू ।
 प्रतिरोधिन् (पु०) } चोर । ३ अटकाव । रोकटोक ।
 प्रतिरोधनं (न०) अवरोध । रोक । अटकाव ।
 प्रतिलम्भः } (पु०) १ प्राप्ति । उपलब्धि । २
 प्रतिलम्भः } भर्त्सना । कुवाच्य । गाली गलौज ।
 प्रतिलाभः (पु०) वापिस लेना । फेर लेना । प्राप्त
 करना ।
 प्रतिवचनं (न०) }
 प्रतिवचस् (न०) } उत्तर । जवाब ।
 प्रतिवाच (स्त्री०) }
 प्रतिवाच्यं (न०) }
 प्रतिवर्तनम् (न०) लौटाव । फिराव । लौटने की
 क्रिया ।
 प्रतिवस्थः (पु०) प्राप्त । गाँव ।
 प्रतिवहनं (न०) उलटी ओर ले जाना । विरुद्ध दिशा
 में ले जाना ।
 प्रतिवाद् (पु०) १ उत्तर । उत्तर का उत्तर । जवाब ।
 २ अस्वीकृति । इंकार ।

प्रतिवादिन् (पु०) १ प्रतिवादी । विपक्षी मुद्दालह ।
 प्रतिवार { पु० } } रोकना । मना करना ।
 प्रतिवारणम् { न० } }
 प्रतिवार्ता (स्त्री०) वृत्तान्त । सूचना । संवाद ।
 खबर ।
 प्रतिवासिन् (वि०) [स्त्री०—प्रतिवासिनी] समीप
 का वासी । (पु०) पड़ोसी ।
 प्रतिविधातः (पु०) बचाव । मोट के बदले मोट ।
 प्रतिविधानं (न०) १ प्रतीकार । २ व्यूहरचना । ३
 रोक । ४ उपसंस्कार ।
 प्रतिविधिः (पु०) १ बदला । दौंव । २ प्रतीकार ।
 हलाज । उपाय ।
 प्रतिविशिष्ट (वि०) अत्युत्तम ।
 प्रतिवेशः (पु०) १ पड़ोसी । २ पड़ोसी का वास-
 स्थान । पड़ोस ।—वासिन् (वि०) पड़ोस में
 बसने वाला ।
 प्रतिवेशिन् (वि०) [स्त्री०—प्रतिवेशिनी] पड़ोसी ।
 प्रतिवेश्यः (पु०) पड़ोसी ।
 प्रतिवेष्टित (व० क०) प्रत्यावृत्त । लौटा हुआ ।
 निपर्यन्त ।
 प्रतिव्यूहः (पु०) १ शत्रु पर आक्रमण करने के लिये
 सेना का व्यूह बनाना । २ समुदाय । दल ।
 प्रतिशमः (पु०) अवसान । समाप्ति ।
 प्रतिशयनम् (न०) किसी कामना की सिद्धि के लिये
 देवस्थान पर खाना पीना त्याग कर पड़ा रहना ।
 धरना देना ।
 प्रतिशयित (वि०) धरना देने वाला ।
 प्रतिशापः (पु०) शाप के बदले शाप । अकोसा के
 बदले अकोसा ।
 प्रतिशासनं (न०) १ आज्ञा प्रदान करना । २ किसी
 कार्य पर बाहिर भेजना । आज्ञा । आदेश ।
 प्रतिशिष्ट (व० क०) १ भेजा हुआ । आज्ञित । २
 विसर्जन किया हुआ । छुड़ाया हुआ । खारिज
 किया हुआ । ३ प्रख्यात । प्रसिद्ध ।
 प्रतिश्रय (स्त्री०) }
 प्रतिश्रयानं (न०) } जुकाम । श्लेष्मा । ठंड ।
 प्रतिश्रयायः (पु०) }
 प्रतिश्रयः (पु०) १ आश्रम । २ घर । ३ सभा । ४

यज्ञमयङ्प । २ साहाय्य । सहायता । ६ वादा । प्रतिज्ञा ।
 प्रतिश्रवः (पु०) १ राजमंदा । इकार । वादा । २ गूँज । काँई । प्रतिश्रवनि ।
 प्रतिश्रवणम् (न०) १ सुनना । २ प्रतिज्ञावद् होना । ३ प्रतिज्ञा । वादा । इकार ।
 प्रतिश्रुत् (स्त्री०) १ वादा । प्रतिज्ञा । २ प्रति-
 प्रतिश्रुतिः } ध्वनि । गूँज । काँई ।
 प्रतिश्रुत (व० कृ०) प्रतिज्ञात । स्वीकार किया हुआ ।
 मंजूर किया हुआ ।
 प्रतिषिद्ध (व० कृ०) १ निषिद्ध । वर्जित । अस्वीकृत ।
 २ खण्डित । खण्डन किया हुआ ।
 प्रतिषेधः (पु०) १ निषेध । मनाई । २ अस्वीकृति ।
 इंकार । ३ अपलाप । खण्डन । ४ अस्वीकार
 सूचक अव्ययात्मक शब्द ।—अप्रसरं, (न०)—
 उक्तिः, (स्त्री०) इंकार । अस्वीकारोक्तिः ।—
 उपमा, (स्त्री०) दण्डी कवि वर्णित कई प्रकार की
 उपमाओं में से एक ।
 प्रतिषेधक } (वि०) १ प्रतिषेध करने वाला । मना
 प्रतिषेध } करने वाला । २ रोकने वाला । (पु०)
 बाधा डालने वाला । मनाई करने वाला ।
 प्रतिषेधनम् (न०) १ रोक थाम । २ निषेध ।
 मनाई । ३ इंकार । अस्वीकृति ।
 प्रतिष्कः } (पु०) जासूस । भेदिता । दूत ।
 प्रतिष्कसः }
 प्रतिष्कशः (पु०) १ भेदिता । दूत । २ चाबुक ।
 ३ चमड़े का तस्मा ।
 प्रतिष्कषः (पु०) चाबुक । कोड़ा । चमड़े का तस्मा ।
 प्रतिष्ठंभः } (पु०) अवरोध । शोक । बाधा ।
 प्रतिष्ठम्भः }
 प्रतिष्ठा (स्त्री०) १ स्थापना । पथरौनी । अवस्थान ।
 स्थिति । २ घर । मकान । आवादी ।
 ३ स्थिरता । स्थायित्व । दृढ़भिति । ४ नींव ।
 शुनकिया । ओटा । खंभा । ६ उच्चपद । उच्च
 अधिकार । ७ कीर्ति । यश । ख्याति । प्रायः-
 प्रतिष्ठा (किसी देवमूर्ति की) १ अभीष्ट सिद्धि ।
 १० शान्ति । विश्राम । ११ आधार । पात्र ।
 १२ पृथिवी । १३ अभिषेक । १४ सीमा । इद ।

प्रतिष्ठानं (न०) १ नींव । आधार । २ जगह ।
 स्थान । अवस्थिति । ३ टाँग । पैर । ४ एक प्राचीन
 राजधानी का नाम जो प्रयाग के समीप गंगा पार
 मूसी के नाम से अब प्रसिद्ध है । ५ गोदावरी नदी
 के तटवर्ती एक नगर का नाम ।
 प्रतिष्ठित (व० कृ०) १ खड़ा किया हुआ । लगाया
 हुआ । २ गाड़ा हुआ । स्थापित किया हुआ ।
 ३ अवस्थित । ४ अभिषेक किया हुआ । ५ पूर्ण
 किया हुआ । ६ जिसका मूल्य लग चुका हो ।
 ७ प्रसिद्ध । प्रख्यात ।
 प्रतिसंविद् (स्त्री०) किसी वस्तु का सम्यक् परि-
 ज्ञान या जानकारी ।
 प्रतिसंहारः (पु०) १ वापिस कर लेने की क्रिया ।
 २ हास । न्युनता । सिमटाव । सङ्कोचन । ३
 र्धशक्ति । बोध । अन्तर्निवेश । ४ त्याग ।
 प्रतिसंहृत (व० कृ०) १ वापिस लिया हुआ । फेरा
 हुआ । २ समस्ता हुआ । शामिल किया हुआ ।
 सिकुड़ा हुआ । दबा हुआ ।
 प्रतिसंक्रमः (पु०) १ प्रतिच्छाया । परवर्ण । २
 परिशोपन । तिरोधान ।
 प्रतिसंख्या (स्त्री०) अव्यवहित ज्ञान । चैतन्य ।
 प्रतिसञ्चरः (पु०) पुराणानुसार प्रलय का एक भेद ।
 प्रतिसन्देश } (पु०) सन्देश का जवाब । सन्देश
 प्रतिसन्देशः } के उत्तर में सन्देश ।
 प्रतिसंधानं } (न०) १ मिलान । जोड़ । दो पुराओं
 प्रतिसन्धानं } के बीच का सन्धिकाल । ३ इलाज ।
 ४ आत्म संयम । जितेन्द्रियत्व । ५ प्रशंसा ।
 प्रतिसंधिः } (पु०) १ पुनर्मिलन । २ गर्भाशय में
 प्रतिसन्धिः } प्रवेश करण । ३ दो पुराओं के परिवर्तन का
 मध्यकाल । ४ उपरम । विश्राम ।
 प्रतिसमाधानं (न०) इलाज । चिकित्सा ।
 प्रतिसमानम् (न०) १ जोड़ीदार । बराबरी का ।
 २ सामना करना । मुकाबला करना ।
 प्रतिसरं (न०) कलाई या गरदन में बाँधने का
 प्रतिसरः (पु०) } गोंदा या ताबीज़ । (पु०) १
 नौकर । अनुचर । कङ्कण । ग्याह में पहिना जाने
 वाला कङ्कण विशेष । ३ पुष्पहार या फूलमाला ।
 ४ प्रभात । ५ सेना का पश्चाद भाग । ६

तांत्रिक मन्त्र विशेष । ७ वाव का पुरना या अच्छा होना ।

प्रतिसंगः (पु०) पुराण के मतानुसार वे सब सृष्टियाँ जिनकी रचना, ब्रह्मा के मानसपुत्रों द्वारा की गयी । २ प्रलय ।

प्रतिसांधानिकः } (पु०) भाद । मागध । बंदी ।

प्रतिसांधानिकः }

प्रतिसारणं (न०) १ वाव के किनारों की सफाई और मल्लहम पट्टी करना । २ वाव में मलहम लगाने का एक औज़ार । ३ भगंदर ववासीर रोगों को गरम घी या तेल से दागने की सुश्रुत के मतानुसार किया विशेष ।

प्रतिसीरा (स्त्री०) पर्दा । कनात । विक । दबनिका ।

प्रतिसृष्ट (न० कृ०) १ भेजा हुआ । रवाना किया हुआ । २ प्रसिद्धि प्राप्त । ३ खदेड़ा हुआ । भगाया हुआ । खारिज किया हुआ । ४ प्रमत्त । नशे में चूर ।

प्रतिस्नात (व० कृ०) स्नान किया हुआ ।

प्रतिस्नेहः (पु०) प्यार के बदले प्यार ।

प्रतिस्पन्दनम् } (न०) हृदय की धक्कधक्क ।

प्रतिस्पन्दनम् }

प्रतिस्वनः } (पु०) प्रतिध्वनि । काँई ।

प्रतिस्वरः }

प्रतिहत (व० कृ०) १ हटाया हुआ । २ भगाया हुआ । ३ अवरुद्ध । रुका हुआ । ४ भेजा हुआ । ५ नापसन्द । घृणास्पद । ६ हताश ।—प्रति, (वि०) घृणा । अरुचि ।

प्रतिहतिः (स्त्री०) १ रोकने या हटाने की चेष्टा । २ प्रतिघात । ३ नैराश्य । विफलता । ४ क्रोध । ५ टक्कर ।

प्रतिहननं (न०) वह आघात जो किसी के आघात करने पर किया जाय ।

प्रतिहर्तुं (पु०) निवारण करने वाला । पीछे हटाने वाला ।

प्रतिहारः } (पु०) १ द्वार । दरवाज़ा । २ द्वारपाल ।

प्रतीहारः } दरवान । ३ ऐन्द्रजालिक । जादूगर । ४

इन्द्रजाल ।—भूमिः, (स्त्री०) घर का चबूतरा ।

—रत्नी. (स्त्री०) स्त्रीद्वारपाल ।

प्रतिहारकः (पु०) ऐन्द्रजालिक ।

प्रतिहास (पु०) हँसी के बदले हँसी

प्रतिद्विसा (स्त्री०) बदला लेना । बैर चुकाना ।

प्रतीक (वि०) १ प्रतिकूल । विरुद्ध । २ उलटा । औंधा । विलोम ।

प्रतीकः (पु०) १ अवयव । अङ्ग । २ अंश । भाग ।

प्रतीकं (न०) १ मूर्ति । २ मुख । चेहरा । ४ किसी पद या वाक्य का प्रथम शब्द ।

प्रतीक्षा (न०) } १ आसरा । इन्तज़ार । २

प्रतीक्षा (स्त्री०) } प्रत्याशा । ३ अग्रजाल । विचार । ध्यान ।

प्रतीक्षित (व० कृ०) १ वह जिसकी प्रतीक्षा की गयी हो या जिसकी बात जोही गयी हो । २ विचार किया हुआ । सोचा विचारा हुआ ।

प्रतीक्ष्य (वि०) १ प्रतीक्षा करने योग्य । सोचने योग्य । विचारने योग्य । ३ माननीय । प्रतिष्ठित । ४ परिपूर्ण करने योग्य ।

प्रतीची (स्त्री०) पश्चिम दिशा ।

प्रतीचीन (वि०) १ पश्चिमी । पारचात्य । २ भविष्य का । पीछे का । अग्रजाल ।

प्रतीच्छकः (पु०) पाने वाला ।

प्रतीच्य (वि०) पारचात्य देश वासी । पश्चिम दिशा का ।

प्रतीत (व० कृ०) १ गुज़रा हुआ । गया हुआ । व्यतीत । अतीत । २ विश्वस्त । विश्वास किया हुआ । ४ सिद्ध । साबित किया हुआ । स्थापित । ५ माना हुआ । जाना हुआ । ६ भली भाँति ज्ञात । प्रसिद्ध । विख्यात । ७ हृद निश्चय । ८ प्रसन्न । आनन्दित । ९ प्रतिष्ठित । सम्मानित । १० चतुर । विद्वान् । बुद्धिमान ।

प्रतीतिः (स्त्री०) १ विश्वास । निश्चित विश्वास या धारणा । २ यकीन । प्रत्यय । ३ ज्ञान । जानकारी । ४ कीर्ति । ख्याति । ५ सम्मान । प्रतिष्ठा । ६ हर्ष । आनन्द ।

प्रतीत्त (वि०) फेर कर दिया हुआ । वापिस किया हुआ ।

प्रतीधकः (पु०) विदेह देश का नामान्तर ।

प्रतीप (वि०) १ विरुद्ध । प्रतिकूल । २ उलटा । विलोम । ३ पश्चाद्गामी । ४ अप्रिय । अप्रसन्नकर

२ हठी अवस्थाकारी । दुराग्रही । ६ दायाकारक ।
प्रतीप (न०) अर्थात्कार विशेष । इसमें उपमेय
को उपमान के समान न कह कर, उलटा उपमान
को उपमेय के समान कहते हैं । अथवा उपमेय
द्वारा उपमान के तिरस्कार का वर्णन करते हैं ।

प्रतीपः (पु०) महाराज शान्तनु के पिता का नाम ।

प्रतीपम् (अव्यया०) १ विरुद्ध इसके । दूसरी ओर ।
२ उलटे क्रम से । बिलान क्रम से । ३ प्रतिकूल ।
बरखिलाफ़ ।—ग, (वि०) १ प्रतिकूल गमनकारी ।
२ वैरी । प्रतिकूल ।—गमनं, (न०) —गतीः,
(स्त्री०) पीछे की ओर की गति या गमन ।—
तरणां, (न०) धार के विरुद्ध जाना या नाव
चलाना ।—दर्शिनी, (स्त्री०) स्त्री । औरत ।
नवयधू ।—वचनं, (न०) खण्डन । किसी के
वचन के विरुद्ध कथन ।—विपाकिन्, (वि०)
उलटा फल देने वाला ।

प्रतीरं (न०) समुद्रतट । नदीतट । तट ।

प्रतीवापः (पु०) १ वह दवा जो पीने के लिये काढ़े
आदि में मिलायी जाय । २ किसी धातु का रूप
बदलाने के लिये उसमें अन्य धातु या वस्तु मिलाना ।
३ संक्रामक रोग । उड़नी बीमारी । बुझाकृत के
रोग । प्लेग ।

प्रतीवेश } देखो प्रतिवेश ।
प्रतीहार }
प्रतीहास }

प्रतीवेशिन् (वि०) देखो प्रतिवेशिन् ।

प्रतीहारी (स्त्री०) १ स्त्री दरवान या स्त्री द्वारपाल ।
२ द्वारपाल । दरवान ।

प्रतुदः (पु०) १ पक्षियों की जाति विशेष । (इस
जाति में तोता, बाज, कौआ आदि हैं) । २ छेदने
या चुभोने का यंत्र विशेष ।

प्रतुष्टिः (स्त्री०) सन्तोष । हर्ष ।

प्रतोदः (पु०) १ अङ्गुष्ठ । २ चातुक । ३ अरई ।
चुभोने का औज़ार ।

प्रतूर्ण (वि०) वेगवान् । तेज ।

प्रतोली (स्त्री०) गली । आमसड़क । किसी नगर
का मुख्य मार्ग ।

प्रत्त (व० कृ०) दिया हुआ । दे वाला हुआ । चढ़ाया

हुआ । भेंट किया हुआ । २ विवाह में दिया
हुआ । विशाहित ।

प्रत्त (वि०) १ प्राचीन । पुरातन । २ अगला । ३
परंपरागत ।

प्रत्यक्ष (अव्यया०) १ विरुद्ध दिशा में । पीछे की
ओर । २ प्रतिकूल । ३ पश्चिम की ओर । ४
भीतर की ओर । अंदर से । ५ पहिले । प्राचीन
काल में ।

प्रत्यक्ष (वि०) १ नवनगोचर । २ उपस्थित । विद्य-
मान । आँखों के सामने । इन्द्रियगोचर । ४
स्पष्ट । साफ़ । ५ सोचा । समीप । ६ शरीर
सम्बन्धी ।—दर्शनः, —दर्शिन्, (पु०) चरम-
दीप्त गवाह । वह साक्षी जिसने कोई घटना अपनी
आँखों से देखी हो ।—दृष्ट, (वि०) खुद का
देखा हुआ ।—प्रभा, (स्त्री०) बथार्थ ज्ञान ।—
प्रमाणां, (न०) आँखों से देखा हुआ सबूत ।—
वादिन्, (पु०) वह व्यक्ति जो केवल प्रत्यक्ष
प्रमाण या इन्द्रिय ज्ञेय प्रमाण माने ।—विहित,
(वि०) स्पष्ट रूप से आदेश किया हुआ ।

प्रत्यक्षं (न०) १ स्पष्टता । २ चार प्रकार के प्रमाणों
में से एक ।

प्रत्यक्षिन् (पु०) आँखों देखा गवाह ।

प्रत्यग्र (वि०) १ साक्षा । जवान । नया । दृढका ।
२ दुहराया हुआ । ३ विशुद्ध ।—वग्रस्, (वि०)
जवान ।

प्रत्यक्ष } (वि०) [स्त्री०—प्रतीक्षा] बोधदेव
प्रत्यक्ष } के मतानुसार प्रत्यक्षी १ मुझ हुआ ।

धूमा हुआ । २ पीछे पड़ा हुआ । ३ अगला ।
निम्न । ४ लौटा हुआ । फिरा हुआ । बदला
हुआ । ५ पश्चिमी । पारचात्य ।—आत्मन्,
(पु०) (= प्रत्यगात्मन्) व्यक्तिगत जीव ।—
आशापतिः, (= प्रत्यगाशापतिः) (पु०)
पश्चिम दिशा के दिक्पाल वरुण देव ।—उदक्ष,
(स्त्री०) (= प्रत्यगुदक्ष) उत्तर-पश्चिम कोण ।
वायव्यकोण ।—दक्षिणः, (= प्रत्यग्दक्षिणः)
(अव्यया०) नैऋत्य कोण की ओर ।

—दृश्, (स्त्री०) (= प्रत्यग्दृश्) अन्तर्दृष्टि
—मुख, (वि०) [= प्रत्यङ्मुख] पश्चिम की

ओर उठा मुह किये हुए । स्रोतस
(=प्रयकस्मात्स) (वि०) पश्चिम का ओर
बहने वाली, (स्त्री०, नरमदा नदी का नामान्तर ।
प्रत्यन्वित (वि०) सम्मानित । पूजित । अर्चित ।
प्रत्यदनं (न०) १ भोजन करना । २ भोजन ।
प्रत्यभिज्ञा (स्त्री०) वह ज्ञान जो किसी देखी हुई
वस्तु को अथवा उसके समान अन्य किसी वस्तु को
फिर से देखने पर हो । स्मृति की सहायता से
उत्पन्न होने वाला ज्ञान ।
प्रत्यभिज्ञानम् (न०) समान वस्तु को देख कर किसी
पूर्व देखी हुई वस्तु का स्मरण हो आना ।
प्रत्यभिज्ञात (व० कृ०) पहचाना हुआ ।
प्रत्यभिभूत (व० कृ०) जीता हुआ ।
प्रत्यभियुक्त (व० कृ०) अभियोग के बदले अभियोग
लगाया हुआ ।
प्रत्यभियोगः (पु०) वह अभियोग जो अभियुक्त
अपने अभियोग लगाने वाले पर लगावे ।
प्रत्यभिवादः (पु०) } नमस्कार के बदले का नम-
प्रत्यभिवादनं (न०) } स्कार ।
प्रत्यभिस्कन्दनं (न०) अभियोग के बदले का
प्रत्यभिस्कन्दनम् (अभियोग ।
प्रत्ययः (पु०) १ प्रतीति । विश्वास । २ भरोसा । ३
ज्ञान । बुद्धि । समझ । धारणा । राय । ४ निश्च-
यत्व । ५ अनुभव । बोध । ६ कारण । हेतु । ७
प्रसिद्ध । ख्याति । ८ वह अक्षर या शब्द जो
किसी धातु या मूल शब्द के अन्त में जोड़ा जाय ।
७ शपथ । १० परमुखापेक्षी । ११ चाल । प्रचलन ।
रवाज़ । रीति । रस्म । १२ छिद्र । १३ बुद्धि ।—
कारक, (वि०)—कारिन्, (वि०) विश्वास
दिताने वाला ।—कारिणी, १ (स्त्री०) मोहर ।
सीज़ ।
प्रत्ययित (वि०) १ विश्वास किये हुए । निर्भर । २
विश्वस्त । विश्वासपात्र ।
प्रत्ययिन् (वि०) १ विश्वास करने वाला । २ विश्वास
करने योग्य । विश्वस्त ।
प्रत्यर्थ (वि०) उपयोगी । काम का ।
प्रत्यर्थम् (न०) १ उत्तर । जवाब । २ विरोध ।
प्रत्यर्थकः (पु०) विपक्षी । विरोधी ।

प्रत्यर्थिन (वि०) [स्त्री० प्रत्यर्थिनी] विरोधी ।
(पु०) १ बैरी । शत्रु । २ प्रतिद्वन्द्वी । जोड़ीदार ।
३ प्रतिवादी । मुद्दालह ।—भूत. (वि०) बाधक
होना ।
प्रत्यर्पणं (न०) वापिस देना । लिये हुए को लौटा
देना ।
प्रत्यर्पित (व० कृ०) लौटाया हुआ । फेरा हुआ ।
प्रत्यवमर्शः (पु०) १ समाधि । भली भाँति विचार
प्रत्यवमर्शः } २ परामर्श । सलाह । ३ परिणाम ।
प्रत्यवरोधनं (न०) रोक टोक । बाधा अटकाव ।
प्रत्यवसानं (न०) जाना या पीना ।
प्रत्यवसित (वि०) खाया हुआ । पिया हुआ ।
प्रत्यवस्कन्दः (पु०) } व्यवहार शास्त्रानुसार प्रति-
प्रत्यवस्कन्दः (पु०) } वादी का वह उत्तर जो
प्रत्यवस्कन्दनं (न०) } वादी के कथन का खण्डन
प्रत्यवस्कन्दनम् (न०) } करने को दिया जाय ।
जवाब दावा ।
प्रत्यवस्थानं (न०) १ स्थानान्तरकरण । २ विरोध ।
मुकाबला ।
प्रत्यवहारः (पु०) १ वापिसी । २ प्रलप । संहार ।
प्रत्यवायः (पु०) १ हास । न्यूनता । २ अटकाव ।
बाधा । ३ विरुद्ध मार्ग । विरुद्धता । ४ पाप । अप
राध । पापमयता ।
प्रत्यवेक्षणं (न०) } किसी बात को भलीभाँति
प्रत्यवेक्षा (स्त्री०) } देखना । देखना भालना ।
मुधायना करना ।
प्रत्यस्तमयः (पु०) १ सूर्यास्त । २ अवसान ।
समाप्ति ।
प्रत्याक्षेपक (वि०) [स्त्री०—प्रत्याक्षेपिका]
चिढ़ाने वाला । जीट उड़ाने वाला । तिरस्कार करने
वाला ।
प्रत्याख्यात (व० कृ०) १ अस्वीकृत । जो अङ्गीकार
न किया हो । २ वर्जित । निषिद्ध । ३ वरतरफ
किया हुआ । हटाया हुआ । खारिज किया हुआ ।
प्रत्याख्यानम् (न०) १ अस्वीकृति । २ तिरस्कार ।
३ भर्त्सना । ४ खण्डन । प्रतिवाद ।
प्रत्यागतिः (स्त्री०) वापसी ।
प्रत्यागमः (पु०) } वापिसी । लौट आना ।
प्रत्यागमनम् (न०) } वापिस आना ।

प्रत्यादान (न०) वापिस ले लेना ।

प्रत्यादिष्ट (व० क०) १ निर्दिष्ट । २ सूचित किया हुआ । ३ अस्वीकृत किया हुआ । ४ वरतरफ किया हुआ । हटाया हुआ । ५ कान्हा में फँका हुआ । ६ चेतावनी दिया हुआ । सावधान किया हुआ ।

प्रत्यादेशः (पु०) १ आज्ञा । आदेश । २ सूचना । घोषणा । ३ अस्वीकृति । प्रतिवाद । ४ असित करने की क्रिया । लज्जित करने वाला । ५ चेतावनी । ६ आकाशवाणी ।

प्रत्यानयनं (न०) वापिसी । दूसरे के हाथ में गयी हुई वस्तु को फिर पाना ।

प्रत्यापत्तिः (स्त्री०) १ वापिसी । २ वैराग्य ।

प्रत्यायः (पु०) कर । टैक्स ।

प्रत्यायक (वि०) १ सिद्ध करने वाला । समझाने वाला । २ विश्वास कराने वाला ।

प्रत्यायनम् (न०) १ (वर) को घर लाना । २ (सूर्य का) अस्त होना ।

प्रत्यालीढ (न०) धनुषधारियों के बैठने का आसन विशेष । [आना ।

प्रत्यावर्तनम् (न०) लौटना । लौटकर आना । वापस

प्रत्याव्रवस्त (व० क०) ढाँड़स बँधाया हुआ । धीरज बँधाया हुआ । तरोताज़ा किया हुआ ।

प्रत्याश्वासः (पु०) स्वाँस चलने की क्रिया । फिर से स्वाँस का चलने लगना ।

प्रत्याश्वासनम् (न०) धीरज बँधाना । मातमधुरसी ।

प्रत्यासत्तिः (स्त्री०) (समय या स्थान की) समीपता ।

२ घानिष्टता । ३ उपमिति । भिन्न भिन्न वस्तुओं का सादृश्य ।

प्रत्यासन्नः (व० क०) पास आया हुआ । निकट पहुँचा हुआ ।

प्रत्यासरः (पु०) १ सेना का पीछे का भाग ।

प्रत्यासारः (पु०) २ सेना का व्यूह । व्यूह के पीछे व्यूह ।

प्रत्याहरणं (न०) १ वापस लेना या लाना । २ रोक रखना । ३ इन्द्रियसंयम ।

प्रत्याहारः (पु०) १ पीछे खींच लेना । २ पीछे हटा लेना । पीछे हट आना । २ रोक रखना । ३ इन्द्रिय

दमन । ४ प्रलय । ५ शोर के श्राव्य श्रंगों में से एक ।

प्रत्युक्त (व० क०) उत्तर दिया हुआ । जिसका उत्तर दिया जा चुका हो ।

प्रत्युक्तिः (स्त्री०) उत्तर । जवाब ।

प्रत्युच्चारः (पु०)

प्रत्युच्चारणं (न०) पुनरुक्ति ।

प्रत्युज्जीवनं (न०) मरे हुए व्यक्ति का फिर जी उठना । पुनर्जीवन । -प्रत्युत्, (अव्यया०) विपरीतता । चल्कि वरन् । इसके विरुद्ध ।

प्रत्युत्क्रमः (पु०) १ उद्योग जो कोई कार्य आरम्भ

प्रत्युत्क्रमणं (न०) करने के लिये किया जाय ।

प्रत्युत्क्रान्तिः (स्त्री०) २ खड़ाई की तैयारी । ३

वह आक्रमण जो युद्ध के समय सब से पहले हो ।

प्रत्युत्थानं (न०) १ अभ्युत्थान । किसी बड़े के आने पर उसके प्रति सम्मान प्रदर्शन करने के लिये उठ खड़े होना । २ किसी के विरुद्ध उठ खड़े होना । युद्ध के लिये तैयारी करना ।

प्रत्युत्थित (व० क०) किसी मित्र या शत्रु से मिलने के लिये उठा हुआ ।

प्रत्युत्पन्न (व० क०) १ जो फिर से उत्पन्न हुआ हो ।

२ जो ठीक समय पर उत्पन्न हुआ हो । उद्यत ।

तत्पर । चिपकारी । -मति, (वि०) १ हाज़िर-

जवाब । वह जो मौके पर ठीक उत्तर दे या समय

पर जिसकी बुद्धि काम कर जाय । तत्पर बुद्धि वाला ।

२ साहसी । हिम्मतवाला । ३ तीक्ष्ण । तीव्र ।

प्रत्युत्पन्नं (न०) गुणा ।

प्रत्युदाहरणं (न०) उदाहरण के बदले उदाहरण । विरुद्ध उदाहरण ।

प्रत्युद्ग (व० क०) १ अतिथि के आने पर उसके प्रति सम्मान प्रदर्शनार्थ अपना आसन छोड़ उठ खड़ा होना । अभ्युत्थान ।

प्रत्युद्गतिः (स्त्री०) आगे बढ़ कर या अपने

प्रत्युद्गमः (पु०) आसन को छोड़ कर आगे

प्रत्युद्गमनम् (न०) हुए अतिथि की आवृत्तभगत

के लिये उठ खड़ा होना ।

प्रत्युद्गमनीयम् (न०) एक प्रकार के वस्त्र का जोड़ा ।

(उत्तरीय और अधोवस्त्र), जो प्राचीन काल में

यहाँ में या भोजन के समय पहना जाता था ।
घोनी उपरना ।

प्रत्युद्धरण (न०) १ परहस्तगत वस्तु को वापिस लेना । २ पुनः उठ खड़ा होना ।

प्रत्युद्यमः (पु०) १ समान भाव या बल । २ प्रतिक्रिया ।

प्रत्युद्यत (वि०) देखो "प्रत्युद्ग" ।

प्रत्युन्नयनम् (न०) पुनः उठ खड़े होना । उछल कर लौट आना । पलटा खाना ।

प्रत्युपकारः (पु०) वह उपकार जो किसी उपकार के बदले में किया जाय ।

प्रत्युपक्रिया (स्त्री०) वह सेवा जो किसी सेवा के बदले में की जाय ।

प्रत्युपदेशः (पु०) वह उपदेश जो उपदेश के बदले दिया जाता ।

प्रत्युपमानं (न०) १ नमूना । बानगी । २ यथार्थ नकल । ३ यथार्थ तुलना ।

प्रत्युपलब्ध (व० कृ०) वापिस मिला हुआ फिर से पाया हुआ ।

प्रत्युपवेशः (पु०) } कोई कार्य कराने के लिये
प्रत्युपवेशनं (न०) } अभ्यास करना ।

प्रत्युपस्थान (वि०) सासीप्य । नैक्य । पड़ास ।

प्रत्युप्त (व० कृ०) १ जड़ा हुआ । बिछाया हुआ । २ बोधा हुआ । ३ गाढ़ा हुआ । लगाया हुआ । मजबूत करके गाढ़ा हुआ ।

प्रत्युषः (पु०) } प्रभात । भोर । तड़का ।
प्रत्युषस् (न०) }

प्रत्युषं (न०) } प्रभात । भोर । सबेरा । तड़का ।

प्रत्युषः (पु०) } (पु०) १ सूर्य । २ आठ वसुओं में से एक वसु का नाम ।

प्रत्युषस् (न०) प्रभात । सबेरा । भोर । तड़का ।

प्रत्युहः (पु०) अडचन । रोक । अटकाव ।

प्रथ् (धा० आत्म०) [प्रथते, प्रथित] १ (धन की) वृद्धि करना । २ (कीर्ति का) फैलाना । ३ प्रसिद्ध होना । विप्रशस्त होना । ४ प्रकट होना । देख पड़ना । प्रकाश में आना ।

प्रथा (स्त्री०) कीर्ति । ख्याति ।

प्रथित (व० कृ०) १ बढ़ा हुआ । फैला हुआ । २ प्रसिद्ध किया हुआ । घोषित किया हुआ । प्रचार

किया हुआ । ३ दिखलाया हुआ । प्रकट किया हुआ । ४ प्रसिद्ध । विख्यात ।

प्रथिमन् (न०) चौड़ाई । महानता । विस्तार । आयतन ।

प्रथिविः (स्त्री०) पृथ्वी । धरा । भूमि ।

प्रथिष्ठ (वि०) सब से लंबा । सब से चौड़ा । अर्ज में सब से बड़ा ।

प्रथीयस् (वि०) [स्त्री०—प्रथीयसी] अपेक्षा कृत लंबा, चौड़ा । विस्तृत ।

प्रथु (वि०) विस्तृत । चारों ओर व्याप्त या फैला हुआ ।

प्रथुकः (पु०) व्योम । चूड़ा । चौरा ।

प्रदक्षिण (वि०) देवपूजन के समय देवमूर्ति आदि को दहिनी ओर का सभक्ति उसके चारों ओर घूमने वाला । २ पूज्य । माननीय । ३ शुभ । मङ्गलकारी ।

प्रदक्षिणं (न०) } भक्ति पूर्वक किसी पूज्य को
प्रदक्षिणः (पु०) } दहिनी ओर कर उसके चारों
प्रदक्षिणा (स्त्री०) } ओर घूमना ।

प्रदक्षिण (अव्यय०) १ बायीं से दहिनी ओर । २ दहिनी ओर । ३ दक्षिण की ओर । दक्षिण दिशा की ओर ।—अर्चिस, (वि०) अग्नि जिसकी लों दहिनी ओर झुकी हो ।—क्रिया, (स्त्री०) परिक्रमा करने की क्रिया ।—एट्टिका, (स्त्री०) अँगान । खुला मैदान ।

प्रदग्ध (व० कृ०) जला हुआ । जो भस्म हो चुका हो ।

प्रदत्त (व० कृ०) दिया हुआ ।

प्रदरः (पु०) १ फोड़ने या तोड़ने का भाव । २ अस्थि-भङ्ग । हड्डी का टूटना । दरार । तड़कन । गर्त । गड्ढर । ३ सेना का पलायन । ४ स्त्रियों का रोग विशेष जिसमें स्त्रियों के गर्भाशय से सफेद या लाल रंग का लसीदार पानी सा बहा करता है ।

प्रदर्पः (पु०) अभिमान । अकड़ । अहङ्कार ।

प्रदर्शः (पु०) १ शक्त । सूरत । चितवन । २ आदेश । आज्ञा ।

प्रदर्शक (वि०) दिखलाने वाला । बतलाने वाला ।

प्रदर्शनम् (न०) १ सूरत । शक्त । चितवन । २ दिखावट । दिखलाने का काम । ३ प्रदर्शनी । नुमा-

दृश ४ शिक्षण । उपदेश । व्याख्या । ५ उदाहरण । दृष्टान्त ।
 प्रदर्शित (व० कृ०) १ दिखलाया हुआ । प्रकट किया हुआ । प्रोचित किया हुआ ।
 प्रदलः (पु०) तीर ।
 प्रदधः (पु०) जलन । वहन ।
 प्रदातृ (पु०) १ दाता । देने वाला । २ उदार पुरुष । ३ कन्यादान (विवाह में) करने वाला । ४ इन्द्र का नामान्तर ।
 प्रदानं (न०) १ दान । चढ़ावा । भेंट । २ विवाह में देना । ३ शिक्षण । ४ भेंट । दान । पुरस्कार । ५ अंकुश — शूरः १ (पु०) दानी । दानवीर ।
 प्रदानकं (न०) भेंट । चढ़ावा । दान । पुरस्कार ।
 प्रदायं (न०) पुरस्कार । भेंट ।
 प्रदिः } (पु०) पुरस्कार । भेंट ।
 प्रदेयः }
 प्रदिग्ध (व० कृ०) तेल या घी से चिकनाया हुआ ।
 प्रदिग्धं (न०) विशेष प्रकार से पका हुआ मांस ।
 प्रदिश (स्त्री०) १ बतलाना । २ आज्ञा । आदेश । निर्देश । ३ उपदिशा । विदिशा ।
 प्रदिष्ट (व० कृ०) १ दिखलाया हुआ । बतलाया हुआ । २ आज्ञा दिया हुआ । आदिष्ट । नियुक्त किया हुआ । निश्चित किया हुआ ।
 प्रदीपः (पु०) १ दीपक । लैंप । प्रकाश । २ वह जिससे प्रकाश हो ।
 प्रदीपन (वि०) [स्त्री—प्रदीपनी] प्रकाश करने वाला । २ उत्तेजक ।
 प्रदीपनं (न०) प्रकाश करने का काम ।
 प्रदीपनः (पु०) एक प्रकार का खनिज विष ।
 प्रदीप्त (व० कृ०) १ जला हुआ । प्रकाशित । २ प्रकटता हुआ । प्रकाशमान । जगमगाता हुआ । ३ उदा हुआ । फैला हुआ । ४ उत्तेजित । उत्साहित ।
 प्रदुष्ट (व० कृ०) १ बिगाड़ा हुआ । खराब किया हुआ । २ दूष्ट । निकृष्ट । पापी । ३ लग्नपट । कामुक ।
 प्रदूषित (व० कृ०) खराब । अष्ट । नष्ट । अपवित्र । सड़ा हुआ ।
 प्रदेय (वि०) देने योग्य । दान करने योग्य ।

प्रदेशः (पु०) १ बतलाने वाला । दिखलाने वाला । २ स्थान । प्रदेश । जगह । देश । राज्य । छोटा भूखण्ड । ३ वाजिरत । विन्ता । ४ निर्याद । निरन्तर । ५ दीवाला । ६ (व्याकरण का) उदाहरण ।
 प्रदेशानम् (न०) १ आदेश । २ परामर्श । ३ भेंट । नज़र । चढ़ावा ।
 प्रदेशिनी (स्त्री०) तर्जनी । अंगूठे के पास की प्रदेशिनी) उँगली ।
 प्रदेशः (पु०) लेप । पलस्तर ।
 प्रदीप (वि०) बुरा । खराब — कालः (पु०) सार्धकाल । रात्रि का आरम्भ — तिमिरं (न०) सायंकाल की अंधियारी ।
 प्रदीपः (पु०) १ अपराध । त्रुटि । ऐव । पाप । दुर्म । २ गदर आदि जैसी गड़बड़ अवस्था । ३ सायंकाल । रात्रि का प्रथम प्रहर ।
 प्रदीप्तः (पु०) दूहना । दूध निकालना ।
 प्रद्युम्नः (पु०) कामदेव का एक नाम । प्रद्युम्न जी श्री कृष्ण जी के पुत्र थे और रुक्मिणी जी के पेट से उत्पन्न हुए थे ।
 प्रद्योतः (पु०) १ जगमगाहट । प्रकाश । रोशनी । २ चमक । आभा । ३ किरण । ४ उज्जयन के एक राजा का नाम ।
 प्रद्योतनं (न०) १ दहकन । प्रकाशन । २ प्रकाश ।
 प्रद्योतनः (पु०) सूर्य ।
 प्रद्वः (पु०) पलायन ।
 प्रद्वः (पु०) १ पलायन । निकल भागना । तेज़ चलना या जाना ।
 प्रद्वारः (पु०) } दरवाजे के सामने का स्थान या प्रद्वारम् (न०) } जगह ।
 प्रद्वेषः } (पु०) अरुचि । घृणा । नफरत । प्रद्वेषणम् } बैर ।
 प्रधनं (न०) १ युद्ध में लूट का माल । ३ नाश । विनाश । चीरफाड़ ।
 प्रधमनं (न०) १ वैद्यक में वह क्रिया जिसके द्वारा कोई दवा नाक के रास्ते ज़ोर से सुंघा कर ऊपर चढ़ायी जाय । २ एक प्रकार की सूँघनी ।
 प्रधर्षः (पु०) बलात्कार । आक्रमण । हमला ।

प्रथमः (न०) १ अक्रमण्य हम्भा । २
प्रथमः (स्त्री०) १ बलाकार ३ व्यवहार अप
मान । तिरस्कार ।

प्रथमः (व० कृ०) १ अक्रमण्य किया हुआ । २
चोद पहुँचाया हुआ । अतिष्ठ किया हुआ । ३
अभिमानि । अहङ्कारी ।

प्रधान (वि०) १ शास । मुख्य । प्रसिद्ध । उत्तम ।
अत्युत्तम । २ मुख्यतया प्रचलित ।

प्रधानः (न०) १ मुख्य वस्तु । अति आवश्यक वस्तु ।
प्रधान । मुखिया । २ प्रथम उत्पादक । इस
भौतिक संसार का उपादान कारण । ३ परब्रह्म ।
४ बुद्धि ।

प्रधानः (न०) १ महामात्र । प्रधान सचिव । २ सर-
प्रधानः (पु०) १ दार । दरबारी । ३ महावत । फौजवान ।

—अङ्गः (न०) १ किसी वस्तु की प्रधान शाखा
या भाग । २ शरीर का प्रधान अङ्ग । ३ किसी
राज्य का प्रधान अधिकारी । —अमात्यः (पु०)
प्रधान सचिव । महामात्र । —आत्मान् १ (पु०)
विष्णु का नामान्तर । —घातुः १ (पु०) शरीर
का प्रधान तत्व । वीर्य । —पुरुषः (पु०) १ राज्य
का प्रधान पुरुष । २ शिव जी का नामान्तर ।
—मन्त्रिन् (पु०) प्रधान सचिव । —वास्तु,
(न०) मुख्य वस्तु । —वृष्टिः (स्त्री०)
अतिवृष्टि ।

प्रधावनः (पु०) हवा । पवन ।

प्रधावनः (न०) रगड़ । प्रहालन ।

प्रधिः (पु०) पहिये का धुरा ।

प्रधी (वि०) कुशाग्रबुद्धि वाला । (स्त्री०) महती
प्रतिभा ।

प्रधूपित (व० कृ०) १ सुवासित । २ गर्माया हुआ ।
तपाया हुआ । ३ चमकता हुआ । दीप्त । ४
सन्तप्त ।

प्रधूपिता (स्त्री०) १ सन्तप्ता (स्त्री०) । २ वह दिशा
जिधर सूर्य बढ़ रहा हो ।

प्रधृष्ट (व० कृ०) १ वह जिसके साथ ठिगई के
साथ वर्ताव किया गया हो । २ असिमानि ।
अहङ्कारी ।

प्रध्यानं (न०) १ गम्भीर ध्यान या सोच विचार ।
२ विचार ।

प्रध्वंस (पु०) निरान्त अभाव पूर्णरीत्या विनाश
अभावः, (पु०) न्याय क अनुसार पाँच
प्रकार के अभावों में से एक प्रकार का अभाव ।
वह अभाव जो किसी वस्तु से उत्पन्न होकर, नष्ट
हो जाने पर हो ।

प्रध्वस्वः (व० कृ०) जो नष्ट हो गया हो । जिसका
नाश हो चुका हो ।

प्रनप्तु (पु०) पौत्र का पुत्र । प्रपौत्र ।

प्रनष्ट (व० कृ०) १ अन्तर्धान । जो देख न पड़े ।
अगोचर । २ नष्ट । मरा हुआ । ३ खोया हुआ । ४
बरबाद ।

प्रनायक (वि०) वह जिसका नायक चला गया हो ।
२ नायक के अभाव से युक्त ।

प्रनालः } (पु०)
प्रनाली } (स्त्री०) देखो प्रणाली ।

प्रनिघातनं (न०) बध । हत्या । कत्ल ।

प्रनृत्त (वि०) नाचने वाला ।

प्रनृत्तं (न०) नाच । नृत्य ।

प्रपन्नः (पु०) बाजू की कोर ।

प्रपंचः } (पु०) १ विकास । प्रदर्शन । २ वृत्ति ।

प्रपञ्चः } विस्तार । ३ बाहुल्य । वाग्बिस्तार । व्या-
ख्या । टीका । ४ अति विस्तार । अतिप्रसङ्ग ।

विस्तार । ५ बहुलता । अनेकत्व । ६ दुनिया का
जंजाल । ७ अम । धोखा । ८ ठगी । —बुद्धि

(वि०) १ चालाक । कुलिया । धोखेबाज़ ।

प्रपञ्चित (व० कृ०) १ प्रकटित । २ विस्तारित ।

प्रपञ्चित } ३ भली भाँति व्याख्या किया हुआ ।

४ भटका हुआ । भूला हुआ । ५ धोखा खाया
हुआ । छला हुआ ।

प्रपतनम् (न०) १ पलायन । २ पात । ३ नीचे
उतरना । ४ मृत्यु । नाश । ५ उतार ।

प्रपदं (न०) पैर का अग्रभाग ।

प्रपदीन (वि०) पैर का अग्रभाग सम्बन्धी ।

प्रपन्न (व० कृ०) १ आया हुआ । पहुँचा हुआ । २
शरण में आया हुआ । शरणागत । आश्रित । ३
प्रतिज्ञात । ४ उपलब्ध । प्राप्त । ५ निर्धन ।
दुश्चारा ।

प्रपञ्चादः (पु०) चक्रमर्दक । चकदँड ।

प्रपर्ण (वि०) पत्तों से रहित ।

प्रपर्ण (न०) गिरा हुआ पत्ता ।
 प्रपलायनम् (न०) उड़ान । पलायन ।
 प्रपा (स्त्री०) १ पौसाला । प्याऊँ । २ कूप । कुण्ड । ३ वह जल का स्थान जहाँ पशु जलपान करें । ४ जल का देना ।—पालिका. (स्त्री) वह स्त्री जो बटो-हियों को जल पिजावे ।
 प्रपाठकः (पु०) १ सवक्र । पाठ । २ ग्रन्थ का अध्याय । परिच्छेद ।
 प्रपाणिः (पु०) १ हाथ का अग्रभाग । २ हाथ की हथेली ।
 प्रपातः (पु०) १ प्रस्थान । २ पतन । ३ अधानक आक्रमण । ४ जलप्रपात । पानी का झरना । ५ तट । समुद्रतट । ६ ढलुआ चट्टान । पहाड़ का उतार या ढाल । ७ झड़ना (जैसे केशों का) ८ निकल पड़ना (जैसे वीर्य का) । ९ बहाव के ऊपर से अपने को नीचे गिरा देना । १० उड़ान विशेष ।
 प्रपातनं (न०) अपने को नीचे गिरा देना ।
 प्रपादिकः (पु०) मयूर । मोर ।
 प्रपानं (न०) पीना ।
 प्रपानकं (न०) एक प्रकार का पेय पदार्थ ।
 प्रपितामहः (पु०) १ पिता का पिता । बाबा । २ कृष्ण का नामान्तर ।
 प्रपितामही (स्त्री०) पिता की माता । दादी ।
 प्रपितृव्यः (पु०) चचेरे बाबा ।
 प्रपीडनम् (न०) १ दबाना । दबाकर निचोड़ना । २ कोष्ट करने वाली (दवा)
 प्रपीत } (वि०) निगला हुआ ।
 प्रपीन }
 प्रपनाटः—प्रपन्नाटः } (पु०) चक्रमर्द नाम का वृक्ष ।
 प्रपुनाडः—प्रपुन्नाडः } चक्रद्विड ।
 प्रपूरित (व० क०) भरा हुआ । परिपूर्ण ।
 प्रपृष्ठ (वि०) विशिष्ट पीठवाला ।
 प्रपौत्रः (पु०) पौत्र का पुत्र । पंती ।
 प्रपौत्री (स्त्री०) पौत्री की पुत्री । पंतिन ।
 प्रफुल्ल (व० क०) १ पूर्ण खिला या फूला हुआ । २ आनन्दित । ३ सुसज्जता हुआ ।—नयन, —नेत्र—लोचन, (वि०) हर्ष से खुले हुए

नेत्र । वदन. (वि०) जिसके चेहरे पर हर्ष छाया हो । हर्षित ।
 प्रवद्ध (व० क०) १ बंधा हुआ । २ रोका हुआ । अवरुद्ध । अद्वचन में डाला हुआ ।
 प्रवद्ध } (पु०) ग्रन्थकार
 प्रवन्ध }
 प्रवन्धः (पु०) १ बंधन । गाँझ । २ अप्रतिबन्धता । अविच्छिन्नता । ३ ऐसा निबन्ध जिसका सिल सिला जारी रहै । ४ कोई भी रचना; विशेष कर पद्यमयी । ५ योजना ।—कल्पना, (स्त्री०) कल्पित कहानी ।
 प्रवन्धनम् (न०) बन्धन । गाँझी ।
 प्रवन्धः (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।
 प्रवर्ह } (वि०) अत्युत्तम । सर्वोत्तम । सर्वश्रेष्ठ ।
 प्रवर्ह }
 प्रवल (वि०) १ अत्यन्त मजबूत या ताकतवर । २ प्रचण्ड । सुदृढ़ । ३ आवश्यक । ४ विपुल । ५ छतरनाक । मयानक नाशकारी ।
 प्रवहिका } (स्त्री०) पहेली । बुझौअल ।
 प्रवहिका }
 प्रवाधनम् (न०) १ अत्याचार । प्रपीडन । २ अस्वी-कृति । इंकार । ३ दूर रखना । इदानी ।
 प्रवालः—प्रवालः (पु०) १ झड़ुर । झँझुआ ।
 प्रवालः—प्रवालम् (न०) १ कोपल । २ मृगा । ३ बीणा का भाग विशेष । (पु०) १ शिष्य । शार्गिर्द । २ पशु ।—अश्मस्तकः. (पु०), वृक्ष विशेष । मृगे का वृक्ष ।—पद्मं, (न०) लाल कमल ।—फलं, (न०) लाल चन्दन काष्ठ ।—भस्मम्, (न०) मृगा की भस्म ।
 प्रवाहुः (पु०) बाँह ।
 प्रवाहुकम् (अव्यया) १ ऊँचाई पर । २ साथ ही साथ ।
 प्रवुद्ध (व० क०) १ जागृत । जागा हुआ । २ बुद्धिमान । विद्वान् । चतुर । ३ जानकारी । ४ पूर्ण खिला हुआ । फैला हुआ ।
 प्रवाधः (पु०) १ जागना । नींद का हटावा । (आलं०) यथार्थज्ञान । पूर्ण बोध । २ (फूलों का) खिलना या फैलना । ३ जागृति । अनिद्रता । ४ सतर्कता । ५ समझदारी । ज्ञान । अम का दूर होना । सत्य

ज्ञान । ६ ढाढस । धीरज । ७ किसी सुगन्ध द्रव्य में पुनः सुगन्ध उत्पन्न करने की क्रिया ।

प्रबोधन (वि०) [स्त्री०—प्रबोधनी] जागने वाला ।

प्रबोधनम् (न०) १ जागृति । जागरण । २ सचेत होना । ३ ज्ञान । बुद्धिमत्ता । ४ शिक्षण । परामर्श । ५ सुगन्ध द्रव्य की नष्ट हुई सुगन्ध को पुनः सुगन्ध से युक्त करना ।

प्रबोधनी } (स्त्री०) कार्तिक शुक्ला ११, जिस
प्रबोधिनो } दिन भगवान् चारमास शयन कर जागते हैं ।

प्रबोधित (व० क०) १ जागृत । जागा हुआ । २ सूचित किया हुआ । शिक्षा दिया हुआ ।

प्रमज्जनम् } (न०) टुकड़े टुकड़े कर डालना ।
प्रमज्जनम् }

प्रमज्जनः (पु०) पवन । वायु । विशेष कर आँधी ।

प्रमदः (पु०) नीव वृक्ष ।

प्रभवः (पु०) १ उद्गमस्थल । निकाल । २ जन्म । उत्पत्ति । ३ नदी का उद्गमस्थान । ४ उपादान कारण । ५ रचयिता । सृष्टिकर्ता । ६ उत्पत्ति स्थान । ७ शक्ति । बल । पराक्रम । प्रभाव । ८ विष्णु का नामान्तर ।

प्रभवितृ (पु०) शासक ।

प्रभविविष्णु (वि०) बलवान् । शक्तिमान् ।

प्रभविविष्णु (पु०) १ स्वामी । मालिक । २ विष्णु ।

प्रभा (स्त्री०) १ चमक । जगमगाहट । आभा । २ किरण । ३ सूरजवही पर सूर्य की छाया । ४ दुर्गा का नामान्तर । ५ कुवेर की नगरी का नाम । ६ एक अप्सरा का नाम —करः (पु०) । सूर्य । २ चन्द्रमा । ३ अग्नि । ४ समुद्र । ५ शिव । ६ मीमांसा दर्शनकार का नाम ।—कीटः, (पु०) जुगनू । खद्योत ।—तरल, (वि०) कम्पित भाव से दीप्तमान् ।—भगवद्गल, (न०) प्रकाश का घेरा ।—लेपिन्, (वि०) प्रकाश से आच्छादित ।

प्रभागः (पु०) विभाग । २ भिन्न का भिन्न, जैसे ५ का ३ आदि ।

प्रभात (व० क०) रोशनी होना आरम्भ हुआ ।

प्रभातं (न०) प्रातःकाल । सबेर ।

प्रभानं (न०) ज्योति । दीप्ति । प्रकाश ।

प्रभावः (पु०) १ आभा । चमक । जगमगाहट । २ महत्त्व । गौरव । ३ शक्ति । बल । ४ राजोचित शक्ति या अधिकार । ५ अलौकिक शक्ति । ६ महिमा । साहाय्य ।—ज, (वि०) प्रभाव से उत्पन्न । प्रभावजात ।

प्रभाषणं (न०) व्याख्या । कैतियत । अर्थ ।

प्रभासः (पु०) चमक । सौन्दर्य । आभा ।

प्रभासं (न०) } एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान जो काठिया-
प्रभासः (पु०) } वाड़ में है ।

प्रभासनम् (न०) चमक । दीप्ति । प्रकाश ।

प्रभास्वर (वि०) चमकीली । दीप्तिमान् ।

प्रभिन्न (व० क०) १ अलग किया हुआ । अलगगाथा हुआ । फटा हुआ । चिरा हुआ । विभक्त । २ तोड़ कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ । ३ कटा हुआ । काट कर अलग किया हुआ । ४ धूला हुआ । खिला हुआ । ५ परिवर्तित । बदल बदल किया हुआ । ६ बदशक्ल किया हुआ । अंग भङ्ग किया हुआ । ढीला किया हुआ । ८ नशे में चूर । मतवाला ।

प्रभिन्नः (पु०) मतवाला हाथी ।—अज्जनम्, (न०) काजल ।

प्रभु (वि०) [स्त्री०—प्रभु, प्रभ्वी] १ ताकतवर । बलवान् । २ योग्य । अधिकार प्राप्त । ३ जोड़ का । बराबरी का ।—भक्त, (वि०) अपने मालिक का हितैषी या खैरखाह ।—भक्तः, (पु०) अच्छा बोड़ा ।—भक्तिः, (स्त्री०) अपने मालिक की हित-तत्परता या खैरखाही ।

प्रभुः (पु०) १ स्वामी । मालिक । २ शासक । सूबेदार । सर्वोच्च अधिकारी । ३ (किसी वस्तु का) मालिक । ४ पारा । ५ विष्णु । ६ शिव । ७ इन्द्र ।

प्रभुता (स्त्री०) १ मलकियत । साहिबी । मालिक-प्रभुत्वं (न०) } यत्न । २ बड़ाई । महत्त्व ।

प्रभूत (व० क०) १ उद्भूत । निकला हुआ । उत्पन्न । २ बहुत । विपुल । ३ बहुत से । बहुत । ४ पूर्ण । परिपक्व । ५ उच्च । विशाल । ६ लंबा । ७ अधिष्ठाता ।—यवसंधन, (वि०) हरी घास और इंधन की बहुतायत या इफरात ।—वयस्, (वि०) बुढ़ा । उमररसीदा ।

प्रभृति. (स्त्री०) १ उत्पत्ति । विकास । २ बल । शक्ति । ३ पर्याप्तता ।

प्रभृतिः (अव्यया०) से । तब से । आरम्भ कर । आज से । अब से । अद्यप्रभृति ।

प्रभेदः (पु०) १ भेद । विभिन्नता । २ स्फोटन । फोड़ कर निकालने की क्रिया । ३ हाथी की कन-पुटी से मूद का चूना । ४ जाति । तरह ।

प्रभ्रंशः (पु०) पाल । गिरना ।

प्रभ्रंशशुः (पु०) पीनस रोग ।

प्रभ्रंशित (व० कृ०) १ नीचे गिराया या फेंका हुआ । २ वज्रित किया हुआ ।

प्रभ्रंशिन (व०) गिरा हुआ ।

प्रभ्रष्ट (व० कृ०) पतित । नीचे गिरा हुआ ।

प्रभ्रष्टं (न०) शिखावलम्बिनी फूलमाला ।

प्रभ्रष्टकम् (न०) देखो प्रभ्रष्टम् ।

प्रभ्रम्न (व० कृ०) ढूँढा हुआ ।

प्रभ्रत (व० कृ०) विचारा हुआ । मनन किया हुआ ।

प्रभ्रत्त (व० कृ०) १ नशे में चूर । नशा पिये हुए ।

मस्त । २ पागल । उन्मत्त । ३ असावधान ।

लापरवाह । जो ध्यान न दे । ४ जो काम न करे ।

५ भूल करने वाला । ६ कामुक । व्यसनी ।—

गोल, (वि०) असावधानी से गाया हुआ ।

वित्त, (वि०) असावधान । लापरवाह ।

प्रभ्रथः (पु०) १ वेड़ा । २ शिव के गण जिनकी संख्या किसी किसी पुराणानुसार ३६ करोड़ बत-लाई गयी है ।—अधिपः, नाथः,—पतिः, (पु०) शिव जी ।

प्रभ्रथनम् (न०) १ मथना । २ पीड़ित करना । सताना । ३ कुचलना । ४ हत्या । वध ।

प्रभ्रथित (व० कृ०) १ सताया हुआ । पीड़ित । २ कुचला हुआ । ३ मार डाला हुआ । ४ भली भाँति मथा हुआ ।

प्रभ्रथितम् (न०) माछ जिसमें जल न हो ।

प्रभ्रद (वि०) १ नशे में मस्त । २ क्रोधविष्ट । क्रुद्ध । ३ असावधान । ४ असंयत । निरङ्कुश । अशिष्ट ।

—काननम्, (न०)—वनम्, (न०) ऐश-वारा । आनन्दबाग ।

प्रभ्रदः (पु०) १ हर्ष । आह्लाद । २ भन्ने का पौधा ।

प्रभ्रदक (वि०) कामुक । हँपट । ऐयाश ।

प्रभ्रदनम् (न०) प्रीतिद्योतक अभिलाषा ।

प्रभ्रदा (स्त्री०) १ युवती सुन्दरी स्त्री । २ पत्नी । स्त्री । ३ कन्याराशि ।—काननम्,—वनं, (न०) राजमहल में रनवास का उद्यान, जहाँ रानियों चलें फिरें ।—जनः, (पु०) युवती । स्त्री । २ स्त्री जाति ।

प्रभ्रद्वर (वि०) असावधान । लापरवाह ।

प्रभ्रनस् (वि०) प्रसन्न । हर्षित ।

प्रभ्रन्यु (वि०) १ क्रोधाविष्ट । क्रुद्ध । नाराज । २ पीड़ित । दुःखी ।

प्रभ्रयः (पु०) १ मृत्यु । मौत । चरवादी । नाश । अधःपात । ३ वध । हत्या ।

प्रभ्रर्दनं (न०) १ अच्छी तरह मर्दन । अच्छी तरह कुचलना या नष्ट करना । पैरों से हँथना ।

प्रभ्रर्दनः (पु०) विष्णु का नामान्तर ।

प्रभा (स्त्री०) १ शुद्धबोध । यथार्थ ज्ञान । २ जहाँ जैसा हो वहाँ वैसा अनुभव ।

प्रभाषां (न०) १ माप । नाप । २ आकार । आय-

तन । ३ पैमाना । नपुष्ठा । श्रेणी । ४ सीमा ।

मात्रा । ५ साक्षी । गवाही । सबूत । ६ अधि-

कारी या वह पुरुष जिसका कथन अन्तिम

निर्णय हो । न्यायाधीश । ७ यथार्थ ज्ञान शुद्ध

बोध । ८ यथार्थ ज्ञान प्राप्ति का साधन । [नैया

यिकों ने चार प्रमाण माने हैं:—यथा प्रत्यक्ष ।

अनुमान । उपमान । शब्द । वेदान्ती और मोर्मा-

सक इन चार के अतिरिक्त अनुपलब्धि और

अर्थापत्ति: दो प्रमाण और मानते हैं । सौख्य वाले

केवल प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम—ये तीन ही

प्रमाण मानते हैं ।] मुख्य । प्रधान । १० देख्य ।

११ ब्रमेशास्त्र । आगम । १२ कारण । युक्ति ।

—अधिक, (वि०) अत्यधिक । बहुत ज्यादा ।

—अन्तरं, (न०) कोई बात प्रमाणित करने के

लिये अन्य ढंग ।—अभावः (पु०) प्रमाण का

अभाव ।—ज्ञः, (पु०) शिव जी ।—दृष्ट,

(वि०) प्रमाण सिद्ध ।—पञ्च, (न०) वह

लिखा हुआ कागज़ जिसका लेख किसी बात का

प्रमाण हो । सर्तीफिकेट ।—पुरुषः, (पु०) पंच ।

सं० श० को०—७०

न्यायाधीश । शास्त्र (न०) १ वमशास्त्र ।
 १ न्याय शास्त्र सत्र (न०) नापने का फीता
 प्रमाणिक (वि०) १ मनान आश्रय । माननीय । २
 टीक । सत्य । ४ शास्त्रसिद्ध । ५ हेतुक । ६ शास्त्रज्ञ ।
 ७ जो प्रत्यक्षादि प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो ।
 प्रमानामहः (पु०) बड़ा नाना । नाना का पिता ।
 प्रमातामही (स्त्री०) बड़ी नानी । बड़े नाना की पत्नी ।
 प्रमाथः (पु०) १ अत्यचार । पीड़न । २ उत्तेजना
 मथन । ३ हत्या । वध । नाश । ४ बलात्कार ।
 किसी स्त्री से उसकी इच्छा के विरुद्ध भोग ।
 बरजोरी किसी स्त्री को पकड़ कर लेजाना । स्त्री
 भगाना । ६ प्रतिद्वन्द्वी को भूमि पर पटक कर
 उसके बिस्से लगाना ।
 प्रमाथिन् (वि०) १ अत्याचार । पीड़न । २ हत्या ।
 वध । ३ चलाना । ४ मार कर नीचे गिराना । ५
 काट कर गिराना ।
 प्रमादः (पु०) १ आसावधानी । लापरवाही । २
 नशा । मस्ती । ३ पागलपन । ४ गलती । ५
 घटना । दुर्घटना । विपत्ति । ख़तरा ।
 प्रमापणम् (न०) हत्या वध ।
 प्रमार्जनम् (न०) मँजना । धोना । स्नाइना ।
 प्रमित (व० क०) १ परिमित । २ अल्प । थोड़ा । ३
 जिसका यथार्थ ज्ञान हो चुका हो । ज्ञात । विदित ।
 अवगत । ४ अवधारित । प्रमाणित ।
 प्रमितिः (स्त्री०) १ माप । नाप । २ यथार्थ या सत्य
 ज्ञान । यथार्थ बोध । ३ वह ज्ञान जो किसी प्रमाण
 की सहायता से प्राप्त हुआ हो ।
 प्रमोद (वि०) १ गाढ़ा । घना । मोटा । सकुड़ा
 हुआ । २ मूत्र बन कर निकला हुआ ।
 प्रमीतिः (स्त्री०) मृत्यु । मौत । नाश । रोग ।
 प्रमीला (स्त्री०) १ निद्रा । नींद । तंद्रा । थकावट
 शैथिल्य । ग्लानि । २ अर्जुन की एक स्त्री का
 नाम जो प्रथम उनसे लड़ी और पीछे उनकी स्त्री
 बन गयी ।
 प्रमीलित (व० क०) आँख मूंदे हुए ।
 प्रमुक्त (व० क०) १ ढीला किया हुआ । २ छोड़ा
 हुआ । मुक्त किया हुआ । ३ त्यागा हुआ । छोड़ा

हुआ । ४ फका हुआ । कट (अव्यया०) कस
 के चार स .
 प्रमुख (वि०) १ समुख । सामने । आगे । २
 मुख्य । प्रधान । सब के आगे । प्रथम ।
 प्रमुखः (पु०) १ प्रतिष्ठित पुरुष । २ ढेर । समुदाय ।
 प्रमुखं (न०) १ मुख । २ किसी ग्रन्थ का या किसी
 ग्रन्थ के अध्याय का आरम्भ ।
 प्रमुग्ध (वि०) १ मूर्छित । अचेत । बेहोश । (२)
 अत्यन्त मनोहर ।
 प्रमुद (स्त्री०) अत्यन्त आनन्द ।
 प्रमुदित (व० क०) आल्हादित । प्रसन्न । सुखी ।—
 हृदय, (वि०) प्रसन्न हृदय ।
 प्रमुषित (व० क०) चुराया हुआ ।
 प्रमुषिता (स्त्री०) एक प्रकार की पहेली ।
 प्रमूढ (व० क०) १ परेशान । धबड़ाया हुआ ।
 व्याकुल । २ मूर्ख । मूढ़ ।
 प्रमृत् (व० क०) मृत । मरा हुआ ।
 प्रमृत्तं (न०) सूखी हुई या पाला मारी हुई खेती ।
 प्रमृष्ट (व० क०) १ मला हुआ । मँजा हुआ ।
 पोंछा हुआ । साफ किया हुआ । २ चिकनाया
 हुआ । चमकीला । साफ ।
 प्रमेय (वि०) १ जिसका मरन बताया जा सके ।
 परिमित । २ जो सिद्ध करने को हो । अवधार्य ।
 प्रमेयं (न०) सूत्र । उपपाद्य ।
 प्रमेहः (पु०) वातु सम्बन्धी रोग विशेष ।
 प्रमोक्षः (पु०) १ त्याग । छोड़ना । फेंकना । २ मुक्त
 करना । छुटकारा देना ।
 प्रमोचनम् (न०) छोड़ना । छुटकारा देना ।
 प्रमोदः (पु०) खुशी । हर्ष ।
 प्रमोदनं (न०) १ प्रसन्नकारक । हर्षप्रद । २ हर्ष ।
 प्रमोदनः (पु०) विष्णु भगवान का नाम ।
 प्रमोदित (व० क०) प्रसन्न । हर्षित ।
 प्रमोदितः (पु०) कुबेर का नामान्तर ।
 प्रमोहः (पु०) १ मोह । २ मूर्छा । ३ परलोक दर्श
 की मूर्खता । मूलभटक । धबड़ाहट ।
 प्रयत्न (व० क०) १ संयत्न । इन्द्रियों को दमन किये
 हुए । धर्मात्मा । भक्त । जो तपस्या द्वारा पवित्र

हो चुका हो । जितेन्द्रिय । २ स्पर्द्धावान् । ३ नम्र । दीन ।

प्रयत्नः (पु०) १ विशेष यत्न । प्रयास । चेष्टा । कोशिश । २ अध्यवसाय । ३ बड़ी सावधानी । ४ व्याकरण के मतानुसार वर्णों के उच्चारण में होने वाली क्रिया ।

प्रयस्त (व० कृ०) मसाला मिला हुआ ।

प्रयागः (पु०) १ यज्ञ । २ इन्द्र । ३ घोड़ा । ४ तीर्थ स्थान विशेष जो गंगा यमुना के संगम पर अवस्थित है ।—प्रयः (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।

प्रयाचनं (न०) माँगना । आचना करना । दीनता करना ।

प्रयाजः (पु०) यज्ञीय प्रधान कर्म विशेष ।

प्रयाणम् (न०) १ प्रस्थान । २ यात्रा । ३ उत्पत्ति । आगे बढ़ना । ४ आक्रमण । हमला । ५ आरम्भ । प्रारम्भ । ६ मृत्यु । महायात्रा । महाप्रस्थान । ७ घोड़े की पीठ । पशु का पीछे का भाग ।—भङ्गम्, (न०) पड़ाव । यात्रा के बीच रुक जाना ।

प्रयाणकं (न०) यात्रा । प्रस्थान ।

प्रयात (व० कृ०) १ आगे बढ़ा हुआ । प्रस्थानित । २ मरा हुआ । मृत ।

प्रयातः (पु०) १ आक्रमण । २ पहाड़ का ढाल । ढलुवाँ चट्टान ।

प्रयापित (व० कृ०) १ आगे बढ़ाया हुआ । आगे जाने के लिये प्रेरित किया हुआ । २ भगाया हुआ ।

प्रयामः (पु०) १ अभाव । महँगी । कृतसाली । २ संयम । दमन । ३ लंबाई ।

प्रयास्तः (पु०) १ प्रयत्न । चेष्टा । उद्योग । ३ कठिनाई । श्रम ।

प्रयुक्त (व० कृ०) १ जुए में जुता हुआ । काँड़ी या चारजामा कसा हुआ । २ व्यवहार में लाया हुआ । इस्तेमाल किया हुआ । ३ संलग्न । ४ नियुक्त किया हुआ । नामजुद किया हुआ । ५ किया हुआ । ६ ध्यानावस्थित । ७ (व्याज प्राकर) लगाया हुआ । ८ प्रेरित किया हुआ । उसकाया हुआ ।

प्रयुक्तिः (स्त्री०) १ उपयोग । इस्तेमाल । प्रयोग । २ उत्तेजना । उसकाने की क्रिया । ३ प्रयोजन । उद्देश्य । अवसर । ४ परिणाम । नतीजा ।

प्रयुनं (न०) दस लाख की संख्या ।

प्रयुत्सुः (पु०) १ योद्धा । २ मेढ़ा । ३ पवन । ४ संन्यासी । ५ इन्द्र ।

प्रयुजं (न०) युद्ध । लड़ाई ।

प्रयोक्तृ (वि०) १ प्रयोगकर्ता । व्यवहार करने वाला । अनुष्ठान करने वाला । २ उत्तेजित करने वाला । भड़काने वाला । ३ रचयिता । गुमारता । ४ (नाटक में) अभिनयकर्ता । ५ व्याज पर रुपया उधार देने वाला । ६ वाण्य चलाने वाला । तीरंदाज ।

प्रयोगः (पु०) १ व्यवहार । अनुष्ठान । २ रीतिरस्म । पद्धति । ३ चलाना । फेंकना : (तीर या अन्य किसी वस्तु को) । ४ अभिनय करना । नाटक खेलना । ५ अभ्यास । ६ प्रणाली । प्रथा । ७ क्रिया । ८ पाठ पढ़ कर सुनाना । पाठ करना । ९ आरम्भ । शुरुआत । १० योजना । ११ साधन । औज़ार । १२ परिणाम । प्रतिफल । १३ तार्किक उपचार । १४ धनवृद्धि के लिये धन लगाना । १५ घोड़ा ।—अतिशयः, (= प्रयोगातिशयः) (पु०) नाटक में प्रस्तावना का एक भेद ।—निपुणः, (वि०) अभ्यास में निपुण ।

प्रयोजकः (पु०) १ प्रयोगकर्ता । अनुष्ठान करने वाला । २ काम में लगाने वाला । प्रेरक । ३ नियन्ता । व्यवस्थापक । महाजन । कर्ज देने वाला । ५ धर्मशास्त्र या आईन की व्यवस्था देने वाला । ६ स्थापनकर्ता । प्रतिष्ठापक ।

प्रयोजनं (न०) १ कार्य । काम । अर्थ । २ अपेक्षा । आवश्यकता । ३ उद्देश्य । ४ उद्देश्य सिद्धि का साधन । ५ अभिप्राय । मतलब । गरज़ । ३ लाभ । मुनाफा । सूद । व्याज ।

प्रयोज्य (वि०) १ प्रयोग के योग्य । बरतने योग्य । काम में लाने योग्य । २ अभ्यास करने योग्य । ३ नियुक्त करने योग्य । ४ चलाने या फेंकने (अस्त्र) योग्य ।

प्रयोज्यं (न०) पूँजी । सरमाया ।

प्रयाज्य (पु०) नौकर
 प्ररुद्धि (व० क०) — १ कर रोने वाला
 प्ररुद्ध (व० क०) १ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त । २ उत्पन्न ।
 निकला हुआ । पैदा किया हुआ । ३ बड़ा हुआ ।
 ४ गहरा भरा हुआ । ५ लंबा ।
 प्ररुद्धिः (स्त्री०) बाढ़ । बढ़ती ।
 प्ररोचन (न०) १ उत्तेजना । भड़की । २ उदाहरण ।
 नज़ीर । व्याख्या । ३ प्रदर्शन (ऐसा जिससे
 लोगों को देखने की रुचि पैदा हो और वे पसंद
 करें) । ४ किसी नाटक में आगे होने वाले दृश्य
 का रोचक वर्णन ।
 प्ररोहः (पु०) १ अँकुर । अँलुआ । कल्ला । कौपल । २
 टहनी जो क्रम लगाते के लिये उतारी जाय ।
 पैवँद । वंश । ३ उल्का । ४ नया पत्ता या
 डाली ।
 प्ररोहण (न०) १ आरोह । चढ़ाव । २ भूमि से
 निकलना । उगना । जमना ।
 प्रलपनम् (न०) १ वार्तालाप । सम्भाषण । २
 गपशप । ऊटपटांग बातचीत । ३ विलाप ।
 प्रलपित (व० क०) कहा हुआ । ऊटपटांग कहा हुआ ।
 प्रलपितं (न०) वार्तालाप ।
 प्रलम्ब (व० क०) बड़ा हुआ । धीमा दिया हुआ ।
 प्रलम्ब } (वि०) १ नीचे की ओर दूर तक लटकता
 प्रलम्ब } हुआ । २ बड़ा (यथा प्रलम्बनासिका) ३
 सुस्त । काहिल । दीर्घसूत्री ।—अण्डः, (पु०)
 मनुष्य जिसके अण्डकोष लटकते हों या बड़े हों ।
 —झः, —मथनः, —हन्, (पु०) बलराम ।
 प्रलम्बः } (पु०) १ लटकाव । मुलाव । २ शाखा ।
 प्रलम्बः } डाली । ३ गले में पड़ी फूलमाला । ४
 कण्ठहार या गुंज । ५ स्त्री के कुच । ६ जस्ता या
 सीसा । ७ एक दैत्य का नाम जिसे बलराम ने
 मारा था ।
 प्रलम्बनं } (न०) अञ्जलम्बन । सहारा ।
 प्रलम्बनम् }
 प्रलम्बित } (वि०) खूब नीचे तक लटकाया हुआ ।
 प्रलम्बित }
 प्रलम्बः } (पु०) १ उपलब्धि । प्राप्ति । २ बल ।
 प्रलम्बः } कपट । धोखा ।

प्रलय (पु०) नाश लय को प्राप्त होना विलीन
 होना । रह न जाना । २ कल्पान्त में संसार का
 नाश । ३ क्षुब्ध । मौत । विनाश । ४ मूर्च्छा ।
 बेहोशी । अचेतनता । ५ प्रणव ओं ।—कालः,
 (पु०) संसार के नाश का समय ।—जलधरः,
 (पु०) प्रलयकालीन मेघ ।—दहनः, (पु०)
 प्रलयकालीन भाग । —पयोधिः, (पु०) प्रलय-
 कालीन समुद्र ।
 प्रलम्बाट (वि०) बड़ा या विशाल माथे वाला ।
 प्रलवः (पु०) हुकड़ा । धुन्नी । छिपटिहया ।
 प्रलवित्रं (न०) काटने का औज़ार ।
 प्रलापः (पु०) १ वार्तालाप । संवाद । २ व्यर्थ की
 बकबाद । अनापशानाव बातचीत । ३ विलाप ।—
 —हन्, (पु०) कुलत्याजिन । एक प्रकार का
 अञ्जन ।
 प्रलापिन् (वि०) बातूनी । व्यर्थ की बातचीत करने
 वाला ।
 प्रलीन (व० क०) १ पिघला हुआ । धुला हुआ । २
 विनष्ट । ३ अचेत । बेहोश ।
 प्रलून (व० क०) कटा हुआ ।
 प्रलेपः (पु०) लेप । उपटन । मलहम ।
 प्रलेपकः (पु०) १ लेप करने वाला । उपटन लगाने
 वाला । २ एक प्रकार का मन्द ज्वर ।
 प्रलेहः (पु०) केरमा । माँस का बनाया हुआ खाद्य
 पदार्थ विशेष ।
 प्रलोठनम् (न०) १ ज़मीन पर लोटना पोटना ।
 उसाँस लेना ।
 प्रलोभः (पु०) १ लालच । अत्यन्त लोभ ।
 प्रलोभनम् (न०) १ किसी को किसी ओर प्रवृत्त
 करने के लिये उसे लाभ की आशा देने का काम ।
 लालच । लोभ । २ लालसा ।
 प्रलोभनी (स्त्री०) रेत । बालू ।
 प्रलोल (वि०) अत्यन्त उद्भिन्न या व्याकुल ।
 प्रवक्तृ (पु०) १ कहने वाला । बोलने वाला । घोषणा
 करने वाला । २ शिक्षक । व्याख्याता । ३ लेख-
 चरार । वाग्मी ।

प्रथम

प्रथमः

प्रथमः

प्रथमः

प्रथमः

(पु०) वानर । बंधर ।

प्रथमम् (न०) १ अच्छी तरह समझ कर कहना ।
अर्थ खोलकर बतलाना । २ व्याख्या । ३
वाग्मिता । ४ वेदाङ्ग ।

प्रथमः (पु०) गेहूँ ।

प्रथम (वि०) १ क्रमशः नीचा होता हुआ । नीचे की
ओर बहने वाला । २ ढालू । ३ सुका हुआ ।
सुखा हुआ । ४ रत । प्रवृत्त । ५ अनुरक्त । आदी ।
६ अनुकूल । सुवाकिक । ७ डस्तुक । तत्पर । ८
सम्पन्न । ९ नम्र । विनीत । १० क्षीण । जर्जरित ।

प्रथमां (न०) पहाड़ का ढाल या उतार ।

प्रथमः (पु०) चौरहा । चतुष्पथ ।

प्रवत्स्यत् (वि०) [स्त्री०—प्रवत्स्यती या प्रवत्स्यन्ती]
विदेश की यात्रा करने को जाने वाला ।—
पतिका, (स्त्री०) वह नायिका जिसका पति
विदेश जाने वाला हो ।

प्रथमां (न०) १ बुने हुए कपड़े का ऊपर का भाग ।
२ अङ्गुश ।

प्रथमस् (वि०) बुढ़ा । वृद्ध । पुरनिया ।

प्रथम (वि०) १ मुख्य । प्रधान । सर्वोत्तम । श्रेष्ठ
महिमावित । २ उम्र में सब से बड़ा ।

प्रथमः (पु०) १ बुलाहट । बुलावा । २ अग्निसंस्कार
का मंत्र विशेष । ३ वंश । कुल । ४ पूर्वपुरुष । ५
गोत्रप्रवर्तक ऋषि । ६ सन्तति । वंशज । ७ चादर ।
आच्छादन ।

प्रथमं (न०) अगर काष्ठ ।—वाहनौ, (पु०)
द्विवचन । अश्विनीकुमारों का नामान्तर ।

प्रथमः (पु०) १ यज्ञीय अग्नि । २ विष्णु ।

प्रथमः (पु०) सोम याग की आरम्भिक विधि विशेष ।

प्रवर्तः (पु०) आरम्भ । शुरुआत । कार्यारम्भ ।

प्रवर्तक (वि०) [स्त्री० प्रवर्तिका] १ सञ्चालक ।
किसी काम को चलाने वाला । २ आरम्भ करने
वाला । जारी करने वाला । ३ काम में लगने

वाला । प्रवृत्त करने वाला । प्रेरणा करने वाला ।
गति देने वाला ।

प्रवर्तकः (पु०) १ निकालने वाला । ईजाद करने
वाला । २ पंच दार जीत का नियंत्रण करने
वाला ।

प्रवर्तनम् (न०) कार्यारम्भ । २ कार्यसञ्चालन । ३
उत्तेजना । प्रेरणा । उमसाना । उभारना ४ प्रवृत्ति ।
५ चालचलन । आचरण । पद्धति ।

प्रवर्तना (स्त्री०) १ प्रवृत्तिदान । उत्तेजना । प्रेरणा ।

प्रवर्तयितु (वि०) किसी काम को चलाने वाला ।
किसी काम की नींव डालने वाला ।

प्रवर्तित (वि०) १ गतिशील । २ प्रतिष्ठित ।
स्थापित । ३ उत्तेजित । उभारा हुआ । ४ सुल
गाया हुआ । जलाया हुआ । ५ बनाया हुआ । ६
पवित्र किया हुआ ।

प्रवर्तिन (वि०) १ प्रेरणा करने वाला । चलाने वाला ।
आगे बढ़ाने वाला । २ क्रियाशील । ३ प्रयोग
करने वाला ।

प्रवर्धनम् (न०) विवर्द्धन । बढ़ती । वृद्धि ।

प्रवर्धः (पु०) मूसलधार वृष्टि ।

प्रवर्ध्यां (न०) प्रथम वृष्टि । वृष्टि ।

प्रवसमं (न०) विदेशगमन ।

प्रवहः (पु०) १ प्रवाह । धार । २ हवा पवन । ३ पवन
के सप्तमार्गों में से एक का नाम । इसीमें
ज्योतिष्क पिण्ड आकाश में स्थित है ।

प्रवहणं (न०) १ (स्त्रियों के लिये) पट्टेदार गाड़ी या
पालकी या डोली । २ सवारी । ३ जहाज़ । पोत ।

प्रवह्निः } (स्त्री०) पहेली । बुझौआल ।
प्रवह्नी } (स्त्री०) पहेली । बुझौआल ।

प्रवाह् (वि०) १ वाग्मि । वक्ता । २ बातूनी । गप्पी ।
प्रवाचनं (न०) धोषणा ।

प्रवाणं (न०) बने हुए कपड़े में गोट लगाना या
उसके छोरों को संहारना ।

प्रवाणिः } (स्त्री०) करघा ।
प्रवाणी } (स्त्री०) करघा ।

प्रवान (व० कृ०) आँधी में पड़ा हुआ ।

प्रवार्त (न०) १ हवा का कौंका । ताज़ी हवा । २
अँधड़ । आँधी । ३ हवादार स्थान ।

प्रवाद (पु०) १ शब्दोच्चारण २ व्यक्तकरण वर्णन करना । प्रकट करना ३ वार्तालाप सवाद ४ बातचीत । किंवदन्ती । अफवाह । जनश्रुति । जनरव । ५ कल्पनाप्रसूत रचना । काल्पनिक रचना । ६ आईनी भाषा । ७ चिलौती ।

प्रवारः } (पु०) चादर । आच्छादन ।
प्रवारकः }

प्रवारण (न०) १ इच्छापूर्व्य करना । २ निषेध । विरोध । ४ काश्चन ।

प्रवाल देखो प्रवाल ।

प्रवासः (पु०) विदेश में रहना । परदेश का निवास । विदेश ।

प्रवासन (न०) १ विदेश में बाल । २ घर से निकास । निर्वासन । देशनिकास । ३ वध । हत्या ।

प्रवासिन् (पु०) यात्री । पथिक । बदेही । मुसाफिर ।

प्रवाहः (पु०) १ धार । २ चरमा । ओत । ३ जल का बहाव । ४ घटनाचक्र । ५ क्रियाशीलता । ६ जलाशय । भील । ७ उत्तम घोड़ा ।

प्रवाहकः (पु०) प्रेत । पिशाच ।

प्रवाहनम् (न०) १ निकलना । २ दस्त का कर साफ करना ।

प्रवाहिका (स्त्री०) दस्तों की बीमारी ।

प्रवाही (स्त्री०) रेत । बालू ।

प्रविकीर्ण (व० क०) १ बिखरा हुआ । ओत प्रोत । छिटकाया हुआ ।

प्रविख्यात (व० क०) १ नामधारी । २ प्रसिद्ध । मशहूर ।

प्रविख्यातिः (स्त्री०) नामधारी । प्रसिद्धि । शोहरत ।

प्रविचयः (पु०) परीक्षा । अनुसन्धान ।

प्रविचारः (पु०) विवेक । ज्ञान । चतुराई ।

प्रविचेलनम् (न०) समझदारी ।

प्रवितत (व० क०) १ फैला हुआ । पसरा हुआ । २ अक्षय्यस्त । उलझे हुए (केश) ।

प्रविदारः (पु०) तडकन । फटन ।

प्रविदारणम् (न०) १ चीरन । काढ़न । रकलियों का लगना । ३ लड़ाई । युद्ध । ४ भीड़भाड़ । गड़-बड़ी ।

प्रविद्ध (व० क०) फका हुआ । निकाला हुआ ।

प्रविद्रुत (व० क०) भगाया हुआ । छितराया हुआ ।

प्रविभक्त (व० क०) १ अलहदा किया हुआ । पृथक किया हुआ । २ विभाजित । जिसका बटवारा हो चुका हो ।

प्रविभागः (पु०) १ विभाग । बँट । क्रमवार रखना । २ अंश । भाग ।

प्रविरल (वि०) १ बहुत दूर दूर अलगगाया हुआ । पृथक । २ स्वरूप । बहुत थोड़ा ।

प्रविलयः (पु०) १ पिघलाना । गलाना । २ भली भाँति घुलना या लीन होना ।

प्रविलुप्त (व० क०) हटाया हुआ । काटा हुआ । गिरा हुआ । विसा हुआ ।

प्रविरः (पु०) पीला चन्दन ।

प्रविवादः (पु०) झगड़ा । टंटा ।

प्रविचिक्त (व० क०) १ एकाकी । २ अलगाया हुआ । अलहदा किया हुआ ।

प्रविश्लेषः (पु०) अलगाव । बिलगाव ।

प्रविपण (व० क०) उदास । उत्साह शून्य ।

प्रविष्ट (व० क०) १ घुसा हुआ । २ संलग्न । ३ आरम्भ किया हुआ ।

प्रविष्टकं (न०) रंगभूमि का द्वार ।

प्रविस्तरः } (पु०) विस्तार । फैलाव । वृत्त ।
प्रविस्तरः }

प्रवीण (वि०) चतुर । निपुण । जानकार ।

प्रवीर (वि०) १ प्रधान । श्रेष्ठ । सर्वोत्कृष्ट । २ मजबूत । दृढ़ । वीर ।

प्रवीरः (पु०) १ वीर पुरुष । बहादुर आदमी । योद्धा । २ प्रधान पुरुष ।

प्रवृत्त (व० क०) चुना हुआ । छाँटा हुआ ।

प्रवृत्त (व० क०) १ आरम्भ किया हुआ । २ संब-
लित । ३ संलग्न । ४ प्रस्थानित । ५ निश्चित ।
निर्यात । ६ अविरुद्ध । अविवादग्रस्त । ७ गोल ।

प्रवृत्तः (पु०) गोल आभूषण विशेष ।

प्रवृत्तकं (न०) रंग भूमि का प्रवेशद्वार ।

प्रवृत्तिः (स्त्री०) १ अविविध उन्नति । बढ़ती । २ उत्पत्ति । उद्गमस्थान । उदय । प्राकट्य । प्रकाशन । ३ आरम्भ । ४ लगन । रुकान ।

मुकाव ६ चालचलन । चरित, ७ व्यापार ।
कामधंधा । ८ व्यवहार । चलन । प्रचलन ।
९ अविच्छिन्न उद्योग । १० भाव । अर्थ ।
मतलब । ११ सातत्य । अविच्छिन्नता । स्थायित्व ।
१२ साँसारिक विषयों में अनुरक्ति । १३
जाता । वृत्तान्त । हाल । बात । १४ किसी
नियम का किसी विषय में लागू होना । १५
प्रारब्ध । भाग्य । तक्रवीर । १६ दोष । १७ हाथी
का मद । उज्जयिनी पुरी का नाम । ज्ञः (पु०)
भेदिया । ज्ञासुस ।

प्रवृद्ध (व० क०) १ पूरा बढ़ा हुआ । २ वृद्धियुक्त ।
कैला हुआ । विस्तारित । ३ पूर्ण । गहरा । ४
अहंकारी । अभिमानी । ५ उग्र । प्रचण्ड । ६
लंबा । दीर्घ ।

प्रवृद्धिः (स्त्री०) १ उन्नति । बढ़ती । २ उत्थान ।
समृद्धि । उत्थन ।

प्रवेक (वि०) श्रेष्ठ । मुख्य । सर्वोत्कृष्ट ।

प्रवेगः (पु०) बड़ा वेग ।

प्रवेष्टः (पु०) जाँ ।

प्रवेष्टिः } (स्त्री०) १ बालों का जूड़ा । २ हाथी की
प्रवेष्टी } झूल । ३ रंगीन ऊनी कपड़े का थान ।
४ जलप्रवाह या नदी की धार ।

प्रवेष्ट (पु०) रखवान । सारथी ।

प्रवेदनं (न०) प्रकट करना । प्रकटन । बोधना ।

प्रवेपः }
प्रवेपकः } (पु०) } धराना । कैंपकपी ।
प्रवेपथुः }
प्रवेपनम् (न०) }

प्रवेरित (वि०) इधर उधर पटकता हुआ या फैला
हुआ ।

प्रवेलः (पु०) सोना मूँग ।

प्रवेशः (पु०) १ द्वार । अन्तर्निवेश । २ पैदारी । घुसना ।
३ रंगमंच का प्रवेशद्वार । ४ घर का प्रवेशद्वार ।
५ आमदनी । मालगुजारी । ६ किसी कार्य में
संलग्नता ।

प्रवेशकः (पु०) १ प्रवेश करने वाला । २ नाटक के
अभिनय में वह स्थल जहाँ कोई अभिनय करने
वाला दो अंकों के बीच की घटना का (जो दिख

लायी न गयी हो) परिचय; पारस्परिक बातोलाप
द्वारा देता है ।

प्रवेशनं (न०) प्रवेशद्वार । पैदारी । २ भीतर गमन ।
३ सिंहद्वार । ४ मैथुन । स्त्रीवर्जन ।

प्रवेशित (व० क०) परिचय कराया हुआ । भीतर
लाया हुआ ।

प्रवेष्टः (पु०) १ बाँह । २ पहुँचा । ३ हाथी की पीठ
का वह साँसल भाग जहाँ लोग बैठते हैं । ४ हाथी
के मसूड़े । ५ हाथी की झूल ।

प्रव्यक्त (व० क०) स्पष्ट । साफ । व्यक्त । प्रकट ।

प्रव्यक्तिः (स्त्री०) प्रकटन । प्राकट्य ।

प्रव्याहारः (पु०) वार्तालाप की वृद्धि ।

प्रव्रजनं (न०) १ विदेशगमन । २ निर्वासन । घर
बार छोड़ संन्यास लेना ।

प्रव्रजित (व० क०) घर छोड़ने वाला । विदेश गया
हुआ ।

प्रव्रजितं (न०) संन्यासी का जीवन ।

प्रव्रजितः (पु०) १ संन्यासी । गृहत्यागी । २ बौद्ध
भिक्षुक का शिष्य ।

प्रव्रज्या (स्त्री०) १ विदेशगमन । २ भ्रमण । ३
संन्यास । भ्रम ।

प्रव्रज्यावसितः (पु०) वह पुरुष जिसने संन्यासाश्रम
ग्रहण कर उसे त्याग दिया हो ।

प्रव्रश्चनः (पु०) लकड़ी काटने का चाकू विशेष ।

प्रव्राज (पु०) } संन्यासी ।
प्रव्राजकः (पु०) }

प्रव्राजनं (न०) निर्वासन । घर छोड़ा वन में भेजना ।

प्रशंसनं (न०) प्रशंसा । श्लाघा । सराहना । तारीफ़ ।

प्रशंसा (स्त्री०) गुणवर्णन । स्तुति । बड़ाई । श्लाघा ।
—मुखर, (वि०) जोर जोर से प्रशंसा करने
वाला ।

प्रशंसित (व० क०) सराहा हुआ । तारीफ़ किया
हुआ ।

प्रशंसोपमा (स्त्री०) उपमा अलंकार का एक भेद ।
इसमें उपमेय की विशेष प्रशंसा करके उपमान की
प्रशंसा व्यक्त की जाती है ।

प्रशंस्य (वि०) प्रशंसनीय । प्रशंसा करने योग्य ।

प्रशस्वन (पु०) समुद्र ।

प्रशास्त्ररी (स्त्री०) नदी
 प्रशम (पु०) १ शान्ति ० शमन उपशम । ३ नाश । ध्वंस । ४ अवसान । अन्त । विनाश । ५ निवृत्ति ।
 प्रशमन (वि०) [स्त्री०—प्रशमनी] १ शान्त करने वाला ।
 प्रशमनं (न०) १ शमन । शान्ति । २ नाशन । ध्वंसन । ३ मारण । वध । ४ प्रतिपादन । ५ वशकरण । स्थिरकरण ।
 प्रशमिन (व० कृ०) १ शान्त । उपशमित । २ बुझा हुआ । अघाया हुआ । तृप्त । २ प्रायश्चित्त द्वारा शुद्ध किया हुआ ।
 प्रशस्त (व० कृ०) १ प्रशंसा किया हुआ । प्रशंसनीय । ३ श्रेष्ठ । सर्वोत्तम । ४ कृतकृत्य । सुखी । शुभ । अग्निः (पु०) एक पर्वत का नाम ।—पादः (पु०) एक प्राचीन आचार्य । इन्होंने वैशेषिक दर्शन पर पदार्थ धर्मसंग्रह नामक एक ग्रन्थ लिखा था, जो अब तक मिलता है ।
 प्रशस्तिः (स्त्री०) १ प्रशंसा । विरुदावली २ वर्णन । ३ प्रशंसा में रची हुई कविता । ४ श्रेष्ठता । उत्कृष्टता । ५ आशीर्वाचन । ६ आदेश ।
 प्रशस्य (वि०) प्रशंसा के योग्य । प्रशंसनीय । उत्तम । श्रेष्ठ ।
 प्रशाख (वि०) १ अनेक सवन या विस्तारित शाखाओं वाला । २ गर्भपिण्ड की पाँचवी अवस्था जब उसमें हाथ पैर बन चुकते हैं ।
 प्रशाखा (स्त्री०) छोटी डाली या टहनरी ।
 प्रशाखिका (स्त्री०) छोटी डाली या टहनरी ।
 प्रस्तरणं (न०) १ सेज । शय्या । २ आसन ।
 प्रस्तरणा (स्त्री०) १ बैठकी ।
 प्रशान्त (व० कृ०) १ स्थिर । अचंचल । २ शान्त । शमन । ३ शान्तचित्त ।
 प्रशान्त (वि०) निर्वल किया हुआ । पैरों पड़ा हुआ ।—लेष्ट (वि०) काम धंधा छोड़े हुए ।—वाध (वि०) वह जिसकी समस्त बाधाएँ दूर हो चुकी हों ।

प्रशान्ति (स्त्री०) शान्ति । स्थिरता
 प्रशाम (पु०) १ शान्ति । स्थिरता । २ दुर्लभ । ३ अवसान ।
 प्रशासनं (न०) १ हुकूमत करना । शासन करना । २ हुकूमत । शासन । ३ हुकूमदेन ।
 प्रशास्तृ (पु०) राजा । शासक । सूबेदार ।
 प्रशथिल (वि०) बहुत ढीला ।
 प्रशिष्यः (पु०) शिष्य का शिष्य ।
 प्रशुद्धिः (स्त्री०) स्वच्छता । पवित्रता ।
 प्रशोपः (पु०) सूखना । सूख जाना ।
 प्रश्रोतनम् (न०) छिड़काव ।
 प्रशनः (पु०) १ सवाल । २ अनुसन्धान । तहकीकात । ३ विवाद प्रस्त विषय । ४ शंकाश्रित का हल करने के लिये कोई सवाल । ५ भविष्य सम्बन्धी जिज्ञासा । ६ किसी ग्रन्थ का कोई छोटा अध्याय ।—उपनिषद् (न०) एक उपनिषद् विशेष जिसमें ६ प्रश्न और उनके छः उत्तर हैं ।—दूतिः (स्त्री०) पहेली ।—दूती (स्त्री०) बुझौअल ।
 प्रश्रयः (पु०) ढीलापन ।
 प्रश्रयः (पु०) १ विनय । नम्रता । शिष्टता ।
 प्रश्रयणम् (न०) १ प्रेम । स्नेह । सम्मान ।
 प्रश्रित (व० कृ०) विनम्र । विनीत । शिष्ट ।
 प्रश्लथ (वि०) १ बहुत ढीला । २ उस्ताहरीन ।
 प्रश्लिष्ट (व० कृ०) १ उमेठा हुआ । २ युक्तियुक्त ।
 प्रश्लेषः (पु०) १ वनिष्ट संसर्ग । २ सन्धि होने में स्वरों का परस्पर मिल जाना ।
 प्रशवात्सः (पु०) नथने से बाहिर आयी हुई साँस । वायु के नथने से निकलने की क्रिया ।
 प्रष्टु (वि०) १ सामने खड़ा होने वाला । २ प्रधान । मुख्य । अगुआ । नेता ।—वाह, (पु०) जवान बैल, जिसे हल जोतने का अभ्यास कराया जाता हो ।
 प्रस्त (धा० आत्म०) [प्रस्त, प्रस्य, प्रस्यते] १ बचा पैदा करना । २ फैलाना । पसारना । व्याप्त करना । बढ़ाना ।
 प्रसक्त (व० कृ०) १ सम्बन्ध युक्त । अटका हुआ । २ अत्यन्त आसक्त । ३ समीप । ४ सतत । ५ प्राप्त । उपलब्ध ।

प्रसक्त (अन्यथा०) लगातार । बराबर : अविच्छिन्न ।
 प्रसक्तिः (स्त्री०) १ स्नेह । भक्ति । अनुराग । २
 सम्बन्ध । मेल । संसर्ग । ३ प्रयोग । ४ व्याप्ति ।
 ५ अध्यवसाय । ६ परिणाम । नतीजा । प्रतिफल ।
 ७ विवादग्रस्त विषय । ८ सम्भावन ।

प्रसंगः (पु०) १ अनुराग । आसक्ति । भक्ति ।
 प्रसङ्गः २ संसर्ग । सम्बन्ध । सम्पर्क । मेल । ३
 अनुचित सम्बन्ध । ४ विषय जो विवादग्रस्त हो
 या जिस पर बातचीत होती हो । ५ अवसर ।
 ६ उपयुक्त अवसर । उपयुक्त काल । ७ व्याप्त
 रूप सम्बन्ध ।

प्रसंख्या (स्त्री०) १ जोड़ । मीजान । २ ध्यान ।
 प्रसंख्यानम् (न०) १ गणना । २ ध्यान । विचार ।
 आत्मानुसन्धान । ३ इयाति । कीर्ति । प्रसिद्धि ।

प्रसंख्यानः (पु०) भुगतान । दिवाला ।
 प्रसंजनम् (न०) १ जोड़ने की क्रिया । मिलाना ।
 प्रसंजनम् २ उपयोग में लाना । काम में लाना ।

प्रसन्तिः (स्त्री०) १ अनुग्रह । २ स्वच्छता । पवित्रता
 निर्मलता ।

प्रसंधानम् (न०) मिलान । योग । जुटाव । एका ।
 प्रसन्धानम् (न०) मिलान । योग । जुटाव । एका ।

प्रसन्न (व० कृ०) १ पवित्र । स्वच्छ । चमकीला ।
 निर्मल । २ प्रसन्न । आह्लादित । आस्वस्त । ३
 कृपालु । शुभ । ४ साफ़ । खुल्लखुल्ला । स्पष्ट ।
 सहज में बोधगम्य । ५ सत्य । सही । ठीक ।—
 आत्मन्, (वि०) जो सदा प्रसन्न रहै ।
 आनन्दी ।—ईरा, (= प्रसन्नो) एक प्रकार
 की मदिता ।—कल्प, (वि०) १ प्रायःशान्त ।
 २ प्रायःसत्य ।—मुख, —वदन, (वि०) जिसका
 मुख प्रसन्न हो । जिसकी आकृति से प्रसन्नता
 व्यक्त हो । हँसता हुआ चेहरा ।—सलिल, (वि०)
 स्वच्छ जलवाला ।

प्रसन्ना (स्त्री०) १ प्रसन्नकर । आनन्दप्रद । २ वह
 मद्य जो पहले खींची गयी हो ।

प्रसर्भ (अन्यथा०) १ बलपूर्वक । बरजोरी । जबर-
 दस्ती । २ अत्यधिक । बहुतायत से । ३ अद-
 पकड़कर । हठ करके ।—दमन, (न०) जबर-
 दस्ती वशीभूत करना ।—हरण, (न०) जबर-
 दस्ती पकड़ कर ले जाना ।

प्रसभः (पु०) बल । उग्रता । प्रवण्डता । वेग ।

प्रसमीक्षणम् (न०) विचार । निर्णय । गम्भीरा
 प्रसमीक्षा (स्त्री०) लोचन ।

प्रसयनम् (न०) १ बंजन । २ जाल ।

प्रसारः (पु०) १ आगे बढ़ना । बढ़ना । विस्तार । २
 बेरोकटोक गति । अबाधित गति । अबाधित
 मार्ग । ३ प्रसार । विस्तार । फैलाव । ४ आपतन ।
 दड़ो मात्रा । ५ प्रभाव । चलन । ६ धार ।
 बहाव । वाह । ७ समूह । भीड़भाड़ । ८ युद्ध ।
 लड़ाई । लोहे का तीर । ९ वेग । वेगवान् गति ।
 ११ विनम्र याचना या प्रार्थना । स्नेहयुक्त याचना ।

प्रसरणं (न०) १ आगे बढ़ना । बहाव । २ निकल
 भागना । भाग जाना । ३ फैलना । फैलने की
 क्रिया या भाव । ४ शत्रु को घेर लेना । ५ मुशी-
 लता । स्नेहशीलता ।

प्रसरणिः (स्त्री०) शत्रु को घेर लेना ।
 प्रसरणी (स्त्री०) शत्रु को घेर लेना ।

प्रसर्पणम् (न०) १ आगे बढ़ना । आगे खिसकना ।
 २ घुसना । पैठना । (सेना का) चारों ओर
 फैल जाना ।

प्रसलः (पु०) हेमन्त ऋतु ।
 प्रशलः (पु०) हेमन्त ऋतु ।

प्रसवः (पु०) १ बच्चा जनने की क्रिया । जनना ।
 प्रसूति । २ जन्म । उत्पत्ति । ३ अपत्य । बच्चा ।
 सन्तान । ४ उत्पत्ति स्थान । उत्पन्नस्थल । ५ फूल ।
 पुष्प । कुसुम । ६ फल । उपज ।—उत्सुख,
 (वि०) उत्पन्न होने वाला ।—गृह, (न०)
 प्रसूतिकागृह । वह कमरा जिसमें बच्चा जना
 जाय । सोबर ।—धर्मिन्, (वि०) उर्वर,
 जिसमें कोई वस्तु पैदा हो सके ।—वन्धनम्,
 (न०) वह पतला सीका जिसके सिरे पर पत्ता
 या फूल लगता है । नाल ।—वेदना, —व्यथा,
 (स्त्री०) वह दर्द जो बच्चा जनने के पूर्व गर्भवती
 स्त्री के पेट में हुआ करता है ।—स्थली, (स्त्री०)
 माता । स्थान, (न०) १ वह स्थान जहाँ
 बच्चा उत्पन्न हो । २ जाल ।

प्रसवकः (पु०) पितामहवृत्त । चिरौजी का पेड़ ।

प्रसवनम् (न०) १ बच्चा जनना । २ उर्वरपन ।
 उपजाऊपन ।

प्रसवति: } (स्त्री०) जन्म औरत ।
प्रसवन्ति: }

प्रसवितृ (पु०) पिता । जनक ।

प्रसवित्री (स्त्री०) माता ।

प्रसव्य (वि०) उत्पद्य । औंधा ।

प्रसह (वि०) सहनशील । सहिष्णु ।

प्रसहः (पु०) १ शिकारी पशु या पक्षी । २ सहन-
शीलता । सामना । मुकाबला ।

प्रसहनं (न०) १ सहनशीलता । सहिष्णुता । २
सामना । मुकाबला । ३ पराजय । शिकस्त । ४
आलिङ्गन ।

प्रसहनः (पु०) शिकारी पशु या पक्षी ।

प्रसह्य (अव्यया०) १ बरजोरी । प्रचण्डता से ।
जबरदस्ती से । २ बहुतायत से । अत्यन्त अधिकाई
से । बहुत ।

प्रसालिका (स्त्री०) छोटे दाने का चाँवल ।

प्रसादः (पु०) १ अनुग्रह । कृपा । अच्छा स्वभाव ।
२ शान्ति । उद्देगराहित्य । ३ स्पष्टता । स्वच्छता ।
४ प्राञ्जलता । सुस्पष्टता । परिस्पष्टता । ५ वह
भोज्य पदार्थ जो देवता को निवेदित किया
गया हो । ६ देवता, गुरुजन आदि को देने
पर बची हुई वस्तु जो काम में लायी जाय । ८
निस्स्वार्थदान । पुरस्कार । ९ कोई भी पदार्थ जो
तुष्टिसाधन के लिये भेंट किया जाय ।—उन्मुख,
(वि०) कृपालु । अनुग्रह करने को तत्पर ।
—पराङ्मुख, (वि०) १ अप्रसन्न । नाराज़ । २
वह जो किसी की कृपा की परवाह न करे ।—पार्श्व,
(न०) कृपापात्र ।—स्थ, (वि०) १ कृपालु ।
२ शुभ । शान्त । प्रसन्न । सुखी ।

प्रसादक (वि०) [स्त्री०—प्रसादिका] १ स्वच्छ
करने वाला । साफ करने वाला । २ ढाँस बँधाने
वाला । धीरज देने वाला । ३ प्रसन्न करने वाला ।
४ अनुग्रह करने वाला ।

प्रसादन (वि०) [स्त्री० प्रसादनी] १ साफ करने
वाला । पवित्र या स्वच्छ करने वाला । २ धीरज
बँधाने वाला । प्रसन्न करने वाला ।

प्रसादनं (न०) १ अस्वच्छता को हटाने वाला या
साफ करने वाला । २ धीरज बँधाने वाला । ३
प्रसन्न करने वाला । ४ अनुग्रह करने वाला ।

प्रसादनः (पु०) शाही खीसा । बादशाह का तंबू ।

प्रसादना (स्त्री०) १ चाकरी । सेवा । परिचर्या । २
पवित्रता ।

प्रसादित (व० कृ०) १ स्वच्छ किया हुआ । पवित्र
किया हुआ । २ सन्तुष्ट किया हुआ । अवाया
हुआ । ३ परिचर्या किया हुआ । ४ शान्त किया
हुआ । धीरज बँधाया हुआ ।

प्रसाधक (वि०) [स्त्री०—प्रसाधिका] १
सम्पादक । निर्वाह करने वाला । २ स्वच्छ करने
वाला । सफाई करने वाला । ३ सजावट करने
वाला । शृङ्गार करने वाला ।

प्रसाधकः (पु०) राजाओं को वस्त्र, आभूषणादि
पहनाने वाला नौकर ।

प्रसाधनं (न०) १ सम्पादन । कार्य को पूरा करना ।
२ सुव्यवस्था करना । ३ सजावट । शृङ्गार । वेष ।
कँची । ४ सजावट ।—विधिः (स्त्री०) शृङ्गार
का तरीका ।—विशेषः (पु०) सब से चढ़ बढ़
कर शृङ्गार ।

प्रसाधनः (पु०) }
प्रसाधनम् (न०) } कँची ।
प्रसाधनी (स्त्री०) }

प्रसाधिका (स्त्री०) वह दासी जो अपनी स्वामिनी के
शृङ्गार के साधनों की देखरेख रखा करे ।

प्रसाधित (व० कृ०) १ सँवारा हुआ । सजाया हुआ ।
२ सुसम्पादित ।

प्रसारः (पु०) वित्तार । फैलाव । पसार ।

प्रसारणं (न०) फैलाना । पसारना । विस्तृत करना ।

प्रसारिणी (स्त्री०) शत्रु को घेरना ।

प्रसारित (व० कृ०) १ फैला हुआ । बढ़ा हुआ ।
छाया हुआ । २ (हाथ) आगे फैलाया हुआ । ३
(विक्री के लिये) सामने रखा हुआ ।

प्रसाहः (पु०) शिकस्त । हार । पराजय ।

प्रसित (व० कृ०) १ बसा हुआ । बसा हुआ । २
अलुप्त । संलग्न । लगा हुआ । ३ अभिलषित ।

प्रसितं (न०) पीव । मवाद ।

प्रसितिः (स्त्री०) १ जाल । २ पट्टी । ३ बँधन । बेड़ी ।

प्रसिद्ध (व० कृ०) १ विख्यात । मशहूर । २ सजरा
हुआ । सँवारा हुआ ।

प्रसिद्धिः (स्त्री०) १ ख्याति । कीर्ति । २ सफलता ।
परिपूर्णता । ३ आभूषण । सजावट ।

प्रसीदिका (स्त्री०) बाटिका । फुलबगिया ।

प्रसूत (व० कृ०) १ निद्रित । सोया हुआ । २
प्रगाढ़निद्रित । [बीमारी ।

प्रसूतिः (स्त्री०) १ निद्रा । नींद । २ लकवे की

प्रसू (वि०) जनने वाली । उत्पन्न करने वाली (स्त्री०)
१ माता । जननी । २ छोड़ी । ३ फैलने वाली
लता या बेल । ४ केला ।

प्रसूका (स्त्री०) बोड़ी ।

प्रसूत (व० कृ०) उत्पन्न । सञ्जात । पैदा ।

प्रसूतं (न०) १ फूल । २ उत्पादक ।

प्रसूता (स्त्री०) जन्मा स्त्री ।

प्रसूतिः (स्त्री०) १ प्रसव । जनन । २ उद्भव । ३
बढ़वा जनना । ४ अंडे देना । ५ उत्पत्ति । पैदायश ।
६ निकलना । बढ़ना । ७ पैदावार । ८ अपत्य ।
सन्तति । ९ उत्पन्न करने वाला । पैदा करने वाला ।
१० माता ।

प्रसूतिजं (न०) वह द्रव जो बच्चा जनते समय होता है ।

प्रसूतिवायुः (पु०) वह वायु जो बच्चा जनते समय
गर्भाशय में उत्पन्न होता है ।

प्रसूतिका (स्त्री०) जन्मा स्त्री । वह स्त्री जिसके हाथ
में बच्चा हुआ हो ।

प्रसून (व० कृ०) उत्पन्न हुआ । पैदा हुआ ।

प्रसूनम् (न०) १ फूल । पुष्प । २ कली । ३ फल ।

प्रसूनकं (न०) १ फूल । २ कली ।

प्रसूनवृक्षः
प्रसूनवाणः
प्रसूनवाणः } (पु०) कामदेव के नामान्तर ।

प्रसूनवर्षः (पु०) फूलों की वर्षा ।

प्रसृत (व० कृ०) १ आगे बढ़ा हुआ । २ पसारा
हुआ । बढ़ाया हुआ । ३ छाया हुआ । बिदा हुआ ।
४ लंबा । दीर्घ । ५ लगा हुआ । ६ तेज । फुर्तीला ।
७ सुशील । दिनशः—जं (न०) छिनाले का
लड़का ।

प्रसृतं (न०) हथेली पर का मान (यह पु० भी है) ।

प्रसृतः (पु०) हाथ की हथेली या अंगुलि ।

प्रसृता (स्त्री०) टाँग ।

प्रसृतिः (स्त्री०) १ वृद्धि । बढ़ती । २ बहाव ।
३ हथेली । पस्सा । अङ्गुलि । ४ हथेली भर
का मान ।

प्रसृष्ट (व० कृ०) १ पृथक् किया हुआ । पसारे हुए ।

प्रसृष्टा (स्त्री) एक अंगुली पसारे हुए ।

प्रसृष्टर (वि०) चारों ओर फैलने वाला ।

प्रसृमर (वि०) चूने वाला । उपकने वाला ।

प्रसेकः (पु०) १ सेचन । सिञ्चन । २ छिड़काव । ३
पसेव । ४ बमन । कै ।

प्रसेदिका (स्त्री०) छोटी बगिया ।

प्रसेवः } (पु०) १ वेरा । थैला । २ कुप्पी । कुप्पा ।
प्रसेवकः } ३ बीन की तूची ।

प्रस्कंदनं } (न०) १ रुपट । फलौंग । २ विरेचन ।
प्रस्कन्दनं } जुलाव । अतिसार । दस्तों का रोग ।

प्रस्कंदनः } (पु०) शिव ।
प्रस्कन्दनः }

प्रस्कन्न (व० कृ०) १ फलौंग लगाये हुए । उड़ला
हुआ । २ गिरा हुआ । टपका हुआ । ३ परास्त ।
पराजित ।

प्रस्कन्नः (पु०) १ जातिच्युत । २ पापी । नियम भङ्ग
करने वाला ।

प्रस्कंदः } (पु०) गोलाकार वेदी ।
प्रस्कन्दः }

प्रस्खलनम् (न०) १ पतन । २ लड़खड़ाना ।

प्रस्तरः (पु०) १ फूलों और पत्तों की खेज । २ खेज ।
शय्या । ३ चौरस जगह । मैदान । ४ पत्थर ।
चट्टान । ५ रत्न ।

प्रस्तरणा (पु०) १ शय्या मज २ ५० की
प्रस्तरणा (स्त्री०) १ शय्या मज २ ५० की

प्रस्तरः (पु०) १ फैलाव । विस्तार । २ फूलों और पत्तों से सजरी सेज या शय्या । ३ सेज । शय्या । ४ चौरस जमीन । मैदान । ५ जंगल । वन । ६ छन्दः शास्त्र के अनुसार नव प्रत्ययों में से प्रथम । इसमें छंदों के भेद की संख्या और उनके रूपों का वर्णन होता है । इसके दो भेद हैं । प्रथम वर्णप्रस्तर । द्वितीय मात्राप्रस्तर ।

प्रस्तावः (पु०) १ आरम्भ । शुरुआत । २ भूमिका । उपक्रम । ३ वर्णन । चर्चा । जिक्र । ४ अवसर । मौका । ५ प्रकरणा । विषय । ६ अभिनय में अभिनय से पूर्व विषय का परिचय ।

प्रस्तावना (स्त्री०) १ प्रशंसा । सराहना । २ आरम्भ । शुरुआत । ३ भूमिका । उपोद्घात । ४ नाटक में सूत्रधार और किसी नट से आरम्भिक बातचीत जिसमें नाटक रचयिता और उसकी योग्यता का वर्णन दिया जाता है ।

प्रस्तावित (वि०) १ आरम्भ किया हुआ । २ वर्णित ।

प्रस्तिरः (पु०) फूलों और पत्तियों की सेज ।

प्रस्तीत (व० क०) १ शब्द करता हुआ । शब्दाय-
प्रस्तीत } मान । २ भोड़भाड़ लगाये हुए ।

प्रस्तुत (व० क०) १ जिसकी स्तुति या प्रशंसा की गयी हो । २ आरम्भ किया हुआ । ३ पूर्ण किया हुआ । खत्म किया हुआ । ४ जो बंदिता हुआ हो । ५ जो समीप या सामने हो । ६ विवादग्रस्त । प्रस्तावित । वर्णित । हाथ में लिया हुआ ।—अङ्कुरः, (पु०) एक अलङ्कार विशेष । इसमें एक प्रस्तुत पदार्थ के सम्बन्ध में कुछ कह कर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत पदार्थ पर बढ़ाया जाता है । प्रस्तुतालङ्कार ।

प्रस्तुतं (न०) १ उपस्थित विषय । २ विचाराधीन या विवादग्रस्त विषय ।

प्रस्थ (वि०) १ जाने वाला । भेंट करने वाला । अनुसार चलने वाला । २ यात्रा के लिये जाने वाला । ३ फैलाना । बढ़ाना । विस्तार करना । ४ स्थिर । स्थायी ।

प्रस्थ (न०) १ चारस सप्ताह २ पहाड़ के प्रस्थ (पु०) १ ऊपर की चोखल भूमि । अधित्यका ।

देखललैड । २ पर्वतशिखर । ३ प्राचीन कालीन एक तौल । ४ कोई वस्तु जो एक प्रस्थ वाली एक बालिरत के लगभग हो ।—पुष्पाः, (पु०) १ दोषामरुष्या का पृष्ठ । २ छोटे पत्ते की तुलसी ।

प्रस्थानं (न०) १ गमन । यात्रा । रवानगी । २ आगमन । ३ कूच । सेना या चढ़ाई करने वाली सेना का कूच । ४ पद्धति । ५ मृत्यु । मरण । ६ अपरुद्ध श्रेणी का नाटक ।

प्रस्थापनं (न०) १ रवानगी । विदाई । २ दौत्य—कार्य पर नियुक्ति । ३ स्थापन । सिद्ध करना । ४ उपयोग । ५ पशुओं की रवानगी । उनको दूर भेजन ।

प्रस्थापित (व० क०) १ भेजा हुआ । रवाना किया हुआ । २ सिद्ध किया हुआ । स्थापित किया हुआ ।

प्रस्थित (व० क०) गत । गया हुआ ।

प्रस्थितिः (स्त्री०) १ रवानगी । प्रस्थान । २ यात्रा । कूच ।

प्रस्नः (पु०) स्नान पात्र ।

प्रस्नवः (पु०) १ नहाव । उमड़ कर बहना । २ (दूध की) धार ।

प्रस्तुत (व० क०) १ टपकता हुआ । चूता हुआ । गिरता हुआ ।—स्तनी, (स्त्री०) वह स्त्री जिसकी छाती से दूध टपकता हो । (मातृस्नेह के आधिक्य से) ।

प्रस्तुधा (स्त्री०) पौत्र की पत्नी । नतबहू ।

प्रस्पन्दन (न०) झड़कन ।

प्रस्फुट (वि०) १ फूला हुआ । खिला हुआ । २ प्रकाशित । जाहिर । साफ । स्पष्ट ।

प्रस्फुरित (व० क०) काँपता हुआ । थरथराता हुआ ।

प्रस्फोटनं (न०) फोड़ निकलना । विकसित होना या करना । खिलना । खिलाना । ३ प्रकट करना । प्रकाशित करना । खोद देना । ४ फटना (अक्राका) ५ सूँप । ६ पीटना । ठोंकना ।

प्रस्थसिन् (वि०) [स्त्री०—प्रस्थसिनी] अकाल ही में गिरने वाला या कच्चा गिरने वाला (गर्भ) ।

प्रस्व (पु०) १ उमड़ कर वह निकलना २ बहाव
धार ३ स्तन से दूध का करना । ४ पगार
सूत्र ।

प्रस्वणां (न०) १ बहाव । २ ज्वारी या ऐन से दूध का
बहना या निकलना । ३ जलप्रपात । ४ चरमा ।
सोता । ५ फव्वारा । ६ वह या कुण्ड । ७ पसीना ।
८ मूत्रोत्सर्ग ।

प्रस्वणाः (पु०) एक पर्वत का नाम ।

प्रस्वावः (पु०) १ बहाव । उमड़न । २ पेशाब । सूत्र ।

प्रस्वावाः (पु०) (बहुवचन) आँसुओं का उमड़ना
या गिरना ।

प्रस्वन (व० कृ०) उमड़ा हुआ । टपका हुआ । निकला
हुआ ।

प्रस्वनः } (पु०) जोर का कोलाहल या शोरगुल ।

प्रस्वापः (पु०) १ निद्रा । २ स्वप्न । ३ अस्व विशेष
जिसके कारण शत्रु सैन्य सो जाती हो ।

प्रस्वापनं (न०) १ निद्रा लाने वाला । २ अस्व विशेष
जो शत्रु सैन्य को निद्रित करता है ।

प्रस्विज (व० कृ०) पसीने से तर ।

प्रस्वेदः (पु०) बहुत अधिक पसीना ।

प्रस्वेदित (व० कृ०) १ पसीने से तराबोर । २ गर्म ।

प्रह्वानम् (न०) हलन । वध । हत्या ।

प्रहत (व० कृ०) १ घायल । हत । वध किया हुआ ।

२ पीटा हुआ । ३ भगाया हुआ । हराया हुआ ।

४ कैला हुआ । बढ़ा हुआ । ५ अविच्छिन्न । ६

(कोई मार्ग जो पैरों से) कचरा हुआ हो । ७

सीखा हुआ ।

प्रहारः (पु०) दिन का आठवाँ भाग । समय का मान
विशेष ।

प्रहरकः (वि०) घड़ियाली अथवा वह आदमी भी जो
पहरे पर हो और घंटा बजाता हो ।

प्रहरणं (न०) १ प्रहार । धार । २ फेंकना । हटाना ।

३ आक्रमण । हमला । ४ चोट । ५ स्थानान्तरित

करना । निकाल देना । ६ आयुष । हथियार । ७

युद्ध । ८ पर्दावार डोली या गाड़ी ।

प्रहरणीयम् (न०) अस्त्र । हथियार ।

प्रह्व (पु०) १ पाराला चाकानार २ दूध
उमड़ने वाला ।

प्रह्वर्तु (वि०) १ मारने वाला । प्रहार करने वाला ।
आक्रमणकारी । २ लड़ने वाला । थोड़ा । ३
तीरंदाज । गोली चलाने वाला ।

प्रह्वर्षः (पु०) १ अत्यधिक हर्ष । २ लिङ्ग का उत्थान ।

प्रह्वर्षणम् (न०) अत्यन्त आनन्दित करना ।

प्रह्वर्षणः (पु०) दुष्ट नामक ग्रह ।

प्रह्वर्षणी } (स्त्री०) १ हल्दी । २ एक वर्णवृत्त का
प्रह्वर्षणी } नाम जिसमें १३ अक्षर होते हैं ।

प्रह्वर्षुलः (पु०) दुष्ट ग्रह ।

प्रह्वसनम् (न०) १ अट्टहास । प्रसन्नता । २ मजाक ।
उपहास । दिखलगी । हँसी । ३ रूपक विशेष । ४
हँसाने वाला नाटक । फार्स । निम्नश्रेणी का
मुखान्त नाटक ।

प्रह्वसन्ती (स्त्री०) १ चमेली विशेष । यूथिका ।
वासन्ती । २ बड़ी कढ़ाई । कढ़ाह ।

प्रह्वसित (व० कृ०) हँसता हुआ ।

प्रह्वसितम् (न०) हास्य । हँसी । प्रसन्नता ।

प्रह्वस्तः (पु०) १ चपेटा । थपड़ । २ रावण के
अमात्य एवं सेनापति विशेष का नाम ।

प्रह्वणं (न०) त्यागना । छेंकना । छोड़ देना ।

प्रह्वणिः (स्त्री०) १ त्याग । २ कमी । अभाव ।

प्रहारः (पु०) १ आघात । वार । चोट । २ बध । ३
तलवार का घाव । ४ लात की चोट । ठोकर । ५
गोली मारना ।—अर्धार्ण (वि०) प्रहार से घायल ।
—अर्धार्णम् (न०) प्रहार की दारुण पीड़ा ।

प्रहारणम् (न०) काम्य दान । मनचाहा दान ।

प्रहासः (पु०) १ अट्टहास । २ चिढ़ाना । बनाना ।
जीट उड़ाना । ३ व्यङ्ग्योक्ति । श्लेषवाक्य । ४
नचैया । नट । ५ शिव । ६ प्राकट्य । प्रदर्शन । ७
प्रभास नामक तीर्थस्थल विशेष ।

प्रहासिन् (पु०) विदूषक । मसखरा । हँसाड़ा ।

प्रहिः (पु०) कूप । इनारा ।

प्रहित (व० कृ०) १ स्थापित । २ बढ़ाया हुआ । ३
भेजा हुआ । रवाना किया हुआ । ४ छोड़ा हुआ
(जैसे तीर) ५ नियत किया हुआ । ६ उपयुक्त ।
उचित ।

प्रहितं (न०) चटनी । मसाला ।

प्रहीण (व० कृ०) त्यक्त । त्यागा हुआ ।

प्रहीण (न०) नाश । स्थानान्तरकरण । हानि ।

प्रहृतं (न०) } सूत यज्ञ । वलिवेश्व देव ।

प्रहृतः (पु०) }

प्रहृत (व० कृ०) १ प्रताडित । मारा हुआ । बायल किया हुआ ।

प्रहृतं (न०) प्रहार । चोट । आघात ।

प्रहृष्ट (व० कृ०) १ अत्यन्त प्रसन्न । आह्लादित । २ रोमाञ्चित ।—आत्मन्, —चित्त, —मनस्, (वि०) प्रसन्न मन ।

प्रहृष्टकः (पु०) काक । कौआ ।

प्रहेलकः (पु०) १ लपसी । २ पहेली । बुझौवल ।

प्रहेला (स्त्री०) आवारा । बुरे चालचलन की । ३ रंगरस । विहार ।

प्रहेलिः (स्त्री०) } पहेली । बुझौवल ।

प्रहेलिका (स्त्री०) }

प्रह्व (व० कृ०) हर्षित । प्रसन्न ।

प्रह्लादः (पु०) १ अत्यन्त आनन्द । प्रसन्नता ।

प्रह्लादः } हर्ष । २ शोर । कोलाहल । रव । ३ हिरण्यकशिपु के पुत्र का नाम । इन्हीं प्रह्लाद को पुराणों में भक्तशिरोमणि की उपाधि दी है ।

प्रह्लादन (वि०) प्रसन्नकारक । आनन्ददायी ।

प्रह्लादन (हर्षकर ।

प्रह्लादनं (न०) प्रसन्न करना । आह्लादित

प्रह्लादनम् } करना ।

प्रह्व (वि०) १ डालू । उतार का । २ झुका हुआ ।

नम्रता से झुका हुआ । ३ विनम्र । विनीत । ४

आसक्त । अनुरक्त ।—अञ्जलि (वि०) अञ्जलि-वद्ध हो सिर नवाये हुए ।

प्रह्वयति (क्रि०) विनम्र करना ।

प्रह्वलिका (स्त्री०) पहेली । बुझौवल ।

प्रह्वयः (पु०) बुलावा । आमंत्रण ।

प्रोशु (वि०) ऊँचा । लंबा । बड़ा । लंबे तबंगे क्रद का या डीलडौल का । २ लंबा । विस्तृत ।

प्रोशुः (पु०) लंबे डील डौल का आदमी ।

प्राक् (अव्यया०) १ पहिले । २ आरम्भ में । हाल

ही में । ३ पूर्व । (किसी ग्रन्थ के पिछले भाग में) । ४ पूर्व दिशा में । (अमुक स्थान से) पूर्व ।

५ सामने । ६ जहाँ तक हो वहाँ तक । यहाँ तक

(अथा—प्राक् कडारात्)

प्राकट्यं (न०) प्रादुर्भाव । प्रसिद्धि । प्रचार ।

प्राकरणाक (वि०) [स्त्री०—प्राकरणाकी] विवाद प्रस्त विषय सम्बन्धी ।

प्राकर्षिक (वि०) [स्त्री०—प्राकर्षिकी] श्रेष्ठतर समझे जाने का अधिकारी ।

प्राकर्षिकः (पु०) १ लौंडा । मैथुन कराने वाला लौंडा । २ वह पुरुष जिसकी जीविका दूसरों की स्त्रियों से चलती हो । औरतों का दलाल ।

प्राकाश्यं (न०) १ कार्य करने का स्वातंत्र्य । २ स्वेच्छाचरिता । ३ अप्रतिरोधनीय सङ्कल्प ।

प्राकृत (वि०) [स्त्री०—प्राकृता या प्राकृती । १

असली । स्वाभाविक । अपरिवर्तित । असंशोध्य ।

२ मामूली । साधारण । ३ अशिक्षित । गँवार ।

अपढ़ । ४ तुच्छ । अनावश्यक । ५ प्रकृति से

उत्पन्न । ६ प्रान्तीय । ६ बोलचाल की भाषा,

जिसका प्रचार किसी समय किसी प्रान्त में हो

अथवा पूर्वकाल में रहा हो । ६ एक प्राचीन

भाषा जिसका प्रचार प्राचीन भारत में था और

जिसका प्रयोग संस्कृत नाटकों में स्त्रियों, सेवकों

और साधारण व्यक्तियों के मुख से करवाया गया

है ।—अरिः (पु०) नैसर्गिक शत्रु अर्थात् पड़ोसी

राज्य का राजा ।—उदासीनः (पु०) स्वभावतः

तटस्थ । अर्थात् राजा जिसका राज्य बहुत दूर पर

हो ।—ज्वरः (पु०) मामूलीबुखार ।—प्रलयः

(पु०) पुराणानुसार एक प्रकार का प्रलय ।

जिसका प्रभाव प्रकृति पर भी पड़ता है । अर्थात्

इस प्रलय में प्रकृति भी प्रलय में लीन हो जाती

है ।—मित्रं (न०) स्वाभाविक मित्र ।

प्राकृतं (न०) प्रान्तीय बोलचाल की भाषा जो संस्कृत से निकली हो या जो संस्कृत शब्दों के अपभ्रंश रूपों से बनी हो । हेमचन्द्र ने प्राकृत भाषा की परिभाषा इस प्रकार दी है । —“प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं तत् आगतं च प्राकृतं ।”

प्राकृतः (पु०) नीच जन । गँवार आदमी । साधारण मनुष्य ।

प्राकृतिक (वि०) [स्त्री०—प्राकृतिकी] १ स्वाभाविक ।

प्रकृति से उत्पन्न । २ अमात्मक । मायामय । सूत ।

तन (वि०) [स्त्री० - प्राक्तनी] १ पहिले का ।

पूर्व का । २ पुराना । प्राचीन । पुरातन । ३

पिछले किसी जन्म का पूर्वजन्म कृत कर्म ।

खर्य (न०) १ उग्रता । २ तीतापन । कडुआपन । ३

दुष्टता ।

शाल्भ्यम् (न०) १ प्रगल्भता । वीरता । २ धमंड ।

अभिमान । ३ चतुरता योग्यता । ४ प्रधानता ।

प्रवलता । बड़प्पन । ५ प्रादुर्भाव । प्राकट्य । ६

वाग्मिता । ७ धूमधाम । आडम्बर । ८ औद्धत्य ।

गारः (पु०) घर । इमारत । भवन ।

ग्रं (न०) सर्वोच्च स्थान ।—सर, (वि०) प्रथम ।

सब से आगे ।—हर, (वि०) मुख्य । प्रधान ।

प्राटः (पु०) पतला जमा हुआ दूध ।

य (वि०) प्रधान । सर्वप्रथम । श्रेष्ठ । सर्वोत्तम ।

प्रातः (पु०) युद्ध । लड़ाई ।

प्रातः (पु०) टपकना । चूना । रिसना ।

धुणः

धुणकः

धुणिकः

धुणकः

धुणिकः

धुणः

धुणः

धुणः

धुणः

धुणः

धुणः

धुणः

धुणः

धुणः

धुणः

धुणः

धुणः

धुणः

धुणः

धुणः

धुणः

पूर्वकथित ।—अवस्था, (= प्रागवस्था (स्त्री०)

पहिले की हालत या अवस्था ।—प्रायत,

(= प्राभायत) (वि०) पूर्व की ओर बढ़ा

हुआ ।—उक्तिः (= प्रागुक्तिः) (स्त्री०)

पहिले का कथन ।—उत्तर, (= प्रागुत्तर)

(वि०) ईशान कोण का ।—उद्दीची, (= प्रागु-

दीची) (स्त्री०) ईशान कोण ।—कर्मन्,

(= प्राक्कर्मन्) (न०) पूर्व जन्म में किये हुए

कर्म ।—कालः, (= प्राक्कालः) (पु०)

अगली अवस्था । अगला युग ।—कालीन,

(= प्राक्कालीन) प्राचीन काल सम्बन्धी ।—

कूलः, (= प्राक्कूल) (वि०) (कुशों के सिरे)

पूर्व दिशा की ओर निकले हुए ।—कृतं,

(= प्राक्कृतं) (पु०) पूर्व जन्म में किया हुआ ।

—चरणा, (= प्राक्चरणा) (स्त्री०) भग ।

येनि ।—चिरं, (= प्राक्चिरं) (अव्यया०)

उपयुक्त समय में । अपेक्षित काल में । अति

विलम्ब होने के पूर्व ।—जन्मन्, (= प्राग्जन्मन्)

(न०)—जातिः, (= प्राग्जातिः) (स्त्री०)

पूर्व जन्म ।—उद्योतिषः, (= प्राग्द्योतिषः)

(पु०) कामरूप देश । (बहु०) इस देश के

अधिवासी ।—उद्योतिषं, (= प्राग्द्योतिषं)

(न०) एक नगर का नाम ।—दक्षिण,

(= प्राग्दक्षिण) (वि०) आग्नेयी दिशा का ।

—देशः, (= प्राग्देशः) (पु०) पूर्वी देश ।

—द्वार, (= प्राग्द्वार)—द्वारिक, (= प्राग्द्वार-

रिक) (वि०) वह घर जिसका द्वार वा दर-

वाजा पूर्व की ओर हो ।—न्यायः, (= प्राङ्-

न्यायः) (पु०) किसी विवाद का पहिले भी

किसी न्यायालय में उपस्थित किये जाने पर

निर्णीत हो चुकना ।—प्रहारः, (= प्राक्प्रहारः)

(पु०) पहिली चोट ।—फलः, (= प्राक्फलः)

(पु०) कटहल का पेड़ ।—फल्गुनी, (= प्राक्-

फल्गुनी)—फाल्गुनी, (= प्राक्फाल्गुनी)

(स्त्री०) स्यारहवाँ नक्षत्र ।—फाल्गुनः

(= प्राक्फाल्गुनः)—फाल्गुनेयः, (प्राक्-

फाल्गुनेयः) (पु०) बृहस्पति ग्रह ।—भक्त,

(= प्राग्भक्त) (न०) वह दवा जो भोजन

करने के पूर्व ली जाय ।—भागः, (= प्राग्भागः) (पु०) १ सामना । २ सामने का हिस्सा ।
—भारः, (= प्राग्भारः) (पु०) १ पर्वत-
शिलर । २ अगला या सामने का हिस्सा । ३
अतिमात्रा । ढेर । समूह । बाड़ ।—भावः,
(= प्राग्भावः) (पु०) १ पूर्व का अस्तित्व ।
२ उत्कृष्टता । उत्तमता ।—मुखः, (= प्राङ्मुखः)
(वि०) १ पूर्व की ओर मुख किये हुए । २
अभिलाषी ।—वृंशः, (= प्राग्शः) (पु०)
यज्ञस्यद्वय विशेष जिसके लम्बे पूर्व की ओर मुड़े
हुए हों । अथवा वह कमरा जिसमें यज्ञकर्त्ता के
मित्र और कुटुम्बी एकत्र हों । २ पूर्व कालीन कोई
राजवंश या पीढ़ी । वृत्तान्तः, (= प्राग्वृत्तान्तः)
(पु०) पुरातन घटना ।—शिरस्, —शिरस्,
—शिरस्कः, (= प्राक्शिरस् आदि) (वि०)
पूर्व ओर सिर घुमाये हुए ।—सन्ध्या, (= प्राक्-
सन्ध्या) तड़का । सवेरा । सुकृष्णका ।—सवर्नः,
(= प्राक्सवर्नः) (न०) प्रातःकालीन अग्नि-
होत्र ।—स्रोतस्, (= प्राक्स्रोतस्) (वि०)
पूर्व की ओर बहने वाला ।

प्राच्यं (न०) १ प्रबलता । तीव्रता । क्रोध ।
प्राच्यं २ भयङ्करता ।

प्राचिका (स्त्री०) १ मच्छर । २ डांस की जाति की
जंगली एक मक्खली ।

प्राची (स्त्री०) पूर्व दिशा ।—पतिः (पु०) इन्द्र
का नामान्तर । मूलं, (न०) पूर्व की ओर
का आकाश ।

प्राचीन (वि०) १ पूर्वी । पूर्व दिशा का । पूर्व दिशा
की ओर मुड़ा हुआ । २ अगला । पहला । पूर्व
कथित । ३ पुरातन । पुराना ।—प्राचीतः, (न०)
यज्ञोपवीत धारण करने का एक ढंग । इसमें बायां
हाथ यज्ञोपवीत से बाहिर और यज्ञोपवीत
दाहिने कंधे पर रहता है । (यह उपवीत का उल्टा ।
इस प्रकार का यज्ञोपवीत पितृकार्य में धारण किया
जाता है) ।—रूपः, (पु०) पहला रूप ।
पूर्वकल्प ।—तिलकः, (पु०) चन्द्रमा ।—
पनसः, (पु०) विल्ववृक्ष ।—वर्हिस्, (पु०)

इन्द्र का नामान्तर ।—मर्त (न०) प्राचीन मर्त ।
प्राचीन सम्मति ।

प्राचीन (न०) } बाड़ा । हाता । हाते की
प्राचीनः (पु०) } दीवाल ।

प्राचीरं (न०) नगर या किले आदि के चारों ओर
उसकी रक्षा करने के लिये बनायी हुई दीवाल ।
चतारदीवारी । शहरपनाह । परकोटा ।

प्राचुर्य (न०) १ विपुलता । बहुतायत । २ समूह ।

प्राचैतसः (पु०) १ मनु का नाम । २ दक्ष का
नाम । ३ वात्सोकि का नाम ।

प्राच्य (वि०) १ पूर्वी देश या पूर्व दिशा में उत्पन्न
या रहने वाला । पूर्वी । २ प्राचीन । पुरातन । ३
पूर्व का । पहिला ।

प्राच्याः (पु० बहु०) पूर्व दिशा के देश । सरस्वती
नदी के दक्षिण या पूर्व के देश ।—भाषा, (स्त्री०)
वह बोलचाल की भाषा जो भारत में पूर्व देश में
बोली जाती है । पूर्वी बोली ।

प्राच्यक (वि०) पूर्वी ।

प्राङ् (वि०) पूंङ्गने वाला ।—विवाकः, (= प्राङ्-
विवाकः) १ न्यायाधीश । २ वकील ।

प्राजकः (पु०) सारथी । रथ हाँकने वाला ।

प्राजनम् (न०) } कोड़ा । चाबुक । अङ्गुश ।
प्राजनः (पु०) }

प्राजापत्य (वि०) १ प्रजापति सम्बन्धी ।

प्राजापत्यं (न०) १ यज्ञ विशेष । २ उत्पादक शक्ति ।

प्राजापत्यः (पु०) १ हिन्दू धर्मशास्त्रानुसार आठ
प्रकार के विवाहों में से एक । २ प्रवाग का
नामान्तर ।

प्राजापत्या (स्त्री०) १ एक इष्टि का नाम । यह
सन्ध्यास ग्रहण के समय की जाती है । इसमें
सर्वस्व दक्षिणा में दे दिया जाता है । २ वैदिक
ब्रह्मों के आठ भेदों में से एक ।

प्राजिकः (पु०) बाज नामक पक्षी ।

प्राजितु } (पु०) सारथी । गादीवान ।
प्राजिन् }

प्राजेश (न०) रोहिणी नक्षत्र ।

प्राज्ञ (वि०) [स्त्री०—प्राज्ञा या प्राज्ञी] १ बुद्धि
सम्बन्धी । मानसिक । २ बुद्धिमान । विद्वान् ।
चतुर ।

प्राज्ञ (पु०) १ बुद्धिमान् आर विद्वान् नर । २ एक जाति विशेष का तोता या सुगा ।

प्राज्ञा (स्त्री०) १ बुद्धि । समझ । २ चतुर या बुद्धिमती स्त्री ।

प्राज्ञी (स्त्री०) १ चतुर या बुद्धिमती स्त्री । २ विद्वान् की स्त्री । ३ सूर्यपत्नी ।

प्राज्य (वि०) १ प्रचुर । अधिक । बहुत । २ बड़ा । खंदा । आवश्यक ।

प्रांजल } (वि०) सीधा । सरल । ईमानदार ।
प्राञ्जल } सच्चा ।

प्रांजलि } (वि०) अञ्जलिबद्ध ।
प्राञ्जलि }

प्रांजलिक, प्राञ्जलिक } देखो प्रांजलि ।
प्रांजलिन्, प्राञ्जलिन् }

प्राणः (पु०) १ स्वांस । स्वांस प्रश्वास । २ प्राणवायु । शरीर की वह हवा जिससे वह जीवित कहलाता है । ३ शरीरस्थित पञ्चप्राणवायु । ४ पवन । वायु । ५ बल । शक्ति । पौरुष । ६ जीव या आत्मा । ७ परब्रह्म । ८ इन्द्रिय । ९ प्राण समान प्रिय कोई पदार्थ या व्यक्ति । प्रेमपात्र । मायूक । १० कवित्व शक्ति या प्रतिभा । प्रत्यादेश । ११ उच्चाभिलाष । १२ पावनशक्ति । १३ समय का मान विशेष । १४ गोंद । लोबान ।—अतिपातः, (पु०) जीव की हत्या या वध ।—अत्ययः, (पु०) जीवन की हानि ।—अधिक, (वि०) १ प्राण से भी अधिक प्रिय । २ शक्ति या बल में उत्कृष्टतर ।—अधिनाथः, (पु०) पति ।—अधिपः, (पु०) जीव । आत्मा ।—अन्तः, (पु०) मृत्यु । मौत ।—अन्तिकः, (पु०) १ मरणाशील । २ यावज्जीवन । जीवन के साथ अन्त होने वाला । ३ सब से बड़ कर (फौसी या सज़ा, ।—अन्तिकः, (न०) हत्या ।—अपहारिन्, (वि०) साक्षात्क । प्राणनाशक ।—आघातः, (पु०) प्राण का नाश या विनाश ।—आचार्यः (पु०) राजवैद्य । शाही हकीम ।—आद, (वि०) प्राणनाशक ।—आवाचः, (पु०) जीवन के लिये अनिष्टकर ।—आयासः, (पु०) योग शास्त्रानुसार योग के आठ अँगों में से चौथा अँग ।—ईश्वरः, (पु०) प्यार करने

वाला । प्रेमी । आशिक । पति ।—ईशा,—ईश्वरी, (स्त्री०) पत्नी । प्रेयसी ।—उत्कमर्णः, (न०)—उत्सर्गः, (पु०) मृत्यु । मरण । मौत ।—उपहारः, (पु०) भोजन ।—कृच्छ्रम्, (न०) जीवन का सङ्कट या खतरा ।—घातक, (वि०) जीवन नाशक ।—घ्न, (वि०) जीवन नाशकारी ।—हृद्दः, (पु०) हृत् । क्रूर ।—त्यागः, (पु०) १ आत्महत्या । खुदकुशी । २ मृत्यु । मौत । क्रजा ।—दं, (न०) १ खून । लोह । २ जल । पानी ।—दक्षिणा, (स्त्री०) जीवन दान ।—दग्धः, (पु०) फौसी की सज़ा ।—दयितः, (पु०) पति । स्वासी ।—दानः, (न०) जीवनदान । किसी को मरने से बचाना ।—द्रोहः, (पु०) किसी को मार डालने की चेष्टा ।—धारः, (पु०) जीवधारी ।—धारणम्, (न०) १ जीवन धारण करने का भाव । जीवन निर्वाह । २ जीवनी शक्ति ।—नाथः, (पु०) १ प्रिय व्यक्ति । प्रेमी । पति । २ यम का नामान्तर ।—निग्रहः, (पु०) प्राणायाम । स्वांस को रोकना या बंद कर लेना ।—पतिः, (पु०) १ प्रेमी । पति । २ जीव । आत्मा ।—परिक्रयः, (पु०) जीवन को दाँव पर लगाना । अथवा जीवन की बाजी लगाना या जान को खतरे में डालना ।—परिग्रहः, (पु०) प्राण धारण । जीवन । अस्तित्व ।—प्रदः, (वि०) जीवनदाता ।—प्रयाणः, (न०) मृत्यु ।—प्रियः, (पु०) जो प्राण के समान प्रिय हो । प्रियतम । पति ।—भक्त, (वि०) पवन पीकर जीवित रहने वाला ।—भास्वत्, (पु०) समुद्र ।—भुत्, (पु०) जीवधारी ।—भोक्षणा, (न०) १ मृत्यु । मरण । २ आत्मघात ।—यात्रा, (स्त्री०) वे व्यापार जिनसे मनुष्य जीवित रहे । आजीविका ।—योगिनिः, (स्त्री०) जीवन का आवि कारण ।—रन्ध्रं, (न०) १ मुख । मुँह । २ नाक के नथना ।—रौधः, (पु०) १ प्राणायाम । २ जीवन के लिये सङ्कट ।—विनाशः,—विसर्गः, (पु०) मृत्यु । मौत ।—वियोगः, (पु०) जीव का शरीर से विच्छेद । मृत्यु । मौत ।—

व्यय (पु०) प्रायोत्सर्ग प्रायनाश शृणु ।
—सयम (पु०) प्राणायाम ।—सशय
(पु०)—सङ्कट्य, (न०)—सन्देहः, (पु०)
जान जोखिम । वह अवस्था जिसमें प्राण जाने
का भय हो ।—सद्यन्, (न०) शरीर । देह ।
—सार, (वि०) बल शक्ति अथवा ताकत
वाला ।—हर, (वि०) मारक । नाशक ।
धातक । प्राणलोच ।—हारक, (वि०) प्राण
नाश करने वाला ।—हारकं, (न०) वस्तुनाश
विध ।

प्राणकः (पु०) १ जीवधारी । प्राणधारी । २ लोबान ।
गन्धरस ।

प्राणधः (पु०) १ पवन । वायु । २ तीर्थस्थान । ३
प्राणधारियों का स्वामी । प्रजापति ।

प्राणनं (न०) १ श्वास प्रश्वास । २ जीवन । जान ।

प्राणनः (पु०) गला ।

प्राणतः } (पु०) पवन । वायु । हवा ।
प्राणन्तः }

प्राणंती } (स्त्री०) १ भूख । २ सिसकन । ३
प्राणन्ती } हिचकी ।

प्राणाय्य (वि०) [स्त्री०—प्राणाय्यी] उपयुक्त ।
उचित । ठीक । योग्य ।

प्राणित (वि०) जीवित । जिव्वा ।

प्राणिन् (वि०) जिंदा जीवित । (पु०) १ प्राण-
धारी । २ मनुष्य ।—अङ्गं, (न०) प्राणधारी
के शरीर का अवयव ।—जातं, (न०) पशु की
एक समस्त श्रेणी ।—द्युतं, (न०) धर्मशास्त्रा-
नुसार वह बाजी जो मेढ़े, तीतर, घोड़े आदि जीवों
की लड़ाई पर लगायी जाय ।—पीडा (स्त्री०)
पशुओं के साथ निर्दयीपन का व्यवहार ।—हिंसा
(स्त्री०) पशुओं का अनिष्ट ।—हिता, (स्त्री०)
जुता ।

प्राणित्यं (न०) कला । श्रय ।

प्रातर् (अन्यथा०) १ तड़के । मोर ही । सबेरे । २ आने
वाला कल का दिन ।—अन्तः, (पु०) दोपहर के
पूर्व ।—आशः, (पु०) कलेवा ।—आशिन,
(पु०) वह पुरुष जो कलेवा खा चुका हो ।—
कर्मन्, (न०)—कार्य,—कृत्यं, (न०)

प्रत कालीन कर्म । काल (पु०) सबेरा
सबेरे का समय ।—गेयः, (पु०) वे बंदीजन या
भार जो प्रातःकाल राजश्री का स्तुति पाठ कर राजा
को जगाते थे ।—त्रिचर्गा, (= प्रातस्त्रिचर्गा)
(स्त्री०) गङ्गा ।—दिनं, (न०) दोपहर के पूर्व
का समय ।—प्रहरः (पु०) दिन का प्रथम प्रहर ।
—भोक्तृ, (पु०) काक । कौआ ।—भोजनं,
(न०) कलेवा ।—सन्ध्या, (= प्रातःसन्ध्या)
प्रातःकालीन भगवदुपासना का कृत्य विशेष ।

प्रातस्तन (वि०) [स्त्री०—प्रातस्तनी] प्रातःकाल
सम्बन्धी ।

प्रातस्तरां (अन्यथा०) बड़े तड़के ।

प्रातस्त्य (वि०) प्रातःकाल सम्बन्धी ।

प्रातिः (स्त्री०) आँगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान ।
पितृतीर्थ ।

प्रातिका (स्त्री०) जवा का पेड़ ।

प्रातिकूलिक (वि०) [स्त्री०—प्रातिकूलिकी]
विरुद्ध । विरोधी । प्रतिकूल ।

प्रातिकूल्यं (न०) प्रतिकूलता । विरोध ।

प्रातिजनीन (वि०) [स्त्री०—प्रातिजनीनी] विरोधी
के उपयुक्त । शत्रु के लायक ।

प्रातिज्ञं (न०) विवादग्रस्त विषय ।

प्रातिदैवसिक (वि०) [स्त्री०—प्रातिदैवसिकी]
नित्य होने वाला ।

प्रातिपत्त (वि०) [स्त्री०—प्रातिपत्ती] विरुद्ध ।

प्रातिपद्यं (न०) शत्रुता । बैरीपन ।

प्रातिपद (वि०) [स्त्री०—प्रातिपदी] १ आरम्भ करने
वाला । २ प्रतिपदा तिथि सम्बन्धी या प्रतिपदा
को उत्पन्न ।

प्रातिपदिकः (पु०) अग्नि ।

प्रातिपदिकं (न०) संस्कृत व्याकरणानुसार वह
अर्थवान् शब्द जो धातु न हो और जिसकी सिद्धि
विभक्ति लगने से न हुई हो ।

प्रातिपौरुषिक (वि०) [स्त्री०—प्रातिपौरुषिकी]
पुरुषार्थ या मरदानगी सम्बन्धी ।

प्रातिभ (वि०) [स्त्री०—प्रातिभी] प्रतिभा
सम्बन्धी ।

प्रातिभं (न०) विस्तृत कल्पना ।

प्रातिभाव्यं (न०) जमानत । जामिनी ।

प्रातिभासिक (वि०) [स्त्री०—प्रातिभासिकी]

१ जो असली न हो । २ नकल ।

प्रातिलोमिक (वि०) [स्त्री०—प्रातिलोमिकी]

विपक्ष । विरुद्ध । उत्पन्न ।

प्रातिलोम्यं (न०) १ प्रतिलोम का भाव । २ विरुद्धता । प्रतिकूलता ।

प्रातिवेशिकः

प्रातिवेश्यकः } (पु०) पड़ोसी ।

प्रातिवेश्यकः

प्रातिवेश्यः (पु०) १ पड़ोसी । २ वह पड़ोसी जिसके घर का द्वार ठीक अपने घर के द्वार के सामने हो ।

प्रातिशाख्यं (न०) ग्रन्थ विशेष । इसमें वेदों की किसी शाखा के स्वर, पद, संहिता, संयुक्त वर्णादि के उच्चारणादि का निर्णय किया जाता है । वेदों की प्रत्येक शाखा की संहिताओं पर एक एक प्रातिशाख्य ग्रन्थ थे । ऐसा लेखों के सङ्केतों से जान पड़ता है ।

प्रातिस्विक (वि०) [स्त्री०—प्रातिस्विकी] विलक्षण । विशिष्ट ।

प्रातिहंस् (न०) प्रतिहिंसा । बदला । पलटा ।

प्रातिहारः } (पु०) माथावी । जादूगर । ऐन्द्र-
प्रातिहारकः } जालिक । लाग का खेल करने
प्रातिहारिकः } वाला

प्रातीनिक (वि०) [स्त्री०—प्रातीनिकी] मानसिक । काल्पनिक । जिसकी प्रतीति केवल चिन्ता या कल्पना के द्वारा मन में होती है ।

प्रातीपः (पु०) प्रतीप के पुत्र राजा शान्तनु ।

प्रातीपिक (वि०) [स्त्री०—प्रातीपिकी] (स्त्री०)

१ विरुद्धाचरण करने वाला । २ विपरीत । उलटा ।

प्रात्यतिक (वि०) [स्त्री०—प्रात्यतिकी] विश्वासी । हतमीनासी । २ प्रतिभू । जामिनी । जमानत ।

प्रात्यहिक (वि०) [स्त्री०—प्रात्यहिकी] दैनिक । प्रति दिन का ।

प्राथमिक (वि०) [स्त्री०—प्राथमिकी] १ प्रारम्भिक । आदि का । आदिम । २ प्रथम बार होने वाला । ३ पहला । अगला ।

प्राथम्यं (न०) प्रथमता । पहिलापन ।

प्रादृतिशयम् (न०) प्रदृष्टिमा । परिक्रमा ।

प्रादुस् (अव्यया०) दृश्यतः, स्पष्टतः । प्रकाशतः ।

—करणां (=प्रादुष्करणां) (न०) प्रादुर्भाव ।

प्रत्यक्ष करना ।—भावः (पु०) (=प्रादुर्भावः)

१ प्रकट होना । प्रत्यक्ष होना । २ ऐसे बोलना जो सुन और समझ पड़े । ३ किसी देवता का धराधाम पर अवतार ।

प्रादुष्यं (न०) प्रकटन । प्रादुर्भाव ।

प्रादेशः (पु०) १ एक मान जो ऋग्वेद की नौक से लेकर तर्जनी की नौक तक का होता था और नापने के काम में आता था । २ प्रदेश । स्थान ।

प्रादेशनं (न०) प्रसाद । पुरस्कार । दान ।

प्रादेशिक (वि०) [स्त्री०—प्रादेशिकी] १

प्रदेश सम्बन्धी । २ प्रान्तिक । ३ प्रसङ्गगत । प्रसङ्गानुसार ।

प्रादेशिकः (पु०) सामन्त । जमींदार ।

प्रादेशिनी (स्त्री०) तर्जनी । ऋग्वेद के पाठ की ऊँगली ।

प्रादोष (वि०) [स्त्री०—प्रादोषी] } सायङ्काल

प्रादोषिक (वि०) [स्त्री०—प्रादोषिकी] } सम्बन्धी ।

प्राधनिकं (न०) इधियार । आयुध ।

प्राधानिक (वि०) [स्त्री०—प्राधानिकी] १ प्रधान सम्बन्धी । २ प्रधान । सर्वोत्कृष्ट ।

प्राधान्यं (न०) १ प्रधानता । श्रेष्ठता । २ मुख्यता । उत्कर्ष । ३ प्रधान कारण ।

प्राधीत (वि०) भली भाँति पढ़ा हुआ । बहुत पढ़ा हुआ ।

प्राध्व (वि०) १ लंबा । दूर । फैलता । २ मुका हुआ । ३ बढ़ा । ४ अनुकूल ।

प्राध्वः (पु०) गाड़ी । बगी ।

प्राध्वम् (अव्यया०) १ अनुकूलता से । उपयुक्त रूप से । २ देहपन के ।

प्रांतः } (पु०) १ किनारा । हाशिया । छोर । २

प्रान्तः } कोना । ३ सीमा । ४ अन्त । ५ नौक ।—ग,

(वि०) समीपस्थ । पास रहने वाला ।—दुर्ग,

(न०) १ किसी नगर के परकोटे के बाहिर की

आबादी । २ नगर या आबादी जो किसी दुर्ग के

समीप हो ।—विरसः (वि०) अन्व में फीका ।

वेजायका ।

नर } (न०) लम्बा और सुनसान रास्ता २ रास्ता
न्तर) जिस पर छाया न हो । ३ वन । पगल । ४
पेड़ का खोइर ।

पक (वि०) [स्त्री०—प्रापिका] १ पाने वाला ।
२ प्राप्त होने वाला । ३ स्थापनकर्त्ता । दृढकर्त्ता ।
समर्थनकर्त्ता । सिद्ध करने वाला ।

परा (न०) १ प्राप्ति । मिलना । २ ले आना ।

पणिकः (पु०) व्यापारी । सौदागर ।

पम (व० कृ०) १ लब्ध । पाया हुआ । जीता हुआ ।
लिया हुआ । २ समुपस्थित । ३ मिला हुआ ।
४ सहा हुआ । ५ आया हुआ । ६ पूर्ण किया
हुआ । ७ उपयुक्त । ठीक ।—अनुज्ञ, (वि०)
जाने की अनुमति पाये हुए ।—अर्थ, (वि०)
सफल ।—अर्थः, (पु०) उद्देश्य की पूर्ति ।
—अवसर, (वि०) मिला हुआ मौका ।
—उदय, (वि०) उन्नति प्राप्त ।—कारिन्,
(वि०) उचित करने वाला ।—काल, (वि०)
१ उपयुक्तकाल । उचित समय । २ विवाह करने
योग्य । ३ समय प्राप्त । जिसके मरने का समय
आ गया हो ।—कालः (पु०) उपयुक्त समय ।
—पञ्चत्व, (वि०) मृत । मरा हुआ । प्रसव,
(वि०) जन्मा ।—बुद्धि, (वि०) आदेश
दिया हुआ । शिक्षित ।—भारः, (पु०) बोझ
होने वाला पशु ।—मनोरथ, (वि०) वह
जिसका उद्देश्य पूरा हो चुका हो ।—यौवन,
(वि०) जवान । युवा ।—रूप, (वि०) १
खूबसूरत । सुन्दर । २ बुद्धिमान । विद्वान् । ३
योग्य । उपयुक्त ।—व्यवहार, (वि०) व्यवस्था ।
वालिग ।—श्री, (वि०) वह जिसकी बढ़ती
(वृत्ति के द्वारा) हुई हो ।

प्राप्तिः (स्त्री०) १ उपलब्धि । प्रापण । मिलना ।
२ पहुँच । ३ आगमन । ४ अर्थागम । अर्जन ।
५ अनुमान । अटकल । कल्पना । ६ हिस्ता ।
अंश । ७ प्रारब्ध । भाग्य । ८ उदय । ९ अणुमादि
अष्ट प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक, जिससे वाञ्छित
पदार्थ मिलता है । १० संहति । ११ सुखगम ।
—आशा, (स्त्री०) कोई वस्तु मिलने की
उम्मेद ।

प्राबल्य (न०) १ प्रबलता । उन्मूल्यता । प्रधानता
२ शक्ति । शक्ति । बल ।

प्रावानिकः } (पु०) सूया का व्यापार करने
प्रावालिकः } वाला ।

प्रावाधिकः } (पु०) १ भोर । तड़का । सबेरा ।
प्राधाधिकः } २ बंदीजन जिनका काम स्तुति सुना कर
राजा को जमाने का हो ।

प्राभञ्जनं } (न०) स्वाति नक्षत्र ।
प्राभञ्जनम् }

प्राभञ्जनिः } १ इन्दुमान । २ भीष्म ।
प्राभञ्जनिः }

प्राभवं (न०) उन्मूल्य । प्रधान्य । विशिष्टता ।

प्राभवत्यम् (न०) प्रधानता । अधिकार । शक्ति ।

प्राभाकरः (पु०) मीमांसक ।

प्राभातिक (वि०) [स्त्री०—प्राभातिकी] प्रातः
काल सम्बन्धी ।

प्राभुतं } (न०) १ पुरस्कार । दान । २ नज़राना
प्राभुतकम् } भेंट । चढ़ावा । ३ वृत्ति । रिशवत ।

प्राभाणिक (वि०) [स्त्री०—प्राभाणिकी] १
जो प्रत्यक्ष प्रमाणों से सिद्ध हो । २ शास्त्र-
सिद्ध । ३ विशिष्ट । ४ प्रमाण सम्बन्धी ।

प्राभाणिकः (पु०) वह जो प्रमाण को स्वीकार करे ।
२ नैयायिक । ३ व्यापारियों का मुखिया ।

प्राभाण्यं (न०) १ प्रमाण का भाव । प्रमाणत्व ।
२ विशिष्टता । प्राप्तता । ३ सबूत । साक्षी ।
प्रमाण ।

प्राभादिक (वि०) १ प्रमादजनित । २ दूषित ।

प्राभाद्यम् (न०) १ भूल । दोष । गलती । २
पागलपन । ३ नशा ।

प्रायः (पु०) १ प्रस्थान । जीवन से प्रस्थान । २
किसी इष्टसिद्धि के लिये खाना पीना छोड़ कर
धरना देना या भूखों प्यासों मर जाने को तैयार
होना । ३ सब से बड़ा अंश । बहुमत । बहुसायत ।
४ आधिक्य । विपुलता । प्राचुर्य । ५ जीवन की
अवस्था ।—उपगमनं, (न०) —उपवेशः,
(पु०) —उपवेशनम्, (न०) उपवेशनिका,
(स्त्री०) वह अनशन व्रत, जो प्राण त्यागने के
लिये किया जाय । अन्न जल त्याग कर मरने को
वैठना ।—उपेत, (वि०) अन्न जल त्याग कर

मरने के लिये बैठने वाला । - उपविष्ट, (वि०)
वह जिसने प्रायोपवेशन व्रत किया है - दर्शन,
(न०) मामूली अद्भुत व्यापार या घटना ।

प्रायणां (न०) १ प्रवेश । आरम्भ । प्रारम्भ । २
इच्छामृत्यु । ३ शरण होना ।

प्रायणीय (वि०) आरम्भिक । प्रारम्भिक ।

प्रायणांयं (न०) सोम याग में पहिली सुत्या के
दिवस का कर्म ।

प्रायशस् (अव्यया०) साधारणतः । अक्सर ।
सम्भवतः ।

प्रायश्चित्तं (न०) १ शास्त्रीय कृत्य विशेष जिसके
प्रायश्चित्तिः (स्त्री०) करने से करने वाले का पाप
छूट जाता है । २ तृप्ति । तृतिपूरण ।

प्रायश्चित्तिन् (वि०) प्रायश्चित्त करने वाला ।

प्रायस् (अव्यया०) अक्सर । प्रायः । सम्भवतः
बहुत करके । कदाचित् ।

प्रायाणिक (वि०) [स्त्री०—प्रायाणिकी या
प्रायात्रिक] यात्रा के लिये उपयुक्त
या अनावश्यक ।

प्रायिक (वि०) [स्त्री०—प्रायिकी] मामूली ।
साधारण ।

प्रायुद्धेयिन् (पु०) घोड़ा ।

प्रायेण (अव्यया०) प्रायः । अक्सर ।

प्रायोगिक (वि०) [स्त्री०—प्रायोगिकी] जो
नित्य काम में आता हो ।

प्रारब्ध (व० कृ०) आरम्भ किया हुआ ।

प्रारब्धं (न०) १ कर्म । २ प्रारब्ध । भाग्य ।

प्रारब्धिः (स्त्री०) आरम्भ । शुरुआत । २ हाथी के
बौधने का खूँटा या रस्सा ।

प्रारंभः (पु०) १ आरम्भ । शुरुआत । २ कर्म ।
प्रारम्भः (पु०) १ आरम्भ । शुरुआत । २ कर्म ।

प्रारंभणं (न०) आरम्भ । शुरुआत ।
प्रारम्भणम् (न०) आरम्भ । शुरुआत ।

प्रारोहः (पु०) अंकुर । अँखुआ । कोपल ।

प्रार्ण (न०) मुख्य ऋण ।

प्रार्थक (वि०) [स्त्री०—प्रार्थिका] याचक ।
प्रार्थी ।

प्रार्थकः (पु०) प्रार्थी । वर ।

प्रार्थनं (न०) १ प्रार्थना : विनय । २ इच्छा ।
प्रार्थना (स्त्री०) १ स्वाहिष । ३ सुकहमा । —भङ्ग,
(पु०) प्रार्थना अस्वीकार करना :—सिद्धिः,
(स्त्री०) प्रार्थना स्वीकृति । अभिलषित वस्तु
की प्राप्ति ।

प्रार्थनीय (वि०) प्रार्थना करने योग्य । याचनीय ।

प्रार्थनीयं (न०) द्वार युग का नाम ।

प्रार्थित (वि०) १ याचित । जो माँगा गया हो ।
२ अभिलषित । ३ आक्रमण किया हो । शत्रु
द्वारा सामना किया हुआ । ४ दध किया हुआ ।
घायल किया हुआ ।

प्रालंब (वि०) लटकता हुआ । झूलता हुआ ।

प्रालंबः (पु०) १ मोती का आभूषण विशेष ।
प्रालम्बः (स्त्री०) २ स्त्री के स्तन ।

प्रालंबं (न०) वह हार जो कुर्छों तक लंबा हो ।
प्रालम्बम् (न०) वह हार जो कुर्छों तक लंबा हो ।

प्रालंबिका (स्त्री०) सौने का हार । माला ।
प्रालम्बिका (स्त्री०) सौने का हार । माला ।

प्रालेयं (न०) वर्षा । कोहरा । पाला । ओस ।—
अद्रिः,—शैलः, (पु०) हिमालय पर्वत ।—
अंशुः,—करः,—रश्मिः, (पु०) १ चन्द्रमा ।
२ कपूर । कर्पूर ।—लेशः (पु०) ओला ।

प्रावटः (पु०) यव । जबा ।

प्रावणं (न०) कुदाल । फावड़ा । बेलचा ।

प्रावरः (पु०) १ परकोटा । हाता । घेरा । २ उत्तरीय
वस्त्र । ३ देश विशेष ।

प्रावराणं (न०) चुगा । लवादा ।

प्रावरणीयं (न०) १ उत्तरीय वस्त्र । २ एक प्रान्त
का नाम ।—कीटः, (पु०) दीमक ।

प्रावारकः (पु०) उत्तरीय वस्त्र ।

प्रावारिकः (पु०) उत्तरीय वस्त्र बनाने वाला ।

प्रावास (वि०) [स्त्री०—प्रावासी] यात्रा सम्बन्धी ।
यात्रा में देने योग्य । यात्रा में करने योग्य ।

प्रावासिक (वि०) [स्त्री०—प्रावासिकी] यात्रा के
योग्य ।

प्रावीण्यं (न०) चातुरी । चतुराई । निपुणता ।
पटुता ।

प्रावृत्त (व० क०) घिरा हुआ । आच्छादित ढका हुआ पदार्थ पना हुआ

प्रावृत्त (न०) } धूँट । बुरका । चादर । पिछौरा ।
प्रावृत्तः (पु०) } (यह स्त्रीलिङ्ग भी है ।)

प्रावृत्तिः (स्त्री०) १ घेरा । हाता । बाड़ा । रोक ।
आड़ । २ आत्मा सम्बन्धी अज्ञान । आध्यात्मिक
अन्धकार ।

प्रावृत्तिक (वि०) [स्त्री० प्रावृत्तिकः] अप्रधान ।
गौण ।

प्रावृत्तिकः (पु०) दूत । एलची ।

प्रावृष् (स्त्री०) वर्षा ऋतु ।—अन्ययः (पु०)
[=प्रावृडत्ययः] वर्षाऋतु का अन्त ।—कालः,
(=प्रावृट्कालः) (पु०) वर्षा ऋतु । बस-
काल । बसात ।

प्रावृषः (पु०) } वर्षा ऋतु । वर्षाकाल ।
प्रावृषा (स्त्री०) }

प्रावृषिक (वि०) [स्त्री० प्रावृषिकी] वर्षाऋतु में
उत्पन्न ।

प्रावृषेय (वि०) १ वर्षाऋतु में उत्पन्न या वर्षाऋतु
सम्बन्धी । २ वह (किरत) जो वर्षाऋतु में अदा
की जाय ।

प्रावृषेयं (न०) असंख्यता । प्राचुर्य । आधिक्य ।

प्रावृषेयः (पु०) १ कदम्ब वृक्ष । २ कुटज । कुरैया ।

प्रावृष्यः (पु०) कदम्ब वृक्ष विशेष । २ कुटज ।
कुरैया ।

प्रावेष्टयं (न०) ऋदिया ऊनी चादर ।

प्रावेशन (वि०) [स्त्री०—प्रावेशना] (वस्तु) जो
प्रवेश करने पर दी जाय या वह (कार्य) जो
प्रवेश करने पर किया जाय ।

प्रावेशनं (न०) अर्चा । पूजन ।

प्रावेशिक (वि०) [स्त्री० प्रावेशिकी] प्रवेश सम्बन्धी
या प्रवेश से युक्त । प्रवेश का साधन भूत । जिसके
द्वारा (रंगशाला या भवन में) प्रवेश मिले ।

प्राव्रज्यं } (न०) प्रव्रज्या सम्बन्धी । संन्यासी का
प्राव्रज्यं } जीवन ।

प्राशः (पु०) १ भोजन करना । खाना । चखना । २
भोजन । भोज्य पदार्थ ।

प्राशनं (न०) १ खाना । भोजन करना । २ खिलाना ।
३ भोजन । भोज्य पदार्थ ।

प्राशनीय (न०) नोजन सामग्री । खाद्य पदार्थ ।

प्राशस्य (न०) उत्तमता । प्रशंसा का भाव । प्रशानता ।
श्रेष्ठता ।

प्राशित (व० क०) खाया हुआ । भक्षित ।

प्राशितं (न०) पितृपर्वण । पितृयज्ञ ।

प्राशिनकः (पु०) १ परीक्षक । २ पंच । हारजीत का
निर्णायक । न्यायाधीश ।

प्रासः (पु०) प्राचीन कालीन एक प्रकार का भाला ।
इसमें ० हाथ लंबी बाँस की छड़ लगायी जाती थी
और उसकी एक नोक पर लोहे का चुकीला फल
रहता था । यह फल बड़ा तेज़ होता था और उस
पर सक्क चड़ा रहता था । बरछी । भाला ।

प्रासकः (पु०) १ प्रास । २ पौंसा ।

प्रासंगः } (पु०) पशु का जुआँ ।
प्रासङ्गः }

प्रासङ्गिक (वि०) [स्त्री०—प्रासङ्गिकी] १ प्रसङ्ग
प्रासङ्गिक सम्बन्धी । २ प्रसङ्गागत । ३ इत्तिफाकिया ।
४ प्रस्तावानुरूप । ५ समयोचित । ६ उपरुखान
बदित या तदन्तर्भुक्त ।

प्रासङ्ग्यं } (पु०) हल में चला हुआ बैल ।
प्रासङ्ग्यं }

प्रासादः (पु०) महल । राजभवन । विशाल भवन ।

२ राजप्रासाद । शाहीमहल । ३ देशालय । मन्दिर ।

—आङ्गनं, (न०) राजभवन का आँगन ।—

आरोहणं, (न०) राजभवन पर चढ़ना या उसमें

प्रवेश करना ।—कुक्कुटः (पु०) पालतू कबूतर ।

—तलं, (न०) राजभवन की छत या फर्श ।

—पृष्ठः, (पु०) राजभवन के ऊपर का छज्जा या

बरामदा ।—प्रतिष्ठा, (स्त्री०) मन्दिरकी प्रतिष्ठा ।

—शायिन, (वि०) राजभवन में सोने वाला ।

—शृङ्गम्, (न०) राजभवन या मन्दिर का
कलस या गुमटी ।

प्रास्तिकः (पु०) प्रासधारी । भालाधारी ।

प्रास्तिक (वि०) [स्त्री०—प्रास्तिकी] प्रास्तुति
सम्बन्धी । जज्ञा सम्बन्धी ।

प्रास्त (व० क०) १ फैका हुआ । छोड़ा हुआ । २
निकाला हुआ । बहिष्कृत किया हुआ ।

प्रास्ताविक (वि०) [स्त्री० प्रास्ताविकी] आरम्भिक। प्रारम्भिक। मूलिका सम्बन्धी। ३ उचित समय का। सामयिक। ४ प्रासङ्गिक।

प्रास्तुत्यं (न०) विवादग्रस्त। विचाराधीन।

प्रास्थिक (वि०) [स्त्री० - प्रास्थिकी] वह वस्तु जो यात्रा के समय शुभ समझी जाती हो। यथा-शङ्ख-ध्वनि। दही। मङ्गली आदि।

प्रास्त्रवण (वि०) [स्त्री० - प्रास्त्रवणी] १ तौल में एक प्रस्थ भर। २ एक प्रस्थ के मूल्य में खरीदा हुआ। प्रस्थ के हिसाब से मोल लिया हुआ। ३ प्रस्थ भर का।

प्रास्त्रवण (वि०) [स्त्री० - प्रास्त्रवणी] सोते से निकला हुआ।

प्राहः (पु०) नृत्य कला का शिक्षक।

प्राहः (पु०) मध्याह्नपूर्व।

प्राह्वेतन (वि०) [स्त्री० - प्राह्वेतनी] मध्याह्न के पूर्व होने वाला। मध्याह्न पूर्व सम्बन्धी।

प्राह्वेतराम् } (अव्यया०) सवेरे। बड़े तड़के। गजरदम।
प्राह्वेतमाम् }

प्रिय (वि०) १ प्यारा। २ मनोहर।

प्रियः (पु०) १ प्रेमी। स्वामी। २ एक जाति विशेष का हिरन।

प्रिया (स्त्री०) १ प्रेयसी। २ माया। ३ स्त्री। ४ छोटी इलायची। ५ खबर। संवाद। ६ शाख।

प्रियं (न०) १ प्यार। २ महरवानी। चाकरी। अनुग्रह। ३ प्रसन्नकारक सूचना या खबर। ४ आनन्द।

प्रियं (अव्यया०) प्रसन्नकारक ढंग से। हर्षप्रद रीति से।—अतिथि, (वि०) आतिथेय।—अपायः, (पु०) किसी प्रिय वस्तु का अभाव या अनुपस्थिति।—अप्रिय, (वि०) प्यारा कुप्यारा। रुचिकर अरुचिकर।—अश्रुः, (पु०) आम का पेड़।—अर्हः, (वि०) १ प्रेम या कृपा करने योग्य। २ सर्वप्रिय। मनभावन।—अर्हः, (पु०) विष्णु का नामान्तर।—असु, (वि०) जीवन का प्रेमी।—आख्य, (वि०) शुभसंवाद सुनाने वाला।—आख्यानं, (न०) शुभसंवाद।—आत्मन्, (वि०) मनभाव। मनोहर।—उक्तिः, (स्त्री०)—उदितम्, (न०) आपलूसी की

वातें। मैत्री सूचक वक्तृता—उपपत्तिः, (स्त्री०) आनन्द दायिनी वधना—उपमांगः, (पु०) किसी प्रेमी या प्रेयसी के साथ रंगरत्नियाँ।—पयिन्, (वि०) प्रसन्न करने या सेवा करने का अभिलाषी। २ प्यारा। स्नेही।—कर, (वि०) आनन्द दायी। हर्षप्रद।—कर्मन्, (वि०) मित्रभाव से बर्ताव करने वाला।—कलत्रः, (पु०) वह पति जो अपनी भार्या को बहुत चाहता हो।—काम, (वि०) सेवा करने के लिये इच्छुक।—कार,—कारिन्, (वि०) भलाई करने वाला। नेकी करने वाला।—कृत्, (पु०) हितैषी। मित्र। जनः, (पु०) प्यारा जन। प्रेमपात्र जन।—जानिः, (पु०) अपनी पत्नी को प्यार करने वाला पुरुष।—तापणः, (पु०) स्त्री मैथुन का आसन विशेष।—दर्श, (वि०) मनोहर। खूबसूरत।—दर्शन, (वि०) मनोहर सूरत का। खूबसूरत। मनोहर। प्यारा।—दर्शनः, (पु०) १ सोता। २ खिरनी का पेड़। ३ एक गन्धर्व का नाम। दर्शिन, (वि०) अशोक राजा की उपाधि।—हेचन, (वि०) जुआ खेलने का शौकीन।—धन्वः, (पु०) शिवजी।—पुत्रः, (पु०) पत्नी-विशेष।—प्रसादनम्, (न०) पति को सन्तोष प्रदान।—प्राय, (वि०) अत्यन्त कृपालु या शिष्ट।—प्रायस्, (न०) प्रिय सम्भाषण जो एक प्रेमी अपनी प्रेयसी से करता हो।—प्रप्नु, (वि०) अपनी इष्ट सिद्धि का अभिलाषी।—भाचः, (पु०) प्रेम की भावना।—भाषणं, (न०) मीठा बोल।—भाषिन्, (वि०) मीठा बोलने वाला।—मण्डन, (वि०) आभूषणों का शौकीन।—मधु, (वि०) शराब का सुस्ताक।—मधुः, (पु०) बलराम जी का नामान्तर।—रण, (वि०) बहादुर। वचन, (वि०) अच्छे वचन कहने वाला।—वयस्यः, (पु०) प्यारा-मित्र।—वर्णी, (स्त्री०) कँगनी नाम का अन्न।—वस्तु, (न०) प्यारी वस्तु।—वाच, (वि०) प्यारी बातें कहने वाला। (स्त्री०) कृपामय या प्यारे वचन बोलने वाला।—वादिका, (स्त्री०) बाजा विशेष।—वादिन्, (वि०) मधुरभाषी।

चापलूस।—श्रवसः, (पु०) कृष्ण का नाम ।
—सवासः, (पु०) प्रियपात्र का ससङ्ग ।—सखः,
(पु०) प्यारा मित्र । सखी, (स्त्री०) प्यारी
सहेली।—सत्य, (त्रि०) १ सच को पसन्द
करने वाला । २ सत्य होने पर भी प्रिय।—
सन्देशः, (पु०) १ खुशखबरी । अच्छा सन्देश
२ चम्पा का पेड़ । समागमः, (पु०) प्रेमपात्र
के साथ मिलन ।—सहचरी, (स्त्री०) प्यारी
पत्नी ।—सुहृद्, (पु०) प्राणप्रिय मित्र ।—
स्वप्न, (वि०) सोने का शौकीन । जो निद्रा
लेना बहुत पसन्द करना हो ।

प्रियंवद (वि०) मधुरभाषी ।

प्रियंवदः (पु०) १ पक्षीविशेष । २ एक गन्धर्व का
नाम ।

प्रियकं (न०) असन के पेड़ का फूल ।

प्रियकः (पु०) १ मृग विशेष । चित्तमृग । २ नीपवृक्ष ।
३ प्रियङ्गु लता । ४ शहद की मक्खी । ५ पक्षी
विशेष । ६ केसर ।

प्रियकर
प्रियकरणा } (वि०) १ कृपा करने वाला । दयालु ।
प्रियकरणा } कृपालु । २ अनुकूल । प्यारा । ३ मन-
प्रियङ्कार } भावन ।
प्रियङ्कार

प्रियंगुः (पु०) १ एक लता विशेष का नाम, जिसके
प्रियङ्गुः } सम्बन्ध में कहा जाता है कि, जहाँ उसे किसी
स्त्री ने स्पर्श किया कि, वह फूलने लगती है । २
बड़ी पीपल । (न०) केसर ।

प्रियतम (वि०) सब से अधिक प्यारा ।

प्रियतमः (पु०) आशिक । प्रेमी । पति ।

प्रियतमा (स्त्री०) पत्नी । प्रेयसी । माशूका ।

प्रियतर (वि०) अपेक्षाकृत प्यारा ।

प्रियता (स्त्री०) } १ प्रिय होने का भाव । २ प्यार
प्रियत्वं (न०) } स्नेह ।

प्रियंभविष्णु } (वि०) प्रेमपात्र ।
प्रियंभावुक }

प्रियालः (पु०) पियाल पेड़ ।

प्रियाला (स्त्री०) दाख ।

१ (धा० उभय) [प्रीणाति, प्रीणीते, प्रीत]
प्रसन्न करना । आनन्दित करना । तृप्त करना ।

प्रीण (वि०) १ प्रसन्न । सन्तुष्ट । आनन्दित । २
प्राचीन । पुरातन । ३ पहिले का । अगला ।

प्रीणनम् (न०) प्रसन्नकारक । आनन्ददायी । सन्तोष-
कारक । तृप्तिकर ।

प्रीत (वि० कृ०) १ आनन्दित । हर्षित । २ प्रसन्न ।
सुखी । अल्हादमय । ३ सन्तुष्ट । ४ प्यारा । ५
कृपालु । स्नेहमय ।—आत्मान, —चित् —मनस्,
(वि०) मन से प्रसन्न । चित्त से आनन्दित ।

प्रीतिः (स्त्रि०) १ हर्ष । आनन्द । सुखी । २ अनु-
कम्पा । अनुग्रह । ३ प्रेम । स्नेह । ४ अनुराग ।
५ मैत्री । मेल । ६ कामदेव की स्त्री और रति की
सौत का नाम ।—कर, (वि०) कृपालु । अनु-

कूल ।—कर्मन्, (न०) मित्रोचित कर्म ।—दः,
(पु०) हँसोड़ । मसखरा । विदूषक ।—दत्त,
(वि०) प्रेम से दिया हुआ । स्नेह के कारण
दिया हुआ । दत्तं, (न०) वह सम्पत्ति जो
किसी स्त्री को उसके सगे सम्बन्धियों से मिली हो
विशेष कर वह जो उसे उसके ससुर या साल से
विवाह के अवसर पर प्राप्त हुई हो ।—दानं, (न०)

—दायः, (पु०) प्रेमोपहार ।—धनं, (न०)
प्रेम या मित्रता के नाते दिया हुआ धन या रुपया ।
—पार्त्रं, (न०) प्रेमपात्र । कोई भी पुरुष या
पदार्थ जिसके प्रति प्रेम हो ।—पूर्व, —पूर्वकं,
(अव्यय०) दयामय । स्नेहमय ।—मनस्, (वि०)

मन में प्रसन्न । प्रसन्न ।—युज, (प्यारा ।
स्नेही ।—वचस्, (न०)—वचनम्, (न०)
मित्रोपयुक्त वचन या भाषण ।—वर्धन, (वि०)
प्रेम या हर्ष बढ़ानेवाला ।—वर्धनः, (पु०)

विष्णु भगवान् ।—वादः, (पु०) मित्रोपयुक्त
वाद विवाद ।—विवाहः, (पु०) वह विवाह जो
केवल प्रीतिवश हुआ हो ।—श्राद्धम्, (न०)
अर्द्धापूर्वक किया गया श्राद्ध विशेष ।

प्रु (धा० आत्म०) [प्रवते] १ जाना । २ छूटना ।
३ उड़लना ।

प्रुष् (धा० परस्मै०) [प्रोषति, पुष्ट] १ जलाना ।
भस्म कर डालना । २ जला कर राख कर डालना ।
[प्रष्णाति] १ तर होना । भीग जाना । २
उड़लना । झिड़कना । ३ भरना । परिपूर्ण करना ।

प्रुष्ट (व० कृ०) जला हुआ । जला कर राख किया हुआ ।

प्रुष्वः (पु०) १ वर्षा ऋतु । २ सूर्य । ३ जलविन्दु ।

प्रेक्षकः (पु०) दर्शक । तमाशवीन ।

प्रेक्षणां (न०) १ देखने की क्रिया । २ दृश्य । चित्त-वन । शङ्ख । सूरत । ३ आँख । नेत्र । ४ कोई भी सार्वजनिक दृश्य या तमाशा ।—कूटः (न०) आँख का ढेला ।

प्रेक्षणाकं (न०) दृश्य । तमाशा । स्वाँग । लीला । कौतुक ।

प्रेक्षणीका (स्त्री०) वह स्त्री जिसे तमाशा देखने का बड़ा शौक हो ।

प्रेक्षणीय (वि०) १ देखने के योग्य । दर्शनीय । २ ध्यान देने के योग्य ।

प्रेक्षणीयकं (न०) तमाशा । दृश्य ।

प्रेक्षा (स्त्री०) १ देखना । २ दृष्टि । निगाह । ३ स्वाँग तमाशा देखना । ४ सार्वजनिक कोई भी स्वाँग या तमाशा । ५ विशेष कर नाटकीय अभिनय । नाटक । ६ बुद्धि । समझदारी । ७ विचार । आलोचन । मनन । ८ वृक्ष की शाखा या डाली ।—अगारः, (पु०)—आगारः, (पु०)—अगारं,—आगारं, (न०)—गृहं, (न०)—स्थानं (न०) रंगशाला । वह घर या भवन जहाँ नाटक खेला जाय ।—समाजः, (पु०) दर्शक वृन्द ।

प्रेक्षावत् (वि०) समझदार । बुद्धिमान । विद्वान् ।

प्रेक्षित (व० कृ०) देखा हुआ । ताका हुआ । घूरा हुआ ।

प्रेक्षितं (न०) चित्तवन । नज़र ।

प्रेखः, प्रेक्षः (पु०) १ झूलना । २ पैंग लौना । ३ प्रेखं, प्रेक्षम् (न०) एक प्रकार का सामगान ।

प्रेखण (वि०) १ भ्रमणकारी । इतस्ततः फिरने प्रेक्षण । बाला ।

प्रेखणां (न०) १ अच्छी तरह झूलना । २ झूलना । प्रेक्षणम् हिंडोला । ३ अठारह प्रकार के रूपकों में से एक । इसमें सूत्रधार, विष्कुम्भक, प्रवेशक आदि की आवश्यकता नहीं होती । इसका नायक कोई नीच जाति का हुआ करता है । इसमें नान्दी और प्ररोचना नैपथ्य में होते हैं और इसमें एक ही

अङ्क होता है । इसमें प्रधानता वीररस की रखी जाती है ।

प्रेखा (स्त्री०) १ झूलना । हिंडोला । २ नृत्य ।

प्रेक्षा (३ भ्रमण । यात्रा । ४ विशेष प्रकार का घर या भवन । ५ बोड़े की चाल विशेष ।

प्रेखित } हिलता हुआ । झूलता हुआ ।
प्रेक्षित }

प्रेखोल (धा० डभय०) [प्रेखोलयति प्रेखो-
प्रेक्षोल] लयते] हिलना । झुलना । हिलाना
हुलाना ।

प्रेखोलनम् (न०) झूलना । हिलना । काँपना ।
प्रेक्षोलनम् २ हिंडोला । झूला ।

प्रेत (व० कृ०) मृत । मरा हुआ ।

प्रेतः (पु०) १ वह मृतआत्मा की अवस्था जो आर्ष्वदेहिक कृत्य किये जाने के पूर्व रहती है । २ भूत ।—अधिपः, (पु०) यमराज ।—अश्वं, (न०) वह अश्व जो पितरों को अर्पित किया गया हो ।—अस्थि, (न०) मुर्दे की हड्डियाँ ।—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) यमराज । धर्मराज ।—उद्देशः, (पु०) पितरों के लिये नैवेद्य ।—कर्मन्, (न०)—कृत्यं, (न०)—कृत्या, (स्त्री०) दाह से लेकर सपिण्डी तक का वह कर्म जो मृतक जीव के उद्देश्य से किया जाता है ।—गृहं, (न०) कबरस्तान ।—चारिन्, (पु०) शिव जी ।—दाहः, (पु०) मृतक के जलाने आदि का कर्म ।—धूमः, (पु०) चिता से निकला हुआ धुआँ ।—पक्षः, (पु०) कार का आँधियारा या कृष्ण पाल पितृपक्ष कहलाता है ।—पटहः, (पु०) वह ढोल जो किसी के जनाजे या ठठरी को ले जाते समय बजाया जाता है ।—पतिः, (पु०) यम का नामान्तर ।—पुरं, (न०) यमराज पुरी ।—भावः, (पु०) मृत्यु । मौत ।—भूमिः, (स्त्री०) कबरस्तान ।—मेघः, (पु०) मृतक कर्म विशेष ।—राक्षसी, (स्त्री०) तुलसी ।—राजः, (पु०) यमराज ।—लोकः, (पु०) वह लोक जहाँ प्रेत निवास करते हैं ।—शरीरं, (न०) मृत शरीर ।—शुद्धि, (स्त्री०)—शौचं, (न०) किसी मरे हुए नातेदार के

सूतक का शुद्धि । आश्र (न०) मरण की तिथि से एक वर्ष के अन्तर होने वाले १२ आश्र इनमें सपिण्डी, मासिक और पाण्डमासिक आश्र भी शामिल हैं ।—हारः, (पु०) १ मृत शरीर को उठाकर श्मशान तक ले जाने वाला । सुरदा उठाने वाला । २ सूतक का सगा या चातेदार ।

प्रेतिकः (पु०) भूत । प्रेत ।

प्रेत्य (अन्वया०) लोकान्तरित । परलोकगत ।—जातिः, (स्त्री०) परलोक में मरने के बाद किसी की परिस्थिति ।—भावः, (पु०) किसी जीव की शरीर छोड़ने के बाद की दशा ।

प्रेतवन् (पु०) १ पवन । हवा । २ इन्द्र का नामान्तर ।

प्रेक्षा (स्त्री०) १ प्राप्त करने की अभिलाषा । २ इच्छा ।

प्रेक्षु (वि०) अभिलाषी । इच्छुक ।

प्रेमन् (पु० न०) १ प्रेम । स्नेह । २ अनुकम्पा । अनुग्रह । ३ आसोद प्रमोद । ४ हर्ष । प्रसन्नता ।—अश्रु, (स्त्री०) प्रेम या स्नेह के आँसू ।—ऋद्धिः, (स्त्री०) स्नेह का आधिक्य । प्रगाढ़ प्रेम ।—पर, (वि०) प्यारा । प्रिय ।—पातनं, (न०) (हर्ष के) आँसू । २ नेत्र (जिससे प्रेमाश्रु गिरे) ।—पात्रं, (न०) प्रेमपात्र ।—बंधः, (पु०)—बन्धनम्, (न०) प्रेम की फाँस या गँस ।

प्रेमिन् (वि०) [स्त्री०—प्रेमिणी] प्यारा । स्नेही ।

प्रेयस् (वि०) [स्त्री०—प्रेयसी] अधिकतर प्यारा । (पु०) प्रेमी । पति । (पु० न०) चापलूसी ।

प्रेयसी (स्त्री०) पत्नी । स्वामिनी ।

प्रेयोपत्यः (पु०) बगुला । बूढ़ीमार ।

प्रेरक (वि०) [स्त्री०—प्रेरिका] १ प्रेरणा करने वाला । उत्तेजन देने वाला । २ फेंकने वाला ।

प्रेरणा (न०) १ उत्तेजित करना । इस्तिथाल प्रेरणा (स्त्री०) १ दिलावा । २ आदेश । उत्तेजना । प्रवृत्ति । ३ फेंकना । डालना । ४ भेजना । रवाना करना ।

प्रेरित (व० क०) १ उत्तेजित किया हुआ । आग्रह किया हुआ । २ उद्विग्न । ३ भेजा हुआ । रवाना किया हुआ । ४ स्पर्श किया हुआ ।

प्रेरित (पु०) एलची दूत ।

प्रेष (धा० उभय०) [प्रेषति—प्रेषते] जाना ।

प्रेषः (पु०) १ आग्रह । २ सन्ताप । कष्ट । शोक ।

प्रेषणा (न०) १ प्रेरणा । भेजना । २ किसी प्रेषणा (स्त्री०) विशेष अभीष्ट सिद्धि के लिये भेजना ।

प्रेषित (व० क०) १ (संदेश देकर) भेजा हुआ ।

२ आज्ञा दिया हुआ । निर्देश किया हुआ । ३ धूसा हुआ । गढ़ा हुआ । किसी ओर फिरा हुआ ।

(आँखें) नीचे किये हुए । ४ बहिष्कृत ।

प्रेष्ठ (व० क०) अतिशय प्रिय । प्रियतम । बहुत प्यारा ।

प्रेष्ठः (पु०) प्रेमी । पति ।

प्रेष्टा (स्त्री०) पत्नी । स्वामिनी ।

प्रेष्य (वि०) जो भेजने योग्य हो । जनः, (पु०) नौकर चाकर ।—भावः, (पु०) गुलामी । चाकरी । बंधन ।—वधूः, (पु०) नौकर की पत्नी । २ नौकरानी । दासी ।—वर्गः, (पु०) अनुचरों का समूह ।

प्रेष्यं (न०) १ किसी कार्य पर भेजना । २ चाकरी ।

प्रेष्यः (पु०) नौकर । दास । गुलाम ।

प्रेष्या (स्त्री०) दासी । चाकरानी ।

प्रेहिकटा (स्त्री०) आचार विशेष जिसमें चटाइयों का निषेध है ।

प्रेहिकर्दमा (स्त्री०) अनुष्ठान विशेष जिसमें अपवित्रता वर्जित है ।

प्रेहिक्रितीया (स्त्री०) अनुष्ठान विशेष जिसमें स्वयं को छोड़ अन्य पुरुष की उपस्थिति वर्जित है ।

प्रेहिवाणिजा (स्त्री०) अनुष्ठान विशेष जिसमें किसी भी व्यवसायी की उपस्थिति वाञ्छनीय नहीं है ।

प्रेयं (न०) कृपा । प्रेम ।

प्रेयः (पु०) १ प्रेषण । २ आज्ञा । आदेश । आमंत्रण । ३ सङ्कट । विपत्ति । ४ विचित्रता । पागलपन । सनक । ५ दवाना । कुचलना । मर्दन ।

प्रेयम् (न०) चाकरी । गुलामी ।

प्रेय्यः (पु०) नौकर । दास । गुलाम । कमीन ।—भावः, (पु०) नौकरी । दासत्ववृत्ति ।

प्रेष्या (स्त्री०) दासी । चाकरानी ।

प्रेक्त (व० कृ०) १ कहा हुआ । निश्चय किया हुआ ।
ठहराया हुआ ।

प्रेक्षणी (न०) १ मार्जन । २ जल छिड़क कर पवित्र करना । ३ यज्ञ में वध के पूर्व अज्ञेय पशु पर जल छिड़कना ।

प्रेक्षणी (स्त्री०) १ वह पवित्र जल जो मार्जन के लिये या छिड़कने के लिये हो । २ वह पात्र जिसमें प्रोक्ष्य के लिये जल रखा जाता है । प्रोक्षणीपात्र ।

प्रेक्षणीयं (न०) प्रोक्ष्य के लिये जल ।

प्रेक्षित (व० कृ०) जल के मार्जन से पवित्र किया हुआ । २ बलिदान के पूर्व जल से छिड़का हुआ ।

प्रेक्ष्यं } (वि०) अतिशय भयानक ।
प्रेक्ष्यण्ड }

प्रेक्ष्यस् (अन्वया०) १ अतिशय उच्चस्वर से । २ अतिशय अधिकता में ।

प्रेक्षित् (व० कृ०) ऊँचा । लंबा । उन्नत ।

प्रेक्ष्यासनम् (न०) वध । हत्या ।

प्रेक्ष्यनम् (न०) त्याग । विराग । वैराग्य ।

प्रेक्षित (व० कृ०) त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ ।

प्रेक्ष्यन् } (न०) पोंछ डालना । मिटा डालना ।
प्रेक्ष्यन्म् } २ अवशिष्ट को बीन लेना ।

प्रेक्षिन (वि०) उड़ा हुआ । उड़ गया हुआ ।

प्रेडि } देखो 'प्रीड, प्रीडि ।'
प्रीडि }

प्रीत (व० कृ०) १ सिला हुआ । टाँका लगा हुआ ।
२ ओत का उलटा । लंबा या सीधा फैला हुआ ।
३ बंधा हुआ । गसा हुआ । ४ बिधा हुआ । आर पार बिधा हुआ । ५ गुजरा हुआ । निकला हुआ ।
६ जड़ा हुआ । बैठाया हुआ ।

प्रीतं (न०) बुना हुआ वस्त्र ।

प्रीत + उत्सादनं (न०) (= प्रीतोत्सादनं) १ छाता ।
२ छीमा । तंबू । पटगृह ।

प्रीतकण्ठ (वि०) गर्दन उठाये हुए । गर्दन आगे किये हुए ।

प्रीतकुण्डं (न०) कोलाहल । शोरगुल । गुलशराबा ।

प्रीतकृत (व० कृ०) सुदा हुआ ।

प्रीतुङ्ग (वि०) बहुत ऊँचा । अतिशय लंबा ।

प्रीतुल्लस (वि०) फैला हुआ । खिला हुआ ।

प्रीतसारणी (न०) पिंड खुडाना । पीछा खुडाना । हटा देना । निकाल देना ।

प्रीतसारित (व० कृ०) १ स्थानान्तरित किया हुआ ।
निकाला हुआ । हटाया हुआ । २ आगे बढ़ाया हुआ । ३ त्यागा हुआ ।

प्रीतसाहः (पु०) १ उमङ्ग । अतिशय उत्साह । २ उकसाने वाला । शह देने वाला ।

प्रीतसाहकः (पु०) उकसाने वाला । उत्तेजन देने वाला ।

प्रीथ् (धा० उभय०) [प्रीथति—प्रीथते] १ समान होना । बराबरी करना । २ योग्य होना । ३ परिपूर्ण होना ।

प्रीथ (वि०) १ बिग्यात । प्रसिद्ध । २ स्थापित । ३ यात्रा करने वाला ।

प्रीथं (न०) } १ घोड़ा का नथुना । शूकर का
प्रीथः (पु०) } यूथन । (पु०) १ कमर । वृत्त ।
२ गढ़ा । गर्त । ३ वस्त्र । पुराने वस्त्र । ४ गर्भाशय ।

प्रीथिन् (पु०) घोड़ा ।

प्रीधुष्ट (व० कृ०) १ प्रतिध्वनित । प्रतिशब्दाय मान । २ कोलाहल करना ।

प्रीधोपणं (न०) } १ घोषणा । २ उच्चस्वर से
प्रीधोपणा (स्त्री०) } बोलना ।

प्रीदीप्त (व० कृ०) आग लगाया हुआ । जलता हुआ ।
धक्कता हुआ ।

प्रीद्विन्न (व० कृ०) १ उगा हुआ । २ फोड़ कर निकला हुआ ।

प्रीदुत (व० कृ०) निकला हुआ । उगा हुआ ।

प्रीद्यत (व० कृ०) १ उठा हुआ । २ क्रियावान् ।
परिश्रमी ।

प्रीद्याहः (पु०) विवाह ।

प्रीञ्चन (व० कृ०) १ अतिशय ऊँचा या लंबा । २ निकला हुआ ।

प्राक्नाधित (वि०) १ वामारी स उठा हुआ रोग छूटने पर कुछ कुछ प्रासबल । २ रोवाला ।

प्रोल्लेखनम् (न०) छीलना । चिन्ह करना ।

प्रापित (व० कृ०) यात्रा के लिये विदेश गया हुआ । विदेशवासी । अनुपस्थित :—भर्तृका (स्त्री०) पति के विदेश गमन से दुखी स्त्री । विरहिनी नायिका ।

प्रोष्ठः } (पु०) १ बैल । साँड़ । २ तिपाई । काठ

प्रोष्ठः } का मूढ़ । स्टूल । ३ एक प्रकार की मछली ।

—पद्ः (पु०) भाद्रपद । भादों का महीना ।

—पदा (स्त्री०) पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्र-पदा नक्षत्र ।

प्रोह् } (वि०) बहस करने वाला ।

प्रोहः } (पु०) १ तर्क । न्याय । २ हाथी का पैर

प्रोहः } ३ गाँठ । जोड़ ।

प्रौढ } (वि०) १ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त । पका हुआ ।

प्रौढ } पूर्ण । २ जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो ।

३ गाढ़ । घना । सतेज । सारवान । ४ विशाल । सबल । बलवान । ५ उग्र । प्रचण्ड । ६ साहसी । ७ अभिमानी ।

प्रौढा (स्त्री०) अधिक उम्रवाली स्त्री । १० से १०

या १५ वर्ष तक की वयस वाली स्त्री प्रौढा मानी गयी है ।—अङ्गना, (स्त्री०) साहसिन स्त्री ।—

उक्ति, (स्त्री०) साहसपूर्ण कथन ।—प्रताप,

(वि०) बड़ा शक्तिवान् ।—यौधन, (वि०)

ढलती जवानी का ।

प्रौढिः } (स्त्री०) १ बालगी । पूर्णवयस्कता । २

प्रौढिः } बाढ़ । बढ़ती । ३ बढ़ाई । बढपन । उच्चता ।

शान । ४ साहस । ५ अभिमान । आत्मनिर्भरता ।

६ उद्योग । उत्साह ।—वाद्ः (पु०) चटकीला

भड़कीला भाषण । २ साहस से भरा वयान या

कथन ।

प्रौण (वि०) चतुर । विद्वान् । निपुण ।

प्रुत्तः (पु०) १ बट वृक्ष । २ पाकर वृक्ष । ३ पुराणा-

नुसार सात द्वीपों में से एक । ३ खिड़की ।—

जाला ।—समुद्रवाचका, (स्त्री०) सरस्वती

नदी का नामान्तर ।—तीर्थ, (न०)—राज्,

(पु०) वह स्थान जहाँ से सरस्वती नदी निकलती है ।

प्रव (वि०) १ तैरता हुआ । उतराता हुआ । २ कूदता हुआ । उड़लता हुआ ।

प्रवः (पु०) १ तैरना । उतराना । २ जल की बाढ़ । ३

छल्लाँग । कुल्लाँच । ४ वेड़ा । घरनई । नाव ।

छोटी नाव । ५ मेढ़क । ६ बंदर । ७ उतार ।

ढाल । ८ शत्रु । ९ भेड़ । १० चाण्डाल । ११

मछली पकड़ने का जाल । १२ वट वृक्ष । १३

कारणव पत्नी ।—गः, (पु०) १ बंदर । २

मेढ़क । ३ जल का पत्नी विशेष । ४ शिरीष वृक्ष ।

५ सूर्य के सारथी का नाम । ६ कन्याराशि ।—

गतिः, (पु०) मेढ़क ।

प्रवकः (पु०) १ मेढ़क । २ कूदने वाला । रस्से पर

नाचने वाला नट । ३ पाकर वृक्ष । ४ पतित ।

चाण्डाल । ५ बंदर ।

प्रवंगः } (पु०) १ लंगूर । वानर । २ मृग । ३

प्रवङ्गः } पाकर वृक्ष ।

प्रवंगमः } (पु०) १ वानर । २ मेढ़क ।

प्रवङ्गमः } (पु०) १ वानर । २ मेढ़क ।

प्रवनं (न०) १ तैरना । २ स्नान । अवगाह स्नान ।

३ उड़ना । कुल्लाँग । फल्लाँग । ५ जलप्लावन । जल-

प्रलय । ६ नीची ज़मीन ।

प्रवाका (स्त्री०) वेड़ा । घरनई ।

प्रविक (वि०) मल्लाह । माभी ।

प्रवत्तं (न०) मूत्र वृक्ष के फल ।

प्रवाधः (पु०) १ बाढ़ (जल की) । २ तरल पदार्थ

का छानना (जिससे उसमें मैल न रह जाय) ।

प्रवाधनं (न०) १ स्नान । मार्जन । २ जल की बाढ़ । ३

जलप्रलय ।

प्राचित (व० कृ०) १ तैराया हुआ । उमड़ कर बहा

हुआ । जल की बाढ़ में डूबा हुआ । ३ नम ।

गीला । जल से छिड़का हुआ । ४ ढका हुआ ।

सिह् (धा० आत्म०) (प्लेहते) जाना ।

सी (धा० परस्मै०) (प्लीनाति) जान ।

सीहन् (पु०) तिल्ली । बरबट । लरक ।—उदरं,

(न०) तिल्ली की वृद्धि ।—उदरिन, (वि०)

वह पुरुष जो तिल्ली की वृद्धि से पीड़ित हो ।

श्रीहा (श्री०) तिल्ली । दरवट ।

प्लु (धा० आत्म०) — [प्लवते, प्लुन] १ तैरना ।
पैरना । नाव द्वारा पार होना । २ डोलना । इधर
उधर कूलना । ३ कूदना । फलौंगना । ४ उड़ना ।
५ कुदकना । ७ (स्वर का) दीर्घ होना । (निजं)
[प्लावयति प्लावयते] १ तैरना । पैरना । २
हडाना । वहाँ ले जाना । ३ स्नान करना । ४ बाढ़
में डूबना । ५ तारतम्य करना ।

प्लुत (व० कृ०) १ पैरता हुआ । उतराता हुआ । २
डूबा हुआ । ३ कूदा हुआ । ४ बड़ा हुआ । ५
ढका हुआ ।

प्लुतं (न०) १ झलौंग । फलौंग । २ घोड़े की चाल
विशेष । पोई ।—गतिः, (पु०) १ खरगोश ।
खरहा । २ उड़लते हुए चञ्चलता । फरपट चाल ।

प्लुतिः (श्री०) १ जल की बाढ़ । २ झलौंग । फलौंग
३ घोड़े की चाल विशेष, जिसे पोई कहते हैं । ४
स्वर का एक भेद जो दीर्घ से भी बड़ा और तीन
मात्रा का होता है ।

प्लुय (धा० परस्मै०) [प्लुयति, प्लुयति,
प्लुयानि, प्लुय] जलाना ।—[प्लुयानि,]
१ छिड़कना । ठर करना । २ मादित करना ।
तेल लगाना । ३ भरना ।

प्लुय (व० कृ०) जला हुआ । दग्ध ।

प्लेव (धा० आत्मने०) [प्लेवते] खिदमत करना ।
चाकरी करना । सेवा करना ।

प्लोषः (पु०) जलन । दाह ।

प्लोषण (वि०) [प्लोष—प्लोषणी,] जला हुआ ।
जल कर जो भस्म हो गया हो ।

प्लोषणं (न०) जलन । दाह ।

प्ला (धा० परस्मै०) [प्लाति, प्लात,] खाना ।
भक्षण करना ।

प्लात (व० कृ०) मचख । भोजन । भूख । दुभुक्षा ।

प्लानम् (न०) १ खाया हुआ । २ भोजन ।

फ

फ (पु०) संस्कृत वर्ण माला का बाइसवाँ व्यंजन
और पवर्ग का दूसरा वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान
श्रोत्र है और इसके उच्चारण में आन्तरिक प्रयत्न
होता है । इसका उच्चारण करते समय जिह्वा का
अग्रभाग होठों से छूता है, अतः इसे स्पर्शवर्ण
कहते हैं । इसके वाह्यप्रयत्न, विचार, श्राल और
अधोष हैं । इसकी गणना महाप्राण में है । प,
व, भ, तथा म, इसके सवर्ण हैं ।

फ (न०) १ रुखा बोल । २ फूत्कार । फूँक । ३ झुका
वात । ४ जमुहाई । ५ साफल्य । ६ रहस्यमय
अनुमान । ७ व्यर्थ की बकबक । ८ गर्मी । उष्ण-
ता । ७ उन्नति ।

फक् (धा० परस्मै०) [फकति, फकित] १ धीरे
धीरे चलना । खसकना । रेंगना । २ गलती करना ।
तूषित व्यवहार करना । ३ बढना । फूल उठना ।

फक्कि (श्री०) वह जो शास्त्रार्थ में दुरुहस्थल को
स्पष्टीकरण करने के लिये पूर्वपक्ष के रूप में कहा
जाय । निरर्थक के लिये पूर्वपक्ष । २ पक्षपात । वह
राय जो पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष को सुनने के पूर्व
ही कायम कर ली जाय ।

फट् (अव्यय) एक तांत्रिक शब्द जिसको अस्त्र मंत्र
भी कहते हैं ।

फटः (पु०) १ साँप का फैला हुआ फन । २ दाँत ।
३ बदमाश । कितव ।

फडिगा } (श्री०) टीढ़ी । पल्लिगा ।
फडिङ्गा }

फण (धा० परस्मै०) [फणति, फणित] इधर
उधर हिलना । २ विना प्रयास उत्पन्न करना ।

फणः (पु०) } साँप का फैला हुआ फन ।—

फणा (श्री०) } करः, (पु०) साँप ।—धरः,
(पु०) १ साँप । २ शिव जी ।—भृत्, (पु०)

सर्प ।—मणिः, (पु०) वह मणि जो सर्प के फन में होती है —मण्डलं, (न०) सर्प की कुदरी ।

फलिन् (पु०) १ फलधारी सर्प । २ राहु । महा-भाष्यकार पतञ्जलि ।—इन्द्रः, —ईश्वरः, (पु०) १ शेषनाग का नामान्तर । २ अनन्त नाग । ३ पतञ्जलि ।—खेलः, (पु०) लबा । बटेर ।—तल्पगः, (पु०) विष्णु का नामान्तर —पतिः, (पु०) शेषनाग । वासुकी नाग ।—प्रियः, (पु०) पवन । हवा ।—फेनः, (पु०) अफीम ।—भाष्यं, (न०) पाणिनी के सूत्रों पर पतञ्जलि का महामाष्य ।—भुज् (पु०) १ मोर । २ गरुड फल्कारिन् (पु०) पक्षी । चिड़िया ।

फरं (न०) ढाल । फलक ।

फरुबकं (न०) पान रखने का डब्बा ।

फर्फरीकः (पु०) हाथ की खुली हुई हथेली ।

फर्फरीकं (न०) १ कल्ला । वृक्ष की नयी ढाली । २ कोमलता ।

फर्फरीका (स्त्री०) जूता । जूती ।

फल (धा० परस्मै०) [फलति, फलित] १ फलना । २ सफल होना । ३ परिणाम निकालना । ४ पकना ।

फलं (न०) १ फल । २ फसल । पैदावार । ३ परिणाम । नतीजा । ४ पुरस्कार । ५ कर्म । ६ उद्देश्य । ७ उपयोग । लाभ । फायदा । ८ मूल धन का व्याज । ९ सन्तति । औलाद । १० फल के भीतर का बीज या गुदा । ११ फल विशेष । १२ तलवार की धार । १३ तीर की नोक । १४ ढाल । १५ अण्डकोष । १६ दान । १७ अङ्गणित की किसी क्रिया का अन्तिम परिणाम । १८ योग-फल । गुणफल । १९ रजस्वलाधर्म । २० जायफल । २१ हल की नोक ।—अनुबन्धः, (पु०) परिणाम । नतीजा ।—अनुमेय, (वि०) फल देख कर निकाला हुआ सार ।—अन्तः, (पु०) बाँस । बल्ली ।—अन्वेधिन् (वि०) (कर्म का) फल या पुरस्कार चाहने वाला ।—अग्रानः, (पु०) तोता । सुग्गा । सूआ ।—

अम्लम्, (न०) हमली ।—अस्थि, (न०) नारियल ।—आकांक्षा, (स्त्री०) (अच्छे) परिणाम की अभिलाषा ।—आगमः, (पु०) १ फलोत्पत्ति । २ फल फलने का समय या मौसम । शरद्ऋतु ।—आख्या, (स्त्री०) १ कठकेला । २ एक प्रकार के अँगूर जिनमें बीजा नहीं होते ।—उत्पत्तिः, (स्त्री०) १ फल की पैदावार । २ लाभ । सुनाफा । (पु०) आम का पेड़ ।—उदयः, (पु०) १ फल का दृष्टिगोचर होना । २ परिणाम निकलना । ३ सफलता प्राप्ति या अभीष्टसिद्धि ।—कालः, (पु०) फलों का मौसम ।—केशरः, (पु०) नारियल का वृक्ष ।—ग्रहः, (पु०) लाभ निकालने वाला ।—ग्रहि, —ग्राहिन्, (वि०) फलवान् । ऋतु में फल देने वाला ।—दः, (वि०) १ फलदायी । उपजाऊ । फलदार । २ लाभदायी ।—दः, (पु०) वृक्ष ।—निवृत्तिः, (स्त्री०) परिणाम का अवसान ।—निष्पत्तिः, (स्त्री०) फलोत्पत्ति —पादपः, (पु०) फल-दार वृक्ष ।—पूरः, —पूरकः, (पु०) नीव या जमीरी का पेड़ ।—प्रदानं, (न०) १ सगाई । २ फल का दान ।—भूमिः, (स्त्री०) वह स्थान जहाँ कर्मों के फल का भोग करना हो ।—भृत्, (वि०) फलदार । भोगः, (पु०) १ फल का भुगतना । २ फलभोग । उपसत्त्व भोगने का अधिकार ।—योगः, (पु०) १ फलप्राप्ति या अभीष्ट-प्राप्ति । २ मजदूरी । महनताना ।—रात्रन्, (पु०) तरबूज । कलीदा ।—वर्तुलम्, (न०) तरबूज । कलीदा ।—वृक्षः, (पु०) फलवान् वृक्ष ।—वृक्षकः, (पु०) कठहल का पेड़ ।—ग्राहवः, (पु०) अनार का वृक्ष ।—श्रेष्ठः, (पु०) आम का पेड़ ।—सम्पद्, (स्त्री०) १ फलों का बाहुल्य । २ सफलता ।—साधनं, (न०) किसी भी अभीष्ट सिद्धि का कोई उपाय ।—स्नेहः, (पु०) अखरोट का पेड़ ।—हारी, (स्त्री०) काली या हुर्गी का नामान्तर ।

फलकं (न०) १ पटल । तख्ता । पट्टी । २ चौरस सतह । ३ ढाल । ४ कागज का तख्ता । सफा । ५ चूतड़ । करिहाँ । ६ हथेली ।—पाणि, (वि०)

हालधारी।—यत्र, (न०) ज्योतिष सम्बन्धी
यंत्र विशेष जिसको भास्कराचार्य ने ईजाद किया
था।

फलतस् (अव्यया०) फलतः। परिणामतः। अन्ततो
गत्वा। लिहाजा। अतः।

फलनं (न०) १ फलोत्पत्ति। फलों का लगना। २
२ नतीजा निकालना।

फलवत् (वि०) १ फल वाला। फरने वाला। २
परिणामप्रद। सफल। लाभप्रद।

फलवती (स्त्री०) प्रियङ्गु नाम का पौधा।

फलिता (स्त्री०) रजस्वला स्त्री

फलित् (वि०) फलवान्। फरने वाला। (पु०)
वृत्त।

फलित (वि०) फलने वाला।

फलिनः (पु०) कटहल का पेड़।

फलिनी } (स्त्री०) प्रियङ्गु नामक लता
फली }

फल्यु (वि०) १ रसहीन। फीका। असार। २
निकम्मा। अनुपयोगी। अनावश्यक। ३ धोड़ा।
सूक्ष्म। ४ व्यर्थ। अर्थशून्य। ५ निर्बल। कम-
जोर। बौदा।—उत्सवः, (पु०) होली का
स्योहार।

फल्युः (स्त्री०) १ वसन्त ऋतु। २ गुलर। वृक्ष विशेष।
३ गया की एक नदी का नाम।

फलगुनः (पु०) १ फागुन मास। २ इन्द्र का नाम।

फलगुनी (स्त्री०) एक नक्षत्र का नाम।

फल्यं (न०) फूल।

फालिः (पु०) } गुड़। राव। कभी खाँड़।

फालितं (न०) }

फाँट } (वि०) आसानी से या सहज में बना हुआ।

फाँटः, फाण्टः } (पु०) काड़ा। काथ।

फाँट, फाण्टम् }

फालं (न०) } १ हल की नौक। २ स्तीमान्त भाग।

फालः (पु०) } माँग। (सिर पर की)। (पु०) १

बलराम का नामान्तर। २ शिव का। ३ नीबू का

वृक्ष। (न०) सूती कपड़ा। २ जुता हुआ खेत।

फाल्गुनः (पु०) १ फागुनमास। २ अर्जुन का नामा-
न्तर। ३ एक वृक्ष विशेष।—अनुजः, (पु०)

१ चैत्रमास। २ वसन्तकाल। ३ नरुल और सह-
देव का नाम।

फाल्गुनी (स्त्री०) फागुन मास की पूर्णमासी।—
भवः, (पु०) बृहस्पति का नाम।

फिरङ्गः (पु०) फिरंगियों का देश। फिरंगिस्तान।
योरूप।

फिरङ्गिन् (पु०) फिरंगी। बेरोपियन।

फुकः (पु०) पत्नी।

फुत् } (अव्यया०) शब्द विशेष।—कारः, (पु०)

फूत् } —कृतं, (न०)—कृतिः, (स्त्री०) १

फूँकना। २ सर्प की फूँसकार। ३ सिसकन। ४

चीख मारना।

फुफुसं (न०) } फेफड़ा।

फुफुसः (पु०) }

फुल्ल (धा० परस्मै०) [फुल्लति, फुल्लित]

फूलना। फैलना। खिलना।

फुल्ल (व० कृ०) १ फैला हुआ। खिला हुआ।

खुला हुआ।—लोचन, (वि०) (आनन्द से)

नेत्रों का विकसित होना।

फोटकारः (पु०) चीख।

फेणः } (पु०) १ फैना। फैन। भाग। २ मुँह का

फेनः } भाग। ३ थूक।

—फिण्डः, (पु०) १ बबूला। बुदबुद। २

खोखले विचार।—वाहिन, (पु०) बूझा। साझी।

फेणकं } (न०) भाग। फेन।

फेनकं }

फेनिल (वि०) भागदार फेनदार।

फेरः } (पु०) शृगाल। गीदड़। स्यार।

फेरडः } (पु०) शृगाल। गीदड़। स्यार।

फेरडः }

फेरवः (पु०) १ शृगाल। स्यार। गीदड़। २ बदमाश।

गुंडा। कपटी। ३ राक्षस। प्रेत। पिशाच।

फेरुः (पु०) स्यार। गीदड़।

फेलं (न०) }

फेला (स्त्री०) }

फेलिका (स्त्री०) }

फेली (स्त्री०) }

उच्छिष्ट। जुड़ा।

बु

बु-संस्कृत बयोमाला का तेईसवां व्यञ्जन और पवर्ग का तीसरा वर्ण । यह दोनों ओठों के मिलाने पर उच्चारित होता है । इस लिये इसके ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं । यह अल्पप्राण है और इसके उच्चारण में संचार, नाद और घोष नाम के बाह्य प्रचरन होते हैं ।

बु (पु०) १ बुनावट । २ बुआई । ३ बरुण । ४ बड़ा । ५ योनि । ६ समुद्र । ७ जल । ८ गमन । ९ तन्तु सम्मान । १० सूचना ।

बुह् (प्रा० आत्म०) [बुहते, बुहित] १ बढ़ना । उगना । २ दृढ़ करना ।

बुहिमन् (पु०) १ बाहुल्य । २ विपुलता ।

बुहिष्ठ (वि०) बहुत अधिक । बहुत बड़ा ।

बुहीयस् (वि०) अतिशय । अनेक ।

बुकः (पु०) १ बगला । २ ढोंगी । झुलिया । कपटी । ३ एक असुर का नाम जिसे भीम ने मारा था । ४ एक और असुर का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था । ५ कुबेर का नाम ।—चरः,—वृष्टिः,—व्रतचरः,—व्रतिकः,—व्रतिन्, (पु०) वह पुरुष जो नीचे ताकता हो और स्वार्थ साधन में तत्पर तथा कपटयुक्त हो । ढोंगी । झुली । कपटी ।—जित्, (पु०)—निषूदनः, (पु०) १ भीम । २ श्रीकृष्ण ।—व्रतं, (न०) ढोंग । इम्भ ।

बुकुलः (पु०) १ मौलसिरी का पेड़ ।

बुकुलं (न०) मौलसिरी के फूल ।

बुकेरुका (स्त्री०) छोटी जाति का सारस ।

बुकोटः (पु०) सारस । बगला ।

बुटुः (पु०) लटका । झोकरा । [इस शब्द का प्रयोग तिरस्कार करने के लिये भी होता है यथा चौखन्खबटुः]

बुडिशं } (न०) मछली पकड़ने की बंसी ।
बुलिशं }

बुत (अव्यया०) एक अव्ययः जो शोक, खेद, दया, अनुकम्पा, सम्बोधन, इर्ष्य, सन्तोष, आश्चर्य और भर्त्सना के अर्थ में व्यवहृत किया जाता है ।

बुदरं (न०) बेर के फल ।

बुदरः (पु०) बेर का पेड़ ।

बुदरपाचनम् (न०) तीर्थस्थान विशेष ।

बुदरिका (स्त्री०) १ बेर का पेड़ या फल । २ हिन्दुओं के चार धामों में से एक, जिसे बुदरिका-श्रम या बुदरीनारायण कहते हैं ।

बुदरिकाश्रम (न०) हिन्दुओं का हिमालयपर्वत-स्थित तीर्थस्थान विशेष ।

बुदारी (स्त्री०) बेर का पेड़ ।

बुद्ध (ब० कृ०) १ बुद्धा हुआ । २ हथकड़ी बेड़ी से जकड़ा हुआ । ३ गिरफ्तार किया हुआ । पकड़ा हुआ । ४ कैदखाने में बंद । ५ पहिना हुआ । कमर में कसा हुआ । ६ रुका हुआ । रोका हुआ । दमन किया हुआ । ७ बनाया हुआ । ८ जुड़ा हुआ । मिला हुआ । ९ दृढ़ता से जमाया हुआ ।

—अंगुलित्र, —अंगुलित्राण, (वि०) दस्ताना पहिने हुए ।—अंजलि (वि०) हाथ जोड़े हुए ।

—अनुराग (वि०) प्रेम में बुँधा हुआ ।—

अनुशय, (वि०) पश्चाताप करने वाला ।—

अशङ्क, (वि०) शक्की । सन्दिग्ध ।—उत्सव,

(वि०) खुदी मनाने वाला ।—उद्यम,

(वि०) मिल कर सब करने वाला ।—कत्त,

—कट्य, (वि०) तैयार । तत्पर ।—कोप,

—मन्यु,—रोष, (वि०) १ क्रोधी । रोषान्वित ।

(वि०) १ कोपान्वित । २ क्रोध को दबा लेने

वाला ।—चित्त,—मनस्, (वि०) किसी और

मन को दृढ़ता से लगाने वाला ।—जिह्व, (वि०)

जीभ कीला हुआ ।—वृष्टि,—नेत्र,—लोचन,

(वि०) घूमने वाला । ताकने वाला ।—

नेपथ्य, (वि०) नाटकीय पोशाक पहिने हुए ।

—परिकर, (वि०) कमर कसे हुए । तैयार ।

—प्रतिज्ञ, (वि०) १ वचन दिये हुए । प्रतिज्ञा

किये हुए । २ दृढ़ता पूर्वक (किसी बात का)

निश्चय किये हुए ।—मुष्टि (वि०) १ कंजूस ।

लोभी । मूढ़ी बाँधे हुए ।—मूल, (वि०)

जिसने जड़ पकड़ ली हो। जो दड़ या अटल हो गया हो।—मौन, (वि०) खामोश। चुपचाप।
—राग, (वि०) अनुरागी।—वसति, (वि०) अपने वासस्थान को निर्दिष्ट करने वाला।—वाच, (वि०) जिसका बोलना बंद कर दिया गया हो। जवानबंद।—वैपथ्य, (वि०) धर-धर काँपता हुआ।—वैर, (वि०) घृणा करने वाला। वैर रखने वाला।—शिख, (वि०) १ जिसकी चोटी गाँठवायी या बंधी हुई हो। २ बालक।—स्नेह, (वि०) स्नेही। अनुरागी। प्रेमी।

बध् (धा० आत्म०) घृणा करना। नफरत करना।

बधिर (वि०) बहरा।

बधिरित (वि०) बहरा बनाया हुआ।

बधिरमन् (पु०) बहरापन। बधिरता।

बंधिन् (देखो बंधिन्)

बंधिः, बन्दिः (स्त्री०) १ बंधन। कैदखाना। २ बंदी, बन्दी (कैदी) बंधुआ।

बंध (धा० परस्मै०) [बध्नाति, बद्ध] १ बन्धे। बाँधना। गसना। पकड़ना। फँदे में फँसना।

कैद करना। ३ बेड़ी डालना। ४ रोकना। बंद करना। ५ पहिना। धारण करना। ६ आकर्षण करना। पकड़ना। गिरफ्तार करना। ७ लगाना। फेरना। ८ मिला कर बाँधना या गसना। ९ (इमारत या भवन) बनाना। १० (पथ) रचना। ११ पैदा करना। लगाना। (जैसे फलों का) १२ रखना।

बंधः (पु०) १ बंधन। २ बाल बाँधने का फीता या बन्धः (बारी)। ३ बेड़ी। जंजीर। ४ पकड़। गिरफ्तारी। ५ बनावट। ६ सम्बन्ध। मेल। ७ जोड़ना (हाथों का)। ८ पट्टी। १० मेलमिलाप। ११ प्रदर्शन। प्रकटन। १२ फँसाव। १३ परिणाम। १४ परिस्थिति। १५ मैथुन का आसन विशेष। १६ किनारी। चौखटा। १७ विशेष प्रकार की पथ-रचना। (खड्गबंध) १८। १९ शरीर। २० धरोहर।
—कारण, (न०) बेड़ी डालना। कैद करना।
—तंत्र, (न०) पूरी फौज या क्षत्रसिंघिनी सेना।
—स्तम्भः, (पु०) खंभ।

बंधक (न०) बंधन। कैदखाना।

बंधकः (पु०) १ बाँधने वाला। २ पकड़ने वाला।

बन्धकः ३ पट्टी। रस्सी। ४ बाँध। ५ धरोहर। ६ आसन। ७ विनमय। बदलौअल। ८ भङ्ग करने वाला। तोड़ने वाला। ९ प्रतिज्ञा। १० शहर।

बंधकी (स्त्री०) १ किनाल की। २ रंजी। बन्धकी (वेश्या) ३ हथिनी।

बंधन (न०) १ बाँधने की क्रिया। २ वह जो बन्धन किसी की स्वतंत्रता में बाधक हो। ३

फँसा रखने वाली वस्तु। ४ रस्सी। जंजीर। बैड़ी

५ जेलखाना। कैदखाना। ६ बध। हिंसा। ७

बंटुल। नाल। ८ राग। नस। ९ पट्टी।—

अगारः, (पु०)—आगारः, (पु०)—अगारः,

(न०)—आगरः, (न०)—आलयः, (पु०)

जेलखाना। कैदखाना।—अग्निः, (पु०) १

बंधन या पट्टी की गाँठ। फँदा। २ पशु बाँधने

की रस्सी।—पालकः,—रक्षिन्, (पु०) जेल-

खाने का दरोगा।—वेश्मन्, (न०) जेलखाना।

—स्थः, (पु०) कैदी। बंधुआ।—स्तम्भः,

(पु०) पशु बाँधने का खंभ।—स्थानं, (न०)

अस्तबल। गोशाला आदि।

बंधित (वि०) १ बंधा हुआ। २ कैद में पड़ा बन्धित हुआ।

बंधित्रः (पु०) १ कामदेव। २ चमड़े का पंख।

बन्धित्रः ३ तिल। दाग।

बन्धुः (पु०) १ नातेदार। भाई बिरादरी।

बन्धुः सम्बन्धी। २ पारिवारिक नातेदार [धर्मशास्त्र में

तीन प्रकार के बन्धु बतलाये गये हैं। अर्थात्

“आत्मबन्धु”, पितृबन्धु और “मातृबन्धु”]। ३

कोई भी किसी प्रकार का सम्बन्धी जैसे प्रवासबन्धु,

धर्मबन्धु आदि। ४ मित्र। ५ पति।

[यथा “वैदेषिबन्धोद्दयं विवहे”-रघुवंश ।]

६ पिता। ७ माता। ८ भाई। ९ बन्धुजीव

नामक वृक्ष। १० जो किसी जाति या पेशे से नाम

मात्र का सम्बन्ध रखता हो। इसका प्रयोग प्रायः

तिरस्कार सूचक होता है—यथा, “ब्रह्मबन्धु”।—

कृत्यं, (न०) भाई बिरादरी का कर्तव्य।—

सं० श० की०—७४

जनः (पु०) रिश्तेदार । जाति वाला ।—जीवः,
—जीवकः (पु०) एक वृक्ष का नाम ।—दत्तः,
(न०) स्त्रीधन विशेष ।—प्रीतिः, (स्त्री०)
१ भाई विरादरी का प्रेम । २ मित्र के प्रति प्रेम ।
—भावः, (पु०) १ मैत्री । भाईचारा । नाते-
दारी ।—वर्गः, (पु०) भाईबन्द ।—हीनः,
(वि०) भाई विरादरी या मित्र से रहित ।

बधुकः } (पु०) १ दुपहरिया का वृक्ष जिसमें लाल
बन्धुकः } रंग के फूल लगते हैं और जो बरसात में
फूलता है । २ वर्णसङ्कर ।

बधुका, बन्धुका } (स्त्री०) असती स्त्री । बिनाल
बधुकी, बन्धुकी } औरत ।

बधुता } (स्त्री०) १ बन्धु होने का भाव । २ भाई-
बन्धुता } चारा । ३ मैत्री । दास्ती ।

बधुदा } (स्त्री०) बिनाल औरत ।
बन्धुदा }

बधुर } (वि०) १ तरङ्गित । लहराता हुआ ।
बन्धुर } असमान । २ झुका हुआ । नवा हुआ ।
३ टेढ़ा । टेढ़ा मेढ़ा । ४ मनोहर । सुन्दर । खूब-
सूरत । ५ बहुरा । ६ अनिष्टकर । उपद्रवी ।

बधुरं } (न०) मुकुट । ताज ।
बन्धुरम् }

बधुरः } (पु०) १ हंस । २ सारस । ३ अर्कविशेष ।
बन्धुरः } ४ खली । ५ योनि । भग ।

बधुरा } (स्त्री०) बिनाल औरत ।
बन्धुरा }

बधुराः } (पु० बहुवचन) मुना हुआ अनाज या
बन्धुराः } कोई खाद्य पदार्थ ।

बधुल } (वि०) १ मुड़ा हुआ । झुका हुआ । २
बन्धुल } प्रसन्नकारक । हर्षप्रद । आकर्षक । सुन्दर ।

बधुलः } (पु०) १ वर्णसङ्कर । दोगला । २ रंड़ी
बन्धुलः } की दासी । बन्धूक वृक्ष ।

बधूकं } (न०) बन्धूक वृक्ष का फूल ।
बन्धूकम् }

बधूकः } (पु०) वृक्ष विशेष ।
बन्धूकः }

बधूर } (वि०) १ तरङ्गित । असम । २ झुका
बन्धूर } हुआ । मुड़ा हुआ । नवा हुआ । ३ प्रसन्न
कारक । हर्षप्रद । प्यारा ।

बधूरं } (न०) छेद । छिद्र ।
बन्धूरम् }

बन्धूनिः } (पु०) बन्धुजीव नामक वृक्ष । गुलदुपहरिया
बन्धूलिः } का पौधा ।

बन्ध } (वि०) १ बाँधने योग्य । बेड़िया डालने
बन्ध } लायक । क़ैद करने लायक । २ मिलाने योग्य ।
एक करने योग्य । ३ बाँधने या बनाने योग्य । ४
रोका हुआ । एकड़ा हुआ । गिरफ्तार किया
हुआ । ५ बाँझ । जिसमें कुछ भी पैदावार न हो ।
बंजर । बेकाम । ६ जो रजस्वला न हो । ७
वञ्चित । रहित ।

बन्ध्या } (स्त्री०) १ बाँझ औरत । २ बाँझ गौ ।
बन्ध्या } ३ बालकृष्ण ।—तनयः, (पु०) पुत्र,
(पु०)—सुतः, (पु०)—दुहितृ, (पु०)
—सुता, (स्त्री०) बाँझ स्त्री का पुत्र या पुत्री ।
[इसका प्रयोग केवल किसी असम्भावित वस्तु
के लिये किया जाता है ।]

बन्ध्रं } (न०) बन्धन । गाँस ।
बन्ध्रम् }

बन्ध्रवी (स्त्री०) दुर्गा देवी का नामान्तर ।

बन्ध्र (वि०) १ सौंख्य । भूरा । धवला । धौला ।
२ गंजा ।—धातुः, (पु०) १ सुवर्ण । सोना ।
२ गेरु ।—वाहनः, (पु०) चित्राङ्गदा के गर्भ
से उत्पन्न अर्जुन के पुत्र का नाम ।

बन्ध्रः (पु०) १ अग्नि । २ न्योला । ३ भूरा रंग ।
४ भूरे रंग के केशों वाला मनुष्य । ५ एक यादव
का नाम । ६ शिव । ७ विष्णु ।

बन्ध्र (धा० पर०) [बन्धति] जाना ।

बन्ध्रः } (पु०) शहद की मक्खी ।
बन्ध्रः }

बन्ध्राली (स्त्री०) मक्खी ।

बन्ध्रः (पु०) अनाज विशेष ।

बन्ध्र (धा० पर०) [बन्धति] चलना । जाना ।

बन्ध्रटः (पु०) राजमाष नाम का अनाज ।

बन्ध्रटी (स्त्री०) १ राजमाष नाम का धान्य । २
रंड़ी । वेश्या ।

बन्ध्रगा (स्त्री०) नीले रंग की मक्खी ।

बन्ध्रः (पु०) १ अनाज । जंगली । २ मूख ।

बबुरः (पु०) बबूल का पेड़ ।

बर्ह (धा० आत्म०) [बर्हते] १ बोलना । २ देना । ३ ढकना । ४ चोटिल करना । नाश करना । ५ बिछाना ।

बर्ह (न०) १ मयूर की पूंछ । २ पत्ती की पूंछ । बर्हः (पु०) ३ मोर की पूंछ के पर । ४ पत्ता । ५ अनुचर वर्ग ।—भारः (पु०) १ मोर की पूंछ । ३ मोरझल ।

बर्हणम् (न०) पत्ता ।

बर्हिः (पु०) अग्नि । (न०) कुश । वर्भ ।

बर्हिणः (पु०) मोर । मयूर ।—वाजः, (पु०) मयूर के पैरों से युक्त बाण । वह तीर जिसमें मोर के पंख लगे हों ।—वाहनः, (पु०) कार्तिकेय ।

बर्हिस् (पु० न०) १ कुश । वर्भ । २ कुश की शय्या । (पु०) १ अग्नि । २ प्रकाश । चमक । (न०) १ जल । २ यज्ञ ।—कैशः,—ज्योतिस्, (पु०) १ अग्नि । २ देवता ।—शुभन्, (पु०) अग्नि ।—सद्, (= बर्हिषद्) (वि०) कुशासन पर बैठा हुआ । (पु०) (बहुवचन) पितृगण ।

बल् (धा० परस्मै०) [बलति] स्वाँस लेना । जीवित रहना । २ अनाज एकत्र करना । (उभय०) [बलति,—बलते] १ देना । चोटिल करना । मार डालना । ३ बोलना । ४ देखना । चिन्हित करना । (निज०) [बालयति,—बालयते] पालन पोषण करना । परवरिश करना ।

बलं (न०) १ बल । ताकत । जोर । शक्ति । २ उग्रता । प्रचण्डता । ३ सेना । सैन्यदल । ४ (शरीर की) मुटाई । मौदापन । ५ शरीर । आकार । ६ बौर्य । धातु । ७ खून । ८ गोंद । राल । लोबान । ९ अँखुआ । अदुर ।—अङ्गकः, (पु०) वसन्त ऋतु ।—अविन्ता, (स्त्री०) बलराम की बाँसुरी ।—अटः, (पु०) मूँग ।—अभ्यत्तः, (पु०) १ चमूपति । सेना का बड़ा अफसर । २ समरसचिव ।—अनुजः, (पु०) श्रीकृष्ण ।—अभ्रः, (पु०) बादल के आकार

में सेना ।—अरातिः, (पु०) इन्द्र ।—अवलेपः, (पु०) बलवान होने का अभिमान ।—उशः,—असः, (पु०) १ चक्षु रोग । कफ । २ गले की सूजन ।—आत्मिका, (स्त्री०) हस्तिशुण्डी या सूरजमुखी ।—आहः, (पु०) जल पानी ।—उपपन्न, —उपेत, (वि०) बलवान । ताकतवर ।—आघ्रः, (पु०) सेनाओं का समूह । अनेक सेनाएं ।—क्षोभः, (पु०) शत्रु । विप्लव ।—चक्रं, (न०) १ साम्राज्य । राष्ट्र । २ सेना ।—जं, (न०) १ नगरद्वार । फाटक । २ खेत । ३ अनाज । अनाज का ढेर । ४ युद्ध । लड़ाई । ५ गरी । मिगी ।—जा, (स्त्री०) १ पृथिवी । २ सुन्दरी स्त्री । ३ चमेली विशेष ।—द्, (पु०) बैल ।—देवः, (पु०) १ पवन । हवा । २ श्रीकृष्ण के बड़े भाई का नाम ।—द्विष्, (पु०)—निषूदनः, (पु०) इन्द्र ।—पतिः, (पु०) सेनापति ।—ग्रसूः, (पु०) बलराम की माता रोहिणी जी ।—भद्रः, (पु०) १ मज्जबुत आदमी । २ बैल विशेष । ३ बलराम । ४ लोभ वृद्ध ।—भिद्, (पु०) इन्द्र ।—भृत्, (वि०) मज्जबुत । बलवान ।

बलः (पु०) १ काक । कौआ । २ कृष्ण के बड़े भाई बलराम । ३ एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था ।—अग्रः, (पु०) सेनानायक । चमूपति ।—रामः, (पु०) बलदेव जी का नामान्तर ।—विन्यास, (पु०) सैन्यव्यूह ।—व्यसनं, (न०) सेना की हार ।—सूदनः, (पु०) इन्द्र ।—स्थः, (पु०) थोड़ा । सिपाही ।—स्थितिः, (स्त्री०) पड़ाव । छावनी । शाही पड़ाव ।—हन, (पु०) इन्द्र ।—हीन, (वि०) बलशून्य । निर्बल । कमजोर ।

बलत्त (वि०) सफेद ।—शुः, (पु०) चन्द्रमा । बलत्तः (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।

बलधत् (वि०) १ ताकतवर । बलवान । २ मज्जबुत । रोबीला । ३ सघन । गाढ़ा । ४ सुख्य । प्रधान । व्याप्त । ५ अधिक आवश्यक । अधिक भारी । (अव्यया०) १ ज़बरदस्ती । बलपूर्वक । २ अत्यधिक । अतिशय ।

बला (स्त्री०) एक मंत्र या विद्या का नाम, जिसके

प्रभाव से योद्धा को युद्ध के समय भूल या प्यास नहीं रखाती । [यह मन्त्र या विद्या विश्वामित्र ने शरामचन्द्र जी और शालक्ष्मण जी को सिखायी थी ।

बलाकः (पु०) } १ बगली । २ (स्त्री०) बलाका (स्त्री०) } स्वामिनी ।

बलाकिका (स्त्री०) छोटी जाति का बगला या सारस ।

बलाकिन् (वि०) जहाँ बगलों या सारसों की बहुतायत हो ।

बलात्कारः (पु०) १ जबरदस्ती करना । २ किसी स्त्री का सतीत्य नष्ट करना । ३ अन्याय । ४ ऋणी को पकड़ कर बैटाना ।

बलात्कृत (वि०) जिसके साथ ज़ोरजुल्म या बलात्कार किया गया हो ।

बलाहकः (पु०) १ बादल । २ बगला या सारस । ३ पहाड़ । ४ प्रलयकालीन सात बादलों में से एक का नाम ।

बलिः (पु०) १ किसी देवता को उत्सर्ग किया कोई खाद्य पदार्थ । २ भूतयज्ञ । ३ पूजन । अर्घ्य । ४ उच्छिष्ट । ५ नैवेद्य । ६ कर । ७ देव । खिराज । ७ चोरी की डंढी । ८ एक प्रसिद्ध दैत्य का नाम, जो विरोचन का पुत्र था । इसी के बिये भगवान् विष्णु ने वामनावतार धारण किया था । (स्त्री०) भुरी । बल । सिद्धि । — कर्मन्, (न०) १ भूतयज्ञ । समस्त प्राणियों को भोजन देना । २ राजकर का सुगतान । — दानं, (न०) देवता को नैवेद्य का अर्पण । प्राणियों को भोज्यपदार्थ प्रदान । — ध्वंसिन्, (पु०) विष्णु । — नन्दनः, — पुत्रः, — सुतः, (पु०) बलिराज के पुत्र बाणसुर का नामान्तर । — पुष्टः, (पु०) — भोजनः, (पु०) काक । कौश्या । — प्रियः, (पु०) लोभवृत्त । — बन्धनः (पु०) विष्णु । — भुज्, (पु०) १ काक । २ गौरैया । सारस । बगला । — मन्दिरं, — वेश्मन्, — स्वप्नन्, (न०) पाताल लोक । राजा बलि के रहने का स्थान । — हन्, (पु०) विष्णु । — हरणं, (न०) प्राणिमात्र को आहार प्रदान ।

बलिन् (वि०) बलवान् । ताकतवर । पु० । १ मैसा । २ शूकर । ३ ऊट । ४ बैल । ५ घोड़ा । ६ चमेली विशेष । ७ कक । ८ बलराम जी का नामान्तर ।

बलिन्दमः } (पु०) विष्णु ।
बलिन्दमः }

बलिमत (वि०) १ पूजन का या बलिदान का संरञ्जाम ठीक करने वाला । २ कर वसूल करने वाला ।

बलिमन् (पु०) शक्ति । ताकत ।

बलिर्वद (न०) देखो बलीवर्द ।

बलिष्ट (वि०) अतिशय बलवान् ।

बलिष्टः (पु०) ऊँट । उष्ट्र ।

बलिष्ठा (वि०) अपमानित । तिरस्कृत ।

बलीकः (पु०) छप्पर की मुड़ेर ।

बलीयस् (वि०) [स्त्री० — बलीयसी] १ मजबूत । ताकतवर । २ अधिक प्रभाव वाला । ३ अधिकतर आवश्यक ।

बलीवर्दः } (पु०) सौँ । बैल ।
बलीवर्दः }

बल्य (वि०) १ मजबूत । ताकतवर । २ बलप्रद ।

बल्यं (न०) वीथी । धातु ।

बलयः (पु०) बौद्ध भिक्षुक ।

बलुवः (पु०) १ खाला । अहीर । गोपाल । २ पाचक । रसोद्घा । ३ भीम का फर्जी नाम जो उन्होंने अज्ञातवास के समय रखा था । — गुवतिः, — गुवती, (स्त्री०) गोपी ।

बलुवी (स्त्री०) गोपी । म्वालिनी । अहीरिनी ।

बल्वजः (पु०) } एक जाति की मैटे वृक्ष की बास ।
बल्वजा (स्त्री०) }

बल्हिकाः } (बहुवच०) एक देश विशेष और
बल्हिकाः } उसके अधिवासी ।

बल्क्य (वि०) पूर्णवयस्क । जैसे गाय का बच्छा ।

बल्क्यणी }
बल्क्यणी } १ (स्त्री०) गौ जिसका बच्छा बड़ा हो ।
बल्क्यणी } २ गौ जिसके कई एक बच्चे हों ।
बल्क्यिनी }

बस्तः (पु०) बकरा । — कर्माः, (पु०) साल वृक्ष ।

बहल (वि०) १ अत्यधिक । विपुल । प्रचुर । बड़ा ।

मजबूत । २ गाढ़ । घना । ३ लंबे लंबे बालों वाली
(जैसे घुँघु) ४ सज्ज । उड़
त (पु०) उख विशेष ।

जा (स्त्री०) बड़ी इलायची ।

स् (अन्वया०) १ बाहिर की ओर । बाहिरी । २
द्वार के बाहिर । ३ बाहिर की ओर से ।

(वि०) [स्त्री०—बहु या बह्वी] विपुल ।
प्रचुर । २ बहुत से । अनेक । ३ सम्पन्न । बहुतायत
से ।—अप-अप, (वि०) तरल । पनीला ।—
अपत्य, (वि०) अनेक सन्तानों वाला ।—अपत्यः,
(पु०) १ शूकर । २ चूहा । घंस ।—अपत्या
(स्त्री०) कई बार की व्याधी हुई गौ ।—आशिन
(वि०) पेड़ । भोजनभट्ट ।—उदकः, (पु०)
एक प्रकार का संन्यासी ।—ऋच्, (स्त्री०) ऋग्वेद ।
—एनस्, (वि०) बड़ा पापी ।—कर, (वि०)
मशगूल । कामधंधे में लगा हुआ ।—करः, (पु०)
१ महतर । सफाई करने वाला । २ ऊँट ।—करी,
(स्त्री०) माह । बकनी ।—कालीन, (वि०)
पुरातन । पुराना ।—कूर्चः, (पु०) नारियल
का वृक्ष विशेष ।—गन्धदा, (स्त्री०) सुसक ।
कस्तूरी ।—गन्धा, (स्त्री०) १ यूथिका लता ।
२ चम्पा की कली ।—जल्प, (वि०) बानूनी ।
बकवादी ।—दक्षिण, (वि०) १ जिसमें बहुत
सा धन दिया जाय । २ उदार ।—दायिन्, (वि०)
उदार ।—दुग्ध, (वि०) बहुत दूध देने वाली ।
—दुग्धः, (पु०) गोहूँ ।—दुग्धा, (स्त्री०)
बहुत दूध देने वाली गौ ।—दृश्वन्, (वि०) बड़ा
अनुभवी ।—धारं, (न०) इन्द्र का वज्र ।—
धेनुर्कं (न०) बहुत सी गौयें ।—नादः, (पु०)
शंस ।—पत्रः, (पु०) लहसुन । लहसन ।—पत्रं,
(न०) सुइवर । अन्नक । अवरक ।—पत्री,
(स्त्री०) तुलसी वृक्ष ।—पट्ट, पाट्ट, पादः,
(पु०) बट वृक्ष ।—पुष्पः, (पु०) १ मूँगा का
वृक्ष । २ नींबू का पेड़ ।—प्रज, (वि०) अनेक
सन्तानों वाला ।—प्रजः, (पु०) १ शूकर । २
मूँज घास ।—प्रद, (वि०) अतिशय उदार ।—
प्रसूः, (स्त्री०) अनेक बच्चों की माता ।—प्रेयसी,
(वि०) अनेक प्रेमियों वाली ।—फलः, (पु०)

कन्दम्व वृक्ष । बल (पु०) शर ।—भाण्ड
(वि०) बड़ा भाण्डवान् ।—भापिन्, (वि०)
बकवादी । गप्पी ।—मञ्जरी, (स्त्री०) तुलसी ।
—मल, (वि०) अतिशय माननीय ।—मलं,
(न०) सीसा । जस्ता ।—मानः, (पु०)
अतिशय मान ।—मानं, (न०) वह पुरस्कार
जो बड़े से छोटे को मिले ।—मान्य, (वि०)
सम्माननीय । पूज्य ।—माय, (वि०) मायावी ।
बूली । कपटी । विश्वासघाती ।—मार्गगा,
गंगा नदी ।—मार्गी, (स्त्री०) वह जगह जहाँ
अनेक मार्ग मिलते हैं ।—मूत्र (वि०) प्रमेह
रोग से पीड़ित ।—मूर्धन्, (पु०) विष्णु का
नामान्तर ।—मूल्य, (वि०) कीमती । बहुत
दामों का ।—मृग, (वि०) जहाँ बहुत से हिरन
हों । हिरनों की बहुतायत ।—रूप, (वि०) १
अनेक रूप धारण करने वाला । २ चितकवरा ।—
रूपः, (पु०) १ सरद । गिरगट । छपकली २
केश । ३ सूर्य । ४ शिव । ५ विष्णु । ६ ब्रह्मा । ७
कामदेव ।—रेतस्, (पु०) ब्रह्मा ।—रोमन्,
(पु०) मेड़ा । भेड़ा ।—लवणां, (न०) लुनिया
जमीन ।—वचनं, (न०) व्याकरण की एक
परिभाषा जिससे एक से अधिक वस्तुओं के होने का
ज्ञान होता है । जमा ।—वर्ण, (वि०) अनेक
रंगों का ।—विघ्न, (वि०) अनेक विघ्न या
बाधाएँ डालने वाला ।—विध, (वि०) अनेक
प्रकार का ।—वीजं, (वीज) (न०) शरीर ।
सीताफल ।—व्रीहि, (वि०) १ बहुत चाँबलों
वाला ।—व्रीहिः, (पु०) छः प्रकार के समानों में
से एक । इसमें दो या अधिक पदों के मिलने से
जो पद बनता है वह किसी अन्य पद का विशेषण
होता है । शत्रुः, (पु०) गोरैया चिड़िया ।—
शल्यः, (पु०) खदिर विशेष ।—शृङ्गः, (पु०)
विष्णु का नामान्तर ।—श्रुत, (वि०) १ जिसने
बहुत कुछ सुना हो । अनेक विषयों का ज्ञानकार ।
बड़ा विद्वान् । २ वेदों का ज्ञान ।—सन्ततिः,
(पु०) एक जाति का बाँस ।—सारः, (पु०)
खदिर वृक्ष ।—सूः, (पु०) १ अनेक सन्तति
वाली जननी । २ शूकरी ।—सूतिः (स्त्री०) १

अनेक वज्र की माना । २ गौ जा बहुत बाढा हो
स्वन (पु०) १ उल्ल । बहुक (पु०)
१ सूर्य । २ अर्क । सदा । ३ कैकदा । ४ कुक्षुट
जातीय पक्षी विशेष ।

बहुतर (वि०) अतिशय । अधिकतर ।

बहुतम (वि०) अतिशय प्रचुर ।

बहुतः (अव्यया०) अनेक पहलुओं से ।

बहुता } विपुल । प्रचुर । अनेकता
बहुत्वं }

बहुतिथ (वि०) अधिक । लंबा । बहुत ।

बहुधा (अव्यया०) १ अनेक ढंगों से । बहुत प्रकार
से । २ बहुत करके । प्रायः । अक्सर । ३
अधिकतर अवसरों पर । ४ अनेक स्थानों या
विशेषों में ।

बहुल (वि०) १ प्रचुर । अधिक । ज्यादा । २ गाढ़ा ।
सघन । कसा हुआ । ३ काला ।—आलाप,
(वि०) बातनी । बकवादी ।—गन्धा, (स्त्री०)
इलायची ।

बहुलं (न०) १ आकाश । २ सफेद गोलमिर्च ।

बहुलः (पु०) १ कृष्ण पक्ष । २ अग्नि ।

बहुला (स्त्री०) १ गौ । २ इलायची । ३ नील का
पौधा । ४ कृत्तिका नक्षत्र ।

बहुलिका (स्त्री० बहु०) कृत्तिका नक्षत्र पुंलिंग ।

बहुगुणस् (अव्य०) १ अधिक । अधिकता से । प्रचुरता
से । २ अक्सर । बहुधा । ३ साधारणतः । मामूली
तौर से ।

बाकुलं (न०) बकुल वृक्ष के फल ।

बाड् (धा० आत्म०) [बाडते] १ स्नान करना । २
द्ववना ।

बाडवः देखो बाडवः ।

बाडवेय देखो बाडवेय ।

बाडव्यं देखो बाडव्यम् ।

बाढ (वि०) १ दब । मजबूत । २ उच्च ।

बाढं (अव्यया०) १ निश्चय रूप से । अवश्य ।
निश्चय । २ आह । हाँ । ३ बहुत अच्छा । तथास्तु ।
४ अतिशय । अत्यधिक ।

बाणः (पु०) १ तीर । नरकुल । सरपट । २ तीरका । ३
तीर की वह नौका जिसमें पर लगे हों । ४ गाय

का ऐन था यत्र शर्पाय विशेष । ६ दैत्यराज बलि
के पुत्र का नाम । ७ हयवर्धन राजा के एक दरवारी
कपि का नाम । ८ पौंच संख्या ।—असनं, (न०)
कमान । धनुष ।—आवलिः, —आवली,
(स्त्री०) १ तीरों की कतार ।—आश्रयः, (पु०)
तरकस । तूणीर ।—गोचरः, (पु०) तीर की
मार ।—जालं, (न०) अनेक तीर ।—जित्,
(पु०) विष्णु ।—तूणः—धिः, (पु०) तरकस
तूणीर ।—पाणि, (वि०) धनुर्धर ।—पातः,
(पु०) १ भूमि का माप । जितनी दूर तीर जा
कर पड़े । २ तीर की मार ।—मुक्तिः, (पु०)
—मोक्षण, (न०) मारना ।—योजनं, (न०)
तरकस ।—वृष्टिः (स्त्री०) बाणों की वर्षा ।—
वारः, (पु०) कवच ।—सुताः, (स्त्री०) उषा
जो बाणासुर की बेटी थी ।—हन्, (पु०) विष्णु ।

बाणिनी देखो बाणिनी ।

बादर (त्रि०) [स्त्री०—बादरी] बेरवृक्ष सम्बन्धी ।
२ कपास का पेड़ ।

बादरं (न०) १ बेर का पेड़ । २ रेशम । ३ जल ।
सूती कपड़ा । ४ दहिनावर्ती शङ्ख ।

बादरः (पु०) रुई का झाड़ ।

बादरा (स्त्री०) कपास का पौधा ।

बादरायणः, (पु०) वेदान्त का नामान्तर ।—सूत्र,
(न०) वेदान्त दर्शन ।—सम्बन्धः, (पु०)
कलित रिरता ।

बादरायणिः (पु०) शुकदेव जी का नाम, जो व्यास
के पुत्र हैं ।

बादरिक (वि०) [स्त्री०—बादरिकी] बेरों के
बीन कर एकत्र करने वाला ।

बाध् (धा० आत्म०) [स्त्री०—बाधते, बाधित] १
सताना । अत्याचार करना । जुल्म करना । दवाना ।
छेड़छाँड़ करना । कष्ट देना । २ सामना करना ।
मुकाबला करना । ३ आक्रमण करना । ४ भङ्ग
करना । ५ अनिष्ट करना । घायल करना । ६ भगा
देना । हटा देना । ७ खारिज करना । बरतारफ
करना । नष्ट करना ।

बाधः (पु०) १ पीड़ा । कष्ट । सन्ताप ।
बाधा (स्त्री०) १ अत्याचार । २ छेड़खानी ।

गड़बड़ी । ३ हानि । अमिष्ट । चोट । ४ भय ।
खतरा । जोखों । ५ मुकाबला । सामना । ६ एत
राज । आपत्ति । ७ खरडन । प्रतिवाद ।

वाधक (वि०) [स्त्री०—वाधिका] १ दुःखदायी ।
पीड़ाकारी । २ छेड़छाड़ करने वाला । ३ मिटाने
वाला । मेंटने वाला । ४ वाश डालने वाला ।

वाधनं (न०) १ अत्याचार । छेड़खानी । चिढ़ । गड़-
बड़ी । कष्ट । पीड़ा । २ खरडन । ३ स्थानान्तर-
करण । ४ प्रतिवाद ।

वाधना (स्त्री०) कष्ट । पीड़ा । गड़बड़ी । चिन्ता
वाधित (वा० कृ०) अत्याचार किया हुआ । चिढ़ाया
हुआ । पीड़ित । ३ मुकाबला किया हुआ । सामना
किया हुआ । ४ रोका हुआ । बंद किया हुआ । ५
बरतारफ किया हुआ । मँसूक किया हुआ । वारिज
किया हुआ । ६ खरडन किया हुआ ।

वाधियं (न०) बहिरापन ।

वाधिकिनेयः } (पु०) दोगला । बर्षसङ्कर ।
बान्धकिनेयः }

वाधयः } १ रिस्तेदार । सगा । नातेदार । २ मान्
बान्धवः } पत्नी नातेदार । ३ मित्र । ४ भाई ।—
जनः, (पु०) नातेदार । नातेगोते का ।

वाधव्यम् (न०) सम्बन्ध । नातेदारी । रिस्तेदारी ।

वाध्रवी (स्त्री०) दुर्गा देवी का नामान्तर ।

वाध्रवीरः (पु०) १ आम का गूदा । २ टीन । जस्ता ।
३ खैलुआ । अक्षुर । ४ वेस्यापुत्र ।

वाह्वि (वि०) [स्त्री०—वाह्वी] मोर की पूँछ के परों
का बना हुआ ।

वाह्व्यः } (पु०) जरासन्ध का नाम ।
वाह्व्यः }

वाह्व्यत (वि०) [स्त्री०—वाह्व्यती] बृहस्पति
सम्बन्धी । बृहस्पति से उत्पन्न । बृहस्पति का ।

वाह्व्यतय (वि०) बृहस्पति सम्बन्धी ।

वाह्व्यतय (न०) पुण्य नक्षत्र ।

वाह्व्यतयः (पु०) १ बृहस्पति का शिष्य । २ उन
बृहस्पति का अनुयायी जिन्होंने अद्वैत का उग्रवाद
लोगों को सिखलाया था । जड़वादी ।

वाह्वी (वि०) [स्त्री०—वाह्वी] मयूर सम्बन्धी
या मयूर से उत्पन्न ।

वाल (वि०) १ बालक । लड़का । जो जवान न हुआ

हो । २ हाल का उगा हुआ । यथा सूर्य । ३
बालकों का सा । ४ अज्ञानी । मूर्ख ।—अग्रहाः,
(पु०) लड़का । मोर । अर्कः, (पु०) हाल
का निकला सूर्य ।—अवस्था, (स्त्री०)
लड़कपन ।—आलयः, (पु०) प्रायः कालीन भूप ।
—इन्दुः, (पु०) चन्द्रमा । (प्रतिपदा द्वितीया का ।
—हृष्टः, (पु०) बेर का पेड़ । —उपहारः,
(पु०) लड़कों की चिक्किमा । —कदली,
(स्त्री०) छोटी जाति के केले का वृक्ष ।
—कृमिः, (पु०) जूँ । चिलुआ ।—क्रीडनकं,
(न०) बालक का खिलौना ।—क्रीडनकः,
(पु०) १ गेंद । २ शिव ।—क्रोडा, (स्त्री०)
बालक का खेड़ । लड़क खेल ।—खिल्यः,
(पु०) पुराणों के अनुसार ब्रह्मा के रोम से
उत्पन्न ऋषि समूह जिनके शरीर का आकार शंखूटे
के बराबर है । इस समूह में साठ हजार ऋषियों
की गणना है । ये सब के सब बड़े तपस्वी हैं ।
—गर्भिणी (स्त्री०) वह गौ जो प्रथम बार ब्याली
हो ।—चरितं (न०) १ लड़कों के खेल ।—
चर्यः (पु०) कार्तिकेय ।—चर्या (स्त्री०)
बालक की चर्या ।—तनयः (पु०) खदिर का
वृक्ष ।—तंत्रं, (न०) बालकों के लालन पालन
आदि की विधि । कौमार श्रुत्य ।—दलकः
(पु०) खदिर का पेड़ ।—पाश्या, (स्त्री०)
१ तिर के केशों में धारण करने का पुराने रंग का
एक गहना । २ छोटी में गँथने की मोती की लड़ी ।
—पुष्टिकः,—पुष्टी, (स्त्री०) चमेली ।—बोधः
(पु०) कोई पुस्तक जो बालकों या अनुभव
शून्य लोगों के पढ़ने के लिये हो ।—भद्रकः
(पु०) द्विप विशेष ।—भारः (पु०) लंबी
और बालोंदार पूँछ ।—भावः, (पु०) लड़कपन ।
—भैषज्यं (न०) सुर्मा विशेष ।—भोज्यः
(पु०) मटर । चना ।—मृगः (पु०) हिरन
का बच्चा ।—यज्ञोपवीतकं (न०) जनेऊ जो
बन्धःस्थल के ऊपर होकर पहिना जाय ।

वालः (पु०) १ बच्चा । २ अवयस्क । नावांजित ।
३ बड़ेडा । ४ मूर्ख । ५ पूँछ । ६ केश । ७ पाँच
वर्ष का हाथी । ८ सुगन्धद्रव्य विशेष ।

रान (२०) वैदूर्यमणि वस्त (पु०)
१ बाग बाछा । २ कव्तर वायज (न०)
वैदूर्यमणि ।—वासस् (न०) कनी वस्त्र ।
—वाह्यः, (पु०) जंगली वस्त्र ।—विधवा,
(स्त्री०) वह स्त्री जो बाल्यावस्था ही में विधवा
हो गयी हो ।—व्यजनं (न०) चौरी । चौर । चैवर ।
—सूर्यः, —सूर्यकः, (पु०) वैदूर्यमणि ।—हत्या
(स्त्री०) बालक का बध ।—हस्तः (पु०)
बालदार पूँछ ।

बालक (वि०) [स्त्री०—बालिका] १ लड़के की तरह ।
जो जवान न हुआ हो । २ अज्ञानी ।

बालकं (न०) अँगूठी ।

बालकः (पु०) १ बच्चा । लड़का । २ अपासवयस्क ।
नाबालिग । ३ अँगूठी । मूर्ख । मूढ़ । ४ बलघ्न ।
कङ्कण । ५ घोड़ा या हाथी की पूँछ ।

बाला (स्त्री०) १ लड़की । २ वह युवती जो १६
वर्ष से कम उम्र की हो । ३ युवती स्त्री । ४ चमेली
विशेष । ५ नारियल का वृत्त । ६ धीमवार । घृत-
कुआरी । ७ छोटी इलायची । ८ हस्ती ।

बालिः (पु०) बानरराज सुग्रीव के बड़े भाई और
अहन् के पिता का नाम ।—हन्, —हन्तु (पु०)
श्रीरामचन्द्र ।

बालिका (स्त्री०) १ लड़की । २ बाली की गाँठ ।
३ छोटी इलायची । ४ रेती । ५ पत्तों की खरभर ।

बालिन् (पु०) बानरराज बालि ।

बालिनो (न०) अभिनी नक्षत्र ।

बालिमन् (पु०) लड़कपन ।

बालिश (वि०) १ लड़कपन । मूर्खता । २ जवान ।
३ मूर्ख । अज्ञानी । ४ अपावधान ।

बालिशं (न०) लकिया ।

बालिशः (पु०) १ मूर्ख । मूढ़ । २ बालक । बच्चा ।
लड़का ।

बालीश्वं (न०) १ लड़कपन । जवानी । २ मूर्खता ।
बेवकूफी ।

बाली (स्त्री०) कान का अभूषण विशेष ।

बालीशः (पु०) मूत्र को रोक रक्ता ।

बालुः (पु०) } सुगन्ध द्रव्य विशेष ।
बालुकं (न०) }

बालुका (स्त्री०) देखो बालुका ।

बालुकी
बालुकी
बालुकी
बालुकी
बालुकी } (स्त्री०) एक प्रकार की ककड़ी ।

बालुकः (पु०) एक प्रकार का विष ।

बालेय (वि०) [स्त्री०—बालेयो] १ बलि देने योग्य ।
२ केमल । मुलायम । नरम । बालि के वंश का ।

बालेयः (पु०) गधा । रासभ ।

बाल्यं (न०) १ लड़कपन २ मूर्खता । मूढ़ता ।

बाल्हकं
बाल्हिकं
बाल्हिकं } (न०) १ केसर । २ हींग ।

बाल्हिकः (पु०) १ बाल्हकों का राजा । २ बलखबुखारे
का घोड़ा ।

बाल्हिकाः
बाल्हिकाः
बाल्हिकाः } (पु० बहु०) १ एक देश विशेष के
अधिवासियों की संज्ञा ।

बाल्हिः (पु०) बलख-बुखारा देश ।

बाष्पः (पु०) } १ आँसू । २ भाफ । कोहरा । ३
बाष्पं (न०) } लोहा—अम्यु, (न०) आँसू ।
—कण्ठ, (वि०) गदगद् कण्ठ ।—मोक्षः,
(पु०)—मोचनं, (न०) आँसू बहाना ।

बास्तं (वि०) [स्त्री०—बास्ती] बकरे का या बकरे
से निकला हुआ ।

बाहः (पु०) १ बाँह । २ घोड़ा ।

बाहा (स्त्री०) बाँह ।

बाहीकः (पु० बहु०) पंजाब का एक निवासी ।

बाहीकाः (पु०) १ पंजाबी लोग । २ बैल ।

बाहुः (पु०) १ बाँह । २ कलाई । ३ पशु के अगले
पैर । ४ चौखट का बाजू ।

बाहू (द्वि०) आर्द्रा नक्षत्र ।—कुण्ड, —कुण्ड, (वि०)

वह जिसका हाथ दृढ़ हो । कुंजा ।—कुन्धाः,
(पु०) पक्षी का बाजू । डैना ।—चापः, (पु०)
फाँसला जो हाथों से नापा हुआ हो ।—जः,
(पु०) १ बन्धन । २ तोता । जः, (पु०)
—जः, (न०)—जः, (न०) बाहु को बचाने
के लिये कवच विशेष ।—पाशः, (पु०) मल्लयुद्ध
का एक पेच ।—प्रहरणम्, (न०) धूसों की

लड़ाई । घुसघुसला ।—बल (न०) बाँह की शक्ति । कुम्बत बाजू ।—भूषण, —भूषा (स्त्री०) बाजूबंद ।—भेदिन, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।—मूलं (न०) बगल ।—युद्धं (न०) मल्ल युद्ध ।—योधः, योधिन् (पु०) धूसों से लड़ने वाला ।—लता, (स्त्री०) बाहु जैसी लता ।—वीर्य, (न०) बाँह का जोर ।—अय्यायामः, (पु०) कसरत विशेष ।—शालिन्, (पु०) १ शिव । २ भीम ।—शिखरं, (न०) कंधा ।—सम्भवः, (पु०) चतुर्थ जाति का आदमी ।—सहस्रभृन्, (पु०) कार्तवीर्य राजा ।

बाहुकः (पु०) १ बंदर । २ राजा नल का बदला हुआ नाम ।

बाहुगुण्यं (न०) अनेक गुणों की सम्पन्नता ।

बाहुदन्तं (न०) स्मृति जिसके रचयिता इन्द्र कहे जाते हैं ।

बाहुदन्तयः (पु०) इन्द्र ।

बाहुदा (स्त्री०) एक नदी का नाम ।

बाहुभाष्य (न०) बकनादीपन । बाहुनीपन ।

बाहुरूप्यं (न०) अनेकता । विभिन्नता ।

बाहुलः (पु०) १ अग्नि । २ कार्तिक मास ।

बाहुलं (न०) १ अनेकता । २ हाथ के लिये परित्राण ।

—ग्रीवः, (पु०) मोर । मयूर ।

बाहुलकं (न०) अनेकता ।

बाहुलेयः (पु०) कार्तिकेय ।

बाहुल्यं (न०) विपुलता । प्राचुर्य ।

बाहुबाह्वि (अव्यया०) हाथपाँही ।

बाह्य (वि०) १ बाहर का । बाहिरी । २ अजनबी । अपरिचित । विदेशी । ३ समाज बहिष्कृत ।

बाह्यः (पु०) १ अजनबी । विदेशी । २ पतित । जाति से निकाला हुआ ।

बाह्यव्यं (न०) ऋग्वेद की परम्परागत शिक्षा ।

विट् (धा० परस्मै०) (वेदनि) १ शपथ खाना । २ शपथदेना । ३ विज्ञाना ।

विट्कं (न०)

विट्कः (पु०)

विट्का (स्त्री०)

बलतोड़ । फोड़ा ।

विट् (न०) लवण विशेष ।

विडालः (पु०) १ दिही । २ अन्न के डेला ।—

पदः, (पु०) —पदकं, (न०) तौल विशेष जो १६ माशे की होती थी ।

विडालकं (न०) पीलीभरहस ।

विडालकः (पु०) १ बिल्ली । पलकों पर लोप चढ़ाने की क्रिया ।

विडौजस् (पु०) इन्द्र ।

विंदु (धा० परस्मै०) [विन्दति] १ बीरना ।

विन्दु (न०) २ विभाजित करना ।

विंदुः (पु०) १ बूँद । कतरा । सूक्ष्म परिमाण ।

विन्दुः (न०) २ बिंदी । विन्दु । ३ हाथी पर रंगीन वस्त्र जो उसे सजाने को बनायी जाती हैं । ४ शून्य ।

सिफर ।—चित्रकः, (पु०) चित्तल । बारहसिंगा ।

—जालं, —जालकं, (न०) १ अनेक विन्दु ।

२ हाथी के नाथे और सूँड़ का चित्रण ।—तंत्रः, (पु०) १ पाँता । २ शतरंज की विद्या ।

—देवः, (पु०) महादेव ।—पञ्चः, (पु०)

भोजपत्र का वृक्ष विशेष ।—फलं, (न०)

मोती ।—रेखकः, (पु०) १ अनुस्वार । २ पक्षी

विशेष ।—घासरः, (पु०) गर्भस्थापन का दिवस ।

विज्योकः (पु०) अभिमान या अहङ्कारवश अपनी प्रेयसी की ओर से अनास्था । हावभाव ।

विमिस्ता (स्त्री०) भीतर प्रवेश करने की इच्छा ।

विभीषणः (पु०) लङ्कापति रावण के सब से छोटे भाई का नाम ।

विभ्रजुः } (पु०) अग्नि । आग ।

विभ्रजितपुः } (पु०) अग्नि । आग ।

विचः, विम्वः (पु०) १ चन्द्रमा का या सूर्य का

विचं, विम्वम् (न०) १ मण्डल । २ मण्डल ।

गोलाकार कोई वस्तु । ३ मूर्ति । छाया । परकाई ।

४ दर्पण । ५ घड़ा । (न०) कुंदरु ।—अगोष्ठः,

(वि०) । = (चर्मोष्ठं चिम्वोष्ठं) जिसके

कुंदरु के फल जैसे लाल ओठ हों ।

विचकं (न०) १ चन्द्र या सूर्य मण्डल । २

विचकम् (न०) कुंदरु फल ।

विचिन (वि०) १ प्रतिष्ठाया पड़ा हुआ । २

विचित्र (वि०) चित्र खींचा हुआ ।

विल (धा० उभय०) [विलति विलयति—विलयते]
बीडना । फाटना । भाडना । ओं टुकड़ करना ।

विल (न०) १ सूरख । छेद । भाग । माँद । २
गदा । गर्त । ३ फिरी । दरार । निकास । मुहाना ।
४ गुहा ।

विलः (पु०) इन्द्र के बड़े उच्चैश्रवस् का नाम ।
—ओकस्, (पु०) वे जन्तु जो विल या माँद में
रहते हैं ।—कारिन् (पु०) चूहा ।—योनि,
(वि०) उस जाति के जानवर जो विल में रहते
हैं ।—वासः, (पु०) खेखर (यह एक पशु है
जो ऊदविलान की तरह होता है ।—वासिन्
(या विलेवासिन्) (पु०) सर्प । साँप ।

विलंगमः } (पु०) साँप । सर्प ।
विलङ्गमः }

विलेगयः (पु०) १ साँप । चूहा । २ माँद या विल
में रहने वाला कोई भी जन्तु ।

विलः (पु०) १ गर्त । गदा २ आलनाल । - सुः,
(स्त्री०) वस बच्चों की जननी ।

विल्वः (पु०) बेल का पेड़ ।—दण्डः, (पु०)
शिव जी ।—पेशिकः, —पेशी, (स्त्री०) बेल के
फल की नरेंरी या कड़ा छिलका ।

विल्वं (न०) १ बेल का फल । २ तैल विशेष । जो
एक पल की होती है ।

विल्वकीया (स्त्री०) वह स्थान जहाँ अनेक बेल के पेड़
लगाये गये हों ।

विस् (धा० पर०) [विस्ति] १ जाना । २
उत्तेजित करना । अनुरोध करना । भड़काना ।
३ फैकना । ४ चीरना ।

विसं (न०) कमल - नाल - तन्तु ।—कण्ठिका,
(स्त्री०)—कण्ठिन् (पु०) छोटा सारस —
कुसुमं,—पुष्पं,—प्रसूनं, (न०) कमल का
फूल ।—खादिका, (न०) कमलनालतन्तु को
छाने वाला ।—जं, (न०) कमल का फूल ।—
नाभिः (स्त्री०) पंखनी ।—नासिका (स्त्री०)
सारस विशेष ।

विसलं (न०) अँखुआ । अङ्गुर । पल्लव । कली ।

विसिनी (स्त्री०) १ कमल का पैधा । २ कमलनाल
तन्तु । ३ कमल समूह ।

विसिल (वि०) विस सम्बन्धी या विस से निकला
हुआ ।

विस्तः (पु०) २० रत्ती के बराबर की एक तौल जो
सोना तौलने के काम में आती है ।

विल्हणाः (पु०) विक्रमाङ्कदेव चरित्र के रचयिता एक
कवि का नाम ।

बीजं (न०) १ बीजा । २ अङ्गुर । गाभ । जड़ । उद्गम ।
तत्व । ३ उद्गम स्थान । उत्पत्ति स्थान । उपादान
कारण । ४ बीर्य । ५ किसी नाटक की मूल कथा
या कहानी । ६ गूदा । गरी । मिंगी । ७ बीजग-
णित । ८ बीजमंत्र ।—अक्षरं, (न०) मंत्र का
आदि अक्षर ।—आह्वयः,—पूरः,—पूरकः,
(पु०) नीबू । जंभीरी ।—पूरं,—पूरकं, (न०)
नीबू का फल ।—उत्कृष्टं, (न०) उत्तम बीजा ।
—उदकं, (न०) ओला ।—कर्तृ (पु०)
शिव ।—कोषः,—कौशः, (पु०) बीज । फली ।
झीमी रखने का पात्र ।—गणितं, (न०)
बीजगणित का विज्ञान ।—गुप्तिः, (स्त्री०)
फली । झीमी ।—दर्शकः, (पु०) स्टेज मैनेजर ।
रंगशाला का व्यवस्थापक ।—धान्यं, (न०)
धानिया । कोथमीर ।—न्यासः, (पु०) किसी
नाटक की कथा के उद्गम स्थान को, या आधार को
बतलाना ।—पुरुषः (पु०) गोत्रप्रवर्तक ।—
फलकः, (पु०) नीबू का दूध ।—मंत्रः, (पु०)
मंत्र के आदि का अक्षर ।—मातृका, (स्त्री०)
कमलगदा ।—रुहः, (पु०) अनाज । नाज ।—
घापः, (न०) १ बीज बोने वाला । २ बीज बोने
की क्रिया ।—वाहनः, (पु०) शिव जी ।—सूः,
(पु०) पृथिवी ।—सेकतृ (पु०) (वि०)
उत्पन्न करने वाला । पैदा करने वाला ।

बीजः (पु०) नीबू या जंभीरी का दूध ।—अध्यक्षः,
(पु०) शिव ।—अश्वः, (पु०) साँड़ घोड़ा ।
(वह घोड़ा जो केवल घोड़ियों को स्थाभन करने
के लिये होता है ।)

बीजकं (न०) बीजा । बीज ।

बीजकः (पु०) १ नीबू । २ जंभीरी । ३ जनम के
समय बच्चे की वह अवस्था जब उसका सिर दोनों

भुजाओं के बीच में होकर योनि के द्वार पर आ जाय ।

बीजल (वि०) बीजों वाला । जिसमें अधिक बीज हों ।

बीजितक (वि०) अधिक बीजों वाला ।

बीजिन् (वि०) [स्त्री०—बीजिनी] बीजों वाला ।

(पु०) १ असली जनक । (बीज बोने वाला ।

२ पिता । जनक । ३ सूर्य ।

बीज्य (वि०) १ बीज से उत्पन्न । २ कुलीन ।

बीभत्स (वि०) १ घृणित । २ डहरी । ईर्ष्यालु ।

उपद्रवी । ३ बर्बर । निष्ठुर । भयानक । ४ मन फिरा हुआ ।

बीभत्सः (पु०) १ घृणा । २ काव्य के नौरसों के

अन्तर्गत सातवों रस । ३ अर्जुन का नामान्तर ।

बीभत्सुः (पु०) अर्जुन ।

बुक् (अव्यय०) नकली शब्द ।—कारः, (पु०)

सिंह की गर्जन ।

बुक् (धा० परस्मै०) [बुकति, बुकयति बुकयते]

१ भूखना । २ बोलना । बातचीत करना ।

बुक् (न०) १ हृदय । २ बकःस्थल । क्रांती ।

बुक् (पु०) १ रक्त । (पु०) बकरा । २ समय ।

बुक्त् (पु०) हृदय ।

बुक्त्तं (न०) भूखना ।

बुक्त्त (पु०) चाण्डाल ।

बुक्ता) (ली०) हृदय । दिल ।

बुक्ती) (ली०) हृदय । दिल ।

बुद् (धा० उभय) [बुदति, बुदते] १ देखना ।

पहचानना । २ समझना । जानना ।

बुद् (ध० कृ०) १ जाना हुआ । समझा हुआ ।

पहचाना हुआ । २ जागा हुआ । ३ देखा हुआ ।

४ बुद्धिमान । परिहृत ।

बुद्धः (पु०) १ एक बुद्धिमान या परिहृत पुरुष । २

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक शाक्यसिंह का नाम ।—

आगमः, (पु०) बुद्धधर्म के सिद्धान्त और

यमनियम । उपासकः (पु०) बौद्ध धर्मा-

नुयायी —गया, (स्त्री०) तीर्थ स्थान विशेष ।

—मार्ग, (पु०) बुद्धधर्म । बुद्धधर्म के सिद्धान्त ।

बुद्धिः (स्त्री) १ धीमाक्षि । बोध । २ चित्त । प्रतिभा ।

समझ । ३ ज्ञान । ४ विवेक । ५ मन । ६ हाज़िर-

प्रचार । ७ धारणा । राय । विश्वास । ज्ञयाल । ८

इरादा । अभिप्राय । ९ सचेतता । चैतन्य ।—

अतीत, (वि०) समझ के बाहिर ।—इन्द्रियं

(न०) ज्ञानेन्द्रिय ।—गम्य, —ग्राह्य, (वि०)

समझ के भीतर । जो बुद्धि से समझा जा सके ।

—जीविन्, (वि०) वह जो बुद्धि द्वारा अपना

निर्वाह करता हो ।—भ्रमः, (पु०) चित्त का

डॉढ़ाड़ोल डोना । मन की अस्थिरता ।—

शालिन्, —सम्पन्न, (वि०) बुद्धिमान । समझ-

दार । अकृमन्द ।—सखः —सहायः, (पु०)

मंत्री । सचिव । वजीर ।—हानि, (वि०) भूल ।

बेवकूफ ।

बुद्धिमान् (वि०) १ बुद्धिमान । प्रतिभाशाली । २

विद्वान् । ३ चतुर । चालाक ।

बुद्बुद् (पु०) बबूजा । दुल्हा ।

बुध् (धा० आत्म०) [बुधति—बोधते, बुध्यते,

बुध्] १ जानना । समझना । २ पहचानना । ३

खयाल करना । विचारना । ४ ध्यान देना । ५

सोचना । विचारना । ६ जागना । ७ होश में

आना । चैतन्य होना ।

बुध् (वि०) बुद्धिमान । चतुर । विद्वान् ।

बुधः (पु०) १ बुद्धिमान या विद्वान् आदमी । २

देवता । ३ बुधग्रह ।—जनः, (पु०) बुद्धिमान

या विद्वान् आदमी ।—तातः, (पु०) चन्द्रमा ।

—दिनः, (न०)—वारः, (पु०)—वासरः, (पु०)

बुधवार ।—रत्नः, (न०) पत्ता ।—सुतः,

(पु०) राजा पुरूरवा की उपाधि ।

बुधानः (पु०) १ बुद्धिमान् । गुरु ।

बुधित (वि०) जाना हुआ । समझा हुआ ।

बुधिल (वि०) बुद्धिमान । विद्वान् ।

बुध् (पु०) १ नर्तन की तली । २ पैर की जड़ ।

३ सब से नीचे का भाग । ४ शिष्य ।

बुद्, बुन्द् } (धा० उभय०) [बुदति—बुन्दते,

बुध्, बुन्ध् } बुधति—बुन्धते] १ पहचानना ।

देखना । २ समझना । विचारना ।

बुभुक्षा (स्त्री०) १ भूख । २ किसी वस्तु के उपभोग की इच्छा ।

बुभुक्षित (वि०) भूखा ।

बुभुक्षु (वि०) भूखा । साँसारिक सुखोपभोग का हल्लुक ।

बुल् (धा० उभय०) [बोलयति, बोलयते] १ बहना । २ डुबाना ।

बुलिः (स्त्री०) भय । डर ।

बुस् (धा० परस्मै०) [बुस्यति] निकालना । ढोबना ।

बुस् (न०) १ भूसी । २ रद्दी । कूड़ा कंकट ।
बुयं } ३ उपरी । कंड़ा । ४ धन दौलत ।

बुस्त (धा० उभय०) [बुस्तयति, बुस्तयते] १ सम्मान करना । अपमान करना ।

बुस्तं (न०) मुना हुआ मौस विशेष ।

बुशी } (स्त्री०) किसी महात्मा की गद्दी ।
बुषी }
बुसी }

बृंह (धा० पर०) [बृंहति, बृंहति] बढ़ना । उगना ।
२ दहादना । गर्जना ।

बृंहणं (न०) हाथी की चिंवार ।

बृंहित (व० क०) १ उगा हुआ । बढ़ा हुआ । २ गर्जता हुआ ।

बृंहितं (न०) हाथी की चिंवार ।

बृह (धा० पर०) [बृहति, बृहति] १ बढ़ना । उन्नत होना । फैलना । २ गर्जना ।

बृहत् (वि०) [स्त्री०—बृहती] १ बहुत बड़ा । विशाल । भारी । २ चौड़ा । ओंड़ा । बहुत विस्तार युक्त । ३ विपुल । ४ बलवान् । ५ लंबा । ६ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त । ७ दसा हुआ । सघन । (स्त्री०) व्याख्यान । (न०) १ वेद । २ साम-वेद का नाम । ३ ब्रह्म का नाम ।—अङ्ग, —काय, (वि०) बड़े भारी कीलडौल का ।—अङ्गः, (पु०) हाथी ।—आरायणं, —आरायकं, (न०) एक प्रसिद्ध उपनिषद् जो शतपथ में ब्राह्मण के अन्तिम ६ अध्याय में वर्णित है ।—एला, (स्त्री०) बड़ी इलायची ।—कुत्तिः, (वि०) बड़े पेट वाला ।—केतुः, (पु०) अग्नि का नाम ।

—गृहः, (पु०) देश विशेष ।—चित्तः, (पु०) नीबू या जंभीरी का वृक्ष ।—ढक्का, (स्त्री०) बड़ा डोल ।—नटः, —नलाः, (पु०) नला, (स्त्री०) विराट के दरबार में जिन दिनों अर्जुन छिप कर रहते थे, उन दिनों वे इसी नाम से वहाँ परिचित थे ।—नेत्र, (वि०) दूरदर्शी । बिबेकी ।—पाटलिः, (पु०) धनूरे का फल ।—पालः, (पु०) बट या गुलार का वृक्ष ।—भट्टारिका, (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।—भानुः, (पु०) अग्नि ।—रथः, (पु०) १ इन्द्र । २ अरासन्ध के पिता का नाम ।—राविन्, (पु०) छोटी जाति का उल्लू ।—रिफुच्, (वि०) बड़े नितंबों वाला ।

बृहत्तिका (स्त्री०) उत्तरीयवस्त्र । चादर ।

बृहस्पतिः (पु०) १ देवताओं के गुरु । २ बृहस्पति ग्रह । ३ एक स्मृतिकार का नाम ।—पुरोहितः, (पु०) इन्द्र का नाम ।—वारः, —वासरः, (पु०) गुरुवार ।

बैडा (स्त्री०) नाव । बोट ।

बैह (धा० आत्म०) [बैहते] प्रयत्न करना । उद्योग करना । कोशिश करना ।

बैजिक (वि०) [स्त्री०—बैजिकी] १ बोर्य सम्बन्धी । २ असली । ३ गर्भाधान सम्बन्धी । ३ सम्भोग सम्बन्धी ।

बैजिकं (न०) उपपादन कारण । उद्गम स्थल । विकास ।

बैजिकः (पु०) अँखुआ । अङ्कुर ।

बैडाल (वि०) [स्त्री०—बैडाली] बिल्ली सम्बन्धी ।—व्रतं, (न०) बिल्ली की तरह ऊपर से तो बहुत सीधा साधा बना रहना पर समय पर झुक करना ।—व्रतिः, (पु०) कपटी । छुली । वह पुरुष जो पवित्र जीवन व्यतीत इस लिये करे कि बिना ऐसा किये उसके फैलाये कोई स्त्री फैले ही नहीं ।—व्रतिकः, —व्रतिन्, (पु०) पाखण्डी साधु । दम्भी सन्त । नास्तिक ।

बैचिकः } (पु०) रसिक । रसीला ।
बैम्बिकः }

बैलव (वि०) [स्त्री०—बैलवी] १ बेल वृक्ष सम्बन्धी

या बेल वृक्ष की लकड़ी का बना हुआ । २ बेल के पेड़ों से आच्छादित ।

वैद्य (न०) बेल वृक्ष का फल ।

बोधः (पु०) १ जानकारी । ज्ञान । जानने का भाव । २ विचार । ३ बुद्धि । समझ । ४ जागृति । चैतन्यता । ५ खिलना । फैलना । खुलना । ६ निर्देश । अनुमति । ७ उपाधि । संज्ञा ।—अतीत । (वि०) ज्ञान के परे ।—करः, (वि०) जनाने वाला । बतलाने वाला ।—करः, (पु०) १ बंदी-जन जो राजाओं को जगाया करते थे । २ शिक्षक । अध्यापक ।—गम्य, (वि०) जो समझ में आ जाय ।—पूर्व (वि०) इरादतन । जानबूझकर ।—वासरः, (पु०) देवोत्थानी एकादशी, जो कार्तिक शुक्ल पक्ष में होती है ।

बोधक (वि०) [स्त्री०—वाधिका] १ बतलाने वाला । आगाह करने वाला । २ सिखलाने वाला । शिक्षक । ३ सूचक । ४ जगाने वाला ।

बोधकः (पु०) ज्ञातृ । भेदिया ।

बोधने (न०) ज्ञापन । जताना । सूचित करना । २ जगाना । ३ उद्दीपन । ४ धूप देना ।

बोधनः (पु०) १ बुधग्रह ।

बोधनी (स्त्री०) १ कार्तिक शुक्ल ११ शी । २ बड़ी पीपल ।

बोधनः (पु०) १ बुद्धिमान पुरुष । २ बृहस्पति का नामान्तर ।

बोधिः (पु०) १ पूर्ण ज्ञान । २ बट वृक्ष । ३ सुगाँ । ४ बुद्ध देव का नामान्तर ।—ततः, —तुमः, —वृत्तः, (पु०) वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध भगवान् ने बुद्धत्व प्राप्त किया था ।—दः, (पु०) जैनियों का अर्हत ।—सत्त्वः, (पु०) वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो, परन्तु बुद्ध न हो सका हो ।

बोधित (व०) १ जनाया हुआ । प्रकट किया हुआ । २ स्मरण दिलाया हुआ । ३ आदेश दिया हुआ । सूचित किया हुआ ।

बौद्ध (वि०) [स्त्री०—बौद्धी] १ बुद्धि या समझ से सम्बन्ध रखने वाला । २ बुद्ध से सम्बन्ध रखने वाला ।

बौद्ध (पु०) बौद्ध धर्म का मने वाला

बौप्रः (पु०) पुरुरवा का नामान्तर ।

बौधायनः (पु०) एक प्राचीन लेखक का नाम ।

ब्रध्नः (पु०) १ सूर्य । २ वृक्षमूल । पेड़ की जड़ । ३ दिक्क । ४ मदार का पौधा । ५ सीसा । जस्ता । ६ घोंडा । ७ शिव या ब्रह्मा ।

ब्रह्म (न०) परमात्मा ।

ब्रह्मण्य (वि०) १ ब्रह्म सम्बन्धी । २ पवित्र । ३ ब्राह्मण के योग्य । ४ ब्राह्मणों से प्रीति करने वाला ।—देवः, (पु०) विष्णु भगवान् ।

ब्रह्मण्यः (पु०) १ वह जो वेदों में निपटान हो । २ शहनृत का वृक्ष । ३ ताड़ का पेड़ । ४ मूँज । ५ शनिग्रह । ६ विष्णु का नामान्तर । ७ कार्तिकेय ।

ब्रह्मण्या (स्त्री०) दुर्गा देवी की उपाधि ।

ब्रह्मण्यवत् (न०) अग्नि का नामान्तर ।

ब्रह्मना (स्त्री०) } १ शुद्ध ब्रह्म भाव । २ ब्राह्मण्यत्व ।
ब्रह्मन्वं (न०) } ३ ब्रह्म में लीनता ।

ब्रह्मन् (न०) १ परमात्मा । परब्रह्म । २ स्तुति की एक श्रृंखा । ३ धर्म ग्रन्थ । ४ वेद । ५ प्रणव । ओङ्कार । ६ ब्राह्मण वर्ण । ७ ब्रह्मी शक्ति । ८ तप । ९ कीर्ति । श्रुतिता । १० मोक्ष । ११ वेदों का ब्राह्मण भाग । १२ सम्पत्ति । धन । दौलत । १३ ब्रह्मविद्या । (पु०) १ विष्णु । २ ब्राह्मण । ३ भक्तजन । ४ सामयज्ञ के चार ऋषियों में से एक । ५ ब्रह्मविद्या जानने वाला । ६ मूर्ख । ७ प्रतिभा । ८ सप्त प्रजापतियों का नामान्तर । [सप्त प्रजापति—मरीचि, अत्रि, अंगिरस, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ] ९ बृहस्पति का नामान्तर । १० शिव ।—अक्षरं, (न०) प्रणव । ओङ्कार । अङ्गभूः,— (पु०) १ घोंडा । २ वह पुरुष जिसने मंत्रोच्चारण पूर्वक घोड़े के म्रिञ्ज म्रिञ्ज शरीरावयवों का स्पर्श किया हो ।—अञ्जलिः, (पु०) मंत्र पढ़ते हुए हाथ जोड़ना । वेदपाठारम्भ और वेदपाठ समाप्ति के समय गुरु को प्रणाम ।—अशङ्कं, (न०) वह अँडा विशेष जिसके भीतर से यह सारा जगत् उत्पन्न हुआ ।—पुराणं (=ब्रह्मपुराणम्) (न०) अठारह पुराणों में से एक ।—अदि, या

अग्नि ताता स्त्री०) गोमयग नग अग्नि
गम (पु०) —अधिगमन (न०) वेदाध्ययन ।
अभ्यस्तः, (न०) गोमूत्र । —अभ्यासः, (पु०)
वेदाध्ययन । —अयणः, —अयनः, (पु०) नारायण
का नामान्तर । —अरराय, (न०) १ ब्रह्मविद्या
अध्ययन करने का स्थान । २ एक वन विशेष । —
अर्पणः, (न०) १ ब्रह्मज्ञान का अर्पण । २
ब्रह्म में अनुरागवान् होना । ३ एक तांत्रिक प्रयोग
का नाम । ४ आन्ध्र विशेष जिसमें पिण्डदान (खीर
के पिण्ड) नहीं होता । —अर्घ्य (न०) एक
प्रकार का अस्त्र जो मंत्र से अभिमंत्रित कर चलाया
जाता था । यह अनप अस्त्र समस्त अस्त्रों में श्रेष्ठ
माना जाता था । —आत्मभूः, (पु०) बोझ ।
—आनन्दः, (पु०) ब्रह्म के स्वरूप के अनुभव
का आनन्द । ब्रह्मज्ञान से उत्पन्न आनन्दसन्तोष ।
—आरम्भः, (पु०) वेदाभ्यास का आरम्भ । —
आवर्तः, (पु०) सरस्वती और दशरूती नदियों
के बीच की भूमि का नाम विशेष । यथा

सरस्वती दृषद्वरे ते ईद्वनयोर्वदन्तरम् ।

तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते ॥

—भनु

—आसनं, (न०) वह आसन विशेष जिसके
अनुसार बैठ कर ब्रह्म का ध्यान किया जाता है ।
—आहुतिः, (स्त्री०) १ ब्रह्मपक्ष । २ वेदा-
ध्ययन । —उत्तमता, (स्त्री०) वेदाध्ययन सम्बन्धी
प्रमाद या उनके अध्ययन से विमुक्तता । —उद्यौ,
(न०) वेदों की व्याख्या अथवा ब्रह्मविद्या सम्बन्धी
विषयों पर विचार । —उपदेशः, (पु०)
ब्रह्मविद्या या वेदों को पढ़ाना । —ऋषिः,
(= ब्रह्मर्षिः या ब्रह्मर्षिः) ब्राह्मण ऋषि ।
—ऋषिदेशः, (= ब्रह्मर्षिदेशः) (पु०) ग्रन्थ
विशेष । [यथा

“ कुत्सेत्रं च कस्स्याश्च यं वाक्यं शूरसेनकः ।

रप ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तरः ॥

—भनु ।

—ओदनः, (पु०) —ओदनम्, (न०) यज्ञ
में यज्ञ कराने वालों को दिया जाने वाला
भोजन । —कन्यका, (स्त्री०) सरस्वती । —करः,

(पु०) यज्ञ कराने वालों को दी जाने वाली
दक्षिणा कर्मन्, (न०) १ ब्राह्मण का अनुष्ठेय
कर्म । २ यज्ञ में प्रधान चार यज्ञ कराने वालों में
से एक । —कला, (स्त्री०) दाक्षायणी का
नामान्तर । —कल्पः, (पु०) ब्रह्मकल्प । उतना
समय जितने में एक ब्रह्मा रहता है । —काण्डः,
(न०) वेद का वह भाग जिसमें ज्ञानकाण्ड है ।
—काष्ठः, (वि०) शङ्खुत का पेड़ । —कूर्चम्
(न०) रजस्वला के स्पर्श या इसी प्रकार की अन्य
अशुद्धि दूर करने के लिये एक व्रत विशेष । इसमें
एक दिन निराहार रह कर दूसरे दिन पञ्चगव्य
दिया जाता है । —कृत, (वि०) स्तुति करने
वाला । (पु०) विष्णु का नामान्तर । —कोशः,
(पु०) समस्त वेदराशि । —गुप्तः, (पु०)
एक ज्योतिषी का नाम जो ईसा की ४६८ ई० में
उत्पन्न हुआ था । —गोलः, (पु०) ब्रह्माण्ड ।
—ग्रन्थिः, (पु०) शरीर की ग्रन्थि विशेष । —
ग्रहः, —पिशाचः, —पुरुषः, —रक्षस्, (न०)
—राक्षसः, (पु०) ब्रह्मराक्षस । ब्रह्मराक्षस
होने का कारण याज्ञवल्क्य स्मृति में यह लिखा है ।

“ परस्य जीवितं हतया ब्रह्मन्वचपक्षय च ।

अरवये विजले वेद्ये भवति ब्रह्मराक्षसः ॥

—घातकः, —घातिन्, (पु०) ब्राह्मण की
हत्या करने वाला । —घातिनी, (स्त्री०)
रजस्वला होने के दूसरे दिन की उस स्त्री की
संज्ञा । —घोषः, (पु०) १ वेदाध्ययन । २
वेदपाठ । —घ्नः, (पु०) ब्राह्मण की हत्या करने
वाला । —चर्च, (न०) धर्म शास्त्रानुसार ब्रह्मचारी
का व्रत । प्रथम आश्रम । —चारिकं (न०)
ब्रह्मचारी का जीवन । —चारिन्, (वि०) १
वेदाध्ययन करने वाला । २ ब्रह्मचारी (पु०) वह
जो आजीवन ब्रह्मचर्य धारण करने का सङ्कल्प किये
हुए हो । ३ शिव जी । ४ स्कन्द । —चारिणी,
(स्त्री०) १ दुर्गा की उपाधि । २ सती स्त्री । —
—जः, (पु०) कार्तिकेय । —जन्मन्, (न०)
उपनयन संस्कार । —जारः (पु०) १ दाक्षायणी
का उपपति । २ इन्द्र । —जीविन्, (वि०) १
औतस्मार्त कर्म करा कर जीविका चलाने वाला ।

२ वेतनभोगी या स्वार्थसेवी ब्राह्मण ।—ज्ञः, (पु०) १ कर्तिकेय । २ विष्णु ।—ज्ञानं, (न०) ब्रह्मविद्या ।—ज्योतिस्, (न०) शिव ।—तत्त्वं, (न०) ब्रह्म सम्बन्धी सत्यज्ञान ।—दः, (पु०) दीक्षा गुरु ।—दशहः, (पु०) २ ब्राह्मण का शाप । २ ब्राह्मण की प्रशंसा । ३ शिव ।—दानं, (न०) वेद पढ़ाना ।—दायः, (पु०) वेदों की शिक्षा । २ ब्राह्मण की सम्पत्ति ।—दायादः, (पु०) १ ब्राह्मण जिसकी वेद पैतृक सम्पत्ति है । २ ब्राह्मणपुत्र ।—दारुः, (पु०) शहतूत का पेड़ ।—दिनं, (न०) ब्रह्मा का एक दिन जो १०० चतुर्युगियों का माना जाता है ।—दैत्य, (वि०) ब्राह्मणविवाह के नियमानुसार विवाहित ।—ब्रह्मदैत्यः, (पु०) ब्राह्मण जो दैत्य होगया हो ।—द्विप्—द्वेषिन्, (वि०) ब्राह्मणों से घृणा करने वाला । नास्तिकः—द्वेषः, (पु०) ब्राह्मणों से घृणा ।—नदी, (स्त्री०) सरस्वती नदी ।—नाभः, (पु०) विष्णु ।—निष्ठः, (वि०) ब्रह्म के ध्यान में मग्न रहने वाला ।—निष्ठः, (पु०) शहतूत का पेड़ ।—पदं, (न०) १ ब्रह्मत्व । २ ब्राह्मणत्व ।—पवित्रः, (पु०) दर्भ । कुश ।—परिषद्, (स्त्री०) ब्राह्मणों की सभा ।—पादपः—पत्रः, (पु०) पलाश का पेड़ ।—पाणः, (पु०) ब्रह्मा का पाश नामक अस्त्र ।—पितृ, (पु०) विष्णु ।—पुत्रः, (पु०) १ ब्राह्मण का बेटा । एक नद का नाम । यह मानसरोवर से निकल कर हिमालय के पूर्वी प्रान्त आसाम में हो कर भारत में प्रवेश करता है और बंगाल की खाड़ी में गिरता है ।—पुत्रो, (स्त्री०) सरस्वती नदी ।—पुरं, (न०) हृदय ।—पुरं, (न०)—पुरी, (स्त्री०) १ ब्रह्मलोक । २ बनास ।—पुराणं, (न०) पुराण विशेष ।—प्राप्तिः, (स्त्री०) ब्रह्म में लीनता ।—वन्धुः, (पु०) पतित ब्राह्मण । बोजं (न०) प्रणव । ओङ्कार ।—व्रधः—व्रवाणः, (पु०) बनावदी ब्राह्मण ।—भागः, (पु०) १ शहतूत का पेड़ । २ यज्ञ करने वालों में प्रधान का भाग ।—मङ्गल-देवता, (स्त्री०) लक्ष्मी देवी का नामान्तर ।—महः,

(पु०) ब्राह्मणों के उपलक्षण में किया हुआ उत्सव ।—मीमांसा, (स्त्री०) वेदान्त दर्शन ।—सूर्यभृन्, (पु०) शिव ।—मेखलः, (पु०) मूत्र तृण ।—यज्ञः, (पु०) १ यज्ञमहायज्ञों में से एक । २ विधि पूर्वक वेदान्त्यास ।—योगः, (पु०) आध्यात्मिक ज्ञान को उपलब्धि ।—योगि, (वि०) ब्रह्म से उत्पन्न ।—यश्त्रं, (न०) ब्रह्माण्ड द्वार । मूर्द्धा या द्वेदः । मस्तक के मध्य में माना हुआ गुह्य छेद जिससे प्राण निकलने पर ब्रह्मलोक में उस जीव का जाना माना जाता है ।—रातः, (पु०) शुकदेव जी ।—राशिः, (पु०) परशुराम का एक नाम । बृहस्पति से आक्रान्त भवण नक्षत्र ।—रीतिः, (स्त्री०) पीतल विशेष ।—रेखा,—लेखा, (स्त्री०)—लिखितं, (न०)—लेखः, (पु०) भाग्य व अभाग्य का लेख जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ में आते ही उसके मस्तक पर लिख देते हैं ।—लोकः, (पु०) ब्रह्मा का लोक ।—वक्तु, (पु०) वेदों का व्याख्याता ।—वध्रः, (पु०)—वध्या, —वर्चस् (न०)—वर्चसं, (न०) वह तेज या शक्ति जो ब्राह्मण तप एवं स्वाध्याय द्वारा प्राप्त करता है । ब्रह्मतेज ।—वर्धनं (न०) तौवा ।—वादिन्, (पु०) १ वेदों को पढ़ाने या सिखाने वाला । २ वेदान्ती ।—विदुः—विदः, (वि०) ब्रह्म को जानने वाला । (पु०) ऋषि । ब्रह्मवेत्ता दार्शनिक ।—विद्या, (स्त्री०) वह विद्या जिसके द्वारा कोई ब्रह्म को जान सके ।—हत्या, (स्त्री०) ब्राह्मण की हत्या ।

विदुः (पु०) वेद पाठ करते समय मुँह से विदुः गिरा हुआ धूक का छींटा ।—विवर्धनः (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।—वृत्तः, (पु०) १ पलाश या ढाँक का पेड़ । २ गूलर वृक्ष ।—वृत्तिः, (स्त्री०) ब्राह्मण की आजीविका ।—वृद्धं, (न०) ब्राह्मणों का समुदाय ।—वेदः, (पु०) १ वेद का ज्ञान । २ ब्रह्मज्ञान । ३ अथवा वेद का नाम ।—वेदिन्, (वि०) वेदों का जानने वाला ।—वैवर्त, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक ।—शिरस्—शीर्षन्, (न०)

अस्त्र विशेष । इस अस्त्र का चलाना अगस्त्य जी से सीखा था ।—संमद्, (स्त्री०) ब्राह्मणों की सभा ।—सतो, (स्त्री०) सरस्वती नदी ।—सर्व, (न०) ब्रह्मज्ञ ।—सद्स, (न०) ब्राह्मण का निवास स्थान ।—सभा, (स्त्री०) ब्राह्मणों की कचहरी । या न्यायालय जहाँ ब्राह्मण न्याय करता हो ।—सम्भव, (वि०) ब्राह्मण से उत्पन्न ।—सम्भवः, (पु०) नारद जी का नाम ।—सर्प, (पु०) सर्प विशेष ।—सायुज्यं, (न०) ब्रह्मसूत्र ।—सार्ष्टिका, (पु०) ब्रह्म में एकत्व ।—सार्वर्णिः, (पु०) दसवे मनु का नाम ।—सुनः, (पु०) १ नारद मरीचि आदि सप्तर्षिगण । २ केतु विशेष ।—सूः, (पु०) १ अनिरुद्ध । २ कामदेव ।—सूत्रं, (न०) यज्ञोपवीत । बादरायण रचित ब्रह्मसूत्र । इसमें ब्रह्म का प्रतिपादन है और ये वेदान्त दर्शन के आधार हैं ।—सृज्, (पु०) शिव जी ।—स्तम्बः, (पु०) संसार । दुनिया ।—स्तेयं, (न०) सत्यज्ञान की प्राप्ति, अनुचित उपायों से ।—हन्, (वि०) ब्राह्मण की हत्या करने वाला ।—हृदयः, (पु०)—हृदयं, (न०) प्रथम वर्ग के १६ नक्षत्रों में से एक जिसे अँगरेजी में कैपेला पुकारते हैं ।

ब्रह्ममय (वि०) १ वेद सम्बन्धी । २ ब्राह्मण के योग्य ।

ब्रह्ममयं (क०) ब्रह्मास्त्र ।

ब्रह्मवत् (वि०) आध्यात्मिक ज्ञान सन्पन्न ।

ब्रह्माणी (स्त्री०) १ ब्रह्मा जी की स्त्री । २ दुर्गा की उपाधि । ३ रेणु का नामक गन्धद्रव्य । पीतल ।

ब्रह्मिन् (वि०) ब्रह्म सम्बन्धी । (पु०) विष्णु ।

ब्रह्मिष्ठ (वि०) बड़ा विद्वान् । वेदविद्या में विशारद ।

ब्रह्मिष्ठा (स्त्री०) दुर्गा की उपाधि ।

ब्रह्मी (स्त्री०) खरी विशेष ।

ब्रह्मेशयः (पु०) १ कार्तिकेय । २ विष्णु ।

ब्राह्म (वि०) [स्त्री०—ब्राह्मी] १ परब्रह्म सम्बन्धी ।

२ ब्राह्मणों का । ३ वेदाध्यन सम्बन्धी । ४

वैदिक । ५ पवित्र । ६ जिसका अधिष्ठाता ब्रह्मा हो ।

ब्राह्मं (न०) १ हाथ के अँगूठे के नीचे का स्थान ।

२ धर्मग्रन्थों का अध्ययन ।—अहोरात्रः, (पु०)

ब्रह्मा का एक दिन और एक रात ।—देया, (स्त्री०)

कन्या जिसका विवाह ब्रह्मविवाह की विधि से

होने वाला हो ।—मुहूर्तः, (पु०) रात के पिछले

पहर के अन्तिम दो दण्ड । सूर्योदय से पूर्व, दो

घड़ी तक का समय ।

ब्राह्मः (पु०) १ आठ प्रकार के विवाहों में से एक ।

२ नारद ।

ब्राह्मण (वि०) [स्त्री०—ब्राह्मणी] १ ब्राह्मण का ।

२ ब्राह्मणोपयोगी । ३ ब्राह्मण का किया हुआ ।

ब्राह्मणः (पु०) १ चारों वर्गों में प्रथम और श्रेष्ठ वर्ग ।

ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में ब्राह्मण की उत्पत्ति विराट्

पुरुष के मुख से वर्णित है । २ यज्ञ कराने वाला ।

ब्रह्मवादी ३ अग्नि ।

ब्राह्मणम् (न०) १ ब्राह्मणों की सभा । २ वेद का वह

भाग जो मंत्र नहीं कहलाता और जिसमें वेद के

मंत्रों का यज्ञ कार्यों में प्रयोग बतलाया गया है ।

वेद के मंत्रभाग से यह भिन्न है । प्रत्येक वेद का

ब्राह्मण पृथक् है । यथा

वेद ब्राह्मण

ऋग्वेद, — ऐतरेय, या आश्वलायन और

कौशीतकी या सांख्यायन ।

यजुर्वेद, — शतपथ ।

सामवेद, — पञ्चविंश और षड्विंश और

६ अन्य भी हैं ।

अथर्ववेद, — गोपथ ।

—अतिक्रमः, (पु०) ब्राह्मण के प्रति अप-

मान । ब्राह्मण को अवज्ञा या तिरस्कार ।—जातं,

(न०) जातिः, (स्त्री०) ब्राह्मण जाति ।

—जायिका, (स्त्री०) ब्राह्मण वृत्ति ।—द्रव्यं,

—स्वं, (न०) ब्राह्मण का धन ।—निन्दकः,

(पु०) नास्तिक । ब्राह्मण की निन्दा करने वाला ।

—ब्रुवः, (पु०) कहलाने भर का ब्राह्मण । कर्म

और संस्कार हीन ब्राह्मण ।—सन्तर्पणं, (न०)

ब्राह्मणों को तृप्त या सन्तुष्ट करने वाला ।

ब्राह्मणकः (पु०) १ नाम मात्र का ब्राह्मण । निरुद्ध
अथवा अयोग्य ब्राह्मण । २ उस देश विशेष का
नाम जहाँ रणप्रिय ब्राह्मण वास करते थे ।

ब्राह्मणत्रा (अन्यथा०) १ ब्राह्मणों में । २ ब्राह्मण की
दशा में ।

ब्राह्मणकुंक्षिन् (पु०) सोमयाग में ब्रह्म का सहकारी
एक ऋत्विक् ।

ब्राह्मणी (स्त्री०) १ ब्राह्मण जाति की स्त्री । २ ब्राह्मण
की पत्नी । ३ वृद्धि । ४ गिरगद की जाति का एक
जन्तु विशेष । गामिन् (पु०) ब्राह्मणी का
उपपति ।

ब्राह्मण्य (वि०) ब्राह्मणत्व ।

ब्राह्मण्यं (न०) १ ब्राह्मणत्व । २ ब्राह्मणों का
समुदाय ।

ब्राह्मण्यः (पु०) शनिग्रह का नामान्तर ।

ब्राह्मी (स्त्री०) १ ब्रह्म की मूर्तिमती शक्ति । २
सरस्वती । ३ वाणी । ४ कहानी । कथा । ५ बर्मा

लुष्टान । धार्मिक कृत्यों की रस्म । ६ रोहिणी
नक्षत्र । ७ दुर्गा । ८ ब्राह्म विवाह से परिणीत
स्त्री । ९ ब्राह्मण की पत्नी । १० रुक्मिणी विशेष ।

११ पीतल । १२ एक नदी का नाम ।—कन्दः

(पु०) बाराही कंद ।—गायत्री, (स्त्री०)

एक वैदिक छन्द । इसमें ४२ वर्ण होते हैं ।—

जगती, (स्त्री०) वैदिक छन्द विशेष, जिसमें ७२

वर्ण होते हैं ।—पंक्ति, (स्त्री०) वैदिक छन्द

विशेष, जिसमें ६० वर्ण होते हैं ।—वृहती,

(स्त्री०) वैदिक छन्द जिसमें २४ वर्ण होते हैं ।

ब्राह्म्य (वि०) [स्त्री०—ब्राह्म्यी] १ ब्रह्म
सम्बन्धी । २ परब्रह्म सम्बन्धी । ३ ब्राह्मणों से
सम्बन्ध रखने वाला ।—उत्तं (न०) ब्रह्मयज्ञ ।

ब्राह्म्यं (न०) ब्राह्म्यर्थ । विस्मय ।

ब्रुव (वि०) बनावटी ।

ब्रू (धा० उभय०) [ब्रूवति, ब्रूते, ब्रूह,] १

कहना । २ बोलना । ३ पुकारना । ४ उत्तर देना ।

ब्रूतेस्कं (न०) कंदा । जाल । पाश ।

भ

भ-संस्कृत वर्णमाला का चौबीसवाँ व्यञ्जन और पर्व
का चौथा वर्ण । इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है
और इसका प्रयत्न संवार, नाद और घोष है । यह
महाप्राण है और इसका अल्पप्राण 'ब' है ।

भं (न०) १ नक्षत्र । २ राशि । ३ ग्रह । ४ तारा ।
५ सत्ताइस की संख्या । ६ मधुसक्ती ।

भः (पु०) १ शुक्र ग्रह । २ भ्रम । माया ।—ईनः,
—ईशः, (पु०) सूर्य ।—गणाः,—वर्गः, (पु०)
१ सितारों का समुदाय । २ राशिचक्र । ३ राशिचक्र
में ग्रहों का भ्रमण ।—गोलः, (पु०) नक्षत्रचक्र ।
चक्रं,—मण्डलं, (न०) राशिचक्र ।—
पतिः, (पु०) चन्द्रमा ।—सूचकः, (पु०)
ज्योतिषी ।

भक्तिका (स्त्री०) गेंदबल्ला का खेल ।

भक्त (व० क०) १ बाँटा हुआ । निर्दिष्ट किया हुआ । २

विभाजित । ३ पूजन किया हुआ । ४ संलग्न । ५
अनुरक्त । ६ सम्भारा हुआ । पकाया हुआ ।—
अभिलाषः, (पु०) भूख । भोजन करने की
इच्छा ।—उत्साधकः, (पु०) रसोद्घा ।
पाचक ।—कंसः, (पु०) भोजन के पदार्थों से
भरी हुई थाली ।—करः, (पु०) एक प्रकार का
सुगन्धित द्रव्य जो अनेक अन्य द्रव्यों को मिला
कर बनाया जाता है ।—कारः, (पु०) रसोद्घा ।
पाचक ।—छन्दः, (न०) भूख ।—दासः, (पु०)
भोजन मात्र पाने पर लिप्त करने वाला ।—द्वेषः
(पु०) भोजन के प्रति अरुचि ।—मण्डं, (न०)
माँद ।—रोचन, (वि०) भूख बढ़ाने वाला ।—
वत्सल, (वि०) भक्तों पर कृपा करने वाला ।
—शाला, (स्त्री०) मार्थियों से मुलाकात करने
का कमरा । भोजन गृह ।

भक्त (न०) १ हिस्सा । अंश । बाँट । २ भोजन । ३ भाल । उबाला हुआ कोई भी भोज्य पदार्थ ।
भक्तः (पु०) पूजक । पूजन करने वाला । उपासक ।
भक्तिः (स्त्री०) १ भिन्नता । पृथक्ता । बटवारा । बाँट । २ विभाग । अंश । हिस्सा । ३ अनुराग । श्रद्धा । ४ सम्मान । सेवा । पूजन । मानप्रदर्शन । ५ विभावद । ६ सजावट । ७ विशेषण ।—नम्र-पूर्व, —पूर्वकं, (अग्र्या०) अनुरागयुक्त । सम्मान सहित ।—भाज, (वि०) विश्वस्त । अनुरागवान्—मार्गः (पु०) भक्तियोग । भक्ति का वह साधन जिसके द्वारा भगवद् प्राप्ति हो ।—भोगः, (पु०) भक्ति का साधन ।

भक्तिमत (वि०) अनुरागी । सच्चा विश्वास रखने वाला ।

भक्तिल (वि०) १ भक्तिदायक । २ विश्वस्त । सच्चा ।

भक्त (धा० उभय०) [भक्तयति-भक्तयते, भक्तति] खाना । भक्षण करना । २ निघटाना । ३ खराब करना । नाश करना । ४ डसना । काटना ।

भक्तः (पु०) १ भोजन करना । २ भोज्य पदार्थ ।

भक्तक (वि०) [स्त्री० - भक्तिका] १ खाने वाला । २ पैदल । भोजनभट्ट ।

भक्तण (वि०) [स्त्री० - भक्तणी] खाने वाला ।

भक्त्या (न०) खाना ।

भक्त्य (वि०) खाने योग्य ।—कारः, (पु०) भक्त्य-कारः भी होता है । नानबाई । पाचक । रसोद्घा ।

भक्त्यं (न०) भोज्य पदार्थ ।

भगं (न०) उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र ।

भगः (पु०) १ सूर्य के द्वादश रूपों में से एक । २ चन्द्रमा । ३ शिव का रूप विशेष । ४ सौभाग्य । ५ समृद्धि । ६ गौरव । ७ कीर्ति । ८ मनोहरता । सौन्दर्य । ९ सर्वोत्तमता । १० प्रेम । स्नेह । ११ आमोदप्रमोद । १२ सद्गुण । नय । धर्म । १३ उद्योग । प्रयत्न । १४ निरपेक्षता (सांसारिक पदार्थों के प्रति) १५ मोक्ष । मुक्ति । १६ बल । शक्ति । १७ सर्वव्यापकता ।—अङ्कुरः, (पु०) बबासीर । अर्शरोग ।—भः, (पु०) शिव जी ।

—देवः, (पु०) पहले दर्जे का कामुक या लंपट ।

—देवता, (स्त्री०) विवाह का अधिष्ठाता देवता ।

—दैवतं, (न०) उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र ।—

नन्दनः, (पु०) विष्णु ।—भक्तकः, (पु०) कुटना । भट्टा ।

भगंदरः } (पु०) गुदावर्त के किनारे होने वाला
भगन्दरः } एक रोग ।

भगवत् (वि०) १ ऐश्वर्ययुक्त । २ पूज्य । सम्माननीय ।
देवी, (पु०) १ देवता । २ विष्णु । ३ शिव ।
४ जिन । ५ बुद्ध देव ।

भगवदीयः (पु०) भगवान् विष्णु का उपासक ।

भगालं (न०) खोपड़ी ।

भगालिन (पु०) शिव ।

भगिन् (वि०) [स्त्री० - भगिनी] १ समृद्धशाली ।
प्रसन्न । भाग्यवान् । २ प्रतापी । शानदार ।

भगिनिका (स्त्री०) बहिन ।

भगिनी (स्त्री०) १ बहिन । २ सौभाग्यवती स्त्री । ३ स्त्री ।—पतिः, (पु०) —भर्तु, (पु०)
बहनेई । बहिन का पति ।

भगिनीयः (पु०) भौजा । बहिन का पुत्र ।

भगीरथः (पु०) सूर्यवंशी एक प्राचीन राजा का नाम जिसने तप कर गङ्गा को मृत्युलोक में बुलाया ।—पथः, —प्रयत्नः, (पु०) बड़ा भारी परिश्रम ।—सुता, (स्त्री०) श्रीगङ्गा जी ।

भग्न (व० कृ०) १ टूटा फूटा । फटा हुआ । २ परा-जित । हताश । ३ पकड़ा हुआ । थामा हुआ । रोका हुआ । ४ निर्बल किया हुआ । ५ भलीभाँति पराजित किया हुआ । ६ नष्ट किया हुआ ।—आत्मन, (पु०) चन्द्रमा ।—आपद् (वि०) वह जिसने विपत्तियों अथवा अपने दुर्भाग्य पर विजय प्राप्त की हो ।—आश, (वि०) निराश । हताश । उत्साह, (वि०) हतोत्साह ।—पृष्ठ, (वि०) १ टूटी हुई पीठ वाला । २ सामने आने वाला ।—प्रतिज्ञ, (वि०) वह जिसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी हो ।—ममस (वि०) हताश ।—मृत, (वि०) वह जिसने अपना व्रत भङ्ग कर डाला

हो ।—सङ्कल्प (वि०) वह जिसका विचार
विफल हुआ हो ।

भग्गं (न०) पैर की हड्डी का टूटना ।

भग्नी (स्त्री०) बहिन ।

भङ्गारी
भङ्गारी
भङ्गारी
भङ्गारी } (स्त्री०) मच्छड़ । डाँस ।

भङ्क्तिः
भङ्क्तिः } (स्त्री०) टूटन । (हड्डी का) टूटना ।

भङ्गः } (पु०) १ टूटने का भाव । टूट । दरार । ३
भङ्गः } अलहदगी । पृथक्ता । ४ अंश । हिस्सा ।

टुकड़ा । टुक । ५ पात । अधःपात । नाश ।
विनाश । ६ भगदड़ । ७ पराजय । ८ असफलता ।
९ अस्वीकृति । ईकार । १० दर्ज । ११ बाधा ।
रुकावट । गड़बड़ी । १२ प्रतिबन्ध । मुश्किल ।
किसी कार्य को स्थगित करने की क्रिया । १३
भाग जाने की क्रिया । १४ फेर । मोड़ । तह ।
लहरिया । १५ सिकोड़न । सुकाव । बुनन । १६
गमन । १७ लकवा का रोग । १८ छल । धोखा ।
१९ नहर । जलमार्ग । २० घूम घुमाकर कोई
बात कहने का ढंग । २१ पटसन । पटुआ ।—
नयः, (पु०) बाधाओं को दूर करने की क्रिया ।
—वासा, (स्त्री०) हलदी । हरिद्रा ।—सार्थ,
(वि०) बेईमान । दगाबाज़ ।

भङ्गा, } (स्त्री०) १ पटसन पटुआ । २ भाग ।
भङ्गा }

भङ्गिः } (स्त्री०) १ टूटन । फटन । विभाजन ।
भङ्गिः } २ लहर ३ सुकाव । टेढ़ाई । सिकोड़न । ४
भङ्गी } लहर । ५ जल की बाढ़ । धार । ६ टेढ़ा
भङ्गी } मेढ़ा मार्ग । ७ घूम घुमाकर बात कहने का
ढंग । ८ बहाना । अनुआ । ९ फरेब । चाल ।
दगा । १० व्यङ्ग्योक्ति । ११ रसिकता पूर्ण उत्तर ।
१२ पग । कदम । १३ अन्तर । समय । १४ हया-
दारी । लज्जाशीलता । —भक्तिः, (स्त्री०)
लहरियादार जीना ।

भङ्गिन् } (वि०) निर्बल । कमजोर । नरतर ।
भङ्गिन् }

भङ्गिमत् } (वि०) लहरियादार ।
भङ्गिमत् }

भङ्गिमन् } (पु०) (हड्डी का) टूटना ।
भङ्गिमन् } फटन । २ मुहाव । टेढ़ापन । ३ घु-
पन । ४ धोखा । छल । ५ व्यङ्ग्य ।
निडुराई । मगगाई । कुचाल ।

भङ्गिलं } (न०) ज्ञानेन्द्रियों का विकार ।
भङ्गिलम् }

भङ्गुर } (वि०) १ भंग होने वाला । नाशव-
भङ्गुर } परिवर्तनशील । ३ टेढ़ा । ४ घूमघुम-
धुंवराला । ५ दगाबाज़ । बेईमान । सुत्फल

भङ्गुरः } (पु०) नदी का मोड़ या घुमाव ।
भङ्गुरः }

भञ्ज (धा० उभय०) [भञ्जति, भञ्जते] १
कटना । २ अपने लिये प्राप्त करना । ३ अ-
करना । प्राप्त करना । ४ आश्रय लेना ।
पकड़ना । ५ अभ्यास करना । अनुगमन ।
आलोचना करना । ६ उपयोग करना । अ-
में करना । ७ परिचर्या करना । ८ सम्मान
९ पूजा करना । १० चुनना । छाँटना
करना । ११ सम्भोग करना । १२ अनुरक्त
१३ कब्जा करना । अधिकार जमाना । १४
के हिस्से में पड़ना ।

भञ्जकः (पु०) १ विभाग करने वाला । २
करने वाला । उपासना करने वाला ।

भञ्जनं (न०) १ भाग । खण्ड । २ सेवा ।
उपासना ।

भञ्जमान (वि०) १ विभाजक । २ उपयोग
वाला । ३ योग्य । ठीक । उपयुक्त ।

भञ्ज् } (धा० पर०) —[भनक्ति, १
भञ्ज् } तोड़ना । चीर डालना । टुकड़े
डालना । २ नाश करना । गिरा कर
डालना । ३ (किले में) सन्धि कर देना ।
करना । हताश करना । ४ रोकना । बाधा
६ हराना ।

भञ्जक } (वि०) [स्त्री०—भञ्जिका]
भञ्जक } वाला । भञ्जकारी ।

भजन } (वि०) [स्त्री० भजनी] १ तोड़ने
भजन } वाला - राकते वाला ३ विकल करने
वाला ४ उम्र पाड़ा दन वाला ।

भजनः } (न०) १ नाश । विनाश । ध्वंस ।
भजनम् } भंग । २ भगाना । हटाना । ३ खदेड़ना ।
विनय करना । ४ बाधा डालना । ५ पीड़ा देना ।

भजनः }
भजनः } (पु०) दांतों का नष्ट होजाना ।

भजनकः } (पु०) एक रोग जिसमें दाँत गिर जाते
भजनकः } और थोड़ा टेढ़ा हो जाता है ।

भजदः } (पु०) मन्दिर के समीप लगा हुआ
भजदः } वृक्ष ।

भट् (धा० परस्मै०) [भटति, भटित] १ पालना ।
पालन पोषण करना । २ भाड़े पर लेना । ३
मजदूरी पाना ।

भटः (पु०) १ थोड़ा । सिपाही । लड़ने वाला । २
भाड़ेदू सिपाही । ३ पतित । जंगली । ४ राक्षस ।

भटिज (वि०) सीखचा पर भूना हुआ ।

भट्टः (पु०) १ प्रभु । स्वामी । २ उपाधि विशेष ।
[यह उपाधि विद्वान् ब्राह्मणों के नाम के पीछे
लगायी जाती है ।] ३ विद्वान् । दार्शनिक ।
परिडत । ४ वर्षासङ्कर विशेष । ५ भट । बंदीजन ।
—आचार्यः (पु०) विद्वान् की उपाधि ।

भट्टार (वि०) मान्य । पूज्य ।

भट्टारक (वि०) [स्त्री०—भट्टारिका,] मान्य ।
पूज्य ।—वासरः, (पु०) रविवार ।

भट्टिनी (स्त्री०) १ सप्राज्ञी । महारानी । २ ऊँचे पद
की स्त्री । ३ ब्राह्मण की स्त्री ।

भङ्गः (पु०) वर्षासङ्कर जाति विशेष ।

भङ्गिलः (पु०) १ थोड़ा । शूरवीर । २ चाकर ।
अनुचर ।

भङ्ग (धा० परस्मै०) [भङ्गति, भङ्गित] १ कहना ।
बोलना । २ वर्णन करना । ३ नाम लेना ।
पुकारना ।

भङ्गनं (न०) } कथन । वार्तालाप । संवाद ।
भङ्गितं (न०) }
भङ्गितिः (स्त्री०) } बातचीत ।

भङ्ग } (धा० धात्म०) [भङ्गते] १
भङ्ग } भिडकना । डौटना । पटना । २ विद्वान्ना

३ बोलना । ४ उपहास करना । [भङ्गयति,
भङ्गयते] १ भाग्यवान् बनाना । २ टगना ।
धोखा देना ।

भङ्गः } (पु०) १ भाँड़ । हँसोड़ा । विदूषक । २
भङ्गः } वर्षासङ्कर जाति विशेष ।—तपस्विन,
(पु०) कल्पित तपस्वी ।—हासिनी, (स्त्री०)
वेश्या । रंडी ।

भङ्गकः }
भङ्गकः } खजन पत्नी ।

भङ्गनं } (न०) १ कवच । जिरहवस्त्र । २
भङ्गनम् } युद्ध । लड़ाई । ३ उपद्रव । दुष्टता ।

भङ्गिः }
भङ्गिः } (स्त्री०) लहर ।
भङ्गी }
भङ्गी }
भङ्गी }
भङ्गिल } (वि०) मज्जलकारी । शुभ । समृद्ध-

भङ्गिल } शाली । भाग्यशाली ।

भङ्गिलः } (पु०) १ सौभाग्य । आनन्द । कुशलता ।
भङ्गिलः } २ दूत । ३ कलावन्त । कारीगर ।

भङ्गतः } (पु०) १ प्रतिष्ठा सूचक बौद्ध धर्मा-
भङ्गतः } लुपाधी की उपाधि । २ बौद्ध भिक्षुक ।

भदाकः (पु०) समृद्धि । सौभाग्य ।

भद्र (वि०) शुभ । प्रसन्न । समृद्धशाली । २ मज्जल-
कारक । भाग्यवान् । ३ सर्वप्रथी । सर्वोत्तम ।

प्रधान । ४ अनुकूल । शुभ । ५ कृपालु । दयालु ।

श्रेष्ठ । अप्रतिकूल । ६ आनन्ददायी । उपभोग्य । ७

मनोहर । सुन्दर । ८ रत्नाय । वाञ्छित । प्रशंस्य ।

प्यारा । प्रिय । ९ दिखावटी । बनावटी ।

पाखण्डी ।—अङ्गः, (पु०) बलराम ।—

आकार, —आकृति, (वि०) शुभ बीज डौल

का ।—आत्मजः, (पु०) खड्ग । तलवार ।—

आसनं, (न०) १ कुर्मा । तख्त । सिंहासन ।

२ ध्यान करने का आसन विशेष ।—ईशः, (पु०)

शिव जी ।—एला, (स्त्री०) बड़ी हलायची ।

—कपिलः (पु०) शिव ।—कारक, (वि०)

मज्जलकारी । शुभ ।—काली, (स्त्री०) दुर्गा

देवी ।—कुम्भः, (पु०) सोने का घड़ा जिसमें

गंगा जल भरा हो ।—गणितं, (न०) यंत्र

रचना या यंत्र लिखना ।—घटः, —घटकः,

(पु०) वह घड़ा जिसमें नामों की गोली डालकर लादरी या चिट्ठी निकाली जाती है ।—दारु, (पु० न०) सतौवर का पेड़ ।—नामन्, (पु०) खंजन पक्षी ।—पीठं (न०) १ राजसिंहासन । उच्चासन । २ एक प्रकार का पंख वाला कीड़ा । बलनः, (पु०) बलराम जी । बलदाज जी ।—मुख, (वि०) शुभ मुख वाला । वास्तव में यह सम्बोधन के रूप में “और सज्जन महोदय” के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।]—मुगः, (पु०) हाथी विशेष ।—रेणुः, (पु०) इन्द्र के हाथी का नाम ।—वर्मन्, (पु०) चमेली विशेष ।—शास्त्रः, (पु०) कार्तिकेय ।—श्रयं, श्रियं, (न०) चन्दन ।—श्रीः, (स्त्री०) चन्दन का पेड़ ।—सोमा, (स्त्री०) गंगा ।

भद्रं (न०) १ प्रसन्नता । सौभाग्य । कुशलता । बरकत । समृद्धि । २ सुवर्ण । ३ जोहा । ईसपात ।

भद्रः (पु०) १ खंजन पक्षी । २ विशेष जाति के हाथी की उपाधि । ३ दम्भी । पाखण्डी । ४ बैल । ५ शिव । ६ मेरु पर्वत । ७ कदम्ब वृक्ष ।

भद्रक (वि०) [स्त्री० - भद्रिका] १ शुभ । नेक । २ मनहोर । सुन्दर ।

भद्रकः (पु०) देवदारु वृक्ष ।

भद्रकर } (वि०) शुभकारी । समृद्धिदाता ।
भद्रकुर }

भद्रवत् (वि०) शुभ । (न०) देवदारु वृक्ष ।

भद्रा (स्त्री०) १ गौ । २ द्वितीया, सप्तमी, और द्वादशी तिथियों की संज्ञा । ३ आकाशगंगा । ४ अनेक पौधों के नाम ।—श्रयं (न०) चन्दन ।

भद्रिका (स्त्री०) तावीज । यंत्र ।

भद्रिलं (न०) समृद्धि । सौभाग्य ।

भंभः } (पु०) १ मक्खी । २ धूम । धुआँ ।
भम्भः }

भंभरालिका } (स्त्री०) गोमक्खी डौल । पिस्तू ।
भम्भरालिका }
भंभराली } मच्छर ।
भम्भराली }

भंभाखः } (पु०) राय का रौबना ।
भम्भाखः }

भयं (न०) १ डर । भीति । खौफ । २ जोखों ।

भयः (पु०) बीमारी । रोग ।—अन्वित, —आक्रान्त (वि०) डरा हुआ । भयभीत ।—आतुर, —आर्त, (वि०) भयभीत । डरा हुआ ।—आवह, (वि०) १ डरावना । भयोत्पादक । २ जोखों का ।—उत्तर, (वि०) भयान्वित ।—कर, (वि०) १ भयावन । डरावना । भीम । भयङ्कर । २ खतरनाक ।—डिण्डिमः, (पु०) लड़ाई में बजाया जाने वाला ढोल । मारुबाजा ।—प्रद, (वि०) भय देने वाला । भयकारी ।—विप्लुत, (वि०) डरा हुआ । भयभीत ।—व्यूहः, (पु०) सेना का व्यूह विशेष जो उस समय रचा जाता है जिस समय किसी प्रकार के भय की उपस्थिति की आशङ्का होती है ।

भयानक (वि०) डरावन ।

भयानकं (न०) भय । डर ।

भयानकः (पु०) १ चीता । २ राहु । ३ साहित्य में नौरत्नों के अन्तर्गत छठवाँ रत्न ।

भर (वि०) प्रद । देने वाला । सहारा देने वाला । समर्थक ।

भरः (पु०) १ भार । बोझ । २ समूह । संग्रह । विशेष परिमाण में । विशेष मात्रा में । ३ अतिशयता । ४ तौल विशेष ।

भरटः (पु०) १ कुम्हार । २ नौका ।

भरण (वि०) [स्त्री० - भरणी] भरण पोषण करने वाला । परवरिश करने वाला ।

भरणा (पु०) भरणी नक्षत्र ।

भरणी (स्त्री०) दूसरे नक्षत्र का नाम ।—भूः, (पु०) राहु ।

भरंडः } (पु०) १ स्वामी । प्रभु । २ राजा ।
भरण्डः } रहस । ३ बैल । लाँच । ४ कीट । कीड़ा ।

भरस्यं (न०) १ भरण पोषण । २ मजदूरी । भाड़ा । किराया । ३ भरणी नक्षत्र ।

भरश्या (स्त्री०) मजदूरी । उजरत ।—भुज्, (पु०) भाड़े का नौकर ।

भरथु (पु०) १ स्वामी । मातृक २ रत्नक ३ मित्र । ४ अग्नि ५ चन्द्रमा । ६ सूर्य

भरतः (पु०) १ दुष्यन्त और शकुन्तला से उत्पन्न । यह चक्रवर्ती राजा होगये हैं और इन्हींके नाम पर इनके राज्य का नाम भारतवर्ष पड़ा है । २ महाराज दशरथ के पुत्र जो रानी कैकेयी की कोख से उत्पन्न हुए थे । ३ एक ऋषि जिन्होंने नाटक रचना की कला में एक प्रसिद्ध ग्रन्थ रचा है । ४ नट । अभिनयकर्ता । ५ भाड़े का घोड़ा । ६ पहाड़ी आदमी । जंगली आदमी । ७ अग्नि ।—अग्रजाः, (पु०) श्रीरामचन्द्र ।—खण्डम्, (न०) भारतवर्ष का प्रान्त विशेष ।—ज्ञ, (वि०) भरत मुनि रचित नाटक शास्त्र का ज्ञाता ।—पुत्रकः, (पु०) नट । अभिनयकर्ता—वर्षः, (पु०) भरत का देश ।—वाक्यं, (न०) नाटक का अन्तिम गान जो आशीर्वादात्मक होता है ।

भरथः (पु०) १ राजा । २ अग्नि । ३ लोकपाल ।

भरद्वाजः (पु०) १ सप्तर्षि में से एक । २ भरत पत्नी ।

भरित (वि०) १ पोषित । २ परिपूर्ण ।

भरुः (पु०) १ पति । २ स्वामी । ३ शिव । ४ विष्णु । ५ सुवर्ण । ६ समुद्र ।

भरुजः (पु०) [स्त्री०—भरुजा या भरुजी] श्रगाव । गीदड़ । सियार ।

भरुटकं (न०) भुना हुआ मौस ।

भरुतः (पु०) १ शिव । २ ब्रह्मा ।

भरुथः (पु०) शिव का नामान्तर ।

भरुज (वि०) १ भुना हुआ । सिका हुआ । कढ़ाई में अकोरा हुआ । २ नाश करने वाला ।

भरुजनं (न०) १ भुनाने या अकोरने की क्रिया । २ कढ़ाई ।

भरुतु (पु०) १ पति । २ प्रभु । स्वामी । ३ नेता । नायक । प्रधान । ४ समर्थक । रत्नक ।—स्त्री, (स्त्री०) पतिव्रतिनी स्त्री ।—द्वारकः, (पु०) युवराज । (यह नाटक की भाषा में युवराज को

सम्बन्धन करते समय प्रयुक्त होता है । द्वारिकार (स्त्री०) युवराज्ञी ।—द्वत, (न०) पतिव्रता ।—व्रता, (स्त्री०) पतिव्रता स्त्री ।—शोकः, (पु०) पति के मरने का शोक ।—हरिः, (पु०) एक प्रसिद्ध ग्रन्थ रचयिता जिनके बनाये, नीति भण्डार और वैराग्य शतक प्रसिद्ध हैं ।

भरुमती (स्त्री०) सौभाग्यवती स्त्री ।

भरुसातु (अव्यय०) पति के अधिकार में ।

भरुस (धा० आत्म०) [भरुसयते] १ डौटना । डपटना । २ फटकारना । लानत मलामत करना । सफ़्तसुख कहना । गरियाना । ३ चिढ़ाना ।

भरुसकः (पु०) १ डराने बमकाने वाला । २ गरियाने वाला ।

भरुसनं (न०) १ डौटडपट । गाली गालौज । भरुसना (स्त्री०) २ बमकी । ३ लानत मलामत । भरुसितम् (न०) ४ शाप । अक्रोश ।

भरुम (न०) १ मजदूरी । भाड़ा । २ सुवर्ण । ३ नाफ । नाभि ।

भरु (धा० आत्म०) [भाजयते, भाजित,] देखना । निहारना ।

भरुल (धा० आत्म०) १ निरूपण करना । वर्णन करना । कहना । २ धायल करना । वध करना । ३ देना ।

भरुलः (पु०) १ बाण विशेष । एक । प्रकार का भरुली (स्त्री०) २ तीर या अस्त्र । (पु०) १ रीढ़ । भरुलं (न०) २ शिव । ३ भिलावे का वृक्ष ।

भरुलकः (पु०) रीढ़ । मालू ।

भरुलातः } (पु०) भिलावे का वृक्ष ।
भरुलातकः }

भरुलुकः (पु०) } भालू । रीढ़ ।
भरुलुकः (पु०) }

भव (वि०) उत्पन्न । पैदा हुआ ।

भवः (पु०) १ सत्ता । २ उत्पत्ति । पैदायश । विकास । ४ सांसारिक अस्तित्व । ५ संसार । ६ स्वास्थ्य । तंदुरुस्ती । ७ श्रेष्ठता । उत्कृष्टता । १० प्राप्ति ।—अतिग, (वि०) सांसारिक अस्तित्व से निस्तार पाना ।—अन्तकृत, (पु०) ब्रह्मा

जी का नामान्तर ।—अन्तरं, (न०) आगे का या पिछला अस्तित्व ।—अधिः,—अर्धः,—समुद्रः,—सागरः,—सिन्धुः, (पु०) सांसारिक जीवन रूपी सागर ।—आत्मजः, (पु०) गणेश जी या कार्तिकेय के नामान्तर ।—उच्छेदः, (पु०) सांसारिक जीवन का नाश ।—क्षितिः, (स्त्री०) जन्मस्थान ।—प्रस्मरः, (पु०) द्वावानल ।—क्रिद्, (वि०) सांसारिक जीवन के बंधनों का काटने वाला । पुनर्जन्म रोकने वाला । क्रिद्, (पु०) पुनर्जन्म की रोक ।—दारु, (न०) देवदारु वृक्ष ।—भूतिः, (पु०) एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि ।—रुद् (पु०) वह ढोल जो किसी के मरने पर पीटा जाता है । मातमी ढोल ।—वीतिः, (स्त्री०) सांसारिक प्रपञ्च से छुटकारा ।

भवत् (वि०) [स्त्री—भवन्ती] १ होने वाला । २ वर्तमान ।

भवतो (स्त्री०) आप ।

भवदीय (वि०) आपका । तुम्हारा ।

भवनं (न०) १ अस्तित्व । २ उत्पत्ति । पैदायश । ३ घर । मकान । डेरा । महल । ४ स्थान । आवार । ५ इमारत । ६ प्रकृतः—उदरं, (न०) घर के भीतर का स्थान ।—पतिः,—स्वामिन, (पु०) पेशवा खान्दान । घर का बड़ा बड़ा ।

भवंतः }
भवन्तः } वर्तमान समय । इस बीच में ।
भवतिः }
भवन्ती } (स्त्री०) पतिव्रता या सती पत्नी ।

भवानी (स्त्री०) पार्वती का नाम जो शिव जी की पत्नी हैं ।—गुरुः, (पु०) हिमालय पर्वत ।—पतिः, (पु०) शिव जी का नाम ।

भवाद्वत् (वि०) [स्त्री०—भवाद्वती] आपकी
भवाद्वत् (वि०) [स्त्री०—भवाद्वती] तरह ।
भवाद्वत् (वि०) [स्त्री०—भवाद्वती] तुम्हारी तरह ।

भषिक (वि०) [स्त्री०—भषिकी] १ गुणकारी । लाभकारी । उपयुक्त । उपयोगी । २ प्रसन्न । समृद्धशाली ।

भषिकं (न०) कुशलता । समृद्धि ।

भषितव्य (वि०) होने वाला । भावी । होनेहार ।

भषितव्यं (न०) जो अवश्यम्भावो है ।

भषितव्यता (स्त्री०) १ होनी । भावी । होनेहार । २ प्रारब्ध । भाग्य । किस्मत ।

भषित् (वि०) [स्त्री०—भषित्री] भषित्व । होनेहार ।

भषितः (पु०) कवि । [इस अर्थ में, किन्तु पुलिङ्ग में “भगिनिन्” शब्द का भी प्रयोग होता है ।]

भषितः (पु०) १ उपपत्ति । जार । आशिक । २ लंपट । कामी ।

भषिष्णु (वि०) १ होने वाला । २ धनेच्छुक । धन-दौलत की कामना रखने वाला । काब । २ प्रस्था-सन्न । निकट ।

भषिष्य (वि०) १ वर्तमान काल के उपरान्त आने वाला समय । आने वाला काल । २ प्रस्थासन्न । निकट ।

भषिष्यं (न०) आने वाला काल ।—ज्ञानं, (न०) आने वाले समय या घटना की जानकारी ।—पुराणं, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक ।

भषिष्यन् (वि०) [स्त्री०—भषिष्यन्ती या भषिष्यन्ती] होने को ।—वक्तृ, —वादिन, (वि०) आगे होने वाली घटनाओं का बतलाने वाला । पेशीन गोई करने वाला ।

भव्य (वि०) १ मौजूद । विद्यमान । वर्तमान । २ आगे होने वाला । ३ बहुत करके होने वाला । ४ उपयुक्त । ठीक । उचित । योग्य । ५ अच्छा । उम्दा । उत्कृष्ट । ६ शुभ । भाग्यवान । प्रसन्न । ७ मनोहर । सुन्दर । ८ शान्त । ९ सत्य ।

भव्या (स्त्री०) पार्वती का नाम ।

भव्यं (न०) १ अस्तित्व । २ आने वाला काल । ३ परिणाम । फल । ४ शुभपरिणाम । समृद्धि । ५ हठ्ठी ।

भष (धा० प०) [भषति] १ सूचना । गुरांता । २ शालियां देना । डाँटना । हपटना ।

भषः }
भषकः } (पु०) कुत्ता । खान ।

भषण (पु०) कुत्ता

भषण (न०) कुत्त का भूकना कुत्त का गुराँना ।

भस्म (पु०) १ सूर्य । २ गोशत ३ बतक विशेष । ४ समय । ५ वेड़ा । धरनै । ६ पिछला भाग ।

भसनः (पु०) शहद की मक्खी ।

भस्मन्तः (पु०) समय ।

भसित (वि०) जल कर रख हुआ । भस्म हुआ ।

भसितं (न०) राख ।

भस्त्रका } (स्त्री०) १ धोक्नी । २ भस्त्र या
भस्त्रा } चाम का कोई पात्र जिसमें जल भरा
भस्त्रि } जाय । ३ चमड़े का थैला ।

भस्मकं (न०) १ राख । खाक । २ एक रोग विशेष जिसमें भोजन तुरन्त पच जाता है ३ नेत्र रोग विशेष ।

भस्मन् (वि०) १ राख । खाक । २ भस्म जो शरीर में लगायी जाती है —अग्निः, (पु०) भस्मक रोग ।
—अवशेष, (वि०) राख के रूप में रहने वाला अथवा जिसकी केवल राख बच रहे । —आहुयः, (पु०) कपूर । —उद्धूलनं, (न०) गुग्गुलुनम्, (न०) शरीर में भस्म मलना । —कारः, (पु०) धोबी । —कूटः, (पु०) राख का ढेर । —गन्धा, —गन्धिका, —गन्धिनी, (स्त्री०) सुगन्धद्रव्य विशेष । —तूलं, (न०) १ कुहरा । वर्षा । २ धूल की वर्षा । ३ कई ग्रामों का समुदाय । —प्रियः, (पु०) शिव । —रागाः, (पु०) रोगविशेष । —लेपनं (न०) भस्म से शरीर पोतना । —विधिः, (पु०) कोई विधान जो भस्म से किया जाय । —वेधकः, (पु०) कपूर । —स्नानं, (न०) भस्मस्नान ।

भस्मता (स्त्री०) भस्म होने का कार्य ।

भस्मसान् (अव्यया०) भस्म होना ।

भा (धा० परस्मै०) [भाति, भात] १ चमकना । २ दिखलाई पड़ना । ३ होना । ४ अपने को दिखलाना ।

भा (स्त्री०) १ प्रकाश । अभा । चमक । सौन्दर्य । २ प्रतिष्ठाया । परछाई । —कोशः, — कोषः,

(पु०) सूय गया (पु०) नक्षत्रों का समुदाय । —निकरः, (पु०) किरणों का संग्रह, प्रकाशपुञ्ज । — नेमिः, (पु०) सूर्य ।

भाक्त (वि०) १ परमुखापेक्षी । परतंत्र । २ भोज्यपदार्थ होने के योग्य । ३ गौण । अपकृष्ट । ४ गौण भाव में प्रयुक्त ।

भाक्तिकः (पु०) अनुगामी । चाकर । नौकर ।

भाक्त (वि०) [स्त्री० —भाक्ती] भुक्त्वद् भोजनभट्ट ।

भागः (पु०) १ अंश । हिस्सा । पाती । भाग । २ बंटवारा । ३ भाग्य । प्रारब्ध । ४ किसी समूची वस्तु का एक अंश या टुकड़ा । चतुर्थांश । ५ वृत्त के व्यास का ३६० वाँ अंश । ७ किसी राशि का ३० वाँ अंश । ८ भागफल । ९ स्थान । जगह । —अर्ह (वि०) पैतृक सम्पत्ति में भाग पाने का अधिकारी । —लपना, (स्त्री०) हिस्सों का विभाजन । —जातिः, (स्त्री०) विभाग के चार प्रकारों में से एक । इसमें एक हर और एक अंश होता है । यह चाहे समभिन्न हो चाहे विषमभिन्न । जैसे $\frac{1}{2}$ $\frac{1}{3}$ । —धेयः, (न०) १ पाँती । हिस्सा । २ भाग्य । प्रारब्ध । ३ सौभाग्य । खुशकिस्मती । ४ सम्पत्ति । ५ आल्हाद । —धेयः, (पु०) १ कर । टेक्स । २ उत्तराधिकारी । भाज, (वि०) हिस्सेदार । पाँतीदार । वह जिसका कुछ लगाव हो । —भुज (पु०) राजा । बादशाह । —हरः, (पु०) १ समान उत्तराधिकारी । २ भाग । (अङ्कगणित का) —हारः, (पु०) (अङ्कगणित का) भाग ।

भागवत (वि०) [स्त्री० —भागवती] १ विष्णु-सम्बन्धी । विष्णुभक्त । २ भगवान सम्बन्धी । ३ पावन । देवी (पवित्र) ।

भागवतं (न०) अष्टादश पुराणों में से एक सात्विक पुराण ।

भागवतः (पु०) विष्णुभक्त ।

भागशस् (वि०) (अव्यया०) १ टुकड़ों में हिस्सा करके । २ हिस्से के अनुसार ।

भागिक (वि०) १ हिस्सा सम्बन्धी । २ हिस्से वाला । ३ भिन्नात्मक । ४ व्याज ।

भागिन् (वि०) १ भागो या हिस्सों वाला । २ हिस्से वाला । ३ बाँट या हिस्सा लेने वाला । ४ सम्बन्ध युक्त । ५ अधिकारी । मालिक । ६ जो एक भाग पाने का अधिकारी हो । ७ भाग्यवान् । ८ अपकृष्ट । गाय ।

भागिनेयः (पु०) भाँजा । भगिनीपुत्र ।

भागिनेयी (स्त्री०) भाँजी । भगिनी की पुत्री ।

भागीरथी (स्त्री०) श्री गङ्गा ।

भाग्य (न०) १ प्रारब्ध । किस्मत । २ सौभाग्य । ३ समृद्धि । ४ हर्ष । कुशलता । आयात्त, (वि०) प्रारब्ध पर निर्भर ।—उद्भयः, (पु०) भाग्योद्भय । भाग्य का खुलना ।—विस्तारः, (पु०) वृद्धि किस्मती ।—वर्गान्, (अव्यय०) भाग्य से । भाग्यवश ।

भाग्यवत् (वि०) १ भाग्यवान् । सुशक्तिस्मत् । २ हरा भरा । समृद्धवान् ।

भाँग } (वि०) [स्त्री—भाङ्गी] पटसन का बना भाङ्ग } हुआ । सनिया ।

भाँगकः } (पु०) चिथड़ा । चीथड़ा ।

भाँगिले } (न०) पटसन का खेत ।

भाज् (धा० उभय०) १ बाँटना । वितरित करना ।

भाज (वि०) १ रखने वाला । भोगने वाला । २ कर्तव्य । जो करणीय हो ।

भाजकः (पु०) भाग करने वाला । बाँटने वाला ।

भाजनं (न०) १ वरतन । पात्र । २ आधा । ३ योग्य व्यक्ति या वस्तु । ४ प्रतिनिधित्व । ६४ पल की तौल विशेष ।

भाजितं (न०) पाँती । हिस्सा । अंश ।

भाजी (स्त्री०) चाँवल । माँह । पीच ।

भाज्यं (न०) १ अँश । भाग । पाँती । २ वह अङ्क जिसे भाजक अङ्क से भाग दिया जाता है । ३ उत्तराधिकार । पैतृक सम्पत्ति ।

भाटं } (न०) मजदूरी । उजरत । किराया ।

भाटकं }

भाटिः (स्त्री०) १ मजदूरी । उजरत । २ रहिद्वारों की आसड़नी ।

भाट्टः (पु०) कुमारिल भट्ट के मीमांसा सम्बन्धी सिद्धान्तानुयायी ।

भाटाः (पु०) नाट्य शास्त्रानुसार एक प्रकार का रूपक, जो नाटकादि दस रूपकों में से एक माना गया है । इसमें केवल एक ही श्रृंग होता है और इसमें हास्य रस की प्रधानता होती है । इसमें वह आकाश की ओर देखता हुआ आप ही आप सारी कहानी उक्ति प्रत्युक्ति के रूप में कह डालता है, मानों वह किसी से बातचीत कर रहा हो ।

भाणकः (पु०) घोषणा करने वाला । निरूपण करने वाला ।

भाण्डं (न०) १ बरतन । २ पेटी । ड्रंक । बक्स । ३ कोई भी औज़ार या यंत्र । ४ बाजा । ५ माल । सामान । सौदागरी माल । ६ माल की गाँठ । ७ क्रीमली माल । बहुमूल्य सामान । ८ नदीगर्भ । ९ घोड़े का ज़ीन या साज । १० भाड़पन । मसखरापन ।

भांडाः } (पु०) (बहुवचनान्त) माल । सामान ।

भाण्डाः } —अगारः,—आगारः, (पु०)—अगारं,—आगारं, (न०) मालगोदाम । मण्ड-रिया । २ खजाना । धनागार । ३ संग्रह । सामान । गोलाबारूद ।—पतिः, (पु०) व्यापारी ।—पुटः, (पु०) नाई ।—प्रतिभाण्डकम्, (न०) विनिमय ।—शाला, (स्त्री०) मालगोदाम ।

भांडकः (पु०) }
भाण्डकः (पु०) } कटोरा । (न०) सौदागरी का
भांडकं (न०) } माल ।

भाण्डकम् (न०) }

भांडारं } (न०) मालगोदाम ।

भाण्डारं }

भांडारिन् } (पु०) मालगोदाम का अधिकारी ।

भाण्डारिन् }

भांडिः } (स्त्री०) १ उत्तरा रखने का घर या खोख ।

भाण्डिडः } —घाहः, (पु०) नाई ।—शाला,

(स्त्री०) हज्जाम की दुकान ।

भाडिक (पु०)
भाडिकः (पु०)
भाडिलः (पु०)
भाडिल्लः (पु०)

भाडिका } (स्त्री०) छाँड़ार । छोखर । बरतन
भाडिका } भाँड़ा ।

भाँड़िनी } (स्त्री०) पेटी । टोकरी ।
भाँड़िनी }

भाँड़ीरः } (पु०) वट वृक्ष । बरगद का पेड़ ।
भाँड़ीरः }

भात (व० क०) चमकीला । चमकदार ।

भातः (पु०) प्रभात । भोर ।

भातिः (स्त्री०) १ चमक । प्रकाश । आभा । दमक ।
२ ज्ञान । प्रतीति ।

भातुः (पु०) सूर्य ।

भाद्रः } (पु०) एक मास का नाम । भादों का
भाद्रपदः } महीना ।

भाद्रपदाः (स्त्री० बहु०) २५ वें और २६ वें नक्षत्रों
का नाम । पूर्वाभाद्रपदा और उत्तरभाद्रपदा ।

भाद्रपदी } (स्त्री०) भादों महीने की पूर्णमासी ।
भाद्री }

भाद्रमानुरः (पु०) नेक माता का पुत्र ।

भाने (न०) १ प्रकटन । प्रादुर्भाव । दृष्टिगोचर होना ।
२ प्रकाश । आभा । ३ ज्ञान । प्रतीति ।

भानुः (पु०) १ प्रकाश । आभा । चमक । २
किरण । ३ सूर्य । ४ सौन्दर्य । ५ दिवस । ६
राजा । बादशाह । ७ शिव । (स्त्री०) सुन्दरी
स्त्री । —केशरः, —केशरः, (पु०) सूर्य । —
जः, —(पु०) शनिग्रह । —दिनः, (न०)
वारः, (पु०) रविवार । इतवार ।

भानुमत् (वि०) १ चमकीला । प्रकाशमान । २
सुन्दर । मनोहर । (पु०) सूर्य ।

भानुमती (स्त्री०) दुर्योधन की स्त्री का नाम ।

भामः (पु०) १ चमक । आभा । २ सूर्य । ३ क्रोध ।
कोप । रोष । ४ बहनोंई । भगिनीपति ।

भामा (स्त्री०) १ क्रोध करने वाली स्त्री । २ सत्य
भामा जो श्री कृष्ण की पत्नियों में से एक थी ।

भामिनी (स्त्री०) १ कामिनी । सुन्दरी युवती स्त्री ।
२ क्रोधना स्त्री ।

“उपजीयत इव कश्चि बोभाः

परितो भामिनि ते पुण्यस्य चित्तं ।”

भामिनीविलास ।

भारः (पु०) १ बोझ । २ भोक । प्रचण्डता । (यथा
युद्ध की) ३ अतिशयता । ४ श्रम । परिश्रम ।
अयास । ५ बड़ी मात्रा । ६ तौल विशेष । ७
जुआं (उस गाड़ी का जो बोझ ढोने के लिये हो)
—आक्रान्त, (वि०) बोझ से दबा हुआ ।
—उद्धतः, (वि०) कुली । मजदूर । बोझ
उठाने वाला । —उपजीवनः, (न०) बोझ ढोकर
और उसकी ग्रामदनी से आजीविका चलावे
वाला । —यष्टिः, (पु०) वह बल्ली जिसमें
लटक कर भारी सामान ढोया जाता है । —वाहः,
(वि०) [स्त्री०—मरौही] बोझ ढोने वाला ।
—वाहः, (पु०) बोझ ले जाने वाला । कुली ।
—वाहनः, (पु०) जानवर जो बोझ ढोवे । —
वाहिकः, (पु०) कुली । हम्माल । —सह,
(वि०) जो भारी बोझ उठा सके अतएव बड़ा
मजबूत या ताकतवर । —हर, —हारः (पु०)
कुली । हम्माल । —हारिन, (पु०) कृष्ण का
नामान्तर ।

भारंडः } (पु०) पत्नी विशेष, जिसे आज तक
भारण्डः } किसी ने नहीं देखा । इसको भारंड, या
भारण्ड, भी कहते हैं ।

भारत (वि०) [स्त्री०—भारती] भरत का वंशज
या भारत का ।

भारतं (न०) १ भारतवर्ष । हिन्दुस्थान । २ महा-
भारत ग्रन्थ जिसमें मुख्यतः कौरव और पाण्डवों
के प्रसिद्ध युद्ध का वर्णन है ।

भारतः (पु०) १ भरतवंशज । २ भारतवर्षवासी ।
३ नट । अभिनय करने वाला ।

भारती (स्त्री०) १ वाणी । स्वर । शब्द । वाग्मिता ।
२ वाणी की अधिष्ठात्री देवी । सरस्वती । ३ रचना
शैली विशेष । यथा—

"भारती संस्कृतभाषायां व्याख्यापारं ब्रह्मण्यः"

—साहित्यदर्पणः ।

४ लवा । बटेर ।

भारद्वाजः (पु०) १ द्रोणाचार्य का नाम । २ अगस्त्य का नामान्तर । ३ मङ्गलग्रह । ४ लाख । अग्नि । चंदूल ।

भारद्वाजं (न०) हड्डी । अस्थि ।

भारवः (पु०) कमान की डोरी । धनुष का रोदा ।

भारविः (पु०) किरातार्जुनीय के रचयिता एक प्रसिद्ध एवं सकल संस्कृत भाषा के कवि ।

भारिः (पु०) शेर । सिंह ।

भारिक } (वि०) भारी । (पु०) कुली । हम्माल ।
भारिम् }

भार्गः (पु०) भर्गों का राजा ।

भार्गवः (पु०) १ शुक्राचार्य । असुराचार्य । २ परशुराम । ३ शिव । ४ धनुर्धर । ५ हाथी ।—प्रियः, (पु०) हीरा ।

भार्गवी (स्त्री०) १ द्वे । वास । २ लक्ष्मी ।

भार्यः (पु०) नौका ।

भार्या (स्त्री०) १ पत्नी । २ भावा जालवर ।—आट, (वि०) पत्नी के वेश्यापन से आजीविका निर्वाह करने वाला ।—ऊट, (वि०) विवाहित ।—जितः, (पु०) स्त्री का वशवर्ती पति ।

भार्याकः (पु०) १ सृग विशेष । २ उस पुत्र का पिता जो अन्य की स्त्री से उत्पन्न हुआ हो ।

भालं (न०) १ माथा । २ प्रकाश । ३ अंधकार ।—आङ्गः, (पु०) १ भान्यवान पुरुष । २ शिव । ३ आरा । ४ कच्छप । कबुआ ।—चन्द्रः, (पु०) १ शिव । २ गणेश ।—दर्शनं, (न०) ईगुर । सेंदूर ।—दर्शिनः, (वि०) माथा देखने वाला अर्थात् वह नौकर जो सदा मालिक की ओर ध्यान रखता हो ।—दृशः, (पु०)—लोचनः, (पु०) शिव ।—पट्टः, (पु०)—पट्टं, (न०) माथा ।

भालुः (पु०) सूर्य ।

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

भालुकः

(पु०) रीझ । भालु ।

भावः (पु०) १ अस्तित्व । विद्यमानता । २ घटना । होना । ३ अवस्था । दशा । हालत । ४ ईश । रीति । ५ पद । ओहदा । ६ वास्तविकता । ७ स्वभाव । भिन्न । ८ कुकाव । विचार । चित्त-वृत्ति । ९ प्रेम । प्यार । अनुराग । १० अभिप्राय । ११ अर्थ । १२ सङ्कल्प । इदं विचार । १३ हृदय । आत्मा । मन । १४ पदार्थ । वस्तु । जीव । १५ जीवधारी । १६ भावना । १७ हावभाव । आचरण । १८ प्रेमोद्योतक हावभाव । १९ उत्पत्ति । २० संसार । दुनिया । २१ गर्भशय । २२ सङ्कल्प । २३ अलौकिक शक्ति । २४ परामर्श । आदेश । २५ नाटक में किसी पुरुष के लिये सम्बोधन । २६ व्याकरण में "भावेत्तः" । २७ मान-मन्दिर । ज्योतिष । २८ चान्द्र नक्षत्र ।—अनुग, (वि०) स्वाभाविक ।—अनुगा, (स्त्री०) प्रतिच्छाया ।—अन्तरं, (न०) भिन्न दशा ।—आकृतं, (न०) मानसिक विचार ।—आत्मक, (वि०) स्वाभाविक । असली ।—आलोना, (स्त्री०) प्रतिच्छाया ।—गम्भीरं, (न०) १ हृदय से । २ गम्भीरता पूर्वक ।—गम्यं, (न०) मन द्वारा जानने योग्य ।—ग्राहिन्, (वि०) तात्पर्य समझने वाला ।—जः, (पु०) कामदेव ।—ज्ञः, (वि०) हृदय की बात जानने वाला ।—बंधन, (वि०) हृदय को बाँधने वाला । हृदयों को मिलाने वाला ।—मिश्रः, (पु०) मान्य पुरुष । भद्रपुरुष ।—रूप, (वि०) असली । वास्तविक ।—वाचकं, (न०) व्याकरण में वह संज्ञा जिसके द्वारा किसी पदार्थ का भाव, धर्म, या गुण मालूम पड़े ।—शवलत्वं, (न०) अनेक प्रकार के भावों का संमिश्रण ।—शून्य, (वि०) प्रेमरहित ।—समाहित, (वि०) धर्मनिष्ठ । साधु । भक्तिपूर्ण ।—सर्गः, (पु०) (सांख्य) तन्मात्राओं की उत्पत्ति ।—स्थः, (वि०) अनु-रक्त ।—स्निग्ध, (वि०) शकपद भाव से अनुरक्त ।

भावक (वि०) १ मात्र से पूर्ण । २ सौख्य वृद्धि कारक । ३ कल्पना करने वाला । अद्भुत रसोद्गी-
पक पदार्थ और सुन्दरता के प्रति रुचि रखने
वाला ।

भावकः (पु०) १ भावना । हृदयगत भाव । संस्कार ।
२ प्रेम के भावों को बहिर्वेष्टा से बाँधन करना ।

भावन्न (वि०) [स्त्री०—भावनी] प्रभाव डालने
वाला । असर करने वाला ।

भावनं (न०) १ उत्पत्ति । प्रादुर्भाव । २ किसी
भावना (स्त्री०) के स्वार्थ को आगे बढ़ाना । ३
कल्पना । विचार । खयाल । ४ भक्ति । श्रद्धा ।
५ ध्यान । धारणा । ६ अप्रमाणीकृत अनुमान ।
कल्पित विषय । ७ आलोचन । खोज । ८
निरणय । ९ स्मरण । याददात । १० ज्ञान ।
प्रतीति । ११ प्रमाण । तर्क । प्रयोग । १२ सूखे
चूर्ण को किसी तरल पदार्थ से तर करना ।
१३ बसाना । पुष्प तथा सुगन्ध द्रव्यों से
सजाना ।

भावनः (न०) १ निमित्त कारण । २ सृष्टिकर्ता ।
३ शिव जी की उपाधि ।

भावदः (पु०) १ उच्छ्वास । हृदय का आवेग । २
रामद्वेष । २ प्रेमभाव का प्रकटन । ३ साधु पुरुष ।
४ लंपट जन । ५ नट । अभिनयकर्ता । ६
सजावट ।

भाविक (वि०) [स्त्री०—भाविकी] १ स्वाभाविक ।
नैसर्गिक । प्राकृतिक । २ भावनात्मक । ३ आने
वाला । काल ।

भाविकं (न०) भाषा जो प्रेम और कामेच्छा से
परिपूर्ण हो । २ अलङ्कार विशेष । इसमें भूल और
भावी बातों को प्रत्यक्ष वर्तमान की तरह निरूपण
करना पड़ता है ।

भावित (व० क०) १ रचा हुआ । पैदा किया
हुआ । २ प्रकट किया हुआ । ३ पोसा हुआ । ४
विचार हुआ । सोचा हुआ । कल्पना किया
हुआ । ५ ध्यान किया हुआ । परिवर्तित । ६ शुद्ध
किया हुआ । ७ सिद्ध किया हुआ । स्थापित किया
हुआ । ८ व्याप्त । परिपूर्ण । ९ उत्साहित ।
१० तर । भीगा हुआ । ११ सुगन्धित किया

हुआ । १२ मिला हुआ । मिश्रित ।—आत्मन्,
(वि०)—बुद्धि, (वि०) १ वह जिसने अपने
आत्मा को परमात्म का ध्यान करके पवित्र कर
लिया हो । २ भक्तिपूर्ण । साधु । ३ विचारवान ।
४ संलग्न ।

भावितकं (न०) सत्य विवरण ।

भावित्रं (न०) स्वर्ग, मर्त्य और पानाल का समूह ।
त्रैलोक्य ।

भाविन् (वि०) १ हुआ । २ होने वाला । ३ आने
आने वाला काल । ४ होने योग्य । ५ अवश्य-
म्भावी । ६ कुलीन । सुन्दर । आदर्श ।

भाविनी (स्त्री०) सुयरी स्त्री । २ सती स्त्री । कुलवती
स्त्री । ३ स्वेच्छाचारिणी या निरङ्कुश स्त्री ।

भावुक (वि०) १ होने वाला । भव्य । ३ समृद्ध-
शाली । प्रसन्न । ४ शुभ गुणग्राही । कविप्रिय ।

भावुकं (न०) १ प्रसन्नता । कुशलता । समृद्धि । २
भाषा जिससे प्रेम और आसक्ति प्रकट हो ।

भावुकः (पु०) बहनाई । अग्निनीपति ।

भाव्य (वि०) १ होने वाला । २ आने वाला काल ।
३ होने वाला । पूर्ण होने वाला । ४ वह जिसका
विचार होने वाला हो ।

भाव्यं (न०) अवश्यम्भावी । भावी ।

भाष (धा० आत्म०) [भाषते, भाषित] १
बोलना । कहना । २ सम्बोधन करना । ३ वार्ता-
लाप करना । ४ निरूपण करना । ५ वर्णन करना ।

भाषणं (न०) १ कथन । वार्तालाप । बातचीत ।
२ दयामय शब्द ।

भाषा (स्त्री०) १ बोली । जवान । त्राणी । २ परि-
भाषा । विवरण । ३ सरस्वती का नामान्तर । ४
अर्जीदावा । अभियोगपत्र ।—अन्तरं, (न०)
दूसरी बोली या भाषा ।—पादः, (पु०) अर्जी
दावा ।—समाः, (पु०) शब्दालङ्कार विशेष ।
इसमें शब्दों को इस प्रकार किसी वाक्य में क्रम-
वद्ध किया जाता है कि, चाहे उसे संस्कृत भाषा
का वाक्य समझे चाहे प्राकृत का तथा

मञ्जुलक्षणि मञ्जु रे कलम-भीरे विड रसरवी तीरे ।
विरसाकि कोसिकीरे क्षिपालि धीरे न मञ्जुसाराधभीरे ॥

—साहित्यदर्पण ।

भित्ति (स्त्री०) तोड़ना । चारना । विभाजित करना ।
२ दीवार । ३ स्थान । ४ टुकड़ा । ५ टूटी हुई कोई
वस्तु । ६ दार । सन्धि । झिरी । ७ चटाई । ८
विद्र । दोष । ९ अवसर ।—खातनः, (पु०)
चूहा । —चौरः, (पु०) चोर । घर में लेंच
लगाने वाला । —पातनः, (पु०) १ चूहा
विशेष । २ धूस । चूहा ।

भित्तिका (स्त्री०) शीशवाला । रक्षिकली । विस्तृष्ट्या ।
भिद् (धा० परस्मै०) [भिन्दति] १ बाँटना । टुकड़े
करना । २ फोड़ना । सन्धि करना । झिरी करना ।
३ खोदना । ४ गुजरना । ५ पृथक् करना । ६ भङ्ग
करना । ७ गड़बड़ करना । ८ अदल बदल करना ।
घटाना बढ़ाना । ९ खिलाना । १० दखेरना
झितराना । ११ खोलना । पृथक् करना । १२
ढीला करना । १३ छिपी हुई बात को प्रकट करना ।
१४ परेशान करना । १५ पहचानना ।

भिदकं (न०) १ हीरा । २ इन्द्र का वज्र ।

भिदकः (पु०) तलवार ।

भिदा (स्त्री०) १ तोड़ना । फटन । चीरना । फाड़ना ।
२ अलहदगी । ३ अन्तर । ४ जाति । किस्म ।

भिदिः (पु०) }
भिदिरं (न०) } इन्द्र का वज्र ।
भिदुः (पु०) }

भिदुर (वि०) १ तोड़ने वाला । फटने वाला । चीरने
वाला । २ भङ्गप्रवण । टूटने फूटने वाला । ३
मिश्रित । मिला हुआ । गड़गड़ ।

भिदुरं (न०) इन्द्र का वज्र ।

भिदुरः (पु०) पूरवृक्ष ।

भिद्यः (पु०) १ तोड़ से बहने वाली नदी । २ नदी
विशेष ।

भिद्रं (न०) वज्र ।

भिद्रपाल (पु०) १ छोटा एक ढंडा जो
भेन्द्रपालः { प्राचीन काल में फेंक कर मारा जाता
भिद्रपालः { था । २ गुफना । जिसमें कंकड़ या
भेन्द्रपालः { पथर रख कर और उसे घुमा कर
फेंका जाता है ।

भिन्न (धा० कृ०) १ टूटा हुआ फटा हुआ चिर-
हुआ । २ विभाजित । पृथक् किया हुआ । अल-
गाया हुआ । ३ (खोलकर) अलग किया हुआ ।
४ खिला हुआ । फूला हुआ । ५ पृथक् । अलग
जुदा । ६ इतर । दूसरा । अन्य । ७ ढीला । ८
मिश्रित । ९ फिरा हुआ । १० परिवर्तित । बदला
हुआ । ११ भयानक । मस्त । १२ विना ।—
अञ्जनं, (न०) कई द्रव्यों को मिला कर बनाया
हुआ सुर्मा ।—उदरः, (पु०) सौतेला भाई ।
—करटः, (पु०) मदमस्त हाथी ।—कूट
(वि०) नायक विहीन ।—क्रम, (वि०) क्रम-
रहित । गड़बड़ ।—गति (वि०) तेज़चाल से
जाने वाला ।—गर्भ (वि०) तितर बितर ।—
दर्शिन, (वि०) पक्षपाती । प्रकार (वि०) दूसरी
किस्म का या जाति का ।—भाजनं (न०)
खप्पर । कमण्डलु ।—भर्मन्, (वि०) वह
जिसके मर्मस्थल विधे हो ।—मर्याद, (वि०) १
वह जिसने मर्यादा या सीमा भङ्ग कर दी हो ।
असम्मानकारी । २ असंयत । जो काबू में न हो ।
—रुचि, (वि०) जुदी जुदी रुचि वाला ।—
वर्चस्, वर्चस्क, (वि०) मलोत्सर्ग करने वाला ।
—वृत्त, (वि०) असद जीवन व्यतीत करने
वाला । त्यागा हुआ ।—वृत्ति, (वि०) १ जुरी
राह चलने वाला । २ इतर रुचि या भावना रखने
वाला ।—संहति, (वि०) असंयुक्त । विमुक्त ।
—स्वर, (वि०) १ आवाज़ बदले हुए । २
बेसुरा ।—हृदय (वि०) वह जिसका हृदय
विधा हो ।

भिन्नः (पु०) रत्नदोष । किसी रत्न में ऐब ।

भिन्नं (न०) १ टुकड़ा । भाग । अंश । २ फूल ।
मुकुल । ३ घाव । जुरी का घाव । ४ भग्नश ।

भिरिटिका } (स्त्री०) श्वेतगुञ्जा । सफेद चुंवची ।
भिरिशिटिका }

भिल्लः (पु०) भील जाति ।—तलुः (पु०) लोभ
वृत्त ।—भूषणं, (न०) गुंजा का पौधा ।

भिल्लोटः (पु०) } लोभ वृत्त ।
भिल्लोटकः (पु०) }

भिषज (पु०) १ वैद्य । हकीम । डाक्टर । २ विष्णु ।

—जित, (न०) दवाइ : दवा ।—पाश. (पु०)
नीमहकीम ।—घरः, (पु०) सर्वश्रेष्ठ वैद्य ।

भिष्मा
भिष्मिका
भिष्मिटा
भिष्मटा
भिस्मिटा
भिस्मिटा } (स्त्री०) सुना हुआ अन्न ।

भी (आ० परस्मै०) —[विभेति, भीत] डरना ।
भयभीत होना । चिन्तित होना ।

भी (स्त्री०) भय । डर । आशङ्का ।

भीत (व० कृ० ; १ भयभीत । डरा हुआ । २ खतरे
में पड़ा हुआ ।—भीत, (वि०) अतिशय डरा
हुआ ।

भीतंकार (वि०) डराने वाला । भयभीत करने
भीतङ्कार } वाला ।

भीतंकारं } (अव्यया०) डरपोंक कहना या बतलाना ।
भीतङ्कारं }

भीतिः (स्त्री०) १ डर । भय । २ कैपकपी । थराहट ।
—नाट्टिकं, (न०) भयभीत होने को हावभाव
दिखलाना ।

भीम (वि०) भयावना । डराने वाला ।—उदरो,
(स्त्री०) उमा का नामान्तर ।—कर्मन्,
(वि०) भयङ्कर शक्ति वाला ।—दर्शन, (वि०)
देखने में भयङ्कर ।—नादः, (वि०) भयानक
रूप से शब्द करने वाला ।—नादः, (पु०)
१ सिंह । २ प्रलय कालीन सप्त सेवों में से एक
का नाम ।—पराक्रम, (वि०) भयङ्कर शक्ति
वाला ।—रथी, (स्त्री०) किसी मनुष्य की उम्र
की ७७वीं वर्ष के ७वें मास की ७वीं रात का
नाम । [यह रात बड़ी खतरनाक बतलायी
जाती है ।

“सप्तसप्ततिमे वर्षे रूप्यमे भलि सप्तर्ष ।
रात्रिर्भीमरथी नाम पराक्रमतिदुस्तरा ॥”]

—रूप, (वि०) भयानक शक्ति का ।—
विक्रान्तः, (पु०) शेर । सिंह ।—विग्रह,
(वि०) भयङ्कर डील डौल का ।—शासनः,
(पु०) यमराज ।—सेनः, (पु०) १ दूसरे
पाण्डव का नाम । २ भीमसेनी कपूर ।

भीम. (पु०) १ शिव । २ पाच पाण्डवों में से सबसे
पाण्डव का नाम । पवन के घोरत्व से कुन्ती के
गर्भ में इनकी उत्पत्ति हुई थी ।

भीमरं (न०) युद्ध । लड़ाई ।

भीमा (स्त्री०) १ दुर्गा । २ रोचना । ३ चातुक
कोड़ा ।

भीरु (वि०) [स्त्री०—भीरु, भीरु,] १ डरपोक ।
२ भयभीत ।—चेतसः, (पु०) हिरन । मृग ।
—रन्ध्रः, (पु०) चूल्हा । भट्ठी ।—सत्त्व,
(वि०) भीरु,—हृदयः, (पु०) हिरन ।

भीरं (न०) चांदी । (स्त्री०) १ भीरु स्त्री । २
प्रतिष्ठाया । परछाई ।

भीरः (पु०) १ शृगाल । २ चोता ।

भीरुक (वि०) १ भीरु । डरपोक । मुँह चुगने
भीलुक } वाला । शर्मिला ।

भीरुकं } (न०) जंगल । वन ।
भीलुकं }

भीरुकः (पु०) १ रीछ । २ उल्लू । ३ ऊल्लू ।
भीलुकः } ईख ।

भीरु } (स्त्री०) डरपोक स्त्री ।
भीलु }

भीरुकः } (पु०) रीछ । भालू ।
भीलुकः }

भीषण (वि०) भयानक । डरपावना । भयप्रद ।

भीषणं (न०) कोई वस्तु जो भय उत्पन्न करे ।

भीषाणः (पु०) १ भयानक रत्न । २ शिव जी का
नामान्तर । ३ कवुतर । ४ फाऊता ।

भीषा (स्त्री०) १ डराने की क्रिया । २ भय । डर ।

भीषित (वि०) डरा हुआ । भयभीत ।

भीष्म (वि०) भयङ्कर ।—जननी, (स्त्री०) श्री
गङ्गा ।—पञ्चकः, (न०) कार्तिक शुक्ला ११ से
१२ तक २ दिवस को भीष्मपञ्चक कहते हैं । इन
पाँच दिनों में स्त्रियाँ प्रायः व्रत किया करती हैं ।
—सूः, (स्त्री०) गंगा का नाम ।

भीष्मः (पु०) १ भयानक रत्न । २ राक्षस । ३ शिव
जी का नामान्तर । ४ सान्त्वनु पुत्र भीष्म पिता-

मह, जिनका जन्म श्रीगङ्गादेवी के गर्भ से हुआ था ।

भीष्मकः (पु०) १ राजा सान्तनु के पुत्र का नाम ।
२ विद्मों के एक राजा का नाम जिसकी लड़की रुक्मिणी के साथ श्रीकृष्ण ने अपना विवाह किया था ।

भुक्त (व० कृ०) १ भक्षित । २ उपभुक्त । उपयोग में लाया हुआ । ३ अनुभूत । ४ भोग के लिये रखा हुआ । यथा भोग-वन्धक ।

भुक्तं (न०) १ भक्षण करने या उपभोग करने की क्रिया ।
२ भक्ष्य पदार्थ । २ वह स्थान जहाँ किसी ने भोजन किया हो ।—उच्छिष्टं, (न०)—शेषः, (पु०)—समुद्भिर्भुतं, (न०) खाने से बचा हुआ । जठन ।—सुप्त, (वि०) भोजनोपरान्त सोने वाला ।

भुक्तिः (स्त्री०) १ भोजन । आहार । २ विषयोप-
भोग । ३ कञ्जा । दखल । ४ भोजन । ५ ग्रहों का किसी राशि में एक एक औंश करके गमन ।—
प्रदः, (पु०) भूग नामक अक्ष ।—वर्जित, (वि०) वह जिसका उपभोग निषिद्ध हो ।

भुग्न (वि०) १ टेंका । वक्र । २ टूटा हुआ ।

भुज् (धा० पर०) [भुजति, भुग्न] १ झुकाना । २
टेंका करना । मोड़ना । (उभय०) [भुनक्ति, भुंक्ते] १ खाना । भक्षण करना । निघटाना ।
२ उपभोग करना । बरतना । ३ सम्भोग करना ।
४ शासन करना । हुकूमत करना । रक्षा करना ।
५ सहना । अनुभव करना । ६ गुजरना ।

भुज् (वि०) खाने वाला । उपभोग करने वाला ।
सहने वाला । शासन करने वाला ।

भुज् (स्त्री०) १ उपभोग । लाभ । मुनाफा । फायदा ।

भुजः (पु०) १ भुजा । बाहु । २ हाथ । ३ हाथी की सूँड़ । ४ मोड़ । घुमाव । ५ त्रिकोण की एक भुजा ।—अन्तरं,—अन्तरालं, (न०) वक्रः-
स्थल । छाती ।—आपीडः, (पु०) कोरियाना ।
बाहों में दबाना ।—कोटरः, (पु०) बगल ।
—दण्डः, (पु०) बाहुदण्ड ।—दलः, (पु०)

दलं, (न०) हाथ ।—बन्धनं, (न०) आलि-
ङ्गन ।—बलं, (न०)—वीर्यं, (न०) बाहों की ताकत ।—मध्यं, (न०) छाती । सीना ।
—मूलं, (न०) कंधा ।—शिवरं,—शिरस्, (न०) कंधा ।

भुजगः (पु०) सर्प । साँप ।—अन्तकः,—अशनः,
—आभोजिन, (पु०)—दारणः,—भोजिन,
(पु०) १ गरुड़ । २ मोर । ३ न्योला ।—
ईश्वरः,—राजः, (पु०) शेष जी ।

भुजंगः } (पु०) १ सर्प । साँप । उपपति । जार ।
भुजङ्गः } आशिक । ३ पति । स्वामी । ४ गाढ़ू ।
५ राजा का एक पारवर्तनी नौकर । ६
अश्लेषा नक्षत्र ।—इन्द्रः, (पु०) शेष जी ।
सर्पराज ।—ईशः, (पु०) १ वासुकी । २ शेष ।
३ पतञ्जलि । ४ पिंगलमुनि ।—कन्या, (स्त्री०)
सर्प की युवती कन्या ।—भं, (न०) आश्लेषा
नक्षत्र ।—भुज्, (पु०) १ गरुड़ । मयूर ।
मोर ।—लता, (स्त्री०) ताम्बूली लता ।—हन्, (पु०) गरुड़ ।

भुजंगमः } (पु०) १ सर्प । राहु । ३ आठ की
भुजङ्गमः } संख्या ।

भुजा (स्त्री०) १ बाँह । २ हाथ । ३ साँप की
गिडुरी ।—कण्टः, (पु०) नाखून । नख ।—
दलः, (पु०) हाथ ।—मध्यः, (पु०) १
कोहनी । २ छाती ।—मूलं, (न०) कंधा ।

भुजिष्यः (पु०) १ दास । गुलाम । साथी । सखा ।
३ कलाई का सूत्र । ४ रोग विशेष ।

भुजिष्या (स्त्री०) १ दासी । २ वेश्या । रंडी ।

भुंङ् (धा० आत्म०) [भुंङ्ते] १ पालना । २
चुनना । छानना ।

भुमुंरिका } (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।
भुमुंरी }

भुवनं (न०) १ जगत । २ पृथिवी । ३ स्वर्ग । ४
प्राणधारी । ५ मानव । मानवजाति । ६ जल । ७
चौदह की संख्या ।—ईशः, (पु०) राजा ।
बादशाह ।—ईश्वरः, (पु०) राजा । बादशाह ।
१ शिव जी का नाम ।—ओक्स, (पु०)
देवता ।—त्रयं, (न०) तीन लोक—स्वर्ग,

मर्त्यः पाताल ।—पावनी, (स्त्री०) राज्ञा ।—

शासिन्, (पु०) बादशाह । शासक ।

भुवन्युः (पु०) १ स्वामी । प्रभु । २ सूर्य । ३ अग्नि । ४ चन्द्रमा ।

भुवर (अन्वया०) अन्तरिक्ष । आकाश । ससन्ध्या भुवस् } इतियों में से एक ।

भुविस् (पु०) समुद्र ।

भुशुङ्घिः

भुशुङ्घीः (स्त्री०) अक्ष विशेष एक प्रकार का गुफना ।

भुशुङ्घी

भू (धा० आत्म०) [भवति, भूत] १ होना । २ उत्पन्न होने को । ३ निकलना । ४ (घटना का) घटना । ५ जिंदा रहना । ६ किसी दशा में बना रहना । पालन करना । ७ परिचर्या करना । १० सहायता करना । ११ सम्बन्ध रखना । १२ किसी कार्य में संलग्न होना ।

भू (पु०) विष्णु । (वि०) बना हुआ यथा । कमलभू । वित्तभू ।—उत्तमं, (न०) सुवर्ण । —कम्पः, (पु०) कदम्ब विशेष ।—कम्पः, (पु०) भूबोल । भूचाल ।—कर्णः, (पु०) पृथिवी का व्यास । —कश्यपः, (पु०) वसुदेव । श्री कृष्ण के पिता का नाम ।—काकः, (पु०) १ एक प्रकार का बाज या कंक पक्षी । २ नीला कवृत्तर । ३ कौच पक्षी ।—केशः, (पु०) बट वृक्ष ।—केशा, (स्त्री०) राक्षसी ।—क्षिन्, (पु०) सूअर । शूकर ।—गरं, (न०) विष विशेष ।—गर्भः, (पु०) भवभूति का नामान्तर ।—गृहं,—गेहं, (न०) तहलाना । जमीन के नीचे बना हुआ ।—गोलः, (पु०) भूमण्डल ।—धनः, (पु०) शरीर । वपु ।—चक्रं, (न०) पृथिवी की परिधि । विपुवरं ।—चर, (वि०) पृथिवी पर रहने या चलने वाले ।—चरः, (पु०) शिव जी ।—झाया, (स्त्री०)—झायं, (न०) पृथिवी की छाया जिसे अनजान लोग राहु कहते हैं । २ अंधकार ।—जम्बुः, (पु०) १ मिट्टी का एक कीड़ा । २ हाथी ।—जम्बुः, (स्त्री०) गेहूँ ।—तलं, (न०) पृथिवी की सतह ।

तृणः, (= भूतृणः) सुगन्ध युक्त घाल विशेष ।—द्वारः, (पु०) शूकर । सुअर ।—देवः, —सुरः, (पु०) ब्राह्मण ।—धनः, (पु०) राजा । बादशाह ।—धरः, (पु०) १ पहाड़ । २ शिव । ३ कृष्ण । ४ सात की संख्या ।—नागः (पु०) मिट्टी का कीड़ा विशेष ।—नेतु, (पु०) राजा । बादशाह ।—एः, (पु०) राजा ।—पतिः, (पु०) १ राजा । २ शिव । ३ इन्द्र ।—पदः, (पु०) वृक्ष । पेड़ ।—पदी, (स्त्री०) चमेली विशेष ।—परिधिः, (पु०) पृथिवी का व्यास या घेरा ।—पालः, (पु०) राजा ।—पालनं, (न०) राज्य । रियासत ।—पुत्रः, —सुतः, (पु०) मङ्गलग्रह ।—पुत्री, —सुता, (स्त्री०) सीता की उपाधि ।—प्रकम्पः, (पु०) भूचाल । भूडोल ।—विम्बः, (पु०)—विम्बम्, (न०) भूगोल ।—मर्त्यः, (पु०) राजा । बादशाह ।—भागः, (पु०) पृथिवी का टुकड़ा ।—भूत, (पु०) पर्वत । पहाड़ । राजा । बादशाह । ३ विष्णु ।—मण्डलं, (न०) पृथिवी ।—रुहः, (पु०) रुहः, (पु०) वृक्ष । पेड़ ।—लोकः (= भूलोकः) (पु०) मर्त्य लोक ।—वलनं, (न०) भूगोल ।—वलम्भा, (पु०) राजा । बादशाह ।—वृत्त, (न०) विपुवरं । भूपरिधि ।—शक्रः, (पु०) राजा । बादशाह ।—शयः, (पु०) विष्णु ।—अवस, (पु०) दीमक की मिट्टी का टीला ।—मुरः, (पु०) ब्राह्मण । विश ।—स्पृश, (पु०) १ मानव । २ मानव जाति । ३ वैश्य ।—स्वर्गः, (पु०) मेरु पर्वत ।—स्वामिन्, (पु०) जमींदार ।

भूः (स्त्री) १ पृथिवी । २ जगत । भूगोल । ३ फर्श । जमीन । ४ भूसम्पत्ति । ५ स्थान । जगह । ६ विवेक या आलोच्य विषय । ७ एक की संख्या । ८ व्याहृतियों में से प्रथम व्याहृति ।

भूकं (न०) १ रुद्र । क्रिड । २ चरमा । सोता । भूकः (पु०) ३ समय ।

भूकलः (पु०) चंचल घोड़ा ।

भूत (न० कृ०) १ हो गया । २ बना हुआ । ३ सत्य । ४ ठीक । उचित । उपयुक्त । ५ गुजरा हुआ ।

बाता हुआ ६ प्राप्त । ७ मिश्रित । युक्त । ८ समान । सदृश ।—अनुकम्पा, (स्त्री०) प्राणिमात्र पर दया ।—अन्तकः, (पु०) यमराज । धर्मराज ।—अर्थः, (पु०) वास्तविक बात । वास्तविक परिस्थिति । सत्य । यथार्थता ।—आत्मक, (वि०) पञ्चतत्त्वों का बना हुआ ।—आत्मन्, (पु०) १ जीवात्मा । २ परमात्मा । ३ ब्रह्म की उपाधि । ४ शिव की उपाधि । ५ मूलतत्त्व सम्बन्धी पदार्थ । मौलिक पदार्थ । ६ शरीर । ७ युद्ध । लड़ाई ।—आदिः, (पु०) १ परब्रह्म । २ अहङ्कार ।—आर्तः, (वि०) प्रेताविष्ट ।—आवासः, (पु०) १ शरीर । २ शिव । ३ विष्णु ।—आविष्ट, (वि०) प्रेताविष्ट ।—आवेशः, (पु०) प्रेत का किसी पर सवार होना ।—इज्यं, (न०) इज्या, (स्त्री०) भूतों के लिये बलिदान ।—इष्टा, (स्त्री०) कृष्ण पक्ष की १४-शी ।—ईशः, (पु०) १ ब्रह्म । २ विष्णु । ३ शिव ।—ईश्वरः, (पु०) शिव ।—उन्मादः, (पु०) ऊपरी फिसाव । प्रेत का फेरा ।—उपसृष्ट, —उपहत, (वि०) प्रेत के कब्जे में ।—ओदनः, (पु०) भोजन का थाल ।—कर्तृ, —कृत, (पु०) ब्रह्म की उपाधि ।—कालः, (पु०) बीता हुआ समय ।—केशी, (स्त्री०) तुलसी ।—कान्तिः, (स्त्री०) प्रेताविष्ट ।—गणः, (पु०) १ प्राणियों का समुदाय । २ मरे हुए पुरुषों के आत्माओं या राक्षसों का समुदाय ।—ग्रस्त, (वि०) प्रेताविष्ट ।—ग्रामः, (पु०) १ जीवधारी मात्र की समष्टि । २ भूत प्रेतों का समुह । ३ शरीर ।—घ्नः, (पु०) १ ऊँट । २ प्याज ।—घ्नी, (स्त्री०) तुलसी ।—चतुर्वर्शी, नरक चौदस । कार्तिक कृष्ण चतुर्वर्शी ।—चारिन्, (पु०) शिव जी की उपाधि ।—जयः, (पु०) तत्त्वों पर विजय ।—दया, (स्त्री०) प्राणिमात्र पर कृपा ।—धरा,—धात्री,—धारिणी, (स्त्री०) पृथिवी ।—नाथः, (पु०) शिव ।—नायिका, (स्त्री०) दुर्गा देवी ।—नाशनः, (पु०) १ भिलावा । २ राई । सरसों । ३ कालीमिर्च ।—निचयः, (पु०)

शरीर ।—पतिः, (पु०) १ शिव । २ अग्नि । ३ तुलसी ।—पत्री, (स्त्री०) तुलसी ।—पूर्णिमा, (स्त्री०) आश्विन की पूर्णिमा ।—पूर्व, (अव्यय०) पहिले । पेशतर । वर्तमान से पहिले का ।—प्रकृतिः, (स्त्री०) सब प्राणियों का उत्पत्तिस्थान या विकास ।—ब्रह्मन्, (पु०) अकालीन ब्रह्मण । देवत्व ।—भर्तृ, (पु०) शिव की उपाधि ।—भावनः, (पु०) १ परब्रह्म । २ विष्णु ।—भाषा, (स्त्री०)—भाषितं, (न०) पैशाची भाषा ।—महेश्वरः, (पु०) शिव जी ।—यज्ञः, (पु०) पञ्च-महायज्ञों में से एक ।—यानिः, (पु०) समस्त प्राणियों का उत्पत्ति स्थान या विकास ।—राजः, (पु०) शिव जी ।—वर्गः, (पु०) पिशाच जाति ।—वासः, (पु०) विभीतक वृक्ष ।—वाहनः, (पु०) शिव जी की उपाधि ।—विक्रिया, (स्त्री०) १ मिरगी का रोग । २ भूत या पिशाच का फेरा ।—विज्ञानं,—विद्या, (स्त्री०) भूत-प्रेत-विद्या ।—वृत्तः, (पु०) विभीतक वृक्ष ।—संसारः, (पु०) मल्लोक्त ।—सञ्चारः, (पु०) भूत या पिशाच का फेरा ।—सर्गः, (पु०) संसार की उत्पत्ति ।—सूक्ष्मं, (न०) सांख्य के मतानुसार पञ्चभूतों का आदि, अमिश्र एवं सूक्ष्मरूप ।—स्थानं, (न०) १ जीवधारियों का वासस्थान । २ प्रेतों के रहने का स्थान ।—हत्या, (स्त्री०) जीवधारियों का नाश ।

भूतं (न०) १ कोई वस्तु चाहे वह मानवी हो चाहे दैवी और चाहे निर्जीव । २ प्राणधारी । ३ आत्मा । जीव । भूत । प्रेत । राक्षस । ४ तत्त्व । ५ वास्तविक घटना । वास्तविक बात । ६ भूतकाल । गुजरा हुआ समय । ७ संसार । जगत । ८ कुशलता । ९ पाँच की संख्या ।

भूतः (पु०) १ पुत्र । बच्चा । २ शिव । ३ कृष्ण पक्षीय चतुर्वर्शी ।

भूतमय (वि०) जिसमें समस्त प्राणी सम्मिलित हों । २ पञ्चतत्त्वों का बना हुआ या उत्पन्न किये हुए जीवों से बना हुआ ।

भूतिः (स्त्री०) १ अस्तित्व । होने का भाव । २ जन्म । उत्पत्ति । ३ कुशलत्व । स्वस्थता । प्रसन्नता । समृद्धि । ४ सफलता । सौभाग्य । शुशकिम्पनी । ५ धन । सम्पत्ति । ६ वैभव । राज्यश्री । ७ भस्म । राख । ८ हाथी का मस्तक रंग कर उसका शृङ्गार करना । ९ तप या तांत्रिक अनुष्ठानादि से प्राप्त अलौकिक शक्ति । १० मुता हुआ मौस । ११ हाथी का मद । (पु०) १ शिव । २ विष्णु । ३ धृतिगण । —कर्मन्, (न०) कोई शुभ कृत्य या उत्सव का विधान । —काम, (वि०) सम्पत्ति प्राप्ति का अभिलाषी । —कामः, (पु०) १ किसी राज्य का सचिव । २ बृहस्पति का नामान्तर । —कातः, (पु०) आनन्दप्रद शुभ घड़ी । —कीलः, (पु०) १ छिद्र । गर्त । २ नगर या दुर्ग चारों ओर जल से भरी खाई । ३ तहखाना । भूमि के नीचे की गुफासुमा छोटी कोठरी । —कृत, (पु०) शिव जी का नामान्तर । —गर्भः, (पु०) भवभूति कवि का नामान्तर । —दा, (पु०) शिव जी का नामान्तर । —निधानं, (न०) धनिष्ठा नक्षत्र । —भूषणः, (पु०) शिव जी । —वाहनः, (पु०) शिवजी ।

भूतिकं (न०) १ कपूर । २ चन्दन । ३ कायफल । भूमत् (वि०) पृथिवी या भूमि रखने वाला । (पु०) पृथिवीपाल । राजा ।

भूमन् (पु०) १ अधिक परिमाण । विपुलता । प्राचुर्य । एक बड़ी संख्या । २ धन सम्पत्ति ।

भूमन् (न०) १ पृथिवी । २ ग्रान्त । जिला । भूखण्ड । ३ प्राणी । देहधारी । ४ बहुतायत । अनेकत्व ।

भूमय (वि०) [स्त्री०—भूमयी] मिट्टी का । मिट्टी का बना या मिट्टी से उत्पन्न ।

भूमिः (स्त्री०) १ पृथिवी । २ कर्दममय स्थान । पट्टिल । जलाभूमि । पृथिवी का पृष्ठदेश । ३ नगर के चारों ओर का विस्तृत मैदान । ४ जिला । देश । ज़मीन । ५ स्थान । भूखण्ड । ६ स्थल । जगह । ६ भूमसम्पत्ति । ७ मंजिल । खण्ड । ८ चोचरभूमि । चरागाह । ९ नाटक में किसी पात्र

का चरित्र या अभिनय । १० आधार । ११ व्यासि । सीता । १२ जिह्वा । —अन्नरः, (पु०) पड़ोसी राज्य का अधिपति । —इन्द्रः, —ईश्वरः, (पु०) राजा । नृपति । —कम्पः, (पु०) भूडोल । भूचाल । —गुहा, (स्त्री०) गुफा । —गृहं, (न०) तहखाना । —वतः, (पु०) —खलनं, (न०) भूडोल । भूचाल । —जः, (पु०) १ मङ्गल ग्रह । नरकासुर । २ मानव । ३ भूर्निव नामक पौधा । —जा, (स्त्री०) सीता । —जीविन्, (पु०) वैश्य । बनिया । —तलं, (न०) पृथिवी की सतह । —दानं, (न०) पृथिवी का दान । —देवः, (पु०) ब्राह्मण । —धरः, (पु०) १ पर्वत । २ बादशाह । ३ सार की संख्या । —नाथः, (पु०) —पतिः, —पालः, (पु०) —भुज, (पु०) राजा । —पत्तः, (पु०) तेज बोझ । —पिशाचं, (न०) ताड़ का पेड़ । —पुत्रः, (पु०) मङ्गल ग्रह । —पुरन्दरः, (पु०) १ राजा । २ महाराज दिलीप का नाम । —भूत्, (पु०) १ पर्वत । २ राजा । —मण्डा, (स्त्री०) चमेली विशेष । —रत्नकः, (पु०) तेज बोझ । —लामः, (पु०) दृष्टु । मौत । —लेपनं, (न०) गोबर । —वर्धनः, (पु०) —वर्धनं, (न०) लाश । —शय, (वि०) पृथिवी पर सोने वाला । —शयः, (पु०) जंगली कबूतर । —शयनं, (न०) शय्या, (स्त्री०) ज़मीन पर सोने वाला । —सम्भवः, —सुतः, (पु०) १ मङ्गलग्रह । २ नरकासुर । —सम्भवा, —सुता, (स्त्री०) सीता की उपाधि । —स्पृश, (पु०) १ मनुष्य । २ मानवजाति । ३ वैश्य । ४ चोर ।

भूमिका (स्त्री०) १ ज़मीन । भूमि । २ पट्टिल भूमि । ३ मंजिल । खण्ड । ४ दग । ५ पदी । काला तहखाना । ६ नाटक में किसी का चरित्र या अभिनय । ७ नाटक के नट की पोशाक । ८ शृङ्गार । ९ किसी ग्रन्थ के प्रारम्भ की सूचना जिससे उस ग्रन्थ के विषय में आवश्यक विषयों का ज्ञान हो ।

भूमी (स्त्री०) पृथिवी । —कदम्बः, (पु०) कदम्ब

वृक्ष विशेष ।—पतिः, (पु०)—भुज्, (पु०)

राजा ।—रुहः, (पु०)—रुहः, (पु०) वृक्ष ।

भूय (न०) (किसी वस्तु के) किसी रूप में होने की दशा या अवस्था या ब्रह्मभूय ।

भूयशस् (अव्यया०) १ प्रायः । अक्सर । २ अति-शय । ३ पुनः । अन्तर ।

भूयस् (वि०) [स्त्री०—भूयसी] १ आधिक्य । अत्यधिक । विपुल । २ अधिक बढ़ा । अधिक लंबा । ३ अत्यावश्यक । ४ बहुत अधिक । बहुत लंबा । अतिशय । ५ बहुतायत । सम्पन्नता ।

भूयस्त्वं (न०) १ विपुलता । बहुतायत । २ बहुमत । प्रबलता ।

भूयिष्ठ (वि०) १ बहुत ही । २ प्रायः । बहुत करके ।

भूर (अव्यया०) तीन व्याहृतियों में से एक ।

भूरि (वि०) १ प्रचुर । अधिक । बहुत । २ बड़ा । भारी ।

भूरि (पु०) १ विष्णु । २ ब्रह्मा । ३ शिव ।

भूरि (न०) सुवर्ण ।—गमः, (पु०) गधा ।—तेजस्, (वि०) बड़ा चमकीला । (पु०) अग्नि ।—दक्षिण, (वि०) १ मूल्यवान या बढ़िया वस्तुओं की दक्षिणा से युक्त । २ उदार ।—दानं, (न०) उदारता ।—धन, (वि०) धनवान ।—धामन्, (वि०) चमकीला ।—प्रयोग, (वि०) प्रायः उपभोग में आने वाला ।—धैमन्, (पु०) लाल रंग का हंस ।—भाग, (वि०) धनो । धनवान ।—मायः, (पु०) शृगाल । गीदड़ ।—रसः, (पु०) गन्ना ।—लामः (पु०) बड़ा मुनाफा ।—विक्रम, (वि०) बड़ा बहादुर ।—श्रवस्, (पु०) एक रथी का नाम जो महाभारत के युद्ध में कौरवों की ओर से पाण्डवों से लड़ा था और सात्यकि के हाथ से मारा गया था ।

भूरिज् (स्त्री०) पृथिवी ।

भूर्जः (पु०) भोजपत्र का वृक्ष । कण्टकः, (पु०) वणेशङ्कर विशेष ।—पत्रः, (पु०) भोजपत्र का पत्र ।

भूर्णिः (स्त्री०) जमीन । पृथिवी ।

भूष् (धा० परस्मै०) [भूषति, भूषयति, भूषयते, भूषित] १ पूजना । शृङ्गार करना । २ छा देना ।

भूषणं (न०) १ शृङ्गार । सजावट । २ गहना । आभूषण ।

भूषा (स्त्री०) १ शृङ्गार । सजावट । २ गहना । आभूषण । ३ रत्न ।

भूषित (व० कृ०) सजा हुआ । आभूषणों से युक्त ।

भूषण्यु (वि०) १ होना । बनजाना । २ धन की कामना ।

भृ (धा० उभय०) [भरति, भरिते, विभर्ति, विभूते, भृत] १ भरना । २ परिपूर्ण करना । व्याप्त होना । ३ सहना । सहारा देना । ४ पोषण करना । रक्षा करना । पालना । ५ अधिकार करना । कब्जा करना । ६ पहिना । धारण करना । ७ अनुभव करना । ८ देना । ९ रखना । पकड़ना । (स्मृति में) धारण करना । १० भाड़ा करना । ११ खाना । ले जाना ।

भृकुण्डः (पु०) स्त्री का वेष धारण करने वाला भृकुसः } नद ।

भृकुटिः } (स्त्री०) भौंह ।

भृगु (अव्यया०) यह आग की चटचटाहट की आवाज़ को प्रकट करता है ।

भृगुः (पु०) १ एक प्रसिद्ध मुनि । जमदग्नि । शुकाचार्य । ४ शुक्रग्रह । ५ पहाड़ी । ६ पहाड़ के शिखर की समतल भूमि । ७ कृष्ण मगवान् ।—उग्रहः, (पु०) परशुराम ।—जः,—तनयः, (पु०) शुकाचार्य ।—नन्दनः, (पु०) १ परशुराम । २ शुक्र ।—पतिः, (पु०) परशुराम ।—वंशः, (पु०) परशुराम के वंशज ।—वारः,—वासरः, (पु०) शुक्रवार । जुमा ।—शार्दूलः,—श्रेष्ठः,—सत्तमः, (पु०) परशुराम ।—सुतः,—सुनुः, (पु०) १ परशुराम । २ शुक्र ग्रह ।

भृंगः (पु०) १ भौरा । अमर । २ बिलनी । ३ भृङ्गः } पक्षी विशेष । ४ लंपटनर । ५ सुवर्ण घट या सुवर्ण पात्र ।

भं (न०) अत्रक । मोड़ल । चिलचिल ।—
 भ्रम (न०) अमीट । (पु०) धाम का पेड़ ।—
 भ्रानन्दा, (स्त्री०) यूथिका लता ।—भ्रावली,
 (स्त्री०) मधुमक्खियों का दल ।—जं, (न०) १
 अग्र । २ अत्रक ।—परिणिका, (स्त्री०) छोटी
 हलायची ।—राज, (पु०) १ भौरा । २ एक
 भावी का नाम ।—रिटिः, —रोटिः, (पु०) शिव
 जी के गण विशेष जो बड़े बयस्कल हैं ।—रोलः,
 (पु०) एक जानि की बरंथा ।

गारः (पु०) १ सुवर्ण वट या सुवर्ण पात्र ।
 झारः (पु०) २ आकार विशेष का लोटा । ३
 गारं (न०) राज्याभिषेक के समय काम में
 झारं (न०) आने वाला घट ।

गारगं (न०) १ स्वर्ण । सेना । २ लवङ्ग ।
 झारगम् (न०) लौंग ।

गारिका
 झारिका
 गारो
 झारो } (स्त्री०) फिल्ली नामक कीड़ा ।

गिन } (पु०) १ घटहूँ । २ शिव जी के एक
 झिन् } गण का नाम ।

गिरिटिः
 झिरिटिः
 गिरोटिः
 झिरोटिः } (पु०) शिव जी के द्वारपाल ।

गेरिटिः
 झेरिटिः } (पु०) शिव जी का गण ।

ज् (धा० आत्म०) [भर्जते] भूतना । अकोरना ।

टिका
 झिटका } (स्त्री०) पौधा विशेष ।

डिः
 झिडः } (स्त्री०) लहर ।

त (व० क०) १ भरा हुआ । पूरित । १ पाला हुआ ।
 पोषित । ३ सम्पन्न । ४ भाड़े पर लिया हुआ ।
 बड़ा किया हुआ ।

तः (पु०) भाड़े का नौकर ।

तक (वि०) भाड़े किया हुआ । बड़ा किया हुआ ।
 चुकाया हुआ ।—अध्यापकः, (पु०) १ वेतन
 भोगी शिक्षक । २ वेतन भोगी शिक्षक द्वारा

पढ़ाया हुआ ।—अध्यापिनः, (पु०) फीस
 देकर पढ़ने वाला छात्र ।

भृतिः (स्त्री०) १ पालन पोषण । २ भोजन । ३
 मजदूरी । भाड़ा । ४ (वेतन पाने की शर्त पर)
 नौकरी । ५ पूँजी । मूलधन ।—अध्यापनं, (न०)
 पढ़ाना, विशेषतया वेदों का पढ़ाने के लिये वेतन
 लेकर ।—भुज्, (पु०) वेतन भोगी नौकर ।

भृत्य (वि०) वह जिसका पालन पोषण किया जाय ।
 —जलः, (पु०) नौकर । सेवक ।—भर्तुः, (पु०)
 घर का या परिवार का मालिक या बड़ा बूढ़ा ।—
 वर्गः, (न०) अनुचर समुदाय ।—वान्सल्यं,
 (न०) नौकरों के प्रति दया ।

भृत्यः (पु०) १ नौकर । चाकर । २ अनाथ ।
 वजीर ।

भृत्या (स्त्री०) १ दास्य । २ भोजन । ३ मजदूरी ।
 ४ सेवा ।

भूत्रिम (वि०) पालन पोषण किया हुआ ।

भूमिः (स्त्री०) मैदान । चकर ।

भृश (धा० परस्मै०) [भृशयति] नीचे गिरना ।
 अवःपतन होना ।

भृश (वि०) १ मजबूत । ताकतवर । बज्रवान् । २ साधन ।
 अत्यधिक । —दुःखित । —पीडित, (वि०)
 अत्यन्त सन्नत —सहृष्ट, (वि०) अत्यन्तानन्दित ।

भृशं (अव्यय०) १ अत्यधिकता से । प्रचण्डता से ।
 बहुतायत से । २ अक्सर । प्रायः । ३ अच्छे ढंग
 से । भले प्रकार ।

भृष्ट (व० क०) भुना हुआ । अकोरा हुआ ।—
 अश्रं, (न०) उबाल कर भुना हुआ दाना ।
 लावा-खील ।

भृष्टिः (स्त्री०) १ भूतना । अकोरना । २ उजड़ा
 हुआ भाग या उपवन ।

भृ (धा० परस्मै०) [भृशयति] १ पालनपोषण
 करना । २ भूतना । ३ फलङ्कित करना । नर्तना
 करना ।

भेकः (पु०) १ मैक । २ भीष मनुष्य । ३ बादल ।

मेकी (स्त्री०) मेंडकी। छोटा मेंडक।—भुज्, (पु०)
सर्प। साँप।—रवा, (पु०) मेंडक की टर्रटर्।

मेडः (पु०) १ मेघ। मेड़। २ बेड़ा। घसीती।

मेडूः (पु०) मेड़ा।

मेदः (पु०) १ मेदने की क्रिया। छेदना। वेधना।
विदीर्ण करना। २ दरार। फटन। ३ गड़बड़ी।
होहवला। बाधा। ४ अलहदगी। अलगव। ६
दरार। भिरी। सन्धि। ६ चोट। बाव। ७
अन्तर। पहिचान। ८ परिवर्तन। संशोधन। ९
भगड़ा। अनैक्य। १० विश्वासघात। ११ धोखा
१२ किस्म। जाति। १३ द्वैतता। १४ चार प्रकार
की राजनीतियों में से एक, जिसके द्वारा शत्रु और
उसके मित्रों में परस्पर भगड़ा उत्पन्न कर दिया
जाता है। १५ रेचन विधि। मल को साफ कर
देने की क्रिया।—उन्मुख (वि०) खिलने
वाला। फूटने वाला।—कर,—कृत, (वि०)
भगड़ा उत्पन्न करने वाला।—दर्शन,—दृष्टि,
—बुद्धि, (वि०) संसार को परब्रह्म से भिन्न
मानने वाला।—प्रत्ययः, (पु०) अद्वैतवाद में
विश्वास रखने वाला।—वादिन्, (पु०)
द्वैतवादी।—सह, (वि०) १ विभाजित या
पृथक् होने योग्य। २ वह जो बिगाड़ा जा सके।
जो प्रलोभन में फँसाया जा सके।

मेदक (वि०) [स्त्री०—मेदिका] १ तोड़ने वाला।
चीरने वाला। विभाजित करने वाला। अलग
करने वाला। २ नाश करने वाला। ३ पहचानने
वाला। विवेचन करने वाला। ४ लक्षण वर्णन
करने वाला।

मेदकः (पु०) विशेषण।

मेदनं (न०) १ चीर। फाड़। २ पृथक्त्व। अलहदगी
अलगव। ३ पहचान। ४ अनैक्य फैलाना।
भगड़ा टंटा उत्पन्न करने वाला। डिलाई। ५
प्रकटन। विश्वासघात।

दनः (पु०) शूक।

दिन् (वि०) चीरने वाला। फाड़ने वाला। अलगाने
वाला।

मेदिरं } (न०) इन्द्र का वज्र।

मेदुर } (न०) इन्द्र का वज्र।

मेद्यं (न०) संज्ञा।—लिङ्गः, (वि०) लिङ्ग द्वार
पहचाना हुआ।

मेरः (पु०) मेरी। बड़ा ढोल या नगाड़ा।

मेरिः } (स्त्री०) बड़ा ढोल या नगाड़ा।

मेरी } (स्त्री०) बड़ा ढोल या नगाड़ा।

मेरुडं } (वि०) भयानक। भयप्रद। डरावन।

मेरुगडं } खौफनाक।

मेरुडं } (न०) गर्भधारण। गर्भाधान।

मेरुगडं } (न०) गर्भधारण। गर्भाधान।

मेरुडः } (पु०) पक्षी की जाति विशेष।

मेरुगडः } (पु०) पक्षी की जाति विशेष।

मेरुडकः } (पु०) शृगाल। स्यार।

मेरुगडकः } (पु०) शृगाल। स्यार।

मेल (वि०) १ डरपोकना। भीह। २ मूर्ख।
अज्ञानी। ३ चञ्चल। ४ लंबा। ५ फुर्तीला।

मेलः (पु०) नाव। वोट। बेड़ा।

मेलकः (पु०) } नाव। वोट। बेड़ा।

मेलकं (न०) } नाव। वोट। बेड़ा।

मेष् (धा० उभय०) [मेषति, मेषते] डरना। भय-
भीत होना।

मेषजं (न०) १ दवाई। २ इलाज। चिकित्सा। ३
सोआ। सोंफ।—अगारः,—आगारः, (पु०)
—अगारं,—आगारं, (न०) दवाईखाना या
दवाई की दूकान।—अगं, (न०) कोई चीज़
जो दवाई खाने के बाद ली जाय।

मैत्त (वि०) [स्त्री०—मैत्ती] भिक्षा पर निर्वाह
करने वाला।—अन्न, (न०) भिक्षा का अन्न।
—आशिन, (वि०) भिक्षा में मिले हुए अन्न
को खाने वाला। (पु०) भिखारी।—आहारः,
(पु०) भिखारी। भिक्षुक।—वर्यां,—चर्या,
(न०)—वर्यां, (स्त्री०) भीख माँगना।—
जीविका,—वृत्तिः, (स्त्री०) भिखारीपन।—
भुज्, (पु०) भिखारी। भिक्षुक।

मैत्तं (न०) भिक्षा। भीख।

मैत्तवं } (न०) कई एक भिखारी।

मैत्तुकं } (न०) कई एक भिखारी।

भैद्यं (न०) भीख । खैरात ।

भैम (वि०) [स्त्री०—भैमी] भीम सम्बन्धी ।

भैमी (स्त्री०) १ भीम की पुत्री दमयन्ती । २ माघ-
शुक्ला ११श्री ।

भैमसेनिः

भैमसेन्यः (पु०) भीमसेन का पुत्र ।

भैरव (वि०) [स्त्री०—भैरवी] १ भयानक ।
हरावना । २ भैरव सम्बन्धी ।—ईशः, (पु०)
१ विष्णु । शिव ।—तर्जकः, (पु०)—यातना,
(स्त्री०) वह यातना जो उन प्राणियों को,
जो काशी में शरीर त्यागते हैं, मरते समय उनकी
शुद्धि के लिये भैरव जी द्वारा दी जाती है ।

भैरवं (न०) भय । डर ।

भैरवः (पु०) शिव के गण विशेष जो उन्हींके अव-
तार माने जाते हैं ।

भैरवी (स्त्री०) १ दुर्गा देवी । २ एक रागिनी विशेष ।
३ वर्ष या कम की लड़की जो दुर्गापूजा में
दुर्गा देवी की जगह समझी जाती है ।

भैषजं (न०) दवाई ।

भैषजः (पु०) लावक । लवा । बटेर ।

भैषज्यं (न०) १ रोग की चिकित्सा । २ दवा । दाह ।
३ आरोग्य करने की शक्ति । आरोग्यता ।

भैष्मकी (स्त्री०) रुक्मिणी ।

भोक्तृ (वि०) १ खाने वाला । २ भोग करने वाला ।
३ कबज़ा करने वाला । ४ उपयोग में खाने वाला ।
बरतने वाला । ५ अनुभव करने वाला ।

भोक्तृ (पु०) १ काबिज । उपभोग कर्ता । उपयोग
कर्ता । २ पति । ३ राजा । नरेन्द्र । ४ प्रेमी ।
आशिक ।

भोगः (पु०) १ भक्षण । आहार करना । २ स्त्रीसम्भोग ।
३ मुक्ति । कबज़ा । अधिकार । ४ उपयोग । लाभ ।
५ शासन । हुकूमत । ६ प्रयोग । लगाना (जैसे
रूपये का व्याज पर या व्यापार में) । ७ अनुभव ।
८ प्रतीति । भाव । ९ उपभोग । १० उपभोग के
लिये पदार्थ । ११ भोज । दावत । ज्योंहार । १२

किसी देवविग्रह के लिये नैवेद्य । १३ लाभ ।
मुताका । १४ आय । सालगुजारी । १५ सम्पत्ति ।
१६ वह मजदूरी या रूपया पैसा जो किसी वेश्या
को उसके साथ उपभोग करने के बदले में दिया
जाय । १७ मोड़ । गेठुरी । घुमाव । १८ सर्प का
फेला हुआ फन । १९ सर्प ।—अर्ह, (वि०)
उपभोग योग्य ।—अर्ह, (न०) सम्पत्ति । धन
दौलत ।—अर्ह, (न०) अनाज । अन्न । नाज ।
—आधि, (पु०) गिरवी रखी हुई धरोहर
जिसका उपभोग तब तक किया जासके जब तक
इसका मालिक उसे बुढावे नहीं ।—आवस्, (पु०)
ज्ञानखाना । घर का वह भाग जिसमें
छियाँ उठे बैठे ।—गुच्छं, (न०) रण्डियों की उज-
रत ।—गृहं, (न०) जनाना कमरा ।—तृष्णा,
(स्त्री०) सौम्यारिक पदार्थों के उपभोग की
कामना या अभिलाषा ।—देहः, (पु०) जीव का
सूक्ष्म शरीर या कारण शरीर जिसके द्वारा वह
मर्त्यलोक में किये हुए शुभाशुभ कर्मों का फल पर-
लोक में भोगता है ।—धरः, (पु०) सर्प ।
साँप ।—पतिः, (पु०) सूबेदार । जिलेदार ।—
पालः, (पु०) साईंस ।—पिशाचिका, (स्त्री०)
भूख ।—भृतकः, (पु०) नौकर । चाकर ।
(केवल खुराक लेकर काम करने वाला) ।—वस्तु,
(न०) उपभोग्य वस्तु ।—स्थानं, (न०) १
शरीर । २ जनाना कमरा ।

भोगवन् (वि०) १ आनन्दग्रह । २ सुखी । समृद्ध-
वान् । ३ उमेठवों । बुल्लादार । गिटुरीदार ।

भोगवन् (पु०) १ सर्प । २ पर्वत । ३ एक ही साथ
नाचना, गाना और अभिनय करना ।

भोगवती (स्त्री०) १ पातालगंगा । २ नागिन । ३
नागों की पुरी जो पाताल में है । ४ द्वितीया
तिथि की रात । ५ महाभारत के अनुसार एक नदी
का नाम । ६ कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

भोगिकः (पु०) साईंस । छोड़े की दास्य करने
वाला ।

भोगिन् (वि०) १ खाने वाला । २ उपयोग करने
वाला । ३ अनुभव करने वाला । ४ इस्तेमाल
करने वाला । ५ देड़ा मेंढा या मोढ़ों वाला । ६

फनों वाला । ७ कामी । कामुक । विषयतपट । ८ धनी । सम्पत्तिशाली ।—ईशः, (पु०) शेष जी या वासुकी नाग ।—कान्तः, (पु०) पवन । इवा ।—भुज्, (पु०) १ न्यूता । २ मयूर । मोर ।—वहलभं, (न०) खन्दन ।

भोगिन् (पु०) १ सर्व । २ राजा । ३ इन्द्रियपरायण व्यक्ति । लोभासक्त मनुष्य । आमोद प्रमोद में एकान्त रत नर । ४ नाई । नापित । ५ गाँव का मुखिया । ६ आरक्षेपा नक्षत्र ।

भोगिनी (स्त्री०) राजा की रखैल स्त्री या वेश्या ।

भोग्य (वि०) १ भोगने योग्य । काम में लाने लायक । २ जो सह लिया जाय । ३ लाभकारी ।

भोग्यं (न०) १ जिसका भोग किया जाय । २ सम्पत्ति । अधिकारयुक्त पदार्थ । ३ अनाज । नाज । अन्न ।

भोग्या (स्त्री०) रंडी । वेश्या ।

भोजः (पु०) १ मालवा प्रान्त के अन्तर्गत धार नगरी के एक प्राचीन एवं प्रसिद्ध प्रजाप्रिय राजा का नाम । २ एक देश का नाम । ३ विदर्भ के एक राजा का नाम । यथा—

भोजेन द्वौ रथवे विभुधुः ।

—रघुवंश

—अधिपः, (पु०) १ कंस । २ कर्ण ।—इन्द्रः, (पु०) भोजराज ।—कटं, (न०) राजकुमार रुक्मिण द्वारा प्रतिष्ठित नगर का नाम ।—देवः, राजः, (पु०) १ राजाभोज ।—पतिः, (पु०) १ राजा भोज । २ कंस ।

भोजनं (न०) १ आहार को मुँह में रख कर खाना । भक्षण करना । खाना । २ खाने की सामग्री । खाने का पदार्थ । ३ खाने के लिये भोजन देना । उपयोग । ४ उपभोग्य कोई पदार्थ । ५ सम्पत्ति । धन ।—अधिकारः, (पु०) भंडारी । मोदी ।—आच्छादनं (न०) खाना कपड़ा ।—कालः (पु०)—वेलाः, (स्त्री०)—समयः, (पु०) भोजनकाल । खाने का समय ।—त्यागः, (पु०) आहार त्याग ।—

भूमिः, (स्त्री०) भोजन का कमरा ।—विशेषः, वदिया खाने की सामग्री ।—वृत्तिः, (स्त्री०) भोजन । आहार ।—व्ययः, (वि०) भोजन करने में लगा हुआ ।—व्ययः, (पु०) भोजन का खर्च ।

भोजनः (पु०) शिव जी की उपाधि ।

भोजनीय (वि०) खाने योग्य ।

भोजनीयं (न०) खाने का सामान ।

भोजयितु (वि०) खिलाते वाला ।

भोजाः (पु० बहुव०) एक जाति के लोगों का नाम ।

भोज्य (वि०) १ खाद्य पदार्थ । २ सम्भोग करने योग्य ।—कालः, (पु०) भोजन का समय ।—सरभवः, (पु०) आमरस । उदरस्थ भोज्य पदार्थ का अर्थ जीर्ण रस ।

भोज्यं (न०) १ आहार । भोजन । २ भोजन सामग्री । स्वादिष्ट भोजन । घटरस व्यञ्जन । ४ उपयोग ।—

भोज्या (स्त्री०) राजा भोज की एक रानी ।

भोटः (पु०) देश विशेष ।—अङ्गः, (पु०) भूतान नामक देश विशेष ।

भोटीय (वि०) तिब्बतीय (जन) ।

भोमीरा (स्त्री०) मृगा ।

भोस् (अव्यया०) ओ । हो । अरे । आह । सम्बोधनात्मक अव्यय ।

भौजंग } (वि०) [स्त्री०—भौजङ्गी] संपन्न ।
भौजङ्ग, } संप समान ।

भौजंग } (न०) अरक्षेपा नक्षत्र ।
भौजङ्गम् }

भौहः (पु०) तिब्बत का रहने वाला ।

भौत (वि०) [स्त्री०—भौती] १ जीवित व्यक्तियों से सम्बन्ध युक्त । २ जड़ पदार्थ । ३ शैतानी । राक्षसी । ४ पागल ।

भौतः (पु०) भूत प्रेतों को पूजने वाला । २ देवक-देवता की पूजा कर उस पर चढ़े हुए द्रव्य से निर्वाह करने वाला ।

भौतं (न०) भूत प्रेतों का समुदाय ।

भौतिक (वि०) [स्त्री०—भौतिकी] १ जोषधारी सम्बन्धी। २ जड़पदार्थ सम्बन्धी। ३ भूत प्रेत सम्बन्धी।—मठः, (पु०) साधु संन्यासी अथवा कुत्रों के रहने का स्थान।—विद्या, (स्त्री०) जादूगरी।

भौतिक (न०) भोती।

भौतिकः (पु०) शिव।

भौम (वि०) [स्त्री०—भौमी,] १ पृथिवी सम्बन्धी। २ मिट्टी का बना हुआ। ३ मङ्गल ग्रह सम्बन्धी।

भौमः (पु०) १ मङ्गलग्रह। २ नरकासुर। ३ जल। ४ प्रकाश।—दिनः, (न०)—वारः, (पु०)—वासरः, (पु०) सङ्कलवार।—रत्नं, (न०) मृगा।

भौमनः (न०) विश्वकर्मा।

भौमिक (वि०) [स्त्री०—भौमिकी] } मर्य लोक
भौम्य (वि०) } वासी।

भौरिकः (पु०) कोषाध्यक्ष।

भौवनः (पु०) देखो—भौमन।

भौवादिक (वि०) [स्त्री०—भौवादिकी] भू श्रेणी की धातु सम्बन्धी।

भ्रंश (धा० आत्मने परस्मै०) [भ्रंशते, चश्यति, भ्रष्टः] १ गिरना। ठोकर खाना। २ भटकना। ३ खोना। ४ बच जाना। भाग जाना। ५ बीख होना। बटना। ६ लोप होना।

भ्रंशः (पु०) १ पतन। फिसलन। ठोकर। २ भ्रंसः } चोखता। हास। ३ पतन। नाश। ४ पीलापन। ५ लोप। ६ भटक जाना।

भ्रंशन } (वि०) —[भ्रंशनी, या भ्रंसनी]
भ्रंसन } गिराने वाला।

भ्रंशनं (न०) १ गिराने की क्रिया। २ वञ्चित होना।
भ्रंसनं } खाना।

भ्रंशिन (वि०) १ गिरने वाला। २ जीर्ण होने वाला। ३ भटकने वाला। ४ नाश करने वाला।

भ्रंशुः (पु०) जनाना रूप धरे हुए नट।

भ्रत (धा० आत्म०) [भ्रतति, भ्रतते] खाना। भक्षण करना।

भ्रज्जनं (न०) भूजने सेकने या अङ्कुरने की क्रिया।

भ्रण (धा० परस्मै०) [भ्रणति] शब्द करना। बजना।

भ्रमंगः (पु०) देखो भ्रूमङ्ग।

भ्रम (धा० परस्मै०) [भ्रमति, भ्रम्यति, भ्राम्यति, भ्रान्त] १ भ्रमण करना। २ धूमना। कावा काटना। ३ भटक जाना। ४ जड़खडाना। सम्येह युक्त होना। ढाँवाँडोल होना। ५ भूलना। ६ धुकधुक करना। झिलझिलाना। तिलझिलाना। पर मारना। ७ घेरना।

भ्रमः (पु०) १ भ्रमण। २ कावा काटना। ३ भूलना। भटकना। ४ भूल। गलती। धोखा। ५ गड़बड़ी। परेशानी। ६ भँवर। ७ कुम्हार का चाक। ८ चक्की का पाट। ९ खराद। १० सुस्ती। ११ जल-श्रोत। जलपथ।—आकुल, (वि०) घबड़ाया हुआ।—आसक्तः, (पु०) सिगलीगर।

भ्रमणं (न०) १ धूमना। फिरना। २ चक्कर। ३ खुटवाला। भटकना। ४ कप। कँपकपी। चञ्चलता। ५ भूल। गलती। ६ धुमरी। चक्कर।

भ्रमणी (स्त्री०) १ खेल विशेष। २ जोंक। जलौका।

भ्रमत् (वि०) धूमने वाला।—कुटा, (स्त्री०) छाता विशेष।

भ्रमरः (पु०) १ भौरा। कामुक जन। विषयी जन। ३ कुम्हार का चाक।

भ्रमरः (न०) धुमरी। चक्कर।—अतिथिः, (पु०) चम्पा का वृक्ष।—अभिलीन, (वि०) जिसमें मधुमक्खी या भ्रमर लपटे हों।—अलकः, (पु०) माथे पर की अलक या लट।—इष्टः, (पु०) श्योनाक वृक्ष।—उत्सवा, (स्त्री०) माघवी लता।—करगडकः, (पु०) कँडी जिसमें भौर भरे रहते हैं (चोर लोग जब चोरी करने जाते हैं तब इसे ले जाते हैं और जिस घर में चोरी करने जाते हैं उसमें यदि दीपक जलता हुआ हो तो भौरों को छोड़ देते हैं। वे जाकर दीपक बुझा देते हैं।)—कीटः, (पु०) बँै विशेष।—मिया, (पु०) कदम्ब वृक्ष विशेष।—वाधा, (स्त्री०) भ्रमर या सं० श० कौ०—अ

मधुमक्षिका द्वारा विह्वल ।—मण्डल, (न०)
अमर या मधुमक्षिकाओं का दल ।

अमरकः (पु०) १ मधुमक्षिका । २ भँवर ।

अमरकं (न०) । १ भाँचे पर लटकने वाली लट
अमरकः (पु०) । या अलक । २ कीड़ा के लिये
गैदा । ३ लट् । विंगी ।

अमरिका (स्त्री०) चारों ओर अमण करने वाली ।

अमः (स्त्री०) १ चक्र खाना । घूमना । २ कुम्हार
का चाक । ३ खरादी की खराद । ४ भँवर । ५
हवा का चक्र । वयण्डर । ६ गोलाकार सैन्य व्यूह ।
७ भूल । शलती ।

अश (देखो) अंश ।

अंशिमन् (पु०) प्रचण्डता । आधिक्य । उग्रता ।

अष्ट (व० कृ०) १ गिरा हुआ । २ पतित । ३ भूला
भटका । ४ वियोजित । निकाला हुआ । ५ चीण ।
बरबाद । ६ खोया हुआ । ७ दुराचारी । बतचलन ।
—अधिकार (वि०) बरखास्त किया हुआ ।
किसी पद या अधिकार से निकाला हुआ ।—
क्रिया, (वि०) कर्म को छोड़े हुए ।—योगः,
(पु०) धर्मव्युत् । धर्म से जिगा हुआ ।

असृज (धा० उभय०) [भुजति, भृष्ट] १
भूना । अकरोना ।

अज् (धा० आत्म०) [अजते] १ चमकना ।
दमकना ।

अजं (न०) एक प्रकार का साम जो गवामथनसत्र
में विषुव नामक प्रधान दिन में गाया जाता था ।

अजः (पु०) सप्तसूर्यों में से एक का नाम ।

अजक (वि०) [स्त्री०—अजिका] प्रकाशमान ।
दीप्तिमान ।

अजकं (न०) पित्त ।

अजधुः (पु०) आभा । चमक । सौन्दर्य ।

अजिन् (वि०) चमकीला ।

अजिष्णु (वि०) चमकीला । चमकदार ।

अजिष्णुः (पु०) १ विष्णु । २ शिव ।

आतृ (पु०) १ भाई । २ सगा या सहोदर भाई ।

३ समीपी सम्बन्धी । ३ सगा । नातेदार । ४
साधारणतः सम्बोधनात्मक शब्द । यथा । “आतः
कष्टमहो” भाई ! बड़ा कष्ट है ।” (द्विवचन)
भाई बहिन ।—गन्धि, —गन्धिक, (वि०)
नाम मात्र का भाई ।—जः, (पु०) भतीजा ।
—जा, (स्त्री०) भतीजी ।—जाया, (स्त्री०)
[= आतृजाया भी रूप होता है ।] भौजाई ।
भाई की स्त्री ।—दत्त, (न०) वह सम्पत्ति जो
भाई अपनी बहिन को विवाह के समय दे ।—
द्वितीया, (स्त्री०) दिवाली के बाद की द्वितीया ।
भैयाद्वैज ।—पुत्रः, (पु०) (आतृपुत्रः भी
रूप होता है ।) भाई का बेटा । भतीजा ।—वधूः,
(स्त्री०) भाई की पत्नी । भौजाई । भाभी ।—
श्वसुरः, (पु०) पति का बड़ा भाई । जेठ ।
भसुर ।—हत्या, (स्त्री०) भाई का वध ।

आतृक (वि०) भाई सम्बन्धी ।

आतृव्यः (पु०) १ भतीजा । भाई का लड़का ।
२ शत्रु । दुश्मन ।

आत्रीयः } (पु०) भाई का पुत्र । भतीजा ।
आत्रेयः }

आत्र्यं (न०) भाईचारा । आतृभाव ।

आतं (व० कृ०) १ अमण किये हुए । घूमा
आन्तं (वि०) फिरा हुआ । २ चक्र खाया हुआ । ३
भूला हुआ । भटका हुआ । ४ परेशान । घबड़ाया
हुआ । ५ हथर उधर घूमा हुआ ।

आतं } (न०) १ अमण । २ भूल । शलती ।
आन्तम् }

आतिः } (स्त्री०) १ अमण । २ चक्र काटना ।
आन्तिः } ३ घूम कर आना । ४ शलती । भूल ।
अम । ५ परेशानी । घबड़ाहट । ६ सन्देह ।
संशय ।—कर, (वि०) अम में गलने वाला ।
—नाशनः, (पु०) शिव जी ।—हर, (वि०)
अम दूर करने वाला ।

आतिमत् (वि०) १ घूमने वाला । २ भूल करने
आन्तिमत् (वि०) वाला । ३ काव्यालङ्कार विशेष, जिसमें
किसी वस्तु को, दूसरी वस्तु के साथ उसकी
समानता देख, अम से वह दूसरी वस्तु ही समझ
लेना निरूपित होता है ।

आमः (पु०) १ इधर उधर का भ्रमण । २ अस । गलती । भूल ।

आमक (वि०) [स्त्री०—आमिका] १ घुमाने वाला । २ परेशान करने वाला । छलिया । कपटी । धूर्त । चालबाज़ ।

आमकः (पु०) १ सुरजमुखी फूल । २ चुम्बक पत्थर । ३ छली । धूर्त । ४ गीदड़ । श्याल ।

आमर (वि०) [स्त्री०—आमरी] मधुमक्खी सम्बन्धी ।

आमरं (न०) १ चुम्बक पत्थर । (न०) चक्र । आमरः (पु०) १ काटना । २ घुमरी । चक्र । ३ मिरगी । ४ शहद । ५ स्त्रीसम्भोग का आसन विशेष ।

आमरी (स्त्री०) १ दुर्गा देवी । २ प्रदक्षिणा । परिक्रमा ।

आश } (वा० आत्म०) [आशते, आश्रयते, भ्लाशे } भ्लाशते, भ्लाश्रयते] चमकना । जलना । धमकना ।

आश्रू (न०) १ कदाई । (पु०) १ प्रकाश । २ आश्रुः (पु०) १ आकाश । व्योम ।

आश्रमिन्ध } (वि०) भद्रभुजा । भुँजवा ।

भ्रुकुंशः

भ्रुकुंशः { (पु०) अभिनयकर्ता पुरुष जो स्त्री के मेघ में हो ।

भ्रुकुंसः

भ्रुकुटिः } (स्त्री०) भौंह ।

भ्रु (वा० परस्मै०) [भ्रुडति] १ एकत्र करना । २ डकना ।

भ्रू (स्त्री०) भौं ।—कुटिः,—कुटी, (स्त्री०) भौं टेढ़ी करना ।—क्षेपः, (पु०) भौं टेढ़ी करना ।—भङ्ग,—भेदः, (पु०) तेंवरी चढ़ाना ।—भेदिन, (वि०) तेंवरी चढ़ाने वाला ।—मध्यं, (न०) दोनों भौवों के बीच का स्थान ।—घिकारः,—विक्षेपः, (पु०)—विक्रिया, (स्त्री०) त्वोरी बदलना ।

भ्रूयाः, (पु०) १ स्त्री का गर्भ । २ बालक की उस समय की अवस्था जब कि वह गर्भ में रहता है । भ्रू,—हनु, (वि०) गर्भपात करने वाला ।

भ्रैज (वा० आत्म०) [भ्रैजते] चमकना ।

भ्रैष्, भ्रैष् (वा० उभय०) [भ्रैषति भ्रैषते, भ्रैषति, भ्रैषते] १ जाना । २ गिरना । लड़-खड़ाना । फिसलना । ३ करना । ४ नाराज़ होना ।

भ्रैषः (पु०) १ चलना । गमन । फिसलना । लड़-खड़ाना । २ नाश । ३ हानि । ४ पाप । भंग करना । तोड़ना । ५ अलग करना । जुदा करना ।

भ्रौणहृत्यं (न०) गर्भ गिरा कर या अन्य किसी प्रकार गर्भस्थ बालक को मार डालना ।

भ्लाश देवो आश ।

म

म संस्कृत वर्षसाला का पचीसवाँ नवत्यन और पचास का अन्तिम वर्ष । इसका उच्चारण हॉठ और नासिका द्वारा होता है । जिह्वा के अग्रभाग का दोनों होठों से स्पर्श होने पर इसका उच्चारण होता है । यह स्पर्श और अनुनासिक वर्ष है । इसके उच्चारण में संकार, नादबोध और अल्पप्राण प्रयत्न लगाये जाते हैं । प, फ, ब और भ इसके सबर्ण कहे जाते हैं ।

मं (न०) १ जल । २ सुख । कुशलता ।

मः (पु०) १ समय । काल । २ विष । जहर । ३ ऐन्द्रिजात्मिक लुटकुला । ४ चन्द्रमा । ५ ब्रह्म । ६ विष्णु । ७ शिव । ८ यम ।

मकरः (पु०) १ मगर । नक्र । बड़ियाल । २ मकर राशि । ३ मकराकृत मूष । ४ मकराकृत कुण्डल । मकरा-कार मुद्रा । ५ कुबेर की नवनिधियों में से एक

निधि का नाम ।—अङ्कः, (पु०) १ कामदेव । २ समुद्र ।—अश्वः, (पु०) वरुण ।—आकरः, —आलयः, —आवासः, (पु०) समुद्र ।—कुण्डलं, (न०) मकराकृत कुण्डल ।—केतनः, —केतुः, —केतुमत्, (पु०) कामदेव की उपाधियाँ ।—ध्वजः, (पु०) १ कामदेव । २ सैन्य झण्डा विशेष ।—राशिः, (स्त्री०) मकर राशि ।—संकमयां, (न०) सूर्य का मकरराशि पर जाना ।—सप्तमी, (स्त्री०) माघ शुक्ला ७मी ।

मकरन्दः (पु०) १ फूलों का रस । २ कुन्द पुष्प । ३ कोयल । ४ मधुमक्षिका । ५ आम का वृक्ष विशेष जिसमें सुगंधि होती है ।

मकरन्दं (न०) किञ्चलक । फूल का केसर ।

मकरन्दवत् (वि०) मकरन्द से पूर्ण ।

मकरन्दवती (स्त्री०) लता विशेष या उसके फूल ।

मकरिन् (पु०) समुद्र की उपाधि ।

मकरी (स्त्री०) मादा घड़ियाल ।—पत्रं, —लेखा, (न०) लक्ष्मी जी के मुख का चिन्ह विशेष ।—प्रस्थः (पु०) एक नगर विशेष ।

मकुटं (न०) ताज । मुकुट ।

मकुतिः, (पु०) राजा की ओर से श्रमों के लिये आदेश । शूद्रशासन ।

मकुरः (पु०) १ दर्पण । आईना । २ वकुल वृक्ष । ३ कली । ४ अरबी चमेली । ५ कुम्हार के चाक को घुमाने का हंडा ।

मकुलः (पु०) १ वकुल वृक्ष । २ कली ।

मकुशः
मकुशकः } (पु०) मोठ नामक अन्न ।
मकुशुः

मकुलकः (पु०) १ कली । २ दन्वी वृक्ष ।

मक् (धा० आ०) [मङ्कते] जाना ।

मकलः (पु०) १ धूप । लोबान । २ गेरू ।

मकौलः (पु०) खड़िया मिट्टी ।

मक् (धा० परस्मै०) [मङ्कति] १ इकट्ठा करना । जमा करना । संग्रह करना । २ कुपित होना ।

मलः (पु०) १ कोप । क्रोध । २ दग्धः । पाखण्ड । ३ समूह ।—वीर्यः, (पु०) पियाल वृक्ष ।

मलिका } (स्त्री०) मक्खी । शहद की मक्खी ।—
मलीका } —मलं, (न०) मोंम ।

मल या मंख (धा० परस्मै०) [मङ्कति, मंखति] चलना । जाना । हेंगना ।

मलः (पु०) यज्ञ । याग ।—अग्निः, (पु०)—अनलः, (पु०) यज्ञीयाग्नि । यज्ञ की अग । असुहृद्, (पु०) शिव जी का नामान्तर ।—क्रिया, (स्त्री०) यज्ञीय कर्म विशेष ।—वातुः, (पु०) श्रीराम जी की उपाधि ।—छिन्, (पु०) राक्षस ।—द्वेपिन्, (पु०) शिव जी की उपाधि ।—हन्, (न०) १ इन्द्र । २ शिव ।

मगधः (पु०) १ विहार के दक्षिणी प्रान्त का प्राचीन नाम । २ बंदीजन या भाट ।—उल्लावा, (स्त्री०) बड़ी पीपल ।—पुरी, (स्त्री०) मगधनाम्रीपुरी ।—लिपिः, (स्त्री०) मागधी लिपि या लिखावट ।

मगधाः (पु० बहु०) १ मगधदेश के अधिवासी । २ बड़ी पीपल ।

मग्न (वि०) १ निमज्जित । डूबा हुआ । वृद्धा हुआ । २ लवलील । लित । लीन ।

मगं (न०) एक प्रकार का पुष्प ।

मगः (पु०) १ पुराणों के अनुसार एक द्वीप का नाम, जिसमें ग्लेच्छ रहते हैं । २ देश विशेष । ३ एक दवा का नाम । ४ हर्ष । आनन्द । ५ दसवां महा नक्षत्र ।

मगधः } (पु०) इन्द्र का नाम ।
मगधत् }

मगधन् (पु०) १ इन्द्र का नाम । उल्लू । पैचक । ३ व्यास जी का नाम ।

मघा (स्त्री०) दसवें नक्षत्र का नाम ।—त्रयोदशी, (स्त्री०) भाद्र कृष्ण त्रयोदशी ।—भवः, —भूः, (पु०) शुक्रमह ।

मङ्क } (धा० आत्म०) [मङ्कते] १ जाना । २
मङ्कु } सजाना । शृंगार करना ।

मंकिलः } (पु०) दावानल ।
मङ्किलः }
मङ्कुरः } (पु०) दर्पण । आईना ।
मङ्कुरः }
मङ्कुरा (न०) टाँगों की रक्षा के लिये चर्म निर्मित कवच ।
मङ्कु (अन्यया०) १ तुरन्त । फौरन । शीघ्रता से ।
२ अतिशय । अत्यधिक । प्रचुर ।
मङ्खः } (पु०) १ राजा का बंदीजन । २ सरहस ।
मङ्खः } लेप । दवा ।
मङ्ग } (धा० उभय०) [मङ्गति—मङ्गति, मङ्गते
मङ्गु } —मङ्गते] जाना । चलना ।
मङ्गः } (पु०) १ नाव का अगला भाग । गलही ।
मङ्गः } २ जहाज का एक बाजू ।
मङ्गल } (वि०) १ शुभ । २ समृद्धवान् । ३ बहा-
मङ्गल } दुर । वीर ।
मङ्गलम् } (न०) १ शुभत्व । आनन्द । सौभाग्य
मङ्गलम् } कुशल । २ शुभशकुन । ३ आशीर्वाद ।
दुआ । ४ शुभ पदार्थ । मङ्गलकारी वस्तु । ५
विवाहादि मङ्गलोत्सव । ६ शुभावसर । शुभवटना ।
उत्सव । ७ प्राचीन रीति रस्म । ८ हल्दी ।—
अक्षताः, (पु० बहुवचन) वे अक्षत या चॉवल जो
आशीर्वाद देने समय ब्राह्मण यजमान के ऊपर
छोड़ते हैं ।—अगुरुः, (न०) चन्दन विशेष ।—
अयनं, (न०) आनन्द या समृद्धि का मार्ग ।—
अष्टकं, (न०) आशीर्वादामक श्लोक जो विवाह
कराने वाला पुरोहित या पाधा वर वधू की मङ्गल
कामना के लिये विवाह के समय पढ़ता है ।—
आह्निकः, (वि०) वह धार्मिक कृत्य जो मङ्गल कामना
के लिये नित्य किया जाय ।—आचरणं, (न०)
वह श्लोक या पद जो किसी शुभ कार्य के आरम्भ
में कार्य की निर्विघ्न समाप्ति के लिये पढ़ा या लिखा
जाय ।—आचारः, (पु०) १ गीतवाद्यादि शुभ
कृत्य । २ आशीर्वादोच्चारण ।—आतोरछं, (न०)
वह ढोल जो किसी उत्सवावसर पर बजाया
जाय ।—आदेशवृत्तिः, (पु०) ज्योतिषी ।
भाग्य में लिखा शुभाशुभ फल बताने वाला ।—
आरम्भः, (पु०) गणेश जी ।—आलयः,

—आवासः, (पु०) देवालय मंदिर ।—
कारकः,—कारिन्, (वि०) शुभ ।—लौमं,
(न०) वह रेशमी वस्त्र जो किसी उत्सव के अव-
सर पर पहिना जाय ।—ग्रहः, (पु०) शुभ ग्रह ।
—हायः, (पु०) प्लव वृक्ष ।—तूर्यः,—वाद्यं
(न०) तुरही या ढोल जो किसी उत्सव या
मङ्गल कृत्य ढाँते समय बजाया जाय ।—देवता,
(स्त्री०) शुभ या मङ्गल देवता ।—पाठकः
(पु०) भट्ट । बंदीजन । मागध ।—प्रतिसरः
—सूत्रं, (न०) १ वह डोरा जो किसी देवता
के प्रसाद रूप में किसी शुभ अवसर पर कलाई में
बाँधा जाता है । २ वह डोरा जो सौभाग्यवती
स्त्री अपने गले में तब तक बाँधती है जब तक
उसका पति जीवित रहता है । ३ ताबीज़ या
बाजबंद की डोरी ।—प्रदा, (स्त्री०) हल्दी ।—
प्रस्थः, (पु०) एक पर्वत ।—वचस्, (पु०)
—वादः, (पु०) आशीर्वाचन । आशीर्वाद ।—
वारः,—वासरः, (पु०) मङ्गलवार ।—
स्नानं, (न०) वह स्थान जो मङ्गल की कामना
से अथवा किसी शुभ अवसर पर किया जाता है ।

मङ्गलः } (पु०) मङ्गलग्रह ।
मङ्गलः }

मङ्गला } (स्त्री०) पतिव्रता पत्नी ।
मङ्गला }

मङ्गलीय } (वि०) शुभ । सौभाग्यशाली ।
मङ्गलीय }

मङ्गल्य } (वि०) १ शुभ । २ प्रसन्नकारक । अनुकूल ।
मङ्गल्य } सुन्दर । ३ पवित्र ।

मङ्गल्यं } (न०) १ अनेक तीर्थ स्थानों से लाया
मङ्गल्यं } हुआ जल जो राज्याभिषेक के काम में
आता है । २ सुवर्ण । ३ चन्दन काष्ठ । ४ सिंदूर ।
५ खट्वादी ।

मङ्गल्यः } (पु०) १ बट वृक्ष । २ नारियल का
मङ्गल्यः } वृक्ष । ३ मसूर की दाल ।

मङ्गल्या } (स्त्री०) एक प्रकार का अगद । जिममें
मङ्गल्या } चमेली के फूल जैसी सड़क निकलती है ।
२ दुर्गा का नाम । ३ चन्दन विशेष । ४ गन्ध
द्रव्य विशेष । ५ एक प्रकार का पीला रोगन ।

मंगल्यकः } (पु०) मसूर ।
मङ्गल्यकः }

मंघ्र } (धा० परस्मै०) [मंघ्रति] १ सजाना ।
मङ्घ्र } शृङ्गार करना । (आत्म०-मंघ्रते) १ छुलना ।
धोखा देना । २ आरम्भ करना । ३ कलङ्क लगाना ।
झोषी ठहराना । फटकारना । ४ चलना । जाना ।
शीघ्रता पूर्वक चलना । ५ खाना होना ।

मञ्च (धा० आत्म०) [मञ्चते] १ दुष्टता करना । दुष्ट
होना । २ धोखा देना । छलना ३ शोखी मारना ।
अभिमान करना । ४ अभिमानी बनना ।

मञ्चर्विका (स्त्री०) संज्ञा के अन्त में लगाया जाने
वाला शब्द विशेष, जिसके अर्थ होते हैं :—
सर्वश्रेष्ठ । सर्वोत्तम । अपनी जाति में सब से
अच्छा । जैसे गोमञ्चर्विका अर्थात् सर्वश्रेष्ठ गौ ।

मञ्चः (पु०) मत्स्य ।

मञ्जनं (न०) १ स्नान । गोता । बुड़की । २ माँस
या हड्डी के भीतर का कोमल चिकना गूदा ।

मञ्जनः (पु०) १ नली की हड्डी के भीतर का गूदा जो
बहुत कोमल एवं चिकना हुआ करता है । पौधे के
बीच की नस ।—कृत, (न०) हड्डी ।—
समुद्रवः (पु०) वीर्य ।

मञ्जा (न०) १ हड्डी के भीतर का गूदा । माँस का
गूदा । २ पौधे के बीच की नस ।—जं, (न०)
वीर्य ।—रजस, (न०) नरक विशेष ।—रसः,
(पु०) वीर्य । धातु ।—सारः, (पु०)
कायफल ।

मंघ्र } (धा० आत्म०) (मंघ्रते) १ पकड़ना । २
मञ्घ्र } बड़ा या लंबा होना । ३ चलना । जाना ।
४ चमकना । ५ सजाना ।

मंघ्रः } (पु०) १ सेज । शय्या । पलंग । ३ उच्च
मञ्घ्रः } स्थान । प्रतिष्ठा का स्थान । मंचान । रंग-
मंच । सिंहासन । व्यास गद्दी ।

मंघ्रकं } (न०) १ सेज । खाट । २ सिंहासन । ऊँचा
मञ्घ्रकं } बना हुआ चबूतरा । अग्नि रखने का स्थान ।
—आश्रया, (पु०) खाट के खटकीरा या खटमल ।

मंघ्रिका } (स्त्री०) १ कुर्सी । २ कठौठा ।
मञ्घ्रिका }

मंजरं } (न०) फूलों का झुप्पा । २ मोती । ३
मञ्जरं } तिलक पौधा ।

मञ्जरिः } (पु०) १ छोटे पौधे या लता आदि का
मञ्जरी } नया निकला हुआ कल्ला । कोपल । २
वृक्ष विशिष्ट में फूलों या फलों के स्थान में एक
सोंके में लगे हुए अनेक दानों का समूह । ३
समानान्तर रेखा या धंक्ति । ४ मोती । ५ लता ।
३ तुलसी । ७ तिलक पौधा ।—नम्रः, (पु०)
वेतस पौधा ।

मंजरित } (वि०) १ फूलों से सम्पन्न । २ कलियों
मञ्जरित } से युक्त । मंजरी से युक्त ।

मंजा } (स्त्री०) १ बकरी । २ फूलों का झुप्पा । ३
मञ्जा } बेल ।

मंजिः } (स्त्री०) १ फूलों का झुप्पा । २ लता ।
मञ्जी } बेलें ।—फला, (स्त्री०) केले का वृक्ष ।

मंजिका } (स्त्री०) १ बेरया । रंडी ।
मञ्जिका }

मंजिमन् } (पु०) सौन्दर्य । मनोहरता ।
मञ्जिमन् }

मंजिष्ठा } (स्त्री०) मजीठ ।—मेहः, (पु०)
मञ्जिष्ठा } प्रमेह रोग विशेष ।—रागः, (पु०)

मजीठ का रंग । (अल०) ऐसा पक्का प्रेम या
अनुराग जैसा कि मजीठ का पक्का रंग होता है ।
स्थायी या टिकाऊ प्रेम या अनुराग ।

मंजीरः (पु०) } नूपुर । बिड़िया । (न०) वह
मंजीरः (पु०) } खंभा जिसमें मथानी या रई की
मंजीर (न०) } रस्सी लपेटी जाती है ।
मञ्जीर (न०) }

मंजीलः } (पु०) वह गाँव जिसमें धोबी रहते हों ।
मञ्जीलः }

मंजु } (वि०) १ प्रिय । मनमोहक । मधुर ।
मञ्जु } मनोहर । आकर्षक ।—केशिन्, (पु०)

कृष्ण ।—गमन, (वि०) मनोहर चाल ।—

गमना, (स्त्री०) १ हंस । २ सारस जाति का
जलपक्षी । लाल मेढ़क ।—गर्तः, (पु०)

नेपाल देश का प्राचीन नाम ।—गिर, (वि०)
वह जिसकी मधुर वाणी हो ।—गुञ्जः, (पु०)

मधुर गुञ्जार ।—घोष, (वि०) मधुर स्वर ।—
नाशी, (स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री । २ दुर्गा । ३

शची । इन्द्राणी ।—पाठकः, (पु०) तोता ।

सुग्गा ।—प्राणाः, (पु०) ब्रह्मा ।—भाशिनः,
—वाचः, (वि०) मधुरभाषी ।—वक्त्र, (वि०)
सुन्दर शङ्खवाला । खवसुरत ।—स्वनः,—स्वर,
(वि०) मधुर स्वर करने वाला ।

मञ्जुल } (वि०) मनोहर । सुन्दर । सुरीला ।
मञ्जुल } (कण्ठ) ।

मञ्जुलम् } (न०) १ कूज । २ जल का सोता ।
मञ्जुलम् } कूप । २ नदी या जलाशय का पाट ।

मञ्जुलः } (पु०) जलकुक्षुट । जल का मुर्गा ।
मञ्जुलः }

मञ्जूषा } (स्त्री०) १ पेटी । वक्त्र । चौखटा ।
मञ्जूषा } आधार । २ मंजीठ । ३ पत्थर । ४ बड़ा
पिटारा या दोकरा ।

मटची } (स्त्री०) ओला ।
मटती }

मटःस्फटिः (पु०) अभिमान का आरम्भ । खोलला
अभिमान ।

मट्टकं (न०) छत की मुड़ेर ।

मट् (धा० परस्मै०) [मटति] १ रहना । बसना ।
२ जाना । ३ पीसना ।

मटं (न०) } १ वह मकान जिसमें किसी महन्त
मटः (पु०) } के अधीन अन्य बहुत से साधु रह
सके । २ छात्रनिलय । बोर्डिंग हाउस । छात्रालय
छात्रावास । ३ विद्यालय । विद्यामन्दिर । ४
मन्दिर । ५ बैलगाड़ी ।—आयतनं, (न०) मठ ।
अखाड़ा । अस्थल । विद्यामन्दिर । विद्यालय ।

मठर (वि०) नशे में । शराब पिये हुए ।

मठिका (स्त्री०) मठी । मदी ।

मठी (स्त्री०) १ छोटा मठ । २ अखाड़ा । अस्थल ।

मड्डुः } (पु०) ढोल ।
मड्डुकः }

मण् (धा० परस्मै०) शब्द करना । बरबराना ।

मणिः (पु० स्त्री०) १ बहुमूल्य रत्न । जवाहिर । २
आभूषण । ३ कोई भी वस्तु जो चपनी जाति में
श्रेष्ठ हो । ४ चुम्बक पत्थर । ५ कलाई । ६ घड़ा ।
• भगाङ्कुर । योनिलिङ्ग । योनि का अगला भाग ।

• लिङ्ग का अगला भाग ।—इन्द्रः,—राजः,
(पु०) हीरा ।—कंठः—कण्ठः, (पु०) नील-
कण्ठ पक्षी ।—कण्ठकः, (पु०) मुर्गा ।—
कर्णिका,—कर्णी, (स्त्री०) बनारस या काशी
में तीर्थकुण्ड विशेष ।—कानः, (पु०) बाण
का वह भाग जहाँ पर लगे होते हैं ।—काननं,
(न०) गरदन ।—कारः, (पु०) जौहरी ।—
तारकः (पु०) सारस पक्षी ।—दर्पणः,
(पु०) दर्पण जिसमें रत्न जड़े हों ।—द्वीपः,
(पु०) १ अनन्त नाग का फन । २ असृज
सागर का एक द्वीप विशेष ।—धनुः, (पु०)—
धनुस् (न०) इन्द्रधनुष ।—पाली, (स्त्री०)
जौहरिन । स्त्री जो रत्न रखती हो ।—पुष्पकः,
(पु०) सहदेव के शङ्ख का नाम ।—पूरः,
(पु०) १ नाभि । २ चोली, जिसमें बहुत से
रत्न टके हों ।—पूरं, (न०) कलिङ्ग देश का
एक नगर ।—बन्धः, (पु०) १ कलाई ।
पहुँचा ।—बन्धनं, (न०) १ अँगूठी का वह
स्थान जहाँ नगीना जड़ा जाता है । २ मोती की
लड़ी । ३ कलाई ।—बीजः,—बीजः, (पु०)
अनार का पेड़ ।—गितिः, (स्त्री०) शेष के
भवन का नाम ।—भूः, (स्त्री०) रत्नजटित फर्श ।
—भूमिः, (स्त्री०) मणियों की खान । २ रत्न
जटित फर्श ।—मंथं, (न०) सैन्धा निमक ।—
मात्ता, (स्त्री०) १ रत्नहार । २ चमक । आभा ।
दीप्ति । ३ प्रेमक्रीड़ा में गाल पर या अन्यत्र दाँतों
से काँटने का गोल चकत्ता या दाग । ४ लक्ष्मी
जी का नाम । ५ एक वृक्ष का नाम ।—रत्नं
(न०) जवाहिर ।—रागः, (पु०) रत्नों का
रंग ।—रागं, (न०) डिङ्कुल । शिंशरफ ।—
सरः, (पु०) हार । गुंज ।—सूत्रं, (न०)
मोतियों की लड़ी ।

मणिकः (पु०) } जल का घड़ा । (पु०) जवाहिर
मणिकं (न०) } विशेष । माणिक । चुकी ।

मणितं (न०) एक अव्यक्त सिसकारी जो स्त्रीसम्भोग
के समय मुख से निकला करती है ।

मणिमत् (वि०) रत्नजटित । (पु०) १ सूर्य ।
२ एक पर्वत का नाम । ३ एक तीर्थ का नाम ।

मणीचकं (न०) चन्द्रकान्तमणि ।

मणीचकः (पु०) मङ्गरंगा । रामचिदिया । कौडि-
याला ।

मणीषिकं (न०) पुष्प विशेष ।

मंड } (धा० आत्म०) १ कामना करना । २
मण्ड } खेद पूर्वक स्मरण करना ।

मंड } (धा० परस्मै०) मण्डयति, [मण्डयति—
मण्डयते] मण्डयते, मण्डित] १ सजाना । शृङ्गार
करना । २ आनन्द मनाना । [आत्म०—मण्डते]
१ वस्त्र धारण करना २ घेर लेना ३ बाँटना ।

मंडः (पु०) वह गाढ़ा चिकना पदार्थ विशेष
मण्डः (पु०) जो किसी तरल पदार्थ के ऊपर
मंड (न०) छा जाता है । २ मॉँड । पिच्छ ।
मण्डम् (न०) सार । ३ दूध की मलाई ।
४ कैन । माग । ५ समीरा । ६ पीच । महेरी ।
७ गुदा । सार । ८ खिर । (पु०) १ आभूषण
विशेष । शृङ्गार विशेष । २ मैटक । ३ पुरण्ड
का वृत्त ।—प, (वि०) मॉँड पोने वाला ।
मलाई खाने वाला ।—हारकः, (पु०) कलवार
जो शराब खींचता है ।

मंडा } (स्त्री०) शराब । मदिरा ।
मण्डा }

मंडकः } (पु०) एक प्रकार का पिष्टक । मैदे की
मण्डकः } रोटी विशेष । मॉँड ।

मंडनम् } (न०) १ शृङ्गार करना । सँवारना । २
मण्डनम् } गहना । सजावट । शृङ्गार ।

मंडनः } (पु०) एक पण्डित का नाम । मण्डन
मण्डनः } मित्र जो शङ्कराचार्य द्वारा शास्त्रार्थ में
हराये गये थे ।

मंडपः } १ मँडवा । २ तंबू । ३ कुंज । ४ भवन
मण्डपः } जो देवता को चढ़ा दिया गया हो ।—

प्रतिष्ठा, (स्त्री०) किसी देवालय की प्रतिष्ठा ।

मंडयंतः } (पु०) १ आभूषण । सजावट । २
मण्डयन्तः } वट । ३ भोज्य पदार्थ । ४ स्त्रियों का
समुदाय ।

मंडयंती } (स्त्री०) स्त्री । नारी ।
मण्डयन्ती }

मंडरी } (स्त्री०) झिल्ली । कींगुर विशेष ।
मण्डरी }

मंडल } (वि०) गोल ।—अग्रः, (पु०)
मण्डल } खाँड़ा । मुड़ी हुई तलवार ।—अधिपः,

अधीशः,—ईशः,—ईश्वरः,— (पु०) १

सुवेदार । जिलेदार । २ राजा ।—आवृत्तिः,

(स्त्री०) चक्रदार चाल ।—कार्मुकः, (वि०)

गोल धनुषधारी ।—नृत्यं, (न०) गोलाकार

नाच ।—न्यासः, (पु०) वृत्त का वर्णन ।—

पुच्छकः, (पु०) एक कीड़ा जो प्रायः नाशक

होता है । इसके काटने से सर्प जैसा विष चढ़ता

है ।—वटः, (पु०) गोल वट वृक्ष ।—वर्तिनः,

(पु०) एक छोटे प्रान्त का हाकिम ।—वर्षः,

(पु०) सार्वत्रिक वर्षा ।

मंडलं } (न०) १ वृत्ताकार विस्तार । गोला ।
मण्डलं } पहिया । कुल्ला । व्यास । गुलाई । २ ऐन्द्र

जासिक की खींची हुई गोलाकार रेखा । ३ चन्द्र

सूर्य का पार्श्व । ४ ग्रह के घूमने की कक्षा । ६

समुदाय । समाल । समूह । दल । ७ सभा । संस्था ।

८ बड़ा वृत्त । ९ चारों दिशाओं का घेरा जो गोला-

कार दिखलाई पड़ता है । क्षितिज । १० समीप

का ज़िला या प्रान्त । ११ ज़िला या प्रान्त । १२

बारह राज्यों का गुट या समूह । १३ शिकार खेलने

का पैतरा विशेष । १४ तौंत्रिक मंत्र विशेष । १५

अग्नेय का एक खंड । १६ कुष्ठ रोग विशेष । १७

गन्ध द्रव्य विशेष ।

मंडलः } (पु०) १ गोलाकार सैन्य व्यूह । २
मण्डलः } कुत्ता । ३ सर्प विशेष ।

मंडलकम् } (न०) १ घेरा । २ चक्र । ३ ज़िला ।

मण्डलकम् } प्रान्त । ४ समुदाय । समूह । ५ चक्रा-

कार । सैन्य व्यूह । ६ सफेद कुष्ठ जिसमें गोल

चकते सारे शरीर में पड़ जाते हैं । ७ दर्पण ।

मंडलयित } (वि०) गोल । चक्रदार ।
मण्डलयित }

मंडलयितम् } (न०) गोला । मैद ।
मण्डलयितम् }

मंडलित } (वि०) वह जो गोल बनाया
मण्डलित } गया हो ।

मंडलिन } (वि०) १ वर्तुलाकार बनाने वाला । २
मण्डलिन } देश का शासन करने वाला । ३ (पु०)

१ सर्प विशेष । २ बिल्ली । ३ ऊदविलाव । ४ कुत्ता । ५ सूर्य । ६ वटवृक्ष । ७ सूवेदार । एक सूवे का हाकिम ।

मंडित } (व० कृ०) सजाया हुआ । सँवारा
मण्डित } हुआ ।

मंडूकं } (न०) स्त्रीसम्भोग का एक आसन
मण्डूकम् } विशेष ।

मंडूकः } (पु०) मैदक ।—अनुवृत्तिः—मृतिः,
मण्डूकः } (स्त्री०) मैदक की छल्लाँ ।—दुल्ल,
(न०) मैदकों का समुदाय —योगः, (पु०)
मण्डूकासन से बैठ, ध्यान करने की क्रिया ।—
सरस्, १ (न०) तालाव जिसमें मैदक भरे हों ।

मंडूकी } (स्त्री०) १ मैदुकी । २ स्वतंत्रा स्त्री ।
मण्डूकी } स्वेच्छाचारिणी स्त्री । झिनाल औरत ।
३ अनेक पौधों के नाम ।

मंडूरं } (न०) लोह कीट ।
मण्डूरं }

मत (व० कृ०) १ सोचा हुआ । विश्वास किया हुआ । अनुमान किया हुआ । २ विचार किया हुआ । खयाल किया हुआ । ३ सम्मान किया हुआ । ४ प्रशंसित । मूल्यवान समझा हुआ । ५ कल्पना किया हुआ । कूता हुआ । ६ ध्यान किया हुआ । पहचाना हुआ । ७ सोच कर निकाला हुआ । ८ लक्ष्य किया हुआ । ९ पसंद किया हुआ ।

मतं (न०) १ विचार । धारणा । खयाल । राय । विश्वास । सम्मति । २ सिद्धान्त । धर्म । धार्मिक समुदाय । ३ परामर्श । सलाह । ४ उद्देश्य । सङ्कल्प । अभिप्राय । ५ स्वीकृति । पसंदगी ।—अन्त, (वि०) पाँसे के खेल में निपुण । अन्तरं, (न०) १ भिन्न सम्मति । २ भिन्नसम्प्रदाय ।—अवलंबनम्, (न०) खास राय को मानने वाला ।

मतंगः } (पु०) १ हाथी । २ बादल । ३ एक
मतङ्गः } ऋषि का नाम ।

मतङ्गजः (पु०) १ हाथी ।

मतल्लिका (स्त्री०) यह शब्द संज्ञा के अन्त में लगाया जाता है । इसका अर्थ होता है सर्वोत्कृष्ट,

अपनी जाति में श्रेष्ठ । यथा —“मोमदल्लिका”
अर्थात् सर्वोत्तम गौ या श्रेष्ठ जाति की गौ ।

मतल्ली (स्त्री०) देखो मतल्लिका ।

मतिः (स्त्री०) १ बुद्धि । समझदारी । ज्ञान
निर्णय । २ मन । हृदय । ३ विचार । धारणा ।
विश्वास । राय । कल्पना । ३ विचार । मंसूवा ।
४ सङ्कल्प । पक्का विचार । ५ सम्मान । प्रतिष्ठा । ६
कामना । इच्छा । अभिलाष । ७ परामर्श ।
मशवरा । ८ स्मरण । स्मृति । याददाश्त ।—
ईश्वरः (पु०) विश्वकर्मा ।—गर्भ, (वि०)
प्रतिभाशाली । बुद्धिमान । चतुर ।—द्वैधं, (न०)
मतभेद ।—निश्चयः, (पु०) दृढ़ विश्वास ।—
पूर्व, (वि०) हरादत्तन । जान बूझ कर ।—पूर्व
—पूर्वक्रम, (अव्यया०) जान बूझ कर, हरादत्तन ।
रजामंदी से ।—प्रकर्षः, (पु०) चतुर्थ । नैपुण्य ।
—भेदः, (पु०) मतपरिवर्तन ।—भ्रमः,—
विपर्यासः, (पु०) १ धोखा । विभ्रम । मानसिक
भ्रम । मन की गड़बड़ी । २ भूल । गलती ।—
विभ्रमः—विभ्रंशः, (पु०) पागलपना । विचित्रता ।
—शालिन, (वि०) बुद्धिमान । चतुर ।—हीन,
(वि०) मूर्ख । मूढ़ । बेवकूफ ।

मत्क (वि०) मेरा । हमारा ।

मत्कः (पु०) खटमल । खटकीरा ।

मत्कुणाः (पु०) १ खटमल । २ बिना दाँतों का
हाथी । ३ छोटा हाथी । ४ वेदादी का नर । ५
मैसा । ६ नारियल का कपड़ा ।

मत्कुणां (न०) दाँतों की रक्षा के लिये चर्म का बना
कवच विशेष ।—अरिः, (पु०) पटसन ।

मत्त (व० कृ०) १ मस्त । मत्तवाला । २ उन्मत्त ।
पागल । ३ मद में मत्त (जैसे हाथी) । भयानक ।
४ अभिमानी । अहंकारी । ५ प्रसन्न । खुश । ६
खिलाड़ी । रसिक ।

मत्तः (पु०) १ शराबी । २ पागल आदमी ।
३ मदमस्त हाथी । ४ कोयल । ५ मैसा । ६ धतूरा ।
—आलम्ब्यः (पु०) किसी बड़े भवन का घेर ।—
इभः, (पु०) मदमस्त हाथी ।—काशिनी,—

वासिनी, (स्त्री०) अरुण रूपिता ।—दन्तिन्, (पु०)—नागः,—धारणः, (पु०) मदमत्त हाथी ।—धारणः, (पु०)—धारणः, (न०) १ विशाल भवन का हाता या घेरा । २ बुझी या अशरी जो किसी विशाल भवन के ऊपर हो । ३ बरंडा । कलसदार भवन ।—धारणः, (न०) कर्ष हुई सुपारी ।

मन्यं (न०) १ हँगा । पाटा । २ ज्ञान भासि का साधन । ३ ज्ञान का उपयोग ।

मत्स्यः (पु०) १ मत्स्य । २ मत्स्य देश का राजा ।

मत्सर (वि०) १ डाह । हसद् । जलन । २ लोभी । कृपण । कंजुस । ३ तंगदिल । सङ्कीर्णमन । ४ दुष्ट ।

मत्सरः (पु०) १ डाह । हसद् । जलन । २ शत्रुता । घैर । ३ अहिमान । ४ लोभ । ५ क्रोध । गुस्सा । ६ डांस । मत्सर ।

मत्सरिन् (वि०) १ डाही । जलने वाला । २ शत्रु । बैरी । ३ स्वार्थी । लालची ।

मत्स्याः (पु०) १ मत्स्य । २ विशेष जाति की मछली । मत्स्य देश का राजा ।—अतका,—अत्ती, (स्त्री०) सोमलता विशेष ।—अद्,—अदन,—आद्, (वि०) मछली खाने वाला ।—अवतारः, (पु०) विष्णु भगवान के दस अवतारों में से प्रथम मत्स्या-वतार ।—अशनः, (पु०) मछली खाने वाला ।—असुरः, (पु०) एक दैत्य का नाम ।—आश्रानी,—धानी, (स्त्री०) मछली रखने की टोकरी ।—उदरिन्, (पु०) विराट का नामान्तर ।—उदरी, (स्त्री०) सत्यवती ।—उदरीयः, (पु०) वेद-व्यास ।—उपजांघन्, (पु०)—आजीवः, (पु०) मछुआ । मछवाहा ।—करण्डिका, (स्त्री०) मछलियों रखने की कंडी ।—गन्धः, (वि०) मछुराइन ।—गन्धा, (स्त्री०) सत्यवती ।—घातिन्,—जं वित्,—जीविन्, (पु०) मछुआ ।—जालं, (न०) मछली पकड़ने का जाल ।—देशः, (पु०) मत्स्य देश । जहाँ का राजा विराट था ।—नारो, (स्त्री०) सत्यवती ।—नाशकः,—नाशन, (पु०) कुर पत्नी ।—पुराणः, (न०)

अष्टादश पुराणों में से एक जो महापुराणों में परिगणित है ।—गन्धः,—गन्धिन्, (पु०) मछली मारने वाला । मछली पकड़ने वाला ।—गन्धनं, (न०) मछली पकड़ने की वंसी ।—गन्धनी,—गन्धिनी, (स्त्री०) मछली रखने की टोकरी ।—रङ्गः,—रङ्ग,—रङ्गकः, (पु०) मछुरंगा । राम-चिन्ता ।—संघातः, (पु०) मछलियों का गढ़ या गोल ।

मत्स्यगण्डिका } (स्त्री०) मोटी और बिना साह
मत्स्यगण्डा } की हुई चीनी ।

मत्स्येक्षे मन्थ ।

मथन (वि०) [स्त्री०—मथनी] १ मथने की क्रिया । २ चोटिल करने वाला । ३ नाशक । विध्वंसक । घातक ।—अचलः,—पर्वतः, (पु०) मन्दरा-चल पर्वत ।

मथनः (पु०) वृक्ष विशेष । मनियारी नामक पेड़ ।

मथिः (पु०) रई मथने की लकड़ी विशेष ।

मथित (व० क०) १ मथा हुआ । २ आलोकित । धोल कर भली भाँति मिलाया हुआ । ३ पोंदित । सन्तप्त । ४ बंध किया हुआ । ५ जोड़ से उसड़ा हुआ ।

मथितं (न०) विशुद्ध मांस या छाड़ ।

मथिन् (पु०) १ रई । मठा बिलोने की लकड़ी विशेष । २ पवन । ३ पुरुष की जननेन्द्रिय । ४ बिजली । वज्र ।

मथुरा } (स्त्री०) श्रीकृष्ण की जन्मभूमि और मोक्षदा
मथूरा } सप्तपुरियों में से एक ।—ईशः,—नाथः, (पु०) श्रीकृष्ण ।

मद् (धा० परस्मै०) [माद्यति, मत्ति] १ नशा पीना । नशे में बुर होना । २ पागल होना । ३ धूम मचाना । विलास करना । ४ आनन्द मनाना ।

मदः (पु०) १ नशा । २ विह्वलता । पागलपन । ३ लंपटता । कामुकता । ४ हाथी का मद अथवा वह गन्धयुक्त द्राव जो मतवाले हाथियों की कल-पुटियों से बहता है । ५ असुराग । प्रेम । ६ अभिमान । अहङ्कार । ७ हर्षातिरेक । ८ मदिरा । शराब ।

१ शहद । १० मुरक कस्तूरी ११ कीर्य
अयय, आतड्ड, (पु०) नशा पीने के
कारण उत्पन्न हुआ सिर का दद आदि ।—अन्धः,
(पु०) १ नशे से अंधा । २ अभिमान से अंधा ।
—अपनयन, (न०) नशा उतारना ।—अम्बरः,
(पु०) १ मदमस्त हाथी । २ इन्द्र के ऐरावत
हाथी का नामान्तर ।—अलस्, (वि०) नशे से
या कामार्सक्ति से शिथिल ।—अवस्था, (स्त्री०)
१ नशे की दशा या हालत । २ कामुकता । ३ मद
हाथी का मद ।—आकुल, (वि०) मदमस्त ।
—आकृष्य, (वि०) नशे में चूर ।—आकृष्यः,
(पु०) खजूर का पेड़ ।—आघ्रातः, (पु०)
हाथी की पीठ पर रख कर बजाया जाने वाला
नगाड़ा या ढोल ।—अलापिन् (पु०) कोयल ।
—आह्वः, (पु०) कस्तूरी । मुरक ।—उत्कट,
(वि०) १ नशे में चूर । २ कामुक । ३ अहङ्कारी ।
अभिमान । ४ मदमाता ।—उत्कटः, (पु०)
१ मदमस्त हाथी । २ प्राकलाचिद्विद्या ।—उत्कटा,
(स्त्री०) शराब । मदिरा ।—उद्ग्रः—उन्मत्त,
(वि०) १ नशे में चूर । २ उग्र । ३ अभिमान ।
—उद्धत, (वि०) १ मदमस्त । २ घमंडी ।
—उल्लापिन्, (पु०) कोयल ।—वर (वि०)
नशीला ।—करिन्, (पु०) मदमस्त हाथी ।
—कल, (वि०) अस्पष्टता बोलने वाला ।
२ धीरे धीरे प्रेमालाप करने वाला । ३ मदोन्मत्त ।
४ मन्दमुर । ५ मदमाता ।—कलः, (पु०)
मदमस्त हाथी ।—कोदलः, (पु०) झांझ हुआ
साँव ।—खेत, (वि०) मदमस्त ।—गन्धा,
(स्त्री०) १ नशीली पेय वस्तु । २ भाँग ।—
गमनः, (पु०) मैना ।—व्युन, (वि०) गन्ध-
नाशक । (पु०) इन्द्र ।—जलं, (न०)—वारि,
(न०) मत्त हाथी के मस्तक का जाव । हाथी
का मद ।—उवरः, (पु०) अहङ्कार का ज्वर
या अभिमान की गर्मी ।—द्विः, (पु०) खूनी
हाथी या बिगड़ा हुआ हाथी ।—प्रयोगः,—
प्रसेतः,—प्रस्त्रवणं,—प्रावः,—सूतः (स्त्री०)
मत्त हाथी के मस्तक का जाव । हाथी का मद ।
रागः, (पु०) १ कामदेव । २ सुगंध । ३ शराबी ।

वाचत (पृ०) मन्मस्त । उग्र विद्वान्,
(वि०) १ अभिमान न चूर । नशे में चूर या
चूर ।—वृन्दः, (पु०) हाथी ।—जौगडकम्,
(न०) कायफल ।—सारः, (पु०) कपास का
पेड़ ।—स्यलं,—स्थानं, (न०) शराब की
दुकान । कलरिया । कलवार की दुकान ।
मदन (वि०) [स्त्री०—मदनी] १ नशीला ।
विचिस्ताकारक । २ आलस्यकारक ।—अग्रकः,
(पु०) कोदों नाज । कोद्वय अन्न ।—अकुशः,
(पु०) १ लिङ्ग । २ नख या सम्भोग के समय
लगा हुआ नखावात ।—अन्तकः—अरिः,—
दमनः,—दहनः,—नाशनः,—रिपुः, (पु०)
शिव जी की उपाधि ।—अवस्था, (वि०)
प्रेमासक्त ।—आतुर आर्त्त,—क्लिष्ट,—पीडित,
(वि०) प्रेम का बीमार ।—आलयः, (पु०)
आलयं, (न०) १ कमल । राजा ।—इच्छा-
फलकं, (न०) आम विशेष ।—उत्सवः, (पु०)
वसन्तः, रसव ।—उत्सवा, (स्त्री०) अप्सरा ।
स्वर्ग की वेस्था ।—उद्यान, (न०) आनन्दवाग ।
—वृष्टकः (पु०) १ सात्विकः, माज्ज । २ वृक्ष
विशेष ।—कलहः, (पु०) प्रेम का भगवा ।
सम्भोग । मैथुन ।—काकुरवः, (पु०) कबूतर
या फाका ।—गोपालः, (पु०) श्रृंगार ।
चतुर्दशी, (स्त्री०) चैत्रशुक्ला १४शी का नाम ।
—त्रयोदशी, (स्त्री०) चैत्रशुक्ला १३शी । यह मदन-
महोत्सव के अन्तर्गत है ।—नलीला, (स्त्री०)
असली भार्या ।—रत्निन्, (पु०) खज्जनपत्नी ।—
राटकः, (पु०) कांथल ।—महोत्सवः, (पु०)
प्राचीन काल का एक उत्सव जो चैत्र शुक्ला १२शी
से चतुर्दशी पञ्चम्य मनाया जाता था । इस उत्सव
में व्रत, कामदेव की पूजा, गीत वाद्य और रात्रि—
जागरण किया जाता था । उत्सव में स्त्रियाँ और
पुरुष दोनों सम्मिलित होते थे और बाग़ बगीचों
में जा आमंद प्रमंद करते थे ।—मोहनः, (पु०)
श्रृंगार ।—शलाका, (स्त्री०) मैना । कोकिला ।
कांथल ।

मदनं (न०) १ नशीली । २ आलस्यकारक । मोदक ।

मदनः (पु०) १ कामदेव । २ प्रेम । अनुराग ।

सम्भोग जन्म प्रेम । ३ वसन्तऋतु । ४ मधु-
मलिका । ५ मोम । ६ आलिङ्गन विशेष । ७ धनुरे
का पौधा । ८ वक्रलवृक्ष ।

मदनकः (पु०) दमनक नाम का पौधा ।

मदना (स्त्री०) १ शराब । २ मुरक । ३ अति-
मदनी (मुक्ताबेल) ।

मदयन्तिका (स्त्री०) । मलिका ।
मदयन्ती (स्त्री०) ।

मदयितु (वि०) १ नशीला । बदहवास कर देने
वाला । २ आल्हादकर ।

मदयितुः (पु०) १ कामदेव । २ बादल । ३ कलवार ।
शराब खींचने वाला । ४ शराबी आदमी । ५
शराब ।

मदारः (पु०) १ मरुमस्त हाथी । २ शूकर । ३
धनुरा । ४ प्रेमी । कामुक । लंपट । ५ गन्धद्रव्य
विशेष । ६ कुलिया । कपटी । धोखा देने वाला ।

मदिः (स्त्री०) हँगा । पाटा ।

मदिर (वि०) १ नशीला । विद्विस्तकारी । २ आनन्द-
कारी । नयनाभिराम ।

मदिरः (पु०) लाल फूलों वाला खदिर वृक्ष ।—
अली—ईश्या, —नयना, —लोचना, (स्त्री०)
वह स्त्री जिसके नेत्र मनोहर हों या जिसकी आँखों में
जादू सा हो ।—आयतनयन, (वि०) बड़ी
और आकर्षण करने वाली आँखों वाला ।—
आसवः, (पु०) नशीला अर्क । शराब ।

मदिरा (स्त्री०) १ शराब । २ खंजन पत्नी । ३ दुर्गा
का नाम ।—उत्कट, —उन्मत्त, (वि०) शराब
के नशे में चूर ।—गृह, (न०)—शाला,
(स्त्री०) शराब की दूकान । कलवरिया ।—
सखः, (पु०) आम का वृक्ष ।

मदिष्ठा (स्त्री०) शराब ।

मदीय (वि०) मेरा ।

मधुः (पु०) १ एक प्रकार का जलपत्नी, जिसकी
लंबाई पूँछ से चौथ तक ३४ इंच तक की
होती है । २ सर्पविशेष । ३ वनजन्तु विशेष ।
४ एक प्रकार का युद्धपोत । ५ वर्णसङ्कर जाति

विशेष जिसकी उत्पत्ति ब्राह्मण जाति के पिता और
बंदीजन जाति की माता से होती है । ६ जाति
बहिष्कृत । पतित ।

मधुरः (पु०) १ गोताझोर । मोती निकालने वाला ।
२ मैथुरीवाँ भंगुर मञ्जुली । ३ प्राचीन काल की एक
वर्णसङ्कर जाति, जिसका पेशा वन्यपशुओं का
मारना था ।

मद्य (वि०) १ नशीला । २ आल्हादकर ।—आमोदः,
(पु०) वक्रलवृक्ष ।—कीटः (पु०) कीड़ा
विशेष ।—द्रुमः, (पु०) वृक्ष विशेष ।—पः, (पु०)
पियूषक । शराबी ।—पानं, (न०) मदिरापान ।
कोई भी नशीली वस्तु का सेवन ।—पीत, (वि०)
शराब के नशे में चूर ।—पुष्पा, (स्त्री०)
धातकी । धौ ।—वीजं, —वीजं (न०) शराब
खींचने के लिये उठाया हुआ खमीर ।—भाजनं,
(न०) शराब रखने का करावा या कोई भी
काँच का पात्र ।—मण्डः, (पु०) फेन जो मद्य
का खमीर उठने पर ऊपर आता है । मद्यफेन ।
—वासिनी, (स्त्री०) धातकी का पौधा । धौ ।
—सन्धानं, (न०) मदिरा खींचने का व्यापार ।

मद्यं (न०) शराब । मदिरा । दारू ।

मद्रं (न०) हर्ष । आनन्द ।—कार, (= मद्रकार)
(वि०) आनन्ददायक । हर्षप्रद ।

मद्रः (पु०) १ एक प्राचीन देश का वैदिक नाम । यह
देश कश्यपसागर के दक्षिणी तट पर पश्चिम की
ओर था । ऐतरेय ब्राह्मण में इसे उत्तरकुरु के नाम
से बतलाया है । २ पुराणों के मतानुसार वह देश
जो रावी और झेलम नदी के बीच में है । ३ मद्र
देश का शासक ।

मद्राः (पु०) बहुवचन । मद्रदेशवासी ।

मद्रुकः (पु०) मद्र देश का शासक या निवासी ।

मद्रुकाः (पु० बहुवचन) दक्षिण की एक नीच जाति
का नाम ।

मधदयः (पु०) वैशाख मास ।

मधु (वि०) [स्त्री०—मधु या मध्वी] मधुर ।
स्वादिल । मिष्ट । प्रसन्नकर ।

(न०) १ शहद २ फल का रस ३ मधुरा जिसका स्वाद मीठा होता है ४ जल ५ चाना ६ मीठापन या मधुरता ।

:(पु०) १ वसन्त ऋतु । २ चैत्र मास । ३ मधु-
दैत्य जिसे भगवान् विष्णु ने मारा था । लवणासुर
के पिता का नाम, जिसे शत्रुघ्न जी ने मारा था ।
४ अशोकवृक्ष । ५ कार्तवीर्य राजा ।—अष्टोला
(स्त्री०) शहद का लौंदा । जमा हुआ शहद ।
—आधारः, (पु०) मोम । —आपात,
(वि०) खाने वाला या चखने वाला ।—आघ्नः,
(पु०) आम का वृक्ष विशेष । —आसवः,
(पु०) मीठी शराब । —आसाद, (वि०)
जिसमें शहद का स्वाद हो । —आहुतिः, (स्त्री०)
मधुर शाकल्य का हवन । —उत्क्रिष्टः—अर्थः—
उत्थितं, (न०) शहद की मक्खियों का बनाया
मोम । —अस्वः (पु०) वसन्तोत्सव । —
उदकं, (न०) शहद का शरवत । शहद और
जल के संयोग से बनाई हुई शराब । —उपध्नः,
(न०) मधु का आवसथान । मधुरा का नामा-
न्तर । —कण्ठः, (पु०) कोकिल । —करः,
(पु०) १ भौरा । २ प्रेमी । आशिक । लंपट
पुरुष । —कर्कटी, (स्त्री०) मीठा नीबू । मिठा ।
शरवती नीबू । २ सन्तरा । —कान्तं,—वनं,
(न०) वह वन या जंगल जिसमें मधु रहता था ।
—कारः,—कारिन्, (पु०) मधुमक्षिका । —
कुक्कुटिका,—कुक्कुटो, (स्त्री०) नीबू का पेड़
विशेष । —कुड्या, (स्त्री०) पुराणानुसार कुश-
द्वीप की एक नदी का नाम जिसमें पानी के बदले
शहद बहा करता है । —कृत, (पु०) मधु-
मक्षिका । —केशटः, (पु०) शहद की मक्खी ।
—कोषः,—कोशः, (पु०) शहद की मक्खियों
का छत्ता । —कमः, (पु०) बहुवचन) मद्यपान
का उत्सव । —क्षीरः,—क्षीरकः, (पु०) खजूर
का पेड़ । —गायनः, (पु०) कायल पक्षी । —
ग्रहः, (पु०) वाजपेय यज्ञ में एक हवन विशेष
जिसमें मधु की आहुति दी जाती है । —घोषः,
कोयल । —ज, (न०) मांस जो शहद के छत्ते
से निकलता है । —जा, (स्त्री०) १ मिश्री । २

पृथ्वी चम्पा (पु०) जम्बीरा । नित (न०)
द्वय निपुदन । —निहृत्, (पु०) —मधः,
—मधन, —रिपुः,—मनुः,—सूदनः, (पु०)
विष्णु भगवान् के नामान्तर । —नृगः, (पु०) —
नृगं, (न०) गन्ना । ईख । —त्रयं, (न०) तीन
मीठी चीज़ें अर्थात् शकर, शहद, घी । —दीपः,
(पु०) कामदेव । —दूनः, (पु०) आम का
पेड़ । —दोहः, (पु०) शहद या मिठास निष्का-
लने की क्रिया । —द्रः, (पु०) १ शहद की
मक्खी । २ लंपट पुरुष । —द्रवः, (पु०) लाल
सहजन का पेड़ । —द्रुमः, (पु०) आम का पेड़ ।
—धातुः, (पु०) गन्धक तथा अन्यधातु मिश्रित
पीले रंग का पदार्थ विशेष । —धारा, (स्त्री०)
शहद की धार । —धृतिः (पु०) खोड । शकर ।
चीनी । राव । शीरा । —नारिकेलकः (पु०)
नारियल विशेष । —नेत्र, (पु०) शहद की
मक्खी । —पः, (पु०) शहद की मक्खी या
शराबी । —पटलं, (न०) शहद की मक्खी का
बूरा । —पनिः, (पु०) श्रीकृष्ण का नामान्तर ।
—पर्कः, (पु०) १ दही, घी, जल, शहद और
चीनी के योग से बना हुआ पदार्थ विशेष । यह
देवताओं को अर्पण किया जाता है । इससे देवता
बड़े सन्तुष्ट होते हैं । इसके अर्पण करने से सुख एवं
सौभाग्य का वृद्धि होती है । पूजन के पौडश उप-
चारों में से एक उपचार मधुपर्क-अर्पण भी है । २
तंत्रानुसार घी, दही और मधु को मिलाने से मधुपर्क
तैयार होता है । —पर्क्यं, (वि०) मधुपर्क अर्पण करने
योग्य । —पर्णिका,—पर्णी, (स्त्री०) नील का
पौधा । —पायिन्, (पु०) शहद का मक्खी । —
पुरं, (न०) —पुरी (स्त्री०) मधुरा नगरी ।
—पुष्पः, (पु०) १ अशोक वृक्ष । २ वकुल वृक्ष ।
३ दन्ती नामक पेड़ । ४ सिरस वृक्ष । —प्रणयः,
(पु०) शराब पीने की लत । —प्रमेहः, (पु०)
एक प्रकार का प्रमेह रोग जिसमें पेशाब के साथ
शकर निकलने लगती है । —प्राज्ञं, (न०)
पौडश संस्कारों में से एक जिसमें नवजात
शिशु को शहद चटाया जाता है । —प्रियः,
(पु०) बलराम । —फलाः, (पु०) १ नारि-

यज कत २ दाख । ३ कौंय या विकल नामक वृक्ष ।—सुनिका, (खी०) मीठी खजूर ।—खजुरा, (खी०) माधवी लता ।—चात्रः,—चात्रः, (पु०) अन्तर का पेड़ ।—चोत्रपुरः,—चोत्रपुर (पु०) जम्भीरी विशेष ।—मस्तः,—स्ताः, (खी०)—मस्तिका, (खी०) शहद की मक्खी ।—मज्जनः, (पु०) आखोड नामक वृक्ष ।—मदः, (पु०) शराब का नशा ।—महितः, (खी०)—मरुती, (खी०) मालती लता ।—माधवी, (खी०) १ मदिरा विशेष । २ वासन्ती लता । ३ एक रागिनी जो मैत्रव राग की सहचरी है । ४ वसन्त ऋतु में फूलने वाला कोई भी फूल ।—माधवीकं, (न०) शराब । मदिरा ।—मारकः, (पु०) शहद की मक्खी ।—यटिः, (खी०) गला ईख ।—रसः, (पु०) १ ईख । ऊख । गन्ना । २ मधुरता । मिठास ।—रसा, (खी०) १ जैंग्रों का गुच्छा । २ दाख । दावा । सुनका ।—लक्षः, (पु०) लाल शोभाजन ।—लिहू—लेहू—लेहेन, (पु०) शहद का मक्खी ।—वनं (न०) वह वन जिसमें मधुरता रहता था और जहाँ पक्षे से शत्रुज जी ने मधुरा बसाई ।—वनः, (पु०) कोकिल । कोयल ।—वारः, (पु०) मद्य पीने की रीति ।—वैरः, (पु०) भौरा । अन्तर ।—शर्करा, (खी०) शहद । चीनी ।—गण्डः, (पु०) मधुर का पेड़ ।—शिष्टं—शीर्षं (न०) भौम ।—सखः,—सहायः,—सारथिः,—हुड्डः, (पु०) कामदेव ।—निःथकः, (पु०) एक प्रकार का स्थावर विप ।—सूदनः, (पु०) १ शहद की मक्खी । भौरा । २ श्रोत्रस्थ ।—स्थानं (न०) शहद का छत्ता ।—स्वरः, (पु०) कोकिल ।—हनः, (पु०) शहद को नष्ट करने वाला या एकत्र करने वाला । २ शिकारी पक्षी । ३ आगम बतलाने वाला । ४ विष्णु का नामान्तर ।
कं (न०) १ टीन । जस्ता । २ मुलेडा ।
कः (पु०) १ मधुर का पेड़ । २ अशोक वृक्ष । ३ पक्षी विशेष ।
कं (अव्यया०) मधुरता से । प्रियता से ।

मधुर (वि०) १ मीठा । शहद मिला हुआ । २ सुन्दर । मनोरञ्जक । ३ जो सुनने में भला जान पड़े ।
मधुरं (न०) १ मिठास । २ शरबत । ३ विप । ४ हीन । जस्ता ।
मधुरः (पु०) १ लाल गङ्गा । २ चाँवल । ३ राव । शकर । गुड़ । ४ ग्राम विशेष ।—मधुरका, (पु०) एक प्रकार की मक्खली ।—जम्भीरं (न०) जैमंरी ।—फलः, (पु०) बेर फल । राजवदर ।
मधुरता (खी०) १ मिठास । सौन्दर्य । मनो-मधुरत्व (न०) १ हरष । ३ सुकुमारता । कंमजता ।
मधुरिमन् (पु०) मिठास ।
मधुरलिका (खी०) राई ।
मधूकं (न०) मधुर का फूल ।
मधूकः (पु०) १ शहद की मक्खी । महुक । मधुर का पेड़ ।
मधूजः (पु०) जल मधुर का पेड़ ।
मधूनिका (खी०) १ मूवा । २ मुलेडी ।
मधूती (खी०) अ.भ का पेड़ ।
मध्य (वि०) १ बीच का । मध्यर्था । २ मक्खेला । दामिहानी । ३ मातृदेव । ४ तस्थ । निरपेक्ष । ५ टोक । उचित । (उपावि०) मध्यदूरत्व । मध्यम अन्तर ।
मध्यं (न०) १ बीच । मध्य । मध्य का भाग । २ मध्यः (पु०) १ शरीर का मध्यभाग । कमर । ३ पेट । ऊदर । ४ किसी वस्तु का भीतर का भाग । ५ मध्यावस्था । ६ घंटे की कोख या चक्की । ७ संगीत में एक सप्तक जिसके स्वरों का उच्चारण चत्वारथज से, कण्ठ के भीतर के स्थानों से किया जाता है । लाघरणतः इसे बीच का सप्तक मानते हैं । (न०) दस अक्षरों की संख्या ।
मध्या (खी०) पाँच जैंगलों में से बीच की जैंगली ।—अधुनिः—अधुनी, (खी०) हाथ की बीच की जैंगली ।—अन्तः, (पु०) दे.पहर ।—कर्णः, (पु०) धेरेखाएं जो किसी वृत्त के केन्द्र से परिधि तक खींची जाती हैं ।—गत, (वि०)

बीच का । मध्यवर्ती । गन्ध (पु) आम का पेड़ । अहण (न०) चन्द्र अथवा सूर्य के ग्रहण का मन्त्रालय ।—दिन (= मन्त्रादनं) दोपहर ।—देशः, (पु०) १ कमर । २ पेट । उदर । ३ हिमालय और विन्ध्य गिर के बीच का देश । इसकी सामा पुराणों में इस प्रकार है । उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पश्चिम में कुरुक्षेत्र और पूर्व में प्रयाग । प्राचीन काल में यही देश आर्यों का प्रधान निवासस्थान था और बहुत पवित्र माना जाता था । ४ मध्यान्ह रेखा ।—देशः, (पु०) उदर । पेट ।—पदार्थानि (पु०) देखो मध्यमव । लोपन् ।—पानः, (पु०) जान पहचान । परीक्षण ।—पाणः, (पु०) १ बीच का हिस्सा । २ कमर ।—यवः, (पु०) प्राचीन काल का एक परिमाण जो ६ पीली सरसों के बराबर होता था ।—रात्रिः,—रात्रिः, (स्त्री०) अद्विरात्रि ।—रेखा, (स्त्री०) ज्योतिष और भूगोल शास्त्र में वह रेखा जिसकी कल्पना देशान्तर निकालने के लिये की जाती है । यह रेखा उत्तर दक्षिण मानी जाती है और उत्तरी तथा दक्षिणी भुवों को काटती हुई एक वृत्त बनाती है ।—लोकः, (पु०) पृथिवी ।—वयस्, (वि०) अष्टादश का ।—वर्तिन्, (वि०) बीच का । जो मध्य में हो । (पु०) पंच । बीच में पड़ने वाला ।—वृत्तं, (न०) नाभि ।—सूः, (न०) देखो मध्य रेखा ।—स्थः, (वि०) १ मध्यवर्ती । २ मन्त्रालय । ३ उदालीन । तदर्थ । ४ निरपेक्ष ।—स्थाः, (पु०) १ दो में भगड़ा होने पर उस भगड़े को निपटाने वाला । बीच में पड़ कर मिटाने वाला । २ शिव जी की उपाधि ।—स्थलं, (न०) १ मध्य । बीच । मध्य का देश । २ कमर ।—स्थानं, (न०) बीच की जगह । २ अन्तरिक्ष ।

तस् (अन्वया०) १ बीच से । २ बीच में । बहुत से में से ।

म (वि०) १ मध्यवर्ती । बीच का । २ मन्त्रालय ।

३ निरपेक्ष । अपेक्षा शून्य ।

मः (पु०) संगत कला के सस्वरों में से चौथा ।

स्वर । २ एक राग का नाम । ३ मध्य स्वर । ४ व्यंकरण म मध्यम स्वर । ५ तदर्थ राजा । ६ वह उदरति जो नायिका के कुपित होने पर अपना अनुराग न प्रकट करे और उसकी चेष्टाओं से उसके मन का भाव ताड़ ले । ७ साहित्य में तीन प्रकार के नायकों में से एक । ८ सूत्रेदार । प्रांतीय शासक । सूत्रे का हाकिम ।—अगुलिः, (पु०) हाथ की बाँध की जैंगली ।—कक्षा, (स्त्री०) बीच का आँगन या सहन ।—जातः, (वि०) मकला । दो के बीच का उत्पन्न ।—एद्वलानि (पु०) व्याकरण में वह समास जिसमें प्रथम पद से द्वितीय पद का सम्बन्ध बतलाने वाला शब्द लुप्त या समास से अभ्याहत रहता है । लुप्त-पद-समास ।—पाण्डित्यः (पु०) अर्जुन ।—पुरुषः (पु०) व्याकरणानुसार तीन पुरुषों में से वह पुरुष जिसने बात की जाय । वह पुरुष जिससे कुछ कहा जाय ।—भूतकः, (पु०) किसान । खेतहर ।—रात्रः, (पु०) आधीरात ।—लोकः, (पु०) बीच का लोक अर्थात् पृथिवी ।—संग्रहः, (पु०) पुष्पादि साधारण वस्तुओं की भेंट भेज कर, दूसरे की स्त्री को अपने ऊपर अनुरक्त बना लेना । [व्यासस्मृति के अनुसार —

“ अद्वयं मध्यमस्यार्कं भूष भूषणवासनां ।
मलोमनं वात्रयवैर्मध्यमः संग्रहः रघुतः ॥ ”]

—साहसः, (पु०) मनुस्मृति के अनुसार पाँच सौ पण तक का अर्थदण्ड या जुर्माना ।—स्थः, (वि०) बीच का ।

मध्यमं (न०) कमर । कटि ।

मध्यमा (स्त्री०) १ हाथ की बीच की जैंगली । २ वह स्थानी लड़की जो विवाह योग्य हो गयी हो । ३ कमलगढ़ । ४ वह नायिका जो अपने प्रियतम के प्रेम वा दण्ड के अनुसार उसके आदर मान या अपमान करे । स्त्री जो अपनी जवानों की उम्र के बीच पहुँची हो ।

मध्यमक (वि०) [स्त्री—मध्यमिका] बीच का । बीचों बीच का ।

मध्यमिका (स्त्री०) लड़की जो विवाह योग्य हो गयी हो ।

माध्वः (पु०) दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध वैष्णव-सम्प्रदायाचार्य और माध्वसम्प्रदाय के प्रवर्तक । इनको लोग वायु का अवतार मानते हैं । इनके बनावे बहुत से ग्रन्थ और भाष्य हैं । इनके सिद्धान्तानुसार सर्वप्रथम एक मात्र नारायण थे । उन्हींसे समस्त जगत तथा देवतादि की उत्पत्ति हुई । ये जीव और ईश्वर की पृथक् पृथक् सत्ता मानते हैं । इनके दर्शन को पूर्णब्रह्मदर्शन कहते हैं और इनके सिद्धान्त को मानने वाले इनके सम्प्रदाय के लोग माध्व कहलाते हैं ।

मध्वकः (पु०) शहद की मक्खी ।

मध्विजा (स्त्री०) कोई भी नशीली चीज़ जो पीजाय । शराब । मदिरा ।

मन् (धा० परस्मै०) [मनति] १ अभिमान करना । २ पूजन करना ।

मननम् (न०) १ चिन्तन । २ बुद्धि । समझदारी । तर्कद्वारा निकाला हुआ परिणाम । ३ कल्पना ।

मनस् (न०) १ मन । हृदय । बुद्धि । प्रतीति । प्रतिभा । २ न्याय में मन को एक द्रव्य और आत्मा या जीव से भिन्न माना है । ३ वैशेषिक दर्शन में मन को एक अप्रत्यक्ष द्रव्य माना है । संख्या परिणाम, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व और संस्कार मन के गुण बतलाये गये हैं । मन अणु रूप है । ३ प्राणियों में वह शक्ति जिसके द्वारा उनको वेदना, सङ्कल्प, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न बोध और विचार आदि का अनुभव होता है । अन्तःकरण । चित्त । ४ विचार । धारणा । कल्पना । खयाल । ५ मंशा । मनसूवा । ६ इच्छा । कामना । अभिलाषा । सम्मान । भुकाव । ७ निधिध्यासन । भावना । ८ प्राकृतिक स्वभाव । बान । ९ स्फूर्ति । उत्साह । १० मानसरोवर कील ।—अग्निनाथः, (पु०) प्रेमी । पति ।—अनवस्थानं, (न०) अनवधानता ।—अनुग, (वि०) इच्छानुसार ।—अपहारिन्, (वि०) मन को वश में करने वाला ।—आप, (वि०) आकर्षक ।—कान्त,

(वि०) [मनस्क्रान्त या मनःक्रान्त] मन को प्रिय ।—क्षेप, (पु०) मन की विकलता ।—गत, (वि०) १ मन में वर्तमान । मन का । भीतरी । गुप्त । २ मन पर प्रभाव डालने वाला ।—गतं, (न०) १ अभिलाषा । २ विचार । धारणा । मन ।—गतिः, (स्त्री०) हृदयभिलाष ।—गवी, (स्त्री०) इच्छा । कामना ।—गुप्ता, (स्त्री०) लाल मैदसिल ।—ज,—जन्मन्, (वि०) मन से उत्पन्न । (पु०) कामदेव ।—जव, (वि०) १ मन के समान वेगवान् । २ विचार करने या कोई बात समझने में फुर्तीला । ३ वाप का । पैतृक ।—जात, (वि०) मन से उत्पन्न ।—जिघ्र, (वि०) मन की बात को ताड़ना ।—ज्ञ (वि०) मनोहर । प्रिय ।—ज्ञः, (पु०) गन्धर्व का नाम ।—ज्ञा, (स्त्री०) १ मनसिल । २ नशा । ३ राजकुमारी ।—तापः,—पीड़ा (स्त्री०) मानसिक कष्ट । २ पश्चात्ताप ।—तुष्टिः, (स्त्री०) मन का सन्तोष ।—तोका, (स्त्री०) दुर्गा ।—दण्डः, (पु०) मन पर पूर्ण अधिकार ।—दाहः, (पु०) दुःखम् (न०) मानसिक पीड़ा ।—नीत, (वि०) मन के अनुकूल । पसंद । चुना हुआ ।—पतिः, (पु०) विष्णु ।—पूत, (वि०) १ जो मन से पवित्र माना गया हो । जिसको चित्त ने मान लिया हो । २ शुद्ध मन का ।—प्रीतिः, (स्त्री०) मानसिक सन्तोष । हर्ष । आनन्द ।—भवः, (पु०)—भूः, (पु०) १ कामदेव । २ प्रेम । कामुकता ।—मथनः, (पु०) कामदेव ।—यायिन्, (वि०) १ अपनी इच्छानुसार चलने वाला । २ फुर्तीला ।—यागः, (पु०) मन की एकाग्रता । मन को एकाग्र कर के किसी और उसको लगाना ।—योनिः, (पु०) कामदेव ।—रञ्जनम्, (न०) मन को प्रसन्न करने वाला । दिलबहलाव । मनोविनोद ।—रथः, (पु०) अभिलाषा । इच्छा । कामना ।—रम, (वि०) मनोज्ञ । मनोहर । सुन्दर ।—रमा, (स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री । २ एक प्रकार का रोगन ।—राज्यं, (न०) मानसिक कल्पना ।—लयः, (पु०) विवेक का नष्ट होना ।—लौल्यं, (न०) लहर ।

उचंग ।—वृत्तिः, (स्त्री०) चित्त की वृत्ति । मनोविकार ।—वेगः, (पु०) विचार करने में कुर्तीलापन ।—व्यथा, (स्त्री०) मानसिक कष्ट ।—शीतः, (पु०)—शीला, (स्त्री०) मैनसिल ।—हतः, (वि०) हताश ।—हर, (वि०) मनहरने वाला । चित्त को आकर्षित करने वाला ।—हरः, (पु०) कुन्दपुष्प ।—हरं, (न०) सेना ।—हर्तुं,—हारिन्, (वि०) मन को चुराने वाला । मनोहर । मनोज्ञ ।—हारी, (स्त्री०) असती या छिनाल स्त्री ।—ह्लादः, (पु०) मन की प्रसन्नता ।—ह्ला, (स्त्री०) मनःशिला । मैनसिल ।

मनसा (स्त्री०) कश्यप की एक लड़की का नाम जो सर्पराज अनन्त की बहिन और जरकारु की भार्या थी । इसको मनसादेवी भी कहते हैं ।

मनसिजः (पु०) १ कामदेव । २ प्रेम ।

मनसिशयः (पु०) कामदेव ।

मनस्तः (अव्यया०) मन से । हृदय से ।

मनस्विन् (वि०) बुद्धिमान । प्रतिभाशाली । चतुर । ऊँचे मन का । २ दृढमन का ।

मनस्विनी (स्त्री०) १ उदार मन की या अभिमानिनी स्त्री । २ बुद्धिमती या सती स्त्री । ३ दुर्गा का नाम ।

मनाक् (अव्यया०) थोड़ा । कम । हल्का । अल्प मात्रा में । २ मन्द मन्द । धीमे धीमे ।—कर, (वि०) कम करने वाला ।—करं, (न०) अगर काष्ठ ।

मनाका (स्त्री०) हथिनी ।

मनित (व० क०) जाना हुआ । समझा हुआ । पहचाना हुआ ।

मनीकं (न०) सुर्मा । अंजन ।

मनीषा (स्त्री०) १ अभिलाष । कामना । २ प्रतिभा । बुद्धि । समझ । ३ विचार । खयाल ।

मनीषिका (स्त्री०) समझ । बुद्धि ।

मनीषित (वि०) १ अभिलषित । वांछित । २

अनुकूल । प्रिय । —मनीषितं, (न०) अभिलाषा । अभिलषित पदार्थ ।

मनीषिन् (वि०) बुद्धिमान । पण्डित । प्रतिभाशाली चतुर । विवेकी । विचारवान । (पु०) बुद्धिमान या विद्वान् जन । पण्डित । ऋषि ।

मनुः (पु०) १ ब्रह्मा के पुत्र जो मानव जाति के मूलपुरुष माने जाते हैं । २ चौदह मनु । पुराणों के अनुसार तथा सूर्यसिद्धान्त नामक ग्रन्थ के अनुसार एक कल्प में १४ मनुओं का अधिकार होता है और उनके अधिकार काल को मन्वन्तर कहते हैं :— चौदह मनुओं के नाम ये हैं :— १ स्वायम्भुव । २ स्वरोचिष, ३ अत्रि, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चातुष, ७ वैवस्वत, ८ सावर्णि, ९ दक्षसावर्णि, १० ब्रह्मसावर्णि, ११ धर्मसावर्णि, १२ रुद्रसावर्णि, १३ रौच्य-देव-सावर्णि, १४ इन्द्र-सावर्णि । ३ चौदह की संख्या ।—अन्तरं (न०) मनु की आयु का काल । एक मनु के रहने की अवधि । यह इकहत्तर चतुर्युगी का होता है । इसमें मानवी गणना से ४,३२०,००० वर्ष और ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग होता है ।—जः, (पु०) मनुष्य । मानव जाति ।—ज्येष्ठः, (पु०) तलवार ।—राज्, (पु०) कुबेर का नामान्तर ।—श्रेष्ठः, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।—संहिता, (स्त्री०) धर्मशास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जो मनु का बनाया हुआ है ।

मनुः (स्त्री०) मनु की पत्नी ।

मनुष्यः (पु०) १ मानव । मानुस । २ नर । - इन्द्र, —ईश्वरः, (पु०) राजा ।—जातिः, (पु०) मानव जाति ।—देवः, (पु०) १ नरेन्द्र । राजा । २ ब्राह्मण ।—धर्मन्, (पु०) कुबेर ।—मारणं, (न०) नरहत्या ।—यज्ञः, (पु०) आतिथ्य । नृयज्ञ ।—लोकः, (पु०) मर्त्य लोक ।—विशः, —विशा, (स्त्री०)—विशं, (न०) मानव जाति ।—शोणितं, (न०) मनुष्य का रक्त ।—सभा, (स्त्री०) १ मनुष्यों की सभा । २ मनुष्य समुदाय ।

मनोमय (वि०) मानसिक । आध्यात्मिक । मनोरूप ।

कोशः,—कोषः (पु०) वेदान्त । दर्शन के अनुसार पाँच कोशों में से तीसरा कोश । मन, अहङ्कार और कर्मेन्द्रियाँ, इस कोश के अन्तर्गत हैं ।

{ (पु०) १ अपराध । दोष । २ मनुष्य ।
: } मनुष्य जाति । (स्त्री०) बुद्धि । समझ ।
(पु०) परिष्कृत । बुद्धिमान पुरुष । सलाहकार ।
परामर्शदाता ।

(धा० आत्म०) [मंत्रयते, मंत्रयति, मंत्रित]
१ सलाह लेना । २ सलाह देना । ३ अभिमंत्रित
करना । ४ कहना । बोलना । बातचीत करना ।

(पु०) १ वैदिक वाक्य । निरुक्त के अनुसार
वैदिक मंत्र तीन प्रकार के माने जाते हैं । यथा
परोक्षकृत, प्रत्यक्षकृत और आध्यात्मिक । २ वेदों
का मंत्रभाग जो ब्राह्मण भाग से भिन्न है । ३
जादू । इन्द्रजाल । ४ स्तुति । प्रार्थना । ५ मंत्रणा ।

—आराधनं, (न०) मंत्र द्वारा किसी अभीष्ट
की प्राप्ति ।—उदकं,—जलं,—तोंयं,—वारि,
(न०) मंत्र से अभिमंत्रित जल ।—उपग्रन्थः,
(पु०) परामर्श द्वारा समर्थन करना ।—करणां,
(न०) १ वेदसंहिता । २ वेदपारायण ।—कारः,
(पु०) मंत्रदृष्टा ऋषि ।—कालः, (पु०)
परामर्श का समय ।—कुशलं, (वि०) परामर्श
देने में निपुण ।—कृतं, (पु०) १ वेद का रचयिता ।
२ वेदपाठी । ३ परामर्शदाता । ४ दूत । एलची ।

—गण्डकः, (पु०) विज्ञान । ज्ञान ।—गुतिः,
(स्त्री०) गुप्तपरामर्श ।—गूढः, (पु०) गुप्तचर ।
जासूस ।—जिह्वः, (पु०) अग्नि ।—ह्वः,
(पु०) १ परामर्शदाता । २ परिष्कृत । ब्राह्मण ।
३ गुप्तचर । जासूस ।—दः,—दातृ, (पु०)
दीक्षा या मंत्रदाता गुरु ।—दर्शिनं (पु०) १ मंत्र-
दृष्टा ऋषि । २ वेदवित् । वेदज्ञ । दीधितिः,
(पु०) अग्नि ।—दृशं, (पु०) १ मंत्रदृष्टा ।
२ परामर्शदाता ।—देवता, (स्त्री०) वह देवता
जिसका उस मंत्र में आह्वान किया गया हो ।—
धरः (न०) परामर्शदाता ।—निर्णयः, (पु०)
विचार करने के पीछे अन्तिम फैसला ।—पूत,
(वि०) मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ ।—बोजं,
—वीजं, (न०) किसी मंत्र का प्रथमाक्षर ।

मूलमंत्र ।—भेदः, (पु०) सलाह का प्रकट कर
देना ।—मूर्तिः (पु०) शिव जी ।—मूलं,
(न०) इन्द्रजाल । जादू ।—योगः, (पु०) १
मंत्र का प्रयोग । २ तंत्र ।—विद्या, (स्त्री०)
तंत्र विद्या ।—संस्कारः, (पु०) मंत्र पढ़ कर
किया हुआ संस्कार ।—संहिता, (स्त्री०) वेदों का ।
वह ग्रंथ जिसमें मंत्रों का संग्रह हो ।—साधकः,
(पु०) तान्त्रिक ।—सिद्धिः, (स्त्री०) मंत्र का
सिद्ध होना । मंत्र की सफलता । मंत्र द्वारा प्राप्त
शक्ति ।

मंत्रणां (न०) } परामर्श । सलाह । मशबरा ।
मंत्रणा (स्त्री०) }

मंत्रित (व० कृ०) १ मंत्र द्वारा संस्कृत । अभिमंत्रित ।
२ परामर्श किया हुआ । ३ कहा हुआ । निश्चित ।
तैशुदा ।

मन्त्रिन् (पु०) १ सचिव । राजा का आमात्य ।—
धुर, (वि०) सचिव के पद का दायित्व उठा
लेने योग्य ।—पतिः,—प्रधानः,—प्रमुखः,—
वरः,—श्रेष्ठः, (पु०) प्रधान सचिव या
आमात्य ।—प्रकाण्डः, (पु०) श्रेष्ठ सचिव ।
—श्रोत्रियः, (पु०) सचिव जो वेदविद् हो ।

मन्थ, मन्थ्य (धा० परस्मै०) [मन्थति, मन्थति,
मन्थे] मन्थति, मन्थित] १ मथना । बिलोना ।
मथ कर निकालना । २ हिलाना । ३ पीस
डालना । पीड़ित करना । सन्तप्त करना । ४
घायल करना । ५ नाश करना । वध करना ।
मसल डालना । ६ चीरना । फाड़ना ।

मन्थः } (पु०) १ मन्थन । बिलोना । हिलाना ।
मन्थ्यः } गड़बड़ करना । २ वध करना । नाश
करना । ३ शरवत जिसमें कई वस्तुएं मिली हों ।
४ मथानी । रई । ५ सूर्य । ६ सूर्य की किरण ।
७ आँख का कीचड़ । आँख का जाला या मोतिया-
बिन्द । ८ यंत्र जिससे धातु उत्पन्न की जाती है ।
—अचलः,—अद्रिः,—गिरिः,—पर्वतः,—
शैलः, (पु०) मन्दराचल पर्वत ।—उदकः,—
उदधिः, (पु०) दूध का समुद्र ।—गुणः, (पु०)
मन्थन दण्ड की रस्सी ।—जं, (न०) मन्थन ।
—दण्डः,—दण्डकः, (पु०) मथानी । रई ।

मथनः } मथानी । रई । घटी, (स्त्री०) मथन
मन्थनः } करने का बरतन ।

मन्थनं } (न०) १ मथना । गड़बड़ करना । २
मन्थनं } दो लकड़ियों को रगड़ कर आग उत्पन्न
करना ।

मन्थानी } (स्त्री०) वह बरतन जिसमें मथानी डाल
मन्थानी } कर मथा जाय ।

मन्थर } (वि०) १ सुस्त । अक्रियाशील । २ मूर्ख ।
मन्थर } मूढ़ । ३ नीचा । गहरा । पोला । मन्दस्वर
वाला । ४ लंबा । बड़ा । चौड़ा । ५ झुका हुआ ।
मुका हुआ । टेढ़ा ।

मन्थरः } (पु०) १ भाण्डार । धनागार । २ सिर के
मन्थरः } बाल । ३ क्रोध । कोप । ४ ताज़ा मक्खन ।
५ मथानी । ६ बाधा । रोक । अड़चन । ७ दुर्ग ।
८ फल । ९ गुप्तचर । खबर देने वाला । १०
वैशाख मास । ११ मन्दराचल । १२ बारहसिंगा ।

मन्थरम् } (न०) कुसुम का फूल ।
मन्थरम् }

मन्थरा } (स्त्री०) कैकेयी की कुबड़ी चेरी, जिसने
मन्थरा } उसे भड़का कर, श्रीरामचन्द्र जी को १२
वर्ष का वनवास दिलवाया था ।

मन्थारुः } (पु०) पवन जो चँवर डुलाने से निकले ।
मन्थारुः }

मन्थानः } (पु०) १ मथानी । रई । २ शिवजी ।
मन्थानः }

मन्थानकः } (पु०) एक प्रकार की घास ।
मन्थानकः }

मन्थिन् } (वि०) १ मथने वाला । २ सन्तापकारक ।
मन्थिन् } (पु०) वीर्य ।

मन्थिनी } (स्त्री०) वह बरतन जिसमें कोई तरह
मन्थिनी } पदार्थ मथा जाय ।

मन्द् } (धा० आत्म०) [मन्दते] १ (वैदिक) नशे
मन्द् } में होना । २ प्रसन्न होना । ३ सुस्त पड़ना ।
४ चमकना । ५ मन्द चाल से चलना । मटरगरत
लगाना ।

मन्द } (वि०) १ धीमा । सुस्त । काहिल । दीर्घ-
मन्द } सूत्री । २ उदासीन । तटस्थ । ३ मूर्ख ।
मन्दबुद्धि का । अज्ञानी । निर्बल अस्थिर वाला ।

४ नाचा । गहरा । खोखला । पोला । ५ कोमल ।
मुलायम । ६ छोटो । हलका । कम । ७ निर्बल ।
दोषयुक्त । अशक्त । ८ अभागा । दुःखी । ९
कुम्हलाया हुआ । मुरझाया हुआ । १० दुष्ट ।
बदमाश । पापी । ११ नशा पीने को लाजायित ।

मन्दं } (पु०) १ धीमे से । धीरे धीरे । क्रमशः ।
मन्दम् } २ आहिस्ता से । उग्रता या प्रचण्डता से
नहीं । ३ हल्केपन से । ४ मन्द स्वर से । —अन्तः,
(वि०) कमजोर दृष्टि वाला । —अन्तः, (न०)
लज्जा का भाव । लज्जाशीलता । —अग्निः,
(वि०) वह जिसकी पाचन शक्ति कम हो गयी
हो । —अग्निः, (पु०) एक रोग जिसमें रोगी
की पाचन शक्ति कम हो जाती है । —अनिलः,
(पु०) धीमा बहने वाला वायु । —आक्रान्ता,
(स्त्री०) सत्रह अक्षर के वर्ण वृत्त का नाम । —
आमन्, (वि०) मन्दबुद्धि । मूर्ख । अज्ञानी ।
—आदर, (वि०) १ कमसम्मान प्रदर्शित
करने वाला । २ असावधान । —उत्सह, (वि०)
वह जिसका उत्साह कम हो । —उदरी, (=मन्दो-
दरी) (स्त्री०) रावण की पटरानी का नाम ।
इसकी गणना पाँच सती स्त्रियों में है । —उष्णः,
(वि०) शीतोष्ण । गुणगुना । —कर्णः, (वि०)
थोड़ा थोड़ा बहरा । —कान्तिः, (पु०) चन्द्रमा ।
—गः, (पु०) शनिग्रह । —जननी, (स्त्री०)
शनि की माता । —स्मितं, (न०) —हासः,
(पु०) —हास्यं, (न०) सुसंवादन ।

मन्दः } (पु०) १ शनिग्रह । ३ चम । ३ प्रलय ।
मन्दः } ४ हाथी विशेष ।

मन्दटः } (पु०) मूंगा का वृक्ष ।
मन्दटः }

मन्दनम् } (पु०) प्रशंसा । तारीफ़ ।
मन्दनम् }

मन्दयन्ती } (स्त्री०) दुर्गा देवी ।
मन्दयन्ती }

मन्दरः } (वि०) १ सुस्त । धीमा । काहिल । २
मन्दरः } गाढ़ा । घना । पुष्ट । ३ लंबा । भारी
ढील का ।

मन्दरः } (पु०) १ मन्दराचल का नाम । मोती का
मन्दरः } हार । २ स्वर्ग । ४ दर्पण । ५ मन्दार वृक्ष ।

इन्द्र के नन्दनकानन के पाँच वृक्षों में से एक —
आवासा, —वासिनी, (स्त्री०) दुर्गा का
नामान्तर ।

मंदसानः } (पु०) १ अग्नि । २ जीवन । आयु ।
मन्दसानः } ३ निद्रा ।

मंदाकः } (पु०) धारा । नदी ।
मन्दाकः }

मंदाकिनी } (स्त्री०) पुराणानुसार गङ्गा की वह
मन्दाकिनी } धार जो स्वर्ग में है जो ब्रह्मवैवर्त के
अनुसार एक अयुत योजन लंबी है ।

मंदारः } (पु०) मूंगे का वृक्ष । यह भी इन्द्र के
मन्दारः } नन्दनकानन के पाँच वृक्षों में से एक है ।
२ अर्क । मदार । ३ घतुरा । ४ स्वर्ग । ५ हाथी ।

मंदारं } (पु०) मूंगे के वृक्ष का फूल । —माला,
मन्दारं } (स्त्री०) मदार के फूलों का हार । —पट्टी,
(स्त्री०) मावशुक्ला ६ कूठ ।

मंदारकः }
मन्दारकः }
मंदारवः } (पु०) मूंगे का वृक्ष ।
मन्दारवः }
मंदारः }
मन्दाकः }

मंदिमन } (पु०) १ धीमापन । दीर्घसूत्रता । २
मन्दिमन } मृदता । मूर्खता ।

मन्दिरं } (न०) १ रहने का घर । घर । डेरा ।
मन्दिरं } भवन । राजभवन । २ कस्बा । ३ शिखिर ।
झावनी । ४ देवालय । —पशुः, (पु०) बिल्ला ।
बिलार । —मणिः, (पु०) शिव जी का नाम ।

मंदिरा } (स्त्री०) अस्तबल । तबेला । पशुशाला ।
मन्दिरा }

मंदुरा } (स्त्री०) १ अश्वशाला । खुदसाल । घोड़ों
मन्दुरा } का तबेला । २ चटाई । गद्दा ।

मंद्र } (वि०) नीचा । गहरा । पोला । गम्भीर ।
मन्द्र }

मंद्रः } (न०) १ मन्दस्वर । २ एक प्रकार का ढोल ।
मन्द्रः } मृदङ्ग । ३ हाथी विशेष ।

मन्मथः (पु०) १ कामदेव । २ प्रेम । कामुकता ।
३ कैथा । —आनन्दः, (पु०) आम विशेष का
वृक्ष । —आलयः, (पु०) १ आम का पेड़ । —

युद्धं, (न०) स्त्रीसम्भोग । —लेखः, (पु०)
प्रेमपत्र ।

मन्मनः (पु०) १ गुप्त कानाफूसी । २ कामदेव ।

मन्युः (पु०) १ क्रोध । कोप । रोष । २ दुःख । शोक ।
सन्ताप । क्रेश । ३ दुर्दशा । कमीनापन ।
नीचता । ४ यज्ञ । ५ अग्नि । ६ शिव ।

मभ्र (धा० पर०) [मभ्रति] चलना । जाना ।

मम (पु०) मेरा । —कारः, (पु०) ममता । मैं
मैंपन । स्वार्थ ।

ममता (स्त्री०) १ मेरेपन का भाव । स्वार्थ । ममत्व ।
अपनापन । २ अभिमान । अहङ्कार । ३ व्यक्तित्व ।

ममत्व (न०) १ ममता । अपनापन । २ स्नेह । ३
गर्व । अभिमान ।

ममापतालः (पु०) ज्ञानेन्द्रिय ।

मंब् (धा० परस्मै०) चलना । डोलना ।

मम्मटः (पु०) काव्यप्रकाश के रचयिता एक विद्वान
का नाम ।

मय् (वि०) [स्त्री०—मयी] तद्धित का एक प्रत्यय
जो तद्रूप, विकार और प्राचुर्य के अर्थ में शब्दों में
जोड़ा जाता है ।

मयः (पु०) १ दैत्य जाति के एक शिल्पी का नाम ।
पाण्डवों के लिये सभाभवन इसीने बनाया था ।
२ दिति का पुत्र, जिसकी पुत्री मन्दोदरी रावण
को न्याही थी । ३ बोझ । ऊँट । ४ खच्चर ।
अश्वतर ।

मयटः (पु०) बास फूस की झोपड़ी ।

मयष्टकः } (पु०) बनमृग ।
मयुष्टकः }

मयुः (पु०) १ किलर । २ मृग । हिरन । —राजः,
(पु०) कुबेर का नाम ।

मयूखः (पु०) १ किरण । २ सौन्दर्य । ३ अँगारा ।
धूपघड़ी की कील ।

मयूरः (पु०) १ मोर । २ पुष्प विशेष । ३ सूर्य-
शतक के बनाने वाले कवि का नाम । —अरिः,
(पु०) छिपकली । —केतुः, (पु०) कार्तिकेय ।

—ग्रीवकः, (न०) कृतिया । —चटकः, (पु०)

गोरैया पत्नी ।—मूढ़ा, (स्त्री०) मयूर शिखा ।
—तुल्यं, (न०) तृतिथा ।—रथः, (पु०)
कार्तिकेय ।—गिञ्जा, (स्त्री०) मोर की चोटी ।

मयूरी (स्त्री०) मयूर की सादा ।

मयूरकं (न०) तृतिथा ।

मयूरकः (पु०) १ मोर । २ तृतिथा ।

मरकः (पु०) महामारी । प्लेग ।

मरकतं (न०) पन्ना ।—मणिः, (पु० स्त्री०)
पन्ना ।—शिला, (स्त्री०) पन्ना की सिन्ही ।

मरणां (न०) १ मृत्यु । मौत । २ विष विशेष ।—
अन्तः,—अन्तकः, (वि०) मृत्यु के साथ समाप्त
होने वाला ।—अभिमुखः,—उन्मुखः, (वि०)
मरणापन्न ।—अर्धन्, (वि०) मरणाशील ।
मर्त्य ।

मरतः (पु०) मृत्यु ।

मरन्दः { (पु०) फूल का रस ।—ओकस्,
मरन्दकः { (न०) फूल ।
मरन्दकः {

मरारः (पु०) खत्ती । अनाज रखने की भण्डारी ।

मराल (वि०) १ कोमल । चिकना ।

मरालः (पु०) [स्त्री०—मराली] १ हंस । २
बत्तख की तरह का जलचर पक्षी विशेष ।
कारण्डव । ३ घोड़ा । ४ बादल । ५ नयनाञ्जन ।
सुर्मा । ६ अनार के वृक्षों की कुंज । ७ बदमाश ।
कपदी ।

मरोचं (न०) काली मिर्च ।

मरिचः { (पु०) काली मिर्च का भाद ।
मरीचः {

मरीचिः (पु० स्त्री०) १ किरण । २ प्रकाश का
अणु । ३ मृगमरीचिका । मृगतृष्णा ।

मरीचिः (पु०) १ एक ऋषि जो ब्रह्मा के पुत्र कहे
जाते हैं और दस प्रजापतियों में इनकी गणना की
जाती है । २ एक स्मृतिकार । ३ श्रीकृष्ण का
नाम । ४ कंजूस ।—तौर्यं, (न०) मृगतृष्णा ।
—मालिन, (वि०) जो किरनों से विरा हो ।
(पु०) सूर्य ।

मरीचिका (स्त्री०) मृगतृष्णा ।

मरीचिन् (पु०) सूर्य ।—मरुः, (पु०) १ रेग-
स्थान । ऐसा देश जहाँ जल का अकाल सा हो ।
२ पर्वत । चट्टान । (पु०) (बहुवचन) एक
देश का नाम और उसके अधिवासियों का नाम ।
मारवाड़ । मारवाड़ी ।—उद्भवा, (पु०) १
कपान का रूख । २ ककड़ी ।—कच्छः, (पु०)
एक प्रान्त विशेष ।—द्विपः,—प्रियः, (पु०)
जुट ।—धन्वः,—धन्वन्, (पु०) रेगस्थान ।
मरुभूमि ।—भूः, (बहुवचन) मारवाड़ देश ।
—भूमिः, (स्त्री०) रेगस्थान ।—स्थलं,—
स्थली, (स्त्री०) रेगस्थान । वीरान । जंगल ।

मरुकः (पु०) मोर ।

मरुत् (पु०) १ पवन । २ पवन का अधिष्ठाता
देवता । ३ देवता विशेष । ४ मरुवक नामक
पौधा । (न०) ग्रन्थपर्णि नामक वृक्ष ।—
आदोलः, (पु०) हिरन या सैले के चाम का
बना रंजक विशेष ।—कर्मन्, (पु०)—क्रिया,
अफरा । पेट का फूलना ।—गणः, (पु०)
देवताओं का समुदाय ।—तनयः,—पुत्रः,—
सुनः,—सूनुः, (पु०) १ हनुमान । २ भीम ।
—पटः, (पु०) नाव का पाल ।—पतिः,
—पालः, (पु०) इन्द्र ।—पथः, (पु०)
आकाश । अन्तरिक्ष ।—प्लवा, (पु०) सिंह ।
शेर ।—फलं, (न०) ओला ।—वक्षः, (पु०)
१ विष्णु । २ यज्ञीयपात्र विशेष ।—लोकः,
(पु०) वह लोक जिसमें देवता रहते हैं—
वर्त्मन्, (न०) आकाश । अन्तरिक्ष ।—वाहः,
(पु०) १ धूम । २ अग्नि ।—सखः, (पु०)
१ पवन । २ इन्द्र ।

मरुतः (पु०) १ पवन । २ देवता ।

मरुतः (पु०) चन्द्रवंशी एक राजा का नाम जिसके
यज्ञ में देवता आकर काम करते थे ।

मरुत्तकः (पु०) मरुत्ता नामक पौधा ।

मरुत्तत् (पु०) १ बादल । २ इन्द्र । ३ हनुमान ।

मरुलः (पु०) बत्तख विशेष ।

मरुवः (पु०) १ दौनामरुत्ता । २ राहु का नामान्तर ।

मरुचक्रः (पु०) १ दौनामरुचक्रा । २ नीच विशेष ।
मरुचक्रः (पु०) ३ चीना । ४ राहु । ५ सारस ।

मरुचक्रः (पु०) १ मोर । वारहसिंघा विशेष ।

मरुचक्रः (पु०) १ वानर । लँगूर । २ मकड़ी । ३ सारस । ४ स्त्रीसम्भोग का आसन विशेष । ५ विष विशेष । —आस्य, (वि०) वानरमुख । —आस्यं (न०) ताँबा । —इन्दुः, (पु०) आवनूस । —तिन्दुकः, (पु०) आवनूस विशेष । कुपील । —पोतः, (पु०) बँदर का बच्चा । —वासः, (पु०) मकड़ी का जाला । —शीर्षः, (पु०) हिंगुल ।

मरुचक्रः (पु०) १ लँगूर । २ मकड़ी । ३ एक जाति विशेष की मछली । ४ अनाज विशेष ।

मरुचक्र (स्त्री०) १ बरतन । २ पात्र । २ गुफा । सुरंग । ३ बाँक स्त्री ।

मर्च (धा० उभय०) [मर्चयति, मर्चयते] १ लेना । २ साफ करना । ३ शब्द करना ।

मर्जः (पु०) १ धोवी । २ मैथुन कराने वाला लड़का । (स्त्री०) सफाई । धुलाई । पवित्रता ।

मर्तः (पु०) १ मानव । इंसान । आदमी । २ पृथिवी । मर्त्यलोक ।

मर्त्य (वि०) मरणाशील

मर्त्य (न०) शरीर । —धर्मः, (पु०) विनियम । —धर्मन्, (वि०) मरणाशील । —निवास्तिन, (पु०) मानव । मनुष्य । —भावः, (पु०) मनुष्य-स्वभाव । —भुवनं, (न०) पृथिवी । —महिलाः, (पु०) ईश्वर । —मुखः, (पु०) किन्नर । —लोकः, (पु०) मर्त्यलोक । भूलोक ।

मर्त्यः (पु०) १ इंसान । मनुष्य । २ मर्त्यलोक । भूलोक ।

मर्द (वि०) कुचलने वाला । कूटने वाला । पीसने वाला । नाश करने वाला ।

मर्दः (पु०) १ पीसना । कूटना । २ प्रचण्ड आघात ।

मर्दन (वि०) [स्त्री०—मर्दनी] कुचलने वाला । पीसने वाला । नाश करने वाला ।

मर्दनं (न०) १ कुचलना । पीसना । २ मालिश । (शरीर) दधाना । ३ लेप करना । ४ दबाव डालना । ५ पीड़ा करना । सन्तापित करना । ६ नाश करना । उजाड़ना ।

मर्दलः (पु०) मृदङ्ग विशेष ।

मर्ब (धा० पर०) [मर्बति] जाना ।

मर्मन् (न०) १ शरीर का मर्मस्थल । २ शरीर का सन्निवस्थान । २ रहस्य । तत्व । भेद । —चरं, (न०) हृदय । —त्रिदं, —भिदं, (वि०) १ अत्यन्त पीड़ाकारक । २ सँघातिक । आघात करने वाला । —ज्ञ, (वि०) वह जो किसी बात का मर्म या गूढ़ रहस्य जानता हो । तत्त्वज्ञ । २ भेद की बात जानने वाला । रहस्य का जानकार । —ज्ञः, (पु०) प्रकाण्ड विद्वान् । —त्रं, (न०) कवच । —पारग, (वि०) भली भाँति अभिज्ञ । —भेदः, (पु०) मर्मस्थलों को छेदने वाला । २ किसी की गुप्त बातों को या कमज़ोरियों को प्रकट करने वाला । —भेदनः, (पु०) —भेदिन्, (पु०) बाण । तीर । —स्थलं, —स्थानं, (न०) १ शरीर के सन्निवस्थान । २ कमज़ोरियाँ । निर्बलताएँ ।

मर्मर (वि०) मरमर । पत्तों या कलफदार कपड़े की खरभर ।

मर्मरः (पु०) १ पत्तों की खड़कन । २ बरबराहट ।

मर्मरी (स्त्री०) १ हल्दी । २ वृक्ष विशेष ।

मर्मरीकः (पु०) १ गरीब आदमी । मोहताज । २ दुष्ट मनुष्य ।

मर्या (स्त्री०) सीमा । हद ।

मर्यादा (स्त्री०) १ सीमा । हद । २ अन्त । क्षेप । तट । किनारा । ३ चिन्ह । क्षेत्रसीमा चिन्ह । ४ नैतिक विधि । ५ शिष्टता की मर्यादा । ६ दहराव । इकरार । —अचल, (पु०) —गिरिः, (पु०) —पर्वतः, (पु०) सीमा पर स्थित पहाड़ । —भेदकः, (पु०) क्षेत्र-सीमा-चिन्ह को भिटाने वाला ।

मर्यादिन (पु०) १ पड़ोसी । २ सीमा पर रहने वाला ।

मर्ष (धा० परस्मै०) [मर्षति] १ यजना होलना
२ मरना परिपूर्ण करना

मर्शः (पु०) १ विचार । २ परामर्श । सलाह । ३
झोंक लाने वाली वस्तु ।

मर्शनं (न०) १ मालिश । मलाई दलाई । २
परीक्षा । अनुसन्धान । ३ विचार । मनन । ४
परामर्श । ५ स्थानान्तर करण ।

मर्षः (पु०) । सहनशीलता । धीरज ।
मर्षणम् (न०)

मर्षित (व० कृ०) सहा हुआ । गँवारा किया हुआ ।
२ चमा किया हुआ । माफ़ किया हुआ ।

मर्षितं (न०) सहनशीलता । धैर्य ।

मर्षिन् (वि०) सहन करने वाला । सहिष्णु ।

मल (धा० आत्म०-परस्मै०) [मलते, मलयति]
ग्रहण करना । अधिकार में करना ।

मलं (न०) १ मैल । कीट । धूल । गर्दा । २
मलः (पु०) १ तलछट । फोक । खुद । लीम्मी । ३

धातुओं का मैल । ४ पाप । ५ शरीर से निकलने
वाला मैल या विकार । [मनुस्मृति के अनुसार

शरीर के बारह मल हैं — १ वसा । २ शुक्र । ३
रक्त । ४ मज्जा । ५ मूत्र । ६ विण्डा । ७ कान का

मैल । ८ नख । ९ श्लेष्मा या कफ । १० आँसू ।
११ शरीर के ऊपर जमा हुआ मैल । १२

पसीना ।] ६ कपूर । ७ समुद्रफेन । कमाया हुआ
चमड़ा । चमड़े के बने वस्त्र । (न०) मिलावटी

धातु विशेष ।—अपकर्षणं, (न०) मैल या
पाप दूर करना ।—अरिः, (पु०) चार विशेष ।

—अवरोधः, (पु०) कोष्ठवद्धता । कवजियत ।
—आकर्षिन्, (पु०) महतर । कूड़ा साफ

करने वाला ।—आशयः, (पु०) मेदा । पेट ।
—उत्सर्गः, (पु०) टट्टी जाना । पेट से मल

निकालना ।—जं, (न०) पीप । मवाद ।—
दूषित, (वि०) मैला । गंदा ।—द्रवः, (पु०)

वस्तु की बीमारी ।—धात्री, (स्त्री०) दाई जो
बच्चे की आवश्यकताओं को दूर करे ।—पृष्ठं,

(न०) किसी पुस्तक का पहला पन्ना । आवरण-
पृष्ठ ।—भुज्, (पु०) काक । कौआ ।—

मल्लक (पु०) कौपीन । लगेटी माम्
(पु०) अधिक मास लौट कर महीना

वासस्, (स्त्री०) स्त्री जो कपड़ों से हो । रज
स्वला स्त्री ।—विमर्गः,—विसर्जनं,—शुद्धिः

(स्त्री०) कोठा साफ करना ।—हारक, (वि०)
मैल या पाप दूर करने वाला ।

मलनः (पु०) तंबू । डेरा ।

मलनं (न०) कुचरना । पीस डालना ।

मलयः, (पु०) १ दक्षिण भारत की एक पर्वतमाला
जिसके ऊपर चन्दन के वृक्ष अधिकता से पाये जाते

हैं । २ मलय पर्वत के पूर्व का देश विशेष । माला-
वार प्रान्त । ३ बाग । ४ इन्द्र का नन्दनकानन ।

—अचलः,—गिरिः,—अद्रिः,—पर्वतः, (पु०)
मलयाचल ।—अनितः,—वातः,—समीरः,

(पु०) मलय पर्वत से आयी हुई हवा ।—
उद्भवः, (न०) चन्दन काष्ठ ।—जः, (पु०)

चन्दन वृक्ष ।—जं, (पु०)—जं, (न०) चन्दन
काष्ठ ।—जं, (न०) राहु का नामान्तर ।—

—दुमः, (पु०) चन्दन का वृक्ष ।—वासिनी,
(स्त्री०) दुर्गा देवी ।

मलाका (स्त्री०) १ कामातुरा स्त्री । २ स्त्रीहलकारा ।
दूती । ३ हथिनी ।

मलिन (वि०) १ मैला । गंदा । अपवित्र । २
काला । ३ पापमय । दुष्ट । ४ नीच । कमीना ।

पापी । ५ मेघाच्छन्न । अन्धकारमय ।—अम्बु,
(न०) मसी । स्याही । रोशनाई ।—आस्य,

(वि०) १ मलिन मुख वाला । २ नीच । कमीना ।
गँवार । ३ बर्बर । निष्ठुर ।—मुखः, (पु०) १

अग्नि । २ भूत । प्रेत । ३ गोलाझूल जाति का
वनर ।

मलिनं (न०) १ पाप । अपराध । दोष । १ माछ ।
३ सोहागा ।

मलिना } (स्त्री०) १ रजस्वला स्त्री । २ लाल
मलिनो } खौंड़ या शक्कर । ३ छोटी भटकटैया ।

मलिनयति (क्रि०) १ मैला करना । गंदा करना । ३
बिगाड़ना । बुरा काम करने के लिये उन्साहित

करना ।

मल्लिनिमन् (पु०) १ गंदागी । अशुद्धता । मैलापन ।
२ कृम्यता । कालापन । कलूषापन । यथा —

“ मल्लिनिमल्लिनि मन्त्रव्योषिता । ”

३ पाप । नैतिक अपवित्रता ।

मल्लिमुखः (पु०) १ डाँकू । चोर । २ दैत्य । ३
डाँस । मच्छर । ४ अधिकमास । लौंदा का महीना ।
५ पवन । हवा । ६ अग्नि । ७ वह ब्राह्मण जो
पंचमहायज्ञों को नित्य नहीं करता ।

मल्लीमस (वि०) १ मैला । गंदा । २ काला कलूषा ।
काले रंग का । ३ पापी दुष्ट ।

मल्लीमसः (पु०) १ लोहा । २ पीले रंग का कसीस ।
हरे रंग का कसीस । तूतिया ।

मल्ल (धा० आत्म०) [मल्लते] ग्रहण करना ।
अधिकार करना । कब्जा करना ।

मल्ल (वि०) १ मज्जवृन् । बलवान् । कसरती ।
रोबीला । २ अच्छा । उत्तम ।

मल्लः (पु०) १ पहलवान् । कसरती आदमी । २
मज्जवृन् या ताकतवर आदमी । ३ प्याला ।
कटारा । ४ कपोल । कनपुटी । गण्डस्थल । ५
देवता को चढ़ाया हुई वस्तु । प्रसाद ।— अरिः,
(पु०) १ श्रीकृष्ण । २ शिव ।—कीडा,
(स्त्री०) पहलवानों का दंगल ।—जं, (न०)
कालीमिर्च ।—तूर्य, (न०) बोल विशेष ।—
भूः,—भूमिः, (स्त्री०) १ अखाड़ा । २ देश विशेष ।
—युद्धं, (न०) बाहुयुक्त । कुश्ती ।—विद्या,
(स्त्री०) कुश्ती लड़ने की विद्या ।—शाला,
(न०) १ अखाड़ा ।

मल्लकः (पु०) १ डीबट । पत्तीलसोत । २ तैल-
पात्र । ३ दीपक । ४ नरैरी का बना प्याला । ५
दाँत । ६ कुन्दपुष्प ।

मल्लिः (स्त्री०) मोतिया ।—नाथः, (पु०)
मल्लि } १४वीं या १५वीं शताब्दी में यह एक
प्रसिद्ध टीकाकार हो गये हैं । इनकी बनायी रघुवंश,
कुमारसम्भव, मेघदूत, किरातार्जुनीय, नैषधचरित
और शिशुपालवध की टीकाओं का विद्वानों में
बड़ा आदर है ।

मल्लिकः (पु०) १ हंस विशेष जिसकी टाँगे और
चोंच धुमैले रंग की होती हैं । २ माघ मास । ३
जुलाहे की ढरकी ।—अज्ञः, (पु०)—आख्या,
हंस विशेष ।—अर्जुनः, (पु०) श्रीशैल पर
स्थित शिवजी के एक लिङ्ग का नाम ।—आख्या,
(स्त्री०) मोतिया ।

मल्लिका (स्त्री०) १ मोतिया । २ मोतिया का फूल ।
३ डीबट । पत्तीलसोत । विशेष आकार का मिट्टी
का बना बरतन ।

मल्लीकरः (पु०) चोर ।

मल्लुः (पु०) रीझ । भालू ।

मव् (धा० परस्मै०) [मवति] बाँधना । कसना ।

मव्य् (धा० परस्मै०) [मव्यति] बाँधना ।

मश् (धा० परस्मै०) [मशति] १ भिन भिन करना ।
गुनगुनाता । २ नाराज होना ।

मशः (पु०) १ मच्छर । २ गुज्जर । ३ क्रोध ।—हुरी,
(स्त्री०) मसैहरी । मच्छरदानी ।

मशकः (पु०) १ मच्छर । डाँस । २ मसा नामक
चर्मरोग । ३ मशक जो भिरितियों के पास रहती
है ।

मशकिन् (पु०) गुलर का पेड़ ।

मशुनः (पु०) कुत्ता ।

मष् (धा० परस्मै०) [मषति] चोटिल करना ।
घायल करना । वध करना । नाश करना ।

मषिः } (स्त्री०) मसी । रोशनाई । स्याही ।
मषी }

मस् (धा० परस्मै०) [मस्यति] १ तौलना ।
नाँपना । २ रूप बदलना ।

मसः (पु०) माशा । एक तौल विशेष ।

मसनं (न०) १ नापना । तौल । २ रुखरी । बुटी ।

मसरा (स्त्री०) मसूर ।

मसारः } (पु०) पन्ना रत्न ।
मसारकः }

मसिः (पु० स्त्री०) १ रोशनाई । स्याही । २ कालिख ।
३ काजल ।—आधारः, (पु०) —कूपी,

(श्री०) —धानं, (न०) —धानी, (श्री०)
 —मणिः, (पु०) दावात । स्याही की बोतल ।
 कलमदान ।—जलं, (न०) स्याही ।—
 परायः, (पु०) लेखनी ।—पथः, (पु०) ।
 कलम । लेखनी ।—प्रसूः, (श्री०) । कलम ।
 २ दावात ।—वर्द्धनं, (न०) गन्धरस । लोचन ।
 मस्तिकः (पु०) लौप का बिल ।
 मसी (श्री०) देखो मस्ति ।—जलं, (न०) स्याही ।
 रोशनाई ।—पटलं (न०) कालिख । काजल ।
 मसूरः } (पु०) । मसूर की दाह । २ तकिया ।
 मसूरः }
 मसूरा } (श्री०) । मसूर की दाह । २ वेश्या ।
 मसूरा } देवी ।
 मसूरिका (श्री०) । कुरा । छोटी चेचक । २ मसेहरी ।
 ३ कुटनी ।
 मसूरी (श्री०) छोटी चेचक ।
 मसूरा (वि०) । स्निग्ध । चिकना । २ कोमल ।
 नरम । सुलायन । ३ मीठा । मातदिल । ४
 मनोज्ञ । मनोहर । ५ चमकीला । फलमला ।
 मसूरा (श्री०) अलसी ।
 मस्क (श्री० परस्मै०) [मस्कति] चलना ।
 मस्करः (पु०) । बाँस । २ पोखा बाँस । ३ गमन ।
 गति । ४ ज्ञान ।
 मस्करिन (पु०) । साधु । संन्यासी । २ चन्द्रमा ।
 मसृज (श्री० परस्मै०) [मसृजति, मसृज] । नहाना ।
 जल में शरीर डुबो कर स्नान करना । अदगाहन ।
 स्नान करना । ३ डूबना । ३ डूब मरना । ४
 सङ्कट में डूबना । ५ हताश होना । दिल का
 टूटना ।
 मस्तं (न०) मस्तक । सिर ।—दाह, (न०)
 देवदार का पेड़ ।—मूलकं, (न०) गर्दन ।
 मस्तकं (न०) । सिर । लोपही । शिखर या
 मस्तकः (पु०) । चोटी ।—आख्याः, (पु०)
 पेड़ । फुनगी ।—उवरः, (पु०)—शूलं, (न०)
 उग्र शिर की पीड़ा ।—मूलकं, (न०) गर्दन ।
 —स्नेहः, (पु०) मस्तिष्क दिमाग । भेजा ।

मस्तिकं (न०) । सिर । मस्तिष्क । दिमाग ।
 मस्तिष्कं (न०) । भेजा । मस्तक के अंदर का गुदा ।
 भेजा । मगज ।
 मस्तु (न०) । दही का पानी । तोड़ । २ खँड़ । मठा ।
 —लुंगः, लुङ्गः, (पु०)
 —लुंग, लुङ्गम्, (न०) } मस्तिक । भेजा ।
 —लुंगकः, लुङ्गकः, (पु०) } दिमाग । मगज ।
 —लुंगकम्, लुङ्गकम्, (न०) }
 मह (श्री० परस्मै०) [महति, महयति, महयते,
 महित] सम्मान करना । पूजन करना ।
 महः (पु०) । उत्सव । २ नैवेद्य । भेंट । यज्ञ ।
 बलिदान । ३ मैला । ४ दीप्ति । चमक ।
 महकः (पु०) । प्रसिद्धपुरुष । २ कथवा । ३ विष्णु
 का नामान्तर ।
 महत् (वि०) । बड़ा । लंबा । विशाल । बड़ा लंबा
 चौड़ा । २ विपुल । बहुत । अनेक । ३ विस्तृत ।
 दीर्घ । ४ मज्जबुत । बलवान । ताकतवर । ५ उग्र ।
 प्रचण्ड । अतिशय । ६ गाढ़ा । घना । ७
 आवश्यक । बड़े महत्व का । ८ ऊँचा । प्रसिद्ध ।
 प्रख्यात । कुलीन । ९ उच्चस्तर से । १० सबेर या
 अखेर । ११ उच्च ।
 महत् (पु०) । ऊँट । २ शिव । ३ बड़ा सिद्धान्त ।
 महत् (न०) । बड़प्पन । २ अनन्तता । असंख्यता ।
 ३ राज्य । सत्ततन्त्र । ४ पवित्रज्ञान ।
 महत् (अव्यय०) अतिशयता से । अस्याधिक ।—
 आवासः, (पु०) विस्तृत भवन ।—आशा,
 (वि०, बड़ी दम्मेद ।—विलं, (न०) अन्तरिक्ष ।
 —स्था, (न०) उच्चस्थान । उच्चपद ।
 महती (श्री०) । वीरता । २ नारद की वीणा का
 नाम । ३ बड़प्पन । महत्त्व । ४ बैंगन । माँटा या
 वृन्ताक का पौधा ।
 महत्तर (वि०) अपेक्षा कृत बड़ा । दो पदार्थों में से
 बड़ा या श्रेष्ठ ।
 महत्तरः (पु०) मुख्य प्रधान या सब से अधिक
 बड़ा आदमी । सर्वाधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति । २
 राजा या किसी रईस के घर का प्रधानकर्त्ता । ३
 दरबारी । ४ गाँव का मुखिया या बड़ा बुढ़ा ।

महत्तरकः (पु०) दरवारी । मुसाहिब । राजा या
रईस के घर का प्रधानकर्त्ता ।

महत्त्वं (न०) १ बड़प्पन । २ विशालता । ३ गुरुता ।
श्रेष्ठता ।

महत्तोर्यं (वि०) प्रतिष्ठापात्र । माननीय । पुज्य ।
मान्य ।

महंतः } (पु०) मठ का मुख्य पुरुष । साधुमण्डली
महन्तः } या मठ का मुख्याधिष्ठाता । साधुओं का
मुखिया ।

महर् } (अन्यथा०) सात ऊर्ध्व लोकों में से चौथा
महर्से } लोक । महर्लोक ।

महर्लजः } (पु०) रनवास का खोजा या
महर्लिकः } हिजड़ा ।

महर्लक (वि०) निर्बल । कमजोर । वृद्ध ।

महर्लकः (पु०) १ रनवास का खोजा । ३ विशाल
भवन । महल । राजप्रासाद ।

महस् (न०) १ उत्सव । २ भेंट । नैवेद्य । बलि । ३
दीप्ति । आभा । ४ महर्लोक ।

महस्वत् } (वि०) चमकीला । प्रकाशमान ।
महस्विन् } प्रदीप्त ।

महा (स्त्री०) गौ ।

महा (वि०) अत्यन्त । बहुत अधिक [नोट ब्राह्मण,
पात्र, प्रस्थान, तैल और माँस इन शब्दों में महा
लगाने पर इन शब्दों के अर्थ कुत्सित हो जाते हैं]
—अक्षाः, (पु०) शिव जी ।—अंगाः, (पु०)
१ ऊँट । २ चूहा । घूस । ३ शिव ।—अज्जनः,
(पु०) एक पर्वत का नाम ।—अत्ययः, (पु०)
बड़ा भारी सङ्कट ।—अध्वनिक, (वि०) मृत ।
मरा हुआ ।—अध्वरः, (पु०) बड़ा यज्ञ ।—
अनसं, (न०) भारी गाढ़ी ।—अनसः, (पु०)
—अनसं, (न०) रसेई घर ।—अनुभाव,
(वि०) कुलीन । गौरव युक्त । आदर्श । २
महात्मा । धर्मात्मा ।—अनुभावः, (पु०)
मान्य पुरुष ।—अन्तकः, (पु०) १ मृत्यु । २
शिव ।—अन्ध्राः, (पु० बहुवचन०) आन्ध्र देश
वासी ।—अन्वयः, —अभिजन, (वि०) कुलीन
ब्राने में उत्पन्न ।—अभिषेकः, (पु०) सोम

का बहुतसा खींचा हुआ रस ।—अमात्यः,
(पु०) प्रधान सचिव ।—अम्बुकः, (पु०)
शिव ।—अम्बुज, (न०) दस खरब संख्या ।—
अम्लः, (न०) इमली का फल ।—अर्घ्यः,
(वि०) मूल्यवान् । वेशकीमती ।—अर्गुषः,
(पु०) १ महासागर । २ शिव ।—अर्ह, (वि०)
१ बहुमूल्य । २ अमूल्य ।—अर्हम्, (न०)
सफेद चन्दन काष्ठ ।—अवरोहः, (पु०) घट
वृक्ष ।—अशन, (वि०) पेट । भोजनभट्ट ।—
अश्मन्, (पु०) लाल । माणिक ।—अश्वरी,
(न०) आश्विन शुक्लाष्टमी ।—असुरी, (स्त्री०)
दुर्गा का नाम ।—अन्हः, (पु०) मध्याह्नोत्तर ।
दोपहर के बाद का समय ।—आचार्यः, (पु०)
शिव जी का नामान्तर ।—आद्यः, (वि०)
धनवान् । धर्म ।—आद्यः (पु०) कदम्ब का
पेड़ ।—आत्मन्, (वि०) महात्मा । महापुरुष
(पु०) परब्रह्म । परमानन्द ।—आत्मकः,
(पु०) बड़ा नगाड़ा ।—आनन्दः, —नन्दः,
(पु०) मोक्ष ।—आयुधः, (पु०) शिव ।—
आलयः, (पु०) ३ देवालय । मंदिर । आश्रम ।
२ तीर्थस्थान । ३ ब्रह्मलोक । ४ परमात्मा ।—
आलया, (स्त्री०) देवता विशेष ।—आशयः,
(पु०) १ महानुभाव । २ समुद्र ।—आस्पदः,
(वि०) उच्चपदवर्ती । २ बलवान् ।—आहुषः,
(पु०) प्रचण्डयुद्ध ।—इच्छ, (वि०) १ उदारा-
शय । कुलीन । २ वह जिसके उद्देश्य बहुत ऊँचे
हों ।—इन्द्रः, (पु०) १ बड़ा इन्द्र । इन्द्र का नाम ।
२ नेता । मुखिया । ३ पर्वतमाला विशेष ।—
इष्वासः, (पु०) बड़ा धनुर्धर । महाभट । बड़ा
योद्धा ।—ईशः, —ईशानः, (पु०) शिव ।—
ईशानी, (स्त्री०) पार्वती ।—ईश्वरः, (पु०)
१ विष्णु । २ शिव ।—ईश्वरी, (स्त्री०) दुर्गा ।—
उक्षः, (पु०) बड़े भारी झीलझील का बैल ।—
उत्पलः, (न०) बड़ा नील कमल ।—उत्सवः
(पु०) १ कोई बड़ा उत्सव । २ कामदेव ।—
उत्साहः, (वि०) बड़ा उत्साही । बड़ा स्फूर्तिमान् ।
—उदधिः, (पु०) १ महासागर । २ इन्द्र ।
—उदयः, (पु०) १ अत्युन्नति । २ मोक्ष । ३

स्वामी । प्रभु ४ कन्नौज कन्वे का नाम । ५
कन्नौज राज्य की राजधानी का नाम । उदर
(न०) १ जलोदर या जालधर रोग । २ बड़ा
पेट ।—उपाध्यायः, (पु०) बड़ा शिष्यक ।—
उरस्कः, (पु०) शिव ।—ओष्ठः, (पु०)
शिव जी ।—ओजस, (वि०) बड़ा बलवान ।
(पु०) बड़ा थोड़ा ।—ओजसं, (न०) विष्णु-
भगवान का सुदर्शन चक्र ।—ओपधिः, (स्त्री०)
१ बड़ी गुणकारी दवाई । २ दूब घास ।—
औषधं, (न०) सर्वरोगहरण दवा । २ सोंठ ।
३ लहसुन । ४ वत्सनाभ ।—कन्धः, (पु०) १
समुद्र । २ वरुण । ३ पर्वत ।—कन्दः, (पु०)
लहसुन ।—कमिष्ठः, (पु०) १ चित्तवृत्त । २
लाल लहसुन ।—कंठु, —कम्बु, (वि०)
मादरजात नंगा ।—कम्बुः, (पु०) शिव जी ।
—कर, (वि०) १ लंबे हाथों वाला । २ जिसकी
बड़ी मालगुजारी हो ।—कर्णः, (पु०) शिव जी ।
—कर्मन्, (वि०) बड़ा काम करने वाला ।
(पु०) शिव जी ।—कविः, (पु०) बड़ा कवि ।
२ शुक का नामान्तर ।—कान्तः (पु०) शिव ।
—कान्ता, (स्त्री०) पृथिवी ।—कायः, (पु०)
१ हाथी । २ शिव । ३ विष्णु । ४ नंदि । शिव
जी का एक गण ।—कार्तिकी, (स्त्री०) कार्तिक-
मास की पूणिमा ।—कालः, (पु०) १ शिव
जी । २ उज्जैन में महाकाल नाम की शिवजी
की प्रतिमा । ३ विष्णु । ४ कद्दू । कुम्हड़ा ।—
कालपुर, (न०) उज्जैन ।—काली, (स्त्री०)
महाकाल स्वरूप शिव को पत्नी, जिसके पाँचमुख
और आठ भुजाएं मानी जाती हैं ।—काव्यं,
(न०) महाकाव्य सर्गवद्ध होता है और उसका
नायक कोई देवता, राजा, ऋषि या धीरोदात्त गुण
सम्पन्न चरित्र होता है । इसमें शृङ्गार, वीर व शान्त
रसों में से कोई रस प्रधान होता है । बीच बीच में
अन्य रसों का भी समावेश होना आवश्यक है ।
महाकाव्य में कम से कम आठ सर्ग अवश्य हों ।
इसमें सन्ध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, प्रभात, सृगया,
पर्वत, वन, जल, सागर, संयोग, विप्रलम्भ, मुनि,
पुर, यज्ञ, रणप्रथा, विवाहादि का यथास्थान

वर्णन होना चाहिये [संस्कृत साहित्य में साधारणतः पाँच महाकाव्य माने जाते हैं । रघुवंश, कुमारसम्भव, किशोर्नुनीय, शिशुपालवध और नैषधचरित । यह लोगों की साधारणतः धारणा है किन्तु संस्कृत साहित्य में इन पाँच के अतिरिक्त भट्टिकाव्य विक्रमाङ्कदेवचरित, हर्षचरित, यादवाभ्युदय आदि और भी कई एक महाकाव्य हैं ।] कुमारः,
(पु०) राजा का सब से बड़ा पुत्र । युवराज ।
—कुल, (वि०) वह जो बहुत उत्तम कुल में
उत्पन्न हुआ हो । कुलीन ।—कृच्छ्रं, (न०)
एक बड़ा प्रायश्चित्त ।—कोशः, (पु०) शिव
जी ।—क्रतुः, (पु०) बड़ा यज्ञ जैसे अश्वमेध ।
क्रमः, (पु०) विष्णु ।—क्रोधः, (पु०) शिव ।
—क्षीरः, (पु०) दूध । उख ।—खर्चः, (पु०)
—खर्व, (न०) एक बहुत बड़ी संख्या जो सौ
खर्व की होती है ।—गजः, (पु०)—दिग्गज ।
—गणपतिः, (पु०) गणपति ।—गन्धः,
(पु०) १ जलवैत । २ कुदज ।—गन्धं, (न०)
चन्दन ।—ग्रहः, (पु०) राहु ।—ग्रीवः, (पु०)
१ ऊँट । २ शिव ।—ग्रीविन्, (पु०) ऊँट ।—
घूर्णा, (स्त्री०) शराब ।—घोषं, (न०)
बाज़ार । हाट । मेला ।—घोषः, (पु०) हो
हल्ला । शोरगुल । कोलाहल ।—चक्रवर्तिन्,
(पु०) सम्राट । बहुत बड़ा चक्रवर्ती राजा ।—
चम्पूः, (स्त्री०) बड़ी फौज ।—छायाः, (पु०)
बट वृक्ष ।—जटः, (पु०) शिव जी ।—जत्रु,
(वि०) वह जिसकी हंसली की हड्डी बहुत बड़ी
हो ।—जत्रुः, (पु०) शिवजी ।—जनः, (पु०)
१ बड़ा या श्रेष्ठ पुरुष । २ साधु । ३ जनता ।
जनसमुदाय । ४ व्यापारी मण्डल का मुखिया ।
५ व्यापारी । सौदागर ।—ज्योतिस्, (पु०)
शिव ।—तपस्, (पु०) १ बड़ा तपस्वी । २
विष्णु ।—तलं, (न०) नीचे के लोकों में से
पाँचवा लोक ।—तिकः, (पु०) नीव का वृक्ष ।
—तेजस्, (पु०) १ शूरवीर । बहादुर । २
अग्नि । ३ कार्तिकेय । (न०) पारा । पारद ।—
दन्तः, (पु०) १ बड़े दाँतों वाला हाथी । २
शिवजी ।—दण्डः, (पु०) १ बड़ी बाँह । २

कठोर दण्ड या सजा ।—दशः, (न०) देवदारु वृक्ष ।—देवः, (पु०) शिवजी ।—देवी, (स्त्री०) पार्वती जी ।—दुमः, (पु०) अश्वत्थ । बट ।—धनः, (वि०) १ बड़ा धनवान् । २ बड़ा खर्चीला । बहुमूल्य ।—धनः, (न०) १ सोना । २ गन्ध द्रव्य विशेष । ३ मूल्यवान् पोशाक ।—धनुस्, (पु०) शिवजी ।—ध्रुवः, (पु०) १ सुवर्ण । २ शिवजी । ३ मेरुपर्वत ।—नद्यः, (पु०) शिवजी ।—नदी, (स्त्री०) १ गंगा, यमुना, कुष्मा आदि बड़ी नदियाँ । २ एक नदी का नाम जो बंगाल को खाड़ी में गिरती है ।—नन्दा, (स्त्री०) १ शराब । मदिरा । २ एक नदी का नाम ।—नरकः, (पु०) २१ बड़े नरकों में से एक ।—नलः, (पु०) एक प्रकार का नरकुल या सरपत ।—नवमी, (स्त्री०) आश्विन शुक्ला १ मी ।—नाटक, (न०) नाटक के लक्ष्यों से युक्त दस अँकों वाला नाटक । यथा हनुमन्नाटक ।—नादः, (पु०) १ कोलाहल । २ बड़ा ढोल या नगाड़ा । ३ बादल की गरज । ४ शब्द । ५ हाथी । ६ सिंह । ७ कान । ८ ऊँट । ९ शिव जी ।—नादः, (न०) वाद्ययंत्र या बाजा विशेष ।—नासः, (पु०) शिवजी ।—निद्रा, (स्त्री०) मृत्यु । मौत ।—नियमः, (पु०) विष्णु जी ।—निर्वाणः, (न०) परिनिर्वाण जिसके अधिकारी केवल अर्हत् या बुद्धगण हैं ।—निशा, (स्त्री०) रात का मध्यभाग । आधी-रात । २ कल्पान्त या प्रलय की रात । ३ रात का दूसरा और तीसरा प्रहर ।

“महानिशा तु विज्ञेया मध्यमं प्रहरद्वयम् ।”

—नीचः, (पु०) धोबी ।—नीलः, (पु०) एक प्रकार का नीलम नामक रत्न जो सिंहलद्वीप में होता है ।—नृत्यः, (पु०) शिव जी ।—नेमिः, (पु०) काक । कौआ ।—पक्षः, (पु०) १ गरुड़ जी । २ एक प्रकार की बत्तख ।—पक्षी, (स्त्री०) उल्लू । पेचक ।—पञ्चमूलः, (न०) बेल, अरनी, सोनापाद, काश्मरी और पाटला इन पाँचों वृक्षों का समूह ।—पञ्चविधः, (न०) श्रद्धा, कालकूट, मुस्तक, बछनाग और शङ्खकर्ण ।

—पथः, (पु०) १ बहुत लंबा और चौड़ा रास्ता । राजपथ । २ परलोक का मार्ग । मृत्यु । मौत । ३ कई एक ऊँचे पर्वत शिखरों के नाम जिन पर लोग चढ़ कर कूदते थे, जिससे वे सीधे स्वर्ग में चले जाँय । ४ शिवजी ।—पद्मः, (पु०) १ सौ पद्म की संख्या । २ नारद जी का नामान्तर । ३ कुबेर की नौ निधियों में से एक निधि ।—पद्मः, (न०) १ सफेद कमल । २ एक नगर का नाम ।—पद्मपतिः, (पु०) नारद जी ।—पातकः, (न०) बड़ा पाप । ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की पत्नी के साथ सम्भोग तथा इनमें से कोई महापातक करने वाले का सँसर्ग—ये महापातक कहलाते हैं । कहा जाता है कि, जो ये महापातक करते हैं वे नरकयातना भोगने के अनन्तर भी सात जन्म तक वार कष्ट भोगते हैं ।—पात्रः, (पु०) महामंत्री ।—पादः, (पु०) शिव जी का नाम ।—पुरुषः, (पु०) १ बड़ा आदमी । प्रसिद्ध पुरुष । २ परमात्मा । ३ विष्णु भगवान का नामान्तर ।—पुष्पः, (पु०) कीट विशेष ।—पृष्ठः, (पु०) ऊँट ।—प्रपञ्चः, (पु०) विश्व । दुनिया ।—प्रभः, (पु०) दीपक का प्रकाश ।—प्रभुः, (पु०) १ बड़ा स्वामी । २ राजा । मुखिया । प्रधान । ४ इन्द्र । ५ शिवजी । ६ विष्णु भगवान ।—प्रलयः, (पु०) कल्पान्त । समूची सृष्टि का सर्वनाश । पुराणानुसार कल्प या ब्रह्मा के दिन के अन्त में सम्पूर्ण सृष्टि का नाश । उस समय अनन्त जलराशि को छोड़ और कुछ भी शेष नहीं रहता ।—प्रसादः, (पु०) १ बड़ा अनुग्रह । २ भगवन्मूर्ति को निवेदित वस्तु विशेष ।—प्रस्थानं, (न०) १ प्राय त्यागने की इच्छा से हिमालय की ओर जाना । २ मरण । देहान्त ।—प्राणः, (पु०) व्याकरण के अनुसार वह वर्ण जिसके उच्चारण करने में प्राणवायु का विशेष प्रयोग करना पड़ता है । वर्णमाला में प्रत्येक वर्ण का दूसरा और चौथा वर्ण महाप्राण है । यथा—

कवर्ग का ख, और घ ।

चवर्ग का छ और झ ।

टवर्ग का ठ और ड

पटवर्ग का फ और भ ।

श. व. स ह भी इस श्रेणी में हैं ।

२ पहाड़ी कौवा ।—एवः, (पु०) जलप्रलय ।—
फला, (वि०) १ कड़वी तुमड़ी । २ भाला विशेष ।
—फलं, (न०) बड़ा फल या पुरस्कार ।—बलः,
(पु०) १ पवन ।—बलं, (न०) सीसा ।
राँगा ।—बाहुः, (पु०) विष्णु ।—विलं,—
विलं, (न०) १ अन्तरिक्ष । २ हृदयस्थान ।
३ जलघट । घड़ा । ४ सूराल । बिल । गुफा ।
मौद ।—वीजः,—वीजः, (पु०) शिव जी ।—
बोधिः, (पु०) बुद्धदेव ।—ब्रह्मं,—ब्रह्मन्,
(न०) परमात्मा ।—ब्राह्मणः, (पु०) कड़िहा
ब्राह्मण । वह ब्राह्मण जो मृतक का दान लेता है ।
निकृष्ट ब्राह्मण ।—भाग, (वि०) भाग्यवान् ।
किस्मतपर । २ धर्मात्मा । बड़ा धर्मात्मा ।—भागिन्,
(वि०) बड़ा भाग्यवान् ।—भारतं, (न०)
एक परम प्रसिद्ध संस्कृत, भाषा का प्राचीन ऐति-
हासिक महाकाव्य । इसमें कौरव और पाण्डवों का
वृत्तान्त मुख्यतया है । इसमें १८ पर्व हैं और वेद-
व्यास जी का रचा हुआ है ।—भाष्यं, (न०)
१ बड़ा टीका । पाणिनि के व्याकरण पर पतञ्जलि
का लिखा हुआ प्रसिद्ध भाष्य ।—भीमः, (पु०)
राजा सान्तनु ।—भोक्तः, (पु०) खातिन नाम
का बरसाती कीड़ा ।—भुज, (वि०) बलवान्
या लंबी भुजाओं वाला ।—भूतं, (न०) पाँच
मुख्य तत्व ।—भोगा, (स्त्री०) दुर्गा देवी ।—
मतिः, (पु०) बृहस्पति ।—मदः, (पु०)
जड़मस्त हाथी ।—मनस्,—मनस्क, (वि०)
१ ऊँचे मन का । २ उदार । ३ अभिमानी । (पु०)
शरभ ।—मन्त्रिन्, (पु०) प्रधान सचिव ।—
महोपाध्याय, (पु०) गुरुओं का गुरु । बहुत
बड़ा गुरु । बड़े भारी पण्डितों की उपाधि विशेष ।
—मांसं, (न०) १ गौ का माँस । २ बर-
माँस ।—मावः, (पु०) १ प्रधान सचिव ।
२ महावत । ३ गजशाला का अध्यक्ष ।—मात्री,
(स्त्री०) १ प्रधान सचिव की पत्नी । २ दीक्षा
गृह की पत्नी ।—मायः, (पु०) विष्णु ।—

माया (स्त्री०) प्रकृति । मारी (स्त्री)
हज़ा प्लेग आदि संक्रामक रोग ।—मुष्कः, (पु०)
मगर । मड़ियाल ! कुम्भीर ।—मुनिः, (पु०)
१ बड़े मुनि । २ वेदव्यास ।—मूर्धम्, (पु०)
शिव जी ।—मूलः, (पु०) प्याज । मूल्यः,
(पु०) मालिक । लाल । बुद्धी ।—मृगः,
१ कोई भी बड़ा जन्तु । २ हाथी ।—मेदः, (पु०)
मूँगे का पेड़ ।—मोहः, (पु०) साँसारिक सुखों
के भोग की इच्छा जो अविद्या का रूपान्तर है ।
—मोहा, (स्त्री०) दुर्गा देवी ।—यज्ञः, (पु०)
पञ्च महायज्ञ ।—यात्रा, (स्त्री०) मौत ।—याम्यः,
(पु०) विष्णु ।—युगं, (न०) मनुष्यों के चार
युगों को मिला कर, देवताओं का एक युग होता
है । वही देवताओं का युग । इसमें मनुष्यों के
४, ३२०, ००० वर्ष होते हैं ।—योगिन्, (पु०)
१ शिव जी । २ भगवान् विष्णु । ३ मुर्गा ।—
रजतं, (न०) १ सोना । २ धतूरा ।—रजतं,
(न०) १ कुसुमपुष्प । २ सुवर्ण ।—रथः, (पु०)
१ बड़ा रथ । २ बड़ा भट या घोड़ा ।—रसः,
(पु०) १ जल । ईख । २ पारा । ३ मूल्यवान्
खनिजद्रव्य ।—रसं, (न०) कौड़ी ।—राजः,
(पु०) राजाओं में श्रेष्ठ । बहुत बड़ा राजा ।—
राजचूतः, (पु०) आम विशेष ।—राजिकाः,
(पु० बहुवचन०) देवता विशेष जिनकी संख्या
२२० या २३२ वतलाई जाती है ।—राज्ञी,
(स्त्री०) पटरानी । प्रधान महिला ।—रात्रिः,
—रात्री, (स्त्री०) महाप्रलय वाली रात ।—
राष्ट्रः, (पु०) १ बड़ा राज्य । २ दक्षिण भारत
का प्रान्त विशेष । ३ महाराष्ट्र देश और वहाँ के
अधिवासी ।—राष्ट्री, (स्त्री०) एक प्रकार की प्राकृत
भाषा जो महाराष्ट्र देश में बोली जाती है ।—
रूपः, (पु०) १ शिव जी । २ राल । धूना ।—
रेतस्, (पु०) शिव जी ।—रौद्र, (वि०)
बड़ा भयानक ।—रौद्री, (स्त्री०) दुर्गा देवी ।
—रौरवः, (पु०) २१ प्रधान नरकों में से एक ।
—लक्ष्मी, (स्त्री०) श्रीमन्नारायण की महा-
लक्ष्मी या शक्ति ।—लिङ्गः, (पु०) महादेव ।
—लोलः, (पु०) काक । कौआ ।—लोहं,

(न०) चुम्बक पत्थर ।—घनं, (न०) बड़ा वन ।
 मथुरा जिले का एक स्थान विशेष ।—वराहः,
 (पु०) विष्णु भगवान् ।—वसः, (पु०)
 शिशुमार । सुइस ।—वातः, (पु०) तूफान ।
 आँधी । आँध ।—वार्तिकः, (न०) पाणिनि के
 सूत्रों पर कात्यायन का वार्तिक प्रसिद्ध है ।—
 विदेहार. (स्त्री०) योगशास्त्रानुसार मन की एक
 बहिर्वृत्ति ।—विभाषा, (स्त्री०) नियम विशेष ।
 विषुव (न०) वह समय जब सूर्य मीन से
 मेष राशि में जाते हैं और दिन रात दोनों बराबर
 होते हैं । मेषसंक्रान्ति । चैत्र की संक्रान्ति ।—वीरः,
 (पु०) १ बड़ा बहादुर । २ सिंह । शेर । ३
 हृन्द् का वज्र । ४ विष्णु भगवान् । ५ गरुड़ जी ।
 ६ हनुमान जी । ७ कोयल । ८ सफेद रंग का
 घोड़ा । ९ यज्ञीय अग्नि । १० यज्ञीय पात्र विशेष ।
 ११ बाज पक्षी ।—वीर्या, (स्त्री०) सूर्यपत्नी
 संज्ञा ।—वेगः, (पु०) १ बड़ी तेज़ रफ़्तार । २
 वानर । ३ गरुड़पक्षी ।—व्याधिः, (स्त्री०) कुष्ठ
 या कोढ़ रोग ।—व्याद्वति. (स्त्री०) भूर, भुवस्
 और स्वर ।—व्रतं, (न०) वह व्रत जो बारह
 वर्ष तक जारी रहें ।—व्रतिन्, (पु०) १ भक्त ।
 संन्यासी । २ शिव जी ।—शक्तिः, (पु०) शिव
 जी । २ कार्तिकेय ।—शङ्कुः, (पु०) ललाट
 २ कनपटी की हड्डी । ३ मनुष्य की ठठरी । ४ एक
 बहुत बड़ी संख्या ।—शठः (पु०) पीला धतूरा ।
 —शलकः (पु०) भिंगा मड़ली ।—शलः,
 (पु०) एक बड़ा गृहस्थ ।—शिरसः, (पु०)
 सर्प विशेष ।—शुक्तिः, (स्त्री०) सीप जिसमें
 मोती होता है ।—शुक्लः, (स्त्री०) सरस्वती
 देवी ।—शुभ्रं, (न०) चाँदी ।—शूद्रः, (पु०)
 अहीर । खाला ।—श्मशानं, (न०) काशी का
 नामान्तर ।—श्रमणः, (पु०) बुद्ध देव का
 नामान्तर ।—श्वासः, (पु०) दम के रोग
 विशेष ।—श्वेता, (स्त्री०) १ सरस्वती का
 नामान्तर । २ दुर्गा देवी । ३ सफेद खोब ।—
 सती. (स्त्री०) बड़ी पतिव्रता स्त्री ।—सत्यः,
 (पु०) यमराज ।—सत्त्वः, (पु०) कुबेर ।—
 सान्धिविग्रहः, (पु०) युद्धसचिव जिसे युद्ध

और सन्धि करने का अधिकार हो ।—सङ्घः,
 (पु०) कुबेर ।—सर्जः, (पु०) कटहल के दू.
 या कटहल फल ।—सान्तिपनः, (न०) एक
 व्रत जिसमें पाँच दिन तक क्रम से पंचगव्य, छठवें
 दिन कुशजल पीकर सातवें दिन उपवास किया
 जाता है ।—सान्धिविग्रहिकः, (पु०) युद्ध
 सचिव जो शत्रु के साथ सुलह अथवा युद्ध करने
 का अधिकार रखता हो ।—सारः, (पु०)
 खदिर वृक्ष विशेष ।—सारथिः, (पु०) अरुण
 देव ।—साहसिकः, (पु०) डाँकू । चोर ।—
 सिंहः, (पु०) शरभ पक्षी ।—सुखं, (न०)
 १ बड़ा आनन्द । २ स्त्रीसम्भोग । सूक्ष्मा
 (स्त्री०) बालू । रेत ।—सूतः, (पु०) मारु-
 बाजा । ढोल जो युद्ध में बजाया जाता है ।—सेनः,
 (पु०) १ कार्तिकेय । २ एक बड़ी सेना का
 नायक ।—सेना, (स्त्री०) बड़ी फौज ।
 —स्कन्धः, (पु०) ऊँट ।—स्थली, (स्त्री०)
 पृथिवी ।—स्वनः, (पु०) ढोल विशेष ।—
 हंसः, (पु०) विष्णु भगवान् ।—हविस्, (न०)
 धी ।—हिमवत्, (न०) एक पर्वत का नाम ।

महिका (स्त्री०) कोहरा । पाला ।

महित (व० कृ०) सम्मानित । प्रतिष्ठाप्राप्त ।

महितं (न०) शिव जी का त्रिशूल ।

महिमन् (पु०) १ महत्व । महिमा । माहात्म्य ।
 बड़ाई । गौरव । २ प्रभाव । प्रताप । २ अणिमा
 आदि आठसिद्धियों में से पाँचवी सिद्धि ।

महिरः, (पु०) सूर्य ।

महिला (स्त्री०) १ रमणी । २ नशे में मस्त स्त्री ।
 मस्तानी हुई औरत । २ प्रियङ्गु लता । ३ रेणुका
 नाम का पौधा ।—आह्वया, (स्त्री०) प्रियगु-
 लता ।

महिलारोप्यम् (न०) दक्षिण भारत के एक नगर का
 नाम ।

महिषः (पु०) १ मैसा । २ महिषासुर जिसे दुर्गा ने
 मारा था ।—अर्दनः, (पु०) कार्तिकेय ।—
 ग्री, (स्त्री०) दुर्गा देवी ।—ध्वजः (पु०)
 यमराज ।—वहनः,—वाहनः, (पु०) यमराज ।

महिषी (स्त्री०) १ मैस । २ पटरानी । ३ पत्नी की माँदा । सैरन्ध्री । ४ छिनाल औरत । ५ पत्नी के छिनाले की कमाई ।—स्तरम्भः, (पु०) खंभा जिसके उपर मैस का सिर सजाया गया हो ।

माहिष्मत् (वि०) बहुत से भैंसों वाला । जहाँ बहुत-यत से भैंसे हों ।

मही (स्त्री०) १ पृथिवी । २ ज़मीन । ३ भूसम्पत्ति । रियासत । ज़मींदारी । ४ राज्य । देश । ५ माही नदी जो खंभात की खाड़ी में गिरती है ।—ईनः—ईश्वरः, (पु०) राजा ।—कम्पः, (पु०) भूचाल । भूकंप ।—क्षित् (पु०) राजा ।—जः, (पु०) १ मंगल ग्रह । २ वृद्ध ।—जं, (न०) अदरक । आदी ।—तलं (न०) ज़मीन की सतह ।—दुर्ग, (न०) भूदुर्ग ।—धरः, (पु०) १ पहाड़ी । २ विष्णु ।—ध्रः, (पु०) १ पर्वत । २ विष्णु भगवान ।—नाथः,—पतिः,—पः,—भुज्, (पु०)—मधवन, (पु०)—महेन्द्रः, (पु०) राजा ।—पुत्रः,—सुतः,—सूनुः, (पु०) १ मंगलग्रह । २ नरकासुर ।—पुत्री—सुता, (स्त्री०) सीता जी ।—प्रकम्पः, (पु०) भूचाल ।—प्ररोहः,—रुह, (पु०)—रुहः, (पु०) वृद्ध । पेड़ ।—प्राचीरं, (न०)—प्रावरः, (पु०) समुद्र । भर्तृ, (पु०) राजा ।—भृत्, (पु०) १ पहाड़ । २ राजा ।—लता (स्त्री०) केचुवा ।—सुरः, (पु०) ब्राह्मण ।

महीयस (वि०) अपेक्षा कृत बढ़ा । दो में बढ़ा या बलवान् । (पु०) बढ़ा या उदारमना मनुष्य ।

महीला } (स्त्री०) महिला । रमणी । नारी । स्त्री ।
महेला }

मा (अन्यथा०) वर्जनारम्भक अन्यथ ।

मा (स्त्री०) १ धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी जी । २ माता । ३ माप या मान विशेष ।—पः,—पतिः, (पु०) विष्णु भगवान ।

मा (धा० परस्मै०) [माति, मिमीते, मीयते, मित] १ नापना । २ नाप कर सीमा का चिन्ह करना । ३ आकार की तुलना करना । शरीक होना । स्थान पाना । किसी वस्तु में शरीक होना ।

मांस (न०) गोश्त ।

मांसं (न०) १ गोश्त । २ मछली । ३ फल का गूदा ।

मांसः (पु०) १ कीड़ा । २ वर्षासंकर जाति जिसका पेशा मांस बेचना है ।—अद्,—अद्,—अदिन्,—भक्तक, (वि०) मांसभक्षी । मांसघ्नो ।—अर्गलः,—अर्गलं, (न०) मांस पिण्ड जो मुख से नीचे लटकता है ।—अशनं, (न०) मांस भक्षण ।—आहारः (पु०) मांसाहार ।—उपजीवित्, (पु०) मांस बेचने वाला । मांस का सौदागर ।—ओदः, (पु०) १ भोजन जिसमें मांस हो । २ चाँवल और मांस एक साथ पकाया हुआ भक्ष्य पदार्थ विशेष ।—कारि, (न०) रक्त । खून ।—ग्रन्थिः, (पु०) गाँठ । गिल्टी ।—जं, (न०)—तेजस्, (न०) चर्बी बसा ।—द्राविन्, (पु०) खट्टा-साग विशेष ।—निर्यासः, (पु०) शरीर के रोंगटे ।—पिटकः,—पिटकं, (न०) १ मांस भरी बलिया । २ बहुत सा मांस ।—पित्तं, (न०) हड्डी ।—पेशी, १ मांस का टुकड़ा । २ रग पुट्टा । ३ भावप्रकाश के अनुसार गर्भ की वह अवस्था जो गर्भधारण के सात दिनों के बाद और १४ दिनों के भीतर होती है और प्रायः एक सप्ताह तक रहती है ।—योनिः, (पु०) रक्त मांस से उत्पन्न जीव ।—सारः,—स्नेहः, (न०) चर्बी । बसा ।—हासा, (स्त्री०) चमड़ा । चर्म ।

मांसल (वि०) १ मांस से भरा हुआ । मांस पूर्ण । २ मौटा लाज़ा । पुष्ट । ३ बलवान । मज़बूत । दृढ़ । ४ गम्भीर, जैसे स्वर ।

मांसिकः (पु०) जट्टमासी ।

माकंदः } (पु०) आम का पेड़ ।
माकन्दः }

माकंदी } (स्त्री०) १ आँवला । २ पीला चन्दन । ३
माकन्दी } महाभारत के समय का गंगातट पर बसे हुए एक नगर का नाम ।

माकर (वि०) [स्त्री०—माकरो] मकर नामक समुद्री जन्तु विशेष सम्बन्धी ।

माकरंद } (वि०) [स्त्री०—माकरंदी] पुष्प के रस
माकरंद } स सम्बन्ध युक्त । शहद से पूर्य या जिसमें
शहद मिला हो ।

माकलिः (पु०) १ माकलि का नाम । माकलि इन्द्र
का सारथी है । २ चन्द्रमा ।

मात्तिक } (वि०) [स्त्री०—मात्तिकी या मात्तीकी]
मात्तीक } मधुमक्षिका से उत्पन्न या निकला हुआ ।

मात्तिकं } (न०) १ शहद । मधु । २ शहद जैसा
मात्तीकं } खनिज पदार्थ विशेष ।—आश्रयं,—जं,
(न०) मधुमक्षिका का नैम ।

मागधः (पु०) १ मगध देश का राजा । २ वर्ण
सङ्कर जाति विशेष, जिसकी उत्पत्ति वैश्य पिता
और क्षत्रिय माता से हुई है । इस जाति का काम
वंशक्रम से किसी राजा या अपने अपने यजमानों
की विरुद्धावली पढ़ना है । ३ बंदीजन । भाट ।

मागधा } (स्त्री०) बड़ी पीपल ।
मागधिका }

मागध्राः (पु० बहुवचन) मगधदेशवासी लोग ।

मागध्रिकः (पु०) मगध देश का राजा ।

मागध्री (स्त्री०) १ मगध देश की राजकुमारी । २
मगधदेश की प्राचीन प्राकृत भाषा । ३ बड़ी
पीपल । ४ सफेद खाल । ५ जुही । जूथिका । ७
छोटी इलायची । ८ जीरा ।

माघः (पु०) १ माघ का महीना । २ संस्कृतभाषा के
शिखुपालवध काव्य के रचयिता एक कवि का
नाम ।

माघमा (स्त्री०) मकरा की मादा ।

माघवत् (वि०) [स्त्री०—माघवती] इन्द्र का ।
—वापं, (न०) इन्द्रधनुष ।

माघवती (स्त्री०) पूर्व दिशा ।

माघवन (वि०) [स्त्री०—माघवनी] इन्द्र का था
इन्द्र द्वारा शासित ।

माघ्यं (न०) कुन्द पुष्प ।

मात् (धा० परस्मै०) [मात्ति] अभिलाषा करना ।
इच्छा करना ।

मांगलिक } (वि०) [स्त्री०—माङ्गलिका] १
माङ्गलिक } शुभ । २ भाग्यवान् ।

मांगल्य } (वि०) शुभ । सौभाग्य सूचक ।
माङ्गल्य }

मांगल्यं } (पु०) १ शुभप्रदता । सन्तुष्टि ।
माङ्गल्यम् } निरुजता । २ आशीर्वाद । ३ उत्सव ।

—मृदङ्गः, (पु०) वह मृदङ्ग जो, किसी शुभा-
वसर पर बजाया जाय ।

मान्वः (पु०) मार्गः । सड़क ।

माचलः (पु०) १ चोर । डाकू । १ सगर । नक्र ।

माविका (स्त्री०) मक्खी ।

मांजिष्ठ (वि०) [स्त्री०—मांजिष्ठी] मजीठ की
तरह लाल ।

मांजिष्ठं (न०) लाल रंग ।

मांजिष्ठिक (वि०) [स्त्री०—मांजिष्ठिकी] मजीठ
के रंग में रंगा हुआ ।

माठरः (पु०) १ व्यास जी का नाम । २ ब्राह्मण ।
३ कलवार । शौचिक । ४ सूर्य का एक राश ।

माठी (स्त्री०) कवच । जिरहबस्तर ।

माडः (पु०) १ ताड़ की जाति का वृक्ष विशेष । २
तौल । नाप ।

माढिः (स्त्री०) १ अंडुर । अँलुआ । २ सम्मान ।
प्रतिष्ठा । ३ उदासी । ४ धनहीनता । ५ श्लोष ।
रोष । ६ संजफ । गोद । किनारी । ७ एक के
ऊपर एक जमे हुए दुहरे दाँत ।

माणवः (पु०) १ छोकरा । लड़का जो १६ वर्ष की
अवस्था तक का हो । २ बोना । गुरजी (तिरस्कार
सूचक शब्द) । ३ सोलह या बीस लरों का
मोतीहार ।

माणवकः (पु०) १ लड़का । छोकरा । लौंडा ।
यह भी प्रायः तिरस्कारद्योतक है । २ खर्वाकार
मनुष्य । बोना । ३ मूर्ख आदमी । ४ छात्र ।
धर्मशास्त्र पढ़ने वाला विद्यार्थी । ५ सोलह (या
बीस) लर का मोतियों का हार ।

माणवीन (वि०) लड़कपन । बचपन ।

माणव्यं (न०) बालकों या छोकरो की टोली ।

माणिका (स्त्री०) आठपल के बराबर की एक तौल ।

माणिक्यं (न०) लाल पथराग । चुन्नी ।

माणिक्या (स्त्री०) छिपकली ।

माणिक्यं
माणिक्यम्
माणिक्यं
माणिक्यम् } (न०) सँधा निमक । लाहौरी नॉन ।

मांडलिक (वि०) [स्त्री०—मांडलिकी
माण्डलिक] किसी प्रान्त या मण्डल
की रक्षा या शासन करने वाला ।

मांडलिकः (पु०) सूबेदार । किसी सूबे का
माण्डलिकः) हाकिम या शासक ।

मातंगः (पु०) १ हाथी । २ चाण्डाल । ३
मातङ्गः) किरात । ४ समासान्त शब्द के अन्त में
कोई भी अपनी जाति की सर्वश्रेष्ठ वस्तु ।—दिवा-
करः, (पु०) एक संस्कृत कवि का नाम ।—नकः,
(पु०) मगर जो झील डौल में हाथी के
समान हो ।

मातरिपुरुषः (पु०) वह जो केवल घर ही में अपनी
माता आदि के सामने अपनी वीरता प्रकट करता
हो, किन्तु घर के बाहिर कुछ भी न कर सकता
हो ।

मातरिश्वन् (पु०) पवन, जो अन्तरिक्ष में चलता
है ।

मातलिः (पु०) इन्द्र के रथवान् का नाम ।—
सारथिः, (पु०) इन्द्र का नाम ।

माता (स्त्री०) जननी । जन्म देने वाली स्त्री । माँ ।

मातामहः (पु०) नाना । माता का पिता ।

मातामही (स्त्री०) नानी ।

मातामहौ (द्विवचन) नाना नानी ।

मतिः (स्त्री०) १ नाप । २ विचार । खयाल ।

मातुलः (पु०) १ मामा । माता का भाई । २ धतुरे
का पौधा । ३ सर्प विशेष ।—पुत्रकः, (पु०)
१ मामा का पुत्र । २ धतुरे का फल ।

मातुलंगः } देखो—मातुलिङ्ग ।
मातुलङ्गः }

मातुला (स्त्री०) } १ मामा की पत्नी । मामी ।
मातुलानी (स्त्री०) } २ पटसन । सन ।
मातुली (स्त्री०) }

मातुलिङ्गः
मातुलिङ्गः
मातुलङ्गः
मातुलङ्गः } (पु०) विजौरा नीबू ।

मातुलिङ्गं
मातुलिङ्गं
मातुलङ्गं
मातुलङ्गम् } विजौरा नीबू का फल ।

मातुलेयः (पु०) [स्त्री०—मातुलेयी] मामा
का लड़का ।

मातृ (स्त्री०) १ माता । २ पूज्य या आदरणीय
शब्द । बड़ी बड़ी स्त्री । ३ गौ । ४ लक्ष्मी देवी ।
५ दुर्गा देवी । ६ पृथिवी । ७ ज्योम । आकाश ।
८ देवमातृका जो संख्या में सोलह हैं ।—
केशवः, (पु०) मामा - गणः, (पु०) षोडश
मातृ का ।—गोत्रं, (न०) माता के गोत्र का ।—
घातः,—घातकः,—घातिन्,—घ्नः, (पु०)
मातृहन्ता ।—घातुकः, (पु०) १ मातृहन्ता । २
इन्द्र ।—चक्रं, (न०) मातृकाओं का समूह ।
—देवः, (वि०) वह जो अपने माता ही को
अपना इष्टदेव मानता हो ।—नन्दनः, (पु०)
कार्तिकेय ।—पुत्रः, (वि०) माता के कुल का ।
—पूजनं, (न०) मातृकाओं का पूजन ।—
वन्धुः,—बन्धवः, (पु०) माता के सम्बन्ध
का कोई आत्मीय ।—मण्डलं, (न०) १ मातृ-
काओं का समुदाय । २ दोनों नेत्रों के बीच का
स्थान ।—मातृ, (स्त्री०) पार्वती देवी ।—
मुखः, (पु०) मुख या मुँह जन ।—यज्ञः,
(पु०) एक यज्ञ विशेष जो मातृकाओं के उद्देश्य
से किया जाता है ।—वत्सलः, (पु०) कार्ति-
केय ।—स्वसृ (स्त्री०) [= मातृवत्सृ या
मातृस्वसृ] मौसी का लड़का ।

मातृक (वि०) १ माता सम्बन्धी । माता से प्राप्त ।
२ माता का । मातापक्षीय ।

मातृकः (पु०) मामा ।

मातृका (स्त्री०) १ माता । २ दादी । ३ धात्री ।
दाई । ४ उद्भवस्थान । ५ देवी । देवमाता । ६
तांत्रिक यंत्र विशेष । ७ यंत्र में लिखे जाने वाले
अक्षर या वर्ण ।

मात्र (वि०) [स्त्री०—मात्रा, मात्री] नाप, केवल, भर, और सिर्फ अर्थवाची अव्यय विशेष ।

मात्रा (स्त्री०) १ परिमाण । मिकदार । २ नाप का परिमाण । नियम । ३ ठीक ठीक नाप । ४ एक फुट । ५ पल । जहमा । ६ अशु । ७ अंश । छोटा नाप । ८ काम का । उपयोग का । [यथा:—
“ सन्नेति किमस्ती मात्रा ।”

अर्थात् राजा किस प्रयोजन या काम का है] । १० धन । सम्पत्ति । ११ छन्दःशास्त्र में इसे मत्त, मत्ता, कल या कला कहते हैं । १२ तत्त्व । १३ जगत्प्रसक्त संसार । १४ बारहलक्षी लिखते समय स्वरसूचक वे सङ्केत जो अक्षर के ऊपर, नीचे, आगे या पीछे लगाये जाते हैं । १५ कान को बाजो । १६ आभूषण । रत्न ।—भस्त्रा, (स्त्री०) रुपये रखने की थैली या बटुवा ।

मात्सर (वि०) [स्त्री०—मात्सरी] } (वि०)
मात्सरिक (न०) [स्त्री०—मात्सरिकी] } डाही । ईर्ष्यालु ।

मात्सर्य (न०) ईर्ष्या । डाह । जलन ।

मास्त्यकः (पु०) मलुआ । धीवर । माहीगीर ।

माथः (पु०) १ मंथन । विलोना । गडबड करना । २ हत्या । नाश । ३ मार्ग । रास्ता ।

माथुर (वि०) [स्त्री०—माथुरी] १ मथुरा का । २ मथुरा में उत्पन्न । ३ मथुरा में रहने वाला ।

मादः (पु०) १ नशा । मद । २ हर्ष । आनन्द । ३ अभिमान । अकड़ ।

मादक (वि०) [स्त्री०—मादिका] १ बेहोश करने वाला । नशा पैदा करनेवाला । २ आनन्ददायिक ।

मादन (वि०) नशीला ।

मादनं (वि०) १ नशा । मद । २ प्रसन्नकर । ३ लौंग ।

मादनः (वि०) १ कामदेव । २ धतूरा ।

मादनीयं (वि०) नशा लाने वाला पेय पदार्थ ।

मादुक्त } (वि०) [स्त्री०—मादुक्ती, मादुक्ती]
मादुक्ता } मेरी तरह । मेरे सदृश ।
मादुक्ता }

मादुकः (पु०) मद्र देश का राजकुमार ।

मादुवती (स्त्री०) माद्री राजा पाण्डु की दूसरी रानी का नाम ।

माद्री (स्त्री०) राजा पाण्डु की दूसरी रानी जिसके गर्भ से नकुल और सहदेव की उत्पत्ति हुई थी ।
—नन्दनः, (पु०) । नकुल और सहदेव ।
—पतिः, (पु०) पाण्डु का नामान्तर ।

माद्रेयः (पु०) नकुल और सहदेव ।

माधव (वि०) [स्त्री०—माधवी] १ शहव की तरह मीठा । २ शहद से तैयार किया गया । ३ वसन्तकालीन । मधु दैत्य के वंश का ।

माधवः (पु०) १ श्रीकृष्ण । २ वसन्त ऋतु । कामदेव का सखा । ३ वैशाख मास । ४ इन्द्र । ५ परशुराम । ६ (बहुवचन में) यादव गण । ७ एक प्रसिद्ध संस्कृत के विद्वान् का नाम । यह माथण के पुत्र और सायण के भाई थे । इनका काल १२वीं शताब्दी माना गया है । इनके बनाये कितने ही प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थ हैं । कहा जाता है कि, सायण और माधव ने मिल कर, ऋग्वेद भाष्य बनाया था ।—श्री, (स्त्री०) वसन्त ऋतु की शोभा ।

माधवकः (पु०) मधुष की शराब ।

माधविका (स्त्री०) माधवी लता ।

माधवी (स्त्री०) १ मिली । २ शहद से बनायी हुई मदिरा विशेष । ३ माधवी नाम की लता । ४ तुलसी वृक्ष । ५ कुन्नी ।—लता, (स्त्री०) माधवी की बेल ।—वनं, (न०) माधवी लता की कुञ्ज ।

माधवीय (वि०) माधव सम्बन्धी ।

माधुकर (वि०) मधुमक्षिका सम्बन्धी या मधु-मक्षिका सदृश ।

माधुकरी (स्त्री०) १ भिक्षा जो घर घर माँग कर इकट्ठी की गयी हो । २ पाँच घरों से मिली हुई भिक्षा ।

माधुरं (न०) मखिलका लता का पुष्प ।

माधुरी (स्त्री०) १ मिठास । मधुर स्वाद । २ मदिरा । शराब ।

माधुर्य (न०) १ मिठास । मकर होने का भाव ।
मधुरता २ लावण्य सौन्दर्य ३ पाचाली राति
के अन्तर्गत काव्य की एक विशेषता जिससे चित्त
बहुत प्रसन्न होता है । ४ सात्विक नायक का
एक गुण ।

माध्य (वि०) बीच का । मध्य का ।

माध्यमिनः (पु०) वाजसनेद्यों की एक शाखा का
नाम ।

माध्यमिन् (न०) शुद्ध यजुर्वेद की एक शाखा ।

माध्यम (वि०) [स्त्री०—माध्यमी] बीच का ।
बिचले भाग का । मध्य का ।

माध्यमक (वि०) [स्त्री०—माध्यमिका]

माध्यमिक (वि०) [स्त्री०—माध्यमिकी]
मध्य । बीच का । केन्द्रवर्ती ।

माध्यस्थ्यं } (न०) १ निरपेक्षता । २ तटस्थता ।
माध्यस्थ्यं } ३ बीच विचार ।

माध्याह्निक (वि०) दोपहर सम्बन्धी ।

माध्व (वि०) मधुर ।

माध्वः (पु०) मध्वाचार्य सम्प्रदाय का अनुयायी ।

माध्वी (स्त्री०) मदिरा । शराब ।

माध्वीकं (न०) १ मदिरा । शराब । २ द्राक्षा से
निकाली हुई शराब । ३ अँगूर । द्राक्षा ।—फलं,
(न०) नास्त्यल विशेष ।

मानः (पु०) १ सम्मान । प्रतिष्ठा । २ अभिमान ।
वर्मद । आत्मसम्मान । आत्मनिर्भरता । ३ गर्व ।
मद । ४ अहंकार से उत्पन्न क्रोध ।—दण्ड,
(न०) राज । नापने का एक ढंडा ।—धानिका,
(स्त्री०) ककड़ी ।—रंभा, (स्त्री०) जलबड़ी
का कटोरा ।—सूत्रं, (न०) नापने का फीता ।
नापने की जंजीर, जिसे जरीय कहते हैं ।

मानं (न०) १ नाप । तौल । परिमाण । मिकदार । २
प्रमाण । ३ सम्मानना । सादृश्य ।

मानःशिला (वि०) मनःशिला या मनसल सम्बन्धी ।

माननं (न०) १ प्रतिष्ठा । सम्मान । २ वच ।
मानना (स्त्री०) इत्या ।

माननीय (वि०) पूज्य सम्मान योग्य ।

मानव (वि०) १ [स्त्री०—मानवी] १ मनु के वंश-
धर या मनु के वंश वाले । २ इंसानी । मनुष्य का ।

मानवः (पु०) १ मनुष्य । नर । २ मानव जाति ।—
इन्द्रः, देवः,—पनिः, (पु०) राजा । सरेन्द्र ।
—धर्मशास्त्रं, (न०) मनुसंहिता ।—
राक्षसः, (पु०) मनुष्य रूप धारी राक्षस ।

मानवत् (वि०) अभिमानी । अहंकारी ।

मानवती (स्त्री०) अभिमानिनी स्त्री ।

मानव्यं (न०) लड़कों या युवकों की टोली ।

मानस (वि०) १ मन सम्बन्धी । मानासिक । २ मन
से उत्पन्न । ३ मन में विचारा हुआ । ४ मान
सरोवर पर रहने वाला ।

मानसं (न०) १ मन । हृदय । २ मानसरोवर । ३
लवण विशेष ।—आलयः, (पु०) राजद्वार ।—
उल्क, (वि०) मानसरोवर जाने की उल्क ।—
आकस्—चारिन्, (पु०) १ हँस । २ काम-
देव ।

मानसः (पु०) विष्णु भगवान का एक रूप ।

मानसिक (वि०) मन सम्बन्धी ।

मानसिकः (पु०) विष्णु भगवान का नामान्तर ।

मानिका (स्त्री०) १ शराब । मदिरा । २ तौल विशेष ।

मानित (व० क०) सम्मानित । प्रतिष्ठित ।

मानुष (वि०) [स्त्री—मानुषी] १ मानवी । २
सहृदय । दयालु । अनुग्रहशील ।

मानुषं (न०) १ इंसानियत । मनुष्यत्व । २ पुरुषार्थ ।

मानुषः (पु०) १ मनुष्य । नर । २ मिथुन, कन्या
और तुला राशियों का नामान्तर ।

मानुषक (वि०) मनुष्य सम्बन्धी । मनुष्य का ।

मानुष्यम् } (न०) १ मानवी प्रकृति । मनु-
मानुष्यकम् } ष्यत्व । मानव जाति । २ मानव
समुदाय ।

मानोज्ञकं (न०) सौन्दर्य । मनोज्ञता ।

मात्रिकः (पु०) तांत्रिक । ऐन्द्रजालिक । जादूगर ।
बाजीगर ।

माथ्यर्थ } (न०) १ सुस्ती । श्रान्ति । थकावट ।
मान्ययम् } २ निर्बलता । कमजोरी ।

मांदारः }
मान्दारः } (पु०) वृक्ष विशेष ।
मांदारवः }
मान्दारवः }

मांथं } (न०) १ सुस्ती । काहिली । दीर्घसूत्रता ।
मान्थं } २ मूर्खता । ३ निर्बलता । कमजोरी । ४
वैराग्य । उदासीनता । ५ रोग । बीमारी ।

मांधात् } (पु०) युवनाथ राजा के पुत्र का नाम ।
मान्धात् } यह एक इतिहास प्रसिद्ध राजा होगया है
और राजा मान्धाता के नाम से प्रसिद्ध है ।

मान्मथ (वि०) [स्त्री०—मान्मथी] प्रेम सम्बन्धी ।
प्रेमोत्पन्नकारी ।

मान्य (वि०) १ मानने योग्य । माननीय । पूज्य ।

मापनं (न०) १ नाँप । २ बनावट ।

मापनः (पु०) तराजू ।

मापत्यः (पु०) कामवेव ।

माम (वि०) [स्त्री०—मामी] १ मेरा । २ चाचा
(सम्बोधन में) ।

मामक (वि०) [स्त्री०—मामिका] १ मेरा । २
स्वार्थी । लालची ।

मामकः (पु०) १ कंजूस । २ मामा ।

मामकीन (वि०) मेरा ।

मायः (पु०) १ बाजीगर । जादूगर । तांत्रिक । २
राक्षस । दानव । प्रेत ।

माया (स्त्री०) १ कपट । छल । प्रवञ्चना । ठगी ।
धोखा । २ ऐन्द्रजाल । जादू का खेल । ३ अविद्या ।

अज्ञान । भ्रम । ४ राजनैतिक धोखाधड़ी । ५
प्रधान या प्रकृति । ६ दुष्टता । ७ अनुकम्पा । ८

बुद्धदेव की माता का नाम ।—कारे—कृत्—
जीविन् (पु०) जादूगर । बाजीगर ।—यर्थ, (न०)

किसी को मोहने की विद्या । सम्मोहन ।—वादः,
(पु०) ईश्वर के अतिरिक्त सृष्टि की समस्त वस्तुओं

को अनित्य मानने का सिद्धान्त । इस सिद्धान्त के
अनुसार यह सारी सृष्टि केवल मिथ्या समझी जाती

है ।—सुतः, (पु०) बुद्ध देव ।

मायावत् (वि०) १ छली । कपटी । धोखेवाज़ । २
मायावी । बाजीगर । जादूगर । ३ अमात्मक
असत्य । (पु०) कंस का एक नाम ।

मायावती (स्त्री०) प्रद्युम्न की पत्नी का नाम ।

मायाविन् (वि०) १ धोखेवाज़ । छलिया । कपटी ।
२ बाजीगरी में निपुण । ३ असत्य । अमात्मक ।

(पु०) ऐन्द्रजालिक । बाजीगर । जादूगर । २
बिल्ली । (न०) माजूफल ।

मायिक (वि०) १ धोखेवाज़ । कपटी । छलिया । २
अमात्मक । असत्य ।

मायिकं (न०) माजूफल ।

मायिकः (पु०) बाजीगर । जादूगर ।

मायिन् (पु०) १ बाजीगर । २ गुंडा । कपटी । ३
ब्रह्मा या कामदेव का नामान्तर ।

मायुः (पु०) १ सूर्य । २ पित्र ।

मायूर (वि०) [स्त्री०—मायूरी] १ मोर का । २
मोर के पंखों का बना हुआ । ३ मोर की खींची
हुई जैसे गाढ़ी । ४ मोरप्रिय ।

मायूरं (न०) मोरों की ढोली ।

मायूरकः } (पु०) मोर पकड़ने वाला । चिड़ी-
मायूरिकः } मार ।

मारः (पु०) १ हनन । मारण । २ बाधा । अड़चन ।
विरोध । ३ कामदेव । ४ प्रेम । आसक्ति । ५

धतुरा । ६ संहारक । अरिः,—रिपुः, (पु०)
शिव जी ।—आत्मक, (वि०) हत्याजनक ।—

जित्, (पु०) १ शिव जी का नाम । २ बुद्धदेव
का नाम ।

मारकः (पु०) १ प्लेग आदि कोई भी संक्रामक या
फैलने वाली बीमारी । २ कामदेव । ३ हत्यारा ।
घातक । ४ वाजपक्षी ।

मारकत (वि०) [स्त्री०—मारकती] पक्षा
सम्बन्धी ।

मारणं (न०) १ मारना । नष्ट करना । हत्या करना ।
२ तांत्रिक । षट्कर्मों में से एक । शत्रुनाश । ३

भस्मीकरण । ४ विष विशेष ।

मारिः (स्त्री०) १ मरी। प्लेग। २ हनन। नाश।

मारिच (कि०) [स्त्री०—मारिची] मिर्च का बना हुआ।

मारिषः (पु०) १ प्रलिष्टिष। माननीय।

मारी (स्त्री०) १ प्लेग। संक्रामक रोग। २ मरी रोग की अधिष्ठात्री देवी जैसे दुर्गा।

मारीचः (पु०) १ रामायण के अनुसार वह राक्षस जिसने सोने का हिरन बन कर, सीता जी को धोखा दिया था। २ बादशाही हाथी। बड़े डीलडौल का हाथी। ३ पैधा विशेष।

मारीचम् (न०) मिर्च की भाड़ियों का समुदाय।

मारुंडः } (पु०) १ सर्प का अँडा। २ गोमय।
मारुण्डः } गोबर। ३ मार्ग। सड़क।

मारुत (वि०) [स्त्री०—मारुती] १ मरुत सम्बन्धी। २ पवन सम्बन्धी।

मारुतं (न०) स्वाति नक्षत्र।—अश्विनः (पु०) सर्प। साँप।—आत्मजः,—सुतः,—सूनुः, (पु०) १ हनुमान जी। २ भीम।

मारुतः (पु०) १ पवन। हवा। २ पवनदेव। ३ स्वांसा। ४ वायु, कफ, पित्त में से वायु। ५ हाथी की सूँड़।

मार्कंडः } (पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
मार्कण्डः } इनकी गणना चिरजीवियों में है।—
मार्कण्डेयः } पुराणों, (न०) अष्टादश पुराणों में से
मार्कण्डेयः } एक।

मार्ग (धा० परस्मै०) [मार्गति, मार्गयति, मार्गयते] १ ढूँढ़ना। खोजना। तलाश करना। शिकार खेलना। २ याचना करना। माँगना। ३ विवाह के लिये माँगना।

मार्गः (पु०) १ रास्ता। सड़क। पथ। २ पगडंडी। राह। ३ पहुँच। ४ गूत। निशानी। चिन्ह। ५ ग्रह का मार्ग। ६ खोज। अनुसन्धान। तहकीकात। ७ नहर। बंधा। नाली। ८ उपाय। साधन। ९ उचित मार्ग। ठीक राह। १० ढंग। तौर। तरीका। ११ शैली। १२ गुदा। मलद्वार। १३ कस्तूरी। १४ मृगशिरस नक्षत्र। १५ मार्गशीर्ष मास।—तोरणम्, (न०) सड़क पर किसी विशेष अवसर के लिये

बनाया हुआ महारावदार द्वार।—दर्शकः, (पु०) पथप्रदर्शक।—धेनुः (पु०)—धेनुर्कं, (न०) एक भोजन का परिमाण।—वन्धनं, (न०) कच्ची मोर्चाबंदी। आड़। नाकेबंदी।—रक्षकः, (पु०) सड़क पर पहरा देने वाला।—शोधकः, (पु०) वह मनुष्य जो औरों के लिये आगे आगे राह बनाता चलता है।—स्थ, (वि०) यात्री। पथिक।—हर्म्य (न०) सड़क के किनारे बना हुआ महल।

मार्गकः (पु०) मार्गशीर्ष मास।

मार्गणं (न०) } १ याचना। माँग। खोज।
मार्गणा (स्त्री०) } तलाश। ३ अनुसन्धान। तहकीकात।

मार्गणः (पु०) १ भिक्षुक। २ तीर। बाण। ३ पाँच की संख्या।

मार्गशिरः }
मार्गशिरस् } (पु०) अगहन का महीना।
मार्गशीर्षः }

मार्गशिरा } (पु०) पूस की पूर्णमासी।
मार्गशीर्षा }

मार्गिकः (पु०) १ यात्री। पथिक। २ शिकारी।

मार्गित (व० कृ०) १ तलाश हुआ। खोजा हुआ। दर्याप्त किया हुआ। २ अभिलषित। याचित।
मार्ज (धा० डभ्य०) [मार्जयति, मार्जयते] १ पवित्र करना। साफ करना। झाड़ना। पोंछना। २ शब्द करना। बजाना।

मार्जः (पु०) १ माँजना। सफा करना। २ धोबी। ३ विष्णु का नामान्तर।

मार्जक (वि०) [स्त्री०—मार्जिका] साफ करने वाला। माँजने वाला।

मार्जनं (न०) १ साफ करने का भाव। स्वच्छ करना। २ झाड़ना। पोंछना। ३ मिटा देना। रगड़ डालना। ४ उबटन लगा कर किसी आदमी को नहलाना। ५ कुश से पानी छिड़कना।

मार्जनः (पु०) जोधवृक्ष।

मालः (पु०) १ दक्षिणी पश्चिमी बंगाल के एक

जिले का नाम । २ एक पहाड़ी जाति । ३ विष्णु का नाम ।

मार्जना (स्त्री०) डोल का शब्द ।

मार्जनी (स्त्री०) काढ़ । बुहारी ।

मार्जरः (पु०) १ बिल्ली । बिलार । २ ऊद-

मार्जलः (पु०) १ विलाव ।—कण्ठः, (पु०)

मोर ।—करणं, (न०) क्षीमैथुन का आसन विशेष ।

मार्जरकः (पु०) १ बिल्ली । २ मयूर ।

मार्जारी (स्त्री०) १ बिल्ली । २ गन्धमार्जार । ३ मृशक । कस्तूरी ।

मार्जारीयः (पु०) १ बिल्ली । २ शूद्र ।

मार्जित (व० कृ०) १ साफ किया हुआ । शुद्ध किया हुआ । २ बुहारा हुआ । ३ सजाया हुआ ।

मार्जिता (स्त्री०) चीनी मिला हुआ दही ।

मार्तण्डः } (पु०) १ सूर्य । २ अर्क । मदार । ३
मार्तण्डः } शूकर । ४ बारह की संख्या ।

मार्तिक (वि०) [स्त्री०—मार्तिकी] १ मिट्टी का बना हुआ । मिट्टी का ।

मार्तिकः (पु०) १ घड़ा विशेष । २ घड़ा का ढकना ।

मार्तिक (न०) मिट्टी का डेला ।

मार्त्य (न०) मरण-धर्म-शीलता ।

मार्द्वंग } (न०) नगर । कत्वा ।
मार्द्वङ्गः }

मार्द्वंगः } (पु०) मृदंगची ।
मार्द्वङ्गः }

मार्द्वंगिकः } (पु०) मृदंगची ।
मार्द्वङ्गिकः }

मार्दवं (न०) १ कोमलता । २ मृदुता । सरलता ।

मार्द्वीक (वि०) [स्त्री०—मार्द्वीकी] अँगूर का बना हुआ ।

मार्द्वीक (न०) अँगूरी शराब ।

मार्मिक (वि०) मर्मज्ञ । भली भाँति किसी वस्तु या विषय से परिचित ।

मार्प देलो मारिष ।

मार्ष्टिः (स्त्री०) सफाई । स्वच्छता । विशुद्धता ।

मालं (न०) १ खेत । २ ऊँची ज़मीन । ३ छल । दगा ।—चक्रकं, (न०) पुष्टे पर का वह जोड़ जो कमर के नीचे जाँघ की हड्डी और कूटहे में होता है । कूटहा ।

मालकं (न०) हार । माला ।

मालकः (पु०) १ नीम का पेड़ । २ गाँव के समीप का वन । ३ नरैरी का बना पात्र ।

मालतिः } (स्त्री०) १ लता विशेष जिसके फूल बड़े
मालती } सुशबूवार होते हैं । २ मालती का फूल ।

३ कली । ४ कारी युवती स्त्री । ५ राव । ६ चाँदनी ।—त्तारकः, (पु०) सुहागा ।—

पत्रिका, (स्त्री०) जायफल का छिलका ।—

फलं, (न०) जायफल ।—माला, (स्त्री०)

मालती पुष्पों की माला ।

मालय (वि०) [स्त्री०—मालयी] मलय पर्वत का ।

मालयः (पु०) चन्दन काष्ठ ।

मालवः (पु०) १ मध्य भारत का स्वनामख्यात मालवा प्रान्त । २ राग विशेष ।

मालवकः (पु०) १ मालवियों का देश । २ मालवा निवासी । मालवी ।

मालवाः (पु० बहुवचन) मालवा देशवासी ।

मालसो (स्त्री०) एक पौधे का नाम ।

माला (स्त्री०) १ हार । पुष्पहार । २ पंक्ति ।

अवली । ३ समूह । ढेर । गुच्छा । ४ लड़ । कण्ठ-

हार । ५ माला । जंजीर । ६ रेखा जैसे तडिन्माला ।

विद्युन्माला । ७ अनेकों की उपाधियाँ ।—उपमा,

(स्त्री०) एक प्रकार का उपमा अलंकार जिसमें

एक उपमेय के अनेक उपमान होते हैं और प्रत्येक

उपमान के भिन्न भिन्न धर्म होते हैं ।—कारः,

या—करः, (पु०) १ माली । २ माली की

जाति । ३ पुराणानुसार एक जानि जो विश्वकर्मा

और शूद्रा के संयोग से उत्पन्न हुई है । किन्तु

पराशर पद्धति से यह तेलिन और कर्मकार से

उत्पन्न है । वर्षासङ्कर जाति विशेष ।—तृणः,

(न०) एक सुगन्ध युक्त तृण विशेष ।—दीप-

कम्, (न०) एक अलंकार का नाम । सम्मट ने इसकी परिभाषा यह लिखी है ।

“ मालोदीपशपावर् चैव्योन्नयुक्तावहम् ।”

कान्यप्रकाश

मालिकः (पु०) १ माली । २ रंगरेज । चितेरा ।

मालिका (स्त्री०) १ गजरा । २ अबली । पंक्ति । ३ लर । गुंज । ४ चमेली की जाति का पौधा विशेष । ५ अलसी । ६ पुत्री । ७ विशेष । ८ नशीली पेय वस्तु ।

मालिन (वि०) माला पहिने हुए । (पु०) माली ।

मालिनी (स्त्री०) १ मालिन । माली की स्त्री । २ चम्पा नामक नगरी । ३ सात वर्ष की कन्या जो दुर्गा पूजा में दुर्गा की प्रतिनिधि मान कर पूजी जाती है । ४ दुर्गादेवी का नामान्तर । ५ आकाश-गङ्गा । ६ एक वार्षिक वृत्त का नाम ।

मालिन्यं (न०) १ मैलापन । गंदगी । अशुद्धता । २ अष्टता । ३ पापमयता । ४ कृष्णता । काला-पन । ५ कष्ट । सन्ताप ।

मालुः, (स्त्री०) १ जला विशेष । २ स्त्री ।—धानः, (पु०) सर्प विशेष ।

मालूरः (पु०) १ बेल का पेड़ । २ कैथे का पेड़ ।

मालेया (स्त्री०) बड़ी इलायची ।

माल्य (वि०) १ माला सम्बन्धी । माला के लिये उपयुक्त । २ फूल । ३ पुष्पों का बना गुच्छा जो सिर के केशों में बाँधा जाता है ।—आपणः, (पु०) वह बाज़ार जहाँ फूल बिकते हों । फूल-बाजार ।—जीवकः, (पु०) माली ।—पुष्पः, (पु०) सनई । सन का पौधा ।

माल्यवत् (पु०) माला पहिने हुए । (पु०) १ एक पर्वत माला या पर्वत का नाम । २ एक दैत्य का नाम । जो सुकेतु का पुत्र था ।

माल्लः (पु०) एक वर्णसंकर जाति जो ब्रह्मवैवर्त पुराणानुसार लेट जाति के पिता और धीवरी माता से उत्पन्न कही गयी है ।

माल्लवी (स्त्री०) १ मल्लयुद्ध । पहलवानों का दंगल । २ मल्लों की विद्या या कला ।

माघः (पु०) १ उर्दू या उर्दी । २ माशा । तौल विशेष । ३ मूर्ख । मूढ़ ।—आदः,—आदः, (पु०) कड़वा ।—आशः, (पु०) बोधा ।—ऊन, (वि०) एक माशा कम ।—वर्धकः (पु०) सुनार ।

माघिक (वि०) [स्त्री०—माघिकी] एक माशा मूल्य का ।

माघोणं } (न०) उर्दी का खेत ।
माघ्यं }

मासं (न०) १ महीना । २ बारह की संख्या । मासः (पु०) ।—आनुमासिक, (वि०) माह व मास । प्रतिमास । माहवार ।—उपवासिनी, (स्त्री०) वह औरत जो महीने भर उपासी रहै । २ कुटिनी ।—प्रमितः, (पु०) अमावास्या प्रतिपदादि ।—मानः, (पु०) वर्ष । साल ।

मासकः (पु०) महीना ।

मासरः (पु०) चॉवल का माँड़ ।

मासलः (पु०) वर्ष । साल ।

मासिक (वि०) [स्त्री०—मासिकी] १ मास सम्बन्धी । २ प्रतिमास होने वाला । ३ एक मास तक रहने वाला । ४ प्रतिमास में अदा किया जाने वाला । ५ एक मास के लिये (कोई घर या पदार्थ) किसी काम के लिये लिया हुआ ।

मास्तिकं (न०) मासिक श्राद्ध जो किसी मृतक के उद्देश्य से उसके मरने के प्रथम वर्ष में किया जाता है ।

मासीन (वि०) १ एक मास की उम्र का । २ मासिक ।

मासुरी (स्त्री०) ढाड़ी ।

माह् (धा०—उभय०) [माहति, माहते] नापना

माहाकुल (वि०) [स्त्री०—माहाकुली] }
माहाकुलीन (वि०) [स्त्री०—माहाकुलीनी] }
उच्चकुलोद्भव । छान्दानी ।

माहाजनिक (वि०) [स्त्री०—माहाजनिकी] }
माहाजनीन (वि०) [स्त्री०—माहाजनीनी] }

१ व्यापारी के उपयुक्त । सौदागरों के खायक ।
२ बड़े लोगों के योग्य ।

माहात्मिक (वि०) [स्त्री०—माहात्मिकी] उदार-
शय । महाबुभाव । गौरवास्पद ।

माहात्म्य (न०) महिमा । गौरव । महत्व ।

माहाराजिक (वि०) [स्त्री०—माहाराजिकी]
शाही । राजसी ।

माहाराज्य (न०) बड़ा राज्य ।

माहिरः (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।

माहिकः (पु०) भैसा रखने वाला ।

माहिकः (पु०) १ भैसा रखने वाला । अहीर ।
२ जार । छिनाल औरत का चाहने वाला ।

माहिकीयुच्यते कारी या च स्याद् व्यनक्ति रिक्ते ।
तां वृष्टां कामयति यः स वै माहिकः स्मृतः ॥

कालिकापुराण ।

४ अपनी स्त्री की छिनाले की आमदनी पर
निर्वाह करने वाला ।

माहिष्मती (स्त्री०) हैहय राजवंशी राजाओं की
राजधानी ।

माहिष्यः (पु०) कत्रिय बाप और वैश्य माता से
उत्पन्न वर्णसङ्कर जाति विशेष ।

माहेन्द्र (वि०) इन्द्र सम्बन्धी ।

माहेन्द्री (स्त्री०) १ पूर्व दिशा । २ सौ । ३ इन्द्राणी ।

माहेय (वि०) मिट्टी का बना हुआ ।

माहेयः (पु०) १ मङ्गलग्रह । २ मूँगा ।

माहेयी (स्त्री०) सौ ।

माहेश्वरः (पु०) शैव । शिव का पूजक ।

मि (धा०—उभय०) [मिनोति, मिलुते] १ फैकना ।
पटकना । छितराना । २ बनाना । बना कर लक्ष्य
करना । ३ नापना । ४ स्थापित करना । ५
देखना । पहचानना ।

मिच्छ् (धा० परस्मै०) [मिच्छति] १ अङ्गुली
डालना । बाधा डालना । २ चिढ़ाना ।

मित (व० कृ०) १ नापा हुआ । ३ जो सीमा के
अंदर हो । परमित । ३ आँचा हुआ । पड़ताला
हुआ ।—अन्तर, (वि०) १ संचित । २ पद्यात्मक ।
—अर्थ, (वि०) परिमित अर्थ का ।

मितंगम (वि०) भीमे चलने वाले ।

मितंगमः (पु०) हाथी ।

मितंपच (वि०) थोड़ा पकाने वाला ।

मितिः (स्त्री०) (१) १ मान । परिणाम । २ प्रमाण ।
साक्षी । ३ यथार्थ ज्ञान ।

मित्रं (न०) १ मित्र । २ मित्र राज्य ।

मित्रः (पु०) १ सूर्य । २ आदिश्व —आचारः,
(पु०) मित्र के प्रति व्यवहार ।—उद्द्यः,
(पु०) सूर्योद्द्य । २ मित्र की समृद्धि ।—कर्मन्,
(न०)—कार्य, —कृत्यं, (न०) मित्रता का
कार्य । मित्र का कार्य ।—इष्ट, (वि०) विश्वास-
घाली ।—द्रुह्—द्रोहिन्, (वि०) मित्र के
साथ विश्वासघात करने वाला । बनावटी या
सूडा मित्र ।—भावः, (पु०) मैत्री ।—भेदः,
(पु०) मैत्री-मङ्गल ।—वत्सल, (वि०) मित्र
पर दया करने वाला ।—हत्या, (स्त्री०) दोस्त
का वध ।

मित्रयु (वि०) १ मिलनसार । मित्र बनाने वाला ।

मिथ् (धा० उभय०) [मेथति—मेथते] १ संग
करना । २ मिलाना । जोड़ा बाँधना । संगम
करना । ३ चोटिल करना । घायल करना । आघात
पहुँचाना । प्रहार करना । बध करना । ४ सम-
झाना । पहचानना । जानना । ५ भगड़ा
करना ।

मिथस् (अन्यथा०) १ पारस्परिक । आपस का ।
एक दूसरे का । २ चुपके चुपके । गुप्तरीत्या ।
निज तौर से ।

मिथिलः (पु०) एक राजा का नाम ।

मिथिला (स्त्री०) एक नगरी का नाम, जो विदेह
देश की राजधानी थी ।

मिथिलाः (पु०—बहुवचन०) मैथिल जाति के लोग ।

मिथुनं (न०) १ जोड़ा । जुड़ा । २ एक साथ पैदा हुए

दो बच्चे । ३ लज्जम समागम । ४ खीसगमो ।
५ मिथुन राशि । मल्ल (पु०) १ मिथुन का
भाव या धर्म । जुट होने का दशा । २ सम्मोह ।
—व्रतिन्, (वि०) जो मैथुन करता हो ।

युनेचरः (पु०) चक्रवाक पक्षी ।

व्या (अन्यथा०) मिथ्यापन से । धोखे से ।
शाली से । अशुद्धता से । २ विपरीत प्रकार से ।
३ ध्वय । निरर्थक ।—अध्यवसितिः, (स्त्री०)
एक काव्यालङ्कार जिसमें किसी एक असम्भव
बात को मानकर, दूसरी बात कही जाती है ।—
अपवादः, (पु०) झूठा इलज्जाम या कलङ्क ।—
अभियोगः, (पु०) झूठा आरोप । किसी पर
झूठमूठ अभियोग लगाने की क्रिया ।—अभिज्ञो
—सनम्, (न०) झूठा इलज्जाम । झूठा दोष ।
झूठा कलङ्क ।—अभिशापः, (पु०) १ झूठा
दावा । २ मिथ्या भविष्यद्वाणी ।—आचारः, (पु०)
कपट पूर्ण आचरण ।—आहारः, (पु०)
अनुचित या प्रकृति के विरुद्ध भोजन ।—उत्तरः,
(न०) व्यवहार में चार प्रकार के उत्तरों में से
एक प्रकार का उत्तर । अभियुक्त का अपना अप-
राध छिपाने के लिये मिथ्या वयान ।—उपचारः,
(पु०) बनावटी या दिखाने के लिये परिचर्या
या सेवा या दिखावटी कृपा ।—कर्मन्, (न०)
मिथ्या काम ।—क्रोधः, (पु०) बना-
वटी क्रोध ।—क्रयः, (पु०) झूठी कीमत ।—
ग्रहः—ग्रहणां, (न०) समझने की भूल या समझने
में भूल ।—वर्ग्य, (स्त्री०) झूठा या कपट व्यवहार
—ज्ञानं, (न०) भूल । भ्रम ।—दर्शनं, (न०)
नास्तिकता ।—दृष्टिः, (स्त्री०) नास्तिकता ।
नास्तिक ।—पुरुषः, (पु०) झूठा पुरुष ।—
प्रतिज्ञा, (वि०) झूठा वादा करने वाला । दगा-
वाज़ । विश्वासघाती ।—मतिः, (पु०) भ्रम ।
भूल । शलती ।—वचनं,—वाक्यं, (न०)
झूठ । मिथ्या ।—वार्ता, (स्त्री०) झूठी इत्तिहा ।
झूठी रिपोर्ट ।—साक्षिन्, (पु०) झूठा गवाह ।

[(धा०—आत्म) [मेद्यते, मेद्यति, मेद्यते, मेद्य-
यति—मेद्यते] १ चिकना होना । स्निग्ध

हाना ० पिघलना ३ माटा हाना ४ प्यार
करना । स्नेहवान होना ।

मिष्टं (न०) १ सुस्त । काहिल । २ तन्हा । निद्रा ।
मन की उदासी ।

मिन्द् (धा० पर०) [मिन्दति, मिन्दयति] देखो
मिद् ।

मिन्व् (धा०—उभय०) [मिन्वति] पानी १ छिड़-
कना । तर करना । नम करना । २ सम्मान
करना । पूजन करना ।

मिल् (धा० उभय) [मिलति—मिलते] किन्तु
साधारणतः इसके रूप मिलति, मिलित होते हैं]
१ जोड़ना । मिलजाना । २ एकत्र होना । जमा
होना । ३ मिश्रित हो जाना । ४ मुठभेड़ होना ।
५ (किसी घटना का) घटना । ६ पाना ।

मिलनं (न०) १ मिलन । मिलाप । मेट । समा-
गम । योग । २ मिश्रण । मिलावट ।

मिलित (व० कृ०) १ मिला हुआ । मेटा हुआ ।
समागत । २ आमने सामने आया हुआ । ३
मिश्रित एक साथ रखा हुआ ।

मिलिदः } (पु०) मधुमक्षिका ।
मिलिन्दः }

मिलिदकः । (पु०) एक जाति विशेष का
मिलिन्दकः । साँप ।

मिश् (धा०—परस्मै०) [मेशति] १ कोलाहल
करना । २ क्रोध करना ।

मिश् (धा०—उभय०) [मिश्रयति, मिश्रयते]
संमिश्रण करना । मिलाना । जोड़ना । एकत्र
करना ।

मिश्र (वि०) १ मिला हुआ । जुड़ा हुआ । मिश्रित ।
२ सम्बन्ध युक्त । ३ बहुगुणित । नाना विध ।
नाना प्रकार । ४ गुथा हुआ ।—जः, (पु०)
खच्चर । अश्वतर ।—शब्दः, (पु०) खच्चर ।
अश्वतर ।

मिश्रं (न०) १ मिश्रित पदार्थ । २ सलज्जम । भूली ।

मिश्रः (पु०) १ भद्र जन । प्रतिष्ठित व्यक्ति । यह
एक उपाधि है जो बड़े नामी विद्वानों के नामों के

साथ लगायी जाती है, जैसे "आर्यमिश्राः प्रमायं ।" २ हाथी विशेष ।

मिश्रक (वि०) १ मिला हुआ । मिलावटी । २ फुटकल ।

मिश्रकं (न०) खारी नमक ।

मिश्रकः (पु०) १ कंपाउडर । मिलाकर दवाइयाँ बनाने वाला । २ सौदागरी माफ में मिलावट करने वाला ।

मिश्रणं (न०) मिलावट । संमिश्रण ।

मिश्रित (व० कृ०) १ मिला हुआ । २ जोड़ा हुआ । ३ सम्मानित या सम्मान किया हुआ ।

मिष् (धा० पर०) [मिषति] १ आँखें खोलना । आँखें भपकाना । २ वैराग्य का दृष्टि से देखना । ३ स्पर्धा करना । हसद करना । ईर्ष्या करना ।

मिषः (पु०) स्पर्धा । प्रतियोगिता ।

मिषम् (न०) बहाना । मिस । अगुआ । घोखा । चाल । जाल । बनावटी दिखावट ।

मिष्ट (वि०) १ मधुर । २ स्वादिष्ट । २ नम । तर ।

मिष्टं (न०) मिठाई ।

मिह् (धा० परस्मै०) [मेहति, मीढ] १ झूठ करना । २ तर करना । नम करना । (जल) छिड़कना । ३ वीर्य निकालना ।

मिहिका (स्त्री०) कोहरा । बर्फ ।

मिहिरः (पु०) १ सूर्य । २ बादल । ३ चन्द्रमा । ४ पवन । ५ वृद्धजन ।

मिहिराणः (पु०) शिव जी का नामान्तर ।

मी (धा०—उभ०) [मीनाति, मीनीते] १ बंध करना । हत्या करना । नाश करना । चोटिल करना । अनिष्ट करना । २ कम करना । घटाना । ३ बदलना । तबदील करना । ४ तोड़ना । भङ्ग करना ।

मीढ (व० कृ०) १ पेशाब किया हुआ । वह जो पेशाब कर चुका हो ।

मीढश्चः मीढम् (पु०) शिव जी का नामान्तर ।

मीनः (पु०) १ मछली । २ मीन राशि । ३ भगवान् विष्णु का मत्स्यावतार ।—आघानिन्—घातिन्, (पु०) १ मछली पकड़ने वाला । मछुआ । २ सारस । बगला । —आलयः, (पु०) समुद्र । —केतवः, (पु०) कामदेव ।—गन्धा, (स्त्री०) व्यास की माता सत्यवती ।—गन्धिका, (स्त्री०) तालाब ।—रङ्गः,—रङ्गः, (पु०) १ जलकौवा । सुरगावी । २ मछरंग नामक पक्षी जो मछली खाता है ।

मीनारः (पु०) मकर । मगर । बड़ियाल ।

मीम् (धा०—परस्मै०) (मीमति) १ गमन करना । गतिशील होना । २ आवाज़ करना । बजाना ।

मीमांसकः (पु०) १ अन्वेषक । खोजी । २ वह जो मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता हो ।

मीमांसनम् (न०) अनुसन्धान । परीक्षा । खोज ।

मीमांसा (स्त्री०) १ गम्भीर विचार । खोज । परीक्षा । अनुसन्धान । २ षड् आस्तिक दर्शनों में से एक, जो पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा के नाम से प्रसिद्ध है । साधारणतः मीमांसा शब्द से पूर्वमीमांसा ही का बोध होता है । क्योंकि उत्तरमीमांसा तो वेदान्त के नाम से प्रसिद्ध है । ३ जैमिनि कृत दर्शन जिसे पूर्वमीमांसा कहते हैं । इसमें वेद के यज्ञपरक वचनों की व्याख्या तथा उनका समन्वय बड़े विचार पूर्वक किया गया है ।

मीरः (पु०) १ समुद्र । २ सीमा । हद् ।

मील् (धा० परस्मै०) [मीलति, मीलित] १ बंद करना । मँद लेना । २ सुँद जाना । बंद हो जाना (जैसे आँख या फूल का) ३ कुम्हलाना । नष्ट होना । अन्तर्धान होना । ४ मिलना । जमा होना ।

मीलिनं (न०) १ आँखों का बंद करना । २ आँखें बंद करने की क्रिया । ३ फूल के बंद होने की क्रिया ।

मीलित (वा० कृ०) १ बंद । सुँदा हुआ । २ पलक

भपकाये हुए । ३ अश्वत्थला । अनखिला । ४ खुस ।
जो नष्ट हो चुका हो ।

मौलित (न०) एक अलङ्कार । इसमें दो पदार्थों की
समानता के कारण, उन दोनों में भेद नहीं जान
पड़ता ।

मीव (धा०-पर०) [मीवति] १ गमन करना । २
मोटा साजा होना ।

मीवरः (पु०) सेनानायक । वसूपति ।

मीवा (स्त्री०) १ घेद में का कीड़ा । २ वायु ।
हवा ।

मुः (पु०) १ शिव जी का नाम । बन्धन । कारागार ।
३ मोक्ष । ४ चित्ता ।

मुकुन्दकः } (पु०) १ व्याज २ साठीधान ।
मुकुन्दकः }

मुकुः (पु०) मोक्ष ।

मुकुटं (न०) १ ताज । शिरोभूषण । २ कलंगी ।
चोटी । ३ शिखर । शृङ्ग ।

मुकुटी (स्त्री०) उँगली चटकाना ।

मुकुन्दः (पु०) १ विष्णु भगवान का नाम । श्रीकृष्ण
जी का नाम । २ पार । पारद । ३ रत्न विशेष ।
४ नवनिधियों में से एक निधि । ५ ढोल
विशेष ।

मुकुरः (पु०) १ दर्पण । २ कली । ३ कुम्हार के
चाक का डंडा । ४ वकुलवृक्ष ।

मुकुलः (पु०) १ कली । २ कोई वस्तु जो कली
मुकुलं (न०) के आकार की हो । ३ शरीर ।
देह । ४ आत्मा । जीवात्मा ।

मुकुलित (वि०) १ वह वृक्ष जिसमें कलियाँ आ
गयी हों । २ अश्वमुदा ।

मुकुष्ठः } (पु०) मोंठ ।
मुकुष्ठकः }

मुक्त (व० कृ०) १ ढीला । बंधन से छूटा हुआ । २
छोड़ा हुआ । स्वतंत्र किया हुआ । ३ त्यागा
हुआ । ४ फँका हुआ । जिस । छोड़ा हुआ ।
५ गिरा हुआ । ६ दिया हुआ । ७ भेजा हुआ ।
८ मोक्ष प्राप्त किये हुए ।—अम्बरः, (पु०)

दिगंबर जैन साधु ।—आत्मन्, (वि०) वह
आत्मा जिसकी मोक्ष हो । (पु०) वह जीव जो
सौंसारिक एपखायों या पापों से छूट चुका हो ।
—आसन, (वि०) वह जो अपने आसन से
उठ खड़ा हो ।—कच्छः, (पु०) बौद्ध ।—
कश्चकः, (पु०) कंचुली छोड़े हुए साँप ।
—कसुठ, (वि०) चिल्लाने वाला ।—कर,
—हस्त, (वि०) उदार ।—चलुस्, (पु०)
सिंह ।—वसन, (वि०) जैनी दिगम्बर साधु ।

मुक्तः (पु०) वह जीव जो सौंसारिक बंधनों से छूट
कर, मोक्ष पावे ।

मुक्तकं (न०) १ अस्त्र । २ एक प्रकार का काव्य
जो एक ही पद्य में पूरा हो । ३ फुटकर कविता ।
प्रबन्ध का खल्ला जिसे उद्भट भी कहते हैं ।

मुक्ता (स्त्री०) १ मोती । २ वेश्या । रंडी ।—अगारः
—आगारः, (पु०) सीपी जिसमें से मोती
निकलता है ।—आवलिः,—आवली, (स्त्री०)
—कलापः (पु०) मोतियों का हार ।—गुणा,
(पु०) मोतियों की माला या लड़ी ।—जालं,
(न०) मोतियों की लड़ी ।—दामन्, (न०)
मोतियों की लर ।—पुष्पः, (पु०) कुन्द का
फूल ।—प्रसूः, (स्त्री०) सीप । शुक्ति ।—
प्राजम्भः, (पु०) मोतियों की लर ।—फलं,
(न०) १ मोती । २ हरफा रेवरी । लवनीफल ।
३ एक प्रकार का छोटा जाति का बिलोड़ा । ४
कपूर ।—मणिः, (पु०) मोती ।—मातृ,
(स्त्री०) सीप ।—जता, (स्त्री०)—स्रज्,
(स्त्री०)—हारः, (पु०) मोती का हार ।—
शुक्तिः,—स्फोटः (पु०) सीप ।

मुक्तिः (स्त्री०) १ छुटकारा । रिहाई । २ स्वतंत्रता ।
३ मोक्ष । ४ त्याग । ५ फेंकने की क्रिया । छोड़ने
की क्रिया । ६ खोखले की क्रिया । बंधन से मुक्त
करने की क्रिया । ७ अदायगी । (कर्ज का)
अदा करना ।—क्षेत्रं, (न०) काशी का नाम ।
—मार्गः, (पु०) मोक्ष का रास्ता ।—मुक्तः,
(पु०) शिलारस । सिद्धक ।

१ (अन्यथा०) १ छोड़ा हुआ । त्यागा हुआ ।
२ सिन्धु । बिना । छोड़कर ।
(न०) १ मुख । २ चेहरा । शङ्ख । सुरत ।
३ पशु का शूथन । ४ अगला भाग । सामना ।
५ नौक । ६ बाढ़ । धार । ७ चूची के ऊपर की
बुँडी । ८ पक्षी की चोंच । ९ दिशा । १० द्वार ।
दरवाजा । मुहाना । ११ घर का दरवाजा । १२
आरम्भ । १३ भूमिका । १४ प्रधान । मुख्य ।
१५ सह्य या ऊपरी भाग । १६ साधन । १७
कारण । उच्चारण । १८ वेद । धर्मशास्त्र । १९
नाटक में एक प्रकार की सन्धि ।—अग्निः, (पु०)
१ दावानल । २ अग्निता बेटाल । ३ यज्ञीय
अग्नि । ४ वह आग जो मुर्दा जलाते समय
मुर्दे के मुख के ऊपर रखी जाती है ।—अनिलः,
—उक्ष्वासः, (पु०) सौँस ।—अस्त्रः, (पु०)
कैंडा ।—आस्रवः, (पु०) अधरास्रव ।—
आस्त्रावः, —आवः, (पु०) थूक । खखार ।
—इन्दुः, (पु०) चन्द्रमुख । चन्द्रमा जैसा
मुख । गोल सुन्दर चेहरा ।—उल्का, (स्त्री०)
दावानल ।—कमलः, (न०) कमल जैसा मुख ।
—खुरः, (पु०) दाँत ।—गन्धकः, (पु०)
प्याज । खपल, (वि०) वह जो बहुत अधिक
था पड़ । चनकटा ।—जीरिः, (स्त्री०) जिह्वा ।
जः, (पु०) ब्राह्मण ।—दूषणः, (पु०)
प्याज ।—दूषिका, (स्त्री०) मुँहासा ।—
निरीक्षकः, (पु०) सुल या काहिज आदमी ।
—निवासिनी, (स्त्री०) सरस्वती ।—पटः,
(पु०) धूँध । नकाब ।—पिण्डः, (पु०)
१ कँवर । कौर । २ वह पिण्ड जो स्रुत व्यक्ति के
उद्देश्य से उसकी अन्त्येष्टि क्रिया करने के पूर्व दिया
जाता है ।—पूरणम्, (न०) कुड़ा ।—प्रियः, (पु०)
शंतरा । नारंगी ।—वन्धः, (पु०) प्रतापना
भूमिका ।—वन्धनं, (न०) १ भूमिका । २ बन्धन ।
—भूषणं, (न०) ताम्बूल । पान ।—मार्जनं,
(न०) दत्तवन । मुखप्रक्षालन ।—ग्रंथणं, (न०)
लगाव ।—लाङ्गलः, (पु०) शूकर ।—लेपः,
(पु०) १ वह लेप जो मुख पर शोभा के लिये

लगाया जाय । २ मुखरोग विशेष ।—वल्लभः,
(पु०) अनार का पेड़ ।—वाद्यं, (न०) १
मुख से फूँक कर बजाया जाने वाला वाद्य । २
मुख से निकला बम् बम् शब्द ।—विलुण्ठिका,
(स्त्री०) बकरी । छेरी ।—व्यादनं, (न०)
जमुहाई ।—जफ, (वि०) मुखर । कटुभाषी ।
—शेषः, (पु०) राहु ।—शोधन, (वि०) १
मुख साफ करने वाला । २ तीता । चटपटा ।—
शोधनः, (पु०) चटपटी वस्तु ।—श्रीः, (स्त्री०)
मुख का सौन्दर्य । सुन्दर चेहरा ।

मुखपत्रः (पु०) भिड्डक । भिलारी ।

मुखर (वि०) १ बान्सी । २ समझुम शब्द करने
वाला । पायजेव । नूपुर । ३ छोटक । प्रकाशक ।
४ मुखशफ । कटुभाषी । गाली गलौज करनेवाला ।
५ मज़ाक उड़ाने वाला । उपहास करने वाला ।

मुखरः (पु०) १ काक । कौआ । २ नेता । प्रधान
पुरुष । ३ शङ्ख ।

मुखरिका (स्त्री०) } लगाव ।
मुखरी (स्त्री०) }

मुखरिन् (वि०) शब्दायमान ।

मुख्य (वि०) १ मुख सम्बन्धी । २ प्रधान ।—अर्थः,
(पु०) प्रधान अर्थ । (गौण का उल्टा) ।—
—चान्द्रः, (पु०) मुख्य चन्द्रमास ।—नृपतिः,
(पु०) प्रधानराजा ।—मन्त्रिन्, (पु०) प्रधान
सचिव ।

मुख्यः (पु०) नेता । पथप्रदर्शक ।

मुख्यं (न०) १ यज्ञ का प्रथम कल्प । २ वेद का
अध्ययन या अध्यापन ।

मुखूह (पु०) १ पपीहा । २ एक प्रकार का हिरना ।

मुख (वि०) १ मोह या अम में पड़ा हुआ । २ मूर्ख ।
सूढ़ । अज्ञानी । ३ सादा । सीधा । अनजान । ४
भूला हुआ । भूल में पड़ा हुआ । ५ भोलपन के
कारण आकर्षक ।—अज्ञी, (स्त्री०) सुन्दर
आँखों वाली युवती ।—आनना, (स्त्री०) सुन्दर
शङ्ख वाली स्त्री ।—धी,—बुद्धि,—मति, (वि०)
मूर्ख । मूढ़ । सीधा । सादा ।—भावः, (पु०)
सीधापन । मूर्खता ।

मुञ् (धा० आत्म०) [मोञ्चते] ठगना धोखा देना । [उभय० मुञ्चति मुञ्चत मुक्त] डीला करना । छोड़ देना । मुक्त करना । रिहा करना ।

मुञ्चकः (पु०) लाल ।

मुञ्चकन्दः, } (पु०) १ वृक्ष विशेष । २ भागवत
मुञ्चकुन्दः } पुराण के अनुसार एक राजा का नाम ।
मुञ्चकुन्दः } यह राजा मान्धाता का पुत्र था । इसीके
मुञ्चकुन्दः } नेत्राग्नि से कालयवन को श्री कृष्ण जी
ने भस्म करवाया था । — प्रस्तावकः, (पु०) श्री
कृष्ण का नाम ।

मुञ्चिरः (पु०) १ देवता । २ भलाई । गुण । ३ पवन । हवा ।

मुञ्चिलिन्दः (पु०) तिलपुष्पी ।

मुञ्चटी (स्त्री०) १ ऊँखली चटकाने या मटकाने की क्रिया । मुट्टी ।

मुञ्ज् } (धा० परस्मै०) [मोञ्जति, मुञ्जति,
मुञ्ज् } मोजयति, मोजयते, मुञ्जयति—मुञ्जयते]
१ साफ करना । पवित्र करना । २ बजाना । शब्द
करना ।

मुञ्जः (पु०) १ मूँज बास । २ चारापति राजा भोज
के चचा का नाम । — केशः, (पु०) शिव जी
का नाम । — वन्दनं, (न०) यज्ञोपवीत संस्कार ।
— वासस्, (पु०) शिव जी का नामान्तर ।

मुञ्जरं } (न०) कमल की रेशेदार जड़ । भसीड़ा ।
मुञ्जरं }

मुट् (धा० परस्मै०) [मोटति, मोटयति—
मोटयते] १ कुचलना । तोड़ना । पीसना । चूँ
करना । २ दोषी ठहराना । भर्त्सना करना । गाली
देना ।

मुण् (धा० परस्मै०) [मुण्ति] प्रतिज्ञा करना ।

मुट् } (धा० परस्मै०) कुचलना । पीसना ।
मुण्ट् }

मुंड् } (धा० परस्मै०) १ मूँडना । २ कुचलना ।
मुण्ड् } पीसना । (आत्म०—मुण्डते) डूबना ।

मुंड } (वि०) १ मुड़ा हुआ । २ किसी वस्तु का
मुण्ड } अग्र भाग । कटा हुआ । ३ मौयरा । गुंठल ।

४ कमीना । नाव अउस (न०) लाहा ।

फण् (पु०) नारियल का वृक्ष । — मण्डली
(स्त्री०) ऐसे लोगों का दल जिसके सब मनुष्यों
का सिर मुड़ा हुआ हो : — जोहं, (न०) छोड़ा ।
— शालिः, (पु०) एक प्रकार के चाँदल ।

मुंडः } (पु०) १ मनुष्य जिसका सिर मुड़ा हुआ हो
मुण्डः } या जो गँजा हो । २ मुड़ा हुआ या गँजा ।
सिर । ३ माथा । ४ नाई । नापित । ५ पैर का
तना जिसकी डालियाँ काट दी गयी हों ।

मुंडा } (स्त्री०) भिक्षुकी विशेष । भिखारिन विशेष ।
मुण्डा }

मुंड } (न०) १ सिर । २ लोहा ।
मुण्डम् }

मुंडकः } (न०) मूँड । सिर । — उपनिषद्,
मुण्डकः } (स्त्री०) अथर्ववेद के एक उपनिषद् का
नाम ।

मुंडकार } (न०) मुण्डन संस्कार ।
मुण्डकार }

मुंडित } (व० कृ०) १ मुड़ा हुआ । २ फुनगी
मुण्डित } कटा हुआ । अग्रभाग कटा हुआ ।

मुंडितं } (न०) लोहा ।
मुण्डितं }

मुंडिन् } (पु०) १ नाई । २ शिव जी का नामा
मुण्डिन् } न्तर ।

मुन्यं (न०) मोती ।

मुद् (धा० उभय०) [मोदयति—मोदयते] १
मिलाना । मिश्रण करना । २ साफ करना । पवित्र
करना ।

मुद् } (स्त्री०) हर्ष । प्रसन्नता । आल्हाद ।
मुदा }

मुदित (व० कृ०) आनन्दित । हर्षित ।

मुदितं (न०) १ आनन्द । हर्ष । २ एक प्रकार का
मैथुनोपयोगी आलिङ्गन ।

मुदिना (स्त्री०) हर्ष । आनन्द ।

मुदिरः (पु०) १ बादल । २ प्रेमी । लोपट पुरुष ।
३ मैदक ।

मुदी (स्त्री०) चाँदनी । उन्हाई ।

मुद्रः (पु०) १ मृग । २ दकना । दकन : गिलाफ ।
आच्छादन । ३ समुद्रा पत्नी ।—भुज,—भोजिव,
(पु०) बोहा ।

मुद्रः (पु०) १ हथौड़ा । २ गदा । डंडा । ३ मोंगी ।
मुंगरिया जिससे मिट्टी के डेले फोड़े जाते हैं । ४
काठ का बना हुआ एक प्रकार का गावदुम दण्ड
जो मूठ की ओर पतला और आगे की ओर बहुत
भारी होता है । इसको घुमाने से कलाह्यों और
हाथों में बल आता है । ५ केली । ६ मोगरा ।
चमेली का भेद ।

मुद्रलः (पु०) घास या वृण विशेष ।

मुद्रुणः (पु०) वनमृग । सुगवन ।

मुद्रणं (न०) १ किसी चीज़ पर अवर आदि अङ्कित
करना । छपाई । २ बंद करने या मूंदने की क्रिया ।

मुद्रा (स्त्री०) १ किसी के नाम की छाप । मोहर । २
अँगूठी । छाप । छद्मा । ३ मोहर । रुपया । पैसा
आदि सिक्के । ४ पदक । तगमा । ५ चपरास आदि
के ऊपर छपा जाने वाली मूर्ति आदि का छपा ।
६ बंद करने या मोहर लगा कर बंद करने की
क्रिया । ७ रहस्य । गुप्त भेद । ८ हाथ, पाँव, आँख,
मुँह, गर्दन आदि की कोई स्थिति विशेष ।—अक्षरं,
(न०) मोहर पर खुदे हुए अक्षर ।—कारः,
(पु०) मोहर बनाने वाला ।—मार्गः, (पु०)
मस्तक के भीतर का वह रन्ध्र जहाँ से योगियों का
प्राणवायु बाहिर निकलता है । अक्षरन्ध्र ।

मुद्रिका (स्त्री०) मोहरछाप वाली अँगूठी ।

मुद्रित (व० क०) १ मोहर किया हुआ । चिन्हित ।
अङ्कित । २ बंद । मोहर लगा कर बंद किया हुआ ।
३ अनखिला हुआ ।

मुद्रा (अन्वया०) १ अर्थ । निरर्थक । बेकार । २
भूल से ।

मुनिः (पु०) १ वह जो मनन करे । ईश्वर, धर्म और
सत्यासत्य प्रभृति सूक्ष्म विषयों का विचार करने
वाला व्यक्ति । मननशील महात्मा । धर्मात्मा ।
भक्त । साधु । २ अगस्त्य मुनि । ३ वेदव्यास । ४
बुद्धदेव । ५ आम का पेड़ । ६ सान की संख्या ।

(बहुवचन०) सप्तर्षि ।—अयं, (न०) पाणिनि,
कात्यायन और पतञ्जलि ।—पितृलं, (न०)
ताँवा ।—पुङ्गवः, (पु०) मुनिश्रेष्ठ ।—पुत्रकः,
(पु०) खंजन पत्नी ।—मेघजं (न०) १ अगस्त्य
का फूल । २ हड़ । हरा । ३ लङ्घन । उपवास ।
—व्रतं (न०) मुनियों के योग्य व्रत ।

मुध् (धा० परस्मै०) (मूयति) जाना ।

मुमुत्ता (स्त्री०) मोच प्राप्ति की अभिलाषा ।

मुमुक्षु (वि०) १ मोच प्राप्ति का अभिलाषी । २
बंधन से छूटने का इच्छुक । ३ दागने या छोड़ने ही
को गोलो या तीर । ४ साँसारिक आवागमन से
छूटने की इच्छा रखने वाला । मोच के लिये
प्रयत्नवान ।

मुमुक्षुः (पु०) वह साधु जो मोच प्राप्ति के लिये
यत्नवान हो ।

मुमुचानः (पु०) बादल । मेघ ।

मुमुर्धा (स्त्री०) मरने की इच्छा ।

मुमुर्षु (वि०) मरणपन्न । जो मरने ही वाला हो ।

मूर् (धा० परस्मै०) [मूरति] घेर डालना । घेरना ।
फँसाना ।

मुरः (पु०) एक दैत्य जिसका वध श्रीकृष्ण ने किया
था ।—अरिः, (पु०) १ श्रीकृष्ण का नाम । २
अनर्घराधव रचयिता कवि का नाम ।—जित्,—
द्विष्—मिदु,—मर्दनः,—रिपुः,—वैरिनः—
हन्, (पु०) श्रीकृष्ण ।

मुरं (न०) घेरने या घेरा डालने की क्रिया ।

मुरजः (पु०) मृदङ्ग ।—बंधः, (पु०) काव्यरचना शैली
विशेष ।—फलः, (पु०) कटहल का फल ।

मुरजा (स्त्री०) १ बड़ा मृदङ्ग । २ कुबेरपत्नी का
नाम ।

मुरन्दला (स्त्री०) एक नदी का नाम । (बहुत कर
वर्मदा ।)

मुरला (स्त्री०) केरल देश से निकलने वाली एक नदी
का नाम ।

मुरली (स्त्री०) बाँसुरी ।—धरः, (पु०) श्रीकृष्ण ।

सुध (धा० परस्मै०) [सूक्ष्मि, सूक्ष्म, या सूत] १ जमना । तरल पदार्थ का जम कर गाढ़ा होना । २ सूक्ष्म होना । ३ बुद्धि को प्राप्त होना । ४ शक्ति सञ्चय करना । ५ पूर्ण करना । व्याप्त होना । घुसना । झाड़ना । ६ जोड़ का होना । ७ चिह्न कर बुलवाना । पुकरवाना ।

सुधुरः (पु०) १ तुषाग्नि । चोकर या भूसी की आग । २ कामदेव । ३ सूर्य के एक घोड़े का नाम ।

सुध (धा० परस्मै०) [सुधति] बाँधना ।

सुशदी (स्त्री०) अनाज विशेष ।

सुप् (धा० परस्मै०) [सुप्णाति, सुप्ति] १ चुराना । लूटना । छीन लेना । २ घसना । ढकना । घेर लेना । छिपाना । ३ पकड़ लेना । ४ आगे निकल जाना ।

सुषकः (पु०) चूहा ।

सुषा } (स्त्री०) धरिया । कुठाली । कुल्हिया ।
सुषी }

सुपित (व० क०) १ लुटा हुआ । चुराया हुआ । २ छीना हुआ । ३ रहित । वञ्चित । ४ ठगा हुआ । धोखा खाया हुआ ।

सुपितकं (न०) चोरी का माल ।

सुष्कः (पु०) १ अण्डकोष का झँडा । २ अण्डकोष । ३ हृष्ट पुष्ट पुरुष । ४ ढेर । समुदाय । ५ चोर ।
- देशः, (पु०) अण्डकोष का स्थान ।—
शून्यः, (पु०) हिजड़ा ।—शोकः, (पु०) अण्डकोष की सूजन ।

सुष्ट (व० क०) चुराया हुआ ।

सुष्टं (न०) चोरी का माल ।

सुष्टिः (पु० स्त्री०) १ सुष्टी । २ सुष्टो भर । ३ सुष्टिया । सूँ । ४ माघ विशेष । ५ बिह्व ।—देशः, (पु०) धनुष का मध्य भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है ।
—सूतं, (न०) एक प्रकार का जुआ ।—पातः, (पु०) बूँसेबाजी ।—बन्धः, (पु०) १ बंधी हुई सुष्टी । २ सुष्टी भर ।—युद्धं, (न०) बूँसेबाजी ।

सुष्टिकः (पु०) १ सुनार । २ मुक्ता । बूँसा । ३ राजा कंस के पहलवानों में से एक का नाम जिसे बलदाऊ जी ने पड़ाया था ।—अन्तकः, (पु०) बलराम जी का नाम ।

सुष्टिका (स्त्री०) मुक्ता । बूँसा ।

सुष्टिधयः (पु०) बन्धा ।

सुष्टीमुष्ट (अव्यया) घुसंघुस्सा ।

सुष्ठकः (पु०) राई ।

सुस् (धा० परस्मै०) [सुस्यति] चीरना । विभाजित करना । टुकड़े टुकड़े कर ढालना ।

सुसलः (पु०) १ सुसल । २ एक प्रकार का डंडा । सुसलं (न०) गदा का भेद ।—आयुधः, (पु०) बलराम जी ।—उत्तुखलं, (न०) इनामदस्ता । खड्गलोढ़ा ।

सुसलामुसति (अव्यया०) डंडेबाजी ।

सुसलिन (पु०) १ बलराम । २ शिव जी ।

सुसल्य (वि०) डंडे से भार ढालने योग्य ।

सुस्त (धा० उभय०) [सुस्तयति, सुस्तयते] जमा करना । ढेर लगाना ।

सुस्तः (पु०) एक प्रकार की घास ।—आदाः—
सुस्तं (न०) आदाः, (पु०) शूकर ।
सुस्ता (स्त्री०)

सुस्तं (न०) १ सुसल । लोढ़ा । २ आँसू ।

सुड (धा० परस्मै०) [सुडति, सुध या सुड] १ सूक्ष्म होना । २ व्याकुल होना । परेशान होना । ३ सूख बनना । ४ मूलना ।

सुहिर (वि०) सूख । सुड ।

सुहिरः (पु०) १ कामदेव । २ सूख । सुड ।

सुहस् (अव्यया०) १ अक्सर । सदैव । बारंबार । २ कुछ देर के लिये ।—भाषा, (स्त्री०)—
वचस्, (न०) पुनरावृत्ति ।—भुज्, (पु०) घोड़ा ।

सुहृत् (न०) काळ का एक मान जो ४८ मिनिट
सुहृत् (पु०) का होता है । दिन रात का तीसरा भाग ।

मुहूर्तः (पु०) ज्योतिषी ।

मुहूर्तकः (पु०) १ पल । लहमा । २ ३८ मिनट का समय का मान ।

मू (धा० परस्मै०) [मवते] बाँधना ।

मूक (वि०) रूंगा । मौन । बाणी रहित । २ वापुरा । अभागा ।

मूकः (पु०) १ रूंगा आदमी । २ अभागा या धनहीन आदमी । ३ मड़ली ।—अंवा, (स्त्री०) दुर्गा का रूपान्तर ।—भावः, (पु०) मौन भाव । रूंगापन ।

मूकमन् (पु०) रूंगापन । मौनत्व ।

मूढ (व० कृ०) १ मूर्च्छित । मूढ़ । २ व्याकुल । परेशान । ३ बेवकूफ । भूला हुआ । भटका हुआ । ४ समय से पूर्व जन्मा हुआ । ६ चकित ।

मूढः (पु०) मूर्खजन । अज्ञजन ।—आत्मन्, (वि०) १ विकल मन । २ मूर्ख । बेवकूफ ।—गर्भः, (पु०) गर्भलाव आदि ।—ग्राहः, (पु०) समझने में अम । नासमझी ।—चेतन, —चेतस, (वि०) मूर्ख । अज्ञान ।—धी, —बुद्धि, —मति, (वि०) मूर्ख । मूढ़ । अज्ञानी ।—सत्त्व, (वि०) पागल । विचित्र ।

मूत (वि०) १ बंधा हुआ । बंधन युक्त । २ क्रौं दे में पड़ा हुआ ।

मूत्रं (न०) पेशाब ।—आघातः, (पु०) एक पेशाब की बीमारी ।—आशयः, (पु०) तरेट । मूत्रस्थली ।—कुच्छं, (न०) पेशाब की एक बीमारी जिसमें पेशाब करते समय जलन या दर्द होता है ।—कोशः, (पु०) अण्डकोष ।—क्षयः, (पु०) पेशाब की बीमारी विशेष ।—जठरः, (पु०) —जठरं, (न०) पेट की सृजन जो पेशाब सूख जाने से हो गयी हो ।—दोषः, (पु०) पेशाब की बीमारी ।—निरोधः, (पु०) पेशाब का रुक जाना या बंद हो जाना ।—पतनः, (पु०) गन्धमार्जार । गन्धविलास ।—पथः, (पु०) पेशाब निकलने का रास्ता ।—परीक्षा, (स्त्री०) चिकित्सा में रोगी के पेशाब

की परीक्षा करने की क्रिया ।—पुट्टं, (न०) पेट का निचला भाग । तरेट ।—मार्गः, (पु०) मूत्रद्वार ।

मूत्रल (वि०) मूत्र को बढ़ाने वाला ।

मूत्रित (वि०) मूत्र की तरह निकाला हुआ ।

मूर्ख (वि०) मूढ़ । बेवकूफ ।

मूर्खः (पु०) १ बेवकूफ । मूढ़ । २ उर्द । बनमृग ।—भूयम्, (न०) बेवकूफी । मूर्खता ।

मूर्च्छन (वि०) [स्त्री०—मूर्च्छनी] संज्ञा जोप करने वाला । २ वृद्धिकारक । पुष्टिकारक ।

मूर्च्छनं (न०) १ मूर्च्छा । २ संगीत में एक ग्रास से दूसरे ग्रास तक जाने में सातों स्वरों का आरोह अवरोह ।

मूर्च्छा (स्त्री०) १ बेहोशी । संज्ञाहीनता । २ अचेतनावस्था ।

मूर्च्छाल (वि०) मूर्च्छित । बेहोश ।

मूर्च्छित (व० कृ०) १ मूर्च्छा को प्राप्त । संज्ञाहीन । २ मूर्ख । मूढ़ । ३ परेशान । विकल । ४ परिपूर्ण । ५ फूँकी हुई धातु ।

मूर्त (वि०) १ मूर्द्धित । बेहोश । मूर्तिमान । शरीर-धारी । अवतार । ३ पार्थिव । ४ ठोस । कड़ा ।

मूर्तिः (स्त्री०) १ आकृति । स्वरूप । सूरत । शरीर । देह । २ शरीरधारण । अवतरण । ३ प्रतिमा । ४ सौन्दर्य । ५ ठोसपन । कड़ापन ।—धर,—सञ्चर, (वि०) शरीर धारण किये हुए ।—पः, (पु०) मूर्तिपूजक पुजारी ।

मूर्तिमत (वि०) १ पार्थिव । शारीरिक । २ शरीर-धारी । अवतरित । मूर्तिमान । ३ कड़ा । ठोस ।

मूर्धन (पु०) १ माथा । भौं । २ सिर । ३ चोटी । शिखर । शृङ्ग । ४ नेता । नायक । प्रधान । अग्रणी । मुख्य । ५ सामना । अगला भाग ।—अन्तः, (पु०) चोटी ।—अभिषिक्त, (वि०) जिसके सिर पर अभिषेक किया गया हो ।—अभिषिक्तः, (पु०) १ राजतिलक प्राप्त राजा । २ क्षत्रिय जाति का पुरुष । ३ सचिव ।—अभिषेकः, (पु०) राजगद्दी ।—अवसिक्तः, १ वर्ष

सङ्कर जाति विशेष जिसकी उत्पत्ति ब्राह्मण पिता और क्षत्रिया माना से हुई हो । २ राजतिलक प्राप्त राजा ।—कूर्णी, —कर्परी, (स्त्री०) छतरी । छाता ।—जः, (पु०) १ केश । बाल । २ सिंह या घोड़े की गर्दन के बाल । अयाल ।—ज्योतिष, (न०) ब्रह्मरन्ध्र ।—पुष्पः, (पु०) सिरस का वृक्ष ।—रसः, (पु०) चाँवल की माँड़ी ।—वेष्टनं, (न०) पगड़ी । साका ! मुकुट ।

मूधन्य (वि०) १ सिर सम्बन्धी । सिर या मस्तक में स्थित । २ वे वर्ण जिनका उच्चारण मूढ़ों से होता है । यथा—क, ख, ट, ठ, ड ढ ण, र, प । ३ मुख्य । प्रधान । सर्वोत्कृष्ट ।

मूर्वा { (स्त्री०) मरोड़कली नाम की बेल जिसके मूर्वी } रेशे निकाल कर धनुष के रोदे की डोरी मूर्वीका } और क्षत्रिय का कटिमुत्र बनाया जाता है ।
मूल (धा० उभय०) [मूलनि—मूलते] दृढ होना । जड़ जमाना ।

मूलं (न०) १ जड़ । २ किसी वस्तु के सब से नीचे का भाग । ३ किसी वस्तु का क्षोर, जिससे वह किसी अन्य वस्तु से जुड़ी हो । ४ आरम्भ । प्रारम्भ । शुरुआत । ५ आधार । नींव । ६ उद्भव-स्थल । उत्पत्तिस्थान । उपादान कारण । ७ पाद-देश । तली । ८ मूलकृति (टीका से भिन्न अथवा जिसका टीका हो) । ९ पड़ोस । सामीप्य । १० पूँजी । सरमाया । ११ परम्परानुगत सेवक । १२ वर्गमूल । १३ किसी राजा का अपना निज राज्य । १४ वह बिचवाल जो उस सौदा का जिसे वह बेचता है, स्वयं धनी न हो । अस्वामि विक्रेता । १५ सत्ताइस नक्षत्रों में से उन्नीसवाँ नक्षत्र । १६ निकुञ्ज । १७ पीपरामूल । १८ मुद्रा विशेष ।—
—आधारं, (न०) १ नामि । २ योगानुसार मानव शरीर के षट् चक्रों में से एक, जो गुदा और शिश्न के बीच में है ।—आभं, (न०) मूली । आयतनं, (न०) असली रहायस का स्थान ।—आशिन, (वि०) जड़ को खाकर रहने वाला ।—आह्नं, (न०) मूली ।—उच्छेदः, (पु०) सर्वनाश । विनाश ।—कर्मन्, (न०) इन्द्रजाल । जादू ।—कारणं, (न०) उपादान

कारण —कारिका, (स्त्री०) मटी । चूल्हा ।—कच्छूः, (पु०)—कच्छू, (न०) व्रत विशेष इसमें मूली आदि जड़ों के काथ को पीकर एक मास तक व्रत करना पड़ता है ।—केशरः, (पु०) नीबू ।—जः, (पु०) एक पौधा जो जड़ बोने से उत्पन्न होता है । बीज से नहीं ।—जं, (न०) अदरक । आदी ।—देवः, (पु०) कंस का नामान्तर ।——द्रव्यं,—धनं (न०) पूँजी ।—धातुः, (पु०) मज्जा ।—निर्झतन, (वि०) जड़ डाली नाशक ।—पुष्पः, (पु०) किसी वंश का आदि पुरुष । सब से पहला पुरुष जिससे वंश चला हो ।—प्रकृतिः, (स्त्री०) संसार की वह आदिम सत्ता, जिसका कि यह संसार परिणाम या विकास है । साँख्य मतानुसार “प्रधान” ।—फलदः, (पु०) कटहल ।—भद्रः (१०) कंस का नामान्तर ।—भूयः, (पु०) पुरतैनी नौकर ।—वचनं, (न०) मूल ग्रन्थ के पद्य ।—वित्तं, (न०) पूँजी । जमा ।—विभुजः, (पु०) रथ ।—शाकटः, (पु०)—शाकिनं, (न०) वह खेत जिसमें मूली गाजर आदि मैदी जड़वाले पौधे बोये जाते हैं ।—स्थानं, (न०) १ नींव । आधार । २ परमात्मा । ३ पवन । हवा ।—स्रोतस्, (न०) मुख्य धार अथवा किसी नदी का उद्गमस्थान ।

मूलकं (पु०) १ मूली । २ खाने योग्य जड़ । मूलकः (न०) कंदमूल । (पु०) चौतीस प्रकार के स्थावर विषों में से एक प्रकार का विष ।—पोनिका, (स्त्री०) मूली ।

मूला (स्त्री०) १ एक पौधे का नाम । २ मूल नक्षत्र । मूलिक (वि०) मूल सम्बन्धी । मूलिकः (पु०) कंदमूल खाकर रहने वाला साधु । मूलिन् (पु०) वृक्ष । मूलिन (वि०) जड़ से उत्पन्न होने वाला । मूली (स्त्री०) छिपकली । मूलेरः (पु०) १ राजा । २ जटामाँसी । बालकृष्ट । मूल्य (वि०) १ जड़ से उखाड़ने योग्य । २ खरीदने योग्य ।

मूल्यं (न०) १ कीमत् । दाम । २ मङ्गदूरी । भाड़ा ।
वेतन । ३ लाभ । ४ पूँजी ।

मूष (धा० परस्मै०) [मूषति, मूषित] चुगना ।
लूटना ।

मूषः (पु०) १ चूहा । २ करोखा । रोशनदान ।

मूषकः (पु०) १ चूहा । २ चोर ।—अरातिः,
(पु०) बिलार ।—वाहनः, (पु०) श्री
गणेश जी ।

मूषणं (न०) चोरी । डाँकाजनी ।

मूषा } (पु०) १ चूहा । २ चोर । सिरस का पेड़ ।
मूषिकः } ४ एक देश का नाम ।—अङ्गुः,—अञ्जनः,—
रथः, (पु०) श्री गणेश जी के नामान्तर ।—
अदः, (पु०) बिलार । विज्ञा ।—अरातिः,
(पु०) बिलार । विज्ञा ।—उत्करः, (पु०)
—स्थलं, (न०) झङ्गुंदर का तोड़ा या टिक्वा ।
ढेरी ।

मूषा (स्त्री०) } १ चुहिया । २ सेना आदि
मूषिका (स्त्री०) } गलाने की धरिया ।

मूषिकारः (पु०) चूहा ।

मूषी (स्त्री०) } मुसरिया । चूहा । मूँसा ।
मूषीकः (पु०) } चुहिया ।
मूषीका (स्त्री०) }

मृ (धा० आत्म०) [म्रियते, मृत] मरना । नष्ट
होना ।

मृग (धा० आत्म०) [मृग्यति, मृगयते, मृगित]
१ खोजना । ढूँढना । तलाश करना । २ शिकार
करना । खदेड़ना । ३ लक्ष्य बाँधना । ४ परीक्षा
करना । जाँचना । ५ माँगना । जाच करना ।

मृगः (पु०) १ औपाया मात्र । २ हिरन । बारह-
सिंहा । ३ शिकार । ४ चन्द्रलान्छन । ५ कस्तूरी ।
मुरक । ६ खोज । तलाश । ७ खदेड़ने की क्रिया ।
८ अनुसन्धान । तहकीकात । ९ थाचना । माँग ।
१० एक जाति का हाथी । ११ मानव जाति
विशेष । १२ मृगशिरस नक्षत्र । १३ मार्गशीर्ष
मास । १४ मकर राशि ।—अक्षी, (स्त्री०)
हिरनी जैसी आँखों वाली स्त्री ।—अङ्गुः, (पु०)
१ चन्द्रमा । २ कपूर । ३ पवन ।—अङ्गुना,

(स्त्री०) हिरनी ।—अजिनः, (न०) मृग-
चर्म ।—अराडजा, (स्त्री०) मुरक । कस्तूरी ।
—अदः,—अदनः, = अन्तकः, (पु०) चीता ।
तेंदुआ । सेई ।—अधिपः,—अधिराजः, (पु०)
शेर ।—अरातिः, (पु०) १ सिंह । २ कुत्ता ।
—अरिः, (पु०) १ शेर । २ कुत्ता । ३ चीता ।
४ वृक्ष विशेष ।—अशनः, (पु०) सिंह ।—
आविधू (पु०) शिकारी ।—आस्यः, (पु०)
मकर राशि ।—इन्द्रः, (पु०) १ शेर । २
चीता । ३ सिंह राशि ।—ईश्वरः, (पु०) १
सिर । २ सिंह राशि ।—उत्तमं,—उत्तमाङ्गम,
(न०) मृगशिरस नक्षत्र ।—काननं, (न०)
उद्यान ।—गामिनी, (स्त्री०) औषधि विशेष
—जलं, (न०) मृगतृष्णा की लहरें ।—
जीवनः, (पु०) बहेलिया । शिकारी ।—तृष-
—तृषा,—तृष्णा,—तृष्णिका, (स्त्री०) जलाव ।
जल की लहरों की वह मिथ्या प्रतीति जो कभी
कभी उत्तर मैदानों में कड़ी धूप पड़ने के समर्थ
होती है ।—दंशः,—दंशकः, (पु०) कुत्ता ।—
दृशः, (स्त्री०) मृगनयनी स्त्री ।—धूः, (पु०)
शिकारी ।—द्विष (पु०) सिंह ।—धरः, (पु०)
चन्द्रमा ।—धूर्तः,—धूर्तकः, (पु०) शृगाल ।
गीदड़ ।—नयना, (स्त्री०) मृगनयनी स्त्री —
नाभिः, (पु०) कस्तूरी । २ हिरन जिसकी नाभि
में कस्तूरी होती है ।—पतिः, (पु०) १ सिंह ।
२ नर हिरन । ३ चीता ।—पालिका, (स्त्री०)
मृगनाभि ।—पिप्लुः (पु०) चन्द्रमा ।—प्रभुः,
(पु०) सिंह ।—वधाजीवः,—वधाजीवः, (पु०)
शिकारी ।—वन्धिनी, (स्त्री०) हिरन पकड़ने
का जाल । मदः, (पु०) मुरक ।—मन्द्रः,
(पु०) हाथियों की जाति विशेष ।—मातृका,
(स्त्री०) हिरनी ।—मुखः, (पु०) मकर राशि ।
—यूथं (न०) हिरनों की टोली ।—राजः, (पु०)
१ सिंह । २ चीता । ३ सिंहराशि ।—राजः,
(पु०) १ सिंह । २ सिंहराशि । ३ चीता । ४
चन्द्रमा ।—रिपुः, (पु०) सिंह ।—रोमं, (न०) जन ।
—लान्छनः, (पु०) चन्द्रमा ।—लोखा, (स्त्री०)
हिरन जैसे चिन्ह जो चन्द्रमा में दिखलाई पड़ते

हैं।—लोचनः, (पु०) चन्द्रमा ।—लोचना,
—लोचनी, (स्त्री०) मृगनयनी स्त्री ।—वाहनः,
(पु०) चन्द्रमा ।—व्याघ्रः, (पु०) १ बहे-
लिया । शिकारी । २ तारागण विशेष । ३ शिव
जी का नामान्तर ।—शिरः, (पु०) हिरन का
बच्चा ।—शिरः, (पु०) शिरस् (न०)—
शिरा, (स्त्री०) पाँचवें नक्षत्र का नाम ।—
शीर्षः, (न०) मृगशिरस् नक्षत्र ।—शीर्षः,
(पु०) अगहन मास ।—शीर्षन्, (पु०)
मृगशिरस नक्षत्र ।—श्रेष्ठः, (पु०) चीता ।—
हन्, (पु०) शिकारी ।

मृगणा (स्त्री०) खोज । तलाश । अनुसन्धान ।

मृगया (स्त्री०) शिकार ।

मृगयुः (पु०) १ शिकारी । बहेलिया । २ गीदह ।
३ ब्रह्मा ।

मृगव्यं (न०) १ शिकार । मृगया । २ लक्ष्य ।
निशाना । चाँद ।

मृगी (स्त्री०) १ हिरनी । २ मिरगी रोग । ३ स्त्री
जाति विशेष ।—पतिः, (पु०) श्रीकृष्ण ।

मृग्य (वि०) शिकार के लिये खोजने योग्य ।

मृज् (धा० परस्मै०) [मार्जति] बजाना । शब्द
करना ।

मृजः (पु०) ढोल विशेष ।

मृजा (स्त्री०) १ शुद्धि । सफाई । मार्जन । प्रक्षालन ।
२ शरीर का रंग ।

मृजित (वि०) पौछा हुआ । साफ किया हुआ ।
काड़ा हुआ ।

मृडः (पु०) शिव ।

मृडा
मृडानी } (स्त्री०) पार्वती । दुर्गा । भवानी ।
मृडी

मृण् (धा० परस्मै०) १ बध करना । हत्या करना ।

मृणालं (न०) कमल की जड़ । मुहार । भसींदा ।

मृणालं (न०) } कमल का इँटल जिसमें फूल
मृणालः (पु०) } लगा रहता है । कमलनाल ।

मृणालिका (स्त्री०) } कमल की डंटी । कम-
मृणाली (स्त्री०) } लनाड ।

मृणालिन् (पु०) कमल ।

मृणालिनी (स्त्री०) १ कमल का पौधा । २ कमल
का ढेर । ३ स्थान जहाँ कमल बहुत होते हों ।

मृत (व० कृ०) १ मरा हुआ । २ व्यर्थ । निर्गुण ।
३ भस्म किया हुआ । फूँका हुआ ।—अगन्तः,
(न०) सुर्दा ।—अगडः, (पु०) सूर्य ।—
अशौचं, (न०) किसी गोश्री या वंश वाले के
मरने से लगा हुआ सूतक ।—उद्भवः, (पु०)
समुद्र ।—कल्प, (वि०) मृतप्राय । बेहोश ।
अचेत ।—गृहं, (न०) समाधि । कब्र ।—
दार, (पु०) रकुआ ।—निर्मातकः, (पु०)
सुर्दा होने वाला ।—मत्तः,—मत्तकः, (पु०)
गीदह ।—संस्कारः, (पु०) सूतक के क्रिया
कर्म ।—सञ्जीवन, (वि०) सुर्दे को जिलाने
वाला ।—सञ्जीवनं, (न०)—सञ्जीवनी,
(स्त्री०) सुर्दे को जिलाने की क्रिया ।—सूतक,
(वि०) मृत बालक जनने वाली ।—स्नानं,
(न०) किसी भाई बंधु के मरने पर किया जाने
वाला स्नान ।

मृतं (न०) १ मृत्यु । २ भिन्नान्न ।

मृतकं (न०) } १ सुर्दा । सुर्दा की लाश ।
मृतकः (पु०) } (न०) २ सूतक सूतक ।—
अन्तकः, (पु०) सियार । गीदह ।

मृतराडः (पु०) सूर्य ।

मृतालकं (न०) एक प्रकार की मिट्टी ।

मृतिः (स्त्री०) मृत्तु । मौत ।

मृत्तिका (स्त्री०) १ मिट्टी । २ ताज़ी खोदी हुई
मिट्टी । ३ मिट्टी जिसमें सुगन्धि आती है ।

मृत्युः (पु०) १ मौत । २ यमराज । ३ ब्रह्मा । ४
विष्णु । ५ माया । ६ काली । ७ कामदेव ।—
तूर्य, (न०) ढोल जो किसी के मृतक क्रिया
कर्म के समय बजाया जाय ।—नाशकः, (पु०)
पारा ।—पाः, (पु०) शिवजी का नाम ।—
पाशः (पु०) यमराज का फंदा ।—पुण्यः,

(पु०) गन्ना । ऊख । ईख ।—प्रतिवद्र, (वि०) मरगशील । मर्त्य ।—फला, —फली, (स्त्री०) केला ।—बीजः, —बीजः, (पु०) बाँस ।—राज, (पु०) यमराज ।—लोकः, (पु०) १ मर्त्यलोक । २ यमलोक ।—वञ्चनः, (पु०) १ शिवजी । २ जंगली कौआ । वनकाक ।—सृतिः, (स्त्री०) कैकट की मादा । यह छँडे देती है और छँडे देते ही मर जाती है ।

मृत्युञ्जयः } (पु०) १ वह जिसने मौत को जीत लिया
मृत्युञ्जयः } हो । २ शिवजी का एक नाम ।

मृत्सा } (स्त्री०) १ मट्टी । २ अच्छी मट्टी । ३
मृत्स्ना } सुगन्धि युक्त मट्टी ।

मृद् (धा० परस्मै०) [मृदाति, मृदित] १ निचोड़ना । दबाना । मलना । २ कुचलना । पैरों से रूधना । कुचल कुचल कर टुकड़े २ कर डालना । नाश कर डालना । मार डालना । ३ रगड़ना । छिड़ना । स्पर्श करना । ४ झाड़ डालना । रगड़ कर साफ कर डालना ।

मृदु (स्त्री०) १ मिट्टी । मृत्तिका । २ मिट्टी का डेला । ३ मिट्टी का ढीला । ४ एक प्रकार की गन्धदार मिट्टी ।—करः, (पु०) कुम्हार ।—कांस्यः, (न०) मिट्टी का बरतन ।—गः, (पु०) मट्टली विशेष ।—जयः, (= मृच्चयः,) (पु०) मिट्टी का ढेर ।—पञ्चः, (पु०) कुम्हार ।—पात्रं, —भाण्डं, (न०) मिट्टी के बने बरतन ।—पिशडः, (पु०) मिट्टी का डेला ।—लोष्टः, (पु०) मिट्टी का डेला ।—शकटिका, (= मृच्छकटिका) मिट्टी की बनी छोटी गाड़ी । मिट्टी का बना गाड़ी का खिलौना ।

मृदंगः } (पु०) १ मृदङ्ग । तालक विशेष । २ बाँस ।
मृदङ्गः } —फलः, (पु०) कटहल का पेड़ ।

मृदर (वि०) १ चंचल । चपल । खेलाड़ी । २ कच्चा । उदात्त । उबन हू ।

मृदा देखो मद् ।

मृदित (व० कृ०) १ खाया हुआ । निचोड़ा हुआ । पीसा हुआ । कूटा हुआ । मला हुआ ।

मृदिनी (स्त्री०) कोमल या अच्छी मिट्टी ।

मृदु (वि०) [स्त्री०—मृदु या मृद्वी,] १ कोमल । नरम । मुलायम । २ निर्बल । कमज़ोर । ४ पर-मिताचारी ।—अङ्गम्, (न०) दीन । जस्ता ।—अङ्गी (स्त्री०) कोमलाङ्गी स्त्री ।—उत्पलं, (न०) कोमल नीला कमल ।—काष्णायसं (न०) सीसा । जस्ता ।—गभना, (स्त्री०) हंसी ।—पर्वकः, (पु०)—पर्वन्, (न०) सरपट । नरकुल ।—पुष्पः, (पु०) सिरस का पेड़ ।—भाषिन्, (वि०) मधुर भाषी । मीठा बोलने वाला ।—रोमन्, (पु०)—रोमकः, (पु०) सरगोश । खरा ।

मृदुः (पु०) शनिग्रह ।

मृदुन्नकं (न०) सुवर्ण । सोना ।

मृदुल (वि०) नम । कोमल । मुलायम ।

मृदुलं (न०) १ पानी । २ अगर काष्ठ विशेष ।

मृद्वी } (स्त्री०) अंगूरों या दाखों का
मृद्वीका } गुच्छा ।

मृध् (धा० उभय०) [मर्धति—मर्धते] नम होना या नम अथवा तर करना ।

मृधं (न०) युद्ध । लड़ाई ।

मृन्मय (वि०) मिट्टी का ।

मृश (धा० परस्मै०) [मृशति, मृष्ट] १ स्पर्श करना । छूना । २ रगड़ना । मलना । ३ विचारना खयाल करना ।

मृष् (धा० परस्मै०) [मर्षति] छिड़कना । (उभय०—मर्षति, मर्षते) सहना । सहन करना ।

मृषा (स्त्री०) १ झूठ । गलत । असत्यता । झूठ-मूठ । २ व्यर्थ । निरर्थक । अनुपयोगी ।—अध्या-यिन्, (पु०) सारस विशेष ।—अर्थक, (वि०) १ असत्य । २ वाहितात ।—अर्थकः, (न०) वाहितातपना । असम्भवत्व ।—उद्यं, (न०) झूठ । असत्य । झूटा बयान ।—ज्ञानं, (न०) अज्ञानता । भ्रम । भूल ।—भाषिन्—वादिन्, (पु०) झूठा । असत्य बोलने वाला ।—वाच,

(स्त्री०) असत्य वचन । व्यङ्ग्य ।—वाद्ः ।
(पु०) १ असत्य भाषण । असत्य । झूठ । २
अथार्थ भाषण । चापलूसी । ३ व्यङ्ग्य ।

सुषालकः (पु०) आम का पेड़ ।

सुष्ट (व० कृ०) १ साफ किया हुआ । पवित्र किया
हुआ । २ मालिश किया हुआ । मला हुआ । ३
पकाया हुआ । ४ स्पर्श किया हुआ । ५ विचार
किया हुआ । ६ स्वादिष्ट ।

सृष्टिः (स्त्री०) १ सफाई । पवित्रता । २ पाक-
क्रिया । ३ स्पर्श ।

मे (धा० आत्म) [मयते, मित] वित्तिय करना ।
बदलौवल करना ।

मेकः (पु०) बकरा ।

मेकलः (पु०) एक पर्वत का नाम । इसको
मेखल भी कहते हैं ।—अद्रिजा, (स्त्री०) —
कन्यका, (स्त्री०)—कन्या, (स्त्री०) नर्मदा
नदी के नामान्तर ।

मेखला, (स्त्री०) १ करघनी । तागड़ी । किङ्किणी ।
२ कमरबंद । इजारबंद । कमरपेटी । ३ कोई भी
वस्तु जो दूसरी वस्तु के मध्यभाग में उसे
चारों ओर से घेरे हुए पड़ी हो । ४ कटिसूत्र
जो तीन कर का होता है और जिसे द्विजाति
पहिनते हैं । ५ पहाड़ का उतार । ६ कूल्हा ।
कुम्हर । ७ तलवार का परतला । ८ तलवार को
मूठ में बंधी खोरी की गाँठ । ९ घोड़ा का
जेरबंद । १० नर्मदा नदी का नाम ।—पर्व, (न०)
कूल्हा ।—वन्धः, (पु०) कटिसूत्र धारण करने
की क्रिया ।

मेखलालः (पु०) शिव जी ।

मेखलिन् (पु०) १ शिवजी का नाम । २ बल्लचारी ।

मेघ (न०) अबरक ।

मेघः (पु०) १ बादल । २ समुदाय । ३ एक प्रकार
की घास जिसमें सुगन्धि आती है ।—अध्वन्,
(पु०), —पथः, (पु०)—मार्गः, (पु०)
अन्तरिक्ष ।—अन्तः, (पु०) शरतकाल ।—
अरिः, (पु०) पवन ।—अस्थि, (न०)

ओला ।—आश्व्यं, (न०) अबरक ।—आगमः,
(पु०) वर्षावृत्त ।—आटोपः, (पु०) मेघों
की बटा ।—आहम्बरः, (पु०) मेघों की गर्जन ।
—आनन्दा, (स्त्री०) सारस विशेष ।
आनन्दिन, (पु०) मेर ।—आलोकाः, (पु०)
मेघों का दृष्टिगोचर होना ।—आसवद्, (न०)
आकाश । अन्तरिक्ष ।—उदकं, (न०) वर्षा ।
वृष्टिः—कफः, (पु०) ओला ।—कालः,
(पु०) वर्षावृत्त ।—गर्जनं (न०)—गर्जना,
(स्त्री०) बादलों की गर्जन ।—त्रिस्तकः, (पु०)
चातक पक्षी ।—जः (पु०) बड़ा मोती ।—
जालं, (न०) १ मेघ । बटा । २ अबरक ।—
जीवकः,—जीवनः, (पु०) चातक पक्षी ।—
ज्योतिस्, (पु०) बिजली ।—डम्बरः, (पु०)
मेघ गर्जन ।—दीपः, (पु०) बिजली ।—द्वारं,
(न०) आकाश । ध्योम ।—नादः, (पु०)
१ बादलों की गर्जन । २ वरुण का नामान्तर । ३
रावण के पुत्र इन्द्रजीत का नाम ।—निघोषः,
(पु०) बादलों की गर्जन ।—पंक्तिः, (पु०)
माला, (स्त्री०) मेघबटा ।—पुष्पं, (न०)
१ जल । २ ओला । ३ नदी का जल ।—
प्रसवः, (पु०) जल ।—भूति, (स्त्री०)
बिजली ।—मण्डलं, (न०) अन्तरिक्ष ।
आकाश ।—मालः,—मातिन्, (वि०) मेघ-
रिखट ।—यानिः, (पु०) कोहरा । धूम ।—रवः,
(पु०) बादल का गर्जन ।—वर्णाः, (स्त्री०) नील
का रौवा ।—वर्मन्, (न०) आकाश ।—वन्धिः,
(पु०) बिजली ।—वाहनः (पु०) १ इन्द्र ।
२ शिव ।—विष्फूजितं, (न०) १ मेघों की
गड़गड़ाहट । २ एक वर्षावृत्त का नाम । वैशम्न,
(न०) आकाश ।—सारः, (पु०) चीनिया
कपूर ।—सुहृद्, (पु०) मयूर । मेर ।—स्तनितं,
(न०) बिजली । कड़क ।

मेचक (वि०) काला । श्यामल ।

मेचकं (न०) अन्वकार ।

मेचकः (पु०) १ कालापन । २ श्यामलरंग । २
मेर की चन्द्रिका । ३ बादल । ४ धुआँ । ५ धन
की दैपती । स्तन के ऊपर की काली धुँडी । ६

रत्न विशेष ।—आपग, (स्त्री०) यमुना का नाम ।

मेट्,) (धा० परस्मै०) [मेटति, मेटति]
मेड् } यागल होना । विस्स होना ।

मेडुला (स्त्री०) आँखों का वृक्ष ।

मेठ् (पु०) १ मेठा । २ महावत ।

मेठिः } (पु०) १ खंभा । २ खँटा । धुन-
मेथिः } किया ।

मेढ् (न०) १ लिङ्ग । पुरुष की जननेन्द्रिय ।—
चर्मन्, (न०) सुपाड़ी के ऊपर का चमड़ा ।
खलदी जो लिङ्ग के अग्रभाग को ढके रहती है ।
छेवर । छुछुरी ।—जः, (पु०) शिव ।—रोगः,
(पु०) लिङ्ग सम्बन्धी रोग ।

मेढ् (पु०) मेड़ा ।

मेढ्कः (पु०) १ बाँह । मुजा । २ लिङ्ग ।

मेंडः
मेगडः } (पु०) महावत ।
मेंडः
मेगडः }

मेढः
मेंडकः } (पु०) मेड़ा ।
मेगडकः }

मेथ् (धा० उभय०) [मेथति, मेथते] १ मिलना ।
२ आलिङ्गन करना । ३ (आत्मने०) गालियाँ
देना । ४ जानना । समझना । ५ धायल करना ।
भार डालना ।

मेथिका } (स्त्री०) एक प्रकार की घास ।
मेथिनी }

मेदः (पु०) १ चर्वी । २ वर्षसङ्कर जाति विशेष
जिसकी उत्पत्ति मनुस्मृति के अनुसार वैदेहिक
पुरुष और निषाद जाति की स्त्री से हो । ३ एक
नाग का नाम ।—जः, (न०) एक प्रकार का
रुग्ण ।—मिहः, (पु०) एक अल्पज जाति
विशेष ।

मेदकः (पु०) अर्क जो शराब खींचने के काम में
आता है ।

मेदस् (न०) १ चर्वी । चसा । शरीर स्थित सस
धातुओं में इसकी गणना है और यह उदर में
इकट्ठी होती है । २ स्थूलता । मोटाई या चरबी
बढ़ने का रोग ।—अर्चुदः, (न०) मेद युक्त गाँठ
या गिलदी जिसमें पीड़ा हो ।—कृत्, (पु० न०)
माँस ।—ग्रन्थिः, (पु०) मेदयुक्त गाँठ ।—जं,
—तेजस् (न०) हड्डी ।—पिण्डः, (पु०)
चर्वी का गोला ।—वृद्धिः, (स्त्री०) १ मेद की
बाढ़ । चर्वी की वृद्धि । मोटाई । २ अणुवृद्धि ।

मेदस्विन् (वि०) १ सौदा । स्थूल । २ बलवान ।
रोबीला ।

मेदिनी (स्त्री०) १ पृथिवी । २ ज़मीन । भूमि ।
धरती । ३ स्थान । स्थल । ४ एक संस्कृत कोश का
नाम (मेदिनीकोश) ।—ईशः, —पतिः,
(पु०) राजा ।—द्रवः, (पु०) धूल । गर्दा ।

मेदुर (वि०) १ चर्वी । २ स्निग्ध । चिकना ।
कोमल । ३ गाढ़ा । सघन ।

मेदुरित (वि०) गाढ़ा किया हुआ । घना बनाया
हुआ ।

मेद्य (वि०) १ सौदा । २ गाढ़ा । सघन ।

मेध देखो मेथ् ।

मेधः (पु०) १ यज्ञ । २ यज्ञीय पशु । यज्ञ में बलि
दिया जानेवाला पशु ।—जः, (पु०) विष्णु का
नामान्तर ।

मेधा (स्त्री०) १ बात को स्मरण रखने की मानसिक
शक्ति । धारणा शक्ति । २ बुद्धि । धी । ३ सर-
स्वती का रूप विशेष । ४ यज्ञ ।—अतिथिः,
(पु०) कई लोगों के नाम । यथा—१ काण्व-
वंश उद्भव एक ऋषि जो ऋग्वेद के प्रथम मण्डल
के १२-३३ सूक्तों के दृष्टा थे । २ कण्व मुनि के
पिता । ३ महावीर स्वामी के पुत्र जिनकी बनायी
मनुसंहिता की टीका प्रसिद्ध है । ४ प्रियव्रत के
पुत्र और शाकद्वीप के अधिपति । ५ कदम्ब प्रजा-
पति के पुत्र ।—रुद्रः, (पु०) कालिदास की
एक उपाधि ।—मेधावत् (वि०) बुद्धिमान ।
धीमान ।

मैधाविन् (वि०) १ तीव्र स्मरणशक्ति वाला । २
इन्द्रिमान् । धीमान् । (पु०) १ विद्वान्
पण्डित । २ तोता । ३ नशीला पेय पदार्थ
विशेष ।

मैधि देखो मैथि ।

मैधिका } (स्त्री०) सहदी ।
मैधी }

मैघ्य (वि०) १ यज्ञ के योग्य । २ यज्ञ सम्बन्धी ।
यज्ञीय । ३ पवित्र ।

मैघ्यः (पु०) १ बकरा । २ खदिर का वृक्ष । ३ शव ।
जै । जवा ।

मैघ्या (स्त्री०) कई एक पौधों का नाम ।

मैनका (स्त्री०) १ शकुन्तला की माता एक अप्सरा
का नाम । २ हिमालय की पत्नी का नाम ।—
आत्मजा, (स्त्री०) पार्वती का नाम ।

मैना (स्त्री०) १ हिमालय की पत्नी का नाम । २
एक नदी का नाम ।

मैनादः (पु०) १ मयूर । मोर । २ बिल्ली । ३
बकरा ।

मैप् (धा० आत्म०) [मैपते] जाना ।

मैय (वि०) १ नापने योग्य । नापने का । २ वह
जिसका तथ्यमीना या अनुमान किया जा सके ।
३ ज्ञेय । जानने योग्य ।

मैरुः (पु०) १ एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का
कहा गया है और जिसके चारों ओर कहा जाता है
कि उसके शिखर समस्त ग्रह घूमा करते हैं । २ माला
के बीच का गुरिया जिससे जप आरम्भ किया जाता
है । मणिहार के बीच का रत्न ।—धामन्, (पु०)
शिवजी ।—दंष्ट्र (न०) बीजगणित का चक्र
विशेष ।

मैरुकः (पु०) यज्ञधूप । धूता ।

मैलः (पु०) संयोग । समागम । मिलाप ।

मैलनं (न०) १ संयोग । मिलाप । २ जमावडा ।
३ संमिश्रण ।

मैला (स्त्री०) १ समागम । २ सभा । समाज ।

३ सुर्मा । ४ नील का पौधा । ५ स्याही । ६
(संगीत में) स्वरग्राम ।—अम्बुकः (पु०)
—अम्बुः—(पु०)—नन्दः, (पु०)—नन्दा,
(स्त्री०)—मंदा (स्त्री०) कलसदान । मली-
पात्र । दावात ।

मैव् (धा० आत्म०) [मैवते] पूजन करना । सेवा
करना । परिचर्या करना ।

मैवः (पु०) १ मेढा । मेढा । २ मैवराशि ।—अण्डः
(पु०) इन्द्र की उपाधि ।—कम्बलः, (पु०)
ऊनी कंबल ।—पालः,—पालकः, (पु०)
गहरिया ।—मांसम् (न०) मेढ का मांस ।
—यूथं, (न०) मेढों का गल्ला ।

मैपा (स्त्री०) छोटी इलायची ।

मैपिका } (स्त्री०) मेढ ।
मैपी }

मैहः (पु०) १ पेशाब करने की क्रिया । २ पेशाब ।
मूत्र । ३ पेशाब की बीमारी । ४ मेढा । ५
बकरा ।—घ्नी (स्त्री०) हल्दी ।

मैहनं (न०) १ मूत्र विसर्जन करने की क्रिया । २
मूत्र । ३ लिङ्ग ।

मैत्र (वि०) [स्त्री०—मैत्री] १ मित्र का । मित्र
सम्बन्धी । २ मित्र का दिया हुआ । ३ सद्भाववात्मक ।
४ मित्र नामक देवता सम्बन्धी ।

मैत्रं (न०) १ दोस्ती । २ मलोत्सर्ग । ३ अनुराधा
नक्षत्र । [मैत्रं भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ।]

मैत्रः (पु०) १ कुलीन ब्राह्मण । २ प्राचीन कालीन
एक बर्णसङ्घट्ट जाति । ३ गुहा । मलद्वार ।

मैत्रकं (न०) मित्रता ।

मैत्रावरुणः (पु०) १ वाल्मीकि जी का नाम । २
अगस्त्य जी का नाम । ३ सोलह ऋषिओं में से
पाँचवाँ ऋषि ।

मैत्रावरुणिः (पु०) १ अगस्त्य । २ वशिष्ठ । ३
वाल्मीकि ।

मैत्री (स्त्री०) १ दोस्ती । सद्भाव । २ घनिष्ठ सम्बन्ध ।
३ अनुराधा नक्षत्र ।

मैत्रेय (वि०) [स्त्री०—मैत्रेयी] मित्र सम्बन्धी ।
सद्भाव युक्त ।

मैत्रेयः (पु०) एक वर्णसङ्कर जाति विशेष ।

मैत्रेयकः (पु०) वर्षसङ्कर जाति विशेष ।

मैत्रेयिका (स्त्री०) मित्रों की लड़ाई । मित्रयुद्ध ।

मैत्र्य (न०) दोस्ती । मेल मिलाप ।

मैथिलः (पु०) मिथिला देश का राजा ।

मैथिली (स्त्री०) सीता जी ।

मैथुन (वि०) [स्त्री०—मैथुनी] १ जोड़ मिला हुआ । २ विवाह में जोड़ा मिला हुआ । ३ सम्भोग सम्बन्धी ।

मैथुन (न०) १ स्त्रीप्रसङ्ग । २ विवाह । ३ संसर्ग । समागम ।—उत्तरः, (पु०) मैथुनेन्द्रा की उद्भिन्नता ।—धर्मिन्, (वि०) सम्भोग क्रिया ।—वैराग्यं, (न०) स्त्री प्रसङ्ग से अरुचि ।

मैथुनिका (स्त्री०) विवाह द्वारा संयोग । वैवाहिक सम्बन्ध या मेल ।

मैधावकं (न०) बुद्धि । प्रतिभा ।

मैनाकः (पु०) मैना के गर्भ से और हिमालय के वीर्य से उत्पन्न पर्वत विशेष । केवल इसीके पर रह गये हैं ।—स्वस्तु, (स्त्री०) पार्वती ।

मैनालः (पु०) मछवा । धीमर ।

मैन्दः (पु०) एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ।—हनु, (पु०) श्रीकृष्ण का नाम ।

मैरेयं (न०) गुड़ और घै के फूलों की बनी
मैरेयः (पु०) हुई एक प्रकार की शराब जो
मैरेयकं (पु०) प्राचीन काल में व्यवहृत की
मैरेयकः (न०) जाती थी ।

मैलिन्दः (पु०) भ्रमर । भौरा । मधुमक्षिका ।

मोक्तं (न०) किसी जानवर का निकाला हुआ चाम ।

मोक्त (धा० परस्मै० उभय०) [मोक्तानि, मोक्तयति, मोक्तयते] १ मुक्त करना । छोड़ देना । रिहा कर देना । २ खोल देना । बंधन से रहित कर देना । ३ छीन लेना । खींच लेना । ४ फेंकना । धुमा कर भारना । ५ बहाना । गिराना ।

मोक्तः (पु०) १ छुटकारा । स्वतंत्रता । २ बचाव । ३ मुक्ति । आवागमन या जन्ममरण से छुटकारा । ४

मृत्यु । ५ अथःपात । अधोगमन । गिर जाना । ६ छील । बंधन से मुक्ति । ७ पात । बहाव । ८ छोड़ने की क्रिया । दागने की क्रिया । ९ बखेरने की क्रिया । १० उद्घरण होने की क्रिया । ११ ग्रहण के छूटने की क्रिया ।—उपायः, (पु०) मोक्ष प्राप्ति के साधन ।—देवः, (पु०) चीनी यात्री हुएन सांग की उपाधि ।—द्वारं, (न०) सूर्य ।—पुरी, (स्त्री०) काश्मी की उपाधि ।

मोक्त्यां (न०) १ रिहाई । छुटकारा । २ मोचन । ३ बन्धन राहित्य । ४ त्याग । ५ बहाव । गिराव (जैसे धौंसुओं का) ६ बरबाद कर देने की क्रिया ।

मोक्ष (वि०) १ निष्फल । व्यर्थ । जिसका कुछ फल न हो । जिसमें कुछ लाभ न हो । असफल । २ निष्प्रयोजन । निरुद्देश्य । ३ त्यक्त । त्यागा हुआ । ४ सुल । काहिल ।—कर्मन्, (वि०) ऐसे कर्म में लगा हुआ जिसका फल कुछ भी न हो ।—पुण्या, (स्त्री०) बौद्ध स्त्री ।

मोक्षं (अव्यया०) व्यर्थ । निष्प्रयोजन ।

मोक्षः (पु०) घेरा । हाता । मैद ।

मोक्षालिः (पु०) मैद । हाता । बाढ़ा ।

मोक्षं (न०) केले का फल ।

मोक्षः (पु०) १ केले का वृक्ष । २ शोभाजन वृक्ष ।

मोक्षकः (पु०) १ भक्त । साधु । २ मोक्ष । मुक्ति । ३ केले का पेड़ ।

मोक्षन (वि०) [स्त्री० मोक्षनी] छुड़ाने वाला । रिहा करने वाला ।

मोक्षनम् (न०) १ रिहाई । छुटकारा । मोक्ष । २ छुआँ में से खोलने की क्रिया । ३ छोड़ने की क्रिया । ४ उद्घरण होने की क्रिया ।—पट्टकः, (पु०) छड़ी । साफी । जल साफ करने का यंत्र ।

मोक्षयितु (वि०) छुड़ाने वाला । छुटकारा देने वाला ।

मोक्षा (स्त्री०) १ केले का पेड़ । २ कपास का पौधा ।

मोक्षाटः (पु०) १ केले के फल का गूदा । केले का फल । २ चन्दन काष्ठ ।

मोटकः (पु०) } गोली । (न०) भग्नकुशपत्र द्वय ।
मोटकं (न०) }

मोहन (न०) } मलना । रगड़ना । पीसना ।
मोहनक (न०) } कूटना कचरना ।

मोहायिते (पु०) साहित्य में एक हाव जिसमें नायिका अनुपस्थित प्रेमी के प्रति अपने आन्तरिक प्रेम को इच्छा न रहते भी प्रकट कर देती है ।

मोहः (पु०) १ आनन्द । हर्ष । २ सुगन्ध । सुशब्द ।
—आख्यः, (पु०) आम का वृक्ष ।

मोहक (वि०) [स्त्री०—मोहका, मोहकी,] प्रसन्नकारक । हर्षप्रद ।

मोहकं (न०) } लड्डू । लड्डूया । मिठाई विशेष ।
मोहकः (पु०) }

मोहकः (पु०) वर्षासङ्कर जाति विशेष जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और शूद्र माता से होती है ।

मोहन (न०) १ हर्ष । आनन्द । २ प्रसन्न रखने की क्रिया । ३ मोम ।

मोहयन्तिका } (स्त्री०) वनमल्लिका । जंगली
मोहयन्ती } चमेली ।

मोहिन् (वि०) १ प्रसन्न । हर्षित । २ प्रसन्नकारक ।

मोहिनी (स्त्री०) १ अजमोदा । २ मञ्जिका । ३ युधिका । २ मुस्क । कस्तूरी । ३ मदिरा । शराब ।

मोहयः (पु०) १ एक पौधे की जड़ जो मीठी होती है । २ प्रसव से सातवीं रात के बाद का दूध ।

मोहयः (न०) गन्ने की जड़ ।

मोपः (पु०) १ चोर । डाँकू । २ चोरी । लूट । ३ लूटने या चुराने की क्रिया । ४ लूट या चोरी का माल ।—कृत, (पु०) चोर ।

मोपकः (पु०) चोर । डाँकू ।

मोपणं (न०) १ चुराने या लूटने की क्रिया । २ काटने की क्रिया । ३ नाश करने की क्रिया ।

मोषा (स्त्री०) चोरी । लूट ।

मोहः (पु०) १ भ्रम । भ्रान्ति । २ परेशानी । उद्विग्नता । बबड़ाहट । ३ अज्ञान । मूर्खता । ४ भूल । झलती । ५ आश्चर्य । विस्मय । ६ सन्ताप । पीड़ा । ७ तौत्रिक क्रिया विशेष जिससे शत्रु बबड़ा जाता है ।—कलिलं, (न०) माया का

फंदा या जाल ।—निद्रा, (स्त्री०) उत्कट आत्मविश्वास । आनन्दना से अधिक आत्मविश्वास ।
—रात्रिः, (स्त्री०) वह कालरात्रि जब सारा संसार नष्ट हो जायगा ।—शास्त्रं, (न०) झूठा सिद्धान्त जो भ्रम में डाले ।

मोहन (वि०) [स्त्री०—मोहनी] १ मोह उत्पन्न करने वाला । २ परेशान करने वाला । व्याकुल करने वाला । ३ माया में डालने वाला । ४ मनोमोहक । मन को मोहने वाला ।

मोहनं (न०) १ मोह लेने की क्रिया । २ परेशानी । ३ व्यामोह । ४ माया । भ्रम । ५ लालच । ६ स्त्रीप्रसङ्ग । ७ तौत्रिक प्रयोग जिसके द्वारा शत्रु को बबड़ा देते हैं ।—अस्त्रं, (न०) प्राचीन कालीन अस्त्र विशेष, जिसके द्वारा शत्रु मूर्च्छित हो जाता था ।

मोहनः (पु०) १ शिव जी का नामान्तर । २ कामदेव के पाँच बाणों में से एक का नाम । ३ धनुरा ।

मोहनकः (पु०) चैत्र मास ।

मोहित (व० क०) १ व्यामोह । २ परेशान । विकल । ३ भ्रम में पड़ा हुआ । मोह में पड़ा हुआ ।

मोहिनी (स्त्री०) १ एक अप्सरा का नाम । २ मोहने वाली स्त्री । ३ विष्णु का एक रूप जो अमृत वॉटने के समय असुरों को मोहित करने के लिये उनको रखना पड़ा था । ४ चमेली विशेष ।

मौक्तिकः } (पु०) काक । कौआ ।
मौकुलिः }

मौक्तिकं (न०) मोती ।—अवली, (स्त्री०) मोतियों की लड़ी ।—गुफिका, (स्त्री०) स्त्री जो मोती का हार बनाकर तैयार करे ।—दामन, (न०) मोतियों की लर ।—शक्तिः, (स्त्री०) मोती की सीप ।—सरः, (पु०) मोती का हार ।

मौक्त्यं (न०) गूंगापन । मुक्त्व ।

मौख्यं (न०) मुख्यत्व । प्रधानता ।

मौखरिः (पु०) भारत के एक प्राचीन राजवंश का नाम ।

मौख्य (न०) १ वायुलीपना । बकीपन । २ गाली । अपमान । तिरस्कार ।

मौख्यं (न०) १ मूर्खता । मूढ़ता । २ सादगी । निर्दोषता । ३ मनोहरता । सौन्दर्य ।

मौर्व (न०) केले का फल ।

मौज } (वि०) [स्त्री०—मौजी,—मौजी] मूँज
मौज } तृण का बना हुआ ।

मौजी } (स्त्री०) मूँज का बना ब्राह्मण का कटि-
मौजी } सूत्र ।—वधनं, (न०) यज्ञोपवीत
संस्कार ।

मौख्यं (न०) १ अज्ञानता । मूर्खता । २ लड़कपन ।

मौर्व (न०) मूत्र ।

मौदिकः (पु०) हलवाई ।

मौदलिः (पु०) काक । कौआ ।

मौद्गीन (वि०) मूँग बोने योग्य खेत ।

मौन (न०) खामोशी । चुप्पी ।—मुद्रा, (स्त्री०)
मौन भाव ।—व्रतं, (न०) मौन धारण करने
का व्रत ।

मौनिन् (वि०) [स्त्री०—मौनिनी] मौन व्रत
धारण करने वाला । (पु०) मुनि । संन्यासी ।
साधु ।

मौरजिकः (पु०) डोल बजाने वाला ।

मौख्यम् (न०) मूर्खता । बेवकूफी ।

मौर्यः (पु०) एक राजवंश का नाम जिसका प्रथम
राजा चन्द्रगुप्त था ।

मौर्वी (स्त्री०) १ कमान की डोरी । धनुष का रोदा ।
२ मूर्वा शास का बना सत्रिय के पहिने योग्य
कटिसूत्र ।

मौल (वि०) [स्त्री०—मौला—मौली] १
मौलिक । मूलोद्भूत । २ प्राचीन । पुराकाशीन ।
३ कुलीन-वंशजसम्भूत । ४ राजा का पुरतैनी
नौकर । पुरतैनी ।

मौलः (पु०) पुरतैनी दीवान ।

मौलि (वि०) सर्वोच्च । मुख्य । सर्वोत्तम ।

मौलिः (पु०) १ सिर । सीस । २ मुकुट । ३ किसी
वस्तु का सर्वोच्च भाग । ४ यशोकवच ।

मौलिः (पु० या स्त्री०) १ मुकुट । ताज । कलंगी ।
२ जुटिया । शिखा । ३ केश विन्यास ।

मौलिः } (स्त्री०) पृथिवी ।—मणिः, (पु०)—
मौली } रत्नं, (न०) मुकुट का रत्न या जवाहर ।
—मण्डनं (न०) सीसफूल । शिरोभूषण ।—
मुकुटं (न०) किरीट । ताज ।

मौलिक (वि०) [स्त्री०—मौलिकी] १ मूलोद्-
भूत । २ मुख्य । प्रधान । ३ अचकूट ।

मौल्यं (न०) कीमत । दाम । मोल ।

मौष्टा (स्त्री०) वृत्तसंयुक्ता ।

मौष्टिकः (पु०) गुंडा । बदमाश । कपटी । झलिया ।

मौसल (वि०) [स्त्री०—मौसली] १ सूसल के
आकार का । २ सूसल से युद्ध में लड़ा हुआ ।
३ सूसल की लड़ाई से सम्बन्ध युक्त ।

मौहूर्तः } (पु०) ज्योतिषी ।
मौहूर्तिकः }

मना (धा० परस्मै०) [मनति, मनात] १ मन ही मन
यावृत्ति करना । समझदारी से सीखना । ३ याद
करना ।

मनात् (व० कृ०) १ दुहराया हुआ । २ सीखा हुआ ।
अध्ययन किया हुआ ।

मनत् (धा० परस्मै०) १ रगड़ना । २ ढेर करना ।
जमा करना ।

मनः (पु०) दम्भ । पाखंड ।

मनः (न०) १ शरीर में उबटन या खुशबुदार कोई
लेप लगाने की क्रिया । २ जमा या ढेर लगाने
की क्रिया । ३ तेल । लेप ।

मन्द् (धा० आत्म०) (मन्दते) कूटना । पीसना ।
कुचरना ।

मन्दिमन् (पु०) १ कोमलता । २ निर्बलता ।

मृच् (धा० परस्मै०) [मृचति] जाना । चलना ।

मृच् } (धा० परस्मै०) [मृचति] जाना ।
मृश्च }

मल्ल (धा० उभय०) [मल्लयति—मल्लते]
काटना । विभाजित करना ।

मल्लत (व० कृ०) १ कुम्हलाया हुआ । सुरमाया
हुआ । २ थका हुआ । परिश्रान्त । ३ निर्बल ।
कमज़ोर । मूर्च्छित । ४ उदास । गमगीन । ५
गंदा । मैला —अंग, (वि०) निर्बल शरीर का ।
अंगी, (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।—मनस्,
(वि०) उदास मन ।

मल्लानिः (स्त्री०) १ सुरमाता । कुम्हलान । २ थका-
वट । ३ उदासी । गंदा ।

मल्लायत् (वि०) कुम्हलाया हुआ । लटा हुआ ।
मल्लयित् (दुबला ।

मल्लास्तु (वि०) १ कुम्हलाया हुआ । सुरमाया हुआ ।
२ जो दुबला होता जाय । ३ थका हुआ ।

मल्लिष्ट (वि०) १ अस्पष्ट कहा हुआ । अस्पष्ट । २
बर्बर । जंगली । ३ कुम्हलाया हुआ । सुरमाया
हुआ ।

मल्लितं (न०) जंगली बोली । ऐसी बोली जो समझ
में न आवे ।

मल्लेच्छ (धा० परस्मै०) [मल्लेच्छति, मल्लिष्ट,
मल्लेक्ष्] मल्लेच्छित् अस्पष्ट रूप से बोलना ।
जंगलियों की तरह बोलना । अंधबुद्ध बोलना ।

मल्लेच्छं (न०) ताँबा ।

मल्लेच्छः (पु०) जंगली जाति का मनुष्य । अनार्य
जाति के लोग जो संस्कृत भाषा न बोलते हैं

और हिन्दू धर्मशास्त्रों को न मानते हैं । विदेशी ।
२ जातिवहिकृत । जातिच्युत । बोधायन ने
मल्लेच्छ की परिभाषा यह बतलायी है :—

गोनानवाटको यस्तु चित्तं बहु भाषते ।
सर्वाचार विहीनश्च मल्लेच्छ इत्यभिधीयते ॥

३ पापी । दुष्ट मनुष्य ।—आख्यं, (न०)
ताँबा ।—आशः, (पु०) गेहूँ ।—आस्थं,—
मुखं, (न०) ताँबा ।—कन्दः, (पु०)
प्याज ।—जातिः, (स्त्री०) जंगली जाति ।
पहाड़ी जाति ।—देशः,—मण्डलः, (पु०)
वह देश जिलमें मल्लेच्छ रहते हैं ।—भाषा,
(स्त्री०) विदेशियों की भाषा ।—भोजनः,
(पु०) गेहूँ ।—भोजनं, (न०) जौ । जव ।
—वाचः, (वि०) विदेशी भाषा बोलने वाला ।

मल्लेच्छित (व० कृ०) अस्पष्ट रूप से कहा हुआ ।

मल्लेच्छितं (न०) १ विदेशी भाषा । २ व्याकरण-
विरुद्ध शब्द या बोली ।

मल्लेदु } (मल्लेदति, मल्लेदति) पापल होना ।
मल्लेड् }

मल्लेव (धा० आत्म०) [मल्लेवते] सेवा करना ।
पूजा करना ।

मल्लै (धा० परस्मै०) [मल्लायति, मल्लान] १ कुम्ह-
लाना । सुरमाना । २ थक जाना । ३ उदास
होना । ४ लट जाना । दुबला हो जाना । ५
अन्तर्धान होना । अदृष्ट होना ।

य

य—संस्कृत या नागरी वर्णमाला का २६ वाँ अक्षर ।
इसका उच्चारणस्थान तालू है । यह स्पर्शवर्ण और
उभयवर्ण के बीच का वर्ण कहा जाता है । इसी
से यह अन्तःस्थ वर्ण कहा जाता है । इसके उच्चा-
रण में कुछ आभ्यन्तर प्रयत्न के अतिरिक्त बाह्य
प्रयत्न, यथा संवार और घोष अपेक्षित होते हैं ।
य वर्ण अल्पप्राण है ।

यः (पु०) १ जाने वाला । २ गाड़ी । ३ हवा ।

यवन । १ सम्मिलन । २ कीर्ति । ३ यव । जौ ।
४ रोक । ५ विजली । ६ त्याग । १० गण
विशेष । ११ यम का नाम ।

यकन् (न०) यकृत । जिगर । यकृत द्वारा शिराओं
का रक्त परिष्कृत हुआ करता है । यह दाहिनी
कोख में रहता है । इसे कालखण्ड भी कहते हैं ।
—आत्मिका, (स्त्री०) कीद विशेष ।—उदरम्,
(न०) जिगर की वृद्धि ।

यज्ञः (पु०) देवयोनि विशेष जिनके राजा कुबेर हैं । ये लोग ही कुबेर के धनागारों की रखवाली किया करते हैं । २ आत्मा विशेष । ३ इन्द्र के राजभवन का नाम । ४ कुबेर का नाम ।—अधिपतिः, (पु०)—अधिपतिः, (पु०)—इन्द्रः, (पु०) यज्ञों के राजा कुबेर ।—आवासः, (पु०) वट का वृक्ष ।—कर्मः, (पु०) एक प्रकार का अङ्गलेप जिसमें कपूर, अगार, कस्तूरी और कंकौल समान भाग में पड़ते हैं । यह अङ्गलेप यज्ञों को परमप्रिय है ।—ग्रहः, (पु०) : १ वह जिस पर यज्ञ अथवा अन्य किसी प्रेतादि का ऊपरी केरा हो । २ पुराणानुसार एक प्रकार का कल्पित ग्रह । कहते हैं कि, जब इस ग्रह की दशा का आक्रमण होता है, तब वह मनुष्य विह्वल हो जाता है ।—तरुः, (पु०) वट वृक्ष ।—धूपः, (पु०) गृगल । लोबान ।—रसः, (पु०) एक प्रकार का मादक पेय पदार्थ ।—राजः, (पु०) कुबेर का नाम ।—रात्रिः, (स्त्री०) किसी के मतानुसार कार्तिकी अमावास्या और किसी के मतानुसार कार्तिकी पूर्णिमा यक्षरात्रि है ।—चित्तः, (पु०) वह जिसके पास विपुल धन राशि तो हो, पर वह उसमें से व्यय एक कोड़ी भी न करे ।

यज्ञिणी (स्त्री०) १ यज्ञ की स्त्री । २ कुबेर की पत्नी का नाम । ३ दुर्गा की एक अनुवरी का नाम । ४ अप्सरा विशेष जो मर्त्यलोकवासियों से सम्बन्ध रखती हैं ।

यज्ञी (स्त्री०) यज्ञ की स्त्री ।

यक्ष्मः (पु०) १ क्षी नामक रोग । तपेक्षिक ।—यक्ष्मन् (पु०) १ ग्रहः, (पु०) क्षीररोग का आक्रमण ।—ग्रस्त, (वि०) क्षय का रोगी ।—क्षी, (स्त्री०) अँगूर ।

यक्ष्मन् (वि०) क्षी रोग से पीड़ित ।

यज्ञ (धा० उभय०) [यजति, यजते, इष्ट] १ यज्ञ करना । २ बलिदान करना । चढ़ावा । नैवेद्य रखना । ३ पूजन करना । [निजन्तः—याजयति, —याजयते] १ यज्ञ करवाना । २ यज्ञ में सहायता देना ।

यज्ञघ्नः (पु०) अग्निहोत्री ।

यज्ञघ्नं (न०) अग्निहोत्र के अग्नि को सुरक्षित रखने की क्रिया ।

यज्ञनं (न०) १ यज्ञ करने की क्रिया । २ यज्ञ । ३ यज्ञ करने का स्थान ।

यज्ञमानः (पु०) १ वह व्यक्ति जो यज्ञ करता हो । वृश्चिणा आदि देकर ब्राह्मणों द्वारा यज्ञादि किया कराने वाला ब्रत । यथा । २ धनी । संरक्षक । आश्रयदाता । ३ अपने घर का बड़ा बृद्ध ।

यज्ञिः (पु०) १ यज्ञ करने वाला । २ यज्ञ करने की क्रिया । ३ यज्ञ ।

यज्ञसू (न०) १ यज्ञीय मंत्र । २ यजुर्वेद संहिता । वे मंत्र जो यज्ञ के समय पढ़े जायें । ३ यजुर्वेद का नाम ।—वेदः, (पु०) वेदग्रन्थों में से दूसरा वेद । यजुर्वेद की मुख्य दो शाखाएँ हैं—तैत्तिरी या कृष्णयजुर्वेद और वाजसनेयि अथवा शुक्ल यजुर्वेद ।

यज्ञः (पु०) १ यज्ञ । २ पूजन की क्रिया । ३ अग्नि का नाम । ४ विष्णु का नामान्तर ।—अहुः, (पु०) १ गृह्य का पेड़ । २ विष्णु का नामान्तर ।—अरिः, (पु०) शिवजी का नाम ।—अश्विनः, (पु०) देवता ।—आत्मन्, (पु०)—ईश्वरः, विष्णुभगवान् ।—उपवीतं, (न०) जनेऊ ।—कर्मन्, (वि०) यज्ञीय कोई कर्म ।—कीलकः, (पु०) वह खंभा जिसमें यज्ञीय पशु बाँधा जाता है ।—कुण्डः, (न०) हवनकुण्ड । अग्नि-कुण्ड ।—कृत्, (पु०) १ विष्णु । २ यज्ञ कराने वाला ऋत्विज ।—कृतः, (पु०) १ यज्ञीय कर्म विशेष । २ यज्ञीय मुख्य कर्म । ३ विष्णु का नाम ।—ह्रः, (पु०) राजस जो यज्ञ कार्यों में बाधा दे ।—पतिः, (पु०) विष्णुभगवान् ।—पशुः, (पु०) १ वह पशु जिसका यज्ञ में बलिदान किया जाय । २ फोड़ा ।—पुरुषः, —फलदः, (पु०) श्री विष्णुभगवान् ।—भागः, (पु०) १ यज्ञ का अंश जो देवताओं को दिया जाता है । २ देवता ।—भुजः, (पु०) देवता ।—भूमिः, (स्त्री०) वह स्थान जहाँ यज्ञ किया जाय ।—भृत्, (पु०)

विष्णु का नाम ।—मौक्तु, (पु०) विष्णु का नाम ।—रतः, (पु०)—रेतस् (न०) सोम ।—वराहः, (पु०) भगवान् विष्णु का वराह-वतार ।—वह्निः,—वह्नी (स्त्री०) सोमनह्नी या लता ।—वाटः, (पु०) यज्ञमण्डप का हाता ।—वाहनः, (पु०) श्री विष्णु ।—वृत्रः, (पु०) वरवृत्र ।—शरणः, (न०) यज्ञमण्डप ।—शाला, (स्त्री०) यज्ञमण्डप ।—शेषा, (पु०)—शेषं, (न०) यज्ञ करने के बाद बचा हुआ उपस्कर ।—श्रेष्ठा, (स्त्री०) सोम लता ।—सदस्, (न०) यज्ञकर्म में भाग लेने वाले जन ।—सम्भारः, (पु०) यज्ञ की सामग्री ।—सारः, (पु०) श्री विष्णु भगवान् ।—सिद्धिः, (स्त्री०) यज्ञ की समाप्ति ।—सूचं, (न०) यज्ञोपवीत ।—सेनः, (पु०) राजा वृषभ की उपाधि ।—स्थालुः, (पु०) यज्ञस्तम्भ ।—हन्, (पु०)—हन्तः, (पु०) शिव ।

यज्ञिकः (पु०) पलास का पेड़ ।

यज्ञिय (वि०) १ यज्ञ का । यज्ञ सम्बन्धी । यज्ञकर्म के योग्य । २ पवित्र । ३ पूजनीय । अर्चनीय । ४ धर्मात्मा । भक्त ।

यज्ञियः (पु०) १ देवता । २ द्वापर युग ।—देशः, (पु०) वह देश जहाँ यज्ञ करना चाहिये । मनु-स्मृति में इस देश की व्याख्या इस प्रकार की गयी है—

दृष्टव्य-रक्तु अन्तं कुतो जन यज्ञभादयः ।

स तेषां यज्ञियैः देशो ज्ञेयश्चेदेषः ततः परः ॥

—शाला, (स्त्री०) यज्ञमण्डप ।

यज्ञीय (पु०) यज्ञ सम्बन्धी ।

यज्ञीयः (पु०) गूजर का पेड़ ।

यज्ञीयव्रजपादपः (पु०) विकट्क नामक पेड़ ।

यजन् (वि०) [स्त्री०—यज्वरी] यज्ञ करने वाला । पूजन करने वाला । (पु०) १ वह जो वैदिक विधान से यज्ञ करता हो । श्री विष्णु भगवान् ।

यत् (धा० आत्म०) [यतते, यतित] १ प्रयत्न करता । उद्योग करता । कोशिश करता । २ उत्क-

षित होना । खालाचति होना । ३ परिश्रम करना । ४ सतर्क होना ।

यत् (व० कृ०) १ रोका हुआ । कावू में किया हुआ । संयत । २ परिमित ।—ध्यान्मन्, (वि०) जितेन्द्रिय ।—आहार, (वि०) निताहारी ।—इन्द्रिय, (वि०) इन्द्रियों को अपने वश में रखने वाला । जितेन्द्रिय । पवित्र । धर्मात्मा ।—चित्त,—मनस्,—मानस्, (वि०) मन को वश में रखने वाला ।—चाञ्, (वि०) चाँची को वश में रखने वाला । मौनी ।—व्रत (वि०) व्रत रखने वाला । सङ्कल्प को पूरा करने वाला ।

यत् (न०) हाथी को पैर की पृष्ठ से चलाने का क्रिया ।

यत्न (न०) प्रयत्न । उद्योग ।

यत्नम् (वि०) । यत्नम् (न०) । बहुतों में से कौन या कौन सा ।

यत्नर (वि०) । यत्नरत् (न०) । दो में से कौन सा या कौन ।

यत्स् (अव्यया०) १ कहाँ से । किससे । किस स्थान से । किस दिशा से । २ इस कारण—इसलिये । ३ क्योंकि । चूंकि । ४ किस समय से । जब से । ५ कि जिससे ।

यतिः (सर्वनाम. विशेषण) जितने : जितनी बार । पितने ।

यतिः (स्त्री०) १ शंक । धाम । नियंत्रण । २ बंदी । ३ पथप्रदर्शन । ४ सङ्गीत में स्थायी । ५ पाठच्छेद । कृत् में विरामस्थान । ६ विधवा ।

यतिः (पु०) संन्यासी, जिसने अपनी इन्द्रियों को अपने वश में कर रखा हो और जो सांसारिक जंजाल से विरक्त हो ।

यतिः (वि०) यत्नित । यत्न किया हुआ । जिसके लिये उद्योग किया गया हो ।

यतिन् (पु०) यती । संन्यासी ।

यतिनी (स्त्री०) विधवा ।

यत्नः (पु०) १ यत्न । उद्योग । २ धुन । परिश्रम । हड़ता । ३ सावधानी । सतर्कता । मनेयोग । उत्साह । जागरितावस्था । ४ कष्ट । कठिनाई ।

(अव्यया०) जहाँ। कहाँ। जिस स्थान में। किधर।
२ कब जैसे “यत्र काल”। ३ वृत्ति। क्योंकि।

त्य (वि०) किस स्थान का। किस स्थान का रहने वाला।

१ (अव्यया०) १ जिस प्रकार। जैसे। ज्यों। २ उदाहरणार्थ।—कामिन्, (वि०) स्वतंत्र। स्वेच्छाचारी।—कालः, (पु०) ठीक समय। उचित समय पर।—कालं, (अव्यया०) ठीक समय पर।—कर्म, —कर्मण, (अव्यया०) तरतीबवार। क्रमशः। क्रमानुसार।—कर्म, (अव्यया०) यथाशक्य। अपनी सामर्थ्य भर।—जान, (वि०) मूर्खतापूर्ण। वेहूना। जाहियाद। सूद।—ज्ञानं, (अव्यया०) अपनी समझ या जानकारी से सर्वोत्तम।—तथ, (वि०) १ सत्य। सही। २ ठीक। बिल्कुल ठीक।—तथं, (न०) किसी वस्तु का विस्तृत वर्णन। व्योरेबार या विगत बार वर्णन।—तथं, (अव्यया०) १ ठीक तौर से। सही तौर से। २ उचित रीति से। ज्यों का त्यों।—दिक्, —दिशं, (अव्यया०) हर ओर। हरतरफ।—निर्दिष्ट, (वि०) जैसा कि पहले कहा जा चुका है।—न्यायं, (अव्यया०) ठीक ठीक। सही सही।—पुर्, (अव्यया०) जैसा कि पहिले। जैसा कि पूर्व अवसरों पर।—पूर्व, (वि०) —पूर्वक, (वि०) १ जैसा पहिले था वैसा ही। पहले की नाई। पूर्ववत्। ज्यों का त्यों।—भागं, (न०) —भागशः, (अव्यया०) भाग के अनुसार। हिस्से के मुताबिक। यथोचित।—योग्य, (वि०) उपयुक्त। जैसा चाहिये वैसा। यथोचित। मुनासिब।—विधि, (अव्यया०) विधि के अनुसार।—शक्ति, —शक्त्या (अव्यया०) सामर्थ्यानुसार।—शास्त्रं, (न०) शास्त्रानुसार। शास्त्र के मुताबिक।—श्रुतं, (अव्यया०) १ जैसा सुना या जैसा कहा गया। २ वेद के अनुसार।—संख्यं, (न०) अलङ्कार विशेष।

“यञ् संख्यं अनेकेषु अतिजायां समन्वयः ॥”

—काव्यप्रकाश।

—संख्यं, —संख्येन, (अव्यया०) संख्या के अनुसार।—समयं, (अव्यया०) १ ठीक समय

पर। २ इकार के मुताबिक। ठहराव के अनुसार। चलन के अनुसार।—सम्भव, (वि०) जहाँ तक हो सके। जितना सुमकिन हो।—स्थानं, (न०) उपयुक्त स्थान।—स्थानं, (अव्यया०) ठीक जगह पर।

यथावत् (अव्यया०) ज्यों का त्यों। जैसा था वैसा ही। २ नियमानुसार।

यद् (सर्वनाम विशेषण) कर्ता एकवचन पुल्लिङ्गः। स्त्री० या। न० यत् अथवा यद्) कौन। कौनसा। क्यों।

यदा (अव्यया०) १ जिस समय। जिस वक्त। जब। २ यदि। अगर। ३ जब कि। क्योंकि।

यदि (अव्यया०) १ अगर। जो। २ आया। ३ बसलें कि। जब कि। ४ कदाचित्।

यदुः (पु०) देवयानी से महाराज यथाति का ज्येष्ठ पुत्र और यादवों का पूर्वपुरुष। प्राचीन कालीन एक प्रसिद्ध राजा।—कुलोद्भवः, —नन्दनः, —श्रेष्ठः, (पु०) श्रीकृष्ण के नामान्तर।

यदृच्छा (स्त्री०) १ मनमानापन। स्वेच्छाचरण। २ इच्छाकिया। अवानवक।—अभिज्ञः, (पु०) अपने मन से (किसी के कहे बिना ही) गवाही देने वाला साक्षी।—संवादः, (पु०) १ आकस्मिक वार्तालाप। २ स्वतः प्रवृत्त आलाप। आकस्मिक सम्मिलन।

यदृच्छातस् (अव्यया०) १ आकस्मिक। इच्छाकिया।

यदु (पु०) १ परिचालक। शासनकर्ता। नियन्ता। २ हाँकने वाला (हाथी का, गाड़ी का) ३ महाव्रत या हाथी का सवार।

यञ् (धा० उभय०) [यञति—यञते, यञयति—यञयते] रोकना। निग्रह करना। विवश करना। बंधन में डालना।

यञम् (न०) १ निग्रह करने वाला। टेक। थूनी। स्थम्भ। २ बेड़ी। बंधन। रस्सी। चमड़े का तस्मा। ३ जराही औजार। विशेष कर वह जो गुठिल या मोथरा हो। ४ किसी कार्य विशेष के

यन्त्रक

(५५७)

यमकः

लिये बनाई हुई कोई कला या औजार । १ चट-
खनी । ठाला । २ संयम । दमन । बल । जोर ।
३ ताबीज़ । कवच ।—उपलब्धः, (पु०) चक्री ।
—करण्डिका, (स्त्री०) बाजीगरों का पिंढारा;
जिसके द्वारा वे तरह तरह के करतब करके दिख
जाते हैं ।—कर्मकुत, (पु०) कारीगर । शिल्पी ।
—गृह, (न०) १ कोठहूँ । २ पुतलीघर ।—
वेष्टितं, (न०) जादूगरी का कोई करतब ।—
मालं, (न०) वह नल जिसके द्वारा कुपादि से
जल निकाला जाय ।—पुत्रकः, (पु०)—पुत्रिका,
(स्त्री०) कल से नाचने वाला गुहा या गुड़िया ।
—मार्गः, (पु०) नहर । बंश ।

यंत्रकं (न०) १ पट्टी । २ खराद । चक्रयंत्र ।

यंत्रकः, (पु०) १ वह जो कलपुत्रों की पूरी पूरी जान-
कारी रखता हो । २ वह शिल्पी जो यंत्रादि के
द्वारा वस्तुएं बनाता हो ।

यंत्रणाम् (न०) } १ नियंत्रण । २ दमन । ३
यंत्रणा (स्त्री०) } बंधन । ४ बरजोरी । बलात् ।
विवशता । कष्ट । पीड़ा । ५ रक्षण । चौकसी ।
६ पट्टी ।

यंत्रणी } (स्त्री०) पत्नी की छोटी बहिन । छोटी
यंत्रिणी } साली ।

यंत्रिन् (वि०) १ जीन या चारजामा कसा हुआ
(जैसे घोड़ा) । २ पीड़ाकारक । ३ कवच या
ताबीज़ धारी ।

यम् (भा० परस्मै०) [यच्छति, यत] दमन करना ।
निग्रह करना । सेकना । नियंत्रण करना । बशवर्ती
करना । दबाना । बंद करना । २ देना । भेंट
करना । प्रदान करना ।

यमः (पु०) १ दमन । निग्रह । २ नियंत्रण । ३
आधमसंयम । ४ चित्त को धर्मे में स्थिर रखने वाले
कर्मों का साधन । सृष्टिकारों ने यमों का निरू-
पण इस प्रकार किया है :—

प्रब्रह्मं दत्वा शान्तिर्दानं संयमश्चरन्तः ।

अहिंसा/अस्तेयं वाचं धर्मश्चेति यमः सृष्टः ॥

याज्ञवल्क्यः ।

अथवा

आधुनिक दत्तः मर्यादादिना शान्तिर्दानं च ।

मैत्रिः प्रसादी वाचं धर्मश्चेति यमः सृष्टः ।

कहीं कहीं पर पोंच ही यमों का उल्लेख है ।

यथाः—

अहिंसां संयमं च प्रब्रह्मं धर्मं चरन्तः ।

अहिंसां च वाचं धर्मं चरन्तः यमः सृष्टः ।

१ योग के आठ अंगों में से प्रथम । [योग के
आठ अंग ये हैं :—

१ यमः २ नियमः ३ आसनः ४ प्राणायामः ।

५ प्रत्याहारः ६ धारणाः ७ ध्यान और ८

समाधि ।] ६ यमराजः धर्मराजः । ७ एक साथ

उपलब्धियों का जोड़ा । ८ जोड़े में का या दो में

से एक ।—अनुगः,—अनुचरः, (पु०) यम-

किङ्कर । यमदूत ।—अन्तकः, (पु०) १ शिव ।

२ यमराज ।—किङ्करः, (पु०) यमराज के दूत ।

—कीलः, (पु०) श्री विष्णु भगवान् ।—ज,

(वि०) जुलही जुलहा । जो जुड़ में उपलब्ध

हुए हों ।—दूतः, (पु०) १ यमराज का दूत ।

मौत । २ काक ।—द्वितीया, (स्त्री०) कार्तिक

शुक्ला रथा जब बहिन अपने माहलों को भोजन

कराती हैं । मैयाद्वैज । आतृद्वितीया ।—धानी,

(स्त्री०) यमपुरी ।—भगिनी, (स्त्री०) यमुना

नदी का नाम ।—यातना, (स्त्री०) वह दण्ड

जो यमराज द्वारा पापी जीवों को मृत्यु के अनन्तर

दिया जाता है । [यह शब्द प्रायः घोर अत्याचार

प्रदर्शन करने के लिये प्रयुक्त किया जाता है ।]—

राज्, (पु०) यम ।—सभा, (स्त्री०) यम-

राज की कचहरी ।—सूर्य, (न०) ऐसा मकान

जिसमें दो बड़े कमरे हों । इनमें से एक का मुख

पूर्व और दूसरे का पश्चिम की ओर होना है ।

यमं (न०) जोड़ा । जुड़ ।

यमकं (न०) १ दुहरी पट्टी । २ एक प्रकार का

शब्दालङ्कार या अनुशास जिसमें एक ही शब्द

कई बार आता है, पर हर बार उसके अर्थ भिन्न

भिन्न होते हैं ।

यमकः (पु०) १ संयम । दमन । २ यमज । जोड़े ।

३ यम ।

यमन (वि०) [स्त्री०—यमनी] दमन करने वाला ।
संयमी । निग्रह करने वाला ।

यमन (न०) १ निग्रह अथवा दमन करने की क्रिया ।
२ समाप्ति । विश्राम । ३ प्रतिबंध । बंधन ।

यमनः (न०) यमराज । धर्मराज ।

यमनिका (स्त्री०) पर्दा । नाटक का पर्दा । कनात ।

यमल (वि०) जोड़ा । यमज । जुड़ में का एक ।

यमल (न०) } जोड़ा । जुड़ ।
यमली (स्त्री०) }

यमलः (पु०) दो की संख्या ।

यमलौ (द्विवचन) जोड़ा ।

यमनात् (वि०) आत्मसंयमी । जितेन्द्रिय ।

यमनात् (अव्यय०) यमराज के हाथ में ।

यमुना (स्त्री०) एक प्रसिद्ध नदी का नाम ।—धारा ।
(पु०) यमराज ।

ययातिः (पु०) चन्द्रवंशी एक प्रसिद्ध प्राचीन राजा
का नाम जो महाराज नहुष का पुत्र था ।

ययावरः (पु०) देखो यायावरः ।

ययिः } (पु०) १ अश्वमेध के योग्य घोड़ा । २
ययी } घोड़ा । अश्व ।

यहि (अव्यय०) १ कब । जब । जब कभी । २
क्योंकि । चूंकि ।

यवः (पु०) १ जवा । जौ । जव नामक अन्न । २ बारह
सरसों या एक जवा की तौल का एक मान । ३
नाँपने का एक भाप विशेष जो $\frac{1}{2}$ या $\frac{1}{4}$ अँगुल का
होता है । ४ सामुद्रिक शास्त्रानुसार जौ के आकार
की एक रेखा विशेष, जो अँगूठे में होती है । अपने
स्थानानुसार यह धन, सन्तान अथवा सौभाग्य-
दायिनी मानी जाती है ।—झारः, (पु०) जवा-
झार ।—फलः, (पु०) बाँस ।—लासः, (पु०)
लोरा । झार । जवाझार ।—शुकः, —शुकजः,
(पु०) जवाझार ।—सुरं, (न०) जौ की
शराब ।

यवनः (पु०) १ यूनानी । २ कोई भी विदेशी । ३
साजर ।

यवनानी (स्त्री०) यवनों की लिपि ।

यवनिका } (स्त्री०) १ यूनानी स्त्री । सुसज्जमानि ।
यवनी } यथाः—

“यवन्यं यवन्यदीप्तं ।”

[प्राचीन नाटकों की देखने से जान पड़ता है कि,
यवनों की छोकरीयाँ राजाओं की परिचर्या
क्रिया करती थीं और धनुष तथा तरकलों की देख
भाल और रखवाली का काम विशेष रूप से उनकी
करना पड़ता था । यथाः—

(१) “बाणासनहस्तामिर्यवनीभिः परिवृत हत
एवागच्छति प्रियवयस्यः ।” —शकुन्तला ।—२

(२) “प्रविश्य शाङ्गहस्ता यवनी ।” —शकुन्तला—६

(३) “प्रविश्य चापहस्ता यवनी ।” —विक्रमोर्वशी—६
२ नाटक की पर्दा । पर्दा । कनात ।

यवसं (न०) घास । तृण । चारा ।

यवागू (स्त्री०) जौ या चावल का वह भाँड़ जो
सड़ा कर कुड़ सड़ा कर दिया गया हो । भाँड़ की
काँजी ।

यवानिका } १ “बुष्टो यवो यवानी ।” बुरी जाति
यवानी } का एक यव । २ अजदायन ।

यविष्ट (वि०) सब से छोटा । बहुत छोटा । (पु०)
१ छोटा भाई । २ शूद्र ।

यशस् (न०) कीर्ति । नामवरी । बड़ाई । प्रसिद्धि ।
—कर, (= यशस्कर) (वि०) यशप्रद ।—
काम (= यशस्काम) १ कीर्ति । कामी । नाम-
वरी चाहने का अभिलाषी ।—द, (= यशोद)
(वि०) यश देने वाला ।—दः, (= यशोदः)
(पु०) पारा । पारद ।—दा (= यशोदा)
(स्त्री०) नन्द गोप की स्त्री का नाम जिसने
श्रीकृष्ण का बाल्यावस्था में पालन पोषण किया
था ।—पदहः, (पु०) डोल विशेष ।—शेषः,
(पु०) मृत्यु । मौत ।

यशस्य (वि०) १ यश को देने वाला । यशस्कर ।
२ प्रख्यात । प्रसिद्ध ।

यशस्विन (वि०) प्रसिद्ध ।

यष्टिः } (स्त्री०) १ लाठी । छड़ी । डंडा । २ गदा ।
यष्टी } ३ खंभा । खोब । ४ चक्रस । अड्डा । अड्डी ।

२ बंदुल । ६ इहनी । डाल । शाखा । ७ पताका
या ध्वजा का वाँस । ८ लड़ी । हार । ९ पैल ।
लता । १० कोई भी वस्तु जो पनली हो ।—ग्रहः,
(पु०) असाबरदार ।—निवास्तः, (पु०)
कबूतरों की शृङ्गी ।—प्राणः, (वि०) १ निर्बल ।
कमजोर । शक्तिहीन ।

यष्टिकः (पु०) शिखरी पक्षी जो दिवहरी की जाति
का होता है ।

यष्टिका (स्त्री०) १ लाठी । छड़ी । डंडा । २ गले में
पहनने का हार ।

यष्टी (स्त्री०) देखो यष्टि ।

यष्ट्र (पु०) १ पूजक । अर्चक । पुजारी । २ ऋत्विज ।

यस्त् (धा० परस्मै०) [यमति, यस्यति, यस्तु]
प्रयत्न करना । उद्योग करना ।

या (धा० परस्मै०) [यानि, यात] १ जाना
गमन करना । २ आक्रमण करना । चढ़ाई करना ।
३ प्रस्थान करना । कूँच करना । ४ गुज़र जाना ।
५ अदृष्ट हो जाना । अन्तर्धान हो जाना । ६ गुज़र
जाना । बीत जाना । ७ प्रचलित रहना । ८ हो
जाना । आपड़ना । ९ किसी (नीची) अवस्था
को पहुँच जाना । १० किसी काम को करने का
बीड़ा उठाना । ११ किसी के साथ मैथुन सम्बन्धी
सम्बन्ध स्थापित करना । १२ प्रार्थना करना ।
याचना करना । १३ पता लगाना । ढूँढ
निकालना ।

यागः (पु०) यज्ञ ।

याच् (धा० आत्म०) [याचते] माँगना । भिक्षा
माँगना । प्रार्थना करना । बिनती करना ।

यान्वकः (पु०) [स्त्री०—याचकी] भिक्षुक ।
भिक्षारी । माँगता । प्रार्थी ।

“तुषादपि लघुस्तृप्तस्तृतादपि च याचकः ॥”

—सुमाधित ।

यान्वनं (न०) १ प्राप्त करने के लिये बिनती
याचना (स्त्री०) करने की क्रिया । माँगने की
क्रिया । २ प्रार्थना । बिनती । प्रार्थनापत्र ।

यान्वनकः (पु०) भिक्षारी । निवेदक । प्रार्थी ।

यान्विष्णुः (वि०) याचनाशील । माँगने की प्रवृत्ति
वाला ।

याचित (व० कृ०) माँगा हुआ । प्रार्थित ।

याचिनकं (न०) वह वस्तु जो याचना करने से प्राप्त
हुई हो । माँगनी की चीज़ ।

याश्ना (स्त्री०) १ याचना । माँगनी । २ प्रार्थना ।
बिनती ।

याजकः (पु०) १ ऋत्विज । यज्ञ कराने वाला । २
राजा का हाथी । ३ मदमाता हाथी ।

याजनं (न०) यज्ञ की क्रिया ।

याज्ञसेनी (स्त्री०) द्रौपदी का एक नाम ।

याज्ञिक (वि०) [स्त्री०—याज्ञिकी] यज्ञ सम्बन्धी ।

याज्ञिकः (पु०) ऋत्विज या यज्ञ करने वाला ।

याज्य (वि०) १ यज्ञ करने योग्य । २ दक्षिण । ३
वह जिसके लिये यज्ञ किया जाय । ४ वह जिसे
शास्त्रानुसार यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त है ।

याज्यः (पु०) यज्ञ करने वाला ।

याज्यं (न०) ऋत्विज की दक्षिणा ।

यात (व० कृ०) गया हुआ । प्रस्थानित ।

यातं (न०) १ गमन । गति । २ कूँच । प्रस्थान । ३
बीता हुआ समय । भूतकाल ।—यामः,—यामन्,
(वि०) १ बासी । रात का रखा हुआ । हस्ते-
मात्र किया हुआ । गुसा हुआ । २ कच्चा । अन-
पका । जीर्ण । वृद्ध । घिसा हुआ ।

यातनं (न०) बड़बड़ा । [जैसे जैरयाननं]

यातना (स्त्री०) यम द्वारा दिया जाने वाला पापियों
को दण्ड । (बहुवचन)

यातुः (पु०) १ यष्टिक । बंदोही । २ पवन । ३
समय । (पु० न०) प्रेत । भूत । राक्षस ।—
धानः, (पु०) प्रेत । भूत । राक्षस ।

यातु (स्त्री०) पति के भाई की पत्नी । जिहानी ।
दौरानी ।

यात्रा (स्त्री०) सफ़र । एक स्थान से दूसरे स्थान पर
जाने की क्रिया । २ कूँच । प्रस्थान । चढ़ाई के लिये
सेना का प्रस्थान । चढ़ाई । ३ तीर्थयात्रा । ४ तीर्थ

सं० श० कौ०—या

यात्रियों का समुदाय । ५ उत्सव । ६ जलूस ।
उत्सव का जलूस । ७ सड़क । ८ जीविका । ९
(समय) यापन । १० संसारी । [यथा—यात्रा
चैव हि लौकिकी] ११ उपाय । साधन । १२ प्रथा ।
रस्म । १३ वाहन । सवारी ।

यात्रिक (वि०) [स्त्री०—यात्रिकी] १ प्रस्थान
करने वाला । २ यात्रा सम्बन्धी । ३ वह जो जीवन
धारण करने के उपयुक्त हो । ४ मामूली ।

यात्रिकः (पु०) यात्री ।

यात्रिकं (न०) १ कूच । चढ़ाई । २ यात्रा सम्बन्धी
रसद ।

याथातथ्यं (न०) वास्तविकता । सत्यता ।

याथार्थ्यम् (न०) १ यथार्थ होने का भाव । २
उपयुक्तता । ३ किसी उद्देश्य की सिद्धि ।

यादवः (पु०) यदुवंशी ।

यादस् (न०) कोई भी (विशाल वपुधारी) जल-
जन्तु ।—पतिः, —नाथः, (= यादसांपति,
यादसानाथः,] (पु०) १ समुद्र । २ वरुण
देव का नाम ।

यादृक् (वि०) [स्त्री०—यादृक्ती] } (वि०)
यादृश (वि०) [स्त्री०—यादृशी] } जिस प्रकार
यादृश (वि०) [स्त्री०—यादृशी] } का । जैसा ।

यादृच्छिक (वि०) [स्त्री०—यादृच्छिकी] १ स्वेच्छा
चारी । स्वतंत्र । २ आकस्मिक । हृत्तिफाकिया ।

यानं (न०) १ गमन । पादचारण । (घोड़े या हाथी
की) सवारी । २ समुद्र यात्रा । यात्रा । ३ आक्रमण
। चढ़ाई । हमला । ४ जलूस । ५ वाहन । रथ ।
गाड़ी ।—पार्श्वं (न०) नाव । जहाज ।—भंगः,
(पु०) जहाज के नष्ट होने की क्रिया ।—मुखं,
(न०) सवारी का आगे का भाग, जिसमें घोड़ा
जोता जाता है ।

यापनं (न०) १ चलाना । हँका देना । निकाल
यापना (स्त्री०) १ देना । २ रोग को दूर करना । ३
समय का व्यतीत करना । ४ दीर्घसूत्रता । ५
सहायता । सहारा । ६ अभ्यास ।

याप्य (वि०) हटाने, निकाल देने या अस्वीकृत करने

योग्य । २ नीच । तिरस्करणीय । अनावश्यक । —
यानं, (न०) डोली । पालकी । म्याना ।

यामः (पु०) १ दमन । संयम । सहनशीलता । २
प्रहर । तीन घंटे का समय ।—घोषः, (पु०)
मुर्गा । २ घड़ियाली ।—यामः, (पु०) प्रत्येक
घंटे के लिये निर्दिष्ट कार्य ।—वृत्तिः, (स्त्री०)
चौकीदारी । पहरेदारी ।

यामलं (न०) जोड़ा । जुड़ ।

यामवती (स्त्री०) रात्रि ।

यामिः } (स्त्री०) १ भगिनी । बहिन । २ रात ।
यामी } रात्रि ।

यामिकः (पु०) चौकीदार । पहरेदार जो रात को
पहरा दे ।

यामिका } (स्त्री०) रात ।—पतिः, (पु०) १
यामिनी } चन्द्रमा । २ कपूर ।

यामुन (वि०) [स्त्री०—यामुनी] यमुना नदी
सम्बन्धी या यमुना से निकला हुआ या यमुना से
उत्पन्न ।

यामुनं (न०) सुर्मा विशेष ।

यामुनेष्टकं (न०) सीसा । रँग ।

याम्य (वि०) १ दक्षिणी । २ यमराज सम्बन्धी या
यम जैसा ।—अयनं, (न०) दक्षिणायन ।—
उत्तर, (वि०) दक्षिण से उत्तर की ओर जाने
वाला ।

याम्या (स्त्री०) १ दक्षिण । २ रात ।

यायजूका (पु०) इज्याशील । वह पुरुष जो प्रायः यज्ञ
किया करता हो ।

यायावरः (पु०) एक स्थान पर न रहने वाला साधु ।

यावः (पु०) १ भोज्य पदार्थ जो यव का बना हो ।
यावकं (न०) २ लाख ।
यावकः (पु०)

यावत् (वि०) [स्त्री०—यावती] जितना ।

यावन् (वि०) [स्त्री०—यावनी] यवन सम्बन्धी ।

यावनः (पु०) लोबान ।

यावसः (पु०) १ घास का ढेर । २ चारा । रसद ।

याष्टीक (वि०) [स्त्री०—याष्टीकी] लट्ठधर । लठैत

यात्रीकः (पु०) योद्धा जो लाली से लड़े ।

यास्कः (पु०) निरुक्तकार का नाम ।

यु (धा० परस्मै०) [यौति, युन] १ मिलाना । जोड़ना । २ गड़बड़ करना । संमिश्रण करना ।

युक्त (व० कृ०) १ जुड़ा हुआ । मिला हुआ । २ बंधा हुआ । जुएँ में जुता हुआ । नधा हुआ । ३ सुव्यवस्थित किया हुआ । ४ सहित । संयुक्त । ५ सम्पन्न । परिपूर्ण । ६ लीन । एकाग्र । ७ क्रियाशील । ८ निपुण । अनुभवी । चतुर । ९ उपयुक्त । योग्य । ठीक । १० अयौनिक :—अर्थ, (वि०) ज्ञानी । समकदार —कर्त्तव्य (वि०) वह जिसे कोई कर्त्तव्य कर्म सौंपा गया हो —दण्ड (वि०) उपयुक्त दण्ड देने वाला । मनस् (वि०) जो किसी काम में मन लगाये हो । मुखातिव ।

युक्तं (न०) जोड़ी । जुट ।

युक्तः (पु०) वह संन्यासी जो ब्रह्मीभूत हो गया हो ।

युक्तिः (स्त्री०) १ मेल । मिलाप । सङ्गम । मिलावट । २ प्रयोग । व्यवहार । इस्तेमाल । ३ नाचना । ४ चलन । रस्म । ५ उपाय । ढंग । तरकीब । ६ उपयुक्तता । ७ चातुरी । कला । ८ उपपत्ति । हेतु । ९ परिणाम । नतीजा । १० आधार । कारण । ११ रचना । सम्भावना । योग । १२ अलङ्कार विशेष जिसमें अपने कर्म को छिपाने के लिये दूसरे को किसी क्रिया या युक्ति द्वारा वञ्चित करने का वर्णन किया जाता है । १३ मीजान । जोड़ । १४ धातु की मिलावट ।—कर, (वि०) १ उपयुक्त । २ सिद्ध ।—युक्त, (वि०) युक्तिसङ्गत । ठीक । वाजिब ।

युगं (न०) १ जुआ । जुआठ । २ जोड़ा । जुट । २ समय या काल विशेष । पुराणानुसार काल का एक दीर्घ परिमाण । ३ पुरुष । पुरुष । पीढ़ी । ४ चार की संख्या का सङ्केत ।—अन्तः, (पु०) युग का अन्त । प्रलय । मयान्द ।—अवधिः, (पु०) प्रलय ।—कीलकः, (पु०) वह खूँटी जो बम और जुएँ के मिले छिद्रों में डाली जाती है । सैल । सैला ।—बाहु, (वि०) लंबी भुजा वाला ।

युगधरः (पु०) } गाड़ी के अगले भाग की वह
युगन्धरः (पु०) } लंबी निकली हुई लकड़ी जिसमें
युगधरम् (न०) } जुआँ अटकाया जाता है ।
युगन्धरम् (न०) }

युगपद् (अव्यया०) समसामयिकता से । एक साथ । एक ही समय में ।

युगलं (न०) जोड़ा । जोड़ी ।

युगलकं (न०) १ जुट । जोड़ा । २ वह कुलक (गद्य) जिसमें दो श्लोकों वा पद्यों का एक साथ अव्यय हो ।

युग्म (वि०) सम ।

युग्मं (न०) १ जोड़ा । २ सङ्गम । सम्मिलन । ३ (दो नदियों का) समागम । ४ जुलही सन्तान । यमज सन्तान । ५ कुलक या युगलक । ६ मिथुन राशि ।

युग्य (वि०) १ जोते जाने योग्य । २ जुटा हुआ । चारजामा या साज कसा हुआ । ३ खीचने योग्य ।

युग्यः (पु०) रथ में जोतने योग्य घोड़ा या कोई जानवर ।

युज् (धा० उभय०) [युनक्ति, युंक्ते, युक्त] १ जोड़ना । मिलाना । लगाना । संयुक्त करना । २ जुएँ में जोतना । ३ सम्पन्न करना । ४ इस्तेमाल करना । प्रयोग करना । ५ लगाना । नियुक्त करना । ६ बुमाना । फेरना । लगाना (जैसे मन को किसी वस्तु पर) । ७ एकाग्र चित्त करना । ८ रखना । स्थापित करना । ९ बना कर तैयार करना । सुव्यवस्था से रखना । तैयार करना । योग्य बनाना । १० देना । प्रदान करना ।

युज् (वि०) १ जुता हुआ । २ सम । विषम नहीं । (पु०) १ संयोजक । जोड़ने वाला । २ योगी । ३ जोड़ा । (इस अर्थ में यह शब्द नपुंसक भी है ।)

युञ्जानः (पु०) १ हँकने वाला । सारथी । २ युञ्जानः) योगाभ्यासी ब्राह्मण जो ब्रह्म में एकीभूत होने का अभिलाषी हो ।

युत (व० कृ०) १ संयुक्त । मिला हुआ । जुड़ा हुआ । २ सम्पन्न सहित ।

तक (न०) १ जोड़ा । २ मेल । दोस्ती । मैत्री ।
३ विवाहोपलक्ष्य का उपहार या भेंट । ४ स्त्रियों
की पोशाक विशेष । ५ स्त्रियों के पहिने के कपड़े
की गोट या संजाफ ।

युतिः (स्त्री०) १ सम्मिलन । सङ्गम । २ सहित ।
युक्त । अधिकार-प्राप्ति । ३ जोड़ । मीतान । ४
ग्रहों का योग ।

युद्ध (न०) १ लड़ाई । संग्राम । रण ।—अवसानं,
(न०) सुलह । सन्धि ।—आचार्यः, (पु०)
युद्धविद्या की शिक्षा देने वाला ।—उन्मत्त,
(वि०) लड़ाका । युद्ध में विह्वल ।—कारिन्
(वि०) लड़ने वाला । घोड़ा ।—भूः, (पु०)
—भूमिः, (स्त्री०) रणक्षेत्र ।—मार्गः, (पु०) युद्ध
के रास्ते पंच ।—रङ्गः, (पु०) रणक्षेत्र । घोरः,
(पु०) १ सैनिक । सिपाही । वीररस ।—
—सारः, (पु०) घोड़ा ।

युध् (धा० आत्म०) [युध्यते, युद्ध] लड़ना ।
लड़ना । युद्ध करना ।

युध् (स्त्री०) युद्ध । लड़ाई । रण । संग्राम ।

युधानः (पु०) सैनिक । सिपाही । बन्धु जाति का
मनुष्य ।

युप् (धा० परस्मै०) [युप्यति] १ मिटा देना ।
खरोच डालना । २ कष्ट देना । पीड़ित करना ।
सताना ।

युयुः (पु०) घोड़ा ।

युयुत्साः (स्त्री०) लड़ने की अभिलाषा । मिदन्त
करने की इच्छा ।

युयुत्सु (वि०) लड़ने का अभिलाषी ।

युवतिः } (स्त्री०) जवान औरत ।
युवती }

युवत् (वि०) [स्त्री०—युवतिः, युवति, यूनी]
१ जवान । वयस्क । २ स्वस्थ । तंदुरुस्त । ३
उत्तम । उत्कृष्ट ।

युवन् (पु०) [कर्ता—युवा, युवानौ, युवानः]
१ जवान आदमी । २ छोटा वंशधर । (जिसका
बड़ा जीवित हो । जीवति तु वश्ये युवा ।—

खुलति, (वि०) [स्त्री०—खुलतिः, खुलनी]
जवानी में गंजा ।—जरत्, (वि०) [स्त्री०—
जरती] वह जो जवानी की अवस्था में बूढ़ा देख
पड़े ।—राज्, (पु०)—राजः, (पु०) राजा
का वह राजकुमार जो राजसिंहासन के लिये मनो-
नीत कर लिया गया हो । राजा का उत्तराधिकारी ।

युष्मद् (सर्वनाम) तू । तुम ।

युष्मादृश } (वि०) तुम जैसा । तुम्हारे जैसा ।
युष्मादृश }

यूकः (पु०) } जुआँ । चीत्तर । चिलुआ ।
यूका (स्त्री०) }

यूतिः (स्त्री०) मिला । मेल । संमिलन । सम्बन्ध ।

यूयं (न०) गल्ला । गिरोह । हेड़ । समूह । दल ।
टोली ।—नाथः,—पः,—पतिः, (पु०) किसी
टोली या दल का नायक । अगुआ ।

यूयिका } (स्त्री०) लुही नाम का फूल और उसका
यूयी } पौधा ।

यूपः (पु०) १ यज्ञमण्डप का वह खंभा जिसमें
बलि का पशु बाँधा जाता है । यह खंभा या तो
बाँस का होता है अथवा खदिर की लकड़ी का ।
२ वह स्तम्भ जो किसी विजय अथवा कीर्ति के
लिये बना कर खड़ा किया गया हो ।

यूषं (न०) }
यूषः (पु०) } रसा । शोरवा । कोर । जूस । परेह ।
यूषन् (पु०) }

येन (अव्यया०) १ जिससे । २ चूँकि । क्योंकि ।

योक्त्रे (न०) १ रस्सा । रस्ती । चमड़े का तस्मा । २
हल के जुए की रस्सी । ३ गाड़ी का जोत ।

योगः (पु०) १ दो अथवा अधिक पदार्थों का एक
में मिलना । संयोग मिलना । मिलान । २ मेल ।
मिलाप । ३ संसर्ग । स्पर्श । सम्बन्ध । ४ प्रयोग ।
उपयोग । इस्तेमाल । ५ ढंग । रीति । तरीका ।
६ परिणाम । नतीजा । ७ जुआ । ८ सवारी ।
वाहन । गाड़ी । ९ कवच । १० योग्यता । उप-
युक्तता । ११ पेशा । धंधा । कारोबार । १२
धोखा । चालबाज़ी । दगाबाज़ी । १३ उपाय
तरकीब । १४ उस्ताह । उद्योग । आयास । १५

द्विजाज । चिकित्सा । १६ जादू । टोना । तौथिक कर्म । ऐन्द्रजालिक विद्या । १७ प्राप्ति । उपलब्धि । १८ धन । सम्पत्ति । १९ नियम । आदेश । २० निर्भरता । सम्बन्ध । एक शब्द की दूसरे शब्द पर निर्भरता । २१ शब्दविन्यास । शब्दव्युत्पत्ति । २२ शब्दव्युत्पत्ति के अनुसार शब्द का अर्थ । २३ योगदर्शनानुसार चित्त की चञ्चलता का निग्रह । चित्तवृत्ति निरोध । २४ पतञ्जलि का योगदर्शन । २५ (गणित में) जोड़ । मीज़ान । २६ (ज्योतिष में) शुभयोग । २७ तारागण्य का मिलन । २८ ज्योतिष सम्बन्धी (काल) योग विशेष । २९ किसी नक्षत्र का तारा विशेष । ३० भक्ति । ३१ जानूप । भेदिया । ३२ विश्वासघातक ।—अंगम्, (न०) योग का साधन ।—आचार्यः, (पु०) १ योगाभ्यास । २ बौद्ध विशेष । इस सम्प्रदाय के बौद्धों का मत है कि (बाह्य) पदार्थ जो देख पड़ते हैं, शून्य हैं । वे केवल आन्तरिक ज्ञान से जानते हैं, बाहर उनमें कुछ नहीं है ।—आचार्यः, (पु०) १ शिष्य जो इन्द्रजाल विद्या सिखाता हो । २ योगाभ्यास की शिक्षा देने वाला अध्यापक ।—आध्यात्मनः, (न०) जाली बन्धक ।—आरूढ़, वह योगी जिसने अपनी चित्त की वृत्तियों का निरोध कर लिया हो ।—आसनं (न०) योग-साधन के आसन अर्थात् बैठने का ढंग विशेष ।—इन्द्रः,—ईशः,—ईश्वरः, (पु०) १ बहुत बड़ा योगी । २ वह जिसने अलौकिक शक्ति सम्पादन कर ली हो । ३ ऐन्द्रजालिक । ४ देवता विशेष । ५ शिव जी । ६ याज्ञवल्क्य ।—क्षेमः, (पु०) १ नया पदार्थ प्राप्त करना और प्राप्त पदार्थ की रक्षा । २ बीमार । ३ कुशल स्वेम । राजी खुशी । सुरक्षा । समृद्धि । ४ सम्पत्ति । लाभ । मुनाफा ।—तारका,—तारा, (स्त्री०) किसी नक्षत्र का प्रधान तारा ।—दानं (न०) १ योगदीक्षा । २ कपटदान ।—धारणा, (स्त्री०) भक्ति में दृढ़ता ।—नायः, (पु०) शिव जी का नामान्तर ।—निद्राः, (स्त्री०) १ सोने और जागने के बीच की दशा । २ युगान्त

में होने वाली विष्णु की निद्रा ।—पट्टः, (न०) प्राचीनकालीन एक पहनावा जो पीठ पर से जाकर कमर में बाँधा जाता था और जिससे घुटनों तक का छंग ढका रहता था ।—एतिः, (पु०) विष्णु का नाम ।—चलं, (न०) वह शक्ति जो योग की साधना से प्राप्त होता है । तपोबल । २ ऐन्द्रजालिक शक्ति ।—माया, (स्त्री०) १ योग की अलौकिक शक्ति । २ भगवान की सृजन शक्ति । (भगवतः सर्जनार्थ शक्तिः) ३ दुर्गा का नाम ।—रङ्गः, (पु०) नारंगी ।—रूढ, (वि०) दो शब्दों के योग से बनने वाला (वह शब्द जो अपना सामान्य अर्थ छोड़ कर कोई विशेष अर्थ बतलावे) ।—रोचना, (स्त्री०) इन्द्र-जाल करने वालों का एक प्रकार का लेप ।—वर्तिका, (स्त्री०) जादू की बत्ती या दीपक ।—वाहिनः, (पु० न०) भिन्न गुणों की दो या कई ओषधियों को एक में मिलाने योग्य करने वाली ओषधि या द्रव्य ।—वाही, (स्त्री०) १ सजी । खारः । जवाखार । २ शहद । मधु । ३ पारा ।—विक्रयः, (पु०) जाली फरोहल या बिक्री ।—विन्दुः, (वि०) योग को जानने वाला । (पु०) १ शिव जी । २ योगी । ३ दर्शन का अनुयायी । ४ बाजीगर । जादूगर । ५ दवाइयों को बनाने वाला । कम्पौंडर ।—ग्राह्यं, (न०) पतञ्जलि ऋषि का बनाया हुआ योग-साधन पर एक ग्रन्थ विशेष ।—सारः, (पु०) सर्वव्याधिहर ओषधि ।

योगिन (वि०) १ संयुक्त । सहित । २ वह जिसमें ऐन्द्रजालिक शक्ति हो । (पु०) १ योगी । २ बाजीगर । ३ योगदर्शन का अनुयायी ।

योगिनी (स्त्री०) १ बाजीगरिनी । २ भगतिनी । ३ रणपिशाचिनी । दुर्गा की सहचरी जिनकी संख्या आठ है ।

योगेष्टं (न०) सीसा । रौंता ।

योग्य (वि०) १ उपयुक्त । योग्य । ठीक । बाजिव । २ उपयोगी । कामलायक । मुफ़ीद । ४ योगाभ्यास के योग्य ।

योग्यः (पु०) युक्ति भिड़ाने वाला । उपाय लगाने वाला । उपायी ।

योग्यं (न०) १ सवारी । गाड़ी । चन्दन । ३ चपाती । ४ दूध ।

योग्या (स्त्री०) १ अन्यास । कसरत । २ कवायद । फौजी शिखा ।

योग्यता (स्त्री०) १ समता । लायकी । २ लियकत । विद्वत्ता । बुद्धिमानी । ३ सात्पर्य बोध के लिये वाक्य के तीन गुणों में से एक । शब्दों के अर्थ संबन्ध की सङ्गति या सम्भवनीयता ।

योजनं (न०) १ संयोग । मिलान । मेल । एक में मिलाने की क्रिया । जुए में जोतने की क्रिया । २ प्रयोग । निर्याक्ति । ३ तैयारी । व्यवस्था । ४ शब्दान्वय । दूरी नापने का प्राचीन कालीन माप विशेष जो ४ कोस या आठ मील का होता है । ६ उत्तेजित करने या बढ़काने की क्रिया । ७ मन को एकाग्र करने की क्रिया ।—गन्धा, (स्त्री०) व्यास-माता सत्यवती का नामान्तर ।

योजना (स्त्री०) संयोग । मेल । मिलाप । २ व्याक-रणसिद्ध अन्वय ।

योधः (पु०) १ बोद्धा । सिपाही । २ लड़ाई । समर । संग्राम ।—अगारः, (पु०)—अगारः, (न०) सिपाहियों के रहने का मकान । बारक ।—धर्मः (पु०) योद्धाओं के नियम या आईन ।—संरावः, (पु०) सिपाहियों या लड़ने वालों की पारस्परिक ललकार ।

योधनं (न०) युद्ध । लड़ाई । रण । समर ।

योधिन् (पु०) बोद्धा । सिपाही । भट । लड़ाका ।

योनिः (पु० स्त्री०) १ गर्भाशय । भग । २ कोई भी उन्नत स्थान । उपादान कारण । श्रोत । चश्मा । ३ खान । ४ आवासस्थान । आश्रयस्थान । आधार । ५ घर । तह । ६ वंश । कुल । खानदान । जाति । उत्पत्ति । अस्तित्व का रूप । ७ जल ।—ज (वि०) गर्भाशय से उत्पन्न होने वाला । योनि से उत्पन्न ।—देवता, (स्त्री०) पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र ।

—भ्रूणः, (पु०) योनि रोग विशेष, जिसमें गर्भाशय अपने स्थान से कुछ हट जाता है ।—रञ्जनं, (न०) रजस्वला धर्म ।—लिङ्गम्, (न०) भगान्दुर । भगलिङ्ग ।—मङ्कुर, (वि०) नियम विरुद्ध संयोग से जातियों का सङ्करत्व ।

योनी (स्त्री०) देखो योनि ।

योपनं (न०) १ मिटा देने या छील डालने की क्रिया । २ कोई वस्तु जिससे मिटाया जाय । ३ परेशानी । जवड़ाहट । विकलता । ४ अत्याचार । पीड़न । नाशन ।

योपा (स्त्री०) }
योधिन् (स्त्री०) } स्त्री । लड़ाकी । युवती स्त्री ।
योदिता (स्त्री०) }

यौक्तिक (वि०) [स्त्री०—यौक्तिकी] १ उपयुक्त । योग्य । मुनासिब । २ युक्तियुक्त । ३ परिणाम निकालने योग्य । ३ साधारण । मामूली । रीति-रस्म के अनुसार ।

यौक्तिकः (पु०) राजा का विनोद या फीड़ा का साथी । नर्मसखा ।

यौगः (पु०) योग दर्शन को मानने वाला ।

यौगपद्यं (न०) समकालीनता ।

यौगिक (वि०) [स्त्री०—यौगिकी] १ उपयोगी । उचित । कामलायक । २ सामूली । साधारण । ३ शब्द व्युत्पत्ति के अनुकूल । ४ योग सम्बन्धी प्रतिकारकर । दुःखहर ।

यौतक (वि०) [स्त्री०—यौतकी] वह सम्पत्ति जिस पर किसी एक ही व्यक्ति का एकमात्र अधिकार हो ।

“ विभागभाषना ज्ञेया दृष्टेनैव यौतकीः ”

याज्ञवल्क्य ।

यौतकं (न०) १ निजी सम्पत्ति । खास अपनी सम्पत्ति । २ दाइजा । दहेज । वह सम्पत्ति जो स्त्री को विवाह के समय मिलती है ।

यौतधं (न०) माप । नाप ।

यौध (वि०) [स्त्री०—यौधी] लड़ाकू । लड़ने वाला ।

यौन (वि०) [स्त्री०—यौनी] १ यौनि सम्बन्धी ।
२ विवाह सम्बन्धी ।

यौन (न०) विवाह । वैवाहिक सम्बन्ध ।

यौवतं (न०) १ युवती स्त्रियों की डोली । २ युवती स्त्री की खूबी (सौन्दर्य आदि) । युवा स्त्री होने का भाव ।

यौवनं (न०) जवानी ।—आरम्भः, (पु०) जवानी का उभाड़ ।—दर्पः, (पु०) १ जवानी का

अभिमान । २ अविवेक ।—तन्त्रां (न०) ।

जवानी का चिन्ह । २ मनोहरता । सौन्दर्य । ३ (स्त्रियों के) कुच ।

यौवनकं (न०) जवानी ।

यौवनाश्वः (पु०) युवनाश्व के पुत्र का नाम । अर्थात् राजा मान्वाता का नाम ।

यौवराज्यं (न०) युवराज का पद ।

यौष्माकः (वि०) [स्त्री०—यौष्माकी] तुम्हारा यौष्माकीण । स्वदीय ।

र

र (पु०) संस्कृत अथवा नागरी वर्णमाला का सत्ताइसवाँ व्यञ्जन । जिसका उच्चारण जीभ के अगले भाग को मूर्छा के साथ थोड़ा सा स्पर्श कराने से हुआ करता है । यह ऊष्म और स्पर्श वर्णों के बीच का वर्ण है । इसका उच्चारण स्वर और व्यञ्जन का सम्भवती है । अतएव यह अन्तस्थ कहलाता है । इसके उच्चारण में सँवार, नाद और घोष नाम के प्रयत्न हुआ करते हैं ।

रः (पु०) १ अग्नि । २ गर्मी । ताप । ३ प्रेम । कामना । ४ वेग । रफ्तार ।

रंह (धा० परस्मै०) [रंहति] तेज़ी से या वेग से जाना या चलना ।

रंहतिः (स्त्री०) १ वेग । रफ्तार । २ उत्प्रेरिता । प्रचण्डता ।

रक्त (न० कृ०) १ रंगा हुआ । रंगीन । २ लाल । ३ अनुरक्त । अनुरागवान् । ४ प्यारा । प्रिय । माशुक । ५ मनोहर । सुन्दर । मनोज्ञ । ६ क्रीड़ा प्रिय । खिलाड़ी ।—अक्षः, (वि०) लाल नेत्रों वाला । २ भयानक ।—अक्षः, (पु०) १ मैला । २ कबूतर ।—अक्षः, (पु०) प्रवाल । मृगा ।—अक्षः, (न०) १ खटमल । खटकीरा । २ मङ्गलग्रह । ३ सूर्य या चन्द्रमण्डल । अधिमन्थः, (पु०) आँखों की सूजन ।—अम्बरं, (न०) लाल रंग का वस्त्र ।—अम्बरः, (पु०) गेरुवा वस्त्रधारी संन्यासी या परिव्राजक ।—अर्बुदः, (पु०) रोग विशेष जिसमें पकने और बहने वाली गाँठें शरीर में निकल आती हैं ।—अशोकः, (पु०) लाल

फूलों वाला अशोक वृक्ष । आधारः, (पु०) चमड़ा ।—आभ (वि०) लाल आभा वाला ।—आशयः, (पु०) शरीर के सात आशयों में से चौथा जिसमें रक्त का रहना माना गया है ।—उत्पलं, (न०) लाल कमल ।—उपलं, (न०) गेरु ।—कण्ठः,—कण्ठिनः, (वि०) मधुर कण्ठ वाला । (पु०) कोंकिल पक्षी ।—कन्दः,—कन्दनः, (पु०) मृगा । प्रवाल ।—कमलं, (न०) लाल कमल ।—चन्दनं, (न०) १ लाल चन्दन । २ केसर ।—चूर्णं, (न०) सेंदूर । हँसुर ।—कुर्दिः, (स्त्री०) रक्त की कमन ।—जिह्वः, (पु०) शेर । सिंह ।—तुण्डः, (पु०) तोता ।—वृक्षः, (पु०) कबूतर ।—धातुः, (पु०) १ गेरु । २ ताँबा ।—पाः, (पु०) राक्षस ।—पल्लवः, (पु०) अशोक वृक्ष ।—पा, (स्त्री०) जौंक ।—पादः, (वि०) लाल पैरों वाला ।—पादः, (पु०) १ पर्वी विशेष, जिसके पैर लाल हों । तोता । २ संश्राम-स्थ । ३ हाथी ।—पायिन् (पु०) खटमल । खटकीरा ।—पायिनी, (स्त्री०) जौंक ।—पिराडम्, (न०) १ लाल मुँहासा । २ नाक व मुँह से अपने आप रक्त का गिरना ।—प्रमेहः, (पु०) पेशाब की राह खून का गिरना ।—भवं, (न०) मांस ।—भोक्तः, (पु०)—भोक्तृणां, (न०) रक्त का बहना ।—बटी,—वरटी, (स्त्री०) चेचक ।—वर्गः, (पु०) १ लाख । २ अनार का वृक्ष । ३ कुसुम का फूल ।—वर्णः, (वि०) लाल रंगा हुआ । २ बीरबहूरी ।—वर्णः, (न०) सोना ।

—शासनं, (न०) सेन्दूर । ईंगुर । शीर्षकः,
(पु०) १ गंधाविरोजा । २ सारस ।—सन्ध्यकः,
(न०) लाल कमल ।—सारं, (न०) लाल
चन्दन ।

रक्तं (न०) १ खून । लोह । २ ताँवा । ३ कुसुम का
फूल । ४ सिंदूर । इंगूर ।

रक्तः (पु०) १ लाल रंग । २ कुसुम का फूल ।

रक्तक (वि०) १ लाल । २ अनुरक्त । आशिक ।
शौकीन । ३ प्रसन्नकर । ४ खूनी ।

रक्तकः (पु०] १ लाल वस्त्र । २ प्रेम करने वाला
आइमी । ३ विनोदी । मसखरा ।

रक्ता (स्त्री०) १ लाख । २ गुज्जा या घुंघची का
पौधा ।

रक्तिः (स्त्री०) १ मनोहरता । मनोज्ञता । अनुराग ।
प्रेम । राजभक्ति । भक्ति ।

रक्तिका (स्त्री०) घुंघची ।

रक्तिमन् (पु०) लड़ाई ।

रक्त (धा० परस्मै०) [रक्षति, रक्षित] १ रक्षा
करना । रखवाली करना । चौकसी करना । शासन
करना । २ गुप्त रखना । प्रकट करना । ३ बचाना ।

रक्तक (वि०) [स्त्री०—रक्तिका] रक्षण करने
वाला । चौकसी करने वाला । बचाने वाला

रक्तकः (न०) रखवाला । रखैया । चौकीदार । पहरे-
दार ।

रक्षणं (न०) रखवाली । रक्षा । चौकसी । पहरेदारी ।

रक्षणी (स्त्री०) लगाम । रास ।

रक्षस् (न०) राक्षस । दैत्य । दानव ।—ईशः,—
नाथः, (पु०) रावण ।—जननी, (स्त्री०)
रात ।—सर्भ, (न०) राक्षसों की टोली या
सभा ।

रक्षा (स्त्री०) १ बचाव । रक्षण । चौकसी । २
संविधानी । सुरक्षा । ३ चौकीदार । पहरेदार । ४
यंत्र । कवच । ताबीज़ । ५ अधिष्ठातृ देवता ।
अधिदैवत । ६ भस्म । ६ राखी जो कलाई में बाँधी
जाती है ।—अधिकृतः, (पु०) १ संरक्षक ।
शासक । २ मजिस्ट्रेट । ३ पुलिस का प्रधाना-

ध्यक्ष ।—अपेक्षकः, (पु०) १ द्वारपाल । दरवान ।
२ जनानखाने का दरवान । ३ खौंटा । (जो
पुरुष से मैथुन करवाता है) ४ नट । अभिनयकर्ता ।

—करण्डकः, (पु०) —करण्डकम्, (न०)
ताबीज़ । कवच । गृहं, (न०) प्रसूति का गृह ।
जन्माशाना । सौरी ।—पालः,—पुरुषः, (पु०)
चौकीदार । रखवाला ।—प्रदीपः, (पु०) तंत्र के
अनुसार वह दीपक जो भूत प्रेतादि की बाधा
मिटाने को जलाया जाता है ।—भूषणं,—मणिः,
—रत्नं, (न०) वह भूषण जिसमें किसी प्रकार
का कवच आदि हो ।

रक्षितृ } (वि०) रखवाला । (पु०) १ बचाने
रक्षिन् } वाला । २ चौकीदार । सन्तरी । पुलिस
वाला ।

रक्षुः (पु०) सूर्यवंशी एक प्रसिद्ध राजा । यह राजा
दिलीप का पुत्र और राजा अज का पिता था ।—
नन्दनः, नाथः,—पतिः,—श्रेष्ठः,—सिंहः,
(पु०) श्री रामचन्द्र जी का नामान्तर ।

रङ्ग } (वि०) १ कमीना । गरीब । भिड्डक ।
रङ्गु } अभागा । २ सुस्त ।

रङ्कः } (पु०) फकीर । मँगता । भूखा ।
रङ्कुः }

रङ्कुः } (पु०) हिरन । मृग ।
रङ्कुः }

रङ्गः (पु०) }
रङ्गः (पु०) } दीन । जस्ता ।
रङ्गः (न०) }
रङ्गम् (न०) }

रङ्गः) (पु०) १ रंग । २ अभिनय खेलने का
रङ्गः } स्थान । रंगमञ्च । ३ सभा-स्थान । ४ सभा के
सदस्य । दर्शक गण । ५ रणभूमि । ६ नृत्य ।
गान । अभिनय । ७ खेल । तमाशा । बहलाव ।
म सुहागा ।—अङ्गणम्, (न०) रंगभूमि ।
अलाड़ा ।—अवतरणम्, (न०) १ रङ्गभूमि
में जाने का द्वार । २ नट का पेशा ।—आजीवः
—उपजीवीन् (पु०) १ नट । २ चित्रकार ।
—कारः,—जीवकः, (पु०) चित्रकार ।
—चरः, (पु०) १ नट । खिलाड़ी । २ पटेवाज़ ।—
जं, न०) सेंदुर । ईंगुर ।—द्वारं, (न०) १ रंगमञ्च ।

का प्रवेशद्वार । २ किसी नाटक का मङ्गलाचरण, नान्दीमुख पाठया प्रस्तावना ।—भूतिः, (स्त्री०) आश्विनमास की पूर्णिमा वाली रात ।—भूमिः, (स्त्री०) १ रंगमंच । २ अखाड़ा । ३ रणक्षेत्र ।—मण्डपः, (पु०) अभिनयशाला । नाटक-घर ।—प्रातः, (स्त्री०) १ लाख । २ कुटनी ।—वस्तु, (न०) चित्रण । रंगसाजी ।—वाटः, (पु०) अखाड़ा ।—शाला, (स्त्री०) नाटक-घर । नाचघर ।

रंघ) (धा० उभय०) [रंघति, रंघते] १ जाना ।
रङ्ग) तेज़ी के साथ जाना ।

रच् (धा० उभय०) [रचयति—रचयते, रचित] १ क्रमबद्ध करना । प्रस्तुत करना । तैयार करना । उद्भावित करना । २ बनाना । सरजना । पैदा करना । ३ लिखना । निबन्ध रचना । ४ स्थापित करना । ५ सजाना । शृङ्गार करना । ६ लगाना ।

रचनं (न०) } १ रचने या बनाने की क्रिया या
रचना (स्त्री०) } भाव । निर्माण । बनावट । २
बनाने का ढंग । ३ ग्रन्थ । ४ बाल सभाशाला या
गूँधना । ५ न्यूह रचना । ६ मानसिक कल्पना ।

रजकः (पु०) धोबी ।

रजका }
रजकी } (स्त्री०) धोबिन ।

रजत (वि०) १ सवैहला । चाँदी का बना । २ मफेद ।

रजतं (न०) १ चाँदी । २ सुवर्ण । ३ मोती का हार
या आभूषण । ४ रक्त । खून । ५ हाथीदाँत । ६
नक्षत्र ।

रजनिः } (स्त्री०) रात ।—करः, (पु०) चन्द्रमा ।
रजनी } —चरः, (पु०) रात को घूमने वाला ।
राक्षस ।—जलं (न०) ओस । कोहरा ।—
पतिः—रमणः, (पु०) चन्द्रमा ।—मखं, (न०)
सन्ध्या । रात्रि का आरम्भ ।

रजस् (पु०) १ धूल । रज । मैल । २ पुष्परज । मक-
रन्द । सूर्यकिरण में का एक रजकण । ३ जुता
हुआ खेत । ४ अन्धकार । अन्धकारी । ६ मान-
सिक

० तीन गुणों में से (जो समस्त

पदार्थों में पाये जाते हैं) दूसरा रजोगुण । = स्त्रियों
का रजोधर्म ।—तोकः, (पु०) —तोकः, (न०)
—पुत्रः, (पु०) —दर्शनः, (न०) जालच
लोभ । स्त्रियों का प्रथम बार रजस्वला होना ।
—वन्धः, (पु०) रजस्वला धर्म का रुक जाना ।
—रसः, (पु०) अन्धकार ।—शुद्धिः, (स्त्री०)
रजस्वला धर्म का साफ साफ नियत समय पर
होना ।—हरः, (पु०) धोबी ।

रजसानुः (पु०) १ बादल । २ जीव । हृदय ।

रजस्वला (वि०) गर्दीला । धूलधूसरित ।

रजस्वलः, (पु०) मैला ।

रजस्वला (स्त्री०) १ मासिक धर्मवती स्त्री । २ लड़की
जो विवाह योग्य हो गयी हो ।

रज्जुः (पु०) १ रस्सी । रस्सा । डोरी । २ शरीरस्थ
रंग विशेष । ३ स्त्रियों के सिर की चाँदी ।—
दालकं, (न०) एक प्रकार का जलचर पक्षी ।
—पेड़ा, (स्त्री०) सुतली की टोकनी ।

रंज् } (धा० उभय०) [रंजति,—रंजते,
रञ्ज् } रज्यति, रज्यते, रक्त] १ लाल हो जाना ।
रंगना । ३ अनुसक्त होना । ४ प्रेम में फँसना । ५
प्रसन्न होना । सन्तुष्ट होना ।

रंजकं }
रञ्जकम् } (न०) १ लालचन्दन । २ सेंदुर । इंगुर ।

रंजकः }
रञ्जकः } (पु०) १ रंगरेज । चितेरा । २ उत्तेजक ।

रंजनम् } (न०) १ रंगना । रंग चढ़ाना । २ रंग ।
रञ्जनम् } ३ प्रसन्नता । प्रसन्नकारक । ४ लाल-
चन्दन की लकड़ी ।

रंजनी }
रञ्जनी } (स्त्री०) नील का पौधा ।

रट् (धा० परस्मै०) [रटति, रटित] चिल्लाना ।
चीख मारना । गर्जना । भूंकना । २ चिह्ना कर
घोषणा करना । ३ आनन्द में भर चिचकाना ।

रटनं (न०) १ चिल्लाने की क्रिया । २ प्रसन्नता
सूचक चिल्लाहट ।

रणा (धा० परस्मै०) [रणति, रणित] बजाना ।
कमकुम का लब्ध करना

राः (पु०) } १ संग्राम । युद्ध । समर । लड़ाई ।
 राम् (न०) } २ रणक्षेत्र । (पु०) १ शोरगुल ।
 कोलाहल । २ वीणा बजाने का गज । ३ गति ।
 गमन ।—अङ्गं, (न०) तलवार आदि कोई भी
 शस्त्र ।—अंगणं, —अंगनं (न०) रणक्षेत्र ।
 समरभूमि ।—अपेत, (वि०) (रणक्षेत्र का)
 भगोड़ा ।—आतोद्य, (न०)—तूर्य, (न०)
 इन्दुभिः, (पु०) मारु बाजा ।—उत्साहः,
 (पु०) समर में पराक्रम ।—लितिः, (स्त्री०)
 —क्षेत्रं, (न०)—भूमिः, (स्त्री०)—भूमिः,
 (स्त्री०),—स्थानं, (न०) संग्राम क्षेत्र ।
 लड़ाई का मैदान ।—धुरा, (स्त्री०) १ युद्ध में
 सामना । २ युद्ध की प्रचण्डता ।—मत्तः,
 (पु०) हाथी । गज ।—मुखं, (न०)—
 मूर्धनं, (पु०)—शिरस्, (न०) युद्ध में आगे
 का भाग । लड़ने वाली सेना का सब से अगला
 भाग ।—रङ्गः, (पु०) हाथी के दोनों इतों के
 मध्य का भाग ।—रङ्गः, (पु०) रणभूमि ।
 —रणः, (पु०) मन्दार । डौंस ।—रणम्, (न०)
 १ उल्कयटा । लालसा । किसी वस्तु के खोजने का
 खेद ।—रणकः, (पु०) रणकं, (न०) १
 चिन्ता । व्याकुलता । धवड़ाहट । विकलता ।
 (पु०) कामदेव ।—वाद्यं, (न०) मारुबाजा ।
 —शिक्षा, (स्त्री०) लड़ाई का विज्ञान ।—
 सङ्कुलं, (न०) लड़ाई की गाढ़बंदी ।—सज्जा,
 (स्त्री०) युद्ध के उपकरण ।—सहायः, (पु०)
 मित्र ।—स्तरम्भः, (पु०) युद्ध का स्तरक ।
 युद्धस्तरक-सम्भ ।

रात्कारः (पु०) १ खड़बड़ । कंकार । २ शब्द ।
 ३ गुञ्जर ।

रहितं (न०) खड़बड़ । कंकार ।

रंडः } (पु०) १ वह मनुष्य जो पुत्रहीन मरे ।
 रण्डः } २ बाँक वृक्ष ।

रंडा } (स्त्री०) १ स्त्री के लिये एक गाली ।
 रण्डा } नौवी । पलुरिया । २ विधवा स्त्री ।

रत्न (व० क०) १ प्रसन्न । हर्षित । २ अनुरक्त । ३
 लोभ ।—अयनी, (स्त्री०) देखा । रंडी । पलु-
 रिया ।—अर्थिन्, (वि०) कामुक । ऐयाश ।—

उद्धः, (पु०) कोकिल ।—अद्विकं, (न०)
 १ दिवस । २ आनन्द के लिये स्थान ।—कीलः
 (पु०) कुत्ता ।—कूजित, (न०) मैथुन के
 समय की सिसकारी ।—उवरः, (पु०) काक ।
 कौआ ।—तालिन्, (पु०) कामी । लंपट ।
 ऐयाश ।—ताली, (स्त्री०) कुटनी ।—नारीच,
 (पु०) १ कामदेव । २ आवारा । लंपट । बद-
 चलन । ३ कुत्ता । ४ मैथुन के समय की सिस-
 कारी ।—बन्धः, (पु०) मैथुन का आसन ।
 —हिरण्यकः, (पु०) १ औरतों को फुसलाने
 या बहकाने अथवा बिगाड़ने वाला । २ आवारा ।
 बदचलन । लंपट ।

रत्नं (न०) १ हर्ष । आनन्द । २ मैथुन । ३ गुसाङ्ग ।

रतिः (स्त्री०) आनन्द । हर्ष । सन्तुष्टि । आह्लाद । २
 अनुराग । प्रेम । ३ प्रीति । यार । ४ कामक्रीडा ।
 सम्भोग । ५ कामदेव की स्त्री का नाम ।—गृहं,
 (न०)—भवनं, (न०),—मन्दिरं, (न०) १
 आनन्दभवन । २ चकला । रंडीखाना ।—
 तस्करः, (पु०) वह पुरुष जो स्त्रियों को अपने
 साथ व्यभिचार करने में प्रवृत्त करता हो ।—पतिः,
 —प्रियः,—रमणः, (पु०) कामदेव ।—रसः,
 (पु०) रतिक्रीडा । सम्भोग ।—लम्पट, (वि०)
 कामी । ऐयाश ।

रत्नं (न०) जवाहर । बहुमूल्य चमकीले, छोटे और
 रंग विरंगे पत्थर । [रत्नों की संख्या या तो ६ या
 ६ या १४ बतलायी जाती है ।] २ कोई भी
 बहुमूल्य प्रिय पदार्थ । ३ कोई भी सर्वोत्तम वस्तु ।
 —अनुविद्ध, (वि०) रत्नों से जड़ा हुआ या
 जिसमें रत्न जड़े हुए हों ।—आकरः, (पु०) १
 रत्नों की खान । २ समुद्र ।—आलोचः, (पु०) रत्न
 की आभा ।—आवली, —माला, (स्त्री०) रत्नों
 का हार ।—कन्दलः, (पु०) मृगा । प्रवाल ।—
 खचित, (वि०) जिसमें रत्न जड़े हों ।—गर्भः,
 (पु०) समुद्र ।—गर्भा, (स्त्री०) पृथिवी ।—
 दीपः,—प्रदीपः, (पु०) १ रत्न का दीपक । २
 एक कल्पित रत्न का नाम । कहा जाता है, पाताळ
 में इसीके प्रकाश से उजाला रहता है ।—मुख्यं,
 (न०) हीरा ।—राजः, (पु०) माणिक्य ।

मानिक। चुकी।—राशिः, (पु०) १ रत्नों का ढेर।
२ समुद्र।—सानुः, (पु०) मेरु पर्वत का नाम।—
सु, (वि०) रत्न उत्पन्न करने वाला।—सु,—
सृतिः, (स्त्री०) पृथिवी। धरा।
नः (पु० स्त्री०) १ कोहनी। २ कोहनी से मुड़ी
लक। एक हाथ (नाप विशेष) (पु०) मुड़ी।
मूका।
ः (पु०) १ प्राचीन कालीन एक सवारी। २ घोड़ा।
३ चरण। पैर। ४ ज्ञान। अवयव। ५ शरीर। देह।
६ नरकुल। सरपत्र।—अजः, (पु०) धुरा। धुरी।
—अङ्गुष्, (न०) १ गाड़ी का कोई भाग। २
विशेष कर पहिये। ३ विष्णु भगवान का सुदर्शन
चक्र। कुन्धार का चक्र। ईशः, (पु०) रथ में
बैठ कर युद्ध करने वाला।—ईषा (स्त्री०) गाड़ी
का बम्।—उद्वहः,—उपस्थः, (पु०) कोचबक्स।
रथ का वह स्थान जहाँ सारथी बैठता है।—कट्या
—कट्या, (स्त्री०) रथों का समुदाय।—कल्पकः
(पु०) राजा की रथशाला का अधिकारी।—
कारः, (पु०) रथ बनाने वाला।—कुटुम्बिकः,
कुटुम्बिन् (पु०) रथवान। सारथी।—कूवरः
(पु०) कूवरं (न०) रथ का वह अगला लम्बा
भाग जिसमें जुयाँ बंधा रहता है।—लोभः,
(पु०) रथ का झटका।—गर्भकः, (पु०)
डोली। पालकी।—गुप्तिः, (स्त्री०) रथ के किनारे
या चारों ओर लगा हुआ काठ या लोहे का ढाँचा
जो रथ को दूसरे रथ से टकराने से बचाता था।
—चरणाः,—पादः, (पु०) एक रथ के पहिये।
१ चक्रवाक। चक्रवा।—धुर (स्त्री०) रथ का
बन्ध।—नार्भिः, (स्त्री०) रथ के पहियों का मध्य-
भाग जिसमें धुरी रहती है।—नीङ्गः, (पु०)
रथ का खटोला। रथ का वह भाग जहाँ सवारी
बैठती है।—बन्धः, (पु०) रथ का साज या सा-
मान।—महोत्सवः, (पु०)—यात्रा, (स्त्री०)
आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को मनाया जाने वाला उत्सव
विशेष। इसमें लोग प्रायः जगन्नाथ जी, बलराम
जी और सुभद्रा जी की प्रतिमाओं को रथ पर
सवार कर उस रथ को लोग स्वयं खींचते हैं।
बौद्धों और जैनो में भी उनके देवता रथ में सवार

करा कर निकाले जाते हैं।—मुग्धः, (न०) रथ
का अगला हिस्सा।—मुहः, (न०) रथों में
बैठ कर लड़ने वालों को लड़ाई।—वर्मन्, (न०)
—वरिधिः, (पु०) सड़क। आनसड़क। शाही
शाला।—वाहः, (पु०) १ रथ का घोड़ा।
२ सारथी।—शक्तिः, (स्त्री०) रथ की कलसी
पर का वह बॉल जिसमें लड़ाई के रथों की शरणाई
लटकायी जाती थी।—सप्तमी, (स्त्री०) माघ
शुक्ला ७मी।

रथिक (वि०) (स्त्री०—रथिकी) १ गाड़ी पर सवार।
२ गाड़ी का मालिक।

रथिन् (स्त्री०) १ रथ पर सवार होता या रथ को
हाँकना। २ रथ को रगड़ने वाला। (पु०) १ रथ
का मालिक। रथ में बैठ कर लड़ने वाला।

रथिन
रथिर } (पु०) देखो—‘रथिन्’।

रथ्यः (पु०) १ रथ में जेता जानेवाला घोड़ा। २
रथ का एक भाग।

रथ्या (स्त्री०) १ रथों के आने जाने का रास्ता या
सड़क। २ वह स्थान जहाँ कई एक सड़कों एक
दूसरे को काटती हों। ३ कई एक रथ या गाड़ियाँ।
रद् (धा० परस्मै०) [रदति] १ चीरना। फाड़ना।
२ खरोचना।

रदः (पु०) १ चीर। फाड़। खरोच। २ दाँत। शायी
का दाँत।—ऊदः, (पु०) थोठ।

रदनः (पु०) दाँत।—ऊदः, (पु०) थोठ।

रध्र (धा० परस्मै०) [रध्रति, रध्र] १ चोटिल करना।
घायल करना। भार डालना। ताश कर डालना।
२ सम्हारना। साफ करना। अमनिया करना।
(भोजन)

रन्तिदेवः
रन्तिदेवः } (पु०) चन्द्रवंशी एक राजा का नाम।

रन्तुः
रन्तुः } (पु०) १ सड़क। मार्ग। २ नदी।

रन्धनं (न०)
रन्धनं (न०)
रन्धिः (स्त्री०)
रन्धिः (स्त्री०) } १ अनिष्ट। चोट। २
पाचन। पकाने की क्रिया।

- रंघ्रं } (न०) १ छेद । सूरस्य । गुफा २ । गह्वर । सन्धि
रन्ध्रं } २ कमजोर स्थल । वह स्थल जिस पर आक्रमण
किया जा सके । ऐव । त्रुटि । अपूर्णता । - वज्रः,
(पु०) चूहा । मूँसा । - वज्राः, (पु०) पोला,
रम् (वा० आत्म०) [रमते; रन्ध्र] आरम्भ करना ।
प्रारम्भ करना ।
रमस् (न०) १ धुन । उत्साह । २ ताकत । ज़ोर ।
रमस (वि०) १ उग्र । भयानक । २ ताकतवर ।
प्रचण्ड । उत्कण्ठित । उत्सुक ।
रमसः (पु०) १ उग्रता । ज़बरदस्ती । धरजोरी ।
उतापिलापन । बेग । २ जलज्वारी । ३ क्रोध ।
रोष । ४ खेद । शोक । ५ हर्ष । आनन्द ।
रम् (धा० आत्म०) [रमते] १ प्रसन्न होना । २
खेलना । क्रीडा करना । ३ मैथुन करना । ४ बना
रहना । ठहरना । टिकना ।
रम (वि०) प्रसन्नकारक । आनन्ददायी ।
रमः (पु०) १ हर्ष । आनन्द । २ प्रेमी । आशिक ।
पति । ३ कामदेव ।
रमठं (न०) हींग । - ध्वनिः, (पु०) हींग ।
रमण (वि०) [स्त्री० - रमणी] आनन्ददायी ।
प्रसन्नकारक । मनोहर ।
रमणं (न०) १ क्रीडा । २ आनन्दप्रमोद । ३ प्रीति ।
मैथुन । ४ आनन्द । ५ कूल्हा । कमर ।
रमणः (पु०) १ प्रेमी । पति । प्रीतस्य । २ कामदेव
३ गधा । रासभ । ४ अण्डकोश ।
रमणा } १ एक सुन्दरी युवती स्त्री । २ मियनमा ।
रमणी } पत्नी ।
रमणीय (वि०) सुन्दर । मनोहर ।
रमा (स्त्री०) १ पत्नी । स्वामिनी । २ लक्ष्मीजी का
नाम । ३ धन । सम्पत्ति । - कान्तः - नाथः -
पतिः, (पु०) विष्णु । - वेष्टः (पु०) तारपीन ।
चन्दन विशेष । इसीसे तारपीन का तेल निकलता
है ।
रंभा } (स्त्री०) १ केली का पेड़ । २ गौरी का
रम्भा } नाम । ३ एक अप्सरा का नाम । यह
नलकूबर की पत्नी है । इससे बढ़कर सुन्दरी अप्सरा
इन्द्रलोक में दूसरी नहीं है ।
रम्य (वि०) मनोहर । सुन्दर ।
रम्यः (पु०) चम्पा का पेड़ ।
रम्यं (न०) वीर्य ।
रय् (धा० आत्म०) [रयते, रयित] जाना । गमन
करना ।
रयः (पु०) १ नदी का प्रवाह । धारा । २ रफ्तार ।
बेग । तेज़ी । गति । ३ उत्साह । धुन ।
रल्लकः (पु०) १ कंबल । ऊनीवस्त्र । २ पलक ।
पुवतिरल्ल चल्लसभाहलो ।
चवति को न पुवा गतचेतनः ॥”
३ हिरन ।
रवः (पु०) १ चीख । गर्ज । नाद । २ गान ।
(चिहिया का) चहकना । ३ खड़बड़ी । ४ शोर ।
रवण (वि०) १ चिल्लाने वाला । नाद करने वाला ।
गर्जने वाला । २ शब्दायमान । ३ तीक्ष्ण । उष्ण ।
४ चपल । चञ्चल ।
रवणः (पु०) १ ऊँट । २ कोथल ।
रवणं (न०) पीतल । काँसा । फूल ।
रविः (पु०) सूर्य । - कान्तः, (पु०) सूर्यकान्त ।
आतिशी शीशा । - त्रः, - तनयः, - पुत्रः, (पु०)
- सूनुः, (पु०) १ शनिग्रह । २ कर्ण । ३
वालि । ४ वैवस्वत मनु । ५ यमराज । ६ सुग्रीव ।
- दिनः, (न०) - वारः, (पु०) - वासरः,
(पु०) - वासरं, (न०) रविवार । इतवार ।
- संक्रान्तिः, (स्त्री०) सूर्य का एक राशि
से दूसरी राशि में गमन । सूर्यसंक्रमण ।
रशना } (स्त्री०) १ रस्सी । डोरी । २ रास । लगाम ।
रसना } ३ पटका । कमरबंद । कमरपेटी । ४
जवान । जीम । - उपमा, (स्त्री०) उपमा
विशेष जिसमें उपमाओं की शृङ्खला बँधी रहती
है तथा पूर्वकथित उपमेय आगे चल कर उपमान
होता जाता है । इसको गमनोपमा भी कहते हैं ।
रश्मिः (पु०) १ डोरी । रस्सी । रस्सा । २ रास ।
लगाम । ४ अक्षुश । चाबुक । ४ किरण । -
कलापः, (पु०) १४ लड़ियों का मोतीहार ।

ममत् (पु०) सूर्य ।

(धा० परस्मै०) [रसति, रसित] १ गर्जना । चीखना । चिल्लाना । दहाड़ना । २ शोरगुल करना । ३ प्रतिध्वनि करना ।

(पु०) (वृत्तों से निकलने वाला एक प्रकार का) सार । तत्व । २ तरल पदार्थ । ३ जल । ४ अर्थ । ५ मझिरा । आसव । ६ स्वाद । जायका । ७ चटनी । मसाला । ८ स्वादिष्ट पदार्थ । ९ रुचि । १० प्रीति । प्रेम । ११ आनन्द । हर्ष । प्रसन्नता । १२ मनोज्ञता । सौन्दर्य । सुडौलता । १३ भाव । भावना । १४ साहित्य में वह आनन्दात्मक चित्त वृत्ति या अनुभव जो विभाव, अनुभाव, और सञ्चारी से युक्त किसी स्थायी भाव के व्यञ्जित होने से पैदा होता है । साधारणतः साहित्य में आठ रस माने गये हैं । यथा

दृष्टार इत्येकं कथं रौद्रवीर भवानकम् ।

कोभस्वाहुतसंघौ वेत्तव्यौ भाव्ये रसाः स्मृताः ॥

किन्तु कभी कभी इनमें शान्त रस और जोड़ देने से इनकी संख्या नौ हो जाती है । इसीसे कान्य-प्रकाशकार ने लिखा है :—

निर्वेदस्यापि भावोस्ति शान्तोपि नवमो रसः ।

इसी प्रकार कोई कोई “वासन्त्यरस” को और बढ़ा कर रसों की संख्या दस बतलाते हैं । [रस कविता की जान है । इसीसे विरवनाथ का मत है

“ वाक्यं रसात्मकं काव्यं । ”

१५ गुदा । मिंगी । १६ शरीरस्थ पदार्थ विशेष । १७ वीर्य । १८ पारा । १९ जहर । विष । २० कोई भी खनिज पदार्थ ।—अञ्जनं, (न०) रसवत् । रसैत ।—अभ्रतः, (पु०) १ अभ्रवेतस । अमल-वेद । २ चूक नाम की खटाई ।—अयनं, (न०) १ वैद्यक के अनुसार वह ओषधि जो जरा और व्याधि का नाश करने वाली हो । २ पदार्थों के तत्वों का ज्ञान ।—आभासः, (पु०) साहित्य में किसी रस की ऐसे स्थान में अवतारणा करना जो उचित था उपयुक्त न हो । २ किसी रस का अनुपयुक्त स्थान पर वर्णन ।—आस्वादः, (पु०) १ स्वाद खेने वाला । २ कविता के भावों को जानने

वाला ।—इन्द्रः, (पु०) १ पारा । २ पारस पत्थर ।—उद्धर्षः—उपलं, (न०) मोती ।—कर्मन्, (न०) पारे का तैयार करना ।—केसरं, (न०) कपूर ।—गन्धः, (पु०) —गन्धं, (न०) रसैत । रसाञ्जन ।—जः, (पु०) राव । शीरा ।—जं, (न०) खून ।—झः, (वि०) १ वह जो रस का ज्ञाता हो । रस का जानने वाला । २ काव्यकर्मज्ञ ।—ज्ञः, (पु०) १ समा-लोचक । गुणग्राही । कवि । २ रसायनी । ३ पारद के योग से दवाइयों बनाने वाला वैद्य ।—झा (स्त्री०) जीभ ।—तेजस्, (न०) खून ।—दः, (पु०) वैद्य । इकीम ।—धातु, (न०) पारा । पारद ।—प्रवन्धः, (पु०) नाटक ।—फनः, (पु०) वान्धिल ।—भङ्गः, (पु०) भाव का नष्ट होना ।—भवं, (न०) खून । रक्त । लोहू ।—राजः, (पु०) पारा । पारद ।—विक्रयः, (पु०) शराब की विक्री ।—शास्त्रं, (न०) रसायन शास्त्र ।—सिद्धिः, (स्त्री०) रसायन विद्या में कुशलता या निपुणता ।

रसनं (न०) रोना । चिल्लाना । चीखना । दहाड़ना । झुनझुनाना । २ गर्ज । दहाड़ । बादल की गड़गड़ाहट । २ स्वाद । जायका । ४ जिह्वा । जीभ ।

रसना (स्त्री०) देखो “रशना” ।—रदः, (पु०) पत्नी ।—निहः, (पु०) कुत्ता ।

रसवत् (वि०) १ जिसमें रस हो । २ स्वादिष्ट । जायकेदार । ३ नम । तर । भली भाँति पानी से भिगोया हुआ । ४ मनोहर । मनोज्ञ । ५ भाव-पूर्ण । ६ प्रीतिपरिपूर्ण । प्रेममय । ७ ज़िन्दा-दिल । हाज़िरजवाब ।

रसा (स्त्री०) १ नरक । २ पृथिवी । धार । ३ जिह्वा । जीभ ।—तलं, (न०) १ सप्त अधोलोकों में से एक लोक रसातल भी है । २ अधोलोक । नरक ।

रसालं (न०) लोधान । गुग्गुल ।

रसालः (पु०) १ आम का वृक्ष । २ ऊख । ईख ।

रसाला (स्त्री०) १ जिह्वा । जीभ । २ शक्कर तथा मसाले पड़ा हुआ दही । सिखरन । सिखिस । ३ दूर्वाघास । ४ अँगूर ।

रसिक (वि०) १ स्वादिष्ट । २ मनोज्ञ । मनोहर । सुन्दर । ३ गुणग्राही । ४ रसिया ।

रसिकः (पु०) १ सहृदय मनुष्य । भावुक नर । २ रसिया आदमी । लंपट मनुष्य । ३ हाथी । ४ बोढा ।

रसिका (स्त्री०) १ गधे का रस । शीरा । २ जिह्वा । जीभ । ३ कमरबंद ।

रसित (व० क०) १ चाला हुआ । २ भावपूर्ण । ३ मुलम्मा चढ़ा हुआ ।

रसितं (न०) १ शराब । मदिरा । २ चीख । दहाड़ । गर्जन ।

रसोनः (पु०) लशुन । लहसुन ।

रस्य (वि०) रसवाला ।

रह् (धा० परस्मै०) [रहति, रहयति ते, रहित] त्यागना । छोड़ना । परित्याग करना । छोड़ देना ।

रहणं (न०) वियोग । त्याग ।

रहस्य (न०) १ एकान्त । निर्जनता । विजनता । विविक्तता । २ निर्जनता । ३ रहस्य । भेद । ४ स्त्री-मैथुन ।

रहस्य (अश्रया०) गुपचुप । चुपके से ।

रहस्य (वि०) गुप्तभेद । गोप्य विषय । २ वह जिसका तत्त्व सहज में सब की समझ में न आसके ।

रहस्यं (न०) १ गुप्त भेद । २ एक तौत्रिक प्रयोग । किसी अक्ष का रहस्य । सरहस्यानि जृम्भकास्त्राणि । ३ किसी के चालचलन का गुप्त भेद । ४ गोप्य सिद्धान्त ।

रहस्यं (अश्रया०) गुपचुप । चुपचाप ।—आख्यायिन्, (वि०) गुप्त बात कहने वाला ।—भेद, —विभेदः, (पु०) किसी गुप्त भेद का प्राकट्य ।—व्रतं, (न०) गुप्त व्रत या प्रायश्चित्त ।

रहित (व० क०) १ त्यक्त । त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । २ पृथक् किया हुआ । विना । ३ अकेला । निर्जन ।

रा (धा० परस्मै०) [राति, रात] देना । प्रदान करना ।

राका (स्त्री०) १ पूर्णमासी । पूर्णिमा । रात । २ वह स्त्री जिसको पहले पहल रजोदर्शन हुआ हो । ३ खुजली । खाज । ४ पूर्णिमा की अभिष्टात्री देवी । ५ खर तथा सूपनखा की माता ।

राक्षस (वि०) [स्त्री०—राक्षसी] राक्षस सम्बन्धी । राक्षस स्वभाव का । राक्षस जैसा । शैतानी ।

राक्षसः (पु०) १ निशाचर । २ आठ प्रकार के विवाहों में से एक प्रकार का राक्षस विवाह भी है । इसमें कन्या के लिये उभयपक्ष में युद्ध होता है । ३ ज्योतिष सम्बन्धी योग विशेष । ४ मुद्राराक्षस नाटक के राजा नन्द के एक मंत्री का नाम । ५ साठ संवत्सरों में से उनचासवाँ संवत्सर ।

राक्षसी (स्त्री०) राक्षस की स्त्री ।

रागः (पु०) १ रंग । २ लाल रंग । ललाई । ३ लाखी रंग । ४ अनुराग । प्रीति । मैथुन सम्बन्धी । भावना । ५ भाव । ६ हर्ष । आनन्द । ७ क्रोध । रोष । ८ मनोज्ञता । सौन्दर्य । ९ संगीत में राग । राग छः माने गये हैं यथा :—

शैरवः कौशिकश्चैव हिन्दोक्तो दीपकस्तथा ।

श्रीरागो नेचरागश्च रागाः षडिति कीर्तिताः ॥

१० संगीत सम्बन्धी संगती । ११ खेद । शोक । १२ लालच । डाह ।—चूर्णाः, (पु०) कथा का पेड़ । २ इंगूर । सिन्दूर । ३ लाख । ४ अवीर । गुलाल । ५ कामदेव ।—भुज्, (पु०) चुन्नी । मानिक ।—सूर्ज, (न०) १ रंगा हुआ सूत या डोरा । २ रेशमी डोरा । ३ तराजू की डोरी ।

रागिन् (वि०) १ रंगीन । २ लाल रंग का । ३ भावपूर्ण । ४ प्रेमपूरित । प्रीतिपूर्ण । ५ अनुरागवान् । (पु०) १ चित्रकार । २ प्रेमी । अनुरागी । ३ कामुक । लंपट ।

रागिणी (स्त्री०) १ रागिणियां या राग की पत्नियां ।

इनकी संख्या किसी के मतानुसार ३० और किसी के मतानुसार ३६ हैं । २ विदग्धा स्त्री । स्वेच्छा-चारिणी स्त्री । झिनाल स्त्री ।

राघवः (पु०) १ रघु का वंशधर । श्रीरामचन्द्र । २ वही जाति की मच्छली ।

रांकव (वि०) [स्त्री०—रांकवी, राङ्कवी]
राङ्कव (पु०) रङ्ग जाति के हिरन सम्यन्धी या उसके चर्म का बना हुआ । ऊनी ।

रांकवम् (न०) १ हिरन के चालों का बना ऊनी राङ्कवम् (वस्त्र) । ऊनी वस्त्र । २ कंबल ।

राज् (धा० उभय०) [राजन्ति—राजते, राजिन] :
धमकना । २ सुन्दर देख पड़ना ।

राज् (पु०) राजा । नरेन्द्र । नरपति ।

राजकः (पु०) छोटा राजा ।

राजकं (न०) कितने ही राजाओं का समुदाय ।

राजत (वि०) [स्त्री०—राजती] स्पहला । चाँदी का बना हुआ ।

राजतं (न०) चाँदी ।

राजन् (पु०) १ राजा । २ चरित्र । ३ युधिष्ठिर का एक नाम । ४ इन्द्र का नाम । ५ चन्द्रमा । ६ यज्ञ ।—अङ्गनः (न०) शाही अदालत । राजप्रसाद का आँगन ।—अधिकारिन्,—अधिकृतः, (पु०) १ सरकारी अफसर । २ न्यायाधीश । जज ।—अधिराजः,—इन्द्रः, (पु०) महाराज । राजाओं का राजा ।—अनकः, (पु०) १ छोटा राजा । २ प्राचीन कालीन एक उपाधि जो प्रसिद्ध कवियों और विद्वानों को दी जाती थी ।—अपसदः, (पु०) अयोध्या या पतित राजा ।—अभिषेकः, (पु०) राजा का राजतिलक ।—अर्ह, (न०) अगर काष्ठ ।—अर्हणम्, (न०) राज की दी हुई सम्मानसूचक उपहार की वस्तु ।—आज्ञा, (स्त्री०) राजघोषणा ।—अग्निः, (= राजर्षिः या राजऋषिः) (पु०) चरित्र जाति का ऋषि । [राजर्षियों में पुरुवरुष, जनक और विश्वामित्र की

गणना है ।]—करः, (पु०) कर जो राजा को दिया जाय ।—कार्यः, (न०) राजकाज ।—कुमारः, (पु०) राजा का पुत्र ।—कुलं, (न०) १ राजवंश । २ राजा का दरबार । ३ न्यायालय । ४ राजप्रासाद । ५ राजन । स्वामिन् (प्रतिष्ठानुचक सम्बोधन करने की शैली)—गाविन्, (वि०) (वह) राजा को प्राप्त होने वाली (सम्पत्ति, जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो) लावारिसी (जायदाद)—गृहं, (न०) १ राजप्रासाद । महल । २ नगध के एक प्रधान नगर का नाम ।—तालः, (पु०)—नाली, (स्त्री०) सुपारी का पेड़ ।—दण्डः, (पु०) १ राजा के हाथ का डंडा विशेष । २ राजशासन । ३ वह दण्ड या सजा जो राजा द्वारा दी गयी हो ।—दन्तः, (पु०) सामने का दाँत ।—दूतः, (पु०) एलची ।—द्रोहः, (पु०) बगावत । ऐसा काम जिससे राजा या राज्य के अनिष्ट की सम्भावना हो ।—द्वारिकः, (पु०) राजा का ड्योढ़ीवान् ।—धर्मः, (पु०) १ राजा का कर्तव्य । २ महाभारत के शान्तिपर्व के एक अंश का नाम ।—धार्म, (न०)—धानिका, (स्त्री०)—धानी, (स्त्री०) वह प्रधान नगर जहाँ किसी देश का राजा या शासक रहै ।—नयः, (पु०)—नीतिः, (स्त्री०) वह नीति जिसका पालन करता हुआ राजा अपने राज्य की रक्षा और शासन को दृढ़ करता है ।—नीलं, (न०) पद्मा ।—पदः, (पु०) कमकीर्ति का हीरा ।—पथः, (पु०)—पद्धतिः, (स्त्री०) राजमार्ग ।—पुत्रः, (पु०) १ राजकुमार । २ राजपूत । चरित्र । ३ कुधग्रह ।—पुत्री, (स्त्री०) राजकुमारी ।—पुरुषः, (पु०) १ राजकर्मचारी । २ अमात्य ।—प्रेष्यः, (पु०) राजा का नौकर ।—प्रेष्यं, (न०) राजा की नौकरी ।—वीजिन्,—वंश्य, (वि०) राजा के वंश का ।—भूतः, (पु०) राजा का सिपाही ।—भृत्यः, (पु०) १ राजा का मंत्री । २ कोई भी सरकारी नौकर ।—भौतः, (पु०) राजा का विदूषक ।—मात्रधरः,—मंत्रिन्, (पु०) राजदरबारी ।—मार्गः, (पु०)

१ आम सङ्कट । २ राजपद्धति ।—मुद्रा, (स्त्री०) राजा की मोहर । यक्ष्मन्, (पु०) क्षत्री । यक्ष्मा । तपेदिक ।—यान्, (न०) पालकी । शाही सवारी ।—योगः, (पु०) १ फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का एक योग विशेष जिसके जन्म-कुण्डली में पढ़ने से राजा या राजा के लुप्त होता है । २ वह योग विशेष जिसका उपदेश पतंजलि ने योगशास्त्र में किया है ।—रङ्गम्, (न०) चाँदी । —राजः, (पु०) १ सम्राट् । महाराज । २ कुबेर का नाम । ३ चन्द्रमा ।—रीतिः, (स्त्री०) कौसा । कसकट ।—लक्षणां, (न०) १ सामुद्रिक के अनुसार वे चिन्ह या लक्षण जिनके होने से मनुष्य राजा होता है । २ राजचिन्ह । (छत्र-चक्र आदि) —लक्ष्मीः,—श्रीः, (स्त्री०) राजवैभव ।—वंशः, (पु०) राजकुल । —विद्या, (स्त्री०) राजनीति ।—विहारः, (पु०) राजमठ ।—शासनं, (न०) राजा की आज्ञा । —शृङ्गं, (न०) सोने की ढंडी का छत्र जो राजा के ऊपर ताना जाय ।—समदः, (स्त्री०) न्यायालय ।—सदनं, (न०) राजप्रासाद । —सर्पः, (पु०) राई ।—सायुज्यं, (न०) राजत्व ।—सारसः, (पु०) मयूर ।—सूयः (पु०)—सूयं, (न०) राजाओं के करने योग्य यज्ञविशेष ।—स्कन्धः, (पु०) ढोड़ा ।—स्थं, (न०) १ राजा की सम्पत्ति । २ राजकर ।—हंसः, (पु०) एक प्रकार का हंस जिसे सेना-पक्षी भी कहते हैं ।—हस्तिन्, (पु०) १ वह हाथी जिस पर राजा सवार हो । २ बड़ा और सुन्दर हाथी ।

।जन्य (वि०) शाही । राजसी ।

।जन्यः (पु०) १ क्षत्रिय । २ सरदार ।

।जन्यकं (न०) षोडश्यों या क्षत्रियों की टोली या समुदाय ।

जन्वत् (वि०) अच्छे राजा द्वारा शासित ।

जस् (वि०) [स्त्री०—राजसी] रजोगुण सम्बन्धी ।

जसात् (अव्यया०) राजा के अधिकार में ।

राजिः } (स्त्री०) धारी । रेखा । पंक्ति ।
राजी } (स्त्री०) धारी । रेखा । पंक्ति ।

राजिका (स्त्री०) १ रेखा । पंक्ति । २ खेत । ३ राई । ४ सरसों ।

राजिलः (पु०) विपरहित और लीधे सपों की एक जाति ।

राजीवः (पु०) १ हिरन विशेष । २ सारस । ३ हाथी ।

राजीवं (न०) नील कमल ।—अक्ष्, (वि०) कमललोचन ।

राज्ञो (स्त्री०) राजा की पत्नी । रानी ।

राज्यं (न०) १ राज्याधिकार । २ वह देश जिसमें एक राजा का शासन हो । ३ शासन । हुकूमत । —तंत्रं, (न०) राज्य की शासन प्रणाली ।—व्यवहारः, (पु०) शासन । हुकूमत ।—सुखं, (न०) राज्य के सुख या आनन्द ।

राढा, (स्त्री०) १ आभा । हींसि । २ बंगाल के एक जिले का नाम । उसकी राजधानी का नाम । यथा :—

नीलं राष्ट्रमनुत्तमं निरूपयन् राजापि राढापुरीं ।

—प्रबोधचन्द्रोदय ।

रात्रिः } (स्त्री०) रात । रजनी । निशा ।—अष्टः,
रात्री } (पु०) १ राक्षस । भूत । प्रेत । २ चोर ।

—अन्ध, (वि०) जिसे रात में न देख पड़े ।

—करः, (पु०) चन्द्रमा ।—चरः, [रात्रिचर, भी होता है] १ चोर । डाँकू । २ चौकीदार । ३ भूत । प्रेत । राक्षस ।—जं, (न०) नक्षत्र ।

तारा ।—जलं, (न०) ओस ।—जागरः, (पु०) कुत्ता ।—पुष्पं, (न०) रात में खिलने वाला कमल ।—योगः, (पु०) रात हो जाना ।—

—रक्षः,—रक्षकः, (पु०) चौकीदार ।—रागः, (पु०) अन्धकार ।—वासस्, (न०) १ रात में पहनने की पोशाक । २ अंधकार ।—विगमः, (पु०) रात का अवसान । भोर । तड़का ।

सवेरा ।—वेदः,—वेदिन्, (पु०) मुर्गा । कुक्कुड ।

रात्रिदिवं }
रात्रिदिवा } (अव्यया०) दिनरात । सदैव ।

रात्रिमन्य (वि०) रात्रि के समान देख पड़ने वाला ।
(बदली का दिन) चौधवारा दिन ।

रात्रि (वि० ३०) १ रात्रि हुआ । रात्रि हुआ । २ प्रसन्न । मनाया हुआ । राजी किया हुआ । ३ सिद्ध । पूरा किया हुआ । ४ तैयार किया हुआ । ५ पाया हुआ । प्राप्त । उपलब्ध । ६ सफल मतारथ । भाग्यवान् । सुखी । ७ प्रेम्णालोक विद्या में निपुण ।

रात्रि (वि० परम०) [रात्रि, रात्रि] १ राजी कर लेना । प्रसन्न कर लेना । २ पूरा करना । सिद्ध करना । ३ तैयार करना । ४ मार डालना । धातु करना । जड़ में नष्ट कर डालना ।

रात्रि (वि०) वैशाख मास ।

रात्रि (वि०) १ समृद्धि । सफलता । २ एक प्रसिद्ध गोपी का नाम, जिस पर श्रीकृष्ण का बड़ा अनुराग था और जो कृपमानु गोपी की कन्या थी । ३ अश्विनी की स्त्री का नाम, जिसने कर्ण को पाला पोसा था । ४ विशाखा नक्षत्र । ५ विजली ।

रात्रिका (वि०) देखो रात्रि ।

रात्रियः (पु०) कर्ण की उपाधि ।

रात्रि (वि०) १ प्रसन्न करने वाला । २ सुन्दर । खूबसूरत । मनोहर । मनोज्ञ । ३ कृष्ण वर्ण । काले रंग का । ४ सफेद ।—रात्रिजः, (= रात्रिजः) (पु०) १ दक्षिण प्रदेश में प्रादुर्भूत एक प्रसिद्ध श्रीवैष्णवाचार्य । २ श्रीरामचन्द्र जी के छोटे भाई, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न । किन्तु विशेष कर लक्ष्मण ।—अयनं, अयनं, (न०) १ श्रीरामचरित । २ श्रीमद्वाल्मीकि रचित ऐतिहासिक एक काव्य ग्रन्थ विशेष, जिसमें २४,००० श्लोक और सात काण्ड हैं ।—गिरिः, (पु०) नागपुर के निकट एक पहाड़ी जिसका वर्णन कालिदास ने मेघदूत काव्य में किया है । इसका आधुनिक नाम राम-देक है ।

विमलवर्णायास्तद्वपुः सखि रत्नमिव निखिलेपु ।

—मेघदूत ।

—चन्द्रः, —भद्रः, (पु०) दशरथनन्दन श्री रामचन्द्र जी ।—दूतः, (पु०) हनुमान जी ।—नवमी, (स्त्री०) वैद्य शुक्ल नवमी - लेनु, (पु०) श्रीरामचन्द्र जी का बनाया पुल जो लंका और भारतवर्ष के बीच में है, जिसे आज फल पडनम् ब्रिज कहते हैं ।

रात्रि (पु०) १ तीन प्रसिद्ध महापुरुषों का नाम । यथा (क) दशरथपुत्र श्रीरामचन्द्र । (ख) जमदग्निपुत्र परशुराम । (ग) वसुदेवपुत्र बलराम । २ हिरण विशेष ।

रात्रि (न०) } हींग ।
रात्रि (पु०) }

रात्रिगीयक (वि०) [स्त्री०—रात्रिगीयकी] मनोहर । सुन्दर ।

रात्रिगीयक (न०) सौन्दर्य । मनोहरता ।

रात्रि (स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री । २ प्रेयसी । भार्या । ३ स्त्री । ४ अकुलीन स्त्री । ५ ईश्वर । शिगरक । ६ हींग ।

रात्रि (पु०) वज्रचारी या संस्थासा का (बाँस का) दण्ड ।

रात्रि (पु०) चीख । चीत्कार । नाद । गर्जन ।

रात्रि (वि०) राने वाला । चिल्लाने वाला ।

रात्रि (पु०) राक्षसराज दशानन का नाम जिसे लंका में जा दशरथनन्दन श्रीरामचन्द्र ने युद्ध में मारा था । क्योंकि रात्रि श्रीरामचन्द्र जी की स्त्री सीता को वन में से अकेले में हर ले गया था ।

रात्रि (पु०) १ रात्रिपुत्र इन्द्रजीत या मेघनाद । २ रात्रि का (कोई भी) पुत्र ।

राशि (पु०) १ ढेर । पुञ्ज । एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों का समूह । २ क्रान्ति वृत्त में अवस्थित विशिष्ट तारा समूह जो संख्या में गणित है ।—चक्रं, (न०) मेघ, वृष, मिथुन आदि राशियों का चक्र या मण्डल । मचक्र ।—त्रयं, (न०) त्रैराशिक गणित ।—भागः, (पु०) भागोत्तर । किसी राशि का भाग या अंश ।—भोगः, (पु०) किसी ग्रह का किसी राशि में कुछ काल तक रहना ।

राष्ट्र (पु०) १ राज्य । साम्राज्य । २ देश । मुल्क ।
३ प्रजा । जाति ।

राष्ट्र (न०) } किसी भी प्रकार का जातीय या
राष्ट्र (पु०) } देश व्यापी सङ्घट ।

राष्ट्रिक (पु०) १ किसी देश या राज्य का रहने
वाला । २ किसी राज्य का राजा या शासक ।

राष्ट्रिय (वि०) किसी राज्य सम्बन्धी ।

राष्ट्रियः (पु०) १ राजा किसी राज्य का शासक ।
२ राजा का सलाह । यथा "

"कृतं राष्ट्रियमुत्तमावदंगुली जदर्शनम् ।"

रास् (धा० आत्म०) [रास्ते] चिचियाना ।
चीखना । भूकना ।

रासः (पु०) १ कोलाहल । शोरगुल । हल्ला । गोपों
की प्राचीन काल की क्रीड़ा जिसमें वे सब मण्डल
बना कर एक साथ नाचते थे । —क्रीड़ा, (ली०)
—मण्डलं, (न०) मण्डलाकार श्रीकृष्ण और
गोपियों का नृत्य ।

रासकं (न०) नाटक का एक भेद जो केवल एक अङ्क
का होता है । इसमें केवल ५ नट या अभिनय
करने वाले होते हैं । इसमें हास्यरस प्रधान होता
है और सूत्रधार नहीं आता ।

रासभः (पु०) राधा । गर्दभ ।

राहित्यं (न०) अभाव ।

राहुः (पु०) १ पुराणानुसार नौ ग्रहों में से एक जो
विप्रचित के वीर्य और सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न
हुआ था । २ ग्रहण । —ग्रसनं, (न०)
—ग्रासः, (पु०) —दर्शनं, (न०) —संस्पर्शः,
चन्द्र या सूर्य का ग्रहण । —सूतर्कं, (न०)
ग्रहण का सूतक ।

रि (धा० परस्मै०) [रियति, रीण] जाना । चलना ।

रिक्त (व० कृ०) १ रीता किया हुआ । खाली किया
हुआ । २ खाली । रीता । ३ रहित । विना । ४
खोखला (जैसे हाथ की अंजलि) ५ मोहताज ।
कंगाल । ६ विभक्त । विभुक्त । —पाणो, —हस्त,
(वि०) खाली हाथ । रीते हाथ ।

रिक्त (न०) १ रिक्त या खाली स्थान । २ वन ।
जंगल ।

रिक्तक (वि०) देखो रिक्त

रिक्ता (स्त्री०) चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियाँ रिक्ता
तिथियाँ कहलाती हैं ।

रिक्थं (न०) १ उत्तराधिकार या विरासत में मिली
हुई सम्पत्ति । २ धन । सम्पत्ति । ३ सुवर्ण । —
आदः, —ग्राहः, —भागिनः, (पु०) —हरः,
—हारिनः, (पु०) उत्तराधिकारी ।

रिख् } [रिखति, रिङ्गति, रिगति, रिङ्गति] १
रिङ्ग } रेंगना । २ धीरे धीरे जाना ।
रिङ्ग }

रिखणं, (न०) }
रिङ्गणं (न०) } १ रेंगना । घुटनों चलना । २
रिगणं (न०) } विचलित होना ।
रिङ्गणम् (न०) }

रिच् (धा० उभ०) [रिखति, रिक्ते, रिक्त] १
खाली करना । साफ करना । निकाल डालना ।
२ वञ्चित करना । मुहताज करना ।

रिटिः (पु०) १ बाजा । २ शिवजी के एक राख का
नाम ।

रिपुः (पु०) शत्रु ।

रिप् (धा० परस्मै०) [रिफति, रिफित] १ गाली
देना । दोषी ठहराना । कलङ्क लगाना । २ कट-
कटाने का शब्द करना ।

रिप् (धा० परस्मै०) [रेफति, रिष्ट] १ चोटिल
करना । लुकसान पहुँचाना । अनिष्ट करना । २
बध करना । नाना करना ।

रिष्ट (व० कृ०) १ घायल । चोटिल । ३ अभागा ।
वदकिस्मत ।

रिष्टं (न०) १ उपद्रव । अनिष्ट । हानि । २ अभा-
गापन । वदकिस्मती । ३ नाश । हानि । ४ पाप ।
५ सौभाग्य । समृद्धि ।

रिष्टिः (पु०) सलवार ।

री (धा० आत्म०) [रीयते] १ चूना । टपकना ।
उसड़ना । बहना ।

रीखा (स्त्री०) १ भस्मना । फिरकार । कलङ्क । २ लज्जा । लज्जाशीलता ।

रीढ़कः (पु०) मेरुदण्ड । पीठ के बीच की हड्डी । रीढ़ की हड्डी ।

रीढ़ा (स्त्री०) अपमान । तिरस्कार । अपमान ।

रीण (व० क०) उमड़ा हुआ । पहा हुआ । बूना हुआ ।

रीतिः (स्त्री०) १ गति । बहाव । २ नदी । सोता । ३ रेखा । सीमा । ४ रंग । प्रकार । ५ चलन । स्वाज्ञ । रस्म । ६ तर्ज । शैली । ७ पीलल । काँसा । कलकुट । ८ लोहे का मोर्चा । जंग । ९ चरतनों पर की कलई ।

रु (धा० परस्मै०) [रीति, रीति हत] १ चित्तलाना । हो हो करना । चीखना । चिचियाना । दहाड़ना । गुआर करना ।

रुक्म (वि०) चमकीला । चमकदार ।

रुक्मन् (न०) १ सुवर्ण । २ लोहा ।—कारकः, (पु०) सुनार ।—पृथक्, (वि०) सोने का पानी चढ़ा हुआ । सुलम्भा किया हुआ ।—वाहनः, (पु०) द्रोणाचार्य का नामान्तर ।

रुक्मिन् (पु०) राजा भीष्मक के ज्येष्ठ राजकुमार का नाम ।

रुक्मिणी (स्त्री०) राजा भीष्मक की राजकुमारी और श्रीकृष्ण की पटरानी ।

रुग्ण (व० क०) १ दूदा हुआ । चकता बूर । २ झुका हुआ । मुड़ा हुआ । नमित । ३ चोटिल । घायल । ४ बीमार । रोगी । रोगग्रस्त । ५ बिगड़ा हुआ ।

रुक् (धा० आत्म०) [रोचते, रुचति] १ चमकना । सुन्दर जान पड़ना । २ पसन्द करना । प्रसन्न होना ।

रुच (स्त्री०) १ चमक । आभा । दीप्ति । २ रुचो } मनोहरता । सुन्दरता ३ वर्ण । सूरत । ४ रुचि । अभिलाषा ।

रुचक (वि०) १ पसन्द आने वाला । प्रसन्नकारक । २ पाकस्थली सम्बन्धी । ३ तीक्ष्ण । चरपरा ।

रुचकं (न०) १ दाँत । २ गले में धारण किया जाने

वाला आभूषण । हार । पुष्पहार । शङ्करा । २ लज्जीसार । काला निमक ।

रुचकः (पु०) १ बिजोरा नीव । जैभीरी । २ ककुर रुचा (देखो रुच)

रुचिः (स्त्री०) १ आभा । प्रकाश । दीप्ति । चमक । २ किरन । ३ वर्ण । रूपरंग । सौन्दर्य । ४ स्वाद । प्रापका । ५ भूख । बुद्धि । ६ अभिलाषा । इच्छा । आनन्द । ७ पसंदगी । अभिरुचि । ८ लयलीनता । ली । लगन ।—कर, (वि०) १ स्वादिष्ट । २ अभिरुचि को उत्पन्न करने वाला । ३ पाकस्थली सम्बन्धी ।—भर्तृ (पु०) १ सूर्य । २ पति ।

रुचिर (वि०) १ चमकीला । चमकदार । २ स्वादिष्ट । ३ मधुर । मीठा । ४ पाकस्थली सम्बन्धी । भूख बढ़ाने वाला । ५ बलद । शक्तिप्रद । बलवर्धक ।

रुचिरं (न०) १ केसर । २ लोण ।

रुचिरा (स्त्री०) १ एक प्रकार का पीला रोगन । २ वृत्त विशेष ।

रुच्य (वि०) चमकीला । मनोहर ।

रुज् (धा० परस्मै०) [रुजति, रुग्ण] १ टुकड़े टुकड़े कर डालना । २ पीड़ित करना । रोगाक्रान्त होना । गड़बड़ी करना ।

रुज् (स्त्री०) १ भङ्ग । २ वेदना । कष्ट । ३ रुजो } रोग । बीमारी । ४ थकावट । आन्ति । श्रम ।—प्रतिक्रिया, (स्त्री०) रोग की चिकित्सा ।—भेषजं, (न०) दवा ।—सङ्घन, (न०) मल । विष्ठा ।

रुंडः (पु०) } रुण्डः (पु०) } सिर शुन्य शरीर । कबन्ध । धड़ रुंडं (न०) } मात्र । रुण्डम् (न०) }

रुतं (न०) १ शब्द । ध्वनि ।—व्याजः, (पु०) १ उत्तेजक उद्बोध । २ नकल । हास्योद्दीपक अनुकरण ।

रुदु (धा० परस्मै०) [रुदिति, रुदित] १ रोना । चित्तलाना । विज्ञाप करना । शोक मनाना । आसू बहाना । २ गुराँना । भूकना । दहाड़ना । चीखना ।

रुदन } (न०) रोदन । चींकार । विलाप ।
रुदित }

रुद्र (व० कृ०) १ रुका हुआ । झिका हुआ । २
वेष्टित । घिरा हुआ ।

रुद्र (वि०) भयानक । भयङ्कर । सौमनास ।

रुद्रः (पु०) १ एकादश संख्यक एक प्रकार के गण
देवता । ये शिव जी के अपकृष्ट रूप हैं । शिवजी
इनके मुख्य हैं । गीता में कहा भी है:—

महाबाहो मद्भारं धारयस्व ।

१ शिव जी का नाम ।—अज्ञः, (पु०) एक
प्रसिद्ध बड़ा पेड़ । इसी वृक्ष के फल के बीजों की
रुद्राक्ष की माला बनायी जाती है ।—आवास्तः,
(पु०) १ रुद्र का निवास स्थान । कैलास पर्वत ।
२ काशी । ३ शमशान ।

रुद्राणी (स्त्री०) रुद्र की पत्नी अर्थात् पार्वती जी ।

रुध् (धा० उभय०) [रुणद्धि, रुद्धे, रुद्ध] १ रोकना ।
बंद करना । थामना । बाधा डालना । २ रोक
रखना । ३ ताले में बंद कर रखना । ४ बंधन में
रखना । क़ैद करना । ५ बेरा डालना । ६ छिपाना ।
ढकना ७ पीड़ित करना । सताना ।

रुहः (पु०) मृग विशेष ।

रुश (धा० परस्मै०) [रुशति] वायल करना । बध
करना । नाश करना ।

रुशत् (वि०) चोट पहुँचाने वाला । अप्रिय । बुरा
लगने वाला (जैसे शब्द) ।

रुष् (धा० परस्मै०) [रुष्यति, रुषित रुष्ट]
रुठना । अप्रसन्न होना । नाराज़ होना [रोषति]
१ वायल करना । बध करना । २ चिढ़ाना ।
चिंमना । छेड़छाड़ करना ।

रुष्य } (स्त्री०) क्रोध । गुस्सा । रोष ।
रुषो }

रुह (धा० परस्मै०) [रोहति, रुह] १ बढ़ना ।
उगना । अद्भुत होना । जड़पकड़ना । उत्पन्न होना ।
बढ़ना । २ निकलना । ऊपर को उठना । ऊपर
चढ़ना । ४ पूरना (घाव का) भरना ।

रुह् } (वि०) उत्पन्न होने वाला । निकलने वाला ।
रुह्य }

रुहा (स्त्री०) दूर्वा या दूब घास ।

रुल (वि०) १ खुरखुरा । कड़ा । अस्तिम्व । २ रुखा ।
३ असम । अव्यवस्थित । कठिन । ४ मैला कुचैला ।
५ निष्ठुर । संगदिल । ६ सूखा । नीरस ।

रुलयां (न०) सुखाने या पतले करने की क्रिया । २
मुटाई कम करने की क्रिया ।

रुढ (व० कृ०) १ उगा हुआ । निकला हुआ । अद्भुत ।
जमा हुआ । २ उत्पन्न । ३ वृद्धि को प्राप्त । ४
उगा हुआ (जैसे कोई ग्रह) ऊपर को चढ़ा हुआ ।
५ बढ़ा । लंबा । मजबूत पड़ा हुआ । ६ व्याप्त ।
फैला हुआ । ७ प्रचलित । प्रसिद्ध । ८ सर्वजन
स्वीकृत । ९ निश्चित किया हुआ । खोजा हुआ ।
दर्शागत किया हुआ ।

रुद्धिः (स्त्री०) १ बाढ़ । अद्भुतोत्पत्ति । २ जन्म ।
उत्पत्ति । ३ वृद्धि । बढ़ती । फैलाव । ४ उभार ।
उठान । ५ रक्षाति । प्रसिद्धि । ६ प्रथा । चाल ।
७ प्रचलन । ८ प्रचलित अर्थ ।

रूप (धा० उभय०) [रूपयति, रूपयते, रूपित] १
बनाना । गढ़ना । २ रंगमञ्च पर रूप धरना । ३
चिन्हाती करना । ध्यान से देखना । ४ तलाश
करना । ढूँढना । ५ खाल करना । विचार करना ।
६ निश्चय करना । ७ परीक्षा करना । अन्वेष्टन
करना । ८ नियत करना ।

रूपं (न०) १ शक्त । सूरत । आकार । २ कोई
भी पदार्थ जो देख पड़े । ३ सुन्दर पदार्थ । लूब-
सूरत शक्त । ४ स्वभाव । प्रकृति । ५ रीति ।
हंग । ६ पहचान । लक्ष्य । ७ जाति । प्रकार ।
किस्म । ८ भूति । प्रतिमा । ९ सादृश्य ।
समानता । प्रतिकृति । १० आदर्श । नमूना ।
बानगी । ११ किसी संज्ञा या क्रिया को विभक्तियों
और उसके लकारों के रूप । १२ एक की संख्या ।
१३ पूर्ण संख्या । अखण्ड संख्या । अखण्ड राशि ।
पूर्णाङ्क । १४ नाटक । रूपक । १५ किसी ग्रन्थ को
कण्ठस्थ करके अथवा बार बार पढ़ कर, उसके

अवगत करने की क्रिया । १६ भवेर्णा । पशु । १७ शब्द । ध्वनि ।—अभिप्राहित, (वि०) वृत्त जो अपराध करते हुए सिगप्रसार किया गया हो ।—आजीवा, (स्त्री०) वेस्वा । रंडी ।—आश्रयः, (पु०) आश्रयन् सुन्दर पुरुष ।—इन्द्रियं, (न०) वह इन्द्रिय जो रूप वर्ण का ज्ञान सम्पादन करती है अर्थात् आँखें ।—उच्चयः, (पु०) सुन्दर रूपों का संग्रह ।—कारः,—कृत्, (पु०) शिल्पी ।—तत्त्वं (न०) पैत्रिक सम्पत्ति । परमसत्ता ।—धर, (वि०) (किसी की) शक्ति का बला हुआ । स्वर्ण बताये हुए ।—नाशनः, (पु०) उल्लू ।—लावण्यं, (न०) सौन्दर्य । सुन्दरता ।—विपर्ययः, (पु०) भ्रमपन । कुरुपता । वद-सूती ।—शालिन्, (वि०) सुन्दर ।—सम्पद्,—सम्पत्ति, (स्त्री०) सौन्दर्य । उत्तम रूप ।

रूपकं (न०) १ आकृति । सूरत । शङ्क । २ सृति । प्रतिकृति । ३ चिन्हानी । लक्षण । ४ किस्म । जाति । ५ वह काल जो पात्रों द्वारा खेला जाता है । हर्यकाव्य । ६ एक अर्थालङ्कार जिसमें उपमेय में उपमान के साधन्य का आरोप कर, उसका वर्णन, उपमान के रूप से किया जाता है । ७ मान या तौल विशेष ।—तालः, (पु०) सङ्गीत में "देताला" एक ताल ।

रूपकः (पु०) १ मुद्रा विशेष रूपैया ।

रूपणं (न०) १ आलङ्कारिक वर्णन । २ अन्वेषण । अनुसन्धान । परीक्षा ।

रूपवत् (वि०) १ रंग या रूप वाला । २ शारीरिक । ३ शरीरधारी । ४ सुन्दर । मनोहर ।

रूपवती (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री ।

रूपिन् (वि०) १ मानों । सूरश । २ शरीरधारी । अवतारी । ३ सुन्दर ।

रूप्य (वि०) सुन्दर । मनोहर । प्रिय ।

रूप्यं, (न०) १ चाँदी । २ रूपैया । ३ शङ्का हुआ सोना ।

रूप (धा० परस्मै०) [रूपति, रूपित] अजाना । शङ्का करना । १ मालिश करना । मलना । उबटन करना । ठक जाना । आच्छादित होना ।

(उभय० रूपयति, रूपयते) १ कौपता । २ फट जाना । लड़क जाना ।

रूपित (व० कृ०) १ सजा हुआ । २ लेप किया हुआ । उबटन किया हुआ । उका हुआ । ३ दाग दगाँला । दागी । दरदरा । ४ कुटा हुआ ।

रे (अव्यय) सर्वोपनात्मक अव्यय ।

रेखा (स्त्री०) १ लकीर । धारी । २ पंक्ति । कतार । ३ रूपरेखा । डॉन्डा । स्वका । ४ अखाने की क्रिया । ५ दगा । कुल । कपट ।—आंशः (पु०) आधिसांश या मोतर वृत्त का एक एक अंश ।—गणितं, (न०) गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं में कतिपय भिन्नान्त निर्धारित किये गये हैं ।

रेचक (वि०) [स्त्री०—रेचिका] १ दस्तावर । दस्त लाने वाला । २ फेकड़ों को साफ करने वाला । स्वाँस निकालने वाला ।

रेच देखो रेचक ।

रेचकः (पु०) १ पूरक का बल्ला । नथुने से पेट में रुकी हुई स्वाँस को निकालने की क्रिया । २ पिचकारी । ३ शोरा । जवाखार ।

रेचकं (न०) जमालगोटा ।

रेचनं (न०) १ खाली करने की क्रिया । २ रेचनता (स्त्री०) १ कम करने की क्रिया । घटाने की क्रिया । ३ साँस बाहिर निकालने की क्रिया । ४ मलस्थली साफ करने की क्रिया । ५ मल ।

रेचित (व० कृ०) साफ । रीना किया हुआ ।

रेचितं (न०) घेड़े की दुलकी की चाल ।

रेणुः (पु०) (स्त्री०) १ रज । धूल । रेत । बालू । २ पुष्पपराग ।

रेणुका (स्त्री०) परशुराम जी की माता का नाम ।

रेतस् (न०) वीर्य । धातु ।

रेप (वि०) १ तिरस्करणीय । नीच । २ निष्ठुर ।

रेफ (वि०) नीच । कमीना । दुष्ट ।

रेफः (पु०) १ रकार का वह रूप जो अन्य अक्षर के र पूर्व आने पर उसके ऊपर रहता है । २ ध्वनि विशेष । ३ अनुराग । स्नेह ।

रेवटः (पु०) १ शूकर । २ बाँस की छड़ी । ३ भैंस ।

रेवतः (पु०) बिजौरा नीव । जँभीरी ।

रेवती (स्त्री०) १ सत्ताइसवें नक्षत्र का नाम ।
२ बलराम जी की स्त्री का नाम ।

रेवा (न०) नर्मदा नदी का नाम ।

रेष् (धा० आत्म०) [रेपते, रेषित] १ दशाङ्गना ।
गुराणा । चीजना । २ हिनहिनाह ।

रेषणां (न०) } दहाह । हिनहिनाह ।
रेषा (स्त्री०) }

रै (पु०) धन दौलत । सम्पत्ति । [कर्त्ता—राः,
राशौ, रायः]

रैवतः (पु०) द्वारका के समीपवर्ती एक पर्वत
रैवतकः (पु०) का नाम ।

रोकं (न०) १ छिद्र । २ नाव । जहाज । ३ कम्प ।
प्रकम्प ।

रोगः (पु०) बीमारी ।—आयतनं, (न०) शरीर ।
वेह ।—आर्त, (वि०) बीमार । रोगी ।—
हर, (वि०) रोग दूर करने वाला ।—हरं,
(न०) दवा ।—हारिन्, (वि०) आरोग्य-
कर । (पु०) वैद्य । हकीम । डाक्टर ।

रोचक (वि०) १ रुचिकारक । रुचने वाला । २
२ भूख बढ़ाने वाला ।

रोचकं (न०) १ भूख । २ वह दवा जिससे भूख
बढ़े । ३ काँच की चूड़ियाँ या अन्य आभूषण
धनाने वाला ।

रोचन (वि०) [रोचनी या रोचना] १ दीप्तिमान ।
शोभाप्रद । मनोहर । प्रिय । २ पाकस्थली
सम्बन्धी ।

रोचनं (न०) १ आकाश । निर्मलाकाश । २ सुन्दरी
स्त्री । ३ गोररोचन ।

रोचनः (पु०) पाकस्थली सम्बन्धी ।

रोचमान (वि०) १ चमकीला । दीप्तिमान । २ प्रिय ।
सुन्दर । मनोहर ।

रोचनं (न०) बोड़े की गर्दन के बालों का जुड़ा ।
रोचिष्णु (वि०) १ चमकीला । २ हर्षित । प्रफु-
ल्लित । अच्छे अच्छे कपड़े पहिने हुए । ३ भूख
को बढ़ाने वाला ।

रोचिस् (न०) चमक । दमक । तेज ।

रोदनं (न०) १ रोना । रुदन । २ आँसू ।

रोदस् [स्त्री०—रोदसी] स्वर्ग और पृथिवी का ।

रोधः (पु०) १ रोक । रुकावट । २ अड़चन । अट-
काव । ३ बंदी । घेरा । बाँध ।

रोधनं (न०) रोक । प्रतिबन्ध ।

रोधनः (पु०) १ रुध ग्रह ।

रोधस् (न०) १ नदी का तट या बाँध । २ नदी
का कगारा । समुद्र तट ।—वक्रा,—वती,
(स्त्री०) १ नदी । २ वेग से बहने वाली नदी ।

रोध्रः (पु०) लोध वृक्ष । लोध का पेड़ ।

रोध्रः (पु०) } १ पाप । २ जुर्म । अपराध ।
रोध्रं (न०) } अनिष्ट ।

रोपः (पु०) १ उठाने या स्थापित या लगाने की
क्रिया । २ वृक्ष लगाने की क्रिया । ३ सीर । ४
छेद । छिद्र ।

रोपणं (न०) १ उठाने लगाने या खड़ा करने की
क्रिया । २ वृक्ष लगाने की क्रिया । ३ धाव पुरना ।
४ धाव पुरने वाली दवा लगाने की क्रिया ।

रोमकः (पु०) १ रोम नगर । २ रोमनिवासी । —
पत्तनं, (न०) रोम नगरी ।—सिद्धान्तः (पु०)
मुख्य पाँच सिद्धान्तों में से एक ।

रोमन् (न०) रोंगटा ।—अश्चः, (पु०) आनन्द या
भय से शरीर के रोंगटों का खड़ा होना ।—अश्वित,
(वि०) पुलकित । हृष्टरोम ।—अन्तः, (पु०)
हथेली की पीठ पर के बाल ।—आवलि,—
आवलिः—आवली, (स्त्री०) रोमों की पंक्ति
जो पेट के बीचों बीच नाभि से ऊपर की ओर
गयी हो ।—उद्गमः—उद्ग्रेहः, (पु०) रोंगटों
का खड़ा होना ।—कूपः, (पु०)—कूपं,
(न०)—गर्तः, (पु०) शरीर के चाम के
ऊपर वे छिद्र जिनमें से रोएं निकले हुए होते हैं ।
लोमछिद्र ।—केशरं,—केशरं, (पु०) चँवर ।
चामर । चैरी ।—पुलकः, (पु०) रोंगटों का
खड़ा होना ।—भूमिः, (पु०) चमड़ा । चर्म ।
रन्ध्रः, (पु०) रोमकूप ।—राजिः,—राजीः,

—लता, (स्त्री०) तरेट पर की रोमावली ।—
विकारः, (पु०)—विक्रिया, (स्त्री०)—
विभेदः, (पु०) रोमान्त्र । रोंगटों का खड़ा
होना ।—हर्षः, (पु०) रोंगटों का खड़ा होना ।
—हर्षणः, (पु०) व्यास देव के एक शिष्य का
नाम, जिसने कई एक पुराणों की कथा शौनक को
सुनायी थी ।—हर्षणं, (न०) रोंगटों का खड़ा
होना ।

रोमन्थ (न०) जुगाली । लाये हुए को चवाना
अतः बारंबार की आवृत्ति । पुनरावृत्ति ।

रोमश (वि०) बालों वाला ।

रोमशः (पु०) १ भेड़ । भेड़ा । २ शूकर ।

रोरुद्रा (स्त्री०) अत्यधिक रोदन या विलाप ।

रोलंवः } (पु०) भौंरा ।
रोलम्बः }

रोषः (पु०) क्रोध । गुस्सा ।

रोषण (वि०) [स्त्री०—रोषणी] कुढ़ ।

रोषणः (पु०) १ कलौड़ी । २ पारा । ३ ऊसर
जमीन । तुनही जमीन ।

रोहः (पु०) १ उठान । चढ़ाव । २ ऊपर चढ़ना
(जैसे किसी वस्तु के मूल्य का) ३ उपज । बाढ़ ।
४ कली । अङ्कुर ।

रोहणं (न०) ऊपर चढ़ने, सवार होने की क्रिया ।

रोहणः (पु०) लङ्का के एक पर्वत का नाम ।—द्रुमः,
(पु०) चन्दन का पेड़ ।

रोहंतः } (पु०) वृद्ध ।
रोहन्तः }

रोहंती } (स्त्री०) लता । बेल
राहन्ती }

रोहिः (पु०) १ मृग विशेष । २ धार्मिक पुरुष ।
३ वृद्ध । ४ बीज ।

रोहिणी (स्त्री०) १ लाल गौ । २ चौथे नक्षत्र का
नाम । ४ वसुदेव की एक पत्नी का नाम जिनके
गर्भ से बलराम जी की उत्पत्ति हुई थी । ५ हाल

की रजस्वला स्त्री । ६ विजली ।—पतिः,—प्रियः,
—चन्द्रमः, (पु०) चन्द्रमा ।—रमणः,
(पु०) १ साँड़ । २ चन्द्रमा ।—शकटः, (पु०)
रोहिणी नक्षत्र, जिसका आकार शकट जैसा है ।

रोहित (वि०) [स्त्री०—रोहिता या रोहिणी]
लाल ; लाल रंग का ।—अग्निः, (पु०) अग्नि ।

रोहितं (न०) १ रक्त । २ केसर ।

रोहितः (पु०) १ लाल रंग । २ लोमड़ी । ३ मृग
विशेष । ४ मच्छली विशेष ।

रोहिणः (पु०) १ मछली विशेष । मृग विशेष ।

रौदयं (न०) १ कड़ाई । सफ़ाई । २ रुलापन ।
निन्दुरता ।

रौद्र (वि०) [स्त्री०—रौद्रा, रौद्री] १ रुद्र की
तरह । उग्र । प्रचण्ड । क्रोधाविष्ट । २ भयंकर ।
बहशी । जंगली ।

रौद्रं (न०) १ क्रोध । २ भयङ्करता । ३ गर्मी ।
उत्ताप । सौर्यताप । धूप की गर्मी ।

रौद्रः (पु०) १ रुद्र का पूजक । २ गर्मी । तेज़ी । ३
रौद्र रस ।

रौप्य (वि०) चाँदी का बना हुआ । चाँदी जैसा ।

रौप्यं (न०) चाँदी ।

रौरव (वि०) [स्त्री०—रौरवी] १ रुद्र के चर्म का बना
हुआ । २ भयङ्कर । ३ बेईमान । जुआचोर ।

रौरवः (पु०) १ एक प्रकार का कनाव । २ इक्कीस
नरकों में से एक नरक का नाम ।

रौहिणः (पु०) १ चन्दन वृद्ध । २ वट का वृद्ध ।

रौहिण्यः (पु०) १ ब्रह्मा । बलराम जी । २ बुधग्रह ।

रौहिण्यं (न०) पन्ना । मरकत मणि ।

रौहिण् (पु०) हिरण विशेष ।

रौहिण्यं (न०) एक प्रकार की घास ।

रौहिणः (पु०) देखो रोहिण ।

ल

ल—संस्कृत या नागरी वर्णमाला का अठ्ठाइसवाँ व्यञ्जन वर्ण । इसके उच्चारण में सँवार, नाद और घोष प्रयत्न होने के कारण यह अल्पप्राण माना गया है ।

लः (पु०) १ इन्द्र । २ छन्दः शास्त्र में आठगणों में से एक गण । ३ व्याकरण में सम्य विभाग के लिये पाणिनि ने दस लकार माने हैं, उन्हींका यह अर्थवाची है । [दस लकार ये हैं ।

१, लट्, २ लिट्, ३ लृट्, ४ लुट्, ५ लेट्, ६ लोट्, ७ लङ्, ८ लिङ्, ९ लुङ् और लृङ् ।]

लक्ष् (धा० उभय०) [लाकयति—लाकयते]
१ खलना । २ पावा प्राप्त करना ।

लक्षः (पु०) १ भाषा । ललाट । २ वन्य प्रायुषों की बाल ।

लक्षवः } (पु०) कटहल विशेष का वृक्ष ।
लक्षुवः }

लक्षव (न०) } कटहल का फल ।
लक्षुव (न०) }

लक्षुटः (पु०) जाड़ी । झड़ी ।

लक्षकः (पु०) १ लाख । २ चिपड़ा । ३ फटा कपड़ा ।

लक्षिका (स्त्री०) द्विपक्षी । विस्तृष्टया ।

लक्ष् (धा० आत्मने) [लक्षते, लक्षित] १ देखना । २ पहचानना । ३ चिन्ह करना । परिभाषा निरूपण करना । ४ गौण अर्थ बतलाना । ५ निशाना लगाना । ६ सोचना । विचारना ।

लक्ष् (न०) १ एक लाख । २ चिन्ह । निशाना । ३ चिन्हानी । निशानी । ४ दिखावट । बहाना । झूठ । बनावट ।—अर्घीशः, (पु०) लक्षपती आदमी ।

लक्षक (वि०) लक्ष कराने वाला । जता देने वाला ।

लक्षकं (न०) एक लाख ।

लक्ष्णं (न०) १ किसी वस्तु की वह विशेषता जिससे वह पहचाना जाय । २ रोग की पहचान । ३

उपाधि । ४ परिभाषा । ५ शरीर पर का शुभ चिन्ह । ६ शरीर पर का कोई शुभ या अशुभ चिन्ह ।

लक्ष्णं तद्विषयं कृत्वा पुनरुक्तव्यम् ।

बलेयाचक्षा चतुरलक्षणाद ।

७ नाम । पद । ८ विशिष्टता । उत्तमता । श्रेष्ठता । ९ लक्ष्य । उद्देश्य । १० निर्धारित कर (या चुंगी का महसूल) । ११ आकार । प्रकार । किस्म । १२ कार्य । क्रिया । १३ कारण । १४ विषय । प्रसङ्ग । १५ बहाना । मिस । बनावट ।—अन्वित, (वि०) शुभ लक्ष्णों से युक्त ।—क्षट, (वि०) अभागा । बद्दकिस्मत् ।—सन्निपातः, (पु०) अङ्कन । बिगहन । दागने की क्रिया ।

लक्ष्णः (पु०) सारस ।

लक्षणा (स्त्री०) १ लक्ष्य । उद्देश्य । २ लक्ष्य शब्द की वह शक्ति जिससे उसका अर्थ लक्षित हो । शब्द की वह शक्ति जिससे उसका साधारण से भिन्न और वास्तविक अर्थ प्रकट हो । यह शक्ति दो प्रकार की होती है । अर्थात् “निरुद्ध” और “प्रयोजनवती” । ३ हंस ।

लक्ष्णय (वि०) १ चिन्ह का काम देने वाला । २ जिसके अच्छे चिन्ह हों । अच्छे चिन्हों वाला ।

लक्ष्णशस् (अव्यया०) सैकड़ों । हजारों । असंख्य ।

लक्ष्मि (व० कृ०) १ देखा हुआ । लक्ष्य किया हुआ । २ निरूपित । वर्णित । कहा हुआ । ३ चिह्नित । पहचाना हुआ । ४ परिभाषा किया हुआ । ५ निशाना बैधा हुआ । ६ अन्य प्रकार से प्रकट किया हुआ । ७ ढूँढा हुआ । तलाश किया हुआ ।

लक्ष्मण (वि०) १ लक्ष्य युक्त । २ भाग्यवान् । सुश-किस्मत । ३ समृद्धशास्त्री हर प्रकार से भरा पूरा ।

लक्ष्मणा (पु०) महाराज दशरथ के एक पुत्र का नाम जो सुमित्रा रानी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे ।

—प्रभुः (स्त्री०) १ लक्ष्मण-जननी । सुमित्रा रानी ।

लक्ष्मणं (न०) १ नाम । उपाधि । २ चिन्ह । निशान ।

लक्ष्मणा (स्त्री०) हंसी । माता हंस ।

लक्ष्मन् (न०) १ चिन्हाती । निशान । २ दाग । धब्बा । ३ परिभाषा । (पु०) १ सारस पक्षी । २ लक्ष्मण का नाम ।

लक्ष्मीः (स्त्री०) १ सौभाग्य । समृद्धि । सम्पत्ति । २ अम्बा मातर्य । खुश किस्मती । ३ सफलता । ४ सौन्दर्य । ५ धन की अधिष्ठात्री देवी । ६ राज-शक्ति । ७ वीर पत्नी । ८ मोती । ९ हल्दी ।— ईशः, (पु०) विष्णु का नाम । २ आस का पेड़ । ३ भाग्यवान् आदर्मी ।—काशः, (पु०) १ विष्णु भगवान् । २ राजा ।—गृहं, (न०) लाल कमल का फूल ।—तालः, (पु०) एक प्रकार का ताड़ का पेड़ ।—नाथः, (पु०) विष्णु का नाम ।—पतिः, (पु०) १ विष्णु । २ राजा । ३ सुपाद्री का पेड़ । ४ लवंग का वृक्ष ।—पुत्रः, (पु०) १ घोड़ा । २ कामदेव ।—पुष्पः, (पु०) मानिक । चुड़ी ।—पूजनं, (न०) लक्ष्मी जी का उस समय का पूजन जिस समय वर और वधू प्रथम बार (वर के) घर में प्रवेश करते हैं ।—फलः, (पु०) बेल वृक्ष ।—रमणः, (पु०) श्री विष्णु भगवान् ।—वसति, (स्त्री०) लाल कमल पुष्प ।—घारः, (पु०) गुरुवार ।—वैद्यः, (पु०) तारपीन ।—सखः, (पु०) लक्ष्मीप्रिय ।—सहजः,—सहोदरः, (पु०) चन्द्रमा ।

लक्ष्मीवल (वि०) १ भाग्यवान् । खुशकिस्मत । २ धनी । धनवान् । ३ सुन्दर । खूबसूरत ।

लक्ष्य (स० व० क०) १ दिखलाई पड़ने वाला । २ पहचाना जाने वाला । ३ जानने लायक । वह जिसका पता चल सके । ४ चिन्हित किया जाने वाला । ५ निरूपण किया जाने वाला । ६ निशाना लगाने के योग्य । ७ घूम घुमाकर बतलाने योग्य । ८ विचारणीय ।

लक्ष्यं (न०) १ निशाना । २ चिन्ह । निशानी । ३ वह वस्तु जो लक्ष्यवती हो । ४ गौण अर्थ ।

लक्ष्य से उपपन्न अर्थ । ५ बहाना । कल्पित । यलावदी । ६ एक लाख ।—सेवः,—वेधः, (पु०) निशानाबारी ।—हन्, (पु०) तीर । गोली ।

लग् (धा० परस्मै०) [लगति, लगति, लङ्गति] लङ्गे (धा० परस्मै०) [लगति, लगति, लङ्गति] जाना ।

लग् (धा० परस्मै०) [लगति, लगति] १ लगना । चिपकना । चिपटना । अनुरक्त होना । २ घुना । ३ मिल जाना । एक हो जाना । ४ पीछे लगना या पीछा करना । ५ रोक रखना । काम में लगा रखना ।

लगड (वि०) प्रिय । मनोहर । सुन्दर ।

लगित (वि०) १ चिपटा हुआ । लगा हुआ २ जुड़ा हुआ । सम्बन्ध युक्त । ३ प्राप्त । पाया हुआ ।

लगुडः } (पु०) छड़ी । लकड़ी । काठी ।
लगुरः }
लगुलः }

लग्न (व० क०) १ चिपटा हुआ । लगा हुआ । दृढ़ता पूर्वक पकड़ा हुआ । २ जुड़ा हुआ । स्पर्श किया हुआ । ३ सम्बन्ध युक्त ।—मासः, (पु०) शुभ मास जिसमें शुभकार्य विवाहादि हो सके ।

लग्नः (पु०) १ मदमस्त हार्थी । २ भाट । बंदीजन ।

लग्नं (न०) १ ज्योतिष में दिन का उतका अंश जिसमें में किसी एक राशि का जड़य रहता है । २ वह समय जब सूर्य किसी राशि में जाता है । ३ शुभ कार्य करने का शुभ मुहूर्त ।

लग्नकः (पु०) प्रतिभू । जानिन । वह जो जमानत करे ।

लघिमन् (पु०) १ हलकापन । अगुरुत्व । गुरुत्वाभाव । २ ओढ़ापन । नाचता । ३ विचारहीनता । ४ अप्रसिद्धियों में से चौथी सिद्धि, जिसके प्राप्त होने पर मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन जाता है ।

लघिष्ठ (वि०) सब से हलका । सब से नीचा ।

लघीयस् (वि०) अपेक्षाकृत लघुतर । निम्नतर ।

लघु (वि०) [लो०—लघ्वी या लघु] १ हल्का । २ छोटा । ३ संक्षिप्त । ४ अकिञ्चित् । ५ क्षीना ।

मीच । ६ निर्बल । कपजोर । ७ अभागा । ८ चंचल । ९ तेज । १० सरल । ११ सहज में पचने वाला । १२ ह्रस्व (जैसे स्वर) । १३ मंद । कोमल । १४ प्रिय । वाञ्छनीय । १५ विशुद्ध । साफ । —आशिन, —आहार, (वि०) कम खाने वाला । —उक्तिः, (स्त्री०) संक्षिप्त रूप से कहने का ढंग । —उत्थान, —समुत्थान (वि०) तेजी से काम करने वाला । —काय, (वि०) हलके शरीर का । —कायः, (पुं०) बकरा । —क्रम, (वि०) तेज चलने वाला । —लङ्घिका (स्त्री०) छोटी चारपाई । —गंधूमः (पुं०) छोटी जाति का गेहूँ । —निस्त, —चेतस्, —मनस्—हृदय (वि०) १ हलके मन का । २ चंचलचित्त । —जङ्गलः, (पुं०) लावक पत्ती । —द्राक्षा, (स्त्री०) किशमिश सेवा । —द्राविन् (वि०) सहज में पिघलने वाला । —पाक, (वि०) सहज में पचने वाला । —पुष्पः, (पुं०) कदंब वृक्ष । —वदरः, (पुं०) —वदरी, (स्त्री०) बेरी का वृक्ष या फल । —भवः, (पुं०) नीच योनि का । —भोजनं, (न०) हलका भोजन । —मांसः, (पुं०) तीतर विशेष । —मूलकं, (न०) मूली । —लघं, (न०) बीरनमूल । —वृत्ति, (वि०) १ बदचलन । २ हलका । ३ जुरी तरह किया हुआ । —हस्तः, (वि०) हलके हाथ का । चतुर । निपुण । कुशल । —हस्तः, (पुं०) कुशल तीरंदाज ।

लघु (अन्वया०) १ कमीनेपन से । नीचता से । २ तेजी से । फुर्ती से ।

लघुः (पुं०) १ काला अगर । २ समय का एक परिमाण, जिसमें १५ वण होते हैं ।

लघुता (स्त्री०) १ हलकापन । २ छुटाई । कमी । लघुत्वं (न०) १ छुट्टता । अकिंचनता । ४ तिरस्कार । अप्रतिष्ठा । ५ तेजी । फुर्ती । ६ संक्षिप्तता । ७ सरलता । सहजता । ८ विचारहीनता । ९ लंपटता ।

लघ्वी (स्त्री०) १ नज़ाकत से सरी औरत । कोमलज्जी स्त्री । २ छोटी गाड़ी ।

लङ्का (स्त्री०) १ राक्षसराज रावण की राजधानी का लंका नाम । २ वेश्या । रंडी । ३ शाखा । ४ अत्र विशेष । —अधिपः—अधिपतिः,—ईशः,—ईश्वरः,—नाथ,—पतिः (पुं०) रावण या विभीषण । —दाहिन, (पुं०) श्रीहनुमान जी ।

लंखनी } (स्त्री०) लगाम ।
लङ्खनी }

लंगः } (पुं०) १ लंगड़ापन । २ संयोग । ३ प्रेमी ।
लङ्गः } अनुरागी । आशिक ।

लंगकः } (पुं०) प्रेमी । आशिक ।
लङ्गकः }

लंगलं } (न०) हल ।
लङ्गलं }

लंगूलं } (न०) पूंछ ।
लङ्गूलं }

लंघ } (धा० उभय०) [लंघति, लंघते—लंघित] १ लङ्घ् } उड़लना । कूदना । कुलाँच मारना । २ सवार होना । चढ़ना । ३ पार जाना । नाँघना । ४ लंघन करना । उपवास करना । ५ सुखा डालना । ६ आक्रमण करना । खा डालना । अनिष्ट करना । लंघनं } (न०) १ फाँदना । नाँघना । २ कुलाँच लङ्घनम् } मारते आना । ३ चढ़ना । ४ आक्रमण करना । ५ सीमा के बाहिर होना । ६ तिरस्कार करना । ७ समुहाना । अपराध । जुर्म । ८ हानि । अनिष्ट । ९ लंघन । कड़ाका । १० धोड़े की चात विशेष ।

लंघित } (व० कृ०) १ नाँघा हुआ । फलाँगा लङ्घित } हुआ । २ अपराध गया हुआ । ३ भंग किया हुआ । ४ तिरस्कृत । अपमानित ।

लज्ज (धा० परस्मै०) [लज्जति] चिन्ह करना । चिन्हानी करना ।

लज्ज } (धा० आत्म०) [लज्जते] लज्जित होना ।
लज्ज }

शर्माना ।

लज्ज (धा० आत्म०) [लज्जते, लज्जित] शर्माना । लजाना ।

लज्जका (स्त्री०) जंगली कपास का वृक्ष ।

लज्जा (स्त्री०) १ शर्म । लाज । २ कुईमुई का पेड़ ।
—अन्वित, (वि०) लज्जालु । लजीला ।
—शील, (वि०) लजीला । —रहित, —शून्य ।
—होन, (वि०) बेहया । बेसर्म ।

लज्जालु (वि०) लजीला । शर्मीला । (पु० स्त्री०)
लजालू या लज्जावन्ती का पौधा ।

लज्जित (व० कृ०) १ शर्मीला ।

लज्ज } (धा० परस्मै०) [लज्जति] १ दोषी ठहराना ।
लज्जे } भस्मना करना । २ भूतना । [उभय०—लज्जयति
—लज्जयते] १ अनिष्ट करना । मारना । लाइन
करना । मार डालना । २ देना । ३ बोलना । ४
मजबूत होना । ५ बसना । ६ चमकना ।

लज्जः } (पु०) १ पाद । पैर । २ काँड़ । ३ पूँछः ।
लज्जः }

लज्जा } (स्त्री०) १ प्रवाह । धार । २ छिनाल स्त्री ।
लज्जा } ३ लक्ष्मी जी का नाम । ४ निद्रा ।

लज्जिका } (स्त्री०) रंढी । बेरथा ।
लज्जिका }

लट् (धा० परस्मै०) [लटति] १ बालक बन
जाना । २ लड़कों की तरह काम करना । ३
बालकों की तरह बातें करना । तुतलाना । ४
रोना । चिल्लाना ।

लटः (पु०) १ मूर्ख । २ अपराध । चूक । ३ ढाँक ।

लटकः (पु०) दगाबाज़ । बदमाश । गुंडा ।

लटभ (वि०) मनोज्ञ । मनोहर । खूबसूरत ।

लट्टः (पु०) दुष्ट । बदमाश ।

लट्ट (न०) १ पत्नी विशेष । २ जुल्म । अलक ।
लट्ट । ३ गौरैया चिड़िया । ४ बाजा विशेष । ५
क्रीड़ा विशेष । ६ कुसुम का फूल । ७ असली स्त्री ।

लट्टः (पु०) १ घोड़ा । २ नरैया लड़का । ३ एक
जाति विशेष ।

लड् (धा० परस्मै०) [लडति] खेलना । क्रीड़ा
करना । [लडति, लडयति] १ उछालना ।
फेंकना । २ दोषी ठहराना । ३ जीभ लप लपाना ।
४ तंग करना । चिढ़ाना । २ (उभय०—लाडयति
—लाडयते] १ थपकी लगाना । २ चिढ़ाना ।

लडह (वि०) खूबसूरत । सुन्दर

लड्डुः } (पु०) लड्डू । लड्डुआ ।
लड्डुः }

लंड } (धा० उभय०) [लंडति, लंडयति—
लण्ड] लंडयते] १ उछालना । ऊपर फेंकना । २
बोलना ।

लंड } (न०) बिटा । मल ।
लण्ड }

लंडः } (पु०) लंडन नगर ।
लण्डः }

लना (स्त्री०) १ बेल । लतर । २ शाखा । डाली ।
३ प्रियङ्गुलता । ४ माधवी लता । ५ सुरक लता ।
६ चावुक । कोड़ा । ७ मांतिमों का लड़ी । ८
सुन्दरी स्त्री । —अनं, (न०) फूल । —अंबुजं,
(न०) ककड़ी । —अकः, (पु०) हरा लहपन ।
—अलकः, (पु०) हाथी । —गृहः, (पु०)
—गृहं, (पु०) कुंज । लतामण्डप । —जिह्वः,
—रसनः, (पु०) —तरुः, (पु०) १ साल
वृक्ष । सारंगी का पेड़ । —पनसः, (पु०)
तरवृज । हिंगवाना । कलीदा । —प्रतानः, (पु०)
बेल का सूत । —नवर्नं, (न०) लतागृह ।
लतामण्डप । —यावकं, (न०) अङ्कुर । कल्ला ।
—बलयः, —बलयं, (न०) लतामण्डप । —
वृत्तः, (पु०) नारियल का वृक्ष । —वेष्टः, (पु०)
कामशास्त्र में वर्णित सोलह प्रकार के रतिबंधों में
से तीसरा । —वेष्टनं, —वेष्टिनकं, (न०) एक
प्रकार का आलिङ्गन ।

लतिका (स्त्री०) १ छोटी लता । २ मोती की लड़ी ।

लतिका (स्त्री०) विस्तृष्टा । छिपकली ।

लप् (धा० परस्मै०) [लपति] १ बोलना । बातचीत
करना । २ बिना प्रयोजन बकबक करना । ३
काना-फूँसी करना ।

लपनं (न०) १ वार्तालाप । बातचीत । २ मुख ।

लपित (व० कृ०) कहा हुआ ।

लपितं (न०) कथन । वाणी ।

लप्य (व० कृ०) १ प्राप्त । पाया हुआ । २ लिया
हुआ । वसूल किया हुआ । ३ जाना हुआ ।
समझा हुआ । ४ (भाग देकर) निकाला हुआ ।

लब्ध (न०) वह जो प्राप्त हो या उपलब्ध हो ।—
अन्तरं, (न०) १ वह जिसे प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त हो गया हो । २ वह जिसे अवसर प्राप्त हुआ हो ।—उद्य, (वि०) १ उत्पन्न । २ वह जिसका भाग्योदय हुआ हो । काम, (वि०) वह जिसकी कामना सिद्ध होगयी हो । सफलमनोरथ —कीर्ति, (वि०) जिसने यश पाया हो । प्रसिद्ध । प्रख्यात ।—चेतस्, —संज्ञ, (वि०) होश में आया हुआ ।—जन्मन्, (वि०) उत्पन्न ।—नामन्, —शब्द, (वि०) प्रसिद्ध । प्रख्यात ।—नाशः, (पु०) जो प्राप्त हो उसका नाश होना या खोजाना ।—प्रशमनं, (न०) १ मिले हुए धन का सत्पात्र को दान । २ उपार्जित धन की रक्षा ।—लक्ष्, —लक्ष्य, (वि०) १ वह जिसका निशाना ठीक बैठा हो । २ निशाना लगाने में निपुण ।—वर्ण, (वि०) १ विद्वान् । पण्डित । ३ प्रसिद्ध । प्रख्यात ।—विद्या, (वि०) विद्वान् । शिक्षित । बुद्धिमान् ।—सिद्धि, (वि०) वह जिसका मनोरथ पूर्ण हो गया हो । जो किसी कला में पूर्ण निपुणता प्राप्त कर चुका हो ।

लब्धिः (स्त्री०) १ प्राप्ति । लाभ । मुनाफा ।

३ (गणित में) लब्धाङ्क ।

लब्धिम (वि०) पाया हुआ । प्राप्त किया हुआ ।

लभ् (धा० आत्म०) [लभते, लब्ध] १ प्राप्त करना । पाना । २ अधिकार में करना । कब्जा करना । ३ लेना । ४ पकड़ना । थामना । ५ मिलना । ६ (खोई हुई वस्तु को) ढूँढ़ निकालना । पुनः प्राप्त करना । ७ जानना । सीखना । पहचानना । समझना ।

लभनं (न०) १ प्राप्त करने की क्रिया । २ पहचानने की क्रिया ।

लभसं (न०) छोड़ा बाँधने की रस्सी । (पु० भी होता है) ।

लभसः (पु०) १ धन दौलत । २ याचक ।

लभ्य (वि०) १ पाने योग्य । २ पता पाने योग्य । जो मिल सके । ३ न्याययुक्त । उचित । मुनासिब । ४ बोधयोग्य ।

लभकः (पु०) प्रेमी । अनुरागी । आशिक ।

लम्पट } (वि०) १ मरभुका । लातची । २ लम्पट } कामुक । ऐयाश ।

लम्पटः } (पु०) व्यभिचारी । विषयी । कामी । लम्पटः }

लम्फः } (पु०) उछाल । फलांग । झपट । लम्फः }

लम्फनं } फलांग । कूद । झपट । लपक । लम्फनं }

लम्ब } (धा० आत्म०) [लम्बते, लम्बित] १ लम्बे } लटकना । २ किसी के साथ लगना या नथी होना । ३ नीचे उतरना । डूबना । ४ पीछे रह जाना । ५ बिलंब करना । ६ ध्वनि करना ।

लम्ब लम्ब } (वि०) १ लंबा । २ बढ़ा । ३ प्रशस्त ।

लम्बः (पु०) वह खड़ी रेखा जो किसी बेंदी रेखा पर इस तरह गिरे कि, उसके साथ वह समकोण बनावे उसे लम्बरेखा कहते हैं ।—उद्ग, (वि०) बड़े पेट का ।—उद्गः, (पु०) १ गणेशजी । २ मरभुका । भोजनभट ।—ओष्ठः, (लम्बोष्ठः, लम्बोष्ठः) (पु०) ऊँट ।—कर्णः, (पु०) १ गवा । २ बकरा । ३ हाथी । ४ बाज पक्षी । ५ राक्षस । दैत्य ।—जठर, (वि०) बड़े पेट वाला ।—पयोधरा, (स्त्री०) स्त्री जिसकी छातियाँ या कुच लंबे और नीचे लटकते हों ।—स्फिच, (वि०) भारी या बड़े चूतरोँ वाला ।

लम्बकः } (पु०) १ लम्बरेखा । २ ज्योतिष में लम्बकः } एक प्रकार का योग । इनकी संख्या १५ है ।

लम्बनः } (पु०) १ शिव जी । २ कफ । लम्बनः }

लम्बनं } (न०) १ झूलने वाला । लटकने वाला । लम्बनं } २ गोद । झालर । ३ गले का हार जो नाभि तक लटकता हो ।

लम्बा लम्बा } (स्त्री०) १ दुर्गा । २ लक्ष्मी ।

लम्बिका लम्बिका } (स्त्री०) गले के अंदर की घंटी या कौआ ।

लंभित } (व० कृ०) १ लटकता हुआ । २
लम्बित } झूलता हुआ । ३ डूबा हुआ । नीचे पैदा
हुआ । ४ आश्रित । टिका हुआ ।

लंघुपा } (स्त्री०) सात लकी का हार । सतलकी ।
लम्बुपा }

लंभः } १ प्राप्ति । उपलब्धि । २ मिलन । ३ पुनः
लम्भः } प्राप्ति । ४ लाभ ।

लंभनं } (न०) १ प्राप्ति । उपलब्धि । २ पुनः
लम्भनम् } प्राप्ति ।

लंभित } (व० कृ०) १ प्राप्त किया हुआ ; हासिल
लम्बित } किया हुआ । २ प्रदत्त । दिया हुआ । ३
वर्द्धित । बढ़ाया हुआ । ४ प्रयोग किया हुआ ।
लगाया हुआ । ५ लालन पालन किया हुआ । ६
कथित । सम्बोधित ।

लभ् (धा० आत्म०) [लयते] जाना ।

लयः (पु०) १ विलीन होना । लीनता । मग्नता ।
२ एकाग्रता । ३ नाश । विनाश । ४ संगीत की
लय [जो तीन प्रकार की मानी गयी है, द्रुत, मध्य
और विलंबित] । ५ संगीत का ताल । ६ विश्राम ।
७ विश्रामस्थान । आलय । वासस्थान । ८ मन की
सुस्ती । मानसिक अकर्मण्यता । ९ आलिङ्गन ।—
आरम्भः. —आलम्भः. (पु०) नट । नचैया ।
—कालः, (पु०) प्रलय काल ।—गत, (वि०)
गला हुआ । पिचला हुआ ।—पुत्री, (स्त्री०)
(नाटक की, पात्री । नाचने वाली ।

लयनं (न०) १ चिपकन । लिपटन । २ आराम ।
विश्राम । ३ विश्राम गृह ।

लव् (धा० परस्मै०) [लवति] जाना । चलना ।

लल् (धा० उभय०) [ललति-ललते] खेलना ।
क्रीड़ा करना । आमोदप्रमोद करना ।

लल (वि०) १ खिलाबी । क्रीड़ाप्रिय । २ अभिलाषी ।

ललत् (वि०) १ खिलाबी । २ मुँह से बाहिर निकाले
हुए ।—जिह्वा, (वि०) (= लज्जिज्जह्वा) १ जिह्वा
मुँह के बाहिर निकाले हुए । २ बहरी । भयानक ।
—जिह्वा, (पु०) १ कुत्ता । २ ऊँट ।

ललनः (पु०) १ क्रीड़ा । खेल । आमोद । २ जिह्वा
को मुँह से बाहिर निकालना ।

ललना (स्त्री०) १ स्त्री । रमणी । २ स्नेहवाचिणी
स्त्री । ३ जिह्वा ।—प्रियः (पु०) कदम्ब वृक्ष ।

ललनिका (स्त्री०) छेदी अथवा अभागी स्त्री ।

ललनिका } (पु०) १ लंबी माला । २ छपकनी
ललन्तिका } या गिरगट ।

ललाकः (पु०) लिङ्ग । जननेद्रिय ।

ललार्क (न०) माथा । माल । मस्तक ।—अर्द्धः.
(पु०) शिवजी का नान ।—पट्टः, (पु०) —
पट्टिका, (स्त्री०) १ माथे का चपटा भाग । २
सुकुट । किरिट ।—लेला, (स्त्री०) कपाल का
लेख । भाग्यलेख ।

ललाटकं (न०) १ माथा । २ सुन्दर माथा ।

ललाटंतप } (वि०) १ माथे को तपाने वाला । २
ललाटन्तप } अत्यन्त पीड़ाकारी ।

ललाटंतपः } (पु०) सूर्य ।
ललाटन्तपः }

ललाटिका (स्त्री०) १ आभूषण । २ माथे पर लगा
हुआ तिलक ।

ललाटूल (वि०) वह जिसका माथा ऊँच या सुन्दर
हो ।

ललाम (वि०) [स्त्री—ललामी] १ रमणीय ।
सुन्दर । बढ़िया ।

ललामं (न०) १ माथे पर धारण किये जाने वाले
आभूषण (यथा—बैनाबंदिया, कटियाँ, झूमर)
[यह शब्द पुलिङ्ग भी होता है, जब यह भूषण के
अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है] । २ कोई भी सर्वोत्तम
जाति की वस्तु । ३ माथे का चिन्ह या निशान ।
४ चिन्ह । निशानी । ५ झंडा । पताका । ६
पंक्ति । रेखा । अवली । ७ पूंछ । दुम । ८ गरदन
के बाल । अयाल । ९ प्राधान्य । गौरव । सौन्दर्य ।
१० लींग । श्रद्ध ।

ललामः (पु०) घोड़ा ।

ललामकम् (न०) माथे पर धारण किया जाने वाला
पुष्पगुच्छ अथवा पुष्पमाला ।

ललामन् (न०) १ आभूषण । सजावट । २ कोई
भी सर्वोत्तम वस्तु । ३ झंडा । पताका । ४ साम्प्र-
दायिक तिलक । चिन्ह । चिन्हानी । ५ पूंछ । दुम ।

ललित (वि०) १ क्रीडासक्त । खिलड़ी । २ कामुक ।
भोजनभट्ट । ३ मनोहर । सुन्दर । ४ मनोमुग्धकारी ।
प्रिय । उत्तम । ५ अभिलषित । ६ कोमल । सीधा ।
७ कपकपा । हिलता डोलता हुआ ।

ललित (न०) १ खेल । क्रीडा । २ आसोद प्रसोद ।
शृङ्गार रस में कायिक हाव या अङ्गवेष्टा जिसमें
सुकुमारता के साथ भौं, आँख, हाथ, पैर आदि
अंग हिलाये जाते हैं । ३ सौन्दर्य । मनोहरता ।
४ कोई भी स्वाभाविक क्रिया । ५ मोलापन ।
अलङ्करण ।—अर्थ, (वि०) जिसका सुन्दर
अर्थ हो ।—पद, (वि०) जिसमें सुन्दर पद या
शब्द हो ।—प्रहार, (पु०) प्यार की थपथपी ।

ललिता (स्त्री०) १ रमणी । २ स्वेच्छाचारिणी ।
स्त्री । ३ मुरक । कस्तूरी । ४ दुर्गादेवी का रूप । ५
अनेक प्रकार के वृक्ष ।—पञ्चमी, (स्त्री०)
आखिल शुक्ला पंचमी जिसमें ललिता देवी का पूजन
होता है ।—सप्तमी, (स्त्री०) भाद्रमास के शुक्ल
पक्ष की सप्तमी ।

लवं (न०) १ लौंग । लवंग । २ जायफल । जातीफल ।

लवं (अव्यय०) अव्यय अल्प परिमाण ।

लवः (पु०) १ कटाई । २ पके हुए अनाज की कटाई ।
३ विभाग । टुकड़ा । खण्ड । ४ परिमाण । कतरा ।
बँद । बहुत थोड़ी मात्रा । ५ ऊन । केश । ६
क्रीड़ा । ७ काल का एक मान । ८ भिन्न के ऊपर
की राशि (यथा ४) । इसमें ४ की संख्या लव है)
९ लग्नांश । १० विनाश । ११ श्रीरामचन्द्र जी
के एक पुत्र का नाम ।

लवंगं } (न०) लवंग का पौधा ।
लवङ्गम् }

लवंगः } (पु०) लौंग का वृक्ष ।—कलिका, (स्त्री०)
लवङ्गः } लौंग ।

लवङ्गकं } (न०) लौंग ।
लवङ्गकम् }

लवण (वि०) १ निमकीन । खारा । २ सलौना ।
सुन्दर । प्रिय । मनोह ।—अन्तकः, (पु०) शत्रुघ्न ।
—अग्निः, (पु०) खारी समुद्र ।—अम्बुराशिः,
(पु०) समुद्र ।—अम्भस्, (पु०) समुद्र । (न०)

खारी जल ।—आकरः, (पु०) १ निमक की
खान । २ खारीजल का कुण्ड अर्थात् समुद्र ।
(आलं०) सौन्दर्य की या सलोनेपन की खान ।
—आलयः, (पु०) समुद्र ।—उत्तमं, (न०)
१ सेंधा नमक २ सोरा ।—उदः, (पु०) १
समुद्र । २ खारीजल का समुद्र ।—उदकः,—
उदधिः, (पु०)—जलः, (पु०) समुद्र ।—मेहः,
(पु०) प्रमेह का एक भेद ।—समुद्रः, (पु०)
खारी जल का समुद्र ।

लवणं (न०) १ निमक । २ बनाया हुआ निमक
विशेष ।

लवणः (पु०) १ निमकीन स्वाद । २ खारी जल का
समुद्र । ३ मधुदैत्य का पुत्र लवणालुर । ४ नरक
विशेष ।

लवणा (स्त्री०) दीप्ति । आभा । सौन्दर्य ।

लवणिमन् (पु०) १ निमकीनपना । २ सलौनापन ।
सौन्दर्य ।

लवनं (न०) १ लुनना । (अनाज का) काटना ।
२ हंसिया ।

लवली (स्त्री०) लता विशेष । हरफोखरी नाम का
वृक्ष विशेष ।

लवित्रं (न०) हंसिया ।

लशू (धा० उभय०) [लशयति, लशयते] किसी
कलाकौशल को सीखने का अभ्यास करना ।

लशुनः (पु०) }
लशूनः (पु०) } लहसुन ।
लशुनं (न०) }
लशूनं (न०) }

लष् (धा० परस्मै०) १ अभिलष करना । चाहना ।

लपित (व० कृ०) अभिलषित । चाहा हुआ ।

लषः (पु०) नट । अभिनयकर्त्ता । नचैया ।

लस् (धा० परस्मै०) [लसति, लसित] १ चमकना ।
२ निकलना । उदय होना । प्रकट होना । ३ आलि-
ङ्गन करना । ४ खेलना । नाचना । भटकना ।

लसा (स्त्री०) १ केसर । २ हल्दी ।

लसिका (स्त्री०) थूक । लार ।

लसित (व० क०) खेला हुआ । प्रकट हुआ ।
प्रादुर्भूत ।

लसीका (स्त्री०) लार । थूक ।

लसज् (धा० आत्म०) [लज्जते, लज्जित] शर्माना ।
लजाना ।

लस्त (वि०) १ आलस्य । २ लिपुण । दृढ़ ।

लस्तकः (पु०) धनुष का मध्यभाग ।

लस्तकिन् (पु०) धनुष । कमान ।

लहरीः } लहर । तरङ्ग ।
लहरी }

ला (धा० परस्मै०) [लाति] लेना । पाना । प्राप्त
करना । ले लेना ।

लाकुटिक (वि०) [स्त्री० —लाकुटिकी] लठैल ।
लाठी धारण किये हुए ।

लाकुटिकः (पु०) सन्तरी । पहरेदार ।

लाक्षकी (स्त्री०) सीतार्जी का नाम ।

लाक्षणिक (वि०) [स्त्री० —लाक्षणिकी] १
वह जो लक्षणों का ज्ञाता हो । लक्षण जानने
वाला । २ जिससे लक्षण प्रकट हो । ३ गौणार्थ-
वाची । ४ गौण । अपकृष्ट । ५ पारिभाषिक ।

लाक्षणिकः (पु०) पारिभाषिक शब्द ।

लान्नाय (वि०) १ लक्षण सम्बन्धी । २ लक्षण
जानने या बतलाने वाला ।

लात्ता (स्त्री०) १ लात । २ वह कीड़ा जो लाख
उत्पन्न करता है ।—तदः, —वृत्तः, (पु०)
पलास । डाक —रक्त, (वि०) लात के रंग में
रंगा हुआ ।—प्रसाधनः (पु०) लाख । जोध
वृक्ष ।

लात्तिक (वि०) [स्त्री०—लात्तिकी] १ लाख
सम्बन्धी । लाख का बना हुआ । लात्ती रंग
का । २ लाख सम्बन्धी ।

लाख् (धा० परस्मै०) [लाखति] १ खूब जाना ।
२ सजाना । ३ काफी होना । ४ देना । ५ रोकना ।

लागुटिक देखो लाकुटिक ।

लाघ् (धा० आत्म०) [लाघते] समान होना ।
पर्याप्त होना ।

लाघवं (न०) १ लघुता । आत्मता । २ हलकापन ।
३ विचारहीनता । ४ अकिञ्चिक्ता । ५ अभ्यन्मान ।
अप्रतिष्ठा । निरस्कार । अन्धःपान । ६ कुर्मी । वेग ।
नेत्री । जीवन्ता । ७ किनाफोलता । तत्परता । ८
मन्त्र विषयों की पारदर्शिता । ९ संक्षिप्तता ।

लांगलं (न०) १ हल । २ हल के आकार का
लाङ्गुलम् । शहवीर या लट्ठा । ३ नाव का वृक्ष ।
४ भिरन । लिङ्ग । ५ दुग्ध विशेष ।—ग्रहः, (पु०)
हलवाग्रा ।—दण्डः, (पु०) हल का लट्ठा । हरिस ।
—ध्वजः, (पु०) बलरामजी का नाम । —पद्मतिः,
(स्त्री०) कूंड । हवाई । लीक ।—फालः, (पु०)
हल की फाल ।

लांगलिन् (पु०) १ बलरामजी का नाम । २
लाङ्गलिन्) नारियल का पेड़ । ३ सर्प ।

लांगली } (स्त्री०) नारियल का वृक्ष ।
लाङ्गली }

लांगलीपा } (स्त्री०) हल का लट्ठा । हरिस ।
लाङ्गलीपा }

लांगुलं (न०) १ पूंछ । २ लिङ्ग । जननेन्द्रिय ।
लाङ्गुलम् }

लांगुलिन् } (पु०) बंदर । लंगूर ।
लाङ्गुलिन् }

लाज् (धा० परस्मै०) [लाजति, लांजति]
लांज्) १ कलङ्क लगाना । धिक्कारना । २ भूषना ।
तलना ।

लाजः (पु०) भीमा अनाज ।

लाजाः (पु०) (बहुवचन) भुना हुआ अनाज ।

लांज् (धा० परस्मै०) [लांजति] १ चिन्हित
लांज्) करना । २ सजाना ।

लांजन् (न०) १ चिन्ह । निशान । पहचान
लांजन्) का चिन्ह । २ नाम । संज्ञा । ३ दाता ।
धब्बा । लान्छन । ४ चन्द्रलान्छन । ५ भूमीमा

लांजित (पु०) १ चिन्हित । २ नामक । ३
लांजित) सजा हुआ । ४ सम्पन्न ।

लाट (पु० बहुवचन०) एक देश विशेष का नाम
और उसके निवासी ।

लाटः (पु०) १ लाट देशाधिपति । २ पुराना कपड़ा ।
जीर्णवस्त्र । ३ बल । ४ लड़कों जैसी बौली ।—
अनुप्रासः (पु०) एक शब्दालङ्कार । इसमें
शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है किन्तु अन्वय में
हेरफेर करने से अर्थ बदल जाता है ।

लाटक (वि०) [स्त्री—लाटिका] लाटों सम्बन्धी ।
लाटिका (स्त्री०) साहित्य की चार प्रकार की
लाटी) शैलियों में से एक । इसमें वैदर्भी और
पांचाळी रीतियों का कुछ कुछ अनुसरण किया
जाता है । इसमें छोटे छोटे पद तथा समास हुआ
करते हैं ।

लाड् (धा० उभय०) [लाडयति—लाडयते]
१ थपथपाना । थपकी देना । २ दोषी ठहराना ।
धिकारना । ३ फैकना । उछालना ।

लाटनी (स्त्री०) कुलटा स्त्री ।

लात (व० क०) पाया हुआ । बसुल पाया हुआ ।

लापः (पु०) १ वार्तालाप । बातचीत । २ तुलनाना ।

लावः } (पु०) लवा नामक पत्थी ।
लावकः }

लावुः } (पु०) लौकी । लौआ ।
लावूः }

लावुकी (स्त्री०) चीन्हा विशेष ।

लाभः (पु०) १ प्राप्ति । लब्धि । २ मुनाफा ।
फायदा । ३ उपभोग । ४ विजय । जीत । ५
ज्ञान । प्रतीति ।—कर,—कृत, (वि०) लाभ-
दायक । फायदेमंद ।—लिप्ता, (स्त्री०) मुनाफे
की खाहिश । लाभ की अभिलाषा (लोभ)
लालच ।

लाभकः (पु०) मुनाफा । फायदा ।

लाभञ्जकं } (न०) बीरनमूल ।
लाभञ्जक }

लापस्यं } (न०) लपटता । कामुकता । ऐयाशी ।
लापस्यं }

लालनं (न०) थपथपाना । प्यार । लाड़ ।

लालस (वि०) १ उत्सुकता पूर्वक अभिलाषी ।
उत्कट इच्छुक । २ अनुरागी । अनुरागवान् ।

लालसा (स्त्री०) १ अभिलाषा । उत्सुकता । २ माँग ।
आचना । चिन्तन । ३ खेद । शोक । ४ गर्मिणी स्त्री
की रुचि ।

लालसीकं (न०) चटनी ।

लाला (स्त्री०) लार । थूक ।—लावः, (पु०)
मकड़ी ।—लावः, (पु०) १ लार का टपकना ।
२ मकड़ी ।

लालाटिक (वि०) [स्त्री०—लालाटिकी] १ माल
सम्बन्धी । २ भास्य पर निर्भर रहने वाला । ३
निरर्थक । नीच । कमीना ।

लालाटिकः (पु०) १ सावधान अनुचर । २ चिठल्ला
३ आदिङ्गन विशेष ।

लालाटी (न०) माथा ।

लालिकः (पु०) मैसा ।

लालित (व० क०) १ दुलारा हुआ । लड़ाया हुआ ।
२ बहकाया हुआ । ३ प्रिय । अभिलषित ।

लालितं (न०) प्रेम । प्रसन्नता ।

लालितकः (पु०) लड़ैता बालक ।

लालित्यं (न०) १ मनोहरता । सौन्दर्य । सरस ।
२ प्रीतिद्योतक हावभाव ।

लालिन (पु०) बहकाने वाला । स्त्रियों को कुपथ में
प्रवृत्त करने वाला ।

लालिनी (स्त्री०) स्वेच्छाचारिणी स्त्री ।

लालुका (स्त्री०) कण्ठहार विशेष ।

लाव (वि०) [स्त्री०—लावी] १ काटनेवाला ।
कतरने वाला । २ तोड़ने वाला । नाशक । विनाशक ।

लावः (पु०) १ कतरन । २ बटेर । पक्षी विशेष ।

लावकः (पु०) १ काटने वाला । विभाजक । बाँटने
वाला । २ (अनाज) काटने वाला । जमा करने
वाला । ३ बटेर । पक्षी विशेष ।

लावण (वि०) [स्त्री०—लावणी] १ निमक ।
निमक पड़ा हुआ ।

लावणिक (वि०) [स्त्री०—लावणिकी] १ निमकीन ।
२ निमक का व्यापारी ३ प्रिय । मनोहर ।

लावणिकं (न०) लवण-पात्र ।

लावणिकः (पु०) निमक का व्यापारी ।

लावण्यं (न०) १ निमकीनपन । २ सलौनापन ।
मनोहरता । सौन्दर्य ।—अर्जितं, (न०)

विवाहित स्त्री की व्यक्तिगत सम्पत्ति जो उसे विवाह के समय उसके पिता अथवा उसकी सास द्वारा मिली हो ।

लाघरयमय } (वि०) सजौना । सुन्दर । मनोहर ।
लाघरयवत् }

लावाणकः (पु०) मगध देश के समीप एक जिले का नाम ।

लाघिकः (पु०) भैंसा ।

लापुक (वि०) [स्त्री०—लापुका, लापुकी] लोभी । लालची ।

लासः (पु०) १ नृत्य विशेष । २ कीड़ा । बिहार । ३ बियों का नृत्य । ४ झोल । शोरवा ।

लासक (वि०) [स्त्री०—लासिका] १ सिलाड़ी । कीड़ाग्रिय । २ इधर उधर हिलने वाला ।

लासकः (पु०) १ नचैया । २ मोर । मयूर । ३ आलिङ्गन । शिव जी ।

लासकं (न०) अदारी । अग्र ।

लासकी (स्त्री०) १ नृत्यकी । नाचने वाली । २ रंड़ी । वेश्या ।

लास्यः (पु०) नचैया । नट ।

लास्यं (न०) १ नृत्य । नाच । २ गान वादन सहित नृत्य । ३ वह नृत्य जिसमें हाव भाव दिखला कर प्रेमभाव प्रदर्शित किया जाता है ।

लास्या (स्त्री०) नृत्यकी । नाचने वाली ।

लिकुचः देखो लकुच ।

लित्ता (स्त्री०) १ जुएं या चील्हर का अंडा । २ चार या आठ तृसुरेणु के बराबर की लौल विशेष ।

लित्तिका (स्त्री०) लीक जू का अंडा ।

लिख् (धा० परस्मै) [लिखति,—लिखित] १ लिखना । २ खाका खींचना । १ रेखांकित करना । ३ खरोचना । झीलना । फाड़ना । ४ भाला से छेदना । ५ स्पष्ट करना । चराना । ६ चौंच मारना । ७ चिकनाना । ८ स्त्री के साथ संगम करना ।

लिखनं (न०) १ लेख । २ लिखंत । टीप । पट्टा ।

लिखिनं (न०) १ लेख । टीप । २ कोई ग्रन्थ या निबन्ध ।

लिखित (व० कृ०) लिखा हुआ । चित्रित ।

लिखितः (पु०) एक स्मृतिकार का नाम ।

लिख् } (धा० परस्मै) [लिखति] जाना ।
लिङ्ग } चलना ।

लिङ्गः } (पु०) १ मृग । हिरन । २ मूत्र । मूद ।
लिङ्गः } (न०) हृदय ।

लिङ्ग } (धा० परस्मै) [लिङ्गति, लिङ्गित]
लिङ्ग } चलना । जाना ।

लिङ्गं } १ चिन्ह । निशान । चिन्हानी । प्रतीक ।
लिङ्गम् } २ वनावटी निशानी । वनावट । धोखे देने वाली चिन्हानी । ३ रोग के लक्षण । ४ प्रमाण । साक्षी । ५ (न्याय में) वह जिससे किसी का अनुमान हो । साधक हेतु । ६ नर या मादा पहचानने की चिन्हानी । ७ शिव जी की मूर्ति विशेष । ८ देवता की मूर्ति या प्रतिमा । ९ एक प्रकार का सम्बन्ध या सूचक । (जैसे संयोग । वियोग, साहचर्य) इससे शब्दार्थ का बोध होता है । १० वह सूक्ष्म शरीर जो स्थूल शरीर के नष्ट होने पर कर्मफल भोगने के लिये प्राप्त होता है ।—अग्रं, (न०) लिङ्ग का अग्रभाग । अनुशासनं, (न०) व्याकरण के वे नियम जिनके द्वारा शब्द के लिङ्गों का ज्ञान प्राप्त होता है ।—अर्चनं, (न०) महादेव की पिंडी की पूजा ।—देहः, (पु०)—शरीरं, (न०) सूक्ष्म शरीर ।—धारिन्, (वि०) चपरासधारी ।—नाशः, (पु०) १ पहिचान के चिन्ह का नाश । २ जननेन्द्रिय का । ३ दृष्टि का नाश । नेत्र रोग विशेष ।—पुराणं, (न०) १ पुराणों में से एक पुराण का नाम ।—प्रतिष्ठा, (स्त्री०) शिव जी की पिण्डी की स्थापना ।—विपर्ययः, (पु०) लिङ्ग परिवर्तन ।—वृत्ति, (वि०) आडम्बरी । डकोसखेबाज ।—वेदी, (स्त्री०) वह पीठ जिस पर शिव की पिण्डी स्थापित की जाती है

लिङ्गकः }
लिङ्गकः } (पु०) कपिस्थ वृक्ष ।

लिगन } (पु०) आलिङ्गन । गले लगाना ।
लिङ्गन }

लिगिन् । (पु०) १ चिन्हित । २ लक्षणयुक्त । ३
लिङ्गिन् । उपरासधारी । दम्भी । बनावटी । ४

लिङ्गसम्पन्न । ५ सूक्ष्मशरीरधारी । (पु०) १
बलधारी । २ शैव । लिङ्गायत । ३ पाखंडी ।
दंभी । डोंगी । ४ हाथी ।

लिप् } (धा० उभय०) [लिपति—लिपते,
लिप् } लिप्] १ मालिश करना । उपदेन करना । २
ठकना । विश्राना । ३ कलङ्कित करना । भ्रष्ट करना ।
धव्वा लगाना । ४ जलाना । सुलगाना ।

लिपिः } (स्त्री०) १ मालिश । उपदेन । २ लेख ।
लिपी } हस्तलेख । ३ अक्षर । लिखावट । ४ टीप ।
दस्तावेज । ५ चित्रण ।—करः, (पु०) १
पोतने वाला । राज । मैमार । २ लेखक । ३
खुदया । अक्षर खोदने वाला ।—ज्ञ, (वि०)
वह जो लिख सके ।—न्यासः, (पु०) लेखन
कला ।—फलकं, (वि०) पट्टी या दस्ती जिस
पर कागज रख कर लिखा जाय ।—शाला,
(स्त्री०) वह स्थान जहाँ लिखना सिखलाया जाय ।
—सज्जा, (स्त्री०) लिखने की सामग्री ।

लिपिका (पु०) देखो लिपी ।

लित (व० कृ०) १ लिपा हुआ । ठका हुआ । २
दगीला । धक्केदार । भ्रष्ट । ३ विष में चुका हुआ ।
४ भक्षित । ५ संयुक्त । जुड़ा हुआ ।

लितकः (पु०) विष का चुका तीर ।

लिप्सा (स्त्री०) १ किसी वस्तु की प्राप्ति की अभि-
लाषा । २ कामना । इच्छा ।

लिप्सु (वि०) प्राप्ति की इच्छा वाला ।

लिविः } (स्त्री०) देखो लिपि ।
लिवी }

लिविकरः } (पु०) लेखक । प्रतिलिपि करने वाला ।
लिविङ्करः } नक़लनवीस ।

लिपः } (पु०) लेप । मालिश ।
लिप्यः }

लिपट } (वि०) व्यभिचारी । लंपट ।
लिप्यट }

लिपटः } (पु०) व्यभिचारी पुरुष । लंपट आवामी ।
लिप्यटः }

लिपाकः } (पु०) १ बिजौरा नीवू का पेड़ । २
लिम्पाकः } गधा ।

लिपाकम् } (न०) बिजौरा नीवू ।
लिम्पाकम् }

लिश (धा० परस्मै०) [लिशति] १ जाना । २
चोटिल करना ।

लिष्ट (व० कृ०) छोटा । घटा हुआ ।

लिष्वः (पु०) नट । नृत्यक । नचैया ।

लिहू (धा० उभय०) [लेदि, लीडे, लीड] १
चाटना । २ चुसक चुसक कर पीना ।

ली (धा० प०) [लयति] गलाना । धोखना ।

लीकः (स्त्री०) जू का धरड़ा ।

लीड (व० कृ०) चाटा हुआ । चाखा हुआ । खाया
हुआ ।

लीन (व० कृ०) १ चिपटा हुआ । सटा हुआ । २
झिपा हुआ । ३ सहारा लिये हुए । रखा हुआ ।
पिचला हुआ । बुला हुआ । ४ बिल्कुल मिला
हुआ । एकीभूत । ५ अनुरागी । भक्त । ६
अन्तर्धान । लुप्त ।

लीला (स्त्री०) १ खेल । क्रीड़ा । २ आमोदप्रमोद ।
३ लड़कखेल । सरल । सहज । ४ सादर्य ।
समानता । तद्रूपता । ५ सौन्दर्य । मनोहरता । ६
बहाना । बनावट ।—अगारं—आगारं—गृहं
—गेहं,—वेश्मन् (न०) आनन्दभवन ।
—अंग (वि०) सुझौल अंगोवाला ।—अञ्जं,
—अम्बुजं,—अरविन्दं, कमलं,—तामरसं,
—पद्मं, (न०) खिलवाड़ करने के लिये
खिलौने की तरह हाथ में लिया हुआ कमल
पुष्प । अवतारः, (पु०) लीला करने के
लिये धारण किया हुआ विष्णु भगवान् का
अवतार ।—उद्यानं, (न०) १. आनन्दवाश ।
२. इन्द्र का स्वर्गलोक । देवताओं का उद्यान ।
—कलहः, (पु०) बनावटी झगड़ा ।

लीलायितं (न०) खेल । क्रीड़ा । मनोरंजन ।
आनन्द ।

लीलावत् (पु०) खिलाड़ी । क्रीडामय ।

लीलावती (स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री । २ स्वेच्छा-
चारिणी अथवा व्यभिचारिणी स्त्री । ३ दुर्गा का
नाम । ४ प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की
कन्या का नाम, जिसने अपने नाम पर लीला-
वती नाम की गणित की एक प्रसिद्ध पुस्तक
बनायी थी ।

लुञ्ज (धा० प०) [लुञ्जति, लुञ्जित] १ तोड़ना ।
लुञ्जित (न०) उखाड़ना । उचेलना २ चीरना । फाड़ना ।
खींचना ।

लुञ्जः (पु०)
लुञ्जः (पु०) १ छीलने या बकला उतारने की
लुञ्जन (न०) क्रिया । २ तोड़ने की क्रिया ।
लुञ्जन (न०)

लुञ्जित (वि० क०) १ छिकला उतारा हुआ ।
लुञ्जित (न०) तोड़ा हुआ ।

लुट् (धा० आ०) [लोटते] १ सामना करना ।
समुद्धाना । २ चमकाना । ३ पीड़ित होना ।

लुटनं (न०) लोभपेद ।

लुटित (व० क०) लुटका हुआ । ज़मीन पर लोटता
हुआ ।

लुट् (धा० प०) [लोटति] हिलाना डुलाना ।
गड्गड्ग करना ।

लुट् (धा० प०) [लुटयति] १ जाना । २ चुराना ।
लुटना । ३ लंगडाना । लंगड़ा होना । ४ सुस्त
होना ।

लुटक (वि०) [स्त्री०—लुटकाकी] चोर ।
लुटका (न०) चुरानेवाला ।

लुट् (धा० प०) [लुटयति] १ जाना ।
लुट (व० क०) २ गड्गड्ग करना । हिलाना डुलाना । चालू
करना । ३ सुस्त पड़ना । ४ लंगड़ा होना ।
५ लटना । ६ सामना करना ।

लुटकः (पु०) लुटक । चोर ।
लुटकः (पु०) लुटक । चोर ।

लुटनं (न०) लुट । चोरी । डाकेज़नी ।
लुटनम् (न०) लुट । चोरी । डाकेज़नी ।

लुंठा (स्त्री०) १ लूट । डोभ । २ लुटक पुटक ।
लुंठा (स्त्री०) १ लूट । डोभ । २ लुटक पुटक ।

लुंठाकः (पु०) १ डाँठ । २ कौआ ।
लुंठाकः (पु०) १ डाँठ । २ कौआ ।

लुंठिः (स्त्री०) लूट । लूट का नाम ।
लुंठिः (स्त्री०) लूट । लूट का नाम ।
लुंठिः (स्त्री०) लूट । लूट का नाम ।

लुंठ (धा० प०) [लुंठयति, लुंठयते] लुटना ।
लुंठ (धा० प०) [लुंठयति, लुंठयते] लुटना ।

लुंठिका (स्त्री०) १ गोलाकार वस्तु । गेंडा ।
लुंठिका (स्त्री०) १ गोलाकार वस्तु । गेंडा ।

लुंठी (स्त्री०) शिष्टाचार ।
लुंठी (स्त्री०) शिष्टाचार ।

लुंथ (धा० प०) [लुंथति] १ घाघात करना ।
लुंथ (धा० प०) [लुंथति] १ घाघात करना ।
लुंथ (धा० प०) [लुंथति] १ घाघात करना ।

लुप् (धा० प०) [लुप्यति] १ धबड़ाना । परेशान
होना । २ परेशान करना । धबड़ा देना ।

लुन (व० क०) १ टूटा हुआ । भङ्ग । नष्ट । २
खोया हुआ । वञ्चित । ३ लुटा हुआ । गिरा
हुआ । लुप्त । ४ छोड़ा हुआ । ५ अव्यवहृत ।
अपव्यवहृत । जो काम में न लाया जाता हो ।

लुब्ध (व० क०) १ लालची । लोभी । २ अभि-
लाषी ।

लुब्धः (पु०) १ शिकारी । बहेलिया । २ व्यभिचारी ।
लम्पट ।

लुब्धकः (पु०) १ शिकारी । बहेलिया । २ लोभी
या लालची आदमी । ३ उत्तरी गोलाद का एक
बहुत तेजवान तारा ।

लुम् (धा० प०) [लुम्बति, लुम्बयति] १ लोभ करना ।
उत्सुकता पूर्वक अभिलाषा करना । २ बहकाना ।
३ धबड़ाना । परेशान होना ।

लुम् (धा० परस्मै०) [लुम्बति, लुम्बयति]
लुम् (धा० परस्मै०) [लुम्बति, लुम्बयति]
लुम् (धा० परस्मै०) [लुम्बति, लुम्बयति]

लुम्बिका (स्त्री०) एक प्रकार का वाजा ।
लुम्बिका (स्त्री०) एक प्रकार का वाजा ।

लुल् (धा० प०) [लोलति, लुलित] १ लुङ्कना ।
२ हिलाना । ३ दवाना । कुचलना ।

लुलापः (पु०) } पैसा ।
लुजायः (पु०) }

लुलित (व० कृ०) १ हिला हुआ । २ गड़गड़ा किया हुआ । ३ खुला हुआ । बिलरा हुआ ।

लुप् (धा० प०) [लोपति] देखो लूप् ।

लुपमः (पु०) मदमस्त हाथी ।

लुह् (धा० प०) [लोहति] इच्छा करना । अभि-
लाष करना ।

लू (धा० उभय०) [लुनाति, लुनीते, लून] १
काटना । पृथक् करना । विभाजित करना । तोड़ना ।
काटना । एकत्र करना । २ काट डालना । नाश
कर डालना ।

लूना (स्त्री०) १ मकड़ी । २ चींटी ।—तन्तुः, (पु०)
मकड़ी का जाला ।—मर्कटकः, (पु०) १
खंगूर । २ चमेली ।

लूतिका (स्त्री०) मकड़ी ।

लून (व० कृ०) १ कटा हुआ । अलग किया हुआ ।
२ तोड़ा हुआ । एकत्र किया हुआ । ३ नष्ट किया
हुआ । ४ काटा हुआ । कुतरा हुआ । ५ बायल
किया हुआ ।

लूनं (न०) पूँछ । घुम ।

लूमं (न०) पूँछ ।

लूप् (धा० प०) [लूपति] १ चोट करना । अनिष्ट
करना । २ लुटना । चुराना ।

लेखः (पु०) १ लिपि । लिखंत । टीप । दस्तावेज । २
देवता ।—अधिकारिन्, (न०) मंत्री । (राजा
का)—अर्हः, (पु०) ताड़ वृक्ष विशेष ।—
अश्वभः, (पु०) इन्द्र का नाम ।—पत्रं, (न०)
—पत्रिका, (स्त्री०) १ चिट्ठी । पुर्जा । २ टीप ।
दस्तावेज ।—संदेशः, (पु०) लिखा हुआ
संदेश ।—हारः,—हारिन्, (पु०) पत्र-
वाहक । चिट्ठीरस । डाँकिया ।

लेखकः (पु०) १ लेखक । हार्क । नकलनवीस । २
चित्तेरा । चित्रकार ।

—दीपः,—प्रमादः, (पु०) लिखने की भूल ।
नकल करने में गलती ।

लेखन (वि०) [लेखनी] लेख । लिखन्त । चित्रण ।

लेखनं (न०) १ लेख । लिखंत । नकल । २ छीखन ।
खरोचन । ३ संशोधन । ४ ताड़पत्र ।

लेखनः (पु०) नरकुल जिसकी कलम बनाई जाती
है ।

लेखनिकः (पु०) चिट्ठी-लेजानेवाला ।

लेखनी (स्त्री०) १ कलम । नरकुल की कलम ।
२ चमच ।

लेखिनी (स्त्री०) १ कलम । २ चमच ।

लेखा (स्त्री०) १ रेखा । लकीर । धारी । २ बाड़ ।
किनारी । ३ चेदी ।

लेख्य (वि०) १ लिखने योग्य । २ जो लिखा जाने
को हो ।

लेख्यं (न०) १ लेखनकला । २ लेख । पत्र । टीप ।
दस्तावेज । हस्तलिपि । ४ अक्षर । खोद कर लिखा
हुआ । ५ चित्रण । ६ चित्रित । आकृति ।—
आरुद्धः,—कृत, (वि०) लिखा हुआ ।—गत,
(वि०) चित्रित ।—चूर्णिका, (स्त्री०) कूची ।
पेंसिल ।—पत्रं,—पत्रकं, (न०) १ लिखन्त ।
पत्र । टीप । २ ताड़पत्र ।—प्रसङ्गः, (पु०)
दस्तावेज । टीप ।—स्थानं, (न०) लिखने का
स्थान ।

लेखं } (न०) लेख । विद्या ।
लेखडम् }

लेतं (पु०) }
लेतः (न०) } आँक ।

लेप (धा० आ०) [लेपते] १ जाना । २ पूजन
करना ।

लेपः (पु०) १ पोतने, छेपने या चुपड़ने की चीज ।
२ धब्बा । दाग । ३ पाप । ४ भोजन ।—करः,
(पु०) लेप करने वाला । लेप बनाने वाला ।
झास्य करने वाला । मैमार ।—भागिन्,—भुज्,
(पु०) ४थी, ५वीं और छठवीं पीढ़ी के पूर्व
पुरुष ।

लेपकः (पु०) थवई । राज । मैमार ।

लेपनः (पु०) सुगन्ध द्रव्य ।

लेपनं (न०) १ लेपना । पोतना । २ लेप । प्लास्टर । मलहम । गारा । कलई । ४ गोशत ।

लेप्य (वि०) प्लास्टर करने योग्य ।—कृत्, (वि०) १ नमूना बनाने वाला । २ राज । थवई । मैमार । —ह्वी, (स्त्री०) वह स्त्री जो डबटन या चन्द-नादि का लेप लगाये हो ।

लेप्यमयी (स्त्री०) गुदिया । पुतली ।

लेलायमाना (स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।

लेलिहः (पु०) साँप, सर्प ।

लेलिहानः (पु०) १ सर्प । साँप । २ शिवजी ।

लेशः (पु०) १ अणु । २ सूक्ष्मता । ३ समय का माप विशेष जो २ कला के समान होता है । ४ एक अलंकार विशेष । इसमें किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही भाग या अंश में रोचकता आती है ।

लेश्या (स्त्री०) प्रकाश । उजियाला ।

लेष्टुः (पु०) डेला । मट्टी का डेला ।

लेसिकः (पु०) हाथी पर चढ़ने वाला ।

लेहः (पु०) १ चाटना । २ स्वाद लेना । चखना । ३ चाट कर खाने का पदार्थ । ४ भोजन । भोज्य पदार्थ ।

लेहर्नं (न०) चाटना ।

लेहिनः (पु०) सुहागा ।

लेह्य (वि०) चाटने योग्य ।

लेह्यं (न०) वह वस्तु जो चाट कर खायी जाय ।

लैंगं } (न०) अष्टादश पुराणों में से लिङ्गपुराण ।
लैङ्गम् }

लैंगिक } (वि०) [स्त्री०—लैङ्गिकी] १ विन्दु-
लैङ्गिक } लक्ष्मी । २ अनुमित ।

लैंगिकः } (पु०) मूर्ति बनाने वाला ।
लैङ्गिकः }

लोकः (भा० आ०) [लोकते, लोकिता] देखना । ताकना । पहचानना ।

लोकः (पु०) १ संसार । भुवन का एक भाग । साधारणतः स्वर्ग, पृथिवी और पाताल तीन लोक माने जाते हैं । किन्तु विशेष रूप से वर्णन करने वालों ने लोकों की संख्या १४ मानी है । सात ऊर्ध्वलोक और सात अधःलोक ।

१ ऊर्ध्वलोकः—

भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनर्लोक, तपर्लोक । और सत्यलोक ।

२ अधःलोकः—

अमल, वितल, सतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल । ३ भूर्लोक । ४ मानवगण । ५ समूह । समुदाय । ६ प्रदेश । अंचल । ग्रन्थ । ७ साधारण जीवन । ८ साधारण चलन या प्रथा । साधारण या लौकिक व्यवहार । ९ दृष्टि । चित्र-घन । अवलोकन । १० या १४ की संख्या ।—अतिगा, (वि०) असाधारण । अलौकिक ।—अतिशय, (वि०) लोकोत्तर । असाधारण ।—अधिक, (वि०) असाधारण । असामान्य ।—अधिपः, (पु०) १ सज़ा । २ देवता ।—अधिपतिः, (पु०) संसार पति । ब्रह्मायुध-नायक ।—अनुरागः, (पु०) मानव जाति का प्रेम । सार्वजनिक प्रेम । लोकहितैषिता । उदारता ।—अन्तरं, (न०) परलोक । आगे होने वाला जन्म ।—अपवादः, (पु०) लोकनिन्दा ।

—अयनः, (न०) नारायण का नामान्तर ।—

अलोकः, (पु०) एक पौराणिक पहाड़ जो भूमण्डल के चारों ओर और मधुर जल पूरित सागर के परे हैं ।—अलोकौ, (पु०) दृष्ट और अदृष्ट लोक ।—अचारः, (पु०) लोक-व्यवहार । संसार में बरता जाने वाला व्यवहार ।—आयतः, (पु०) १ वह मनुष्य जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को द मावता हो । २ चार्वाक दर्शन का मानने वाला ।—आयतं, (न०) नास्तिकवाद । चार्वाक दर्शन ।—आय-तिका, (पु०) नास्तिक । चार्वाक ।—ईशः,

(पु०) १ राजा । २ ब्राह्मण । ३ पारा । पारद ।
 —उक्तिः, (स्त्री०) १ कहावत । मसल । सार्व-
 जनिक मसल । —उत्तर, (वि०) अलौकिक ।
 असाधारण । असामान्य । —उत्तरः, (पु०)
 राजा । —दृष्टा, (स्त्री०) स्वर्गसुख प्राप्ति की
 कामना । —कण्टकः, (पु०) वह जो समाज
 का कण्टक विरोधी या हानिकर हो । दुष्टप्राणी ।
 —कथा, (स्त्री०) प्रसिद्ध प्राचीन कहानी । —
 कर्तृ, —कृत्, (पु०) संसार का रचने या बनाने
 वाला । —गाथा, (स्त्री०) प्रचलित गीत । —
 चतुस्र, (न०) सूर्य । —चारित्र्य, (न०) संसार का
 ढंग । —जननी, (स्त्री०) लक्ष्मी जी का नाम ।
 —जित्, (पु०) १ बुद्धदेव । २ कोई भी संसार
 विजयी । —ज्ञ, (वि०) संसार का ज्ञाता । —
 ज्येष्ठः, (पु०) बुद्धदेव की उपाधि । —तत्त्वं,
 (न०) मानव जाति का ज्ञान । —तुषारः, (पु०)
 कपूर । —त्रय, (न०) —त्रयी, (स्त्री०) स्वर्ग,
 मर्त्य और पाताल-तीनों लोकों की समष्टि । —
 धातृ, (पु०) शिव जी का नाम । —नाथः,
 (पु०) १ ब्राह्मण । २ विष्णु । ३ शिव । ४
 राजा । महाराज । ५ बौद्ध । —नेतृ, (पु०)
 शिव जी की उपाधि । —पः, —पालः, (पु०)
 विष्णु । इनकी संख्या आठ है । —पतिः,
 (पु०) १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ राजा । महा-
 राज । —पथः, —पद्धति, (स्त्री०) सार्वजनिक
 व्यवहार या कार्य करने का ढंग । —पितामहः,
 (पु०) ब्रह्मा जी । —प्रकाशनः, (पु०) सूर्य ।
 —प्रवादः, (पु०) किंवदन्ती । अफवाह । —
 प्रसिद्ध, (वि०) विश्वविख्यात । —वन्धुः,—
 बान्धवः, (पु०) सूर्य । —बाह्य,—वाह्य,
 (वि०) १ लोकबहिष्कृत । समाज से खारिज या
 निकाला हुआ । २ संसार से निराला । अकेला ।
 बाह्यः, (पु०) जातिव्युत् । —मर्यादा, (स्त्री०)
 लौकिक व्यवहार लौकिक चलन या रस्म । —
 मातृ, (स्त्री०) लक्ष्मी जी । —मार्गः, (पु०)
 लौकिक चलन । —यात्रा, (स्त्री०) १ व्यवहार ।
 २ व्यापार । ३ आजीविका । —रत्नः, (पु०)
 राजा । महाराज । —रंजनं, (न०) सर्वप्रियता ।

—लोचनं, (न०) सूर्य । —वचनं, (न०)
 —वादः, (पु०) —वार्ता, (स्त्री०) अफवाह ।
 किंवदन्ती । —विद्विष्ट (वि०) वह जो सब को
 नापसंद हो या जिसे सब नापसंद करें । —लोक-
 विधिः, (पु०) १ प्रचलित पद्धति । २ संसार
 का रचयिता । विश्रुत, (वि०) जगद्विख्यात ।
 संसार भर में प्रसिद्ध । —वृत्तं, (न०) लोक-
 रीति । गणपाठक । —श्रुतिः, (स्त्री०) १ जन-
 श्रुति । अफवाह । २ जगत्प्रसिद्धि या कीर्ति । —
 सङ्करः, (पु०) संसार की गड़बड़ी । गोलमाल ।
 —संग्रहः, (पु०) संसार का कल्याण या सब
 की भलाई । —सात्तिन्, (पु०) १ ब्रह्मा । २
 अग्नि । —सिद्ध, (वि०) मामूली । प्रचलित ।
 रस्मी ।

लोकनं (न०) अवलोकन । चितवन ।

लोकपृष्ण (वि०) संसार व्यापी ।

लोच (धा० आ०) [लोचते] देखना ।

लोचं (न०) आँसू ।

लोचकः (पु०) १ मूर्खपुरुष । २ आँख की पुतली ।
 ३ दीपक की कालिल या काजल । सुर्मा ।
 अंजन । ४ कर्णभूषण विशेष । ५ काला या
 आसमानी वस्त्र । ६ धनुष का रोदा । शीशफूल ।
 ७ साँप की कैतुली । १० झुर्रियाँ पड़ा हुआ चर्म ।
 ११ झुर्री पड़ी हुई भौंएँ । १२ केला का पेड़ ।

लोचनं (न०) १ देखन । चितवन । अवलोकन ।
 २ आँख । —गोचरः,—पथः,—मार्गः (पु०)
 दृष्टि की दौड़ । —हिता, (स्त्री०) नीलायेथा ।
 तृत्तिया ।

लोट (धा० पर०) [लोटति] पागल होना । मूर्ख
 होना ।

लोठ (पु०) भूमि पर लेटना ।

लोड (धा० पर०) [लोडति] पागल होना ।
 मूर्ख होना ।

लोडनं (न०) हिलाना । डुलाना ।

लोणारः (पु०) निम्क विशेष ।

लोतः (पु०) १ आँसू । २ चिन्ह । निशान ।

लोत्रं (न०) चोरी का माल ।

लोथः } (पु०) इस नाम का पेड़ । इसमें लाल और
लोध्रः } स्फेद फूल लगते हैं ।

लोपः (पु०) १ अदर्शन । अभाव । २ नाश । क्षय ।
३ किसी रस्म या ग्रथा को बंदी । ४ भंग । अति-
क्रम । लंघन । ५ अभाव । असफलता । अनु-
पस्थिति । ६ छूट । ७ वर्षलोप ।

लोपनं (न०) १ अतिक्रम । लंघन । २ छूट ।

लोपा } विदर्भाधिपति की कन्या और महर्षि
लोपामुद्रा } अगस्त्य की पत्नी का नाम ।

लोपाकः } (पु०) शृगाल । गीदड़ । सियार ।
लोपापकः }

लोपाशः } (पु०) गीदड़ । नरलोमड़ी ।
लोपाशकः }

लोपिन् (वि०) हानिकारक । अनिष्टकारक । २ वर्ष-
लोप करने योग्य ।

लोभः (पु०) १ लालच । लुब्धा । लिप्सा । २ अभि-
लाषा ।—अन्वित, (वि०) लालची । लोभी ।
—विरहः, (पु०) लोभ का अभाव ।

लोभनं (न०) १ लालच । फुसलाहट । बहक । २
सुवर्ण । सोना ।

लोभनीय (वि०) जो लुभाया जा सके । जो आक-
र्षित किया जा सके ।

लोमः (पु०) पंख ।

लोमकिन् (पु०) पची ।

लोमन् (न०) मनुष्य या पशु के शरीर के ऊपर
के रोएं ।—कर्णः, (पु०) खरा । खरगोश ।
शशक ।—कोटः, (पु०) जूं । चीलहर ।—कूपः,
—गर्तः, (पु०)—रन्ध्रं,—विवरं, (न०) रोमकूप ।
—वाहिन्, (वि०) परवाला ।—संहर्षण
(वि०) रोमाञ्चित ।—सारः, (पु०) पक्षा ।
—हृत्, (पु०) ह्रताल ।

लोम (वि०) १ बालदार । उनी । २ बालोंदार ।

लोमशः (पु०) १ भेड़ । भेड़ा ।

लोमशा (स्त्री०) १ लोमड़ी । २ सियारिन ।

शृगाली । ३ लंगूर । ४ फसीन ।—माज्जरिः
(पु०) गंधकिलाव ।

लोभाजः (पु०) गीदड़ । शृगाल ।

लोल (पु०) १ कंपकंपा । हिलने वाला । कम्पाध-
मान । २ चंचल । ३ बेचैन । विकल । बबड़ाया
हुआ । ४ लक्ष्मणपुर । विनश्वर । ५ उत्सुक ।—
अग्नि, (न०) अग्नि मटकाना ।—लोल,
(वि०) सदैव बेचैन रहने वाला ।

लोल्ला (स्त्री०) १ लक्ष्मी जी । २ विजली । ३ जिह्वा ।

लोलुप (वि०) अत्यन्त उत्सुक ।

लोलुपा (स्त्री०) उत्कण्ठा । उत्सुकता ।

लोलुभ (वि०) अत्यन्त लोलुप ।

लोष्ट (धा० आ०) [लोष्टे] जमा करना । ढेर
करना ।

लोष्टः (पु०) १ मिट्टी का ढेला । २ (न०)
लोष्ट (न०) । लोहे का मोर्चा ।

लोष्टुः (पु०) मिट्टी का ढेला ।

लोह (वि०) १ लाल । सुर्खीमाइल । ललोह । २
ताँबे का दना हुआ ।—अभिसारः, (पु०)—
अभिहारः, (पु०) सामरिक रीति भाँति ।—
कान्तः, (पु०) चुम्बक ।—कारः, (पु०) लुहार ।
—किट्ट, (न०) लोहे का मोर्चा ।—घातकः,
(पु०) लुहार ।—चूर्णः, (न०) लोहे का
चूरा । लोहे का मोर्चा ।—जं, (न०) १ काँसा ।
फूल । २ लोहचूर्ण । लोहे की चूर जो रेतने से
निकले ।—जालं, (न०) कवच । बलतर ।—
जिन्, (पु०) हीरा ।—द्राविन्, (पु०)
सोहागा ।—नालः, (पु०) लोहे का तीर ।—
पृष्ठः, (पु०) बगला । बूटीमार ।—प्रतिमा,
(स्त्री०) १ निहाड़े । २ लोहे की मूर्ति ।—वद्ध,
(वि०) लोहे से जड़ा हुआ या जिसकी नोक
पर लोहा जड़ा हो ।—मुक्तिका, (स्त्री०)
लाल मोती ।—रजस, (न०) लोहे का चुर्चा ।
—राजकं, (न०) चाँदी ।—वरं, (न०)
सुवर्ण । सोना ।—गङ्गुः, (पु०) लोहे की
कील ।—श्लेषणः, (पु०) सुहागा ।—संकरं,
(न०) नीले रंग का ईसपात लोहा ।

लोहं (न०) १ ताँवा । २ लोहा । ३ ईसपात ।
लोहः (पु०) ४ कोई भी धातु । ५ सोना । ६
रक्त । लोहू । ७ हथियार । ८ मकली फँसाने की
बंसी ।

लोहः (पु०) लाल बकरा ।

लोहं (न०) अगर की लकड़ी ।—अज्ञः, (पु०)
लाल बकरा ।

लोहल (वि०) १ लोहे का बना हुआ । २ फुल-
फुसाहट । अस्पष्ट भाषण ।

लोहिका (स्त्री०) लोहे का पात्र ।

लोहित (वि०) [स्त्री० लोहिता, लोहिनी] १
लाल । लालरंग का । २ ताँवा । ताँवे का बना
हुआ ।

लोहितः (पु०) १ लालरंग । २ मङ्गल ग्रह । ३
सर्प । ४ भृगु विशेष । ५ चाँवल विशेष ।

लोहिता (स्त्री०) अग्नि की सप्तजिह्वाओं में से एक
का नाम ।

लोहितं (न०) १ ताँवा । २ खून । लोहू । ३ केसर ।
४ युद्ध । ५ लालचन्दन । ६ चन्दन विशेष । ७
अधूरा इन्द्रधनुष ।—अज्ञः, (पु०) १ लाल-
रंग का पाँसा या दाना । लाल रंग का
सर्प विशेष । ३ कोमल । ४ विष्णु का
नाम ।—अज्ञः, (पु०) मंगलराहु ।—अघसः,
(न०) ताँवर ।—अशोकः, (पु०) अशोक
वृक्ष ।—अश्वः, (पु०) अग्नि ।—अननः,
(पु०) न्योला ।—ईक्ष्णु, (वि०) लाल नेत्रों
वाला ।—उद्, (वि०) वह जिसमें लाल या
लोहे जैसा लाल जल हो ।—कल्माषः, (वि०)
लाल धब्बेदार ।—सयः, (पु०) रक्त का नाश ।
—ग्रीवः, (पु०) अग्निदेव ।—चन्दनं, (न०)
केसर ।—सुत्तिका, (स्त्री०) गेरू । लाल
खड़िया मिट्टी ।—शतपत्रं, (न०) लाल कमल
का फूल ।

लोहितक (वि०) [स्त्री—लोहितिका] लाल ।

लोहितकः (पु०) १ माखिक । सुखी । २ मङ्गलग्रह ।
३ चाँवल विशेष ।

लोहितकं (न०) काँसा । फूल ।

लोहितिमन् (पु०) लाली ।

लोहिनी (स्त्री०) स्त्री जिसके शरीर का रंग लाल हो ।

लौकायतिकः (पु०) चार्वाक मतानुयायी नास्तिक ।

लौकिक (वि०) [लौकिकी] १ साँसारिक । २
साधारण । मामूली । गँवारू । ३ रोजमर्रे का ।
सर्वजन स्वीकृत । सर्वप्रिय । ४ ऐहिक । पार्थिव ।
साँसारिक । ५ भ्रष्ट । अपावन ।

लौकिकं (न०) लोकाचार ।

लौकिकाः (बहुवचन० पु०) सर्वसाधारण जन ।
संसार के लोग ।

लौक्य (वि०) १ साँसारिक । पार्थिव । मानवी । २
साधारण । मामूली ।

लौड (धा० परस्मै०) (लौडति) पागल होना ।
मूर्ख बनाना ।

लौल्यं (न०) १ चंचलता । अस्थिरता । अन्यवस्थित-
चित्ता । २ उत्सुकता । प्रलोभन । कामुकता ।
उत्कट कामना ।

लौह (वि०) [स्त्री०—लौही] लोहे का बना । २
ताँवे का । ३ धातु का । ४ ताँवे के रंग का ।
लाल ।

लौहं (न०) लोहा ।

लौहा (स्त्री०) पतीली । डेगची । बटलोई ।—
आत्मन्, (पु०)—भूः, (स्त्री०) पतीली ।
डेगची ।—कारः, (पु०) लुहार ।—जं, (न०)
लोहे का मुर्चा ।—बंधः, (पु०)—बंधं, (न०)
लोहे की बेड़ी । जंजीर ।—शङ्कुः, (पु०) लोहे
की कील ।

लौहित (पु०) शिव जी का त्रिशूल ।

लौहित्यः (पु०) ब्रह्मपुत्र नदी का नाम ।

लौहित्यं (न०) लालिमा । ललाई ।

ल्यी (धा० परस्मै०) [ल्यिनाति, ल्यिनाति]
ल्यी जोबना । मिलाना । मिल जाना ।

ल्यी (धा० पर०) [ल्यिनाति,] जाना । समीप जाना ।

व

—संस्कृत अथवा देवनागरी वर्णमाला का उन्तीसवाँ व्यञ्जन वर्ण । यह उकार का विकार और अन्तस्थ अर्द्धव्यञ्जन माना गया है । यह दाँत और ओठ की सहायता से उच्चारण किया जाता है, अतः इसे दन्त्यौष्ठ कहते हैं । प्रत्यक्ष ईषस्वरूप होता है अर्थात् इसका उच्चारण जब किया जाता है, तब दाँतों का ओठ के साथ थोड़ा सा स्पर्श होता है ।

न०) [स्त्री० — मेदिनीकोश] वरुण का नाम (अग्न्यथा०) जैसा । समान ।

(पु०) १ पवन । हवा । २ बाहु । ३ वरुणदेव । ४ तुष्टिसाधन । ५ सम्बोधन । ६ कल्याण । मङ्गल । ७ वास निवास । ८ समुद्र । ९ बीता । १० वस्त्र । ११ राहु का नाम ।

वः (पु०) १ बाँस । २ कुल । खान्दान । गोत्र । ३ वेदा । ४ नफीरी । बाँस की बंसी । ५ समूह । समुदाय । ६ शहतीर । बह्वी । जट्टा । ७ गाँठ (जो बाँस में होती है) । ८ गन्ना । ऊख । ९ मेखदण्ड । रीड़ की हड्डी । १० साल का पेड़ । ११ बारह हाथ का एक मान ।—अर्द्धः, (न०)—अर्द्धुरः, (पु०) १ बाँस की छड़ी की नौक । २ बाँस का अर्द्धुर ।—अनुकीर्तनं (न०)—अनुक्रमः (पु०) वंशावली ।—अनुचरितं, (न०) किसी वंश या खान्दान का इतिहास या तवारीख ।—अवली, (स्त्री०) किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रम से सूची ।—आह्वः, (पु०) वंशलोचन ।—कठिनः, (पु०) बाँस का जंगल ।—कर (वि०) १ वंशस्थापक ।—करः, (पु०) मूलपुरुष ।—कर्पूरोचना, (स्त्री०)—रोचना, (स्त्री०)—लोचना, (स्त्री०) वंशलोचन ।—कृतः, (पु०) देखो वंशकर ।—क्रमः, (पु०) किसी वंश की परंपरा ।—सूरी, (स्त्री०) वंशलोचन ।—चिन्तकः, (पु०) वंशावली जानने वाला ।—क्षेत्तुः, (वि०) किसी वंश का अन्तिम पुरुष ।—जः, (पु०) १ सन्तान । औलाद । २ बाँस का बिया ।—जम्, (न०)—जा,

(स्त्री०) वंशलोचन ।—नर्तिद्, (पु०) मसलगा । विदूषक ।—नाडका, —नालिका, (स्त्री०) बाँस की नली ।—नाथः, (पु०) किसी वंश का प्रधान पुरुष । पेशवा खान्दान ।—भैरवः, (न०) गन्ने की जड़ । पथः, (न०) बाँस का पत्ता ।—पथः, (पु०) नरकुल । सरपत ।—पत्रकः, (पु०) १ नरकुल । सरपत । २ सफेद पीड़ा ।—पत्रकः, (न०) दरताल ।—परंपरा, (स्त्री०) किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रमानुसार सूची ।—पुरकः, (न०) ऊख की जड़ ।—मोज्यः, (वि०)—पैतृक, बाप दादों की ।—मोज्यः, (न०) पैतृक सम्पत्ति ।—विततिः, (स्त्री०) १ खान्दान । कुल । २ बाँस का बन ।—गर्हरा, (स्त्री०) वंशलोचन ।—शलाका, (स्त्री०) बीणा के नीचे के भाग में लगायी जाने वाली बाँस की छोटी परेग ।—स्थितिः, (स्त्री०) किसी वंश का चिरस्थायीकरण ।

वंशकः (पु०) १ गन्ना । २ बाँस की गाँठ । ३ मङ्गली ।

वंशकं (न०) अगर की लकड़ी ।

वंशिका (स्त्री०) १ बंसी । मुरली । २ अगर की लकड़ी ।

वंशी (स्त्री०) १ मुरली । २ नस । रक्तप्रवाहिनी शिरा । ३ वंशलोचन । ४ चार कर्ष या आठ तोले का एक मान ।—धरः,—धारिन्, (पु०) १ श्रीकृष्ण । २ बंसी बजाने वाला ।

वंश्य (वि०) १ मुख्य बह्वी सम्बन्धी । २ मेखदण्ड से सम्बन्ध युक्त । ३ किसी वंश से सम्बन्ध युक्त । ४ कुलीन । उत्तम कुल का । वंशावली सम्बन्धी ।

वंश्यः (पु०) १ वंशधर । २ पूर्वपुरुष । पूर्वज । ३ किसी वंश का कोई भी पुरुष । ४ बह्वी या जट्टा । ५ बाँह या दाँग की हड्डी । ६ शिष्य ।

वक देखो वक

वकुल देखो वकुल

वक् (धा० आ०) [वक्ते] जाना ।

वक्तव्य (स० का० कृ०) १ कहने लायक । कहने योग्य । २ वह जिसके विषय में कहा जाय । ३ तिरस्करणीय । धिक्कारने योग्य । फटकारने योग्य । ४ कमीना । नीच । छुद्र । ५ जिम्मेदार । उत्तरदायी । ६ पराधीन । परतंत्र ।

वक्तव्य (न०) १ कथन । वक्तृता । २ अनुशासन । नियम । आज्ञा । ३ कलङ्क । भर्त्सना । धिक्कार ।

वक् (वि० पु०) कथन । वार्तालाप । बोलने वाला । २ वामी । व्याख्यानदाता । ३ शिक्षक । व्याख्याता । ४ विद्वान् । परिणत ।

वक्त्रं (न०) १ मुख । २ चेहरा । ३ धूधन । चोंच । टोंटो । ४ आरम्भ । ५ (तीर की) नौक । ६ वर्तन की टोंटी । ७ वस्त्रविशेष । ८ अनुष्टुप छंद के समान एक छंद । —आसवः, (पु०) थूक । खखार । —खुरः, (पु०) दाँत । —जः, (पु०) ब्राह्मण । —तालं, (न०) वह ताल जो मुख से निकाला जाय । —दलं, (न०) ताल । —रन्ध्रं, (न०) मुख का छेद । —परिस्मन्दः, (पु०) भावण । वाणी । —मेदिनः, (वि०) तीक्ष्ण । तीता । चरपरा । —वासाः, (पु०) नारंगी । —शोधनं, (न०) मुखप्रच्छादन । नीव । बिजौरा । (पु०) बिजौरे का पेड़ ।

वक् (वि०) १ टेढ़ा । बाँका । २ गोलमोल । टाला-टूली का । ३ छुँवराला । छुँवलेदार । ४ परचाङ्गामी । ५ बेईमान । धोखेबाज । ६ निष्ठुर । बेरहम । ७ छन्दःशास्त्र के अनुसार दीर्घ । —अङ्गं, (न०) टेढ़ा शरीरावयव । —अङ्गः, (पु०) १ हँस । २ चक्रवाक । चकई चकवा । ३ सर्प । —उक्तिः, (स्त्री०) १ एक प्रकार का काव्यालङ्कार । इसमें काकु या श्लेष से किसी वाक्य का और का और ही अर्थ किया जाता है । २ काकूक्ति । ३ बढ़िया या चमत्कार पूर्ण कथन । —कण्ठः, (पु०) घेर का पेड़ । —कण्ठकः, (पु०) खदिर वृक्ष । —खङ्गः, —खङ्गकः, (पु०) असा । राजदण्ड । —गति, —गामिन्, (वि०) १ धूमधुमौवा ।

टेढ़ा मेढ़ा । २ धोखेबाज । बेईमान । —ग्रीवः, (पु०) कँट । —चञ्चुः, (पु०) तोता । —तुरङ्गः, (पु०) १ गणेशजी । २ तोता । —दंष्ट्रः, (पु०) शूकर । —द्विष्टिः, (वि०) १ घृणाताना । भैंसा । २ वह जिसकी निगाह में दुष्टता भरी हो । ३ डाढ़ी । ईर्ष्यालु । (स्त्री०) भैंसापन । —नकः, (पु०) १ तोता । २ नीच आवामी । —नासिकः, (पु०) उल्लू । —पुच्छः, (पु०) —पुच्छिकः, (पु०) कुत्ता । —पुष्पः, (पु०) पलास का वृक्ष । —वालधिः, —जाङ्गलः, (पु०) कुत्ता । —मानः, (पु०) १ बाँकापन । टेढ़ापन । २ दागावाजी । —वक्त्रः, (पु०) शूकर ।

वक्त्रः (पु०) १ मङ्गलग्रह । २ शनिग्रह । ३ शिव । ४ त्रिपुरासुर ।

वक्त्रं (न०) नदी का मोड़ । ग्रह की वक्त्री गति ।

वक्त्रयः (पु०) मृत्यु । कीमत ।

वक्त्रिन् (वि०) १ टेढ़ामेढ़ा । २ विपरीत । उल्टा । (पु०) जैनी या बौद्ध ।

वक्त्रिमन् (पु०) १ बाँकापन । डिटाई । २ द्वयर्थक-श्लेष अथवा अनिश्चितार्थक वाक्य । श्लेषवाक्य । ३ चालाकी ।

वक्त्रोष्ट्रिः { (पु०) }
वक्त्रोष्टिका { स्त्री० } } मन्द सुसम्बन्ध ।

वक्त्र (धा० प०) [वक्त्रति] १ बढ़ना । उगना । २ बलिष्ठ होना । ३ क्रुद्ध होना । ४ जमा करना ।

वक्त्रस् (न०) झांती । कुच । चूची । —जः, —रुहः, —रुहः, (= वक्त्रोजः, वक्त्रोरुहः, वक्त्रोरुहः) (पु०) स्त्री के कुच । चूची । —स्थलं, (न०) (= वक्त्र या वक्त्रःस्थल) झांती ।

वक्त्र { (धा० प०) [वक्त्रति, वक्त्रति] जाना ।
वक्त्रे }

वक्त्राहः (पु०) देखो अवगाहः ।

वक्त्रः { (पु०) नदी का मोड़ ।
वक्त्रः }

वक्त्रा (स्त्री०) घोड़े के चारजामें की अगली बङ्का ।

वङ्किलः } (पु०) भाँटा ।
वङ्किलः }

वङ्किः (पु०) १ पतली । २ छत्त का शहतीर । ३ एक प्रकार का बाजा ।

वङ्गुः (पु०) गंगा की शाखा ।

वङ्ग } (धा० प०) [वङ्गति] १ जाना । २ लंगड़ाना ।
वङ्ग }

वङ्गाः } (बहु०) बंगाल ।
वङ्गाः }

वङ्गः } (पु०) १ रई । २ बैंगन ।
वङ्गः }

वङ्गं (न०) १ सीसा । २ रांगा । टीन ।—अरिः, (पु०) हरताल ।—जः, (पु०) पीतल । २ ईगुर । सेंदुर ।—जीवनं, (न०) चाँदी ।—शुल्यजं, (न०) काँसा ।

वङ्घ } (धा० आ०) [वङ्घते] १ जाना । तेज़ी के साथ जाना । २ आरम्भ करना । ३ अत्सना करना । दोष लगाना ।
वङ्घ }

वच् (धा० प०) १ कहना । बोलना । २ वर्णन करना । निरूपण करना । ३ बतलाना ।

वचः } (पु०) १ तोता । ३ सूर्य ।
वचः }

वच्चा } (स्त्री०) एक पक्षी विशेष जो बातचीत करे ।
वच्चा } एक खुशबूदार जड़ ।

वचं } (न०) बातलाप । बातचीत ।
वचम् }

वचनं (न०) १ बोलने की क्रिया । २ वाणी । कथन । ३ पुनरावृत्ति । पाठ । ४ नियम । आदेश । ५ निर्देश । ६ परामर्श । सलाह । ७ शपथ पूर्वक वर्णन । बयान । ८ शब्दार्थ । ९ (व्याकरण में) वचन यथा एकवचन । द्विवचन । बहुवचन । १० सौंड ।—उपक्रमः, (पु०) भूमिका । आरम्भिक वक्तव्य ।—करः, (वि०) आज्ञाकारी । आज्ञा पालक ।—कारिन्, (वि०) आज्ञाकारी ।—क्रमः, (पु०) संवाद । कथोपकथन ।—ग्राहिन् (वि०) विमग्न । आज्ञाकारी ।—पटु, (वि०) बोलने में चतुर ।—घिरोधः, (पु०) कथन में परस्पर विरोध ।—स्थितः, (पु०) आज्ञाकारी ।

वचनीय (वि०) १ कहने योग्य । वर्णन करने योग्य । २ धिक्कारने योग्य ।

वचनीयं (न०) कलङ्क । अपवाद ।

वचराः (पु०) १ मुर्गा । २ दुष्ट । नीच । शठ ।

वचस् (न०) १ वाक्य । शब्द । २ आदेश । आज्ञा । ३ परामर्श । सलाह । ४ (व्याकरण में) वचन ।—करः, (वि०) १ आज्ञाकारी । २ दूसरे की आज्ञा के अनुसार काम करने वाला ।—ग्रहः, (पु०) कान ।—प्रवृत्तिः, (स्त्री०) बोलने का प्रयत्न ।

वचसांपनिः (पु०) बृहस्पति ।

वज्र (धा० प०) [वज्रति] १ चलना । सहालना । तैयार करना । २ तीर में पर लगाना । ३ चलना ।

वज्रं (न०) १ इन्द्र का वज्र । २ कोई भी वज्रः (पु०) विनाशक हथियार । ३ हीरा काटने का औज़ार । ४ हीरा । ५ काँजी ।

वज्रः (पु०) १ न्यूहरचना विशेष । २ कुश । ३ भिन्न भिन्न पौधों के नाम ।

वज्रं (न०) १ ईसपात । अवरक । ३ वज्र या कठोर भाषा । ४ बच्चा । ५ वज्रपुष्प ।—अङ्गः, (पु०) सर्प ।—अशनिः, (पु०) इन्द्र का वज्र ।—आकारः, (पु०) हीरा की खान ।—आयुधः, (पु०) इन्द्र ।—कङ्कटः, (पु०) हनुमान ।—कोलः, (पु०) वज्र ।—तारः, (न०) वैद्यक का एक रसायन योग ।—गोपः,—इन्द्रगोपः,—चञ्चुः, (पु०) गीब ।—चर्मन्, (पु०) गैंडा ।—जित्, (पु०) गरुड का नाम ।—ज्वलनं, = ज्वाला, (स्त्री०) विजली ।—तुण्डः (पु०) १ गीब । २ मन्दार । डोंत । ३ गरुड । ४ गयोश ।—दंष्ट्रः, (पु०) कीट विशेष ।—दन्तः, (पु०) १ शूकर । २ चूहा ।—दशनः, (पु०) चूहा ।—देह, —देहिन् (वि०) हड शरीर वाला ।—धरः, (पु०) इन्द्र ।—नाभः, (पु०) श्री कृष्ण का चक्र ।—निर्घोषः, (पु०) इन्द्र ।—निष्पेषः, (पु०) बादल की गड़गड़ाहट ।—

पाणिः, (पु०) इन्द्र ।—पातः, (पु०)
वज्रपात । विजली का गिरना ।—पुष्पः, (न०)
तिली का फूल ।—भूतः, (पु०) इन्द्र ।—अग्निः,
(पु०) हीरा ।—मुष्टिः, (पु०) इन्द्र ।—रदः
(पु०) शूकर ।—लेपः, (पु०) एक प्रकार का
सीनद ।—लोहकः, (पु०) चुंबक ।—व्यूहः,
(पु०) सैनिक कवायद ।—शल्यः, (पु०)
सूँस ।—नार, (वि०) हीरा की तरह कड़ा ।
—हृदयं, (न०) हीरा की तरह कड़ा दिल ।

वज्रिन् (पु०) १ इन्द्र का नाम । २ उखलू ।
डुखू ।

वञ्च } (धा० पर०) [वञ्चति] १ जाना ।
वञ्च्ये } पहुँचना । आना । २ चुपचाप जाना ।

वञ्चक } (वि०) १ धोखेबाज़ । झलिया । कपटी ।
वञ्चक } सुतफन्नी ।

वञ्चकः } (पु०) १ शठ । धोखेबाज़ । ठग । २
वञ्चकः } श्रमाल । ३ छुछूंदर । ४ पालतू न्योला ।

वञ्चति } (पु०) अग्नि ।
वञ्चतिः }

वञ्चथः } (पु०) १ ठगी । धोखेबाज़ी । चाल । २
वञ्चथः } ठगिया । धोखेबाज़ । कपटी । ३ कोमल ।

वञ्चनं (न०) }
वञ्चनम् (न०) } १ धोखा । चालबाजी । ३ अम ।
वञ्चना (स्त्री०) } माया । ४ हानि । रूकावट ।
वञ्चना (स्त्री०) }

वञ्चित } (व० कृ०) १ छला हुआ । धोखा दिया
वञ्चित } हुआ । २ अलग किया हुआ ।

वञ्चिता } (स्त्री०) एक प्रकार की पहेली या
वञ्चिता } डुस्मैवज ।

वञ्चुक } (वि०) [वञ्चुकी] धोखेबाज़ ।
वञ्चुक } झलिया । बेईमान । सुतफन्नी । चालाक ।

वञ्चुकः } (पु०) श्रमाल ।
वञ्चुकः }

वञ्जुलः } (पु०) १ नरकुल या वेत । २ पुष्प
वञ्जुलः } विशेष । ३ अशोक वृक्ष । ४ पक्षी विशेष ।

—द्रुमः, (पु०) अशोक वृक्ष ।—प्रियः, (पु०)
छड़ी । वेत ।

वट् (धा० प०) [वटति] घेरना । [उभय० वाट-
यति—वाटयते] १ कहना । २ बँटना । बँटवारा
करना । ३ घेरना ।

वटः (पु०) १ बरगद का पेड़ । २ कोड़ी । ३ गोली ।
टिकिया । ४ शून्य । खिफर । ५ चपाती । ६
डोरी । रस्सा । ७ रूप की समानता या रूपसा-
दृश्य ।—पत्रं, (न०) रामतुलसी विशेष ।—
पत्रा, (स्त्री०) चमेली ।—वासिन्, (पु०)
यक्ष ।

वटकः (पु०) १ चपाती । ३ गोला । गोली ।
टिकिया ।

वटरः (पु०) १ मुर्गा । २ चटाई । ३ फगड़ी । ४
चोर । डाँकू । ५ रई । ६ सुगन्धयुक्त घास ।

वटारकः } (पु०) डोरी । रस्सी ।
वटारकः }

वटिकः (पु०) शतरंज का दाँव ।

वटिका (स्त्री०) १ वटी । गोली । २ शतरंज का
मोहरा ।

वटिन् (वि०) गोल । डोरीदार ।

वटी (स्त्री०) १ रस्सी । डोरी । २ गोली या टिकिया ।

वटुः (पु०) १ छेकरा । बालक । २ ब्रह्मचारी ।
माणवक ।

वटुकः (पु०) १ बालक । २ ब्रह्मचारी । माणवक ।
३ मूढ़ । मूर्ख ।

वट् (धा० प०) [वटति] १ मज्जबूत होना । २
हृष्टपुष्ट होना ।

वटर (वि०) १ सुस्त । काहिल । २ दुष्ट । शठ ।

वटरः (पु०) मूढ़जन । मूर्ख आदमी । २ शठजन
दुष्टजन । ३ चिकित्सक । ४ जल का बड़ा ।

वडभिः } (पु०) देखो वल्लभिः, वलभी ।
वडभी }

वडवा (स्त्री०) १ घोड़ी । २ अश्विनी नाम व
अप्सरा जिसने घोड़ी का रूप धर, सूर्य से दो पु
उत्पन्न करवाये थे । वे दोनों अश्विनीकुमार
नाम से प्रसिद्ध हैं । ३ दासी । ४ रंडी । वेश्या

५ द्विजयोषित् । ब्राह्मणी ।—अग्निः—अनलः,
(पु०) बाडवानल । समुद्र के भीतर रहने वाला
अग्नि ।—मुखः, (पु०) १ बाडवानल । २ शिव
का नाम ।

वडा (स्त्री०) उर्दू की पीठी का बना बड़ी पड़ोनुमा
पदार्थ विशेष ।

वडिश (न०) देखो वडिश ।

वड् (वि०) बड़ा । दीर्घाकार । महान् ।

वड् (धा० परस्मै०) [वगति] शब्द करना ।
बजाना ।

वणिज (पु०) १ सौदागर । व्यापारी । २ तुलाराशि ।
(स्त्री०) सौदागरी । व्यापार ।—जनः, (पु०)
१ व्यापारी । तिजारती । सौदागर । २ बनिया या
व्यापारी लोग ।—पथः, (पु०) १ सौदागरी ।
व्यापार । ४ व्यापारी । सौदागर । ३ व्यापारी की
दुकान । तुलाराशि ।—वृत्तिः, (स्त्री०)
व्यापार । सौदागरी ।—सार्थः, (पु०) काफिला ।
व्यापारियों की टोली ।

वणिजः (पु०) १ व्यापारी । २ तुलाराशि ।

वणिजकः (पु०) व्यापारी ।

वणिज्य (न०) } व्यापार । सौदागरी । तिजा-
वणिज्या (स्त्री०) } रत ।

वट् (धा० प०) [वटति, वटयति,
वटयते] बटवारा करना । बाँटना ।

वटः (पु०) १ हिस्सा । बाँट । अंश । २
वटेटः } हसिया का वट । ३ बिधुर । वह पुरुष जिसका
विवाह न हो ।

वटकः (पु०) १ बटवारा । २ बाँटने वाला ।
वटकः } ३ अंश । भाग । हिस्सा ।

वटनं } (न०) बटवारा । हिस्सा । बाँट ।
वटनं }

वटालः } (पु०) १ शूरीरों का कगड़ा । २
वटालः } बेज्या कलड़ा । ३ नौका । बोट ।
वटालः }

वट (धा० आत्मा०) [वटते] अकेले जाना ।
वटेटे } हुकेला जाना ।

वट (वि०) १ अविवाहित । २ दोना । खर्वा-
वटेटे } कार । ३ पंगा ।

वटः (पु०) १ अविवाहित पुरुष । २ नौका ।
वटेटे } चक्र । ३ बड़ा । शक्ति । शूल ।

वटरः (पु०) १ बाँस के कल्ले का वह मोटा
वटरः } पत्ता जो इसे छिपाये रहता है । [यह
पत्ता गाँठ गाँठ पर होता है] २ ताड़ वृक्ष का नया
अङ्कुर । ३ बकरा बाँत्रने की रस्सी । ४ कुत्ता । ५
कुत्ते की पूंछ । ६ बादल । ७ छानी । चूची ।

वट (धा० आ०) [वटते] १ बटवारा
वटेटे } करना । बाँटना । हिस्सा करना । बरेना ।

वट (वि०) १ अङ्गभङ्ग । पंगु । २ अविवाहित ।
वटेटे } ३ बधिया किया हुआ । आदता किया
हुआ ।

वटः (पु०) १ वज्र पुरुष जिसकी लिङ्गेन्द्रिय के
वटेटे } अग्रभाग पर वह चमड़ा न हो, जो सुपागी
को ठाँके रहता है । २ बिना पूंछ का बैल ।

वट (स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री । पुंश्चली स्त्री ।
वटेटे } छिनाल औरत ।

वटरः (पु०) १ कंदूल आदमी । २ नपुंसक
वटेटे } पुरुष । हिजड़ा आदमी ।

वत् (वि०) यह एक प्रत्यय है जो संज्ञावाची शब्दों में
किसी वस्तु की सम्पन्नता प्रकट करने को लगाया
जाता है । जैसे “धनवत्” अर्थात् धनी या धन
से सम्पन्न । यह सादृश्यता अथवा समानता भी
प्रकट करता है—यथा “आत्मवत्” ।

वत (अन्यथा०) १ कष्ट । २ दया । ३ सुखी । ४
विस्मय । ५ आमंत्रण ।

वतंसः (पु०) अवतंस का अपभ्रंश । (अकार का
लोप होने से । १ आभूषण । २ चांदी । ३ हर
प्रकार का गहना । ४ कर्णफूल ।

वतंका (स्त्री०) सन्तानरहित स्त्री या गौ । वह स्त्री
या गौ जिसका गर्भ किसी बटना विशेष से गिर
पड़ा हो ।

वत्सः (पु०) १ बड़वा । किसी भी जानवर का बच्चा ।
२ बेटा । ३ सन्तान । औलाद । वर्ष । ४ एक देश
का नाम जहाँ उदयन नामक राजा राज्य करता था

और जिसकी राजधानी का नाम कौशांबी था ।—
अत्ती, (स्त्री०) एक प्रकार की ककड़ी की जाति
का फल । कर्लादा । तरबूज ।—अदनः, (पु०)
भेदिया ।—काम, (वि०) बच्चों का अनुरागी ।
—नाभः, (पु०) १ वृक्ष विशेष । २ बड़नाभ
नामक विष जो मीठा होता है ।—पालः, (पु०)
श्रीकृष्ण या बलराम ।—शाला, (स्त्री०)
गौशाला ।

वत्सकः (पु०) १ छोटा बड़वा । बड़वा । २ बच्चा । ३
कुटज का पौधा ।

वत्सकं (न०) १ पुष्पकलीस । २ कुटज । ३ इन्द्रजै ।
४ निर्गुण्यही ।

वत्सतरः (पु०) जवान बड़वा जो जोता न गया हो ।

वत्सतरी (स्त्री०) वह बछिया जिसकी उम्र ३ वर्ष की
हो । कलोर ।

वत्सरः (पु०) १ वर्ष । २ विष्णु का नाम ।—
अन्तकः, (पु०) फागुन मास ।—अग्र्यः, (न०)
वह कर्ज जिसका चुकाना वर्ष के अन्त में
आवश्यक हो ।

वत्सल (वि०) पुत्र या सन्तान के प्रति पूर्ण स्नेह
युक्त । बच्चे के प्रेम से भरा हुआ है ।

वत्सलः (पु०) फूस की घास ।

वत्सला (स्त्री०) वह गाय जिसका अपने बच्चे पर
पूर्ण अनुराग हो ।

वत्सलं (न०) स्नेह । अनुराग ।

वत्सा } (स्त्री०) ओसर या कलोर गौ ।
वत्सिकः }

वत्सिमन् (पु०) लड़कपन । जवानी ।

वत्सीयः (पु०) अहीर । गोपाल । ग्वाला ।

वद् (धा० प०) [वदति] १ बोलना । २ सूचना
देना । ३ कहना । वर्णन करना । ४ निर्दिष्ट करना ।
५ पुकारना । ६ बतलाना । ७ चिह्नाना । ८ किसी
कार्य में पड़ता प्रदर्शन करना । ९ चमकना ।
१० परिश्रम करना । उद्योग करना ।

वद् (वि०) बोलने वाला । बातचीत करने वाला ।
भली भाँति बोलने वाला ।

वदनं (न०) १ चेहरा । २ मुख । ३ शङ्ख । सुरत ।
रूप । ४ सामना । अगला भाग । ५ प्रथम संख्या
(किसी माला का)—आसवा, (पु०) थूक ।

वदन्ती (स्त्री०) वाणी । वक्तृता । संवाद ।

वदन्य (वि०) देखो “वदान्य”, ।

वदरः (पु०) देखो “वदर”, ।

वदालः (पु०) १ भँवर । २ पाटीन मत्स्य । पाटीन
मछली ।

वदावद (वि०) १ वक्ता । २ गप्पी ।

वदान्य (वि०) १ तेज़ बोलने वाला । सुभाषी । २
अपनी बातचीत से दूसरे को समुष्ट करने वाला ।
३ उदार । अतिशय दाता ।

वदि (अव्यया०) कृष्णपक्ष ।

वद्य (वि०) १ बोलने योग्य । तिरस्कार करने के
अयोग्य । २ कृष्णपक्ष ।

वद्यं (न०) भाषण । बातचीत ।

वध् (धा० प०) [वधति] १ बध करना ।

वधः (पु०) १ हत्या । वध । २ आघात । प्रहार । ३
लकवा । ४ अन्तर्धान क्रिया । ५ (अङ्गगणित में)
गुणा की क्रिया ।—अन्तकं, (न०) विष ।—अर्हः,
(वि०) प्राणदण्ड पाने योग्य ।—उपायः,
(पु०) बध के साधन ।—कर्माधिकारिन,
(पु०) जल्लाद । अधिक ।—जीविन्, (पु०)
१ व्याधा । बहेलिया । २ कसाई । बूचर ।—
दण्डः, (पु०) १ शारीरिक दण्ड । २ प्राण-
दण्ड ।—भूमिः, (स्त्री०) स्थली, (स्त्री०)
स्थानं, (न०) १ वह स्थान जहाँ प्राणदण्ड
दिया जाय । २ कसाईखाना ।—स्तम्भः, (पु०)
फाँसी ।

वधकः (पु०) १ जल्लाद । २ घातक । हत्यारा ।

वधत्रं (न०) वध करने का हथियार ।

वधिन्नं (न०) १ कामदेव । २ मैथुन करने की इच्छा ।
शहवत ।

वधुः } (स्त्री०) १ बहू । पुत्र की पत्नी । २
वधुका } युवती स्त्री ।

वधूः (स्त्री०) १ वधु । २ पत्नी । ३ पुत्रवधू । ४ स्त्री । औरत । ५ अपने से छोटे सम्बन्धी की स्त्री । नाते में छोटी स्त्री । ६ पशु की मादा ।—जनः, (पु०) पत्नी । स्त्रीलोग ।—वस्त्रं, (न०) वे कपड़े जो विवाह के समय धारण किये जाते हैं ।

वधूटो (स्त्री०) १ युवती स्त्री । २ पुत्रवधू ।

वध्य (वि०) १ वध करने योग्य । २ प्राणदण्ड की आज्ञा पाये हुए । ३ शारीरिकदण्ड पाने योग्य ।

वध्यः (पु०) १ शिकार । आपदग्रस्त व्यक्ति । २ शत्रु ।—पटहः, (पु०) वह ढोल जो किसी को प्राणदण्ड देते समय बजाया जाय ।—भूः, —भूमिः, (स्त्री०)—स्थल, —स्थानं, (न०) वध करने की जगह ।—माला, (स्त्री०) वह माला जो प्राणदण्ड प्राप्त पुरुष के गले में उस समय पहनायी जाय, जिस समय उसका वध किया जाय ।

वध्या (स्त्री०) हत्या । कत्ल ।

वध्रं (न०) १ चमड़े का तस्मा । २ शीशा ।—ध्री, (स्त्री०) चमड़े का तस्मा ।

वध्यः (पु०) जूत ।

वन् (धा० परस्मै०) [वनति] १ प्रतिष्ठा करना । सम्मान करना । पूजन करना । २ सहायता करना । ३ ध्वनि करना । ४ संलग्न होना । किसी काम में लगना । [उभय० --वनोति, वनुति] १ याचना करना । माँगना । प्रार्थना करना । २ हँसना । तलाश करना । ३ जीतना । अधिकार में करना । कब्जा करना । (उभय० वनति, वानयति, वानयते) १ कृपा करना । अनुग्रह करना । २ चोटिल करना । अनिष्ट करना । ३ ध्वनित करना । ४ विश्वास करना ।

वनं (न०) १ जंगल । २ कमल के फूलों का दस्ता । ३ आवासस्थान । ४ जल का चरमा या सोता । ५ जल । ६ काष्ठ । लट्ठा ।—अग्निः, (पु०) दावानल । दावाग्नि ।—अजः, (पु०) जंगली बकरा ।—अन्तः, (पु०) १ वन की सीमा । वन प्रान्त ।—अन्तरं, (न०) १ दूसरा वन । २ वन का भीतरी हिस्सा ।—अरिष्टा, (स्त्री०)

जंगली हल्दी ।—अलकं, (न०) लालमिट्टी ।—अलिका, (स्त्री०) सूरजमुखी ।—आग्न्युः, (पु०) खरगोश । खरा ।—आग्न्युकाः, (पु०) वनसूँग ।—आपगा, (स्त्री०) वन की नदी ।—आर्द्रका, (स्त्री०) जंगली अदरक ।—आश्रमः, (पु०) १ वानप्रस्थाश्रम । २ वन का वास ।—आश्रमिन्, (पु०) तपस्वी । महात्मा ।—आश्रय, (पु०) १ वनवासी । २ काला कौआ । डाम-कौआ ।—उत्साहः, (पु०) गैबा ।—उद्भवा, (स्त्री०) जंगली कपास का पौधा ।—आकस्, (पु०) १ वनवासी । जंगल का रहने वाला । २ वानप्रस्थाश्रमी । तपस्वी । मुनि । ३ वन्यपशु । (यथा बंदर, शूकर आदि) —कणा, (स्त्री०) वनपिप्पली ।—कदली (स्त्री०) जंगली केला ।—करिन्, (पु०) —कंजरः, —गजः (पु०) जंगली हाथी ।—कुक्कुटः (पु०) जंगली मुर्गा ।—खरडं, (न०) जंगल ।—गहनं, (न०) वन का वह भाग जहाँ, वह अति सघन हो ।—गुतः, (पु०) जासूस । भेदिया ।—शुल्भः, (पु०) जंगली काढ़ी ।—गोचर, (वि०) वन में रहने वाला ।—गोचरः, (पु०) १ बहेलिया । २ वनवासी ।—गोचरं, (न०) वन । जंगल ।—चन्दनम्, (न०) १ देवदारु वृक्ष । २ अगर काष्ठ ।—चर, (वि०) वन में बिचरने वाला ।—चरः, (पु०) १ वनवासी । २ वन्यपशु । ३ शरभ ।—चर्या, (स्त्री०) वनवासी । वन में घूमने वाला ।—कागः, (पु०) १ जंगली बकरा । २ शूकर ।—जः, (पु०) १ हाथी । २ सुगन्धयुक्त वृक्ष विशेष । ३ जंगली बिजौरा जाति का नीबू ।—जं, (न०) १ नीलकमल का पुष्प । २ जंगली कपास का पौधा ।—जीविन्, (वि०) लकड़हारा ।—दः, (पु०) बादल । मेघ ।—दहः (पु०) दावानल ।—देवता, (स्त्री०) वन का अधिष्ठाता देवता ।—पांसुलः, (पु०) शिकारी । बहेलिया ।—पूरकः, (पु०) वनैला । बिजौरा नीबू का वृक्ष ।—प्रवेशः, (पु०) वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश ।—प्रियः, (पु०) कोयल ।—प्रियं, (न०) दाखचीनी का पेड़ ।—मालिन्, (पु०) श्रीकृष्ण ।

—मालिनी, (स्त्री०) द्वारकापुरी का नामान्तर ।
 —मूतः, (पु०) बादल । मेघ । —मोक्षा, (स्त्री०)
 जंगली केला । —राजः, (पु०) सिंह । शेर ।
 —रहः, (न०) कमल का फूल । —लक्ष्मीः,
 (स्त्री०) वनश्री । वन की शोभा । २ केला । —
 वासन्तः, (पु०) ऊदविलास । —वासिन्, (पु०)
 १ वन में बसने वाला । २ मुनि । वानप्रस्थ । —
 वनस्थायिन्, —व्रीहिः, (पु०) जंगली चाँवल ।
 —शोभनः, (न०) कमल । —ध्वन्, (पु०)
 शृगाल । १ चीता २ ऊदविलास । —सङ्कटः
 (पु०) मसूर । —सरोजिनी, (स्त्री०) कपास
 का पौधा । —स्थः, (पु०) १ हिरन । २ मुनि ।
 —स्था, (स्त्री०) वटवृक्ष । —स्थली, (स्त्री०)
 वनभूमि । आरक्ष्यदेश । जंगली जमीन ।
 वनस्पतिः (पु०) १ बड़ा जंगली वृक्ष, विशेष कर
 वह पेड़ जिसमें पुष्प लगे बिना ही फल लगें । वृक्ष ।
 पेड़ ।
 वनायुः (पु०) एक प्राचीन देश का नाम जहाँ का
 घोड़ा अच्छा होता था । —ज, (न०) वनायु
 देश में उत्पन्न (घोड़ा) ।
 वनिः (स्त्री०) कामना । अभिलाषा ।
 वनिका (स्त्री०) छोटा वन ।
 वनिता (स्त्री०) १ स्त्री । २ पत्नी । स्वामिनी । ३
 कोई भी प्रेमपात्री (माशुका) स्त्री । ४ पशु की
 मादा । —विष् (पु०) स्त्रियों से वृणा करने
 वाला । —विलासः, (पु०) स्त्री का आनन्द
 प्रमोद ।
 वनिन् (पु०) १ वृक्ष । २ सोमलता । ३ वानप्रस्थ ।
 वनिष्ठा (वि०) याचक । भँगता ।
 वनी (स्त्री०) जंगल । वन । कुंज ।
 वनीपकः } (पु०) भिजुक । भिलारी ।
 वनीयकः }
 वनेकिशुकः (पु०) जंगल का किशुक । अर्थात्
 वह वस्तु जो वैसे ही बिना माँगे मिले । जैसे वन
 में किशुक बिना माँगे या प्रयास किये मिलता है ।
 वनेखर (न०) वन में रहने वाला ।

वनेखरः (पु०) १ वनरत्ना । जंगल में रहने वाला ।
 २ मुनि । ३ वन्यपशु । ४ वनमालुष । ५ राक्षस ।
 वनेज्यः (पु०) आम विशेष ।
 वन्द (धा० आ०) [वन्दते, वन्दित] १ प्रशाम
 करता । २ अर्चन करना । पूजन करना । ३ प्रशंसा
 करना ।
 वन्दकः } (पु०) प्रशंसक । भाट । बंदीजन ।
 वन्दकः }
 वन्द्यः } (पु०) प्रशंसक । भाट । बंदीजन ।
 वन्द्यः }
 वन्दनं (न०) १ प्रशाम । नमस्कार । २ सम्मान ।
 अर्चन । पूजन । ३ सम्मान या प्रशाम जो ब्राह्मण
 को किया जाय । ४ प्रशंसा । तारीफ ।
 वन्दना } (स्त्री०) १ अर्चन । पूजन । २ प्रशंसा ।
 वन्दना }
 वन्दनी } (स्त्री०) १ पूजन । अर्चन । २ प्रशंसा ।
 वन्दनी } याचना । ३ एक अर्क जो मृतक को जीवित
 करे । —माता, —मलिका, (स्त्री०) बंदनवार ।
 वन्दनीय } (वि०) प्रशाम करने योग्य । सम्मान-
 वन्दनीय } नीय ।
 वन्दनीया } (स्त्री०) हरताल ।
 वन्दनीया }
 वन्दा } (स्त्री०) भिलारिनी ।
 वन्दा }
 वन्दाह } (वि०) १ प्रशंसा करने वाला । २ अर्च्य ।
 वन्दाह } माननीय । (न०) प्रशंसा ।
 वन्दिन् (पु०) } १ बंदीजन । भाट । २ कैदी ।
 वन्दिन् (पु०) } बंदी ।
 वन्दी } (स्त्री०) देखो वन्दी । —पालः, (पु०)
 वन्दी } जेलर । बंदीगृह का रक्षक ।
 वन्द्य } (वि०) १ पूज्य । २ प्रशम्य । ३ प्रशंस्य ।
 वन्द्य } प्रशंसा है ।
 वन्दः } (पु०) १ पूजक । पूजा करने वाला ।
 वन्दः } भक्त ।
 वन्दं } (न०) समृद्धि ।
 वन्दं }
 वन्य (वि०) १ वन का । वन सम्बन्धी । जंगली ।
 २ बहारी ।

अथः

सं० शं० कां०—१३

(पु०) चुनने या पसंद करने की क्रिया । २ चुनाव । पसंदगी । ३ वरदान । आशीर्वाद । अनुग्रह । ४ भेंट । पुरस्कार । ५ अभिलाषा । इच्छा । ६ याचना । विनय । ७ दूल्हा । पति । ८ वधू । प्रार्थी । ९ दहेज । १० दामाद । ११ लंपट आदमी । १२ गोरैया पत्नी ।
 (न०) केंसर ।—अङ्गः, (पु०) हाथी ।—अङ्गी, (स्त्री०) हल्दी ।—अङ्गु, (न०) १ सिर । २ उत्तम अवयव । ३ सुदौल शरीर । ४ दालचीनी ।—अङ्गना, (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री ।—अर्ह, (पु०) वरदान पाने योग्य ।—आजीविन, (पु०) ज्योतिषी ।—आरोह, (पु०) सुन्दर कूल्हे या कमर वाला ।—आरोहः, (पु०) उत्तम सवार ।—आरोहा, (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री ।—आलिः, (पु०) चन्दमा ।—कनुः, (पु०) इन्द्र ।—चन्दनं (न०) १ काला चंदन । २ देवदारु ।—तनुः, (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री ।—तन्तुः, (पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम ।—त्वचः, (पु०) नीम का पेड़ ।—द, (वि०) १ वरदानशाला । २ शुभ ।—दः, (पु०) दा, (स्त्री०) १ एक नदी का नाम । २ कारी कन्या ।—दक्षिणा, (स्त्री०) वह धन जो वर के विवाह के समय कन्या के पिता से मिलता है । दहेज । दायजा ।—दानं, (न०) देवता या बड़ों का प्रसन्न होने पर कोई अभीष्ट वस्तु या सिद्धि का प्रदान करना ।—दुमः, (पु०) अगार का वृक्ष ।—पक्षः, (पु०) बरात ।—यात्रा, (स्त्री०) विवाह के लिये वर का अपने इष्टमित्रों और सम्बन्धियों के साथ कन्या के वर गमन ।—फलः, (पु०) नारियल ।—वाहिकं (न०) केंसर ।—युवतिः,—युवती, (स्त्री०) सुन्दरी जवान औरत ।—रुचिः, (पु०) एक अस्यन्त प्रसिद्ध प्राचीन पण्डित जो व्याकरण और काव्य के मर्मज्ञ थे ।—लब्धः, (पु०) चंपा का पेड़ ।—वत्सला, (स्त्री०) सास ।—वर्णः, (न०) सुवर्ण । सोना ।—वर्णिनी, (स्त्री०) १ सुवर्ण । सुन्दरी स्त्री । २ स्त्री । ३ लाख । ४ लक्ष्मी । ६ दुर्गा । ७ सरस्वती । ८ अयंगुलता ।—स्त्रज्,

(स्त्री०) वर की माला या गजरा । वह माला जो दुल्हिन दूल्हा को पहनाती है ।
 वरकः (पु०) १ इच्छा । चाहना । वर । २ जुगा । ३ जंगल में उत्पन्न होने वाला मूँग ।
 वरकं (न०) लोलिया । दस्तर । सावन ।
 वरटः (पु०) १ हंस । २ विरा अनाज । ३ बर । बरैया ।
 वरट्टा } (स्त्री०) हंसी । २ बरैया ।
 वरटी }
 वरटं (न०) कुन्द का फूल ।
 वरणां (न०) १ चुनाव । पसंदगी । २ याचना । प्रार्थना । ३ फेरा । घिराव । ४ पर्दा । चादर । ५ वर का चुनाव ।
 वरणाः (पु०) १ शहरपनाह की दीवाल । २ पुल । ३ वरुण नामक पेड़ । ४ उट ।—माजा, (स्त्री०)—स्त्रज्, (न०) वह माला जो दुल्हिन अपने दूल्हा की गरदन में पहनाती है ।
 वरणासो (स्त्री०) वाराणसी । काशीपुरी ।
 वरंडः } (पु०) १ समूह । समुदाय । २ चेहरे
 वरगंडः } पर के मुहाँसे या मुरसे । ३ वरासदा । ५ घास का ढेर । ६ जेब । खीसा ।
 वरंडकः } (पु०) १ मिट्टी का टीला । २ हौदा ।
 वरगंडकः } ३ दीवाल । ४ मुरसा या मुहाँसा ।
 वरंडा } (स्त्री०) १ खंजर । कुरी । २ सारिका
 वरगंडा } पत्नी । ३ लैंप की बत्ती ।
 वरत्रा (स्त्री०) १ तस्मा । २ घोड़ा या हाथी का जेरबंद ।
 वरं (अव्यया०) अपेक्षाकृत भला । बहुततर ।
 वरलः (पु०) १ बरैया ।
 वरला (स्त्री०) १ हंसी । २ बरैया ।
 वरा (स्त्री०) १ त्रिफला । २ रेणुका नामक गन्धद्रव्य । ३ हल्दी । ४ पार्वती ।
 वराक (वि०) [स्त्री०—वराकी] १ गरीब । मिसकीन । बपुरा । अभागा ।
 वराकः (पु०) १ शिव । २ बुद्ध । लड़ाई ।

वराटः (पु०) १ कौडी । २ रस्सा । डोरी ।

वराटकः (पु०) १ कौडी । २ कमलगट्टा । ३ रस्सी ।
डोरी ।—रजस् (पु०) नागकैसर का पेड़ ।

वराटिका (स्त्री०) कौडी ।

वराणः (पु०) इन्द्र ।

वराणसी (स्त्री०) वाराणसी ।

वरारक्तं (न०) हीरा ।

वराजः } (पु०) लौंग । लवंग ।
वराजकः }

वराशिः } (पु०) मोटा कपड़ा ।
वरासिः }

वराहः (पु०) १ सुअर । शूकर । २ मेढा । ३ सौँड़ ।
४ बादल । ५ बड़ियाल । नक्र । मगर । ६ शूकर
के रूप का न्यूह । ७ विष्णु का अवतार । ८
भाव विशेष । ९ वराहमिहिर । १० अष्टादश
पुराणों में से एक का नाम ।—अवतारः, (पु०)
भगवान् विष्णु का तीसरा अवतार ।—कन्दः,
(पु०) बराहीकंद ।—कल्पः, (पु०) वह काल
जब भगवान् ने वराहावतार धारण किया था ।—
मिहिरः, (पु०) ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य
जिनकी बनायी बृहत्संहिता बहुत प्रसिद्ध है ।
—शृङ्गः, (पु०) शिव का नाम ।

वरिमस् (पु०) श्रेष्ठत्व । उत्तमता । उम्कृष्टता ।

वरिवसित } (वि०) अर्चित । सम्मानित । पूजित ।
वरिवस्वित }

वरिवस्या (स्त्री०) पूजन ।

वरिष्ठ (वि०) १ उत्तम । २ सब से बड़ा । सब से
अधिक लंबा । ३ सब से अधिक चौड़ा । ४ सब
से अधिक भारी ।

वरिष्ठः (पु०) १ तित्तिर पक्षी । तीतर । २ नारंगी का
पेड़ ।

वरिष्ठं (न०) १ ताअ । ताँवा । २ मिर्च ।

वरी (स्त्री०) १ सूर्यपत्नी द्याया का नाम । २ शता-
वरी का पौधा ।

वरीयस् (वि०) १ अपेक्षा कृत अच्छा । बहतर । २
अपेक्षाकृत लंबा या चौड़ा ।

वरीवर्दः } (पु०) बैल । सौँड़ ।
वलीवर्दः }

वरीपु (पु०) कानदेव का नाम ।

वरुटः (पु०) स्लेख विशेष ।

वरुडः (पु०) एक नीच जाति का नाम ।

वरुणः (पु०) मित्र देवता के साथ रहने वाले एक
आदित्य का नाम । २ समुद्र के अधिष्ठान् देवता
और पश्चिम दिशा के दिक्पाल । ३ समुद्र । ४
आकाश ।—अङ्गरुहः, (पु०) अगस्त्य जी की
उपाधि ।—आत्मजा, (स्त्री०) मदिरा । सुरा ।
—शालयः,—आवासः, (पु०) समुद्र ।—
पाशः, (पु०) समुद्र में रहने वाला एक भयङ्कर
जलजन्तु विशेष । इसे श्रीगरेजी में शार्क कहते हैं ।
—लोकः, (पु०) वरुण जी का लोक । २
जल ।

वरुणानी (स्त्री०) वरुण की स्त्री ।

वरुत्रं (न०) लवादा । चुगा ।

वरुथं (न०) १ लोहे की चदर या सीकड़ों का बना
हुआ आवरण जो शत्रु के आघात से रथ को
रक्षित रखने के लिए उसके ऊपर डाला जाता था ।
२ कवच । बख्तर । ३ ढाल । ४ समूह ।
समुदाय ।

वरुथिन् (वि०) १ कवचधारी । बख्तर पहिने हुए ।
२ रथारूढ़ । (पु०) १ रथ । २ रथक ।

वरुथी (स्त्री०) सेना ।

वरोक्ष्य (वि०) १ वाञ्छनीय । २ सर्वोत्तम । मुख्य ।

वरोक्ष्यं (न०) कुङ्कुम । केसर ।

वरोटं (न०) मरुवा के फूल ।

वरोटः (पु०) मरुवादोना । मरुवा ।

वरोलः (पु०) एक प्रकार की बर ।

वर्करः (पु०) १ मेंमना । बकरी का बच्चा । २
बकरा । ३ कोई भी पालतु जानवर का बच्चा । ४
आमोद प्रमोद । क्रीड़ा । विहार ।

वर्कराटः (पु०) १ कटाक्ष । २ स्त्री के कुच के ऊपर
लगने हुए नखों का घाव या खरौंच ।

वर्कटः (पु०) पिल । बोलू । कील । चाबी ।

वर्गः (पु०) १ श्रेणी । विभाग । जमात । कक्षा । समाज । जाति । समुदाय । २ दल । टोली । पक्ष । ३ न्यायशास्त्र के नव या सप्त पदार्थ विभाग । ४ राजदशस्त्र में एक स्थान से उच्चारित होने वाले स्पर्श व्यञ्जन वर्णों का समूह । (यथा कवर्ग, चवर्ग आदि । ५ आकार प्रकार में कुछ भिन्न, किन्तु कोई भी एक सामान्य धर्म रखने वालों का समूह । (यथा—मनुष्यवर्ग, वनस्पति वर्ग) ६ ग्रन्थ विभाग । प्रकरण । परिच्छेद । अध्याय । ७ विशेष कर ऋग्वेद के अध्याय के अन्तर्गत उपअध्याय । ८ दो समान अक्षरों या राशियों का घात या गुणनफल । (यथा ४ का १३) ९ शक्ति । ताकत ।—अत्यं,—उत्तमं, (न०) पाँचों वर्गों के अन्त के अक्षर । अनुनासिक वर्ण ।—वनः, (पु०) वर्ग का घनफल ।—पदं,—मूलं, (न०) वह अक्ष जिसके घात से कोई वर्णाक्ष बनावे । वर्गमूल ।

वर्गशा (स्त्री०) गुणन । घात ।

वर्गशस् (अव्यया०) श्रेणी या समूहों के अनुसार ।

वर्गीय (वि०) किसी वर्ग का या श्रेणी का । वर्ग सम्बन्धी ।

वर्गीयः (पु०) सहपाठी ।

वर्ग्य (वि०) एक ही श्रेणी का ।

वर्ग्यः (पु०) सहपाठी । साथी ।

वर्च (धा० आ०) [वर्चते] १ चमकना । चमकीला होना ।

वर्चस् (न०) १ शक्ति । २ पराक्रम । प्रभाव । २ तेज । काम्ति । दीप्ति । ३ रूप । शक्त । ४ विद्या ।—ग्रहः, (पु०) कोष्ठकद्वारा । कक्षितयत ।

वर्चस्कः (पु०) १ दीप्ति । तेज । २ पराक्रम । ३ विद्या ।

वर्चस्विन् (वि०) १ पराक्रमी । शक्तिशाली । क्रियाशील । तेजस्वी । समुज्ज्वल ।

वर्जः (पु०) त्याग । परिष्ठाग ।

वर्जनम् (न०) १ त्याग । २ वैराग्य । ३ मनाई । मुमानियत । ४ हिंसा । मारण ।

वर्जित (व० कृ०) १ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । त्यक्त । २ निषिद्ध । ३ बाहिर किया हुआ । ४ गदित ।

वर्ज्य (वि०) १ छोड़ने योग्य । त्याज्य । वर्जनीय । २ जिसका निषेध किया गया हो । निषिद्ध ।

वर्ण (धा० उभय०) [वर्णयति, वर्णित] १ रंग बढ़ाना । रंगना । २ वर्णन करना । बयान करना । व्याख्या करना । लिखना । ३ प्रशंसा करना । सराहना । फैलाना । बढ़ाना । ४ प्रकाश करना ।

वर्णः (पु०) १ रंग । २ रोगन । ३ रूपरंग । सौन्दर्य । ४ मनुष्य समुदाय के चार विभाग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र । ५ श्रेणी । जाति । किस्म । ६ अक्षर । स्वर । ७ कीर्ति । महिमा । प्रख्याति । प्रसिद्धि । ८ प्रशंसा । ९ परिच्छेद । सजावट । १० वाद्य आकार प्रकार । रूपरेखा । शक सूरत । ११ लवाश । चुगा । जामा । १२ डकना । डकन । १३ गीतक्रम । १४ हाथी की झूल । १५ गुण । १६ धर्मानुष्ठान । १७ अज्ञात राशि ।—अर्द्धा, (स्त्री०) लेखनी । कलम ।—अपसदः, (पु०) जातिच्छुत ।—अपेन, (वि०) तो किसी भी जाति में न हो । जातिवहिष्कृत पतित ।—अर्द्धः, (पु०) रंग ।—आतनं, (पु०) शब्द ।—उद्भवं, (न०) रंगीन जल ।—कूपिका, (स्त्री०) दावात ।—क्रमः, (पु०) १ वर्णव्यवस्था । २ अक्षरक्रम ।—चारकः, (पु०) चितेरा । रंगैषा ।—अप्रेतः, (पु०) ब्राह्मण ।—तूलिः,—तूलिका, —तूलो, (स्त्री०) पेंसिल । चितेरे की कूँची ।—दं, (वि०) रंगसाज ।—दं, (न०) सुगन्धि युक्त पीला काष्ठ विशेष ।—दात्री (स्त्री०) हकदी ।—दूतः, (पु०) अक्षर ।—धर्मः, (पु०) प्रत्येक जाति के कर्म विशेष ।—पातः, (पु०) किसी अक्षर का लोप होना ।—प्रकर्षः, (पु०) रंग की उत्तमता ।—प्रसादनं, (न०) अगर की लकड़ी ।—मातृ, (स्त्री०) कलम । पेंसिल ।—मातृका, (स्त्री०) सरस्वती ।—माला,—राशिः, (स्त्री०) अक्षरों के रूपों की श्रेणी या लिखित सूची ।—वर्तिः,—वर्तिका, (स्त्री०) चितेरे की कूँची ।—

वर्ण

(७४१)

वर्णनाम

विपर्ययः (पु०) निरुक्त के अनुसार शब्दों में वर्णों का उलट कर ।—विजासिनी, (स्त्री०) हल्दी ।—विलोडकः, (पु०) १ सेंध लगाने वाला । २ फेंका लगाने वाला । ३ लिखनतस्कर । ४ लेखचोर । ५ काव्यचोर । ६ भावचोर । ७ उक्तिचोर ।—वृत्तं, (न०) वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघुगुरु के क्रम में समानता हो । (मात्रावृत्त का उल्लेख) ।—व्यवस्थितिः, (स्त्री०) वर्णव्यवस्था ।—श्रेष्ठः, (पु०) ब्राह्मण ।—संयोगः, (पु०) एक ही जाति के लोगों में वैवाहिक सम्बन्ध ।—सङ्करः, (पु०) १ वह व्यक्ति या जाति जो दो भिन्न भिन्न जातियों के स्त्री पुरुष के संयोग से उत्पन्न हो । २ रंगों का मिश्रण ।—संघातः,—प्रामाण्याः, (पु०) वर्णमाला । घोल ।

वर्ण (न०) १ कुङ्कुम । केसर । २ श्रृंगारग विशेष ।

वर्णकः (पु०) १ एकदर की पोशाक । अभिनेता का परिधान या परिच्छेद । २ रंग । रोगन । ३ अनु-लेपन । उबटन । ४ चारण । भाद । बैदीजन । ५ खन्डन ।

वर्णकं (न०) १ रंग । रोगन । डरवाल । २ चैतन । ३ ग्रन्थ का अध्याय । सर्ग ।

वर्णका (स्त्री०) १ मुरक । कस्तूरी । २ रंग । रोगन । ३ लज्जादा । लुगा ।

वर्णनं (न०) १ चित्रण । रंगने को क्रिया । २ वर्णना (स्त्री०) १ वर्णन । निरूपण । निवेदन । २ लेखन । ३ वयान । ४ श्लाघा । सराहना ।

वर्णनिः (पु०) पानी । जल ।

वर्णादः (पु०) १ चित्तेरा । रंगसाज । २ गर्वशा । ३ स्त्री की आमदनी से निर्वाह करने वाला । स्त्री-कृताजीव ।

वर्णिका (स्त्री०) १ अभिनयकर्ता का परिच्छेद । २ रंग । रोगन । ३ स्याही । ४ कलम । पैसिल ।

वर्णित (व० क०) १ रंग हुआ । रोगन किया हुआ । २ निरूपित । वर्णन किया हुआ । ३ प्रशंसित । सराहा हुआ ।

वर्णिन् (वि०) १ रंग या रूप सम्पन्न । २ किमी वर्ण या जाति का । (पु०) १ चित्तेरा । रंग-साज । २ लेखक । ३ ब्रह्मचारी । ४ मुख्य चार वर्णों में से किसी वर्ण का पुरुष ।—लिगिन्, (वि०) वनावटी रूप धारण किये हुए ब्रह्मचारी । [यथा—

२ वर्णलिङ्गा विदिनः समाप्रदी,
गणेशिर्द्वैतनि जनेचरः ॥

—किरागर्जुनीध ।

वर्णिनी (स्त्री०) १ स्त्री । २ चार वर्णों में से किसी भी वर्ण की स्त्री । ३ हल्दी ।

वर्णः (पु०) सूर्य ।

वर्ण्य (वि०) वर्णन करने योग्य ।

वर्ण्य (न०) कुङ्कुम । केसर ।

वर्तः (पु०) आजीविका । माश ।—जन्मन्, (पु०) बादल ।—नोहं, (न०) फूल । कौसा ।

वर्तक (वि०) जीवित । जिंदा । वर्तमान ।

वर्तकः (पु०) १ बटेर । २ धोड़े का लुर ।

वर्तकं (न०) फूल । कौसा ।

वर्तका (स्त्री०) तीतर । बटेर ।

वर्तन (वि०) १ रहने वाला । जीवित । २ अचल ।

वर्तनं (न०) १ नजीब । जीवधारी । २ वासी । निवासी । ३ जीवित रहने का ढंग । ४ निर्वाह । ५ आजीविका । ६ पेशा । धंधा । ७ चरित्र व्यवहार । कार्यवाई । ८ मजदूरी । वेतन । भाड़ा । ९ अवसाय । व्यापार । १० तकुआ । ११ गोला गेंद ।

वर्तनः (पु०) बीना ।

वर्तनिः (पु०) १ भारत का पूर्वी अंचल । पूर्वी देश । २ खव । खोत्र ।

वर्तनिः (स्त्री०) रान्ता । सबक । राह ।

वर्तनी (स्त्री०) १ रास्ता । मार्ग । २ जीवन । जिंदगी । ३ कूटना । पीसना । ४ तकुआ ।

वर्तमान (वि०) १ विद्यमान । मौजूद । २ जीवधारी । जिंदा । सहयोगी । ३ घूमने वाला । फिरने वाला ।

वर्तमानः (पु०) व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक जिसके द्वारा सूचित किया जाता है कि, क्रिया अभी चली चलती है और समाप्त नहीं हुई।

वर्तनकः (पु०) १ पोखर। गडैया। २ भवर। ३ कौवे का घोंसला। ४ द्वारपाल। ५ एक नदी का नाम।

वर्तिः (स्त्री०) १ गद्दी। वह बत्ती जो वैद्य घाव वर्ती में देता है। लपेटा। २ अंजन। मलहम। ३ लैप या दीपक की बत्ती। ४ किसी कपड़े के छोरों के सूत जो बुने न गये हों। ५ जादू का दीपक। ६ बर्तन के चारों ओर को बाहिर निकला हुआ किनारा। ७ जराही औजार। ८ धारी। रेखा।

वर्तिकः (पु०) तीतर। बटेर।

वर्तिका (स्त्री०) १ चितरे की कूची। २ दीपक की बत्ती। ३ रंग। रोगन। ४ तीतर। बटेर।

वर्तिन् (वि०) [स्त्री०—वर्तिनी] १ स्थित रहने वाला। २ बर्तनशील। ३ धूमने वाला।

वर्तिरः } (पु०) एक प्रकार का तीतर।
वर्तीरः }

वर्तिष्णु (वि०) १ धूमने वाला। २ गोल। चक्रदार।

वर्तुल (वि०) गोलाकार। गोल।

वर्तुलः (पु०) १ मटर। २ गोला। गेंद।

वर्तुलं (न०) चक्र। वृत्त। परिधि।

वर्तन् (न०) १ राह। रास्ता। सड़क। पगडंडी। २ (आर्त्त०) चलन। रस्म। पद्धति। ३ स्थान। कार्य करने की समाई। ४ पलक। ५ किनारा। कोर।—पातः, (पु०) रास्ता भटक जाना।—वन्धः,—वन्धकः, (पु०) पलकों का रोग विशेष।

वर्तुनिः } (स्त्री०) रास्ता। सड़क।
वर्तुनी }

वर्ध (धा० उभय०) [वर्धयति, वर्धयते] १ काटना। विभाजित करना। कतरना। २ भरना। परिपूर्ण करना।

वर्ध (न०) १ सीसा। २ ईगुर। सेंदूर।

वर्ध (पु०) १ काट। तराश। विभाजन। २ वृद्धि। सम्पत्ति वृद्धि।

वर्धकः } (पु०) बढ़ाई, तलक।
वर्धकिः }
वर्धकिन् }

वर्धन (वि०) १ बढ़ाने वाला। उन्नति करने वाला।

वर्धनं (न०) १ वृद्धि। बढ़ती। २ उन्नयन। ३ सजीवता। ४ शिक्षण। पोषण। ५ काट।

वर्धनः (पु०) १ समृद्धिदाता। २ वह दाँत जो दाँत के ऊपर उगता है। ३ शिव जी। विभाजन।

वर्धनी (स्त्री०) १ बुहारी। माबू। २ विशिष्ट रूप सम्पन्न जलघट।

वर्धमान (वि०) बढ़ने वाला। बढ़ता हुआ।

वर्धमानः (पु०) } १ विशेष रूप की बनी तश्तरी
वर्धमानं (न०) } या पात्र। टुकन। १ तांत्रिक चित्र। ३ घर जिसका दरवाज़ा दक्षिण दिशा की ओर न हो।

वर्धमानः (पु०) १ रेड़ी का पौधा। २ पहेली। बुझौवल। ३ विष्णु का नाम। ४ बंगाल के एक ज़िले का नाम। (वर्द्धमान जिला)।

वर्धमाना (स्त्री०) बंगाल के एक ज़िले का नाम।

वर्धमानकः (पु०) तश्तरी। मिट्टी का प्याला। सकोरा।

वर्धापनं (न०) १ काटना। तराशना। विभाजन। २ नाड़ा काटने की क्रिया या इसका संस्कार विशेष। नालच्छेदन संस्कार। ३ वर्षगाँठ का उत्सव। ४ कोई भी उत्सव।

वर्धित (व० कृ०) १ बढ़ा हुआ। वृद्धि को प्राप्त। २ बढ़ा हुआ।

वर्ध (न०) १ चमड़े का तस्मा या बद्धि। २ चमड़ा। ३ सीसा।

वर्धिका } (स्त्री०) तस्मा। चमड़े का बंधन।
वर्धी }

वर्मन् (न०) १ कवच। बल्लतर। २ झाल। गूहा। (पु०) क्षत्रिय सूचक उपाधि।—हर, (वि०) १ कवचधारी। २ इतना बड़ा कि जो कवच धारण करने या युद्ध में भाग लेने को असमर्थ हो।

वर्मणः (पु०) नारंगी का पेड़ ।
 वर्मिः (पु०) मत्स्य विशेष ।
 वर्मित (वि०) वर्म था कवचधारी ।
 वर्म्य (वि०) १ चुनने योग्य । २ सर्वोत्तम । मुख्य ।
 प्रधान ।
 वर्म्यः (पु०) कामदेव ।
 वर्म्या (स्त्री०) १ वह लड़की जो स्वयं अपना पति
 वरण करे । २ लड़की ।
 वर्म्यट (न०) देखो वर्मट ।
 वर्मण (स्त्री०) दाँवा वर्मणा ।
 वर्मर (वि०) १ हकलाने वाला । २ धुंधराला ।
 वर्मरः (पु०) १ जंगली । २ मूर्ख । गण्डमूर्ख । ३
 पतित । ४ धुंधराले बाल । ५ हथियारों की खटा-
 पटी या भंकार । ६ नृत्य विशेष ।
 वर्मरं (न०) १ गोपीचन्दन । पीलाचन्दन । २
 हिंगुल । ईंगुर । ३ लोबान । गूगुल ।
 वर्मरा } (स्त्री०) १ मक्खी विशेष । २ तुलसी ।
 वर्मरी }
 वर्मरकं (न०) चन्दन विशेष ।
 वर्मरीकः (पु०) १ धुंधराले बाल । २ तुलसी । ३
 झाड़ी विशेष ।
 वर्मरः } (पु०) बबर नामक वृक्ष ।
 वर्मरः }
 वर्षः (पु०) १ वर्षा । पानी की झड़ी । २
 वर्ष (न०) १ छिड़काव । ३ वीर्य का बहाव या
 ढरकाव । ४ साल । ५ पुराणानुसार सातद्दीपों
 का एक विभाग । ६ हिन्दुस्तान । भारतवर्ष । ७
 बादल (केवल पु० में) ।—अंशः,—अंशकः,
 अङ्गः, (पु०) मास । महीना । अम्बु, (न०)
 वृष्टि का जल ।—अयुतं, (न०) दस हजार ।—
 अर्चिस्, (पु०) मङ्गलग्रह ।—अवसानं, (न०)
 शरदऋतु ।—आद्योषः, (पु०) मँडक ।—
 आम्रदः, (पु०) मयूर । मोर ।—उपलः,
 (पु०) ओला ।—करः, (पु०) बादल ।—
 करी, (स्त्री०) किल्ली । कींगुर ।—कोशः,
 —कोषः, (पु०) १ मास । २ ज्योतिषी ।—

—गिरिः,—पर्वतः, (पु०) पर्वत विशेष ।—
 जः, (= वर्षेज) (वि०) बरसान में उत्पन्न ।
 —धरः, (पु०) १ बादल । २ हिजड़ा ।—
 प्रतिबंधः, (पु०) मूला । अनावृष्टि ।—प्रियः,
 (पु०) चानक पत्ती ।—वरः, (पु०) खोजा ।
 --वृद्धिः, (स्त्री०) वर्षगांठ ।—शतं, (न०)
 शताब्दी । सही । सौ वर्ष ।—सहस्रं, (न०)
 एक हजार वर्ष ।

वर्षक (वि०) बरसने वाला ।
 वर्षण (न०) १ वर्षा । वृष्टि । २ छिड़काव ।
 वर्षणिः (स्त्री०) १ वृष्टि । २ यज्ञ । यज्ञीय कर्म ।
 ३ क्रिया । ४ वर्जन । व्यवहार ।
 वर्षा (स्त्री०) १ वर्षाऋतु । बरसान का मौसम । २
 पीड़ा ।—कालः, (पु०) वर्षाती मौसम ।—भूः,
 (पु०) मँडक । २ बीरबहूटी । इन्द्रगोप ।—भूः,
 —भूमी, (स्त्री०) मँडकी ।—रात्रः, (पु०)
 १ वर्षाऋतु ।

वार्षिक (वि०) बरसाती । बरसने वाला ।
 वार्षिकं (न०) अगर की लकड़ी ।
 वर्षितं (न०) वृष्टि । वर्षा ।
 वर्षिष्ठ (वि०) १ बहुत बड़ा । २ बहुत मज़बूत । ३
 सब से बड़ा ।
 वर्षीयस् (वि०) [वर्षीयसी] १ बहुत बड़ा या पुराना ।
 २ दृढ़तर ।

वर्षुक (वि०) [स्त्री०—वर्षुकी] बरसने वाला ।
 पनीला । पानी उड़ेलने वाला ।—अम्रदः,—
 अम्बुदः, (पु०) बादल । जल बरसाने वाला ।
 वर्ष्म (न०) वपु । शरीर ।
 वर्ष्मन् (न०) १ शरीर । देह । २ माप । ऊँचाई । ३
 सुन्दर रूप ।

वर्ह }
 वर्ह } (पु०) देखो वर्ह, वर्ह, वर्हण, वर्हिण,
 वर्हण } बर्हिन्, बर्हिस् ।
 वर्हिण }
 वर्हिन् }
 वर्हिस् }
 वल (ध० आ०) [चलते] १ जाना । समीप
 जाना । २ धूमना । ३ बढ़ाना । ४ (किसी ओर)

आकर्षित होना । २ ढकना । लपेटना । ३ घिर जाना । लपेटा जाना ।

बलं (न०) देखो बल ।

बलत्त (न०) देखो बलत्त ।

बलग्नः (पु०) } कमर ।
बलग्नः (न०) }

बलनं (न०) १ धुमाव । फिराव । २ फेरा । कावा । ३ विषयगमन । पार्वं विचरख । विचलन ।

बलभिः () (स्त्री०) १ बलुवा कृत । २ ऊपर का बलभी } ठाठ । ३ घर का सब से ऊँचा भाग । ४ काठियावाड़ प्रान्त की एक प्राचीन नगरी का नाम ।

बलम्ब () (न०) देखो अवलम्ब ।

बलयः (पु०) } १ कंकण । बाजूबंद । २ छल्ला ।
बलयं (न०) } गड़री । ३ कमरपेटी । इजारबंद । ४ घेरा । कुंज ।

बलयः (पु०) १ किनारी । छोर । २ गलगण्ड रोग विशेष ।

बल्यति (वि०) घेरा हुआ । लपेटा हुआ । वेष्टित ।

बलाक देखो बलाक ।

बलाकिन देखो बलाकिन ।

बलासकः (पु०) १ कायल । २ मेंढक ।

बलाहक देखो बलाहक ।

बलिः () (स्त्री०) १ सिकुड़न । झुर्री । २ चर्म पर बली } की सुइय । पेट के दोनों ओर पेटी के सुइयों से पड़ी हुई लकीर । ३ ऊपर की बढरी ।—भृत्, (वि०) धुवराले ।—मुखः, —वदनः, (पु०) बानर । बंदर ।

बलिकं (पु०) } ऊपर की बढियारी ।
बलिकः (न०) }

बलित (व० कृ०) १ गतिशील । २ घूमा हुआ । मुड़ा हुआ । ३ घिरा हुआ । लपटा हुआ । ४ झुर्री पड़ा हुआ ।

बलिन () (वि०) झुर्री पड़ा हुआ । बिखरा हुआ ।
बलिन ()

बलिमत् (वि०) झुर्री पड़ा हुआ ।

बलिर (वि०) ऐंछाहाना । झेंडी धाँल जाना । झेंडा ।

बलिशं (पु०) } बंसी । मङ्गली पकड़ने का
बलिशी (स्त्री०) } काँटा ।

बलीकं (न०) कृत की बढरी ।

बलूकः (पु०) पत्थी विशेष ।

बलूकं (न०) कमल की जड़ । भसीड़ा ।

बलूल (वि०) मज्जवृत । रोवाला । हृष्टपुष्ट ।

बलूक (धा० उभ०) [बलूकयति, —बलूकयते]
बोलना ।

बलूकं (पु०) } १ पंख की छाल । बलूकल । २
बलूकः (न०) } मङ्गली के शरीर का आवरण या पपड़ी । ३ लयक । टुकड़ा ।—तदः, (पु०) वृक्ष विशेष ।—लोधः, (पु०) पठानी लोध ।

बलूकल (न०) } १ वृक्ष की छाल । २ छाल के
बलूकलः (पु०) } बने वस्त्र ।—संवीत, (वि०) बलूकलवस्त्रधारी ।

बलूकवत् (वि०) मङ्गली जिसके शरीर पर पपड़ी हो ।

बलूकलः (पु०) काँटा ।

बलूकटं (न०) छाल । गुदा ।

बल्य (धा० उ०) [बल्यति, —बल्यते, बल्यत]
१ जलना । हिलाना । २ उड़लना । उड़ल उड़ल कर चलना । ३ नाँचना । ४ प्रसन्न होना । ५ खाना भोजन करना । ६ ढींगे मारना । शेखी बघारना ।

बल्यनं (न०) उड़ाल । फलांग । हुलकी चाल ।

बल्य (स्त्री०) लगाम । रास ।

बल्यित (व० कृ०) १ कूदा हुआ । उड़ला हुआ । नचाया हुआ ।

बल्यितं (न०) १ घोड़े की हुल्की या सरपट चाल । २ ढींग । शेखी ।

बल्यु (वि०) १ प्यारा । मनोहर । मनोज्ञ । चित्त-कर्षक । २ मधुर । ३ वेशकीमती । बहुमूल्यवान् ।

बल्युः (पु०) बकरा ।—पत्रः, (पु०) वनमूँग ।

बल्युक (वि०) सुन्दर । मनोहर । खूबसूरत ।

बल्युकं (न०) १ चन्दन । २ क्रोमट । ३ जंगल ।

बल्युलः (पु०) शृगाल । शीदक ।

वल्गुलिका (स्त्री०) १ कथई रंग का पतंग जाति का कीट; जिसका दूसरा नाम तैलपायी है। २ मंजूपा। पेटीया पिडारा।

वल्भ (धा० आ०) (वल्भते) १ खाना। भक्षण करना।

वल्भिक (धा० आ०) (वल्भते) १ वल्भिक।

वल्मी (स्त्री०) चेंदी।—कूटं, (न०) दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर।

वल्मीकं (पु०) } दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी
वल्मीकः (न०) } का ढेर। विमौट।

वल्मीकः (पु०) १ शरीर के कतिपय अंगों की सूजन। फोलापा का रोग। २ आदि कति बाल्मीकि।—
शीर्ष (न०) सुर्मा विशेष। लालसुर्मा। खोताजन।

वल्थुल (धा० आ०) [वल्थुलयति] १ काट
वल्थुल (धा० आ०) [वल्थुलयति] १ काट
वल्थुल (धा० आ०) [वल्थुलयति] १ काट
वल्थुल (धा० आ०) [वल्थुलयति] १ काट

वल्थु (धा० आ०) [वल्थुते] १ ढकना। २ ढका।
जाता। ३ गमन करना।

वल्थः (पु०) १ चादर। उवार। गिलाफ। २ तीन
घुंघची के बराबर की तौल। ३ दूसरी तौल जिसमें
एक या डेढ़ घुंघची पड़ती है। ४ वर्जन। निवेध।

वल्थकी (स्त्री०) बीणा। बीन।

वल्थभ (वि०) १ प्यारा। वाञ्छनीय। २ सर्वोपरि।

वल्थभः (पु०) १ प्रेमी। पति। २ चहीता। प्रेमपात्र।
३ अन्धक। पर्यवेक्षक। ४ मुख्य या प्रधान ग्वाला
या गोप। ५ शुभलक्षण युक्त अथवा बड़ा।—
आचार्यः, (पु०) चार वैष्णव सम्प्रदायों में से
एक सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य का नाम।—
पालः, (पु०) घोड़े का सईस।

वल्थभाषितं (न०) रतिक्रिया का आसन विशेष।

वल्थरिः (स्त्री०) १ लता। बेल। २ मंजरी।

वल्थवः (पु०) [स्त्री०—वल्थवी] देखो वल्थवः।

वल्थिः (स्त्री०) १ बेल। २ मिट्टी।—दूर्वा, (स्त्री०)
एक प्रकार की घास।

वल्थी (स्त्री०) १ बेल। लता।—जं, (न०)
मिर्च।—वृत्तः (पु०) साख का पेड़।

वल्थुरं (न०) १ लता कुच्छ। लतामयउप। २
पवन। ३ मंजरी। ४ अनजुता खेल। ५ रोगस्थान।
वीरान। जंगल। ६ सूखी मल्लकी।

वल्थुरं (न०) १ उपवन। २ रोगस्थान। धन। ३
अनजुता खेल।

वल्थुरः (पु०) १ मूला मौस। २ जंगली शूकर का
मौस।

वल्थु (धा० आ०) [वल्थुते] १ बसिद्ध होना। २
ढकना। ३ भारना। चोटिल करना। ४ बोलना।
५ देना।

वल्थिक (धा० आ०) [वल्थुते] १ बसिद्ध होना। २
ढकना। ३ भारना। चोटिल करना। ४ बोलना।
५ देना।

वल्थि (धा० आ०) [वल्थुते] १ चाहना। २
अनुकंपा करना। ३ चसकना।

वल्थ (वि०) १ कावु में आया हुआ। अधीन। २
आज्ञाबुद्धी। फर्मावदार। ३ नीचा दिग्गताया
हुआ। नम्र किया हुआ। ४ जादू रोता से
वल्थ में किया हुआ।—अनुग,—अतिन, (पु०)
चाकर। नौकर।—आख्यकः, (पु०) सूँस।
शिथुमार।—गा, (स्त्री०) आज्ञाकारिणी स्त्री।

वल्थ (पु०) १ इच्छा। कामना। अभिलाषा।
वल्थः (न०) १ सङ्कल्प। २ शक्ति। प्रभाव। विध्वंस्य।
प्रभुत्व। स्वामित्व। अधिकार। वल्थतित्व।
अधीनताई। ३ उत्पत्ति।

वल्थः (पु०) रंढियों का चकला। रंढीखाना।
वल्थवद् (वि०) १ वशीभूत। वल्थवर्ती। २ आज्ञाकारी।
दास।

वल्थका (स्त्री०) आज्ञाकारिणी स्त्री।

वल्था (स्त्री०) १ औरत। २ पत्नी। ३ लड़की। ४
ननद। पति की बहिन। ५ गौ। ६ बाँध स्त्री। ७
बाँध गौ। ८ हथिनी।

वल्थिः (पु०) १ अधीनताई। २ मनमोहकता। (न०)
वल्थित्व।

वल्थिक (वि०) शून्य। रहित। रीता। झांझी।

वल्थिका (स्त्री०) अगल की लकड़ी।

वल्थिन् (वि०) [स्त्री—वल्थिनी] १ ताकतवर। २
अधीन। ३ इन्द्रजीत।

वल्थिनी (स्त्री०) शमी या छेंकुर का पेड़।

वशिरं (न०) समुद्री निमक ।

वशिरः (पु०) मिर्चा ।

वशिष्टः (पु०) देखो वसिष्ठः ।

वश्य (वि०) १ वश करने योग्य । वश में किया हुआ ।

जीता हुआ । ३ निर्मन्त्रित । आज्ञाकारी । अवलम्बित

वश्यं (न०) लयंग ।

वश्यः (पु०) दास । अनुचर ।

वश्या (स्त्री०) आज्ञाकारिणी स्त्री ।

वश्यका (स्त्री०) देखो वश्या ।

वष् (धा० ष०) [वपति] १ अनिष्ट करना । चोटिल करना । वध करना ।

वषट् (अव्यया०) एक शब्द जिसका उच्चारण अग्नि में आहुति देते समय यज्ञों में किया जाता है ।—

[वया—इन्द्राय वषट् । पुष्ये वषट्]

कर्तृ, (पु०) ऋविज जो वषट् उच्चारण पूर्वक आहुति दे ।

वष्क (धा० आ०) [वष्कते] जाना । चलना ।

वष्कयः (पु०) एक वर्ष का बड़वा ।

वष्कयणी } (स्त्री०) चिरप्रसूता गौ । बहुत दिनों
वष्कयिणी } की व्याधी हुई गौ या वह गाय जिसका
बड़वा बहुत बड़ा हो गया हो ।

वस् (धा० ष०) [वसति, कभी कभी वंसते रूप भी होता है ।] १ बसना । २ होना । ३ तेज़ी से गुज़रना ।

वसतिः } (स्त्री०) १ रहाइस । वास । २ घर ।

वसती } वासा । डेरा । बस्ती । ३ आधार । ४

शिविर । ५ रात (जब सब लोग अपना अपना सफर बंद कर दिक् जाते हैं ।)

वसन्तं (न०) १ वास । रहल । २ घर । वासा । ३

वस्त्रधारण करने की क्रिया । ४ वस्त्र । परिधान ।

५ करधनी । स्त्रियों की कमर का एक आभूषण ।

वसंतः } (पु०) १ वर्ष की छः ऋतुओं में से

वसन्तः } प्रथम ऋतु, जिसके अन्तर्गत चैत्र और

वैशाख मास हैं । मौसम बहार । २ सूर्यमान ऋतु

जो कामदेव का सखा माना गया है । ३ अतीसार

रोग । ४ शीतला या चेचक की बीमारी । ५ मसू-

रिका रोग ।—उत्सवः, (पु०) उत्सव विशेष

जो प्राचीन काल में वसन्त पञ्चमी के अगले दिन

मनाया जाता था । इसी उत्सव का दूसरा नाम

“मदनोत्सव” है । आधुनिक पण्डित होली के

उत्सव को ही वसन्तोत्सव कहते हैं ।—शोषिन्,

(पु०) कोयल ।—जा, (स्त्री०) वासन्ती या

माधवीलता । २ वसन्तोत्सव ।—तिलकः, (पु०)

—तिलकं (न०) वसन्त का आभूषण ।

‘कुलं वसन्तं तिलकं तिलकं जगत्पतिः ।’

सुन्दोमञ्जरी ।

—तिलकः (पु०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक

—तिलका (स्त्री०) चरण में लगाने, भगण, जगण

—तिलकं (न०) भगण और दो गुरु—इस

तरह सब मिलाकर चौदह वर्ण होते हैं ।—दूतः

(पु०) १ कोयल । २ चैत्र मास । ३ आम का

वृक्ष ४ पंचमराग ।—दूती, (स्त्री०) १ पारल-

पुष्प । दुः, —दुमः (पु०) आम का पेड़ ।

—पञ्चमी, (स्त्री०) माघशुक्ला ५मी ।—वन्धुः,

—स्वः, (पु०) कामदेव का नाम ।

वसा (स्त्री०) १ मेढ़ । चरबी । २ मस्तिष्क ।

आढ्यः,—आढ्यकः, (पु०) गङ्गा में रहनेवाली

सूँस या शिशुमार ।—पाथिन् (पु०) कुत्ता ।

वसिः (पु०) १ वस्त्र । २ वासा । डेरा । रहने का

स्थान ।

वसित (व० कृ०) १ पहिना हुआ । धारण किया

हुआ । २ वसा हुआ । ३ जमा किया हुआ

(अनाज) ।

वसिरं (न०) समुद्री निमक ।

वसिष्ठः (पु०) [इसका वशिष्ठ भी रूप होता है]

१ एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो सूर्यवंशी राजाओं

के गुरोहित थे । २ एक स्मृतिकार ऋषि का

नाम ।

वस्तु (न०) १ धनदौलत । २ रत्न । जवाहर ।

३ सुवर्ण । ४ जल । ५ पदार्थ । वस्तु ६ लवण-

विशेष । ७ एक जड़ी विशेष । (पु० बहुवचन)

१ एक श्रेणी के देवताओं की संज्ञा । वस्तु आठ

माने गये हैं (उनके नाम—आप । ध्रुव । सोम ।

धर या धव । अनिल । अनल । प्रत्यूष । और

प्रभास । कहीं कहीं “आप” के बजाय “अह”

भी लिखा पाया जाता है ।) २ आठ की संख्या ।

३ कुबेर का नाम । ४ शिवजी का नाम । ५ अग्नि

वस्त्रनं (न०) पट्टिका । कमरबंद । करधनी ।

वस्त्रसा (स्त्री०) स्नायु । अतङ्गी । नारा ।

वंह (धा० उ०) [वंहाति—वंहाते] प्रकाशित कर-
वाना । चमकवाना ।

वंह (धा० उ०) [वंहाति—वंहाते, ऊह] १ ले
जाना । होना । चोकर पहुँचाना । २ आगे बढ़-
वाना । ३ जाकर लगना । ४ समर्थन करना ।
५ निकाल ले जाना । ६ विवाह करना ।
७ अधिकार में कर लेना । कब्जा कर लेना । ८
प्रदर्शित करना । दिखलाना । ९ रखवाली करना ।
खबरदारी करना । खबर लेना । १० अनुभव
करना । सहना ।

वंहः (पु०) १ समर्थन । ले जाने की क्रिया । २ बैल
का कंधा । ३ वाहन । सवारी । ४ विशेष कर
बोटा । ५ हवा । पवन । ६ मार्ग । सड़क । ७
नद । ८ चार द्रोण भर का एक नाप ।

वंहतः (पु०) १ यात्री । २ बैल ।

वंहातिः (पु०) १ बैल । २ हवा । पवन । ३ मित्र ।
परामर्शदाता । सहायकार ।

वंहती } (स्त्री०) १ नदी । चरमा । सोता ।
वंहा }

वंहतुः (पु०) बैल ।

वंहनं (न०) १ ले जाना । पहुँचाना । २ समर्थन । ३
वहाव । ४ सवारी । ५ नाव । बेड़ा ।

वंहंतः } (पु०) १ हवा । २ बच्चा ।
वंहनः }

वंहल देखो वंहल ।

वहित्रं (न०) }
वहित्रकं (न०) } बेड़ा । नाव । जहाज । पोत ।
वहिनी (स्त्री०) }

वहिष्क (वि०) बाहिरी । बाहिर का ।

वहेडुकः (पु०) वहेड़ा या विभीषक का पेड़ ।

वह्निः (पु०) १ अग्नि । आग । २ अन्नपचाने या
जो खाया जाय उसे पचाने वाली शक्ति । ३
हाज़मा । भूख । ४ सवारी ।—कर, (वि०)
जलाने वाला । सूख बढ़ाने वाला ।—काष्ठं,
(न०) अगुरु की लकड़ी ।—गर्भः, (पु०) १

बाँस । २ शमी का पेड़ ।—दीपकः, (पु०)
कुसुम का पेड़ ।—मोय्यं, (न०) घी ।—मित्रः,
(पु०) पवन । हवा ।—रेतस्, (पु०) शिव
जी ।—लोहं,—लोहकं, (न०) ताँवा ।—
वल्हभः, (पु०) रत्न ।—वीजं, (न०) १ सुवर्ण
२ नीव ।—शिल्पं, (न०) १ केसर । २ कुसुम ।
—सखः, (पु०) पवन ।—संज्ञकः, (पु०)
चित्रक का पेड़ ।

वह्यं (न०) १ गाड़ी । २ सवारी कोई भी ।

वह्या (स्त्री०) ऋषिपत्नी ।

वह्निहक } देखो वह्निहक, वह्नीक ।
वह्नीक }

वा (अन्धधा०) १ या । अथवा । २ और । तथा ।
भी । ३ जैसा । सदृश । ४ विकल्प या सन्देह-
वाचक ।

वा (धा० प०) [वाति, वात, या वान] १
फूंकना । धौंकना । २ जाना । ३ आवात करना
अनिष्ट करना ।

वांश (त्रि०) [स्त्री०—वांशी] बाँस का बना हुआ ।
वांशी (स्त्री०) बंसलोचन ।

वांशिकः (पु०) १ बाँस काटने वाला । २ बंसी बजाने
वाला । नफीरी बजाने वाला ।

वाकं (न०) सारसों की लड़ाई ।

वाकुल देखो वाकुल ।

वाक्यं (न०) १ भाषण । शब्द । वाक्य । कथन ।
जो बोला जाय । २ आदेश । आज्ञा । सिद्धान्त ।
—पदीयं, (न०) एक ग्रन्थ का नाम जो भर्तृ-
हरि का बनाया हुआ बतलाया जाता है ।—
पद्धतिः, (स्त्री०) वाक्यरचना की विधि ।—
भेदः, (पु०) मीमांसा के एक ही वाक्य का
एक ही काल में परस्पर विरोधी अर्थ करना ।

वागरः (पु०) १ मुनि । ऋषि । २ विद्वान् ब्राह्मण ।
परिहृत । ३ वीरपुरुष । शूरवीर । ४ सान रखने
का पथर । ५ रोक । अड़चन । ६ निश्चय ।
निर्यय । ७ वाङ्मालज । ८ भेड़िया ।

वागा (स्त्री०) बागडोर । लगाम । रास्स ।

वायुरा

(७४१)

वाच्

वायुरा (स्त्री०) फंदा । जाल । लासा । —वृत्तिः, (स्त्री०) जंगली जीवों को पकड़ कर आजीविका करने वाला । —वृत्तिः, (पु०) बहेलिया । बधिक ।

वायुरिकः (पु०) बहेलिया । चिहीमार । हिरन पकड़ने वाला ।

वाग्मिन् (वि०) १ वाक्पटुता । वाग्मिता । २ बान्नी । ३ बहुवाक्य । (पु०) १ वक्ता । वाग्मी । वाक्पटु मनुष्य । २ बृहस्पति का नाम ।

वाग्य (वि०) १ कम बोलने वाला । बोलने सनय सावधानी करने वाला । २ यथाथं भा सत्य कहने वाला ।

वाग्यः (पु०) लज्जाशीलता । विनम्रता ।

वाक् : } (पु०) समुद्र ।
वाङ्कः }

वाच् (धा० प०) [वाचति] अभिव्यक्ति करना । बोलना ।

वाङ्मय (वि०) [स्त्री०—वाङ्मयी] १ शब्दमयी । २ वाक्यात्मक वचन सम्बन्धी । ३ वाणीसम्पन्न । ४ वाक्पटु ।

वाङ्मयं (न०) १ भाषा । वाणी । २ वाक्पटुता । ३ अलङ्कार शास्त्र ।

वाङ्मयी (स्त्री०) सरस्वती देवी ।

वाच् (स्त्री०) १ शब्द । ध्वनि । वाणी । भाषा । २ कहावत । कहतूत । ३ वचन । ४ वादा । इकरार । ५ सरस्वती का नाम । —अर्थः, (पु०) (= वागर्थः) शब्द और उसका अर्थ । —आङ्-वरः, (= वागाङ्गवरः) बहुवाक्यता । बहु-शब्दत्व । —आत्मन्, (= वागात्मन्) (वि०) शब्दों से सम्पन्न । —ईशः, (= वागीशः) (पु०) १ वाग्मी । वक्ता । २ बृहस्पति का नामान्तर । ३ ब्रह्मा । —ईश्वरः, (= वागीश्वरः) १ वाक्पटु । वक्ता । —ईश्वरी (स्त्री०) सरस्वती । —ऋषभः (= वागृषभः) (पु०) वाक्पटु या विद्वान् पुरुष । —कलहः, (= वाक्कलहः) झगडा । टंटा । वाक्कुल । —कीरः, (= वाक्कीरः)

(पु०) पर्वी का भाई । साला । —शुभः, (= वाग्शुभः) (पु०) पर्वी विशेष । —गुणः, —गुणिकः, (= वाग्गुणः, = वाग्गुणिकः) (पु०) राजा का वह अनुचर जो इनको राज का याज्ञा बिल्लाया करे । —वपनः, (वि०) (= वाक्-वपनः) बकी । बान्नी । —वृत्तः, (= वाक्वृत्तः) बान्नी चालाकी । —जालं (= वाग्जालं) (न०) कोरी बातचीत । —इन्द्रः (= वाग्इन्द्रः) (पु०) १ विकार । फटकार । २ वाक्संयम । —दत्ता, (= वाग्दत्ता) प्रतिज्ञात । —दत्ता, (स्त्री०) (= वाग्दत्ता) सगाई की हुई कारी लड़की । —दत्तं, (= वाग्दत्तं) (न०) ओठ । —दानं, (न०) (= वाग्दानं) सगाई । सगनी । —दुष्ट (= वाग्दुष्ट) (वि०) गाली गलौज से भरा हुआ । वह जो व्याकरण के नियमों के विरुद्ध अशुद्ध भाषा का प्रयोग करे । —दुष्टः, (= वाग्दुष्टः) (पु०) १ निन्दक । २ वह ब्राह्मण जिसका अज्ञोपवीत समय पर न हुआ हो । —देवता, —देवी, (= वाग्देवता, वाग्देवी) (स्त्री०) सरस्वती देवी । —दोषः, (= वाग्दोषः) (पु०) १ गाली । निन्दा । व्याकरण विरुद्ध भाषण निवन्धन, (वि०) शब्दों पर निर्भर रहने वाला । —निश्चयः, (= वाग्निश्चयः) सगाई । —निष्ठा, (= वाङ्निष्ठा) वचनपालन । —पटुः, (वि०) (= वाक्पटुः) वाक्पटुपण्य । —रतिः, (पु०) (= वाक्पतिः) बृहस्पति । —प्राख्यं, (न०) (= वाक्प्राख्यं) कठोर शब्द । गाली गलौज । निन्दा । —प्रचोदनं, (न०) (= वाक्प्रचोदनं) मौखिक आज्ञा । प्रमोदः, (पु०) व्यङ्ग्य । कटाक्ष । आक्षेप । —प्रलापः, (= वाक्प्रलापः) वाक्पटुता । —मनसे, (द्विवचन) (= वाङ्मनसी) वैदिक) वाणी और मन । —मार्गः, (= वाङ्मार्गः) (न०) शब्द मात्र । —मुखं, (= वाङ्मुखं) (न०) भूमिका । —वृत्त, (वाग्वृत्त) मौन या वह जिसने अपनी वाणी को वश में कर रखा हो । —यामः, (= वाग्यमः) वाणी को संयम में करने वाला । ऋषि । मुनि । —यामः, (= वाग्यमः) (पु०)

रंगा आदमी ।—युद्धं (=वायुद्धं) जवानी लड़ाई । गरम बहस या वादविवाद ।—वज्रः, (=वाग्बज्रः) (पु०) १ शय । अकोसा २ कठोर शब्द ।—विदग्धः, (=वाग्विदग्धः) वाक्पटु । घोस चाल में निपुण ।—विदग्धा, (=वाग्विदग्धा) (स्त्री०) मधुरभाषिणी या मनोमोहिनी स्त्री ।—विभवः, (=वाग्विभवः) (पु०) वर्णन करने की शक्ति ।—विलासः, (=वाग्विलासः) गौरवमयी वाणी ।—व्यवहारः, (=वाग्व्यवहारः) (पु०) मौखिक वादविवाद । जवानी बहस ।—व्यापारः, (पु०) (=वाग्व्यापारः) १ बोलने की शैली या ढंग ।—संयमः, (पु०) (=वाक्संयमः) वाणी का नियंत्रण ।

वाचः (पु०) १ मछली । २ मदन नामक पौधा ।

वाचंयम (वि०) जवान बन्द रखने वाला । मौनी ।

वाचंयमः (पु०) मौन रहने वाला मुनि ।

वाचक (वि०) बताने वाला । कहने वाला । सूचक । व्याख्याता ।

वाचकः (पु०) १ वक्ता । २ व्यञ्जक शब्द । पाठक । पाठ करने वाला । ४ संदेशा भेजाने वाला । क्रासिद्ध । दूत ।

वाचनं (न०) १ पाठ । २ वाच्यता । कथन ।

वाचनकं (न०) पहेली ।

वाचनिक (वि०) [स्त्री०—वाचनिकी] मौखिक । वाचिका शब्दों द्वारा प्रकटित ।

वाचरूपतिः (पु०) “वाणी का प्रभु”; देवगुरु बृहस्पति की उपाधि ।

वाचरूपत्यं (न०) वाक्पटुता । भाषण । उच्चस्वर से सुनाई हुई वक्तृता ।

वाचा (स्त्री०) १ वाणी । २ वाक् । वचन । शब्द । ३ सिद्धान्त । स्मृति या धृतिवाक्य । ४ शयन ।

वाचाट (वि०) बातूनी । बक्ती ।

वाचाल (वि०) बकवादी । व्यर्थ बकने वाला ।

वाचिक (वि०) [स्त्री०—वाचिकी, वाचिका] १

वाणी सम्बन्धी । वाणी से किया हुआ । शाब्दिक । ३ मौखिक ।

वाचिकं (न०) १ जवानी संदेश । मौखिक सूचना । २ समाचार । संवाद । खबर ।

वाचोयुक्ति (वि०) वाक्पटु ।

वाचोयुक्तिः (स्त्री०) घोषणा । वयान ।

वाच्य (वि०) १ कहने योग्य । जो कथन में आवे । २ शाब्दिक सङ्केत द्वारा जिसका बोध हो । ३ अभिधेय । ४ तिरस्करणीय । दोषी ठहराने लायक ।—वज्रं, (न०) कठोर शब्द ।

वाच्यं (न०) १ कलङ्क । भर्त्सना । निन्दा । २ अभिधा द्वारा बोधगम्य । २ विधेय । ४ क्रिया का वाच्य (क्रिया दो प्रकार की मानी गयी हैं । कर्म-वाच्य, कर्तृवाच्य)

वाजः (पु०) १ बाज । २ पर । डैना । ३ तीर में लगे हुए पर । ४ युद्ध । संग्राम । ५ ध्वनि । नाद ।

वाजं (न०) १ घी । २ आहुतिपिण्ड । ३ भोज्य पदार्थ । ४ जल । ५ वह स्तव या मंत्र जिसको पढ़ कर कोई ब्रह्म समाप्त किया जाय ।—पेयः, (पु०) —पेयं, (न०) एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात और यज्ञों में पाँचवाँ है ।—सनः, (पु०) १ श्रीविष्णु भगवान का नाम । २ शिव ।—सनिः, (पु०) सूर्य ।

वाजसनेयः (पु०) वाजवल्क्य का नाम । [यह ऋषि वे हैं, जिनके नाम से शुक्लयजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता प्रसिद्ध है ।]

वाजसनेयिन् (पु०) १ वाजवल्क्य ऋषि का नाम । २ शुक्लयजुर्वेदी ।

वाजिन् (पु०) १ घोड़ा । २ तीर । ३ पक्षी । यजुर्वेद की वाजसनेयी शाखा वाला । ४ शुक्ल यजुर्वेदी । —मेघः, (पु०) अश्वमेध यज्ञ ।—शाला, (स्त्री०) अस्तबल ।

वाजीकर (वि०) मनुष्य में वीर्य और पुंस्त्व की वृद्धि करने वाला ।

वाजीकरणः (पु०) आयुर्वेदिक वह प्रयोग जिससे मनुष्य में वीर्य और पुंस्त्व की वृद्धि होती है ।

वाङ् } (धा० प०) [वाङ्नि, वाङ्नि]
वाङ्क् } चाहना । इच्छा करना । कामना करना ।

वाङ्मन् } (न०) वाङ्मा । अभिलाषा । कामना ।

वाङ्मन् } (क्री०) इच्छा । अभिलाषा । कामना ।

वाङ्मन् } (व० कृ०) चाहना हुआ । अभिलषित ।

वाङ्मन् } (न०) कामना । इच्छा । अभिलाषा ।

वाङ्मन् } (वि०) १ चाहने वाला । कामना करने
वाङ्मन् } वाला । इच्छा करने वाला । २ लंपट ।

कामुक ।

वाट (न०) १ वेग । दान । २ दास । उद्दान ।

वाटः (पु०) १ लतामयडप । २ मार्ग । राह । रास्ता ।

३ कमर । कटि । कूहा । ४ अन्नाविशेष ।—

धानः (पु०) ब्राह्मणी माता और कर्महीन या

नाममात्र के ब्राह्मण से उत्पन्न एक पति या

सङ्कर जाति ।

वाटिका (स्त्री०) १ कुलवर्गिया । २ वह भूखण्ड

जिस पर कोई हमारत या भवन खड़ा हो ।

वाटी (स्त्री०) १ वह भूखण्ड जिस पर कोई भवन

खड़ा हो । २ घर । डेरा । ३ थाँगन । सहन ।

वेरा । ४ बाग । उपवन । कुञ्ज । ५ मार्ग । सड़क ।

६ कमर । कटि । अनाज विशेष ।

वाट्या (स्त्री०) १ अतिवृद्धा नाम का पौधा ।

वाट्याजी (स्त्री०) १ अतिवृद्धा नाम का पौधा ।

वाट्याजी (स्त्री०) १ अतिवृद्धा नाम का पौधा ।

वाणिजः (पु०) व्यापारी । सौश्राल ।

वाणिजः (न०) वणिज । व्यापार ।

वाणिनी (स्त्री०) १ चालाक औरत । २ लुप्तकी

अभिलष पात्री । ३ मगध के नद्यों में चुर स्त्री

स्वेच्छाचारिणी या व्यभिचारिणी स्त्री ।

वाणी (स्त्री०) १ वचन । शब्द । भाषा । २ वाच-

शक्ति । ३ नाद । ध्वनि । स्वर । ४ अन्ध । साहि-

न्यिक निरन्तर । ५ प्रशंसा । ६ मरुत्तरी देवी ।

वात् (धा० उभय०) [वातयति, वातयते] १

धुँकना । धुँकना । २ हवा करना । पंखा करना ।

३ परिचर्या करना । ४ प्रमथ करना । ५ जाना ।

वान (व० पु०) १ उड़ाया हुआ । फूँका हुआ । २

अभिलषित । वाचित ।—अष्टः, (पु०) १

वानसुग । वारहसिंगा । २ सूर्य के घोड़ों में से एक ।

—अष्टः, (पु०) अष्टकोप का रोग विशेष ।

—अष्टः, (न०) पत्ता ।—अष्टः, (पु०)

घोड़ा ।—अष्टः, (न०) १ खिड़की । झरोखा ।

रोशनदारो । २ बरसाती । घर के दरवाजे के आगे

की पटी हुई जगह । ३ कर्ष । गन्ध ।—अष्टः,

(पु०) वारहसिंगा ।—अष्टः, (पु०) तेज

घोड़ा ।—अष्टः, (स्त्री०) मुरक । कस्तुरी ।

—अष्टः, (स्त्री०) मुरक ।—अष्टः, (वि०) १

हिरन ।—मण्डली, (स्त्री०) १ बवंडर । हवा का चक्कर ।—रत्नं,—गोणितं, (न०) रोग विशेष ।—रोगः (पु०) दृष्टवृत्त ।—रूपः, (पु०) १ आँधी । तूफान । २ हृन्मधुप । ३ धूम । शिखर ।—रोगः,—व्याधिः, (पु०) गठिया ।—वस्तिः, (पु०) सूत्र का न उतरना ।—वृद्धिः, (स्त्री०) अण्डकोष की सूजन ।—शीर्ष, (न०) पेड़ । तरटे ।—सारथिः, (पु०) अग्नि ।

वातः (पु०) १ पवन । हवा । २ पवनदेव । वायु का अधिष्ठान् देवता । ३ शरीरस्थ कफ वात और पित्त में से दूसरा । ४ गठिया ।

वातकः (पु०) १ जार । आशिक । उपपत्ति । २ अशनपर्णी ।

वातकिन् (वि०) [स्त्री०—वातकिनी] गठिया वाला ।

वातमजः (पु०) तेज चलने वाला मृग ।

वातर (वि०) १ तूफानी । २ तेज ।—अयणः, (पु०) १ तीर । २ तीर का उड़ान । धनुष की टंकार । ३ शृङ्ग । शिखर । ४ आरा । ५ नशे में चूर या पागल मनुष्य । ६ ठलुथा । अकर्मस्थ आदमी । ७ सरल नामक वृक्ष ।

वातल (वि०) [स्त्री०—वातली] १ तूफानी । हवाई । २ वायुचर्क ।

वातलः (पु०) १ पवन । २ चना ।

वातापिः (पु०) अगस्त्य द्वारा पचाया हुआ राक्षस विशेष ।—द्विपः, (पु०)—सूदनः, (पु०)—हनु, (पु०) अगस्त्य जी की उपाधियाँ ।

वातिः (पु०) १ सूर्य । २ हवा । ३ चन्द्रमा ।—गः,—गमः, (पु०) मटा । बैगन । (वातिगण का भी अर्थ मटा है)

वातिक (वि०) [स्त्री०—वातिकी] १ तूफानी । हवाई । २ गठिया वाला । ३ पागल ।

वातिकः (पु०) वायु के प्रकोप से उत्पन्न ज्वर ।

वातीय (वि०) हवाई ।

वातीयं (न०) काँजी ।

वातुल (वि०) १ वायु से पीड़ित । गठिया का रोगी । २ पागल । फिरे हुए मग्न का ।

वातुलः (पु०) बगुला । बदला ।

वातुलिः (पु०) बड़ा चिमगादड़ ।

वातूल (वि०) देखो वातुल ।

वातु (पु०) पवन । वायु ।

वात्था (स्त्री०) आँधी । अंधड़ । तूफान । बगुला ।

वात्सकं (न०) बछड़ों की देव ।

वात्सल्यं (न०) स्नेह जो अपने से छोठों में होता है ।

वात्सिः (स्त्री०) ब्राह्मण के वीर्य और शूद्रा के वात्सी (गर्भ से उत्पन्न लड़की)

वात्स्यायनः (पु०) १ कामसूत्र के बनाने वाले का नाम । २ न्यायसूत्रों पर भाष्य रचयिता का नाम ।

वादः (पु०) १ बातचीत । कथन । २ वाणी । शब्द । वचन । ३ कथन । बयान । ४ वर्णन । निरूपण । ५ वादविवाद । शास्त्रार्थ । खण्डन-मण्डन । बहस । ६ उत्तर । ७ टीका । व्याख्या । भाष्य । ८ किसी पक्ष के तत्वज्ञों द्वारा निश्चित सिद्धान्त । उसूल । ९ ध्वनिनाद । १० अफवाह । ११ अज्ञीदावा ।—अनुवादौः, (द्वि०) १ अज्ञी-दावा और उसका जवाब । २ विवाद । बहस ।—अस्त (वि०) झगड़े में पड़ा हुआ ।—प्रति-वादः, (पु०) शास्त्रार्थ ।

वादकः (पु०) गवैया ।

वादनं (न०) बजाने की क्रिया । बाजा बजाना ।

वादर (वि०) [स्त्री०—वादरी] खई का बना हुआ ।

वादरं (न०) सूती कपड़ा ।

वादरा (स्त्री०) कपास का पौधा ।

वादरंग } (पु०) दृष्टवृत्त । अश्वस्थवृत्त ।
वादरङ्ग }

वादरायण देखो वादरायण ।

वादालः (पु०) सहस्रदंष्ट्र नामक मछली ।

वादि (वि०) विद्वान् । निपुण ।

वादित (व० क०) नादित । बजाया हुआ ।

वादित्रं (न०) १ बाजा । २ वादन ।

वादिन् (वि०) १ बोलने वाला । भला करने वाला । (पु०) १ वक्ता । २ वादी । ३ मुहर्षि । दावीदार । ४ भाष्यकार । शिक्षक ।

वादिशः (पु०) विद्वान् । परिहृत । अपि ।

वाद्यं (न०) १ बाजा । २ बाजे की ध्वनि । वाद्य ध्वनि ।—करः, (पु०) बाजा बजाने वाला । वजंत्री ।—भाष्यः, (न०) १ मृदङ्गादि बाजे । २ बाजा ।

वाध्
वाध
वाधक
वाधन
वाधना
वाधा
} देवो वाध्. वाध. वाधक आदि ।

वाधुक्यं
वाधूक्यं } (न०) विवाह । परिणय ।

वाध्वीशसः (पु०) गेंडा ।

वान (वि०) १ फूँका हुआ । २ जंगली या जंगल का ।

वानं (न०) १ सूखा या सुखाया हुआ फल । (यह पु० भी होता है) २ फूलना । ३ रहना । ४ घुमना । डोलना । फिरना । ५ सुगन्ध द्रव्य । ६ वन या उपवन समूह । ७ बुनावट । विनन । ८ नृष की चटाई । ९ घर की दीवाल का रन्ध्र ।

वानप्रस्थः (पु०) १ ब्राह्मण का तीसरा आश्रम । वानप्रस्थाश्रमी । ३ महर्षि का पेड़ । ४ पलाश वृक्ष ।

वानरः (पु०) वानर । लंगूर ।—अक्षः, (पु०) जंगली बकरा ।—आश्रयः, (पु०) लोभप्रवृत्ति ।—इन्द्रः, (पु०) सुग्रीव या हनुमान ।—प्रियः, (पु०) सीरिन् वृक्ष ।

वानत्तः (पु०) तुलसी का वृक्ष । श्यामा तुलसी ।

वानस्पत्यः (पु०) वह वृक्ष जिसमें बैंग लगने पर फल लगे, यथा आम ।

वाना (स्त्री०) बटेर । लवा ।

वनायुः (पु०) भारतवर्ष का उत्तर पश्चिमीय प्रान्त ।

वानीरः (पु०) १ वैन । २ पाकर का पेड़ ।

वानीरकः (पु०) मँज । नृष ।

वानेशं (न०) कैवर्त मुस्तक । सुस्ना ।

वानं (व० क०) १ उगला हुआ । धूँका हुआ । २ निकला हुआ ।—अक्षः, (पु०) कृशा ।

वांतिः (स्त्री०) १ वमन । २ उगला ।—कृत्वा, वाप्तिः ।—दः, (वि०) वमन कराने वाला ।

वान्या (स्त्री०) कुत्त समूह ।

वापः (पु०) १ वीजवपन । २ विनावट । ३ मुसहान । कपटन ।—दक्षः, (पु०) करघा ।

वापनं (न०) १ बुवाई । २ मुसहान ।

वापित (व० क०) १ बोया हुआ । २ मुड़ा हुआ ।

वाप्तिः (स्त्री०) वावली । झंझा चौकोर जल वापी) कुण्ड ।—दः, (पु०) चातकपत्नी ।

वाम (वि०) १ बायाँ । २ वामभाग स्थित । ३ उल्टा । ४ विपरीत स्वभाव । ५ कुटिल स्वभाव का । ६ दुष्ट । शठ । नीच । ७ मनोज्ञ । मनोहर । सुन्दर ।—आचारः, (पु०) तांत्रिकमत का एक भेद । [इसमें पञ्चमकार अर्थात् मद्य, मांस, मत्स्य, सुद्रा और मैथुन द्वारा उपास्य देव का आराधना किया जाता है । इस मतवाले अपने मतवाले को वीर माधक आदि कहते हैं और विरोधियों को कट्टर बतलाते हैं ।] —मार्गः, (पु०) वेदविहित दक्षिण मार्ग के प्रतिकूल तांत्रिकमत विशेष ।—प्रवर्तः, (पु०) वह शङ्ख जिसमें बाईं ओर का घुमाव या मँदरी हो ।—उरु, —उरु (वि०) सुन्दर उरवाली स्त्री । सुन्दरी स्त्री ।—देवः, (पु०) १ गौतम गोत्रीय एक वैदिक ऋषि जो ऋग्वेद के चौथे मण्डल के अधिकांश मूक्तों के द्रष्टा थे । २ दशरथ महाराज के एक मंत्री का नाम । ३ शिवजी का नाम ।—लोचना, (वि०) वह स्त्री जिसके नेत्र सुन्दर हो ।—शीलः, (पु०) कामदेव की उपाधि ।

वामं (न०) धन सम्पत्ति ।

वामः (पु०) १ जन्तु । २ शिव । ३ कामदेव । ४ सर्प । ५ पेन । थल ।

वामक (वि०) १ बाँया । २ उन्हा ।

वामन (वि०) १ बाँना । छोटे डील का । हस्त ।
सर्व । २ नम्र । ३ नीच । कर्मीना शठ ।

वामनः (पु०) १ बाँना आदमी । २ त्रिष्णु भगवान्
के पाँचवें अवतार का नाम । ३ दक्षिण दिग्गज का
नाम । ४ कारिका वृत्ति के रचयिता का नाम । ५
अंकट वृक्ष का नाम ।—आकृति, (वि०)
स्वर्वाकार ।—पुराण (न०) १८ पुराणों में से
एक ।

वामनिका (स्त्री०) बौनी स्त्री ।

वामनी (स्त्री०) १ स्त्री जो बाँने डील की हो । २
घोड़ी । ३ स्त्रीविशेष ।

वामनूरः (पु०) वीमकों द्वारा बनाया हुआ मर्द का
टीला ।

वामा (स्त्री०) १ रमणी । २ सुन्दरी स्त्री । ३ गौरी ।
४ लक्ष्मी । ५ सरस्वती ।

वामिल (वि०) १ सुन्दर । मनोहर । २ अभिमानी ।
अहङ्कारी । ३ चालाक । दगाबाज़ ।

वामी (स्त्री०) १ घोड़ी । २ गधी । ३ इधिनी । ४
गीदड़ी ।

वायः (पु०) वृत्तन । पुलावट । सिलाई ।—दण्डः,
(पु०) जुलाहे का करघा ।

वायकः (पु०) १ जुलाहर । २ ढेर । संग्रह । समुदाय ।

वायनं) (न०) देवता के लिये मिष्टान्न का नैवेद्य ।
वायनकं) आह्वण के लिये उद्यापन में मिष्टान्न का
भोजन ।

वायव (वि०) [स्त्री — वायवी] १ वायु सम्बन्धी ।
वायु के कारण उत्पन्न । २ हवाई ।

वायवीय) (वि०) पवन सम्बन्धी । हवाई ।—

वायव्य) पुराण (न०) एक पुराण का नाम ।

वायसः (पु०) १ काक । कौआ । २ अगस्त काष्ठ । ३
तारपील ।—अरातिः, —अरिः, (पु०) उल्लू ।
—इन्द्रः, (पु०) वृष्ण या आस विशेष जो लंबी
होती है ।

वायुः (पु०) १ हवा । पवन । २ पवन देव । ३
शरीरस्थ पाँच प्रकार का वायु । [प्राण, अपान,

समान, व्यान । और उद्यान] — आस्पदं,

(न०) आकाश । अन्तरिक्ष ।—केतुः, (पु०)

धूल । रज ।—कोणः, (पु०) उत्तर पश्चिम कोण ।

गण्डः, (पु०) पेट का फूलना जो अनपच के
कारण हुआ हो ।—गुल्मः, (पु०) आँधी ।

नृफान । २ बबंजर । बबूजा ।—प्रस्त, (वि०)

गदिया का रोगी ।—जातः, —तनयः —तन्दनः,

—पुत्रः, —सुतः, —सनुः, (पु०) हनुमान

या भीम ।—दाहः (पु०) बादल ।—निधः,

(वि०) पागल । सिङ्गी । सनकी ।—पुराण,

(न०) अष्टादश पुराणों में से एक ।—फलः,

(न०) १ ओला । २ इन्द्रधनुष ।—भक्षः,

भक्षणः, —भुज्, (पु०) १ केवल वायु पीकर

रहने वाला । तपस्वी । २ सर्प ।—रोषा, (स्त्री०)

रुग्ण, वायु का रोगी ।—वर्मन्, (पु० न०)

आकाश । ज्योम । अन्तरिक्ष ।—वाहः, (पु०)

धुआँ ।—वाहिनी (स्त्री०) शिरा । वमनी ।—

सखः, —सखिः, (पु०) अग्नि ।

वार (न०) जल । पानी ।—आसनं, (न०) जल

का कुण्ड ।—किटिः, (= वाःकिटिः) (पु०)

सूँस । शिशुमार ।—लः, (पु०) हंस ।—दः,

(पु०) बादल ।—दरं, (न०) १ पानी । २

रेशम । ३ वाणी । ४ आम की गुठली । ५ घोड़े

की गरदन की भौरी । ६ शङ्ख ।—धिः, (पु०)

समुद्र ।—धिमवं, (न०) निम्क । लवण ।—

पुष्पं, (न०) (= वाःपुष्पं) लौंग ।—भटः,

(पु०) मगर । बबियाल । नाका ।—मुब्, (पु०)

बादल ।—राशिः, (पु०) समुद्र ।—वटः, (पु०)

नाव । जहाज़ ।—सदनं, (= वाःसदनं) जल-

कुण्ड । जल का ढौड़ ।—स्थ, (वि०) (= वाःस्थ)

जल में । जल का ।

वारः (पु०) १ ढकना । २ बड़ी संख्या । समुदाय ।

३ ढेर । ४ गल्ला । कुंड । ५ दिन यथा बुधवार ।

६ बारी । दौड़ । ७ अवसर । दफा भरतवः ।

८ द्वारा । फाटक । ९ नदी का सामने का तट ।

पल्लीवार । १० शिवजी ।

वारं (न०) १ मद्यपात्र । २ जलसंघ ।—वर्गना,—

नारः —युधति, —योधित, —वनिता, —

विलासिनी. —सुन्दरी. —स्त्री, (स्त्री०) रंडी ।
 वेश्या ।—कीरः, (पु०) १ परी का भाई ।
 माता । २ बाइवानल । ३ कंषी । ४ जूँ । चील्हर ।
 ५ सुरंग । युद्ध का घोड़ा ।—बुधा. —बुधा,
 (स्त्री०) केले का पेड़ ।—सुम्ब्या, (स्त्री०)
 रंघियों के गिराह का सर्दार ।—वाणाः. —वाणाः,
 (पु०) वाणां. —वाणां. (न०) कवच ।
 बज्रतर ।—वाणिः, (पु०) नर्कारी बजाने वाला ।
 बाजा बजाने वाला । ३ वर्ष । ४ न्यायकर्ता । जज ।
 —वाणिः. (स्त्री०) रंडी । वेश्या ।—वाणी,
 (स्त्री०) रंडी ।—मेघा (स्त्री०) वेश्यापता ।
 छिनाला । रंघियों का समुदाय ।

वारक (वि०) अड़चन डालने वाला । रोकने वाला ।
 अवरोधक ।

वारक (न०) १ वह स्थान जहाँ पीड़ा होनी हो । २
 बालकृष्ण । हीवर ।

वरकः (पु०) १ अश्व विशेष । २ घोड़ा । ३ घोड़े
 की चाल ।

वारकिन (पु०) १ विरोधी । शत्रु । २ समुद्र । ३
 शुभलक्षणों से युक्त अश्व । ४ पत्ते आकर रहने
 वाला तपस्वी ।

वारकः } (पु०) पक्षी ।

वारंगः } (पु०) तलवार की मूठ । कुरी का इस्ता ।

वारट (न०) १ खेल । २ अनेक खेल ।

वारटा (स्त्री०) हंस । राजहंस ।

वारण (वि०) [स्त्री०—वारणा] रोकने वाला ।
 मना करने वाला । सामना करने वाला । समुहाने
 वाला ।

वारण (न०) १ शोक । संयम । रुकावट । २ अड़-
 चन । ३ सामना । समुहाने की क्रिया । ४ बचाव ।
 रक्षा ।

वारणाः (पु०) १ हाथी । २ कवच ।—बुधा,—
 बुसा.—बलुभा, (स्त्री०) केले का पेड़ ।—
 माहुर्यं, (न०) हस्तिनापुर का नाम ।

वारणासी (स्त्री०) काशी । बनारस ।

वारधं (न०) वमन का तन्मा ।

वारवारं (अव्यया०) अन्तर । कई बार । फिर फिर ।

वारला (स्त्री०) १ बरंया । २ हंस ।

वाराणसी (स्त्री०) बनारस । काशीपुरी ।

वारानिधिः (पु०) समुद्र ।

वाराह (वि०) [स्त्री०—वाराही] शूकर सम्बन्धी ।

—कल्पः, (पु०) वर्तमान कल्प का नाम ।—

पुराणः, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक ।

वाराहः (पु०) १ शूकर । २ वृक्ष विशेष ।

वाराही (स्त्री०) १ सुन्दरी । २ पृथिवी । ३ विष्णु
 की शूकर के रूप में शक्ति । ४ माप विशेष ।—
 कन्दः (पु०) एक प्रकार का महाकन्द जिसे
 गेंडी कहते हैं ।

वारि (न०) १ जल । २ तरल पदार्थ । ३ आलस्य
 या हीवर ।

वारिः (स्त्री०) १ हाथी के बाँधने की रस्सी
 वारी) जंजीर आदि । २ हाथी एकड़ने के लिये

बनाया हुआ गढ़ा । ३ कैदी । बंदी । ४ जलपात्र ।

५ सरस्वती का नाम ।—ईशः, (पु०) समुद्र ।

—उद्भवः, (न०) कमल ।—आोकः, (पु०)

जौक । जलौका ।—कर्पूरः, (पु०) मत्स्य विशेष ।

हलीश ।—किमिः, (पु०) जौक ।—चत्वरः,

(पु०) जलाशय ।—चरः, (वि०) पानी में

रहने वाला जन्तु ।—चरः, (पु०) १ मत्स्य । २

जलचर कोई भी जन्तु ।—जः, (वि०) जल में

उत्पन्न ।—जः, (पु०) १ शङ्ख । घोषा ।—जः,

(न०) १ कमल । २ निमक विशेष । ३ गौर

सुवर्ण नामक पौधा । ४ लवंग ।—तस्करः, (पु०)

बादल । मेघ ।—त्रा, (स्त्री०) कुवरी । छाता ।

दः, (पु०) बादल ।—द्रः, (पु०) चालक

पक्षी ।—धरा, (पु०) बादल ।—धिः, (पु०)

समुद्र ।—नाथः, (पु०) १ समुद्र । २ वरुण

देव । ३ बादल ।—निधिः, (पु०) समुद्र ।—

पथः, (पु०)—पथं, (न०) समुद्रयात्रा ।—

प्रवाहः, (पु०) पानी का करना । जलप्रपात ।

—मसिः, (पु०)—मुचः, (पु०)—रः,

(पु०) बादल । मेघ ।—यंत्रं, (न०) जल

निकालने की कल ।—रथः, (पु०) नाव ।
जहाज । वेड़ा ।—राशिः, (पु०) १ समुद्र । २
भील ।—रुहं, (न०) कमल ।—वास्तः, (पु०)
कलवार । शराब बेचने वाला ।—वाहः,—वाहनः,
(पु०) बावल । मेघ ।—शः, (पु०) विष्णु
भगवान ।—सम्भवः, (पु०) १ लवंग । लौंग ।
२ सुर्मा विशेष । ३ उशीर । खस ।

वारित (व० कृ०) १ रोका हुआ । अवरुद्ध । २ रक्षा
किया हुआ । बचाया हुआ ।

वारीहटः (पु०) हाथी ।

वारुः (पु०) विजय कुत्तर । वह हाथी जिस पर सेना
में विजय पताका रहती है ।

वारुठः (पु०) अन्तश्शय्या । मरखलाट । वह टिकठी
जिस पर मुर्दे को रखकर ले जाते हैं । अरथी ।

वारुणा (वि०) [स्त्री०—वारुणी] १ वरुण
सम्बन्धी । २ वरुण को समर्पित किया हुआ । ३
वरुण को दिया हुआ ।

वारुणा (न०) जल ।

वारुणः (पु०) भारतवर्ष के नवखण्डों में से एक ।

वारुणिः (पु०) १ अगस्त्य ऋषि । २ भृगु जी ।

वारुणी (स्त्री०) १ पश्चिम दिशा । २ किसी भी
प्रकार की मदिरा या शराब । ३ शतभिन्न नक्षत्र ।
४ दूर्वा या दूब ।—घल्लभः, (पु०) वरुण
जी ।

वारुण्डः } (पु०) नग जाति का प्रधान ।

वारुण्डः (पु०) } १ आँख का मैल या कीचड़ । २
वारुण्डः (पु०) } कान का मैल या डेठ । ३ नाव
वारुण्डः (न०) } का पानी उलीचने का कठौता
वारुण्डः (न०) } या पात्र विशेष ।

वारुण्डी } (स्त्री०) बंगाल के एक अंचल का नाम
वारुण्डी } जिसका आधुनिक नाम राजशाही है ।

वार्त्त (वि०) [स्त्री०—वार्त्ती] बूत्तों से सम्बन्ध ।

वार्त्तम् (न०) वन । जंगल ।

वार्त्तिकः (पु०) लेखक ।

वार्त्तिकः (स्त्री०)
वार्त्तिकः (स्त्री०)
वार्त्तिकः (पु०)
वार्त्तिकी (स्त्री०)
वार्त्तिकुः (पु० स्त्री०) } बैंगन या भोंटे का पौधा ।

वार्त्तिका (स्त्री०) तीतर । बटेर ।

वार्त्त (वि०) तंदुरुस्त । स्वस्थ । १ हल्का । कमजोर ।
असार । ३ धंधा करने वाला । पेरो वाला ।

वार्त्त (न०) १ तंदुरुस्ती । २ निपुणता । पटुता ।

वार्त्ता (स्त्री०) १ पालन । २ संवाद । खबर । ३
पेशा । आजीविका । ४ खेती । वैश्यवृत्ति । वैश्य
का धंधा (अर्थात् कृषि, वाणिज्य, गोरक्षा और
कुसीद) ५ बैंगन का पौधा ।—वहः,—हरः,
(पु०) १ दूत । कासिद । २ बत्ती बनाने वाला ।
—वृत्तिः, (पु०) जो किसानी पेशे से निर्वाह
करता हो ।

वार्त्तायनः (पु०) संवाददाता । जासूस । दूत ।

वार्त्तिक (वि०) [स्त्री०—वार्त्तिकी] संवाद संबन्धी ।
२ खबर लाने वाला । ३ व्याख्याकारी ।

वार्त्तिकः (पु०) १ गोहंदा । जासूस । २ किसान ।

वार्त्तिक (न०) किसी ग्रन्थ के उक्त, अनुक्त और
दुरुक्त अर्थों को स्पष्ट करने वाला वाक्य या ग्रंथ ।
[वार्त्तिक और भाष्य में यह भेद है कि, भाष्य में
केवल मूल ग्रन्थ का आशय स्पष्ट किया जाता है,
किन्तु वार्त्तिक में पूर्ण स्वतंत्रता रहती है । वार्त्तिक-
कार नयी बातें भी कह सकता है ।]

वार्त्तज्ञः (पु०) अर्जुन का नाम ।

वार्त्तकं (न०) १ बुढ़ापा । बुढ़ावस्था । २ बुढ़ापे के
कारण उत्पन्न अङ्गशैथिल्य । ३ बृद्धजनों का समु-
दाय ।

वार्त्तक्यं (न०) १ बुढ़ापा । २ बुढ़ापे की निर्बलता ।

वार्त्तपिः }
वार्त्तपिकः } (पु०) सूदज्वोर । व्याजज्वोर ।
वार्त्तपिन् }

वार्त्तप्यं (न०) व्याज । सूद ।

वार्ध्रः } (स्त्री०) चमड़े का तस्मा ।
वार्ध्री }

वाभ्राणसः.

(७७७)

नामः

वाभ्राणसः (पु०) गैंडा ।

वार्मणं (ब०) कवचधारी लोगों का जमाव ।

वार्य (न०) आशीर्वचन । वर । (बहुवचन)
अधिकृत सम्पत्ति ।

वार्लणा (स्त्री०) नीले रंग की मक्खी ।

वार्ष (वि०) [स्त्री०—वार्षी] १ वर्षा सम्बन्धी ।
२ सालाना । बर्सात ।

वार्षिक (वि०) [स्त्री०—वार्षिकी] १ वर्षाश्चतु
या वर्षा सम्बन्धी । २ सालाना । ३ एक वर्ष भर
का या एक वर्ष तक रहने वाला ।

वार्षिकं (न०) एक रुखरी विशेष ।

वार्षिला (स्त्री०) ओला ।

वार्षीयः (पु०) १ वृष्टिचंशी । २ विशेष कर श्री
हृण्य । ३ राजानन के सारथी का नाम ।

वाह् }
वाह्द्रथ }
वाह्द्रथि }
वाह्द्रपत }
वाह्द्रपत्य }
वाह्द्रिण }
वाल }
वालक }
देखो वाह्, वाह्द्रथ, वाह्द्रपत्य ।
आदि ।

वालखिल्य (न०) देखो बालखिल्य ।

वालिः (पु०) वानरराज सुग्रीव के बड़े भाई और
अंगद के पिता का नाम ।

वालुका (स्त्री०) १ बालू । रेत । २ चूर्ण । चुकनी ।
३ कपूर ।—आत्मिका, (स्त्री०) शक्कर । चीनी ।

वालुका }
वालुकी } (स्त्री०) ककड़ी ।

वालेय (न०) देखो बालेय ।

वालक (वि०) [स्त्री०—वालकी] वृक्षों की छाल
का बना हुआ ।

वालकल (वि०) [स्त्री०—वालकली] वृक्ष की
छाल का बना हुआ ।

वालकलं (न०) वृक्ष की छाल के बने कपड़े ।

वालकली (स्त्री०) शराब । मदिरा ।

वालमीकः (पु०) आत्मिकाय श्रीमद्भामावण
वालमीकिः () के रचयिता का नाम ।

वाल्लभ्यम् (न०) प्रेमपात्र । नाथूक ।

वावृक (वि०) १ वावरी । बलोरा । शकवादी । २
अच्छा बोलने वाला बक्ता ।

वाक्यः (पु०) तुलसी ।

वावृटः (पु०) नाव । वेड़ा ।

वावृत्त (घा० आ०) [वावृत्त्यते] १ चुनना ।
पसंद करना । प्यार करना । २ सेवा करना ।

वावृत्त (वि०) चुना हुआ । झूठा हुआ । पसंद ।
किया हुआ ।

वाश् (घा० था०) [वाश्मन्, वाशित] १
गर्जना । २ दहाड़ना । चिल्लाना । भूंकना ।
गूंजना । २ चुल्लाना । पुकारना ।

वाश्क (वि०) दहाड़ने वाला । ध्वनि करने वाला ।

वाशनं (न०) १ दहाड़ । गर्जन । भूंकना । गुराहट ।
चीत्कार । चीख । २ पक्षियों की गहक । भौंरों की
गूंजार ।

वाशिः (पु०) अग्निदेव ।

वाशितं (न०) पक्षियों का कलरव ।

वाशिता (स्त्री०) १ हथिनी । २ स्त्री ।

वाधः (पु०) दिवस ।

वाध्रं (न०) १ रहने का घर । २ चौराहा । ३ गोबर ।
बिन्डा ।

वाष्पः (पु०) }
वाष्पं (न०) } देखो वाष्प ।

वास (घा० उभय०) [वासयति, वासयते] १
सुवासित करना । सुशुद्ध उत्पन्न करना । २ सिक
करना । भिगोना । डुबाना । ३ मसाले डालना ।
पकाना । सुस्वाद बनाना ।

वामः (पु०) १ व । सुगन्ध । २ अवस्थान । रहाइस ।
निवास । ३ घर । मकान । डेरा । ४ स्थान । अगह ।
५ परिच्छेद । परिवान । पोशाक ।—कशी,
(स्त्री०) एक बड़ा कमरा या मण्डप जिसमें
पहलवानों का दंगल या नृत्य हो ।

आदि हुआ करे ।—यष्टिः, (स्त्री०) पाखन पक्षियों के बैठने की झुड़ी ।

वामक (वि०) [स्त्री०—वासका, वासिका] १ खुशबूदार । खुशबू उत्पन्न करने वाला । २ बसाने वाला । आवाद करने वाला ।—सज्जा, (स्त्री०) वह नायिका जो अपने नायक से मिलने के स्वयं बनठन कर और अपने घर को सजा कर उसके आने की प्रतीक्षा में बैठी हो ।

वासक (न०) कपड़े । वस्त्र ।

वास्तः (पु०) गधा ।

वास्तैय (वि०) [स्त्री०—वास्तैयी] आवाद करने योग्य । बसाने योग्य । रहने योग्य । बनने योग्य ।

वास्तैयी (स्त्री०) रात । निशा ।

वास्तनं (न०) १ बसाना । खुशबू पैदा करना । २ तर करना । ३ वास । रहायस । ४ वार । मकान । ५ कोई पात्र, यथा टोकरा, पेटी, बर्तन आदि । ६ ज्ञान । ७ वस्त्र । परिधान । ८ आच्छादन । चादर । गिलाफ ।

वासना (स्त्री०) १ भावना । जन्मान्तर के जमे प्रभाव से उत्पन्न मानसिक सुख दुःख की भावना संस्कार । स्मृतिहेतु । ३ कल्पना । विचार । ख्याल । ४ मिथ्या विचार । झूठा ख्याल । अज्ञता । अज्ञान । ५ अभिलाषा । कामना । ६ सम्मान ।

वासंत } (वि०) [स्त्री०—वासंती, वासन्ती]
वासन्त } १ बसन्त सम्बन्धी । बसन्तऋतु के योग्य या बसन्तऋतु में उत्पन्न । २ जवान । ३ बुद्धिमान ।

वसंतः } (पु०) १ जूँट । २ जवान हाथी । ३
वसन्तः } किसी जानवर का बच्चा । ४ कोयल । ५ मलयाचल हो कर आयी हुई हवा । मलयसमीर । ६ भौंग । ७ लंपट या दुराचारी पुरुष ।

वासंती } (स्त्री०) १ माघवी लता । २ बड़ी
वासन्ती } पीपल । जुही । ३ गनियारी नामक फूल । ४ बसन्तोत्सव ।

वासंतिक } (वि०) १ बसन्त सम्बन्धी ।
वासन्तिक } वासन्तिक

वासंतिकः } (पु०) १ विदूषक । भौँड़ । २ नट ।
वासन्तिकः } अभिनयपात्र ।

वासरः (पु०) } दिवस । दिन ।—संगः, सङ्गः,
वासरं (न०) } (पु०) प्रातःकाल । सबेरा ।

वासव (वि०) [स्त्री०—वासवी] इन्द्र का । इन्द्र सम्बन्धी ।

वासवः (पु०) इन्द्र का नाम ।—दत्ता. (स्त्री०)
१ सुवन्धु नामक कवि का बनाया नाटक । २ कई एक कथानकों की एक नायिका का नाम ।

वासवी (स्त्री०) व्यास की माता का नाम ।

वासम् (न०) १ कपड़ा । वस्त्र ।

वासिः (पु० स्त्री०) कुठार । बसूला । छैनी ।

वासित (व० कृ०) १ सुवासित । २ तर । भिंगोया हुआ । ३ सुस्वादु बनाया हुआ । ४ वस्त्रों से सुसज्जित किया हुआ । ५ बसा हुआ । आवाद । ६ प्रसिद्ध । मशहूर ।

वासितं (न०) १ पक्षियों का कलरव । २ ज्ञान ।

वासिष्ठ } (वि०) [स्त्री०—वासिष्ठी, वाशिष्ठी]
वाशिष्ठ } वसिष्ठ सम्बन्धी । (ऋग्वेद का एक मण्डल जो) वसिष्ठ जी का देखा हुआ हो ।

वासिष्ठः } वशिष्ठ का वंशधर या वंश वाला ।
वाशिष्ठः }

वासुः (पु०) १ जीव । आत्मा । २ विश्वात्मा । परमात्मा । ३ विष्णु भगवान का नामान्तर ।

वासुकिः } (पु०) कश्यपपुत्र और सर्पराज
वासुकेयः } वासुका ।

वासुदेवः (पु०) १ वसुदेव का वंशज । २ विशेष कर श्रीकृष्ण का नाम ।

वासुरा (स्त्री०) १ पृथिवी । २ रात । ३ स्त्री । ४ हथिनी ।

वासूः (स्त्री०) १ जवान लड़की । झारी लड़की ।

वास्त देखो वास्त ।

वास्तव (वि०) [स्त्री०—वास्तवी] १ असली । सच्चा । प्रकृत । सारवान । २ निश्चय किया हुआ निर्दिष्ट किया हुआ ।

वास्तव (न०) कोई वस्तु जो निश्चित या निर्दिष्ट कर ली गयी हो ।

वास्तवा (स्त्री०) वातःकात् । भोर । तड़का ।

वास्तविक (वि०) [स्त्री०—वास्तविका] यथार्थ । सत्य । प्रकृत । ठीक । सच्चा ।

वास्तिक (न०) बकरी का गल्ला ।

वास्तव्य (वि०) १ रहने वाला । निवासी । वासिन्दा । २ रहने योग्य । रहने लायक ।

वास्तव्य (न०) रहने लायक स्थान । वस्ती । आबादी ।

वास्तु (पु० न०) १ वह स्थान जिस पर कोई इमारत खड़ी हो । ज़मीन । २ घर । मकान । डेरा ।—यागः, (पु०) उस समय का धर्मानुष्ठान विशेष, जिस समय किसी मकान की नींव रखी जाय ।

वास्तेय (वि०) [स्त्री०—वास्तेयी] १ रहने योग्य । रहने लायक । २ पेड़ू सम्बन्धी । कुट्टि सम्बन्धी । उदर सम्बन्धी ।

वास्तोष्पतिः (पु०) १ वास्तुपति । २ इन्द्र ।

वास्त्र (वि०) वस्त्र का बना हुआ ।

वास्त्रः (पु०) गाड़ी या सवारी जिम्मे पर कपड़े का उबार या पर्दा पड़ी हो ।

वास्तेयः (पु०) नागकेसर का पेड़ ।

वाह (भा० आ०) [वाहते] उद्योग करना । प्रयत्न करना । कोशिश करना ।

वाह (वि०) लेजाने वाला ।

वाहः (पु०) १ लेजाने वाला । २ कुली । मज़दूर । ३ बोकुल लादने वाला जानवर । ४ घोड़ा । ५ बैला । ६ बैसा । ६ गाड़ी । सवार । ८ वाहु । ९ हवा । पवन । १० प्राचीन काल की एक तौल जो ४ गोन की होती थी ।—विपत्, (पु०) भैया ।—श्रेष्ठः, (पु०) घोड़ा ।

वाहक (पु०) १ कुली । २ गाड़ीवान । ३ घुड़सवार ।

वाहन (न०) १ घोड़ा । २ रथकना । ३ वाहन सवारी । ४ ज्ञानसवारी का घोड़ा । ५ हाथी ।

वाहसः (पु०) १ जलप्रवाहमार्ग । जलप्रणाली । अजगत् सर्प ।

वाहिकः (पु०) १ बड़ा ढोल । २ बैचगाड़ी योभ ढोलें वाज्ना कुली ।

वाहित (न०) भारी बाँझा ।

वाहित्य (न०) हाथी का माथा ।

वाहिनी (स्त्री०) १ सेना । २ एक सैन्यदल विशेष जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घुड़सवार और ४०५ पैदल होते हैं । ३ नदी ।—निवेष्टः, (पु०) फौज की छावनी ।—पतिः, (पु०) १ चन्द्रपति । २ समुद्र ।

वाहीक देखो वाहीक ।

वाहुक देखो वाहुक ।

वाह्य देखो वाह्य ।

वाल्हिः (पु०) आधुनिक बलख (बुखारा) का नाम — जः, (पु०) बलख देश का घोड़ा ।

वाल्हिकः (पु०) १ आधुनिक बलख का नाम वाल्हीकः (पु०) २ बलख देश का घोड़ा ।

वाल्हिकः (न०) १ कैमर । २ हींग ।

वि (अण्यथा०) किया शब्द के पूर्व जाँड़े जाने इसके ये अर्थ होने हैं :—१ पार्थक्य । विलगाव । २ किसी क्रिया का विपरीत कर्म । ३ विभाग । ४ विशिष्टता । ५ अँक । जाँच । भेद । ६ क्रम । ७ विरोध । ८ तरंगी । ९ विचार । १० आधिक्य ।

विः (पु० स्त्री०) १ पत्नी । २ घोड़ा ।

विंश (वि०) [स्त्री०—विंशी] बीसवाँ ।

विंशः (पु०) बीसवाँ भाग ।

विंशकः (पु०) [स्त्री०—विंशकी] बीस की संख्या ।

विंशतिः (स्त्री०) कोई । बीस ।—ईशः,—ईशिन (पु०) बीस गाँव का ठाकुर या मालिक ।

विंशतितम (वि०) [स्त्री०—विंशतितमी] बीसवाँ

विशिष्ट (पु०) १ बीस । एक कोड़ी । २ बीस गाँव का शासक या जमींदार ।

विक (न०) हाल की व्याधी गौ का दूध ।

विकटः (पु०)
विकटः (पु०)
विककनः (पु०)
विककृतः (पु०)

वृत्त विशेष जिसकी लकड़ी की कलदियौ बनती है ।

विकच (वि०) १ खिला हुआ । फैला हुआ । २ खिरा हुआ । ३ केशविहीन ।

विकचः (पु०) १ बौद्ध भिक्षुक । २ केतु का नाम ।

विकट (वि०) १ बदशक्त । कुरूप । २ भयङ्कर । डरावना । जंगली । उग्र । ३ बड़ा । चौड़ा । प्रशस्त । ४ अहंकारी । अभिमानी । ५ सुन्दर । ६ लोरी चढ़ाए हुए । ७ धुंधला । ८ शक्त बदले हुए ।

विकटं (न०) बालतोड़ । गूमड़ा ।

विकथन (वि०) १ डोंगे मारने वाला । शेखी मारने वाला । २ व्याज स्तुति करने वाला ।

विकथनं (न०) १ शेखी । डोंग । २ व्यङ्ग्य । झूठी प्रशंसा ।

विकथा (स्त्री०) १ डोंग । शेखी । २ प्रशंसा । ३ झूठी प्रशंसा ।

विकप } (वि०) अहङ्ग । हिलता डोलता ।
विकप }

विकरः (पु०) बीमारी । रोग ।

विकराल (वि०) बड़ा भयानक । बड़ा भयङ्कर ।

विकर्णः (पु०) एक कौरव राजकुमार का नाम ।

विकर्तनः (पु०) १ सूर्य । २ अर्क । मदार । अकौवा । ३ वह पुत्र जिसने अपने पिता का राज्य छीन लिया हो ।

विकर्मन् (वि०) निषिद्धकर्म करने वाला । (न०) निषिद्ध कर्म ।

विकर्मस्थ (वि०) भर्मशास्त्र के मत से वह पुरुष जो वेदविरुद्ध काम करता हो ।

विकर्षः (पु०) १ तीर । बाण ।

विकर्षणं (न०) आकर्षण । खिंचाव ।

विकर्षणः (पु०) कामदेव के पाँच बाणों में से एक का नाम ।

विकल (वि०) १ खण्डित । अपूर्ण । अङ्गहीन । २ भयभीत । डरा हुआ । ३ रहित । हीन । ४ विह्वल । घबड़ाया हुआ । उदास । ५ कुम्हलाया हुआ । मुर्झाया हुआ । सड़ा हुआ ।—अङ्ग, (वि०) जिसका कोई अंग भङ्ग हो । न्यूनाङ्ग । अङ्गहीन ।—पाणिकः, (पु०) लुब्धा ।

विकला (स्त्री०) एक कला का ६० वाँ अंश ।

विकल्पः (पु०) १ सन्देह । अनिश्चय । सङ्कोच । हिचकिचाहट । २ भ्रम । अविश्वास । ३ कौशल । कला । ४ धृच्छा । अभिरुचि । ५ किस्म । जाति । ६ भूल । चूक । अज्ञानता ।—जालं, (न०) दुविधा । द्वैध ।

विकल्पनं (न०) १ सन्देह में पड़ना । २ अनिश्चय ।

विकल्पाय (वि०) पापराहित । कलङ्कशून्य । निरपराध ।

विकषा } (स्त्री०) मजीठ ।
विकसा }

विक्रमः (पु०) चन्द्रमा ।

विकसित (व० क०) खिला हुआ । पूरा फैला हुआ ।

विकस्वर } (वि०) १ खुला हुआ । फैला हुआ ।
विकस्वर } २ स्पष्ट समझ में आने वाला ।

विकारः (पु०) १ विकृति । २ तबदीली । परिवर्तन । ३ बीमारी । रोग । ४ मनपरिवर्तन । ५ भावना । उच्च । मनोवेग । ६ उद्वेग । विकलता । घबड़ाहट । ७ वेदान्त और साँख्य दर्शन के अनुसार किसी के रूप आदि का बदल जाना । परिणाम ।—हेतुः, (पु०) प्रलोभन । लालच । विकलता का कारण ।

विकारित (वि०) बदला हुआ । बिगड़ा हुआ ।

विकारिन् (वि०) परिवर्तनशील ।

विकालः } (पु०) शाम । सन्ध्या काल ।
विकालिकः } दिनान्त काल ।

विकालिका (स्त्री०) जलघड़ी की कटोरी ।

विकाशः (पु०) प्रदर्शन । प्राकट्य । प्रकटन ।
२ खिलना । फैलना । ३ खुला हुआ या सीधा
मार्ग । ४ विषम गति । ५ हर्ष । आनन्द
६ आकाश ७ उत्सुकता । उत्कण्ठ । ८ निर्जन ।
एकाग्र ।

विकाशक (वि०) [स्त्री०—विकाशिका] १ प्रकट
करने वाला । २ खिलने वाला ।

विकाशनं (न०) १ प्रादुर्भाव । प्रदर्शन । प्राकट्य ।
प्रस्फुटन । खिलना । फैलाव ।

विकाशिन् (वि०) [स्त्री०—विकाशिनी,
विकाशिनी] १ दृष्टिगोचर होने वाला ।
नज़र आने वाला । प्रकट होने वाला । २ खिलने
वाला । खुलने वाला । फैलने वाला ।

विकासः (पु०) } प्रस्फुटन । खिलन । फैलाव ।
विकासनं (न०) }

विकिरः (पु०) १ वे चाँवल आदि जो पूजन के समय
विघ्न दूर करने के लिये चारों ओर फेंके जाते हैं ।
२ पत्ती । ३ कूप । ४ वृक्ष ।

विकिरणं (न०) १ बखेरना । छिड़कना । फैकना ।
२ बिछाना । फैलाना । ३ फाड़ना । ४ हिंसन ।
ज्ञान ।

विकीर्णं (व० क०) फैला हुआ । २ व्याप्त ।
३ प्रसिद्ध ।—केश, —मूर्धन, (वि०) वह
जिसने अपने बाल तोंच डाले हों या जिसके बाल
विखरे हों ।

विकुण्डः (पु०) वैकुण्ठ जहाँ भगवान् विष्णु
विकुण्डः का निवास है ।

विकुर्वाण (वि०) १ परिवर्तित या परिवर्तन करने
वाला । २ प्रसन्न । आल्हादित ।

विकुलः (पु०) चन्द्रमा ।

विकूजनं (न०) १ कूजन । कलरव । चहक । गुञ्जार ।
२ गुब्बुडाहट ।

विकूजनं (न०) कटाक्ष । कलखियों (की इष्टि) ।

विकूणिका (स्त्री०) नाक ।

विकृत (व० क०) १ परिवर्तित । बदला हुआ ।
संशोधित । २ बीमार । ३ विकलाङ्ग । अङ्गहीन ।

कुरूप । अङ्गभङ्ग । ४ अपर्याप्त । स्वस्थित । अपूरा ।
५ अश्वेशित । ६ उथा हुआ । ७ बीभत्स । अधन्य ।
जुगुप्सित । दुःसाजनक । अकचिकारक । ८ अद्भुत
असामान्य ।

विकृतं (न०) १ परिवर्तन । संशोधन । २ बिगाड़
खराबी । बीमारी । ३ अशक्ति । दुःखा ।

विकृतिः (स्त्री०) १ परिवर्तन । २ घटना । ३ बीमारी ।
४ बचड़ाहट । उद्देग ।

विकृष्ट (व० क०) १ इधर उधर कड़ोरा हुआ । २
खींचा हुआ । कड़ोरा हुआ । आकर्षित । ३ बढ़ा
हुआ । निकला हुआ । ४ कोलाहल करने वाला ।

विक्रेश (वि०) [स्त्री०—विक्रेशी] १ खुले केशों
वाला । २ बिना केशों वाला । गंजा ।

विक्रेशी (स्त्री०) १ स्त्री जिसके खुले केश हों । २
स्त्री जो गंजी हो । ३ केशों की छोटी छोटी लट्टों
को मिला कर बनी हुई एक चोरी या बेसी ।

विकोश (वि०) १ बिना भूली का । २ म्यान से
विकोप निकला हुआ ।

विकः (पु०) हाथी का बच्चा ।

विक्रमः (पु०) १ क्रम । पग । २ चलना । ३
बहादुरी । पराक्रम । ४ उज्जयिन के एक प्रसिद्ध
सद्वाराज का नाम । ५ विष्णु भगवान् का नाम ।

विक्रमणं (न०) चलना । क्रम चलना ।

विक्रमिन् (वि०) वीर । बहादुर । (पु०) १ सिंह ।
२ शूरवीर । ३ विष्णु का नाम ।

विक्रयः (पु०) विक्री । बेचवाली ।—अनुशयः,
(पु०) किसी वस्तु की खरीदारी की शर्त या
आज्ञा को रद्द करना ।

विक्रयिकः (पु०) बेचवाल । बेचने वाला ।
विक्रयिन् (फेरी वाला ।

विक्रयः (पु०) चन्द्रमा ।

विक्रान्त (व० क०) १ बलवान् । वीर । शूर । २
विजयी ।

विक्रान्तं (न०) १ पग । क्रम । २ शौर्य । वीरता ।

विक्रान्तः (पु०) वीर । योद्धा । २ सिंह ।

विक्रान्तिः (स्त्री०) १ गति । २ धोड़े की सरपट चाल । ३ विक्रम । बल । बीरता : बहादुरी ।

विक्रांतृ } (वि०) बहादुर । शूरवीर । (पु०)
विक्रान्तृ } सिंह ।

विक्रिया (स्त्री०) १ विकार । संशोधन । २ उद्वेग । विकलता । धक्काहट । ३ क्रोध । रोष । अप्रसन्नता । ४ बुराई । विगाड़ । ५ अकुञ्चन । ६ रोग जो अचानक उत्पन्न हो जाय । ७ खरबन । भञ्जन । त्याग (जैसे कर्म का) ।—उपमा, (स्त्री०) काव्यालङ्कार विशेष ।

विकुप (व० कृ०) १ पुकारा हुआ । चिल्लाया हुआ । २ निष्ठुर । बरहम ।

विकुपं (न०) १ सहायता के लिये बुलाहट । २ गाली ।

विक्रोथ (वि०) विकार ।

विकोशनं (न०) १ गाली । २ चीत्कार । चिल्लाहट ।

विक्रव (वि०) १ डरा हुआ । भयभीत । २ भीड़ । डरपोक । ३ उद्विग्न । धक्काया हुआ । ४ सन्तप्त । पीड़ित । दुःखित । ५ विह्वल । बेचैन ।

विक्रिञ्च (व० कृ०) १ बिल्कुल तरावोर या भीगा हुआ । २ सड़ा हुआ । गला हुआ । मुरझाया हुआ । कुम्हलाया हुआ । ३ जीर्ण ।

विक्रिष्ट (पु०) १ अत्यन्त सन्तप्त । २ घायल । नष्ट किया हुआ ।

विक्रिष्टं (न०) उच्चारण का दोष ।

विक्रत (व० कृ०) घायल । ताड़ित ।

विस्तावः (पु०) १ खसारन । छींक । २ ध्वनि । नाद ।

वित्तित (व० कृ०) १ बिखरा हुआ । फैका हुआ । २ खारिज किया हुआ । त्यागा हुआ । ३ भेजा हुआ । ४ बचकाया हुआ । बेचैन । ५ खरबन किया हुआ ।

विस्तीर्णकः (पु०) १ शिवगणों का मुखिया । २ देवसभा ।

विस्तीरः (पु०) मदार या अर्क या अकौआ का पेड़ ।

विस्तेपः (पु०) १ ऊपर की ओर अथवा इधर उधर फैकना या डालना । २ झटका देना । इधर उधर हिलाना डुलाना । ३ प्रेषण । ४ रोकड़ाहट । विकलता । परेशानी । बेचैनी । ५ भय । डर । ६ खरबन ।

विस्तेपणं (न०) १ ऊपर अथवा इधर उधर फैकने की क्रिया । २ हिलाने या झटका देने की क्रिया । ३ प्रेषण । ४ धक्काहट । बेचैनी ।

विस्तेभ (पु०) १ मन की उद्विग्नता या चञ्चलता । सोभ । २ झगड़ा । टंटा ।

विस्त्रि } (वि०) नासिका हीन । बिना नाक वाला ।
विस्त्रि } जिसके नाक न हो ।
विस्त्रि }

विस्त्रिडित } (व० कृ०) १ दूदा हुआ । विभा-
विस्त्रिडित } जित । २ बीच से चिरा या फटा हुआ ।

विस्त्रानसः (पु०) वैखानस ।

विस्त्रुरः (पु०) १ राक्षस । वैश्य । दानव । २ चोर ।

विस्त्र्यात (व० कृ०) १ प्रसिद्ध । भली भाँति परिचित । २ नामक । ३ माना हुआ । मान्य । स्वीकृत ।

विस्त्र्यातिः (स्त्री०) प्रसिद्धि । कीर्ति । ख्याति । नामवरी ।

विगणनं (न०) १ गिनती । गणना । २ विचार । मनन । ३ ऋण की आदायगी या फारकती ।

विगत (व० कृ०) १ प्रस्थानित । २ वियोजित । जुदा । ३ मृत । ४ रहित । हीन । ५ खोया हुआ । ७ बुँधला । अधिभारा ।—अर्थात्वा, (स्त्री०) वह स्त्री जिसके बच्चा होना बंद हो चुका हो अथवा जिसका रजोवर्म बंद हो गया हो ।—कलमप, (वि०) यापरहित । निष्पाप । शुद्ध । —भी, (वि०) निडर । निःशङ्क । बेखौफ । —लक्ष्मण, (वि०) अभागा । अशुभ । अमङ्गलकारी ।

विगन्धकः { पु० }
विगन्धकः { पु० } } हंगुदी या हिंगोट का पेड़ ।

विगमः (पु०) १ प्रस्थान । खानगी । २

विचित्र

(७३६)

विचित्र

समाप्ति । अन्त । खातमा । ३ त्याग । ४ हानि ।
नाश । ४ मृत्यु ।
विचरः (पु०) १ परमहंस । वह तपस्वी साधु जो
नंगा रहै । ३ पर्यंत । ४ वह मनुष्य जिसने भोजन
करना त्याग दिया हो ।
विचर्हण (न०) १ भर्त्सना । फटकार । धिक्कार ।
विचर्हणा (स्त्री०) १ डाँट डपट । गाली गलौज ।
विचर्हित (व० कृ०) १ भर्त्सित । फटकारा हुआ । २
नफरत किया हुआ । दृष्टि । ३ वर्जित । ४
नीच । कमीना । ५ दुरा । शठ । दुष्ट ।
विचलित (वि०) १ चूकर या टपक कर निकला हुआ ।
२ किया हुआ । जो अन्तर्धान हो गया हो । ३
गिरा हुआ । टपका हुआ । ४ पिघला हुआ ।
घुला हुआ । ५ विभ्रजित । ६ डीला किया हुआ ।
खुला हुआ । ७ अस्तव्यस्त । बिखरा हुआ । जैसे
केश)
विचानं (न०) १ भर्त्सना । गालीगलौज । अपमान ।
बदनामी । २ खरबनात्मक कथन । खरबन ।
विगाहः (पु०) स्नान । गोता ।
विगीत (व० कृ०) १ भर्त्सित । गाली दिया हुआ ।
२ असंगत । विरोधी ।
विगीतिः (स्त्री०) १ भर्त्सना । गाली । २ खरबन ।
विगुण (वि०) १ निक्कमा । २ गुणविहीन । ३
बिना डोरी का ।
विगूढ (व० कृ०) १ गुप्त । छिपा हुआ । २ भर्त्सित ।
फटकारा हुआ ।
विगृहीत (व० कृ०) १ विभाजित । घुला हुआ ।
अलगवाया हुआ । २ पकड़ा हुआ । ३ जिसके साथ
सुठमेक हुई है ।
विग्रहः (पु०) १ फैलाव । प्रसार । २ आकृति । शक्ती ।
रूप । ३ शरीर । ४ यौगिक शब्दों अथवा समन्त
पदों के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग
करना । ५ कलाङ्का । ६ विग्रह । समर । नीच ।
द्विगुणों में से एक । ७ अनुपद का अभाव ।
८ अंश । भाग ।
विघटनं (न०) बरबादी । नाश ।

विघटिका । स्त्री० । घड़ी का ६०वाँ अंश । २४ लैकगड ।
विघटित (व० कृ०) १ विभोजित । अलग किया
हुआ । २ विभाजित ।
विघटनं (पु०) १ रगड़ । पटकन । २ खोजना । विभोजित
विघटना । करना । ३ चोट ।
विघ्नः (पु०) १ हथोड़ा । सुगरी ।
विघ्नः (पु०) १ अवचवाया हुआ कौर । दक्षिण ।
२ भोज्य पदार्थ ।
विघ्नः । न० । नौम ।
विघ्नः (पु०) नाश । स्थानान्तरकरण । रोक ।
घथाव । २ हिंसन । बध । ३ अवचन । अटकाव ।
४ प्रहार । ५ त्याग ।
विघ्नित (व० कृ०) चारों ओर घुमाया हुआ ।
विघ्नः (व० कृ०) १ अत्यन्त मला हुआ । २ पीड़ा ।
दर्द ।
विघ्नः (पु०) अदचन । रुकावट । बाधा । व्याघात ।
अन्तराय । खलल । — ईशः, — ईशानः, (पु०)
मयेशजी । — नायकः, — नाशकः, — नाशनः,
श्रीमयेशजी । — राजः, — विनायकः, — हारिज,
(पु०) मयेशजी ।
विघ्नित (वि०) विघ्न डाला हुआ ।
विघ्नः (पु०) बोड़े का सुम ।
विघ्नः (पु०) बोड़े का सुम ।
विघ्न (धा० ड०) [विघ्नक्ति, चघ्नक्ति, विघ्नक्ति] १
अलगाना । विभाजित करना । अलग करना । २
पहचानना । ३ वञ्चित करना । वर्जित करना ।
विचक्रितः (पु०) एक प्रकार की मल्लिका या चमेली ।
मदनक ।
विचक्रण (वि०) १ पारदर्शी । दीर्घदर्शी । लतर्क ।
सावधान । चौकस । २ बुद्धिमान । चतुर । विद्वान् ।
३ निपुण । पटु । योग्य । काबिल ।
विचक्रणः (पु०) बुद्धिमान आदमी । चतुर वर ।
विचक्रणम् (वि०) १ जंघा । टाँही । २ उदास ।
परेशान ।
विचक्रणः (पु०) १ तलाश । खोज । २ अनुसन्धान ।
तहकीकात ।

विचयन (न०) खोज । तलाश ।

विचर्चिका (स्त्री०) खुजली । रोगविशेष जिसमें दाँने निकलने और उनमें खुजली होती है । न्यूँची ।

विचर्चित (वि०) मालिश किया हुआ । लेप किया हुआ । मला हुआ ।

विचल (वि०) १ जो बराबर हिलता रहता हो । अस्थिर । २ अभिमानी । अहंकारी ।

विचलन (न०) १ कम्पन । २ उत्पथगमन । अन्यथा चरण । ३ अस्थिरता । चञ्चलता । ४ अहङ्कार ।

विचारः (पु०) १ वह जो कुछ मन से सोचा अथवा सोच कर निश्चित किया जाय । मन में उठने वाली बात । भावना । खयाल । २ परीक्षा । जांच । अनुसन्धान । ३ राजा या न्यायकर्ता का वह कार्य जिसमें वादी और प्रतिवादी के अभियोग और उत्तर आदि सुनकर न्याय किया जाय । ४ निर्णय । फैसला । ५ निश्चय । सङ्कल्प । ६ चुनाव । ७ सन्देह । शङ्का । पशोपेश । हिचकिचाहट । ८ सतर्कता । सावधानता ।—ज्ञः (वि०) निर्णायक । न्यायकर्ता । —भूः, (स्त्री०) १ न्यायालय । विशेष कर यमराज का न्यायालय या न्यायासन । शील, (वि०) विचारवान् । —स्थलं, (न०) १ न्यायालय । अदालत । २ वह स्थान जहाँ किसी विषय पर विचार होता हो ।

विचारकः (पु०) विचारकर्ता । न्यायकर्ता ।

विचारणा (न०) १ विचार करने की क्रिया या भाव । अनुसन्धान । २ सन्देह । पशोपेश हिचकिचाहट ।

विचारणी (स्त्री०) १ समालोचना । बादविवाद । अनुसन्धान । २ सन्देह । ३ मीमांसा दर्शन ।

विचारित (व० कृ०) १ जिस पर विचार किया जा चुका हो । परीक्षित । २ निर्णय किया हुआ । निश्चित किया हुआ ।

विचिः (पु० स्त्री०) } लहर । तरङ्ग ।

विचिकित्सा (स्त्री०) १ सन्देह । शक । २ झूल । चूक ।

विचित (व० कृ०) तलाश किया हुआ । खोजा हुआ ।

विचितः (स्त्री०) खोज । तलाश ।

विचित्र (वि०) १ रंग बिरंगा । चित्तीदार । चित-कबरा । भिन्न भिन्न प्रकार का । ३ चित्रित । ४ सुन्दर । मनोहर । ५ अद्भुत । विलक्षण ।—अंगः, (वि०) १ चित्तीदार रंग वाला ।—अङ्गः, (पु०) १ मयूर । मोर । २ चोता ।—देहः, (वि०) सुन्दर शरीर वाला ।—देहः (पु०) बादल । मेघ ।—वीर्यः, (पु०) चन्द्रवंशी एक राजा का नाम ।

विचित्रं (न०) १ चितकबरा रंग । २ आश्चर्य ।

विचित्रकः (पु०) भोजपत्र का पेड़ ।

विचिन्वत्कः (पु०) १ तलाशी । खोज । २ तहकीकात । अनुसन्धान । ३ घोर पुरुष ।

विचिर्णा (वि०) १ अमणकारी । २ प्रवेशित ।

विचेतन (वि०) १ जीवरहित । मरा हुआ । बेहोश । २ अचेतन । निर्जीव ।

विचेतस् (वि०) १ विवेकहीन । मूढ़ । अज्ञ । २ विकल । परेशान । उदास ।

विचेष्टा (स्त्री०) उद्योग । प्रयत्न ।

विचेष्टित (व० कृ०) १ उद्योग किया हुआ । प्रयत्न किया हुआ । २ परीक्षित । जाँचा हुआ । अनुसन्धान किया हुआ । ३ छुरी तरह या मूर्खतापूर्वक किया हुआ ।

विचेष्टितं (न०) १ क्रिया । कर्म । २ उद्योग । ३ चेष्टा । मुँह बनाना या हाथ पैर पटकना । ४ चैतन्य । इन्द्रियवृत्ति । क्रीड़ा । ५ कौशल ।

विच्छ् (धा० प०) [विच्छति, विच्छयति, विच्छयते] जाना । (उभय०) १ चमकाना । २ बोलना ।

विच्छन्दः
विच्छन्दः
विच्छन्दकः
विच्छन्दकः

(पु०) विशाल भवन, जिसमें कई खण्ड हों ।

विच्छन्दकः (पु०) राजभवन ।

विच्छन्दनं (न०) वसन । उनाल ।

विच्छिन्न (व० क०) १ वमन किया हुआ । उगला हुआ । २ भूला हुआ । तिरस्कृत । ३ निर्वज किया हुआ । छोटा या कम किया हुआ ।

विच्छिन्न (वि०) पोला । धुंधला ।

विच्छिन्न (पु०) रत्न । जवाहर ।

विच्छिन्न (स्त्री०) १ काटकर अलग या टुकड़े करना । २ विच्छेद । अलगगति । ३ कमी । त्रुटि । ४ अवसान । ५ शरीर पर रंग चिरंगे लिखना बनाना । ६ सीमा । ७ हृद । कविता में या तो वेध भूषा आदि में होने वाली लापरवाही या बेइंगापन ।

विच्छिन्न (व० क०) १ काटकर अलग या टुकड़े करना । २ टूटा हुआ । पृथक् किया हुआ । विभाजित । पृथक् किया हुआ । जुदा । अलग । ३ बाधा डाला हुआ । रोका हुआ । ४ समाप्त किया हुआ । ५ रंगचिरंगा बना हुआ । ६ छिपा हुआ । ७ उच्चतन लगाया हुआ ।

विच्छेद (पु०) १ काटकर अलग या टुकड़े करने की क्रिया । २ तोड़ने की क्रिया । ३ क्रम का बीच से भङ्ग होना । सिलसिला टूटना । ४ स्थानान्तरकरण । निषेध । ५ मतानैक्य । जाग्रदुत्थ । ६ ग्रन्थ का परिच्छेद या अध्याय । ७ बीच में पड़ने वाला खाली स्थान । अवकाश ।

विच्छेदनं (न०) काट कर या छेद कर अलगाने की क्रिया ।

विच्युत (व० क०) १ गिरा हुआ । फिसला हुआ । २ स्थानच्युत । नीचे गिराया हुआ । ३ अलगगया हुआ ।

विच्युति (स्त्री०) १ नीचे गिरना । वियोग । अलगगना । २ अधःपात । नाश । ३ गर्भपात ।

विज् (धा० उ०) [वेवेक्ति, वेविक्ते, विक] १ अलगगाना । विभाजित करना । २ पहचानना ।

विजल (वि०) अकेला । जनशून्य ।

विजनं (न०) एकान्त स्थान । निराला स्थान ।

विजननं (न०) उत्पत्ति । जन्म । जनन ।

विजम्पन (वि० अथवा पु०) वर्णमंडर । दागूला ।

विजपलं (न०) कोंचड़ ।

विजयः (पु०) १ जित । जय । २ देवरथ । स्वर्गीय रथ । ३ अर्जुन का नाम । ४ यमराज । ५ बृहस्पति की दशा का प्रथम वर्ष । ६ विष्णु के एक द्वारपाल का नाम । —अभ्युप्रायः (पु०) जीत का उपाय । —कुञ्जरः, (पु०) लड़ाई का हाथी । —कुन्दः, (पु०) पाँच सौ लड़ियों का द्वार । —डिगिडमः (पु०) लड़ाई का बड़ा ढोल । नगरं, (न०) एक नगर का नाम । —नदलः, (पु०) एक बड़ा ढोल । —सिद्धिः, (स्त्री०) सफलता । जीत ।

विजयन्तः (पु०) इन्द्र का नाम ।

विजया (स्त्री०) १ दुर्गा । २ दुर्गा की एक सहचरा परिचारिका या योगिनी का नाम । ३ एक विद्या विशेष जिसे विश्वामित्र ने श्रीरामचन्द्र जी को सिखाया था । ४ भोग । ५ विजयोत्सव । ६ हर । हरीतकी । —उत्सवः, (पु०) एक उत्सव, जो आश्विन शुक्ला १० मी को मनाया जाता है इसीको दुर्गासव भी कहते हैं । —दुर्गमीः, (पु०) आश्विन शुक्ला १० मी ।

विजयिन् (पु०) जीतने वाला । कतहयाव । विजयी ।

विजरं (न०) वृक्ष का तना ।

विजल्पः (पु०) १ सब, कूठ और तरह तरह का उठ पड़ना वार्तालाप । बकवाद । २ वार्तालाप । द्वेषपूर्ण या निन्दात्मक वार्तालाप ।

विजल्पित (व० क०) १ कहा हुआ । जिसके विषय में वार्तालाप हो चुका हो या किया गया हो । २ बकवक किया हुआ ।

विजात (व० क०) १ वर्णमंडर । दागूला । २ हरामजादा । ३ उत्पन्न । पैदा किया हुआ । ३ बदला हुआ । परिवर्तित ।

विजाता (स्त्री०) १ वह लड़की जिसके हाल में सन्तान हुई हो । माता । जननी । २ जारज लड़की । खोगरी ।

विज्ञानिः (स्त्री०) १ भिन्न या दूसरी जाति का । २ दूसरी किस्म या प्रकार का ।

त्रेजातीय (वि०) १ दूसरी जाति का । असमान । असदृश । २ वर्णसङ्कर । दोगला ।

त्रेजिगीषा (स्त्री०) १ विजय प्राप्त करने की इच्छा । २ सब से आगे बढ़ जाने की अभिलाषा ।

त्रेजिगीषु (वि०) १ विजयाभिलाषी । २ ईर्ष्यालु । इच्छानवान ।

त्रेजिगीषुः (पु०) १ घोड़ा । भट । २ प्रतिस्पर्धी । बैरी । प्रतिद्वन्द्वी ।

त्रेजिज्ञासा (स्त्री०) स्पष्ट या साफ जानने का अभिलाषी ।

त्रेजित (व० कृ०) जीता हुआ । जिसने परास्त किया हो ।—आत्मन्, (वि०) जितेन्द्रिय ।—इन्द्रिय, (वि०) अपनी इन्द्रियों को अपने वश में कर लेने वाला ।

त्रेजितिः (स्त्री०) जीत । विजय ।

त्रेजिनः (पु०)
त्रेजिलः (पु०)
त्रेजिनं (न०)
त्रेजिलं (न०) } चटनी ।

त्रेजिह्व (वि०) १ टेढ़ा मेढ़ा । मुड़ा हुआ । घूमा हुआ । मुका हुआ । २ बेईमान ।

त्रेजुलः (पु०) शास्त्रमालि वृक्ष ।

त्रेजुभूतं } (न०) १ जन्माई । २ प्रस्फुटन ।
त्रेजुम्भयाम् } खिलना । कली लगना । ३ खोलना ।
दिलखलाना । प्रकट करना । ४ फैलाव । ५ आमोद प्रमोद । क्रीड़ा । बिहार ।

त्रेजुभूतं } (व० कृ०) १ मुँह खीरे हुए । जमु-
त्रेजुम्भूतं } हाई खेता हुआ । २ खुला हुआ ।
खिला हुआ । फैला हुआ । ३ प्रादुर्भूत । प्रदर्शित । ४ प्रत्यक्ष हुआ । ५ खेलता हुआ ।

त्रेजुभूतं } (न०) १ क्रीड़ा । आमोद प्रमोद ।
त्रेजुम्भूतम् } २ इच्छा । अभिलाषा । ३ प्रदर्शन ।
४ क्रिया । कर्म । आचरण ।

त्रेजुलं } (न०) १ एक प्रकार की चटनी । २
उज्जलं } बाण । तीर ।

विजुल्लं (न०) दालचीनी ।

विज्ञ (वि०) १ जानकार । जानने वाला । २ चतुर । पटु । निपुण ।

विज्ञः (पु०) विद्वान् आदमी ।

विज्ञप्त (व० कृ०) प्रार्थित । सम्मान पूर्वक निवेदन किया हुआ ।

विज्ञप्तिः (स्त्री०) १ विनय । प्रार्थना । विनती । २ बोधना ।

विज्ञात (व० कृ०) १ जाना हुआ । समझा हुआ । पहिचाना हुआ । २ प्रसिद्ध । प्रख्यात । मशहूर ।

विज्ञानं (न०) १ ज्ञान । जानकारी । बुद्धि । प्रतिभा । २ विवेक । ३ निपुणता । पटुता । ४ लौकिक ज्ञान । ५ काम धन्धा । व्यवसाय । ६ संगीत । — ईश्वरः, (पु०) याज्ञवल्क्य स्मृति के मिताचरा टीका के बनाने वाले विज्ञानेश्वर । — पादः, (पु०) व्यास जी का नाम । — मातृकः, (पु०) बुधदेव का नाम । — वाहः, (पु०) वह वाद या सिद्धान्त जिसमें ब्रह्म और आत्मा का ऐक्य प्रतिपादित हो । बुद्धदेव द्वारा प्रचारित सिद्धान्त विशेष ।

विज्ञानिक (वि०) बुद्धिमान । परिष्ठित ।

विज्ञापकः (पु०) १ इत्तिला देने वाला । मुखबर । २ शिक्षक । उपदेशक ।

विज्ञापनं (न०) १ विनय । प्रार्थना । नम्र निवे-
विज्ञापना (स्त्री०) १ दन । २ विज्ञप्ति । आवेदन ।
३ निर्देश ।

विज्ञापित (व० कृ०) १ सम्मान पूर्वक कहा हुआ या सूचित किया हुआ । २ प्रार्थित । ३ सूचित । ४ आदिष्ट ।

विज्ञाप्ति देखो विज्ञप्ति ।

विज्ञाप्यं (न०) प्रार्थना ।

विज्वर (पु०) ज्वर से मुक्त । चिन्ता या कष्ट से मुक्त ।

विजामरं } (न०) नेत्र का सफेद भाग ।
विजामरम् }

विजोति }
विजोति } (पु०) पंक्ति । कतार ।
विजोली }

विट् } (धा० पर०) [वेडति] १ नाद करना ।
विष्ट } ध्वनि करना । शब्द करना । २ अकोसना ।
गाली भजौन करना ।

विटः (पु०) १ जार । २ कामुक । लंपट । ३ साहित्य में एक प्रकार का नाटक । ४ छली । कपटी । धूर्त । ५ वह लौंडा जो मैथुन करवावे । ६ चूहा । ७ खदिर वृक्ष । ८ नारंगी का पेड़ । ९ पल्लव युक्त शाखा या डाली ।—मात्तिकं, (न०) सोनामन्त्री नामक खनिज पदार्थ । लवणां, (न०) नौचर नमक ।

विटंकः } (पु०) १ कवुतर का दरवा । काठुक । कवुतर
विटङ्कः } की अड़्की । २ सब से ऊँचा सिरा या स्थान ।

विटंकक } (वि०) देखो विटंक ।
विटङ्कक }

विटङ्कित } (वि०) चिन्हित । छपा हुआ ।
विटङ्कित }

विटः (पु०) १ शाखा । डाल । गुच्छा । वृक्ष या लता की नयी शाखा । २ छतनार पेड़ । ३ भाड़ी । ४ कोंपल । अड्डर । ५ सघन वृक्षों का नुरमुट । ६ प्रसारण । व्याप्ति । ७ अग्रहकोष का मध्यस्थ परदा ।

विटपिन् (पु०) १ वृक्ष । पेड़ । २ कवृक्ष ।—मृगः, (पु०) बंदर । लंगूर ।

विट्टलः } १ पंढरपुर में भगवान् विष्णु की मूर्ति का
विट्टलः } नाम ।

विठक (वि०) } दुष्ट । खराब । नीच । कमीना ।
विष्टक (वि०) }

विठरः (पु०) बृहस्पति ।

विट् (धा० पर०) [वेडति] १ अकोसना । शप देना । गरियाना । २ जोर से चिखाना ।

विडं (न०) बनावटी निमक ।

विडंगं (व०) }
विडङ्गम् (न०) } वायविडंग ।
विडंगः (पु०) }
विडङ्गः (पु०) }

विडंबः } (पु०) १ नकल । २ कष्ट । पीड़ा ।
विडम्बः } सन्ताप ।

विडंबनं (न०) } १ किसी के रंगरङ्ग या चाल
विडम्बनम् (न०) } डाल आदि की ज्यों की त्यो
विडंबना (स्त्री०) } नकल बनाना । २ अनुकरण
विडम्बना (स्त्री०) } करके चिढ़ाने या अपमान करने वाला । ३ वेश बदलने की क्रिया । ४ छल । धोखा । ५ चिढ़ाना । ६ पीड़न । सन्तापन । ७ हलाय करण । ८ मज़ाक । उपहास ।

विडंबिन } (व० कृ०) १ नकल उतारा हुआ
विडम्बिन } नकल किया हुआ । २ हँसी उड़ाया हुआ । जोड़ ठड़ाया हुआ । ३ छला हुआ । ४ चिढ़ाया हुआ । ५ हताश किया हुआ । ६ नीच । धनहीन । गरीब ।

विडारकः (पु०) बिल्ली ।

विडाल } (पु०) देखो बडाल, विडालक ।
विडालक }

विडीनं (न०) पक्षियों का उड़ान का एक प्रकार ।

विडुलः (पु०) सारस विशेष ।

विडोजस् } (पु०) इन्द्र का नाम ।
विडोजम् }

वितसः (पु०) १ पिंजड़ा । २ रस्सी । जंजीर । बेड़ी जिनके द्वारा वनपशु या पक्षी कैद किये जायें ।

वितंडः } (पु०) १ हाथी । २ ताला या चटखनी ।
वितण्डः }

विण्डा } (स्त्री०) १ दूसरे के पक्ष को दवाने हुए
विण्डा } अपने मत का स्थापन । २ व्यर्थ का झगड़ा या कहासुनी । ३ कलह । द्वेष । ४ शिखारस ।

वितन (व० कृ०) १ फैला हुआ । पसारा हुआ । आगे बढ़ाया हुआ । २ विस्तृत । लंबा । चौड़ा । ३ समरप किया हुआ । पूर्ण किया हुआ । ४ उका हुआ । ५ व्यास ।—ग्रन्थन, (वि०) कमान को ताने हुए ।

विततं (न०) बीया अथवा उसी प्रकार का तार वाला कोई वाजा ।

विततिः (स्त्री०) १ विस्तार । फैलाव । २ समुदाय । रूप्य । गुच्छा । ३ पंक्ति । कतार ।

वितथ (वि०) १ झूठ । मिथ्या ।

वितथ्य (वि०) झूठ ।

वितंतुः } (स्त्री०) पंजाब की एक नदी का नाम ।
वितंतुः }

वितंतुः } (पु०) १ अन्धका घोड़ा । (स्त्री०)
वितन्तुः } विधवा स्त्री ।

वितरणं (न०) १ पार होना । २ दान । ३ अर्पण ।
समर्पण ।

वितर्कः (पु०) १ एक तर्क के बाद होने वाला दूसरा
तर्क । २ अनुमान । कल्पना । विश्वास । ३ विचार ।
४ सन्देह । शक । ५ विचार । विवाद ।

वितर्कणं (न०) १ वादविवाद । बहस । २ अनुमान ।
कल्पना । ३ सन्देह । ४ वादविवाद ।

वितर्दिः } (स्त्री०) ० वेदी । मंच । २ छज्जा ।
वितर्दी } गौल । बरंडा ।
वितर्दिका }

वितर्दिः }
वितर्दी } (न०) देखो वितर्दिः, आदि ।
वितर्दिका }

वितर्लं (न०) पुराणानुसार साठ पातालों में से एक ।

वितस्ता (स्त्री०) पंजाब की एक नदी का नाम ।
इसका आधुनिक नाम झेलम नदी है ।

वितस्तिः (पु०) १२ अंगुल का परिमाण । एक
वालिरत । एक वित्ता ।

वितान (वि०) १ रीता । खाली । २ निस्सार । सार
हीन । ३ उदास । शमगीन । ४ कुंद । मूढ़ । ५
शठ । त्यक्त । पतित ।

वितानं (न०) अवकाश । विश्राम का समय ।

वितानं (पु०) १ फैलाव । विस्तार । २ चँदोवा ।

वितानः (न०) } शामियाना । चन्द्रातप । चाँदनी ।
१ गद्दा । ४ समूह । संग्रह । ५ यज्ञ । ६ यज्ञीय
कुण्ड या वेदी । ७ अवसर । मौक़ा ।

वितानकं (पु०) } १ विस्तार । २ ढेर समूह । ३
वितानकः (न०) } चाँदनी । चन्द्रातप । शामि-
याना । ४ धनिया । ५ मादनामक वृक्ष ।

वितीर्ण (व० क०) १ गुज़रा हुआ । २ दिया हुआ ।
प्रदत्त । ३ नीचे गया हुआ । उतरा हुआ । ४ लेजाया

हुआ । सवारी द्वारा पहुँचाया हुआ । ५ वशवर्ती
किया हुआ ।

वितुहं (न०) १ शिरियारी या सुसना नामक साग ।
२ शैवाल । सिवार ।

वितुन्नकं (न०) १ धनिया । २ तुलिया ।

वितुन्नकः (पु०) ताम्रलकी नाम का वृक्ष ।

वितुष्ट (व० क०) असन्तुष्ट । नाराज ।

वितृष्ण (वि०) सन्तुष्ट । कामनाशून्य ।

वित् (धा० ड०) [वित्तयति—वित्तयते - वित्ता-
पयति—वित्तापयते] दे डालना । दान कर देना ।

वित्त (व० क०) १ पाया हुआ । मिला हुआ । खोजा
हुआ । २ प्राप्त । उपलब्ध । ३ परीक्षित । अनुस-
न्धान किया हुआ । ४ प्रसिद्ध । प्रख्यात ।—
ईशः, (पु०) कुवेर ।—दाः, (पु०) धनदाता ।
दानी । उपकारी ।—मात्रा, (स्त्री०) सम्पत्ति ।
वित्तं, (न०) धन । सम्पत्ति । शक्ति । ताक़त ।

वित्तवत् (वि०) धनी । धनवान ।

वित्तिः (स्त्री०) १ ज्ञान । २ विवेक । विचार । ३
उपलब्धि । सम्भावना ।

वित्रासः (पु०) भय । डर ।

वित्सनः (पु०) बैल । साँड़ ।

विथू (धा० आ०) [वेथते] माँगना । याचना
करना ।

विथुरः (पु०) १ दैत्य । दानव । २ चोर ।

विद् (धा० प०) [वेत्ति, वेद, विदित] १ जानना ।
समझना । सीखना । पता लगाना । खोज निकालना ।
२ अनुभव करना । ३ विचार करना ।

विद् (वि०) जानने वाला । परिचित । (पु०) बुधग्रह ।
२ बुद्धिमान्जन । पण्डितजन । (स्त्री०) १ ज्ञान ।
जानकारी । २ समझदारी । प्रतिभा ।

विदः (पु०) १ पण्डित जन । २ बुधग्रह ।—दा,
(स्त्री०) १ ज्ञान । विद्या । २ समझदारी ।

विदंशः (पु०) ऐसा भोजन जो प्यास लगावे ।

विदग्ध (व० क०) १ जला हुआ । आग से भस्म किया

हुआ । २ पकाया हुआ । ३ पसाया हुआ । हज़म किया हुआ । ४ नष्ट किया हुआ । सड़ा हुआ । ५ चतुर । चालाक । ६ मुत्तफकी । चालाक । ७ अनपचा हुआ ।

विदग्धः (पु०) १ पण्डित । विद्वान् । २ रसिक जन । लंपट जन ।

विदग्धा (स्त्री०) चालाक औरत । नायिका विशेष ।

विद्वयः (पु०) १ विद्वान् जन । पण्डित जन । २ साधु । संन्यासी ।

विदरः (पु०) फाड़ना । विदीर्ण करना ।

विद्वरं (न०) कंकारी । विश्वसारक ।

विदर्भः (पु०) १ विदर्भ देश का राजा । २ रेगिस्तान । —जा,—तनया—राजतनया, (स्त्री०) —

सुभ्रूः, (स्त्री०) दमयन्ती के नामान्तर ।

विदर्भा (पु० बहुवचन०) १ बरादा प्रान्त का प्राचीन नाम । २ बरार प्रान्त निवासी ।

विदल (वि०) १ चिरा हुआ । २ खिला हुआ । विकसित ।

विदलं (न०) १ बाँस की खपाचियों की बनी ठोकरी । २ अनार की छाल । ३ ढाली । टहनी । ४ किसी वस्तु के टुकड़े ।

विदलः (पु०) १ चपाती । २ चीरन । फाड़न । ३ दलना । दरना । जैसे चना या मूँग, उदं आदि का । ४ पहाड़ी आबूत्स ।

विदलनं (न०) दो टुकड़े करना ।

विदारः (पु०) चीरना । विदीर्ण करना ।

विदारकः (पु०) चीरने वाला । फाड़ने वाला । २ नदी के बीच की पहाड़ी या बृच । ३ पानी निकालने को नदी गर्भ में खोदा हुआ कूप जैसा गढ़ा ।

विदारणाः (पु०) १ नदी के बीच में उगा हुआ बृच अथवा चट्टान । २ युद्ध । संग्राम । ३ कर्मिकार नामक पेड़ ।

विदारणां (न०) १ बीच में से अलग करके दो या अधिक टुकड़े करना । फाड़ना । २ सताना । ३ भार डालना । हत्या करना ।

विदारणा (स्त्री०) युद्ध । लड़ाई ।

विदारः (पु०) झपकली । विस्तृष्टा ।

विदित (व० कृ०) १ जाना हुआ । अवगत । ज्ञात । २ सूचित किया हुआ । ३ प्रतिद्व । प्रख्यात । ४ प्रतिज्ञात । इकार किया हुआ ।

विदितः (पु०) विज्ञान पुस्तक । पण्डित ।

विदिनं (न०) ज्ञान । जानकारी ।

विदिश (स्त्री०) दो दिशाओं के बीच का कोना ।

विदिशा (स्त्री०) १ वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम । २ मालवा की एक नदी का नाम ।

विदीर्मा (व० कृ०) १ बीच से फाड़ा या विदारण किया हुआ । २ खिला हुआ । फैला हुआ ।

विदुः (पु०) हाथों के मन्त्र के बीच का भाग ।

विदुर (वि०) चतुर । प्रतिभावान् ।

विदुरः (पु०) १ विद्वज्जन । २ चालाक या मुत्तफकी आदमी । ३ पाण्डु के छोटे भाई का नाम ।

विदुलः (पु०) १ बेत । जलवेत । २ बोल या गन्ध रस नामक गन्धद्रव्य ।

विदून (व० कृ०) सन्तप्त । सताया हुआ । पीड़ित किया हुआ ।

विदूर (वि०) जो बहुत दूर हो ।

विदूरः (पु०) एक पर्यंत का नाम जिससे वैदूर्य मणि निकलती है ।

विदूरजं (न०) वैदूर्य मणि ।

विदूषक (स्त्री०) [विदूषकी] १ अन्ध करने वाला । बिगाड़ने वाला । खराब करने वाला । २ गाली देने वाला । ३ हाज़िर जवाब । मनखरा । भौंड़ ।

विदूषकः (पु०) १ हँसीड़ा । मनखरा । २ विशेष कर राजाओं अथवा बड़े आदमियों के पास उनके मनोविनोद के लिये रहने वाला मनखरा । ३ वह जो बहुत अधिक विषयी हो । कामुक ।

विदूषणां (न०) अश्रुता । बिगाड़ । २ गाली । कुवाच्य । ऐब लगाना ।

विद्वतिः (पु०) स्वर्ग ।

विद्वशः (पु०) अन्यदेश ।

विदेशजः (पु०) विदेश या अन्यदेश का बना हुआ या उत्पन्न हुआ ।

विदेशीय (वि०) अन्यदेश का ।

विदेहः (पु०) } मिथिला प्रान्त ।
विदेहाः (स्त्री०) }

विदेहाः (पु० बहु०) १ मिथिला देश का प्राचीन नाम । २ इस देश के अधिवासी ।

विद्ध (व० कृ०) १ बीच में से छेद किया हुआ । २ बाधक किया हुआ । दुरी या कटार से बाधक किया हुआ । २ पीटा हुआ । त्रैतों से पीटा हुआ । कोड़ों से मारा हुआ । ३ कैका हुआ । ४ वह जिसमें बाधा पड़ी हो या डाली गयी हो । १ समान । तुल्य । बराबर । —कणः, (वि०) वह जिसके कान छिदे हों ।

विद्ध (न०) धाव ।

विद्या (स्त्री०) १ ज्ञान । विद्वत्ता । विज्ञान । इत्तम । [परा और अपरा विद्या के अतिरिक्त किसी किसी शास्त्रकार के अनुसार विद्या के चार प्रकार माने गये हैं । यथा

‘जान्बीहकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्च शास्त्रवती ।’

मनु ने इनमें पाँचवीं आरम्भविद्या और जोड़ी है ।]
२ यथार्थ या सत्यज्ञान । आत्मविद्या । ३ जादू । टोना । ४ दुर्गा, देवी । ५ ऐन्द्रजालिक विद्या या निपुणता । —अनुपालिन् —अनुसेविन्, (वि०) ज्ञानोपाज्जन करने वाला । —अभ्यासः, (पु०) —अर्जनं, (न०) —आगमः, (पु०) विद्योपाज्जन । ज्ञानसञ्चय । अध्ययन । —अर्थः, (पु०) —अर्थिन्, (पु०) विद्यार्थी । छात्र । —आलयः, (पु०) स्कूल । विद्यामन्दिर । —करः, (पु०) परिष्कृत । विद्वान् । —चण्डः, (वि०) वह जो अपनी विद्वत्ता के लिये प्रसिद्ध हो । —धनं, (न०) विद्या रूपी धन । —धरः, (पु०) —धरी, (स्त्री०) देवयोगि विशेष । —व्रतस्नातकः, (पु०) मनु के अनुसार वह स्नातक जो गुरु के निकट रह कर वेद और विद्याव्रत दोनों समाप्त कर अपने घर लौटे ।

विद्युत् (स्त्री०) १ बिजली । २ वज्र । —उन्मेषः, (पु०) बिजली की कौंध या कौंधा । —जिह्वः, (पु०) १ श्रीमद्रामायण के अनुसार रावण के पक्ष के एक राक्षस का नाम, जो शूर्पणखा का पति था । २ एक यज्ञ का नाम । ३ एक जाति विशेष के राक्षस । —उवाता, (स्त्री०) —द्यौतः, (पु०) बिजली का कौंधा या दीप्ति । —पातः, (पु०) बिजली का गिरना । वज्रपात । —लता, (= विद्युत्लता) (स्त्री०) —लेखा, (= विद्युत्लेखा) (स्त्री०) बिजली की धारी या रेखा ।

विद्युत्स्वत् (वि०) वह जिसमें बिजली हो । (पु०) बादल ।

विद्योतन (वि०) [स्त्री० —विद्योतनी] १ प्रकाश करने वाला । २ व्याख्याकार ।

विद्रः (पु०) १ विदारण । २ छिद्र । छेद ।

विद्रधिः (पु०) फोड़ा ।

विद्रवः (पु०) १ पलायन । भगाव । २ भय । डर । ३ बहान । ४ पिबलन ।

विद्राग (वि०) १ नींद से जागा हुआ । जागृत ।

विद्रावणं (न०) १ खदेड़ना । भगाना । हराना । २ गलाना । तरल करना ।

विद्रुमः (पु०) १ मृग का वृक्ष । मुक्ताफल नामक वृक्ष । २ मृगा । प्रवाल । ३ कौपल । वृक्ष का नया पत्ता या अक्षुर । —लता, (स्त्री०) या —लतिका (स्त्री०) १ बलिका या नली नामक गन्धद्रव्य । २ मृगा ।

विद्वस् (वि०) [कर्त्ता, एकवचन, (पु०) विद्वान्
” (स्त्री०) विद्वशी
” (न०) विद्वत्]

१ ज्ञाता । जानकार । २ परिष्ठित । विद्वान् । (पु०) विद्वज्जन । —कल्प, (= विद्वत्कल्प) —देशीय, (= विद्वद्देशीय) —देश्य, (= विद्वद्देश्य) (वि०) थोड़ा या कम विद्वान् । —जनः, (पु०) (= विद्वज्जनः) विद्वान् । परिष्ठित ।

विद्विषः (पु०) } शत्रु । दुश्मन ।
विद्विषं (न०) }

विधिः (व० क०) धृष्टिः । नापमदः ।

विधिः (पु०) १ शत्रुता । धृष्टा । निन्दा । २ निरस्कारः ।

विधिपणः (पु०) धृष्टा करने वाला । शत्रु ।

विधिपणी (स्त्री०) विधि करने वाली स्त्री ।

विधिपणं (न०) १ धृष्टोत्पादक । विधिपकारक । २ शत्रुता । धृष्टा ।

विधिपिन् (वि०) विधिपी । धृष्टा करने वाला ।
विधिपिन् (पु०) शत्रु ।

विधि (धा० प०) [विधति] १ चुभोना । दुसेचना ।
वेधना । काटना । २ सम्मान करना । पूजन करना ।
३ शासन करना । हुकूमत करना ।

विधिः (पु०) १ प्रकार । किस्म । जाति । २ ढंग ।
रूप । ३ गुण । यथा अष्टविध अङ्गुना । ४ हाथी का
साधपदार्थ । ५ समृद्धि । ६ वेध ।

विधिवनं (न०) १ कपन । झिलन । २ थरथरी ।
कंपकपी ।

विधिव्यं (न०) कंपकपी ।

विधिवी (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति मर गया हो ।
पतिहीन स्त्री । रौंड़ । बेवा ।

विधिस (पु०) सर्वसृष्टिउत्पादक ब्रह्म ।

विधा (स्त्री०) १ ढंग । तौर । तरीका । रूप । २
किस्म । जाति । ३ धनदौलत । ४ हाथी या घोड़े
का चारा । ५ प्रवेशन । वेधन । ६ भाड़ा ।
मजदूरी ।

विधातृ (पु०) १ बनानेवाला । सृष्टिकर्ता । २ ब्रह्म ।
३ देने वाला । दाता । ४ प्रारब्ध । भाग्य ।
किस्मत । ५ विश्वकर्मा । ६ कामदेव । ७ मदिरा ।
शराब ।—आयुस्, (पु०) १ धूप । सूर्य का
प्रकाश । २ सूरजमुखी का फूल ।—भू, (पु०)
नारद जी की उपाधि ।

विधानं (न०) १ किसी कार्य का आयोजन । २ सम्पा-
दन क्रम । विन्यास । अनुष्ठान । ३ सृष्टि । ४
निर्देशकरण । ५ आज्ञा । आदेश । धर्मशास्त्र की
आज्ञा । ६ ढंग । तौर । तरीका । ७ तरकीब ।

उपाय । ८ हाथियों की नखों में लाने के लिये दिया
गया खाद्यपदार्थ विशेष । ९ धन । सम्पत्ति । १०
कष्ट । पीड़ा । सन्ताप । ११ विधिपण ।—जः, जः,
(पु०) विद्वजन । पण्डित जी ।

विधानकं (न०) कष्ट । पीड़ा । सन्ताप ।

विधायक (वि०) [स्त्री०—विधायिका] १ वह
कार्य जो सम्पादन क्रम में हो । २ अनुष्ठित ।
सम्पादित । ३ रचा हुआ । ४ आज्ञित । निर्दिष्ट ।
५ न्यस्त । सौंपा हुआ ।

विधिः (पु०) १ कार्य करने की रीति । २ कार्यक्रम ।
प्रणाली । ढंग । नियम । कायदा । ३ आज्ञा । ४
धर्मशास्त्र की आज्ञा या आदेश । ५ धार्मिक विधान
या संस्कार । ६ आचरण । व्यवहार । ७ सृष्टि ।
रचना । ८ सृष्टिकर्ता । ९ भाग्य (प्रारब्ध) १०
हाथी का चारा । ११ समय । १२ वेध । हकीम ।
चिकित्सक । १३ विष्णु का नामान्तर ।—ज्ञः,
(पु०) विधि विधान जानने वाला ब्राह्मण ।
—दृष्ट,—विहित, (वि०) नियमानुसार ।
शास्त्रानुसार ।—द्वैधं (न०) विधियों का विभिन्नत्व ।
—पूर्वकं (अव्यय०), नियम या विधि के अनु-
सार ।—प्रयोगः, (पु०) नियम का विनियोग ।
—योगः, (पु०) भाग या किस्मत की
बूँदी ।—वधूः, (स्त्री०) सरस्वती देवी ।—हीन,
(वि०) विधिरहित । शास्त्रविरुद्ध । अँडसँट ।

विधित्सा (स्त्री०) १ कार्य करने की अभिलाषा ।
२ युक्ति । विधि । विधान ।

विधित्सित (वि०) वह कार्य जो करना है ।

विधित्सितं (न०) इरादा । विचार ।

विधुः (पु०) १ चन्द्रमा । २ कष्ट । ३ राक्षस । वैश्य ।
४ प्रायश्चित्तात्मक कर्म । पापमोचन । पापनाशन ।
५ विष्णु का नामान्तर । ब्रह्मा ।—पञ्चरः,
(विष्णुः भी होता है) खड्ग । खौड़ा ।—प्रियाः,
(स्त्री०) चन्द्रमा की स्त्री रोहिणी ।

विधुतिः (स्त्री०) कपन । थरथराहट ।

विधुननं (न०) कपन । थरथराहट ।

विधुतुदः (पु०) राहु का नाम ।

विधुतुदः (पु०) राहु का नाम ।

विभुर (वि०) १ पीड़ित । दुःखी । सन्तप्त । दुःख से चिह्नित । २ पति या पत्नी के वियोगजन्य दुःख से विकल । विरहव्यथा से विकल । ३ रहित । हीन । मोहताज । ४ विरोधी । शत्रु ।

विभुरः (पु०) रंडुआ । वह जिसकी पत्नी मर गयी हो ।

विभुरं (न०) १ भय । डर । चिन्ता । विरह । वियोग । गुदाई ।

विभुरा (स्त्री०) चीनी और मसालों से मिश्रित दही ।

विभुवनं (न०) कंपन । थरथराहट ।

विभूत (व० कृ०) १ कंपित । काँपता हुआ । लहराता हुआ । २ हिलता हुआ । डोलता हुआ । ३ हटाया हुआ । अलग किया हुआ । स्थानान्तरित किया हुआ । ४ चञ्चल । अटक । ५ त्यक्त । त्यागा हुआ ।

विभूतं (न०) घृणा । अरुचि । नक्ररत ।

विभूतिः (स्त्री०) } कंपन । थरथराहट ।
विभूतनं (न०) }

विभूत (व० कृ०) १ पकड़ा हुआ । ग्रहण किया हुआ । २ विभाजित । पृथक् किया हुआ । ३ अधिकृत । ४ दमन किया हुआ । रोका हुआ । ५ समर्थित । रक्षित ।

विभूतं (न०) आज्ञा की अवहेलना । २ असन्तोष । असन्तुष्टि ।

विधेय (स० क० कृ०) १ जिसका विधान या अनुष्ठान उचित हो । जिसका करना उचित हो । विधान के योग्य । कर्तव्य । २ जो नियम या विधि द्वारा जाना जाय । ३ अधीन । वचन या आज्ञा के वशीभूत । आज्ञापालक । विनम्र । ४ (व्याकरण में) वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के सम्बन्ध में कुछ कहा जाय । —अविमर्शः, (विधेयाविमर्शः) (पु०) साहित्य में एक वाक्यदोष; जो विधेय अंश को अप्रधान अंश प्राप्त होने पर होता है । कहीं जाने वाली मुख्य बात का वाक्यरचना के बीच में दब जाना । —आत्मन्, (पु०) विष्णु भगवान् का नामान्तर । —क्ष,

(वि०) अपने कर्तव्य को जानने वाला । — पदं, (न०) वह कर्म जो पूरा किया जाने वाला हो । विधेय ।

विधेयं (न०) कर्तव्य ।

विधेयः (पु०) अनुचर । नौकर ।

विध्वंसः (पु०) १ नाश । बरबादी । २ बैर । घृणा । नफरत । ३ तिरस्कार । अन्यादर ।

विध्वंसिन् (वि०) जो नष्ट होता हो । जो टुकड़े टुकड़े हो कर गिर रहा हो ।

विध्वस्त (व० कृ०) १ नष्ट । बरबाद । २ बिखरा हुआ । ३ धुँधला । अन्धकारमय । ४ प्रस्त । प्रसा हुआ ।

विनत (व० कृ०) १ झुका हुआ । नवा हुआ । नीचे की ओर प्रवृत्त । २ टेढ़ा पड़ा हुआ । वक्र । ३ नीचे धसा हुआ । दबा हुआ । विनीत । नम्र ।

विनता (स्त्री०) १ कश्यप की एक पत्नी और गरुड तथा अरुण की जननी का नाम । २ एक प्रकार की टोकरी वा डलिया । —नन्दः,—सुतः,—सूनुः, (पु०) गरुड या अरुण के नामान्तर ।

विनतिः (स्त्री०) १ झुकन । नवन । २ नम्रता । विनय । ३ प्रार्थना ।

विनदः (पु०) १ ध्वनि । नाद । कोलाहल । २ वृक्ष विशेष ।

विनमनं (न०) झुकन । नवन ।

विनम्र (वि०) १ झुका हुआ । नवा हुआ । २ दबा हुआ । डबा हुआ । ३ विनयी । नम्र ।

विनम्रकं (न०) तगर वृक्ष का फूल ।

विनय (वि०) १ पटका हुआ । फेंका हुआ । २ गुप्त । गोपनीय । ३ असदाचरणी ।

विनयः (पु०) १ नम्रता । प्रणति । आज्ञिणी । २ शिष्टा । ३ शील । भयता । शिष्टता । ४ व्यवहार में अधीनता का भाव । शिष्टोचित व्यवहार । ५ विनम्रता । ६ भद्रता । नम्रता । ७ आचरण । ८ स्थानान्तरकरण । ९ जितेन्द्रिय पुरुष । १० व्योपारी । सौदागर ।

विनयनं (न०) १ हटाना । ले जाना । २ शिक्षण ।
नियमन ।

विनयनं (न०) नाश । बरबादी ।

विनयनः (पु०) रेगिस्तान के उस स्थान का नाम जहाँ
सरस्वती नदी गुप्त हो जाती है ।

विनष्ट (व० कृ०) १ नष्ट । अखाद । २ खोया हुआ ।
अदृश्य हुआ । ३ भ्रष्ट । विगड़ा हुआ ।

विनस (वि०) [स्त्री०-- विनसा, विनसी]
नासिकाहीन ।

विना (अव्यय०) १ बगैर । अभाव में । न रहने की
अवस्था में । २ सिवा । अतिरिक्त । छोड़कर ।

विनाडिः } (स्त्री०) पल्ल । एक घड़ी का ६०वाँ
विनाडिका } भाग ।

विनायकः (पु०) १ विघ्नविनाशक । २ गणेश जी ।
३ बौद्ध आचार्य विशेष । ४ गरुड़ । ५ विघ्न ।
बाधा । रोकटोक ।

विनाशः (पु०) १ नाश । बरबादी । २ स्थानान्तर-
करण ।—धर्मन्, —धर्मिन्, (वि०) नाशवान् ।

विनाशनं (न०) नाश । बरबादी ।

विनाशनः (पु०) नाशक । नाश करने वाला । बर-
बाद करने वाला ।

विनाहः (पु०) कुए के मुख का ढक्कन ।

विनिक्षेपः (पु०) फैकना । पटकना ।

विनिग्रहः (पु०) १ संयम । दमन । २ परस्पर
विरोध ।

विनिद्र (वि०) १ निद्रारहित । जागा हुआ । २
खिला हुआ । फूला हुआ ।

विनिपातः (पु०) १ अधःपात । पात । २ महासङ्कट ।
नाश । बरबादी । मृत्यु । ३ नरक । ४ धरना ।
६ कष्ट । पीड़ा । ७ अपमान । निरादर ।

विनिमयः (पु०) १ अदलबदल । २ एक वस्तु ले
कर बदले में दूसरी वस्तु देने का व्यवहार । २
वन्धक । गिरवी ।

विनिमेषः (पु०) (आँख के) झाल के रूपकमे
की क्रिया ।

विनियत (व० कृ०) निर्मञ्जित । संयमन ।

विनिमयः (पु०) निरवग्रह । संयमन । दमन ।

विनियुक्त (व० कृ०) १ वियोजित । बिछुरा हुआ ।
अलग किया हुआ । २ विनियोग किया हुआ ।
व्यवहृत । ३ संयुक्त । लगा हुआ । नियुक्त । ४
आज्ञा दिया हुआ ।

विनियोगः (पु०) १ वियोज । विलगाव । वियोग ।
२ त्याग । ३ उपयोग । ४ किसी कार्य को करने के
लिये नियुक्ति भारोपण । ५ अवचन । स्कावट ।

विनिर्जयः (पु०) सब प्रकार से या पूर्ण रूप से
विजय ।

विनिर्णयः (पु०) पूर्णरूप से निवटारा या फैसला ।
२ निश्चय । ३ निर्धारित नियम ।

विनिर्ग्रथः } (पु०) अटलता । दृढ़ता । आग्रह ।
विनिर्ग्रन्थः } ज़िद ।

विनिर्मित (व० कृ०) १ बना हुआ । बनाया हुआ ।
२ रचा हुआ । उत्पन्न किया हुआ ।

विनिवृत्त (व० कृ०) १ लौटा हुआ । लौटाया हुआ ।
२ बंद किया हुआ । ठहराया हुआ । रोक हुआ ।
३ कार्य त्याग किया हुआ ।

विनिवृत्तिः (स्त्री०) १ अवसान । बंदी । रोक । २
अन्त । समाप्ति ।

विनिश्चयः (पु०) १ निश्चय । निर्धारण । २
मन्तव्य । फैसला ।

विनिश्वासः (पु०) आह । उसांस । झोर की साँस ।

विनिष्पेषः (पु०) कुचलना । पीस डालना ।

विनिहत (व० कृ०) १ सादित । घायल किया हुआ ।
२ मार डाला हुआ । ३ सम्पूर्णतः अशक्ती
किया हुआ ।

विनिहतः (पु०) कोई बड़ा अनिवार्य सङ्कट या
आपत्ति जो भाग्यदोष से अथवा दैवप्रेरित आया
हो । २ अशकुन । कुलचण । धूमकेतु । पुच्छ-
लतारा ।

विनीत (व० कृ०) १ हटाया हुआ । अलग किया
हुआ । २ भली भाँति शिक्षित । सुशिक्षित ।

मुनिप्रवृत्ति । ३ सदाचारखी । ४ विनम्र । भद्र । ५ शिष्टोचित । भद्रोचित । ६ भेजा हुआ । प्रेषित । विनम्रजित । ७ पालतु । ८ साफ । सादा । ९ आत्म-संयमी । जितेन्द्रिय । १० दृष्टिल । सजायाप्रता । ११ शासनीय । शासन करने योग्य । १२ प्रिय । मनोहर ।

विनीतः (पु०) १ सिखाया हुआ घोड़ा । २ व्यापारी । सौदागर ।

विनीतक (न०) १ सवारी । गाड़ी । डोली । पालकी । २ लेजाने वाला । डोने वाला ।

विनेतृ (पु०) १ नेता । रहनुमा । २ शिक्षक । ३ राजा । शासक । ४ दूरद्विधानकर्ता ।

विनोदः (पु०) १ हटाना । दूर करना । २ बहलाना । मनोरंजन । कोई कार्य जिससे मनोरंजन हो । ३ खेल । क्रीडा । आमोदप्रमोद । ४ उत्सुकता । उत्कण्ठ । ५ आलहाद । प्रसन्नता । ६ रतिक्रिया का आसन विशेष ।

विनोदनं (न०) १ हटाने की क्रिया । बहलाने की क्रिया ।

विन्दुः (वि०) १ प्रतिभाशाली । बुद्धिमान । २ चिन्दु । उदार ।

विन्दुः } (पु०) बूँद । कतरा ।
विन्दुः }

विन्ध्यः } (पु०) विन्ध्याचल नाम का पहाड़ । यह
विन्ध्यः } मध्यदेश की दक्षिणी सीमा हो ।—

अटवी, (स्त्री०) विन्ध्याचल का विशाल वन ।—

कूटः, (पु०) —कूटनं, (न०) अगस्त्य जी की उपाधि ।—वासिन्, (पु०) संस्कृत व्याकरण की व्याडि की उपाधि ।—वासिनी, (स्त्री०) दुर्गा देवी की उपाधि ।

विन्न (व० क०) १ जाना हुआ । प्रसिद्ध । २ प्राप्त । उपलब्ध । ३ बहस किया हुआ । अनुसन्धान किया हुआ । ४ स्थापित । प्रतिष्ठित । ५ विवाहित ।

विन्नकः (पु०) अगस्त्य जी का नाम ।

विन्यस्त (व० क०) १ स्थापित । रखा हुआ । २ जड़ा हुआ । बैठाया हुआ । ३ गाढ़ा हुआ । ४

क्रम से रखा हुआ । ५ सौंपा हुआ । ६ अर्पित । ७ न्यस्त । जमा किया हुआ ।

विन्यासः (पु०) १ स्थापन । अमानत रखना । २ अमानत । धरोहर । ३ सजावटी डीक जगह पर करीने से रखना । ४ समूह । संग्रह । ५ स्थान । आधार ।

विपक्वित्रम (वि०) १ अच्छी तरह पका हुआ । २ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त । परिपक्वता को प्राप्त ।

विपक्व (वि०) १ पूर्ण रूप से पका हुआ या परिपक्व । २ पूर्ण वृद्धि को प्राप्त । परिपूर्ण । ३ रेंधा हुआ । पकाया हुआ ।

विपक्ष (वि०) १ विरुद्ध । खिलाफ । प्रतिकूल । २ उलटा । विपरीत ।

विपक्षः (पु०) १ शत्रु । दुश्मन । प्रतिपक्षी । २ सौत । ३ वादी । मुद्दई । ४ न्याय या तर्क शास्त्र में वह पक्ष जिसमें साक्ष्य का अभाव हो ।

विपक्षिका }
विपक्षिका } (स्त्री०) १ वीणा । २ क्रीडा । खेल ।
विपक्षी } आमोद प्रमोद ।
विपक्षी }

विपणः (पु०) } १ विक्री । २ हल्की तिजारत ।
विपणनं (न०) } छोटा व्यापार ।

विपणिः } (स्त्री०) १ बाजार । हाट । दूकान । २
विपणी } व्यापारी माल । विक्री के लिये रखा हुआ
माल । ३ व्यापार । वाणिज्य ।

विपणिन् (पु०) व्यापारी । सौदागर । दूकानदार ।

विपत्तिः (स्त्री०) १ आपत्ति । सङ्कट । मृत्यु । नाश । ३ आतना ।

विपत्तिः (पु०) उत्तम या प्रसिद्ध पैदल सिपाही ।

विपथः (पु०) कुपथ । बुरा मार्ग ।

विपद् (स्त्री०) १ आपत्ति । विपत्ति । सङ्कट । २ मृत्यु । मौत ।—उद्धरणं, (न०) —उद्धारः, (पु०)
विपत्ति से निस्तार ।—युक्त, (वि०) अभागा । दुःखी ।

विपदा देखो विपद् ।

विपन्न (व० क०) १ मृत । मारा हुआ । २ खोया

हुआ । नष्ट किया हुआ । ३ अभागा । बद्ध-
किस्मत । पीड़ित । विपद्गुस्त । ४ अशक्त । बेकाम ।

विपन्नः (पु०) सौंप । सर्प ।

विपरिणामनं (न०) १ परिवर्तन । २ रूप परि-
विपरिणामः (पु०) ३ वर्तन । रूपान्तर ।

विपरिवर्तनं (न०) लोटन । लोटने की क्रिया ।

विपरीत (वि०) १ उलटा । विरुद्ध । खिलाफ । २
अशुद्ध । नियम विरुद्ध । ३ कूटा । असत्य ।
प्रतिकूल । ४ अप्रिय । अशुभ । ५ चिड़चिड़ा

विपरीतः (पु०) रतिक्रिया का आसन विशेष ।

विपरीता (स्त्री०) १ असनी स्त्री । २ दुरचरित्रा
स्त्री ।

विपरीतः (पु०) पलाश वृक्ष ।

विपर्ययः (पु०) १ विरुद्धता । विपरीतता । उलटा
पन । २ परिवर्तन (भेष या पोशाक का) ३
अभाव । अनस्तित्व । ४ हानि । ५ सम्पूर्णतः
नाश । ६ अदल बदल । विनिमय । ७ भूल ।
चूक । गलती । भ्रम । ८ आपत्ति । विपत्ति ।
दुर्भाग्य । ९ द्वेष । वैमनस्य । शत्रुता ।

विपर्यस्त (व० क०) १ परिवर्तित । बदला हुआ ।
उलटा । २ अमात्मक ।

विपर्यायः (पु०) उलटा । विपरीत ।

विपर्यासः (पु०) १ परिवर्तन । उलटापन । २
प्रतिकूलता । विरुद्धता । ३ अदल बदल । बदलौ-
बल । उलट पलट । ४ भूल । चूक ।

विपलं (न०) समय का एक अत्यन्त छोटा विभाग
जो एक पल का साठवाँ भाग होता है ।

विपलागनं (न०) भिन्न भिन्न दिशाओं में अथवा
चारों ओर भाग जाना ।

विपश्चिन् (वि०) परिङित । बुद्धिमान । सूक्ष्मदर्शी ।

विपश्चिन् (पु०) परिङितजन । बुद्धिमान जन ।

विपाकः (पु०) १ परिपक्व होना । पचन । पकना ।
२ पूर्ण दशा को पहुँचना । तैयारी पर आना ।
चरम उत्कर्ष । ३ फल । परिणाम । ४ कर्म का
फल । ५ कठिनाई । सौंभत । ६ स्वाद । ज्ञायक ।

विपाटनं (न०) १ उखाड़ना । खंडना । चीरना ।
फाटना । २ मूलोच्छेद । समूलोत्पाटन । ३
अपहरण । लुण्ठन ।

विपाठः (पु०) लंबा नाग विशेष ।

विपांडु } (वि०) पीला । पीत ।
विपाण्डु }

विपांडुर } (वि०) पीला । पीत ।
विपाण्डुर }

विपांडुरा } (स्त्री०) महामेदा ।
विपाण्डुरा }

विपादिका (स्त्री०) १ कुष्ठ रोग का एक भेद ।
अपरस । प्रहेलिका । पहेली ।

विपाश } (स्त्री०) पंजाब की अयान नदी का
विपाशा } प्राचीन नाम ।

विपिनं (न०) वन । जंगल । अरण्य ।

विपुल (वि०) १ बड़ा । विस्तारित । विस्तृत ।
चौड़ा । आँड़ा । २ अधिक । बहुत । ३ अगाध ।
गहरा । ४ रोमाञ्चित ।—छाया, (वि०) सघन ।
छायादार । जगना, (वि०) बड़े चूतड़ों
वाली स्त्री ।—मति, (वि०) बहुत बुद्धि वाला ।
बड़ा बुद्धिमान् । रसः, (पु०) गन्ना । ऊँस ।
ईल ।

विपुलः (पु०) १ मेरुपर्वत । २ हिमालय पर्वत । ३
प्रतिष्ठितजन ।

विपुला (स्त्री०) पृथिवी । वसुधरा ।

विपुयः (पु०) भूल । मुञ्जवृक्ष ।

विप्रः (पु०) १ ब्राह्मण । २ परिङित । बुद्धिमान जन ।
३ अदन्तवृक्ष ।—प्रयः, (पु०) पलाश वृक्ष ।
—स्व, (न०) ब्राह्मण की सम्पत्ति ।

विप्रकर्षः (पु०) कासला । दूरी ।

विप्रकारः (पु०) १ तिरस्कार । अनादर । २ अपकार ।
अनिष्ट । ३ दुष्टता । शठता । ४ प्रतिकूलता । ५
प्रतिहिंसन । बदला ।

विप्रकीर्ण (व० क०) १ नितर बितर छितरा हुआ ।
बिखरा हुआ । २ बीजा । बिखरे हुए (बाल)
३ फैला हुआ । निकला हुआ । ४ चौड़ा ।
आँड़ा ।

विप्रकृत (व० क०) १ चोट खाया हुआ । अनिष्ट किया हुआ । अपकार किया हुआ । २ अपमानित । तिरस्कृत । कुवाच्य कहा हुआ । ४ सामना किया हुआ । ५ बदला लिया हुआ ।

विप्रकृतिः (स्त्री०) १ अनिष्ट । अपकार । २ अपमान । तिरस्कार । कुवाच्य । ३ बदला । प्रति-उत्तर ।

विप्रकट (व० क०) १ खींच कर दूर किया हुआ या हटाया हुआ । २ दूरस्थ । दूर । फासले पर । ३ निकला हुआ । आगे बढ़ा हुआ । लंबा किया हुआ ।

विप्रकृष्टक (त्रि०) दूरस्थ । दूर का ।

विप्रतिकारः (पु०) १ प्रतिरोध । प्रतिक्रिया । २ प्रतिहिंसा । बदला ।

विप्रतिपत्तिः (स्त्री०) १ विरोध (मत का राय का) २ आपत्ति । एतराज । ३ परेशानी । विकलता । ४ परस्परिक सम्बन्ध । ५ अभिज्ञता ।

विप्रतिपन्न (व० क०) १ परस्पर विरुद्ध । मृतविरोधी । २ विकल । व्याकुल । परेशान । ३ विवादग्रस्त । झगड़े में पड़ा हुआ । ४ परस्पर सम्बन्ध युक्त ।

विप्रतिषेधः (पु०) १ निषेध । २ दो बातों का परस्पर विरोध । समानबल वालों का आपुस का विरोध ।

“दुश्चयन विरोधो विप्रतिषेधः।”

३ वर्जन ।

विप्रतिस्सारः (पु०) १ अनुताप । परिताप । पक्ष-विप्रतीसारः (तावा । २ रोष । क्रोध । ३ दुष्टता ।

विप्रदुष्ट (व० क०) १ पापरात । २ कामी । ३ मन्द । नष्ट ।

विप्रनष्ट (व० क०) १ खोया हुआ । २ व्यर्थ । निरर्थक ।

विप्रमुक्त (व० क०) १ कुटा हुआ । कुटकारा पाया हुआ । (तीर, गोली, गोला) । फँका हुआ । बलाया हुआ । ३ रहित ।

विप्रयुक्त (व० क०) १ विगोजित । अलगया हुआ । विशिष्ट । विभिन्न । जो मिला न हो । २ बिछुड़ा हुआ । ३ मुक्त किया हुआ । छोड़ा हुआ । ४ रहित किया हुआ । विना ।

विप्रयागः (पु०) १ अनैक्य । पार्थिक्य । विलगाव । असङ्गति । २ (प्रेमियों का) विछोह । वियोग । ३ झगड़ा । मतमुदाव ।

विप्रलब्ध (व० क०) १ छूला हुआ । प्रतारित । धोखा दिया हुआ । २ हताश । निराश । ३ अपकार किया हुआ । अनिष्ट किया हुआ ।

विप्रलब्धा (स्त्री०) वह नायिक जो सङ्केत-स्थान में प्रियतम को न पा कर निराश या दुःखी हुई हो ।

विप्रलम्भः (पु०) १ धोखा । प्रतारण । छल । विप्रलम्भः (कपट । २ विशेष कर प्रतिभङ्ग करके

अथवा मिथ्या बोल कर दिया हुआ । धोखा । ३ झगड़ा । विवाद । ४ विछोह । वियोग । ५ प्रेमियों का वियोग । ६ साहित्य में विप्रलम्भ शृङ्गार । [विप्रलम्भ शृङ्गार में नायक नायिका के विरहजन्य सन्ताप आदि का वर्णन किया जाता है ।]

विप्रलापः (पु०) १ बकवाद । स्वर्थ की बकबक । सारहीन वाक्य । २ विवाद । झगड़ा । ३ विरुद्ध कथन । ४ प्रतिज्ञाभङ्ग ।

विप्रलयः (पु०) समूलनाश । विनाश ।

विप्रलुप्त (व० क०) १ अपहृत जो उड़ा लिया गया हो । जिसके कार्य में विघ्न या बाधा डाली गयी हो ।

विप्रलोभिन (पु०) किङ्किरात और अशोक नामक वृक्ष द्वय का नाम ।

विप्रवासः (पु०) परदेश निवास । विदेशवास ।

विप्रश्लिषा (स्त्री०) स्त्री दैवज्ञ । स्त्री ज्योतिषी ।

विप्रहीण (वि०) रहित । विहीन ।

विप्रिय (वि०) अप्रिय । अरुचिकर । दुस्स्वादु ।

विप्रियं (न०) अपकार । अप्रियकार । बुरा कार्य ।

विप्रुप् (स्त्री०) १ बूढ़ । कतरा । २ चिन्ह । ध्वजा । दग । चिन्दु ।

विप्रोषिन (व० क०) १ विदेश में रहने वाला । प्रवास में गया हुआ । २ निर्वासित — भर्तृका, (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति या प्रेमी प्रवास में हो ।

विप्रवः (पु०) १ उतराना । तैरना । २ विरोध । ३ परेशानी । विकलता । ४ उपद्रव । हंगामा । ५

वरवादी। वह युद्ध जिसमें लूट पाट की जाय।
शत्रुभय। परत्रचक्र-भय। ३ हानि। नाश। ७
उत्प्रेषण। अत्याचार। ८ वैपरोत्य। विरोध। ९
धुज या गदे जो आर्द्रे पर या दर्पण पर क्रम
जाती है। यथा—

अपप्रजितविरुद्धे युगे

X X X

मतिरादर्थं युगाभिदुष्यते।

—किरातार्जुनीय।

१० लङ्घन। अतिक्रमण। भङ्गकरण। ११
आफत। विपत्ति। १२ दुष्टता। पापकर्म।
पापमयता।

विस्त्रावः (पु०) १ बाढ़। वृद्धा। २ उपद्रवकारक।
३ बोड़े की बहुत तेज़ चाल।

विप्लुत (व० कृ०) १ छितराया हुआ। बिखरा हुआ।
२ डूबा हुआ। बुड़ा हुआ। ३ आकुल। ववहाया
हुआ। ४ मार काट या लूट पाट करके नष्ट किया
हुआ। ५ खोया हुआ। हिराना हुआ। ६ अपसा-
नित। तिरस्कृत। ७ वरवाद किया हुआ। उजाड़ा
हुआ। ८ बदशक्त किया हुआ। ९ जारकर्म का
अपराधी। अभिचारी। १० विरुद्ध। उलटा। ११
मूढ। असत्य।

विस्मृ-देखो विप्रुध”।

विस्तृत (वि०) १ व्यर्थ। निरर्थक। बेकाम। बेफायदा।

विघ्नः (पु०) १ कोष्टकद्वारा। मलावरोध।
विबन्धः (व० कृ०) १ कबिज्ञयत। २ अवरोध। रुकावट।

विवाधा (स्त्री०) पीडा। कष्ट। सन्ताप।

विबुद्धः (व० कृ०) १ जागृत। जागता हुआ। २
खिला हुआ। फूला हुआ। फैला हुआ। ३ चतुर।
निपुण। पटु।

विबुधः (पु०) १ बुद्धिमानजन। विद्वान् पुरुष।
२ देवता। ३ चन्द्रमा।—अविपत्तिः, —इन्द्रः,
—ईश्वरः, (पु०) इन्द्र की उपाधियां।—क्षिप्रः,
—शत्रुः, (पु०) दैत्य। राक्षस।

विबुधानः (पु०) १ शक्तिशाली पुरुष। २ शिष्यक।

विबोधः (पु०) १ जागृति। जागरण। २ बुद्धि।
प्रतिभा। ३ व्यभिचार भाव (अलङ्कार साहित्य में),
४ सम्यक् बोध। ५ देश में जाना।

विभक्त (व० कृ०) १ बँटा हुआ। विभाजित। धृक्
क्रिया हुआ। २ जो अपने पिता की सम्पत्ति से
अपना भाग या चुका हो और अलग रहता हो।
३ विमुक्त। ४ भिन्न। बहुसंख्यक। ५ कार्य से
अवकाश प्राप्त। एकान्तवासी। ७ नियमित। व्यव-
स्थित। यथा विहित। ८ शोभित। भूषित।

विभक्तः (पु०) कालिकेय का नाम।

विभक्तिः (स्त्री०) १ विभाग। बाँट। २ अलग होने
की क्रिया या भाव। पार्थक्य। अलगाव। ३
पैतृक सम्पत्ति का भाग या हिस्सा। ४ शब्द के
आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिन्ह जो यह
बतलाता है कि, उस शब्द का क्रियापद से क्या
सम्बन्ध है। संस्कृत व्याकरण में विभक्ति वास्तव
में शब्द का रूपान्तरित अङ्ग है।

विभंगः (पु०) १ टूटन। (हड्डी का) टूटना। २
विभङ्गः (व० कृ०) १ बँदी। अवरोध। २ मोड़। सकुञ्चन। ३ कुरी।
पत। शिकन। ४ लीदी। जीना। ५ विकसन।
प्राकट्य।

विभवः (पु०) १ धन दौलत। सम्पत्ति। २ महिमा
बढ़प्पन। अधिकार। ३ विक्रम। पराक्रम। बल।
४ उच्चपद। महिमान्वितपद। ५ औदार्य। ६
मोक्ष। मुक्ति। स्वर्गीय सुख।

विभा (स्त्री०) १ दीप्ति। आभा। २ किरन। ३
सौन्दर्य।—करः, (पु०) १ सूर्य। २ अर्क।
मदार। अकौआ। ३ चन्द्रमा।—वस्तुः, (पु०)
१ सूर्य। २ अग्नि। ३ चन्द्रमा। ४ हार। गले
का आभूषण विशेष।

विभागः (पु०) १ हिस्सा बाँट। बँटवारा। २ पैतृक
सम्पत्ति में का एक भाग। ३ अंश। भाग। ४
अलगाव। विभाजन। ५ परिच्छेद खण्ड।—
कल्पना, (स्त्री०) बँटवारा या हिस्सों का
बाँटना।—धर्मः, (पु०) दायभाग।

विभाजनं (व०) बँटवारा। बाँटने की क्रिया।

विमाज्य (वि०) १ बाँटे जाने के योग्य । २ खण्डनीय । विभेद्य ।

विभातं (न०) प्रभात । तड़का ।

विभावः (पु०) १ (साहित्य में) रसविधान में भाव का उद्बोधक । शरीर या मन के किसी विशेष परिस्थिति में पहुँचाने वाली अवस्था विशेष । २ मित्र । परिचित ।

विभाजनं (न०) १ विवेक । विचार । २ बाद विभाजना (स्त्री०) १ विवाद । अनुसन्धान । परीक्षण । ३ चिन्तन । (स्त्री०) साहित्य में एक अर्थालङ्कार । इसमें कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति या किसी अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति या प्रतिबन्ध होने पर भी, कार्य की सिद्धि दिखलायी जाती है ।

विभावरी (स्त्री०) १ रात । २ हल्दी । ३ कुटनी । दूती । ४ बेरिया । रंड़ी । ५ व्यभिचारिणी स्त्री । ६ मुखरा स्त्री ।

विभावित (व० कृ०) १ प्रादुर्भूत । जो स्पष्ट दिखलायी दे । २ जाना हुआ । समझा हुआ । चिन्तित किया हुआ । ३ देखा हुआ । पहचाना हुआ । ४ विचारा हुआ । विवेचित । विवेचना किया हुआ । ५ लक्षित । सूचित । बतलाया हुआ । ६ सिद्ध किया हुआ । स्थापित किया हुआ । साबित किया हुआ ।

विभाषा (स्त्री०) १ संस्कृत व्याकरण में वे स्थल जहाँ ऐसे वचन पाये जाँय कि " ऐसा न होता । " तथा ऐसा हो भी सकता है । २ विकल्प । ३ नियम की विकल्पना ।

विभासा (स्त्री०) दीप्ति । प्रभा । आभा ।

विभिन्न (व० कृ०) १ तोड़ा हुआ । अलग किया हुआ । चीरा हुआ । काड़ा हुआ । बिदा हुआ । २ घायल । विधा हुआ । विद्धः । ३ भगाया हुआ । हटाया हुआ । ४ परेशान । विकल । उद्भिन्न । ५ इधर उधर फिरता हुआ । ६ हताश । ७ अनेक प्रकार का । कई तरह का । ८ मिश्रित किया हुआ । रंगविरंगा ।

विभिन्नः (पु०) शिव जी ।

विभीतः (पु०)
विभीतं (न०)
विभीतकः (पु०)
विभीतकं (न०)
विभीतकी (स्त्री०)
विभीता (स्त्री०)

बहेड़े का पेड़ ।

विभीषक (वि०) भयप्रद । डराने वाला ।

विभीषिका (स्त्री०) १ भय । डर । २ डराने का साधन । पक्षियों को डराने का पुतला ।

विभु (वि०) [स्त्री०—विभु, विभ्वी] १ ताकतवर । बलिष्ठ । बलवान । २ प्रसिद्ध । ३ योग्य । ४ दृढ़ । आत्मसंयमी । जितेन्द्रिय । ५ अनादि । सर्वगत । सर्वव्यापक ।

विभुः (पु०) १ एक प्रकार का उद्गाथी तरह पदार्थ । २ आकाश । शून्य स्थान । ३ काल । समय । ४ आत्मा । जीवात्मा । ५ प्रभु । स्वामी । ६ ईश्वर । ७ भृत्य । नौकर । ८ ब्रह्मा । ९ शिव । १० विष्णु ।

विभुन (व० कृ०) देवामेंदा । मुड़ा हुआ । मुका हुआ ।

विभूतिः (स्त्री०) १ बड़प्पन । अधिकार । शक्ति । २ समृद्धि । स्वास्थ्यता । ३ महत्त्व । महिमाम्बितपद । ४ विभव । ऐश्वर्य । ५ धन । सम्पत्ति । ६ अलौकिक शक्ति । ७ कंड़े की राख ।

विभूषणं (न०) गहना । भूषण ।

विभूषा (स्त्री०) १ दीप्ति । प्रभा । २ सौन्दर्य । मनोहरता ।

विभूषित (व० कृ०) अलङ्कृत । सजा हुआ ।

विभूत (व० कृ०) समर्थित । समर्थन किया हुआ । रचित । धारण किया हुआ ।

विभ्रंशः (पु०) १ पतन । अवनति । २ विनाश । ध्वंस । ३ ऊँचा कगारा । ४ पहाड़ की चोटी के ऊपर का चौरस मैदान ।

विभ्रंशित (व० कृ०) १ बहकाया हुआ । फुसलाया हुआ । २ रहित किया हुआ ।

विभ्रमः (पु०) १ अमण । चक्कर । फेरा । २ भूल । चूक । गलती । ३ उतावली । उद्दिग्भता । ४ कियों का एक द्वाव जिसमें वे भ्रम से उलझे । सीधे

आभूषण और वस्त्र पहन लेती हैं तथा ठहर ठहर कर मतवालियों की तरह कभी क्रोध, कभी हर्ष प्रकट करती हैं । २ किसी प्रकार की भी कामप्रणोदित क्रिया । प्रीतिद्योतक हावभाव । ३ सौन्दर्य । शोभा । ७ शङ्का । सन्देह । ८ भ्रान्ति । धोखा । भूल ।

विभ्रमा (स्त्री०) बुझापा ।

विभ्रष्ट (व० कृ०) १ गिरा हुआ । अलगगाया हुआ । २ उजाड़ा हुआ । नष्ट किया हुआ । ३ अन्तर्निहित । दृष्टि के बहिर्भूत ।

विभ्राज् ((वि०) चमकीला । प्रकाशमान ।

विभ्रान्त (व० कृ०) १ घूमता हुआ । चक्कर खाता हुआ । २ उद्विग्न । विकल । व्याकुल । ३ भ्रम में पड़ा हुआ । विभ्रमयुक्त । — शील, (वि०) वह जिसका मन व्याकुल हो । २ नशे में चूर । — शीलः, (पु०) १ बानर । २ सूर्य का या चन्द्रमा का मण्डल ।

विभ्रान्तिः (स्त्री०) १ चक्कर । फेरा । २ भ्रान्ति । भ्रम । ३ सन्देह । हड़बड़ी । घबड़ाहट ।

विभ्रत (व० कृ०) १ असंगत । विषम । २ वे जिनका मत या राय एक न हो । ३ तिरस्कृत । तुच्छ समझा हुआ ।

विभ्रतः (पु०) शत्रु ।

विभ्रति (वि०) मूर्ख । मूढ़ । बुद्धिहीन ।

विभ्रतिः (पु०) १ मतानैक्य । एक मत का अभाव । २ अरुचि । नापसंदगी । ३ मूर्खता । मूढ़ता ।

विभ्रत्सरं (न०) ईर्ष्या रहित । जो ईर्ष्यालु न हो ।

विभ्रद् (वि०) १ नशे से मुक्त । २ हर्ष रहित । ईर्ष्यालु ।

विभ्रनस् } (वि०) १ उदास । खिन्न । रंजीदा ।
विभ्रनस्क } २ जिसका मन उछाट हो । अनमना ।
३ परेशान । विकल । ४ अप्रसन्न । ५ वह जिसका मन या भाव बदला हुआ हो ।

विभ्रन्यु (वि०) १ क्रोध शून्य । २ शोकरहित ।

विभ्रयः (पु०) अदल बदल । विनिमय ।

विमर्दः (पु०) १ मूढ़ मर्दन करना । अच्छी तरह मलना दलना । २ स्पर्श । ३ शरीर में उद्बदन करना । ४ युद्ध । संग्राम । मुठमेड़ । ५ नाश । वरबादी । ६ सूर्यचन्द्र का समागम । ७ ग्रहण ।

विमर्दकः (पु०) १ मर्दन करने वाला । मसल डालने वाला । चूर चूर कर डालने वाला । पीस डालने वाला । २ सुगन्ध द्रव्यों की पिसाई या कुटाई । ३ (चन्द्र सूर्य) ग्रहण । ४ सूर्य एवं चन्द्र का समागम ।

विमर्शः (पु०) १ किसी तथ्य का अनुसन्धान । किसी विषय का विवेचन या विचार । २ आलोचना । समीक्षा । ३ बहस । ४ विरुद्ध निर्णय या फैसला । ५ शङ्का । सन्देह । हिचकिचाहट । ६ वासना ।

विमर्षः (पु०) १ विवेचन । विचार । २ अर्थार्थ । असहिष्णुता । ३ असन्तोष । अप्रसन्नता । ४ नाटक का एक अङ्क । इसके अन्तर्गत अपवाद, संकेत, व्यवसाय, द्रव, द्युति, शक्ति, प्रसंग, खेद, प्रतिषेध, विरोध, प्ररोचना, आदान और उदान का निरूपण किया जाता है ।

विमल (वि०) १ मलरहित । निर्मल । बेदाग । २ स्वच्छ । साफ़ । ३ सफेद । चमकीला ।

विमलं (न०) १ चाँदी की कलई । २ अवसर । — दानं, (न०) देवता का चढ़ावा । — मणिः, (पु०) स्फटिक ।

विमांसं (न०) १ अशुद्ध, अपवित्र या वर्जित मांस ।
विमांसः (पु०) १ जैसे कुत्ते का मांस ।

विमातृ (स्त्री०) सौतेली माता । — जः, (पु०) सौतेली माता का पुत्र ।

विमानं (न०) १ अपमान । तिरस्कार । २ माप ।
विमानः (पु०) १ विशेष । २ गुब्बारा । ज्योमयान ।
३ सवारी । ४ बड़ा कमरा । सभाभवन । ५ राज प्रासाद या महल जो सतखना हो । यथा —

“विना नीलः सतखनिना
वद्विनानाग्रभूमीः ।”

— मेवदुत ।

७ घोड़ा । — चारिन्, — यान, (वि०) ज्योमयान में बैठ कर घूमने वाला । — राजः, (पु०) सर्वोत्तम

व्योमयान । २ व्योमयान का सञ्चालक या चलाने वाला ।

विमानना (स्त्री०) अपमान । तिरस्कार ।

विमानित (व० क०) अपमानित । तिरस्कृत ।

विमार्गः (पु०) १ कुपथ । बुरा रास्ता । २ कदाचार । बुरी चाल । ३ झट्ट । बुहारी ।

विमार्गणं (न०) खोज । तलाश । अनुसन्धान ।

विमिश्र (वि०) मिला हुआ । मिश्रित । मिला विमिश्रित । जुला ।

विमुक्त (व० क०) १ छूटा हुआ । छुटकारा पाये हुए । २ त्यागा हुआ । त्यक्त । ३ फँका हुआ । छोड़ा हुआ (जैसे अस्त्र) ।—कण्ठः (पु०) बड़े जोर से चिल्लाना । फूट फूट कर हदन करना ।

विमुक्तिः (स्त्री०) १ छुटकारा । २ अलगवान । ३ मोक्ष ।

विमुख (वि०) [स्त्री—विमुखी] १ जिसने अपना मुख किसी कारण वशात् फेर लिया हो । २ जो किसी कार्य या विषय में दत्तचित्त न हो । अमनस्क । ३ विरुद्ध । ४ रहित । विना ।

विमुग्ध (वि०) बबड़ाया हुआ । विकल । परेशान ।

विमुद्ग (वि०) १ बिना मोहर किया हुआ । २ खुला हुआ । खिला हुआ । फूला हुआ ।

विमूढ (व० क०) १ मोहग्रस्त । भ्रम में पड़ा हुआ । २ बहकाया हुआ । तालच दिखलाया हुआ । ३ मूढ़ ।

विमृष्ट (व० क०) १ मला हुआ । पौछा हुआ । साफ़ किया हुआ । २ सोचा विचारा हुआ ।

विमोक्षः (पु०) १ छुटकारा । रिहाई । २ प्रक्षेपण । छोड़ना (जैसे तीर का) ३ मोक्ष । मुक्ति । जन्म मरण से छुटकारा ।

विमोक्षणं (न०) १ रिहाई । छुटकारा । मुक्ति ।

विमोक्षणा (स्त्री०) १ फँकना । छोड़ना । २ त्यागना । ४ (अंडे) देना ।

विमोचनं (न०) १ बंधन या गाँठ खोलना । २ बंधन से मुक्ति । छुटकारा । रिहाई । ३ मोक्ष । मुक्ति ।

विमोहन (वि०) [स्त्री०—विमोहना, विमोहनी] ललचाने वाला । मुग्धकारी । दूसरे के मन वश में करने वाला ।

विमोहनं (न०) } नरक विशेष ।
विमोहनः (पु०) }

विमोहनं (न०) फुसलाना । बहकाना । मोहना ।

विम्बः (पु०) }
विम्बः (न०) } देखो विम्ब या विंब ।
विर्ष (न०) }
विम्बं (न०) }

विम्बकः } (पु०) देखो विम्बकः ।
विम्बकः }

विम्बटः } (पु०) राई का पौधा ।
विम्बटः }

विम्बा }
विम्बा } (स्त्री०) एक लता या बेल का नाम ।
विम्बी }
विम्बी }

विम्बिका } (स्त्री०) देखो विम्बिका ।
विम्बिका }

विम्बित } (न०) देखो विम्बित ।
विम्बित }

विम्बुः } (पु०) सुपादी का पेड़ ।
विम्बुः }

वियत् (न०) आसमान । अन्तरिक्ष । व्योम । वायु मण्डल ।—गङ्गा, (स्त्री०) १ आकाश गंगा । २ द्वापापथ ।—चारिन्, (= वियच्छारिन् (पु०) पतंग । कनकौघा ।—भूतिः, (स्त्री०) अन्धकार ।—मणिः, (= वियन्मणिः) (पु०) सूर्य ।

वियतिः (पु०) पत्नी ।

वियमः (पु०) १ रोक । नियंत्रण । २ कष्ट । पीड़ा सन्ताप । ३ अवसान । बंदी ।

वियात (वि०) १ साहसी । धृष्ट । २ निर्लज्ज । बेहया वैशर्म्य ।

वियाम देखो वियमः ।

वियुक्त (व० क०) १ जो युक्त न हो । अलग । अलङ्घ्य । २ जुदा । छोड़ा हुआ । जिसकी जुदाई हो चुकी हो । वियोग प्राप्त । ३ रहित । हीन ।

वियुत (व० क०) वियोग प्राप्त । रहित । हीन ।

वियोगः (पु०) १ वियोग । विछोह । २ अभाव । हानि । ३ व्यवकलन । काट ।

वियोगिन् (वि०) अलगया हुआ । वियोजित । वियोगप्राप्त । (पु०) चक्रवाक । चक्रवा ।

वियोगिनी (स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पति या प्रियतम से बिछुई हो । २ वृत्तविशेष ।

वियोजित (व० क०) १ अलगया हुआ । विछोह प्राप्त । २ रहित किया हुआ ।

वियोनिः } (पु०) १ अनेक जन्म । २ पशुओं का वियोनी } गर्भाशय । ३ हीन उत्पत्ति ।

विरक्त (व० क०) १ असन्तुष्ट । २ बदरंग । ३ असन्तुष्ट । मन फिरा हुआ । अप्रसन्न । ४ सांसारिक बन्धनों से मुक्त । विमुख । ५ उत्तेजित । क्रोधाविष्ट ।

विरक्तिः (स्त्री०) १ असन्तोष । असन्तुष्टता । अनुराग का अभाव । विमुक्तता । विराग । २ उदासीनता । ३ खिन्नता । अप्रसन्नता ।

विरचनं (न०) } प्रथयन । निर्माण । बनाना ।
विरचना (स्त्री०) }

विरचित (व० क०) १ निर्मित । बनाया हुआ । तैयार किया हुआ । २ रचा हुआ । लिखित । ३ सम्हाला हुआ । सूचित । अलंकृत । ४ धारण किया हुआ । पहना हुआ । ५ जड़ा हुआ । बैठाया हुआ ।

विरज (वि०) १ जिस पर धूल या गर्द न हो । २ जिसमें अनुराग न हो ।

विरजः (पु०) विष्णु का नामान्तर ।

विरजस् } (वि०) १ धूल गर्द से रहित । २ अनुराग
विरजस्क } शून्य । सुखवासना से मुक्त । ३ जिसका रजोधर्म बंद हो गया हो ।

विरजस्का (स्त्री०) वह स्त्री जिसका रजो धर्म बंद हो गया हो ।

विरञ्जः }
विरञ्जः } (पु०) ब्रह्मा का नाम ।
विरञ्जिः }
विरञ्जिः }

विरटः (पु०) काला अगुरु । अगर का वृक्ष ।

विरागं (न०) कारिन् या बीरन् नाम की घास ।

विरम (व० क०) १ बंद । २ थमा हुआ । बंद किया हुआ । ३ समाप्त किया हुआ ।

विरतिः (स्त्री०) १ अवसान । बंदी । समाप्ति । २ छोर । अखीर । ३ सांसारिक वस्तुओं से उदासीनता ।

विरमः (पु०) १ विराम । ठहरना । २ सूत्रास्त्र ।

विरल (वि०) १ जिसके बीच बीच में अवकाश या खाली जगह हो । सवन नहीं । पतला । २ नाज़ुक । ३ ढीला । चौड़ा । ४ दुर्लभ । ५ थोड़ा । कम । दूरस्थ ।—जानुक, (वि०) छुटना टेके हुए ।

विरलं (न०) दही । जमा हुआ दूध ।

विरलं (अव्यया०) थोड़ा । बहुतायत से नहीं ।

विरस (वि०) १ स्वादहीन । फीका । रसहीन । २ अरुचिकर । अप्रिय । पीड़ाकारक । ३ निम्बुर । हृदयहीन ।

विरसः (पु०) पीड़ा । कष्ट ।

विरहः (पु०) १ वियोग । विछोह । २ विशेष कर दो प्रेमियों का वियोग । ३ अनुपस्थिति । ४ अभाव । ५ त्याग । —अनलः, (पु०)
विरहान् ।—अवस्था, (स्त्री०) वियोग की दशा ।—आर्त, —उत्कर्ष, —उत्सुक (वि०)
वियोग पीड़ित ।—उत्कण्ठिता, (= विरहोत्कण्ठिता) (स्त्री०) नायिका भेद के अनुसार प्रिय के न आने से दुःखित नायिका ।—ल्वरः, (पु०)
जब जो वियोग की पीड़ा के कारण चढ़ आया हो ।

विरहिणी (स्त्री०) १ वह स्त्री जिसका अपने प्रियतम या अपने पति से वियोग हो गया हो । २ भाड़ा । उजरत । मजदूरी ।

विरहित (व० क०) १ त्यक्त । त्यागा हुआ । २ अलग किया हुआ । ३ अकेला । एकान्त । ४ रहित विहीन ।

विरहिन (वि०) [स्त्री०—विरहिनी] वियोजित । वियोगी (अपने प्रियतम या प्रियतमा से) ।

विरागः (पु०) १ रंग का परिवर्तन । २ मित्राज का बदलना । ३ अनुराग का अभाव । असन्तोष । ४

विरोध । अरुचि । १ सौन्दर्यिक बन्धनों की ओर से अनुराग का अभाव । क्रोध राहित्य ।

विराज् (पु०) १ सौन्दर्य । आभा । २ उन्नति जाति का आदमी । ३ ब्रह्म का प्रथम सन्तान । ४ शरीर । देह । (स्त्री०) एक वैदिक छन्द का नाम ।

विराज देखो विराज् ।

विराजित (व० कृ०) प्रकाशित । २ प्रदर्शित । प्रकटित ।

विराट् : (पु०) १ एक प्रान्त का नाम । २ भस्मदेशी एक राजा का नाम ।—जः, (पु०) कम मूल्य का हीरा । बटिया हीरा ।—पर्वन्, (न०) महाभारत का चौथा पर्व ।

विराटकः (पु०) बटिया हीरा ।

विरागिन् (पु०) हाथी । गज ।

विराद्ध (व० कृ०) १ विरुद्ध । २ अपमानित । अपकारित । तिरस्कृत ।

विराधः (पु०) १ विरोध । २ अपमान । छेदछाह । ३ एक बड़ा बलवान राक्षस जिसे श्रीरामचन्द्र जी ने दण्डकवन में मारा था ।

विराधनं (न०) १ विरोध करना । २ अनिष्ट करना । अपकार करना । ३ पीड़ा । कष्ट ।

विरामः (पु०) १ शोकना । थामना । २ अन्त । समाप्ति । ३ ठहरना । ठहराव । वाक्य के अन्तर्गत वह स्थान जहाँ बोलते समय कुछ काल ठहरना पड़ता है । ४ छंद के चरण में वह स्थान जहाँ पढ़ते समय कुछ काल के लिये ठहरना पड़े । यति । ५ विष्णु का नामान्तर ।

विराल देखो विडाल ।

विराव (न०) कोलाहल । होहल्ला । शोरगुल ।

विराविन् (वि०) १ रुदनकारी । चिल्लाने वाला । पुकारने वाला । २ विज्ञाप करने वाला ।

विराविणी (स्त्री०) १ रुदन करने वाली । चिल्लाने वाली । २ मादू । बुहारी । बहनी ।

विरिचिः, (पु०)
विरिञ्चिः, (पु०)
विरिचनं (न०)
विरिञ्चनं (न०)

ब्रह्मा का नाम ।

विरिचिः १ (पु०) १ ब्रह्मा का नाम । २ विष्णु का विरिञ्चिः नाम । ३ शिव जी का नाम ।

विरुष्ण (व० कृ०) १ टुकड़े टुकड़े करके दूदा हुआ । २ नष्ट किया हुआ । ३ सुड़ा हुआ । ४ मौथरा । गुदगुल ।

विरुत् (व० कृ०) रवयुक्त । अन्यक्त शब्द-युक्त । कृजित । गुञ्जायमान ।

विरुत्तं (न०) १ चीत्कार । रव । गर्जन । दहादन । २ रुदन । ध्वनि । नाद । कोलाहल । ३ गान । कूजन । कलारव ।

विरुदं (न०) १ घोषणा । छिठोरा । २ चिल्लाहट । विरुदः (पु०) ३ प्रशस्ति । यशकीर्तन ।

विरुदितं (न०) चीत्कार । विलाप ।

विरुद्ध (व० कृ०) १ अवरोध । अटकाया हुआ । रोका हुआ । २ घेरा हुआ । (जैद में) बंद किया हुआ । ३ चारों ओर से आक्रमण कर घेरा हुआ । ४ असङ्गत । बेमेल । ५ उलटा । ६ विरोधी । जो खण्डन करे । ७ विद्वेषी । बैरी । ८ प्रतिकूल । अशुभ । ९ वर्जित । निषिद्ध । १० अनुचित ।

विरुद्धं (न०) १ विरोध । विद्वेष । बैर । २ विवाद । अनैक्य ।

विरुत्तणं (न०) १ रुखा करने की क्रिया । २ समेटने वाला । कठज पैदा करने वाला । ३ कलङ्क । आरोप । भस्मना । ४ शाप । अकोसा ।

विरुड (व० कृ०) १ उखा हुआ । जब पकड़े हुए । बीज से फूटा हुआ । २ निकला हुआ । उत्पन्न । ३ बुद्धि को प्राप्त । बड़ा हुआ । ४ कली लगा हुआ । फूला हुआ । कुसमित । ५ चड़ा हुआ । सवार ।

विरूप (वि०) [विरूपा, विरूपी] १ बदशक्ल । कुरूप । बदसूरत । २ अप्राकृतिक । अनोखा । भयङ्कर । ३ बहुरूप वाला । भिन्न भिन्न ।—करण, (न०) १ बदसूरत बनाना । २ अनिष्ट करण ।—चक्षुस्, (पु०) शिव जी ।—रूप, (वि०) भद्रा । बेडौल ।

विरूपं (न०) १ बदसूरती । कुरूपता । भौड़ावन । २ विभिन्नरूपता । स्वभाव या प्रकृति ।—अन्तः, (वि०) वह जिसकी आँखें मही हों ।—अन्तः, (पु०) शिव जी का नाम ।

विरूपिन् (वि०) [स्त्री०—विरूपिणी] भद्रा । बेडौल । बदशक्त । बदसूरत ।

विरोकः (पु०) १ दस्तावर । कोठा साफ करने वाला । २ जुलाब ।

विरोचनं (न०) देखो विरेकः ।

विरोचित (व० कृ०) दस्त कराये हुए ।

विरोकः (पु०) १ नदी । जलश्रोत । २ “र”

विरोकं (न०) १ अक्षर का लोप । २ वेद ।

विरोकः (पु०) १ सूराल । (पु०) किरन ।

विरोचनः (पु०) १ सूर्य । २ चन्द्रमा । ३ अग्नि । ४ प्रह्लाद के पुत्र और राजा बलि के पिता का नाम ।—सुतः, (पु०) राजा बलि ।

विरोधः (पु०) १ विपरीत भाव । अनैक्य । २ अवरोध । रुकावट । अड़चन । ३ धेरा । मुहासरा । ४ नियंत्रण । दमन । ५ वैपरीत्य । विभिन्नता । ६ असङ्गति । बेमेलपन । ७ अश्वत्ता । विद्वेष । वैर । ८ झगडा । विवाद । ९ विपत्ति । सङ्कट । १० एक अर्थालङ्कार । इसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य में से किसी एक के साथ विरोध होता है ।—कारिन् (वि०) झगडा कराने वाला ।—कृतः, (पु०) शत्रु । वैरी ।

विरोधनं (न०) १ रुकावट । विरोध । अवरोध । २ धेरा डालना । ३ सामना करना । समुहाना । ४ खण्डन । असङ्गति ।

विरोधिन् (वि०) [स्त्री०—विरोधिनी] सामना करने वाला । समुहाने वाला । रोकने वाला । २ धेरा डालने वाला । ३ खण्डनारम्भ । विरुद्ध । असङ्गत । ४ द्वेषी । विरोधी । ५ झगडालू । (पु०) शत्रु । वैरी ।

विरोपणं } (न०) धाव का पूरना या भरना ।
विरोधणं }

विल (वा० प०) [विलति] १ ढकना । छिपाना । २ तोड़ना । अलगाना । [उभय० विलयति—विलयते] फैकना । आगे भेजना ।

विलं देखो विलं ।

विलज्ज (वि०) १ लज्ज हीन । २ विकल । व्याकुल । परेशान । ३ विस्मित । आश्चर्यान्वित । ४ लज्जित । ५ विलक्षण । अनौत्तम ।

विलज्जण (वि०) लज्ज हीन । २ भिन्न । दूसरा । ३ अशुभ । अनौत्तम । ४ अशुभ लक्षणों वाला ।

विलज्जणं (न०) निकम्मी हालत या दशा ।

विलज्जित (व० कृ०) १ पहिचाना हुआ । देखा हुआ । खोज कर निकाला हुआ । ३ जान लेने योग्य । ३ प्रवक्ष्या हुआ । परेशान । ४ खेड़ा हुआ । विद्वेषा हुआ ।

विलग्न (वि०) चिपटा हुआ । लगा हुआ । अवलम्बित । बंधा हुआ । २ फैका हुआ । गड़ा हुआ । लगा हुआ । घुमाया हुआ । ३ बीता हुआ । ४ पतला । नाजुक ।

विलग्नं (न०) १ कमर । २ कुल्हा । ३ नक्षत्रोदय ।

विलग्नं } (न०) १ अतिक्रमण । २ लुप्त ।
विलग्नं } नियमोल्लङ्घन ।

विलम्बित } (व० कृ०) १ विलंब किया हुआ ।
विलम्बित } देरी किये हुए । २ अतिक्रान्त । ३ आगे निकला हुआ । बढ़ावडा । ४ पराजित । हराया हुआ ।

विलज्ज (वि०) लज्जाहीन । शर्म । बेहया ।

विलपनं (वि०) बालावाप । व्यर्थ की बकवाद । २ विलाप । ४ तलछट । कीट ।

विलपितं (न०) १ विलाप । २ रुदन ।

विलम्बः } (पु०) १ लटकाव । २ दीर्घसूत्रता ।
विलम्बः }

विलम्बनं } (न०) १ लटकना । टँगना । सहारा
विलम्बनं } लेना । २ देरी । दीर्घसूत्रता ।

विलम्बिका } (स्त्री०) कोष्ठबद्धता । कम्पित ।
विलम्बिका }

विलम्बित } (व० क०) १ लटकना हुआ ।
विलम्बित } झूलता हुआ । २ लम्बित । लम्बमान ।
वहिरांत । दोदृश्यमान । ३ आश्रित । परस्पर
आश्रय ग्रहण किये हुए । ४ दीर्घसूत्री । ५ धीमा ।
मन्द ।

विलम्बित } (न०) विलम्ब । देरी ।
विलम्बित }

विलम्बित } (वि०) [स्त्री०—विलम्बिनी]
विलम्बित } १ लटकनेवाला । झूलने वाला ।
लम्बित । २ दीर्घसूत्री । काहिल ।

विलम्बः } (पु०) १ उदारता । २ भेंट । दान ।
विलम्बः }

विलसः (पु०) १ इचीकरण । धोलने की क्रिया । २
नाशन । मृत्यु । समाप्ति । ३ नाश । लय । प्रलय ।
विलयनं (न०) १ लयता । विलीनता । इचीकरण । २
लयकरण । ३ स्थानान्तरकरण । ४ चीयकरण ।
५ विद्रावक ।

विलसत् (वि०) [स्त्री०—विलसन्ती] १ चम-
कीला । चमकदार । २ कौंचन । तड़पन । ३
हिलन । झुलन । ४ क्रीडासक्त ।

विलसनं (न०) १ चमक । कौंचन । २ विनोदन ।
मनोरञ्जन ।

विलसित (व० क०) १ चमकदार । चमकीला । २
प्रकट । प्रादुर्भूत । ३ खिलाड़ी । मनमौजी ।

विलसितं (न०) १ चमकीला । २ कौंचा । चमक ।
३ प्रादुर्भाव । प्रकटन । प्राकट्य । ४ क्रीडा ।
आमोद प्रमोद । प्रेमोद्योतक हावभाव ।

विलापः (पु०) विलस विलस कर या विकल
होकर रोने की क्रिया । रोकर दुःख प्रकट
करने की क्रिया । क्रन्दन । रुदन ।

विलालः (पु०) १ बिज्जी । २ औजार । कल ।
मैशीन ।

विलासः (पु०) १ क्रीडा । खेल । आमोदप्रमोद ।
२ प्रेमपूर्ण आमोदप्रमोद । आह्लाद । ३ सुख
भोग । आनन्दमयी क्रीडा । मनोरञ्जन । मनो-
विनोद । ४ हावभाव । नाज़ नखरा । ५ सौन्दर्य ।
सुन्दरता । मनोहरता । ६ कौंचा । चमक ।
ज्योति ।

विलासनं (न०) १ क्रीडा । खेल । मनोविनोद ।
२ अटखेलियाँ ।

विलासवती (स्त्री०) रसिक स्त्री । स्वेच्छाचारिणी
स्त्री ।

विलासिका (स्त्री०) एक प्रकार का रूपक जो एक
ही अङ्क का होता है । इसमें प्रेमलीला ही दिख-
लाई जाती है ।

विलासिन् (वि०) [स्त्री०—विलासिनी] १ क्रीडा-
सक्त । रसिक ।

विलासिन् (पु०) १ कामी । रसिकजन । २ अग्नि ।
३ चन्द्रमा । ४ सर्प । ५ श्रीकृष्ण या विष्णु । ६
शिव । ७ कामदेव ।

विलासिनी (स्त्री०) १ स्त्री । औरत । २ कामिनी ।
३ वेश्या । गणिका । रंडी ।

विलिखनं (न०) खरोचना । खोदना । लिखना ।

विलिप्त (व० क०) पुता हुआ । लिपा हुआ ।

विलीन (व० क०) १ लगा हुआ । सटा हुआ ।
विपटा हुआ । २ वसा हुआ । बैठे हुए । उतरा
हुआ । ३ पिघला हुआ । मिला हुआ । तरलित ।
४ छिपा हुआ । ५ नष्ट । मृत ।

विलुचनं } (न०) उखाड़ना । नोचना । चीर
विलुचनं } डालना ।

विलुटनं } (न०) लुटपाट । डकेज़नी ।
विलुटनं }

विलुप्त (व० क०) १ भङ्ग । टूटा हुआ । चुचा हुआ ।
२ पकड़ा हुआ । छीना हुआ । अपहृत । ३ लूटा
हुआ । ४ नाश किया हुआ । बरबाद किया हुआ ।
५ कमज़ोर किया हुआ । निर्बल किया हुआ ।
अङ्गभङ्ग किया हुआ ।

विलुपकः } (पु०) चोर । डाकू । लुटेरा ।
विलुपकः }

विलुलित (व० क०) १ इधर उधर हिलने वाला ।
अट्ट । काँपने वाला । २ अव्यवस्थित किया हुआ ।
कमभङ्ग किया हुआ ।

विलुन (व० क०) काट कर अलग किया हुआ । कटा
हुआ ।

विलेखनं (न०) खरोचना । खीलना । धारी करना ।
चिह्न बनाना ।

विलेपनं (न०) १ लेप करने या लगाने की क्रिया ।
२ लेप । सरहम । ३ चन्दन, केसर आदि कोई भी
सुगन्ध द्रव्य जो शरीर में लगाई जाय ।

विलेपः (पु०) १ शरीर आदि पर चुपड़ कर लगाने
की चीज़ । लेप । २ पल्लस्तर । ३ गारा ।

विलेपनी (स्त्री०) १ स्त्री जिसके शरीर पर सुगन्ध
द्रव्य लगाये गये हों । २ सुवेशा स्त्री । ३ चावल
की कौंजी ।

विलेपिका (स्त्री०) }
विलेपी (स्त्री०) } भात की माँड़ी ।
विलेप्यः (पु०) }

विलोकनं (न०) १ चितवन । अवलोकन । २ दृष्टि ।

विलोकित (व० कृ०) १ देखा हुआ । २ जाँचा हुआ ।
पढ़ता हुआ । विचारा हुआ ।

विलोकितं (न०) चितवन । झलक ।

विलोचनं (न०) आँख । नेत्र ।—अम्बु, (न०)
आँसू ।

विलोडनं (न०) हिलाना हुआ । आन्दोलित
करना । बिलौना । मथना ।

विलोडित (व० कृ०) हिलाया हुआ । बिलौया
हुआ । मथा हुआ ।

विलोडितं (न०) माठा । तक्र ।

विलोपः (पु०) १ किसी वस्तु को लेकर भाग जाने
की क्रिया । लूटपाट । अपहरण । २ अभाव ।
नाश ।

विलोपनं (न०) १ काटना । २ लेभागना । ३
नाशन । विनाशन ।

विलोभः (पु०) आकर्षण । लालच । प्रलोभन ।
बहकाना । फुसलाना ।

विलोभनं (न०) १ लोभ दिलाने या लुभाने की
क्रिया । २ बहकाने या फुसलाने की क्रिया । ३
प्रशंसा । चापलुसी ।

विलोभ (वि०) [स्त्री०—विलोमी] १ विपरीत ।
उलटा । प्रतिकूल । २ पिड़ड़ा हुआ । पीछे पड़ा

हुआ । ३ विपरीत क्रम से उत्पन्न किया हुआ ।
उत्पन्न,—ज.—जान,—वर्ण, (वि०) विप-
रीत क्रम से उत्पन्न । अर्थात् ऐसी माता से उत्पन्न
जिसकी जाति, उसके पति से ऊँची हो । ऊँची
जाति की माता और माता की अपेक्षा हीन जाति
के पिता से उत्पन्न सम्मान ।—क्रिया, (स्त्री०)
—विधिः, (पु०) विपरीत क्रिया वह क्रिया
जो अन्त से आदि की ओर को जाय । उल्टी
ओर से होने वाली क्रिया ।—जिह्वः, (पु०)
दायी ।

विलोभं (न०) रहट । कूप में जल निकालने का
यंत्र विशेष ।

विलोभः (पु०) १ विपरीत क्रम । २ कुत्ता । ३
साँप । ४ बरह का नाम ।

विलोमी (स्त्री०) आँवला । आँवला की

विलोम (वि०) १ हिलने बुलने वाला । काँपने
वाला । चंचल । २ ढीला । अस्तव्यस्त । बिखरे
हुए (बाल) ।

विलोहितः (पु०) रक्त का नाम ।

विल्ल देखो विल्ल ।

विल्वः (पु०) बेल का पेड़ ।

विवक्षा (स्त्री०) १ बोलने की अभिलाषा । २ इच्छा ।
अभिलाषा । ३ अर्थ । भाव । ४ इरादा । अभि-
प्राय । उद्देश्य ।

विवक्षित (वि०) १ जिसके कहने की इच्छा हो । २
इच्छित । अपेक्षित । ३ प्रिय ।

विवक्षितं (न०) १ इरादा । उद्देश्य । अभिप्राय । २
भाव । अर्थ ।

विवक्षु (वि०) बोलने या कोई बात कहने की इच्छा
करने वाला ।

विवस्ता (स्त्री०) वह गाय जिसका बछड़ा न हो ।

विषधः (पु०) १ वह लकड़ी जो वेलों के कंधों पर,
बोझ खींचने के लिये रखी जाती है जुआठा ।
२ राजमार्ग । आम रास्ता । ३ बोझ । ४
अनाज की राशि । ५ घड़ा । जलकुम्भ ।

विविधः (पु०) १ बोक लोने वाला । कुली । २ फेरी लगाकर सौदागरी माल बेचने वाला । फेरी वाला ।

विवरं (न०) १ छिद्र । बिल । २ गढ़ा । दरार । गर्त । ३ गुफा । कन्दरा । ४ निर्जन स्थान । ४ घोष । वृष्टि । ऐव । निर्जलता । कर्मा । ५ बाध । ६ नौ की संख्या । ७ विच्छेद । सन्धिस्थल ।—नालिका । (स्त्री०) बंसी । नफीरी ।

विवरणं (न०) १ प्रकटन । प्रकाशन । प्रदर्शन । २ उद्घाटन । खोल कर सब के सामने रखने की क्रिया । ३ भाष्य । टीका । सविस्तर वर्णन ।

विवर्जनं (न०) परित्याग । त्याग करने की क्रिया ।

विवर्जित (व० क०) १ त्याग हुआ । छोड़ा हुआ । २ अनादृत । उपेक्षित । ३ वञ्चित । रहित । बाँटा हुआ । दिया हुआ । ४ मना किया हुआ । वर्जित । निषिद्ध ।

विवर्ण (वि०) १ रंगहीन । पीला । जिसका रंग बिगड़ गया हो । २ पानी उतरा हुआ । ३ नीच । कमीना । ४ अज्ञानी । मूर्ख । कुपट । अपट ।

विवर्णः (पु०) जातिव्युत् । नीच जाति का आदमी ।

विवर्तः (पु०) १ चक्र । फेरा । २ प्रत्यावर्तन । लौटाव । ३ मृत्प । नाँच । ४ परिवर्तन । संशोधन । ५ अम । अन्ति । ६ समुदाय । समूह । ढेर ।—वादः, (पु०) वेदान्तियों का सिद्धान्त विशेष जिसके अनुसार ब्रह्म को छोड़ और सब मिथ्या है ।

विवर्तनं (न०) १ परिभ्रमण । चक्र । फेरा । २ प्रत्यावर्तन । ३ उतार । नीचे आने की क्रिया । ४ प्रणाम । आदर सूचक नमस्कार । भिन्न भिन्न दशाओं या योनियों में होकर गुजरना । ५ परिवर्तित दशा । बदली हुई हालत ।

विवर्धनं (न०) १ वृद्धि । बढ़ती । उन्नति । २ बढ़ाने या वृद्धि करने की क्रिया । ३ महोन्नति । समृद्धि ।

विवर्धित (व० क०) १ वृद्धि को प्राप्त । बढ़ा हुआ । २ आगे बढ़ा हुआ । ऊपर को गया हुआ । ३ सन्तुष्ट । प्रसन्न ।

विचश (वि०) १ लाचार । बेवस । मज़बूर । २ जो

अपने को अपने काढ़ में न रख सके । ३ बेहोश । ४ मृत । ५ मृत्युकामी । मृत्यु से शङ्कित ।

विवसन (वि०) नंगा । बिना वस्त्र का ।

विवसनः (पु०) जैन भिक्षुक ।

विवस्वत् (पु०) १ सूर्य । २ अरुण । ३ वर्तमान काल के मनु । ४ देवता । ५ अर्क । मदार ।

विवहः (पु०) अग्नि की सप्त जिह्वाओं में से एक का नाम ।

विवाकः (पु०) न्यायाधीश । जज ।

विवादः (पु०) किसी विषय को लेकर या बात को लेकर वाक्कलह । वाग्बुद्ध । झगड़ा । कलह । २ खगडन । प्रतिवाद । ३ मुकदमाबाज़ी । मुकदमा । अभियोरा । ४ चीत्कार । उच्च रव । ५ आज्ञा । आदेश ।—अर्थिन्, (पु०) मुकदमेबाज़ । २ वादी । अभिराज लगाने वाला ।—पदं, (न०) जिसपर विवाद या झगड़ा हो । विवाद युक्त विषय ।—वस्तु, (न०) विवाद प्रस्त वस्तु ।

विवादिन् (वि०) १ झगड़ाखू । झगड़ने वाला । कलह करने वाला । २ अदालतबाज़ । मुकदमेबाज़ किसी मुकदमे का आसामी ।

विवारः (पु०) १ प्रस्फुटन । फैलाव । २ अभ्यन्तर प्रथलों में से एक संवार का विपरीत ।

विवासः (पु०) } निर्वासन । देश निकाला ।
विवासनं (न०) }

विवासित (व० क०) निकाला हुआ । देश से निकाल बाहर किया हुआ ।

विवादः (पु०) परिणय । एक शास्त्रीय प्रथा जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष आपस में दाम्पत्य-सूत्र में आबद्ध होते हैं ।

विवाहित (व० क०) वह जिसका विवाह हो चुका हो । ब्याह हुआ ।

विवाहाः (पु०) १ दामाद । जामाता । २ दूल्हा । वर ।

विविक्त (व० क०) १ पृथक् किया हुआ । २ विजन । निर्जन । एकान्त । ३ अकेला । ४ पहचाना हुआ । ५ विवेकी । ६ पापरहित । विशुद्ध ।

विविक्तं (न०) निर्जन या एकान्त स्थल ।

विविक्ता (स्त्री०) अनायी स्त्री । दुर्भंगा । वह स्त्री जो अपने पति की अरुचि का कारण हो ।

विविग्न (वि०) अत्यन्त उद्विग्न या भयभीत ।

विविध (वि०) बहुम प्रकार का । भाँति भाँति का अनेक तरह का ।

विधीतः (पु०) वह स्थान जो चारों ओर से घिरा हो । बाड़ा । चरागाह ।

विवृत्त (व० कृ०) त्यक्त । त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ ।

विवृत्ता (स्त्री०) विविक्ता स्त्री । स्त्री जिसे उसके पति ने छोड़ दिया हो ।

विवृत (व० कृ०) १ प्रकटित । प्रदर्शित । २ प्रत्यक्ष । स्पष्ट । खुला हुआ । ३ खेलकर सामने रक्खा हुआ । अनङ्का । ४ धोपित । ५ टीका किया हुआ । व्याख्या किया हुआ । ६ पसरा हुआ । फैला हुआ । ७ बढ़ा । विस्तृत ।—अप्रत, (वि०) वही आँखों वाला ।—अप्रतः (पु०) युगा ।—द्वार, (वि०) खुला हुआ फाटक का ।

विवृतं (न०) जपमस्त्रों के उच्चारण करने का एक प्रयत्न ।

विवृतिः (स्त्री०) १ प्राकट्य । प्रादुर्भाव । २ फैलाव । पसारा । ३ आविष्क्रिया । ४ टीका । भाष्य । व्याख्या ।

विवृत्त (व० कृ०) १ धूमा हुआ । २ धूमने वाला । भ्रमणकारी ।

विवृत्तिः (स्त्री०) १ चक्र । भ्रमण । फेरा । २ सन्धिविश्लेष । सन्धिभङ्ग ।

विवृद्ध (व० कृ०) १ बड़ा हुआ । वृद्धि को प्राप्त । २ बहुत । विपुल । अधिक । बड़ा ।

विवृद्धिः (स्त्री०) १ वाढ़ । वृद्धि । २ समृद्धि ।

विवेकः (पु०) १ भली बुरी वस्तु का ज्ञान । सद्व्यसत् का ज्ञान । २ मन की वह शक्ति जिसके द्वारा भले बुरे का ज्ञान हुआ करता है । भली बुरा पहचानने की शक्ति । ३ समक । विचार । बुद्धि । ४ सत्यज्ञान । ५ प्रकृति और पुण्य की

विभिन्नता का ज्ञान । ६ जलपात्र । पानी रखने का बरतन । जलकुण्ड ।

विवेकज्ञ (वि०) भले बुरे का ज्ञान रखने वाला । विचारवान् । बुद्धिमान ।

विवेकिन् (वि०) विचारवान । बुद्धिमान । (पु०) १ विचार्यक । विचारकर्ता । २ दर्शनशास्त्री ।

विवेक्तृ (पु०) १ न्यायाधीश । २ पण्डित । दर्शन शास्त्री ।

विवेचनं (न०) १ विवेक । भली बुरी वस्तु का निर्वेचना (स्त्री०) } ज्ञान । २ वाद । विवाद । ३ निर्णय । फैसला ।

विवोद (पु०) वर । दूल्हा पति ।

विश (धा० प० [तिशाति, निष्ट] १ प्रवेश करना । २ जाना या आना । हिस्से में आना । बाँट में पड़ना । अधिकार में आना । ३ बैठ जाना । बस जाना । ४ बुझना । व्याप्त होना । ५ किसी कार्य को अपने हाथ में लेना ।

विश (पु०) १ वैश्य । बनिया । २ मानव । मनुष्य । ३ लोभ । (स्त्री०) १ प्रजा । रैयत । २ कन्या । बेटी ।—परायं, (न०) सौदागरी माल ।—पतिः, (या विशांपतिः,) (पु०) राजा । नृपति ।

विशं (न०) १ भलीबुरे के रेशे ।—आकरः, (पु०) भद्रचूड़ नामक पौधा ।—कश्टा, (स्त्री०) सारस ।

विशंकट (वि०) [स्त्री०—विशंकटा, विशंकटी] विशङ्कट १ बड़ा । बहुत बड़ा । २ दड । प्रचण्ड । बलवान् ।

विशंका } (स्त्री०) भय । डर । आशङ्का ।
विशङ्का }

विशद् (वि०) १ साफ़ । शुद्ध । स्वच्छ । बेदाग । २ उज्ज्वल । सफेद । सफेद रंग का । ३ चमकीला । सुन्दर । ४ स्पष्ट । व्यक्त । ५ शान्त । निश्चिन्त । चैन से ।

विशयः (पु०) १ सन्देह । शक । अनिश्चय । २ आशय । सहारा ।

विशरः (पु०) १ दो टुकड़े करना । फट जाना ।
२ हत्या । कत्ल । बध । नाशन ।

विशलय (वि०) कष्ट और चिन्ता से रहित ।
निरिन्त ।

विशसनं (न०) १ हत्या । बध । २ बरबादी ।

विशसनः (पु०) १ कटार । खाँड़ा । २ तलवार ।

विशस्त (व० कृ०) १ काटा हुआ । गँवार । शिष्टा-
चारविहीन । बदतहज़ीब । ३ प्रशंसित । प्रसिद्ध
किया हुआ ।

विशस्तु (पु०) १ बलि देने वाला । २ चाखडाल ।

विशास्त्र (वि०) हथियार हीन । जिसके पास बचाव
अथवा आत्मरक्षा के लिये कोई हथियार न हो ।

विशाखः (पु०) १ कार्तिकेय का नाम । २ धनुष
चलाने के समय एक पैर आगे और दूसरा उससे
कुछ पीछे रखना । ३ याचक । भिक्षुक । ४
तकुआ । ५ शिव जी का नाम ।—जः, (पु०)
नारंगी का पेड़ ।

विशाखल देखो विशाख का दूसरा अर्थ ।

विशाखा (प्राचः द्विवचन) १६ वें नक्षत्र का नाम
जिसमें दो तारे होते हैं ।

विशायः (पु०) पहरेदारों का पारी पारी से सोना ।

विशारय्यं (न०) १ चीरना । दो टुकड़े करना । २
हनन । मारण ।

विशारद (वि०) १ चतुर । निपुण । २ पण्डित ।
बुद्धिमान । ३ प्रसिद्ध । प्रख्यात । ४ हिम्मती ।
साहसी ।

विशारदः (पु०) बकुल वृक्ष ।

विशाल (वि०) १ बड़ा । महान् । लंबा चौड़ा ।
प्रशस्त । चौड़ा । २ सम्पन्न । बहुतायत से । ३
प्रसिद्ध । आदर्श । महान् । कुलीन ।—अक्षः,
(पु०) शिव जी का नामान्तर ।—अप्ती,
(स्त्री०) दुर्गा । पार्वती जी ।

विशालः (पु०) १ मृग विशेष । २ पक्षी विशेष ।

विशाला (स्त्री०) १ उज्जयनी नगरी । २ एक नदी
का नाम ।

विशिख (वि०) चोटी रहित । शिखाहीन । जिसके
सिर पर कर्लेंगी न हो ।

विशिखः (पु०) १ तीर । २ नरकुल । ३ गर्दाला ।

विशिखा (स्त्री०) १ कावड़ा । २ तकुआ । ३ सुई
या आलपिन । ४ छोटा बाण । ५ राजमार्ग ।
आम रास्ता । ६ नाक की छी । नाइन ।

विशित (वि०) पैना । तीक्ष्ण ।

विशिपं (न०) १ मन्दिर । घर । मकान ।

विशिष्ट (वि०) १ प्रसिद्ध । मशहूर । यशस्वी ।
कीर्तिशाली । २ जो बहुत अधिक शिष्ट हो । ३
विलक्षण । अद्भुत । ४ विशेषता युक्त । जिसमें
किसी प्रकार की विशेषता हो ।—अद्वैतवादः,
(विशिष्टाद्वैतवादः) (पु०) श्रीरामानुजाचार्य
का एक प्रसिद्ध दार्शनिक सिद्धान्त । [इसमें
ब्रह्म जीवात्मा और जगत् तीनों मूलतः एक ही
माने जाते हैं, तथापि तीनों कार्य रूप में एक
दूसरे से भिन्न तथा कतिपय विशिष्ट गुणों से
युक्त माने गये हैं ।]

विशीर्ण (व० कृ०) १ टूटाफूटा । २ सड़ा हुआ ।
सुरभाया हुआ । ३ गिरा हुआ । ४ क्षुरियाया
हुआ । क्षुरियाँ पड़ा हुआ ।—पर्याः, (पु०)
नीम का पेड़ ।—मूर्तिः (पु०) कामदेव का
नाम ।

विशुद्ध (वि०) १ साफ किया हुआ । शुद्ध किया
हुआ । २ पापरहित । ३ कलङ्कशून्य । ४ ठीक ।
सही । ५ गुणवान । धर्मात्मा । ईमानदार । ६
विनम्र ।

विशुद्धिः (स्त्री०) १ शुद्धता । पवित्रता । २ सही-
पन । ३ भूल संशोधन । ४ समानता । सादृश्य ।

विशुल (वि०) माला रहित । जिसके पास माला
न हो ।

विशुल (वि०) १ जिसमें शृङ्खला न हो या
विशुल न रह गयी हो । शृङ्खला विहीन । २
जो किसी प्रकार काबू में न लाया जा सके या
दबाया अथवा रोका न जा सके । ३ लंपट ।
दुराचारी । लुंगाड़ा ।

विशेष (वि०) १ विलक्षण । २ विपुल ।

विशेष. (पु०) १ विशिष्टता । पहिचान । २ अन्तर । भेद । फरक । ३ विलक्षणता । ४ तारतम्य । ५ अवयव । अंग । ६ प्रकार । तरह । ढंग । किस्म । ७ वस्तु । पदार्थ । चीज़ । ८ उत्तमता । उत्कृष्टता । ९ श्रेणी । कक्षा । १० माथे पर का तिलक । टीका । ११ विशेषण । १२ साहित्य में एक प्रकार का पद्य जिसमें तीन श्लोकों या पदों में एक ही क्रिया रहती है । अतः उन तीनों का एक साथ ही अन्वय होता है । १३ वैशेषिक दर्शन के सप्त पदार्थों में से एक ।—उक्तिः, (स्त्री०) काव्य में एक प्रकार का अलङ्कार इसमें पूर्ण कारण के रहते भी कार्य के न होने का वर्णन किया जाता है ।

विशेषक (वि०) १ विशिष्ट । विलक्षण ।

विशेषकं (न०) १ विशेषण । २ टीका । तिलक ।

विशेषकः (पु०) १ चन्दन आदि से अनेक प्रकार की रेशायें बनाकर शृङ्गार करने की क्रिया ।

विशेषकं (न०) ऐसे तीन श्लोकों का समुदाय जिनका एक साथ ही अन्वय हो ।

विशेषण (वि०) जिसके द्वारा विशेष्य निरूपण किया जाय । गुण रूप आदि का बताने वाला ।

विशेषणं (न०) किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करने वाला या बतलाने वाला शब्द । २ अन्तर । फरक । भेद । ३ व्याकरण में वह विकारी शब्द, जिससे किसी संज्ञावाची शब्द की कोई विशेषता अवगत हो या उसकी व्याप्ति सीमाबद्ध हो । ४ लक्षण । ५ किस्म । जाति ।

विशेषतस् (अव्यया०) खास कर के । खास तौर पर ।

विशेषित (व० कृ०) १ विशेष । खास । २ परिभाषित जिसकी परिभाषा की गयी हो या जिसकी पहिचान बतलायी गयी हो । ३ विशेषण द्वारा पहिचाना हुआ । ४ उत्कृष्टतर । उत्तम ।

विशेष्य (वि०) मुख्य । प्रधान । उत्कृष्ट ।

विशेष्यं (न०) (व्याकरण में) वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा हो । वह संज्ञावाची शब्द जिसकी विशेषता विशेषण लगाकर प्रकट की जाय ।

विशोक (वि०) शोकरहित । सुखी ।

विशोकः (पु०) अशोक वृक्ष ।

विशोका (स्त्री०) शोक विवर्जित ।

विशोधने (न०) १ अच्छी तरह साफ करने की क्रिया । विशुद्धता । २ सरकाई । पापमोचन । ३ आयश्चित्त ।

विशोध्य (वि०) साफ करने योग्य । स्वच्छ । सही करने योग्य ।

विशोध्यं (न०) ऋण । कर्जा ।

विशोपणा (न०) सुखाने की क्रिया ।

विश्रान्तं } (न०) दान । भेंट । पुरस्कार ।
विश्रान्तं }

विश्रब्ध (व० कृ०) १ जो उद्ध्व न हो । शान्त ।

२ जिसका विश्वास किया जाय । विश्वस्त ।

विश्वसनीय । ३ निर्भय । निडर । ४ दृढ़ ।

अचञ्चल । ५ दीन । ६ अत्यधिक । बहुताधिक ।

विश्रब्धं (अव्यया०) विश्वस्तता से । निर्भयता से । निस्सङ्कोच भाव से ।

विश्रमः (पु०) १ विश्राम । २ बंदी । समाप्ति ।

विश्रमः } (पु०) विश्वास । अनिष्टता । परिचय ।

विश्रम्भः } २ गुप्त बात । रहस्य । ३ विश्राम । ४ प्रेम पूर्वक (कुशल) प्रश्न । ५ प्रेम कलह । प्रेमियों

का झगडा । ६ हत्या । बध ।—आलापः, (पु०)

भाषणां, (न०) गुप्त वार्तालाप ।—पार्थं,

(न०)—भूमिः, (न०)—स्थानं, (न०)

विश्वस्त मनुष्य । विश्वसनीय पदार्थ । विश्वास-पात्र जन ।

विश्रवः (पु०) आश्रय । आश्रम ।

विश्रवस् (पु०) पुत्रस्व ऋषि के पुत्र और रावण के पिता का नाम ।

विश्राणित (व० कृ०) दिया हुआ । बक्शा हुआ ।

विश्रान्त (व० कृ०) १ बंद । बंद किया हुआ ।

२ विश्राम किये हुए । आराम किये हुए । ३

शान्त ।

विश्रान्तिः (स्त्री०) १ विश्राम । आराम । २ अवसान ।

विश्रामः (पु०) अवसान । बंदी । विश्राम ।
आराम । ३ शान्ति ।
विश्रावः (पु०) १ बुझाव । टपकन । बहाव । २
प्रसिद्धि । शोहरत ।
विश्रुत (व० कृ०) १ प्रसिद्ध । प्रख्यात । २ प्रसन्न ।
आह्लादित । हर्षित ।
विश्रुतिः (स्त्री०) कीर्ति । यश । ख्याति ।
विश्रुत (वि०) १ ढीला । खुला हुआ । २ मंद ।
सुस्त । थका हुआ ।
विश्रुत (व० कृ०) खुला हुआ । अलहदा किया
हुआ ।
विश्लेषः (पु०) १ अनैक्य । २ पार्थक्य । ३ प्रेमियों
का विछोह या पति और पत्नी का विछोह ।
४ अभाव । हानि । शोक । ५ दरार । दर्ज ।
विश्लेषित (व० कृ०) वियोजित । अलहदा किया
हुआ । अनमिला हुआ ।
विश्व (सर्वनाम०) १ सम्पूर्ण । तमाम । कुल ।
समूचा । सार्वजनिक । २ प्रत्येक । हरेक ।
विश्वं (न०) १ चौदह भवनों का समूह । समस्त
ब्रह्माण्ड । २ संसार । जगत । दुनिया । ३ सोंठ ।
४ बोलनामक गन्ध द्रव्य ।
विश्वः (पु०) १ देवताओं का एक गण जिसमें वसु,
सत्य, क्रतु, दक्ष, काल, काम, सृति, कुरु, पुरुषवा
और माद्रवा परिगणित हैं ।—आत्मन्, (पु०)
१ परमात्मा । २ ब्रह्मा । ३ विष्णु । ४ शिव ।—
ईशः,—ईश्वरः, (पु०) १ परमात्मा । २ विष्णु ।
३ शिव ।—कद्रु, (वि०) नीच । कमीना ।—
कद्रुः, (पु०) १ ताड़ी या शिकारी कुत्ता । २
ध्वनि । शब्द ।—कर्मन्, (पु०) १ विश्वकर्मा
अर्थात् देवताओं का शिल्पी । २ सूर्य । कृत्,
(पु०) १ सृष्टिकर्त्ता । २ विश्वकर्मा का
नामान्तर ।—कैतुः, (पु०) अनिरुद्ध ।—गन्धः,
(पु०) लहसन ।—गन्धं, (न०) १ लोबान ।
गुग्गुल । २ बोल नामक गन्ध द्रव्य ।—गन्धा,
(स्त्री०) पृथिवी ।—जनं, (न०) मानवजाति ।
—जनीन,—जन्म, (वि०) मनुष्य जाति मात्र
के लिये भला या हितकर ।

जित्, (पु०) १ यज्ञ विशेष । २ वरुण का पाश ।
—धारिणी, (स्त्री०) पृथिवी ।—धारिन्, (पु०)
देवता विशेष ।—नाथः (पु०) विश्व का स्वामी ।
शिव । महादेव । काशी के एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग
का नाम ।—पा, (पु०) १ ईश्वर । २ सूर्य ।
३ चन्द्रमा । ४ अग्नि ।—पाविनी —पूजिता,
(स्त्री०) तुलसी ।—प्सन् (पु०) १ देवता ।
२ सूर्य । ३ चन्द्र । ४ अग्नि ।—भुज्, (वि०)
सब का उपभोग करने वाला । सर्पभक्षी । (पु०)
१ ईश्वर । २ इन्द्र ।—भेषजं, (न०) सोंठ ।—
मूर्ति, (वि०) सर्वरूपमय । सर्वव्यापी । सर्वत्र
विद्यमान ।—योनिः, (पु०) १ ब्रह्मा । २ विष्णु ।
—राज्,—राजः, (पु०) सार्वदेशिक अधिपति ।
—रूप, (वि०) सर्वव्यापी । सर्वत्र विद्यमान ।—
रूपः, (पु०) विष्णु ।—रूपं (न०) काला
अगर ।—रेतस् (पु०) ब्रह्मा ।—वाह, (=विश्वोद्दी
स्त्री०) सब सहने वाला ।—सहा, (स्त्री०)
पृथिवी ।—सृज्, (पु०) सृष्टि कर्त्ता ब्रह्मा जी ।
विश्वंकरः } (पु०) आँख । नेत्र । (किसी किसी के
विश्वङ्करः } मतानुसार यह नपुंसक लिङ्ग भी है ।)
विश्वतस् (अव्यया०) हर ओर । हर तरफ । हर
अगह । सर्वत्र । चारों ओर ।—मुख, (वि०)
हर ओर एक एक मुख वाला ।
विश्वथा (अव्यया०) सर्वत्र । सब जगह ।
विश्वंभर } (वि०) सारे विश्व का पालन या भरण
विश्वम्भर } करने वाला ।
विश्वंभरः } (पु०) १ परमात्मा । सर्वव्यापी परमेश्वर ।
विश्वम्भरः } २ विष्णु । ३ इन्द्र ।
विश्वंभरा } (स्त्री०) पृथिवी । धरा । मही ।
विश्वम्भरा }
विश्वसनीय (स० का० कृ०) १ विश्वास करने योग्य ।
विश्वस्त । मातवर । २ विश्वास उत्पन्न करने की
शक्ति रखने वाला ।
विश्वस्त (व० कृ०) १ मातवर । विश्वसनीय । जिसका
विश्वास किया जाय । २ निर्भय । निःशङ्क ।
विश्वस्ता (स्त्री०) विश्वा ।
विश्वाधायस (पु०) देवता ।
विश्वानरः (पु०) सावित्री की उपाधि ।

श्वामित्रः (पु०) एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो माघिज माघेय और कौशिक भी कहलाते हैं ।

श्वानसुः (पु०) एक गन्धर्व का नाम ।

श्वासः (पु०) १ सातवरी । २ गुप्त सूचना ।—
घातः, —भङ्गः, (पु०) किसी के विश्वास के विरुद्ध की हुई क्रिया ।—घातिन्, (पु०) विश्वास-
घातक । दगाबाज़ ।

ष् (धा० उ०) [वेवेष्टि, वेविष्टे, विष्ट] १ बेरना ।
२ छा जाना । व्याप्त हो जाना । ३ मुठभेड़ होना ।

ष् (स्त्री०) १ विष्टा । मल । २ व्याप्ति । फैलाव ।
पसार । ३ लडकी (यथा विष्टपति)—कारिका,
(स्त्री०) (= विष्टकारिका) पक्षी विशेष ।—
ग्रहः, (विष्टग्रहः) कोष्ठबद्धता । कब्जियत ।—
चरः, (= विष्टचरः)—चराहः, (पु०) (=
विष्टचराहः) विष्टा भली गाँव शूकर ।—उवणः,
(विष्टलवणः) (न०) लवण विशेष ।—मङ्गः,
(विष्टमङ्गः) (पु०) कब्जियत । कोष्ठबद्धता ।
सारिका, (स्त्री०) पक्षी विशेष ।

षं (न०) १ जहर । सर्पविष । २ जल । ३ कमल की
जड़ अथवा भसीड़े के रेशे । ४ गुग्गुलु । बोल नामक
गन्धद्रव्य ।—अकः, —दिग्ध, (वि०) जहर मिला
हुआ । विषयुक्त । विषपूर्ण । जहरीला ।—अङ्कुरः,
(पु०) १ भाला । २ विष में बुझा तीर ।—
अन्तकः, (पु०) शिव ।—अपहं, प्र, (वि०)
विषनाशक ।—आननः, —आयुधः, —आस्यः,
(पु०) सर्प ।—कुम्भः, (पु०) विष से भरा
बड़ा ।—कृमिः, (पु०) वह कीड़ा जो विष में
पड़े ।—ज्वरः, (पु०) मैसा ।—दं, (पु०)
बादल ।—दं, (न०) तृतीया ।—दन्तकः, (पु०)
सर्प । साँप ।—दर्शनमृत्युकः, —मृत्युः, (पु०)
चकोर पक्षी ।—धरः, (पु०) साँप । सर्प ।—
पुष्पं, (न०) नील कमल ।—प्रयोगः, (पु०)
विष देना । विष का व्यवहार या इस्तेमाल ।—
मिषज, (पु०)—वैद्यः, (पु०) विष उतारने
की चिकित्सा करने वाला । साँप के काटे हुए का
इलाज करने वाला ।—मंत्रः, (पु०) १ विष
उतारने का मंत्र । २ सपेरा । कालबेलिया ।

मदारी ।—वृत्तः, (पु०) जहरीला पेड़ ।—
शालूका, (स्त्री०) कमल की जड़ ।—शूकः,
—शृङ्गिन्, —मृकन्, (पु०) बर । बरेंधा ।—
हृदय, (वि०) दुष्ट हृदय वाला । मलिन मन
वाला ।

विपक्ष (व० क०) १ मजबूती से गढ़ा हुआ । २
दृढ़ता से विपक्ष या सट्टा हुआ ।

विपंडं } (न०) कमल की जड़ के रेशे ।
विपरंडं }

विषगण (व० क०) उदास । रंजीदा । विषादयुक्त ।
मुख, —वदन, (वि०) जो उदास देख पड़े ।
उदास । रंजीदा । शमगीन ।

विषम (वि०) १ जो सम या समान न हो । असमान ।
२ वह संख्या जिसमें दो से भाग देने पर एक बचे ।
सम या जूय का उल्टा । ताक । ३ अनियमित ।
अव्यवस्थित । ४ बहुत कठिन । जो सहज में समझ
में न आवे । रहस्यमय । ५ अप्रवेश्य । दुष्प्रवेश्य ।
६ मोटा । खरदरा । ७ तिरछा । बाँका । एकदृष्टी ।
पीड़ाकारक । ८ प्रचण्ड । विकट । भीषण । ९०
अथानक । भयप्रद । ११ बुरा । प्रतिकूल । विपरीत ।
१२ अजीब । अनौत्तम । असमान । १३ चालाक ।
बेईमान ।—अक्षः, —ईक्षणः, —नयनः, —
नेत्रः, —लोचनः, (पु०) शिव जी के नामान्तर ।
अक्षं, (न०) असाधारण भोजन ।—आयुधः,
इषुः, —शरः (पु०) कामदेव ।—कालः, (पु०)
प्रतिकूल मौसम या ऋतु ।—चतुरस्त्रः,—
चतुर्भुजः, (पु०) वह चौकोर क्षेत्र जिसके चारों
कोन समान न हों । विषम कोणवाला चतुष्कोण ।
—दृढः, (पु०) छनिवन का पेड़ ।—ज्वरः, (पु०)
ज्वर विशेष । इसके चढ़ने का कोई समय नियत नहीं
रहता और न तापमान ही सदा समान रहता है ।
—जहमीः, (पु०) दुर्भाग्य । बदकिस्मती ।

विषमं (न०) १ असमानता । २ अनौत्तम । ३
दुष्प्रवेश्य स्थान । गढ़ा । गर्त । ४ सङ्कट । आपत्ति ।
५ एक अर्थात्कारक जिसमें दो विरोधी वस्तुओं का
संबन्ध वर्णन किया जाय या यथायोग्य का
अभाव निरूपण किया जाय ।

विषमः (पु०) विष्णु का नाम ।

विषमिन् (वि०) १ ऊबड़ खाबड़ । असम । २ सङ्कुचित । सिकुड़ा हुआ । ३ कठिन या दुर्गम बनाया हुआ ।

विषयः (पु०) १ पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ । २ सांसारिक पदार्थ । दैनलैन । ३ लौकिक आनन्द या मैथुन सम्बन्धी आनन्द भोग । ४ वस्तु । पदार्थ । चीज़ । ५ उद्देश्य । ६ दौड़ । सीमा । अवकाश । दूरता । परिसर । ७ विभाग । प्रान्त । क्षेत्र । कोटि । स्थान । ८ प्रसङ्ग । विवेच्य या आलोच्य विषय । ९ स्थान । जगह । १० देश । राज्य । सत्तनत । बादशाहत । ११ आश्रमस्थल । आश्रम । १२ ग्रामों का समूह । १३ प्रियतम । पति । १४ वीर्य । १५ धार्मिक कृत्य ।—अभिरतिः, (पु०) इन्द्रिय-सम्बन्धी भोगों के प्रति अनुरक्ति ।—आसक्त ।—निरत, (वि०) कामी । रतिक्रिया ।—सुखं, (न०) इन्द्रिय सुख ।

विषयायिन् (पु०) १ कामी । कामुक । २ सांसारिक या संसार में फँसा हुआ आदमी । विषयों में फँसा हुआ । ३ कामदेव । ४ राजा । ५ इन्द्रिय । ६ जववादी ।

विषयिन् (वि०) दैहिक (पु०) १ संसारी पुरुष । २ राजा । ३ कामदेव । ४ विषय वासना में फँसा हुआ । (न०) १ इन्द्रिय । २ ज्ञान ।

विषलः (पु०) विष । सर्पविष ।

विषह्य (वि०) १ सहने योग्य । बरदाश्त करने योग्य । २ निर्णय करने या फैसला करने योग्य । ३ सम्भव ।

विषा { स्त्री० }
विषाणः { पु० } १ विड्डा । मल । २ बुद्धि ।
विषाणं { न० } प्रतिभा । ३ सींग । शृङ्ग ।
विषाणी { स्त्री० }

विषाणिन् (वि०) सींग या नोकदार दाँतों वाला (पु०) १ सींग या नोकदार दाँतों वाला कोई भी जानवर । २ हाथी । ३ साँब ।

विषादः (पु०) १ उदासी । रंजीदगी । दुःख । शोक । २ नादस्नेदी । हताशा । नैराश्य । ३ शिथिलता । दौर्बल्य । ४ मूडता । अज्ञानता ।

विषादिन् (वि०) विषादयुक्त । उदास । गमहीन ।

विषारः (पु०) साँप । सर्प ।

विषालु (वि०) ज़हरीला ।

विषु (अन्यथ०) १ दो समान भागों में । बराबर का । २ भिन्न रूप में । ३ समान । सदृश ।

विषुपं (न०) ज्योतिष के अनुसार वह समय जब कि सूर्य विषुव रेखा पर पहुँचता है और दिन रात दोनों बराबर होते हैं ।

विषुवं (न०) देखो विषुपं ।

विषुवरेखा (स्त्री०) ज्योतिष के कार्य के लिये कल्पित एक रेखा जो पृथिवी तल पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व पश्चिम पृथिवी के चारों ओर मानी जाती है । यह रेखा दोनों मेरुओं के ठीक मध्य में और दोनों से समान अन्तर पर है ।

विषूचिका (स्त्री०) हैज़ा ।

विष्क (धा० उ०) [विष्कयति, विष्कयते] १ हथका करना । चोटिल करना । २ देखना । पहचानना ।

विष्कन्दः { (पु०) १ छितराने या तितर बितर करने की क्रिया । २ गमन ।

विष्कम्भः { (पु०) १ शोक । रुकावट । अड़चन । २ अर्गल ।
विष्कम्भः { किवाड़ का बँड़ा या बिल्ली । ३ छत्त का वह मुख्य शहतीर जिस पर छत्त रखी हो । ४ संभा । सम्भ । ५ वृत्त । ६ नाटक का एक अङ्क विशेष जो प्रायः गर्भाङ्क के निकट होता है जो दृश्य पहले दिखालाया जा चुका है अथवा जो अभी होने वाला है, उसकी इसमें मध्यम पात्रों द्वारा सूचना दी जाती है । ७ वृत्त का व्यास । ८ योगियों का एक प्रकार का बन्ध । ९ प्रसार । लंबाई ।

विष्कम्भक { (न०) देखो विष्कम्भ ।

विष्कम्भित { (वि०) अवरुद्ध । रोका हुआ । अड़चन
विष्कम्भित { डाला हुआ ।

विष्कम्भिन् { (पु०) अर्गल । किवाड़ों का बँड़ा ।
विष्कम्भिन् {

विष्किरः (पु०) १ छितराने या नख से कुरेदने की क्रिया । २ मुर्गा । ३ तीतर बंदर की जाति के पक्षी ।

विष्णु (न०) १ विरव । सुवन । लोक ।—हारिश्च ।
विष्णुः (पु०) (पु०) विरव को प्रसन्न करने
वाला ।

विष्णुः (व० कृ०) १ दृढ़ता से गढ़ा हुआ । भली
भाँति अवलम्बित । २ समर्थित । ३ रुका हुआ ।
रुकावट डाला हुआ । ४ गतिहीन किया हुआ ।
लकवा का मारा हुआ ।

विष्णुः (पु०) १ दृढ़ता पूर्वक गाढ़ने की क्रिया । २
रुकावट । अड़चन । ३ सूत्र अथवा मल का अयरोध ।
४ लकवा । ५ ठहरन । टिकाव ।

विष्णुः (पु०) १ बैठक । (यथा कुर्सी आदि) २
कुशा का बना हुआ आसन । ३ कुशा का मूँडा ।
४ यज्ञ में ब्रह्मा का आसन । ५ वृक्ष ।—अवस्तु ।
(पु०) विष्णु या कृष्ण का नामान्तर ।

विष्णुः (स्त्री०) १ व्याप्ति । २ धंधा । पेसा । कर्म ।
३ भाड़ा । उजरत । मजदूरी । ४ मजदूरी जो
चुकायी न गयी हो । बेगार । ५ प्रेषण । ६ नरक-
गामी जीव का नरक वास ।

विष्णुलं (न०) दूरस्थ स्थान ।

विष्णु (स्त्री०) १ मल । मैला । गू । पामाना । २
पेट । उदर ।

विष्णुः (पु०) १ परब्रह्म का नामान्तर । सर्वप्रधान
देव, जो सृष्टि के सर्वोत्कर्ष हैं । २ अग्नि । ३
सपत्नी जन । ४ एक स्मृतिकार जिन्होंने विष्णु-
स्मृति बनायी है ।—काञ्ची, (स्त्री०) दक्षिण
की एक नगरी का नाम ।—कर्म, (पु०)
विष्णु भगवान का पाद या पग ।—गुप्तः, (पु०)
प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का असली नाम ।—
तैलं, (न०) वैद्यक में बतलाया हुआ, दात
रोगों को नाश करने वाला तैल विशेष ।—
दैवत्या, (स्त्री०) चान्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की
एकादशी और द्वादशी तिथियाँ ।—पर्व, (न०)
१ आकाश । व्योम । २ खीरसागर । ३ टिड्डी ।—
पद्मी, (स्त्री०) श्रीभगवत्पत्नी गङ्गा ।—पुराणं,
(न०) अष्टादश पुराणों में से एक सात्विक
पुराण का नाम ।—प्रोतिः, (स्त्री०) वह जमीन
जो विष्णु भगवान की सेवा पूजा करने के लिये

किसी ब्राह्मण को बिना जगान दान दे दी गयी
हो ।—रथः, (पु०) गरुड का नाम । रिङ्गी,
(स्त्री०) बहेर ।—लोकः, (पु०) वैकुण्ठधाम ।
—वल्गुभा, (स्त्री०) १ लक्ष्मी जी । २ तुलसी ।
—वाहनः—वाह्यः, (पु०) गरुड जी ।

विष्णुः (पु०) (पु०) निम्नकन । विस्मृतन । अडकन ।

विष्णुः (पु०) १ धनुष की टंकार । २ कम्पन ।

विष्णुः (पु०) (पु०) बढाव । सुवन । उपकन । करन ।

विष्णु (वि०) अनिष्टकर । उत्पाती । अपकारी ।

विष्णु (वि०) (वि०) [कर्ता, एकवचन, पु०—
विष्णुः] विष्णुः, स्त्रीः—विष्णुः । न०—विष्णुः]

१ सर्वगत । सर्वव्यापी । २ भागों में पृथक् किया
हुआ या करने वाला । ३ विभिन्न ।—मेनः, (—
विश्वमेनः वि. यन्त्रेणः) (पु०) १ विष्णु भगवान
का नाम । २ एक मनु का नाम जो मात्स्यपुराण के
अनुसार मेरुहर्वे और विष्णु-पुराण के अनुसार
चौदहर्वे हैं । ३ शिव का नाम । ४ एक प्राचीन
ऋषि का नाम ।—प्रिया, (स्त्री०) लक्ष्मी जी का
नामान्तर ।

विष्णुः (पु०) (पु०) भोजन करने की क्रिया ।

विष्णुः (वि०) (वि०) [स्त्री०—विष्णुः]
विष्णुः, सर्वगत, सर्वव्यापी ।

विष्णु (धा० प०) [विस्मृति] फेंकना । पटकना ।
मेजना ।

विस् देखो विस् ।

विस्संयुक्त (व० कृ०) असंयुक्त । पृथक् ।

विस्संयोगः (पु०) अलगव । असंयोग ।

विस्संवादः (पु०) १ झूल । धोखा । प्रतिज्ञाभङ्ग ।
निराश । २ असङ्गति । ३ विरोध । खगडन ।

विस्संवादिन् (वि०) १ निराश करने वाला । धोखा
देने वाला । २ असङ्गत । विरोधात्मक । ३ भिन्न ।
असम्मत । ४ झूली । धोखेबाज । मुत्तकधी ।

विस्संष्टुल (वि०) १ चंचल । आन्दोलित । २ अग्रम ।
विषम ।

विसंकट } (वि०) भयानक । डरावना । भयप्रद ।
विसङ्कट } भयङ्कर ।

विसंकट : } (पु०) १ सिंह । २ हंगुदी का पेड़ ।
विसङ्कट : }

विसंगत } (वि०) अयोग्य । असङ्गत । बेमेज ।
विसङ्गत }

विसन्धि : } (पु०) कुसन्धि । सन्धि का अभाव ।
विसन्धि : }

विस्तर : (पु०) १ गमन । अस्थान । रवानगी । २
वृद्धि । विकास । ३ भीड़ भड़का । गल्ला । झुंड ।
देड़ । ४ अत्यधिक परिमाण । ढेर ।

विस्सर्ग : (पु०) १ प्रेरण । त्याग । २ बहाव । उड़ेलन ।
टपकाव । ३ प्रक्षेपण । छोड़ना । ४ प्रदान । भेंट ।
दान । ५ विसर्जन । बरखास्तगी । ६ छोड़ देना ।
त्याग कर देना । ७ उत्सर्जन । (जैसे मल मूत्र का)
प्रस्थान । विद्योह । ८ मोक्ष । मुक्ति । ९
वीक्षि । प्रभा । ११ व्याकरणानुसार एक वर्ष जिसका
चिन्ह खड़े दो बिन्दु (:) होते हैं । १२ सूर्य का
दक्षिण अयन । १३ जिज्ञ । जननेन्द्रिय ।

विस्सर्जन (न०) १ परित्याग । त्याग । २ दान ।
प्रदान । भेंट । ३ मल का त्याग करना । ४ छोड़
देना । ५ बरखास्तगी । ६ किसी देवता की विद्या ।
आवाहन का उलटा । ७ वृषोत्सर्ग । साँड़ दाग
कर छोड़ना ।

विस्सर्जनीय (वि०) त्यागने योग्य ।

विस्सर्जनीयः देखो विसर्गः ।

विस्सर्जित (व० कृ०) प्रेरित । त्यक्त । २ वृत्त । यदत्त ।
३ छोड़ा हुआ । त्याग किया हुआ । ४ प्रेषित ।
भेजा हुआ । ५ बरखास्त किया हुआ ।

विस्सर्पः (पु०) १ रेंगना । फिसलना । सरफना । २
हथर उधर घूमना । ३ फैलना । प्रसरण करना । ४
किसी कर्म का अनाश्रित और अनपेक्षित परिणाम ।
५ रोग विशेष जिसमें ज्वर के साथ साथ सारे शरीर
में छोटी छोटी फुंसियाँ हो जाती हैं । सूखी
खुजली ।

विस्सर्पण (न०) मोम ।

विस्सर्पणम् (न०) १ रेंगना । फिसलना । धीमी चाल
से चलना । २ व्याप्ति । प्रसार । बढ़ोत्तरी ।

विस्सर्पः (पु०) } देखो विस्सर्प का पाँचवा अर्थ
विस्सर्पिका (स्त्री०) }

विस्सल देखो विस्सल ।

विस्सारः (पु०) १ व्याप्ति । फैलाव । २ रेंगन
फिसलन । ३ मछली ।

विस्सारं (न०) १ काठ । लकड़ी । २ शहतीर । लट्ठा

विस्सारिन् (वि०) [स्त्री०—विस्सारिणी] १ व्याप्ति
फैलाव । २ रेंगन । फिसलन । सरफन । (पु०)
मछली ।

विस्सिनी देखो विस्सिनी ।

विस्सुचिका (स्त्री०) हैजा ।

विस्सुरणं (न०) } कष्ट । शोक ।
विस्सुरणा (स्त्री०) }

विस्सुदितं (न०) पश्चात्ताप । पछतावा । परिताप ।

विस्सुरिता (स्त्री०) ज्वर ।

विस्सून (व० कृ०) १ फैला हुआ । छाया हुआ ।
व्याप्त । २ आगे बढ़ा हुआ । पसारा हुआ
३ उच्चारित ।

विस्सुत्वर (वि०) [स्त्री०—विस्सुत्वरी] १ फैला हुआ
विस्तारित । व्याप्त । २ रेंगने वाला । फिसलने वाला

विस्सुत्तर (वि०) रेंगने वाला । फिसलने वाला ।
चलने वाला ।

विस्सुष्ट (व० कृ०) १ प्रेरित । त्यक्त । २ रखा हुआ
स्पष्ट । ३ बहाया हुआ । फेंका हुआ । भेजा हुआ
प्रेषित । ४ निकाला हुआ । बरखास्त किया हुआ
५ फेंका हुआ । या चलाया हुआ या छोड़ा हुआ
(अश्व) । ६ दिया हुआ । ७ बरखा हुआ । ८
त्यागा हुआ । अलगया हुआ । हराया हुआ ।

विस्स्त देखो विस्स्त ।

विस्स्तारः (पु०) १ विस्तार । प्रसार । फैलाव ।

२ विस्तृत विवरण । सविस्तर वर्णन । ३ व्याप्ति
४ विपुलता । बहुत्व । समूह । संख्या । ५ आधार
६ बैठकी । पीढ़ा ।

विस्स्तरः (पु०) १ लंबे या चौड़े होने का भाव
फैलाव । २ चौड़ाई । ३ बढ़ाव । वृद्धि । ४ व्योरा ।

५ वृत्त का व्यास । ६ भाड़ी । ७ पेड़ की डाली या शाखा जिसमें नये पत्ते लगे हों ।

विस्तीर्ण (व० कृ०) १ विस्तृत । दूर तक फैला हुआ ।
२ चौड़ा । ३ लंबा । बड़ा । फैला हुआ ।—पर्ण,
(न०) मानकन्द ।

विस्तृत (व० कृ०) १ व्याप्त । फैला हुआ । बड़ा हुआ । २ चौड़ा । विस्तारित । ३ विपुल । परित्याप्त । चारों ओर फैला हुआ ।

विस्तृतिः (स्त्री०) १ फैलाव । विस्तार । २ व्याप्ति । ३ लंबाई । चौड़ाई । ऊँचाई । गहराई । ४ वृत्त का व्यास ।

विस्पष्ट (वि०) १ साफ़ । स्पष्ट । बांधगम्य । २ प्रत्यक्ष । प्रकाशित । खुला हुआ । जाहिर ।

विस्फारः (पु०) १ कंपन । तिसकन । २ धनुष की टंकार ।

विस्फारित (व० कृ०) १ कैपाया हुआ । २ कम्पित । धरधराता हुआ । ३ टंकोरा हुआ । ४ खँचा हुआ । ताना हुआ । ५ प्रदर्शित । दिखलाया हुआ ।

विस्फुरित (व० कृ०) १ काँपता हुआ । कम्पित । २ सूजा हुआ । फूला हुआ ।

विस्फूर्तिगः } (पु०) १ शोळा । अंगारा । आग
विस्फूर्तिङ्गः } का जलता हुआ कोयला । २ विशिष्ट विशेष ।

विस्फूर्जथुः (पु०) १ गर्जन । बड़ाव । नाद । २ बादल की गड़गड़ाहट । ३ जहरों का उत्थान ।

विस्फूर्जित (न०) १ गरजन । चीन्कार । २ जहर-वार । लुढ़कन । ३ फल । परिणाम ।

विस्फोटः (पु०) १ फोड़ा । २ गुमड़ा । ३ चेचक ।

विस्फोटा (स्त्री०) १ माता की बीमारी ।

विस्मयः (पु०) १ आश्चर्य । ताज्जुब । २ अद्भुत रस का एक स्थायी भाव । (यह अनेक प्रकार के अलौकिक अथवा विलक्षण पदार्थों के वर्णन करने या सुनने से मन में उत्पन्न होता है ।) ३ अभिमान । अहङ्कार । अकड़ । शेखी । ४ सन्देह । शक ।—आकुल,—आविष्ट, (वि०) विस्मित । आश्चर्य-चकित ।

विस्मयंगम (वि०) आश्चर्यकारक । अद्भुत ।

विस्मरणा (न०) विस्मृति । धार या स्मरण का न रहना । भूल जाना । [यद्]

विस्मापन (वि०) [स्त्री० —विस्मापनी] आश्चर्य-विस्मापन (न०) १ विस्मयोत्पादन करने वाला । २ कोई भी वस्तु जो ताज्जुब में डाले । ३ गन्धर्वों की नगरी । (यह पु० भी है)

विस्मापनः (पु०) १ कामदेव । २ चाड़ । फरेव । झल । अम ।

विस्मिन (व० कृ०) चकित । आश्चर्य में पड़ा हुआ ।

विस्मृत (व० कृ०) भूला हुआ । जो स्मरण न हो ।

विस्मृतिः (स्त्री०) विस्मरण । भूल जाना ।

विस्मैर (वि०) चकित । आश्चर्योन्मित ।

विस्मं (न०) कच्चेमोस जैसी दुर्गन्धि ।—गन्धिः, (पु०) हरताल ।

विस्मंसः (पु०) १ पतन । २ गलन । जीर्णता ।
विस्मंसा (स्त्री०) १ निर्बलता । कमजोरी ।

विस्मंसन (वि०) १ गिराने वाला । चुभाने वाला । २ खुला हुआ । डीला ।

विस्मंसनं (न०) १ पतन । २ बहाव । टपकन । ३ खुलाव । डोलापन । ४ दस्तावर । रेखक ।

विस्मन्धः }
विस्मंभः } देखो विस्मन्ध । विस्मंभ ।
विस्मंभः }

विस्मंसा (स्त्री०) जीर्णता । निर्बलता । बुढ़ापा ।

विस्मस्त (व० कृ०) १ डीला किया हुआ । २ कमजोर । निर्बल ।

विस्मावः } (पु०) बहाव । टपकन । सूजन ।
विस्मावः }

विस्मावर्ण (न०) खून का बहाव ।

विस्मृतिः (स्त्री०) बहाव । खुआव । टपकन ।

विस्वर (वि०) नेसुरा ।

विहगः (पु०) १ पक्षी । २ बाइल । ३ तीर । ४ सूर्य । ५ चन्द्रमा । ६ ग्रह ।

विहङ्गः } (पु०) १ पक्षी । २ बादल । ३ तीर ।
विहङ्गः } ४ सूर्य । ५ चन्द्रमा ।—इन्द्रः—ईश्वरः,
राजः, (पु०) गतव जी ।

विहङ्गमः } (पु०) पक्षी ।
विहङ्गमः }

विहङ्गमा } (स्त्री०) बहूनी में की वह लकड़ी
विहङ्गमा } जिसके दोनों सिरों पर बोक बाँध कर
विहङ्गिका } लटकाया जाता है ।
विहङ्गिका }

विहृत (व० कृ०) १ सम्पूर्णतया आहत । बध किया
हुआ । २ चोटित किया हुआ । ३ विरोध किया
हुआ । रोका हुआ । अटकाया हुआ ।

विहृतिः (पु०) मित्र । सखा । सहचर ।

विहृतिः (स्त्री०) १ बध करना । प्रहार करना । २
असफलता । नाकामवाची । ३ पराजय । हार ।

विह्वननं (न०) १ ताड़न । मारण । २ चोट ।
अनिष्ट । ३ अडचन । रुकावट । ४ धुना की धुनही ।

विह्वरः (पु०) १ हटाना । ले जाना । २ विछोड़ ।
वियोग ।

विह्वरणं (न०) १ हटाने या लेजाने की क्रिया । २
चहलकदमी । हवाझोरी । सैर सपाटा । ३
आमोद प्रमोद । मनोरञ्जन ।

विह्वर्तु (पु०) १ अमण करने वाला । २ लुटेरा ।

विह्वर्षः (पु०) बड़ा आनन्द । आह्लाद ।

विह्वसनं (न०) } सुसक्यान । सुसकुराहट ।
विह्वसितं (न०) } मन्द हास ।
विह्वसः (पु०) }

विह्वस्त (वि०) १ हाथरहित । करहीन । २ बध-
राया हुआ । व्याकुल । ३ निकम्मा किया हुआ ।
४ विद्वान् । पण्डित ।

विह्व (अव्यय०) स्वर्ग । विह्वरत ।

विह्वापित (व० कृ०) १ झुकाया हुआ । वियोग
कराया हुआ । २ देने के लिये विवश किया हुआ ।

विह्वापितं (न०) दान । उपहार ।

विह्वयस् } (पु० न०) आकाश । व्योम ।
विह्वयसे } (पु०) पक्षी ।

विह्वरः (पु०) १ हटाने या लेजाने की क्रिया । २
सैर सपाटा । चहलकदमी । हवाझोरी । अमण ।
विचरण । ३ कीड़ा । आमोदप्रमोद । ४ कुच-
लना । पैर से रूंधना । पैर रखना । ५ उपवन ।
आमोद वन । ६ कंधा । ७ जैन या बौद्ध मठ ।
संघाराम । ८ मन्दिर ।—गृहं, (न०) आमोद-
भवन ।—दासी, (स्त्री०) मठवासिनी । संन्या-
सिनी ।

विह्वारिका (स्त्री०) मठ ।

विह्वारिन् (वि०) विह्वर करने वाला । आमोदप्रमोद
में व्यस्त ।

विहित (व० कृ०) १ किया हुआ । बनाया हुआ ।
अनुष्ठित । २ सुव्यवस्थित । निश्चित किया हुआ ।
नियुक्त किया हुआ । तै किया हुआ । ३ विधान
किया हुआ । ४ निर्माण किया हुआ । रचा
हुआ । ५ स्थापित । जमा किया हुआ । ६ सम्पन्न
किया हुआ । ७ करने योग्य । ८ विभाजित ।
बाँटा हुआ ।

विहितं (न०) विधान । विधि । आदेश । आज्ञा ।

विहितः (स्त्री०) १ कृति । कार्य । २ विधान ।

विहीन (व० कृ०) १ त्यक्त । परित्यक्त । त्यागा हुआ ।
२ रहित । बगैर । बिना । ३ कमीना । नीच ।
—जाति,—घोनि, (वि०) नीच जाति में
उत्पन्न । अकुलीन ।

विह्वत (व० कृ०) १ खेला हुआ । कीड़ा किया
हुआ । २ बड़ा हुआ । विस्तृत ।

विह्वतं (न०) (साहित्य में) रमणियों के दस
प्रकार के अलङ्कारों में से एक ।

विह्वतिः (स्त्री०) १ हटाने या छीन लेने की क्रिया ।
२ कीड़ा । आमोद प्रमोद । ३ विस्तार ।

विह्वेठकः (पु०) अपकारक । हिंसक ।

विह्वेठनं (न०) १ अपकार । अनिष्ट । २ रगड़
पीसना । ३ सन्ताप । ४ पीड़ा । झंझ । शोक ।

विह्वल (वि०) १ भय अथवा वैसे ही किसी
अन्य कारण से जिसका जी ठिकाने न हो । धव-
राया हुआ । व्याकुल । विकल । २ भयभीत ।

बरा हुआ । २ मतिभ्रष्ट । ३ पीड़ित । सन्तप्त ।

४ उदास । ५ गला हुआ । पिथला हुआ ।

वी (धा० पर०) १ जाना । गमन करना । २ समीप
गमन करना । नजदीक जाना । ३ व्याप्त होना । ४
लाना । ५ फेंकना । प्रक्षेप करना । ६ खाना ।
निघ्नाना । ७ प्राप्त करना । ८ पैदा करना । ९
उत्पन्न होना । पैदा होना । १० चमकना ।
सुन्दर होना ।

वीकः (पु०) १ पवन । २ पक्षी । ३ मन ।

वीकाश देखो विकास ।

वीक्ष (न०) १ कोई भी दृश्य पदार्थ । २ आश्चर्य ।
अचरज ।

वीक्षः (पु०) } अवलोकन । चितवन । घुरन ।

वीक्षा (स्त्री०) }

वीक्षणं (न०) } चितवन । अवलोकन । दृष्टि ।

वीक्षणा (स्त्री०) }

वीक्षितं (न०) अवलोकन । भलक ।

वीक्ष्य (वि०) १ देखने योग्य । २ जो दिखलाई पड़े ।

वीक्ष्यः (पु०) १ नचैया । नाचने वाला । नट ।
अभिनय का पात्र । २ शोका ।

वीक्ष्यं (न०) १ कोई देखने योग्य या दिखलाई पड़ने
वाला पदार्थ या वस्तु । २ आश्चर्य । अचंभा ।

वीक्षा (स्त्री०) १ गमन । गति । उन्नति । २ छोड़े
की चालों में से एक चाल । ३ क्षय । नाच । ४
पङ्कम । मिलन ।

वीक्षिः (पु० स्त्री०) १ लहर । तरंग । २ अवि-

शोचती } वेकता । चाञ्चल्य । ३ आनन्द । आह्लाद ।

४ विश्राम । अवकाश । ५ किरन । ६ अल्प ।

स्वल्प ।—मालिन् (पु०) समुद्र ।

वीक्षी देखो वीक्षि ।

वीज् (धा० आ०) [वीजते] १ जाना । गमन करना ।

(उभ०—वीजयति—वीजयते) २ पंखा करना ।

ठंडा करना । पंखा हँक कर ठंडा करना ।

वीज

बीजक

बीजल

बीजिक

बीजिन्

बीज्य

देखो बीज । बीजक । बीजल आदि ।

वीजनः (पु०) १ चक्रवाक । २ चकोर ।

वीजनं (न०) १ पंखा । २ पंखा चलाने की क्रिया ।

वीटा (स्त्री०) प्रार्थन कालीन एक प्रकार का तेल
किली डंडा के डंग पर ।

वीटिः (स्त्री०) १ पान की बेल । २ पान का

वीटिका बीड़ा नैवार करने की क्रिया । ३ बंधन ।

वीटी) गाँठ । ४ चोली की गाँठ ।

वीणा (स्त्री०) १ वीन । २ विजली ।—आर्यः.

(पु०) नाद जी का नाम—इण्डः, (पु०)

वीणा का लंबा डंडा जो मध्य में होता है ।

—वादः—वादकः, (पु०) वीणा बजाने
वाला ।

वीट (व० वृ०) १ अन्तर्धान हुआ । २ प्रत्यागित ।

गया हुआ । ३ छोड़ा हुआ । दीजा किया हुआ ।

मुक्त किया हुआ । ४ प्रवर्जित । ५ परमद किया ।

हुआ । स्वीकृत किया हुआ । ६ युद्ध के अयोग्य । ७

पालतु । लोचा । ८ जो रहित हो ।—दम्भ, (वि०)

विनम्र ।—भय, (वि०) निर्भय, निश्ङ्क ।—भयः,

(पु०) विष्णु का नामान्तर ।—मल, (वि०)

विशुद्ध ।—राग, (वि०) १ कामताशून्य ।

निश्चुह । शान्त । २ विना रंग का ।—रागः,

(पु०) जितेन्द्रिय साधु ।—शोकः, (पु०)

अशोक वृक्ष ।

वीतः (पु०) घोड़ा या हाथी जो लड़ाई के काम के
अयोग्य हो ।

वीते (न०) हाथी को अंकुश से गोद कर और पैरों
की मार से सारने की क्रिया ।

वीतंसः (पु०) १ पिंजड़ा । पिंजड़ा या जाल जिसमें
पक्षी या जानवर फँसाये जाते हैं । २ चिड़ियाघर ।

३ वह स्थान जहाँ शिकार पाले जायें ।

वीतनौ (पु० द्वि०) गले के अगल बगल के दोनों
स्थान ।

वीतिः (पु०) घोड़ा । अरव ।

वीतिः (स्त्री०) १ गति । गमन । २ पैदायश । पैदा-
वार । ३ उपभोग । ४ भोजन । ५ चमक । आभा ।

—होत्रः, (पु०) १ अग्नि । २ सूर्य ।

धीथि: । (स्त्री०) १ मार्ग । रास्ता । २ पंक्ति ।
धीथी } क्रतार । ३ हाट । दूकान । ४ इरय काव्य
या रूपक के २० भेदों में से एक भेद । यह एक
ही शब्द का होता है और इसमें नायक भी एक
ही होता है । इसमें आकाश-भाषित और शृङ्गार-
रस का आधिक्य रहता है ।

धीथिका (स्त्री०) १ मार्ग । २ चित्रशाला । ३ कागज
का नक़्क़ा (जिस पर चित्र चित्रित किया जाता
है) । भीत या दीवाल (जिस पर चित्र खींचा
जाय) ।

धीध्र (वि०) स्वच्छ । साफ़ ।

धीध्रं (न०) १ आकाश । २ पवन । ३ अग्नि ।

धीनाहः (पु०) कूप का ढकना ।

धीपा (स्त्री०) विद्युत् । बिजली ।

धीप्सा (स्त्री०) १ परिव्याप्ति । २ शब्ददुरुक्ति ।
३ दुरुक्ति ।

धीम् (धा० आ०) डींगें मारना । शेखी मारना ।

धीर (वि०) १ बहादुर । शूर । २ बलवान । ताकत-
वर ।—आशुनं, (न०) १ रखवाली । चौकसी ।
२ युद्ध में जोखों का पद । ३ वे सिपाही जो जीवन
से हाथ धो युद्ध में आगे जाते हैं ।—आसनं,
(न०) १ बैठने का एक प्रकार का आसन या
सुदा जिसका व्यवहार तांत्रिकों के साधनों में
हुआ करता है । २ एक खुदना मोड़कर बैठना ।
३ रणभूमि । ४ वह स्थान जहाँ पहरेदार पहरा
देता है । पहरा देने का स्थान ।—ईशः, —ईश्वरः,
(पु०) १ शिवजी । २ बड़ा बहादुर ।—उज्झः,
(पु०) वह ब्राह्मण जो अग्निहोत्र नहीं करता ।
—कीटः, (पु०) तुच्छ बेल ।—जयन्तिका
(स्त्री०) रण-तुल्य । २ युद्ध । समर ।—तदः,
(पु०) अर्जुनवृक्ष ।—धन्वन्, (पु०) कामदेव ।
—पानं, —पार्श्वः, (न०) वह पेय पदार्थ जो वीर
लोग युद्ध का श्रम मिटाने के लिये पान करते हैं ।
—भद्रः, (पु०) १ शिवजी के एक प्रसिद्ध गण
का नाम, जिसकी उत्पत्ति शिव जी की जटा से हुई
थी । २ प्रसिद्ध भट । ३ अश्वसेन यज्ञ के योग्य
घोड़ा । ४ एक सुगन्धित घास ।—मुद्रिका, (स्त्री०)

पैरकी बिचली उँगली में पहनी जाने वाली छल्ली ।
—रत्नसू, (न०) खंदुर । इंगुर ।—रत्नं, (न०)
१ वीर रस । २ सामरिक भाव ।—रेणुः, (पु०)
भीमसेन का नाम ।—वृक्षः, (पु०) १ अर्जुन-
वृक्ष । २ मिलावे का पेड़ ।—सूः, (स्त्री०) वीर
जननी । इसी अर्थ में वीरप्रसवा, वीरप्रसूः,
और वीरप्रसविनी शब्दों का भी प्रयोग होता है ।
—सैन्यं, (न०) व्याज ।—स्कन्धः, (पु०)
भैंसा ।—हन्, (पु०) वह ब्राह्मण जिसने यज्ञ
करना त्याग दिया हो । २ विष्णु का नाम ।

धीरं (न०) १ बरकुल । काली मिर्च । ३ कौंजी । ४
खस की जड़ ।

धीरः (पु०) १ शूरवीर । भट । बेल्ला । २ वीरभाव ।
३ वीररस । ३ भट । ४ अग्नि । ५ यक्षीय अग्नि ।
६ पुत्र । ७ पति । ८ अर्जुन वृक्ष । ९ विष्णु का
नामान्तर ।

धीर्यां (न०) उशीर । खस ।

धीर्या (स्त्री०) १ कटाह । तिरछी चितवन । २
गहरा स्थान ।

धीरतरः (पु०) १ बड़ा शूर । २ तीर ।

धीरतरं (न०) तृण विशेष । उशीर । खस ।

धीरंधरः } (पु०) १ मयूर । मोर । २ पशुओं के
धीरन्धरः } साथ लड़ाई । ३ चमड़े की नीमास्तीन या
जाकेट ।

धीरवत् (वि०) शूरों से परिपूर्ण ।

धीरवती (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति शूर और पुत्र
जीवित हों ।

धीरा (स्त्री०) १ वीरपत्नी । २ पत्नी । ३ माता ।

४ मुरा । मुरामाली । ५ शराब । ६ एलुवा । ७
केला ।

धीराध } (स्त्री०) १ फैलने वाली लता या बेल ।
धीराधा } २ अङ्कुर । बाली । ३ एक पौधा जो
जितना काटो उतना ही बढ़ता है या काटने परही
बढ़ता है । ४ बेल । भाङ्गी ।

धीर्थ (न०) १ वीरता । पराक्रम । विक्रम । २
शक्ति । सामर्थ्य । ३ पुंसत्व । जनन शक्ति । ४

स्फूर्ति। साहस्य। दृढता। २ (किसी दया का लाभकारी) गुण। ३ धातु। बीज। ४ चमक। धामा। ५ महिमा। सन्तोष।—जः, (पु०) पुत्र। प्रपातः, (पु०) वीर्य का पान।

वीथवत् (वि०) १ मज्जवृक्ष। बलिष्ठ। २ गुणकारी। वीथधः (पु०) १ बहंगी का बाँस। २ वीर्य। ३ अनाज का ढेर। ४ मार्ग। रास्ता। सड़क।

वीथधिकः (पु०) बहंगी वाला।

वीथारः (पु०) १ बौदों का संघाराम। २ मठ।

वृंग } (धा० प०) [वृंगति,] त्यागना छोड़ना।
वृङ्ग }

वृन्द } (धा० उ०) [वृन्दयति, वृन्दयते] १
वृन्दयते } चादिल करना। बध करना। २ नाश होना।

वृन्धुर्षु (वि०) चुनने के लिये अभिलाषी।

वृण (वि०) चुना हुआ। छाँटा हुआ।

वृ (धा० उ०) [वरति,—वरते, वृणाति,—वृणुते, वृणाति,—वृणीते, वृत्] १ चुनना। छाँटना। २ विवाह करने के लिये छूट कर पसंद करना। ३ याचना करना। माँगना। ४ ठकना। छिपाना। पदां डालना। छपेटना। ५ बेरना। ६ रोकना। बचाना। ७ अइचन हलाना। विरोध करना।

वृंह } देखो वृंह वृंहिन।
वृंहित }

वृक (धा० आ०) [वृकते,] ग्रहण करना। लेना। पकड़ना।

वृकः (पु०) १ भेड़िया। २ सेही। ३ गीदड़। मृगाल। ४ काक। कौवा। ५ उल्लू। ६ दाहू। ७ चित्रिय। ८ तारपीन। ९ सुगन्ध पदार्थों का समिथय। १० एक राक्षस का नाम। ११ वक्रवृक्ष। १२ उदरस्थ अग्नि विशेष।—अवृतिः,—अवृतिः (पु०) कुत्ता। उदरः (पु०) १ वृक्ष का नाम। २ भीम का नाम।—दंशः, (पु०) कुत्ता।—धूपः, (पु०) १ तारपीन। कई सुशब्दों के द्रव्यों से बना हुआ सुगन्ध पदार्थ विशेष।—धूर्तः, (पु०) मृगाल।

वृकः (पु०) १ वृक्ष। २ मृग।
वृका (स्त्री०) १ वृक्ष। २ मृग।

वृका (धा० कृ०) १ विभाजित। कटा हुआ। २ कटा हुआ। ३ टूटा हुआ।

वृक्त (धा० कृ०) साफ किया हुआ। शुद्ध किया हुआ।

वृत् (धा० पा०) [वृत्तते] १ शरीरका कर्त्तव्य। पसंद करना। चुनलाना। २ आँकना।

वृत्तः (पु०) पेड़। कमल। पात्रप। विदप।

अवृत्तः (पु०) १ बदई की छेनी। २ कुल्हाड़ी। बमूला। ३ अश्वध का पेड़। ४ पित्राल

वृक्ष।—अवृत्तः, (पु०) आमड़ा।—अवृत्तयः,

(पु०) पत्नी।—अवृत्तमः, (पु०) १ पत्नी।

२ साधु।—अवृत्तयिन्, (पु०) छोटी जामिका

उल्लू। कुम्भकटः, (पु०) जंगली मुर्गा।—

अवृत्तम्, (न०) कुम्भक। उपवन।—अवृत्तः, (पु०)

वानरः—धूपः, (पु०) तारपीन।—निर्यासः,

(पु०) गोंद। गुग्गुलु।—पाकः, (पु०)

अश्वधवृक्ष।—भिद्रः, (पु०) कुल्हाड़ी।—

मर्कटिका, (स्त्री०) गिलहरी।—वाटिका,

—वाटी, (स्त्री०) बाग। बगिया।—शाः, (पु०)

छपकली।—शाशिका, (स्त्री०) गिलहरी।

वृत्तकः (पु०) १ छोटा वृक्ष। २ वृक्ष।

वृत् (धा० प०) [वृत्ति] चुनना। पसंद करना।

वृत् (धा० आ० [वृत्ते] १ बचाना। त्यागना।

[प०—वृत्ति] १ बचना जाना। छोड़ देना।

त्याग देना। २ पसंद करना। चुनना। ३ प्राय

श्चित्त करना। ४ टाल देना।

वृजिनः (पु०) १ केश। २ धुंधराळे बाल। वृजिन

(न०) १ पाप। २ विपत्ति। ३ आकाश।

४ हाथा। बाधा। विरा हुआ भूखण्ड जो काम-

कारी या चरागाह के काम के लिये हो।

वृजिन (पु०) १ मुड़ा हुआ। टेढ़ा। दुष्ट। पापी।

वृजिनं (न०) १ पाप। २ पीड़ा। कष्ट। (इस-

अर्थ में पु० भी)

वृजिनः (पु०) १ केश। धुंधराळे केश। २ दुष्ट जल।

वृण (धा० ङ०) [वृणोति, वृणुते] खाना ।
निघडाना ।

वृन् (धा० धा०) (वृत्त्यते) १ पसंद करना । चुन
लेना । २ बाँटना । [उभ०—वर्तयति—वर्तयते]
चमकाना ।

वृत्त (व० कृ०) १ चुना हुआ । छाँटा हुआ । २
पदी पड़ा हुआ । ढका हुआ । ३ छिपा हुआ ।
४ घिरा हुआ । ५ रज़ामंद । ६ भाड़े पर उदाया
हुआ । ७ अष्ट क्रिया हुआ । ८ सेवित ।

वृत्तिः (स्त्री०) १ चुनाव । छाँट । २ छिपाव । दुराव ।
३ याचना । ४ विनय । प्रार्थना । ५ घेरा । लपेटन ।
६ हाता । घेरा । घेरने वाला ।

वृत्तिकर } (वि०) घेरने वाला । लपेटने वाला ।
वृत्तिङ्कर }

वृत्तिकरः } (पु०) विककृत नामक वृत्त ।
वृत्तिङ्करः }

वृत्त (व० कृ०) १ जीवित । वर्तमान । २ हुआ ।
घटित हुआ । ३ पूर्णता को प्राप्त । ४ कृत ।
क्रिया हुआ । ५ बीता हुआ । गुज़रा हुआ । ६
वर्तुल । गोल । ७ मृत । मरा हुआ । ८ दृढ़ ।
मज़बूत । ९ अचीठ । पड़ा हुआ । १० (किसी
से) निकला हुआ । ११ प्रसिद्ध । —अन्तः,
(पु०) १ अवसर । मौका । २ संवाद । समाचार ।
खबर । ३ किसी बीती हुई घटना का विवरण ।
इतिहास । इतिवृत्त । कथा । कहानी । ४ विषय ।
प्रसङ्ग । ५ जाति । क्रिस्म । तरह । ६ तौर । तरीका
ढंग । ७ दशा । हालत । ८ सम्पूर्णता । समस्तता ।
९ विश्राम । अवकाश । फुरसत । १० भाव । —
इचार्तिः, (पु०) —ककटी, (स्त्री०) हिंगवाना ।
कलींदा । तरबूज । —गन्धि, (न०) वह गंध
जिसमें अनुप्रासों और समासों की अधिकता हो ।
वह गंध जिसे पढ़ने से पढ़ पढ़ने जैसा आनन्द
प्राप्त हो । —चूड, —चौल (वि०) वह जिसका
मुख्य लक्ष्य हो चुका हो । —पुष्पः, (पु०)
१ जलवेत । २ सिरिस का पेड़ । ३ कदंब का पेड़ ।
४ मुहुकदंब । ५ सदागुलाब । सेवती । ६ मोतिथा ।
७ मणिलका । —फलः, (पु०) १ कैथा का पेड़ ।

२ अनार का पेड़ । —शस्त्र, (वि०) शस्त्रचालन
कला में पारदर्शी या पटु ।

वृत्तः (पु०) कछुवा ।

वृत्ते (न०) १ घटना । २ इतिहास । वृत्तान्त । ३
संवाद । खबर । ४ पेशा । धंधा । ५ चरित्र ।
चालचलन । ६ सञ्चरित्र । अचञ्छा चालचलन ।
७ शास्त्रानुमोदित विधान । चलन । पद्धति ।
कर्त्तव्य । ८ वृत्त । वृत्त का व्यास । ९ कुण्ड ।

वृत्तिः (स्त्री०) १ अस्तित्व । २ परिस्थिति । ३ दशा ।
हालत । ४ क्रिया । कर्म । विधान । ५ तौर ।
तरीका । ढंग । ६ चालचलन । आचरण । ७
धंधा । पेशा । ८ जीविका । रोज़ी । ९ मज़दूरी ।
उजरत । भाड़ा । १० सम्मानपूर्ण व्यवहार । ११
व्याख्या । टीका । शब्दार्थ । १२ चक्र । घुमाव ।
१३ वृत्त या पहिये का व्यास या घेरा । १४
व्याकरण में सूत्र जो व्याख्या की अपेक्षा रखते हैं ।
१५ शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा वह किसी
अर्थ को बतलाता या प्रकट करता है । (यह
अर्थ तीन प्रकार के माने गये हैं—यथा—अभि-
धात्मक, लक्षणात्मक, और व्यञ्जनात्मक) । १६
वाक्यरचना की शैली [शैली चार प्रकार की मानी
गयी है । यथा—कैशिकी, भारती, सात्वती और
आरभटी । इनमें से शृङ्गार रस वर्णन के लिये
कैशिकीवृत्ति, वीररस के लिये सात्वतीवृत्ति, रौद्र
और वीभत्स रसों का वर्णन करने के लिये आरभटी
वृत्ति तथा अवशेष रसों का वर्णन करने के लिये
भारतीवृत्ति से काम लिया जाता है ।] —
अनुप्रासः, (= वृत्त्यनुप्रासः) (पु०) पाँच
प्रकार के अनुप्रासों में से एक प्रकार का अनुप्रास
जो काव्य में एक शब्दालङ्कार माना गया है ।
इसमें एक अथवा अनेक व्यञ्जन वर्ण एक ही या
भिन्न भिन्न रूपों में बराबर व्यवहृत किये जाते हैं ।
—उपायः (पु०) जीविका का जरिया या साधन ।
—कर्पित, (वि०) जीविका के अभाव से दुःखी ।
—चक्रं, (न०) राजचक्र । —क्षेपः, (पु०)
किसी की जीविका का अपहरण । —भङ्गः, (पु०)
—वैकल्यं, (न०) जीविका का अभाव । —स्थः,
(वि०) १ वह जो अपनी वृत्ति पर स्थित हो ।

२ सदाचारी । अच्छे चालचलन का । - स्थः, (पु०) गिरगिट । झुकली । विस्तृद्धा ।

वृथः (पु०) १ पुराणानुसार स्वर्णा के पुत्र एक दानव का नाम, जो इन्द्र के हाथ से मारा गया था । २ बादल । ३ अन्धकार । ४ शत्रु । ५ शब्द । ध्वनि । ६ पर्वत विशेष । - अरिः, - द्विप्, (पु०) - शत्रुः । - हन्, (पु०) इन्द्र की उपधिओं ।

वृथा (अव्यया०) १ व्यर्थ । बेकार । निरर्थक । २ अनावश्यकता से । ३ मूर्खता से । ४ गलती से । अनुचित रीति से । - भनि, (वि०) वह जिसकी वृद्धि में मूर्खता भरी हो । मूर्ख । - वादिच्, (वि०) मिथ्याभाषी । झूठ बोलने वाला ।

वृद्ध (वि०) १ वृद्धि को प्राप्त । बड़ा हुआ । २ पूर्ण रूप से वृद्धि को प्राप्त । ३ बड़ा । बड़ी उम्र का । ४ बड़ा । लंबा । ५ एकत्रित । ढेर किया हुआ । ६ बुद्धिमान । परिहृत । - अङ्गुलिः, (स्त्री०) पैर की बड़ी उँगली । - अवस्था, (स्त्री०) बुढ़ापा । - आचारः (पु०) पुरानी रीतिरस्स । उन्नः, (पु०) बड़ा लैल । - काकः, (पु०) द्रोणकाक । पहाड़ी कौआ । - नाभि, (वि०) तोंदल । - भावः, (पु०) बुढ़ापा । - मतं, (न०) प्राचीन श्रवियों की आज्ञा । - दाहन्, (पु०) आम की लकड़ी । - अवस्, (पु०) इन्द्र की उपाधि - सन्धः, (पु०) बुद्धजनों की सभा । - सूत्रकं, (न०) कपास ।

वृद्धं (न०) शैलजनामक गन्धद्रव्य ।

वृद्धः (पु०) १ बड़ा आदर्शी । २ सम्माननीय पुरुष । ३ तपस्वी । श्रमि । ४ वैशधर । पुत्र । सन्तान ।

वृद्धा (स्त्री०) १ बुढ़िया स्त्री । २ कन्यासन्तान ।

वृद्धिः (पु०) १ बढ़ती । उन्नति । २ चन्द्रकलाओं की वृद्धि । ३ धन की वृद्धि । ४ सफलता । सौभाग्य । ५ धनसौलभ्य । समृद्धि । ६ ढेर । समुदाय । ७ सूद । सूद दर सूद । ८ सूदखोरी । ९ लाभ । मुनाफा । १० अण्डकोष की वृद्धि । ११ शक्ति की वृद्धि । राजस्व की वृद्धि । १२ वह श्रौच या सूतक जो घर में सन्तान उत्पन्न होने पर होता है । जननाशौच । - आजीवः, - आजीविन्, (पु०)

महाजन जो सूदखोरी का राजगार करता है — जीविनं, - जीविका, (स्त्री०) मृदङ्गो का धंवा या पेशा । - दः, (वि०) समृद्धि-कारक । - पत्रं, (न०) दुरा । - श्राद्धं, (न०) नान्दीमुखश्राद्ध । आशुवृद्धिक श्राद्ध ।

वृथ् (प्रा० श्रा०) [वर्धते, वृद्ध] १ बढ़ना । बढ़ा हो जाना । मज्जवृत्त हो जाना । फलना-फूलना । २ जारी रहना । चालू रहना । ३ निकलना । चटना (जैसे सूर्य इतना चढ़ आया) । ४ बधाई देने का हेतु होना । [निजन्त-वर्धयति-वर्धयते] बढ़वाना है । गौरव बढ़वाना । बधाई देना । (उ० - वर्धयति - वर्धयते) १ बोलना । २ चमकना ।

वृधसानः (पु०) मनुष्य । मानव ।

वृध्रासानुः (पु०) १ मानव । मनुष्य । २ पत्नी । पत्नी । ३ क्रिया । कर्म ।

वृत्तं (न०) फल या पत्र का डंडुल । २ पल्लेड़ी । वृन्तं (न०) घड़ा रखने की तिपाई । ३ कुच की चौड़ी या अग्रभाग ।

वृत्ताकः (पु०) }
वृन्ताकः (पु०) }
वृत्ताकी (स्त्री०) }
वृन्ताकी (स्त्री०) } मटा का पौधा । बैंगन का पौधा ।

वृत्तिका } (स्त्री०) छोटा डंडुल ।
वृन्तिका }

वृन्दं (न०) १ समुदाय । समूह । २ ढेर । वृन्दं (न०) समुच्चय ।

वृन्दा } (स्त्री०) १ तुलसी । २ गोकुल के समीप
वृन्दा } एक धन का नाम । - अग्रशयं, - धनं, (न०)
मथुरा में एक तीर्थस्थल विशेष । - वनी, (स्त्री०) तुलसी ।

वृन्दार (वि०) १ अधिक । बड़ा लंबा । २ मुख्य । वृन्दार (उ०) उत्तम । उत्कृष्ट । ३ मनोहर । प्रिय । सुन्दर । वृन्दारक (वि०) [स्त्री - वृन्दारका, वृन्दारिका] वृन्दारक (उ०) अत्यधिक । बहुत ज्यादा । २ मुख्य । उत्तम । उत्कृष्ट । ३ मनोहर । प्रिय । सुन्दर । ४ मान्य । प्रतिष्ठित । माननीय ।

वृन्दारकः (पु०) १ देवता । २ किसी वस्तु का वृन्दारकः } मुख्य अंश ।

वृद्धिष्ट । (वि०) १ बहुत बड़ा या लंबा । २ बड़ा वृन्दिष्ट । सुन्दर ।

वृन्दीयस् (वि०) अपेक्षाकृत बड़ा । अपेक्षाकृत वृन्दीयस् । लंबा । २ सुन्दरतर । मनोहरतर ।

वृण् (धा० प०) [वृण्यति] चुनना । पसंद करना । छोटमा ।

वृणं (न०) अदरक । आदि ।

वृशः (पु०) चूहा ।

वृशा (स्त्री०) एक प्रकार की ओषधि ।

वृश्चिकः (पु०) १ बिच्छू । २ वृश्चिक राशि । ३ मकर । ४ कमलजरा । गोजर । ५ कैंकड़ा । ६ एक कीड़ा जिसके शरीर पर बाल होते हैं ।

वृष् (धा० प०) [वृषति, वृष्ट] १ बरसना । २ वृष्टि होना । ३ बकशना । देना । ४ नम करना । ५ उत्पन्न करना । ६ सर्वोपरि शक्ति रखना । ७ आघात करना ।

वृषः (पु०) १ साँड़ । बैल । २ वृष राशि । ३ सर्वश्रेष्ठ (किसी समुदाय में) ४ कामदेव । ५ बलिष्ठ आदमी । ६ कामुक । ७ शत्रु । विरोधी । ८ मूला । ९ शिव का नादिया । १० न्याय । ११ मरकम । पुरुष कर्म । १२ कण का नाम । १३ विष्णु का नाम । १४ एक ओषधि विशेष ।—
—अङ्गः, (पु०) १ शिव जी । २ पुरुषात्मा जन । ३ भिलावे का पेड़ । ४ हिजड़ा ।—अन्तनः, (पु०) शिव ।—अन्तकः, (पु०) विष्णु ।—आहारः, (पु०) बिल्ली ।—उत्सर्गः, (पु०) किसी की मृत्यु होने पर बड़बड़े को दाग कर और उसे साँड़ बना कर छोड़ने की क्रिया ।—दंशः,—
दंशकः, (पु०) बिल्ली ।—ध्वजः, (पु०) १ शिव । २ गणेश । ३ पुरुषात्माजन ।—पतिः, (पु०) १ शिव जी । २ एक दैत्य का नाम जिसकी बेटी शर्मिष्ठा को राजा अश्वति ने ध्याहा था । ३ बरं ।—भासः, (स्त्री०) इन्द्र और देवताओं का आवासस्थान अर्थात् अमरावती पुरी ।—लोचनः, (पु०) बिल्ली ।—वाहनः, (पु०) शिवजी का नाम ।

वृषं (न०) मोर का पंख ।

वृषणः (पु०) अण्डकोष ।

वृषणश्वः (पु०) इन्द्र के एक घोड़े का नाम ।

वृषन् (पु०) १ साँड़ । २ वृषभ राशि । ३ किसी श्रेणी या जाति का मुखिया । ४ साँड़ । घोड़ा । ५ कष्ट । शोक । ६ पीड़ा का ज्ञान न होना । ७ इन्द्र । ८ कर्ण । ९ अग्नि ।

वृषमः (पु०) १ साँड़ । २ वृषभ राशि । ३ किसी श्रेणी या जाति का मुखिया । ४ कोई भी नर जानवर । ५ एक प्रकार की ओषधि । ६ हाथी का कान । ७ कान का छेद ।—गतिः,—ध्वजः, (पु०) शिव जी ।

वृषभी (स्त्री०) १ विधवा । २ गौ ।

वृषलः (पु०) १ शूद्र । २ घोड़ा । ३ गाजर । शलगम । ४ वह जिसे धर्म आदि का कुछ भी ध्यान न हो । पापी । दुष्टात्मा । ५ पतित । ६ चन्द्र गुप्त का नाम जो चाणक्य ने रख छोड़ा था ।

वृषलकः (पु०) तिरस्करणीय शूद्र ।

वृषली (स्त्री०) १ वह कन्या जो रजस्वला हो गयी हो, पर जिसका विवाह न हुआ हो ।

पितुर्गैहे च या मरी रजः परधर्यसंकृता ।

अथैवैव पितुस्तस्याः सा कन्या विवकी कृता ॥

२ रजस्वला स्त्री या वह स्त्री जो मासिक धर्म से हो । ३ बाँक स्त्री । ४ मरी हुई सन्तान उत्पन्न करने वाली स्त्री । ५ शूद्र जाति की स्त्री ।

पतिः, (पु०) शूद्रा स्त्री का पति ।—सेवनं, (न०) शूद्रा स्त्री से संसर्ग ।

वृषस्तुकी (स्त्री०) बरं ।

वृषस्यंती (स्त्री०) १ वह स्त्री जिसे पुरुष समागम वृषस्यन्ती की लालसा हो । २ झिनाल औरत । ३ उठी हुई गौ या गर्मानी हुई गाय ।

वृषाकपायी (स्त्री०) १ खड्गी । २ गौरी । ३ शची । ४ अग्नि पत्नी स्वाहा । ५ सूर्यपत्नी ।

वृषाकपिः (पु०) १ सूर्य । २ विष्णु । ३ शिव । ४ इन्द्र । ५ अग्नि ।

वृषायणः (पु०) १ शिव । २ गौरैया ।

वृषिन् (पु०) मयूर । मोर ।

वृषी (स्त्री०) कुशासन ।

वृष्ट (व० क०) १ बरना हुआ । २ बरसना हुआ ।

वृष्टिः (स्त्री०) १ बरसान । २ बौद्धार । कुआर । —
कालः, (पु०) वर्षा ऋतु । —भूः, (पु०)
मेढक ।

वृष्टिम्ब (वि०) बरसाती । बरसने वाला । (पु०)
बादल ।

वृष्टिा (वि०) १ विधर्मी । पाखण्डी । २ क्रोधी ।

वृष्टिाः (पु०) १ बादल । २ मेढा । ३ किरन । ४
श्रीकृष्ण के एक पुत्रों का नाम । ५ श्रीकृष्ण का
नामान्तर । ६ इन्द्र का नामान्तर । ७ अग्नि का
नामान्तर । —गर्भः, (पु०) श्रीकृष्ण की उपाधि ।

वृष्य (वि०) १ बरसने वाला । २ वह वस्तु जो वीर्य
और बल को बढ़ाने वाली हो । कामोद्दीपक ।

वृष्यः (पु०) उद्द की डाल ।

वृद्ध
वृहत्
वृहत्तिका } देखो वृह, वृहत्, वृहत्तिका ।

वृहती (स्त्री०) १ नारद की वीणा । २ ङ्गीस की
संख्या । ३ चुगा । जवादा । रैपर । ४ वाणी ।
वाक्य । ५ कुण्ड (जैसे जल का) । ६ बृन्द विशेष ।
—पतिः, (पु०) वृहस्पति की उपाधि ।

वृहस्पति देखो वृहस्पति ।

वृ (धा० उ०) [वृणाति, वृणीति, वृणा] चुनना ।
छानना ।

वे (धा० उ०) [वयति—वयते, उत] १ चुनना । २
लगाना । जमाना । ३ सीना । ४ बनाना । ५
जड़ना । ६ ओतप्रोत करना ।

वेकटः (पु०) १ मल्लरा । विदूषक । २ जौहरी । ३
युवा पुरुष ।

वेगः (पु०) १ उत्तेजना । प्रवृत्ति । २ गति । तेज़ी ।
स्फ़ूर्तार । ३ उद्योग । उद्यम । ४ प्रवाह । बहाव । ५
किसी काम को करने की दृढ़ प्रतिज्ञा । ६ बल ।
शक्ति । ७ फैलाव (जैसे विष का रक्त के साथ
मिल कर सारे शरीर में फैल जाना) । ८ उतावली ।
जल्दबाज़ी । ९ धनुषबाण की लड़ाई । १० प्रेम ।

अनुराग । १० किन्हीं आन्तरिक भाव का पार्थिव
प्रकट होना । ११ आनन्द । आह्लाद । १२ शरीर
में से मल मूत्रादि के निकलने की प्रवृत्ति । १३
वीर्यपान । —नाशनः (पु०) रक्षोघ्ना । कक —
वाहिनः, (वि०) नेत्र । कुर्तीला । —मरः
(पु०) खड्ग । अश्वतर ।

वेगिन् (वि०) [स्त्री०—वेगिनी] नेत्र । कुर्तीला ।

वेगिन् (पु०) १ हलकाग । २ वाज पक्षा ।

वेगिनी (स्त्री०) नदी ।

वेकटः } (पु०) वेकटाचल, पर्वत विशेष ।
वेकटः }

वेचा (स्त्री०) भाड़ा । किराया । उजरत ।

वेडं (न०) चन्दन विशेष ।

वेडा (स्त्री०) नाव । बोट ।

वेणू (धा० उ०) [वेणति—वेणते, वेनति—
वेन्] वेनते] १ जाना । जानना । पहचानना ।
२ सोचना । विचारना । ३ लेना । ग्रहण करना ।
बाना बजाना ।

वेणुः (पु०) मनु के अनुसार एक प्राचीन वर्षासङ्कर
जाति, जिसकी उत्पत्ति वैदेहक माता और अंबष्ट
पिता से मानी गयी है । गर्वया जानि । २ मूर्ध
वंशी राजा पृथु के पिता का नाम ।

वेण्णा (स्त्री०) कृष्णा नदी में गिरने वाली एक नदी का
नाम ।

वेण्णिः (स्त्री०) १ केशों की चोटी । गुथी हुई
वेणी } चोटी । २ जल का प्रवाह । पानी का बहाव ।
३ दो या अधिक नदियों का संगम । ४ गङ्गा
यमुना और सरस्वती नदी का संगम । ५ एक
नदी का नाम । —वन्धः, (पु०) गुथी हुई चोटी ।
—वेधिनी, (स्त्री०) जोंक । जलौका —
वेधिनी, (स्त्री०) कंबी । —संहारः, (पु०) १
चोटी बना कर केशों को बाँधने की क्रिया । २
नारायण भट्ट का बनाया संस्कृत का एक नाटक ।

वेणुः (पु०) १ बाँस । २ नरकुल । सरपत । ३ बंसी ।
नफीरी । —जः, (पु०) बाँस का बीज । —धमः,
नफीरी या बंसी का बजाने वाला । —निस्स्रतिः
(पु०) गङ्गा । उख । —यवः, (पु०) बाँस का

बीज ।—अष्टिः, (स्त्री०) बीस की छड़ी ।—

वादः,—वादकः, (पु०) नफ़ीरी वाला ।—

बीजं, (न०) बीस का बीज ।

वेद्युक्तं (न०) वह अंकुर जिसमें बीस की मूठ हो ।

वेद्युनं (न०) काली मिर्च ।

वेतः }
वेतसुडः } (पु०) हाथी ।
वेदः }
वेदसुडः }

वेतनं (न०) १ भाड़ा । तनख्वाह । मासिक । २

आजीविका ।—आदानं,—अनपाकर्मन्, (न०)

—अनपक्रिया, (स्त्री०) १ वेतन न चुकाना ।

२ वेतन न चुकाने पर वेतन वसूल करने के लिये किया गया उद्योग विशेष ।—जीविन्, (पु०)

वृत्तिहा । वृत्तिवाला ।

वेतसः (पु०) १ वेत । नरकुल । २ जंभीरी ।
बिजौरा ।

वेतसी (स्त्री०) वेत । जलवेत ।

वेतस्वत् (वि०) [स्त्री०—वेतस्वती] वह स्थान जहाँ
वेतों का बाहुल्य हो ।

वेतालः (पु०) १ भूत योनि विशेष । २ द्वारपाल ।
पौरुष । दरवान ।

वेत् (पु०) १ ज्ञाता । जानने वाला । २ विद्वान् ।
पति ।

वेत्रः (पु०) १ बेंत । जलबेंत । २ द्वारपाल के हाथ
की छड़ी ।—आसनं, (न०) वेत का बना हुआ
आसन ।—धरः,—धारकः, (पु०) १ द्वार-
पाल । २ असाधारी । चौबदार ।

वेत्रकीय (वि०) बेंत का ।

वेत्रवती (स्त्री०) १ स्त्री द्वारपाल । २ वेतवा नदी
का नाम ।

वेत्रिन् (पु०) १ द्वारपाल । दरवान । २ चौबदार ।

वेथ् (धा० आ०) [विधत्ते] याचना करना । माँगना ।

वेदः (पु०) १ ज्ञान । २ विशेषतः आध्यात्मिक
विषय का सच्चा और वास्तविक ज्ञानी । ३ ऋक्,
यजु, साम और अथर्ववेद । ४ कुशों का मूटा । ४

विष्णु का नामान्तर ।—अङ्गः, (न०) वेदाङ्ग छः

हैः—यथा १ शिवा । २ छंदस् । ३ व्याकरण । ४

निरुक्त । ५ ज्योतिष । ६ कल्प ।—अधिगमः,

(पु०) वेदाध्ययन ।—अध्ययनं, (न०) वेदाध्ययन ।

—अध्यापकः (पु०) वेदों का पढ़ाने

वाला ।—अन्नः, (पु०) १ उपनिषद्

और आरण्यक आदि वेद के अन्तिम भाग जिनमें,

आत्मा, परमात्मा और जगत् आदि का विषय

वर्णित है । २ छः दर्शनों में से प्रधान वेदान्त

दर्शन ।—अन्तिन्, (पु०) वेदान्त दर्शन का

अनुयायी या मानने वाला ।—आदि, (न०)

—आदिर्वाङ्, —आदिवीजं, (न०) प्रणव ।

ओं ।—उक्त, (वि०) वेदविहित ।—कौलेयकः,

(पु०) शिव जी ।—गर्भः (पु०) १ ब्रह्मा । २

वेदविद् ब्राह्मण ।—ज्ञः, (पु०) ब्राह्मण जिसने

वेद का अध्ययन किया हो ।—त्रयं, (न०)—

त्रयी, (स्त्री०) तीन वेदों का समुच्चय ।—

निन्दकः, (पु०) नास्तिक ।—निन्दा, (स्त्री०)

वेद की बुराई ।—पारगः, (पु०) वेदविद्या में

निष्णात ब्राह्मण ।—मातृ, (स्त्री०) गायत्रीमंत्र ।

—वचनं,—वाक्यं, (न०) वैदिक मंत्र या

ऋचा ।—वदनं, (न०) व्याकरण ।—वासः,

(पु०) ब्राह्मण ।—वाह्य, (वि०) जिसका

उल्लेख वेद में न हो । वेदविरुद्ध ।—विहित,

(वि०) वेदानुकूल ।—व्यासः, (पु०) वेद-

व्यास जी जिन्होंने वेदों के विभाग किये ।—

संन्यासाः, (पु०) वैदिक कर्मकाण्ड का त्याग ।

वेदनं, (न०) } १ ज्ञान । अवगति । २ अनुभव ।
वेदना (स्त्री०) } पीड़ा । ३ धन दौलत । सम्पत्ति ।
४ विवाह ।

वेदारः (पु०) गिरगट ।

वेदिः (पु०) पण्डित । विद्वान् ।

वेदिः } (स्त्री०) १ यज्ञकार्य के लिये साफ करके

वेदी } तैयार की हुई भूमि । ३ अँगूठी जिसमें नाम

की मोहर हो । ३ सरस्वती का नाम । ४ भूखण्ड ।

देश ।—जा, (स्त्री०) द्रौपदी का नामान्तर ।

वेदिका (वि०) १ वह स्थान या ऊँचा चबूतरा
जो यज्ञ के लिये ठीक किया गया हो । २ बैठकी ।

- १ चतुरा जो आँगन के बीचों बीच बना हो । ३
लतामण्डप । लताकुञ्ज ।
- वेदिन् (वि०) १ जानने वाला । २ विवाद करने
वाला ।
- वेदिन् (पु०) १ ज्ञाता । २ शिक्षक । ३ विद्वान्
ब्राह्मण । ४ ब्राह्मण की उपाधि ।
- वेदी देखो वेदि ।
- वेध (वि०) १ ज्ञानव्य । जानने के लिये । २ बलवाने
या मितलवाने के लिये । ३ विवाद करने को ।
- वेधः (पु०) १ प्रदेश । छेदन । २ घाव । ३ छेद ।
खुदाई की गहराई । ४ समय का भाल विशेष ।
- वेधक (न०) धान । धनिया ।
- वेधकः (पु०) १ तरक विशेष । २ कपूर ।
- वेधनं (न०) १ छेदने की क्रिया । २ खुदाई । ३ घाव
करना । ४ गहराई । (खुदी हुई जगह की)
- वेधनिका (स्त्री०) वह औजार जिससे मणि आदि में
छेद किये जाते हैं ।
- वेधनी (स्त्री०) १ हाथी का कान छेदने का औजार ।
२ मणि आदि में छेदने का औजार ।
- वेधस् (पु०) १ सुष्ठिकर्ता । २ मन्त्रा । ३ द्रव्य आदि
प्रजापति । ४ शिव । ५ विष्णु । ६ सूर्य । ७ अर्क ।
मन्दार । ८ परिच्छिन्न जल ।
- वेधसं (न०) इथेली का वह भाग जो अँगूठे की जड़
के पास होता है ।
- वेधित (न० कृ०) छेदा हुआ । वेधा हुआ ।
- वेन् (भा० उ०) [वेनति, वेनते] देखो वेणु ।
- वेन देखो वेणु ।
- वेष्ठा देखो वेणु ।
- वेप् (भा० आ०) [वेपते, वेपित] कौपना ।
थरथराना ।
- वेपथुः (पु०) कैंपन । थरथरी ।
- वेपनं (न०) कैंपना । थरथराहट ।
- वेप्स, वेपन् (पु० न०) करवा ।
- वेरं (न०) १ शरीर । २ केसर । ३ भाँटा
- वेरः (पु०) १
- वेरटं (न०) वेर नामक फल ।
- वेरटः (पु०) नीच जाति का आदर्मी ।
- वेत् (भा० प०) [वेत्ति] १ जाना । २ दितना ।
कौपना ।
- वेत्तं (न०) दात । बागिया ।
- वेत्ता (स्त्री०) १ समय । २ मर्मपत्र । अउमर । ३
अपकाश । ४ लहर । प्रवाह । धार । ५ समुद्रनट ।
६ सीमा । हट । ७ वर्षा । वचन । ८ रोग । ९
सद्वत् सत्यु । १० समुद्र ।—कृतं, (न०)
ताम्रलित देश का नाम ।—मूलं, (न०) समुद्र-
नट ।—वनं, (न०) समुद्रनट वर्णों वन ।
- वेत्त (भा० प०) [वेत्तति] जाना । कौपना ।
दितना ।
- वेत्तः (पु०) १ दितन । कौपन । २ लुप्तकन ।
- वेत्तनं (न०) १ लोट ।
- वेत्तहलः (पु०) लंपट । दुराचारी ।
- वेत्तिः (स्त्री०) वेत् । जता ।
- वेत्तित (न० कृ०) १ कौपना हुआ । २ टेढ़ामेढ़ा ।
- वेत्तितं (न०) १ गमन । २ हिलन ।
- वेवी (भा० आ०) [वेवीने] १ जाना । २ प्राप्त
करना । ३ गर्भवती होना । ४ व्याह होना । ५
फँकना । ६ खाना । ७ इच्छा करना ।
- वेणः (पु०) १ प्रवेशद्वार । २ भीतर जाने का रास्ता ।
३ घर । ४ वेरवालय । ५ पोशाक । परिच्छिन्न ।—
दानं, (न०) सूरजमुक्ती का फूल ।—धारिन्,
(वि०) कपटरूप धारी ।—नारी,—उनिना,
(स्त्री०) रंडी । वेण्या । वासः, (पु०) वेण्या
का घर ।
- वेणकः (पु०) घर । मकान ।
- वेणनं (न०) १ प्रवेशद्वार । २ घर ।
- वेणनः (पु०) १ छोटा तालाब । २ अग्नि ।
- वेणरः (पु०) लखर । अरवतर ।
- वेणम् (न०) घर । भवन । राजभवन ।—कलिङ्गः,
(पु०) चटक पक्षी । गौरैया ।—नकुलः, (पु०)

वक्षः ।—भूः, (स्त्री०) वह स्थान जो मकान बनाने के लिये उपयुक्त हो ।

वक्ष्य (न०) रंडी खाना ।

वक्ष्या (स्त्री०) रंडी । पतुशिया ।—आचार्यः, (पु०) वह पुरुष जो वेश्याओं को रखता हो और परपुरुषों से उन्हें मिलाता हो । महुआ ।—आश्रयः, (पु०) रंडियों के रहने की जगह । रंडियों की आबादी ।—गमनः, (न०) रंडी-बार्ता ।—गृहः, (न०) चक्रवा ।—जनः, (पु०) रंडी ।—पण्यः, (पु०) फीस जो रंडी को दी जाती है ।

वैश्वरः (पु०) खजूर । अरवतर ।

वैषयं (न०) कृष्ण । दलल । अविकार ।

वैष्, (धा० आ०) [वैष्टते] १ घेरना । लपेटना । २ उमैठना । मरोड़ना । ३ पोशाक धारण करना ।

वैष्टः (पु०) १ विराव । लपेटन । २ घेरा । हाता । ३ पगड़ी । ४ गोंद । राल । ५ तारपीन ।—संशः, (पु०) एक प्रकार का बाँस ।—सारः, (पु०) तारपीन ।

वैष्टकं (न०) १ पगड़ी । २ चादर । पिछौरी । ३ गोंद । ४ तारपीन ।

वैष्टकः (पु०) १ हाता । घेरा । २ सफेद कुम्हड़ा ।

वैष्टनं (न०) १ घेरन । लपेटन । २ उमैठन । मरोड़न । ३ लिफाफा । बंधन । ४ पगड़ी । साफा । ५ घेरा । हाता । ६ कमरबंद । पटका । ७ पट्टी । ८ गुण्गुल । ९ कान का छेद । १० नृत्य का भाव विशेष ।

वैष्टनकः (पु०) रतिकंध की क्रिया विशेष ।

वैष्टिल (न० क०) १ चारों ओर से घिरा हुआ । २ लपेटा हुआ । ३ रोका हुआ । अवरुद्ध । ४ घेरा हुआ ।

वैष्यः } (पु०) पानी ।
वैष्यः }

वैष्या (स्त्री०) देखो वेश्या ।

वैसरः (पु०) खजूर । अरवतर ।

वैसवारः } (पु०) जीरा, मिर्च, लौंग या राई, काली
वैशवारः } मिर्च सोंठ आदि मसालों का चूर्ण ।

वेह् (धा० आ०) [वेहते] देखो “वेह्” ।

वेहत् (स्त्री०) बाँझ गौ ।

वेहारः (पु०) बिहार प्रदेश का नाम ।

वेह् (धा० प०) [वेहते] जाना ।

वै (धा० प०) [वायति] १ सुखाना । सूख जाना । २ थक जाना ।

वै (अव्यया०) अव्यय विशेष जिसका प्रयोग निश्चय या स्वीकारोक्ति के अर्थ में किया जाता है । किन्तु अधिकांश प्रयोग इसका पद पूर्ण करने के लिये ही होता है । यथा

“आगे वै भरजूनवः ।”

—मनुः ।

कभी कभी यह सम्बोधन और अनुनय द्योतक भी होता है ।

वैशतिक (वि०) [स्त्री०—वैशतिकी] वीस में खरीदा हुआ ।

वैकरं (न०) १ माला जो जनेऊ की तरह पहनी गयी हो । २ उत्तरीय वस्त्र । लबादा । चेगा ।

वैकलकं } (न०) “देखो वैकलं”
वैकलिकं }

वैकटिकः (पु०) जौहरी । रत्नपारखी ।

वैकर्तनः (पु०) कर्ण का नाम ।

वैकल्पं (न०) १ विकल्प का भाव । २ असमञ्जसता । ३ अनिश्चयता ।

वैकल्पिक (वि०) [स्त्री०—वैकल्पिकी] १ ऐच्छिक । एकाङ्गी । २ सन्दिग्ध । सन्देहात्मक । अनिश्चित ।

वैकल्पं (न०) १ न्यूनता । कमी । त्रुटि । अपूर्णता । २ अज्ञहीनता । लंगड़ा होने का भाव । ३ अयोग्यता । ४ घबड़ाहट । विकलता । ५ अभाव । अनस्तित्व ।

वैकारिक (वि०) [स्त्री०—वैकारिकी] १ संशोधन सम्बन्धी । २ संशोधनात्मक । ३ संशोधित ।

वैकालः (पु०) मध्याह्नोत्तर । सार्धकाल ।

वैकालिक (वि०) [स्त्री०—वैकालिकी] } सार्धकाल
वैकालीन (वि०) [स्त्री०—वैकालिनी] } सम्बन्धी
या शाम को होने वाला ।

प्रसूतः (पु०) १ विष्णु का एक नाम । २ हृन्द्
प्रसूतः का एक नाम । ३ तुलसी ।

वैकुण्ठं । चतुर्दशी, (श्री०) कान्तिक शुद्धा
वैकुण्ठम् । १४ शी । — लोकः, (पु०) विष्णु-
लोक । (न०) १ विष्णुलोक । २ अक्षक ।

वैकृत (वि०) [श्री—वैकृत] १ पवित्रित , २ संशोधित ।

वेदार्थ (२०) परिकल्पन । अवलम्बन । संशोधन । ०
 पुष्पा । २ परिस्थिति अथवा सूरत शङ्क । नै अदल-
 बदल । ४ अशुभ सूचक अशङ्कन ।—विघ्नः ।
 (पु०) दुर्दशा ।

वैद्वतिक (वि०) [स्त्री—वैद्विका] : पण्डितिक ।
संशोधित । २ विकृति सम्बन्धी ।

वैकुण्ठ (न०) १ परिवर्तन । गङ्गोत्पत्ति . २ तुर्ग्यः ।
३ धृष्टा । अरुचि ।

(७०) एक प्रकार का ख. जुझा ।

वैद्व्यं) (पु०) १ गदबद्धी । विकलता । धवदाहट ।
वैद्व्यं) २ इदबद्धी । मानसिक अस्थिरता । ३
सन्ताप । दुःख । पीडा ।

त्रैल्लरी (छी) १ वाक्शक्ति । २ वाग्देवी । ३ कण्ठ से उत्पन्न होने वाला स्वर का एक विशिष्ट प्रकार । ऐसा स्वर उच्च और सम्भीर होता है और स्पष्ट सुनाई पड़ता है ।

वैखानस (वि०) [छा०—वैखानसो] संन्यासी
सम्बन्धी ।

वैखानसः (पु०) बालप्रस्थ । वानप्रस्थाश्रमी ब्राह्मण !

त्रैगुण्यं (न०) १ गुण का अभाव । विगुण्यता ।
२ ऐव । अवगुण्य । वृद्धि । ३ वैषम्य । विपरीत ।
विरुद्धता । ४ नीचता । ह्रदता । ५ अनिपुण्यता ।

वैचक्षण्यं (न०) चातुरी । जिदुयता । शोभ्यता ।

वैचित्र्यं (न०) दुःख । मानसिक विकलता । शोक ।

वैविध्यं (न०) । विविक्तता । निखल्यता । २
बहुप्रकारत्व । ३ विभिन्नता । ४ समवेधी । ५
आश्चर्य ।

वैशाख (न०) वर्ष का अन्तिम मास ।

सूत्रार्थः : (पु०) १ अत्र का शब्दार्थः ० अत्र
व्यवहारः : का शब्दार्थः ० अत्र का शब्दार्थः ० अत्र

संज्ञकः (५०) मंडा वरान बाजार .
 संज्ञकः

वेजयंतिका : (स्थो) १ अंश । पताका । ३ मोटा
वेजयंतिका : का उत्तर ।

श्रीनन्दन : (सु०) १ मंडा । पनाका : २ मिट्टी ।
जलपान्नी : चित्ता । ३ हात । ४ भगवान विष्णु की
माता जिणेय । ५ एक शब्दकोश का नाम ।

वेजातीय (न०) १ विज्ञानोद्यता । विज्ञानीय होने का भाव । २ वर्णभेद । ३ अलसता । ४ जाति-बहिष्कार । ५ यदसलनी । लंपटता ।

पञ्चमः श्लोकः

वैज्ञानिक (वि०) [श्री०—वैज्ञानिकी] चतुः ।
निपुणः । योग्यः ।

बैङ्गाल देखो बैङ्गाल ।

वेग: (५०) बँसकांडा । बाँस की सीतें बनाने
वाला ।

त्रैणव (वि०) [स्त्री०—त्रैणवा] बाँस से उत्पन्न या बाँस का बना हुआ ।

वेरात्र (न०) बाँस का फल या बीज ।

वैज्ञानिक: (पु०) १ बॉम्ब का डंडा । २ टांकरी सी बितावट ।

त्रैलोक्यिकः (पु०) बंभो बजाने वाक्ता । नफीरी बजाने
वाक्ता ।

नैऋतिन् (पु०) शिव जी का नाम ।

वैष्णवी (स्त्री०) वंशलोचनः ।

वैशिकः (पु०) वंसी बजावे वाळा ।

त्रैलोक्यं (न०) हाथी का श्रृंगार ।

वैष्णवः (पु०) दंभी ब्रजाने वाला ।

वैतसिकः (पु०) ग्राम्य बेचने वाला ।

वैतण्डिकः । (पु०) वितंडावादी । स्वर्थ का भगवा

वैयक्तिक (वि०) या बहस करने वाला ।
वैयक्तिक (वि०) [स्त्री०—वैयक्तिकी] बैयक्तिकी ।
वैयक्तिक काम करने वाला ।

वैतनिकः (पु०) १ मज्जदूर। मज्जदूरी के ऊपर काम करने वाला। २ वृत्तिहा। वृत्ति वाला।

वैतरणिः (स्त्री०) १ नरकस्थित एक नदी का वैतरणी नाम। २ कलिङ्ग देशस्थ एक नदी का नाम।

वैतस (वि०) [स्त्री०—वैतसी] १ वैत सम्बन्धी। २ नरकुल जैसा। बलवान शत्रु के सामने नवने वाला। बलिष्ठ शत्रु से हार मानने वाला। [यथा "वैतसीवृत्तिः"]

वैतान (वि०) [स्त्री०—वैतानी] यज्ञीय। पवित्र। वैतानं (न०) १ यज्ञीय विधान। २ यज्ञीय बलिदान।

वैतानिक (वि०) [स्त्री०—वैतानिकी] देखो वैतान।

वैतानिकः (पु०) १ बंदीजन। मार। २ मदारी। ऐन्द्रजालिक। ३ वेताल को सिद्ध करने वाला।

वैत्रक (वि०) [स्त्री०—वैत्रकी] बेंतदार। नरकुलदार।

वैदः (पु०) विद्वज्जन। पण्डित जन।

वैदग्ध्यं (न०) १ निपुणता। पटुता। हाथ की वैदग्ध्यं (स्त्री०) सफ़ाई। चातुर्य। २ सौन्दर्य। वैदग्ध्यं (न०) ३ चालाकी। ४ हाज़िरजवाबी।

वैदर्भः (पु०) विदर्भ देश का राजा।

वैदर्भी (स्त्री०) १ दम्बन्ती का नाम। २ रुक्मिणी का नाम। ३ काण्व की एक शैली जिसमें मधुर वर्णों के द्वारा मधुर रचना की जाती है। साहित्य दर्पणकार ने इसकी परिभाषा यह दी है :—

“मधुर्यं वदन्तुर्कैवर्कै रचना बलिता रिमका।

अवृत्तिरपवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते॥”

वैदल (वि०) [स्त्री०—वैदली] बेंत का बना हुआ।

वैदलः (पु०) १ परावृण। उल्टा। २ दाल का अनाज। जैसे उर्द, मूंग, अरहर आदि। कोई भी शाक जिसमें खीमी हों, जैसे रोसा, बनझिमिर्छा, सेंम, मटर आदि।

वैदलं (न०) मिट्टी का वह पात्र जिसमें भित्तारी भील साँगते हैं। २ बाँस की बुनावट का आसन या मोड़ा या टोकरा।

वैदिक (वि०) [स्त्री०—वैदिकी] १ वेद से निकला हुआ या वेदोक्त। २ शास्त्रीय। धर्मशास्त्रीय।—पाशः, (पु०) वह जिसे वेद का पूर्ण ज्ञान न हो।

वैदिकः (पु०) वेदज्ञ ब्राह्मण।

वैदुषी (स्त्री०) } पाण्डित्य। विद्वत्ता।
वैदुष्यं (न०) }

वैदूर्य (वि०) [स्त्री०—वैदूरी, वैदूर्यी] विदुर से लाया हुआ या उत्पन्न किया हुआ।

वैदूर्य (न०) लहसुनिया रत्न।

वैदेशिक (वि०) [स्त्री०—वैदेशिकी] अन्यदेश का विदेश का।

वैदेशिकः (पु०) अजनबी। विदेशी। अन्य देश का।

वैदेश्यं (न०) विदेशीपना।

वैदेहः (पु०) १ विदेहराज। २ विदेहवासी। ३ वैश्य। पैदायशी व्यापारी। ४ वैश्य पुत्र जो ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो।

वैदेहकः (पु०) व्यापारी। सौदागर।

वैदेहाः (पु० बहु०) विदेह देशवासी।

वैदेही (स्त्री०) सीता का नाम।

वैदेहिकः (पु०) व्यापारी। सौदागर।

वैद्य (वि०) [स्त्री०—वैद्यी] १ वेद सम्बन्धी। आत्मा सम्बन्धी। २ औषधि सम्बन्धी। चिकित्सा सम्बन्धी।—क्रिया, (स्त्री०) चिकित्सा कर्म।—नाथः, (पु०) १ धन्यन्तरि। २ शिव।

वैद्यः (पु०) १ विद्वान्। शास्त्राचार्य। २ चिकित्सक। ३ वैद्य जाति का आदमी। यह वर्णसङ्कर जाति का होता है। इसकी उत्पत्ति वैश्य माता और ब्राह्मण पिता से बतलाई जाती है।

वैद्यकं (न०) वैद्य विद्या।

वैद्यकः (पु०) डाक्टर। हकीम। वैद्य।

वैद्युत (वि०) [स्त्री०—वैद्युती] बिजली

सम्बन्धी । बिजली से उत्पन्न ।—अग्निः,—
अनजः,—वह्निः (पु०) बिजली की आग ।
वैध (वि०) [स्त्री०—वैधी] ।
वैधिक (वि०) [स्त्री०—वैधिकी] १ नियमानुसार ।
२ आईना । आईने के सुताधिक ।
वैधर्म्य (न०) १ असमानता । भिन्नता । २ विभि-
न्नता । ३ नास्तिकता । ४ अन्याय ।
वैधवेगः (पु०) विधवा का पुत्र ।
वैधव्य (न०) विधवापन ।
वैधुर्य (न०) १ कातरता । २ कंपित होने का भाव ।
वैध्वय (वि०) [स्त्री०—वैध्वयी] १ नियमानुकूल ।
निर्दिष्ट । २ मूर्ख । मूढ़ ।
वैध्वेयः (पु०) मूर्ख । विमूढ़ ।
वैनतेयः (पु०) १ गरुड़ का नाम । २ अरुण का
नाम ।
वैनयिक (वि०) [स्त्री०—वैनयिकी] १ विनय
सम्बन्धी । २ शिष्टाचार का व्यवहार करवाने
वाला ।
वैनायक (वि०) [स्त्री०—वैनायकी] गणेश का ।
वैनायिकः (पु०) १ बौद्ध दर्शन विशेष के सिद्धान्त ।
२ उक्त दर्शन का मानने वाला ।
वैनाशिकः (पु०) १ गुलाम । दास । २ मकड़ी ।
३ ज्योतिषी । ४ बौद्ध सिद्धान्त । ५ बौद्ध
सिद्धान्तानुयायी ।
वैपरीत्य (न०) १ विपरीतता । विरोध । २
असंगति ।
वैपुल्य (न०) १ विस्तर । विशालता । २ विपुलता ।
बाहुल्य ।
वैफल्य (न०) निरर्थकता । व्यर्थता । विफलता ।
वैक्रोधिकः (पु०) १ चौकीदार । रखवाला । २
विशेष कर वह जो सोने वालों को बीता हुआ
समय बतला कर जगावे ।
वैमर्ध (न०) १ ऐश्वर्य । विभव । २ महिमा ।
महत्त्व । बहूपन । ३ सामर्थ्य । शक्ति । ताकत ।

वैमर्षिक (वि०) [स्त्री०—वैमर्षिकी] ऐश्वर्य ।
वैकल्पिक ।
वैभ्र (न०) वैकुण्ठ । विष्णु लोक ।
वैभ्राज्य (न०) स्वर्गीय उपवन या बगीचा ।
वैमन्य (न०) १ मतभेद । अनेक्य । २ दृष्टा ।
अश्वि ।
वैमनस्य (न०) १ विकलता । व्याकुलता । २ शोक ।
उदाली । ३ बीमारी ।
वैमात्रः (पु०) सांतेली माता का पुत्र ।
वैमात्रेयः (पु०) सांतेली माता का पुत्र ।
वैमात्रा
वैमात्री (स्त्री०) सांतेली माता की लड़की ।
वैमात्रेयी
वैमानिकः (वि०) देवयान में सवार हो अन्तरिक्ष में
विहार करने वाला ।
वैमानिकः (पु०) आकाशचारी गुब्बाड़े में या ज्योम-
यान में बैठ कर उड़ने वाला मनुष्य ।
वैमुख्य (न०) १ विमुखता । पीठ फेरना । २
दृष्टा । अश्वि ।
वैमेयः (पु०) बदल बदल । एक वस्तु के बदले
दूसरी वस्तु लेना । विनिमय ।
वैयग्रं (न०) १ विकलता । घबड़ाहट । २ किसी
वैयग्र्यं (न०) विषय में जीनता या एकाग्रता ।
वैयर्थ्य (न०) व्यर्थता । विफलता ।
वैयधिकरण्य (न०) भिन्नभिन्न सम्बन्धों या अवस्थि-
तियों में होने की दशा ।
वैयाकरण (वि०) [स्त्री०—वैयाकरणी] व्याकरण
सम्बन्धी । व्याकरण का ।
वैयाकरणाः (पु०) व्याकरण का पण्डित ।—पाशः,
(पु०) अपटु व्याकरण जानने वाला । वह जिसे
व्याकरण अच्छी तरह न आता हो ।
वैयाघ्र (वि०) [स्त्री०—वैयाघ्री] १ चीते की
तरह । २ चीते के चर्म से आच्छादित ।
वैयाघ्रः (पु०) चीते के चर्म से आच्छादित गाड़ी ।
वैयाघ्र्य (न०) १ साहस । बहादुरी । लज्जा का या
विनय का अभाव । २ उद्वेगता । औद्धत्य ।

वैयासिकः (पु०) व्यासपुत्र ।

वैरं (न०) १ शत्रुता । विरोध । २ प्रतिहिंसा ।

बदला ।—ध्यातंकः (पु०) अर्जुन का पेद ।

वैरक्तं } (न०) १ वासना शुन्यता । २ अरुचि ।
वैरक्त्यं } धृणा ।

वैरगिकः } (पु०) जितेन्द्रियजन । संन्यासी ।
वैरगिकः }

वैरग्यं (न०) १ विरलता । २ वीक्षणपन । ३ सूक्ष्मता ।

वैराग्यं देखो वैराग्यं ।

वैराग्यं (न०) १ सांसारिक पदार्थों में अनासक्ति
अथवा उनसे विरक्ति । २ असन्तोष । अप्रसन्नता ।
३ धृणा । अरुचि । ४ रंज । शोक ।

वैराज (वि०) [स्त्री—वैराजी] ब्राह्मण सम्बन्धी ।

वैराट (वि०) [स्त्री—वैराटी] विराट सम्बन्धी ।

वैराटः (पु०) इन्द्रगोप नामक कीट । वीर बहूटी ।

वैरिन् (वि०) विरोधात्मक ।

वैरिन् (पु०) शत्रु । बैरी ।

वैरूप्यं (न०) १ कुरूपता । बदृशरूपना । २ रूपों
की विभिन्नता ।

वैरोचनः } (पु०) विरांचन के पुत्र वैत्यराज बलि
वैरोचनिः } की उपाधियाँ ।
वैरोचिः }

वैलक्षण्यं (न०) १ विचित्रता । २ विरोध । ३
विभिन्नता ।

वैलक्ष्यं (न०) १ गढ़बड़ी । २ अप्राकृतिकत्व । ३
लज्जा । शर्म । ४ वैपरील ।

वैलोभ्यं (न०) वैपरीत्य । उत्पापन ।

वैवधिकः (पु०) १ फेरीवाला । घूम घूम कर माल
बेचने वाला । २ बहूनी उठाने वाला ।

वैवर्ध (न०) १ रंग बदलौअल । पीलापन । २
भिन्नता । ३ जालिअंशत्व ।

वैवस्वतं (न०) वैवस्वत मनु का वर्तमान मन्वन्तर ।

वैवस्वतः (पु०) १ सातवें मनु का नाम । आज
कल का मन्वन्तर इन्हीं मनु का माना जाता है ।
२ यमराज । ३ शनिग्रह ।

वैवस्वती (स्त्री०) १ दक्षिण । दिशा । २ यमुना नदी
का नाम ।

वैवाहिक (वि०) [स्त्री—वैवाहिकी] विवाह
सम्बन्धी ।

वैवाहिकः (पु०) } विवाह । परिणय । शादी ।
वैवाहिकं (न०) }

वैवाहिकः (पु०) बधू का पिता या दामाद का पिता ।
ससुर ।

वैशद्यं (न०) १ स्वच्छता । निर्मलता । २ सफाई ।
३ उज्ज्वलता । ४ स्वस्थता । शांति (मन की) ।

वैशसं (न०) १ नाश । बध । कसाईपन । २ उत्पीड़न ।
अत्याचार । कष्ट । पीड़ा । तकलीफ ।

वैशस्त्रं (न०) १ अरक्तता । २ हुकूमत । शासनतंत्र ।

वैशाखं (न०) शिकार करने के समय का एक पैतरा ।

वैशाखः (पु०) १ दूसरे मास का नाम । २ मन्थन
दण्ड । मथानी ।

वैशाखी (स्त्री०) वैशाख मास की पूर्णमासी ।

वैशिक (वि०) वैश्याओं द्वारा अनुष्ठित ।

वैशिकं (न०) रंढीपना । वैश्यापन । वैश्याओं का
हुनर ।

वैशिकः (पु०) साहित्य में तीन प्रकार के नायकों
में से एक, जो वैश्याओं के साथ भाग विलास
करता हो । वैश्यागामी ।

वैशिष्ट्यं (न०) १ भेद । पहचान । २ विलक्षणता ।
विशेषता । ३ उत्तमता । विशिष्ट लक्षण सम्पन्नता ।

वैशेषिक (वि०) [स्त्री—वैशेषिकी] १ विशिष्टता ।
वैशेषिक दर्शन सम्बन्धी ।

वैशेषिकं (न०) छः दर्शनों में से एक । इसके आचार्य
कणाद हैं ।

वैशेष्यं (न०) उत्तमता । मुख्यता ।

वैश्यः (पु०) तृतीय वर्ण का मनुष्य ।—कर्मन्, (न०)
—वृत्तिः, (स्त्री०) वैश्य वर्ण के कर्म ।

वैश्रवणः (पु०) १ कुबेर का नाम । २ राक्षस का
नाम ।—आलियः, —आधाम्यः, (पु०) ३ कुबेर

के रहने का स्थान । २ अश्वत्थ ।—उदयः, (पु०)
अश्वत्थ का वृक्ष ।
वैश्वदेव (वि०) [स्त्री—वैश्वदेवी] विश्वदेव
सम्बन्धी ।
वैश्वदेवं (न०) १ विश्वदेव की स्त्री या नैवेद्य । भोजन
करने के पूर्व सब देवताओं के उद्देश्य में अग्नि में
दी हुई आहुति ।
वैश्वानरः (पु०) १ अग्नि की उपाधि । २ वह अग्नि
जो अन्न पचाती है । ३ वेदान्त में चेतन शक्ति ।
४ परमात्मा ।
वैश्वामित्र (वि०) [स्त्री—वैश्वामिकी] विश्वामित्र ।
इतमीनामी ।
वैश्वम्यं (न०) १ असमानता । २ औद्धत्य । उद्वेगता ।
३ अमरदशता । ४ अन्वय । ५ कठिनाई । मुमूर्शुता ।
आफत । ६ एकान्तता ।
वैषयिक (वि०) [स्त्री—वैषयिकी] १ किसी पदार्थ
सम्बन्धी । २ विषयी । लंपट ।
वैषयिकः (पु०) विषयीपुरुष । लंपट आदमी ।
वैश्वतं (न०) हवन की भस्म ।
वैष्टः (पु०) १ आकाश । २ पवन । हवा । ३ लोक ।
वैष्णव (वि०) [स्त्री—वैष्णवी] १ विष्णु सम्बन्धी ।
२ विष्णु की उपासना करने वाला ।—पुराणः,
(न०) अष्टादश पुराणों में से एक ।
वैष्णवं (न०) हवन की भस्म ।
वैष्णवः (पु०) वैदिक धर्म के अन्तर्गत मुख्य तीन
विभागों में से एक विभाग । अन्य दो हैं, शैव और
शाक्त ।
वैसारिणः (पु०) मङ्गली ।
वैहायस (वि०) [स्त्री—वैहायसकी] व्योम सम्बन्धी ।
आकाश सम्बन्धी । आसमानी । आकाशी ।
वैहार्य (वि०) वह जिसके साथ मत्तक किया जाय
(जैसे सरला या ससुराल का अन्य ऐसा ही कोई
रिश्तेदार)
वैहासिकः (पु०) मसखरा । विदूषक ।
वोहू (पु०) १ कुली । वाहक । २ नेता । ३ पति । ४
सौह । ५ स्थ । ६ गोह । गोनस सूर्य ।

वोहूः (पु०) १ सूर्य विशेष । २ मङ्गली विशेष ।
वोहू (स्त्री०) चौथाई पण । निष्ठा विशेष ।
वोहः (पु०) डंडुल ।
वोहटः (पु०) डंडुल ।
वोह (वि०) नम । नर । मीलवाला ।
वोहानः (पु०) बोधारी नामक मङ्गली ।
वोहकः (पु०) नेत्रक ।
वोहकः (पु०) नेत्रक ।
वोहटः (पु०) कुन्दा ।
वोहः (पु०) गुग्गुलु ।
वोहलाहः (पु०) पीले अथवा लाल और पीले रंग की
पंख वाला घोड़ा ।
वोह (पु०) देखो वोह ।
वोहट (अव्यय०) पितरों या देवताओं को कोई
वस्तु अर्पण करने समय बोला जाने वाला अव्यय
विशेष ।
व्यंशकः (पु०) पशाव ।
व्यंशुक (वि०) नंगा । वस्त्र विवर्जित ।
व्यंसकः (पु०) बदमाश । झुली कपरी ।
व्यंनं (न०) धोखेबाजी । झल । कपट ।
व्यक्त (व० कृ०) १ प्रादुर्भूत । प्रकटित । २ निर्मित ।
वृद्धिगत । ३ स्पष्ट । साफ । ४ वर्णित । ज्ञान ।
पहचाना हुआ । ५ व्यक्त । ६ बुद्धिमान । परिद्धत ।
व्यक्तं (अव्यय०) स्पष्टतः । साफ तौर पर । निश्चयरूप
से ।—गणितं (न०) अङ्कगणित ।—दृष्टार्थः,
(पु०) चरमदीर्घवाह । वह साक्षी जिम्मे कोई
बटना अपनी आँखों से देखी हो ।—राशिः, (पु०)
अङ्कगणित में वह राशि या अङ्क जो बतला दिया
गया हो या ज्ञात अङ्क ।—रूपः, (पु०) विष्णु ।
व्यक्तिः (स्त्री०) १ व्यक्त होने की क्रिया या भाव ।
प्रकटन । प्रादुर्भाव । २ मनुष्य । आदमी । ३
मनुष्य या किसी अन्य शरीरधारी का सारा शरीर,
जिसकी पृथक् मत्ता मानी जाय और जो किसी
समूह या समाज का अंग माना जाय । व्यक्ति । ३
लिङ्ग प्रकरण ।

व्यग्र (वि०) १ विकल । व्याकुल । परेशान । २ भयभीत । डरा हुआ । ३ किसी कार्य में लीन ।

व्यंग्य } (वि०) १ शरीरहीन । २ अवयवहीन ।
व्यङ्ग्य } विकलाङ्ग । लुंजा ।

व्यंग्यः } (पु०) १ लुंजा । २ मेढ़क । ३ गालों पर
व्यङ्ग्यः } के काके दाग ।

व्यंगुलं } (न०) अंगुल का $\frac{1}{4}$ वाँ अंश ।
व्यङ्गुलं }

व्यंग्यं } (न०) शब्द का वह अर्थ जो उसका
व्यङ्ग्यं } व्यञ्जना वृत्ति के द्वारा प्रकट हो । गूढ़
और छिपा हुआ अर्थ । २ वह लगती हुई बात
जिसका कुछ गूढ़ अर्थ हो । लाना । बोली । चुटकी ।

व्यञ् (धा० प०) [चिञ्चि] धोखा देना । झलना ।

व्यजः (पु०) पंखा ।

व्यजनं (न०) पंखा ।

व्यञ्जक } (वि०) [स्त्री—व्यञ्जिका, व्यञ्जिका]
व्यञ्जक } प्रकट करने वाला । जाहिर करने वाला ।

व्यञ्जकः } (पु०) १ नाटकीय हाव भाव । हाव
व्यञ्जकः } भाव द्वारा आन्तरिक भावों का प्रकटन ।
२ सङ्केत ।

व्यञ्जनं } (न०) १ स्पष्ट करने वाला । २ चिह्न ।
व्यञ्जनं } निशान । चिन्हानी । ३ स्मारक । स्मरण

कराने वाला । ४ परिच्छेद । बनावटीपन । ५ वर्ण-
माला का वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता के
न बोला जा सके । संस्कृत वर्णमाला में के “क से
ह ” तक सब वर्ण व्यञ्जन कहे जाते हैं । ६
लिङ्गवाची चिह्न । अर्थात् स्त्री या पुरुष पहचानने
का चिह्न । ७ बिरला । अपराध । ८ वयस्कता
प्राप्ति का लक्षण । १ दाढ़ी । १० अवयव । प्रत्यङ्ग ।
११ मसाला । चटनी । अचार । १२ व्यञ्जना ।
शक्ति की तीन प्रकार की शक्तियों में से एक प्रकार
की शक्ति, जिससे किसी शब्द या वाक्य के वाच्यार्थ
अथवा लक्ष्यार्थ से भिन्न किसी अन्य ही अर्थ का
बोध होता है ।

यञ्जित } (व० कृ०) १ स्पष्ट किया हुआ । प्रकटित
यञ्जित } २ चिन्हित । ३ सङ्केत किया हुआ ।
प्रकारान्तर से कहा हुआ ।

व्यङ्ग्यः } (पु०) अंशुआ का रूप ।
व्यङ्ग्यः }

व्यतिकरः (पु०) १ संमिश्रण । मिलावट । २
सम्बन्ध । संसर्ग । लगाव । तन्मूलक । ३ आघात
प्रत्याघात । ४ रुकावट । अड़चन । ५ घटना ।
हादसा । ६ अवसर । मौका । ७ आपत । विपत्ति ।
८ पारस्परिक सम्बन्ध । ९ अदल बदल । आपस का
लेन देन ।

व्यतिकर्ण (व० कृ०) १ मिश्रित । २ संयुक्त ।
जुड़ा हुआ ।

व्यतिक्रमः (पु०) १ उलट फेर जो सिलसिलेवार हो ।
क्रमानुसार होने वाला विपर्यय । २ पाप । असत्कर्म ।
जुर्म । अपराध । ३ विपत्ति । सङ्कट । ४ अतिक्रमण ।
५ अवहेला । लापरवाही । ६ वैपरीत्य ।

व्यतिक्रान्त (व० कृ०) १ अतिक्रम किया हुआ ।
जिसमें विपर्यय हुआ हो । भङ्ग किया हुआ ।
(नियम) । अवहेला किया हुआ । २ उलट फेर
किया हुआ । ३ बीता हुआ । गुज़रा हुआ । (जैसे
समय) ।

व्यतिरिक्त (व० कृ०) १ अलगया हुआ । अलहदा
किया हुआ । २ बढ़ा हुआ । ३ रोका हुआ । ४
वर्जित ।

व्यतिरेकः (पु०) १ भेद । अन्तर । भिन्नता । २
अलगाव । ३ वर्जन । बहिष्करण । ४ असमानता ।
असादृश्य । ५ विच्छेद । क्रमभङ्ग । ७ अर्थालङ्कार
विशेष जिसमें उपमान की अपेक्षा उपमेय में कुछ
और भी विशेषता या अधिकता का वर्णन किया
जाता है ।

व्यतिरेकिन् (वि०) १ भिन्न । २ आगे बढ़ा हुआ ।
३ वर्जित । बहिष्कृत । ४ अभाव या अनस्तित्व
प्रदर्शन करने वाला ।

व्यतिषक्त (व० कृ०) १ पारस्परिक सम्बन्ध युक्त या
जुड़ा हुआ । २ ओतप्रोत । ३ परस्पर परिणय या
विवाह सम्बन्ध में आवद्ध ।

व्यतिषङ्गः } (पु०) १ पारस्परिक सम्बन्ध । २
व्यतिषङ्गः } मिलावट । ३ संयोग । सङ्गम ।

व्यतिहारः }
व्यतीहारः } (पु०) विविमथ । बदला ।

व्यतीत (व० कृ०) १ गया हुआ । गुजरा हुआ ।
बीता हुआ । २ मरा हुआ । ३ त्यागा हुआ ।
छोड़ा हुआ । प्रस्थानित । ४ तिरस्कृत । अवहे-
लना किया हुआ ।

व्यतीपातः (पु०) १ सम्पूर्णरीत्या प्रस्थान । सम्पूर्णतः
विच्छेद । २ बड़ा भारी उत्पात या उपद्रव । [जैसे
भूकम्प उत्कापात आदि] ३ अन्वमान ।
तिरस्कार । अपमान । ४ ज्योतिष शास्त्र में सत्ताह्न
योगों में से सत्रहवाँ योग । हस्त गोरा में कोई शुभ
कार्य या बाधा निषिद्ध है । ५ योग विशेष जो
अमावास्या के दिन रविवार या श्रवण धनिष्ठा,
आर्द्रा, अश्लेषा, अथवा मृगशिरा नक्षत्र होने पर
होता है । इस योग में गङ्गास्नान का बड़ा पुण्य
फल बतलाया गया है ।

व्यत्ययः (पु०) १ व्यतिक्रम । उलटफेर । २ उल्ल-
ङ्घन । ३ रोक । अड़चन ।

व्यन्यस्त (व० कृ०) १ उलटा । औंधा किया हुआ ।
२ विरुद्ध । विपरीत । ३ असंलग्न । ४ आधा ।
तिरछा ।

व्यन्यासः (पु०) १ व्यतिक्रमण । २ विपरीत्य ।
विरुद्धता ।

व्यथ् (धा० आ०) [व्यथते, व्यथित] १ दुःखी
होना । रंजीदा होना । मन्तस होना । अशान्त
होना । २ आन्ध्रालित होना । विकल होना । ३
कौपना । ४ भयभीत होना । ५ सूख जाना ।

व्यथक (वि०) [स्त्री०—व्यथिका] दुःख पूर्ण ।
पीड़ाकारक ।

व्यथनं (न०) पीड़ादायी । सन्तापकारी ।

व्यथा (स्त्री०) १ कष्ट । दुःख । २ भय । डर ।
चिन्ता । ३ विकलता । व्याकुलता । ४ रोग ।
बीमारी ।

व्यथित (व० कृ०) १ पीडित । सन्तप्त । २ भयभीत ।
३ व्याकुल । विकल ।

व्यथ् (धा० प०) [विध्यति, विद्ध] १ वेधना ।

वेधना । ताड़न करना । भोंक देना । मार डालना
२ वेद करना । ३ कोचना ।

व्यथ्रः (पु०) १ वेदन । वेदनः । २ लाइन । धातन
करण । ३ घाम घाम वेद करने की क्रिया ।

व्यध्यः (पु०) निशाना में वेधा जाय । निशाने बाजी
का चोंद ।

व्यध्यः (पु०) दुरा मार्ग । कुपथ ।

व्यनुनादः (पु०) १ च प्रतिध्वनि ।

व्यन्तरः } (पु०) अजौकिक जीव या आत्मा ।
व्यन्तरः }

व्यप् (धा० उ०) [व्यपयते व्यपयते] १ फैकना
२ कम करना । खराब करना । बरबाद करना ।
घटाना ।

व्यपकुप्ट (व० कृ०) हटाया हुआ । खींचा हुआ ।
स्थानान्तरित किया हुआ ।

व्यपगत (व० कृ०) १ गया हुआ । प्रस्थानित । २
हटाया हुआ । ३ गिरा हुआ ।

व्यपगमः (पु०) प्रस्थान ।

व्यपत्रप (वि०) निलज्ज । बेहया ।

व्यपदिष्ट (व० कृ०) १ नामाङ्कित । २ निर्दिष्ट ।
बतलाया हुआ ।

व्यपदेशः (पु०) १ सूचना । इत्तिला । २ नाम-
करण । ३ नाम । उपाधि । ४ वंश । कुल । जाति ।
५ कीर्ति । प्रसिद्धि । प्रख्याति । ६ चालाकी ।
चाल । बहाना । तरकीब । ७ जाल । कपट । छल ।

व्यपदेश्ट (पु०) कपटी । झलिया । धोखेबाज ।

व्यपरोपसां (न०) १ जब से उखाड़ कर फेंक देने की
क्रिया । बहिष्करण । हराना । निकाल बाहिर
करना । ३ कर्तन । तोड़ना ।

व्यपायः (पु०) समाप्ति । बंदी ।

व्यपाश्रयः (पु०) १ आश्रय । अवलम्ब । २ निर्भरता ।
३ एक के बाद एक होना । परंपराक्रम ।

व्यपेक्षा (स्त्री०) १ आकाँक्षा । अभिलाषा । २ आग्रह ।
अनुरोध । ३ पारस्परिक सम्बन्ध । ४ संलग्नता
५ अपेक्षा ।

व्यपेत (व० कृ०) १ विप्रोजित । २ प्रस्थानित ।
व्यपोद् (व० कृ०) १ निकाला हुआ । हटाया हुआ ।
२ विरुद्ध । विपरीत । ३ प्रादुर्भूत । प्रकटित ।
प्रवर्धित ।

व्यगोहः (पु०) बहिष्करण । रोक रखने या भगा देने
की क्रिया ।

व्यभिचारः (पु०) १ कदाचार । बद्धव्रतनी ।
व्यभिचारः (पु०) कुपथगमन । अनुचित मार्गानुसरण ।
२ अतिक्रमण । भङ्गीकरण । ३ भूलचूक ।
अपराध । ४ अलहदगी । ५ असतीत्य । ६
अनियमितता । अपवाद (किसी नियम का) ।
७ न्याय में हेतु दोष ।

व्यभिचारिणी (स्त्री०) असती स्त्री । दिनाल औरत ।
व्यभिचारिन् (वि०) १ मार्ग भ्रष्ट । २ बदचलन ।
परस्त्रीगामी । ३ असत्य । झूठ ।

व्यभिचारिभावः (पु०) साहित्य में वे भाव जो रस
के उपयोगी होकर जलतरङ्गवत् उनमें सञ्चरण
करते हैं और समय समय पर मुख्य भाव का रूप
भी धारण कर लेते हैं । अर्थात् चंचलता पूर्वक सब
रसों में सञ्चारित होते रहते हैं । सञ्चारी भाव ।

व्यय (वि०) परिवर्तनशील । नाशवान् ।

व्ययः (पु०) १ नाश । बरबादी । २ रोक । रुकावट
अदचन । ३ अधःपात । ह्रास । घटती । ३ खर्च ।
लागत । ४ फजूलखर्च । —शील, (वि०)
अपव्ययी । फजूलखर्च । शाहखर्च ।

व्ययनं (न०) खर्च करना । बरबाद करना । नष्टकर
डालना ।

व्ययित (व० कृ०) १ व्यय किया हुआ । १ बरबाद
किया हुआ । घटती को प्राप्त ।

व्यर्थ (वि०) १ निरर्थक । २ अर्थरहित । जिसका
कुछ मतलब ही न हो ।

व्यलीक (वि०) १ झूठा । मिथ्या । २ अप्रिय ।
अप्रीतिकर । ३ असत्य नहीं ।

व्यलीकं (न०) १ अप्रियता । अप्रीतिकर । २
कोई कारण जिससे दुःख उत्पन्न हो । कष्ट । शोक ।
दुःख । ३ अपराध । जुर्म । ४ कपट । झूठ ।

धोखा । ५ झुठाई । असत्यता । ६ वैपरीत्य ।
विरुद्धता ।

व्यलीकः (पु०) १ लंपट पुरुष । २ वह लौंढा जो
पुरुष मथुन कराता हो ।

व्यवकलनं (न०) १ विच्छेद । २ अङ्कगणित में
बाकी घटाने की क्रिया । बाकी निकालने की
क्रिया ।

व्यवक्रोशनं (न०) आपस में गाली गलौज़ ।

व्यवच्छिन्न (व० कृ०) १ कटा हुआ । चिरा हुआ ।
कटा हुआ । २ विप्रोजित । विभक्त । ३ निर्द्धारण
किया हुआ । निश्चित । ४ विहित । ५ बाधा
डाला हुआ ।

व्यवच्छेदः (पु०) १ पृथक्ता । पार्थक्य । अलगव ।
२ विभाग । खण्ड । हिस्सा । ३ विराम । ४
निर्द्धारण । ५ छोड़ना । दागना । चलाना जैसे
बाण । ६ किसी ग्रन्थ का अध्याय या पर्व ।

व्यवधा (स्त्री०) १ वह जो बीच में हो । २ पर्दा ।
३ छिपाव । दुराव ।

व्यवधानं (न०) वह वस्तु जो बीच में पड़ पृथक्
करती हो । २ रुकावट । दृष्टि को रोकने वाली
वस्तु । ३ दुराव । छिपाव । ४ परदा । दीवाल ।
५ गिलाफ । चादर । ६ अवकाश । स्थान ।

व्यवधायक (वि०) [स्त्री०—व्यवधायिका] १
आड़ करने वाला । अन्तर डालने वाला । परदा
करने वाला । २ रुकावट डालने वाला । छिपाने
वाला । ३ बीच का । मझौला ।

व्यवधिः (पु०) व्यवधान । परदा । आड़ । रोक ।

व्यवसायः (पु०) १ उद्योग । उद्यम । २ मिश्रण-
धारणा । सङ्कल्प । पक्का इरादा । ३ कार्य । क्रिया ।
४ धंधा । व्यवसाय । व्यापार । ५ आचरण । चाल-
चलन । व्यवहार । ६ तरकीब । चालाकी । झुल ।
कपट । ७ डींग । अकड़बाजी । ८ विष्णु का
नामान्तर ।

व्यवसायिन् (वि०) १ उद्यमी । परिश्रमी । २ दृढ़
विचारवान् । दृढ़ अध्यवसायी ।

व्यवसित (व० क०) १ जिसका अनुपाद किया गया हो । व्यवसाय किया हुआ । २ उद्यत । तत्पर । ३ निश्चित । ४ कुला हुआ । प्रवृत्ति ।

व्यवसितं (न०) मङ्गल्य । दृढ़ विचार ।

व्यवस्था (स्त्री०) १ प्रबन्ध । इन्तजाम । २ तजवीज । युक्ति । ३ निर्धारित नियम या विधान । ४ शर्त-नामा । ठहराव । इफ्तार नामा । ५ परिस्थिति । हालत । दशा । ६ दृढ़ आधार ।

व्यवस्थानं (न०) १ व्यवस्था । प्रबन्ध । २ व्यवस्थितिः (स्त्री०) १ नियम । निर्णय । ३ दृढ़ता । सङ्गति । ४ अध्यवसाय । ५ विच्छेद ।

व्यवस्थापक (वि०) [स्त्री०—व्यवस्थापिका] १ प्रबन्धक । व्यवस्था करने वाला । मुन्तजिमकार । २ वह जो कानूनी सलाह देता है । ३ न्याय-स्थान क्रम से सजाने वाला ।

व्यवस्थापनं (न०) १ व्यवस्था करने की क्रिया । २ निर्धारण । निश्चयकरण ।

व्यवस्थापित (व० क०) व्यवस्था किया हुआ । निर्धारण किया हुआ ।

व्यवस्थित (व० क०) १ क्रम से रखा हुआ । सजाया हुआ । २ तै किया हुआ । निर्धारित । ३ निर्णीत । ४ वियोजित । ५ निकाला हुआ । ६ निर्धारित । अवलम्बित ।

व्यवहर्तृ (पु०) १ किसी व्यापार का प्रबन्धक । २ मुकदमाबाज़ी करने वाला । वादी । ३ न्यायाधीश । ४ सार्थी । संगी ।

व्यवहारः (पु०) १ आचरण । चालचलन । २ धंधा । व्यवसाय । ३ पेशा । ४ व्यवहार । लैनदेन । ५ तिजारत । व्यापार । व्याज बढ़े का धंधा । ६ रीति । रस्म । रिवाज । ७ सम्बन्ध । रिश्ते-दारी । ८ मुकदमे की जाँच पड़ताल । मुकदमे की कैसल करना । ९ मुकदमा । अभियोग । राजिश । करियाद ।—पाठः (पु०) व्यवहार के पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष, क्रियापाद और निर्यय इन चारों का समूह ।—मातृका, (स्त्री०) व्यवहारशास्त्रानुसार होने वाली क्रियाएँ । [जैसे मुकदमा का दायर होना, पेश होना, रावाहों की तलबी । उनको

साक्षी । जिम्ह । यत्न । कैसल । आदि ।]—विधिः, (पु०) वह शास्त्र जिससे व्यवहार सम्बन्धी बातों का उत्तरेय किया गया हो । धर्म शास्त्र ।—विषयः, (धि०) पदं (न०)—मार्गः, (पु०)—स्थानं (न०) व्यवहार का विषय या स्थान ।

व्यवहारकः (पु०) व्यवहारी । व्यापारी । सौदागर । व्यवहारिक (वि०) [स्त्री० व्यवहारिका, व्यवहारिकी] १ व्यापार सम्बन्धी । २ व्यापार में संलग्न । ३ फौजदारी । आईनी या कानूनी । ४ मुकदमाबाज़ ।

मामूली रस्म के मुताबिक ।

व्यवहारिका (स्त्री०) चलन । पत्रति । रवाज । रस्म । २ भाव । ३ इंगुदी का वृक्ष ।

व्यवहारिक (वि०) १ व्यापारी । जिसके साथ लैन देन का व्यवहार होता है । २ मुकदमाबाज़ । ३ मामूली । रस्म के मुताबिक ।

व्यवहित (व० क०) १ अलग रखा हुआ । २ बीच में पड़ी किसी वस्तु से अलगया हुआ । ३ बाधा दिया हुआ । बंद किया हुआ । रोका हुआ । ४ परदा डाला हुआ । आव में किया हुआ । ५ सम्बन्ध न किया हुआ । ६ किया हुआ । सम्पादित । ७ ढोड़ा हुआ । ८ आगे बढ़ा हुआ । ९ विरोधी विरुद्ध ।

व्यवहतिः (स्त्री०) १ उद्यम । धंधा । २ क्रिया । कृति ।

व्यवायं (न०) चमक । दीप्ति । आभा ।

व्यवायः पु०) १ विच्छेद । २ लीनता । ३ परदा । दुराव । क्षिपाव । ४ मध्यवर्तित्व । अन्तराल । विराम । ५ शब्दचन । रोक । ६ स्त्रीसम्भोग । अर्धमधुन । ७ शुद्धता ।

व्यवायिन् (पु०) १ कामी पुरुष । पेशाश आदमी । २ कामादीपक औषध ।

व्यवेत (व० क०) १ वियोजित । २ भिन्न ।

व्यष्टि (स्त्री०) व्यक्तित्व । समष्टि का एक पृथक् एवं विशिष्ट अंश । समष्टि का उलटा ।

व्यसनं (न०) १ प्रवृत्ति । २ वियोग । विच्छेद ।

३ अतिक्रमण । भङ्गकरण । ४ नाश । पराजय ।
अधःपात । निर्बलता । ५ आपत्ति । विपत्ति ।
सङ्कट । अभाव । ६ अस्त होने की क्रिया । ७
पापाचार । दुष्टाचार । बुरी आदत । बुरीलत ।
८ लीनता किसी कार्य में । ९ जर्म । अपराध ।
१० सजा । ११ अयोग्यता । १२ निरर्थक उद्योग ।
१३ पवन । हवा ।—अतिभारः, (पु०) बड़ी
भारी विपत्ति ।—अन्वित,—आर्त,—पीडित,
(वि०) आपदाग्रस्त । सङ्कटापन । मुसीबतजड़ा ।

व्यसनिन् (वि०) १ किसी बुरीलत में फँसा हुआ ।
दुष्ट । २ अभाग । बदकिस्मत । ३ अत्यन्त
अनुरक्त ।

व्यसु (वि०) निर्जीव । मृत ।

व्यस्त (व० क०) १ प्रक्षिप्त । निक्षिप्त । २ विकीर्ण ।
बिखरा हुआ । ३ निकाला हुआ । ४ वियोजित ।
अलहदा किया हुआ । ५ एक एक कर विचार
किया हुआ । अलग अलग । ६ अमिश्रित । सादा ।
७ विभिन्न । ८ स्थानान्तरित किया हुआ । ९
बढ़ाया हुआ । विकल । १० गड़बड़ । अस्तव्यस्त ।
११ उलटा पुलटा । ऊपर नीचे । १२ विपरीत ।

व्यस्तारः (पु०) हाथी की कनपुष्टियों से मद का
चूना ।

व्याकरणां (न०) १ वाक् पृथकरण प्रक्रिया । २
व्याकरण शास्त्र जो वेद के छः अंगों में से एक है ।

व्याकारः (पु०) १ परिवर्तन । रूप का पलटना । २
कुरुपता ।

व्याकीर्ण (व० क०) १ बिखरा हुआ । छिटका
हुआ । २ अस्तव्यस्त किया हुआ ।

व्याकुल (वि०) १ विकल । परेशान । भयभीत ।
डरा हुआ । ३ परिपूर्ण । ४ मशगूल कार्य में
संलग्न या फँसा हुआ ।

व्याकुलित (व० क०) विकल । परेशान । बढ़ाया
हुआ ।

व्याकृतिः (स्त्री०) छल । कपट । धोखा । फरेव ।

व्याकृत (व० क०) १ पृथक् किया हुआ । २
व्याख्या किया हुआ । ३ बदशक्त । बनाया हुआ ।

व्याकृतिः (स्त्री०) १ पृथकरण । २ व्याख्या । टीका ।
३ शक्त की बदलौबल । ४ व्याकरण ।

व्याकोश (वि०) १ बढ़ाया हुआ । फुलाया
व्याकोष । हुआ । खिला हुआ । २ वृद्धि को प्राप्त ।

व्याक्षेपः (पु०) १ उछल कूद । २ अदृष्ट । स्का-
वट । ३ विलम्ब । ४ विकलता ।

व्याख्या (स्त्री०) १ वर्णन । निरूपण । २ टीका ।
टिप्पणी ।

व्याख्यात (व० क०) निरूपित । वर्णित । टीका
किया हुआ ।

व्याख्यातृ (पु०) टीकाकार । टिप्पणीकार ।

व्याख्यानं (न०) निरूपण । २ आशय । तर्करी ।
३ व्याख्या । टीका ।

व्याघट्टनं (व०) १ मन्थन । रगड़ । संघर्ष ।

व्याघातः (पु०) १ ताड़न । २ आघात । प्रहार ।
३ अदृष्ट । स्कावट । ४ खसडन । प्रतिवाद ।
५ अलङ्कार विशेष जिसमें एक ही उपाय के
द्वारा दो विरुद्ध कार्यों के होने का वर्णन किया
जाता है ।

व्याघ्राः (पु०) १ चीता । बाघ । २ (समासान्त
शब्दों के अन्त में आने पर इसका अर्थ होता है—
सर्वोत्तम । मुख्य । प्रधान । यथा ' नरव्याघ्रा ' ।
३ लालरेंड । करंज ।—आस्यः, (पु०) बिलार ।
—नखः, (पु०) —नखं, (स्त्री०) १ चीते
के नाखून । २ बगनहा नामक प्रसिद्ध गन्धद्रव्य ।
३ खरौंच । नखचत । ४ थूहर । ५ एक प्रकार
का कंद ।—नायकः, (पु०) गीदड़ । शृगाल ।

व्याघ्री (स्त्री०) चीते की मादा ।

व्याजः (पु०) १ कपट । छल । फरेव । २ कौशल ।
चालाकी । ३ बहाना । मिस । ४ तरकीब युक्ति ।
—उक्तिः, (स्त्री०) १ कपटभरी बात । २
अलङ्कार विशेष । इसमें किसी स्पष्ट बात को
दुहाने के लिये कोई बहाना किया जाता है ।
—निन्दा, (स्त्री०) वह निन्दा जो छल या
कपट से की जाय ।—सुप्त, (वि०) सोने का
बहाना किये हुए ।—स्तुतिः, (स्त्री०) वह

स्तुति या प्रशंसा जो किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने में तो स्तुति जान पड़े, किन्तु हो निन्दा।

व्याडः (पु०) १ मौँस भन्नी जीव जैसे शेर चीता आदि। २ गुंदा। शठ। ३ सर्प। ४ इन्द्र का नामान्तर।

व्याडिः (पु०) संस्कृत साहित्य का एक प्रसिद्ध ग्रन्थकार जिसके बनाये व्याकरण और शब्दकोश प्रसिद्ध हैं।

व्यान्पुत्ती (स्त्री०) जलक्रीड़ा।

व्यात्त (व० कृ०) खिन्ना हुआ। फैला हुआ। पसरा हुआ।

व्यादानं (न०) १ फैलाव। विस्तार। २ उद्घाटन।

व्यादिशः (पु०) विष्णु को उपाधि।

व्याधः (पु०) १ शिकारी। चढ़ेलिया। चिड़ीमार। २ दुष्ट। नीच आदमी।

व्याधामः } (पु०) इन्द्र का वज्र।
व्याधावः }

व्याधिः (पु०) १ बीनारी। रोग। पीड़ा। २ कोई।
—ग्रस्त, (वि०) बीमार। रोगी।

व्याधित (वि०) रोगी। बीमार।

व्याधूत (व० कृ०) हिलाया डुलाया हुआ। काँपता हुआ। धरधराता हुआ।

व्यानः (पु०) शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक। यह सारे शरीर में व्याप्त रहता है।

व्यानलं (न०) रतिबन्ध।

व्यापक (वि०) [स्त्री०—व्यापिका] १ चारों ओर फैला हुआ। २ जो ऊपर या चारों ओर से घेरे हुए हो। घेरने या ढकने वाला।

व्यापत्तिः (स्त्री०) १ बरबादी। सर्वनाश। विपत्ति। आपत्ति। २ एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु का रखना। ३ मृत्यु।

व्यापट् (स्त्री०) १ विपत्ति। सङ्कट। २ रोग। बीमारी। ३ अस्वस्थता। ४ मृत्यु। रोग।

व्यापनं (न०) व्याप्ति। फैलाव।

व्यापन्न (व० कृ०) १ सङ्कटापन्न। विपन्न। २ गिरा हुआ (जैसे गर्भ)। ३ चोखिल। बायल। ४ मृत। मरा हुआ। ५ सम्मथ्यमान। गदगद। ६ परिवर्तित। बदला हुआ।

व्यापादः (पु०) १ वन। मारण। २ नाश। व्यापादनं (न०) १ शरबादी। २ दुष्टता। मलिनता। मन में दूसरे के अपकार की भावना करना। किर्मी की डराई सोचना।

व्यापारः (पु०) १ कर्म। कार्य। काम। २ धंधा। पेशा। ३ उद्योग। उद्यम। ४ व्याप के अनुसार विषय के साथ होने वाला इन्द्रियों का संयोग।

व्यापारिन् (व० कृ०) १ काम में लगा हुआ। २ स्थापित। गढ़ा हुआ। जड़ा हुआ।

व्यापारिन् (वि०) १ व्यापारी। रोजगारी। सौदागर। २ कोई भी कार्य करने वाला।

व्यापिन् (वि०) १ व्यापक। २ सर्वव्यापी। ३ आच्छादक। (पु०) विष्णु का नाम।

व्यापृत (व० कृ०) १ किसी काम में लगा हुआ। २ स्थापित। नियत। (पु०) सखिव नौका।

व्यापृतिः (स्त्री०) १ धंधा। काम काज। २ कार्य। कर्म। ३ उद्योग। ४ पेशा।

व्याप्त (व० कृ०) १ फैला हुआ। घुसा हुआ। २ चारों ओर फैला हुआ। ३ भरा हुआ। परिपूर्ण। ४ विरा हुआ। ५ स्थापित। नियत। ६ अधि-कृत। प्राप्त। ७ सम्मिलित। ८ (न्यायदर्शन के अनुसार किसी पदार्थ का दूसरे पदार्थ में) पूर्ण रूप से मिला हुआ या फैला हुआ (होना)। ९ प्रसिद्ध। प्रख्यात। १० फैला हुआ। पसरा हुआ।

व्याप्तिः (स्त्री०) १ व्याप्त होने की क्रिया। २ न्याय दर्शनानुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्णरूपेण मिला या फैला हुआ होना। एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के साथ सदा पाया जाना। ३ सर्वमान्य नियम। सार्वजनिक नियम। परिपूर्णता। ४ प्राप्ति। ज्ञानं, (न०) न्यायदर्शनानुसार वह ज्ञान जो साध्य को देख कर साध्यबानु

के अस्तित्व के सम्बन्ध में अथवा साध्यवान् को देखकर साध्य के अस्तित्व के सम्बन्ध में उपलब्ध होता है ।

व्याप्य (वि०) व्यापनीय । व्याप्त करने के योग्य ।

व्याप्यं (न०) वह जिसके द्वारा कोई कार्य हो । हेतु । साधन ।

व्याप्यत्वं (न०) नित्यता । अविकारता । अपरिवर्तनीयता ।

व्याभ्युत्थी देखो व्याधुत्थी ।

व्यामः (पु०) } लंबाई का नाप । दोनों भुजाओं
व्यामनं (न०) } को दोनों ओर फैलाने पर एक हाथ की उँगलियों के सिरे से दूसरे हाथ की उँगलियों के सिरे तक जिसकी दूरी होती है उसे 'व्याम' कहते हैं ।

व्यामिश्र (वि०) मिश्रित । मिला हुआ ।

व्यामोहः (पु०) १ मोह । अज्ञान । २ व्याकुलता । परेशानी ।

व्यायत (व० कृ०) १ खंवा । आगे बढ़ा हुआ । २ फैला हुआ । पसरा हुआ ३ नियंत्रित । ४ कार्य में व्यग्र । मशगूल । ५ सख्त । दृढ़ । ६ मजबूत । अत्यधिक । सघन । ७ ताकतवर । बलवान् । ८ गहरा । गम्भीर ।

व्यायतत्वं (न०) रायपट्टों की वृद्धि ।

व्यायामः (पु०) १ फैलाव । बढ़ाव । २ कसरत । ३ थकावट । आन्ति । ४ उद्योग । उद्यम । ५ झगड़ा । विवाद । ६ माप विशेष ।

व्यायाधिक (वि०) [स्त्री०—व्यायाधिकी] कसरती । कसरत सम्बन्धी ।

व्यायोगः (पु०) साहित्य में दस प्रकार के रूपकों में से एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य ।

व्याल (वि०) १ दुष्ट । शठ । २ डुरा । उपद्रवी । ३ चूरास । भयानक । बहुरी ।

व्यालः (पु०) १ खूनी हाथी । २ शिकार करने वाला जन्तु । हिल जन्तु । ३ सर्प । ४ चीता । बाघ । ५ बघरा । लकड़ बघरा । ६ राजा । ७ छली । कपटी

धोखा देनेवाला । ८ विष्णु का नाम ।—खड्डः ।

—नखः, (पु०) नख या बगनहा नामक गन्ध द्रव्य —ग्राहः, ।—ग्राहिन्, (पु०) सपेता । सर्प पकड़ने वाला ।—भृगः, (पु०) वनजन्तु । २ शिकारी चीता ।—रूपः, (पु०) शिव जी का नामान्तर ।

व्यालकः (पु०) दुष्ट या उपद्रवी हाथी ।

व्यालंबः } (पु०) रेंड का रुख ।
व्यालम्बः }

व्यालोल (वि०) १ काँपने वाला । थरथराने वाला । २ अस्तव्यस्त । गड़बड़ । बिखरा हुआ (जैसे सिर के केश) ।

व्याल्ललनं (न०) बाकी निकालने की क्रिया ।

व्यावक्रोशी } (स्त्री०) आपस में गाली गलौज ।
व्यावभाषी } अक्रोशी अक्रोसा ।

व्यावर्तः (पु०) १ धिराव । घेरना । २ अमणः चक्र करना । ३ आगे को निकली हुई नाभि । नाभिकण्टक ।

व्यावर्तक (वि०) [स्त्री०—व्यावर्तिका] १ व्यावर्तन करने वाला । घेरने वाला । २ पृथक् करने वाला । ३ पीछे की ओर लौटाने वाला । ४ विमुख होने वाला ।

व्यावर्तनं (न०) १ घेरने की या चारों ओर से छेक लेने की क्रिया । २ घूमने की या चकर खाने की क्रिया । ३ लपेट । पट्टी ।

व्यावल्लित (व० कृ०) हिला हुआ । आन्दोलित ।

व्यावहारिक (वि०) [स्त्री०—व्यावहारिकी] काम धंधे सम्बन्धी । वर्ताव सम्बन्धी । २ आईनी । कानूनी । ३ रसूमी । रीति रिवाज के मुताबिक मामूली । ४ प्रातिभासिक ।

व्यावहारिकः (पु०) राजा का वह अमात्य या मंत्री जिसके अधिकार में भीतरी और बाहिरी समस्त प्रकार के कार्य हों ।

व्यावहारी (वि०) परस्पर पकड़ने वाले ।

व्यावहासी (वि०) एक दूसरे को चिकाने वाले या पारस्परिक उपहास करने वाले ।

शब्द

१८६

शब्द

व्यावृत्त (व० क०) १ छूटा हुआ । निवृत्त । २ मना किया हुआ । वर्जित । ३ खण्डित । टूटा हुआ । ४ अलहदा किया हुआ । विभाजित । ५ मनालीन । ६ चारों ओर से घेरा हुआ । ७ आच्छादित । ढका हुआ । ८ प्रसंसित । सराहा हुआ । ९ हुमाया हुआ ।

व्यावृत्तिः (स्त्री०) आच्छादन । परदा करने की क्रिया । २ बहिष्करण ।

व्यासः (पु०) १ बाँट । वितरण । भाग भाग करके अलगाने की क्रिया । २ विरलेपण । ३ वाहुल्य । विस्तार । ४ अंतर । भेद । जाँच । चौकाई । औकाई । ५ दून का व्याप्य या वह रेखा जो किसी बिन्दुके गोल रेखा या वृत्त के किसी एक स्थान से बिन्दुके सीधे चल कर दूसरे सिरे तक पहुँची हो । ७ उच्चारण का दोष । ८ संसृष्टकर्ता । विभागकर्ता । ९ एक प्रसिद्ध ऋषि जो पराशर के औरस और सत्यवतो के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । १० कथावाचक । पुराणों की कथा सुनाने वाला ।

व्यासक्त (व० क०) १ जो बहुत अधिक आसक्त हुआ हो । जिसका मन बेतरह आ गया हो । २ विभ्रान्त । विभ्रुक्त । ३ व्याकुल । विकल । बबड़ाया हुआ । परेशान ।

व्यासंगः (पु०) १ बहुत अधिक आसक्ति । व्यासङ्गः (२) बहुत अधिक भक्ति या अनुगम । ३ ध्यान । विभ्रुक्ति । विच्छेद । ४ परिश्रम पूर्वक अध्ययन ।

व्यासिद्ध (व० क०) १ वर्जित । निषिद्ध । २ रोंका हुआ (माल) ।

व्याहत (व० क०) १ मना किया हुआ । निवारित । निषिद्ध । २ व्यर्थ । ३ रोंका हुआ । अबचन डाला हुआ । ४ हताश किया हुआ । ५ बबड़ाया हुआ । भयभीत ।—अर्थता, (स्त्री०) निबन्ध रचना-शैली के दोषों में से एक ।

व्याहुरण (न०) १ उच्चारण । कथन । २ वक्तृता । वचन ।

व्याहारः (पु०) १ वक्तृता । भाषण । शब्द राशि । २ ध्वनि । नाद ।

व्याहृत (व० क०) कटा हुआ । खोला हुआ । उच्चारण किया हुआ ।

व्याहृतिः (स्त्री०) भाषण । वक्तृता । २ वचन । ३ गायत्री के साथ मने जाने वाले मंत्र विशेष । यथा—भू, भुवः, स्वः । [व्याहृति की संख्या कोई तीन और कोई सात मानते हैं ।]

व्युच्छिन्त (स्त्री०) विनाश । बरबाद ।

व्युत्क्रमः (पु०) १ व्यतिक्रम । गड़बड़ी । क्रम में उल्टा फेर । २ मार्गभ्रंशता । ३ वैपरीत्य ।

व्युत्क्रान्त (व० क०) १ यतिक्रमण किया हुआ । व्युत्क्रान्त (२) प्रस्थानित । गया हुआ ।

व्युत्थानं (न०) १ जहाज उद्योग । २ किसी के व्युत्थान (स्त्री०) विरुद्ध उद खड़ा होना । विरोध । अवरोध । ३ स्वयं होकर काम करना । स्वेच्छाजुसार काम करना । ४ समर्थि । ५ नृत्य विशेष । ६ हाथी को उठाने की क्रिया ।

व्युत्पत्तिः (स्त्री०) १ किसी पदार्थ आदि की विशेष उत्पत्ति या उत्पत्ति का विकास । २ शब्दसाधन विद्या । ३ पूर्ण अवगति । पूरी पूरी जानकारी । ४ पाण्डित्य । विद्वत्ता ।

व्युत्पन्न (व० क०) १ निकला हुआ । २ शब्द साधन विद्या द्वारा बना हुआ । ३ संस्कृत । ४ जो किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता हो ।

व्युत्स (व० क०) भीगा हुआ । पानी से तर ।

व्युत्सन्न (व० क०) खारिज किया हुआ । फेंका हुआ ।

व्युदासः (पु०) १ दूर करने या फेंकने की क्रिया । २ बहिष्करण । ३ निरादर । तिरस्कार । ४ सारण । हनन । नाशकरण ।

व्युपदेशः (पु०) बहाना । मिस ।

व्युपरमः (पु०) अवसान । समाप्ति ।

व्युपशमः (पु०) १ अनवसान । २ अशान्ति । ३ निरान्त अवसान । [यहाँ वि उपमर्ग का अर्थ नितान्तता है ।]

व्युष्ट (व० क०) १ जला हुआ । खुल गया हुआ । २

सवेरे के प्रकाश से प्रकाशित । ३ चमकीला । स्पष्ट । ४ बसा हुआ ।
 व्युष्ट (न०) १ तडका । भोर । प्रभातकाल । २ दिवस । दिन । ३ फल ।
 व्युष्टिः (स्त्री०) तडका । भोर । २ समृद्धि । ३ प्रशंसा । ४ फल । परिणाम ।
 व्यूढ (व० कृ०) १ फैला हुआ । वृद्धि को प्राप्त । चौड़ा । ओढ़ा । २ दृढ़ । संसक्त । ३ क्रम में रखा हुआ । सिलसिलेवार रखा हुआ । ४ अस्तव्यस्त । गड़बड़ । ५ विवाहित । —कड़ुट, (वि०) कवचधारी । जिरहबक्तर पहिने हुए ।
 व्यूत (वि०) ओतप्रोत । सिला हुआ । बुना हुआ ।
 व्यूतिः (स्त्री०) १ सिलाई । बुनावट । २ बुनाई की उज्जरत ।
 व्यूहः (पु०) १ युद्ध करने के लिये जाने वाली अथवा युद्ध के समय की सेना की स्थापना । बलविन्यास । सेना का विन्यास । २ सेना । ३ समूह । जमघट । ४ अंश । भाग । अन्तर्गत भाग । ५ शरीर । ६ ठाठ । बनावट । ७ तर्क । —पार्श्वः, (स्त्री०) सेना का पिछला भाग । —भंगः, —भेदः, (पु०) सेना के व्यूह को तोड़ देना ।
 व्यूहनं (न०) १ युद्ध के समय सेना की भिन्न भिन्न स्थानों में नियुक्त करने की क्रिया । २ शरीर के अङ्ग प्रत्यङ्गों की बनावट ।
 व्यूद्धिः (स्त्री०) असमृद्धि । अभान्य । दुर्भाग्य । बदकिस्मती ।
 व्ये (धा० उभ०) [व्ययति—व्ययते, ऊत] १ आच्छादन करना । ऊपर से ढाँकना । २ सीना ।
 व्योकारः (पु०) लुहार ।
 व्योमन् (न०) १ आकाश । आसमान । २ जल । ३ सूर्य का मन्दिर । ४ भोडर । धवरक । —उदकं, (न०) वृष्टिजल । ओस । —केशिन्, —केशिन्, (पु०) शिव जी । —गङ्गा, (स्त्री०) आकाश गंगा । —चारिन्, (पु०) १ देवता । २ पत्नी । ३ सन्त । महात्मा । ४ ब्राह्मण । ५ नक्षत्र । —धूमः, (पु०) बादल । —नाशिका, (स्त्री०)

लीटर । बदेर । —अञ्जरं, —अञ्जलं (न०) पत्ताका । भंडा । —नुदुरः (पु०) पवन का झोका । हूका । —यानं (न०) आकाशयान । देवयान । —सदु (पु०) १ देवता । २ गन्धर्व । ३ आत्मा । —स्थली, (स्त्री०) पृथिवी । —स्पृश, (वि०) बहुत ऊँचा ।

व्रज (धा० प०) [व्रजति] १ जाना । गमन करना । टहलना । आगे बढ़ना । २ पास जाना । मुलाकात करने को जाना । ३ प्रस्थान करना । रवाना होना । ४ गुजर जाना ।

व्रजनं (न०) १ भ्रमण । यात्रा । २ निर्वासन ।

व्रज्या (स्त्री०) १ घूमना फिरना । पर्यटन । २ आक्रमण । चढ़ाई । ३ गल्ला (भेड़ों का) । भुंड । गिरोह । समूह । समुदाय । देह । ४ धियेटर । रंगभूमि । नाट्यशाला ।

व्रण (धा० प०) [व्रणति] शब्द करना । बजाना । [उ० व्रणयति—व्रणयते] घायल करना । चोटिल करना ।

व्रणं (न०) १ घाव । कृत् । चोट । खरोंच । व्रणः (पु०) २ बलतोड़ । कोड़ा । —अरिः (पु०) बाल नामक गन्धद्रव्य । गुगल । —कृत (वि०) घायल किया हुआ या घायल । (पु०) भिलावे का पेड़ । —विरोपण, (वि०) घाव पुराने वाला । —शोधनं, (न०) घाव की मलहम पट्टी । —हः, (पु०) अरंड वृक्ष । रेंडी का रुख ।

व्रणित (वि०) घायल । चोटिल ।

व्रतं (न०) १ किसी बात का पक्का सङ्कल्प । २ व्रतः (पु०) ३ प्रतिज्ञा । ३ आराधना । भक्ति । ४ पुण्य के साधन उपवासादि नियम विशेष । ५ व्यवस्था । विधि । निर्दिष्ट अनुष्ठान-पद्धति । ६ यज्ञ । ७ अनुष्ठान । कर्म । कार्य । —तर्था (स्त्री०) किसी प्रकार का व्रत रखने या करने का काम । —पारणां (न०) —पारणा, (स्त्री०) किसी व्रत की समाप्ति । २ प्रतिज्ञा-भङ्ग । —लोपनं, (न०) किसी व्रत को भंग करना । —वैकल्यं, (न०) किसी धार्मिक व्रत की अपूर्णता । —स्नातकः, (पु०) तीन प्रकार के ब्रह्मचारियों में

से एक। वह ब्रह्मचारी जिसने गुरु के निकट रह, वह तो समाप्त कर लिया हो, किन्तु वेदाध्ययन इस किये ही बिना घर चला आया हो।

व्रतति: } (श्री०) १ वेत। उता । २ कैलाव ।
व्रती } वृद्धि ।

व्रतिन् (वि०) व्रतधारी । तपस्वी । भक्त । धर्मात्मा ।
(पु०) १ ब्रह्मचारी । २ साधु । महात्मा । ३ यजमान । यज्ञ करने वाला ।

व्रश्च (धा० प०) [वृश्चति, वृश्च्य] १ काटना ।
काट कर अलग करना । काटना । २ बाधना करना ।

व्रश्चन् (न०) काट । चीरना । बाध करना ।

व्रश्चनः (पु०) १ घाटी । २ सुनार की रेंती ।

व्राजिः (श्री०) तूफान । आंधी ।

व्रातं (न०) १ शारीरिक श्रम । सत्रदूरी । २ वह परिश्रम या सत्रदूरी जो जीविका के लिये की जाय ।
३ वैमित्तिक धंधा ।

व्रातः (पु०) समूह । सङ्गुदाय ।

व्रातीन् (वि०) कुली । उजरत लेकर काम करने वाला मजदूर ।

व्रान्त्यः (पु०) १ वह दिन जो समय पर संस्कार विशेष कर यज्ञोपवीत संस्कार के न होने से, पतित हो गया हो, जिसे वैदिक कृत्यादि करने का अधिकार न रह गया हो । २ नीच आदमी । कमीना पुरुष । ३ वर्षसङ्कर विशेष जिसकी उत्पत्ति शूद्र पिता और क्षत्रियमाता से हुई हो । —व्रुचः, (पु०) अपने कां व्रात्य बतलाने वाला । —स्त्रीमाः, (पु०) प्राचीन कालीन एक यज्ञ जिसे व्रात्य लोग अपना व्रान्त्यपना दूर करने के लिये किया करते थे ।

व्री (धा० प०) [व्रीणाति, व्रीणाति] छूटना ।
चुनना । पतक करना । [धा० व्रीयते, व्रीणा] १
बाना । चुना बाना । छूटा जाना ।

व्रीड् (धा० प०) [व्रीडयति] १ लजित होना ।
शर्माना । २ फेंकना । पटकना ।

व्रीडिः (पु०) १ शर्म । लजा । २ विनम्रता ।
व्रीडा (श्री०) विनय शील ।

व्रीडित (न० कृ०) लजित करना । शर्माना ।

व्रीन् (धा० प०) [व्रीसति, व्रीसयति, व्रीसयते]
धनित करना । इनन करना । मार डालना ।

व्रीहिः (पु०) १ चावल । २ चावल का कण ।—
अगारं, (न०) अनाज की खर्ता या भंडारी ।—
कांचिनं, (न०) मसर की दाल ।—राजिकं,
(न०) सेना धान ।

व्रीड् (धा० प०) [व्रीडति] १ आश्चर्यजनक करना ।
२ जमा किया जाना । ढेर लगाया जाना । ३ ढेर
करना । जमा करना । ४ बूढ़ा । डूबना ।

व्रीस् (धा० प०) देखो व्रीस्

व्रीहेय (वि०) [श्री—व्रीहेयी] १ चावल के योग्य ।
२ चावल के साथ योग्य हुआ ।

व्रीहेयं (न०) धान का खेत वह खेत जिसमें धान
उग सके ।

व्री (धा० प०) [व्रीणाति, व्रीणाति, निव्रन्त
व्रीणयति] १ गमन करना । जाना । २ समर्थन
करना । सहारा देना । ३ चुनना । छूटना ।

व्रीत् (धा० उभ०) [व्रीत्तयति—व्रीत्तयते]
देखना । अवलोकन करना ।

श

श-संस्कृत अथवा नागरी वर्णमाला में तीसवाँ व्यंजन वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान प्रधानतया तालु है । अतः इसे तालव्य " श " कहते हैं । यह महाप्राण है और इसके उच्चारण में एक प्रकार का ध्वनि होने के कारण इसे ऊष्म भी कहते हैं । यह

आन्तरिक प्रयत्न के विचार से ह्रस्व स्पृष्ट है और इसमें बाह्य प्रयत्न श्वास और घोष होता है ।

श (न०) आनन्द । हर्ष । प्रसन्नता ।

शः (पु०) १ काटने वाला । नाश करने वाला । २ हथियार । ३ शिवजी का नाम ।

शंयु (वि०) प्रसन्न । समृद्धिवान् ।

शंखः (पु०) १ हलचालन । २ इन्द्र का यज्ञ । ३ खरल के दस्ते का लोहे वाला अग्र भाग ।

शंस् (धा० प०) [शंसति, गस्त] १ प्रशंसा करना । २ कहना । वर्णन करना । प्रकट करना । ३ प्रदर्शित करना । ४ दुहराना । पाठ करना । ५ अमिष्ट करना । वायल करना । ६ गाली देना । अक्रोशना ।

शंसनं (न०) १ प्रशंसाकरण । २ कथन करना । वर्णन करना । ३ पाठ करना ।

शंसा (स्त्री०) १ प्रशंसा । २ अभिलाष । इच्छा । ३ पुनरावृत्ति । वर्णन ।

शंसित (घ० कृ०) १ प्रशंसित । २ कथित । बोधित । ३ अभिलषित । ४ निश्चित । निर्धारित । विचारित । ५ मिथ्या दोष लगाया हुआ । फूटा इलजाम लगाया हुआ ।

शंसिन् (वि०) १ प्रशंसन । २ कथन । ३ प्रकटन । ४ भविष्यत्कथन ।

शक् (धा० प०) [शक्नोति, शक्त] १ योग्य होना । सकना । करने की शक्ति रखना । २ सहना । सहन करना । ३ शक्तिमान होना ।

शकः (पु०) १ एक प्राचीन राजा का नाम । विशेष कर शातिवाहन का । २ शातिवाहन का चलाया शक (= बरसर गणना) [ईसा के सन् के ७८ वर्ष पीछे शक संवत्सर का आरम्भ होता है ।]

शकाः (पु० बहु०) १ एक देश का नाम । २ एक जाति विशेष का नाम ।—अन्तकः, —अरिः, (पु०) विक्रमादित्य की उपाधि, जिसने इस जाति का उन्मूलन किया था ।—अब्दः, (पु०) शातिवाहन का चलाया संवत्सर ।—कर्तृ, —कृत, (पु०) संवत्सर विशेष का चलाने वाला ।

शकटं (न०) १ गाड़ी । बग्गी । छकड़ा । २ सैन्य-शकटः (पु०) १ व्यूह विशेष । ३ लौह विशेष जो छकड़ा भर या २००० पलों भर की होता थी । ४ एक दैत्य का नाम जिसका वध श्री कृष्ण ने किया था । ५ तिनिश वृद्ध ।—अरिः, हन् (पु०) श्रीकृष्ण

की उपाधि ।—अह्वा, (स्त्री०) रोहिणी नक्षत्र ।

—विलः, (पु०) जलकुण्ड जालीय पत्नी विशेष ।

शकटिका (स्त्री०) छोटी गाड़ी । गाड़ी का खिलौना ।

शकन् (न०) विद्या । मल । विशेष कर पशुओं का ।

शकलः (पु०) १ भाग । अंश । हिस्सा । टुकड़ा । २ छाल । ३ सड़की का काँटा ।

शकलित (वि०) टुकड़े टुकड़े किया हुआ, खरब खरब किया हुआ ।

शकलिन् (पु०) सड़की ।

शकारः (पु०) १ अनूदा भ्रातृ । राजा की रखैल या बिन व्याही स्त्री का भाई । साहित्य दर्पणकार ने “अनूदा भ्राता” की परिभाषा इस प्रकार दी है :—

नदःखत भिगानी दुषकुलतैरवर्षसंदुक्तः ।

शेवमवृद्धाक्षता रात्रः प्रसारः शकार इत्युक्तः ॥

नाटक की भाषा में शकार भूल, चंचल, अभिमानी, नीच तथा कठोर हृदय का दिखलाया जाता है ।

शकुनं (न०) १ सगुन । शुभसूचक चिह्न या लक्षण । किसी कार्य के समय दिखलाई देने वाले लक्षण जो उस काम के सम्बन्ध में शुभ या अशुभ की सूचना देते हैं ।—ज्ञ, (वि०) शकुनों को जानने वाला ।—शास्त्रं, (न०) एक ग्रन्थ विशेष जिसमें शकुनों पर विचार किया गया है ।

शकुनः (पु०) १ पक्षी । चील । गिड़ ।

शकुनिः (पु०) १ पक्षी । २ गीघ । चील । उकाव । ३ मुर्गा । ४ गान्धारराज सुबल के एक पुत्र का नाम जो हस्तराष्ट्र की पत्नी गान्धारी का भाई और दुर्योधन का मामा था ।—ईश्वरः, (पु०) गरुड का नाम ।—प्रपा, (स्त्री०) कूड़ा जिसमें पक्षियों के पीने के लिये जल भरा जाय ।—वादः, (पु०) चिड़ियों की बोली । २ मुर्गे की बाँग ।

शकुनी (न०) १ श्यामा पक्षी । २ गौरैया पक्षी । ३ पुराणानुसार एक पूतना का नाम जो बड़ी क्रूर और भयङ्कर कही गयी है । ४ शुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बालग्रह ।

शकुंतः (पु०) १ पक्षी । चिड़िया । २ नीलकण्ठ । शकुन्तः (पु०) १ पक्षी । ३ पक्षीविशेष ।

शकुंतलः } (पु०) पत्नी ।
शकुन्तलः }

शकुंतला } (स्त्री०) राजा दुष्यन्त की स्त्री जिसके
शकुन्तला } गर्भ से राजा भरत का जन्म हुआ
था । इन्हीं राजा भरत के नाम पर इस देश का
नाम भारतवर्ष पड़ा है । शकुन्तला, मेनका अम्बरा
की वेदी थी ।

शकुन्तिः } (स्त्री०) पत्नी ।
शकुन्तिः }

शकुन्तिका } १ पत्नी । २ पत्नी विशेष । ३ टिड्डी ।
शकुन्तिका } टिड्डी ।

शकुलः (पु०) १ एक प्रकार की मड़ली ।— अद्दली,
शकुली (स्त्री०) } (स्त्री०) कटुकी या कटुकी ।—

अर्भकः (पु०) गड़ई मड़ली

शकुत (न०) १ विष्ठा । गृह । २ गोश्वर ।—करिः
(पु०) (स्त्री०)—करी, (स्त्री०) बड़वा, बड़िया ।
—द्वारं (न०) मलद्वार । गुदा ।

शक्रः } (पु०) बैल । साँड़ । वृष ।
शक्रिः }

शकरी (स्त्री०) १ नदी । २ मेखला । ३ एक अद्भुत
जाति की औरत ।

शक्त (व० कृ०) १ शक्ति सम्पन्न । समर्थ । ताकतवर ।
२ योग्य । लायक । ३ धनी । धनवान । ४ द्योतक ।
व्यञ्जक । ५ चतुर । ६ मिष्टभाषी । प्रियवादी ।

शक्तिः (स्त्री०) १ बल । पराक्रम । ताकत । जोर । २
कविवशक्ति । ३ किसी देवता का पराक्रम या बल
जो किसी विशिष्ट कार्य का साधन माना जाता है ।
४ फेंक कर चलाने वाला हथियार विशेष । ५
भाला । शूल । तीर । ६ न्यायदर्शनानुसार वह
सम्बन्ध जो किसी पदार्थ और उसका बोध कराने
वाले शब्द में होता है । ७ शब्द की अर्थव्योक्त
शक्ति जो तीन मानी गयी है (अर्थात् १ अभिधा,
२ लक्षणा और ३ व्यञ्जना । ८ शब्द की लक्षणा
और व्यञ्जना शक्ति की उल्टी शक्ति । ९ (तांत्रिक)
स्त्री की मूत्रेन्द्रिय । भग । १० ईश्वर की वह
कल्पित माया, जो उसकी आज्ञा से सब काम
करने वाली और सृष्टि की रचना करने वाली

मानी जाती है । प्रकृति । माया ।—अर्थः (पु०)
श्रम करने पर शरीर से निकला हुआ पसीना और
दम कलना या ढोंकी ।—अत्र (वि०) १ शक्ति
को ग्रहण करने वाला । २ भालाधारी ।—अत्रः
(पु०) १ बल्लभधारी । २ शिव । महादेव । ३
कार्तिकेय ।—आहकः, (पु०) कार्तिकेय ।
धर, (वि०) ताकतवर । बलवान ।—धरः (पु०
१ भालाधारी । २ कार्तिकेय ।—पानिः, भृत्
(पु०) १ भालाधारी । २ कार्तिकेय ।—पूजाः
(स्त्री०) शक्ति का शक्त द्वारा होने वाला पूजन ।
—नैकहर्षं (न०) शक्ति का नाश । कमजोरी ।
निबलता ।—नील (वि०) निर्बल । कमजोर ।
नपुंसक ।—हेनिकः, (पु०) भालाधारी ।

शक्तितम् (अन्वया०) शक्ति भर । ताकत भर ।
गुणाशक्ति ।

शक्त } (वि०) मिष्टभाषी । सुखभाषी । प्रिय-
शक्त } वादी ।

शक्य (स० का० कृ०) १ सम्भव । होने योग्य । २
करने योग्य । ३ सहज में करने लायक । ४ शब्द
का वाच्य । ५ सम्भावनात्मक । भविष्य सम्भाव्य ।
प्रच्छन्न शक्ति ।

शक्रः (पु०) १ इन्द्र का नाम । २ अर्जुन वृक्ष । ३
कुटज वृक्ष । ४ उल्लू ५ । ज्येष्ठा नक्षत्र । ६
चौदह की संख्या ।—अश्विनः, (पु०) कुटज
वृक्ष ।—आख्यः, (पु०) उल्लू ।—आत्मजः,
(पु०) १ इन्द्रपुत्र जयन्त । २ अर्जुन ।—
उन्मत्तः, (न०)—उन्मत्तः, (पु०) भाद्रपदा १२
को किया जाने वाला इन्द्रोत्सव विशेष ।—गोपः,
(पु०) जीरबह्वी नामक कीड़ा ।—जः,—जानः,
(पु०) काक । कौश ।—जित्,—निद्, (पु०)
रावणपुत्र मेघनाद की उपाधि ।—द्रुमः (पु०)
देवदारु वृक्ष ।—धनुस्, (न०)—शरासनं
(न०) इन्द्रधनुष ।—ध्वजः, (पु०) वह
पताका जो इन्द्र के उपलब्ध में खड़ी की जाय ।—
पश्यायः, (पु०) कुटज वृक्ष ।—पादपः, (पु०)
१ कुटज वृक्ष । २ देवदारु वृक्ष ।—भवनं,—भुवनं,
(न०)—वासः, (पु०) स्वर्ग ।—मूर्धन्य,
(न०),—शिरस्, (पु०) वल्मीक, बाँधी ।

—लोकः, (पु०) इन्द्रलोक । स्वर्ग ।—वाहनं
(न०) वादल । शाखिन, (पु०) कुटज
वृक्ष ।—सारथिः, (पु०) इन्द्र का रथवान ।
मातली का नामान्तर ।—सुतः, (पु०) १
जयन्त । २ अर्जुन । ३ बाली ।

शक्राणी (स्त्री०) इन्द्रपत्नी शची देवी ।

शक्रिः (पु०) १ वादल । २ इन्द्र का वज्र । ३ पहाड़ ।
४ हाथी । गज ।

शक्ररः (पु०) वृष । बैल । साँड़ ।

शंक } (धा० आ०) [शङ्कते, शङ्कित] १ सन्देह
शङ्क } करना । हिचकिचाना । २ डरना । भय
सानना । ३ अविश्वास करना । ४ समझना ।
सोचना । कल्पना करना । ५ आपत्ति या आशङ्का
करना ।

शंकः } (पु०) वह बैल जो जोता जाय या छकड़ा
शङ्कः } खींचे ।

शंकर } (वि०) [स्त्री०—शंकरा या शंकरा]
शङ्कर } शुभसूचक । शुभदायी । मङ्गलकारी ।

शंकरः } (पु०) १ महादेव जी । २ हिन्दूधर्म के
शङ्करः } एक आचार्य । शङ्कराचार्य ।

शंकरा } (स्त्री०) १ पार्वती का नाम । २ मजीठ ।
शङ्करा } मज्जिष्ठा । ३ शमी का पेड़ ।

शंका } (स्त्री०) १ सन्देह । शक । अनिश्चयता ।
शङ्का } २ हिचकिचाहट । पशोपेश । ३ अविश्वास ।
४ भय । आशङ्का । डर । ५ आशा ।

शंकित } (व० कृ०) १ सन्देहयुक्त । संशयग्रस्त ।
शङ्कित } भयभीत । २ अविश्वासपूर्ण । ३ अनिश्चित ।
४ भयाकुल ।—चित्, —मनस्, (वि०) १
डरपोंक । भीस । २ संशयग्रस्त । अविश्वासपूर्ण ।
३ सन्देह ।

शंकिन् } (वि०) सन्देह करने वाला । संशयारम्भ ।
शङ्किन् }

शङ्कुः } (पु०) १ तीर । बाण । माला । बरछा ।
शङ्कुः } कोई लुकीली वस्तु । २ मेख । कील । ३
खूँटी । ४ खंभा । खँटा । ५ बाण की पैनी नोक ।
६ कटे हुए वृक्ष का टना । ७ घड़ी की सुई । ८
बारह अंगुल का माप । ९ नापने का गज । १०

दस लक्ष कोटि की संख्या । शङ्कु । ११ पत्तों की
नसें । १२ बाँबी । १३ लिङ्ग । जननेन्द्रिय । १४
एक प्रकार की मछली । १५ दैत्य विशेष । १६
विष । जहर । १७ पाप । १८ जलजन्तु विशेष ।
विशेष कर हंस । १९ शिव जी का नाम । २०
साल वृक्ष ।—कर्ण, (वि०) वह जिसके कान
शङ्कु के समान लंबे और लुकीले हों ।—कर्णः,
(पु०) गधा । रासभ । —तसः,—वृत्तः, (पु०)
साल के पेड़ ।

शङ्कुला } (स्त्री०) १ सुपारी काटने का सरौता । २
शङ्कुना } एक प्रकार का नशतर या छुरी ।—खण्डः,
(पु०) सरौता से काटा हुआ टुकड़ा ।

शंखं (न०) } १ एक प्रकार का बड़ा घोंघा, जिसमें
शङ्खं (न०) } रहने वाले जन्तु को मार कर, लोग
शंखः (पु०) } बजाने के काम में लाते हैं । २ माथे
शङ्खः (पु०) } की हड्डी । ३ कनपुटी की हड्डी । ४

हाथी का गण्डस्थल । ५ दस खर्व की संख्या ।
एक लाख करोड़ । ६ मारुबाजा या ढोल । ७
नखी नामक सुगन्ध द्रव्य । ८ कुबेर की नवनिधियों
में से एक । ९ एक दैत्य का नाम जिसे भगवान्
विष्णु ने मारा था । १० लिखित के भाई शङ्ख
जिनकी लिखी स्मृति प्रसिद्ध है । ११ चरण—चिन्ह ।
१२ राजा विराट का पुत्र ।—उदकं, (न०) शङ्ख
में डाला हुआ जल ।—कारः,—कारकः, (पु०)
पुराणानुसार एक वर्षासङ्कर जाति, जिसकी
उत्पत्ति शूद्रामाता और विश्वकर्मा पिता से मानी
जाती है । इस जाति के लोगों का काम शङ्ख की
चीजें बनाना है ।—चरी,—चर्वी, (स्त्री०) चंदन
की खौर ।—द्रावः,—द्रावकः, (पु०) एक
प्रकार का अर्क जिसमें शङ्ख भी गल जाता है ।—
धमः,—ध्मा, (पु०) शङ्ख बजाने वाला । ध्वनिः,
(पु०) शङ्ख की आवाज़ ।—प्रस्थः, (पु०)
चन्द्रकलङ्क ।—भृत्, (पु०) विष्णु ।—मुखः,
(पु०) मगर । कुम्भीर । बडियाल ।—स्वनः,
(पु०) शङ्ख की आवाज़ ।

शंखकं (न०) } १ शङ्ख । २ कनपुटी की हड्डियाँ
शङ्खकं (न०) } (पु०) शङ्ख का बना बलय ।
शंखकः (पु०) } हाथ का कंगन ।
शङ्खकः (पु०) }

शङ्खनकः }
शङ्खनकः } (पु०) छोटा शङ्ख ।
शङ्खनखः }
शङ्खनखः }

शङ्खिन् } (पु०) १ समुद्र । २ विष्णु । ३ शङ्ख
शङ्खिन् } बजाने वाला ।

शङ्खिनी } (स्त्री०) १ पद्मिनो आदि स्त्रियों के चार
शङ्खिनी } भेदों में से एक भेद । [चार भेद—

शङ्खिनी, पद्मिनी, त्रिविणी, हस्तिनी] २ एक प्रकार की अफसरा । ३ गुदा द्वार की नस । ४ सुँह की नाड़ी । ५ एक देवी का नाम । ६ सीप । ७ बौद्धों की पूजने की एक शक्ति । ८ एक तीर्थ स्थान । ९ शङ्खाहूली ।

शब् (धा० आ०) [शब्ते] बोलना । कहना ।

शचिः } (स्त्री०) इन्द्र की स्त्री का नाम :—पतिः,
शची } (पु०) —भर्तृ. (पु०) इन्द्र ।

शच् (धा० आ०) जाना ।

शट् (धा० प०) [शटति] १ बीमार होना । २ पृथक् करना । विभाजित करना ।

शट (वि०) खट्टा । तीता ।

शटा (स्त्री०) साधू की जटा ।

शट्टिः (स्त्री०) १ कचूर । २ गन्धपलाशी । कपूर-कचरी । ३ अमिया हल्दी । आम्रहरिद्रा । ४ नेत्र-वाला । सुगन्धवाला ।

शठ (धा० प०) [शठति] १ छलना । ठगना । धोखा देना । २ धातल करना । मार डालना । ३ पीड़ित होना । [शठयति] १ समाप्त करना । २ असम्पूर्ण या अधूरा छोड़ देना । ३ जाना । ४ सुस्त पड़ा रहना । ५ छलना । धोखा देना ।

शठ (वि०) १ किरती । छलिया । कपटी । दगाबाज़ । बेईमान । २ दुष्ट ।

शठं (न०) १ लोहा । २ कुङ्कुम । केसर ।

शठः (पु०) १ दुष्ट । गुंडा । बदमाश । उठाईगीरा । धूर्त । २ साहित्य में पाँच प्रकार के नायकों में से एक । यह नायक किसी दूसरी स्त्री के साथ प्रेम करते हुए भी अपनी स्त्री से प्रेम प्रदर्शित करने का कपट रचना है । ३ बेवकूफ । जड़बुद्धि । ४ वह जो

भगवने वाले दो आदमियों के बीच में पड़ कर, उनका कगड़ा निपटाता है । पंच । मध्यस्थ । ५ धनुरा का पौधा । ६ आलसी ।

शर्णा (न०) सन । पटसन । —सूत्रं. (न०) : मन की डोरी । सुतर्की । २ सन का बटा हुआ जान । ३ पाल की रस्ती । मस्तूल का बंधन ।

शर्ङ्ग } (न०) संग्रह । समूह ।
शर्ङ्गः }

शर्ङ्गः } (पु०) १ नपुंसक पुरुष । हिजड़ा । २ शर्ङ्गः } वृष । बैल । ३ सौँड जो छोड़ दिया जाता है ।

शर्ङ्गः (पु०) १ नपुंसक । हिजड़ा । २ खोजा शर्ङ्गः । जो रनवास में काम करते हैं । ३ सौँड । ४ छुड़ा सौँड । ५ पागल आदमी ।

शर्तं (न०) १ सौ । २ कोई भी बड़ा संख्या । —अती, (स्त्री०) १ रात । २ दुर्गा देवी —ग्रन्तः, (पु०) गाड़ी । युद्ध का रथ । —अनीकः, (पु०) बड़ा मनुष्य । —अरं, —अरं, (न०) इन्द्र का वज्र । —आननं, (न०) रमशन । कवरागाह । —आनन्दः, (पु०) १ ब्राह्मण का नाम । २ विष्णु या कृष्ण । ३ विष्णु के रथ का नाम । ४ गौतम के पुत्र का नाम जो जनक राजा के पुरोहित थे । —आयुस्, (वि०) सौ वर्ष तक रहने वाला या जीने वाला । —आवर्तः, —आवर्तिन् (पु०) विष्णु । —ईशः, (पु०) सौ पर शासन करने वाले । २ सौ गाँव का ठाकुर । —कुम्भः, (पु०) पर्वतविशेष जहाँ सुवर्ण पाया जाता है । —कुम्भं, (न०) सुवर्ण । सेना । —कृत्वस्, (अव्यय०) सौगुना । —कोटि, (वि०) सौ धार का । —कोटिः, (पु०) इन्द्र का वज्र । (स्त्री०) सौ करोड़ । —क्रतुः, (पु०) इन्द्र । —खराडं, (न०) सुवर्ण । —गु, (वि०) सौ गौरखने वाला । —गुण, —गुणिन् (वि०) सौगुना । सौगुना अधिक । —ग्रन्थिः, (स्त्री०) दूबा । दूब । —ग्री, (स्त्री०) १ प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र जो किसी बड़े पत्थर या लकड़ी के कुंद में बहुत से कील काँटें ठोक कर बनाया जाता था और जो युद्ध में शत्रुओं पर बार करने के काम में आता था । २

विष्णु की माता । ३ कष्टरोग ।—जिह्वः, (पु०) शिव जी ।—तारका, —भियजू, —भिषा, (स्त्री०) २४वें नक्षत्र का नाम ।—दला, (स्त्री०) सफेद गुलाब ।—दुः, (स्त्री०) सतलज नदी का नाम ।—धामन, (पु०) विष्णु ।—धार, (वि०) सौ धारों वाला ।—धारं, (न०) वज्र ।—धृतिः, (स्त्री०) १ इन्द्र । २ ब्राह्मण । ३ स्वर्ग ।—पन्नः, (पु०) १ मीर । २ सारस । ३ कठफोड़वा नामक पक्षी । ४ तोता । मैना ।—पत्रा, (स्त्री०) स्त्री । औरत ।—पत्रं, (न०) कमल ।—पत्रयोनिः, (पु०) ब्रह्मा ।—पत्रकः, (पु०) कठफोड़वा पक्षी ।—पाद, (वि०) सौ पैरों वाला ।—पादी, (स्त्री०) कनखजूरा । गोखर ।—पद्मं, (न०) सफेद कमल ।—पर्वन्, (पु०) बाँस । (स्त्री०) १ आश्विन मास की पूर्णिमा । २ दूब । दूर्वा । ३ कटुकी का पौधा ।—प्रीतिः, (स्त्री०) मल्लिका । चमेली ।—मखः, —मन्युः, (पु०) १ इन्द्र । २ उल्लू ।—मुख, (वि०) सौ द्वार या विकास वाला ।—मुखी, (स्त्री०) ब्रुश । भाड़ ।—मूला, (स्त्री०) दूर्वा । दूब ।—यज्वन्, (पु०) इन्द्र का नाम ।—यष्टिकः, (पु०) सौ लड़ियों का हार ।—रूपा, (स्त्री०) ब्रह्मा की पुत्री का नाम ।—वर्ष, (न०) शताब्दी । सदी ।—वेधिन, (पु०) चूका या चुक्रिका नामक साग ।—सहस्रं, (न०) १ सौ हजार । २ हजारों ।—साहस्र, (वि०) १ जिसमें कितने ही हजार हों । २ एक लक्षमूल्य केकर खरीदा हुआ ।—हृदा, (स्त्री०) १ बिजली । २ इन्द्र का वज्र ।

शतक (वि०) १ सौ । २ सौ वाला ।

शतकं (न०) १ शताब्दी । २ सौ श्लोकों का संग्रह ।

शततम (वि०) [स्त्री०—शततमी] सौवाँ ।

शतधा (अव्यया०) १ सौ प्रकार से । २ सौ हिस्सों में या सौ ठुकड़ों में ।

शतशस् (अव्यया०) १ सैकड़ों । सौ गुना । २ अनेक प्रकार से । बहुप्रकार से । सौ विस्वाँ ।

शत्य (वि०) १ सौ वाला या सौ से बना हुआ । २ सौ सम्बन्धी । ३ सौ के हिसाब से टेक्स या ब्याज देने वाला । ४ सौ बतलाने वाला । सौ का व्यञ्जक ।

शतिन् (वि०) १ सौगुना । अनेक । बहुप्रकार । (पु०) शतपति । सौ का मालिक ।

शत्रिः (पु०) हाथी ।

शत्रुः (पु०) १ विजयी । नाश करने वाला । जितैया । २ बैरी । दुश्मन । विरोधी । ३ राजनैतिक प्रतिद्वन्द्वी । पड़ोसी प्रतिद्वन्द्वी राजा ।—उपजापः (पु०) शत्रु की गुप्तचुप कानाफूसी । शत्रु का विश्वासघात ।—ऋषण, —दमन, —निवर्हण, (वि०) शत्रु का दवाना या नाश करना ।—घ्नः, (पु०) १ शत्रु का नाश करने वाला । २ दशरथ महाराज के चतुर्थ पुत्र का नाम ।—पन्नः, (पु०) शत्रु का पक्ष । विरोधी दल ।—विनाशनः, (पु०) शिव जी का नाम ।—हन्, (वि०) शत्रुहन्ता ।

शत्रुञ्जयः } (पु०) १ हाथी । २ एक पर्वत का नाम ।
शत्रुञ्जयः }

शत्रुतप (वि०) शत्रु का नाश करने वाला या शत्रु को जीतने वाला ।

शत्वरी (स्त्री०) रात ।

शद् (धा० प०) [शीयते] पतन होना । नाश होना । सड़ना । कुम्हलाना ।

शदः (पु०) शाक मूल आदि खाद्य वस्तु ।

शद्रिः (पु०) १ हाथी । २ बादल । ३ अर्जुन का नाम । (स्त्री०) बिजली ।

शद्रु (वि०) १ गमन । २ पतन । विनाश । जीर्णता ।

शनकैस् (अव्यया०) धीरे धीरे ।

शनिः (पु०) १ शनि नामक ग्रह । २ शनिवार । ३ शिव जी का नाम ।—जं, (न०) काली मिर्च ।

—प्रदोषः, (पु०) जब शुक्ला १३ शनिवार को पड़े, तब प्रदोष कहलाता है और उस दिन शिव जी के पूजन का विशेष साहाय्य है ।—प्रियं, (न०) नीलम मणि ।—वारः,—वासरः, (पु०) शनिवार ।

शनैस् (अव्यया०) १ धीमे । अहिस्ते । चुपचाप । २ क्रमशः । शनैः शनैः । थोड़ा थोड़ा । ३ सिलसिलेवार । ४ कोमलता से । ५ धीमे धीमे ।—चरः, (पु०) शनिवार ग्रह ।

शतनुः } चन्द्रवंशीय एक राजा का नाम ।
शन्तनुः }

शप् (धा० ड०) [शपति—शपते, शप्यति—
शप्यते, शप्त] १ शपथ देना । अकोमता । २
शपथ खाना । कसम खाना । ३ दोषी ठहराना ।
डॉटना । डपटना । चिक्कारना ।

शपः (पु०) १ शपथ । अकोमता । २ शपथ । कसम ।

शपथः (पु०) १ अकोमता । बदबुआ । २ अभिशाप्त
वस्तु । अभिशाप का पात्र । ३ कसम । किरिया ।
४ किरिया में बाँधने की क्रिया ।

शप्त (न० कृ०) १ शापित । शाप दिया हुआ । २
शपथ खाये हुए । ३ गरियाया हुआ ।

शफं (न०) } १ खुर । २ पेड़ की जड़ ।
शफः (पु०) }

शफरः (पु०) [स्त्री०—शफरी] छोटी मछली
जिसके शरीर में चमक होती है ।—आधिपः,
(पु०) इलिशा या हिलसा जाति की मछली ।

शवरः } (पु०) १ पहाड़ी । जंगली । २ शिव जी ।
शवरः } ३ हाथ । ४ जल । ५ शास्त्र विशेष अथवा
मीमांसा शास्त्र के एक प्रसिद्ध भाष्यकार ।
—लोभः, (पु०) जंगली लोभ वृद्ध ।

शवरी } (स्त्री०) शवर जानीय स्त्री । २ किरात
शवरी } जातीय स्त्री, जिसका श्रीगमचन्द्र जी ने उद्धार
किया था ।

शवल } (वि०) १ चितकबरा । रंगविरंगा । २
शवल } विभिन्न । कई भागों में विभक्त ।

शवलं } (न०) जल । पानी ।
शवलं }

शवलः } (पु०) चितकबरा रंग ।
शवलः }

शवला } (स्त्री०) १ चितकबरी या रंगविरंगी गौ ।
शवला } २ कामधेनु ।
शवली }
शवली }

शब्द (धा० ड०) [शब्दयति—शब्दयते, शब्दित] १
शब्द करना । शोर करना । २ बोलना । बुलाना ।
पुकारना । ३ नाम लेना । नाम ले कर पुकारना ।

शब्दः (पु०) १ आवाज़ । ध्वनि : : पक्षियों का
कलरव । २ यात्रे की आवाज़ । ४ अर्थयुक्त शब्द ।
५ संज्ञा । ६ उपाधि । पदवी । ७ भाव । ८
भौतिक प्रमाण ।—अधिष्ठानं, (न०) कान ।
कण ।—अनुशासनं, (न०) व्याकरण ।—
अलङ्कारः, (पु०) वह अलङ्कार जिसमें केवल
शब्दों या वर्णों के विन्यास से भाषा में काल्पनिक
उत्पन्न होता है ।—आख्येयः, (वि०) जोर से
या खिल्ला कर कहा जाने वाला ।—आख्येयं
(न०) ज़बानी संदेश या पैगाम ।—आडम्बरः,
(पु०) बड़े बड़े शब्दों का ऐसा प्रयोग जिसमें भाव
की न्यूनता हो ।—क्रोशः, (पु०) दिक्कतारी ।
लुताह । ग्रन्थ विशेष जिसमें अक्षर क्रम से या
समूह क्रम से शब्दों के अर्थ या पर्यायवाची
शब्दों का संग्रह किया गया हो ।—ग्रहः, (पु०)
कान ।—आनुय, (न०) शब्दप्रयोग सम्बन्धी
चतुरता । वाग्मिता ।—विधं, (न०) अनुशास
नामक अलङ्कार ।—पतिः, (पु०) नाममात्र
का स्वामी या मालिक ।—पातिन्, (वि०) शब्द-
वेधी (निशाना) लगाने वाला ।—प्रमाणां, (न०)
वह प्रमाण या साक्षी जो किसी के कथन पर निर्भर
हो ।—ग्रहान्, (न०) १ वेद । २ ब्रह्म जीव का
ज्ञान । आध्यात्मिक ज्ञान ।—मेदिन्, (वि०)
शब्द को सुन कर निशाना वेधने वाला । (पु०)
अर्जुन । रघुदा । ३ बाण विशेष ।—योनिः, (स्त्री०)
शब्द की उत्पत्ति ।—विद्या, (स्त्री०)—शासनं,
—शास्त्रं, (न०) व्याकरण शास्त्र ।—विरोधः,
(पु०) वाचिक विरोध ।—वेधिन्, (वि०)
देखो मेदिन्, (पु०) १ अर्जुन । २ बाण विशेष ।
—शक्तिः, (स्त्री०) शब्द की वह शक्ति जिसके
द्वारा उस शब्द से कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता
है ।—शुद्धिः, (स्त्री०) शब्द का शुद्ध प्रयोग ।
—श्रेष्ठः, (पु०) वह शब्द जो दो या अधिक
अर्थों में व्यवहृत किया जाय ।—संग्रहः, (पु०)
शब्दकोश ।—सौप्रदं, (न०) किसी लेख
या शैली आदि में प्रयुक्त किये हुए शब्दों की
सुन्दरता या कोसलता ।—सौकर्यं, (न०)
शब्दव्यवहार की सरलता ।

शब्दन (वि०) शब्द करने वाला । बजने वाला ।

शब्दनं (न०) १ शोर करने वाला । २ ध्वनि । कोलाहल । ३ पुकारना । बुलाहट । ४ नाम लेकर पुकारने की क्रिया ।

शब्दायते (क्रि०) १ कोलाहल करना । २ चिखलाना । बहाड़ना । गरजना । चीख मारना ।

शब्दित (व० कृ०) १ शब्द करता हुआ । बजा हुआ । २ कथित । उच्चारित । ३ पुकारा हुआ । ४ नामाङ्कित किया हुआ ।

शब् (अव्यय०) कुशलता, प्रसन्नता । समृद्धि, स्वस्थता, आदि सूचक अव्यय ।

शब् (धा० प०) [शास्यति, शान्त] १ चुपका होना । शान्त होना । अघाना । शमन होना । २ बंद करना । समाप्त करना । ३ बुझाना । ४ नाश करना । मार डालना ।

शमथः (पु०) १ शान्ति । निस्तब्धता । २ सुसाहिब । सलाहकार । मंत्रदाता । मंत्री ।

शमन (वि०) [स्त्री०—शमनी] शान्तकारी । शमनकारी ।

शमनं (न०) अघाना । शान्त करना । जीतना । २ शान्ति । निस्तब्धता । ३ अवसान । समाप्ति । नाश । ४ अनिष्ट । चोट । ५ बलि के लिये पशु-हनन । ६ निगलना । चबाना ।

शमनः (पु०) १ बारह सिंहा । २ यमराज का नाम । —स्वस्त, (स्त्री०) यम की बहिन । यमुना नदी का नामान्तर ।

शमनी (स्त्री०) रात ।—सदः,—षदः, (पु०) दैत्य । दानव । राक्षस ।

शमलं (न०) १ विष्टा । गूढ़ । मल । २ छानन । तलछट । ३ पाप । नैतिक अपवित्रता ।

शमित (व० कृ०) १ शान्त किया हुआ । शमित किया हुआ । सामोश किया हुआ । २ आराम किया हुआ । आरोग्य किया हुआ । ३ ढीला किया हुआ । ४ नरम किया हुआ ।

शमिन् (वि०) १ शान्त । निस्तब्ध । शमित । २ संयमी । जितेन्द्रिय ।

शमी (कभी कभी शमि मी) १ छेकुर का पेड़ । सफेद कीकर । २ शिवी धान्य । मूंग । मसूर । मोठ । उबड़ । चना । अरहर, मटर, कुलथी । लोबिया आदि ।—शर्मः, (पु०) १ अग्नि । २ अग्निहोत्री ब्राह्मण ।—शाम्भं, (न०) वह अनाज जो छीमियों से निकले ।

शंपा (स्त्री०) बिजली ।

शंक् (धा० प०) [शंभवति] जाना । [शंभवति] जमा करना । संग्रह करना ।

शंक् (वि०) १ प्रसन्न । भाग्यवान् । २ निर्धन । शम्भे } अभाग ।

शंक् : } (पु०) १ इन्द्र का वज्र । २ खल्ल का शम्भः } लोहे की नोक का दस्ता । ३ लोहे की शंक् : } जंजीर जो कमर के चारों ओर पहनी जाय । ४ नियमित रूप से हल चलाने की क्रिया । ५ खुले हुए खेत को पुनः जोतने की क्रिया ।

शंवरं } (न०) १ जल । २ मेघ । ३ धन दौलत । शम्बरं } ४ धर्मानुष्ठान । धर्मकृत्य ।

शंवरः } (पु०) १ एक दैत्य का नाम जिसे प्रद्युम्न शम्बरः } ने मारा था । २ पर्वत । ३ सृग विशेष । ४ शंवरः } मत्स्य विशेष । ५ संग्राम । युद्ध ।—अरिः,—सूदनः, (पु०) प्रद्युम्न की उपाधियाँ । —असुरः, (पु०) शंवरसुर ।

शंवरी } (स्त्री०) १ इन्द्रजात । जादूगरी । २ स्त्री शम्बरो } ऐन्द्रजालिक । शंवरी }

शंवलः (पु०) } १ समुद्रतट । २ पाथेय । रास्ते में शम्बलः (पु०) } खाने का भोजन । ३ डाह । ईर्ष्या । शंवलं (न०) } शम्बलं (न०) }

शंवली } (स्त्री०) कुटनी । शम्बली }

शंक् : } (पु०) घोंघा । हुपडा । शङ्ख । शम्बुः } शम्बुकः } शम्बुकः } शम्बुकः }

शब्दकः } (पु०) १ घोंघा । २ शङ्ख । ३ हाथी की
शब्दकः } सूत्र का अगला भाग । ४ एक शूद्र तपस्वी
का नाम जिसके अनधिकार कर्म करने पर श्रीराम-
चन्द्र जी ने उसे जान से मार डाला था ।

शम्भः } (पु०) १ प्रसन्न पुरुष । २ इन्द्रका वज्र ।
शम्भः }

शम्भली } (स्त्री०) कुटनी । दूती ।
शम्भली }

शम्भु } (वि०) आह्लादकारी । आनन्ददायी ।
शम्भु }

शम्भुः } (पु०) १ शिव । २ ब्रह्मा । ३ ऋषि ।
शम्भुः } मान्यपुरुष । ४ सिद्धपुरुष ।—तनयः,—
नन्दनः,—सुतः, (पु०) कार्तिकेय या गणेश ।
—प्रिया, (स्त्री०) १ दुर्गा । २ आमलकी ।
—वल्लभं, (न०) सनेह कमल ।

शम्भा (स्त्री०) १ काठ की छड़ी या खंभा । २ डंडा ।
३ जुआ की खंटी । ४ करताल । मंजीरा । ५
यज्ञीयपात्र विशेष ।

शय (वि०) [स्त्री०—शया, शयी] लेटने वाला ।
सोने वाला ।

शयः (पु०) १ निद्रा । नींद । २ सेज । खाट ।
शय्या । ३ हाथ । ४ साँप विशेष । अजगर । ५
गाली । अक्रोश । शाप ।

शयड } (वि०) निद्रालु । सोने वाला ।
शयड }

शयध (वि०) निद्रालु । सोथा हुआ ।

शयथः (पु०) १ मृत्पु । २ सर्प विशेष । अजगर सर्प ।
३ शूकर । ४ मङ्गली विशेष ।

शयनं (न०) १ निद्रा । नींद । २ सेज । शय्या ।
चारपाई । ३ स्त्रीप्रसंग । स्त्रीमैथुन ।—अगारः,
—आगारः, (पु०)—अगारं,—आगारं,
(न०)—गृहं, (न०) शयनगृह । सोने का
कमरा ।—एकादशी, (स्त्री०) आषाढ़ शुक्ल
एकादशी, जब भगवान् विष्णु शयन करना आरम्भ
करते हैं ।—सखी, (स्त्री०) एक सेज पर साथ
सोने वाली सहेली ।—स्थानं, (न०) शयन-
गृह ।

शयनीयं (न०) सेज । शय्या ।

शयानकः (पु०) १ गिरगट । २ अजगर सर्प ।

शयालु (वि०) निद्रालु । आलसी ।

शयालुः (पु०) १ अजगर सर्प । २ कुला । ३
शृगाल ।

शयित (व० कृ०) १ सोया हुआ । सुप्तः । २ लेटा
हुआ ।

शयुः (पु०) बड़ा सर्प । अजगर ।

शय्या (स्त्री०) १ सेज । पलंग । २ बंधन ।
—अव्यक्तः,—पालः, (पु०) राजा के शयनागार
का प्रधानधक ।—उन्नतः, (पु०) सेज की बगल ।
—गतः, (वि०) १ सेज पर लेटा हुआ । २
बीमार ।—गृहं, (न०) शयनागार ।

शरं (न०) जल । पानी ।

शरः (पु०) १ बाण । तीर । २ एक प्रकार का नर-
कुल या सरपत । ३ मलाई । अनिष्ट । नेट ।
बाव । ५ पाँच की संख्या ।—अश्रयः, (पु०)
उत्तम बाण ।—अभ्यासः, (पु०) तीरंदाजी ।
—असलं,—आश्रयं, (न०) तीरंदाज । कमान ।
—आलेपः, (पु०) तीर की वर्षा । तीर वर-
साना ।—आरोपः,—आवापः, (पु०) धनुष ।
कमान ।—आश्रयः, (पु०) तुरीयर । तरकस ।
—इषिका, (स्त्री०) तीर । बाण ।—इष्टः,
(पु०) आम का पेड़ ।—श्रोत्रः, (पु०) बाण-
वर्षा ।—काण्डः, (पु०) १ नरकुल । २ बाण
की लकड़ी ।—घातः, (पु०) तीरंदाजी ।—जं,
(न०) ताजा या दृढका मक्खन ।—जन्मन,
(पु०) कार्तिकेय ।—धिः, (पु०) तुरीयर ।
तरकस ।—पुंलः, (पु०)—पुंला, (स्त्री०)
तीर का वह भाग जहाँ पर लगे होते हैं ।—पालं,
(न०) तीर की पैनी बोक जहाँ तुकीला लोहा
लगा होता है ।—भङ्गः, (पु०) एक ऋषि, जो
दण्डक वन में श्री रामचन्द्र जी से मिले थे ।
—भूः, (पु०) कार्तिकेय ।—मलुः, (पु०) धनु-
र्धर ।—वनं, (व०) (न०) सरपत का वन ।
—वाणिः, (पु०) १ तीर का सिरा । २ धनु-
र्धर । तीरंदाज । ३ तीर बनाने वाला । ४ पैदल

सिमाही।—वृष्टिः, (स्त्री०) तीरों की वर्षा।
—वातः, (पु०) बाणसमूह।—सन्धानं, (न०)
तीर का निशाना बाँधना।—संवाध, (वि०)
तीरों से ढका हुआ।—स्तम्भः, (पु०) सरपत
का गड्ढा।

शरटः (पु०) १ गिरगट। २ कुसुम।

शरणां (न०) १ रक्षा। आश्रय। पनाह। २
आश्रयस्थल। बचाव की जगह। ३ घर।
मकान। ४ कोठरी। कमरा। ५ विश्रामस्थल।
आराम करने की जगह। ६ अनिष्टकरण। हिंसन।
वध करना।—अर्थिन्, (वि०)—पविन्,
(वि०) रक्षा चाहने वाला। आसरा तकने
वाला।—आगत, —आपन्न, (वि०) रक्षा करवाने
को आया हुआ। शरण में आया हुआ।
—उन्मुख, (वि०) रक्षा करवाने को इच्छुक।

शरंडः } (पु०) १ पक्षी। २ गिरगट। ३ ढग।
शरण्डः } कपटी। दशाबाज़। ४ लंपट। ऐयाश।
५ भ्रूषण विशेष।

शरण्य (वि०) १ शरण में आये हुए की रक्षा करने
वाला। २ बपुरा। अभाग।

शरण्यं (न०) आश्रयस्थल। २ रक्षक। ३ रक्षा।
बचाव। ४ अनिष्ट। अपकार।

शरत्तयः (पु०) शिवजी की उपाधि।

शरत्तयुः (पु०) १ रविक। २ वादल। ३ पवन।
हवा।

शरत् (स्त्री०) १ एक ऋतु जो आश्विन और कार्तिक
मास में मानी जाती है। २ वर्ष। साल।
—अन्तः, (पु०) जाड़े का मौसम।—अम्बुधरः,
(पु०) शरत्कालीन बादल।—उदाशयः,
(पु०) शरत्कालीन भील।—कामिन, (पु०)
कुत्ता।—कालः, (पु०) शरत् ऋतु।—वनः,
—मेघः, (पु०) शरत्कालीन मेघ।—चन्द्रः,
(= शरत्चन्द्रः) (पु०) शरत् ऋतु का
चन्द्रमा।—पद्मः, (पु०)—पद्मं (न०)
सफेद कमल।—पर्वन्, (न०) कोलाहार उत्सव।
—मुखं, (न०) शरत् ऋतु का आरम्भ।

शरदा (स्त्री०) १ शरत् ऋतु। २ वर्ष।

शरदिङ्ग (वि०) शरत् कालीन।

शरभः (पु०) १ हाथी का बच्चा। २ आठ पैरों
वाला एक जन्तु विशेष जिसका वर्णन पुराणों में
पाया जाता है किन्तु वह देखने में नहीं आया।
शरभ को शेर से कहीं बढ़कर बलवान और मजबूत
बतलाया गया है। ३ ऊँट। ४ टिड्डी। ५ कीट
विशेष।

शरयु } (स्त्री०) सरजू नदी।
शरयूः }

शरत्त (वि०) सरत्त।

शरत्तकं (न०) जल। पानी।

शरत्तयं (न०) वह निशाना जिस पर तीर का सन्धान
किया जाय। लक्ष्य। निशाना।

शराटिः } (पु०) पक्षी विशेष। टिटिहरी।
शरातिः }

शराक (वि०) अनिष्टकर। विषैला। आरोग्यता-
नाशक।

शरावं (न०) } १ सैनिकिया। परई। २ ढकना।
शरावः (पु०) } ३ माप विशेष।

शरावती (स्त्री०) एक नगरी जो श्रीरामचन्द्र के पुत्र
लव की राजधानी थी।

शरिमन् (पु०) निकालने की क्रिया। उत्पादन।

शरीरं (न०) १ कलेवर। गात्र। काय। देह।

तनु। २ शारीरिक बल। ३ शव। मुर्दा शरीर।

—अन्तरं, (न०) शरीर के भीतर का भाग।

—आचरणं, (न०) चमड़ा। चाम। खाल।

चर्म।—कर्तु, (पु०) पिता।—कर्षणं, (न०)

शरीर का दुबलापन।—जः, (पु०) १ बीमारी।

२ कामुकता। विषयवासना। ३ कामदेव। ४

पुत्र। सन्तति।—तुल्य, (वि०) शरीर के

समान प्रिय।—वृण्डः, (पु०) १ देह सम्बन्धी

द्वन्द्व। २ शारीरिक तप।—धृक्, (वि०)

शरीरवारी। शरीर वाला।—पतनं, (न०)

—पातः, (पु०) मृत्यु। मौत।—पाकः,

(पु०) शरीर का दुबलापन।—ब्रह्म, (वि०)

शरीरान्वित। शरीर सम्पन्न।—बन्धकः, (पु०)

प्रतिभू। जामिन।—भाजू, (वि०) शरीर

धारी । अवतार । मूर्तिमान् । (पु०) जीवधारी ।
शरीरधारी जीव ।—भेदः, (पु०) मृत्यु ।
—यष्टिः, (स्त्री०) लटा दुबला शरीर ।—आत्रा,
(स्त्री०) आजीविका । रोजी ।—विमोक्षणं,
(न०) मुक्ति । आत्रागमन से छुटकारा ।—वृत्तिः,
(स्त्री०) शरीर का पालन पोषण । जीविका ।
—वैकल्यं, (न०) रोग । बीमारी ।—संस्कारः,
(पु०) १ शरीर की शोभा तथा मार्जन । २
गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक के वेद विहित
खालह संस्कार ।—सम्पत्तिः, (स्त्री०) शरीर-
रिक् स्वस्थता ।—साद्रः, (पु०) शरीर का
दुबलापन ।—स्थितिः, (स्त्री०) शरीर का पालन
पोषण । भोजन । खाना ।

शरीरकं (न०) १ देह । शरीर । २ छोटा शरीर ।

शरीरकः (पु०) जीवात्मा ।

शरीरिन् (वि०) [स्त्री०—शरीरिणी] १ शरीर-
धारी । मूर्तिमान् । २ जीवित । (पु०) १ शरीर-
धारी कोई भी वस्तु चाहे वह स्थावर हो चाहे
जंगम । २ सचेतन शरीर । संवित्-सम्पन्न शरीर ।
३ पागल आदमी । ४ आत्मा । जीव ।

शर्करजा (स्त्री०) मिथी । कंद ।

शर्करा (स्त्री०) १ मिथी । कंद । चीनी । शक्कर ।
२ बालू का कण । कंकरी । रोड़ा । ३ रेतीली या
कंकड़ही ज़मीन । बालू । रेत । ४ खण्ड । टुकड़ा ।
टुक । ५ कमण्डलु । ६ ओला । विनौरा । ७
पथरी का रोग ।—उदकं, (न०) शरबत ।—
सप्तमी । वैशाख शुक्ल सप्तमी ।

शर्करिक (वि०) [स्त्री०—शर्करिकी]

शर्करिल (वि०) पथरीला । कंकरीला ।

शर्करी (स्त्री०) १ नदी । २ मेखला ।

शर्धः (पु०) १ अपानवायु का त्याग । २ दल ।
समूह । ३ बल । ताकत ।

शर्धजह (वि०) अफरा उत्पन्न करने वाला । पेट को
फुलाने वाला ।

शर्धजहः (पु०) उदं । एक प्रकार की दाल ।

शर्धनं (न०) अपान वायु त्यागने की क्रिया ।

शर्व (धा० प०) [शर्वति] १ जाना । २ अनिष्ट
करना । बध करना ।

शर्मन् (पु०) उपार्ध विशेष जो ब्राह्मण के नाम के
पीछे लगायी जाती है । (न०) १ शर्ष । आनन्द ।
२ आर्शात्रादि । ३ घर । आश्रय ।—द. (वि०)
हर्षदायी ।—दः, (पु०) विष्णु ।

शर्मरः (पु०) वस्त्रविशेष ।

शर्या (स्त्री०) १ रात । २ उर्वर्ती ।

शर्व (धा० प०) [शर्वति] १ जाना । २ अनिष्ट
करना । बध करना ।

शर्वः (पु०) १ शिव जी का नाम । २ विष्णु भगवान्
का नाम ।

शर्वरं (न०) अन्धकार । अंधियारी ।

शर्वरः (पु०) कामदेव ।

शर्वरी (स्त्री०) १ रात । २ हल्दी । ३ स्त्री ।—ईशः,
(पु०) चन्द्रमा ।

शर्वाणी (स्त्री०) पार्वती या दुर्गा का नाम ।

शर्शरीक (वि०) उत्पाती । नृशंस ।

शर्शरीकः (पु०) १ बदमाश । दुष्ट । शठ । उत्पाती ।

शल (धा० आ०) [शलते] १ हिलाना । आन्दो-
लन करना । २ काँपना । [शलति] १ जाना ।
२ तेज़ दौड़ना ।

शलं (न०) १ साड़ी का काँटा । किसी किसी के
मतानुसार यह पुं० भी है ।

शलः (पु०) १ बच्ची । भाला । २ शिव के नृङ्गी
नामक गण का नाम । ३ ब्रह्मा ।

शलकः (पु०) मकड़ी ।

शलंगः }
शलङ्गः } (पु०) राजा । महाराज ।

शलभः (पु०) १ टिड्डी । टीड्डी । शरभ । २ पतंगा ।
फतिगा ।

शलले (न०) साड़ी का काँटा ।

शलली (स्त्री०) १ साड़ी का काँटा । २ छोटी
साड़ी ।

शलाका (स्त्री०) जेहे या लकड़ी की सलाई ।
सीखचा । सलौंग । २ सुर्मा लगाने की सीसे की
सलाई । ३ तीर । बाण । ४ बछ्नीं । बछ्नी ।
५ वह सलाई जिससे घाव की गहराई नापी जाती
है । ६ छाता की लीला । ७ नली की हड्डी । =
अलुआ । कल्ला । कोपल । ८ चितरे की कुंची
१० दाँत साफ करने की कुंची । दँतवन । खरका ।
११ साही । १२ जुआ खेलने का पौसा ।—धूर्तः,
(=शलाकाधूर्तः) (पु०) ठग ।—परि,
(अन्यथा०) पाँसे की फैकन जिसमें फैकने वाला
दाँव हार जाय । अक्षपरि ।

शलाटु (वि०) अनपका ।

शलाटुः (पु०) कंद विशेष ।

शलाभोलिः (पु०) ऊँट ।

शलकं { (न०) १ मछली का काँटा । २ छाल ।
शलकलं { गुदा । ३ भाग । हिस्सा । टुकड़ा ।

शलकलिन् } (पु०) मछली ।
शलकलन् }

शलम् (धा० आ०) [शलमते] प्रशंसा करना ।

शलमलिः } (स्त्री०) शालमली वृक्ष । सेमल का
शलमली } पेड़ ।

शल्यं (न०) १ भाला । बछ्नीं । सांग । २ तीर । बाण ।
३ काँटा । ४ फील । खूंदी । ५ शरीर में चुभा
हुआ काँटा जो बड़ा पीड़ाकारक होता है । ६
(आलं०) कोई भी कारण जो हृदय दहलाने
वाला दुःखप्रद हो । ७ हड्डी । ८ सङ्कट । विपत्ति ।
९ पाप । जुर्म । अपराध । १० जहर । विष ।

शल्यः (पु०) १ साही । जीवविशेष । २ कटीली
काड़ी । ३ अक्षचिकित्सा जिसके द्वारा शरीर में
गड़ा काँटा या अन्य कोई वस्तु निकाली जाय । ४
हाता । सीमा । ५ शिल्पिद मछली । ६ मद्रदेश के
राजा का नाम जो माद्री का भाई था और नकुल
तथा सहदेव का मामा था ।—अरिः, (पु०)
युधिष्ठिर ।—आहरणां, —उद्धरणां, (न०)
—उद्धारः, (पु०)—क्रिया, (स्त्री०)—शास्त्रं,
(न०) अक्षचिकित्सा द्वारा काँटा या अन्य कोई
जुकीली चीज़ जो शरीर में चुसगयी हो, निकालने

की क्रिया ।—कण्ठः, (पु०) साही । जन्तु
विशेष ।—लामन्, (न०) साही का काँटा ।
—हर्तुः, (पु०) काँटे वीनने वाला या वीन
बीन कर निकालने वाला ।

शल्लं (न०) वृक्ष की छाल या गूदा ।

शल्लः (पु०) मेंढक ।

शल्लकं (न०) वृक्ष की छाल या गूदा ।

शल्लकः (पु०) शोण वृक्ष । सलई ।

शल्लकी (स्त्री०) १ साही । २ सलई नामक वृक्ष जो
हाथियों को बड़ा प्रिय है ।—द्रवः, (पु०)
शिलारस । सहक ।

शल्वः (पु०) शाल्व नामक देश ।

शव् (धा० प०) [शवति] १ जाना । २ परिवर्तन
करना । बदल बदल करना । रूप बदल डालना ।

शवं (न०) } मुदा । ज्ञाश ।—आन्त्यादनं, (न०)
शवः (पु०) } कफन ।—आश, (वि०) मुदाखाने
वाला ।—काम्यः, (पु०) कुत्ता ।—यानं, (न०)
—रथः (पु०) ठठरी । अरथी । मुदा डोने की
काठ की बनी वस्तु विशेष । टिकठी ।

शवं (न०) जल ।

शवर } देखो शबर, शवल ।
शवल }

शवसानः (पु०) १ यात्री । पथिक । मुसाफिर । २
मार्ग । रास्ता ।

शवसानं (न०) श्मशान । कबरगाह ।

शशः (पु०) १ खरगोश । २ चन्द्रकलङ्क । ३ काम-
शास्त्र के अनुसार मनुष्य के चार भेदों में से एक
भेद । ऐसे मनुष्य के लक्षण ये हैं :—

सुदृढवक्त्रमुशीलः कोमलाङ्गः सुकेशः ।

सकलपुष्पनिधानं सख्यवादी शशोऽयम् ।

४ लोभ वृक्ष । ५ गन्धरस ।—अङ्गः, (पु०) १

चन्द्रमा । २ कपूर ।—अदः, (पु०) १ बाज

पक्षी । श्येन पक्षी । २ इक्ष्वाकु के एक पुत्र का

नाम ।—अदनः, (पु०) बाज पक्षी । श्येन पक्षी ।

—धरः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।

—स तकं, (न०) नख का घाव ।—भुत्,

(पु०) चन्द्रमा ।—लक्ष्मणाः, (पु०) चन्द्रमा ।
—लङ्कितः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।
—विन्दुः, चिन्दुः, (पु०) १ चन्द्रमा २ विष्णु-
भगवान् ।—विषाणं, —भुङ्गं, (न०) खरहे के
सोंग । कोई अलीक या अश्वमेध वात ।—स्वली,
(स्त्री०) गङ्गा और यमुना के मध्य का प्रदेश ।
दोआब ।

शशकः (पु०) खरगोश । खरहा ।

शशिन् (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—ईशः, (पु०)
शिवजी ।—कला, (स्त्री०) चन्द्रमा की कला ।
—कान्तः (पु०) चन्द्रकान्त मणि ।—कान्तं,
(न०) कुसुद । कोई । बबोला ।—कांतिः,
(पु०) चन्द्रश्चक्र ।—ग्रहः, (पु०) चन्द्रग्रहण ।
—जः, (पु०) बुधग्रह ।—प्रभ, (वि०) चन्द्रमा
जैसी प्रभवाला ।—प्रभं, (न०) १ कुसुद ।
२ मुक्ता । मोती ।—प्रभा (स्त्री०) चाँदनी ।
ज्योत्स्ना ।—भूषणः, —भूत्, (पु०)—मौलिः,
—शेखरः (पु०) शिवजी ।—लोखा, (स्त्री०)
चन्द्रकला ।

शशवन् (अव्यया०) १ सदैव । अनन्त काल से । २
लगातार । बारंबार । अक्सर । फिर फिर ।

शशकुली । (स्त्री०) १ कान का छेद । २ घूरी ।
शशकुली । पक्काज आदि । ३ काँजी । ४ कान का रोग
विशेष ।

शश्वं } (न०) घास । वृण । तिनका ।
शश्वं }

शश्वः } (पु०) प्रतिभाञ्जय ।
शश्वः }

शश्व् (घा० घ०) [शसति] १ काट डालना ।
मार डालना । नाश कर डालना ।

शश्वन् (न०) १ घाव करता । वध करण । २ पशु
का बलि के लिये हनन ।

शश्वत् (व० कृ०) १ प्रशंसित । सराहा हुआ ।
२ मुद्दकारी । मंगलकारी । ३ सही । समीचीन ।
४ बायल । चोटिल । ५ हनन किया हुआ ।

शश्वत् (न०) १ प्रसन्नता । कुशलमङ्गलत्व । २

शुभता । उन्नमता । ३ शरीर । देह । ४ अद्भुत-
वाण । वस्तुना ।

शस्तिः (स्त्री०) प्रशंसा । स्तव ।

शस्त्रं (न०) १ हथियार । २ औज़ार । ३ लोहा । ४
ईसपात लोहा । ५ स्तोत्र ।—अभ्यासः (पु०)
हथियार चलाने की मरक । सैनिक कसरत ।
—अयस्, (न०) १ ईसपात लोहा । २ लोहा ।
—अस्त्रं, (न०) हथियार जो पैक कर चलाये जाय
और यंत्रविशेष द्वारा छोड़े जाय ।—आजीवः,
—उपजीविन्, (पु०) पेशेवर सिपाही ।—उद्यमः,
(पु०) प्रहार करने को हथियार उठाना ।—उपक-
रणं, (न०) लड़ाई का हथियार आदि सामान ।
—कारः, (पु०) कवच । बख्तर ।—कापः,
(पु०) म्यान । परतला ।—ग्राहिन्, (वि०)
हथियार धारण करने वाला ।—जीविन्, —वृत्ति,
(पु०) पेशेवर सिपाही ।—देवता, (स्त्री०)
युद्ध का अभिष्टाला देवता ।—धरः, (पु०)
शस्त्रधारी ।—प्राणि, (वि०) शस्त्र से सुसज्जित ।
—पूत, (वि०) शस्त्र से पवित्र किया हुआ ।
अर्थात् युद्धक्षेत्र में युद्ध में शस्त्र से मारे जाने के
कारण पापों से छूटा हुआ ।—प्रहारः, (पु०)
हथियार का धाव ।—भुम्, (पु०) शस्त्रधारी ।
—मार्जः, (पु०) हथियार साफ करने वाला ।
सिगलीगर ।—विद्या, (स्त्री०)—शास्त्रं, (न०)
वह विद्या या शास्त्र जो हथियार चलाने आदि की
बातें बतलावे या सिखलावे ।—संहतिः, (स्त्री०)
१ हथियारों का संग्रह । २ हथियारों का भाण्डार-
गृह ।—हत, (वि०) हथियार से मारा हुआ ।
—हस्तः, (पु०) सिपाही । योद्धा ।

शस्त्रकं (न०) १ ईसपात लोहा । २ लोहा ।

शस्त्रिका (स्त्री०) चाकू ।

शस्त्रिन् (वि०) हथियारबंद ।

शस्त्री (स्त्री०) घुरी ।

शस्यं (न०) १ अनाज । नाज । २ किसी वृक्ष का
फल या उसकी पैदावार । ३ लक्ष्य ।—जेत, (न०)
अनाज का खेत ।—भञ्जक, (वि०)
अन्नभञ्जी । अनाज खाने वाला ।—भञ्जरी, (स्त्री०)

अनाज की बाल ।—मालिन्, (वि०) फसल से सम्पन्न । शालिन्,—सम्पन्न, (वि०) जिसमें बहुत अनाज हो ।—संपद्, (स्त्री०) अनाज का बाहुल्य ।—संवरः,—संवरः, (पु०) साल वृद्ध ।

शाकं (न०) } शाक । तरकारी । भाजी । पत्ती
शाकः (पु०) } फूल, फल आदि जो पका कर खाये जाय । (पु०) १ ताकत, बल । पराक्रम । २ सागौन का पेड़ । ३ सिरिस का पेड़ । ४ मानव जाति विशेष । ५ शालिवाहन का शाक ।—अंगं, (न०) कालीमिर्च ।—अम्लं, (न०) १ महादा । वृषाभल । २ हमली ।—आख्यः, (पु०) सागौन का पेड़ ।—आख्यं, (न०) शाक । भाजी । चुक्रिका, (स्त्री०) हमली ।—तरुः, (पु०) सागौन का पेड़ ।—पशाः, (पु०) १ मान विशेष जो एक हाथभर का होता है । हाथभर २ भाजी ।—पार्थिवः, (पु०) वह राजा जो अपना शाका या सन् चलाने का शौकीन हो ।—योग्यः, (पु०) धनिया । धन्याक ।—वृत्तः (पु०) सागौन का पेड़ ।—शाकटं,—शाकिनं, (न०) शाकभाजी का खेत ।

शाकट (वि०) [स्त्री०—शाकटी] १ छकड़ा सम्बन्धी । २ छकड़े में जाने वाला ।

शाकटः (पु०) बैल जो गाड़ी या हल में चला हुआ हो । गाड़ी का बैल ।

शाकटं (न०) खेत । क्षेत्र ।

शाकटायनः (पु०) एक बहुत प्राचीन वैयाकरण, जिसका उल्लेख पाणिनि और यास्क ने किया है ।

शाकटिक (वि०) [स्त्री०—शाकटिकी] छकड़ा सम्बन्धी । छकड़े में बैठ कर जाने वाला ।

शाकटीनः (पु०) १ गाड़ी का बोझ । २ प्राचीन कालीन एक तौल जो बीस तुला या २ हजार पल की होती थी ।

शाकल (वि०) [स्त्री०—शाकली] शकल नामक द्रव्य सम्बन्धी । एक खण्ड या टुकड़ा सम्बन्धी ।—प्रातिशाख्यं, (न०) ऋग्वेद प्रातिशाख्य का नाम ।—शाखा, (स्त्री०) ऋग्वेद का वह पाठ

या संशोधित संस्करण जो शाकलों में परम्परागत चला आता है ।

शाकलः (पु०) ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता या उस शाखा वाले या उस संहिता के मानने वाले ।

शाकल्यः (पु०) एक प्राचीन कालीन वैयाकरण जिसका उल्लेख पाणिनि ने किया है ।

शाकारी (स्त्री०) शकों अथवा शकारों की भाषा, जो प्राकृत का एक भेद है ।

शाकिनं (न०) खेत । क्षेत्र ।

शाकिनी (स्त्री०) १ शाक या भाजी का खेत । २ दुर्गा देवी की सहचरी ।

शाकुन (वि०) [स्त्री०—शाकुनी] १ पक्षी सम्बन्धी । २ शकुनसम्बन्धी । ३ शुभ ।

शाकुनिकं (न०) शकुनों का फल ।

शाकुनिकः (पु०) चिड़ीमार । बहेलिया ।

शाकुनेयः (पु०) झेडा उल्लू ।

शाकुंतलं } (न०) कालिदास रचित अभिज्ञान
शाकुन्तलं } शकुन्तला नाटक ।

शाकुंतलः } (पु०) शकुन्तला का पुत्र राजा भरत ।
शाकुन्तलः }

शाकुलिकः (पु०) धीमर । मझुआ । मझली मारने वाला ।

शाकरः (पु०) बैल ।

शाक्तः (पु०) शक्ति पूजक । शक्तिउपासक । तत्र प्रवृत्ति से शक्ति की पूजा करने वाला । [तत्रप्रवृत्ति दो प्रकार की है । एक दक्षिणाचार, दूसरी, वामाचार । वामाचार या वाममार्गियों की प्रवृत्ति में मद्य, मांस, स्त्री आदि का व्यवहार किया जाता है, किन्तु दक्षिणाचार में इन सब अपवित्र वस्तुओं का व्यवहार नहीं किया जाता ।

शाक्ति (वि०) [स्त्री०—शाक्ती] बल या शक्ति सम्बन्धी । शक्तिरूपिणी मूर्तिमती देवी सम्बन्धी ।

शाक्तिकः (पु०) १ शक्ति का उपासक । २ भालाधारी ।

शाक्तीकः (पु०) भालादारी ।

शाक्तेयः (पु०) शक्ति-पूजक ।

शाक्त्वः (पु०) एक प्राचीन क्षत्रिय जाति, जो नेपाल की तराई में रहती थी और जिसमें गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था ।—भिलुकः, (पु०) बौद्ध भिलुक ।—मुनिः,—मिहः, (पु०) बुद्ध देव के नामान्तर ।

शाक्ती (स्त्री०) १ शची । २ दुर्गा ।

शाक्करः (पु०) बैल । वृषभ ।

शाखा (स्त्री०) १ डाली । शाख । २ बाँह । बाजू । ३ विभाग । ४ किसी शास्त्र या विद्या के अन्तर्गत उसका कोई भेद । ५ सम्प्रदाय । पंथ । सिद्धान्त । ६ वेद की संहिताओं के पाठ तथा क्रमभेद जो कई ऋषियों ने अपने गोत्र या शिष्यपरंपरा में चलाए ।—पित्तः, (पु०) एक रोग जिसमें हाथ और पैर में जलन और सूजन हो जाती है ।—मृगः, (पु०) १ वानर । बंदर । २ गिलहरी ।—रग्डः, (पु०) वेद विहित कर्मों को अपनी शाखा के अनुसार न करने वाला । अपनी शाखा को छोड़ अन्य शाखा के अनुसार कार्य करने वाला ।—रथ्या, (स्त्री०) पगडंडी ।

शाखालः (पु०) वानीर । बेल विशेष ।

शाखिन् (वि०) १ डालियों वाला । शाखाओं से युक्त । २ किसी शाखा वाला । वृक्ष । ३ वेद । ४ वैदिक किसी शाखा को मानने वाला ।

शाखोटः } सिहोर का पेड़ । पीतवृक्ष ।
शाखोटकः }

शांकरः } (पु०) बैल । वृषभ ।
शाङ्करः }

शांकरिः } (पु०) १ कार्तिकेय का नाम । गणेश
शाङ्करिः } जी का नाम । ३ आभीर ।

शांखिकः } (पु०) १ शङ्ख को काट कर शङ्ख की
शाङ्खिकः } चीजें बनाने वाला । २ एक वर्णसङ्कर
जाति । ३ शङ्ख बजाने वाला ।

शाटः } १ वस्त्र । २ कुर्ती । जाकट ।
शाटी }

शाटकं (न०) } वस्त्र । कपड़ा । कुर्ती । जाकट ।
शाटकाः (पु०) }

शाक्यं (न०) बेईमानी । धोखाधड़ी । चालाकी ।
कमट । जाल । दुष्टता ।

शाख (वि०) [स्त्री०—शाखा] सन का । पट-
सन का ।

शाखां (न०) सन का वस्त्र । सनिया । मोटा कपड़ा ।

शागाः (पु०) १ कसौटी का पथर । २ सान रखने
वाला पथर । ३ आरा । ४ चार माथे की तौल ।
—आजीवः, (पु०) कवचधारी ।

शाणिः (पु०) सन जिसके रेशों से वस्त्र बनाया
जाता है ।

शाणित (व०) शान रखा हुआ । बाढ़ रखा हुआ ।
पैनाया हुआ ।

शाणी (स्त्री०) १ कसौटी । २ शान का पथर । ३
आरा । ४ पटसन का बना वस्त्र । ५ फटा कपड़ा ।
६ छोटी कनात या तंतु । हाथ या आँख
मटकौबल ।

शाणीरं (न०) सोन नदी का तट । सोन नदी के बीच
में स्थित भूभाग ।

शाशिडल्यः (पु०) १ भक्ति शास्त्र को बनाने वाले
एक मुनि । गोत्र प्रवर्तक एक ऋषि । २ विल्ववृक्ष ।
३ अग्नि का रूप विशेष ।—गोत्रं, (न)
शाशिडल्य गोत्र वाले ।

शात (व० कृ०) १ शान पर चढ़ा हुआ । पैना ।
२ पतला । दुबला । ३ निर्बल । कमजोर । ४
सुन्दर । मनोहर । ५ प्रसन्न ।

शातं (न०) धतूरा वृक्ष ।

शातः (पु०) आनन्द । हर्ष । आह्लाद ।—उद्री,
(स्त्री०) पतली कमर वाली ।—शिख, (वि०)
पैनी नौक वाला ।

शातकुम्भं } (न०) १ सेना । २ धतूरा ।
शातकुम्भं }

शातकौमं (न०) सुवर्ण । सेना ।

शातनं (न०) १ छोटा करना । तेज़ करना ।
२ विनाशन ।

शातपत्रकः (पु०) } चाँदनी । जुन्हाई ।
शातपत्रकी (स्त्री०) }

शातभोरुः (पु०) मल्लिका विशेष ।

शातमान (वि०) [स्त्री०—शातमानी] एक सौ के मूल्य का ।

शात्रव (वि०) [स्त्री०—शात्रवी] १ शत्रु सम्बन्धी ।
२ वैरी । विरोधी ।

शात्रवं (न०) १ शत्रुओं का समुदाय । २ शत्रुता ।
विरोध ।

शात्रवः (पु०) शत्रु ।

शात्रवीय (वि०) १ शत्रु सम्बन्धी । २ वैरी । विरोधी ।

शादः (पु०) १ छोटी घास । २ कीचड़ ।—हरितः,
(पु०)—हरितः, (न०) दूब का मैदान ।

शार्दूल (वि०) १ वह स्थान जहाँ घास हो । २ वह
स्थान जहाँ छोटी और हरी घास बहुतायत से हो ।
३ सज्ज । हरा भरा ।

शार्दूल } चरगाह । गोचरभूमि ।
शार्दूलः }

शान् (धा० उ०) [शीशांसति—शीशांसते] तीक्ष्ण
करना । पैनाना । तेज़ करना । शान पर रखना ।

शानः (पु०) १ कसौटी । २ शान रखने का पथर ।
—पादः, (पु०) १ वह पथर जिस पर चन्दन
रगड़ा जाय । २ पारियात्र पर्वत ।

शान्त } (व० कृ०) १ शमयुक । शान्ति वाला । सन्तुष्ट ।
शान्त } अवाया हुआ । २ बन्द । मिटा हुआ । ३ घटा
हुआ । दबा हुआ । बुझा हुआ । ४ मृत । मरा
हुआ । ५ सौम्य । गम्भीर । ६ पालतू । ७ मौन ।
तुप । खामोश । ८ शिथिल । ढीला । ९ शान्त ।
थका हुआ । १० रागादि शून्य । जितेन्द्रिय । ११
विघ्न बाधा रहित । स्थिर । १२ स्वस्थचित । १३
अप्रभावित । १४ शुभ । मङ्गलकारी ।—[शान्तं
पापं,] संस्कृत का यह एक मुहाबिरा है जिसका
अर्थ है, ईश्वर न करे, ऐसा हो, या ईश्वर को ऐसा
न हो । अथवा “नहीं नहीं” । “ऐसा नहीं । ऐसा
कैसे हो सकता है ।”] ।—आत्मनः—चेतस्,
(वि०) शान्त स्वभाव वाला । स्वस्थ चित्त ।

—रसः, (पु०) काव्य के नौ रसों में से एक ।
इसका स्थायी भाव “ निर्वेद ” (अर्थात् काम
क्रोधादि वेगों का शमन) है ।

शान्तनवः } (पु०) शान्तनुपुत्र भीष्म का नाम ।
शान्तनवः }

शांता } (स्त्री०) महाराज दशरथ की पुत्री का नाम
शान्ता } जो अश्वत्थामा को व्याही गयी थी ।

शांतिः } (स्त्री०) १ वेग, लोभ या क्रिया का अभाव ।
शान्तिः } स्थिरता । २ सन्नाटा । स्वस्थता । नीरवता ।

३ स्वस्थता । चैन । इतमीनान । आराम । ४
युद्ध की बंदी । ५ अवसान । समाप्ति ।
६ रागादि का अभाव । विरक्ति । वैराग्य । ७
पारस्परिक मतभेदों का दूर हो मेल मिलाप होना ।
८ भूख को भोजन करके शान्त करना । ९ प्राय-
श्चित्त अथवा वह कर्म जिससे किसी ग्रह का बुरा
फल दूर हो जाय । अशुभ या अनिष्ट का निवारण ।
अमङ्गल दूर करने का उपचार । १० सौभाग्य ।
शुभत्व । मङ्गल । ११ कलङ्क का दूर होना । १२
बचाव ।

शांतिकं } (न०) पालन । रक्षण । [स्त्री०—
शान्तिकं } शान्तिकी] उपद्रवों को शान्त करने वाली
होम आदि क्रिया ।

शापः (पु०) १ अहितकामना सूचक शब्द । बददुआ ।
अकोसा । २ शपथ । ३ गाली । भर्त्सना ।—अश्वः
(पु०) वह व्यक्ति जिसके पास अश्वों की जगह
शाप देने की शक्ति हो । मुनि । ऋषि । महात्मा ।
—उत्सर्गः, (पु०) शापोच्चारण । शाप देना ।
उद्धारः,—(पु०)—मुक्तिः,—(स्त्री०)—मोक्षः,
(पु०) शाप या उसके प्रभाव से छुटकारा ।
शापमुक्ति ।—ग्रस्तः, (वि०) शापित ।—मुक्तः,
(वि०) शाप से छूटा हुआ ।—ग्रंथितः,
(व० कृ०) शाप द्वारा नियंत्रण किया हुआ ।

शापित (व० कृ०) १ शापग्रस्त । २ किरिया
खाये हुए । शपथ खाये हुए ।

शाफरिः (पु०) धीवर । मड़वाहा । माहीगीर ।

शावर } (वि०) [स्त्री०—शावरी—शावरी] १
शावर } जङ्गली । बर्बर । २ नीच । ३ कमीना ।

ओढ़ा ।—भेदाख्यं, (न०) तौबा ।

शावरः } (पु०) लोभ वृत्त ।
शावरः }

शावरी } (स्त्री०) शवरों की भाषा । एक प्रकार की
शावरी } प्राकृत भाषा ।

शाब्द (वि०) [स्त्री०—शाब्दी] १ शब्द सम्बन्धी ।
शब्द से उत्पन्न । २ ध्वनि पर निर्भर । ध्वनि
सम्बन्धी । ३ मौखिक । ज्ञानी । ४ ध्वनिकारक ।
बजने वाला ।—बोधः (पु०) शब्दों के प्रयोग
द्वारा अर्थ का ज्ञान । वाक्य के तात्पर्य की जान-
कारी —वाञ्छना, (स्त्री०) वह व्यञ्जना जो
शब्द विशेष के प्रयोग पर ही निर्भर होती है,
अर्थात् यदि उसका पर्यायवाची शब्द व्यवहृत किया
जाय तो वह न रह जाय ।

शाब्दिक (वि०) [स्त्री०—शाब्दिकी] १ मौखिक ।
ज्ञानी । २ ध्वनिकारक । बजने वाला ।

शाब्दिकः (पु०) वैभाकरण ।

शामनः (पु०) १ यमराज का नाम ।

शामनं (न०) १ वध । हत्या । २ शान्ति । नीरवता ।

शामनी (स्त्री०) दक्षिण दिशा ।

शामित्रं (न०) १ यज्ञ । २ यज्ञ के लिये पशुवध । ३
बलिदान के लिये पशु को बांधने की क्रिया । ४
यज्ञीय पात्र विशेष ।

शामिलं (न०) सम्म । सम्म ।

शामिली (स्त्री०) नुवा ।

शांवरि } (स्त्री०) १ माया । इन्द्रजाल । जादूगरी ।

शांवरि } २ जादूगरनी ।

शांनविकः (पु०) शंख बेंचने वाला ।

शाम्भ } (वि०) [स्त्री०—शाम्भवी] १ शिव
शाम्भ } सम्बन्धी ।

शाम्भं } (न०) देवदारु का पेड़ ।
शाम्भवं }

शाम्भः } (पु०) (२) शिव का भक्त या पूजक । २
शाम्भः } शिवपुत्र । ३ कष्ट । ४ विष विशेष ।

शाम्भवी } (स्त्री०) १ पार्वती । २ नील वृषा ।
शाम्भवी }

शायकः } (पु०) १ नील । २ गज । तलवार ।
शायकः }

शार (धा० ड०) [शारयानि—शारयन्ते] १ निर्बल
करना । २ निर्बल होना ।

शार (वि०) रंगविरंगा । चित्रकवरा । चित्रियोंदार ।

शार (पु०) १ रंगविरंगा रंग । २ हरा रंग । ३
पवन । हवा । ४ शतरंज का मोहरा । ५
फनिष्ट । चोट ।

शारंगः } (पु०) १ चातक पक्षी । २ मोर । मयूर ।

शारङ्गः } ३ मधुमक्षिका । ४ हिरन । मृग । ५ हाथी ।

शारंगी } (स्त्री०) सारंगी । एक वाजा जो गज से
शारङ्गी } बजाया जाता है ।

शारद (पु०) १ शारदी । शरत् ऋतु का । २ वार्षिक ।
३ नया । हाल का । ४ ताजा । टटका । ५ शमीला ।
शमदार । खजाल । खजीला । ६ जा साहसी
न हो ।

शारदं (न०) १ अनाज । नाज । २ सफेद कमल ।

शारदा (स्त्री०) १ वीणा विशेष । २ दुर्गा का नाम ।
३ सरस्वती का नाम ।

शारदः (पु०) १ वर्ष । २ शारदी रोग । शरत्
ऋतु में उत्पन्न होने वाला रोग । ३ हरी मृग ।
शरत् ऋतु की धूप । ४ बहुल वृक्ष ।

शारदिकं (न०) वार्षिक श्राद्ध या शरत् ऋतु में
किया जाने वाला श्राद्ध कर्म ।

शारदिकः (पु०) १ शरत् ऋतु में उत्पन्न होने वाले
रोग । २ शरत् ऋतु का सूर्यास्त या शाम या धूप ।

शारदी (स्त्री०) कार्तिक मास की पूर्णमासी ।

शारदीय (वि०) शरत्कालीन ।

शारिः (पु०) १ शतरंज का मोहरा या गोदी । २
छोटी लेंद । ३ एक प्रकार का पौसा ।

शारिः (स्त्री०) १ सारिका या मैना पक्षी । २
कपट । कुल । धोखा । दगा । ३ हाथी का पलान
या झूल ।—फलं—फलकं, (न०)—फलकः,
(पु०) शतरंज या चौसर की विद्युत ।

शारिका (स्त्री०) १ मैना पक्षी । २ सारंगी । बेहला

आदि राजों के बजाने का राज । ३ शतरंज खेलने की क्रिया । ४ शतरंज का मोहरा या उसकी गोद या गोदी ।

री (स्त्री०) पक्षी विशेष ।

रीर (वि०) [स्त्री०—शारीरी] शरीर सम्बन्धी । दैहिक । कायिक । २ शरीर धारी । मूर्तिमान् ।

रीरः (पु०) १ जीवात्मा । २ सौँद । वृष । ३ एक प्रकार का अर्थ ।

रीरक (वि०) [स्त्री०—शारीरकी] शरीरसम्बन्धी । रीरकं (न०) १ शरीरधारी जीवात्मा । २ जीव के स्वरूप ज्ञान की खोज या जिज्ञासा ।—सूत्रं, (न०) वेदान्त के दार्शनिक विचार । वेदव्यासजी के बनाये हुए वेदान्त सूत्र ।

रीरिक (वि०) [स्त्री०—शारीरिकी] शरीर सम्बन्धी । दैहिक । कायिक । पार्थिव ।

रुक् (वि०) [स्त्री०—शारुकी] अनिष्टकर । हानिकारी । कष्टदायी ।

रुक् (पु०) शर्करापिण्ड । मिश्री । कंद ।

रुर्कर (वि०) [स्त्री०—शार्करी] १ चीनी की बनी हुई । २ पथरीली । कँकरीली ।

रुर्करः (पु०) कँकरीली जगह । २ दूध का फेना । ३ मलाई ।

रुर्ग } (वि०) १ सींग का बना हुआ । सींगदार ।
रुर्ग } २ धनुषधारी । धनुर्धर ।

रुर्गः (पु०) १ धनुष । २ विष्णु भगवान् के धनुष
रुर्गः (पु०) का नाम । —धन्वन्, (पु०)—धरः,
रुर्ग (न०) —पाणिः,—भृत्, (पु०) विष्णु
रुर्ग (न०) भगवान् के नामान्तर ।

रुर्गन् } (पु०) १ धनुर्धारी । २ विष्णु ।

रुलः (पु०) १ व्याघ्र । चीता । २ बघरा । लकड़-
बग्घा । ३ राक्षस । दैत्य । दानव । ४ पक्षी विशेष ।
५ समासान्त शब्दों में पीछे आने पर इसका अर्थ
होता है :—सर्वश्रेष्ठ । उत्तम । प्रसिद्ध पुरुष ।—
चर्मन्, (न०) चीते की छाल ।—चिक्रीडितं
(न०) १ चीते की क्रीड़ा । २ उन्नीस अक्षरों के
पादवाला एक छन्द विशेष ।

शार्धर (वि०) [स्त्री०—शार्धरी] १ नैशिक । रात्रि-
कालीन । २ उत्पाती । उपद्रवी ।

शार्धरं (न०) अधियारी । अन्धकार ।

शार्धरी (स्त्री०) रात्रि । रात । निशा ।

शाल् (धा० आ०) [शालते] १ प्रशंसा करना ।
चापलूसी करना । २ चमकना । ३ सम्पन्न होना ।
४ कहना ।

शालः (पु०) १ शालनामक पेड़ । २ वृक्ष । ३ हाता ।
वेरा । ४ मछली विशेष । ५ शालिवाहन राजा का
नाम ।—ग्रामः, (पु०) विष्णु भगवान् की एक
प्रकार की मूर्ति जो गंडकी नदी में पाई जाती है ।
—निर्यासः, (पु०) शालवृक्ष का गोंद ।—
भञ्जिका, (स्त्री०) गुड़िया । पुतली । पुतला ।
२ रंढी । वेश्या ।—भञ्जी, (स्त्री०) गुड़िया ।
पुतली ।—वेष्टः, (पु०) शालवृक्ष का गोंद ।—
सारः, (पु०) १ उत्कृष्टतर वृक्ष । २ हींग ।

शालवः (पु०) लोध्र वृक्ष ।

शाला (स्त्री०) १ कमरा । कोठा । बड़ा कमरा । २
घर । मकान । ३ वृक्ष की ऊपर की डाली । ४
वृक्ष का तना या धड़ ।—मृगः, (पु०) सियार ।
शृगाल ।—वृकः, (पु०) १ भेड़िया । २ कुत्ता ।
३ हिरन । ४ बिल्ली । ५ शृगाल । गीदड़ ।
६ बंदर ।

शालाकः (पु०) पाणिनि का नाम ।

शालाकिन् (पु०) १ भालाधारी । २ जराह ।
हज्जाम । नापित । नाई ।

शालातुरीयः (पु०) पाणिनि का नाम । [“शालातुर”
पाणिनि के जन्मस्थान का नाम है]

शालारं (न०) १ जीना । सीढ़ियाँ । २ पक्षी का
पिण्डा ।

शालिः (पु०) १ चूँचल । २ ऊदबिलाव ।—ओदनः,
(पु०) —ओदनं, (न०) भात ।—गोपी,
(स्त्री०) वह स्त्री जो धान के खेत की
रखवाली के लिये नियुक्त की गयी हो ।—
पिष्टं, (न०) बिलतौर पथर । स्फटिक ।—
वाहनः, (पु०) शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा ।

इसका सवासर भी चलता है और ईसा के जन्म के ७८ वर्ष पीछे से इसके वर्ष की गणना आरम्भ होती है।—होत्रः, (पु०) १ एक प्रसिद्ध ग्रन्थकार का नाम जिसने अश्वचिकित्सा पर एक प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा। २ घोड़ा।—होत्रिन्, (पु०) घोड़ा।

शालिकः (पु०) १ कोरी। जुलाहा। २ कर। महमूल।
शालिन् (वि०) [शां०—शालिनी] १ सम्पन्न। २ चमकदार। ३ बरलू।

शालिनो (स्त्री०) १ गृहिणी। गृहस्वामिनी। २ ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त। ३ भसीड़ा। पद्मकन्द। ४ मैथी।

शालीन (वि०) १ विनीत। नम्र। २ सलज्ज। ३ सदृश। समान। तुल्य।

शालीनः (पु०) गृहस्थ।

शालू (न०) भसीड़ा। पद्मकन्द।

शालूः (पु०) १ मेड़क। २ गन्ध द्रव्य विशेष।

शालूकं } (न०) पद्मकन्द। भसीड़ा। २ जायफल।
शालूकं } जातीफल।

शालूकः } (पु०) मेड़क। मंड़क।
शालूकः }

शालूरः } (पु०) मेड़क। मंड़क।
शालूरः }

शालेर्यं (न०) घान का खेत।

शालोत्तरीयः (पु०) पाणिनि का नामान्तर।

शाल्मलः (पु०) १ सेंमर का पेड़। २ भूमण्डल के सप्त विभागों में से एक। एक द्वीप का नाम।

शाल्मलिः (पु०) १ सेंमर का पेड़। २ भूमण्डल के सप्त बृहद् भूखण्डों में से एक। ३ नरक विशेष।
—स्थः, (पु०) गरुड़ जी।

शाल्मली (स्त्री०) १ सेंमर का वृक्ष। २ पाताल की एक नदी का नाम। ३ नरक विशेष।—वेष्टः, वेष्टकः, (पु०) सेंमर का गोंद।

शाल्वः (पु०) १ एक देश का नाम। २ शाल्व देश का राजा।

शाव (वि०) [स्त्री०—शावी] १ शव सम्बन्धी।
मुर्दा सम्बन्धी। २ भूरा रंग।

शावः (पु०) बच्चा। विशेष कर पशुओं का।

शावकः (पु०) किसी भी पशु का बच्चा।

शाश्वत (वि०) [स्त्री०—शाश्वती] जो सदा स्थायी रहे। नित्य।

शाश्वती (वि०) पृथिवी। धरा।

शाष्कुल (वि०) [स्त्री०—शाष्कुली] मौसमही।
मौसमहारी। मोक्षप्रद।

शाष्कुलिकं (न०) पृथिवी।

शास् (धा० प०) (शास्ति, शिष्ट) १ शिक्षा देना।
२ शासन करना। ३ आज्ञा देना। निर्देश करना।
४ कहना। सूचना देना। ५ सलाह देना। ६ डिक्री करना। ७ दण्ड देना। ८ वशवर्ती करना।
पालतू बनाना।

शासनं (न०) १ आज्ञा। आदेश। हुक्म। २ वशवर्ती करना। अधिकारयुक्त करना। ३ लिखित प्रतिज्ञा। पट्टा। दीप। ४ शास्त्र। ५ राजा की दान की हुई भूमि। ६ वह परवाना या क्रूरमान जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया गया हो। ७ इन्द्रिय निग्रह।—पत्रं, (न०) वह ताम्रपत्र या शिखा, जिस पर कोई राजाज्ञा खोदी गयी हो।—हुरः, (पु०) राजदूत।—हारिन्, (पु०) पलची। राजदूत।

शासित (व० कृ०) १ शासन किया हुआ। २ दयिष्ठ।

शासितृ (पु०) १ शासनकर्ता। २ दयिष्ठदाता।

शास्त्र (पु०) १ शिक्षक। २ शासनकर्ता। राजा। महाराज। ३ पिता। ४ बौद्ध या जैन। बौद्धों या जैनों का गुरु।

शास्त्रं (न०) १ आज्ञा। आदेश। नियम। २ धर्माज्ञा। धर्मशास्त्र की आज्ञा। ३ धर्मग्रन्थ। ४ किसी विशिष्ट विषय का वह समस्त ज्ञान जो ठीक क्रम से संग्रह करके रखा गया हो। ५ पुस्तक।—अतिक्रमः, (पु०) शास्त्र की आज्ञा का उल्लङ्घन।—अनुष्ठानं (न०)

शास्त्रीय आज्ञा का पालन ।—अभिज्ञ, (वि०)
शास्त्र जानने वाला ।—अर्थः, (पु०) १ शास्त्र
का अर्थ । २ धर्मशास्त्र की आज्ञा ।—आचरण
(न०) शास्त्रीय आज्ञाओं का पालन ।—उक्त,
(वि०) शास्त्रकथित । शास्त्रीय । शास्त्रानु-
सोदित ।—कारः,—कृतः, (पु०) धर्मशास्त्र
का बनाने वाला ।—कादि, (वि०) शास्त्र-
निष्णात । शास्त्रों को भली भाँति जानने वाला ।
—गण्डः (न०) परलवप्राप्ती परिणत ।
परिणतमन्य ।—चक्षुस्, (न०) शास्त्र का नेत्र
अर्थात् व्याकरण ।—दर्शिनः, (वि०) शास्त्र-
कथित ।—दृष्टिः, (स्त्री०) शास्त्र का मत ।
शास्त्र की निगाह से ।—योनिः, (पु०) शास्त्रों
का उद्गमस्थल ।—विधानं,—विधिः,
शास्त्र की आज्ञा ।—विप्रतिषेधः,—विरोधः,
(पु०) धर्मशास्त्र की आज्ञाओं में परस्पर विरोध ।
२ कोई कार्य जो धर्मशास्त्र के विरुद्ध हो ।—
विमुख, (वि०) धर्मशास्त्र के अध्ययन से पराङ-
मुख ।—विरुद्ध, (वि०) धर्मशास्त्र की आज्ञाओं
के विरुद्ध या बरखिलाफ़ ।—व्युत्पत्तिः, (स्त्री०)
शास्त्रज्ञ । शास्त्रों में पूर्ण ज्ञान रखने वाला ।—
शिदिपन्, (पु०) काश्मीर देश ।—सिद्ध,
(वि०) धर्मशास्त्र के मतानुसार । धर्मशास्त्र-
प्रतिपादित ।

खिन् (वि०) [स्त्री०—शास्त्रिणी] शास्त्री ।
शास्त्र का जानने वाला ।

रीय (वि०) १ शास्त्र सम्बन्धी । शास्त्र का । २
वैज्ञानिक । विज्ञान सम्बन्धी ।

य्य (वि०) १ शासन करने के योग्य । २ सिखलाने
या समझाने योग्य । ३ दण्डनीय । [सजा देने
योग्य]

(धा० ड०) [शिनेति, शिनुते] १ पैना करना ।
धार रखना । २ पतला करना । ३ भड़काना ।
उत्तेजित करना । ४ ध्यान देना । ५ तेज होना ।
(पु०) १ शुभत्व । सौभाग्य शीलत्व । २ स्वस्थता ।
शान्ति । ३ शिव जी ।

गपा (स्त्री०) १ शीशम का पेड़ । २ अशोक वृक्ष ।
(वि०) सुप्त । काहिल । अकर्मस्थ ।

शिक्ष्यं (न०) मौम ।

शिक्ष्यं (न०) } १ सींका । सिकहर । २ बँहगी
शिक्ष्या (स्त्री०) } के दोनों ओर बँधा हुआ स्त्री
का जाल, जिस पर बोक रखते हैं । ३ तराजू की
डोरी ।

शिक्षित (वि०) १ सींके में लटकाया हुआ । २
बँहगी में रखा हुआ ।

शिच् (धा० आ०) [शिक्षते, शिक्षित] पढ़ना ।
सीखना । ज्ञान की प्राप्ति ।

शिक्षकः (पु०) [स्त्री०—शिक्षिका शिक्षिका] १
सिखलाने वाला । २ उस्ताद ।

शिक्षणं (न०) शिक्षा । तालीम । पढ़ाने का काम ।

शिक्षा (स्त्री०) १ किसी विद्या को सीखने या सिखाने
की क्रिया । तालीम । २ गुरु के निकट विद्याभ्यास ।
विद्या का ग्रहण । ३ दक्षता । निपुणता । ४ उप-
देश । मंत्र । सलाह । ५ छः वेदाङ्गों में से एक-
जिसमें वेदों के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का
निरूपण रहता है । ६ विनय । विनम्रता ।—
करः, (पु०) १ अध्यापक । शिक्षक । २ वेदव्यास ।
—नरः, (पु०) इन्द्र ।—शक्तिः, (स्त्री०)
निपुणता ।

शिक्षित (ध० क०) १ पढ़ा लिखा । अधीत । २
सिखाया हुआ । पढ़ाया हुआ । ३ नियंत्रित । ४
पालतू । ५ निपुण । चतुर । ६ विनम्र । लज्जालु ।
—अक्षरः, (पु०) शिष्य । शार्गिर्द —आयुध,
(वि०) हथियार चलाने में निपुण ।

शिक्षमाणः (पु०) शार्गिर्द । शिष्य ।

शिखंडः } (पु०) १ चोटी । शिखा । २ काकपक्ष ।
शिखण्डः } काकुल । ३ मयूरपुच्छ ।

शिखंडकः } (पु०) १ चूड़ाकरण संस्कार के
शिखण्डकः } समय सिर पर रखी गयी चोटी या
चुटिया । २ काकपक्ष । काकुल । ३ मयूरपुच्छ ।
कलंगी ।

शिखंडिकः } (पु०) मुर्गा ।
शिखण्डिकः }

शिखंडिका } (स्त्री०) १ शिखा । चोटी । २
शिखण्डिका } काकपक्ष । काकुल । ३ मयूरपुच्छ ।

शिखंडिन् (वि०) } शिखावाला । कल्लंगादार ।
शिखण्डिन् (वि०) }

शिखंडिन् (पु०) १ मयूर । मोर । २ सुर्गा । ३
शिखण्डिन् } तीर । ४ मयूरपुच्छ । ५ पीली जुही ।

६ विष्णु का नामान्तर । ७ द्रुपदराज के एक पुत्र
का नाम ।

शिखंडिनी (स्त्री०) १ मयूरी । २ पीली जुही ।
शिखण्डिनी } ३ राजा द्रुपद की एक कन्या का नाम ।

शिखर (न०) १ चोटी या सबसे ऊँचा भाग ।
शिखर (पु०) १ पर्वत का शृङ्ग । २ वृक्ष की
फुनगी । ३ चुटिया । शिखा । ४ तलवार की धार
या बाड़ । ५ बगल । ६ रोमाञ्च । ७ कुन्द की
कली । ८ चुन्नी की तरह का एक रत्न । सिरा ।
अग्रभाग ।—वासिनी, (स्त्री०) दुर्गा देवी
का नाम ।

शिखरिणी (स्त्री०) १ उत्तम स्त्री । २ शिखरन ।
सिखिख । ३ रोमाञ्चली । ४ सत्रह अक्षरों का
एक वर्ष वृत्त जिसके छठे और ग्यारहवें वर्ण पर
यति हो ।

शिखरिन् (वि०) १ चोटीवाला । शिखावाला । २
नुकीला । शृङ्गवाला । (पु०) १ पहाड़ । २
पर्वतदुर्ग । ३ वृक्ष । ४ शिखरी नामक पत्नी ।
५ अपामार्ग । अज्जाकार ।

शिखा (स्त्री०) १ (सिर पर) चोटी । चुटिया ।
२ कल्लंगी । ३ बेणी । केशों या परों का झुच्छा ।
४ धार । बाड़ । ५ वृक्ष की किनार । दामन या
गोट या अंचल । ६ अँगारा । ७ शिखर । शृङ्ग ।
८ लौ । किरन । ९ मोर की कल्लंगी । १० कलियारी
विष । लांगली । ११ मूर्वा । मरोदफली । १२
जटासासी । बालझड़ । १३ वच । १४ शिफा ।
१५ तुलसी । १६ ढाली । दहनी । शाख । १७
मुख्य । प्रधान । १८ कामज्वर ।—तरुः, (पु०)
दीपवृक्ष । दीवट । दीयट । पत्तीबसोत ।—
धरः, (पु०) मयूर । मोर ।—मणिः, (पु०)
वह मणि जो सिर पर पहना जाय ।—मूलं,
(न०) १ वह कंद जिसके ऊपर पत्तियों का गुच्छा
हो । गाजर । गोभी । २ शलजम् ।—वरः,

(पु०) कदहल का पेड़ ।—वलः, (पु०)
मयूर । वृक्षः, (पु०) दीयट । दीवट ।—
वृद्धिः, (स्त्री०) १ सूत्र-दर-सूत्र । वह व्याज जो
प्रति दिन बदे

शिखालुः (पु०) मयूर की कल्लंगी ।

शिखावन् (वि०) १ चोटीदार । २ लौं दार । (पु०)
१ दीपक । २ अग्नि ।

शिखिन् (वि०) १ नौकर । २ चोटीदार । शिवा-
वाला । २ अभिमानी । (पु०) १ मयूर । मोर ।
१ अग्नि । ३ सुर्गा । ४ तीर । ५ वृक्ष । ६
दीपक । ७ साँड़ । ८ बोंड़ा । ९ पहाड़ । पर्वत ।
१० ब्राह्मण । ११ संन्यासी साधु । १२
केतु उपग्रह । १३ तीन की संख्या । १४ चित्रक
का वृक्ष ।—कसटं, —ग्रोवं, (न०) कृतिया ।—
ध्वजः, (पु०) १ कार्तिकेय । २ धूम । धुआँ ।
—विच्छ्रं, —पुच्छ्रं, (न०) मयूर की पूँछ ।
—यूषः, (पु०) बारहसिंगा ।—वर्धनः,
(पु०) कुम्हड़ा । तरवृक्ष ।—वाहनः, (पु०)
कार्तिकेय ।—शिखा, (स्त्री०) १ अँगारा ।
शोला । २ मयूर की कल्लंगी या शिखा ।

शिभ्रुः (पु०) १ सहिजन का पेड़ । शोभाजन । २
शाक । साग ।

शिख् (धा० प०) [शिखति] चलना ।

शिघ् (धा० प०) सँघना ।

शिघ्राक्षं (न०) १ नाक से निकलने वाला मैल ।

शिघ्राणः (पु०) १ फेला । फेन । २ कफ । रहट ।
२ लोहे का मैल । ३ काँच का बरतन ।

शिघ्राणकं (न०) }
शिङ्घ्राणकं (न०) } नाक का मैल । रहट । (पु०)
शिघ्राणकः (पु०) } कफ । श्लेष्मा ।
शिङ्घ्राणकः (पु०) }

शिज् (धा० आ०) [शिजते, —शिक, —शिजयति
शिज्] —गिजयते, —शिजित] बजना । खड-
खड़ाना । हनकुनाना । (विशेषतः आभूषणों का)

शिजः पु०) भूषण का शब्द ।

शिजंजिका } (स्त्री०) कमर में बाँधने की जंजीर ।
शिखजिका }

शिजा } (स्त्री०) १ रुनकुन । २ कमान की डोरी ।
शिञ्जा } रोड़ा । कमान का चिल्ला ।

शिजित } (व० कृ०) रुनकुन का शब्द करते हुए ।
शिञ्जित } खनखनाते हुए ।

शिजितं } (न०) आभूषण, विशेष कर पायजेब या
शिञ्जितं } विड़ियों का शब्द ।

शिजिनी } (स्त्री०) १ धनुष का रोड़ा । कमान का
शिञ्जिनी } चिल्ला । २ पायजेब । पैर का आभूषण
विशेष ।

शिष्ट (धा० प०) [शेटलि] तुच्छ समझना ।
तिरस्कार करना । अपमान करना ।

शित (व० कृ०) १ पैनाया हुआ । धान रखा हुआ ।
२ पतला । लटा हुआ । ३ जीर्ण । ४ निर्बल ।
कमजोर । —अग्रः, (पु०) काँटा । —धार,
(वि०) पैनी धार वाला । —शूकः, (पु०) १
जौ । २ गेहूँ ।

शितद्रुः, (स्त्री०) सतलज नदी ।

शिति (वि०) १ सफेद । २ काला ।

शितिः (पु०) भोजपत्र का वृक्ष । —कण्ठः, (पु०)
१ शिव जी का नामान्तर । २ मयूर । ३ बटेर
जाति का एक पक्षी विशेष । —कृदः, —पक्षः,
(पु०) हंस । —रत्नं, (न०) नीलमणि ।
नीलम । —दासस, (पु०) श्रीरामचन्द्र ।

शिथिल (वि०) १ ढीला । २ जो बँधा न हो । अन-
बँधा हुआ । ३ (वृक्ष से) गिरा हुआ । अलहदा
हुआ । वृक्ष के तने से पृथक् हुआ । ४ निर्बल ।
कमजोर । ५ नरम । कोमल । ६ घुला हुआ । ७
सड़ा हुआ । ८ व्यर्थ । अकिञ्चित्कर । विफल ।
१० असाधन । ११ भली प्रकार न किया हुआ ।
१२ त्यक्त । त्यागा हुआ ।

शिथिलं (न०) १ ढीलापन । २ सुस्ती ।

शिथिलयति (क्रि०) १ ढीला करना । २ त्याग
देना । त्यागना । ३ कम करना ।

शिथिलित (वि०) १ ढीला । २ ढीला किया हुआ ।
३ घुला हुआ ।

शिनिः (पु०) १ यादवों के पञ्च का एक योधा । २
सात्यकि का नाम ।

शिपिः (पु०) किरन । (स्त्री०) चर्म । चमड़ा ।
(न०) जल । —विष्ट, (वि०) १ किरन से
व्याप्त । २ गंजा । ३ कोढ़ी । —विष्टः, (पु०)
१ विष्णु । २ शिव । ३ साहसी आदमी । ४ वह
मनुष्य जिसकी सुपाड़ी पर चमड़ा न हो । ५
कोढ़ी ।

शिप्रः (पु०) हिमालय पर्वत की एक भील का नाम ।

शिप्रा (स्त्री०) शिप्र भील से निकालने वाली एक
नदी जिसके तट पर उज्जयनी नगरी है ।

शिफा (स्त्री०) १ भसीड़ा । पञ्चकंद । २ जड़ । ३
एक वृक्ष की रेशादार जड़ जिससे प्राचीन
काल में कोड़े बनाये जाते थे । ४ कशाघात ।
कोड़े की मार । ५ माता । ६ नदी । —धरः,
(पु०) डाली । शाखा । —रुहः, (पु०) वट वृक्ष ।
वरगद का पेड़ ।

शिफाकः (पु०) भसीड़ा ।

शिविः } १ शिकारी जानवर । २ भोजपत्र का पेड़ ।

शिविः } ३ एक देश का नाम । ४ राजा उशीनर के
पुत्र तथा ययाति के दौहित्र एक राजा का नाम ।

शिविका } (स्त्री०) १ पालकी । डोली । २ टिकटी ।

शिविरं } १ डेरा । खेमा । निवेश । २ शाही खेमा ।
शिविरं } राजकीय निवेश । ३ पड़ाव । छावनी । सेना
की रक्षा के लिये छाँई । ४ धान्य विशेष ।

शिविरथः } (पु०) पालकी । पीनस । म्याना ।

शिषा } (स्त्री०) छीमी । सेंम । फली ।

शिविका } (स्त्री०) १ छीमी । सेंम । फली । २
शिविका } पौधा विशेष ।

शिरं (न०) सीस । २ पिप्परीमूल । पिपरामूल ।

शिरः (पु०) १ शय्या । २ एक बड़ा सर्प । —जं,
(न०) केश । बाल ।

शिरस् (न०) १ सिर । सीस । २ खोपड़ी । ३ चोटी ।
शिखा । ४ वृक्ष की फुनगी । ५ किसी भी वस्तु
का अग्रभाग । ६ सर्वोच्चस्थान । ७ मुख्य ।

प्रधान ।—अस्थि, (=शिरास्थि) (न०) खोपड़ी ।
 —कपालिन्, (पु०) कपालिक । अपोर पंथी ।
 —ग्रहः, (पु०) सिर का दर्द—नापिन्, (पु०)
 हाथी ।—ग्रं, —त्रागां, (न०) १ युद्ध के समय
 सिर के बचाव के लिये पहनी जाने वाली लोहे
 की टोपी । कुँड़ । खोद । २ पगड़ी । साफा ।
 टोपी ।—अरा, (स्त्री०) —धिः, (पु०)
 गरदन ।—पीडा, (स्त्री०) सिर का दर्द ।
 —फजः, (पु०) नासिक का वृक्ष ।—भूषणां,
 (न०) गहना जो सिर पर पहना जाय ।
 —मणिः, (पु०) १ रत्न जो सिर पर आरण
 किया जाय । २ प्रतिष्ठा सूचक उपाधि जो विद्वानों
 को दी जाती है ।—मर्मन्, (पु०) शूकर ।
 बराह ।—मालिन्, (पु०) शिव जी का नाम ।
 —रत्नं, (न०) शिरोमणि ।—रुजा, (स्त्री०)
 सिर की पीडा ।—रुहः, (पु०)—रुहः, (पु०)
 —(शिरसिरुह) सिर के केश ।—वर्तिन्, (पु०)
 प्रधान । अध्यक्ष ।—वृत्तं, (न०) काली मिर्च ।
 —वेष्टः, (पु०)—वेष्टनं, (न०) पगड़ी । साफा ।
 —हारिन्, (पु०) शिव जी ।

शिरसिजः (पु०) सिर के बाल ।

शिरस्कं (न०) १ कुँड़ । खोद । शिरस्त्राण ।
 २ पगड़ी । साफा । टोपी ।

शिरस्का (स्त्री०) पालकी ।

शिरस्तस् (अव्यया०) सिर से ।

शिरस्य (वि०) सिर सम्बन्धी ।

शिरस्यः (पु०) साफ बाल ।

शिरा (स्त्री०) रक्त की छोटी नाड़ी । खून की छोटी
 नली । नस । रगें ।—पत्रः, (पु०) कैय ।—वृत्तं,
 (न०) सीसा । जस्ता ।

शिराल (वि०) नसों या नाड़ियों वाला ।

शिरिः (पु०) १ तलवार । २ मार डालने वाला ।
 हत्यारा । ३ तीर । ४ टीढ़ी ।

शिरोधं (न०) सिरस का फूल ।

शिरोधः (पु०) सिरस का पेड़ ।

शिल (भा०) [शिलति] लुनने के पीछे जो दाने
 खेत में पड़े रहते हैं, उन्हें बीनना ।

शिलं (न०) १ अनाज की चालों को चीनने की
 शिलः (पु०) किया ।—उंडः, (पु०) १ कणज
 कट जाने पर खेत में गिरे दाने चुनने की किया ।
 २ अनिश्चित वृत्ति । आकाशवृत्ति ।

शिला (स्त्री०) १ पत्थर । चट्टान । २ चक्री ।
 ३ चौखट के नीचे की लकड़ी । ४ खेमे का अग्र-
 भाग । ५ शिरा । नाड़ी । ६ मैनसिल । ७ कपूर ।

—अष्टकः, (पु०) सुराल । रन्ध्र । २ हाता ।
 घरा । ३ अट्टिया । अटा ।—आत्मजं, (न०)
 लोहा ।—अश्लिका, (स्त्री०) सेना या चौड़ी
 शलाने की गरिया ।—आरम्भा, (स्त्री०) केली
 का वृक्ष । आसनं, (न०) १ पैठने के लिये

पत्थर की मिलनी । २ शैलेय नामक गन्धद्रव्य ।
 ३ शिलाजीत ।—आहं, (न०) शिलाजीत ।
 —उच्चयः, (पु०) पहाड़ । पर्वत । बड़ी चट्टान ।

—अर्थः, (न०) १ छुरीला या शैलेय नामक
 गन्ध द्रव्य । २ शिलाजीत ।—उद्धवं, (न०)
 १ शैलेय । छुरीला । २ पीला चन्दन ।—ओकस्,

(पु०) गरुड़ जी, —कुट्टकः, (पु०) संगतराश की
 बैनी ।—कुसुमं, —पुष्पं, (न०) शिलाजीत ।
 —ज, (वि०) खनिज ।—जं, (न०)

१ छुरीला । पत्थर का फूल । २ लोहा । ३ शिला-
 जीत ।—जतु, (न०) १ शिलाजीत । २ गेरु ।
 —जित्,—दद्रुः, (पु०) शिलाजीत ।—धातुः,

(पु०) १ खरिया मिट्टी । २ गेरु । ३ खनिज
 पदार्थ ।—पट्टः, (पु०) पत्थर की शिला की
 बैठकी ।—पुत्रः,—पुत्रकः, (न०) मसाले

पीसने की सिल ।—प्रतिकृतिः, (स्त्री०) पत्थर
 की मूर्ति ।—फलकः, (न०) पत्थर का टुकड़ा ।
 —भवं, (न०) १ शिलाजीत । २ छुरीला ।

—बल्कलं, (न०)—बलका, (स्त्री०) एक प्रकार की
 ओपधि जिसे शिलजा और श्वेता भी कहते हैं ।
 —वृष्टिः, (स्त्री०) ओलों की वर्षा । पत्थरों

की वर्षा ।—वैश्मन् (न०) कंदरा । गुफा ।
 —व्याधिः (पु०) शिलाजीत ।

शिलिः (पु०) भोजपत्र का पेड़ । (स्त्री०) चौखट
 के नीचे की लकड़ी ।

शिलिदः } (पु०) मक्खली विशेष ।
 शिलिन्दः }

शिली (स्त्री०) १ दरवाजे के नीचे की लकड़ी ।
२ केंबुआ । गंडूपट्टी । ३ भाला । ४ बाण ।
५ मेढकी ।—मुखः, (पु०) १ मधुमक्षिका ।
२ तीर । ३ मूल । बेवकूफ ।

शिलीध्रं } (न०) १ कुङ्कुमुत्ता । सुदृक्ता ।
शिलीन्ध्रं } २ केले का फूल । ३ ओला ।

शिलीध्रः } (पु०) १ सत्यविशेष । शिलिद नामक
शिलीन्ध्रः } मछली । २ कठकेला ।

शिलीध्रकं } (न०) १ कुङ्कुमुत्ता । सुदृक्ता ।
शिलीन्ध्रकं } २ केले का फूल । ३ ओला ।

शिलीध्री } (स्त्री०) १ मिट्टी । २ केंबुआ ।
शिलीन्ध्री } निजियायी ।

शिल्पं (न०) १ दस्तकारी । कारीगरी । हुनर ।
२ धुवा ।—कर्मन्, (न०)—क्रिया (स्त्री०)
दस्तकारी । हाथ की कारीगरी ।—कारः,
—कारकः,—कारिन्, (पु०) दस्तकार । कारी-
गर ।—शालं, (न०)—शालः, (पु०) कार-
खाना ।—शास्त्रं, (न०) १ वह शास्त्र जो
दस्तकारी की शिक्षा दे । २ यंत्र विद्या ।

शिल्पिन् (वि०) १ यंत्र निर्माण-कला-विज्ञान
सम्बन्धी । २ यंत्रसम्बन्धी (पु०) १ शिल्पी ।
कारीगर । यंत्र कलाविद् । २ किसी भी दस्तकारी
के काम में निपुण ।

शिव (वि०) १ शुभ । कल्याणकारी । २ अच्छे स्वास्थ्य
वाला ।—आत्मकं, (न०) संधा निमक ।—आदे-
शकः, (पु०) १ शुभ संवाद देने वाला ।
२ ज्योतिषी ।—आलयः, (पु०) शिव जी
का मन्दिर । २ लाख तुलसी ।—आलयं,
(न०) शिव जी का मन्दिर । २ रमशान ।
—इतर, (वि०) अशुभ । अमङ्गलकारी ।
कर, (= शिवंकर,) (वि०) शुभकारी ।
आनन्ददायी ।—कीर्तनः, (पु०) भक्ती का
नाम ।—गति, (वि०) समृद्ध । हर्षित ।—
धर्मजः, (पु०) मङ्गलप्रद ।—ताति, (वि०)
शुभकारी । कल्याणकारी । कोमल ।—तातिः,
(पु०) शुभत्व । मङ्गलत्व । आनन्द ।—दत्तं,
(न०) विष्णु भगवान का चक्र ।—दारु, (न०)

देवदारु का पेड़ ।—द्रुमः, (पु०) विश्व वृक्ष ।—
द्विष्टा, (स्त्री०) केतक वृक्ष ।—धातुः, (पु०) पारा ।
—पुरं, (न०)—पुरी (स्त्री०) बनारस । काशी ।
—पुराणं, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक ।
—प्रियः, (पु०) १ स्फटिक । २ अगस्त । वक-
वृक्ष । ३ धतूरा । ४ रुद्राक्ष ।—वल्लभः, (पु०)
अर्जुन वृक्ष ।—राजधानी, (स्त्री०) बनारस ।
काशी ।—रात्रिः, (स्त्री०) माघ कृष्ण १४शी ।
—लिङ्गं, (न०) महादेव की पिंडी ।—लोकः,
(पु०) शिव जी का लोक या कैलास ।—
वल्लभः, (पु०) आम का पेड़ ।—वल्लभा, (स्त्री०)
पार्वती ।—वाहनः, (पु०) बैल ।—धीजं,
(न०) पारा ।—शेखरः, (पु०) १ चन्द्रमा ।
२ धतूरा ।—सुन्दरी, (स्त्री०) दुर्गा ।

शिवं (न०) १ समृद्धि । कुशल । कल्याण । आनन्द ।
२ मोक्ष । ३ जल । ४ समुद्री निमक । ५ संधा
निमक । ६ शुद्ध सोहागा ।

शिवः (पु०) १ महादेव । २ लिङ्ग । जननेन्द्रिय ।
३ शुभ भोग विशेष । ४ वेद । ५ मोक्ष । ६ खूँटा ।
७ देवता । ८ पारा । ९ शिलाजीत । १० काला
धतूरा ।

शिवकः (पु०) १ गौ आदि धाँधने का खूँटा । २
पशुओं के छुजाने के लिये बनाया हुआ खंसा ।

शिवा (स्त्री०) १ पार्वती । २ गौदड़ी । शृगाली ।
सियारिन । ३ मोक्ष । ४ शमी वृक्ष । ५ इल्ली ।
६ दूर्वा । ७ गौरोचन ।—अरातिः, (पु०)
कुत्ता ।—प्रियः, (पु०) बकरा ।—फला, (स्त्री०)
शमी वृक्ष ।—रुतं, (न०) गौदक का हूहा ।

शिवानी (स्त्री०) पार्वती । शिवपत्नी ।

शिवालुः (पु०) गौदक । सियार ।

शिवौ (वि०) शिव और पार्वती ।

शिशिर (वि०) ठंडा । शीतल ।—अंशुः,—किरणः,
—दीधितिः,—रश्मिः, (पु०) चन्द्रमा ।
—अत्ययः, (पु०)—अपगमः, (पु०) जाड़े का
अन्त ।—कालः,—समयः, (पु०) जाड़े का
मौसम ।—घ्नः (पु०) अग्नि ।

शिजिर (न०) } १ ओस कोहरा । कोहासा । २
शिजिरः (पु०) } जाड़े का मौसम । (माघ और
फागुन) ३ ठंडक । शीतलता ।

शिशुः (पु०) १ बच्चा । बालक । २ किसी जानवर का
बच्चा । ३ बालक जो ८ और १६ वर्ष की अवस्था
के बीच हो ।—क्रन्दः (पु०)—क्रन्दनं, (न०)
बच्चे का रुदन ।—गन्धाः, (स्त्री०) मल्लिका ।
मोतिश ।—पालः, (पु०) चेदि देश का एक राजा,
जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ।—मारः, (पु०) सूँस
नामक जलजन्तु ।—वाहकः—वाह्यकः, (पु०)
जंगली बकरा ।

शिशुकः (पु०) १ बच्चा । २ किसी जानवर का बच्चा ।
३ वृक्ष । ४ सूँस ।

शिशुनं } (न०) लिंग । जननेन्द्रिय ।
शिशुनं }

शिशिवदान (वि०) १ सदाचारी । पुण्यात्मा ।
धर्मात्मा । २ दुष्टात्मा । पापी । पापात्मा ।

शिष् (धा० प०) [शेषति] बायल करना । मार
हाजना ।

शिष्ट (व० कृ०) १ बचा हुआ । बचा खुचा । २
आज्ञा दिया हुआ । आदेश किया हुआ । ३
सिखाया हुआ । शिक्षित । नियमाधीन किया हुआ ।
४ शालीन । आज्ञाकारी । ५ बुद्धिमान । विद्वान् ।
६ पुण्यात्मा । प्रतिष्ठित । ७ शान्त । धीर । ८
मुख्य । प्रधान । उत्कृष्टतर । उत्तम । प्रसिद्ध ।
प्रख्यात । ९ वेद के वचनों पर विश्वास रखने वाला ।
अच्छी समझ वाला । १० अच्छे स्वभाव और
आचरण वाला । आचार व्यवहार में निपुण ।
सुशील । ११ सभ्य । सज्जन । भला आदमी ।
—आचारः, (पु०) बुद्धिमानों का आचरण । २
अच्छा स्वभाव । अच्छा आचरण ।—सभा, (स्त्री०)
राजसभा । राज्यपरिषद् ।

शिष्टः (पु०) १ प्रसिद्ध या प्रख्यात पुरुष । २ बुद्धिमान
जन । ३ मंत्री । वज़ीर । मशवरा देने वाला ।

शिष्टिः (स्त्री०) १ अनुशासन । शासन । २ आदेश ।
आज्ञा । ३ दण्ड । सज़ा ।

शिष्यः (पु०) १ अन्तेवासी । विद्यार्थी । शार्गिर्द । २

कोष । रोष ।—परम्परा, (स्त्री०) शिष्यानुक्रम ।
—शिष्टिः, (स्त्री०) शिष्य का सुधार ।

शिक्षः } (पु०) शिजारस नामक गन्धद्रव्य ।
शिक्षकः }

शी (धा० आ०) [शीते, शीयति] १ छेदना ।
पड़ना । आराम करना । विश्राम करना । २ सेना ।

शी (स्त्री०) १ निद्रा । आराम । शान्ति ।

शीक (धा० आ०) [शीकते] १ जड़ से तर करना ।
(पानी) छिड़कना । २ धीरे धीरे गमन करना ।
(उ०—शीकति, शीकयति—शीकयते) ३
क्रोध करना । २ नम करना । तर करना ।

शीकरः (पु०) १ जलकण । पानी की बूँद । २ वायु
द्वारा उत्पन्न जल बिन्दु । वर्षा की फुहार । तुषार ।
ओस । शबनम ।

शीकरं (न०) १ सरल वृक्ष । २ गंधाविरोजा ।

शीघ्र (वि०) १ अचिरम्ब । चटपट । तुरन्त । जल्द ।
२ वह अन्तर जो पृथिवी के दो निम्न भिन्न स्थानों
से यहाँ के देखने में होता है ।—कारिन्, (वि०)
फुर्तीला । जल्दी करने वाला ।—कोपिन्, (वि०)
जल्दी गुस्सा होने वाला । चिड़चिड़ा ।—चेतनः,
(पु०) कुत्ता ।—बुद्धिः (वि०) तीव्रबुद्धि
वाला ।—लघन (वि०) तेज़ जाने वाला । तेज़
चलने वाला ।—वेधिन्, (पु०) अच्छा निशाने
वाला । अच्छा बाणवेधी ।

शीघ्रं (अव्यया०) जल्दी से । फुर्ती से ।

शीघ्रिन् (वि०) फुर्तीला । तेज़ ।

शीघ्रिय (वि०) तेज़ ।

शीघ्रियः (पु०) १ विष्णु । २ शिव । ३ बिज्रियों की
लड़ाई ।

शीघ्रियं (न०) तेज़ी । फुर्ती ।

शीत् (अव्यया०) १ सहसा आनन्दोद्रेक या भयो-
द्रेक व्यञ्जक अव्यय विशेष । मैथुन के समय की
सिसकारी ।—कारः—कृत्, (पु०) सिसकारी ।

शीत (वि०) १ ठंडा । सर्द । शीतल । २ सुस्त ।
काहिल । मदा ओढ़ने वाला । ३ मूर्ख । कुन्दजहन ।

मन्दबुद्धि।—अंशुः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर।—अर्द्धः, (पु०) हाँथों के मसूहों का एक रोग।—अर्द्धिः, (पु०) हिमालय पहाड़।—अश्मन्, (पु०) चन्द्रकान्त मणि।—आर्तः, (वि०) शांत से पीड़ित। थरथराता हुआ।—उत्तमं, (न०) जल।—कालः, (पु०) शीत ऋतु। जाड़े का मौसम।—कुच्छुः, (पु०)—कुच्छुः, (न०) मिताक्षरा के अनुसार एक प्रकार का व्रत जिसमें तीन दिन तक ठंडा जल, तीन दिन तक ठंडा वृष और ३ दिन तक ठंडा बी पीकर और ३ दिन तक बिना कुछ खाए रहना पड़ता है।—गन्धः, (न०) सफेद चन्दन।—गुः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर।—चम्पकः, (पु०) दीपक। २ आईना। दर्पण।—दीधितिः, (पु०) चन्द्रमा।—पुष्पः, (पु०) सिरिस वृक्ष।—पुष्पकः, (न०) शैलेय। छरीबा।—प्रभः, (पु०) कपूर।—भानुः, (पु०) चन्द्रमा।—भीरुः, मल्लिका। मोतिया।—मधुखः,—मरीचिः,—रश्मिः, (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर।—रम्यः, (पु०) दीपक।—रुचः, (पु०) १ चन्द्रमा।—वल्कः, (पु०) उबुम्बर या गुलर का पेड़।—वीर्यकः, (पु०) वट वृक्ष। बरगद का पेड़।—निवः, (पु०) शमी वृक्ष।—शिवः, (न०) १ सेंधा निमक। २ सोहागा।—शूकः, (पु०) जवा। जौ। यव।—स्पर्शः, (वि०) ठंडा। शीतल।

शीतं (न०) १ ठंडक। सर्दी। शीतलता। २ जल। ३ दालचीनी।

शीतः (पु०) १ सरपत। नरकुल। २ नीम का पेड़। सर्दी का मौसम। ४ कपूर।

शीतक (वि०) शीतल। ठंडा।

शीतकः (पु०) १ कोई भी शीतल वस्तु। २ जाड़ा। जाड़े का मौसम। ३ सुस्त या काहिल जन। ४ प्रसन्न। वह मनुष्य जिसे किसी प्रकार की चिन्ता न हो। ५ बिच्छू। बीछी।

शीतल (वि०) ठंडा। सर्द।—कुन्धः, (पु०) चम्पा का पेड़।—जलः, (न०) कमल।—प्रदः,

(पु०)—प्रदः, (न०) चन्दन।—पद्मी, (स्त्री०) माघ शुक्ल छठ।

शीतलं (न०) १ ठंडक। शीतलता। २ जाड़े का मौसम। ३ शैलेय। शिलारस। ४ सफेद चन्दन। ५ मोती। ६ वृत्तिवा। ७ कमल। ८ वीरय।

शीतलः (पु०) १ चन्द्रमा। २ कपूर। ३ तारपीन। ४ चम्पा का पेड़। ५ जैनियों का व्रत विशेष।

शीतलकं (न०) सफेद कमल।

शीतला (स्त्री०) १ विस्फोटक रोग। चेचक। २ इस नाम की देवी जिनका वाहन खर है।

शीतली (स्त्री०) चेचक। माता। बसन्त रोग।

शीता देखो सीता।

शीतालु (वि०) जाड़े का भारा हुआ। जाड़े से काँपता हुआ।

शीत्य देखो सीत्य।

शीथु (पु० न०) १ सुरा। शराब। मदिरा। २ अंगूरी शराब। द्राक्षासव।—गन्धः, (पु०) वकुल वृक्ष।—पः, (पु०) शराबी। मदिरापान करने वाला।

शीन (वि०) गाढ़ा। जमा हुआ।

शीनः (पु०) १ मूर्ख। जड़बुद्धि वाला। २ अजगर सर्प।

शीम् (धा० आ०) [शोभते] १ डींगे मारना। २ कहना।

शीम्यः (पु०) १ बैल। २ शिव।

शीरः (पु०) वड़ा सर्प।

शीर्ण (न० कृ०) १ कुम्हलाया हुआ। मुर्झाया हुआ।

सड़ा हुआ। गला हुआ। २ शुष्क। सूखा। ३ टुकड़े टुकड़े। टूटा फूटा। ४ लदा। कुबला।

—अग्निः,—पादः, (पु०) १ यमराज। २

शनिग्रह।—पार्श्वः, (न०) कुम्हलाया हुआ पत्ता।

—पर्याः, (पु०) नीम का पेड़।—कुतं, (न०) कलीदा। तरबुज। हिंगवाना।

शीर्ण (न०) एक गन्ध द्रव्य।

शीर्वि (वि०) नाशक। अनिष्टकारी। हानिकारी।

शीर्ष (न०) १ सिर । २ काला अगर ।—आमयः, (पु०) सिर का कोई भी रोग ।—क्षेद्रः, (पु०) सिर का काट डालना ।—क्षेद्य, (वि०) सिर काट डालने योग्य ।—रत्नकं (न०) खंड । शिरस्त्राण ।
शीर्षकं (न०) १ सिर । २ खोपड़ी । ३ शिरस्त्राण । ४ टोपी । साफा । पगड़ी । ५ कैलजा । न्याय का परित्याग । दण्डाज्ञा ।

शीर्षकः (पु०) १ राहु ।

शीर्षण्यः (पु०) साक और बिना डलके पुलके केश ।

शीर्षण्यं (न०) १ शिरस्त्राण । २ टोपी । टोप ।

शीर्षन् (न०) सिर ।

शील् (भा० ५० / [शीलति] १ ध्यान करना । २ पूजन करना । अर्चन करना । ३ अभ्यास करना । [उ०—शीलयति—शीलयते] १ अर्चन करना । पूजा करना । २ अभ्यास करना । अभ्यस्यत करना । आवृत्ति करना । मदन करना । ३ धारण करना । पहनना । ४ भेंट करना ।

शीलं (न०) १ स्वभाव । लक्षण । सम्मान । मुकाव । आदर । धान । २ आचरण । आलचक्षण । ३ अच्छा स्वभाव । ४ सदाचरण । सदाचार । ५ सौन्दर्य । सुन्दररूप ।—स्वयङ्मनं, (न०) सदाचार का नाश करना ।—धारिन्, (पु०) शिव जी ।—वञ्चना (स्त्री०) सदाचार का नाश करना ।

शीलः (पु०) बड़ा सौंप ।

शीलनं (न०) १ अभ्यास । सम्मान करण । २ धारण करण ।

शीलित (न० कृ०) १ अभ्यास किया हुआ । २ धारण किया हुआ । पहिना हुआ । वसा हुआ । ४ निपुण । पटु । ५ सम्बन्ध । युक्त ।

शीवन् (पु०) अजगर सर्प ।

शुंशुमारः (पु०) शिशुमार । सुहल ।

शुक् (भा० ५०) [शोकति] जाना ।

शुकं (न०) १ वस्त्र । २ शिरस्त्राण । ३ पगड़ी । साफा । ४ कपड़े का दामन । अंचल ।—अद्मनः, (पु०) अनार का पेड़ ।—तरुः,—द्रुमः, (पु०) सिरिस

का पेड़ ।—नामिका, (वि०) नोते की चोंच जैसी नाक ।—पुच्छः, (पु०) गन्धक ।—पुष्पः, —प्रियः, (पु०) सिरिस का पेड़ ।—शुष्पा, (स्त्री०) १ धुनेर । २ अनास्र का पेड़ ।—वटभृङ्गः, (पु०) अनार । वाहः, (पु०) जलदेव ।

शुकः (पु०) १ नांता । सुना । २ सिरिस का पेड़ । ३ व्यास के एक पुत्र का नाम ।

शुक (व० कृ०) १ चमकीला । पचित्र । स्वच्छ । २ खटा । अम्ल । ३ कड़ा । कठोर । ४ संयुक्त । रिलट । मिला हुआ । ५ निर्जन । युनसान । उजाड़ ।

शुकं (न०) १ मांस । २ कांजी । ३ एक प्रकार का श्वा देव पदार्थ ।

शुक्तिः (स्त्री०) १ सौंप । २ शंख । ३ घोषा । ४ खोपड़ी का भाग विशेष । ५ बाड़े की गरदन या छाती की भौरी । ६ गन्ध द्रव्य विशेष । ७ दो कर्ष या चार लोके की एक तौल ।—उद्भवं,—जं, (न०) मोती । शुकता ।—पुटं, (न०)—पेशी, (स्त्री०) वह सीप जिसमें मोती निकलता है ।—वधूः (स्त्री०) सीप ।—वीजं, (न०) मोती ।

शुक्तिका (स्त्री०) सीप, जिसमें मोती निकले ।

शुकः (पु०) १ शुक ग्रह । २ देवों के गुरु शुक्याचार्य । ३ ज्येष्ठ मास का नाम । ४ अग्नि देव का नाम ।

शुकं (न०) १ पुरुष का वीर्य या धातु । २ किसी भी वस्तु का सार या निष्कर्ष ।—अङ्गः, (पु०) मोर ।—कर, (वि०) धातु सम्बन्धी ।—करः, (पु०) मज्जा ।—वारः ।—वासरः, (पु०) शुकवार । शुकवार ।—जिह्वः, (पु०) दैत्य । दानव ।

शुक्ल } (वि०) १ वीर्य सम्बन्धी । २ शुक या पीप
शुक्लिय } का बढ़ाने वाला ।

शुक्ल (वि०) १ सफेद । २ स्वच्छ । चमकीला ।—अङ्गः,—अपाङ्गः, (पु०) मोर ।—उपला, (स्त्री०) मिश्री ।—कशटकः (पु०) पक्षी विशेष । मुर्गावी । जलकाक ।—कर्मन्, (वि०)

पुण्यात्मा । धर्मात्मा । —कुपुं, (न०) सफेद कोढ़ । —धातुः, (पु०) चाक । खड़िया मिट्टी । —पत्तः, (पु०) उजियाला पाख । —वायस, (पु०) सारस ।

शुक्लं (न०) १ चाँदी । २ नेत्ररोग विशेष जो आँखों के सफेद तल या डेले पर होता है । ३ ताज़ा मक्खन । ४ खट्टी काँजी या माँड़ी ।

शुक्लः (पु०) १ सफेद रङ्ग । २ शुक्लपत्र । ३ शिव का नाम ।

शुक्लक (वि०) सफेद ।

शुक्लकः (पु०) १ सफेद रङ्ग । २ शुक्लपत्र । उजियाला पाख ।

शुक्लल (वि०) सफेद । उज्ज्वल ।

शुक्ला (स्त्री०) १ सरस्वती । २ मिश्री । कन्द । ३ गोरों वर्या की स्त्री । ४ काकोली पौधा ।

शुक्लिमन्, (पु०) सफेदी ।

शुक्तिः (पु०) १ पवन । हवा । २ चमक । दीप्ति । ३ आग ।

शुंगः } (पु०) १ वटवृक्ष । बरगद का पेड़ । २ आँवला
शुङ्गः } ३ जौ या अनाज की बाल । शुङ्गा । पाकड़ का पेड़ ।

शुगा } (स्त्री०) १ कली का कोष २ जवा या अनाज
शुङ्गा } की बाल ।

शुगिन् } (पु०) १ वटवृक्ष । बरगद का पेड़ ।
शुङ्गिन् }

शुक् (धा० प०) [शोचति] १ शोक करना । दुःखी होना । विलाप करना । २ पड़ताना । खेद करना ।

शुक् } (स्त्री०) खेद । दुःख । सन्ताप । पीड़ा ।
शुक्ता }

शुचि (वि०) १ साफ । विशुद्ध । स्वच्छ । २ सफेद । ३ चमकीला । ४ पुण्यात्मा । धर्मात्मा । जो अष्ट न हो । ५ पवित्र । ६ ईमानदार । निष्कपट । सच्चा । ७ ठीक । सही । ठीक ठीक । —द्रुमः (पु०) वटवृक्ष । —मणिः, (पु०) स्फटिक । बिल्लौर पत्थर । —मल्लिका, (स्त्री०) नैवारी ।

नवमल्लिका । —रीचिस्, (पु०) चन्द्रमा । —व्रत (वि०) पूत । पवित्र । पुण्यात्मा । —स्मित, (वि०) मधुर मुसक्यान वाला ।

शुचिः (पु०) १ सफेद रङ्ग । २ विशुद्धता । सफाई । ३ निर्दोषता । भलाई । पुण्य । ईमानदारी । शुद्धता । सहीपन । ४ ब्रह्मचर्य । ५ पवित्रजन । ७ ब्राह्मण । ८ ग्रीष्मऋतु । ९ ज्येष्ठ और आषाढ़ का महीना । १० ईमानदार और सच्चा मित्र । ११ सूर्य । १२ चन्द्रमा । १३ अग्नि । १४ शृङ्गार रस । १५ शुक्र ग्रह । १६ चित्रक वृक्ष ।

शुचिस् (न०) चमक । प्रकाश । दीप्ति । आभा ।

शुच्य (धा० प०) [शुचयति] १ स्नान करना । मार्जन करना । २ निचोड़ना । ३ (अर्क का) खींचना । मथना ।

शुटीरः (पु०) वीर । नायक ।

शुट् (धा० प०) [शोठति] १ रोका जाना । रुकावट डाला जाना । २ लँगडाना । ३ बचाव करना । समुद्धाना । (उ०—शोठयति-शोठयते) सुस्त होना ।

शुट् } (धा० प० उ०) [शुगठति, शुगठयति—
शुगट् } शुगठयते] १ साफ करना । २ सूखना ।

शुटि (स्त्री०)
शुगिठ (स्त्री०)
शुटी (स्त्री०)
शुगटी (स्त्री०)
शुठ्य (न०)
शुगठ्य (न०) } सोंठ ।

शुंडः } (पु०) १ मदमाते हाथी का मद जो उसकी
शुगडः } कनपुटी से चूता है । २ हाथी की सूँड़ ।

शुंडकः } (पु०) कलवार । शराब खींचनेवाला ।
शुगडकः }

शुंडिन् } १ कलवार । शराब बनाने वाला ।
शुगडिन् } हाथी । —मूषिका (स्त्री०) झड़ूँदर ।

शुतुदिः } (स्त्री०) सतलज नदी ।
शुतुदुः }

शुद्ध (व० क०) १ पवित्र । स्वच्छ । विशुद्ध । निर्दोष । ३ सफेद । चमकीला । ४ बेदाग । ५ भोलाभाला । आडम्बररहित । ६ ईमानदार धर्मात्मा । ७ सही । ठीक । दोषरहित । शुद्ध ८ निर्दोष समझ कर बरी किया हुआ । ९ केवल

मिर्क । १० अमिश्रित । चिता मिलावट का ।
११ असमान । १२ अधिकार प्राप्त । १३ पैनाया
हुआ ।

शुद्ध (न०) १ कोई भी वस्तु जो विशुद्ध हो । २
विशुद्धात्मा । ३ संधा निमक ४ । काली मिर्च ।
—अन्तः, (पु०) जननखाना । राजा का
रनवास । अन्तःपुर । —अयोदनः (= शुद्धो-
दनः) (पु०) बुद्धदेव के पिता का नाम ।
—चैतन्य, (न०) विशुद्ध बुद्धि । —अंधा,
(पु०) गंधा । —धो-भाव, -मति, (वि०) विशुद्ध
मन का । आढम्बररहित । ईमानदार ।

शुद्धः (पु०) शिव जी ।

शुद्धिः (स्त्री०) १ विशुद्धता । सफाई । २ चमक । आभा ।
३ पवित्रता । प्रायश्चित्त । ४ प्रायश्चित्तात्मककर्म ।
५ अशायी । भुगतान । ७ बदला । ८ रिहाई ।
छुटकारा । ९ सत्य । १० संशोधन । संस्कार ।
११ बाकी निकालने की क्रिया । १२ दुर्गादेवी का
नाम । —पत्रं, (न०) १ भूल संशोधन सूची । २
२ प्रायश्चित्त द्वारा पापनिर्मुक्त होने का प्रमाण
पत्र ।

शुध् (धा० प०) [शुध्यति-शुद्ध] १ शुद्ध हो जाना ।
पवित्र होना । २ अनुकूल होना । ३ संशयों को
निवृत्त करना ।

शुन् (धा० प०) [शुनति] जाना ।

शुनःशेषः } (पु०) अजीगर्तपुत्र एक ब्राह्मण का नाम ।
शुनःशेषः } इसका नाम ऐतरेय ब्राह्मण में आया है ।

शुनकः (पु०) १ ऋग्वंशीय एक ऋषि का नाम । २
कुत्ता ।

शुनाशीरः } (पु०) १ इन्द्र । २ उल्लू ।
शुनासीरः }

शुनिः (पु०) कुत्ता ।

शुनी (स्त्री०) कुतिया ।

शुनीरः (पु०) अनेक कुतिया ।

शुन्ध् } (धा० ३०) [शुन्धति—शुन्धते, शुन्धयति-
शुन्धे] शुन्धयते } १ पवित्र होना । स्वच्छ होना । २
साफ करना । पवित्र करना ।

शुष्पुः (पु०) पवन । हवा ।

शुभ (धा० आ०) [शोभते] १ चमकना । सुन्दर
लगना । २ लाभदायक प्रतीत होना । ३ उपयुक्त
होना । ४ सजाना ।

शुभ (वि०) १ चमकीला । चमकदार । २ सुन्दर ।
खूबसूरत । ३ शुभ । कल्याणप्रद । सुखी ।
भाग्यवान् । ४ प्रसिद्ध । नेक । धर्मात्मा ।
—अन्तः, (पु०) महादेव । —अङ्ग, (वि०)
खूबसूरत । सुन्दर । —अङ्गी, (स्त्री०) १ सुन्दरी
स्त्री । २ कामदेव पत्नी रति । —अपाङ्गा, (स्त्री०)
सुन्दरी स्त्री । —अशुभं, (न०) सुख दुःख ।
मलाबुरा । —आचार, (वि०) पुण्यात्मा ।
—आनना, (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री । —इतर, (वि०)
१ बुरा । खराब । २ अशुभ । —उर्दक, (वि०)
वह जिसका अन्त शुभ हो या आनन्दमय हो ।
—कर, (वि०) शुभ । मङ्गलकारी । —कर्मन्,
(न०) पुण्याकार्य । गन्धवाला । शैल नामक
गन्धद्रव्य । —ग्रहः, (पु०) अष्टग्रह । अष्टग्रह फल
देनेवाला ग्रह । —दः, (पु०) पीपल का वृक्ष ।
—दन्ती, (स्त्री०) वह स्त्री जिसके सुन्दर दाँत हों ।
—लम्भः, (पु०) —लभं, (न०) अच्छा सुदृढ ।
—वार्ता, (स्त्री०) शुभ संवाद । खुशखबरी ।
—वासनः, (पु०) सुँह को खुशबूदार करने
वाला गन्धद्रव्य विशेष । —शंसिन्, (वि०)
शुभ या मङ्गलद्योतक । —स्थली, (स्त्री०) १
वह मण्डप जहाँ यज्ञ होता हो । यज्ञभूमि । २
मङ्गल भूमि । पवित्र स्थान ।

शुभं (न०) १ कल्याण । मङ्गल । सौभाग्य । प्रसन्नता ।
समृद्धि । २ आभूषण । ३ जल । पानी । ४
गन्धकाष्ठ विशेष ।

शुभंयु (वि०) १ शुभ । २ आनन्दवर्द्धक ।

शुभंकर } (वि०) कल्याणकारी । २ आनन्दवर्द्धक ।
शुभंकर }

शुभंभावुक } (वि०) सुसज्जित । मूषित ।
शुभंभावुक }

शुभा (स्त्री०) १ आभा । कान्ति । २ सौन्दर्य । ३
कामना । अभिलाष । ४ गौरव । ५ शमी
सं० शु० कौ०—१०७

वृक्ष । ६ देवताओं की सभा । ७ दूर्वा । दूब । ८
प्रियंगुलता ।

शुभ्र (वि०) १ कान्तिमान् । सुन्दर । २ सफेद ।
उज्ज्वल ।—श्रृंगुः,—करः (पु०) १ चन्द्रमा ।
२ कपूर ।—रश्मिः, (पु०) चन्द्रमा ।

शुभ्रं (न०) १ चाँदी । २ अवरक । ३ सैधान्तिक ।
४ वृत्तिया ।

शुभ्रः (पु०) १ सफेद रंग । २ चन्द्रन ।

शुभ्रा (स्त्री०) १ गंगा । २ स्फटिक । ३ वंशलोचन ।

शुभिः (पु०) ब्रह्मा ।

शुभ्र (भा० प०) [शुभ्रति] १ चमकना । २
बोखना । ३ अतिष्ठ करना । बायल करना ।

शुभ्रः } (पु०) एक दैत्य जिसका वध दुर्गा देवी ने
शुभ्रः } किया था ।—घातिनी,—मर्दिनी (स्त्री०)
दुर्गा का नाम ।

शुर् (भा० आ०) [शुर्यते] १ बायल करना ।
शूर् वध करना । २ हट करना । रोकना । थामना ।
शुल्क (भा० उ०) [शुल्कयति—शुल्कयते] १
पाना । २ देना । अदा करना । ३ उत्पन्न करना ।
४ कहना । वर्णन करना ५ त्यागना । छोड़ देना ।

शुल्कं (न०) १ कर । महसूल । चुंगी । (विशेष)
शुल्कः (पु०) १ कर । (घाट की उत्तराई का,
महसूल । २ लाभ । मुनाफा । ३ साई । ४ वह
सूख्य जो कन्या को खरीदने के लिये उसके पिता
को दिया जाय । ५ विवाह के समय की भेंट । ६
विवाह का दैनदायजा । ७ वह भेंट जो वर अपनी
दुलहिन को दे ।—ग्राहक,—ग्राहिन् (वि०)
कर उगाहने वाला ।—दः, (पु०) विवाहोपलक्ष्य
में भेंट देने वाला ।

शुल्लं (न०) १ रस्सी । कमान्नी । २ तौबा ।

शुल्व (भा० उ०) [शुल्वयति शुल्वयति, शुल्व-
शुल्वं यते, शुल्वयते] १ देना । दान करना । २
भेजना । पठाना वितर्जन करना । बिदा करना ।
नापना ।

शुल्वं (न०) १ रस्सा । डोरी । २ तौबा । यज्ञीय
शुल्वं } कर्म विशेष । ३ जल का सामीप्य या वह

स्थान जो जल के समीप हो । ४ नियम । विधि ।
आदेश ।

शुल्व } (स्त्री०) देखो शुल्व ।
शुल्वी }

शुश्रु (स्त्री०) माता ।

शुश्रूषक (वि०) आज्ञाकारी ।

शुश्रूषकः (पु०) नोकर । सेवक ।

शुश्रूषणं (व०) १ सुनने का अभिलाष २
शुश्रूषणा (स्त्री०) १ सेवा । परिचर्या । ३ कर्तव्य-
परायणता । आज्ञापालन करने की क्रिया ।

शुश्रूषा (स्त्री०) १ श्रवण करने का अभिलाष । २
सेवा । चाकरी । ३ आज्ञावर्तित्व । आज्ञापालन ।
कर्तव्यपरायणता । ४ सम्मान । प्रतिष्ठा । ५ कथन ।
उक्ति ।

शुश्रूषु (वि०) १ सुनने का अभिलाषी । २ सेवा
करने को कामना रखने वाला ३ आज्ञाकारी ।

शुष् (भा० प०) [शुष्यति, शुष्क] १ सूख जाना ।
२ कुम्हला जाना । मुरझा जाना ।

शुषः (पु०) १ सुखाने की क्रिया । २ भूमि रन्ध्र ।
शुषी (स्त्री०) १ सुखाने की क्रिया । २ छेद । ३ सर्प के
विषदन्त का खोलला भाग ।

शुषिः (स्त्री०) १ सुखाने की क्रिया । २ छेद । ३ सर्प के
विषदन्त का खोलला भाग ।

शुषिर (वि०) सुराखों से पूर्ण । द्विद्वार ।

शुषिरं (न०) १ सुराख । २ अन्तरिक्ष । ३ वह बाजा
जो फूंक से या हवा देकर बजाया जाय ।

शुषिरः (पु०) १ अग्नि । २ चुहा । मूल ।

शुषिरा (स्त्री०) १ नदी । २ गन्धद्रव्य विशेष । ३
लौंग ।

शुषिलः (पु०) पवन । हवा ।

शुष्क (वि०) १ सूखा । २ मुना हुआ । ३ कुरा ।
दुजला । वनावटी । झूठा । ४ रीता । व्यर्थ ।
निकम्मा । ५ अकारण । कारण रहित । आधार-
शून्य । ७ कटु । बुरा लगने वाला ।—अद्गी,
(स्त्री०) छिपकली । विसतुद्धया ।—कलहः,
(पु०) निरर्थक फगड़ा ।—वैरं, (न०) अका-

रथ शत्रुता ।—वराहः (न०) फोड़े या छाप का निशान ।

शुष्कलः (न०) १ सूखा माँस । माँस ।
शुष्कलः (पु०) १ सूखा माँस । माँस ।

शुष्मः (न०) १ पराक्रम । बल । २ दीप्ति । आभा ।

शुष्मः (पु०) १ सूर्य । २ आग । ३ पवन । ४ पक्षी ।
विडिया ।

शुष्मन् (पु०) अग्नि । (न०) १ बल । पराक्रम ।
२ आभा । दीप्ति ।

शूकः (न०) १ जवा की बाल । भुष्ट । २ सुअर
शूकः (पु०) १ का बाल । कड़ा बाल । ३ नौक ।

पैना नौक । ४ कोमलता । दयालुता । ५ एक
प्रकार का विपैला कीड़ा ।—कीटः,—कीटिकः

(पु०) एक जाति का रोपेदार कीड़ा ।—धान्यः,

(न०) वह अन्न जिसके दाने बालों या सीकों में
लगते हैं, जैसे गेहूँ, जवा आदि ।—पिंडिः,—

पिण्डी, (स्त्री०)—शिवा, —शिविका, —शिवी,

(स्त्री०) कपिकच्छु । किवाछ । कौछ । दोंदिया ।

शूककः (पु०) अनाज विशेष । कोमलता ।
दयालुता ।

शूकरः (पु०) शूकर । सूअर ।—हृष्टः, (पु०)
सुस्ता । कसेरु ।

शूकलः (पु०) चमकने या भड़कने वाला घोड़ा ।

शूद्रः (पु०) स्मृत्यनुसार अथवा हिन्दूधर्म शास्त्रानु-
सार चारवर्णों में से चौथा और अन्तिम वर्ण ।

—उदकः, (न०) वह जल जो शूद्र के कूते से
अष्ट हो गया हो ।—प्रियः, (पु०) पलायण ।

प्याज ।—प्रेष्यः, (पु०) वह ब्राह्मण चरित्र या
वैश्य जो किसी शूद्र की नौकरी या सेवा करता हो ।

—याजकः, (पु०) वह ब्राह्मण जो शूद्र को यज्ञ
कराता हो या उसके लिये यज्ञ करता हो ।—वर्गः,

(पु०) शूद्र जाति ।—सेवनं, (न०) शूद्र की
सेवा ।

शूद्रकः (पु०) विदिशा नगरी का एक राजा और
सृज्जकटिक का रचयिता महाकवि ।

शूद्रा (स्त्री०) शूद्रजाति की स्त्री ।—भार्यः, (पु०)

वह पुरुष जिसकी स्त्री शूद्र जाति की हो ।—

वेदनं, (न०) शूद्रा स्त्री के साथ विवाह करने
वाला ।—सुनः, (पु०) शूद्र स्त्री का वह पुत्र

जिसका पिता किसी भी जाति का हो ।

शूद्राणी }
शूद्री } (स्त्री०) शूद्र की पत्नी ।

शून (न० क०) १ सुजा हुआ । बड़ा हुआ । समृद्ध

शूना (स्त्री०) १ तालु के ऊपर की छोटी जीम । २
बूचड़खाना । कसाईखाना । ३ गृहस्थ के घर के

वे स्थान जहाँ नित्य अन्नजाने अनेक जीवों की हत्या
होती हो : जैसे चूल्हा, चक्की, पानो का पाव आदि

या गृहस्थी के वे उपस्कर जिनमें जीवहर्त्ता होना
हो । वे पाँच वे बतलाये गये हैं—यथा चूल्हा

चक्की, भाड़, उत्तरी और जलपात्र ।

शून्य (वि०) १ रीता । खाली । २ अभाव । राहित्य ।

३ निर्जन । एकान्त । ४ उदास । रंजीदा । ५

रहित । अभावयुक्त । ६ अनासक्त । विरक्त । ७

अकपट । सरल । सीधासादा । ८ उदपरीग । अर्थ-

शून्य । ९ नंगा । परिच्छिन्न रहित ।—मध्यः,

(पु०) पोली नरकुज ।—वादः, (पु०) बौद्धों

का एक सिद्धान्त जिसमें ईश्वर या जीव किसी को

कुछ भी नहीं मानते ।—वादिन्, (पु०) १

नास्तिक । २ बौद्ध ।

शून्यं (न०) १ खाली स्थान । २ आकाश । ३

शून्य । विदी । ४ अभाव । अनस्तित्व ।

शून्या (स्त्री०) पोली नरकुज । २ बाँक स्त्री ।

शूर (वा० उ०) [शूरयति,—शूरयते] बहादुरी
दिखाना । वीरता प्रदर्शित करना । २ जी खोजकर

उद्योग करना ।

शूर (वि०) बहादुर । वीर ।

शूरः (पु०) १ वीर । भट । योद्धा । २ शेर । ३ शूकर ।

४ सूर्य । ५ साल वृक्ष । ६ श्रीकृष्ण के पितामह

का नाम ।—कीटः, (पु०) तुच्छ मोटा ।—

मानं, (न०) अहंकार । अकड़ । सेन, (पु०)

(बहुवचन) मथुरामण्डल या उसके अधिवासी ।

शूरणः (पु०) जमीकंद । सूरन ।

शूरमन्य (वि०) वह पुरुष जो अपने को शूर लगाता हो।

शूर्प (न०) } सू० (पु०) दो द्रोण की एक
शूर्पः (पु०) } तौल।—कर्णः, (पु०) हाथी।
—शर्पा, —शर्पा, (स्त्री०) वह जिसके ना-
खून सू० जैसे हों। रावण की बहिन का नाम।
—वातः, (पु०) सू० से निकाली हुई हवा।
—श्रुतिः, (पु०) हाथी।

शूर्पी (स्त्री०) १ छोटो सू०। २ सू०पनखा का नामान्तर।

शूर्मः } (पु०) [स्त्री०—शूर्मिका, शूर्मी] १
शूर्मिः } लोहे की बनी मूर्ति। २ निहाई।

शूल (धा० प०) [शूलति] १ बीमार होना। २
बहुत शोर करना। ३ गड़गड़ी करना।

शूल (न०) } १ प्राचीन कालीन एक अस्त्र, जो
शूलः (पु०) } प्रायः वरुण के आकार का होता
था। सूली जिससे प्राचीन काल में लोगों को
प्राणदण्ड दिया जाता था। ३ लोहे की सीक
जिस पर लपेट कर कबाब भूनी जाती है। ४ कोई
भी उग्र पीड़ा या दर्द। ५ वायु गोले का दर्द। ६
गदिया। बलास। ७ मृत्यु। ८ कंज। पताका।
धन्वन, —धर, —धारिन्, —धृक्, —पाणिः, —
भृत्, (पु०) शिव जी का नामान्तर।—शत्रुः,
(पु०) रेंड का रूख।—स्थ, (वि०) सूली
दिया हुआ।—हंजी, (स्त्री०) एक प्रकार का
जौ।—हस्तः, (पु०) भाला धारी।

शूलकः (पु०) भड़कने वाला घोड़ा।

शूलाकृतं (न०) भुना हुआ गोश्त।

शूलिक (वि०) १ शूलधारी। २ वायु गोले से
पीड़ित। (पु०) भालाधारी। ३ खरगोश। ३
शिव जी का नामान्तर।

शूलिनः (पु०) १ भाण्डीर वृक्ष। २ गूलर का पेड़।
उदुम्बर।

शूल्य (वि०) १ सीक पर भुना हुआ। २ सूली पाने
का अधिकारी।

शूल्यं (न०) भुना हुआ गोश्त।

शूष् (धा० प०) [शूषति] १ उत्पन्न करना।

शृकालः (पु०) गीदड़।

शृगालः (पु०) १ गीदड़। सियार। २ दाराबाज़।
धोखेबाज़। झुलिया। कपटी। ३ भीरु। डरपोक।
४ कटुभाषी। बदमिजाज़। ५ कृष्ण का नामान्तर।
—कैलिः, (पु०) एक प्रकार का बेर या उखाव।
—योनिः, (पु०) अगले जन्म में शृगाल के शरीर
में उत्पत्ति।—रूपः, (पु०) शिव जी का
रूपान्तर।

शृगालिका } (स्त्री०) १ गीदड़ी। सियारिन। २
शृगाली } लोमड़ी। ३ भगाड़। पलायन।

शृङ्खलः (पु०) } लोहे की जंजीर। जेदी। २
शृङ्खला (स्त्री०) } जंजीर। ३ हाथी के पैर में बाँधने
शृङ्खलं (न०) } की जंजीर। ४ कमरपेटी। ५
जरीब नापने की जंजीर।—यमकं, (न०) एक
प्रकार का अलंकार, जिसमें कथित पदार्थों का
वर्णन शृङ्खला के रूप में सिलसिलेवार किया
जाता है।

शृङ्खलकः } (पु०) १ जंजीर। २ ऊंट।

शृङ्खलित } (वि०) जंजीर में बंधा हुआ।

शृंग, } (न०) १ सींग। २ पहाड़ की चोटी।
शृङ्गम् } भवन का सब से ऊँचा भाग। ३ ऊँचाई।

आधिपत्य। ५ बालचन्द्र का शृङ्गाकार अग्रभाव।

६ चोटी या आगे निकला हुआ भाग। ७ सींग

(भैंस आदि का) जो बजाया जाता है। ८

पिचकारी। ९ अनुराग का उद्देक। १० चिन्ह।

निशानी। ११ कमल।—उच्चयः (पु०) बड़ी

ऊँची चोटी।—जः (पु०) तीर।—जं, (न०)

अगर।—प्रहारिन्, (वि०) सींग मारने वाला।

—प्रियः, (पु०) शिव का नामान्तर।—मोहिन्,

(पु०) चंपा का वृक्ष।—वेरं, (न०) १ गंगा-

तट पर के एक प्राचीन नगर का नाम जो आधुनिक

मिर्जापुर के समीप था। २ अदरक।

शृंगकः (पु०) } १ सींग। २ बालचन्द्र का शृङ्गा-
शृङ्गकः (पु०) } कार अग्रभाग। ३ कोई नोकदार
शृंगकं (न०) } चीज़। ४ पिचकारी।
शृङ्गकं (न०) }

शृंगवत् } (वि०) चोटीदार । शिखरदार । (पु०)
शृङ्गवत् } पहाड़ ।

शृंगाटः }
शृङ्गाटः } (प्र०) वह जगह जहाँ चार सड़कें
शृंगाटकः } मिलती हैं । चौगाहा । चतुष्पथ । २
शृङ्गाटकः } एक पौधे का नाम ।

शृंगाटं }
शृङ्गाटं } (न०) चतुष्पथ । चौगाहा ।
शृंगाटकं }
शृङ्गाटकं }

शृंगारः } (पु०) साहित्य के अनुसार नौ रसों में
शृङ्गारः } से एक रस जो सब से अधिक प्रसिद्ध है ।
२ प्रेम । रसिकता । सम्पत्त्य प्रेम । ३ सजावट । ४
मैथुन । ५ सेंदुर से बनाये हुए हाथी के ऊपर
लिखना । ६ चिह्न ।

शृंगारं } (न०) १ लौंग । २ सेंदुर । ३ अदरक ।
शृङ्गारं } ४ सुगन्ध पूर्ण जो शरीर में मल्ला जाय वा
सूराव के लिए वस्त्र पर लगाया जाय । ५ काला
अगर । धूपणं, (न०) सेंदुर । सिंदूर ।—
योगिनः, (पु०) कामदेव ।—रसः, (पु०)
प्रेमभाव ।—सहायः, (पु०) नर्म सचिव ।

शृंगारकं } (न०) सेंदुर । सिंदूर ।
शृङ्गारकं }

शृंगारकः } (पु०) प्रेम । प्रीति ।
शृङ्गारकः }

शृंगारित } (वि०) सजा हुआ । सँवारा हुआ ।
शृङ्गारित } रसिक । रसिया । प्रेमासक्त ।

शृंगारिन् } (वि०) १ उत्तेजित प्रेमी । २ खुशी । जाल ।
शृङ्गारिन् } ३ हाथी । ४ परिच्छिन्न । पोशाक । ५
सुपाही का वृक्ष । ताम्बूल । पान का बीड़ा ।

शृंगिः } (पु०) १ आभूषण के लिये सोना । २
शृङ्गिः } सिंगी मछली ।

शृंगिकं } (न०) एक प्रकार का विष ।
शृङ्गिकं }

शृंगिका } (स्त्री०) भोजपत्र का वृक्ष ।
शृङ्गिका }

शृंगिणः } (पु०) मेवा । मेव ।
शृङ्गिणः }

शृंगिणी } १ गौ । २ मल्लिका । मोतिधा ।
शृङ्गिणी }

शृंगिन् } (वि०) [स्त्री०—शृङ्गिणी] १ सींगवाला ।
शृङ्गिन् } २ चोटीदार । शिखर वाला (पु०) १ पर्वत ।
२ हाथी । ३ वृक्ष । ४ शिव का नामान्तर । ५ शिव
जी के एक राक्ष का नाम ।

शृंगी } १ वह सुवर्ण जो आभूषणों के बनाने के काम
शृङ्गी } में आता है । २ एक प्रकार का जड़ । ३ एक
प्रकार का विन । ४ शृंगी मछली ।—कनकं,
(न०) सुवर्ण जिसके आभूषण बनाये जायें ।

शृंगिः (स्त्री०) शंकु ।

शृंग (व० क०) १ पकाया हुआ । रँधा हुआ । २
उबाला हुआ ।

शृङ्ग (धा० धा०) [शृङ्गति] पादना । अपान वायु
छोड़ना । [ड०—शृङ्गति—शृङ्गति] नम करना ।
भिगोना । २ प्रयत्न करना । ३ ग्रहण करना ।
पकड़ना । ४ काटना । विद्वाना ।

शृङ्गुः (पु०) १ बुद्धि । २ गुदा । मलद्वार ।

शृ (धा० प०) [शृणाति—शृणी] १ टुकड़े
टुकड़े करना । २ चोटिल करना । ३ बध करना ।
२ नाश करना ।

शृङ्खरः (पु०) १ सिर का आभूषण । मुकुट । किरीट ।
सिर पर धारण की जाने वाली पुष्पमाला । २
चोटी । शृङ्ग । ३ श्रेष्ठता वाचक शब्द । ४ संगीत
में ध्रुव या स्थायी पद का एक भेद ।

शृङ्खरं (न०) लौंग ।

श्रेयः (पु०) }
श्रेयस् (न०) } १ लिङ्ग जननेन्द्रिय । अयहकोश ।
श्रेयः (पु०) } २ पंख । दुम ।
श्रेयः (न०) }
श्रेयस् (न०) }

श्रेयातिः }
श्रेयाती } (स्त्री०) एक प्रकार का पौधा ।
श्रेयातिका }

श्रेयुगी (स्त्री०) समकदारी । बुद्धि ।

श्रेल् (धा० प०) १ जाना । २ कुचलना ।

श्रेवं (न०) १ लिङ्ग जननेन्द्रिय । २ हर्ष । प्रसन्नता

शेवः (पु०) १ सर्प । सर्प । २ लिंग । जननेन्द्रिय । ३ ऊँचाई । ऊँचान । ४ प्रसन्नता । ५ धन । सम्पत्ति ।
—धिः (पु०) १ मूल्यवान खजाना । २ कुबेर की नवनिधियों में से एक ।
शेवलं (न०) १ सिवार घास जो पानी में डगती है । एक पौधा विशेष ।
शेवतिनी (स्त्री०) नदी ।
शेवालः (पु०) देखो शेवाल ।
शेव (वि०) वह जो कुछ भाग निकल जाने पर कट गया हो । बची हुई वस्तु । बाकी ।
शेवं (न०) } १ बचा हुआ । उच्छिष्ट । २ वह
शेषः (पु०) } जो कुछ कहने से छोड़ दिया गया हो । ३ मुक्ति । छुटकारा । — (पु०) १ परिमाण । २ समाप्ति । अन्त । ३ मृत्यु । मौत । ४ शेषभाग । अनन्त साग । (न०) उच्छिष्ट । — अन्नं, (न०) उच्छिष्ट अन्न । — अवस्था, (स्त्री०) बुढ़ापा । — भागः, (पु०) बचत । बचा हुआ अंश । — रात्रिः, (पु०) रात का अन्तिम प्रहर । — शयनः, — शयिन्, (पु०) विष्णु के नामान्तर ।
शैलः (पु०) १ वह विद्यार्थी जिसने वेद का एक ऋग शिखा का अध्ययन किया हो या जिसने वेद पढ़ना आरम्भ ही किया हो । २ नौसिखिया ।
शैलकः (पु०) शिखा में पट्ट । निपुण ।
शैल्यं (न०) विद्वत्ता । योग्यता ।
शैल्यं (न०) कुर्ती । तेजी ।
शैल्यं (न०) ठंडक । शीतलता । इतनी ठंडक जिससे (जल आदि तरल पदार्थ) जम जाय । ठिठुरन ।
शैथिल्यं (न०) १ शिथिल होने का भाव । शिथिलता । ढिलाई । २ तत्परता का अभाव । सुस्ती । ३ दीर्घसूत्रता । ४ निर्वलता । भीरुता ।
शैनेयः (पु०) सात्यकि का नाम ।
शैन्याः (पु० बहु०) शिनि के वंश वाले जो क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गये थे ।
शैव्य देखो शैव्य ।
शैलं (न०) १ शिलारस । शैलेय । २ सोहागा । ३

रसौत । रसवत् । ४ शिलाजीत । — अग्रं, (न०) पर्वत शृङ्ग ।

शैलः (पु०) १ पहाड़ । पहाड़ी । चट्टान । बड़ा भारी पत्थर । — अटः, (पु०) १ पहाड़ी । जंगली । २ पुजारी । ३ शेर । ४ स्फटिक पत्थर । — अधिपः, — अधिराजः, — इन्द्रः, — पतिः, — राजः, (पु०) हिमालय पर्वत के नामान्तर । — आख्यं, (न०) १ शैलरस । शिलाजीत । — गन्धं, (न०) चन्दन । — जं, (न०) १ शिलाजीत । २ राल । नक़्ता । — जा, — तनया, — पुत्री, — सुता, (स्त्री०) पार्वती का नामान्तर । — धन्वन्, (पु०) शिव जी का नाम । धरः, (पु०) कृष्ण जी का नामान्तर । — निर्यासः, (पु०) शिलाजीत । — पत्रः, (पु०) चित्त्व या वेल का वृक्ष । — भित्ति, (स्त्री०) पत्थर काटने का औज़ार विशेष । पत्थर काटने की ढ़ैनी । — रन्ध्रं, (न०) गुफा । पहाड़ी कंदरा । — शिबिरं, (न०) समुद्र ।

शैलकं (न०) १ शिलाजीत । २ राल । नक़्ता ।

शैलादिः (पु०) शिवजी का गण नन्दी ।

शैलालिन् (पु०) नट । मृत्पक ।

शैलिक्यः (पु०) दंभी । पाखंडी । दगाबाज़ । कपटी ।

शैली (स्त्री०) १ लिखने का हंग । वाक्यरचना का प्रकार । २ चाल । ढ़व । ढ़ंग । ३ परिपाटी । तर्ज़ । तरीका । ४ रीति । रस्म । प्रथा । रवाज़ । ५ आचरण । चाल चलन ।

शैलूषः (पु०) १ नट । नर्तक । नचैया । २ अभिनय करने वाला । नाटक खेलने वाला । ३ गंधर्वों का स्वामी । रोहित गण । ४ बेल का पेड़ । ५ धूल ।

शैलूषिकः (पु०) वह जो अभिनय करने का पेशा करता हो ।

शैलेय (वि०) [स्त्री० — शैलेयी] १ पहाड़ी । २ चट्टान से उत्पन्न या निकला हुआ । ३ सशत । कहा । पथरीला ।

- शैलेय (न०) १ शिलाजीत । २ गृगुल । ३ संधा निमक ।
- शैलेयः (पु०) १ सिंह । २ मधुमक्षिका ।
- शैल्य (वि०) पथरीला ।
- शैल्यं (न०) पथरीलापन । कड़ापन ।
- शैव (वि०) [स्त्री०—शैवी] शिव सम्बन्धी ।
- शैवं (न०) अष्टादश पुराणों में से एक ।
- शैवः (पु०) १ शैव सम्प्रदाय । २ शैव सम्प्रदायी ।
- शैवलं (न०) पञ्चाक । पञ्चाकष्ट । पटुमाख ।
- शैवलः (पु०) सिवार ।
- शैवलिनी (स्त्री०) नदी ।
- शैवाल देखो शैवलः ।
- शैव्यः (पु०) १ कृष्ण के चार घोड़ों में से एक का नाम । २ पाण्डव दल के एक योद्धा राजा का नाम । ३ घोड़ा ।
- शैशवं (न०) बचपन । (सोलह वर्ष के नीचे) ।
- शैशिर (वि०) [स्त्री०—शैशिरी] जाड़े की ऋतु सम्बन्धी ।
- शैशिरः (पु०) काले रङ्ग का चातक पक्षी ।
- शैयोपाध्यायिका (स्त्री०) बच्चों की शिक्षा ।
- शो (धा० प०) [शयति, शात या शित] १ पैनाना । पैना करना । २ पतला करना ।
- शोकः (पु०) शोक । रज । सन्ताप । पीड़ा ।—
—अग्निः, —अनलः (पु०) दुःख की आग ।
—अपनोदः, (पु०) दुःख का दूर होना ।—
अभिभूतः, —आकुल, —आविष्ट, —उपहत,
—विह्वल, (वि०) शोक से पीड़ित ।—नाशः,
(पु०) अशोकवृक्ष ।
- शोचनं (न०) दुःख । शोक । विलाप ।
- शोचनीय (वि०) १ शोक करने योग्य । २ जिसकी दशा देख कर दुःख हो । दुष्ट ।
- शोचिस्त् (न०) १ प्रकाश । दीप्ति । आभा । चमक । २ शोला ।—केशः, (शोचिकेशः) अग्नि का नामान्तर ।
- शोटीर्म (न०) विक्रम । पराक्रम ।
- शोठ (वि०) १ सूखे । २ नीचे । ओढ़ा । दुष्ट । ३ सुस्त । काहिल ।
- शोठः (पु०) १ मूत्रे । मूत्र । २ दीर्घमूत्रा । ३ सीच या कमीना आदर्मी । ४ शठ । धूर्त ।
- शोण् (धा० प०) [शोणति] १ जाना । २ लाल हो जाना ।
- शोण (वि०) [स्त्री०—शोणा, शोणी] १ लाल । हिरमिजी । लाल रंगा हुआ ।
- शोणं (न०) १ खून । २ सेंदूर । सिन्दूर ।
- शोणः (पु०) १ लाल रंग । २ आग । ३ लालगन्ना । ४ कुम्भेड़ घोड़ा । ५ एक नद का नाम जो गोंडवाना से निकल कर पटना के पास गंगा में गिरता है । ६ मंगलग्रह । अम्बुः, (पु०) प्रलयकालीन मेषों में से एक । अतन (पु०) —उपलः, (पु०) १ लाल पत्थर । २ चुन्नी ।—पञ्चः (पु०) लाल कमल ।—रत्नं, (न०) लाल । चुन्नी ।
- शोणित (वि०) १ लाल । बैंगनी ।
- शोणितं (न०) १ खून । २ केसर ।—ब्राह्मणं, (न०) केसर ।—उत्तित, (वि०) रक्तजित । —उपलः, (पु०) चुन्नी ।—चन्दनं, (न०) लालचन्दन ।—प, (वि०) खून पीने या चूसने वाला ।—पुरं, (न०) बाणासुर की नगरी का नाम ।
- शोणिमन् (पु०) लाली ।
- शोथः (पु०) सूजन ।—जिह्वाः, (पु०) पुनर्जवा । —रोगः, (पु०) जलंधर का रोग ।—हस्त, (वि०) सूजन दूर करने वाला । (पु०) भिलावा ।
- शोध (पु०) १ शुद्धि संस्कार । २ ठीक किया जाना । दुरुस्ती । ३ अदायगी । ऋणशोध । ४ बदला । पट्टा ।
- शोधक (वि०) [स्त्री०—शोधका—शोधिका] १ शुद्धिसंस्कारक । ररेचन । ३ शुद्ध करने वाला ।
- शोधकं (न०) एक प्रकार की मट्टी ।

शोधकः (पु०) शुद्धि करने वाला ।

शोधन (वि०) [स्त्री०—शोधनी] साफ करने वाला । शोधन करने वाला ।

शोधनं (न०) १ शुद्ध करना । साफ करना । २ दुरुस्त करना । ठीक करना । सुधारना । ३ छान बीन । जाँच । ४ अनुसन्धान । ५ ऋणशोध । ६ प्रायश्चित्त । ७ धातुओं को साफ करने की क्रिया । ८ चाल सुधारने के लिये दण्ड । ९ वदना । निकालना । १० तृप्ति । ११ मल । विष्टा ।

शोधनी (स्त्री०) भाइ ।

शोधनकः (पु०) फौजदारी अदालत का हाकिम ।

शोधित (व० कृ०) १ साफ किया हुआ । २ संशोधित । ३ (जल) साफ किया हुआ । ४ ठीक किया हुआ । सही किया हुआ । ५ अदा किया हुआ । ६ बदला लिया हुआ ।

शोध्य (वि०) शुद्ध किया हुआ । साफ किया हुआ । अदा किया हुआ ।

शोध्यः (पु०) वह अपराधी जिसे अपने अपराध की सफाई देनी हो ।

शोफः (पु०) सूजन । गुमदा ।—जित्—दत्त, (पु०) भिलावा ।

शोभन (वि०) [स्त्री०—शोभनी] १ चमकीला । २ सुन्दर । खूबसूरत । मनोहर । प्यारा । ३ शुभ । कल्याणकारी । ४ अच्छी तरह सुसज्जित । ५ पुण्यात्मा । धर्मात्मा ।

शोभनं (न०) १ सौन्दर्य । आभा । चमक । २ कमल ।

शोभनः (पु०) १ शिव । २ ग्रह ।

शोभना (स्त्री०) १ हल्दी । २ सुन्दरी या पतिव्रता स्त्री । ३ गोरोचन ।

शोभा (स्त्री०) १ आभा । दीप्ति । चमक । २ सौन्दर्य । मनोहरता । ३ वृषि । छटा । ४ हल्दी । ५ गोरोचन ।

शोभाञ्जनः (पु०) एक बड़ा उपयोगी वृक्ष ।

शोभित (व० कृ०) १ सुन्दर । शोभायुक्त । २ सुन्दर । मनोहर ।

शोषः (पु०) सूखने का भाव । खुरक होना । रस या गीलापन दूर होने का भाव ।—सम्भवं, (न०) पिपला मूल ।

शोषण (वि०) [स्त्री०—शोषणी] १ सोखना । २ कुम्हला देना ।

शोषणं (न०) १ सोखना । २ चूसना । ३ निषेदाना । ४ कुम्हलाना । मुरझाना । ५ सोंठ ।

शोषित (व० कृ०) १ सूखा हुआ । २ लदा हुआ । मुर्झाया हुआ । ३ थका हुआ ।

शोषिन् (वि०) [स्त्री०—शोषिणी] सुखाने वाला । मुर्झाने वाला ।

शौकं (न०) तोतों का मुँड ।

शौक (वि०) [स्त्री०—शौकी] खट्टा । चमक ।

शौक्तिक (वि०) [स्त्री०—शौक्तिकी] मोती सम्बन्धी । २ खट्टा । तेज । तीक्ष्ण ।

शौक्तिकेयं } (न०) मोती । मुक्ता ।

शौक्तिकेयः (पु०) एक प्रकार का जहर ।

शौक्ल्यं (न०) सफेदी । स्वच्छता ।

शौचं (न०) १ शुद्धता । २ मृतक सूतक से शुद्धि । ३ सफाई । संस्कार । ४ मलत्याग । मलोत्सर्ग । ५ धर्मात्मापन । ईमानदारी ।—आचारः, (पु०)—कर्मन्, (न०)—कल्पः, (पु०) प्रायश्चित्तात्मक कर्म ।—कूपः, (पु०) पाप्माना । दही । संढाल ।

शौचेयः (पु०) धोबी ।

शौट (धा० प०) (शौटति) अभिमान करना । अफइना ।

शौटीर (वि०) अभिमानी । वसंडी ।

शौटीरः (पु०) १ शूरवीर । २ अभिमानी पुरुष । ३ साधु ।

शौटीर्य } (न०) अभिमान । वसंड ।

शौडर्य
शौडर्य
शौडर्य

जौह (धा० प०) (जौहनि) देखो जौह ।

जौह (वि०) [जौहडी] १ शराबी । मद्यप ।

जौह (२ नशे में चूर उत्तेजित । ३ निपुण । ४ ।

जौहिकः } (पु०) कलवार । शराब बेचने वाला ।
जौहिकः }
जौहिन }
जौहिन् }

जौहिकेयः } (पु०) दैत्य । दानव ।
जौहिकेयः }

जौहो } (स्त्री०) बड़ी पीपल ।
जौहडी }

जौहीर (वि०) १ अभिमानी । क्रोधी । २ उठा
जौहीर) हुआ । उत्तत ।

जौहादनिः (पु०) बुद्ध का नाम अर्थात् शुद्धोद्ग
का पुत्र ।

जौह (वि०) [स्त्री०—जौही] शूद्र सम्बन्धी ।

जौहः (पु०) शूद्रा का पुत्र जो शूद्र मित्र किसी
जाति के पुरुष से पैदा हुआ हो ।

जौह (न०) कसार्हिलाने में रखा हुआ मौस ।

जौहकः (पु०) एक प्राचीन वैदिक आचार्य और
ऋषि जो शुनक ऋषि के पुत्र थे । इनके नाम से
कई ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं ।

जौहिकः (पु०) १ कसार्ह । वृचह । २ बहैलिया ।
चिड़ीमार । ३ शिकार । आखेट ।

जौहः (पु०) १ ईश्वर । देवी । २ सुपाड़ी का
वृक्ष ।

जौहोजनः (पु०) एक वृक्ष का नाम ।

जौहिनः (पु०) मधारी । ऐन्द्रजालिक । जादूगर ।

जौरसेनी (स्त्री०) प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध
प्राकृत भाषा जो शौरसेन प्रदेश में बोली जाती
थी ।

जौरिः (पु०) १ श्रीकृष्ण या विष्णु । २ बलराम ।
३ शनिग्रह ।

जौर्य (न०) १ शूरता । वीरता । पराक्रम । २ बल ।
ताकत । ३ आरम्भटी ।

जौलकः } (पु०) चूंगी विभाग का दरोगा ।
जौलिकः }

जौलिकः } (पु०) नाँवे के बरतन आदि बनाने
जौलिकः } वाला । कंहरा ।

जौव (वि०) [स्त्री०—जौवी] कुत्ता सम्बन्धी ।

जौव (न०) १ कुत्तों का दल । २ कुत्ते जैसी प्रकृति ।

जौवन (वि०) [स्त्री०—जौवनी] कुत्ता सम्बन्धी ।
२ कुत्तों जैसे गुणों वाला ।

जौवन (न०) १ कुत्ते की प्रकृति । २ कुत्ते की
आलाह ।

जौवस्त्रिक (वि०) [स्त्री०—जौवस्त्रिकी] आने
वाले कल का या कल तक रहने वाला ।

जौष्कल (न०) खुरक मोरत का मूल्य ।

जौष्कलः (पु०) १ मोरत बेचने वाला । २ मोरत
खोर ।

श्चुन् देखो श्च्युन्

श्च्युत् (धा० प०) [श्च्योतति] १ टपकना । बहना ।
२ गिरना ।

श्च्योतः (पु०) }
श्च्योतः (पु०) } टपकना । वृत्ता । बहाव ।
श्च्योतनं (न०) }
श्च्योतनं (न०) }

श्मशानं (न०) मसान । कबरगाह ।—श्मशिनः,

(पु०) मसान की आत्मा ।—श्मालयः, (पु०)

श्मशान घाट ।—गोचर, (वि०) श्मशान पर

रहने वाला ।—निवासिन,—वतिन्, (पु०)

भूत । प्रेत ।—माज्, (पु०)—वासिन,

(पु०) शिव ।—वेश्मन्, (पु०) १ शिव ।

२ भूत । प्रेत ।—वैराग्य, (न०) वृत्तिक,

वैराग्य (जो श्मशान देखने से उत्पन्न होता है ।

—शूलं, (न०)—शूलः, (पु०) श्मशान घाट

पर लगी हुई सूखी ।—साधनं (न०) भूत

प्रेत को वश में करने के लिये श्मशान जगाना ।

श्मश्रु (न०) मंछ । दाढ़ी ।—प्रवृद्धिः, (पु०)

दाढ़ी की बढ़ ।—मुखी, (स्त्री०) वह स्त्री

जिसके दाढ़ी हो ।—वर्धकः, (पु०) नाई ।

श्मश्रुल (वि०) दाढ़ी वाला ।

श्मील (धा० प०) [श्मीलनि] आँख मटकाना ।

आँख मारना ।

शमीलन (न०) आँख रूपकाना ।

श्याम (व० कृ०) १ गन्ध हुआ । प्रस्थानित । २ जमा हुआ । जमौआ । ३ गाढ़ा । लिबलिबा । ४ मिक्का हुआ । सुरीदार । सूखा ।

श्यामं (न०) धूम ।

श्याम (वि०) १ कृष्ण । काला । २ भूरा । ३ काही ।

श्यामं (न०) १ समुद्री निमक २ काली मिर्च ।

श्यामः (पु०) १ काला रंग । २ बादल । ३ कोमल । ४ प्रयाग का अक्षयवट :—अश्लुः (वि०) काला । —अश्लुः (पु०) बुधमह । (इनका वर्ण दूर्वा-श्याम माना गया है ।)—कण्टः (पु०) १ महादेव जी । २ मयूर ।—पत्रः (पु०) तमाल वृक्ष ।—भास्वः-रविः (वि०) चमकदार । काला । —सुन्दरः (पु०) श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

श्यामल (वि०) लौहला । कलौहाँ ।

श्यामलः (पु०) १ काला रंग । २ काली मिर्च । ३ औरा । ४ पीपल । अश्वत्थ वृक्ष ।

श्यामलिका (स्त्री०) नील का पौधा ।

श्यामलिमन् (पु०) कालापन । कृष्णत्व ।

श्यामा (स्त्री०) रात । (विशेषतः) कृष्ण पक्ष की रात । २ साया । छाई । ३ काले रंग की स्त्री । ४ सोलह वर्ष की तरुणी स्त्री । ५ वह स्त्री जिसके सन्तान न हुई हो । ६ गौ । ७ हल्दी । ८ मादा कोयल । ९ भिरगु जता । १० नील का पौधा । ११ श्यामा तुलसी । १२ पद्मवीज । १३ यमुना नदी । १४ अनेक पौधों का नाम ।

श्यामाकः (पु०) सीमा नाम का अनाज ।

श्यामिका (स्त्री०) १ कालापन । कृष्णत्व । २ अप-वित्रता । मिलावट । टाँका ।

श्यामित (वि०) काला । कलूटा ।

श्यालः (पु०) साला । जोर का भाई ।

श्यालकः (पु०) १ साला । जोर का भाई । २ अभागा बहनोई ।

श्यालकी } (स्त्री०) पत्नी की बहिन । साली ।
श्यालिका } सरहज ।
श्यालो }

श्याव (वि०) [स्त्री०—श्यावा या श्यावी,] १ धुमैला । धूम्र । २ भूरा ।—तैलः (पु०) आम का पेड़ ।

श्यावः (पु०) भूरा रंग ।

श्येत (वि०) [स्त्री०—श्येता—श्येना] सफेद । उज्ज्वल ।

श्येतः (पु०) सफेद रंग ।

श्येनः (पु०) १ सफेद रंग । २ सफेदी । ३ बाज पक्षी । ४ प्रचण्डता । उग्रता ।—करणा, (न०)—करणिका, (स्त्री०) दूसरी चिता पर मरम करने की क्रिया । २ किसी काम को उतनी ही तेजी या फुर्ती से करना जितनी तेजी या फुर्ती से बाज पक्षी अपने शिकार पर झपटता है ।

श्यै (धा० धा०) [श्यायते, श्यान, शीत या शीन] १ जाना । २ जमाने को । जमाने को । ३ सूखना । कुम्हलाना ।

श्यैर्नयाता (स्त्री०) शिकार । झपट । खदेड़न ।

श्याणाकः } (पु०) एक वृक्ष का नाम ।
श्योनाकः }

श्रंक् (धा० आ०) [श्रंक्ते] जाना । रेंगना ।

श्रंग् (धा० प०) [श्रंगति] जाना ।

श्रण् (धा० प०) [श्रणति, श्राणयति—श्राणयते] देना । दे डालना ।

श्रत् (अव्यया०) एक उपसर्ग जो “घा” धातु के साथ व्यवहृत की जाती है ।

श्रथ् (श्रयति, श्रय्नाति) चेतित करना । हत्या करना । अनिष्ट करना ।

श्रथनं (न०) १ हिंसन । हत्या । २ खोलना । कुद-कारा देना । मुक्त करना । बंधन खोलना । ३ उद्योग । प्रयत्न । ४ बंधन करण । बाँधना ।

श्रद्धा (स्त्री०) १ एक प्रकार की मनोवृत्ति, जिसमें किसी बड़े या पूज्य व्यक्ति के प्रति भक्तिपूर्वक विश्वास के साथ उच्च और पूज्य भाव उत्पन्न होता

(पु०) दिन, (न०) वह दिन जिस दिन किसी मरे हुए के उद्देश्य से श्राद्ध कर्म किया जाय ।
—देवः, (पु०) —देवता, (स्त्री०) १ श्राद्ध का अधिष्ठाता देवता । २ यमराज । ३ वैश्वदेव ।
—भुज्, भोक्तृ, (पु०) मृतक । पूर्वपुरुष ।

श्राद्धम् (न०) १ वह कार्य जो श्राद्धपूर्वक किया जाय । २ वह कृत्य जो शास्त्र के विधान के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है ।

श्राद्धिक (वि०) [स्त्री०—श्राद्धिकी] श्राद्ध सम्बन्धी ।

श्राद्धिक (न०) श्राद्ध में दी हुई भेंट ।

श्राद्धिकः (पु०) वह जो श्राद्ध के अवसर पर पितरों के उद्देश्य से भोजन कराता हो ।

श्राद्धीय (वि०) श्राद्ध सम्बन्धी ।

श्रांत } (व० क०) १ थका हुआ । २ शान्त ।
श्रान्त }

श्रांतः } (पु०) साधु । संन्यासी ।
श्रान्तः }

श्रांतिः } (स्त्री०) थकावट ।
श्रान्तिः }

श्रामः (पु०) १ मास । २ समय । ३ उठाऊ कृपण ।

श्रायः (पु०) संरक्षण । रक्षा । आश्रय ।

श्रावः (पु०) सुनना । श्रवण ।

श्रावकः (पु०) १ सुनने वाला । २ शिष्य । चेला ।
३ बौद्ध भिक्षुक । ४ बौद्ध भक्त । ५ नास्तिक ।
६ कौश्या ।

श्रावण (वि०) [स्त्री०—श्रावणी] काल सम्बन्धी ।
२ श्रावण नक्षत्र में उत्पन्न ।

श्रावणः (पु०) १ एक मास का नाम । २ नास्तिक । ३ प्रसारक । ब्रह्मवेशी । भण्ड । ४ एक वैश्य तपस्वी, जो महाराज दशरथ के राज्यत्व काल में था ।

श्रावणिक (वि०) १ श्रावण मास सम्बन्धी ।

श्रावणिकः (पु०) श्रावण मास ।

श्रावणी (स्त्री०) १ श्रावण मास की पूर्णिमा । २ श्रावण मास की पूर्णिमा, जिस दिन ब्राह्मणों

का प्रसिद्ध त्योहार रक्षाबंधन होता है । इस दिन लोग यज्ञोपवीत का पूजन करते और नवीन यज्ञोपवीत भी धारण करते हैं ।

श्रावस्तिः १ (स्त्री०) उत्तर कोशल में गंगा के तट श्रावस्ती पर बसी हुई एक बहुत प्राचीन नगरी ।

श्रावित (वि०) कथित । वर्णित । कहा हुआ ।

श्राव्य (वि०) १ सुनने योग्य । २ जो सुन पड़े ।

श्रि (धा० उ०) [श्रयति—श्रयते, श्रिन] १ जाना । २ प्राप्त करना । ३ चुकना । आश्रय लेना । ४ बसना । ५ परिचर्या करना । ६ व्यवहार करना । ७ अनुरक्त होना ।

श्रित (व० क०) १ गथा हुआ । रक्षा के लिये समीप आया हुआ । २ चिपटा हुआ । ३ संयुक्त । ४ रक्षित । ५ सम्मानित । परिचर्या किया हुआ । ६ सहकारी । ७ छाया हुआ । ढका हुआ । ८ सम्पन्न । ९ एकत्रित । जमा हुआ । १० अधिकृत ।

श्रितिः (स्त्री०) आश्रय ।

श्रियमन्य (वि०) १ अपने को योग्य समझने वाला । २ अभिमानी ।

श्रियापतिः (पु०) शिव जी का नामान्तर ।

श्रिप् (धा० प०) [श्रेषति] जलाना ।

श्री (धा० उ०) [श्रोणानि, श्रोणीते] रौंधना । उबालना । तैयार करना ।

श्री (स्त्री०) १ धन । सम्पत्ति । समृद्धि । २ राजसी सम्पत्ति । ३ गौरव । उच्चपद । ४ सौन्दर्य । आभा । ५ रंग । ६ धन की अधिष्ठात्री देवी । ७ कोई गुण या सत्कर्म । ८ सजावट । शृंगार । ९ बुद्धि । प्रतिभा । १० अलौकिक शक्ति । ११ धर्म, अर्थ और काम । १२ सरल वृत्त । १३ बेल का पेड़ । १४ लवङ्ग । लौंग । १५ कमल ।—श्राद्धं, (न०) कमल ।—ईशः, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।—कण्ठः, (पु०) १ शिव । २ भवभूति कवि ।—करः, (पु०) विष्णु ।—करं, (न०) लाल कमल ।—कराणं, (न०) कलम ।—कान्तः, (पु०) विष्णु ।—कारिन् (पु०) एक प्रकार का साग ।—गदितं, (न०) उपरूपक के

अठारह भेदों में से एक भेद । इसका दूसरा नाम श्रीरासिका भी है ।—गर्भा, (पु०) १ विष्णु का नामान्तर । २ तलवार ।—ग्रहः, (पु०) कुण्ड या कठोता, जिसमें पक्षियों के लिये अन्न भरा जाय ।—घनं (न०) खड़ा दही ।—धनः, (पु०) ऐन्द्र मिष्टक ।—वक्रः, (न०) भूगोल । २ इन्द्र के रथ का एक पक्षिया ।—जः, (पु०) कामदेव का नामान्तर ।—दः, (पु०) कुबेर का नामान्तर ।—दधितः—धरः, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।—नगरं, (न०) एक नगर का नाम ।—नन्दनः, (पु०) श्रीरामचन्द्र जी का नामान्तर ।—निकेतनः—निवासः, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।—पतिः, (पु०) १ विष्णु का नामान्तर । २ राजा । महाराज ।—पथः, (पु०) राजमार्ग ।—पार्थ, (न०) कमल ।—पर्वतः, (पु०) एक पहाड़ का नाम ।—पितृः, (पु०) तारपीन ।—पुष्पं (न०) लवंग ।—फलः, (पु०) बेल का पेड़ ।—फलं, (न०) बेल का फल ।—फला,—फली, (स्त्री०) १ नील का पौधा । २ आँबला ।—भ्रातृ, (पु०) १ चन्द्रमा । २ बोंदा ।—मस्तकः, (पु०) १ जहसन । २ लाल आलू ।—मुद्राः (स्त्री०) मस्तक पर लगाया जाने वाला वैष्णवों का तिलक-विशेष ।—मूर्तिः, (स्त्री०) १ श्रीलक्ष्मी जी की मूर्ति । २ किसी की भी मूर्ति ।—युक्त,—युत, (वि०) १ भाग्यवान् । आहुतादित । २ धनवान् । समृद्धशाली ।—रङ्गः, (पु०) विष्णु भगवान् का नामान्तर ।—रसः, (पु०) १ तारपीन । २ राख ।—वत्सः, (पु०) १ श्रीविष्णु का नामान्तर । २ विष्णु के वक्षस्थल का चिह्न विशेष । यह अंगुष्ठ प्रमाण श्वेत बालों का दक्षिणावर्त भौरी कासा चिह्न । इसे शृगु के चरण-ग्रहार का चिह्न बतलाते हैं ।—वत्सकिन्, (पु०) वह बोंदा जिसकी छाती पर भौरी हो ।—वरः—वहलमः, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।—वहलमः, (पु०) १ भाग्यवान् पुरुष । सौभाग्यशाली पुरुष ।—वासः, (पु०) १ विष्णु का नामान्तर । २ शिव । ३ कमल । ४ तारपीन ।—

वाससु, (पु०) तारपीन ।—धुत्तः, (पु०) १ बेल का वृक्ष । २ अश्वत्थ का वृक्ष । ३ बोंदे के साथे और छाती को भौरी ।—वेष्टः, (पु०) १ तारपीन । २ गज ।—संज्ञः, (न०) लवंग ।—महोदरः, (पु०) चन्द्रमा ।—सूक्तः, (न०) एक वैदिक सूक्त ।—हरिः, (पु०) विष्णु का नामान्तर ।—हस्तिनी, (स्त्री०) सूर्यमुखी का फूल ।

श्रीधत् (वि०) १ धनवान् । धनी । २ इषित । भाग्यवान् । ३ सुन्दर । मनोहर । ४ प्रसिद्ध । (पु०) १ विष्णु का नामान्तर । २ कुबेर । ३ शिव । ४ तिलक वृक्ष । ५ अश्वत्थ वृक्ष ।

श्रील (वि०) १ धनी । २ भाग्यवान् । समृद्धिशाली । ३ सुन्दर । खूबसूरत । ४ प्रसिद्ध । विख्यात ।

श्रु (वा० ५०) [श्रवनि] जाना । चलना । [श्रुतिगति, श्रुत] १ सुनना । २ सीखना । पढ़ना । ३ ध्यान देना । आज्ञा का पालन करना ।

श्रुन (न० क०) १ सुना हुआ । २ जाना हुआ । सीखा हुआ । ३ प्रसिद्ध । प्रख्यात । ४ नामक ।

श्रुतं (न०) १ सुनने की वस्तु । २ वेद । ३ विद्या । अध्ययनं, (न०) वेदों का अध्ययन —अन्वित, (वि०) वेदों का जानकार ।—अर्थः, (पु०) कोई बात जिसकी सूचना मौखिक दी गयी है ।—कोर्ति, (वि०) प्रसिद्ध । (पु०) १ उदार पुरुष । २ ब्रह्मर्षि । (स्त्री०) शत्रुघ्न की स्त्री का नाम ।—देवी, (स्त्री०) सरस्वती का नाम ।—धर, (वि०) जो पढ़ा हो उसे याद रखने वाला ।

श्रुतवन् (वि०) वेदज्ञ ।

श्रुतिः (स्त्री०) १ सुनने की क्रिया । २ कान । ३ अफवाह । ४ ध्वनि । आवाज । ५ वेद । ६ वेद-संहिता । ७ श्रवण नक्षत्र । ८ संगीत में किसी तसक के बाईस भागों में से एक भाग अथवा किसी स्वर का एक अंश । स्वर का आरम्भ और अन्त इसी से होता है ।—उक्त—उदित, (वि०) वेदों द्वारा आज्ञात ।—कटुः, (पु०) सपै । २ तप । प्रायश्चित्त ।—कटुः, (वि०) सुनने में कठोर ।—कटुः, (पु०) काव्यरचना का एक दोष । कठोर

एवं कर्कश वयों का व्यवहार । दुःश्रवणत्व ।
—चोदनं, (न०) —चोदना, (स्त्री०) वेद की आज्ञा । वेदवाक्य । —जीविका, (स्त्री०) स्मृति । धर्मशास्त्र । —द्वैतं, (न०) वेदवाक्यों का परस्पर विरोध या अनेक्य । —निर्दर्शनं, (न०) वेद का प्रमाण । —प्रस्तावनं, (वि०) कर्णमधुर । —ग्रामासृपं, (न०) वेद का प्रमाण । —प्रसङ्गं, (न०) कान का बाहिरी भाग । —मूलं, (न०) १ कान के नीचे का भाग । २ वेद-संहिता । —मूलक, (वि०) वेद से प्रमायित । —विषयः, (पु०) १ शब्द । ध्वनि । आवाज़ । २ वेद सम्बन्धी विषय । ४ कोई भी वैदिक आज्ञा । —स्मृति, (स्त्री०) वेद और धर्मशास्त्र ।

श्रुवः (पु०) १ यज्ञ । २ श्रुवा ।

श्रुवा (स्त्री०) श्रुवा । चम्पक जुमा लकड़ी का पात्र जिसमें भर कर शाकल्य की आहुति अग्नि में छोड़ी जाती है । —वृत्तः, (पु०) विकट वृत्त ।

श्रेढी (स्त्री०) एक प्रकार का पहाड़ा ।

श्रेणिः (स्त्री० पु०) १ रेखा । पंक्ति । अवली । २ श्रेणी (स्त्री०) { समूह । समुदाय । गिरोह । ३ व्यवसायों का संघ । कारीगरों का संघ । ४ बाली । बोल । —धर्मः, (पु० बहु०) व्यवसायों की मंडली या पंचायत की रीति या नियम ।

श्रेणिका (स्त्री०) खेमा ।

श्रेयस् (वि०) १ बेहतर । उत्कृष्टतर । २ उत्कृष्टतम । सर्वोत्तम । ३ बहुत प्रसन्न । सौभाग्यवान् । ४ माङ्गलिक अवसर । ५ मोक्ष । —अर्थिन्, (वि०) सुख प्राप्ति का अभिलाषी । मङ्गलाभिलाषी । —कर, (वि०) कल्याणकारी । शुभदायक । —परिश्रमः, (पु०) मोक्ष के लिये प्रयत्न ।

श्रेष्ठ (वि०) १ सर्वोत्तम । सर्वोत्कृष्ट । २ अत्यन्त प्रसन्न । अत्यन्त समृद्धशाली । ४ सब से अधिक बड़ा । —आश्रमः, (पु०) गृहस्थाश्रम । २ गृहस्थ । —वाच्, (वि०) वाम्नी ।

श्रेष्ठं (न०) गौ का वृष ।

श्रेष्ठः (पु०) १ ब्राह्मण । २ राजा । ३ कुबेर । ४ विष्णु ।

श्रेष्ठिन् (पु०) व्यापारियों की पंचायत का मुखिया । श्रे (धा० प०) [आरयति] १ पसीना निकालना । पसीजना । २ रांधना । उबालना ।

श्रोण् (धा० प०) [श्रोणति] १ जमा करना । ढेर लगाना । २ एकत्रित किया जाना ।

श्रोणा (वि०) लंगड़ा । लूला ।

श्रोणाः (पु०) रोग विशेष ।

श्रोणा (स्त्री०) १ कौड़ी । भात का माँड । २ श्रवणनक्षत्र ।

श्रोणिः (स्त्री०) १ कटि । कमर । २ चूतड़ । नितंब । श्रोणी } ३ मार्ग । सड़क । रास्ता । —फलकं, (न०) १ चौड़े चूतड़ । २ चूतड़ । नितंब । —विम्बं, (न०) १ गोल कमर । २ कमरबंद । पटुका । —सूत्रं, (न०) करधनी । मेखला ।

श्रोतस् (न०) १ कर्ण । कान । २ हाथी की सूँड़ । ३ इन्द्रिय । सोता । चरमा ।

श्रोतृ (पु०) १ सुनने वाला । २ शिष्य ।

श्रोत्रं (न०) १ कान । २ वेदज्ञान । ३ वेद ।

श्रोत्रिय (वि०) १ वेद वेदाङ्ग में पारङ्गत । २ शिक्षा देने योग्य । कावृ में लाने योग्य । —स्वं, (न०) विद्वान् ब्राह्मण की सम्पत्ति ।

श्रोत्रियः (पु०) विद्वान् ब्राह्मण । वेद में या धर्म-शास्त्रों में निष्णात पुरुष ।

श्रौत (वि०) [स्त्री०—श्रौती] कान सम्बन्धी । वेदसम्बन्धी । वेद पर अवलम्बित । वेदोक्त ।

श्रौतं १ वेदोक्त कर्म या क्रियाकलाप । २ वैदिक विधान । ३ यज्ञीय अग्नि का सदैव बनाये रखना । ४ तीनों प्रकार की (अर्थात् गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण) अग्नि । —सूत्रं, (न०) यज्ञादि के विधान वाले सूत्र । कल्पग्रन्थ का वह अंश जिसमें पौर्णमास्येष्टि से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञों के विधान का निरूपण किया गया है ।

श्रौत्रं (न०) १ कान । २ वेद में योग्यता ।

श्रोषट् (अन्याय०) बषट् या वौषट् का पर्यायवाची शब्द ।

शुक्ल (वि०) १ कोमल । सुलायन । सुकुमार ।
२ चमकदार । चिकना । पालिश किया हुआ । ३
छोटा । सूक्ष्म । पतला । ४ खूबसूरत । मनोहर ।
५ ईमानदार । साफदिल का ।

शुक्लकं (न०) सुपारी । पुं० गीफल ।

श्लक्ष्णं } (धा० आ०) [श्लक्ष्णते] चलना । जाना ।
श्लक्ष्णं }

श्लक्ष्णं } (धा० आ०) [श्लक्ष्णते] चलना । जाना ।
श्लक्ष्णं }

श्लक्ष्ण (धा० उ०) १ दीला होना । शिथिल होना ।
२ कमजोर होना । निर्बल होना । ३ दीला करना ।
शिथिल करना । ४ चोटिल करना । बच करना ।

श्लक्ष्ण (वि०) १ अयुक्त । अंधमरहित । २ दीला ।
खसका हुआ । ३ बिखरे हुए (जैसे बाल) ।

श्लक्ष्ण (धा० प०) [श्लक्ष्णति] घुसना । व्याप्त
होना ।

श्लक्ष्ण (धा० आ०) [श्लक्ष्णते] १ सराहना ।
प्रशंसा करना । तारीफ करना । २ डींगे हँकना ।
अकड़ना । अभिमान करना । ३ चापलूसी
करना ।

श्लक्ष्णनं (न०) १ श्लाघा । प्रशंसा । सराहना ।
२ चापलूसी ।

श्लक्ष्ण (स्त्री०) १ प्रशंसा । सराहना । तारीफ ।
२ आत्मश्लाघा । अभिमान । ३ चापलूसी । ४
सेवा । परिचर्या । ५ कामना । अभिलाष ।
—विपर्ययः, अभिमान का अभाव ।

श्लक्ष्णित (व० क०) प्रशंसित । तारीफ किया हुआ ।

श्लक्ष्ण (वि०) १ प्रशंसनीय । श्रेष्ठ । २ सम्मान-
नीय । प्रतिष्ठित ।

श्लक्ष्णः (पु०) लंपट । कामुक । २ गुलाम । चाकर
(न०) ज्योतिर्विद्या के अन्तर्गत गणित ज्योतिष
और फलित ज्योतिष ।

श्लक्ष्णः (पु०) १ लंपट । कामुक । २ चाकर ।

श्लक्ष्ण (धा० प०) [श्लक्ष्णति] जलाना । [श्लक्ष्णति
श्लक्ष्ण] चिपटना । गले लगाना । क्वार्ती से
लगाना । चिपकाना । चिपटना । ३ मिलाना ।
जोड़ना । ४ पकड़ना । ग्रहण करना । सम्भारना ।

श्लक्ष्ण (स्त्री०) १ आलिङ्गन । २ चिपक ।

श्लक्ष्ण (व० क०) १ आलिङ्गन किया हुआ । २
चिपका हुआ । चिपटा हुआ । ३ अचलस्थित ।
सुका हुआ । ४ साहित्य में श्लेषयुक्त अर्थान
जिसके दुहरे अर्थ हैं ।

श्लक्ष्णः (स्त्री०) आलिङ्गन । २ लगाव । चिपक ।

श्लक्ष्ण (न०) दाँग फूलने का रोग । पील पाँव ।

—प्रभवः (पु०) आन का वृक्ष ।

श्लक्ष्णः (वि०) १ मङ्गलकारी । शुभ । २ उत्तम ।
नफ़ीस । जो महा न हो ।

श्लक्ष्णः (पु०) आलिङ्गन । परिस्पर्श । २ जोड़ ।
मिलान । ३ एक में लटने या लगने का भाव ।
४ साहित्य में एक अलङ्कार जिसमें एक शब्द के
दो या अधिक अर्थ लिए जाते हैं । दो अर्थ वाले
शब्दों का प्रयोग ।

श्लक्ष्णकः (पु०) कफ । बलगम ।

श्लक्ष्ण (वि०) बलगमी । कफ वाला या कफ की
प्रकृति वाला ।

श्लक्ष्ण (पु०) कफ । बलगम । कफ की प्रकृति ।
—अतीसारः, (पु०) कफ के प्रकोप से उत्पन्न
हुआ अतीसार अर्थात् दस्तों का रोग । —श्लक्ष्णः,
(न०) कफ की प्रकृति । —श्लक्ष्णः, (स्त्री०)
१ मल्लिका । मोरिया का एक भेद । २ क्लृप्त
केवडा । ३ महा ज्योतिष्मती जल । ४ त्रिकुट । ५
पुनर्वसु ।

श्लक्ष्ण (वि०) कफ का । बलगमी ।

श्लक्ष्णः, } (पु०) लिसेडा । मेरा । बहुवार
श्लक्ष्णः }
श्लक्ष्णः } वृक्ष ।
श्लक्ष्णः }

श्लक्ष्ण (धा० आ०) [श्लक्ष्णते] १ श्लोक बनाना ।
पद्य रचना । २ प्राप्त करना । ३ त्याग देना ।
छोड़ देना ।

श्लक्ष्णः (पु०) १ स्तुति । प्रशंसा । २ नाम । कीर्ति ।
यश । ३ छंद । गीत । ऐसा छंद या गीत जो
प्रशंसा करने के लिये बनाया गया हो । ४ प्रशंसा
करने की वस्तु । ५ लोकोक्ति । कहावत । ६
संस्कृत का कोई पद्य जो अनुष्टुप् छन्द में हो ।

श्लोण (धा० प०) — [श्लोणति] ढेर करना । एकत्र करना । जमा करना ।

श्लोणः (पु०) लंगड़ा । लूना ।

श्वक् } (धा० आ०) [श्वङ्कते] चलना । जाना ।
श्वङ्क् }

श्वच् } (धा० आ०) [श्वचते, —श्वंचते] १
श्वंच् } जाना । चलना । २ फटना । दरार होना ।

श्वज् (धा० आ०) [श्वजते] जाना । चलना ।

श्वठ् (धा० उ०) [श्वठयति—श्वठयते] श्वा-
ठयति—श्वाठयते] १ जाना । चलना । २
सजाना । ३ समाप्त करना । पूरा करना ।

श्वंठ् } (धा० उ०) [श्वंठयति] बुराई करना ।
श्वण्ठ् }

एकव० द्विवच० बहुवच०

श्वन् (पु०) [कर्त्ता-श्वा, श्वानौ, श्वानः] कुत्ता ।
कूकुर ।—क्रीडिन् (पु०) शिकारी कुत्तों के
पालनेवाला ।—गणः, (पु०) शिकारी कुत्तों
का झुंड ।—गणिकः, (पु०) शिकारी ।
२ कुत्तों के खिलाने वाला ।—धूर्तः, (पु०)
शृगाल ।—नरः, (पु०) कठोर बातें कहने
वाला ।—निशः, (न०) निशा, (स्त्री) वह रात
जब कुत्ते भोंके ।—पचः, (पु०)—पचः, (पु०)
चाण्डाल । पतित जाति का आदमी । २ कुत्ते
का मौस खाने वाला ।—पाकः, (पु०) चाण्डाल ।
—फलः, (न०) नीबू या जंभीरी ।—फलकः,
(पु०) अकूर के पिता का नाम ।—भीरुः,
(पु०) स्यार । शृगाल ।—यूथ्यं (न०) कुत्तों
का झुंड ।—वृत्तिः, (स्त्री०) सेवा वृत्ति ।
—व्याघ्रः, (पु०) १ शिकारी जानवर । २
चीता । ३ बघरा ।—हज्र, (पु०) शिकारी ।

श्वभ्र (धा० उ०) [श्वभ्रयति—श्वभ्रयते] १ चलना ।
जाना । २ घुसेटना । छेद करना । ३ दरिद्रता
में रहना ।

श्वभ्रं (न०) सूख । दरार । सन्धि ।

श्वयः (पु०) सृजन । वृद्धि ।

श्वयश्चुः (पु०) सृजन ।

श्वयीची (स्त्री०) बीमारी । रोग ।

श्वल् (धा० प०) [श्वलति] दौड़ना । चलना ।

श्वल्क् (धा० उ०) [श्वल्कयति, श्वल्कयते] कहना ।
दर्शन करना ।

श्वल्ल (धा० प०) [श्वल्लति] दौड़ना ।

श्वशुरः (पु०) ससुर । पत्नी या पति का पिता ।

श्वशुरकः (पु०) ससुर ।

श्वशुर्यः (पु०) साला । पत्नी या पति का भाई । २
देवर । पति का छोटा भाई ।

श्वस् (धा० प०) [श्वसिति, श्वस्त या श्वसित]
स्वाँस लेना । साँस खींचना । २ उसाँस लेना ।
आह भरना । ठंडी साँस लेना । सुसकारी भरना ।
खुराँदा लेना ।

श्वस् (अव्यय०) १ कल (जो आने वाला है) । २
भविष्यद् ।—भूत, (वि०) [= श्वोभूत] कल होने
पर ।—वसीय, —वसीयस्, (= श्वोवसीय, =
श्वोवसीयस्) शुभ । भाग्यवान् । (न०) प्रसन्नता ।
सौभाग्य ।—श्रेयस्, (= श्वःश्रेयस्) आनन्दित
समृद्धवान् ।—श्रेयसं, (न०) १ हर्ष । समृद्धि ।
२ ब्रह्म ।

श्वसनं (न०) १ स्वाँस । साँस । २ आह । ठंडी
साँस ।—अशनः, (पु०) साँप ।—ईश्वरः, (पु०)
अर्जुन वृक्ष ।—उत्सुकः (पु०) साँप ।—ऊर्मिः,
(स्त्री०) हवा का भोंका ।

श्वसनः (पु०) १ हवा । पवन । २ एक दैत्य का नाम
जिसका वच इन्द्र ने किया था ।

श्वसित (व० क०) आह लिय हुए । ठंडी साँस भरे
हुए ।

श्वसितं (न०) १ साँस । उसाँस । २ आह ।

श्वस्तन } (वि०) [स्त्री०—श्वस्तनी] आने वाले कल
श्वस्त्य } से सम्बन्ध युक्त भविष्य ।

श्वकर्णः (पु०) कुत्ते के कान ।

श्वगणिकः (पु०) वह जो कुरो पालकर जीविका
निर्वाह करे ।

शवादतः }
शवादन्तः } कुरो का दाँत ।

श्वानः (पु०) कुत्ता ।—निद्रा. (स्त्री०) ऐसी नींद जो जरा सा खटका होते ही उचट जाय । भूपकी ।

श्वापद (वि०) [स्त्री०—श्वापदी] हिंसक । भयङ्कर ।

श्वापदः (पु०) १ हिंसकपशु, व्याघ्रादि २ चीता ।

श्वापुच्छं (न०) } कुत्ते की पूँछ
श्वापुच्छः (पु०) }

श्वविध् (पु०) सूइस । शिशुमार ।

श्वसः (पु०) १ स्वाँस, साँस । २ आह ३ हवा । पवन । ४ दमा की बीमारी ।—कासः, (पु०) दम के रोग ।—रोधः (पु०) साँस की रुकावट ।—हिक्का, (स्त्री०) हुचकी ।—हेतिः, (स्त्री०) निद्रा । नींद ।

श्वसिन् (वि०) साँस लेने वाला । (पु०) १ हवा । पवन । सजीव । जीवधारी स् स् स् कह कर बोलने वाला । एक प्रकार का हकला ।

शिव (धा० प०) [श्वयति, शून] १ उगना । बढ़ना । सूजना । २ फलना फूलना । ३ समीप जाना ।

शिवत् (धा० आ०) [श्वेतते] सफेद होना ।

शिवत् (वि०) सफेद । उज्ज्वल ।

शिवतिः (स्त्री) सफेदी ।

शिवन्य (वि०) सफेद । उजला ।

शिवत्रं (न०) १ सफेद कोढ़ । २ कोढ़ का दाग ।

शिवत्रिन् (वि०) [स्त्री०—शिवत्रिणी] कोढ़ी । कोढ़-वाला । (पु०) कोढ़ का रोगी ।

शिवंद् } (धा० आ०) [शिवन्दते] सफेद हो जाना ।
शिवन्द }

श्वेत (वि०) [स्त्री०—श्वेता या श्वेती] सफेद । उजला ।—अम्बरः, (पु०) जैन साधुओं का एक भेद । जैनियों की दो प्रधान सम्प्रदायों में से एक ।—इक्षुः, (पु०) एक प्रकार का गन्ना ।—उदरः, (पु०) कुबेर का नामान्तर ।—कमलं,—पद्मं, (न०) सफेद कमल ।—कुंजरः, (पु०) ऐरावत हाथी ।—कुष्ठं, (न०) सफेद कोढ़ ।—केतुः, (पु०) १ महर्षि उडालक के पुत्र का नाम । २ बोधिसत्व की अवस्था में गौतम बुद्ध का नाम ।—कोलः (पु०) मन्त्रजी विशेष ।—गजः—द्विपः

(पु०) १ सफेद हाथी । इन्द्र का हाथी ।

गरुत्, (पु०)—गरुतः (पु०) हंस ।—छदः,

(पु०) १ हंस । २ तुलसी ।—द्विपः (पु०) महाद्वीप

के अष्टादश विभागों में से एक ।—धातुः (पु०)

सफेद खनिज पदार्थ । २ खड़िया मिट्टी ।

—धामन्, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर । ३

मसुदफेन ।—नीलः, (पु०) बादल ।—पञ्चः,

(पु०) हंस ।—पाटला, (स्त्री०) पुष्प विशेष ।

—पिङ्गः, (पु०) १ शेर । सिंह । २ शिव का

नामान्तर ।—प्ररिचं, (न०) सफेद मिर्च ।

—मालः, (पु०) १ बादल । २ धूम । धुआँ ।

—रक्तः, (पु०) गुलाबी रङ्ग ।—रंजनं, (न०)

सीसा । रौंसा ।—रथः, (पु०) शुक्रग्रह ।

—रौचिस्, (पु०) चन्द्रमा ।—रोहितः, (पु०)

गरुड का नामान्तर ।—वलकलः (पु०) गोलाकार

वट वृक्ष ।—वाजिन्, (पु०) १ चन्द्रमा । २

अर्जुन ।—वाहः, (पु०) इन्द्र का नाम ।

—वाहः, (पु०) १ अर्जुन का नाम । २ इन्द्र

का नाम ।—वाहनः, (पु०) १ अर्जुन । २

२ चन्द्रमा । ३ मकर । बघियाल ।—वाहिन्,

(पु०) अर्जुन ।—शुद्धः—शृङ्गः (पु०) जौ ।

यव ।—हयः, (पु०) इन्द्र का घोड़ा । २

अर्जुन ।—हस्तिन्, (पु०) इन्द्र का हाथी

ऐरावत ।

श्वेतं (न०) १ चाँदी ।

श्वेतः (पु०) १ सफेद रङ्ग । २ शंख । ३ कौड़ी । ४

शुक्रग्रह । ५ शुक्रग्रह का अधिष्ठातृ देवता । ६

सफेद बादल । ७ सफेद जीरा । ८ एक पर्वत-

माला का नाम । ९ ब्रह्माण्ड का एक भाग ।

श्वेतकः (पु०) कौड़ी ।

श्वेतकं (न०) चाँदी ।

श्वेता (स्त्री०) १ कौड़ी । २ पुनर्नवा ३ सफेद तूँडा ।

४ स्फटिक ५ मिश्री कन्द । ६ बंशलोचन ।

७ भिन्न भिन्न पौधों के अनेक नाम ।

श्वेतौही (स्त्री०) इन्द्र पत्नी शची का नाम ।

श्वेत्त्रं (न०) सफेद कोढ़ ।

श्वैत्यं (न०) १ सफेदी । २ सफेद कोढ़ ।

श्वैर्व. श्वैर्व्यं (न०) सफेद कोढ़ ।

ष

१—संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला के व्यञ्जन वर्णों में ३१ वीं वर्ण या अक्षर । मुर्दा इसका उच्चारण-स्थान है । इसी लिए यह मूर्दान्य ष कहलाता है । इसका उच्चारण कुछ लोग “श” के समान और कुछ लोग “स” के समान करते हैं ।

[नोट—अनेक धातुएँ जो “स” अक्षर से आरम्भ होती हैं धातुपाठ में “ष” से लिखी गयी हैं, क्योंकि स्थान विशेषों में स के स्थान पर ष हो जाता है । ऐसी धातुएँ “स” अक्षर-शब्दावली में यथास्थान पायी जायगी]

ष (वि०) सर्वोत्तम । सर्वोत्कृष्ट ।

षः (पु०) १ नाश । २ अवसान । ३ अवशिष्ट । शेष । बाकी । ४ मुक्ति । मोक्ष ।

षट्क (वि०) छःगुना ।

षट्क (न०) छः का समुदाय ।

षड्भा देखो षोढा ।

षंडः } (पु०) १ बैल । वृषभ । २ नपुंसक ।
षण्डः } हिजड़ा । ३ समूह । समुदाय ।

षंडकः } (पु०) हिजड़ा । खोजा । नपुंसक ।
षण्डकः }

षंडाली } (स्त्री०) १ ताल । तलैया । २ व्यभि-
षण्डाली } चरिणी । दुरचरित्रा स्त्री ।

षंडः } (पु०) १ हिजड़ा । नपुंसक । नामदं । २
षण्डः } नपुंसकलिङ्ग ।

षष् (वि०) इसका प्रयोग बहुवचन में होता है । प्रथमा में इसका रूप षट्, होता है । —अक्षीणः, (= षडक्षीणः) (पु०) मछली । —अङ्गम् (= षडङ्गम्) (न०) १ शरीर के ६ अवयवों का समुदाय । वे छः अवयव ये हैं ।

[जंचे हाडु गिरी अधः षडङ्गचिदुच्यते ।

अर्थात् दो जाँवे, दो बाहेँ, सिर और धड़ ।]

२ वेद के छः अङ्ग । [यथा—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष] । ३ गौ से प्राप्त छः शुभ पदार्थ । [यथा—गोमूत्र, गोबर,

दूध, घी, दही और गोरोचन ।] —अग्निः, (= षडग्निः) (पु०) अमर । मौरा । —अधिक (वि०) (= षडधिक) जिसमें छः अधिक हों । —अभिज्ञः, (पु०) (= षडभिज्ञः) बौद्धों के एक माहात्मा । —अशीत, (= षडशीत) (वि०) छियासीवाँ । —अशीतिः, (= षडशीतिः) (स्त्री०) छियासी । —अहः (= षडहः) (पु०) छः दिन की अवधि या समय । —आननः (= षडा-ननः) —वक्त्रः, (पु०) (= षडवक्त्रः) —वदनः (= षड्वदनः) (पु०) कार्तिकेय । —आम्नायः (पु०) (= षडाम्नायः) छः प्रकार के तन्त्र । —कर्ण, (वि०) (= षट्कर्ण) छः कानों की सुनी हुई । —कर्ण, (न०) एक प्रकार की वीणा । —कर्मन्, (न०) (= षट्कर्मन्) १ ब्राह्मण के छः कर्म, यथा पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान लेना, दान देना] २ वे छः कार्य जो ब्राह्मण को जीविका के लिए विहित बतलाये गये हैं । (यथा—उद्धं प्रतिग्रहो भिक्षा वाणिज्यं पशुपालनं । कृषिकर्म तथा चेति षट् कर्माण्यप्रजन्मनः । अर्थात् उद्ध, दान, भिक्षा, व्यापार, पशुपालन और खेती ।] ३ तन्त्र द्वारा किये जानेवाले छः कर्म [यथा शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेष, उच्चाटन और मारण] । ४ छः कर्म जो योगियों को करने पड़ते हैं । (यथा—धैर्यव्रतं तथा नेत्रा नौलिकी त्राटकस्तथा । कपालभातोः चैतानि षट्कर्माणि समाचरेत् । (पु०) ब्राह्मण । —कोण, (= षट्कोण) १ छः कोने की शकल । २ इन्द्र का वज्र । —गधं, (न०) = षड्गधं] ऐसा शुभ्रा जिसमें छः बैल जोते जाँय या छः बैलों का समुदाय । —गुण, (= षड्गुण,) (वि०) १ छःगुना । २ छः गुणों वाला । —गुण, (= षड्गुण,) १ छः गुणों का समुदाय । २ राजनीति के छः अङ्ग । [यथा—सन्धि, विग्रह, यान, (चढ़ाई), आसन (विग्राम) द्वैधीभाव और संश्रय] —अग्निः,

(= पङ्क्तिः) (पु०) पिपत्तामूल (—
ग्रन्थिका, (= पङ्क्तिग्रन्थिका,) (स्त्री०)
पिपत्तामूल ।—चक्रं, (= पट्चक्रं,) (न०)
हठ योग में माने हुए कुण्डलिनी के ऊपर पढ़ने वाले
छः चक्र ।—चत्वारिंशत् (= पट्चत्वारिंशत्)
द्वियासीस ।—चरणाः, (= पट्चरणाः,)
(पु०) १ भौरा । अमर । २ दीदी । ३ कुआँ ।—
जः, (= पट्जः,) (पु०) सरगम का प्रथम
या चौथा स्वर ।—त्रिंशत्, (= पट्त्रिंशत्,)
छत्तीस ।—त्रिंश, (= पट्त्रिंश,) (वि०)
छत्तीसवाँ ।—दर्शनं, (= पट्दर्शनं) (न०)
हिन्दूशास्त्र के छः दर्शन या छः दार्शनिक
सिद्धान्त । [यथा—सांख्य, योग, न्याय, वैशे-
षिक, मोमांसा और वेदान्त]—दुर्ग, (= पट्
दुर्ग,) छः प्रकार के दुर्गों का समुदाय । [यथा
भन्वदुर्ग, भद्रदुर्ग, गिरिदुर्ग, मन्दिर १ ।
मनुष्यदुर्ग, शुद्धदुर्ग वनदुर्गमिति क्रमत् " ॥]
—नवतिः, (= पट्नवतिः) (पु०) ९६ द्विया-
नवे ।—पञ्चाशत्, (स्त्री०)—(= पट्पञ्चाशत्)
छप्पन ।—पदः, (= पट्पदः,) (पु०)
भौरा । अमर । १ कुआँ ।—पद्मी, (= पट्पद्मी,)
(स्त्री०) १ एक छंद जिसमें छः पद या चरण
होते हैं । २ भौरी । अमरी । ३ कुआँ ।—प्रज्ञः,
(पु०) (= पट्प्रज्ञः,) १ धर्म, अर्थ, काम,
मोक्ष, लोकार्थ और तत्त्वार्थ का ज्ञान । २ कामुक ।
—विन्दुः, (= पट्विन्दुः,) (पु०) विण्डु ।
—भुजा, (= पट्भुजा,) (स्त्री०) १ दुर्गा
देवी । २ तरबूज । हिंगवाना । कलीदा ।—
मासिक, (वि०) (= पट्मासिक,) छः
माही ।—मुखः, (= पट्मुखः,) (पु०)
कार्तिकेय ।—मुखा, (पट्मुखा) (स्त्री०)
कलीदा । हिंगवाना । तरबूज ।—रसम् (न०)
—रसाः, (बहु० पु०) (= पट्सं) छः प्रकार
के रस या स्वाद ।—वर्गः, (= पट्वर्गः,)
(पु०) १ छः वस्तुओं का समुदाय । २ काम,
क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर का समूह ।
—विंशतिः, (स्त्री०) (= पट्विंशतिः,)
छत्तीस ।—विंश, (= पट्विंश,) (वि०)

छत्तीसवाँ ।—विंश, (= पट्विंश,) (वि०)
छः प्रकार का । छः गुना ।—पटिः, (=
पट्पटिः,) (स्त्री०) द्वियासठ ।—सप्ततिः,
(= पट्सप्ततिः,) द्वियत्तर । ७६ ।

पटिः, (स्त्री०) साठ ।—भागः, (पु०) शिव जी ।
—मत्तः, (पु०) वह हाथी जो ६० वर्ष का होने
पर भी मृदमत्त हो ।—योजनी, (स्त्री०) साठ
योजन की दूरी या यात्रा ।—ह्ययनः, (पु०) १
६० वर्ष की उम्र का हाथी । २ चावल विशेष ।
पट, (वि०) [स्त्री०—पट्ठी,] छठवाँ ।—अंगः
(पु०) १ छठवाँ भाग । विशेष कर पैदावार का
छठवाँ भाग जो राजा अपनी प्रजा से ले ।

पट्ठी (स्त्री०) १ तिथि छठ । सम्बन्धकारक । २
कात्यायनी देवी ।—तत्पुरुषः, (पु०) समास-
विशेष ।—पूजनम् (न०)—पूजा, (स्त्री०)
बालक उत्पन्न होने से छठवाँ दिन तथा उस दिन का
उत्सव ।

षट्सानुः (पु०) १ मयूर । मोर । २ यज्ञ ।

षाट् (अव्यया०) सम्बोधनात्मक अव्यय ।

षाट्कौशिक (वि०) [स्त्री०—षाट्कौशिकी] छः
पत्तों में लपेटा हुआ या छः म्यानो वाला ।

षाडवः (पु०) १ मनोविकार । मनोराग । २ संगीत ।
गान । ३ राग की एक जाति जिसमें केवल छः स्वर
(स, रे, ग, म, प और ध) लगते हैं और जो
निषाद वर्जित है ।

षाड्गुण्यं (न०) १ छः उत्तम गुणों का समूह । २
राजनीति के छः अङ्ग । ३ किसी वस्तु को छः से
गुणा करने से प्राप्त गुणनफल ।—प्रयोगः, (पु०)
राजनीति के छः अङ्गों का प्रयोग ।

षाण्मातुरः (पु०) वह जिसकी छः माताएँ हैं । कार्ति-
केय ।

षाण्मासिक (वि०) [पट्मासिकी] १ छः माही ।
२ छः मास का या छः मास का पुराना ।

षाष्ट (वि०) [स्त्री०—षाष्टी] छठवाँ

षिङ्गः (पु०) १ कामुक पुरुष । व्यवहारी पुरुष । २
विट ।

(पु०) जनन । पुत्रजनन ।

डश (वि०) [स्त्री०—पौडशी] सोलहवाँ ।

डशम्, (वि०) सोलह ।—अंशुः, (पु०) शुक्रमह ।

—अङ्गः, (पु०) एक प्रकार का सुगन्धद्रव्य ।—

अङ्गुलकः, (वि०) सोलह अंगुल चौड़ा ।—

अंभिः, (पु०) कैकड़ा ।—अर्चिस्, (पु०)

शुक्रमह ।—आवर्तः, (पु०) शङ्ख ।—उपचार,

(पु० बहुव०) पूजन के पूर्ण अंग जो सोलह

माने गये हैं । [आवाहन । आसन । अर्घ्यपात्र ।

आचमन । मधुपर्क । स्नान । वस्त्राभरण । यज्ञोपवीत ।

गन्ध (चन्दन) । पुष्प । धूप । दीप । नैवेद्य ।

साम्बूल । परिक्रमा । वंदना ।

आसनं स्वासनं, पादपद्मार्चनावसनीयकम् ।

मधुपर्कचनरत्नानं वसत्राभरणानि च ॥

गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं वंदनं तथा ॥]

—कलाः, (पु०) चन्द्रमा की सोलह कला ।

[चन्द्रमा की सोलह कला ये हैं :—

अधृता चानदा पूर्णा तुष्टिः पुष्टीरतिधृतिः ।

शक्ती चन्द्रिका कान्तिर्लघोरत्ना श्रीः प्रीतिरेव च ।

अङ्गदा च तथा पूर्णाधृता षोडश वै कलाः ।]

—भुञ्जा, (स्त्री०) दुर्गा की एक मूर्ति ।—मातृका

(स्त्री०) एक प्रकार की देवियाँ जो सोलह हैं ।

[उनके नाम ये हैं, गौरी । पद्मा । शची । मेधा ।

सावित्री । विजया । जया । देवसेना । स्वधा ।

स्वाहा । शान्ति । पुष्टि । धृति । तुष्टि । मानसः

और आत्मदेवता ।]

षोडशधा (अव्यया०) १६ प्रकार का ।

षोडशिक (वि०) [स्त्री०—षोडशिकी,] १६ भागों

का । सोलह गुना ।

षोडशिन् (पु०) अग्निष्टोम यज्ञ का विधान

विशेष ।

षोढा (अव्यया०) छः प्रकार से —मुखः, (पु०)

छः मुखों वाला । कार्तिकेय ।

ष्विन् (धा० प०) [ष्वीवति, ष्वीव्यति, ष्व्यूत]

थूकना ।

ष्वीवनं

ष्वेवनं

(ल०) १ थूकने की क्रिया । २ थूक । खखार ।

ष्व्यूत

ष्व्यूत

(व० कृ०) थूका हुआ । उगला हुआ ।

ष्वक्

ष्वस्के

(धा० आ०) [ष्वकते, ष्वस्कते]

जाना । चलना ।

स

संस्कृत अथवा नागरी वर्णमाला का बत्तीसवाँ

व्यंजन । इसका उच्चारणस्थान दन्त है ।

अतएव यह दन्त्य स कहा जाता है ।

(अव्यया०) यह संज्ञात्मक शब्दों के पहले सम्,

सम, तुल्य, सदृश, सह के अर्थ में लगाया जाता है ।

[जैसे सपुत्र, समार्थ, सतुल्य]

(पु०) १ सर्प । सर्प । २ हवा । पवन । ३ पत्नी ।

४ पद्म । ५ शिव । ६ विष्णु ।

१: (पु०) कंकाल । पंजर ।

सत् (स्त्री०) युद्ध । संग्राम । लड़ाई ।—वरः, (पु०)

राजा । महाराज ।

सत् (व० कृ०) १ बद्ध । बाँधा हुआ । जकड़ा हुआ ।

२ पकड़ में रखा हुआ । दबाव में रखा हुआ । ३

रोका हुआ । दमन किया हुआ । काढ़ में छाया

हुआ । वशीभूत । ४ बंद किया हुआ । कैद किया

हुआ । ५ क्रमवृद्ध । व्यवस्थित । नियमबद्ध ।

क्राथदे का पाबंद । ६ उद्यत । तैयार । सज्ज ।

७ इन्द्रियजीत । निग्रही । ८ उचित सीमा के भीतर

रोका हुआ ।—अंजलि, (वि०) हाथ जोड़े हुए ।

—आत्मन् (वि०) आत्म-निग्रही ।—आहार,

(वि०) जो आहार करने में संयम रखे ।—

उपस्कर, (वि०) वह जिसका घर सुव्यवस्थित

हो ।—चेतस्,—मनस्, (वि०) मन को संयम

में रखने वाला ।—प्राण, (वि०) वह जिसकी

स्वांस रुकी हो ।—वास, (वि०) खामोश ।

जिसने अपनी वाणी को वश में कर रखा हो ।

संयत (वि०) १ तैयार । सज्ज । सावधान ।
संयमः (पु०) १ निग्रह । रोक । २ मन की एका-
ग्रता । २ धार्मिक व्रत । ३ तपनिष्ठा । ४ दयालुता ।

संयमनं (न०) १ रोक । निग्रह । २ खिंचाव । तनाव ।
३ बंधन । ४ बंदी करने की क्रिया । कैद । ५
आत्मसंयम । ६ धार्मिक व्रत । ७ चार चरों का
चौकोर चौगान ।

संयमनः (पु०) शासक ।

संयमनी (स्त्री०) यमराज की नगरी का नाम ।

संयमित (व० कृ०) १ निग्रह किया हुआ । २ बाँधा
हुआ । बेड़ी डाला हुआ । ३ रोका हुआ ।

संयमिन् (वि०) संयमी । निग्रह । (पु०) तपस्वी ।
ऋषि । साधु ।

संयानं (न०) १ सहगमन । साथ जाना । २ यात्रा ।
सफ़र । ३ मुरदे को ले चलना ।

संयानः (पु०) सौँचा ।

संयाम देखो संयम ।

संयावः (पु०) गुम्फिया । पिराक । पकवान विशेष ।

संयुक्त (व० कृ०) १ जुड़ा हुआ । लगा हुआ । मिला
हुआ । २ मिश्रित । घाल मेल । ३ साथ आया
हुआ । ४ सम्पन्न । ५ समन्वित । ६ लिये हुए ।

संयुगः (पु०) १ संयोग । समागम । २ युद्ध ।
भिन्न । लड़ाई ।—गोणपदं, (न०) तुच्छ
भगवत् ।

संयुज् (वि०) संयुक्त । सम्बन्ध युक्त ।

संयुत (व० कृ०) १ मिला हुआ । जुड़ा हुआ ।
संयुक्त । २ सम्पन्न । समन्वित ।

संयोगः (पु०) १ समागम । मेल । मिलान । मिलाप ।
२ वैशेषिक दर्शन के २४ गुणों में से एक । २
जोड़ लेना । मिला लेना । अन्तर्मुक्त कर लेना ।
४ जोड़ । जोड़ी । ५ दो राजाओं के बीच किसी
समान उद्देश्य की सिद्धि के लिये सन्धि । ६
व्याकरण में दो या अधिक व्यंजनों का मेल । ७
दो ग्रहों या नक्षत्रों का समागम । ८ शिव जी
का नामान्तर ।—पृथक्त्वं, (न०) (न्याय में)

ऐसा अलगवाव जो लिये न हो ।—विरुद्ध, (न०)
वे खाद्य पदार्थ जो मिला कर खाये जाने पर
अवगुण करें, अर्थात् रोगों की उत्पत्ति करें ।

संयोगिन्, (वि०) १ संयुक्त । युक्त । २ मिलवैया ।

संयोजनं (न०) १ मेल । मिलाप । २ मैथुन । समागम ।

संरत्नः, (पु०) रत्न । हिराजत । देख रेख ।
निगरानी ।

संरक्षणं, (न०) १ हिराजत । निगरानी । रक्षा ।
देखरेख । २ अधिकार । कब्जा ।

संरक्त, (व० कृ०) १ रंगीन । लाल । २ अनुरागवान् ।
आसक्त । प्रेम मग्न । ३ क्रोधान्वित । कुपित ।
४ मुग्ध । प्रेम में फँसा हुआ । ५ सुन्दर । मनो-
मुग्धकारी ।

संरब्ध, (व० कृ०) १ उत्तेजित । जोश में भरा
हुआ । २ कुन्ध । उद्विग्न । ३ क्रोध में भरा हुआ ।
क्रुद्ध । ४ कुला हुआ । सुजा हुआ । ५ बढ़ा हुआ ।
वृद्धि को प्राप्त । ६ अभिभूत । मग्न । आकुलित ।

संरम्भः (पु०) १ आरम्भ । २ उत्पात । उपद्रव ।
हंगामा । ३ आन्दोलन । उत्तेजना । खोब । ४
उत्पुक्ता । उत्कण्ठा । उत्साह । ५ क्रोध । दोष ।
कोप । ६ अभिमान । घमंड । ७ गर्मी और सूजन
से फूल उठना ।—परुष, (वि०) क्रोध के
कारण रुख या रुखा ।—रस, (वि०) अस्यन्त
क्रुद्ध ।—वेगः, (पु०) क्रोध की प्रचण्डता ।

संरम्भिन् (वि०) [स्त्री०—संरम्भिणी] १ उत्ते-
जित । उद्विग्न । २ क्रोधयुक्त । क्रोधादिष्ट ।
३ अभिमानी । अहंकारी ।

संरागः (पु०) १ रंगत । २ अनुराग । स्नेह ।
३ क्रोध । कोप ।

संराधनं (न०) आराधना करके प्रसन्न करने की
क्रिया । २ सम्पादन । ३ गम्भीर ध्यानमग्नता ।
गम्भीर विचार ।

संरावः (पु०) १ कोलाहल । शोर । होदल्ला । गड़-
बड़ी ।

संरुणा (व० कृ०) टुकड़े टुकड़े किया हुआ । टूटा
हुआ ।

संस्कृ, (व० कृ०) १ अवस्कृ । रोका हुआ । सामना किया हुआ । २ भरा हुआ । परिपूर्ण । ३ घेरा हुआ । अच्छी तरह बंद । ४ ढका हुआ । छिपाया हुआ । ५ अस्वीकृत । वर्जित । मना किया हुआ ।

संस्कृ (व० कृ०) १ साथ साथ उगा हुआ । २ पुरा हुआ । भरा हुआ । २ अंकुरित । कलियाना हुआ । अच्छी तरह जमा या जड़ पकड़े हुए । ४ छष्ट । प्रसन्न । ५ प्रौढ़ । दृढ़ ।

संरोधः (पु०) रुकावट । रोकटोक । अड़चन । निग्रह । २ घेरा । ३ बन्धन । बेड़ी । ४ प्रक्षेप । निक्षेप ।

संरोधनं (न०) रोकना । बाधा डालना ।

संलक्षणं (न०) १ निशान लगाने की क्रिया । चिह्नाना । २ लखना । पहचानना । ताड़ना । तमीज़ करना ।

संलग्न (व० कृ०) १ सटा हुआ । संयुक्त । मिला हुआ । २ भिड़ा हुआ । परस्पर भूँकाबाज़ी करता हुआ ।

संलयः (पु०) १ लेटना । सोना । निद्रा । २ धुलना । धुलाव । लीनता । ३ प्रलय ।

संलयनं (न०) १ चिपकना । सटना । २ लीनता । विलीनता ।

संललित (व० कृ०) दुलारा हुआ । प्यार किया हुआ ।

संलापः (पु०) १ परस्पर वार्तालाप । आपस की बातचीत । २ विशेष कर गुप्त या गोपनीय वार्तालाप । रहस्य वार्ता । ३ नाटक में एक प्रकार का संवाद जिसमें जोभ या आवेग तो नहीं होता, बल्कि धैर्य होता है ।

संलापकः (पु०) नाटक में एक प्रकार का संवाद । संलाप । २ एक प्रकार का उपरूपक ।

सलीढ (व० कृ०) चाटा हुआ । उपभोग किया हुआ ।

संलीन (व० कृ०) १ अच्छी तरह लगा हुआ । सटा हुआ । १ छिपा हुआ । ४ ढाँका हुआ । ५ सिकुड़ा हुआ । सङ्कुचित ।—मानस, (वि०) उदास मन ।

संलौडनं (न०) गड़बड़ी । उथल पुथल । उलट पुलट ।

संवत् (अन्वय०) १ वर्ष । २ विशेष कर विक्रमी वर्ष ।

संवत्सरः (पु०) १ वर्ष । साल । २ विक्रमादित्य के काल से प्रचलित वर्ष गणना । ३ शिव जी का नाम ।—कर, (पु०) शिव ।—रथ, (पु०) एक वर्ष का मार्ग या वह मार्ग जो एक वर्ष में पूरा हो ।

संवदनं (न०) १ परस्पर वार्तालाप । २ खबर देना । ३ परीक्षा । ४ मंत्र द्वारा वशवर्ती करना । ५ यंत्र ताबीज़ ।

संवरं (न०) १ दुराव । छिपाव । २ सहनशीलता । आत्मसंयम । ३ जल । ४ बौद्धों का एक प्रकार का मत ।

संवरः (पु०) १ ढकन । २ धीशक्ति । बोध । ३ सिकुड़न । सङ्कोच । ४ बाँध । पुल । सेतु । ५ मृग विशेष । ६ एक दैत्य का नाम ।

संवरणम् (न०) १ आच्छादन । ढकना । २ छिपाव । दुराव । ३ बहाना । मिस ।

संवर्जनं (न०) १ आत्मसात् करना । २ भक्षण कर जाना । खा जाना । उड़ा जाना ।

संवर्तः (पु०) १ फेरा । घुमाव । २ लीनता । नाश । ३ कल्पान्त । प्रलय । ४ बादल । ५ बहुत जल वाला बादल । प्रलयकालीन सप्तमेघों में से एक का नाम । ७ वर्ष विशेष । राशि । समूह ।

संवर्तकः (पु०) १ बादल विशेष । २ प्रलयाग्नि । ३ बहवानल । ४ बलराम जी का नाम ।

संवर्तकिन् (पु०) बलराम का नाम ।

संवर्तिका (स्त्री०) १ कमल का बँधा पत्ता । २ कोई बँधा हुआ पत्ता । ३ दीपक की बत्ती ।

संवर्धक (वि०) [स्त्री०—संवर्धिका] बढ़ाने वाला । ३ (अतिथि का) स्वागत । बधाई ।

संवर्धित (व० कृ०) १ पाला पोसा । २ वर्धित ।

संवलित (व० कृ०) १ मिला हुआ । मिश्रित । २ छिड़का हुआ । ३ सम्बन्ध युक्त । ४ दूटा हुआ ।

संयुक्त (वि०) आक्रमण किया हुआ । उच्छिन्न किया हुआ । पददलित किया हुआ ।

संयुक्त (न०) स्वर । आवाज़ ।

संयुक्त (पु०) आवादी गाँव या वह स्थान जहाँ लोग आस पास रहते हों ।

संयुक्त (पु०) वायु के सात पथों में से एक का नाम ।

संवादः (पु०) १ वार्तालाप । बातचीत । संवाद । २ बहस । वादविवाद । संवाद की सूचना । ३ स्वीकृति । मंजूरी । ४ समानता । सहमति ।

संवादिन् (वि०) भाषण करने वाला । वार्तालाप करने वाला ।

संवारः (पु०) १ आच्छादन । ढाँकना । छिपाना । २ उच्चारण में कंठ का आकुञ्चन या दबाव । ३ उच्चारण के वाह्य प्रयत्नों में से एक, जिसमें कण्ठ का आकुञ्चन होता है । विवाह का उलटा । ४ रक्षण । हिफाजत । ५ सुव्यवस्था । ६ हास । न्यूनता । कमी ।

संवासः (पु०) १ साथ साथ बसना । २ सहवास । साथ । ३ घरेलू व्यवहार या रसज्ञान । ४ घर । आवासस्थान । ५ सभा के लिये या आमोद प्रमोद के लिये खुला हुआ मैदान ।

संवाहः (पु०) १ लेजाना । ढोना । २ मिला कर दबाना । ३ पगचप्पी । पैर दबाना । ४ वह नौकर, जो पैर दबाने और बदन में मालिश करने को रखा गया हो ।

संवाहकः (पु०) पैर दबाने वाला ।

संवाहनं (न०) १ बोक ले जाना या ढोना । २ संवाहना (स्त्री०) । पैर दबाना । मालिश करना ।

संविक्तं (न०) जो अलगया गया हो ।

संविग्न (वि०) १ दुःख । उद्विग्न । धबराया हुआ । २ भीत । आतुर । डरा हुआ ।

संविज्ञात (व० कृ०) सब का जाना हुआ ।

संविधि (स्त्री०) १ प्रतिपत्ति । चेतना । संज्ञा । २ अविवाद । ऐकमत्य । ३ अनुभव । ४ बुद्धि ।

संविट् (स्त्री०) १ चेतना । ज्ञान । बोध । २ प्रतीति । ३ इकरार । उहराव । टेका । प्रतिज्ञा । ४ रजामंदी

स्वीकृति । ५ प्रचलन । पद्धति । रीति रस्म । ६ युद्ध । संग्राम । लड़ाई । ७ युद्ध की ललकार । वह शब्द या वाक्य जिससे रात को संतरी मित्र या शत्रु को पहचान सके । पलवल । ८ नाम । संज्ञा । ९ सङ्केत । इशारा । १० तोषण । तुष्टि । प्रसन्नता । ११ सहानुभूति । १२ ध्यान । १३ वार्तालाप । १४ भाँग । विज्या । वृत्ति ।—व्यक्ति-क्रमः, (पु०) वादों का तोड़ना । प्रतिज्ञा भङ्ग करना ।

संविद्रा (स्त्री०) इकरार । प्रतिज्ञा । इकरारनामा ।

संविदित (व० कृ०) १ जाना हुआ । समझा हुआ । २ पहचाना हुआ । माना हुआ । ३ प्रसिद्ध । प्रख्यात । ४ खोजा हुआ । ढूँढ़ा हुआ । ५ तै पाया हुआ । सब की राय से निश्चित किया हुआ । ६ उपदिष्ट । समझाया बुझाया हुआ ।

संविदितं (न०) इकरारनामा । प्रतिज्ञापत्र ।

संविधा (स्त्री०) १ व्यवस्था । आयोजन । प्रबन्ध । २ ढंग । तरीका । ३ विधान । ४ अभिनय । ५ किसी नाटक की घटनाओं को क्रमबद्ध करना ।

संविधानकं (न०) १ वटवारा । विभाजन । भाग । अंश ।

संविभाषिन् (पु०) साझीदार । पत्नीदार । भागीदार ।

संविष्ट (व० कृ०) १ सोया हुआ । लेटा हुआ २ साथ साथ घुसा हुआ । साथ साथ बैठा हुआ । ३ पोशाक पहने हुए ।

संवीक्षणं (न०) चारों ओर ताकना । खोजना ।

संवीत (व० कृ०) १ पोशाक पहिने हुए । कपड़े पहिने हुए । २ ढका हुआ । ढाया हुआ । आच्छादित । सजा हुआ । ३ बिरा हुआ । छिका हुआ । बंद । ४ असिभूत । मृत ।

संवृत (व० कृ०) १ मद्धण किया हुआ । लाया हुआ । २ नष्ट किया हुआ ।

संवृत (व० कृ०) १ ढका हुआ । २ छिपा हुआ ३ गुप्त । ४ बंद । सुरक्षित । ५ अवकाश प्राप्त । जो अलग हो गया हो । ६ दबाया हुआ । सकोदा हुआ । सङ्कुचित । ७ जन्त किया हुआ । अपहत ।

छीना हुआ । २ परिपूर्ण । भरा हुआ । ३ सम्-
न्वित । सहित ।—आकार, (वि०) वह जो
अपने मन का भेद किसी प्रकार प्रकट न होने दे ।
—मंत्र, (वि०) वह जो अपने विचार गुप्त रखे ।

संवृतं (न०) १ गुप्त स्थान । २ उच्चारण का ढंग
विशेष ।

संवृत्तिः (स्त्री०) १ ढकने या छिपाने की क्रिया । २
छिपाव । दुराव । ३ गुप्त मंसूवे ।

संवृत्त (व० कृ०) १ जो हुआ हो । घटित । २ परि-
पूर्ण । निष्पन्न । ३ एकत्रित । ४ व्यतीत । ५
आच्छादित । ६ अन्वित ।

संवृत्तः (पु०) वरुण का नाम ।

संवृत्तिः (स्त्री०) १ होना । घटित होना । २ सिद्धि ।
निष्पत्ति । ३ आच्छादन ।

संवृद्ध (व० कृ०) १ पूरा बढ़ा हुआ । २ लंबा
उगा हुआ । लंबा । ऊँचा । ३ फला फूला हुआ ।
उन्नत ।

संवेगः (पु०) १ उत्तेजना । चोम । २ पूर्ण वेग ।
या तेजी । प्रचण्डता । ३ उतावली । आवेग । ४
चटपराहट । कहुआपन ।

संवेदनं (पु०) १ अनुभव । प्रतीति । बोध ।

संवेदः (पु०) १ प्रतीति । बोध । २ अनुभव
संवेदना (स्त्री०) १ करना । ३ उत्सर्ग । समर्पण ।

संवेशः (पु०) १ निद्रा । विश्राम । २ स्वप्न । ३
बैठकी । ४ मैथुन । सम्भोग । रतिबन्ध ।

संवेशनं (न०) रति । रमण । समागम ।

संव्यानं (न०) उत्तरीय वस्त्र । चादर । दुपटा । २
वस्त्र । आच्छादन । कपड़ा ।

संशक्तः (पु०) १ वह थोड़ा जिसने बिना सफल
हुए लड़ाई से न हटने की शपथ खायी हो । २ वह
थोड़ा जिसने शत्रु को मारे बिना, रणक्षेत्र से
न हटने की शपथ खायी हो । ३ खुना हुआ थोड़ा
४ सहयोगी थोड़ा । ५ षड्यंत्रकारी जिसने किसी
की हत्या करने का बीड़ा उठाया हो ।

संशयः (पु०) १ शक । सन्देह । दुविधा । २ अनिश्च-
यात्मक ज्ञान । ३ खतरा । जोखी । ४ सम्भावना ।

—आत्मन्. (वि०) संशयात्मक । सन्दिग्ध ।

—आपन्न, —उपेत, —स्थ, (वि०) सन्दिग्ध ।
संशयी । अनिश्चयात्मक ।—गत, (वि०) ख़तर
में पड़ा हुआ ।—छेदः, (पु०) संशय का
निरसन । निश्चयात्मक ।

संशयान } (वि०) सन्दिग्ध । शङ्की । डौंवाडोल ।
संशयालु }

संशरणां (न०) चढ़ाई का उपक्रम । आक्रमण ।

संशित (व० कृ०) १ शान पर चढ़ाया हुआ । तेज
किया हुआ । देया हुआ । २ पूर्णरीत्या पूरा किया
हुआ । ३ निश्चय किया हुआ । निर्यय किया
हुआ । तै किया हुआ ।—घृतः, (पु०) वह
जिसने अपना व्रत पूरा कर डाला हो ।

संशुद्ध (वि०) १ विशुद्ध । यथेष्टशुद्ध । २ पालिश
किया हुआ । साफ किया हुआ । ३ प्रायश्चित्त से
निष्पाप किया हुआ ।

संशुद्धिः (स्त्री०) १ पूर्ण रूप से शुद्धि । २ सफ़ाई ।
शुद्धि । ३ सही करने की क्रिया । मूल को सुधा-
रने की क्रिया । ४ ऋणशोध । ५ निकासी ।

संशोधनं (न०) सफ़ाई । निकासी ।

संश्रुत् (न०) हाथ की सफ़ाई । जादूगरी । इन्द्र-
जाल । (पु०) जादूगर ।

संश्रयान (व० कृ०) १ सङ्कुचित । सिंकुड़ा हुआ ।
ठिठुरा हुआ । २ जमा हुआ । जमौआ । ३ लपटा
हुआ । ४ सहसा विनष्ट हुआ ।

संश्रयः (पु०) १ आश्रय । शरण । पनाह । २
विश्रामस्थान । आवासस्थान । निवासस्थान ।
डोरा । टिकासरा । ३ आश्रयाभिलाषी । पनाह
चाहने वाला । सन्धि करने वाला ।

संश्रवः (पु०) १ सुनना । कान देना । २ प्रतिज्ञा ।
इकरार ।

संश्रवणां (न०) १ श्रवण । सुनना । २ कान ।

संश्रित (व० कृ०) १ आश्रय ग्रहण या रक्षा कराने
के लिये गया हुआ । २ समर्थन किया हुआ ।
आश्रय दिया हुआ ।

संश्रुत (व० कृ०) १ प्रतिज्ञात । आपस में तै किया
हुआ । २ भली भाँति सुना हुआ ।

संश्लिष्ट (व० कृ०) १ खूब मिला हुआ । २ आलिङ्गित । ३ सम्बन्ध युक्त । ४ पड़ोस का । समीप का । ५ अन्वित । सम्पन्न ।

संश्लेषः (पु०) १ आलिङ्गन । परिभ्रमण । मिलन । भेंट । २ मेल । संयोग । संस्पर्श ।

संश्लेषणं (न०) १ मिला कर दवाना । २ दो संश्लेषण (स्त्री०) १ दो एक साथ मिलाने का साधन ।

संस्तुत (व० कृ०) १ लगा हुआ । सटा हुआ । २ जुड़ा हुआ । ३ समीप । निकट । ४ गड़बड़ । बोल मेल । संमिश्रित । ५ लवलीन । ६ सम्पन्न । ७ बँधा हुआ । रंका हुआ । —मनस्, (वि०) मन लगाये हुए । —युग, (वि०) युग में लगा हुआ । साज या जीन लगा हुआ ।

संस्तुतिः (स्त्री०) १ घनिष्ट सम्बन्ध । २ सामीप्य । ३ अत्यन्त परिचय । ४ बन्धन । ५ भक्ति ।

संस्तुः (स्त्री०) १ सभा । मजलिस । मण्डल । २ न्यायालय ।

संस्तरणं (न०) १ गमन । २ संसार । सांसारिक जीवन । ३ जन्म और पुनर्जन्म । ४ सेना का अबाधित प्रस्थान । ५ राजमार्ग । ग्राम सड़क । ६ युद्धारम्भ । ७ नगरद्वार के समीप की मुसाफिरों की धर्मशाला ।

संस्पर्शः (पु०) १ संगम । मेल मिलान । २ संस्था । सभा । ३ संस्पर्श । ४ हेलमेल । रसज्ञप्ति । ५ मैथुन । सम्भोग । ६ घनिष्ट सम्बन्ध । —अभावः, (पु०) १ संस्पर्श का अभाव । सम्बन्ध का न होना । २ न्याय में अभाव का एक भेद । किसी वस्तु के सम्बन्ध में दूसरी वस्तु का अभाव । —दोषः, (पु०) वह बुराई जो बुरी संगत के कारण उत्पन्न हो । संगत का दोष ।

संसर्गिन् (वि०) संसर्ग या लगाव रखने वाला । (पु०) साथी । संगी ।

संसर्जनं (न०) १ संयोग । मिलान । २ त्याग । वैराग्य । ३ वर्जन । राहित्य ।

संसर्पः (पु०) १ रेंगना । सरकना । २ वह अधिक मास जो चय मास वाले वर्ष में होता है ।

संसर्पणं (न०) १ रेंगना । सरकना । २ बहना । आक्रमण । अचानक हनला ।

संसर्गिन् (वि०) रेंगने वाला । सरकने वाला ।

संसादः (पु०) जमापड़ा । गोष्ठी । सभा । यमाज ।

संसारः (पु०) १ मार्ग । रास्ता । २ सांसारिक जीवन । ३ पुनर्जन्म । बार बार जन्म लेने की परंपरा । आवागमन । भवचक्र । ४ मायाजाल । —गमनं, (न०) पुनर्जन्म । —गुरुः (पु०) कामदेव । —प्रार्णः, (पु०) सांसारिक जीवन का मार्ग । २ स्त्री की जननेन्द्रिय । भग । मोच्छः, (पु०) —मोक्षणं (न०) मुक्ति । मोक्ष आवागमन से बृत्कारा ।

संसारिन् (वि०) [स्त्री० —संसारिणी] लौकिक । सांसारिक । (पु०) जीवधारी । मखलूक । जीवात्मा ।

संसिद्ध (व० कृ०) १ पूर्णतया सम्पन्न । २ जिसका योग सिद्ध होगया हो । सुक्त ।

संसिद्धिः (स्त्री०) १ सम्यक् पूर्ति । किसी कार्य का अच्छी तरह पूरा होना । मोक्ष । मुक्ति । ३ प्रकृति । स्वभाव । निसर्ग । ४ मदमस्त स्त्री । मदोद्ग्रा ।

संसूचनं (न०) १ जाहिर करना । जताना । प्रकट करना । सूचना देने वाला । २ सूझते करने वाला । इशारा देने वाला । भर्त्सना । फटकार ।

संस्तुतिः (स्त्री०) १ धार । प्रवाह । २ नैसर्गिक जीवन । ३ आवागमन । भवचक्र ।

संस्तुष्ट (व० कृ०) १ मिश्रित । मिला हुआ । साभीदार की तरह शामिल । ३ रचित । संयोजित । ४ पुनर्मिलित । ५ रचा हुआ । ६ शुद्ध किया हुआ ।

संस्तुष्टता (स्त्री०) १ संस्तुष्ट होने का भाव । जायदाद संस्तुष्टत्वं (न०) १ का बँटवारा हो जाने के पीछे फिर एक में होना या रहना ।

संस्तुष्टिः (स्त्री०) १ एक में मेल या मिलावट । मिश्रण । २ परस्पर सम्बन्ध । लगाव । ३ हेलमेल । घनिष्टता । मेल सुआक्रिकत । ४ एक ही

परिवार में रहने की क्रिया । शिरस्त खान्दान ।
२ संग्रह । ६ जमावड़ा । समुदाय । ७ दो या
अधिक काव्यालंकारों का एक ऐसा मेल, जिसमें
सब परस्पर निरपेक्ष हों, अर्थात् एक दूसरे के
आश्रित, अन्तर्भूत आदि न हों ।

संसेकः (पु०) अच्छी तरह पानी आदि का छिड़काव ।

संस्कृ (पु०) १ वह जो सौधता है, तैयार करता है ।
रसाद्वया । २ संस्कार कराने वाला । संस्कार-
कारक ।

संस्कारः (पु०) १ ठीक करना । सुधारना । २
शुद्धि । ३ सजावट । ४ परिष्कार । ५ बदन
की सफाई । शौच । ६ सनेहवृत्ति या स्वभाव का
शोधन । मानसिक शिक्षा । ७ शिक्षा । उपदेश ।
८ पूर्वजन्म की वासना । ९ पवित्र करना । १०
वे कृत्य जो जन्म से लेकर मरणकाल तक द्विजा-
तियों के संबंध में आवश्यक हैं ।

संस्कृत (व० क०) १ साफ किया हुआ । शुद्ध किया
हुआ । २ परिमार्जित । परिष्कृत । ३ घो मांज
कर शुद्ध किया हुआ । निखारा हुआ । ४ पकाया
हुआ । ५ सिजाया हुआ । सुधारा हुआ । ठीक
किया हुआ । दुरुस्त किया हुआ । ६ अच्छे रूप
में लाया हुआ । सजाया हुआ । ७ विनाशित ।

संस्कृतं (न०) संस्कृत भाषा ।

संस्कृतः (पु०) १ वह शब्द जो संस्कृत भाषा के
व्याकरणानुसार बना हो । २ वह पुरुष जिसके
उपनयनादि संस्कार हुए हों । ३ विद्वान् ।

संस्क्रिया (स्त्री०) १ प्रायश्चित्त कर्म । २ संस्कार ।
३ अन्त्येष्टि क्रिया ।

संस्तम्भः } (पु०) १ सहारा । २ दृढ़ता । धीरता ।
संस्तम्भः } ३ रोक । मान । ४ लकवा । स्तम्भन ।

संस्तरः (पु०) १ खाट । चारपाई । शय्या ।
विस्तर । २ तह । पहल । ३ यज्ञ ।

संस्तवः (पु०) १ प्रशंसा । स्तुति । तारीफ़ । २
परिचय । ज्ञान पहचान ।

संस्तावः (पु०) १ प्रशंसा । प्रख्याप्ति । २ एक स्वर
से मिला कर गान । ३ यज्ञ में स्तुति करने वाले
ब्राह्मणों की अवस्थान भूमि ।

संस्तुत (व० क०) १ जिसकी खूब स्तुति या प्रशंसा
की गयी हो । २ एक साथ । ऐकमत्य । ३ वनिष्ट ।
परिचित ।

संस्यायः (पु०) १ ढेर । संग्रह । समुदाय । २
पड़ोस । नैकट्य । सामीप्य । ३ विस्तार ।
फैलाव । व्याप्ति । ४ वर । आवासस्थल । ५
परिचय । रसज्ञस की बातचीत ।

संस्थ (वि०) १ ठहराऊ । २ पालतू । घरेलू ।
अचल । स्थिर । ३ समाप्त । मरा हुआ ।

संस्थः (पु०) रहने वाला । अधिवासी । २ पड़ोसी ।
देशवासी । ३ भेदिता । जासूस ।

संस्था (स्त्री०) १ सभा । मजलिस । समूह । २
स्थिति । दशा । हालत । ३ रूप । आकार ।
आकृति । ४ पेशा । धंधा । आजीविका । ५ ठीक
ठीक आचरण । ६ समाप्ति । पूर्णता । ७ रोक-
धाम । सहारा । ८ हानि । नाश । ९ संसार का
नाश । प्रलय । १० समानता । सादृश्य । ११
राजाज्ञा । राजशासन । १२ समयज्ञ का विधान
विशेष ।

संस्थानं (न०) १ संग्रह । ढेर । २ रूप । आकृति ।
३ बनावट । रचना । ४ सामीप्य । ५ परिस्थिति ।
हालत । ६ स्थान । ठहरने का स्थान । ७
चौराहा । चिह्न । निशान । लक्षण । १२ मृत्यु ।
मौत ।

संस्थापनं (न०) १ संग्रह । २ निश्चय । निर्यय ।
३ जमाना । बैठाना । स्थित करना । ४ रोकना ।
धामना ।

संस्थापना (स्त्री०) शान्त करने का साधन ।

संस्थित (व० क०) १ खड़ा । उठाया हुआ ।
२ ठहरा हुआ । टिका हुआ । ३ बैठा हुआ ।
जमा हुआ । दृढ़ता से अड़ा हुआ । पड़ोस का ।
पास का । मिलता जुलता हुआ । समान । ४
एकत्रित किया हुआ । ढेर लगाया हुआ । ५
स्थिर । अचल । ७ मृत । मरा हुआ ।

संस्थितिः (स्त्री०) साथ साथ होना । साथ ठहरना ।
२ सामीप्य । नैकट्य । ३ आवासस्थान । रहने का

स्थान । विश्राम स्थान । ४ संग्रह । ढेर । ५ सावत्य । ६ परिस्थिति । हालत । दशा । ७ रोक थाम । ८ मृत्यु ।

संस्पर्शः (पु०) १ छुआव । लगाव । संगम । संयोग । २ इन्द्रियों का विषय ग्रहण ।

संस्पर्शी (स्त्री०) एक प्रकार का सुगन्धयुक्त पौधा ।
संस्फालः (पु०) १ मेढा । मेप । २ बादल । मेघ ।

संस्तेदः } (पु०) लड़ाई । युद्ध । संग्राम । जंग ।
संस्फोटः }

संस्मरणं (न०) पूर्ण स्मरण । स्मृति याद ।

संस्मृतिः (स्त्री०) याददायक । स्मरण शक्ति ।

संस्त्रवः } (पु०) १ वहाव । प्रवाह । चुआव । २
संस्त्रावः } धारा । चरमा । ३ देवता या पित्र के
उद्देश्य से दिये हुए जल आदि का अवशिष्ट भाग ।
४ एक प्रकार का नैवेद्य या भेंट ।

संहत (व० कृ०) १ भिड़ा हुआ । आपस में टकराया हुआ । घायल । २ बंद । मुँदा हुआ । ३ भली भाँति जुता हुआ । इकट्ठा पूर्वक मिला हुआ । ४ पूर्ण रूप से मिलाया हुआ । इक । ठोस । ५ युक्त । संयुक्त । ६ ऐकमत्य । ७ एकत्रित । जमा हुआ ।—जातु, (वि०) घुटने मिलाये हुए । घुटने टेके हुए ।—भू, (वि०) भौएँ सकोड़े हुए ।—स्तनी, (स्त्री०) वह स्त्री जिसके दोनों कुच आपस में सटे हों ।

संहतता (स्त्री०) १ संयोग । २ संहति । संघेप ।
संहतार्थ (न०) १ आनुकूल्य । मेल । ४ ऐक्य । एका ।

संहतिः (स्त्री०) १ मिलाव । मेल । २ जुटाव । बटोर । इकट्ठा होने का भाव । ३ निविडसंयोग । गठन । ठोसपन । वनत्व । ४ सन्धि । जोड़ । ५ परमाणुओं का परस्पर मेल । राशि । ढेर । अठाला । ७ समूह । कुँड । ८ साक़त । बल । शक्ति । ९ शरीर । तन । बदन ।

संहननं (न०) १ संहति । इकट्ठा । २ शरीर । ३ शक्ति । बल ।

संहरणं (न०) १ एक साथ करना । बटोरना । एकत्र करना । संग्रह करना । २ ग्रहण करना ।

पकड़ना । ३ सङ्कोचन । ४ निग्रह । ५ नाश । विनाश ।

संहर्तु (पु०) नाशक ।

संहर्षः (पु०) रोमाञ्च । पुलक । उमड़ से रोओ का खड़ा होना । २ हर्ष । आनन्द । ३ स्फूर्ति । प्रतिद्वन्द्वता । ४ पवन । ५ रगड़ । मसलन ।

संहानः (पु०) २१ नरकों में से एक नरक ।

संहारः (पु०) १ समेटना । इकट्ठा करना । बटोरना । २ सङ्कोच । आकुञ्चन । सिकुञ्चन । ४ सुजासा । सार । संघेप कथन । ५ छोड़े हुए बाण को वापिस लेना । ६ रोक लेना । ७ अलग । ८ अन्त । डोर । समाप्ति । ९ उभावृष्टा । समुदाय । १० उच्चारण का एक दोष । ११ निवारण । परिहार । रोक । १२ निपुणता । अभ्यास । १३ नरक विशेष ।—भैरवः, (पु०) भैरव के रूपों में से एक कालभैरव ।—मुद्रा, (स्त्री०) तांत्रिक पूजन में अङ्गों की एक प्रकार की स्थिति । इसे विसर्जन मुद्रा भी कहते हैं ।

संहित (व० कृ०) १ एक साथ किया हुआ । एकत्र किया हुआ । बटोरा हुआ । समेटा हुआ । २ २ सम्मिलित । मिलाया हुआ । ३ जुड़ा हुआ । लगा हुआ । संबद्ध । ४ संयुक्त । सहित । अन्वित । पूर्ण । ५ मेल में आया हुआ । मेली । हेलमेल वाला ।

संहिता (स्त्री०) १ संयोग । मेल । २ संग्रह । ३ वह ग्रन्थ जिसमें पद पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो । ४ धर्मशास्त्र । स्मृति । ५ वेदों का मन्त्रभाग । ६ जगत्त्रियन्ता परमात्मा ।

संह्रतिः (स्त्री०) होहल्ला । कोलाहल । शोर ।

संहन (व० कृ०) १ समेटा हुआ । एकत्र किया हुआ । २ संघिस । सुजासा । ३ वापिस लिया हुआ । निवारित । जमा लिया हुआ । ४ पकड़ा हुआ । हथियाया हुआ । ५ नष्ट किया हुआ ।

संहृतिः (स्त्री०) १ सिकुञ्चन । २ हानि । नाश । ३ ग्रहण । पकड़ । ४ रोक । निवारण । ५ संग्रह ।

सदृष्ट (व० कृ०) १ उमङ्ग से खड़े हुए रोहँ ।
पुलकित । प्रफुल्ल । प्रसन्न । आह्लादित । २
अत्यन्त उत्साही ।

संहादः (पु०) ऊँचा शोर । शोर । कोलाहल ।
चीख ।

संहीण (वि०) १ शमीला । सकुचीला । २ अत्यन्त
लज्जित किया हुआ ।

सकट (वि०) डरा । कुत्सित । पापी ।

सकट } (वि०) १ कटीला । काँदेदार । कष्टदायक
सकण्ट } भयानक ।

सकटकः } (पु०) शैवल । सिवार ।

सकंप, }
सकम्प } (वि०) कँपकपा । थरथराने वाला ।
संकपन }
सकम्पन }

सकरुण (वि०) दयालु ।

सकर्ण (वि०) [स्त्री०—सकर्णा, सकर्णी] १ कानों
वाला । २ सुनने वाला ।

सकर्मक (वि०) १ जो कर्म करता हो या जिसने
कोई कर्म किया हो । २ व्याकरण में वह क्रिया
जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त हो ।

सकल (वि०) १ अवयवों या भागों सहित । २
सब । सर्व । समस्त । कुल । ३ धोमे और
कोमल स्वरों वाला ।—वर्ण, (वि०) वह जिसमें
क और ल अक्षर हों ।

सकल्पः (पु०) शिव जी का नाम ।

सकाकालः (पु०) २१ नरकों में से एक का
नाम ।

सकाम (वि०) १ वह व्यक्ति जिसे कोई कामना
या इच्छा हो । २ वह व्यक्ति जिसकी कामना पूर्ण
हुई हो । लब्धकाम । ३ कामवासनायुक्त व्यक्ति ।
मैथुन की इच्छा रखने वाला व्यक्ति । कामी ।

सकामं (अव्यया०) १ सहर्ष । २ सन्तोष सहित ।
३ दरहकीकत ।

सकाल (वि०) सामयिक ।

सकालं (अव्यया०) समय से । बड़े तड़के । बड़े
भोर ।

सकाश (वि०) जो दिखलाई पड़े । पास । निकट ।
समीप ।

सकाशः (पु०) वर्तमान । पड़ोस । सामीप्य ।

सकुक्षि (वि०) सहोदर । एक पेट से उत्पन्न ।

सकुल (वि०) १ उत्पकुल का । २ एक ही कुल का ।
३ वह जो परिवार वाला हो । ४ परिवार
सहित ।

सकुलः (पु०) १ जात विरादरी का । २ सकुली
जाति की मछली ।

सकुल्यः (पु०) १ परिवार के लोगों में से एक ।
२ चौथी, पाँचवी या छठवीं अथवा सातवीं, आठवीं
या नवमी पीढ़ी का भाई विरादर । ३ दूर का
सम्बन्धी ।

सकुत् (अव्यया०) १ एक बार । २ एक अवसर पर ।
पहले । पूर्वकाल में । ३ एकदम । फौरन । तुरन्त
४ साथ साथ । (पु०—स्त्री०) मल । विष्ठा ।
—गर्भा, (स्त्री०) जखर । —प्रजः, (पु०)
काक । कौआ । —प्रसूता, —प्रसूतिका,
(स्त्री०) वह स्त्री जिस के एक सन्तान हुई हो ।
वह गाय जो केवल एक बार व्याई हो । —फला,
(स्त्री०) केले का वृक्ष ।

सकैतव (वि०) धूर्त । दगाबाज़ ।

सकैतवः (पु०) टग आदमी । धूर्त आदमी ।
गुंडाजन ।

सकोप (व०) क्रुद्ध । क्रोध में भरा ।

सकोपं (अव्यया०) क्रोध के साथ । कुपित होकर ।

सक्त (व० कृ०) १ मिला हुआ । सदा हुआ ।
संलग्न । २ जड़ा हुआ । गड़ा हुआ । ३ सम्बन्ध-
युक्त । —वैर, (वि०) जो सदैव वैर रखता हो ।

सक्तिः (स्त्री०) १ स्पर्श । संसर्ग । संगम । ३
अनुराग । अनुरक्तता । सक्ति ।

सक्थि (पु०) १ जाँब । जंघा । २ हड्डी । ३ गाड़ी
या बकड़े का शीरा ।

सक्रिय (वि०) क्रियात्मक । जंगम । चल ।

सदस्य (वि०) वह जिसको अवकाश हो ।

सखि (पु०) [सखा, सखाग्रौ. सखायः]
१ मित्र । संगी ।

सली (स्त्री०) सहेली ।

सख्यं (न०) : मित्रता : दोस्ती : हेतुमेल : स
समानता ।

सह्यः (पु०) दीप्त । मित्र ।

संगण (वि०) इल सहित । समुदाय सहित ।

सगणः (पु०) शिव जी का नाम ।

समर (वि०) गहरीला । विप्लव ।

सगरः (पु० : एक चन्द्रवंशी राजा का नाम ।

सगर्भः (पु०) एक गर्भ का ।
सगर्भ्यः

समुदाय (वि०) १. गुणसहित । गुणों वाला । २. धार्मिक । साधु । पवित्र । ३. सांसारिक । ४. वह धनुष जिस पर डोरी या रोटी या चिह्न चढ़ा हो ।

संगोत्र (वि०) एक कुल का । सम्बन्ध युक्त ।

समोत्रः (पु०) १ एक कुल के लोग । आपसदारी
या रिश्तेदारी के लोग । सजातीय । उस वंश
के जिसके साथ आद्व और तर्पण का सम्बन्ध हो ।
दूर का नातेदार । २ कुल । परिवार । खानदान ।

सन्धिः (स्त्री०) साथ साथ स्थाने वाक्ता ।

संकट (वि०) १ सिक्का हुआ । सङ्गीत ।
सङ्कट पतला २ अग्रग्न्य ३ परिपूर्ण । सम्पन्न ।
विरा हुआ ।

संकटं) न०) सङ्कीर्ण रास्ता । दुर्ग । पर्वतों के
सङ्कुटं) बीच का रास्ता । २ आकृत । विपत्ति ।
जोखों । खतरा ।

संख्या } (श्री०) वार्तालाप . बातचीत ।
सङ्ख्या }

संकरः) (पु०) १ मिलावट । २ संयोग । ३ वर्ण-
सङ्करः) असमानता । वर्णों की गड़बड़ी । दोगलापन ।
४ चल । बढोदन । भाड़न

संकारी } देवों संकारी वा सङ्कारी ।
सङ्कारी }

संक्रयण } (न०) : खींचने की क्रिया । २ आकर्षण ।
 संकुचन } हलसे जोतने की क्रिया । जुताई ।

संकेतः : (पु०) श्रीकृष्ण के भाई बलराम का
सङ्केतः : नाम ।

संकेतः) : संग्रह । ५ जोड़ । योग ।
संज्ञाः)

संकलन (म०) } १ बहुत सी वस्तुओं को एक
 संकलन (न०) } स्थान पर एकत्र करने की
 संकलन (स्त्री०) } क्रिया । सम्मेलन । ३ टक्कर
 संकलन (स्त्री०) } ४ भराई । छेदन । ५ जोड़ ।

मंजुलिनः । (व० क०) । १ देर लगाना हुआ एकत्र
सङ्कुलित । किरा हुआ । २ स्थित । ३ पकड़ा हुआ ।
४ योजित । जोड़ा हुआ । जोड़ लगाना हुआ ।

संकल्पः) (पु०) । कार्य करने की इच्छा जो मन
तद्बलः) में उत्पन्न हो । विचार । इरादा । २
अभिलाष । कामना । ३ मन । चित्त । हिमा ।
४ दान । पुराण । कोई ऐवकार्य आरम्भ करने
के पूर्व एक निश्चित मन्त्र का उच्चारण करते हुए
अपना इष्ट निश्चय या विचार प्रकट करना ।

—जः, —अन्मन् (न०)—दोनिः (पु०)
कामदेव की उपाधि । रूप, इच्छा प्रकाश करने
वाला । इन्द्रानुसार ।

मौक्तिकः (वि०) १ शब्द, वंशजः । परिवर्तनशीलः ।
२ अनिश्चितः । ३ सन्निवृत्तः । संशयमस्त ४ दुःखः ।
दुष्टः । ५ कमजोरः । निर्बलः ।

संस्कार: (पु०, १ धूत । गर्दा । भादन । बटोरन ।
संस्कार:) २ अंगारों की चटापट ।

मंकारी : (बी०) वह लड़की जिसका कैमारा
संभारों : हाल ही में हरण किया गया हो ।

संकाश) (वि०) : समान । सदृश । २ समीप ।
सङ्काश) निकट ।

संकाजः १ (पु०) १ मौजूदगी । विद्यमानता । २
माहाजः १ सामीप्य । निकट्य ।

संज्ञितः (पु०) कुशाट । अथवा लो लकडी ।
संज्ञितः जलती हुई मशाल ।

मंकीय (वि०) १ मिश्रित । मिला हुआ । २
सडीया गडबड । फुटकर । ३ बिखरा हुआ । फैला

हुआ । ४ अस्पष्ट । ५ मदमस्त । नशे में चूर । ६ दोगला । अकुलीन । ७ अविशुद्ध । मिलावटी । ८ तंग । सँकरा । सङ्कुचित ।

संकीर्णः } (पु०) १ वर्णसङ्कर जाति का आदमी ।
सङ्कीर्णः } २ वह राग या रागिनी जो अन्य दो रागों
या रागिनियों को मिला कर बने । ३ मदमस्त
हाथी । नशे में चूर हाथी ।

संकीर्ण } (न०) कठिनाई । विपत्ति । सङ्कट ।—
सङ्कीर्ण } जाति,—यानि, (वि०) दोगली नस्ल
का ।—युद्धं, (न०) गडबड लड़ाई ।

संकीर्तनं (न०) १ प्रशंसा । स्तव । स्तुति ।
सङ्कीर्तनं (न०) २ तारीफ़ । ३ किसी देवता की
संकीर्तना (स्त्री०) ३ महिमा का वर्णन या स्तवन । ३
सङ्कीर्तना (स्त्री०) ३ किसी देवता के नाम का बार
बार नाम लेना ।

संकुचित } (न० कृ०) १ सिकुड़ा हुआ । सिमटा
सङ्कुचित } हुआ । संक्षेप किया हुआ । २ सिकुड़न-
दार । झुर्रियाँ पड़ा हुआ । ३ बंद । सुँदा हुआ ।
४ ढका हुआ ।

संकुल } (वि०) १ गडबड । २ मरा हुआ । परि-
संकुल } पूर्ण । ३ अस्तव्यस्त । ४ असंगत ।

संकुल } (न०) १ भीड़भाड़ । जनसमुदाय । झुंड ।
सङ्कुल } दल । गल्ला ।

संकुल } (न०) १ गिरोह । झुंड । गल्ला । २
सङ्कुल } समुल युद्ध । ३ असंगत या परस्पर विरो-
धिनी वक्तृता ।

संकेतः } (पु०) १ स्वल्पाक्षर उल्लेख या निर्देश ।
सङ्केतः } इशारा । २ चिह्न । चिन्हाती । निशान ।
३ नियमावली । नियमपत्र । ४ कामशास्त्र
संबन्धी इज्ञित । शृङ्गारवेष्टा । ५ प्रेमी और
प्रेमिका के मिलने का वादा । ६ प्रेमी और प्रेमिका
के मिलने का स्थान । ७ उहराव । शर्त । ८ (व्या-
करण का) सूत्र ।—गृहं,—निकेतनं,—स्थानं,
(न०) प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का स्थान ।

संकेतकः } (पु०) १ नियम । इकारार । २ नियुक्ति ।
सङ्केतकः } उहराव । ३ प्रेमी प्रेमिका के मिलने का
स्थान । ४ प्रेमी या प्रेमसी जो मिलने के लिये
समय का सङ्केत करें । ५ नियुक्ति ।

संकेतित } (वि०) १ संकेत किया हुआ । नियमा-
सङ्केतित } नुसार निर्धारित । २ आमंत्रित । बुलाया
हुआ ।

संकोचः } (पु०) १ सिकुड़न । २ संक्षेपकरण ।
सङ्कोचः } हास । ३ भय । डर । ४ बंदी । रोक । ५
बंधन । ६ एक प्रकार की मञ्जरी ।

संक्रन्दनः } (पु०) श्रीकृष्ण भगवान का नाम ।
सङ्क्रन्दनः }

संक्रमः } (पु०) १ सहमत्य । २ सहमगन ।
सङ्क्रमः } ३ परिवर्तन । अवस्थान्तर प्रवृत्ति । विषया-
न्तर प्रसङ्ग । ४ किसी ग्रह का एक राशि से निकल
कर दूसरी राशि में जाना । ५ गमन । यात्रा ।

संक्रमं (न०) १ दुरधिगम्य मार्ग । सँकरा
सङ्क्रमं (न०) २ रास्ता । २ पुल । सेतु । २ किसी
संक्रमेः (पु०) ३ वस्तु की प्राप्ति का साधन ।
सङ्क्रमः (पु०) ३ वस्तु की प्राप्ति का साधन ।

संक्रमणं } (न०) १ एकमत्य । २ एक बिन्दु से
सङ्क्रमणं } दूसरे बिन्दु पर गमन । ३ सूर्य का एक
राशि से दूसरी राशि पर गमन । ४ वह विशेष
दिन जिस दिन सूर्य उत्तरायण होते हैं ।

संक्रांत } (न० कृ०) १ प्रविष्ट । घुसा हुआ ।
संक्रान्त } २ परिवर्तित । बदला हुआ । ३ पकड़ा
हुआ । ४ विचारा हुआ । सोचा हुआ । ५ वर्णित ।
रञ्जित ।

संक्रांतिः } (स्त्री०) १ ऐक्य । मेल । २ अवस्था-
सङ्क्रान्तिः } न्तर प्रवृत्ति । ३ सूर्य अथवा अन्य
किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि पर गमन ।
४ परिवर्तन । (दूसरे को देना) ५ प्रदाय शक्ति ।
६ प्रसिद्धि । प्रतिभूति । ७ वर्णन । रत्नन ।

संक्राम } (न०) देखा संक्रम ।
सङ्क्राम }

संक्रोडनं } (न०) साथ साथ खेलने वाले ।
सङ्क्रोडनं }

संक्रोदः } (पु०) १ तमी । तरी । सील । २ एक
सङ्क्रोदः } प्रकार का पनीला पदार्थ जो प्रथम मास
में गर्भ के रूप में रहता है ।

संक्षयः (पु०) १ नाश । विनाश । २ पूर्ण विनाश ।
३ हानि । बरबादी । ४ अन्त । अवसान । प्रलय ।

सन्निधि: (स्त्री०) १ साथ साथ प्रवेष्टव्य । २ संकुचन ।
संक्षेप करण । ३ फँकना । प्रेषण । ४ दाँव । घात ।
घात की जगह ।

संक्षेपः (पु०) १ निक्षेप । प्रक्षेप । २ खुलासा ।
मुक्तसर । ३ संकोचन । घटाना । ४ सार । संग्रह ।
५ फिकाव । प्रेषण । ६ ले जाना । ७ किसी अन्य
के कार्य में साहाय्य प्रदान ।

संक्षेपणं (न०) १ ढेर करना । २ संक्षेपकरण । सार
निकाल लेना । ३ प्रेषण ।

संक्षोभः (पु०) १ कँपकपी । थरथराहट । २ बबड़ाहट ।
उत्तेजना । ३ अस्तव्यस्तता । उलट पलट । ४ अभि
मान । अहङ्कार ।

संख्यं (न०) युद्ध । लड़ाई । संश्राम ।

संख्या (स्त्री०) १ गणना । गिनती । २ हिंदसा ।
अङ्क । ३ जोड़ । ४ हेतु । युक्ति । समझ । बुद्धि ।
६ विचार । ढंग । तौर । तरीका ।—अतिग, —
अतीत, (वि०) संख्या से परे । वह जिसकी
गिनती न हो सके ।—वाचकः, (पु०) संख्या
सम्बन्धी ।

संख्यात (व० कृ०) १ गिना हुआ ।

संख्यातं (न०) संख्या । अङ्क ।

संख्याता (स्त्री०) पहेली विशेष ।

संख्यावत् (वि०) १ गिना हुआ । २ युक्ति वाला ।
(पु०) परिद्धत जन ।

संगः } (पु०) १ संयोग । २ मेल । ऐक्य । संगम ।
सङ्गः } ३ संसर्ग । संस्पर्श । ४ साथ । मैत्री । मैत्रो-
पयोगी व्यवहार । ५ अनुराग । अनुरक्तता । अभि-
लाष । ६ सांसारिक वस्तुओं में आसक्ति । ७
भिन्नन्त । लड़ाई ।

संगणिका } (स्त्री०) उत्तम संवाद । अनुपम संवाद ।
सङ्गणिका }

संगत } (व० कृ०) १ जुड़ा हुआ । मिला हुआ ।
सङ्गत } २ गया हुआ । एकत्रित । ३ विवाहित ।
मैथुन द्वारा मिला हुआ । ४ उपयुक्त । सुनासिब ।
५ एक राशि पर एकत्रित । ६ संकुचित । संकुच
हुआ ।

संगतं } (न०) १ ऐक्य । मेल । सन्धि । २
सङ्गतं } साथ । संगति । ३ परिचय । मैत्री । बनि-
ष्टता । ४ संगत कथन । युक्तियुक्त भाषण ।

संगतिः } (स्त्री०) १ ऐक्य । मेल । २ संग ।
सङ्गतिः } साथ । सुहृत् । संगत । ३ स्त्रीमैथुन ।
४ प्रेम्यता । उपयुक्तता । उपयोगता । उपयुक्त
सम्बन्ध । ५ संयोग । इतिहासक्रिया । इतिहासक्रिया
घटना । ६ ज्ञान । ७ ज्ञान प्राप्त करने के लिये बार
बार प्रश्न करने की क्रिया ।

संगमः } (पु०) १ ऐक्य । मिलाप । २ साथ ।
सङ्गमः } सुहृत् । ३ संसर्ग । संस्पर्श । ४ स्त्री-
मैथुन । स्त्रीसंग । ५ (नदियों का) संगम । ६
भिन्नन्त । मुठभेड़ । लड़ाई । ७ प्रेम्यता । उप-
युक्तता । ८ ग्रहों का समागम ।

संगमनं } (न०) मेल । ऐक्य ।
सङ्गमनं }

संगरः } (पु०) १ प्रतिज्ञा । वादा । इकरार । २
सङ्गरः } स्वीकार । अङ्गीकार । ३ सौदा । ४ युद्ध ।
लड़ाई । समर । ५ ज्ञान । ६ भक्षण । ७ विपत्ति ।
सङ्कट । ८ विष । जहर ।

संगवः } (पु०) तड़का होने से ३ मुहूर्त बाद का
सङ्गवः } काल । वह समय जब चरवाहा बच्चों को
दूध पिला कर और गौओं को दुह कर चराने को ले
जाता है ।

संगाद्ः } (पु०) संवाद । वार्तालाप ।
सङ्गाद्ः }

संगिन् } (वि०) १ संयुक्त । मिला हुआ । २ भक्त ।
सङ्गिन् } अनुरक्त ।

संगीत } (व० कृ०) मिला कर गाया हुआ ।
सङ्गीत }

संगीतं } (न०) १ वह गाना जो कई लोगों द्वारा
सङ्गीतं } मिला कर गाया जाय । २ वह गान जो
वाद्ययंत्रों के साथ तबल के साथ गाया जाय ।
३ गाने बजाने की कला ।—शास्त्रं, (न०) वह
शास्त्र जिसमें सङ्गीतकला का निरूपण हो ।

संगीतकं } (न०) १ गाना बजाना । २ एक प्रकार
सङ्गीतकं } का सार्वजनिक संगीत का अभिनय जिसमें
गाना बजाना हो ।

संगीर्ण } (व० कृ०) १ स्वीकृत । मंजूर किया हुआ ।
सङ्गीर्ण } २ प्रतिज्ञात ।

संग्रहः } (पु०) १ ग्रहण । पकड़ । पकड़ना । २ पहुँचा
सङ्ग्रह } पकड़ना । ३ स्वागत । प्रवेश करना । ४ संरक्षण ।
५ अनुग्रह करना । सहारा देना । समर्थन करना ।
६ एकत्रकरण । ढेर लगाना । ७ शासन करना ।
निग्रह करना । ८ राशि । स्तूप । ९ समागम । १०
एक प्रकार का संयोग । ११ सम्मिलित करना । १२
संग्रह करना । १३ सारसंग्रह । १४ योग । जोड़ ।
टोपल । १५ तालिका । सूची । १६ भाण्डार ग्रह ।
१७ उद्योग । १८ हवाला । वर्णन । १९ बड़प्पन ।
ऊँचापन । २० वेग । २१ शिवजी का नामान्तर ।

संग्रहण } (त०) १ पकड़ । ग्रहण । २ समर्थन ।
सङ्ग्रहण } उत्साह प्रदान करना । ३ संग्रहकरण । ४
मिलाव । मेल । मिलौनी । ५ जड़ना । चौखटे में
रखना । ६ मैथुन । स्त्रीसमागम । ७ व्यभिचार ।
८ आशा करना । ९ स्वीकार करना । प्राप्त करना ।

संग्रहणी } (पु०) दस्तों का रोग विशेष ।
सङ्ग्रहणी }

संग्रहीत } (पु०) रथवान । सारथी ।
सङ्ग्रहीत }

संग्रामः } (पु०) लड़ाई । युद्ध ।—पट्टहः, (पु०)
सङ्ग्रामः } युद्ध में वजाया जाने वाला एक बड़ा भारी
ढोल ।

संग्राहः } (पु०) १ हाथ मारना । ग्रहण करना । २
सङ्ग्रहः } झीन लेना । बरजोरी ले लेना । ३ कलाई
पकड़ना । ४ ढाल का बेंट ।

संग्रहः } (पु०) १ समूह । समुदाय । २ कितने ही
सङ्ग्रहः } लोग जो साथ रहते हों ।—चारिन् (पु०)
मङ्गली ।—जीतिन्, (पु०) कुली । मङ्गदूर ।
—वृत्तिः, (स्त्री०) धनिष्ठ मेल ।

सङ्घटना } (स्त्री०) संयोग । मिलाप ।
सङ्घटना }

सङ्घट्टः } (पु०) १ रगड़ । रगड़ना । २ टक्कर ।
सङ्घट्टः } भिड़न्त । ३ लड़ाई । मुठभेड़ । मेल । योग
भिड़न्त या स्पर्धा (दो पक्षियों की) ४ आलिङ्गन ।

सङ्घट्टनं } १ रगड़ना । रगड़ । २ भिड़न्त । टक्कर ।
सङ्घट्टनं } ३ संसर्ग । लगाव । ४ संयोग । मेल । ५
सङ्घट्टना } पहलवानों की भिड़न्त ।
सङ्घट्टना }

सङ्घशस् } (अव्यया०) दल में । टोली में ।
सङ्घशस् }

सङ्घर्षः } (पु०) १ रगड़ना । रगड़ । २ पसीना ।
सङ्घर्षः } ३ टक्कर । भिड़ंत । ४ स्पर्धा । प्रतिद्वन्द्वता ।
५ डाट । हसड़ । ६ फिसलन । खसकन ।

सङ्घाटिका } (स्त्री०) १ जोड़ा । जोड़ी । २ कुदनी ।
सङ्घाटिका } ३ गन्ध ।

सङ्घाणकः } (पु०)
सङ्घाणकः } (पु०)
सङ्घाणकं } (त०)
सङ्घाणकं } (त०) } नाक का मैल ।

सङ्घातः } (पु०) १ ऐक्य । संयोग । २ जनसमुदाय ।
सङ्घातः } समूह । ३ हत्या । हिंसन । ४ क्रम । ५
समासान्त शब्दों की बनावट । ६ नरक विशेष ।

सचकित (वि०) भड़का हुआ । भीरु । डरपोंक ।

सचकितं (अव्यय०) काँपते हुए ।

सचिः (पु०) १ मित्र । २ मित्रता । मैत्री । दोस्ती ।
(स्त्री०) इन्द्र की पत्नी । इन्द्राणी ।

सचिल्लः (वि०) भेंड़ा । पेंचालाना ।

सचिवः (पु०) १ मित्र । साथी । २ मंत्री । मशीरकार ।
सलाहकार । दरबारी ।

सची देखो शची ।

सचेतन (वि०) जीवधारी । जीवित । जानदार ।

सचेतस् (वि०) १ बुद्धिमान । २ वह जो समवेदनापूर्ण
या दयालु हो । ऐकमत्य ।

सचेत (वि०) वस्त्रों सहित । वस्त्र धारण किए हुए ।

सचेष्टः (पु०) आस का वृत्त ।

सञ्जन (वि०) मनुष्यों या जीवधारियों वाला ।

सजतनः (पु०) सजाति । जाति विरादरी का आदमी ।

सजल (व०) पनीला । गीला । तर ।

सजाति } (वि०) १ एक ही जाति का । २ एक ही
सजातीय } किस्म का । ३ समान । सदृश । (पु०)
एक ही जाति के माता और पिता से उत्पन्न पुत्र ।

सञ्ज (वि०) १ प्यारा । अतुरक्त । २ संगी । साथी ।
सञ्ज (पु०) [कर्ता—सञ्जः, सञ्जो, सञ्जः]
मित्र । दोस्त । मखा । (अव्यया०) सहित ।
साथ ।

सञ्ज (वि०) १ तैयार । तैयार किया या कराया हुआ ।
२ सम्हारा हुआ । ठीक किया हुआ । ३ सब प्रकार
से लैस । हथियारधारी । ४ किलाबंदी किया हुआ ।
सञ्जन (न०) १ बाँधना । कसना । २ पोशाक धारण
करना । सजाना । ३ तैयार करना । हथियार
धारण करना । हरया हथियार से लैस करना । ४
चौकीदार । संतरी । ५ बाट । उतारा ।

सञ्जनः (पु०) भला अनुष्ठ ।

सञ्जना (स्त्री०) १ सजावट । २ वस्त्राभूषण से सुसज्जित
करने की क्रिया ।

सञ्जा (स्त्री०) १ परिच्छद । सजावट । २ सज्जाकरण ।
साज । सामान । ३ सैनिक साज सामान । कवच ।

सञ्जित (वि०) सजाया हुआ । २ शृङ्गार किया हुआ ।
तैयार किया हुआ । साजसामान से लैस । ४
शस्त्रधारण किये हुए ।

सञ्ज (वि०) १ डोरी या रोदा लगा हुआ ।

सञ्जोत्सना (स्त्री०) चाँदनी रात ।

सञ्चः } (न०) १ ऐसे पत्तों का ढेर जिन पर लिखा
सञ्चः } जाता है ।

सञ्चत् } (पु०) धूर्त । गुंढा । जादूगर ।

सञ्चयः } (पु०) १ ढेर करना । जमा करना । ढेर ।
सञ्चयः } राशि । ३ एकत्र या राशि करने की क्रिया ।

सञ्चयनं } (न०) १ एकत्र करने की क्रिया । एकत्र
सञ्चयनं } या संग्रह करने की क्रिया । २ सब भस्म
होने के पीछे अस्थि बीनने की क्रिया ।

सञ्चरः } (पु०) १ गमन । चलन । एक राशि से
सञ्चरः } दूसरी राशि में गमन । २ मार्ग । पथ ।
रास्ता । ३ सङ्कीर्ण पथ । कष्ट साध्य मार्ग । ४
द्वार । प्रवेशद्वार । ५ शरीर । हनन । हिंसन । ६
बुद्धि ।

सञ्चरणं } (न०) गमन । चलन । यात्रा करना ।
सञ्चरणं }

सञ्चज } (वि०) काँपता हुआ । थरथराना हुआ ।
सञ्चल } (वि०) काँपना ।
सञ्चलनं } (न०) हिलना डोलना । काँपना ।
सञ्चलनं } थरथराना ।

सञ्चायः } (पु०) यज्ञ विशेष ।
सञ्चायः }

सञ्चारः } (पु०) १ गमन । चलन । चलना फिरना ।
सञ्चारः } २ गुजरना । ३ मार्ग । पथ । रास्ता । ४
४ कठिन मार्ग । कठिन यात्रा । ५ कठिनाई । कष्ट ।
६ चलाने की क्रिया । ७ भड़काने की क्रिया । ८
मार्गप्रदर्शन । रास्ता दिखलाने की क्रिया । ९
-पर्श द्वारा संक्रामक । प्रेरण । चालन । १० सौंप
के फन में मिली हुई सणि ।

सञ्चारक } (वि०) १ संचार करने वाला । फैलाने
सञ्चारक } वाला । चलाने वाले ।

सञ्चारकः } (पु०) १ दलपति । नायक । नेता ।
सञ्चारकः } २ साजिश करने वाला । षडयंत्रकारी ।

सञ्चारिका } (स्त्री०) १ दूती । २ कुटनी । ३
सञ्चारिका } जोड़ी । जोड़ । ४ गंध । बास ।

सञ्चारणं } (न०) १ प्रयोदित करने की क्रिया ।
सञ्चारणं } उत्तेजित करने की क्रिया । २ पहुँचाने की
क्रिया । मार्गप्रदर्शन की क्रिया ।

सञ्चारिन् } (वि०) [स्त्री०—सञ्चारिणी] १
सञ्चारिन् } गमनशील । २ घूमने फिरने वाला ।
३ परिवर्तनशील । चंचल । अटढ़ ४ दुर्गम ।
दुरधिगम्य । ५ भाव विशेष । ६ प्रभावित ।
प्रभावान्वित । ७ वंशपरम्परा गत । पुरतैनी ।
पैतृक (जैसे कोई बीमारी) । ८ जुग्राहृत वाला ।
(पु०) १ पवन । हवा । २ धूप । ३ संचारी भाव ।

सञ्चाली } (स्त्री०) धुँधची का पौधा ।
सञ्चाली }

सञ्चित } (व० क०) १ जमा किया हुआ । एकत्र
सञ्चित } किया हुआ । २ गणना किया हुआ । गिना
हुआ । ३ परिपूर्ण । भरा हुआ । ४ बाधा डाला
हुआ । ५ धना । धनीभूत ।

सञ्चितिः } (स्त्री०) संग्रह ।
सञ्चितिः }

सञ्जिस्तनं } (न०) मोक्षना । विचारना ।
सञ्जिस्तनं }

सञ्चयनं } (न०) टुकड़े टुकड़े कर डालने की क्रिया ।
सञ्चयणं }

सञ्चय } (व० क०) १ लपेटा हुआ । छिपाया
सञ्चयण } हुआ । २ कपड़े से लपेटा हुआ ।

सञ्चादनं } (न०) छिपाव । दुराव ।
सञ्चादनं }

सञ्ज } (धा० प०) [सजति, सक्त] १
सञ्ज् } चिपटाना । चिपकाना । २ बाँधना ।

सञ्जः } (पु०) १ ब्रह्मा का नाम । २ शिव का नाम ।
सञ्जः }

सञ्जयः } (पु०) उत्तराष्ट्र के सारथी का नाम ।
सञ्जयः }

सञ्जल्पः } (पु०) १ वार्तालाप । गद्गद बातचीत ।
सञ्जल्पः } गद्गदी । २ गर्जन । दहाड़ ।

सञ्जवनं } चतुष्क, गृहवेष्टित चत्वर या चवृतरा ।
सञ्जवनं } चार मकोंनों के बीच का चवृतरा ।

सञ्जा } (स्त्री०) बकरी । बेरी ।
सञ्जा }

सञ्जीवनं } १ साथ साथ रहने की क्रिया । २
सञ्जीवनं } जीवित करने की क्रिया । पुनर्जीवित
करण । ३ इक्कीस नरकों में से एक । ४ गृह-
वेष्टित-चत्वर ।

सञ्ज्ञ (वि०) घुटनों के बल ठुकराया हुआ । २ सचेत ।
३ नामक ।

सञ्ज्ञं (न०) पीतकाष्ठ । झाड़ ।

सञ्ज्ञपनं (न०) हिंसन । बध्करण । मार डालना ।

सञ्ज्ञा (स्त्री०) १ चेतना । होश । २ बुद्धि । अहम् ।
३ ज्ञान । ४ सङ्केत । इशारा । ५ बोधक शब्द ।
नाम । आख्य । ६ व्याकरण में वह विकारी शब्द
जिससे किसी यथार्थ या कल्पित वस्तु का बोध
हो । ७ गायत्री मंत्र । ८ सूर्यपत्नी जो विश्वकर्मा
की कन्या थी । मार्कण्डेय नामक पुराण के अनुसार
यम और यमुना का जन्म इसीके गर्भ से
हुआ है ।—विषयः, (पु०) उपाधि ।
विशेषण ।—सुतः, (पु०) शनि का एक
नाम ।

सञ्ज्ञानं (न०) ज्ञान । बुद्धि ।

सञ्ज्ञापनं (न०) १ सूचन । २ शिक्षण । ३ हनन ।
बध्करण ।

सञ्ज्ञावत् (वि०) १ होश में । हवास में । सचेत ।
२ वह जिसका कोई नाम हो ।

सञ्ज्ञित (वि०) नामवाला । नामक ।

सञ्ज्ञिन् (वि०) १ नामक । नाम्ना । नामवाला ।
२ वह जिसका कुछ नाम रखा जाय ।

सञ्ज्ञु (वि०) घुटनों के बल ।

सञ्ज्वरः } (पु०) १ बहुत गर्म । ज्वर । २ ताप ।
सञ्ज्वरः } उष्णता । ३ क्रोध आदि का बहुत अधिक
आवेग ।

सट् (धा० प०) [सटति] १ किसी पदार्थ का
एक भाग होना । २ दिखलाना । प्रादुर्भाव
होना ।

सटं (न०) } १ साधु की जटा । २ सिंह की
सटा (स्त्री०) } गरदन के बाल । अयाल । ३
शूकर के बाल । ४ कलंगी । चेदी । शिला ।

सट् (धा० ड०) [सटयति-सटयते] १ हनन
करना । घायल करना । २ मजबूत होना । ३
देना । ४ लेना । ५ बसना । रहना ।

सट्कं (न०) प्राकृत भाषा में रचा हुआ छोटा
रूपक ।

सट्वा (स्त्री०) १ पक्षी विशेष । २ बाजा विशेष ।

सट् (धा० ड०) [साटयति, -साटयते] १ समाप्त
करना । पूर्ण करना । २ अधूरा छोड़ देना ।
३ चलना । जाना । ४ सजाना ।

सणसूत्रं (न०) सन की डोरी या रस्सी ।

संड देखो घंटा ।

संडिशः } (पु०) चिमटा । सँदसी ।
सण्डिशः }

संडीनं } पक्षियों का उड़ान विशेष ।
सण्डीनं }

सत् (वि०) [स्त्री०—सती] १ विद्यमान । २
असली । सत्य । ३ नेक । पुण्यभावा । धर्मात्मा ।
४ कुलीन । भद्र । ५ ठीक । उचित । ६ उत्तम ।
श्रेष्ठ । ७ प्रतिष्ठित । सम्माननीय । ८ बुद्धिमान ।

परिहृत । १ मनोहर । सुन्दर । १० सज्जन ।
 दृढ़ । (पु०) नेक या धर्मात्मा आदमी । (न०) १
 वह जो यथार्थ में विद्यमान हो । २ यथार्थ मत् ।
 ३ श्रेष्ठ । ४ ब्रह्म । आचारः, (पु०)
 (= सदाचारः) १ अच्छा आचरण । सद्वृत्ति
 २ शिक्षाचार ।—आत्मन्, (वि०) पुण्यात्मा ।
 नेक ।—उत्तरं (न०) उचित या अच्छा उत्तर ।
 —कर्मन्, (न०) १ पुण्यकर्म । धर्मकार्य ।
 २ धर्म । पुण्य । आतिथ्य । अतिथि सत्कार ।
 —काण्डः (पु०) चील । बाज पक्षी ।—कारः,
 (पु०) १ एक प्रकार का आतिथ्यसत्कार । २
 सम्मान । प्रतिष्ठा । ३ खबरदारी । मनोयोग । ४
 भोजन । ५ पर्व । उत्सव ।—कुलं, (न०)
 अच्छा वंश । अच्छा खानदान ।—कृतं, (वि०)
 १ भलीभाँति किया हुआ । २ सत्कार किया हुआ ।
 ३ सम्मान किया हुआ । आदर किया हुआ ।
 ४ स्वागत किया हुआ ।—कृतं, (न०) १
 आदर । सत्कार । आतिथ्य । २ पुण्य ।—कृतः,
 (पु०) शिव जी का नाम ।—क्रिया, (स्त्री०)
 १ सत्कर्म । पुण्य । धर्म का काम । २
 सत्कार । आदर । खातिरदारी । ३ आयोजन ।
 तैयारी । ४ नमस्कार । प्रणाम । ५ प्रायश्चित्त का
 कोई कर्म । ६ अन्वेषण कर्म । और्ध्वदेहिक कर्म ।
 —गतिः, (स्त्री०) (= सदगतिः) अच्छी गति ।
 मोक्ष । मुक्ति ।—गुणः, (पु०) उत्तमता ।
 विशिष्टता ।—चरितं, —चरित्रं, (= सच्चरित
 या सच्चरित्र) अच्छे चाल चलन का ।
 ईमानदार । धर्मात्मा । पुण्यात्मा । (न०)
 अच्छा चाल चलन । २ अच्छे लोगों का इतिहास
 या जीवनी ।—चारा, (= सञ्चारा) हल्दी ।
 चिद्, (= सञ्चिद्) (न०) परब्रह्म ।—
 जनः, (= सज्जनः) (पु०) नेक या धर्मात्मा
 आदमी ।—पत्रं, (न०) कुमोदनी का ताड़ा
 पत्ता ।—पथः, (पु०) १ अच्छा मार्ग । २
 कर्तव्यपालन का ठीक मार्ग । ३ उत्तम सम्प्रदाय
 या सिद्धान्त ।—परिग्रहः, (पु०) उपयुक्त पात्र
 से (दान) ग्रहण ।—पशुः, (पु०) देवताओं की
 वलि योग्य अच्छा पशु ।—पात्रं, (न०) दान

आदि देने योग्य उत्तम व्यक्ति ।—पुत्रः, (पु०)
 सुपात्र बेटा । सत् ।—प्रतिपत्ताः, (पु०)
 (न्याय दर्शन में) वह पक्ष जिसका उचित
 खगड़न हो सके अथवा जिसके विपक्ष में बहुत
 कुछ कहा जा सके । सौच प्रकार के हेतुभासों में
 से एक ।—फलः, (पु०) अनार का पेड़ ।
 —भावः, (= सद्भावः) १ विद्यमानता ।
 २ साधुभाव । अच्छा भाव ।—मात्रः,
 (= सम्मात्रः) (पु०) जीव । आत्मा ।—
 मानः, (= सम्मानः) भले लोगों की प्रतिष्ठा ।
 —वज्र, (वि०) उच्च कुल का ।—वस्तु,
 (न०) प्रत्यक्षकारक भाषण ।—वस्तुः, (न०)
 १ अच्छा पदार्थ । २ अच्छी कहानी ।—विद्यः,
 (वि०) भली भाँति शिक्षित ।—वृत्त, (वि०)
 १ भले आचरण का । अच्छे चालचलन का । २
 विस्तृत गोल ।—वृत्तं, (न०) १ अच्छा चाल
 चलन । २ अच्छा स्वभाव ।—संसर्गः,
 संनिधानं,—संगः,—संगतिः—समागमः, (पु०)
 (पु०) अच्छे लोगों की सुहबत या साथ ।
 —सहाय, (वि०) अच्छे मित्रों वाला ।—
 सहायः, (पु०) अच्छा साथी या संगी ।
 —सारः, (पु०) १ वृक्ष विशेष । २ कपि । ३
 चित्रकार ।

सतत, (वि०) निरन्तर । सदा । सर्वदा । हमेशा ।
 बराबर ।—गः—गतिः, (पु०) पवन । हवा ।
 —यायिन्, (वि०) १ मदैव चलते रहने
 वाला । २ सदैव नाशोन्मुख ।

सततं (अव्यया०) सदैव । हमेशा ।

सतर्क (वि०) १ तर्क करने में पटु । न्यायशाल-
 निष्ठा । २ विचारवान ।

सतिः (स्त्री०) १ भेंट । पुरस्कार । २ नाश । अवसान ।

सती (स्त्री०) १ पतिव्रता स्त्री । २ साधुनी ।
 तपस्विनी । ३ दुर्गा का नाम ।

सतीतं (न०) पातिव्रत्य ।

सतीनः (पु०) १ एक प्रकार की दाल या मटर ।
 २ बीस ।

सतीर्थः } (पु०) सहपाठी । साथ पढ़ने वाला ।
सतीर्थः }

सतीलः (पु०) १ बाँस । २ पवन । हवा । ३ दाल । मटर ।

सतेर (पु०) भूखी । चोकर ।

सत्ता (स्त्री०) १ विद्यमानता । होने का भाव । अस्तित्व । हस्ती । होना । भाव । २ वास्तविक अस्तित्व । ३ भलापन । उत्तमता । श्रेष्ठता ।

सत्त्रे (न०) (सत्रं ही प्रायः लिखा जाता है) १ सोमयज्ञ का काल जो १३ से १०० दिवसों के भीतर पूरा होता है । २ यज्ञ । ३ भेंट । नैवेद्य । ४ उदारता । ५ पुण्य । धर्म । ६ घर । मकान । ७ पर्व । चादर । ८ सम्पत्ति । धन । दौलत । ९ जंगल । वन । १० ताल । तलैया । ११ बोखा । दगा । धूर्तवा । १२ आश्रयस्थान । शरण । पाने की जगह ।—अयनं—अयणं, (न०) दीर्घ यज्ञीय काल ।

सत्त्वा (अन्वया०) साथ । सहित ।—हन् (पु०) हन्द् का नामान्तर ।

सत्विः (पु०) १ बादल । मेघ । २ हाथी । गज ।

सत्विन् (पु०) १ वह जो सदैव यज्ञ किया करता हो । २ उदार गृहस्थ ।

सत्त्वं (न०) [नीचे दिये हुए प्रथम दस अर्थों में (पु०) भी होता है ।] १ होने का भाव । अस्तित्व । २ स्वाभाविक आचरण । आसियत । असलियत । स्वभाव । पैदायशी गुण । ३ प्रकृति । ४ ज्ञिन्दगी । जीवन । स्वाँला । जीवनी शक्ति । चैतन्यता । मन । ज्ञान । ५ कच्चा । अधूरा । गर्भ । माँसपिण्ड । ७ सार । पदार्थ । दौलत । ८ तत्त्व यथा जल, वायु, आकाशदि । ९ जीवधारी । चेतन । जानदार । १० भूत । प्रेत । राक्षस । दैत्य । ११ अच्छाई । भलाई । उत्तमता । १२ सत्य । यथार्थता । निश्चय । १३ बल । साहस । स्फूर्ति । उत्साह । १४ बुद्धिमान्ता । सज्जाव । १५ अच्छा-पन । नेकी । सात्त्विक भाव । १६ विशिष्टता । लक्षण । १७ संज्ञा । संज्ञावाची (शब्द)—अनुरूप, (वि०) १ पैदायशी आसियत के

मुताबिक । २ अपने वित्त के अनुसार ।—उद्धेहः, (पु०) भलाई का आधिक्य । २ बल या साहस की प्रधानता ।—लक्षणां, (न०) गर्भ-वती होने के चिह्न ।—विश्वः, (पु०) विवेक की हानि ।—विहित, (वि०) १ प्रकृति-द्वारा किया हुआ । पुण्यात्मा ।—सम्वः, (पु०) वीर्य या पराक्रम की हानि ।—सारः, (पु०) बल का सार या निचोड़ । २ बलिष्ठ आदमी ।—स्थ, (वि०) १ अपनी प्रकृति में स्थित । २ इदं अविचलित । धीर । ३ अशक्त । ४ प्राणयुक्त । सत्त्वमेजय (वि०) जानवरों या प्राणधारियों को भयभीत करने वाला ।

सत्य (वि०) १ यथार्थ । ठीक । वास्तविक । याथातथ्य । २ असल । ३ ईमानदार । सच्चा । निमक हलाल । ४ पुण्यात्मा ।—अनृत, (वि०) १ सच्चा और भूठा । २ देखने में सत्य किन्तु वास्तविक में असत्य ।—अनृतं,—अनृते, १ सत्यता और झुठाई । २ भूठ सत्त्व का अभ्यास अर्थात् व्यापार । व्यवसाय ।—अभिसन्ध, (वि०) अपनी प्रतिज्ञा को सत्य करने वाला ।—उत्कर्षः, (पु०) १ सत्य बोलने में प्रधानता । २ वास्तविक उत्कृष्टता ।—उद्य, (वि०) सत्य बोलने वाला ।—उपयाचन, (वि०) प्रार्थना या याचना को पूरा करने वाला ।—कामः, (पु०) सत्यप्रेमी ।—तपस्, (पु०) एक ऋषि का नाम ।—दर्शिन, (वि०) सत्य का देखने वाला । पहले ही से सत्य देखने या जान लेने वाला ।—धन, (वि०) सत्य का धनी । अत्यन्त सत्य बोलने वाला ।—धृति, (वि०) नितान्त सत्य ।—पुरं, (न०) विष्णु लोक ।—पूत, (वि०) सत्य से पवित्र किया हुआ ।

यथाः—

“सत्यं धृतां च वैद्वर्षी ।”

—मनु ।

—प्रतिज्ञा, (वि०) प्रतिज्ञा को सत्य करने वाला । बात का धनी । वचन का सच्चा ।—भामा, (स्त्री०) सत्राजित की पुत्री और श्रीकृष्ण की एक पटरानी का नाम ।—युगं, (न०) चार युगों में से प्रथम युग । स्वर्ण युग ।—वचस, (वि०)

सच्चा । (पु०) १ भविष्यद्वाक्ता । २ ऋषि ।
मुनि । (न०) सच्चाई । सन्धता ।—वद्य, (वि०)
सच्चा ।—वद्य, (न०) सच्चाई । सन्धता ।—
वाच, (वि०) सच्चा । स्पष्टवाक्ता । (पु०) १
ऋषि । २ काक । कौवा ।—वाक्य, (न०) सत्य-
कथन ।—वादिन्, (वि०) १ सत्य बोलने
वाला । २ सच्चा । निष्कपट । स्पष्ट वक्ता ।—व्रत,
—सङ्गर, —सन्ध, (वि०) १ सत्यप्रतिज्ञ ।
वचन को पूरा करने वाला । २ ईमानदार । सच्चा
—श्रावणा, (न०) शपथ खाने वाला ।—
सङ्काश, (वि०) आपाततः अनुमोदनीय या
सन्तोषजनक ।

सत्यं (न०) १ सच । २ सच्चाई । ३ नेकी । भलाई ।
पुण्य । ४ शपथ । प्रतिज्ञा । ५ प्रत्यक्ष सिद्ध सत्य ।
६ चार युगों में से प्रथम युग । स्वर्ण युग । ७
जल । पानी ।

सत्यं (अव्यया०) सच्चाई से । यथार्थतः । वस्तुतः ।

सत्यः (पु०) १ ऊपर के सप्त लोकों में से सब से ऊँचा
लोक, जहाँ ब्रह्मा जी रहने हैं । २ अश्वत्थ वृक्ष ।
३ श्री राम जी का नामान्तर । ४ विष्णु का
नामान्तर । ५ नान्दीमुख आदि का अधिष्ठाता
देवता ।

सत्यकारः (पु०) १ किसी सोदा या ठेके का सका-
रना । २ पेशगी । साही ।

सत्यवन् (वि०) सच्चा । (पु०) सावित्री के पति
सत्यवान् का नामान्तर ।

सत्यवती (स्त्री०) एक मछुवे की लड़की जो पीछे
वेदव्यास की माता हुई थी ।—सुतः, (पु०)
वेदव्यास ।

सत्या (पु०) १ सच्चाई । सत्यता । २ सीता का
नामान्तर । ३ दुर्गा देवी । ४ सत्यभामा । ५
द्रौपदी । ६ सत्यवती, जो वेदव्यास की जननी थी ।

सत्यापनं (न०) सत्य का पालन । सत्य का भाषण ।
(ठेके या किसी लैन देन को) सकारना ।

सत्र देखो सन्ध ।

सत्रप (वि०) लज्जित । शर्माला ।

सत्राजिन् (पु०) सत्यभामा के पिता का नाम ।

सन्धर (वि०) शीघ्र । तुरन्त ।

सन्धरं (अव्यया०) शीघ्रता से । जुरी से ।

सन्धुत्कार (वि०) शीघ्रता से अस्पष्ट बोला हुआ ।

सन्धुत्कारः (पु०) वह भाषण जिसमें शीघ्रता से
कहे गये अस्पष्ट वचन हों ।

सद् (धा० प०) [सदिदि, सन्न] १ बैठना ।
लेटना । उड़क जाना । २ हूय जाना । ३ रहना ।
बसना । ४ उदास होना । निरासा होना । ५
मड़ना । नष्ट होना । दरबाद होना । नष्ट होना ।
६ कष्ट में पड़ना । पीड़ित होना । ७ गोक
जाना । म थक जाना । शिथिल पड़ जाना । ८
जाना ।

सदः (पु०) वृत्त के फल ।

सदंगकः (पु०) केकड़ा ।

सदंशवदनः (पु०) बगुला । वृटीमार ।

सदनं (न०) १ घर । महल । भवन । हवेली । २
शैथिल्य । थकावट । ३ जल । ४ यज्ञमण्डप । ५
विराम । स्थिरता । ६ यमराज का आवासस्थान ।

सदय (वि०) दयालु । रहमदिल । कृपालु ।

सदयं (अव्यया०) कृपया । रहम दिली से ।

सदस् (न०) १ आवास स्थान । रहने की जगह ।
२ सभा । मजलिस ।—गतः, (वि०) समा या
मजलिस में बैठा हुआ । गृह । सभाभवन ।

सदस्यः (पु०) १ सभासद । २ असेसर । जूर ।
पञ्च । ३ यज्ञ कराने वाला । याजक ।

सदा (अव्यया०) १ नित्य । सदैव । हमेशा । सर्वदा
निरन्तर । सब समय ।—आनन्द, (वि०)
सदैव प्रसन्न ।—आनन्दः, (पु०) शिव जी
का नामान्तर ।—गतिः, (पु०) १ पवन । २
सूर्य । ३ मोक्ष । मुक्ति ।—नोया, —नीरा,
(स्त्री०) १ करनाया नदी का नामान्तर । २ वह
नदी या सोता जिसमें सदैव जल बहा करे ।—
दान, (वि०) १ सदैव दान करने वाला । २
(वह हाथी) जिसके सदा मद बहता हो ।—

दानः, (पु०) १ इन्द्र का ऐरावत हाथी । २ गन्धद्विप नामक रत्नरी । ३ गयेश जी ।—नर्तः, (पु०) खंजन पत्नी ।—फलः, (पु०) १ बिल्व वृक्ष । २ कटहल का पेड़ । ३ सधन वट वृक्ष । ४ नारियल का पेड़ ।—योगिन्, (पु०) कृष्ण का नामान्तर ।—शिवः, (पु०) शिव जी का नाम ।

सदृल (वि०) [स्त्री०—सदृली] } १ समान ।
सदृश (वि०) [स्त्री०—सदृशी] } अनुरूप । तुल्य ।
सदृश (वि०) } बराबर । २ उप-
युक्त । योग्य ।

सदेश (वि०) १ देश रखने वाला । २ एक ही स्थान या देश का । ३ समीपी । पड़ोसी ।

सद्वन् (न०) १ घर । मकान । २ स्थान । ठिकने की जगह । ३ मन्दिर । ४ वेदी । ५ जल ।

सद्यस् (अव्यया०) १ आज ही । २ तुरन्त ही । अभी । ३ हाल ही में । कुछ ही समय पीछे ।
—कालः, (पु०) वर्तमान काल ।—कालीनः, (वि०) हाल ही का ।—जातः, (वि०) [=सद्योजात] हाल का उत्पन्न ।—जातः, (पु०) १ बछड़ा । २ शिव जी का नामान्तर ।—पातिन्, (वि०) शीघ्र नष्ट होने वाला । नश्वर ।—शुद्धिः, (स्त्री०)—शौचं, (न०) तुरन्त की हुई शुचता ।

सद्यस्क (वि०) १ नया । टटका । हाल का । २ तुरन्त का ।

सदु (वि०) १ टिका हुआ । अवलम्बित । प्रस्थानित । जाता हुआ । गमनकारी ।

सद्वद्व (वि०) क्लृप्त । कलहप्रिय । लड़ाकू ।

सद्वसथः (पु०) ग्राम । गाँव ।

सधर्मन् (वि०) एक ही गुणों वाला । समान गुणों वाला । २ समान कर्तव्यों वाला । ३ एक ही जाति या सम्प्रदाय वाला । ४ सदृश । अनुरूप ।
चारिणी, (स्त्री०) वह स्त्री जिसके साथ शास्त्रीया विवाह हुआ हो ।

सधर्मिणी देखो “सधर्मचारिणी”, ।

सधर्मिन् (वि०) [स्त्री०—सधर्मिणी] देखो “सधर्मन्”

सधिस (पु०) बैद्य वृषभ सौद

सध्रीची (स्त्री०) सखी । सहेली ।

सध्रीचीन (वि०) सहित । अन्वित ।

सध्र्यन् (पु०) पति । साथी ।

सन (धा० ड०) [सनति,—सनेति,—सनुते,—सात,] १ प्यार करना । पसंद करना । २ पूजन करना । अर्चा करना । सम्मान करना । ३ प्राप्त करना । उपलब्ध करना । ४ सम्मान या गौरव के साथ प्राप्त करना । ५ भेंट । पुरस्कार आदि भेंट का सम्मान करना । देना । बाँटना ।

सनः (पु०) हाथी के कानों की फड़फड़ाहट ।

सनत् (पु०) ब्रह्मा का नामान्तर । (अव्यया०) सदैव । निरन्तर ।—कुमारः, (पु०) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक का नाम ।

सनसूत्र देखो “सणसूत्र” ।

सना (अव्यया०) सदैव । निरन्तर ।

सनात् (अव्यया०) सदैव ।

सनातन (वि०) [स्त्री०—सनातनी] १ निरन्तर । बराबर । अनादि । स्थायी । २ दृढ़ । निश्चित । निर्धारित । ३ प्राचीन । आदि काल का ।

सनातनः (पु०) १ विष्णु भगवान् का नामान्तर । २ शिव । ३ ब्रह्मा ।

सनातनी (स्त्री०) १ लक्ष्मी । २ दुर्गा या पार्वती । ३ सरस्वती ।

सनाथ (वि०) १ जिसकी रक्षा करने वाला कोई स्वामी हो । २ जिसका कोई रक्षक या पति हो । ३ रोका हुआ । अधिकार में किया हुआ । ४ अन्वित । पूरित । सम्पन्न ।

सनाभि (वि०) १ एक ही गर्भ का । सहोदर । २ सजातीय । सम्बन्धी । ३ अनुरूप । सदृश । ४ स्नेहान्वित ।

सनाभिः (पु०) १ सहोदर भाई । २ नजदीक का रिश्तेदार । सात पीढ़ी के भीतर का नातेदार ।

सनाभ्यः (पु०) सात पीढ़ियों के भीतर एक ही वंश का मनुष्य । सपिण्ड ।

सनिः (पु०) १ अर्चा । पूजन । २ नैवेद्य । भेंट । ३ वाचना

सनिष्ठीवं } (न०) ऐसी बोली जिसके बोलने में
सनिष्ठेवं } थूक उड़े ।

सनी (स्त्री०) १ दिशा । २ यात्रा । ३ हाथों के कान
की फड़फड़ाहट ।

सनीड } (वि०) १ साथ रहने वाले । एक ही
सनील } घाँसले में रहने वाला । २ समीप । निकट ।

संतः } (पु०) दोनों हाथों की औंगली ।
सन्तः }

संतक्षणं } (न०) कटाक्षपूर्ण वचन । व्यङ्ग्य वचन ।
सन्तक्षणं }

संतत } (व० कृ०) १ बढ़ाया हुआ । फैलाया
सन्तत } हुआ । २ अविच्छिन्न । सतत । लगातार । ३
अनादि । ४ बहुत । अधिक ।

संततं } (अव्यया०) १ सदैव । हमेशा । निरन्तर ।
सन्ततं }

संततिः } (स्त्री०) १ फैलने वाला । पसरने वाला ।
सन्ततिः } २ फैलाव । प्रसार । ३ अवली । पंक्ति ।
३ अविच्छिन्न । सिलसिला । ४ वंश । कुल ।
खानदान । ५ औलाद । सन्तान । ६ ढेर । राशि ।

संतपनं } (न०) १ तपन । जलन । २ पीड़न ।
सन्तपनं } सन्तापन ।

संतप्त } (व० कृ०) १ गर्माया हुआ । गर्मागर्म ।
सन्तप्त } दहकता हुआ । २ पीड़ित । कष्ट में पड़ा
हुआ । —अयस्, (न०) गर्म खोहा । —वत्सस्,
(न०) मन्द स्वास वाला ।

संतप्तस् } (न०) सर्वव्यापी अन्धकार । घोर
सन्तप्तस् } अन्धकार ।
संतप्तस् }

संतर्जनं } (न०) १ सन्तोषकरण । अघाना ।
सन्तर्जनं } २ डौटना । डपटना । भर्त्सना करना ।

संतर्पणं } (न०) १ सन्तोषकरण । अघाना । २
सन्तर्पणं } प्रसन्न । ३ हर्षप्रद । ४ पकवान विशेष ।

संतानं (न०) } १ बढ़ाव । प्रसार । व्याप्ति । फैलाव ।
सन्तानं (न०) } २ कुल । वंश । ३ सन्तान । औलाद ।
संतानः (पु०) } ४ स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक ।
सन्तानः (पु०) }

संतानकः } (पु०) स्वर्ग के ५ वृक्षों में से एक वृक्ष
सन्तानकः } और उसके फूल ।

संतानिका } (स्त्री०) १ फल । फाग । २ मलाई ।
सन्तानिका } साड़ी । मकंदजाल नामक घास । ३
छुरी या तलवार की धार ।

सन्तापः } (पु०) १ उष्णता । गर्मी । जलन । ताप ।
सन्तापः } २ दुःख । कष्ट । व्यथा । ३ मानसिक
कष्ट । मनोव्यथा । पश्चात्ताप । ४ तप । तप की
थकावट । ५ क्रोध । रोष ।

सन्तापन } (वि०) [स्त्री०—सन्तापिनी] जलने
सन्तापन } वाला । घथकने वाला ।

सन्तापनं } (न०) १ दाह । जलन । २ पीड़ा ।
सन्तापनं } तकलीफ । दर्द । ३ भड़काने वाला रोष ।

सन्तापनः } (पु०) १ कामदेव के पाँच शरों में से
सन्तापनः } एक ।

सन्तापित } (व० कृ०) तपाया हुआ । मन्नस ।
सन्तापित } उत्पादित ।

सन्तिः } (पु०) १ अवसान । नाश । २ भेंट ।
सन्तिः }

सन्तुष्टिः } (स्त्री०) नितान्त सन्तोष ।
सन्तुष्टिः }

सन्तोषः } (पु०) १ मन की वह वृत्ति या अवस्था
सन्तोषः } जिसमें मनुष्य अपनी वर्तमान दशा में ही
पूर्ण सुख अनुभव करता है । तृप्ति । शान्ति । २
प्रसन्नता । सुखाहर्ष । आनन्द । ३ औंगुष्ठ या
तर्जनी उँगली ।

सन्तोषणं } (न०) सन्तोष । तृप्ति । शान्ति ।
सन्तोषणं }

सन्त्यजनं } (न०) त्याग । विरक्ति ।
सन्त्यजनं }

सन्त्रासः } (पु०) डर । भय ।
सन्त्रासः }

सन्दंशः } (पु०) १ चिमटा । सैंदसी । २ जराही
सन्दंशः } का एक औज़ार । कंकमुख । ३ एक नरक
का नाम ।

सन्दंशकः } (पु०) सैंदसी ।
सन्दंशकः }

सन्दर्भः } (पु०) १ रचना । ग्रन्थन । रचन ।
सन्दर्भः } २ गुनावट । ३ संमिश्रण । एकीकरण । ३
नियमित सम्बन्ध । सातत्य । ४ बनावट । ५
ग्रन्थ रचना ।

सदृशन } (न०) १ अवलोकन । चितवन । २
सन्दर्शन } धूरन । ३ भेंट । परस्पर दर्शन । ४ दृश्य ।
दर्शन । ५ विचार । लिहाज । शील ।

संदाजः } (पु०) १ रस्सा । रस्सी । २ बेड़ी ।
सन्दानः } शृङ्खला ।

संदानं } (न०) हाथी की कनपटी जहाँ से भद्र
सन्दानं } चूता है ।

संदानित } (वि०) १ बाँधा हुआ । २ बेड़ी पका
सन्दानित } हुआ । जंजीर में जकड़ा हुआ ।

संदानिनी } (स्त्री०) गोष्ठ । गोशाला ।
सन्दानिनी }

संदावः } (पु०) पलायन । भगाव ।
सन्दावः }

संदाहः } (पु०) जलन । दाह ।
सन्दाहः }

संदिग्ध } (व० कृ०) १ लेप किया हुआ । ढका
सन्दिग्ध } हुआ । २ मशकूक । अनिश्चिन । सन्देह-
युक्त । ३ अमित । ४ गड़बड़ । अस्पष्ट । ५ भया-
नक । खतरनाक । अरक्षित । ७ विपाक ।

संदिष्ट } (व० कृ०) १ बतलाया हुआ । बताया
सन्दिष्ट } हुआ । २ निर्दिष्ट किया हुआ । ३ कहा
हुआ । कथित । ४ स्वीकृत । मंजूर किया हुआ ।

संदिष्टं } (न०) इत्तिला । सूचना । खबर । समा-
सन्दिष्टं } चार । संवाद ।

संदिष्टः } (पु०) वार्तावह । हत्कारा । कासिद ।
सन्दिष्टः }

संदिष्ट } (वि०) बन्धन युक्त । जंजीर में जकड़ा
सन्दिष्ट } हुआ । कसा हुआ ।

संदी } (स्त्री०) छोटी खाट या खटोला ।
सन्दी }

संदीपन (वि०) [स्त्री०—सन्दीपनी] १ जलाने
वाला । भड़काने वाला । २ उत्तेजित करने वाला ।

संदीपनं } (न०) १ उद्दीपन करने की क्रिया । २
सन्दीपनं } उत्तेजना देने वाला ।

संदीपनः } (पु०) १ कामदेव के पाँच बाणों में
सन्दीपनः } से एक ।

संदीप्त } (व० कृ०) १ दहकता हुआ । जलता
सन्दीप्त } हुआ । २ उद्दीपित । उद्दीप्त । ३ भड़काया
हुआ । बरगलाया हुआ ।

संदुष्ट } (व० कृ०) १ अष्ट किया हुआ । बिगाड़ा
सन्दुष्ट } हुआ । २ दुष्ट । धूर्त ।

संदूषणं } (न०) अष्टना-करण । अष्ट करने की
सन्दूषणं } क्रिया । अष्टता ।

संदेशः } (पु०) १ सूचना । संवाद । खबर । २
सन्देशः } संदेश । ३ आदेश ।—अर्थः, (पु०)

संदेश का विषय ।—वाच. (पु०) संदेश ।—

हरः, (पु०) १ दूत । कासिद । वार्तावह । २

पुलची । राजदूत ।

सन्देहः } (पु०) १ सन्देह । संशय । अनिश्चयता ।
सन्देहः } अंदेश । २ खतरा । भय । ३ एक प्रकार

का अर्थालंकार ।—दोलाः, (स्त्री०) द्विविधा ।

संदोहः } (पु०) १ दुहना । दोहन । २ समूह ।
सन्दोहः } ढेर । राशि ।

संदावः } (पु०) पलायन । भगाव ।
सन्दावः }

संध्या } (स्त्री०) १ संयोग । २ अनिष्ट सङ्बन्ध ।
सन्ध्या } ३ हालत । दशा । ४ उदराव । प्रतिज्ञा ।

शतं । ५ सीमा । हद्द । ६ दृढ़ता । ७ सायंकाल
का धुंधला प्रकाश । ८ भभके से खींचने की
क्रिया ।

संधानं } (न०) १ जोड़ । मिलान । २ संयोग ।
सन्धानं } ३ समिश्रण । ४ सन्धि । मैत्री । ५ जोड़ ।

गाँठ । ६ मनोयोग । एकाग्रता । ७ दिशा । ओर ।

८ समर्थन । ९ शराब खींचने की क्रिया । १० मदिरा

या शराब की तरह कोई मादक वस्तु । ११ कोई

भी सुस्वाद व्यञ्जन जिसके खाने पर प्यास बढ़े ।

१२ मुरब्बे और अचार के बनाने की प्रक्रिया । १३

ओषधोपचार से चमड़े को सिकोड़ने की क्रिया ।

खड़ी काँजी ।

संधानित } १ संयुक्त । मिला हुआ । एक ढोरे में
सन्धानित } नथी । २ बंधा हुआ । कसा हुआ ।

संधानी } (स्त्री०) १ वह स्थान जहाँ मदिरा खींची
सन्धानी } जाती है । २ वह स्थान जहाँ पीतल आदि

की ढलाई की जाती है ।

संधिः } (पु०) १ दो वस्तुओं का एक में मिलना ।
सन्धिः } मेल । संयोग । २ कौलकार । इकार ।

३ सुलह । मैत्री । मित्रता । ४ शरीर की जोड़

या गाँठ । ५ (कपड़े की) तह या टूटन । ६

सुरंग । संध । ७ पृथक्करण । विभाजन । ८ व्याकरण

में वह विकार जो दो अक्षरों के पास पास आने के कारण उनके मेल से हुआ करता है । १० अव-काश । दो वस्तुओं के बीच की खाली जगह । ११ अवकाश । विश्राम । १२ सुअवसर । १३ एक युग की समाप्ति और दूसरे युग के आरम्भ के बीच का मसम । युग-सन्धि । १४ नाटक में किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथाओं का किसी एक मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होने वाला सम्बन्ध । [ऐसी सन्धियाँ ५ प्रकार की होती हैं यथा—मुखसन्धि, प्रसिमुख-सन्धि, गर्भ-सन्धि, अवमर्श या विमर्श सन्धि और निर्वहण-सन्धि] १५ स्त्री की जननेन्द्रिय । भग ।—अक्षरं, (न०) दो स्वरों का थोर । संयुक्त स्वरवर्णद्वय (जिनका उच्चारण सम्मिलित किया जाता है) ।—चोरः, (पु०) सेंध लगाने वाला चोर । जं, (न०) अगव ।—जीवकः, (पु०) दलाल । कटना ।—दूषणं, (न०) सन्धि को भङ्ग करने की क्रिया ।—व्रंथनं, (न०) शिरा । नाड़ी । नख ।—भङ्गः, (पु०)—मुक्तिः, (स्त्री०) वैद्यक के मत्तानुसार हाथ या पैर आदि के किसी जोड़ का टूटना या स्थानच्युत होना ।—विग्रहः, (पु० द्विवचन) शान्ति और युद्ध ।—विचक्षणः, (पु०) सन्धि करने के कार्य में निपुण ।—वेला, (स्त्री०) सन्ध्याकाल । सार्धकाल । शाम ।—हारकः, (पु०) घर में सेंध या नक्कब लगाने वाला ।

संधिकः } (पु०) एक प्रकार का ज्वर ।
सन्धिकः }

संधिका } (स्त्री०) शराब छींचने की क्रिया ।
सन्धिका }

सन्धित } (वि०) १ संयुक्त । जुड़ा हुआ । २
सन्धित } बैधा हुआ । कसा हुआ । ३ मेल मिलाप
किये हुए । मैत्री स्थापित किये हुए । ४ जबा
हुआ । बैठाया हुआ । ५ मिश्रित किया हुआ ।
६ अक्षर ढाला हुआ ।

सन्धितं (न०) } १ आचार । सुरब्बा । २ शराब ।
सन्धितं (न०) } सदिरा । ३ उठी हुई राख । गामिन
सन्धिनी (स्त्री०) } होने के लिये विकल गाय ।
सन्धिनी (स्त्री०) } गामिनी हुई गौ । ४ वेवक्त बुढ़ी
हुई गौ ।

सन्धिला } (स्त्री०) १ दीवाल में किया हुआ
सन्धिता } वेद । २ नदी । ३ शराब ।

संभु-संभु (न०) १ जलाना । यालना । दहकाना ।
संभु-संभु } २ उडीपन करने की क्रिया ।

संभु-संभु (न०) १ जलाना हुआ । दहकाया
संभु-संभु } हुआ । सड़काया हुआ । उत्तेजित किया
हुआ ।

संभेय } (वि०) १ मिलाने का । जोड़ने का । २
संभेय } मिलाने या मना लेने के योग्य । ३ सन्धि
करने के योग्य । जिसके साथ सन्धि की जासके ।
निशाना लगाने योग्य ।

सन्ध्या (स्त्री०) १ सेल । सन्धि २ जोड़ ।
सन्ध्या } विभाग । ३ प्रातः या सन्ध्या का समय ।
४ लड़का । भोर । ५ सन्ध्या । शाम । ६ युग-
सन्धि । ७ प्रातः । सन्ध्या और सायं सन्ध्यापावन
हृत् । ८ कौलकरा । इकरा । ९ सीमा । हद ।
१० ध्यान । विचार । ११ पुष्प विशेष । १२ नदी
का नाम । १३ ब्राह्मणी । ब्राह्मणपत्नी ।—घाघं,
(न०) १ सन्ध्या कालीन मेघ जिनमें सुनहली
आभा होती है । २ गेरु । लाल खदिया ।—
कालः, (पु०) शाम ।—नादिन, (पु०)
तिथि ।—पुष्पी, (स्त्री०) १ कुन्द की जाति
का फूल । २ जायफल ।—वजः, (पु०) राक्षस ।
—रागाः, (पु०) ईगुर । लेंदूर ।—रामः, (पु०)
ब्रह्माजी ।—वन्दनं, (न०) आर्यों की प्रातः
सायं की विशिष्ट उपासना ।

सन्न (व० क०) १ उपविष्ट । बैठा हुआ । बसा हुआ ।
लेटा हुआ । २ उदात्त । शमनीय । ३ ढीला ।
खटकना हुआ । ४ निर्बल । मन्द । कमजोर । ५
बरबाद किया हुआ । नाश किया हुआ । ६ विनष्ट ।
७ गतिहीन । स्थिर । ८ घुसा हुआ । ९ समीप ।
नज़दीक ।

सन्न (न०) थोड़ा । थोड़े परिमाण में ।

सन्नः (पु०) पियाल बृद्ध ।

सन्नक (वि०) हस्त । बौना । खर्चाकार ।—द्रः, (पु०)
पियाल बृद्ध ।

सन्नतर (वि०) मन्द । दबा हुआ (स्वर जैसे)

संनत } (व० कृ०) १ झुका हुआ । नवा हुआ ।
सन्नत } २ उदास । ३ सिकुड़ा हुआ ।

संनतिः } (स्त्री०) १ सखात पूर्वक प्रणाम । २
सन्नतिः } विनम्रता । ३ यज्ञ विशेष । शौरगुल ।

संनद्ध } (व० कृ०) १ एक साथ मिला कर बाँधा
सन्नद्ध } हुआ । २ कवच धारण किये हुए । ३
युद्ध करने को लैस । ४ तैयार । प्रस्तुत । ५ प्पात ।
६ किसी भी वस्तु से पूर्ण रीत्या सम्पन्न । ७ हिंसक ।
हिसालु । धातकी । ८ नज़दीकी । समीप का ।

संनयः } (पु०) १ समूह । ढेर । राशि । परिमण्ड ।
सन्नयः } २ पिछाड़ी । (सेना की पिछाड़ी का रक्षक
दल)

संनहनं } (न०) तैयारी । सजावट । हथियार से
सन्नहनं } लैस । २ तैयारियाँ । ३ मजबूत बंधन ।
४ उद्योग । धंधा ।

संनाहः } (पु०) १ कवच और अस्त्रशस्त्र से सज्जित
सन्नाहः } होने की क्रिया । २ युद्ध करने जाने जैसी
सजावट । ३ कवच ।

संनहः } (पु०) लड़ाई का हाथी ।
सन्नहः }

संनिकर्षः } (पु०) १ समीप खींचना या लाना ।
सन्निकर्षः } २ समीप्य । पड़ोस । उपस्थिति । ३
सम्बन्ध । रिश्ता । ४ (न्याय से इन्द्रिय और
विषय का सम्बन्ध जो कई प्रकार का माना
गया है ।

संनिकर्षणं } (न०) १ समीप लाना । २ समीप
सन्निकर्षणं } जाना । ३ समीप्य । पड़ोस ।

संनिकृष्ट } (व० कृ०) १ प्रायः ठीक । लगभग ।
सन्निकृष्ट } अनकरीब । २ पड़ोसी । निकट का ।
पास का ।

संनिकृष्टं } (न०) समीप्य । पड़ोस ।
सन्निकृष्टं }

संनिक्रयः } (पु०) संग्रह । समुच्चय ।
सन्निक्रयः }

संनिधातृ } (पु०) १ समीप लाने वाला । २
सन्निधातृ } जमा कराने वाला । ३ चोरी का माज
लेने वाला । ४ अदालत का पेशकार ।

संनिधानं (न०) } १ धामने सामने की स्थिति ।
सन्निधानं (न०) } २ निकटता । समीपता । ३
संनिधिः (पु०) } प्रत्यक्षगोचरत्व । ४ आधार ।
सन्निधिः (पु०) } पात्र । ५ रखना । भरना । ६
जोड़ । औसत ।

संनिपातः } (पु०) १ एक साथ गिरना या पड़ना ।
सन्निपातः } नीचे आना । उतरना । २ मिलना ।
एकत्र होना । ३ टकरा । संघर्ष । ४ संगम ।
संयोग । ५ समूह । समुदाय । ६ आगमन । ७
कफ बात और पित्त तीनों का एक साथ बिगड़ना ।
त्रिदोष । सरसाम । संगीत में समय का एक
प्रकार का परिमाण ।---ज्वरः, (पु०) त्रिदोषज
ज्वर ।

संनिबन्धः } (पु०) १ मजबूती से बाँधना । जक-
सन्निबन्धः } डना । २ सम्बन्ध । लगाव । ३ प्रभाव ।
तासीर ।

संनिभ } (वि०) सदृश । समान ।
सन्निभ }

संनियोगः } (पु०) १ मेल । लगाव । २ नियुक्ति ।
सन्नियोगः }
संनिरोधः } (पु०) अड़चन । रुकावट । रोक ।
सन्नरोधः } बाधा ।

संनिवृत्तिः } (स्त्री०) १ फिरना (मन का) । २
सन्निवृत्तिः } विरक्ति । ३ निग्रह । सहिष्णुता ।

संनिवेश } (पु०) १ लवलीनता । संलग्नता ।
सन्निवेशः } २ समूह । समाज । ३ जुटाव । मेल । ४
स्थान । जगह । स्थिति । ५ पड़ोस । समीप्य । ६
बनावट । शक्ति । ७ कोपड़ी । रहने की जगह ।
८ अथास्थान बिठाना । ९ वैठाना । जड़ना । १०
चौगाव । खेलने की जगह या मैदान ।

संनिहित } (व० कृ०) १ समीप रखा हुआ । एक
सन्निहित } साथ या पास रखा हुआ । २ निकटस्थ ।
समीपस्थ । ३ स्थापित । जमा किया हुआ । ४
उद्यत । तत्पर । ५ ढहराया हुआ । टिकाया
हुआ ।---अप्राप, (वि०) नश्वर । वितश्वर ।
नाशवान् ।

संन्यसनं (न०) १ वैराग्य । चिराय । २ सांसारिक
वस्तुओं से पूर्ण रूप से विरक्ति । ३ सौंपना ।
सुपुर्न करना ।

सम्यस्त (व० कृ०) १ बैठाया हुआ । जमाया हुआ । २ जमा कराया हुआ । ३ सँपा हुआ । ४ फँसा हुआ । जोड़ा हुआ । अलग किया हुआ ।

सम्यासः (पु०) १ वैराग्य । त्याग । २ सांसारिक प्रपञ्चों के त्याग की वृत्ति । ३ धरोहर । धात्री । ४ लुब्धा का दाव । होड़ । ५ शरीरत्याग । मृत्यु । ६ जशमर्षी ।

सम्यासिन् (पु०) १ धरोहर रखने वाला । जमा कराने वाला । २ वह पुरुष जिसने संन्यास धारण किया हो । चतुर्थ आश्रमी । ३ स्पृहाहार ।

सप् (धा० प०) [सपति] १ सम्मान करना । पूजन करना । २ मिलाता । जोड़ना ।

सपत्न (वि०) १ पँखों वाला । २ दलबन्दी वाला । ३ अपने पक्ष या दल का । ४ सजातीय । सदस्य । समान ।

सपत्नः (पु०) १ सरफदार । पक्षपाती । २ सजातीय । ३ न्याय में वह बात या दृष्टान्त जिसमें साध्य अवश्य हो ।

सपत्नः (पु०) शत्रु । वैरी । प्रतिद्वन्द्वी ।

सपत्नी (स्त्री०) सौत ।

सपत्नीक (वि०) पत्नी सहित ।

सपत्राकरणं (न०) १ शरीर में बाण इतनी जोर से मारना कि बाण का वह भाग जिसमें पर लगे होते हैं, शरीर के भीतर घुस जाय । २ अस्थान्त पीड़ा उत्पन्न करना ।

सपत्राकृतिः (स्त्री०) बड़ी पीड़ा या दर्द ।

सपदि (अव्यया०) तुरन्त । क्रौर्य ।

सपर्षा (स्त्री०) १ पूजन । अर्चन । २ सेवा । परिचर्या ।

सपाद (वि०) १ पैरों वाला । २ सवाया ।

सपिंडः } (पु०) एक ही कुल का पुरुष जो एक
सपिण्डः } ही पितरों को पिण्ड दान करता हो ।
एक ही खानदान का ।

सपिंडीकरणं } (न०) किसी मृत नातेदार के उद्देश्य
सपिण्डीकरणं } से किया जाने वाला आद्य कर्म विशेष । [असल में यह कृत्य एक वर्ष बाद करना

चाहिये; किन्तु प्रातः कल त्रेय बारहवें दिन ही इसे कर डाला करने दे ।]

सपीतिः (स्त्री०) प्रायः प्रायः पान करने वाला । हम-प्याला ।

सप्तक (वि०) [स्त्री०—सप्तका, सप्तकी] १ जिसमें सात हों । २ सात । ३ सप्तर्षी ।

सप्तकं (न०) सात का समुदाय ।

सप्तकी (स्त्री०) स्त्री की करघनी या कमरबंद ।

सप्तर्षिः (स्त्री०) सप्त ।

सप्तधा (अव्यया) सातगुना ।

सप्तन् (संख्यावाची विशेषण) सात ।—अग्निम्, (वि०) १ सात त्रिधा या लौं वाला । २ अशुभ दृष्टि वाला । (पु०) १ अग्नि । २ शनि ।—अग्नौतिः, (स्त्री०) सप्तर्षी ।—अश्वं, (न०) सप्तकोना ।—अश्वः, (पु०) सूर्य ।—अश्ववाहनः, (पु०) सूर्य ।—अश्वः, (पु०) सप्तदिवस अर्थात् सप्ताह । हफ्ता ।—आत्मन्, (पु०) ब्रह्म की उपाधि ।—ऋषिः, (पु०) बहुवचन । १ मरीचि, अत्रि, आंसिरिस्, पुलस्त्य, पुलह, ऋतु और वसिष्ठ नामक सात ऋषियों का समुदाय । २ आकाश में उत्तर दिशा में स्थित सात तारों का समूह जो ध्रुव के चारों ओर घूमता दिखलाई पड़ता है ।—अत्वारिगत, (स्त्री०) १७ । सैतालिल ।—जिह्वा, —ज्वालाः, (पु०) अग्नि ।—तन्तुः, (पु०) वस्त्र विशेष ।—दण्डः, (वि०) सत्रह । १७ ।—दीधितिः, (स्त्री०) अग्नि ।—द्वीपा, (स्त्री०) पृथिवी की उपाधि ।—धातु, (पु०) बहुव०) शरीरस्थ सात धातुएं या शरीर के संयोजक द्रव्य अर्थात् रक्त, पित्त, मूत्र, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र ।—नवतिः, (स्त्री०) १७ सत्तानवे ।—जाडीचक्रं, (न०) फलित ज्योतिष में सात देवी रेखाओं का एक चक्र जिसमें सब नक्षत्रों के नाम भरे रहते हैं और जिसके द्वारा वर्षा का आगम बतलाया जाता है ।—पद्मः, (पु०) वृत्तिजन का पेद ।—पद्मी (स्त्री०) विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू गाँठ जोड़ कर अग्नि के चारों ओर सात परि-

क्रमाणं करते हैं। भँवर। भँवरी।—प्रकृतिः,
(स्त्री०) राज्य के सात अंग। [यथा राजा,
मंत्री, सामन्त, देश, कोश, गढ़ और सेना]—
—भद्रः, (पु०) सिरिस का पेड़।—भूमिकः,
—भौम, (वि०) सातखना ऊँचा।—विगतिः,
(स्त्री०) सत्ताइस।—शतं, (न०) १ सातसौ।
२ एक सौ सात।—शती, (स्त्री०) ७०० पद्यों
का संग्रह।—सप्तिः, (पु०) सूर्य की उपाधि।

सप्तम (वि०) [स्त्री०—सप्तमी] सातवाँ।

सप्तमी (स्त्री०) १ सप्तम कारक। अधिकरण कारक।
२ किसी पक्ष की सातवीं तिथि।

सप्तला (स्त्री०) चमेली की जाति का पौधा विशेष।

सप्तिः (पु०) १ जुआ। जुगन्धर। २ घोड़ा।

सप्रणय (वि०) प्यारा। मित्रतायुक्त।

सप्रत्यय (वि०) १ विश्वस्त। २ निश्चय। बेशक।

सफरः (पु०) } छोटी जाति की मछली जो
सफरी (स्त्री०) } चमकीले रंग की होती है।

सफल (वि०) १ फलवाला। फल देने वाला। २
सार्थक। २ कृतकार्य। कामयाब।

संबंधु } (वि०) घनिष्ठ सम्बन्ध युक्त। मित्र
सबन्धु } वाला।

संबन्धुः } (पु०) नातेदार। सजातीय।
सबन्धुः }

सबलिः (पु०) सायंकाल का कुटपुटा उजियाला।

सबाध (वि०) १ अनिष्टकर। २ जालिम। उत्पीड़क।

सब्रह्मचर्य (न०) सहपाठी। एक ही गुरु से पढ़ने
वाला।

सब्रह्मचारिन् (पु०) १ वे सहपाठी जो एक ही साथ
पढ़ते हों और एक ही व्रत रखते हों। २ सहानुभूति
रखने वाला।

सभा (स्त्री०) १ परिषद्। गोष्ठी। समिति। मजलिस।
२ सभाभवन। सभामण्डप। ३ न्यायालय। ४
५ दरबार। ६ द्यूतगृह। जुआइखाना।—आस्तारः,
(पु०) सभासद। सदस्य।—पतिः, (पु०)
१ सभा का प्रधान या नेता। २ जुआइखाने का

मालिक।—सद्, (पु०) १ सदस्य। २ जरूर।
असेसर। पंच।

सभाज (धा० उ०) [सभाजयति—सभाजयते] १
प्रणाम करना। २ सम्मान प्रदर्शित करना। पूजन
करना। ३ प्रसन्न करना। ४ शृङ्गार करना। सजाना।
५ दिखलाना। प्रदर्शित करना।

सभाजनं (न०) १ प्रणाम। नमस्कार। २ शिष्टता
विनम्रता। ३ परिचर्या।

सभावनः (पु०) शिवजी का नाम।

सभिकः } (पु०) जुआइखाना चलाने वाला।
सभीकः }

सभ्य (वि०) १ समासद। २ समाज के उपयुक्त। ३
सभ्यता का व्यवहार करने वाला। ४ कुलीन।
विनम्र। ५ विश्वस्त। विश्वासपात्र।

सभ्यः (पु०) १ सभासद। २ कुलीन वंशज। ३
जुआइखाना चलाने वाला। ४ जुआइखाने के
मालिक का नौकर।

सभ्यता (स्त्री०) } १ सभ्य होने का भाव। २
सभ्यत्व (न०) } सदस्यता। ३ सुशिक्षित और
सज्जन होने की अवस्था। ४ भलमनसाहत।
शराफत।

सम् (धा० प०) [समति] १ घबड़ा जाना। जो
घबड़ाया या परेशान न किया जा सके।

सम् (अव्यया०) १ समान। तुल्य। बराबर। २ सारा।
३ साथ। भला। ४ युग्म। जोड़ा।

सम (वि०) १ एकसा। समान। २ बराबर। तुल्य।
३ सदृश। एक रूप। समतल। समभूमि। चौरस।
४ जूस। (संख्या) जिसमें दो से भाग देने पर
कुछ न बचे। ५ पक्षपातहीन। ६ न्यायवान।
ईमानदार। सच्चा। ७ नेक। धर्मात्मा। ८ साधारण।
मामूली। ९ मध्य का। मध्यम। १० सीधा।
११ उपयुक्त। १२ उदासीन। विरक्त। १३ सब।
हर कोई। १४ समूचा। तमाम। सम्पूर्ण।—अंशः,
(पु०) बराबर का हिस्सा।—अन्तर, (वि०)
समान्तराल। समान। तुल्य।—उदकं, (न०)
दूध और जल की ऐसी मिलावट जिसमें समान
भाग जल और समान भाग दूध का हो।—उपमा,
(स्त्री०) एक अलङ्कार विशेष।—कन्या, (स्त्री०)

विवाह योग्य लड़की — कालः, (पु०) तत्त्वण ।
 उसी समय ।—कालं (अव्यया०) एक ही समय
 में ।—कालीन (वि०) एक ही समय में होने
 वाले ।—कालः, (पु०) सर्प ।—गन्धकः,
 (पु०) नकली धूप ।—चतुरस्र, (वि०) चार
 समान भुजाओं वाला ।—चतुर्भुजः, (पु०)
 —चतुर्भुजं, (न०) वह चतुर्भुज शङ्ख जिसके
 चारों भुज समान हो ।—चिन्त, (वि०) १ वह
 जिसके मन की अवस्था सर्वत्र समान रहती हो ।
 समचेता । २ विरक्त ।—ऋदः—ऋदन, (वि०)
 समान विभाजक वाला ।—जाति, (वि०) समान
 जाति वाला ।—ज्ञा, (स्त्री०) कीर्ति ।—त्रिभुजः,
 (पु०) —त्रिभुजं, (न०) वह त्रिकोण जिसकी
 तीनों भुजा समान या बराबर की हों ।—दर्शन,
 —दर्शिनः, (वि०) सब को एक निगाह से देखने
 वाला । अपचपाती ।—दुःख, (वि०) समवेदना
 रखने वाला ।—दुःखसुख, (वि०) दुःख सुख
 का साथी ।—दृश्, —दृष्टि, (वि०) जो पक्षपाती
 न हो ।—बुद्धि, (वि०) १ अपचपाती । २
 विषयविरागी ।—भावः, (पु०) समानता । तुल्यता ।
 रंजित, (वि०) रंगा हुआ ।—रभः, (पु०)
 रतिबन्ध ।—रेख, (वि०) सीधा ।—लंव,
 (पु०) —लम्बं, (न०) वह चतुर्भुज शङ्ख
 जिसकी दो भुजा मात्र समानतराल हों ।—वर्तिनः,
 (वि०) समचेता । अपचपाती । (पु०)
 यमराज ।—वृत्तं, (न०) वह छंद जिसके चारों
 चरण समान हों ।—वृत्ति, (वि०) स्थिर ।
 प्रशान्त ।—व्रेधः, (पु०) मध्यम गहराई ।
 —संधिः, (पु०) वह सुलह जो बराबर की
 शर्तों पर हुई हो ।—सुप्तिः, (स्त्री०) वह निद्रा
 जिसमें समस्त चराचर निद्राभिभूत हों । ऐशा कल्प
 के अन्त में होता है ।—स्थ, (वि०) १ समान ।
 एकसा । २ समतल । ३ समान ।—स्थलं,
 (न०) असमान जगह । ऊबड़ खाबड़ जगह ।
 (न०) चौरस मैदान । (अव्यया०) १ साथ ।
 साथ में । साथ साथ । २ बराबर बराबर । ३ उसी
 प्रकार । उसी तरह । ४ पूर्णतः । ५ एक ही समय
 में । सब एक बार ।

समत्त (वि०) दृष्टिोच्चर
 समत्तं (अव्यया०) नेत्रों के सामने ।
 समग्र (वि०) तमाम । समूचा । सम्पूर्ण ।
 समंगा) (स्त्री०) मंजिष्टा ।
 समङ्गा)
 समजं (न०) जंगल । वन ।
 समजः (पु०) १ पशुओं का गिरोह । २ मूखों का
 जमाव ।
 समज्या (स्त्री०) १ सभा । मजलिस । २ कीर्ति ।
 प्रसिद्धि ।
 समजस (वि०) १ उचिन । युक्तियुक्त । ठीक ।
 उपयुक्त । २ सही । सचा । विरक्त ठोक । ३
 माफ़ । बोधगम्य । ४ धर्मात्मा । भला । न्यायवान ।
 ५ अभ्यस्त । अनुभव । ६ तंदुरुस्त ।
 समजसं (न०) १ योग्यता । २ यथार्थता । ३ सच्ची
 सान्नी ।
 समता (स्त्री०) } १ एकरूपता । २ सादृश्य ।
 समन्वं (न०) } समानता । ३ तुल्यता । ४
 निष्पक्षपातता । ५ मनस्थिरता । ६ सम्पूर्णता ।
 ७ साधारणत्व । ८ असमता ।
 समतिक्रमः (पु०) लङ्घन । मङ्ग ।
 समतीत (वि०) गुजरा हुआ । बीता हुआ ।
 समद् (वि०) १ मतवाला । खूनी । २ सद्माता ।
 ३ सद् से पगलाया हुआ ।
 समधिक (वि०) १ अधिक । ज्यादा । बहुत ।
 समधिकं (अव्यया०) अत्यधिक ।
 समधिगमनं (न०) जीतना । दमन करना ।
 समध्व (वि०) साथ साथ यात्रा करना ।
 समनुज्ञानं (न०) १ स्वीकृति । राजामंदी । २
 सम्पूर्ण रीत्या पसंदगी ।
 समंत } (वि०) १ हर ओर । २ समूचा ।
 समन्त }
 समंतः } (पु०) सीमा । हद्द ।—दुग्धा, (स्त्री०)
 समन्तः } दूध । स्तुही ।—पंचकं, (न०)
 कुरुक्षेत्र अथवा कुरुक्षेत्र के निकट का स्थान विशेष ।

—भद्रः, (पु०) बुद्धदेव ।—भुज्, (पु०)
अग्नि ।

समन्वु (वि०) १ दुःखी । २ क्रोधी ।

समन्वयः (पु०) १ संयोग । मिश्रण । मिलाप ।
२ विरोध का अभाव । ३ कार्य कारण का प्रवाह
या निर्वाह ।

समन्वित (व० कृ०) १ संयुक्त । मिला हुआ ।
२ जिसमें कोई रूकावट न हो । ३ सम्पन्न ।
अन्वित । ४ प्रभावान्वित या प्रभाव पड़ा
हुआ ।

समभिस्तुत (व० कृ०) १ जलप्लावित । जल के बूढ़े
में बुड़ा हुआ । २ प्रसूत ।

समभिव्याहारः (पु०) १ एकसाथ वक्ष्येय या कथन ।
२ साहचर्य । अच्छी तरह कहना ।

समभिस्तरणां (न०) १ समीप आगमन । २ जिज्ञासु ।
अभिलाषवान् ।

समभिहारः (पु०) १ एक साथ ग्रहण । २ दुह-
राव । पुनरावृत्ति । ३ कालतु । अतिरिक्त ।

समभ्यर्चनं (न०) अर्चा । सम्मान । पूजन ।

समभ्याहारः (पु०) साहचर्य ।

समयः (पु०) १ वक्त । काल । २ मौका । अवसर ।
३ उचित समय । ठीक वक्त । ४ कौल करार । ५
पद्धति । रीतिरस्म । रवाज़ । प्रथा । ६ मामूली
रीति रस्म । ७ कवियों का निश्चय किया हुआ
सिद्धान्त । ८ सङ्केत स्थान या कालनिरूपण ।
९ ठहराव । शर्त । १० कानून । कायदा । नियम ।
११ आदेश । निर्देश । आज्ञा । १२ गुरुतर विषय ।
नितान्त आवश्यकता । १३ शपथ । १४ सङ्केत ।
इशारा । १५ सीमा । हद्द । १६ सिद्धान्त । सूत्र ।
१७ समाप्ति । अवसान । अन्त । १८ साफल्य ।
समृद्धि । १९ दुःख की समाप्ति ।—अभ्युषितं,
(न०) वह समय जब न तो सूर्य और न तारा-
गण दित्ताई पड़े ।—अनुवर्तिन, (वि०)
किसी प्रतिष्ठित पद्धति पर चलने वाला ।—
आचारः, (पु०) पद्धति । रीतिरस्म ।—क्रिया,
(स्त्री०) कौल करार करना ।—परिरक्षां, (न०)
सन्धि या किसी इकरार नामों की शर्तों पर

चलने की क्रिया ।—व्यभिचारः, (पु०) किसी
इकरार या कौलकरार को तोड़ना ।—व्यभि-
चारिन्, (वि०) कौल करार का भंग
करने वाला ।

समया (अव्यया०) १ समय से । २ निर्दिष्ट समय से ।
३ बीच में । भीतर ।

समरं (न०) १ युद्ध । लड़ाई । संग्राम ।—उद्देशः
समरः (पु०) १—भूमिः, (पु०) युद्धक्षेत्र ।

—शिरस्, (न०) सेना का अग्रभाग ।

समर्चनं (न०) अर्पण । पूजन । सम्मानकरण ।

समर्ण (वि०) १ पीड़ित । कष्टित । बायल । २
आचित । माँगा हुआ ।

समर्थ (वि०) १ सज्जवृत्त । चलवान । २ निष्ठा ।
योग्यता सम्पन्न । ३ योग्य । ठीक । उचित । ४
तैयार किया हुआ । ५ समानार्थवाची । ६ गूढार्थ
प्रकाशक । ७ बहुत जोरदार । ८ अर्थ से सम्बन्ध
रखने वाला ।

समर्थकं (न०) अगर की लकड़ी ।

समर्थनं (न०) १ स्थापन । अनुमोदन । २ संभा-
वना । ३ दत्ताह । ४ सामर्थ्य । शक्ति । ५ मत-
भेद दूर करना । कगड़ा मिटाना ।

समर्थक (वि०) १ अभीष्ट पूरा करने वाला ।
वरदाता ।

समर्पणं (न०) प्रतिष्ठा पूर्वक देना ।

समर्थाद् (वि०) १ सीमाबद्ध । २ समीप । निकट ।
३ चाल चलन में दुरुस्त । शिष्ट ।

समल (वि०) १ मैला । गंदा । अपवित्र । २ पापी ।

समलं (न०) बिण्डा । मल ।

समवकारः (पु०) एक प्रकार का नाटक । इसकी
कथावस्तु का आधार, किसी देवता या असुर
के जीवन की कोई घटना होती है । इसमें वीररस
प्रधान होता है । इसमें अक्सर देवासुर-संग्राम का
वर्णन किया जाता है । इसमें तीन अङ्क होते हैं,
और विमर्श सन्धि के अतिरिक्त शेष चारों सन्धियाँ
रहती हैं । इस नाटक में विन्दु या प्रवेशक की
आवश्यकता नहीं समझी जाती ।

समवतारः (पु०) १ उतरने की जगह । उतारा । २ जल में या तीर्थ में डुबने की क्रिया ।

समवस्था (स्त्री०) १ निर्धारित अवस्था । २ समान-हालत । ३ दशा । हालत ।

समवस्थित (व० कृ०) १ अचल रहा हुआ । २ दृढ़ ।

समवाप्तिः (स्त्री०) प्राप्ति । उपलब्धि ।

समवायः (पु०) १ समुदाय । समूह । २ ढेर । राशि । ३ वलिष्ठ सम्बन्ध । ४ (वैशेषिक दर्शन में) अद्भुत सम्बन्ध । (न्याय में) निश्चय सम्बन्ध । वह सम्बन्ध जो अवयवों के साथ अवयव का, गुणों के साथ गुण का अवयव जाति के साथ व्यक्ति का होता है ।

समवायिन् (वि०) १ जिसमें समवाय या निश्चय सम्बन्ध हो । २ बहुसंख्यक । बहुकार । बहु-गुणित ।

समवेत (व० कृ०) १ एक में मिला हुआ । एकत्र । २ अद्भुत सम्बन्ध युक्त । ३ बहु संख्यक ।

समग्रिः (स्त्री०) सब का समूह । कुल एक साथ । व्यष्टि का उलटा ।

समस्तनं (न०) १ मेल । संयोग । २ शब्दों का योग । समासान्त शब्दों की वनावट । ३ लङ्गोचन ।

समस्त (वि०) १ सब । कुल । समग्र । २ एक में मिलाया हुआ । संयुक्त । ३ समाप्त युक्त । ४ संक्षिप्त ।

समस्या (स्त्री०) १ किसी श्लोक या छंद का वह अन्तिम पद या टुकड़ा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिये बना कर दूसरों को दिया जाय और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद तैयार किया जाय । २ अपूर्ण की पूर्ति ।

समा (स्त्री०) वर्ष । (अव्यय०) साथ । सहित ।

समासमीना (स्त्री०) वह गी जो प्रतिवर्ष बरखा दे । वर्षोद्धार गाय ।

समाकर्षिन् (वि०) [स्त्री०—समाकर्षिणी] १

आकर्षक । भली भाँति खींचने वाला । २ दूर तक गन्ध फैलाने वाला । पु०) गन्ध जो दूर तक घ्याप्त हो ।

समाकुल (वि०) १ परिपूर्ण । भीड़भाड़ युक्त । २ अत्यन्त घबड़ाया हुआ ।

समाख्या (स्त्री०) १ कीर्ति । नामवरी । ख्याति । नाम । संज्ञा ।

समाख्यात (व० कृ०) १ गिना हुआ । जोड़ा हुआ । २ भर्त्ताभाँति वर्णित । बोधित । ३ प्रख्यात । प्रसिद्ध ।

समागत (व० कृ०) साथ आया हुआ । संयुक्त । मिला हुआ । २ आया हुआ । वह जिसका समागम हुआ हो ।

समागतिः (स्त्री०) १ सहआगमन । २ आगमन । ३ एकस्रोत दशा या एकसी उत्पत्ति ।

समागमः (पु०) १ मेल । मंद । सुठमेद । मिलन । २ रसज्ञ । हेलमेल । ३ समीप आगमन । ४ (ज्योतिष में) (दो ग्रहों का) मेल ।

समाधातः (पु०) १ हिंसन । वध । २ युद्ध । लड़ाई ।

समानग्रनं (न०) सञ्चय करण । जमा करने की क्रिया ।

समाचरणां (न०) भर्त्ता भाँति आचरण करना ।

समाचारः (पु०) १ गमन । जाना । २ आचरण । चालचलन । ३ उचित चाल चलन या व्यवहार । ४ संवाद । सुख । रिपोर्ट । सूचना ।

समाजः (पु०) १ सभा । मजलिस । २ गोष्ठी । छब । संस्था । ३ समूह । समुदाय । ४ दल । टोली । ५ हाथी ।

समाजिकः (पु०) सभा का सदस्य ।

समाज्ञा (स्त्री०) कीर्ति । ख्याति ।

समादानं (न०) १ पूरा पूरा देना । २ उपयुक्त दान पाना । ३ जैनियों का आद्विक कृत्य विशेष ।

समाधा (स्त्री०) देखो समाधान ।

समाधानं (न०) १ मिलान करना । २ मन को प्रह्व

में लगाना । ३ ध्यान । समाधि । ४ एकाग्रता । ५ चित्त की शान्ति । ६ शङ्कानिरसन । पूर्वपक्ष का उत्तर । ७ प्रतिज्ञा करण । ८ (नाटक में कथा-भाग की मुख्य घटना ।

समाधिः (पु०) १ (मन की) एकाग्रता । २ ध्यान विशेष । ३ तप । ४ मिलाना । जोड़ना । ५ समाधान करना । ६ शान्ति । निस्तब्धता । ७ वचनदान । ८ त्याग । ९ पूर्णता । सम्पन्न करने की क्रिया । १० कठिन समय में धैर्य धारण । ११ असम्भव कार्य करने का प्रयत्न । १२ अन्न बाँटना । दुर्मिष्ट के लिये अन्न जमा करना । १३ कन्न । १४ गरदन का भाग या जोड़ विशेष । १५ अलंकार विशेष जिसकी परिभाषा यह है—

‘ समाधिः पुनरं कार्यं कारणांतरयोगतः ।’

—मम्मट ।

समाध्यात (व० कृ०) १ फूँका हुआ । २ कुलाया हुआ ।

समान (वि०) १ बहीँ । तुल्य । सदृश । २ एक । एकता । ३ नेक । पुण्यात्मा । न्यायवान । ४ साधारण । ५ सम्मानित ।

समानं (अव्यया०) बराबर बराबर । सदृश ।

समानः (पु०) १ बराबर वाला । मित्र । २ शरीरस्थ पाँच पवनों में से एक । यह नाभि के पास रहता है और अन्न आदि पचाने के लिये आवश्यक माना गया है ।—अर्थः, (वि०) एक अर्थ वाला ।—उदकः, (पु०) ऐसा सम्बन्धी जिसे तर्पण में दिया हुआ जल मिले । चौदहवीं पीढ़ी के बाद समानोदक सम्बन्ध समाप्त हो जाता है ।—उदर्यः, (पु०) सगा भाई ।—उपमा, (स्त्री०) उपमा विशेष ।

समानयनं (न०) राशीकरण । एकत्रीकरण ।

समापः (पु०) देवताओं की बलिदान या भेंट चढ़ाने की क्रिया ।

समापत्तिः (स्त्री०) मिलन । भेंटन । संयोग । इत्ति-फाक । ३ इत्तिफाकिया मुठमेड़ ।

समापक (वि०) [स्त्री०—समापिका] पूरा करने वाला । समाप्त करने वाला ।

समापनं (न०) १ समाप्ति करने की क्रिया । सम्पूर्णता । २ उपलब्धि । ३ हिंसन । नाशन । ४ अध्याय । ५ ध्यान । समाधि ।

समापन्न (व० कृ०) १ पाया हुआ । उपलब्ध किया हुआ । २ वरित । बाँके हुआ भया । ३ आया हुआ । पहुँचा हुआ । ४ समाप्त किया हुआ । ५ गुयी । प्रवीण । ६ सम्पन्न । अन्वित । ७ पीड़ित । दुःखी । ८ हत । मारा हुआ ।

समापादनं (न०) पूर्ण करने की क्रिया ।

समाप्त (व० कृ०) १ पूरा किया हुआ । पूर्ण किया हुआ । २ चतुर । चालाक ।

समाप्तालः (पु०) स्वामी । पति ।

समाप्तिः (स्त्री०) १ अन्त । अवसान । २ पूर्णता । ३ मगड़ों का निपटारा ।

समाप्तिक (वि०) १ अन्तिम । २ ससीम । परिच्छिन्न । ३ सम्पूर्ण कर चुकने वाला ।

समाप्तिकः (पु०) १ समापक । पूर्ण करने वाला । २ वेदुध्ययन पूर्ण कर चुकने वाला ।

समाप्तुत (व० कृ०) १ जल की बाद में डूबा हुआ । २ परिपूर्ण ।

समाभाषणं (न०) वार्तालाप । संभाषण ।

समाभ्यानं (न०) १ पुनरावृत्ति । २ गणना । ३ परंपरागत प्राप्त पाठ ।

समाभ्यायः (पु०) १ परंपरागत पाठ । २ परम्परागत (शब्द) संग्रह । ३ परम्परा । ४ पाठ । गणना । ५ योग । जोड़ । जमा । समूह । (यथा अक्षर-समाभ्यायः ।)

समायः (पु०) १ आगमन । २ भेंट । मुलाकात ।

समायत (व० कृ०) बाहर खींचा हुआ । बढ़ाया हुआ । लंबा किया हुआ ।

समायुक्त (व० कृ०) १ जोड़ा हुआ । सम्बन्धयुक्त । २ अनुरक्त । ३ तैयार किया हुआ । ४ अन्वित । सम्पन्न । ५ नियुक्त किया हुआ । सौंपा हुआ ।

समायुत (व० कृ०) १ जोड़ा हुआ । मिलाया हुआ । २ जमा किया हुआ । ३ सम्पन्न किया हुआ ।

समायोगः (पु०) १ संयोग । समागम । सम्बन्धी ।
२ नैश्वरी । ३ धनुष पर बाण रखना । ४ डेर ।
राशि । ५ कारण । हेतु । उद्देश्य ।

समारंभः } (पु०) १ आरम्भ । शुरुआत । २
समारम्भः } उद्योग । कार्य । क्रिया । ३ लेप । सल-
हम ।

समाराधनं (न०) १ सन्तुष्ट करने का साधन ।
सन्तुष्ट करना प्रसन्न करना । २ परिचर्या । सेवा ।

समारोपणं (न०) १ सौंपना । जमा कराना । रखना ।
२ हवाले करना ।

समारोपित (व० कृ०) १ ऊपर चढ़वाया हुआ । २
चढ़ा हुआ (रोदा धनुष पर) । ३ धरोहर रखा
हुआ । स्थापित किया हुआ । जमाया हुआ । ४
हवाले किया हुआ । सौंपा हुआ ।

समारोहः (पु०) १ ऊपर चढ़ना । ऊपर जाना । २
(धाँड़े या किसी के ऊपर) सवार होना । ३ राजी
होना । मान लेना ।

समालंबनं (न०) टेक । सहारा ।

समालंबिन् } (वि०) लटकने वाला ।
समालम्बिन् }

समालंभः (पु०) } १ पकड़न । २ बलिदान के
समालम्भः (पु०) } लिये पशु को पकड़ने की क्रिया ।
समालम्भनं (न०) } ३ शरीर पर लेप करना ।
समालम्भनं (न०) }

समावर्तनं (न०) १ लौटना । प्रत्यावर्तन । २ विशेष
कर घर लौट आना । वेदाध्ययन समाप्त कर
ब्रह्मचारी का गुरुकुल से ।

समावायः (पु०) १ संबन्ध । लगाव । २ अद्भुत
सम्बन्ध । ३ समूह । समुदाय । ४ राशि । डेर ।

समावासः (पु०) वासा । रहने का स्थान ।

समाविष्ट (व० कृ०) १ भली भाँति घुसा हुआ ।
भली तरह व्याप्त । २ पकड़ा हुआ । वश में किया
हुआ । घेरा हुआ । ३ भूलाविष्ट । ४ अन्वित ।
सम्पन्न । ५ तै किया हुआ । निर्धारित किया हुआ ।
६ भली भाँति शिक्षा दिया हुआ ।

समावृत्त (व० कृ०) १ घिरा हुआ । घिका हुआ ।

२ पर्व पड़ा हुआ । घूँघट में द्रिप हुआ । ३ द्रिप
हुआ घुसा हुआ । ४ गलित । ५ निचाला हुआ ।
छेका हुआ । ६ रोका हुआ । रुका हुआ ।

समावृत्तः (पु०) १ द्रव्यवारी जो गुरुकुल में
समावृत्तकः) वास कर और विद्याध्ययन पूर्ण कर,
घर लौट कर आया हो ।

समावेशः (पु०) १ एकत्र आग करना । २ मिश्रण ।
लगाव । ३ प्रवेश । ४ युगाव । ५ भूत का आवेश ।
६ क्रोध । उर्मग ।

समाश्रयः (पु०) १ रक्षा की स्त्रोत्र करने वाला । २
रक्षा । पनाह । ३ रक्षा का स्थान आश्रयस्थल ।
४ आश्रयस्थान । निवासस्थान ।

समाश्लेषः (पु०) आलिङ्गन ।

समाश्वानः (पु०) दम में दम आना । किसी
कठिनाई से पार पाकर दम लेना । झटका ।
उत्साह । आश्वासन । ३ भरोसा । आसरा । विश्वास ।

समाश्वसनं (न०) १ उत्साहित करना । आश्वासन
देना । २ आश्वासन ।

समासः (पु०) १ संक्षेप । सुलाला । २ समर्थन ।
सिद्ध करना । ३ समाहार । एकत्रकरण । ४ व्या-
करण में दो अथवा अधिक पदों के एक बनाने
वाला विधान विशेष ।—उक्तिः, (पु०) अलङ्कार
विशेष ।

समासक्तिः (स्त्री०) } १ संयोग । मेल । २ स्थापन ।
समासंगः (पु०) } ३ सम्बन्ध ।
समासङ्गः (पु०) }

समासर्जनं (न०) १ पूर्ण रीत्या वैराग्य । २ त्याग ।

समासादमं (न०) १ समोपागमन । २ पाना ।
मिलना । ३ पूर्ण करना । सम्पन्न करना ।

समाहरणं (न०) मिलाना । जमा करना । डेर करना ।

समाहर्तृ (पु०) १ एकत्र करने या जमा करने का
आदी । २ वसूल करने वाला ।

समाहारः (पु०) १ संग्रह । समूह । २ शब्दों की
रचना । ३ शब्दों या वाक्यों को एक करने की
क्रिया । ४ द्वन्द्व और द्विगु समासों का भेद विशेष ।
५ संक्षिप्त करण । सङ्कोचन ।

समाहित (व० कृ०) १ जमा किया हुआ । एकत्र किया हुआ । २ तै किया हुआ । ३ शान्त (नित्त) स्वस्थ । एकाग्र । ४ लवलोन । संलग्न । ५ समाप्त किया हुआ । ६ कौलकरार किया हुआ ।

समाहित (व० कृ०) १ एक जगह किया हुआ । जमा किया हुआ । २ विपुल । बहुत । अत्यधिक । बहुत अधिक । ३ मास । स्वीकृत । लिया हुआ । ४ संक्षिप्त किया हुआ । खुलासा किया हुआ ।

समाहित (स्त्री०) १ संग्रह । संक्षेप ।

समाह्वः (पु०) विनोती । लजकार ।

समाह्वयः (पु०) १ लजकार । निमंत्रण । २ युद्ध । संग्राम । ३ लड़ाई जो केवल दो आदमियों में हो (समूह बाँध कर नहीं) । ४ जानवरों की लड़ाई जो आमोद प्रमोद के लिये हो । ५ नाम । संज्ञा ।

समाह्वी (स्त्री०) नाम । उपाधि ।

समाह्वानं (न०) १ बुलौआ । समाहृत सभामण्डली । २ लजकार । रणनिमंत्रण ।

समिकं (न०) भावा । वरदा । वस्त्रम् ।

समित् (स्त्री०) संग्राम । लड़ाई ।

समिता (स्त्री०) गेहूँ का आटा ।

समितिः (पु०) १ सभा । समाज । २ मजलिस । ३ गङ्गा । झुंड । हेड़ । गौहर । ४ लड़ाई । जंग । समर । ५ साक्षर्य । समानता । ६ शान्ति । सन्तोष । सहनशीलता ।

समितिजय } (वि०) विजयी ।
समितिजय }

समिधः (पु०) १ युद्ध । लड़ाई । समर । २ अग्नि । आग ।

समिद्ध (व० कृ०) १ जलाया हुआ । सुलगया हुआ । २ आग लगाया हुआ । फूँका हुआ । ३ भड़काया हुआ ।

समिध् (स्त्री०) लकड़ी । ईंधन । समिधा । हवन में जलायी जाने वाली लकड़ी ।

समिधः (पु०) आग । अग्नि ।

समिधनं } (न०) १ जलन । बलन । २ ईंधन ।
समिधनं }

समिरः (पु०) हवा । पवन ।

समीकं (न०) युद्ध । लड़ाई ।

समीकरणां (न०) १ असम को सम करना । २ बीज-गणित में अनजानी हुई संख्याओं को जानने के लिये प्रक्रिया विशेष । ३ सांख्य दर्शन ।

समीता (स्त्री०) : खोज । अनुसंधान । २ विचार । ३ भली भाँति पर्यवेक्षण या मुआयना । ४ समझ । बुद्धि । ५ सत्यप्रकृति या नैसर्गिक सत्य । ६ मुख्य सिद्धान्त । ७ सीमांसा दर्शन ।

समीचः (पु०) समुद्र ।

समीचकः (पु०) संयोग । स्त्रीमैथुन ।

समीची (स्त्री०) १ मृगी । हिरनी । २ प्रशंसा । तारीफ़ ।

समीचीनं (न०) १ सत्य । २ उपयुक्तता ।

समीचीनः (पु०) १ सही । ठीक । २ सत्य । यथार्थ । ३ उपयुक्त । संगत ।

समीदः (पु०) मैदा । गेहूँ का अति महीन आटा ।

समीन (वि०) १ वार्षिक । सालाना । २ एक वर्ष के लिये साढ़े पर लिया हुआ । ३ एक वर्ष का ।

समीनिका (स्त्री०) बसौड़ गाय । प्रतिवर्ष व्याने वाली गाय ।

समीप (वि०) समीप । निकट ।

समीपं (न०) नैकत्व । समीपत्व ।

समीरः (पु०) १ पवन । हवा । २ शमी वृक्ष ।

समीरणः (पु०) १ पवन । हवा । २ स्वांस । दम । यात्री । पथिक । ३ मख्वा का पौधा ।

समीहा (स्त्री०) अभिलाप । कामना । वांछा ।

समीहित (न० कृ०) १ अभिलषित । वांछित । इच्छित । २ हाथ में लिया हुआ ।

समीहितं (न०) कामना । इच्छा । अभिलाष ।

समुच्चगां (न०) गिराना ।

समुच्चयः (पु०) १ समूहन । समूह । समुच्चय । २ आपस में अनपेक्षित बहुत से शब्दों का एक क्रिया में अन्वय । ३ अलङ्कार विशेष ।

मुञ्चरः (पु०) १ आरोहण । २ पार करना ।
 मुञ्चैद् (पु०) पूर्णरीत्या नाश । जड़ से नाश ।
 मूलोच्छेद ।
 मुञ्चयः (पु०) १ उन्नयन । ऊँचाई । २ विरोध ।
 शत्रुता ।
 मुञ्चायः (पु०) ऊँचाई । उठान ।
 मुञ्चसितं (न०) } आह । ठंडीसाँस
 मुञ्चासः (पु०) }
 मुञ्जित (वि०) १ त्याग हुआ । छोड़ा हुआ ।
 २ मुक्त किया हुआ । ३ मुक्त ।
 मुत्कर्षः १ उन्नति । बढ़ती । २ अपनी जाति से
 ऊँची किसी अन्य जाति में जाना ।
 मुत्कप्रः (पु०) १ ऊपर चढ़ना । उन्नति करना ।
 २ सीमेतलङ्घन । नयाँदा लांघना ।
 मुत्कोशः (पु०) १ चिल्लाना । २ विकट कोलाहल ।
 ३ कुररी नामक पक्षी ।
 मुत्थ (वि०) १ उठा हुआ । उन्नत । २ निकला
 हुआ । उत्पन्न । ३ (घटना का) होना ।
 मुत्थानं (न०) १ उठान । उत्थान । २ (मरकर)
 जो उठना । ३ पूर्णरीत्या आरोह्य । ४ (घाव का)
 पुरना । ५ रोग का लक्षण । ६ उद्योग धंधे में
 लगना ।
 मुत्पत्तनं (न०) १ उठान । २ उद्वान ३ उद्योग ।
 मुत्पत्तिः (स्त्री०) १ पैदायश । उत्पत्ति । २ घटना ।
 मुत्पिञ्ज }
 मुत्पिञ्ज } (वि०) अत्यन्त गढ़बढ़ाया हुआ ।
 मुत्पिञ्जत } अस्तव्यस्त ।
 मुत्पिञ्जत }
 मुत्पिञ्जः } (पु०) १ सेना जो हड़बड़ी में अस्त-
 मुत्पिञ्जः } व्यस्त हो गयी हो । २ बड़ी भारी
 मुत्पिञ्जलः } गढ़बढ़ ।
 मुत्पिञ्जलः }
 मुत्सवः (पु०) बड़ा उत्सव ।
 मुत्सर्गः (पु०) १ त्याग । विराग । २ गिरन ।
 गिराव । ३ मल का त्याग । दस्त होना ।
 मुत्सारणं (न०) १ हँका देना । भगा देना । २
 पीड़ा करना । शिकार करना ।

समुन्मुक्त (वि०) १ अत्यन्त विकृत या विनिर्मुक्त । २
 अभिलाषी । ३ शोकान्वित ।
 समुन्नेत्रः (पु०) १ ऊँचान । उठान । २ मोटापन ।
 गाढ़ापन ।
 समुदक (व० कृ०) (कृपं से जैसे) खींचा हुआ ।
 निकाला हुआ ।
 समुदयः (पु०) ३ चढ़ाव । उठान । २ निकाल । ३
 संग्रह । समूह । राशि । ४ योग । मिलावट । ५
 समूचा । नमाम । ६ राजस्व । ७ उद्योग ।
 ८ लड़ाई । समर । ९ दिवस । १० सेना का
 पिछला भाग ।
 समुदागलः (पु०) पूर्णज्ञान ।
 समुदाहारः (पु०) १ उचित अभ्यास या व्यवहार ।
 २ संशोधन करने का उपयुक्त विधान । ३ अभि-
 प्राय । प्रयोजन । मतलब ।
 समुदायः (पु०) संग्रह । समुदाय ।
 समुदाहरणं (न०) १ कथन । उच्चारण । २ उदाह-
 रण । मिलावट । नज़ीर ।
 समुदित (व० कृ०) १ ऊपर गया हुआ । उठा हुआ ।
 ऊपर चढ़ा हुआ । २ उँचा । उन्नत । ३ उत्पन्न ।
 निकला हुआ । ४ समवेत । एकत्रित । मिला
 हुआ । ५ सम्मेलन ।
 समुदीरणं (न०) १ कथन । वर्णन । उच्चारण । २
 हुहराना ।
 समुद्ग (वि०) १ उठान । उद्वान । २ पूर्णरीत्या ।
 व्याप्ति । ३ उक्कन वाला । ४ झोमी वाला ।
 समुद्गः (पु०) १ उक्कनदार निदारा या टोकरी ।
 श्लोक विशेष ।
 समुद्गकः (पु०) १ उक्कनदार पेटी या टोकरी ।
 २ श्लोक विशेष ।
 समुद्गमः १ उदना । उगना । २ निकलना । ३ उत्पत्ति ।
 पैदायश ।
 समुद्गिरणं (न०) १ वसन । उगलन । २ वह जो
 उगला गया हो । ३ उठना । ऊपर करना ।
 समुद्गीतं (न०) उच्चस्वर का गीत या राग ।

समुद्रेशः (पु०) १ पूर्णरीत्या । बतलाना । २ पूर्ण वर्णन ।

समुद्रत (व० क०) १ उठाया हुआ । ऊपर किया हुआ । २ उत्तेजित । उभाड़ा हुआ ४ अभिमान में चूर । अकड़ा हुआ । ४ डूरे तौर तरीके का । दुष्ट व्यवहार करने वाला । ५ अहङ्कारी । अशिष्ट ।

समुद्रराण (न०) १ उठान । ऊपर करना । २ उठा लेना । ३ ऊपर खींच लेना । ४ मुक्ति । छुटकारा । ५ मूलोच्छेदन । ६ (समुद्र तट से) निकाल लेना । ७ भोजन जो वसन द्वारा निकल पड़ा हो ।

समुद्रर्तु (पु०) छुटाने वाला । छुटकारा देने वाला ।

समुद्रवः (पु०) निकास । उद्भवस्थान ।

समुद्रमः (पु०) १ उठान । २ महान् उद्योग । ३ उद्योगारम्भ । ४ आक्रमण । चढ़ाई ।

समुद्रयोगः (पु०) क्रियात्मक उद्योग । उस्साह ।

समुद्र (वि०) मोहर से बंध । मोहर वाला । मोहर लगा हुआ ।—अन्तः, (न०) १ समुद्रतट । २ जायफल ।—अता, (स्त्री०) १ कपास का पौधा । २ पृथिवी ।—अंबरा, (स्त्री०) पृथिवी ।—अरुः, —आरुः, (पु०) १ मगर । नक्र । २ बृहदाकार मत्स्य विशेष । ३ श्रीराम जी का बाँधा हुआ समुद्र ।—कफः, —फेनः, (पु०) समुद्रफेन ।—गाः, (पु०) समुद्री देशों में व्यापार करने वाला ।—गा, (स्त्री०) नदी ।—गृहं, (न०) जल के भीतर बनाया हुआ श्रीरामभवन ।—खलुकः, (पु०) अगस्त्य जी का नामान्तर ।—नधनीतं, (न०) १ चन्द्रमा । अमृत ।—मेखला, —रसना, (स्त्री०) पृथिवी ।—यानं, (न०) १ समुद्रयात्रा । २ जहाज । पोत ।—यात्रा, (स्त्री०) समुद्री सफर ।—योपित्, (स्त्री०) नदी ।—वह्निः, (पु०) बड़वानल ।—सुभगा, (स्त्री०) गङ्गा नदी ।

समुद्रः (पु०) १ सागर । २ शिव । ३ चार की संख्या ।

समुद्रहः (पु०) १ ढोने वाला । २ उठाने वाला ।

समुद्राहः (पु०) १ वहन । ढुलाई । २ विवाह । शादी ।

समुद्वेगः (पु०) महा भय । डर । भीति ।

समुन्दनं } (न०) १ नमी । तरी । २ गीलापन ।
समुन्दनं } ओढ़ापन ।

समुन्न (वि०) गीला । नम । तर ।

समुन्नत (व० क०) १ ऊपर उठाया हुआ । २ ऊँचा । ३ गंभीर । श्रेष्ठ । ४ अभिमान । अहंकारी । ५ निकला हुआ । ६ ईमानदार । न्यायी ।

समुन्नतिः (स्त्री०) १ उठान । २ ऊँचाई । ऊँचान । ३ उत्त्थपद । मुख्यता । प्रधानता । ४ अभ्युदय । समृद्धि । ५ अभिमान । अहंकार ।

समुन्नद्ध (व० क०) १ उठा हुआ । उन्नत । २ सूजा हुआ । ३ भरा हुआ । ४ अभिमान । ५ पण्डितमन्य । ६ बिना बेड़ियों का । मुक्त । खुला हुआ ।

समुन्नयः (पु०) १ प्राप्ति । उपलब्धि । २ घटना । हादसा ।

समुन्मूलनं (न०) जड़ से उखाड़ना । नाश ।

समुपगमः (पु०) लगाव । संस्पर्श ।

समुपजोषम् (अव्यथा०) नितान्त इच्छानुसार ।

समुपभोगः (पु०) मैथुन ।

समुपवेशनं (न०) १ इमारत । भवन । बस्ती । २ बैठना ।

समुपस्था (स्त्री०) । १ समीपता । २ नैकत्व ।
समुपस्थानं (न०) । होना । घटना ।

समुपार्जनं (न०) एक साथ एक समय में प्राप्ति ।

समुपेत (व० क०) १ सह आगमन । २ आया हुआ । ३ अन्वित । सम्पन्न ।

समुपोढ (व० क०) १ ऊँचा उठा हुआ । २ उन्नत । बढ़ा हुआ । ३ समीप लाया हुआ । ४ संयत । रोका हुआ ।

समुल्लासः (पु०) अत्यधिक चमकीला । २ सहाज हर्ष ।

समुद्ध (व० क०) एकत्र किया हुआ । जमा किया हुआ । २ एकत्रित किया हुआ । जपेटा हुआ । ४ सहित ।

५ कुर्ती से उत्पन्न किया हुआ । ६ शान्त किया हुआ । ७ उप किया हुआ । ८ मोटा हुआ । ९ कुका हुआ । ८ साफ किया हुआ । पवित्र किया हुआ । ९ ले जाया हुआ । १० रहनुमा किया हुआ । आगे चलाया हुआ । ११ विवाहित ।

समूरः }
समूहः } (पु०) एक प्रकार का मृग ।
समूरकः }

समूल वि०) जड़ समेत ।

समूहः (पु०) १ संग्रह । २ गिरोह । सुंड । समुदाय ।

समूहनं (न०) १ एकत्रीकरण । २ समूह । संग्रह ।

समूहनी (स्त्री०) झाड़ू । बुहारी ।

समूहाः (पु०) यज्ञ का अग्नि विशेष ।

समृद्ध (व० कृ०) १ फलता फूलता हुआ । भरा पूरा । २ प्रसन्न । सुखी । आनन्दमान । ३ धनी । सम्पत्तिशाली । ४ सफल ।

समृद्धिः (स्त्री०) १ बढ़ती । उन्नति । २ धनदौलत का होना । धनी होने का भाव । ३ धन दौलत ४ विपुलता । बाहुल्य ।

समेत (व० कृ०) १ जमा हुआ । एकत्रित । २ मिला हुआ । ३ पास आया हुआ । ४ सहित । अन्वित । ५ सम्पन्न । युक्त । ६ संघर्षित । टकराया हुआ । ७ कौल करार किये हुए ।

संपत्तिः } (स्त्री०) १ धन की वृद्धि । धन दौलत ।
सम्पत्तिः } २ सफलता । कामयाबी । ३ पूर्णता । सम्पन्नता । ४ बाहुल्य । विपुलता ।

संपद् } (स्त्री०) १ धन दौलत । २ समृद्धि । ३ सम्पद् } सीमाय । ४ सफलता । ५ पूर्णता । उत्कृष्टता । ६ धन का भाण्डार । ७ लाभ । फायदा । आशीर्वाद । ८ सञ्जावट । ९ ठीक ढ़ या फायदा । १० मोली का हार ।—शरः (पु०) राजा ।

संपन्न } (व० कृ०) १ समृद्धवान् । भरा पूरा । २ सम्पन्न } आनन्दमान । सुखी । ३ पूर्ण किया हुआ । सम्पन्न किया हुआ । ४ पूर्ण । निष्णात । ५ पूरा बढ़ा हुआ । पका हुआ । ६ पाया हुआ । प्राप्त ।

७ सहो । ठीक । ८ सम्पन्न युक्त । सहित । ९ हुआ ।

संपन्नं } (न०) १ धन दौलत । २ रुचिकर स्वाद सम्पन्नम् } सुखाद्य पदार्थ ।

संपन्नः } (पु०) शिव ।
सम्पन्नः }

संपरायः } (पु०) १ लड़ाई । मुठभेड़ । २ संकट । सम्परायः } आपत्ति । ३ भावी दशा । ४ पुत्र ।

संपरायकं }
सम्परायकं } (न०) मुठभेड़ । लड़ाई । संग्राम । जंग ।
सम्परायिकं }
सम्परायिकं }

संपर्कः } (पु०) १ संमिश्रित पदार्थ । २ संयोग । सम्पर्कः } स्पर्श । लगाव । ३ समाज । समा । ४ मैथुन । सम्भोग ।

संपा } (स्त्री०) विद्युत् । बिजली ।
सम्पा }

संपाक } (वि०) १ अच्छी बहस करने वाला । २ सम्पाक } चालाक । चतुर । ३ कामुक । लोपट । ४ छोटा । थोड़ा ।

संपाकः } (पु०) १ पका हुआ पदार्थ । पकावट । सम्पाकः } २ एक वृक्ष विशेष ।

संपाटः } (पु०) १ परस्पर छेदन । अन्योन्यद्विज्जता सम्पाटः } २ तकुआ ।

संपातः } (पु०) १ सहपतन । सहमत्य । २ एक सम्पातः } साथ मिलन । ३ मुठभेड़ । संघर्ष । ४ पतन । उतार । ५ नीचे आगमन । ६ तीर का प्रक्षेप । ७ गमन । चलन । ८ स्थानान्तर करण । हटाना ९ पक्षियों का उड़ान विशेष । १० नैवेद्य का उच्छिद्य ।

संपातिः } (पु०) गृह जरायु का बड़ा भाई ।
सम्पातिः }

संपादः } (पु०) १ पूर्णता । २ उपलब्धि । प्राप्ति । सम्पादः }

संपादनं } (न०) पूरा करना । २ प्राप्ति । उपलब्धि । सम्पादनं } हासिल करना । ३ सफा करना । तैयार करना ।

संपिंडित } (व० कृ०) १ पिंड बनाया हुआ । २
सम्पिण्डित } सङ्कुचित । सिकुड़ा हुआ ।

संपीडनं } (न०) १ निचोड़ना । दबाना । २ प्रेषण ।
सम्पीडनं } (न०) ३ दबड़ । सज़ा । ४ धँधोला ।

संपीडः } (पु०) १ निचोड़ना । २ पीड़ा ।
सम्पीडः }

संप्रीतिः } (स्त्री०) साथ साथ पीना ।
सम्प्रीतिः }

संपुटः } (पु०) १ गद्गर । गुहा । गर्त । २ दिविया ।
सम्पुटः } ३ कुरवक का फूल ।

संपुटकः } (पु०)
सम्पुटकः } (पु०) रत्नपेटी । गहना रखने का
संपुटिका } (स्त्री०) डिब्बा ।
सम्पुटिका } (स्त्री०)

संपूर्णः } (वि०) १ परिपूर्ण । भरा हुआ । २
सम्पूर्णः } तमाम । सब । समूचा ।

सम्पूर्णः } (न०) १ आकाश । २ पदार्थ विशेष ।
सम्पूर्णम् }

संपृक्तः } (व० कृ०) १ मिश्रित । २ सम्बन्धयुक्त ।
सम्पृक्तः } ३ छूने वाला ।

संप्रज्ञाजनं } (न०) १ जब्ब द्वारा भली भाँति
सम्प्रज्ञाजनम् } पेट की खुद्दि । २ स्थान । ३ जल
का बुड़ा ।

संप्रणेतृ } (पु०) शासक । न्यायाधीश । जज ।
सम्प्रणेतृ }

संप्रति } (अव्यय०) अभी । हाल में । इस
सम्प्रति } समय ।

संप्रतिपत्तिः } (स्त्री०) १ समीप आगमन । आग-
सम्प्रतिपत्तिः } मन । २ विद्यमानता । मौजूदगी । ३
प्राप्ति । उपलब्धि । ४ इकरारनामा । ५ स्वीकृति ।
इकरार । ६ (आईन में) विशेष प्रकार का उत्तर ।
७ आक्रमण । चढ़ाई । ८ घटना । ९ सहयोग ।
१० क्रम ।

संप्रतिरोधकः } (पु०) १ पूर्णरीत्या रोक या
सम्प्रतिरोधकः } बाधा । २ जेल या बन्दीगृह ।

संप्रतीतः } (व० कृ०) १ लौटाया हुआ । २ भली
सम्प्रतीतः } भाँति विश्वास कराया हुआ । ३ सिद्ध
किया हुआ । स्थापित किया हुआ । ४ प्रसिद्ध ।
५ माननीय ।

सम्प्रतीतिः } (स्त्री०) १ भली प्रकार प्रतीति या
सम्प्रतीतिः } विश्वास । २ कृत्याति । कीर्ति ।

सम्प्रत्ययः } (पु०) १ दृढ़ विश्वास । २ इकरार । कौल
सम्प्रत्ययः } करार ।

सम्प्रतीक्षा } (स्त्री०) आशा । उम्मेद ।
सम्प्रतीक्षा }

सम्प्रदानं } (न०) १ भली प्रकार दे डालना या सौंप
सम्प्रदानं } देना अर्थात् दी हुई वस्तु में देने वाले का
कुछ भी स्वत्व न रखना । २ विवाह । ३ कारक
विशेष ।

सम्प्रदानार्थः } (स्त्री०) भेंट । दान । पुरस्कार ।
सम्प्रदानार्थः }

सम्प्रदायः } (पु०) १ परम्परा । परम्परागत प्राप्त
सम्प्रदायः } सिद्धान्त या विषय विशेष का सम्बन्ध
में ज्ञान । धर्म सम्बन्धी समुदाय विशेष । ३
परम्परागत प्रचलित रीति रवाज़ या पद्धति ।

सम्प्रधानं } (न०) निश्चयकरण ।
सम्प्रधानं }

सम्प्रधारणं } (न०) १ विचार । २ किसी वस्तु
सम्प्रधारणं } के औचित्य अनौचित्य के
सम्प्रधारणा } (स्त्री०) विषय में निश्चय करने की
सम्प्रधारणा } (स्त्री०) क्रिया ।

सम्प्रपदः } (पु०) भ्रमण ।
सम्प्रपदः }

सम्प्रभिन्नः } (व० कृ०) १ चिरा हुआ । फटा हुआ ।
सम्प्रभिन्नः } २ मद में मत्त ।

सम्प्रमादः } (पु०) अतिहर्ष ।
सम्प्रमादः }

सम्प्रमोषः } (पु०) हानि । नाश । विनाश ।
सम्प्रमोषः }

सम्प्रयाणं } (न०) प्रस्थान । रवानगी ।
सम्प्रयाणं }

सम्प्रयोगः } (पु०) १ संयोग । मेल । मिलाप । २
सम्प्रयोगः } मिलाने वाली शृङ्खला । ३ सम्बन्ध ।
अधीनता । ४ पारस्परिक सम्बन्ध । ५ क्रमबद्ध
संख्या या सिलसिला । ६ स्त्रीमैथुन । ७ संलग्नता ।
८ इन्द्रजाल । जादू ।

सम्प्रयोगिन् } (वि०) संयोग । मिलन । (पु०)
सम्प्रयोगिन् } १ मिलाने वाला । जोड़ने वाला । २

एन्द्रजालिक । मन्तरी । ३ लपट उरुष । ४ मैथुन कराने वाला लौंडा ।

संप्रवृत्त } (न०) अच्छी वर्षा ।
सम्प्रवृत्त }

संप्रश्नः } (पु०) १ भली भाँति या शिष्टतरार्थ
सम्प्रश्नः } अनुसन्धान । २ अनुसन्धान ।

संप्रसादः } (पु०) १ सन्तोषण । सन्तोषण ।
सम्प्रसादः } प्रसादन । २ अनुग्रह । हुषा । ३ मन का धैर्य । सुस्थिरता । ४ विश्रान्त । भरोसा । ५ जीव । आत्मा ।

संप्रसारण } (न०) क्रमशः घृ, वृ, र और ल का
सम्प्रसारण } इ, ठ, ड और ढ में परिवर्तन :—

"प्रसृतः सप्तकारणम्"

संप्रहारः } (पु०) १ पारस्परिक नाइन । २ तुड़
सम्प्रहारः } मुठभेड़ ।

संप्राप्तिः } (स्त्री०) प्राप्ति । उपलब्धि
सम्प्राप्तिः }

संप्रीतिः } (स्त्री०) लगाव । स्नेह । २ मैत्री । ३
सम्प्रीतिः } हर्ष । प्रसन्नता ।

संप्रेक्षण } (न०) १ देखना । अवलोकन । चित्त-
सम्प्रेक्षण } वन । २ अनुसन्धान । विचार ।

संप्रैषः } (पु०) १ भेजना । बिदा कर देना । २
सम्प्रैषः } आदेश । आज्ञा । निर्देश ।

संप्रीक्षण } (न०) मार्जन । प्रोक्षण । जल को
सम्प्रीक्षण } मंत्र पढ़ कर दिङ्कना ।

संभवः } (पु०) १ जल में डूबना या जल की बाढ़
सम्भवः } में जलमग्न होना । २ लहर । तरंग । ३ जल की बाढ़ । ४ बरबादी । ५ विधर्मास ।

संफालः } (पु०) मेड़ा । सेप ।
सम्फालः }

संफटः } (पु०) दो कुछ जनों का लड़ाई
सम्फटः }

संभ } (धा० पु०) [सम्बन्धि] जाना । [उ०—
सम्भ } सम्भवति, सम्भवति] जमा करना । एकत्र करना ।

संभम् } (न०) किसी खेत की दुबारा जुताई ।
सम्भम् }

संभव } (व० क०) १ बंधा हुआ । २ अटक हुआ ।
सम्भव } ३ सम्बन्ध युक्त । ४ युक्त । अन्वित ।

संबंधः } (पु०) १ संयोग । भेद । संगति । २
सम्बन्धः } रिश्ता । रिश्तेदारी । ३ कारक विशेष । ४ वैवाहिक सम्बन्ध । ५ औचित्य । उपयुक्तता । ६ समृद्धि । साफल्य ।

संबन्धक } (वि०) १ सम्बन्ध करने वाला । २
सम्बन्धक } योग्य । उपयुक्त ।

संबन्धकः } (पु०) १ मित्र । दोस्त । २ विवाह से
सम्बन्धकः } या जन्म से सम्बन्धी या नातेदार । ३ एक प्रकार की सन्धि ।

संबन्धिन् } (वि०) १ सम्बन्ध युक्त । २ जुड़ा
सम्बन्धिन् } हुआ । ३ सदगुणों वाला । वैवाहिक नातेदार । ४ नतैत । नातेदार ।

संवरः } (न०) १ रोक । निग्रह । २ जल ।—अरिः,
सम्वरः }—रिपुः (पु०) कामदेव ।

संदरः } (पु०) १ बौन । पुल । २ युग विशेष । ३
सम्बरः } एक देव का नाम जिसे प्रद्युम्न ने मारा था ।

३ एक पर्वत का नाम ।

संवल } (न०)
सम्बल } (न०)
संवलः } (पु०)
सम्बलः } (पु०)

संवाध } (वि०) १ भीड़ भाड़ से बंद । अवरुद्ध । २
सम्वाध } सङ्कोच ।

संवाधः } (पु०) १ आपस की राड़ । ठेलंठेला ।
सम्वाधः } २ रुकावट । कठिनाई । जंजाल । अड़बट । ३ नरक का मार्ग । ४ भय । डर । खौफ । ५ योनि । भग ।

संभुद्धिः } (स्त्री०) १ पूर्ण ज्ञान या प्रतीति । २
सम्भुद्धिः } पूर्ण विवेक । ३ सम्बोधन । ४ सम्बोधन कारक ।

संबोधः } (पु०) १ खोल कर यतजाना । शिक्षण ।
सम्बोधः } सूचन । २ सत्य या पूर्ण प्रतीति । ३ निषेध । प्रक्षेप । ४ हानि । नाश ।

संबोधनः } (न०) १ व्याख्या । २ सम्बोधन । ३
सम्बोधनः } आठवीं विभक्ति । सम्बोधनकारक ।
संभक्तिः } (स्त्री०) १ हिस्सा जगाना । २ बाँटना ।
सम्भक्तिः }

संभग } (व० क०) तितर बितर । भङ्ग किया हुआ ।
सम्भग }

संभगः } (पु०) शिव जी की उपाधि ।
सम्भगः }

संभली } (स्त्री०) कुटनी । दूती ।
सम्भली }

संभवः } (पु०) १ उत्पत्ति । पैदायश । निकाम ।
सम्भवः } २ उत्पन्न करने की क्रिया । कारण ।
हेतु । ३ संमिश्रण । मेल । मिलावट । ४ सम्भावना । ५ सङ्गति । सुसङ्गति । ७ उपयुक्तता । अनुसारता । ८ धारणा शक्ति । १० प्रमाण विशेष । ११ परिचय । १२ बरबादी । हानि । नाश ।

संभारः } (पु०) १ संयोग । २ आवश्यकतापुं । ३
सम्भारः } उपादान । उपकरण । ४ समूह । ढेर ।
राशि । ५ भरापन । पूर्णता । ६ धन दौलत ।
सम्पत्ति । ७ परिवरिश । पोषण ।

संभावनं (न०) } १ विचार । मनन । २ कल्पना ।
सम्भावनं (न०) } ३ खयाल । विचार । ४ सम्मान ।
संभावना (स्त्री०) } प्रतिष्ठा । ५ मुमकिन । ६ उप-
सम्भावना (स्त्री०) } युक्तता । ७ योग्यता । ८ सन्वेह ।
९ प्रेम । स्नेह । १४ प्रसिद्धि ।

संभावित } (व० कृ०) १ विचारा हुआ । कल्पना
सम्भावित } किया हुआ । २ सम्मानित । ३ उप-
युक्त । योग्य । ४ सम्भव ।

संभाषः } (पु०) बातचीत ।
सम्भाषः }

संभाषा } (स्त्री०) १ वार्तालाप । सम्भाषण । २
सम्भाषा } बधाई । ३ आईन विरुद्ध सम्बन्ध ।
ऐसा सम्बन्ध जो जुर्म समझा जाय । ४ इकरार-
नामा । कौलकरार । ५ पहरेदार का सङ्केत शब्द
या वाक्य ।

संभूतिः } (स्त्री०) १ उत्पत्ति । पैदायश । २
सम्भूतिः } मिलावट । मेल । ३ उपयुक्तता ।
योग्यता । ४ ताकत ।

संभूत } (व० कृ०) १ एकत्र किया हुआ । जमा
सम्भूत } किया हुआ । २ तैयार किया हुआ । लैस
किया हुआ । ३ सुसम्पन्न । ४ धरा हुआ । जमा
कराया हुआ । ५ पूर्ण । पूरा । समूचा । ६ प्राप्त ।
पाया हुआ । ७ ढोया हुआ । ले जाया हुआ । ८
पालन पोषण किया हुआ । ९ उत्पन्न किया हुआ ।

संभूतिः } (स्त्री०) १ संग्रह । २ उपस्कर । सामग्री ।
सम्भूतिः } ३ पूर्णता । परिवरिश । पालन पोषण ।

संभेदः } (पु०) १ तोड़ना । चीरना । २ मेल ।
सम्भेदः } मिलावट । संयोग । ३ (नजर का)
मिलना । ४ (नदियों का) संगम ।

संभेगः } (पु०) १ अच्छी क्रीड़ा । २ उपभोग ।
सम्भेगः } ३ मैथुन । ४ वह लौंडा जो मैथुन करावे ।
५ शृङ्गाररस का एक प्रकारान्तर ।

संभ्रमः } (पु०) १ घूमना । चक्कर खाना । २ हड़-
सम्भ्रमः } बंदी । जल्दबाजी । ३ गाड़बंदी । गोलमाल ।
४ भय । डर । ५ गलती । भूल । अज्ञानता । ६
उत्साह । ७ मान । सम्मान ।

संभ्रांत } (व० कृ०) १ घूमा हुआ । २ श्रवणार्थ
सम्भ्रान्त } हुआ । परेशान ।
संभ्रत } (व० कृ०) १ राजी । रजामंद । २ प्यारा ।
सम्भ्रत } प्रेमपात्र । ३ सदृश । समान । ४ सोचा
हुआ । विचारा हुआ । ५ अत्यन्त सम्मानित ।

संभ्रतं } (न०) इकरार नामा । कौलकरार ।
सम्भ्रतं }

संभ्रतिः } (स्त्री०) १ इकरार । कौलकरार । २
सम्भ्रतिः } स्वीकृति । रजामंदी । ३ अभिलाष ।
इच्छा । ४ आत्मज्ञान । ५ मान । प्रतिष्ठा । ६
प्यारा । स्नेह ।

संभ्रदः } (पु०) बड़ी प्रसन्नता । आह्लाद । हर्ष ।
सम्भ्रदः }

संभ्रदः } (पु०) १ रगड़ । संघर्ष । २ भीड़भाड़ ।
सम्भ्रदः } ३ कुचलना । पैरों से रूँधना । ४ युद्ध ।
समर । लड़ाई ।

संभ्रादः } (पु०) नशा । मद ।
सम्भ्रादः }

संभ्रानं } (न०) १ माप । तुलना ।
सम्भ्रानं }

संभ्रानः } (पु०) मान । प्रतिष्ठा ।
सम्भ्रानः }

संभ्रार्जकः } (पु०) मेहतर । भंगी । झाड़ने
सम्भ्रार्जकः } वाला ।

संभ्रार्जनं } (न०) झाड़ना । बुहारना । सफाई ।
सम्भ्रार्जनं }

संभ्रार्जनी } (स्त्री०) झाड़ू ।
सम्भ्रार्जनी }

समित } (व० कृ०) १ नापा हुआ । २ समान
समित } माप का । समान । बराबर ।

समिश्र }
समिश्र } (वि०) मिला जुला ।
समिश्रित }
समिश्रित }

समिश्रः }
समिश्रः } (पु०) इन्द्र ।

संमीलनं } (न०) (कूल का) मुँदना । ठकना ।
संमीलनं } लपिटना ।

संमुख } (वि०) [स्त्री०—संमुखी, संमुखी]
संमुख } १ सामने का । आगने सामने । २
संमुखीन } मिलने वाला ।
संमुखीन }

संमुखिन् } (पु०) शीशा । दर्पण । आईना ।
संमुखिन् }

संमूर्द्धनं } (न०) १ बेहोशी । सूँझ । २ जनावट ।
संमूर्द्धनं } गाढ़ा होना । ३ वृद्धि । ४ ऊँचान ।
ऊँचाई । ५ सर्वव्याप्ति ।

संमृष्ट } (व० कृ०) १ अच्छी तरह झाड़ा बंदोरा हुआ ।
संमृष्ट } २ अच्छी तरह छाना हुआ ।

संमेलनं } (न०) १ मेल । मिलावट । ऐक्य ।
संमेलनं } २ संमिश्रण । ३ एकत्र होना । जमा
होना ।

संमोहः } (पु०) १ घबड़ाहट । परेशानी । २
संमोहः } बेहोशी । सूँझ । ३ मूर्खता । अज्ञानता ।
४ मोहन । वशीकरण ।

संमोहनं } (न०) वशीकरण । मोहने की क्रिया ।
संमोहनं }

संमोहनः } (पु०) कामदेव के पाँच शरों में से एक ।
संमोहनः }

संम्यक् } (वि०) [स्त्री०—संम्यक्] १ सद्गमन ।
संम्यक् } २ ठीक । उपयुक्त । उचित । वाजबी ।
संम्यक् } ३ सही । शुद्ध । ४ अनुकूल । आनन्दप्रद ।
५ एकसा । ६ तमाम । सब । समस्त ।

संम्यक् (अव्यया०) १ साथ । सहित । २ ठीक ठीक ।
३ सही सही । शुद्धता से । ४ प्रतिष्ठापूर्वक । ५
सम्पूर्ण रीति । ६ स्पष्टतया ।

सम्राज् (पु०) सम्राट् । महाराज । शाहंशाह ।

राजाधिराज [वह राजाधिराज कहलाता है जिसने
राजसूययज्ञ किया हो]

सम् (धा० आ०) [सगते] जाना । हिलना । डोलना ।

सम्युध्यः (पु०) किसी गिराह या जाति का ।

सम्योनि (वि०) एक ही गर्भ का ।

सम्योनिः (पु०) १ सहोदर भाई । २ सरोता ।
सुपाशी काटने का औजार विशेष । ३ इन्द्र ।

स्मर (वि०) १ गमनशील । गतिशील । २ दस्त खाते
वाला । पेशाब लाने वाला ।

सरं (न०) १ जल । २ सरोवर । झील । जलकुण्ड ।

सरः (पु०) १ गमन । गति । २ तीर । ३ सजाई ।
बड़ी का थका । ४ निमज्ज । लवण । ५ लड़ी ।
हार । ६ जलप्रपात ।

सरकं (न०) १ वह सबक जिसका सिलमिखा

सरकः (पु०) १ बराबर चला जाय । २ शराब ।
मदिरा । ३ पानपात्र । शराब पीने का पात्र । ४
शराब का वितरण । (न०) १ गमन । २ जल-
कुण्ड । झील । ३ स्वर्ग ।

सरघा (स्त्री०) भौरा । मधुमक्षिका ।

सरंगः } (पु०) १ चौपाया । २ पक्षी ।

सरङ्गः }
सरजस् [स्त्री०—सरजसा] (वि०) रजस्वला
सरजस्का [स्त्री०—सरजस्की] स्त्री ।

सरट् (पु०) १ पवन । वायु । २ बादल । ३ छिपकली ।
४ मधुमक्षिका ।

सरटिः (पु०) १ पवन । २ छिपकली । बिसतुइया ।
३ बादल ।

सरटुः (पु०) गिरगट । छिपकली ।

सरण (वि०) गमनशील । गतिशील । बहनेवाला ।

सरणां (न०) १ आगे गमन करना । बहाव । २ लोहे
की जंग ।

सरणिः } (स्त्री०) १ मार्ग । रास्ता । सड़क । २

सरणी } ढंग । तौर तरीका । ३ सरल या सीधी
रेखा । ४ गले का रोग विशेष ।

सरंडः } (पु०) १ पत्नी । २ लंपट जन । ३

सरगंडः } छिपकली । ४ बदमाश । दुर्त । ५ आभूषण
विशेष ।

सरयुः (पु०) १ पवन । हवा । २ बादल । मेघ ।
३ जल । पानी । ४ वसन्त ऋतु । ५ अग्नि ।
आग । ६ यमराज । धर्मराज ।

सरणिः (पु० स्त्री०) नाव विशेष ।

सरथ (वि०) एक ही रथ पर सवार ।

सरथः (पु०) रथ पर सवार योद्धा ।

सरभस् (वि०) १ तेज । फुर्तीला । २ प्रचण्ड । उग्र ।
३ क्रोधी । ४ हर्षित ।

सरभसं (अव्यया०) प्रचण्डवेग से । हड़बड़ी से ।

सरमा (स्त्री०) १ देवताओं की कुतिया । २ दूध की
एक कन्या का नाम । ३ विभीषण की पत्नी का
नाम ।

सरयुः (पु०) पवन । हवा । वायु ।

सरयुः } (स्त्री०) एक नदी का नाम जिसके तट
सरयुः } पर अयोध्या बसी हुई है ।

सरल (वि०) १ सीधा । टेढ़ा नहीं । २ ईमानदार ।
सच्चा । स्पष्टवक्ता । ३ सीधासाधा ।

सरलः (पु०) १ पीतदाह वृक्ष । २ अग्नि । आग ।

सरस् (न०) सरोवर । झील । जलकुण्ड ।—जं,
—जम्भन्, —रुहं, (न०) कमल ।—जिनी,
—रुहिणी, (स्त्री०) १ कमल का पौधा । २
वह सरोवर जिसमें कमलों को बहुतायत हो ।—
रुहं, (न०) कमल ।—वरः, (सरोवरः) (पु०)
झील ।

सरस् (वि०) १ रसदार । रसीला । २ स्वादिष्ट ।
३ पसीने से तराबोर । ४ तर । भीगा हुआ । ५
रसिक । ६ मनोहर । मनोमुग्धकारी । सुन्दर । ७
ताज़ा । टटका । नया ।

सरसं (न०) १ झील । जल का तालाब । २ कीमि-
यागरी । रसायन विद्या ।

सरसी (स्त्री०) झील । जल का कुंड ।—रुहं, (न०)
कमल ।

सरस्वत् (वि०) १ पनीला । २ रसादार । रसदार ।
३ सुन्दर । ४ रसात्मक । भावपूर्ण । (पु०) १
समुद्र । २ झील । ३ नदी । ४ बैसा । ५ वायु
विशेष ।

सरस्वती (स्त्री०) १ विद्या की अधिष्ठात्री देवी । २
वाणी । गिरा । ३ एक नदी का नाम । ४ नदी । ५
गौ । गाय । ६ उत्तमा स्त्री । ७ दुर्गा देवी का
नाम । ८ बौद्धों की एक देवी का नाम । ९ सोम-
लता । १० ज्योतिष्मती रुखरी ।

सराग (वि०) १ रंगीन । २ लाखी । लाल रंग से रंगा
हुआ । ३ रसिक । आसक्त । आशिक ।

सराव (वि०) रव करने वाला । शब्द करने वाला ।

सरावः (पु०) १ सकोरा । परहूँ । २ ढक्कन ।

सरिः (स्त्री०) सेता । श्रोत । फव्वारा ।

सरित् (स्त्री०) १ नदी । २ डोरी । डोरा ।—नाथः,
—पतिः, —भर्तुः, (पु०) समुद्र । सागर ।—
धरा, [सरितांघरा भी] गंगा ।—सुतः, (पु०)
भीष्मपितामह ।

सरिम्भन् } (पु०) १ गति । चाल । रेंगन । २
सरीम्भन् } पवन । वायु ।

सरिलं (न०) जल । पानी ।

सरीसृपः (पु०) सर्प या वे जानवर जो रेंग कर चले ।

सरुः (पु०) तलवार की मूठ ।

सरूप (वि०) १ एक ही शक्त का । एक ही रूप रंग
का । २ समान । मिलता जुलता ।

सरूपता (स्त्री०) } १ समानता । सादृश्य । एक
सरूपत्वं (न०) } रूपता । २ चार प्रकार की
मुक्तियों में से एक ।

सरोष (वि०) १ क्रोधी । क्रोध में भरा । २ गुस्सैल ।

सर्कः (पु०) १ पवन । हवा । २ मन ।

सर्गः (पु०) १ त्याग । विराग । २ सृष्टि । ३ संसार
की सृष्टि । ४ प्रकृति । स्वभाव । ५ जड़ जगत । ६
सङ्कल्प । विचार । क्रुद्ध । ७ स्वीकृति । रजामंदी ।
अपरिच्छेद । बाव । अध्याय । ८ मल्ला । आक्रमण ।
१० मलत्याग । ११ शिवजी का नामान्तर ।—
क्रमः, (पु०) सृष्टिक्रम ।—बन्धः, (पु०)
महाकान्य ।

“सर्गबन्धी सदाकाव्यम् ।”

सर्ज (धा० प०) [सर्जति] १ प्राप्त करना ।
हासिल करना । २ परिश्रम से प्राप्त करना ।

सर्जः (पु०) १ साल का पेड़ । २ राल ।—निर्यासकः ।
—मणिः, —रसः, (पु०) राल ।

सर्जकः (पु०) साल वृक्ष ।

सर्जनं (न०) १ त्याग । विराग । २ छुटकारा । मुक्ति ।
३ सिरजन । ४ निकालना । ५ सेना का पिछला भाग ।

सर्जिः }
सर्जिका } (स्त्री०) सज्जी । खार या चार विशेष ।
सर्जी }

सर्जः (पु०) १ व्यापारी । (स्त्री०) बिजली । विद्युत् ।
२ गले की सकरी । ३ गमन । अनुवर्तन ।

सर्पः (स्त्री०) १ घूम घुमाव की चाल । २ बहाव । ३ साँप ।—अरातिः, —अरिः, (पु०) १ न्योला । नकुल । २ मयूर । मोर । ३ गरुड़ ।—अशनः, (पु०) मयूर । मोर ।—आवासः, —इष्टं, (न०) चन्दन का पेड़ ।—कुत्रं, (न०) कुकुरमुत्ता । कट्फूल ।—तृणः, (पु०) न्योला । नकुल ।—दंष्ट्रः, (पु०) साँप का विषदन्त ।—धारकः, (पु०) कालबेलिया । सर्प पकड़ने वाला ।—भुजः, (पु०) १ मयूर । २ सारस । ३ बड़ा साँप ।—मणिः, (पु०) सर्प के फन का रत्न ।—राजः, (पु०) बासुकी का नामान्तर ।

सर्पणं (न०) १ रेंगन । फिसलन । २ वक्रगति । ३ बाण का ऐसा प्रक्षेप जो ज़मीन से मिलता जुलता जाकर अपने निशाने पर लगे ।

सर्पिणी (स्त्री०) १ साँपिन । २ रूखरी विशेष ।

सर्पिन् (वि०) रेंगनेवाला । सरकने वाला । वक्रगति से चलने वाला ।

सर्पिस् (न०) स्त्री । घृत ।—समुद्रः, (पु०) सह समुद्रों में से एक । घी का समुद्र ।

सर्पिष्मत् (वि०) स्त्री मले हुए ।

सर्व (धा० प०) [सर्वति] जाना ।

सर्वः (पु०) १ गमन । गति । २ आकाश ।

सर्व् (धा० प०) [सर्वति] वध करना । अनिष्ट करना । घायल करना ।

सर्व (सर्वनाम वि०) [कर्त्ता बहुवचन सर्वे पु०] १

सब । हरेक । २ समूचा । नितान्त । सम्पूर्ण ।—अंगं, (न०) समस्त शरीर ।—अंगीण, (वि०) सर्व शरीरगत । समस्त शरीर में व्याप्त ।—अधिकारिन्, —अध्यक्षः, (पु०) जनरल सुपरिटेंडेंट । व्यवस्थापक ।—अग्नीन, (वि०) हर प्रकार का अनाज खाने वाला । सर्वाभोजी ।—आकारः, (न०) समूचेपन से । विलकुल । सम्पूर्णतः ।—आत्मन्, (पु०) समूचा जीव या रूह । सर्वात्मना ।—ईश्वरः, (पु०) सर्वेश्वर । सब का मालिक ।—ग, —गामिन्, (वि०) सर्वगत । सर्वव्यापी ।—जित् (वि०) अजेय । सर्वजयी ।—ज्ञ, —विद्, (वि०) सर्वज्ञ । सब जानने वाला । (पु०) १ शिव । २ बुद्धदेव ।—दमन, (वि०) सब को दमन करनेवाला ।—नामन्, (न०) सर्वनाम ।—मङ्गला, (स्त्री०) पार्वती का नाम ।—रसः, (पु०) राल ।—लिङ्गिन्, (पु०) नास्तिक । पाषण्डी ।—व्यापिन्, (वि०) सर्वव्यापी ।—वेदस्, (पु०) यज्ञ में सर्वस्व दक्षिणा देने वाला यज्ञकर्त्ता ।—सहा, (सर्वसहा भी) (स्त्री०) पृथिवी ।—स्वं, (न०) १ सकल धन । सारा धन । २ किसी वस्तु का सार ।

सर्वः (पु०) १ विष्णु । २ शिव ।

सर्वकप (वि०) सर्वनाशक । सर्वशक्तिमान ।

सर्वकषः (पु०) शूर्त्त । वदमाश ।

सर्वतस् (अव्यया०) १ सब ओर से । सब तरह से । २ सर्वत्र । चारों ओर । ३ सम्पूर्णतः ।—गामिन्, (वि०) सर्वत्र जा सकने वाला ।—भद्रः, (पु०) १ विष्णु का रथ । २ वाँस । ३ छन्द विशेष । ४ भवन या देवालय जिसमें चारों ओर चार द्वार हों ।—भद्रा, (स्त्री०) नृत्यकी । नाटक की पात्री । नदी ।—मुख, (वि०) पूर्ण । हर प्रकार का । असीम ।—मुखः, (पु०) १ शिव जी । २ ब्रह्मा जी । ३ परब्रह्म । जीवात्मा । ४ ब्राह्मण । ५ अग्नि । ६ स्वर्ग ।

सर्वत्र (अव्यया०) १ सब जगह । सब जगहों पर । २ सब समय । सब समयों में ।

सर्वथा (अव्यया०) १ हर प्रकार से । सब तरह से ।

२ विकृत । ३ सम्पूर्णतः । नितान्त । ४ सर्वत्र ।
 सर्वदा (अव्यया०) सदैव । हमेशा ।
 सर्वशस् (अव्यया०) १ पूर्ण रूप से । सम्पूर्ण से ।
 २ सर्वत्र । ३ सब ओर ।
 सर्वांगी देखो शर्वांगी ।
 सर्वपः (पु०) १ गई । सरसों । २ तोल विशेष । ३ विष विशेष ।
 सल (भा० प०) [सलति] जाना । हिलना ।
 डोलना ।
 सलं (न०) पानी । जल ।
 सलिलं (न०) पानी ।—अग्निं, (वि०) प्यासा ।
 —आशयः, (पु०) तालाब । जलाशय ।—
 इन्धनः, (पु०) बड़वानल ।—उपप्लवः, (पु०)
 जल का बूझ । जलप्रलय ।—क्रिया, (स्त्री०)
 १ मुर्दा को जल से स्नान कराने की क्रिया । २
 बढकक्रिया ।—जं, (न०) कमल । निधिः,
 (पु०) समुद्र ।
 सलज्ज (वि०) लज्जालु । लजीला । हयादार ।
 सलील (वि०) १ खिलाड़ी । रसिक । लंपट ।
 सलोकता (स्त्री०) चार प्रकार की मोलों में से एक ।
 अपने आराध्य देव के लोक में वास ।
 सल्लकी (स्त्री०) बृश् विशेष ।
 सलं (न०) १ जल । फूल का शहद ।
 सलः (पु०) १ सोमरस निकालने की क्रिया । २
 भेंट । नैवेद्य । ३ यज्ञ । ४ सूर्य । ५ चन्द्रमा । ६
 सन्तति । औलाद ।
 सलनं (न०) १ सोमरस का निकालना या पीना । २
 यज्ञ । ३ स्नान । प्रक्षालन । ४ उत्पत्ति । लड़के
 उत्पन्न करना ।
 सलथस (वि०) १ एक उख का । हमउख । २ समच-
 यस्क । साथी । ३ सहयोगी । (स्त्री०) सहेली ।
 सखी ।
 सलरः (पु०) १ शिब जी । २ पानी । जल ।
 सलर्य (वि०) १ समान रंग का । २ समान रूप रंग

का । ३ एक ही जाति का । ४ एक ही प्रकार का ।
 ५ एक ही उच्चारण-स्थान से उच्चारण किये जाने
 वाले वर्ण ।
 सलिकल्प } (वि०) १ ऐच्छिक । पसंद का । २
 सलिकल्पक } सन्दिग्ध । ३ निर्विकल्पक का उलटा ।
 सलिव्रह (वि०) १ शरीरभारी । २ अर्थवाला ।
 जिसका कुछ अर्थ या मानी हो । ३ अगढ़ालू ।
 अगढ़ने वाला ।
 सलितर्क } (वि०) विचारवान । विवेकी ।
 सलिवर्श }
 सलितर्क } (अव्यया०) विचार पूर्वक । समझदारी
 सलिवर्श } से ।
 सलितृ (वि०) [स्त्री०—सलित्री] उत्पादक । पैदा
 करने वाला । देने वाला । (पु०) १ सूर्य । २
 शिवजी । ३ इन्द्रदेव । ४ अर्क वृक्ष । मदार का
 पौधा ।
 सलित्री (स्त्री०) १ माता । २ गौ ।
 सलिव्र (वि०) १ एक ही तरह का या प्रकार का ।
 २ समीप । निकट ।
 सलिवं (न०) पकोस । नैकट्य । सामीप्य ।
 सलिनय (वि०) लज्जालु । हयादार । विनम्र ।
 सलिनयं (अव्यया०) हयादारी से ।
 सलिव्रम (वि०) क्रीडासक्त । रंगीला । रसिक ।
 सलिव्रेश (वि०) १ विशिष्ट गुणों वाला । विशेष
 लक्षणाक्रान्त । २ विलक्षण । विचित्र । असा-
 धारण । ३ स्वास । विशेष । ४ मुख्य । प्रधान ।
 उत्कृष्ट । सर्वोत्तम । ५ प्रभेदात्मक । विभेदक ।
 सलिव्रतर (वि०) न्यौरे बार । विस्तार पूर्वक ।
 सलिव्रमय (वि०) आश्चर्यचकित । विस्मित ।
 सलिव्रिक (वि०) व्याज । व्याज देने वाला ।
 सलिव्रेश (वि०) १ सजा हुआ । भूषित । २ समीप ।
 नजदीक ।
 सल्य (वि०) १ बायाँ । बायाँ हाथ । २ दक्षिणी । ३
 उलटा । विपरीत । पिछाड़ी । ४ सीधा ।—इतर,
 (वि०) दहिना ।—सल्विन, (पु०) अर्जन की
 उपाधि । कारण यह है :—

असौ न इक्षिषौ पःषी शयडोवस्य विवर्षणे ।

तेन देवसमुपेयु धव्यसावीरि नां विदुः ॥

सर्व्य (अव्यया०) कार्ये कंधे पर रखा हुआ बजो-
पवीत ।

सर्व्यपेत्त (वि०) सम्बन्ध युक्त । अवलम्बित ।

सर्व्यमिचारः (पु०) न्यायदर्शन के पांच प्रकार के
हेत्वाभासों में से एक ।

सर्व्याज (वि०) १ चालाक । मुक्कबी । धूर्त ।

सर्व्यापार (वि०) संलग्न । लगा हुआ ।

सर्वीड (वि०) १ लज्जालु । लजीला । २ लज्जित ।

सर्वोष्ट्र } (वि०) सारथी । रथ हँकने वाला ।
सर्वोष्ट्रः }

सशय्य (वि०) १ कटीला । २ बरड़ा या काँटों से
विधा हुआ ।

सशस्य (वि०) अन्नोत्पादक ।

सशस्या (स्त्री०) सूरजमुखी का फूल विशेष ।

सशमश्रु (वि०) बढियल । (स्त्री०) वह स्त्री जिसके ढाढ़ी
हो ।

सश्रीक (वि०) १ समृद्धवान् । भाग्यवान् । २
सुन्दर । मनोहर ।

सस् (धा० प०) [सस्ति] सोना ।

ससस्त्व (वि०) १ शक्तिवान् । विक्रमी । साहसी । २
फलदार । भरपूर हुआ ।

ससत्त्वा (स्त्री०) गर्भवती स्त्री ।

ससन्देह } (वि०) संशयग्रस्त । सन्दिग्ध ।
ससन्देहः }

ससन्देहः } (पु०) अलङ्कार विशेष । देखो
ससन्देहः } सन्देह ।

ससनं (न०) बलिप्रदान । हनन ।

ससाध्वस (वि०) भयभीत । डरा हुआ ।

सस्यं (न०) १ अनाज । नाज । अन्न । २ किसी वृक्ष
का फल या उसकी पैदावार । ३ शस्त्र । हथियार ।
४ सद्गुण । खूबी ।—इष्टिः, (स्त्री०) नवाष्टि ।
अधे अन्न से यज्ञ करने की क्रिया ।—प्रद, (वि०)
फलने वाला । उपजाऊ ।—मारिन्, (वि०)

अनाज का नाश करने वाला । (पु०) चूड़ा ।
स्यं ।—संवरः (पु०) साल वृक्ष ।

सस्यक (वि०) सद्गुण सम्पन्न । खूबियों वाला ।

सस्यकः (पु०) १ नलवार । खड्ग । २ हथियार । ३
रत्न विशेष ।

सस्वेद (वि०) पसीने से तर ।

सस्वेदा (स्त्री०) वह लड़की जिसका कौमार्य हाल ही
में नष्ट किया गया हो ।

सह (धा० प०) [सहाति] १ सन्तुष्ट करना । २
प्रसन्न होना । ३ सहना । बरदाश्त करना ।

सह (वि०) १ सहिष्णु । सहनशील । बरदाश्त कर
लेने वाला । २ मरीज । रोगी । ३ शोग्य ।
क्राविल ।

सह (अव्यया०) १ साथ । सहित । २ एक ही समय
में । एक साथ ।

सहं (न०) } ताकत । शक्ति ।
सहः (पु०) }

सहः (पु०) मार्गशीर्ष मास ।—आध्यायिन्,
(पु०) सहपाठी ।—अर्थ, (वि०) समानार्थ
वाची ।—उक्तिः, (स्त्री०) अलङ्कार विशेष ।
—उदजः, (पु०) पर्यङ्गदी ।—उदरः,
(पु०) सगा भाई । सहोदर भाई ।—
उपमा, (स्त्री०) उपमा विशेष ।—ऊढः,—
ऊढजः, (पु०) विवाह के समय गर्भवती स्त्री
का पुत्र ।—कारः, (पु०) १ सहयोग । २
आम का वृक्ष ।—भञ्जिका, (स्त्री०) एक प्रकार
का खेल ।—कारिन्,—कृत, (वि०) सहयोगी ।
सहयोग देने वाला । (पु०) साथी । संगी ।
सखा ।—कृत, (वि०) सहायता दिया हुआ ।
—गमनं, (न०) १ साथ गमन । २ सती
स्त्री जो अपने पति के साथ भस्म हो जाय ।—
चर, (वि०) साथ रहने वाला ।—चरः,
(पु०) १ साथी । मित्र । सहचरी । २ पति ।
३ जामिन । जमानत करने वाला ।—चरी,
(स्त्री०) १ सखी । सहेली । २ भार्या । पत्नी ।
—चारः, (पु०) १ साहचर्य । २ अनुकूलता ।
ऐकमत्य ।—ज, (वि०) १ स्वाभाविक । २

परपरागत । पुरतैवी ।—जः, (पु०) सहोदर भाई । लगा भाई ।—जात, (वि०) स्वाभाविक । प्राकृतिक ।—दार, (वि०) १ पत्नी सहित । २ विवाहित ।—देवः, (पु०) पाँच पाण्डवों में सब से छोटे पाण्डव का नाम ।—धर्मचारिन्, (पु०) पति ।—धर्मचारिणी, (स्त्री०) १ पत्नी । जोरू । २ साथ काम करने वाली ।—पांशुकीडिन्, —पांशुकिल, (पु०) बचपन का दोस्त । जोगोटिया थार ।—भाविन्, (पु०) मित्र । साझीदार । अनुयायी ।—भू, (वि०) स्वाभाविक ।—भोजनं, (न०) मित्रों के साथ भोजन करना ।—मरणां, (न०) देखो सहगमन ।—वसतिः, —वासः, (पु०) साथ साथ बसने वाला या रहने वाला ।

सहता (स्त्री०) } एक होने का भाव । एकता ।
सहत्वं (न०) } मेल जोल ।

सहने (न०) १ सहने की क्रिया । बरदाश्त करना ।
२ सत्र ।

सहस् (पु०) १ मार्गशीर्ष मास । २ जाड़े का मौसम ।
(न०) १ शक्ति । ताकत । २ प्रचण्डता ।
उग्रता । ३ विजय । जीत । ४ चमक । दीप्ति ।
आभा ।

सहसा (अव्यया०) १ बरजोरी । जबरदस्ती । बलपूर्वक । २ अविचारता पूर्वक । ३ सहसा । एक बारगी ।

सहसानः (पु०) १ मयूर । मोर । २ यज्ञ । नैवेद्य । भेंट ।

सहस्यः (पु०) पूष मास ।

सहस्रं (न०) एक हजार ।—अशु, —अर्चिस्, —कर, —किरण, —दीधिति, —धामज, —पाद, —मरीचि, —रश्मि, (पु०) सूर्य । दिवाकर । मातृण्ड ।—अक्ष, (वि०) हजार नेत्रों वाला ।—अक्षः, (पु०) १ इन्द्र । २ पुरुष । ३ विष्णु ।—काण्डा, (स्त्री०) सफेद दूर्वा बास ।—कृतवत्, (अव्यया०) हजार बार ।—द, (वि०) उदार ।—दः, (पु०) शिवजी ।—दंष्ट्रः, (पु०) मत्स्य विशेष ।—दूश, —नयन,

—नेत्र, —लोचन, (पु०) १ इन्द्र । २ विष्णु ।—धारः, (पु०) विष्णु भगवान का चक्र ।—पत्रं, (न०) कमल ।—बाहुः, (पु०) कर्तवीर्य । २ बाणासुर । ३ शिव । ४ किसी किसी के मतानुसार विष्णु (भी) ।—भुजः, —मूर्धन्, —मौलिः (पु०) विष्णु ।—रोमन्, (न०) कंबल ।—वीर्या, (स्त्री०) हींग ।—शिखरः, (पु०) चिन्माचल ।

सहस्रधा (अव्यया०) सहस्र भागों में । सहस्र गुना ।

सहस्रशस् (अव्यया०) हजारों से ।

सहस्त्रिन् (वि०) १ हजारपती । २ हजार वाला । ३ हजार तक (जैसे अर्थ दण्ड) (पु०) हजार आदमियों की टोली । २ हजार सिपाहियों पर अफसर । हज़ारी ।

सहस्रवत् (वि०) मजबूत । ताकतवर ।

सहा (स्त्री०) १ पृथिवी । धरा । धरिणी । २ श्री-कुम्हार । ग्वारपाठा । ३ वनमंग । ३ दण्डोत्पल । ४ सफेद कटसरैया । ५ ककरी या कंधी नाम का वृक्ष । ६ सर्पिणी । ७ रासना । ८ सत्यानाशी । ९ सेवती । १० मेंहदी । ११ मखवन । १२ अगहन मास । १३ हेमन्त ऋतु ।

सहायः (पु०) १ मित्र । दोस्त । सखा । २ अनुयायी । चाकर । ३ सन्धि की शर्तों के अनुसार बचावा गया मित्र (राजा) । ४ सहकारी । संरक्षक । ५ चक्रवाक । चकई चकवा । ६ गन्ध पदार्थ विशेष । ७ शिवजी ।

सहायता (स्त्री०) } १ कई एक साथी । २ मेल-सहायत्वं (न०) } मिलाप । मैत्री । ३ सहायता । मदद ।

सहायवत् (वि०) १ वह जिसका मित्र हो । २ मित्र बनाया हुआ । सहायता दिया हुआ ।

सहारः (पु०) १ आस का वृक्ष । २ प्रलय ।

सहित (वि०) साथ । समेत । संग । युक्त ।

सहितं (अव्यया०) साथ में । साथ साथ ।

सहित (वि०) धीरज । सब ।

सहिष्णु (वि०) १ सह लेने वाला । बरदाश्त कर लेने वाला ।

सहिष्णुता (स्त्री०) १ सहन करने की शक्ति । २ सहिष्णुत्व (न०) धैर्य । सत्र ।

सहुरिः (पु०) सूर्य । (स्त्री०) पृथिवी ।

सहृदय (वि०) १ अच्छे हृदय वाला । नेक तवियत का । कृपालु । दयालु । २ सच्चा ।

सहृदयः (पु०) १ विद्वान् । २ गुणग्राही । ३ रसिक । ४ सज्जन ।

सहस्रलेख (वि०) सन्दिग्ध । सन्देहयुक्त ।

सहस्रलेखं (न०) सन्दिग्ध भोज्य पदार्थ ।

सहेल (वि०) क्रीडासक्त । खिलाड़ी ।

सहोदः (पु०) वह चोर जो मय चोरी के माल के पकड़ा गया हो ।

सहोर (वि०) श्रेष्ठ । उत्तम ।

सहोरः (पु०) ऋषि । मुनि ।

सह्य (वि०) १ सहन करने योग्य । सहारने लायक । २ सह लेने योग्य । ३ मजबूत । ताकतवर ।

सह्यं (न०) १ तंदुरुस्ती । २ सहायता । ३ योग्यता । यथोचितता ।

सह्यः (पु०) सह्याद्रि नामक पर्वत जो पश्चिमी घाट का एक भाग है और जो समुद्रतट से कुछ हट कर है ।

सा (स्त्री०) १ लक्ष्मी । २ पार्वती ।

सांयात्रिकः (पु०) पोतवाणिक । समुद्र मार्ग से व्यापार करने वाला व्यापारी ।

सांयुगीन (वि०) युद्धविद्या में निपुण ।

सांयुगीनः (पु०) एक बड़ा योद्धा । योद्धा जो युद्ध विद्या में निपुण हो ।

सांपाविणं (न०) कोलाहल । शोरगुल ।

सांवत्सर (वि०) [स्त्री०—सांवत्सरी] }
सांवत्सरिक (वि०) [स्त्री०—सांवत्सरिकी] }
सालाना । वार्षिक ।

सांवत्सरिकः (पु०) ज्योतिषी । गणितज्ञ । दैवज्ञ ।

सांवादिक (वि०) [स्त्री०—सांवादिकी] १ बोलचाल की । २ विवादालम्बक ।

सांवादिकः (पु०) विवादकारी ।

सांवृत्तिक (वि०) [स्त्री०—सांवृत्तिकी] अद्भुत । अमात्मक । मायामय । मिथ्या ।

सांमिखिक (वि०) १ स्वभाविक । प्रकृतिगत । २ स्वेच्छाप्रसूत । स्वतःप्रवृत्त । स्वयंसिद्ध । ३ अनि-यंत्रित । स्वतंत्र ।

सांस्थानिकः (पु०) स्वदेशवासी ।

सांन्नाविणं (वि०) बहाव ।

सांहननिक (वि०) [स्त्री०—सांहननिकी] शारी-रिक । देह सम्बन्धी ।

साकम् (अन्यथा०) १ साथ । सहित । २ एक ही समय में ।

साकल्यं (न०) नितान्तता । समूचापन ।

साकूत (वि०) १ वह जिसका कुछ अर्थ हो । २ दरादतन । जानबूझ कर । ३ रसिक । लंपट ।

साकैतं (न०) अयोध्या का नामान्तर ।

साकैताः (पु०) अयोध्यावासी गण ।

साकैतकः (पु०) अयोध्यावासी ।

साक्तुकं (न०) सत्तू ।

साक्तुकः (पु०) जवा । जौ ।

साक्षात् (अन्यथा०) खुल्लखुल्ला । साफ साफ आँखों के सामने प्रत्यक्षतः ।—कारः, (पु०) प्रतीति । ज्ञान । पदार्थों का इन्द्रियों द्वारा होने वाला ज्ञान ।

साक्षिन् (वि०) [स्त्री०—साक्षिणी] देखने वाला । १ समर्थक । पुष्ट करने वाला (पु०) साक्षी । गवाह । साखी । अस्मदीय गवाह । ऐसा गवाह जिसने वदना अपनी आँखों से देखी हो ।

साक्ष्यं (न०) १ गवाही । साखी । २ समर्थन । पुष्टि ।

साक्षेप (वि०) आक्षेप युक्त । कुवाच्य युक्त ।

साखेय (वि०) [स्त्री०—साखेयी] १ मित्र सम्बन्धी । २ बन्धुता जनित । सद्भावालम्बक ।

साख्यं (न०) मैत्री । दोस्ती ।

सागरः (पु०) १ समुद्र । सागर । २ चार की

संख्या । सात की संख्या । ३ मृग विशेष ।—
अलुकूल, (वि०) समुद्रतट पर बसा हुआ ।
—अनन्त, (वि०) समुद्र से घिरा हुआ ।—
अंबरा,—नेमि,—मेखला, (स्त्री०) घरती ।
पृथिवी ।—आलयः, (पु०) वरुण ।—उत्थं,
(न०) समुद्री जवण ।—गा, (स्त्री०) गंगा ।
—गामिनी, (स्त्री०) नदी ।

साक्षि (वि०) १ अग्नि सहित । २ अज्ञ की आग
को रखने वाला ।

साग्निक (वि०) १ अग्निहोत्र के लिये अग्नि घर में
जीवित रखने वाला । २ अग्नि सहित ।

साशिकः (पु०) गृहस्थ, जिसके पास पशु या हवन
की आग रहती हो । वह जो नियमित रूप से
अग्निहोत्रादि करता हो ।

साग्र (वि०) १ समूचा । २ समस्त । कुल । सब ।
३ जिसके पास अधिक हो ।

सांकर्य } (न०) मित्रावृत्त । मिश्रण । गड़बड़ी ।
साङ्कर्य }

सांकल (वि०) [स्त्री०—सांकली] योग या
साङ्कल } जोड़ से उत्पन्न ।

सांकाश्यं (न०) }
साङ्काश्यं (न०) } जनक के भाई कुशध्वज की
सांकाश्या (स्त्री०) } राजधानी का नाम ।
साङ्काश्या (स्त्री०) }

सांकेतिक } (वि०) [स्त्री०—सांकेतिकी] १
साङ्केतिक } सङ्केत सम्बन्धी । इशारे का । २ प्रजा-
जनित ।

सांक्षेपिक (वि०) [स्त्री०—सांक्षेपिकी] संक्षिप्त ।
छुलासा । संक्षिप्त किया हुआ ।

सांख्य (वि०) १ संख्या सम्बन्धी । २ गणनात्मक ।
३ प्रमेदात्मक । ४ बहस करने वाला ।

सांख्यं (न०) } आस्तिक ऋः दर्शनों में से एक ।
सांख्यः (पु०) } इसमें सृष्टि की उत्पत्ति का भ्रम
वर्णित है । इसमें प्रकृति ही जगत् का मूल मानी
गयी है । इसमें कहा है सत्त्व, रज और तम इन
तीन गुणों के योग से सृष्टि का तथा उसके अन्य
समस्त पदार्थों का विकास होता है । इसमें ईश्वर

की सत्ता नहीं मानी गयी है और आत्मा ही पुरुष
माना गया है । सांख्यमतानुसार आत्मा अकाल,
सारी और प्रकृति से भिन्न है । (पु०) सांख्य-
मतानुयायी ।—प्रसादः,—मुख्यः, (पु०)
शिष्य जी ।

सांग (वि०) १ अंगों या अवयवों वाला । २ सब
साङ्ग } प्रकार से परिपूर्ण । ३ अंगों सहित ।

सांगतिक } (वि०) [स्त्री०—सांगतिकी] समाज
साङ्गतिक } या समा सम्बन्धी । संग करने वाला ।

सांगनिकः } (पु०) नवागत । अतिथि । महमान ।
साङ्गतिकः }

सांगमः } (पु०) मेख । संगम ।
साङ्गमः }

सांग्रामिक } (वि०) [स्त्री०—सांग्रामिकी] समर
साङ्ग्रामिक } सम्बन्धी ।

सांग्रामिकः } (पु०) सेनाध्यक्ष । जनरल । सिरह-
साङ्ग्रामिकः } सालार । कमांडर ।

सावि (अव्यय०) डेढ़पन से । तिरछेपन से ।

साविध्यं (न०) १ मंत्री का पद । सचिव का पद ।
२ दीवानी । आमात्यपना । ३ मैत्री । दोस्ती ।

साजारयं (न०) एक ही जाति वाला । एक ही
प्रकार या तरह का । २ समजातिकत्व । साजाल ।

सांजनः } (पु०) छिपकली ।
सांजनः }

साट् (धा० ड०) [साटयति, साटयते] दिख-
लाना । प्रकट होना ।

साटोप (वि०) १ अभिमान में चूर । २ राजसी ।
३ फूला हुआ ।

साटोपं (अव्यय०) अभिमान से ।

सातत्यं (न०) स्थिरता । अविच्छिन्नता ।

सातिः (स्त्री०) १ भेंट । दान । २ प्राप्ति । उप-
जन्धि । ३ सहायता । ४ नाश । ५ अन्त । ६
तीव्र वेदना ।

सातीनः } (पु०) मर ।
सातीनकः }

सात्त्विक (वि०) [स्त्री०—सात्त्विकी] १ असली ।

यथार्थ । २ सच्चा । सत्य । स्वाभाविक । ३ ईमान-
दार । नेक । ४ गुणवान् । ५ सहसी । हिम्मती ।
६ सत्त्वगुण सम्पन्न । ७ सत्त्वगुण-सम्भूत । ८
आन्तरिक भावोत्पन्न ।

सात्त्विकः (पु०) १ साहित्य शास्त्र का भावविशेष जिससे
हृदय की बात बाहिरी भाव से प्रकट होती है ।
२ प्रज्ञा । ३ ब्राह्मण ।

सात्यकिः (पु०) यादववंशीय योद्धा जो श्रीकृष्ण
का सारथी था ।

सात्यवतः (पु०) } कृष्णद्वैपायन व्यास का
सात्यवतेयः (पु०) } नामान्तर ।

सात्वत् (पु०) अनुयायी । श्री कृष्णका पूजक ।

सात्वतः (पु०) १ विष्णु । २ बलराम । ३ जाति-
च्युत वैश्य का पुत्र ।

सात्वताः (पु० बहुवचन) एक जाति के लोगों की
संज्ञा ।

सात्वती (स्त्री०) १ चार प्रकार के नाटकों की रीति
या शैली । २ शिशुपाल की माता का नाम ।

सादः (पु०) १ बैठना । लगना । २ थकावट ।
आन्ति । ३ दुबलापन । पतलापन । लटापन । ४
नाशन । समाप्ति । ५ पीड़ा । पीड़न । ६ सफाई ।
स्वच्छता ।

सादनं (न०) १ थकावट । आन्ति । २ नाशन । ३
३ आवासस्थान । घर । मकान ।

सादिः (पु०) १ रथवान् । सारथी । २ योद्धा ।

सादिन् (वि०) १ बैठा हुआ । २ नाश करने वाला ।
(पु०) १ बुक्सवार । २ हाथी पर या रथ पर
सवार मनुष्य ।

सादृश्यं (न०) १ समानता । एकरूपता । २ प्रति-
कृति । सूरति । पुतला ।

साद्यन्तः (वि०) आदि से अन्त तक । समूचा ।
साद्यन्तः } सम्पूर्ण ।

साद्यस्क (वि०) [स्त्री०—साद्यस्की] कुर्तीला ।
तुरन्त । फौरन ।

साध् (धा० प०) [साधोति] १ समाप्त करना ।
पूरा करना । खतम करना । २ जीत लेना ।

साधक (वि०) [स्त्री०—साधका—साधिका]

१ पूरा करने वाला । सम्पूर्ण करने वाला । २
फलोत्पादक । ३ निपुण । पटु । ४ ऐन्द्रजालिक ।
जदू से होने वाला । ५ सहायक ।

साधन (वि०) [स्त्री०—साधनी] साधन करने
वाला । पूरा करने वाला ।

साधनं (न०) किसी कार्य को सिद्ध करने की क्रिया ।
सिद्धि । विधान । २ सामग्री । सामान । उपक-
रण । ३ उपाय । मुक्ति । हिकमत । ४ उपासना ।
साधना । ५ सहायता । मदद । ६ शोधन । ७
कारण । हेतु । ८ अनुसरण । ९ प्रमाण । १०
वशवर्ती करण । दमन करना । ११ मंत्र मंत्र से
कोई कार्य पूरा करना । १२ आरोग्य करना ।
पूरना । भरना । (वायु का) १३ बंध करना ।
मारहालना । १४ राजी करना । १५ प्रस्थान ।
रवानगी । १६ तपस्या । १७ मोक्षप्राप्ति । १८
अर्थदण्ड करना । आईन के बल से देना चुकवाना
या किसी वस्तु को दिलवा देना । १९ कर्मेन्द्रियाँ ।
२० लिंग । जननेन्द्रिय । २१ गर्भाशय । २२
सम्पत्ति । २३ मैत्री । २४ लाभ । फायदा । २५
मृतक का अग्निसंस्कार ।

साधनता (स्त्री०) } किसी कार्य को पूरा करने का
साधनत्वं (न०) } सामान या युक्ति ।

साधना (स्त्री०) १ सिद्धि । २ आराधना । अर्चा ।
३ राजीनामा । राजमंदी ।

साधन्तः (पु०) मित्रक । मित्रारी ।

साधर्म्यं (न०) १ समान धर्म होने का भाव । तुल्य
धर्मता ।

साधारण (वि०) [स्त्री०—साधारणा—साधारणी]

१ मामूली । सामान्य । २ सार्वजनिक । आम । ३
समान । सदृश । तुल्य । ४ मिश्रित । ५ न्याय में
एक प्रकार का हेत्वाभास । वह हेतु जो सपन्न और
विपन्न दोनों में एक सा रहे ।—धनं (न०)
मिलीखली सम्पत्ति । वह सम्पत्ति जिस पर किसी
परिवार के सब पातीदारों का स्वत्व हो ।

साधारणं (न०) मामूली नियम । सार्वजनिक
नियम ।

साधारणता (स्त्री०) १ सार्वजनिकता । समाज ।
साधारणत्व (न०) २ समान स्वार्थ या स्वत्व ।

साधारण्यं (न०) साधारण्यता ।

साधिका (स्त्री०) १ निपुणा स्त्री । २ गहरी निद्रा ।

साधित (व० कृ०) १ सिद्ध किया हुआ । ३ सावित
किया हुआ । प्रत्यक्ष करके दिखलाया हुआ ।
४ प्राप्त । हासिल किया हुआ । ५ छुटाया हुआ ।
छोड़ा हुआ । ६ दमन किया हुआ । वशवर्ती
किया हुआ । ७ फिर से पाया हुआ । ८ जुमाना
किया हुआ । ९ दिलवाया हुआ । १० (दण्ड)
दिया हुआ ।

साधिमन् (पु०) नेकी । उत्तमता ।

साधिष्ट (वि०) १ सर्वोत्तम । सर्वोत्कृष्ट । बहुत ठीक ।
२ बहुत मज़बूत । सक्त् । दृढ़ ।

साधीयस् (वि०) २ अपेक्षा कृत अच्छा । उत्कृष्ट-
वर । अपेक्षा कृत कड़ा या मज़बूत ।

साधु (वि०) [स्त्री०—साधु, साध्वी] १ नेक ।
उत्तम । २ योग्य । उचित । ठीक । ३ पुण्यात्मा ।
धर्मात्मा । प्रतिष्ठित । पवित्रात्मा । ४ दयालु ।
नेक मित्र । ५ शुद्ध । विशुद्ध । ६ मनोहर ।
हर्षदायी । कुलीन ।—धी, (वि०) अच्छे स्वभाव
का ।—वादः, (पु०) शाबाशी ।—वृत्त, (वि०)
१ अच्छे आचरण वाला । पुण्यात्मा । ईमानदार ।
सच्चा ।—वृत्तः, (पु०) साधु आचरण करने
वाला पुत्र ।—वृत्तं, (न०) सदाचरण ।
सज्जनता । सौजन्य ।

साधुः (पु०) १ पुण्यात्मा जन । २ ऋषि । महात्मा ।
३ व्यापारी । ४ जैन भिक्षुक । ५ महाजन । सूद-
खोर । (अव्यय०) बहुत अच्छा । बहुत अच्छी
तरह किया हुआ । शाबाश । २ काफ़ी । अलं ।

साधृतं (न०) १ दूकान । २ छतरी । ३ मधुरों
का मुँह ।

साध्य (वि०) १ साधनीय । २ सम्भव । होने योग्य ।
३ सिद्ध करने योग्य । ४ स्थापित करने योग्य । ५
प्रतिकार करने योग्य । ६ जानने के योग्य । ७
जीतने के योग्य । दमन करने के योग्य । आराम

होने योग्य । आरोग्य होने योग्य । ८ नाश करने
योग्य । सार डालने योग्य ।

साध्यं (न०) १ पूर्णता । २ वह वस्तु जिसे सिद्ध
करना हो । ३ न्याय में वह पदार्थ जिसका अनु-
मान किया जाय ।—सिद्धिः, (स्त्री०) निष्पत्ति ।
काम का पूरा होना ।

साध्यः (पु०) १ एक प्रकार के गण्य देवता । २
देवता । ३ एक मंत्र का नाम ।

साध्यता (स्त्री०) १ सम्भावना । २ आरोग्य होने
की सम्भावना ।—अवच्छेदकं, (न०) जिस रूप
से जिसकी साध्यता निश्चित हो ।

साध्यसं (न०) १ भय । डर । आतङ्क । २ गति-
शक्तिहीनता । स्पन्दहीनता । जड़ता । ३ ध्वबाहट ।
परेशानी ।

साध्वी (स्त्री०) १ सती स्त्री । पतिव्रता स्त्री । २ शुद्ध
चरित्रवाली स्त्री । ३ मेवा नामक अष्टवर्गीय
श्रोषधि ।

सानंद (वि०) हर्षित । प्रसन्न ।

सानसिः (पु०) सुवर्ण । सोना ।

सानिका }
सानेयिका } (स्त्री०) नफीरी । शहनाई ।
सानेयी }

सानु (पु० न०) १ चोटी । शिखा । २ पर्वत शिखर
की समतल भूमि । ३ अङ्गुर । अँगुली । ४ वन ।
जंगल । ५ सड़क । रास्ता । ६ नौक । झोर । ७
ढालुवा ज़मीन । ८ पवन का झोंका । ९ पण्डित-
जन । १० सूर्य ।

सानुमत् (पु०) पर्वत ।

सानुमती (स्त्री०) एक अप्सरा का नाम ।

सानुकोश (वि०) दयालु । दयार्द्रचित्त वाला ।

सानुनय (वि०) शिष्ट । सज्जन ।

सानुबंध } (वि०) अबाधित । अविच्छिन्न ।
सानुबन्ध } लगातार ।

सानुराम (वि०) आसक्त । अनुरक्त । अनुरागवान् ।

सांतपनं } (न०) दो दिन में पूरा होने वाला ।
सान्तपनं }

बीच के अवकाश वाला ।

१) फैला हुआ । सवन (वृक्ष)
मन्तान का साधन विशेष । २

१ । ४ सन्तान वृक्ष सम्बन्धी ।

०) वह ब्राह्मण जो सन्तानोत्पत्ति
ज्ये विवाह करे ।

०) [सान्त्वयति—सान्त्वयते]
ता । शान्त करना । (शोक) दूर

डॉरस । आश्वासन । चित्त की
शान्ति । सुख । शान्ति देने का
काम । किसी दुःखी आदमी को
उसका दुःख हल्का करने के
लिये समझा डुका कर शान्त
करने का काम ।

१) श्रीकृष्ण के विद्यागुरु का नाम ।

०) [स्त्री०—सान्द्रष्टिकी] एक
दम में होने वाला । तात्कालिक । देखते
वाला ।

१ घना । गहरा । घोर । २ मजबूत ।

३ विपुल । अधिक । अत्यधिक । ४

५ स्निग्ध । चिकना । ६ मृदु ।

७ मनोहर । सुन्दर । खूबसूरत ।

गुच्छा । स्तवक । राशि । ढेर ।

१) शौडिक । कलवार । वह जो
बनाता हो । २ वह जो सन्धि करता
ले वाला ।

(पु०) परराष्ट्रप्रचिव । वह
अमात्य जिसके अधिकार में, अन्य
१, विग्रह, सुलह, जंग करना हो ।

०) [स्त्री०—सान्ध्या] सन्ध्या

०) [सान्हनिकी] १ कवच-
१ । अरहवस्त्र पहने हुए ।

ला हुआ हवन के लिये शाकल्य ।

सान्निध्य } (न०) १ नैक्य । सामीप्य । २ उपस्थिति
सान्निध्य } विद्यमानता ।

सान्निपातिक } (वि०) [स्त्री०—सान्निपातिकी] १
सान्निपातिक } फुदकल । २ उलझन डालने वाला ।

उलझा हुआ । ३ वह रोगी जिसके कफ, पित्त
और वायु गड़बड़ा गये हों ।

सान्ध्यातिकः (पु०) १ वह ब्राह्मण जो चतुर्थ
आश्रम अर्थात् संन्यासाश्रम में हो । २ कोई भी
भिषुक ।

सान्धय (वि०) पुरतनी । पैतृक ।

सापत्न (वि०) [स्त्री०—सापत्नी] सौत की कोख
से उत्पन्न या सौत सम्बन्धी ।

सापत्नाः (पु० बहु०) एक ही पति से कई एक
पत्नियों की कोख से उत्पन्न लड़के ।

सापत्न्य (न०) १ सौत की दशा । सौतियाभाव । २
प्रतिद्वन्द्वता । स्पर्धा । वैर भाव ।

सापत्न्यः (पु०) १ सौत का बेटा । २ शत्रु । बैरी ।

सापराध (वि०) अपराधी । मुजरिम ।

सर्पिड्यं } (न०) सर्पिड होने का भाव या धर्म ।
सर्पिड्यं }

सापेक्ष (वि०) अपेक्षित । अपेक्षा सहित ।

साप्तपद } (वि०) [स्त्री०—साप्तपदी] सात
साप्तपदी } पग चलने से अथवा सात वाक्य आपस
में कहने सुनने से उत्पन्न हुई मैत्री या सम्बन्ध ।

साप्तपदं (न०) १ भाँवर । फेरा । २ मैत्री । दोस्ती ।

साप्तपौरुष (वि०) [साप्तपौरुषी] सात पीढ़ी
तक या सात पीढ़ियों का ।

साफल्यं (न०) १ सफलता । कृतकार्यता । उपयोग-
गिता । २ लाभ । फायदा ।

सान्दी (स्त्री०) एक प्रकार के अंगूर ।

साम्यस्य (वि०) बारी । ईर्ष्यालु ।

साम् (धा० उ०) [सामयति—सामयते] शमन
करना । शान्त करना ।

सामर्क (न०) वह मूल धन जो ऋण स्वरूप लिया
या दिया गया हो ।

सामकः (पु०) सान धरने का पत्थर ।

सामग्री (स्त्री०) सामान । वे पदार्थ जिनका किसी कार्य विशेष में उपयोग होता है ।

सामग्र्यं (न०) १ समूचापन । पूर्णता । नितान्तता ।
२ नौकर । चाकर । अनुचरवर्ग । ३ सामान का ढेर या जखीरा । ४ भंडार । जखीरा ।

सामंजस्य (न०) १ संगति । मेल । मिलान । २ सामंजस्यं । शुद्धता । याथार्थ्य ।

सामन् (न०) १ शान्तिकरण । मुहिसाधन । २ राजाओं के लिये शत्रु को वश करने का उपाय विशेष । ३ कामजता । मृदुता (वाक्य सम्बन्धी) । ४ प्रशंसात्मक छंद या गान । ५ सामवेद का मंत्र । ६ सामवेद ।—उद्भवः, (पु०) हाथी ।—उपचारः,—उपायः, (पु०) शमन करने के साधन ।—गः, (पु०) सामवेदी ब्राह्मण या वह ब्राह्मण जो सामवेद का गान कर सके ।—ज,—जात, (वि०) १ सामवेद से उत्पन्न । २ शान्त साधनों से पैदा हुआ ।—जः,—जातः, (पु०) हाथी ।—योनिः, (पु०) १ ब्राह्मण । २ हाथी ।—षादः, (पु०) मृदुशब्द । मधुर शब्द ।—वेदः, (पु०) चार वेदों में तीसरा वेद ।

सामंत } (वि०) १ सीमावर्ती । समीपी । पड़ोस
सामन्त } का । २ सार्वजनिक ।

सामंत } (न०) १ पड़ोसी । २ पड़ोसी राजा ।
सामन्त } २ करदा राजा । ४ नामक ।

सामंतः } (पु०) पड़ोस ।
सामन्तः }

सामयिक (वि०) [स्त्री०—सामयिकी] १ रस्मी । रीति जो सदा से होती चली आयी हो । २ कौल-करार की हुई । ठहराई हुई । ३ ठीक समय का । ४ समय से । ५ समयानुसार । समय की दृष्टि से उपयुक्त । ६ समय सम्बन्धी । समय से सम्बन्ध रखने वाला । ७ अस्थायी । थोड़े समय के लिये ।

सामर्थ्य (न०) १ शक्ति । ताकत । योग्यता । २ उद्देश्य की समानता । ३ अर्थ या अभिप्राय की समानता या एकता । ४ उपयुक्तता । ५ शब्द की अर्थ बतलाने वाली शक्ति । ६ लाभ । स्वार्थ । ७ सम्पत्ति । धन दौलत ।

सामवायिक (वि०) [स्त्री०—सामवायिकी] समाज या समूह या कंपनी से सम्बन्ध युक्त । २ अटूट सम्बन्ध से सम्बन्ध रखने वाला ।

सामाजिक (वि०) [स्त्री०—सामाजिकी] समाज सम्बन्धी ।

सामाजिकः (पु०) किसी समाज का सदस्य ।

सामानाधिकरण्य (न०) एक ही पद पर दोनों का होना । समान या बराबर अधिकार । समानता का सम्बन्ध ।

सामान्य (वि०) १ साधारण । जिसमें कोई विशेषता न हो । मामूली । २ समान । बराबर का । ३ समानांश का । ४ तुल्य । नाधीन । ५ समूचा । समस्त ।—पक्षः, (पु०) मध्यम ।—लक्षणा, (स्त्री०) वह गुण जिसके अनुसार किसी एक सामान्य को देख कर उसी के अनुसार उस जाति के अन्य सब पदार्थों का ज्ञान प्राप्त होता है । किसी पदार्थ को देख, उस जाति के अन्य पदार्थों का बोध करा देने वाली शक्ति ।—चनिता, (स्त्री०)—शास्त्रं, (न०) साधारण नियम या विधान ।

सामान्यं (न०) १ सार्वजनिकता । २ सामान्य । लक्षण । ३ समूचापन । ४ क्रिस्म । प्रकार । ५ समता । एक स्वरूपत्व । ६ निर्विकार अवस्था । समता । धैर्य । ७ सार्वजनिक मामले । ८ सार्वजनिक प्रस्तावित विषय । ९ साहित्य में अलंकार विशेष । यह तब माना जाता है जब एक ही आकार की दो या अधिक ऐसी वस्तुओं का वर्णन होता है; जिनमें देखने में कुछ भी अन्तर नहीं जान पड़ता ।

सामासिक (वि०) [स्त्री०—सामासिकी] १ समूचा । समष्टि । २ संक्षिप्त । ३ सामासिक शब्द सम्बन्धी ।

सामासिकं (न०) सब प्रकार के समासों का संग्रह ।

सामि (अव्यया०) १ आधा । अधूरा । २ कलङ्की । तिरस्करणीय ।

सामिधेनी (स्त्री०) १ एक प्रकार का ऋक्मंत्र जिसका पाठ, होम का अग्नि प्रज्वलित करते समय अथवा हवन के अग्नि में समिधाएं छोड़ते समय किया जाता है । २ समिधा । ईंधन ।

सामीची (स्त्री०) प्रशंसा । स्तब । स्तुति ।

सामीप्यं (न०) समीप होने का भाव । निकटता ।

सामीप्यः (पु०) पड़ोसी । अन्तेवासी ।

सामुद्र (वि०) [स्त्री०—सामुद्री] समुद्र सम्भूता ।
समुद्र में उत्पन्न ।

सामुद्रं (न०) १ समुद्री निमक । २ समुद्र केन ।
३ शरीर का दाग वा चिह्न ।

सामुद्रः (पु०) समुद्र यात्री । समुद्री सफर करने
वाला ।

सामुद्रकं (न०) समुद्री लवण ।

सामुद्रिक (वि०) [स्त्री०—सामुद्रिकी] समुद्र में
उत्पन्न । समुद्र सम्भूत । शरीर के शुभाशुभ चिह्नों
सम्बन्धी ।

सामुद्रिकं (न०) हस्त रेखाओं से शुभाशुभ कहने
की विद्या ।

सामुद्रिकः (पु०) वह आदमी जो मनुष्य के शरीर
के चिह्नों या लक्षणों को देख उस मनुष्य को
शुभाशुभ फलों का विवेचन करे ।

सांपराय } (वि०) [स्त्री०—सांपरायी] १
साम्पराय } युद्ध सम्बन्धी । सामरिक । २ परलोक
सम्बन्धी । भविष्य ।

सांपरायं, (न०) } १ मुठभेड़ । लड़ाई । २
साम्परायं (न०) } भविष्य जीवन । भविष्य ।
सांपरायः (पु०) } ३ परलोक प्राप्ति के साधन ।
साम्परायः (पु०) } ४ भविष्य सम्बन्धिनी जिज्ञासा ।
५ जिज्ञासा । अनुसन्धान । ६ अनिरञ्जयता ।

सांपरायिक } (वि०) [स्त्री०—साम्परायिकी]
साम्परायिकी } १ युद्ध में काम आने वाला । २
सामारिक । ३ विपत्तिकारक । ४ परलोक सम्बन्धी ।
—कल्पः, (पु०) सैन्य व्यूह विशेष ।

सांपरायिकं } (न०) युद्ध । समर । लड़ाई ।
साम्परायिकं } जङ्ग ।

सांपरायिकः }
साम्परायिकः } (पु०) लड़ाई का रथ ।

सांप्रतिक } (वि०) [स्त्री०—साम्प्रतिकी] १ वर्तमान
साम्प्रतिक } समय सम्बन्धी । न्योम्य । उचित । ठीक ।

सांप्रदायिक } (वि०) [स्त्री०—सांप्रदायिकी]
साम्प्रदायिक } परंपरागत सिद्धान्त सम्बन्धी । परंपरा
गत प्राप्त । परंपरागत ।

सांवः }
साम्बः } (पु०) शिव का नामान्तर ।

सांवधिक } (वि०) [स्त्री०—साम्बन्धिकी]
साम्बन्धिक } सम्बन्ध से उत्पन्न ।

सांवधिकं } (न०) १ नातेदारी । रिश्तेदारी ।
साम्बन्धिकं } २ सन्धि द्वारा स्थापित मैत्री ।

सांवरी }
साम्बरी } (स्त्री०) माया ; जादूगरी । जादूगरनी ।

साम्भवी } (स्त्री०) १ लाल लोभ वृत्त । २
साम्भवी } सम्भावना ।

साम्यं (न०) १ समानता । एकता । समत्व ।
२ सादृश्य । ३ ऐकमत्य । ४ अपक्षपातित्व ।
साहमत्य ।

साम्राज्यं (न०) १ वह राज्य जिसके अधीन बहुत से
देश हों और जिसमें किसी एक सम्राट का शासन
हो । सार्वभौमराज्य । सत्ततन्त्र । २ आधिपत्य ।
पूर्ण अधिकार ।

सायः (पु०) १ समाप्ति । अन्त । २ दिन का अन्त ।
सन्ध्याकाल । तीर ।—अग्रहन्, (पु०)
(= सायाहः) सायंकाल ।

सायकः (पु०) १ तीर । २ तलवार ।—पुंल्लः,
तीर का वह भाग जिसमें पंख लगे होते हैं ।

सायंतन } (वि०) [स्त्री०—सायंतनी] सन्ध्या
सायन्तन } सम्बन्धी । सन्ध्या ।

सायम् (अव्यया०) सन्ध्याकाल में ।—कालः, (पु०)
सन्ध्याकाल ।—मराठनं, (न०) १ सूर्यास्त ।
२ सूर्य ।—सन्ध्या, (स्त्री०) सन्ध्या काल की
खाली । ३ सन्ध्या काल की भगवदुपासना ।

सायिन् (पु०) युद्धसवार ।

सायुज्यं (न०) १ एक में इस प्रकार मिल जाना कि
भेद न रहे । २ पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक
प्रकार का मोक्ष । इसमें जीवात्मा का परमात्मा
में लीन हो जाना माना गया है । ३ समानता ।
सादृश्य ।

सार (वि०) १ निष्कर्ष । निचोड़ । २ सर्वोत्तम ।
अत्युत्तम । ३ असली । सत्य । यथार्थ । ४ मज्जवृत्त ।
विक्रमी । ५ भलीभाँति सिद्ध किया हुआ ।
दृढ़ ।

सारं (न०) १ किसी पदार्थ का मूल, मुख्य या
सारः (पु०) १ काम का अथवा असली अंश ।

तत्त्व । सत् । २ मिनी । ३ गूदा । ४ वृत्त का
रस । ५ किसी ग्रन्थ का सार । निचोड़ । ६
शक्ति । ताकत । ७ श्रुता । ८ दृढ़ता । मज्जवृत्ती ।
९ धन । सम्पत्ति । १० अमृत । ११ ताज़ा
मक्खन । १२ हवा । पवन । १३ मलाई । १४
रोग । बीमारी । १५ पीप । मवाद । १६ उत्तमता ।
१७ शतरंज का मोहरा । १८ एक प्रकार का
अर्थालंकार जिसमें उत्तरोत्तर वस्तुओं का उत्कर्ष
या अपकर्ष वर्णित होता है ।

सारं (न०) १ जल । पानी । २ योग्यता । उपयुक्तता ।
३ वन । जंगल । ४ ईसपात लोहा ।—असार,
(वि०) मूल्यवान और निकम्मा । मज्जवृत्त और
कमजोर ।—असारं, (न०) सारता और
निस्सारता । २ पोषाण और खुखलापन । ३
ताकत और कमजोरी ।—गन्धः, (पु०) चन्दन
की लकड़ी ।—श्रीवः, (पु०) शिव ।—जं, (न०)
ताज़ा नवनीत ।—तदः, (पु०) केले का वृक्ष ।
—दा, (स्त्री०) १ सरस्वती देवी । २ दुर्गा
देवी ।—द्रुमः, (पु०) खदिर वृक्ष ।—भङ्गः
शक्ति का नाश ।—भाण्डः, (पु०) व्यापार
की बहुमूल्य वस्तु । २ सौदागरी माल की गाँठ ।
सौदागरी माल । ३ औज़ार ।—लोहं, (न०)
ईसपात लोहा ।

सारथं (न०) शहद ।

सारंग }
सारङ्ग } (वि०) [स्त्री०—सारंगी] चितकवरा ।
सारंगी } रंगविरंगा ।
सारङ्गी }

सारंगः } (पु०) १ रंगविरंगा रंग । २ चित्तल
सारङ्गः } हिरन । बारहसिंहा । ३ हिरन । मृग ।
४ शेर । ५ हाथी । ६ भैंरा । अमर । ७ कोकिल ।
८ बड़ा सारस । ९ लाल । लमहेक । १० मयूर ।

मोर । ११ छाता । १२ बादल । १३ वस्त्र । १४
बाल । १५ शङ्ख । १६ शिवजी । १७ कामदेव ।
१८ कमल । १९ कपूर । २० धनुष । कमान । २१
चन्दन । २२ वाद्ययंत्रविशेष । सारंगी । चिकारा ।
२३ आभूषण विशेष । २४ सुवर्ण । २५ पृथिवी ।
२६ रात्रि । २७ प्रकाश ।

सारंगिकः }
सारङ्गिकः } (पु०) विडीमार । बहेलिया ।

सारंगी } (स्त्री०) १ सारंगी । चित्तल हिरन ।
सारङ्गी }

सारण (वि०) [स्त्री०—सारणी] बहाने वाला ।
मेजने वाला ।

सारणं (न०) एक प्रकार की गंध या सहक ।

सारणः (पु०) १ दस्तों की बीमारी । अतीसार । २
आमड़ा । ३ आँवला ।

सारणा (स्त्री०) पारद आदि रसों का एक प्रकार का
संस्कार ।

सारणिः }
सारणी } (स्त्री०) १ छोटी नदी । २ नहर । नाली ।

सारंडः } (पु०) सर्प का अंडा ।
सारण्डः }

सारतस् (अव्यया०) १ धन के अनुसार । वित्तानुसार ।
२ विक्रम पूर्वक ।

सारथिः (पु०) १ रथवान । रथ हाँकने वाला । २
साथी । सहायक । ३ समुद्र ।

सारथ्यं (न०) रथवानी । कोचवानी ।

सारमेयः (पु०) कुत्ता ।

सारमेयी (स्त्री०) कुतिया ।

सारत्यं (न०) सरलता । सीधापन । ईमानदारी ।
सच्चाई ।

सारवत् (वि०) १ सारवान । उपजाऊ ।

सारस (वि०) [स्त्री०—सारसी] जलाशय सम्बन्धी ।
श्रील सम्बन्धी ।

सारसं (न०) १ कमल । २ स्त्री की कमर की कवचनी
या कमरबंद ।

सारसः (पु०) १ सारस । ईस । २ पक्षी । ३ चन्द्रमा ।

सारसनं } (न०) १ करवनी । पटुका । कमरपेटी ।
सारशनं } कमरबंद । २ सामरिक कमरबंद विशेष ।

सारस्वत (वि०) [स्त्री०—सारस्वती] १ सरस्वती
देवी सम्बन्धी । २ सरस्वती नदी सम्बन्धी । ३
वाक्पटु ।

सारस्वतं (न०) वाक्पटुता । भाषण । वाणी ।

सारस्वतः (पु०) १ सरस्वती नदी के तटवर्ती एक देश
विशेष का नाम । २ इस नाम की ब्राह्मण जाति
विशेष । ३ बेल को लकड़ी का दण्ड ।

सारस्वताः (पु० बहु०) सारस्वत देश वासी ।

सारालः (पु०) तिल्ली । तिल ।

सारिः } (स्त्री०) १ शतरंज का मोहरा । २ पक्षी
सारी } विशेष—फलकः, (पु०) शतरंज की
विज्ञात ।

सारिका (स्त्री०) मैना जाति की चिड़िया ।

सारिन् (वि०) [स्त्री०—सारिणी] १ जाने वाला ।
चलने वाला । २ सारवान् ।

सारूप्यं (न०) १ समान रूप होने का भाव । एक-
रूपता । सारूपता । २ पाँच प्रकार की मुक्तियों में
से एक प्रकार की मुक्ति । इसमें उपासक अपने
उपास्य देव के रूप में रहता है और अन्त में उसी
उपास्य देवता का रूप प्राप्त करता है । ३ नाटक
में शङ्क मिलती जुलती होने के कारण किसी के
धोखे में किसी की क्रोधावेश में भ्रमना ।

सारोष्ठिकः (पु०) विष विशेष ।

सार्गल (वि०) रोका हुआ । अवरोद्ध । अड़चन डाला
हुआ ।

सार्थ (वि०) १ अर्थसहित । २ वह जिसका कोई
उद्देश्य हो । ३ एक ही अर्थ वाला । समानार्थक ।
४ उपयोगी । काम लायक । ५ धनी । धनवान् ।

सार्थः (पु०) १ धनी आदमी । २ यात्री । सौदागरों
की टोली । (काफिला) । ३ टोली । दल । ४
(एक जाति के पशुओं का) हेड़ । रौहर । गल्ला ।
५ समुदाय । समूह । ६ तीर्थ यात्रियों की टोलियों
में से एक ।—ज, (वि०) वह जो यात्री सौदागरों

की टोली या काफिले में पालापोसा हुआ हो ।—
वाहः, (पु०) यात्रीव्यापारी । दल का नेता या
नायक । व्यापारी । सौदागर ।

सार्थक (वि०) १ अर्थवाला । अर्थ सहित । २
उपयोगी । काम का । मुकीद । लाभप्रद ।

सार्थवत् (वि०) १ अर्थ वाला । अर्थ सहित । २
बड़े समुदाय या समूह वाला ।

सार्थिकः (पु०) व्यापारी । सौदागर ।

सार्द्र (वि०) भींगा । तर । सील वाला । तर्ग वाला ।
नम ।

सार्ध (वि०) ज्योंही ।

सार्धम् (अव्यय०) सहित । साथ । समेत ।

सार्पः । (पु०) आश्लेषा नक्षत्र ।
सार्प्यः । (पु०) आश्लेषा नक्षत्र ।

सार्पिय (वि०) [स्त्री०—सार्पिणी] } बी में रौंधा
सार्पिक (वि०) [स्त्री०—सार्पिका] } हुआ । घी
में तला हुआ । बी मिश्रित ।

सार्धकामिक (वि०) [स्त्री०—सार्धकामिकी] हर
प्रकार की समस्त कामनाओं को पूरा करने वाला ।

सार्धजनिक (वि०) [स्त्री०—सार्धजनिकी] } सर्व-
सार्धजनीन (वि०) [स्त्री०—सार्धजनीनी] } आधा-
रण सम्बन्धी । आम । पबलिक का ।

सार्धशं (न०) सर्वज्ञता ।

सार्धत्रिक (वि०) [स्त्री०—सार्धत्रिकी] हर स्थान
का । सर्वत्र से सम्बन्ध रखने वाला ।

सार्धधातुक (वि०) [स्त्री०—सार्धधातुकी] सब
धातुओं में व्यवहृत होने वाला ।

सार्धभौतिक (वि०) [स्त्री०—सार्धभौतिकी] १ हरेक
तत्व या प्राणी से सम्बन्ध रखने वाला । २ जिसमें
समस्त प्राणधारी सम्मिलित हों ।

सार्धभौम (वि०) [स्त्री०—सार्धभौमी] समस्त
भूमि सम्बन्धी । सम्पूर्ण भूमि की ।

सार्धभौमः (पु०) १ सम्राट् । चक्रवर्ती राजा ।
शाहंशाह । २ उत्तर दिशा का दिक्पुञ्ज ।

सार्धलौकिक (वि०) [स्त्री०—सार्धलौकिकी]
सर्वसंसार में व्याप्त

सार्वर्णिक (वि०) [स्त्री०—सार्वर्णिकी] १
हर प्रकार का । हर तरह का । हर जाति का । हर
वर्ण का ।

सार्वविभक्तिक (वि०) [स्त्री०—सार्वविभक्तिकी]
सब विभक्तियों में लगने वाला । सब विभक्ति
सम्बन्धी ।

सार्ववेदसः (पु०) अपना समस्त द्रव्य यज्ञ की
दक्षिणा अथवा अन्य किसी वैसे ही धर्मानुष्ठान
में दे डालने वाला ।

सार्ववेद्यः (पु०) वह ब्राह्मण जो सब वेदों का जानने
वाला हो ।

सार्षप (वि०) [स्त्री०—सार्षपी] सरसों का बना
हुआ ।

सार्षपं (न०) सरसों का तेल । कडुआ तेल ।

सार्ष्टि (वि०) समान पद या अधिकार वाला । समान
पदवी वाला ।

सार्ष्टिता (स्त्री०) १ पद या अधिकार में समानता
या तुल्यता । पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक
प्रकार की मुक्ति ।

सार्ष्ट्य (न०) चौथे दर्जे की मुक्ति ।

सालः (पु०) १ साल नाम का वृक्ष । उसकी राल ।
२ वृक्ष । ३ किसी भवन के चारों ओर की परकोटे
की दीवारें या झारदीवारी । ४ दीवाल । ५ मछली
विशेष ।

सालनः (पु०) साल वृक्ष की राल ।

साला (स्त्री०) १ दीवाल । झारदीवाली । २ मकान ।
कमरा । कोठा । कोठरी । -करी, १ वह
कारीगर जो अपने घर ही में काम करे । २
पुरुषत्रैदी (विशेषकर युद्धक्षेत्र में पकड़ा हुआ) ।

सालारं (न०) दीवाल में जड़ी हुई और बाहर
निकली हुई खैदी ।

सालूरः (पु०) मेंढक ।

सालेयं (न०) सौंफ या सोए जैसा पदार्थ विशेष ।

सालोक्यं (न०) १ दूसरे के साथ एक ही लोक या
स्थान में निवास । २ पाँच प्रकार की मुक्तियों में

से एक । इसमें मुक्तजीव भगवान् के साथ अथवा
अपने अन्य आराध्य देव के साथ एक ही लोक में
वास करता है । सलोकता ।

साल्वः (पु०) १ देश विशेष । २ एक दैत्य जिसे
विष्णु भगवान् ने मारा था ।—हन्, (पु०)
विष्णु भगवान् ।

माल्विकः (पु०) सारिका (मैना) नामक पक्षी ।

सावः (पु०) देवता या पितृ के उद्देश्य से दिया हुआ
जल मयादि का दान ।

सावक (वि०) [स्त्री० साविका] उपजाऊ ।
उत्पादक ।

सावकः (पु०) शावक । किसी भी जानवर का बच्चा ।

सावकाश (वि०) वह जिसको अवकाश हो । अवकाश
के समय का । खाली । निटुला । ठलुआ ।

सावग्रह (वि०) अवग्रह चिह्न वाला ।

सावज्ञ (वि०) वृत्त्य । निन्द्य । तिरस्करणीय ।

सावद्यं (न०) ऐश्वर्य । तीन प्रकार की योग-शक्तियों
में से एक । यह योगियों को प्राप्त होती है । अन्य
दो शक्तियों के नाम “निरवद्य” और “सूक्ष्म” हैं ।

सावधान (वि०) १ सचेत । सतर्क । होशियार ।
सजग । चौकस । २ चौकजा । खबरदार । ३ बुद्धि-
मान् ।

सावधि (वि०) सीमा सहित । सीमाबद्ध । मर्यादित ।
सान्त ।

सावनी (वि०) [स्त्री०—सावनी] तीन सवनों वाला ।
तीन सवनों से सम्बन्ध रखने वाला ।

सावनः (पु०) १ यज्ञमान । यज्ञकर्ता । यज्ञ कराने
के लिये ऋत्विक्, होता आदि नियत करने वाला ।
यज्ञ की समाप्ति । वह कर्म विशेष जिसके द्वारा यज्ञ
समाप्त किया जाता है । ३ वरुण । ४ तीस दिवस
का सौर्यमास । ५ सूर्योदय से सूर्यास्त तक का
मामूली दिन या दिनमान । ६० दण्ड का
समय । ६ वर्ष विशेष ।

सावयव (वि०) अवयवों या अंगों या भागों से बना
हुआ ।

सावरः (पु०) १ अपराध । जुर्म । २ पाप । गुनाह ।
दुष्टता । ३ लोभ का पेड़ ।

सावर्णा (वि०) १ गुह्य । गोप्त । छिपा हुआ । २
ढका हुआ । मुँदा हुआ । बंद ।

सावर्ण (वि०) [स्त्री०—सावर्णी] एक ही रंग, नस्ल
या जाति का । एक ही रंग, नस्ल या जाति से
सम्बन्ध रखने वाला ।

सावर्णाः (पु०) आठवें मनु जो सूर्य के पुत्र थे ।

सावर्ण्य (न०) १ रंग की समानता । इकरंगापन ।
२ श्रेणी या जाति की एकरूपता । ३ सावर्णिमनु
का मन्वन्तर ।

सावलेप (वि०) अभिमानी । अकड़बाज़ । धमंडी ।

सावलेपं (अव्यया०) अभिमान से । क्रोध से । अकड़-
बाज़ी से ।

सावशेष (वि०) १ वह जिसमें कुछ शेष हो । अव-
शिष्ट । २ अपूर्ण । अधूरा ।

सावर्षभ (वि०) हड़ता से । मज़बूती से । सोल्साह ।
हिम्मत के साथ ।

सावहेल (वि०) घृण्य । निन्द्य । तिरस्करणीय ।

सावहेलं (अव्यया०) घृणा के साथ । तिरस्कार के
साथ ।

साधिका (स्त्री०) दाई ।

साधित्र (वि०) [स्त्री०—साधित्री] १ सूर्य सम्बन्धी ।
२ सूर्यवंशी । ३ गायत्री सहित ।

साधित्रं (न०) यज्ञसूत्र । यज्ञोपवीत ।

साधित्रः (पु०) १ सूर्य । २ गर्भ । गर्भ की क्लिष्टी ।
३ ब्राह्मण । ४ शिव । ५ कर्ण ।

साधित्री (स्त्री०) १ किरण । २ ऋग्वेद का स्वनाम-
ख्यात मंत्र विशेष । गायत्री मंत्र । ३ यज्ञोपवीत
संस्कार । ४ ब्राह्मणी । ५ पार्वती । ६ कश्यप की
एक पत्नी का नाम । ७ साख्य देशाधिपति सत्यवान
की पत्नी का नाम ।—पतितः, —परिभ्रष्टः
(पु०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य वर्ण का वह
पुरुष, जिसका उपनयन-संस्कार निर्दिष्ट समय पर
न हुआ हो । ब्राह्म्य ।—व्रतं, (न०) व्रत विशेष ।

यह व्रत वे स्त्रियाँ रखती हैं, जो अपने पति की
दीर्घायु की कामना रखने वाली होती हैं । यह व्रत
ज्येष्ठ कृष्ण १४ को रखा जाता है । इस व्रत की
रखने वाली स्त्रियाँ विधवा नहीं होतीं ।

साविष्कार (वि०) १ अनिमानी । क्रोधी । २
प्रादुर्भूत ।

साशंस (वि०) आशावान । कामना से पूर्ण ।

साशंक } (वि०) भयभीत । डरा हुआ ।
साशङ्क }

साशयन्दकः } (पु०) छपकली । बिसतुइया ।
साशयन्दकः }

साशूकः (पु०) कंबल ।

साश्चर्य (वि०) १ अद्भुत । विलक्षण । २ आश्चर्य-
चकित ।

साश्च } (वि०) १ कोण वाला । जिसमें कोण हों ।
साश्च } २ रोता हुआ । आँखों में आँसू भरे हुए ।

साश्रुधी (स्त्री०) सास । पत्नी अथवा पति की
माता ।

साष्टांगम् } (न०) अष्टाङ्ग प्रणाम । [अष्टाङ्ग थे
साष्टाङ्ग } हैं :—सरतक, हाथ, पैर, छाती, आँख,
जाँव, वचन और मन । इन सहित भूमि पर जेट
कर प्रणाम करना ।]

सास (वि०) धनुर्धारी ।

सासुस् (वि०) तीरों वाला ।

सासूय (वि०) डाही । ईर्ष्यालु ।

सास्ना (स्त्री०) गौ आदि का गलकंबल ।

साहचर्य (न०) सहचारता । सहवर्तित्व ।

साहनं (न०) सहनशीलता । सहिष्णुता ।

साहसं (न०) १ ज़बरदस्ती । बरजोरी । लूटना । २
कोई बुरा काम जैसे लूपाट, बलात्कार आदि ।
३ बेरहमी । नृशंसता । ४ हिम्मत । जुर्नत । ५
बेसमझे बूझे काम कर बैठना । ६ सज़ा । दण्ड ।
जुर्माना । अर्थदण्ड ।—अशङ्कः, (पु०) विक्रमा-
दित्य का नामान्तर ।—अप्यवसायिन्, (वि०)
बेसमझे बूझे सहसा हड़बड़ी में काम कर बैठने
वाला ।—ऐकरसिक, (वि०) खूंखार ।

अयानक । पाशविक ।—कारिन्, (वि०) १ साहसी । २ दुस्साहसी । अशिवेकी ।
 साहसिक (वि०) [स्त्री०—साहसिकी] १ पाशविक । लुटेरा । २ हिम्मतवर । पराक्रमी । ३ दण्ड देने वाला ।
 साहसिकः (पु०) १ पराक्रमी पुरुष । २ प्रचण्ड या उन्मत्त व्यक्ति । ३ चोर । डाँकू । लुटेरा ।
 साहसिन् (वि०) १ प्रचण्ड । अयानक । नृशंस । २ साहसी । पराक्रमी ।
 साहस्र [स्त्री०—साहस्री] १ हजार सम्बन्धी । २ जिसमें एक हजार हो । ३ एक हजार में खरीदा हुआ । ४ प्रति सहस्र के हिसाब से दिया हुआ (सूद) ५ सहस्र गुना ।
 साहस्रं (न०) एक हजार का जोड़ ।
 साहस्रः (पु०) सैनिक टोली जिसमें एक सहस्र सैनिक हों ।
 साहायकं (न०) १ सहायता । मदद । २ सहचरत्व । मैत्री । ३ सहायक सैन्य ।
 साहाय्यं (न०) १ सहायता । मदद । २ मैत्री । दोस्ती ।
 साहित्यं (न०) १ एकत्र होना । मिलन । समुदाय । समूह । सभा । २ गद्य और पद्य सब प्रकार के उन ग्रन्थों का समूह, जिनमें सार्वजनिक हित सम्बन्धी स्थायी विचार रचित रहते हैं ।
 साहा (न०) १ संयोग । संगम । मेल । मिलाप । समुदाय । २ सहायता । मदद ।—कृत, (पु०) साथी । सखा ।
 साहयः (पु०) जानवरों की लड़ाई का जुआ या धूत ।
 सि (धा० उ०) [सिनोति, सिनुते, सिनाति, सिनीते] १ बाँधना । २ जाल में फँसाना । फँदे में फसाना ।
 सिंहः (पु०) १ शेर । २ सिंहराशि । ३ सर्वोत्तमता । सर्वोत्कृष्टता । (यथा पुरुषसिंहः) —अवलोकनं, (न०) १ शेर की चितवन । २ शेर की तरह

पीछे देखते हुए आगे बढ़ना । ३ आगे वर्णन करने के पूर्व पिछली बातों का संक्षेप में वर्णन ।
 —अवलोकनः, (पु०) रतिबन्ध । स्त्रीमैथुन का दण्ड विशेष ।—आस्यः, (पु०) हाथों की मुद्रा विशेष ।—गाः, (पु०) शिव जी का नाम ।—तलं, (न०) हाथों की मिली और खुली हुई दोनों हथेली ।—तुरङ्गः, (पु०) १ एक प्रकार की मछली । २ सेहूँड़ । स्तुही । धूँड़ ।—दंष्ट्रः, (पु०) शिव जी का नामान्तर ।—दर्प, (वि०) सिंह जैसा अभिमानी ।—ध्वनिः—नादः, (पु०) १ सिंह की दहाड़ या गर्जन । २ युद्ध की ललकार ।—द्वारं, (न०) मुख्य द्वार या दरवाजा । सदर फाटक ।—वाहनः, (पु०) शिवजी की उपाधि ।—संहनन, (वि०) १ सिंह जैसा मजबूत । सुन्दर । खूबसूरत ।—संहननं, (न०) सिंह का वध ।

सिंहलं (न०) १ दीन । जस्ता । २ पीतल । ३ झाल । ४ लंका द्वीप ।

सिंहलकं (न०) लंका का टापू ।

सिंहलाः (पु० ब०) सिंहल । (लंका) द्वीप निवासी लोग ।

सिंहाणां } १ लोहे का मोर्चा । २ नाक का मल या
 सिंहानं } रद्द ।

सिंहिका (स्त्री०) राहु की माता ।—तनयः,—पुत्रः,—सुतः,—सुनुः, (पु०) राहु का नामान्तर ।

सिंही (स्त्री०) १ सिंघिन । २ राहु की माता का नाम ।

सिकता (स्त्री०) १ रेतीली भूमि । २ रेल । बालू । ३ प्रमेह का एक भेद ।

सिकतिल (वि०) रेतीली ।

सिक (ब० कृ०) १ जल से सींचा हुआ । तर । नम । ३ गीला ।

सिक्थं (न०) १ मधुमक्षिका का मोम । २ नील ।

सिक्थः (पु०) १ भात । २ भात का पिंड ।

सिद्धः (पु०) सफटिक । शीशा ।

सिध्दा } (न०) १ नाक का मैल । २ लोहे का
सिध्दा } मोर्चा ।

सिध्दा (स्त्री०) नाक ।

सिद्ध (धा० उ०) [सिद्धति-सिद्धते, सिक्त] १
छिड़कना । २ पानी देना । नम करना । ३
उदेलना ।

सिद्धयः } (पु०) कपड़ा ।
सिद्धयः }

सिद्धिता } (स्त्री०) पिपरा मूल ।
सिद्धिता }

सिद्धा } (स्त्री०) आभूषणों की झनकार ।
सिद्धा }

सिद्धितं } (न०) झनकार ।
सिद्धितं }

सिद्ध (धा० प०) [सिद्धति] तिरस्कार करना ।
हिकारत करना ।

सित (वि०) १ सफेद । २ बँधा हुआ । ३ धिरा
हुआ । ४ सम्पूर्ण किया हुआ । समाप्त किया हुआ ।
—अग्रः, (पु०) काँटा ।—अग्रङ्गः, (पु०)
मयूर ।—अग्रः, (पु०)—अग्रं, (न०)
कपूर ।—अम्बरः, (पु०) श्वेताम्बरी साधू ।
—अर्जकः, (पु०) सफेद तुलसी ।—अश्वः,
(पु०) अर्जुन ।—असितः, (पु०) बलराम ।
—आदिः, (पु०) गुड़ । शीरा ।—आलिका,
(स्त्री०) ताल की सीपी । जलसीप ।—इतर,
(वि०) कृष्ण । काला ।—उद्भवः, (न०)
सफेद चन्दन ।—उपलः (पु०) बिल्लौर ।
फटिक ।—उपला, (स्त्री०) मिश्री ।—करः,
(पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—धातुः, (पु०)
खड़ी मिट्टी ।—रश्मिः, (पु०) चन्द्रमा ।
—वाजिन, (पु०) अर्जुन ।—शर्करा,
(स्त्री०) मिश्री ।—शिल्पिकः, (पु०) गेहूँ ।
—शिवः, (न०) सेंधा निमक ।—शूकः,
(पु०) जवा । जौ ।

सितं (न०) १ चाँदी । २ चन्दन । ३ सूखी ।
सुराई ।

सितः (पु०) १ सफेद रंग । २ शुद्धपत्र । ३ शुद्ध
ग्रह । ४ तीर ।

सिता (स्त्री०) १ मिश्री । चीनी । २ सुन्दाई । ३
सुन्दरी स्त्री । ४ शराब । मदिरा । ५ सफेद दूध
वास । ६ मल्लिका । मोतिया ।

सिति (वि०) १ सफेद । काला ।

सितिः (पु०) सफेद या काला रङ्ग ।

सिद्ध (व० क०) १ जिसका साधन हो चुका हो ।
जो पूरा हो गया हो । जो किया जा चुका हो ।
सम्पन्न । सम्पादित । २ प्राप्त । उपलब्ध । ३
सफल । ४ स्थापित । बसा हुआ । निश्चय किया
हुआ । ५ वैद्य । इह । न्याय । ७ सत्य माना
हुआ । ८ फैसला किया हुआ । ९ अदा किया हुआ ।
खुदता हुआ । १० रोंधा हुआ । ११ पक्का ।
पका हुआ । निश्चित किया हुआ । १२ तैयार ।
१३ दमन किया हुआ । १४ बरीभूत किया हुआ ।
१५ निपुण । पटु । १६ प्राथश्चित्त द्वारा पवित्र
किया हुआ । १७ अधीनता से मुक्त किया हुआ ।
१८ अलौकिक शक्ति सम्पन्न । १९ पवित्र । २०
दैवी । अनादि । अविनाशी । २१ प्रसिद्ध ।
प्रख्यात । २२ चमकीला । प्रकाशमान ।—अन्तः,
(पु०) १ भलीभाँति सोच विचार कर स्थिर किया
हुआ मत । उसूल । २ वह बात जो विद्वानों द्वारा
सत्य मानी जाती हो । मत । ३ निर्णयित अर्थ या
विषय । नतीजा । सत्य की बात ।—अर्थः, (न०)
रोंधा हुआ अर्थ ।—अर्थः, (वि०) वह जिसका अनीष्ट
सिद्ध हो चुका हो ।—अर्थः, (पु०) १ सफेद
सरसों । २ शिव जी का नामान्तर । ३ बुद्ध देव ।—
आसनं (न०) दृढ़ योग के ८४ आसनों में से एक
प्रधान आसन ।—गङ्गा,—नदी (स्त्री०)—
सिन्धुः (पु०) आकाशगङ्गा ।—ग्रहः, (पु०)
उन्माद विशेष ।—जलं, (न०) खट्टी काँजी ।
—धातुः, (पु०) पारा ।—पद्मः, (पु०)
किसी प्रतिज्ञा या बात का वह अंश जो प्रमाणित
हो चुका हो । २ साबित बात ।—प्रयोजनः,
(पु०) सफेद सरसों ।—योगिनः, (पु०)
शिव ।—रसः, (वि०) खनिज । खान का ।
—रसः, (पु०) १ पारा । २ सिद्ध रसायनी ।
—सङ्कल्पः, (वि०) जिसको सब कामनाएँ
पूरी हो चुकी हों ।—सेनः, (पु०) कार्तिकेय

का नाम ।—स्थाली, (स्त्री०) सिद्ध योगियों की बटखोई ।

सिद्धं (न०) समुद्री निमक ।

सिद्धः (पुं०) १ देवयोगि विशेष । २ दैवी शक्ति सम्पन्न । करामाती । ऋषि या महात्मा । ३ ऋषि । देवदूत । फरिश्ता । ४ ऐन्द्रजालिक । जादूगर । ५ अभियोग । फौजदारी मामला । दीवानी मुकदमा । ६ शुद्ध ।

सिद्धता (स्त्री०) } १ सिद्ध होने की अवस्था । २ सिद्धत्व (न०) } प्रामाणिकता । सिद्ध । ३ पूर्णता ।

सिद्धिः (स्त्री०) १ काम का पूरा होना । २ सफलता । कृतकार्यता । ३ संस्थापन । प्रतिष्ठा । आवास । ४ प्रमाण । विवाद रहित परिणाम । ५ किसी नियम या विधान का वैधत्व । ६ निर्णय । फैसला । निपटारा । ७ निश्चय । सत्यता । शुद्धता । ८ परिशोध । बेबाकी । चुकता होना । ९ पकना । सीकना । १० किसी प्रश्न का हल होना । ११ तत्परता । १२ नितान्त विशुद्धता । १३ अलौकिक सिद्धियाँ जो गणना में आठ हैं । [यथा:—

अग्निमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा ।
हृशिवं च वशिवं च तथा कामावसायिता ॥]
१४ ऐन्द्रजालिक विद्या द्वारा अलौकिक शक्तियों की प्राप्ति । १५ विलक्षण नैपुण्य । १६ अच्छा प्रभाव या फल । १७ मोक्ष । मुक्ति । १८ समझदारी । बुद्धि । १९ छिपाव । दुराव । अपने आपको अन्तर्धान करने की क्रिया । २० जादू की खड़ाई या जूती । २१ एक प्रकार का योग । २२ दुर्गा का नाम ।—द, (वि०) सिद्धि देने वाला ।—दः, (पु०) शिव जी का नाम ।—दात्री, (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।—योगः, ज्योतिष विद्या के अनुसार शुभ काल विशेष ।

सिध् (धा० प०) [सिध्यति, सिद्ध] १ सिद्ध करना । पूरा करना । २ सफल होना । ३ पहुँचना । ४ अभीष्ट प्राप्त करना । ५ सावित करना । ६ तैकरना । ७ रौंधना । पकाना । ८ जीतना । विजय प्राप्त करना ।

सिध्मं } (न०) १ चट्टा । ददोरा । चकता । २ सिध्मन् } कोढ़ । ३ कोढ़ का दाग ।

सिध्मल (वि०) १ सेंहुण वाला । झींटा रोग वाला । कोबी ।

सिध्मा (स्त्री०) १ चट्टा । ददोरा । कोढ़ का दाग । २ कोढ़ ।

सिध्यः (पु०) पुष्य नक्षत्र ।

सिध्नः (पु०) १ साधु पुरुष । २ वृक्ष । पेड़ ।

सिध्नकावणं (न०) स्वर्ग के बाराँ में से एक बाग का नाम ।

सिन्नः (पु०) गस्ता । कवर । निवाला ।

सिनी (स्त्री०) गौरवर्ण की स्त्री ।

सिनीवाली (स्त्री०) १ शुक्लपत्र की प्रतिपदा ।

सिन्धुकः }
सिन्धुकः } (पु०) सँभालू वृक्ष । निर्गुण्डी का
सिन्धुवारः } पेड़ ।
सिन्धुवारः }

सिन्दूरः } (न०) ईंगुर । सेंदुर ।
सिन्दूरः }

सिन्दूरः } (पु०) बलुत की जाति का एक पहाड़ी
सिन्दूरः } वृक्ष ।

सिन्धुः } (वि०) १ समुद्र । सागर । २ सिन्धुनद ।
सिन्धुः } ३ सिन्धुनदी के आसपास का देश । ४

मालवा की एक नदी का नाम । ५ हाथी की सूँठ से निकला हुआ पानी । ६ हाथी का मद । ७ हाथी । (पु०) सिन्धु देशवासी । (स्त्री०) बड़ी नदी ।—ज, (वि०) १ नदी से उत्पन्न । २ समुद्र से उत्पन्न । ३ सिन्धु देश में उत्पन्न ।—जः, (पु०) चन्द्रमा ।—जं, (न०) संधा निमक ।—नाथः, (पु०) समुद्र ।

सिन्धुकः }
सिन्धुकः } (पु०) सँभालू वृक्ष । निर्गुण्डी का
सिन्धुवारः } पेड़ ।
सिन्धुवारः }

सिन्धुरः } (पु०) हाथी ।
सिन्धुरः }

सिन्ध् (धा० प०) [सिन्धति] भिंगाना । तर करना ।

सिप्रः (पु०) १ पसीना । २ चन्द्रमा ।

सिप्रा (स्त्री०) १ स्त्री की करधनी । कमरपेटी । २
भैंस । ३ उज्जैन के नीचे बहने वाली नदी ।

सिम (वि०) हरेक । सब । तमाम । समूचा ।

मिरः (पु०) पिपरामूल की जड़ ।

सिरा (स्त्री०) १ रक्त नाड़ी । २ डोलची । बाल्टी ।

सिष् (धा० प०) [सीव्यति, स्यूत] १ सीना । २
जोड़ना ।

सिवरः (पु०) हाथी ।

सिषाधयिषा (स्त्री०) १ किसी काम को पूरा करने
की इच्छा । २ किसी बात को सिद्ध करने या
स्थापित करने की अभिलाषा ।

सिसृद्धा (स्त्री०) सृष्टि करने की अभिलाषा ।

सिहुंडः } (पु०) सेंहुड़ । यूहर ।
सिहुगडः }

सिहः } (पु०) शिलारस
सिहकः }

सिहकी } (स्त्री०) शिलारस का पेड़ ।
सिह्नी }

सिक् (धा० आ०) [सीकते] १ झिड़कना । २
जाना । चलना । [उ०—सीकति, सीकयति,
सीकयते] १ उतावला होना । २ धीरज धरना ।
३ कृना ।

सीकरः (पु०) जलकण । पानी की फुआर । झोंट ।

सीता (स्त्री०) १ वह रेखा जो ज़मीन जोतते समय
हल की फाल के धंसने से ज़मीन पर बन जाती है।
कूँड़ । २ जोती हुई ज़मीन । ३ किस्ती । खेती ।
४ जनक की पुत्री और श्रीरामचन्द्र जी की
भार्या । ५ एक देवी जो इन्द्र की पत्नी हैं । ६
उमा का नाम । ७ लक्ष्मी का नाम । ८ आकाश-
गंगा की उन चार धाराओं में से एक, जो मेरु पर्वत
पर गिरने के उपरान्त हो जाती है । ९ मदिरा ।
शराब ।

सीतानकः (पु०) मटर ।

सीत्कारः (पु०) } सिसकारी । सी सी शब्द ।
सीत्कतिः (स्त्री०) }

सीत्य (वि०) हल से माँपा हुआ ।

सीत्यं (न०) चावल । अनाज ।

सोद्यं (न०) काहिली । सुस्ती । दीर्घमूत्रता ।

सीधु (पु०) गुड़ की शराब ।—गन्धः, (पु०)
वकुल वृक्ष ।—पुष्पः, (पु०) कदंब का पेड़ ।—
रसः, (पु०) आम का पेड़ ।—संज्ञः, (पु०)
वकुल वृक्ष ।

सीध्रं (न०) गुदा । मलद्वार ।

सीपः (पु०) नावनुमा यज्ञीय पात्र विशेष ।

सीमन् (स्त्री०) १ सीमा । २ अण्डकोष ।

सीमंतः } (पु०) १ सीमा का चिह्न या रेखा । २
सीमन्तः } सिर के केशों की माँग । ३ एक वैदिक
संस्कार जो प्रथम गर्भस्थिति के चौथे, छठे या
अष्टम मास में किया जाता है ।

सीमंतकः } (पु०) १ जैनियों के सात नरकों में
सीमन्तकः } से एक नरक का अधिपति । २ नरक
विशेष का रहने वाला ।

सीमंतयति } (क्रि०) १ बालों की तरह विभा-
सीमन्तयति } जित करना । २ रेखा से अलग करना
या चिह्नित करना ।

सीमंतित } (वि०) १ माँग की तरह अलहदा
सीमन्तित } किया हुआ । २ रेखा से पृथक् या चिह्नित
किया हुआ ।

सीमंतनी } (स्त्री०) नारी । औरत । स्त्री ।
सीमन्तिनी }

सीमा (स्त्री०) १ हृद । सरहद । मर्यादा । २ सीमा
चिह्न । सीमास्वरूप । ३ चिह्न । सीमा का
निशान । ४ तट । समुद्रतट । ५ अन्तरिक्ष । ६
(जैसा कि खोपड़ी का) जोड़ । ७ सदाचार या
शिष्टाचार की मर्यादा । ८ सर्वोच्च या दूरतितूर
की हृद । ९ खेत । क्षेत्र । १० गर्दन का पिछला
भाग । ११ अण्डकोष ।—अधिपः, (पु०)
सीमा से मिले हुए राज्य का राजा । पड़ोसी
राजा ।—अन्तः, (पु०) सीमा की रेखा । सीमा
चिह्न ।—उल्लङ्घनं, (न०) १ मर्यादा तोड़ना ।
२ सीमा नाँधना । सरहद के बाहर जाना ।—
लिङ्गं, (न०) सीमा का निशान ।—वाद्ः,
सरहद निश्चय सम्बन्धी बग़ावत ।—विनिर्णयः,

(पु०) विवादग्रस्त सीमा का निर्याय ।—वृद्धः,
(पु०) सीमा पर का पेड़ जो सीमा का चिह्न
मान लिया गया हो ।—सन्धिः, (पु०) दो
सीमाओं का मिलान या मेल ।

सीमिकः (पु०) १ वृक्ष विशेष । २ दीमक । ३
दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर ।

सीरः (पु०) १ हल । २ सूर्य । ३ मदार का पौधा ।
—ध्वजः, (पु०) राजा जनक की उपाधि ।
—पाणिः, —भृत्, (पु०) बलराम ।—योगः,
(पु०) पशु को हल में जोतना ।

सीरकः (पु०) देखो सीर ।

सीरिन् (पु०) बलरामजी का नामान्तर ।

सीलदः
सीलन्दः
सीलथः
सीलन्धः

(पु०) एक प्रकार की मछली ।

सीव् देखो सिव्,

सीवनं (न०) १ सिंथन । सिलाई । २ जोड़ (जैसे
लोपड़ी का) ।

सीदनी (स्त्री०) १ सुई । सूची । २ वह रेखा जो
लिंग के नीचे से गुदा तक जाती है ।

सीसं
सीसकं
सीसपत्रकं

(न०) सीसा नामक धातु ।

सीहुंडः
सीहुण्डः

(उ०) सेंहुड । थूहर ।

सु (धा० उ०) [सुवति, सुषते] (धा० प०)
[सुवति-सौति] अधिकार रखना । सर्वप्रधानत्व
रखना । [उ०—सुनोति, सुनते, सुत] १
दबा कर रस निकालना । २ अर्क खींचना । ३
छिड़कना । छिटकाना । ४ यज्ञ करना, विशेष कर
सोम यज्ञ । ५ स्नान करना ।

सु (अव्यया०) यह एक अव्यय है जो संज्ञावाची
शब्दों के साथ कर्मधारय और बहुव्रीहि समासों
में तथा विशेषणवाची पूर्व क्रिया विशेषणवाची
शब्दों के साथ व्यवहृत किया जाता है । सु के
निम्न लिखित अर्थ होते हैं:—

१ अच्छा । भला । सर्वोत्तम । यथा सुगन्धि ।
२ सुन्दर । सुस्वरूप । मनोहर । यथा सुकेशी ।
३ भली भाँति । पूरी तौर पर । यथा सुजीर्ण ।
४ सहज । तुरन्त । यथा सुकर या सुलभ ।
५ अधिक । अत्यधिक । यथा सुदारुण ।—अज्ञ,
(वि०) अच्छी आँखों वाला ।—अज्ञः, (वि०)
खुबसूरत । सुन्दर । —आकर, —आकृति,
(वि०) सुन्दर । मनोहर । खुबसूरत ।—
आभास, (वि०) बड़ा चमकीला ।—इष्ट,
(वि०) उपयुक्त रीत्या भज किया हुआ ।
—उक्त, (वि०) भलीभाँति कथित ।—सूक्तं,
(न०) बुद्धिमानी की कहतूत या कहावत ।
—उक्ति, (स्त्री०) १ मैत्री के कारण कहा
हुआ वचन । २ चातुर्यपूर्ण कथन । ३ शुद्ध वाक्य ।
—उत्तर, (वि०) १ अत्यन्त उत्कृष्ट । २ उत्तर
दिशा की ओर ।—उत्थान, (वि०) अच्छा
उद्योग करने वाला । पराक्रमी । क्रियावान ।—
उत्थानं, (न०) जोरदार उद्योग या प्रयत्न ।—
उन्मद्, —उन्माद, (वि०) नितान्त पागल या
सनकी ।—उपसदन, (वि०) सहज में पाय
जाने योग्य ।—उपस्करः, (वि०) वह जिसके
पास अच्छे औज़ार हों ।—कराडुः, (पु०)
सुजली । खाज ।—कंदः, (पु०) १ कसेरु ।
२ रतालू । जमीनकंद । ३ चास विशेष ।—
कन्दकः, (पु०) १ प्याज । २ बाराहीकंद । ३
मिर्चोली कंद । नेंदी ।—कर, (वि०)
[स्त्री०—सुकरा, सुकरी] १ जो सहज में
हो सके । जो आसानी से हो सके । २ जो सहज
में सुव्यवस्थित किया जा सके या जिसका इन्तजाम
आसानी से हो सके ।—सुकरा, (स्त्री०) अच्छी
और सीधी गौ ।—सुकरं, (न०) धर्मादा ।
पुण्यदान ।—कर्मन्, (वि०) १ पुण्यत्मा ।
धर्मात्मा । २ परिश्रमी । मिहनती । (पु०) विश्व-
कर्मा का नाम ।—कल, (वि०) ऐसा पुण्य-
जिसने उदारता पूर्वक अपना धन देने और उसका
सद्व्यय करने के लिये प्रसिद्धि प्राप्त की हो ।—
काण्डिन्, (वि०) १ सुन्दर डाली वाला । २
सुन्दर रीति से जुड़ा हुआ (पु०) और । मधु-

मलिका ।—कालिका, (स्त्री०) भटकटैया ।—
 काष्ठं, (न०) ईंधन ।—कुन्दकः, (पु०)
 प्याज ।—कुमार, (वि०) अत्यन्त नाजूक या
 कोमल । अत्यन्त चिकना ।—कुमारः, (पु०)
 १ खूबसूरत जवान । २ ऊँच । ईँच ।—
 कुमारकः, (पु०) १ सुन्दर युवा पुरुष । २
 चावल ।—कुमारकः, (न०) तमालपत्र ।
 तमाखू ।—कृत, (वि०) १ दानशील ।
 परहितैषी । २ पुण्यात्मा । धर्मात्मा । ३
 बुद्धिमान । विद्वान् । ४ भाग्यवान् । खुशकिस्मत ।
 ५ यज्ञ करने वाला । (पु०) १ निपुण कारीगर ।
 २ त्वष्टा ।—कृत, (वि०) १ भली भाँति
 किया हुआ । २ भली भाँति बनाया हुआ । ३ मिश्र
 बनाया हुआ । सद्ब्यवहार किया हुआ । ४
 धर्मात्मा । धर्मशील । पुण्यात्मा । ५ भाग्यवान् ।
 किस्मतवर ।—सुकृतं, (न०) १ पुण्य ।
 सत्कार्य । भला काम । २ दान । ३ पुरस्कार । ४
 दया । मेहरबानी ।—कृतिः, (स्त्री०) १ पुण्य
 कार्य । २ तपस्या ।—कृतिन्, (वि०) १ भली-
 भाँति कार्य करने वाला । २ पुण्यात्मा । धर्मात्मा ।
 ३ बुद्धिमान । ४ परहितैषी । ५ भाग्यवान् ।
 खुशकिस्मत ।—केशरः, —केसरः, (पु०) नीबू
 का वृक्ष ।—कैतुः, (पु०) १ अग्नि । २ शिव ।
 ३ इन्द्र । ४ मित्र और वरुण । सूर्य ।—ग,
 (वि०) १ भली चाल से चलने वाला । २
 सुबौद्ध । बुद्धीबाला । ३ सुगम । ४ बोधगम्य ।
 सहज में समझने लायक ।—गं, (न०) १ मल ।
 विद्धा । २ प्रसन्नता । हर्ष ।—गत, (वि०) १
 भली प्रकार गुज़रा या बीता हुआ । २ भली भाँति
 दिया हुआ ।—गतः, (पु०) बुद्ध देव का नाम ।
 —गन्धः, (पु०) १ महक । गन्ध । बू । २
 गन्धक । ३ व्यापारी ।—गन्धं, (न०) १
 चन्दन । २ जीरा । ३ नील कमल । ४ गन्धतृण ।
 गंधेल घास ।—गन्धा, (स्त्री०) तुलसी ।—
 गन्धकः, (पु०) १ गन्धक । २ लाल तुलसी ।
 ३ नारंगी । ४ कटुआ ।—गन्धि, (वि०) १
 सुगन्धि । अच्छी-खुशबू । २ धर्मात्मा ।
 पुण्यात्मा ।—गन्धिः, (पु०) १ अच्छी

सुगन्धि । २ परब्रह्म । ३ मधुर सुगन्धियुक्त आस ।
 —सुगन्धि, (न०) १ पिपरासूल । २ एक प्रकार
 की सुगन्ध युक्त घास । ३ धनिया ।—गन्धिकः
 (पु०) १ धूप । २ गन्धक । ३ चावल विशेष ।—
 गन्धिकं, (न०) सफेद कमल ।—गम, (वि०)
 १ सहज में जाने योग्य । २ स्पष्ट । बोधगम्य ।—
 गहना, (स्त्री०) वह हाता जो यज्ञमण्डप के
 चारों ओर अष्ट एवं पतित लोगों को रोकने के
 लिये बनाया जाता है ।—ग्रासः, (पु०) सुस्वादु
 कवर या निवाला ।—ग्रीवः, (वि०) गरदन वाला ।
 —ग्रीवः, (पु०) १ बहादुर । २ ईंस । ३ हथि-
 थार विशेष । ४ वानरराज बालि के छोटे भाई का
 नाम ।—ग्ल, (वि०) घट्टन यका हुआ ।—
 चक्षुस्, (वि०) अच्छे नेत्रों वाला । अच्छा
 देखने वाला । (पु०) १ पण्डित जन ।
 २ सबल बट वृक्ष ।—चरित, —चरित्र, (वि०)
 भलीभाँति व्यवहार करने वाला । अच्छे चालचलन
 का ।—चरितं—चरित्रं, (न०) अच्छा चाल
 चलन । पुण्य कार्य ।—चरिता, —चरित्रा, (स्त्री०)
 अच्छे चाल चलन की स्त्री या पत्नी ।—चित्रकः,
 (पु०) १ सुर्गावी । मत्सरंग पत्नी । २ चितला
 साँप । चित्र सर्प ।—चिरम्, (अव्यया०) दीर्घ
 काल ।—चिरायुस् (पु०) देवता । देवभोजि ।—जन्,
 (पु०) १ परहितैषी जन । २ भद्र पुरुष ।—
 जनता, (स्त्री०) १ नेकी । कृपा । परहितैषिता ।
 २ सज्जन जन ।—जन्मन्, (वि०) कुलीन
 जन ।—जल्पः, (पु०) सुभाषित ।—जान,
 (वि०) १ कुलीन । अच्छे कुल का । २ सुन्दर ।
 मनोहर ।—तनु, (वि०) १ अच्छे शरीर वाला ।
 २ अत्यन्त सुकुमार या लदा युवका । ३ लक्ष
 हुआ ।—तनुः, —तनूः, (स्त्री०) सुन्दर शरीर ।
 —तपस्, (वि०) १ तपस्या करने वाला । २ वह
 जिसमें अत्यधिक गर्मी हो । (पु०) १ साधु ।
 भक्त । २ सूर्य । (न०) तपस्या । तप ।—
 तदाम्, (अव्यया०) १ बेहतर । अधिकतर
 उत्तमता से । बहुत । अत्यधिक ।—तदनः, (पु०)
 कोकिल ।—तलं, (न०) १ सप्त अक्षरों लोको
 में से एक । २ विशाल भवन की नाँव ।—

तित्तकः, (पु०) सूँगे का पेड़ ।—तीक्ष्ण, (वि०) १ बड़ा तीव्र । २ बड़ा चरपरा । ३ अत्यन्त पीड़ाकारक ।—तीक्ष्णः, (पु०) १ सिम् का पेड़ । २ एक ऋषि का नाम जो श्री राम चन्द्र जी के समय में थे ।—तीर्थः, (पु०) १ अच्छा गुरु । २ शिव जी ।—तुङ्ग, (वि०) बहुत ऊँचा । बहुत लंबा ।—तुङ्गः (पु०) नारियल का पेड़ ।—दक्षिण (वि०) १ बहुत सच्चा । बड़ा ईमानदार । २ यज्ञ की दक्षिणा देने में बड़ा उदार ।—दक्षिणा, (स्त्री०) दत्तीप की पत्नी ।—दण्डः, (पु०) बेत ।—दन्त, (वि०) अच्छे दाँतो वाला ।—दन्तः, (पु०) १ अच्छा दाँत । २ नट । नचैया ।—दन्ती, (स्त्री०) उत्तर पश्चिम दिशा के दिग्गज की हथिनी ।—दर्शन, (वि०) १ खूबसूरत । २ जो सहज में देखा जा सके ।—दर्शनः, (पु०) १ विष्णु भगवान् का चक्र । २ शिव जी का नाम । ३ गीघ । गिड़ ।—दर्शनं, (न०) जम्बूद्वीप ।—दर्शना, (स्त्री०) १ सुन्दरी स्त्री । २ स्त्री । ३ आज्ञा । आदेश । ४ एक प्रकार की दवाई ।—दामन, (वि०) उदारता पूर्वक देने वाला । (पु०) १ बादल । २ पहाड़ । ३ समुद्र । ४ इन्द्र का हाथी । ५ श्री कृष्ण के सखा एक धनहीन ब्राह्मण का नाम ।—दायः, (पु०) शुभ भेंट । शुभ दान । वह दान विशेष जो किसी पर्व विशेष पर दिया जाय ।—दिनं, (न०) शुभ अवसर । सुदिन ।—दीर्घ, (वि०) बहुत लंबा ।—दीर्घा, (स्त्री०) ककड़ी विशेष ।—दुर्लभ, (वि०) विरला ।—दूर, (वि०) बहुत दूर या फासले पर ।—दृश, (वि०) अच्छे नेत्रों वाला ।—धन्वन्, (वि०) अच्छे धनुष वाला (पु०) १ अच्छा तीरंदाज । २ विश्वकर्मा का नामान्तर ।—धर्मन्, (स्त्री०) देवताओं की सभा ।—धर्मा, —धर्मी, (स्त्री०) देवसभा ।—धी, (स्त्री०) अच्छी बुद्धि वाला । चतुर । बुद्धिमान ।—धीः, (पु०) पण्डित जन । (स्त्री०) सुबुद्धि ।—नन्दा, (स्त्री०) नारी । स्त्री ।—नयः, (पु०) १ अच्छा चाल चलन । २ सुनीति । अच्छी नीति ।—

नयनः, (पु०) १ हिरन । मृग ।—नयना, (स्त्री०) १ अच्छे नेत्रों वाली स्त्री । २ नारी । स्त्री ।—नाभ, (वि०) अच्छी नाभि वाला ।—नाभः, (पु०) १ पर्वत । पहाड़ । २ मैनाक पर्वत ।—निभृत, (वि०) नितान्त निर्जन ।—निश्चलः, (पु०) शिव ।—नीति, (वि०) १ सुचालित । सद् व्यवहारयुक्त । २ सज्जन । शिष्ट ।—नीतं, (न०) १ सद् व्यवहार । अच्छा चाल-चलन । २ सुनीति ।—नीतिः, (पु०) १ अच्छा चाल चलन । २ अच्छी नीति । ३ ध्रुव की माता का नाम ।—नीथ, (वि०) धर्मात्मा । पुण्यात्मा ।—नीथः, (पु०) १ ब्राह्मण । २ शिशुपाल का नाम ।—नीलः, (पु०) अनार का पेड़ ।—नीला, (स्त्री०) १ चणिका तृण । चनिका घास । २ नीला पराजिता । नीले रंग की अपराजिता । नीली कोयल । ३ तीली । अलसी ।—पक्क, (वि०) भलीभाँति रौंथा हुआ । भलीभाँति पका हुआ ।—पक्कः, (पु०) एक प्रकार का खुशबूदार आम ।—पत्नी, (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति नेक हो ।—पथः (पु०) १ अच्छी सड़क । २ अच्छा मार्ग । ३ अच्छा चाल चलन ।—पथिन्, (पु०) [कर्ता एक०—सुपन्थाः] अच्छी सड़क ।—पर्ण, (वि०) १ अच्छे पंखों वाला । २ अच्छे पत्तों वाला ।—पर्णः, (पु०) १ सूर्य की किरण । २ देवयोनि विशेष । ३ कोई भी अलौकिक पत्नी । ४ गरुड़ जी का नाम । ५ मुर्गा ।—पर्णा, —पर्णी, (स्त्री०) १ कमलसमूह । वह तालाब जिसमें कमलों की बहुतायत हो । ३ गरुड़ की माता का नाम ।—पर्याप्त, (वि०) १ बहुत लंबा चौड़ा । २ भली भाँति सजा हुआ ।—पर्वन्, (वि०) १ भली भाँति ग्रन्थित । २ बहुत गाँठ गठीला । (पु०) १ बांस । २ तीर । ३ देवता । ४ पृथ्वीमा । अमावास्या, अष्टमी और चतुर्दशी तिथियां । ५ धूम । धुआँ ।—पात्रं, (न०) अच्छा बरतन । सुपात्र । २ उपयुक्त मनुष्य । योग्य व्यक्ति ।—पाद, (स्त्री०) सुन्दर पैरों वाला ।—पार्श्वः, (पु०) पृष्ठ नामक पेड़ । पाकर का पेड़ ।—पीतं, (न०) गाजर ।—पीतः, (पु०)

पाँचवाँ सुहृत् ।—पुष्पः, (पु०) मूंगे का पेड़ ।
 —मुष्पः, (न०) लौंग । लवंग । २ स्त्रियों का
 रज ।—प्रवर्तकः, (पु०) सुविचारित निर्णय
 या फैसला ।—प्रतिभा, (स्त्री०) शराब ।—
 प्रतिष्ठ, (वि०) १ भलीभाँति खड़ा हुआ । २
 बहुत प्रसिद्ध ।—प्रतिष्ठा, (स्त्री०) अच्छा पद ।
 २ सुकीर्ति । नेकनामो । सुयश । ३ स्थापना ।
 प्रतिष्ठा । ४ प्राणप्रतिष्ठा ।—प्रतिष्ठित, (वि०)
 १ भलीभाँति स्थापित । २ अप्रति । ३ प्रसिद्ध ।
 —प्रतिष्ठितः, (पु०) उदुम्बर का पेड़ । गूलर
 का पेड़ ।—प्रतिष्ठात, (वि०) १ भली प्रकार
 पवित्र किया हुआ । २ भलीभाँति परिचित ।—
 प्रतीक, (वि०) सुन्दर । मनोहर ।—प्रतीकः,
 (पु०) १ कामदेव का नाम । २ शिव । ३ ईशान
 केय का दिग्गज ।—प्रपाणं (न०) अच्छा तालाब ।
 —प्रभ, (वि०) बहुत तड़कीला भड़कीला ।—
 प्रभा, (स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से
 एक ।—प्रभातं, (न०) १ शुभ प्रभात । मङ्गलमय
 प्रातःकाल । २ बड़ा तड़का ।—प्रयोगः, (पु०)
 १ सुव्यवस्था । अच्छा प्रवन्ध । २ निपुणता ।
 पटुता ।—प्रसाद, (वि०) अत्यन्त शुभ ।—
 प्रसादः, (पु०) शिवजी ।—प्रिय, (वि०)
 अत्यन्त रुचिकर । बहुत पसंद ।—प्रिया, (स्त्री०)
 १ मनोहारिणी स्त्री । २ प्रेयसी ।—फल, (वि०)
 १ बहुत फलने वाला । २ बहुत उपजाऊ ।—फलः
 (पु०) १ अनार का पेड़ । २ बेरी का पेड़ । ३
 मूंग ।—फला, (स्त्री०) १ पेठा । कुम्हड़ा । २
 केले का पेड़ । ३ कपिला दादा । मुनक्का ।—बन्धः,
 (पु०) तिखी । तिल ।—बलः, (पु०) शिवजी ।
 —बोधः, (पु०) अच्छी सलाह या परामर्श ।
 —ब्रह्मगयः, (पु०) १ कर्तिकेय । २ उद्गाता
 पुरोहित या उसके तीन साथियों में से एक ।
 —भग, (वि०) १ बड़ा भाग्यवान् या समृद्ध-
 शाली । २ सुन्दर । मनोहर । ३ मधुर । प्रिय । ४
 प्रेमपात्र । प्यारा । ५ प्रसिद्ध ।—भगः, (पु०)
 १ सुहागा । २ अशोक वृक्ष । ३ चम्पक वृक्ष । ४
 लाल कटसरैया ।—भागं, (न०) सौभाग्य ।
 सुशक्तिस्मयी ।—भगा, (स्त्री०) १ वह स्त्री

जिसको उसका पति प्यार करता हो । २ पूज्य
 माता । ३ बेला । मोतिया । ४ हल्दी । ५ तुलसी ।
 —भङ्गः, (पु०) नारियल का पेड़ ।—भद्रः, (पु०)
 (वि०) अत्यन्त प्रसन्न या भाग्यवान् ।—भद्रः, (पु०)
 विष्णु का नाम ।—भद्रा, (स्त्री०) बलराम तथा
 श्रीकृष्ण की बहिन ।—भाषितं, (न०) उत्तम
 वाणी । अच्छी तरह की बोली ।—भूः, (स्त्री०)
 सुन्दर स्त्री ।—मति, (वि०) बहुत बुद्धिमान ।—
 मतिः, (स्त्री०) अच्छा मन । कृपालुता । परहि-
 तैपिता । सुहृदता । मैत्री । २ देवता का अनुग्रह ।
 ३ आशीर्वाद । दया । ४ प्रार्थना । गीत । ५ अभि-
 लाष । ६ सगर की भार्या का नाम ।—मदनः,
 (पु०) आम का पेड़ ।—मध्य, —मध्यम, (वि०)
 पतली कमर वाला ।—मध्या, —मध्यमा, (स्त्री०)
 सुन्दरी स्त्री ।—मन, (वि०) सुन्दर । खूबसू-
 रत ।—मनः, (पु०) १ गेहूँ । २ धनूरा—मना,
 (स्त्री०) चमेली । जाती पुष्प । २ सेवती । शत-
 पत्री ।—सुमनस्, (वि०) १ अच्छे मन का । २
 सन्तुष्ट । प्रसन्न । (पु०) देवता । दैवत्व । २ पण्डित
 जन । ३ वेदपाठी ब्रह्मचारी । ४ गेहूँ । ५ नीम का
 पेड़ ।—मित्रा, (स्त्री०) लक्ष्मण जननी और महाराज
 दशरथ की एक रानी का नाम ।—मुख, (वि०)
 मनोहर । सुन्दर । २ आह्लादकर । २ उत्सुक ।—
 —मुखः, (पु०) १ पण्डित जन । २ गरुड़ । ३
 (पु०) १ पण्डित जन । २ गरुड़ । ३ गणेश ।
 ४ शिव ।—मुखं, (न०) नख का खरोंटा या
 खरोंच ।—मुखा, —मुखी, (स्त्री०) १ सुन्दरी
 स्त्री । २ आईना ।—मूलकं (न०) गाजर ।—
 मेघस्, (वि०) उत्तम बुद्धि वाला । बुद्धिमान ।
 (पु०) बुद्धिमान आदमी ।—मेरुः, (पु०) १
 मेरु नामक पर्वत । २ शिवजी का नाम ।—यवसं,
 (न०) सुन्दर वास । अच्छा चरागाह ।—
 योधनः, (पु०) दुर्योधन का नामान्तर ।—
 रक्तकः, (पु०) १ गेरु । २ आम्बवृक्ष की तरह
 का एक पेड़ ।—रङ्गः, (पु०) अच्छा रंग ।—
 रञ्जनः, (पु०) सुपारी का पेड़ ।—रत, (वि०)
 १ बड़ा खिलाड़ी । २ खिलाड़ी । ३ अत्यधिक
 उपयुक्त । ४ दयालु । कोमल ।—रतं, (न०) १

अत्यन्त हर्ष या आनन्द । २ स्त्री-मैथुन । रतिबंध । पुष्पगुच्छ जो सिर पर धारण किया जाय ।—रतिः, (स्त्री०) बड़ा उपभोग या सन्तोष ।—रसं, (न०) १ रसीला । रसादार । २ मधुर । ३ सुन्दर ।—रसः, (पु०)—रसा, (स्त्री०) सिन्धुवार नामक पौधा ।—रस्ता, (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।—रूप, (वि०) १ सुन्दर । मनोहर रूपवान । सम्भव । २ बुद्धिमान । पण्डित ।—रूपः, (पु०) शिवजी का नामान्तर ।—रेम, (वि०) सुस्वर । सुरीला । अच्छे कण्ठ वाला ।—रेखं, (न०) टीन । जस्ता ।—लक्षणा, (वि०) १ शुभ लक्षणों से युक्त । अच्छे लक्षणों वाला । २ भाग्यवान । किस्मतवर ।—लक्षणां, (न०) १ शुभ लक्षण । शुभ चिह्न ।—लभ, (वि०) १ सहज में मिलने योग्य । २ योग्य । उपयुक्त ।—लोचन, (वि०) अच्छे नेत्रों वाला ।—लोचनां, (पु०) सृग । हिरन ।—लोचना, (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री ।—लोहकं, (न०) पीतल ।—लोहित, (वि०) बहुत लाल ।—लोहिता, (स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।—वक्त्रं, (न०) १ अच्छा चेहरा । २ शुद्ध उच्चारण ।—वचनं,—वचस्, (न०) वाक्पटुता ।—वर्चिकः, (पु०)—वर्चिका, (स्त्री०) सज्जी । स्वर्जिकाचार ।—वह, (वि०) १ सहज में वहन करने या उठाने योग्य । २ धैर्यवान । धीर ।—वासिनी, (स्त्री०) १ विवाहिता अथवा अनविवाहिता वह स्त्री जो अपने पिता के घर में रहै । २ विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित हो ।—विक्रान्त, (वि०) बड़ा पराक्रमी । बड़ा बहादुर ।—विक्रान्तं, (न०) वीरता । बहादुरी ।—विद्, (पु०) विद्वज्जन । (स्त्री०) चतुर या चालाक स्त्री ।—विद्ः, (पु०) ज्ञानखाने का अनुचर ।—विद्वत्, (पु०) राजा ।—विद्वलः, (पु०) ज्ञानखाने का चाकर ।—विद्वलं, (न०) ज्ञानखाना । अन्तःपुर ।—विद्वला, (स्त्री०) विवाहिता स्त्री ।—विध, (वि०) अच्छी जाति का ।—विधं, (अव्यय०) सहज में ।—विनीत, (वि०) विनम्र । सुशिक्षित ।—विनीता, (स्त्री०) सीधी

गौ ।—विहित, (वि०) १ भलीभाँति जमा कराया हुआ । २ भलीभाँति सजाया हुआ । भली-भाँति व्यवस्थित ।—वीज,—बीज, (वि०) अच्छे बीज वाला ।—वीजः,—बीजः, (पु०) १ शिवजी । २ पोस्ता का दाना ।—वीजं,—बीजं, (न०) अच्छा बीज ।—वीर्य, (वि०) बड़े पराक्रम वाला । वीर । बहादुर ।—वीर्यं, (न०) बहादुरी । बहादुरों का बाहुल्य ।—वीर्या, (स्त्री०) वनकपास । वनकार्पासी ।—वृत्त, (वि०) १ धर्मात्मा । पुण्यात्मा । नेक । २ सुन्दर । खूबसूरत ।—वैल, (वि०) १ शान्त । निस्तब्ध । २ विनीत । चुपचाप ।—वैलः, (पु०) त्रिकूट पर्वत का नाम ।—व्रत, (वि०) साधु । व्रतों का पालन करने वाला ।—व्रता, (स्त्री०) १ पति-व्रता स्त्री । २ सीधी गौ । वह गौ जो सहज में दुह ली जाय ।—शंस, (वि०) प्रसिद्ध । मशहूर । प्रशंसित ।—शक, (वि०) सुलभ । सहज में होने योग्य । आसान ।—शल्यः, (पु०) खदिर का पेड़ ।—शाकं, (न०) अदरक । आदी ।—शासित, (वि०) भलीभाँति ज्ञात में किया हुआ ।—शिक्षित, (वि०) उत्तम तरह शिक्षा पाया हुआ ।—शिक्षः, (पु०)—शिक्षा, (स्त्री०) १ मोर की कलंगी । २ सुर्त की कलंगी ।—शील, (वि०) १ उत्तम शील वाला । २ उत्तम स्वभाव वाला । शीलवान । ३ सचरित्र । साधु । ४ विनीत । नम्र । ५ सरल । सीधा ।—शीला, (स्त्री०) १ यमराज की पत्नी का नामान्तर । २ श्रीकृष्ण की आठ मुख्य रानियों में से एक का नाम ।—श्रुत, (वि०) १ अच्छी तरह सुना हुआ । २ वेदविद्या में निपुण ।—श्रुतः, (पु०) आयुर्वेदीय चिकित्सा शास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य । २ इनका बनाया ग्रन्थ विशेष । ३ आद्य के अन्त में ब्राह्मण से यह प्रश्न कि आप तृप्त हो गये न ।—श्लिष्ट, (वि०) भली-भाँति मिला या जुड़ा हुआ ।—श्लेषः, (पु०) भलीभाँति आलिङ्गन करने की क्रिया ।—संदूश, (वि०) देखने में अच्छा ।—सज्जत (वि०)

भली प्रकार चलाया हुआ । जैसे वाण्य ।—सह, (वि०) १ सहज में सहने योग्य । २ सहज में बहन करने योग्य ।—सहः, (पु०) शिवजी ।—सार, (वि०) अच्छा रस वाला । सारवान ।—सारः, (पु०) १ अच्छा रस । २ लाख फल का खदिर वृक्ष । ३ वैद्यक्यमता ।—स्थ, (वि०) १ नीरोग । भला चंगा । तंदुरुस्त । २ समृद्धवान । समृद्धशाली । ३ प्रसन्न । हर्षित । सुखी ।—स्थः, (न०) सुखी दशा । अच्छी हालत ।—स्थता, —स्थितिः, (स्त्री०) १ अच्छी दशा । सुख । हर्ष । २ तंदुरुस्ती ।—स्मित, (वि०) आनन्द से मुसकना हुआ ।—स्मिता, (स्त्री०) प्रसन्न वदना स्त्री ।—स्वर, (वि०) १ सुरीला । अच्छा कंठ वाला । ३ ऊँचस्वर का ।—हित, (वि०) १ अत्यन्त योग्य या उपयुक्त । २ लाभकारी । गुणकारी । ३ स्नेही । प्यारा । ४ सन्तुष्ट ।—हिता, (स्त्री०) अग्नि की सप्त जिह्वों में से एक ।—हृद्, (वि०) १ अच्छे हृदय वाला । (पु०) १ मित्र । सखा । बन्धु । दोस्त । २ ज्योतिष के अनुसार लग्न से चौथा स्थान, जिससे ग्रह जाना जाता है कि मित्र आदि कैसे होंगे ।—हृदः, (पु०) मित्र ।—हृदय, (वि०) १ अच्छे हृदय वाला । २ प्यारा । स्नेही । प्रिय ।

३ (वि०) १ मन की वह उत्तम तथा प्रिय अनुभूति जिसके द्वारा अनुभव कर्ता का विशेष समाधान और सन्तोष होता है और जिसके बराबर बने रहने की उसे सदा अभिलाषा बनी रहती है । २ प्रिय । मधुर । मनोहर । ३ धर्मात्मा । पुण्यात्मा । ४ आनन्द । हर्ष । ५ सरल । होने या करने योग्य । ६ योग्य । उपयुक्त ।

४ (न०) १ आनन्द । हर्ष । प्रसन्नता । सुख । चैन । २ समृद्धि । ३ नीरोगता । तंदुरुस्ती । आरोग्यता । सौख्य । ४ सरलता । आसानी । ५ स्वर्ग । ६ जल । पानी ।

५ (अव्यया०) १ सहर्ष । आनन्द से । २ भला । ३ आराम के साथ । ४ आसानी से । सहज में । ५ राजी से । राजासंदी से । ६ चुपचाप ।

खामोशी से ।—आधारः, (पु०) स्वर्ग ।—आसवः, (वि०) नहाने के लिये उपयुक्त ।—आयतः, —आयनः, (पु०) सुशिक्षित घोड़ा । आरोहः, (पु०) सहज में सवारी लायक ।—आलोक, (वि०) देखने में सुन्दर । खूबसूरत ।—आषट्, (वि०) सुख देने वाला । आराम देने वाला ।—आशः, (पु०) वरुण का नाम ।—आशकः, (पु०) ककड़ी ।—आस्वाद, (वि०) १ अच्छे ज्ञायके का । २ आनन्ददायी ।—आस्वादः, (पु०) १ अच्छा ज्ञायक । अच्छा स्वाद । २ (आनन्द का) उपभोग ।—उत्सवः, (पु०) १ आनन्दावसर । २ पति । स्वामी ।—उदर्क, (न०) गर्म पानी ।—उदयः, (पु०) आनन्द की प्राप्ति या अनुभव ।—उदर्क, (वि०) परिणाम में सुखदायी ।—उद्य, (वि०) सुख से उच्चारण योग्य ।—उपविष्ट, (वि०) सुख से बैठा हुआ ।—एयिन्, (वि०) सुख की चाहना करने वाला ।—कर, —कार, —दायक, (वि०) आनन्ददायी । हर्षप्रद ।—द, (वि०) आनन्ददायी ।—दं, (न०) विष्णु का आसन ।—दा, (स्त्री०) इन्द्र के स्वर्ग की अप्सरा ।—बोधः, (पु०) १ आनन्द का अनुभव । २ सरल ज्ञान ।—भागिन्, —भाज्, (पु०) आनन्द ।—श्रव, —श्रुति, (वि०) कर्णमधुर । सुरीला ।—संगिन्, (वि०) सुख का साथी ।—स्पर्श, (वि०) छूने से सुख देने वाला ।

सुत (व० कृ०) १ उड़ेला हुआ । २ खींचा हुआ । निकाला हुआ । ३ पैदा किया हुआ । पाया हुआ ।—आत्मजः, (पु०) पौत्र । पुत्र का पुत्र । नाती ।—आत्मजा, (स्त्री०) पौत्री । पुत्र की पुत्री । नातिन ।—उत्पत्तिः, (स्त्री०) पुत्र की पैदा-वश ।—निर्विशेषं, (न०) ठीक पुत्र जैसा ।—वस्कुरा, (स्त्री०) वह, स्त्री जिसके ७ पुत्र हों ।—स्नेहः, (पु०) माता पिता का स्नेह ।

सुतः (पु०) १ पुत्र । २ राजा ।

सुतवत् (वि०) वह जिसके सुत हो । पुत्रवान । (पु०) एक पुत्र का पिता ।

सुता (स्त्री०) लड़की । पुत्री ।

सुतिः (स्त्री०) सोमरस का निकालना ।

सुतिन् (वि०) [स्त्री०—सुतिनी] पुत्र या पुत्रों वाली । लड़कौरी । (पु०) पिता ।

सुतिनी (स्त्री०) माता ।

सुतुस् (वि०) भली आवाज़ वाला ।

सुन्या (स्त्री०) १ सोमरस को निकालने या तैयार करने की क्रिया । २ यज्ञीय नैवेद्य । ३ सन्तान प्रसव । गर्भमेचन ।

सुत्रामन् (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।

सुत्वेन् (पु०) १ सोमरस पीने या चढ़ाने वाला । वह ब्रह्मचारी जिसने यज्ञीय कर्म करने के पूर्व अपना माजून या अभिषेक किया हो ।

सुदि (अव्यया०) शुद्ध पक्ष में ।

सुधन्वाचार्यः (पु०) पतित वैश्य का पुत्र जो वैश्या माता के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो ।

सुधा (स्त्री०) १ अमृत । २ पुष्पों का शहद । ३ रस । ४ जल । ५ गंगा जी का नाम । ६ सफेदी । अस्तरकारी । गारा । ७ ईंट । ८ बिजली । ९ लेंहुड । यूहर ।—अंशुः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—अंशुरत्नं, (पु०) सेती ।—अंगः, —आकारः, —आधारः, (पु०) चन्द्रमा ।—जीविन्, (पु०) मैमार । राज । थवई ।—द्रवः, (पु०) अमृत जैसा तरल पदार्थ ।—धवलित, (वि०) अस्तरकारी किया हुआ । कलई या सफेदी किया हुआ । चूना से पुता हुआ ।—निधिः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—भवनं, (न०) अस्तरकारी किया हुआ मकान ।—मितिः, (स्त्री०) १ अस्तरकारी की हुई दीवाल । २ ईंट की दीवाल । ३ दोपहर के बाद का पाँचवाँ मुहूर्त्त या घंटा ।—भुज्, (पु०) देवता ।—भूतिः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ यज्ञ ।—मथं, (न०) १ चूना या पत्थर का भवन या घर । २ राजमहल ।—धर्वः, (पु०) अमृत-वृष्टि ।—धर्षिन्, (पु०) ब्रह्मा की उपाधि ।—वासः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—वासा,

(स्त्री०) खीरा । जपुषी ।—सित, (वि०) १ गारा की तरह सफेद । २ अमृत की तरह चमकीला । ३ अमृत से बंधा हुआ । ४ चूना किया हुआ । सफेदी से पुता हुआ ।—सुतिः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ यज्ञ । ३ कमल ।—स्यंदिन्, (वि०) अमृत बहाने वाला ।—हरः, (पु०) गरुड़ जी की उपाधि ।

सुधितिः (पु० स्त्री०) कुल्हाड़ी ।

सुनारः (पु०) १ कुतिया का दूध । २ साँप का झंडा । ३ चटक पक्षी । गौरैया ।

सुनासीरः } (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।
सुनाशीरः }

सुंदः } (पु०) निकुंभ का पुत्र और उपसुंद का
सुन्दः } भाई एक दैत्य ।

सुंदर } (वि०) [स्त्री०—सुन्दरी] १ प्रिय ।
सुन्दर } खूबसूरत । मनोहर । २ ठीक । सही ।

सुंदरः } (पु०) कामदेव का नाम ।
सुन्दरः }

सुन्दरी } (स्त्री०) खूबसूरत औरत । सुस्वरूपा
सुन्दरी } नारी ।

सुप्त (व० कृ०) १ सोया हुआ । २ लकवा मारा हुआ । ३ बेहोश । बहहवास ।—अनः, (पु०) अर्थ रात्रि ।—ज्ञानं, (न०) स्वप्न ।—त्वच्, (वि०) सुन्न ।

सुप्तं (न०) प्रगाढ़ निद्रा । निद्रा ।

सुप्तिः (स्त्री०) १ निद्रा । सुस्ती । औंघाई । निदा-सापन । २ लकवा । चैतन्य राहित्य । अचैतन्यता । ३ विश्वास । भरोसा ।

सुप्तं (न०) सुप्त । फूल ।

सुप्तः (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर । ३ आकाश ।

सुरः (पु०) १ देवता । २ तेतीस की संख्या । ३ सूर्य । ४ महात्मा । अधि । विद्वज्जन ।—अंगना, (स्त्री०) स्वर्ग की अप्सरा ।—अधिपः, (पु०) इन्द्र ।—अरिः, (पु०) देवशत्रु । दैत्य ।—अर्ह, (न०) १ सुवर्ण । २ केसर । जाफ़ान ।—आचार्यः, (पु०) बृहस्पति ।—आपगा, (स्त्री०) आकाश गंगा ।—आलयः, (पु०) १ मेरुपर्वत,

२ स्वर्ग ।—इज्यः, (पु०) बृहस्पति का नाम ।
 —इज्या, (स्त्री०) तुलसी ।—इन्द्रः,—ईशः
 —ईश्वरः, (पु०) इन्द्र का नाम ।—उत्तमः,
 (पु०) १ सूर्य । २ इन्द्र ।—उत्तरः, (पु०)
 चन्दन का वृक्ष ।—ऋषिः, (= सुरर्षिः) (पु०)
 देवर्षि ।—कारुः, (पु०) विश्वकर्मा की उपाधि ।
 —कामुकं, (न०) इन्द्र धनुष ।—गुरुः, (पु०)
 बृहस्पति का नामान्तर ।—ग्रामणी, (पु०)
 इन्द्र का नामान्तर ।—उयेष्टः, (पु०) ब्रह्मा ।—
 तरुः, (पु०) स्वर्ग का एक वृक्ष ।—तौषकः,
 (पु०) कौस्तुभमणि ।—दारु, (न०) देवदारु
 वृक्ष ।—दीर्घिका, (स्त्री०) श्रीगंगा जी ।—
 दुन्दभी, (स्त्री०) तुलसी ।—द्विष्टः, (पु०) १
 देवताओं का हाथी । २ ऐरावत हाथी का नामा-
 न्तर ।—द्विष्ट, (पु०) दैत्य ।—धनुस्, (न०)
 इन्द्र धनुष ।—धूपः, (पु०) तारपीन । राल ।
 —मिस्त्रगा, (स्त्री०) श्रीगङ्गा जी ।—पतिः,
 (पु०) इन्द्र ।—पथं, (न०) आकाश । स्वर्ग ।
 —पर्वतः, (पु०) मेरुपर्वत ।—पादपः, (पु०)
 स्वर्ग का एक वृक्ष । कल्पतरु ।—प्रियः, (पु०) १
 इन्द्र का नाम ।—भूयः, (न०) पुरस्कार में देव-
 त्वग्रहण । गौरव या मर्यादान्वितकरण ।—भुरुहः,
 (पु०) देवदारु वृक्ष ।—युवतिः, (स्त्री०)
 अप्सरा ।—जासिका, (स्त्री०) बाँसुरी । नफीरी ।
 —लोकः, (पु०) स्वर्ग ।—वर्धन, (न०)
 आकाश ।—वल्ली, (स्त्री०) तुलसी ।—विद्विष्ट,
 —वैरिन्,—शत्रुं, (पु०) दुष्ट आत्मा । दानव ।
 दैत्य ।—सद्गन्, (न०) स्वर्ग ।—सरित्
 —सिन्धु (स्त्री०) श्रीगङ्गा ।—सुन्दरी, (स्त्री०)
 —ह्यो, (स्त्री०) अप्सरा ।

भि (वि०) १ अच्छी सुगन्धि से युक्त । तूशबू
 रा । २ प्रसन्न कारक । प्रिय । ३ चमकीला ।
 मनोहर । ४ प्रेम पात्र । ५ प्रसिद्ध । ७ बुद्धिमान् ।
 परिणत । ८ नेक । पुण्यात्मा ।

भिः (पु०) १ महक । सुगन्धि । २ जातीफल ।
 जायफल । ३ चंपक वृक्ष । ४ साल वृक्ष की
 राल । ५ समी वृक्ष । ६ कर्द्व वृक्ष । ७ एक
 प्रकार की सुगन्ध युक्त घास । ८ वसन्त ऋतु ।

(स्त्री०) १ एलुवा । एलुवालक । २ जदौमासी ।
 ३ मोतिया । बेला । ४ मुरामाँसी । एकांगी । ५
 शराव । मदिरा । ६ पृथिवी । ७ गो । सुरभी
 नामक गौ विशेष । ८ मातृशौ में से एक । (न०)
 १ सुगन्धि । २ गन्धक । ३ सुवर्ण ।—घृतं,
 (न०) खुशबूदार घी ।—विफना, (स्त्री०) १
 जायफल । २ तबंग । ३ सुपारी ।—व्राणः,
 (पु०) कामदेव ।—मासः, (पु०) वसन्त ऋतु ।
 —मुकं, (न०) वसन्त ऋतु का आरम्भ ।

सुरभिका (स्त्री०) एक प्रकार का केला ।

सुरभिमत (पु०) अग्नि का नाम ।

सुरा (स्त्री०) १ शराब । झँगूरी शराब । २ जल ।
 ३ पानपात्र । ४ सर्प ।—आकारः, (पु०)
 शराब की भट्टी ।—आजीवः,—आजीविन्,
 (पु०) कलवार । शराब खींचने वाला ।—
 आलयः, (पु०) शराब की दूकान । गद्दी ।—
 उद्ः, (पु०) शराब का समुद्र ।—ग्रहः, (पु०)
 शराब रखने का पात्र ।—ध्वजः, (पु०) वह
 पताका या अन्य कोई चिन्हानी जो शराब की
 दूकान पर पहचान के लिये लगाया जाता है ।—
 प, (वि०) १ शराबी । शराब पीने वाला । २
 आनन्दजनक । रम्य । ३ बुद्धिमान महात्मा ।
 ऋषि ।—पाणं,—पानं, (न०) शराब पीना ।
 —पार्श्व,—भारुडं, (न०) मदिरापान-पात्र ।—
 भागः, (पु०) शराब का फेन । झमीर । फेन ।
 —मण्डः, (पु०) शराब का भाँड़ ।—संधानं,
 (न०) शराब चुभाने की क्रिया ।

सुवर्ण (वि०) १ सुन्दर रंग का । चमकदार रंग
 का । सुनहला । पीला । २ अच्छी जाति का । ३
 अच्छी कीर्ति वाला । गौरवान्वित । प्रसिद्ध ।—
 अभिषेकः, (पु०) बरवधु का उस जल से
 साजन जिसमें सोने का एक टुकड़ा पड़ा हो ।—
 कदली, (स्त्री०) केले की एक जाति विशेष ।—
 कर्तुं,—कार, कृत, (पु०) सुनार ।—गणितं,
 (न०) गणित में विशेष प्रकार की गणनक्रिया ।
 बीजगणित का वह अंग जिसके अनुसार सोने की
 तौल आदि मानी जाती है और उसका हिसाब

लगाया जाता है ।—पुष्पित, (वि०) सोने का आधिक्य ।—पृष्ठ, (वि०) सोने का पत्र चढ़ा हुआ । सुनहला सुलम्भा किया हुआ —मानिक, (न०) सोनामकड़ी । खनिज पदार्थविशेष ।—यूथी, (स्त्री०) पीली जुही । पीतयूथिका ।—रूप्यक, (वि०) सोने और चाँदी कि विपुलता वाला । (न०) सुवर्ण द्वीप या सुमात्रा का एक प्राचीन नाम ।—रेतस्, (पु०) शिवजी ।—वर्णा, (स्त्री०) हल्दी ।—सिद्धः, (पु०) वह जो इन्द्रजाल या जादू के बल से सोना बना या प्राप्त कर सकता हो ।—स्तेयं, (न०) सोने की चोरी ।

सुवर्ण (न०) १ सेना । २ सोने का सिक्का । अशरत्नी । मोहर । ३ सोने की तौल विशेष जो १६ माशे या लगभग १७५ रत्ती की होती है । [यह पु० भी है ।] ४ धनदौलत । ५ पीला चन्दन । ६ गेरू ।

सुवर्णः (पु०) १ अच्छा रंग । २ अच्छी जाति । ३ यज्ञविशेष । ४ शिव का नामान्तर । ५ धतूरा ।

सुवर्णकं (न०) १ पीतल । काँसा । २ सीसा नामक धातु ।

सुवर्णवत् (वि०) १ सुनहला । २ सुन्दर । खूबसूरत ।

सुषम (वि०) अत्यन्त मनोहर या खूबसूरत ।

सुषमा (स्त्री०) परमशोभा । अत्यन्त सुन्दरता ।

सुषवी (स्त्री०) १ करेला । कारवेल्ल । २ करेली । ३ जीरा ।

सुषाढः (पु०) शिवजी का एक नाम ।

सुषिः (स्त्री०) सूराल ।

सुषिम } (वि०) १ ठंडा । शीतल । २ मनोरम ।
सुषीम } मनोज्ञ । सुन्दर ।

सुषिमः } (पु०) १ शीतलता । २ सर्पविशेष । ३
सुषीमः } चन्द्रकान्तमणि ।

सुषिर (वि०) १ छेदों से परिपूर्ण । पोला । छेदोंदार । २ मन्दस्वर ।

सुषिरं (न०) १ छेद । सूराल । २ कोई भी बाजा जो हवा के संयोग से बजाया जाय ।

सुषुप्तिः (स्त्री०) १ गहरी नींद । प्रगाढ़ निद्रा । २ अज्ञान । ३ पार्तजल दर्शन में सुषुप्ति, चित्त की उस वृत्ति या अनुभूति को माना है, जिसमें जीव, नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है । किन्तु जीव को इस बात का ज्ञान नहीं रहता कि उसने ब्रह्म की प्राप्ति की है ।

सुषुम्णः (पु०) १ सूर्य की मुख्य किरणों में से एक का नाम ।

सुषुम्णा (स्त्री०) शरीरस्थ तीन प्रधान नाड़ियों में से एक जो इड़ा और पिंगला के बीच में है ।

सुषु (अव्यया०) १ अच्छा । उत्तमता से । खूबसूरती से । २ बहुत अधिक । अत्यधिक । ३ सचाई से । ठीक तौर से ।

सुषुमं (न०) रस्सा । रस्ती । डोर । डोरी ।

सुषुमाः (पु० बहु०) एक जाति के लोग ।

सू (धा० आ०) [सूते, सूयते, सूत] पैदा करना । उत्पन्न करना । देना ।

सू (वि०) उत्पन्न करने वाला । पैदा करने वाला । (स्त्री०) १ पैदावश । २ माता ।

सूकः (पु०) १ तीर । २ हवा । पवन । ३ कमल ।

सूकरः (पु०) १ शूकर । सुअर । २ मृग विशेष । ३ कुहार ।

सूकरी (स्त्री०) १ सुअरिया । २ एक प्रकार की सिवार या काई ।

सूक्ष्म (वि०) १ बहुत छोटा । बहुत बारीक या महीन । २ छोटा । कम । अल्प । ३ पतला । सुकुमार । विलक्षण । ४ उत्तम । ५ तीक्ष्ण । ६ मुत्कली । चालाक । धूर्त । ७ ठीक । सही सही । शुद्ध । —पला, (स्त्री०) छोटी इलायची । —तंडुलः, (पु०) पोस्ता । —तण्डुला, (स्त्री०) १ पीपल । पिप्पली । २ एक प्रकार की घास । —दर्शिता, (स्त्री०) सूक्ष्मदर्शी होने का भाव । सूक्ष्म बात सोचने समझने का गुण । दूरदर्शिता । बुद्धिमानी । —दर्शिनः, —दृष्टिः, (वि०) वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी दिखाई दें या समझ में आ जाय । —दारु, (न०)

काठ की पतली पटरी या तख्ता ।—देहः, (पु०)
—शरीरं, (न०) लिंगशरीर । पाँच प्राण,
पाँच ज्ञानेन्द्रियां, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि
इन सत्रह तत्वों का समूह ।—पत्रः, (पु०) १
१ धनिया । धन्याक । २ कालीजीरक । धनजीरक ।
३ लाल ऊख । ४ कीकर । बबूल । ५ देवसर्प ।
—पर्णी, (स्त्री०) रामतुलसी । रामदूती ।—
पिप्पली (स्त्री०) जंगली पीपल । वन पिप्पली ।
—बुद्धि, (वि०) तेज बुद्धि वाला ।—मल्लिकं,
(न०)—मल्लिका, (स्त्री०) मच्छड़ । मशक ।
डॉस ।—मानं, (न०) ठीक ठीक नाप ।—
शर्करा, (स्त्री०) बालू । बालुका ।—गालिः,
(पु०) सोरों जाति का चावल ।—पट्वरणाः,
(पु०) एक प्रकार का सूक्ष्म कीड़ा जो पलकों की
जड़ में रहता है ।

सूक्ष्मं (न०) १ सर्वव्यापी आत्मा । परमात्मा । पर-
ब्रह्म । २ सूक्ष्मता । ३ योग द्वारा प्राप्त योगियों की
तीन शक्तियों में से एक । ४ शिल्पकौशल । ५
धूर्तता । कपट । फरेब । ६ महीन डोरा । ७ एक
काव्यालंकार जिसमें चित्रवृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से
लक्षित कराने का वर्णन होता है ।

सूक्ष्मः (पु०) १ अणु । परमाणु । २ केतक वृक्ष । ३
शिव का नाम ।

सूच् (धा० उ०) [सूचयति—सूचयते, सूचित]
१ छेदना । २ बतलाना । दिखलाना । ३ (किसी
छिपी बात या वस्तु को) प्रकट कर डालना । ४
हावभाव प्रदर्शित करना । ५ आसूसी करना ।
खोज निकालना ।

सूचः (पु०) कुशा की पैनी या नुकीली नोक ।

सूचक (वि०) [स्त्री०—सूचिका] १ बतलाने
वाला । सिद्ध करने वाला । दिखलाने वाला । २
मुखबिर ।

सूचकः (पु०) १ छेदने वाला । २ सुई । ३ मुख-
बिर । खबर देने वाला । जासूस । भेदिया । ४
वर्णन करने वाला । शिक्षक । ५ किसी नाटक
मण्डली का व्यवस्थापक या मुख्य या प्रधान नट ।
६ बुधदेव । ७ सिद्ध । ८ दुष्ट । गुंडा । ९ दैत्य ।

राक्षस । शैतान । १० कुत्ता । ११ काक । कौआ ।
१२ बिड्डी । १३ एक प्रकार का महीन चावल ।
—वाक्पत्रं, (न०) मुखबिर की की हुई
मुखबिरी ।

सूचनं (न०) १ छेदने या सूरख करने की
सूचना (स्त्री०) १ किया । २ सूचना देना । बत-
लाना । ३ भेद खोल देना । किसी गोप्य बात को
प्रकट कर देना । ४ हावभाव । ५ सङ्केत । इशारा-
बाजी । ६ इत्तिहा । ७ शिक्षण । वर्णन । ८
भेदिया का काम करना । पता लगाना । ९ दुष्टता ।

सूचा (स्त्री०) १ भेदन । २ हावभाव । ३ अवलोकन ।
सूचिः (स्त्री०) १ छेदन । भेदन । २ सुई ।
सूनी } ३ नुकीली नोक । ४ किसी वस्तु की नोक ।
५ कील की नोक । ६ सैन्यन्यूह । सूक्ष्माग्र चतु-
रस । सूक्ष्म वनचेत्र । ७ हावभाव द्वारा कोई बात
प्रदर्शित करना । इशारेबाजी । सैन्यामानी । ८ नृत्त्य
विशेष । ९ नाटकीय हावभाव । १० तालिका ।
फेहरिस्त । ११ विषयानुक्रमिका । किसी ग्रन्थ के
विषयों की तालिका ।—अग्रं, (वि०) सुई की तरह
पैनी नोक का ।—अग्रं, (न०) सुई की नोक ।
—आस्यः, (पु०) चूहा ।—पत्रकं, (न०)
सूचीपत्र । तालिका । फहरिस्त ।—पत्रकः, (पु०)
एक प्रकार की रुखरी ।—पुष्पः, (पु०) केतक
वृक्ष ।—मुखः, (वि०) वह जिसका मुख सुई
जैसा हो । नुकीली चोंच वाला । २ नुकीला ।—
मुखः, (पु०) १ चिड़िया । २ सफेद कुश । ३
हस्तमुद्राविशेष ।—मुखं, (न०) हीरा ।—
रोमन्, (पु०) शूकर ।—चदन, (वि०) सुई
जैसा चेहरे वाला । नुकीली चोंच वाला । चदनः,
(पु०) १ मच्छड़ । डॉस । २ न्योला ।—
शालिः, (पु०) महीन जाति का चावल विशेष ।

सूचिकः (पु०) दर्जी ।

सूचिका (स्त्री०) १ सुई । २ हाथी की सूँड़ ।—
धरः, (पु०) हाथी । गज ।—मुखं, (न०)
शंख ।

सूचित (व० कृ०) १ छिदा हुआ । छेदा हुआ ।
छेद किया हुआ । २ दिखलाया हुआ । बतलाया

हुआ । ३ इशारे या सङ्केत से बतलाया हुआ ।
४ कथित । इतिला दिया हुआ । प्रकट किया
हुआ । ५ जाना हुआ । दरिप्राप्त किया हुआ ।

सूचिन् (वि०) [स्त्री०—सूचिनी] १ छेदने वाला ।
छेद करने वाला । २ बतलाने वाला । ३ सुखबिरी
करने वाला । ४ भेद लेने वाला । जासूसी करने
वाला । (पु०) जासूस । भेदिया ।

सूचिनी (स्त्री०) १ सुई । २ रात । रजनी ।

सूची देखो सूचि ।

सूच्य (वि०) सूचना देने योग्य । बतलाने लायक ।

सूत् (अव्यथा०) खरटे का शब्द जो सोने के समय
प्रायः लोग किया करते हैं ।

सूत (व० कृ०) १ पैदा हुआ । उत्पन्न हुआ । पैदा
किया हुआ । २ निकाला हुआ ।

सूतः (पु०) १ सारथी । रथ हाँकने वाला । २
चित्रिथ का पुत्र जो ब्राह्मणी माता के गर्भ से उत्पन्न
हुआ हो । ३ बंदीजन । भाट । ४ बढ़ई । ५ सूर्य ।
६ व्यास के एक शिष्य का नाम । (पु० न०) पारा ।
पारद ।—तनयः, (पु०) कर्ण का नाम ।—
राजः, (पु०) चाँदी ।

सूतकं (न०) १ उत्पत्ति । पैदाइश । २ जन्मसूतक ।
जनन अशौच ।

सूतकं (न०) } पारा । पारद ।
सूतकः (पु०) }

सूतका (स्त्री०) जच्चा स्त्री । वह स्त्री जिसने हाल ही
में बच्चा जना हो ।

सूता (स्त्री०) जच्चा औरत । सूतका ।

सूतिः (स्त्री०) १ उत्पत्ति । पैदाइश । प्रसव । २
सन्तान । औलाद । ३ निर्गमस्थान । ४ वह स्थान
जहाँ सोमरस निकाला जाय । —अशौचं,
(न०) जननअशौच । —गृहं, (न०) वह
कमरा जिसमें लड़का जना गया हो । प्रसूतिगृह ।
—मासः, (पु०) (= सूतीमासः भी)
वह मास जिसमें बच्चा जना गया हो ।

सूतिका (स्त्री०) स्त्री जिसने हाल ही में सन्तान जनी
हो । —अगारं, —गृहं, —गेहं, —भवनं (न०)

वह कोठा या कमरा जिसमें जन्ता हुआ हो । —
रोगः, (पु०) वह बीमारी जो बच्चा जनने के बाद
हुई हो । —षष्ठी, (स्त्री०) देवी विशेष, जिसका
पूजन बच्चा जन्मने के दिन से छठवें दिन किया
जाता है ।

सूत्परं (न०) शराब चुशाने की क्रिया ।

सूत्या (स्त्री०) देखो सुत्या ।

सूत्र (धा० उ०) [सूत्रयति, सूत्रित] १ बाँधना ।
२ सूत्र के रूप में लिखना या बनाना । ३ क्रमबद्ध
करना । ४ खोलना । बाँधन ढीला करना ।

सूत्रं (न०) १ डोरा । डोरी । २ सूत । धागा । ३ तार ।
४ सूत का ढेर । ५ द्विजों के पहिनने का जनेऊ ।
६ कठपुतली का तार या डोरी या वह तार या
डोरी जिसे थाम कर कठपुतली नचाई जाती
है । ७ संहिस रूप में बनाया हुआ नियम या
सिद्धान्त । ८ थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ
ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करता हो ।
संहिस सारगर्भित पद या वचन । —आत्मन्,
(पु०) जीवात्मा । —आलो, (स्त्री०) माला ।
हार । —कण्ठः, (पु०) १ ब्राह्मण । २ कवुतर ।
फाकता । ३ खंजन । —कर्मन्, (न०) बढ़ई-
गिरी । —कारः, —कृत्, (पु०) सूत्र बनाने
वाला । —कोणः, —कोणकः, (पु०) डमरू ।
—गण्डिका, (स्त्री०) जुलाहे का । एक
औजार जो लकड़ी का होता है और कपड़ा
बुनने में काम देता है । —धरः, —धारः, (पु०)
१ नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट जो
भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार नांदी पाठ के
अनन्तर खेले जाने वाले नाटक की प्रस्तावना
सुनाता है । २ बढ़ई । ३ सूत्रों का बनाने वाला ।
४ इन्द्र । —पिटकः, (पु०) बौद्धों के मत के
प्रसिद्ध तीन संग्रह-ग्रन्थों में से एक । —पुष्पः,
(पु०) कपास का वृक्ष । —भिद्, (पु०) दर्जी ।
—भूत्, (पु०) सूत्रधार । —यंत्रं, (न०)
करघा । डरकी । —वीणा, (स्त्री०) प्राचीन
काल की एक वीणा जिसमें तार की जगह सूत
लगाये जाते थे । —वेष्टनं, (न०) करघा ।
डरकी ।

सूत्रां (न०) गूँथने की क्रिया ।
 सूत्रला (स्त्री०) तकला । टेकुवा ।
 सूत्रिका (स्त्री०) एकवान विशेष ।
 सूत्रित (व० कृ०) सूत्र में दिया हुआ ।
 सूत्रिन् (व०) [स्त्री०—सूत्रिणी] १ सूतों वाला । २ नियमों वाला । (पु०) काक ।
 सूट (धा० आ०) [सूदते,] १ ताड़न करना । चोटिल करना । घायल करना । वध करना । २ उड़ेलना । ३ जमा करना । ४ निकाल डालना । [उभय०—सूदयति—सूदयते] १ उत्तेजना देना । उत्तेजित करना । जान डालना । २ ताड़न करना । चोटिल करना । वध करना । ३ उड़ेलना ४ स्वीकार करना । प्रतिज्ञा करना । ५ तैयार करना । राँधना । ६ फैक देना ।
 सूदः (पु०) १ नाश । वध २ उड़ेलना । चुआना । ३ कूप । सोता । चरमा । ४ रसोइया । ५ चटनी । कढ़ी । ६ पकवान । ७ दली हुई मटर । ८ कीचड़ । काँदा । ९ पाप । गुनाह । कसूर । दोष । १० लोभ वृद्ध ।—कर्मन्, (न०) रसोइया का काम । —शाला, (स्त्री०) रसोई घर ।
 सूदन (वि०) [स्त्री०—सूदनी] १ नाशक । विनाशक । वधकारक । २ प्यारा । प्रेमपात्र । माथूक ।
 सूदनं (न०) नाशन । विनाशन । वध । करल । २ प्रतिज्ञा । ३ निकालना । निष्कासन ।
 सून (व० कृ०) १ उत्पन्न । जन्मा हुआ । पैदा किया हुआ । २ खिला हुआ । फूला हुआ । कली लगा हुआ । ३ खाली । रीता ।
 सूनं (न०) १ प्रसव करना । २ कली । कुसुम । ३ फूल ।
 सूनरी (स्त्री०) सुखी स्त्री ।
 सूना (स्त्री०) १ कसाईखाना । २ माँस की धिकी । ३ चोटिल करना । वध करना । ४ छोटी जिह्वा । कौआ । ५ पटुका । कमरपेटी । ६ गर्दन की गाँठों की सूजन । ७ किरन । ८ नदी । ९ पुत्री ।
 सूनाः (स्त्री० बहु०) गृहस्थ के घर में ऐसा स्थान, चूल्हा, चक्की, ओखली, घड़ा, भाड़ू में की कोई भी

वस्तु, जिससे जीवहिंसा होने की सम्भावना रहती है ।
 सूनिन् (पु०) १ कसाई । २ माँस बेचने वाला । बहेलिया । शिकारी ।
 सूनुः (पु०) १ लड़का २ बच्चा । बालक । औलाद । ३ दौहित्र । बेटी का वेदा । ४ छोटा भाई । ५ सूर्य । सदार का पौधा ।
 सूनु (स्त्री०) लड़की ।
 सूनुत (वि०) १ सच्चा और आनन्ददाई । कृपालु और सहृदय । २ कृपालु । शिष्ट । भद्र । ३ शुभ । भागवान् । ४ प्यारा । प्रेमपात्र ।
 सूनुतं (न०) १ सत्य और प्रिय वाणी । २ अच्छा और अनुकूल संवाद । शिष्ट भाषण । ३ शुभता । कल्याण ।
 सूपः (पु०) १ शोरुआ । कढ़ी । २ चटनी । मसाला । ३ रसोइया । ४ कढ़ाई । तसला । ५ तीर । बाण ।—कारः, (पु०) रसोइया । बाबची ।—धूपनं.—धूपकं, (न०) होंग ।
 सूर (धा० आ०) [सूर्यते] १ चोटिल करना । वध करना । २ दड़ करना । दड़ होना ।
 सूर्य (वि०) घायल ।
 सूरः (वि०) १ सूर्य । २ सदार का पौधा । ३ सोम-वल्ली । ४ पण्डितजन । ५ शूरवीर । राजा ।—सुतः, (पु०) शनिग्रह ।—सूतः, (पु०) सूर्य के सारथी अरुण देव ।
 सूरशाः (पु०) जमीकंद । सूरन ।
 सूरत (वि०) १ सहृदय । कृपालु । दयालु । कोमल । २ शान्त ।
 सूरिः (पु०) १ सूर्य । २ विद्वज्जन । पण्डितजन । ३ पाथा । ४ पुजारी । अर्चक । ५ सम्मानसूचक जैनियों की एक उपाधि । ६ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।
 सूरिन् (वि०) [स्त्री०—सूरिणी] विद्वान् । पण्डित । (पु०) विद्वज्जन । विद्वान् । पण्डित ।
 सूरी (स्त्री०) १ सूर्य की पत्नी का नाम । २ कुन्ती का नाम ।

सूत (धा० प०) [सूतति, सूतयति] : सम्मान करना । इज्जत करना । २ अपमान करना । तिरस्कार करना ।

सूतयि } (न०) असम्मान । बेइज्जती ।
सूतयि }

सूर्यः (पु०) मूंग ।

सूर्य देखो शूर्य ।

सूर्यः } (स्त्री०) १ लोहे या अन्य किसी धातु की
सूर्यी } बनी मूर्ति । धातु विग्रह । २ घर का खंभा ।
३ चमक । आभा । दीप्ति । ४ शोला । अंगारा ।

सूर्यः (पु०) १ सूर्य । २ अर्क का पौधा । ३ बारह की संख्या ।—अपायः, (पु०) सूर्यास्त ।—अर्घ्यः, (न०) सूर्य को अर्घ्यदान ।—अश्मन्, (पु०) सूर्यकान्तमणि ।—अश्वः, (पु०) सूर्य का घोड़ा ।—अस्तः, (न०) सूर्यास्त ।—घातपः, (पु०) धूप की चकाचौंध । धूप । सूर्यातपः ।—आलोकः, (पु०) धूप । वाम ।—आवर्तः, (पु०) सूरज सुबी का फूल ।—आह्नः, (वि०) सूर्य के नाम वाला ।—आह्नः, (न०) तांबा ।—आह्नः, (पु०) गुल्म विशेष ।—दर्शः, —उत्थानं, (न०)—उदयः, (पु०) सूर्योदय ।—ऊढः, (पु०) १ वह अतिथि या महमान जो शाम को आया हो । २ सूर्यास्तकाल ।—कान्तः, (पु०) सूर्यकान्तमणि ।—कालः, (पु०) दिवस काल ।—ग्रहः, (पु०) १ सूर्य । २ सूर्य का ग्रहण । ३ राहु और केतु के नामान्तर । ४ जल-घट की लली ।—ग्रहणः, (न०) सूर्यग्रहण ।—चन्द्रौ, [= सूर्याचन्द्रमसौ] (पु०) (द्विवचन) सूर्य और चन्द्रमा ।—जः, —तनयः, —पुत्रः, (पु०) १ सुग्रीव का नामान्तर । २ कर्ण । ३ शनिग्रह । ४ यम ।—जा, —तनया, (वि०) यमुना नदी ।—तेजस्, (न०) सूर्य का आतप या चकाचौंध या चमक ।—नक्षत्रं, (न०) २७ नक्षत्रों में से जिस पर सूर्य हो ।—पर्वन्, (न०) संक्रमण और सूर्यग्रहण आदि ।—प्रभव, (वि०) सूर्य से उत्पन्न या निकला हुआ ।—भक्त, (वि०) सूर्योपासक ।—भक्तः, (पु०) बन्धूक नामक वृक्ष या उसके फूल ।—मणिः, (पु०) सूर्यकान्त

मणि ।—मण्डलं, (न०) सूर्य की परिधि ।—यंत्रं, (न०) १ सूर्य के मंत्र और बीज से अंकित ताम्रपत्र जिसका सूर्य के उद्देश्य से पूजन किया जाता है । २ यंत्र विशेष या दूरबीन जिससे सूर्य की गति आदि का हाल जाना जाय ।—रश्मिः, (पु०) सूर्य की किरणें ।—लोकः, (पु०) सूर्य के रहने का लोक विशेष ।—वंशः, (पु०) सूर्यवंशी राजाओं का कुल या वंश ।—वर्चस्, (वि०) सूर्य की तरह चमकीला ।—विलोकनं, (न०) चार मास का होने पर शिशु को बाहिर निकाल कर उसको सूर्य का दर्शन कराने की विधि ।—संक्रान्ति, (स्त्री०)—संकमः, (पु०) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि पर जाना ।—संज्ञः, (न०) केसर ।—सारथिः, (पु०) ग्रहण का नामान्तर ।—स्तुतिः, (स्त्री०)—स्तोत्रं, (न०) सूर्य की स्तुति या स्तव ।—हृदयं (न०) सूर्य का एक स्तव विशेष ।

सूर्या (स्त्री०) सूर्यपत्नी ।

सूप (धा० प०) [सूपति] उत्पन्न करना । पैदा करना ।

सूषणा (स्त्री०) माता ।

सूष्यन्ती (स्त्री०) वह स्त्री जो बालक जनने ही वाली हो ।

सु (धा० प०) [सरति, सिसर्ति, सुत] : गमन करना । २ समीप जाना । ३ आक्रमण करना । ४ बौढ़ना । भागना । ५ बहना । चलना । (जैसे हवा का) । ६ बहना (पानी का) ।

सुकः (पु०) १ हवा । पवन । २ तीर । ३ वज्र । ४ कैरव । कमल ।

सुकंडु } (स्त्री०) खाल । खुजली ।
सुकण्डु }

सुकालः (पु०) शृगाल । गीढ़ ।

सुकं (न०)

सुकणी (स्त्री०)

सुकन (न०)

सुकिणी (स्त्री०)

सुकिन (न०)

सुगः (पु०) भिन्दिपाल । एक प्रकार की गदा ।

सृगालः (पु०) सियार । गीदड़ ।

सृका (स्त्री०) रत्न हार । रत्नों का हार ।

सृज् (धा० प०) [सृजति, सृष्ट] १ सृष्टि करना ।
पैदा करना । बनाना । २ रखना । प्रयुक्त करना ।
३ छोड़ देना । मुक्त करना । छुटकारा देना । ४
उड़ेलना । गिराना । बहाना । ५ उच्चारण करना ।
६ फेंकना । पटकना • त्यागना । छोड़ना ।

सृजिकात्तरः (पु०) रेह । सज्जी । खार ।

सृजयाः } (पु०) (बहु०) एक जाति के लोगों
सृज्याः } का नाम ।

सृणिः (स्त्री०) अंकुश । अँकुस (पु०) १ शत्रु ।
२ चन्द्रमा ।

सृणिका } (स्त्री०) थूक । खखार ।
सृणीका }

सृतिः (स्त्री०) १ जाना । फिसलना । खिसकना । २
मार्ग । सड़क । रास्ता । ३ चोटिलकरण । अनिष्ट-
करण ।

सृत्वर (वि०) [स्त्री०—सृत्वरी] गमन करने
वाला । जाने वाला ।

सृत्वरी (स्त्री०) १ दरिया । चरमा । नदी । सेता ।
२ माता । जननी ।

सृद्रः (पु०) सर्प । साँप ।

सृदाकुः (पु०) १ पवन । हवा । २ अग्नि । ३ मृग ।
४ इन्द्र का वज्र । सूर्य का मण्डल । (स्त्री०)
नदी । चरमा ।

सृप् (धा० प०) [सर्पति, सृप्त] १ रेंगना । सरकना ।
फिसलना । धीरे धीरे रेंगना । २ जाना । चलना ।

सृपाटः (पु०) माप विशेष ।

सृपाटिका (स्त्री०) पट्टी की घोंच ।

सृपाटी (स्त्री०) माप विशेष ।

सृप्रः (पु०) चन्द्रमा ।

सृभ् } (धा० प०) [सर्भति, सृंभति] धायल
सृभ् } करना । चोटिल करना । बध करना ।
सृभ् }

सृमर (वि०) [स्त्री०—सृमरी] गमन करने
वाला । जाने वाला ।

सृमरः (पु०) मृग विशेष ।

सृष्ट (व० कृ०) १ पैदा किया हुआ । सिरजा हुआ ।
२ उड़ेला हुआ । ३ त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ ।
४ विदा किया हुआ । विसर्जन किया हुआ ।
वरखास्त किया हुआ । निकाला हुआ । ६ दर्याप्रत
किया हुआ । निश्चित किया हुआ । ७ जुड़ा
हुआ । मिलाया हुआ । ८ अधिक । विपुल ।
असंख्य । ९ भूषित ।

सृष्टिः (स्त्री०) १ रचना । २ संसार की रचना ।
३ प्रकृति । ४ छुटकारा । ५ दान । ६ गुण का
अस्तित्व । सगुणता । ७ निर्गुणता ।—कर्तृ,
(पु०) सृष्टिकर्ता ।

सृ (धा० प०) [सृणाति] धायल करना । बध
करना ।

सेक् (धा० आ०) [सेकते] जाना । चलना ।

सेकः (पु०) १ पानी छिड़कना । सिंचन । पेड़ों को
सींचना । २ प्रेरण । त्याग । ३ धीर्यपात । ४ नैवेद्य ।
चढ़ौती ।—पार्श्व, (न०) वह बरतन जिससे
छिड़काव किया जाय । २ बाहरी । डोल ।

सेकिप्रं (न०) मूली । सब्जाम ।

सेक्तृ (वि०) [स्त्री०—सेक्त्री] १ छिड़कने वाला ।
(पु०) छिड़काव करने वाला । २ पति ।
खाबिंद ।

सेक्त्रं (न०) डोलची । पानी छिड़कने का पात्र ।

सेचकं (वि०) [स्त्री०—सेचिका] सिंचन करने
वाला । जल छिड़कने वाला ।

सेचकः (पु०) बादल ।

सेचनं (न०) १ सिंचन । पानी का छिड़काव ।
सींचना । २ डोलची । बाहरी ।—घटः, (पु०)
जलघट । जल का घड़ा ।

सेचनी (स्त्री०) बाहरी । डोलची ।

सेटुः (पु०) १ तरबूज । २ ककड़ी ।

सेतिका (स्त्री०) अथोथ्या का नाम ।

सेतुः (पु०) १ टीला । बांध । २ पुज । सेतु ।
भूलीमा । ३ घाटी । सक्कीर्ण मार्ग । ४ सीमा । हद ।

१ प्रतिबन्धक । किसी भी प्रकार की रोक या रुकावट । २ निर्दिष्ट या निर्धारित नियम या विधि । ३ प्रणव । ओङ्कार । [यथा कालिका-पुराणोः—

संज्ञायां प्रणवः सेतुस्तत्सेतुः प्रणवः स्मृतः ।
सवस्यनोऽङ्कुरं पुर्वं परंस्ताश्च विदीर्यते ॥

—बाँधः, (पु०) १ पुल की बनावट । २ श्रीराम चन्द्र जी का बनवाया इतिहासप्रसिद्ध पुल ।
—भेदिन्, (वि०) रुकावट का तोड़ने वाला । रुकावट दूर करने वाला । (पु०) इन्ती नामक वृक्ष ।

सेतुकः (पु०) १ बाँध । पुल । २ दर्रा ।

सेत्रं (न०) बन्धन । बेड़ी ।

सेदिवस् (वि०) [स्त्री०—सेदुषी] उपवेशित । बैठा हुआ ।

सेन (वि०) वह जिसका कोई प्रभु हो ।

सेना (स्त्री०) १ फौज । बाहिनी । २ सेना की अधिष्ठात्री देवी कार्तिकेय की पत्नी बतलाई जाती है ।—अग्रं, (न०) सेना का वह दल जो आगे चलता है ।—चरः, (पु०) १ सिपाही । २ अनुयायी । अनुचरका ।—निवेशः, (पु०) सेना की छावनी । सैन्यशिखर ।—निवेशनी, (स्त्री०) १ सेनानायक । २ कार्तिकेय का नाम ।—परिच्छिन्न, (वि०) सेना से घिरा हुआ ।—पृष्ठं, (न०) सेना का पिछला भाग ।—सङ्गः, (पु०) सेना को तितर बितर कर भगा देना ।—मुखं, (न०) १ सेना का एक दल । २ विशेष कर वह दल, जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, १ घोड़े, और पन्द्रह पैदल सिपाही होते हैं । ३ नगर द्वार के सामने का मिट्टी का टीला या धुस्स ।—योगः, (पु०) सेना की सजावट ।—रक्षः, (पु०) पहरेदार । पहरा ।

सेफः (पु०) लिङ्ग । पुरुष की जननेन्द्रिय ।

सेमंती } (स्त्री०) सफेद गुलाब विशेष ।
सेमन्ती }

सेरः (पु०) १ षट्पाँच का एक सेर ।

सेराहः (पु०) दूधिया सफेद रङ्ग का घोड़ा ।

सेरु (वि०) बांधने वाला ।

सेल् (धा० प०) [सेलति] जाना । चलना ।

सेव् (धा० आ०) [सेवते, सेवित] १ परिचय करना । सेवा करना । २ पीछा करना । पड़ियाना । अनुगमन करना । ३ इस्तेमाल करना । उपयोग करना । ४ मैथुन करना । ५ सम्पादन करना । ६ बसना । रहना । ७ रखवाली करना । ८ जमा करना ।

सेव देखो सेवन ।

सेवक (वि०) १ सेवा करने वाला । अर्चा करने वाला । २ अनुगमन करने वाला । ३ परतन्त्र । पराधीन ।

सेवकः (पु०) १ नौकर । चाकर । २ भक्त । आराधना करने वाला । ३ दर्जी । सीने वाला । ४ बौरा ।

सेवन (न०) १ सेवा करने की क्रिया । सेवकाई । २ इस्तेमाल करने की क्रिया । काम में लाने की क्रिया । ३ स्त्रीमैथुन करने की क्रिया । ४ सीना । सीने का काम । ५ बौरा ।

सेवा (स्त्री०) १ सेवकाई । पराधीनता । २ पूजन । अर्चा । ३ अनुराग । अनुरक्ति । ४ उपयोग । ५ आसरा । ६ चापलूसी । ठकुरसुहाती ।—धर्मः, (पु०) सेवकाई करने का कर्त्तव्य ।

सेवि (न०) १ बेर या बेरी का फल । २ सेवक ।

सेवित (व० कृ०) १ सेवन किया हुआ । सेवकाई किया हुआ । २ अनुमान किया हुआ । अभ्यास किया हुआ । ३ आसरा लिया हुआ । ४ उपयोग किया हुआ । काम में लाया हुआ ।

सेवितं (न०) १ बदरी फल । बैर । २ सेव ।

सेवितु (पु०) अनुचर । पराधीन ।

सेविन् (वि०) १ सेवा करने वाला । पूजा करने वाला । २ अभ्यास करने वाला । काम में लाने वाला । ३ बसने वाला । रहने वाला । (पु०) नौकर । अनुचर ।

सेव्य (वि०) १ सेवा के लायक । २ नौकर रखने लायक । ३ उपभोग करने लायक । ४ रखवाली करने लायक ।

सेव्य (न०) एक प्रकार की जड़ । —सेवकौ, (पु०) मालिक और नौकर ।

सेव्यः (पु०) १ स्वामी । अश्वत्थ वृक्ष ।

सै (धा० प०) [सायति] खराब कर डालना । नाश कर डालना ।

सैह (वि०) [स्त्री०—सैही] सिंह सम्बन्धी ।

सैहल (वि०) सिंहल द्वीप सम्बन्धी । लंका में उपन्न ।

सैहिकः } (पु०) राहु का नामान्तर ।
सैहिक्यः }

सैकत (वि०) [स्त्री०—सैकती] १ रेतीला । २ रेतीली जमीन वाला ।

सैकतं (न०) १ रेतीला तट । २ वह द्वीप जिसके तट पर रेत या बालू हो । ३ तट । किनारा ।—इष्टं, (न०) अदरक । आदी ।

सैकितिक (वि०) [स्त्री०—सैकितिकी] १ बलुहा तट का । २ सन्देह जीवन ।

सैकितिकं (न०) गंडा जो गले या कलाई में बाँधा जाता है ।

सैकितिकः (पु०) १ संन्यासी । साधु । २ तपस्वी ।

सैदांतिकः } (पु०) १ सिद्धान्त सम्बन्धी । २
सैद्धान्तिकः } यथार्थ सत्य जानने वाला ।

सैनापत्यं (न०) सेनानायकत्व । सेनापतित्व ।

सैनिक (वि०) [स्त्री०—सैनिकी] १ सेना सम्बन्धी । २ फौजी । जंगी ।

सैनिकः (पु०) १ सिपाही । योद्धा । सन्तरी । सेना जो युद्ध के लिए सजा कर खड़ी की गई हो ।

सैधव } (वि०) [स्त्री०—सैधवी] १ सिन्धु देश
सैन्धव } में उत्पन्न हुआ । २ सिन्धु नदी सम्बन्धी ।
३ नदी में उत्पन्न । ४ सामुद्रिक । समुद्र सम्बन्धी ।

सैधवः } (पु०) १ घोड़ा, विशेष कर सिन्धु देश
सैन्धवः } का । २ एक ऋषि का नाम । ३ एक देश का नाम ।

सैधवः (पु०)
सैन्धवः (पु०)
सैधवं (न०)
सैन्धवं (न०) } सैधा निमक ।

सैधवाः } (पु० बहु०) सिन्धु देशवासी लोग ।
सैन्धवाः } —घनः (पु०) निमक का ढेला ।
—शिला (स्त्री०) सैधानिमक ।

सैधवक (वि०) [स्त्री०—सैधवकी] सैन्धव सम्बन्धी ।

सैधवकः } (पु०) सिन्धु देश का एक विपत्तिग्रस्त
सैन्धवकः } आदमी ।

सैधी } (स्त्री०) मदिरा विशेष ।
सैन्धी }

सैन्यः (पु०) १ सैनिक । योद्धा । २ रक्षक । संतरी । पहरेदार ।

सैन्यं (न०) सेना । फौज ।

सैमंतिकं } (न०) इंगुर । सेंदुर ।
सैमन्तिकं }

सैरंध्री (स्त्री०)
सैरन्ध्री (स्त्री०)
सैरिंध्रः (पु०)
सैरिन्ध्रः (पु०) } १ नीच जाति की चाकरानी ।
२ वर्णसङ्कर जाति ।

सैरंध्री (स्त्री०)
सैरन्ध्री (स्त्री०)
सैरिंध्री (स्त्री०)
सैरिन्ध्री (स्त्री०) } १ अन्तःपुर में काम करने वाली
दासी जिसकी उत्पत्ति वर्णसङ्कर
जाति विशेष में हुई हो । २
दूसरे के घर में रहने वाली
स्वाधीन शिल्पकारिणी स्त्री । ३ द्रौपदी का वह नाम जो उसने अज्ञातवास के समय रखा था ।

सैरिक (वि०) [स्त्री०—सैरिकी] १ हल सम्बन्धी । २ सीर वाला ।

सैरिकः (पु०) १ हल का बैल । २ हलवाहा ।

सैरिभः (पु०) १ भैसा । २ स्वर्ग ।

सैवाल देखो शैवाल ।

सैसक (वि०) [स्त्री०—सैसकी] सीसा नामक धातु का ।

सो (धा० प०) [स्थिति—सित] १ बध करना
नष्ट करना । २ समाप्त करना । पूर्ण करना ।

सोढ (व० क०) वहन किया हुआ । सहन किया हुआ ।

सोढू (वि०) [स्त्री०—सोढी] १ धीरजवान । सहिष्णु । २ शक्तिमान । योग्य ।

सोत्क } (वि०) १ उत्सुक । अत्यन्त उत्सुक ।
सोत्कट } २ खेदजनक । ३ शोकान्वित ।
सोत्कण्ठ }

सोत्प्रास (वि०) १ अत्यधिक । २ बहुत बढ़ाया हुआ । अतिशयोक्त । ३ व्यङ्ग्यपूर्ण । कटाक्षयुक्त । व्याजस्तुतियुक्त ।

सोत्प्रासः (पु०) अट्टहास ।

सोत्प्रासः (पु०) } व्यङ्ग्यपूर्ण अतिशयोक्ति ।
सोत्प्रासं (न०) } व्याजस्तुति ।

सोत्सव (वि०) हर्षवर्द्धक । आनन्दवर्द्धक ।

सोत्साह (वि०) उत्साहपूर्वक ।

सोत्सुक (वि०) खेदपूर्ण । शोकान्वित ।

सोत्सेध (वि०) उन्नत । उठा हुआ । ऊँचा । लम्बा ।

सोदर (वि०) एक उदर या पेट से उत्पन्न ।

सोदरः (पु०) सहोदर भाई ।

सोदरा (स्त्री०) सगी बहिन ।

सोदर्यः (पु०) सहोदर भ्राता ।

सोद्योग (वि०) मिहनती । परिश्रमी । अध्यवसायी ।

सोद्वेग (वि०) १ उत्सुक । उत्कण्ठित । सशक्तित । २ शोकान्वित ।

सोद्वेगं (न०) उत्सुकता पूर्वक ।

सोनहः (पु०) लहसुन ।

सोन्माद (वि०) पागल । सिढ़ी । सनकी ।

सोमकरण (वि०) वह जिसके पास अपेक्षित समस्त औज़ार या सामान हो ।

सोपद्रव (वि०) उपद्रवों सहित । उपद्रव युक्त ।

सोपध (वि०) धूर्त । कपटी । धोखेबाज़ ।

सोपधि (वि०) कपटी । धूर्त ।

सोपमव (वि०) १ किसी बड़े सङ्कट में पड़ा हुआ । २ शत्रुओं से आक्रान्त । ३ ग्रस्त । जैसे चन्द्र और सूर्य ग्रस्त होते हैं ।

सोपरोध (वि०) १ अवरोध । २ अनुगृहीत ।

सोपरोधं (अव्यया०) प्रतिष्ठासहित ।

सोपसर्ग (वि०) १ किसी बड़ी मुसीबत या सङ्कट में पड़ा हुआ । २ भावी अमङ्गल सूचक । ३ किसी भूत प्रेत द्वारा आवेशित । ४ व्याकरण में उपसर्ग सहित ।

सोपहास (वि०) १ व्यङ्ग्यपूर्ण । व्युत्पाद्यञ्जक हास्य युक्त ।

सोपाकः (पु०) पतित जाति का आदमी ।

सोपाधि } (वि०) [स्त्री०—सोपाधिकी]
सोपाधिक } १ उपाधि सहित । २ विशेष उपाधि सहित ।

सोपानं (न०) सिढ्डी । सीढ़ी । जीना ।—पंक्तिः, (स्त्री०)—पथः, (पु०)—पद्धतिः, (स्त्री०)—परम्परा, (स्त्री०)—मार्गः, (पु०) जीना । नसैनी । सीढ़ी ।

सोमः (पु०) १ एक क्षता जिसका रस यज्ञ के काम में आता है । २ सोमवल्ली का रस । ३ अमृत । ४ चन्द्रमा । ५ किरण । ६ कपूर । ७ जल । ८ पवन । वायु । ९ कुबेर का नाम । १० शिव का नाम । ११ मन का नाम । १२ [किसी समासान्त शब्द के अन्त में आने पर इसका अर्थ होता है—मुख्य, प्रधान, सर्वोत्तम । यथा नृसोम] —अभिषवः, (पु०) सोमरस का निकालना ।

सोमं (न०) १ काँजी । २ आकाश ।—ग्रहः, (पु०) सोमवार ।—आख्यः, (न०) लाल कमल । —ईश्वरः, (पु०) शिवजी का एक प्रसिद्ध प्रतिनिधि ।—उद्गवा, (स्त्री०) प्रसिद्ध नदी नर्मदा का नाम ।—कान्तः, (पु०) चन्द्रकान्तमणि । —क्षयः, (पु०) चन्द्र की कला का हास ।—ग्रहः, (पु०) वह पात्र जिसमें सोमरस एकत्रित किया जाय ।—ज, (वि०) चन्द्रमा से उत्पन्न ।—जः, (पु०) बुधग्रह ।—जं, (न०) दूध ।—धारा, (स्त्री०) आकाश । आसमान ।—नाथः, (पु०) शिवजी के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक । सोमनाथ नामक प्रभासच्छेत्र में स्थान विशेष ।—प,

—पा, (वि०) १ सोमरस पीने वाला । २ सोम याग करने वाला । ३ पितृगण विशेष ।—पतिः, (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।—पाथिन्, —पीथिन्, (पु०) सोम रस पीने वाला ।—पुत्रः, —भूः, —सुतः, (पु०) बुध का नाम ।—प्रवाकः, (पु०) श्रोत्रिय को सोमयाग के लिए नियुक्त करने का अधिकार प्राप्त मनुष्य ।—पुत्रः, —भूः, —सुतः, (पु०) बुध का नामान्तर ।—वंधुः, (पु०) सफेद कमल । कमोदिनी ।—योनिः, (पु०) पीत सुगन्ध वाला चन्दन ।—रोगः, (पु०) स्त्रियों का रोग विशेष ।—लता, —वल्लरी, (स्त्री०) १ सोम-वल्लरी । २ गोदावरी नदी का नाम ।—वंशः, (पु०) सोमवंशी क्षत्रिय राजाओं की वह शाखा जो बुध से चली ।—वारः, —वासरः (पु०) सोमवार ।—विकथिन्, (पु०) । सोमवल्लो का विक्रेता ।—वृत्तः, —सारः, (पु०) सफेद खदिर का पेड़ ।—शकला, (स्त्री०) ककदी विशेष ।—संज्ञं, (न०) कपूर ।—सद्, (पु०) पितृगण विशेष ।—सिन्धुः, (पु०) विष्णु ।—सुतः, (पु०) सोमरस सुगन्धने वाला ।—सुता (स्त्री०) नर्मदा नदी ।—सूत्रं, (न०) शिव-लिङ्ग के अभिषेक का जल निकालने की नाली ।

सोमन् (पु०) चन्द्रमा ।

सोमिन् (वि०) [स्त्री०—सोमिनी] सोम याग ।
—(पु०) सोम याग करने वाला ।

सोमय (वि०) १ सोम के योग्य । २ सोम चढ़ाने वाला । ३ सोम की शक्त का । ४ मुलायम । कोमल ।

सोमलुण्ठः (पु०)
सोमलुण्ठः (पु०)
सोमलुण्ठनं (न०)
सोमलुण्ठनं (न०)

श्लेषवाक्य । व्यङ्ग्योक्ति ।
परिहास । उपहास ।

सोमन् (वि०) १ उष्ण । २ ध्वनिपूर्वक स्पष्ट उच्चारित । (पु०) स्पष्ट उच्चारण ।

सौकर (वि०) [स्त्री०—सौकरी] शूकर का ।

सौकर्य (न०) १ शूकरपन । २ सहजता । सरलत्व ।

३ सम्भावना । ४ निपुण्यता । पटुता । किसी भोज्य पदार्थ या दवाई की सहज बनाने की तरकीब ।

सौकुमार्य (न०) १ कोमलता । सुकुमारता । २ जवानी ।

सौन्दर्य (न०) सूक्ष्मता । मिहीनपन ।

सौख्यशायनिकः (पु०) वह पुरुष जो किसी अन्य पुरुष से सुख पूर्वक सोने का प्रश्न करे ।

सौख्यसुप्तिकः (पु०) १ वह पुरुष जो किसी अन्य पुरुष से सुखपूर्वक सोने का प्रश्न करे । २ बंदी-जन जो राजा या अन्य किसी महान् पुरुष को गान गाकर और बाजे बजाकर जगावें ।

सौखिक } (वि०) [स्त्री०—सौखिकी]
सौखीय } (वि०) [स्त्री०—सौखीयी] सुख
संबन्धी । सुखी ।

सौख्यं (न०) आनन्द । हर्ष । सन्तोष ।

सौगतः (पु०) सुगत या बुध देव का अनुयायी ।

सौगतिकः (पु०) १ बौद्ध । २ बौद्धमित्रक ।
३ नास्तिक । पास्त्यडी ।

सौगतिकं (न०) अविश्वास । नास्तिकता ।

सौगंध } (वि०) [स्त्री०—सौगंधी] मधुर
सौगन्ध } सुगन्ध युक्त ।

सौगंधं } (न०) १ मधुर सुशब्दपन । सुगन्धि । २
सौगन्धं } सुगन्ध युक्त घास विशेष ।

सौगंधिक } [स्त्री०—सौगंधिका, सौगंधिकी]
सौगन्धिक } (वि०) मधुर सुगन्धि वाला । खूशबू-
दार ।

सौगंधिकं } (न०) १ सफेद कमल । २ नील
सौगन्धिकम् } कमल । कच्छण नामक खूशबूदार
वृक्ष विशेष । ३ सुत्री । लाल ।

सौगंधिकः } (पु०) १ गन्धी । इत्रफरोश ।
सौगन्धिकः } २ गन्धक ।

सौगन्धं } (न०) महक या सुगन्धि की मधुरता ।
सौगन्ध्यं } खूशबू ।

सौविः }
सौविकः } (पु०) दर्जी ।

सौजन्यं (न०) १ नेकी । भलाई । भद्रता ।

२ उदारता । ३ कृपालुता । दयालुता । ४ मैत्री ।
प्रेम ।

सौडी (स्त्री०) पीपरामूल ।

सौलिः (पु०) कर्ण का नामान्तर ।

सौत्य (न०) सारथीपन ।

सौत्र (वि०) [स्त्री०—सौत्री] १ सूत्रसम्बन्धी ।
२ सूत्र में वर्णित घातु ।

सौत्रः (पु०) १ ब्राह्मण । २ भ्यादि आदि दशगण
में होने वालों से भिन्न केवल सूत्र में वर्णित
घातु ।

सौत्रांत्रिकाः } (पु० बहु०) सौगत नाम की चौध
सौत्रांत्रिकाः } धर्म की शाखा विशेष ।

सौत्रासखी (स्त्री०) पूर्वदिशा ।

सौदर्य (न०) भाईपना ।

सौदामनी (स्त्री०) }

सौदामिनी (स्त्री०) } बिजली । विद्युत ।

सौदाक्षी (स्त्री०) }

सौदायिक (वि०) [स्त्री०—सौदायिकी] वह
सम्पत्ति जो किसी स्त्री को विवाह के समय दी
जाय और जो उसीकी हो जाय ।

सौदायिकं (न०) स्त्रीधन जो उसे विवाह के समय
मिला हो ।

सौध (वि०) [स्त्री०—सौधी] १ अमृत सम्बन्धी ।
अमृत रखने वाला । २ प्लास्टर वाला । अस्तर-
कारी किया हुआ ।—कारः, (पु०) मैमार ।
राज । धवई । अस्तरकारी करने वाला ।—वासः,
(पु०) राजसी भवन । महल जैसा मकान ।

सौधं (न०) १ सफेदी से पुता हुआ भवन ।
विशाल भवन । राजप्रासाद । ३ चाँदी ।
४ दूधिया पत्थर ।

सौन (वि०) [स्त्री०—सौनी] कसाईपन या
कसाई खाने से सम्बन्ध रखने वाला ।—भ्रम्यः,
(न०) घेर शत्रुता ।

सौनं (न०) कसाई के घर का माँस ।

सौनिकः (पु०) कसाई ।

सौनदं (न०) बलराम का मुख ।

सौनन्दिन् } (पु०) बलराम का नामान्तर ।
सौनन्दिन् }

सौन्दर्य } (न०) सुन्दरता । मनोहरता ।
सौन्दर्य }

सौपर्य (न०) १ सोंठ । २ पत्ता ।

सौपर्ण्यः (पु०) गरुड़ जी ।

सौप्तिक (वि०) [स्त्री०—सौप्तिकी] १ निद्रा
सम्बन्धी । निद्राजनक । प्रस्थापन ।—पर्वनः,
(न०) महाभारत का दसवाँ पर्व ।—वधः,
(पु०) पाण्डवों के शिबिर में सोते हुए लोगों
का अश्वत्थामा द्वारा हत्या कृत्य ।

सौप्तिकं (न०) १ रात्रि के समय का आक्रमण । २
वह आक्रमण जो रात के समय सोते लोगों पर
किया जाय ।

सौबलः (पु०) शकुनि का नामान्तर ।

सौबली } (स्त्री०) गान्धारी या दुर्योधन की माता
सौबलेयी } का नाम ।

सौभं (न०) हरिश्चन्द्र की नगरी का नाम, जिसके
विषय में कहा जाता है कि, वह अन्तरिक्ष में लटक
रही है ।

सौभगं (न०) १ सौभाग्य । २ समृद्धि । धन-
दौलत ।

सौभद्रः } (पु०) सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु का
सौभद्र्यः } नामान्तर ।

सौभागिनेयः (पु०) किसी भाग्यवन्ती का पुत्र ।

सौभाग्यं (न०) १ अच्छा भाग्य । अच्छी किस्मत ।

सुगमता । २ शुभत्व । कल्याणत्व । ३ सौन्दर्य ।

मनोहरता । ४ गरिमा । महत्व । ५ सौभाग्यपन ।

६ बधाई । सुबारकवादी । ७ ईश्वर । सेंदूर । ८

सुहागा ।—चिह्नं, (न०) १ सौभाग्य का या

हर्ष का लक्षण जैसे रोरी का माथे पर तिलक । २

सौभाग्यवती होने के चिह्न । यथा हाथों की

चूड़ियाँ, माँग का सेंदूर, पैरों के बिलुआ ।—तन्तुः,

(पु०) वह डोरा जो वर के गले में विवाह के

दिनों में डाला जाता है । मंगलसूत्र ।—तृतीया

(स्त्री०) भाद्र शुक्ल तृतीया ।

सौभाग्यवत् (वि०) सौभाग्यवान् । शुभ ।

सौभाग्यवती (स्त्री०) विवाहित स्त्री जिसका पति जोषित है ।

सौमिकः (पु०) मदारी ।

सौमित्रं (न०) आवृत्तभाव ।

सौमनस (वि०) [स्त्री०—सौमनसा या सौमनसी]

१ मनोमुकूल । मनप्रसन्नकारक । २ फूल सम्बन्धी । फूलों का ।

सौमनसं (न०) १ कृपालुता । दयालुता । परहितैषिता । २ आनन्द । सन्तोष ।

सौमनसा (स्त्री०) कायफल का बाहिरी छिन्नका ।

सौमनस्यं (न०) १ मन का सन्तोष । आनन्द । हर्ष । २ श्राद्ध के समय ब्राह्मण को दी गई पुष्पों की मँट ।

सौमनस्थायनी (स्त्री०) नालती लता के पुष्प ।

सौमायनः (न०) बुद्धदेव का नामान्तर ।

सौमिक (वि०) [स्त्री०—सौमिकी] १ सोमरस से (यज्ञ) किया हुआ । सोमरस सम्बन्धी । २ चन्द्रमा सम्बन्धी । चान्द्रमस ।

सौमित्रः } (पु०) लक्ष्मण का नामान्तर ।

सौमित्रिः } (पु०) एक नाटककार जो कालिदास के पूर्व हुए थे ।

सौमेधिकः (पु०) ऋषि । मुनि । अलौकिक बुद्धि-सम्पन्न ।

सौमेहक (वि०) [स्त्री०—सौमेहकी] सुमेह-सम्बन्धी । सुमेह से निकला हुआ ।

सौमेहकं (न०) सुघर्ष । सोना ।

सौम्य (वि०) [स्त्री०—सौम्या या सौम्यी] १ चन्द्रमा सम्बन्धी । चन्द्रमा का । २ सोम सम्बन्धी । ३ सुन्दर । मनोहर । प्रिय । ४ मुलायम । कोमल । ५ शुभ ।

सौम्यः (पु०) १ बुध ग्रह का नाम । २ ब्राह्मण को सम्बोधित करने के लिये उपयुक्त सम्बोधनात्मक शब्द । ३ आश्रय । ४ गुलर का बुध । ५ खून की

वह दशा जो लाल होने के पूर्व होती है । ६ अन्न का वह रस जो उसके जीर्ण होने पर उदर में बनता है । ७ भूगोल के नक्शों में से एक का नाम । (पु० बहु०) १ पितृगण विशेष । २ तारागण विशेष ।—उपचारः, (पु०) शान्त उपचार ।—ग्रहः, (पु०) ज्योतिष में चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्ररूप शुभग्रह ।—धातुः, (पु०) श्लेष्मा । कफ ।—वारः,—वासरः, (पु०) बुधवार ।

सौर (वि०) [स्त्री०—सौरी] १ सूर्य सम्बन्धी । सौर्य । २ सूर्य को अर्पित । ३ वैधी । स्वर्गीय । ४ शराब या मदिरा सम्बन्धी ।—नक्तं, (न०) जल विशेष ।—लोकः, (पु०) सूर्यलोक ।

सौरं (न०) सूर्य सूक्त अर्थात् ऋग्वेद के उन मंत्रों का संग्रह जो सूर्य सम्बन्धी हैं ।

सौरः (पु०) १ सूर्योपासक । २ शनिग्रह । ३ सौर्य-मास । वह मास जिसकी गणना संक्रान्ति से हो । ४ सौर्य दिवस । ५ तुम्बुरु नामक पौधा ।

सौरधः (पु०) घोड़ा । वीर । भट ।

सौरम (वि०) [स्त्री०—सौरमी] खूशबूदार । सुगन्धि युक्त ।

सौरमं (न०) १ खूशबू । सुगन्धि । केसर । कुङ्कुम ।

सौरमेय (वि०) [स्त्री०—सौरमेयी] सुरमी सम्बन्धी ।

सौरमेयः (पु०) बैल । वृषभ ।

सौरमी } (स्त्री०) १ गौ । २ सुरमी गौ ।

सौरभ्यं (न०) १ महक । खूशबू । २ लावण्य । सौन्दर्य । ३ अच्छा चालचलन । सुकीर्ति । गौरव । नामवरी ।

सौरसैयः (पु०) स्कन्ध । कार्तिकेय ।

सौरसैयः } (वि०) [स्त्री०—सौरसैयवी]

सौरसैयवः } आकाश गंगा सम्बन्धी ।

सौरसैयवः } (पु०) सूर्य का घोड़ा ।

सौराज्यं (न०) अच्छा राज्य । सुशासन ।

सौराष्ट्र (वि०) [स्त्री०—सौराष्ट्री या सौराष्ट्र]

सं० श० को०—११६

सुराष्ट्र (अर्थात् सुरत नगर) सम्बन्धी था वहाँ से आया हुआ ।

सौराष्ट्रः (पु०) सुराष्ट्र देश । सुरत प्रान्त ।
(पु० बहु०) सौराष्ट्र देश के अधिवासी ।

सौराष्ट्र (न०) पीतल । फूल । काँसा ।

सौराष्ट्रिक (न०) त्रिप विशेष ।

सौराष्ट्रिकः (पु०) फूल या काँसा जैसी धातु विशेष ।

सौरिः (पु०) १ शनिग्रह । २ असन नामक वृक्ष ।
—रत्नं, (न०) पुखराज । याकृत ।

सौरिक (वि०) [स्त्री०—सौरिकी] १ स्वर्गीय । २ मादक । नशीला । ३ मदिरा पर लगने वाला (कर या महसूल)

सौरिकः (पु०) १ शनिग्रह । २ स्वर्ग । ३ शराब बँचने वाला । कलवार ।

सौरी (स्त्री०) सूर्य की पत्नी ।

सौरीय (वि०) [स्त्री०—सौरीयी] १ सौर्य । २ सूर्य के लिये उपयुक्त या सूर्य के योग्य ।

सौर्य (वि०) [स्त्री०—सौर्यी] सूर्य सम्बन्धी । सूर्य का ।

सौलभ्यं (न०) सुलभता । सहज में प्राप्त्य । २ सहजत्व ।

सौल्विकः (पु०) ताँबे का काम करने वाला ।

सौव (वि०) [स्त्री०—सौवी] १ अपनी निज की सम्पत्ति सम्बन्धी । २ स्वर्गीय या स्वर्ग का ।

सौवं (न०) आदेश । अनुशासनपत्र ।

सौवग्रामिक (वि०) [स्त्री०—सौवग्रामिकी] अपने निज के ग्राम का ।

सौवर (वि०) [स्त्री०—सौवरी] ध्वनि या किसी राग सम्बन्धी ।

सौवर्चल (वि०) [स्त्री०—सौवर्चली] सुवर्चल नामक देश का या उस देश से निकला हुआ ।

सौवर्चलं (न०) १ सज्जीखार । २ लवण विशेष ।

सौवर्ण (वि०) [स्त्री०—सौवर्णी] १ सुनहला । २ तौल विशेष ।

सौवस्तिक (वि०) [स्त्री०—सौवस्तिकी] आशीर्वादालम्बक ।

सौवस्तिकः (पु०) कुलपुरोहित ।

सौवाध्यायिक (वि०) [स्त्री०—सौवाध्यायिकी] स्वाध्याय का । स्वाध्याय से सम्बन्ध रखने वाला ।

सौवास्तव (वि०) [स्त्री०—सौवास्तवी] अच्छी जगह वाला । खूबसूरती से स्थापित ।

सौविदः } (पु०) जनानखाने का अनुचर या
सौविद्वलः } चाकर ।

सौवीरं (न०) १ बदरीफल । २ सुर्मा । ३ खड़ी काँजी ।

सौवीरः (पु०) एक प्रदेश का नाम और वहाँ के अधिवासी ।—अंजनं, (न०) सुर्मा या काजल ।

सौवीरकं (न०) जवा के आटे की खट्टी काँजी ।

सौवीरकः (पु०) १ बदरी का फल । २ सुवीर का वाली । ३ जयद्रथ का नाम ।

सौवीर्य (न०) बड़ी शूरवीरता या पराक्रम ।

सौशील्यं (न०) अच्छा स्वभाव । अच्छा चलन ।

सौश्रवसं (न०) प्रसिद्धि । प्रख्याति ।

सौष्ठवं (न०) १ उत्तमता । नेकी । भलमनसाहत । २ सौन्दर्य । उत्कृष्टतर सौन्दर्य । ३ पदता । चातुर्य । ४ आधिक्य । ५ हल्कापन ।

सौस्नातिकः (पु०) वह जो किसी अन्य से पूछे कि उसका स्नान भली भाँति हुआ है या नहीं ।

सौहार्द (न०) अच्छा हृदय होने का भाव । मैत्री ।

सौहार्दः (पु०) मित्र का पुत्र ।

सौहार्द }
सौहृदं } (न०) दोस्ती । प्यार ।
सौहृदयं }

सौहित्यं (न०) १ सन्तोष । अधाना । २ परिपूर्णता । सम्पूर्णता । ३ मिहिरबानी । दोस्तीपन ।

स्कन्द } (धा० आ०) [स्कन्दते,] १ कूटना । २
स्कन्द } उठाना । ३ उड़ेलना । बाहिर निकालना ।

स्कन्द } (धा० प०) [स्कन्दति, स्कल] १
स्कन्द } कूटना । फलंगाना । २ उड़ेलना । ऊपर की

उठना । ३ गिरना । ऊपर से नीचे गिरना । ४ फूट जाना । ५ नाश होना । समाप्त होता । ६ चुना । ७ बहना । निकल पड़ना ।

स्कंदः } (पु०) १ उछाल । कुलांच । २ पारा । ३ स्कन्दः } कार्तिकेय । ४ शिव । ५ शरीर । ६ राजा ।

७ नदी तट । ८ चालाक आदमी ।—पुराणः, (न०) अष्टादश पुराणों में से एक ।—घण्टी, (स्त्री०) चैत्र मास की शुक्ला ६ ।

स्कंदकः } (पु०) १ कूदने वाला । २ सिपाही । स्कन्दकः }

स्कन्दनं } (न०) १ निर्गमन । आव । बहाव । २ स्कन्दनं } ढीलापन । रेचन । ३ गमन । चलन । ४ शोषन । सूख जाना । ५ क्षीतलोपचार से खून का बहना बंद करने की क्रिया ।

स्कंधः } (धा० उ०) [स्कन्धयति—स्कन्धयते] स्कन्धः } जमा करना । एकत्र करना ।

स्कंधः } (पु०) १ कंधा । २ शरीर । ३ पेड़ का स्कन्धः } तना या खड़ । ४ पेड़ की डाली या गुहा ।

५ मानवी ज्ञान का एक विभाग या शाखा । (पुस्तक का) अध्याय । परिच्छेद । पर्व । ७ फौज का एक दस्ता या टोली । ८ टोली । वल । समूह । ९ पाँच इन्द्रियों । १० सौगत सिद्धों में विज्ञानादि पाँच । बौद्धदर्शन में सांसारिक ज्ञान विशेष । ११ संग्राम । युद्ध । १२ राजा । १३ इकरार । कौल करार । १४ मार्ग । सड़क । १५ बुद्धिमान या पढ़ा लिखा आदमी । १६ कक्क । बृहत् वक्र विशेष ।—आधारः, (पु०) सेना या सेना का एक विभाग । २ राजधानी । ३ शिविर । पड़ाव ।—उपानेय, (वि०) वह जो कंधों पर रख कर लेजाया जाय ।—उपानेयः, (पु०) एक प्रकार की सन्धि जिसमें शत्रु का वशित्व स्वीकार करने का चिह्न स्वरूप शत्रु के सामने फल अन्न आदि की भेंट रखनी पड़ती है ।—चापः, (पु०) बहंगी का बाँस ।—तकः, (पु०) नारियल का पेड़ ।—देशः, (पु०) कन्धा । —फलः, (पु०) १ नारियल का पेड़ । २ वित्त का वृत्त । ३ गूलर का पेड़ । —बन्धनः, (पु०) सुलफा नामक शाक ।—महतकः, (पु०)

बगुला । बूँदीमार ।—रुहः, (पु०) अश्वत्थ वृक्ष ।—वाहः,—वाइकः, (पु०) बाक ढोने वाला या लट्टू बैल ।—शाखा, (स्त्री०) मुख्य गुहा या डाली ।—शृङ्गः, (पु०) भैंसा ।—स्कन्धः, (पु०) प्रत्येक कंधा ।

स्कंधस् } (न०) १ कंधा । २ वृक्ष का तना । स्कन्धस् }

स्कंधिकः } (पु०) लट्टू बैल । स्कन्धिकः }

स्कन्धिन् } (वि०) [स्त्री०—स्कन्धिनी] १ स्कन्धिन् } कंधों वाला । २ डालियों वाला । (पु०) वृत्त । पेड़ । दरख्त ।

स्कन्न (व० क०) १ नीचे गिरा हुआ । नीचे उतरा हुआ । २ बाहिर निकला हुआ । बुझा हुआ । टपका हुआ । ३ झिड़का हुआ । ४ गया हुआ । ५ सूखा हुआ ।

स्कम्भः } (धा० आ०) [स्कम्भते, स्कम्भाति] १ स्कम्भः } रचना । सिरजना । २ रोकना । बाधा डालना ।

स्कम्भः } (पु०) १ सहारा । रोक । धाम । २ स्कम्भः } कील जिसके ऊपर कोई वस्तु धूमे । ३ परबल ।

स्कम्भनं } (न०) सहारा लगाने की क्रिया । स्कम्भनं }

स्कांदः } (वि०) [स्त्री०—स्कान्दी] १ स्कन्द स्कान्दः } सम्बन्धी । २ शिव सम्बन्धी ।

स्कंदः } (न०) स्कन्द पुराण । स्कन्दः }

स्कु (धा० उ०) [स्कुनोति, स्कुनुते, स्कुनाति, स्कुनीते] १ कूद कूद कर चलना । उछलना । २ उठाना । ऊपर करना । ३ ढाँकना । ढा लेना । ४ समीप जाना ।

स्कन्दः } (धा० आ०) [स्कन्दते] १ कूदना । स्कन्दः } २ उठाना । ऊपर उठाना ।

स्कोदिका (स्त्री०) पत्नी विशेष ।

स्खद् (धा० आ०) [स्खदते] १ काटना । टुकड़े टुकड़े कर डालना । २ नाश करना । ३ चोटिल करना । अनिष्ट करना । मार डालना । ४ भगना

देना । पूर्ण रूप से परास्त करना । ५ थका डालना ।
कष्ट देना । ६ हड़ करना ।

स्खलने (न०) १ काट छूँट । टुकड़े टुकड़े करने की
क्रिया । २ धायल करना । वध । कष्टप्रद । तंग
करने की क्रिया ।

स्खल (धा० प०) [स्खलति,] १ ठोकर
खाना । ठोकर खाकर गिरना । फिसल पड़ना ।
२ लड़खड़ाना । हिलना झुलना । ३ आज्ञा
का भंग किया जाना । ४ सत्य से अष्ट होना । ५
उत्तेजित होना । ६ भूल करना । गलती करना । ७
हकलाना । ८ चूकना । असफल होना । ९ बूँद
बूँद कर गिरना । घूना । टपकना । १० जाना ।
११ अदृश्य होना । १२ एकत्र करना । जमा
करना ।

स्खलनं (न०) फिसलन । गिरन । पतन । २ लड़-
खड़ाने की क्रिया । ३ सत्य से अष्ट होना । भूल ।
चूक । ४ हताशा । असफलता । अनुत्तीर्णता । ५
हकलापन । ६ चुनन । रिसन । टपकन । ७ पटकन ।
८ रगड़न । परस्पर ताड़न ।

स्खलित (व० कृ०) १ ठोकर खाया हुआ । फिसला
हुआ । २ गिरा हुआ । ३ हिलता हुआ । काँपता
हुआ । धरधराता हुआ । ४ नष्टे में चूर । ५
हकलाता हुआ । ६ उत्तेजित । ७ धबड़ाया हुआ ।
८ भूल किये हुए । भूला हुआ । ९ चुआ हुआ ।
टपका हुआ । १० बाधा डाला हुआ । रोका हुआ ।
११ परेशान । १२ प्रस्थानित । गया हुआ ।

स्खलितं (न०) १ पतन । गिरन । फिसलन । २
सत्य से अष्ट होना । ३ भूल । चूक । गलती । ४
अपराध । दोष । पाप । गुनाह । ५ धोखा ।
विश्वासघात । ६ चालाकी । चालबाजी ।

स्खुड् (धा० प०) [स्खुडति] ठकना । झा लेना ।

स्तक् (धा० प०) [स्तकति] १ बार बचाना ।
अपनी रक्षा करना । २ ठकेलना ।

स्तन् (धा० प०) [स्तनति, स्तनयति, स्तनयते,
स्तनित] १ शब्द करना । बजना । २ कराहना ।
ज़ोर ज़ोर से साँस लेना । ३ गर्जना । दहाड़ना ।

स्तनः (पु०) स्त्री की छाती । २ छाती या किसी
आनवर का थन ।—अंशुकं, (न०) छाती या
सीना ढाकने का वस्त्र ।—अग्रः, (पु०) चूँची की
घुँडी ।—अन्तरं, (न०) हृदय । दोनों स्तनों के
बीच का स्थान । २ स्तन पर का एक चिह्न जो
भावी वैधव्य का द्योतक समझा जाता है ।—
आभोगं, (न०) स्तनों की वृद्धि या बढ़ाव ।
२ छातियों या चूँचियों की गोलाई । ३ वह पुरुष
जिसकी स्त्रियों जैसी बड़ी छातियाँ हों ।—प,—
पा,—पायक,—पायिन, (वि०) दूध पीने
वाला । (बच्चा)—भरः, (पु०) १ छातियों का
बोझ । स्त्रियों जैसी छातियों वाला पुरुष ।—
भवः, (पु०) रतिबन्ध विशेष ।—मुखं,—
खुन्तं, (न०)—शिखा, (स्त्री०) चूँची की
घुँडी ।

स्तननं (न०) १ आवाज़ । शोर गुल । २ दहाड़न ।
गर्जन । ३ कराहट । कराहने का शब्द । ४ ज़ोर
ज़ोर से और जल्दी जल्दी साँस लेना ।

स्तनंधय (वि०) छाती का दूध पीने वाला ।

स्तनंधयः (पु०) बच्चा जो छाती का दूध पीता हो ।

स्तनधितुः (पु०) १ गर्जन । दहाड़न । बादलों की
कड़क । २ बादल । ३ बिजली । ४ बीमारी । ५
मृत्यु । मौत । ६ तृण विशेष ।

स्तनित (व० कृ०) १ शब्दायमान । कोलाहल
करने वाला । २ गरजने वाला । दहाड़ने वाला ।

स्तनितं (न०) १ बादलों की गरजन । २ दहाड़ । गर्ज ।
कोलाहल । ३ तात्की बजाने का शोरगुल ।

स्तन्यं (न०) माता का दूध ।

स्तन्यकः (पु०) गुच्छा । गुलदस्ता ।

स्तब्ध (व० कृ०) १ रोका हुआ । २ सुन्न । लकवा का
भारा हुआ । ३ गतिहीन । अचल । ४ हड़ ।
कड़ा । कठोर । सख्त । ५ हठी । ज़िद्दी । ६ मोटा
खरदरा ।—कर्णः, (वि०) कानों को छेदना ।—
रोमन्, (पु०) शूकर ।—लोचन, (वि०) वे
जिनके पलक न झपकें ।

स्तब्धत्वं (न०) } १ कड़ाई । कठोरता । कड़ापन ।
स्तब्धता (स्त्री०) } सज्जती । २ दृढ़ता । अचलता । ३
३ सुख होना । अचैतन्यता । ४ हठीलापन ।
झिड़ । हठ ।

स्तम् देखो स्तम्भ ।

स्तम्भः (पु०) बकरा । मेढ़ा ।

स्तम्भु (न०) देखो स्तम्भन ।

स्तम् (धा० प०) [स्तम्भति] घबड़ा जाना । परे-
शान हो जाना ।

स्तम्भः } (पु०) १ बास का गट्टा । २ अनाज की
स्तम्भः } बाल या मुट्ठा । ३ गुच्छा । ४ झाड़ी ।
जंगल । ५ झाड़ी या पौधा जिसका तना या धड़
न देख पड़े । ६ हाथों बाँधने का खूँटा । ७ खंभा ।
८ स्तब्धता । सुखपना । ९ पहाड़ । करिः
(पु०) अनाज । चावल ।—करिना, (स्त्री०)
वाल या मुट्ठा पैदा करने वाला । अच्छी उगत या
उपज ।—वनः, (पु०) १ बास खोदने की खुर्ची ।
२ अनाज काटने का हँसिया । ३ चावल रखने की
टोकरी ।—झः, (पु०) अनाज काटने का हँसिया ।
खुरपी ।

स्तम्भेरमः } (पु०) हाथी । गज ।
स्तम्भेरमः }

स्तम्भ } (धा० आ०) [स्तम्भते, स्तम्भन्ति,
स्तम्भे] स्तम्भानि, स्तम्भित या स्तब्ध } १
रोकना । पकड़ना । गिरफ्तार करना । दबाना । २
दृढ़ करना । अचल करना । अटल बनाना । ३ सुख
करना । स्तब्ध करना । ४ सहारा देना । ५ कड़ा
होना । ६ अकड़ जाना । अभिमान दिखलाना ।

स्तम्भते पुहयः प्राये यौवनेन धनेन च ।

न स्तम्भन्ति क्षितिजोऽपि न स्तम्भन्ति पुष्पाप्यसौ ॥

स्तम्भः } (पु०) १ दृढ़ता । कठोरता । चिमड़ापन ।
स्तम्भः } गतिहीनता । २ अकड़न । सुखपना । संज्ञा-
हीनता । ३ रोकथाम । बाधा । अवचन । ४ टका-
बट । दबाना । ५ सहारा । अवलंब । ६ खंभा । ७
पेड़ का तना । धड़ । ८ मृदता । मूर्खता । ९
उत्तेजना के भावों का अभाव । १० अलौकिक या
मंत्र शक्ति से किसी वेग या भाव को दबाने की

क्रिया ।—उत्कीर्ण, (वि०) काठ के खंभे में
खोदी हुई (मूर्ति)—कर, (वि०) १ स्तब्ध
करने वाला । २ रोकथाम करने वाला । बाधा
बाजने वाला ।—पूजा, (स्त्री०) मड़वा की पूजा ।
गजस्तम्भ का पूजन ।

स्तम्भकिन् } (पु०) चमड़े से मड़ा हुआ बाजा
स्तम्भकिन् } विशेष ।

स्तम्भनं } (न०) १ रोक थाम । पकड़ थकड़ । २
स्तम्भनं } सुख करना । स्तब्ध करना । ३ सामोरा
करना । ४ सुख या कड़ा करना । ५ सहारा देना ।
६ तांत्रिक क्रिया विशेष ।

स्तम्भनः } (पु०) कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।
स्तम्भनः }

स्तर (वि०) झा खेने वाला । ढकने वाला ।

स्तरः (पु०) १ परत । तह । २ शय्या । बिस्तर ।
बिछौना ।

स्तरणं (न०) बिछाने, धुने या बखेरने की क्रिया ।

स्तरिमन् } (पु०) शय्या । खाट । चारपाई । कोच ।
स्तरिमन् }

स्तरि (स्त्री०) १ धूम । भाप । २ बछिया । बछेड़ी ।
३ धौंल गौ ।

स्तरः (पु०) १ प्रशंसन । स्तुति । कीर्तिकथन । २
तारीफ । प्रशंसा ।

स्तवक (वि०) [स्त्री०—स्तविका] १ स्तव । स्तुति ।
प्रशंसा ।

स्तवकः (पु०) १ प्रशंसा करने वाला । बंदीजन ।
भाट । २ प्रशंसा । स्तुति । ३ पुष्पगुच्छ । गुल-
दस्ता । ४ ग्रन्थ का परिच्छेद । ५ समूह । समु-
दाय ।

स्तवर्ज (न०) १ प्रशंसा । स्तुति । २ स्तोत्र । स्तव ।

स्तावः (पु०) प्रशंसा । स्तुति ।

स्तावकः (पु०) प्रशंसा करने वाला । भाट । बंदी
जन । चापलूस ।

स्तिग्ध (धा० आ०) [स्तिच्छुते] १ चढ़ना । २
आक्रमण करना । ३ चूना । रिसना । बहना ।

स्तिप् (धा० आ०) [स्तेपते] चूना । टपकना ।
रिसना ।

स्तिभिः (पु०) १ रोक । अड़चन । २ समुद्र । ३
गुच्छ । स्तम्भक ।

स्तिम् (धा० प०) [स्तिम्यति, स्तीम्यति] १
स्तीम् } गीला होना । भीग जाना । २ अटल
होना । सख्त होना ।

स्तिमित (वि०) १ गीला । नम । तर । २ स्तब्ध ।
निश्चल । शान्त । ३ अटल । गतिहीन । ४ बंद ।
लकवा मारा हुआ । सुक । ५ कोमल । मुलायम ।
६ सन्तुष्ट । प्रसन्न ।—वायुः, (पु०) मन्दवायु ।
—समाधिः, (न०) दृढ़ ध्यान । ध्यानमग्नता ।

स्तिमितत्वं (न०) दृढ़ता । शान्ति ।

स्तोत्रिः (पु०) १ वह ऋषिक जो किसी नियत ऋषिक
की जगह काम करे । २ घास । ३ आकाश ।
अन्तरिक्ष । ४ जल । ५ रक्त । ६ इन्द्र का नाम ।

स्तु (धा० उ०) [स्तौति,—स्तवीति, स्तुते,—
स्तुवीते, स्तुत] १ प्रशंसा करना । स्तुति करना ।
२ किसी की प्रशंसा में गीत गाना । ३ स्तवन
द्वारा पूजन या सम्मान करना ।

स्तुकः (पु०) केशों की चौटी ।

स्तुका (स्त्री०) १ केशों की चौटी । २ मैसा के सींगों
के बीच के छल्लेदार बाल । ३ जांच । जंघा ।
कूल्हा ।

स्तुच् (धा० आ०) [स्तोचते] १ चमकना । २
अलुक्ल होना । प्रसन्न होना ।

स्तुत (व० कृ०) १ प्रशंसित । कीर्तित । २ चाप-
लूसी किया हुआ ।

स्तुतिः (स्त्री०) १ प्रशंसा । स्तव । स्तुति । २ विरुदा-
बली । ३ चापलूसी । छुरसुहाती । झूठी प्रशंसा ।
४ दुर्गा देवी का नाम ।—गीतं, (न०)
विरुदाबली के गीत ।—पदं, (न०) प्रशंसा की
वस्तु ।—पाठकः, (पु०) बंदीखन । भाट ।—
वाद्, (पु०) प्रशंसावाद । गुणकीर्तन । स्तुति ।
—मृत, (पु०) भाट ।

स्तुत्य (वि०) श्लाघ्य । सराहनीय । प्रशंसनीय ।

स्तुनकः (पु०) बकरा ।

स्तुम् (धा० प०) [स्तोमति] १ प्रशंसा करना । २
प्रसिद्ध करना । प्रतिष्ठा करना । पूजन करना ।
[आ०—स्तोमते] १ दवाना । बंद करना ।
रोकना । २ स्तब्ध करना । सुन्न करना । लकवा
का मार जाना ।

स्तुमः (पु०) बकरा ।

स्तूप (धा० प०) (उ०) [स्तुप्नोति, स्तुप्नति]
जमा करना । ढेर करना । २ उठाना । खड़ा करना ।

स्तूपः (पु०) १ ढेर । राशि । टीला । २ बौद्धों के
स्तूप या स्तम्भ जो विशेष आकार के होते थे और
स्मरणचिह्न स्वरूप समझे जाते थे । ३ चिता ।

स्तु (धा० उ०) [स्तृणाति, स्तृणुते, स्तृत]
छाना । ढकना । तोप लेना । २ फैलाना ।
बढ़ाना । ३ बखेरना । छितराना । ४ लपेटना ।

स्तृ (पु०) सितारा । तारा ।

स्तृत् (धा० प०) [स्तृत्ति] जाना ।

स्तृतिः (स्त्री०) १ विस्तार । फैलाव । बढ़ाव । २
ताद्वर । चहर ।

स्तृह् (धा० प०) [स्तृहति, स्तृहति] ताड़न
स्तृह् } करना । चोटिल करना । बध करना ।

स्तृ (धा० प०) [स्तृणाति, स्तृणीते, स्तोर्ण]
ढकना । छुपाना ।

स्तेन (धा० उ०) चुराना । लूटना ।

स्तेनं (न०) चोरी । चुराने का कार्य ।—निग्रहः,
(पु०) १ चोरों को दण्ड । २ चोरी की वारदातों
को रोकना ।

स्तेनः (पु०) चोर । छुटेरा । डाँकू ।

स्तेप् (धा० आ०) [स्तेपते] रसना । टपकना ।
(उ०) [स्तेपयति—स्तेपयते] भेजना ।
फैकना ।

स्तेमः (पु०) सील । नमी । तरी ।

स्तेयं (न०) १ चोरी । डाँकेजनी । २ कोई वस्तु जो
चुराई गई हो या जिसके चोरी जाने की सम्भावना
हो । ३ कोई निज्ज या गोप्य वस्तु ।

स्तयिन् (पु०) १ चोर । डोंक । २ सुनार ।

स्तै (धा० प०) [स्नायति] सजाना । पहिनना ।

स्तैनं (न०) चोरी । डकैती ।

स्तैन्यं (न०) चोरी । डकैती ।

स्तैन्यः (पु०) चोर ।

स्तैमित्यं (न०) १ दृढ़ता । अदृढ़ता । अमलता । २ सुनपना ।

स्तोक (वि०) १ छोटा । थोड़ा । कम । २ ह्रस्व । ३ कुछ । ४ नीचा ।—काय, (वि०) खर्वाकार । बौना । छोटा ।—नम्र, (वि०) कुछ कुछ झुका हुआ । कुछ कुछ दबा हुआ ।

स्तोकं (अन्वया०) थोड़ा सा । स्वरूप ।

स्तोकः (पु०) १ कम परिमाण । थोड़ा मिक्कार । कतरा । बूँद । २ चातक पक्षी ।

स्तोककः (पु०) चातक पक्षी ।

स्तोकशस्त्रं (अन्वया०) थोड़ा थोड़ा करके ।

स्तोत्रं (पु०) प्रशंसक । भाट ।

स्तोत्रं (न०) १ प्रशंसा । तारीफ़ । स्तुति । २ विरुदावली । प्रशंसात्मक गीत या कविता ।

स्तोत्रियः (पु०) } काव्य या कविता विशेष ।
स्तोत्रिया (स्त्री०) }

स्तोमं (न०) १ शिर । २ धन । दौलत । ३ अन्न । अनाज । ४ लोहे की शान लगी लकड़ी ।

स्तोमः (पु०) १ ह्कावट । अड़चन । २ रोक । ठहराव । ३ अप्रतिष्ठा । असम्मान । ४ गीत । प्रशंसात्मक कविता । ४ सामवेद का भाग विशेष । ५ कोई वस्तु जो ऊपर से किसी वस्तु में छुसे दी गई हो ।

स्तोमः (पु०) १ प्रशंसा । विरुदावली । गीत । २ यज्ञभाग । ३ देवता या पितरों के लिये सोम प्रदान । ४ संग्रह । समूह । ५ बहु संख्यक ।

स्तोम्य (वि०) श्लाघ्य । प्रशंसनीय ।

स्त्योनं (वि०) १ ढेर किया हुआ । २ गाढ़ा । बड़ा । बड़े आकार का । ३ कोमल । मुलायम । चिकना । ४ ध्वनिकारक ।

स्त्योनं (न०) १ मुटाई । बड़ा आकार । आकार की वृद्धि । २ स्निग्धता । चिकनाई । ३ असृत । ४ काहिली । सुस्ती । ५ प्रतिध्वनि । स्माई ।

स्त्योयनं (न०) ढेर करना । भीड़भाड़ । समूहन ।

स्त्योनः (पु०) १ असृत । २ चोर ।

स्त्यै (धा० उ०) [स्त्यायति—स्त्यायते] १ राशि या ढेर के रूप में जमा किया जाना । २ फैलाना । व्याप्त करना । ३ प्रतिध्वनि करना ।

स्त्री (स्त्री०) १ नारी । औरत । २ जानवर की मादा [यथा—हरिणस्त्री, गजस्त्री] । ३ भार्या । पत्नी । ४ स्त्रीलिङ्ग ।—अगार, (पु०)—आगारं, (न०) जनानखाना । अन्तःपुर । हरम ।—अध्यक्षः, (पु०) जनानखाने या रनवास का अध्यक्ष ।—अभिगमनं, (न०) स्त्री के साथ मैथुन ।—आर्जावः, (पु०) १ वह जो अपनी स्त्री के सहारे रहता हो । २ वह जो वेश्याकर्म के लिये स्त्रियाँ रखता हो ।—कामः, (पु०) १ स्त्री-मैथुन का अभिलाषी । २ भार्या प्राप्ति की कामना ।—कार्यं, (न०) १ स्त्री का काम । २ स्त्रियों का अनुचर । अन्तःपुर का चाकर ।—कुमारं, (न०) स्त्री और बच्चा ।—कुसुमं, (न०) स्त्री का रजो-धर्म ।—क्षौरं, (न०) माता का वृष ।—ग, (वि०) स्त्री के साथ मैथुन करने वाला ।—गवो, (स्त्री०) दुधार गौ ।—गुरुः, (पु०) पुरोहितानी ।—घोषः, (पु०) प्रभात । सबेर ।—घ्नः, (पु०) स्त्री की हत्या करने वाला ।—चरितं,—चरित्रं, (न०) स्त्री के कर्म ।—चिह्नं, (न०) १ स्त्री जाति का कोई भी चिह्न या लक्षण । २ भग । योनि ।—चौरः, (पु०) स्त्री को चुराने वाला । स्त्री को बहकाने वाला ।—जननी, (स्त्री०) वह स्त्री जो लड़की ही बने ।—जातिः, (स्त्री०) स्त्री जाति । स्त्रीलिङ्ग ।—जितः (पु०) भार्या निर्जित स्वामी । स्त्रैणपुरुष ।—धनं, (न०) स्त्री की निज सम्पत्ति ।—धर्मः, (पु०) १ स्त्री या भार्या का कर्तव्य । २ स्त्री सम्बन्धी आईन । ३ रजस्वला धर्म ।—धर्मिणी, (स्त्री०) रजस्वला स्त्री ।—ध्वजः, (पु०) किसी भी जानवर की

मादा ।—नाथ, (वि०) वह जिसकी रक्षा कोई स्त्री करती हो ।—निर्वधनं, (न०) गार्हस्थ्य धर्म । परः, (पु०) स्त्री-प्रेमी । लण्ट । कालुक ।—पिशाची, (स्त्री०) राक्षसी जैसी पत्नी ।—पुंसो, (पु० द्विवचन०) १ पत्नी और पति । २ मर्दाना और ज्ञानाना ।—पुंस लक्षणा, (स्त्री०) स्त्री पुं०—उभय चिह्न विशेष जन्तु या उद्भिद ।—प्रत्ययः, (पु०) व्याकरण में स्त्रीवाचक प्रत्यय ।—प्रसङ्गः, (पु०) स्त्रीमैथुन ।—प्रसूः, (स्त्री०) वह स्त्री जो केवल लड़कियाँ ही जने ।—प्रियः, (पु०) आम का वृक्ष ।—बाध्यः, (पु०) वह पुरुष जो अपने आपको स्त्री द्वारा उत्पीडित करावे ।—बुद्धिः, (स्त्री०) १ औरत की अकृया समझ । २ स्त्री की सलाह या परामर्श ।—भोगः, (पु०) स्त्रीमैथुन ।—मंत्रः, (पु०) स्त्री की चालाकी । स्त्री की सलाह ।—मुख्यः, (पु०) अशोक वृक्ष ।—यंत्रं, (न०) स्त्री के आकार की कल ।—रंजनं, (न०) ताम्बूल । पान ।—रत्नं (न०) अत्युत्तम स्त्री ।—राज्यं, (न०) स्त्री का राज्य ।—जिगं, (न०) १ स्त्रीवाची । २ योनि । भग ।—वशः, (पु०) स्त्रैण ।—विधेय, (वि०) वह जिस पर उसकी स्त्री हुक्म करे ।—संग्रहणं, (न०) १ स्त्री को (अनुचित रूप से) चिपटाने की क्रिया । २ व्यभिचार ।—सर्भं, (न०) स्त्रियों का समाज ।—संबंधः, (पु०) स्त्री के साथ वैवाहिक सम्बन्ध । २ विवाह द्वारा सम्बन्ध स्थापन ।—स्वभावः, (पु०) १ स्त्री की प्रकृति । २ हिजड़ा । मेहरा । ज्ञानाना ।—हरणं, (न०) स्त्री पर वलात्कार ।

स्त्रीतमा } (स्त्री०) नितान्त स्त्री ।
स्त्रीतरा }

स्त्रीता } १ स्त्रीपना । २ भार्यापन । ३ ज्ञानपन ।
स्त्रीत्वं } महारापन ।

स्त्रैण (वि०) [स्त्री०—स्त्रैणी] १ ज्ञानाना । २ स्त्रियोपयुक्त । स्त्री का । ३ स्त्रियों में रहने वाला ।

स्त्रैणं (न०) १ स्त्रियत्व । स्त्रीस्वभाव । २ स्त्रीजाति । ३ स्त्रियों का संग्रह ।

स्त्रैणता (स्त्री०) } १ ज्ञानपना । महारापन । २
स्त्रैणत्वं (न०) } स्त्रियों के प्रति अत्यन्त अनुरक्ति ।

स्थ (वि०) स्थापित । ठहरा हुआ । वर्तमान ।

स्थकरं (न०) सुपाड़ी ।

स्थग (धा० प०) [स्थगति, स्थगयति,] १ ढकना । छिपाना । पर्दा डालना । २ भरना । पूर्ण करना । व्यास करना ।

स्थग (वि०) १ धूर्त । कपटी । बेईमान । २ त्यक्त । लापरवाह । ठीठ ।

स्थगः (पु०) १ गुंडा । बदमाश । ठग ।

स्थगनं (न०) छिपाव । दुराव ।

स्थगरं (न०) सुपाड़ी ।

स्थगिका (स्त्री०) १ वेश्या । रंडी । २ वह नौकर जो पान के बीड़े साथ लिये हुए अपने मालिक के संग रहे । ३ एक प्रकार की पट्टी या बंधन ।

स्थगित (वि०) ढका हुआ । छिपा हुआ ।

स्थगी (स्त्री०) पनडिब्बा ।

स्थगुः (पु०) कूबड़ । कुम्ब ।

स्थण्डिलं } (न०) १ वेदी । वेदिका । २ ऊसरखेत ।
स्थण्डिलं } २ डेलों का ढेर । ४ सीमा । हद्द । ५ सीमाचिह्न ।—शायिनः, (पु०) व्रत के लिये चवतरे पर सोने वाला ।—सितकं, (न०) वेदी । अग्निवेदी ।

स्थपतिः (पु०) १ राजा । महाराज । २ कारीगर । २ होशियार बढ़ई । ४ सारथी । ५ बृहस्पति देव को बलि चढ़ाने वाला । ६ ज्ञानानखाने का नौकर । ७ कुबेर का नाम ।

स्थपुट (वि०) सङ्कटापन्न । ऊबड़खाबड़ । ऊँचानीचा ।

स्थल (धा० प०) [स्थलति] ढकता से खड़ा होना । ढक होना ।

स्थलं (न०) १ ढक या सूखी भूमि । सूखी ज़मीन । २ समुद्र या नदी का तट । वेलाभूमि । ३ ज़मीन । धरती । ४ स्थान । जगह । ५ खेत । भूभाग । ६ टीला । ७ विषय । विवादग्रस्त विषय । ८ भाग । [जैसे ग्रन्थ का] ९ स्त्रीमा । तंबू ।—अंतरं, (न०) दूसरी जगह ।—आरुढ, (वि०) पृथिवी पर उतरा हुआ ।—अरविद, —कमलं,

कमलिनी, (स्त्री०) वह भूभाग जहाँ कमल उत्पन्न हो ।—चर, (वि०) ज़मीन पर रहने वाला । (जलचर का उल्टा)—न्युत (वि०) स्थान अष्ट ।—विग्रहः, (पु०) वह संग्राम जो सम-भूमि पर हो ।

स्थला (स्त्री०) बनावटी सूखी ज़मीन जो ऊँची करके बनायी गई हो ।

स्थली (स्त्री०) कड़ी ज़मीन ।

स्थलेशय (वि०) ज़मीन पर सोने वाला ।

स्थलेशयः (पु०) स्थलचर जीव ।

स्थविः (पु०) १ जुलाहा । २ स्वर्ग ।

स्थविर (वि०) १ दृढ़ । मज़बूत । अचल । २ पुराना । बूढ़ा । प्राचीन ।

स्थविरः (पु०) १ बूढ़ा आदमी । २ भिक्षुक । ३ ब्रह्मा का नामान्तर ।

स्थविरा (स्त्री०) बुढ़िया ।

स्थविष्ठ (वि०) सब से बड़ा । अत्यन्त दृढ़ या मज़बूत ।

स्थवीर्यस् (वि०) सब से बड़ा ।

स्था (धा० प०) १ खड़ा होना । २ बसना । रहना । २ बचजाना । ३ विखंड करना । ४ रोकना । बंद करना । चुपचाप खड़ा रहना ।

स्थाणु (वि०) दृढ़ । मज़बूत । टिकाऊ । अचल । गतिहीन ।

स्थाणुः (पु०) १ शिव का नाम । २ खंभा । खूंट । ३ खूँटी । कील । ४ धूपबड़ी का काँटा । ५ भाला । बर्छा । ६ दीमक का छत्ता । ६ जीवक नामक सुगन्ध द्रव्य ।—(पु० न०) पेड़ का टूँठ ।—छेदः, (पु०) वृक्षों को काटने वाला ।

स्थण्डिलः } १ यज्ञमण्डप में सोने वाला तपस्वी ।

स्थण्डिलः } वह तपस्वी जो ज़मीन पर सोवे । २ भिक्षुक ।

स्थानं (न०) १ खड़े होने की क्रिया । २ अचलता । अटलता । ३ दशा । हालत । ४ स्थान । जगह । ५ सम्बन्ध । रिश्ता । [यथा पितृस्थाने] । ६

आवासस्थान । रहने की जगह । ७ गाँव । क़स्बा । ज़िला । ८ पद । ओहदा । ९ पदार्थ । वस्तु । १० कारण । हेतु । ११ उपयुक्त स्थान । १२ उपयुक्त या उचित पदार्थ । १३ किसी अक्षर के उच्चारण का स्थान । १४ तीर्थस्थान । १५ वेदी । १६ किसी नगर का कोई स्थल विशेष । १७ वह लोक या पद जो किसी मरे हुए आदमी के जीव को उसके शुभाशुभ कर्मानुसार प्राप्त हो । १८ युद्ध के लिये बट कर खड़ी हुई सेना । १९ टिकाव । पड़ाव । तटस्थता । उदात्तानता । २० राज्य के मुख्य अंग, यथा सेना, धन, कौष, राजधानी राज्य । २१ सादृश्य । समानता । २२ अस्याय । परिच्छेद । २३ किसी अभिनयकर्ता का अभिनय या पार्ट । २४ अवकाश काल ।—अध्यक्षः, (पु०) स्थानीय शासक ।—आसेधः, (पु०) जैद । जेल । गिरफ्तारी ।—चिनकः, (पु०) अधिकारी विशेष जो प्रायः क्वार्टरमास्टर के अधिकारों से युक्त होता है ।—पालः, (पु०) चौकीदार ।—भ्रष्ट, (वि०) स्थानच्युत ।—माहात्म्यं, (न०) किसी स्थान या जगह का गौरव या महिमा ।—स्थ. (वि०) अपने घर में स्थित । अपनी जगह पर ठहरा हुआ ।

स्थानकं (न०) १ पद । ओहदा । २ अभिनय के समय का एक हावभाव विशेष । ३ नगर । शहर । ४ बरतन । ५ मदिरा का भाग या फेन । ६ पाठ करने का एक ढंग । ७ यजुर्वेद के तैत्तिरीय का एक भाग या शाखा ।

स्थानतस् (अव्यया०) १ निज स्थान या पद के अनुसार । २ अपने उपयुक्त स्थान से । जिह्वा या उच्चारण करने की इन्द्रिय के अनुरूप ।

स्थानिक (वि०) [स्त्री०—स्थानिकी] १ स्थानीय । किसी स्थान विशेष का । २ वह जो किसी के बदले प्रयुक्त हो ।

स्थानिकः (पु०) १ सदस्य । ओहदेदार । २ किसी स्थान का शासक ।

स्थानिन् (वि०) १ स्थान वाला । २ स्थायी । ३ वह जिसका कोई बदलीदार या एवज़दार हो ।

स्थानीय (वि०) १ किसी स्थान का । २ किसी स्थान के लिये उपयुक्त ।

स्थानीय (न०) नगर । शहर । कस्बा ।

स्थाने (अव्यया०) १ उचित रीत्या । २ वजा । जगह में । ३ क्योंकि । बवज़ह । ४ वैसे ही । उसी प्रकार । वैसे । जैसे । उसी तरह ।

स्थापक (वि०) स्थापित करने वाला ।

स्थापकः (पु०) १ रंगमञ्च का व्यवस्थापक या प्रबन्धकर्त्ता । २ किसी देवालय का बनाने वाला । किसी मूर्ति की स्थापना करने वाला ।

स्थापत्य (न०) भवन-निर्माण-कला । इमारती काम ।

स्थापत्यः (पु०) ज्ञानखाने का पहरेदार या रक्षक ।

स्थापनं (न०) १ स्थापित करने की क्रिया । २ मन की एकाग्रता । ३ आवादी । बस्ती । ४ पुंसवन संस्कार ।

स्थापना (स्त्री०) १ प्रतिष्ठा । २ रंगमञ्च का प्रबन्ध ।

स्थापित (व० कृ०) १ रखा हुआ । प्रतिष्ठित किया हुआ । जमा किया हुआ । २ जारी किया हुआ । खोला हुआ । ३ खड़ा किया हुआ । ४ निर्दिष्ट किया हुआ । आदेश किया हुआ । ५ निश्चित किया हुआ । निर्णयित किया हुआ । ६ नियत किया हुआ । नियुक्त किया हुआ । ७ विवाहित । ८ दृढ़ । अटल ।

स्थाप्य (वि०) रखने योग्य । जमा करने योग्य ।

स्थाप्यं (न०) धरोहर । अमानत ।—अपहरणं (न०) धरोहर का गवन । अमानत की ख़यानत ।

स्थामन् (न०) १ ताकत । शक्ति । २ स्तरभन-शक्ति । बल । ३ अटलता । अचलता ।

स्थायिन् (वि०) १ खड़ा रहने वाला । २ टिकाऊ । ३ रहाइस । ४ स्थायी । दृढ़ । मज़बूत । (पु०) स्थायी भाव । (न०) स्थायी दशा या परिस्थिति । —भावः, (पु०) मन की स्थायी दशा ।

स्थायुक (वि०) [स्त्री०—स्थायुका,—स्थायुकौ] १ सहन करने वाला । ठहराऊ । २ दृढ़ । मज़बूत । अचल ।

स्थायुकः (पु०) गाँव का मुखिया या अकसर । स्थालं (न०) १ थाली । रक्ताबी । तश्तरी । २ बट-लोई ।—रूपं, (न०) बरतन की शकल का ।

स्थाली (स्त्री०) १ मिट्टी की हँडिया । बटलोई । २ सोम रस तैयार करने का पात्र विशेष । ३ पुष्प विशेष । पाटल फूल ।—पाकः, (पु०) गृहस्थ का धार्मिक कृत्य विशेष ।—पुरीषं, (न०) बट-लोई का मैल ।—पुलाकः, (पु०) बटलोई में रखा हुआ भात ।

स्थार (वि०) १ अटल । अचल । २ सुस्त । अक्रियाशील । ३ स्थापित ।

स्थावरं (न०) १ कोई निर्जीव वस्तु । २ रोदा । कमान की डोरी । ३ स्थावर सम्पत्ति । ४ माल असबाब जो वपौती में मिले ।—अस्थावरं,—जंगमं, (न०) १ चल अचल सम्पत्ति । २ जानदार बेजान चीज़ें ।

स्थावरः (पु०) पहाड़ । पर्वत ।

स्थाविर (वि०) [स्त्री०—स्थाविश, स्थाविरी] मौंदा । दृढ़ ।

स्थाविरं [न०] बुढ़ापा ।

स्थासकः (पु०) १ खुशबूदार उबटन लगा कर शरीर को सुवासित करने वाला । २ जल या किसी तरह के पदार्थ का बबूला ।

स्थासु (न०) शारीरिक बल ।

स्थासुन् (वि०) १ दृढ़ । अचल । २ स्थायी । अनन्त । टिकाऊ ।

स्थित (व० कृ०) १ खड़ा हुआ । ठहरा हुआ । २ जारी । प्रचलित । ३ खड़ा हुआ । निकला हुआ । ४ वर्तमान । ५ हुआ । बाँझ हुआ । ६ घेरे हुए । रोके हुए । ७ दृढ़ । मज़बूत । ८ दृढ़ सङ्कल्प किये हुए । ९ सिद्ध किया हुआ । आशप्त । १० दृढ़ चित्त । ११ धर्मात्मा । पुण्यात्मा । १२ अपने वचन का धनी । १३ इकरार किया हुआ । कौल करार किया हुआ । १४ तैयार । मौजूद ।—धी, (वि०) शान्तचित्त । दृढ़चित्त ।—प्रज्ञ, (वि०) स्थिर बुद्धि वाला ।—प्रेमन्, (पु०) पक्का या सच्चा मित्र ।

स्थितिः (स्त्री०) १ रहन । ठहरन । २ स्थिरता । ठहराऊपन । ३ कर्तव्य में स्थिरता । ४ ग्रहणकाल ।
 स्थिर (वि०) १ दृढ़ । मजबूत । अटल । २ अचल । गतिहीन । ३ ऐसा स्थिर कि हिलडुल भी न सके । ४ स्थायी । अनादि । अनन्त । सदैव रहने वाला । ५ शान्त । स्वस्थ । ६ काम क्रोधादि से रहित या मुक्त । ७ दृक्कर । दृढप्रतिज्ञ । निश्चित । ८ सक्त । ठोस : १० मजबूत । १२ निष्पूरहृदय । संगदिल । वधाहीन ।—अनुराग, (वि०) वह जिसका प्रेम एक सा बना रहै ।—आत्मन्, —चित्त, —चेतस्, —धी, —बुद्धि, मति, (वि०) १ दृढ़ मन वाला । दृढप्रतिज्ञ । २ शान्त । स्वस्थ । —आयुस्, —जीविन्, (वि०) दीर्घायु वाला । चिरजीवी । —आरम्भ, (वि०) किसी कार्य को आरम्भ कर अन्त तक एक सा उद्योग करने वाला । दृढ़ अध्यस्तार्थी । —गन्धा, (पु०) चम्पा का फूल । —हृद्, (पु०) भूर्जपत्र का वृक्ष । —छाया, (पु०) १ वह वृक्ष जिसकी छाया में बड़ेही ठहरें । २ वृक्ष । पेड़ । —जिह्वा, (पु०) मछली । —जीविता, (स्त्री०) सेमर का पेड़ । —वृष्टि, (पु०) साँप । —पुष्पा, (पु०) १ चम्पा का पेड़ । २ वक्रुल वृक्ष । —प्रतिज्ञ, (वि०) १ दृढ़ी । जिह्वा । आज्ञाही । २ वात का पक्षा । वचन का चौकस । —प्रतिघन्ध, (वि०) सामना करने में दृढ़ । जिह्वा । —फला, (स्त्री०) कुम्हड़ा । —यौनिः, (पु०) बड़ा वृक्ष जिसकी छाया में लोग ठहरें । —यौवन, (वि०) सदा युवा रहने वाला । —यौवनः, (पु०) अप्सरा जाति के जीव । परी । —श्री, (वि०) अनन्त काल रहने वाली समृद्धि । —संगर, (वि०) सत्यप्रतिज्ञ । अपने वचन को निवाहने वाला । —सौहृद्, (वि०) मैत्री में दृढ़ । —स्वायिन्, दृढ़ या अटल रहने वाला ।

स्थिरः (पु०) १ देवता । २ वृक्ष । ३ पर्वत । ४ वैल । साँड़ । ५ शिव । ६ कान्तिकेय । ७ मोक्ष । ८ शनिग्रह ।

स्थिता (स्त्री०) १ दृढ़ता । अटलता । अचलता । स्थितं (न०) १ विक्रम । पराक्रमयुक्त उद्योग ।

३ मन की दृढ़ता । मन का एक रस बना रहना । ४ एकाग्रता ।

स्थिरा (स्त्री०) पृथिवी ।

स्थुड् (धा० पु०) [स्थुडति] डकना ।

स्थूलं (न०) एक प्रकार का प्रंथा स्त्रीमा ।

स्थूला (स्त्री०) १ खंभा, धुनकिया । २ लोहे की प्रतिमा या पुतला । ३ लुहार की निहाई ।

स्थूमः (पु०) १ अकाश । २ चन्द्रमा ।

स्थूरः (पु०) १ साँव । २ नर । मनुष्य ।

स्थूल (वि०) १ बड़ा । बड़े आकार का । २ मैदा ।

३ मजबूत । दृढ़ । ४ गाढ़ा । ५ मूर्ख । मूढ़ । ६ सुस्त । मन्दबुद्धि । ७ जो ठीक न हो । —अर्ज, (न०) बड़ी आँत जो गुदा के पास रहती है । —

आस्यः, (पु०) सर्प । —उच्चयः, (पु०) १ पर्वत में दृढ़ी हुई शिला या चट्टान जो एक टीला

सा बन जाय । २ आधुरापन । अपूर्णता । कर्मा ।

त्रुटि । ३ हाथी की मध्यम चाल । ४ सूँह पर मुहाँसों का निकलना । ५ हाथी की सूँह के नीचे

का गढ़ा या पोला सा स्थान । —काय, (वि०)

मैदा शरीर का । —सेडाः —देवेडः, (पु०)

तीर । —आयः, (पु०) धुनिया की धनुही जिसमें

खई धुनी जाती है । —तालाः, (पु०) बलदल

में उत्पन्न खजर का वृक्ष । —धी —मति,

(वि०) मूर्ख । मूढ़ । बेचकूफ । —नालः,

(पु०) लंबी जाति का सरकंडा । —नासे,

नासिकः, (वि०) मैदी नाक वाला । —नासः,

—नासिकः, (पु०) शूकर । सुअर । —पटः,

(पु०) —पटं, (न०) मैदा कपड़ा । —पट्टः,

(पु०) खई । —पादः, (वि०) वह जिसका

पैर फूल उठा या सूज गया हो । —पादः, (पु०)

१ हाथी । २ पीछे पाँव के रोग से पीड़ित आदमी ।

—फलाः, (पु०) सेमर का पेड़ । —मानं (न०)

मैदा अन्दाज । —मूलं, (न०) मूली । शल-

गम । —लत, —लक्ष्य, (वि०) १ उदार ।

दिलदार । २ मनस्वी । विद्वान् । ३ वह जिसे

हानि लाभ का स्मरण रहै । —शंख, (स्त्री०)

बड़ी अगवाली स्त्री । —शरीरं, (न०) पाँच

मौलिक नाशवान शरीर (सूक्ष्म या लिङ्ग शरीर का उल्टा) — शाटकः, — शाटिः, (पु०)
मौटा कपड़ा । — शीर्षिका, (स्त्री०) एक जाति की चींटी जिसका सिर शरीर की अपेक्षा बड़ा होता है । — पट् पटः, (पु०) १ भौरा । २ बरैया । — स्कन्धः (पु०) लकूचा का पेड़ । — हस्तं, (न०) हाथी की सूँड़ ।

स्थूलं (न०) १ ढेर । राशि । २ खीमा । तन्तु । ३ कूट । पर्वत की चोटी ।

स्थूलः (पु०) कदहल का पेड़ ।

स्थूलक (वि०) बड़ा । लंबा । विशाल । मौटा ।

स्थूलकः (पु०) एक प्रकार की बास या नरकुल ।

स्थूलता (स्त्री०) १ बड़ापन । मोटापन । बड़ाई ।

स्थूलत्वं (न०) २ सूडता । मूर्खता ।

स्थूलयति (क्रि०) मौटा होना । तगड़ा होना । आकार में वृद्धि हो जाना ।

स्थूलिन् (पु०) ऊँट ।

स्थेमन् (पु०) दृढ़ता । स्थिरता । टिकाऊपन ।

स्थेय (वि०) स्थापित करने योग्य । तै करने योग्य । निश्चित करने योग्य ।

स्थेयः (पु०) १ पंच । निष्पत्तिक । २ पाधा । पुरोहित ।

स्थेयस् (वि०) [स्त्री०—स्थेयसी] दृढतर ।

स्थेयु (वि०) बहुत दृढ़ । अत्यन्त मजबूत ।

स्थैर्य (न०) १ स्थिरता । दृढ़ता । २ सातत्य । ३ मन की दृढ़ता । ४ धैर्य । ५ कठोरता । टोसपन ।

स्थौण्यः } (पु०) एक प्रकार की सुगन्धित
स्थौण्यकः } वृक्ष ।

स्थौरं (न०) १ दृढ़ता । शक्ति । बल । २ गधा या घोड़े के डोने योग्य बोझ ।

स्थौरिन् (वि०) १ लहू घोड़ा । २ मजबूत या ताकतवर घोड़ा ।

स्थौल्यं (न०) स्थूलता । मुटाई । मौटापन ।

स्नपनं (न०) १ मार्जन । प्रक्षालन । २ स्नान ।

स्नवः (पु०) जुआव । रिसाव । टपकाव ।

स्नस (धा० प०) [स्नसति, स्नस्यति] १ आधाव होना । बसना । २ उगलना (मुँह से) अस्वीकार करना ।

स्ना (धा० प०) [स्नाति, स्नात] १ स्नान करना । नहाना । २ वेद पढ़ने के अनन्तर गृहस्थाश्रम में लौटते समय स्नान करने की विधि को पूरा करना ।

स्नातकः (पु०) १ वह ब्राह्मण जिसने ब्रह्मचर्याश्रम के कर्म को पूरा करके स्नान विशेष किया हो । २ वेदाध्ययन के अनन्तर गृहस्थाश्रम में लौटने के लिये ब्रह्मभूत स्नान करने वाला ब्राह्मण । ३ वह ब्राह्मण जिसने किसी धार्मिक अनुष्ठान करने के लिये भिक्षावृत्ति ग्रहण की हो । ४ वह द्विज जिसने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया हो ।

स्नानं (न०) १ स्नान । शोधन । प्रक्षालन । अघवाहन । २ देवप्रतिमा को विधिपूर्वक स्नान कराने की क्रिया । ३ कोई वस्तु जो स्नान में काम आती हो । — अगारं, (न०) स्नानागार । गुहालखाना । — द्रोणी, (स्त्री०) नहाने के लिये टब । — यात्रा, (स्त्री०) ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन का स्नान पर्व । — विधिः, (पु०) स्नान करने का विधान या नियम ।

स्नानीय (वि०) वह वस्त्र जो नहाते समय धारण करने के योग्य हो । उपयुक्त ।

स्नानीयं (न०) स्नान के काम में आने वाली कोई भी वस्तु यथा जल, डबटन, तैल आदि ।

स्नापकः (पु०) स्नान कराने वाला नौकर या वह नौकर जो अपने मालिक के नहाने के लिये जल लावे ।

स्नापनं (न०) स्नान करवाने की क्रिया या किसी के स्नान करते समय उपस्थित रहने की क्रिया ।

स्नायुः (पु०) १ शिरा । नस । २ धनुष का रोवा या डोरी । — अर्मन्, (न०) नेत्र रोग विशेष ।

स्नायुकः (पु०) डेखो स्नायु,

स्नावः } (पु०) रग । पुहा ।
स्नावन् }

स्निग्ध (वि०) १ श्रिय । प्यारा । स्नेही । मित्र ।

अनुरक्त । २ चिकना । तेल से तर । ३ चिपचिपा ।
४ चमकीला । ५ कोमल । मुलायम । ६ तर ।
नम । भीगा । ७ शीतल । ८ दयालु कृपालु ।
९ मनोहर । मनोश । १० शाका । टस । सघन ।
११ एकाग्रता ।—नगाहुलाः, (पु०) एक प्रकार का
चावल जो जल्द उगता है ।

स्निग्धं (न०) १ तेल । २ मोम । ३ चमक । दीप्ति ।
४ मोटाई । मोटापन ।

स्निग्धः (पु०) १ मित्र । दोस्त । मिथजन । २ लाल
रंग का रूख । ३ एक प्रकार का सनेवर का वृक्ष ।

स्निग्धता (स्त्री०) } १ चिकनापन । चिकनाहट ।
स्निग्धत्वं (न०) } २ कोमलता । मिथता । प्रेम ।

स्निग्धा (स्त्री०) गृदा । मिर्गी ।

स्निह् (धा० प०) [स्निह्यति, स्निग्ध] १ प्यार
करना । प्रेम करना । स्नेह करना । २ सहज में
अनुरक्त होना । ३ प्रसन्न होना । ४ चिपचिपा
होना । ५ चिकना होना ।

स्नु (धा० प०) [स्नोति, स्नुत] १ टपकना ।
चूना । २ बहना । प्रवाहित होना ।

स्नु (पु० न०) १ अधिलेख । ऊंची समतल भूमि ।
२ चोटी ।

स्नु (स्त्री०) स्नायु । नस । रग । पुट्टा ।

स्नुत (वि०) रिसा हुआ । टपका हुआ । बहा हुआ ।

स्नुषा (स्त्री०) बहू । पुत्रवधू ।

स्नुह् (धा० प०) [स्नुह्यति, स्नुग्ध, स्नुह] कै
करना । उड़ाट करना । ओकना ।

स्नेहः (वि०) १ वह प्रेम जो बड़ों का छोटे के प्रति
होता है । २ चिकनाहट । चिकनापन । ३ नमी ।
तरी । ४ चरबी । बसा । ५ तेल । ६ शरीर से
निकलने वाला कोई भी तरल धातु जैसे वीर्य ।
—अक्त, (वि०) तेल दिया हुआ । तेल से चिक-
नाया हुआ ।—अनुवृत्तिः, (स्त्री०) मैत्री भाव ।
—आशः, (पु०) दीपक ।—छेद्ः, —भङ्गः,
(पु०) मित्रता का टूटना ।—पूर्व, (अव्यया०)
प्रेमपूर्वक ।—प्रवृत्तिः, (स्त्री०) प्रेमप्रवाह ।—
प्रिय, (वि०) जिसको तेल प्रिय हो ।—प्रियः,

(पु०) दीपक —भूः, (पु०) कफ । श्लेष्म
—रंगः, (पु०) तिल्ली । तिल ।—वस्त्रि
(पु०) गुदाभ्याग से पिचकारी की नली से तेल
डालना ।—विमर्दित, (वि०) तेल की मालिश
किये हुए ।—व्यक्तिः, (स्त्री०) मित्रता प्रदर्शन ।
प्रेमजल लाना ।

स्नेहन् (पु०) १ मित्र । २ चन्द्रमा । ३ रोगविशेष ।

स्नेहन् (वि०) १ चिकनाया । हुआ । २ नाश करने
वाला ।

स्नेहनं (न०) १ तेल की मालिश । उबटन ।

स्नेहित (व० कृ०) १ प्यार किया हुआ । २ कृपालु ।
प्यारा । ३ चिकनाया हुआ ।

स्नेहितः (पु०) मित्र । प्रेमपात्र । मायूक ।

स्नेहित् (वि०) [स्त्री०—स्नेहिनी] १ प्यारा ।
प्रिय । २ चिकना । मोटा । (पु०) १ मित्र ।
दोस्त । २ तेल मलने वाला । उबटन लगाने वाला ।
३ चितेरा ।

स्नेहुः (पु०) १ चन्द्रमा । २ रोगविशेष ।

स्नै (धा० प०) [स्नायति] वस्त्र धारण करना ।
कपड़ा लपेटना ।

स्नैर्ग्यं (न०) १ स्निग्धता । चिकनाई । २ कोमलता ।
३ चिकनाहट ।

स्पन्दु } (धा० आ०) [स्पन्दते, स्पन्दित] १
स्पन्दु } धड़कना । सिसकना । २ थरथराना । कंपना ।
३ जाना ।

स्पन्दः } (पु०) १ सिसकन । धड़कन । २ कंप-
स्पन्दः } कैरी ।

स्पन्दनं } (न०) १ धड़कन । सिसकन । २ आन्दो-
स्पन्दनं } लन । कंपन । २ गर्भ में बच्चे की फड़कन ।

स्पन्दित } (व० कृ०) १ कंपा हुआ । फड़का
स्पन्दित } हुआ । २ गया हुआ ।

स्पन्दितं } (न०) धड़कन । फड़कन । सिसकन ।
स्पन्दितं }

स्पर्ध (धा० आ०) [स्पर्धते] १ स्पर्धा करना ।
बराबरी करना । प्रतिद्वन्द्वता करना । २ चिन्तैती
देना । ललकारना ।

स्पर्धा (स्त्री०) १ दूसरे को दबाने की इच्छा । प्रतियोगिता । २ ईर्ष्या । डाह । ३ युद्धार्थ आह्वान । ४ समानता । बराबरी ।

स्पर्धिन् (वि०) [स्त्री०—स्पर्धिनी] १ स्पर्धा करने वाला । प्रतियोगिता करने वाला । प्रतिद्वन्द्वी । २ ईर्ष्यालु । डाही । ३ अभिमानी । (पु०) प्रतियोगी ।

स्पर्श (धा० आ०) [स्पर्शयते] १ छेना । ग्रहण करना । स्पर्श करना । २ जोड़ना । मिलाना । ३ छ्वाती से लगाना । आस्निंगन करना । कोरियाना ।

स्पर्शः (पु०) १ लगाव । छुआव । २ (उद्योतिष में ग्रहों का) समागम । ३ भिदंत । मुटभेद । ४ अनुभव । संज्ञा । ५ स्वप्ना का विषय । ६ रोग । बीमारी । पांच वर्गों में से ('क' से 'म' तक) कोई भी व्यञ्जन । ७ भेंट । दान । नजर । पवन । हवा । ८ आकाश । १० स्त्री-मैथुन ।—अज्ञ, (वि०) निःसंज्ञ । बेहोश । मूर्च्छित ।—उदय, (वि०) जिसके पीछे व्यञ्जन वर्ण हो ।—उपलः,—मणिः, (पु०) दिव्यमणि ।—लज्जा, (स्त्री०) कुईमुई ।—वेद्य, (वि०) जो छूने से जाना जाय ।—सञ्चारिन् (वि०) उदना । बुझाकृत का । संक्रामक ।—स्नानं, (न०) उस समय का स्नान जिस समय चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण लगना आरम्भ होता है ।—स्पन्दः,—स्पर्दः, (पु०) भेंदक ।

स्पर्शन् (वि०) [स्त्री०—स्पर्शनी] १ छूने वाला । २ प्रभाव डालने वाला ।

स्पर्शनः (पु०) पवन । हवा ।

स्पर्शनं (न०) १ छुआव । लगाव । संसर्ग । २ दान । भेंट ।

स्पर्शनकं (न०) सांख्य दर्शन में चर्म के लिये पर्यायवाची शब्द ।

स्पर्शवत् (वि०) १ स्पर्श द्वारा अनुभव करने योग्य । स्पर्श योग्य । २ कोमल । मुलायम । छूने से आनन्द देने वाला ।

स्पर्ध् (धा० आ०) [स्पर्धते] नम होना । भींगना ।

स्पृष्ट (पु०) शरीर की शङ्खबी । रोग । बीमारी ।

स्पृश (धा० उ०) [स्पृशति—स्पृशते] १ रूकावट डालना । २ कोई काम करना । ३ सीना । ४ छूना । ५ देखना ।

स्पृशः (पु०) १ जासूस । २ युद्ध । जङ्गाई । ३ जंगली जानवरों से लड़ने वाला । (पुरस्कार पाने की कामना से)

स्पृष्ट (वि०) १ साफ । प्रकट । २ असली । सच्चा । ३ पूरा खिला हुआ । ४ साफ साफ देखने वाला ।

स्पृष्टं (न०) १ स्पष्टता से । साफ तौर से । २ सुल्लुखला । साहस पूर्वक ।—गर्भा, (स्त्री०) स्त्री जिसके शरीर में गर्भ धारण के लक्षण साफ साफ दिखलाई पड़ते हों ।—प्रतिपत्तिः, (पु०) स्पष्ट प्रतीति ।—आधिन्,—वक्तृ, (वि०) साफ साफ कहने वाला ।

स्पृ (धा० प०) [स्पृणाति] १ देना । खींचकर निकालना । २ दान करना । वक्शना । ३ वचाना । रक्षा करना । ४ रहना ।

स्पृका (स्त्री०) एक जंगली रुख ।

स्पृश (धा० प०) [स्पृशति. स्पृष्ट] १ छूना । २ धीरे धीरे थपथपाना । ३ लगाव होना । सम्पर्क होना । ४ पानी से छिड़कना या धोना । ५ प्राप्त करना । ६ प्रभाव डालना । ७ हवाला देना ।

स्पृश (वि०) छूने वाला । असर डालने वाला । बेधने वाला । (यथा मर्मस्पृश)

स्पृष्ट (व० कृ०) १ छुआ हुआ । हाथ से मालूम किया हुआ । २ जो लागू न हो । जो पहुँचे नहीं । ३ कलङ्कित । दागी । भ्रष्ट किया हुआ । ४ जिह्वा के स्पर्श से बना हुआ या उच्चारित वर्ण विशेष ।

स्पृष्टिः } (स्त्री०) १ छुआव । लगाव ।

स्पृह (धा० उ०) [स्पृहयति—स्पृहयते] इच्छा करना । अभिलाष करना । कामना करना । ईर्ष्या करना ।

स्पृहणं (न०) इच्छा करने की क्रिया ।

स्पृहणीय (वि०) इच्छा करने योग्य । वाञ्छनीय ।
स्पृहयालु (वि०) स्पृहा करने वाला । इच्छा करने वाला ।

स्पृहा (स्त्री०) कामना । अभिलाष । उत्सुकता ।

स्पृह्य (वि०) वाञ्छनीय । ईर्ष्या करने योग्य ।

स्पृह्यः (पु०) जंगली विजौरे का पेड़ ।

स्पृ (धा० प०) [स्पृणाति] चोटिल करना ।
वध करना ।

स्पृष्ट (पु०) देखो स्पृष्ट ।

स्फट् (धा० प०) [स्फटति] फट जाना । बड़ जाना ।

स्फटः (पु०) साँप का फैला हुआ फन ।

स्फटा (स्त्री०) १ साँप का फैला हुआ फन ।
२ फिटकरी ।

स्फटिकः (पु०) बिल्लौर । फटिक ।—अश्लः,
(पु०) मेरु पर्वत ।—अग्निः, (पु०) कैलास
पर्वत ।—अश्मन्—आत्मन्—मणिः (पु०)
—शिला, (स्त्री०) स्फटिक या बिल्लौर
पत्थर ।

स्फटिकारिः } (स्त्री०) एलुमिनिथस धातुमिश्रित
स्फटिकारिका } रसायनिक पदार्थ विशेष ।

स्फटिकी (स्त्री०) फिटकरी ।

स्फट् (धा० प०) [स्फटति] सड़क जाना । फूट
जाना । खिल जाना । फैल जाना । [उ०
स्फटयति—स्फटयते] हँसी करना । मजाक
करना । हँसना । उपहास करना ।

स्फरणां (न०) काँपना । थरथराना । धड़कना ।

स्फाटिक (वि०) [स्त्री०—स्फाटिकी] फटिक
पत्थर की ।

स्फाटिकं (न०) बिल्लौर पत्थर ।

स्फाटित (न० क०) चिरा हुआ । फटा हुआ । फैला
हुआ । सन्धि वाला ।

स्फातिः (स्त्री०) १ सृजन । फूलन । २ वृद्धि ।
बढ़ती ।

स्फाय् (धा० आ०) [स्फायते—स्फीत] १

मोटा हो जाना । बड़ा हो जाना । बढ़ जाना ।
२ सूज जाना । फैल जाना । वृद्धि को प्राप्त होना ।

स्फार (वि०) १ बढ़ा । दीर्घ । बढ़ा हुआ । फैला
हुआ । २ बहुत । विपुल । ३ उच्चस्वरित ।

स्फारं (न०) विपुलता । आधिक्य । बहुतायत ।

स्फारः (पु०) १ सृजन । बाढ़ । वृद्धि । २ (सुवर्ण
में का) बुबुद । बुलबुला । ३ गुमड़ा । गुमड़ी ।
थरथराहट । स्पन्दन । धड़कन । ४ मरोड़ा
पैठन ।

स्फारण (न०) विपुलता । कंपन । थरथराहट ।

स्फालः (पु०) धड़कन । कंपन । थरथराहट ।

स्फालनं (न०) १ कंपन । धड़कन । २ हिलाना ।
३ रगड़न । घिटन । ४ अपधरी । सहलाना ।

स्फिच् (स्त्री०) चूतड़ । नितम्ब ।

स्फिट् (धा० उ०) [स्फोटयति—स्फोटयते]
१ बायल करना । २ वध करना ।

स्फिर (वि०) १ अधिक । बहुत । विपुल । २ अनेक ।
असंख्य । २ बड़ा । विस्तारित ।

स्फीत (न० क०) १ सूजा हुआ । बढ़ा हुआ ।
२ मोटा ताजा । बड़े आकार का । ३ बहुत ।
असंख्य । अधिक । ४ सफलकाम । समृद्धवान ।
५ पैतृक या पुत्रैनी रोग से सताया हुआ ।

स्फीतिः (पु०) १ वृद्धि । बाढ़ । २ विपुलता ।
आधिक्य । ३ समृद्धि ।

स्फुट् (धा० प० उ०) [स्फुटति, स्फोटति—
स्फोटते, स्फुटित] १ फटजाना । अचानक दरक
जाना । २ खिलना । फैलना । कुसुमति होना ।
३ तितर बितर होना भाग जाना । ४ दृष्टिगोचर
होना । प्रत्यक्ष होना । प्रकट होना ।

स्फुट (वि०) १ फटा हुआ । टूटा हुआ । २ पूरा
खिला हुआ । फैला हुआ । ३ सफेद । चमकीला ।
विशुद्ध । ४ प्रसिद्ध । प्रख्यात । ५ झूया हुआ ।
व्याप्त । ६ उच्चस्वरित । ७ स्पष्ट । सत्य ।

—अर्थ, (वि०) १ बोधगम्य । साफ । २
अभिप्रायसूचक । गुढार्थप्रकाशक । —तार,
(वि०) नद्वयविजडित । चमकीला ।

स्फुटं (अव्यया०) साफ तैर से । स्पष्टतः ।

स्फुटनं (न०) फूट जाना । खुल जाना । बरक जाना ।
चिर जाना ।

स्फुटिः } (स्त्री०) पैर की बिवाई या सूजन ।
स्फुटी }

स्फुटिका (स्त्री०) टुकड़ा । चीप ।

स्फुटित (व० कृ०) १ तड़का हुआ । टूटा हुआ ।
चिरा हुआ । फूटा हुआ । २ कलियाया हुआ ।
कलियाँ लगा हुआ । फूला हुआ । खिला हुआ ।
(फूल) ३ साफ किया हुआ । प्रकट किया हुआ ।
खिलाया हुआ । ४ चीरा हुआ । नष्ट किया हुआ ।
५ उपहास किया हुआ । जोड़ उड़ाया हुआ ।
—चरण, (वि०) फैले हुए पैरों वाला । चौड़े
पैरों वाला ।

स्फुट् (धा० उ०) [स्फुटयति, —स्फुटयते]
तिरस्कार करना । अपमान करना ।

स्फुड् (धा० प०) [स्फुडति] ढकना ।

स्फुट् } (धा० प०) [स्फुगटति] हँसना ।
स्फुगट् } मजाक करना ।

स्फुड् } (धा० उ०) [स्फुगडते, स्फुगडयति-
स्फुगड् } स्फुगडयते] देखा स्फुगट् ।

स्फुत (अव्यया०) बनावटी आवाज़ विशेष । —करः,
(पु०) स्फुत् शब्द ।

स्फुर् (धा० प०) [स्फुरति, स्फुरित] १
धड़कना । धकधक करना । २ थरथराना । काँपना ।

स्फुरः (पु०) १ फड़कन । थरथरी । धड़कन ।
काँपकाँपी । २ सूजन । फूलन । ३ ढाल ।

स्फुरणं (न०) १ फड़कन । काँपकाँपी । थरथराहट ।
२ (अङ्ग विशेषों की) फड़कन । जो होने वाले
शुभाशुम के चोतक होते हैं । ३ इष्टि पड़ना ।
नज़र आना । ४ चमक । दमक । कौधा । ५
स्मरण हो आना ।

स्फुरत् (वि०) थरथराता हुआ । चमकीला ।

स्फुरित (व० कृ०) १ काँपता हुआ । धड़कता
हुआ । २ हिला हुआ । ३ चमका हुआ । ४
अदृढ़ । चञ्चल । ५ सूजा हुआ ।

स्फुरितं (न०) १ थरथरी । काँपकाँपी । २ मन का
उद्रेक या उद्वेग ।

स्फुर्च्छ (धा० प०) [स्फुर्च्छति] १ फैलना ।
बढ़ना । २ भूलना । विस्मरण होना ।

स्फुर्ज (धा० प०) [स्फुर्जति] १ बादल की तरह
गरजना । २ चमकना । ३ फट पड़ना । फूट
जाना ।

स्फुल् (धा० ०) [स्फुलति] १ काँपना ।
धड़कना । २ प्रकट होना । सामने आना । ३
जमा करना । संग्रह करना । ४ नाश करना ।
वध करना ।

स्फुलं (न०) झोखवारी । तंबू ।

स्फुलनं (न०) काँपकाँपी । धड़कन ।

स्फुलिङ्गः (पु०) }
स्फुलिङ्गः (पु०) }
स्फुलिङ्ग (न०) }
स्फुलिङ्गम् (न०) }
स्फुलिङ्गा (स्त्री०) }
स्फुलिङ्गा (स्त्री०) }
अँगारा । शोला ।

स्फूर्जः (पु०) १ बिजली गिरने की कड़कड़ाहट । २
हनु का वज्र । ३ सहसा होने वाली बाढ़ या फूटन ।
४ दो प्रेमियों का प्रथम समागम जिसमें आरम्भ में
हर्ष और अन्न में भय की आशंका हो ।

स्फूर्जथुः (पु०) गड़गड़ाहट ।

स्फूर्तिः (पु०) १ धड़कन । थरथराहट । २ खिलन ।
फूलन । ३ प्रकटन । प्राकट्य । ४ स्मरण होना ।
५ काव्य सम्बन्धी स्फूर्ति ।

स्फूर्तिमत् (वि०) १ काँपकाँपी । थरथराने वाला ।
आन्दोलित । २ कोमल द्रव्य वाला ।

स्फैयस् (पु०) अपेक्षाकृत अधिक । अपेक्षाकृत
बड़ा ।

स्फोट (वि०) अत्यधिक अधिक । सब से अधिक
बड़ा ।

स्फोटः (पु०) १ फूटन । तड़कन । २ प्रकाश ।
प्रकटीकरण । खुलाव । ३ गुमड़ा । सूजन । गुमड़ी ।
बलतोड़ । ४ मन का वह भाव जो किसी शब्द के

सुनने से मन में उदय होता है । (सीमांसकों का)
अनादि शब्द ।—बीजकः (पु०) भिलावा ।

स्फोटन (वि०) [स्त्री०—स्फोटनी] प्रकटन ।
प्रकाशन । साक्ष्य करना ।

स्फोटनं (न०) १ सहसा तड़कना । फटना । चिरना ।
अनाज फटकना । ३ उँगली फोड़ना या चट-
काना ।

स्फोटनः (पु०) संयुक्त व्यञ्जन वर्णों का पृथक् पृथक्
उच्चारण ।

स्फोटनी (स्त्री०) छेद करने का औज़ार । बर्मा ।

स्फोटा (स्त्री०) साँप का फैला हुआ फन ।

स्फोटिका (स्त्री०) पत्थी विशेष ।

स्फोरणं (न०) देखो स्फुरणं ।

स्फुटं (न०) यज्ञीय पात्र विशेष जो तलवार के आकार
का होता है ।—वर्तिनिः, (पु०) इस औज़ार से
बनाई हुई रेखा या कूंड ।

स्म (अव्यया०) १ यह जब किसी वर्तमानकालिक
क्रिया वाची शब्द में लगाया जाता है तब वह
शब्दभूत कालिक क्रिया का अर्थ देता है । २
निषेध और वर्जन में भी इसका प्रयोग होता है ।

स्मयः (पु०) १ आश्चर्य । ताज्जुब । २ अहंकार ।
अकड़ ।

स्मरः (पु०) १ यादगारी । स्मरणशक्ति । २ प्रेम ।
३ कामदेव ।—अङ्कुशः, (पु०) १ उँगली के
नख । २ प्रेमी । आशिक । रसिया ।—अगारं, (न०)
—कूपकः (पु०)—गृहं, (न०)—मंदिरं, (न०)
योनि । भग । स्त्री की जननेन्द्रिय ।—अन्ध,
(वि०) प्रेम से अंधा ।—आतुर, —आर्त, —
उत्सुक, (वि०) प्रेमविह्वल । —आमवः,
(पु०) धूक । खखार ।—कर्मन्, (न०) कोई
भी रसिक कर्म ।—गुरुः (पु०) विष्णु ।—दशा,
(स्त्री०) प्रेम के कारण उत्पन्न हुई शरीर की
दशा ।—ध्वजः, (पु०) १ इन्द्रिय । २ मत्स्य
विशेष । ३ वाद्ययंत्र विशेष ।—ध्वजं, (न०)
स्त्री की जननेन्द्रिय । भग । योनि ।—ध्वजा,

(स्त्री०) वाँदनी रात । प्रिया, (स्त्री०)
कामदेव की स्त्री रति ।—भासित, (वि०) प्रेम
से विह्वल ।—मोहः, (पु०) प्रेम से मति का
मारा जाना ।—लेखनी, (स्त्री०) मैनापत्थी
सारिका पक्षी ।—वल्लभः, (पु०) १ वसन्त
ऋतु । २ अनिरुद्ध का नाम ।—वीथिका, (स्त्री०)
रंडी । बेश्या ।—शासनः, (पु०) शिव जी ।—
सखः, (पु०) चन्द्रमा ।—स्तरभः, (पु०)
लिङ्ग । पुरुष की जननेन्द्रिय ।—स्मर्यः, (पु०)
गधा । रासभ ।—हरः, (पु०) शिव जी ।

स्मरणं (न०) १ याद । स्मरण । २ किसी के विषय
में चिन्तन । ३ परंपरागत अनुशासन ।
४ किसी देवता का मानसिक बारबार नाम कीर्तन
करना । ५ सखेद स्मरण । ६ साहित्य में अलंकार
विशेष । यथा ।

“यथातुल्यवर्णस्य दृष्टेनस्मरणं स्मृतिः स्मरणम् ।”

—अनुग्रहः, (पु०) १ कृपा पूर्वक स्मरण । २
स्मरण करने का अनुग्रह ।—अपत्यतर्पकः,
(पु०) कछुवा ।—अयौगपद्यं, (न०) स्मरणों
की अतिसमसामयिकता ।—पदवी, (स्त्री०)
मृत्यु ।

स्मार (वि०) कामदेव सम्बन्धी ।

स्मारं (न०) स्मरण । याददाशत ।

स्मारक (वि०) [स्त्री०—स्मारिका] स्मरण कराने
वाला । याद दिलाने वाला ।

स्मारकं (न०) कोई वस्तु जो किसी को स्मरण कराने
के लिये हो ।

स्मारणं (न०) स्मरण कराना । याद दिलवाना ।

स्मार्त (वि०) १ स्मरण शक्ति सम्बन्धी । स्मरण
किया हुआ । स्मारक । २ स्मृति में लिखा हुआ ।
स्मृति पर निर्भर । ३ आईनी-पुस्तकों का अनुसरण
करने वाला । ४ गार्हपत्य (यथा अग्नि)

स्मार्तः (पु०) १ स्मृति शास्त्रों में दक्ष ब्राह्मण । २
परंपरागत आईन को मानने वाला । ३ एक
सम्प्रदाय विशेष ।

स्मि (धा० आ०) [स्मयते, स्मित] १ हँसना ।
मुसकुराना । २ खिलना । फूलना ।

स्मिद् (धा० ड०) [स्मेदयति—स्मेदयते] १
सिरस्कार करना । २ प्रेम करना । ३ जाना ।

स्मित (व० कृ०) १ मुसकाया हुआ । २ खिल्ला
हुआ । फूला हुआ ।

स्मितं (न०) मुसक्यान ।—इश्, (वि०) दृष्टि
जिसमें मुसक्यान हो । (स्त्री०) सुन्दरी स्त्री ।—
पूर्वम्, (अव्यया०) मुसक्यान के साथ ।

स्मीलू (धा० प०) [स्मीलति] आँख भारना । आँख
रूपकाना ।

स्मृ (धा० प०) [स्मृणाति] १ प्रसन्न करना । २
रक्षा करना । बचाना । ३ रहना ।

स्मृतिः (स्त्री०) १ याददाशत । स्मरण शक्ति । २
ऋषि प्रणीत स्मृति शास्त्र । ३ आईन की पुस्तक ।
४ अभिलाषा । कामना । ५ समझ । बुद्धि ।—
अंतर्, (न०) दूसरी स्मृति ।—अपेक्ष, (वि०)
१ भूला हुआ । २ स्मृति शास्त्र विरुद्ध । ३ न्याय
वर्जित । बेआईनी ।—उक्त, (वि०) स्मृतियों में
वर्णित ।—प्रत्यवमर्षः, (पु०) स्मरण शक्ति ।
धारण । शक्ति ।—प्रबन्धः, (पु०) स्मृति सम्बन्धी
ग्रन्थ । आईनी किताब ।—भ्रंशः, (पु०) स्मरण
शक्ति का नाश ।—रोधः, (पु०) स्मरण शक्ति
का नाश ।—विभ्रमः, (पु०) स्मरण शक्ति की
गड़बड़ी ।—विरुद्ध, (वि०) स्मृति शास्त्र
के विरुद्ध । बे आईनी ।—विरोधः, (पु०) दो
स्मृति वाक्यों में पारस्परिक विरोध ।—शार्ङ्ग, (न०)
स्मृति ग्रन्थ । आईन की पुस्तक ।—शेष, (वि०)
शुत । मरा हुआ ।—शैथिल्यं, (न०) स्मरण
शक्ति की शिथिलता ।—साध्य, (वि०) जो
स्मृति से सिद्ध किया जासके ।—हेतुः, (पु०)
स्मरण होने का कारण ।

स्मेर (वि०) १ मुसकाने वाला । मुसकाता हुआ । २
खिल्ला हुआ । प्रफुल्लित । ३ अभिमानी । ४ प्रत्यक्ष ।
स्पष्ट । साफ़ ।—विविकरः, (पु०) मयूर । मोर ।

स्यद् (पु०) वेग । रफ्तार । तेज़ी ।

स्यंदु } (धा० धा०) [स्यन्दते, स्यन्न] १ चूना ।
स्यन्दु } रिसना । २ पकना । ३ बहना । निकालना ।
३ दौड़ना । पलायन करना ।

स्यंदः } (पु०) १ बहाव । चुआव । २ तेज़ी से
स्यन्दः } गमन । ३ रथ । गाड़ी ।

स्यंदन } (वि०) [स्त्री०—स्यन्दना, स्यन्दनी] तेज़ी
स्यन्दन } से गमन करना । २ तेज़ चाल चलने वाला ।

स्यन्दनं } (न०) १ बहाव । टपकाव । रिसाव ।
स्यन्दनं } चुआव २ वेगवान प्रवाह । ३ जल । पानी ।

स्यंदनः } (पु०) १ लड़ाई का रथ । रथ । गाड़ी ।
स्यंदनः } २ पवन । हवा । ३ तिनिश का पेड़ ।—

आरोहः (पु०) वह घोड़ा जो रथ में बैठ कर
चुड़ करे ।

स्यंदनिका } (स्त्री०) थूक का छौंटा ।
स्यन्दनिका }

स्यंदित् } (वि०) [स्त्री०—स्यंदिनी] १ थूक । २
स्यंदित् } एक साथ दो बच्चे जनने वाली गौ ।

स्यन्न (व० कृ०) १ टपका हुआ । रिसा हुआ ।
चुआ हुआ । २ गमनशील ।

स्यम् } (धा० प०) [स्यमति, स्यमयति—
स्यं } स्यमयते] १ शब्द करना । २ चिन्तिताना । २
जाना । ३ सोचना विचारना ।

स्यमंतकः } (पु०) एक प्रकार का बहुमूल्य रत्न ।
स्यमंतकः } यह श्रीकृष्ण के समय में सत्राजित के
पास थी ।

स्यमिकः } (पु०) १ बादल । मेघ । २ दीमक का
स्यमीकः } मिट्टी का टीला । ३ वृक्ष विशेष । ४
समय । काल ।

स्यमिका (स्त्री०) नील ।

स्यात् (अव्यया०) कदाचित् । शायद । संयोगवश ।
—वाहिन्, (पु०) नास्तिक । शक्का करने वाला ।

स्यालः (पु०) देखो श्यालः ।

स्यूत (व० कृ०) १ सिला हुआ । २ बिना हुआ ।

स्यूतः (पु०) बोरा ।

स्यूतिः (पु०) १ सिलाई । सीवन । २ सुईकारी । ३
बोरा । ४ वंशावली । ५ सन्तति । औलाद ।

स्यूतः (पु०) १ किरन । २ सूर्य । बोरा । बोरी ।

स्यूमः (पु०) किरन ।

स्योन (वि०) १ सुन्दर । मनोहर । २ शुभ । मङ्गल-
कारक ।

स्थोन (न०) प्रसन्नता । आनन्द ।

स्थोनः (पु०) १ किरन । २ सूर्य । ३ बोरी ।

स्नंस् (धा० आ०) [स्नंसते, स्नस्त] १ गिरना । टपक पड़ना । रपट जाना । २ डूब जाना । ३ लटकना । ४ जाना ।

स्नंसः (पु०) गिरन । किरन ।

स्नंसनं (न०) १ गिरन । २ गिरवाने की क्रिया । नीचे उतरवाने की क्रिया ।

स्नंसिन् (वि०) [स्नंसिनी] १ गिरने वाला । लटकने वाला । २ मूखने वाला ।

स्नंह (धा० आ०) [स्नंहते] विश्वास करना । भरोसा करना ।

स्नविन् (वि०) [स्त्री—स्नविणी] मालाधारी ।

स्नज् (स्त्री०) पुष्पमाला । फूलका गजरा ।—स्नान् [स्नान्दामन्] (न०) फूलके गंजरे की गोंठ ।—धर (वि०) मालाधारी ।—धरा, (स्त्री०) वृक्ष विशेष ।

स्नज्वा (स्त्री०) रस्सी । डोरी । डोरा ।

स्नद्धू (स्त्री०) अपान वायु । गोत्र । पाद ।

स्नम् } (धा० आ०) [स्नम्भते, स्नम्भ] १ विश्वास करना । भरोसा करना ।

स्नवः (वि०) १ टपकाव । चुआव । २ बहाव । धार । ३ चरमा । सोता ।

स्नवणं (न०) १ चुआव । टपकाव । रिसाव । २ पसीना । ३ पेशाब ।

स्नवत् (वि०) [स्त्री—स्नवती] बहने वाला ।—गर्भा, (स्त्री०) १ पेट गिराने वाली औरत । २ किसी बुर्घटना वश गिरे हुए गर्भ वाली गौ ।

स्नष्ट (पु०) १ बनाने वाला । २ सिरजन हार । रचने वाला । ३ जहा ।

स्नस्त (व० कृ०) १ गिरा हुआ । टपका हुआ । २ लटकता हुआ । ३ ढीला किया हुआ । ४ खोला हुआ । ५ लटकता हुआ । ६ अलग किया हुआ ।—श्रंग, (वि०) १ ढीले श्रंगों वाला । २ मूर्च्छित ।

स्नस्तरः (पु०) शय्या । सेज । कोच ।

स्नाक् (धा० आ०) फुर्ती से । तेजी से ।

स्नावः (पु०) बहाव । रिसाव । टपकाव ।

स्नावक (वि०) [स्त्री—स्नाविका] बहने वाला । टपकने वाला ।

स्नावकं (न०) काली मिर्च ।

स्निम् (धा० प०) [स्निमति] चोदिल करना । बंध करना ।

स्निम् (धा० प०) [स्निमति] चोदिल करना । बंध करना ।

स्निव् (धा० प०) [स्निव्यति, स्नुत] १ जाना । २ सूख जाना ।

स्नु (धा० प०) [स्नुवति, स्नुत] १ बहना । २ उड़लना । बहाना । ३ जाना । ४ शून्य होना । बह जाना । टपक जाना । ५ (किसी गुप्त बात का) फैल जाना ।

स्नुधः (पु०) एक जनपद का नाम जो किसी समय पाटलिपुत्र से एक मंजिल पर था ।

स्नुध्री (स्त्री०) सज्जी ।

स्नुव (स्त्री०) काठ का चुवा ।—प्रणान्तिका (स्त्री०) चुवा की नाली जिसमें होकर घो अग्नि में डालने समय बहाया जाता है ।

स्नुत (वि०) बहने वाला । टपकने वाला ।

स्नुतिः (स्त्री०) १ बहाव । रिसाव । टपकाव । २ राल । धूना । ३ चरमा ।

स्नुवः (पु०) १ यज्ञीय पात्र विशेष । चुवा । २ स्नुवा (स्त्री०) १ सोता । चरमा ।

स्नेक् (धा० आ०) [स्नेकते] जाना ।

स्नै (धा० प०) [स्नायति] १ उवाकना । २ पसी जना । पसीना निकालना ।

स्रोतं (न०) चरमा । सोता ।

स्रोतस् (न०) १ धार । चरमा । सोता । जलप्रवाह । तेज प्रवाह वाली नदी । २ नदी । ३ लहर । ४ जल । ५ इन्द्रिय । ६ हाथी की सूँड़ ।—श्रंजनं, (= स्रोतोञ्जनं) सुमा ।—ईशः, (पु०)

समुद्र ।—रन्ध्रः, (पु०) हाथी की सूँड़ का छेद ।
 नकुना । नधुना ।—वहा, (स्त्री०) नदी ।
 तस्यः (पु०) १ शिव । २ चोर ।
 तस्वती } (स्त्री०) नदी ।
 तस्मिन्नी }
 (सर्वनाम० वि०) १ निज । अपना । २ स्वाभाविक प्रकृतिगत । ३ अपनी जाति का । अपनी जाति सम्बन्धी । अक्षपादः, (पु०) न्याय दर्शन का मानने वाला या अनुयायी ।—अक्षर, (न०) अपने हाथ की लिखावट ।—अधिकारः, (पु०) अपना कर्त्तव्य या शासन ।—अधिष्ठानं, (न०) शरीरस्थित षट्चक्रों में से एक ।—अधीन, (वि०) १ स्वतंत्र । खुदमुखतार । २ आत्मनिर्भर । ३ अपनी निज प्रजा । १ निज शक्ति या सामर्थ्य के भीतर ।—अध्यायः, (पु०) १ वेदाध्ययन ।—अनुभूतिः, (स्त्री०) निज अनुभव । २ आत्मज्ञान ।—अंतं, (न०) १ मन । २ गुफा । खोह ।—अर्थः, (पु०) १ अपना मतलब । निज प्रयोजन । २ निज अर्थ ।—आयत्त, (वि०) आत्मनिर्भर ।—इच्छा, (स्त्री०) निज अभिलाष ।—उद्यः, (वि०) किसी ग्रह का उद्य जो किसी स्थल विशेष पर हो ।—उपधिः, (पु०) वह तारा जो अपने स्थान पर अचल रहै ।—कंपनः, (पु०) पवन । वायु ।—कर्मिन्, (वि०) स्वार्थी । खुदगारज ।—कुंद, (वि०) १ स्वेच्छाचारी । मनमौजी । २ बहशी ।—कुंदः, (पु०) अपनी इच्छा या मर्जी ।—कुंदं, (न०) अपनी इच्छानुसार । अपने मन से ।—ज, (वि०) स्वयं उत्पन्न ।—जः, (पु०) १ पुत्र या बच्चा । २ पसीना ।—जं, (न०) खून ।—जनः, (पु०) बिरादरी । जाति वाला ।—तंत्र, (वि०) स्वाधीन । अनियंत्रित । मनमौजी । स्वेच्छाचारी । मनमुल्ली ।—तंत्रः, (पु०) अंधा आदमी ।—देशः, (पु०) अपना देश ।—धर्मः, (पु०) १ अपना धर्म । २ अपना कर्त्तव्य । ३ विशेषता । निज सम्पत्ति ।—पत्तः, (पु०) निज दल ।—परमगुडलं, (न०) निज और शत्रु का देश ।—प्रकाश, (वि०) स्वयंसिद्ध । स्वयं

प्रकाशमान ।—प्रयोगात्, (अव्यया०) अपने निज प्रयत्नों द्वारा ।—भटः, (पु०) अपना थोड़ा । २ शरीररत्नक ।—भावः, (पु०) १ निज दशा । २ स्वभाव । प्रकृति ।—भूः, (पु०) १ ग्रहा की उपाधि । २ शिव का नामान्तर । ३ विष्णु का नामान्तर ।—योनि, (वि०) मातृ सम्बन्धी । (पु० स्त्री०) अपनी उत्पत्ति का स्थान । (स्त्री०) भगिनी या अन्य कोई समीपी नातेदार । रमः, (पु०) स्वाभाविक स्वाद ।—राजः, (पु०) परब्रह्म ।—रूप, (वि०) १ समान । सदृश । २ मनोहर । सुन्दर । मनोज्ञ । ३ विद्वान् । पण्डित बुद्धिमान् ।—रूपं, (न०) १ प्रकृति । २ विलक्षण उद्देश्य । ३ प्रकार । तरह । किस्म ।—वश, (वि०) १ आत्म-संयमी । २ स्वाधीन ।—वासिनी, (स्त्री०) विवाहिता अथवा अविवाहिता वह स्त्री जो युवती होने पर भी अपने पिता के घर में रहै ।—वृत्ति, (वि०) अपने उद्योग पर निर्भर ।—संवृत्त, (वि०) स्वयं अपनी रक्षा आप करने वाला ।—संस्था, (वि०) आत्म-विकार । धृति । मन का प्रशान्त भाव । धीरता ।—स्थ, (वि०) १ स्वाधीन । २ स्वस्थ । तंदुरुस्त । ३ सन्तुष्ट । सुखी ।—स्थानं, (न०) अपना निज घर ।—हस्तं, (न०) अपना हाथ या अपने हाथ का लेख ।—हस्तिका, (स्त्री०) कुल्हाड़ी ।—हित, (वि०) अपने लिये हितकर ।—हितं, (न०) अपनी भलाई । अपना हित ।

स्वः (पु०) १ नातेदार । रिश्तेदार । २ जीवात्मा ।

स्वं (न०) }
 स्वः (पु०) } धन दौलत । सम्पत्ति ।

स्वक (वि०) १ अपना । निज । अपना । २ अपने खानदान । या कुटुम्ब का ।

स्वंग }
 स्वङ्ग } (धा० प०) [स्वंगति] जाना । चलना ।

स्वंगः }
 स्वङ्गः } (पु०) आलिङ्गन ।

स्वच्छ (वि०) १ साफ । बहुत स्वच्छ । चमकीला ।
 विशुद्ध । २ सफेद । ३ सुन्दर । ४ तंदुरुस्त ।
 स्वस्थ ।—पञ्च (न०) अक्षरक ।—बालुकं, (न०)

विशुद्ध खडिया मिट्टी ।—मणिः, (पु०) फटिक पत्थर । विलौरी पत्थर ।

स्वच्छं (न०) मोती । मुक्ता ।

स्वच्छः (पु०) बिलहारी पत्थर ।

स्वज्ज } (धा० आ०) [स्वजते] आलिङ्गन करना ।
स्वप्नु } छाती लगाना । २ घेर लेना । घेरे में कर लेना ।
उमैठना । मरोड़ना ।

स्वठ् (धा० ड०) [स्वठयति, स्वाठयति—स्वठयते, स्वाठयते] १ जाना । २ समाप्त करना । पूरा होना ।

स्वतस (अव्यया०) अपना । अपने का ।

स्वत्वं (न०) १ आत्म-अस्तित्व । २ मालिकाना । अधिकार । स्वामित्व ।

स्वदृ (धा० आ०) [स्वदत्ते, स्वदित] स्वादिष्ट लगाना । जायकेदार मालूम होना । भाना । पसंद आना ।

स्वदनं (न०) चखना । खाना ।

स्वदित (व० कृ०) चाखा हुआ । खाया हुआ ।

स्वदितं (न०) वाक्य विशेष जिसका प्रयोग श्राद्ध कर्म में किया जाता है और जिसका अभिप्राय है कि यह पदार्थ आपको स्वादिष्ट लगे ।

स्वधा (स्त्री०) १ स्वतः प्रवृत्ति । स्वयंसिद्धता । स्वाभाविक चाञ्चल्य । २ निज सङ्कल्प या इदं विचार । मृत पुरुषों के उद्देश्य से हवि आदि का देना । ३ पितरों को भोजनादि निवेदन करना । ४ भोज्य पदार्थ या नैवेद्य । ५ माया या सांसारिक प्रपञ्च । (अव्यया०) पितरों का सम्बोधन विशेष जो नैवेद्य निवेदन करते समय उच्चारित किया जाता है । यथा—“ पितृभ्यः स्वधा ॥ ”—कारः, (पु०) स्वधा शब्द का उच्चारण ।—प्रियः, (पु०) अग्नि । आग ।—भुज् (पु०) १ मरे हुए पूर्वपुरुष । २ देवता ।

स्वधिति (पु० स्त्री०) } कुल्हाड़ी ।
स्वधित्ता (स्त्री०) }

स्वन् (धा० प०) [स्वनति] १ शब्द करना । शोरगुल करना । २ गाना ।

स्वनः (पु०) ध्वनि । अवाज़ । कोलाहल ।—उत्साहः, (पु०) गैड़ा ।

स्वनिः (पु०) शोरगुल ।

स्वनिक (वि०) शब्द करने वाला ।

स्वनित (वि०) शब्दायमान । शोर करने वाला । कोलाहलकारी ।

स्वनितं (न०) गड़गड़हाट का शोर ।

स्वप् (धा० प०) [स्वर्पति, सुप्त] १ सोना । २ लेटना । आराम करना । ३ ध्यानमग्न होना ।

स्वप्नः (पु०) १ निद्रा । नींद । २ स्वप्न । सपना । स्वाभ । ३ काहिली । सुस्ती । औँचाई ।—अवस्था, (स्त्री०) सपना देखने की हालत ।—उपम, (वि०) १ सपने के सदृश । २ सपने की तरह मिथ्या ।—कर,—कृत् (वि०) नींद लाने वाला । निद्राजनक ।—गृहं,—निकेतनं, (न०) सोने का कमरा । शयनगृह ।—दोषः, (पु०) सोते में इच्छा न रहते भी वीर्यपात होना ।—धीमस्य, (वि०) सोने जैसी दशा मन की होने पर जानने योग्य ।—प्रपञ्चः, (पु०) स्वप्न सदृश मिथ्या संसार ।—विचारः, (पु०) स्वप्न के शुभाशुभ फल पर विचार ।—शील (वि०) निद्रालु । औँघासा ।

स्वप्नज् (वि०) निद्रासा । निद्रालु ।

स्वयम् (अव्यया०) अपने आप । अपनी इच्छा से ।—अर्जित, (वि०) अपनी पैदा की हुई ।—उक्तिः, (स्त्री०) १ अपने आप दिया हुआ बयान । २ सूचना । इत्तिला । बयान । ग्रहः, (पु०) विना परवानगी लेना ।—ग्राह, (वि०) अपने आप पसंद किया हुआ । स्वेच्छा प्रसूत । स्वेच्छाधीन ।—ज्ञान, (वि०) अपने आप उत्पन्न ।—दत्त, (वि०) अपने आप दिया हुआ ।—दत्तः, (पु०) वह बालक जो दत्तक होने के लिये अपने आप दूसरे को दे दें ।—भुः, (पु०) ब्रह्मा का नामान्तर ।—भुधः, (पु०) प्रथम मनु । २ ब्रह्मा का नामान्तर । ३ शिव का नाम ।—भूः, (वि०) अपने आप उत्पन्न ।—भूः, (पु०) १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ शिव । ४ काल जो सृष्टिमान

हो । ५ कामदेव ।—वरः, (पु०) स्वेच्छानुसार
चुनाव । अपने आप (अपने लिये पति को)
चुनना ।—वरा, (स्त्री०) वह युवती जो अपने
पति को अपने आप चुने ।

वर् (धा० उ०) [वरयति—वरयते] शेष निका-
लना । ऐव जोई करना । कलङ्क लगाना । भर्त्सना
करना । फटकारना । धिक्कारना ।

वर् (अव्यया०) १ स्वर्ग । २ इन्द्रलोक जहाँ
पुण्यात्मा जन अपना पुण्यफल भोगने को अस्थायी
रूप से रहते हैं । ३ आकाश । अन्तरिक्ष । ४ सूर्य
और ध्रुव के बीच का स्थान । ५ तीन व्याह-
तियों में से तीसरी व्याहृति ।—आपगा, —गङ्गा,
(स्त्री०) आकाशगंगा ।—गति, (स्त्री०)
गमनं, (न०) १ स्वर्गगमन । २ सृष्टि । मौत ।
—तरुः, (= स्वस्तारुः) (पु०) स्वर्ग का
वृक्ष ।—द्रुशः, (पु०) १ इन्द्र । २ अग्नि ।
३ सोम ।—नदी, (= स्वर्णदी) (स्त्री०)
स्वर्णीय गङ्गा ।—मानवः, (पु०) बहुमूल्य स्तन
विशेष ।—भानुः, (पु०) राहु का नामान्तर ।
—मध्यः, (न०) आकाश का मध्य बिन्दु ।—
लोकः, (पु०) स्वर्गलोक । स्वर्ग बहिस्त ।—
वधूः, (स्त्री०) अप्सरा । वापी, (स्त्री०)
गंगा ।—वेश्या, (स्त्री०) अप्सरा ।—वैद्य,
(पु० द्वि०) अश्विनी कुमार ।—षा, (स्त्री०) १
सोम का नामान्तर । २ इन्द्र के वज्र का नामान्तर ।

वरः (पु०) १ ध्वनि । शोर । २ आवाज़ । ३ सरगम ।
४ सात की संख्या । ५ स्वरवर्ण । ६ उदात्त, अनु-
दात्त और स्वरित । ७ स्वांसा । पवन जो नथुनों में
होकर निकले । ८ खराँटा । सोते समय नाक से
निकलने वाला खराँटे का शब्द । ग्रामः, (पु०)
सरगम ।—मण्डलिका, (स्त्री०) वीणा ।—
लासिका, (स्त्री०) बाँसुरी ।—शून्य, (वि०)
सङ्गीत रहित ।—संयोगः, (पु०) स्वरवर्णों का
मेल ।—संक्रमः, (पु०) सरगम ।—सामन्,
(पु०) (बहुवचन) यज्ञकाल का दिन विशेष ।

वर्त्त (वि०) १ स्वर या आवाज वाला । २
जवानी । ३ स्वरयुक्त ।

स्वरित (वि०) १ स्वरयुक्त । २ प्रोथित किया हुआ ।
बाँधा हुआ । ३ स्पष्ट उच्चारित । ४ वक्कीभूत ।

स्वरुः (पु०) १ धूप । २ यज्ञ-स्तम्भ का भाग विशेष ।
३ यज्ञ । ४ वज्र । ५ तीर ।

स्वरुस् (पु०) वज्र ।

स्वर्गः (पु०) स्वर्ग । इन्द्रलोक ।—आपगा, (स्त्री०)
स्वर्गगङ्गा ।—ओकस्, (पु०) देवता ।—गिरिः,
(पु०) सुमेरुपर्वत ।—द, —प्रद, (वि०)
स्वर्ग प्राप्ति करने वाला ।—द्वारः, (न०) स्वर्ग
का काटक ।—पतिः,—भर्तृ, (पु०) इन्द्र ।—
लोहः, (पु०) १ स्वर्गलोक । २ स्वर्ग ।—वधूः,
—स्त्री, (स्त्री०) अप्सरा ।—साधनं, (न०)
स्वर्ग प्राप्ति का उपाय ।

स्वर्गिन् (पु०) १ देवता । २ मुर्दा । मृतपुरुष ।

स्वर्गीय } (वि०) स्वर्ग का । स्वर्ग सम्बन्धी ।
स्वर्ग्य } स्वर्ग लेजाने वाला । स्वर्ग में प्रवेश कराने
वाला ।

स्वर्ण (न०) १ सुवर्ण । २ मोहर । अशर्फी ।—अरिः,
(पु०) गंधक ।—कणः,—कणिकः, (पु०)
रत्ती भर सोना ।—कायः, (वि०) सुनहले शरीर
वाला ।—कायः, (पु०) गरुड़ ।—कारः,
(पु०) सुतार ।—मैरिकः, (न०) गेरु ।—
चूड़ः, (पु०) १ नीलकण्ठ । २ मुर्गा ।—जं,
(न०) जस्ता । टीन ।—दीधितिः, (पु०)
अग्नि ।—पत्तः, (पु०) गरुड़ का नाम ।—
पाठकः, (पु०) सोहागा ।—पुरुषः, (पु०)
चंपक वृक्ष ।—वंधः, (पु०) सोने की धरोहर ।
शृंगारः, (पु०) सोने का यज्ञीय पात्र विशेष ।
—मात्तिकं, (न०) सोनामक्खी ।—रेखा,
—लेखा, (स्त्री०) सोने की लकीर । वणिज्,
(पु०) १ सोने का व्यापारी । २ शराफ़ ।—
वर्णा, (स्त्री०) हस्ती ।

स्वर्द् (धा० आ०) [स्वर्दते] स्वाद लेना । ज्ञायका
लेना ।

स्वल् (धा० प०) [स्वलति] चलना । जाना ।

स्वल्प (वि०) [तुलना में—स्वल्पीयस्, स्वल्पिष्ठ]

१ बहुत कम या थोड़ा । तुच्छ । अत्यन्त ह्रस्व ।

२ बहुत थोड़ी संख्या में —आहार. (वि०) बहुत कम खाने वाला।—कंकः, (पु०) कङ्क नामक पक्षी विशेष।—बल, (वि०) बहुत कमजोर।—विषयः, (पु०) १ तुच्छ विषय। २ छोटा भाग।—व्ययः, (पु०) बहुत थोड़ा खर्च।—व्रीडः, (वि०) निर्लज्ज। बेहया। बेशर्मा।—शरीर, (वि०) बौना। ठिगना।

स्वल्पक (वि०) बहुत कम। बहुत थोड़ा। बहुत छोटा।

स्वल्पीयस् (वि०) बहुत कम। अपेक्षाकृत छोटा।

स्वल्पिष्ठ (वि०) सब से छोटा। सब से कम। सब से हल्का।

स्वशुरः (पु०) ससुर।

स्वस् (स्त्री०) बहिन।

स्वभारतः प्रायः विचरन्ति ॥

पुष्पवेशाभिमुखो बभूव ॥

रघुवंश।

स्वस्त (वि०) स्वेच्छागामी।

स्वस्क् (धा० आ०) [स्वस्कते] देखो “ह्वक्”

स्वस्ति (अव्यय०) हेम, कल्याण, आशीर्वाद और पुण्य आदि स्वीकार सूचक अव्यय।—अयनं, (न०) १ समृद्धि प्राप्ति का साधन। २ मंत्रद्वारा अनिष्ट दूर करना। प्रायश्चित्त करना। ३ भेंट पाने के बाद ब्राह्मण का दिया हुआ आशीर्वाद।

“मास्याजिह्वं स्वस्वयमं प्रयुज्यते”

—रघुवंश।

—इः, भावः, (पु०) शिवजी का नामान्तर।

—मुखः, (पु०) १ अक्षर। वर्ण। २ ब्राह्मण। ३ बन्दीजन। भाट।—वाचनं,—वाचनकं,—वाचनिकं (न०) यज्ञ करने के पूर्व की जाने वाली विधि या क्रिया विशेष। २ पुण्योद्धार आशीर्वाद देने का कर्मविशेष।—वाक्यं, (न०) वधाई। आशीर्वाद।

स्वस्तिकः (पु०) १ शारीरिकचिह्न विशेष जो शुभ-फलदायी माना जाता है। २ कोई भी शुभ पदार्थ। ३ चौराहा। चतुष्पथ। ४ सतिथा जैसा

(+ चिह्न)। ५ विशेष ढंग का राजप्रासाद। ६ चौवल के आटे से बना हुआ त्रिकोण के आकार का रूप विशेष। ७ एक प्रकार का पकवान। ८ लंपट। रलिया। ९ लहसन। कः, (पु०) —कं, (न०) १ राजभवन या देवालय जो विशेष आकार का हो और जिसके सामने छजा या गौख हो। २ योगियों का आसन विशेष।

स्त्रीयः } (पु०) भाँजा। बहिन का बेटा।
स्वस्त्रीयः }

स्वस्त्रीया } (वि०) भाँजी। बहिन की बेटा।
स्वस्त्रीयी }

स्वागतं (न०) अगवानी। सुखान्वयन। भला आगमन।

स्वांगिकः (पु०) ढोल बजाने वाला।

स्वाच्छंदां (न०) स्वेच्छान्वित। अपनी इच्छानुसार काम करने की शक्ति

स्वातन्त्र्यं } (न०) स्वाधीनता। आज़ादी।
स्वातन्त्र्यं }

स्वातिः । (स्त्री०) १ सूर्य की एक पत्नी का नाम।
स्वाती । २ तलवार। ३ एक शुभनक्षत्र। ४ पन्द्रहवां नक्षत्र।

स्वादः (पु०) { १ ज्ञापक। स्वाद। २ चखना।
स्वादनं (न०) { खाना। पान करना। ३ पसंदगी। रुचि। उपभोग। ४ मिठास उत्पन्न करना।

स्वादिमन् (पु०) मधुरिमा। मिठास।

स्वादिष्ठ (वि०) बहुत मीठा। सब से अधिक मीठा।

स्वादीयस् (वि०) अपेक्षाकृत मधुर। बहुत मीठा।

स्वादु (वि०) [स्त्री०—स्वादु या स्वाद्वी] १

मीठा। मधुर। ज्ञापकेदार। स्वादिष्ठ। २ मनोज्ञ।

मनोहर। आकर्षक। प्रिय। (पु०) मधुर रस।

२ राब। गुड़। (न०) मिठास।—अर्धं, (न०)

मिठाई। पकवान।—अम्लः, (पु०) अम्ल का वृत्त।—खण्डः (पु०) १ मिठाई का टुकड़ा।

२ गुड़ का भेजा।—फलं, (न०) बेर का फल।

—मूलं, (न०) गाजर।—रस्ता, (स्त्री०)

१ आमड़ा। अत्रातक। २ सतावरी। ३ काकोली।

४ मदिरा। ५ अंगूर।—शुद्धं, (न०) सेंधा

निसक। समुद्री नॉन।

स्वादु (स्त्री०) अंगूर ।

स्वाद्वी (स्त्री०) अंगूर । दाख ।

स्वानः (पु०) आवाज़ । कोलाहल ।

स्वापः (पु०) १ निद्रा । नींद । २ स्वप्न । सपना । ३ औंवाई । निदास । ४ लकवा । सुन्न । ५ किसी अंग के दब जाने से कुछ देर के लिये उसका सुन्न पड़ जाना या सों जाना ।

स्वापतेयं (न०) धन । सम्पत्ति ।

स्वापदः (पु०) देखो श्वापदः ।

स्वाभाविक (वि०) [स्त्री—स्वाभाविकी] स्वभाव सम्बन्धी ।

स्वाभाविकाः (पु०) (बहुवचन) बौद्धों का सम्प्रदाय विशेष ।

स्वामिता (स्त्री०) १ मालिकाना । स्वत्वाधिकार । स्वामित्वं (न०) २ प्रभुत्व । अधिराजत्व ।

स्वामिन् (वि०) [स्त्री—स्वामिनी] स्वत्वाधिकारी । मालिकाने के हक रखने वाला । (पु०) १ मालिक । स्वामी । २ प्रभु । ३ राजा । महाराजा । ४ पति । भर्ता । ५ गुरु । ६ परिणत ब्राह्मण । सर्वोच्च श्रेणी का तपस्वी या साधु । ७ कार्तिकेय । ८ विष्णु । ९ शिव । १० वात्सायन ऋषि । ११ गरुड़ । — उपसारकः, (पु०) छोड़ा । — कार्य, (न०) राजा या स्वामी का कार्य । — पाल, (पु० द्वि०) (पशु का) मालिक और पालने वाला । — सद्भावः, (पु०) १ किसी मालिक या स्वामी की विद्यमानता । २ स्वामी या प्रभु की नेकी । — सेवा, (स्त्री०) १ स्वामी या मालिक की सेवा । २ पति के प्रति सम्मान ।

स्वाम्यं (न०) १ मालिकपन । प्रभुत्व । २ सम्पत्ति का स्वत्वाधिकार । ३ शासन । प्रभुत्व । स्वामित्व ।

स्वायंभुव (वि०) [स्त्री—स्वायंभुवी] १ ब्रह्मा-सम्बन्धी । २ ब्रह्मा से उत्पन्न ।

स्वायंभुवः (पु०) ब्रह्मा के पुत्र प्रथम मनु का नाम ।

स्वारसिक (वि०) [स्त्री—स्वारसिकी] स्वाभाविक मिठास वाला ।

स्वारस्यं (न०) १ स्वाभाविक उत्तमता या श्रेष्ठता । २ सुखसा । सौन्दर्य । मनोहरता ।

स्वाराज् (पु०) इन्द्र का नामान्तर ।

स्वाराज्यं (न०) १ स्वर्ग का राज्य । इन्द्रपन । इन्द्रत्व । २ ब्रह्मत्व । ब्रह्मपन ।

स्वारोचिषः (पु०) } दूसरे मनु का नाम ।
स्वारोचिषं (न०) }

स्वालक्षण्यं (न०) स्वाभाविक पहचान के चिह्न या लक्षण । लक्षण विशेष ।

स्वालप (वि०) [स्त्री—स्वालपी] १ थोड़ा । छोटा । २ कम ।

स्वालपं (न०) १ कमपन । थोड़ापन । छोटापन । २ संख्या का थोड़ापन ।

स्वास्थ्यं (न०) १ आत्मानिर्भरता । स्वाधीनता । २ विक्रम । दृढ़ता । ३ तंदुरुस्ती । ४ सुखचैन । ५ सन्तोष ।

स्वाहा (अग्र्यया०) १ देवता के उद्देश्य से हवि छोड़ते समय स्वाहा शब्द का उच्चारण किया जाता है । (स्त्री०) १ अग्नि पत्नी का नाम । २ समस्त देवताओं के उद्देश्य से दिया हुआ नैवेद्य । — कारः, (पु०) स्वाहा शब्द का उच्चारण । — पतिः,—प्रियः, (पु०) अग्नि । — भुज्, (पु०) देवता ।

स्विद् (अग्र्यया०) प्रश्नवाची शब्द । यह संन्देह और आश्चर्य्य द्योतक भी है । यह कभी कभी या, एवं, अथवा के अर्थ में भी व्यवहृत होता है ।

स्विद् (धा० प०) [स्विद्यति, स्विदित या स्विज्] पसीना निकालना ।

स्वीकरणां (न०) } १ ग्रहण करना । अंगीकार
स्वीकारः (पु०) } करना । २ रजामंदी । प्रतिज्ञा ।
स्वीकृतिः (स्त्री०) } ३ विवाह । परिणय ।

स्वीय (वि०) निज् । अपना ।

स्वृ (धा० प०) [स्वरति] १ पढ़ना । ध्वनि करना । २ प्रशंसा करना । ३ पीड़ित करना ।

स्वृ (धा० प०) चोटिल करना । बध करना ।

स्वेक् (धा० प्रा०) [स्वेकते] जाना ।

स्वेदः (पु०) पसेव । — उद्, — उद्कं, — जलं (न०) पसीना । — ज, (वि०) पसीने से उत्पन्न ।

स्वैर (वि०) १ स्वेच्छाचारी । मनमौजी । २ खुल-
खुला । ३ मंद । धीमा । ४ सुस्त । काहिल । ५
ऐच्छुक ।

स्वैरं (न०) स्वेच्छाचारिता । मनमौजीरता ।

स्वैरं (अव्यया०) १ अपनी मर्जी के मुताबिक । २
अपनी मौज के अनुसार । ३ धीमे धीमे । आहिस्ता
आहिस्ता । ४ अस्पष्ट रूप से । ऐसी धीमी आवाज़
से कि सुनने ही में न आवे । (स्पष्ट का उल्टा ।

स्वैरिणी (स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री ।

स्वैरिन् (वि०) स्वेच्छाचारी । मनमुक्ती ।

स्वैरिन्त्री देखो सैरिन्त्री ।

स्वैरसः (पु०) चिकने पदार्थों का वह तलछट जो
पत्थर से पिसा हुआ हो ।

स्वावशीयं (न०) आनन्द । सुख । समृद्धि । (विशेष
कर सविष्य जीवन सम्बन्धी) ।

ह

ह—संस्कृत वर्णमाला का अन्तिम वर्ण ।

ह (अव्यया०) १ अपने से पूर्वगत शब्द पर जोर देने
वाला अव्यय विशेष । २ सचमुच, निश्चय, दृ-
ढ़कीकृत शब्दों के अर्थ को भी यह सूचित करता
है । ३ वैदिक साहित्य में यह पूरक का भी काम
देता है और उस दशा में इसका अर्थ कुछ भी नहीं
होता । यथा:—

‘तस्य ह शतं जाया अभूतुः ।’

तस्य ह पर्वत नारदी गृह जघनतुः ।’

४ यह कभी कभी सम्बोधन के लिये और कदाचित्
धृष्टा और उपहास के लिये भी प्रयुक्त किया जाता
है ।

ह (पु०) १ जल । २ आकाश । ३ रक्त । खून । ४
शिवजी का एक रूप ।

हंसः (पु०) [इसकी व्युत्पत्ति हस् से बताई जाती
है । “भवेद्वागमाद् हंस” —सिद्धान्तकौमुदी]
१ हंस नाम का एक पक्षी । [इस पक्षी का जो
वर्णन संस्कृत साहित्य में दिया हुआ है वह वास्त-
विक कम किन्तु काव्यमय है । कवियों ने इसे ब्रह्मा
जी का वाहन लिखा है । और वर्षा ऋतु के आरम्भ
में इसका मानसरोवर को चला जाना लिखा है ।
अधिकांश कवियों के मतानुसार हंस में यह शक्ति
है कि, वह दूध में मिले हुए जल को दूध से अलग
कर दे । यथा:—

घारं ततो ब्राह्मणस्य फण्युः,
हंसो यथा र्हारमिवांशुमप्याह ।

अन्यत्त्व,

नारदः तत्र विवेकं हंसालम्ब्य स्वमेव तनुमे वेत् ।

विश्वमिन्द्रधुनाम्बः कुतश्चतं पालयिष्यति ह ।

२ परब्रह्म । परमात्मा । ३ जीवात्मा । ४ शरीरगत
पवन विशेष । ५ सूर्य । ६ शिव । ७ विष्णु । ८
कामदेव । ९ सन्तुष्ट राजा । १० साधु विशेष । ११
गुरु । १२ कस्मिन् रहित पुरुष । १३ पर्वत ।—
अंधिः, (पु०) सेंदुर । इंगुर ।—अधिरुद्धा,
(स्त्री०) सरस्वती ।—अभिख्यं (न०) चांदी ।
—कान्ता, (स्त्री०) हंसी ।—कीलकः, (पु०)
रतिबन्ध ।—गति, (वि०) हंस जैसी चाल ।
—गद्गदा, (वि०) मधुरभाषिणी स्त्री ।—
गामिनी, (स्त्री०) १ हंस जैसी चाल चलने वाली
स्त्री । २ ब्रह्मणी ।—तूलः, (पु०) तूल, (न०)
हंस के कोमल पर ।—दाहर्न, (न०) अगर ।
नादः, (पु०) हंस की बोली ।—नादिनी,
(स्त्री०) विशेष प्रकार की स्त्री जिसकी परिभाषा
यह है:—

वजेन्द्र गमना तन्वी कोकिलापसंयुता ।

नितम्बे गुर्विणी वा स्यात् वा स्तुता हंसनादिभिः ॥

—माला, (स्त्री०) हंसों का उद्यान विशेष ।
गुधन, (पु०) हंस का वस्त्र ।—रथः,—वाहनः,
(पु०) ब्रह्मा के नामान्तर ।—राजः, (पु०)

सं० श० कौ०—१२६

हंसों का राजा ।—लोमशं, (न०) तृतीया ।—
लोहकं, (न०) पीतल ।

हंसकः (पु०) हंस । २ नूपुर ।

हंसिका } (स्त्री०) मादाहंस ।
हंसी }

हंसा (अव्यया०) १ सम्बोधनात्मक अव्यय जो हो
हल्लो के समान है । २ तिरस्कार, अहंकार सूचक
अव्यय । ३ प्रशंसा की अव्यय । यथा

हंसा ब्राह्मण ना कुप्य ।

हक्कः (पु०) हाथियों का आह्वान ।

हंजा } (अव्यया०) चाकरानी या दासी को बुलाने
हंजे } के लिये काम में लाया जाने वाला अव्यय ।

हट् (धा० प०) [हटति, हटित] चमकना । चम-
कीला होना ।

हट्टः (पु०) बाज़ार । पेंठ ।—चौरकः, (पु०) वह
चोर जो पेंठ या बाज़ार से चोरी करे ।—धिला-
सिनी, (स्त्री०) १ वेरया । रंडी । २ एक प्रकार
की गन्ध द्रव्य ।

हठः (पु०) १ ज़बरदस्ती । जबरन । २ जुल्म ।
अत्याचार ।—योगः, (पु०) योग का भेद
विशेष । [राजयोग और हठयोग—योग के दो
भेद हैं ।]

हडिः (पु०) काठ जो देशी रियासतों में क़ैदी के पैर में
डाल दिया जाता है ।

हडिकः }
हडिकः } (पु०) सब से नीच जाति का आदमी ।
हडिः }

हड्ड (न०) हड्डी ।—जं, (न०) गुश्ता ।

हंडा } (स्त्री०) अपने से निम्न श्रेणी की स्त्री को तथा
हण्डा } निम्न श्रेणी की स्त्रियों का परस्पर सम्बोधन
करने का अव्यय ।

हंडे हंडे हलाहलाने नीचां बेटीं उठो प्रति ।”

हंडिका }
हण्डिका } (स्त्री०) मट्टी का बड़ा बरतन ।

हंडी }
हण्डी } (स्त्री०) हॉबी ।

हंडे (अव्यया०) देखो हंडा

हत (व० क०) १ बध किया हुआ २ ताड़ित । चोटिल
किया हुआ । ३ खोया हुआ । नष्ट हुआ । ४
वञ्चित किया हुआ । ५ हताश । ६ गुणित ।—
आश (वि०) १ आशा रहित । २ निर्वल ।
शक्तिहीन । ३ निष्ठुर । ४ बौद्ध । ५ नष्ट । दुष्ट ।
धूर्त ।—कष्टक, (वि०) शत्रु या कौटों से
रहित या मुक्त ।—चित्त, (वि०) बलवाया
हुआ । परेशान ।—विष, (वि०) धुंधला ।—
दैव, (वि०) अभागा । वह जिसके ग्रह अनुकूल
न हों ।—प्रभाव,—वीर्य, (वि०) शक्ति या
विक्रम हीन ।—बुद्धि, (वि०) बुद्धिहीन ।—
भाग,—भाग्य, (वि०) बदकिस्मत । अभागा ।
—मूर्खः, (पु०) मूढ़ । मूर्ख ।—लक्ष्ण, (वि०)
अभागा ।—शेष, (वि०) अवशिष्ट । बचा हुआ ।
—श्री,—संपद, (वि०) श्री अष्ट । धनहीन ।
निर्धन ।—साधवस्, (वि०) भय से युक्त ।

हतक (वि०) नीच । कमीना ।

हतकः (पु०) भीरु । डरपोंक । कमीना आदमी ।

हतिः (स्त्री०) १ नाश । वध । २ ताड़न । चोटिल
करना । ३ आघात । ४ हानि । असफलता ।

हत्तुः (पु०) १ हथियार । २ रोग । बीमारी ।

हत्या (स्त्री०) वध । कत्ल ।

हट् (धा० आ०) [हटते, हट] हगना । पाखाना
फिरना ।

हटनं (न०) मल त्यागना । ठट्टी जाना ।

हन् (धा० प०) (हति, हत) १ वध करना । मार
बालना । २ ताड़न करना । मारना । पीटना । ३
घायल करना । चोटिल करना । तंग करना ।
सताना । कष्ट देना । ४ त्यागना । दवाना । ५
स्थानान्तरित करना । हटाना । ले जाना । नाश
करना । ६ जीतना । हराणा । परास्त करना । ७
बाधा देना । रोकना । ८ अष्ट करना । खराब
करना । ९ उठाना । ऊँचा करना । यथा :—

पुरगखुरहतस्तथा हि रेणुः ।”

—शकुन्तला ।

१० गुणा करना । जरब देना । ११ जाना (इस अर्थ में बहुत ही बिरल प्रयोग होता है) ।

हन् (वि०) हनन करने वाला । वध करने वाला । नाश करने वाला ।

हन् (पु०) वध । नाश । हत्या ।

हनन (न०) १ नाशन । हत्या । २ चोटिल करना । ३ गुणा ।

हनु } (पु० स्त्री०) ठोड़ी ठुड़ी ।

हनु (स्त्री०) १ जीवन के लिये अनिष्ट करने वाला । २ हथियार । ३ रोग । बीमारी । ४ मृत्यु । ५ ओषधि विशेष । ६ बेरया । रंढी ।—ग्रहः, (पु०) बंद जावड़ा ।—मूलः, (न०) जावड़े की जड़ ।

हनुमत् (पु०) सुग्रीवसचिव एवं श्रीरामदूत हनुमत् । हनुमान जी ।

हन्त } (अव्यया०) १ हर्ष, आश्चर्य, व्यस्तता ।
हन्त } सूचक अव्यय । २ दयालुता । रहम । ३ दुःख । शोक । ४ सौभाग्य । आशीर्वाद । ५ उद्दीपक या उत्तेजक अव्यय विशेष ।—कारः, (पु०) १ हन्त का चीत्कार । २ अतिथि को भेंट में दिया जाने वाला नैवेद्य ।

हन्तु (वि०) } [स्त्री०—हन्त्री] १ मारने वाला ।
हन्तु (वि०) } वध करने वाला । २ हटाने वाला । नाश करने वाला । बदला लेने वाला । (पु०) १ वध करने वाला । हत्या करने वाला । २ चोर डाँकू ।

हम् (अव्यया०) १ क्रोध । २ शिष्टता या सम्मान सूचक अव्यय ।

हम्बा } (स्त्री०) पौड़े का हँभना ।—रवः, (पु०)
हम्बा } पौड़े का रँभना ।
हम्बा }

हय् (था० प०) [हयति, हयित] १ जाना । २ पूजा करना । ३ ध्वनि करना । ४ थक जाना ।

हयः (पु०) १ घोड़ा । २ मानव जाति विशेष का मनुष्य । ३ सात की संख्या । ४ इन्द्र का नामान्तर ।

—अध्यक्षः, (पु०) घुड़साल का दारोगा ।—आयुर्वेदः, (पु०) साहित्योत्र विद्या ।—आरुढः, (पु०) घुड़साज ।—आरोहः, (पु०) १ घुड़सवार । घोड़े पर सवार होने की क्रिया ।—इष्टः, (पु०) जवा । यव ।—उत्तमः, (पु०) उत्तम घोड़ा ।—कोविद्, (वि०) घोड़ों को पालने, उनको सिखलाने आदि की विद्या में निपुण ।—ज्ञः, (पु०) घोड़ों का सौदागर । साईल ।—द्विषत्, (पु०) मैला ।—प्रियः, (पु०) यवा । जौ ।—प्रिया, (स्त्री०) खजूर का पेड़ ।—मारणः, (पु०) बट वृद्ध ।—मेघः, (पु०) अश्वमेध यज्ञ ।—वाहनः, (पु०) कुन्वर का नामान्तर ।—शास्त्रा, (स्त्री०) घोड़े का अस्तबल ।—शास्त्रं, (न०) सातहोत्र विज्ञान ।—संग्रहणं, (न०) घोड़े को शिञ्चित करने की क्रिया ।

हयंकषः (पु०) सारथी । रथवान ।

हयी (स्त्री०) बोड़ी ।

हर (वि०) [स्त्री०—हरी] १ हरने वाला । ले जाने वाला । दूर करने वाला । हराने वाला । [यथा खेदहर] २ लाने वाला । होने वाला । ले जाने वाला । ३ ग्रहण करना । पकड़ना । आकर्षक । मोहक । ४ (पाने का) अधिकारी । ५ घेरने या रोकने वाला । (किसी प्रकान या स्थान को) ६ विभाजक ।—गौरी, (स्त्री०) अर्धनारी नटेश्वर शिव । चूड़ामणिः, (पु०) शिव जी की कलगी का रत्न । चन्द्रमा ।—तेजस्, (न०) पारा । पारद ।—नेत्रं, (न०) १ शिव का नेत्र । २ लीन की संख्या ।—वीजं, (न०) शिव का बीज । पारा ।—शेखरा, (स्त्री०) शिव की कलगी । गंगा ।—सुनुः, (पु०) स्कन्द ।

हरः (पु०) १ शिव । २ अग्नि का नाम । ३ गधा । ४ विभाजक । ५ मित्र का भाजक ।

हरकः (पु०) १ चोर । चुराने वाला । २ दुष्ट । गुंडा । ३ भाग देने वाला ।

हरणं (न०) १ पकड़ना । २ लेजाना । चुराना । हटाना । ३ वञ्चित करना । नाश करना ।

४ विभाजन । ५ विद्यार्थी के लिये दान । ६ बाहु ।
७ वीर्य । धातु । ८ सुवर्ण । सोना ।

:(वि०) १ हरा । धानी । २ भूरा । कपिल । ३ पीला ।

:(पु०) १ विष्णु । २ इन्द्र । ३ ब्रह्मा । ४ धर्म । ५ सूर्य ।
६ चन्द्रमा । ७ मानव । ८ किरण । शिव । १०
अग्नि । ११ हवा । १२ शेर । सिंह । १३ घोड़ा ।
१४ इन्द्र का घोड़ा । १५ वानर । लँगूर । १६
कोयल । १७ मेंढक । १८ तोता । १९ सर्प ।
साँप । २० भूरा या पीला रंग । २१ मयूर । मोर ।
२२ भृगुहरि का नामान्तर ।—अक्षतः, (पु०)
१ सिंह । २ कुबेर । ३ शिव ।—अश्वः, (पु०)
१ इन्द्र । २ शिव ।—कान्तः, (वि०) १ इन्द्र
का प्यारा । २ सिंह की तरह मनोहर ।—
केलीयः, (पु०) वंग देश ।—चन्दनः, (पु०)
—चन्दनं, (न०) १ चन्दन विशेष । २ स्वर्ग के
पाँच वृक्षों में से एक ।—

“ पंचैव देवतयो नन्दारः पारिजातः ।

सन्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनं ॥

—चन्दनं (न०) १ चँदनी । २ केसर । जाफ़ान ।
३ कमल का रेश ।—ताजः, (पु०) पीले रंग
का कबूतर ।—तालं, (न०) हरताल ।—
ताली, (स्त्री०) दूर्वा बास ।—तालिका,
(न०) भाद्र शुक्ल चतुर्थी । २ दूर्वा बास ।—
तुरङ्गमः, (पु०) इन्द्र का नाम ।—दासः,
(पु०) विष्णुभक्त ।—दिनं, (न०) विष्णु
उपासना का दिवस विशेष ।—देवः, (पु०)
अव्यय नक्षत्र ।—द्रवः, (पु०) हरे रंग का द्रव
पदार्थ ।—द्वारं, (न०) हरिद्वार नामक तीर्थ
विशेष ।—नेत्रं, (न०) १ विष्णु की आँख । २
२ सफेद कमल ।—नेत्रः, (पु०) उल्लू ।—
पदं, (न०) वसन्त कालीन वह दिन जब दिन
और रात बराबर होती है । २१ मार्च ।—प्रियः,
(पु०) १ कन्दन का वृक्ष । २ शंख । ३ मूर्ख । ४
उन्मत्त पुरुष । ५ शिव ।—प्रियं, (न०) एक
प्रकार का चन्दन ।—प्रिया, (स्त्री०) १ लक्ष्मी ।
२ तुलसी । ३ पृथिवी । ४ द्वादशीतिथि ।—भुजः,
(पु०) साँप । सर्प ।—मथः,—मन्थकः, (पु०)

छोटी मन्दर ।—लोचनः, (पु०) १ मकरा । २
उल्लू ।—वल्लभा, (स्त्री०) १ लक्ष्मी । २
तुलसी ।—वासरः, (पु०) एकादशी ।—
—वाहनः, (पु०) १ गरुड़ । २ इन्द्र ।—शरः,
(पु०) शिव जी का नामान्तर ।—सखः, (पु०)
गन्धर्व ।—सङ्कीर्तनं, (न०) विष्णु का नाम-
कीर्तन ।—सुनः,—सुनुः, (पु०) अर्जुन का
नाम ।—हृयः, (पु०) १ इन्द्र । २ सूर्य ।—
हरः, (पु०) विष्णु और शिवात्मक देव विशेष ।
—हेतिः, (स्त्री०) १ इन्द्रधनुष । २ विष्णु का
चक्र ।

हरिकः (पु०) १ पीले या भूरे रंग का घोड़ा । २
चोर । ३ ज्वारी ।

हरिण (वि०) [स्त्री०—हरिणी] १ पीला ।
उज्जर । २ ललोंहाँ या पिलोंहाँ । सफेद ।

हरियाः (पु०) १ हिरन । बारहसिंहा । [ये पाँच
तरह के कहे गये हैं यथा :—

हरिणश्चापि विज्ञेयः पञ्चभेदोऽत्र चैरेव ।

अश्वः साङ्गो ववरचैव पृथक्तरश्च वृमस्तथा ।

२ सफेद रंग । ३ हंस । ४ सूर्य । ५ विष्णु ।
शिव ।—अक्ष, (वि०) हिरन जैसी आँखों
वाला ।—अक्षी, (स्त्री०) सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री ।
—अक्षुः, (पु०) १ चन्द्रमा । २ कपूर ।—
कलङ्कः,—धामन्, (पु०) चन्द्रमा ।—नयनः,
—नेत्र,—लोचन (वि०) मृगनयन । हिरन
जैसे नेत्रों वाला ।—हृदय, (वि०) डरपोक ।
भीरु ।

हरिणकः (पु०) हिरन ।

हरिणी (स्त्री०) १ हिरनी । मृगी । २ चित्रिणी
लक्षणाक्रान्त स्त्री । पुण्य वृक्ष विशेष । ३ सुन्दर
सुवर्ण प्रतिमा । ४ वृत्त विशेष । दृश ।

हरित (वि०) १ हरा । हरोंहाँ । २ पीला । पिलोंहाँ ।
३ धानी । (पु०) १ हरा या पीला रङ्ग । २
२ सूर्य का एक घोड़ा । कुम्भेद घोड़ा । ३ तेज
घोड़ा । ४ सिंह । ५ सूर्य । ६ विष्णु । (पु० न०)
१ वास । २ विशा ।—अंतः, (पु०) दिगन्त ।
—अन्तरं, (न०) भिन्न भिन्न दिशाएँ ।—
अश्वः, (पु०) १ सूर्य । २ अर्क या मन्दार का

पौधा ।—गर्भः, (पु०) हरे या पिलोंहें रङ्ग के वे कुश जिनकी पत्ती चौड़ी होती है ।—मणिः, (पु०) [= हरिन्मणि] पद्मा । हरे रंग की मणि ।—वर्णा, (वि०) हरौहौ । हरा रङ्गा हुआ ।

हरित (वि०) [स्त्री०—हरिता या हरिणी] १ हरा । हरे रङ्ग का । सज्ज । २ मूरे रंग का ।

हरितः (पु०) १ हरा रङ्ग । २ सिंह । ३ नृप विशेष ।—अश्वत्थ, (पु०) १ पद्मा । २ नीलायोधा ।

हरितकं (न०) हरी घास ।

हरिता (स्त्री०) १ दुर्वा घास । २ हल्दी । ३ अंगूर ।

हरिताल (देखो) हरि के घनतंग ।

हरिद्रा (स्त्री०) १ हल्दी । २ फिरी हुई हल्दी की जड़ ।—आम, (वि०) पीले रङ्ग का ।—गणपतिः,—गणेश, (पु०) गणेश की मूर्ति विशेष ।—राग,—रागक, (वि०) १ हल्दी के रङ्ग का । २ प्रेम में अहङ्ग । चंचलमन । हलाबुध के मतानुसार ।

वर्णमात्रापुराणश्च हरिश्चरितं उच्यते ।

हरियः (पु०) हरे रंग का घोड़ा ।

हरिश्चन्द्रः (पु०) सूर्यवंशी स्वनामख्यात एक राजा ।

हरीतकी (स्त्री०) हर के पेड़ ।

क्षदाचित् कृपिता माता नोदरस्थ हरीतकी ।

हर्तु (वि०) [स्त्री०—हर्त्रा] १ हरने वाला । जबरदस्ती छीनने वाला । (पु०) १ चोर । डाँकू । २ सूर्य ।

हर्मन् (न०) जमुहाई । अँगड़ाई ।

हर्मित (व० कृ०) १ फँका हुआ । २ जला हुआ । ३ जमुहाई लिए हुए ।

हर्म्य (न०) राजभवन । राजप्रासाद । कोई भी विशाल भवन । २ तट्टर । खूँहा । अग्निकुण्ड । अंगीठी । ३ आग का गढ़ । भूतावास । अधोलोक ।—अंगन,—अङ्गण (न०) राजप्रासाद का आँगन या सहन ।

हर्षः (पु०) १ प्रसन्नता । आनन्द । खुशी । २ उत्फुल्लता । रोमान्ध होना ।—अन्वित, (वि०)

हर्षपूरित हर्षाविष्ट ।—उत्कर्ष, (पु०) हर्ष का आधिक्य ।—३.२, (वि०) प्रसन्नकारक ।—जड़, (वि०) हर्ष से विद्वल ।—विवर्धन, (वि०) हर्ष बढ़ाने वाला ।—स्वनः, (पु०) हर्ष का चीत्कार ।

हर्षक (वि०) [स्त्री०—हर्षका, हर्षिका] प्रसन्नकारक

हर्षण (वि०) [हर्षणा या हर्षणी] हर्ष उत्पादक ।

हर्षणं (न०) प्रसन्नता । हर्ष ।

हर्षणः (पु०) १ कामदेव के पांच वाशों में से एक । २ नेत्र रोग विशेष । श्राद्ध कर्म का अभिष्टाता देवता ।

हर्षयितु (वि०) प्रसन्नकारक । (न०) सुवर्ण । (पु०) पुत्र ।

हर्षुलः (पु०) १ हिरन । २ प्रेमी ।

हल (वा० प०) [हलति, हलित] हल चलाना ।—आयुधः, (पु०) बलराम की उपाधि ।—धर, —भृत्, (पु०) १ हलवाहा । २ बलराम का नामान्तर ।—भूतिः,—भूतिः, (स्त्री०) हल चलाने की क्रिया । किसानी । कृषि ।—हतिः, (स्त्री०) हल चलाना ।

हलं (न०) हल ।

हलहला (स्त्री०) हे । अरे । हो ।

हला (स्त्री०) १ सखी । २ पृथिवी । ३ जल । ४ शराब । (अव्यय) १ जियों को सम्बोधन करने का अव्यय ।

हला यत्कुन्तले छत्रैश्च तावमुहूर्ततिष्ठ ।

हलाहल देखो हालहल ।

हलिः (पु०) १ बड़ा हल । २ कूण्ड । हलाई । ३ कृषि ।

हलिन (पु०) १ हलवाहा । किसान । २ बलराम का नाम ।—प्रियः, (पु०) कंदव वृक्ष ।—प्रिया, (स्त्री०) शराब ।

हलिनी (स्त्री०) अनेक हल ।

हलीनः (पु०) साल का वृक्ष ।

हलीषा (स्त्री०) हल की सुठिया ।

हल्य (वि०) १ हल चलाने लायक । २ बदशक्त ।
बदसूरत ।

हल्य्या (स्त्री०) हलों का समुदाय ।

हल्लकं (न०) लाल कमल ।

हल्लनं (न०) करवटें बदलना ।

हल्लीशं } (न०) १ अठारह उपरूपकों में से एक ।
हल्लीषं } २ एक प्रकार का गोलाकार नृत्य ।

हल्लीपकः (पु०) गोलाकार नृत्य ।

हवः (पु०) चढ़ावा । बलि । भेंट ।

हवमं (न०) १ होम । २ बलि । चढ़ावा । आहुति ।
आमन्त्रण । आर्चना । ४ आदेश । आज्ञा ।
५ ललकार । ६ युद्ध के लिए ललकार ।
—आयुस्, (पु०) अग्नि ।

हवर्नायं (न०) १ हवन करने योग्य । २ धी ।

हवित्री (स्त्री०) हवन कुण्ड ।

हविष्मत् (व०) हवि वाला ।

हविष्यं (न०) १ हवन करने योग्य पदार्थ । २
धी ।—अन्नं, (न०) वे भोज्य पदार्थ जो व्रत
में खाये जा सकें ।—आशिन, —भुज्, (पु०)
अग्नि ।

हविस् (न०) १ चढ़ावा या भेंट जो अग्नि में भस्म
हो चुका हो । २ धी । जल ।—अशनं, (न०)
(=हविरशनं) धी खाने वाला ।—अशनः,
(पु०) अग्नि ।—गन्धा, [स्त्री० =हविर्गन्धा]
समी का पेदा ।—गेहं, (न०) [=हविर्गेहं]
वह स्थान या घर जिसमें होम किया जाय ।
—भुज्, (पु०) [हविर्भुज्] अग्नि ।—यज्ञः,
(पु०) [=हविर्यज्ञः] यज्ञ विशेष ।—याजिन,
[हविर्याजिन] (पु०) ऋत्विक् ।

हव्य (वि०) होम करने योग्य ।

हव्यं (न०) १ धी । २ देवताओं के लिए चढ़ावा ।
३ चढ़ावा । नैवेद्य ।—आशः, (पु०) आग ।
—कव्यं, (न०) देवताओं और पितरों का
चढ़ावा ।—वाहः, —वाहनः, (पु०) अग्नि ।

हस् (बा० प०) [हसति] १ हँसना । मुसकाना ।
२ मज़ाक उड़ाना । हँसी उड़ाना । ३ समान होना ।
हँसी । मज़ाक । ४ खिलना । फूलना । ५ चमकना ।
स्पष्ट होना ।

हसः (पु०) १ हँसी । हास्य । २ ठठोली । ३ प्रसन्नता ।
हर्ष ।

हसनं (न०) हँसी ।

हसती (स्त्री०) १ सफरी अँगोठी । २ महिला विशेष ।
हसिका (स्त्री०) हँसी । ठठ्ठा ।

हमित (व० क०) १ हँसता हुआ । हँसा हुआ ।
२ खिला हुआ ।

हसितं (न०) १ हँसी । २ ठठ्ठा । ठठोली । ३
कामदेव का धनुष ।

हस्तं (न०) चाम की धोकनी ।—अक्षरं, (न०)
हस्ताक्षर । दस्तखत । अंगुलि, (स्त्री०) हाथ
की उँगली ।—अभ्यास, (पु०) हस्तस्पर्श ।
हाथ का लगाव ।—अथर्जः (पु०),—आलम्बनं,
(न०) हाथ का सहारा ।—आमलक, (न०) हाथ
का अँवला । [एक यह महावरा है जिसका प्रयोग
उस समय किया जाता है, जिस समय किसी ऐसी
वस्तु का निर्देश करना आवश्यक होता है जो
प्रत्यक्ष अथवा सामने हो ।]—आवापः, उँगली
रखक । ज्वावातवारण ।—कमलं, (न०) १
कमल जो हाथ में हो । २ कमल जैसा हाथ ।
—कौशलं, (न०) हाथ की सफाई ।—क्रिया,
(स्त्री०) दस्तकारी ।—गत, —गामिन्, (वि०)
हाथ में आया हुआ । प्राप्त । कब्जे में आया हुआ ।
—ग्राहः, (पु०) हाथ से पकड़ना ।—चापल्यं,
(न०) हस्तकौशल ।—तलं, (न०) १ हथेली ।
२ हाथी की सूँड़ की नोक ।—तालः, (पु०)
ताली बजाना ।—दाघः, (पु०) हाथ की
फिसलन ।—धारणः, —वारणः (न०) हाथ से
ग्रहण रोकना ।—पादं, (न०) हाथ और पैर ।
—पुच्छं (न०) कलाई के नीचे का हाथ ।
—पृष्ठं, (न०) हाथ की पीठ ।—प्राप्त, (वि०)
१ हाथ में पकड़ा हुआ । २ प्राप्त । पाया हुआ ।
—प्राप्य, (वि०) सरलता से हाथ में आने

वाला ।—विंशः, (न०) शरीर में सुगन्ध द्रव्य लगाकर शरीर को सुवासित करना ।—मणिः, (पु०) कलाई में पहनी जाने वाली मणि ।—लाघवः, (न०) हाथ की सफाई ।—संवाहनः, (न०) हाथ से मलना या सहराना ।—पिद्धिः, (स्त्री०) १ शारीरिक श्रम । हस्त-क्रिया । २ भाड़ा । मजदूरी । उजरत ।—सूत्रं, (न०) कलाई पर बांधा जाने वाला डोरा ।
हस्तः (पु०) १ हाथ । २ सूँढ़ । ३ तेरहवाँ नक्षत्र । ४ एक हाथ का नाम । ५ हस्तलिपि । दस्तखत । हस्ताक्षर । ६ सवृत । प्रमाण । ७ मदद । सहायता । समर्थन । ८ परिमाण ।

हस्तकः (पु०) १ हाथ ।

हस्तवत् (वि०) निपुण । चतुर ।

हस्ताहस्ति (अव्यया०) हाथापाई ।

हस्तिकं (न०) हाथियों का समुदाय ।

हस्तिन् (वि०) [स्त्री०—हस्तिनी] १ हाथों वाला ।

वह जिसके हाथ हो । २ सूँढ़वाला । (पु०) हाथी । [भद्र, मन्द्र, मृग और मिश्र नामक चार जातियों के हाथी होते हैं ।]—अध्यक्षः, (पु०) हाथियों का दारोगा ।—आयुर्वेदः, (पु०) एक शास्त्र जिसमें हाथियों के रोगों की चिकित्सा का वर्णन किया गया है ।—आरोहः, (पु०) हाथी का सवार या महावत ।—कर्णः, (पु०) १ सिंह । २ चीता ।—कर्णः, (पु०) रेबी का रुख ।—घ्नः, (पु०) १ हाथी का हथपारा । २ मनुष्य ।—चारिन्, (पु०) हाथी हाँकने वाला । महावत ।—दन्तः, (पु०) १ हाथी का दाँत । २ खूँटी ।—दन्तः, (न०) १ हाथी दाँत । २ मूली ।—दन्तकं, (न०) मूली ।—नखं, (न०) नगरद्वार के पास की अथवा दुर्ग की छोटी बुर्जी ।—पः, —पकः, (पु०) महावत ।—मदः, (पु०) हाथी का मद ।—मल्लः, (पु०) १ पैरावत हाथी का नाम । २ गणेश जी । ३ राख या भस्म का ढेर । ४ धूल की वर्षा । ५ कुहरा ।—यूथः,—यूथं, (न०) हाथियों का गिरोह या गल्ला ।—वज्रसं, (न०) हाथी का महत्व या चमक ।—वाहः, (पु०) १ महावत । २ आँकुस ।

अकुश ।—वज्रसं, (न०) ६ हाथियों का समुदाय ।—स्नानं, (न०) हाथी का स्नान । [यह एक महावरा है । कोई कार्य करने पर जब उसकी निष्कलता निश्चित होती है, तब इसका प्रयोग किया जाता है ।]

हस्तनपुरं } (न०) दिल्ली से लगभग ५० मील
हस्तिनापुरं } उत्तर पूर्व के कोने में अवस्थित प्राचीन
कालीन एक नगर, जिसे राजा हस्तिन् ने आबाद किया था । हस्तिनापुर के ही नाम गजाद्वय, नाग-साद्वय, नागाद्व और हास्तिन भी हैं ।

हस्तिनी (स्त्री०) १ हथिनी । २ सुगन्ध द्रव्य या रुखरी विशेष । ३ चार प्रकार की स्त्रियों में से एक । [इसका लक्षण इस प्रकार है :—

रघुलाचरा रघुलनितंबविभवा

रघुलारुगुलिः रघुलकुचा मुखीला ।

काशिरघुका गहवरनिप्रिया च,

नित न्त भोऽग्नी खलु हस्तिनी स्यात् ॥]

हस्त्य (वि०) १ हाथ सम्बन्धी । २ हाथ से किया हुआ । ३ हाथ से दिया हुआ ।

हहलं (न०) मारक विष विशेष ।

हहा (पु०) गन्धर्व विशेष ।

हा (अव्यया०) १ दुःख, उदासी, पीड़ा द्योतक अव्यय विशेष । २ आश्चर्य । ३ क्रोध । भर्त्सना ।

हा (धा० आ०) [जिहीते, जान] १ जाना । २ पाना । प्राप्त करना ।

हांगरः } (पु०) मत्स्य विशेष ।

हाङ्गरः } (पु०) मत्स्य विशेष ।

हाटक (वि०) [स्त्री०—हाटकी] सुनहली ।

हाटकं (न०) सेना ।—गिरिः, (पु०) सुमेरुपर्वत ।

हात्रं (न०) भाड़ा । उजरत । मजदूरी ।

हानं (न०) १ त्याग । हानि । असफलता । २ बचाव । निकास । ३ शक्ति । ताकत ।

हानिः (स्त्री०) १ त्याग । २ हानि । असफलता ।

अविद्यमानता । अनस्तित्व । ३ हानि । नुकसानी ।

४ हास । कमी । ५ छूट । भङ्गकरण ।

हाफिका (स्त्री०) जमुहाई ।

हायनः (पु०) १ एक वर्ष । (पु०) १ चोबल

हायनं (न०) विशेष । २ शोला । अंगारा ।

हारः (पु०) १ हर ले जाना । हराना । अलग करना ।
२ ढोना । ३ अलहदा करना । ४ कुली । ढोने
वाला । ५ मोती का हार । ६ संग्राम । युद्ध । ७
भिल का भाजक । ८ विभाजक ।—आवलिः,—
आवली, (स्त्री०) मोती की लर ।—गुटिका,
गुलिका, (स्त्री०) हार का गुरिया ।—यष्टिः,
(स्त्री०) हार । मोती का हार ।—हारा, (स्त्री०)
अंगूर विशेष ।

हारकः (पु०) १ चोर । लुटेरा । २ धूर्त । कपटी ।
३ मोती का हार । ४ विभाजक । ५ गद्यनिबन्ध
विशेष ।

हारि (वि०) आकर्षक । मोहक । प्रसन्नकारक
मनोहर ।—कण्ठः (पु०) कोयल ।

हारिः (स्त्री०) १ हार । पराजय । २ जुए की हार ।
यात्री व्योपारियों की डोली ।

हारिणिकः (पु०) शिकारी । बहेलिया ।

हारिण (व० क०) १ एकड़ाया हुआ । २ जेंड किया
हुआ । नज़र किया हुआ । ३ आकर्षण किया
हुआ ।

हारिणः (पु०) १ हरारंग । २ एक प्रकार का कवुतर ।

हारिण् (वि०) [स्त्री०—हारिणी] १ ले जाने
वाला । ढोने वाला । २ लूटने वाला । ३ एकड़ने
वाला । गड़बड़ करने वाला । लेने वाला । प्राप्त
करने वाला । ४ आकर्षक । मोहक । आल्हाद-
कारक । ५ आगे निकल जाने वाला । ७ हार
पहिने हुए ।

हारिद्रः (पु०) १ पीला रंग । २ कर्दव वृक्ष ।

हारीतः (पु०) १ कवुतर विशेष । २ धूर्त । कपटी ।
एक स्मृतिकार का नाम ।

हार्द (न०) १ प्रेम । स्नेह । २ कृपालुता । कोमलता ।
३ बड़ सङ्कल्प । ४ हुरादा । अभिप्राय ।

हार्य (वि०) १ लेजाने या ढोने लायक । २ जीन
लेने योग्य । ३ हटा देने योग्य । ४ हिलजाने
योग्य । ५ वश कर लेने योग्य । आकर्षण करने
योग्य । जीत लेने योग्य । ७ लुट लेने योग्य ।
जब्त कर लेने योग्य ।

हार्यः (पु०) १ साँप । २ बहेड़े का पेड़ । ३ विभाज्य-
राशि । अंश । लब्धांश ।

हालः (पु०) १ हाल । २ बलराम का नाम । ३
शालिवाहन का नाम—भूत, (पु०) बलराम का
नामान्तर ।

हालकः (पु०) बादामी या भूरे रंग का घोड़ा ।

हालहली (न०) भयङ्कर विष । यह विष समुद्र
हालाहली } मंथन के समय निकला था । इसकी
क्षरप से जब समस्त लोक भस्म होने लगे; तब
देवताओं द्वारा प्रार्थना किये जाने पर भगवान् रुद्र
ने इसे अपने कण्ठ में रख लिया ।

हालहली (स्त्री०) शराब । मदिरा । मद्य ।

हालिकः (पु०) १ हलवाहा । खेतिहर । २ हल
सींचने वाला (बैल) । ३ वह जो हल से जड़े ।
हल से लड़ने वाला ।

हालिनी (स्त्री०) छिपकली विशेष ।

हाली (स्त्री०) साली ।

हालुः (स्त्री०) दाँत ।

हावः (पु०) १ बुलावा । पुकार । २ सुस्निग्ध
प्रेमालाप ।

हासः (पु०) १ ठंडा । मुसक्यान । २ हर्ष । आनन्द ।
३ हास्य रस । ठडोली । मज़ाक । ४ खिलन ।
प्रस्फुटन ।

हासिका (स्त्री०) १ हास । हंसी । २ उत्लास । हर्ष ।

हास्य (वि०) हँसने योग्य । हँसाने योग्य ।

हास्य (न०) हँसी । २ हर्ष । उत्लास । आमोद ।
प्रमोद । क्रीड़ा । ३ मज़ाक दिखली । ४ जीद ।
हास । ठड्डा । ठडोली ।

हास्यः (पु०) हास्य रस । आस्पदं, (न०) हँसने
का कारण । —पदवी, —मार्गः, (पु०)
ठडोली । मज़ाक ।—रसः, (पु०) हास्य रस ।

हास्तिकः (पु०) महाव्रत । हाथीसवार ।

हास्तिकं (न०) हाथियों का गत्ता ।

हास्तिनं (न०) हस्तिनापुर ।

हाहा (पु०) एक गन्धर्व का नाम । (अवध्या०)
पीड़ा, दुःख अथवा आश्चर्यसूचक अव्यय ।—
कारः (पु०) १ विज्ञाप । दुःख । २ युद्ध का
चीत्कार ।—रधः, (पु०) हाहाकार ।

हि (अव्यया०) [यह वाच्य के आरम्भ में कभी प्रयुक्त नहीं किया जाता है। ये निम्न अर्थों में व्यवहृत किया जाता है :— १ क्योंकि। २ दर-हकीकत। सचमुच। ३ उदाहरणार्थ। जैसा कि प्रसिद्ध है। ४ केवल। सिर्फ। एकाकी। ५ कभी कभी यह केवल पूरक की तरह प्रयुक्त किया जाता है।

हि (धा० प०) [हिनोति, हित] १ रेलना। ठेलना। डकेलना। २ झोड़ना। फेंकना। चलाना। ३ उत्तेजित करना। भड़काना। ४ आगे बढ़ाना। बढ़ाना। ५ प्रसन्न करना। ६ आगे बढ़ना।

हिंस (धा० प०) [हिंसति, हिंस्ति, हिंसयति—हिंसयते, हिंसित] १ ताड़न करना। आघात करना। २ चोटिल करना। घायल करना। हानि करना। ३ पीड़ित करना। सन्तप्त करना। ४ बध करना।

हिंसक (वि०) हानिकारी। अनिष्टकर।

हिंसकः (पु०) जंगली या बहरी जानवर। २ शत्रु। ३ अथर्ववेदज्ञ आश्विन।

हिंसनं (न०) } ताड़न। चोटिल करना। बध
हिंसना (पु०) } करना।

हिंसा (स्त्री०) १ अनिष्ट। उत्पात। बुराई। हानि। चोट। २ बध। हत्या। नाश। ३ लुटपाट।—आत्मक, (वि०) अनिष्टकारी। विनाशक।—कर्मन्, (न०) १ कोई भी अनिष्टकारी कार्य। २ अविचार। तांत्रिक मारण प्रयोग।—प्राणिन्, (पु०) अनिष्टकर पशु।—रत्न, (वि०) उपद्रव-प्रिय।—रुचि, (वि०) उपद्रव करने में प्रसन्न रहने वाला या उपद्रव करने को तुला हुआ।—समुद्रव, (वि०) अनिष्ट से उत्पन्न।

हिंसारुः (पु०) १ चीता। २ कोई भी अनिष्टकारी जानवर।

हिंसालु (वि०) १ अनिष्टकारी। उपद्रवी। चोट करने वाला। २ हिंसा या बध करने वाला। (पु०) उपद्रवी या बहरी कुत्ता।

हिंसारः (पु०) १ चीता। २ पक्षी। ३ उपद्रवीजन।

हिंस्य (वि०) घायल किये जाने या बध किये जाने की सम्भावना से युक्त।

हिंसं (वि०) १ हिंसालु। अनिष्टकर। उपद्रवी। २ भयानक। ३ निष्ठुर। बहरी।

हिंस्रः (पु०) १ हिंसालु पशु। हिंसक जानवर। २ नाशक। ३ शिव। ४ भीम का नाम।—पशु, (पु०) हिंसालु पशु।—यंत्र, (न०) जाल। जानवर फँसाने का फंदा। विद्वेषकारी कार्यों की सिद्धि के लिये बनाया हुआ तांत्रिक यंत्र विशेष।

हिक् (धा० उ०) [हिक्ति—हिक्ते, हिक्ति] १ ऐसा शब्द करना जो बोधगम्य न हो। २ हिचकी लेना। [भा०—हिक्कयते] चोटिल करना। अनिष्ट करना। बध करना।

हिक्का (स्त्री०) १ अव्यक्त शब्द। २ हिचकी।

हिंकारः } (पु०) १ "हिम" की तरह का मंद या
हिङ्कारः } धीमा शब्द। २ चीता।

हिङ्गु } (पु०) १ हींग का पौधा। २ अक्षर का
हिङ्गु } (न०) मसाला जो हींग डाल कर तैयार किया गया हो।—निर्यासः, (पु०) १ हींग के पौधे का गोंद। २ नीम का पेड़।—पत्रः, (पु०) इंगुदी का पेड़।

हिङ्गुलः (पु०)

हिङ्गुलः (पु०)

हिङ्गुलं (न०)

हिङ्गुलं (न०)

हिङ्गुलिः (पु०)

हिङ्गुलिः (पु०)

हिङ्गुलु (पु० न०)

हिङ्गुलु (पु० न०)

हिङ्गीरः } (पु०) हाथी के पैर की बेड़ी या रस्ती।

हिङ्गीरः } (पु०) हाथी के पैर की बेड़ी या रस्ती।

हिडिंबः } (पु०) एक राक्षस जिसे भीम ने

हिडिम्बः } मारा था।

हिडिंबा } (स्त्री०) हिडिम्ब की भगिनी। इसने

हिडिम्बा } भीम के साथ अपना विवाह किया था।

—जित्, —निषूदन, —भिद्, —रिपु, (पु०)

भीमसेन के नामान्तर।

हिड् (धा० आ०) [हिडते, हिडित] १ जाना।

घूमना फिरना। अमण करना।

हिडनं } (न०) १ अमण। घूमना फिरना।

हिण्डनं } २ खोमैथुन। ३ लेखन।

हिडिकः } (पु०) ज्योतिषी । दैवज्ञ ।
हिशिडकः }

हिडिरः } (पु०) १ समुद्रफेन । २ मानव ।
हिशिडिरः } पुंस । २ बैगन । भय ।
हिडोरः }
हिशिडोरः }

हिडी } (स्त्री०) दुर्गा का नाम ।
हिशिडी }

हित (वि०) १ रखा हुआ । स्थापित । जड़ा हुआ ।
२ लिया हुआ । ग्रहण किया हुआ । ३ उपयुक्त ।
उचित । ठीक । अच्छा । ४ उपयोगी । लाभकारी ।
५ गुणकारी । ६ कृपालु । स्नेही ।—अनुबन्धिनः,
(वि०) कल्याणकारी ।—अन्वेषिन्,—अर्थिन्,
(वि०) कल्याण चाहने वाला ।—इच्छा (स्त्री०)
सद्‌इच्छा ।—उक्तिः, (स्त्री०) हितकर सलाह ।
उपदेशः, (पु०) कल्याणप्रद परामर्श ।—एषिन्,
(वि०) दूसरों का हित चाहने वाला । उपकारी ।
—कर, (वि०) अनुकूल । हित करने वाला ।
—काम, (वि०) उपकार करने की इच्छा रखने
वाला ।—काम्या, (स्त्री०) परहित साधन के
लिये इच्छुक ।—कारिन्,—कृत्, (पु०) उपकारी ।
हितैषी ।—प्रणी, (पु०) जासूस । भेदिया ।—
बुद्धि, (पु०) मित्र । हितैषी । शुभेच्छु ।—
वाक्यं, (न०) हितपूर्ण सलाह ।—वादिन्,
(पु०) हित की सलाह देने वाला ।

हितं (न०) १ लाभ । फायदा । मुनाफा । २ कोई भी
उचित या उपयुक्त वस्तु । ३ तंदुरुस्ती । चैम ।
कुशल ।

हितः (पु०) मित्र । उपकारी । नेक सलाह देने वाला ।

हितकः (पु०) १ बच्चा । २ जानवर का बच्चा ।

हितालः } (पु०) एक प्रकार का ताड़ वृक्ष ।
हिन्तालः }

हिंदोलः } (पु०) हिडोला । झूला ।
हिन्दीलः }

हिंदोलकः (पु०) }
हिन्दीलकः (पु०) } हिडोला । झूला ।
हिंदोला (स्त्री०) }
हिन्दीला (स्त्री०) }

हिम (वि०) ठंडा । शीतल । ओस का ।—अंशुः,
(पु०) १ चन्द्रमा २ कपूर ।—अचलः,—अद्रिः,

(पु०) हिमालय पर्वत ।—अद्रिजा, अद्रितनया,
(स्त्री०) १ पार्वती । २ गंगा ।—अंशुः,—
अभ्रभस्, (न०) १ शीतलजल । २ ओस ।—
अनिलः, (पु०) शीतल पवन ।—अश्वत्, (न०)
कमल ।—अरातिः, (पु०) १ अग्नि । २ सूर्य ।
—आगमः, (पु०) शीतकाल । जड़काला ।—
आर्त, (वि०) जड़ाया हुआ ।—आलयः, (पु०)
हिमालय पर्वत ।—आलयसुता, (स्त्री०) १
पार्वती का नामान्तर । २ श्रीगङ्गा जी का नामा-
न्तर ।—आह्वः,—आह्वयः, (पु०) कपूर ।—
उरुः, (पु०) चन्द्रमा ।—करः, (पु०) १
चन्द्रमा । २ कपूर ।—कूटः, (पु०) १ शीतकाल ।
२ हिमालय पर्वत ।—गिरिः, (पु०) हिमालय ।
—गुः, (पु०) चन्द्रमा ।—जः, (पु०) मैनाक
पर्वत ।—जा, (स्त्री०) १ पार्वती । २ अर्वा
हल्दी का पौधा ।—तैलं, (न०) कपूर या मल-
हम विशेष ।—दीधितिः, चन्द्रमा ।—दुर्दिनं,
(न०) ऐसा दिन जिस दिन ठंड हो, बादल आदि
के कारण बुरी श्रुति हो ।—द्युतिः, (पु०)
चन्द्रमा ।—द्रुह्, (पु०) सूर्य ।—ध्वस्त, (वि०)
पाके का मारा हुआ । कुतरा हुआ ।—प्रस्थः,
(पु०) हिमालय पर्वत ।—भास्, (पु०)
हिमालय पहाड़ । भास्,—रश्मि, (पु०) चन्द्रमा ।
—वाल्लुका, (स्त्री०) कपूर ।—शीतल (वि०)
बर्फ की तरह शीतल ।—शैलः, (पु०) हिमा-
लय पर्वत ।—संहतिः, (स्त्री०) बर्फ का ढेर ।
—सरस्, (न०) बर्फ़ीली मील शीतल जल ।
—हासकः, (पु०) दलदल में लगा हुआ खुदारे
का पेड़ ।

हिमं (न०) १ कोहरा । पाला । २ बर्फ । ३ ठंड ।
ठंडक । ४ कमल । ५ ताज़ा या दटका मक्खन । ६
मोती । ७ रात । चन्दन काष्ठ ।

हिमः (पु०) १ शीतकाल । जाड़ा । २ चन्द्रमा । ३
हिमालय पर्वत । ४ चन्दन का वृक्ष । ५ कपूर ।

हिमवत् (वि०) बर्फ़ीला । (पु०) हिमालय पर्वत ।
—कुत्तिः, (पु०) हिमालय पर्वत की घाटी ।
—पुरं, (न०) हिमालय की राजधानी ओषधि-

प्रस्थ ।—सुतः, (पु०) मैनाक पर्वत ।—सुता,
(स्त्री०) १ पार्वती । २ गंगा ।

हिमानी (स्त्री०) बर्फ का ढेर । वायुचालित बर्फ
का स्तूप ।

हिरण्यं (न०) १ सुवर्ण । २ वीर्य । ३ कौड़ी ।

हिरण्यमय (वि०) [स्त्री०—हिरण्यमयी] सुवर्ण का
बना हुआ । सुनहला ।

हिरण्यमयः (पु०) ब्रह्मा जी का नामान्तर ।

हिरण्यं (न०) १ सोना २ सुवर्णपात्र । ३ चाँदी ।

४ कोई भी मूल्यवान धातु । ५ सम्पत्ति । जायदाद ।

६ वीर्य । धातु । ७ कौड़ी । ८ माँप विशेष । ९

वस्तु । द्रव्य । १० धनुरा ।—कतः, (वि०)

सोने की करधनी पहिने वाला ।—कशिपुः,

(पु०) एक दैत्य का नाम ।—कौशः, (पु०)

—गर्भः, (पु०) १ ब्रह्म जिनका जन्म सुवर्ण-

अण्ड से हुआ था । २ विष्णु । सूक्ष्म शरीर ।—

दः, (वि०) सुवर्ण देने वाला ।—दः, (पु०)

समुद्र ।—दा, (स्त्री०) पृथिवी ।—नाभः,

(पु०) मैनाक पर्वत ।—बाहुः, (पु०) शिव

का नाम । २ सोन नदी ।—रेतस्, (पु०) १

अग्नि । २ सूर्य । ३ शिव का नाम । ४ चित्रक या

अर्क का पौधा ।—वर्णा, (स्त्री०) नदी ।—

वाहः, (पु०) सोन नदी ।

हिरण्यय (वि०) [स्त्री०—हिरण्ययी] सुनहला ।

हिङ्क् (अव्यया०) १ विना । छोड़कर । २ बीच में ।

३ समीप । ४ नीचा ।

हिल् (धा० प०) [हिलति] स्वेच्छानुसार कीड़ा
करना ।

हिल्डः (पु०) एक प्रकार की चिड़िया ।

हिल्लोलः (पु०) १ तरंग । लहर । २ हिंदोल राग ।

३ बहम । ४ रतिबन्ध विशेष ।

हिल्ललाः (स्त्री० पु०) मृगशिरस् नक्षत्र ।

ही (अव्यया०) १ आश्चर्य । थकावट, शोक । २ तर्क
सूचक अव्यय विशेष ।

हीन (व० कृ०) १ त्यक्त । त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ ।

२ वर्जित । रहित । विना । ३ नष्ट । ४ त्रुटिपूर्ण ।

५ घटाया हुआ । ६ अल्पतर । निम्नतर । ७ नीच ।

कमीना ।

हीनः (पु०) १ दोषयुक्त शब्दाह । २ दोषयुक्त प्रति-
वादी । [नारद ने ऐसे पाँच प्रकार के प्रतिवादियों
का उल्लेख किया है । यथाः—

अन्यवादी क्रियावृत्तः । नोपस्थायी निस्तरः ।

आहुतमपक्षायो च हीनः पंचविधः स्मृतः ॥]

—अंगः, (वि०) अंगहीन ।—कुलः—ज,

(वि०) कमीना । अकुलीन ।—कतुः, (वि०)

यज्ञहीन ।—जाति, (वि०) १ नीच जाति का ।

२ जातिबहिष्कृत । पतित ।—यानिः, (पु०)

नीच जाति का । २ नीच पद का ।—वादिन,

(वि०) दोषयुक्त बयान देने वाला । २ बयान

बदलने वाला । ३ गूंगा ।—लख्यः, (न०) नीच

लोगों के साथ रहने वाला । सेवा, (स्त्री०)

नीच की सेवा या चाकरी ।

हीतालः (पु०) दलदल में उत्पन्न झुहारे या खजूर
हीन्तालः का पेड़ ।

हीरः (पु०) १ सर्प । २ हार । ३ शेर । ४ नैषध
चरितकार श्रीहर्ष के पिता का नाम ।

हीरः (पु०) १ इन्द्र का वज्र । २ हीरा ।—अंगः,

हीरं (न०) (पु०) इन्द्र का वज्र ।

हीरकः (पु०) हीरा ।

हीरा (स्त्री०) १ लक्ष्मी जी की उपाधि । २ चीटी ।

हीलं (न०) वीर्य । धातु ।

हीही (अव्यया०) आश्चर्य या हर्षसूचक अव्यय
विशेष ।

हु (धा० प०) [जुहोति, हुत] १ निवेदन करना ।
भेंट करना । २ यज्ञ करना । ३ खाना ।

हुड् (धा० प०) [हुडति] जाना । [पु०—हुडति]
जमा करना ।

हुडः (पु०) १ भेड़ा । मेघ । २ लोहे का खंभा या
मेख जो चोरों से बचने के काम में आता है । ३

एक प्रकार का हाता । ४ लोहे का डंडा या गदा ।

५ मूढ़ । मूर्ख । ६ ग्रामशूकर । ७ दैत्य । राक्षस ।

हुडुः (पु०) मेढा ।

हुडुकः (पु०) १ ढोल जो विशेष । आकार का होता

है । २ दात्यूह पक्षी । ३ किवाड़ों में लगी चटखनी ।

४ नशे में चूर आदमी ।

हुडुत् (न०) बैल का रौबना । २ धमकी का शब्द ।

हुत (व० क०) १ हवन किया हुआ । होम किया हुआ । २ वह जिसको नैवेद्य अर्पण किया जाय ।—अग्नि, (वि०) हवन करने वाला । होम करने वाला ।—अशनिः, (पु०) १ अग्नि । २ शिव ।—अशनसहायः, (पु०) शिव जी की उपाधि ।—अशनी, (स्त्री०) होली । फाल्गुनी पूर्णिमा ।—आशः, (पु०) अग्नि ।—जातवेदस्, (वि०) हवनकर्त्ता । होम कर्त्ता ।—भुज्, (पु०) अग्नि ।—भुज्प्रिया, (स्त्री०) स्वाहा, जो अग्निपत्नी है ।—वहः, (पु०) अग्नि ।—होमः, (पु०) हवन करने वाला ब्राह्मण ।—होमं, (न०) जला हुआ शाकल्य ।

हुतं (न०) नैवेद्य । चढ़ावा ।

हुतः (पु०) शिव जी का नामान्तर ।

हुं } (अव्यया०) १ स्मृति । २ सन्देह । ३
हुम् } स्वीकृति । ४ क्रोध । ५ अक्षि, घृणा । ६
भर्त्सना । ७ प्रशङ्कोक अव्यय विशेष । तांत्रिक
साहित्य में "हुं" का प्रयोग प्रायः किया जाता है ।
[यथा ओं कवचाय हुं]—कारः,—कृतिः (स्त्री०)
१ हुं का उच्चारण करने वाला । २ तिरस्कार सूचक
आवाज़ । ३ गर्जन । ४ सुअर की घुर घुर आवाज़ ।
५ टंकार ।

हुर्त् (धा० प०) [हुर्त्ति] टेढ़ा होना ।

हुल् (धा० प०) [होलति] १ जाना । २ ढकना ।
झिपाना ।

हुलहुली (स्त्री०) यह एक अव्यक्त शब्द है जो
आनन्दोत्सव पर स्त्रियों द्वारा बोला जाता था ।

हुहु } (पु०) गन्धर्व विशेष ।
हुहु }

हृड् (धा० आ०) [हृडते] जाना ।

हृणः } (पु०) १ बर्बर । विदेशी । २ सोने का
हृनः } सिक्का विशेष (सम्भवतः यह हुणों के देश
में प्रचलित था) ।

हृणाः (पु० बहु०) एक देश या उस देश के अधिवासी ।

हृत (व० क०) आमंत्रित । निमंत्रित । बुलाया हुआ ।
आहूत ।

हृतिः (स्त्री०) १ आमंत्रण । बुलावा । २ ललकार ।
३ नाम ।

हृम् देखो हुम्

हूरतः (पु०) गीदड़ । शृगाल ।

हृह (पु०) गन्धर्व विशेष ।

हृ (धा० ड०) [हरति,—हरते, हृत] १ ले जाना ।
ढोना । २ हर लेजाना । दूर लेजाना । ३ लूट लेना ।
४ उतार लेना । वञ्चित कर देना । छीन लेना । ५
नष्ट कर डालना । ६ आकर्षण करना । मोह लेना ।
७ प्राप्त करना । रखना । अधिकार में करना ।
८ असना । ९० विवाह करना । ११ विभाजन
करना ।

हृणीयते } (क्रि०) १ क्रुद्ध होना । २ लजित
हृणीयते } होना । शर्माना ।

हृणीया } १ भर्त्सना । नास्त्य मलामत । २ लज्जा ।
हृणीया } शर्म । ३ दया । रहम ।

हृत् (वि०) १ छीना हुआ । २ आकर्षक ।

हृत (व० क०) १ छीना हुआ । २ पकड़ा हुआ । ३
मोहित । ४ स्वीकृत । ५ विभाजित ।—अधिकार,
(वि०) १ बरखास्त । निकाला हुआ । २
न्यायानुमोदित अधिकारों से वञ्चित किया हुआ ।
—उत्तरोय (वि०) वह जिसका उत्तरीय वस्तु
(डुपट्टा) छीन लिया गया हो ।—द्रव्य—धन
(वि०) वह जिसका धन नष्ट होगया हो ।—
सर्वस्व (वि०) सम्पूर्णतः बरबाद किया हुआ ।

हृतिः (स्त्री०) १ पकड़ । २ लूटपाट । नाशन ।
विनाशन ।

हृद् (न०) १ मन । हृदय । दिल । २ छाती ।
वक्षःस्थल । छाती ।—आवर्तः, (पु०) घोड़े की
छाती की भौरी ।—कम्पः, (पु०) हृदय की
धड़कन ।—गत, (वि०) १ मनोगत । २ प्यार
की आँखों से देखा हुआ ।—गतं, (न०) उद्देश्य ।
अभिप्राय ।—देशः, (पु०) हृदय का स्थान ।
—पिण्डः, (पु०) पिण्ड, (न०) हृदय ।
—रोगः, (पु०) १ हृदय का रोग । हृदय की
जलन । २ दुःख । शोक । ३ प्रेम । ४ कुम्भराशि ।
—लाभः, (= हृत्लाभः) (पु०) १ हिचकी ।
२ शोक । दुःख ।—लोखः, (पु०) (= हृत्लोखः)
१ ज्ञान । तर्कना । २ हृदय की पीड़ा ।—वंटकः,
(पु०) पेट । मेढ़ा ।—शोकः, (पु०) हृदय
जलन ।

हृदय (न०) १ हृदय । दिल । जीव । रूह । मन ।
२ छाती । वक्षःस्थल । प्रेम । प्यार । ४ किसी
श्वस्तु का सार या मर्म । गुप्त विज्ञान । — आत्मन्,
(पु०) बगुला । बूढ़ीमार । — आविध्, (वि०)
हृदय को वेधने वाला । — ईशः, — ईश्वरः, (पु०)
(पु०) पति । स्वामी । — ईशा, — ईश्वरी,
(स्त्री०) १ पत्नी । २ स्वामिनी । मलकिन ।
— कम्पः, (पु०) हृदय की धड़कन । — ग्राहिन्,
(वि०) हृदय को बश में करने वाला । — चौरः,
(पु०) हृदय को चुराने वाला । — वेधिन्,
(वि०) हृदय को छेदने वाला । — स्थानं, (न०)
छाती । वक्षःस्थल ।

हृदयंगम (वि०) १ हृदय को दहलाने वाला । २
प्रिय । सुन्दर । मनोहर । ३ मजुर । आकर्षक ।
मनोज्ञ । ४ उचित । उपयुक्त । ५ प्रेमपात्र । प्यारा ।
माशूक ।

क्रुधु ते हृदयंगमः खला ।

कुमारसम्भव ।

हृदयालु } (वि०) कोमल हृदय । नेकदिल ।
हृदयिक } स्नेहयुक्त ।
हृदयिन् }

हृदिकः } (पु०) एक यादव राजकुमार का नाम ।
हृदोकः }

हृदिस्पृश (वि०) १ हृदय को छूने वाला । २ प्रिय ।
प्रेमपात्र । ३ मनोजुक्त । मनोहर । सुन्दर ।

हृद्य (वि०) १ हृदय का । हृदय से । सच्चा । प्यारा ।
२ मनोहर । मनोजुक्त । — गन्धाः, (पु०) बेल
का पेड़ । — गन्धा, (स्त्री०) बेला या मोतिया का
पौधा ।

हृष् (धा० प०) [हर्षति, हृष्यति, हृष्ट या हृषित]
१ हर्षित होना । प्रसन्न होना । खुश होना । २
(बालों या रोंगटों का) खड़ा होना । ३ (लिङ्ग
का) तनाना या खड़ा होना ।

हृषित (व० कृ०) १ प्रसन्न । आनन्दित । २ रोमाञ्चित ।
३ आश्चर्यान्वित । ४ झुका हुआ । नवा हुआ । ५
हताश । ६ ताज़ा । टटका ।

हृषीकं (न०) ज्ञानेन्द्रिय । — ईशः, (पु०) विष्णु
या कृष्ण का नाम ।

हृष्ट (व० कृ०) हर्षित । आनन्दित । — वित्त,
प्राप्त, (वि०) मन में प्रसन्न । — रोमन्, (वि०)
रोमाञ्चित । — वदन, (वि०) प्रसन्नमुख । —
सङ्कल्प, (वि०) सन्तुष्ट । सुखी । — हृद्, (वि०)
प्रसन्न । आनन्दित ।

हृष्टिः (स्त्री०) १ प्रसन्नता । हर्ष । खुशी । आनन्द
२ अभिमान । घमण्ड । अहङ्कार ।

हे (अव्यया०) १ सम्बोधनात्मक अव्यय । हो, अरे
२ दर्प, ईर्ष्या, द्वेष या शत्रुताद्योतक अव्यय ।

हेका (स्त्री०) हिचकी ।

हेठः (पु०) १ विरक्ति । २ रुकावट । अड़चन
विरोध । अनिष्ट । चोट ।

हेड् (धा० आ०) [हेडते] तिरस्कार करना
तुच्छ समझना । [प०—हेडति] १ घेरना
पोशाक धारण करना ।

हेडः (पु०) अमान्यकरण । उपेक्षा । — जः, (पु०)
क्रोध । अप्रसन्नता । नाखुशी ।

हेडासुकः (पु०) घोड़े का व्यापारी ।

हेतिः (पु० स्त्री०) १ हथिचार । अस्त्र ।
“समरविजयी हेतिदक्षितः” ।

२ आघात । चोट । ३ किरण । ४ प्रकाश । चमक ।
५ शोला । अंगारा ।

हेतुः (पु०) १ कारण । सबब । उद्देश्य । २ उद्भव-
स्थल । निकास । उत्पत्ति । ३ जरिया । साधन ।
४ तर्क । तर्क विज्ञान । न्यायदर्शन में वर्णित
प्रमाणों में से कोई भी प्रमाण । ५ अलङ्कार ।
विशेष जिसकी परिभाषा यह है:—
“हेतौ हेतुमता सर्धमभेदो हेतुः कथ्यते ।”

हेतुक (वि०) उत्पादक ।

हेतुकः (पु०) १ कारण । हेतु । साधन । जरिया ।
३ तार्किक ।

हेतुता (स्त्री०) } हेतु की विद्यमानता । कारण का
हेतुत्वं (न०) } होना ।

हेतुमत् (वि०) सकारण । सहेतुक । (पु०) कार्य ।
क्रिया । उद्देश्य ।

हेमं (न०) सोना । सुवर्ण ।

हेमः (पु०) १ काले या भूरे रंग का घोड़ा । २
सोने की तौल विशेष । ३ बुध ग्रह ।

न (न०) १ सुवर्ण । सोना । २ जल । पानी ।
 ३ बर्फ । हिम । ४ धनुरा ५ केसर का फूल ।
 —अङ्गः, (वि०) सुनहला ।—अङ्गः, (पु०)
 १ गरुड़ । २ शेर । सिंह । ३ सुमेरु पर्वत ।
 ४ ब्रह्मा । ५ विष्णु । ६ चंपक वृक्ष ।—अंगदं,
 (न०) सोने का बाजूबन्द ।—अङ्घ्रिः, (पु०)
 सुमेरु पर्वत ।—अम्भोजं, (न०) सोने का
 कमल । [यथा—

हेमाम्भोजप्रसवि सखिलं नाभसस्याददानः ।

—मेघदूत ।]

—अम्भोरुहं, (न०) सुनहला कमल ।—आद्भिः,
 (पु०) जंगली चंपा का पेड़ ।—कंदलः, (पु०)
 मूँगा ।—करः, —कर्तृ, —कारः, —कारकः,
 (पु०) सुनार ।—किंजल्कः, (न०) नाग-
 केसर का फूल ।—कुम्भः (पु०) सोने का
 बड़ा ।—कूटः, (पु०) एक पर्वत का नाम ।
 —केतकी, (स्त्री०) स्वर्णकेतकी नामक पौधा ।
 —गंधिनी, (स्त्री०) रेणुका ।—गिरिः, (पु०)
 सुमेरु पर्वत ।—गौरः, (पु०) अशोक वृक्ष ।
 —क्षत्र, (वि०) सुवर्ण से अञ्जादित । सोने से
 मझा हुआ ।—क्षत्रं, (न०) सोने का ढक्का ।
 —ज्वालः, (पु०) अग्नि ।—तारं, (न०)
 तृतीया ।—दुग्धः, —दुग्धकः, (पु०) सघन
 गुल्बर का पेड़ ।—पर्वतः (पु०) सुमेरु पर्वत ।
 —पुष्पः, —पुष्पकः, (पु०) १ अशोक वृक्ष ।
 २ लोध्रवृक्ष । ३ चंपकवृक्ष । (न०) १ अशोक
 का फूल । २ गुलाब विशेष का फूल ।—वलं,
 —वलं, (न०) मोती ।—मालिन्, (पु०)
 सूर्य ।—यूथिका, (स्त्री०) सुनहली मल्लिका ।
 —रामिणी, (स्त्री०) हल्दी ।—शङ्खः, (पु०)
 विष्णु का नामान्तर ।—शृङ्गः, (न०) सुनहला
 सींग । २ सुनहली चेटी या शिखर ।—सारं,
 (न०) नीलायोथा ।—सूर्जं, —सूत्रकं, (न०)
 गोप नामक कण्ठभरण विशेष ।

रः (पु०) } षट्क्षतुर्धों में से एक । मार्गशीर्ष
 तः (पु०) } और पौष अर्थात् अगहन और
 रं (न०) } पुष मास ।
 तं (न०) }

मन्मथालोद्गमनस्यवरम्भः
 मकुलमोदः प रेपक्रमालिः ।
 विलानपद्यः प्रपतनुपारो
 हेमन्तकालः क्षुपागतः प्रिये ॥”

ऋतुसंहार ।

हेमलः (पु०) १ सुनार । २ कसौटी । ३ गिरगट ।
 हेय (वि०) त्यागने योग्य । छोड़ देने योग्य ।
 हेरं (न०) १ सुकुट विशेष । शिरोभूषण विशेष ।
 २ हल्दी ।

हेरंभः } (पु०) १ गणेश । २ भैसा । शेखीवाज कीर ।
 हेरम्भः } —जननी, (स्त्री०) गणेश जननी श्री
 पार्वतीजी ।

हेरिकः (पु०) जासूस । भेदिया ।

हेलनं (न०) } उपेक्षा । तिरस्कार । अपमान ।
 हेलना (स्त्री०) } हतक ।

हेला (स्त्री०) १ तिरस्कार । अपमान, हतक । २
 आमोद प्रमोदमय क्रीड़ा । ३ उत्कट मैथुनेच्छा ।
 ४ आराम । सुसाध्यता । सौख्य । ५ चाँदनी ।
 जुम्हारी ।

हेलावृकः (पु०) घोड़े का व्यापारी ।

हेलिः (पु०) १ सूर्य । (स्त्री०) स्वेच्छाचारिता ।

हेवाकः (पु०) उत्सुकता ।

हेवाकस (वि०) उच्च । अतिशय । अत्यन्त । प्रचण्ड ।

हेवाकिन् (वि०) अतिशय उत्सुक या इच्छुक ।

आयन्ते महताः ऋते निरपम—

परयामहेवाकिनां ।

विःसाभान्यमप्यवयोगविशुना

वातं विपत्तायवि ।

—कन्दन ।

हेप (धा० आ०) [हेपते, हेपित] घोड़े की तरह
 हिनहिनाना । रेंकना । गर्जना ।

हेपः, (पु०)

हेपा (स्त्री०) } हिनहिनाहट । रेंक ।

हेपितं (न०) }

हेपिन् (पु०) घोड़ा ।

हेहे (अव्यया०) किसी को पुकारने के काम में आने
 वाला अव्यय विशेष ।

है (अव्यया०) सम्बोधनात्मक अव्यय ।

हैतुक (वि०) [स्त्री०—हैतुकी] १ कारणात्मक ।
 कारणासम्बन्धी या निर्देशक । २ तर्कात्मक ।
 प्रज्ञावत्ता । यौक्तिकता ।

हैतुक- (पु०) १ तर्क करने वाला बहस करने वाला । २ मीमांसा दर्शन का अनुयायी । ३ 'सन्निध्य चित्त । ४ नास्तिक ।

हैम [स्त्री०—हैमी] १ शीतल । ठंडा । २ कोहरे के कारण हुआ । ३ सुनहला । सोने का बना हुआ । —मुद्रा—मुद्रिका, (स्त्री०) १ सोने का सिका ।

हैमं (न०) ओस । कोहरा । पाला ।

हैमः (पु०) शिव जी का नामान्तर ।

हैमन् (वि०) [स्त्री०—हैमनी] १ शीतल । ठंडा । २ जड़काला सम्बन्धी । ३ शीतकाल में या ठंड में उत्पन्न होने वाला । ४ सुनहला । सोने का ।

हैमनः (पु०) १ मार्गशीर्षमास । अग्रहन का महीना । २ हेमन्त ऋतु । जड़काला ।

हैमतिक } (वि०) १ शीतल । ठंडा । २ जड़काले
हैमन्तिक } में उत्पन्न होने वाला ।

हैमंतिकं } (न०) एक प्रकार का चावल ।
हैमन्तिकं }

हैमल देखो हैमन्त ।

हैमघत (वि०) [स्त्री०—हैमघती] १ बर्फीला । बर्फीले यानी हिमालय पर्वत से बहने वाला । २ हिमालय पर्वत में उत्पन्न या पालापोसा हुआ । हिमालय पर्वत सम्बन्धी । हिमालय पर्वत का । हिमालय पर्वत में स्थित ।

हैमघतं (न०) भारतवर्ष या हिन्दुस्तान ।

हैमघती (स्त्री०) १ श्री पार्वती देवी । २ श्री गङ्गा । ३ हरी बहेड़ा । आँवला की जाति का फल विशेष । ४ एक ओषधि विशेष । ५ साधारण सन या पट-सन । ६ दाख या अंगूर ।

हैयंगवीनं } (न०) १ ताजा घी । टटका मक्खन ।
हैयङ्गवीनं }

हैरिकः (पु०) चोर ।

हैहय (पु०) (बहु०) एक जाति और उस जाति वालों का देश विशेष ।

हैहयः (पु०) १ यदु के पंती का नाम । २ सहस्रार्जुन का नाम ।

येसुवत्सहरणाञ्च हैहयः

त्वंच कीर्तिमपदवुमुद्यतः ॥

हो (अव्यया०) हा अरे हे । खुवश होड् (धा० आ०) [होडते] तिरस्कार करना । डपेचा करना । अपमान करना । (पु० होडति] जाना ।

होडः (पु०) बेड़ा ।

होतृ (वि०) [स्त्री—होत्री] १ हवन करने वाला । होम करने वाला । २ ऋत्विक् । ३ यज्ञकर्त्ता ।

होत्रं (न०) १ हवन करने योग्य यथा धी । २ यज्ञ । ३ भस्म । शाकल्य ।

होत्रा (स्त्री०) १ यत् । २ स्तुति ।

होत्रीयं (न०) यज्ञमण्डप । यज्ञशाला ।

होत्रीयः (पु०) हवन करने वाला ।

होमः (पु०) १ हवन । २ यज्ञ ।—अग्निः, (पु०) होम की आग ।—कुण्डः, (न०) हवनकुण्ड । —तुरङ्गः (पु०) यज्ञ में बलि दिया जानेवाला घोड़ा ।—धान्यं, (न०) तिल ।—धूमः, (पु०) यज्ञीय अग्नि या होम की आग से निकला हुआ धूम ।—भस्मन्, (न०) होम की भस्म —वेला, (स्त्री०) हवन करने का समय ।—शाला, (स्त्री०) वह घर जिसमें हवन करने के लिए हवन कुण्डादि हवन की सामग्री हो ।

होमक देखो होतृ ।

होमिः (पु०) १ धी । २ जल । ३ अग्नि ।

होमिन् (पु०) होम करने वाला । यज्ञ करने वाला ।

होमीय } (वि०) हवन सम्बन्धी ।
होम्य }

होम्यं (न०) धी ।

होरा (स्त्री०) १ राशि का उदय । २ राशि का आधा भाग । ३ एक घंटा । ४ चिह्न । रेखा ।

होलाका (स्त्री०) १ होली का त्योहार । २ फाल्गुनी पूर्णिमा ।

होलिका } (स्त्री०) होली का त्योहार ।
होली }

हो } (अव्यया०) अरे । ए । हो ।
होहो }

होत्रं (न०) होता ।

होम्यं (न०) धी ।

हु (धा० आ०) [हुते, हुत] १ चीन लेना । लू लेना । २ छिपाना । ३ किसी से कोई चीज छिपाना ।

हास् (अ० या०) बीता हुआ कल ।—भव, (वि०) वह जो कल (बीता हुआ) हुआ हो ।
 हास्तन (वि०) [स्त्री—हास्तनी] कल सम्बन्धी ।
 —दिन, (न०) बीता हुआ कल ।
 हास्त्य (वि०) गुज़रे हुए कल सम्बन्धी ।
 हदः (पु०) १ गहरी कील । बड़ा और गहरा सरोवर ।
 २ गहरी गुफा । किरण ।—ग्रहः, (पु०) बिजली । विद्युत् ।
 हदिनी (स्त्री०) १ नदी । सरिता । २ विद्युत् । बिजली ।
 हद्रोगः (पु०) कुम्भ राशि ।
 हस् (धा० प०) [हन्ति, हसित] १ शब्द करना । २ छोटा हो जाना ।
 हसिमन् (पु०) छोटापन । हस्यता ।
 हस्त्र (वि०) १ छोटा । थोड़ा । कम । २ खर्वाकार । बौना । ३ छोटा ।—ध्रुग, (वि०) ठिगनेकद का ।
 —अङ्गः, (पु०) बौना । वामन ।—गर्भः, (पु०) कुश ।—दर्भः, (पु०) छोटा सफेद कुश ।
 —बाहुक, (वि०) छोटी बाँह वाला ।—मूर्ति, (वि०) ठिगने कद का ।
 ह्रस्वः (पु०) बौना ।
 ह्राद् (धा० आ०) [ह्रादते] १ शब्द करना । २ गर्जना ।
 ह्रादः (पु०) शोर गुल ।
 ह्रादिन् (वि०) शब्दाधमान । गर्जने वाला ।
 ह्रादिनी (स्त्री०) १ वज्र । २ बिजली । ३ नदी । ४ शल्लकी नामक वृक्ष ।
 ह्रासः (पु०) १ शब्द । शोरगुल । २ कमी । छोटापन । नाशन । ३ छोटी संख्या ।
 ह्रीणीया (स्त्री०) १ भस्मना । २ लज्जा । शर्मा ३ रहम । तरस ।
 ह्री (धा० प०) [जिहति, ह्रीण, ह्रीत] शर्माना । लजाना ।

ह्री (स्त्री०) १ शर्म । लाज । २ हथा । नम्रता ।—जित, —मूढ, (वि०) शर्म से घबड़ाया हुआ ।
 —ग्रन्था, (स्त्री०) शर्म के कारण उत्पन्न पीड़ा ।
 ह्रीका (स्त्री०) १ लज्जालापन । हथादारी । भीस्ता । भय । डर ।
 ह्रीकु (वि०) १ लज्जाला । हथादार । शर्मीला । २ भीर । डरपोक ।
 ह्रीकुः (पु०) १ टीन । जस्ता । २ लास ।
 ह्रीगा { (व० क०) १ शर्माया हुआ । लजाया हुआ ।
 ह्रीत } २ हथादार । शर्मीला ।
 ह्रीवेरं { (न०) एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य ।
 ह्रीवेले }
 ह्रेप् (धा० आ०) [ह्रेपते] १ हिनहिनाना । २ चलना । रेंगना ।
 ह्रेपा (स्त्री०) हिनहिनाहट ।
 ह्रग् (धा० प०) [ह्रगति] शब्द करना ।
 ह्रतिः (स्त्री०) हर्ष । प्रसन्नता ।
 ह्रद (धा० आ०) [ह्रादते, लहन्न, लहादित] १ प्रसन्न होना । प्रसन्न करना । २ शब्द करना ।
 ह्रादः { (पु०) हर्ष । आनन्द ।
 ह्रादकः }
 ह्रादनं (न०) प्रसन्न होने की क्रिया । आनन्द । प्रसन्नता ।
 ह्रादिन् (वि०) प्रसन्नकारक । हर्षप्रद ।
 ह्रादिनी (स्त्री०) देखा ह्रादिनी ।
 ह्रल् (धा० प०) [ह्रलति] १ चलना । जाना । २ हिलना । काँपना ।
 ह्रानं (न०) १ आमंत्रण । २ चीत्कार । आवाज़ ।
 ह्रू (धा० प०) [ह्रूरति] १ देखा होना । २ आचरण में देहापन करना । कपट करना । छलना । धूर्तता करना । ३ सन्तप्त होना । चोटिल होना ।
 ह्रै (धा० उ०) [ह्रयति ह्रयते, —हृतः] १ बुलाना । आह्वान करना । २ नाम लेना । नाम लेकर पुकारना । ३ विनोती देना । लजकारना । ४ स्पर्द्धा करना । ५ प्रार्थना करना । याचना करना ।